Pramanik Hindi Kosha 1946

R
१.२
१४(२)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

Stock Verification-2024

R

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या १२ / १४(२) आगत संख्या २६।७२

Stock Verification-2024

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है । इस तिथि सहित ३० वे दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए । अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा ।

Stock Verification-2024

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFRENCE BOOK

26,962

गुरुकुल विश्वविद्यालय
कांगड़ी को भेंट
(रामचन्द्र शर्मा)
३-७-५२

[illegible] १९८४-१९८५

पुस्तक संख्या ४५८५६

प्रामाणिक हिन्दी कोश

(हिन्दी भाषा का वस्तुतः प्रामाणिक और सर्व-श्रेष्ठ शब्द-कोश)

R1.2/14(2)
26172

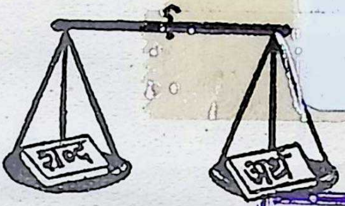

CHECKED 1973
Initial

सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

भलीभाँति संशोधित बहुत अधिक परिवर्द्धित संस्करण

[illegible]
पुस्तक सं०.....................
आगत सं०.....................
तिथि.....................
[illegible]

प्रकाशक

हिन्दी साहित्य कुटीर,
हाथीगली, बनारस।

साहित्य-रत्न-माला कार्यालय,
२० धर्मकूप, बनारस।

R
१.१

दूसरा संस्करण
महाशिवरात्रि सं० २००८ वि०
मूल्य १२॥)

मुद्रक
मुकुन्ददास गुप्त 'प्रभाकर'
टाइम टेबुल प्रेस, बनारस।

रामचन्द्र वर्म्मा

जन्म—माघ कृष्ण २, सं० १९४६ वि०]

संकेताक्षरों का विवरण

०=अँग्रेजी भाषा।
०= १. अकर्मक क्रिया।
२. कोष्ठक में व्युत्पत्ति के प्रसंग में = अरबी भाषा।
नु०=(क) अनुकरण। (व्युत्पत्ति में) (ख) अनुयायी। (वाद या मत का)
प०=अपभ्रंश।
ल्पा०=अल्पार्थक रूप।
व०=अवधी बोली।
व्य०=अव्यय।
ब०=इब्रानी।
ड़ि०=उड़िया।
प०=उपसर्ग।
हा०=कहावत।
क०=कोंकणी। (कोंकण देश की भाषा)
० प्र०=क्रिया प्रयोग।
० वि०=क्रिया-विशेषण।
व०=क्वचित्। (कहीं कहीं प्रयुक्त)
ज०=गुजराती भाषा।
र०=जरमन।
०=जापानी।
०=तातारी भाषा।
०=तुरकी भाषा।
०=देखें। (अभिदेश)
श०=देशज।
० धा०=नाम-धातु।
०=पंजाबी।
रि०=परिशिष्ट।
०=पाली भाषा।
०=पुलिंग।
० हिं=पुरानी हिन्दी।
र्त०=पुर्त्तगाली भाषा।
०=पूर्वी या पूरब।

पूर्व०=पूर्व-कालिक क्रिया।
प्रत्य०=प्रत्यय।
प्रा०=प्राकृत भाषा।
प्रे०, प्रेर०=प्रेरणार्थक क्रिया।
फा०=फारसी भाषा।
बँग०=बँगला भाषा।
बहु०=बहुवचन।
भाव०=भाववाचक संज्ञा।
मि०=मिलाओ।
मुसल०=मुसलमानों में प्रयुक्त।
मुहा०=मुहावरा।
यू०=यूनानी भाषा।
यौ०=यौगिक (दो या अधिक शब्दों के पद)।
राज०=राजस्थानी।
ले०=लैटिन।
व० वि०=वर्ण-विपर्यय।
वि०=विशेषण।
विप०=विपर्याय।
विभ०=विभक्ति।
विरु०=विरुद्धार्थक।
व्या०=व्याकरण।
व्रज०=व्रज भाषा।
सं०=संस्कृत।
संक्षि०=संक्षिप्तक।
स०=सकर्मक क्रिया।
समु०=समस्त पद।
सर्व०=सर्वनाम।
सा०=साहित्य।
स्त्रि०=स्त्रियों की बोल-चाल।
स्त्री०=स्त्री-लिंग।
स्पे०=स्पेनी भाषा।
हिं०=हिन्दी।

• कविताओं, गीतों आदि में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का सूचक चिह्न।
† स्थानिक बोल-चाल में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का सूचक चिह्न।

विषय-सूची

प्रस्तावना १–
शब्द-कोश १–१४
परिशिष्ट (छूटे हुए शब्द और अर्थ) १४३३–१५
अँगरेजी–हिन्दी–शब्दावली १५२९–१६

विशेष सूचनाएँ

१. इस कोश का पूरा पूरा महत्व समझने और इसका ठीक ठीक उपयोग करने के लिए इसकी प्रस्तावना तथा वक्तव्य एक बार ध्यानपूर्वक पढ़ जाना आवश्यक है।

२. जो शब्द मूल अंश में न मिलें, वे एक बार परिशिष्ट में भी देख लेने चाहिएँ। सम्भव है, उसमें मिल जायँ।

३. अन्त में जो अंगरेजी-हिन्दी-शब्दावली है, उसका ठीक और पूरा उपयोग करना न भूलें। बहुत से अँगरेजी शब्दों के उपयुक्त हिन्दी पर्याय उसमें मिलेंगे।

प्रस्तावना

इस शताब्दी के आरम्भ में हिन्दी में 'गौरी नागरी कोश', 'मंगल कोश' आदि छोटे-मोटे दो-तीन शब्द-कोश ही मिलते थे; और हिन्दी के उस आरम्भिक युग के लिए वही बहुत थे। हिन्दी में व्यवस्थित तथा कलात्मक रूप से बड़ा और सर्वांगपूर्ण कोश बनाने का काम पहले-पहल काशी नागरी-प्रचारिणी सभा ने सन् १९०९ में आरम्भ किया था और बीस वर्षों में उसने 'हिन्दी-शब्द-सागर' छापकर तैयार किया था। यह कोश हिन्दी-वालों के लिए तो सर्व-श्रेष्ठ और आदर्श था ही; भारतीय भाषाओं में भी यह अपने ढंग का पहला कोश था। उसमें अनेक ऐसे तत्वों का समावेश हुआ था, जो राष्ट्र-भाषा के सर्व-श्रेष्ठ कोश के लिए परम आवश्यक थे। इन पंक्तियों का लेखक आदि से अन्त तक (बीच के उस थोड़े से समय को छोड़कर, जब कोश-विभाग जम्मू चला गया था) उसकी रचना में सम्मिलित और सहायक था। चाहे सौभाग्य से समझिए या दुर्भाग्य से, उसके सम्पादकों में से वही अब तक जैसे-तैसे बचा है।

जिस समय हिन्दी शब्द-सागर बना था, उस समय बड़े-बड़े विद्वानों ने मुक्त-कंठ से उसकी प्रशंसा की थी। पर जो विशाल भवन दूर से देखनेवालों को परम रमणीक, भव्य और सुखद जान पड़ता है, वही भवन उसमें रहनेवालों को और उनसे भी बढ़कर उसे बनानेवाले कारीगरों को बहुत-कुछ त्रुटिपूर्ण और स-दोष जान पड़ता है। शब्द-सागर के दो सम्पादक (स्व० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और इन पंक्तियों का लेखक) प्रायः आपस की बात-चीत में शब्द-सागर की खूब दिल्लगी उड़ाते थे और उसके तरह-तरह के दोषों की चर्चा करते हुए सोचा करते थे कि इसके ये सब दोष कब और कैसे दूर होंगे। स्व० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अन्यान्य विषयों और विद्याओं की भाँति कोश-कला के भी परम प्रवीण पंडित थे। यदि वे चाहते तो उसे बहुत-कुछ निर्दोष कर सकते थे। पर थे वे बहुत सुख-जीवी, और परिश्रम के कार्यों तथा झगड़े-बखेड़ों से दूर रहनेवाले। अतः वे प्रायः मुझसे कहा करते थे—'वर्म्मा जी, हमसे तो अब कुछ हो न सकेगा। हाँ, आप यदि कुछ हिम्मत करें तो शब्द-सागर का बहुत-कुछ सुधार हो सकता है'। मैं भी हँसकर कह देता—'जी हाँ, मैं ही इसके लिए मरने को हूँ। हम लोगों को जो कुछ करना था, वह कर चुके। अब आनेवाली पीढ़ियाँ जो चाहेंगी, वह करेंगी'।

परन्तु जब शुक्ल जी का स्वर्गवास हो गया, तब मेरी आँखें खुलीं। जिस समय मैं शोक मग्न होकर उनके शव के साथ श्मशान की ओर जा रहा था, उस समय मुझे ध्यान आया कि शुक्ल जी कोश-कला के ज्ञान का कितना बड़ा भंडार अपने साथ लिये जा रहे हैं और उस ज्ञान का कितना थोड़ा अंश अभी तक कागज पर आ पाया है। मैंने सोचा कि शुक्ल जी के सत्संग से इस विषय का जो थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसका तो मैं कुछ उपयोग कर जाऊँ। बस तभी से मैं शब्द-सागर में जहाँ-तहाँ सुधार, संशोधन, परिवर्त्तन और परिवर्द्धन करने लगा। पर सारा काम अकेले मेरे वश का नहीं था। इसके लिए अनेक विद्वानों के सहयोग तथा एक बड़े कार्यालय

की आवश्यकता थी। सभा का कोश-विभाग बहुत पहले बन्द हो चुका था; और फिर से उसका काम चलाने में सभा असमर्थ-सी थी। अतः मुझसे अकेले जो कुछ हो सकता था, वह मैं करता चलता था।

परन्तु जब संवत् २००४ के अन्त में देव-स्वरूप महा० गान्धी के पवित्र नाम का घोर दुरुपयोग करके सभा का तख्ता उलट दिया गया और उसी समय से सभा के कई पुराने और सच्चे सेवकों, उन्नायकों तथा हितैषियों के साथ अनेक प्रकार के अशालीन और अशोभन व्यवहार होने लगे, कोरे व्यक्ति-गत राग-द्वेष तथा विशुद्ध बल-प्रदर्शन की वेदियों पर सभा के उच्चतम हितों की बलि चढ़ने लगी और सभा की कई परम उपयोगी तथा अर्थ-करी योजनाएँ और व्यवस्थाएँ मनमाने ढंग से नष्ट की जाने लगीं, तब सं० २००५ के पूर्वार्द्ध में मैंने परम दुःखी होकर सभा से ४० वर्षों का पुराना घनिष्ट सम्बन्ध तोड़ लिया और शब्द-सागरों के संशोधन से हाथ खींचकर 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' की रचना में हाथ लगाया।

अन्यान्य कोशों की भूलें

यह नया कोश प्रस्तुत करने के समय मुझे 'शब्द-सागर' के बृहत् और संक्षिप्त दोनों संस्करणों में और भी अनेक प्रकार की हजारों भूलें मिलने लगीं। यहाँ यह बतला देना भी आवश्यक जान पड़ता है कि 'शब्द-सागरों' के बाद उनके अनुकरण पर बने हुए कोशों में भी ये सब भूलें तो ज्यों की त्यों मिलती ही हैं, साथ में और भी बहुत सी नई भूलें देखने में आती हैं। ऐसी भूलों का सुधार और बहुत सी त्रुटियों की पूर्त्ति तो इस कोश में कर दी गई है, तो भी बहुत सा काम बाकी है। पर मैं इसके लिए शारीरिक शक्ति और नैत्रिक ज्योति कहाँ से लाऊँ ! फिर भी जहाँ तक हो सकेगा, कुछ न कुछ करता रहूँगा। बाकी काम 'आनेवाली पीढ़ियाँ' करेंगी।

संक्षिप्त शब्द-सागर में 'धवनी' के बाद भूल से 'धवर' शब्द तो छपना छूट गया है, पर उसका अर्थ 'सफेद, उजला' छप गया है, जिससे यह अर्थ भी 'धवनी' के अन्तर्गत हो गया है। वर्णों का उच्चारण-प्रकार है तो वस्तुतः 'स्पृष्ट' पर 'शब्द-सागरों' में उसका विवरण 'स्पष्ट' के अन्तर्गत चला गया है। 'पराह' शब्द है तो संज्ञा, पर दोनों 'शब्द-सागरों' में भूल से 'विशेषण' छप गया है। 'होना' क्रिया का अवधी भूत-कालिक रूप 'भया' है तो अकर्मक क्रिया, पर दोनों 'शब्द-सागरों' में विशेषण छप गया है। 'पूरा' विशेषण भी है और संज्ञा भी; पर 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में उसका संज्ञावाला अर्थ भी विशेषणवाले अर्थ के साथ ही आ गया है। यही बात 'जाग्रत' के सम्बन्ध में भी है। 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में इसके विशेष वाले अर्थ के साथ ही संज्ञा-वाला अर्थ भी आ गया है 'सकोचना' का 'सिकोड़ना' वाला अर्थ सकर्मक और 'संकोच' या 'लज्जा करना' वाला अर्थ अकर्मक है। पर दोनों अर्थ सकर्मक के अन्तर्गत ही आये हैं। 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में 'पट' शब्द जहाँ विशेषण बताया गया है, वहाँ उसका जो अर्थ दिया है, वह विशेषण के रूप में नहीं, बल्कि संज्ञा के रूप में है। कोशों में 'संगत' का संज्ञावाला हिन्दी अर्थ तो मिलता है, पर संस्कृत का विशेषणवाला अर्थ नहीं मिलता।

कई कोशों में 'कोहरी' के आगे दे० 'कोइलारी' 'घोहरा' के आगे दे० 'देवहरा' और 'तनुरुह' के आगे दे० 'तनूरुह' लिखा है। पर 'कोइलारी' 'देवहरा' और 'तनरूह' शब्द उनमें आये ही नहीं। एक कोश में 'निमिख' दे० 'निमिष' और 'निमिष' दे० 'निमेष' तथा 'तरोई' दे० 'तुरई' और 'तुरई' दे० 'तरोई' तक मिला है। यदि शब्द-सागरों में आंतरिक, परिस्थिति, पारिश्रमिक, पुस्तिका आदि शब्द छूट गये हैं, तो फिर उनके अनुकरण पर बने हुए कोशों में भी इन शब्दों का अभाव ही दिखाई देता है। तात्पर्य यह कि हिन्दी के किसी नये या आधुनिक कोशकार ने कहीं कुछ सोचने विचारने की आवश्यकता नहीं समझी। सबने शब्द-सागरों का अन्ध अनुसरण मात्र किया है। पर मैं आशा करता हूँ कि इस प्रस्तावना में कोशों की भूलों और त्रुटियों की जो चर्चा की गई है, उससे भावी कोशकार सचेत हो जायँगे और अपनी कृतियों को ऐसी भूलों और त्रुटियों से बचाने का प्रयत्न करेंगे।

शब्दों का चुनाव

कोशकार को पहले यह देखना पड़ता है कि हम किस प्रकार अथवा वर्ग के लोगों के लिए कोश बना रहे हैं; और उन्हीं लोगों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए शब्दों का चुनाव और संग्रह होना चाहिए। प्रायः लोग कोई बड़ा कोश उठा लेते हैं और उसी में से बिना किसी उद्देश्य या विशेष दृष्टि के शब्द लेने लगते हैं। अन्य क्षेत्रों से नये शब्द ढूँढ़ने का भी वे कोई प्रयत्न नहीं करते। 'हिन्दी शब्द-सागर' के बाद आज तक जितने कोश बने हैं, उनमें से एक को छोड़कर और किसी कोश में कदाचित् ही दस-पाँच नये शब्द आये हों। हिन्दी शब्द-संग्रह में प्राचीन कवियों के प्रयुक्त किये हुए अवश्य सैकड़ों ऐसे शब्द मिलते हैं, जो हिन्दी शब्द-सागर में नहीं आये हैं। इधर हिन्दी में हजारों नये शब्द बने और प्रचलित हुए हैं और हजारों शब्दों में नये अर्थ लगे हैं। पर अभी तक किसी कोश में उन्हें स्थान नहीं मिला। इधर दस बारह वर्षों में मैंने प्राचीन तथा आधुनिक कवियों और इधर के समाचारपत्रों आदि में प्रयुक्त सात-आठ हजार नये शब्द उदाहरणों सहित ढूँढ़कर इकट्ठे किये हैं। और उनमें से अधिकतर मुख्य शब्द इस कोश में ले लिये गये हैं।

जब से हमारा देश स्वतंत्र हुआ है, तब से हिन्दीवालों को शासनिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक आदि अनेक प्रकार के और कार्यालयों आदि में प्रयुक्त होनेवाले बहुत से अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्यायों की आवश्यकता पड़ने लगी है। अनेक सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों में आवश्यक अँगरेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय खूब बन रहे हैं। पर ये सभी नये हिन्दी पर्याय न तो अभी तक सर्व-मान्य हुए हैं और न उनमें से बहुतेरे कभी सर्व-मान्य हो सकते हैं। हाँ, उनमें से जो दो-तीन हजार शब्द मुझे ठीक और काम के या चल सकने योग्य जान पड़े, वे अवश्य इस कोश में ले लिये गये हैं। नवम्बर-दिसम्बर १९४९ में भारतीय संविधान परिषद् की ओर से दिल्ली में जो भाषा-विद् सम्मेलन हुआ था और जिसमें मुझे भी इस प्रान्त की सरकार के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उसमें अँगरेजी के विधिक और वैधानिक शब्दों के लिए जो

हिन्दी शब्द बने थे, उनमें से भी प्रायः सभी ठीक और उपयुक्त शब्द इस कोश के अ गये हैं। बहुत से शब्द मेरे विद्वान् और सुयोग्य मित्र श्री गोपालचन्द्र सिंह जी (अ प्रान्त के सिविल जज) के चुने और बनाये हुए भी हैं, जिन्हें इस प्रान्त की सरकार ने सभा द्वारा बननेवाले 'राजकीय कोश' में मेरे साथ सहयोग के लिए काशी भेजा था और बहुत से शब्द स्वयं मेरे चुने, ढूँढ़े, बनाये और स्थिर किये हुए भी हैं।

इस कोश में पाठकों को कुछ अँगरेजी शब्दों के दो-दो और तीन-तीन पर्याय भ मिलेंगे। वे इसी दृष्टि से दिये गये हैं कि सुविज्ञ लोग उनमें से चल सकने योग्य औ उपयुक्त शब्द चुन लें। ऐसे महत्त्वपूर्ण शब्दों की व्याख्या के अन्त में उनके वाच अँगरेजी शब्द भी दे दिये गये हैं। जो लोग अँगरेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय जानन चाहते हों, उनके सुभीते के लिए अँगरेजी के प्रायः दो हजार शब्दों की सूची उनके हिन् पर्यायों के साथ इस कोश के अन्त में दे दी गई है। हिन्दी और संस्कृत के शब्दों में गिन तियों, ओषधियों, स्थलों, व्यक्तियों, पशु-पक्षियों, जातियों, वृक्षों आदि के नामों औ धर्मशास्त्र, ज्यौतिष, तर्कशास्त्र, पिंगल, अलंकारशास्त्र आदि के शब्दों में से वही शब् लिये गये हैं, जो बहुत अधिक प्रचलित हैं। अरबी-फारसी के भी बहुत प्रचलित शब्द ह लिये गये हैं, शेष छोड़ दिये गये हैं।

शब्दों का मानक रूप

जिन दिनों 'हिन्दी शब्द-सागर' बन रहा था, उन दिनों शब्दों के मानक रूप स्थि करने की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया था। जो शब्द जहाँ जिस रूप में मिलता थ वहाँ से वह प्रायः उसी रूप में ले लिया जाता था और उसी के आगे उसके अर्थ भी दिये जाते थे। इसके सिवा उस समय भूल से कुछ शब्दों के ऐसे रूप मानक मान लि गये थे, जो वास्तव में मानक नहीं थे। उदाहरणार्थ—कुआँ, कौवा, ठटरी, ठाट, तुर घुआँ आदि। पर इनके मानक रूप क्रमात् कूआँ, कौआ, ठठरी, ठाठ, तोरी, घूआँ आ हैं। शब्द-सागर में 'पावँड़ा', 'पावँड़ी' आदि रूप दिये हैं, पर ये शब्द 'पाँव' से बने है और इसी लिए 'पाँवड़ा' 'पाँवड़ी' आदि रूप ही शुद्ध ठहरते हैं। 'बहुँटा' रूप इसलि ठीक नहीं है कि वह 'बाँह' से बना है। मैंने 'बहुँटा' रूप ही ठीक माना है। संस्क 'विहंगिका' से निकला हुआ हिन्दी शब्द 'बहँगी' ही ठीक होगा, 'बँहगी' नहीं। 'रसाव रूप तो मानक और 'रसौर' स्थानिक है। पर कोशों में प्रायः 'रसौर' के अन्तर्गत ही अ मिलता है। इस कोश में 'रसावर' के अन्तर्गत ही अर्थ दिया गया है। 'तूँबा' रूप मानक है, पर 'तुँबड़ी' 'तुमड़ी' आदि रूप स्थानिक हैं। बोल-चाल और प्रचलित 'साँढ़' ही मानक माना गया है, 'साढ़' नहीं।

शब्दों की अक्षरी या हिज्जे उनके मानक रूप के अन्तर्गत ही आ जाते हैं। पर मैं अक्षरी में भी एक विशेष बात का ध्यान रखा है। वह यह कि आवश्यकतानुसार सम या यौगिक शब्दों में संयोजक-चिह्न लगाकर उनके ठीक-ठीक उच्चारण बतलाने का प्रयत्न किया है। उदाहरणार्थ 'कन-पटी' रूप इसलिए दिया गया है कि मदरासी, असम आदि अ-हिन्दी-भाषी कहीं भूल से उसका उच्चारण 'कनप-टी' के समान न करने लगें

इसी दृष्टि से हिन्दी शब्दों में 'ड' और 'ड़' तथा 'ढ' और 'ढ़' के अन्तर का भी उच्चारण की दृष्टि से बहुत-कुछ ध्यान रखा गया है। पर हो सकता है कि प्रेस के भूतों के कारण इस नियम का पालन न हो सका हो। अगले संस्करण में इस बात का और भी अधिक ध्यान रखा जायगा।

इस कोश में अरबी-फारसी आदि विदेशी शब्दोंके हिन्दी मानक रूप स्थिर करने का भी प्रयत्न किया गया है। उदाहरणार्थ—'उम्र' 'बिल्कुल' 'सब्र' 'सर्दी' आदि रूपों के बदले 'उमर', 'बिलकुल' 'सबर', 'सरदी' आदि रूप ही मानक माने गये हैं। इसके कई कारण हैं। एक तो यह कि ये शब्द हिन्दी में अधिकतर इन्हीं रूपों में बोले और लिखे जाते हैं। दूसरे यह कि ऐसे रूपों में संयुक्त अक्षरों के लिखने-पढ़ने की कठिनाई से बचत होती है। परन्तु 'बस्ता', 'बस्ती' सरीखे शब्द इसी लिए इन रूपों में रखे गये हैं कि ये इसी प्रकार बोले और लिखे जाते हैं। इसी दृष्टि से संस्कृत के 'तारल्य', 'प्राबल्य' 'दौर्बल्य' और 'शैथिल्य' सरीखे रूपों की जगह 'तरलता' 'प्रबलता' 'शिथिलता' सरीखे रूप ही मान्य किये गये हैं। सारांश यह कि इस कोश में शब्दों के मानक रूप बहुत सोच-समझकर और कुछ विशिष्ट सिद्धान्तों के आधार पर ही स्थिर किये गये हैं। आशा है, इससे लोगों को भाषा का स्वरूप स्थिर करने में विशेष सहायता मिलेगी।

शब्द-भेद

शब्द का मानक रूप ज्ञात हो जाने पर यह जानने की आवश्यकता होती है कि व्याकरण की दृष्टि से यह किस प्रकार का शब्द है। अर्थात् संज्ञा है या विशेषण; क्रिया है अथवा क्रिया-विशेषण आदि। पर कुछ तो गम्भीर विचार के अभाव के कारण और कुछ दृष्टि-दोष से इस सम्बन्ध में भी कोशकारों से कई प्रकार की भूलें हो जाती हैं। यों तो बहुत से ऐसे विशेषण हैं जिनका व्यवहार प्रायः संज्ञा के समान होता है; फिर भी विशेषण विशेषण ही हैं और संज्ञाएँ संज्ञाएँ ही। फिर इनके सम्बन्ध की गड़बड़ी उतनी भ्रामक भी नहीं होती। हाँ, गड़बड़ी तब होती है, जब एक शब्द-भेद के अन्तर्गत दूसरे शब्द-भेदवाला अर्थ आता है। 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में 'सरपट' शब्द बताया तो गया है क्रि० वि०, पर उसका अर्थ दिया गया है संज्ञा के रूप में। वस्तुतः ये दोनों अर्थ हैं जो अलग अलग शब्द-भेदों के अन्तर्गत होने चाहिएँ। क्रियाओं में अकर्मक और सकर्मक का भेद करना कभी कभी कठिन होता है और शायद इसी कठिनता से बचने के लिए एक कोशकार ने अपने कोश में से यह भेद ही निकाल दिया है, और 'क्रिया' मात्र लिखकर छुट्टी ली है! पर अधिकतर कोशों में अकर्मक और सकर्मक भेद बतलाये गये हैं। हाँ, उनमें कहीं-कहीं कुछ भूलें अवश्य हुई हैं। उदाहरणार्थ—'पतियाना' शब्द है तो अकर्मक, पर कई कोशों में वह सकर्मक बतलाया गया है। 'धीजना', 'बराना', 'बहना' आदि बहुत से शब्दों में मुझे कई कोशों में अकर्मक और सकर्मक अर्थ एक-साथ और एक ही में मिले-जुले दिखाई दिये। पर इस कोश में प्रायः सभी अकर्मक और सकर्मक अर्थ अलग और यथा-स्थान दिये गये हैं; और इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि अकर्मक का अर्थ भी अकर्मक रूप में हो और सकर्मक का अर्थ भी सकर्मक रूप में।

लिंग-निर्णय

हिन्दी में लिंग-भेद का प्रकरण इतना जटिल और दुरूह है कि उसकी ठीक-ठी मीमांसा होना प्रायः असम्भव है। बहुत-से अ-हिन्दी-भाषी इसी लिए हिन्दी से घबरा हैं कि उनकी समझ में नहीं आता कि हिन्दी में 'मार्ग' या 'रास्ता' पुं० क्यों है औ 'सड़क' या 'गली' स्त्री० क्यों है। या 'बाल' पुं० क्यों है और दाढ़ी या मूँछ स्त्री क्यों है। पर हिन्दी में संज्ञाओं में लिंग-भेद है ही, जिसका प्रभाव विशेषणों औ क्रियाओं तक पर पड़ता है। किसी शब्द का ठीक लिंग जानने के लिए लोगों को प्राय कोश का ही सहारा लेना पड़ता है। अतः 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' में शब्दों के लि बहुत-कुछ विचारपूर्वक और कुछ निश्चित सिद्धान्तों के आधार पर स्थिर किये गये हैं 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में 'थूक' शब्द पुं० बतलाया गया है; पर अब मैं समझता हूँ कि चूक, हूक, फूँक आदि शब्दों की तरह 'थूक' भी स्त्री० ही है। 'दम-कल' शब्द मैंने इसलिए स्त्री० माना है कि उसके अन्त में 'कल' है जो स्त्री० है और फिर इसका पुं० रूप 'दम-कला' भी हिन्दी में प्रचलित है। 'हँकारी' शब्द 'दूत' के अर्थ में पुं० है, प 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में स्त्री० दिया है। प्रायः कोशों में 'बन्दनवार' शब्द पुं० बतलाय गया है; पर वह 'बन्दनमाला' से निकला है और इसी लिए स्त्री० होना चाहिए। 'पंखी' शब्द पक्षी या चिड़िया के अर्थ में तो पुं० है, पर शेष अर्थों में स्त्री० है शब्द-सागरों में यह सभी अर्थों में पुं० बतलाया गया है, जो ठीक नहीं है। प्रायः कोशों में 'नाल' शब्द कुछ अर्थों में पुं० और कुछ अर्थों में स्त्री० बतलाया गया है। प वह बोला जाता है सभी अर्थों में स्त्री० ही और इसी लिए वह इस कोश में भी स्त्री० ही माना गया है। शब्द-सागरों में 'पारख' शब्द तो स्त्री० बतलाया गया है; पर उसी के अन्तर्गत उस 'पारखी' शब्द का भी अभिदेश किया गया है, जो स्त्री० नहीं बल्कि पुं० है। यही बात 'पायल' के सम्बन्ध में भी है। शब्द-सागरों में उसके स्त्री० रूप में ही पुं० रूप का भी अर्थ आ गया है। यद्यपि कई कोशों में 'नेतक' शब्द पुं० दिया गया है, पर मैंने उसे इसलिए स्त्री० रखा है कि कविता में उसके प्रायः सभी प्रयोग स्त्री० रूप में मिलते हैं। 'बाढ़' शब्द सर्वथैव स्त्री० है। पर कुछ कवियों ने इसके 'बार' रूप क प्रयोग पुं० में किया है जो ठीक नहीं है। इस अर्थ में मैंने 'बार' शब्द भी स्त्री० ही माना है।

व्युत्पत्ति

कोश में व्युत्पत्ति विशेष महत्त्व की वस्तु मानी जाती है। शब्द का मूल रूप तो व्युत्पत्ति बतलाती ही है, इससे शब्द के इतिहास और विकास के सम्बन्ध की भी बहुत सी बातें प्रकट होती हैं। शब्द के ठीक अर्थ का जो ज्ञान होता है, वह अलग। खेद है कि इस क्षेत्र में अब तक हिन्दी में बहुत ही कम काम हुआ है। जो कुछ हुआ है, उसका अधिकांश 'शब्द-सागर' में ही हुआ है। पर वह आरम्भिक काम भी ऐसे समय हुआ था, जब न तो किसी का ध्यान इस ओर गया था और न इसके लिए यथेष्ट अवकाश अथवा साधन ही प्राप्त थे। 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' में भी व्युत्पत्तियों की वैसी छान-बीन तो

नहीं हो सकी है, जैसी होनी चाहिए, फिर भी जहाँ-तहाँ बहुत सी व्युत्पत्तियाँ ठीक की. गई हैं। 'जुकाम' सीधा-सादा अरबी शब्द है, पर शब्द-सागर में उसकी व्युत्पत्ति 'जूड़ + घाम' बतलाई गई है! जो 'बहीर' वस्तुतः फारसी का शब्द है, उसकी व्युत्पत्ति शब्द-सागर में 'भीड़' बतलाई गई है। 'पुर' फारसी का शब्द है, जो 'शब्द-सागर' में भूल से अरबी का माना गया है। 'तालाब' शब्द 'ताल' और 'आब' के योग से नहीं बना है, बल्कि सं० 'तल्ल' से निकला है। 'समूर' है तो अरबी का शब्द, पर 'शब्द-सागर' में संस्कृत बताया गया है। यों बोल-चाल में लोग भले ही 'ठेका' और 'ठीका' में अन्तर न रखें, पर व्युत्पत्ति के विचार से दोनों में बहुत अन्तर है। 'ठेका' शब्द 'ठेकना' से बना है। इसका अर्थ 'चाँड़' है और इसका दूसरा रूप 'ठेक' है। पर संविदा का वाचक 'ठीका' वास्तव में 'ठीक' से बना है; और इस दृष्टि से 'ठेका' से बिलकुल अलग चीज है। 'धुस्स' शब्द कभी 'ध्वंस' से निकला हुआ नहीं हो सकता, चाहे वह 'दूह' से बना हो, चाहे किसी और शब्द से। 'निनावाँ' कभी 'नन्हाँ' से निकला हुआ नहीं माना जा सकता। 'पुजापा' शब्द 'पुजापात्र' से नहीं निकला है, बल्कि 'पूजा' में वही 'आपा' प्रत्यय लगने से बना है जैसा 'बुढ़ापा' में है। 'शब्द-सागर' में 'पिन्नी' को देशज बतलाया गया है. पर वह सं० 'पिंड' से निकला है। 'निदरना' सं० 'निरादर' से नहीं बना है; क्योंकि स्वयं 'निरादर' संस्कृत का शब्द नहीं है। वह 'आदर' में हिन्दी उपसर्ग लगने से बना है। 'पहल' का तह या परतवाला अर्थ शब्द-सागर में फारसी 'पहलू' से व्युत्पन्न माना गया है, पर वह वस्तुतः सं० 'पटल' से निकला है। 'तरी' का एक अर्थ है—नीची भूमि, जिसमें बरसाती पानी इकट्ठा होता है। इस अर्थ में यह शब्द हिन्दी के उस 'तर' से निकला है, जिसका अर्थ 'तले' या 'नीचे' है, न कि फारसी 'तर' (आर्द्र) से। अवधी हिन्दी का प्रसिद्ध 'बरु' या 'बरुक' शब्द या तो सं० 'वरम्' से निकला है या फारसी 'बल्कि' से। उसे सं० वर = श्रेष्ठ से निकला हुआ बतलाना ठीक नहीं है। व्युत्पत्ति संबंधी इस प्रकार की सैकड़ों भूलें इस कोश में सुधारी गई हैं। बहुत से ऐसे शब्द भी हैं, जिनकी कोई व्युत्पत्ति शब्द-सागर में दी ही नहीं गई है और उनके आगे प्रश्न-चिन्ह लगाकर छोड़ दिया गया है इस कोश में ऐसे कुछ शब्दों की व्युत्पत्ति ढूँढ़ने का भी प्रयत्न किया गया है। पंक्ति या कतार के अर्थ में 'परा' शब्द फारसी के उस 'पर' शब्द से निकला है, जिसका अर्थ पंख है। 'धूजना' शब्द 'धूत' से और 'पुटियाना' शब्द 'पुट देना' में के 'पुट' से निकला है। 'पुतली घर, पक्का चिट्ठा, फौजी कानून, बन्दर-घुड़की' सरीखे समस्त या यौगिक शब्दों में इसलिए व्युत्पत्ति नहीं दी गई कि वह शब्दों से ही प्रकट हो जाती है और इनके अलग-अलग शब्दों के अन्तर्गत देखी जा सकती है। अन्त में मैं यह भी निवेदन कर देना चाहता हूँ कि व्युत्पत्ति का विषय बहुत ही विस्तृत, गम्भीर, जटिल और महत्त्व का है; बड़े बड़े विद्वानों को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिए।

अर्थ-विचार

शब्द-कोश का सबसे अधिक महत्त्व का अंग वह होता है जिसमें शब्दों की व्याख्याएँ और अर्थ होते हैं। शब्दों की व्याख्या सदा ऐसी होनी चाहिए जिसमें न तो अ-व्याप्ति

दोष हो और न अति-व्याप्ति दोष। शब्द-सागरों में 'हुंडी' शब्द की जो व्याख्या है उसमें कुछ दृष्टियों से अ-व्याप्ति दोष भी है और कुछ दृष्टियों से अति-व्याप्ति दोष भी। व्याख्या इतनी सुगम और स्पष्ट होनी चाहिए कि पाठकों को तुरन्त उस पदार्थ या भा का ठीक-ठीक ज्ञान हो जाय, जिसका वाचक यह शब्द है। शब्द-सागरों में 'दशमलव' शब्द की जो व्याख्या है, वह कोरी पारिभाषिक और फलतः इतनी जटिल है कि साधार पाठकों का उससे कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' में इन शब्दों की जो व्याख्याएँ दी गई हैं, उन्हें देखने से सहज में पता चल सकता है कि कौन स व्याख्याएँ ठीक, अच्छी और काम की हैं। 'देवर्षि' शब्द के सम्बन्ध में य कहना ठीक नहीं है—'नारद, अत्रि, मरीचि आदि जो देवताओं में ऋषि माने जाते हैं' इसकी ठीक व्याख्या होगी—'नारद, अत्रि, मरीचि आदि जो ऋषि होने पर भी देवत माने जाते हैं।' शब्दों के अर्थ और पर्याय देते समय भी उक्त प्रकार के दोषों से बहुत बचना पड़ता है। यह नहीं होना चाहिए कि बहुत से ऐसे पर्याय एक-साथ दे दिये जायँ जो आपस में एक दूसरे से भिन्न भाव प्रकट करनेवाले हों। उदाहरणार्थ—'संक्षिप्त शब्द-सागर' में 'अधिकार' शब्द के अन्तर्गत पहले अर्थ में कार्य-भार, प्रभुत्व, आधिपत्य और प्रधानता ये चार शब्द आये हैं; चौथे अर्थ के अन्तर्गत कब्जा और प्राप्ति ये दो शब्द आये हैं; और छठे अर्थ में योग्यता, जानकारी और लियाकत शब्द हैं। यह स्पष्ट है कि 'कार्य्य भार' कभी 'प्रभुत्व' का अर्थ नहीं दे सकता और 'आधिपत्य' तथा 'प्रधानता' दोनों अलग बातें हैं। कब्जा कोई और चीज है, प्राप्ति कोई और चीज। हम जहाँ 'योग्यता' या 'लियाकत' का प्रयोग कर सकते हैं, वहाँ 'जानकारी' का प्रयोग नहीं कर सकते। 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' में 'अधिकार' शब्द की व्याख्याएँ, अर्थ-विभाग तथा पर्याय देखने से यह अन्तर स्पष्ट हो जायगा। 'दुहिता' का अर्थ पुत्री या बेटी ही ठीक है, 'कन्या' या 'लड़की' नहीं।

फिर शब्दों के अर्थ-विभाग करते समय उनके क्रम का भी ध्यान रखना पड़ता है। शब्दों के अर्थों के विकास का भी कुछ इतिहास होता है। कुछ अर्थ केवल शाब्दिक होते हैं, जिन्हें हम मूल अर्थ कह सकते हैं। कुछ मुख्य होते हैं और कुछ गौण। इसके सिवा अर्थों के कुछ वर्ग और क्रम भी होते हैं। 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में 'पल्ला' शब्द के अन्तर्गत पहले क्रि॰ वि॰ वाले अर्थ दिये हैं और तब संज्ञावाले। पर 'पल्ला' शब्द सुनते ही पहले उसके संज्ञावाले अर्थों का ध्यान आता है। और तब उसके क्रि॰ वि॰ अथवा वि॰ वाले अर्थों का। 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में 'निधि' शब्द के अन्तर्गत कुबेर के नौ रत्न तो दूसरे अर्थ के अन्तर्गत आये हैं, पर इन्हीं नौ रत्नों के कारण 'निधि' शब्द जो 'नौ' की संख्या का वाचक बन गया है, उसका सूचक अर्थ उसमें सबके अंत में अर्थात् सातवाँ रखा गया है। वास्तव में वह सातवाँ अर्थ दूसरे अर्थ के बाद अर्थात् तीसरा अर्थ होना चाहिए। फिर जीवित भाषा के शब्दों में समय-समय पर नये अर्थ भी लगते रहते हैं। पर इधर के किसी कोशकार का ध्यान ऐसे नये अर्थों की ओर नहीं गया। संस्कृत का 'मत' शब्द तो आपकी हिन्दी के सभी कोशों में मिल जायगा। पर आज-कल इसमें अँगरेजी के 'वोट' शब्द का जो नया अर्थ लगा है,

वह अब तक के किसी कोश में नहीं आया है। इस कोश में ऐसे हजारों नये अर्थ भी बढ़ाये गये हैं।

मुहावरे

बहुत-से शब्दों के साथ कुछ मुहावरे भी लगे होते हैं और कुछ कहावतें भी। इसके सिवा उनसे बने हुए कुछ समस्त या यौगिक पद भी होते हैं। जैसे—'काम पड़ना' मुहावरा है, 'काम के न काज के' कहावत है और 'काम की बात' पद है। हिन्दी शब्द-सागर में शब्दों का अर्थ विभाग करते समय उनसे सम्बन्ध रखनेवाले मुहावरों का भी ध्यान रखा गया था; और जो मुहावरा जिस अर्थ से सम्बन्ध रखता था, वह प्रायः उसी अर्थ के साथ रखा जाता था। पर इस सम्बन्ध की एक महत्त्व की बात उस समय सम्पादकों के ध्यान में नहीं आई थी। उन्होंने कहावतों और पदों को भी मुहावरों के साथ ही रख दिया था। इस कोश में, जहाँ तक हो सका है, ये तीनों तत्व अलग-अलग रखे गये हैं और जिस प्रकार शब्दों के मानक रूप स्थिर किये हैं, उसी प्रकार मुहावरों के भी मानक रूप स्थिर किये गये हैं। उदाहरणार्थ—मुहावरे का शुद्ध रूप है—'टुक्का सा जबाब देना', 'टका सा जवाब देना' नहीं। 'टुक्का' का अर्थ होता है—'टुकड़ा' और इस मुहावरे का आशय है—उसी प्रकार जबाब देना, जिस प्रकार किसी चीज का कोई टुकड़ा तोड़कर किसी के आगे फेंक दिया जाता है। 'टका सा जवाब' में 'टका' केवल उर्दूवालों की फसाहत और उर्दू-लिपि की कृपा से चला है। वस्तुतः 'टका सा जवाब' का कुछ अर्थ नहीं होता।

शब्द-सागरों में 'टाँग' और 'पाँव' से सम्बन्ध रखनेवाले बहुत से मुहावरे तो अवश्य आये हैं; पर उन मुहावरों का वर्गीकरण उतना युक्ति-संगत नहीं हुआ है, जितना होना चाहिए। और इसी लिए बहुत-से मुहावरे, 'टाँग' और 'पाँव' दोनों के अन्तर्गत आ गये हैं। इस कोश का सम्पादन करते समय मेरे ध्यान में यह बात आई कि कुछ मुहावरे तो केवल 'टाँग' के हैं और कुछ केवल 'पाँव' के। उदाहरणार्थ—'किसी के काम में टाँग अड़ाना' तो मुहावरा है, पर 'किसी के काम में पाँव (या पैर) अड़ाना' मुहावरा नहीं है। इसलिए मैंने 'टाँग' के मुहावरे 'टाँग' के अन्तर्गत और 'पाँव' के मुहावरे 'पाँव' के अन्तर्गत दिये हैं। पर कुछ मुहावरे ऐसे भी हैं जो दोनों शब्दों के साथ समान रूप से चलते हैं। ऐसे मुहावरे इसलिए 'पाँव' के अन्तर्गत रखे गये हैं कि आज कल यही शब्द मानक और शिष्ट सम्मत है। 'टाँग' शब्द कुछ तो पुराना हो चला है, कुछ उसमें स्थानिकता की गन्ध है और कुछ वह ग्राम्य-सा जान पड़ता है। मुहावरों के क्षेत्र में कुछ-कुछ इसी प्रकार का अन्तर 'पाँव' और 'पैर' में भी है, पर उतना नहीं, जितना 'टाँग' और 'पाँव' में है। मैंने यथा-साध्य ऐसे सूक्ष्म अन्तरों का भी बहुत ध्यान रखा है।

उपयोगी सूचनाएँ

अब मैं कुछ ऐसी बातें बतलाता हूँ, जिनसे पाठकों को इस कोश के सामान्य स्वरूप का ज्ञान हो जायगा और वे ठीक तरह से इसका उपयोग कर सकेंगे।

१. प्रायः शब्दों के साथ ही भाववाचक संज्ञाएँ, विशेषण, क्रियाएँ आदि भी कोश में दे दी गई हैं। जैसे–'तीक्ष्ण' के अन्तर्गत ही 'तीक्ष्णता', 'मृदुल' के अन्तर्गत 'मृदुलता' और 'धिक्कार' के अन्तर्गत 'धिक्कारना' है। 'दीवाना' में ही 'दीवानाप और 'धारी' में ही 'धारीदार' भी दिखा दिया गया है। 'संबंध' के साथ उससे बननेवाल विशेषण 'संबद्ध' भी दिखला दिया है। प्रायः अकर्मक क्रियाओं के अन्तर्गत उ सकर्मक रूप और सकर्मक क्रियाओं के अन्तर्गत उनके अकर्मक रूप भी दिखा दिये गये है

२. यों तो सभी आवश्यक यौगिक शब्द इस कोश में आ गये हैं; पर व्यर्थ विस्तार बचाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के यौगिक शब्द छोड़ भी दिये गये हैं उदाहरणार्थ–'तिरलोक' शब्द के आगे कहा है–दे० 'त्रिलोक'; परन्तु 'तिरलोकपति' श नहीं लिया गया है। 'दच्छ' के आगे लिखा है–दे० 'दक्ष' पर 'दच्छ-कुमारी' श नहीं लिया गया है। अतः पाठकों को समझ लेना चाहिए कि 'तिरलोकपति' शब्द लिए 'त्रिलोकपति' और 'दच्छ-कुमारी' के लिए 'दक्ष-कुमारी' शब्द देखना चाहिए।

३. यदि 'बगीत' स्त्री० के आगे दे० 'बगत' लिखा है, तो उसका अर्थ जानने लिए 'बगत' का वही अंश देखना चाहिए, जिसके आगे स्त्री० दिया है; उसके पुं अंश से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार यदि 'चुवना' अ० के आगे दे० 'चूना लिखा है, तो 'चूना' का वही अंश देखना चाहिए, जिसके आगे 'अ०' लिखा है, उस पुं० या संज्ञावाले अर्थ से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

४. हिन्दी में जो शब्द अशुद्ध रूप अथवा अशुद्ध अर्थ में चल पड़े हैं, उनक अशुद्धता का निर्देश उनके आगे कोष्ठक में कर दिया गया है।

५. 'ब' और 'व' के अन्तर का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। संस्कृत के ज शब्द 'ब' में न मिलें, उन्हें 'व' में और जो 'व' में न मिलें, उन्हें 'ब' में ढूँढ़ना चाहिए।

६. प्राचीन कवियों ने 'ख-ष', 'छ-क्ष', 'श-स', 'त्र त', 'य-ज' आदि में विशे अन्तर नहीं माना है। बहुत से कवि 'खारा' को 'षारा', 'क्षेत्र' को 'छेत्र', 'नक्षत्र' क 'नषत' 'शिव' को 'सिव' और 'यदु' को 'जदु' लिख गये हैं। ऐसे अपभ्रष्ट रूपों में से जो बहुत अधिक प्रचलित हैं, वे तो इस कोश में दे दिये गये हैं, पर कम प्रचलित रू छोड़ दिये गये हैं। शब्द ढूँढ़ते समय इस तत्त्व का भी ध्यान रखना चाहिए।

७. इस कोश में शब्दों का क्रम तो उन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार रखा गया है जो शब्द-सागर की रचना के समय स्थिर हुए थे। पर शब्द-सागर में कहीं-कहीं दृष्टि दोष से उन सिद्धान्तों का अतिक्रमण भी हुआ है। इस प्रकार की भूलें जहाँ जहाँ मे ध्यान में आई हैं, वहाँ वहाँ वे ठीक कर दी गई हैं। इस कोष में इस क्षेत्र में दूसरे कोशों से जो अन्तर दिखाई दे, उसके कारण पाठकों को भ्रम नहीं होना चाहिए।

८. अँगरेजी हिन्दी-शब्दावली में अँगरेजी शब्दों के आगे जो हिन्दी पर्याय दिये दिये गये हैं, उनमें से बहुतेरे बाद में मिले या ध्यान में आये हैं; और फलतः वे परिशिष्ट में दिये गये हैं। ऐसे अधिकतर शब्दों के आगे परिशिष्ट का संकेत कर दिया गया है। अतः ऐसे शब्द मूल शब्द-कोश में नहीं, बल्कि परिशिष्ट में देखने चाहिएँ।

अन्तिम निवेदन

शब्द-कोश का काम सभी प्रकार के साहित्यिक कामों से इसलिए बहुत अधिक कठिन और विकट होता है कि उसमें सभी विषयों और सभी शास्त्रों के शब्द आते हैं; और किसी एक व्यक्ति के लिए सभी विषयों और सभी शास्त्रों की थोड़ी-बहुत जानकारी रखना भी असम्भव-सी बात है। इसी लिए अच्छे शब्द-कोश वही होते हैं जिनमें अलग अलग विषयों और शास्त्रों के शब्द उनके विशिष्ट ज्ञाताओं से सम्पादित कराये जाते हैं। मैं 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' की इस प्रकार की त्रुटियों और अपनी अक्षमताओं से अच्छी तरह परिचित हूँ; और उनके लिए सुविज्ञ पाठकों से क्षमा माँगता हूँ। पर मैं उन्हें यह भी विश्वास दिलाता हूँ कि जहाँ तक हो सका है, मैंने इसे वस्तुतः 'प्रामाणिक' बनाने में अपनी ओर से कोई बात उठा नहीं रखी है, और हजारों शब्दों तथा अर्थों के लिए बहुत अधिक छान-बीन की है। इस संस्करण में जो दोष और त्रुटियाँ रह गई हैं, उनके सुधार और पूर्त्ति का अगले संस्करणों में प्रयत्न किया जायगा। शर्त्त यही है कि ईश्वर इसके लिए मुझमें थोड़ी बहुत शारीरिक शक्ति और नैतिक ज्योति बनाये रखे।

अन्त में मैं अपने सहायक, वात्सल्य-भाजन चि० जयकान्त झा को कृतज्ञतापूर्वक आशीर्वाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने प्रायः आदि से अन्त तक मुझे यह कोश प्रस्तुत करने में बहुत ही तत्परतापूर्वक पूरी पूरी और अमूल्य सहायता दी है। ईश्वर इन्हें इस नये क्षेत्र में यशस्वी करे।

महा शिवरात्रि, }
संवत् २००६ वि० }

रामचन्द्र वर्मा

दूसरे संस्करण का वक्तव्य

‘प्रामाणिक हिन्दी कोश’ की रचना का सूत्र-पात कोश-कला का एक बिलकुल न आदर्श सामने रखकर किया गया था। पर कई कारणों से इसका पहला संस्करण ब ही जल्दी में—केवल डेढ़ वर्षों में—तैयार करना पड़ा था, जिससे उसमें उस आद की साधारण झलक भर आ सकी थी। फिर भी हिन्दी जगत ने उसका जो आदर कि उससे मैंने अपना परिश्रम सफल समझा; और इसके लिए मैं उसके प्रति कृतज्ञ प्रकट करता हूँ।

पर एक बात निश्चित है। मैंने किसी आदर-सम्मान की भावना अथवा आर्थि लाभ की दृष्टि से इस कार्य में हाथ नहीं लगाया था। मैं बहुत दिनों से कोश-कार्य संबंध रखनेवाले अपने तुच्छ अनुभव और अल्प-ज्ञान का यत्किंचित् फल इस दृष्टि हिन्दी जगत् को अर्पित करना चाहता था कि सुयोग्य विद्वान् कोश-निर्माण के उपे क्षेत्र की ओर आकृष्ट हों और यह कार्य ठीक दिशा में कुछ आगे बढ़े। परन्तु अप कई दुर्बलताओं के कारण मैं इस सेवा-कार्य में प्रवृत्त होने का साहस न करता था। संयोग से परमात्मा ने इसके लिए निमित्त रूप में एक अप्रिय घ (प्रस्तावना पृष्ठ २) घटित करके मुझसे ‘प्रामाणिक हिन्दी कोश’ का काम शुरू करा दि और अब मैंने सारा शेष जीवन इसके लिए उत्सर्जित कर दिया है—भले ही उ शक्ति और समय बहुत ही थोड़ा बच रहा हो।

ज्यों ज्यों पहला संस्करण छपता चलता था, त्यों त्यों मेरे सामने उसके अनेक अभा त्रुटियाँ और दोष आते चलते थे; और मैं यथासाध्य उनकी पूर्त्ति, सुधार और संशो करता चलता था। पर मुझे ऐसा जान पड़ता था कि उसे ठीक तरह से पूरा करने के जो साधन विशेष आवश्यक हैं, उनका मेरे पास अभाव-सा है। फिर भी अपने गि हुए स्वास्थ्य का ध्यान छोड़कर मैं बराबर इस काम में लगा रहा हूँ। इसके फल-स्व आज यह दूसरा संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण हिन्दी जगत के सामने आ रहा है

हिन्दी का प्राचीन साहित्य-भंडार तो विस्तृत और विशाल है ही, उसका अर्वा साहित्य भी दिन पर दिन बहुत अधिक बढ़ता जा रहा है। तिस पर राष्ट्र-भाषा राज-भाषा हो जाने के कारण इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है और इसमें बहुत नये नये क्षेत्रों तथा विषयों का अंतर्भाव होता जा रहा है। ऐसी अवस्था में हिंदी एक अच्छा, सर्व-मान्य और प्रामाणिक कोश तैयार करना कोई साधारण काम नहीं फिर भी मैं इस काम में लग ही गया था; और चाहता था कि जो थोड़ा-बहुत मैं सकता हूँ, वही क्यों न कर डालूँ! यही सोचकर मैं नई और उपयोगी सामग्री ए

करके यथा-साध्य उनका उपयोग करने लगा। मुझे चारो ओर बिखरे हुए हजारों ऐसे उपयोगी शब्द मिलने लगे, जो हिन्दी के किसी कोश में आये ही नहीं थे। ऐसे शब्दों का संकलन मैंने अपना मुख्य लक्ष्य बनाया। जो उपयोगी और आवश्यक शब्द इस कोश के पहले संस्करण में नहीं आ सके थे, उन्हें भी ले लेना कर्त्तव्य था। फिर शब्दों के जो पुराने विवरण और अर्थ निकम्मे और अशुद्ध या दूषित जान पड़े (उदाहरणार्थ नायिका-भेद, अलंकार, छन्दः शास्त्र के तथा अन्य उपयोगिक साहित्यिक शब्द) उनका संशोधन भी करता था। व्युत्पत्तियों या निरुक्ति का बहुत बड़ा और विकट प्रश्न भी सामने था। और यह स्पष्ट है कि ये सब काम एक आदमी के बस के नहीं हैं। पर मैं हतोत्साह नहीं हुआ; और सभी क्षेत्रों का जो थोड़ा बहुत काम मुझसे हो सकता है, मैं नित्य और नियमित रूप से करता चलता हूँ। सामग्री और साधनों का एक बड़ा पहाड़ मेरे सामने खड़ा हो गया है। समझ में नहीं आता कि क्या लूँ और क्या छोड़ूँ।

इस कोश का यह दूसरा संस्करण हिन्दी जगत की वर्त्तमान आवश्यकताओं के सिवा उसके भावी गौरवपूर्ण युग का भी ध्यान रखकर संशोधित और परिवर्द्धित किया गया है। इस बार इसमें प्राचीन और अर्वाचीन सभी प्रकार के पचासों कवियों द्वारा प्रयुक्त तथा कई राज्य सरकारों द्वारा प्रचलित किये हुए जो नये शब्द बढ़ाये गये हैं, वे अधिकतर इसी दृष्टि से। नये शब्दों के अर्थ, विवरण आदि भी बिलकुल नये ढंग से और यथा-साध्य पूर्ण रखे गये हैं। नये शब्दों के सिवा बहुत से पुराने शब्दों के विवरण और अर्थ भी बहुत अधिक परिश्रम करके सुधारे और ठीक किये गये हैं। उदाहरणार्थ 'रस' शब्द देखने से पाठकों को पता चलेगा कि उसके अर्थों का बहुत कुछ वर्गीकरण उसी प्रकार किया गया है, जिस प्रकार उसके अर्थों का विकास और संवर्धन हुआ है। 'रस' का सारा विवेचन मानों उसके अर्थ-संबंधी इतिहास का काम दे रहा है। इसी प्रकार और भी सैकड़ों-हजारों शब्दों के विवरण अधिक से अधिक पूर्ण और व्यापक किये गये हैं। पहले संस्करण में शब्दों के अर्थों के साथ भी १, २, ३ आदि संख्या-सूचक अंक लगे थे और मुहावरों के अर्थों के साथ भी। पर इससे पाठकों को कुछ भ्रम हो सकता था; इसलिए इस बार मुहावरों के अर्थों में से अंक निकालकर उनकी जगह क, ख, ग आदि वर्ण रखे गये हैं।

दूसरे संस्करण का लगभग आधा अंश छप जाने के बाद एक बात मेरे ध्यान में आई। अनेक प्राचीन कवियों की कृतियों में मुझे प्रायः ऐसे नये प्रयोग और मुहावरे मिलते थे, जो किसी कोश में नहीं आये थे। ऐसे प्रयोग और मुहावरे उदाहरण-स्वरूप कोश में देना आवश्यक जान पड़ा। तब से मैं भिन्न-भिन्न कवियों के कुछ नये उदाहरण भी देने लगा। पर इससे पहले जो बहुत से नये प्रयोगों और अच्छे मुहावरों के उदाहरण मेरे हाथ से निकल गये थे, उनका मुझे इसलिए बहुत पश्चात्ताप है कि अब फिर से उन्हें ढूँढ निकालना मेरे लिए बहुत कठिन है। यही कारण है कि इस संस्करण के पूर्वार्द्ध में उदाहरण आये ही नहीं। और उत्तरार्द्ध में भी जो उदाहरण आये हैं, वे उतने अधिक नहीं हैं, जितने होने चाहिएँ। परिशिष्ट में प्राचीन कवियों के जो हजारों नये शब्द आये हैं,

उनके उदाहरण मुझे जानबूझकर इसलिए रोक रखने पड़े कि छपाई के लिए का यथेष्ट नहीं था। इसके अतिरिक्त राजनीतिक, व्यावहारिक और वैज्ञानिक विषयों हजारों नये शब्द मुझे मिलते गये, जिनमें से बहुतेरे तो इस संस्करण में आ गये हैं बहुतेरे अगले संस्करण के लिए रोक रखने पड़े। मेरे पास अब तक जो सामग्री ए हो चुकी है, वही कम नहीं है। तीसरे संस्करण के प्रकाशन तक जो और सामग्री ए होगी, वह संभवतः इस कोश का आकार प्रस्तुत संस्करण का दूना कर देगी।

इधर हिन्दी में बहुत से प्राचीन कवियों के ग्रन्थों की टीकाएँ और व्याख्याएँ प्रक शित हुई हैं। उनका भी मैंने यथा-साध्य उपयोग किया है। उनमें शब्दों के जो अर्थ मुझे ठीक जान पड़े, वे तो मैंने ले ही लिये हैं; पर जो अर्थ मुझे अशुद्ध जान पड़े उनके ठीक अर्थ ढूँढ़कर देने का भी मैंने प्रयत्न किया है। ऐसे अवसरों पर मैंने उदाहरण का विशेष उपयोग किया है, और अनेक स्थानों पर शब्दों के अन्त में यह निर्देश कर दिया है कि यह देश के किस प्रान्त या बोली का शब्द है, यथा—अवधी, बुन्देल खंडी, राजस्थानी, व्रजभाषा आदि। इस छान-बीन में मुझे ऐसे सैकड़ों शब्द मिले जिनका ठीक अर्थ नहीं लगता। इधर-उधर से पता लगाने पर सफलता कम होती विफलता अधिक। चाहता तो हूँ कि ऐसे शब्दों की एक सूची प्रकाशित कर दूँ, उसके लिए समय और सहायक का अभाव देख कर चुप रह जाता है।

एक और क्षेत्र है जिसमें इस बार बहुत कुछ काम हुआ है। अंग्रेजी के हजार ऐसे शब्द हैं, जिनके ठीक हिंदी पर्याय जल्दी लोगों को नहीं मिलते, पर दैनिक व्यवहा में उनकी आवश्यकता पड़ती रहती है। इस तरह के बहुत से अंग्रेजी शब्दों के हिंद पर्याय ढूँढ़ कर भी और गढ़कर भी इस संस्करण में बढ़ाये गये हैं उदाहरणार्थ— कई वर्षों से अंग्रेजी के 'नेगेटिव' और 'पॉजिटिव' शब्दों के लिए उपयुक्त हिंदी पर्याय ढूँढ़ रहा था। भिन्न भिन्न स्थानों में मुझे इसके लिए कोई १७–१८ पर्याय-युग्म मिले। पर उन सभी में किसी न किसी प्रकार की अव्याप्ति या एकांगिता दिखाई देत थी; बहुत सोच-विचार कर मैंने इनके लिए अपनी बुद्धि से 'नहिक' और 'सहिक' शब्द स्थिर किये और वे इस कोश में यथा-स्थान मिलेंगे। पाठक इन्हें देखकर इनक उपयोगिता समझ सकते और इनका उपयोग तथा प्रचार कर सकते हैं। इस प्रका के हजारों शब्दों के पर्याय इस संस्करण में बढ़े हैं, जिनमें बहुतेरे अन्य स्थानों से संकलि किये गये हैं; (जैसे—'सेप्टिक' के लिए 'पौतिक' और सुप्रसिद्ध 'रैडर' नामक यंत्र के लि 'तेजोन्वेष' आदि) और बहुत से शब्द; जैसे—उच्चक, प्रत्यायक, शीतक, तापक, वायु संवलन, विधारण, संकेतकी आदि) स्वयं मेरे स्थिर किये हुए हैं। पहले संस्करण के अन्त में जो दो हजार शब्दों की अंग्रेजी शब्दावली थी, वह इसी लिए इस बार बढ़कर पाँच हजार शब्दों की हो गई है। आशा है, कोश का यह अंश अंग्रेजी के द्वारा हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करनेवाले सज्जनों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

जैसा कि पहले संस्करण की प्रस्तावना में कह चुका हूँ, शब्दों की निरुक्ति का प्रश्न बहुत ही विकट है। यह ठीक है कि इधर कुछ दिनों में बहुत-सी ऐसी सामग्री प्रस्तुत

चुकी है, जिसके आधार पर हिन्दी शब्दों का मूल और इतिहास अच्छी तरह जाना जा सकता है। पर वह एक बिलकुल स्वतंत्र और बहुत बड़ा काम है। उसकी सिद्धि के लिए अनेक विद्वानों के पूरे नहीं तो आधे जीवन की अपेक्षा है ही। फिर भी राह-चलते जो बातें मुझे मिल जाती हैं या जो सामग्री मेरे हाथ लग जाती है, उसका बहुत कुछ उपयोग मैं कर ही लेता हूँ। इस संस्करण में ५-६ सौ शब्दों की निरुक्तियाँ ठीक की गई हैं; और तीसरे संस्करण के लिए हजारों शब्दों की निरुक्तियाँ ठीक हो रही हैं। सारांश यह कि इस संस्करण में जो काम हुआ है, वह सब नये क्षेत्रों में हुआ है और बिलकुल नया है; और आगे भी जो काम होगा, वह ऐसा ही होगा।

पहले संस्करण की शब्द-संख्या अपेक्षाकृत कुछ कम रह गई थी। इस बार वह संख्या बढ़कर ड्योढ़ी हो गई है। यदि मैं चाहता तो यह संख्या सहज में दूनी क्या चौगुनी हो सकती थी। पर यदि मैं शब्द संख्या बढ़ाने के मोह में पड़ता तो अपने लक्ष्य से च्युत हो जाता। इस संस्करण में शब्द इसीलिए बहुत अधिक नहीं बढ़ने पाये हैं कि अधिकतर नये बढ़नेवाले शब्दों के संबंध में प्रायः कुछ न कुछ विचार और छानबीन करनी पड़ती है। बहुत से शब्दों में तो बहुत अधिक परिश्रम करना और समय लगाना पड़ता है। मैं केवल गिनती गिनाने के लिए शब्द-संख्या बढ़ा कर लाखों तक पहुँचाने के पक्ष में नहीं हूँ। यदि किसी कोश की शब्द संख्या तो बहुत अधिक हो, पर अधिकतर शब्द ऐसे हों जिनका जन-साधारण को जल्दी कभी काम ही न पड़त हो या उसमें के अर्थ बिलकुल अधूरे, अशुद्ध, निकम्मे और भ्रामक हों तो ऐसा कोश मेरी समझ में किसी काम का नहीं है। कोश का सबसे अधिक उपयोग पूरे और ठीक अर्थों के लिए होता है; और इसीलिए उसका महत्त्व भी अर्थों और विवरणों के विचार से ही स्थिर होता है। शब्द संख्या का स्थान तो अपेक्षाकृत गौण ही रहता है।

कुछ न कुछ त्रुटियाँ और दोष मनुष्य के प्रायः सभी कार्यों में होते हैं—अथवा ढूँढ़ कर निकाले भी जा सकते हैं। पर अड़चनें और कठिनाइयाँ तो काम करनेवालों के सामने ही आती हैं। मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि यह संस्करण भी बहुत सी त्रुटियों और दोषों से युक्त है। मेरी आँखें अब प्रूफ देखने योग्य नहीं रह गई हैं, इसलिए छापे की बहुत-सी भूलें भी इसमें आ गई हैं। पर यह भी ध्यान रहे कि मेरा सारा काम एक विशिष्ट आदर्श तक पहुँचने के उद्देश्य से हो रहा है। एक अकेला आदमी बिना किसी संबल या सहायता के, कम से कम समय में, अधिक से अधिक जो कुछ कर सकता है, वही इस कोश के रूप में हिंदी जगत् के सामने है। हाँ, इसे अधिक से अधिक ठीक करके बढ़ाने और उपयोगी बनाने का काम चल रहा है; और चलता रहेगा। यदि मेरे इस तुच्छ परिश्रम से हिन्दी में कोश-कला का एक नया आदर्श स्थापित हो सका, तो मैं आशा करता हूँ कि अपनी अन्यान्य त्रुटियों के लिए मैं भावी हिन्दी जगत् की दृष्टि में क्षम्य ही समझा जाऊँगा।

अंत में मैं अपने उन कृपालु मित्रों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने समय समय पर मुझे अनेक उपयोगी परामर्श देकर, अनेक शब्दों के ठीक अर्थ बतला

कर, कई तरह की सूचनाएँ देकर और उपयोगी सामग्री का पता बताकर मेरा ब
सुगम किया है। ऐसे मित्रों की संख्या बहुत बड़ी है और उनमें अनेक प्रसिद्ध विद्वान औ
गण्य-मान सज्जन भी हैं। इस कोश के वर्त्तमान रूप का बहुत कुछ श्रेय ऐसे महानुभा
को भी है। और जो सज्जन भविष्य में मुझे मेरी भूलें बतलाने अथवा उपयोगी सूच
देने की कृपा करेंगे, वे मुझे उपकृत करने के अतिरिक्त हिन्दी की शुभ सेवा में भी बहु
कुछ सहायक होंगे।

निवेदक
रामचन्द्र वर्म्म

महाशिवरात्रि
संवत् २००८

॥ श्रीः ॥

प्रामाणिक हिन्दी कोश

अ

–देव-नागरी वर्ण-माला का पहला अक्षर और
हला स्वर। इसका उच्चारण कंठ से होता
। व्यंजनों का उच्चारण करते समय उनके
न्त में इसका उच्चारण भी आपसे आप
ा जाता है। जब किसी व्यंजन का उच्चारण
सके बिना होता है, तब वह हल
हलाता है; और नहीं तो साधारण स-
वर रहता है।
व्यंजनों से आरम्भ होनेवाली संज्ञाओं
ौर विशेषणों के पहले जब यह उपसर्ग
रूप में लगता है, तब प्रायः उनका अर्थ
तो उलट देता है या बहुत-कुछ बदल
ा है। जैसे–धर्म्म और अधर्म्म, कर्म्म
ौर अकर्म्म; अथवा खंड और अखंड;
क और अचूक आदि। जब यह स्वर
आरंभ होनेवाले संस्कृत शब्दों के
हले लगता है, तब इसका रूप 'अन' हो
ता है। जैसे–अन्त और अनन्त; आदि
र अनादि; एक और अनेक आदि।
–पुं० [सं०] [वि० अंकित, अंकनीय,
्य। भाव० अंकन] १. चिह्न। छाप।
लेख। लिखावट। ३. संख्या के सूचक
ह्न। (फिगर) जैसे–१. २. ३. ४
दि। ४. भाग्य। ५. धब्बा। ६.
रीर। देह। ७. गोद। क्रोड़।
हा०–अंक देना, भरना या लगाना=
ालिंगन करना। गले लगाना।
. काजल की बिन्दी जो बच्चों को नजर से
चाने के लिए लगाते हैं। ९. नाटक का खंड
भाग जिसमें कई दृश्य होते हैं। १०. पत्र-पत्रिका आदि का कोई प्रकाशन जो अपने नियत समय पर एक बार में हुआ हो। संख्या।

अंकक–पुं० [सं०] खर की मुहर।

अंककार–पुं० [सं०] वह जो खेलों, बाजियों आदि में यह निर्णय करता हो कि किस पक्ष की जीत और किस पक्ष की हार हुई। (अम्पायर)

अंक-गणित–पुं० [सं०] वह विद्या जिसमें संख्याओं के जोड़ने, घटाने और गुणा-भाग आदि की विधि या रीति बतलाई जाती है। हिसाब। (एरियमेटिक)

अँकटा–पुं० [सं० अंकुर या कंटक] [स्त्री० अल्पा० अँकटी] कंकड़, पत्थर आदि का बहुत छोटा या महीन टुकड़ा।

अंकन–पुं० [सं०] [वि० अंकित] १. अंक या चिह्न बनाना। २. लिखना। ३. कलम या कूँची से चित्र बनाना। ४. गिनती करना। गिनना।

अँकना–अ० [सं० अंकन] लिखा, आँका या कूता जाना।

अंकनीय–वि० [सं०] अंकन करने योग्य।

अंकपत्र–पुं० [सं०] कागज का वह छोटा टुकड़ा जो कुछ निश्चित मूल्य का होता और किसी प्रकार के कर, देन आदि के रूप में किसी चीज पर लगाया जाता है। टिकट। (स्टाम्प) जैसे–डाक के अंकपत्र, अधिकरण के अंकपत्र।

अंकपत्रित–वि० [सं० अंकपत्र] जिसपर अंकपत्र लगा हो। (स्टाम्प्ड)

अँकरा†–पुं॰ दे॰ 'अँकटा'।

अँकवार–स्त्री॰ [सं॰ अंकपालिका, प्रा॰ अंकवारिया] १ छाती। हृदय। २. गोद। क्रोड़।

मुहा॰–अँकवार देना या भरना = गले लगाना।

अँकवारना–स॰ [हिं॰ अँकवार] गले लगाना। आलिंगन करना।

अंक-विद्या–स्त्री॰ = अंक-गणित।

अँकाई–स्त्री॰ [हिं॰ आँकना] १. आँकने की क्रिया या भाव। कूत। अटकल। २. आँकने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

अँकाना–स॰ [हिं॰ 'आँकना' का प्रे॰] [भाव॰ अँकाव] आँकने का काम दूसरे से कराना।

अंकित–वि॰ [सं॰] १. जिसपर अंक या चिह्न बना हो। २. लिखा हुआ। लिखित। ३. चित्र के रूप में बना हुआ। चित्रित। ४. जिसपर अंकक या रबर की मोहर लगी हो।

अंकितक–पुं॰ [सं॰ अंकित] कागज का वह छोटा टुकड़ा जो नाम आदि लिखकर किसी वस्तु पर चपकाया जाता है। चिप्पी। (लेबुल)

अंकित मूल्य–पुं॰ [सं॰] किसी वस्तु का वह मूल्य जो उसपर अंकित रहता है, पर जो कुछ विशेष अवस्थाओं में या विशेष कारणों से घटता-बढ़ता भी रहता है। (फेस वैल्यू) जैसे—रुपये का अंकित मूल्य सोलह आने होने पर भी विनिमय के काम के लिए चौदह या अठारह आने भी हो सकता है।

अँकुड़ा–पुं॰ [सं॰ अंकुटक] [स्त्री॰ अल्पा॰ अँकुड़ी] कोई चीज फँसाने या टाँगने आदि के लिए बना हुआ लोहे का टेढ़ा काँटा। जैसे–किवाड़ का अँकुड़ा।

अंकुर–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अंकुरित] १. बोये हुए बीज में से निकला हुआ पहला छोटा कोमल डंठल जिसमें नये पत्ते निकलते हैं। २. वस्तु का वह आरम्भिक रूप जो आगे कर बहुत बढ़ या फैल सकता हो। क्रि॰ प्र॰–निकलना।–फूटना।

अंकुरण–पुं॰ [सं॰] बीज आ जमीन में पड़कर अंकुरित होना। (मिनेशन)

अँकुरना*–अ॰ [सं॰ अंकुर] निकलना या फूटना। अंकुरित होना।

अंकुरित–वि॰ [सं॰] अंकुर के निकला या आया हुआ। जिसने अंकु रूप धारण किया हो।

अंकुरित-यौवना–स्त्री॰ [सं॰] लड़की जिसमें यौवन के लक्षण आ रहे

अंकुश–पुं॰ [सं॰] १. वह छोटा मुँहा भाला जिससे हाथी चलाया और व रखा जाता है। २. वह वस्तु या कार्य किसी को रोकने या दबाव में रखने के हो। दबाव। रोक।

अँकोर–पुं॰ [सं॰] १. दे॰ 'अँकव २. भेंट। नजर। ३. रिश्वत। घूस।

अँखुआ–पुं॰ [क्रि॰ अँखुआना] 'अंकुर'।

अंग–पुं॰ [सं॰] १. शरीर। देह। ब २. शरीर का कोई भाग। जैसे–हाथ, मुँह, नाक आदि। ३. भाग। अंश पक्ष। पार्श्व। जैसे—इस प्रश्न के अंग हैं। ५. प्रेम या आपसदारी का एक संबोधन। ६. भागलपुर के आस के प्रदेश का पुराना नाम।

अंगचारी–पुं॰ [सं॰] सहचर। साथी।

अंगच्छेद–पुं॰ [सं॰] शरीर का अंग या अवयव काटकर निकाल या कर देना। (ऐम्प्यूटेशन)।

अंगज–वि॰ [सं॰] जो अंग से हुआ हो। जैसे–पसीना, रोएँ या पुं॰ [स्त्री॰ अंगजा = बेटी] पुत्र।

अँगड़ाई–स्त्री० [हिं० अँगड़ाना] शरीर की वह क्रिया जिसमें धड़ और बाँहें कुछ समय के लिए तनती या ऐंठती हैं। (ऐसा प्रायः आलस्य के कारण सोकर उठने पर या ज्वर आने से पहले होता है।)

क्रि० प्र०–लेना।

अँगड़ाना–अ० [हिं० अंग] अँगड़ाई लेना।

अंगद–पुं० [सं०] १. बाँह पर पहनने का बाजूबंद। २. राम की सेना का एक बन्दर जो बालि का पुत्र था।

अँगनाई–स्त्री० दे० 'आँगन'।

अंग-भंग–पुं० [सं०] १. अंग का भंग या खंडित होना। २. दे० 'अंग-भंगी'।

अंग-भंगी–स्त्री० [सं०] १. मुँह, हाथ, आँख आदि अंग हिला-डुलाकर प्रकट की जानेवाली चेष्टा या भाव। २. स्त्रियों के हाव-भाव (पुरुषों को मोहित करने के लिए)।

अंग-रक्षक–पुं० [सं०] वे सैनिक जो राजाओं या बड़े शासकों के साथ, उनकी शारीरिक रक्षा के लिए रहते हैं। (बॉडीगार्ड)

अँगरखा–पुं० [हिं० अंग + रखना = रक्षा करना] (कोट की तरह का) एक प्रकार का लम्बा पहनावा। अंगा। चपकन।

अंग-राग–पुं० [सं०] १. शरीर पर मलने का उबटन। बटना। (विशेषतः सुगन्धित पदार्थों का) २. शरीर की सजावट। ३. शरीर की सजावट की सामग्री।

अँगरेज–पुं० [पुर्त्त० इँग्लेज़] इंगलैंड का रहनेवाला आदमी।

अँगरेजियत–स्त्री० [हिं० अँगरेज] अँगरेजी-पन।

अँगरेजी–वि० [हिं० अँगरेज] अँगरेजों का। जैसे-अँगरेजी ढंग।

स्त्री० इंगलैंड देश या अँगरेजों की भाषा।

अँगवना*–स० [सं० अंग] १. गले लगाना। आलिंगन करना। २. ग्रहण या स्वीकृत करना। लेना या मानना। ३. सहना।

अंग-संस्थान–पुं० [सं०] जीव-विज्ञान का वह अंग या शाखा जिसमें प्राणियों, वनस्पतियों आदि के अंगों और आकृतियों का विवेचन होता है। (मारफॉलोजी)

अंगांगी भाव–पुं० [सं०] वह भाव या संबंध जो अंग और उसके मूल शरीर (अंगी) में होता है। किसी बड़ी वस्तु का उसके अंगों के साथ रहनेवाला सम्बन्ध।

अंगा–पुं० [सं० अंगक] अँगरखा या चपकन नाम का पहनावा।

अँगाना*–स० [हिं० अंग] अपने अंग में या अपने ऊपर लेना।

अंगार–पुं० [सं०] आग का अंगारा। विशेष दे० 'अंगारा'।

अंगारक–पुं० [सं०] एक बहुत ही महत्वपूर्ण अधातवीय तत्त्व जो जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों और खनिज पदार्थों में पाया जाता है। कोयला, पेट्रोल आदि इसी के बल से जलते हैं। (कार्बन)

अंगारा–पुं० [सं० अंगारक] जलता हुआ कोयला या जलती हुई लकड़ी का टुकड़ा।

मुहा०–अंगारों पर लोटना = बहुत अधिक क्रोध या ईर्ष्या से जलना। **अंगारे बरसना** = बहुत गरमी पड़ना।

अँगिया–स्त्री० [सं० अङ्गिका] स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की छोटी कुरती। चोली। कंचुकी।

अंगिरस्–पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि जो प्रजापतियों में माने गये हैं। २. वृहस्पति।

अंगिरा–पुं० = अंगिरस्।

अंगी–पुं० [सं० अङ्गिन्] वह जिसने अंग या शरीर धारण किया हो। शरीरी।

अंगीकार–पुं० [सं०] [वि० अंगीकृत] अपने अंग पर या अपने ऊपर लेने की क्रिया या भाव। स्वीकार। ग्रहण।

अंगीकृत–वि० [सं०] जिसे अंगीकार किया गया हो। जो अपने ऊपर लिया गया

हो। स्वीकृत। गृहीत।

अँगीठा–पुं० [सं० अग्निष्ठ] बड़ी अँगीठी। विशेष दे० 'अँगीठी'।

अँगीठी–स्त्री० [हिं० अग्निष्ठिका] लोहे, मिट्टी आदि का वह प्रसिद्ध पात्र जिसमें आग सुलगाते हैं।

अँगुरी*–स्त्री० दे० 'उँगली'।

अंगुल–पुं० [सं०] १. उँगली। २. एक नाप जो उँगली की चौड़ाई के बराबर होती है।

अंगुलि-प्रतिमुद्रा–स्त्री० [सं०] उँगलियों के अगले भाग की छाप जो व्यक्तियों की पहचान के लिए ली जाती है। (फिंगर-प्रिन्ट)

अंगुली–स्त्री० दे० 'उँगली'।

अंगुल्यानिर्देश–पुं० [सं०] किसी की ओर, विशेषतः कोई अनुचित काम करनेवाले की ओर उँगली उठाकर यह सूचित करना कि इसने अमुक, विशेषतः अनुचित कार्य किया है।

मुहा०–अँगूठा चूमना = परम अधीन या वशवर्त्ती होना।

अंगुष्ठ–पुं० [सं०] अँगूठा।

अँगूठा–पुं० [सं० अंगुष्ठक] हाथ या पैर की सबसे मोटी उँगली।

अंगूर–पुं० [फा०] [वि० अँगूरी] एक प्रसिद्ध मीठा फल जो लताओं में लगता है। दाख। द्राक्षा।

पुं० [सं० अंकुर] घाव भरने के समय उसमें दिखाई पड़नेवाले मांस के छोटे लाल दाने।

अँगेजना*–स० [सं० अंग] १. ग्रहण या अंगीकृत करना। २. सहन या बरदाश्त करना। सहना।

अँगेट*–स्त्री० [सं० अंग] अंग या शरीर की शोभा, दीप्ति या चमक।

अँगोछना–स० [हिं० अँगोछा] गीले अँगोछे से शरीर पोंछना।

अँगोछा–पुं० [हिं० अंग + पोंछना] [क्रि० अँगोछना] गीला शरीर पोंछने का कपड़ा।

अँगोजना*–स० दे० 'अँगेजना'।

अंचल–पुं० [सं०] १. साड़ी या का सिरा। पल्ला। २. सीमा के पास प्रदेश। ३. किनारा। तट।

अँचवना*–अ० [सं० आचमन] १. चमन करना। २. भोजन के बाद मुँह धोना।

अंजन–पुं० [सं०] आँखों में लगाने सुरमा या काजल।

पुं० दे० 'इंजन'।

अंजनक–पुं० [सं०] रसांजन। सुरमा

अंजनसार–वि० [हिं० अंजन + सारना लगाना] (आँखें) जिनमें अंजन, का या सुरमा लगा हो।

अंजनहारी–स्त्री० [सं० अंजनकारि आँख पर की छोटी फुन्सी। गुहेरी। बिल

अंजनी–स्त्री० [सं०] हनुमान जी माता का नाम।

अंजनी-नंदन–पुं० = हनुमान।

अंजर-पंजर–पुं० [सं पंजर का अ अंजर + सं० पंजर] शरीर या ढाचे अ के अंग या जोड़।

अंजलि–स्त्री० [सं०] दोनों हथेलि को मिलाने से बना हुआ गड्ढा जि भरकर कुछ दिया या लिया जाता है।

अंजलि-बद्ध–क्रि० वि० [सं०] जोड़कर।

अंजली–स्त्री० दे० 'अंजलि'।

अंजीर–पुं० [फा०] गूलर की तरह एक प्रसिद्ध फल।

अँजोरना–स० [हिं० अँजोरा] १. (दी जलाना। २. (दीया जलाकर) घर प्रकाश करना।

अँजोरा–पुं० दे० 'उजाला'।

अंटी–स्त्री० [सं० अष्टि] १. उँगलि के बीच की जगह। २. कमर के पास

धोती की लपेट। ३. कपड़े के पल्ले की गाँठ, जिसमें रुपये-पैसे बँधे हों।

अंठी-स्त्री० [सं० अस्थि] १. किसी गीली चीज की बँधी हुई गाँठ या जमा हुआ थक्का। गाँठ। २. बीज। गुठली। ३. गिलटी।

अंड-पुं० [सं०] १. अंडा। २. अंडकोश। ३. ब्रह्मांड। विश्व।

अंडकोश-पुं० [सं०] १. दूध पीकर पलनेवाले जीवों के नरों या पुरुषों की इन्द्रिय के नीचे की थैली जिसमें दो गुठलियाँहोती हैं। २. ब्रह्मांड। विश्व।

अंडज-वि० [सं०] अंडे में से जन्म लेनेवाला। अंडे से उत्पन्न।

पुं० मछली, चिड़िया, साँप, आदि वे जीव जो अंडे देते और अंडे से उत्पन्न होते हैं।

अंड-बंड-वि० [अनु०] १. व्यर्थ का। बे सिर-पैर का। २. भद्दा और अनुचित। खराब।

पुं० व्यर्थ की, बे सिर-पैर की या भद्दी और बुरी बात।

अंडा-पुं० [सं० अंड] वह गोल पिंड जिसमें से मछलियाँ, चिड़ियाँ आदि जन्म लेती हैं।

अंडाकार-वि० [सं०] अंडे के आकार का। लंबोतरा गोल।

अंडी-स्त्री० [सं० एरंड] १. रेंड़ का वृक्ष या बीज। रेंड़ी। २. एक प्रकार का रेशम।

अंतःकरण-पुं० [सं०] १. मनुष्य के अंदर की वह शक्ति जिससे वह संकल्प-विकल्प और अच्छे-बुरे की पहचान, निश्चय, स्मरण आदि करता है। हमारे यहाँ इसके चार विभाग मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार किये गये हैं। (कान्शेन्स) २. हृदय। मन।

अंतःकालीन-वि० [सं०] दो घटनाओं या कालों के बीच का (और फलतः अस्थायी)।

अंतःपुर-पुं० [सं०] घर या महल का वह भीतरी भाग, जिसमें स्त्रियाँ रहती हैं।

अंत-पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु समाप्त होती हो। सिरा। छोर। २. समाप्ति। आखीर। ३. परिणाम। फल। ४. नाश। ५. मृत्यु।

पुं० [सं० अन्तस्] १. अन्तःकरण। हृदय। २. भेद। रहस्य। ३. थाह।

पुं० दे० 'आँत'।

अंतक-वि० [सं०] अन्त या नाश करनेवाला। पुं० १. मृत्यु। मौत। २. यमराज।

अँतड़ी-स्त्री० दे० 'आँत'।

अंततः-क्रि० वि० [सं०] १. अन्त में। आखिर में। २. कम से कम।

अंतरंग-वि० [सं०] १. बहुत पास या निकट का। आत्मीय। जैसे-अंतरंग सम्बन्ध। २. बिलकुल अन्दर का। भीतरी। जैसे-अंतरंग सभा।

अंतरंग मंत्री-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति का निजी सचिव। (प्राइवेट सेक्रेटरी)

अंतरंग सभा-स्त्री० [सं०] किसी संस्था की व्यवस्था करनेवाली समिति। प्रबन्धकारिणी सभा या समिति।

अंतर्-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो कुछ शब्दों के पहले लगकर ये अर्थ देता है-(क) किसी के अन्दर का, अन्तर्गत या किसी वर्ग में छोटा। जैसे-अंतर्दशा, अंतर्वर्ग। (ख) एक ही वर्ग या प्रकार के अनेकों से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे-अंतर्राष्ट्रिय, अंतर्प्रादेशिक। (ग) एक ही प्रकार के पर दो भिन्न वर्गों आदि से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे-अंतर्जातीय विवाह। (घ) भीतरी भाग से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे-अंतर्देशीय। (आज-कल यह उपसर्ग (क) अँगरेजी के 'इंटर' उपसर्ग के समान और प्रायः उसके स्थान पर चलने लगा है। और (ख) कुछ अरबी-फारसी शब्दों के साथ भी लगने लगा है। जैसे-अंतर्जिला। पर ऐसे प्रयोग सर्वमान्य न होने के कारण विचारणीय हैं।)

अंतर-पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं के बीच का भेद या दूरी। भेद। फरक। (डिफरेन्स)

२. दो बातों के बीच का समय। ३. ओट। आड़। परदा।

क्रि० वि० दूर। अलग। जुदा।

पुं० [सं० अन्तस्] अंतःकरण। हृदय। मन।

क्रि० वि० अन्दर। भीतर।

वि० दे० 'अंतर्द्धान'।

अंतर-अयन–पुं० [सं०] किसी तीर्थ के चारो ओर की जानेवाली परिक्रमा।

अंतरण–पुं० [सं० अन्तर] [वि० अन्तरित] १. किसी वस्तु का बिककर या और किसी प्रकार दूसरे स्वामी के हाथ जाना। बिकना। २. अधिकारी या कार्य-कर्त्ता का एक स्थान या विभाग से दूसरे स्थान पर या विभाग में भेजा जाना। बदली। ३. धन आदि का एक खाते से दूसरे खाते में जाना। (ट्रान्सफरेन्स)

अंतरण-कर्त्ता–पुं० दे० 'अंतरितक'।

अंतरतम–पुं० [सं० अन्तस्+तम] १. किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग। २. हृदय का भीतरी भाग। ३. विशुद्ध अंतःकरण।

अंतरदिशा–स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

अंतरपट–पुं० [सं०] १. आड़ करने का कपड़ा। परदा। २. विवाह के समय की एक विशेष रीति या रसम।

अंतरण-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपनी सम्पत्ति, सत्ता आदि दूसरे के हाथ सौंपता है। (ट्रांसफरेन्स डीड)

अंतरस्थ–वि० [सं०] १. जो किसी के भीतरी भाग में स्थित हो। अन्दर या बीच का। (इन्टर्नल) २. दे० 'आंतरिक'।

अंतरा–पुं० [सं० अन्तर] किसी गीत के पहले पद या टेक को छोड़कर दूसरा पद या चरण। (पहला पद या चरण स्थायी कहलाता है)

अंतरात्मा–पुं० [सं०] १. जीवात्मा। २. जीव। प्राण। ३. अन्तःकरण। मन।

अँतराना–स० [सं० अन्तर] १. अल या पृथक् करना। २. अन्दर करना।

अंतरायण–पुं० [सं० अन्त] [वि अन्तरायित] राज्य द्वारा किसी व्यक्ति अपने घर या किसी स्थान में, पहरे-चौ में इस प्रकार रखा जाना कि वह कहीं आ-जा न सके। नजरबन्दी। (इन्टर्नमेन्ट

अंतरिक्ष–पुं० [सं०] १. पृथ्वी और दूस ग्रहों या नक्षत्रों के बीच का स्थान। आकाश २. स्वर्ग।

अंतरिक्ष-विज्ञान–पुं० [सं०] व विज्ञान जिसमें वायु-मंडल के विक्षोभ आधार पर गरमी-सरदी, वर्षा आदि क विवेचन होता है। (मीटीरियालोजी)

अंतरित–वि० [सं०] १. अन्दर रखा छिपाया या छिपा हुआ। २. एक स्थान हटाकर दूसरे स्थान पर रखा या किया हुआ। ३. एक के हाथ से दूसरे के हाथ में गया या बिका हुआ। (ट्रान्स्फर्ड)

अंतरितक–पुं० [सं० अंतरित] वह जो अपनी सम्पत्ति और उससे सम्बन्ध रखनेवाले अधिकार आदि दूसरे के हाथ अंतरित करे या दे। (ट्रान्सफरर)

अंतरिती–पुं० [सं० अन्तरित] वह जिसके हाथ कोई अपनी सम्पत्ति और उसके संबंध के अधिकार आदि दे या अंतरित करे। वह जिसके पक्ष में अन्तरण हो। (ट्रान्सफरी)

अंतरिम–वि० [सं० अन्तर] दो अलग कालों या समयों के बीच का। मध्यवर्ती। (इन्टेरिम)

अँतरिया–पुं० [सं० अन्तर] एक दिन का अन्तर देकर आनेवाला ज्वर। पारी का बुखार।

अंतरीख*–पुं० = अंतरिक्ष।

अंतरीप–पुं० [सं०] पृथ्वी का वह भाग जो दूर तक समुद्र में चला गया हो। (पेनिन्सुला)

ंतर्कथा—स्त्री० [सं०] संकेत रूप से कही हुई किसी बात के अन्दर छिपी हुई कोई दूसरी बात, घटना या प्रसंग। (एल्यूजन)

ंतर्गत—वि० [सं०] १. किसी के अन्दर छिपा, समाया, गया या मिला हुआ। २. अंग के रूप में किसी में मिला हुआ। (इन्क्ल्यूडेड इन्)

ंतर्गतक—पुं० [सं०] वह कागज-पत्र आदि जो किसी दूसरे कागज-पत्र के साथ नत्थी करके कहीं भेजा जाय। (एन्क्लोजर)

ंतर्ज्ञान—पुं० [सं०] १. मन में होनेवाला ज्ञान। २. मन में होनेवाला वह स्वाभाविक ज्ञान जिससे कोई बात बिना सोचे आपसे आप समझ में आ जाती है।

अंतर्दाह—पुं० [सं०] हृदय की दाह या जलन। घोर मानसिक कष्ट।

अंतर्देशीय—वि० [सं०] किसी देश के अन्दर या उसके भीतरी भागों में होने या उससे संबंध रखनेवाला। (इनलैंड) जैसे—अंतर्देशीय जल-मार्ग।

अंतर्द्धान—वि० [सं०] इस प्रकार अदृश्य हो जाना कि कहीं पता न चले। लुप्त। गायब।

अंतर्धारा—स्त्री० [सं०] १. नदी, समुद्र आदि में पानी की ऊपरी सतह से नीचे बहनेवाली धारा। २. किसी वर्ग या समाज में अन्दर ही अन्दर फैली हुई ऐसी धारणा या विचार जिसका पता साधारणतः ऊपर से न चलता हो। (अन्डर करेन्ट)

अंतर्निहित—वि० [सं०] अन्दर छिपा हुआ।

अंतर्पट—पुं० [सं०] १. आड़। ओट। परदा। २. ढकनेवाली चीज। आच्छादन। आवरण।

अंतर्भाव—पुं० [सं०] १. किसी का किसी दूसरे में समा या आ जाना। सम्मिलित, समाविष्ट या अन्तर्गत होना। (इनक्लूजन) २. भीतरी आशय। अभिप्राय। ३. न रह जाना। नाश या अभाव।

अंतर्भावित—वि० [सं०] जो किसी के अन्दर आ या समा गया हो। अंतर्भूत। समाविष्ट। (इन्कारपोरेटेड)

अंतर्भुक्त—वि० [सं०] किसी के अन्दर आया, समाया या मिला हुआ।

अंतर्भूत—वि० दे० 'अंतर्भावित'।

अंतर्भौम—वि० [सं०] पृथ्वी के भीतरी भाग का। भू-गर्भ का। (सबटरेनियन)

अंतर्मुख—वि० [सं०] जिसका मुख या प्रवृत्ति अन्दर की ओर हो

अंतर्यामी—वि० [सं०] सबके मन में रहने और सबके मन की बात जाननेवाला (ईश्वर)।

अंतर्राष्ट्रिय—वि० [सं० अंताराष्ट्रिय का अशुद्ध, पर प्रचलित रूप] सब या कुछ राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला। (इन्टरनैशनल)

अंतर्वर्ग—पुं० [सं०] किसी वर्ग या विभाग के अंतर्गत होनेवाला कोई छोटा वर्ग या विभाग। (सब-आर्डर)

अंतर्वर्त्ती—वि० [सं०] १. अन्दर रहनेवाला। २. अंतर्गत। अंतर्भुक्त।

अंतर्वस्तु—स्त्री० [सं०] किसी वस्तु के अन्दर रहनेवाली दूसरी वस्तु। जैसे—घड़े के अन्दर रहनेवाला पानी, पुस्तक में रहनेवाला विषय-विवेचन या लेख्य में रहनेवाले नियम, प्रतिबन्ध आदि। (कन्टेन्ट्स)

अंतर्वाणिज्य—पुं० [सं०] किसी देश के भीतरी भागों में होनेवाला वाणिज्य या व्यापार। 'वहिर्वाणिज्य' का उलटा। (इन्टर्नल ट्रेड)

अंतर्वेद—पुं० [सं०] गंगा और यमुना के मध्य के प्रदेश का पुराना नाम।

अंतर्वेदना—स्त्री० [सं०] अंतःकरण में होनेवाली वेदना या कष्ट।

अंतस्तल—पुं० [सं०] हृदय या मन (का भीतरी भाग)।

अंतस्थ—वि० [सं०] १. अन्दर या बीच

का। २. अन्त का। अन्तिम। आखिरी। पुं० य, र, ल और व ये चारो वर्ण।

अंताराष्ट्रिय–वि० दे० 'अंतर्राष्ट्रिय'।

अंतिम–वि० [सं०] १. सबके अन्त या पीछे का। पिछला। आखिरी। २. (आज्ञा; निर्णय आदि) जो सबके अन्त में निश्चित रूप से हो और जिसमें कोई परिवर्त्तन न हो सके। (फाइनल)

अंतिमेत्थम्–पुं० [अँग० अल्टिमेटम के अनुकरण पर सं० रूप] यह कहना कि बस, यह बात यहीं तक हो सकती है, इससे आगे होने पर लड़ाई या बिगाड़ होगा। अन्तिम चुनौती। (अल्टिमेटम)

अंतेउर*–पुं० दे० 'अंतःपुर'।

अंतेवासी–पुं० [सं०] १. गुरु के पास रहकर शिक्षा पानेवाला। शिष्य। चेला। २. वह जो किसी के पास या किसी कार्यालय में रहकर, नौकरी पाने की आशा से कुछ काम करता या सीखता हो। (अप्रेन्टिस) ३. दे० 'अंत्यज'।

अंत्य–वि० [सं०] सबके अन्त का। अंतिम। आखिरी।

अंत्यज–वि० [सं०] डोम–चमार आदि जातियाँ जो पहले बहुत छोटी मानी जाती थीं और जिन्हें लोग छूते नहीं थे।

अंत्य वर्ण–पुं० [सं०] १. वर्णमाला के वर्णों या अक्षरों में से अंतिम अर्थात् 'ह'। २. कविता में किसी पद या चरण के अंत में आया हुआ अक्षर।

अंत्यशेष–पुं० [सं०] वह धन या रकम जो कोई खाता बन्द करने के समय अन्त में बाकी निकले। (बैलेन्स)

अंत्याक्षरी–स्त्री० [सं०] विद्यार्थियों का एक प्रकार का खेल या प्रतियोगिता जिसमें कोई एक कविता पढ़ता और दूसरा उस कविता के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होनेवाली दूसरी कविता पढ़ता है।

अंत्यानुप्रास–पुं० [सं०] पद्य में अन्तिम अक्षरों का मेल या अनुप्रास। तुक।

अंत्येष्टि–स्त्री० [सं०] किसी के मरने होनेवाले धार्मिक कृत्य या संस्कार।

अंत्र–पुं० [सं०] आँत। अँतड़ी।

अंत्र-वृद्धि–स्त्री० [सं०] आँतें उतरने रोग जो बहुत कष्टदायक होता है।

अंत्री*–स्त्री० = अँतड़ी (आँत)।

अँथऊ†–पुं० [सं० अस्त] सूर्यास्त से प का भोजन। (जैन)

अंदर– क्रि० वि० [फा०] [वि० अंदरी भीतरी] (किसी निश्चित सीमा, स्थान समय के) भीतर। में।

पुं० किसी घिरे हुए स्थान का भीतरी भाग

अँदरसा–पुं० [सं० इन्द्राश] एक प्रका की मिठाई।

अंदरी–वि० [हिं० अन्दर] अन्दर का भीतरी।

अंदाज–पुं० [फा०] १. अनुमान। अ कल। २. ढब। ढंग। तौर। ३. हा भाव। स्त्रियों की चेष्टा।

अंदाजन–क्रि० वि० [फा०] अंदाज अनुमान से। अनुमानतः।

अंदाजा–पुं० [फा०] १. अनुमान। अटकल। २. कूत।

अंदेशा–पुं० [फा०] १. चिन्ता। सो विचार। २. संशय। सन्देह। शक ३. आशंका। खटका। भय।

अँदोर*–पुं० [सं० आन्दोलन] १. हो-हल्ल हुल्लड़। २ आन्दोलन। हलचल।

अंध–वि० [सं०] १. नेत्र-हीन। अंधा। अज्ञानी। मूर्ख। ३. मतवाला। उन्मत्त ४. जिसमें कुछ देखा-सुना या समझा-बू न गया हो। आँखें बन्द करके किया जा वाला। जैसे–अन्ध अनुकरण, अन्ध विश्वा पुं० १. दे० 'अंधा'। २. दे० 'अंधकार'

अंधकार–पुं० [सं०] १. प्रकाश न होना अँधेरा। २. अज्ञान।

अंधड़–पुं० दे० 'आँधी'।

अंधता–स्त्री० [सं०] अंधे होने की दशा या भाव । अन्धापन ।

अंध-तामिस्र–पुं० [सं०] एक नरक जो बहुत अधिक अंधकारपूर्ण माना जाता है ।

अंध-धुंध*–क्रि० वि० = अंधाधुंध ।

अंध-परंपरा–स्त्री० [सं०] बहुत दिनों की चली आई हुई प्रथा या परंपरा के अनुसार बिना समझे-बूझे काम करना ।

ंधबाई*–स्त्री० दे० 'आँधी' ।

ंधर*–वि० दे० 'अँधेरा' ।

ंधरा¹–वि० दे० 'अंधा' ।

ंध-विश्वास–पुं० [सं०] बिना समझे-बूझे या आँखें बन्द करके किसी बात पर किया जानेवाला विश्वास । (सुपर्सटिशन)

ंधा–पुं० [सं० अन्ध] [स्त्री० अंधी, भाव० अंधापन] वह जिसे आँखों से कुछ भी दिखाई न देता हो ।

वि० १. जिसे दिखाई न दे । २. जिसके अन्दर कुछ दिखाई न दे । जैसे–अंधा कूआँ, अन्धी कोठरी । ३. जिसकी चमक या गुण नष्ट हो गया हो । जैसे–अंधा शीशा । ४. जो किसी शक्ति से रहित हो । जैसे–अक्ल का अन्धा ।

ंधाधुंध–क्रि० वि० [हिं० अन्धा + धुन्ध] बिना सोचे-समझे और बहुत तेजी से । बहुत वेग से ।

त्री० १. बहुत अधिक अँधेरा । २. अन्याय और अत्याचार ।

धार*–वि० पुं० = अँधेरा ।

धियारा–वि० दे० 'अँधेरा' ।

धियारी–स्त्री० [हिं० अँधेरा] १. अन्धकार । अँधेरा । २. वह पट्टी जो उपद्रवी घोड़ों और शिकारी जन्तुओं की आँखों पर बाँधी जाती है ।

धेर–पुं० [सं० अन्धकार] १. ऐसा काम जिसमें सोच-विचार या न्याय से काम न लिया जाय । अन्याय और अत्याचार । २. बहुत अधिक गड़बड़ी या कु-प्रबन्ध ।

अंधेर-खाता–पुं० दे० 'अंधेर' ।

अंधेर-नगरी–स्त्री० [हिं० अंधेर = अन्याय + नगरी] वह स्थान जहाँ सब बातों में पूरी पूरी अव्यवस्था और अन्याय होता हो ।

अँधेरना*–स० [हिं० अँधेरा] अँधेरा करना । अन्धकार फैलाना ।

अँधेरा–पुं० [सं० अन्धकार] १. 'प्रकाश' या 'उजाला' का उलटा । अन्धकार । २. काली छाया । परछाँईं ।

सम०–अँधेरा गुप्प = घोर अंधकार जिसमें कुछ भी दिखाई न दे ।

३. छाया । परछाईं । ४. उदासीनता । उदासी ।

वि० जिसमें या जहाँ प्रकाश या उजाला न हो । अन्धकारपूर्ण ।

अँधेरा पक्ष–पुं० [हिं० अँधेरा + पक्ष] पूर्णिमा से अमावस्या तक के १५ दिन ।

अँधेरी–स्त्री० [हिं० अँधेरा] १. अन्धकार । अँधेरा । २. अँधेरी या काली रात । ३. आँधी । ४. वह कपड़ा जो नट-खट घोड़ों, बैलों आदि या शिकारी जानवरों की आँखों पर बाँधा जाता है । ५. दे० 'अँधियारी' ।

अँधेरी कोठरी–स्त्री० १. पेट । २. वह स्थान जिसके अन्दर का कुछ पता न चले ।

अँधौटा–पुं० [सं० अन्धपट्ट, प्रा० अन्धउट्ट] [स्त्री० अल्पा० अँधौटी] कपड़े, चमड़े आदि की वह पट्टी जो बैलों या घोड़ों की आँखों पर बाँधी जाती है ।

अँध्यार*–वि०, पुं० = अँधेरा ।

अंब–स्त्री० दे० 'अंबा' ।

पुं० दे० 'आम' (फल और वृक्ष) ।

अंबक–पुं० [सं०] १. नेत्र । आँख । जैसे–त्र्यंबक = महादेव । २. पिता । बाप ।

अंबर–पुं० [सं० अम्बर] १. पहनने का कपड़ा । वस्त्र । २. आकाश । आसमान । ३. मेघ । बादल ।

पुं० [अ०] एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य जो ह्वेल नाम की मछली की आँतों में से

निकलता है ।

अंबर-डंबर—पुं० [सं० अम्बर = आकाश] सूर्यास्त के समय दिखाई देनेवाली लाली ।

अंबरबेलि—स्त्री० दे० 'आकाश-बेल' ।

अँबराई—स्त्री० दे० 'अमराई' ।

अंबरीष—पुं० [सं०] १. विष्णु । २. शिव । ३. सूर्य । ४. अयोध्या के प्रसिद्ध और प्राचीन सूर्यवंशी राजा ।

अंबल*—वि० = अम्ल ।

पुं० = अमल ।

अंबष्ठ—पुं० [सं०] १. मध्य-पंजाब का प्राचीन नाम । २. इस देश का निवासी । ३. महावत । हाथीवान ।

अंबा—स्त्री० [सं० अम्बा] १. माता । माँ । २. गौरी या पार्वती देवी ।

पुं० दे० 'आम' (फल और वृक्ष) ।

अंबार—पुं० [फा०] राशि । ढेर ।

अंबारी—स्त्री० [अ० अमारी] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला हौदा ।

अंबिका—स्त्री० दे० 'अंबा' ।

अँबिया—स्त्री० [हिं० आम] छोटा आम ।

अँबिरथा*—क्रि० वि० = वृथा ।

अंबु—पुं० [सं०] जल । पानी ।

अंबुज—वि० [सं० अम्बुज] जो जल में उत्पन्न हुआ हो ।

पुं० १. कमल । २. शंख । ३. ब्रह्मा ।

अंबुद—पुं० [सं०] १. मेघ । बादल । २. नागर-मोथा

अंबुधर—पुं० [सं०] मेघ । बादल ।

अंबुधि—पुं० [सं०] समुद्र । सागर ।

अंबुपति—पुं० [सं०] १. समुद्र । २. वरुण ।

अंबुरुह—पुं० [सं०] कमल ।

अंबुशायी—पुं० [सं०] विष्णु ।

अंभ—पुं० [सं०] १. जल । पानी । २. पितृ । पितर । ३. पितृ-लोक ।

अंभसार*—पुं० [सं० अभःसार] मोती ।

अंभोज—पुं० [सं०] १. कमल । २. सारस । ३. चन्द्रमा । ४. कपूर ।

अंश—पुं० [सं०] १. उन अवयवों अंगों में से कोई एक, जिनके योग से वस्तु बनी हो । पूरे में का कोई टुकड़ा, या भाग । (पार्ट, पोर्शन) २. भाग हिस्सा । (शेयर) जैसे-लाभ का अंश ३. किसी वस्तु का चौथाई भाग । ४. कि वस्तु विशेषतः चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग कला । ५. वृत्त की परिधि का ३६० भाग । (डिगरी) ६. दे० 'अंशावतार

अंशक—पुं० [सं०] १. भाग । टुकड़ा २. दे० 'अंशी' ।

वि० १. अंश धारण करनेवाला । अंश या भाग लगानेवाला । विभाजक ।

अंशतः—क्रि० वि० [सं०] किसी अं या कुछ अंशों में ही । पूरा नहीं; कुछ अंश या अंशों में । (पार्टली, इन् प

अंशदाता—पुं० [सं०] वह जो औरों साथ-साथ, देन, सहायता आदि के रू अपना भी अंश या हिस्सा देता (कान्ट्रिब्यूटर)

अंशदान—पुं० [सं०] [वि० अ दानिक] (औरों के साथ-साथ) अ अंश या हिस्सा, देन या सहायता आदि रूप में, देना । (कॉन्ट्रिब्यूशन)

अंशधर—पुं० [सं०] किसी अंश हिस्से का मालिक । अंशी । हिस्सेद (शेयर होल्डर)

अंशपत्र—पुं० [सं०] वह पत्र जि यह लिखा हो कि किसी संपत्ति या व्य आदि में किसका कितना अंश है ।

अंश-मापन—पुं० [सं०] [वि० मापक] किसी चीज के अंशों को नाप जैसे—ताप-मापक यंत्र में के अंश नाप

अंशापन—पुं० [सं०] [वि० अंशा आवश्यकता, उपयोगिता, उत्तरदायित्व, आदि के विचार से किसी वस्तु के अलग अंश या विभाग करना । का विभाजन । (अपोर्शनमेन्ट)

शावतार–पुं० [सं०] वह अवतार जसमें ईश्वरता पूरी न हो, बल्कि कुछ ंशों में ही हो।

शी–पुं० [सं० अंशिन्] १. वह जिसका सी संपत्ति या व्यापार आदि में कोई श हो। हिस्सेदार। (शेयरर) २. व्यापार ादि के किसी अंश या हिस्से का मालिक।

ु–पुं० [सं०] सूर्य की किरण।

ुमान–पुं० [सं०] सूर्य।

ु-माला–स्त्री० [सं०] सूर्य की किरणें उनका जाल।

ुमाली–पुं० [सं०] सूर्य।

स*–पुं० = अंश।

पुं० [सं० स्कंध] कन्धा।

सुआ*–पुं० = आँसू।

सुआना–अ० [हिं० आँसू] आँखों का सुओं से भरना।

उर*–अव्य० = और।

त–वि० [सं० अपुत्र] जिसे पुत्र या तान न हो। अपुत्र। निपूता।

लना*–अ० दे० 'औलना'।

रना*–स० [सं० अंगीकरण] अंगीर करना। ग्रहण या स्वीकृत करना।

ंटक–वि० [सं०] जिसमें कोई कंटक बाधा न हो। निर्विघ्न।

ड़–स्त्री० [हिं० अ+कड्डु] १. ऐंठने क्रिया या भाव। ऐंठ। तनाव। २. ंड। अभिमान। शेखी।

ड़ना–अ० [हिं० अकड़] १. सूखने कड़े होने के कारण तनना। ऐंठना। ना। २. अभिमान या घमंड खलाना। ऐंठना। इतराना। ३. ढिठाई, या दुराग्रह करना।

ड़बाज–पुं० [हिं० अकड़+फा० ज] [भाव० अकड़बाजी] अनुचित अतिरिक्त अभिमान या हठ। ऐंठ।

ड़ाव–पुं० [हिं० अकड़ना] १. अकने की क्रिया या भाव। ऐंठन।

अकड़ैत†–पुं० दे० 'अकड़बाज'।

अकत*–वि० [सं० अक्षत] सारा। पूरा। समूचा। सब।

अकथ–वि० दे० 'अकथनीय'।

अकथनीय–वि० [सं०] जो कहा न जा सके। जिसका वर्णन करना कठिन हो।

अकथ्य–वि० दे० 'अकथनीय'।

अक-धक*–स्त्री० [अनु०] [क्रि० अक-धकाना] १. भय। डर। २. आशंका। खटका। ३. आगा-पीछा। सोच-विचार। असमंजस।

अकनना*–स० [सं० आकर्णन] १. सुनना। २. चोरी से या लुक-छिपकर दूसरों की बातें सुनना।

अकना*–अ० [सं० आकुल] उकताना। ऊबना।

अक-बक–स्त्री० [हिं० बकना] [क्रि० अकबकाना] १. व्यर्थ की बात। प्रलाप। बकवाद। २. दे० 'अक-धक'।

वि० १. भौचक्का। चकित। २. घबराया हुआ। विकल।

अकर–वि० [सं० अ+कर] १. न करने योग्य। २. जिसके हाथ न हो। ३. जिस-पर कर न लगे।

अकरकरा–पुं० [अ० अक़रक़रह] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

अकरखना*–स० [सं० आकर्षण] आकर्षित करना। खींचना या तानना।

अकरण–पुं० [सं०] १. न करना। कर्म का अभाव। २. जो करना चाहिए, वह न करना। कर्त्तव्य छोड़ देना। (ओमिशन) ३. करने पर भी न किये हुए के समान हो जाना। ४. ईश्वर, जो स इन्द्रियों से रहित माना जाता है।

वि० १. न करने योग्य। २. अनुचित। बुरा। ३. कठिन।

अकरणीय–वि० [सं०] जिसे करना ठीक

न हो । न करने योग्य ।

अकरा⁺-वि० [सं० अक्रय्य] १. अधिक मूल्य का । महँगा । २. खरा । अच्छा ।

अकराथ*-वि० दे० 'अकारथ' ।

अकरास⁺-स्त्री० [सं० अकर] १. आलस्य । सुस्ती । २. अँगड़ाई ।

अकरासू-वि० स्त्री० [हिं० अकरास] गर्भवती । (स्त्री)

अकर्त्ता-वि० [सं०] जो कुछ न करता हो । न करनेवाला ।

पुं० सांख्य के अनुसार पुरुष जो सब कुछ करने पर भी कर्मों से अलग माना जाता है ।

अकर्त्तृत्व-पुं० [सं०] कर्त्तृत्व (या उसके अभिमान) का अभाव ।

अकर्म-पुं० [सं०] १. कार्य का न होना । कर्म का अभाव । २. बुरा या अनुचित काम । खोटा काम ।

अकर्मक-वि० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिसके साथ कोई कर्म न हो । (इन्‌ट्रान्‌जिटिव) जैसे—चलना, दौड़ना, सोना ।

अकर्मण्य-वि० [सं०] [भाव० अकर्मण्यता] १. जो कोई काम न कर सकता हो । निकम्मा । २ जो किसी काम न आ सकता हो । निकम्मा । (पदार्थ)

अकर्मण्यता-स्त्री० [सं०] 'अकर्मण्य' का भाव । निकम्मापन ।

अकर्मा-वि० १. दे० 'अकर्मण्य' । २. दे० 'अकर्त्ता' ।

अकर्षण*-पुं० = आकर्षण

अकलंक-वि० [सं०] [भाव० अकलंकता, वि० अकलंकित] जिसमें कोई कलंक या दोष न हो । सब तरह से अच्छा । निर्मल ।

*वि० दे० 'कलंक' ।

अकलंकी-वि० [सं० अकलंकिन्] जिसमें कोई कलंक या दोष न हो । निर्दोष ।

अकल-वि० [सं०] १. जिसमें अवयव या अंग न हों । २. जिसके टुकड़े न हों । पूरा । समूचा । ३. जिसमें कोई कला या कौशल न हो ।

*वि० [हिं० अ + कल] विकल । बेचै

स्त्री० दे० 'अक्ल' ।

अकल्पित-वि० [सं०] १. जो क या मन से गढ़ा हुआ न हो । वास्तवि २. जिसकी कल्पना या अनुमान न गया हो ।

अकवन-पुं० दे० 'मदार' (पौधा) ।

अकस-पुं० [सं० आकर्ष] मन में वाला दुर्भाव । वैर । शत्रुता ।

अकसना-अ० [हिं० अकस] मन दुर्भाव या वैर रखना । द्वेष करना ।

अकसर-क्रि० वि० [हिं० एक+स बिना साथी के । अकेले ।

क्रि०वि० दे० 'प्रायः' ।

अकसीर-वि० [अ०] अवश्य गुण प्रभाव दिखानेवाला । अव्यर्थ ।

पुं० वह रस या भस्म जो धातु को या चाँदी बना दे । रसायन ।

अकस्मात्-क्रि०वि० [सं०] [वि० आ स्मिक] एक दम से । अचानक । सह

अकह*-वि० दे०'अकथ्य' ।

अकांड-वि० [सं०] (वृक्ष) जिसमें या शाखाएँ न हों ।

क्रि० वि० अकस्मात् । अचानक ।

अकांड-तांडव-पुं० [सं०] व्यर्थ उछल-कूद या झगड़ा ।

अकाज-पुं० [सं० अकार्य्य] [अकाजना] १. अनुचित या बुरा २. हानि । हरज ।

अकाजना*-अ० [हिं० अकाज] या हानि होना ।

स० हरज या हानि करना ।

अ० [हिं० काल] मर जाना ।

अकाजी-वि० [हिं० अकाज] का हर्ज करनेवाला । काम में विघ्न डाल औरों का समय नष्ट करनेवाला ।

अकाट्य-वि० [सं० अ + हिं० काट

जसका खंडन न हो सके। जो काटा न जा के.। (शब्द का यह रूप अशुद्ध है)

काथ*–क्रि० वि० दे० 'अकारथ'।

काम–वि० [सं०] जिसमें कोई कामना ा इच्छा न हो। निष्काम। निस्पृह। क्रि० वि० [सं० अकर्म] बिना काम के। यर्थ। यों ही।

कामतः–क्रि० वि० [सं०] जान-झकर नहीं, बल्कि यों ही या अन-जान में।

कामिक–वि० [सं०] जिसकी कामना ा इच्छा न की गई हो।

काय–वि० [सं०] १. जिसकी काया या ारीर न हो। देह-रहित। २. अजन्मा। ३. निराकार।

कार–पुं० [सं०] 'अ' अक्षर या मात्रा। पुं० दे० 'आकार'।

कारज–पुं० दे० 'अकाज'।

कारण–क्रि० वि० [सं०] १. बिना कसी कारण या वजह के। व्यर्थ। यों ही। ० आपसे आप होनेवाला। स्वयंभू।

कारथ*–क्रि० वि० दे० 'व्यर्थ'।

कार्य–पुं० दे० 'अकर्म'।

काल–पुं० [सं०] १. ऐसा समय जो ीक या उपयुक्त न हो। जैसे–अकाल ृत्यु। २. ऐसा समय जब अन्न न मलता हो। दुर्भिक्ष। ०जो कभी मरता या नष्ट न होता हो। विनाशी। अविनश्वर।

काल-कुसुम–पुं० [सं०] वह फूल जो पने समय से पहले या पीछे खिला हो। ऐसा फूल फूलना अशुभ माना जाता) २. वह चीज जो अपने समय से हले या पीछे हो। (आश्चर्य की बात)

काल-प्रसव–पुं० [सं०] स्त्री को नियत ा ठीक समय से पहले सन्तान होना।

काल-मृत्यु–स्त्री० [सं०] उचित समय से पहले होनेवाली मृत्यु। असामयिक मृत्यु।

कालिक–वि० [सं०] अकाल या असमय में होनेवाला।

अकाली–पुं० [हिं० अकाल (पुरुष)] सिक्खों का एक सम्प्रदाय।

अकाश-दीपक–पुं० दे० 'अकास-दीया'।

अकास*–पुं० दे० 'आकाश'।

अकास-दीया–पुं० [हिं०] वह दीया जो बाँस में बाँधकर आकाश में जलाया जाता है। अकाश-दीपक।

अकास-बानी–स्त्री० दे० 'आकाश-वाणी'।

अकासी–स्त्री० [सं० आकाश] १. चील (पक्षी)। २. ताड़ का रस। ताड़ी।

अकिंचन–वि० [सं०] [भाव० अकिंचनता] १. बहुत ही दीन या दरिद्र। गरीब। २. बहुत ही साधारण। बिलकुल मामूली।

अकिंचित्–वि० [सं०] जिसकी कोई गिनती न हो। नगण्य। तुच्छ।

अकि*–अव्य० [फा० कि] कि। या। अथवा।

अकिल–स्त्री० दे० 'अक्ल'।

अकिल-दाढ़–स्त्री० [हिं०] वह विशेष दाँत जो मनुष्यों को वयस्क होने पर निकलता है।

अकीक–पुं० [अ०] एक प्रकार का लाल पत्थर या उप-रत्न।

अकीरत*–स्त्री० दे० 'अकीर्त्ति'।

अकीर्त्ति–स्त्री० [सं०] बुरी कीर्त्ति। अपकीर्त्ति। बदनामी।

अकीर्त्तिकर–वि० [सं०] (बात) जो किसी की कीर्त्ति में बट्टा लगानेवाली हो। बदनामी की।

अकुंठ–वि० [सं०] जो कुंठित न हो। तीखा। तीव्र।

अकुताना*–अ० दे० 'उकताना'।

अकुल–पुं० [सं०] १. बुरा या छोटा कुल या वंश। २. वह जिसके कुल में कोई न हो।

अकुलाना–अ० [सं० आकुल] १.

आकुल होना। घबड़ाना। २. ऊबना। ३. शीघ्रता करना। जल्दी मचाना।

अकुलीन–वि० [सं०] जो कुलीन न हो। छोटे, नीच या तुच्छ कुल या वंश का।

अकुशल–वि० [सं०] जो कार्य करने में कुशल या दक्ष न हो।

अकूट–वि० [सं०] जो अवास्तविक या कृत्रिम न हो। जेन्य। सच्चा। असली। (जेनुइन)

अकूत–वि० [हिं० अ + कूतना] १. जो कूता न जा सके। २. बहुत अधिक।

क्रि० वि० १. आपसे आप। २. अचानक। अकस्मात्।

अकूल–वि० [सं०] जिसका कोई कूल, किनारा या अन्त न हो। असीम।

अकूहल*–वि० [हिं० अकूत] बहुत अधिक।

अकृत–वि० [सं०] १. जो किया न गया हो। बिना किया हुआ। २. जिसमें सफलता न हुई हो। विफल। जैसे–अकृत कार्य = विफल मनोरथ। ३. जिसने न किया हो।

अ-कृतकार्य–वि० [सं०] जो अपने कार्य में सफल न हुआ हो। विफल।

अकृतज्ञ–वि० [सं०] जो किसी का किया हुआ उपकार न माने। कृतघ्न।

अकृति–वि० दे० 'अकर्मण्य'।

अकृती–वि० [सं० अ + कृती] १. जिसने कुछ भी न किया हो। २. जिससे कुछ हो न सकता हो। अकर्मण्य।

अकृत्य–पुं० [सं०] न करने योग्य या बुरा काम।

अ-कृषिक–वि० [सं०] जो कृषि से संबंध न रखता हो। 'कृषिक' का उलटा। (नॉन-एग्रिकल्चरल)

अ-कृषित–वि० [सं०] (खेत) जो जोता-बोया न गया हो। (अन-कल्टिवेटेड)

अकेला–वि० [सं० एकल] जिसके साथ और कोई न हो। बिना संग-साथवाला। **यौ०–अकेला-दुकेला** = जो अकेला जिसके साथ कोई एक और आदमी न २. जिसके जोड़ का दूसरा न हो। ३ एक निराला।

अकेले–क्रि० वि० [हिं० अकेला] १. किसी के संग-साथ के। २. केवल।

अकोट*–वि० [सं० कोटि] १.करोड़ों। बहुत अधिक।

अकोतर सौ–वि० [सं० एकोत्तरश एक सौ एक।

अकोसना*–स० दे० 'कोसना'।

अकौआ–पुं० [हिं० कौआ] गले के अ की घंटी। कौआ।

अकौता–पुं० दे० 'उकवत'।

अकौशल–पुं० [सं०] कौशल या द का अभाव। कुशल या दक्ष न हो (इन-एफिशिएन्सी)

अक्कड़–पुं० [शामी] [वि० अक्कड़ १. प्राचीन मेसोपोटामिया का एक प्रसि सुन्दर, सभ्य और सम्पन्न नगर जो प्रायः हजार वर्ष पहले वर्त्तमान था और जि एक विशिष्ट संस्कृति थी। २. उक्त न के आस-पास का प्राचीन प्रदेश।

अक्कड़ी–वि० [शामी अक्कड़] अक सम्बन्धी। अक्कड़ का।

पुं० प्राचीन अक्कड़ नगर या प्रदेश निवासी।

स्त्री० प्राचीन अक्कड़ नगर या प्रदेश भाषा।

अक्खड़–वि० [सं० अक्षर] १. व अपनी बात पर अड़ा रहे और किसी की सुने। २. जल्दी लड़ पड़नेवाला। झगड़ झगड़ालू।

अक्खर*–पुं० दे० 'अक्षर'।

अक्त–वि० [सं०] किसी से मिला या हुआ। युक्त। (कुछ शब्दों के अं प्रत्यय के रूप में; जैसे–विषाक्त = जि विष हो या मिला हो।)

अक्रम–वि० [सं०] जो कोई क्रिया या कार्य न करे अथवा जिसकी क्रिया या कार्य रुक गया हो। (इन-ऐक्टिव)

अक्रियमाण–वि० [सं०] १. जो कार्य-रूप में न हो रहा हो। २. जो अपनी क्रिया या कार्य न कर रहा हो। (इनऑपरेटिव)

अक्रूर–वि० [सं०] जो क्रूर न हो। दयालु।
पुं० एक यादव जो श्रीकृष्ण के चाचा थे।

अक्ल–स्त्री० [अ०] बुद्धि। समझ।
पद–अक्ल का अंधा या दुश्मन = मूर्ख। बेवकूफ। **अक्ल का पूरा** = मूर्ख।
मुहा०–अक्ल चरने जाना = बुद्धि न रह जाना।

अक्लमंद–वि० [अ० अक्ल + फा० मंद] [भाव० अक्लमंदी] बुद्धिमान्। समझदार।

अक्लमंदी–स्त्री० [अ० + फा०] बुद्धिमत्ता। समझदारी।

अक्ष–पुं० [सं०] १. जूआ खेलने का पासा। २. दो या अधिक वस्तुओं के बीच की वह कल्पित या वास्तविक रेखा जिसके आधार पर वे वस्तुएँ रहती, चलती या घूमती हैं। मेरु। धुरा। (ऐक्सिस) ३. भूगोल में वे कल्पित रेखाएँ जो सारी पृथ्वी पर समान अन्तर पर पड़ी हुई मानी जाती हैं। (लैटिट्यूड) ४. रुद्राक्ष आदि के बीज जिनसे माला बनती है। ५. इन्द्रिय।

अक्ष-क्रीड़ा–स्त्री० [सं०] पासे या चौसर का खेल।

अक्षत–वि० [सं०] १. जिसे क्षत या चोट न लगी हो। २. जिसके टुकड़े न हुए हों। अखंड। पूरा।
पुं० कच्चा चावल (जो देवताओं पर चढ़ाया जाता है)।

अक्षत-योनि–वि० स्त्री० [सं०] (कन्या) जिसका पुरुष से सम्बन्ध न हुआ हो।

अक्षपाद–पुं० [सं०] न्याय-शास्त्र के प्रवर्त्तक गौतम ऋषि।

अक्षम–वि० [सं०] [भाव० अक्षमता] १. जिसमें क्षमता या शक्ति न हो। असमर्थ। (डिस-एब्रुल्ड) २. जिसमें किसी कार्य के लिए योग्यता न हो। अयोग्य। (इन्कैपेबुल) ३. जो क्षमा न करे।

अक्षमता–स्त्री० [सं०] अक्षम होने की अवस्था या भाव। असमर्थता। (डिस्-एबिलिटी)

अक्षम्य–वि० [सं०] जिसे क्षमा न कर सकें।

अक्षय–वि० [सं०] जिसका कभी क्षय या नाश न हो। सदा एक-सा बना रहनेवाला। अविनाशी।

अक्षय तृतीया–स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ल तृतीया। (हिन्दुओं का प्रसिद्ध पर्व)

अक्षय नवमी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्ल नवमी। (हिन्दुओं का प्रसिद्ध पर्व)

अक्षर–पुं० [सं०] १. वर्ण-माला का कोई स्वर या व्यंजन। वर्ण। हरफ। (लेटर, एल्फाबेट) २. आत्मा। ३. ब्रह्म। ४. मोक्ष।
वि० सदा एक-सा बना रहनेवाला। अविनाशी। नित्य।

अक्षर-क्रम–पुं० [सं०] शब्दों, नामों आदि के रखने या लगाने का वह क्रम जिसमें उनके आरंभ के अक्षर उसी तरह के रहते हैं, जिस तरह या क्रम से वर्ण-माला के अक्षर रहते हैं। (एल्फाबैटिक आर्डर)

अक्षरशः–क्रि० वि० [सं०] एक अक्षर का भी अन्तर न रखकर। ठीक ज्यों का त्यों। (कथन या लेख)

अक्षरारंभ–पुं० [सं०] किसी को पहले-पहल अक्षरों का ज्ञान कराना या पढ़ाना आरम्भ करना।

अक्षरी–स्त्री० [सं० अक्षर] शब्दों के अक्षरों का क्रम। वर्त्तनी। हिज्जे।

अक्ष-रेखा–स्त्री० [सं०] वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के केन्द्र से दोनों पृष्ठों पर सीधी गिरती है।

अक्षरौटी–स्त्री० दे० 'अखरौटी'।

अक्षांश–पुं० [सं०] १. भूगोल में पृथ्वी पर पूर्व से पश्चिम गई हुई कल्पित समान अन्तरवाली रेखा या अक्ष का अंश। (लैटिट्यूड की डिग्री)

अक्षि–स्त्री० [सं०] आँख। नेत्र।

अक्षुण्ण–वि० [सं०] [भाव० अक्षुण्णता] ज्यों का त्यों और पूरा। बिना टूटा-फूटा। समूचा। सारा।

अक्षोनी*–स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी'।

अक्षौहिणी–स्त्री० [सं०] वह सेना जिसमें बहुत-से हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सिपाही हों। (प्राचीन काल में वह सेना अक्षौहिणी मानी जाती थी, जिसमें १०९३५० पैदल सिपाही, ६५६१० घुड़-सवार, २१८७० रथ और २१८७० हाथी होते थे। यही पूरी चतुरंगिणी सेना भी कहलाती थी)

अक्स–पुं० [अ०] १. प्रतिबिम्ब। छाया। परछाईं। २. चित्र। तसवीर।

अक्सर–क्रि० वि० दे० 'प्रायः'।

अक्सीर–वि० पुं० दे० 'अकसीर'।

अखंग*–वि० दे० 'अक्षय'।

अखंड–वि० [सं०] [भाव० अखंडता] जिसके खंड या टुकड़े न हों। बिना टूटा हुआ। पूरा।

अखंडनीय–वि० [सं०] १. जिसके खंड या टुकड़े न किये जा सकें। २. जो अशुद्ध या झूठ न सिद्ध किया जा सके।

अखंडल*–वि० दे० 'अखंड'।

अखंडित–वि० [सं०] १. जो खंडित या टूटा-फूटा न हो। पूरा। समूचा। २. जिसका खंडन न हुआ हो।

अखज*–वि० दे० 'अखाद्य'।

अखड़ैत–पुं० [हिं० अखाड़ा + ऐत प्रत्य०] १.मल्ल। पहलवान। २.दे० 'अखाड़िया'।

अखती*–स्त्री० दे० 'अक्षय तृतीया'।

अखनी–स्त्री० [अ० यखनी] मांस का रसा। शोरबा।

अखबार–पुं०[अ०] समाचार-पत्र।

अखय*–वि० दे० 'अक्षय'।

अखर*–वि० पुं० दे० 'अक्षर'।

अखरना–अ० [सं० खर] अनुचित कष्टदायक जान पड़ना। अच्छा न लगन खलना।

अखरा*–वि० [सं० अ + हिं० खरा सच्चा] बनावटी। कृत्रिम।

अखरावट–स्त्री० दे० 'अखरौटी'।

अखरोट–पुं० [सं० अक्षोट] एक फल ऊँचा पेड़ जिसके फलों की गिनती मेवों होती है।

अखरौटी–स्त्री० [हिं० अक्षर] १. व माला। २. लिखने का ढंग। लिखाव ३. वह कविता जिसके पद क्रमशः व माला के अक्षरों से आरम्भ होते हैं।

अखर्व–वि० [सं०] जा खर्व या छोटा हो। बहुत बड़ा।

अखा*–पुं० दे० 'आखा'।

अखाड़ा–पुं० [सं० अक्षवाट] १. स्थान जहाँ लोग व्यायाम करते और कु लड़ते हैं। २. साधुओं की मंडली निवास-स्थान। ३. वह स्थान जहाँ इकठ्ठे होकर अपना कोई कौ दिखलाते हों।

अखाड़िया–वि० [हिं० अखाड़ा] बड़े अखाड़ों में कौशल दिखानेवाला। विषय या कार्य का बहुत बड़ा ज्ञाता या प

अखात–पुं० [सं०] १. समुद्र का थोड़ा अंश जो स्थल से तीन ओर से हो। उप-सागर। खाड़ी। २. झील।

अखाद*–वि० दे० 'अखाद्य'।

अखाद्य–वि० [सं०] (वस्तु) जो के योग्य न हो।

अखिल–वि० [सं०] समस्त। सारा। पुं० जगत्। संसार।

अखिलेश (श्वर)–पुं० [सं०] स्वामी या मालिक, ईश्वर।

खोर–पुं० दे० 'अंत' ।

खूट*–वि० [हिं० अ + खूटना = कम
ना] जो घटे नहीं । कम न होनेवाला ।
हुत अधिक ।

खोर*–वि० [हिं० अ + खोर = बुरा]
भद्र । सज्जन । २. सुन्दर । ३. निर्दोष ।
० [फा० आख़ोर] निकम्मा । बुरा ।
१. कूड़ा-करकट । निकम्मी चीज ।
खराब घास । बुरा चारा ।

ख्तयार–पुं० दे० 'अधिकार' ।

यान*–पुं० = आख्यान ।

–वि० [सं०] १. न चलनेवाला ।
चल । २. टेढ़ा चलनेवाला ।

ाज–वि० [सं०] १. पर्वत से उत्पन्न ।
पर्वत पर होनेवाला । पहाड़ी ।
० १. शिलाजीत । २. हाथी ।

टना*–अ० [हिं० इकट्ठा] इकट्ठा या
ा होना ।

ड़*–स्त्री० दे० 'अकड़' ।

ड़-बगड़–वि० [अनु० या सं०
टा, विकटा (देवियाँ) ?] १. अंड-बंड ।
सिर-पैर का । २. निकम्मा । व्यर्थ का ।

ण–पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में ये चार
षिद्ध और हीन गण—जगण, रगण,
ण और तगण ।

णित–वि० [सं०] जिनकी गिनती न
सके । बहुत अधिक । असंख्य ।

ण्य–वि० [सं०] १. जिसे गिन न
। बहुत अधिक । २. जो किसी गिनती
हो । तुच्छ । नगण्य ।

ता†–वि० दे० 'अग्रिम' ।

ति–स्त्री० [सं०] १. गति का न
। स्थिर या ठहरा हुआ होना । २. मरे
का संस्कार आदि न होना ।
जिसमें गति न हो । अचल ।

तिक–वि० [सं०] १. जिसकी कहीं
या ठिकाना न हो । अशरण ।
आश्रय । २. मरने पर जिसकी अंत्येष्टि
क्रिया आदि न हुई हो ।

अगत्या–क्रि० वि० [सं०] १. विवश होकर । लाचार होकर । २. अचानक । सहसा । अकस्मात् ।

अगन*–पुं० = अगण ।
स्त्री० = अग्नि ।

अगनइता*–स्त्री० = आग्नेय दिशा ।

अगनिउ*–पुं० [सं० आग्नेय] उत्तर-पूर्व का कोना । आग्नेय दिशा ।

अगनी*–वि० दे० 'अगणित' ।
स्त्री० दे० 'अग्नि' ।

अगनू*–पुं० [सं० आग्नेय] पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा या कोण । अग्नि-कोण ।

अगनेत*–पुं० [सं० आग्नेय] आग्नेय दिशा । अग्नि-कोण ।

अगम–वि० [सं० अगम्य] [भाव० अगमता] १. जहाँ तक कोई पहुँच न सके । दुर्गम । २. जो जल्दी समझ में न आवे । कठिन । ३. जिसकी थाह न लगे । अथाह । ४. विकट । ५. बहुत । अधिक ।

अगमन*–क्रि० वि० [सं० अग्रवान्] १. आगे । पहले । २. आगे से । पहले से ।

अगमना*–क्रि० वि० = आगे या पहले ।

अगमनीया–वि० [सं०] (वह स्त्री) जिस के साथ गमन या संभोग करना वर्जित हो और बहुत बड़ा पाप माना जाता हो ।

अगमानी*–पुं० [सं० अग्रगामी] अगुआ । नायक । सरदार ।
*स्त्री० दे० 'अगवानी' ।

अगम्य–वि० [सं०] [भाव० अगम्यता] १. जिसके अन्दर या पास न पहुँच सकें । दुर्गम । २. जिसे समझना कठिन हो ।

अगम्या–वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध हो । जैसे—गुरुपत्नी, राजपत्नी, सौतेली माँ आदि ।

अगर–अव्य० [फा०] यदि । जो ।
पुं० [सं० अगरु] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है । ऊद ।

अगरना*–अ० [सं० अग्र] आगे बढ़ना ।

अगर-बत्ती–स्त्री० [सं० अगरु + हिं० बत्ती] सुगन्ध के निमित्त जलाने की बत्ती ।

अगरा*–वि० [हिं० अगला] १. आगे का । अगला । २. औरों से बढ़कर या श्रेष्ठ । ३. बहुत । अधिक ।

अगराना*–स० [सं० अंग] प्यार या दुलार से छूना ।

अगरी–स्त्री० [सं० अर्गल] लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्ले में कोंढ़ा लगाकर डाला रहता है । ब्योंड़ा । स्त्री० [सं० अगिर = अवाच्य] अंड-बंड या बुरी बात । अनुचित बात ।

अगरु–पुं० [सं०] अगर या ऊद नाम की सुगन्धित लकड़ी ।

अगरो*–वि० [सं० अग्र] १. आगे का । अगला । २. बड़ा । ३. कुशल । चतुर ।

अगल-बगल–क्रि० वि० [फा० बगल] इधर-उधर । आस-पास ।

अगला–वि० [सं० अग्र] १. आगे या सामने का । २. पहले का । ३. पुराना । ४. जो अभी आने को हो । आनेवाला । आगामी । ५. बाद या पीछे का । परवर्त्ती । दूसरा ।

अगवना*–अ० [हिं० आगे] स्वागत करने के लिए आगे बढ़ना ।

अगवाड़ा–पुं० [सं० अग्रवाट] घर के आगे का भाग । 'पिछवाड़ा' का उलटा ।

अगवान–पुं० [हिं० अगवानी] वह जो आगे बढ़कर अगवानी करता हो ।

अगवानी–स्त्री० [हिं० आगे] किसी आनेवाले का सत्कार करने के लिए आगे बढ़ना । स्वागत ।

अगसरना*–अ० दे० 'अगुसरना' ।

अगसार*–क्रि० वि० = आगे ।

अगस्त्य–पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि । २. एक प्रसिद्ध तारा । ३. एक वृक्ष जिसमें लाल या सफेद फूल होते हैं ।

अगहन–पुं० [सं० अग्रहायण] [वि० अगहनियाँ, अगहनी] कार्तिक के और पूस के पहले का महीना ।

अगाऊ–वि० [हिं० आगे] (धन) किसी काम के लिए पहले दिया अग्रिम । पेशगी । (एडवान्स)

अगाड़*–क्रि० वि० [सं० अग्र] आगे । सामने । २. पहले । पूर्व ।

अगाड़ी–क्रि० वि० [हिं० अगाड़ भविष्य में । २. सामने । आगे । ३. स्त्री० १. किसी वस्तु के आगे या साम भाग । २. घोड़े के गले में बँधी हु रस्सियाँ जो इधर-उधर दो खूँटों से रहती हैं ।

अगाध–वि० [सं०] जिसकी गहरा थाह का पता न चले । बहुत गहरा ।

अगान*–वि०, पुं० = अज्ञान ।

अगामै*–क्रि० वि० = आगे ।

अगार (री)*–क्रि० वि० = आगे ।

अगाह*–वि० [सं० अगाध] १. अ बहुत गहरा । २. अत्यंत । बहुत । क्रि० वि० आगे से । पहले से । वि० दे० 'आगाह' ।

अगि-दाहु*–पुं० = अग्नि-दाह ।

अगिन–स्त्री० [सं० अग्नि] [क्रि० याना] १. अग्नि । आग । प्रकार की छोटी चिड़िया । ३. अगिया वि० [सं० अ = नहीं + हिं० गि अगणित । बेशुमार ।

अगिन गोला–पुं० [हिं० अगिन + (बम का) वह गोला जिसके फटने से लग जाती हो ।

अगिन बोट–पुं० [सं० अग्नि बोट] वह बड़ी नाव जो भाप के जोर से चलती है । धूआँकश । स्टीम

अगिनित*–वि० = अगणित ।

अगिया–स्त्री० [सं० अग्नि] प्रकार की घास । २. नीली चाय । घास । ३. एक पहाड़ी पौधा जिसके

हरीले रोएँ होते हैं। ३. अगिया सन नाम घास।

० आग की तरह जलन उत्पन्न करनेवाला।

से-अगिया सन।

गयाना-अ० [हिं० आग] आग गने की-सी जलन या दाह होना।

गया बैताल-पुं० [सं० अग्नि, प्रा० गि + बैताल] १. विक्रमादित्य के कल्पित बैतालों में से एक। २. दे० 'छलावा'।

गयारी-स्त्री० [सं० अग्निकार्य्य] ाग में सुगन्धित द्रव्य डालने की पूजन-धि। धूप देने की क्रिया।

गया सन-पुं० [हिं आग + सन (पौधा)] क पौधा जिसकी पत्ती छूने से शरीर में न होती है।

गला*-वि० = अगला।

आ-पुं० [सं० अग्रपद, प्रा० गवय] १. आगे चलनेवाला। नेता। क। २. मुखिया। प्रधान। ३. पथ-क। मार्ग बतानेवाला।

आई*-स्त्री० [हिं० आगे] १. सब-आगे होने की क्रिया या भाव। २. नेतृत्व। दारी। ३. आगे बढ़कर मार्ग दिखाने क्रिया या भाव।

आना-स० [हिं० अगुआ] अगुआ ना। सरदार नियत करना। आगे होना। बढ़ना।

आनी*-स्त्री० = अगवानी।

ण-वि० [सं०] १. रज, तम आदि गुणों हित। निर्गुण। २. निर्गुण। मूर्ख। अवगुण। दोष।

ताना*-अ० = उकताना।

रु-वि० [सं०] १. जो भारी न हो। का। २. जिसने गुरु से शिक्षा या देश न पाया हो।

वा-पुं० दे० 'अगुआ'।

सरना*-अ० [सं० अग्रसर] [स० सारना] आगे बढ़ना।

अगेर*-क्रि० वि० = आगे।

अगेह-वि० [हिं० अ + गेह] जिसके रहने का घर-बार न हो।

अगोई*-वि० स्त्री० [सं० अ + गोपन] १. जो गुप्त या छिपा न हो। २. प्रकट। ज़ाहिर।

अगोचर-वि० [सं०] जो केवल इन्द्रियों के द्वारा जाना जा सके। जो देखा, सुना या समझा न जा सके।

अगोटना-स० [सं० आगुंठन] १. रोकना। छेकना। २. पहरे में रखना। ३. छिपाना। ४. चारो ओर से घेरना।

स० [सं० अंग + हिं० ओट] १. अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. पसंद करना। चुनना।

अगोरना-स० [सं० आगूरण] १. राह देखना। प्रतीक्षा करना। २. रखवाली या चौकसी करना।

स० रोकना। छेकना।

अगोरिया-पुं० [हिं० अगोरना] अगोरने या रखवाली करनेवाला।

अगौंहैं*-क्रि० वि० [सं० अग्रमुख] आगे की ओर।

अगौला-पुं० [हिं० आगे + औला (प्रत्य०)] ऊख या गन्ने का अगला भाग।

अग्नि-स्त्री० [सं०] [वि० आग्नेय] १. जलती हुई लकड़ी, कोयला या इसी प्रकार की और कोई वस्तु या उस वस्तु के जलने पर होनेवाला प्रकाश-युक्त ताप। २. पेट की वह शक्ति जिससे भोजन पचता है। ३. किसी प्रकार की जलन या ताप। ४. पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा या कोना। ५. क्षत्रियों का एक प्रसिद्ध वंश या कुल।

अग्नि-कर्म-पुं० [सं०] मरे हुए व्यक्ति का जलाया जाना।

अग्नि-कवच-वि० [सं०] (पदार्थ) जो अग्नि में पड़ने पर भी न जले और उसके प्रभाव से रक्षित रहे। (फायर प्रूफ) जैसे—अग्नि-कवच तिजोरी।

अग्नि-कांड–पुं० [सं०] ऐसी आग लगना जो चारो ओर फैले । आग लगना । (कॉन-फ्लेगरेशन)

अग्नि-कोण–पुं० [सं०] पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना ।

अग्नि-क्रीड़ा–स्त्री० [सं०] आतिशबाजी ।

अग्निज–वि० [सं०] १. अग्नि से उत्पन्न। २. अग्नि या उसके ताप से होने या बनने-वाला । (इग्नियस)

अग्नि-दाह–पुं० [सं०] १. जलाना । २. शव-दाह । मुर्दा जलाना ।

अग्नि-दीपन–पुं० [सं०] [वि० अग्नि-दीपक] वह औषध या उपचार जिससे भोजन पचानेवाली पेट की अग्नि बढ़ती हो ।

अग्नि-परीक्षा–स्त्री० [सं०] १. प्राचीन काल की एक परीक्षा जिसमें कोई व्यक्ति हाथ में आग लेकर या आग में बैठकर अपना निर्दोष होना सिद्ध करता था । २. बहुत कठिन परीक्षा या जाँच, जिसमें सब लोग या सब बातें जल्दी पूरी न उतर सकती हों । (एसिड टेस्ट)

अग्नि-पूजक–पुं० [सं०] वह जो अग्नि को देवता मानकर पूजे । जैसे–पारसी ।

अग्नि-मांद्य–पुं० [सं०] वह अवस्था या रोग जिसमें भोजन ठीक तरह से नहीं बल्कि कम पचता हो और पेट की अग्नि मंद पड़ गई हो ।

अग्नि-वर्द्धक–वि० [सं०] जिससे पेट की अग्नि या भोजन पचाने की शक्ति बढ़े ।

अग्नि-वर्षा–स्त्री० [सं०] १. आग या जलती हुई वस्तुएँ बरसाना । २. लड़ाई में गोलियाँ-गोले बरसाना ।

अग्नि-वाण–पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाण जिसे चलाने पर आग बरसती थी ।

अग्नि-शिखा–स्त्री० [सं०] आग की लपट या लौ ।

अग्नि-संस्कार–पुं० दे० 'अग्नि-कर्म' ।

अग्नि-होत्र–पुं० [सं०] वेदों में ब हुआ एक प्रकार का होम, जो नित्य जाता है और जिसकी आग कभी नहीं दी जाती ।

अग्नि-होत्री–पुं० [सं०] वह जो अग्नि-होत्र करता हो ।

अग्न्यस्त्र–पुं० दे० 'आग्नेय-अस्त्र' ।

अग्र–वि० [सं०] १. आगे या सामने अगला । २. प्रधान । मुख्य ।

क्रि० वि० आगे । सामने ।

अग्रगण्य–वि० [सं०] १. गिनत जिसका नाम सबसे पहले आता हो । सबसे अच्छा । श्रेष्ठ । उत्तम ।

अग्रगामी–पुं० [सं० अग्रगामिन्] जो सबके आगे चलता हो। औरों अपने पीछे लेकर चलनेवाला ।

अग्रज–पुं० [सं०] बड़ा भाई ।

वि० १. जो पहले उत्पन्न हुआ २. श्रेष्ठ । उत्तम । अच्छा ।

अग्रणी–पुं० [सं०] वह जो सबके रहता हो । नायक । नेता । अगुआ ।

वि० [सं०] उत्तम । श्रेष्ठ ।

अग्रदान–पुं० [सं०] देन या दातव्य पहले से दे देना । अग्रिम । पेशगी ।

अग्रदूत–पुं० [सं०] वह जा किसी से आकर उसके आने की सूचना दे । (हेर

अग्र-पूजा–स्त्री० [सं०] किसी की पूजा जो औरों से पहले की जाय ।

अग्रवर्ती–वि० [सं० अग्रवर्त्तिन्] आगे रहनेवाला ।

अग्रशोची–पुं० [सं०] आने या भ में होनेवाली बातों का पहले से ही करनेवाला । दूरदर्शी ।

अग्रसर–वि० [सं०] [भाव० अग्रस आगे बढ़ा हुआ ।

पुं० १. नेता । अगुआ । प्रधान व्य मुखिया । २. सामाजिक, धार्मिक राजनीतिक आदि विचारों, व्यवहारों

पट 24(2)

कार्य्यों में औरों की अपेक्षा आगे बढ़ा हुआ और अधिक उदार। प्रगतिशील।

अग्रसारण-पुं० [सं०] [वि० अग्रसारित, कर्त्ता अग्रसारी] १. आगे की ओर बढ़ाना। २. किसी का निवेदन, प्रार्थना आदि उचित आज्ञा के लिए अपने से बड़े अधिकारी के पास भेजना। (फॉरवर्डिंग)

अग्रसारित-वि० [सं०] १. आगे बढ़ाया हुआ। २. (किसी का निवेदन, उचित आज्ञा आदि के लिए) बड़े अधिकारी के पास भेजा हुआ। (फॉरवर्डेड)

9.2 24(2)

अग्रहायण-पुं० [सं०] कार्त्तिक के बाद और पूस के पहले का महीना। अगहन।

अग्रासन-पुं० [सं०] सबसे आगे का या ऊँचा आसन जो किसी मान्य व्यक्ति को उसका आदर करने और उसके प्रति अपनी श्रद्धा दिखाने के लिए उसे दिया जाता है।

अग्राह्य-वि० [सं०] [भाव० अग्राह्यता] जिसे ग्रहण न किया जा सके। २. जो माना न जा सके।

अग्रिम-वि० [सं०] १. वस्तु लेने से पहले चुकाया जानेवाला (मूल्य)। अगाऊ। पेशगी। २. आगे आनेवाला। आगामी।

अघ-पुं० [सं०] १. पाप। पातक। २. दुःख। ३. व्यसन।

अघट-वि० [सं० अ+घटना] १. जो घटित न हो। न होनेवाला। २. दुर्घट। कठिन। ३. ठीक न बैठनेवाला। बे-मेल। वि० [हिं० अ+घट (घटना)] १. न घटनेवाला। कम न होनेवाला। २. सदा एक-सा रहनेवाला। एक-रस।

अघटन-पुं० [सं०] [वि० अघटित] १. न घटना या न होना। २. वह जिसकी घटना न हो सके। असम्भव।

अघटित-वि० [सं०] १. जो या जैसा पहले न हुआ हो। अभूत-पूर्व। २. बिलकुल नया या अनोखा। (अ+घट=घटना) जो किसी की तुलना में बहुत घटकर न हो।

अघमर्षण-वि० [सं०] पापों का नाश करनेवाला। पाप-नाशक।

अघवाना-स० [हिं० अघाना] 'अघाना' का प्रेरणार्थक रूप। ऐसा काम करना जिससे कोई अघा जाय।

अघात*-पुं० दे० 'आघात'। वि० [हिं० अघाना] बहुत। यथेष्ट से अधिक।

अघाना-अ० [सं० अग्रह] १. कोई वस्तु आवश्यकता से अधिक प्राप्त होने पर परम प्रसन्न और सन्तुष्ट होना। २. किसी काम से जी भर जाने के कारण उकताना। ३. थकना। स० १. ऐसा काम करना जिससे कोई वस्तु प्राप्त करके कोई परम सन्तुष्ट और प्रसन्न हो। सन्तुष्ट और तृप्त करना। २. थकाना।

अघाव-पुं० [हिं० अघाना] अघाने की क्रिया या भाव। तृप्ति।

अघासुर-पुं० [सं०] एक असुर जो कंस का सेनापति था और जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

अघी-वि० [सं०] पापी।

अघोर-वि० [सं०] १. जो घोर या भीषण न हो। २. बहुत अधिक घोर।

अघोर-पंथ-पुं० [सं०] शिव का अनुयायी एक पंथ या सम्प्रदाय। (इस सम्प्रदाय के लोगों का आचरण प्रायः बहुत वीभत्स होता है।)

अघोर-पंथी-पुं० [सं० अघोर-पन्थिन्] अघोर-पंथ का अनुयायी। अघोरी। औघड़।

अघोरी-पुं० दे० 'अघोर-पंथी'।

अघोष-पुं० [सं०] व्याकरण का एक वर्ण-समूह जिसमें क ख च छ ट ठ त थ प फ श स और ष हैं। (ब्रीथ्ड)

अघ्रान*-पुं० दे० 'आघ्राण'।

अघ्रानना*-स० दे० 'सूँघना'।

अचंभव*-पुं० = अचंभा ।

अचंभा-पुं० [सं० असंभव] १. विस्मय । आश्चर्य । ताज्जुब । २. विस्मय की या आश्चर्यजनक बात ।

अचंभित*-वि० [हिं० अचंभा से बना हुआ · अशुद्ध रूप] जिसे अचंभा या आश्चर्य हुआ हो । चकित ।

अचंभो*-पुं० दे० 'अचंभा' ।

अचक-वि० [सं० चक] भर-पूर । पुं० भौचक्कापन । विस्मय । आश्चर्य ।

अचकन-स्त्री० [सं० कंचुक] अंगे की तरह का एक लम्बा पहनावा ।

अचकाँ*-क्रि० वि० = अचानक ।

अचका†-क्रि० वि० = अचानक ।

अचगरा-वि० [सं० अत्याकार] नटखट । पाजी । दुष्ट ।

अचगरी*-स्त्री० [हिं० अचगरा] दुष्टता । पाजीपन । नटखटी ।

अचना*-स० [सं० आचमन] आचमन करना ।

अ-चपल-वि० [सं०] १. जो चपल न हो । धीर, गंभीर और शान्त । २. बहुत अधिक चपल या चंचल ।

अ-चपली*-स्त्री० [हिं० अ-चपल] १. अ-चपल या अचंचल होने का भाव । २. बहुत चपलता के कारण किये जानेवाले कार्य । नटखटी । शरारत । ३. मनोविनोद के लिए की जानेवाली क्रीड़ा । किलोल । अठखेली ।

अचमन-पुं० दे० 'आचमन' ।

अचर-वि० [सं०] [भाव० अचरता] जो चलता न हो । गति-रहित । स्थावर ।

अचरज-पुं० = आश्चर्य ।

अचल-वि० [सं०] [स्त्री० अचला, भाव० अचलता] १. जो अपने स्थान से हटे या चले नहीं । (इम्मूवेबल) । २. स्थिर । अटल । दृढ़ । पुं० पर्वत । पहाड़ ।

अचल संपत्ति-स्त्री० [सं०] सम्पत्ति जो अपने स्थान पर अचल से स्थित हो और कहीं हटाई-बढ़ा जा सकती हो । (इम्मूवेबुल प्रॉपर्टी) खेत, घर आदि ।

अचला-वि० स्त्री० [सं०] जो न ठहरी हुई । स्थिर । स्त्री० पृथ्वी ।

अचवन*-पुं० दे० 'आचमन' ।

अचवना-स० [सं० आचमन आचमन करना । पीना । २. भोज बाद हाथ-मुँह धोना और कुल्ली क ३. छोड़ देना ।

अचवाना-स० हिं० 'अचवना' का प्रे

अचाका-क्रि० वि० दे० 'अचानक ।'

अचानक-क्रि० वि० [सं० अज्ञान एक-बारगी । सहसा । अकस्मात् ।

अचार-पुं० [फा०] मसालों के तेल में या यों ही कुछ दिन रखकर किया हुआ फल या तरकारी । अथान *पुं० दे० 'आचार' ।
पुं० [सं० चार] चिरौंजी का पेड़ ।

अचारज*-पुं० = आचार्य ।

अचारी-स्त्री० [हिं० अचार] आ एक प्रकार का अचार ।
*पुं० [सं० आचारी] वह जो ध आचार-विचार का पूरा पूरा ध्यान और पालन करता हो ।

अचाह-स्त्री० [हिं० अ + चाह] अचाहा] चाह या इच्छा न होना । वि० जिसे चाह या इच्छा न हो ।

अचाही*-वि० [हिं० अ + चाह] किसी बात की चाह या इच्छा न निस्पृह ।

अचिंतनीय-वि० [सं०] जो ध्य न आ सके । अज्ञेय । दुर्बोध ।

अचिंत्य-वि० [सं०] १. जिसका

न हो सके। अज्ञेय। कल्पनातीत। २. जिसका अन्दाजा न हो सके। अतुल। ३. आशा से अधिक। ४. आकस्मिक।

अचिर-क्रि॰ वि॰ [सं॰] [भाव॰ अचिरता] १. शीघ्र। जल्दी। २. तुरन्त। तत्काल। उसी समय।

वि॰ १. थोड़ा। अल्प। २. थोड़े समय तक रहनेवाला।

अचिरात्-क्रि॰ वि॰ [सं॰] १. तुरन्त। तत्काल। २. जल्दी।

अचूक-वि॰ [सं॰ अच्युत] १. न चूकनेवाला। २. अपना प्रभाव या फल अवश्य दिखलानेवाला। ३. भ्रम-रहित। ठीक। पक्का।

क्रि॰ वि॰ १. सफाई से। कौशल से। २. निश्चय। अवश्य। जरूर।

अचेत-वि॰ दे॰ 'अचेतन'।

अचेतन-वि॰ [सं॰] १. जिसमें चेतना, ज्ञान या संज्ञा न हो। २. बेहोश। ३. जिसमें जीवन या प्राण न हों। जड़। 'चेतन' का उल्टा।

अचेष्ट-वि॰ [सं॰] जिसमें कोई चेष्टा या गति न हो। जो हिलता-डुलता न हो।

अचेष्टित-वि॰ [सं॰] जिसके लिए कोई चेष्टा या प्रयत्न न हुआ हो।

अचैतन्य-वि॰ [सं॰] जिसमें चेतना या चैतन्य न हो।

अचैन*-पुं॰ [हिं॰ अ + चैन] चैन या सुख-शान्ति का अभाव।

वि॰ जिसे चैन न मिल रहा हो। विकल। व्याकुल।

अचोना*-पुं॰ [हिं॰ आचमन] वह बरतन जिसमें हाथ-मुँह धोते या कुल्ला करते हैं। स॰ = आचमन करना।

अच्छ*-वि॰ [सं॰] स्वच्छ। निर्मल।

पुं॰ दे॰ 'अक्ष'।

अच्छत*-वि॰ पुं॰ दे॰ 'अक्षत'।

अच्छर*-वि॰ पुं॰ दे॰ 'अक्षर'।

अच्छरा*-स्त्री॰ दे॰ 'अप्सरा'।

अच्छा-वि॰ [सं॰ अच्छ] १. उत्तम। बढ़िया।

मुहा॰-अच्छे आना = ठीक या उपयुक्त अवसर पर आना। **अच्छे दिन** = सुख-सम्पत्ति के दिन।

२. स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग।

क्रि॰ वि॰ अच्छी तरह। खूब।

अच्छाई-स्त्री॰ दे॰ 'अच्छापन'।

अच्छापन-पुं॰ [हिं॰ अच्छा + हिं॰ पन] अच्छे होने का भाव। उत्तमता।

अच्छि*-स्त्री॰ [सं॰ अक्ष] आँख। नेत्र।

अच्छे-क्रि॰ वि॰ [हिं॰ अच्छा] अच्छी या ठीक तरह से।

पुं॰ १. बड़े आदमी। श्रेष्ठ पुरुष। २. गुरुजन। बड़े-बूढ़े।

अच्युत-वि॰ [सं॰] [भाव॰ अच्युति] अपने स्थान से न हटने या न गिरनेवाला।

पुं॰ १. विष्णु। २. कृष्ण।

अछक*-वि॰ [हिं॰ अ + छकना = तृप्त होना] जो छका या तृप्त न हुआ हो। अतृप्त।

अछत†-क्रि॰ वि॰ [हिं॰ 'आछना' का कृदंत रूप] १. रहते हुए। २. उपस्थिति में।

अछताना-अ॰ हिं॰ 'पछताना' का अनु॰। जैसे—अछता-पछताकर।

अछन*-पुं॰ [सं॰ अ + क्षण] बहुत दिन। दीर्घ काल। चिर काल।

क्रि॰ वि॰ धीरे धीरे। ठहर ठहरकर।

अछना*-अ॰ [सं॰ अस्] विद्यमान रहना। मौजूद होना। रहना।

अछरा*-स्त्री॰ दे॰ 'अप्सरा'।

अछरी*-स्त्री॰ १. दे॰ 'अप्सरा'। २. दे॰ 'अक्षरी'।

अछरौटी-स्त्री॰ दे॰ 'अखरौटी'।

अछवाई*-स्त्री॰ [हिं॰ अच्छा] १. अच्छापन। अच्छाई। २. स्वच्छता। सफाई।

अछवाना*-स॰ [सं॰ अच्छ = साफ़] १.

साफ करना । २. सँवारना ।

अछवानी-स्त्री० [हिं० अजवायन] कुछ मसालों को पीसकर घी में पकाया हुआ चूर्ण जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाते हैं ।

अछाम*-वि० [हिं० अ + छाम] खूब मोटा, बड़ा या भारी ।

अछूत-वि० [सं० अ = नहीं + छूत] १. अछूता । अस्पृष्ट । २. जो काम में न लाया गया हो । नया । ताजा । ३. जिसे अपवित्र मानकर लोग न छूते हों । अस्पृश्य ।

अछूता-वि० [सं० अ = नहीं + छूत = छूआ हुआ] [स्त्री० अछूती] १. जिसे अभी तक किसी ने छूआ न हो । अस्पृष्ट । २. जो काम में न लाया गया हो । नया । कोरा । ताजा । ३. जिसपर अभी तक किसी ने विचार या विवेचन न किया हो । जैसे—अछूता विषय ।

अछूतोद्धार–पुं० [हिं अछूत + सं० उद्धार] अछूतों या अंत्यजों का उद्धार । (अशुद्ध यौगिक)

अछेद*-वि० [हिं० अ + छेद] जो छेदा न जा सके । अभेद्य ।

पुं० भेद, भिन्नता आदि का अभाव ।

अछेद्य-वि० [सं०] जो छेदा न जा सके ।

अछेव*-वि० = निष्कलंक ।

अछेह*-क्रि० वि० = निरंतर ।

अछोर*-वि० [हिं० अ + छोर] १. अनन्त । असीम । २. बहुत अधिक ।

अज-वि० [सं०] [स्त्री० अजा] जिसका जन्म न हुआ हो, बल्कि जो आपसे आप हुआ हो । जैसे-ईश्वर ।

पुं० १. ईश्वर । २. ब्रह्मा । ३. बकरी ।

अजगर-पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत बड़ा और मोटा साँप ।

अजगुत*-पुं० [सं० अयुक्त] अद्भुत या विलक्षण बात ।

अजगुतहाया*-वि० [हिं० अजगुत + हाया (प्रत्य०)] विलक्षण । अनोखा ।

अजगैबी-वि० [फा० अज + अ० गै १. छिपा हुआ । गुप्त । २. अचानक वाला । आकस्मिक ।

अजनबी-वि० [अ०] १. अज्ञात । परिचित । २. नया आया हुआ । परदे

अजन्मा-वि० [सं०] १. जो हो तो पर बिना जन्म लिये हो । जैसे-ईश्वर । जारज । दोगला ।

अजपा-वि० [सं०] १. जिसका जोर से जप न किया जाय । २. जा जप जाय । ३. जो जप न करे ।

पुं० तांत्रिकों का एक प्रकार का मंत्र जिस जप नहीं किया जाता, मन ही मन मात्र किया जाता है ।

अजब-वि० [अ०] विलक्षण । अद्भुत विचित्र । अनोखा ।

अजमाना*-स० = आजमाना ।

अजय–पुं० [सं०] पराजय । हार ।

वि० जो जीता न जा सके । अजेय ।

अजर-वि० [सं०] जिसे जरा बुढ़ापा न आवे । सदा ज्यों का त्यों रह वाला ।

अजरायल*-वि० [सं० अजर] १. और स्थायी । पक्का ।

अजराल*-वि० दे० 'अजरायल' ।

अजवायन-स्त्री० [सं० यवानिका] ए पौधा जिसके सुगन्धित बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं । यवानी ।

अजस*-पुं० [सं० अयश] अपयश । अपकीर्ति । बदनामी ।

अजसी*-वि० [हिं० अजस] १. जि अच्छा काम करने पर भी यश न मिल हो । २. लोक में जिसका अपयश फैल हो । बदनाम ।

अजस्र-वि० [सं०] [भाव० अजस्रता बहुत अधिक । अपरिमित ।

क्रि० वि० लगातार । निरन्तर ।

अजहुँ (हूँ)-क्रि० वि० [हिं० आज + हूँ

प्रत्य०)] अभी तक । इस समय तक ।

जा-स्त्री० [सं०] १. बकरी । २ दुर्गा ।

जाचक*-वि० [हिं० अ + याचक] कभी किसी से कुछ माँगता न हो ।

जात-वि० [सं०] १. जो हो तो, पर सका जन्म न हुआ हो । २. जो अभी मा न हो ।

० [सं० अ + जाति] १. जिसकी कोई ति न हो । २. जाति से निकाला हुआ ।

ात-शत्रु-वि० [सं०] जिसका कोई त्रु न हो ।

० १. राजा युधिष्ठिर का एक नाम । २. ाध के राजा बिंबिसार का पुत्र जो गौतम द्ध के समय में हुआ था ।

जाती-वि० [सं० अ + जाति] जाति निकाला हुआ । पंक्ति-च्युत ।

ान-वि० [हिं० अ + जानना] १. जो जाने । अनजान । अबोध । ना-समझ । अपरिचित । अज्ञात ।

० अज्ञान । अनभिज्ञता ।

ानता*-स्त्री० = अज्ञान ।

ान बीरो-पुं० [हिं० अजान ? + बीरो = धा] एक प्रकार का पौधा ।

ाय*-वि० [अ = नहीं + फा० जा] ा । अनुचित ।

ायब घर-पुं० [अं० अजायब + हिं० र] वह स्थान जिसमें अनेक प्रकार की द्भुत, विलक्षण और कला-कौशल की तुएँ जन-साधारण के देखने के लिए स्थायी प से रक्खी रहती हैं । (म्यूजियम)

जिऔरा*-पुं० [हिं० आजी + सं० मिल र] आजी या दादी के पिता का घर ।

जित-वि० [सं०] जिसे जीत न सकें ।

जिर-पुं० [सं०] १. आँगन । सहन । वायु । हवा । ३. शरीर । ४. इन्द्रियों ा विषय ।

जी-अव्य० [सं० अयि या हिं० ऐ जी] म्बोधन का शब्द । हे जी ।

अजीब-वि० [अ०] विलक्षण । विचित्र । अनोखा । अनूठा ।

अजीरन-पुं० = अजीर्ण ।

अजीर्ण-पुं० [सं०] १. वह रोग जिसमें भोजन नहीं पचता । अपच । बद-हजमी । २. किसी वस्तु का इतना अधिक हो जाना कि वह सँभाली न जा सके ।

वि० जो जीर्ण या पुराना न हो । नया ।

अजीव-पुं० [सं०] जीव-तत्व से रहित या भिन्न, जड़ पदार्थ । अचेतन ।

वि० बिना प्राण का । मृत ।

अजुगति*-स्त्री० [सं० अयुक्त] विलक्षण या अनहोनी बात ।

अजूजा*-पुं० [देश०] बिज्जू की तरह का एक जानवर जो मुरदे खाता है ।

अजूबा-वि० [अ०] अद्भुत । अनोखा ।

अजूरा*-पुं० [हिं० अ + जुड़ना] जो जुड़ा न हो । पृथक् । अलग ।

पुं० [अ०] १. मजदूरी । २. भाड़ा ।

अजूह*-पुं० [सं० युद्ध] युद्ध । लड़ाई ।

अजेय-वि० [सं०] [भाव० अजेयता] जिसे कोई जीत न सके ।

अजैव-वि० [सं०] जो जैव या जीवन से युक्त न हो । (इन-आर्गेनिक)

अजोग*-पुं० [हिं० अ + योग] बुरा या खराब योग ।

वि० = अयोग्य ।

अजौं*-क्रि० वि० [सं० अद्य] अब तक ।

अज्ञ-वि० [सं०] [भाव० अज्ञता] जो कुछ जानता न हो; या जिसे कुछ आता न हो । मूर्ख । नासमझ ।

अज्ञा*-स्त्री० = आज्ञा ।

अज्ञात-वि० [सं०] १. जो जाना हुआ न हो । बिना जाना । २. छिपा हुआ । गुप्त । ३. जिसको किसी प्रकार जान न सकें । अगोचर ।

अज्ञातनामा-वि० [सं०] १. जिसका नाम विदित न हो । २. अविख्यात ।

अज्ञात-यौवना-स्त्री॰ [सं॰] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आगमन का ज्ञान न हो।

अज्ञात-वास-पुं॰ [सं॰] ऐसे स्थान का निवास जहाँ कोई पता न पा सके। छिपकर रहना।

अज्ञान-पुं॰ [सं॰] १. ज्ञान या बोध का अभाव। २. जड़ता। मूर्खता। ३. जीवात्मा को गुण और गुण के कार्यों से पृथक् न समझने का अविवेक। (अध्यात्म) ३. न्याय में एक निग्रह स्थान। ४. किसी विषय का ज्ञान या परिचय न होगा। ज्ञान आदि का अभाव। (इग्नरेन्स)

वि॰ मूर्ख। ना-समझ।

अज्ञानता-स्त्री॰ [सं॰] १. 'अज्ञान' का भाव, धर्म या गुण। २. किसी बात से परिचित न होने का भाव। ३. मूर्खता। ना-समझी।

अज्ञानी-वि॰ [सं॰] मूर्ख। ना-समझ।

अज्ञेय-वि॰ [सं॰] जो समझ में न आ सके। ज्ञानातीत। बोधागम्य।

अज्ञेयवाद-पुं॰ [सं॰] यह सिद्धान्त कि दृश्य जगत से परे जो कुछ है, वह जाना नहीं जा सकता। (एग्नॉस्टिसिज्म)

अझर*-वि॰ [सं॰ अ = नहीं + झर] १. जो न झरे। जो न गिरे। २. जो न बरसे। (बादल)

अझूना*-वि॰ [हिं॰ अ + सं॰ जीर्ण] ज्यों का त्यों रहनेवाला। स्थायी।

अटंबर-पुं॰ [सं॰ अट्ट + फा॰ अंबार] अटाला। ढेर। राशि।

अट-स्त्री॰ [हिं॰ अटक] बन्ध। शर्त्त।

अटक-स्त्री॰ [हिं॰ अटकना] १. अटकने की क्रिया या भाव। २. रोक। रुकावट। ३. अड़चन। बाधा। ४. संकोच।

अटकन*-स्त्री॰ = अटक।

अटकना-अ॰ [हिं॰ अ + टिकना] [स॰ अटकाना] १. चलते चलते रुकना। अड़ना। २. फँसकर रुकना। ३. झगड़ा करना

अटकर*-स्त्री॰ = अटकल।

अटकल-स्त्री॰ [?] अनुमान। अन

अटकल-पच्चू-वि॰ [हिं॰ अटकल] अटकल या अनुमान से सोचा या हुआ।

अटका-पुं॰ [?] जगन्नाथ जी को जानेवाला भात और धन।

अटकाना-स॰ [हिं॰ अटकना] १. रो ठहराना। २. अड़ाना। फँसाना। करने में विलम्ब करना।

अटकाव-पुं॰ [हिं॰ अटकना] १. कने की क्रिया या भाव। २. रोक। वट। प्रतिबन्ध। ३. बाधा। विघ्न।

अट-खट*-वि॰ दे॰ 'अट्ट-सट्ट'।

अटन-पुं॰ [सं॰] घूमना। फिरना।

अटना-अ॰ [सं॰ अटन] १. घू फिरना। २. यात्रा करना। सफर क

अ॰ [हिं॰ ओट] आड़ करना। करना। छेकना।

अ॰ दे॰ 'अँटना'

अट-पट(ा)-वि॰ [अनु॰] [स्त्री॰ अ १. बे-ठिकाने का। बे-सिर-पैर का विकट। कठिन। ३. जिसका अ संगति ठीक न बैठे। अ-सम्बद्ध। जैसे पट बानी।

अटपटाना-अ॰ [हिं॰ अटपट] अटकना। लड़खड़ाना। २. गड़ब चूकना। ३. हिचकना। संकोच करना

अट-पटी*-स्त्री॰ [हिं॰ अटपट] खटी। शरारत। अन-रीति।

अटम्बर*-पुं॰ [सं॰ आडम्बर] १. म्बर। २. दर्प।

अटल-वि॰ [हिं॰ अ + टलना] [अटलता] १. जो अपने स्थान से टले नहीं। स्थिर। २. दृढ़। पक्का अवश्य होनेवाला।

अटवाटी-खटवाटी-स्त्री॰ [हिं॰

खाट, बिस्तर आदि सोने का सामान ।

टवी-स्त्री० [सं०] १. जंगल । बन । २. मैदान ।

टा-स्त्री० दे० 'अटारी' ।

टाउ*-पुं० [हिं० अटक] १. वैमनस्य । द्वेष । वैर-विरोध । बिगाड़ । २. पाजीपन । दुष्टता । शरारत ।

टाटूट-वि० [सं० अट्टट्ट] बहुत अधिक । क्रि० वि० एक दम से । बिलकुल । परम ।

टारी-स्त्री० [सं० अट्टाली] घर का ऊपरी भाग । कोठा ।

टाल-पुं० दे० 'अटाला' ।

टाला-पुं० [सं० अट्टाल] ढेर । राशि ।

टित-वि० [सं० अटन] घुमावदार ।

वि० [सं० अटा] अटारियों या ऊँचे मकानों से युक्त । (नगर)

टूट-वि० [सं० अ = नहीं + हिं० टूटना] १. न टूटने योग्य । दृढ़ । पुष्ट । मजबूत । २. जिसका पतन न हो । अजेय । ३. अखंड । लगातार । ४. बहुत अधिक ।

टेरन-पुं० [सं० अति + ईरण] [क्रि० अटेरना] १. सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक यंत्र । २. घोड़े को कावा या चक्कर देने की एक रीति ।

टेरना-स० [हिं० अटेरन] १. अटेरन से सूत की आँटी बनाना । २. मात्रा से अधिक मद्य या नशा पीना ।

ट्ट-पुं० [द्रविड़ से गृहीत, सं०] १. बड़ा मकान । भवन । २. अटारी । कोठा । ३. हाट । बाजार ।

वि० ऊँचा । उच्च ।

ट्ट-सट्ट-वि० [अनु०] अंड-बंड । ऊट-पटाँग । (—बकना)

ट्टहास-पुं० [सं०] खूब जोर की हँसी । ठहाका ।

ट्टालिका-स्त्री० [सं०] १. बड़ा और ऊँचा मकान । २. अटारी । कोठा ।

ट्टी-स्त्री० [हिं० अंठी] । अटेरन पर लपेटा हुआ सूत या ऊन । लच्छा ।

अठंग*-पुं० [सं० अष्टांग] योग, जिसके आठ अंग माने गये हैं ।

अठ-वि० दे० 'आठ' । (यौगिक शब्दों के आरम्भ में; जैसे—अठ-पहलू)

अठ-कौशल-पुं० [सं० अष्ट-कौशल] १. गोष्ठी । पंचायत । २. सलाह । मंत्रणा ।

अठखेली-स्त्री० [सं० अष्टकेलि] १. विनोद । क्रीड़ा । २. चपलता । चुलबुलापन । ३. किसी के साथ की जानेवाली छेड़छाड़ ।

अठन्नी-स्त्री० [हिं० आठ + आना] आठ आने का सिक्का ।

अठ-पहला-वि० [हिं० आठ + पहल = पार्श्व] आठ पहलों या पार्श्वोंवाला ।

अठपाव*-पुं० [सं० अष्टवाद] उपद्रव । ऊधम । शरारत ।

अठ-पेजी-वि० [हिं० आठ + अं० पेज = पृष्ठ] (पुस्तकों आदि की छपाई में) जो कागज के एक ताव या तख्ते को चार बार मोड़कर आठ पृष्ठों के रूप में लाया गया हो । (ऑक्टेवो)

अठमासा-वि० [सं० अष्टमास] वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो ।

पुं० १. सीमंत संस्कार । २. वह खेत जो आषाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाय और जिसमें ईख बोई जाय ।

अठलाना-अ० [सं० अष्टवाद] १. ऐंठ दिखलाना । इतराना । २. चोचला करना । नखरा करना । ३. मदोन्मत्त होना । मस्ती दिखाना । ४. जान-बूझकर अनजान बनना ।

अठवना*-अ० [सं० आस्थान] १. अपने ठीक और पूरे रूप तक पहुँचना । जमना । २. ठनना ।

अठवाँसा-वि०, पुं० दे० 'अठमासा' ।

अठवारा-पुं० [हिं० आठ + सं वार] १. आठ दिन का समय । २. सप्ताह । हफ्ता ।

अठसिल्या*-स्त्री० [सं० अष्टशिला] राजा, देवता आदि का सिंहासन ।

अठाई*–वि० [सं० अष्टवादी] उत्पाती। नटखट। शरारती। उपद्रवी।

अठान–पुं० [सं० अ = नहीं + हिं० ठानना] १. न ठानने योग्य कार्य। अनुचित या कठिन काम। २. वैर। शत्रुता। ३. झगड़ा।

अठाना*–स० [सं० अट्ट = वध करना] सताना। पीड़ित करना।
स० [हिं० ठानना] मचाना। ठानना।

अठोतर-सौ–वि० (सं० अष्टोत्तर-शत) एक सौ आठ। सौ और आठ।

अड़ंगा–पुं० (हिं० अड़ाना + टाँग) १. टाँग अड़ाना। रुकावट। २. बाधा।

अडंड*–वि० (सं० अ + दंड्य) १. जिसे दंड न दिया जा सकता हो। २. जिसे दंड देना उचित न हो।

अडंबर*–पुं० (हिं० अंबर-डंबर) सूर्योदय या सूर्यास्त के समय सूर्य की किरणों के कारण बादलों में दिखाई देनेवाली लाली।
पुं० दे० 'आडंबर'।

अड़–स्त्री० [सं० हठ] हठ। जिद।

अड़गड़ा–पुं० [अनु०] १. बैल-गाड़ियों के ठहरने का स्थान। २. बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान।

अड़चन–स्त्री० [हिं० अड़ना + चलना] १. बाधा। विघ्न। २. कठिनता।

अड़चल–स्त्री० दे० 'अड़चन'।

अड़तल–स्त्री० [हिं० आड़] १. ओट। आड़। २. बहाना। मिस। ३. शरण। ४. दे० 'अड़चन'।

अड़दार–वि० [हिं० अड़ = हठ + फा० दार (प्रत्य०)] १. दुराग्रही। हठी। २. चलते समय बीच-बीच में रुकनेवाला। अड़ियल। ३. घमण्डी। अभिमानी। ४. मतवाला। मत्त। मस्त।

अड़ना–अ० [सं० अल = वारण करना] १. रुकना। ठहरना। २. हठ करना।

अड़बंग*–वि० [हिं० अड़ + सं० वक्र] १. टेढ़ा-मेढ़ा। अटपट। २. कठिन। ३. विलक्षण।

अडर*–वि० [सं० अ + हिं० डर] निर्भय। बेडर।

अड़हुल–पुं० [सं० ओड्र + फुल्ल] फूल। जपा या जवा पुष्प।

अड़ाड़–पुं० दे० 'अराड़'।

अड़ान–स्त्री० [हिं० अड़ना] १. या रुकने की जगह। २. अड़ने की या भाव। ३. पड़ाव।

अड़ाना–स० [हिं० अड़ना] १. टिक रोकना। ठहराना। अटकाना। २. टे डाट लगाना। ३. कोई वस्तु बीच में गति रोकना। ४. ठूसना। भरना। गिराना। ढरकाना।
पुं० १. एक राग। २. वह लकड़ी जो हुई छत या दीवार आदि को गिरने से के लिए उसके नीचे लगाई जाती डाट। चाँड़।

अड़ायता*–वि० [हिं० आड़] १. या ओट करनेवाला। २. अपनी श रखकर रक्षा करनेवाला।

अड़ार–पुं० [सं० अट्टाल = बुर्ज समूह। राशि। ढेर। २. बिक्री के रखा हुआ ईंधन का ढेर। ३. लक ईंधन की दूकान।
*वि० [सं० अराल] टेढ़ा। तिरछा।

अड़ारना*–स० दे० 'डालना'।

अडिग–वि० [हिं० अ + डिगना] स्थान से न डिगने या न हटनेवाला।

अड़ियल–वि० [हिं० अड़ना] १. कर चलनेवाला। चलते चलते रुक वाला। २. सुस्त। मट्ठर। ३. हठी।

अड़ी–स्त्री० [हिं० अड़ना] १. जिद। आग्रह। २. रोक। ३. जरूरत का व मौका।

अडीठ*–वि० [हिं० अ + डीठ] दिखाई न दे। २. छिपा हुआ। गुप्त

डूलना-स० [सं०उत् = ऊँचा + इल = कना] जल आदि ढालना । उँड़ेलना ।

डूसा-पुं० [सं० अटरूष] एक पौधा जसके फूल और पत्ते दवा के काम में ाते हैं ।

डैतो*-वि० दे० 'अड़ायता' ।

डोल-वि० [सं० अ = नहीं + हिं० लना] १. जो हिले नहीं । अटल । स्थिर। . स्तब्ध । चकित ।

ड़ोस-पड़ोस-पुं० [हिं० पड़ोस] आस-स । करीब ।

ड्डा-पुं० [सं० अट्टा = ऊँची जगह] १. कने की जगह । ठहरने का स्थान । २. कसी विशेष कार्य के लिए कुछ लोगों के लने या इकट्ठा होने की जगह । ३. केन्द्र थान । प्रधान स्थान । ४. चिड़ियों के ठने के लिए लकड़ी या लोहे का बना हुआ ाँचा या छड़ । ५. कबूतरों की छतरी । . कारीगरों के बैठकर काम करने की गह । ७. करघा ।

ढ़तिया-पुं० [हिं० आढ़त] १. वह कानदार जो ग्राहकों या महाजनों को माल रीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर चता है । आढ़त करनेवाला । २. दलाल ।

ढ़वना*- स० [सं० आज्ञापन] कोई ाम करने के लिए कहना । किसी को किसी ाम के लिए नियुक्त करना ।

ढ़वायक*-पुं० [?] वह जो औरों से ाम कराता हो ।

णिमा-स्त्री० [सं०] अष्ट-सिद्धियों में हली सिद्धि जिससे योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते ।

णु-पुं० [सं०] १. साठ परमाणुओं का एक प्राचीन मान। (विशेष दे० 'परमाणु') २. किसी वस्तु का बहुत ही छोटा टुकड़ा या कण । ३. रज-कण । ४. अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा ।

वि० १. अति सूक्ष्म । अत्यन्त छोटा । २. जो दिखाई न दे ।

अणु बम-पुं० [सं० अणु + अं० बॉम्ब] एक प्रकार का परम भीषण बम (गोला) ।

अणुवाद-पुं० [सं०] १. वह दर्शन या सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया हो। (रामानुज का) २. वैशेषिक दर्शन ।

अणुवादी-पुं० [सं० अणुवादिन्] वह जो अणुवाद के सिद्धान्त मानता हो ।

अणुवीक्षण-पुं० [सं०] १. सूक्ष्मदर्शक यंत्र। खुर्दबीन।२. बाल की खाल निकालना । छिद्रान्वेषण ।

अतंक*-पुं० दे० 'आतंक' ।

अतद्गुण-पुं० [सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के अपने पास की दूसरी वस्तु के गुण न ग्रहण करने का उल्लेख होता है ।

अतनु-पुं० [सं०] कामदेव ।

अतरक*-वि० = अतर्क्य ।

अतर्कित-वि० [सं०] १. जिसका पहले से अनुमान या कल्पना न हो । २. आकस्मिक । ३. अचानक आ पड़नेवाला । जैसे—अतर्कित व्यय ।

अतर्क्य-वि० [सं०] जिसके विषय में तर्क-वितर्क न हो सके ।

अतल-पुं० [सं०] सात पातालों में दूसरा पाताल ।

अतल-स्पर्शी-वि० [सं०] अतल को छूनेवाला । अत्यन्त गहरा । अथाह ।

अतलांतक-पुं० [अं० एटलान्टिक से सं० रूप] अफ्रिका और अमेरिका के बीच का महासमुद्र । (एटलांटिक)

अतवान†-वि० [सं० अति] बहुत । अधिक ।

अताई-वि० [अ०] १. दक्ष । कुशल । प्रवीण । २. धूर्त्त । चालाक । ३. जो किसी काम को बिना सीखे हुए करे ।

अति-वि० [सं०] बहुत । अधिक ।

स्त्री० अधिकता। ज्यादती।

उप० एक उपसर्ग जो कुछ शब्दों के पहले लगकर ये अर्थ देता है। (क) औचित्य या आवश्यकता से अधिक। जैसे—अति-उत्पादन। (ख) नियमित, नियत, साधारण या मध्यक से अधिक। जैसे—अति-जीवन। (ग) साधारण के सिवा। अतिरिक्त। जैसे—अति-मुद्रण।

अति-उत्पादन—पुं० [सं०] खेती की पैदावार या कल-कारखानों में तैयार होनेवाले माल की इतनी अधिकता होना कि उसकी पूरी पूरी खपत न हो सके। (ओवर-प्रोडक्शन)

अति-कर—पुं० दे० 'अधि-कर'।

अति-काल—पुं० [सं०] १. विलम्ब। देर। विकाल। (देखो) २. कुसमय।

अतिक्रम—पुं० [सं०] नियम या मर्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार।

अतिक्रमण—पुं० [सं०] अपने कार्य, अधिकार, क्षेत्र आदि की सीमा पार करके ऐसी जगह पहुँचना, जहाँ जाना या रहना अनुचित, मर्यादा-विरुद्ध या अवैध हो। सीमा का अनुचित उल्लंघन। (एन्क्रोचमेन्ट)

अतिक्रांत—वि० [सं०] १. हद के बाहर गया हुआ। २. बीता हुआ।

अतिक्रामक—पुं० [सं०] वह जो अपने अधिकार आदि की सीमा का उल्लंघन करके आगे बढ़े। दूसरे के अधिकारों में हस्तक्षेप करनेवाला।

अतिगति—स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

अतिचरण—पुं० १. दे० 'अतिक्रमण'। २. दे० 'अतिचार'।

अतिचार—पुं० [सं०] अपने अधिकार या अधिकृत सीमा के बाहर अनुचित रूप से और इस प्रकार जाना कि दूसरे के अधिकार में वाधा पहुँचे। (ट्रान्सग्रेशन)

अतिचारी—पुं० [सं०] वह जो अतिचार करता हो। अतिचार करनेवाला।

अति-जीवन—पुं० [सं०] साधारणतः का अन्त हो जानेपर भी, अथवा विशिष्ट घटनाओं के बाद भी बचा, जीता रहना। (सरवाइवल)

अतिथि—पुं० [सं०] १. घर में आया अज्ञातपूर्व व्यक्ति। अभ्यागत। मेहम पाहुन। २. वह संन्यासी जो किसी स्था एक रात से अधिक न ठहरे। व्रात्य अग्नि। ४. यज्ञ में सोम लता लानेवाल

अतिदिष्ट—वि० [सं०] [संज्ञा अतिदे १. जिसका किसी में अतिदेश हुआ आरोपित। २. अपनी नियत सीमा, आदि से आगे बढ़ाया हुआ। (एक्स्टें ३. धर्म्म, स्वरूप, प्रकृति आदि के से किसी के समान। (एनैलोगस)

अतिदेश—पुं० [सं०] [वि० अतिदि १. किसी विषय की किसी बात, नियम धर्म्म का दूसरे विषय में किया जाने आरोप। २. किसी कार्य्य या बात सीमा या अवधि आगे बढ़ाने की क्रिय भाव। विस्तारण। (एक्स्टेंशन) ३. भिन्न या विरोधी बातों या वस्तुओं में विशेष तत्वों की समानता। (एनॉले

अतिदेशन—पुं० [सं०] अतिदेश करने क्रिया या भाव।

अतिपात—पुं० [सं०] १. हिन्सा, षतः गृहस्थों द्वारा अनजान में नित्य वाली जीव-हिंसा। २. अव्यवस्था। वाधा। विघ्न। ४ दे० 'व्यपगति'।

अति-प्रजन—पुं० [सं० अति-प्रज किसी नगर या देश में रहनेवालों और वालों का इतना अधिक हो जाना कि उनका ठीक और पूरी तरह से निर्वाह सके। (ओवर-पॉपुलेशन)

अति-भोग—पुं० [सं०] नियत सम उपरान्त भी अथवा बहुत दिनों से सम्पत्ति का भोग करना। (प्रेस्क्रिप्शन

तिरंजन–पुं० [सं०] [वि० अतिरं- त] कोई बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर हना। अत्युक्ति।

तिरिक्त–वि० [सं०] १. आवश्यकता उपयोग से अधिक। (एक्स्ट्रा) २. वा हुआ। शेष। ३. अलग। भिन्न। ा। ४. साधारण या नियमित के बाद वश्यकता के अनुसार उसमें कुछ और ड़ा, बढ़ाया या लगाया हुआ। (ऐडिश- ल, एक्स्ट्रा) जैसे–अतिरिक्त आय या कर। ० वि० किसी को छोड़कर उसके सिवा। लावा।

तिरिक्त पत्र–पुं० दे० 'क्रोड़–पत्र'।

तिरेक–पुं० [सं०] १. अधिकता। हुतायत। २. व्यर्थ की वृद्धि या विस्तार। किसी वस्तु या बात के आवश्यकता या ाचित्य से अधिक या गम्भीर होने का व। (एग्रेवेशन)

ति-वृष्टि–स्त्री० [सं०] बहुत अधिक र्षा। (६ ईतियों में से एक)

तिव्याप्ति–स्त्री० [सं०] किसी लक्षण कथन के अन्तर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त न्य वस्तु के आ जाने का दोष। (साहित्य ौर तर्क)

तिशय–वि० [सं०] [भाव० अतिश- ता] बहुत। ज्यादा।

० एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की त्तरोत्तर सम्भावना या असम्भावना दिखलाई ाती है।

तिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] १. बहुत ढ़ा-चढ़ाकर या अपनी ओर से बहुत-कुछ मलाकर कही हुई बात। (एग्ज़ैजरेशन) . एक अलंकार जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में सम्बन्ध आदि दिखाकर किसी वस्तु का बहुत बढ़ाकर वर्णन होता है।

तिसंधान– पुं० [सं०] १. अति- क्रमण। २. ठीक या उचित लक्ष्य से और आगे बढ़कर निशाना लगाना। (ओवर हिटिंग)

अतिसार–पुं० [सं०] एक रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ अँतड़ियों में से पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है।

अतिहायन–पुं० [सं०] १. इतना अधिक वृद्ध होना कि काम-धन्धा न हो सके। (सुपरएनुएशन) २. बहुत अधिक पुराना और जीर्ण होना।

अतींद्रिय–वि० [सं०] १. जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न हो। अगोचर।

अतीत–वि० [सं०] [क्रि० अतीतना] १. गत। व्यतीत। बीता हुआ। २. पृथक्। अलग। ३. मरा हुआ। मृत।

क्रि० वि० परे। बाहर। दूर।

पुं० [सं० अतिथि] साधु, संन्यासी, योगी आदि।

अतीव–वि० [सं०] बहुत। अत्यन्त।

अतीस–स्त्री० [सं० अतिविषा] एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

अ-तुकांत–वि० [हिं० अ + तुकांत] (कविता का वह प्रकार) जिसके अन्तिम चरणों का तुक या काफिया न मिलता हो।

अतुराई*–स्त्री० दे० 'आतुरता'।

अतुराना*–अ० [सं० आतुर] १. आतुर होना। घबराना। २. जल्दी मचाना।

अतुल–वि० [सं०] [भाव० अतुलता] १. जिसकी तौल या अन्दाज न हो सके। २. अमित। असीम। बहुत अधिक। ३. अनुपम। बेजोड़।

अतुलनीय–वि० [सं०] १. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। २. अनुपम।

अतुलित–वि० [सं०] १. बिना तौला हुआ। २. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। ३. असंख्य। ४. अनुपम।

अतृप्त– वि० [सं०] [भाव० अतृप्ति] १. जो तृप्त या सन्तुष्ट न हो। २. भूखा।

अतृप्ति–स्त्री० [सं०] मन न भरने की दशा। तृप्ति न होना।

अतोर–वि० [सं० अ + हिं०तोड़] जो न टूटे। पक्का। दृढ़।

अत्त*–स्त्री ० दे० 'अति'।

अत्तार–पुं० [अ०] १. इत्र या तेल बेचनेवाला। गंधी। २. यूनानी दवायें बनाने और बेचनेवाला।

अत्यंत–वि० [सं०] बहुत अधिक। अतिशय। हद से ज्यादा।

अत्यंताभाव–वि० [सं०] १. किसी वस्तु का बिलकुल न होना। अस्तित्व की परम शून्यता। २. पाँच प्रकार के अभावों में से एक। ३. ऐसी बात जो कभी सम्भव न हो। जैसे–आकाश-कुसुम, वंध्यापुत्र। ३. बिलकुल कमी।

अत्यय–पुं० [सं०] १. मृत्यु। मौत। २. नाश। ३. सीमा के बाहर जाना। ४. कम होना। घटना। ५. ह्रास या क्षीणता को प्राप्त होना। ६. दे० 'आयात' ५।

अत्याचार–पुं० [सं०] १. आचार का अतिक्रमण। २. दूसरों के साथ बलपूर्वक किया जानेवाला वह अनुचित व्यवहार जिससे उन्हें बहुत कष्ट हो। जुल्म। (टिरैनी) ३. दुराचार। पाप। ४. पाखंड। ढोंग।

अत्याचारी–पुं० [सं० अत्याचारिन्] वह जो अपने बल के अधार पर दूसरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करके उन्हें बहुत कष्ट पहुँचाता हो। जालिम। (टायरेन्ट)

अत्याज्य–वि० [सं०] १. जिसे त्याज्य न कर सकते हों। न छोड़ने योग्य। २. जिसे त्याज्य करना या छोड़ना ठीक न हो।

अत्युक्त–वि० [सं०] जिसमें अत्युक्ति हो। जिसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया हो।

अत्युक्ति–स्त्री० [सं०] १. कोई बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना। २. इस प्रकार बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात। (एग्जैजरेशन) ३. एक अलंकार जिसमें शूरता, उदारता आदि गुणों का अद्भुत और मिथ्या वर्णन होता है।

अत्युत्पादन–पुं दे० 'अति-उत्पादन'

अत्र–क्रि० वि० [सं०] यहाँ। इस
*पुं० दे० 'अस्त्र'।

अत्र-भवान्–वि० [सं०] [स्त्री० भवती] बहुत अधिक महान या जैसे–अत्र-भवान् राजा रामपाल सिंह।

अथ–अव्य० [सं०] १. एक शब्द प्राचीन लोग ग्रन्थ या लेख का करते थे। २. अब। ३. अनन्तर।

अथऊ†–पुं० [हिं० अथना] जैनों का से पहले होनेवाला भोजन।

अथक–वि० [सं० अ = नहीं + हिं० थ जो न थके। अ-श्रान्त।

अथच–अव्य० [सं०] और। और

अथना*–अ० [सं० अस्त] अस्त हो डूबना। (सूर्य, चन्द्रमा आदि का)

अथमना†–पुं० [सं० अस्तमन] पश्चि दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है। 'उग का उलटा।

अथरा–पुं० [सं० स्थाल] [स्त्री० अथ मिट्टी का खुले मुँह का चौड़ा बरतन।

अथर्व–पुं० [सं० अथर्वन्] आर्यों या हिन् के चार वेदों में से अन्तिम वेद। चौथा जिसके मंत्र-द्रष्टा या ऋषि भृगु और अं गोत्रवाले थे।

अथवना*–अ० दे० 'अथना'।

अथवा–अव्य० [सं०] एक वियो अव्यय जिसका प्रयोग वहाँ होता है, कई शब्दों या पदों में से किसी एक ग्रहण अभीष्ट हो। या। वा। किंवा।

अथाई–स्त्री० [सं० आस्थान्] १. बैठ जगह। बैठक। २. घर के सामने का तरा। ३. वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे हों पंचायत करते हैं। ४. मंडली। जमाव

अथाना*–अ० दे० 'अथवना'।
स० [सं० स्थान] १. थाह लेना। गह नापना। २. ढूँढ़ना।
पुं० [सं० स्थास्नु] आम आदि फलों

अचार ।

अथावत*–वि॰ [सं॰ अस्ताघ] १. जिसकी थाह न हो। बहुत गहरा। २. जिसका अन्दाज न हो सके। अपरिमित। बहुत अधिक। ३. गम्भीर। गूढ़।

पुं॰ १. गहराई। २. जलाशय। ३. समुद्र।

अथिर*–वि॰ = अस्थिर।

अथोर*–वि॰ [सं॰ अ = नहीं + हिं॰ थोर] अधिक। ज्यादा। बहुत।

अदंक–पुं॰ = आतंक।

अदंड–वि॰ [सं॰] १. जो दंड के योग्य न हो। २. जिसपर कर या महसूल न लगे। ३. स्वेच्छाचारी।

पुं॰ वह भूमि जिसकी मालगुजारी न लगे। मुआफी।

अदंड्य–वि॰ [सं॰] जिसे दंड न दिया जा सके; सजा से बरी।

अदंत–वि॰ [सं॰] १. जिसे दाँत न हों। २. बहुत थोड़ी अवस्था का। दुध-मुँहाँ।

अदग*–वि॰ [सं॰ अदग्ध] १. बे-दाग। शुद्ध। २. निरपराध। निर्दोष। ३. अछूता। अस्पृष्ट। ४. साफ।

अदग्ग*–वि॰ दे॰ 'अदग'।

अदत्त–वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ अदत्ता] १. जो दिया न गया हो। बिना दिया हुआ। २. जिसका मूल्य, कर आदि न चुकाया गया हो।

पुं॰ वह वस्तु जो मिलने पर भी पानेवाला ले या रख न सकता हो। (स्मृति)

अदत्ता–स्त्री॰ [सं॰] वह कन्या जो अभी किसी को दी न गई हो। कुमारी।

अदद–स्त्री॰ [अ॰] १. संख्या। गिनती। २. संख्या का चिह्न या संकेत।

अदन–पुं॰ [अ॰] ईसाइयों, मुसलमानों आदि के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जो परम सुन्दर और रमणीक माना गया है।

अदना–वि॰ [अ॰] बहुत ही छोटा या साधारण। तुच्छ।

स॰ [हिं॰ बदना (शर्त्त लगाना) का अनु॰] दृढ़ता या निश्चयपूर्वक कोई बात कहना। **मुहा॰–अदबदाकर** = निश्चयपूर्वक। अवश्य। जरूर।

अदब–पुं॰ [अ॰] बड़ों के प्रति होनेवाला आदर और शिष्टाचार।

अदबुद*–वि॰ = अद्भुत।

अदम्य–वि॰ [सं॰] १. जो किसी प्रकार दबाया न जा सके। जिसका दमन न हो सके। २. बहुत प्रबल या उग्र।

अदय–वि॰ [सं॰] जिसमें दया न हो। दया-रहित। निर्दय।

अदरक–पुं॰ [सं॰ आर्द्रक, फा॰ अदरक] एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है।

अदराना–अ॰ [सं॰ आदर] बहुत आदर पाने से शेखी पर चढ़ना। इतराना।

स॰ आदर देकर शेखी पर चढ़ाना। घमंडी बनाना।

अदर्शन–पुं॰ [सं॰] १. विद्यमान या उपस्थित न होना। अभाव। २. लोप। विनाश।

अदल-बदल–पुं॰ [अ॰ बदल + अदल अनु॰] १. उलट-पुलट। २. हेर-फेर। परिवर्त्तन।

अदला-बदली–स्त्री॰ [हिं॰ अदल-बदल] १. चीजों को हटाकर परस्पर एक दूसरी की जगह रखना। २. एक चीज लेने के लिए उसके बदले दूसरी चीज देना। (बार्टर)

अदवान–स्त्री॰ [सं॰ अधः = नीचे + हिं॰ बान = रस्सी] चारपाई के पैताने की बिनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिए उसके छेदों में पड़ी हुई रस्सी। उनचन।

अदहन–पुं॰ [सं॰ आदहन] वह पानी जो दाल, चावल आदि पकाने के लिए पहले गरम किया जाता है।

अदांत–वि॰ [सं॰] १. अपनी इंद्रियों या वासनाओं का दमन न कर सकनेवाला।

विषय-लोलुप। २. उद्दंड। उद्धत।

अदा–स्त्री० [फा०] स्त्रियों का हाव-भाव। नखरा।

वि० [अ० अदाऽ, मि० सं० आदान] १. (ऋण या देन) चुकाया हुआ। चुकता। २. जिसका पालन हुआ हो। ३. करके दिखलाया हुआ।

अदाई*–वि० [अ० अदा] चालबाज।

अदाग–वि० [हिं अ + अर० दाग] १. जिसमें दाग या धब्बा न हो। २. निर्दोष। ३. विशुद्ध।

अदानी–वि० [हिं० अ + दानी] १. जो दानी न हो। २. कंजूस। कृपण।

अदायगी–स्त्री० [फा०] ऋण चुकाने या धन आदि देने की क्रिया या भाव।

अदायाँ*–वि० [हिं० अ + दायाँ = दाहिना] १. प्रतिकूल। वाम। २. बुरा। खराब।

अदालत–स्त्री० दे० 'न्यायालय'।

अदावत–स्त्री० दे० 'शत्रुता'।

अदाह*–स्त्री० [अर० अदा] स्त्रियों के हाव-भाव।

अदित*–पुं० [सं० आदित्य] १. सूर्य। २. रविवार। एतवार।

अदिति–स्त्री० [सं०] १. प्रकृति। २. पृथ्वी। ३. दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी जिनसे देवताओं का जन्म हुआ था।

अदिन–पुं० [सं०] १. बुरा दिन। संकट या दुःख का समय। २. अभाग्य।

अदिव्य–वि० [सं०] १. लौकिक। २. साधारण। ३. बुरा।

पुं० साहित्य में वह नायक जो दिव्य या देवता न हो, बल्कि लौकिक या मनुष्य हो।

अदिष्ट*–वि० दे० 'अदृष्ट'।

अदिष्टी*–वि० [सं० अदृष्ट] अभागा।

वि० [अ + दृष्टि]] मूर्ख।

अदीन–वि० [सं०] १. दीनता-रहित। २. उग्र। प्रचंड। ३. निडर। ४. ऊँची तबीयत का। उदार।

अदीह*–वि० [हिं० अ + दीर्घ] छोटा

अदुतिय*–वि० = अद्वितीय।

अदूजा*–वि० दे० 'अद्वितीय'।

अदूरदर्शी–वि० [सं०] जो दूर तक सोचे। स्थूल-बुद्धि। ना-समझ।

अदृश्य–वि० [सं०] १. जो दिखाई न २. जिसका ज्ञान इन्द्रियों को न हो। अगोचर। ३. लुप्त। गायब।

अदृष्ट–वि० [सं०] १. न देखा हुआ। लुप्त। अंतर्द्धान। गायब।

पुं० १. भाग्य। २. अग्नि और जल आ से उत्पन्न आपत्ति।

अदृष्ट-पूर्व–वि० [सं०] जैसा या जो पह कभी देखा न गया हो; अर्थात् अनोखा विलक्षण।

अदृष्टवाद–पुं० [सं०][वि० अदृष्टवादी परलोक आदि परोक्ष बातों का निरूप सिद्धान्त।

अदेख*–वि० [सं० अ = नहीं + हिं० देखन १. छिपा हुआ। अदृश्य। गुप्त। २. देखा हुआ। अदृष्ट।

अदेय–वि० [सं०] जो दिया न जा सके न देने योग्य।

अदेस*–पुं० [सं० आदेश] १. आदेश आज्ञा। हुकुम। २. प्रणाम। दंडवत नमस्कार।

अद्ध*–वि० = अर्द्ध।

अद्धा–पुं० [सं० अर्द्ध] १. किसी का आधा मान। २. वह बोतल जो बोतल की आधी हो।

अद्धी–स्त्री० [सं० अर्द्ध] १. दमड़ी आधा। एक पैसे का सोलहवाँ भाग। एक बारीक और चिकना कपड़ा।

अद्भुत–वि० [सं०] आश्चर्यजनक। क्षण। विचित्र। अनोखा।

अद्भुतोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा कार का वह भेद जिसमें उपमेय के

का उल्लेख होता है जिनका होना उपमें कभी सम्भव न हो।

–क्रि० वि० [सं०] इस समय।

न–वि० दे० 'दिनात्त'।

पि–क्रि० वि० [सं०] इस समय तक। तक।

वधि–क्रि० वि० दे० 'अद्यापि'।

*–स्त्री० = आर्द्रा (नक्षत्र)।

–पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़।

तीय–वि० [सं०] १. जिसके समान कोई न हो। अनुपम। बेजोड़। नीक) २. विलक्षण। अद्भुत।

त–वि० दे० 'अद्वितीय'।

तवाद–पुं० [सं०] [वि० अद्वैत-] वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसमें मा और परमात्मा को एक माना जाता र ब्रह्म के सिवा और सब वतुओं त्वों की सत्ता अ-वातविक या असत्य जाती है। (मॉनिज्म)

– अव्य० [सं०] नीचे। तले।

पतन–पुं० [सं०] १. नीचे की गिरना। पतित होना। अवनति। २. ा। दुर्गति।

पात–पुं० दे० 'अधःपतन'।

स्वस्तिक–पुं० [सं०] वह कल्पित जो देखनेवाले के पैरों के ठीक नीचे जाता है। अधोविन्दु। 'ख-वस्तिक' लटा। (नेडर)

वि० [सं० अर्द्ध] 'आधा' का वह म रूप जो उसे दूसरे शब्दों के पहले पर प्राप्त होता है। जैसे–अध-खुला, मरा आदि।

य० दे० 'अधः'।

कचरा–वि० [हिं० आधा + कचरना] जो पूरा या पक्का न हो। आधा ठीक आधा बे-ठीक। २. अधूरा। अपूर्ण। जो पूरा कुशल या दक्ष न हो। ४. या कूटा या पीसा हुआ। दरदरा।

अध-कपारी–स्त्री० [हिं० आधा + कपार] आधे सिर का दर्द। आधासीसी। विशेष दे० 'सूर्यावर्त्त'।

अध-करी–स्त्री० [हिं० आधा + कर] कर, देन आदि आधा आधा करके दो बार या दो किस्तों में चुकाने की रीति।

अध-कहा–वि० [हिं० आधा + कहना] जो पूरा और स्पष्ट नहीं, बल्कि आधा और अस्पष्ट कहा गया हो।

अध-खिला–वि० [हिं० आधा + खिलना] पूरा नहीं, बल्कि आधा ही खिला हुआ।

अध-खुला–वि० [हिं० आधा + खुलना] जो आधा खुला हो।

अध-घट–वि० दे० 'अट-पट'।

अध-चरा–वि० [हिं० आधा + चरना] जो पूरा नहीं, बल्कि आधा ही चरा गया हो।

अध-जला–वि० [हिं० आधा + जलना] आधा जला हुआ।

अधड़ा*–वि० [हिं० आधा या सं० अधर] १. जो अधर में यों बिना किसी आधार के हो। २. जिसका सिर-पैर न हो। ऊट-पटाँग। असंबद्ध।

अधन*–वि० दे० 'निर्धन'।

अधनिया–वि० [हिं० अधन्ना] आध आने या दो पैसेवाला। जैसे–अधनिया टिकट (डाक का)।

अधन्ना–पुं० [हिं आधा + आना] आधे आने या दो पैसे का ताँबे का सिक्का।

अधन्नी–स्त्री० [हिं० आधा + आना] आधे आने का निकल धातु का छोटा चौकोर सिक्का।

अध-फर*– पुं० [सं० अर्द्ध + फलक] १. बीच का भाग। २. अंतरिक्ष। ३. मध्य आकाश। अधर।

अध-बर*–पुं० [हिं० आधा + बाट = मार्ग] १. आधा मार्ग या रास्ता। २. मध्य। बीच।

अध-बुध–वि० [हिं० आधा + बुद्धि] कम या थोड़ा ज्ञान रखनेवाला।

अध-बैसू*–वि० [हिं० आधा + वयस] जिसकी आधी या उससे कुछ अधिक अवस्था बीत चुकी हो। अधेड़।

अधम–वि० [सं०] [भाव० अधमता] १. बिलकुल निम्न या निकृष्ट कोटि का। २. बहुत बड़ा पापी, दुष्ट या दुराचारी।

अधमई*–स्त्री० दे० 'अधमता'।

अधमता–स्त्री० [सं०] 'अधम' होने की क्रिया या भाव। नीचता।

अध-मरा–वि० [हिं० आधा + मरना] जो पूरा नहीं, बल्कि आधा ही मरा हो। जिसमें कुछ ही प्राण हों। मृत-प्राय।

अधमर्ण–पुं० [सं०] वह जिसने किसी से ऋण लिया हो। कर्जदार। (बॉरोवर)

अधमा–वि० स्त्री० [सं०] अधम स्वभाव या आचरणवाली। दुष्ट प्रकृति की। जैसे– अधमा दूती, अधमा नायिका।

अधमाई*– स्त्री० दे० 'अधमता'।

अधमुआ–वि० दे० 'अध-मरा'।

अधर–पुं० [सं०] होंठ। ओंठ।

पुं० [हिं० अ + धरना] १.ऐसा स्थान जिसके चारो ओर शून्य या आकाश हो। **मुहा०–अधर में झूलना या लटकना** = अनिश्चय की दशा में पड़े रहना। २. पाताल।

वि० १. जो पकड़ा न जा सके। चंचल। २. दे० 'अधम'।

अधरज*–पुं० [सं० अधर + रज] १. ओंठों की ललाई या सुर्खी। २. ओंठों पर की पान या मिस्सी की धड़ी।

अधर्म–पुं० [सं०] धर्म्म के विरुद्ध कार्य। कुकर्म। दुराचार। बुरा काम।

अधर्मी–पुं० [सं० अधर्मिन्] [स्त्री० अधर्मिणी] पापी। दुराचारी।

अधवा*–स्त्री० दे० 'विधवा'।

अधस्तन–वि० [सं०] अधीन या नीचे रहने या होनेवाला। अधीनस्थ। (लोअर) जैसे–अधस्तन न्यायालय।

अधस्तल–पुं० [सं०] १. नीचे की २. नीचे की तह। ३. तहखाना।

अधस्थ–वि० [सं० अधःस्थ] १. के अधीन या नीचे रहकर काम करने (सुबार्डिनेट) २. किसी नियम, व्यवस्था आदि के अधीन। (अंडर

अधार*–पुं० दे० 'आधार'।

अधारा–वि० [हिं० अ + धार](जिसमें धार न हो। बिना धार का। (जैसे–लाठी, छड़ी आदि)

अधारी–स्त्री० [सं० आधार] आधार। सहारा। २. यात्रा के सामान रखने का झोला। ३. काठ ढाँचा जो साधु लोग बैठने के समय लिये बाँह के नीचे रखते हैं।

अधार्मिक–वि० [सं०] १. जो न हो। २. धर्म-हीन। ३. धर्म-विरु

अधि–एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ (क) ऊपर। ऊँचा। जैसे–अधिराज, करण। (ख) प्रधान। मुख्य। जैसे– नायक, अधिपति। (ग) अधिक। जैसे–अधिमास। (घ) संबंध में। जै ध्यात्मिक। (च) साधारण अथवा म अधिक। जैसे– अधिप्रचार। अब य शब्दों के आरंभ में अधिकार के और संक्षिप्त रूप की भाँति भी लगा है। जैसे–अधिक्षेत्र = अधिका अधिपत्र = अधिकार-पत्र। अधि अधिकारपूर्वक ग्रहण आदि

अधिक–वि० [सं०] १.बहुत। विशेष। २. बचा हुआ। फालतू। पुं० वह अलंकार जिसमें आधेय को से अधिक बतलाते हैं।

अधिकतम–वि० [सं०] अधिक से जितना हो सकता है। (मैक्सिमम)

अधिकतर–वि० [सं०] १. अपेक्षा अधिक। २. किसी में का

श या भाग)।
कता–स्त्री० [सं०] १. अधिक या
होने की दशा या भाव। बहुतायत।
ती। २. बढ़ती। वृद्धि।
क-मास–पुं० दे० ‘मल-मास’।
कर–पुं० [सं०] साधारण के
रिक्त वह विशेष कर जो कुछ
अवस्थाओं में अथवा बहुत अधिक
वाले लोगों पर लगाया जाता है।
र-टैक्स)
करण–पुं० [सं०] १. आधार।
। २. व्याकरण में कर्त्ता और कर्म
क्रिया का आधार जो सातवाँ कारक
३. प्रकरण। ४. न्यायालय। अदा-
(कोर्ट) ५. किसी कार्य या विषय का
बड़ा विभाग। महकमा।
करण-शुल्क–पुं० [सं०] वह शुल्क
किसी अधिकरण या न्यायालय में कोई
ना-पत्र उपस्थित करते समय, अंक-प-
या स्टाम्प के रूप में देना पड़ता है।
ई फी)
करण्य–पुं० [सं० अधिकरण]
वह संस्था जिसे कोई कार्य करने का
ष रूप से अधिकार प्राप्त हो। (आर्थो-
य) जैसे–स्थानिक अधिकरण्य (देखें)।
कर्मी–पुं० [सं० अधि + कर्म्मिन्]
लोगों के ऊपर रहकर उनके कामों की
भाल करनेवाला अधिकारी। (ओवर-
र)
कांश–पुं० [सं०] अधिक भाग।
दा हिस्सा।
बहुत।
वि० १. ज्यादातर। विशेषकर।
प्रायः। अक्सर।
काई*–स्त्री० = अधिकता।
काना*–अ० [सं० अधिक] अधिक
ना। ज्यादा होना। बढ़ना।
अधिक या ज्यादा करना। बढ़ाना।

अधिकार–पुं० [सं०] १. वह शक्ति जो किसी को विधि, अपने पद, मर्यादा अथवा योग्यता आदि के कारण प्राप्त हो। (अथॉरिटी) २. प्रभुत्व। आधिपत्य। ३. वह योग्यता या सामर्थ्य जिसके कारण किसी में कोई कार्य कर सकने का बल आता है। शक्ति। (पॉवर) ४. वह शक्ति जिसके द्वारा किसी को किसी वस्तु पर स्वामित्व अथवा किसी कार्य की शक्ति प्राप्त होती है। स्वत्व। (राइट) ५. किसी वस्तु पर अपना स्वत्व या स्वामित्व जताने की क्रिया या भाव। अभ्यर्थन। (क्लेम) जैसे–वास्तविक अधिकार। (राइटफुल क्लेम) ६. किसी वस्तु या विषय से सम्बन्ध रखनेवाला ऐसा पूर्ण ज्ञान जिसके कारण उसका कथन प्रामाणिक माना जाता हो। पूरी जानकारी। ७. किसी वस्तु या सम्पत्ति आदि पर होनेवाला स्वामित्व। कब्जा। (पजेशन) ८. प्रकरण अथवा उसका शीर्षक। ९. नाट्य-शास्त्र में रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता।

अधिकार-त्याग–पुं० [सं०] अपना अधिकार छोड़कर अलग हो जाना। (एब्डिकेशन)

अधिकार-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जिसके अनुसार किसी को कोई कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो।

अधिकारिक–पुं० [सं० अधिकार] वह जिसे किसी कार्य का अधिकार प्राप्त हो। अधिकारी। (ऑथॉरिटी)

वि० १. किसी अधिकारी के द्वारा या अधिकारपूर्वक कहा या किया हुआ। २. अधिकारपूर्ण। अधिकारयुक्त। (ऑथॉरिटेटिव)

अधिकारिकी–स्त्री० [सं० अधिकार] अधिकारियों का समूह, वर्ग या संघात। (ऑथॉरिटी)

अधिकारी–पुं० [सं०] [स्त्री० अधिकारिणी] १. प्रभु। स्वामी। २. वह जिसे कोई स्वत्व प्राप्त हो। ३. वह जिसमें किसी

विषय या कार्य की विशेष योग्यता या क्षमता हो। ४. वह कर्मचारी जो किसी पद पर रहकर कोई कार्य करता हो। अफसर। (ऑफिसर) ५. साधारणतः कोई अधिकार-प्राप्त व्यक्ति। (ऑथॉरिटी) ६. नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त हो।

वि० १. अधिकार रखनेवाला। अधिकारधारी। २. जिसे कुछ पाने या करने का अधिकार हो। (एन्टाइटिल्ड) जैसे—वे इसका निर्णय करने के अधिकारी हैं।

अधिकृत–वि० [सं०] १. जिसपर अधिकार कर लिया गया हो। २. जो किसी के अधिकार में हो। ३. जिसको कोई काम करने का अधिकार दिया गया हो। ४. जिसको कोई काम करने का अधिकार हो। (ऑथराइज्ड)

अधिकौहाँ*–वि० [हिं० अधिक] बराबर बढ़ता रहनेवाला।

अधिक्रम–पुं० [सं०] १. किसी पर चढ़ना। आरोहण। २. दे० 'अधिक्रमण'।

अधिक्रमण–पुं० दे० 'अवक्रांति'।

अधिक्रांत–वि० दे० 'अवक्रांत'।

अधिक्षेत्र–पुं० [सं० अधि + क्षेत्र] किसी के अधिकार या कार्य का क्षेत्र। (ज्युरिस्डिक्शन)

अधिगत–वि० [सं०] १. प्राप्त। पाया हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात।

अधिगम–पुं० [सं०] १. पहुँच। गति। २. दूसरे के उपदेश से मिला हुआ ज्ञान। ३. न्यायालय का वह निष्कर्ष जो किसी अभियोग या वाद की पूरी सुनवाई हो चुकने पर उसे प्राप्त हुआ हो। (फाइन्डिंग)

अधिगमन–पुं० [सं०] किसी वाक्य की वह व्याख्या जो उसकी पद-योजना के आधार पर की जाय। (रीडिंग)

अधिग्रहण–पुं० [सं० अधि = अधिकार + ग्रहण] अधिकारपूर्वक अथवा अधियाचन के द्वारा किसी की सम्पत्ति कोई चीज ले लेना। (अक्विजिशन

अधिग्राहक–पुं० [हिं० अधिग्रहण वैध उपाय से प्राप्त करनेवाला। (एक्व

अधित्यका–स्त्री० [सं०] पहाड़ की समतल भूमि। ऊँचा पहाड़ी मैदा

अधिदेव–पुं० [सं०] [स्त्री० अधि १. इष्टदेव। २. कुलदेव।

अधिदैवत–पुं० [सं०] वह प्रक मंत्र जिसमें अग्नि, वायु, सूर्य्य इत्या ताओं के नाम-कीर्त्तन से ब्रह्म-विभ शिक्षा मिले।

वि० देवता सम्बन्धी।

अधिनायक–पुं० [सं०] [स्त्री० नायिका] १. सरदार। मुखिया विशेष अवस्थाओं या परिस्थितियों नियत किया हुआ सर्व-प्रधान और पूर्ण कार-प्राप्त शासक या अधिकारी। (डि

अधिनायक-तंत्र–पुं० [सं०] व जिसके सब काम केवल अधिनाय आज्ञा से होते हों।

अधिनायकी–पुं० [सं० अधिना अधिनायक का कार्य, पद या भाव।

अधिनियम–पुं० [सं० अधि + नि १. वह नियम जो किसी विशेष आ निश्चय के अनुसार किसी प्रकार की या प्रबन्ध के लिए बना हो। (रेगुले २. साधारण नियम से अधिक महत्व नियम जो किसी विधायन के अधीन हो, बल्कि उसकी परिभाषा में ही आ (रेगुलेशन) ३. दे० 'विधान' ६।

अधिपति–पुं० [सं०] १. मालिक। २. प्रधान अधिकारी। ३. लय आदि का प्रधान विचारक या कारी। (प्रिसाइडिंग ऑफिसर)

अधिपत्र–पुं० [सं० अधि (अधिका पत्र] वह पत्र जिसमें किसी को को करने का अधिकार या आदेश दि

हो। (वारंट) जैसे–किसी को कुछ धन देने या पकड़ने का अधिपत्र।

अधिप्रचार–पुं॰ [सं॰ अधि + प्रचार] [वि॰ अधिप्रचारित, अधिप्रचारक] कोई सिद्धान्त, मत, विचार आदि लोगों में फैलाने के लिए किया जानेवाला संघटित प्रयत्न। (प्रोपैगैन्डा)

अधिप्रचारक–पुं॰ [सं॰ अधि + प्रचारक] वह जो किसी मत, सिद्धान्त, विचार आदि का लोगों में संघटित रूप से प्रचार करता हो। (प्रोपैगैंडिस्ट)

अधिभार–पुं॰ [सं॰] कर या शुल्क आदि का वह विशेष या अतिरिक्त अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए अथवा किसी विशेष परिस्थिति में अलग से अधिक लिया जाता है। (सुपर-चार्ज)

अधिमान–पुं॰ [सं॰] किसी वस्तु या व्यक्ति का वह मान या आदर जो औरों की तुलना में उसे अच्छा समझकर किया जाता है। किसी को औरों से अच्छा समझकर ग्रहण करना। (प्रिफरेन्स)

अधिमानित–वि॰ [सं॰] जिसे औरों से अच्छा समझकर ग्रहण किया गया हो। जिसका अधिमान किया गया हो। (प्रिफर्ड)

अधिमान्य–वि॰ [सं॰] जो अधिमान के योग्य हो। जो औरों से अच्छा होने के कारण ग्रहण किया जा सके। (प्रिफरेबुल)

अधि-मास–पुं॰ दे॰ 'मल-मास'।

अधिमुद्रण–पुं॰ [सं॰] किसी ग्रन्थ या सामयिक पत्र-पत्रिका के किसी प्रकरण, लेख आदि की वे प्रतियाँ जो छापे के उन्हीं बैठाये हुए अक्षरों से किसी काम के लिए अलग छाप ली जाती हैं। (ऑफ प्रिन्ट)

अधिमूल्य–पुं॰ [सं॰] १. किसी वस्तु का साधारण से अधिक वह मूल्य आदि जो विशेष परिस्थिति में लिया जाय। २. दे॰ 'अधिभार'।

अधिया–पुं॰ [हिं॰ आधा] १. आधा हिस्सा। २. गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी। ३. एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को मिलता है।

अधियाचन–पुं॰ [सं॰ अधि = अधिकार + याचन] १. अधिकार-पूर्वक किसी विशेष कार्य के लिए किसी से कुछ माँगने अथवा कोई कार्य करने के लिए कहना। जैसे– किसी सभा के अधिवेशन के लिए सदस्यों का अधियाचन या संपत्ति आदि दिलाने के लिए अधिकारियों का अधियाचन। (रिक्विजिशन)

अधियाना–स॰ [हिं॰ आधा] आधा करना। दो बराबर हिस्सों में बाँटना। अ॰ आधा होना।

अधियार–पुं॰ [हिं॰ आधा] [स्त्री॰ अधियारिन] १. किसी जायदाद का आधा हिस्सा। २. आधे हिस्से का मालिक। ३. वह जमींदार या असामी जो गाँव के हिस्से या जोत में आधे का हिस्सेदार हो।

अधियारी–स्त्री॰ [हिं॰ अधियार] किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी।

अधियुक्त–वि॰ [सं॰] वेतन या पारिश्रमिक पर किसी काम में लगा हुआ। (एम्प्लॉयड)

अधियुक्ती–पुं॰ [सं॰ अधियुक्त] वह जो किसी काम पर लगा हो और वेतन या पारिश्रमिक पाता हो। काम पर लगा हुआ। (एम्प्लॉई)

अधियोक्ता–पुं॰ दे॰ 'अधियोजक'।

अधियोजक–पुं॰ [सं॰] वह जो वेतन आदि देकर लोगों को अपने यहाँ कोई काम करने के लिए रखे। (एम्प्लॉयर)

अधियोजन–पुं॰ [सं॰] १. किसी को वेतन आदि देकर अपने यहाँ किसी काम पर लगाना। २. वेतन आदि पर किसी काम पर लगा रहना। (एम्प्लॉयमेन्ट)

अधिरद्दी–पुं॰ [सं॰] आरद्दी या पुलिस विभाग का वह कर्मचारी जिसके अधीन

कुछ सिपाही रहते हैं। (हेड कान्स्टेबुल)

अधिरथ–पुं० [सं०] १. रथ हाँकनेवाला। गाड़ीवान। २. बड़ा रथ।

अधिराज–पुं० [सं०] महाराज।

अधि-राज्य–पुं० [सं०] साम्राज्य।

अधि-रात*–स्त्री० [हिं० आधी + रात] आधी रात।

अधिरोप(ण)–पुं० [सं०] किसी पर अपराध का आरोप, अभियोग या दोष लगाया जाना। (चार्ज)

अधिरोपित–वि० [सं०] १. जिसपर अपराध आदि का अधिरोप हुआ हो। २. (अपराध) जिसका अधिरोप किया गया हो। (चार्ज्ड)

अधिरोहण–पुं० [सं०] चढ़ना। सवार होना। ऊपर बैठना।

अधिलाभ–पुं० [सं०] लाभ का वह अंश जो किसी समवाय या मंडली के अंशियों अथवा संस्था के नौकरों को साधारण लाभांश या वेतन के अतिरिक्त दिया जाता है। (बोनस)

अधिवर्ष–पुं० [सं०] १. वह वर्ष जिसमें कोई मल-मास पड़ता हो। २. वह वर्ष जिसमें फरवरी का महीना २८ की जगह २९ दिनों का होता हो। (लीप इयर)

अधिवास–पुं० [सं०] १. रहने का स्थान। २. एक देश से चलकर दूसरे देश में इस प्रकार बस जाना कि उस देश की नागरिकता के अधिकार प्राप्त हो जायँ। (डोमिसाइल) २. सुगन्ध। खुशबू।

अधिवासी–पुं० [सं०] १. निवासी। २. दूसरे देश में जाकर बसनेवाला। (डोमिसाइल्ड)

अधिवेशन–पुं० [सं०] सभा, सम्मेलन आदि की बैठक। (सेशन)

अधि-शुल्क–पुं० [सं०] साधारण से अधिक या अतिरिक्त वह शुल्क जो किसी विशेष परिस्थिति में लिया जाता है। (सुपर-चार्ज)

अधिष्ठाता–पुं० [सं० अधिष्ठातृ] [स्त्री० अधिष्ठात्री] १. अध्यक्ष। २. मुखिया। प्रधान। ३. वह जिसके हाथ में किसी का का भार हो। ४. ईश्वर।

अधिष्ठान–पुं० [सं०] [वि० अधिष्ठित] १. वास-स्थान। रहने का स्थान। २. नग शहर। ३. ठहरने का स्थान। पड़ाव। ४. आधार। सहारा। ५. वह वस्तु जिसमें भ्र का आरोप हो। जैसे रज्जु में सर्प या शु में रजत का। ६. शासन। राज-सत्ता। संस्था। ८. संस्था के कार्य-कर्त्ता और अधि कारी लोग। (एस्टैब्लिशमेन्ट) ९. के लिए व्यापार या और किसी काम में ध लगाना। (इन्वेस्टमेन्ट)

अधिष्ठायक–पुं० [सं०] १. वह शासन, व्यवस्था या प्रबन्ध करता हो। दे० 'अधिष्ठाता'।

अधिष्ठित–वि० [सं०] १. ठहरा हुआ। स्थापित। २. नियुक्त। ३. लगाया हुआ।

अधिष्ठित स्वार्थ–पुं० [सं०] वह स्वार्थ जो कहीं धन व्यय करके या व्याप आदि में लगाकर स्थापित किया गया हो। (वेस्टेड इन्टरेस्ट)

अधिसूचना–स्त्री० [सं०] [वि० अधि सूचि] किसी से यह कहना कि अमुक का इस प्रकार या इस रूप में होना चाहिए। (इन्स्ट्रक्शन)

अधीक्षक–पुं० [सं०] किसी कार्याल या विभाग का वह प्रधान अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के सब का की देख-भाल करे। (सुपरिन्टेन्डेन्ट)

अधीक्षण–पुं० [सं०] [वि० अधी क्षक] किसी कार्यालय या विभाग के कर्म चारियों के सब कामों की देख-भाल करना अधीक्षक का काम। (सुपरिन्टेन्डेन्स)

अधीत–वि० [सं०] (ग्रन्थ, पाठ आदि) जो पढ़ा जा चुका हो।

न-वि० [सं०] [भाव० अधी-] १. किसी के अधिकार, शासन, ण या वश में रहनेवाला। मातहत। डर) २. किसी के आसरे या सहारे रहनेवाला। आश्रित। अवलम्बित। किसी नियम, निर्देश आदि से बँधा या नियंत्रित। (सब्जेक्ट टू) ४. वशी-। आज्ञाकारी। ५. विवश। लाचार। अवलम्बित। मुनहसर।

नता-स्त्री० [सं०] १. परवशता। त्रता। २. मातहती।

नना*-स० [सं० अधीन] अपने ीन करना। , किसी के अधीन होना।

नस्थ-वि० [सं०] किसी की आज्ञा, कार आदि में किसी के नीचे रहने-ा। किसी के अधीन। (सबॉर्डिनेट)

नस्थ न्यायालय-पुं० [सं०] किसी न्यायालय की दृष्टि से उससे छोटा और के अधीन रहनेवाला न्यायालय। (सबॉ-ट कोर्ट)

नीकरण-पुं० [सं०] किसी को ने अधीन करना या अपने अधिकार लाना। (सबजुगेशन)

र-वि० [सं०] [भाव० अधीरता] धैर्य-रहित। २. घबराया हुआ। न। ३. बे-चैन। व्याकुल। ४. आतुर।

रा-स्त्री० [सं०] वह नायिका जो क में नारी-विलास सूचक चिह्न ने से अधीर होकर प्रत्यक्ष कोप करे।

ीश-पुं० [सं०] [स्त्री० अधीश्वरी] मालिक। स्वामी। २. भूपति। राजा।

ीश्वर-पुं० दे० 'अधीश'।

ुना-क्रि० वि० [सं०] [वि० आधु-क] सम्प्रति। आज-कल। इन दिनों।

ूरा-वि० [हिं० अध + पूरा] [स्त्री० अधूरी] जो पूरा न हो। अ-पूर्ण।

ेड़-वि० [हिं० आधा + एड़ (प्रत्य०)] ढलती जवानी का। बुढ़ापे और जवानी के बीच का।

अधेला-पुं० [हिं० आधा + एला (प्रत्य०)] एक पैसे के आधे मूल्य का सिक्का।

अधेली-स्त्री० दे० 'अठन्नी'।

अधो-अव्य० दे० 'अधः'।

अधोगति-स्त्री० [सं०] १. पतन। गिराव। २. अवनति। ३. दुर्दशा।

अधोगमन-पुं० [सं०] १. नीचे जाना। २. अवनति। पतन।

अधोगामी-वि० [सं० अधोगामिन्] [स्त्री० अधोगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. अवनति की ओर जानेवाला।

अधोतर-पुं० [सं० अधः + उत्तर] दोहरी बुनावट का एक प्रकार का देशी कपड़ा।

अधोभूमि-स्त्री० [सं०] भूमि या जमीन के ऊपरी स्तर के नीचेवाला स्तर या भाग। (सब-सॉयल)

अधोमंडल-पुं० [सं०] पृथ्वी से साढ़े सात मील तक ऊँचा वायु-मंडल। (बादल, बिजली, आँधी आदि इसी में होती हैं।)

अधोमार्ग-पुं० [सं०] १. नीचे का रास्ता। २. गुदा।

अधोमुख-वि० [सं०] १. नीचे मुँह किये हुए। २. औंधा। उलटा। क्रि० वि० औंधा। मुँह के बल।

अधोवस्त्र-पुं० [सं०] कमर से नीचे पहना जानेवाला कपड़ा। (धोती, लुंगी आदि)

अधोवायु-पुं० [सं०] अपान वायु। गुदा की वायु। पाद।

अधोविंदु-पुं० दे० 'अधः स्वस्तिक'।

अध्यक्ष-पुं० [सं०] १. स्वामी। मालिक। २. नायक। मुखिया। ३. अधिष्ठाता। ४. सभा-संस्था आदि का प्रधान। (चेयरमैन) विशेष दे० 'प्रधान' ३.।

अध्यक्षता-स्त्री० [सं०] १. अध्यक्ष होने की क्रिया या भाव। २. अध्यक्ष का पद या स्थान। ३. किसी समाज या वर्ग

में सबसे ऊँचा और प्रतिष्ठित आसन। ४. कार्य-संचालन आदि के लिए उच्च या प्रतिष्ठित पद पर बैठना।

अध्ययन–पुं॰ [सं॰] किसी विषय के सब अंगों या गूढ़ तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे देखना, समझना या पढ़ना। पठन-पाठन। पढ़ाई। (स्टडी)

अध्ययनावकाश–पुं॰ [सं॰] वह अवकाश या छुट्टी जो किसी कर्मचारी या अधिकारी को किसी विषय का विशेष रूप से अध्ययन करने के लिए मिले।

अध्यर्थ–पुं॰ [सं॰] वह वस्तु जिसपर अधिकार जताया जाय। (क्लेम)

अध्यर्थन–पुं॰ [सं॰] किसी वस्तु पर स्वत्व या अधिकार जताना। दावा। (क्लेम)

अध्यवसाय–पुं॰ [सं॰] [कर्त्ता-अध्यवसायी] १. लगातार उद्योग। दृढ़तापूर्वक किसी काम में लगा रहना। २. उत्साह।

अध्यात्म–पुं॰ [सं॰] आत्मा और ब्रह्म का विवेचन। ज्ञान-तत्व। आत्म-ज्ञान।

अध्यात्मवाद–पुं॰[सं॰][वि॰ अध्यात्मवादी] ब्रह्म और आत्मा को मुख्य मानने का सिद्धान्त।

अध्यादेश-पुं॰ [सं॰] किसी कार्य, व्यवस्था आदि के संबंध में राज्य द्वारा दिया या निकाला हुआ कोई आधिकारिक आदेश। (आर्डिनेन्स)

अध्यापक—पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ अध्यापिका] वह जो विद्यार्थियों को पढ़ाता हो। शिक्षक। उस्ताद।

अध्यापकी-स्त्री॰ [सं॰ अध्यापक] अध्यापन या पढ़ाने का काम। मुदर्रिसी।

अध्यापन-पुं॰ [सं॰] शिक्षण। पढ़ाने का कार्य।

अध्याय-पुं॰ [सं॰] ग्रंथ का खंड या विभाग जिसमें किसी विषय के विशेष अंग या विषय का विवेचन हो। प्रकरण। (चैपटर)

अध्यारोप–पुं॰ [सं॰] १. ए
भूल से दूसरी जगह लगाना। २. मि
निराधार कल्पना।

अध्यास-पुं॰ [सं॰] १. मिथ्या
२. कुछ का कुछ दिखाई देना या
पड़ना। भ्रम। धोखा। (इल्यूजन

अध्यासन–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अध्
१. उपवेशन। बैठना। २. आरोपण

अध्यासीन–वि॰ [सं॰] किसी
या वर्ग में सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा
(प्रेसाइडिंग) जैसे—न्यायालय में
धीश के रूप में और सभा में सभा
रूप में अध्यासीन होना।

अध्याहार–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अध्
१. तर्क-वितर्क। विचार। बहस। २.
पूरा करने के लिए उसमें और कुछ
ऊपर से जोड़ना। ३. अ-स्पष्ट वाक्य के
शब्दों में स्पष्ट करने की क्रिया।

अध्यूढ़ा–स्त्री॰ [सं॰] वह स्त्री
पति दूसरा विवाह कर ले। ज्येष्ठा पत्नी

अध्येय–वि॰ [सं॰] १. अध्ययन
या पढ़ने योग्य। २. जो पढ़ा जा
या पढ़ा जाने को हो।

अध्वर्यु–पुं॰ [सं॰] यजुर्वेद-विहि
करनेवाला ऋत्विक्।

अनंग–वि॰ [सं॰] [क्रि॰ अनं
बिना शरीर का। देह-रहित।
पुं॰ कामदेव।

अनंगना*–अ॰ [सं॰ अनंग] श
सुधि छोड़ना। सुध-बुध भुलाना।

अनंगारि–पुं॰ [सं॰] अनंग
कामदेव के शत्रु, शिव।

अनंगी–वि॰ [सं॰ अनंगिन्] [
अनंगिनी] अंग-रहित। बिना देह क
पुं॰ १. ईश्वर। २. कामदेव।

अनंत–वि॰ [सं॰] १. जिसका अ
पार न हो। असीम। २. बहुत

या बहुत बड़ा । ३. अविनाशी ।

पुं० १. विष्णु । २. शेषनाग । ३. लक्ष्मण । ४. बाँह पर पहनने का एक गहना ।

अनंतर–क्रि० वि० [सं०] १. पीछे । उपरान्त । बाद । २. निरन्तर । लगातार ।

अनंद*–पुं० दे० 'आनंद' ।

अनंदना–अ० [सं० आनन्द] आनंदित होना । खुश होना । प्रसन्न होना ।

अन–क्रि० वि० [सं० अन्] बिना । वगैर ।

वि० [सं० अन्य] कोई और । अपर । दूसरा ।

उप० [सं० अ] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाकर अभाव या विपरीत भाव सूचित करता है । जैसे–अन-गढ़, अन-गिनती आदि ।

अन-ऋतु–स्त्री० [हिं० अन + सं० ऋतु] १. विरुद्ध ऋतु । बे-मौसिम । २. ऋतु-विपर्य्यय । ३. ऋतु के विरुद्ध कार्य ।

अनक*–पुं० दे० 'आनक' ।

अनकना*–स० [सं० आकर्णन] १. सुनना । २. चुपचाप या छिपकर सुनना ।

अन-कहा–वि० [हिं० अन + कहना] [स्त्री० अन-कही] १. बिना कहा हुआ । अकथित । अनुक्त ।

मुहा०–अनकही देना = चुपचाप रहना ।

अनख–स्त्री० [सं० अन् + अक्ष] १. क्रोध । कोप । २. ग्लानि । खिन्नता । ३. ईर्ष्या ।

अ-नख–वि० [सं० अ + नख] बिना नख का ।

अनखना*–अ० [हिं० अनख] १. क्रोध करना । २. रुष्ट होना ।

अनखा–पुं० [हिं० अनख] काजल की बिन्दी । (कुदृष्टि से बचाने के लिए)

अनखाना–अ० दे० 'अनखना' ।

स० अप्रसन्न करना । नाराज करना ।

अनखाहट–स्त्री० दे० 'अनख' ।

अनखी*– वि० [हिं० अनख] १. जो जल्दी रुष्ट हो जाय । २. क्रोधी ।

अ-नखी–वि० [सं० अ + नखिन्] जिसे नख या नाखून न हों ।

अन-खुला–वि० [हिं० अन + खुलना] बिना खुला । बन्द ।

अनखौहाँ*–वि० [हिं० अनख] [स्त्री० अनखौहीं] १. क्रोध से भरा । कुपित । २. चिड़चिड़ा । ३. क्रोध दिखानेवाला । ४. अनुचित । बुरा ।

अन-गढ़–वि० [सं० अन + हिं० गढ़ना] १. बिना गढ़ा हुआ । २. जिसे किसी ने बनाया न हो । स्वयं-भू । ३. बे-डौल । भद्दा । बेढंगा । ४. उजड्ड । अक्खड़ ।

अन-गन*–वि० दे० 'अन-गिनत' ।

अनगवना*–अ० [हिं० अन + गमन] देर लगाना । विलम्ब करना ।

अनगाना*–अ० दे० 'अनगवना' ।

अन-गिनत–वि० [हिं० अन + गिनना] जो गिना न जा सके । बहुत अधिक ।

अन-गिना–वि० [हिं० अन + गिनना] १. जो गिना न गया हो । २. बहुत अधिक ।

अनघ–पुं० [सं०] वह जो अघ या पाप न हो ।

वि० पाप रहित । निर्दोष ।

अनघैरी–वि० दे० 'अनिमंत्रित' ।

अनघोरी*–क्रि० वि० [?] १. चुपके से । चुपचाप । २. अचानक । अकस्मात् ।

अन-चाहा–वि० [हिं० अन + चाहना] जिसकी चाह या इच्छा न की गई हो ।

अन-चिह्न–वि० = अपरिचित ।

अन-जन्मा–वि० [हिं० अन + सं० जन्म] १. जिसने जन्म न लिया हो । जैसे–ईश्वर । २. जिसका अभी जन्म न हुआ हो ।

अन-जान–वि० [हिं० अन + जानना] १. अज्ञानी । नादान । ना-समझ । २. अ-परिचित । अज्ञात ।

अनट–पुं० [सं० अनृत] १. उपद्रव । २. अत्याचार ।

अन-डीठ*–वि० [हिं० अन + डीठ = दृष्टि] जिसे देखा न हो । बिना देखा हुआ ।

अ-नत–वि० [सं०] बिना झुका हुआ ।

सीधा।

क्रि० वि० [सं० अन्यत्र] दूसरी जगह।

अनति–वि० [सं० अन् + अति] कम। थोड़ा। जैसे–अनति दूर।

अ-नति- स्त्री० [सं०] नम्रता का अभाव। अहंकार।

अन-देखा–वि० [हिं० अन + देखना] [स्त्री० अन-देखी] बिना देखा हुआ।

अनद्यतन–वि० दे० 'दिनातीत'।

अनधिकार–पुं० [सं०] १. अधिकार का अभाव। अधिकार न होना। २. बे-बसी। लाचारी। ३. अयोग्यता।

यौ०–अनधिकार चर्चा = जिस विषय का ज्ञान न हो, उसपर बोलना।

अनधिकारी–वि० [सं०] [स्त्री० अनधिकारिणी] १. जिसे अधिकार न हो। २. अ-योग्य। अपात्र।

अनधिकृत–वि० [सं०] १. जिसपर अधिकार न किया गया हो; अथवा अधिकार न हुआ हो। २. जिसके सम्बन्ध में अधिकार प्राप्त न हो।

अनधिगत–वि० [सं०] जो अधिगत अर्थात् जाना या समझा हुआ न हो। अ-ज्ञात।

अनधियुक्त–वि० [सं०] [भाव० अनधियुक्ति] १. जो किसी काम में लगा न हो। २. जिसकी जीविका न लगी हो। खाली बैठा हुआ। (अन्-एम्प्लॉयड)

अनधियुक्ति–स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें मनुष्य के हाथ में जीविका-निर्वाह का कोई साधन नहीं होता। बेकारी। (अन्एम्प्लॉयमेन्ट]

अनध्याय–पुं० [सं०] वह दिन जो शास्त्रानुसार पढ़ने-पढ़ाने का न हो। (अमावस्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा।)

अननुरूप–वि० [सं०] १. जो किसी के अनुरूप न हो। 'अनुरूप' का उलटा। २. जो किसी की मर्यादा को देखते हुए उसके अनुरूप या उपयुक्त न हो।

अनन्नास–पुं० [पुर्त० अनानास] ए छोटा पौधा जिसके फल खट-मीठे होते हैं

अनन्य–वि० [सं०] [स्त्री० अनन्या, भाव अनन्यता] अन्य से संबंध न रखनेवाला एक ही में लीन। एक-निष्ठ।

अन-पच–पुं० [हिं० अन + पचना] भोज न पचना। अजीर्ण। बद-हजमी।

अन-पढ़–वि० [हिं० अन + पढ़ना] पढ़ा-लिखा न हो। अ-शिक्षित।

अनपत्य–वि० [सं०] जिसे अपत्य सन्तान न हो। निस्सन्तान।

अनपराध–वि० [सं०] जिसका को अपराध न हो। निर्दोष।

अनपा कर्म–पुं० [सं०] कोई प्रतिज्ञा संविदा करके उसके अनुसार काम करना। निश्चय तोड़ना।

अन-पास*–पुं० [हिं० अन = नहीं + सं पाश] पाश या बन्धन का अभाव मोक्ष। छुटकारा।

अनपेक्ष–वि० [सं०] १. जिसे किसी अपेक्षा या आवश्यकता न हो। २. किसी की चिन्ता या परवाह न करे ला-परवाह।

अनपेक्षा–स्त्री० [सं०] १. अपेक्षा न होना। २. दे० 'उपेक्षा'।

अनबन–स्त्री० [हिं० अन + बनना बिगाड़। विरोध। खटपट।

वि० १. जो साथवाले के मेल का न हो अन-मेल। २. भद्दा या बे-ढंगा।

अन-बिधा–वि० [हिं० अन + विद्ध] बि बेधा या छेद किया हुआ। जैसे—अन बिधा मोती।

अन-बूझा–वि० [हिं० अन + बूझना १. जिसे समझ-बूझ न हो। अज्ञानी २. जो समझ में न आ सके।

अन-बोल(ता)–वि० [हिं० अन बोलना] १. न बोलनेवाला। मौन

२. जो अपना सुख-दुःख न कह सके।

अन-बोला–पुं० [हिं० अन-बोल] (किसी से) बोल-चाल या बात-चीत बन्द हो जाना।

अन-भल*–पुं० [हिं० अन + भला] बुराई। अहित।

अन-भला–वि० [हिं० अन + भला] बुरा। खराब।

पुं० दे० 'अन-भल'।

अन-भाय*–पुं० [हिं० अन + सं० भाव] आपस का वैर-विरोध या द्वेष।

वि० दे० 'अन-भावता'।

अन-भावता–वि० [हिं० अन + भाना = भला लगना] जो अच्छा या भला न लगे। अ-प्रिय।

अनभिज्ञ–वि० [सं०] [स्त्री० अनभिज्ञा, भाव० अनभिज्ञता] १. अज्ञ। अनजान। मूर्ख। २. अपरिचित। नावाकिफ।

अनभीष्ट–वि० [सं०] जो अभीष्ट न हो। जिसकी चाह या इच्छा न हो।

अन-भेदी–वि० [हिं० अन + भेद] १. जो भेद या रहस्य न जाने। २. पराया।

अनभो*–पुं० [हिं० अन + सं० भव = होना] १. अचंभा। अचरज। २. अनहोनी बात।

वि० १. अपूर्व। अलौकिक। २. अद्भुत। विलक्षण।

अनभोरी*–स्त्री० [हिं० भोर = भुलावा] भुलावा। चकमा।

अनभ्यस्त–वि० [सं०] १. जिसका अभ्यास न किया गया हो। २. जिसने अभ्यास न किया हो। अपरिपक्व।

अन-मना–वि० दे० 'अन्यमनस्क'।

अन-माया–वि० [हिं० अन + माय (माप)] जो नापा न जा सके। जिसकी थाह न हो।

अन-मारग*–पुं० = कु-मार्ग।

अनमिख*–वि० = अनिमेष।

अन-मिल*–वि० [हिं० अन = नहीं + मिलना] बे-मेल। बे-जोड़। अ-संबद्ध।

अन-मीच*–क्रि० वि० [हिं० अन + मीच = मृत्यु] बिना मृत्यु आये या अकाल में ही मरना।

अनमीलना*–स० [सं० उन्मीलन] (आँखें) खोलना।

अन-मेल–वि० [हिं० अन + मेल] १. बे-जोड़। अ-संबद्ध। २. बिना मिलावट का। विशुद्ध।

अन-मोल–वि० [हिं० अन + मोल] १. अमूल्य। २. मूल्यवान्। बहुमूल्य। कीमती। ३. सुन्दर। ४. उत्तम।

अनय–पुं० [सं०] १. अमंगल। २. विपत्ति। ३. अनीति। अन्याय।

अनयास*–क्रि० वि० दे० 'अनायास'।

अनरथ*–पुं० = अनर्थ।

अनरना*–स० [सं० अनादर] १. अनादर करना। २. अपमान करना।

अन-रस–पुं० [हिं० अन = नहीं + सं० रस] रस-हीनता। शुष्कता।

अन-रसना*–अ० [हिं० अन-रस] १. दुःखी या उदास होना। २. अप्रसन्न होना।

अन-रसा*–वि० [हिं० अन + रस] १. अन-मना। २. माँदा। बीमार। रोगी।

अनराता*–वि० [हिं० अन + राता] १. बिना रँगा। २. प्रेम में न पड़ा हुआ।

अन-रीति–स्त्री० [हिं० अन + सं० रीति] १. बुरी रीति। कुरीति। २. अनुचित व्यवहार। बुरा और ना-मुनासिब बरताव।

अन-रुचि*–स्त्री० = अरुचि।

अन-रूप*–वि० [हिं० अन = बुरा + रूप] १. कु-रूप। भद्दा। २. अ-समान। अ-सदृश।

अनर्गल–वि० [सं०] [भाव० अनर्गलता] १. बे-रोक। बे-धड़क। २. बे-सिर-पैर का। अंड-बंड। ३. लगातार।

अनर्घ–वि० [सं०] १. बहुमूल्य। क़ीमती। २. कम क़ीमत का। सस्ता।

अनर्जित–वि० [सं०] जो अर्जित न हो। जो कमाया न गया हो। (अन-अर्न्ड) जैसे—

अनर्जित आय या धन ।

अनर्थ–पुं० [सं०] १. विरुद्ध या उलटा अर्थ । २. बहुत बुरी और अनुचित बात । भारी अन्याय । ३. वह धन जो अ-धर्म से प्राप्त किया जाय ।

अनर्थक–वि० [सं०] १. निरर्थक । अर्थ-रहित । २. व्यर्थ । बे-फायदा ।

अनर्थकारी–वि० [सं०] [स्त्री० अनर्थकारिणी] १. उलटा मतलब निकालनेवाला । २. अनर्थ या अनुचित काम करनेवाला । ३. बहुत बड़ी हानि या खराबी करनेवाला । जैसे–अनर्थकारी भूकम्प ।

अनल–पुं० [सं०] अग्नि । आग ।

अनलस–वि० [सं०] १. आलस्य-रहित । फुर्तीला । २. चैतन्य ।

अन-लायक*–वि० दे० 'नालायक' ।

अन-लेखा*–वि० [हिं० अन + लेखा] जिसका लेखा या हिसाब न हो सके । अन-गिनत । असंख्य ।

अनल्प–वि० [सं०] जो अल्प या थोड़ा न हो । बहुत । अधिक ।

अनवकाश–पुं० [सं०] अवकाश न होना । अवकाश का अभाव ।

अनवच्छिन्न–वि० [सं०] १. जो विच्छिन्न, विभक्त या खंडित न हो । अखंडित । अटूट । २. जुड़ा हुआ । संयुक्त ।

अनवट–स्त्री० [?] १. पैर के अँगूठे में पहनने का छल्ला । २. बैलों की आँखों पर बाँधा जानेवाला कपड़ा ।

अनवद्य–वि० [सं०] दोष-रहित । निर्दोष ।

अनवधान–वि० [सं०] [भाव० अनवधानता] अवधान का अभाव । असावधानी । लापरवाही ।

अनवय*–पुं० [सं० अन्वय] १. वंश । कुल । खान्दान । २. दे० 'अन्वय' ।

अनवरत–क्रि० वि० [सं०] निरंतर । सतत । लगातार ।

अनवस्था–स्त्री० [सं०] १. ठीक अवस्था या स्थिति न होना । २. अव्यवस्था । आतुरता । अधीरता ।

अनवस्थिति–स्त्री० [सं०] [अनवस्थित] १. चंचलता । २. अधीरता । ३. आधार-हीनता ।

अनवाँसी–स्त्री० [सं० अन्वंश] बिस्वे का $\frac{१}{४००}$ वाँ या एक बिस्वाँसी बीसवाँ भाग । (भूमि की नाप)

अनवाद*–पुं० [हिं० अन = बुरा + वाद वचन] १. व्यर्थ का वाद-विवाद । फा बात-चीत । २. बुरा वचन । कटु भाषण ।

अनवेक्षा–स्त्री० [सं० अन् + अवेक्षा [वि० अनवेक्षित, अनवेक्षणीय] ऐसे सामा अपराध या अनुचित बात पर ध्यान न दे जिसपर विधि के अनुसार ध्यान दि जा सकता हो । (नान कागनिजेन्स)

अनवेक्षणीय–वि० [सं०] (ऐ अपराध) जिसपर ध्यान देना आवश्यक न हो । (नॉन कागनिजेबुल)

अनशन–पुं० [सं०] भोजन न करना खाना छोड़ देना । निराहार रहना ।

अन-सखरी–वि० स्त्री० [हिं० अन + सखरी] (रसोई) जो सखरी न हो । पक्की (रसोई)

अन-सहन–वि० [हिं० अन + सहना] सहा न जा सके । असहन-शील ।

अनसाना†–अ० [हिं० अनख] १. म में अप्रसन्न या नाराज होना । बिगड़ना २. चिढ़ना ।

स० किसी को अप्रसन्न या नाराज करना ।

अनसूया–स्त्री० [सं०] १. असूया य ईर्ष्या-द्वेष का अभाव । किसी का बुरा मनाना । २. अत्रि मुनि की पत्नी का नाम ।

अनस्तित्व–पुं० [सं०] अस्तित्व क अभाव । अस्तित्व न होना ।

अनहद-नाद–पुं० दे० 'अनाहद' ।

अन-हित–पुं० [हिं० अन + हित] हित या भलाई का उलटा । बुराई । २.

भ कामना।
हितू–वि० [हिं० अन-हित] अन-हित
नेवाला। अशुभ या अ-मंगल चाहने-
। हितैषी का उलटा।
होना–वि० [हिं० अन = नहीं +
] न होनेवाला। अ-लौकिक।
कानी*–स्त्री० दे० 'आनाकानी'।
कार–वि० [सं०] जिसका कोई
र न हो। निराकार।
क्रमण–पुं० [सं०] आक्रमण न
। जैसे–अनाक्रमण की सन्धि।
गत–वि० [सं०] १. जो न आया
अनुपस्थित। २. भावी। होनहार। ३.
परिचित। अ-ज्ञात। ४. अनादि। ५.
भुत। विलक्षण।
वि० अचानक। सहसा।
चरण–पुं० [सं०] १. किसी कार्य का
चरण न करना। २. जो करना हो वह न
। करने का काम छोड़ देना। (ओमिशन)
चार–पुं० [सं०] १. नीति विरुद्ध,
या निन्दनीय आचरण। कदाचार।
दुराचार। भ्रष्टाचार।
चारी–वि० = अनाचार करनेवाला।
ज–पुं० [सं० अन्नाद्य] अन्न। धान्य।
। गल्ला।
ड़ी–वि० [सं० अनार्य ?] १.
समझ। नादान। अन-जान। २. जो
ण न हो। अ-कुशल। अ-दक्ष।
थ–वि० [सं०] १. जिसका कोई
न हो। बिना मालिक का। २. जिसका
पालन करनेवाला न हो।
थालय–पुं० [सं०] वह स्थान
हाँ अ-सहाय दीन-दुखियों का पालन हो।
दर–पुं० [सं०] [वि० अनादृत,
नादरणीय] १. आदर न होना।
रादर। अपमान। अ-प्रतिष्ठा। बेइज्जती।
. साहित्य में एक अलंकार जिसमें प्राप्त वस्तु
समान दूसरी अ-प्राप्त वस्तु की इच्छा करके
प्राप्त वस्तु का अनादर किया जाता है।

अनादि–वि० [सं०] जिसका आदि न हो। जो सदा से हो।

अनादृत–वि० [सं०] १. जिसका अनादर या अपमान हुआ हो। २. जिसका आदर या सम्मान न होता हो।

अनाधार–वि० = निराधार।

अनाना*–स० [सं० आनयन] मँगाना।

अनाप-शनाप–वि० [सं० अनाप्त + अनु०] १. व्यर्थ का और असंबद्ध (कथन)। २. अंड-बंड। ऊटपटाँग।

अनाप्त वि० [सं०] १. अ-प्राप्त। अ-लब्ध। २. अ-विश्वस्त। ३. असत्य। ४. अ-कुशल। अनाड़ी। ५. अनात्मीय। अ-बंधु।

अनाम–वि० [सं० अनामन्] [स्त्री० अनामा] बिना नाम का। अ-प्रसिद्ध।

अनामिका–स्त्री० [सं०] कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली।

अनायत्त–वि० [सं०] १. जो वश में न हुआ हो। २. स्वतंत्र। स्वाधीन।

अनायास–क्रि० वि० [सं०] १. बिना आयास या प्रयास के। बिना परिश्रम। २. अकस्मात्। अचानक।

अनार–पुं० [फ़ा०] एक पेड़ और उसके फल का नाम। दाड़िम।

अनारदाना–पुं० [फा०] खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना।

अनारी*–वि० दे० 'अनाड़ी'।

अनार्जव–पुं० [सं०] १. आर्जव या ऋजुता का अभाव। २. बेईमानी। (डिस्-ऑनेस्टी)

अनार्य–पुं० [सं०] [भाव० अनार्यता] १. वह जो आर्य जाति का न हो। २. म्लेच्छ। वि० अ-श्रेष्ठ। हीन। बुरा।

अनावर्तक–वि० [सं०] (व्यय, दान आदि) जिसका आवर्त्तन न हो। जो एक ही बार होकर रह जाय, बार बार न हो।

(नॉन-रेकरिंग)

अनावश्यक–वि० [सं०] जिसकी आवश्यकता न हो। अ-प्रयोजनीय। गैर-जरूरी।

अनावासिक–वि० [सं०] जो स्थायी रूप से निवासी या बसा हुआ न हो, बल्कि कुछ दिनों के लिए कहीं से आकर रह या ठहर गया हो । 'आवासिक' का उलटा । (नान-रेजीडेन्ट)

अनावृत–वि० [सं०] १. जो ढका न हो । खुला । २. जो घिरा न हो ।

अनावृष्टि–स्त्री० [सं०] वर्षा का अभाव। अ-वर्षा । सूखा । (ड्रॉट)

अनाश्रमी–वि० [सं० अनाश्रमिन्] गार्हस्थ्य आदि चारो आश्रमों से रहित। आश्रम-भ्रष्ट ।

अनाश्रित–वि० [सं०] जिसे सहारा न हो । आश्रय-रहित । निरवलम्ब ।

अनासक्त–वि० [सं०] जो आसक्त न हो । निर्लिप्त ।

अनासक्ति–स्त्री० [सं०] १. आसक्ति या अनुराग न होना । २. अलग, दूर या उदासीन रहना ।

अनासीन–वि० [सं०] अपने आसन, पद या स्थान से हटाया हुआ । (अन-सीटेड)

अनाह–पुं० [सं०] पेट फूलने का रोग। अफरा ।

* वि० = अनाथ ।

अनाहक*–क्रि० वि० दे० 'नाहक' ।

अनाहत–वि० [सं०] जिसपर आघात न हुआ हो ।

पुं० १. शब्द-योग में वह शब्द जो अँगूठों से दोनों कानों को बन्द करने से सुनाई देता है । २. हठ-योग में शरीर के अन्दर के छः चक्रों में से एक जो हृदय के पास है । आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह उन गिल्टियों के पास है जो शरीर को बलवान बनाती हैं और जो वृद्धावस्था आने से पहले ही प्रायः लुप्त हो जाती हैं ।

अनाहार–पुं० [सं०] [वि० अन
१. भोजन का त्याग । भोजन न
२. जिसने कुछ खाया न हो ।

अनाहूत–वि० [सं०] जो बुलाया
हो । बिना बुलाया हुआ ।

अनिंद्य–वि० [सं०] १.जो निन्दा
न हो । निर्दोष । २. उत्तम । अच्छा

अनिच्छा–स्त्री० [सं०] [वि०
च्छित] इच्छा का अभाव ।
चाहना ।

अनिच्छित–वि० [सं०] १.
इच्छा या चाह न की गई हो ।
रुचिकर न हो । अच्छा न लगनेवाल

अनिच्छुक–वि० [सं०] १. जो
या चाह न करे । २. किसी की ओर
न रखनेवाला ।

अनित्य–वि० [सं०] [भाव०
त्यता] १. जो सदा न रहे । अ-स
क्षण-भंगुर । २. कभी न कभी
जानेवाला । नश्वर । (मॉर्टल)
स्वयं कार्य-रूप हो और जिसका कोई
हो । ४ असत्य । झूठा ।

अनिद्र–वि० [सं०] जिसे नींद न
हो या न आई हो ।

पुं० नींद न आने का उन्निद्र नामक

अनिप*–पुं० दे० 'सेनापति' ।

अनिमा*–स्त्री० = अणिमा ।

अनिमिष (मेष)–क्रि० वि० [सं०
बिना पलक गिराये । एक-टक । २.
तर । लगातार ।

अनियंत्रित–वि० [सं०] १. जिसपर
त्रण न हो । प्रतिबंध-रहित । बिना रो
का । २. मन-माना ।

अनियंत्रित राज्य–पुं० [सं०
राज्य जिसका सारा अधिकार कि
व्यक्ति (राजा) के हाथ में हो और
पर प्रजा के प्रतिनिधियों का कोई
न हो । (एब्सोल्यूट मॉनर्की)

नियम–पुं० [सं०][वि० अ-नियमित] यम, व्यस्था आदि का अभाव।

नियमित–वि० [सं०] [भाव० -नियमितता] १. नियम-रहित। २. समें नियमों का ठीक तरह से या पूरा पालन हुआ हो। बे-कायदा। (इरेंगुलर) ३. -निश्चित। अ-निर्दिष्ट।

नियाउ*–पुं० = अन्याय।

नियारा*–वि० [हिं० अनी = नोक + ० आर (प्रत्य०)] [स्त्री० अनि-री] १. नुकीला। २. धारदार। पैना।

निरुद्ध–वि० [सं०] जो निरुद्ध या द्ध न हो। जिसके आगे कोई रुकावट हो। बिना रोका हुआ। ० श्रीकृष्ण के पोते और प्रद्युम्न के लड़के न्हें ऊषा ब्याही थी।

निर्दिष्ट–वि० [सं०] १. जो निर्दिष्ट हुआ हो। जिसका निर्देश न हुआ । २. अ-निश्चित।

निर्बंध–वि० [सं०] १. जिसके लिए कोई धन न हो। बंधन-रहित। २. स्वतंत्र।

निर्वच–वि० दे० 'अनिर्वचनीय'।

निर्वचनीय-वि० [सं०] जो वचन रा बतलाया न जा सके। जो कहा न सके। अ-कथनीय।

निर्वाच्य–वि० [सं०] १. जो निर्वान के योग्य न हो। जिसका चुनाव न सके। जो चुना न जा सके। २. दे० ानिर्वचनीय'।

निर्वाप्य–वि० [सं०] जिसका निर्वाण या शमन न हो सके। जैसे-अनिर्वाप्य वाला या वैमनस्य।

निल–पुं० [सं०] वायु। पवन। हवा। मीर।

निल कुमार–पुं० [सं०] हनुमान।

निवार*–वि० = अनिवार्य।

निवार्य–वि० [सं०] [भाव० अनि-ार्यता] १. जिसका निवारण न हो। जिससे बचा न जा सके। (एसेन्शल) २. जो हटाया या छोड़ा न जा सके। (इनेविटेबुल) ३. जिसे लेना, रखना या मानना आवश्यक हो। (कम्पल्सरी)

अ-निश्चित–वि० [सं०] १. जो निश्चित न हो। अ-नियत। अ-निर्दिष्ट। २. आकस्मिक रूप से बीच में आ जानेवाला। (कन्टिन्जेन्ट)

अनिष्ट–वि० [सं०] जो इष्ट न हो। अनभिलषित।

पुं० १. अ-मंगल। अ-हित। २. हानि।

अनी–स्त्री० [सं० आणि] १. नुकीली चीज का अगला भाग। नोक।

स्त्री० [सं० अनीक] १. समूह। झुंड। २. सेना। फौज।

स्त्री० [हिं० आन] मन में होनेवाली लज्जा। ग्लानि।

अनीक–पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. सेना। फौज। ३. युद्ध। लड़ाई।

अ-नीक*–वि० [हिं० अ + नीक] जो 'नीक' (अच्छा) न हो। बुरा। खराब।

अनीठ*–वि० दे० 'अनिष्ट'।

अनीति–स्त्री० [सं०] १. नीति, न्याय, औचित्य आदि का न होना। २. अन्याय। अन्धेर। ३. अत्याचार।

अनीश–वि० [सं०] १. जिसका कोई ईश या स्वामी न हो। २. सबसे बड़ा।

अनीश्वरवाद–पुं० [सं०] १. ईश्वर का अस्तित्व न मानना। नास्तिकता। २. मीमांसा दर्शन का सिद्धान्त।

अनीह–वि० [सं०] १. इच्छा-रहित। निस्पृह। २. ला-परवाह।

अनीहा–स्त्री० [सं०] ईहा का न होना। वासना, अनुराग आदि का अभाव।

अनु–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाकर उनमें ये अर्थ लगाता है–(क) पीछे; जैसे–अनुसार, अनुरूप, अनुकूल। (ख) संग या साथ; जैसे–अनुपान।

(ग) हर एक; जैसे–अनुदिन। (घ) बार बार; जैसे—अनुशीलन।

अव्य* १. स्वीकृति सूचक अव्यय। हाँ। २. इसके बाद या आगे। अत्र।

अनुकंपा–स्त्री० [सं०] दूसरों का दुख देखकर उनके प्रति मन में उत्पन्न होनेवाली दया। कृपा। अनुग्रह। (कम्पैशन)

अनुकरण–पुं० [सं०] [वि० अनुकरणीय, अनुकृत] १. देखा-देखी किया जानेवाला कार्य। नकल। २. वह जो पीछे हो या आवे।

अनुकलन–पुं० [सं०] [वि० अनुकलित] दूसरे की कोई बात लेकर और उसे अपने अनुकूल बनाकर ग्रहण करना। (एडाप्टेशन)

अनुकल्प–पुं० [सं०] चुनने, छाँटने या ग्रहण करने के लिए सामने की वस्तुओं या बातों में से वह कोई वस्तु या बात जो चुनी जाने या गृहीत होने को हो। (आल्टर-नेटिव)

अनुकारक–वि० [सं०] ज्यों की त्यों किसी की नकल करनेवाला। (इमीटेटर)

अनुकूल–वि० [सं०] [भाव० अनुकूलता] १. अनुरूप। मुआफिक। २. पक्ष में रहकर सहायता करनेवाला। ३. विचारों आदि में समान होने या मेल खानेवाला। ४. प्रसन्न (किसी पर)।

पुं० १. वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री से सम्बन्ध और प्रेम रखे। २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है।

अनुकूलता–स्त्री० [सं०] अनुकूल होने का कार्य, अवस्था या भाव।

अनुकूलन–पुं० [सं०] १. अपने आपको किसी के अनुकूल बनाना। २. दे० 'अभिकलन'।

अनुकूलना*–अ० [सं० अनुकूलन] १. अनुकूल या मुआफिक होना। २. हितकर होना। ३. प्रसन्न होना।

अनुकृत–वि० [सं०] [भाव० अनुकृ जिसका अनुकरण किया गया हो।

अनुकृति–स्त्री० [सं०] १. दूसरे देखकर वैसा ही किया हुआ कार्य। नकल कोई चीज देखकर ज्यों की त्यों वैसी ही हुई चीज। (इमिटेशन) ३. साहित्य में अलंकार जिसमें एक वस्तु का कारणांत दूसरी वस्तु के अनुसार होने का वर्णन होता

अनुक्त–वि० [सं०] [स्त्री० अनुक्त बिना कहा हुआ। अ-कथित।

अनुक्रम–पुं० [सं०] १. क्रम। सिला। २. लगातार एक के बाद एक की क्रिया या भाव। (सक्सेशन)

अनुक्रमणिका–स्त्री० [सं०] १. क्रम। सिला। २. क्रम से दी हुई सूची। (इन्डे

अनुक्षण–क्रि० वि० [सं०] १. क्षण पर। हर समय। २. निरन्तर। लगाता

अनुग–वि० = अनुगत।

अनुगत–वि० [सं०] [स्त्री० अनुग [भाव० अनुगति] १. अनुगामी। यायी। २. अनुकूल। मुआफिक।

पुं० सेवक। नौकर

अनुगम–पुं० [सं०] तर्क-शास्त्र में बात सिद्ध करने के लिए भिन्न-भिन्न या तत्त्वों के आधार पर स्थिर किया वाला परिणाम। (इन्डक्शन)

अनुगमन–पुं० [सं०] १. पीछे चल अनुसरण। २. समान आचरण। ३. वि का पति के साथ जल मरना।

अनुगामिता–स्त्री० [सं०] १. अनु होने की क्रिया या भाव। २. अनुगमन

अनुगामी–वि० [सं० अनुगामि [स्त्री० अनुगामिनी] १. पीछे वाला। २. समान आचरण करनेवाला आज्ञाकारी।

अनुगृहीत–वि० [सं०] [अनुगृहीता] १. जिसपर अनुग्रह हुआ २. उपकृत। कृतज्ञ।

नुग्रह-पुं० [सं०] १. कृपा। दया। . अनिष्ट-निवारण। ३. सरकार या राज्य ी ओर से होनेवाली रिआयत।

नुग्राहक-वि० [सं०] [स्त्री० अनु-ाहिका] अनुग्रह करनेवाला। कृपालु।

नुचर-पुं० [सं०] १. दास। नौकर। . सहचारी। साथी।

नुचित-वि० [सं०] [भाव० अनौ-चत्य] १. जो उचित न हो। ना-मुना-सब। २. बुरा। खराब।

नुच्छेद-पुं० [सं०] १. किसी साहि-त्यक पुस्तक, विवेचन आदि के किसी करण के अन्तर्गत वह विशिष्ट विभाग जिसमें किसी एक विषय या उसके किसी अंग का एक साथ विवेचन होता है। (पैराग्राफ) २. नियमावली, विधान, विदा आदि का कोई एक विशिष्ट अंग, जसमें किसी एक विषय, प्रतिबंध आदि का क साथ विवेचन होता है। (आर्टिकिल)

नुज-वि० [सं०] जो पीछे जनमा हो। ुं० [स्त्री० अनुजा] छोटा भाई।

नुजीवी-पुं० [सं० अनुजीविन्] [स्त्री० नुजीविनी] १. आश्रित। २. सेवक। ौकर।

नुज्ञप्त-वि० [सं०]. जिसके लिए अनुज्ञा ा स्वीकृति मिल चुकी हो। (एलाउड)

नुज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] कोई काम करने ी आज्ञा या स्वीकृति देने की क्रिया या ाव। (सैंक्शन)

नुज्ञा-स्त्री० [सं०] [वि० अनुज्ञप्त, नुज्ञात] १. आज्ञा। हुकुम। २. वह नुमति या स्वीकृति जो किसी बड़े या धिकारी से कोई काम करने के लिए मिले। इजाज़त। (सैंक्शन, परमिशन) . बिना आपत्ति किये किसी को कोई काम करने देना। (एलाउ) ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी बुरी चीज में भी कोई अच्छी बात देखकर उसे पाने की इच्छा का वर्णन होता है।

अनुज्ञात-वि० [सं०] जिसके लिए अनुज्ञा मिली हो। अनुज्ञप्त। (एलाउड)

अनुज्ञा-पत्र- पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी को किसी अधिकारी से कोई कार्य करने अथवा कुछ लेने की अनुज्ञा या स्वीकृति मिली हो। (परमिट)

अनुज्ञापन-पुं० [सं०] [वि० अनुज्ञापित, अनुज्ञप्त] अनुज्ञा देने की क्रिया या भाव। अनुज्ञा देना।

अनुज्ञापित-वि० दे० 'अनुज्ञप्त'।

अनुताप- पुं० [सं०] [वि० अनुतप्त] १. तपन। दाह। जलन। २. दुख। रंज। ३. पछतावा। अफसोस।

अनुतोष-पुं० [सं०] [वि० अनुतुष्ट] १. किसी काम से होनेवाला संतोष। २. वह धन आदि जो किसी को तुष्ट या प्रसन्न करने के लिए दिया जाय। (ग्रैटिफिकेशन)

अनुतोषण-पुं० [सं०] [वि० अनुतुष्ट] १. किसी को अनुतोष करने की क्रिया या भाव। २. किसी को कुछ देकर अपने अनुकूल करना। (ग्रैटिफिकेशन)

अनुत्तर-वि० [सं०] जो उत्तर न दे सके। निरुत्तर।

पुं० [वि० अनुत्तरित] उत्तर का अभाव। उत्तर या जवाब न देना।

अनुत्तरदायी-वि० [सं०] जो अपने कर्त्तव्य-पालन और उत्तरदायित्व का पूरा ध्यान न रखे और उनकी उपेक्षा करे। (इर्रेस्पॉन्सिबुल)

अनुत्तरित-वि० [सं०] जिसका उत्तर न दिया गया हो।

अनुत्तीर्ण-वि० [सं०] जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हुआ हो।

अनुदत्त-वि० [सं०] जो किसी को अनुदान के रूप में दिया गया हो।

अनुदात्त-वि० [सं०] १. छोटा। तुच्छ। २. नीचा (स्वर)। ३. लघु। (उच्चारण)

पुं॰ स्वर के तीन भेदों में से एक, जो उदात्त या ऊँचा नहीं, बल्कि कुछ नीचा होता है।

अनुदान–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अनुदत्त] राज्य, शासन आदि को किसी विशेष कार्य के लिए सहायता के रूप में मिलनेवाला धन। (ग्रान्ट)

अनुदार–वि॰ [सं॰] १. जो उदार न हो। संकीर्ण। २. कृपण। कंजूस।

अनु-दृष्टि–स्त्री॰ [सं॰] बहुत-सी वस्तुओं में से प्रत्येक वस्तु को उसके ठीक रूप में और सब वस्तुओं के अनुपात का ध्यान रखते हुए देखने की क्रिया या भाव। मुनासिबत। (पर्सपेक्टिव)

अनु-धर्मक–वि॰ [सं॰] धर्म्म, आकृति, स्वरूप आदि के विचार से किसी के समान। सदृश। अतिदिष्ट। (एनैलोगस)

अनु-धर्मता–स्त्री॰ [सं॰] अनुधर्मक होने का भाव या दशा। (एनैलोजी)

अनु-धावन–पुं॰ [सं॰] पीछे चलना। अनुसरण करना।

अनुनय–पुं॰ [सं॰] १. विनय। विनती। प्रार्थना। २. रूठे हुए को मनाना।

अनुनासिक–वि॰ [सं॰] (अक्षर या वर्ण) जिसके उच्चारण में नाक से भी कुछ स्वर निकलता हो। (नैज़ल)

अनुपम–वि॰ [सं॰] [भाव॰ अनुपमता] १. जिसकी बराबरी का और कोई न हो। उपमा-रहित। बे-जोड़। (यूनीक) २. बहुत अच्छा।

अनुपमेय–वि॰ दे॰ 'अनुपम'।

अनुपयुक्त–वि॰ [सं॰] [भाव॰ अनुपयुक्तता] जो उपयुक्त या योग्य न हो। (इन्-एक्सपीडिएन्ट)

अनुपयोग–पुं॰ [सं॰] उपयोग का अभाव या विरोधी भाव।

अनुपयोगिता–स्त्री॰ [सं॰] उपयोगिता का न होना। निरर्थकता।

अनुपयोगी–वि॰ [सं॰] बे-काम। व्यर्थ का।

अनुपस्थित–वि॰ [सं॰] जो स उपस्थित या मौजूद न हो। अविद्यम गैर-हाजिर। (ऐबसेन्ट)

अनुपस्थिति–स्त्री॰ [सं॰] उपसि वर्त्तमान या मौजूद न होने का भ सामने न होना। गैर-मौजूदगी। (ऐबसे

अनुपात–पुं॰ [सं॰] १. गणित की त्रैरा क्रिया। २. मान, माप, उपयो आदि की तुलना के विचार से एक वस्तु दूसरी वस्तु से रहनेवाला सम्बन्ध अपेक्षा। तुलनात्मक स्थिति। (प्रोपोश

अनुपान–पुं॰ [सं॰] वह वस्तु जो औ के साथ या ऊपर से खाई जाय।

अनुपाय–वि॰ [सं॰] जिसके पास जिसका कोई उपाय न हो।

अनुपालन–पुं॰ [सं॰] १. किसी हुई आज्ञा का ठीक पालन। २. किसी या आज्ञा को उसके ठीक स्थान तक चाने का काम। (तामील, सरविस)

अनुपूरक–वि॰ [सं॰] १. किसी के लग या मिलकर उसकी पूर्त्ति करनेवा (कॉम्प्लिमेन्टरी) २. छूट, त्रुटि, आदि की पूर्ति के लिए बाद में ला मिलाया या बढ़ाया हुआ। (सप्लिमेन्ट

अनुपूरण–पुं॰ [सं॰] किसी प्रकार त्रुटि या कमी पूरी करने के लिए बा उसमें कुछ और बढ़ाना, मिलाना लगाना। (सप्लिमेन्ट)

अनुप्रस्थ–वि॰ [सं॰] जो चौड़ाई के हो। (लैटिट्यूडिनल)

अनुप्रनाण–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अ प्राणित] (किसी में) प्राण डाल जीवन का संचार करना।

अनुप्रापण–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अनु (कर, दंड आदि के रूप में) प्राप्तव्य इकट्ठा करना या उगाहना। वसूली की क्रिया या भाव। वसूली। (कलेक्श

ुप्राप्त-वि० [सं०] जिसका अनुप्रापण आ हो। इकठ्ठा किया या उगाहा हुआ। सूल किया हुआ।

ुप्राप्ति-स्त्री० [सं०] [वि० अनुप्राप्त] कर, दंड आदि के रूप में) प्राप्तव्य धन कठ्ठा करने की क्रिया या भाव। वसूली।

ुप्रास-पुं० [सं०] वह शब्दालंकार समें किसी पद में एक ही अक्षर बार बार ाता है। वर्ण-वृत्ति। वर्ण-मैत्री। (एलि- रेशन)

ुबंध-पुं० [सं०] [वि० अनुबद्ध] . बाँधनेवाली चीज या सम्बन्ध। बन्धन। . किसी विषय की सब बातों का विवेचन। ३. कोई काम करने के लिए दो पक्षों में नेवाला ठहराव या समझौता। (एग्रिमेन्ट) . किसी भावी कार्य के सम्बन्ध में होने-ला आपसी निश्चय। (एनगेजमेन्ट) . स्तुओं, जीवों, अंगों आदि में आवश्यक ा अनिवार्य रूप से होनेवाला घनिष्ठ पारपरिक सम्बन्ध। (को-रिलेशन)

ुबंध-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी अनुबंध की शर्तें लिखी हों। करारनामा। (एग्रिमेन्ट)

ुबद्ध-वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २. जिसके सम्बन्ध में कोई अनुबन्ध या मझौता हुआ हो। (एग्रीड)

ुबोधक-पुं० दे० 'आलोक-पत्र'।

ुबोधन-पुं० [सं०] किसी को कोई ात स्मरण कराने की क्रिया या भाव।

ुभक्त-वि० [सं०] जो सब लोगों को उनकी आवश्यकता का ध्यान रखकर उनके अंश या हिस्से के रूप में दिया जाय। (रैशन्ड)

नुभक्तक-पुं० [सं०] वह जो लोगों को उनकी आवश्यकता का ध्यान रखते हुए उनके अंश या हिस्से के रूप में दिया गया हो। (रैशन)

नुभव-पुं० [सं०] [वि० अनुभवी, अनुभाव्य, अनुभूत] वह ज्ञान जो कोई काम या प्रयोग करने से प्राप्त हो। (एक्सपीरिएन्स)

अनुभवी-वि० [सं० अनुभविन्] अनुभव रखनेवाला। जिसने अनुभव प्राप्त किया हो।

अनुभाजन-पुं० [सं०] [वि० अनुभक्त] वह क्रिया जिसमें कोई वस्तु लोगों की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए उनके अंश या हिस्से के अनुसार उन्हें दी जाती हैं। (रैशनिंग)

अनुभाव-पुं० [सं०] १. महिमा। बड़ाई। २. साहित्य या काव्य में रस के अन्तर्गत चित्त का भाव प्रकट करनेवाली कटाक्ष, रोमांच आदि चेष्टाएँ। ३. किसी व्यक्ति, वस्तु, वर्ग आदि में विशेष रूप से पाये जानेवाले गुण या लक्षण। (कैरेक्टरिस्टिक्स)

अनुभावी-वि० [सं० अनुभाविन्] [स्त्री० अनुभाविनी] १. जिसमें अनुभव करने की शक्ति हो। २. वह साक्षी जिसने सारी घटना स्वयं देखी हो। (आइ विटनेस)

अनुभूत-वि० [सं०] १. जिसका अनुभव या साक्षात् ज्ञान हुआ हो। २. परीक्षित। तजरबा किया हुआ।

अनुभूति-स्त्री० [सं०] १. अनुभव। २. मन में होनेवाला ज्ञान। परिज्ञान।

अनुभोग-पुं० दे० 'भोग' २.।

अनुमति-स्त्री० [सं०] १. आज्ञा। हुकुम। २. कोई काम करने से पहले उसके सम्बन्ध में बड़ों से मिलने या ली जानेवाली स्वीकृति जो बहुत-कुछ आज्ञा के रूप में होती है। अनुज्ञा। (परमिशन) ३. कोई काम करते समय या कर चुकने पर किसी बड़े या उच्चाधिकारी के द्वारा होनेवाला उसका अनुमोदन या समर्थन। स्वीकृति। (एस्सेन्ट)

अनुमान-पुं० [सं०] [वि० अनुमित, अनुमेय, अनुमानित] १. अपने मन से यह समझना कि ऐसा हो सकता है या होगा। अटकल। अंदाज। (गेस) २. मोटा

हिसाब लगाकर अन्दाज से यह समझना कि यह ऐसा या इतना होगा। (एस्टिमेट) ३. न्याय में प्रमाण के चार भेदों में से वह भेद जिससे प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना होती है।

अनुमानतः–क्रि॰ वि॰ [सं॰] अनुमान, अटकल या अंदाज से।

अनुमानना*–स॰ [सं॰ अनुमान] अनुमान करना। अंदाज लगाना।

अनुमानित–वि॰ दे॰ 'अनुमित'।

अनुमित–वि॰ [सं॰] १. जो अनुमान से सोचा या समझा गया हो। (गेस्ड) २. जो अनुमान से या मोटा हिसाब लगाकर ठहराया गया हो। (एस्टिमेटेड)

अनुमिति–स्त्री॰ [सं॰] अनुमान।

अनुमेय–वि॰ [सं॰] अनुमान में आने के योग्य।

अनुमोदन–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अनुमोदित] १. प्रसन्नता प्रकट करना। २. किसी के किये हुए काम या सामने रक्खे हुए सुझाव को ठीक मानकर अपनी स्वीकृति देना या उसका समर्थन करना। (एप्रूवल)

अनुमोदित–वि॰ [सं॰] १. (प्रस्ताव) जिसका किसी ने अनुमोदन किया हो। २. (बात या विचार) जिसे किसी उच्च अधिकारी ने ठीक मान लिया हो और जिसके अनुसार कार्य करने की स्वीकृति दे दी हो।

अनुयाचक–पुं॰ [सं॰] वह जो किसी को समझा-बुझाकर उससे अपने किसी काम के लिए कहे। अनुयाचन करनेवाला। (कैन्वेसर)

अनुयाचन–पुं॰ [सं॰] किसी को समझा-बुझाकर अपने अनुकूल करते हुए उससे कोई काम करने के लिए कहना। (कैन्वेसिंग) जैसे–मत या वोट के लिए, अथवा किसी के हाथ अपना माल बेचने के लिए अनुयाचन।

अनुयायी–वि॰ [सं॰ अनुयायिन् [स्त्री॰ अनुयायिनी] १. किसी के पीछे चलनेवाला। अनुगामी। अनुकरण करनेवाला। ३. किसी के सिद्ध मानने और उसके अनुसार चलनेवाल (फॉलोअर)

पुं॰ अनुचर। सेवक। दास।

अनुयोग–पुं॰ [सं॰] कोई बात जा के लिए कुछ पूछना या उसपर आ करना। किसी बात की सत्यता में सन्देह प्र करना। (क्वेश्चन)

अनुरंजन–पुं॰ [सं॰][वि॰ अनुरंजि १. अनुराग। प्रीति। २. दिल-बहलाव

अनुरक्त–वि॰ [सं॰] १. जिसके मन किसी के प्रति अनुराग हुआ हो। २. कि की ओर झुका या ढला हुआ।

अनुरक्ति–स्त्री॰ [सं॰] १. अनु होने की क्रिया या भाव। किसी के श्रद्धा या सद्भाव होना। अनुराग। प्रेम (एफेक्शन)

अनुरणन–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अनुरणि किसी चीज का बोलना या बजना।

अनुराग–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अनुरक्त १. प्रीति। प्रेम। २. दे॰ 'अनुरक्ति'।

अनुरागना*–अ॰ [सं॰ अनुराग अनुराग या प्रेम से युक्त होना। प्र करना।

अनुरागी–वि॰ [सं॰ अनुरागिन्][स्त्री अनुरागिनी] अनुराग रखनेवाला।

अनुराध–पुं॰ [सं॰] विनय। प्रार्थन

अनुराधना*–स॰ [सं॰ अनुराधन विनय करना। मनाना।

अनुरूप–वि॰ [सं॰] १. तुल्य रूप क सदृश। समान। २. योग्य। उपयुक्त।

अनुरूपक–पुं॰ [सं॰] १. वह किसी के अनुरूप हो या अनुकरण पर हो। २. प्रतिमा। मूर्त्ति।

नुरूपता–स्त्री० [सं०] किसी के अनुरूप होने की क्रिया या भाव। जैसा कोई और हो, वैसा ही या उसके समान होना। (एग्रिमेन्ट)

नुरूपना*–अ० [हिं० अनुरूप] किसी के अनुरूप होन।। स० किसी को अपने अनुरूप करना।

नुरोध–पुं० [सं०] १. रुकावट। बाधा। २. प्रेरणा। उत्तेजना। ३. विनयपूर्वक किसी बात के लिए किया जानेवाला हठ। आग्रह।

नुलंब–पुं० [सं०] वह अवस्था जिसमें हाँ या नहीं का कुछ निश्चय न हुआ हो, पर अभी होने को हो। (सस्पेन्स)

अनुलंब खाता–पुं० [सं० + हिं०] वह खाता जिसमें किसी को कुछ धन बाद में हिसाब देने के लिए दिया जाय। उचिन्त। (सस्पेन्स एकाउन्ट)

नुलंबन–पुं० [सं०] किसी कर्मचारी के दोष या अपराध की सूचना पाने पर उसकी ठीक जाँच होने तक के लिए उसका अपने पद से हटाया जाना। मुअत्तल होना। (सस्पेन्शन)

नुलंबित–वि० [सं०] (कार्यकर्ता) जिसका किसी अभियोग या अपराध के कारण अनुलंबन हुआ हो। जो अन्तिम निर्णय तक के लिए अपने कार्य या पद से हटा दिया गया हो। मुअत्तल। (सस्पेंडेड)

नुलग्न–वि० [सं०] किसी के साथ लगा, मिला या जड़ा हुआ। (अटैच्ड, एनक्लोज्ड)

अनुलग्नक–पुं० [सं०] वह पत्र या कागज जो किसी दूसरे पत्र के साथ लगा या जुड़ा हो। (एनक्लोजर)

अनुलाप–पुं० [सं०] कही हुई बात फिर से कहना या दोहराना। (रिपीटीशन)

अनुलेख–पुं० [सं०] किसी लेख या पत्र पर अपनी स्वीकृति, सहमति आदि लिखकर उसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। (एन्डोर्समेन्ट)

अनुलेखन–पुं० [सं०] [कर्त्ता अनुलेखक, वि० अनुलेख्य] १. घटना या कार्य का लेखा आदि लिखना। जैसे-वायु की गति या भूकम्प के धक्के का अनुलेखन। २. दे० 'अनुलेख'।

अनुलेपन–पुं० [सं०] १. किसी के ऊपर लेप लगाना या चढ़ाना। २. शरीर में उबटन आदि लगाना। ३. लीपना।

अनुलोम–पुं० [सं०] ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम। उतार। २. संगीत में सुरों का उतार। अवरोह।

अनुवचन–पुं० [सं०] [कर्त्ता अनुवक्ता] १. किसी की कही हुई बात फिर से कहना या दोहराना। २. प्रकरण। अध्याय। ३. भाग। खंड। हिस्सा।

अनुवर्त्तन–पुं० [सं०] [वि० अनुवर्त्ती] १. अनुकरण। अनुगमन। २. समान आचरण। ३. कोई नियम कई स्थानों पर बार-बार लगाना।

अनुवर्त्ती–वि० [सं०] १. अनुयायी। २. किसी के उपरान्त उसके परिणाम-स्वरूप होनेवाला। (कॉन्सिक्वेन्ट)

अनुवाक्–पुं० [सं०] १. ग्रंथ का विभाग। अध्याय या प्रकरण का एक भाग। २. वेद के अध्याय का एक अंश।

अनुवाद–पुं० [सं०] [वि० अनुवादित, अनूदित] १. फिर से कहना। दोहराना। २. एक भाषा में लिखी हुई चीज या कही हुई बात दूसरी भाषा में लिखना या कहना। भाषान्तर। उलथा। तरजुमा। (ट्रांसलेशन)

अनुवादक–पुं० [सं०] अनुवाद या भाषांतर करनेवाला। एक भाषा से दूसरी भाषा में लिखने या कहनेवाला। (ट्रान्सलेटर)

अनुवादित–वि० दे० 'अनूदित'।

अनुवाद्य–वि० [सं०] १. अनुवाद करने के

योग्य। २. जिसका अनुवाद होने को हो।

अनुविष्ट–वि०[सं०][भाव० अनुविष्टि, अनुवेश] जो अपने स्थान पर लिख लिया गया हो। चढ़ा या चढ़ाया हुआ। (एन्टर्ड)

अनुवृत्ति–स्त्री० [सं०] वेतन का वह अंश जो किसी कर्मचारी को बहुत दिनों तक काम करने पर, उसकी वृद्धावस्था में अथवा उसकी किसी सेवा के विचार से, वृत्ति के रूप में या भरण-पोषण के लिए मिलता है। (पेन्शन)

अनुवृत्तिक–वि० [सं०] १. अनुवृत्ति सम्बन्धी। अनुवृत्ति का। २. (पद, सेवा आदि) जिसके लिए अनुवृत्ति मिलती अथवा मिल सकती हो। (पेन्शनेबुल)

अनुवृत्तिधारी–पुं० [सं०] वह जिसे अनुवृत्ति मिलती हो। अनुवृत्ति पानेवाला। (पेन्शनर)

अनुशंसा–स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति या प्रार्थना आदि के सम्बन्ध में यह कहना कि यह अच्छा, उययुक्त, ग्राह्य अथवा मान्य है। सिफारिश। (रिकमेंडेशन)

अनुशंसित–वि० [सं०] जिसके संबंध में अनुशंसा की गई हो। जिसकी सिफारिश की गई हो। (रिकमेंडेड)

अनुशय–पुं० [सं०] किसी दी हुई आज्ञा या किये हुए कार्य को नहीं के समान करना। रद्द करना। (रिवोकेशन)

अनुशयाना–स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट हो जाने से दुःखी हो।

अनुशासक–पुं० [सं०] १. वह जो अनुशासन करता हो। २. दे० 'प्रशासक'।

अनुशासन–पुं० [सं०] १. आज्ञा। आदेश। हुकुम। २. उपदेश। शिक्षा। ३. वह विधान जो किसी संस्थां या वर्ग के सब सदस्यों को ठीक तरह से कार्य या आचरण करने के लिए बाध्य करे। (डिसिप्लिन) ४. दे० 'प्रशासन'

अनुशीलन–पुं० [सं०] [वि० शीलित, कर्त्ता अनुशीलक] १. चिन् मनन। २. बार बार किया जाने अध्ययन या अभ्यास।

अनुश्रुत–वि० [सं०] जिसे बहुत दिन लोग सुनते चले आये हों। (ट्रेडिशन

अनुश्रुति–स्त्री० [सं०][वि० अनुश्रु परम्परा से चली आई हुई बात, क उक्ति आदि। (ट्रेडिशन)

अनुषंग–पुं० [सं०] [वि० आनुषंगि १. करुणा। दया। २. संबंध। लगा ३. प्रसंग से एक वाक्य के आगे वाक्य लगा लेना। ४. एक के बाद दू बात आपसे आप होना। (इन्सिडेन्स)

अनुषंगी–वि० [सं०] किसी कार्य, वि या तथ्य के बाद सहायक या सम्बद्ध रूप होनेवाला। (एक्सेसरी आफ्टर दि फैक्ट

अनुषक्ति–स्त्री० [सं०] अपने राजा राज्य के प्रति प्रजा, जनता या नागरि के कर्तव्य और निष्ठा। (एलीजिएन्स

अनुष्टुप्–पुं० [सं०] आठ आठ अ के चार चरणों का एक संस्कृत छन्द।

अनुष्ठान–पुं० [सं०][वि० अनुष्ठित १. कार्य्य का आरंभ। २. नियमपू कोई काम करना। ३. शास्त्र-विहित करना। ४. फल के निमित्त किसी दे का आराधन। प्रयोग। पुरश्चरण।

अनुष्ठित–वि० [सं०] १. जिसका अ ष्ठान हुआ हो। २. ठाना हुआ।

अनुसंधान–पुं० [सं०] १. किसी व्य या बात के पीछे लगना या पड़ना। अच्छी तरह देखकर वास्तविक बात का प लगाना। जाँच-पड़ताल। (इन्वेस्टिगेशन

अनुसंधानना*–स० [सं० अनुसंधान १. छान-बीन करके पता लगाना। सोचना। विचार करना।

अनुसंधि–स्त्री० [सं०] १. गुप्त पराम या संधि। २. षड्यंत्र। कुचक्र।

सर*–वि०, क्रि० वि० = अनुसार।

सरण–पुं० [सं०] [वि० अनुसारी] १. सी के पीछे चलना। अनुकरण। (टु फॉलो) कोई बात या निर्णय मानकर उसके नुसार काम करना। (एब्राइड)

सरना*–अ० [हिं० अनुसरण] १. सी के पीछे-पीछे चलना। अनुगमन ना। २. कोई बात मानकर उसके नुसार काम करना। ३. नियम या श्चय के अनुसार चलना।

सार–वि० [सं०] जो किसी के नुकूल या अनुकरण पर हो। किसी के ान या सदृश।

० वि० किसी की तरह पर। वैसे ही, कोई प्रस्तुत या सामने हो।

सारतः–क्रि० वि० [सं०] किसी के नुसार। तदनुसार। (एकॉरडिंग्ली)

सारता–स्त्री० [सं०] 'अनुसार' होने क्रिया या भाव। (एकॉर्डेन्स)

सारना*–स० [हिं० अनुसार] कोई म पूरा करना।

० दे० 'अनुसरना'।

सारिता–स्त्री० दे० 'अनुसारता'।

सारी*–वि० [हिं० अनुसार] किसी अनुसार होकर या रहकर चलनेवाला। नुसरण करनेवाला।

सूची–स्त्री० [सं०] कोष्ठक आदि के में वह नामावली जो किसी सूचना, रण, नियमावली आदि के अन्त में परिष्ट के रूप में हो। (शेड्यूल)

स्मरण–पुं० [सं०] भूली हुई बात से याद होना या करना। (रिक्शन)

स्वार–पुं० [सं०] १. स्वर के पीछे चरित होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण, सका चिह्न (ं) है। २. अक्षर के पर की बिन्दी, जो उक्त वर्ण की सूचक है।

हरना*–अ० दे० 'अनुसरना'।

अनुहार–वि० [सं०] १. सदृश। तुल्य। समान। २. अनुसार। अनुकूल।

पुं० १. भेद। प्रकार। २. चेहरे की बनावट। मुखारी। ३. सादृश्य। ४. किसी चीज की ज्यों की त्यों नकल। प्रतिकृति।

अनुहारना*–स० [सं० अनुहारण] तुल्य, सदृश या समान करना।

अनुहारी–वि० [सं० अनुहारिन्] [स्त्री० अनुहारिणी] १. किसी का अनुकरण या नकल करनेवाला। २. किसी के अनुकरण पर या अनुरूप बना हुआ।

अनूअर*–क्रि० वि० [सं० अनवरत] निरन्तर। लगातार।

अनूजरा*–वि० [हिं० अन + ऊजरा] १. जो उज्वल न हो। २. मैला।

अनूठा–वि० [सं० अनुच्छिष्ट] [स्त्री० अनूठी, भाव० अनूठापन] १. अनोखा। विचित्र। विलक्षण। अद्भुत। २. अच्छा। बढ़िया। ३. अ-साधारण प्रकार का।

अनूढ़ा–स्त्री० [सं०] वह बिना व्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।

अनूतर*–वि० पुं० दे० 'अनुत्तर'।

अनूदित–वि० [सं०] १. कहा हुआ। २. अनुवाद किया हुआ। उलथा किया हुआ। भाषांतरित।

अनूप–पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ जल अधिक हो। जलप्राय देश।

*वि० [सं० अनुपम] १. जिसकी उपमा न हो। बे-जोड़। २. सुन्दर। अच्छा।

अनृत–वि० [सं०] १ मिथ्या। असत्य। झूठ। २. अन्यथा। विपरीत।

अनेक–वि० [सं०] एक से अधिक। कई या बहुत।

अनेग*–वि० = अनेक।

अनेड़*–वि० [सं० अनृत] १. बुरा। खराब। २. दुष्ट। ३. टेढ़ा। ४ मन में वैर रखनेवाला। कुटिल।

अनेरा–वि० [सं० अनृत] [स्त्री०

अनेरी] १. झूठ । २. व्यर्थ । निष्प्रयोजन । ३. झूठा । ४. अन्यायी । अत्याचारी । ५. दुष्ट । पाजी । ६. निकम्मा ।
क्रि० वि० व्यर्थ । फजूल ।

अनैक्य–पुं० [सं०] एकता या एका न होना । मत-भेद । फूट ।

अनैच्छिक–वि० [सं०] जो अपनी इच्छा से या जान-बूझकर न किया गया हो, बल्कि दूसरे की इच्छा से या परिस्थितियों आदि के कारण, कुछ विवश होकर या यों ही किया गया हो । (इन-वालेन्टरी)

अनैठा–पुं० [हिं० अ + पैंठ] पैंठ या बाजार न लगने का दिन ।

अ-नैतिक–वि० [सं०] जो नीति-संगत न हो । नीति के विरुद्ध ।

अनैतिहासिक–वि० [सं०] जो इतिहास से सिद्ध न हो, उसके अनुरूप न हो या उसमें न आया हो ।

अनैस*–वि० दे० 'अनिष्ट' ।

अनैसना*–अ० [हिं० अनैस] १. बुरा मानना । २. रूठना ।

अनैसर्गिक–वि० [सं०] निसर्ग या प्रकृति के विरुद्ध या उससे अलग । अ-स्वाभाविक । (अन-नैचुरल)

अनोखा–वि० [सं० अ + ईक्ष्] [स्त्री० अनोखी, भाव० अनोखापन] १. अनूठा । निराला । विलक्षण । विचित्र । २. नया । ३. सुन्दर ।

अनोखापन–पुं० [हिं० अनोखा + पन (प्रत्य०)] १ अनूठापन । निरालापन । विलक्षणता । विचित्रता । २. नयापन । ३. सुन्दरता । खूबसूरती ।

अनौचित्य–पुं० [सं०] अनुचित होने का भाव । ना-मुनासिब होना ।

अनौट*–स्त्री० दे० 'अनवट' ।

अन्न–पुं० [सं०] १. पौधों से उत्पन्न होनेवाले दाने (गेहूँ, चावल, दाल आदि) जो खाने के काम में आते हैं । अनाज । धान्य । गल्ला । २. इन दानों को उबालकर बनाया हुआ भोजन ।

अन्न-कूट–पुं० [सं०] कार्त्तिक शुक्ल पदा को होनेवाला एक उत्सव अनेक प्रकार के भोजन बनाकर दे सामने उनका ढेर लगाया जाता है ।

अन्न-चोर–पुं० [हिं०] वह जो बाजार में मँहगे दाम पर बेचने के अन्न छिपाकर रखे ।

अन्न-छेत्र–पुं० दे० 'अन्न-सत्र' ।

अन्न-जल–पुं० [सं०] १. खाने-पी सामग्री । २. कहीं रहकर वहाँ खाने की स्थिति । जैसे–अब यहाँ से अन्न-जल उठ गया ।

अन्न-दाता–पुं० [सं०] वह जिस से भोजन मिलता हो । पालन-पोषण वाला । प्रतिपालक ।

अन्नपूर्णा–स्त्री० [सं०] शिव की प सबको भोजन देनेवाली मानी जाती हैं

अन्न-प्राशन–पुं० [सं०] वह सं जिसमें छोटे बच्चे को पहले-पहल चटाया जाता है ।

अन्न-सत्र–पुं० [सं०] वह स्थान दरिद्रों को पका हुआ भोजन बाँ खिलाया जाता है ।

अन्ना–स्त्री० [तु०] दूध पिलाने स्त्री । धाय । दाई ।

अन्य–वि० [सं०] कोई दूसरा । भिन्न । (अदर)

अन्यतम–वि० [सं०] सबसे बढ़ सर्व-श्रेष्ठ ।

अन्यत्र–क्रि० वि० [सं०] किसी स्थान पर । किसी दूसरी जगह ।

अन्यथा–अव्य० [सं०] नहीं तो । अवस्था में । (अदरवाइज)
वि० १. विपरीत । उलटा । २. स वास्तविक से विपरीत । मिथ्या ।
मुहा०–अन्यथा करना = पहले

ज्ञा या निश्चय रद करना या उलटना। टेट एसाइड)

यथा-सिद्धि–स्त्री० [सं०] न्याय या में किसी अ-यथार्थ कारण के आधार कोई बात सिद्ध करना, जो दोष माना ा है।

यपुरुष–पुं० [सं०] व्याकरण में (वक्ता र श्रोता से भिन्न) वह व्यक्ति या वस्तु सके विषय में कुछ कहा जाय। (थर्ड सन)

यमनस्क–वि० [सं०] [भाव० अन्य- नस्कता] १. जिसका जी या ध्यान किसी र तरफ हो। अन-मना। २. खिन्न। दास।

याय–पुं० [सं०] [कर्त्ता-अन्यायी] न्याय का न होना या उलटा होना। न्याय के विरुद्ध व्यवहार या आचरण। नीति। अन्धेर। ३. अत्याचार।

यायी–वि० [सं०] अन्याय करने- ला।

यारा*–वि० [हिं० अ + न्यारा] १. न्यारा या अलग न हो। मिला हुआ। दे० 'अनोखा'।

यारा–क्रि० वि० बहुत। अधिक।

यास*–वि० दे० 'अनायास'।

योक्ति–स्त्री० [सं०] कोई बात कहने वह ढंग जिसमें कुछ कहा तो किसी क के सम्बन्ध में जाता है, पर वह बात टती या ठीक बैठती किसी और पर है।

योन्य–सर्व० [सं०] एक दूसरे के थ। आपस में। परस्पर। ० साहित्य में एक अलंकार जिसमें दो स्तुओं के किसी कार्य या गुण का एक सरे के कारण उत्पन्न होना बतलाया ाता है।

न्योन्याश्रय–पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं का आपस में या एक दूसरी पर आश्रित ोना। २. न्याय में एक वस्तु के ज्ञान से दूसरी वस्तु का ज्ञान। सापेक्ष ज्ञान।

अन्वय–पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं का आपस का सम्बन्ध या अनुरूपता। २. पद्य या कविता की वाक्य-रचना को गद्य की वाक्य-रचना के अनुसार बैठाने या ठीक करने की क्रिया। ३. किसी वाक्य की शब्दावली के अनुसार उसका ठीक और संगत अर्थ लगाना। ४. कार्य और कारण का पारस्परिक संबंध। ५. एक बात सिद्ध करने के लिए दूसरी बात की सिद्धि या उससे सम्बन्ध स्थापित करना।

अन्वित–वि० [सं०] १. जिसका अन्वय हुआ हो। २. मिला हुआ। युक्त।

अन्वितार्थ–पुं० [सं०] १. अन्वय करने पर निकलनेवाला अर्थ। २. अन्दर छिपा हुआ अर्थ। गूढ़ आशय।

अन्वीक्षण–पुं० [सं०] [कर्त्ता-अन्वीक्षक] १. भली भाँति देखना या सोचना-समझना। २. ढूँढ़। खोज। तलाश।

अन्वीक्षा–स्त्री० = अन्वीक्षण।

अन्वेषण–पुं० [सं०] [कर्त्ता-अन्वेषक, अन्वेषी] छान-बीन करके बीती हुई बात के तथ्य, इतिहास आदि का पता लगाना। (रिसर्च) २. दे० 'अनुसंधान'।

अन्वेषी–वि० [सं० अन्वेषिन्] अन्वेषण करनेवाला।

अन्हाना*–अ० दे० 'नहाना'।

अपंग–वि० दे० 'अपांग'।

अप–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें निषेध, अपकर्ष, विकार या किसी बुरी विशेषता का भाव उत्पन्न करता है। जैसे-मान और अपमान, व्यय और अपव्यय, मृत्यु और अपमृत्यु, हरण और अपहरण या हास और अपहास।

अपकर्त्ता–वि० [सं० अपकर्तृ] [स्त्री० अपकर्त्री] अपकार करने या हानि पहुँचाने- वाला। अपकारक।

अपकर्म–पुं० [सं०] बुरा, अनुचित या

निन्दनीय काम।

अपकर्ष-पुं० [सं०] १. पीछे या नीचे खींचना या गिराना। २. गुण, योग्यता आदि का घटना या कम होना। उतार। ह्रास। ३. मान, महत्त्व आदि में होनेवाली कमी।

अपकर्षक-वि० [सं०] अपकर्ष करनेवाला। घटाने, उतारने या कम करनेवाला। (डेरोगेटरी) विशेष दे० 'अपकर्ष'।

अपकर्षण-पुं० [सं०] १. नीचे या उतार की ओर खिंचना या जाना। अवनति की ओर जाना। २. पद-मर्यादा या मान-महत्त्व का घटना या कम होना। (डेरोगेशन)। ३. मूल्य आदि का कम होना या उतरना। घटाव। उतार। (डेप्रिसिएशन) ४. किसी वस्तु में से उसका कुछ अंश निकल या कम हो जाना। घट जाना। (डिट्रैक्शन)

अप-काजी-वि० [हिं० आप + काज = कार्य] अपना काम निकालनेवाला। स्वार्थी। मतलबी।

अपकार-पुं० [सं०] [भाव० अपकारिता] 'उपकार' का विपरीत भाव। 'भलाई' का उलटा। हानि। अहित। नुकसान। (रॉंग)

अपकारक-वि० [सं०] अपकार या खराबी करनेवाला।

अपकारिता-स्त्री० [सं०] अपकार या खराबी करने की क्रिया, भाव या गुण।

अपकारी-वि० दे० 'अपकारक'।

अप-कीरति*-स्त्री० = अपकीर्त्ति।

अपकीर्त्ति-स्त्री० [सं०] 'कीर्त्ति' का विपरीत भाव। यश या नेक-नामी का उलटा। अपयश। बदनामी।

अपकृत-वि० [सं०] जिसका अपकार हुआ हो। 'उपकृत' का उलटा।

अपकृति-स्त्री० = अपकार।

अपकृष्ट-वि० [सं०] जिसका अपकर्ष हुआ हो या किया गया हो। महत्त्व, मूल्य, मान आदि कम हु या किया गया हो। विशेष दे० 'अप

अपक्रम-पुं० दे० 'व्यतिक्रम'।

अपक्रमण-पुं० [सं०] किसी स्थ रुष्ट या असन्तुष्ट होकर उठ (वॉक आउट)

अपक्व-वि० [सं०] [भाव० अपक १. जो अभी पका न हो। कच्चा जिसके पूरे, पक्के या ठीक होने में कुछ कसर हो। (इम्मैच्योर)

अपगत-वि० [सं०] [भाव० अपग १. भागा या हटा हुआ। २. मृत। हुआ। ३. नष्ट।

अपगति-स्त्री० [सं०] १. बुरी ग २. अनुचित मार्ग पर जाना। ३. म या हटना। ४. नाश।

अपघात-पुं० [सं०] [कर्त्ता-अपघ अपघाती] १. किसी को मार डाल हत्या, वध या हिंसा। २. दे० 'विश घात'। ३. दे० 'आत्म-घात'।

अ-पच-पुं० [सं०] १. भोजन आ पचने की क्रिया या भाव। २. भो पचने का रोग। अजीर्ण। (इनडाइजे

अपचय-पुं० [सं०] १. कम या होना। कमी, घटाव या ह्रास। (एबेट २. नाश। ३. गँवाना।

अपचरण-पुं० [सं०] अपने अधि क्षेत्र या सीमा से निकलकर दूस अधिकार-क्षेत्र या सीमा में जाना, अनुचित और आपत्तिजनक माना है। (ट्रेसपासिंग)

अपचार-पुं० [सं०] १. अनुचित २. निन्दा। बुराई। ३. ऐसा काम अपना स्वास्थ्य नष्ट हो। ४. ऐसे स्था या क्षेत्र में पहुँचना, जहाँ जाना अ हो या जहाँ जाने का अधिकार न (ट्रेसपास)

चारक-पुं० [सं०] १. वह जो बुरा अनुचित काम करे। २. वह जो ऐसे ान या क्षेत्र में जा पहुँचे, जहाँ जाना नुचित या अधिकार-विरुद्ध हो। ट्रेसपासर)

चारी-पुं० दे० 'अपचारक'।

चाल*-स्त्री० [हिं० अप + चाल] . बुरी चाल या व्यवहार। २. पाजीपन।

ची-स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गंड-ला (रोग)।

छरा*-स्त्री० = अप्सरा।

जस-पुं० = अपयश।

जात-वि० [सं०] जिसमें अपने नक, उत्पादक, वर्ग या मूल के पूरे पूरे ण न आये हों। अपेक्षाकृत कम या न गुणोंवाला। (डी-जेनेरेटेड)

टन-पुं० दे० 'उबटन'

डर*-पुं० [क्रि० अपडरना] दे० र'।

ड़ाना*-अ० [सं० अपर] [भाव० पड़ाव] खींचा-तानी या लड़ाई-झगड़ा रना।

ड़ावा-पुं० [?] [क्रि० अपड़ाना] . लड़ाई-झगड़ा। २. खींचा-तानी।

पढ़-वि० [सं० अपठ] जो कुछ पढ़ा-खा न हो। अशिक्षित।

पढार*-वि० दे० 'अवढर'।

पत*-वि० [हिं० अ + पत्ता] (वृक्ष) जसमें पत्ते न हो। पत्र-हीन।
० [अ + पत = प्रतिष्ठा] निर्लज्ज। बेहया।
ी० अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

पत-वि० [सं० अपात्र] अधम। नीच।

पतई*-स्त्री० [हिं० अपत] १. निर्लज्जता। हयाई। २. धृष्टता। ढिठाई। ३. पाजीपन। नटखटी। ४. बखेड़ा। झंझट।

पताना*-अ० [हिं०अपत] १. धृष्टता या ढिठाई करना। २. चंचलता या चपलता दिखाना।

अपति*-स्त्री० [हिं० अ + पत = प्रतिष्ठा] १. दुर्गति। दुर्दशा। २. अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। ३. दे० 'अपतई'।
*स्त्री० = आपत्ति।

अपतोस*-पुं० = अफ़सोस।

अपत्य-पुं० [सं०] सन्तान। औलाद।

अ-पथ-पुं० [सं०] १. बुरा या खराब रास्ता। कुमार्ग। २. कठिन या विकट रास्ता।

अपथ्य-वि० दे० 'कुपथ्य'।

अप-देखा-वि० [हिं० आप + देखना] १. अभिमानी। घमंडी। २. स्वार्थी। मतलबी।

अप-द्रव्य-पुं० [सं०] बुरी वस्तु या धन।

अपध्वंस-पुं० [सं०] १. विध्वंस। विनाश। २. अपमान। ३. पराजित करने की क्रिया या भाव।

अपना-वि० १. दे० 'अपना'। २. दे० 'हम'।

अपनपौ*-पुं० [हिं० अपना] १. आत्मीयता। आपसदारी। अपनायत। २. सुध। ज्ञान। होश। ३. अभिमान। घमंड। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत।

अपनयन-पुं० [सं०] [वि० अपनीत] १. दूर या अलग करना। हटाना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना या पहुँचाना। ३. स्त्री, बालक आदि को उसके पति या माता-पिता के पास से हटाकर दुष्ट उद्देश्य से किसी दूसरी जगह ले जाना। भगा ले जाना। (एब्डक्शन)

अपना-सर्व० [सं० आत्मनः] [क्रि० अपनाना] १. हर एक की दृष्टि से, उसका। निज का। दूसरे का नहीं। (तीनों पुरुषों में)

यौ०-अपने आप = स्वतः। स्वयं। २. जो केवल उद्दिष्ट व्यक्ति से सम्बन्ध रखता हो। अभिप्रेत या सम्बद्ध व्यक्ति का। व्यक्तिगत। (पर्सनल)

पुं० आत्मीय । स्वजन ।

अपनाना–स० [हिं० अपना] १. अपना बनाना । अपना कर लेना । २. अपने अधिकार, शरण, रक्षा आदि में लेनां ।

अपनापा*–पुं० [हिं० अपना + आपा (प्रत्य०)] अपनापन । आत्मीयता ।

अप-नाम–पुं० [सं०] बदनामी ।

अपनायत–स्त्री० [हिं० अपना] अपनापन । आत्मीयता । आपसदारी ।

अप-नास–पुं० [हिं० आप + नाश] स्वयं किया हुआ अपना नाश ।

अपनीत–वि० [सं०] १. दूर किया या हटाया हुआ । २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया हुआ । ३. जिसे कोई भगा ले गया हो । (एब्डक्टेड) (विशेष दे० 'अपनयन')

अपनेता–पुं० [सं०] किसी को भगा ले जानेवाला । (एब्डक्टर) (विशेष दे० 'अपनयन')

अप-बस*–वि० [हिं० आप + वश] जो अपने वश में हो । स्वतंत्र । 'पर-बस' का उलटा ।

अप-भोग–पुं० [सं०] [वि० अप-भोगी] किसी के धन या सम्पत्ति पर अनुचित रूप से अधिकार करके उसे भोगना या अपने काम में लाना । (एम्बेजेल्मेन्ट)

अपभ्रंश–पुं० [सं०] [वि० अपभ्रष्ट] १. पतन । गिरना । २. बिगाड़ । विकृति । ३. मूल शब्द से बिगड़कर उसका नया बना हुआ रूप ।

स्त्री० प्राचीन काल की वह भाषा जो पुरानी हिन्दी से पहले और प्राकृत भाषाओं के बाद इस देश में प्रचलित थी ।

अपभ्रष्ट–वि० [सं०] १. गिरा हुआ । पतित । २. बिगड़ा हुआ । विकृत । ३. (शब्द) जो किसी के तत्सम शब्द से निकलकर कुछ बिगड़े हुए रूप में प्रचलित हुआ हो ।

अपमान–पुं० [सं०] [वि० अपम
१. वह काम या बात जिससे कि
मान या प्रतिष्ठा कम हो । अ
बेइज्जती । (इन्सल्ट) २. दे० 'अवम

अपमानना*–स० [हिं० अपम
अपमान करना ।

अपमानिक–वि० [सं०] (ऐसी
जिससे किसी का अपमान हो ।

अपमानित–वि० [सं०] जिसका
मान हुआ हो ।

अप-मिश्रण–पुं० [सं०] किसी
या बढ़िया चीज में बुरी या घटिया
मिलाना । (एडल्टरेशन)

अप-मृत्यु–स्त्री० [सं०] वह मृ
किसी दुर्घटना के कारण और आक
हो । जैसे-छत से गिरकर या लाठी की
से मरना ।

अपयश–पुं० [सं०] १. बुरा यश ।
कीर्त्ति । बदनामी ।

अपयोग–पुं० [सं०] १. बुरा
२. बुरा समय । ३. दे० 'अपयोजन'

अपयोजन–पुं० [सं०] [वि०
योजित] किसी का धन या स
अनुचित रूप से अपने काम में ल
(मिस्-एप्रोप्रिएशन्)

अपरंच–अव्य० [सं०] १. और
२. फिर भी । ३. बाद । पीछे ।

अपरंपार–वि० [हिं० अपर + पार]
जिसका पारावार या कूल-किनारा न
असीम । २. बहुत अधिक । बेहद ।

अपर–वि० [सं०] [स्त्री० अपरा,
अपरत्व] १. पहले का । पूर्व का
पिछला । ३. अन्य । दूसरा । ४. जित
या हुआ हो, उससे और आगे या अधि
(फरदर) जैसे-अपर उपशम ।

अपरक्ति–स्त्री० [सं०] [वि० अप
किसी के प्रति प्रेम, श्रद्धा या सद्भाव
होना । (डिस्-एफेक्शन)

परछन*–वि० [सं० अ + प्रच्छन्न] जो
च्छन्न या ढका हुआ न हो । खुला हुआ ।
० [सं० प्रच्छन्न] ढका या छिपा हुआ ।

प-रती*–स्त्री० [हिं० अप + सं० रति]
. स्वार्थ । २. बेईमानी ।

परना*–स्त्री० दे० 'अपर्णा' ।

परबल*–वि० दे० 'प्रबल' ।

परस–वि० [सं० अ + स्पर्श] १. जिसे
सी ने छूआ न हो । २. न छूने योग्य ।
. दूर हटाया या अलग किया हुआ ।

परस–पुं० एक चर्म रोग जो हथेली
तलवे में होता है ।

परांत–पुं० [सं०] पश्चिम का देश
प्रान्त ।

परा–स्त्री० [सं०] १. अध्यात्म या ब्रह्म-
द्या के अतिरिक्त अन्य विद्या । लौकिक
द्या । पदार्थ विद्या । २. पश्चिम दिशा ।
० स्त्री० सं० 'अपर' का स्त्री० ।

पराग–पुं० [सं०] १. वैर । द्वेष ।
त्रुता । २. अरुचि । ३. दे० 'अपरक्ति' ।

पराजिता–स्त्री० [सं०] १. विष्णु-
ांता लता । कौआ ठोठी । २. कोयल ।
. दुर्गा ।

राध–पुं० [सं०] १. कोई ऐसा अनुचित
र्य जिससे किसी को हानि पहुँचे ।
ऑफेन्स) २. कोई ऐसा काम जो किसी
धि या विधान के विरुद्ध हो और जिसके
ए कर्त्ता को दंड मिल सकता हो ।
क्राइम) । ३. कोई अनुचित या बुरा
ाम । दोष । पाप । ४. भूल-चूक ।

पराध विज्ञान–पुं० [सं०] वह विज्ञान
समें इस बात का विवेचन होता है कि
ग अपराध क्यों करते हैं और उनकी
आपराधिक" प्रवृत्ति का किन उपायों से
अन्त किया जा सकता है । (क्रिमिनॉलोजी)

पराधशील–वि० [सं०] जो स्वभावतः
अपराध करता या अपराधों की ओर प्रवृत्त
होता हो । जैसे–अपराधशील जातियाँ । (क्रिमिनल ट्राइब्स)

अपराधिक–वि० दे० 'आपराधिक' ।

अपराधी–पुं० [सं०] [स्त्री० अपराधिनी] १. वह जिसने कोई अपराध किया हो । अपराध करनेवाला । २. मुलजिम ।

अ-पराह्न–पुं० [सं०] दिन का तीसरा पहर ।

अ-परिग्रह–पुं० [सं०] १. दान न लेना । २. आवश्यक धन से अधिक का त्याग ।

अ-परिचित–वि० [सं०] जिससे परिचय या जान-पहचान न हो । बिना जाना हुआ । 'परिचित' का उलटा ।

अ-परिच्छिन्न–वि० [सं०] १. जिसका विभाग न हो सके । अभेद्य । २. मिला हुआ । ३. असीम । (एब्सोल्यूट)

अ-परिणामी–वि० [सं० अपरिणामिन्] [स्त्री० अपरिणामिनी] १. परिणाम-रहित । २. जिसकी दशा या रूप में परिवर्त्तन न हो ।

अ-परिमित–वि० [सं०] १. जिसकी कोई सीमा न हो । असीम । बेहद । (अन-लिमिटेड) २. असंख्य । अगणित ।

अ-परिमेय–वि० [सं०] १. बे-अंदाज । अकूत । २. असंख्य । अनगिनत ।

अ-परिवर्त्तनीय–वि० [सं०] जिसमें परिवर्त्तन या फेर-बदल न हो सके ।

अ-परिहार्य–वि० [सं०] १. जिसके बिना काम न चले । अनिवार्य्य । २. न छोड़ने योग्य । अ-त्याज्य । ३. न छीनने योग्य ।

अप-रूप–वि० [सं०] १. बद-शकल । भद्दा । बेडौल । २. अद्भुत । अपूर्व ।

अपर्णा–स्त्री० [सं०] १. पार्वती । २. दुर्गा ।

अ-पलक–वि० [हिं० अ + पलक] जिसकी पलकें न गिरें ।
क्रि० वि० बिना पलक गिराये या झपकाये । एक-टक ।

अप-लाप–पुं० [सं०] व्यर्थ की बक-बक ।

अप-वर्ग–पुं० [सं०] १. मोक्ष । निर्वाण ।

मुक्ति। २. त्याग। ३. दान।

अप-वर्जन–पुं० [सं०] [वि० अप-वर्जित] १. त्यागना। २. मुक्ति। मोक्ष।

अपवर्त्तन–पुं० [सं०] [वि० अपवर्त्य, अपवर्त्तित] १. पीछे की ओर अथवा अपने मूल स्थान की ओर लौटना। २. राज्य या अधिकारिकी द्वारा किसी की धन-सम्पत्ति पर इस प्रकार अधिकार किया जाना कि उसके स्वामी का उसपर कोई अधिकार न रह जाय। जब्त होना। जब्ती। (फोरफीचर)

अपवर्त्तित–वि० [सं०] १. पीछे लौटा हुआ। २. जिसपर राज्य या अधिकारिकी ने अपना अधिकार कर लिया हो। जिसका अपवर्त्तन हुआ हो। जब्त किया हुआ। (फोरफीटेड)

अपवर्त्य–वि० [सं०] जिसका अपवर्त्तन होने को हो या करना उचित हो।

अपवाद–पुं० [सं०] १. विरोध या खंडन। २. ऐसी निन्दा जिससे किसी के सम्मान को आघात पहुँचे। बदनामी। (स्लैंडर) ३. दोष। पाप। ४. वह बात जो किसी व्यापक या सामान्य नियम के विरुद्ध हो। 'उत्सर्ग' का विरोधी भाव। (एक्सेप्शन)

अपवादक–पुं० [सं०] वह जो दूसरों का अपवाद या बदनामी करे। पर-निन्दक। वि० १. विरोधी। २. बाधक।

अपवादिक–वि० [सं०] १. अपवाद संबंधी। २. सामान्य नियम के विरुद्ध पड़नेवाला। (एक्सेप्टिव) ३. जिसके कारण या द्वारा किसी का अपमान हो। (स्लैंडरस)।

अपवादी–पुं० = अपवादक।

अ-पवित्र–वि० [सं०] [भाव० अ-पवित्रता] जो पवित्र या शुद्ध न हो। मलिन। गन्दा।

अ-पवित्रता–स्त्री० [सं०] 'अ-पवित्र' होने की अवस्था या भाव। पवित्र या शुद्ध न होना।

अप-व्यय–पुं० [सं०] १. व्यर्थ किय वाला व्यय। फजूल-खर्ची। २. बुरे में होनेवाला व्यय।

अप-व्ययी–वि० [सं० अपव्ययिन्] अधिक खर्च करनेवाला। फजूल-खर्च

अप-शकुन–पुं० [सं०] बुरा श असगुन।

अप-शब्द–पुं० [सं०] १. अशुद्ध २. गाली। कुवाच्य।

अप-सगुन*–पुं० = अप-शकुन।

अपसना–अ० [?] पहुँचना। प्राप्त

अपसर–वि० [हिं० अप = अपना (प्रत्य०)] १. आप ही आप मनमाना।

अपसरक–पुं० [सं०] वह जो विशेषतः सैनिक सेवा से अथवा अपना कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व (पत्नी या का भरण-पोषण आदि) छोड़कर भाग हो। (डिजर्टर)

अपसरण–पुं० [सं०] कार्य या दायित्व छोड़कर भाग जाना। जैसे सेवा से, अथवा विवाहिता स्त्री को, अपने बच्चे को छोड़कर चल (डिजर्शन)

अपसर्जन–पुं० [सं०] [कर्त्ता सर्जक, वि० अपसर्जित] १. छोड़ त्यागना। २. अपने उत्तरदायित्व से के लिए किसी को असहाय अवस्था छोड़कर हट जाना। (एबैन्डन) जैसे द्वारा शिशु का अपसर्जन।

अपसवना*–अ० [सं० अपसरण या खिसक जाना।

अप-सव्य–वि० [सं०] १. 'सव्य उलटा। दाहिना। दायाँ। दक्षिण। २.

अपसारण–पुं० [सं०] [वि० सारित] किसी व्यक्ति या वाक्य को हटा या निकाल देना। दूर करना। (

पल्शान)

पसारी–वि० [सं०] एक-दूसरे से भिन्न या विरुद्ध दिशा में जाने, चलने या रहने वाले। (डाइवर्जेन्ट)

पसृत–वि० [सं०] १. जो कहीं से निकलकर हट गया हो या निकालकर टा दिया गया हो। दूर हटा या हटाया आ। २. जिसे उसके पति या पत्नी ने रित्यक्त कर दिया हो और जिसकी देख-ख करनेवाला कोई न रह गया हो। (डिजर्टेड)

पसोस*–पुं० [क्रिया अपसोसना*] ० 'अफ़सोस'।

पसौन*–पुं० दे० 'अप-शकुन'।

पस्मार–पुं० [सं०] एक रोग जिसमें गी काँपता हुआ मूर्च्छित होकर पृथ्वी र गिर पड़ता है। मिरगी। (एपॉप्लेक्सी)

-स्वर–पुं० [सं०] बुरा, बे-सुरा या र्कश स्वर।

-स्वार्थी–वि० = स्वार्थी।

-हत–वि० [सं०] १. नष्ट किया हुआ। ग हुआ। २. दूर किया हुआ।

-हरण–पुं० [सं०] १. छीनकर या पूर्वक ले लेना। २. किसी व्यक्ति को ीं से बलपूर्वक उठा ले जाना। (किड-ंग) ३. छिपाव। संगोपन।

-हरना*–स०[सं० अपहरण] १.बलपूर्वक लेना। लूटना। छीनना। २. चुराना। कम करना। घटाना। ४. क्षय करना।

हर्त्ता–पुं० [सं० अपहर्त्तृ] १. छीनने-ा। हर लेनेवाला। ले लेनेवाला। २. र। लुटेरा। ३. छिपानेवाला।

हार–पुं० दे० 'अपहरण'।

हारक,अपहारी–पुं० = अपहर्त्ता।

हास–पुं० [सं०] १. उपहास। २. कारण हँसी।

हत–वि० [सं०] १. छीना हुआ। चुराया हुआ। ३. लूटा हुआ।

अपह्नुति–स्त्री० [सं०] १. दुराव। छिपाव। २.बहाना। टाल-मटोल। ३.साहित्य में एक अलंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाता है।

अपांग–वि० [सं०] जिसका कोई अंग टूटा हो या न हो।

अपा*–पुं० [हिं० आपा] अभिमान।

अपाकरण–पुं० [सं०] ऋण आदि का परिशोधन। देन चुकाना। (लिक्विडेशन ऑफ डेट)

अपाकर्म–पुं० [सं०] वह कार्य जिसमें किसी मंडली या समवाय का देना-पावना चुकाकर उसका सारा व्यापार समेटा या बन्द किया जाता है। (लिक्विडेशन ऑफ कम्पनी)

अ-पात्र–वि० [सं०] १. जो पात्र होने के योग्य न हो। २. बुरा पात्र। कु-पात्र। ३. मूर्ख।

अपादान–पुं० [सं०] १. हटाना। अलग करना। २. व्याकरण में पाँचवाँ कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारम्भ सूचित होता है। इसका चिह्न 'से' है। जैसे-घर से चलना।

अपान–पुं० [सं०] १. पाँच या दस प्राणों में से एक। २. गुदास्थ वायु जो मल-मूत्र बाहर निकालती है। ३. वह वायु जो गुदा से निकले। पाद। ४. गुदा।

अपान-वायु–स्त्री० [सं०] गुदा से निकलनेवाली वायु। पाद।

अपामार्ग–पुं० [सं०] चिचड़ा (क्षुप)।

अपाय–पुं० [सं०] १. अलगाव। २. नाश। ३. अन्यथाचार। अनरीति।

अ-पार–वि० [सं०] १. सीमा-रहित। अनन्त। असीम। २. असंख्य। अतिशय।

अ-पारग–वि० [सं०] १. जो पार-गामी न हो। २. अयोग्य। ३. अ-समर्थ।

अपाव*–पुं० [सं० अपाय] अन्याय।

अपावन–पुं० [स्त्री० अपावनी] दे०

'अ-पवित्र'।

अपासन–पुं० [सं०] [वि० अपासित] अपने सामने आई हुई प्रार्थना, कथन आदि की अ-स्वीकृति। ना-मंजूरी। (रिजेक्शन)

अपासित–वि० [सं०] जो माना न गया हो। अ-स्वीकृत। (रिजेक्टेड)

अपाहज–वि० [सं० अपाथेय = जो चल न सके, प्रा० अपाहेज्ज] १. अंग-हीन। खंज। लूला-लँगड़ा। २. काम करने के अयोग्य। ३. आलसी।

अपाहिज–वि० = अपाहज।

अपि–अव्य० [सं०] १. भी। २. ही। ३. निश्चय। ठीक।

अपितु–अव्य० [सं०] १. किन्तु। २. वल्कि।

अपीच*–वि० [सं० अ + पीच्य] सुन्दर। मनोहर।

अपील–स्त्री० [अ०] १. निवेदन। विचारार्थ प्रार्थना। २. नीचे की या छोटी अदालत के फैसले के विरुद्ध ऊँची और बड़ी अदालत में फिर से विचार के लिए अभियोग रखना।

अ-पुत्र–वि० [सं०] [स्त्री० अ-पुत्री] जिसे पुत्र न हो।

अपुनपौ*–पुं० = अपनपौ।

अपूठना*–सं० [स० आपोथन] १. विध्वंस या नाश करना। २. उलटना।

अ-पूठा*–वि० [सं० अपुष्ट] १. अ-परिपक्व। २. अन-जान। अनभिज्ञ।

वि० [सं० अस्फुट] जो विकसित न हुआ हो। बे-खिला।

अ-पूत–वि० [सं०] अपवित्र। अशुद्ध।

*वि० [हिं० अ + पूत] पुत्र-हीन। निपूता।

पुं० कुपूत। बुरा लड़का।

अपूर*–वि० [सं० पूर्ण] १. पूरा या भरा हुआ। २. बहुत अधिक। विशेष दे० 'अ-पूर्ण'।

अ-पूरना*–स० दे० 'पूरना'।

अपूरब*–वि० = अपूर्व।

अपूर्ण-वि० [सं०] [भाव० अपूर्ण
१. जो पूर्ण या भरा न हो। २. अधू
अ-समाप्त। ३. कम।

अ-पूर्व-वि० [सं०] [भाव० अपूर्व
१. जो पहले न रहा हो। २. अद्
अनोखा। विचित्र। ३. उत्तम। श्रेष्ठ

अपेक्षा–स्त्री० [सं०] [वि० अपेक्षि
१. आकांक्षा। इच्छा। अभिलाषा। च
२. आवश्यकता। जरूरत। (रिक्वा
मेन्ट) ३. भरोसा। आशा। ४.
कारण का अन्योन्य सम्बन्ध। ५. तुलन

अपेक्षाकृत–क्रि० वि० [सं०] त
या मुकाबले में।

अपेक्षित–वि० [सं०] १. जिसकी अ
या आवश्यकता हो। आवश्यक। जरू
२. चाहा हुआ। इच्छित। वांछि
(रिक्वायर्ड)

अपेक्ष्य–वि० [सं०] १. जिसकी अ
करना उचित हो। २. अपेक्षित।

अपेय–वि० [सं०] जिसे पीना ठी
हो। न पीने योग्य।

अ-पेल*–वि० [हिं० अ = नहीं + पेल
दबाना] जो हटे या टले नहीं। अटल

अ-पैठ*–वि० [हिं० अ + पैठना]
कोई पैठ न सके। विकट। दुर्गम।

अ-प्रकट–वि० [सं०] जो प्रकट न
छिपा हुआ। गुप्त।

अ-प्रकाशित–वि० [सं०] १
उजाला न हो। अँधेरा। २. जो प्र
हुआ हो। छिपा हुआ। गुप्त। ३.
सर्व-साधारण के सामने न रखा गया
४. जो छापकर प्रचलित या प्र
न किया गया हो।

अ-प्रकृत–वि० [सं०] १. जो
या स्वाभाविक न हो। २. जो अपने

मान से घटा या बढ़ा हुआ हो। जो अपने ठीक ठिकाने पर न हो। (एब्नॉर्मल)

अ-प्रचलित–वि० [सं०] जो प्रचलित न हो। अव्यवहृत। अप्रयुक्त।

अ-प्रतिदेय–वि० [सं०] (ऋण या दान) जो स्थायी रूप से या सदा के लिए दिया गया हो और जिसे लौटाना या चुकाना न पड़े। जैसे—अप्रतिदेय ऋण। (परमेनेन्ट एडवान्स)

-प्रतिदेय ऋण–पुं० [सं०] वह ऋण जो किसी को सहायता के रूप में सदा के लिए दिया गया हो और जो लौटाया न जाय। (परमेनेन्ट एडवान्स)

अ-प्रतिबंध–वि० [सं०] १. जिसपर या जिसके लिए कोई प्रतिबन्ध न हो। २. पूर्ण। परम। (एबसोल्यूट)

अ-प्रतिभ–वि० [सं०] १. प्रतिभा-शून्य। २. चेष्टा-हीन। उदास। ३. स्फूर्ति-रहित। सुस्त। मन्द। ४. मति-हीन। निर्बुद्धि।

-प्रतिम–वि० [सं०] अद्वितीय। अनुपम।

-प्रतिष्ठा–स्त्री० [सं०] [वि० अप्रतिष्ठित] १. अनादर। अपमान। २. अपयश। अपकीर्त्ति।

-प्रतिष्ठित–वि० [सं०] १. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। २. जिसकी अप्रतिष्ठा या अपमान किया गया हो।

-प्रत्यक्ष–वि० [सं०] १. जो प्रत्यक्ष या सामने न हो। २. जो प्रत्यक्ष रूप से या सीधे मार्ग से न होकर किसी दूसरे मार्ग या हेर-फेर से हो। (इन्-डाइरेक्ट)

-प्रत्याशित–वि० [सं०] जिसकी आशा न की गई हो। अचानक या अकस्मात् होनेवाला।

अ-प्रमेय–वि० [सं०] १. जो नापा न जा सके। अपरिमित। अपार। अनन्त। २. जो तर्क या प्रमाण से सिद्ध न हो।

अ-प्रयुक्त–वि० [सं०] जो काम में न लाया गया हो। अव्यवहृत।

अ-प्रसन्न–वि० [सं०] [भाव० अप्रसन्नता] जो प्रसन्न न हो। नाराज।

अ-प्रसन्नता–स्त्री० [सं०] प्रसन्न न रहने की अवस्था या भाव। नाराजगी।

अ-प्रसिद्ध–वि० [सं०] [भाव० अप्रसिद्धि] जो प्रसिद्ध न हो। अविख्यात।

अ-प्रस्तुत–वि० [सं०] जो प्रस्तुत या सामने न हो।

अ-प्रस्तुत प्रशंसा–स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें अ-प्रस्तुत की चर्चा से प्रस्तुत का ज्ञान कराते हैं।

अ-प्राकृत– वि० [सं०] १. जो प्राकृत न हो। अस्वाभाविक। २. असाधारण।

अ-प्राकृतिक–वि० [सं०] जो प्राकृतिक, नैसर्गिक या स्वाभाविक न हो। अ-नैसर्गिक। (अन-नैचुरल)

अ-प्राप्त–वि० [सं०] [भाव० अप्राप्ति] १. जो प्राप्त न हो या न हुआ हो। दुर्लभ। अलभ्य। २. जिसे प्राप्त न हुआ हो। ३. अप्रत्यक्ष। अप्रस्तुत।

अ-प्राप्य–वि० [सं०] जो प्राप्त न हो सके। अलभ्य।

अ-प्रामाणिक–वि० [सं०] [भाव० अ-प्रामाणिकता] १. जो प्रमाण से सिद्ध न हो। ऊट-पटाँग। २. जो मानने योग्य न हो।

अ-प्रासंगिक–वि० [सं०] प्रसंग के विरुद्ध। प्रस्तुत विषय से जिसका कोई सम्बन्ध न हो। (ईर्रेलेवेन्ट)

अप्रिय–वि० [सं०] १. जो न रुचे। अ-रुचिकर। २. जिसकी चाह न हो।

अप्सरा–स्त्री० [सं०] १. स्वर्ग की वेश्या। २. इन्द्र की सभा में नाचनेवाली देवांगना। ३. परम रूपवती स्त्री। परी।

अप्सरी*–स्त्री० = अप्सरा।

अफगान–पुं० [अ०] अफगानिस्तान देश का निवासी।

अफगानिस्तान–पुं० [अ० + फा०]

भारत के पश्चिमी सीमा-प्रान्त के उस पार का एक देश।

अफरन–स्त्री० [हिं० अफरना] पेट फूलने की क्रिया या भाव।

अफरना–अ० [सं० स्फार] १. पेट भर खाना। भोजन से तृप्त होना। २. पेट का फूलना। ३. और अधिक की इच्छा न रहना। ऊबना।

अफरा–पुं० [सं० स्फार] अजीर्ण या वायु से पेट फूलना।

अफराव–पुं० [हिं० अफरना] अफरने या पेट फूलने की क्रिया, भाव या अवस्था।

अफलातून–पुं० [अ०] १. सुप्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो के नाम का अरबी रूप। २. वह जो अपने आप को औरों से बहुत बड़ा समझता हो।

अफवाह–स्त्री० दे० 'किंवदंती'।

अफसर–पुं० [अं० ऑफिसर] [भाव० अफसरी] १. प्रधान। मुखिया। २. अधिकारी। हाकिम।

अफसोस–पुं० [फा०] १. शोक। रंज। दुःख। २. पश्चात्ताप। खेद। पछतावा।

अफीम–स्त्री० [यू० ओपियन, अ० अफयून] पोस्त के ढेढ़ का गोंद जो कड़ुआ, मादक और विष होता है।

अफीमची–पुं० [हिं० अफीम + ची (प्रत्य०)] वह पुरुष जिसे अफीम खाने की लत हो।

अब–क्रि० वि० [सं० इदानीं] इस समय। इस क्षण। इस घड़ी।

पद–अब की = इस बार। **अब जाकर** = इतनी देर बाद।

मुहा०–अब-तब लगना या होना = मरने का समय निकट पहुँचना।

अबटन–पुं० दे० 'उबटन'।

अ-बधू*–वि० [सं० अबोध] अबोध। पुं दे० 'अवधूत'।

अबध्य–वि० [सं०] [स्त्री० अबध्
भाव० अबध्यता] १. जिसे मारना उ
न हो। २. जिसे शास्त्रानुसार प्राण-
न दिया जा सके। जैसे–स्त्री, ब्राह्मण आ
३. जिसे कोई मार न सके।

अबरक–पुं० [सं० अभ्रक] १.
धातु जिसकी तहें काँच की तरह चमक
होती हैं। भोडल। भोडर। २. एक प्र
का पत्थर।

अबरन*–वि० [सं० अ + वर्ण]
जिसमें कोई वर्ण या रंग न हो। वर्ण-रहि
२. जिसका रंग आस-पास की चीजों
अलग प्रकार का हो। भिन्न या
रंग का।

अ-बरन–वि० [सं० अ + वर्णन] जिस
वर्णन न हो सके। अ-वर्णनीय।

अबरस–पुं० [फा०] १. घोड़े का एक
जो सब्जे के रंग से कुछ अधिक साफ
उजला होता है। २. इस रंग का घोड़ा

अबरा–पुं० [फा०] १. दोहरे वस्त्र
ऊपर का पल्ला। उपल्ला। २. उलझ

अबरी–स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार
धारीदार चिकना कागज। २. एक प्र
का पीला पत्थर। ३. एक प्रकार
लाह की रँगाई।

अ-बल–वि० [सं०] [स्त्री० अबल
निर्बल। कमजोर।

अबलख*–वि० [सं० अवलक्ष]
और काले या लाल रंगों से मिला-जुल
दो रंगों का। चितकबरा।

पुं० उक्त प्रकार के रंग का घोड़ा, बैल
और कोई पशु।

अबला–स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।

अबवाब–पुं० दे० 'विकर'। (सेस)

अ-बस*–वि० दे० 'अ-वश'।

अ-बाँह*–वि० [हिं० अ + बाँह] जि
रक्षा करनेवाला कोई न हो। असहा

अ-बाती*–वि० [हिं० अ + बात = वा

. जिसमें वायु न हो । २. जिसका वायु से ोई सम्पर्क न हो । बायु-रहित ।

०[हिं० अ + वाती = बत्ती] (बिना ती या अग्नि के) आपसे आप या अन्दर अन्दर जलनेवाला ।

बादान-वि० [अ० आबाद] [भाव० बादानी] १. बसा हुआ । २. भरा हुआ ।

बाध-वि० [सं०] १. जिसके लिए ोई बाधा या रोक-टोक न हो । निर्विघ्न । . बहुत अधिक । अपार । ३. पूर्ण । रम । (एब्सोल्यूट)

बाध व्यापार-पुं० दे० 'मुक्त व्यापार' ।

-बाधित-वि० [सं०] १. बाधा-रहित । -रोक । २. स्वच्छन्द । स्वतन्त्र ।

-बाध्य-वि० [सं०] [भाव० अबाध्यता] . जो रोका न जा सके । बे-रोक । २. अनिवार्य ।

बार*-स्त्री० [सं० अ + बेला] देर ।

बास* पुं० दे० 'आवास' ।

बीर-पुं० [अ०] [वि० अबीरी] गीन बुकनी या अबरक का चूरा जिसे ोग होली में इष्ट-मित्रों पर डालते हैं ।

-बूझ*-वि० [हिं० अ + बूझना] १. ो बूझा, समझा या जाना न जा सके । अज्ञेय । २. दे० 'अबोध' ।

बूत*-वि० [हिं० अ + पूत] निस्सन्तान ।

वि० [हिं० अ + बूझ] अबोध । अज्ञानी ।

बे-अव्य० [सं० अयि] अरे । हे । (बहुत छोटे या हीन व्यक्ति के लिए सम्बोधन)

मुहा०-**अबे-तबे करना** = निरादर-सूचक बातें कहना ।

बेर-स्त्री० [सं० अबेला] विलम्ब ।

-बेश (स)*-वि० [फा० बेश] अधिक ।

[हिं० अ + फा० बेश] १. थोड़ा । कम । २. मन्द । धीमा ।

अ-बैन*-वि० [हिं० अ + बैन] मौन ।

अबोध-पुं० [सं०] अज्ञान । मूर्खता ।

वि० [सं०] अनजान । नादान । मूर्ख ।

अ-बोल*-वि० [हिं० अ + बोलना] १. मौन । अवाक् । २. जिसके विषय में कुछ बोल या कह न सकें । अनिर्वचनीय ।

पुं० कुबोल । बुरा बोल ।

अ-बोला-पुं० [हिं० अ + बोलना] रंज से न बोलना । रूठने के कारण होनेवाला मौन ।

अब्ज-पुं० [सं०] १. जल से उत्पन्न वस्तु । २. कमल । ३. शंख । ४. चन्द्रमा । ५. सौ करोड़ की संख्या । अरब ।

अब्द--पुं० [सं०] १. वर्ष । साल । २. मेघ । बादल । ३. आकाश ।

अब्द-कोश-पुं० [सं०] प्रति वर्ष प्रकाशित होनेवाला वह कोश जिसमें किसी देश, समाज या वर्ग आदि से सम्बन्ध रखनेवाली सभी जानने योग्य बातों का संग्रह हो । (ईयर बुक)

अब्धि-पुं० [सं०] १. समुद्र । सागर । २. सरोवर । ताल । ३. सात की संख्या ।

अ-ब्रह्मण्य-पुं० [सं०] १. वह कर्म जो ब्राह्मणों के योग्य न हो । २. हिंसा आदि कर्म । ३. वह जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो ।

अभंग-वि० [सं०] १. अखंड । अटूट । पूर्ण । २. न मिटनेवाला । ३. लगातार ।

अभंग-पद-पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का वह भेद या प्रकार जिसमें उसके अक्षरों या पदों को इधर-उधर नहीं लगाना पड़ता, बल्कि ज्यों का त्यों रखकर अर्थ लगाया जाता है ।

अ-भक्ष्य-वि० [सं०] १. अ-खाद्य । अ-भोज्य । जो खाने के योग्य न हो । २. जिसे खाने का धर्म-शास्त्र में निषेध हो ।

अ-भद्र-वि० [सं०] [भाव० अभद्रता] १. अ-मांगलिक । २. अशिष्ट ।

अभय-वि० [सं०] [स्त्री० अभया] निर्भय । बे-डर । बे-खौफ़ ।

अभय-दान-पुं० [सं०] भय से बचाने

का वचन देना। शरण देना। रक्षा करना।

अभय-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसे दिखाकर कोई व्यक्ति किसी संकट की स्थिति से निरापद पार हो सकता है। (सेफ़ कॉन्डक्ट)

अभय-पद-पुं० [सं०] मुक्ति। मोक्ष।

अभय-मुद्रा-स्त्री० [सं०] शरीर की वह मुद्रा जो किसी को अभय या पूर्ण आश्वासन देने की सूचक होती है।

अभय-वचन-पुं० [सं०] भय से बचाने की प्रतिज्ञा। रक्षा का वचन।

अभरन*-पुं० दे० 'आभरण'।

अ-भल*-वि० [हिं० अ + भला] अ-श्रेष्ठ। बुरा। खराब।

अभाऊ*-पुं० [सं० अ + भावुक] १. जो भावुक या रसिक न हो। शुष्क-हृदय। अ-रसिक। २. अशिष्ट। उजड्ड।

अभागा-वि० [सं० अभाग्य] [स्त्री० अभागिनी] भाग्य-हीन। बद-किस्मत।

अ-भाग्य-पुं० [सं०] प्रारब्ध-हीनता। बद-किस्मती।

अभाव-पुं० [सं०] १. न होना। अ-विद्यमानता। २. त्रुटि। कमी। ३. दुर्भाव।

अ-भावक-वि० [सं० अ + भावक] भाव या सत्ता से रहित। (निगेटिव)

अ-भावना*-वि० दे० 'अप्रिय'।

अभास-पुं० दे० 'आभास'।

अभि-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—सामने, बराबर, अच्छी तरह, बुरा, अच्छा आदि।

अभिकथन-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति या पक्ष की ओर से कही जानेवाली ऐसी बात अथवा किया जानेवाला ऐसा आरोप जो अभी प्रमाणित न हुआ हो अथवा जिसके प्रामाणिक होने में कुछ सन्देह हो। (एलिगेशन)

अभिकरण-पुं० [सं०] १. किसी की ओर से, उसके अभिकर्त्ता के रूप में क करना। २. वह स्थान जहाँ किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से उसका अभिक रहता और काम करता हो। (एजेन्सी)

अभिकर्त्ता-पुं० [सं०] वह जो कि व्यक्ति या संस्था की ओर से उसके प्र निधि के रूप में कुछ काम करने के लि नियत हो। (एजेन्ट)

अभिकर्त्ता-पत्र-पुं० [सं०] वह प जिसके अनुसार कोई अभिकर्त्ता नियु किया गया हो और उसे कोई काम क का पूरा अधिकार दिया गया हो। (पॉ ऑफ एटॉरनी)

अभिकर्त्तृत्व-पुं० [सं०] १. अ कर्त्ता होने की क्रिया या भाव। २. दे 'अभिकरण'।

अभिकलन-पुं० दे० 'अनुकलन'।

अभिक्रांति-स्त्री० [सं०] [वि० अ क्रान्त] किसी वस्तु का अपने स्थान हट या हटा दिया जाना। (डिस्प्लेसमे

अभिगमन-पुं० [सं०] [वि० अभिगा १. पास जाना। २. सहवास। संभोग।

अभिघात-पुं० [सं०] [वि० अ घातक, अभिघाती] चोट पहुँचान प्रहार। मार।

अभिचार-पुं० [सं०] [कर्त्ता अभिचा मंत्र-यंत्र द्वारा मारण और उच्चाटन आ हिंसा कर्म। पुरश्चरण।

अभिजात-वि० [सं०] १. अच्छे में उत्पन्न। कुलीन। २. बुद्धिमान पंडित। ३. योग्य। उपयुक्त। ४. मा पूज्य। ५. सुन्दर। मनोहर।

अभिजात-तंत्र-पुं० [सं०] वह शा प्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबंध से उच्च कुल के और सम्पन्न लोगों के में रहता है। (एरिस्टोक्रेसी, ऑलीगार्की)

अभिजित-वि० [सं०] [भाव० अ जिति] जिसे जीत लिया गया है

विजित।

भिजिति–स्त्री० [सं०] [वि० अभि-जित] युद्ध में दूसरे को जीत लेना। (कान्क्वेस्ट)

भिज्ञ–वि० [सं०] १. जानकार। विज्ञ। २. निपुण। कुशल।

भिज्ञा–स्त्री० [सं०]१. पहले-पहल होनेवाला ज्ञान। २. स्मृति। याद। ३. अलौकिक ज्ञान-बल। (बौद्ध)

भिज्ञान–पुं० [सं०] [वि० अभिज्ञात] १. स्मृति। २. पहचान या देखकर बतलाना कि यह वही है। (आइडेन्टिफिकेशन) ३. लक्षण। पहचान।

अभिदत्त–वि० [सं०] अपने स्थान पर या उचित अधिकारी के पास पहुँचाया हुआ। (डेलिवर्ड)

भिदान–पुं० [सं०] [वि० अभिदत्त] किसी की वस्तु उसके पास पहुँचाना या उसे देना। (डेलिवरी)

भिदिष्ट–वि० [हिं० अभिदेश] १. प्रसंगवश जिसकी चर्चा, उल्लेख या उद्धरण किया गया हो या जिसकी ओर संकेत या निर्देश किया गया हो। (रेफ़र्ड टु) २. जिसके विषय में किसी का मत या आदेश माँगा गया हो। (रेफ़र्ड)

भिदेश–पुं० [सं० अभि + देश (आदेश), वि० अभिदिष्ट] १. पहले की किसी घटना, उल्लेख आदि की ऐसी चर्चा जो साक्षी, संकेत, प्रमाण आदि के रूप में की गई हो। २. किसी विषय में किसी का मत या आदेश लेने के लिए वह विषय या उसके कागज-पत्र उसके पास भेजना। (रेफ़रेन्स; उक्त दोनों अर्थों के लिए)

भिदेश-ग्रंथ–वह ग्रंथ जो साधारणतः अध्ययन के लिए न हो, बल्कि जिसका उपयोग कुछ विशिष्ट अवसरों पर कुछ विशेष बातें जानने के लिए किया जाता हो। सन्दर्भ। (रेफ़रेन्स बुक) जैसे—शब्द-कोश, विश्व-कोश आदि।

अभिधा–स्त्री० [सं०] शब्दों की वह शक्ति जिससे उनके नियत अर्थ ही निकलते हैं। (कोई शब्द सुनते ही उसके अर्थ का जो बोध होता है, वह इसी शक्ति के द्वारा होता है।)

अभिधान–पुं० [सं०] १. नाम। संज्ञा। २. किसी पद का विशेष नाम या संज्ञा। (डेजिग्नेशन) जैसे-मंत्री, सचिव, निरीक्षक, आचार्य आदि। ३. शब्द-कोश। (डिक्शनरी)

अभिधेय–वि० [सं०] १. प्रतिपाद्य। वाच्य। २. जिसका बोध नाम लेने ही से हो जाय।

पुं० नाम।

अभिनंदन–पुं० [सं०] [वि० अभिनंदनीय] १. आनन्द। २. सन्तोष। ३. प्रशंसा। ४. विनीत प्रार्थना।

अभिनंदन-पत्र–पुं० [सं०] वह सम्मानसूचक पत्र जो किसी बड़े या प्रतिष्ठित व्यक्ति के आने पर उसके कार्यों आदि से सन्तोष और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उसे सुनाया और दिया जाता है। (एड्रेस)

अभिनंदना*–अ० [हिं० अभिनन्दन] अभिनन्दन करना।

अभिनंदित–वि० [सं०] [स्त्री० अभिनंदिता] जिसका अभिनंदन किया गया हो।

अभिनय–पुं० [सं०] [वि० अभिनीत] १. दूसरे व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा का कुछ काल के लिए अनुकरण करना, जैसा नाटकों आदि में होता है। स्वाँग। नकल। (ऐक्टिंग) २. नाटक का खेल।

अभिनव–वि० [सं०] १. नया। २. ताजा।

अभि-निर्णय–पुं० [सं०] किसी के दोषी या निर्दोष होने के सम्बन्ध में अभिनिर्णायक (ज्यूरी) का दिया हुआ मत या निर्णय। (वरडिक्ट ऑफ ज्यूरी)

अभिनिर्णायक–पुं० [सं०] वे लोग जो जज के साथ बैठकर किसी के दोषी या निर्दोष होने के सम्बन्ध में अपना निर्णय या मत देते हैं। (ज्यूरी)

अभिनिर्देश–पुं० दे० 'अभिदेश'।

अभिनिविष्ट–वि० [सं०] १. जिसका या जिसमें अभिनिवेश हुआ हो। २. घुसा, धँसा, गड़ा या समाया हुआ। ३. किसी काम में लगा हुआ। लिप्त। लीन। मग्न।

अभिनिवेश–पुं०[सं०] [वि० अभिनिविष्ट] १. प्रवेश। पैठ। गति। २. मनोयोग। एकाग्र-चिंतन। ३. दृढ़ संकल्प। ४. मरण के भय से उत्पन्न क्लेश या कष्ट।

अभिनीत–वि० [सं०] १. निकट लाया हुआ। २. सुसज्जित। अलंकृत। ३. जिसका अभिनय हुआ हो। खेला हुआ। (नाटक)

अभिनेता–पुं० [सं० अभिनेतृ] [स्त्री० अभिनेत्री] अभिनय करने या स्वाँग दिखानेवाला पुरुष। नट। (ऐक्टर)

अभिनेत्री–स्त्री० [सं०] अभिनय करनेवाली स्त्री। नटी। (ऐक्ट्रेस)

अभिनेय–वि० [सं०] अभिनय करने योग्य। खेलने योग्य। (नाटक)

अ-भिन्न–वि० [सं०] [भाव० अभिन्नता] १. जो भिन्न न हो। २. मिला या सटा हुआ। सम्बद्ध।

अभिन्न-पद–पुं० = अभंग-पद।

अभिन्यस्त–वि० [सं०] किसी मद या विभाग में रखा या डाला हुआ। जमा किया हुआ। (डिपॉजिटेड)

अभिन्यास–पुं० [सं०] [कर्त्ता अभिन्यासक, वि० अभिन्यस्त] किसी मद या विभाग में रखना। जमा करना।

अभिपुष्ट–वि० [सं०] जिसका अभिपोषण हुआ हो। (रैटिफ़ायड)

अभिपुष्टि–स्त्री० = अभिपोषण।

अभिपोषण–पुं० [सं०] [वि० अभिपुष्ट, अभिपोषित, अभिपोषणीय] प्रति धियों के किये हुए काम की स्वीकृति उसे पक्का करना या मान लेना। (रैटि शन)

अभिपोषणीय–वि० [सं०] जिसका अ पोषण होने को हो या होना उचित हो।

अभिपोषित–वि० = अभिपुष्ट।

अभिप्राय–पुं० [सं०] [वि० अभिप्रे १. आशय। मतलब। तात्पर्य। २. उद्देश्य या विचार जिसे मन में रखकर काम किया जाता है। उद्देश्य। (न्शन) ३. वह प्राकृतिक या काल्प वस्तु जिसकी आकृति किसी चित्र में स वट के लिए बनाई जाय। ४. साहि वह विशिष्ट तत्व या रचना का विषय पर उस रचना का ढाँचा बनता है। (मो अंतिम दोनों अर्थों के लिए)

अभिप्रेत–वि० [सं०] अभिप्राय लक्ष्य या विषय। इष्ट। अभिलषित (इन्टेन्डेड)

अभिभव–पुं० [सं०] १. पराजय। हा २. तिरस्कार। अनादर। ३. विल घटना। ४. किसी को बलपूर्वक द कहीं रोक रखना या किसी ओर ले जान (कॉन्स्ट्रेन्ट)

अभिभावक–वि० [सं०] १. अभि या पराजित करनेवाला। २. स्तम्भित देनेवाला। ३. वशीभूत करनेवाला। ४. 'अभिरक्षक'।

अभिभावित–वि० [सं०] जिसे ने पूरी तरह से दबाकर निकम्मा या अधीन कर लिया हो। किसी के दबा हुआ।

अभिभाषक–पुं० [सं०] वह विधिज्ञ किसी व्यवहार में न्यायालय के सामने पक्ष का समर्थन करता है। (एडवोकेट

अभिभाषण–पुं० [सं०] १. बहु लोगों के सामने किसी विषय पर होने

चना-पूर्ण भाषण। वक्तृता। (एड्रेस) वह भाषण या वक्तव्य जो न्यायालय विधिज्ञ किसी व्यवहार में किसी पक्ष की र से देता है। (एडवोकेट का एड्रेस)

भूत–वि० [सं०] १. पराजित। या हुआ। २. पीड़ित। ३. वशी- । ४. चकित या स्तब्ध।

भमंत्रण–पुं० [सं०] [वि० अभि- त] १. मंत्र द्वारा संस्कार करना। आवाहन।

भमत-वि० [सं०] १. मनोनीत। छित। २. सम्मत। राय के मुताबिक। १. मत। सम्मति। राय। (ओपीनि- न) २. विचार। ३. मन-चाही बात।

भमान–पुं० [सं०] [वि० अभिमानी] समझना कि हम औरों से बहुत अधिक य, समर्थ या बढ़कर हैं। अहंकार। । घमंड।

भमानी-वि० [सं० अभिमानिन्] स्त्री० अभिमानिनी] अहंकारी। घमंडी।

भमुख–क्रि० वि० [सं०] सामने। विमुख।

भयाचन–पुं० [सं०] अपनी आव- कता, अधिकार अथवा प्राप्य बतलाते ए किसी से कुछ माँगना। माँग। डिमांड)

भयान–पुं० [सं०] १. सैनिक कार्य लिए होनेवाली यात्रा। (एक्सपेडिशन) आक्रमण। चढ़ाई।

भयुक्त–पुं० [सं०] वह जिसपर कोई भियोग लगाया गया हो। मुलज़िम। एक्यूज़्ड)

भियोक्ता–पुं० दे० 'अभियोगी'।

भियोग मुं० [सं०] १. किसी के म्बन्ध में यह कहना कि इसने अमुक दोष या अनुचित कार्य किया है। फरियाद। अक्यूजेशन) २. न्यायालय के सामने न्याय के लिए किसी के विरुद्ध यह कहना कि इसने अमुक अपराध या नियम-विरुद्ध कार्य किया है और इसका विचार होना चाहिए। (चार्ज) ३. इस सम्बन्ध का वाद या व्यवहार जो अभियुक्त को दंड दिलाने के लिए न्यायालय में चलता है। (प्रासिक्यूशन) ४. किसी प्रकार की नालिश या मुकदमा। मामला। (केस)

अभियोगी–पुं० [सं०] वह जिसने किसी पर कोई अभियोग लगाया या चलाया हो। अभियोक्ता। फरियादी। (कम्प्लेनेन्ट)

अभियोज्य–वि० [सं०] (कार्य) जिसके लिए अभियोग लगाना उचित हो। अभियोग लगाने के योग्य।

अभिरक्षक–पुं० [सं०] १. वह जो किसी सम्पत्ति या व्यक्ति को अभिरक्षा के लिए लेकर अपने अधिकार में रखता हो। (कस्टोडिअन) २. वह जो किसी ऐसे व्यक्ति की देख-रेख करता हो जो स्वयं अपनी देख-रेख न कर सके। (गार्जिअन) जैसे–किसी विधवा या बालक का अभिरक्षक।

अभिरक्षण–पुं० दे० 'अभिरक्षा'।

अभिरक्षा–स्त्री० [सं०] किसी सम्पत्ति को रक्षापूर्वक रखने के लिए अथवा किसी व्यक्ति को भागने आदि से रोकने के लिए अपने अधिकार या रक्षा में लेकर रखने की क्रिया या भाव। (कस्टडी)

अभिरत–वि० [सं०] १. लीन। अनुरक्त। २. मिला हुआ। युक्त।

अभिरना*–अ० [सं० अभि + रण = युद्ध] १. भिड़ना। लड़ना। २. टेकना। स० मिलाना।

अभिराम–वि० [सं०] [स्त्री० अभिरामा, भाव० अभिरामता] मनोहर। सुन्दर।

अभिरुचि–स्त्री० [सं०] १. अत्यन्त रुचि। चाह। २. पसन्द।

अभिलषित–वि० [सं०] जिसकी अभिलाषा की जाय। वांछित। चाहा हुआ।

अभिलाख*–स्त्री० [क्रि० अभिलाखना]

दे० 'अभिलाषा'।

अभिलाखना*–स० = अभिलाषा करना।

अभिलाष–पुं० [सं०] १. इच्छा। कामना। चाह। २. वियोग शृंगार में प्रिय से मिलने की इच्छा।

अभिलाषा–स्त्री० [सं०] इच्छा। कामना। आकांक्षा। चाह।

अभिलाषी–वि० [सं० अभिलाषिन्] [स्त्री० अभिलाषिणी] अभिलाषा या इच्छा करनेवाला। आकांक्षी। (एस्पायरेन्ट)

अभिलिखित-वि० [सं०] जिसका अभिलेखन हुआ हो। अभिलेख के रूप में लाया हुआ। नियमित रूप से लिखा या अंकित किया हुआ। (रेकॉर्डेड)

अभिलेख–पुं० [सं०] किसी विषय के सम्बन्ध में लिखी हुई सब बातें। (रेकॉर्ड)

अभिलेख अधिकरण–पुं० [सं०] किसी राज्य के प्रधान अभिलेख-विभाग का वह अधिकरण या न्यायालय जो अभिलेखों आदि में लिपि-सम्बंधी अथवा इसी प्रकार की दूसरी भूलें सुधारने का एक-मात्र अधिकारी होता है। (कोर्ट आफ रेकॉर्ड्स)

अभिलेखन–पुं० [सं०] किसी विषय की सब बातें किसी विशेष उद्देश्य से लिखना। (रेकॉर्डिंग)

अभिलेखपाल–पुं० [सं०] वह अधिकारी जिसकी देख-रेख में किसी कार्यालय के अभिलेख आदि रहते हों। (रेकॉर्ड-कीपर)

अभिलेखालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ अभिलेख सुरक्षित रूप से रखे जाते हैं। (रेकॉर्ड रूम)

अभिवंदन–पुं० [सं०] [स्त्री० अभिवंदना] १. प्रणाम। नमस्कार। २. स्तुति। प्रशंसा।

अभिवक्ता–पुं० [सं०] वह जो न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से उसके विधिक या व्यावहारिक पक्ष का समर्थन करता है। वकील। (प्लीडर)

अभिवचन–पुं० [सं०] वह आ
न्यायालय में विधिक प्रतिनिधि या
वक्ता (वकील) अपने नियोज
ओर से कहता है। (प्लीडिंग)

अभिवादन-पुं० [सं०] १. प्र
नमस्कार। वन्दना। २. स्तुति। ३. कि
के प्रति प्रकट की जानेवाली श्रद्धा या
भाव। (होमेज)

अभिव्यंजक–वि० [सं०] प्रकट करने
प्रकाशक। सूचक। बोधक। (एक्सप्रे

अभिव्यंजन–पुं० [सं०] मन के
आदि व्यक्त, प्रकट, स्पष्ट या सूचित क
(एक्सप्रेशन)

अभिव्यंजित–वि० [सं०] जिसका
व्यंजन किया गया हो। (एक्सप्रेस्ड)

अभिव्यक्त–वि० [सं०] [भाव० अभि
जिसका अभिव्यंजन हुआ हो। प्रकट।
जाहिर। (एक्सप्रेस्ड)

अभिव्यक्ति–स्त्री० [सं०] [वि० अभि
१. अभिव्यक्त या प्रकट होने अथवा
रूप से सामने आने या दिखाई पड़ने की
या भाव। (मैनिफेस्टेशन) प्रकाशन।
करण। विशेष दे० 'अभिव्यंजन'। २.
या अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष या कार्य
सामने आना। जैसे-बीज से अंकुर निक

अभिशंसन-पुं० [सं०] [वि०
शंसित] इस बात का निर्णय या
कि अभियुक्त पर लगाया हुआ दोष प्र
हो गया है और उसके फल-स्वरूप उसे
दंड भी मिला हो। (कन्विक्शन)

अभिशंसा– स्त्री० दे० 'अभिशंसन'।

अभिशंसित–वि० [सं०] न्याया
जिसका दोषी होना प्रमाणित हो गया
और जिसे फल-स्वरूप कुछ दंड भी
हो। (कन्विक्टेड)

अभिशप्त–वि० [सं०] १. जिसे
दिया गया हो। शापित। २.
मिथ्या दोष लगा हो।

शाप-पुं० [सं०] [वि० अभिशप्त]
शाप। २. मिथ्या दोषारोपण।
षंग-पुं० [सं०] १. पराजय।
। २. आक्रोश। कोसना। ३. मिथ्या
वाद। झूठा दोषारोपण। ४. गले
ना। आलिंगन। ५. शपथ। कसम।
भूत-प्रेत का आवेश। ७. किसी कार्य
बात में किसी के साथ होना। संग।
षंगी-पुं० [सं०] वह जो किसी
या अनुचित काम में किसी का साथ
(एकम्प्लिस)
किसी के साथ होने या लगा रहने-
ला। (कार्य आदि)
षिक्त-वि० [सं०] [स्त्री० अभि-
क्ता] १. जिसका अभिषेक हुआ हो।
बाधा-शान्ति के लिए जिसपर मन्त्र पढ़-
दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया
। ६. राज-पद पर नियुक्त।
षेक-पुं०[सं०][वि० अभिषिक्त]१.जल
ींचना। छिड़काव। २. ऊपर से जल डाल-
किया जानेवाला स्नान। ३. बाधा-शान्ति
मंगल के लिए मंत्र पढ़कर जल छिड़क-
। मार्जन। ४. विधिपूर्वक मन्त्र से जल
ड़ककर राजगद्दी पर बैठाना। ५. शिव-
ग के ऊपर छेदवाला घड़ा लटकाकर
रे-धीरे पानी टपकाना।
षेचन-पुं० दे० 'अभिषेक'।
संधि-स्त्री० [सं०] [वि० अभि-
धित] १. वंचना। धोखा। २. चुपचाप
म करने की कई आदमियों की सलाह।
चक्र। ३. दे० 'षड्यंत्र'।
समय-पुं० [सं०] [वि० अभि-
मयिक] राष्ट्रों या राज्यों के पारस्परिक
मान हित या व्यवहार से सम्बन्ध रखने-
ले विषयों पर उनमें आपस में होनेवाला
समझौता जिसका पालन उन सबके लिए
मान रूप से विधि या विधान के रूप में
आवश्यक होता है। जैसे—डाक-विभाग या
युद्ध-संचालन सम्बन्धी अभिसमय। २. परस्पर युद्ध करनेवाले राष्ट्रों के सैनिक अधिकारियों का युद्ध स्थगित करने अथवा इसी प्रकार की दूसरी बातों के सम्बन्ध में आपस में होनेवाला समझौता जिसका पालन सभी पक्षों के लिए आवश्यक होता है। ३. किसी प्रथा या परिपाटी के मूल में रहनेवाला सब लोगों का वह समझौता या सहमति जिसे मान्यक के रूप में मानना सबके लिए आवश्यक होता है। जैसे—कला, काव्य या संविधान सम्बन्धी अभिसमय। ४. उक्त प्रकारों की बातें निश्चित करने के लिए आधिकारिक रूप से होनेवाला कोई सम्मेलन या सभा। (कन्वेन्शन; उक्त सभी अर्थों के लिए)

अभिसरण-पुं० [सं०] १. आगे या पास जाना। २. प्रिय से मिलने जाना।

अभिसरना※-अ० [सं० अभिसरण] १. आगे बढ़ना। जाना। २. किसी वांछित स्थान की ओर जाना। ३. प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थल की ओर जाना।

अभिसाधक-पुं० दे० 'अभिकर्त्ता'।

अभिसाधन-पुं० दे० 'अभिकरण'।

अभिसामयिक-वि०[सं०] १. अभिसमय या समझौते से सम्बन्ध रखनेवाला। २. जो किसी चली आई हुई प्रथा या परिपाटी के अनुसार हो। (कन्वेन्शनल)

अभिसार-पुं० [सं०] [वि० अभिसारिक, अभिसारी] १. सहायता। सहारा। २. प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थल पर जाना।

अभिसारिका-स्त्री० [सं०] प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थान पर जानेवाली स्त्री या नायिका।

अभिसारी-वि० [सं० अभिसारिन्] [स्त्री० अभिसारिणी] १. वह जो कार्य सिद्ध करने में सहायक हो। साधक। २. एक दूसरे की ओर अथवा किसी एक

केन्द्र पर पहुँचकर मिलने की प्रवृत्ति रखनेवाले। (कॉन्वर्जेन्ट) ३. प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थल पर जानेवाला (नायक)।

अभिसूचना–स्त्री० दे० 'अधिसूचना'।

अभिस्रावण–पुं० [सं०] [वि० अभिस्रावित] भभके आदि की सहायता से शराब, अरक आदि चुआना। चुलाना। (डिस्टिलेशन)

अभिस्रावणी–स्त्री० [सं०] शराब आदि चुआने की भट्ठी या कारखाना। (डिस्टिलरी)

अभिहार–पुं० [सं०] १. युद्ध की घोषणा। २. दंड। सजा।

अभी–क्रि० वि० [हिं० अब+ही] इसी क्षण। इसी समय। इसी वक्त।

अभीप्सा–स्त्री० [सं०] [वि० अभीप्सित] (कुछ पाने की) प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा।

अभीष्ट–वि० [सं०] १. वांछित। चाहा हुआ। २. मनोनीत। पसन्द का। ३. आशय के अनुकूल। अभिप्रेत।

अभुआना–अ० [सं० आह्वान] हाथ-पैर पटकना और सिर हिलाना, जिससे सिर पर भूत आना समझा जाता है।

अ-भुक्त–वि० [सं०] १. जो न खाया या न भोगा गया हो। न खाया या न भोगा हुआ। २. जो भुनाया न गया हो। जिसका नगद धन या प्राप्य वस्तु न ली गई हो। (अनकैश्ड)

अभू*–क्रि० वि० = अभी।

अ-भूत–वि० [सं०] १. जो हुआ न हो। २. अपूर्व। विलक्षण।

अ-भूतपूर्व–वि० [सं०] १. जो पहले न हुआ हो। २. अपूर्व। अनोखा।

अ-भेद–पुं० [सं०] [वि० अभेदनीय, अभेद्य] १. भेद का अभाव। अ-भिन्नता। २. रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक। वि० भेद-शून्य। एक-रूप। समान।

वि० दे० 'अभेद्य'।

अ-भेद्य–वि० [सं०] १. जिसका छेदन या विभाग न हो सके। २. न सके।

अभेय*–पुं० = अभेद।

अभेर*–पुं० दे० 'भिड़ंत'।

अभेरना*–स० [?] मिलाना।

अभेव*–पुं० = अभेद।

अ-भोग–वि० [सं०] १. जिसका किया गया हो। २. अछूता। 'अभोग्य'।

अ-भोगी–वि० [सं०] १. जो भोग २. विरक्त।

अ-भोग्य–वि० [सं०] [स्त्री० (वस्तु) जो भोग करने के योग्य न जिसे भोगना अनुचित या वर्जित हो।

अभ्यंग–पुं० [सं०] [वि० अभ्यंजनीय] १. पोतना। लेपना शरीर में तेल लगाना।

अभ्यंतर–पुं० [सं०] १. मध्य। २. हृदय। क्रि० वि० अन्दर। भीतर।

अभ्यधीन–वि० [सं०] १. किसी पण, प्रतिबन्ध आदि के अधीन या बँधा हुआ। (सबजेक्ट टु) (क्रि के रूप में भी) २. दे० 'अधीन'।

अभ्यर्थन–पुं० [सं०] १. अपनी कता या अधिकार जतलाते हुए कुछ माँगना या कोई काम करने के जोर देकर कहना। (डिमांड) २. अपना प्राप्य धन या पदार्थ माँगना। 'अभ्यर्थना'।

अभ्यर्थना–स्त्री० [सं०] [वि० नीय, अभ्यर्थित] १. प्रार्थना। विनय सम्मान के लिए आगे बढ़कर किया वाला स्वागत। अगवानी। २. दे० 'अभ्य

अभ्यर्पक–पुं० [सं०] वह जो कोई वस्तु, उसका स्वामित्व अथवा

। (असाइनर)

यर्पण–पुं० [सं०] [वि० अभ्यर्पक] पनी कोई वस्तु, उसका स्वामित्व या धिकार किसी को सौंपना या दे देना। असाइनमेन्ट)

यर्पणग्राही–पुं० दे० 'अभ्यर्पिती'।

यर्पित–वि० [सं०] (वस्तु, उसका मित्व या अधिकार) जो किसी को या दे दिया गया हो। (असाइन्ड)

यर्पिती–पुं० [सं० अभ्यर्पित] वह से कोई वस्तु, उसका स्वामित्व या अधिकार दिया गया हो। (असाइनी)

यसित–वि० = अभ्यस्त।

यस्त–वि० [सं०] १. जिसका अभ्यास या गया हो। २. जिसने अभ्यास किया । दक्ष। निपुण।

यागत–वि० [सं०] १. सामने आया ा। २. अतिथि। पाहुन। मेहमान। वह जो किसी से मिलने या भेंट करने । ४. साधु, संन्यासी आदि।

ास–पुं० [सं०] [वि० अभ्यासी, यस्त] १. पूर्णता या दक्षता प्राप्त करने लिए बार बार एक ही क्रिया का साधन। वृत्ति। मश्क। (प्रैक्टिस) २. आदत। ाव।

ासी–वि० [सं० अभ्यासिन्] ी० अभ्यासिनी] अभ्यास करनेवाला। क।

युक्ति–स्त्री० [सं०] किसी व्यवहार या दमे में दोनों पक्षों में से किसी का कथन या व्य। (स्टेटमेन्ट)

युत्थान–पुं० [सं०] १. उठना। किसी के आने पर उसके आदर के लिए कर खड़े हो जाना। खड़े होकर स्वागत ना। ३. बढ़ती। समृद्धि। ४. उठान। रम्भ।

युदय–पुं० [सं०] १. सूर्य आदि ग्रहों उदय। २. प्रादुर्भाव। उत्पत्ति। ३. मनोरथ की सिद्धि। ४. वृद्धि। बढ़ती। ५. नये सिरे से होनेवाली उन्नति।

अभ्युपगम–पुं० [सं०] तर्क में पहले कोई सिद्ध या असिद्ध बात मानकर तब उसकी सत्यता की जाँच करना और उससे कोई निष्कर्ष या परिणाम निकालना। (डिडक्शन)

अभ्र–पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. आकाश। ३. स्वर्ण। सोना।

अभ्रक पुं० दे० 'अबरक'।

अ-भ्रांत–वि० [सं०] १. भ्रान्ति-शून्य। भ्रम-रहित। २. स्थिर।

अ-मंगल–वि०[सं०] मंगल-रहित। अ-शुभ। पुं० अ-कल्याण। अहित। खराबी।

अमका¹–वि० = अमुक।

अमचूर–पुं० [हिं० आम + चूर] सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण।

अमत–पुं० [सं०] १. अनुकूल मत का अभाव। असम्मति। २. रोग। ३. मृत्यु।

अमन–पुं० दे० 'शांति'।

अमनियाँ–वि० [?] १. जिसमें कोई छूत न हो। २. शुद्ध। पवित्र।

अमनैक–पुं० [सं० आम्नायिक] १. सरदार। नायक। २. अधिकारी। हकदार। ३. ढीठ।

अमनैकी*–स्त्री० [हिं० अमनैक] मनमाना आचरण या व्यवहार। स्वेच्छाचार। पुं० दे० 'अमनैक'।

अमर–वि० [सं०] [भाव० अमरता] १. जो कभी न मरे। सदा जीवित रहनेवाला। चिरजीवी। २. जिसका कभी अन्त, नाश या क्षय न हो। (इम्मॉरटल) पुं० देवता।

अमरख* पुं० दे० 'अमर्ष'।

अमरता–स्त्री० [सं०] १. अमर होने की अवस्था या भाव। कभी न मरना। चिरजीवन। २. देवत्व।

अमर पक्ष–पुं० दे० 'पितृ-पक्ष'।

अमर पद–पुं० [सं०] मुक्ति। मोक्ष।

अमर बेल–स्त्री० दे० 'आकाश बेल'।

अमर लोक–पुं० [सं०] स्वर्ग।

अमरस–पुं० [हिं० आम + रस] पके आम को निचोड़कर निकाला हुआ रस।

अमराई*–स्त्री० [सं० आम्रराजि] आम का बाग। आम की बारी।

अमराव*–पुं० दे० 'अमराई'।

अमरावती–स्त्री० [सं०] देवताओं की पुरी। इन्द्रपुरी।

अमरू–पुं० [सं० अम्बर] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

अमरूत–पुं० [सं० अमृत (फल)] एक पेड़ जिसका फल खाया जाता है।

अ-मर्याद–वि० [सं०] १. मर्यादा-विरुद्ध। बे-कायदा। २. अप्रतिष्ठित।

अमर्ष (ण)–पुं० [सं०] [वि० अमर्षित, अमर्षी] १. क्रोध। कोप। गुस्सा। २. वह द्वेष या दुःख जो विरोधी या शत्रु का कोई अपकार न कर सकने पर हो।

अमर्षी–वि० [सं० अमर्षिन्] [स्त्री० अमर्षिणी] १. अ-सहनशील। २. जल्दी बुरा माननेवाला।

अमल–वि० [सं०] [स्त्री० अमला] १. निर्मल। स्वच्छ। २. निर्दोष। पाप-शून्य। पुं० [अ०] १. शासन-काल। २. नशा। ३. व्यवहार। प्रयोग। ४. कार्य।

मुहा०–अमल में आना–निश्चय, आज्ञा आदि का कार्य के रूप में परिणत होना। (टु टेक एफेक्ट)

अमलदारी–स्त्री०[अ० + फा०]१.शासन। २. राज्य-काल।

अमल-पट्टा–पुं० [अ० अमल + हिं० पट्टा] वह दस्तावेज या अधिकार-पत्र जो किसी प्रतिनिधि या कारिन्दे को किसी कार्य्य पर नियुक्त करने के समय दिया जाय।

अमलबेत–पुं० [सं० अम्लवेतस्] एक पेड़ जिसके फल की खटाई तीक्ष्ण होती है।

अमला–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

अमलारा–वि० [अ० अमल] १. या नशा करनेवाला। २. नशे में चूर।

अमली–वि० [अ०] अमल या रूप में।

पुं० वह जो नशा खाता या पीत नशेबाज।

अमलोनी–स्त्री० [सं० अम्ललोणी प्रकार की घास जिसका साग बना हैं और जो नमकीन होता है।

अमाँ–अव्य० [हिं० ऐ + मियाँ] ऐ (सम्बोधन, मुसल०)

अमा–स्त्री० [सं०] १. अमाव कला। २. घर। ३. मर्त्य-लोक।

अमातना*–स० [सं० आमंत्रण] त्रित करना। निमन्त्रण या न्योता देना

अमात्य–पुं० [सं०] मंत्री। वजीर

अमान–पुं० [अ०] १. सुख-श और सुरक्षा। २. शरण। आश्रय।

अ-मान–वि० [सं०] जिसका मान प्रतिष्ठा न हो।

अमानत–स्त्री० [अ०] १. अपनी किसी दूसरे के पास कुछ काल के रखना। २. इस प्रकार रखी हुई वस्तु

अमानतनामा–पुं० [अ० + फा०] पत्र जो किसी के पास कुछ नत रखने के समय उसके प्रमाण-स्व लिखा जाता है।

अमाना– अ० [सं० आ = पूरा + म १. पूरा पूरा भरना। समाना। अँ २. फूलना। इतराना। गर्व करना।

अमानी–वि० [सं० अमानिन्] भिमान। घमंड-रहित।

स्त्री० [सं० आत्मन्] १. वह भूमि जि जमींदार सरकार हो। खास। २. की वह वसूली जिसमें फसल के विचार रिआयत हो। ३. दैनिक मजदूरी पर

ला काम।

मानी–स्त्री० [हिं० अ + मानना] नमानी कार्रवाई। अंधेर।

मानुष–पुं० [सं०] वह प्राणी जो मनुष्य हो, बल्कि उससे भिन्न हो। जैसे-देवता, तस आदि।

, दे० 'अ-मानुषी'।

मानुषिक–वि० दे० 'अमानुषी'।

मानुषी–वि० [सं०] १. मनुष्य की क्ति के बाहर का। २. मनुष्य के स्वभाव, कृति या आचरण के विरुद्ध। पशुओं -सा। पाशव। जैसे–अमानुषी अत्याचार।

माय–वि० [सं०] १. माया-रहित। र्लिप्त। २. छल-कपट-शून्य।

ारी*–स्त्री० दे० 'अंबारी'।

ाल*–पुं० [अ० अमल] शासक। किम।

ावट–स्त्री० [हिं० आम] आम के खाये हुए रस की परत या तह।

ावास्या–स्त्री० [सं०] कृष्ण पक्ष की न्तिम तिथि जिसमें रात को चन्द्रमा लकुल दिखाई नहीं देता।

मिट–वि० [हिं० अ + मिटना] १. जो मिटे। जो नष्ट न हो। स्थायी। २. सका होना निश्चित हो। अवश्यम्भावी।

मित–वि० [सं०] १. अपरिमित। द। असीम। २. बहुत अधिक।

मय*–पुं० दे० 'अमृत'।

मय-मूरि–स्त्री० [सं० अमृत-मूरि] मृत-बूटी। संजीवनी जड़ी।

मिल*–वि० [हिं० अ = नहीं + लना] १. न मिलनेवाला। अप्राप्य। २. -मेल। बे-जोड़। ३. जिससे मेल-जोल न हो।

मी*–पुं० दे० 'अमृत'।

मी-कर*–पुं० [सं० अमृतकर] चंद्रमा।

मी-कला*–पुं० = चंद्रमा।

मीत*–पुं० [सं० अ-मित्र] शत्रु। दुश्मन।

अमीन–पुं० [अ०] [भाव० अमीनी] माल-विभाग का वह कर्मचारी जो खेतों के बँटवारे आदि का प्रबन्ध करता है।

अमी-निधि–पुं० [हिं० अमी + सं० निधि] १. अमृत का समुद्र। २. चंद्रमा।

अमीर–पुं० [अ०] [भाव० अमीरी] १. कार्य का अधिकार रखनेवाला। सरदार। २. धनाढ्य। दौलतमन्द। ३. उदार।

अमुक–वि० [सं०] (वह) जिसका नाम न लिया गया हो। कोई व्यक्ति। (इस शब्द का प्रयोग किसी का नाम न लेकर किसी अज्ञात या कल्पित व्यक्ति के नाम के स्थान पर करते हैं।)

अ-मूर्त्त–वि० [सं०] १. मूर्त्ति-रहित। निराकार। २. जिसका कोई ठोस रूप सामने न हो। 'मूर्त्त' का उलटा। (एब्सट्रैक्ट) पुं० १. परमेश्वर। २. आत्मा। ३. काल। ४. आकाश। ५. वायु।

अ-मूलक–वि० [सं०] १. निर्मूल। २. मिथ्या।

अ-मूल्य–वि० [सं०] १. जिसका मूल्य न लग सके। अनमोल। २. बहुमूल्य।

अमृत–पुं० [सं०] [भाव० अमृतत्व] १. वह वस्तु जिसे पीने से जीव अमर हो जाता है। सुधा। पीयूष। २. जल। ३. घी। ४. मीठी और स्वादिष्ट वस्तु।

अमृत-कर–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

अमृतबान–पुं० [सं० अमृत = घी + बान] लाह का रोगन किया हुआ मिट्टी का बरतन।

अमृत-मूरि-स्त्री० [सं०] संजीवनी बूटी।

अमेजना*–स० [फ़ा० आमेजन] मिलाना।

अमेय–वि० [सं०] १. असीम। बेहद। २. जो जाना न जा सके। अज्ञेय।

अमेरिकन–वि० [अं०] अमेरिका देश का। पुं० अमेरिका देश का निवासी।

अमेरिका–पुं० [अं०] पश्चिमी गोलार्द्ध का एक मात्र महादेश जो उत्तरी और

दक्षिणी दो भागों में बँटा हुआ है।

अ-मेल-वि० [हिं० अ + मेल] १. अ-सम्बद्ध। २. जिसमें मेल न हो।

अमेव*-वि० दे० 'अमेय'।

अमैंड*-वि० [हिं० अ + मैंड] मर्यादा या बन्धन न माननेवाला।

अमैठना*-स० दे० 'उमेठना'।

अमोघ-वि० [सं०] निष्फल न होनेवाला। अ-व्यर्थ। अ-चूक।

अमोरी*-स्त्री० दे० 'अमोला'।

अ-मोल-वि० दे० 'अमूल्य'।

अमोला-पुं० [हिं० आम] आम का नया निकला हुआ कल्ला या अंकुर।

अम्माँ-स्त्री० [सं० अम्बा] माता। माँ।

अम्ल-पुं० [सं०] १. खटाई। २. तेजाब। वि० खट्टा। तुर्श।

अम्ल-पित्त-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें जो कुछ भोजन किया जाता है, वह सब पित्त के दोष से खट्टा हो जाता है।

अ-म्लान-वि० [सं०] १. जो उदास न हो। २. निर्मल। स्वच्छ। साफ।

अम्हौरी-स्त्री० दे० 'पित्ती'।

अ-यथा-वि० [सं०] १. जो ठीक या सत्य न हो। मिथ्या। झूठ। २. जो उपयुक्त न हो। अनुपयुक्त।

अयन-पुं० [सं०] १. गति। चाल। २. सूर्य्य या चन्द्रमा की दक्षिण और उत्तर की गति या उससे संबंध रखनेवाली प्रवृत्ति, जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। ३. आश्रम। ४. स्थान। ५. घर। ६. काल। समय। ७. गाय या भैंस के थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।

अ-यश-पुं० [सं०] १. अपयश। अपकीर्त्ति। २. निन्दा।

अयस्कांत-पुं० [सं०] चुम्बक।

अ-याचक-वि० [सं०] १. न माँगनेवाला। जो न माँगे। २. सन्तुष्ट। पूर्ण-काम।

अ-याचित-वि० [सं०] बिना हुआ।

अ-याची-पुं० दे० 'अ-याचक'।

अयान-पुं० दे० 'अयाना'।

अयानपन*-पुं० [हिं० अजान + १. अज्ञान। अनजानपन। २. भोल सीधापन।

अयाना*-वि० [सं० अज्ञान, अजाना] [स्त्री० अयानी] अ बुद्धि-हीन।

अयाल-पुं० [फा०] घोड़े और आदि की गरदन के बाल। केसर।

अयास-क्रि० वि० दे० 'अनायास'।

अ-युक्त-वि० [सं०] १. अ अनुचित। बे ठीक। २. अ-संयुक्त। ३. आपद्-ग्रस्त। ४. अनमना। सम्बद्ध। अंड-बंड।

अ-युक्ति-स्त्री० [सं०] १. यु अभाव। अ-सम्बद्धता। गड़बड़ी। २. न देना या न होना। अ-प्रवृत्ति।

अ-योग-पुं० [सं०] १. योग का अ २. बुरा योग। ३. कु-समय। ४. सं

अ-योग्य-वि० [सं०] [स्त्री० अयो भाव० अयोग्यता] १. जो योग्य न अनुपयुक्त। २. नालायक। निक अपात्र। ३. अनुचित। ना-मुनासिब।

अ-योग्यता-स्त्री० [सं०] १. 'यो होने या 'अयोग्य' होने का भाव। निकम्मापन। ३. अ-पात्रता। ४. अनौ

अयौन-वि० दे० 'अलैंगिक'।

अरंभ*-पुं० दे० 'आरंभ'। पुं० [सं० रंभ] १. हलचल। २. शब्द।

अरंभना*-अ० [सं० अ + रंभ = करना] १. बोलना। २. शोर कर स० [सं० आरम्भ] अरम्भ करना। अ० आरंभ होना। शुरू होना।

अर*-स्त्री० दे० 'अड़'।

क–पुं० [अ० अर्क] १. किसी पदार्थ
ा वह रस जो भभके से खींचने से निकले।
ासव। २. रस।
० [अ०] पसीना। स्वेद।
पुं० = अर्क (सूर्य)।

कन*–अ० [अनु०] १. अरराकर
रना। २. टकराना। ३. फटना।

कला–पुं० [सं० अर्गल] १. रोक-थाम।
कावट। २. मर्यादा। सीमा।

काटी–पुं० [दक्षिण भारत का अरकाट
देश] वह जो विदेशों के लिए कुली,
जदूर आदि ठेकेदार भेजनेका काम करता हो।

कान–पुं० [अ०] १. राज्य के स्तम्भ-
रूप प्रमुख अधिकारी। २. वैभव।
म्पत्ति।

गजा–पुं० [हिं० अगर + जा] एक
गंधित द्रव्य जो केसर, चन्दन, कपूर आदि
मेल से बनता है।

गट*–वि० [हिं० अलग] १. पृथक्।
ला। २. निराला। भिन्न।

गला–पुं० दे० 'अर्गला'।

गाना*–अ० [हिं० अलगाना] १.
लग होना। पृथक् होना। २. चुप्पी
धना। मौन होना।
० अलग करना। छाँटना।

घ–पुं० = अर्घ।

घा–पुं० [सं० अर्घ] १. एक प्रसिद्ध
त्र जिसमें अर्घ का जल रखकर दिया जाता
। २. वह आधार जिसमें शिव-लिंग स्था-
त किया जाता है। जलधरी।

घान*–स्त्री० [सं० आघ्राण] महक।
स। गंध।

चन*–पुं० = अर्चन।

चना*–स० [सं० अर्चन] पूजना।

रज–स्त्री० [अ० अर्ज़] १. विनय।
निवेदन। विनती। २. चौड़ाई।

रजी–स्त्री० [अ० अर्ज़ी] आवेदन-पत्र।
निवेदन-पत्र। प्रार्थना-पत्र।

*ी [अ० अर्ज़] अर्ज़ करनेवाला। प्रार्थी।

अरणी–स्त्री० [सं०] १. गनियारी वृक्ष। २. सूर्य्य। ३. काठ का एक यंत्र जिससे यज्ञों के लिए आग निकालते थे।

अरण्य–पुं० [सं०] १. बन। जंगल। २. संन्यासियों का एक भेद।

अरण्य-रोदन–पुं० [सं०] १. ऐसी पुकार जिसे कोई सुननेवाला न हो। २. ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे।

अ-रत–वि० [सं०] जो किसी ओर रत या प्रवृत्त न हो, बल्कि उदासीन हो। (एपैथेटिक)

अ-रति–स्त्री० [सं०] रति, अनुराग, प्रवृत्ति, वासना आदि न होना। उदासीनता। (एपैथी)

अरथाना*– स० [सं० अर्थ] अर्थ करना, बतलाना या समझाना। व्याख्या करना।

अ-रथी– पुं० [सं० अ + रथी] जो रथ पर न हो; अर्थात् पैदल। पैदल।

अरथी–स्त्री० दे० 'रत्थी'।

*वि० दे० 'अर्थी'।

अरदन–पुं० = अर्दन।

अरदना*–स० [सं० अर्दन] कुचलना।

अरदली–पुं० [अं० आर्डरली] वह चपरासी जो बड़े आदमियों के साथ या उनके दरवाजे पर रहता है।

अरदाना–स० [सं० अर्दन] कुचलने का काम दूसरे से कराना।

अ० कुचला जाना।

अरदावा–वि० [सं० अर्दन] कुचला हुआ।

पुं० किसी चीज का कुचला हुआ रूप।

अरदास–स्त्री० [अ०अर्ज़ + फा० दाश्त] १. प्रार्थना। निवेदन। २. कोई शुभ कार्य करते समय किसी देवता से की जानेवाली वह मंगल-कामना जिसके साथ उस देवता के नाम पर कुछ धन भी दिया जाता है।

अरध*–वि० दे० 'अर्ध'।

क्रि० वि० [सं० अधः] अंदर। भीतर।

अरन–पुं० = अरण्य।

अरना-पुं० [सं० अरण्य] जंगली भैंसा।
अ० दे० 'अड़ना'।

अरनी-स्त्री० दे० 'अरणी'।

अरपना*-स० [सं० अर्पण] अर्पण करना।

अरब-पुं० [सं० अर्बुद] १. सौ करोड़। २. सौ करोड़ की संख्या।
पुं० [सं० अर्वन्] १. घोड़ा। २. इन्द्र।
पुं० [अ०] पश्चिमी एशिया का एक प्रसिद्ध रेगिस्तानी देश।

अरबराना-अ० [अर + बर] [भाव० अरबरी] १. घबराना। व्याकुल होना। २. चलने में लड़खड़ाना।

अरबरी*-स्त्री० [अर + बर (अनु०)] आकुलता। घबराहट।

अरबी-वि० [फा०] अरब देश का।
पुं० १. अरब देश का घोड़ा। ताजी। २. ताशा नामक बाजा।
स्त्री० अरब देश की भाषा।

अरबीला*-वि० [अनु०] १. आन-बानवाला। २. हठ करने या अड़नेवाला। ३. बिना सिर-पैर का। अंड-बंड।

अरमान-पुं० [तु०] लालसा। चाह। वासना।

अरराना-अ० [अनु०] १. अररर शब्द करना। २. भहरा पड़ना। सहसा गिरना।

अरवा-पुं० [?] धान को यों ही कूटकर (उबालकर नहीं) निकाला हुआ चावल। (धान को उबालकर निकाला हुआ चावल 'भुजिया' कहलाता है।)

अरविंद-पुं० [द्रविड़ से गृहीत सं०] १. कमल। २. सारस।

अरवी-स्त्री० [सं० आलु] तरकारी के काम का एक प्रसिद्ध कंद। अरुई।

अ-रस-पुं० [सं०] रस का अभाव।
वि० जिसमें रस न हो। रस-हीन।

अरस*-पुं० दे० 'आलस'।

अरसना*-अ० [सं० अलस] शिथिल या ढीला पड़ना। मन्द होना।

अरसना-परसना*-स० [सं० स
आलिंगन करना। गले लगाना।

अरस-परस-पुं० [सं० दर्शन + स्
देखना और छूना। दर्शन और स्पर्श क

अरसा-पुं० [अ० अर्सः] १. स
काल। २. देर। विलम्ब।

अरसाना*-अ० दे० 'अलसाना'।

अरसी*-स्त्री० = अलसी।

अरसीला*-वि० [सं० अलस] आ
पूर्ण। आलस्य से भरा हुआ।

अरहन-पुं० [सं० रंधन] १. वह
या बेसन जो तरकारी आदि पकाते
उसमें मिलाया जाता है। रेहन। २.
'निहाई'।

अरहना*-स० [सं० अर्हण] पूजा क
स्त्री० अर्हण, आराधना या पूजा।

अरहर-स्त्री० [सं० आढ़की] एक अ
जिसकी दाल खाई जाती है। तुअर।

अ-राग-पुं० = अ-रति।

अ-राजक-वि० [सं०] १. (स्थान,
आदि) जिसमें राजा, राज्य या श
न हो।
पुं० १. वह जो राज्य या शासन का प्र
न मानता हो। २. वह जो उपद्रव
करके शासन, व्यवस्था, नियंत्रण
तोड़ता और नष्ट करता हो। (अनार्कि

अ-राजकता-स्त्री० [सं०] १.
देश की वह अवस्था जिसमें या तो
या शासन का बिलकुल अभाव हो
अथवा राज्य या शासन अपना काम
और पूरी तरह करने में असमर्थ
है। २. किसी स्थान में उत्पन्न की
वाली वह अवस्था जिसमें व्यवस्था,
त्रण आदि बिलकुल शिथिल या अ
हो जाते हैं। (अनार्की)

अराड़-पुं० [सं० अट्टाल] १.
चीज, विशेषतः काठ-कबाड़ का बहुत
और ऊँचा ढेर। २. वह स्थान जहाँ

ी लकड़ी बिकती हो।

राधन*–पुं० = आराधन।

राधना*–स० [सं० आराधन] १. आराधना करना। पूजा करना। २. जपना। यान करना।

त्री० दे० 'आराधना'।

राधी*–वि० [सं० आराधन] आ-धना या पूजा करनेवाला। आराधक। पूजक।

रारूट–पुं० [अं० ऐरोरूट] एक पौधा सके कन्द का आटा तीखुर की तरह काम आता है।

ाल–वि० [सं०] वक्र। कुटिल। टेढ़ा।

० [सं०] सिर के बाल। केश।

रावल*–पुं० दे० 'हरावल'।

रिंद*–पुं० [सं० अरि] शत्रु। दुश्मन।

रि–पुं० [सं०] १. शत्रु। बैरी। २. क। चक्कर। ३. काम, क्रोध आदि। ४. की संख्या।

रियाना*–स० [सं० अरे] अरे कहकर तें करना। तिरस्कार करना।

रिष्ट–पुं० [सं०] १. दुःख। कष्ट। २. पत्ति। विपत्ति। ३. दुर्भाग्य। ४. अप-कुन। ५. दुष्ट ग्रहों का मरणकारक योग। एक प्रकार का मद्य जो ओषधियों का मीर उठाकर बनाया जाता है। ७. अनिष्ट पात। जैसे–भूकम्प।

[सं०] बुरा। अशुभ।

रिहा*–पुं० = अर्हंत।

–अव्य० [सं० अयि] स्त्रियों के लिए ोधन।

धती–स्त्री० [सं०] १. वशिष्ठ मुनि स्त्री। २. दक्ष की एक कन्या जो धर्म्म ब्याही गई थी। ३. एक बहुत छोटा रा जो सप्तर्षि-मंडल में है।

–संयो० दे० 'और'।

–स्त्री० = अरबी।

रुचि–स्त्री० [सं०] १. रुचि का अभाव। निच्छा। २. अग्नि-मांद्य रोग जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती। ३. घृणा।

अरुझना*–अ० दे० 'उलझना'।

अरुण–वि० [सं०] [स्त्री० अरुणा, भाव० अरुणता, अरुणिमा] लाल। रक्त। (रंग)

अरुणाई*–स्त्री० दे० 'अरुणिमा'।

अरुणाभ–वि० [सं०] लाल आभा से युक्त। लाली लिये हुए।

अरुणिमा–स्त्री० [सं०] ललाई। लाली। सुर्खी।

अरुणोदय–पुं० [सं०] दिन निकलने से कुछ पहले का समय। उषाकाल। ब्राह्म-मुहूर्त्त। तड़का। भोर।

अरुनाना*–अ० = अरुण या लाल होना। स० लाल करना।

अरुनारा*–वि० [सं० अरुण] लाल रंग का।

अरूझना*–अ० दे० 'उलझना'।

अरूढ़*–वि० दे० 'आरूढ़'।

अरूरना*–अ० [सं० अरुस्] दुःखी या पीड़ित होना।

स० दुःखी या पीड़ित करना।

अरे–अव्य० [सं०] [स्त्री० अरी] १. सम्बोधन का शब्द। ए। ओ। २. एक आश्चर्यसूचक अव्यय।

अरेहना*–स० [हिं० रेहना] १. रगड़ना। २. दे० 'रेहना'।

अरोगना*–अ० [सं० आरोग्य] आरोग्य या स्वस्थ होना।

स० आरोग्य या स्वस्थ करना।

अरोच*– स्त्री० = अरुचि।

अरोहना*–अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।

अरोही*–वि० = आरोही (सवार)।

अर्क–पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. इन्द्र। ३. ताँबा। ४. विष्णु। ५. आक। मदार। ६. बारह की संख्या।

पुं० दे० 'अरक'।

अर्गला–स्त्री० [सं०] १. अरगल। अगरी। ब्योंड़ा। २. किवाड़। ३. अवरोध। प्रति-

बन्ध । रुकावट । ४. कल्लोल । ५. वे रंग-विरंग के बादल जो सूर्य्योदय या सूर्य्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम में दिखाई देते हैं । ६. मांस ।

अर्घ–पुं० [सं०] १. षोड़शोपचार में से एक । जल, दूध, दही, सरसों, जव आदि मिलाकर देवता को अर्पित करना । २. सामने जल गिराना । ३. हाथ धोने के लिए जल देना । ४. मूल्य । दाम । ५. किसी वस्तु की उपयोगिता या महत्व का सूचक तत्व । (वैल्यू)

अर्घ-पतन–पुं० [सं०] भाव का गिरना । माल की कीमत बाजार में कम होना । (डेप्रिसिएशन)

अर्घ-पात्र–पुं० [सं०] अरघा ।

अर्घा–पुं० = अरघा ।

अर्घ्य–वि० [सं०] १. पूजनीय । २. बहुमूल्य । ३. पूजा में देने योग्य । (जल, फूल आदि) ४. भेंट देने योग्य ।

अर्चक–वि० [सं०] अर्चना या पूजा करनेवाला । पूजक ।

अर्चन–पुं० [सं०] १. पूजा । पूजन । २. आदर-सत्कार ।

अर्चना–स्त्री० = अर्चन ।

अर्चा–स्त्री० [सं०] १. पूजा । २. प्रतिमा ।

अर्ज–स्त्री० [अ० अर्ज़] विनती । विनय । पुं० चौड़ाई । आयत ।

अर्जक–वि० [सं०] अर्जन करने या कमानेवाला ।

अर्जन–पुं० [सं०] [वि० अर्जनीय] १. उपार्जन । पैदा करना । कमाना । (टु अर्न) २. इकट्ठा करना । संग्रह ।

अर्जित–वि० [सं०] १. व्यापार आदि में कमाया हुआ । (अर्न्ड) २. किसी प्रकार प्राप्त या इकट्ठा किया हुआ । संगृहीत । (एक्वायर्ड)

अर्जी–स्त्री० [अ०] प्रार्थना-पत्र ।

अर्जी-दावा–पुं० [फा०] वह निवेदन-पत्र जो अदालत में दावा दायर क लिए दिया जाता है ।

अर्जुन–पुं० [सं०] १. एक प्रका बड़ा वृक्ष । काहू । २. पाँच पांडवों मझले का नाम ।

अर्णव–पुं० [सं०] १. समुद्र । २. ३. चार की संख्या ।

अर्थ–वि० [सं०] लोगों के स्वकीय अ कारों और उपचारों से सम्बंध रखने पर अपराधिक से भिन्न । (सिविल) अर्थ व्यवहार । (सिविल केस)

पुं० १. शब्दों का वह अभिप्राय जो चाल में लिया जाता है । मतलब । २. वह अभिप्राय या आशय जो किसी पद या वाक्य से निकलता है और बोध कराने के लिए वह शब्द या पद में प्रचलित होता है । (मीनिंग) ३. निमित्त । ४. धन-सम्पत्ति । दौलत ।

अर्थक–वि० [सं०] १. अर्थ या धन र्जित करने या करानेवाला । २. अ धन से सम्बन्ध रखनेवाला । आर्थिक अर्थ या मतलब से सम्बन्ध रखनेवाल

अर्थ-कर–वि० [सं०] [स्त्री० अर्थ जिससे धन उपार्जन किया जाय । धन जैसे–अर्थकर या अर्थ-करी विद्या ।

अर्थ-कार्य–पुं० दे० 'अर्थ-विवाद' ।

अर्थ-दंड–पुं० [सं०] १. वह दं अर्थ या धन के रूप में हो । जुर्म (फाइन) २. किसी प्रकार की व्यय के बदले में लिया जानेवाला (कॉस्ट्स)

अर्थ-न्यायालय–पुं० [सं०] वह न जिसमें केवल अर्थ-सम्बन्धी वादों का होता हो । दीवानी कचहरी । (सिवि

अर्थ-पिशाच–पुं० [सं०] बहु कंजूस । धन-लोलुप ।

अर्थ-प्रकृति–स्त्री० [सं०] नाटक चमत्कार पूर्ण बात जो कथा-वस्तु

की ओर बढ़ाने में सहायक होती है। यह पाँच प्रकार की कही गई है—बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य।

र्थ-प्रक्रिया–स्त्री० [सं०] अर्थ-न्यायालय के द्वारा होनेवाली प्रक्रिया या कार्य। (सिविल प्रोसीजर)

र्थ-प्रसर–पुं० [सं०] अर्थ-न्यायालय से निकली हुई आज्ञा या सूचना। (सिविल प्रोसेस)

र्थ-बंध-पुं० [सं०] १. विशेष अवसर पर या विशेष कार्य के लिए होनेवाली आर्थिक व्यवस्था। २. व्यापारियों, संघों, राष्ट्रों आदि में पारस्परिक हित के विचार से होनेवाला कोई, विशेषतः आर्थिक गुप्त समझौता। (डील)

र्थ-मंत्री–पुं० दे० 'अर्थ-सचिव'।

र्थ-मूलक–वि० [सं०] अर्थ या दीवानी विभाग से सम्बन्ध रखनेवाला।

र्थ-वाद–पुं० [सं०] १. किसी बात का अर्थ या प्रयोजन बतलाना। २. वह वाक्य जिसमें किसी विधि के करने की उत्तेजना या प्रोत्साहन हो। जैसे—दान करने से स्वर्ग मिलता है। ३. विधान की नियमावली आदि के आरम्भ की वे बातें जिनसे उस विधान या नियमावली का अर्थ या प्रयोजन सूचित होता है। (प्रिएम्बुल)

र्थ-विधि–स्त्री० [सं०] वह विधि या कानून जो राज्य की ओर से जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए (अपराधिक विधि से भिन्न) बनाया गया हो। (सिविल लॉ)

अर्थ-विवाद–पुं० [सं०] वह विवाद (मुकदमा) जो केवल अर्थ या धन से सम्बन्ध रखता हो। दीवानी मुकदमा। (सिविल-केस, सिविल सूट)

अर्थ-व्यवहार–पुं० दे० 'अर्थ–विवाद'।

अर्थ-शास्त्र–पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें अर्थ या धन-सम्पत्ति की उत्पत्ति, उपयोग, विनिमय और वितरण का विवेचन होता है। २. राज्य के प्रबन्ध, वृद्धि, रक्षा आदि की विद्या। (ईकॉनॉमिक्स)

अर्थ-शास्त्री–पुं० [सं०] वह जो अर्थ-शास्त्र का ज्ञाता हो। (ईकॉनामिस्ट)

अर्थ-सचिव–पुं० [सं०] किसी राज्य या प्रान्त के अर्थ-विभाग का वह प्रधान अधिकारी या मन्त्री जो आर्थिक विषयों की देख-रेख करता है। (फाईनान्स मिनिस्टर)

अर्थांतरन्यास–पुं० [सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य द्वारा समर्थन किया जाता है।

अर्थात्–अव्य० [सं०] इसका अर्थ यह है कि। मतलब यह कि।

अर्थाधिकरण–पुं० दे० 'अर्थ-न्यायालय'।

अर्थाना*–स० [सं०] अर्थ लगाना।

अर्थापत्ति–स्त्री० [सं०] १. मीमांसा में वह प्रमाण जिसमें एक बात से दूसरी बात की सिद्धि आपसे आप हो जाय। २. एक अर्थालंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात सिद्ध की जाती है।

अर्थापन–पुं० [सं०] किसी गूढ़ पद या वाक्य का अर्थ लगाना या बताना। यह कहना कि इसका यह अर्थ है। (इन्टरप्रेटेशन)

अर्थालंकार–पुं० [सं०] वह अलंकार जिसमें अर्थ सम्बन्धी चमत्कार हो।

अर्थिक–पुं० [सं०] १. वह जो अपने मन में कोई अर्थ या कामना रखता हो। कुछ चाहनेवाला। २. कोई पद, कार्य या सेवा प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाला। उम्मेदवार। (कैन्डिडेट)

अर्थी–वि० [सं० अर्थिन्] [स्त्री० अर्थिनी] १. इच्छा रखनेवाला। चाह रखनेवाला। २. कार्य्यार्थी। प्रयोजनवाला। गर्जी।
पुं० १. वादी। मुद्दई। २. सेवक। ३. धनी।
स्त्री० दे० 'अरथी'।

अर्थोपचार–पुं० [सं०] वह उपचार या क्षति-पूर्त्ति आदि जो अर्थ-न्यायालय या

अर्थ-विधि के द्वारा प्राप्त हो। (सिविल रेमेडी)

अर्थ्यक–पुं० दे० 'प्राप्यक'।

अर्थ्यक-समाहर्ता–पुं० दे० 'प्राप्यक समाहर्त्ता'।

अर्दन–पुं० [सं०] १. पीड़न। हिंसा। २. जाना। ३. माँगना।

अर्दना*–स० [सं० अर्दन] पीड़ित करना। कष्ट देना।

अर्दली–पुं० दे० 'अरदली'।

अर्द्ध–वि० [सं०] १. पूरे के दो बराबर भागों में से एक। आधा। २. जिसमें कुछ अंश अपना और कुछ दूसरों का हो। 'पूरा' का उलटा। (सेमी) जैसे–अर्द्ध–सरकारी, अर्द्ध-आर्य। ३. जिसमें बहुत कुछ कमी हो। अधूरा। जैसे–अर्द्ध-शिक्षित।

अर्द्ध-चंद्र–पुं० [सं०] १. अष्टमी का चन्द्रमा जो आधा होता है। २. चन्द्रिका। मोरपंख पर की आँख। ३. नख-क्षत। ४. सानुनासिक का एक चिह्न। चन्द्र-विन्दु। ५. निकाल बाहर करने के लिए गले में हाथ लगाना। गरदनियाँ।

अर्द्ध-जल–पुं० दे० 'अर्द्धोदक'।

अर्द्ध-नारीश्वर–पुं० [सं०] तन्त्र में शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप।

अर्द्ध-मागधी–स्त्री० [सं०] प्राकृत का एक भेद। काशी और मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा।

अर्द्ध-वृत्त–पुं० [सं०] मध्य-विन्दु से समान अन्तर पर खिंची हुई गोल रेखा का आधा अंश। आधा गोला या वृत्त।

अर्द्ध-समवृत्त–पुं० [सं०] वह छन्द जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो। जैसे–दोहा।

अर्द्धांग–पुं० [सं०] १. आधा अंग। २. लकवा रोग जिसमें आधा अंग बे-काम हो जाता है।

अर्द्धांगिनी–स्त्री० [सं०] स्त्री। पत्नी

अर्द्धाली–स्त्री० [सं० अर्धालि] चौपाई। चौपाई की दो पंक्तियाँ।

अर्द्धासन–पुं० [सं०] किसी का स करने के लिए उसे अपने साथ आसन पर बैठाना या अपने आसन आधा अंश उसे देना।

अर्द्धोदक–पुं० [सं०] मरते हुए को अन्त समय में किसी नदी या शय में इस प्रकार रखना कि आधा अंग जल में और आधा बाहर

अर्द्धोदय–पुं० [सं०] एक पर्व जो दिन होता है जिस दिन माघ की वस्या रविवार को होती है और श्रवण और व्यतीपात योग पड़ता है।

अर्पण–पुं० [सं०] [वि० अर्पित] देना। दान। २. नजर। भेंट।

अर्पना*–स० [सं० अर्पण] अर्पण भेंट करना।

अर्ब-दर्ब*–पुं० [सं० द्रव्य] धन-सम्प दौलत।

अर्बुद–पुं० [सं०] १. गणित में इ दहाई के नवें स्थान की संख्या। करोड़। २. अरावली पहाड़। ३. बाद ४. दो मास का गर्भ। ५. एक जिसमें शरीर में एक प्रकार की गाँठ जाती है। बतौरी।

अर्भक–वि० [सं०] १. छोटा। अ २. मूर्ख। ३. दुबला-पतला। पुं० [सं०] बालक। लड़का।

अर्यमा–पुं० [सं० अर्यमन्] १. सू २. बारह आदित्यों में से एक।

अर्वाचीन–वि० [सं०] [भाव० अ चीनता] १. जिसका आरंभ या प्रच कुछ ही दिनों से हुआ हो। हाल आधुनिक। २. नवीन। नया। (माड

अर्श–पुं० [सं०] बवासीर नामक रोग –वि० [सं०] १. पूज्य। २. यो

उपयुक्त । (यौगिक शब्दों के अंत में) जैसे-पूजार्ह, मानार्ह, दंडार्ह ।
पुं० १. ईश्वर । २. इन्द्र ।

र्हत-पुं० [सं०] १. जिन । देव । २. बुद्ध ।

र्हन-पुं० [सं०] १. पूजन । पूजा । २. जन । देव ।

लं-अव्य० दे० 'अलम्' ।

लंकरण-पुं० [सं०] [वि० अलंकृत] . अलंकारों आदि से सजाना । अलंकृत करना । २. सजावट । सज्जा ।

लंकार-पुं० [सं०] [वि० अलकृत] १. आभूषण । गहना । जेवर । २. साहित्य में वर्णन करने की वह रीति जिससे चमत्कार और रोचकता आती है। (फिगर ऑफ स्पीच) ३. नायिका के सौन्दर्य बढ़ानेवाले हाव-भाव ।

लंकार-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें यह बतलाया जाता है कि कथन या वर्णन किस प्रकार रोचक और प्रभावक बनाये जाते हैं । (रेटोरिक)

लंकृत-वि० [सं०] [स्त्री० अलंकृता] १. विभूषित । सँवारा हुआ । २. साहित्यिक अलंकारों से युक्त ।

लंग-पुं० [सं० अल् = पूर्ण + अंग] ओर । तरफ । दिशा ।
मुहा०-अलंग पर आना या होना = घोड़ी का मस्त होकर गर्भ धारण करने के योग्य होना ।

लंघनीय-वि० दे० 'अलंघ्य' ।

लंघ्य-वि० [स०] १. जो लाँघने योग्य न हो । जिसे लाँघ न सकें । २. जिसे टाल या छोड़ न सकें ।

अलंब*-पुं० दे० 'आलंब' ।

अलंबुष-स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम । २. हठ-योग में लिंग की नाड़ी ।

अलइक-पलवा†-पुं० [सं० अलीक प्रलाप] व्यर्थ की, झूठी या बिना सिर-पैर की बात । गप ।

अलक-स्त्री० [सं०] १. मस्तक के इधर-उधर लटकते हुए बाल । केश । लट । २. छल्लेदार बाल ।

अलकतरा-पुं० [अं० अलकतर:-] पत्थर के कोयले कों उबाल या गलाकर निकाला हुआ एक प्रसिद्ध गाढ़ा काला पदार्थ ।

अलक-रचना-स्त्री० [सं०] बालों की सुंदर लटें बनाना या उन्हें घूँघरदार बनाना ।

अलक-लड़ैता*-वि० [हिं० अलक = बाल + लाड़ = दुलार] दुलारा । लाड़ला ।

अलक-सलोरा*-वि० [सं० अलक = बाल + हिं० सलोना] लाड़ला । दुलारा ।

अलका-स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी का नाम ।

अलकावलि-स्त्री० [सं०] १. केशों का समूह । बालों की लटें । २. घूँघरवाले बाल । छल्लेदार बाल ।

अलक्त(क)-पुं० [सं०] अलता, जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं ।

अ-लक्षण-पुं० [सं०] [स्त्री० अलक्षणा] १. लक्षण का न होना । २. बुरा या अशुभ लक्षण । ३. वह जिसमें बुरे लक्षण हों ।

अ-लक्षित-वि० दे० 'अलक्ष्य' ।

अ-लक्ष्य-वि० [सं०] १. अदृश्य । जो दिखाई न पड़े । गायब । २. जिसका लक्षण न बतलाया जा सके ।

अलख-वि० [सं० अलक्ष्य] १. जो दिखाई न पड़े । अदृश्य । अप्रत्यक्ष । २. अगोचर । इन्द्रियातीत । (ईश्वर का एक विशेषण)
मुहा०-अलख जगाना = (क) पुकार-पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना या कराना । (ख) परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना ।

अलखधारी-पुं० [सं०] एक प्रकार के साधु जो अलख जगाते हुए भीख माँगते हैं ।

अलखनामी-पुं० दे० 'अलखधारी' ।

अलगंट†वि० [हिं० अलग] सबसे अलग । न्यारा ।

अलग-वि० [सं० अलग्न] १. जुदा ।

पृथक् । भिन्न । अलहदा ।

मुहा०-**अलग करना** = (क) दूर करना। हटाना । (ख) नौकरी से छुड़ाना । बरखास्त करना ।

२. बेलाग । ३. बचाया हुआ । रक्षित ।

अलगनी-स्त्री० [सं० आलग्न] आड़ी रस्सी या बाँस जो कपड़े टाँगने के लिए घर में बाँधा जाता है । डारा ।

अल-गरजी-वि० [अ० गरज़] १. स्वार्थी। मतलबी । २. किसी की बहुत अधिक परवाह या चिन्ता न करनेवाला । लापरवाह ।

अलगाऊ-वि० [हिं० अलग] १. अलग करने या रखनेवाला । २. अलग करने या रखने का पक्षपाती ।

अलगा-गुजारी-स्त्री० [हिं० अलग + फा० गुज़ारी] कुटुंब, व्यापार आदि में सदस्यों आदि का अलग-अलग हो जाना ।

अलगाना-स० [हिं० अलग) १. अलग करना । छाँटना । २. जुदा करना । दूर करना । हटाना ।

अलगाव-पुं० [हिं० अलग] अलग होने की क्रिया या भाव । पार्थक्य ।

अलगोजा-पुं०[अ०]एक प्रकार की बाँसुरी।

अलता-पुं० [सं० अलक्तक] १. लाल रंग जो स्त्रियां पैर में लगाती हैं । २. महावर । ३. खसी की मूत्रेंद्रिय ।

अलप*-वि० = अल्प ।

अलफा-पुं० [अ०] [स्त्री० अल्पा० अलफी] साधुओं के पहनने का, बिना बाँह का एक प्रकार का पहनावा ।

अलबत्ता-अव्य० [अ०] १. निस्सन्देह । निःसंशय । बेशक । २. हाँ । बहुत ठीक । दुरुस्त । ३. लेकिन । परन्तु ।

अलबेला-वि० [सं० अलभ्य] [स्त्री० अलबेली] १. बाँका । बना-ठना । छैला । २. अनोखा । अनूठा । ३. सुन्दर । ४. अल्हड़ । बे-परवाह । मनमौजी ।

पुं० नारियल का बना हुआ हुक्का ।

अलभ्य-वि० [सं०] [भाव० अल १. न मिलने योग्य । अप्राप्य । २. कठिनता से मिल सके । दुर्लभ । अमूल्य । अनमोल ।

अलम्-अव्य० [सं०] यथेष्ट । पर्याप्त

अलमस्त-वि० [फा०] [भाव० अलम १. मतवाला । मत्त । मस्त । २. नि बेफिक्र ।

अलमस्ती-स्त्री० [फा०] १. मत पन । मत्तता । २. लापरवाही ।

अलमारी-स्त्री० [पुर्त० अलमारि वह खड़ा सन्दूक जिसमें चीजें रख लिए खाने या दर बने रहते हैं । भंडरिया ।

अलल-टप्पू-वि० [अनु०] अटकल-पच्चू बे-ठिकाने का । अंड-बंड ।

अलल-बछेड़ा-पुं०[हिं० अल्हड़ + बछेड़ा] १. घोड़े का जवान बच्चा । २. अ आदमी ।

अलल-हिसाब-वि० [अ०] बाद हिसाब लेने के लिए दिया जाने (धन) । उचिंत ।

अललाना-अ० [सं० अर = बोलना गला फाड़कर बोलना । चिल्लाना ।

अलवाँती-वि० [सं० बालवती] (जिसने अभी हाल में प्रसव किया हो । प्र

अलवान-पुं० [अ०] ऊनी चादर ।

अलस-वि० [द्रविण से ग्रहीत, सं० [भाव० अलसता] आलसी । सुस्त ।

अलसाना-अ० [सं० अलस] आल पड़ना । शिथिलता अनुभव करना ।

अलसी-स्त्री० [सं० अतसी] १. पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है ।

अलसेट (ठ)-स्त्री० [सं० अलस] [अलसेटिया] १. ढिलाई । व्यर्थ की २. टाल-मटोल । ३. भुलावा । चकमा । बाधा । अड़चन । ५. व्यर्थ या जान

र किया जानेवाला झगड़ा या तकरार ।

लसौंहाँ*–वि० [सं० अलस] [स्त्री० लसौंहीं] १. आलस्ययुक्त । शिथिल । . नींद से भरा हुआ । उनींदा ।

लह*–वि० दे० 'अलभ्य' ।

लहदगी–स्त्री० [अ०] अलहदा, अलग जुदा होने की क्रिया या भाव ।

हदा-वि० दे० 'अलग' ।

हदी-वि० [अ० अहदी] आलसी र अकर्मण्य ।

ाईं†-वि० [हिं० आलस] [स्त्री० लाइन] आलसी और सुस्त ।

ी० घोड़ों की एक जाति ।

ात-पुं० [सं०] १. जलती हुई कड़ी । २. अंगारा ।

ात-चक्र–पुं० [सं०] १. जलती ई लकड़ी को जोर से घुमाने से बना हुआ डल । २. बनेठी ।

ान–पुं० [सं० आलान] १. हाथी धने का खूँटा या सिक्कड़ । २. बन्धन । वेड़ी । ४. बेल चढ़ाने के लिए गाड़ी ई लकड़ी या ढाँचा ।

ाप–पुं० दे० 'आलाप' ।

ापना–अ० [सं० आलापन] १. लना । बात-चीत करना । २. गाने में न लगाना । ३. गाना ।

ापी–वि० [सं० आलापिन्] बोलने-ला । शब्द करनेवाला ।

लाभ–पुं० [सं०] १. लाभ न होना । घाटा । घटी ।

ाभ-कर–वि० [सं०] १. जिससे कोई भ या फायदा न होता हो । २. जिसमें ार्थिक दृष्टि से कुछ लाभ या बचत न ती हो ।

लाम*–वि० [अ० अल्लामा] १. बातें नानेवाला । २. मिथ्यावादी ।

-लायक*-वि० = अयोग्य ।

लार-पुं० [सं०] कपाट । किवाड़ ।

*पुं० [सं० अलात] १. अलाव । २. आँवाँ ।

अलाव–पुं० [सं० अलात] तापने के लिए जलाई हुई आग । कौड़ा ।

अलावा–क्रि० वि० [अ०] सिवाय । अतिरिक्त ।

अ-लिंग–वि० [सं०] १. लिंग-रहित । बिना चिह्न का । २. जिसकी कोई पहचान न बतलाई जा सके ।

पुं० १. व्याकरण में वह शब्द जो दोनों लिंगों में समान रूप से व्यवहृत होता हो । जैसे–हम, तुम, मित्र । २. ब्रह्म ।

अलिंजर–पुं० [सं०] पानी रखने का मिट्टी का घड़ा, झंझर, सुराही आदि ।

अलिंद–पुं० [सं०] मकान के बाहरी द्वार के आगे का चबूतरा या छज्जा ।

*पुं [सं० अलींद्र] भौंरा ।

अलि–पुं० [सं०] [स्त्री० अलिनी] १. भौंरा । २. कोयला । ३. कौआ । ४. बिच्छू । ५. वृश्चिक राशि । ६. कुत्ता । ७. मदिरा ।

स्त्री० दे० 'अल' ।

अ-लिखित–वि० [सं०] जो लिखा तो न हो, फिर भी प्रायः लिखे हुए के समान हो । जैसे–अ-लिखित आज्ञा या विधान ।

अ-लिप्त–वि० [सं०] जो लिप्त न हो । निर्लिप्त । अलीन ।

अली–स्त्री० [सं० आली] १. सखी । सहेली । २. पंक्ति । कतार ।

पुं० [सं० अलि] भौंरा ।

अलीक–वि० [सं०] १. मिथ्या । झूठ । २. मर्यादा-रहित । ३. अ-प्रतिष्ठित ४. सार-हीन ।

अ-लीक–पुं० [हिं० अ + लीक] अप्रतिष्ठा ।

अलीजा*–वि० [अ० आलीजाह] बहुत । अधिक ।

अ-लीन–वि० [हिं० अ + लीन] १. जो किसी में लीन न हो । विरत । अलग । २. जो ठीक या उपयुक्त न हो । अनुचित ।

अलीपित*–वि० = अलिप्त ।

अलीह*–वि० [सं० अलीक] १. मिथ्या । असत्य । झूठ । २. अनुचित ।

अलुक्–पुं० [सं०] व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता, बल्कि वह ज्यों की त्यों बनी रहती है । जैसे-मनसिज ।

अलुझना*–अ० दे० 'उलझना' ।

अलुटना*–अ० [सं० लुट् = लोटना] लड़खड़ाना । गिरना-पड़ना ।

अलूप*–वि० = लुप्त ।
पुं० = लोप ।

अलूला*–पुं० [हिं० बुलबुला] १. भभूका । बबूला । लपट । २. बुलबुला ।

अ-लेख–वि० [सं०] १. जिसके विषय में कोई भावना न हो सके । दुर्बोध । २. अज्ञेय ।

अलेखा*–वि० [सं० अलेख] १. बेहद । बहुत । २. व्यर्थ । निष्फल । ३. जैसा कभी देखा न गया हो । अद्भुत । विचित्र ।

अलेखी*–वि० [सं० अलेख] १. बे-हिसाब या अंड-बंड काम करनेवाला । २. गड़बड़ मचानेवाला । ३. अंधेर करनेवाला । अन्यायी ।

अलेल–पुं० [?] क्रीड़ा । कलोल ।

अलेलह†–क्रि० वि० [देश०] जितना चाहिए उससे अधिक । बहुत अधिक ।

अ-लैंगिक–वि० [सं०] (जीव) जिसमें स्त्री या पुरुष में से किसी का लिंग या चिह्न वर्त्तमान न हो । (एसेक्सुअल)

अलोक–वि० [सं०] १. जो देखने में न आवे । अदृश्य । २. निर्जन । एकान्त ।
पुं० १. पातालादि लोक । परलोक । २. मिथ्या दोष । कलंक । ३. निन्दा ।
*पुं० दे० 'आलोक' ।

अलोकना*–स० [सं० आलोकन] देखना ।
स० [सं० आलोक] आलोक या प्रकाश से युक्त करना । आलोकित करना ।
अ० आलोक या प्रकाश से युक्त होना । चमकना ।

अलोना–वि० [सं० अलवण] [अलोनी] १. जिसमें नमक न प २. जिसमें नमक न खाया जाय । अलोना व्रत । ३. फीका । स्वाद-रहित

अलोप*–वि० दे० 'लोप' ।

अलोपना–अ० [सं० लोप] १. लुप्त
स० लुप्त या गायब करना ।

अ-लोल–वि० [सं०] जो हिलता- न हो । स्थिर ।

अलौकिक–वि० [सं०] [भाव लौकिकता] १. जो इस लोक में न दिख लोकोत्तर । २. अद्भुत । अपूर्व । मानुषी ।

अल्प–वि० [सं०] [भ.व० अ अल्पत्व] १. थोड़ा । कम । २.
पुं० साहित्य में एक अलंकार जिसमें आ अपेक्षा आधार की अल्पता या छोट वर्णन होता है ।

अल्प-कालिक–वि० [सं०] १. ही दिनों से हो, या कुछ ही दिन र थोड़े समय के लिए होने या दिया वाला । जैसे–अल्प-कालिक अगा ऋण ।

अल्प-कालीन–वि० = अल्प-कालिक

अल्प-जीवी–वि० [सं०] जिसकी कम हो । अल्पायु ।

अल्पज्ञ–वि० [सं०] [भाव० अल १. थोड़ा ज्ञान रखनेवाला । छोटी का । २. ना-समझ ।

अल्पता–स्त्री० [सं०] अल्प या होने की दशा या भाव ।

अल्पना–स्त्री०-दे० 'साँझी' ।

अल्प-प्राण–पु० [सं०] व्यंज प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और अक्षर तथा य, र, ल और व अक्षर ।

अल्प-मत–पुं० [सं०] १. थोड़े का मत । 'बहु-मत' का उलटा । लोग जिनकी संख्या और फलतः म

मुकाबले में कम हो। अल्प-संख्यक। माइनॉरिटी)

प-वयस्क–वि० [सं०] १. छोटी स्था का। थोड़ी या कम उम्रवाला। दे० 'अ-वयस्क'।

प-विराम–पुं० [सं०] एक प्रकार का म-चिह्न जो पूर्ण-विराम की अपेक्षा थोड़े विराम का सूचक होता है। ॉमा)

पशः–क्रि० वि० [सं०] थोड़ा-थोड़ा के। धीरे धीरे। क्रमशः।

प-संख्यक–पुं० [सं०] वह समाज के सदस्यों की संख्या औरों के मुकाबले कम हो। (माइनॉरिटी)

[सं०] गिनती में थोड़े या कम।

ायु–वि० दे० 'अल्प-जीवी'।

पार्थक–पुं० [सं०] वह शब्द जो ी वस्तु के छोटे रूप का वाचक हो। डम्यूनिटिव) जैसे–'फोड़ा' का अल्पार्थक ड़िया' और 'घर' का अल्पार्थक 'घरौंदा'

–पुं० [अ० आल] वंश, गोत्र, जाति दि के अनुसार चलनेवाला नाम। जैसे–र्मा, मिश्र, श्रीवास्तव आदि।

हड़–वि० [सं० अल् = बहुत + हिं० = लालसा] [भाव० अल्हड़पन] १. मौजी। बेपरवाह। २. जिसे व्यवहार का या अनुभव न हो। ३. उद्धत। उजड्ड। गँवार।

वह नया बैल या बछड़ा जो निकाला न ा हो।

ंती–स्त्री० [सं०] उज्जैन या उज्जयिनी मक नगरी जिसकी गिनती सात प्रसिद्ध रियों और तीर्थों में होती है।

व–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों पहले लगाकर उनमें निश्चय (जैसे–अव-ारण), अनादर) जैसे–अवज्ञा), कमी जैसे–अवघात), उतार या निचाई (जैसे–अवतार), बुराई या दोष (जैसे–अवगुण), व्याप्ति (जैसे–अवकाश) आदि भाव उत्पन्न करता है।

*अव्य० दे० 'और'।

अवकलन–पुं० [सं०] १. इकट्ठा होकर मिलना या इकट्ठा करके एक में मिलाना। २. देखना। ३. ग्रहण करना। ४. जानना। समझना।

अवकलना*–अ० [सं० अवकलन] ज्ञान या बोध होना। समझ में आना।

स० १. इकट्ठा करना। २. देखना।

अवकाश–पुं० [सं०] १. रिक्त या शून्य स्थान। खाली जगह। २. आकाश। अंतरिक्ष। ३. दूरी। अन्तर। ४. अवसर। उपयुक्त समय। ५. खाली समय। ६. निरंतर काम करते रहने पर बीच में कुछ समय के लिए मिलनेवाली छुट्टी। (लीव)

अवकाश-ग्रहण–पुं० [सं०] किसी पद या कार्य से हटकर अलग हो जाना। काम से अवकाश लेना (या छुटकारा पाना)। (रिटायरमेन्ट)

अवकाश-प्राप्त–वि० दे० 'अवसर-प्राप्त'।

अवकाश-संख्यान–पुं० [सं०] कार्य-कर्त्ताओं को मिलनेवाली छुट्टियों का लेखा या हिसाब। (लीव एकाउन्ट)

अवकीर्ण–वि० [सं०] १. फैला, बिखरा या छितराया हुआ। २. तोड़-फोड़कर नष्ट किया हुआ।

अवकृपा–स्त्री० [सं०] 'कृपा' का विरोधी भाव। अप्रसन्नता। नाराजगी।

अवक्खन*–पुं० [सं० अवेक्षण] देखना।

अवक्रय–पुं [सं०] १. किसी वस्तु के बदले में दिया जानेवाला धन। निष्क्रय। (कम्पेन्सेशन) २. मूल्य। दाम। (प्राइस)

अवक्रांत–वि० [सं०] (संस्था या संघ) जिसे वरिष्ठ शक्ति या अधिकार के द्वारा हटा या दबाकर अपने अधिकार में ले लिया गय

हो। (सुपरसीडेड) जैसे-अवक्रांत नगरपालिका।

अवक्रांति-स्त्री० [सं०] [वि० अवक्रांत] राज्य, शासन आदि का अपनी वरिष्ठ शक्ति या अधिकार के द्वारा किसी संस्था या संघ को हटा या दबाकर उसका कार्य भार अपने ऊपर ले लेना। (सुपरसेशन)

अवक्षय-पुं० [सं०] सड़-गलकर या जीर्ण होने के कारण क्षीण होना। (डिकेडेन्स)

अवगत-वि० [सं०] १. विदित। ज्ञात। जाना हुआ। मालूम। २. नीचे आया हुआ। गिरा हुआ।

अवगतना*-स० [सं० अवगत] समझना। विचारना।

अवगति-स्त्री० [सं०] १. 'अवगत' होने की क्रिया या भाव। जानकारी। २. बुद्धि। धारणा। समझ। ३. 'सद्-गति' का उलटा। बुरी गति।

अवगाधना*-स० दे० 'अवगाहना'।

अवगारना*-स० [सं० अव + गृ] १. समझाना-बुझाना। २. जताना।

अवगाह*-वि० [सं० अवगाध] १. अथाह। बहुत गहरा। *२. अनहोना। ३. कठिन।

पुं० १. गहरा स्थान। २. संकट का स्थान। ३. कठिनाई।

पुं० [सं०] १. अन्दर प्रवेश करना। पैठना। २. जल में उतरकर नहाना।

अवगाहन-पुं० [सं०] १. नदी, तालाब आदि में पैठकर नहाना। २. प्रवेश। पैठ। ३. आलोड़न। मन्थन। ४. खोज। छान-बीन। ५. मन लगाकर विचार करना या सोचना।

अवगाहना*-अ० [सं० अवगाहन] १. तालाब, नदी आदि में पैठकर नहाना। २. पैठना। धुसना। धँसना। ३. मगन या प्रसन्न होना।

स० १. किसी विषय या बात की छान-बीन करना। २. धारण या ग्रहण करना। ३. (कोई बात) सोचना।

अवगुंठन-पुं० [सं०] [वि० अव १. ढकना। छिपाना। २. रेखा से ३. घूँघट।

अवगुंफन-पुं० [सं०] [वि० अ गूँधना। पिरोना।

अवगुण-पुं० [सं०] १. 'गुण' का भाव। २. कोई खराब बात या बुरा दोष। ऐब। बुराई। खोटाई। (

अवग्रह-पुं० [सं०] १. रुकावट। चन। बाधा। २. वर्षा का अभाव। ३. बाँध। बन्द। ४. समस्त-पदों विच्छेद। (व्या०) ५. 'अनुग्रह' का ६. शाप। कोसना।

अवघट-वि० [सं० अव + घट्ट= १. विकट। दुर्गम। २. मुश्किल।

अवचट-स्त्री०, क्रि० वि० दे० 'औ

अवचय-पुं० [सं०] फल फूल तोड़ या चुनकर इकट्ठा करना।

अवचेतन-वि० [सं०] जिसे या ठीक या पूरी चेतना न हो।

अवचेतना-स्त्री० [सं०] चेतना सुप्त अवस्था जिसमें किसी वस्तु ज्ञान नहीं होता। अर्द्ध-चेतना।

अवच्छिन्न-वि० [सं०] अलग हुआ। पृथक्।

अवच्छेद-पुं० [सं०] [वि० अ अवच्छिन्न, कर्त्ता अवच्छेदक] १. अ पार्थक्य। २. भेद। अन्तर। ३. हद ४. अवधारण। छान-बीन। ५. परि प्रकरण। (ग्रन्थ का)

अवछंग*-पुं० दे० 'उछंग'।

अवज्ञा-स्त्री० [सं०] [वि० अवज्ञेय] १. किसी के प्रति उचित आदर का अभाव। २. आज्ञा या मानना। अवहेला। (डिस्-ओबीडि ३. पराजय। हार। ४. साहित्य में एक जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष का

तु पर प्रभाव न पड़ने का वर्णन होता है।

ज्ञात-वि० [सं०] [संज्ञा अवज्ञा]
जिसकी अवज्ञा, अपमान या अनादर
या गया हो। २. (आज्ञा) जिसका
लंघन किया गया हो। ३. हारा हुआ।
जित।

ज्ञेय-वि० [सं०] १. अवज्ञा, अपमान
अनादर करने के योग्य। २. (आज्ञा
कथन) उल्लंघन करने के योग्य। न
नने योग्य।

टना*-स० [सं० आवर्त्तन] १. मथना।
लोड़न करना। २. किसी द्रव पदार्थ को
ग पर चढ़ाकर गाढ़ा करना।
० घूमना। फिरना।

डेर-पुं० [देश०] [क्रि० अवडेरना]
फेर। चक्कर। २. झंझट। बखेड़ा। ३.
में भंग।

डेरना-स० [हिं० अवडेर] १. झंझट
झगड़े-बखेड़े में डालना या फँसाना।
तंग, परेशान या दिक करना।

डेरा-वि० [हिं० अवडेर] १. जिसमें
माव-फिराव हो। चक्करदार। पेचीला।
. जिसमें बहुत झगड़ा-बखेड़ा या झंझट
। ३. विकट। ४. बेढंगा। बेढब।

ढर-वि० [हिं० अव + ढलना] अ-
रण ही प्रसन्न या अनुरक्त होनेवाला।

वतंश-पुं० [सं०] [वि० अवतंशित]
. भूषण। अलंकार। २. शिरोभूषण।
शिरोमणि। ३. मुकुट। ४. श्रेष्ठ व्यक्ति।
उत्तम पुरुष। ५. माला। हार। ६. कान
की बाली। ७. करनफूल। ८. दूल्हा।

वतरण-पुं० [सं०] [वि० अवतीर्ण]
१. उतरना। २. पार होना। ३. घटना।
कम होना। ४. जन्म ग्रहण करना। ५.
सीढ़ी। ६. घाट। ७. किसी की कही या
लिखी हुई वह बात जो कहीं ज्यों की त्यों
लाकर प्रमाण, विचार आदि के लिए सामने
रखी गई हो। उद्धरण। प्रोक्ति। (कोटेशन)

अवतरण-चिह्न-पुं० [सं०] उलटे हुए अल्पविराम-चिह्न जिनके बीच किसी का कथन उद्धृत रहता है। जैसे-" "।

अवतरणिका-स्त्री० [सं०] १. ग्रन्थ की प्रस्तावना। भूमिका। २. परिपाटी। रीति। प्रथा।

अवतरना*-अ० [सं० अवतरण] १. प्रकट होना। उपजना। २. उतरना।

अवतरित-वि० [सं०] १. ऊपर से नीचे उतरा हुआ। २. किसी दूसरे स्थान से लिया हुआ। उद्धृत। ३. जिसने अवतार धारण किया हो।

अवतार-पुं० [सं०] [वि० अवतीर्ण, अवतरित] १. उतरना। नीचे आना। २. जन्म होना। शरीर धारण करना। ३. देवता का मनुष्यादि संसारी प्राणियों के शरीर में आना। (इन्कारनेशन) *४. सृष्टि।

अवतारण-पुं० [सं०] [स्त्री० अवतारणा] १. उतारना। नीचे लाना। २. नकल करना। ३. उदाहृत करना।

अवतारना-स० [सं० अवतारण] १. अवतार के रूप में पृथ्वी पर लाना। २. जन्म देना। ३. उत्पन्न या प्रस्तुत करना।

अवतारी-वि० [सं० अवतार] १. उतरनेवाला। २. अवतार लेनेवाला। ३. जिसमें ईश्वर या देवता का अंश हो या माना जाता हो। अलौकिक काम करनेवाला। ४. अलौकिक शक्तिवाला।

अवतीर्ण-वि० [सं०] १. ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ। २. जिसने अवतार धारण किया हो। अवतरित। ३. उत्तीर्ण।

अवदमन-पुं० [सं०] उमड़नेवाले या विद्रोही को दबाना। (डिप्रेशन)

अवदशा-स्त्री० दे० 'दुर्दशा'।

अवदात-वि० [सं०] १. उज्वल। सफेद। २. स्वच्छ। निर्मल। साफ।

अवदान-पुं० [सं०] [वि० अवदान्य]

१. शुद्ध आचरण। अच्छा काम। २. खंडन। तोड़ना। ३. शक्ति। बल। ४. अतिक्रम। उल्लंघन।

अवदान्य–वि० [सं०] बलवान और वीर। पराक्रमी।

अ-वदान्य–वि० [सं०] जिसमें उदारता न हो।

अवद्य–वि० [सं०] १. निकृष्ट। बुरा। २. नीच। अधम।

अवध–पुं० [सं० अयोध्या] १. कोशल देश। २. अयोध्या नगरी।

*स्त्री० दे० 'अवधि'।

अवधान–पुं० [सं०] १. मन एकाग्र करके किसी ओर लगाना। मनोयोग। २. सावधानी। चौकसी। ३. किसी कार्य या वस्तु की देख-रेख। (केयर) ४. कोई कार्य अपने अधीन रखकर उसका संचालन करना या कराना। (चार्ज)

अवधायक–पुं० [सं०] वह जिसके अवधान में कोई वस्तु, कार्य अथवा कार्यालय हो। (इन्-चार्ज)

अवधायक अधिकारी–पुं० [सं०] वह अधिकारी जो किसी कार्य या कार्यालय का अवधायक हो। (ऑफिसर इन्-चार्ज)

अवधारण–पुं० [सं०] [वि० अवधारित, अवधारणीय] १. अच्छी तरह विचार करके कोई निश्चय करना। (डिटरमिनेशन) २. अच्छी तरह विचार करके परिणाम निकालना। (फाइंडिंग)

अवधारना*–स० [सं० अवधारण] धारण करना। ग्रहण करना।

अवधारित–वि० [सं०] १. जो अच्छी तरह सोच-समझकर निश्चित किया गया हो। २. जिसने कुछ करना निश्चित कर लिया हो। (डिटरमिन्ड) जैसे–मैं यह काम करने के लिए अवधारित हूँ।

अवधि–स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. किसी एक नियत समय से दूसरे नियत समय तक के बीच का काल। (पी
३. वह नियत या निश्चित समय
पहले कोई काम होना आवश्यक हो। (लिमिटेशन)

मुहा०–**अवधि बदना** = यह क
हम यह काम इतने समय के अन्दर कर
४. किसी पद या कार्य के एक बार
होने पर फिर अन्त होने तक का समय।
अव्य० तक। पर्यंत।

अवधि-बाधित–वि० [सं०] (अ
व्यवहार आदि) जिसकी अवधि बीत
हो और इसी लिए जिसका विचार,
या उपयोग न हो सकता हो। (बा
लिमिटेशन)

अवधिमान–पुं० = समुद्र।

अवधी–वि० [सं० अयोध्या]
सम्बन्धी। अवध का।

स्त्री० अवध की बोली।

अवधू*–पुं० = अवधूत।

अवधूत–पुं० [सं०] [स्त्री० अवधू
संन्यासी। साधु। योगी।

अवन*-स्त्री० = अवनि (पृथ्वी)।

अवनत–वि० [सं०] १. नीचा।
हुआ। २. गिरा हुआ। पतित। ३.

अवनति–स्त्री० [सं०] १. घटती।
न्यूनता। २. अधोगति। हीन दशा।
झुकाव। ४. नम्रता।

अवना*–अ० [हिं० 'आना' का पु
रूप] १. अस्तित्व में आना। रचा ज
२. दे० 'आना'।

अवनि–स्त्री० [सं०] पृथ्वी। जमीन

अवनीश्वर–पुं० [सं०] [स्त्री० अव
श्वरी] राजा। महीप।

अवपात–पुं० [सं०] १. गिराव।
२. गड्ढा। ३. नाटक में अंक
समाप्ति जिसमें लोग डर या घबराकर भ
हुए दिखाई देते हैं।

अवबोध–पुं० [सं०] १. जागना।

न । बोध ।

भृथ–पुं० [सं०] १. वह शेष कर्म
सके करने का विधान मुख्य यज्ञ के समाप्त
ने पर है । २. यज्ञांत स्नान ।

म तिथि–स्त्री० [सं०] चान्द्र मास
वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो ।

मर्दन–पुं० [सं०] [वि० अवमर्दित]
कष्ट पहुँचाना । २. कुचलना, रौंदना
दलना ।

मर्ष–पुं० दे० 'विमर्ष' ५ ।

मान–पुं० [सं०] [वि० अवमानित]
ी के मान का पूरा ध्यान न रखना ।
ना चाहिए, उतना मान न करना ।
टेम्प्ट.)

मानना–स्त्री० दे० 'अवमान' ।
० किसी का अपमान करना ।

मूल्यन–पुं० [सं० अव + मूल्य] किसी
का निश्चित मूल्य, विशेषतः विनिमय
लिए सिक्कों आदि का मूल्य या दर घटा-
कम करना । (डि-वैलुएशन)

यव–पुं० [सं०] [वि० अवयवी]
अंश । भाग । हिस्सा । २. शरीर का
। (ऑर्गन) ३. तर्क-पूर्ण वाक्य का
अंश या भेद । (न्याय)

यस्क–वि० [सं०] जिसने विधि की
में पूर्ण वय न प्राप्त किया हो । जो
वयस्क न हुआ हो । नाबालिग ।
इनर)

र–वि० [सं० अ + वर] १. जो ऊँचा
बड़ा न हो, बल्कि उसकी अपेक्षा कुछ
ा या छोटा हो । 'वर' का विपरीत ।
न्फीरियर) २. अधम ।

०[सं० अपर] १. अन्य । दूसरा ।
और ।

व्य० दे० 'और' ।

रत–वि० = विरत ।

ं० = आवर्त्त ।

र सेवक–पुं० [सं०] वह कर्मचारी
जिसकी गिनती ऊँचे या बड़े सेवकों में न होती हो । (इन्फीरियर सर्वेन्ट)

अवर सेवा–स्त्री० [सं०] राजकीय अथवा लोक-सेवा का वह अंग जिसमें निम्न-कोटि के कर्मचारी होते हैं । (इन्फीरियर सर्विस)

अवराधन-पुं० दे० 'आराधन' ।

अवराधना*–स० = आराधना करना ।

अवराधी*–वि० = आराधना करनेवाला ।

अवरुद्ध–वि० [सं०] १. रुँधा या रुका हुआ । २. चारों ओर से घेरकर बन्द किया हुआ । (इम्पाउंडेड) ३. छिपा हुआ । गुप्त ।

अवरेखना*–स० [सं० अवलेखन] १. उरेहना । लिखना । चित्रित करना । २. देखना । ३. अनुमान करना । कल्पना करना । सोचना । ४. मानना । ५. जानना ।

अवरेब–पुं० दे० 'औरेब' ।

अवरोध–पुं० [सं०] १. चारो ओर से घेरने की क्रिया या भाव । घेरा । २. काम या मार्ग में खड़ी की जानेवाली अड़चन । रुकावट । रोक । ३. मुँह या रास्ता बन्द करना । निरोध ।

अवरोधक–वि० [सं०] [स्त्री० अवरोधिका] अड़चन डालने या रोकनेवाला ।

अवरोधन–पुं० [सं०] [वि० अवरोधक, अवरुद्ध, अवरोधित] १. चारो ओर से घेरकर रोकना । २. इस प्रकार घेरकर रोकना कि इधर-उधर न हो सके । (इम्पांउंडिंग)

अवरोधना*–स० [सं० अवरोधन] १. रोकना । २. निषेध करना ।

अवरोधित–वि० = अवरुद्ध ।

अवरोधी–वि० = अवरोधक ।

अवरोप(ण)–पुं० [सं०] [वि० अवरोपित] किसी को, उसपर लगे हुए आरोप या अभियोग से न्यायालय का यह समझकर मुक्त करना कि इसने जो कुछ किया है, वह अपराध नहीं माना जा सकता । (डिस्चार्ज)

अवरोपित–वि० [सं०] लगे हुए आरोप

या अभियोग से मुक्त किया हुआ। (डिस्चार्ज्ड)

अवरोह(ण)–पुं० [सं०] वि० अवरोहक, अवरोहित] १. ऊपर से नीचे की ओर आना। उतार की ओर चलना। 'आरोह' का उलटा। २. गिराव। अधःपतन। ३. अवनति।

अवरोहना*–अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना।

अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।

*स० [हिं० उरेहना] खींचना। अंकित करना। चित्रित करना।

स० [सं० अवरोधन] रोकना।

अवरोही–वि० [सं० अवरोहिन्] १. ऊपर से नीचे की ओर आनेवाला। २. जो क्रम के विचार से उतार की ओर हो। जैसे–अवरोही स्वर-साधन = (संगीत में) निषाद से क्रमशः षड्ज तक के स्वरों का उच्चारण। (षड्ज से क्रमशः निषाद तक का स्वर-साधन 'आरोही' कहलाता है)।

अ-वर्ण–वि० [सं०] १. वर्ण-रहित। बिना रंग का। २. बदरंग। बुरे रंग का। ३. वर्ण-धर्म रहित।

अवर्ण्य–वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके।

अ-वर्त्त*–पुं० = आवर्त्त।

अवर्षण–पुं० [सं०] वर्षा न होना।

अवलंघन–पुं० = उल्लंघन।

अवलंघना*–स० = लाँघना।

अवलंब–पुं० [सं०] आश्रय। सहारा।

अवलंबन–पुं० [सं०] [वि० अवलंबनीय, अवलंबित, अवलंबी] १. आश्रय। आधार। सहारा। २. धारण। ग्रहण।

अवलंबना*–स० [सं० अवलंबन] १. अवलंबन करना। आश्रय लेना। टिकना। २. धारण करना।

अवलंबित–वि० [सं०] १. किसी के आधार या सहारे पर ठहरा या टिका हुआ। २. जो किसी दूसरी बात के होने पर (डिपेंडेड)

अवलंबी–वि० [सं० अवलंबिन्] अवलंबिनी] १. अवलंबन करने सहारा लेनेवाला। २. सहारा देनेवाला।

अवली*–स्त्री० [सं० आवलि] १. श्रेणी। २. समूह। झुंड। ३. डंठल या बालें जो नवान्न करने खेत से पहले-पहल काटी जाती हैं।

अवलेखना*–स० [सं० अवलेखन खोदना। २. खुरचना। ३. चिह्न या लगाना।

अवलेप–पुं० = उबटन।

अवलेपन–पुं० [सं०] १. लेप में किसी चीज़ पर लगाना। पोतना वह वस्तु जो पोती या लगाई जाय। ३. घमंड। अभिमान। ४. ऐब।

अवलेह–पुं० [सं०] [वि० १. लेई जो न अधिक गाढ़ी हो न पतली हो। २. चटनी। माजूम। औषधि जो चाटी जाय।

अवलोकन–पुं० [सं०] १. देखना अच्छी तरह या जाँच पड़ताल करते देखना। (पेरूज़ल)

अवलोकना*–स० [सं० अवलोक देखना। २. जाँचना। ३. अनुसंधान

अवलोकनि*–स्त्री० [सं० अव १. आँख। दृष्टि। २. चितवन।

अवलोकनीय–वि० [सं०] [स्त्री लोकनीया] १. अवलोकन करने के योग्य। २. बहुत सुंदर या अच्छा

अवलोचना*–स० [सं० आलुंचन से हटाना या दूर करना।

अ-वश–वि० [सं०] [भाव० विवश। लाचार।

अवशिष्ट–वि० [सं०] [संज्ञा बाकी बचा हुआ। शेष। (एरियर और धन दोनों)

अवशेष-वि० [सं०] १. बचा हुआ। शेष। बाकी। २. समाप्त। पुं० [सं०] [वि० अवशिष्ट] १. बची हुई वस्तु। (कार्य या धन आदि) (एरियर्स) २. अन्त। समाप्ति।

अवश्यंभावी-वि० [सं० अवश्यंभाविन्] १. जो अवश्य होकर रहे, टले नहीं। अटल। ध्रुव। २. जिसे किसी प्रकार हटा, छोड़ या टाल न सकें। अनिवार्य। (इनेविटेबुल)

अवश्य-क्रि० वि० [सं०] निश्चित रूप से। निस्सन्देह। जरूर।

वि० [सं०] [स्त्री० अवश्या] १. जो वश में न आ सके। २. जो वश में न हो।

अवश्यमेव-क्रि० वि० [सं०] अवश्य। निःसंदेह। जरूर।

अवसन्न-वि० [सं०] [भाव० अवसन्नता] १. जिसे विषाद हो। दुःखी। २. नष्ट होनेवाला। ३. सुस्त। आलसी।

अवसर-पुं० [सं०] १. समय। काल। २. ऐसा समय या परिस्थिति जिसमें कोई कार्य या उद्देश्य सहज में, जल्दी या सुभीते से हो सके। (अपरचुनिटी) ३. कोई ऐसा विशिष्ट समय जब कोई विशेष घटना हुई हो; अथवा कोई अभीष्ट कार्य किया जा सकता हो। (अकेजन)

मुहा०-**अवसर चूकना** = मौका हाथ से जाने देना।

४. अवकाश। फ़ुरसत। ५. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी घटना का ठीक या अपेक्षित समय पर घटित होने का वर्णन होता है।

अवसर-ग्रहण-पुं० [सं०] अपने कार्य या पद से अवकाश या छुट्टी लेकर सदा के लिए हट जाना। (रिटायरमेंन्ट)

अवसर-प्राप्त-वि० [सं०] जो अपनी नौकरी की अवधि पूरी होने पर काम से हट गया हो। (रिटायर्ड)

अवसरवाद-पुं० [सं०] [वि० अवसरवादी] प्रत्येक उपयुक्त अवसर से पूरा पूरा लाभ उठाने का सिद्धान्त। (अपरच्यूनिज्म)

अवसरवादी-पुं० [सं०] अपने लाभ के लिए सदा उपयुक्त अवसर की ताक में रहनेवाला। (अपरच्यूनिस्ट)

अवसर्ग-पुं० [सं०] देन, दंड आदि में होनेवाली कमी या छूट। (रेमिशन)

अवसर्पिणी-स्त्री० [सं०] जैन शास्त्रानुसार पतन का समय, जिसमें रूप, गंध आदि का क्रमशः ह्रास होता है।

अवसाद-पुं० [सं०] [वि० अवसादित, अवसन्न] १. नाश। क्षय। २. विषाद। खेद। रंज। ३. दीनता। ४. आशा या उत्साह का अभाव। ५. थकावट। ६. कमजोरी।

अवसान-पुं० [सं०] १. विराम। ठहराव। २. समाप्ति। अन्त। (डिस्सोल्यूशन) ३. सीमा। ४. सायंकाल। ५. मरण। मृत्यु।

अवसि*-क्रि० वि० = अवश्य।

अवसित-वि० [सं०] १. जिसका अवसान या अन्त हुआ हो। समाप्त। २. बीता हुआ। गत। ३. बदला हुआ।

अवसेख*-वि० = अवशेष।

अवसेचन-पुं० [सं०] १. सींचना। पानी देना। २. वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना या रक्त निकाला जाय। (वैद्यक)

अवसेर*-स्त्री० [सं० अवसर] १. अटकाव। उलझन। २. देर। विलम्ब। ३. चिन्ता। ४. व्यग्रता। ५. प्रिय के विरह या प्रतीक्षा में होनेवाली विकलता।

अवसेरना*-स० [हिं० अवसेर] तंग करना। दुःख देना।

अवस्था-स्त्री० [सं०] १. किसी विषय, बात या घटना की कोई विशेष स्थिति। दशा। हालत। (केस) २. समय। काल। ३. आयु। उम्र। ४. स्थिति। दशा। जैसे—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय आदि; या

कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन, वृद्ध आदि।

अवस्थान-पुं० [सं०] १. स्थान। जगह। २. ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। ३. स्थिति। ४. उन्नति या विकास के क्रम में कुछ समय तक रुकने या ठहरने का स्थान अथवा श्रेणी। (स्टेज) ५. वह परिमित और निश्चित स्थान, या बात या स्थिति जिसपर कोई बात पूरी तरह से अवलम्बित या आश्रित हो। केन्द्र-विन्दु। (पॉइन्ट) ६. रेल-गाड़ी के नियमित रूप से ठहरने का स्थान। (स्टेशन) ७. वह स्थान जहाँ पुलिस, सेना आदि के लोग रहते हों। (स्टेशन) ८. सम्पत्ति पर किसी व्यक्ति के स्वत्व की मात्रा, प्रकार या विस्तार। (एस्टेट)

अवस्थित-वि० [सं०] १. उपस्थित। मौजूद। २. ठहरा हुआ।

अवस्थिति-स्त्री० [सं०] १. वर्त्तमानता। मौजूद होना। २. स्थिति। सत्ता।

अवहार-पुं० [सं०] सन्धि की बात-चीत करने के लिए कुछ समय तक युद्ध रोकना। (आरमिस्टिस)

अवहित्था-स्त्री० [सं०] मन का भाव छिपाना। दुराव। (साहित्य)

अवहेलना-स्त्री० [सं०] [वि० अवहेलित] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. उचित या आवश्यक ध्यान न देना। बे-परवाही। (डिस्रिगार्ड)

*स० [सं० अवहेलन] तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।

अवहेला-स्त्री० दे० 'अवहेलना'।

अवहेलित-वि० [सं०] जिसकी अवहेलना या अवज्ञा हुई हो। उपेक्षित।

अवाँ†-पुं० दे० 'आँवाँ'।

अ-वांछनीय-वि० [सं० अ + वांछनीय] जिसका होना अभीष्ट न हो। जिसके होने की इच्छा न की जाय।

अ-वांछित-वि० [सं०] १. जिसकी वांछा या इच्छा न की गई हो। २. दे० 'अ-वांछनीय'।

अवांतर-वि० [सं०] किसी के या बीच में होनेवाला। जैसे—इस एक अवान्तर कथा भी है।

पद—**अवांतर दिशा** = दो दि बीच की दिशा। विदिशा। **भेद** = किसी भेद या विभाग के दूसरे छोटे भेद या विभाग।

पुं० [सं०] मध्य। बीच।

अवाँसना-स० [सं० वासन] प काम में लाना।

अवाई-स्त्री० [हिं० आना] क्रिया या भाव। आगमन। आना।

†स्त्री० [?] खेत की गहरी जोता

अवाङ्-मुख-वि० [सं०] १. मुँह या सिर नीचे की ओर हो। २ या औंधाया हुआ।

अ-वाक्-वि० [सं० अवाच्] १. मौन। २. स्तम्भित। चकित। वि

अ-वाच्य-वि० [सं०] १. जो योग्य न हो। अकथ्य। २. वि करना उचित न हो। नीच।

पुं० [सं०] कुवाच्य। गाली।

अवाज*-स्त्री० = आवाज।

अवाप्त-वि० [सं०] जिसपर पूर्वक कुछ देन लगाया गया हो देन उचित प्राप्य के रूप में उ सके। (लेवीड)

अवाप्ति-स्त्री० [सं०] १. अधि कर, शुल्क, आदाय आदि के लगाना, लेना या उगाहना। २. पूर्वक लोगों को बुलाकर उन्हें सेना के रखना या उनकी सेना खड़ी करना।

अवाप्य-वि० [सं०] अधिकारपूर्व शुल्क आदि के रूप में लेने के जिसके सम्बन्ध में अधिकारपूर्वक आदि लिया जा सके। (लेविएबुल

अवार-पुं० [सं०] नदी के

का भाग या तट जिधर वक्ता हो। 'पार' का उलटा।

वारजा-पुं० [फ़ा०] १. वह बही जिसमें असामी की जोत आदि का लेखा रहता है। २. आय-व्यय आदि लिखने की बही।

वारना*-स० [सं० वारण] १. कना। मना करना। २. दे० 'वारना'।

वारा-वि० दे० 'आवारा'।

वारी-स्त्री० [सं० अवार] किनारा। सिरा। त्री० [हिं० बार = द्वार] विवर। छेद।

-विकच-वि० [सं० अ + विकच] १. बिना लिखा हुआ। २. जो सफल न हुआ हो।

-विकल्ल-वि० [सं०] १. ज्यों का त्यों। बिना उलट-फेर का। २. पूर्ण। पूरा। ३. निश्चल। शान्त। ४. ज्यों का त्यों किसी का लिया हुआ (कथन आदि)। (वरबेटिम)

-विकल्प-वि० [सं०] १. जिसमें कुछ र-फेर न हो सके। निश्चित। (एब्सोल्यूट) २. अन्तिम रूप से कहा या किया हुआ। (फाइनल) ३. जिसमें कुछ भी न्देह न हो। असन्दिग्ध।

-विकार-वि० [सं०] १. विकार-रहित। निर्दोष। २. जिसका रूप-रंग न बदले। ुं० [सं०] विकार का अभाव।

-विकारी-वि० [सं०] जिसमें किसी कार का विकार न हो या न होता हो। ुं० व्याकरण में अव्यय, जिसके रूप में कभी विकार नहीं होता। जैसे—बहुधा, प्रायः, अतः आदि।

-विकृत-वि० [सं०] जो बिगड़ा या बदला न हो।

विचल-वि० दे० 'अचल'।

अ-विचार-पुं० [सं०] [कर्त्ता अविचारी] १. विचार का अभाव। २. अज्ञान। अ-विवेक। ३. अन्याय। अत्याचार।

अ-विच्छिन्न-वि० [सं०] अटूट। लगातार।

-विच्छेद-पुं० [सं०] विच्छेद का अभाव। विच्छिन्न या अलग न होना। एक में मिला होना।

अ-विज्ञ-वि० [सं०] [भाव० अविज्ञता] अनजान। अज्ञान।

अ-विद्यमान-वि० [सं०] १. जो विद्यमान या उपस्थित न हो। अनुपस्थित। (ऐब्सेन्ट) २. असत्य। मिथ्या।

अ-विद्या-स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध या मिथ्या ज्ञान। अज्ञान। मोह। २. माया का एक भेद। ३. कर्म-कांड। ४. सांख्य के अनुसार प्रकृति। जड़।

अ-विधिक-वि० [सं०] विधि या नियम के विरुद्ध। (इल्लीगल)

अ-विनय-पुं० [सं०] विनय का अभाव। ढिठाई। उद्दंडता।

अ-विनश्वर-वि० [सं०] जिसका नाश न हो। जो बिगड़े नहीं। अक्षय। चिरस्थायी।

अविनाशी-वि० दे० 'अविनश्वर'।

अ-विरत-वि० [सं०] [भाव०-अविरति] विराम-शून्य। निरन्तर होता या चलता रहनेवाला।

क्रि० वि० [सं०] १. निरन्तर। लगातार। २. नित्य। हमेशा। सदा।

अ-विलम्ब-क्रि० वि० [सं०] बिना विलम्ब के। तुरन्त। तत्काल। फौरन।

अ-विवाहित-वि० [सं०] [स्त्री० अविवाहिता] जिसका व्याह न हुआ हो। कुँआरा।

अ-विवेक-पुं० [सं०] १. विवेक का अभाव। अविचार। २. अज्ञान। नादानी। ३. अन्याय।

अ-विश्रांत-वि० [सं०] १. जो रुके नहीं। २. जो थके नहीं।

अ-विश्वसनीय-वि० [सं०] जिसपर विश्वास न किया जा सके।

अ-विश्वास-पुं० [सं०] १. विश्वास का अभाव। बे-एतबारी। २. अनिश्चय।

अवेक्षण-पुं० [सं०] [वि० अवेक्षित,

अवेक्षणीय] १. अवलोकन। देखना। २. जाँच-पड़ताल। देख-भाल।

अवेक्षणीय-वि० [सं०] (ऐसा अपराध) जिसपर विधि के अनुसार अधिकारियों को ध्यान देना आवश्यक हो। (काग्निजेबुल)

अवेक्षा-स्त्री० [सं०] १. दे० 'अवेक्षण'। २. किसी दोष या अपराध आदि की ओर न्यायालय या अधिकारी का इस प्रकार ध्यान जाना कि वह उसके सम्बन्ध में कुछ उचित कार्य या उसका प्रतिकार करे। (काग्निजेन्स) जैसे—न्यायालय को इसकी वैचारिक अवेक्षा करनी चाहिए।

अवेज*-पुं० [अ० एवज़] बदला। प्रतिकार।

अ-वैज्ञानिक-वि० [सं०] जो विज्ञान के सिद्धान्तों के विरुद्ध हो।

अ-वैतनिक-वि० [सं०] बिना वेतन या तनखाह के काम करनेवाला। (ऑनरेरी)

अ-वैध-वि०[सं०] १. विधि, कानून आदि के विरुद्ध। नियम-विरुद्ध। (इल्लीगल) जैसे—अवैध अनुतोषण। (इल्लीगल ग्रैटिफिकेशन) २. दे० 'अवैधानिक'।

अ-वैधानिक-वि० [सं०] जो विधान या संविधान के नियमों के विरुद्ध हो। (अनकान्स्टिट्यूशनल)

अव्यक्त-वि० [सं०] [भाव० अव्यक्तता, अव्यक्ति] १. जो प्रकट या जाहिर न हो। अप्रत्यक्ष। अगोचर। २. अज्ञात। ३. अनिर्वचनीय। ४. जिसमें रूप गुण न हो। पुं० [सं०] १. विष्णु। २. कामदेव। ३. शिव। ४. प्रकृति। (सांख्य) ५. सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था। ६. ब्रह्म। ७. बीज-गणित में वह राशि जिसका मान अज्ञात हो। ८. जीव।

अव्यय-वि० [सं०] १. जिसमें विकार न हो। सदा एक-रस रहनेवाला। आदि-अंत से रहित। अक्षय। २. नित्य। पुं० [सं०] १. व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिंगों, विभक्तियों और में समान रूप से प्रयोग हो। २. प ३. शिव। ४. विष्णु।

अ-व्यर्थ-वि० [सं०] [भाव० अ १. जो व्यर्थ न हो। सफल। २. ३. अमोघ। न चूकनेवाला। ४. असर करनेवाला।

अ-व्यवस्था-स्त्री० [सं०] [वि व्यवस्थित] १. व्यवस्था, मर्यादा आदि का ऐसा अभाव जो किसी तरह से कर्त्तव्य पूरा न करने के का (डिस्-ऑर्डर) २. स्थिति या म न होना। ३. शास्त्रादि के विरुद्ध ४. बे-इंतजामी। गड़बड़ी।

अ-व्यवस्थित-वि० [सं०] १. व्यवस्था न हो या न रह गई हो। ठीक या उचित दशा या स्थिति में ३. जो ठीक क्रम से न हो।

अ-व्यवहार्य-वि० [सं०] १. जो में न लाया जा सके। २. पतित।

अ-व्याप्ति-स्त्री० [सं०] [वि० अ १. व्याप्ति का अभाव। २. साहित्य तर्क में कोई बात इस प्रकार कह बतलाया हुआ लक्षण या विवरण सा पर पूरी तरह से न घटे। (इसकी दोषों में होती है)

अ-शक्त-वि० [सं०] [भाव० अ अशक्ति] १. निर्बल। कमजोर असमर्थ।

अ-शक्य-वि० [सं०] [भाव० अ-श १. न होने योग्य। असाध्य। 'अशक्त'।

अ-शक्यता-स्त्री० [सं०] अशक् असमर्थ होने की अवस्था या भाव।

अशन-पुं० [सं०] १. भोजन। २. खाने की क्रिया। खाना।

अ-शरण-वि० [सं०] जिसे कहीं मिले। अनाथ। निराश्रय।

ांत-वि० [सं०] [भाव० अशांति] . जो शान्त न हो। अस्थिर। चंचल। . जिसमें शान्ति न हो।

ांति-स्त्री० [सं०] [वि० अशांत] . अस्थिरता। चंचलता। २. क्षोभ। . असंतोष।

शिक्षित-वि० [सं०] जिसने शिक्षा पाई हो। बे पढ़ा-लिखा। अनपढ़।

शात-वि० [सं०] (हथियार) जो रदार न हो। बिना धार का। जैसे—ठी, डंडा आदि।

शिष्ट-वि० [सं०] [भाव० अशिष्टता] शिष्ट न हो। उजड्ड। बेहूदा।

शिष्टता-स्त्री० [सं०] असाधुता। बे-दगी। उजड्डपन।

ुद्ध-वि० [सं०] [भाव० अशुद्धता, शुद्धि] १. अपवित्र। नापाक। २. ना शोधा हुआ। असंस्कृत। ३. गलत।

ुद्धि-स्त्री० [सं०] १. शुद्धि का भाव। २. लिखने-पढ़ने आदि में वस्तुतः कुछ होना चाहिए, उसके स्थान पर नेवाली ऐसी बात या लेख जो नहीं होना ाहिए। भूल। गलती। (मिस्टेक)

शुभ-वि० [सं०] १. अमंगल। अहित। . पाप। अपराध।

० [सं०] जो शुभ न हो। बुरा।

शेष-वि० [सं०] १. पूरा। समूचा। . समाप्त। खतम। ३. अनन्त। बहुत।

शोक-वि० [सं०] शोक-रहित। दुःख-न्य।

ं० १. एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम ी पत्तियों की तरह लम्बी होती हैं। २. ारा।

शौच-पुं० [सं०] [वि० अशुचि] १. अपवित्रता। अशुद्धता। २. हिन्दू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घर के किसी प्राणी के मरने या सन्तान होने पर परिवार-वालों को कुछ दिनों तक माननी पड़ती है। सूतक।

अश्म-पुं० [सं०] १. पहाड़। २. पत्थर। ३. बादल।

अश्मज-पुं० [सं०] एक प्रकार का काला लसीला खनिज पदार्थ जो नलों आदि के जोड़ पर इसलिए लगाया जाता है कि उनमें का जल चू न सके। यह सड़कों पर अलकतरे की तरह बिछाने के भी काम आता है। (एस्फाल्ट)

अ-श्रद्धा-स्त्री० [सं०] [वि० अश्रद्धेय] श्रद्धा का अभाव।

अ-श्राव्य-वि० [सं०] जो किसी को सुनाने योग्य न हो।

पुं० दे० 'स्वगत कथन'।

अश्रु-पुं० [सं०] आँसू।

अश्रु-गैस-स्त्री० [सं० अश्रु + अं० गैस] एक प्रकार की गैस या वाष्प जिसके लगने से चेहरा कुछ सूज जाता और जिसका प्रयोग प्रायः अवैध भीड़ हटाने में होता है। (टियर गैस)

अश्रुत-वि० [सं०] १. जो सुना न गया हो। २. जिसने कुछ देखा-सुना न हो।

अश्रुतपूर्व-वि० [सं०] १. जो पहले न सुना गया हो। २. अद्भुत। विलक्षण।

अश्रु-पात-पुं० [सं०] आँसू गिराना। रुदन। रोना।

अश्लील-वि० [सं०] [भाव० अश्लीलता] १. फूहड़। भद्दा। २. लज्जाजनक।

अश्व-पुं० [सं०] घोड़ा। तुरंग।

अश्वतर-पुं० [सं०] [स्त्री० अश्वतरी] १. नागराज। २. खच्चर।

अश्वत्थ-पुं० [सं०] पीपल।

अश्वमेध-पुं० [सं०] एक बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के सिर पर जय-पत्र बाँधकर उसे भू-मंडल में घूमने के लिए छोड़ देते थे। फिर उसको मारकर उसकी चरबी से हवन किया जाता था।

अश्व-शाला-स्त्री० [सं०] अस्तबल।

तबेला।

अश्वायुर्वेद-पुं० [सं०] आयुर्वेद या चिकित्सा-शास्त्र का वह अंग जिसमें घोड़ों तथा अन्य पशुओं की चिकित्सा का वर्णन रहता है। शालिहोत्र।

अश्वारोही-वि० [सं०] घोड़े का सवार।

अश्विन-पुं० [सं०] एक प्राचीन वैदिक देवता।

अश्विनी-स्त्री० [सं०] १. घोड़ी। २. २७ नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र।

अश्विनीकुमार-पुं० [सं०] त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

अष्ट-वि० [सं०] आठ।

अष्टक-पुं० [सं०] १. आठ वस्तुओं का संग्रह। २. वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक या पद्य हों।

अष्टछाप-पुं० [सं० अष्ट+हिं० छाप] गोसाईं विट्ठलनाथ जी का निश्चित किया हुआ आठ सर्वोत्तम पुष्टि-मार्गी कवियों का एक वर्ग। (इन आठो कवियों के नाम ये हैं—सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविन्द स्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास।)

अष्ट-धातु-स्त्री० [सं०] ये आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।

अष्टम-वि० [सं०] आठवाँ।

अष्टमी-स्त्री० [सं०] शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि।

अष्टवर्ग-पुं० [सं०] १. आठ ओषधियों का समूह—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि। २. राज्य के कृषि, वस्ति, दुर्ग, सेना, हस्ति-बन्धन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य-संस्थापन का समूह।

अष्टांग-पुं० [सं०] [वि० अष्टांगी] किसी वस्तु के आठ अंग। जैसे—(क) योग के—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, हार, धारणा, ध्यान और समाधि। (आयुर्वेद के-शल्य, शालाक्य, कायचि भूत-विद्या, कौमार-भृत्य, अगदतंत्र, र तंत्र और वाजीकरण। (ग) शरीर जानु, पद, हाथ, उर, सिर, वचन, और बुद्धि जिनसे प्रणाम करने का है।

वि० [सं०] १. आठ अवयवोंवाला अठ-पहल।

अष्टावक्र-पुं० [सं०] १. एक २. टेढ़े-मेढ़े अंगों का मनुष्य।

अ संख्य-वि० [सं०] अनगिनत शुमार।

असंग*-वि० [सं०] १. अके एकाकी। २. किसी से वास्ता न वाला। निर्लिप्त। ३. जुदा। अलग विरक्त।

अ-संगत-वि० [सं०] १. जो संग संबद्ध न हो। जो आगे-पीछे की परम मेल न खाता हो। (इन् कॉन्सिस्टेन्ट) अलग। बे-ठीक। ३. अनुचित। मुनासिब।

अ-संगति-स्त्री० [सं०] १. बे-सिल पन। बे-मेल होने का भाव। २. युक्तता। ३. साहित्य में एक अलंकार कारण कहीं बताया जाय और कार्य क

अ-संतुष्ट-वि० [सं०] [भाव० असन्त १. जो सन्तुष्ट न हो। २. जिसका भरा हो। अतृप्त। ३. अप्रसन्न। ना

अ-संतोष-पुं० [सं०] [वि० असन्त १. सन्तोष का अभाव। अ-धैर्य। अतृप्ति। ३. अप्रसन्नता। नाराजगी।

अ-संदिग्ध-वि० [सं०] जिसमें कुछ सन्देह या शंका की जगह न हो। (ईक्वीवोकल)

अ-संबद्ध-वि० [सं०] १. जो मेल हो। २. पृथक्। अलग। ३. अनमि

मेल । अंड-बंड । जैसे-असंबद्ध प्रलाप ।

संभव-वि० [सं०] [भाव० असंभवता] ो सम्भव न हो। जो हो न सके । -मुमकिन ।

० साहित्य में एक अलंकार जिसमें यह लाया जाता है कि जो बात हो गई, उसका ना असम्भव था ।

संभावना-स्त्री० [सं०] [वि० अ-भावित, असंभाव्य] सम्भावना का अभाव । नहोनापन ।

संभाव्य-वि० [सं०] जिसकी सम्भा-ना न हो । अनहोना ।

स*-वि० [सं० ईदृश्] १. इस प्रकार । ऐसा । २. तुल्य । समान ।

सकताना-अ० [हिं० आसकत] आलस्य पड़ना । आलसी होना ।

गंध-पुं० [सं० अश्वगंधा] एक ड़ी जिसकी जड़ दवा के काम में आती । अश्वगन्धा ।

त्-वि० [सं०] १. अस्तित्व-विहीन । ता-रहित । २. बुरा । खराब । ३. साधु ।

सत्य-वि० [सं०] [भाव० असत्यता] सत्य या ठीक न हो । मिथ्या । झूठ । अन्-ट्रू.)

नन*-पुं० [सं० अशन] भोजन । हार । खाना ।

सफल-वि० = विफल ।

सफलता-स्त्री० = विफलता ।

सबाब-पुं० [अ०] प्रयोजनीय पदार्थ । ामग्री । सामान ।

सभ्य-वि० [सं०] [भाव० असभ्यता] : जो सभ्य न हो । २. अशिष्ट । गँवार । अन्-सिविलाइज्ड)

समंजस-स्त्री० [सं०] १. दुविधा । आगा-पीछा । २. अड़चन । कठिनाई ।

समंत*-पुं० [सं० अश्वमंत] चूल्हा ।

सम-वि० [सं०] १. जो सम या तुल्य न हो । असदृश । २. विषम । ताक । ३. ऊँचा-नीचा । ऊबड़-खाबड़ ।

पुं० १. साहित्य में एक अलंकार जिसमें उपमान का मिलना असम्भव बतलाया जाता है । २. पूर्वी भारत की सीमा पर का एक प्रदेश जो भूल से 'आसाम' कहलाता है ।

अ-समय-पु० [सं०] विपत्ति का समय । बुरा समय ।

अ-समर्थ-वि० [सं०] [भाव० अ-समर्थता] १. सामर्थ्य-हीन । २. दुर्बल । अशक्त । ३. अयोग्य ।

असमी-वि० [सं० असम] आसाम संबंधी । आसाम का ।

स्त्री० असम देश की भाषा ।

पुं० असम देश का निवासी ।

अ-सम्मत-वि० [सं०] [संज्ञा असम्मति] १. जो राजी न हो । अ-सहमत । २. जिसपर किसी की राय न हो ।

असर-पुं० [अ०] प्रभाव ।

असल-वि० [अ०] १. सच्चा । खरा । २. उच्च । श्रेष्ठ । ३. बिना मिलावट का । शुद्ध । खालिस । ४. जो झूठा या बनावटी न हो ।

पुं० १. जड़ । बुनियाद । २. मूल धन ।

असलियत-स्त्री० [अ०] १. तथ्य । वास्तविकता । २. जड़ । मूल । ३. मूल तत्त्व । सार ।

असली-वि० [अ० असल] १. सच्चा । खरा । २. मूल । प्रधान । ३. बिना मिलावट का । शुद्ध ।

अ-सवर्ण-वि० [सं०] जो एक ही वर्ण या जाति के न हों । जैसे—क्षत्रिय और ब्राह्मण एक दूसरे के असवर्ण हैं ।

अ-सहन-वि० १. दे० 'असह्य' । २. दे० 'असहिष्णु' ।

अ-सहनीय-वि० = असह्य ।

अ-सहयोग-पुं० [सं०] [वि० असहयोगी] १. किसी से किसी काम में सहयोग न करना ।

साथ मिलकर काम न करने का भाव । २. इस सिद्धान्त का वह आन्दोलन जो सन् १९२१ में महात्मा गाँधी ने भारत को स्वतन्त्र करने के लिए चलाया था और जिसमें लोगों से सरकारी सेवाएँ, पदवियाँ, न्यायालय, शिक्षा-संस्थाएँ आदि छोड़ने के लिए कहा जाता था ।

अ-सहाय–वि० [सं०] जिसे कोई सहारा न हो । निःसहाय । निराश्रय ।

अ-सहिष्णु–वि० [सं०] [भाव० अ-सहिष्णुता] १. असहनशील । २. चिड़चिड़ा ।

अ-सही*–वि० [हिं० अ + सहना] १. वह जो सह न सके । असहिष्णु । २. वह जो दूसरों का उत्कर्ष या सुख न देख सके । ईर्ष्या करनेवाला ।

अ-सह्य–वि० [सं०] १. जो अपनी उग्रता, कठोरता, अनौचित्य आदि के कारण सहा न जा सकता हो । जो बरदाश्त न हो सके । असहनीय । (इन्-टॉलरेबुल)

असांसद–वि० [सं० अ + संसद्] जो संसद् के उपयुक्त या उसकी मर्यादा के अनुकूल न हो । (अन-पार्लमेन्टरी)

असाई*–पुं० [सं० अशास्त्रीय] वह जिसे कुछ भी ज्ञान न हो । अज्ञानी ।

असाढ़–पुं० दे० 'आषाढ़' ।

असाढ़ी–वि० [सं० आषाढ़] आषाढ़ का । स्त्री० १. वह फसल जो आषाढ़ में बोई जाय । खरीफ । २. आषाढ़ी पूर्णिमा ।

अ-साधारण–वि० [सं०] [भाव० अ-साधारणता] १. जो अपनी साधारण अवस्था में नहीं, बल्कि उससे कुछ घट या बढ़कर हो । (अन-कॉमन) २. जैसा साधारणतः होता हो, उससे भिन्न प्रकार का । (एक्स्ट्रा-आर्डिनरी, अन्-यूजुअल) ३. दे० 'अ-सामान्य' ।

अ-साध्य–वि० [सं०] १. न होने योग्य । दुष्कर । कठिन । २. न आरोग्य होने के योग्य । जैसे–असाध्य रोग ।

अ-सामयिक–वि० [सं०] जो उपयु नियत समय से पहले या पीछे हो । ठी उचित समय से पहले या पीछे होनेवा (अन्-टाइमली) ।

अ-सामान्य–वि० [सं०] १. जो अ सामान्य अवस्था में नहीं, बल्कि उससे घट या बढ़कर हो । (एब्-नॉर्मल) २. 'असाधारण' ।

असामी–पुं० [अ० आसामी] १. व्य प्राणी । २. वह जिससे किसी प्रकार लेन-देन हो । ३. वह छोटा किसान पहले लगान देकर किसी जमीदार का जोतता-बोता रहा हो, पर अब जिसे जमीन पर स्थायी और पैतृक अधिका गया हो । छोटा काश्तकार । ४. दार । ५. अपराधी । ६. वह जिससे प्रकार का मतलब निकालना हो । स्त्री० नौकरी । जगह ।

अ-सार–वि० [सं०] [भाव० असार १. सार-रहित । निःसार । २. खाली । ३. तुच्छ ।

अ-सावधान–वि०[सं०] जो सावधान न

अ-सावधानता–स्त्री० [सं०] सावधा रहने की अवस्था या भाव । पूरी त सचेत न रहना । बे-परवाही । (इन् वर्टेन्स)

अ-सावधानी–स्त्री० दे० 'असावधान

असि–स्त्री० [सं०] तलवार । खड्ग ।

असित–वि० [सं०] [स्त्री० असि १. काला । २. दुष्ट । बुरा । ३. कुटिल ।

अ-सिद्ध–वि० [सं०] १. जो व्या नियम, सिद्धान्त आदि से सिद्ध या न हो । अप्रामाणिक । २. बे-पका । ३. अपूर्ण । अधूरा । ४. निष्फल ।

अ-सीम–वि० [सं०] १. जिसकी न हो । बेहद । २. बहुत अधिक ।

अनन्त और परम। (एब्सोल्यूट)

सीस*-स्त्री० दे० 'आशिष'।

सिना-स० [सं० आशिष] शीर्वाद देना। दुआ देना।

ु*-पुं० [सं० अश्व] घोड़ा।

ुग*-वि० [सं० अशुग] जल्दी नेवाला। १. वायु। २. तीर। वाण।

ुर-पुं० [सं०] १. दैत्य। राक्षस। डेमन) २. रात। ३. नीच वृत्ति का त्र। ४. पृथ्वी। ५. सूर्य्य। ६. बादल। राहु। ८. एक प्रकार का उन्माद सका मूल असुरों के उत्पात से माना ता है।

ुर-विद्या-स्त्री० [सं०] वह विद्या या त्र जिसमें भिन्न-भिन्न देशों की अनुतियों के असुरों और उनके कार्यों का विवन या अध्ययन होता है। (डेमनॉलोजी)

ुरारि-पुं० [सं०] १. देवता। २. ष्णु।

सुविधा-स्त्री० [सं० अ = नहीं + सुधि = अच्छी तरह] १. कठिनाई। अड़न। २. तकलीफ। दिक्कत।

सूया-स्त्री० [सं०] [वि० असूयक] १. सी के गुण को भी अवगुण समझना। . ईर्ष्या। डाह। (जेलसी) (यह रस अन्तर्गत एक संचारी भाव भी माना ता है।)

सूर्यंपश्या-वि० [सं०] जिसको सूर्य्य ी न देख सके। परदे में रहनेवाली।

सेग*-वि० [सं० असह्य] न सहने के ोग्य। असह्य।

-सैनिक-वि० [सं०] १. सैनिक और ागर आदि से भिन्न। २. जो सैनिक न हो।

असैला*-वि० [सं० अ = नहीं + शैली = रीति] [स्त्री० असेली] १. रीति-नीति के विरुद्ध काम करनेवाला। २. कुमार्गी। ३. शैली के विरुद्ध। ४. अनुचित।

अ-सोच-वि० [हिं० अ + सोच] चिन्ता-रहित। निश्चिन्त।

वि० [सं० अशुचि] अपवित्र। अशुद्ध।

असोज*-पुं० [सं० अश्वयुज्] आश्विन मास।

असोस*-वि० [सं० अ + शोष] जो सूखे नहीं। न सूखनेवाला।

असौंध*-पुं० दे० 'दुर्गंध'।

अस्तंगत-वि० [सं०] १. जो अस्त हो चुका हो। २. अवनत। हीन।

अस्त-वि० [सं०] १. छिपा हुआ। तिरोहित। २. जो न दिखाई दे। अदृश्य। ३. डूबा हुआ। (सूर्य, चन्द्र आदि) ४. नष्ट। ध्वस्त।

पुं० [सं०] लोप। अदर्शन।

अस्तबल-पुं० [अ०] घुड़साल। तबेला।

अस्तमन-पुं० [सं०] [वि० अस्तमित] अस्त होना।

अस्तर-पुं० [फा०, मि० सं० स्तर] १. नीचे की तह या पल्ला। भितल्ला। २. दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। ३. चन्दन का तेल जिसके आधार पर इत्र बनाये जाते हैं। जमीन। ४. वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ बारीक साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं। अँतरौटा। अंतरपट। ५. वह मसाला जिससे किसी चित्र की जमीन या सतह तैयार की जाय। ६. स्तर। तह।

अस्त-व्यस्त-वि० [सं०] उलटा-पुलटा। छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।

अस्ताचल-पुं० [सं०] वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे अस्त होने पर सूर्य्य का छिप जाना माना जाता है। पश्चिमाचल।

अस्ति-स्त्री० [सं०] १. भाव। सत्ता। २. विद्यमानता। वर्त्तमानता।

मुहा०-अस्ति अस्ति कहना-वाह वाह कहना। साधुवाद कहना।

अस्तित्व-पुं० [सं०] १. सत्ता का भाव। विद्यमानता। होना। मौजूदगी। २.

सत्ता। भाव।

अस्तु-अव्य० [सं०] १. जो हो। चाहे जो हो। २. खैर। भला। अच्छा।

अस्तुति-स्त्री० [सं०] निन्दा। बुराई। *स्त्री० दे० 'स्तुति'।

अस्तेय-पुं० [सं०] चोरी का त्याग। चोरी न करना। (दस धर्मों में से एक)

अस्त्र-पुं० [सं०] १. वह हथियार जो शत्रु पर फेंककर चलाया जाय। जैसे-बाण, शक्ति। २. वह हथियार जिससे शत्रु के चलाये हुए हथियारों की रोक हो। जैसे-ढाल। ३. वह हथियार जो मन्त्र द्वारा चलाया जाय। ४. वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर-फाड़ करते हैं। ५. शस्त्र। हथियार।

अस्त्र-चिकित्सा-स्त्री० [सं०] वैद्यक शास्त्र का वह अंश जिसमें चीर-फाड़ करके चिकित्सा की जाती है।

अस्त्र-शाला-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ अस्त्र-शस्त्र रक्खे जायँ।

अ-स्थायी-वि० [सं०] [भाव० अस्थायित्व] १. जो स्थायी या सदा बना रहनेवाला न हो। थोड़े समय तक रहनेवाला। २. जो किसी के स्थान पर उसका काम चलाने के उद्देश्य से कुछ समय के लिए रखा गया हो। (टेम्परेरी)

अस्थि-स्त्री० [सं०] हड्डी।

अ-स्थिर-वि० [सं०] [भाव० अस्थिरता] १. चंचल। चलायमान। डाँवाँ-डोल। २ जिसका कुछ ठीक न हो। जो प्रायः बदलता, घटता-बढ़ता या इधर-उधर होता रहता हो। (अन्स्टैबुल)। *वि० दे० 'स्थिर'।

अ-स्थिरता-स्त्री० [सं०] अस्थिर (चंचल, अनिश्चित आदि) होने का भाव। (अनस्टैबिलिटी)

अस्थि-संचय-पुं० [सं०] अन्त्येष्टि संस्कार के बाद जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र करने का काम।

अस्थूल*-वि० = स्थूल।

अस्पताल-पुं० [अँ० हास्पिटल] धालय। चिकित्सालय। दवाखाना।

अ-स्पृश्य-वि० [सं०] [भाव० अस्पृश जिसे छूना ठीक न हो। जो स्पर्श क योग्य न हो। (अन्-टचेबुल) पुं० दे० 'अंत्यज'।

अ-स्पृश्यता-स्त्री० [सं०] १. अ या अछूत होने की अवस्था या भाव। धार्मिक और सामाजिक दृष्टियों से अस्पृश्य को न छूने का विचार या (अन्-टचेबिलिटी)।

अस्मिता-स्त्री० [सं०] १. दृक्, और दर्शन शक्ति को एक मानना, पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में मानने की भ्रान्ति (योग)। २. अहं ३. मोह।

अ-स्वस्थ-वि० [सं०] [भाव० अस्वस्थ १. रोगी। बीमार। २. अनमना।

अ-स्वाभाविक-वि० [सं०] [अस्वाभाविकता] १. जो स्वाभावि हो। प्रकृति-विरुद्ध। २. कृत्रिम। बना

अ-स्वामिक-वि० [सं०] [अस्वामिकता] (वस्तु) जिसका स्वामी न हो। ला-वारिस (माल)।

अ-स्वामिकता-स्त्री० [सं०] किसी के सम्बन्ध की वह अवस्था जब कि मिलने पर उसका कोई स्वामी न दि देता हो। (बोना वैकेन्सिआ) जैसे—ज खोदने पर मिलनेवाला खजाना। (अवस्था में मिलनेवाली वस्तु पर प्र राज्य का अधिकार हो जाता है)

अ-स्वीकरण-पुं० [सं०] अस्वीकृत की क्रिया या भाव। नामंजूर कर (रिजेक्शन)

अ-स्वीकार-पुं० [सं०] [वि० अ कृत] स्वीकार का उलटा। इनकार

मंजूरी ।

० दे० 'अस्वीकृत' ।

स्वीकृत-वि० [सं०] जो स्वीकृत या
ूर न किया गया हो । (रिजेक्टेड)

-सर्व० [सं०] मैं ।

० [सं०] अहंकार । अभिमान ।

ंकार-पुं० [सं०] [वि० अहंकारी]
अभिमान । गर्व । घमंड । २. 'मैं हूँ'
'मैं करता हूँ' की भावना ।

ंकारी-वि० [सं०] [स्त्री० अहं-
रिणी] अहंकार करनेवाला । घमंडी ।

ंता-स्त्री० [सं०] अहंकार । गर्व ।

-पुं० [सं० अहन्] १. दिन । २.
ष्णु । ३. सूर्य । ४. दिन का देवता ।

व्य० [सं० अहह] आश्चर्य, खेद या
लेश आदि का सूचक शब्द ।

क*-स्त्री० [सं० ईहा] इच्छा ।

कना-स० [हिं० अहक] इच्छा
ना । लालसा करना ।

टाना*-अ० [हिं० आहट] आहट
ना । पता चलना ।

० आहट लगाना । टोह लेना ।

० [सं० आहत] दुखना ।

थिर*-वि० १. दे० 'स्थिर' । २. दे०
स्थिर' ।

दी-पुं० [अ०] १. आलसी । आस-
ी । २. अकर्मण्य । ३. निठल्लू ।

[अ०] अकबर के समय के एक
ार के सिपाही जिनसे विशेष आवश्यकता
समय काम लिया जाता था और जो
ही सब दिन बैठे रहते थे ।

ना*-अ० [सं० अस् = होना] होना ।
अब यह क्रिया केवल वर्त्तमान रूप
'है' में ही आती है ।)

रन-पुं० दे० 'निहाई' ।

रह-क्रि० वि० [सं०] १. प्रति दिन ।
, नित्य । सदा । ३. लगातार । निरंतर ।

हरा-पुं० [सं० आहरण] १. कंडे का
ढेर । २. वह स्थान जहाँ लोग ठहरें ।

अहर्निश-क्रि० वि० [सं०] १. रात-दिन । २. सदा । नित्य ।

अहलकार-पुं० [फा०] १. कर्मचारी । २. कारिन्दा ।

अहलना*-अ० [सं० अहलन] हिलना । काँपना ।

अहलाद*-पुं० दे० 'आह्लाद' ।

अहा-अव्य० [सं० अहह] आह्लाद और प्रसन्नता-सूचक एक शब्द ।

* अ० अवधी और पूर्वी हिन्दी में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप । था ।

अहाता-पुं० [अ०] १. घेरा । हाता । बाड़ा । २. प्राकार । चहारदीवारी ।

अहारना*-स० [सं० आहरण] १. खाना । भक्षण करना । २. चपकाना । ३. कपड़े में माँड़ी लगाना ।

अ-हिंसक-वि० [सं०] जो हिंसा न करे ।

अ-हिंसा-स्त्री० [सं०] किसी को न सताना या न मारना या दुःख न देना ।

अहि-पुं० [सं०] १. साँप । २. वृत्रासुर । ३. पृथ्वी । ४. सूर्य्य ।

अ-हित-पुं० [सं०] १. अपकार । बुराई या खराबी । 'हित' का विरोधी भाव । २. शत्रु । वैरी ।

अहि-फेन-पुं० [सं०] १. सर्प के मुँह की लार या फेन । २. अफीम ।

अहि-बेल*- स्त्री० [सं० अहिवल्ली] पान ।

अहिवात-पुं० [सं० अभिवाद] [वि० अहिवाती] स्त्री का सौभाग्य । सोहाग ।

अहीर-पुं० [सं० आभीर] [स्त्री० अहीरिन] एक जाति जिसका काम गाय-भैंस रखना और दूध बेचना है । ग्वाला ।

अहुटना*-अ० [हिं० हटना] हटना । दूर होना । अलग होना ।

अहेर-पुं० [सं० आखेट] [कर्त्ता अहेरी] १. शिकार । मृगया । २. वह जन्तु जिसका शिकार किया जाय ।

अहोई-स्त्री० [हिं० अ + होना] एक पूजा जो स्त्रियाँ दीपावली के आठ दिन पहले सन्तान को प्राप्ति और रक्षा के लिए करती हैं।

अहोरात्र -पुं० [सं०] दिन-रात।

अहोरिन-स्त्री० [?] एक प्रका चिड़िया।

आ

आ-देव-नागरी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घ रूप है।

संस्कृत में अव्यय के रूप में इसका प्रयोग सीमा (जैसे-आकर्ण = कानों तक, आ-जीवन = जीवन के अन्त तक या जीवन-भर, आ-समुद्र = समुद्र तक), अभिव्याप्ति (जैसे-आ-पाताल = पाताल के भीतरी भाग तक), किंचित् (जैसे-आ-पिंगल = कुछ कुछ पीला) और अतिक्रमण (जैसे-आ-कालिक = बे-मौसिम का) के अर्थ में होता है।

उपसर्ग के रूप में यह प्रायः गत्यर्थक धातुओं के पहले लगकर उनके अर्थों में कुछ विशेषता उत्पन्न करता है; जैसे-आरोहण, आकर्षण। कभी कभी यह कुछ शब्दों के पहले लगकर उनका अर्थ कुछ उलट भी देता है। जैसे-गमन और आगमन, दान और आदान; नयन (ले जाना) और आनयन (ले आना)।

आँक पुं० [सं० अंक] १. अंक। चिह्न। निशान। २. संख्या का चिह्न। अदद। ३. अक्षर। हरफ। ४. गढ़ी हुई बात। ५. अंश। हिस्सा। ६. लकीर। ७. किसी चीज पर संकेत रूप में टाँका हुआ उसका दाम।

आँकड़ा-पुं० [हिं० आँक] १. अंक। अदद। संख्या का चिह्न। २. पेच।

आँकड़े-पुं० [हिं० आँक] गणित की सहायता से किसी विषय या विभाग के सम्बन्ध में स्थिर किये हुए अंक जो उस विषय या विभाग की स्थिति सूचित करते हैं। (स्टैटिस्टिक्स)

आँकना-स० [सं० अंकन] १. करना। निशान लगाना। दागना। २. अंदाज करना। मूल्य लगाना। ३. करना। ठहराना। ४. चित्र बनाना।

आँख-स्त्री० [सं० अक्षि] १. वह जिससे प्राणियों को रूप, वर्ण, विस्ता आकार का ज्ञान होता है। नेत्र। २. दृष्टि। नजर। ध्यान।

मुहा०-आँख आना = आँख में पीड़ा और सूजन होना। **आँख उठा** (क) देखना। (ख) हानि पहुँचाने की करना। **आँख उलट जाना** = पुत ऊपर चढ़ जाना। (मरने के समय) **खुलना** = (क) नींद टूटना। (ख) होना। भ्रम दूर होना। **आँखें करना** = देखा-देखी करना। सामने **आँखें चुराना या छिपाना** = सामने न होना। (ख) लज्जा से ताकना। **आँखें डबडबाना** = आँ आँसू भर आना। **आँख दिखा** क्रोध की दृष्टि से देखना। जताना। **आँख न ठहरना** = चम द्रुत गति के कारण दृष्टि न जमना। **निकालना** = (क) क्रोध की दृष्टि से दे (ख) आँख का डेला काटकर अलग कर **आँखें नीची होना** = सिर नीचा लज्जा उत्पन्न होना। **आँखों पर पड़ना** = अज्ञान या अन्धकार भ्रम होना। **आँख फड़कना** = का बार बार हिलना। (शुभ-अशुभ **आँखें फिर जाना** = (क) पहले कृपा न रहना। बे-मुरौअती आ

(ख) मन में बुराई आना। **आँखें फेरना** = (क) पहले की-सी कृपा या स्नेह-दृष्टि न रखना। (ख) मित्रता तोड़ना। (ग) विरुद्ध या प्रतिकूल होना। **आँखें बन्द होना** = (क) आँख झपकना। पलक गिरना। (ख) मृत्यु होना। मरना। **आँखें बन्द करके या मूँदकर** = बिना सब बातें देखे, सुने या विचार किये। **आँख बचाना** = सामना न करना। कतराना। **आँखें बिछाना** = (क) प्रेम से स्वागत करना। (ख) प्रेम-पूर्वक प्रतीक्षा करना। **आँखें भर आना** = आँखों में आँसू आना। **आँख भर देखना** = खूब अच्छी तरह देखना। **आँख मारना** = (क) इशारा करना। सनकारना। (ख) आँख के इशारे से मना करना। **आँख मिलाना** = (क) आँख सामने करना। बराबर ताकना। (ख) सामने आना। मुँह दिखाना। **आँखों में चरबी छाना** = गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना। **आँखों में धूल झोंकना या डालना** = सरासर धोखा देना। भ्रम में डालना। **आँखों में समाना** = हृदय में बसना। चित्त में ध्यान बना रहना। **आँख लगना** = (क) प्रीति होना। प्रेम होना। (ख) नींद आना। **आँख लड़ना** = (क) देखा-देखी होना। आँख मिलना। (ख) प्रेम होना। प्रीति होना। **आँख होना** = (क) परख होना। पहचान होना। (ख) ज्ञान होना। विवेक होना।

३. विचार। विवेक। ४. परख। पहचान। ५. कृपा-दृष्टि। दया-भाव। ६. सन्तति। सन्तान। लड़का-बाला। ६. आँख के आकार का छेद या चिह्न। जैसे-सुई की आँख।

आँख-मिचौली-स्त्री॰ [हिं॰ आँख + मीचना] लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आँख मूँदकर बैठता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं, जिन्हें उस आँख मुँदानेवाले लड़के को ढूँढ़कर छूना पड़ता है।

आँगन-पुं॰ [सं॰ अंगण] घर के अन्दर का सहन। चौक। अजिर।

आंगिक-वि॰ [सं॰] १. अंग-सम्बन्धी। अंग का। २. जो किसी के अंग के रूप में हो। पुं॰ १. चित्त के भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा। जैसे-भौंहें नचाना, हाव आदि। २. रस में कायिक अनुभाव। ३. नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक।

आँघी-स्त्री॰ [सं॰ घृ = क्षरण] महीन कपड़े या जाली से मढ़ी हुई चलनी।

आँच-स्त्री॰ [सं॰ अर्चि] १. गरमी। ताप। २. आग की लपट। लौ। ३. आग। **मुहा॰-आँच आना** = कुछ हानि पहुँचना या अपकार होना। **आँच खाना** = गरमी खाना। आग पर चढ़ना। तपना। **आँच दिखाना** = आग के सामने रखकर गरम करना।

४. एक एक बार पहुँचा हुआ ताप। ५. तेज। प्रताप। ६. आघात। चोट। ७. हानि। अहित। अनिष्ट। ८. विपत्ति। संकट। आफत। ६. प्रेम। मुहब्बत। १०. काम-वासना।

आँचल-पुं॰ [सं॰ अंचल] १. धोती, दुपट्टे आदि के दोनों छोरों पर का भाग। पल्ला। छोर। २. साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जो सामने छाती पर रहता है।

मुहा॰-(किसी के आगे) आँचल ओड़ना = कुछ माँगने के लिए दीनता-पूर्वक कपड़े का पल्ला फैलाना। **आँचल में बाँधना** = (क) हर समय साथ रखना। प्रति क्षण पास रखना। (ख) किसी की कही हुई बात अच्छी तरह स्मरण रखना। कभी न भूलना।

आँजन-पुं॰ दे॰ 'अंजन'। (आँख में लगाने का)

आँजना-स॰ [सं॰ अंजन] आँखों में

अंजन लगाना।

आँट-स्त्री० [हिं० अंटी] १. तर्जनी और अँगूठे के नीचे का स्थान। २.दाँव। वश। ३. वैर। लाग-डाँट। ४. गिरह। गाँठ। ५. ऐठन। ६. पूला। गट्ठा।

आँटना*-अ० दे० 'अँटना'।

आँटी-स्त्री० [हिं० आँटना] १. लम्बे तृणों का छोटा गट्ठा। पूला। २. लड़कों के खेलने की गुल्ली। ३. सूत का लच्छा। ४. धोती की गिरह। टेंट। मुर्री।

आँठी-स्त्री० दे० 'अंठी'।

आँड़ी-स्त्री० [सं० आंडीक = एक प्रकार का कमल] गाँठ के रूप में होनेवाले कन्द का कोई समूचा रूप। जैसे प्याज या लहसुन की आँड़ी।

आँत-स्त्री० [सं० अन्त्र] प्राणियों के पेट के भीतर की वह लम्बी नली जो गुदा तक रहती है और जिससे होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है। अंत्र। अँतड़ी। लाद।

मुहा०–आँत उतरना = एक रोग जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे उतर आती है और अंडकोश में पीड़ा उत्पन्न होती है। **आँतें कुलकुलाना या सूखना** = भूख के मारे बुरी दशा होना।

आँतर*-पुं० = अंतर।

आंतर-वि० [सं०] १. अन्दर का। भीतरी। २. किसी निश्चित क्षेत्र या सीमा के भीतरी भागों में होने या उनसे संबंध रखनेवाला। ३. किसी वस्तु के वास्तविक मूल्य, तत्व, महत्व आदि से सम्बन्ध रखनेवाला। (इन्ट्रिंजिक, उक्त सभी अर्थों में) जैसे–आज-कल के प्रचलित रुपये (सिक्के) का अंकित मूल्य सोलह आने होने पर भी आंतर मूल्य डेढ़-दो आने से अधिक नहीं है।

आंतरिक-वि० [सं०] १. अंदर का। भीतरी। २. किसी देश के भीतरी भागों से संबंध रखनेवाला। जैसे– व्यवस्था। 'वैदेशिक' या 'पर उलटा। (इन्टर्नल) ३. किसी घिरे हुए क्षेत्र के भीतरी भागों से रखनेवाला (इन्-डोर) ४. हृदय या होनेवाला। जैसे-आंतरिक प्रेम, द्वेष।

आंतिक-वि० [सं० अंत] अंतिम या के स्थान से सम्बन्ध रखनेवाला। (नल) जैसे–आंतिक कर।

आंतिक कर-पुं० [हिं० आंतिक + वह कर जो किसी यात्रा की स्थान पर पहुँचने के विचार से है। (टरमिनल टैक्स)

आँदू-पुं० [देश०] हाथी के पैर में का सिक्कड़।

आंदोलन-पुं० [सं०] १. हिलना-डोलना। २. उथल-पुथल वाला प्रयत्न। हलचल। (एजिटेशन

आँधना*-अ० [हिं० आँधी] धावा करना। टूट पड़ना।

आँधी-स्त्री० [सं० अंध = अँधेरा] वेग की हवा जिससे इतनी धूल कि चारो ओर अँधेरा छा जाय। वि० आँधी की तरह तेज।

आँय, बाँय, शाँय-वि० [सं० शान्ति या विशुद्ध अनु० ?] व्यर्थ सिर-पैर का और असम्बद्ध (कथ प्रलाप)।

आँव-पुं० [सं० आम = कच्चा चिकना, सफेद लसदार मल जो पचने से उत्पन्न होता है।

आँवठ-पुं० [सं० ओष्ठ] किनारा।

आँवड़ा-वि० [सं० आकुंड] गहरा

आँवल-पुं० [सं० अपरा (जरायु) अवरा, पुं० हिं० आँव] वह जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं। जेरी।

ाँवल-नाल-स्त्री० दे० 'आँवल'।

ाँवला-पुं० [सं० आमलक] एक पेड़ जिसके गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं।

ाँवाँ-पुं० [सं० आपाक] वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

ुहा०-आँवें का आँवा बिगड़ना = किसी समाज के सब लोगों का बिगड़ना।

ांशिक-वि० [सं०] अंश सम्बन्धी। अंश-विषयक। २. जो अंश रूप में हो। थोड़ा। कुछ या कम। (पार्शल)

ाँस*-स्त्री० [सं० काश] संवेदना। दर्द। त्री० [सं० पाश] १. डोरी। २. रेशा। पुं० दे० 'आँसू'।

ाँसला*-वि० [हिं० आँसू] १. आँसुओं से युक्त। २. जिसके हृदय में बहुत वेदना हो।

ाँसू-पुं० [सं० अश्रु] वह जल जो आँखों से शोक या पीड़ा के समय निकलता है। अश्रु।

ुहा०-आँसू गिराना या ढालना = ोना। **आँसू पीकर रह जाना** = मन ही मन रोकर रह जाना। **आँसू पुँछना** = आश्वासन मिलना। ढारस बँधना। **(किसी के) आँसू पोंछना** = (किसी को) आश्वासन देना। ढारस देना।

ाँहड़ा-पुं० [सं० भांड] बरतन। भाँढ़ा।

ाइंदा-क्रि० वि० [फा०] भविष्य में। आगे चलकर।

ाइ*-स्त्री० [सं० आयु] १. जीवन। २. दे० 'आयु'।

ाईन-पुं० [पहलवी से फा०, मि० जंद और सं० अयन (मार्ग)] १. नियम। कायदा। २. कानून। विधान।

ाईना-पुं० [फा०] दर्पण। शीशा।

मुहा०-आईना होना = बिलकुल स्पष्ट होना। अनायास समझ में आने के योग्य होना।

आउंकार*-पुं० = ओंकार।

आउ*-स्त्री० = आयु।

आउज*-पुं० [सं० आ + वाद्य] ताशा नाम का बाजा।

आऊ*-स्त्री० = आयु।

आक-पुं० [सं० अर्क] मदार। अकौवन।

आक-बाक*-स्त्री० दे० 'अक-बक'।

आकर-पुं० [सं०] १. खान। उत्पत्ति-स्थान। २. खजाना। भांडार। ३. प्रकार।

आकरखना*-स० = आकर्षण करना।

आकर-भाषा-स्त्री० [सं०] वह मूल प्राचीन भाषा जिससे नई भाषा आवश्यकता पड़ने पर, शब्द ले। जैसे—हिन्दी की आकर-भाषा संस्कृत और उर्दू की अरबी-फारसी है।

आकरिक-पुं० [सं०] खान खोदनेवाला। वि० आकर या खान से सम्बन्ध रखनेवाला।

आकर्षक-वि० [सं०] आकर्षण करने-वाला। खींचनेवाला।

आकर्षण-पुं० [सं०] [वि० आकर्षित, आकृष्ट] १. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना। २. खिंचाव। ३. तंत्र में एक प्रकार का प्रयोग जिसके द्वारा दूर देशस्थ पुरुष या पदार्थ पास आ जाता है।

आकर्षण-शक्ति-स्त्री० [सं०] भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

आकर्षना*-स० [सं० आकर्षण] खींचना।

आकर्षित-वि० [सं०] खींचा हुआ।

आकलन-पुं० [सं०] [वि० आकलनीय, आकलित] १. ग्रहण। लेना। २. संग्रह। संचय। इकट्ठा करना। ३. गिनती करना। ४. खाते में जमा करना। (क्रेडिट)। ५. अनुसंधान।

आकलन-पत्र-पुं० [सं०] खाते या हिसाब का वह पत्र या अंग जिसमें आया हुआ धन जमा किया जाता है।

(क्रेडिट साइड)

आकलन-पत्रक-पुं० [सं०] वह पत्रक जो खाते में किसी के समुचित आकलन पक्ष या यथेष्ट धन जमा होने का सूचक होता है। (क्रेडिट नोट)

आकस्मिक-वि० [सं०] [भाव० आकस्मिकता] १. यों ही किसी समय हो जानेवाला। (कैजुअल) २. अचानक या सहसा होनेवाला। (कन्टिनजेन्ट) ३. आपसे आप, किसी घटनावश या संयोगवश हो जानेवाला। (ऐक्सिडेन्टल)

आकस्मिक छुट्टी-स्त्री० [सं०+हिं०] वह छुट्टी जो यों ही या अचानक कोई काम आ पड़ने पर ली जाय। (कैजुअल लीव)

आकस्मिकता-स्त्री० [सं०] अचानक, आपसे आप या आकस्मिक रूप से होने का भाव।

आकस्मिकतावाद-पुं० [सं०] दर्शन-शास्त्र में यह सिद्धान्त कि संसार में जो कुछ होता है वह सब यों ही, अकस्मात् या घटनावश होता चलता है। 'नियतिवाद' का विरोधी सिद्धान्त। (ऐक्सिडेन्टलिज्म)

आकस्मिकी-स्त्री० [सं० आकस्मिक] अकस्मात् या अचानक हो जानेवाली घटना या बात। (कैजुएलिटी)

आकांक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० आकांक्षित] १. इच्छा। अभिलाषा। वांछा। चाह। २. अपेक्षा। ३. अनुसंधान। ४. वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिए एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना। (न्याय)

आकांक्षी-वि० [सं० आकांक्षिन्] [स्त्री० आकांक्षिणी] इच्छा करनेवाला। इच्छुक।

आकार-पुं० [सं०] १. स्वरूप। आकृति। सूरत। २. किसी वस्तु या कार्य का वह निश्चित या लोक-प्रचलित रूप जिसमें वह साधारणतः होता या पाया जाता हो। (फॉर्म) ३. डील-डौल। ४. बनावट। ५. निशान। चिह्न। ६. चेष्टा। ७. 'आ' वर्ण। ८. बुलावा।

आकारक-पुं० [सं० आकार= न्यायालय का वह आज्ञापत्र जो साक्षी आदि के लिए बुलाने के उसके पास भेजा जाता है। उपस्थि (सम्मन, साइटेशन)

आकारण-पुं० [सं०] किसी को अथवा आकारक भेजकर, बुलाने या भाव। (सम्मनिंग)

आकार-पत्र-पुं० [सं०] प्रार्थना, आदि से सम्बन्ध रखनेवाले पत्रों आदि निश्चित रूप जिसमें भिन्न भिन्न के लिए प्रायः कोष्ठक आदि बने रूपक। (फार्म)

आकारी-वि० [सं०] [स्त्री कारिणी] आह्वान करनेवाला। बुला

आकाश-पुं० [सं०] १. खुले ऊपर की ओर दिखाई देनेवाला खाली व्योम। अंतरिक्ष। आसमान।

मुहा०-आकाश छूना या चूम बहुत ऊँचा होना। **आकाश-प एक करना** = (क) भारी उद्योग (ख) आन्दोलन या हलचल **आकाश-पाताल का अन्तर** अन्तर।

२. एक लचीला पारदर्शी तत्त्व खाली स्थान में व्याप्त माना जाता जिसमें से होकर सूर्य की किरणें पृ पहुँचती हैं। (ईथर) ३. वह खाली जिसमें वायु के सिवा और कुछ न हो

आकाश-कुसुम-पुं० [सं०] में फूल खिलने की-सी असम्भव बात

आकाश-गंगा-स्त्री० [सं०] १. से तारों का एक विस्तृत समूह जो में उत्तर-दक्षिण फैला है। डहर। २. नुसार स्वर्ग की गंगा। मन्दाकिनी।

आकाश-चारी-वि० [सं० आकाश आकाश में फिरनेवाला। आकाश-गा

०.१. सूर्यादि ग्रह और नक्षत्र। २. वायु। पक्षी। ४. देवता।

काश बेल–स्त्री० [सं० आकाश वल्ली;] ों आदि पर होनेवाली एक प्रकार की जिसकी जड़ और पत्तियाँ नहीं होतीं। र बेल।

काश-भाषित–पुं० [सं०] नाटक के भिनय में वक्ता का ऊपर की ओर देख- इस तरह कोई प्रश्न कहना मानों वह से किया जा रहा हो, और तब फिर का उत्तर देना।

काश-यान–पुं० [सं०] विमान। हवाई हाज।

काश-वाणी–स्त्री० [सं०] १. वह त जो ईश्वर की ओर से कही हुई और काश से सुनाई पड़नेवाली मानी जाय। -वाणी। (ओरैकल) २. दे० 'रेडिओ'।

काश-वृत्ति–स्त्री० [सं०] ऐसी आ- नी जो बँधी न हो। अनिश्चित जीविका।

कुंचन–पुं० [सं०] [वि० आकुंचित] कुड़ना। सिमटना। संकोचन।

कुल–वि० [सं०] [वि० आकुलित, वं० आकुलता] १. व्यग्र। घबराया हुआ। द्विग्न। २. विह्वल। कातर। ३. व्याप्त। कुल। ४. संदिग्ध। अस्पष्ट।

कुलता–स्त्री० [सं०] [वि० आ- लित] व्याकुलता। घबराहट।

कृत–वि० [सं०] जिसे कोई आकार रूप प्राप्त हो। आकार में आया हुआ।

कृति–स्त्री० [सं०] १. बनावट। ढ़न। ढाँचा। २. किसी वस्तु की वे बाहरी ौर दृश्य बातें जिनसे उसकी लंबाई-चौड़ाई, कार, स्वरूप आदि का ज्ञान होता है। प। (फ़िगर) ३. मुख। चेहरा। ४. ख का भाव। चेष्टा।

कृष्ट–वि० [सं०] खींचा या खिंचा हुआ।

क्रम*–पुं० दे० 'पराक्रम'।

क्रमण–पुं० [सं०] [वि० आक्रमित] १. बलपूर्वक सीमा का उल्लंघन करके दूसरे के राज्य या क्षेत्र में जाना। चढ़ाई। २. आघात पहुँचाने के लिए किसी पर झपटना या उसे मारना। (एसॉल्ट) ३. घेरना। छेंकना। ४. किसी के कार्यों या विचारों पर किया जानेवाला आक्षेप या उसकी निन्दा।

आक्रमित–वि० [सं०] जिसपर आ- क्रमण हुआ हो। आक्रांत।

आक्रांत–वि० [सं०] १. जिसपर आ- क्रमण हुआ हो। २. घिरा हुआ। आवृत्त। ३. वशीभूत। विवश। ४. व्याप्त। ५. पराजित।

आक्रामक–वि० [सं०] आक्रमण करने- वाला। जो आक्रमण करे।

आक्रोश–पुं० [सं०] कोसना। शाप या गाली देना।

आक्षिप्त–वि० [सं०] १. जिसपर आक्षेप हुआ हो। २. बुरा। खराब। ३. निन्दनीय।

आक्षेप–पुं [सं०] [कर्त्ता आक्षेपक] १. फेंकना। गिराना। २. दोष लगाना। अप- वाद या इलजाम लगाना। ३. किसी के कथन आदि के सम्बन्ध में की जानेवाली आपत्ति। वह बात जिसके द्वारा किसी का कोई कथन ठीक न माना जाय। (चैलेंज) ४. कटु उक्ति। ताना। ५. एक वात रोग जिसमें अंग में कँपकँपी होती है। ६. व्यंग्य।

आक्षेपक–वि० [सं०] आक्षेप करनेवाला।

आखत*–पुं० दे० 'अक्षत' (चावल)।

आखन*–क्रि० वि० [सं० आ + क्षण] प्रति क्षण। हर घड़ी।

आखना*– स० [सं० आख्यान] कहना। अ० [सं० आकांक्षा] चाहना। स० [हिं० आँख] देखना। ताकना।

आखर*–पुं० दे० 'अक्षर'।

आखा तीजा–स्त्री० दे० 'अक्षय तृतीया'।

आखिर–वि० [फ़ा०] अन्तिम। पीछे का।

पुं० १. अन्त । २. परिणाम । फल ।

क्रि० वि० अन्त में । अन्त को ।

आखिरी-वि० [फा०] अन्तिम । पिछला ।

आखीर-वि० = आखिर ।

आखेट-पुं० [सं०] [कर्त्ता आखेटक] जंगली पशु-पक्षियों को मारना । शिकार ।

आख्या-स्त्री० [सं०] १. नाम । संज्ञा । २. कीर्त्ति । यश । ३. व्याख्या । ४. किसी घटना या कार्य का विवरण जो किसी को सूचित करने के लिए हो । (रिपोर्ट)

आख्यात-वि० [सं०] १. प्रसिद्ध । विख्यात । मशहूर । २. जो आख्या, विवरण या सूचना के रूप में किसी को बतलाया गया हो । (रिपोर्टेड)

आख्याति-स्त्री० = ख्याति ।

आख्यान-पुं० [सं०] १. वर्णन । वृत्तान्त । बयान । २. कथा । कहानी । किस्सा । ३. उपन्यास के नौ भेदों में से एक । वह कथा जो स्वयं कवि या लेखक कहे ।

आख्यापक-पुं० [सं०] वह जो किसी को कोई विवरण बतलावे या सूचना दें । आख्या देनेवाला । (रिपोर्टर)

आख्यायिका-स्त्री० [सं०] १. कथा । कहानी । २. वह कल्पित कथा जिससे कुछ शिक्षा निकले । ३. एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र भी अपने चरित्र अपने मुँह से कुछ कुछ कहते हैं ।

आगंतुक-वि० [सं०] १. जो आवे । आनेवाला । २. जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाय ।

आग-स्त्री० [सं० अग्नि] १. तेज और प्रकाश का पुंज जो तीव्र उष्णतावाली वस्तुओं में देखा जाता है । अग्नि । बसुन्दर । २. जलन । ताप । गरमी । ३. काम का वेग । ४. वात्सल्य प्रेम । ५. डाह । ईर्ष्या ।

वि० १. जलता हुआ । बहुत गरम । २. जो गुण में उष्ण हो ।

मुहा०-आग बबूला होना = क्रुद्ध होना । **आग बरसना** = पड़ना । **आग लगना** = उत्पन्न होना । **आग लगाना** आग से किसी वस्तु को जला गरमी करना । जलन पैदा करना । उत्पन्न करना । (घ) बिगाड़ना । **पानी में आग लगाना** = सम्भव कार्य करना । (ख) जहाँ कोई बात न हो, वहाँ भी लड़ाई

आगणत-पुं० [सं०] पहले से लागत आदि का अनुमान करना । (एस्टिमेट)

आगत-वि० [सं०] [स्त्री० १. आया हुआ । २. प्राप्त । उप

आगत-पतिका-स्त्री० [सं०] वह जिसका पति अभी पर-देस से लौटा

आगत-स्वागत-पुं० [सं० आ स्वागत] आये हुए व्यक्ति का सत्कार । आव-भगत ।

आगम-पुं० [सं०] १. आने की या भाव । अवाई । आगमन । २. काल । आनेवाला समय । ३. होनह समागम । संगम । ५. आमदनी । ६. व्याकरण में किसी शब्द-साधन वर्ण जो बाहर से लाया जाय । ७. ८. वेद और शास्त्र । ९. किसी धर्म मुख्य ग्रन्थ जिनपर वह धर्म आश्रि धर्म-ग्रन्थ । (स्क्रिपचर) १०. नीति ११. वह अधिकार या अधिकारसू जिसके आधार पर कोई किसी वस्तु का या उत्तराधिकारी होता है । (टाइटि

आगम-जानी-वि० [सं० आगम होनहार जाननेवाला । आगम-ज्ञानी

आगम-ज्ञानी-वि० दे० 'आगम-

आगमन-पुं० [सं०] १. किसी के आकर पहुँचने की क्रिया या भाव । आना । आमद । २. किसी कार्य

नये सिर से सामने आने या होने की क्रिया
भाव। (एडवेन्ट) ३. प्राप्ति। लाभ।
गर-पुं० [सं० आकर] [स्त्री० आगरी]
खान। आकर। २. समूह। ढेर। ३.
र। निधि। खजाना। ४. वह गड्ढा
समें नमक जमाया जाता है।
० [सं० आगार] १. घर। गृह। २.
जन। छप्पर।
वि० [सं० अग्र] १. श्रेष्ठ। उत्तम।
ढ़कर। २. चतुर। होशियार। दक्ष।
शल।
क्रि० वि० बहुत अधिक।
गल*-वि० दे० 'अगला'।
गवन*-पुं० दे० 'आगमन'।
गा-पुं० [सं० अग्र] १. किसी चीज
आगे का भाग। अगला भाग। २.
मने का भाग। मुख। मुँह। ३. अँगरखे
कुरते आदि की काट में आगे का टुकड़ा।
सेना या फौज का अगला भाग।
ग्रल। ५. घर के सामने का मैदान। ६.
नेवाला समय। भविष्य।
० [तु० आग़ा] १. मालिक। सरदार।
काबुली। अफ़गान।
गान*-पुं० [सं० आ + गान] १. बात।
ंग। २. वृत्तान्त।
गा-पीछा-पुं० [हिं० आगा + पीछा]
िचक। सोच-विचार। दुबिधा। २.
णाम। नतीजा। ३. शरीर का अगला
र पिछला भाग।
गामिक-वि० [सं०] १. आगामी से
न्ध रखनेवाला। २. आनेवाला।
गामी-वि० [सं० आगामिन्] [स्त्री०
गामिनी, वि० आगामिक] भावी।
ानेवाला।
गार-पुं० [सं०] १. घर। मकान। २.
थान। जगह। ३. खजाना।
गाह-वि० [फा०] [भाव० आगाही]
जसे पहले से किसी बात की सूचना मिल
चुकी हो।

आगाही-स्त्री० [फा०] आगाह होने की अवस्था या भाव। पहले से होनेवाली जानकारी।

आगू*-पुं० = आगा।

आगृहीत-वि० [सं०] आग्रहण किया हुआ। जमा किये हुए धन में से लिया या निकाला हुआ (धन)। (ड्रॉन)

आगृहीती-पुं० [सं० आगृहीत] वह जो आग्रहण करे। कहीं से कुछ रुपये उठाने, निकालने या लेनेवाला। (ड्रॉई)

आगे-क्रि० वि० [सं० अग्र] १. सामने की ओर कुछ दूर पर। और बढ़कर। 'पीछे' का उलटा। २. समक्ष। सामने। सम्मुख। ३. जीवन-काल में। जीते-जी। ४. भविष्य में। आगे चलकर। ५. अनन्तर। पीछे। बाद। ६. पूर्व। पहले। ७. गोद में। जैसे—उसके आगे एक लड़का है।

मुहा०—आगे आना = (क) सामने आना या पड़ना। मिलना। (ख) सामना करना। भिड़ना। (ग) घटित होना। घटना। **आगे करना** = (क) उपस्थित या प्रस्तुत करना। (ख) अगुआ या मुखिया बनाना। **आगे को** = भविष्य में। **आगे चलकर** = कुछ दिनों बाद। **आगे निकलना** = बढ़ जाना। **आगे-पीछे** = (क) एक के पीछे एक। (ख) आस-पास। **आगे से** = (क) आइन्दा से। भविष्य में। (ख) पहले से।

आगौन*-पुं० = आगमन।

आग्नेय-वि० [सं०] [स्त्री० आग्नेया] १. अग्नि-सम्बन्धी। अग्नि का। २. अग्नि से उत्पन्न। ३. जिससे आग निकले। जलानेवाला। जैसे—आग्नेय अस्त्र।

पुं० १. सुवर्ण। सोना। २. अग्नि के पुत्र कार्त्तिकेय। ३. ज्वालामुखी पर्वत। ४. दक्षिण का एक देश जिसकी प्रधान नगरी माहिष्मती थी। ५. वह पदार्थ जिससे आग

भड़क उठे। जैसे-बारूद। ६. अग्नि-कोण।

आग्रह-पुं० [सं०] १. अनुरोध। २. हठ। जिद। ३. तत्परता। परायणता। ४. बल। जोर। जैसे—आग्रहपूर्वक कहना।

आग्रहण-पुं० [सं०] [वि० आग्राहक, आगृहीत] अपने जमा किये हुए रुपयों में से अपने नाम के देयादेश (चेक आदि) के आधार पर कहीं से कुछ रुपये निकालना या लेना। (ड्रॉ)

आग्रहायण-पुं० [सं०] अगहन। (महीना)

आग्रही-वि० [सं० आग्रहिन्] आग्रह करनेवाला। हठी। जिद्दी।

आग्राहक-वि० [सं०] आग्रहण करने या जमा किये हुए रुपयों में से कुछ रुपए निकालने या लेनेवाला। (ड्रॉअर)

आघ*-पुं० [सं० अर्घ] मूल्य। दाम।

आघात-पुं० [सं०] १. धक्का। ठोकर। २. मार। प्रहार। चोट। (इंजरी)

आघात-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर किसी को लगे हुए आघातों या चोटों का उल्लेख या विवरण हो। (इंजरी लेटर)

आघ्राण-पुं० [सं०] [वि० आघ्रात, आघ्रेय] १. सूँघना। वास लेना। २. अघाना। तृप्ति।

आचमन-पुं० [सं०] [वि० आचमनीय, आचमित] १. जल पीना। २. पूजा या धर्म्म-सम्बंधी कर्म्म के आरंभ में दाहिने हाथ में थोड़ा सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना।

आचमनी-स्त्री० [सं० आचमनीय] एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं।

आचरज*- पुं० = आश्चर्य।

आचरण-पुं० [सं०] [वि० आचरणीय, आचरित] १. कोई कार्य करना। किसी कार्य का अनुष्ठान। करण। (ऐक्ट) २. व्यवहार। बरताव। चाल-चलन। (कॉन्डक्ट) ३. आचार-शुद्धि। सफाई।

आचरण-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पंजी या पुस्तिका जिसमें किसी कर्मचारी के आचरण, कर्त्तव्य-पालन आदि समय पर उल्लेख किया जाता है। रोल)

आचरण-पुस्तिका-स्त्री० [सं० पुस्तिका जिसमें किसी कार्य-कर्ता या कर्त्तव्य-पालन से सम्बन्ध रखने चरणों या व्यवहारों का उल्लेख हो रेक्टर बुक)

आचरणीय-वि० [सं०] व्यव योग्य। आचरण करने योग्य।

आचरन*-पुं० = आचरण।

आचरना*-अ० [सं० आच चरण करना। व्यवहार करना।

आचरित-वि० [सं०] आच में लाया हुआ। कार्य के रूप में कि (कमिटेड)

आचान*-क्रि० वि० दे० 'अचान

आचार-पुं० [सं०] [वि० आ १. चाल-चलन और रहन-सहन। व्यवहार। (कस्टम) जैसे-देशाचार चार। ३. चरित्र। चाल-ढाल। ४. शील या स्वभाव।

आचारज*-पुं० = आचार्य।

आचारवान्-वि० [सं०] [स्त्री० वती] पवित्रता से रहनेवाला। शुद्ध का।

आचार-विचार-पुं० [सं०] और विचार। रहने की सफाई।

आचार-शास्त्र-पुं० [सं०] वह जिसमें मनुष्य के चरित्र, आचरण और समाजिक व्यवहारों आदि का होता है। (ईथिक्स)

आचारिक-वि० [सं०] १. सम्बन्धी। आचार का। २. जो कि समाज आदि में बहुत दिनों से प्रथा के रूप में चला आ रहा हो। टमरी)

आचारी-वि० सं० आचारिन्]

ारिणी] आचारवान् । चरित्रवान् ।
रामानुज सम्प्रदाय का वैष्णव ।
ार्य-पुं० [सं०] [स्त्री० आचार्य्याणी]
उपनयन के समय गायत्री मंत्र का
श करनेवाला । २. वेद पढ़ानेवाला
। ३. वह जो यज्ञ के समय कर्मों का
श करता हो । ४. पुरोहित । ५. अध्या-
। ६. किसी महाविद्यालय (कालेज)
वह सर्व-प्रधान अधिकारी जिसकी आ-
ता में सब प्राध्यापक काम करते हैं । (प्रिं-
ल) ७. ब्रह्म-सूत्र के प्रधान भाष्यकार शंकर,
ानुज, मध्व, वल्लभाचार्य आदि । ८.
का भाष्यकार ।

ार्या-स्त्री० [सं०] आचार्य का काम
नेवाली स्त्री ।

ार्याणी-स्त्री० [सं०] आचार्य
पत्नी ।

चिंत्य-वि० [सं०] चिन्तन या विचार
ने योग्य ।

च्छन्न-वि० दे० 'आच्छादित' ।

च्छादक-वि० [सं०] आच्छादन
ने या ऊपर से ढकनेवाला ।

च्छादन-पुं० [सं०] [वि० आ-
ादित, आच्छिन्न] १. ढकना । २. वस्त्र ।
ड़ा । ३. छाजन । छवाई ।

च्छादित-वि० [सं०] जिसके ऊपर
आच्छादन हो । ढका हुआ ।

छत*-क्रि० वि० ['आछना' का
न्त रूप] होते हुए । रहते हुए ।
द्यमानता में । मौजूदगी में ।

छना*-अ० [सं० अस = होना] १.
ना । २. रहना । विद्यमान होना ।

छा-वि० = अच्छा ।

छे*-क्रिं० वि० [हिं० अच्छा] भले
कार से । भली-भाँति । अच्छी तरह ।
अ० = है ।

छेप-पुं० = आक्षेप ।

आज-क्रि० वि० [सं० अद्य] १. वर्त्तमान
दिन में । जो दिन बीत रहा है, उसमें । २. इन दिनों । वर्त्तमान समय में । ३. इस वक्त । अब ।

आज-कल-क्रि० वि० [हिं० आज + कल] इन दिनों । इस समय । वर्त्तमान दिनों में । **मुहा०-आज-कल करना** = टाल-मटोल करना । हीला-हवाला करना । **आज-कल लगना** = अब-तब लगना । मरण काल निकट आना ।

आ-जन्म-क्रि० वि० [सं०] जन्म से अब तक । जीवन में आज तक ।

आजमाइश-स्त्री० = परीक्षा ।

आजमाना-स० [फा० आजमाइश] परीक्षा करना । परखना ।

आजा-पुं० [सं० आर्य] [स्त्री० आजी] पितामह । दादा । बाप का बाप ।

आजाद-वि० दे० 'स्वतंत्र' ।

आजादी-स्त्री० दे० 'स्वतंत्रता' ।

आजानु-वि० [सं०] जाँघ या घुटने तक लम्बा ।

आजानु-बाहु-वि० [सं०] जिसके बाहु जानु तक लम्बे हों । जिसके हाथ घुटने तक पहुँचें । (वीरों का लक्षण)

आ-जीवन-क्रि० वि० [सं०] जब तक जीवन रहे, तब तक । जीवन पर्यंत । जिंदगी भर । (लाइफ-लॉंग)

आ-जीविका-स्त्री० दे० 'जीविका' ।

आज्ञप्त-वि० [सं०] जिसकी या जिसके सम्बन्ध में आज्ञा दी गई हो ।

आज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] १. सर्वोच्च अधिकारी अथवा अधिकारिक परिषद् आदि की वह आज्ञा जो किसी कार्य या व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में सर्वोपरि होती है और प्रायः विधान के रूप में भेजी जाती है । २. वह निर्णय-सूचक लेख जो किसी अर्थ-व्यवहार (दीवानी मुकदमे) में किसी पक्ष के विजयी होने पर उसके पक्ष में न्यायालय के निर्णय के रूप में लिखा जाता है । (डिक्री)

आज्ञा–स्त्री० [सं०] १. बड़ों का छोटों को किसी काम के लिए कहना। हुक्म। २. राज्य, अधिकारी आदि का यह कहना कि अमुक कार्य इसी रूप में हो अथवा बिलकुल न हो। हुकुम। (ऑर्डर) ३. हठ-योग के अनुसार शरीर के अन्दर के सात चक्रों में से छठा चक्र।

आज्ञाकारी–वि० [सं० आज्ञाकारिन्] [स्त्री० आज्ञाकारिणी] १. आज्ञा माननेवाला। २. सेवक। दास।

आज्ञापक–वि० [सं०] [स्त्री० आज्ञापिका] १. आज्ञा देनेवाला। २. प्रभु। स्वामी।

आज्ञा-पत्र–पुं० [सं०] वह जिसमें कोई आज्ञा लिखी हो। (हुकुमनामा)

आज्ञापन– पुं० [सं०] [वि० आज्ञापित] सूचित करना। जताना।

आज्ञा-पालन–पुं० [सं०] [वि० आज्ञापालक] किसी की दी हुई आज्ञा के अनुसार कोई काम करना।

आज्ञापित–वि० [सं०] सूचित किया हुआ। जताया हुआ।

आज्ञा-फलक–पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर किसी विषय या व्यवहार के सम्बंध की आज्ञा लिखी हो। (ऑर्डर शीट)

आज्ञा-भंग–पुं० [सं०] किसी की आज्ञा न मानना या उसके विरुद्ध काम करना। (डिस्-ओबीडिएन्स)

आज्ञार्थक–पुं० दे० 'विधि' ६। (व्या०)

आज्य–पुं० [सं०] वे वस्तुएँ जिनकी यज्ञ में आहुति दी जाती है। हवि।

आटना–स० [सं० अट्ट] १. ढँकना। २. दबाना।

आटा–पुं० [सं० अटन = घूमना] १. किसी अन्न का चूर्ण। पिसान। चून।

मुहा०–आटे-दाल का भाव मालूम होना = संसार के व्यवहार का ज्ञान होना। **आटे-दाल की फिक्र** = जीविका की चिन्ता।

२. किसी वस्तु का चूर्ण। बुकनी।

आठ–वि०-[सं० अष्ट] चार का

मुहा०–आठ-आठ आँसू बहुत अधिक विलाप करना। **पहर** = दिन-रात।

कहा०–आठो गाँठ कुम्मैत = चतुर या धूर्त्त। छँटा हुआ।

आडंबर–पुं० [सं०] [वि० आ १. गम्भीर शब्द। २. तुरही का ३. हाथी की चिग्घाड़। ४. आ नावट। तड़क-भड़क। टीम-टाम। ५. आच्छादन। ६. तम्बू। ७. जो युद्ध में बजाया जाता है।

आड़–स्त्री० [सं० अल् = रोक ओट। परदा। आवरण। २. शरण। पनाह। ३. सहारा। ४. रोक। अड़ान। ५. थूनी। टेक स्त्री०[सं० आलि = रेखा] १. लम्बी जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। २. के भाल पर का आड़ा तिलक। ३. पर पहनने का एक गहना। टीका पुं० दे० 'डंक'।

आड़ना–स० [सं० अल = वारण १. रोकना। छेंकना। २. बाँधना मना करना। न करने देना। ४. या रेहन रखना। गहने रखना।

आड़ा–पुं० [सं० अलि] १. कपड़ा। २. लट्ठा। शहतीर।

वि० १. आँखों के समानान्तर बाँई ओर को या बाँई से दाहिनी गया हुआ। २. इस पार से उस रखा हुआ।

मुहा०–आड़े आना = (क) आना। (ख) रुकावट डालना। होना। (ग) कठिन समय में होना। **आड़े हाथों लेना** = किसी व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना।

ढ़-पुं० [सं० आढ़क] चार प्रस्थ र्थात् चार सेर की एक तौल।

ो० [हिं० आड़] १. ओट। २. न्तर। फरक। ३. नागा।

० [सं० आढ्य = सम्पन्न] कुशल। दक्ष।

ढ़त-स्त्री० [हिं० आड़ना = जमानत ा] १. किसी अन्य व्यापारी के माल बिक्री करा देने का व्यवसाय। २. वह ान जहाँ आढ़त का माल रहता हो। . वह धन जो इस प्रकार बिक्री करने के दले में मिलता है।

ढ़तिया-पुं० दे० 'अढ़तिया'।

ढ्य-वि० [सं०] १. पूरी तरह से क्त या सम्पन्न। जैसे-धनाढ्य, गुणाढ्य।

णविक-वि० [सं०] १. अणु-स- न्धी। अणु का। अणु के विस्फोट से उत्पन्न नेवाली शक्ति से सम्बन्ध रखनेवाला। एटमिक)

तंक-पुं० [सं०] १. रोब। दबदबा। ताप। २. भय। आशंका। ३. रोग। . किसी वस्तु या बात का ऐसा अधिक और कट भय जो बहुत-कुछ रोग का रूप धारण र ले। (फोबिआ) जैसे-जलातंक। ५. बहुत ी कठोर व्यवहारों, अत्याचारों, प्रकोपों ादि के कारण लोगों के मन में उत्पन्न नेवाला भय। (टेरर)

तंकवाद-पुं० [सं०] यह सिद्धान्त कि पना कोई बड़ा या विकट उद्देश्य सिद्ध रने के लिए लोगों के मन में पहले बहुत ातंक या भय उत्पन्न कर देना चाहिए। (टेररिज्म)

ातंकवादी-वि० [सं० आतंकवादिन्] आतंकवाद के सिद्धान्त को माननेवाला। (टेररिस्ट')

ाततायी-पुं० [सं० आततायिन्] [स्त्री० आततायिनी] वह जो लोगों का धन-सम्पत्ति लूट ले, घरों में आग लगा दे या स्त्रियाँ छीन ले या इसी प्रकार के और उपद्रव या दुष्कर्म करे।

आतप-पुं० [सं०] [भाव० आतपता] १. धूप। घाम। २. गर्मी। उष्णता। ३. सूर्य्य का प्रकाश।

आतप-स्नान-पुं० [सं०] धूप में इस प्रकार बैठना या लेटना कि सारे शरीर पर उसका प्रभाव पड़े। (सन्-बाथ)

आतश-स्त्री० [फा०] आग। अग्नि।

आतशबाज-पुं० [फा०] वह जो आतशबाजी बनाता हो।

आतशबाजी-स्त्री० [फा०] बारूद, गन्धक, सोरे आदि के योग से बने हुए चक्र, जिनके जलने पर रंग-बिरंगी चिनगारियाँ निकलती हैं।

आतशी शीशा-पुं० दे० 'सूरजमुखी'। (शीशा)

आतिथ्य-पुं० [सं०] अतिथि का सत्कार। पहुनाई। मेहमानदारी।

आतिपात्य-वि० [सं०] अतिपात या हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाला।

आतिपात्य शांति-स्त्री० [सं०] गृहस्थों से अनजान में नित्य होनेवाली हिंसा या अतिपात के पापों से मुक्त होने के लिए किया जानेवाला धार्मिक कृत्य।

आतिश-स्त्री० दे० 'आतश'।

आतिशय्य-पुं० [सं०] अतिशय होने का भाव। आधिक्य। बहुतायत। ज्यादती।

आतुर-वि० [सं०] [भाव० आतुरता] १. व्याकुल। व्यग्र। घबड़ाया हुआ। २. उतावला। अधीर। ३. उद्विग्न। बेचैन। ४. उत्सुक। ५. दुःखी। ६. रोगी। **क्रि० वि०** शीघ्र। जल्दी।

आतुरी-स्त्री० [सं० आतुर] १. घबराहट। व्याकुलता। २. शीघ्रता।

आत्म-वि० [सं० आत्मन्] अपना।

आत्मक-वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] मय। युक्त। (यौगिक शब्दों के अन्त में) जैसे-ध्वंसात्मक, व्यंग्यात्मक, हास्यात्मक।

आत्म-कथा-स्त्री० [सं०] १. अपने

सम्बन्ध की आप कही हुई बातें। २. दे० 'आत्म-चरित'।

आत्म-गत–वि० [सं०] अपने में आया या मिला हुआ।
पुं० दे० 'स्वगत-कथन'।

आत्म-गौरव–पुं० [सं०] अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान। आत्म-सम्मान।

आत्म-घात–पुं० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालना। आत्म-हत्या।

आत्म-चरित–पुं० [सं०] किसी का वह जीवन-चरित्र जो उसने स्वयं लिखा हो। (ऑटो-बायोग्रैफी)

आत्मज–पुं० [सं०] [स्त्री० आत्मजा] १. पुत्र। लड़का। २. कामदेव।

आत्म-ज्ञान–पुं० [सं०] १. जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी। २. ब्रह्म का साक्षात्कार।

आत्म-त्याग–पुं० [सं०] दूसरों के हित के लिए अपना स्वार्थ छोड़ना।

आत्म-निवेदन–पुं० [सं०] अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्ट-देव पर चढ़ा देना। आत्म-समर्पण। (नवधा भक्ति में)

आत्म-प्रधान–वि० [सं०] जो उस वास्तविक या मूल तत्व (आत्मा) से सम्बन्ध रखता हो, जो गुण, रूप, कार्य आदि का कारण होता है। (सब्जेक्टिव)

आत्म-प्रशंसा–स्त्री० दे० 'आत्म-श्लाघा'।

आत्म-भू–वि० [सं०] १. अपने शरीर से उत्पन्न। २. आप ही आप उत्पन्न।
पुं० १. पुत्र। २. कामदेव। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु। ५. शिव।

आत्म-रक्षा–स्त्री० [सं०] अपनी रक्षा या बचाव।

आत्म-वाद–पुं० = आध्यात्मवाद।

आत्म-विद्या–स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो। ब्रह्म-विद्या। आध्यात्म-विद्या।

आत्म विस्मृति–स्त्री०[सं०] अपने भूल जाना। अपना ध्यान न रखना

आत्म-श्लाघा–स्त्री० [सं०] आत्मश्लाघी] अपनी तारीफ स्वयं

आत्म-संयम–पुं० [सं०] अपने रोकना। इच्छाओं को वश में रखना

आत्म-समर्पण–पुं० [सं०] अपने किसी के हाथ सौंपना। पूरी तरह से के वश में या अधीन हो जाना।

आत्मसात्–वि० [सं०] जो पू से अपने अन्तर्गत कर लिया ग अपने आपमें लीन किया या मिलाया

आत्म-हत्या–स्त्री० [सं०] अपने मार डालना। आत्म-घात। (सुइ

आत्मा–स्त्री० [सं०] [वि० आत्मि त्मीय] १. मन या अन्तःकरण के का ज्ञान करानेवाली सत्ता। जीव चैतन्य। (सोल) २. मन। चित्त। ३.

आत्माभिमान–पुं० [सं०] [आत्माभिमानी] अपनी इज्जत या का खयाल। मान-अपमान का ध्यान।

आत्मावलंबी–पुं० [सं०] जो स अपने बल पर करे।

आत्मिक–वि० [सं०] [स्त्री० आत्मि १. आत्मा-संबंधी। २. अपना मानसिक।

आत्मीय–वि० [सं०] [स्त्री० आत्मी निज का। अपना।
पुं० अपना सम्बन्धी। रिश्तेदार।

आत्मोत्सर्ग–पुं० [सं०] दूसरे की के लिए अपने हिताहित का ध्यान छो

आत्मोद्धार–पुं० [सं०] १. आत्मा को संसार के दुःख से छु या ब्रह्म में मिलाना। मोक्ष। २. उद्धार या छुटकारा।

आत्मोन्नति–स्त्री० [सं०] १. आत्म उन्नति। २. अपनी उन्नति।

आत्यंतिक–वि० [सं०] चरम

र पहुँचा हुआ। अति अधिक।
त्ययिक-वि० दे० 'आपातिक'। (एमर्जेन्ट)
त्रेय-वि० [सं० अत्रि] अत्रि गोत्रवाला।
० अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा और चन्द्रमा।
त्रेयी-स्त्री० [सं०] एक तपस्विनी जो
दान्त की बहुत बड़ी पंडिता थी।
थ*-पुं० दे० 'अर्थ'।
थन*-पुं० [सं० अस्तमन] अस्त होने
क्रिया या भाव।
थना*-अ० [सं० अस्ति] होना।
थि*-स्त्री० [सं० अस्ति] १. स्थिरता।
पूँजी। जमा।
थी-स्त्री० [हिं० थाती] पूँजी। धन।
दत-स्त्री० १. दे० 'स्वभाव'। २. दे०
अभ्यास'।
दम-पुं० [अ०] इबरानी और अरबी
तों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति।
दमियत-स्त्री० दे० 'मनुष्यत्व'।
दमी-पुं० दे० 'मनुष्य'।
दर-पुं० [सं०] १. सम्मान। सत्कार।
प्रतिष्ठा। इज्जत।
दरणीय-वि० [सं०] [स्त्री० आदर-
या] आदर किये जाने के लायक।
दरना*-स० [सं० आदर] आदर
ना। सम्मान करना। मानना।
दर्श-पुं० [सं०] १. दर्पण। शीशा।
इना। २. टीका। व्याख्या। ३. वह
सके रूप और गुण आदि का अनुकरण
या जाय। नमूना। (आइडियल)
दर्शवाद-पुं० [सं०] [वि० आदर्श-
दी] यह सिद्धान्त कि मनुष्य को सदा
पने आदर्श या अच्छी से अच्छी बातें
पने सामने रखकर उनकी सिद्धि या प्राप्ति
लिए सब कार्य करने चाहिएँ। (आइ-
यलिज्म)
दर्शवादी-वि० [सं० आदर्शवादिन्]
आदर्शवाद को मानने और उसके अनुसार
लनेवाला। (आइडियलिस्ट)

आदर्श विज्ञान-पुं० [सं०] विज्ञान की दो शाखाओं में से एक, जिसमें वे विज्ञान आते हैं जो कल्पना आदि के आधार पर आदर्शों का विवेचन करते हैं। (नॉरमेटिव साइन्स) जैसे-नीति-विज्ञान। (दूसरी शाखा तात्विक विज्ञान है)

आदर्शीकरण-पुं० [सं०] किसी वस्तु, कार्य आदि को आदर्श का रूप देना। (आइडियलाइजेशन)

आदाता-पुं० दे० 'आग्राहक'।

आदान-पुं० [सं०] १. किसी से कुछ लेना। ग्रहण करना। 'दान' का उलटा। २. वह जो कर, शुल्क आदि के रूप में लिया जाने को हो या प्राप्य हो।

आदान-प्रदान-पुं० [सं०] किसी से कुछ लेना और उसे कुछ देना। जैसे-वस्तुओं या विचारों का आदान-प्रदान।

आदाय-वि० [सं०] जो किसी से लेने, ग्रहण करने या प्राप्त करने के योग्य हो। प्राप्य। पुं० १. किसी से कुछ लेने या ग्रहण करने की क्रिया या भाव। २. वह धन या लेन जो किसी से अधिकारपूर्वक लिया जा सकता हो।

आदि-वि० [सं०] १. प्रथम। पहला। शुरू का। आरम्भ का। २. बिलकुल। पुं० [सं०] १. आरम्भ। बुनियाद। मूल कारण। २. परमेश्वर।
अव्य० वगैरह। आदिक। (इस बात का सूचक कि इसी प्रकार और भी समझें)

आदिक-अव्य० [सं०] आदि। वगैरह।

आदि-कवि-पुं० [सं०] बाल्मीकि।

आदि-कारण-पुं० [सं०] सृष्टि का मूल कारण। जैसे-ईश्वर या प्रकृति।

आदित्य-पुं० [सं०] १. अदिति के पुत्र। २. देवता। ३. सूर्य। ४. इन्द्र।

आदिनाथ-पुं० [सं०] शिव। महादेव।

आदि-पुरुष-पुं० [सं०] १. परमेश्वर। २. वह जिससे किसी वंश का आरंभ हुआ

हो। मूल-पुरुष।

आदिम–वि० [सं०] पहले का। पुराना।

आदिम जाति–स्त्री० [सं०] किसी देश में रहनेवाली सबसे पहली और पुरानी मनुष्य-जाति। (प्रिमिटिव रेस)

आदिम निवासी–पुं० दे० 'आदि-वासी'।

आदि मान–पुं० [सं०] वह आदर या मान जो किसी व्यक्ति, वस्तु या कार्य को औरों से पहले दिया जाता है। (प्रेरोगेटिव)

आदि वासी–पुं० [सं०] किसी देश या प्रान्त के वे निवासी जो बहुत पहले से वहाँ रहते आये हों और जिनके बाद और लोग भी वहाँ आकर बसे हों। आदिम निवासी।

आदिष्ट–वि० [सं०] १. जिसे आदेश मिला हो। २. जिसके विषय में कोई आदेश दिया गया हो।

आदी–वि० [अ०] अभ्यस्त।

स्त्री० दे० 'अदरक'।

* [सं० आदि] बिलकुल। नाम को भी।

आदृत–वि० [सं०] जिसका आदर किया गया हो। सम्मानित।

आदेय–वि० [सं०] १. किसी से लेने योग्य। जो लिया जा सके। २. जिसपर कर, शुल्क आदि लिया या लगाया जा सके। ३. जिसपर कर, शुल्क आदि लगाया गया हो। (लेवीड)

आदेश–पुं० [सं०] [वि० आदेशक, आदिष्ट] १. आज्ञा। २. उपदेश। ३. ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का फल। ४. व्याकरण में एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना। अक्षर-परिवर्त्तन।

आदेशक–पुं० [सं०] १. आदेश अथवा आज्ञा देनेवाला। २. दे० 'प्रसर'।

आद्यंत–क्रि० वि० [सं०] आदि से अन्त तक। शुरू से आखीर तक।

आद्य–वि० [सं०] बिलकुल आरम्भ या आदि का। सर्व-प्रथम। (जिससे औरों की उत्पत्ति या विकास हुआ हो) (प्राइम)

आद्य-शेष–पुं० [सं०] हिसाब धन जो पहले रोकड़-बाकी के रूप हो और अब नये खाते या पृष्ठ में हो। (ओपिनिंग बैलेन्स)

आद्या–स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। महाविद्याओं में से एक।

आद्याक्षर–पुं० [सं०] [वि० आद्या व्यक्ति के नाम के शब्दों के के अक्षर जो पूरे नाम के सूचक हैं संक्षिप्त हस्ताक्षर का काम दें (इनीशियल) जैसे–कृष्ण चन्द्र के कृ०

आद्याक्षरित–वि० [सं०] हस्ताक्षर के रूप में नाम के श आरम्भ के अक्षर लिखे हों। (इनीशि

आद्योपांत–क्रि० वि० [सं०] आखीर तक।

आद्रा–स्त्री० दे० 'आर्द्रा'।

आध–वि० [हिं० आधा] दो भागों में से एक। आधा। (यौगिक

यौ०–एक-आध = थोड़े से। कुछ

आधर्षण–पुं० [सं०] न्यायाल अभियुक्त को दोषी पाकर अपराधी और दंड देना। (कन्विक्शन)

आधर्षित–वि० [सं०] जो सिद्ध होने पर न्यायालय से दंडित हो। (कन्विक्टेड)

आधा–वि० [सं० अर्द्ध] [स्त्री० दो समान भागों में से एक। अर्द्ध।

मुहा०–आधो-आध = दो बराब में। **आधा तीतर, आधा बटेर** एक तरह का और कुछ दूसरी तरह **आधी बात** = जरा सी भी जनक बात।

आधान–पुं० [सं०] १. स्थापन। २. गिरवी या बन्धक रखना।

आधार–पुं० [सं०] [वि० आधारित] १. जिसपर कोई दूस खड़ी, टिकी या ठहरी रहती हो।

हारा। अवलम्ब। (सपोर्ट) जैसे-प्राणाधार परम प्रिय)। २. व्याकरण में अधिकरण ारक। ३. वृक्ष का थाला। ालवाल। ४. पात्र। ५. नींव। जड़। ल। ६. वह जिसके सहारे पर कोई चीज ी या ठहरी हो। (ग्राउन्ड) जैसे-चित्र आधार, वाद या तर्क का आधार। आश्रय देने या पालन करनेवाला। ८. ० 'भूमि' ४.।

धारिक-वि० [सं०] १. आधार ंधी। २. जिसपर किसी दूसरी बड़ी ीज की स्थिति हो। जो किसी के लिए ाधार-स्वरूप हो। (बेसिक) जैसे—आधारिक त्ता, आधारिक भाषा।

धारित-वि० [सं० आधार] किसी आधार पर ठहरा हुआ। अवलम्बित। ाश्रित।

धारी-वि० [सं० आधारिन्] [स्त्री० ाधारिणी] १. सहारा रखनेवाला। सहारे र रहनेवाला। २. साधुओं के टेकने की, डु के आकार की एक लकड़ी।

धा-सीसी-स्त्री० [हिं० आधा + स = सिर] आधे सिर का दरद। अध-ारी। विशेष दे० 'सूर्यावर्त्त'।

धि-स्त्री० [सं०] १. मानसिक व्यथा। न्ता। २. रेहन। बन्धक।

धिकरणिक-वि० [सं०] १. अधिकरण न्यायालय से संबंध रखनेवाला। २. धिकरण या न्यायालय की आज्ञा से नेवाला। जैसे—आधिकरणिक विक्रय। कोर्ट सेल)

धिकारिक-वि० [सं०] किसी प्रकार अधिकार से युक्त। अधिकार-संपन्न। ऑथॉरिटैटिव)

० १. वह जिसे कोई विशेष अधिकार ास हो और वह उस अधिकार का प्रयोग रता हो। अधिकारी। (ऑथारिटी) २. ाहित्य में दृश्य-काव्य की कथा-वस्तु।

आधिकारिकी-स्त्री० [सं० आधिकारिक] व्यक्तियों का वह संघात या समूह जो किसी अधिकार का प्रयोग या व्यवहार करता हो। (ऑथारिटी)

आधिक्य-पुं० दे० 'अधिकता'।

आधिदैविक-वि० [सं०] १. देवता, भूत आदि द्वारा होनेवाला। देवता-कृत। (दुःख या कष्ट) २. जो साधारणतः प्राकृतिक या लोक-गत न हो, बल्कि उससे बहुत बढ़-चढ़कर हो। (सुपर-नेचुरल)

आधिपत्य-पुं० [सं०] 'अधिपति' होने की अवस्था या भाव। प्रभुत्व। स्वामित्व।

आधिभौतिक-वि० [सं०] चीते, शेर, सर्प आदि के द्वारा प्राप्त होनेवाला। जीवों या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त। (दुःख या कष्ट)

आधीन-वि० दे० 'अधीन'।

आधुनिक-वि० [सं०] वर्त्तमान या इस समय का। आज-कल का। (माडर्न)

आधेय-पुं० [सं०] किसी सहारे पर टिकी हुई चीज।

वि० १. ठहराने योग्य। २. रचने योग्य। ३. रेहन रखने योग्य।

आध्यात्मिक-वि० [सं०] १. अध्यात्म या आत्मा-संबंधी। २. ब्रह्म और जीव संबंधी।

आनंद-पुं० [सं०] [वि० आनंदित, आनंदी] मन का वह भाव जो किसी प्रिय या अभीष्ट वस्तु के प्राप्त होने या कोई अच्छा और शुभ कार्य होने पर होता है। 'कष्ट' का उलटा। हर्ष। प्रसन्नता। खुशी।

यौ०-आनन्द-मंगल, आनंद-बधाई।

आनंदना*-अ० [सं० आनन्द] आनंदित या प्रसन्न होना।

स० किसी को आनन्दित या प्रसन्न करना।

आनंद-बधाई-स्त्री० [सं० आनन्द + हिं० बधाई] १. मंगल उत्सव। २. मंगल-अवसर।

आनंद-मंगल-पुं० [सं०] कोई ऐसा

सुखद या शुभ बात अथवा अवसर जिसमें सब लोग मिलकर आनन्द मनाते हों।

आनंद-मत्ता–स्त्री॰ दे॰ 'आनंद-सम्मोहिता'।

आनंद-वन–पुं॰ [सं॰] काशी नगरी।

आनंद-सम्मोहिता–स्त्री॰ [सं॰] वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनंद में अत्यन्त निमग्न और मुग्ध हो रही हो।

आनंदित–वि॰ [सं॰] जिसे आनन्द हुआ हो। हर्षित। प्रसन्न।

आनंदी–वि॰ [सं॰] १. हर्षित। प्रसन्न। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला।

आन–स्त्री॰ [सं॰ अणि = मर्यादा, सीमा] १. मर्य्यादा। २. शपथ। सौगंद। कसम। ३. विजय-घोषणा। दुहाई। ४. ढंग। तर्ज़। ५. क्षण। लमहा।

मुहा॰–आन की आन में = चटपट। ६. अकड़। ऐंठ। ठसक। ७. अदब। लिहाज़। ८. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। ९. आज्ञा। हुक्म।

†वि॰ [सं॰ अन्य] दूसरा। और।

आनक–पुं॰ [सं॰] १. डंका। भेरी। दुंदुभी। २. गरजता हुआ बादल।

आनत–वि॰ [सं॰] १. झुका हुआ। नत। २. नम्र।

आन-तान–स्त्री॰ दे॰ 'आन-बान'।

आनद्ध–वि॰ [सं॰] कसा या मढ़ा हुआ। पुं॰ वह बाजा जो चमड़े से मढ़ा हो। जैसे–ढोल, मृदंग आदि।

आनन–पुं॰ [सं॰] १. मुख। मुँह। २. चेहरा। मुखड़ा।

आनना*–स॰ [सं॰ आनयन] लाना।

आन-बान–स्त्री॰ [हिं॰ आन + बान] १. सज-धज। ठाठ-बाट। तड़क-भड़क। २. ठसक। अदा।

आनयन–पुं॰ [सं॰] १. कहीं से कोई चीज ले आना। लाना। २. उपनयन-संस्कार।

आनर्त्त–पुं॰ [सं॰] [वि॰ आनर्त्तक] १. द्वारका पुरी या प्रदेश। २. का निवासी। ३. नृत्यशाला। ४.

आना–पुं॰ [सं॰ आणक] १. सोलहवाँ हिस्सा। २. किसी वस्तु का अंश।

अ॰ [सं॰ आगमन] १. कहीं से वक्ता के पास पहुँचना। आगमन

मुहा॰–आ धमकना = अचान पहुँचना। **आ पड़ना** = (क) पहुँचना। (ख) सहसा गिर पड़ना। जै से पेड़ या पत्थर आ पड़ना। **आ रह** गिर पड़ना। **आ लेना** = (क) जाना। (ख) आक्रमण करना। टूट **(किसी की) आ बनना** = लाभ का अच्छा अवसर हाथ आना। **को कुछ आना** = किसी को कुछ होना।

यौ॰–आता-जाता = (क) कहीं या कहीं जानेवाला। आया-गया। (ख) आ पहुँचनेवाला कोई व्यक्ति। (ग) २. जाकर लौटना। ३. काल या प्रारम्भ होना। ४. पौधों आदि में लगना। ५. मन में कोई भाव होना। जैसे-आनन्द आना।

आना-कानी–स्त्री॰ [सं॰ अना १. सुनी अनसुनी करने का ध्यान देने का कार्य। २. टाल हीला-हवाला। ३. काना-फूसी।

आनुतोषिक–पुं॰ [सं॰] वह किसी को उसे सन्तुष्ट या प्रसन्न लिए दिया जाय। (ग्रैचुइटी)

आनुपातिक–वि॰ [सं॰] विचार या दृष्टि से ठीक। (प्रोपोर

आनुपूर्वी–वि॰ [सं॰ आनुपूर्वीय] नुसार। एक के बाद दूसरा। (

आनुमानिक–वि॰ [सं॰] सोचा या समझा हुआ। खयाली।

आनुवंशिक–वि॰ [सं॰] जो

बराबर होता आया हो और जिसके आगे
ी उस वंश में होते रहने की सम्भावना हो।
ानुक्रमिक। (हेरिडेटरी) जैसे-आनु-
शिक रोग।

ानुषंगिक–वि॰ [सं॰] १. जिसका
ाधन कोई दूसरा प्रधान कार्य्य करते समय
हुत थोड़े प्रयास से या आप से आप हो जाय।
ण। अ-प्रधान। २. अनुषंग या प्रसंग से यों
हो जानेवाला। प्रासंगिक। (इन्सिडेन्टल)
से–आनुषंगिक परिव्यय। ३. दे॰ 'उप-
र्ग' ४.।

प–सर्व॰ [सं॰ आत्मन्] १. अपने
रीर से। स्वयं। खुद। (तीनों पुरुषों में)
हा॰-**आप आपकी पड़ना** = अपनी
पनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना।
ाप आपका = सबको अलग अलग।
पने आपको भूलना = (क) किसी
नोवेग के कारण बेसुध होना। (ख) घमंड
चूर होना। **आपसे आप या आप
ी आप** = (क) स्वयं। खुद। (ख) मन
मन। स्वगत।
. 'तुम' और 'वे' के स्थान में आदरार्थक
योग।

॰ [सं॰ आपः = जल] जल। पानी।

प-काज–पुं॰ [हिं॰] [वि॰ आप-
ाजी] १. अपना काम। २. स्वार्थ।

पचारी*–स्त्री॰ [हिं॰ आप + आचरण]
न-माना करने की क्रिया या भाव।
च्छाचार।
॰ मनमानी करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

पजात्य–पुं॰ [सं॰] [वि॰ अपजात]
ुण आदि के विचार से अपने जनक, उ-
ादक या मूल से कम और हीन होना।
डीजेनरेशन)

पत्काल–पुं॰ [सं॰] [वि॰ आप-
कालिक] १. विपत्ति। दुर्दिन। २.
ुष्काल। कुसमय।

ापत्ति–स्त्री॰ [सं॰] १. दुःख। क्लेश।
कष्ट। २. विपत्ति। संकट। आफत। ३. कष्ट का समय। ४. जीविका का कष्ट। ५. दोषारोपण। ६. किसी बात को ठीक न मानकर उसके सम्बन्ध में कुछ कहना। उज्र। एतराज़। (आब्जेक्शन)

आपत्ति-पत्र–पुं॰ [सं॰] वह पत्र जिसमें किसी कार्य या विषय में अपनी आपत्ति और मत-भेद लिखा हो। (पेटिशन ऑफ ऑब्जेक्शन)

आपत्य–वि॰ [सं॰] अपत्य या सन्तान सम्बन्धी। औलाद का।

आपदा–स्त्री॰ [सं॰] १. दुःख। क्लेश। २. विपत्ति। आफ़त। ३. कष्ट का समय।

आपद्धर्म–पुं॰ [सं॰] १. वह कर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिए हो। २. किसी वर्ण के लिए वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा या विधान और कोई जीवनोपाय न होने की ही दशा में हो। जैसे–ब्राह्मण के लिए वाणिज्य। (स्मृति)

आपना*–सर्व॰ दे॰ 'अपना'।

आपन्न–वि॰ [सं॰] १. आपद-ग्रस्त। दुःखी। २. प्राप्त। जैसे-संकटापन्न।

आप-बीती–स्त्री॰ [हिं॰] वह बात या घटना जो स्वयं अपने ऊपर बीती हो।

आपराधिक–वि॰ [सं॰] १. ऐसे कार्यों या बातों से सम्बन्ध रखनेवाला जिनकी गणना अपराधों में हो और जिनके लिए न्यायालय से दंड मिल सकता हो। (क्रिमिनल) जैसे–आपराधिक प्रक्रिया। (क्रिमिनल प्रोसीजर) २. ऐसी बातों से सम्बन्ध रखनेवाला जिनमें अपराध का विचार, भाव या ईप्सा हो। (कल्पेबुल) जैसे–आपराधिक बल-प्रयोग, आपराधिक अपचार, आपराधिक प्रमाद। ३. दे॰ 'अपराध-शील'।

आप-रूप–वि॰ [हिं॰] स्वयं। आप। खुद।

आपस–पुं॰ [हिं॰ आप + से] १. संबंध। नाता। भाई-चारा। जैसे–आपसवालों में, आपस के लोग। २. एक दूसरे के साथ।

एक दूसरे का। (संबंध, अधिकरण कारक में) **पद-आपस का** = (क) इष्ट-मित्रों या भाई-बन्धुओं के बीच का। (ख) पारस्परिक। एक दूसरे का। परस्पर का। **आपस में** = परस्पर। एक दूसरे से।

यौ०-आपसदारी = (क) परस्पर का व्यवहार। (ख) भाई-चारा।

आपसी-वि० [हिं० आपस] आपस का। पारस्परिक।

आपा-पुं० [हिं० आप] १. अपनी सत्ता या अस्तित्व। २. अहंकार। घमंड। गर्व। ३. होश-हवास। सुध-बुध।

मुहा०-आपा खोना = (क) अहंकार छोड़कर नम्र होना। (ख) अपना गौरव छोड़ना। **आपा तजना** = (क) अपनी सत्ता को भूलना। आत्म-भाव का त्याग। (ख) अहंकार छोड़ना। निरभिमान होना। (ग) प्राण तजना। मरना। **आपे में आना** = होश-हवास में होना। चेत में होना। **आपे में न रहना या आपे से बाहर होना** = (क) अपने ऊपर वश न रखना। बे-काबू होना। (ख) घबराना। बद-हवास होना। (ग) अत्यन्त क्रोध करना।

आपात-पुं० [सं०] [वि० आपातिक] १. गिराव। पतन। २. किसी घटना का अचानक हो जाना। ३. आरंभ। ४. अंत। ५. वह घटना या बात जो अचानक ऐसे रूप में सामने आ जाय जिसकी पहले से कोई आशा, सम्भावना या कल्पना न हो। (एमर्जेन्सी)

आपाततः-क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। अचानक। २. अन्त में।

आपातिक-वि० [सं०] अचानक ऐसे रूप में सामने आनेवाला, जिसकी कोई आशा या सम्भावना न हो। (एमर्जेन्ट)

आपा-धापी-स्त्री० [हिं० आप + धाप] १. अपनी अपनी चिन्ता। अपनी अपनी धुन। २. खींच-तान। लाग-डाँट।

आपुन*†-सर्व० दे० 'अपना'।

आपूरना*-स० [सं० आपूरण]

आपेक्षिक-वि० [सं०] १. अपेक्षा रखनेवाला। २. दूसरी अवलंब पर रहनेवाला। किसी की में या किसी पर आश्रित रहनेवा किसी की अपेक्षा, तुलना या अ होनेवाला। (रिलेटिव)

आप्त-वि० [सं०] [भाव० आ प्राप्त। लब्ध। (यौगिक में) २. दत्त। ३. विषय को ठीक तौर से वाला। ४. पूर्ण तत्वज्ञ का कहा हु इसी कारण प्रामाणिक।

पुं० [सं०] १. ऋषि। २. शब्द ३. गणित में भाग की लब्धि।

आप्त-काम-पुं० [सं०] वह जिस कामनाएँ पूरी हो चुकी हों। पूर्ण-

आफत-स्त्री० [अ०] १. आ विपत्ति। २. कष्ट। दुःख। ३. विपत्ति के दिन।

मुहा०-आफत उठाना मचाना = (क) भारी उपद्रव करना जल्दी मचाना।

पद-आफत का परकाला = और विकट काम भी तुरंत कर डाल

आबंध-पुं० [सं०] [वि० आ १. कोई निश्चित की हुई समझौता। २. भूमि का कर या निश्चित करने का काम। (सेटिलमे

आबंधक अधिकारी-पुं० [सं राजकीय अधिकारी जो भूमि का राजस्व निश्चित करता है। (ऑफिसर)

आबंधन-पुं० [सं०] १. अच्छ बाँधना। २. दे० 'आबंध'।

आब-स्त्री० [फा०] १. चमक। भड़क। आभा। कान्ति। पानी शोभा। रौनक। छवि।

० पानी । जल ।

वकारी-स्त्री० [फा०] १. वह स्थान हाँ शराब चुआई या बेची जाती हो । रावखाना । कलवरिया । भट्ठी । २. मादक स्तुओं के उत्पादन, वितरण, नियंत्रण ादि से सम्बन्ध रखनेवाला सरकारी विभाग ।

बकारी शुल्क-पुं० [फा० + सं०] ह शुल्क जो राज्य की ओर से शराब, फीम, भंग आदि मादक द्रव्यों के उ- ादन और बिक्री पर लगता है । (एक्साइज यूटी)

ब-दाना-पुं० [फा०] १. अन्न-जल । ना-पानी । खान-पान । २. जीविका । . रहने का संयोग ।

हा०-आब-दाना उठना = जीविका न ना । रहने का संयोग टलना ।

ब-दार-वि० [फा०] [भाव० आब- री] जिसमें आब या चमक हो । मकीला ।

० वह जो पुरानी तरह की तोपें चलने के मय बीच-बीच में उनपर पानी का पुचारा ता था ।

बद्ध-वि० [सं०] १. बँधा हुआ । २. कैद ।

बनूस-पुं० [फा०] [वि० आबनूसी] क प्रकार का पेड़ जिसके हीर की लकड़ी हुत काली होती है ।

हा०-आबनूस का कुन्दा = अत्यन्त ले रंग का मनुष्य ।

-पाशी-स्त्री० [फा०] सिंचाई ।

बरवाँ-स्त्री० [फा०] एक प्रकार की ढ़िया महीन मलमल । (कपड़ा)

बरू-स्त्री० [फा०] इज्जत । प्रतिष्ठा ।

ब-हवा-स्त्री० [फा०] सरदी-गरमी, वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश या थान की प्राकृतिक स्थिति । जल-वायु ।

बाद-वि० [फा०] १. बसा हुआ । . जोतने योग्य । उपजाऊ । (जमीन)

बादी-स्त्री० [फा०] १. बस्ती । २. जन-संख्या । मर्दुम-शुमारी । ३. वह भूमि जिसपर खेती होती हो ।

आभरण-पुं० [सं०] [वि० आभरित] १. गहना । आभूषण । २. पालन-पोषण । परवरिश ।

आभा-स्त्री० [सं०] १. चमक-दमक । कान्ति । दीप्ति । २. झलक । छाया । ३. रंगों आदि की दिखाई देनेवाली साधारण से कुछ हलकी या गहरी छाया । (शेड)

आभार-पुं० [सं० आ + भार] १. बोझ । भार । २. गृहस्थी का बोझ । घर की देख-भाल की जिम्मेदारी । ३ एहसान । उपकार । ४. उत्तरदायित्व । जिम्मेदारी । (ऑब्लिगेशन; अन्तिम दोनों अर्थों के लिए)

आभारक-पुं० दे० 'आभारी' ।

आभारी-पुं० [हिं० आभार] जिसके साथ कोई उपकार किया गया हो । उपकृत ।

आभास-पुं० [सं०] १. प्रतिबिम्ब । छाया । झलक । २. निशान । संकेत । ३. मिथ्या ज्ञान । जैसे-रस्सी में सर्प का । ४. वह जो पूरा न हो, पर जिसमें असल की झलक भर हो । जैसे—रसाभास, हेत्वाभास ।

आभिजात्य-पुं० [सं०] कुलीनों के लक्षण और गुण । कुल-संस्कार ।

आभीर-पुं० [सं०] [स्त्री० आभीरी] अहीर । ग्वाला । गोप ।

आभुक्ति-स्त्री० [सं०] किसी सुख या सुभीते का वह लाभ जो पहले से प्राप्त हो । (ईज़मेन्ट)

आभूषण-पुं० [सं०] [वि० आभूषित] गहना । ज़ेवर । आभरण । अलंकार । २. वह चीज या बात जिससे किसी दूसरी चीज या बात की शोभा या सौन्दर्य बढ़े । (ऑर्नामेन्ट)

आभोग-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता । पूर्ण लक्षण । २. किसी पद्य में कवि के नाम

का उल्लेख। ३. दे० 'आभुक्ति'।

आभ्यंतर–वि० [सं०] १. अन्दर का। भीतरी। २. किसी वस्तु के भीतरी भागों या कार्यों से सम्बन्ध रखनेवाला। आंतरिक। (इन्टर्नल)

आमंत्रण–पुं० [सं०] [वि० आमंत्रित] बुलाना। आह्वान। निमंत्रण। न्योता।

आमंत्रित–वि० [सं०] १. बुलाया हुआ। २. निमंत्रित। न्योता हुआ।

आम–पुं० [सं० आम्र] १. एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़ जिसके फल खाये या चूसे जाते हैं। २. इस पेड़ का फल।

यौ०-अमचूर। अमहर।

वि० [सं०] कच्चा। अपक्व। असिद्ध। पुं० खाये हुए अन्न का बिना पचा हुआ सफेद और लसदार मल जो मरोड़ के साथ थोड़ी थोड़ी देर में शौच में निकलता है। आँव।

वि० [अ०] १. साधारण। मामूली। २. जन-साधारण का। जनता का। ३. प्रसिद्ध। विख्यात। (वस्तु या बात)

आमद–स्त्री० [फा०] १. अवाई। आगमन। आना। २. आय। आमदनी।

आमदनी–स्त्री० [फा०] १. आनेवाला धन। आय। प्राप्ति। २. व्यापार की वस्तु जो और देशों से अपने देश में आवे। आयात।

आमन–स्त्री० [देश०] १. वह भूमि जिसमें साल में एक ही फसल हो। २. जाड़े में होनेवाला धान।

आमना-सामना–पुं० [हिं० सामना] १. मुकाबला। २. भेंट।

आमने-सामने–क्रि० वि० [हिं० सामने] एक दूसरे के समक्ष या मुकाबले में।

आमरखना*–अ० [सं० आमर्ष] क्रुद्ध होना। दुःखपूर्वक क्रोध करना।

आ-मरण–क्रि० वि० [सं०] जब तक मृत्यु न आवे, तब तक। मरण काल तक। ज़िन्दगी भर।

आमर्ष–पुं० [सं०] १. क्रोध। २. अ-सहनशीलता। (रस में एक भाव)

आमलक–पुं० [सं०] [स्त्री० आमलकी] आँवला।

आम-वात–पुं० [सं०] एक रोग आँव गिरता है और शरीर सूजकर पड़ जाता है।

आमाशय–पुं० [सं०] पेट के अ वह थैली जिसमें भोजन किये हुए इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमिर*–पुं० दे० 'आमिल'।

आमिल–पुं० [अ०] १. कार्य-कर अधिकारी। हाकिम। २. ओझा।

पुं० [हिं० आम] कच्चे आम को बनाई हुई एक प्रकार की खटाई।

आमिष–पुं० [सं०] १. मांस। २. भोग्य वस्तु। ३. लोभ। लालच

आमुख–पुं० [सं०] १. नाटक स्तावना। २. पुस्तक के आरम्भ में वाली उसकी भूमिका या प्रस्तावना।

आमेजना*–स० [फा० आमेजन] मि

आमोद–पुं० [सं०] [वि० आ आमोदी] १. आनन्द। हर्ष। प्रसन्नता। २. मन-बहलाव।

आमोद-प्रमोद-पुं० [सं०] १. ऐ जो केवल मन-बहलाव या चित्त प्रस के लिए होते या किये जाते हों। जै तमाशे, संगीत, नृत्य, जादू के खेल (एन्टरटेन्मेन्ट) २. हँसी-ठट्ठा।

आम्र–पुं० [सं०] आम का पेड़ या

आय–स्त्री० [सं०] लाभ आदि में आने या प्राप्त होनेवाला धन। आम प्राप्ति। धनागम। (इन्कम)

आयत–वि० [सं०] १. विस्तृत। चौड़ा। दीर्घ। विशाल। २. (क्षेत्र) चारो कोण आपस में बराबर और सम

० चार भुजाओंवाला वह क्षेत्र जिसकी मने-सामने की भुजाएँ बराबर और चारो ण समकोण हों। (रेक्टैंगिल)

०[अ०] इंजील या कुरान का कोई वाक्य।

यतन-पुं० [सं०] १. मकान। घर। ठहरने की जगह। ३. देवताओं की ना की जगह। मन्दिर। ४. कोई पदार्थ ण करने की पात्रता या क्षमता के विचार किसी पात्र या खाली जगह के अन्दर स्थान या अवकाश। (कैपेसिटी)

यति-स्त्री० [सं०] १. आयतन। तार। २. वह सीमा जहाँ तक कोई चीज बात पहुँचती या पहुँच सकती हो। एक्सटेन्ट)

त्त-वि० [सं०] [भाव० आयत्ति] ीन।

-व्यय-पुं० [सं०] आमदनी और ।

-व्यय फलक-पुं० दे० 'तल-पट' ला-पत्र)

-व्ययिक-पुं० [सं० आय-व्यय] ष्य में कुछ निश्चित काल तक होने- ी आय और व्यय का अनुमान से या हुआ हिसाब। व्याकल्प। (बजट)

सु*-स्त्री० [सं० आदेश] आज्ञा।

ा*-स्त्री० दे० 'आयुष्य'।

० [पुर्त्त०] बच्चों को दूध पिलाने और को खेलानेवाली स्त्री। दाई।

ात-पुं० [सं०] वह वस्तु या माल व्यापार के लिए विदेश से अपने देश लाया या मँगाया जाय। (इम्पोर्ट) ० (माल आदि) जो दूसरे स्थान या से आया हो। बाहर से आया या मँगाया ा। (इम्पोर्टेड)

याम-पुं० [सं०] १. लम्बाई। विस्तार। नियमित करने की क्रिया। नियमन। -प्राणायाम।

यास-पुं० [सं०] परिश्रम। मेहनत।

आयु-स्त्री० [सं०] जन्म से मृत्यु तक का समय। वय। उमर। जीवन-काल।

***मुहा०—आयु सरना** = (क) जीवन बीतना। (ख) जीवन समाप्त होना।

आयुक्त-वि० [सं०] १. जिसका या जिसके सम्बन्ध में आयोजन हुआ हो। २. जो राज्य की आज्ञा से किसी विशिष्ट कार्य के लिए नियुक्त हुआ हो। (कमिशन्ड)

आयुध-पुं० [सं०] लड़ाई के हथियार। शस्त्र। (आर्म्स)

आयुध-विधान-पुं० [सं०] वह विधान जिसमें जनता द्वारा आयुध रखने और उनके प्रयोग से सम्बन्ध रखनेवाले नियम रहते हैं। (आर्म्स ऐक्ट)

आयुधीय-वि० [सं०] आयुधों से सम्बन्ध रखनेवाला। शस्त्रों का।

पुं० युद्ध में काम आनेवाले अस्त्र-शस्त्र और उनके सभी आवश्यक उपकरण। जैसे-गोला-बारूद, बन्दूकें, तोपें आदि। (एम्युनिशन)

आयुर्वेद-पुं० [सं०][वि० आयुर्वेदीय] आयु संबंधी शास्त्र। चिकित्सा-शास्त्र।

आयुष्मान्-वि० [सं०] [स्त्री० आयुष्मती] दीर्घजीवी। चिरजीवी।

आयुष्य-पुं० [सं०] आयु। उमर।

आयोग-पुं० [सं०] १. राज्य की आज्ञा से किसी कार्य, विशेषतः सैनिक कार्य के लिए किसी व्यक्ति या व्यक्तियों की होनेवाली नियुक्ति। २. इस प्रकार नियुक्त होनेवाले व्यक्तियों का समूह। (कमीशन; उक्त दोनों अर्थों के लिए)

आयोजन-पुं० [सं०] [स्त्री० आयोजना, कर्त्ता आयोजक, वि० आयोजित] १. किसी को किसी कार्य में लगाना। नियुक्ति। २. किसी काम के लिए पहले से किया जानेवाला प्रबन्ध। ३. उद्योग। ४. सामग्री।

आरंभ-पुं० [सं०] कोई काम हाथ में लेकर उसके पहले अंश का सम्पादन या

प्रवर्त्तन करना। २. किसी कार्य, व्यापार आदि का पहलेवाला अंश या भाग। शुरू का हिस्सा। आदि। ३. शुरू होने की क्रिया या भाव। उत्पत्ति।

आरंभतः–क्रि॰ वि॰ [सं॰] १. बिलकुल आरंभ से। ठीक पहले से। २. बिलकुल नये सिरे से। (एब-इनीशियो)

आरंभना*–अ॰ [सं॰ आरंभ] आरंभ या शुरू होना।

स॰ शुरू करना। काम में हाथ लगाना।

आरंभिक–वि॰ [सं॰] १. आरंभ का। शुरू का। पहले का। २. कोई काम करने से पहले, उसकी तैयारी, व्यवस्था आदि से सम्बन्ध रखनेवाला। प्रारंभिक। (प्रिलिमिनरी)

आर–स्त्री॰ [सं॰ अल् = डंक] १. लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी रहती है। अनी। पैनी। २. नर मुरगे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३. बिच्छू, बर्रें या मधुमक्खी आदि का डंक।

स्त्री॰ [हिं॰ अड़] जिद। हठ।

पुं॰ [सं॰] १. किनारा। सिरा। २. इस ओर का या अपनी ओर का सिरा या पार्श्व।

यौ॰–आर-पार।

आरक्त–वि॰ [सं॰] १. ललाई लिये हुए। कुछ लाल। २. लाल।

आरक्षिक–वि॰ [सं॰] आरक्षी विभाग से सम्बन्ध रखनेवाला। पुलिस का।

आरक्षिक क्रिया–स्त्री॰ [सं॰] वह कार्य या कार्रवाई जो कुछ परिमित स्वतंत्रता का भोग करनेवाले किसी क्षेत्र में वहाँ की अव्यवस्था, उपद्रव आदि दूर करने के लिए किसी वरिष्ठ राज-सत्ता के द्वारा की जाती है। (पुलिस ऐक्शन)

आरक्षिक बल–पुं॰ [सं॰] राज्य या शासन का वह बल या शक्ति जो आरक्षियों और उनके अधिकारियों के रूप में होती है। सारी आरक्षिक संस्था। (पुलिस फोर्स)

आरक्षी–पुं॰ [सं॰] १. वह विभाग जिसका काम देश में शान्ति बनाये और अपराधियों आदि को पकड़ यालय के सामने उपस्थित करना है (पुलिस) २. इस विभाग का चारी। ३. इस विभाग के कर्त्तव्य और

आरण्यक–वि॰ [सं॰] [स्त्री रण्यकी] वन का। जंगली।

पुं॰ [सं॰] वेदों की शाखा का जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विव उनके लिए उपदेश हैं।

आरत*–वि॰ दे॰ 'आर्त्त'।

आरती–स्त्री॰ [सं॰ आरात्रिक किसी मूर्त्ति के सामने दीपक नीरांजन। (षोडशोपचार पूजन वह पात्र जिसमें बत्ती रखकर आ जाती है। ३. वह स्तोत्र जो आ समय पढ़ा जाता है।

आरन*–पुं॰ [सं॰ अरण्य] वन।

आर-पार–पुं॰ [सं॰ आर = इ किनारा + पार = उधर का किनारा] वह किनारा। यह छोर और वह छोर।

क्रि॰ वि॰ [सं॰] एक किनारे या दूसरे किनारे या सिरे तक। जैसे- जाना या छेद होना।

आरबल–पुं॰ दे॰ 'आयुर्बल'। (प

आरब्ध–वि॰ [सं॰] आरम्भ किया

आरभटी–स्त्री॰ [सं॰] १. क्रोध उग्र भावों की चेष्टा। २. नाटक वृत्ति जिसमें संग्राम, क्रोध, इन्द्रजाल का वर्णन या प्रदर्शन होता है और व्यवहार रौद्र, भयानक और वीभत्स होता है।

आरस*–पुं॰ [सं॰ आलस्य] प्रकार का, विशेषतः सुख भोग के आनेवाला आलस्य।

पुं॰ [सं॰ आदर्श] दर्पण। शीशा

स्त्री॰ दे॰ 'आरसी'। (परि॰)

आरा–पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ अल्पा॰

लोहे की वह दाँतीदार पटरी जिससे लकड़ी
ारी जाती है। २. लकड़ी की चौड़ी
टरी जो पहिये की गड़ारी और पुट्ठी के
च जड़ी रहती है।

राजी–स्त्री० [अ०] १. भूमि। जमीन।
खेत।

ाधक–वि० [सं०] [स्त्री० आ-
धिका] उपासक। पूजा करनेवाला।

ाधन–पुं० [सं०] [वि० आराधक,
राधित, आराधनीय, आराध्य] १. किसी
पूज्य या कल्याणकारक मानकर की
नेवाली उसकी सेवा, पूजन, चिन्तन
ादि। उपासना। (वरशिप) २. प्रसन्न
ना। तोषण।

ाधना–स्त्री० दे० 'आराधन'।
[सं० आराधन] १. उपासना करना।
ना। २. संतुष्ट करना। प्रसन्न करना।

ाधनीय–वि० [सं०] आराधना
ने के योग्य। पूज्य। उपास्य।

ाधित–वि० [सं०] जिसकी आ-
ना की जाय।

ाध्य–वि० = आराधनीय।

ाम–पुं० [सं०] बाग। उपवन।
[फा०] १. चैन। सुख। २. चंगा-
। स्वास्थ्य। ३. थकावट मिटाना।
लेना। विश्राम।
[फा०] चंगा। तन्दुरुस्त। स्वस्थ।

ाम-कुरसी–स्त्री० [फा० + अ०] एक
र की लम्बी कुरसी।

ी–स्त्री० [हिं० आरा का अल्पा०]
लकड़ी चीरने का बढ़ई का एक
ार। छोटा आरा। २. लोहे की कील
बैल हाँकने के पैने में लगी रहती है।
० [सं० आर = किनारा] १. ओर।
क। २. कोर। सिरा।

ढ़–वि० [सं०] [भाव० आरूढ़ता]
चढ़ा हुआ। सवार। २. किसी बात
जमा हुआ। दृढ़। स्थिर। ३. सन्नद्ध।

तत्पर। उतारू।

आरोगना*–स० [सं० आ + रोगना (रुज् = हिंसा)।] भोजन करना। खाना।

आरोग्य–वि० [सं०] रोग-रहित। स्वस्थ।

आरोधना*–स० [सं० आ + रुंधन] रोकना। छेंकना। आड़ करना।

आरोप–पुं० [सं०] १. स्थापित करना। २. अधिकारपूर्वक, कर, शुल्क, आदाय आदि के रूप में लगाना, लेना या उगाहना। (लेवी) ३. किसी के विषय में यह कहना कि इसने ऐसा किया है। (एलीगेशन) जैसे–दोषारोप। (चार्ज) **मुहा०– आरोप करना** = साधारण रूप से किसी का यह कहना कि अमुक व्यक्ति ने यह दोष या अपराध किया है। **आरोप लगाना** = आरंभिक जाँच या गवाही के बाद न्यायालय का यह स्थिर करना कि अभियुक्त इस अपराध का कर्त्ता हो सकता है। दफा लगाना।
४. एक पेड़ को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ५. एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के धर्म या गुण की कल्पना।

आरोपक–वि० [सं०] आरोप या आरोपण करनेवाला। लगानेवाला।

आरोपण–पुं० दे० 'आरोप'।

आरोपना*–स० [सं० आरोपण] १. लगाना। २. स्थापित करना।

आरोप-फलक–पुं० [सं०] न्यायालय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ वह फलक या पत्र जिसमें किसी पर लगाये हुए अभियोगों या आरोपों की सूची या विवरण होता है। (चार्ज शीट)

आरोपित–वि० [सं०] १. लगाया हुआ। स्थापित किया हुआ। २. रोपा हुआ।

आरोह–पुं० [सं०] [वि० आरोही] १. ऊपर की ओर बढ़ना। चढ़ाव। २. आक्रमण। चढ़ाई। ३. घोड़े, हाथी आदि

पर चढ़ना। सवारी। ४. वेदान्त में क्रमानुसार जीवात्मा की ऊर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति। ५. कारण से कार्य्य का होना या पदार्थों का एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचना। जैसे–बीज से अंकुर। ६. क्षुद्र और अल्प चेतनावाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति। विकास। (आधुनिक) ७. संगीत में नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचे स्वर निकालना।

आरोहण–पुं० [सं०] [वि० आरोहित] १. चढ़ना। सवार होना।

आरोही–वि० [सं० आरोहिन्] [स्त्री० आरोहिणी] चढ़ने या ऊपर जानेवाला। पुं० १. संगीत में वह स्वर साधन जो षड़ज से लेकर निषाध तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाता है। 'अवरोही स्वर-साधन' का उलटा। २. सवार।

आर्जव–पुं० [सं०] १. सीधापन। ऋजुता। २. सरलता। सुगमता। ३. व्यवहार की सरलता और शुद्धता। ईमानदारी। (ऑनेस्टी)

आर्त्त–वि० [सं०] [भाव० आर्त्तता] १. पीड़ित। चोट खाया हुआ। २. दुःखी। कातर। ३. अस्वस्थ।

आर्त्त-नाद–पुं० [सं०] दुःख-सूचक शब्द। पीड़ा के समय निकली हुई ध्वनि।

आर्थिक–वि० [सं०] १. धन-सम्बन्धी। द्रव्य-सम्बन्धी। रुपये-पैसे का। माली। (पिक्यूनरी) २. अर्थ-शास्त्र सम्बन्धी। (इकॉनामिक)

आर्थी–स्त्री० दे० 'कैतवापह्नुति'।

आर्द्र–वि० [सं०] [भाव० आर्द्रता] १. गीला। ओदा। तर। २. सना। लथपथ।

आर्द्रा–स्त्री० [सं०] १. सत्ताइस नक्षत्रों में से छठा नक्षत्र। २. आषाढ़ का आरम्भ, जब सूर्य्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है।

आर्य–वि० [सं०] [स्त्री० आर्य्या, भाव० आर्यत्व] १. मान्य। पूज्य। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। पुं० [सं०] मनुष्यों की एक प्रसि जिसने संसार में बहुत पहले सभ्य की थी। भारतवासी इसी जाति इसकी शाखाएँ एशिया और दूर दूर तक फैली हैं।

आर्य-पुत्र–पुं० [सं०] पति को या सम्बोधन करने का संकेत।

आर्य-समाज–पुं० [सं०] [वि समाजी] एक धार्मिक समाज संस्थापक स्वामी दयानन्द थे। इस के लोग मूर्त्ति-पूजा या पौराणिक आदि नहीं मानते।

आर्य-समाजी–वि० [हिं० आर्य वह जो आर्य-समाज के सिद्धा अनुयायी हो।

आर्या–स्त्री० [सं०] १. पार्व सास। ३. दादी। पितामही। प्रकार का अर्द्ध-मात्रिक छन्द।

आर्यावर्त्त–पुं० [सं०] उत्तरीय

आर्ष–वि० [सं०] १. ऋषि-संबं ऋषि-प्रणीत। ऋषिकृत। ३. वैदि

आर्ष-प्रयोग–पुं० [सं०] शब्दों व्यवहार जो व्याकरण के नियम के हो, पर प्राचीन ग्रन्थों में मिले।

आर्ष-विवाह–पुं० [सं०] आठ के विवाहों में से तीसरा, जिसमें वर का पिता दो बैल शुल्क में लेता था

आलंकारिक–वि० [सं०] १. सम्बन्धी। अलंकार का। २. तरह से नहीं, बल्कि अलंकार-पूर्ण कहा गया हो। अलंकार-युक्त। (३. अलंकार जाननेवाला। ४. जावट के लिए बेल-बूटे आदि अलंकरण-युक्त। (फ्लोरिड)

आलंब–पुं० [सं०] १. अवलम्ब श्रय। सहारा। २. शरण।

आलंबन–पुं० [सं०] [वि० आ

सहारा। आश्रय। अवलंब। २. रस
वह तत्व जिसके अवलम्ब से रस की
पत्ति होती है। जैसे-शृंगार-रस में नायक
र नायिका, रौद्र रस में शत्रु। ३.
धन। कारण।

लकस-पुं० दे० 'आलस्य'।

-जाल-वि० [हिं० आल = झंझट]
का। ऊट-पटाँग।

लन-पुं० [?] १. दीवार की मिट्टी में
लाया जानेवाला घास-भूसा। २. साग में
लाया जानेवाला आटा या बेसन।

लपीन-स्त्री० [पुर्त० आलफ़िनेट]
घुंडीदार सूई जिससे कागज आदि के
ड़े जोड़ते या नत्थी करते हैं।

लमारी-स्त्री० दे० 'अलमारी'।

लय-पुं० [सं०] १. घर। मकान।
स्थान।

वाल-पुं० [सं०] वृक्षों के नीचे का
ला। थाँवला।

लस-पुं० दे० 'आलस्य'।

लसी-वि० [हिं० आलस] सुस्त।
हिल।

लस्य-पुं० [सं०] कार्य करने में
त्साह। सुस्ती। काहिली।

ला-पुं० [सं० आलय] दीवार में का
खा।

[अ०] सबसे बढ़िया। श्रेष्ठ।

[अ०] औजार। हथियार।

० [सं० आर्द्र] [स्त्री० आली]
ला।

लान-पुं० [सं०] १. हाथी बाँधने का
, रस्सा या सिक्कड़। २. बन्धन।

लाप-पुं० [सं०] [वि० आलापक,
लापित] १. कथोपकथन। संभाषण।
त-चीत। २. संगीत में स्वरों का विस्तार-
क साधन। तान।

लापना-स० दे० 'अलापना'।

लापी-वि० [सं० आलापिन्] [स्त्री० आलापिनी] १. बोलनेवाला। २. आलाप करनेवाला। तान लगानेवाला। ३. गानेवाला।

आलिंगन-पुं० [सं०] [वि० आलिंगित] गले से लगाना। परिरंभण।

आलि-स्त्री० [सं०] १. सखी। सहेली। २. भ्रमरी। ३. पंक्ति। अवली।

आली-स्त्री० [सं० आलि] सखी।
वि० [अ०] बड़ा। उच्च। श्रेष्ठ।

आलू-पुं० [सं० आलु] एक प्रकार का कन्द जो खाया जाता है।

आलूचा-पुं० [फा० आलूचः] एक प्रकार के वृक्ष का खटमीठा फल जो खाया जाता है।

आलू बुखारा-पुं० [फा०] आलूचे की जाति के एक प्रकार के वृक्ष का फल जो सुखाकर रक्खा जाता और औषध के काम में आता है।

आलेख-पुं० [सं०] १. लिखावट। लिपि। २. रेखाओं का ऐसा अंकन जो किसी प्राकृतिक घटना या लौकिक व्यवहार में समय-समय पर होते रहनेवाले परिवर्त्तन, उतार-चढ़ाव आदि का सूचक होता है। (ग्राफ) जैसे-जन्म-मरण के लेखे अथवा विदेशों से होनेवाले व्यापार का आलेख।

आलेखन-पुं० [सं०] [वि० आलैखिक, आलिखित, संज्ञा आलेखक] १. लिखना। लिपि-बद्ध करना। २. चित्र आदि अंकित करना। (विशेषतः रेखाओं द्वारा) (स्केचिंग)

आलेख्य-पुं० [सं०] १. चित्र। २. वह अंक़न जिसमें रूप-रेखाएँ मात्र हों। (स्केच)
वि० लिखने के योग्य।

आलैखिक-वि० [सं०] आलेख सम्बन्धी।

आलोक-पुं० [सं०] [वि० आलोक्य, आलोकित] १. प्रकाश। चाँदनी। उजाला। २. चमक। ज्योति। ३. किसी विषय पर लिखी हुई टिप्पणी या सूचना। (नोट)

आलोक-चित्रण-पुं० [सं०] वह प्रक्रिया जिसमें प्रकाश में रहनेवाली वस्तु की छाया लेकर चित्र बनाया जाता है। (फोटोग्राफी)

आलोकन–पुं० [सं०] १. प्रकाश डालना। २. चमकाना। ३. दिखलाना।

आलोक-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र या लेख जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए स्मारक के रूप में लिखा गया हो। जैसे–किसी सभा, मंडली आदि के उद्देश्यों और व्यवस्था से सम्बन्ध रखनेवाला पत्र या पुस्तिका। (मेमोरैन्डम)

आलोकित–वि० [सं०] १. जिसपर प्रकाश पड़ रहा हो। २. चमकता हुआ।

आलोचक–वि० [सं०] [स्त्री० आलोचिका] १. देखनेवाला। २. जो आलोचना करे।

आलोचन–पुं० [सं०] १. दर्शन। २. गुण-दोष का विचार। विवेचन। ३. समालोचना।

आलोचना–स्त्री० [सं०] १. दे० 'आलोचन'। २. दे० 'समालोचना'। ३. किसी बात या कार्य के गुण-दोष आदि के सम्बन्ध में प्रकट किया जानेवाला विचार। टीका-टिप्पणी। (कॉमेन्ट्स)

आलोड़न–पुं० [सं०] [वि० आलोड़ित] १. मथना। हिलोरना। २. विचार।

आलोप–पुं० दे० 'उत्सादन'।

आल्हा–पुं० [देश०] १. ३१ मात्राओं का एक छन्द। वीर छन्द। २. महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था। ३. बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णन।

आव*–स्त्री० = आयु।

आवज–पुं० [सं० वाद्य] ताशा नाम का बाजा।

आवटना*–पुं० [सं० आवर्त्त] १. हलचल। उथल-पुथल। अस्थिरता। २. संकल्प-विकल्प। ऊहापोह।

आवधिक–वि० [सं०] किसी अवधि या सीमा से सम्बन्ध रखनेवाला। अवधि का।

आवन*–पुं० [सं० आगमन] आगमन। आना।

आव-भगत–स्त्री० [हिं० आना आदर-सत्कार। खातिर-दारी।

आवरण–पुं० [सं०] [वि० आवृत] १. वह चीज जिसकी कोई दूसरी चीज छिपाई जाय। या ढकनेवाली वस्तु। आच्छादन परदा। (कर्टेन) २. किसी वस्तु से या चारो ओर से ढकनेवाली कोई (एनवेलप) ३. वह चीज जिस चीज ढकी जाय या कोई मुँह जाय। ढकना। ४. वह कपड़ा वस्तु के ऊपर लपेटा हो। बेठन। ५. ६. चलाये हुए अस्त्र-शस्त्र को करनेवाला अस्त्र।

आवरण-पत्र–पुं० [सं०] वह किसी पुस्तक के ऊपर उसकी रक्षा मढ़ा रहता है और जिसपर उसके लेखक का नाम रहता है। (टाइ

आवरण-पृष्ठ–पुं० दे० 'आवरण-प

आवरा*–वि० [सं० अवर] १. २. विमुख। विपरीत। ३. मलिन।

आवरी*–स्त्री० [?] व्याकुलता।

आवर्जन–पुं० [सं०] [वि० आ छोड़ देना। परित्याग।

आवर्त्त–पुं० [सं०] १. पानी का २. ऐसा बादल जिससे पानी न एक प्रकार का रत्न। राजावर्त्त। वि० घूमा हुआ। मुड़ा हुआ।

आवर्त्तक–वि० [सं०] १. चक्कर खानेवाला। २. कुछ निश्चि पर बार बार होनेवाला। जैसे–अनुदान। (रेकरिंग ग्रान्ट)

आवर्त्तन–पुं० [सं०] [वि० आ आवर्त्तित] १. चारो ओर घूम चक्कर लगाना। चक्कर। फेरा। २. मथना। हिलाना। ३. किसी बार बार होना। (रिपीटीशन) घटना या कार्य का फिर से या

टित होना। (रेकरेन्स)
वर्त्ती-वि० दे० 'आवर्त्तक'।
वली-स्त्री० दे० 'अवली'।
वश्यक-वि० [सं०] १. जो अवश्य
र शीघ्र होना चाहिए। जरूरी। सापेक्ष।
अर्जेन्ट) २. जिसके बिना काम न
। प्रयोजनीय। (नेसेसरी)
-आवश्यक और उचित = जिसके
ा काम न चले और जिसे करना ठीक
कर्त्तव्य भी हो। (एक्सपीडिएन्ट)
वश्यकता-स्त्री० [सं०] १. जरूरत।
पेक्षा। २. प्रयोजन। मतलब।
वश्यकीय-वि० दे० 'आवश्यक'।
वस*-स्त्री० दे० 'ओस'।
वह-वि०[सं०] १. लानेवाला। २. उत्पन्न
आविर्भाव करनेवाला। जैसे—भयावह।
१. आकाश के सात स्कंधो में से पहले
ध की वायु, जिससे बिजली, ओले आदि
उत्पत्ति मानी गई है। २. दे० 'वातावरण'।
ागमन-पुं० [हिं० आवा = आना +
गमन] १. आन-जाना। आमद-रफ्त्।
बार बार मरना और जन्म लेना।
ाज-स्त्री० [फा०, मि० सं०
वद्य] १. शब्द। ध्वनि। नाद। २.
ी। वाणी। स्वर।
हा०-**आवाज उठाना** = किसी के वि-
कहना। **आवाज देना** = पुकारना।
वाज बैठना = गले के कफ के कारण
र का साफ न निकलना।
ा-जाही-स्त्री० [हिं० आना + जाना]
-बार आना-जाना।
वारा-वि० [फा०] [भाव० आवारगी]
व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला। निकम्मा।
बे-ठौर-ठिकाने का। निठल्लू। ३. बद-
ाश। लुच्चा।
वास-पुं० [सं०] [वि० आवासिक]
. रहने की जगह। निवास-स्थान। (एबोड)
. मकान। घर। ३. स्थायी रूप से बसकर रहने की जगह। (रेजिडेन्स)

आवासिक-वि० [सं०] स्थायी रूप से किसी स्थान पर रहने या बसनेवाला। (रेजिडेन्ट)

आवाहक-पुं० [सं०] आवाहन करने या बुलानेवाला।

आवाहन-पुं० [सं०] १. किसी को पुकारने या बुलाने का कार्य। २. निमंत्रित करना। बुलाना।

आविर्भाव-पुं० [सं०] [वि० आविर्भूत] १. सामने आना। प्रकट होना। २. उत्पत्ति। ३. प्रकट या उत्पन्न होकर सामने आना। (एडवेन्ट)

आविर्भूत-वि० [सं०] १. प्रकाशित। प्रकटित। २. उत्पन्न। ३. सामने आया हुआ। उपस्थित।

आविष्कर्त्ता-वि० [सं०] आविष्कार करनेवाला।

आविष्कार-पुं० [सं०] [वि० आविष्कारक, आविष्कर्त्ता, आविष्कृत] १. प्रकट होना। २. कोई ऐसी नई वस्तु तैयार करना या नई बात ढूँढ़ निकालना जो पहले किसी को मालूम न रही हो। किसी बात का पता पहले-पहल लगाना। ईजाद। (डिस्कवरी)

आविष्कृत-वि० [सं०] १. प्रकाशित। प्रकटित। २. पता लगाया हुआ। जाना हुआ। ३. ईजाद किया हुआ।

आवृत-वि० [सं०] [स्त्री० आवृता] १. छिपा हुआ। ढका हुआ। २. लपेटा या घिरा हुआ।

आवृत्ति-स्त्री० [सं०] १. बार बार किसी बात का अभ्यास। २. पढ़ना। ३. किसी पुस्तक का पहली बार या फिर से ज्यों का त्यों छपना।

आवेग-पुं० [सं०] १. चित्त की प्रबल वृत्ति। मन की झोंक। २. अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से मन की वि-

कलता। घबराहट। ३. मनोविकार। ४. सहसा मन में उत्पन्न होनेवाला वह विकार जो मनुष्य को बिना सोचे समझे कुछ कर डालने में प्रवृत्त करता है। (इम्पल्स)

आवेदक-वि० [सं०] आवेदन करनेवाला।

आवेदन-पुं० [सं०] [वि० आवेदनीय, आवेदित, आवेदी, आवेद्य] १. अपनी दशा सूचित करना। २. किसी काम के लिए की जानेवाली प्रार्थना। निवेदन।

आवेदन-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिस-पर कोई अपनी दशा या प्रार्थना लिखकर किसी को सूचित करे। अरजी।

आवेश-पुं० [सं०] १. व्याप्ति। संचार। दौरा। २. प्रवेश। ३. मन की प्रेरणा। ४. झोंक। वेग। जोश। ५. भूत-प्रेत की बाधा। ६. मृगी रोग।

आवेष्टन-पुं० [सं०] [वि० आवेष्टित] १. छिपाने या ढकने का कार्य्य। २. छिपाने, लपेटने या ढकने की वस्तु।

आशंका-स्त्री० [सं०] [वि० आशंकित] १. डर। भय। २. शक। सन्देह। ३. अप्रिय या अनिष्ट की सम्भावना से मन में होनेवाला भय। भीति। खुटका। (एप्रिहेन्शन)

आशंसा-स्त्री० [सं०] [वि० आशंसित] १. आशा। उम्मेद। २. इच्छा। कामना। वासना। ३. सन्देह। शक। ४. प्रशंसा। ५. आदर-सत्कार। अभ्यर्थन।

आशय-पुं० [सं०] १. अभिप्राय। मतलब। तात्पर्य। २. वासना। इच्छा। ३. उद्देश्य। नीयत। (इन्टेन्शन)

आशा-स्त्री० [सं०] मन का यह भाव कि अमुक कार्य हो जायगा या अमुक पदार्थ हमें मिल जायगा।

आशातीत-वि० [सं०] जितनी आशा की गई हो, उससे अधिक। जैसे-आशातीत सफलता या लाभ।

आशा-मुखी-वि० [सं० आशा + मुख] किसी आशा से किसी की ओर देखनेवाला।

आशावाद-पुं० [सं०] [वि० आ
यह सिद्धान्त कि सदा अच्छी
आशा रखनी चाहिए। (ऑप्टिमि

आशावादी-वि० [सं० आशा
सदा अच्छी बातों की आशा रखे
(ऑप्टिमिस्ट)

आशिक-पुं० [अ०] प्रेम क
मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आसक्त।

आशिष-स्त्री० [सं०] १. आ
आशीष। दुआ। २. एक अलंकार
अप्राप्त वस्तु के लिए प्रार्थना होती है

आशीर्वाद-पुं० [सं०] कल्याण या
कामना का सूचक कथन। आशिष।

आशु-क्रि० वि० [सं०] शीघ्र।

आशु कवि-पुं० [सं०] वह
तत्क्षण या बहुत जल्दी जल्दी
करता हो।

आशुग-वि० [सं०] बहुत जल्दी
या शीघ्र चलनेवाला। जैसे-आशुग
(एक्सप्रेस ट्रेन) २. (पत्र, तार
जो पानेवाले के पास बहुत जल्दी प
जाने को हो। (एक्सप्रेस)
पुं० १. वायु। हवा। २. बाण। तीर

आशुतोष-वि० [सं०] शीघ्र सन्तु
वाला। जल्दी प्रसन्न होनेवाला।
पुं० शिव। महादेव।

आश्चर्य्य-पुं० [सं०] [वि० आश्च
१. मन का वह भाव जो किसी
विलक्षण या असाधारण बात को
सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न
है। अचम्भा। विस्मय। ताज्जुब
रस के नौ स्थायी भावों में से एक।

आश्रम-पुं० [सं०] [वि० आ
१. ऋषियों और मुनियों का
स्थान। तपोवन। २. साधु-संत के
की जगह। ३. विश्राम का स्थान।
की जगह। ४. हिन्दुओं के जीवन
चार अवस्थाएँ-ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वा

र संन्यास ।

श्रय-पुं० [सं०] [वि० आश्रयी, श्रित] १. आधार । सहारा । अव-य । २. आधार वस्तु । वह वस्तु जिसके रे पर दूसरी वस्तु हो । ३. शरण । ह । ४. जीवन-निर्वाह का आधार । रा । ५. घर ।

श्रव-पुं० [सं०] १ नदी । २. अ-ध । कसूर । ३. वह जो किसी के बन्धन कारण ह ।

श्रित-वि० [सं०] १. किसी के धार, आश्रय या सहारे पर टिका हुआ । रा हुआ । (बेस्ड) २. किसी के आश्रय अधीन या भरोसे रहनेवाला । (डि-डेन्ट) ३. जो अल्प-वयस्क या और किसी समर्थता के कारण किसी दूसरे की देख-में रहता हो । किसी प्रतिपालक के श्रय या अधीन में रहनेवाला । (वार्ड)

श्वस्त-वि० [सं०] १. जिसे आश्वा-न मिला हो । जिसे तसल्ली दी गई हो । जिसकी घबराहट, बेचैनी या डर दूर गया हो ।

श्वासन-पुं० [सं०] [वि० आश्वस-य, आश्वासित, आश्वास्य] दिलासा । ल्ली । सान्त्वना ।

श्विन-पुं० [सं०] भारतीय महीनों में द्रपद के बाद और कार्त्तिक के पहले का हीना । कुआर का महीना ।

षाढ़-पुं० [सं०] जेठ के बाद का हीना । असाढ़ ।

संग-पुं० [सं०] १. साथ । संग । २. गाव । सम्बन्ध । ३. आसक्ति । (एटैचमेन्ट)

संजन-पुं० [सं०] १. दे० 'आसंग' । . न्यायालय की ओर से किसी देनदार, अपराधी या ऋणी की सम्पत्ति पर वह अधिकार जो ऋण या अर्थ-दंड चुकाने के लिए होता है । कुर्की । (एटैचमेन्ट)

संजित-वि० [सं०] (वह सम्पत्ति) जिसका आसंजन हुआ हो । कुर्क किया हुआ । (एटैच्ड)

आसंदी-स्त्री० [सं०] काठ की छोटी चौकी ।

आस-स्त्री० [सं० आशा] १. आशा । उम्मेद । २. लालसा । कामना । ३. सहारा । आधार । भरोसा ।

आसकत-स्त्री०[सं० आसक्ति] [वि० आसकती, क्रि० असकताना] सुस्ती । आलस्य ।

आसक्त-वि० [सं०] १. अनुरक्त । लीन । लिप्त । २. मोहित । लुब्ध । मुग्ध ।

आसक्ति-स्त्री० [सं०] १. अनुरक्ति । लिप्तता । २. लगन । चाह । प्रेम ।

आसन-पुं० [सं०] बैठने का ढंग या भाव । । बैठने का ढब । स्थिति । बैठक ।

मुहा०–आसन उखड़ना = अपनी जगह से हिल जाना । **आसन जमना** = बैठने में स्थिरता आना । **आसन डिगना या डोलना** = (क) बैठने में स्थिर न रहना । (ख) चित्त चंचल होना । मन डोलना । **आसन देना** = सत्कारार्थ बैठने के लिए कोई वस्तु सामने रखना या बतलाना । २. वह वस्तु जिसपर बैठें । जैसे–चौकी, कुरसी आदि । ३. निवास-स्थान ।

आसन्न-वि० [सं०] १. निकट आया हुआ । समीपस्थ । प्राप्त । २. अनुमान से लगभग ठीक या वास्तविक के बहुत कुछ पास तक पहुँचता हुआ । (एप्रॉक्सिमेट)

आसन्न-भूत-पुं० [सं०] भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्त्तमान से उसकी समीपता पाई जाती है । जैसे–मैं हो आया हूँ ।

आस-पास-क्रि० वि० [अनु० आस + हिं० पास] चारो ओर । इधर-उधर ।

आसमान-पुं० [फा०] [वि० आसमानी] १. आकाश । गगन ।

मुहा०–आसमान के तारे तोड़ना = कठिन या असम्भव काम करना । **आसमान पर चढ़ना** = शेखी करना । घमंड

दिखाना। **आसमान पर चढ़ाना** = बहुत प्रशंसा करके मिजाज बिगाड़ देना। **आसमान में थिगली लगाना** = विकट काम करना। **दिमाग आसमान पर होना** = बहुत अभिमान होना।
२. स्वर्ग। देवलोक।

आसमानी-वि० [फा०] १. आकाश संबंधी। आकाशीय। आसमान का। २. आकाश के रंग का। हलका नीला।

आसरना*-अ० [हिं० आसरा] आश्रय या सहारा लेना।

आसरा-पुं० [सं० आश्रय] १. सहारा। आधार। अवलम्ब। २. भरण-पोषण की आशा। भरोसा। आस। ३. किसी से सहायता पाने का निश्चय। ४. जीवन या कार्य्य-निर्वाह का आधार। आश्रयदाता। ५. सहायक। ६. शरण। ७. प्रतीक्षा। प्रत्याशा। ८. आशा।

आसव-पुं० [सं०] १. वह मद्य जो फलों के खमीर को निचोड़कर बनाया जाता है। २. द्रव्यों का खमीर छानकर बनाया हुआ औषध। ३. अर्क।

आसा-पुं० [अ० असा] सोने या चाँदी का वह डंडा जो राजा-महाराजाओं अथवा बरात और जलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं।
*स्त्री० = आशा।

आसान-वि० [फा०] [भाव० आसानी] सहज। सरल।

आसार-पुं [अ०] लक्षण। चिह्न।
*पुं० [?] १. वृष्टि। वर्षा। २. आधिक्य। अधिकता।

आसारद-वि० [हिं० आसार] वर्षा करनेवाला। वर्षक।

आसीन-वि० [सं०] बैठा हुआ। स्थित।

आसीस-स्त्री० दे० 'आशिष'।

आसु*-पुं० [?] प्राण। जीवनी शक्ति।

आसुर-वि० [सं०] असुर-संबंधी।
यौ०-आसुर विवाह = वह
कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर
*पुं० दे० 'असुर'।

आसुरी-वि० [सं०] असुर-संबंधी का। राक्षसी।
यौ०-आसुरी चिकित्सा =
चिकित्सा। चीर-फाड़। **आसुरी मा**
चक्कर में डालनेवाली राक्षसों
की चाल।
स्त्री० असुर की स्त्री।

आसोज-पुं० [सं० अश्वयुज्]
मास। क्वार का महीना।

आसौं*-क्रि० वि० [सं० इह+
इस वर्ष। इस साल।

आस्तरण-पुं० [सं०] १. शय्या
बिछौना। बिस्तर। २. दुपट्टा।

आस्तिक-वि० [सं०] [भाव० आस्ति
१. वेद, ईश्वर और परलोक
विश्वास रखनेवाला। २. ईश्वर का
माननेवाला। (थीइस्ट)

आस्तिकता-वि० [सं०] १. वेद,
परलोक आदि पर विश्वास रखने का
२. ईश्वर का अस्तित्व मानने का
(थीइज्म)

आस्तीन-स्त्री० [फा०] पहनने के
का वह भाग जो बाँह को ढकता है।
मुहा०-आस्तीन का साँप = वह
जो मित्र होकर शत्रुता करे।

आस्था-स्त्री० [सं०] १. पूज्य
श्रद्धा। २. सभा। समाज। ३. आल
सहारा।

आस्थान-पुं० [सं०] १. बैठने की
बैठक। २. सभा। दरबार।

आस्पद-पुं० [सं०] १. स्थान।
२. आधार। अधिष्ठान। ३.
कृत्य। ४. पद। प्रतिष्ठा। ५. अल्ल।
नाम। ६. कुल या जाति।

आस्फालन-पुं० [सं०] [वि०

त] १. आत्म-श्लाघा । डींग । २.
र्प । ३. उछल-कूद ।

स्वादन-पुं० [सं०] [वि० आस्वादनीय,
स्वादित] चखना । स्वाद लेना ।

ह-अव्य० [सं० अहह] पीड़ा, शोक,
ख, खेद या ग्लानि का सूचक अव्यय ।
० १. दुःख या क्लेश-सूचक शब्द ।
ठंढा साँस । उसास ।
हा०-**किसी की आह पड़ना** = शाप
ना । किसी को दुःख देने का फल मि-
ना । **आह भरना** = ठंढा साँस लेना ।
० [सं० साहस] १. साहस । हिम्मत ।
, बल । जोर ।

हट-स्त्री० [हिं० आ = आना + हट
प्रत्य०)] १. वह शब्द जो चलने में पैर
या दूसरे अंगों से होता है । आने का
ब्द । पाँव की धमक । खटका । २. किसी
ान पर किसी के रहने के कारण होनेवाला
ब्द । ३. पता । टोह ।

हत-वि० [सं०] [भाव० आहति] १.
ोट खाया हुआ । घायल । जख्मी ।
ो०-**हताहत** = मरे हुए और घायल ।
. वह संख्या जिसको गुणित करें । गुण्य ।

हर*-पुं० [सं० अहः] समय ।
० [सं० आहव] युद्ध । लड़ाई ।

हरण-पुं० [सं०] [वि० आहरणीय,
ाहृत] १. छीनना । हर लेना । २.
ोई वस्तु दूसरे स्थान पर ले जाना । ३.
हण । लेना ।

हा-अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य या हर्ष-सूचक अव्यय ।

आहार-पुं० [सं०] १. भोजन । खाना । २. खाने की वस्तु ।

आहार-विहार-पुं० [सं०] खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार । रहन-सहन ।

आहार्य-वि० [सं०] १. ग्रहण किया हुआ । २. खाने योग्य ।
पुं० [सं०] नायक और नायिका का एक दूसरे का वेष धारण करना ।

आहि*-अ० [सं० अस्] 'असना' का वर्त्तमान कालिक रूप । है ।

आहिस्ता-क्रि० वि० [फा०] [भाव० आहिस्तगी] धीरे-धीरे । शनैः शनैः ।

आहुति-स्त्री० [सं०] १. मंत्र पढ़कर देवता केलिए कुछ निश्चित पदार्थ अग्नि में डालना । होम । हवन । २. हवन में डालने की सामग्री । ३. होम-द्रव्य की उतनी मात्रा जो एक बार यज्ञ-कुंड में डाली जाय ।

आहे*-अ० [सं० अस्] 'असना' का वर्त्तमान-कालिक रूप । है ।

आहौं*-अ० 'हूँ' का पुराना अवधी रूप ।

आह्निक-वि० [सं०] नित्य का । दैनिक ।

आह्लाद-पुं० [सं०] [वि० आह्लादक, आह्लादित] आनन्द । खुशी । हर्ष ।

आह्वान-पुं० [सं०] १. बुलाना । बुलावा । पुकार । २. चुनौती । ३. राजा की ओर से बुलावे का पत्र । समन । आकारक । ४. यज्ञ में मंत्र द्वारा देवताओं को बुलाना ।

इ

देव-नागरी वर्ण-माला का तीसरा स्वर,
जिसका दीर्घ रूप 'ई' है । इसका उच्चारण
तालु से होता है और प्रयत्न विवृत होता है ।

गला-स्त्री० [सं०] शरीर में इड़ा नाम
की नाड़ी । (हठ योग)

इंगित-पुं० [सं०] चेष्टा द्वारा अभिप्राय प्रकट करना । इशारा करना । चेष्टा ।
वि० जिसकी ओर इशारा किया जाय ।

इंगुदी-स्त्री० [सं०] १. हिंगोट का पेड़ । २. माल-कँगनी ।

इंच–स्त्री॰ [अं॰] एक फुट का बारहवाँ हिस्सा। तसू। (नाप)

इँचना*–अ॰ दे॰ 'खिंचना'।

इंजन–पुं॰ [अं॰ एंजिन] १. भाप या बिजली से चलनेवाला यंत्र। २. रेल में वह आगेवाली यंत्र-युक्त गाड़ी जो सब गाड़ियों को खींचती है। ३. कल। यंत्र। (क्व॰)

इंजीनियर–पुं॰ [अं॰ एंजीनियर] १. यंत्र की विद्या जाननेवाला। कलों का बनाने, चलाने या मरम्मत करनेवाला। २. शिल्प-विद्या में निपुण। विश्वकर्मा। ३. वह अधिकारी जो सड़कें, इमारतें और पुल आदि अपनी देख-रेख में बनवाने की व्यवस्था करता है।

इंजीनियरी–स्त्री॰ [अं॰ इंजीनियरिंग] १. यंत्र आदि बनाने, सुधारने, चलाने आदि की विद्या या कला। २. इंजीनियर का कार्य या पद।

इँडुआ–पुं॰ [सं॰ कुंडल] कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जो बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं। गेंडुरी।

इंतखाब–पुं॰ [अ॰] १. चुनाव। निर्वाचन। २. पसंद। ३. पटवारी के खाते की नकल।

इंतजाम–पुं॰ दे॰ 'प्रबंध'।

इंदराज–पुं॰ [फा॰] लेखे, बही, पंजी आदि में लिखा या चढ़ाया जाना। निविष्टि। लेखी। (एन्ट्री)

इंदिरा–स्त्री॰ [सं॰] लक्ष्मी।

इंदीवर–पुं॰ [सं॰] १. नील-कमल। नीलोत्पल। २. कमल।

इंदु–पुं॰ [सं॰] १. चंद्रमा। २. कपूर। ३. एक की संख्या।

इंद्र–वि॰ [सं॰] १. ऐश्वर्यवान्। संपन्न। २. श्रेष्ठ। बड़ा। जैसे–नरेन्द्र।

पुं॰ १. एक वैदिक देवता जो पानी बरसाता है। २. देवताओं का राजा।

पद–इंद्र का अखाड़ा = (क) सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं। सजी हुई सभा जिसमें खूब नाच हो। **इन्द्र की परी** = (क) (ख) बहुत सुन्दरी स्त्री।

३. बारह आदित्यों में से एक। ४. मालिक। स्वामी। ५. चौदह की

इंद्रगोप–पुं॰ [सं॰] बीर-बहूटी।

इंद्रजव–पुं॰ [सं॰ इंद्रयव] कुड़ा का बीज।

इंद्र-जाल–पु॰ [सं॰] [वि॰ ऐंद्र जादू के वे आश्चर्यजनक खेल जो समझ में न आवें। जादूगरी।

इंद्रजित्–वि॰ [सं॰] इंद्र को जीतने पुं॰ रावण का पुत्र, मेघनाद।

इंद्रजीत–पुं॰ दे॰ 'इंद्रजित्'।

इंद्र-दमन–पुं॰ [सं॰] नदी के बढ़कर, किसी निश्चित कुंड, ताल वृत्त तक पहुँचना जो एक पर्व जाता है।

इंद्र-धनुष–पुं॰ [सं॰] सात रंगों अर्द्धवृत्त जो वर्षा काल में सूर्य के की दिशा में दिखाई देता है।

इंद्र-नील–पुं॰ [सं॰] नीलम। (र

इंद्रप्रस्थ–पुं॰ [सं॰] एक नगर पांडवों ने खांडव बन जलाकर बसाया

इंद्र-लोक–पुं॰ [सं॰] स्वर्ग।

इंद्राणी–स्त्री॰ [सं॰] १. इन्द्र की शची। २. इंद्रायन।

इंद्रायन–स्त्रीं॰ [सं॰ इंद्राणी] एक जिसको लाल फल देखने में सुन्द खाने में बहुत कड़ुआ होता है। इना

इंद्रासन–पुं॰ [सं॰] १. इंद्र का सिंह २. राज-सिंहासन। ३. वह स्थान सब प्रकार के सुख मिलें।

इंद्रिय–स्त्री॰ [सं॰] १. वह शक्ति बाहरी विषयों का ज्ञान होता है। २. के वे अवयव जिनके द्वारा उक्त

यों का ज्ञान प्राप्त करती है। जैसे—आँख,
न, जीभ, नाक और त्वचा। ज्ञानेन्द्रिय।
वे अंग या अवयव जिनसे कर्म किये जाते
कर्मेंद्रिय। जैसे-वाणी, हाथ, पैर, गुदा,
स्थ। ४. लिंगेन्द्रिय। ५. पाँच की
या।

य-निग्रह-पुं० [सं०] इंद्रियों का वेग
वासना रोकना।

य-लोलुप-वि० [सं०] जिसे इंद्रियों
सुख-भोग की बहुत अधिक लालसा हो।

यातीत-वि० [सं०] जिसका ज्ञान
अनुभव इंद्रियों से न हो सके। अगो-
र। जैसे—आत्मा या ईश्वर।

यारामी*-वि० [हिं० इंद्रिय + अ०
राम] इन्द्रियों का सुख चाहनेवाला।
द्रिय-लोलुप।

यार्थवाद-पुं० [सं०] १. इन्द्रियों के
ख भोगने की वृत्ति। २. वह दार्शनिक
द्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि हमें
प्रकार के ज्ञान इन्द्रियों की अनुभूति से
प्राप्त होते हैं। (सेन्सुअलिज्म)

त*-क्रि० वि० [सं० एकांत] पूरी
ह से। भली भाँति।

०, पुं० दे० 'एकांत'।

*-वि० दे० 'एक'।

ठा-वि० [सं० एकस्थ] एकत्र। जमा।

ता*-स्त्री० = एकता।

तारा-पुं० [हिं० एक + तार] १.
तार की तरह का एक बाजा जिसमें एक
तार रहता है। २. एक प्रकार का कपड़ा।

त्र*-क्रि० वि० दे० 'एकत्र'।

याल-पुं० दे० 'प्रताप'।

रार-पुं० [अ०] १. प्रतिज्ञा। वादा।
२. कोई काम करने का वचन।

रारनामा-पुं० [अ० इकरार +
ा० नामा] वह पत्र जिसमें कोई इकरार या
सकी शर्तें लिखी हों। अनुबंध-पत्र।
(एग्रिमेन्ट)

इकला*-वि० दे० 'अकेला'।

इकलाई-स्त्री० [हिं० एक + लाई या लोई = परत] १. एक पाट का दुपट्टा या चादर। २. अकेलापन।

इकलौता-पुं० [हिं इकला + ऊत (पुत्र)] [स्त्री० इकलौती] वह लड़का जो अपने माँ-बाप का एक ही हो।

इकल्ला*-वि० दे० 'अकेला'।

इकसर*-वि० [हिं० एक + सर (प्रत्य०)] अकेला। एकाकी।

इक-सूत*-वि० [सं० एक + सूत्र] एक साथ। इकट्ठा। एकत्र।

इकहरा-वि० दे० 'एकहरा'।

इकहाई*-क्रि० वि० [हिं० एक + हाई (प्रत्य०)] १. तुरन्त। २. अचानक।

इकहाऊ*-क्रि० वि० दे० 'इकहाई'।

इकाई-स्त्री० दे० 'एकाई' और 'मात्रक'।

इकौसा*-वि० [हिं० एक] [स्त्री० इकौसी] १. जहाँ कोई न हो। एकान्त। २. जिसके साथ कोई न हो। अकेला।

इकौना*-वि० [हिं० एक] अनुपम। बेजोड़।

इक्का-वि०, पुं० दे० 'एक्का'।

इक्का-दुक्का-वि० दे० 'अकेला' के अन्तर्गत 'अकेला-दुकेला'।

इक्कीस-वि० [सं० एकविंशति] १. बीस से एक अधिक। २. (किसी की अपेक्षा) अधिक अच्छा। श्रेष्ठतर।

इक्षु-पुं० [सं०] ईख। गन्ना।

इक्ष्वाकु-पुं० [सं०] सूर्य्य-वंश का एक प्रसिद्ध राजा।

इख्तियार-पुं० १. दे० 'अधिकार'। २. दे० 'प्रभुत्व'।

इच्छना*-स० [सं० इच्छा] इच्छा करना।

इच्छा-स्त्री० [सं०] [वि० इच्छित, इच्छुक] वह मनोवृत्ति जो किसी बात या वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान ले जाती है। कामना। लालसा। अभिलाषा। चाह।

इच्छा-भोजन-पुं० [सं०] जिन जिन

वस्तुओं की इच्छा हो, वही खाना।

इच्छित-वि० [सं०] जिसकी इच्छा की जाय। चाहा हुआ। वांछित।

इजमाल-पुं० [अ०] [वि० इजमाली] १. सब मिलाकर एक। समष्टि। २. किसी वस्तु पर कुछ लोगों का संयुक्त स्वत्व। साझा।

इजरा (य)-पुं० [अ०] १. जारी या प्रचलित करना। २. काम में लाना। ३. दीवानी न्यायालय से मिले हुए जय पत्र या डिगरी के अनुसार प्राप्य धन वसूल करने के लिए की जानेवाली विधिक क्रिया या कार्रवाई। (एक्जीक्यूशन)

पद-इजराय डिगरी = डिगरी को कार्यरूप में परिणत करना।

इजलास-पुं० [अ०] १. अधिवेशन। बैठक। २. कचहरी। न्यायालय। अधिकरण।

इजहार-पुं० [अ०] १. जाहिर या प्रकट करना। २. किसी के सामने दिया जानेवाला बयान। ३. गवाही। साक्षी।

इजाजत-स्त्री० [अ०] १. आज्ञा। हुक्म। २. परवानगी। स्वीकृति।

इजाफा-पुं० [अ०] बढ़ती। वृद्धि।

इजार-स्त्री० [अ०] पायजामा। सूथन।

इजारदार-वि० [फा०] किसी पदार्थ को इजारे या ठीके पर लेनेवाला। ठेकेदार।

इजारबन्द-पुं० [फा०] वह डोरी जो पायजामे या लँहगे के नेफे में उसे कमर से बाँधने के लिए पड़ी रहती है। नारा।

इजारा-पुं० [अ०] १. ठेका। २. अधिकार। स्वत्व।

इज्जत-स्त्री० [अ०] मान। मर्यादा।

मुहा०-इज्जत उतारना = मर्यादा नष्ट करना। **इज्जत रखना** = प्रतिष्ठा की रक्षा करना।

इठलाना-अ० दे० 'इतराना'।

इठाई*-स्त्री० [सं० इष्ट] १. रुचि। चाह। २. मित्रता।

इड़ा-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। भूमि। २. हठ योग की साधना में चाह एक कल्पित नाड़ी।

इत†-क्रि० वि० [सं० इतः] इस ओ

इतना-वि० [सं० एतावत् अ ई (यह) + तना (प्रत्य०)] इतनी] इस मात्रा का। इस क

मुहा०-इतने में = इसी बीच में

इतमाम*†-पुं० [अ० एहतमा तज़ाम। बन्दोबस्त। प्रबन्ध।

इतमीनान-पुं० दे० 'सन्तोष'।

इतर-वि० [सं०] १. दूसरा। अपर २. छोटा, तुच्छ या नीच। ३. सा पुं० दे० 'इत्र'।

इतराना-अ० [सं० उत्तरण] इतराहट] १. घमंड करना। २. दिखाना। इठलाना।

इतरेतर-क्रि० वि० [सं०] परस्प

इतरौंहाँ-वि० [हिं० इतराना (प्रत्य०)] जिससे इतराने का भाव प्र

इतस्ततः-क्रि० वि० [सं०] इधर

इताअत-स्त्री० [अ०] आज्ञा-पाल

इताति*-स्त्री० दे० 'इताअत'।

इति-अव्य० [सं०] समाप्ति-सूचक स्त्री० [सं०] समाप्ति। पूर्णता।

यौ०-इति या इति-श्री = अन्त।

इति-कर्तव्यता-स्त्री० [सं०] १. काम के करने की विधि। प २. कर्तव्य।

इतिवृत्त-पुं० [सं०] १. पुरानी कहानी। २. वर्णन। हाल। ३. इ

इतिहास-पुं० [सं०] बीती हुई घटनाओं और उनसे संबंध रखनेवाले का काल-क्रम से वर्णन। त (हिस्टरी)

इतेक†-वि० दे० 'इतना'।

इतै*-अव्य० = इधर।

इतौ*-वि० दे० 'इतना'।

फाक-पुं०[अ०]१. मेल। एकता। २.
ोग। अवसर।

ला स्त्री० [अ० इत्तलाअ] सूचना।
०-**इत्तलानामा** = सूचनापत्र।

-क्रि० वि० [सं०] ऐसे। यों।

भूत-वि० [सं०] ऐसा।

-क्रि० वि० = यहाँ।

दि-अव्य० [सं०] इसी प्रकार और
। इसी तरह और दूसरे। आदि। वग़ैरह।

-पुं० [अ०] फूलों का सुगन्धित सार।
पसार।

-क्रि० वि० [सं० इतर] इस ओर।
तरफ।
०-**इधर-उधर** = (क) आस-पास।
रे-किनारे। (ख) चारों ओर। सब ओर।
हा०-**इधर-उधर करना** = (क) टाल-
ल करना। (ख) उलट-पुलट करना। तितर-
र करना। **इधर-उधर की बात** =
) सुनी-सुनाई बात। (ख) बे-ठिकाने की
। **इधर की उधर करना या**
गाना = झगड़ा लगाना।

-सर्व० हिं० 'इस' का बहु०।

म-पुं० दे० 'पुरस्कार'।

यत-स्त्री० [अ०] १. कृपा। दया।
ग्रह। २. एहसान।

गिने-वि० [अनु० इन + हिं० गिनना]
पय। कुछ थोड़े से। चुने-चुने।

ार-पुं० दे० 'अस्वीकृति'।

ान-पुं० दे० 'मनुष्य'।

ाफ-पुं० [अ०] न्याय।

रात-वि० [अ०] बहुत अधिक।

ीस-पुं० [अ०] शैतान।

ारत-स्त्री० [अ०] [वि० इबारती]
. लेख। २. लेख-शैली।

रती-स्त्री० [सं० अमृत] जलेबी की
रह की एक प्रकार की मिठाई।

ली-स्त्री० [सं० अम्ल + हिं० ई(प्रत्य०)]
. एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसकी गूदेदार
लम्बी फलियाँ खटाई के काम आती हैं।
२. इस पेड़ का फल।

इमाम-पुं० [अ०] १. अगुआ। २. मुसलमानों के धार्मिक कृत्य करानेवाला।

इमाम-बाड़ा-पुं० [अ० इमाम + हिं० बाड़ा] वह अहाता जिसमें शीया मुसलमान ताजिया गाड़ते हैं।

इमारत-स्त्री० [अ०] ईंट, पत्थर आदि से बनाया हुआ, विशेषतः कोई बड़ा और पक्का मकान। भवन। (बिल्डिंग) २. दे० 'वास्तु'।

इमारती-वि० [अ०] इमारत से सम्बन्ध रखने या वास्तु के काम में आनेवाला। जैसे-इमारती लकड़ी, इमारती सामान।

इमारती लकड़ी-स्त्री० [अ० इमारती + हिं० लकड़ी] अच्छे वृक्षों की वह पक्की लकड़ी जो इमारत या भवन बनाने के काम में आती है। वास्तु-काष्ठ। (टिम्बर)

इमि*-क्रि० वि० [सं० एवम्] इस प्रकार।

इम्तहान-पुं० दे० 'परीक्षा'।

इयत्ता-स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. सदस्यों की वह कम से कम नियत संख्या जो किसी सभा का कार्य संचालित करने के लिए आवश्यक हो। गण-पूर्त्ति। (कोरम)

इरषा*-स्त्री० दे० 'ईर्ष्या'।

इरादा-पुं० [अ०] विचार। संकल्प।

इर्द-गिर्द-क्रि० वि० [अनु० इर्द + फा० गिर्द] १. चारो ओर। २. आस-पास।

इर्षना*-स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।

इलजाम-पुं० दे० 'अभियोग'।

इलहाम-पुं० [अ०] पैगम्बरी मतों में, ऐसी बात जो ईश्वर की ओर से कही हुई मानी जाय। आकाशवाणी। देववाणी।

इला-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. पार्वती। ३. सरस्वती। वाणी। ४. गौ।

इलाका-पुं० [अ०] १. सम्बन्ध। लगाव। २. कई गाँवों की जमीदारी।

इलाज-पुं० [अ०] १. दवा। औषध।

२. चिकित्सा। ३. उपाय। युक्ति।

इलाम*–पुं० [अ० ऐलान] १. इत्तलानामा। २. हुक्म। आज्ञा।

इलायची–स्त्री० [सं० एला] एक सदाबहार पेड़ जिसके फल के सुगंधित बीज मसाले में पड़ते हैं। यह छोटी और बड़ी दो प्रकार की होती है।

इलाही–पुं० [अ०] ईश्वर। खुदा वि० दैवी। ईश्वरीय।

इलाही गज–पुं० [फा० + अ०] अकबर के समय से चला हुआ एक प्रकार का गज जो ४२ अंगुल लंबा होता है।

इलीका–स्त्री० [सं० ?] कीड़ा।

इल्म–पुं० [सं०] १. विद्या। २. ज्ञान।

इल्लत–स्त्री० [अ०] १. रोग। बीमारी। २. झंझट। बखेड़ा। ३. दोष। अपराध।

इव–अव्य० [सं०] उपमावाचक शब्द। समान। नाईं। तरह।

इशारा–पुं० [अ०] १. संकेत। २. संक्षिप्त कथन। ३. हलका सहारा। ४. गुप्त प्रेरणा।

इश्क–पुं० [अ०] [वि० आशिक, माशूक] मुहब्बत। चाह। प्रेम।

इश्तहार–पुं० [अ०] विज्ञापन।

इषणा*–स्त्री० दे० 'एषणा'।

इष्ट–वि० [सं०] १. अभिलषित। चाहा हुआ। वांछित। २. पूजित।
पुं० १. अग्निहोत्र आदि शुभ कर्म्म। २. इष्टदेव। कुल-देव। ३. मित्र।

इस-सर्व० [सं० एषः] 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले का रूप। जैसे-इसको।

इसबगोल–पुं० [फा० यशबगोल] एक झाड़ी या पौधा जिसके रेचक दवा में काम आते हैं।

इसराज–पुं० [?] सारंगी की एक बाजा।

इसारत*–स्त्री० दे० 'इशारा'।

इसे–सर्व० [सं० एषः] 'यह' कारक और संप्रदान कारक का रूप

इस्तमरारी-वि० [अ०] १. वाला। नित्य। २. जो स्थायी निश्चित हुआ हो। दवामी। (परम

इस्तमरारी पट्टा–पुं० दे० 'दवामी

इस्तमरारी बन्दोबस्त = पुं० 'दवामी बन्दोबस्त'।

इस्तरी–स्त्री० [सं० स्तरी = तह कपड़े की तह बैठाने का धोबि दरजियों का एक औजार।

इस्तीफा–पुं० दे० 'त्याग-पत्र'।

इस्तेमाल–पुं० [अ०] उपयोग।

इस्पंज–पुं० [अ० स्पंज] समुद्र प्रकार के बहुत छोटे कीड़ों के योग हुआ रूई की तरह का मुलायम पिंड जो पानी खूब सोखता है। बादल।

इस्पात–पुं० [सं० अयस्पत्र, अथवा स्पेडा] एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

इस्लाम–पुं० [अ०] मुसलमानी ध

इह–क्रि० वि० [सं०] इस जगह। वि० यह।

इह-लीला–स्त्री० [सं०] इस लोक लीला या जीवन। जिन्दगी।

इहाँ–क्रि० वि० दे० 'यहाँ'।

ई

ई–देव-नगरी वर्ण-माला का चौथा अक्षर और 'इ' का दीर्घ रूप जिसका उच्चारण तालु से होता है। प्रत्यय के रूप में यह (क) स्त्री-लिंग का वाचक (जैसे–घोड़ी, पीली आदि), (ख) भाव-वाचकता का (जैसे–लाली, हरियाली आदि) और सम्बन्धवाचक या वाला का बोधक (चैती, दरबारी आदि) होता है।

भी कभी इसका प्रयोग 'यह' के अर्थ में र्वनाम के रूप में और कभी कभी जोर ने के लिए 'ही' के अर्थ में अव्यय के रूप भी होता है।

र-पुं० [सं० हिंगुल, प्रा० इंगुल] एक निज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली र सुन्दर होती है। सिंगरफ।

ना*-स० दे० 'खींचना'।

-स्त्री० [सं० इष्टका] १. ढला हुआ ट्टी का चौकोर लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर वार बनाई जाती है। हा०-**ईंट से ईंट बजाना** = किसी नगर घर को ढाना या ध्वस्त करना। **ईंटें नना** = दीवार बनाने के लिए ईंट पर रखना। **डेढ़ ईंट की मसजिद लग बनाना** = जो सब लोग कहते या रते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना। **-पत्थर** = व्यर्थ की चीजें। धातु का चौखूँटा टुकड़ा।

री-स्त्री० [सं० कुडली] कपड़े की ल गद्दी जिसे घड़ा या बोझ उठाते समय र पर रख लेते हैं।

न-पुं० [सं० इंधन] जलाने की लकड़ी कंडा। जलावन।

ण-पुं० [सं०] [वि० ईक्षणीय, ईक्षित, क्ष्य] १. दर्शन। देखना। २. आँख। विवेचन। विचार। ४. जाँच।

-स्त्री० [सं० इक्षु] शर जाति की एक जिसके डंठलों में मीठा रस रहता है। रस से गुड़ और चीनी बनती है। आ। ऊख।

ना*-स० [सं० ईक्षण] देखना।

न*-पुं० [सं० ईक्षण] १. देखने की या या भाव। दृष्टि-पात। २. नेत्र। आँख।

ना*-स० [सं० इच्छा] इच्छा करना।

द-स्त्री० दे० 'आविष्कार'।

पुं० [सं० इष्ट] मित्र। सखा।

ना-पुं० [सं० इष्ट] इच्छा करना।

१०

ईठि-स्त्री० [सं० इष्टि] १. मित्रता। दोस्ती। २. चेष्टा। प्रयत्न।

ईढ़*-स्त्री० [सं० इष्ट] जिद। हठ।

ईतर*-वि० [हिं० इतराना] इतरानेवाला। ढीठ। शोख। गुस्ताख।

ईति-स्त्री० [सं०] १. खेती को हानि पहुँचानेवाले उपद्रव। जैसे—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पड़ना, चूहे लगना, पक्षियों की अधिकता या सेना की चढ़ाई। २. बाधा। ३. पीड़ा। दुःख।

ईद-स्त्री० [अ०] मुसलमानों का एक प्रसिद्ध त्योहार।

ईदी-स्त्री० [अ०] ईद पर बच्चों, नौकरों आदि को मिलनेवाली मिठाई और त्योहारी।

ईदृश-क्रि० वि० [सं०] इस प्रकार। वि० इस प्रकार का। ऐसा।

ईप्सा-स्त्री० [सं०] [वि० ईप्सित, ईप्सु] १. इच्छा। अभिलाषा। २. कोई काम करने के लिए मन में होनेवाला विचार या उद्देश्य। इरादा। (इन्टेन्शन)

ईमन-पुं० [फा० यमन] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

ईमान-पुं० [अ०] [वि० ईमानदार, भाव० ईमानदारी] १. धर्म पर विश्वास। आस्तिक्य बुद्धि। २. चित्त की सद्वृत्ति। अच्छी नीयत। ३. धर्म्म। ४. सत्य।

ईमानदार-वि० [अ० ईमान + फा० दार] [भाव० ईमानदारी] चित्त में सद्वृत्ति या अच्छी नीयत रखनेवाला। चोरी, छल-कपट आदि न करनेवाला। ऋजु। (ऑनेस्ट)

ईमानदारी-स्त्री० [अ० + फा०] चित्त की सद्वृत्ति या अच्छी नीयत। चोरी, छल-कपट आदि न करने की वृत्ति या भाव। ऋजु। (ऑनेस्टी)

ईरखा*-स्त्री० दे० 'ईर्ष्या'।

ईर्ष्या-स्त्री० [सं०] दूसरे का लाभ या हित देखकर दुःखी होना। जलना। डाह। (जेलसी)

ईर्ष्यालु-वि० [सं०] ईर्ष्या करनेवाला।

ईश-पुं० [सं०] [स्त्री० ईशा, ईशी, भाव० ईशता] १. स्वामी। मालिक। २. राजा। ३. ईश्वर। ४. शिव। ५. ग्यारह की संख्या।

ईशन*-पुं० दे० 'ईशान' ३।

ईशान-पुं० [सं०] [स्त्री० ईशानी] १. स्वामी। अधिपति। २. शिव। ३. पूरब और उत्तर के बीच का कोना।

ईशिता-स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है।

ईशित्व-पुं० दे० 'ईशिता'।

ईश्वर-पुं० [सं०] [स्त्री० ईश्वरी, भाव० ईश्वरता] **१.** क्लेश, कर्म-विपाक और आशय से अलग पुरुष। परमेश्वर। भगवान्। २. मालिक। स्वामी।

ईश्वरवाद-पुं० [सं०] यह मानना कि ईश्वर है और वही सारी सृष्टि का रचयिता है। (डीइज्म)

ईश्वरवादी-वि० [सं० ईश्वरवादिन्] ईश्वर है और वही सारी सृष्टि का है, इस सिद्धान्त को माननेवाला। (

ईश्वरीय-वि० [सं०] १. ईश्वर-स २. ईश्वर का।

ईषत्-वि० [सं०] थोड़ा कुछ।

ईषना*-स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल

ईसर-पुं० १. दे० 'ईश्वर'। २ 'ऐश्वर्य'।

ईसवी-वि० [फा०] ईसा से सम्बन्ध वाला। ईसा का।

यौ०-ईसवी सन् = ईसा मसीह के काल से चला हुआ संवत्।

ईसा-पुं० [अ०] एक प्रसिद्ध धर्म जिनका चलाया हुआ धर्म ईसाई कह

ईसाई-वि० [फा०] ईसा को मानने ईसा के चलाये धर्म पर चलनेवाला।

ईहा-स्त्री० [सं०] १. प्रयत्न। चे लोभ। लालसा। ३. इच्छा। वासन

ईहामृग-पुं० [सं०] चार अंकों प्रकार का रूपक।

उ

उ-देव-नागरी वर्णमाला का पाँचवाँ स्वर जिसका उच्चारण ओष्ठ से होता है। कभी-कभी कविता में इसका प्रयोग अव्यय के रूप में 'वह' के अर्थ में भी होता है।

उँगली-स्त्री० [सं० अंगुलि] हथेली के आगे निकले हुए पाँच अवयव जिनसे चीजें पकड़ी या छुई जाती हैं।

मुहा०-उँगली उठाना = (क) निन्दा का लक्ष्य बनाना। लांछित करना। दोषी ठहराना। (ख) तनिक भी हानि पहुँचाना। **उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना** = थोड़ा-सा सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना। **उँगलियों पर नचाना** = (क) जैसा चाहे, वैसा कराना। (ख) अपनी इच्छा के अनुसार चलाना। **कानों में उँगल देना** = किसी उदासीन होकर उसकी चर्चा न **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** प्रकार से लाभ ही लाभ होना।

उँघाई-स्त्री० दे० 'ऊँघ'।

उंचन-स्त्री० दे० 'उनचन'।

उंचना-स० दे० 'उनचना'।

उँचाना*- स० [हिं० ऊँचा] ऊँचा अ० ऊँचा होना।

उंछ (वृत्ति)-स्त्री० [सं०] खेत में हुए दाने चुनकर जीवन-निर्वाह करना

उंछशील-वि० [सं०] उंछ-वृत्ति से निर्वाह करनेवाला।

उँडेलना-स० [सं० उद्धारण] १. पदार्थ को दूसरे बरतन में डालना।

२. तरल पदार्थ गिराना।

ँह–अव्य० [अनु०] १. अस्वीकार, घृणा या बे-परवाही का सूचक शब्द। २. वेदना-सूचक शब्द। कराहने का शब्द।

अना*–अ० दे० 'उगना'।

आना*–स० १. दे० 'उगाना'। २. दे० 'उठाना'।

ऋण–वि० [सं० उत् + ऋण] ऋण से मुक्त। जिसका ऋण से उद्धार हो गया हो।

कचना*–अ० दे० 'उखड़ना'।

स० दे० 'उखाड़ना'।

कटना-स० दे० 'उघटना'।

कटा–वि० [हिं० उकटना] [स्त्री० उकटी] उघटनेवाला। एहसान जतानेवाला। पुं० किसी के किये हुए अपराध या अपने उपकार का बार-बार कथन।

यौ०–उकटा पुराण = गई-बीती और दबी-दबाई बातों का विस्तारपूर्वक कथन।

कठना*–अ० [हिं० काठ] सूखकर लकड़ी की तरह कड़ा होना या ऐंठना।

कड़ूँ-पुं० [सं० उत्कुतोरु] घुटने मोड़कर बैठने की मुद्रा।

कढ़ना*-अ० = कढ़ना (बाहर निकलना)।

कताना–अ० [सं० आकुल] १. ऊबना। २. जल्दी मचाना।

कति*–स्त्री० दे० 'उक्ति'।

कलना–अ० दे० 'उधेड़ना'।

कवत-पुं० [सं० उत्कोथ] एक प्रकार का चर्म्म-रोग।

कसना–अ० [सं० उत्कर्षण या उत्सुक] १. उभरना। २. निकलना। अंकुरित होना। ३. उधड़ना।

कसाना-स० [हिं० 'उकसना' का प्रे०] [भाव० उकसाहट] १. ऊपर उठाना। २. उभाड़ना। उत्तेजित करना। ३. उठा या हटा देना। ४. (दीये की बत्ती) बढ़ाना या खसकाना।

उकसौहाँ-वि० [हिं० उकसना + औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० उकसौही] उभड़ता हुआ।

उकासना*–स० [हिं० उकसना] १. उभाड़ना। २. खोदकर ऊपर फेंकना। ३. खोलना।

उकेरना–स० [सं० उत्कीर्ण या उकीर्य] किसी कड़ी चीज पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाना। नक्काशी करना। (एन्ग्रेव)

उकेरी–स्त्री० [हिं० उकेरना] उकेरने या खोदकर बेल-बूटे बनाने का काम। नक्काशी। (एन्ग्रेविंग)

उकेलना–स० [हिं० उकलना] १. तह या परत अलग करना। उचाड़ना। २. लिपटी हुई चीज को छुड़ाना या अलग करना। उधेड़ना।

उक्त–वि० [सं०] जो कहा गया हो। कहा हुआ। कथित। (दी सेड)

उक्ति–स्त्री० [सं०] १. कथन। वचन। २. अनोखा वाक्य। चमत्कारपूर्ण कथन।

उखटना–अ० [सं० उत्कर्षण] १. चलने में इधर-उधर पैर रखना। लड़खड़ाना। २. खोंटना। कुतरना।

उखड़ना–अ० [सं० उत्कर्षण] १. जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना। 'जमना' का उलटा। २. किसी दृढ़ स्थिति से अलग होना।

मुहा०–पैर उखड़ना = मुकाबले में ठहर न सकने के कारण भागने को होना।

३. जोड़ से हट जाना।

मुहा०–उखड़ी उखड़ी बातें करना = उदासीनता या विराग दिखाते हुए बातें करना।

४. (घोड़े के सम्बन्ध में) चाल में भेद पड़ना। गति ठीक न रहना। ५. तितर-बितर हो जाना। ६. टूटना।

उखली–स्त्री० दे० 'ऊखल'।

उखाड़–पुं० [हिं० उखाड़ना] १. उखाड़ने की क्रिया या भाव। २. उखाड़ने या रद्द करने की युक्ति।

उखाड़ना–स० [हिं० उखड़ना का स०]

१. किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु को हटाकर अलग करना। २. हटाना। ३. नष्ट करना। ध्वस्त करना।

मुहा०-गड़े मुरदे उखाड़ना = पुरानी बातों को फिर से छेड़ना। **पैर उखाड़ देना** = हटाना। भगाना।

उखारी-स्त्री० [हिं० ऊख] गन्ने या ईख का खेत।

उखेलना*-स० [सं० उल्लेखन] चित्र बनाना।

उगना-अ० [सं० उद्गमन] १. सूर्य, चन्द्र आदि का निकलना। उदय या प्रकट होना। २. जमना। अंकुरित होना। ३. उपजना। उत्पन्न होना।

उगरना*-अ० [सं० उद्गरण] (भरा हुआ पानी आदि) निकलना। बाहर आना।

उगलना-स० [सं० उद्गिलन] १. पेट या मुँह में गई हुई वस्तु मुँह से बाहर थूकना। २. पचाया हुआ माल विवश होकर वापस करना। ३. गुप्त बात प्रकट कर देना।

उगाना-स० [हिं० उगना का स०] १. जमाना। अंकुरित करना। उत्पन्न करना। (पौधा या अन्न आदि) २. उदय करना। प्रकट करना।

उगारना*-स० [सं० अग्र] १. सामने लाना। २. निकालना।

उगाल*-पुं० [सं० उद्गार, प्रा० उगाल] पीक। थूक। खखार।

उगालदान-पुं० दे० 'पीकदान'।

उगाहना-स० [सं० उद्ग्रहण] दूसरों से धन आदि लेकर इकट्ठा करना। वसूल करना।

उगाही-स्त्री० [हिं० उगाहना] १. रुपया-पैसा वसूल करने का काम। वसूली। २. वसूल किया हुआ रुपया-पैसा।

उग्र-वि० [सं०] [भाव० उग्रता] प्रचंड। उत्कट। तेज।

पुं० १. महादेव। २. वत्सनाग विष। बछनाग जहर। ३. क्षत्रिय पिता शूद्र माता से उत्पन्न एक संकर ४. केरल देश। ५. सूर्य्य।

उघटना-अ० [सं० उत्कथन] १. दबाई बात उभाड़ना। २. कभी के हुए अपने उपकार या दूसरे के का उल्लेख करके ताना देना। ३. कहना।

उघटा-वि० [हिं० उघटना] किये उपकार को बार-बार कहनेवाला। जतानेवाला। उघटनेवाला।

पुं० [सं०] उघटने का कार्य्य।

उघड़ना-अ० [सं० उद्घाटन] १. पड़ा हुआ आवरण हटना। खुलना। नंगा होना। ३. प्रकट होना। ४. फूटना।

उघरना*-अ० = उघड़ना।

उघरारा*-वि० [हिं० उघरना] [उघरारी] खुला हुआ।

उघाड़ना-स० [हिं० 'उघड़ना' का १. आवरण हटाना। खोलना। २. करना। ३. प्रकट करना। ४. गुप्त खोलना। भंडा फोड़ना।

उघाड़ा-वि० [हिं० उघड़ना] ऊपर कोई आवरण न हो। नंगा।

उघार-पुं० [हिं० उघारना] उघारने खोलने की क्रिया या भाव।

उघारना*-स० = उघाड़ना।

उघारा*-वि० = उघाड़ा।

उघेलना*-स० = खोलना।

उचकन-पुं० [सं० उच्च + करण] आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे कोई चीज एक ओर से ऊँची करते हैं।

उचकना-अ० [सं० उच्च = ऊँचा करण = करना। १. ऊँचा होने के एड़ी उठाकर खड़े होना। २. उछ स० उछलकर लेना या छीनना।

उचका*-क्रि० वि० दे० 'औचक'।

उचक्का-पुं० [हिं० उचकना] [स्त्री० उचक्की] चीज उठाकर ले भागनेवाला आदमी। चाई।

उचटना-अ० [सं० उच्चाटन] १. जमी हुई वस्तु का उखड़ना। उचड़ना। २. अलग होना। छूटना। ३. भड़कना। बिचकना। ४. विरक्त होना।

उचटाना*-स० [सं० उच्चाटन] १. नोचना। २. अलग करना। छुड़ाना। ३. उदासीन या विरक्त करना।

उचड़ना-अ० दे० 'उखड़ना'।

उचना*-अ० [सं० उच्च] १. ऊँचा होना। २. उचकना।

स० ऊँचा करना। उठाना।

उचरना*-स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। बोलना।

अ० मुँह से शब्द निकालना।

+अ० दे० 'उखड़ना'।

उचाट-पुं० [सं० उच्चाट] मन का उचटना। विरक्ति। उदासीनता।

उचाटना-स० [सं० उच्चाटन] १. उच्चाटन करना। जी हटाना। विरक्त करना। २. दे० 'उचाड़ना'।

उचाटी*-स्त्री० दे० 'उचाट'।

उचाड़ना-स० दे० 'उखाड़ना'।

उचाना*+-स० [सं० उच्च + करण] १. ऊँचा करना। २. ऊपर उठाना।

उचारना*-स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। मुँह से शब्द निकालना।

स० दे० 'उखाड़ना'।

उचिंत-वि० [हिं० उचाना] (वह दी हुई रकम) जिसका हिसाब बाद में या खर्च होने पर मिलने को हो। (सस्पेन्स)

उचित-वि० [सं०] [भाव० औचित्य] १. जैसा होना चाहिए, वैसा। योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब। (प्रॉपर) २. आवश्यकता, अवसर आदि देखते हुए जो ठीक हो या जैसा करना ठीक हो। (फिट्)

उचिस्ट*-वि० = उच्छिष्ट।

उचौंहाँ*-वि० [हिं० ऊँचा + औंहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० उचौंहीं] ऊँचा उठा हुआ।

उच्च वि० [सं०] १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।

मुहा०-उच्च के चन्द्रमा होना = सौभाग्य और उन्नति के दिन होना।

पुं० संगीत में 'तार' नामक सप्तक।

उच्चक-वि० [सं० उच्च] ऊँचाई के विचार से उस निश्चित सीमा तक पहुँचनेवाला जिससे आगे बढ़ना या ऊपर चढ़ना निषिद्ध हो। (सीलिंग) जैसे—सरकार ने गेहूँ का उच्चक मूल्य १६) मन रखा है।

उच्चतम-वि० [सं०] सबसे ऊँचा।

उच्चता-स्त्री० [सं०] १. ऊँचाई। २. श्रेष्ठता। उत्तमता।

उच्चरण-पुं० [सं०] [वि० उच्चरणीय, उच्चरित] कंठ, तालू, जिह्वा आदि से शब्द निकलना। मुँह से शब्द निकलना।

उच्चरना*-स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। बोलना।

उच्चरित-वि० [सं०] १. जिसका उच्चारण हुआ हो। २. जिसका उल्लेख हुआ हो।

उच्च वर्ग-पुं० [सं०] समाज का वह वर्ग जिसमें सभी लोग धनिक होते हैं और इसी लिए जो ऊँचा माना जाता है। (अपर क्लास) (शेष दो वर्ग मध्यम और निम्न कहलाते हैं।)

उच्चाकांक्षा-स्त्री० [सं०] बड़ी या महत्त्व की आकांक्षा। बहुत आगे बढ़ने या बहुत बड़ा काम करने की आकांक्षा। (एम्बिशन)

उच्चाकांक्षी-वि० [सं० उच्चाकांक्षिन्] बहुत बड़ी या ऊँची आकांक्षा रखनेवाला। (एम्बिशस)

उच्चाटन-पुं० [सं०] [वि० उच्चाटनीय, उच्चाटित] १. उचाड़ना। उखाड़ना। २. किसी का चित्त कहीं से हटाना। (तंत्र के छः अभिचारों में से एक) ३. अनमनापन। विरक्ति।

उच्चार–पुं० [सं०] मुँह से शब्द निकालना। बोलना। कथन।

उच्चारण–पुं० [सं०] [वि० उच्चारणीय, उच्चारित, उच्चार्य्य] १. मनुष्यों का मुँह से व्यक्त और स्पष्ट ध्वनि निकालना। मुँह से स्वर और व्यंजन-युक्त शब्द निकालना। २. वर्णों या शब्दों के बोलने का ढंग। (प्रोनन्सिएशन)

उच्चारित–वि० दे० 'उच्चरित'।

उच्चैःश्रवा–पुं० [सं०] इन्द्र या सूर्य का सफेद घोड़ा जो समुद्र से निकला था। वि० ऊँचा सुननेवाला। बहरा।

उच्छन्न–वि० [सं०] दबा हुआ। लुप्त।

उच्छव*–पुं० दे० 'उत्सव'।

उच्छाह*–पुं० दे० 'उछाह'।

उच्छिन्न–वि० [सं०] १. कटा हुआ। खंडित। २. उखड़ा हुआ। ३. नष्ट।

उच्छिष्ट–वि० [सं०] १. किसी के खाने से बचा हुआ। जूठा। २. दूसरे का बरता हुआ।

उच्छू–पुं० [सं० उत्थान, पं० उत्थू] वह खाँसी जो गले में पानी आदि रुकने से आती है।

उच्छृंखल–वि० [सं०] [भाव० उच्छृङ्खलता] १. जो श्रृंखलाबद्ध न हो। क्रम-रहित। अंड-बंड। २. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। स्वेच्छाचारी। ३. उद्दंड। अक्खड़।

उच्छेद (न)–पुं० [सं०] १. उखाड़-पखाड़। खंडन। २. नाश।

उच्छ्वास–पुं० [सं०] [वि० उच्छ्वसित, उच्छ्वासी] १. ऊपर को खींचा हुआ साँस। उसास। २. साँस। श्वास। ३. ग्रन्थ का प्रकरण।

उछंग*–पुं० [सं० उत्संग] १. गोद। क्रोड़। २. हृदय। छाती।

उछरना*–अ० = उछलना।

उछल-कूद–स्त्री० [हिं० उछलना + कूदना] १. उछलने और कूदने की क्रिया भाव। २. खेल-कूद।

उछलना–अ० [सं० उच्छलन] १. से ऊपर उठना। २. कूदना। ३. प्रसन्न होना। खुशी से फूलना। ४. या सामने आना। जैसे–नाम उछ ('नाम' के अन्तर्गत देखें)

उछाँटना–स० १. दे० 'उचाटना'। दे० 'छाँटना'।

उछाल–स्त्री० [सं० उच्छालन] उछलने की क्रिया या भाव। २. छलाँ चौकड़ी। कुदान। ३. वह ऊँचाई तक कोई उछल सके। ४. वमन। ५. संगीत में स्थायी या पहला पद शु गा चुकने पर वही पद या उसका कुछ फिर से कुछ ऊँचे स्वरों तथा भिन्न प्र गाने की क्रिया या भाव। संचारी।

उछालना–स० [सं० उच्छालन] १. की ओर फेंकना। २. प्रकट करना। (व्यं

उछाह*–पुं० = उत्साह।

उछाही*–वि० [हिं० उछाह] १. आ मनानेवाला। २. उत्साही।

उछीर*–पुं० [हिं० छीर = किनारा] काश। जगह।

उजड़ना–अ० [?] [वि० उजाड़] टूट-फूटकर नष्ट होना। उखड़ना-पुखड़ उच्छिन्न होना। ध्वस्त होना। २. गिर जाना। ३. तितर-बितर होना। ब होना। नष्ट होना।

उजड्ड–वि० [सं० उद्दंड] [भाव० उजड्ड १. वज्र मूर्ख। २. अशिष्ट। असभ्य।

उजबक–पुं० [तु०] १. तातारियों की जाति। २. उजड्ड। ३. मूर्ख।

उजरत–स्त्री० [अ०] १ पारिश्रमि २. मजदूरी।

उजरा*–वि० दे० 'उजला'।

उजराना*–स० दे० 'उजालना'।

उजलत–स्त्री० [अ०] शीघ्रता। जल्दी

जला-वि० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजली] [भाव० उजलापन] १. श्वेत। सफेद। २. स्वच्छ। साफ। निर्मल।

जागर-वि० [सं० उद् = ऊपर + जागर = जागना] [स्त्री० उजगारी] १. प्रकाशित। जगमगाता हुआ। २. ज्वल्यमान। सिद्ध। विख्यात।

जाड़-पुं० [हिं० उजड़ना] १. उजड़ा हुआ स्थान। वह जगह जहाँ बस्ती न रह गई हो। २. निर्जन स्थान। ३. बन।

वि० १. ध्वस्त। उच्छिन्न। गिरा-पड़ा। २. जो आबाद या बसा हुआ न हो।

जाड़ना-स० [हिं० उजड़ना] १. ध्वस्त करना। गिराना-पड़ाना। २. उधेड़ना। ३. उच्छिन्न या नष्ट करना।

जान-क्रि० वि० दे० 'उजल'।

जार*-वि० दे० 'उजाला'।

पुं० १. दे० 'उजाला'। २. दे० 'उजाड़'।

जारा*-पुं० दे० 'उजाला'।

जालना-स० [सं० उज्ज्वलन] १. साफ करना। चमकाना। निखारना। २. प्रकाशित करना। ३. बालना। जलाना।

जाला-पुं० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजाली] प्रकाश। चाँदना। रोशनी।

वि० प्रकाशवान। 'अँधेरा' का उलटा।

जाली-स्त्री० [हिं० उजाला] चाँदनी। चन्द्रिका।

जास-पुं० [हिं० उजाला] [क्रि० उजासना] प्रकाश। उजाला।

जियारना*-स० दे० 'उजालना'।

जियारा*-पुं० दे० 'उजाला'।

जेर*-पुं० दे० 'उजाला'।

जेला-पुं० दे० 'उजाला'।

जल-क्रि० वि० [सं० उद् = ऊपर + जल = पानी] बहाव से उलटी ओर। नदी के चढ़ाव की ओर। उजान।

वि० दे० 'उज्ज्वल'।

ज्यारा*-पुं० दे० 'उजाला'।

उज्र-पुं० [अ०] किसी कार्य या बात का विरोध करते हुए यह कहना कि यह ठीक नहीं है अथवा ऐसा नहीं होना चाहिए। आपत्ति। (ऑब्जेक्शन)

उज्रदार-वि० [फा०] [भाव० उज्रदारी] उज्र या आपत्ति करनेवाला।

उज्रदारी-स्त्री० [फा०] किसी विषय में उज्र या आपत्ति करने की क्रिया या भाव। (ऑब्जेक्शन)

उज्वल-वि० [सं०] [भाव० उज्ज्वलता] १. दीप्तिमान्। प्रकाशवान्। २. शुभ्र। स्वच्छ। निर्मल। ३. बेदाग। ४. सफेद।

उझकना*-अ० [हिं० उचकना] १. उचकना। उछलना। २. ऊपर उठना। उभड़ना। ३. देखने के लिए सिर उठाना। ४. चौंकना।

उझल-स्त्री० [हिं० उझलना] १. उझलने या उँडेलने की क्रिया या भाव। २. वर्षा। वृष्टि। ३. अचानक बहुत अधिक मात्रा में आ पड़ने का भाव। उमड़ाव।

उझलना-स० दे० 'उँडेलना'।

*अ० उमड़ना। बढ़ना।

उटंग-वि० [सं० उत्तंग] पहनने में ऊँचा या छोटा। (कपड़ा)

उटकना*-स० [सं० उत्कलन] अनुमान करना। अटकल लगाना।

उटक्कर*-क्रि० वि० = अंधाधुंध।

उटज-पुं० [सं०] झोंपड़ी।

उट्टी-स्त्री० [देश०] खेल या लाग-डाँट में बुरी तरह हार मानना।

उठँगना-अ० [सं० उत्थ + अंग] १. किसी ऊँची वस्तु का कुछ सहारा लेना। टेक लगाना। २. लेटना। पड़ रहना।

उठना-अ० [सं० उत्थान] १. ऐसी स्थिति में होना जिससे विस्तार पहले से अधिक ऊँचाई तक पहुँचे। ऊँचा होना।

मुहा०-उठ जाना = मर जाना। **उठती जवानी** = युवावस्था का आरंभ। **उठते-**

बैठते = प्रति क्षण । हर समय । २. ऊपर जाना या ऊपर चढ़ना । ३. बिस्तर छोड़ना । जागना । ४. निकलना । उदय होना । ५. उत्पन्न होना । पैदा होना । जैसे–मन में विचार उठना, दर्द उठना । ६. तैयार होना । उद्यत होना । ७. किसी अंक या चिह्न का स्पष्ट होना । उभड़ना । ८. खमीर आना । सड़कर उफनना । ९. किसी दूकान या कारखाने का काम बन्द होना । १०. किसी प्रथा का बन्द या अन्त होना । ११. काम में लगना । व्यय होना । जैसे–रुपया उठना । १२. बिकना या भाड़े पर जाना । १३. याद आना । ध्यान पर चढ़ना । १४. गाय, भैंस, घोड़ों आदि का मस्ताना । अलंग पर आना ।

उठल्लू–वि० [हिं० उठना + लू (प्रत्य०)] १. एक स्थान पर जमकर न रहनेवाला । २. बे-ठिकाने का । आवारा ।

मुहा०-उठल्लू का चूल्हा या उठल्लू चूल्हा = व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला ।

उठाईगीरा–वि० [हिं० उठाना + फा० गीर] आँख बचाकर चीज उठाकर ले भागनेवाला । उचक्का । चाईं ।

उठान–स्त्री० [सं० उत्थान] १. उठने की क्रिया या भाव । २. बढ़ने का ढंग । बाढ़ । वृद्धि-क्रम । ३. गति की प्रारम्भिक अवस्था ।

उठाना–स० [हिं० उठना का स०] १. पड़ी या बेड़ी स्थिति से खड़ी या उठी स्थिति में करना । जैसे– लेटे हुए आदमी को उठाकर बैठाना । २. नीचे से ऊपर ले जाना । ३. जगाना । ४. आरम्भ करना । शुरू करना । छेड़ना । जैसे–बात उठाना । ५. तैयार करना । उद्यत करना । ६. मकान या दीवार आदि तैयार करना । ७. कोई प्रथा बन्द करना । ८. खर्च करना । लगाना । ९. भाड़े या किराये पर देना । १०. प्राप्त या हस्तगत करना । जैसे–लाभ उठाना । ११. अनुभव करना । जैसे–मजा उठाना । १२. कोई वस्तु हाथ में लेकर कसम जैसे–गंगा-जल उठाना ।

उठेल*–पुं० [हिं० ठेलना] १. रेला । २. आघात । चोट ।

उठेलना*–स० = ठेलना ।

उठौआ–वि० [हिं० उठाना] १. कोई स्थान नियत न हो । जो नियत पर न रहता हो । २. जो उठाया जाता

उठौनी–स्त्री० [हिं० उठाना] १. की क्रिया या भाव । २. वह रुपया किसी फसल की पैदावार आदि खरीद लिए पेशगी दिया जाय । दादनी । ३. धन या अन्न जो किसी देवता की पू लिए अलग रखा जाय । ४. किसी के के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के का इकट्ठा होकर कुछ रस्म और देन करना ।

उडंकू–वि० [हिं० उड़ना + अंकू (प्रत्य उड़नेवाला । जो उड़े ।

उड़न-खटोला–पुं० [हिं० उड़ना + खटो १. उड़नेवाला खटोला । (कल्पित) विमान । आकाश-यान ।

उड़न-छू–वि० [हिं० उड़ना] देखते अदृश्य । चम्पत । गायब ।

उड़न-झाँई–स्त्री० [हिं० उड़ना + झाँ चकमा । बुत्ता । धोखा ।

उड़ना–अ० [सं० उड्डयन] १. चिड़ि आदि का आकाश में एक स्थान से स्थान पर जाना । २. आकाश-मार्ग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना । हवा में ऊपर उठना या फैलना । पतंग या गुड्डी उड़ना । ४. इधर-उधर जाना । छितराना । बिखरना । ५. फहरा फरफराना । जैसे–झंडा उड़ना । खूब तेज चलना । ७. पृथक् हो हटना । ८. खर्च होना । ९. किसी वस्तु का भोगा जाना । जैसे–लड्डू उड़ १०. आमोद-प्रमोद की वस्तु का

ोना। ११. रंग आदि का फीका या ीमा पड़ना। १२. मार पड़ना। १३. अपने बचाव के लिए चालाकी भरी इधर-र की बातें करना। १२. फलाँग मारना। दना। (कुश्ती)

मुहा०–**उड़ चलना** = (क) तेज दौड़ना। रपट भागना। (ख) शोभित होना। ा) स्वादिष्ट बनना। (घ) कुमार्ग में ाना (च) इतराना। घमंड करना।

यो०–**उड़ती खबर** = बाजारू खबर। किंवदन्ती।

वि० उड़नेवाला। उड़ाका।

प-पुं० [हिं०उड़ना] नृत्य का एक भेद।

पुं० दे० 'उडु.प'।

ड़व-पुं० दे० 'ओड़व'।

ड़सना-अ० [?] भंग या नष्ट होना।

स० भंग या नष्ट करना।

ड़ाई-स्त्री० [हिं० उड़ाना] १. दे० 'उड़ान'। २. उड़ाने का पारिश्रमिक।

ड़ाऊ-वि० [हिं० उड़ना] १. उड़नेवाला। उड़ाका। २. बहुत खर्च करनेवाला। खरचीला।

ड़ाका-वि०[हिं० उड़ना] १. जो उड़ता हो। बहुत उड़नेवाला। २. वायुयान नेवाला।

ड़ान-स्त्री० [सं० उड्डयन] १. उड़ने की क्रिया या भाव। २. छलाँग। कुदान। ३. तनी दूरी, जितनी एक दौड़ में तै करें। ४. कलाई। गट्टा। पहुँचा।

ड़ाना-स० [हिं० उड़ना] १. किसी ु या जीव को उड़ने में प्रवृत्त करना। . हवा में फैलाना। जैसे–धूल उड़ाना। . झटके से अलग करना। काटकर दूर ना। ४. हटाना। दूर करना। ५. ुराकर ले लेना। ६. नष्ट करना। बरबाद ना। ७. खाने-पीने की चीज़ खूब स्वाद ाना-पीना। ८. आमोद-प्रमोद की वस्तु ा भोग करना। ९. प्रहार करना। मारना।

१०. भुलावा या चकमा देना। ११. किसी की विद्या इस प्रकार सीखना कि उसे खबर न हो।

उड़ायक*–वि० [हिं० उड़ान + क(प्रत्य०)] उड़ानेवाला।

उड़ास*–स्त्री० [सं० वास] रहने का स्थान। वास-स्थान।

उड़ासना–स० [सं० उद्वासन] १. बिछौना समेटना। *२. तहस-नहस करना। उजाड़ना। ३. बैठने या सोने में विघ्न डालना।

उड़िया–वि० [हिं० उड़ीसा] उड़ीसा देश का रहनेवाला।

स्त्री० उड़ीसा देश की भाषा।

उड़ी–स्त्री० [हिं० उड़ना] १. मालखंभ की एक कसरत। २. कलाबाजी।

उडु–पुं० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. पक्षी। चिड़िया। ३. केवट। मल्लाह। ४. जल। पानी।

उडुप–पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. नाव। बड़ा गरुड़।

उडुपति–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

उड़ैना*–पुं० [स्त्री० अल्पा० उड़ैनी] दे० 'जुगनूँ'।

उड़ौहाँ†–वि० [हिं० उड़ना] उड़नेवाला।

उड्डयन–पुं० [सं०] उड़ना।

उड्डयन-विभाग–पुं० [सं०] राज्य का वह विभाग जिसके जिम्मे सब तरह के हवाई जहाजों आदि की व्यवस्था हो।

उढरना–अ० [सं० ऊढ़ा] [स० उढ़ारना] स्त्री का पर-पुरुष के साथ निकल भागना।

वि० [सं० उत्तुङ्ग] १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।

उतंग*–वि० दे० 'उत्तुंग'।

उतंत*–वि० दे० 'उत्पन्न'

उत*–क्रि० वि० [सं० उत्तर] उधर।

उतन*-क्रि० वि० [हिं० उ + तनु] उधर।

उतना-वि० [हिं० उस + तना (हिं०प्रत्य०)]

उस मात्रा का। जितना वह है, उसके बराबर।

उतपति*–स्त्री० १. दे० 'उत्पत्ति'। २. दे० 'सृष्टि'।

उतपात*–पुं० = उत्पात।

उतपातना*–स० = उत्पन्न करना।

उतपादना*–स० [सं० उत्पादन] उत्पन्न करना।

उतपानना*–स० [सं० उत्पन्न] उत्पन्न करना। उपजाना।

अ० उत्पन्न होना।

उतरन–स्त्री० [हिं० उतरना] पहनकर उतारे हुए पुराने कपड़े।

उतरना–अ० [सं० अवतरण] १. ऊँचे स्थान से क्रम से नीचे की ओर आना।

मुहा०–चित्त से उतरना = १. विस्मृत होना। भूल जाना। २. पहले का सा अनुराग न रहना। आदर, मान, प्रेम आदि कम होना।

२. अवनति पर होना। ढलना।

मुहा०–उतर कर = नीचे दरजे का। घटकर। (किसी की तुलना में)। **चेहरा उतरना** = (क) चेहरे पर उदासी आना। (ख) लज्जा, खिन्नता या उदासीनता प्रकट होना। ३. शरीर के किसी जोड़ या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना। ४. कान्ति, तेज आदि का फीका पड़ना। ५. प्रभाव या उद्वेग कम होना। ६. वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना। ७. धीरे-धीरे होनेवाला काम पूरा होना। जैसे–गंजी उतरना। ८. भाव का कम होना। ९. डेरा करना। ठहरना। टिकना। १०. प्रतिलिपि का अंकित होना। ११ भभके में खिंचकर तैयार होना। जैसे–अरक उतरना। १२. धारण की हुई वस्तु का अलग होना। १३. तौल में ठहरना। १४. बाजे की कसन का ढीला होना। १५. अवतार लेना। १६. आदर के निमित्त किसी वस्तु का शरीर के चारो ओर घुमाया जाना। जैसे– उतरना। १७. वसूल होना। जैसे– उतरना।

स० [सं० उत्तरण] नदी आदि पार

उतराँहीं*–स्त्री० [हिं० उत्तर (दि उत्तर की ओर से आनेवाली हवा।

उतराई–स्त्री० [हिं० उतरना] १. से नीचे आने की क्रिया या भाव। २. नदी के पार उतारने का महसूल नीचे की ढलती हुई भूमि।

उतराना–अ० [सं० उत्तरण] १. के ऊपर आना। पानी की सतह पर २. उबलना। उफान खाना। ३. होना। हर जगह दिखाई देना।

अ० 'उतरना' का प्रे०।

उतरिन*–वि० दे० 'उऋण'।

उतरौंहाँ*–क्रि० वि० [सं० उत्त (प्रत्य०)] उत्तर की ओर।

उतलाना*–अ० [हिं० आतुर] करना।

उताइल*–वि० = उतावला।

स्त्री० = उतावली।

उतान–वि० [सं० उत्तान] जमीन पीठ लगाये हुए। चित।

उतायली–स्त्री० दे० 'उतावली'।

उतार–पुं० [हिं० उतरना] १. उ की क्रिया या भाव। २. क्रमशः नीचे ओर प्रवृत्ति। ३. उतरने योग्य स्था ४. किसी वस्तु की मोटाई या घेरे में क्र होनेवाली कमी। ५. घटाव। कमी। नदी में हलकर पार करने योग्य स्थान। समुद्र का भाटा। ८. वह वस्तु या प्र जिससे नशे, विष आदि का प्रभाव दूर मारक। परिहार। जैसे–भाँग का खटाई है। ९. किसी चीज का भाव होना। दर गिरना। (डेप्रिसिएशन)। दे० 'उतरना'।

उतार-चढ़ाव–पुं० [हिं० उतरना

उतावला–वि० [सं० उद् + तत्व] [स्त्री० उतावली] जल्दी मचानेवाला। जल्दबाज।

उतावली–स्त्री० [सं० उद् + त्वर] जल्दी। शीघ्रता। जल्दबाजी।

उताहल*–क्रि० वि० [सं० उद् + त्वर] जल्दी से।

उतिम*–वि० = उत्तम।

उतृण*–वि० दे० 'उऋण'।

उतै*†–क्रि० वि० [हि० उत] उधर।

उत्कंठा–स्त्री० [सं०] [वि० उत्कंठित] १. किसी बात की प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा। (लांगिंग) २. किसी कार्य के होने में विलम्ब न सहकर उसे चटपट करने की अभिलाषा। (साहित्य)

उत्कंठित–वि० [सं०] उत्कंठायुक्त। चाव से भरा हुआ।

उत्कंठिता–स्त्री० [सं०] संकेत-स्थान में प्रिय के न मिलने पर तर्क-वितर्क करनेवाली नायिका।

उत्कट–वि० [सं०] [भाव० उत्कटता] तीव्र। विकट। उग्र।

उत्कर्ष–पुं० [सं०] [वि० उत्कर्षित, उत्कृष्ट] १. बड़ाई। प्रशंसा। २ श्रेष्ठता। उत्तमता। ३. समृद्धि। ४. भाव, मूल्य, महत्व आदि का बढ़ना या चढ़ना। (राइज़, एप्रिसिएशन)

उत्कल–पुं० [सं०] उड़ीसा देश।

उत्कलित–वि० [सं०] १. लहराता हुआ। २. खिला हुआ।

उत्कीर्ण–वि० [सं०] १. लिखा हुआ। २. खुदा हुआ। ३. छिपा हुआ।

उत्कृष्ट–वि० [सं०] भाव० उत्कृष्टता] उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।

उत्कोच–पुं० [सं०] घूस। रिशवत।

उत्क्रांत–वि० [सं०] [भाव० उत्क्रांति] १. ऊपर की ओर चढ़नेवाला। २. जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण हुआ हो।

उत्खनन–पुं० [सं०] [वि० उत्खात]

खोदने की क्रिया । खोदाई ।

उत्तंग*–वि० दे० 'उत्तुंग' ।

उत्तंस*पुं० दे० 'अवतंस' ।

उत्त*–पुं० [सं० उत्] १. आश्चर्य । २ संदेह ।

उत्तप्त–वि० [सं०] १. खूब तपा हुआ । बहुत गरम । २. दुःखी । पीड़ित । सन्तप्त ।

उत्तम–वि० [सं०] [स्त्री० उत्तमा] सबसे अच्छा । सर्व-श्रेष्ठ । (बेस्ट)

उत्तमतया–क्रि० वि० [सं०] अच्छी तरह से । भली-भाँति ।

उत्तमता–स्त्री० [सं०] उत्तम होने की क्रिया या भाव । श्रेष्ठता । उत्कृष्टता ।

उत्तम पुरुष–पुं० [सं०] वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष का सूचक होता है । जैसे 'मैं' या 'हम' । (फर्स्ट परसन)

उत्तमर्ण–पुं० [सं०] ऋण देनेवाला व्यक्ति । महाजन । (क्रेडिटर)

उत्तमा दूती–स्त्री० [सं०] वह दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातों से समझा-बुझाकर मना लावे ।

उत्तमा नायिका–स्त्री० [सं०] वह स्वकीया नायिका जो पति के प्रतिकूल रहने पर भी स्वयं अनुकूल बनी रहे ।

उत्तमोत्तम–वि० [सं०] अच्छे से अच्छे ।

उत्तर–पुं० [सं०] १. दक्षिण दिशा के सामने की दिशा । उदीची । २. कोई प्रश्न या बात सुनकर उसके समाधान के लिए कही हुई बात । जवाब । ३. किसी कार्य या व्यवहार के बदले में किया जानेवाला कार्य या व्यवहार । प्रतिकार । बदला । ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमें उत्तर सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है या प्रश्न के वाक्यों में ही उत्तर भी होता अथवा बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है ।

वि० १. पिछला । बाद का । २. ऊपर का । ३. बढ़कर । श्रेष्ठ ।

क्रि० वि० पीछे । बाद ।

उत्तर क्रिया–स्त्री० दे० 'अंत्येष्टि'

उत्तरण–पुं० [सं०] १. पार क्रिया या भाव । २. यानों आदि पृथ्वी पर उतरना । (लैंडिंग)

उत्तरदाता–पुं० [सं० उत्तरदातृ उत्तरदात्री] वह जिससे किसी बनने-बिगड़ने पर पूछताछ की जवाबदेह । जिम्मेदार । (रेस्पॉन्सिबु

उत्तर दान–पुं० [सं०] उत्तरा रूप में मिली हुई वस्तु या (लीगेसी)

उत्तरदायित्व–पुं० [सं०] जिम्मेदारी । (रेस्पॉन्सिबिलिटी)

उत्तरदायी–वि० [सं०] जिस उत्तरदायित्व हो । जिम्मेदार । (रे

उत्तर-पद–पुं० [सं०] समस्त प शब्द जो अन्त में रहता है । 'पूर्व उलटा । जैसे—कासमर्द में 'मर्द' और कोट में 'कोट' उत्तर-पद हैं ।

उत्तर प्रदेश–पुं० [सं०] भारत का वह उत्तरी मध्य भाग जो पुर, मेरठ आदि से बनारस और गोर है । (पुराने संयुक्त प्रदेश का नया

उत्तर-वेतन–पुं० [सं०] वह किसी व्यक्ति को कुछ निश्चित कोई नौकरी कर चुकने पर या उस योग्यता के विचार से यों ही निर्वाह दिया जाता हो । अनुवृत्ति । (पेन्शन

उत्तराखंड–पुं० [सं० उत्तर + खंड] वर्ष का हिमालय के पास का भाग ।

उत्तराधिकार–पुं० [सं०] १. वह जिसके अनुसार कोई किसी व्यक्ति पर उसकी सम्पत्ति अथवा उसके उसका पद या स्थान पाता है । (सक्सेशन) २. किसी अधिकारी के कार्य, अधिकार आदि, उस आनेवाले दूसरे अधिकारी, संस्था मिलना । (डिवोलूशन)

राधिकारी-पुं० [सं०] [स्त्री० उत्तरा-
रिणी] १. वह जो किसी के मर जाने
नियमतः उसकी सम्पत्ति आदि का
कारी हो। वारिस। (एयर) २. वह
किसी के हट जाने या न रहने पर उसके
या स्थान का अधिकारी हो।
सेसर)

रायण-पुं० [सं०] १. सूर्य्य की
रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर
। २. वह छः महीने का समय जब
इस गति से बराबर उत्तर की ओर
ता रहता है।

रार्द्ध-पुं० [सं०] पिछला आधा।
का आधा भाग।

रित-वि० [सं०] जिसका उत्तर या
व दिया जा चुका हो। (रिप्लायड)

रीय-पुं० [सं०] उपरना। दुपट्टा।
१. ऊपर का। ऊपरवाला। २. उत्तर
। का। ३. उत्तर दिशा संबंधी।

रोत्तर-क्रि० वि० [सं०] १. एक के
एक। एक के अनन्तर दूसरा। २.
मशः। लगातार।

रोत्तरता-स्त्री० [सं०] 'उत्तरोत्तर'
एक के बाद एक होने की क्रिया या
। (सक्सेशन)

न-वि० [सं०] जमीन पर पीठ
ये हुए। चित। सीधा।

प-पुं० [सं०] [वि० उत्तप्त, उत्तापित]
गरमी। तपन। ताप। २. वेदना।
। ३. कष्ट। दुःख।

रण-पुं० [सं०] १. पार उतारना।
कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह
कर पहुँचाना। (ट्रांसपोर्टेशन) ३.
त्ति या संकट में पड़े हुए का उद्धार
ना। (रेसक्यूइंग)

र्ण-वि० [सं०] १. पार गया हुआ।
। २. मुक्त। ३. परीक्षा में कृत-
र्य। जो पारित (या पास) हो चुका हो।

उत्तुंग-वि० [सं०] बहुत ऊँचा।

उत्तू-पुं० [फा०] १. वह औजार जिससे बेल-बूटे या चुनट के निशान डालते हैं। २. बेल बूटे का वह काम जो इस औजार से बनता है।

मुहा० ऊत्तू करना = बहुत मारना।

वि० १. बद-हवास। २. नशे में चूर।

उत्तेजक-वि० [सं०] १. उभाड़ने, बढ़ाने या उकसानेवाला। प्रेरक। २. मनोवेगों को तीव्र करनेवाला।

उत्तेजना-स्त्री० [सं०] [वि० उत्तेजित, उत्तेजक] १. प्रेरणा। बढ़ावा। प्रोत्साहन। २. ऐसी बात या कार्य जिससे कोई वृत्ति या भाव जाग्रत या प्रबल होकर किसी को कोई काम करने के लिए प्रवृत्त करे। (एक्साइटमेन्ट) ३. वेगों को तीव्र करने की क्रिया।

उत्तोलन-पुं० [सं०] [वि० उत्तोलक] १. ऊँचा करना। तानना। २. तौलना।

उत्थनि*-स्त्री० दे० 'उत्थान'।

उत्थवना*-स० [सं० उत्थापन] १. आरम्भ करना। २. उठाना।

उत्थान-पुं० [सं०] १. उठने का कार्य्य या भाव। (राइज) २. उठान। आरम्भ। ३. उन्नति।

उत्थानक-वि० [सं०] उत्थान करने, ऊपर उठाने या ऊँचा चढ़ानेवाला। पुं० १. किसी व्यक्ति के एक दम से ऊँचे पद पर पहुँचने की क्रिया। २. बिजली के द्वारा चढ़ने-उतरनेवाला वह चौकोर सन्दूक किसकी सहायता से लोग बहुत ऊँचे मकानों या खानों में चढ़ते-उतरते हैं। (लिफ्ट)

उत्थापन-पुं० [सं०] १. ऊपर उठाना। २. जगाना।

उत्थित-वि० [सं०] १. उठा हुआ। उन्नत। २. जो उठकर खड़ा हुआ हो।

उत्पत्ति-स्त्री० [सं०] [वि० उत्पन्न] १. पहले-पहल अस्तित्व में आना। उद्भव। २. जन्म। पैदाइश। ३. उपज। पैदावार।

४. किसी वस्तु में उपयोगिता या उसके स्वरूप में कोई नवीनता आने की क्रिया या भाव। (प्रोडक्शन)

उत्पन्न-वि० [सं०] [स्त्री० उत्पन्ना] १. जिसकी उत्पत्ति हुई हो। पैदा। २. जिसने जन्म लिया हो। जात। जैसे–पुत्र उत्पन्न होना। ३. जो किसी प्रकार अस्तित्व में आया हो। उद्भूत। जैसे–सन्देह उत्पन्न होना।

उत्पल-पुं० [सं०] कमल।

उत्पाटन-पुं० [सं०] [वि० उत्पाटित, कर्त्ता उत्पाटक] उखाड़ना।

उत्पात-पुं० [सं०] १. कष्ट पहुँचानेवाली आकस्मिक घटना। उपद्रव। आफत। २. अशांति। हलचल। ३. ऊधम। दंगा। ४. शरारत।

उत्पाती-पुं० [सं० उत्पातिन्] [स्त्री० उत्पातिनी] १. उत्पात या उपद्रव मचानेवाला। उपद्रवी। २. नटखट। शरारती।

उत्पादक-वि० [सं०] [स्त्री० उत्पादिका] १. उत्पन्न करनेवाला। २. (वस्तु, कार्य आदि) जिससे कुछ उत्पादन हो। (प्रोडक्टिव) ३. लोगों के व्यवहार के लिए सामान या माल तैयार करनेवाला। (प्रोडयूसर)

उत्पादन-पुं० [सं०] [वि० उत्पादित] १. उत्पन्न करना। पैदा करना। २. बनाना। ३. लोगों के व्यवहार के लिए सामान या माल तैयार करना। (प्रोडक्शन)

उत्पाद शुल्क-पुं० [सं०] वह शुल्क जो राज्य में बननेवाले कुछ विशिष्ट पदार्थों (जैसे-कपड़े, दीया सलाई, नमक आदि) के बनते ही और बाजार में बिकने के लिए आने से पहले ही राज्य की ओर से ले लिया जाता है। (एक्साइज ड्यूटी)

उत्पीड़न-पुं० [सं०] [कर्त्ता उत्पीड़क, वि० उत्पीड़ित) किसी को पीड़ा या कष्ट पहुँचाना। बहुत दुःख देना। सताना।

उत्पीड़ित-वि० [सं०] जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो। सताया हुआ

उत्प्रेक्षक-वि० [सं०] उत्प्रेक्षा क

उत्प्रेक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० उत्प्रेक्षणीय, कर्त्ता उत्प्रेक्षक] १. उ २. उपेक्षा। ३. एक अ जिसमें भेद-ज्ञान पर भी में उपमान की प्रतीति होती है। पुस्तक मानो रत्न है।

उत्फुल्ल-वि० [सं०] [भाव० उत् १. विकसित। खिला हुआ। २.

उत्संग-पुं० [सं०] १. गोद। अंक। २. मध्य भाग। बीच। ३ का भाग।

वि० निर्लिप्त। विरक्त।

उत्सन्न-वि० दे० 'उत्सादित'।

उत्सर्ग-पुं० [सं०] १. किसी के पर या किसी उद्देश्य से छोड़ना। वृषोत्सर्ग। २. छोड़ना। त्यागना दान। ४. निछावर। ५. समाप्ति। ६. कोई साधारण या व्यापक जिसमें कोई अपवाद भी हो।

उत्सर्जन-पुं० [सं०] [वि० उ उत्सृष्ट] १. त्याग। छोड़ना। २. ३. किसी कर्मचारी को बिना दोष या लांछन के, यों ही अथवा होने के कारण, उसके पद से ह अलग करना। (डिस्चार्ज)

उत्सर्जित-वि० [सं०] १. त्या छोड़ा हुआ। २. अपने पद या क हटाया हुआ। ३. किसी के लिए दा में या त्यागपूर्वक छोड़ा हुआ।

उत्सव-पुं० [सं०] १. धूम-धाम से वाला कोई सार्वजनिक, बड़ा, शु मंगल कार्य। समारोह। २. आनंद का समय। ३. त्योहार। पर्व। (फ

उत्सादन-पुं० [सं०] [वि० उत्सा १. कोई पद या स्थान आदि न रहने दे

(एब्रॉलिशन.) २. किसी की आज्ञा रद रना। (सेट एसाइड)

सादित-वि० [सं०] १. (पद आदि) जो रहने दिया गया हो। (एब्रॉलिश्ड) २. आज्ञा या निश्चय) जो रद कर दिया गया । (सेट-एसाइड)

साह-पुं० [सं०] [वि० उत्साहित, त्साही] १. उमंग। उछाह। जोश। सला। २. हिम्मत साहस। (वीर रस का स्थायी भाव)

त्साहिल*-वि० दे० 'उत्साही'।

त्साही-वि० [सं० उत्साहिन्] उत्साह- क। हौसलेवाला।

त्सुक-वि० [सं०] [स्त्री० उत्सुका] उत्कंठित। अत्यन्त इच्छुक। २. चाही ई बात में देर न सहकर उसके उद्योग में तत्पर होनेवाला।

सुकता-स्त्री० [सं०] १. प्रबल इच्छा। किसी कार्य में विलम्ब न सहकर उसमें तसर होना। (एक संचारी भाव)

त्सूत्र-वि० [सं०] सूत्र से भिन्न या विपरीत।

सृष्ट-वि० [सं०] छोड़ा हुआ। त्यक्त।

थपना*-स० [सं० उत्थापन] १. ठना। २. उखाड़ना। ३. उजाड़ना।

अ० १.उठना। २.उखड़ना। ३.उजड़ना।

रा*-वि० [भाव० उथराई] = उथला।

लना-अ० [सं० उत्+स्थल] १. गमगाना। डाँवाँडोल होना। २.उलट-पुलट ना। ३. पानी का उथला होना। नीचे-ऊपर या इधर-उधर करना।

थल-पुथल-स्त्री० [हिं० उथलना] १. उलट-पुलट। विपर्यय। क्रम-भंग। २. लटना-पलटना।

उलट-पुलट। अंड का बंड। अव्यवस्थित।

ला-वि० [हिं० उथलना] [स्त्री० ली] १. (जल या पात्र) जो अधिक गहरा न हो। छिछला। २. जिसकी ऊँचाई अधिक न हो। कम ऊँचा।

उथापना*-स० [सं० उत्थापन] १. ऊपर उठाना। २. खड़ा करना। ३. उखाड़ना। ४. दे० 'थापना'।

उदंत*-पुं० [?] वृत्तान्त। हाल।

उद्-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें ये विशेष बातें उत्पन्न करता है—(क) ऊपर; जैसे-उद्गमन। (ख) पार जाना; जैसे-उत्तीर्ण। (ग) प्रबलता; जैसे–उद्वेग। (घ) प्रकाश; जैसे–उच्चारण।

उदक-पुं० [सं०] जल। पानी।

उदक-क्रिया-स्त्री० [सं०] तिलांजलि।

उदकना*-अ० [देश०] कूदना।

उदगरना*-अ० [सं० उद्गरण] १. निकलना। बाहर होना। २. प्रकाशित या प्रकट होना। सामने आना ३.ऊपर उठना। उभड़ना।

उदगारना*-स० [सं० उद्गार] १. बाहर निकालना। बाहर फेंकना। २. उभाड़ना। भड़काना। उत्तेजित करना।

उदगारी*-वि० [सं० उद्गार] १. उगलनेवाला। २. बाहर निकालनेवाला।

उदग्ग*-वि० दे० 'उदग्र'।

उदग्र-वि० [सं०] १. उच्च। ऊँचा। २. विशाल। बड़ा। ३. उद्दंड। ४. विकट। ५. तीव्र। तेज़। ६. बहुत प्रबल। प्रचंड।

उदघटना*-अ० [सं० उद्घटन] प्रकट होना। उदय होना।

उदघाटना*-स० [सं० उद्घाटन] प्रकट करना। प्रकाशित करना। खोलना।

उदजन-पुं० [सं० उद्+जन] एक प्रकार का अदृश्य, गंधहीन और वर्णहीन वाष्प जिसकी गणना तत्वों में होती है। (हाइड्रोजन)

उदथ*-पुं० [सं० उद्गीथ] सूर्य्य।

उदधि-पुं० [सं०] १. समुद्र। २. मेघ।

उदपान*-पुं० [सं० उदक+पान =

पीना] कमंडलु जिसमें साधु लोग पीने का जल रखते है।

उदवस*-वि० [हिं० उद्वासन] १.उजाड़। सूना। २. एक स्थान पर न रहनेवाला। खाना-बदोश।

उदबासना-स० [सं० उद्वासन] १. तंग करके स्थान से हटाना। रहने में विघ्न डालना। भगा देना। २. उजाड़ना।

उदमद*-वि० दे० 'उन्मत्त'।

उदमदना*-अ० [सं० उद्+मद] पागल या उन्मत्त होना।

उदमाद*-पुं० दे० 'उन्माद'।

उदमादना-स० [सं० उन्मत्त] १. उन्मत्त करना।

अ० दे० 'उदमादना'।

उदमानना-अ० [सं० उन्मत्त] उन्मत्त होना। पागल होना।

स० दे० 'उदमादना'।

उदय-पुं०[सं०] [वि०उदित, उदीयमान]१. ऊपर आना। निकलना। प्रकट होना। (विशेषतः ग्रहों के लिए)

पद-उदय से अस्त तक = पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक। सारी पृथ्वी में। २. किसी नई चीज, बात, शक्ति, आदि का उत्पन्न होकर सामने आना। (राइज) जैसे-किसी नये राष्ट्र या देश का उदय। ३. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। ४. निकलने का स्थान। उद्गम। ५. दे० 'उदयाचल'।

उदयना*-अ० [हिं० उदय] उदय होना।

उदयाचल-पुं० [सं०] पुराणानुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से सूर्य का निकलना माना जाता है।

उदर-पुं० [सं०] १. पेट। जठर। २. अन्दर या बीच का भाग। मध्य। पेटा।

उदरना*-अ० दे० 'ओदरना'।

उदसना*-अ० [सं० उद्सन] १. उजड़ना। २. उदास होना।

उदात्त-वि० [सं०] १. ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ। २. दया- कृपालु। ३. दाता। उदार। ४. बड़ा। ५. स्पष्ट। विशद। ६. समर्थ पुं० [सं०] १. वेद के स्वर के उच्चा एक भेद। २.साहित्य में एक अलंकार संभाव्य विभूति का वर्णन बहुत बढ़ा कर किया जाता है।

उदान-पुं० [सं०] वह प्राण-वायु डकार और छींक आती है।

उदाम-वि० दे० 'उद्दाम'।

उदायन*-पुं० [सं० उद्यान] बाग।

उदार-वि० [सं०] [भाव० उद १. दाता। दानशील। २. बड़ा। ३. ऊँचे दिल का। ४. विचारों संकीर्णता और दुराग्रह से दूर किसी विषय पर विचार करने (लिबरल)

उदार-चरित-वि० [सं०] जिसका उदार हो। ऊँचे दिल का।

उदारचेता-वि० दे० 'उदार-चरित'।

उदारता-स्त्री० [सं०] १. दानशील २. उच्च विचार।

उदारना*-स० [सं० उदारण] १. 'ओदारना'। २. गिराना। तोड़ना।

उदाराशय-वि० [सं०] जिसके और उद्देश्य उच्च हों। महापुरुष।

उदास-वि० [सं० उदास्] १. चित्त किसी पदार्थ से दुःखी होकर गया हो। विरक्त। २. झगड़े से अ निरपेक्ष। तटस्थ। ३. दुःखी। रंजीदा

उदासना*-अ० [हिं० उदास] होना।

स० [सं० उदसन] १. उजाड़ना। तितर-बितर करना। ३. उदास करना।

उदासी-पुं० [सं० उदास + हिं० (प्रत्य०)] १. विरक्त या त्यागी पु २. सनातनधर्मी साधुओं का एक स जो गुरु नानक के पुत्र महात्मा श्री चन्द्र

अनुयायी है।

ली० १. उदास होने की क्रिया या भाव। खिन्नता। २. दुःख।

ासीन-वि० [सं०] [भाव० उदासीनता] . जिसका चित्त दुःखी होकर किसी बात हट गया हो। विरक्त। २. झगड़े-खेड़े से अलग। ३. जो परस्पर विरोधी लों में से किसी की ओर न हो। निष्पक्ष। तटस्थ।

दासीनता-स्त्री० [सं०] १. विरक्ति। त्याग। २. निरपेक्षता। तटस्थता। ३. उदासी। खिन्नता।

ाहरण-पुं० [सं०] १. बहुत-सी घटनाओं ा बातों में से ली हुई कोई ऐसी घटना या बात, जिससे उन सब घटनाओं या बातों का ठीक-ठीक और स्पष्ट स्वरूप मालूम हो जाय। (इलस्ट्रेशन) २. ऐसा कार्य जो आदर्श रूप हो और जिसे देखकर लोग वैसा ही कार्य करने के लिए उत्साहित हों। (एग्जाम्पुल) ३. कही या बतलाई हुई ऐसी घटना या तथ्य जिससे किसी विषय या परिस्थिति का ठीक स्वरूप समझ में आ जाय। दृष्टान्त। मिसाल। (इन्सटेन्स)

दक-वि० [सं०] १. जल-संबंधी। २. स जल से संबंध रखनेवाला जो नल आदि के द्वारा कहीं पहुँचता हो। (हाइड्रॉलिक)

दित-वि० [सं०] [स्त्री० उदिता] १. ो उदय हुआ हो। निकला हुआ। २. प्रकट। जाहिर। ३. उज्ज्वल। स्वच्छ। ४. प्रचलित।

दियाना*-अ० [सं० उद्विग्न] उद्विग्न होना। घबराना।

स० उद्विग्न करना।

दीची-स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा।

दीच्य-वि० [सं०] १. उत्तर का रहने-वाला। २. उत्तर दिशा का।

दीयमान-वि० [सं०] [स्त्री० उदीयमाना] १. जिसका उदय हो रहा हो। २. उठता या उभड़ता हुआ। ३. जिसमें आरम्भ से ही बड़े और अच्छे होने के लक्षण दिखाई दें। होनहार। (प्रॉमिसिंग)

उदीरण-पुं० [सं०] कहना। कथन।

उदीरणा-स्त्री० [सं०] प्रेरणा।

उदुंबर-पुं० [सं०] [वि० औदुंबर] १. गूलर। २. देहली। ड्योढ़ी। ३. नपुंसक। ४. एक प्रकार का कोढ़।

उदेग*-पुं० दे० 'उद्वेग'।

उदेस*-पुं० दे० 'उद्देश्य'।

उदोत*-पुं० [सं० उद्योत] प्रकाश।

वि० १. प्रकाशित। दीप्त। २. उत्पन्न।

उद्गम-पुं० [सं०] १. उदय। आविर्भाव। २. उत्पत्ति का स्थान। उद्भव-स्थान। निकास। ३. वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो।

उद्गार-पुं० [सं०] [वि० उद्गारी, उद्गारित] १. उबाल। उफान। २. वमन। कै। ३. थूक। कफ। ४. घोर शब्द। ५. बहुत दिनों से मन में रखी हुई बात एक-बारगी कहना। ६. मन के विचार या भाव।

उद्घाटक-वि० [सं०] उद्घाटन करनेवाला।

उद्घाटन-पु० [सं०] १. आगे पड़ा हुआ परदा उठाना, खोलना या उभाड़ना। २. छिपी हुई बात प्रकट या प्रकाशित करना। रहस्य खोलना। ३. किसी बड़े समारंभ, सार्वजनिक उत्सव, सम्मेलन आदि का महत्त्व और गौरव बढ़ाने के लिए किसी बड़े आदमी के द्वारा उसके कार्य का आरंभ किया जाना। (इनॉगुरेशन)

उद्घोषणा-स्त्री० [सं०] सार्वजनिक रूप से दी जानेवाली सूचना। (प्रोक्लेमेशन)

उद्दंड-वि० [सं०] [भाव० उद्दंडता] जिसे दंड का भय न हो। अक्खड़। उद्धत।

उद्दाम-वि० [सं०] १. बंधन-रहित। २. निरंकुश। उद्दंड। बे-कहा। ३. स्वतंत्र। ४. महान्। ५. गंभीर।

उद्दित*-वि० १. दे० 'उदित'। २. दे० 'उद्धत'। ३. दे० 'उद्यत'।

उद्दिष्ट-वि० [सं०] १. दिखाया हुआ। इंगित किया हुआ। २. जो उद्देश्य रूप में सामने हो। लक्ष्य। अभिप्रेत।

पुं० वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कोई छन्द मात्रा-प्रस्तार का कौन-सा भेद है।

उद्दीपक-वि० [सं०] [स्त्री० उद्दीपिका] उत्तेजित या उद्दीप्त करनेवाला।

उद्दीपन-पुं० [सं०] [वि० उद्दीप्त, उद्दीप्य] १. उत्तेजित करने की क्रिया या भाव। उभाड़ना। बढ़ाना। जगाना। २. उद्दीप्त या उत्तेजित करनेवाला पदार्थ। ३. काव्य में वे पदार्थ जो रस को उत्तेजित करते हैं। जैसे-ऋतु, पवन आदि।

उद्दीप्त-वि० [सं०] १. जिसका उद्दीपन हुआ हो। २. उमड़ा, बढ़ा या जागा हुआ। ३. उत्तेजित।

उद्देश-पुं० [सं०] [वि० उद्दिष्ट, उद्देश्य, उद्देशित] १. अभिलाषा। चाह। २. कुछ करने की कामना, इच्छा या विचार। मनशा। ३. मतलब। अभिप्राय। ४. न्याय-शास्त्र में प्रतिज्ञा।

उद्देश्य-पुं०[सं०] १.वह वस्तु या बात जिसे ध्यान में रखकर कुछ कहा या कोई काम किया जाय। ध्येय। २. वह जिसके प्रति कोई कार्य या विचार चलता या होता हो। अभिप्रेत वस्तु या कार्य। इष्ट। ध्येय। (ऑब्जेक्ट) ३. व्याकरण में वह जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा या विधान किया जाय। विशेष्य। 'विधेय' का उलटा। जैसे-वह बैठा है में 'वह' उद्देश्य है।

उद्ध*-क्रि० वि० दे० 'ऊर्ध्व'।

उद्धत-वि० [सं०] १. उग्र। प्रचंड। २. अक्खड़। ३. प्रगल्भ।

उद्धना*-अ० [सं० उद्धरण] १. ऊपर उठना। २. उड़ना या फैलना।

उद्धरण-पुं० [सं०] [वि० उ
उद्धृत] १. ऊपर उठना। २. मु
३. बुरी अवस्था से अच्छी अ
आना। ४. पढ़ा हुआ पिछला पाठ
के लिए फिर फिर पढ़ना। ५. कि
का कोई अंश दूसरे लेख में ज्यों
रखना। उपनय। (कोटेशन, साइ
६. प्रमाण, साक्षी आदि के रूप में
हुआ किसी लेख आदि का कोई
(एक्सट्रैक्ट)

उद्धरणी-स्त्री० [सं० उद्धरण+
(प्रत्य०)] १. पढ़ा हुआ पिछ
अभ्यास के लिए बार बार पढ़ना
दे० 'उद्धरण'।

उद्धरना*-स० [सं० उद्धरण]
करना। उबारना।

अ० बचना। छूटना।

उद्धव-पुं० [सं०] १. उत्सव। २.
के एक प्रसिद्ध सखा जिन्हें उन्होंने
से गोपियों को सान्त्वना देने के लि
में भेजा था।

उद्धार-पुं० [सं०] १. नीचे से नि
उठाकर ऊपर ले जाना। (रेज़िंग, लि
२. विपत्ति, संकट आदि से किसी को
करना। मुक्ति। (डेलीवरेन्स) ३.
या विपत्ति में पड़े हुए को बचाने के
से उसके पास पहुँचकर उसकी रक्षा क
(रेस्क्यूइंग) ४. दुरवस्था में या
पड़ी हुई चीज को सुधार या ठीक
काम में आने योग्य बनाना। (रिक्ले
५. ऋण, देन आदि से होनेवाला छुट
६. प्राचीन व्यवहार या लेन-देन में वह
जिसपर ब्याज न लगे। बिना सूद का
७. दे०'उधार'।

उद्धारक-वि० [सं०] उद्धार करने

उद्धारण-पुं० [सं०] १. उद्धार
की क्रिया या भाव। २. वाक्य, पद,
आदि कहीं से जान-बूझकर निका

अलग कर देना। (डिलीशन)

उद्धारणिक-पुं० [सं०] वह जिसने किसी से ऋण या उधार लिया हो। कर्ज लेनेवाला। (बॉरोवर)

द्धारना*-स० [सं० उद्धार] १. उद्धार करना। २. छुटकारा दिलाना।

द्धार-विक्रय-पुं० [सं०] उधार बेचना। (क्रेडिट सेल)

द्धृत-वि० [सं०] १. उगला हुआ। २. ऊपर उठाया हुआ। ३. अपने कथन के समर्थन, प्रमाण आदि के लिए अन्य स्थान से उद्धरण के रूप में ज्यों का त्यों लिया हुआ। (कोटेड)

द्बुद्ध-वि० [सं०] १. विकसित। खिला हुआ। २. प्रबुद्ध। ३. जिसे ज्ञान हो गया हो। चैतन्य। ४. जागा हुआ।

उद्बोध-पुं० [सं०] थोड़ा ज्ञान।

द्बोधन-पुं० [सं०] [वि० उद्बोधक, उद्बोधनीय, उद्बोधित] १. बोध या ज्ञान कराना। जताना। २. प्रकाशित, प्रकट या सूचित करना। ३. उत्तेजित करना। ४. जगाना।

द्भट-वि० [सं०] [भाव० उद्भटता] . प्रबल। प्रचंड। २. श्रेष्ठ। ३. हुत बड़ा।

द्भव-पुं० [सं०] [वि० उद्भूत] १. उत्पत्ति। जन्म। २. किसी पूर्वज के वंश में उत्पन्न होने अथवा किसी मूल से निकलने का तथ्य या भाव। (डिसेन्ट) ३. वृद्धि। बढ़ती।

द्भावना-स्त्री० [सं०] १. मन की उपज। कल्पना। २. उत्पत्ति।

द्भिज-पुं० [सं०] वृक्ष, लता, गुल्म आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं। वनस्पति। पेड़-पौधे।

द्भिद-पुं० दे० 'उद्भिज'।

द्भूत-वि० [सं०] उत्पन्न।

द्भूति-स्त्री० [सं०] [वि० उद्भूत] १. उत्पत्ति। जन्म। २. उन्नति।

उद्भेदन-पुं० [सं०] १. तोड़ना-फोड़ना। २. फोड़कर निकलना।

उद्भ्रम-पुं० [सं०] १. ऊपर की ओर उठना या भ्रमण करना। २. बुद्धि का विनाश। विभ्रम। ३. मन का उद्वेग।

उद्भ्रांत-वि० [सं०] १. घूमता या चक्कर खाता हुआ। २. भूला-भटका हुआ। ३. चकित। भौचक्का। ४. उन्मत्त। पागल। ५. विकल। विह्वल।

उद्यत-वि० [सं०] १. तैयार। तत्पर। प्रस्तुत। मुस्तैद। २. उठाया हुआ।

उद्यम-पुं० [सं०] [वि० उद्यमी, उद्यत] १. प्रयास। प्रयत्न। उद्योग। २. मेहनत। ३. वह काम जिसके द्वारा कोई अपनी जीविका चलाता हो। पेशा। (अकुपेशन)

उद्यमी-वि० [सं० उद्यमिन्] उद्यम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील।

उद्यान-पुं० [सं०] बगीचा। बाग।

उद्यानकरण-पुं० [सं०] बाग बगीचों में पौधे आदि लगाने, उनकी देख-रेख करने और ऐसे ही दूसरे कामों की विद्या या कला। (हॉर्टिकल्चर)

उद्यापन-पुं० [सं०] किसी व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य। जैसे—हवन, ब्राह्मण-भोजन आदि।

उद्युक्त-वि० [सं०] उद्योग में लगा हुआ।

उद्योग-पुं० [सं०] [वि० उद्योगी, उद्युक्त] १. प्रयत्न। प्रयास। कोशिश। २. मेहनत। ३. उद्यम। काम-धन्धा।

उद्योग-धंधे-पुं० बहु० [सं० उद्योग + हिं० धन्धा] व्यापार आदि के लिए कच्चे माल से लोक-व्यवहार के लिए पक्के माल या सामान बनाना। (इन्डस्ट्री)

उद्योग-पति-पुं० [सं०] वह जो कच्चे माल से पक्का माल तैयार करनेवाले किसी कारखाने का मालिक हो। (इन्डस्ट्रिअलिस्ट)

उद्योगालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ

बिक्री के लिए बनाकर चीजें तैयार की जाती हों। कारखाना। (फैक्टरी)

उद्योगी–वि० [सं० उद्योगिन्] [स्त्री० उद्योगिनी] उद्योग करनेवाला। मेहनती।

उद्योत–पुं० [सं०] १. प्रकाश। उजाला। २. चमक। आभा।

उद्रेक–पुं० [सं०] [वि० उद्रिक्त] १. वृद्धि। बढ़ती। अधिकता। २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मन्द पड़ने का वर्णन होता है।

उद्वासन–पुं० [सं०] [वि० उद्वासनीय, उद्वासित, उद्वास्य, कर्त्ता उद्वासक] १. कहीं बसे हुए व्यक्ति को कष्ट पहुँचाकर उससे उसका निवास-स्थान छुड़ाना। भगाना। खदेड़ना। २. उजाड़ना। वास-स्थान नष्ट करना। ३. मारना।

उद्वासित–वि० [सं०] १. (व्यक्ति) जिसे अपने निवास-स्थान से मार या उजाड़कर भगा दिया गया हो।

उद्वाह–पुं० [सं०] विवाह।

उद्विग्न–वि० [सं०] [भाव० उद्विग्नता] उद्वेगयुक्त। आकुल। घबराया हुआ।

उद्वेग–पुं० [सं०] [वि० उद्विग्न] १. चित्त की व्याकुलता। घबराहट। (संचारी भावों में से एक) २. मनोवेग। चित्त की तीव्र वृत्ति। आवेश। जोश। ३. झोंक। ४. किसी विकट या चिन्ताजनक घटना के कारण लोगों को होनेवाला वह भय जिसके फलस्वरूप लोग अपनी रक्षा के उपाय सोचने लगते हैं। (पैनिक)

उद्वेजक–पुं० [सं०] उद्विग्न करनेवाला।

उद्वेजन–पुं० [सं०] उद्विग्न करना।

उद्वेल–पुं० [सं०] [वि० उद्वेलित] १. किसी चीज में भर जाने के कारण इधर-उधर बिखरना। २. छलकना। छलछलाना।

उधड़ना–अ० [सं० उद्धरण] १. खुलना। उचड़ना। २. सिला, जमा या लगा न रहना। ३. उजड़ना।

उधम–पुं० दे० 'ऊधम'।

उधर–क्रि० वि० [सं० उत्तर] उस उस तरफ। दूसरी तरफ।

उधरना*–अ० [सं० उद्धरण] १. होना। २. दे० 'उधड़ना'।

स० [सं० उद्धार] उद्धार करना।

स० [सं० उद्धरण] उद्धरणी करना।

उधराणी*–स्त्री० [सं० उद्धार, उधार] उधार दिया हुआ धन करना। उगाही। (मारवाड़)

उधार–पुं० [सं० उद्धार] १. जो चुका देने के वादे पर माँगकर गया हो। कर्ज। ऋण।

मुहा०–उधार खाये बैठना = भारी आसरे पर दिन काटते रहना। समय तैयार रहना।

२. इस प्रकार किसी से धन लेने की या भाव। ३. किसी एक वस्तु का पास केवल कुछ दिनों के व्यवहार के जाना। मँगनी।

*पुं० दे० 'उद्धार'।

उधारक*–वि० दे० 'उद्धारक'।

उधारना–स० [सं० उद्धरण] उद्धार

उधारी*–वि० दे० 'उद्धारक'।

उधेड़ना–स० [सं० उद्धरण] १. मि परतों को अलग-अलग करना। २. के टाँके खोलना। ३. छितराना। बिख

उधेड़-बुन–स्त्री० [हिं० उधेड़ना + १. सोच-विचार। ऊहा-पोह। २. बाँधना।

उध्वंस–पुं० = विध्वंस।

उध्वस्त–वि० = विध्वस्त।

उनंत*–वि० [सं० अनुन्नत] झुका

उन–सर्व० हिं० 'उस' का बहुवचन।

उनचन–स्त्री० [हिं० उनचना] वह जो चारपाई में पैताने की ओर बुनावट कसने के लिए लगाई जाती है

नचना-स० [हिं० ऐंचना] चारपाई ी उनचन ढीली हो जाने पर कसना।

दौंहाँ*-वि० दे० 'उनींदा'।

मद*-वि० दे० 'उन्मत्त'।

मान*-पुं० दे० 'अनुमान'।
० [सं० उद् + मान] १. परिमाण। २. -तौल। थाह। ३. शक्ति। सामर्थ्य।
० तुल्य। समान।

मानना*-स० [हिं० उनमान] अनुमान करना। खयाल करना।

नमुना*-वि० दे० 'अनमना'।

नमुनी*-स्त्री० दे० 'उन्मनी'।

मूलना*-स० दे० 'उखाड़ना'।

नमेख*-पुं० दे० 'उन्मेष'।

नमेखना*-स० [सं० उन्मेष] १. आँखों का खुलना। उन्मीलित होना। २. विकसित होना। (फूलों आदि का)

नमेद-पुं० [?] बरसात के आरंभ में नेवाले जल का जहरीला फेन। माँजा।

नरना*-अ० [सं० उन्नरण = ऊपर जाना] १. उठना। उमड़ना। २. कूदकर चलना।

नवना*-अ० [सं० उन्नमन] १. झुकना। टकना। २. छाना। घिर आना। (मेघ, नोविकार आदि का) ३. आ टूटना। र पड़ना।

नवर*-वि० [सं० ऊन] कम। न्यून।

नवान*-पुं० दे० 'अनुमान'।

हानि*-स्त्री० [हिं० अनुहार] समता। राबरी।

नहार*-वि० दे० 'अनुसार'।

नाना*-स० [सं० उन्नमन] १. झुकाना। २. लगाना। प्रवृत्त करना।
अ० आज्ञा मानना।

नारना*-स० [सं० उन्नमन] १. उठाना। २. बढ़ाना। ३. दे० 'उनाना'।

नींदा-वि० [सं० उन्निद्र] [स्त्री० उनींदी] त जागने के कारण अलसाया हुआ। नींद से भरा हुआ। ऊँघता हुआ।

उनैना*-अ० दे० 'उनवना'।

उन्नत-वि० [सं०] १. ऊँचा। ऊपर उठा हुआ। २. बढ़ा हुआ। समृद्ध। ३. श्रेष्ठ।

उन्नतांश-पुं० [सं०] किसी आधार, स्तर या रेखा से ऊपर की ओर का विस्तार। ऊँचाई। (आल्टिट्यूड)

उन्नति-स्त्री० [सं०] १. ऊँचाई। चढ़ाव। २. जितना हो, उससे कुछ और अधिक होना। वृद्धि। समृद्धि। ३. पहले की अवस्था से अच्छी या ऊँची अवस्था की ओर बढ़ना। ४. जितना या जहाँ तक हो, उससे अधिक होना या आगे बढ़ना। सुधार। (ऐडवान्समेन्ट, इम्प्रूवमेन्ट)

उन्नतोदर-पुं० [सं०] १. चाप या वृत्तखंड का ऊपरी तल। २. वह वस्तु जिसका वृत्त-खंड ऊपर उठा या उभरा हुआ हो। (कॉन्वेक्स)

उन्नयन-पुं० [सं०] [वि० उन्नीत] १. ऊपर की ओर उठाना या ले जाना। २. ऊँची कक्षा या पद पर भेजा जाना। (प्रोमोशन)

उन्नाब-पुं० [अ०] एक प्रकार का बेर जो हकीमी दवाओं में पड़ता है।

उन्नायक-वि० [सं०] [स्त्री० उन्नायिका] १. ऊँचा करनेवाला। उन्नत करनेवाला। २. बढ़ानेवाला।

उन्निद्र-वि० [सं०] १. निद्रा-रहित। जैसे—उन्निद्र रोग। २. जिसे नींद न आई हो। ३. विकसित। खिला हुआ।
पुं० एक रोग जिसमें मनुष्य को नींद बिलकुल नहीं आती या कभी-कभी और बहुत कम आती है। (इन्सोम्निया)

उन्नीत-वि० [सं०] १. ऊपर चढ़ाया या पहुँचाया हुआ। २. ऊपर की कक्षा में या पद पर पहुँचाया हुआ। (प्रोमोटेड)

उन्नीस-वि० [सं० एकोनविंशति] एक कम बीस। दस और नौ।

मुहा०-उन्नीस बिस्वे = (ख) अधिकतर।

प्रायः। (ख) अधिकांश। **उन्नीस होना** = (क) मात्रा में कुछ कम होना। थोड़ा होना। (ख) गुण या विशेषता में किसी की अपेक्षा कुछ घटकर होना। (दो वस्तुओं का परस्पर) **उन्नीस-बीस होना** = दो वस्तुओं का प्रायः समान होने पर भी उन में से एक का दूसरी से कुछ अच्छा होना।

उन्मत्त–वि० [सं०] [भाव० उन्मत्तता] १. मतवाला। मदांध। २. जो आपे में न हो। बेसुध। ३. पागल। बावला।

उन्मद–पुं० [सं०] १. उन्मत्त। प्रमत्त। २. पागल। बावला। ३. उन्माद। पागलपन।

उन्मन*–वि० दे० 'अन्यमनस्क'।

उन्मनी–स्त्री० [सं०] हठ-योग में नाक की नोक पर दृष्टि गड़ाना।

उन्माद–पुं० [सं०] [कर्त्ता उन्मादक, वि० उन्मादी] १. मस्तिष्क का वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्य्य-क्रम बिगड़ जाता है। पागलपन। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम। २. रस के तेंतीस संचारी भावों में से एक, जिसमें वियोग के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता।

उन्मादन–पुं० [सं०] १. उन्मत्त या मतवाला करना। २. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

उन्मादी–वि० [स्त्री० उन्मादिनी] दे० 'उन्मत्त'।

उन्मान–पुं० [सं०] किसी वस्तु, व्यक्ति, गुण आदि का मान, मूल्य या महत्त्व समझना। (एप्रिसिएशन)

उन्मीलन–पुं० [सं०] (वि० उन्मीलनीय, उन्मीलित, कर्त्ता उमीलक) १. खुलना। (नेत्र)। २. विकसित होना। खिलना।

उन्मीलित–वि० [सं०] खुला हुआ। पुं० साहित्य में एक अलंकार जिसमें दो वस्तुओं में इतना अधिक सादृश्य दिखाया जाता है कि केवल एक बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़ता है।

उन्मुक्त–वि० [सं०] १. जो बँधा न खुला हुआ। जैसे–उन्मुक्त केश। किसी प्रकार के बन्धन से छोड़ दिया हो। मुक्त किया हुआ। (डिस्चार्ज्ड)

उन्मुक्ति–स्त्री० [सं०] [वि० १. मुक्त होने की क्रिया या भाव। कारा। २. अभियोग आदि से छु (एक्विटल) ३. नियम के बंधनों से विशेष कारण से मुक्त होना। (एग्जेम ४. किसी प्रकार के अभियोग, बन्धन से छोड़ा जाना। (डिस्चार्ज)

उन्मुख–वि० [सं०] [स्त्री० भाव० उन्मुखता] १. ऊपर मुँह किये २. उत्कंठित। उत्सुक। ३. उद्यत।

उन्मूलक–वि० [सं०] समूल नष्ट वाला। बरबाद करनेवाला।

उन्मूलन–पुं० [सं०] [वि० उन्मूलित] १. जड़ से उखाड़ना। नष्ट करना। २. पहले की आज्ञा, या कार्य न रहने देना। ३. मिटाना। (एब्रॉलिशन) ४. इस नष्ट करना कि फिर उठ या पनप न (एक्स्टर्पेशन)

उन्मूलित–वि० [सं०] १. उन्मूलन हुआ हो। २. जिसका न रहने दिया गया हो। (एबॉलिश्ड)

उन्मेष–पुं० [सं०] [वि० उन्मेषित] खुलना। (आँखों का) २. विकास खिलना। ३. थोड़ा प्रकाश।

उन्मोचन–पुं० [सं०] [कर्त्ता उन्मोच १. दे० 'मोचन'। २. किसी विशेष से किसी को किसी नियम के बंधन से मुक्त या अलग रखना। (एग्जेम्पशन

उन्हारि*–स्त्री० [सं० अनुसार] समानता। एक-रूपता। २. आ शकल। सूरत।

उपंग–पुं० [?] एक प्रकार का बाजा।

प-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों
के पहले लाकर उनमें इन अर्थों की वि-
षता उत्पन्न करता है—(क) समीपता;
से-उपकूल, उपनयन। (ख) विस्तार
अधिकता; जैसे-उपकार। (ग) पद,
र्यादा आदि के विचार से होनेवाली कुछ
टाई या गौणता। (वाइस) जैसे-उप-
त्री, उप-सभापति। (घ) व्याप्ति; जैसे-
उपकीर्ण।

पकरण-पुं० [सं०] १. सामग्री। २.
राजाओं के छत्र, चँवर आदि राज-चिह्न।
३. वह वस्तु जिसके द्वारा या जिसकी स-
यता से कोई काम हो। साधन। ४. वे
जें जिनसे कोई चीज बनाई या तैयार की
ती है। औजार। (इम्प्लिमेन्ट) ५. दे०
'उपस्कर' २.।

पकरना*-स० [सं० उपकार] उप-
र करना। भलाई करना।

पकल्पन-पुं० [सं०] किसी काम की
यारी। आयोजन। (प्रिपरेशन)

पकार-पुं० [सं०] १. हित-साधन।
लाई। नेकी। २. लाभ। फायदा।

कारक-वि० [सं०] [स्त्री० उप-
रिका] उपकार या भलाई करनेवाला।

कारी-वि० [सं० उपकारिन्] [स्त्री०
कारिणी] १. उपकार करनेवाला। २.
भ पहुँचानेवाला।

-कुल-पुं० [सं०] किसी कुल के अन्त-
त उसका कोई छोटा विभाग। (सब-फैमिली)

कृत-वि० [सं०] [स्त्री० उपकृता]
. जिसके साथ उपकार किया गया हो।
. कृतज्ञ।

-कोशागार-पुं० [सं०] किसी कोशा-
र के अधीन, उसकी शाखा के रूप में
अथवा कुछ परिमित क्षेत्र में उसके कार्य
करनेवाला कोई छोटा कोशागार।(सब-ट्रेजरी)

क्रम-पुं० [सं०] १. कार्यारंभ की
पहली अवस्था। अनुष्ठान। उठान। २.कोई
कार्य आरंभ करने के पहले का आयोजन। तैयारी। (प्रिपरेशन) ३. भूमिका।

उपक्रमणिका-स्त्री० [सं०] किसी पुस्तक के आदि में दी हुई विषय-सूची।

उपक्षेप-पुं० [सं०] १. अभिनय के आरंभ में नाटक के समस्त वृत्तान्त का संक्षेप में कथन। (साहित्य) २.आक्षेप। ३. कोई वस्तु किसी के सामने ले जाकर रखना या उसे देना। (टेंडर) ४. कोई कार्य या ठेका पाने के लिए उसके व्यय आदि के विवरणों से युक्त पत्र जो वह कार्य या ठेका पाने के लिए (प्रायः प्रतियोगिता के रूप में) देना पड़ता है। (टेंडर)

उप-खंड-पुं० [सं०] विधि-विधानों में किसी धारा या उपधारा के अंश या खंड का कोई विभाग। (सब-क्लॉज)

उपखान*-पुं० दे० 'उपाख्यान'।

उप-गत-वि० [सं०] १. प्राप्त। उपस्थित। २. ज्ञात। जाना हुआ। ३. स्वीकृत। ४. व्यय, भार आदि के रूप में अपने ऊपर आया, लगा या चढ़ा हुआ। (इन्कर्ड)

उप-गति-स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति। २. स्वीकार। ३. ज्ञान।

उप-ग्रह-पुं० [सं०] १. पकड़ा जाना। गिरफ्तारी। २. कारावास। कैद। ३. बँधुआ। कैदी। ४. वह छोटा ग्रह जो किसी बड़े ग्रह के चारो ओर घूमता हो। (सैटेलाइट) जैसे-पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा है।

उपघात-पुं० [सं०] [कर्त्ता उपघातक, वि० उपघाती] १. नाश करने की क्रिया। २. इन्द्रियों का अपने-अपने काम में असमर्थ होना। अशक्ति। ३. रोग। व्याधि। ४. आघात। चोट। (इंजरी)

उपचना*-अ० [सं० उपचय] १. उन्नत होना। बढ़ना। २. उफनना। उबलकर बाहर निकलना।

उपचय-पुं० [सं०] १. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। २. संचय। जमा करना।

उपचर्या-स्त्री० [सं०] १. सेवा-शुश्रूषा। २. चिकित्सा। इलाज।

उपचार-पुं० [सं०] १. व्यवहार। प्रयोग। २. रोगी का रोग दूर करने के लिए नियमपूर्वक की जानेवाली प्रक्रिया। चिकित्सा। इलाज। (ट्रीटमेन्ट) ३. रोगी की सेवा-शुश्रूषा। ४. किसी की हानि या अपकार का प्रतिकार। ५. नियम, परिपाटी, व्यवहार आदि का ठीक तरह से और पूरा-पूरा होनेवाला वह पालन जो विहित और आवश्यक हो। (फॉरमैलिटी) ६. वह आचरण या व्यवहार जो दिखाने भर को हो और जिसमें केवल वाह्य रूप का पालन या निर्वाह हुआ हो। (फॉरमैलिटी) ७. पूजन के अंग या विधान। जैसे-षोडशोपचार। ८. खुशामद। ९. घूस। रिशवत। १०. एक प्रकार की सन्धि जिसमें विसर्ग के स्थान पर श या स हो जाता है। जैसे-निःछल से निश्छल।

उपचारक-वि० [सं०] [स्त्री० उपचारिका] १. उपचार या सेवा करनेवाला। २. विधान करनेवाला। ३. चिकित्सा करनेवाला।

उपचारना*-स० [सं० उपचार] १. व्यवहार में लाना। २. विधान करना।

उपचारात्-क्रि० वि० [सं०] केवल व्यवहार, दिखावे या रसम अदा करने के रूप में। (फॉर्मली)

उपचारी-वि० दे० 'उपचारक'।

उपच्छाया-स्त्री० [सं०] किसी वस्तु की मूल छाया के अतिरिक्त इधर-उधर पड़नेवाली उसकी कुछ आभा या हलकी काली झलक, जैसी ग्रहण के समय चन्द्रमा या पृथ्वी की मुख्य छाया के अतिरिक्त दिखाई देती है। (पेनम्ब्रा)

उपज-स्त्री० [हिं० उपजना] १. उपजने की क्रिया या भाव। उत्पत्ति। उद्भव। वह वस्तु जो उपज के रूप में प्राप्त हो। दावार। (प्रोड्यूस) जैसे-खेत उपज। ३. नई सूझ। उद्भावना। मन-गढ़ंत बात। ५. गाने में राग सुन्दरता के लिए उसमें बँधी हुई तानें सिवा कुछ तानें अपनी ओर से मिलाना

उपजना-अ० [सं० उत्पद्यते] १. होना। पैदा होना। २. उगना। *स० दे० 'उपजाना'।

उपजाऊ-वि० [हिं० उपज + आऊ (प्र जिसमें अच्छी उपज हो। उर्वर। ((फर्टाइल)

उपजाऊ-पन-पुं० [हिं० उपजाऊ (प्रत्य०)] भूमि की वह शक्ति जिससे फसल आदि उत्पन्न होती है। उव (प्रॉडक्टिविटी)

उपजात-पुं० दे० 'उपसर्ग' ४.।

उप-जाति-स्त्री० [सं०] किसी जा अन्तर्गत उसका कोई छोटा विभाग।

उपजाति-स्त्री० [सं०] वे वृत्त इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्र और वंशस्थ के मेल से बनते हैं।

उपजाना-स० [हिं० 'उपजना' का उत्पन्न करना। पैदा करना।

उप-जीविका-स्त्री० [सं०] १. प्र जीविका के सिवा निर्वाह या जीवन का और कोई आर्थिक साधन। २. जी निर्वाह के लिए कहीं से मिलने अतिरिक्त सहायता या वृत्ति। एलाउ

उप-जीवी-वि० [सं० उपजीविन्] [उपजीविनी] दूसरे के सहारे बितानेवाला।

उपज्ञा-स्त्री० [सं०] कोई नया प यंत्र या प्रक्रिया ढूँढ़ निकालना। ई (इन्वेन्शन)

उपटन-पुं० दे० 'उबटन'। पुं० [सं० उत्पतन] वह अंक या चिह्न

आघात, दबाने या लिखने से पड़ जाय । निशान । साँट ।

टना-अ० [सं० उपट = पट के ऊपर] , आघात, दाब या लिखने का चिह्न ड़ना । निशान पड़ना । २. उखड़ना ।

टाना*-स० [हिं० 'उपटना' का प्रे०] टन लगवाना ।

० [सं० उत्पाटन] १. उखड़वाना । . उखाड़ना ।

पटारना*-स० [सं० उत्पाटन] १. उत्पाटन करना । २. उठाना । ३. हटाना ।

पत्यका-स्त्री० [सं०] पर्वत के पास नीची भूमि । तराई ।

दंश-पुं० [सं०] गरमी या आतशक मक रोग । फिरंग रोग ।

दित्सा-स्त्री० [सं०] दे० 'दित्सा-क्रोड़' ।

-दिशा-स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के च की दिशा । कोण । विदिशा ।

दिष्ट-वि० [सं०] १. व्यक्ति जिसे देश दिया गया हो । २. (विषय या बात) जिसका उपदेश दिया गया हो । ज्ञापित ।

पदेश-पुं० [सं०] [वि० उपदिष्ट] . हित की बात बतलाना । अच्छी बात या च्छा काम करने के लिए कहना । निर्देश । त । नसीहत । (प्रिसेप्ट) २. दीक्षा । गुरु-मंत्र ।

देशक-पुं० [सं०] [स्त्री० उपदेशिका] . उपदेश करनेवाला । अच्छी बातों की क्षा देनेवाला । २. वह जो घूम-घूमकर च्छी बातों का प्रचार करता हो ।

पदेष्टा-पुं० = उपदेशक ।

पदेसना*-स० [सं० उपदेश] उपदेश रना या देना ।

पद्रव-पुं० [सं०] [वि० उपद्रवी] १. हलचल । विप्लव । २. उत्पात । ऊधम । गा-फसाद । ३. किसी प्रधान रोग के बीच होनेवाले दूसरे विकार या पीड़ाएँ ।

पद्रवी-वि० [सं० उपद्रविन्] १. उपद्रव या ऊधम मचानेवाला । २. नटखट ।

उप-द्वीप-पुं० दे० 'प्रायद्वीप' ।

उप-धातु-स्त्री० [सं०] अप्रधान धातु, जो या तो लोहे, ताँबे आदि धातुओं के योग से बनती है, अथवा खानों से निकलती है । जैसे-काँसा ।

उप-धारा-स्त्री० [सं०] किसी विधान या लेख की किसी धारा के अन्तर्गत उसका कोई विभाग या अंग । (सब-सेक्शन)

उप-नदी-स्त्री० सं०] किसी बड़ी नदी में मिलनेवाली उसकी सहायक नदी।

उपनना*-अ० [सं० उत्पन्न] पैदा होना ।

उपनय-पुं० [सं०] १. किसी के पास या सामने ले जाना । २. उपनयन संस्कार । ३. कोई उदाहरण देकर उसका धर्म्म या सिद्धान्त और कहीं सिद्ध करना । ४. अपने पक्ष का समर्थन करने या इसी प्रकार के और किसी काम के लिए किसी उक्ति, सिद्धान्त, विधि आदि का उल्लेख या कथन करना । उद्धरण । (साइटेशन)

उपनयन-पुं० [सं०] [वि० उपनीत] यज्ञोपवीत संस्कार ।

उपना*-अ० = उत्पन्न होना ।

उपनागरिका-स्त्री० [सं०] शब्दालंकार के अन्तर्गत वृत्त अनुप्रास का एक भेद जिसमें मधुर वर्ण आते हैं ।

उपनाना*-स० [हिं० उपनना] उत्पन्न या पैदा करना ।

उप-नाम-पुं० [सं०] १. किसी व्यक्ति के वास्तविक नाम से भिन्न कोई दूसरा वह नाम जिससे वह प्रसिद्ध हो या पुकारा जाता हो । उर्फ़ । (एलिअस) जैसे-श्री गोविन्दचन्द उप-नाम कल्लू बाबू । २. कवियों आदि का अपना रक्खा हुआ कोई दूसरा छोटा और प्रचलित नाम अथवा वास्तविक नाम का वह अंश जो उनकी कविताओं में रहता है । तखल्लुस । जैसे-पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय का उप-नाम

'हरिऔध' था। ३. किसी व्यक्ति के वास्तविक और मुख्य नाम के अन्त में रहनेवाला वह शब्द जो उसके निवास-स्थान, वंश, परिवार, वृत्ति आदि का सूचक होता और प्रायः उस व्यक्ति का वाचक होता है। (सर नेम) जैसे—'मलिक मुहम्मद जायसी' में 'जायसी' या पं० 'बालकृष्ण भट्ट' में 'भट्ट' उप-नाम है।

उप-नायक-पुं० [सं०] नाटकों में प्रधान नायक का साथी या सहकारी।

उप-निधि-स्त्री० [सं०] अमानत।

उप-निबंधक-पुं० [सं०] वह जो किसी निबंधक के अधीन रहकर उसका या उसके समान काम करता हो। (सब-रजिस्ट्रार)

उप-नियम-पुं० [सं०] किसी नियम के अंतर्गत बना हुआ कोई और छोटा नियम। (सब-रूल)

उप-निर्वाचन-पुं० [सं०] किसी स्थान, पद, सदस्यता आदि के लिए होनेवाला वह निर्वाचन जो किसी सूत्र की अवधि पूरी होने से पहले, किसी विशेष कारण से किसी स्थान के रिक्त हो जाने पर उसकी पूर्ति के लिए होता है। (बाइ-इलेक्शन)

उप-निविष्ट-वि० [सं०] दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

उपनिवेश-पुं० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसना। २. अन्य स्थान से आये हुए लोगों की बस्ती। (कॉलोनी) ३. बाहरी तत्वों, कीटाणुओं आदि का किसी स्थान पर होनेवाला जमाव। (कॉलोनी)

उपनिषद्-उभय० [सं०] १. किसी के पास बैठना। २. ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति के लिए गुरु के पास बैठना। ३. वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण है।

उपनीत-वि० [सं०] १. जो किसी के सामने लाया गया हो। २. जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो। ३. (उल्लेख या चर्चा) अपने पक्ष का समर्थन करने अथवा
प्रकार के और किसी काम के लिए की
हो। (साइटेड)

उपनेत*-वि० = उत्पन्न।

उपन्यास-पुं० [सं०] [वि० उपन्या
१. वाक्य का उपक्रम। बंधान।
अध्यायों या प्रकरणों में लिखी हुई
कल्पित और बड़ी आख्यायिका
बहुत-से पात्र और विस्तृत तथा
घटनाएँ हों। (नॉवेल)

उपन्यासकार-पुं० [सं०] वह
उपन्यास लिखता हो। (नॉवेलिस्ट)

उप-पति-पुं० [सं०] वह पुरुष
किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे। यार।

उपपत्ति-स्त्री० [सं०] १. हेतु द्वारा
वस्तु की स्थिति का निश्चय। २. च
होना। मेल मिलना। संगति। ३. युक्ति

उपपन्न-वि० [सं०] १. पास या शर
आया हुआ। २. मिला हुआ। प्राप्त
लगा हुआ। युक्त। ४. उपयुक्त।

उपपादक-वि० [सं०] उपपादन क
वाला। (डिमॉन्स्ट्रेटर)

उपपादन-पुं० [सं०] [वि० उपपा
उपपन्न, उपपाद्य] १. तर्क, प्रमाण, प्र
आदि की सहायता से कोई बात सम
हुए ठीक सिद्ध करना। (डिमान्स्ट्रेश
२. कार्य पूरा करना।

उपपाद्य-वि० [सं०] (बात, तथ्य
सिद्धांत) जो स्वयं-सिद्ध न हो, बल्कि
तर्क या प्रमाण से सिद्ध करना आव
हो। (थियोरम)

उप-पुर-पुं० [सं०] किसी बड़े नगर
केन्द्र के आस-पास के स्थान या
(सबर्ब)

उप-पुराण-पुं० [सं०] अठारह मुख्य पु
के अतिरिक्त और छोटे पुराण जो अठारह

उपबरहन*-पुं० दे० 'तकिया'। (

नीचे रखने की)

पभुक्त-वि० [सं०] १. काम में लाया हुआ। २. जूठा। उच्छिष्ट।

भोक्ता-वि० [सं०उपभोक्तृ] [स्त्री० उप-भोक्त्री] उपभोग करनेवाला।
ं० वह जो वस्तुएँ खरीदकर उनका पयोग करता या उन्हें अपने काम में लाता । (कन्ज्यूमर)

-भोग-पुं० [सं०] [वि० उपभोग्य] . किसी वस्तु के व्यवहार का सुख या मजा लेना। २. बरतना। ३. कोई चीज लेकर अपने काम में लाना। (कन्जम्शन)

-भोग्य-वि० [सं०] उपभोग या व्यवहार रने के योग्य।

-मंडल-पुं० [सं०] किसी मंडल या ले का एक विशेष छोटा भाग। तहसील।

-मंत्री-पुं० [सं०] वह मंत्री जो प्रधान त्री के नीचे हो।

-मर्दन-पुं० [सं०][वि० उपमर्दित] . बुरी तरह से दबाना या रौंदना। २. पेक्षा या तिरस्कार करना।

मा-स्त्री० [सं०] १. किसी वस्तु, कार्य गुण को दूसरी वस्तु, कार्य या गुण के मान बतलाना। तुलना। मिलान। जोड़। मिटाफ़र) २. साहित्य में एक अलंकार समें दो वस्तुओं (उपमेय और उपमान) भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया ता है। (सिमली)

माता-पुं० [सं० उपमातृ] [स्त्री० मात्री] उपमा देनेवाला।

-माता-स्त्री० [सं० उप + माता] दूध लानेवाली दाई। धाय।

मान-पुं० [सं०] १. वह वस्तु जिससे मा दी जाय। वह जिसके समान कोई री वस्तु बतलाई जाय। २. किसी पदार्थ साधर्म्य से साध्य का साधन जो न्याय चार प्रकार के प्रमाणों में से एक है।

उपमाना*-स० [सं० उपमा] उपमा देना।

उपमित-वि० [सं०] जिसकी उपमा दी गई हो।
पुं० वह समास जो दो शब्दों के बीच उपमा-वाचक शब्द का लोप करके बनाया जाता है। जैसे-पुरुष-सिंह।

उपमिति-स्त्री० [सं०] उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान।

उपमेय-वि० [सं०] जिसकी उपमा दी जाय।

उपमेयोपमा-स्त्री० [सं०] वह उपमा अलंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय हो।

उपयना*-अ० [सं० उत्प्रयाण] न रह जाना। उड़ जाना।

उपयुक्त-वि० [सं०] [भाव० उपयुक्तता] १. जो किसी के साथ ठीक बैठे। किसी के साथ पूरी तरह से मेल खानेवाला। (फिट) २. जैसा होना या करना ठीक हो। उचित। मुनासिब। (प्रॉपर) ३. जो नियम, विधि आदि के अनुसार ठीक अधिकारी हो। जैसे-उपयुक्त न्यायालय। (प्रॉपर कोर्ट)

उपयोग-पुं० [सं०] [वि० उपयोगी, उपयुक्त] १. किसी वस्तु के काम में आने या लाये जाने का भाव। व्यवहार। इस्तेमाल। प्रयोग। (यूज) २. योग्यता। ३. फायदा। लाभ। ४. प्रयोजन। आवश्यकता।

उपयोगिता-स्त्री० [सं०] १. काम में आने की योग्यता। लाभकारिता। २. किसी वस्तु में होनेवाला वह गुण या तत्व जिससे उस वस्तु के द्वारा किसी की कोई आवश्यकता पूरी होती है। २. उपयोग में आने की अवस्था या भाव। (यूटिलिटी)

उपयोगिता-वाद-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसमें प्रत्येक वस्तु और बात का विचार केवल उसकी उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है और उसके नैतिक अंगों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। (यूटिलिटेरियनिज्म)

उपयोगितावादी-पुं०[सं० उपयोगिता +

वादिन्] वह जो उपयोगितावाद के सिद्धान्तों का अनुयायी हो। (यूटिलिटेरिअन)

उपयोगी-वि० [सं० उपयोगिन्] [स्त्री० उपयोगिनी] १. काम में आनेवाला। प्रयोजनीय। २. लाभदायक। फायदेमन्द। ३. अनुकूल। मुआफिक।

उपयोजन-पुं० [सं०] १. अपने उपयोग या काम में लाना। २. दूसरे की वस्तु अनुचित रूप से लेकर अपने काम में लाना। (एप्रोप्रिएशन)

उपरंजन-पुं० [सं०] [वि० उपरंजित, उपरक्त] एक वस्तु या बात का दूसरी वस्तु या बात पर पड़नेवाला ऐसा अनिष्ट प्रभाव जिससे प्रभावित होनेवाली वस्तु या बात की उपयोगिता कम होती हो। (एफेक्टेशन)

उपरंजित-वि० दे० 'उपरक्त'।

उपरक्त-वि० [सं०] जिसपर किसी का कोई प्रतिकूल या अनिष्ट प्रभाव पड़ा हो। (एफेक्टेड)

उपरत-वि० [सं०] जो रत न हो। विरक्त।

उपरति-स्त्री० [सं०] १. विषय-वासना के भोग से विराग। विरति। त्याग। (ऐब्स्टिनेन्स) २. उदासीनता। ३.मृत्यु। मौत।

उप-रत्न-पुं० [सं०] कम दाम के या घटिया रत्न। जैसे-सीप, मरकत मणि आदि।

उपरना-पुं० [हिं० ऊपर] दुपट्टा या चादर जो ऊपर ओढ़ते हैं।

* अ० दे० 'उखड़ना'।

उपरला-वि० [हिं० ऊपर + ला (प्रत्य०)] जो ऊपर की ओर हो। ऊपरवाला। ऊपरी।

उपरांत-क्रि० वि० [सं०] अनन्तर। बाद। पीछे।

उपराग-पुं० [सं०] १. रँगनेवाली वस्तु या तत्व। रंग। २. किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास। ३. विषयों में अनुरक्ति। ४. चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण।

उपराज-पुं० [सं०] राजा का वह प्रतिनिधि जो किसी देश का शासक हो।

*स्त्री० दे० 'उपज'।

उपराजना*-स० [सं० उपार्जन] पैदा या उत्पन्न करना। २. रचन बनाना। ३. उपार्जन करना। कमा

उपराना†-अ० [सं० उपरि] १. त उठकर ऊपर आना। २. सामने आ प्रकट होना। ३. उतराना।

स० १. ऊपर करना। उठाना। २. करना।

उपराहना*-अ० [?] प्रशंसा करन

उपराही*-क्रि० वि० दे० 'ऊपर'।

वि० १. बढ़कर। श्रेष्ठ। २. अधि ज्यादा।

उप-रूपक-पुं० [सं०] साहित्य में प्रकार का छोटा नाटक जिसके १८ कहे गये हैं।

उपरैना*-पुं० दे० 'उपरना'।

उपरोक्त-वि० दे० 'उपर्युक्त'।

उपरोध-पुं० [सं०] [वि० उपरो उपरोध्य] १. होते हुए काम को रो वाली बात। बाधा। रुकावट। २. आ दन। ढकना।

उपर्युक्त-वि० [सं०] जिसका उ ऊपर हो चुका हो। ऊपर कहा हु (एफोर-सेड)

उपल-पुं० [सं०] १. पत्थर। २. ओ ३. रत्न। ४. मेघ। बादल।

उपलक्ष-पुं० = उपलक्ष्य।

उपलक्ष्य-पुं० [सं०] १. संकेत। चि २. दृष्टि। उद्देश्य।

यौ०-उपलक्ष्य में = दृष्टि से। विचार

उपलब्ध-वि० [सं०] [भाव० उपल १. पाया हुआ। प्राप्त। २. जाना हु ज्ञात।

उपला-पुं० [सं० उत्पल] [स्त्री० अ उपली] जलाने के लिए सुखाया गोबर। कंडा। गोहरा।

उपल्ला-पुं० [हिं० ऊपर + ला (प्रत्य०

किसी वस्तु की ऊपरी तह या परत।

उपवन-पुं० [सं०] १. छोटा वन या जंगल। २. बाग। बगीचा। फुलवारी। ३. वह बड़ा बाग जिसमें कई खुले हुए और बड़े मैदान हों। (पार्क)

उपवना*-अ० [सं० उत्प्रयाण] १. गायब होना। २. उदय होना।

प-वाक्य-पुं० [सं०] किसी बड़े वाक्य का वह अंश जिसमें कोई समापिका क्रिया हो। (क्लॉज)

उपवास-पुं० [सं०] [वि० उपवासी] १. नियत समय पर और उसके बाद कुछ समय तक भोजन न करना। फाका। २. वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता। ३. रोग होने पर उसकी शान्ति के लिए भोजन न करना।

उप-विधि-स्त्री० [सं०] किसी विधि के अधीन या अन्तर्गत बनी हुई कोई छोटी विधि। (बाई-लॉ)

उप-विभाग-पुं० [सं०] विभाग के अन्तर्गत छोटा विभाग। (सब-डिवीज़न)

उप-विष-पुं० [सं०] हलका जहर। जैसे–अफीम या धतूरा।

पविष्ट-वि० [सं०] बैठा हुआ।

पवीत-पुं० [सं०] [वि० उपवीती] १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २. उपनयन।

प-वेद-पुं० [सं०] वे विद्याएँ जो वेदों से निकली हैं। जैसे–धनुर्वेद।

पवेशन-पुं० [सं०] [वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १. बैठना। २. स्थित होना। जमना।

पशम-पुं० [सं०] १. मन की इच्छाएँ या वासनाएँ दबाना। इन्द्रिय-निग्रह। २. बढ़े हुए वेग या उग्र तत्व का कम होना या ठंडा पड़ना। शान्ति। जैसे–रोग या विकार का उपशम। शान्ति। ३. किसी के कष्टों, आपत्तियों आदि के निवारण का उपाय। इलाज। (रिलीफ)

उप-शाला-स्त्री० [सं०] मकान के पास का, उठने-बैठने के लिए दालान या छोटा कमरा। बैठक।

उप-शिष्य-पुं० [सं०] शिष्य का शिष्य।

उप-संपादक-पुं० [सं०] [स्त्री० उप-संपादिका] १. किसी कार्य्य में मुख्य कर्त्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका कार्य्य करनेवाला व्यक्ति। २. किसी सामयिक पत्र में संपादक के अधीन रहकर उसके सहायक के रूप में काम करनेवाला व्यक्ति।

उपसंहार-पुं० [सं०] १. परिहार। २. समाप्ति। अन्त। ३. किसी पुस्तक के अन्त का वह अध्याय जिसमें उसका सारांश या परिणाम संक्षेप में बतलाया गया हो। ४. सारांश।

उप-सभापति-पुं० [सं०] किसी संस्था का वह अधिकारी जिसका पद सभापति के उपरान्त या उससे छोटा, पर मन्त्री से बड़ा होता है और जो सभापति की अनुपस्थिति में उसके सब कार्य्य करता है। (वाइस-प्रेसिडेंट)

उप-समिति-स्त्री० [सं०] किसी बड़ी समिति या सभा की बनाई हुई छोटी समिति। (सब-कमेटी)

उपसर्ग-पुं० [सं०] १. वह अव्यय जो किसी शब्द के पहले लगकर उसमें किसी अर्थ की विशेषता करता है। (प्रिफ़िक्स) जैसे–अनुकरण में 'अनु' या उपयोग में 'उप' उपसर्ग है। २. अपशकुन। ३. दैवी उत्पात। ४. वह पदार्थ जो कोई दूसरा पदार्थ बनाते समय बीच में यों ही या आप से आप बन जाता या निकल आता हो। जैसे–गुड़ बनाते समय शीरा। (बाई-प्राडक्ट)

उप-सागर-पुं० [सं०] समुद्र की खाड़ी। समुद्र का एक भाग। खाड़ी।

उपस्कर-पुं० [सं०] १. सजावट की सामग्री। उपस्कार। २. कोई चीज बनाने

या कोई काम करने का छोटा यंत्र। उपकरण। (अपेरेटस)

उपस्करण–पुं० [सं०] घर, स्थान आदि सजाने की क्रिया या भाव। (फरनिशिंग)

उपस्कार–वि० [सं०] वे वस्तुएँ जिनका उपयोग मुख्यतः घर की सजावट के लिए होता है। जैसे–मेज, कुरसी, आलमारी आदि। (फरनिचर)

उपस्कृत–वि० [सं०] (घर या कक्ष) जो उपस्कारों से सजा हो। (फरनिश्ड)

उपस्थ–पुं० [सं०] १. नीचे या मध्य का भाग। २. पेड़ू। ३. पुरुष–चिह्न। लिंग। ४. स्त्री-चिह्न। भग। ५. गोद।

उपस्थान–पुं० [सं०] [वि० उपस्थानीय, उपस्थित] १. पास या सामने आना। २. अभ्यर्थना या पूजा के लिए निकट आना। ३. सभा। समाज।

उपस्थापक–पुं० [सं०] १. वह जो विचार और स्वीकृति के लिए कोई विषय किसी सभा में उपस्थित करे। उपस्थित करनेवाला। २. वह जो न्यायालय में अभियोगों और वादों आदि से सम्बन्ध रखनेवाले कागज-पत्र न्यायकर्त्ता अधिकारी के सामने उपस्थित करता और उनपर आज्ञाएँ आदि लिखता है। पेशकार। (रीडर)

उपस्थापन–पुं० [सं०] [कर्त्ता उपस्थापक] किसी अधिकारी या सभा-समाज के सामने प्रस्ताव या स्वीकृति के लिए कोई विषय उपस्थित करना।

उपस्थित–वि० [सं०] १. समीप बैठा हुआ। सामने या पास आ या हुआ। विद्यमान। मौजूद। हाजिर। (प्रेजेन्ट) २. ध्यान में आया हुआ। याद।

उपस्थिति–स्त्री० [सं०] विद्यमानता। मौजूदगी। हाजिरी।

उपस्थिति-अधिकारी–पुं० [सं०] शिक्षा-संबंधी संस्था का वह अधिकारी जो विद्यार्थियों की ठीक उपस्थिति की देख-भ ल अथवा उपस्थिति के प्रयत्न करता हो। (एटेंडेन्स ऑ

उपस्थिति-पंजिका–स्त्री० [सं० पंजिका (रजिस्टर) जिसमें वि कर्मचारियों आदि की उपस्थिति लि हो। (एटेंडेन्स रजिस्टर)

उपस्थिति-पत्र–पुं० [सं०] किसी कीय अधिकारी की ओर से अ रूप से किसी के नाम भेजा जाने पत्र जिसमें उसे उस अधिकारी के उपस्थित होने की आज्ञा दी जा समन। आकारक। (साइटेशन)

उपहत–वि० [सं०] १. नष्ट या किया हुआ। २. बिगाड़ा हुआ। ३. संकट में पड़ा हुआ। ४. जिसे लगी हो। (हर्ट) ५. दे० 'उपरक्त'

उपहसित–पुं० [सं०] नाक आँखें टेढ़ी करके और गर्दन हिल हँसना। (हास का एक भेद)

उपहार–पुं० [सं०] बड़े या दी जानेवाली कोई अच्छी वस्तु। नजर। (प्रेजेन्ट)

उपहास–पुं० [सं०] [वि० उप १. हँसी। दिल्लगी। २. हँसते हुए को निन्दित ठहराना या उसकी बुराई हास्ययुक्त निन्दा।

उपहासास्पद–वि० [सं०] १. उ के योग्य। हँसी उड़ाने के लायक निन्दनीय। खराब। बुरा।

उपहास्य–वि० दे० 'उपहासास्पद'।

उपहासी*–स्त्री० दे० 'उपहास'।

उपही*–पुं० [हिं० ऊपर + हा (प्रत्य अपरिचित, बाहरी या विदेशी आ

उपांग–पुं० [सं०] १. अंग का अवयव। २. किसी वस्तु के अंगों क करनेवाली वस्तु। जैसे–वेद के उपांग।

उपांत–पुं० [सं०] १. अन्त की ओर भाग। आखिरी हिस्सा। २. आ

का भाग या स्थान । ३. कागज में, लिखने के समय, एक या दोनों ओर खाली छोड़ा जानेवाला वह स्थान जिसपर आवश्यकता होने पर कोई और छोटी-मोटी काम की बात या लेख्य की साक्षी, शीर्षक आदि लिखे जाते हैं। हाशिया । (मार्जिन)

पांतस्थ-वि० [सं०] उपांत पर होने, रहने या लिखा जानेवाला । (मार्जिनल) जैसे-किसी लेख्य पर का उपांतस्थ साक्षी ।

उपांतस्थ साक्षी-पुं० [सं०] वह साक्षी जिसने किसी लेख्य के उपान्त पर हस्ताक्षर या अँगूठे का चिह्न किया हो । (मार्जिनल विटनेस)

पाउ*-पुं० दे० 'उपाय ।

पाकर्म-पुं० [सं०] १. विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन । २. यज्ञोपवीत संस्कार ।

पाख्यान-पुं० [सं०] १. पुरानी कथा । पुराना वृत्तान्त । २. किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा । ३. वृत्तान्त ।

पाटना*-स० दे० 'उखाड़ना' ।

पाती*-स्त्री० दे० 'उत्पत्ति' ।

पादान-पुं० [सं०] [भाव० उपादानता] १. प्राप्ति । मिलना । २. ग्रहण । स्वीकार । ३. किसी की कोई चीज लेकर अपने काम में लाना । (एप्रोप्रिएशन) ४. ज्ञान । बोध । ५. वह कारण जो स्वयं कार्य्य के रूप में परिणत हो जाय । ६ वह सामग्री या वे तत्त्व जिनसे कोई वस्तु बनी हो । (कॉनस्टिचुएन्ट)

पादेय-वि० [सं०] [भाव० उपादेयता] १. ग्रहण करने योग्य । २. उत्तम । श्रेष्ठ ।

पाधि-स्त्री० [सं०] १. कुछ को कुछ और दिखाने का छल । कपट । २. वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे । ३. उपद्रव । उत्पात । ४. कर्त्तव्य का विचार । ५. किसी वस्तु, वर्ग आदि का सूचक नाम । (एपेलेशन) ६. योग्यता, सम्मान आदि का सूचक वह शब्द जो किसी नाम के साथ लगाया जाता है । पदवी । खिताब । (टाइटिल)

उपाधि धारी-पुं० [सं० उपाधिधारिन्] वह जिसे कोई उपाधि या खिताब मिला हो ।

उपाध्यक्ष-पुं० [सं०] किसी संस्था आदि में अध्यक्ष के सहायक रूप में, पर उसके अधीन काम करनेवाला अधिकारी । (वाइस-चेयरमैन)

उपाध्याय-पुं० [सं०] [स्त्री० उपाध्याया, उपाध्यायानी, उपाध्यायी] १. वेद-वेदांग पढ़ानेवाला । २. अध्यापक । शिक्षक ।

उपानह-पुं० [सं०] जूता ।

उपाना*-स० [सं० उत्पन्न] १. उत्पन्न करना । पैदा करना । २. सोचना ।

अ० १. उत्पन्न होना । २. मन में आना । उद्भूत होना ।

उपाय-पुं० [सं०] [वि० उपायी, उपेय] १. पास पहुँचना । निकट आना । २. वह कार्य या प्रयत्न जिससे अभीष्ट तक पहुँचें । साधन । युक्ति । तरकीब ।

उपायन-पुं० [सं०] भेंट । उपहार ।

उपारना*-स० दे० 'उखाड़ना' ।

उपार्जन-पुं० [सं०] [वि० उपार्जनीय, उपार्जित] १. परिश्रम या प्रयत्न करके धन प्राप्त करना । कमाना । २. अधिकारपूर्वक या वैध उपायों से प्राप्त करके अपने अधिकार में लेना । (एक्विज़िशन) जैसे-विशेषाधिकार का उपार्जन ।

उपार्जित-वि० [सं०] १. कमाया हुआ । २. प्राप्त किया हुआ । ३. संगृहीत ।

उपालंभ-पुं० [सं०] [वि० उपालब्ध] उलहना । शिकायत । निन्दा ।

उपाव*-पुं० दे० 'उपाय' ।

उपाश्रित-वि० [सं०] (आज्ञा, नियम, विधि आदि) जो किसी दूसरी आज्ञा,

नियम, विधि आदि पर अवलम्बित या उसका आश्रित हो। (सब्जेक्ट टु) जैसे–यह नियम नीचे लिखी बातों का उपाश्रित है।

उपास*–पुं० दे० 'उपवास'।

उपासक–वि० [सं०] [स्त्री० उपासिका] पूजा या उपासना करनेवाला। भक्त।

उपासना–स्त्री० [सं० उपासन] [वि० उपासनीय, उपास्य, उपासित] १. पास बैठने की क्रिया। २. ईश्वर, देवता या किसी बड़े और पूज्य की की जानेवाली आराधना। पूजा। (वरशिप)

*स० [सं० उपासन] उपासना, पूजा या सेवा करना। भजना।

अ० [सं० उपवास] १. उपवास करना। भूखा रहना। २. निराहार व्रत करना।

उपासी–वि० [सं० उपासिन्] [स्त्री० उपासिनी] उपासना करनेवाला। उपासक।

वि० [सं० उपवास] उपवास करनेवाला।

उपास्य–वि० [सं०] पूजा किये जाने के योग्य। जिसकी सेवा की जाती हो। आराध्य।

उपेंद्र–पुं० [सं०] इन्द्र के छोटे भाई वामन या विष्णु भगवान्।

उपेक्षणीय–वि० दे० 'उपेक्ष्य'।

उपेक्षा–स्त्री० [सं०] १. उदासीनता। लापरवाही। विरक्ति। २. किसी को तुच्छ या नगण्य समझना। अयोग्य समझकर ध्यान न देना या आदर न करना। (डिस-रिगार्ड)

उपेक्षित–वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा की गई हो। तिरस्कृत।

उपेक्ष्य–वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा करना ही ठीक हो।

उपेत–वि० [सं०] १. बीता हुआ। गत। २. मिला हुआ। प्राप्त। ३. साथ लगा हुआ। युक्त।

उपैना–वि० [सं० उ+पद्व] [स्त्री० उपैनी] १. खुला हुआ। २. नंगा।

अ० [?] लुप्त होना। उड़ना।

उपोद्घात–पुं० [सं०] १. पु आरंभ का वक्तव्य। प्रस्तावना। भू २. कोई व्यवस्था या कार्य आरम्भ क पहले उसकी तैयारी के लिए आर किया जानेवाला कोई कृत्य। (प्रिलि

उपोषण–पुं० दे० 'उपवास'।

उपोसथ–पुं० [सं० उपवसथ] व्रत। उपवास। (जैन और बौद्ध)

उफनना*–अ० [सं० उत्+फेन उबलकर उठना। जोश खाना। आदि का) २. उभड़ना।

उफान–पुं० [सं० उत् = फेन] गरमी फेन के साथ ऊपर उठना। उबाल।

उफाल–स्त्री० [हिं० फाल] लम्बा ड

उबकना*–अ० [हिं० उबाक] कै क

उबकाई*–स्त्री० [हिं० ओकाई]

उबट*–पुं० [सं० उद्वाट] बीहड़ वि० ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।

उबटन–पुं० [सं० उद्वर्तन] शरी मलने के लिए सरसों, तिल, चिरौंजी का लेप। बटना। अभ्यंग।

उबटना–अ० = पलटना।

स० = पलटना।

उबना*–अ० १. दे० 'उगना'। 'ऊबना'। ३. दे० 'उबहना'।

उबरना–अ० [सं० उद्वारण] १. या निस्तार पाना। मुक्त होना। २. शेष रहना। बाकी बचना।

उबलना–अ० [सं० उद् = ऊपर + व जाना] १. आग पर चढ़े हुए तरल का फेन के साथ ऊपर उठना। उ २. वेग से निकलना। उमड़ना।

उबहना*–स० [सं० उद्वहन] १. यार उठाना। शस्त्र उठाना। २. फेंकना। उलीचना। ३. जोतना। 'उबेहना'।

अ० १. ऊपर उठना। उभरना। २. या प्रगट होना। खुलना।

वि० [सं० उपाहन] बिना जूते का ।

उवाँत*-स्त्री० दे० 'वमन' ।

बार-पुं० [सं० उद्धारण] उबरने की क्रिया या भाव । निस्तार । छुटकारा ।

बारना-स० [सं० उद्धारण] उद्धार करना । कष्ट से छुड़ाना या बचाना ।

बाल-पुं० [हिं० उबलना] १. उबलने की क्रिया या भाव । उफान । २. आवेश ।

बालना-स० [सं० उद्वालन] तरल पदार्थ आग पर रखकर इतना गरम करना कि वह फेन के साथ ऊपर उठने लगे । खौलाना ।

बासी-स्त्री० दे० 'जँभाई' ।

बीठना*-अ० [सं० अव + इष्ट] १. ऊबना । २. घबराना ।

बीधना*-अ० [सं० उद्विद्ध] १. फँसना । उलझना । २. धँसना । गड़ना ।

बीधा*-वि० [सं उद्विद्ध] [स्त्री० उबीधी] १. धँसा या गड़ा हुआ । २. काँटों से भरा या झाड़-झंखाड़वाला ।

बना*-वि० [हिं० उ = नहीं + सं० उपानह] नंगे पैर । बिना जूते का ।

बहना*-स० [सं० उद्वेधन] १. जड़ना । ाना । २. पिरोना । ३. दे० 'उबहना' ।

भटना*-अ० [हिं० उभरना] १. अभिमान करना । २. दे० 'उभड़ना' ।

भड़ना-अ० [सं० उद्भरण] १. किसी तल या सतह का आस-पास की सतह से कुछ ऊँचा होना । उकसना । २. ऊपर निकलना । टना । जैसे-अंकुर उभड़ना । ३. उत्पन्न ना । पैदा होना । ४. प्रकाशित ना । सामने आना । ५. अधिक या होना । बढ़ना । ६. हट जाना । ७. नी पर आना । ८. गाय, भैंस आदि का त होना ।

भना*-अ० दे० 'उभड़ना' ।

भय-वि० [सं०] दोनों ।

भयतः-क्रि० वि० [सं०] दोनों ओर से ।

१२

उभय-निष्ठ-वि० [सं०] १. जो दोनों में निष्ठा रखता हो । २. जो दोनों में सम्मिलित हो ।

उभय लिंग-पुं० [सं०] १. व्याकरण में वह संज्ञा जिसका प्रयोग स्त्रीलिंग और पुंलिंग दोनों में होता हो । २. वह जीव जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों के लिंग या चिह्न समान रूप से पाये जाते हैं ।

उभय-संकट-पुं० [सं०] ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर (कोई काम करने पर भी और न करने पर भी) संकट दिखाई दे । धर्म-संकट । (डिलेम्मा)

उभरना*-अ० दे० 'उभड़ना' ।

उभरौंहाँ*-वि० [हिं० उभरना + औंहाँ (प्रत्य०)] उभार पर आया हुआ ।

उभाड़-पुं० [सं० उद्भिदन] १. उभड़ने की क्रिया या भाव । उठान । २. ऊँचापन । ऊँचाई । ३. ओज । वृद्धि ।

उभाड़ना-स० [हिं० उभड़ना] १. भारी वस्तु को धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठाना । उकसाना । २. उत्तेजित करना ।

उभाना*-अ० दे० 'अभुआना' ।

उभार-पुं० दे० 'उभाड़' ।

उभिटना*-अ० [?] हिचकना ।

उभै*-वि० दे० 'उभय' ।

उमंग-स्त्री० [सं० उद् = ऊपर + मंग = चलना] १. मन में उत्पन्न होनेवाला वह सुखदायक मनोवेग जो कोई प्रिय या अभीष्ट काम करने के लिए होता है । मौज । लहर । उल्लास । २. उभाड़ ।

उमग*-स्त्री० दे० 'उमंग' ।

उमगना-अ० [हिं० उमंग] १. उभड़ना । उमड़ना । भरकर ऊपर उठना । २. उल्लास में होना । हुलसना ।

उमगाना-स० हिं० 'उमगना' का स० ।

उमचना-अ० [सं० उन्मंच] १. दे० 'हुमचना' । २. चौकन्ना होना ।

उमड़-स्त्री० [हिं० उमड़ना] १. उमड़ने

की क्रिया या भाव । अचानक बहुत अधिक मात्रा में आ पड़ना । उमड़ाव । २. धावा ।

उमड़ना–अ० [सं० उन्मंडन] १. द्रव वस्तु का बहुतायत के कारण ऊपर उठना । उतराकर बह चलना । २. उठकर फैलना । छाना । जैसे–बादल उमड़ना ।

यौ०–उमड़ना-घुमड़ना = घूम घूमकर फैलना या छाना । (बादल)

३. उमंग या आवेश में आना ।

उमड़ाना–स० हिं० 'उमड़ना' का प्रे० ।

*अ० दे० 'उमड़ना' ।

उमड़ाव–पुं० दे० 'उमड़' ।

उमदना*–अ० दे० 'उमगना' ।

उमदाना*–अ० [सं० उन्मद] १. मतवाला होना । २. दे० 'उमगना' ।

स० उन्मत्त या मतवाला करना ।

वि० जो उन्मत्त हो गया हो । मतवाला । उन्मत्त ।

उमर–स्त्री० [अ० उम्र] १. वर्षों के विचार से जीवन के बीते हुए दिन । अवस्था । वय । २. पूरा जीवन-काल । आयु ।

उमरा–पुं० [अ०] 'अमीर' का बहुवचन । प्रतिष्ठित लोग । सरदार ।

उमराव*–पुं० दे० 'उमरा' ।

उमस–स्त्री० [सं० ऊष्म] [क्रि० उमसना] वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है ।

उमहना*–अ० दे० 'उमड़ना' ।

उमहाना*–स० दे० 'उमाहना' ।

उमा–स्त्री० [स०] १. पार्वती । २. दुर्गा । ३. कीर्त्ति । ४. कांति ।

उमाकना*–अ० [?] १. खोदकर फेंक देना । २. नष्ट करना ।

उमाचना*–स० दे० 'उभाड़ना' ।

उमाद*–पुं० दे० 'उन्माद' ।

उमाह*–पुं० दे० 'उमंग' ।

उमाहना–अ० दे० 'उमड़ना' ।

स० उमड़ाना । उमगाना ।

उमाहल*–वि० [हिं० उन्माद] उमंग से भरा हुआ ।

उमेठना–स० [सं० उद्वेष्टन] [उमेठन] इस प्रकार मरोड़ना कि की तरह बल पड़ जाय । ऐंठना ।

उमेठवाँ–वि० [हिं० उमेठना] उमेठन पड़ी हो । ऐंठनदार ।

उमेड़ना*–स० दे० 'उमेठना' ।

उमेलना*–स० [सं० उन्मीलन खोलना । प्रकट करना । २. वर्णन

उमैना*–अ० [हिं० उमंग] आचरण करना ।

उम्दगी–स्त्री० [फा०] अच् भलापन । खूबी ।

उम्दा–वि० [अ० उम्दः] अच्छा ।

उम्मत–स्त्री० [अ०] १. किसी अनुयायियों की मंडली । २. समाज । ३. औलाद । सन्तान ।

उम्मीद–स्त्री० दे० 'उम्मेद'

उम्मेद–स्त्री० [फा०] १. आशा भरोसा । आसरा ।

उम्मेदवार–पुं० [फा०] १. आ उम्मेद रखनेवाला । २. काम सी नौकरी पाने की आशा से कहीं बिन लिये या थोड़े वेतन पर काम क आदमी । अन्तेवासी । ३. किसी चुने जाने के लिए खड़ा होनेवाला अ

उम्मेदवारी–स्त्री० [फा०] १. उ होने की क्रिया या भाव । २. अ आसरा । ३. बिना वेतन या थोड़े वे उम्मेदवार होकर काम करना । ४. स्त्री को सन्तान होने की आशा ।

उम्र–स्त्री० दे० 'उमर' ।

उर–पुं० [सं० उरस्] १. वक्षस्थल । २. हृदय । मन । चित्त ।

उरकना*–अ० दे० 'रुकना' ।

उरगना*–स० [सं० उरगीकरण स्वीकार या अंगीकार करना । २.

उरगारि–पुं० [सं०] गरुड़ ।

रगिनी*–स्त्री० [सं० उरगी] सर्पिणी ।

रज, उरजात*–पुं० दे० 'उरोज' ।

रझना*–अ० दे० 'उलझना' ।

रझेर*–पुं० [?] हवा का झोंका ।

रझेरी*–स्त्री० [सं० अवरुंधन = उलझन] १. हृदय की व्याकुलता । विकलता । २. दे० 'उरझेर' ।

रण–पुं० [सं०] १. भेड़ा । मेढ़ा । २. हमारे सौर जगत् का एक ग्रह जो शनि और वरुण के बीच में पड़ता है । (यूरेनस)

रद–पुं० [सं० ऋद्ध, पा० उद्ध] [स्त्री० अल्पा० उरदी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीजों या दानों की दाल होती है । माष ।

रध*–वि०, क्रि० वि० दे० 'ऊर्ध्व' ।

रना*–अ० १. दे० उड़ना । २. दे० 'भागना' ।

रवी*–स्त्री० दे० 'उर्वी' ।

र-मंडन–पुं० [सं०] वह जिससे हृदय की शोभा या सुख बढ़े; अर्थात् परम प्रिय ।

रमना*–अ० दे० 'लटकना' ।

रमाल*–पुं० दे० 'रूमाल' ।

रमी*–स्त्री० [सं० ऊर्मि] १. लहर । तरंग । २. दुःख । पीड़ा । कष्ट ।

रना*–अ० [?] १. जबरदस्ती घुसना । धँसना । २. उमंग या चाव से आगे बढ़ना ।

विज पुं० [सं० उर्वी] मंगल ग्रह ।

ला–वि० [सं० अपर, अवर + हिं० ला (प्रत्य०)] १. इधर का । इस ओर का । '' का विरोधी । २. पिछला । पीछे का ।

० [हिं० विरल] निराला ।

स*–वि० [सं० कुरस] फीका । नीरस ।

० [सं० उरस्] १. छाती । वक्षस्थल । २. हृदय । चित्त ।

सना*–अ० [हिं० उड़सना] ऊपर-नीचे करना । उथल-पुथल करना ।

सिज–पुं० [सं०] स्तन ।

हना*–पुं० दे० 'उलाहना' ।

उरा–स्त्री० [सं० उर्वी] पृथिवी ।

उराउ*–पुं० = उराव ।

उराना*–अ० दे० 'ओराना' ।

उरारा*–वि० [सं० उरु] विस्तृत ।

उराव–पुं० [सं० उरस् + आव (प्रत्य०)] १. चाव । चाह । २. उमंग । उत्साह ।

उराहना–पुं० दे० 'उलाहना' ।

उरिन*–वि० दे० 'उऋण' ।

उरु–वि० [सं०] लम्बा-चौड़ा ।

*पुं० [सं० ऊरु] जंघा । जाँघ ।

उरुगिनी*–स्त्री० = उरगिनी (सर्पिणी) ।

उरुवा*–पुं० [सं० उलूक, प्रा० उल्लूअ] उल्लू की तरह की एक चिड़िया । रुरुआ ।

उरूज–पुं० [अ०] बढ़ती । वृद्धि ।

उरे*†–क्रि० वि० [सं० अवर] १. परे । आगे । २. इस तरफ । ३. अलग । पृथक् । ४. दूर ।

उरेखना*– स० [सं० आलेखन] १. चित्र अंकित करना । २. दे० 'अवरेखना' ।

उरेह*–पु० [सं० उल्लेख] १. चित्र । २. चित्रकारी ।

उरेहना–स० [सं० उल्लेखन] खींचना । लिखना । (चित्र)

उरैंड़*–स्त्री० [हिं० उरैंड़ना] १. 'उरैंड़ना' का भाव । २. बहुत अधिक मात्रा में आ पड़ना । ३. प्रवाह । बहाव ।

उरैंडना–स० [हिं० उँडेलना का पुराना रूप] १. उँडेलना । २. गिराना ।

उरोज–पुं० [सं०] स्तन । कुच ।

उर्द-पुं० दे० 'उरद' ।

उर्दू–स्त्री० [तु०] १. छावनी का बाजार । २. हिन्दी का वह रूप जिसमें अरबी-फारसी के शब्द अधिक होते हैं और जो फारसी लिपि में लिखी जाती है ।

उर्ध*–वि० [सं०] ऊर्ध्व ।

उर्फ–पुं० [अ०] पुकारने का या प्रसिद्ध नाम । उपनाम । (देखें)

उर्मि*–स्त्री० दे० 'ऊर्मि' ।

उर्वर–वि० [सं०] [भाव० उर्वरता] (भूमि) जिसमें फसलें अच्छी तरह उपजती हों । उपजाऊ । (फर्टाइल) २. जिससे बहुत सी बातें या चीजें निकलती या उत्पन्न होती हों । जैसे–उर्वर मस्तिष्क ।

उर्वरता–स्त्री० [सं०] उर्वर होने की अवस्था या भाव । उपजाऊपन । (फर्टिलिटी, प्रॉडक्टिविटी)

उर्वरा–स्त्री० [सं०] उपजाऊ भूमि ।

वि० स्त्री० उपजाऊ । (जमीन)

उर्वशी–स्त्री० [सं०) एक अप्सरा ।

उर्वी–स्त्री० [सं०] पृथिवी ।

वि० स्त्री० १. विस्तृत । २. सपाट ।

उर्वीजा–स्त्री० [सं०] सीता ।

उलंग*–वि० [सं० उन्नग्न] नंगा ।

उलंघन*–पुं० दे० 'उल्लंघन' ।

उलका*–स्त्री० दे० 'उल्का' ।

उलचना–स० दे० 'उलीचना' ।

उलछना*–स० [हिं० उलीचना] १. छितराना । बिखराना । २. उलीचना । ३. उछालना ।

अ० उछलना ।

उलछारना*–स० दे० 'उछालना' ।

उलझन–स्त्री० [सं० अवरुंधन] १. उलझने की क्रिया या भाव । अटकाव । फँसान । २. गिरह । गाँठ । ३. बाधा । ४. समस्या । ५. चिन्ता । फिक्र ।

उलझना–अ० [सं०अवरुंधन] १. फँसना । अटकना । 'सुलझना' का उलटा । जैसे–काँटों में उलझना । २. बहुत से घुमावों के कारण फेर में फँसना । ३. लिपटना । ४. काम में लिप्त या लीन होना । ५. हुज्जत करना । झगड़ना । ६. कठिनाई या अड़चन में पड़ना ।

उलझा*–पुं० दे० 'उलझन' ।

उलझाना–स० [हिं० उलझना] १. फँसाना । अटकाना । २. लगाये रखना । लिप्त रखना । ३. टेढ़ा करना ।

*अ० उलझना । फँसना ।

उलझौंहाँ–वि० [हिं० उलझना] १. या फँसानेवाला । २. लुभानेवाला ।

उलट*–स्त्री० [?] उल्लास ।

उलटना–अ० [सं० उल्लोठन] १. का नीचे या नीचे का ऊपर होना । होना । पलटना । २. पीछे मुड़ना । ३. तितर-बितर या अस्त-व्यस्त जैसा पहले रहा हो, उसके या के विरुद्ध रूप में होना । ५. नष्ट होना । ६. बेहोश होना । होना । ७. गिरना । ८. पहली बार गर्भ न ठहरना ।

स० १. नीचे का भाग ऊपर या भाग नीचे करना । औंधा पलटना । फेरना । २. औंधा पटकना । गिरा देना । ४. वस्तु को समेटकर ऊपर उठाना । बंद करना । अस्त-व्यस्त करना । पहले रहा हो, उसके विरुद्ध या करना । पुराने रूप के विरुद्ध लाना । (सेट–असाइड) ७. करना । विवाद करना । ८. फेंकना । उखाड़ डालना । ९. बीज पर फिर से बोने के लिए खेत १०. बेसुध करना । बेहोश करना कै करना । वमन करना । १२. ढालना । १३. बरबाद करना ।

उलट-पलट (पुलट)–स्त्री० [अदल-बदल । २. अव्यवस्था ।

उलट फेर–पुं० [हिं० उलटना १. परिवर्त्तन । अदल-बदल । की भली-बुरी दशा । हेर-फेर ।

उलटा–वि० [हिं० उलटना] [स्त्री० १. जिसके ऊपर का भाग नीचे या भाग ऊपर हो । औंधा ।

मुहा०–उलटा साँस चलना रुक-कर साँस चलना । (मरने के

उलटे मुँह गिरना = धोखा खाकर बुरी तरह विफल होना । २. जिसका आगे का भाग पीछे अथवा दाहिनी ओर का भाग बाईं ओर हो । इधर का उधर । क्रम-विरुद्ध ।

मुहा०-**उलटा फिरना या लौटना** = तुरन्त लौट आना । **उलटी गंगा बहना** = अनहोनी या नियम-विरुद्ध बात होना । **उलटी माला फेरना** = बुरा मनाना । अहित चाहना । **उलटे छुरे से मूँड़ना** = मूर्ख बनाकर झँसना । **उलटे पाँव फिरना** = तुरन्त लौट पड़ना । ३. (काल-क्रम में) आगे का पीछे या पीछे का आगे । ४. विरुद्ध । विपरोत । ५. बायाँ । वाम । 'सीधा' का विपरीत । जैसे-उलटा हाथ । ६. उचित के विरुद्ध । अयुक्त ।

मुहा०-**उलटा जमाना** = ऐसा समय, जब भली बात बुरी समझी जाय । अंधेर का समय । **उलटा-सीधा** = क्रम-रहित । अव्यवस्थित । **उलटी खोपड़ी का** = जड़ । मूर्ख । **उलटी-सीधी सुनाना** = खरी-खोटी सुनाना । भला-बुरा कहना । क्रि० वि० १. विरुद्ध क्रम से । २. बे-ठिकाने । अंड-बंड । ३. जैसा होना चाहिए, उसके विरुद्ध प्रकार से ।

पुं० १. सामने की या सीधे पक्ष की विरुद्ध दिशा में या पीछे रहनेवाला पक्ष । जैसे-छापे के कपड़े का उलटा या सिक्के का उलटा । (रिवर्स) २. बेसन से बनने-वाला एक पकवान । चिलड़ा । चिल्ला ।

उलटाना-स० हिं० 'उलटना' का स० । अ० दे० 'उलटना' ।

उलटा पुलटा-वि० [हिं० उलटा + पलटना] इधर का उधर । अंड-बंड ।

उलटा-पुलटी-स्त्री० [हिं० उलटना + पलटना] फेर-फार । अदल-बदल ।

उलटाव-पुं० [हिं० उलटना] १. उलटने की क्रिया या भाव । (रिवर्सल) २. पलटाव । फेर ।

उलटी-स्त्री० [हिं० उलटना] १. वमन । कै । २. कलैया । कलाबाजी ।

उलटे-क्रि० वि० [हिं० उलटा] १. विरुद्ध या विपरीत क्रम से । २. विपरीत व्यवस्था से । विरुद्ध न्याय से ।

उलत्थना*-स० = उलटना ।

यौ०-उलत्थना-पलत्थना = उलटना-पलटना ।

उलथना*-अ० [सं० उद्=नहीं + स्थल = जमना] १. ऊपर-नीचे होना । उथल-पुथल होना । २. उछलना । ३. उमड़ना । स० ऊपर-नीचे करना । उलटना-पलटना ।

उलथा-पुं० [हि० उलथना] १. नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना । २. कलाबाजी । कलैया ।

पुं० दे० 'उल्था' ।

उलदना*-स० [हिं० उलटना] [भाव० उलद] उँडेलना । उलटना । ढालना । अ० खूब बरसना ।

उलमना*-अ० [सं० अवलम्बन] लटकना । झुकना ।

उलरना*-अ० [सं० उल्ललन] १. उछलना । २. नीचे-ऊपर होना । ३. झपटना । ४. (बादल) घिर आना या छाना ।

उलसना*-अ० [सं० उल्लसन] १. शोभित होना । सोहना । २. उल्लसित होना । प्रसन्न होना । हुलसना ।

उलहना*-अ० [सं० उल्लंभन] १. उभड़ना । २. बाहर या सामने आना । निकलना । प्रस्फुटित होना । ३. प्रसन्न होना । हुलसना ।

पुं० दे० 'उलाहना' ।

उलही*-स्त्री० दे० 'उलाहना' ।

उलार-वि० [हिं० ओलरना = लेटना] जो बोझ के कारण पीछे की ओर झुका हो । (गाड़ी)

उलारना*-स० दे० 'उछालना'।

उलाह-पुं० दे० 'उल्लास'।

उलाहना-पुं० [सं० उपालंभन] १. किसी की भूल या दोष उसे दुःखपूर्वक जताना। यह कहना कि तुमने ऐसा नहीं किया या यह अनुचित किया। शिकायत। २. किसी के दोष या अपराध को उससे सम्बन्ध रखनेवाले किसी और आदमी से कहना। शिकायत। *स० १. उलाहना देना। २. दोष देना। निन्दा करना।

उलीचना-स० [सं० उल्लुंचन] १. हाथ या बरतन से पानी उछालकर फेंकना। २. कोई चीज निकालकर बाहर या दूर करना।

उलूक-पुं० [सं०] १. उल्लू नामक पक्षी। २. इन्द्र। ३. कणाद मुनि का एक नाम।

यौ०-उलूक दर्शन = वैशेषिक दर्शन।

पुं० [सं० उल्का] आग की लपट। लुक। लौ।

उलूखल-पुं० [सं०] १. ओखली। ऊखल। २. खल। खरल।

उलेड़ना*-स० दे० 'उँड़ेलना'।

उलेल*-स्त्री० [हिं० कुलेल] १. उमंग। जोश। २. उछल-कूद। ३. पानी की बाढ़। वि० १. बे-परवाह। २. अल्हड़।

उल्का-स्त्री० [स०] १. प्रकाश। तेज। २. जलती लकड़ी। लुक। ३. मसाल। ४. दीआ। दीपक। ५. एक प्रकार के चमकीले पिंड जो कभी-कभी रात को आकाश में इधर से उधर जाते या पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई देते हैं।

उल्कापात-पुं० [सं०] आकाश से पृथ्वी पर उल्का गिरना। तारा टूटना।

उल्कामुख प्रेत-पुं० दे० 'छलावा' २.।

उल्था-पुं० [हिं० उलथना] भाषान्तर। अनुवाद। तरजुमा।

उल्लंघन-पुं० [सं०] १. लाँघना। डाँकना। २. सीमा के बाहर जाना। अतिक्रमण। ३. निश्चय, प्रतिज्ञा आदि तोड़ना और उनके विरुद्ध कार्य करना। (ब्रीच)

उल्लसन-पुं० [सं०] [वि० उल्ल
उल्लासी] १. हर्ष करना। खुशी मना
२. रोमांच।

उल्लसित-वि० [सं०][स्त्री० उल्लसि
१. उल्लास या हर्ष से भरा हुआ। प्र
२. जिसे रोमांच हुआ हो। रोमांचित।

उल्लास-पुं०[सं०] [वि० उल्लसित,
उल्लासक] १. प्रकाश। चमक।
आनन्द। प्रसन्नता। ३. ग्रन्थ का
अध्याय। पर्व। ४. एक अलंकार जि
एक के गुण या दोष से दूसरे में गु
दोष का होना बतलाया जाता है।

उल्लासना*-स० [सं० उल्लासन] १.
करना। २. प्रसन्न करना।

उल्लिखित-वि० [सं०] १. जिसका
या पहले उल्लेख हुआ हो। पूर्वोक्त।
कथित। २. जिसका उल्लेख या कथन
हो। कहा हुआ। कथित। (मेन्शन्ड)

उल्लू-पुं० [सं० उलूक] १. दिन में
देखनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी। खूसट।

मुहा०-कहीं उल्लू बोलना = कि
स्थान का उजाड़ होना।

२. बेवकूफ। मूर्ख।

पद-उल्लू का पट्ठा = बहुत बड़ा मू

उल्लेख-पुं० [सं०] [वि० उल्लेखनी
१. लिखना। लेख। २. वर्णन। बया
३. चर्चा। जिक्र। (मेन्शन) ४. चि
खींचना। ५.साहित्य में एक अलंकार जि
एक ही वस्तु के अनेक रूपों में दिखाई प
का वर्णन होता है।

उल्लेखनीय-वि० [सं०] लिखने के यो
उल्लेख करने के योग्य।

उल्व-पुं० [सं०] १. वह झिल्ली जि
बच्चा बँधा हुआ पैदा होता है। आँव
२. गर्भाशय।

उवना*-अ० दे० 'उगना'।

उशीर-पुं० [सं०] गाँड़र की जड़। खस

-स्त्री० दे० 'उषा' ।
काल-पुं० = उषा काल ।
पान-पुं० [सं०] (हठ-योग, वैद्यक
दि में) बहुत तड़के नाक के द्वारा पानी
ना या पीकर मुँह से निकालना जो स्वास्थ्य-
क माना जाता है । अमृत-पान ।
-स्त्री० [सं०] १. प्रभात । तड़का ।
-वेला । २. अरुणोदय की लाली । ३.
ासुर की कन्या, अनिरुद्ध की पत्नी ।
ा-काल-पुं० [सं०] प्रभात ।
-पुं० [सं०] ऊँट ।
-वि० [सं०] [भाव० उष्णता] १.
ीर में गरम । २. फुरतीला । तेज ।
कटिबंध-पुं० [सं०] पृथ्वी का
भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के
न में पड़ता है और जिसमें अपेक्षाकृत
ीं अधिक होती है । (ट्रॉपिक ज़ोन)
ाता-स्त्री० [सं०] गरमी । ताप ।
ीष-पुं० [सं०] १. पगड़ी । साफा ।
मुकुट । ताज ।
-पुं० [सं०] १. गरमी । ताप । २.
। ३. गरमी की ऋतु ।
ज-पुं० [सं०] छोटे कीड़े जो पसीने
मैल आदि से पैदा होते हैं । जैसे–खटमल,
र आदि ।
ा-स्त्री० [सं०] १. गरमी । २. धूप ।
गुस्सा । क्रोध ।
-सर्व० उभ० [हिं० वह] 'वह' शब्द
रूप जो विभक्ति लगने पर उसे प्राप्त
है । जैसे–उसने ।
न-पुं० [सं० उत्कर्षण] वह घास-पात
से बरतन माँजते हैं ।
काना-स० दे० 'उकसाना' ।
टना-अ० [सं० उत्सरण] १. उखड़ना ।
. भागना ।
ाना-स० हिं० 'उसटना' का स० ।
नना-स० दे० 'उनालना' ।
सरना*-अ० [सं० उद् + सरण = जाना]

---

१. हटना । दूर होना । २. बीतना । गुजरना । ३. भूलना । विस्मृत होना । ४. छिन्न-भिन्न होना ।

उससना*– स० [सं० उत् + सरण] खिसकना । टलना ।

स० [हिं० उसास] साँस लेना ।

उसाँस–पुं० [सं० उत् + श्वास] १. ऊपर को खींचा हुआ लम्बा साँस । २. मानसिक कष्ट, पश्चात्ताप आदि के कारण लिया जाने वाला ठंढा साँस ।

उसार–पुं० [सं० अवसार = फैलाव] विस्तार । फैलाव ।

उसारना*–स० [हिं० उसार] १. उखाड़ना । २. हटाना । टालना । ३. बनाकर खड़ा करना । जैसे–घर उसारना । ४. बाहर निकालना या सामने लाना ।

उसारा–पुं० [हिं० उसार] [स्त्री० उसारी] १. दलान । २. छाजन ।

उसालना*–स० [सं० उत् + सारण] १. उखाड़ना । २. टालना । ३. भगाना ।

उसास–पुं० दे० 'उसाँस' ।

उसीर*–पुं० = उशीर (खस) ।

उसूल–पुं० [अ०] सिद्धान्त ।

उस्तरा–पुं० [फा०] बाल मूँड़ने का छुरा ।

उस्ताद–पुं० [फा०] [स्त्री० उस्तानी] १. गुरु । शिक्षक । अध्यापक । २. वह जो वेश्याओं को संगीत, नृत्य आदि की शिक्षा देता है । ३. किसी विषय का बहुत बड़ा पंडित या ज्ञाता ।

वि० १. चालाक । धूर्त्त । २. निपुण । दक्ष ।

उस्तादी–स्त्री० [फा०] १. शिक्षक की वृत्ति । गुरुआई । २. दक्षता । निपुणता । ३. विज्ञता । ४. चालाकी । धूर्त्तता ।

उस्तानी–स्त्री० [फा० उस्ताद] १. उस्ताद की स्त्री । गुरु-पत्नी । २. वह स्त्री जो शिक्षा दे । शिक्षिका ।

उस्वास*–पुं० दे० 'उसाँस' ।

उहटना*–अ० १. दे० 'उघड़ना' । २.

दे॰ 'हटना'।

उहाँ*–क्रि॰ वि॰ दे॰ 'वहाँ'।

उहै*–सर्व॰ दे॰ 'वही'।

ऊ

ऊ–देव-नागरी वर्णमाला का छठा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है। कहीं कहीं अव्यय के रूप में यह 'भी' और सर्वनाम के रूप में 'वह' का अर्थ देता है। प्रत्यय के रूप में यह प्रायः 'वाला' का अर्थ देता है। जैसे खाऊ, लेऊ आदि।

ऊँघ–स्त्री॰ [सं॰ अवाङ्=नीचे मुँह] ऊँघाई। झपकी। अर्द्ध-निद्रा।

ऊँघना–अ॰ [सं॰ अवाङ्=नीचे मुँह] झपकी लेना। नींद में झूमना।

ऊँच*†–वि॰ दे॰ 'ऊँचा'।

यौ॰–ऊँच-नीच=(क) छोटी जाति का और बड़ी जाति का। (ख) हानि और लाभ। भला और बुरा।

ऊँचा–वि॰ [सं॰ उच्च] [स्त्री॰ ऊँची] १. दूर तक ऊपर की ओर गया हुआ। उठा हुआ। उन्नत।

मुहा॰–ऊँचा नीचा–(क) ऊबड़-खाबड़। जो सम-तल न हो। (ख) भला-बुरा। हानि-लाभ।

२. जिसका सिरा बहुत नीचे तक न हो। जिसका लटकाव कम हो। जैसे–ऊँचा पाजामा। ३. श्रेष्ठ। बड़ा। महान्।

मुहा॰–ऊँचा-नीचा या ऊँची-नीची सुनाना=खोटी-खरी सुनाना। भला-बुरा कहना।

४. जोर का (शब्द)। तीव्र (स्वर)।

मुहा॰–ऊँचा सुनना=केवल जोर की आवाज सुनना। कम सुनना।

ऊँचाई–स्त्री॰ [हिं॰ ऊँचा+ई(प्रत्य॰)] १. ऊपर की ओर का विस्तार। उठान। उच्चता। २. गौरव। बड़ाई।

ऊँचे–क्रि॰ वि॰ [हिं॰ ऊँचा] १. ऊँचे पर। ऊपर की ओर। २. जोर से (
करना)।

मुहा॰–ऊँचे-नीचे पैर पड़ना
काम में प्रवृत्त होना।

ऊँट–पुं॰ [सं॰ उष्ट्र, पा॰ उट्ट] [
ऊँटनी] एक प्रसिद्ध ऊँचा चौ
सवारी और बोझ लादने के
आता है और जो अधिकतर रेगि
सवारी के लिए उपयुक्त होता है।

ऊँड़ा*–पुं॰ [सं॰ कुंड] १. वह
जिसमें धन रखकर भूमि में गाड़
२. चहबच्चा। तहखाना।
वि॰ गहरा। गम्भीर।

ऊँदर*–पुं॰ [सं॰ इंदुर] चूहा।

ऊँहूँ–अव्य॰ [अनु॰] १. नहीं
कभी नहीं। कदापि नहीं। (उत्तर में

ऊअना*–अ॰ दे॰ 'उगना'।

ऊक*–पुं॰ [सं॰ उल्का] १. दे॰ 'उ
२. दाह। जलन। ताप।
स्त्री॰ [हिं॰ 'चूक' का अनु॰]
चूक। गलती।

ऊकना*–अ॰ [हिं॰ 'चूकना' का अ
१. वार खाली जाना। लक्ष्य पर
हुँचना। २. भूल करना। गलती क
स॰ १. भूल जाना। २. उपेक्षा
स॰ [हिं॰ ऊक] १. जलाना। २.

ऊख–पुं॰ [सं॰ इक्षु] ईख। गन्ना।
*वि॰ [सं॰ उष्ण] तपा हुआ।

ऊखम*–पुं॰ दे॰ 'ऊष्म'।

ऊखल–पुं॰ [सं॰ उलूखल]
पत्थर का वह गहरा बरतन जिस
आदि मूसल से कूटते हैं। ओखली।

मुहा॰–ऊखल में सिर देना=

ओखिम के काम में पड़ना ।

खिल*-वि० [सं० ऊष्म ?] १. पराया । अपरिचित । ३. उष्ण । गरम ।

खिलताई*-स्त्री० = 'ऊखिल' का भाव ।

-पुं० [सं० उद्धन] १ उपद्रव । धम । २. अंधेर ।

ड़-वि० दे० 'उजाड़' ।

नना*-अ० [हिं० पूजना] १.पूरा होना । परिपूर्ण होना । भरना ।

जर*-वि० १. दे० 'उजला' । २. दे० 'उजाड़' ।

जू*-पुं० दे० 'वजू' ।

नाटक-पुं० [सं० उत्कट + नाटक] व्यर्थ का काम । २. इधर-उधर का ाधारण काम ।

टना*-अ० [हिं० औटना] १. उत्साहित होना । उमंग में आना । २. तर्क-वितर्क सोच-विचार करना ।

ट-पटाँग-वि० [हिं० ऊँट + पर + टाँग] अटपट । टेढ़ा-मेढ़ा । बेढंगा । बे-मेल । २. निरर्थक । व्यर्थ । वाहियात ।

ठ*-स्त्री० [?] उमंग ।

ढ़ना*-स० [सं० ऊढ़] १. विवाह करना । किसी स्त्री को रखेली बनाकर अपने ास रखना ।

ढ़ा-पुं० [सं० ऊन] १. कमी । टोटा । ाय । २. महँगी । ३. अकाल । ४. नाश । ोप । ५. लक्ष्य । निशाना ।

ढ़ी*-स्त्री० [हिं० उड़ना ?] १. पनडुब्बी नाम की चिड़िया । २. लक्ष्य । निशाना ।

हना*-अ० [सं० ऊह] तर्क-वितर्क करना । सोच-विचार करना ।

अ० [सं० ऊढ़] विवाह करना ।

ढ़ा-स्त्री० [सं०] १. विवाहित स्त्री । २. वह ब्याही हुई स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरे से प्रेम करे ।

त-वि० [सं० अपुत्र] १. बिना पुत्र का । निस्सन्तान । निपूता । २. उजड्ड ।

ऊतर*-पुं० १.दे० 'उत्तर' । २.दे० बहाना ।

ऊतला*-वि० [हिं० उतावला] १. चंचल । चपल । २. बेगवान । तेज ।

ऊद-पुं० [अ०] अगर का पेड़ या लकड़ी ।

पुं० [सं० उद्] ऊदबिलाव ।

ऊद-बत्ती-स्त्री० [अ० ऊद + हिं० बत्ती] अगर की बत्ती जो सुगंध के लिए जलाते हैं । अगर-बत्ती ।

ऊद-बिलाव-पुं० [सं० उद् + बिडाल] नेवले की तरह का एक जन्तु जो जल और स्थल दोनों में रहता है ।

ऊदल-पुं० [उदयसिंह का संक्षिप्त रूप] महोबे के राजा परमाल के मुख्य सामन्तों में से एक वीर ।

ऊदा-वि० [अ० ऊद अथवा फा० कबूद] लाली लिये हुए काले रंग का । बैंगनी ।

ऊधम-पुं० [सं० उद्धम] उपद्रव । उत्पात ।

ऊधमी-वि० [हिं० ऊधम] [स्त्री० ऊधमिन] ऊधम करनेवाला । उत्पाती ।

ऊधो-पुं० दे० 'उद्धव' ।

ऊन-पुं० [सं० ऊर्ण] भेड़, बकरी आदि के रोएँ जिनसे कम्बल और दूसरे गरम कपड़े बनते हैं ।

वि० [सं०] [भाव० ऊनता] १. कम । थोड़ा । २. तुच्छ ।

पुं० स्त्रियों के व्यवहार के लिए एक प्रकार की छोटी तलवार ।

ऊनता-स्त्री० [सं०] १. कमी । त्रुटि । २. घाटा । (डेफिसिट)

ऊना-वि० [सं० ऊन] १. कम । न्यून । थोड़ा । २. तुच्छ । हीन ।

पुं० खेद । दुःख । रंज ।

स्त्री० [?] एक प्रकार की पुरानी तलवार ।

ऊनी*-वि० [सं० ऊन] कम । न्यून ।

स्त्री० १. कमी । न्यूनता । २. उदासी ।

वि० [हिं० ऊन] ऊन का बना हुआ ।

स्त्री० दे० 'ओप' ।

ऊप*-स्त्री० दे० 'ओप' ।

ऊपर–क्रि० वि० [सं० उपरि] [वि० ऊपरी] १. ऊँचे स्थान में। ऊँचाई पर। २. आधार पर। सहारे पर। ३. ऊँची श्रेणी में। उच्च कोटि में। ४. (लेख में) पहले। ५. अधिक। ज्यादा। ६. प्रकट में। देखने में। ७. तट पर। किनारे पर। ८. अतिरिक्त। सिवा।

मुहा०–ऊपर ऊपर = बिना और किसी के जताये। चुपके से। **ऊपर की आमदनी** = इधर-उधर से मिलनेवाली रकम। **ऊपर-तले के** = वे दो भाई या बहनें जिनके बीच में और कोई भाई या बहन न हुई हो। **ऊपर लेना** = (किसी कार्य का) जिम्मा लेना। हाथ में लेना। **ऊपर से** = (क) ऊँचाई से (ख) इसके अतिरिक्त। इसके सिवा। (ग) वेतन से अधिक। (घूस या रिश्वत के रूप में) (घ) दिखाने के लिए। **ऊपर से देखने पर** = जो रूप दिखाई देता हो, उसके विचार से। (प्राइमा फेसी)

ऊपरी–वि० [हिं० ऊपर] १. ऊपर का। २. बाहर का। बाहरी। ३. बँधे हुए के सिवा। ४. दिखौआ। नुमाइशी।

ऊब–स्त्री० [हिं० ऊबना] ऊबने की क्रिया या भाव। व्याकुलता। उद्वेग। घबराहट।

स्त्री० [हिं० ऊभ] उत्साह। उमंग।

ऊबट*–वि० दे० 'ऊबड़-खाबड़'।

पुं० १. कठिन या विकट मार्ग। २. नीति-विरुद्ध या बुरा मार्ग।

ऊबड़-खाबड़–वि० [अनु०] ऊँचा-नीचा। जो सम-तल न हो। अटपट।

ऊबना–अ० [सं० उद्वेजन] उकताना। घबराना। अकुलाना।

ऊबरा–पुं० [हिं० उबरना] उबरने की क्रिया या भाव।

वि० किसी चीज के अन्दर भरे जाने पर बचा या निकला हुआ। अवशिष्ट।

ऊभ*–वि० [हिं० ऊभना] १. खड़ा हुआ। २. ऊँचा। ३. ऊपर उठा या हुआ।

स्त्री० [हिं० ऊब] १. व्याकुलता। उमस। गरमी। ३. हौसला। उमंग।

ऊभना*–अ० १. दे० 'उठना'। २. 'ऊबना'।

ऊभा*–वि० [हिं० ऊभना] १. हुआ। २. जो खड़ा हो।

ऊमक*–स्त्री० [सं० उमंग] झोंक। वे

ऊमना*–अ० दे० 'उमड़ना'।

ऊमर*–पुं० [सं० औदुंबर] गूलर।

ऊरध*–वि० दे० 'ऊर्ध्व'।

ऊरस*–वि० [सं० अव+रस] १. रस न हो। २. बिना स्वाद का स्वादवाला।

पुं० नीरस या बुरे स्वादवाला पदार्थ।

ऊरु–पुं० [सं०] जानु। जाघ।

ऊरुस्तंभ–पुं० [सं०] एक रोग पैर जकड़ जाते हैं।

ऊर्ज–वि० [सं०] बलवान्। शक्तिमान्

पुं० [सं०] [वि० ऊर्जस्वल, ऊर्ज १. बल। शक्ति। २. साहित्य में एक अलं जिसमें सहायकों के घटने पर भी अ न टूटने का वर्णन होता है।

ऊर्जस्वित–वि० [सं०] चढ़ा हुआ।

ऊर्जस्वी–वि० [सं०] १. बलवा शक्तिमान्। २. तेजवान। ३. प्र

ऊर्जित–वि० दे० 'ऊर्ज'।

ऊर्ण–पुं० दे० 'ऊन'।

ऊद्र्ध्व–क्रि० वि० [सं०] ऊपर।

वि० १. जो ठीक और सीधा ऊपर ओर गया हो। (वर्टिकल) २. ऊँ ३. खड़ा।

ऊद्र्ध्वगामी–वि० [सं०] १. ऊपर ओर जानेवाला। २. मुक्त।

ऊद्र्ध्व मंडल–पुं० [सं०] वायु-मं का वह भाग जो अधोमंडल से ऊप और पृथ्वी-तल से २० मील की ऊँ

क माना जाता है। इसमें ताप-क्रम स्थिर
ता है।
र्ध्व लोक-पुं० [सं०] आकाश।
र्ध्व श्वास-पुं० [सं०] १. ऊपर चढ़ता
ा साँस। (मरने या दम फूलने के समय)
-क्रि० वि०, वि० दे० 'ऊद्‌र्ध्व'।
-स्त्री० [सं०] [वि० ऊर्मिल] १.
र। तरंग। २. पीड़ा। दुःख।
मिल-वि० [सं०] जिसमें लहरें उठती
। तरंगित।
ल-जलूल-वि० [देश०] १. असंबद्ध।
सिर पैर का। अंड-बंड। २. वाहियात।
ना*-अ० [हिं० उछलना] १.
छलना। २. प्रसन्न होना।

देव-नागरी वर्ण-माला का सातवाँ वर्ण,
सका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। आज-
ल लोग इसका वास्तविक और मूल-उच्चा-
ण भूल गये हैं और यह 'रि' के समान
या जाने लगा है।
-स्त्री० [सं०] वेदों की ऋचा।
दे० 'ऋग्वेद'।
-पुं० [सं०] [स्त्री० ऋक्षी] १.
। भालू। २. तारा। नक्षत्र।
पति-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २.
वान्।
वेद-पुं० [सं०] चार वेदों में से एक,
द्य में है।
चा-स्त्री० [सं०] १. वह वेद-मंत्र जो
य में हो। २. स्तोत्र।
जु-वि० [सं०] [भाव० ऋजुता] १.
टेढ़ा न हो। सीधा। २. सरल। सुगम।
। ३. सरल चित्त का। सज्जन। ४.
चोरी, छल-कपट आदि से सदा बचता
। ईमानदार। (ऑनेस्ट) ५. अनु-
ल। प्रसन्न।

ऊलरना*–अ० दे० 'उलरना'।

ऊषा–स्त्री० [सं०] पौ फटने की लाली। अरुणोदय।

ऊषा काल–पुं० [सं०] सवेरा।

ऊष्म–पुं० [सं०] १. गरमी। २. भाप। वि० गरम।

ऊष्म वर्ण–पुं० [सं०] श, ष, स और ह अक्षर।

ऊसर–पुं० [सं० ऊषर] वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और जो खेती के योग्य न हो। (बैरन लैंड)

ऊह–पुं० [सं०] १. अनुमान। २. तर्क।

ऊहापोह–पुं० [सं० ऊह + अपोह] मन में होनेवाला तर्क-वितर्क।। सोच-विचार।

ऋ

ऋजुता–स्त्री० [सं०] १. ऋजु होने का भाव। सीधापन। सिधाई। २. चोरी, छल-कपट आदि से सदा बचे रहने की वृत्ति। ईमानदारी। (ऑनेस्टी)

ऋण–पुं० [सं०] [भाव० ऋणत्व, वि० ऋणी] १. कुछ समय के लिए द्रव्य लेना। कर्ज। उधार। (लोन)

मुहा०–ऋण उतरना = कर्ज अदा होना। **ऋण पटाना** = उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना।

२. किसी को किसी काम के लिए दिया हुआ धन। जैसे–अप्रतिदेय ऋण। (परमानेन्ट ऐडवान्स)

ऋण ग्राही–पुं० [सं०] वह जिसने किसी से ऋण लिया हो। (बॉरोवर)

ऋण-पत्र–पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसके आधार पर कोई किसी से ऋण लेता है। २. वह पत्र जिसके आधार पर कोई संस्था जन-साधारण से ऋण लेती है। (डिबेन्चर)

ऋणी–वि० [सं० ऋणिन्] १. जिसने ऋण लिया हो। कर्ज लेनेवाला। अधमर्ण।

(डेटर)। २. किसी के उपकार से दबा हुआ। अनुगृहीत।

ऋतु–स्त्री० [सं०] १. प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो-दो महीनों के छः विभाग जो ये हैं—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर। २. रजोदर्शन के उपरान्त वह काल जिसमें स्त्रियाँ गर्भधारण के योग्य होती है।

ऋतुचर्या–स्त्री० [सं०] ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार रखना।

ऋतुमती–वि० स्त्री० [सं०] १. रजस्वला। २. जिस (स्त्री) के रजोदर्शन के उपरान्त सोलह दिन न बीते हों और जो गर्भाधान के योग्य हो।

ऋतुराज–पुं० [सं०] वसन्त ऋतु।

ऋतु-स्नान–पुं० [सं०] [वि० स्त्री० ऋतुस्नाता] रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।

ऋत्विज–पुं० [सं०] वह जिसका यज्ञ में वरण किया जाय। इनकी संख्या सोलह होती है जिनमें होता, अध्वर्यु,

और ब्रह्मा मुख्य हैं।

ऋद्ध–वि० [सं०] सम्पन्न। समृद्ध

ऋद्धि–स्त्री० [सं०] १. एक लता

कन्द दवा के काम में आता है। २.

बढ़ती।

ऋद्धि-सिद्धि–स्त्री० [सं०] १.

के साथ रहनेवाली उनकी दो दासियाँ,

और सिद्धि। २. सब प्रकार की

और वैभव।

ऋषभ–पुं० [सं०] १. बैल। २.

वाचक शब्द। ३. संगीत के सा

में से दूसरा।

ऋषि–पुं० [सं०] [भा३० ऋषिता,

१. वेद-मंत्रों का प्रकाश करनेवाला

द्रष्टा। २. आध्यात्मिक और भौतिक

का ज्ञाता, परम बुद्धिमान्, दूरदर्शी,

रित्र और त्यागी।

ऋषि-ऋण–पुं० [सं०] ऋषियों के

कर्त्तव्य जो वेदों का पठन-पाठन है।

ए

ए–देव नागरी वर्ण-माला का ग्यारहवाँ और नागरी वर्ण-माला का आठवाँ स्वर-वर्ण जो अ और इ के योग से बना है। गद्य में कभी-कभी यह 'हे' या 'ऐ' की तरह सम्बोधन के रूप में और कविता में 'यह' या 'ये' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।

एँच-पेंच–पुं० [फा० पेच] १. उलझन। २. दे० 'दाँव-पेच'।

एंजिन–पुं० दे० 'इंजन'।

एँड़ा-बेंड़ा–वि० [हिं० बेंड़ा] उलटा-पुलटा। अंड-बंड।

एकंगा–वि० [हिं० एक+अंग] [स्त्री० एकंगी] एक पक्ष का। एक-तरफा।

एकंत*–वि० दे० 'एकांत'।

एक–वि० [सं०] १. एकाइयों में सबसे छोटी और पहली पूरी संख्या। व

छोटा पूरा अंक जिससे गिनती

होती है।

पद–एक अंक या आँक=(क

या पक्की बात। (ख) एक बार।

आध=थोड़ा। कुछ। **एक एक**=

हर एक। प्रत्येक। (ख) अलग अलग

मुहा०–एक आँख से देखना=

साथ समान भाव रखना। **एक**

करके=(क) इस तरह कि एक

एक हो। (ख) धीरे-धीरे। (ग)

एक टक=(क) अनिमेष या

से। (ख) लगातार देखते हुए।

तार=(क) एक ही रूप-रंग का।

(ख) लगातार। **एक तो**=पहले

हली बात तो यह है कि । **एक-दम** = (क) बिना रुके । लगातार । (ख) तुरन्त । उसी समय । (ग) एक-बारगी । **एक दूसरे का, को, पर, में या से** = परस्पर । **एक न** चलना = कोई युक्ति काम न आना । **एक** बात = (क) दृढ़ प्रतिज्ञा । (ख) ठीक या सच्ची बात । **एक-सा** = समान । बराबर । क-से-एक = एक से एक बढ़कर । २. अद्वितीय । बे-जोड़ । ३. कोई अ-निश्चित । ४. समान । तुल्य ।

एकक-वि० दे० 'एकल' जिसमें एक ही हो । (सोल)

ं० दे० 'एकाई' और 'मात्रक' ।

कक निगम-पुं० [सं०] वह निगम (संस्था) जो एक ही व्यक्ति से सम्बन्ध रखता हो । (सोल कारपोरेशन) जैसे-राजा एकक निगम है ।

कक शारीरक-पुं० [सं०] वह शारीरक (संस्था) जो एक ही व्यक्ति से सम्बन्ध रखता हो । (कॉरपोरेशन सोल) जैसे-राजा एकक शारीरक है ।

क-चक्र-पुं० [सं०] १. सूर्य्य का रथ । २. सूर्य ।

वि० चक्रवर्त्ती ।

क-छत्र-वि० [सं०] जिसमें कहीं और किसी का प्रभुत्व या अधिकार न हो । जैसे-एक-छत्र राज्य । (एबसोल्यूट मॉनर्की)

क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ ।

पुं० [सं०] वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार केवल एक (राजा या अधिनायक) को प्राप्त हो ।

कज*-वि० [सं० एक + एव] एक ही ।

कड़-पुं० [अं० एकर] भूमि की एक नाप जो डेढ़ बीघे से कुछ बड़ी होती है ।

क-तंत्र-पुं०, वि० दे० 'एक-छत्र' ।

कतः-क्रि० वि० [सं०] एक ओर से ।

कत*-क्रि० वि० दे० 'एकत्र' ।

क-तरफा-वि० [फा०] १. एक ओर का । एक पक्ष का ।

मुहा०-एक-तरफा डिगरी = वह डिगरी जो मुद्दालेह के हाजिर न होने के कारण मुद्दई को प्राप्त हो ।

२. जिसमें पक्षपात हुआ हो । ३. एक-रुखा । एक पार्श्व का ।

एकता-स्त्री० [सं०] १. सब के मिलकर एक होने का भाव । ऐक्य । (युनिटी) २. समानता । बराबरी ।

वि० [फा०] अद्वितीय । बे-जोड़ ।

एक-तान-वि० [सं०] १. तन्मय । लीन । एकाग्र चित्त । २. मिलकर एक ।

एक-तारा-पुं० [हिं० एक + तार] एक त । रका सितार या बाजा ।

एक-तारी-स्त्री० [हिं० एक + तार] छाती पर पहनी जानेवाली एक तार की जाली । (आभूषण)

एकत्र-क्रि० वि० [सं०] इकट्ठा किया या एक जगह लाया हुआ ।

एकत्रित-वि० दे० 'एकत्र' ।

एकत्व-पुं० [सं०] १. एकता । २. एक ही तरह का या बिलकुल एक-सा होना । पूरी समानता ।

एकदंत-पुं० [सं०] गणेश ।

एक-देशीय-वि० [सं०] १. किसी एक देश, स्थान, विभाग या अंग से सम्बन्ध रखनेवाला । २. (सिद्धान्त या नियम) जो एक ही अवसर या स्थल के लिए हो । जो सर्वत्र न घटे ।

एक-निष्ठ-वि० [सं०] एक ही पर निष्ठा या श्रद्धा रखनेवाला ।

एक-पक्षीय-वि० [सं०] किसी एक पक्ष, दल या अंग से सम्बन्ध रखनेवाला । एक-तरफा । (युनिलेटरल)

एक-पत्नी-व्रत-पुं० [सं०] एक को छोड़ कर दूसरी स्त्री से विवाह या प्रेम-सम्बन्ध न रखने का नियम ।

एक-बारगी-क्रि० वि० [फा०] १. एक

बार में। एक समय में। २. अचानक। अकस्मात्। ३. बिल्कुल। निपट।

एक मत–वि० [सं०] एक या समान मत रखनेवाले। एक राय के।

एक-मात्र–वि० [सं०] केवल एक। एक ही।

एक-रंग–वि० [हिं० एक+रंग] १. समान। तुल्य। २. कपट शून्य। ३. जो सब तरह से एक-सा हो।

एक-रदन–पुं० [सं०] गणेश।

एक-रस–वि० [सं०] आदि से अन्त तक एक-सा।

एक-राजतंत्र–पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें एक राजा कुछ मंत्रियों की सहायता से सारे राज्य का शासन करता हो। एक राजा का राज्य।

एक-रूप–वि० [सं०] [भाव० एक-रूपता] रूप, बनावट, प्रकार आदि के विचार से किसी या औरों से बिलकुल मिलता जुलता हुआ। (युनिफॉर्म)

एक-रूपता–स्त्री०[सं०]रूप, बनावट, प्रकार आदि के विचार से किसी या औरों से समान होने की अवस्था या भाव। (युनिफॉर्मिटी)

एकल–वि० [हिं० एक] १. अकेला। २. अनुपम। बे-जोड़। ३. एक से सम्बन्ध रखनेवाला। जिसमें एक ही हो। (सोल)

एक-लिंग–पुं० [सं०] १. शिव का एक नाम। २. एक शिव-लिंग जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के कुल-देवता हैं।

एकलौता–वि० दे० 'इकलौता'।

एक वचन–पुं० [सं०] व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता है। (सिंग्युलर)

एक-वर्षी–वि० [सं० एक+वर्ष] (पेड़ या पौधा) जो एक ही वर्ष तक रहकर नष्ट हो जाता हो। (एनुअल)

एकवाँज–स्त्री० [हिं० एक+बाँझ] वह स्त्री जिसे एक बच्चे के सिवा दूसरा बच्चा न हो। काक-वंध्या।

एक-वाक्यता–स्त्री० [सं०] कुछ लोगों का कथन या मत एक ही होना।

एक-वेणी–स्त्री० [सं०] वह स्त्री सब बालों की एक ही लट या वेणी रखे। (वियोगिनी या विरह लक्षण)

एकसर*†–वि०[हिं० एक+सर एक पल्ले या परत का।

वि० [फा०] बिलकुल। तमाम।

एक-साँ–वि० [फा०] तुल्य।

एक-हत्था–वि० [हिं० एक+हाथ या व्यवसाय) जो एक ही के हाथ

एकहरा–वि० [सं० एक+हरा [स्त्री० एकहरी] १. एक परत का एकहरा कुरता। २. एक लड़ी का।

यौ०–एकहरा बदन=दुब शरीर।

एकांकी–पुं० [सं०] १. दस रूपकों में से एक। इसमें ऐसे नायक का चरित्र होता है, जिसका रसयुक्त हो। इसकी भाषा सरल और छोटे होने चाहिएँ। २. वह नाटक ही अंक में समाप्त हो।

एकांगी–वि० [सं०] १. एक अंग २. एक-तरफा। ३. हठी। जिद्दी।

एकांत–वि० [सं०] १. अत्यन्त। कुल। २. अलग। ३. अकेला। ४. सूना।

पुं० [सं०] निर्जन या सूना स्थान।

एकांतर (रिक)–वि० [सं०] एक अथवा एक एक को छोड़कर बाद होने या एक-एक को छोड़कर परवर्ती से सम्बन्ध रखनेवाला।

एकांत-वास–पुं० [सं०] [वि० वासी] निर्जन स्थान या अकेले में रह

एकांतिक–वि० दे० 'एक-देशीय'।

एका–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

पुं० [सं० एक] बहुत-से लोगों के कर एक होने का भाव। एकता।

एकाई-स्त्री० [हिं० एक + आई(प्रत्य०)] १. एक का भाव या मान। २. वह मात्रा जिसके गुणन या विभाग से दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाता है। (यूनिट) विशेष दे० 'मात्रक'। ३. अंकों की गिनती में पहला अंक या उसका स्थान।

एकाएक-क्रि० वि० [हिं० एक] अकस्मात्। अचानक। सहसा।

एकाएकी*-क्रि० वि० दे० 'एकाएक'। वि० [सं० एकाकी] अकेला।

एकाकार-पुं० [सं०] किसी के साथ मिल-मिलाकर एक होने की दशा। वि० १. एक-से आकार का। समान। २. कइयों के योग से जिसने एक रूप या आकार धारण कर लिया हो। ३. जो किसी में मिलकर उसी के आकार का होगया हो।

एकाकी-वि० [सं० एकाकिन्] [स्त्री० एकाकिनी] अकेला।

एकाकीपन-पुं० [सं० एकाकी] अकेलापन।

एकाक्ष-वि० [सं०] जिसकी एक ही आँख हो। काना। पुं० १. कौआ। २. शुक्राचार्य्य।

एकाक्षरी-वि० [सं० एकाक्षरिन्] १. जिसमें एक ही अक्षर हो। २. एक अक्षर से संबंध रखनेवाला।

एकाग्र-वि० [सं०] [भाव० एकाग्रता] १. एक रूप में स्थिर। चंचलता-रहित। २. जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

एकाग्र-चित्त-वि० [सं०] जिसका ध्यान किसी एक बात या विचार में लगा हो।

एकाग्रता-स्त्री० [सं०] मन के एकाग्र होने की दशा, वृत्ति या भाव। (एसिडुइटी)

एकात्मता-स्त्री० [सं०] १. एकता। अभेद। २. मिल-मिलाकर एक होना। ३. रूप, प्रकृति, गुण आदि के विचार से किसी के इतना समान होना कि दोनों एक जान पड़ें। (आइडेन्टिटी)

एकात्मवाद-पुं० [सं०] [वि० एकात्मवादी] यह सिद्धान्त कि सारे संसार के प्राणियों और वस्तुओं में एक ही आत्मा व्याप्त है।

एकादश-वि० [सं०] ग्यारह।

एकादशाह-पुं० [सं०] मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का कृत्य। (हिन्दू)

एकादशी-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के शुक्ल और कृष्ण-पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो व्रत का दिन माना जाता है।

एकाधिक-वि० [सं० एक + अधिक] एक से अधिक। कई। तपय।

एकाधिकार-पुं० [सं०] किसी वस्तु, कार्य्य या व्यापार आदि पर किसी एक व्यक्ति, दल या समाज का होनेवाला पूरा-पूरा अधिकार। (मॉनोपोली)

एकाधिपत्य-पुं० [सं०] १. किसी कार्य या देश पर किसी एक व्यक्ति, दल या समाज का होनेवाला आधिपत्य। २. दे० 'एकाधिकार'।

एकार्थक-वि० [सं०] १. जिसका एक ही अर्थ हो। २. जिनके अर्थ समान हों। समानार्थक।

एकावली-स्त्री० [सं०] १. साहित्य में एक अलंकार जिसमें पूर्व का और पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेष भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाता है। २. एक लड़ का हार।

एकाह-वि० [सं०] एक दिन में पूरा होनेवाला। जैसे–रामायण का एकाह पाठ।

एकीकरण-पुं० [सं०] [वि० एकीकृत] १. दो या अधिक वस्तुओं को मिलाकर एक करना। (एमल्गमेशन) २. सबको मिलाकर उनमें एकता स्थापित करना। (युनिफिकेशन)

एकीभूत-वि० [सं०] १. मिला हुआ। मिश्रित। २. जो मिलकर एक हो गया हो।

एकेंद्रिय–पुं० [सं०] वह जीव जिसके केवल एक इन्द्रिय अर्थात् त्वचा मात्र होती है। जैसे–जोंक, केंचुआ आदि।

एकोद्दिष्ट (श्राद्ध) –पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो एक उद्देश्य से किया जाय।

एकौंझा*–वि० दे० 'अकेला'।

एक्का–वि० [हिं० एक + का (प्रत्य०)] एक से सम्बन्ध रखनेवाला। २. अकेला।

यौ०–एक्का-दुक्का = अकेला-दुकेला।

पुं० १. वह पशु या पक्षी जो अकेला चरता या घूमता हो। २. एक प्रकार की दो पहियों की गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है। ३. वह वीर या सैनिक जो अकेला बड़े-बड़े काम कर सकता हो। *४. 'ब्रह्म' का वाचक शब्द।

एक्कावान–पुं० [हिं० एक्का + वान (प्रत्य०)] एक्का नाम की सवारी हाँकनेवाला।

एक्की–स्त्री० [हिं० एक] १. वह बैल-गाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय। २.दे०'एक्का'।

एजेंट–पुं० [अं०] वह जो किसी की ओर से उसका प्रतिनिधि या अधीनस्थ होकर काम करता है। अभिकर्त्ता।

एजेंसी–स्त्री० दे० 'अभिकरण'।

एड़–स्त्री० [सं० एडुक] एड़ी।

मुहा०–एड़ करना = (क) एड़ लगाना। (ख) चलना। रवाना होना। **एड़ देना या लगाना** = (क) लात मारना। (ख) घोड़े को आगे बढ़ाने के लिए एड़ से मारना। (ग) उसकाना। उत्तेजित करना। (घ) बाधा डालना।

एड़ी–स्त्री० [सं० एडुक = हड्डी] पैर के नीचे का पिछला भाग।

मुहा०–एड़ी रगड़ना = बहुत दिनों से क्लेश या बीमारी में पड़े रहना। **एड़ी से चोटी तक** = (क) सिर से पैर तक। (ख) आदि से अन्त तक।

एत*–वि० = इतना।

एतद्–सर्व० [सं०] यह।

एतदर्थ–क्रि० वि० [सं०] इसके लि

वि० दे० 'तदर्थ'।

एतद्देशीय–वि० [सं०] इस देश

एतना–वि० = इतना।

एतबार–पुं० [अ०] विश्वास।

एतराज़–पुं० [अ०] विरोध।

एतवार–पुं० [सं० आदित्यवार] श

बाद और सोमवार से पहले का दिन।

एता*–वि० [स्त्री० एती] दे० 'इ

एतावता–क्रि० वि० [सं०] इसलि

एतिक–वि० स्त्री० [हिं० एती]

एती*–वि० = इतनी।

एमन*–वि० [स्त्री० एमनी] ऐसा

पुं० दे० 'ईमन'।

एरंड–पुं० [सं०] रेंड़। रेंड़ी।

एराक–पुं० [अ०] [वि०

अरब का एक प्रदेश जहाँ का घोड़ा होता है।

एराकी–वि० [फा०] एराक का।

पुं० एराक देश का घोड़ा।

एलची–पुं० [तु०] १. दूत। २.

एला–स्त्री० [सं०] इलायची।

एल्यूमिनम–पुं० [अं० एल्यूमि

मटमैले रंग की एक प्रसिद्ध हल्की

जिससे बरतन आदि बनते हैं।

एवं–क्रि० वि० [सं०] ऐसे ही।

प्रकार।

अव्य० ऐसे ही और। और।

एव–अव्य० [सं०] १. एक निश्च

शब्द। ही। २. भी।

एवज–पुं० [अ०] १. प्रतिफल। प्रति

२. परिवर्त्तन। बदला। ३. दूसरे की

पर कुछ दिनों तक के लिए काम

वाला। स्थानापन्न पुरुष।

एवजी–स्त्री० दे० 'एवज' ३।

एवमस्तु–अव्य० [सं०] ऐसा

(शुभाशीर्वाद)

एषण–पुं० [सं०] १. जाना।

२. छान-बीन। अन्वेषण। ३. तलाश।
ोज। ४. इच्छा। ५. लोहे का बाण।
णा-स्त्री० [सं०] इच्छा। अभिलाषा।
-सर्व०, वि० दे० 'यह'।
तमाल-पुं० [अ०] रक्षा आदि के
ए किया जानेवाला प्रयत्न या सतर्कता।
तमाली-वि० [अ०] १. जिसमें
र्कता का भाव या विचार हो। २.
भूमि) जिसके सम्बन्ध में दैवी विपत्तियों
दि की आशंका बनी रहती हो।
प्रिकेरियस)

एहतियात-स्त्री० [अ० इहतियात] १. बुरे या अनुचित काम से बचना। परहेज। २. रक्षा। बचाव। ३. सतर्कता। सावधानी।

एहसान-पुं० [अ०] कृतज्ञता। निहोरा।

एहसानमंद-वि० [अ०] [भाव० एहसानमन्दी] कृतज्ञ।

एहि*-सर्व० [हिं० एह] 'एह' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है। इसको। इसे।

ऐ

ंस्कृत वर्ण-माला का बारहवाँ और
नागरी वर्ण-माला का नवाँ स्वर वर्ण,
सका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है।
व्यय के रूप में इसका व्यवहार संबोधन
लिए होता है। जैसे-ऐ लड़के! कविता
यह कभी कभी 'इतना' के अर्थ में भी
ाता है। जैसे-ऐ परि = इतने पर भी।
-अव्य० [अनु०] १. एक अव्यय जिसका
ोग अच्छी तरह न सुनी हुई बात फिर से
ानने के लिए होता है। २. एक आश्चर्य-
क अव्यय।
ना-स० [हिं० खींचना] १. खींचना।
. दूसरे का कर्ज अपने जिम्मे लेना।
ा-ताना-वि० [हिं० ऐंचना + तानना]
ने में जिसकी पुतली दूसरी ओर को
चती हो। भेंगा।
ा-तानी-स्त्री० दे० 'खींच-तान'।
ना*-स० [सं० उच्छन् = चुनना] १.
ाड़ना। साफ करना। २. (बालों में)
ी करना।
ठ-स्त्री० [हिं० ऐंठन] १. ऐंठने की
या या भाव। २. अकड़। ठसक। ३.
। घमंड।
ठन-स्त्री० [सं० आवेष्टन] १. ऐंठने की क्रिया या भाव। २. मरोड़। बल। ३. तनाव।

ऐंठना-स० [सं० अवगुंठन] १. घुमाव या बल देना। मरोड़ना। २. दबाव डालकर या धोखा देकर लेना। झँसना।
अ० १. बल खाना। घुमाव के साथ तनना। २. तनना। खिंचना। ३. मरना। ४. अकड़ दिखाना। घमंड करना।

ऐंड़-स्त्री० [हिं० ऐंठ] १. ऐंठ। गर्व। २. पानी का भँवर।
वि० १. निकम्मा। रद्दी। २. जो (धन) डूब गया हो या वसूल न हो सके। जैसे-वह रकम ऐंड़ हो गई।

ऐंड़दार-वि० [हिं० ऐंड़ + फा० दार] १. ठसकवाला। घमंडी। २. बाँका-तिरछा।

ऐंड़ना-अ० [सं० अवगुंठन] १. ऐंठना। बल खाना। २. अँगड़ाई लेना। ३. इतराना। घमंड करना।
स० ऐंठना। बल देना।

ऐंड़-बैंड़*-वि० दे० 'अंड-बंड'।

ऐंड़ा-वि० [सं० अकांड, प्रा० अयंड] [स्त्री० ऐंड़ी] ऐंठा हुआ। टेढ़ा।
मुहा०-अंग ऐंड़ा करना = ऐंठ दिखाना।

ऐंड़ाना–अ० [हिं० ऐंड़ना] १. अँगड़ाई लेना। २. इठलाना। ३. अकड़ दिखाना।

ऐंड़ा-बैंड़ा–वि० [सं० अकांड + विकांड] १. जो अपनी ठीक स्थिति में न हो। २. टेढ़ा-तिरछा। ३. अंड-बंड। ऊट-पटाँग।

ऐंद्रजालिक–वि० [सं०] इन्द्रजाल के खेल करनेवाला। जादूगर।

ऐक*–पुं० [?] गहराई की थाह।

ऐकमत्य–पुं० [सं०] किसी विषय में कुछ लोगों के एक-मत होने का भाव। मतैक्य। (यूनैनिमिटी)

ऐकांतिक–वि० [सं०] १. एकान्त सम्बन्धी। एकान्त का। जैसे-ऐकान्तिक निवास। २. सबसे अलग और निराला। ३. विशेष रूप से किसी एक ही विषय, व्यक्ति या कार्य के लिए रक्षित या व्यासिद्ध। (एक्स्क्लूसिव)

ऐक्य–पुं० दे० 'एकता'।

ऐगुन*–पुं० दे० 'अवगुण'।

ऐच्छिक–वि० [सं०] १. अपनी इच्छा या पसन्द से किया, लिया या दिया जानेवाला। २. जिसे करना या न करना अपनी इच्छा पर हो। वैकल्पिक। (ऑप्शनल)

ऐत*–वि० दे० 'इतना'।

ऐतिहासिक–वि० [सं०] [भाव० ऐतिहासिकता] १. इतिहास सम्बन्धी। २. जो इतिहास में हो। (हिस्टारिकल)

ऐतिह्य–पुं० [सं०] यह प्रमाण कि लोक में बहुत दिनों से ऐसा ही सुनते आये हैं।

ऐन–पुं० दे० 'अयन'।

वि० [अ०] १. ठीक। उपयुक्त। सटीक। २. बिलकुल। पूरा-पूरा।

ऐनक–स्त्री० [अ० ऐन = आँख] आँख में लगाने का चश्मा।

ऐपन–पुं० [सं० लेपन] हल्दी के साथ गीला पिसा हुआ चावल जिससे देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं।

ऐब–पुं० [अ०] [वि० ऐबी] १. दोष। २. अवगुण।

ऐबी–वि० [अ०] १. जिसमें खोटा। बुरा। २. नटखट। विकलांग; विशेषतः काना।

ऐया–स्त्री० [सं० आर्य्या, प्रा० अ बड़ी बूढ़ी स्त्री। २. दादी।

ऐयार–पुं० [अ०] [स्त्री० ऐयार, ऐयारी] १. चालाक। धूर्त। २. वह जो भेस बदलकर विकट लक्षण कार्य्य करता हो।

ऐयाश–वि० [अ०] [भाव० ऐ १. बहुत ऐश या आराम करनेवा विषयी। लम्पट।

ऐरा-ग़ैरा–वि० [अ० ग़ैर] १. अजनबी (आदमी)। २. तुच्छ।

ऐरापति*–पुं० दे० 'ऐरावत'।

ऐरावत–पुं० [सं०] [स्त्री० ऐ १. बिजली से चमकता हुआ बा इन्द्र-धनुष। ३. इन्द्र का हाथी दिशा का दिग्गज है।

ऐरावती–स्त्री० [सं०] १. ऐराव की हथिनी। २. बिजली। ३. रा

ऐल–पुं० [सं०] इला का पुत्र, पु पुं [?] १. बाढ़। २. अधिकता तायत। ३. कोलाहल।

ऐश–पुं० [अ०] आराम। चैन। विलास।

ऐश्वर्य–पुं० [सं०] १. विभूति। संपत्ति। २. अणिमा आदि सिद्धि प्रभुत्व। आधिपत्य।

ऐश्वर्यवान्–वि० [सं०] [स्त्री० ऐ वैभवशाली। सम्पन्न।

ऐस*–वि० दे० 'ऐसा'।

ऐसन*–(अवधी) वि० = ऐसा।

ऐसा–वि० [सं० ईदृश] [स्त्री० इस प्रकार का। इस ढंग का।

मुहा०–ऐसा वैसा = साधारण या

ऐसे–क्रि० वि० [हिं० ऐसा] इस प्र

ऐसो*–(व्रज) वि० = ऐसा।

ऐहिक-वि० [सं०] जिसका संबंध केवल इस लोक या संसार से हो, परलोक, अध्यात्म आदि से न हो। लौकिक। सांसारिक। (सेक्युलर)

ओ

ओ-देव नागरी वर्ण-माला का तेरहवाँ और हिन्दी वर्ण-माला का दसवाँ स्वर-वर्ण, जिसका उच्चारण ओष्ठ और कंठ से होता है। अव्यय के रूप में यह सम्बोधन और आश्चर्य-सूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है।

पुं० हिं० में विशेषण के रूप में यह कहीं कहीं 'वह' का वाचक होता है। जैसे ओकर = उसका।

ओं-अव्य० [अनु०] पर-ब्रह्म का वाचक शब्द। प्रणव मंत्र।

ओंछना*-स० [सं० अंचन] निछावर करना।

ओंकना*-अ० [अनु०] हट या फिर जाना। (मन का)

अ० दे० 'ओकना'।

ओंकार-पुं० [सं०] परमात्मा का सूचक 'ओं' शब्द।

ओंठ-पुं० [सं० ओष्ठ, प्रा० ओट्ठ] मुँह के बाहर ऊपर-नीचे उभरे हुए अंश जिनसे दाँत ढके रहते हैं। होंठ।

मुहा०-**ओंठ काटना या चबाना** = चुप रहकर केवल मुद्रा से बहुत क्रोध प्रकट करना। **ओंठ चाटना** = कोई वस्तु खा चुकने पर स्वाद के लालच से ओंठों पर जीभ फेरना।

ओंड़ा*-वि० [सं० कुंड] गहरा।

पुं० १. गड्ढा। २. सेंध।

ओंहटा-क्रि० वि० [हिं० 'ओट' का पू० रूप] १. ओट या आड़ में। २. दूर।

ओक-पुं० [सं०] १. घर। निवास-स्थान। २. आश्रय। ठिकाना।

स्त्री० [अनु०] मिचली। कै।

पुं० [हिं० बूक] हथेली की पात्र के समान मुद्रा। अंजली।

ओकना-अ० [अनु०] १. कै करना। २. भैंस की तरह चिल्लाना।

ओकपति-पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. चन्द्रमा।

ओकाई-स्त्री० [हिं० ओकना] वमन। कै।

ओखली-स्त्री० दे० 'ऊखल'।

ओखा*-पुं० [सं० ओख] मिस। बहाना।

वि० [भाव० ओखापन] १. रूखा-सूखा। २. कठिन। विकट। ३. जो शुद्ध या खालिस न हो। खोटा। 'चोखा' का उलटा। ४. झीना। विरल।

ओखाण (न)*-पुं० दे० 'उपाख्यान'।

ओग*-पुं० [?] १. कर। २. चन्दा।

ओघ-पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। २. घनत्व। घनापन। ३. बहाव। ४. धारा।

ओछ*-वि० दे० 'ओछा'।

ओछा-वि० [सं० तुच्छ] [भाव० ओछापन] [स्त्री० ओछी] १. जो गम्भीर या उच्चाशय न हो। तुच्छ। क्षुद्र। छिछोरा। २. जो गहरा न हो। छिछला। ३. हलका। जैसे—ओछा वार।

ओज-पुं० [सं० ओजस्] १. प्रताप। तेज। २. उजाला। प्रकाश। रोशनी। ३. कवित का वह गुण जिससे सुननेवाले के चित्त में वीरता आदि का आवेश उत्पन्न हो ४. शरीर के अन्दर के रसों का सार भाग

ओजना*-स० [सं० अवरुन्धन] अपने ऊपर लेना। सहना।

ओजस्विता-स्त्री० [सं०] तेज। कांति

ओजस्वी-वि० [सं० ओजस्विन्] [स्त्री ओजस्विनी] १. शक्तिशाली। २. प्रभाव

शाली। ३. तेजपूर्ण।

ओझर-पुं० [सं० उदर, हिं० ओझल] १. पेट की थैली। पेट। २. आँत।

ओझल-पुं० [सं० अवरुंधन] ओट। आड़।

ओझा-पुं० [सं० उपाध्याय] १. सरजूपारी और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। २. मैथिलों की उपाधि। ३. भूत-प्रेत झाड़नेवाला। सयाना।

ओझाई-स्त्री० [हिं० ओझा] ओझा की वृत्ति। भूत-प्रेत झाड़ने का काम।

ओट-स्त्री० [सं० उट = घास-फूस] १. ऐसी रोक जिससे सामने की वस्तु दिखाई न पड़े। व्यवधान। आड़। २. शरण। पनाह। रक्षा।

ओटना-स० [सं० आवर्तन] १. कपास को चरखी में रखकर रूई और बिनौले अलग करना। २. बराबर अपनी ही बात कहते जाना।

अ० [हिं० ओट] अपने ऊपर सहना।

ओटनी-स्त्री० [हिं० ओटना] कपास ओटने की चरखी। बेलनी।

ओटपाई*-स्त्री० दे० 'औटपाव'।

ओटपाय*-पुं० दे० 'औठपाय'।

ओटा*-पुं० [हिं० ओट] ओट या आड़ करने के लिए खड़ी की हुई दीवार।

ओठँगना-अ० दे० 'उठँगना'।

ओड़न*-स्त्री० [हिं० ओड़ना] १. ओड़ने की क्रिया या भाव। २. वह चीज जिससे वार या आघात रोका जाय। ३. आड़ करने या रोकनेवाली चीज। ४. ढाल। फरी।

ओड़ना-स० [हिं० ओट] १. रोकना। वारण करना। २. फैलाना। पसारना। जैसे-आँचल या झोली ओड़ना। ३. (आघात या प्रहार) अपने ऊपर लेना। सहना।

ओड़व-पुं० [सं०] वह राग जिसमें कोई पाँच स्वर ही लगें, कोई दो न लगें।

ओड़ा-पुं० [?] १. दे० 'औंढ़ा'। बड़ा टोकरा। खाँचा।

पुं० कमी। टोटा।

ओढ़न*-स्त्री० दे० 'ओड़न'।

ओढ़ना-स० [सं० उपवेष्टन] १. के किसी भाग को वस्त्र आदि से दित करना। २. अपने सिर लेना। ऊपर या जिम्मे लेना।

पुं० ओढ़ने का वस्त्र। चादर।

ओढ़नी-स्त्री० [हिं० ओढ़ना] ओढ़ने का वस्त्र। चादर।

ओत-स्त्री० [सं० अवधि] १. चैन। २. आलस्य। ३. किफायत।

स्त्री० [हिं० आना] प्राप्ति। लाभ।

स्त्री० [हिं० 'होत' का अनु० और १. न्यूनता। कमी। २. त्रुटि। कमी

वि० [सं०] बुना हुआ।

ओत-प्रोत-वि० [सं०] बहुत जुला। इतना मिला हुआ कि उसका करना असम्भव-सा हो।

पुं० ताना-बाना।

ओता*-वि० दे० 'उतना'।

ओदन-पुं० [सं०] पका हुआ चाव

ओदर*-पुं० दे० 'उदर'।

ओदरना-अ० [हिं० ओदारना] विदीर्ण होना। फटना। २. छिन्न-भि नष्ट होना। ३. गिरना। ढहना।

ओदा-वि० [स्त्री० ओदी] दे० 'गी

ओदारना-स० [सं० अवदारण] विदीर्ण करना। फाड़ना। २. छिन्न करना। नष्ट करना।

ओधना*-स० [सं० आबद्ध] काम उपक्रम करना। ठानना। जैसे-युद्ध ओ

ओधा*-वि० [सं० विद्ध] १. कि साथ लगा या बँधा हुआ। २. उल फँसा हुआ।

ओनंत-वि० [सं० अनुन्नत] झुका हु नत।

ओनवना–अ० [सं० अनुन्नत] १. झुकना। २. उमड़ना।
स० १. झुकाना। २. उमड़ने में प्रवृत्त करना। उमड़ाना।

ओनहना–अ० दे० 'उनवना'।

ओना–पुं० [सं० उद्गमन] तालाब में से पानी निकलने का मार्ग। निकास।

ओनाना†–अ० [सं० उन्नयन ?] किसी ओर उठना, लगना या प्रवृत्त होना।
स० किसी ओर लगाना या प्रवृत्त करना।

ओनामासी–स्त्री० [सं० ॐ नमः सिद्धम्] १. पढ़ाई का आरम्भ। २. आरंभ। शुरू।

ओनाहँ*–वि० [?] कहीं भर जाने के कारण उमड़कर इधर-उधर या चारो ओर फैला हुआ।
पुं० उल्टी धारा, स्रोत या बहाव।

ओप–स्त्री० [हिं० ओपना] १. चमक। दीप्ति। आभा। कान्ति। २. शोभा। ३. जिला। (पॉलिश)

ओपची–पुं० [सं० ओप] कवचधारी योद्धा।

ओपना–स० [सं० आवपन] चमकाना।
अ० चमकना।

ओपनि–स्त्री० दे० 'ओप'।

ओपनी–स्त्री० [हिं० ओपना] १. यशब या अकीक पत्थर का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते हैं। वट्टी।

ओपित–वि० [हिं० ओप] १. चमकीला। २. सुन्दर।

ओपी*–वि० [हिं० ओप] प्रकाशमान। चमकीला।

ओबरी†–स्त्री० [?] कोठरी। (पूरब)

ओर–स्त्री० [सं० अवार] १. किसी नियत स्थान के आस-पास का विस्तार जिसे दाहिना, बायाँ, ऊपर, सामने आदि शब्दों से सूचित करते हैं। तरफ। दिशा। २. पक्ष।
पुं० १. सिरा। छोर। किनारा। **मुहा०–ओर निभाना** = अन्त तक साथ देना।
२. आदि। आरम्भ।

ओरना*–अ० दे० 'ओराना'।

ओरमना*–अ० दे० 'लटकना'।

ओराना†–अ० [हिं० ओर] समाप्त होना।
स० समाप्त करना। खतम करना।

ओराहना–पुं० दे० 'उलाहना'।

ओरी–स्त्री० दे० 'ओलती'।

ओलंदेज(ी)–वि० [हॉलैंड देश] हॉलैंड देश सम्बन्धी। हॉलैंड देश का।
पुं० हालैंड देश का निवासी।

ओलंबा*–पुं० दे० 'उलाहना'।

ओल–पुं० [सं०] सूरन। जिमींकन्द।
वि० [?] गीला। तर।
स्त्री० [सं० क्रोड़] १. गोद। २. आड़। ओट। ३. शरण। पनाह। ४. बहाना। मिस। ५. स्मृति। याद। ६. विरह। वियोग। ७. किसी वस्तु या प्राणी का किसी दूसरे के पास जमानत के रूप में तब तक रहना, जब तक कुछ रुपया न मिले या कोई शर्त पूरी न हो। (होस्टेज) ८. वह वस्तु या व्यक्ति जो इस प्रकार जमानत में रहे।

ओलगिया†–पुं० [राज०] परदेशी।

ओलती–स्त्री० [हिं० ओलना] छप्पर का वह किनारा जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है। ओरी।

ओलना–स० [हिं० ओल] १. परदा करना। आड़ करना। २. रोकना। ३. ऊपर लेना। सहना।
स० [हिं० हूल] घुसाना।

ओला–पुं० [सं० उपल] १. वर्षा के गिरते हुए जल के जमे हुए गोले। पत्थर। बिनौरी। २. मिसरी का लड्डू।
वि० ओले के समान बहुत ठंडा।
पुं० [हिं० ओल] १. परदा। ओट।

२. गुप्त बात। भेद। रहस्य।

प्रत्य० [सं० पोतलक, प्रा० ओलअ = बच्चा या छोटा रूप] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अन्त में लगकर किसी चीज के बच्चे अथवा छोटे या आरम्भिक रूप का अर्थ देता है। जैसे–साँप से सँपोला, खाट से खटोला आदि।

ओलियाना*–स० [हिं० ओल = गोद] १. गोद में भरना। २. गिराकर ढेर लगाना। स० [हिं० हूलना] घुसाना।

ओली–स्त्री० [हिं० ओल] १. गोद। २. झोली। ३. अंचल। पल्ला।

मुहा०–ओली ओड़ना = आँचल फैलाकर कुछ माँगना।

ओषधि–स्त्री० [सं०] १. वह वनस्पति या जड़ी-बूटी जो दवा के काम आती है।

ओष्ठ–पुं० [सं०] होंठ। ओंठ।

ओष्ठ्य–वि० [सं०] १. ओंठ सम्बन्धी। २. (वर्ण) जिसका उच्चारण ओंठ से हो। (लैबिएल) जैसे–उ, ऊ, प, फ, ब, भ,

ओस–स्त्री० [सं० अवश्याय] हवा में हुई भाप जो रात की सरदी से कणों के रूप में गिरती है। शबनम।

मुहा०–ओस पड़ना या पड़ जाना (क) कुम्हलाना। रौनक न रह जाना। उमंग बुझ जाना।

ओसरी†–स्त्री० [सं० अवसर] पारी।

ओसाना–स० [सं० आवर्षण][ओसाई] दाँए हुए अनाज को हवा में उड़ जिससे भूसा अलग हो जाय। डाली देना।

ओह–अव्य० [अनु०] आश्चर्य, दुः बे-परवाही का सूचक शब्द।

ओहदा–पुं० [अ०] किसी विभाग में कर्त्ता का पद या स्थान।

ओहदेदार–पुं० दे० 'पदाधिकारी'।

ओहार–पुं० [सं० अवधार] रथ या पा के ऊपर आड़ करने का कपड़ा।

औ

औ–देव-नागरी वर्ण-माला का चौदहवाँ और हिन्दी वर्ण-माला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ और ओ के संयोग से बना है। अव्यय के रूप में कविता में यह 'और' का अर्थ देता है।

औंगना–स० [सं० अंचन] गाड़ी के पहियों की धुरी में तेल देना।

औंगा–वि० [भाव० औंगी] दे० 'गूँगा'।

औंघना†–अ० दे० 'ऊँघना'।

औंघाई†–स्त्री० = ऊँघ या उँघाई।

औंजना*–अ० [सं० आवेजन] ऊबना। स० [देश०] ढालना। उँड़ेलना।

औंटना–स० दे० 'औटना'।

औंटाना–स० दे० 'औटाना'।

औंठ–स्त्री० [सं० ओष्ठ] उठा या उभड़ा हुआ किनारा। बारी। बाढ़।

औंड़*–पुं० [सं० कुंड] मिट्टी खोदने मजदूर। बेलदार।

औंदना*†–अ० [सं० उन्माद या उद्वि १. उन्मत्त या बेसुध होना। २. व्या होना। घबड़ाना।

औंधना–अ० [हिं० औंधा] उलट जा स० उलटा कर देना।

औंधा–वि० [सं० अधोमुख] [स्त्री० औं १. जिसका मुँह नीचे की ओर हो। उल २. पेट के बल लेटा हुआ। पट।

मुहा०–औंधी खोपड़ी का = मू जड़। **औंधी समझ** = उलटी सम जड़ बुद्धि। **औंधे मुँह गिरना** = धो खाना।

पुं० उलटा या चिलड़ा नाम का पकवान

ौंधाना-स० [सं० अवः] १. ऊपर का भाग नीचे और नीचे का ऊपर करना। ौंधा करना। उलटना। (बरतन) २. टकाना।

ाँसना-अ० [हिं० उमस] उमस होना।

ाकात-स्त्री० [अ० 'वक्त' का बहु०] १. वक्त। समय। २. हैसियत। बिसात। वित्त।

ागत*-स्त्री० दे० 'दुर्गति'।

वि० दे० 'अवगत'।

ागाहना*-स० दे० 'अवगाहना'।

ागुन*-पुं० दे० 'अवगुण'।

ाघट*-वि० दे० 'अवघट'।

ाघड़-पुं० [स्त्री० औघड़िन] दे० 'अघोरी'। [सं० अव + घड़ना] अंड-बंड। उल्टा-पुल्टा।

ाघर*-वि० [सं० अव + घट] १. अटपट। अनगढ़। अंड-बंड। 'सुघर' का उल्टा। २. अनोखा। विलक्षण।

ाचक-पुं० [हिं० अव + चट = जल्दी] १. अचानक का भाव। २. कठिनाई या असमंजस की स्थिति। अंडस। क्रि० वि० अकस्मात्। अचानक।

ाचट-स्त्री० [?] संकट। कठिनता। क्रि० वि० १. अचानक। २. भूल से।

ाचित*-वि० [सं० अव + चिन्ता] १. निश्चिन्त। २. बे-खबर।

ाचित्य-पुं० [सं०] उचित या ठीक होने का भाव। उपयुक्तता।

ाज*-पुं० दे० 'ओज'।

ाज़ार-पुं० [अ०] वे यन्त्र जिनसे लोहार, बढ़ई आदि कारीगर अपना काम करते हैं। हथियार। उपकरण।

ाझड़-क्रि० वि० [सं० अव + हिं० झड़ी] लगातार। निरन्तर। वि० १. झक्की। २. अक्खड़।

ौटन-स्त्री० [हिं० औटना] १. औटने की क्रिया या भाव। २. तपन। ताप।

ौटना-स० [सं० उत्तापन] [भाव० औटन] दूध या कोई पतली चीज आँच पर चढ़ाकर गाढ़ी करना। खौलाना। अ० १. तरल वस्तु का आँच या गरमी पाकर गाढ़ा होना। २. व्यर्थ घूमना।

औटाना-स० [सं० उत्तापन] तरल पदार्थ को आग पर रखकर गरम और गाढ़ा करना।

औठपाय*-पुं० [सं० उत्पात] शरारत। पाजीपन। नटखटी।

औढर-वि० [सं० अव + हिं० ढार या ढाल] जिस ओर हो, उसी ओर ढल पड़नेवाला। मन-मौजी।

औतरना*-अ० दे० 'अवतरना'।

औतार*-पुं० दे० 'अवतार'।

औत्तापिक-वि० [सं०] उत्ताप-संबंधी।

औत्पत्तिक-वि० [सं०] उत्पत्ति संबंधी।

औथरा*-वि० दे० 'उथला'।

औदरिक-वि० [सं०] १. उदर-संबंधी। २. बहुत खानेवाला। पेटू।

औदसा*-स्त्री० दे० 'दुर्दशा'।

औदुंबर-पुं० [सं०] १. गूलर की लकड़ी का बना एक यज्ञ-पात्र। २. एक प्रकार के मुनि।

औद्योगिक-वि० [सं०] १. उद्योग-संबंधी। २. वस्तुएँ तैयार करने के काम से सम्बन्ध रखनेवाला। (इन्डस्ट्रियल)

औद्योगीकरण-पुं० [सं० उद्योग + करण] किसी देश के उद्योग-धंधों आदि को बढ़ाने और उसमें कल-कारखाने आदि खोलने का काम। (इन्डस्ट्रियलाइजेशन)

औध*-पुं० दे० 'अवध'। स्त्री० दे० 'अवधि'।

औधारना-स० दे० 'अवधारना'। *स० [?] इधर-उधर हिलाना। डुलाना। जैसे—चँवर औधारना।

औधि*-स्त्री० दे० 'अवधि'।

औन*-पुं० [सं० अवनि] १. पृथ्वी। २. जगह। स्थान। ३. घर। मकान।

औनना–स० [?] लीपना, पोतना या लगाना।

औना-पौना–वि० [हिं० ऊन (कम) + पौना] आधा-तीहा। थोड़ा-बहुत।

क्रि० वि० कमती-बढ़ती पर।

मुहा० = **औने-पौने करना** = जितना दाम मिले, उतने पर बेच डालना।

औनि*–स्त्री० दे० 'अवनि'।

औनिप*–पुं० [सं० अवनिप] राजा।

औपचारिक–वि० [सं०] १. उपचार संबंधी। २. जो केवल दिखाने भर को किया गया हो और जिसमें वाह्य रूप का पालन या निर्वाह हुआ हो। (फॉर्मल)

औपनिवेशिक–पुं० [सं०] उपनिवेश में रहनेवाला।

वि० १. उपनिवेश-सम्बन्धी। (कॉलोनियल) २. जैसा उपनिवेशों में होता है, वैसा। जैसे-औपनिवेशिक स्वराज्य।

औपनिवेशिक स्वराज्य–पुं० [सं०] ब्रिटिश साम्राज्य-प्रणाली के अनुसार एक प्रकार का स्वराज्य जो अधीनस्थ उपनिवेशों (जैसे–कनाडा, आस्ट्रेलिआ आदि) को प्राप्त है। इसमें उपनिवेशों को ब्रिटिश अवनीश्वर की अधीनता तथा इसी प्रकार की दो तीन छोटी छोटी बातें माननी पड़ती हैं; शेष बातों में वे स्वतन्त्र रहते हैं।

औपन्यासिक–वि० [सं०] १. उपन्यास-विषयक। उपन्यास-संबंधी। २. उपन्यास में वर्णन करने के योग्य। २. अद्भुत।

पुं० उपन्यास-लेखक।

औपपत्तिक–वि० [सं०] तर्क या युक्ति के द्वारा सिद्ध होनेवाला।

औम*–स्त्री० दे० 'अवम तिथि'।

और–अव्य० [सं० अपर] दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला अव्यय।

वि० १. दूसरा। अन्य। भिन्न।

पद–और का और = कुछ का कुछ। विपरीत। अंड-बंड। **और क्या** = हाँ। ऐसी ही है। (उत्तर में) औ **क्या** = और बातों का तो जिक्र

२. अधिक। ज्यादा।

औरत–स्त्री० [अ०] १. स्त्री।
२. पत्नी। जोरू।

औरस–वि० [सं०] जो विवाहि
उत्पन्न हो।

औरसना*–अ० [सं० अव = बुरा
रुष्ट होना।

औरेब–पुं० [सं० अव + रेब =
वक्र गति। तिरछी चाल। २.
तिरछी काट। ३. पेंच। उलझ
पेंच या चाल की बात। ५. सा
थोड़ी हानि अथवा खराबी।

औलना*–अ० १. दे० 'जलना'।
'औंसना'।

औला–प्रत्य० [सं० पोतलक,
ओलअ = बच्चा या छोटा रूप] ए
जो कुछ शब्दों के अन्त में लग
बच्चे अथवा छोटे या आरंभिक
अर्थ देता है। जैसे–बिनौला = बन
का आरम्भिक रूप, अगौला =
अगला भाग या आरम्भिक रूप आ

औलाद–स्त्री० [अ०] सन्तान।

औला-दौला–वि० [अ० औल
श्रेष्ठ + दौला अनु० या दौलत]
काम करने, विशेषतः उदारता
समय कुछ भी सोच-विचार न करे।

औलिया–पुं० [अ० वली का
मुसलमान सिद्ध। पहुँचा हुआ फकीर

औवल–वि० [अ०] १. पहला। २.
मुख्य। ३. सर्व-श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

औषध–पुं० [सं०] रोग दूर क
ओषधियों का मिश्रित रूप।
(मेडिसिन)

औषधालय–पुं० [सं०] वह स्था
दवाएँ मिलती, बनती या बिकती
(डिस्पेन्सरी)

औसत-पुं० [अं०] बराबर का परता। समष्टि का सम-विभाग। सामान्य। (एवरेज)
वि० माध्यमिक। साधारण।

औसान*-पुं० दे० 'अवसान'।
पुं० [फा०] सुध बुध। होश-हवास।

औसि*-क्रि० वि० दे० 'अवश्य'।

औसेर*-स्त्री० दे० 'अवसेर'।

औहत*-स्त्री० [सं० अपघात] १. अपमृत्यु। २. दुर्गति। दुर्दशा।

औहाती*-स्त्री० दे० 'अहिवाती'।

क

क-देव नागरी वर्ण-माला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है। इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं। कुछ अवस्थाओं में यह शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर ये अर्थ देता है-(क) छोटा या अल्प; जैसे-माणवक; (ख) करनेवाला; जैसे-सूचक, लेखक आदि; (ग) सम्बन्ध रखनेवाला; जैसे-संख्यक; (घ) किसी तत्त्व या भाव का सूचक; जैसे-श्रेष्ठक, दीनक आदि।

कंक-पुं० [द्रविड़ से गृहीत, सं०] [स्त्री० कंका] सफेद चील।

कंकड़-पुं० [सं० कर्कर] [स्त्री० अल्पा० कंकड़ी, वि० कँकड़ीला] १. चिकनी मिट्टी और चूने से बने रोड़े जिनसे सड़क बनती है। २. पत्थर या और किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा। अँकड़ा। ३. सूखा या सेंका हुआ तमाकू का पत्ता।

कँकड़ीला-वि० [हिं० कंकड़] [स्त्री० कँकड़ीली] जिसमें कंकड़ हों।

कंकण-पुं० [सं०] १. कलाई में पहनने का एक गहना। कंगन। २. वह धागा जो विवाह से पहले वर और वधू के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं।

कंकरीट-स्त्री० [अ० कांक्रीट] १. चूने, कंकड़, बालू आदि के मेल से बना गच बनाने का मसाला। छर्रा। बजरी। २. छोटी कंकड़ियाँ जो सड़कों पर बिछाई और कूटी जाती हैं। (कांक्रीट)

कंकाल-पुं० [सं०] अस्थि-पंजर।

कंकालिनी-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. दुष्ट और लड़ाकी स्त्री। कर्कशा।

कंखना*-अ० [सं० कांक्षा] किसी बात की इच्छा या कामना करना।

कंगन-पुं० [सं० कंकण] १. हाथ में पहनने का एक गहना। कंकण। २. लोहे का चक्र जो अकाली सिर पर बाँधते हैं।

कँगनी-स्त्री० [हिं० कँगना] १. छोटा कंगन। २. दीवार के ऊपरी भाग में बाहर की ओर बहुत थोड़ा सा निकला हुआ अंश जो शोभा के लिए बनाया जाता है। ३. गरदनी। कारनिस।
स्त्री० [सं० कंगु] एक अन्न जिसके चावल खाये जाते हैं। काकुन।

कंगला-वि० दे० 'कंगाल'।

कंगाल-वि० [सं० कंकाल] जिसके पास कुछ न हो। बहुत दरिद्र या गरीब।

कँगूरा-पुं० [फा० कुंगरा] [वि० कँगूरेदार] १. शिखर। चोटी। २. किले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए वे ऊँचे स्थान जहाँ खड़े होकर सिपाही लड़ते हैं। बुर्ज। ३. छपाई, गहनों आदि में शिखर के आकार की बनावट।

कंघा-पुं० [सं० कंक] [स्त्री० अल्पा० कंघी] १. लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई वह चीज जिससे सिर के बाल झाड़ते हैं। २. जुलाहों का एक औजार जिससे तागे कसते हैं। बय। बौला।

कंघी–स्त्री० [सं० कंकती] १. छोटा कंघा। **मुहा०–कंघी-चोटी** = बनाव-सिंगार। २. एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं। ३. दे० 'कंघा'।

कंचन–पुं० [सं० कांचन] १. सोना। सुवर्ण। २. धन। सम्पत्ति। ३. धतूरा। ४. [स्त्री० कंचनी] एक जाति जिसकी स्त्रियाँ प्रायः वेश्या का काम करती हैं।
वि० १. नीरोग। स्वस्थ। २. स्वच्छ।

कंचनी–स्त्री० [हिं० कंचन] वेश्या।

कंचुक–पुं० [सं०] [स्त्री० कंचुकी] १. जामे या चपकन की तरह का एक पुराना पहनावा। २. चोली। अँगिया। ३. वस्त्र। कपड़ा। ४. बकतर। कवच। ५. साँप की केंचुली।

कंचुकी–स्त्री० [सं०] अँगिया। चोली।
पुं० [सं० कंचुकिन्] प्राचीन काल में राजाओं के रनिवास की दास-दासियों का अध्यक्ष। अंतःपुर का रक्षक।

कंज–पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. कमल। ३. अमृत। ४. सिर के बाल। केश।

कंजई–वि० [हिं० कंजा] कंजे या धूएँ के रंग का। खाकी।
पुं० १. खाकी रंग। २. वह घोड़ा जिसकी आँखें कंजई रंग की हों।

कंजड़–पुं० दे० 'कंजर'।

कंजर–पुं० [देश० या कालिंजर] [स्त्री० कंजरिन] एक घूमने-फिरनेवाली जाति जो रस्सी बटने, सिरकी बनाने आदि का काम करती है।

कंजा–पुं० [सं० करंज] एक कँटीली झाड़ी जिसकी फली औषध के काम आती है।
वि० [स्त्री० कंजी] १. कंजे के रंग का। गहरा खाकी। २. जिसकी आँखें इस रंग की हों।

कंजूस–वि० [सं० कण + हिं० चूस] [भाव० कंजूसी] जो धन का भोग या व्यय न करे। कृपण। सूम।

कंटक–पुं० [सं०] [वि० कंटकित] १. काँटा। २. कार्य में होनेवाली बा विघ्न। बखेड़ा। ३. ऐसी बात या अ जिससे किसी को कष्ट पहुँचे। (नुएसे ४. रोमांच। ५. कवच।

कंटकित–वि० [सं०] १. काँटेदार कँटीला। २. जिसे रोमांच हो आया है पुलकित।

कंटर–पुं० [अं० डिकैंटर] शीशे की सुराही जिसमें शराब और सुगन्धित अ रखे जाते हैं।

कंटिका–स्त्री० [सं०] सूई के आकार लोहे-पीतल आदि की छोटी तीली जि कागज़ एक में नत्थी किये जाते हैं। आ पीन। (पिन)

कँटिया–स्त्री० [हिं० काँटी] १. छो काँटा या कील। २. मछली मारने की पत नोकदार अँकुसी। ३. अँकुसियों का गुच्छा जिससे कूएँ में गिरी हुई चीजें नि कालते हैं। ४. सिर का एक गहना।

कँटीला–वि० [हिं० काँटा + ईला (प्रत्य [स्त्री० कँटीली] जिसमें काँटे हों।

कंठ–पुं० [सं०] [वि० कंठ्य, भाव० कंठ १. गला। २. गले की वे नलियाँ जि भोजन पेट में उतरता है और आव निकलती है। घाँटी।
मुहा०–कंठ फूटना = (क) वर्णों के उच्चारण का आरंभ होना। (ख) मुँह शब्द निकलना।
३. किनारा। तट। तीर।
वि० (विषय, बात, पद्य आदि) जबानी याद हो या याद किया गया है जैसे–उन्हें सारी गीता कंठ है।
*पुं० दे० 'कंठा'।

कंठ-तालव्य–वि० [सं०] (वर्ण) जि उच्चारण कंठ और तालु-स्थानों से मि हो। (गटरो-पैलेटल) जैसे–'ए' और 'ऐ' व

कंठ-माला–स्त्री० [सं०] गले का एक

जिसमें फोड़े निकलते हैं।

कंठ-संगीत-पुं० [सं०] गले से गाया जानेवाला या होनेवाला संगीत। (वोकल-म्यूजिक)

कंठस्थ-वि० [सं०] १. गले में अटका हुआ। कंठ-गत। २. जबानी याद। कंठाग्र।

कंठा-पुं० [हिं० कंठ] [स्त्री० अल्पा० कंठी] १. वह रेखा जो तोते आदि पक्षियों के गले के चारो ओर होती है। हँसली। २. गले का एक गहना जिसमें बड़े-बड़े मनके होते हैं। ३. कुरते या अँगरखे का वह अर्ध-चन्द्राकार भाग जो गले पर रहता है।

कंठाग्र-वि० [सं०] कंठस्थ। जबानी। (याद)

कंठी-स्त्री० [हिं० कंठा का अल्पा०] १. छोटी गुरियों का कंठा। २. तुलसी आदि के मनियों की माला। (वैष्णव)

कंठोष्ठ्य-वि० [सं०] जो एक साथ कंठ और ओंठ के सहारे से बोला जाय। (गटरो-लेबियल) जैसे- 'ओ' और 'औ' वर्ण।

कंठ्य-वि० [सं०] १. कंठ-सम्बन्धी। गले का। २. गले से उत्पन्न (वर्ण)। जिसका उच्चारण कंठ से हो। (गटरल) पुं० वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठ से हो। अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग।

कंडरा-स्त्री० [सं०] रक्त की नाड़ी।

कंडा-पुं० [सं० स्कंदन] [स्त्री० अल्पा० कंडी] १. जलाने का सूखा गोबर। २. लंबे आकार में पाथा हुआ सूखा गोबर जो जलाने के काम में आता है। उपला। ३. सूखा मल। गोटा। सुद्दा।

कंडाल-पुं० [सं० करनाल] तुरही। पुं० [सं० कंडोल] पानी रखने का लोहे, पीतल आदि का बड़ा बरतन।

कंडिहार*- पुं० [सं० कर्णधार] केवट। मल्लाह।

कंडी-स्त्री० [हिं० कंडा] १. छोटा कंडा। गोहरी। उपली। २. सूखा मल। गोटा।

कंडील-स्त्री० [अ०-कंदील] मिट्टी, अबरक, कागज आदि की बनी हुई वह लालटेन जिसका मुँह ऊपर की ओर होता है।

कंडु-स्त्री० [सं०] खुजली।

कंडोल-पुं० [सं०] वह बड़ा पात्र जो सड़कों पर कूड़ा फेंकने के लिए रक्खा रहता है।

कंत, कंथ*-पुं० दे० 'कांत'।

कंथा-स्त्री० [सं०] गुदड़ी।

कंथी-पुं० [सं० कंथा = गुदड़ी] १. गुदड़ी पहननेवाला। साधु। २. भिखमंगा।

कंद-पुं० [सं०] १. गूदेदार और बिना रेशे की जड़। जैसे-सूरन, शकरकन्द आदि। २. बादल। पुं० [फा०] १. जमाई हुई चीनी। मिसरी। २. बरफी नाम की मिठाई।

कंदन-पुं० [सं०] नाश। ध्वंस।

कंदरा-स्त्री० [सं०] गुफा। गुहा।

कंदर्प-पुं० [सं०] कामदेव।

कंदला-पुं० [सं० कंदल = सोना] १. चाँदी का वह लंबा छड़ जिससे तारकश तार बनाते हैं। पासा। गुल्ली। २. सोने या चाँदी का पतला तार। *स्त्री० दे० 'कंदरा'।

कंदा-पुं० [सं० कंद] १. दे० 'कंद'। २. शकरकन्द।

कंदील-स्त्री० दे० 'कंडील'।

कंदुक-पुं० [सं०] १. गेंद। २. छोटा गोल तकिया।

कंध*-पुं० [सं० स्कंध] १. डाली। शाखा। २. दे० 'कंधा'।

कंधनी*-स्त्री० दे० 'करधनी'।

कंधर-पुं० [सं०] १. गरदन। २. बादल।

कंधा-पुं० [सं० स्कन्ध] १. शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में होता है। २. बाहु-मूल। मोढ़ा।

कँधार*-पुं० [सं० कर्णधार] १. केवट। २. पार लगानेवाला।

कंधार-पुं० [सं० गान्धार] अफगानिस्तान

का एक नगर और प्रदेश।

कंधारी-वि० [हिं० कंधार] कंधार का। पुं० घोड़ों की एक जाति।

कँधावर-स्त्री० [हिं० कंधा + आवर (प्रत्य०)] १. जूए का वह भाग जो बैल के कंधों पर रहता है। २. चादर।

कँधेला-पुं० [हिं० कंधा + एला (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर पड़ता है।

कंप-पुं० [सं०] कँपकँपी। काँपना। (सात्विक अनुभावों में से एक) पुं० [अं० कैंप] पड़ाव। छावनी।

कँपकँपी-स्त्री० [हिं० काँपना] थरथराहट। काँपना। कम्पन।

कंपन-पुं० [सं०] [वि० कंपित] काँपना। थरथराहट। कँपकँपी।

कँपना-अ० दे० 'काँपना'।

कंपनी-स्त्री० [अं०] १. व्यापारियों या व्यवसाइयों का वह समूह या दल जो एकसाथ मिलकर कोई व्यापार या व्यवसाय करता हो। पूग। समवाय। (कंपनी) २. मंडली।

कँपनी*-स्त्री० दे० 'कँपकँपी'।

कंपा-पुं० [हिं० काँपा] बाँस की तीलियाँ जिनमें बहेलिए लासा लगाकर चिड़ियाँ फँसाते हैं।

कँपाना-स० हिं० 'काँपना' का प्रे०।

कंपायमान-वि० दे० 'कंपित'।

कंपित-वि० [सं०] १. काँपता या हिलता हुआ। २. भयभीत। डरा हुआ।

कंपू-पुं० दे० 'छावनी'।

कंबख्त-वि० [फा०] [भाव० कंबख्ती] अभागा। भाग्यहीन।

कंबल-पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० कमली] १. ऊन का बना हुआ वह मोटा कपड़ा जो ओढ़ने-बिछाने के काम में आता है। २. बरसाती कीड़ा। कमला।

कंबुक-पुं० [सं०] १. शंख। २. शंख की चूड़ी। ३. घोंघा।

कंबोज-पुं० [सं०][वि० कांबोज] अ निस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम।

कँवर†-पुं० दे० 'कुँवर'।

कँवल-पुं० दे० 'कमल'।

कँवार†-पुं० दे० 'कुँवर'।

कंस-पुं० [सं०] १. काँसा। २. कटो ३- सुराही। ४. मँजीरा। झाँझ। ५. म के राजा उग्रसेन का लड़का जिसे कृ मारा था।

कँसताल-पुं० दे० 'झाँझ'।

कई-वि० [सं० कति, प्रा० कइ] ए अधिक। अनेक।

ककड़ी-स्त्री० [सं० कर्कटी] एक जिसमें लम्बे फल लगते हैं।

ककनू*-पुं० दे० 'कुकनुस'। (पक्षी)

ककुद-पुं० [सं०] १. बैल के कंधे का कूबड़। डिल्ला। २. राज-चिह्न।

ककुभ-पुं० [सं०] दिशा।

कक्कड़-पुं० [सं० कर्कर] सूखी या हुई सुरती का भुरभुरा चूर जिसे छोटी चि पर रखकर पीते हैं।

कक्का-पुं० [सं० केकय] केकय देश। पुं० [सं०] नगाड़ा। दुंदुभी। पुं० दे० 'काका'।

कक्ष-पुं० [सं०] १. काँख। बगल। काछ। कछौटा। लाँग। ३. कछार। जंगल। ५. सूखी घास। ६. कमर कोठरी। ७. पाप। दोष। ८. काँख फोड़ा। कखरवार। ९. दरजा। श्रे १०. सेना के अगल-बगल का भाग।

कक्षा-स्त्री० [सं०] १. परिधि। घे २. ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। श्रेणी। दर्जा। (क्लास) जैसे-विद्यालय सातवीं कक्षा। ४. काँख। बगल। घर की दीवार या पाख। ६. कछौटा।

कखौरी-स्त्री० [हिं० काँख] १. 'काँख'। २. काँख का फोड़ा।

कगार-पुं० [सं० क = जल + अग्र] १. ऊँचा किनारा। बाढ़। मेंड़। डाँड़।

कगार-पुं० [हिं० कगार] १. ऊँचा किनारा। २. नदी का करारा। ३. टीला।

कच-पुं० [सं०] १. बाल। २. फोड़ा या घाव। ३. झुंड। ४. बादल।

पुं० [अनु०] १. धँसने या चुभने का शब्द या भाव। २. कुचले जाने का शब्द।

वि० 'कच्चा' का अल्पा० रूप जो समास में शब्द के पहले लगने पर होता है; जैसे- कच-लहू।

कचक-स्त्री० [हिं० कच] वह चोट जो दबने या कुचले जाने से लगे।

कच-कच-स्त्री० दे० 'किचकिच'।

कचकोल-पुं० [फा० कशकोल] दरियाई नारियल का भिक्षापात्र। कपाल। कासा।

कच-दिला-वि० [हिं० कच्चा + फा० दिल] जिसे कष्ट, पीड़ा आदि सहने या देखने का साहस न हो। कच्चे दिल का।

कचनार-पुं० [सं० .काञ्चनार] एक छोटा पेड़ जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं।

कच-पच-स्त्री० [अनु०] १. थोड़े से स्थान में बहुत सी चीजों या लोगों का भर जाना। गिचपिच।

कच-पची*-स्त्री० [हिं० कचपच] १. कृत्तिका नक्षत्र। २. वे चमकीले बुन्दे जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं।

कचर-कचर-स्त्री० [अनु०] १. कच्चे फल के खाने का शब्द। २. दे० 'किचकिच'।

कचर-कूट-पुं० [हिं० कचरना + कूटना] १. खूब मारना-पीटना। †२. खूब पेट भर भोजन। इच्छा-भोजन।

कचरना*-स० [सं० कच्चरण] १. पैर से कुचलना। रौंदना। २. खूब खाना।

कचरा-पुं० [हिं० कच्चा] १. कच्चा खरबूजा या ककड़ी। २. कूड़ा-करकट। रद्दी।

कचरी-स्त्री० [हिं० कचा] १. ककड़ी की जाति की एक बेल जिससे फल पकाकर खाये जाते हैं। पेंहटा। २. कचरी या कच्चे पेंहटे या किसी और फल के सुखाये हुए टुकड़े, जो तलकर खाये जाते हैं।

कच-लहू-पुं० [हिं० कचा + लोहू] वह पनछा या पानी जो घाव से बहता है।

कचहरी-स्त्री० [सं० कृत्य-गृहिका, प्रा० किच्चहरिआ] १. गोष्ठी। जमावड़ा। २. दरबार। राज-सभा। ३. न्यायालय। अदालत। (कोर्ट) ४. कार्यालय। दफ्तर। (ऑफिस)

कचाई-स्त्री० [हिं० कच्चा + ई (प्रत्य०)] १. कच्चापन। २. (किसी बात या विषय में) पूर्ण अनुभव न होना।

कचाना-अ० [हिं० कच्चा] १. हिम्मत हारकर पीछे हटना। २. डरना।

कचायँध-स्त्री० [हिं० कच्चा + गंध] कच्चेपन की गंध।

कचारना-स० [हिं० पछाड़ना] पटक पटककर कपड़ा धोना।

कचालू-पुं० [हिं० कच्चा + आलू] १. एक प्रकार की अरवी। बंडा। २. आलू आदि की बनी एक प्रकार की चाट।

कचियाना-अ० दे० 'कचाना'।

कचीची*-स्त्री० [अनु० कच = कुचलने का शब्द] १. जबड़ा। डाढ़। २. मूर्च्छा, रोग आदि के कारण दाँत पर दाँत बैठ जाने की अवस्था।

मुहा०-कचीची बँधना = दाँत बैठना। (मरने का समय)

कचुल्ला*-पुं० दे० 'कटोरा'।

कचूमर-पुं० [हिं० कुचलना] १. कुचलकर बनाया हुआ अचार। कुचला। २. कुचली हुई वस्तु।

मुहा०-कचूमर निकालना = (क) चूर-चूर करना। कुचलना। (ख) खूब पीटना।

कचूर-पुं० [सं० कर्चूर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ में कपूर की-सी गंध होती है। नर-कचूर।

कचोरा-पुं० दे० 'कटोरा'।

कचौरी–स्त्री० [तामिल कच = दाल + पूरिका, प्रा० कचउरिआ] एक प्रकार की पूरी जिसके अन्दर उरद आदि की पीठी भरी रहती है।

कच्चा–वि० [सं० कषण] [भाव० कचापन] १. जो पका न हो। हरा और बिना रस का। अपक्व। २. जो आँच पर पका न हो। जैसे–कच्चा चावल। ३. जो पुष्ट न हुआ हो। अ-परिपुष्ट। ४. जिसके तैयार होने में कसर हो। ५. जो दृढ़ या पुष्ट न हो। कमजोर।

पद-कच्चा जी या दिल = कम साहसवाला और विचलित होनेवाला चित्त।

मुहा०–कच्चा करना = डराना। भयभीत करना।

६. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। बे-ठीक।

मुहा० कच्चा करना = (क) अप्रामाणिक ठहराना। झूठा सिद्ध करना। (ख) लज्जित करना। शरमाना।

७. जो प्रामाणिक तौल या मान से कम हो। जैसे–कच्चा सेर। ८. जिसमें से लागत, परिव्यय आदि निकाले न गये हों। स्थूल। 'पक्का' का उलटा। (ग्रॉस) ९. जिसे अभी पूरा ज्ञान या अभ्यास न हो। अ-पटु।

यौ०–कच्ची-पक्की = दुर्वचन। गाली।

कच्ची बात = अश्लील बात।

पुं० १. दूर-दूर पर पड़ा हुआ तागे का डोभ जिसपर बखिया करते हैं। २. ढाँचा। ढड्ढा। ३. पांडुलेख। मसौदा।

कच्चा चिट्ठा–पुं० [हिं० कच्चा + चिट्ठा] १. ज्यों का त्यों कहा जानेवाला और भीतरी हाल या लेखा। २. गुप्त भेद। रहस्य। ३. आय-व्यय आदि का वह लेखा जो अभी कार्यालय से पूरी तरह जाँचा न गया हो।

कच्चापन–पुं०* दे० 'कचाई'।

कच्चा माल–पुं० [हिं० कच्चा + माल] वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीजें बनती हों। सामग्री। जैसे–रुई, तिल आदि।

कच्चा हाथ–पुं० वह हाथ जो किसी में बैठा न हो। अनभ्यस्त हाथ।

कच्ची–स्त्री० दे० 'कच्ची रसोई'।

कच्ची आय–स्त्री० [हिं० कच्ची + वह समूची आय जिसमें से परिव्यय आदि घटाये न गये हों।

कच्ची चीनी–स्त्री० [हिं० कच्ची + वह चीनी जो अच्छी तरह साफ गई हो।

कच्ची निकासी–स्त्री० [हिं० कच्ची + नि किसी सम्पत्ति से होनेवाली वह सारी जिसमें से व्यय आदि न निकाला गया (ग्रॉस एसेट्स)

कच्ची बही–स्त्री० [हिं० कच्ची + वही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो रूप से निश्चित न हो।

कच्ची रसोई–स्त्री० [हिं० कच्ची + केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। रोटी, दाल, भात आदि।

कच्चू–पुं० [सं० कंचु] १. अ घुइयाँ। २. बंडा।

कच्चे-बच्चे–पुं० [हिं० कच्चा + बच्चे बहुत छोटे-छोटे बच्चे। बहुत से लड़के

कच्छ–पुं० [सं०] [वि० कच्छी] जल प्राय देश। अनूप देश। २. गु के समीप का एक प्रदेश।

पुं० [सं० कक्ष] धोती की लाँग।

*पुं० [सं० कच्छप] कछुआ।

कच्छप–पु० [सं०] [स्त्री० कच्छ १. कछुआ। २. विष्णु के चौबीस अव में से एक।

कच्छा–पुं० [सं० कच्छ] १. एक प्र की बड़ी नाव। २. कई नावों को मिला बनाया हुआ बड़ा बेड़ा।

कच्छी–वि० [हिं० कच्छ] कच्छ देश का पुं० १. कच्छ देश का निवासी। २. की एक जाति।

स्त्री० कच्छ देश की भाषा।

कच्छू-पुं० दे० 'कछुआ'।

कछनी-स्त्री० [हिं० काछना] १. घुटने तक ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती। २. वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।

कछान(ा)-पुं० [हिं० काछना] धोती पहनने का वह प्रकार जिसमें वह घुटनों के ऊपर चढ़ाकर कसी जाती है।

कछार-पुं० [सं० कच्छ] समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि। (एल्यूवियल लैंड)

कछारी-स्त्री० [हिं० कछार] छोटा कछार। वि० कछार सम्बन्धी। कछार का।

कछारी क्षेत्र-पुं० [हिं० कछार + सं० क्षेत्र] वह क्षेत्र या भू-भाग जिसमें कछार हो। (एल्यूवियल एरिया)

कछु*-वि० दे० 'कुछ'।

कछुआ-पुं० [सं० कच्छप] [स्त्री० कछुई] एक प्रसिद्ध जन्तु जिसकी पीठ पर कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।

कछुक*-वि० दे० 'कुछ'।

कछोटा-पुं० [सं० कच्छपट्ट] १. धोती पहनने का 'कछाना' नाम का प्रकार या ढंग। २. दे० 'कछनी'।

कज-पुं० [फा०] १. टेढ़ापन। २. दोष। ऐब।

कजरा†-पुं० [सं० कज्जल] १. दे० 'काजल'। २. काली आँखोंवाला बैल। वि० [स्त्री० कजरी] काला। श्याम।

कजरारा-वि० [हिं० काजल + आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कजरारी] १. (नेत्र) जिसमें काजल लगा हो। अंजन-युक्त। २. काजल के समान काला।

कजरी†-स्त्री० १. दे० 'कजली'। २. दे० 'कदली'। पुं० [?] एक प्रकार का धान या उसका चावल।

कजरौटा-पुं० [स्त्री० अल्पा० कजरौटी] दे० 'कजलौटा'।

कजलाना-अ० [हिं० काजल] १. काला पड़ना। २. आग का बुझना।

कजली-स्त्री० [हिं० काजल] १. कालिख। २. पिसे हुए पारे और गंधक की बुकनी। ३. रस फूँकने में धातु का वह अंश जो पात्र में लग जाता है। ४. वह गाय जिसकी आँखों के किनारे काला घेरा हो। ५. एक बरसाती त्योहार। ६. एक प्रकार का गीत जो बरसात में गाया जाता है।

कजली वन-पुं० दे० 'कदली वन'।

कजलौटा-पुं० [हिं० काजल + औटा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कजलौटी] काजल रखने की डंडीदार लोहे की डिबिया।

कजाक*-पुं० दे० 'डाकू'।

कजाकी-स्त्री० [फा० कज्जाक] १. लुटेरा-पन। २. छल-कपट। धोखेबाजी।

कजावा-पुं० [फा०] ऊँट की काठी।

कजिया-पुं० [अ०] झगड़ा। बखेड़ा।

कजी-स्त्री० [फा०] १. टेढ़ापन। २. दोष।

कज्जल-पुं० [सं०] [वि० कज्जलित, भाव० कज्जलता] १. अंजन। काजल। २. सुरमा। ३. कालिख।

कज्जाक-पुं० दे० 'डाकू'।

कट-पुं० [सं०] १. हाथी का गंड-स्थल। २. खस, सरकंडा आदि घास या उनकी टट्टी। ३. शव। लाश। ४. श्मशान। पुं० [हिं० कटना] 'काट' का संक्षिप्त रूप, जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है। जैसे—कट-खना कुत्ता।

कटक-पुं० [सं०] १. सेना। फौज। २. राज-शिविर। ३. कंकण। कड़ा। ४. पर्वत का मध्य भाग। ५. समूह। झुंड।

कटकई*-स्त्री० [सं० कटक = सेना] १. सेना। फौज। २. सेना या दल-बल के साथ चलने की तैयारी।

कटकट-स्त्री० [अनु०] १. दाँतों के बजने का शब्द। २. लड़ाई-झगड़ा।

कटकटाना-अ० [हिं० कटकट] क्रोध में आकर दाँत पीसना।

कटका–पुं० [सं० कटक] किसी चीज का बड़ा टुकड़ा। पिंड। डला।

कटकाई*-स्त्री० दे० 'कटकई'।

कटकीना–पुं० [हिं० काट] गहरी चाल या युक्ति। हथ-कंडा।

कट-खना–वि० [हिं० काटना + खाना] काट खानेवाला। दाँत से काटनेवाला।

कट-घरा–पुं० [हिं० काठ + घर] १. काठ का वह घर जिसमें जँगला लगा हो। २. बड़ा पिंजड़ा।

कटत(ी)–स्त्री० [हिं० कटना] बिक्री के माल की खपत। बिक्री।

कटनंस*–पुं० [हिं० काटना + नाश] काटने और नष्ट करने की क्रिया।

कटनांस–पुं० [देश०] नीलकंठ। (पक्षी)

कटनि*–स्त्री० [हिं० कटना] १. काट। २. आसक्ति। रीझ।

कटनी–स्त्री० [हिं० कटना] १. काटने का औजार। २. काटने का काम। ३. खेत की फसल का काटा जाना।

कटर–पुं० [अं०] १. वह जिससे कुछ काटें। २. काटनेवाला। ३. एक प्रकार की नाव।

कटरा–पुं० [हिं० कटहरा] छोटा चौकोर बाजार।

पुं० [सं० कटाह] भैंस का नर बच्चा।

कटवाँ–वि० [हिं० कटना + वाँ (प्रत्य०)] १. जो कटकर बना हो। कटा हुआ। २. (ब्याज) जो एक एक रकम और एक एक दिन के हिसाब से जोड़ा जाय।

कटहरा–पुं० दे० 'कटघरा'।

कटहल–पुं० [सं० कंटकिफल] १. एक पेड़ जिसमें बड़े और भारी फल लगते हैं। २. इस पेड़ का फल।

कटहा*–वि० [हिं० काटना + हा (प्रत्य०)] [स्त्री० कटही] काट खानेवाला।

कटा*–पुं० [हिं० काटना] १. मार-काट। २. वध। हत्या।

कटाइक*–वि० [हिं० काटना] काटने

कटाई–स्त्री० [हिं० काटना] १. का काम, भाव या मजदूरी। (फसल की)

कटा-कट(ी)–स्त्री० [हिं० काट] १. कट शब्द। २. लड़ाई। ३. वैमनस्य।

कटाक्ष–पुं० [सं०] १. तिरछी तिरछी नजर। २. किसी पर आक्षेप के लिए कही जानेवाली कोई व्यंग्यपूर्ण (सरकैस्ज़्म)

कटाक्षिक–वि० [सं० कटाक्ष + इक (प्र (उक्ति) जिसमें कटाक्ष हो। कटाक्ष से कटाक्ष-पूर्ण। (सरकैस्टिक)

कटाग्नि–स्त्री० [सं०] घास-फूस की आग जिसमें लोग जल मरते थे।

कटाछनी–स्त्री० दे० 'कटाकट'।

कटान–स्त्री० [हिं० काटना] काटने क्रिया, भाव या ढंग।

कटाना–स० हिं० 'काटना' का प्रे० रू

कटार(ी)–स्त्री० [सं० कट्टार] [अल्पा० कटारी] १. प्रायः एक दुधारा हथियार। २. दे० 'कटास'।

कटाव–पुं० [हिं० काटना] १. काटने की क्रिया या भाव। २. कतर-ब्योंत। ३. काटकर बनाये हुए बूटे। ४. वर्षा, बाढ़ आदि के कारण का कटकर बह जाना। (इरोजन)

कटास–पुं० [हिं० काटना] एक का बन-बिलाव। कटार।

कटाह–पुं० [सं०] १. कड़ाहा। कड़ाही। २. कछुए की खोपड़ी। भैंस का बच्चा।

कटि–स्त्री० [सं०] १. कमर। २. का गंड-स्थल।

कटि-बंध–पुं० [सं०] १. कमर में का कपड़ा या और कोई चीज। कमर २. भूगोल में गरमी-सरदी के विचार किये हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से

एक। (जोन) जैसे–उष्ण कटि-बंध। शीत टि-बंध।

टिबद्ध-वि० [सं०] १. कमर बाँधे हुए। २. तैयार। तत्पर। उद्यत।

टि-मंडन-पुं० [सं०] १. कमर की शोभा बढ़ानेवाली चीज। २. कमर में पहनने का करधनी नाम का गहना।

टि-सूत्र-पुं० [सं०] मेखला।

टीला-वि० [हिं० काटना] [स्त्री० टीली] १. काट करनेवाला। तीक्ष्ण। चोखा। २. बहुत तीव्र प्रभाव डालनेवाला। ३. मोहित करनेवाला।

टु-वि० [सं०] [भाव० कटुता] १. रसों में से एक। चरपरा। कड़ुआ। २. बुरा लगनेवाला। अप्रिय।

टुआ-वि० [हिं० काटना] काटकर टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

टुआ ब्याज-पुं० दे० 'मिती-काटा'।

टक्ति-स्त्री० [सं०] अप्रिय बात।

टैया-पुं० [हिं० काटना] काटनेवाला। स्त्री० काटे जाने की क्रिया या भाव।

टोरदान-पुं० [हिं० कटोरा + दान (प्रत्य०)] वह ढकनदार बरतन जिसमें भोजन आदि रखते हैं।

टोरा-पुं० [हिं० काँसा + ओरा (प्रत्य०) = ओरा] नीची दीवार और चौड़े पेंदे का एक छोटा बरतन। प्याला।

टोरी-स्त्री० [हिं० कटोरा का अल्पा०] छोटा कटोरा। प्याली। २. अँगिया या चोली का वह भाग जिसमें स्तन रहते हैं। ३. के सींके का सिरा जिसपर दल रहते हैं।

टौती-स्त्री० [हिं० कटना] कोई रकम समय उसमें से कुछ बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना। (डिडक्शन)

मुहा०–कटौती का प्रस्ताव = (विधायिका सभा में) यह प्रस्ताव कि अमुक प्रस्तावित व्यय में इतनी कमी की जाय। (कट-मोशन)

कट्टर–वि० [हिं० काटना] [भाव० कट्टरपन] १. काट खानेवाला। कटहा। २. अपने विश्वास पर बहुत दृढ़ रहने और उसके विरुद्ध कोई बात न सुनने या न माननेवाला। अंध-विश्वासी। (फैनेटिक) ३. हठी। दुराग्रही।

कट्टा–वि० [हिं० काठ] १. मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा। २. बलवान। बली।

पुं० जबड़ा।

मुहा०–कट्टे लगना = किसी की वस्तु का अनुचित रूप से दूसरे के उपयोग में आना।

कट्ठा–पुं० [हिं० काठ] पाँच हाथ, चार अंगुल की जमीन की एक नाप।

कठड़ा–पुं० [हिं० कठघरा] १. कठघरा। कटहरा। २. काठ का बड़ा सन्दूक। ३. कठौता।

कठ-पुतली–स्त्री० [हिं० काठ + पुतली] १. काठ की गुड़िया या पुतली जिसे डोरे की सहायता से नचाते हैं। २. वह जो केवल दूसरे के कहने पर, दूसरों की ओर से और दूसरों के स्वार्थ-साधन के लिए सब काम करे।। (हैंड-मेड, पपेट)

कठ-प्रेम–पुं० [हिं० काठ + प्रेम] प्रिय के रुष्ट, उदासीन या विमुख होने पर उसके प्रति बना रहनेवाला प्रेम।

कठ-फोड़वा–पुं० [हिं० काठ + फोड़ना] एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल छेदती है।

कठ-बाप–पुं० [हिं० काठ + बाप] सौतेला बाप।

कठ-मलिया–पुं० [हिं० काठ + माला] १. काठ की माला या कंठी पहननेवाला। वैष्णव। २. झूठ-मूठ कंठी पहननेवाला। बनावटी साधु या संत।

कठ-मस्त–वि० [हिं० काठ + फा० मस्त] [भाव० कठमस्ती] संड-मुसंड।

कठला–पुं० [सं० कठ + ला (प्रत्य०)] बच्चों के पहनने की एक प्रकार की माला।

कठवत–स्त्री० दे० 'कठौत'।

कठिन-वि० [सं०] १. कड़ा। सख्त। कठोर। २. जिसे करना, समझना या जिसके विषय में इसी तरह की और बातें जल्दी या सहज में न हो सकें। मुश्किल। दुष्कर। दुःसाध्य। (डिफिकल्ट)

कठिनई*-स्त्री० = कठिनता।

कठिनता-स्त्री० [सं०] १. कठोरता। कड़ाई। कड़ापन। सख्ती। २. मुश्किल। दिक्कत। ३. निर्दयता। बेरहमी। ४. मजबूती। दृढ़ता।

कठिया-वि० दे० 'काठा'।

कठुआना†-अ० [हिं० काठ + आना] सूखकर काठ की तरह कड़ा होना।

कठूमर-पुं० [हिं० काठ + ऊमर] जंगली गूलर।

कठेठ(ा)*-वि० [सं० काठ] [स्त्री० कठेठी] १. कड़ा। कठोर। सख्त। २. कटु। अप्रिय। ३. अधिक बलवाला।

कठोर-वि० [सं०] [स्त्री० कठोरा, भाव० कठोरता] १. कठिन। सख्त। कड़ा। २. निर्दय। निष्ठुर। बे-रहम।

कठोरता-स्त्री० [सं०] १. कड़ाई। सख्ती। २. निर्दयता। बेरहमी।

कठौत(ता)-पुं० [हिं० कठौत] काठ का बना एक बड़ा और चौड़ा बरतन।

कड़क-स्त्री० [हिं० कड़कड़] १. कड़कने की क्रिया या भाव। २. कड़कड़ाहट का कठोर शब्द। २. तड़प। डपट। ३. गाज। वज्र। ४. वह दर्द जो रुक रुककर हो। कसक।

कड़कड़ाता-वि० [हिं० कड़कड़] १. कड़कड़ शब्द करता हुआ। २. कड़ाके का। बहुत तेज। प्रचंड। जैसे—कड़कड़ाता जाड़ा।

कड़कड़ाना-अ० [अनु०] १. कड़कड़ शब्द होना। २. कड़कड़ शब्द के साथ टूटना। ३. घी, तेल आदि का आँच पर तपकर कड़कड़ शब्द करना।

स० १. 'कड़कड़' शब्द करना या शब्द के साथ तोड़ना। २. घी, खूब तपाना।

कड़कड़ाहट-स्त्री० [हिं० कड़कड़ कड़कड़ाने की क्रिया या भाव। २. शब्द। घोर नाद। गरज।

कड़कना-अ० [हिं० कड़कड़] १. शब्द होना। २. चिटकने का शब्द ३. चिटकना। फटना।

कड़क-नाल-स्त्री० [हिं० कड़क + एक प्रकार की तोप

कड़क-बिजली-स्त्री० [हिं० बिजली] १. कान का एक गहना। वाला। २. तोड़ेदार बन्दूक।

कड़खा-पुं० [हिं० कड़क] समय गाया जानेवाला एक तरह का

कड़खैत-पुं० [हिं० कड़खा + ऐत १. कड़खा गानेवाला। २. भाट।

कड़वा-वि० [स्त्री० कड़वी] दे०

कड़वी-स्त्री० [सं० कांड, हिं० ज्वार का वह पेड़ जो चारे के छोड़ा हो।

कड़ा-पुं० [सं० कटक] [स्त्री० हाथ या पाव में पहनने का प्रसिद्ध २. इस आकार का लोहे या और धातु का छल्ला या कुंडा।

वि० [सं० कटु] [स्त्री० कड़ी, कड़ाई] १. जो दबाने से जल्दी न कठोर। कठिन। सख्त। २. जिसकी कोमल न हो। उग्र। ३. कसा हुआ। ४. जो बहुत गीला न हो। ५. तगड़ा। दृढ़। ६. जोर का। प्रचंड। जैसे—कड़ी चोट, कड़ा जाड़ा। ७. शील। झेलनेवाला। ८. दुष्कर। कठिन। ९. तीव्र प्रभाववाला। तेज।

कड़ाई-स्त्री० हिं० 'कड़ा' का भाव०।

कड़ाका-पुं० [हिं० कड़कड़] १. कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।

मुहा०–कड़ाके का = जोर का। तेज। २. उपवास। लंघन। फाका।

ड़ाबीन–स्त्री० [तु० कारबीन] १. चौड़े हे की बन्दूक। २. छोटी बन्दूक।

ड़ाहा–पुं० [सं० कटाह, प्रा० कड़ाह] स्त्री० अल्पा० कड़ाही] आँच पर चढ़ाने ा लोहे का बड़ा गोल बरतन।

ड़ाही–स्त्री० [हिं० कड़ाह] छोटा कड़ाहा।

ड़ियल–वि० [हिं० कड़ा] कड़ा।

ड़ी–स्त्री० [हिं० कड़ा] १ सिकड़ी की कड़ी या कोई छल्ला। २. वह छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने के लिए लगाया ाय। ३. गीत का एक पद।

ो० [सं० कांड] काठ की छोटी धरन।

ी० [हिं० कड़ा = कठिन] संकट। दुःख।

ुआ–वि० [सं० कटुक] [स्त्री० कड़ुई, ाव० कड़ुआहट] १. स्वाद में उग्र और अप्रिय। जैसे–नीम, चिरायता आदि का। . तीखी प्रकृति का। अक्खड़। ३. जो ा न लगे। अप्रिय।

ुहा०–कड़ुआ करना = (क) व्यर्थ रुपए गाना। (ख) कुछ दाम खड़ा करना। **ड़ुआ होना** = (क) बुरा बनना। (ख) ाध करना।

विकट। टेढ़ा। कठिन।

हा०–कड़ुए-कसैले दिन = (क) बुरे न। कष्ट के दिन। (ख) दो-रसे दिन, जिनमें ा फैलते हैं। (ग) गर्भ के दिन। **कड़ुआ** ट = कठिन काम।

आ तेल–पुं० [हिं० कड़ुआ + तेल] ों का तेल।

आना–अ० [हिं० कड़ुआ] १. कड़ुआ ाना। २. बिगड़ना। खीझना। ३. आँख में किरकिरी पड़ने का-सा दर्द होना।

ना–अ० [सं० कर्षण] १. निकलना। र आना। २. उदय होना। ३. ंदिता में) आगे निकल जाना। बढ़ ना। ४. स्त्री का उप-पति के साथ घर छोड़कर चला जाना। ५. दूध आदि का औटकर गाढ़ा होना।

कढ़लाना*–स० [हिं० काढ़ना + लाना] घसीटकर बाहर करना।

कढ़ाई–स्त्री० [हिं० काढ़ना] कढ़ने या कढ़ाने की क्रिया या भाव।

कढ़ाव–पुं० [हिं० कढ़ना] १. कढ़ने या काढ़ने की क्रिया या भाव। २. कशीदे का काढ़ा हुआ काम। ३. बेल-बूटों का उभार।

कढ़िहार*–वि० [हिं० काढ़ना] १. काढ़ने या निकालनेवाला। २. उद्धार करनेवाला। ३. उधार या ऋण लेनेवाला।

कढ़ी–स्त्री० [हिं० कढ़ना = गाढ़ा होना] एक प्रकार का सालन जो बेसन को गाढ़ा पकाने से बनता हो।

मुहा०–कढ़ी का-सा उबाल = शीघ्र ही घट जानेवाला आवेश।

कढ़ुई†–स्त्री० [हिं० काढ़ना] मिट्टी का छोटा पुरवा जिससे बड़े बरतन में से कोई चीज निकाली जाती हो।

कढ़ैया*–पुं० दे० 'कढ़िहार'।

कढ़ोरना*–स० [सं० कर्षण] घसीटना।

कण–पुं० [सं०] १. बहुत छोटा टुकड़ा। किनका। रवा। २. चावल का छोटा टुकड़ा। कना। ३. अन्न के कुछ दाने।

कणिका– स्त्री० [सं०] छोटा टुकड़ा।

कत*–अव्य० [सं० कुतः] क्यों। किस लिए।

कतक*–अव्य० [सं० कुतः] किस लिए। क्यों।

अव्य० दे० 'कितना'।

कतना–अ० [हिं० कातना] काता जाना। (सूत का)

कतरन–स्त्री० [हिं० कतरना] कपड़े, कागज आदि के वे छोटे रद्दी टुकड़े जो कोई चीज काटने पर बच रहते हैं।

कतरना–स० [सं० कर्त्तन] १. कैंची आदि से काटना। २. दे० 'कुतरना'।

कतरनी–स्त्री० [हिं० कतरना] बाल, कपड़े, धातु आदि काटने की कैंची।

कतर-ब्योंत–स्त्री० [हिं० कतरना + ब्योंत] १. काट-छाँट। २. उलट-फेर। इधर का उधर करना। ३. उधेड़-बुन। सोच-विचार। ४. युक्ति। जोड़-तोड़।

कतरा–पुं० [हिं० कतरना] कटा हुआ टुकड़ा। खंड।

पुं० [अ०] बूँद। विन्दु।

कतराना–अ० [हिं० कतरना] [भाव० कतराई] किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना।

स० [हिं० 'कतरना' का प्रे०] कतरने का काम दूसरे से कराना।

कतल–पुं० [अ० क़त्ल] वध। हत्या।

कतलाम–पुं० [अ० क़त्ले-आम] जन-साधारण का वध। सर्व-संहार।

कतली–स्त्री० [अ० क़तरः] मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा।

कतवार–पुं० [हिं० पतवार = पताई] कूड़ा-करकट।

यौ०–कतवार-खाना = कूड़ा फेंकने की जगह।

*पुं० [हिं० कातना] कातनेवाला।

कतहुँ(हूँ)–अव्य० दे० 'कहीं'।

कताई–स्त्री० [हिं० कातना] कातने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कतान–स्त्री० [फा०] १. अलसी की छाल का बढ़िया कपड़ा जा पहले बनता था। २. एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

कताना–स० हिं० 'कातना' का प्रे०।

कतार–स्त्री० [अ०] १. पंक्ति। श्रेणी। २. समूह। झुंड।

कतारा–पुं० [सं० कांतार] [स्त्री० अल्पा० कतारी] एक प्रकार का मोटा गन्ना।

कति, कतिक*–वि० [सं० कति] १. कितना। २. बहुत।

कतिपय–वि० [सं०] १. कितने ही। कई। २. कुछ। थोड़े से।

कतीरा–पुं० [अ० क़तीरः] गुलू नामक का गोंद।

कतेक*–वि० दे० 'कतिक'।

कतेब*–स्त्री० [फा० किताब] १. पु किताब। २. धर्म-ग्रन्थ।

कत्तीं–स्त्री० [सं० कर्त्तरी] १. छुरी। २. छोटी तलवार। ३. ४. सोनारों की करतनी। ५. तरह बटकर बाँधी जानेवाली पगड़ी।

कत्थई–वि० [हिं० कत्था] कत्थे के रंग का।

कत्थक–पुं० [सं० कथक] एक जिसका काम गाना-बजाना है।

कत्था–पुं० [सं० क्वाथ] [वि० १. खैर की लकड़ियों को उबालकर हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जो पा लगाकर खाते हैं। २. खैर का पेड़।

कत्ल–पुं० दे० 'कतल'।

कथंचित्–क्रि० वि० [सं०] कदा शायद।

कथक–पुं० [सं०] १. कथा कहने पौराणिक। २. कत्थक।

कथक्कड़–पुं० [सं० कथा + कड़ (प्र बहुत कथा कहनेवाला।

कथन–पुं० [सं०] [वि० कथित, नीय, कथ्य] १. कुछ कहना या बो २. कही हुई बात। उक्ति। ३. कि सम्बंध में कही हुई कोई ऐसी बात जो प्रमाणित न हुई हो। (एलीगेशन) किसी के सामने दिया हुआ वक्तव्य। (स्टेटमेन्ट)

कथना*–स० [सं० कथन] १. बोलना। २. निन्दा या बुराई करना।

कथनाश्रय–पुं० [सं० कथन + आ वह पद या शब्द समूह जो कुछ लो बात-चीत में अभ्यास-वश पर निरर्थ से प्रायः आता है। सखुन-तकिया।

है तो, क्या नाम आदि।

थनी*-स्त्री० [सं० कथन + ई (प्रत्य०)] १. कहने की क्रिया या भाव। कथन। बात। २. कोरी बकवाद। ३. हुज्जत। तकरार। जैसे– थनी बहुत-कुछ, करनी कुछ भी नहीं।

थनीय-वि० [सं०] १. कहने योग्य। र्णनीय। २. निन्दनीय। बुरा।

थ-वात*-स्त्री० = कथा-वार्त्ता।

थमपि-क्रि० वि० दे० 'कदापि'।

थरी-स्त्री० [सं० कंथा + री (प्रत्य०)] पुराने चिथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना। गुदड़ी।

था-स्त्री० [सं०] १. वह जो कहा जाय। बात। २. धर्म विषयक व्याख्यान। ३. चर्चा। जिक्र। ४. समाचार। हाल।

थानक-पुं० [सं०] १. कथा। २. छोटी कथा। कहानी। ३. नाटक, उपन्यास, कहानी आदि का मूल ढाँचा। कथा-वस्तु। (प्लॉट)

था-वस्तु-स्त्री० [सं०] वह सारी कहानी जो किसी नाटक, उपन्यास या कहानी के मूल आधार या ढाँचे में होती है। (प्लॉट)

था-वार्त्ता-स्त्री० [सं०] १. अनेक प्रकार की बात-चीत। २. पौराणिक आख्यान।

थित-वि० [सं०] १. कहा हुआ। २. जो अभी कहा तो गया हो, पर प्रमाणित किया गया हो। (अलेज्ड)

थी*-स्त्री० दे० 'कथनी'।

थीर-पुं० [सं० कस्तीर] राँगा नामक धातु।

थोद्घात-पुं० [सं०] १. प्रस्तावना। कथा का प्रारंभ। २. (नाटक में) सूत्रधार की बात, अथवा उसके आशय के अनुसार पहले-पहल पात्र का आना और अभिनय आरम्भ करना।

थोपकथन-पुं० [सं०] १. कुछ व्यक्तियों में होनेवाली कोई औपचारिक या कल्पित बात-चीत। बनाया या माना हुआ वार्त्तालाप। (डॉयलॉग) २. किसी प्रकार की बात-चीत। वार्त्तालाप।

कथ्य-वि० [सं०] १. कहने योग्य। कथनीय। २. साधारण बोल-चाल की भाषा में प्रचलित। ३. जो कहा जाता हो। कहा जानेवाला।

कदंब-पुं० [सं० कदम्ब] १. एक प्रसिद्ध वृक्ष। कदम। २. समूह। ३. ढेर। राशि।

कद-स्त्री० [फा० कद] [वि० कद्दी] १. द्वेष। शत्रुता। २. हठ। जिद।

†अव्य० [सं० कदा] कब। किस समय।

पुं० [अ० क़द] ऊँचाई। (प्राणियों, वृक्षों आदि की)

कदन-पुं० [सं०] १. विनाश। २. वध। हिंसा। ३. युद्ध। ४. पाप। ५. दुःख।

वि० संहार या नाश करनेवाला। (यौ० के अन्त में; जैसे– मदन-कदन = शिव)

कदन्न-पुं० [सं०] घटिया या मोटा अन्न। जैसे– कोदो, साँवाँ आदि।

कदम-पुं० [सं० कदम्ब] १. एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसमें गोल फल लगते हैं। २. इस वृक्ष का फल।

पुं० [अ० क़दम] १. पैर। पाँव।

मुहा०–कदम उठाना = (क) चलना। (ख) कोई काम करने के लिए आगे बढ़ना। **कदम छूना** = (क) प्रणाम करना। **किसी के क़दम छूकर कुछ कहना** = किसी की शपथ खाकर कुछ कहना। **कदम बढ़ाना** = (क) तेज चलना। (ख) उन्नति करना। **कदम रखना** = प्रवेश करना।

२. पैर का चिह्न।

मुहा०–कदम पर कदम रखना = अनुकरण करना।

३. चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अन्तर। पैंड। पग। फाल। ४. घोड़े की वह चाल जिसमें उसके पैरों में तो गति होती है, पर बदन नहीं हिलता।

कदर-स्त्री० [अ० क़द्र] १. मात्रा।

मिक़दार। २.मान। प्रतिष्ठा। आदर।

कदरई*–स्त्री॰ दे॰ 'कायरता'।

कदरदान–वि॰ [फ़ा॰ क़द्रदाँ] गुण-ग्राहक।

कदरमस*–स्त्री॰ [सं॰ कदन] मार-पीट।

कदराई*–स्त्री॰ दे॰ 'कायरता'।

कदराना*–अ॰ [हिं॰ कादर] १. कायरता दिखाना। २. डरना।

स॰ किसी में कायरता उत्पन्न करना। कायर बनाना।

कदर्थ–वि॰ [सं॰] कुत्सित। बुरा।

कदर्थना–स्त्री॰ [सं॰] [वि॰ कदर्थित] १. दुर्दशा। दुर्गति। २. निन्दा।

कदली–स्त्री॰ [सं॰] १. केला। २. एक प्रकार का हिरन।

कदली वन–पुं॰ [सं॰] वह स्थान जहाँ केले के बहुत अधिक पौधे हों।

कदा–क्रि॰ वि॰ [सं॰] कब? किस समय?

मुहा॰–यदा कदा = कभी कभी। जब-तब।

कदाकार–वि॰ [सं॰] बुरे आकार का। बद-शकल। भद्दा।

कदाच*–क्रि॰ वि॰ दे॰ 'कदाचित्'।

कदाचार–पुं॰ [सं॰] [वि॰ कदाचारी] अनुचित या बुरा व्यवहार अथवा आचरण। (मिस-बिहेवियर)

कदाचित्–क्रि॰ वि॰ [सं॰] १. कभी। किसी समय। २. शायद।

कदापि–क्रि॰ वि॰ [सं॰] कभी। हर्गिज़। (इसके बाद 'नहीं' या 'न' आना आवश्यक होता है। जैसे–मैं वहाँ कदापि न जाऊँगा।)

कदी†–क्रि॰ वि॰ = कभी।

कदीम(मी)–वि॰ [अ॰] पुराना। प्राचीन।

कदूरत–स्त्री॰ [अ॰] मन-मोटाव।

कद्दू–पुं॰ [फ़ा॰ कदू] लौकी। घीया।

कधीं†–क्रि॰ वि॰ दे॰ 'कभी'।

कन–पुं॰ [सं॰ कण] १. बहुत छोटा टुकड़ा। कण। २. अन्न का दाना या उसका टुकड़ा। ३. अनाज। ४. देवता या बड़े का प्रसाद। ५. भीख का अन्न। ६. शारीरि

पुं॰ 'कान' का संक्षिप्त रूप

शब्दों के पहले आता है। जैसे–

कनउड़ा*–वि॰, पुं॰ दे॰ 'कनौड़

कनक–पुं॰ [सं॰] १. सोना। धतूरा। ३. पलाश। ढाक।

पुं॰ [सं॰ कणक] गेहूँ।

कनक-चंपा–पुं॰ [सं॰ कनक + एक प्रकार का चंपा। (फूल)

कन-कटा–वि॰ [हिं॰ कान + जिसका कान कटा हो। बूचा। २. लेनेवाला।

कनकना–वि॰ [हिं॰ कनकनाना कनकनी] १. जिससे कनकनाहट २. चुनचुनानेवाला। ३. अरुचि चिड़चिड़ा।

कनकनाना–अ॰ [हिं॰ काट, पुं॰ [भाव॰ कनकनाहट] १. सू आदि तरकारियों के स्पर्श से अं चुनाहट होना। चुनचुनाना। २. लगाना।

अ॰ [हिं॰ चौंकना] १. चौक २. रोमांचित होना।

कनका–पुं॰ [सं॰ कण] [स्त्री॰ किसी चीज के टूटे-फूटे दाने या

कनकानी–पुं॰ [फ़ा॰ खाकान देश प्रकार का घोड़ा।

कनकूत–स्त्री॰ [सं॰ कण + हिं॰ खेत में खड़ी फसल की उपज का

कन-कौआ–पुं॰ [हिं॰ कन्ना + काग़ज की बड़ी गुड्डी। पतंग।

कन-खजूरा–पुं॰ [हिं॰ कान + कीड़ा] एक जहरीला छोटा कीड़ बहुत-से पैर होते हैं। गोजर।

कनखा–पुं॰ [सं॰ काण्ड] १. २. शाखा। डाली।

कनखियाना–स॰ [हिं॰ कनखी] १. या तिरछी निगाह से देखना। २.

इशारा करना।

कनखी-स्त्री० [हिं० कोना + आँख] १. पुतली को आँख के कोने पर ले जाकर और दूसरों की दृष्टि बचाकर देखना। २. आँख का इशारा।

मुहा०-कनखी मारना = आँख से इशारा या मना करना।

कनछेदन-पुं० [हिं० कान + छेदना] हिन्दुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चों के कान छेदे जाते हैं। कर्णवेध।

कनटोप-पुं० [हिं० कान + टोपी] वह टोपी जिससे सिर और दोनों कान ढँक जायँ।

कनपटी-स्त्री० [हिं० कान + सं० पट] कान और आँख के बीच का स्थान।

कनपेड़ा-पुं० [हिं० कान + पेड़ा] एक रोग जिसमें कान के पास सूजन होती है।

कनफटा-पुं० [हिं० कान + फटना] गोरख-पंथी योगी जो कानों में बिल्लौर की मुद्राएँ पहनते हैं।

कनफुँका-वि० [हिं० कान + फूँकना] [स्त्री० कनफुँकी] १. कान में मंत्र सुनाकर दीक्षा देनेवाला। २. जिसने दीक्षा ली हो।

कनमनाना-अ० [अनु०] १. किसी की आहट पाकर कुछ हिलना-डोलना। २. किसी बात के विरुद्ध धीरे से कुछ कहना या चेष्टा करना।

कनय*-पुं० [सं० कनक] सोना। सुवर्ण।

कनरसिया-पुं० [हिं० कान + रसिया] गाना-बजाना सुनने का शौकीन।

कनसुई-स्त्री० [हिं० कान + सुनना] आहट। टोह।

मुहा०-कनसुई या कनसुइयाँ लेना = छिपकर किसी की बात सुनना।

कनस्तर-पुं० [अं० कैनिस्टर] टीन का चौकूँटा पीपा, जिसमें घी-तेल आदि रक्खे जाते हैं।

कनहार*-पुं० [सं० कर्णधार] मल्लाह।

कनागत-पुं० [सं० कन्यागत (सूर्य)] पितृपक्ष जिसमें श्राद्ध होते हैं।

कनात-स्त्री० [तु०] कपड़े का वह परदा जिससे कोई स्थान घेरा जाता है।

कनावड़ा*-वि० दे० 'कनौड़ा'।

कनिगर*-पुं० [हिं० कानि + फा० गर] अपनी मर्य्यादा का ध्यान रखनेवाला।

कनियाना-अ० दे० 'कतराना'।

†अ० [?] गोद में उठाना।

कनियार-पुं० दे० 'कनक-चंपा'।

कनिष्ठ-वि० [सं०] [स्त्री० कनिष्ठा, भाव० कनिष्ठता] १. बहुत छोटा। सबसे छोटा। २. जो पीछे या बाद में उत्पन्न हुआ हो। ३. वय या अवस्था में किसी से कम। उमर में किसी से छोटा। (यंगर) ४. पद, मर्यादा, अवस्था आदि में छोटा। 'वरिष्ठ' का उलटा। (जूनियर) ४. हीन। निकृष्ट।

कनिहार*-पुं० [सं० कर्णधार] मल्लाह।

कनी-स्त्री० [सं० कण] १. छोटा टुकड़ा। २. हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा।

मुहा०-कनी खाना या चाटना = हीरे की कनी निगलकर प्राण देना।

३. चावल के छोटे टुकड़े। कनकी। ४. वर्षा की बूँद।

कनूका*-पुं० दे० 'कनका'।

कनै-क्रि० वि० [सं० करणे = स्थान में] १. पास। निकट। २. ओर। तरफ।

कनैठी-स्त्री० [हिं० कान + ऐंठना] कान मरोड़ने की सजा।

कनेर-पुं० [सं० कणेर] एक पेड़ जिसमें लाल या पीले सुन्दर फूल लगते हैं।

कनेव-पुं० [हिं० काना + एव] चारपाई का टेढ़ापन।

कनोखी*-वि०, स्त्री० दे० 'कनखी'।

कनौजिया-वि० [हिं० कन्नौज + इया (प्रत्य०)] कन्नौज का निवासी।

कनौड़-स्त्री० [हिं० कनौड़ा] १. कनौड़े या खंडित होने का भाव। २. कलंक। ३.

लज्जा । संकोच । ४. तुच्छता । हीनता ।

कनौड़ा-वि० [हिं० काना + औड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० कनौड़ी] १. काना । २. जिसका कोई अंग खंडित हो । अपंग । खोंड़ा । ३. कलंकित । निन्दित । ४. लज्जित । संकुचित । ५. किसी के उपकार या भार से दबा हुआ । दबैल । ६. तुच्छ । हीन । ७. दुर्बल या असमर्थ ।

पुं० [हिं० कीनना = मोल लेना] मोल लिया हुआ दास ।

कनौती-स्त्री० [हिं० कान + औती(प्रत्य०)] १. पशुओं के कान । २. घोड़ों के कान उठाये रखने का ढंग । ३. कान में पहनने की बाली ।

कन्ना-पुं० [सं० कर्ण, प्रा० कण्ण] [स्त्री० कन्नी] १. पतंग के बीच में बाँधा जानेवाला डोरा । २. किनारा । कोर ।

पुं० [सं० कण] चावल का टुकड़ा ।

कन्नी-स्त्री० [हिं० कन्ना] १. पतंग या कनकौए के दोनों ओर के किनारे । २. किनारा ।

मुहा०-कन्नी काटना = सामने न आना ।

कन्यका-स्त्री० दे० 'कन्या' ।

कन्या-स्त्री० [सं०] १. अविवाहिता लड़की । कुँआरी लड़की । २. पुत्री । बेटी । ३. बारह राशियों में से छठी राशि । (वर्गों)

कन्या कुमारी-स्त्री० [सं० कन्या + कुमारी] भारत के दक्षिण में रामेश्वर के पास का एक अन्तरीप । रास कुमारी ।

कन्या-दान-पुं० [सं०] विवाह में वर को दान रूप में कन्या देने की रीति ।

कन्हाई-पुं० दे० 'कन्हैया' ।

कन्हैया-पुं० [सं० कृष्ण, प्रा० कण्ह] श्रीकृष्ण ।

स्त्री० [सं० स्कंध] १. कन्धा । २. बच्चों का बड़ों के कन्धे पर बैठकर चलना । ३. लड़कों का एक प्रकार का खेल जिसमें दो लड़के अपनी बाहों पर किसी दूसरे लड़के को बैठाकर ले चलते हैं ।

कपट-पुं० [सं०] [वि० कपटी] अभिप्राय साधने के लिए हृदय छिपाना । छल । धोखा । २. छिपाव ।

कपटना-स० [सं० कल्पन] १. निकालकर अलग करना । २. चोरी से कुछ अंश निकालकर अपने लिए कर लेना ।

कपटा-पुं० [सं० क्लृप्ता = कपटने या वाला] खेत की फसल काटनेवाला लावा ।

कपटी-वि० [सं०] कपट करनेवा

कपड़-छन-पुं० [हिं० कपड़ा + छ पिसी हुई बुकनी को कपड़े में छानना

कपड़-द्वार-पुं० [हिं० कपड़ा + द्वार] का भंडार । वस्त्रागार । तोशाखाना ।

कपड़-मिट्टी-स्त्री० [हिं० कपड़ा + औषध फूँकने के संपुट पर गीली के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की कपड़ौटी ।

कपड़ा-पुं० [सं० कर्पट] १. रूई, ऊन आदि के तागों से बुना हुआ का आच्छादन । वस्त्र । पट ।

मुहा०-कपड़ों से होना = मासिक से होना । रजस्वला होना । (स्त्रियों २. पहनावा । पोशाक ।

यौ०-कपड़ा-लत्ता = पहनने के

कपरा*-पुं० = कपड़ा ।

† पुं० = कपार (कपाल) ।

कपर्द (क)-पुं० [सं०] [स्त्री० कप १. (शिव का) जटा-जूट । २. कौ

कपर्दिका-स्त्री० [सं०] कौड़ी ।

कपर्दी-पुं० [सं० कपर्दिन्] शिव ।

कपाट-पुं० [सं०] किवाड़ । दरवा

कपार*-पुं० दे० 'कपाल' ।

कपाल-पुं० [सं०] [वि० कपाली, लिका] १. खोपड़ा । खोपड़ी । २.

कपूरा–पुं० [हिं० कपूर] एक प्रकार का धान या उसका चावल।

कपूरी–वि० [हिं० कपूर] १. कपूर का बना हुआ। २. हलके पीले रंग का। पुं० १. कुछ हलका पीला रंग। २. एक प्रकार का पान।

कपोत–पुं० [सं०] [स्त्री० कपोतिका, कपोती] १. कबूतर। २. परेवा। ३. पक्षी। चिड़िया।

कपोत-व्रत–पुं० [सं०] चुपचाप दूसरे के अत्याचार सहने का व्रत।

कपोती–स्त्री० [सं०] १. कबूतरी। २. पेंडुकी। ३. कुमरी।

कपोल–पुं० [सं०] गाल।

कपोल-कल्पना–स्त्री० [सं०] [वि० कपोल-कल्पित] मन-गढंत या बनावटी बात।

कफ़–पुं० [सं०] शरीर के अन्दर की वह गाढ़ी लसीली वस्तु जो खाँसने या थूकने से मुँह या नाक से निकलती है। श्लेष्मा। बलगम।
पुं० [अं०] कमीज या कुरते में आस्तीन का वह अगला भाग जिसमें दोहरी पट्टी होती और बटन लगते हैं।

कफ़न–पुं० [अ०] वह कपड़ा जिसमें शव लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है।

कफ़न-खसोट–वि० [अ० कफ़न + हिं० खसोटना] अत्यन्त लोभी और निन्दनीय कर्म करनेवाला।

कफ़नाना–स० [हिं० कफ़न] शव को कफ़न में लपेटना।

कफ़नी–स्त्री० [हिं० कफ़न] १. वह कपड़ा जो शव के गले में पहनाते हैं। २. गले में पहनने का साधुओं का कपड़ा।

कबंध–पुं० [सं०] १. कंडाल। २. बादल। ३. पेट। ४. बिना सिर का धड़। रुंड।

कब–क्रि० वि० [सं० कदा] किस समय? किस वक्त?

पद–कब का, कब के, कब से=देर

से। कब नहीं = बराबर। सदा।

कबड्डी–स्त्री० [देश०] लड़कों का एक खेल जो दो दलों में होता है।

कबर–स्त्री० दे० 'कब्र'।

कबरा–वि० दे० 'चित-कबरा'।

कबरी–स्त्री० [सं० कवरी] स्त्रियों के सिर की चोटी।

कबल–अव्य० [अ०] पहले। पूर्व।

कबा–पुं० [अ०] एक प्रकार का लम्बा ढीला पहनावा।

कबाड़–पुं० [सं० कर्पट] [वि० कबाड़ी] १. काम में न आनेवाली वस्तु। २. व्यर्थ का काम।

कबाड़ा–पुं० [हिं० कबाड़] झंझट। बखेड़ा।

कबाड़िया, कबाड़ी–पुं० [हिं० कबाड़] १. टूटी-फूटी चीजें बेचनेवाला आदमी। २. झगड़ालू।

कबाब–पुं० [अ०] सीखों पर भूना हुआ मांस।

कबाब-चीनी–स्त्री० [अ० कबाब + हिं० चीनी] एक झाड़ी जिसके गोल फल दवा के काम में आते हैं।

कबाबी–वि० [अ० कबाब] १. कबाब बेचनेवाला। २. मांसाहारी।

कबायली–पुं० [अ०] पश्चिमी पाकिस्तान में रहनेवाले किसी कबीले का आदमी।

कबार–पुं० [हिं० कबाड़] १. रोजगार। व्यवसाय। २. दे० 'कबाड़'।

कबारना–स० = उखाड़ना।

कबाला–पुं० [अ०] वह दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय। जैसे-बैनामा।

कबाहत–स्त्री० [अ०] १. बुराई। खराबी। २. झंझट। अड़चन।

कबीर–पुं० [अ० कबीर = बड़ा, श्रेष्ठ] १. एक प्रसिद्ध भक्त जो जुलाहे थे। २. एक प्रकार का अश्लील गीत जो होली में गाया जाता है।

कबीर-पंथी–वि० [हिं० कबीर + कबीर के सम्प्रदाय का।

कबीला–पुं० [अ० कबीलः] १. झुंड। २. एक वंश के सब लोगों स्त्री० जोरू। पत्नी।

कबुलवाना–स० हिं० 'कबूलना'

कबूतर–पुं० [फा०, मि० सं० [स्त्री० कबूतरी] झुंड में रहने प्रसिद्ध पक्षी।

कबूल–पुं० [अ०] स्वीकार। मं

कबूलना–स० [अ० कबूल + ना स्वीकार करना। मंजूर करना।

कबूलियत–स्त्री० [अ०] वह पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति देनेवाले को लिखकर देता है।

कबूली–स्त्री० [फा०] चने की खिचड़ी।

कब्ज–पुं० दे० 'कब्जियत'।

कब्जा–पुं० [अ०] १. मूठ। किवाड़ या सन्दूक में जड़े जाने या पीतल की चादर के बने हुए टुकड़े जो पेंच से जड़े जाते हैं। स्वत्त्व जो किसी वस्तु या सम्पत्ति भोग आदि के सम्बन्ध में किसी होता है। अधिकार। (पजेशन) इख्तियार।

कब्जियत–स्त्री० [अ०] पाखाना न आना। मलावरोध।

कब्र–स्त्री० [अ०] १. वह गड्ढा मुसलमान, ईसाई आदि अपने मु हैं। २. वह चबूतरा जो ऐसे ऊपर बनाया जाता है।

मुहा०–कब्र में पैर लटकाना के समीप होना।

कब्रिस्तान–पुं० [फा०] वह मुरदे गाड़े जाते हैं। (बरियल ग्राउं

कभी–क्रि० वि० [हिं० कब + ही]

मय । किसी अवसर पर ।
मुहा०-कभी का = बहुत देर से । कभी
कभी = आगे चलकर किसी अवसर पर ।
. किसी समय भी । कदापि । हरगिज ।
भू-क्रि० वि० दे० 'कभी' ।
मंगर-पुं० [फा० कमानगर] १. कमान
नानेवाले । २. जोड़ की उखड़ी हुई हड्डी
ठानेवाले । ३. चित्रकार । चितेरा ।
मंडल-पुं० [सं० कमंडलु] संन्यासियों
का जल-पात्र जो धातु या दरियाई नारियल
आदि का होता है ।
मंद-पुं० दे० 'कबंध' ।
री० [फा०] १. वह फन्देदार रस्सी जिसे
कर, जंगली पशु फँसाये जाते हैं । फंदा ।
पाश । २. वह फन्देदार रस्सी जिसके सहारे
चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं ।
म-वि० [फा०] १. थोड़ा । न्यून । अल्प ।
मुहा०-कम से कम = अधिक नहीं, तो
इतना तो अवश्य । और नहीं, तो इतना जरूर ।
२. बुरा । जैसे-कमबख्त ।
क्रि० वि० प्रायः नहीं । बहुधा नहीं ।
म-असल-वि० [फा० कम + अ० अस्ल]
: वर्ण-संकर । दोगला । २. नीच ।
मखाब-पुं० [फा०] एक प्रकार का
दार रेशमी कपड़ा ।
मची-स्त्री० [तु०, मि० सं० कंचका] १.
ह पतली लचीली टहनी जिससे टोकरियाँ
नाते हैं । तीली । २. पतली लचीली छड़ी ।
मच्छा-स्त्री० दे० 'कामाख्या' ।
मजोर-वि० [फा०] दुर्बल । अशक्त ।
मजोरी-स्त्री० [फा०] दुर्बलता ।
मठ-पुं० [सं०] [स्त्री० कमठी] १.
छुआ । २. साधुओं का तूँबा । ३. बाँस ।
मठी-पुं० [सं०] कछुआ ।
स्त्री० [सं० कमठ] बाँस की पतली लचीली
ट्टी । फट्टी ।
मना-अ० [फा० कम] कम होना ।
मनीय-वि० दे० 'कमनीय' ।

कमनीय-वि० [सं०] [भाव० कमनीयता] सुन्दर । मनोहर ।

कमनैत-पुं० [फा० कमान] [भाव० कमनैती] कमान चलानेवाला । तीरंदाज़ ।

कमरंग-स्त्री० = कमरख ।

कमर-स्त्री० [फा०] शरीर में पेट और पीठ के नीचे और पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर का अंग ।

मुहा०-कमर कसना या बाँधना = (क) तैयार होना । उद्यत होना । (ख) चलने की तैयारी करना । **कमर टूटना** = कुछ करने के योग्य न रह जाना ।

२. किसी लम्बी वस्तु के बीच का पतला भाग । जैसे-कोल्हू की कमर ।

कमरख-स्त्री० [सं० कर्मरंग, फा० कम्मरंग] एक पेड़ जिसके फाँकवाले लम्बे लम्बे फल खट्टे होते हैं । कमरंग ।

कमरखी-वि० [हिं० कमरख] जिसमें कमरख की तरह उभड़ी हुई फाँकें हों ।

कमर-बंद-पुं० [फा०] १. वह लम्बा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं । पटका । २. पेटी । ३. इजारबन्द । नारा ।

कमर-बल्ला-पुं० [फा० कमर + हिं० बल्ला] १. वह छोटी दीवार जो किलों और चारदीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और झरोखे होते हैं । २. वह छोटी दीवार जो किसी बड़ी दीवार के सहारे के लिए उसके नीचेवाले भाग के साथ, प्रायः ढालुएँ रूप में खड़ी की जाती है ।

कमरा-पुं० [लै० कैमेरा] १. कोठरी । २. छाया-चित्र या फोटो उतारने का यंत्र ।

कमरी-स्त्री० दे० 'कमली' ।

कमल-पुं० [सं०] १. पानी में होनेवाला एक पौधा जो अपने सुन्दर फूलों के लिए प्रसिद्ध है । २. इस पौधे का फूल । ३. इस फूल के आकार का एक मांस-पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है । क्लोम । ४. जल । पानी । ५. योनि के अन्दर की एक

कमलाकार गाँठ। फूल। धरन। ६. एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं। पीलू। ७. कमल के फूल या बड़े गिलास के आकार का शीशे का एक आधान जिसमें प्रकाश के लिए मोमबत्ती जलाते हैं।

कमल-ककड़ी–स्त्री॰ दे॰ 'भसींड'।

कमल-गट्टा–पुं॰ [सं॰ कमल + हिं॰ गट्टा] कमल का बीज। पद्मबीज।

कमल-नयन–वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ कमल-नयनी] जिसकी आँखें कमल की तरह बड़ी और सुन्दर हों।
पुं॰ विष्णु।

कमलनाभ–पुं॰ [सं॰] विष्णु।

कमल-नाल–स्त्री॰ [सं॰] कमल की डंडी, जिसपर फूल रहता है। मृणाल।

कमल-बाई–स्त्री॰ दे॰ 'कमल'। (रोग)

कमला–स्त्री॰ [सं॰] १. लक्ष्मी। २. धन-सम्पत्ति। ३. एक प्रकार की बड़ी नारंगी। संतरा।
पुं॰ [सं॰ कम्बल] १. एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर से छू जाने से खुजली होती है। सूँड़ी। २. अनाज या सड़े फलों आदि में पड़नेवाला कीड़ा। ढोला।

कमलासन–पुं॰ [सं॰] १. ब्रह्मा। २. योग का पद्मासन।

कमलिनी–स्त्री॰ [सं॰] १. छोटा कमल। २. वह तालाब जिसमें कमल हों।

कमली–स्त्री॰ [हिं॰ कंबल] छोटा कम्बल।

कमवाना–स॰ [हिं॰ 'कमाना' का प्रे॰] कमाने का काम दूसरे से कराना।

कमाई–स्त्री॰ [हिं॰ कमाना] १. कमाया हुआ धन। अर्जित द्रव्य। २. कमाने का काम।

कमाऊ–वि॰ [हिं॰ कमाना] कमानेवाला।

कमाच–पुं॰ [?] १. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २. दे॰ 'कौंछ'।

कमान–स्त्री॰ [फा॰] १. धनुष। **मुहा॰–कमान चढ़ना** = (क) होना। (ख) त्योरी चढ़ना। क्रोध में २. इन्द्रधनुष। ३. मेहराब। ४. ५. बन्दूक।
स्त्री॰ [अं॰ कमांड] १. आज्ञा। २. फौजी आज्ञा। ३. फौजी नौकरी। **मुहा॰–कमान पर जाना** = जाना। **कमान बोलना** = सिपा नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा

कमाना–स॰ [हिं॰ काम] १. करके धन पैदा करना। २. सुधार के योग्य बनाना।
यौ॰–कमाई हुई हड्डी या देह = से बलिष्ठ किया हुआ शरीर। **साँप** = वह साँप जिसके विषैले उखाड़ लिये गये हों।
३. सेवा संबंधी छोटे काम करना। पाखाना कमाना (उठाना)। कमाना (हजामत बनाना)। ४. संचय करना। जैसे–पाप कमाना।
अ॰ १. मेहनत-मजदूरी करना। का व्यभिचार से धन उपार्जित कसब करना।
+स॰ [हिं॰ कम] कम करना।

कमानी–स्त्री॰ [फा॰ कमान] कमानीदार] १. तार अथवा और लचीली वस्तु, जो इस प्रकार बैठ कि दब और उठ जाय। २. लोहे की लचीली तीली। ३. एक की चमड़े की पेटी जिसे आँत रोगी कमर में बाँधते हैं।

कमाल–पुं॰ [अ॰] [भाव॰ १. परिपूर्णता। पूरापन। २. कुशलता। ३. अद्भुत या अनोखा

कमासुत–वि॰ [हिं॰ कमाना + कमाई करनेवाला। धन कमानेवाला।

कमी–स्त्री॰ [फा॰ कम] १. कम

या या भाव । न्यूनता । अल्पता । २. किये जाने की क्रिया या भाव । (रि-यान) ३. हानि । नुकसान ।

ज-स्त्री० [अ० क़मीज़] वह कुरता समें कली और चौबग़ले नहीं होते ।

ीना-वि० [फ़ा०] [स्त्री० कमीनी] भाव० कमीनापन] नीच । क्षुद्र ।

शन-पुं० [अं०] १. कोई माल बेचने-कवाने अथवा इसी प्रकार का कोई काम रने-कराने के बदले में मिलनेवाला धन । लाली । २. दे० 'आयोग' ।

मुकंदर*-पुं० [सं० कार्मुक + दर] व का धनुष तोड़नेवाले, रामचन्द्र ।

रा-पुं० [हिं० काम + एरा (प्रत्य०)] या काम करनेवाला । जैसे–मजदूर ।

ला-पुं० [हिं० काम + एला (प्रत्य०)] ह जगह जहाँ पशु मारे जाते हैं । वध-स्थान । साई-खाना ।

ोदिनी*-स्त्री० दे० 'कुमुदिनी' ।

ोरा-पुं० [सं० कुंभ + ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कमोरी, कमोरिया] मिट्टी का वह ड़ा बरतन जिसमें दूध, दही या पानी रखा ता है । घड़ा । कछरा ।

युनिज़्म-पुं० [अं०] वह मतवाद या द्धान्त जिसमें सम्पत्ति का अधिकार समष्टि समाज का माना जाना चाहिए, व्यक्ति ोष या व्यष्टि का स्वत्व नहीं होना चाहिए । ष्टिवाद ।

युनिस्ट-पुं० [अं०] वह जो कम्यु-म के सिद्धान्त मानता और उनका चार चाहता हो ।

या*-स्त्री० दे० 'काया' ।

राम-पुं० [अ०] १. ठहराव । टिकाव । ठहरने की जगह । विश्राम-स्थान । ३. श्चय । स्थिरता ।

ामत-स्त्री० [अ०] १. मुसलमानों, हूदियों आदि के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुरदे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनका न्याय होगा । २. प्रलय ।

कयास-पुं० [अ०] अनुमान ।

करंज-पुं० [सं०] १. कंजा । २. एक प्रकार का छोटा जंगली पेड़ ।

पुं० [सं० कलिंग] मुरगा ।

करंजुआ-वि० [सं० करंज] करंज के रंग का । खाकी ।

करंड-पुं० [सं०] १. मधु-मक्खी का छत्ता । २. तलवार । ३. कारंडव नाम का हंस ।

पुं० [सं० कुरविंद] कुरुल पत्थर जिसपर रखकर हथियार आदि तेज किये जाते हैं ।

कर-पुं० [सं०] १. हाथ । २. हाथी का सूँड़ जिससे वह हाथ के समान काम लेता है । ३. सूर्य्य या चन्द्रमा की किरण । ४. आकाश से गिरनेवाला पत्थर । ओला । ५. वह नियत धन जो किसी व्यक्ति या किसी संपत्ति, व्यापार आदि की आय में से कोई अधिकारिकी अपने लिए लेती है । महसूल । (टैक्स) जैसे–आय-कर, मार्ग-कर ।

वि० [स्त्री० करी] करने, देने या प्राप्त करानेवाला । (समस्त पदों के अन्त में; जैसे–दिनकर, सुखकर आदि)

*प्रत्य० [सं० कृत] सम्बन्ध कारक का चिह्न । का । जैसे–तिनकर ।

करक–स्त्री० दे० 'कसक' (पीड़ा) ।

करकच–पुं० [देश०] समुद्र के पानी से बनाया हुआ नमक । समुद्री नमक ।

पुं० [अनु०] १. झगड़ा । बखेड़ा । २. हुज्जत । तकरार ।

करकट–पुं० [हिं० खर + सं० कट] कूड़ा । कतवार ।

करकना*–अ० दे० 'कड़कना' ।

वि० दे० 'करकरा' ।

करकरा–पुं० [सं० कर्करेटु] एक प्रकार का सारस ।

वि० [सं० कर्कर] १. खुरखुरा । २. करारा ।

३. कड़ा । ४. दृढ़ । पक्का ।

करकराहट–स्त्री० [हिं० करकरा + आहट (प्रत्य०)] १. कड़ापन । २. खुरखुराहट । ३. आँख में किरकिरी पड़ने की-सी पीड़ा ।

करका–पुं० दे० 'ओला' ।

करखना*–अ० [सं० कर्षण] १. खींचना । २. आवेश में आना ।

करखा*–पुं० [सं० कर्ष] उत्तेजना । बढ़ावा । पुं० १. दे० 'कालिख' । २. दे० 'कड़खा' ।

करखाना*–अ० [हिं० कालिख] कालिख से युक्त होना । काला पड़ना ।

स० कालिख लगाकर काला करना ।

अ० हिं० 'करखना' का प्रे० ।

करगत–वि० [सं०] हाथ में आया हुआ । हस्तगत ।

करगता–पुं० दे० 'करधनी' ।

करगह–पुं० दे० 'करघा' ।

करगी–स्त्री० [सं० कर + ग्रहण] जमी हुई चीज खुरचने का एक उपकरण ।

स्त्री० [देश०] १. पानी की बाढ़ । २. ओला । पत्थर ।

करघा–पुं० [फा० कारगाह] जुलाहों का वह यंत्र जिससे वे कपड़ा बुनते हैं । खड्डी ।

करचंग–पुं० [हिं० कर + चंग] १. ताल देने का एक बाजा । २. डफ ।

करछी–स्त्री० दे० 'कलछी' ।

करज–पुं० [सं०] १. नाखून । २. उँगली ।

करण–पुं० [सं०] [भाव० करणता] १. कोई काम करने की क्रिया । कुछ करना । आचरण । (एक्ट) जैसे–साधारणीकरण, सरलीकरण । २. वह जो कुछ किया जाय । कार्य । (एक्ट) ३. वह वस्तु या साधन जिसके द्वारा कोई कार्य किया जाय । करने का साधन । जैसे–हथियार, औजार आदि । (इन्स्ट्रुमेन्ट) ४. विधिक क्षेत्र में वह लेख्य जो किसी कार्य, व्यवहार, संविदा, प्रक्रिया आदि का सूचक हो और जिसके द्वारा कोई अधिकार या दायित्व उत्पन्न, अंतरित, परिमित, विस्तारित नि अभिलिखित होता हो । शा (इन्स्ट्रुमेन्ट) ५. व्याकरण में व जिसके द्वारा कर्त्ता कोई क्रिया सि है । (इसका चिह्न 'से' है ।) ६. वह संख्या जिसका पूरा पूरा व निकल सके ।

*पुं० दे० 'कर्ण' ।

वि० करनेवाला । कर्त्ता । (यौगि के अन्त में) जैसे–मंगलकरण ।

करणिक–पुं० [सं०] १. वह जो का कोई काम करता हो । कार्यक किसी कार्यालय में लिखा-पढ़ी करनेवाला कर्मचारी । (क्लर्क)

करणीय–वि० [सं०] करने योग्य ।

करतब–पुं० [सं० कर्त्तव्य] [वि० क १. कार्य । काम । २. कला । हुन करामात । जादू ।

करतबी–वि० [हिं० करतब] १. और बहुत काम करनेवाला । २. ३. बाजीगर ।

करतरी*–स्त्री० दे० 'कर्त्तरी' ।

कर-तल–पुं० [सं०] [वि० हाथ की हथेली ।

यौ०–करतल ध्वनि = दाहिने हा हथेली बाईं हथेली पर मारकर शब्द क तालियाँ बजाना । (प्रसन्नता अथवा का सूचक)

करता*–वि०, पुं० दे० 'कर्त्ता' ।

करतार–पुं० [सं० कर्त्तार] ईश्वर ।

*पुं० दे० 'कर-ताल' ।

करतारी–स्त्री० [हिं० करतार] क ईश्वर की लीला ।

*स्त्री० दे० 'कर-ताली' ।

कर-ताल–पुं० [सं०] १. दोनों ह के परस्पर आघात का शब्द । ताली ब २. ताल देने का एक प्रकार का ३. झाँझ । मजीरा ।

ताली–स्त्री० [सं० कर + ताल] दोनों
ों से तालियाँ बजाने की क्रिया ।
ूत–स्त्री० [सं० कर्तृत्व] १. कर्म ।
ो । काम । २. कला । हुनर ।
ूती–वि० [हिं० करतूत] करतूत
ेवाला ।
ौ० = करतूत ।
–वि० [सं०] किसी प्रकार का कर
ाजस्व देनेवाला ।
[फ़ा० कारज] चाकू । छुरी ।
ा–पुं० [हिं० गर्द] १. बिक्री की
ु में मिला हुआ कूड़ा-करकट । २.
न में वह कमी जो ऐसे कूड़े-करकट के
ी जाय । कटौती ।
नी–स्त्री० [सं० किंकिणी] कमर में
ने का एक गहना ।
–पुं० १. दे० 'कर्ण' । २. दे० 'करण' ।
–फूल–पुं० [सं० कर्ण + हिं० फूल]
ा एक गहना । तरौना । काँप ।
ा–स० [सं० करण] १. क्रिया को आ-
े समाप्ति की ओर ले जाना । निप-
ा । भुगताना । सम्पादित करना । २.
र तैयार करना । ३. पति या पत्नी के
में ग्रहण करना । ४. भाड़े पर सवारी
ा । ५. रोशनी बुझाना । ६. एक
े दूसरे रूप में लाना । बनाना ।
०–करके = के रूप में । जैसे– हम
ो बड़ा करके मानते हैं ।
ोई वस्तु पोतना । जैसे– रंग करना ।
[सं० कर्ण] १. सुदर्शन नामक पौधा
ें सफ़ेद फूल लगते हैं । २. इस पौधेका फूल ।
दे० 'करनी' ।
ाटक–पुं० [सं० कर्णाटक] मद्रास
ा एक भाग ।
ाटकी–पुं० [सं० कर्णाटकी] १.
प्रदेश का निवासी । २. कसरत
ेवाला मनुष्य । ३. जादूगर ।
ाल–पुं० [अ० करनाय] १. सिंघा ।

नरसिंहा । भोंपा । २. एक प्रकार की तोप ।

करनी–स्त्री० [हिं० करण] १. कार्य । कर्म । करतब । २. अन्त्येष्टि कर्म । मृतक-संस्कार । ३. दीवार पर पन्ना या गारा लगाने का एक औज़ार । कन्नी ।

करपर*–स्त्री० [सं० कर्पर] खोपड़ी ।

वि० [सं० कृपण] कंजूस ।

करपरी*–स्त्री० [देश०] पीठी की बरी ।

कर-पलई–स्त्री० दे० 'कर-पल्लवी' ।

कर-पल्लवी–स्त्री० [सं०] उँगलियों के संकेत से शब्द या भाव प्रकट करना ।

कर-पिचकी–स्त्री० [सं० कर + हिं० पिचकी] हथेलियों से पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने की मुद्रा या कार्य ।

करअरना*–अ० [अनु०] १. कुलबुलाना । २. पक्षियों का कलरव करना । चहकना ।

करबूल–पुं० [?] घोड़े के जीन में लगी वह रस्सी या तसमा जिसमें हथियार लटकाते हैं ।

करभ–पुं० [सं०] [स्त्री० करभी] १. हथेली के पीछे का भाग । २. ऊँट का बच्चा । ३. हाथी का बच्चा । ४. कमर ।

करभोरु–पुं० [सं०] हाथी के सूँड़ के समान जाँघें ।

वि० सुन्दर जाँघोंवाली (स्त्री) ।

करम–पुं० [सं० कर्म] १. कर्म । काम ।

यौ०–करम-भोग = वह दुःख जो अपने किये हुए कर्म्मों के कारण हो ।

२. कर्म का फल । भाग्य । किस्मत ।

मुहा०–करम फूटना = भाग्य मंद होना ।

यौ०–करम-रेख = भाग्य में लिखी बात ।

पुं० [अ०] मेहरबानी । कृपा । दया ।

करम-कल्ला–पुं० [अ० करम + हिं० कल्ला] एक प्रकार की गोभी । बंद-गोभी ।

करमठ*–वि० [सं० कर्मठ] १. कर्मनिष्ठ । २. कर्मकांडी ।

करमात*–पुं० [सं० कर्म्म] भाग्य ।

कर-माला–स्त्री० [सं०] उँगलियों के पोर पर उँगली रखकर जप की गिनती करना ।

करमाली–पुं० [सं०] सूर्य्य ।

करमिया–वि० = करमी (कर्मी) ।

करमी–वि० [सं० कर्म्म] १. कर्म करनेवाला । २. कर्मठ । ३. कर्मकांडी ।

कर-मुहा*–वि० दे० 'कल-मुँहा' ।

करर–पुं० [देश०] १. एक प्रकार का जहरीला कीड़ा । २. रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद ।

कररना*–अ० [अनु०] १. चरमराकर टूटना । २. कर्कश शब्द करना ।

करल*–पुं० [सं० कटाह] कड़ाही ।

करवट–स्त्री० [सं० करवर्त्त] हाथ या पार्श्व के बल लेटने की स्थिति या मुद्रा ।

मुहा०–करवट बदलना या लेना = (क) एक ओर से दूसरी ओर घूमकर लेटना । (ख) और का और हो जाना । बदल जाना । **करवट न लेना** = किसी कर्त्तव्य का ध्यान न रखना । सन्नाटा खींचना । **करवटें बदलना** = बिस्तर पर बेचैन रहना । तड़पना ।

पुं० [सं० करपत्र] १. करवत । आरा । २. वे प्राचीन आरे या चक्र जिनसे कटकर लोग शुभ फल की आशा से मरते थे ।

करवत–पुं० [सं० करपत्र] आरा ।

करवर*†–स्त्री० [देश०] विपत्ति । आफत ।

करवरना*–अ० [सं० कलरव] कलरव करना । चहकना ।

करवा–पुं० [सं० करक] मिट्टी, धातु आदि का एक प्रकार का टोंटीदार लोटा ।

करवानक–पुं० दे० 'गौरैया' ।

करवाना–स० हिं० 'करना' का प्रे० ।

करवार*–स्त्री० [सं० करवाल] तलवार ।

करवाल–पुं० [सं० करवाल] १. नाखून । २. तलवार ।

करवीर–पुं० [सं०] १. कनेर का पेड़ । २. तलवार । ३. श्मशान ।

करवैया–वि० [हिं०] करनेवाला ।

करश्मा–पुं० [फा०] अद्भुत काम । चमत्कार । करामात ।

करष–पुं० [सं० कर्ष] १. तनाव । २. मन-मोटाव । द्वेष । का जोश ।

करषना*–स०[सं० कर्षण] १. २. घसीटना । ३. सोख लेना । ४. ५. समेटना ।

कर संपुट–पुं० [सं०] हाथ की की वह मुद्रा जिसमें वे पात्र या दोने में हो जाती हैं । अंजलि ।

करसान*–पुं० दे० 'कृषाण' ।

करसायल–पुं० [सं० कृष्णसार हिरन ।

करसी†–स्त्री० [सं० करीष] १. कंडा । २. उपले की आग । ३. कंडे की राख ।

करह*–पुं० [सं० करभ] ऊँट । पुं० [सं० कलिका] फूल की

करहाट(क)–पुं० [सं०] १. जड़ । भसींड़ । २. कमल का छत्ता

कराँकुल–पुं० [सं० कलांकुर] पास रहनेवाला कूँज नामक जलपक्षी

करा*–स्त्री० = कला ।

कराई–स्त्री० [हिं० केराना] आदि के ऊपर की भूसी ।

स्त्री० [हिं० करना] करने का भाव

*स्त्री० [हिं० काल] कालापन ।

करात–पुं० [अ० कीरात] चार एक तौल जो सोना-चाँदी और तौलने के काम में आती है । (

कराना–स० हिं० 'करना' का प्रे० ।

करावा–पुं० [अ०] शीशे का बरतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं ।

करामात–स्त्री० [अ०] कोई अलौकिक कार्य या व्यापार जो लाया जाय । चमत्कार । (मिरैकल

करामाती–वि० [हिं० करामात] मात सम्बन्धी । जिसमें करामात

करामात का करश्मा दिखानेवाला।

करार-पुं० [अ०] १. स्थिरता। ठहराव। २. धैर्य। तसल्ली। सन्तोष। ३. आराम। चैन। ४. वादा। ५. प्रतिज्ञा।

करारना*-अ० [अनु०] कर्कश स्वर निकालना।

करारा-पुं० [सं० कराल] १. नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बना हो। २. टीला। दूह।

वि० [हिं० कड़ा, कर्रा] १. कठोर। कड़ा। २. दृढ़-चित्त। ३. इतना तला या सेंका हुआ कि तोड़ने से कुर कुर शब्द करे। ४. तेज। तीक्ष्ण। ५. अधिक गहरा या भारी। ६. बहुत कड़ा, बड़ा या पूरा। जैसे-करारा जवान, करारा जवाब।

करारोप-पुं० दे० 'अवाप्ति'।

करारोप्य-वि० दे० 'अवाप्य'।

कराल-वि० [सं०] [स्त्री० कराली] डरावना। भयानक।

करावा-पुं० [हिं० करना] कुछ जातियों में विधवा के साथ किया जानेवाला विवाह।

कराहना-अ० [हिं० करना + आह] मुँह से व्यथासूचक शब्द निकालना। आह आह करना।

रिंद*-पुं० [सं० करीन्द्र] १. बड़ा हाथी। २. इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

रि-पुं० [सं०] [स्त्री० करिणी] हाथी।

रिआ†-वि० = काला।

रिया*-पुं० [सं० कर्ण] १. नाव की तवार। २. केवट। मल्लाह।

†-वि० दे० 'काला'।

रिल*-स्त्री० [हिं० कोंपल] कोंपल। नया कल्ला।

वि० दे० 'काला'।

रि-वदन-पुं० [सं०] गणेश।

रिहाँव*-पुं० = कमर।

-वि० [सं०] १. 'कर' (करनेवाला) का स्त्री०। करनेवाली। जैसे-प्रलयकरी, शुभकरी। २. प्राप्त या उत्पन्न करनेवाला। जैसे-अर्थ-करी विद्या।

स्त्री० [सं० करि] हाथी की मादा। हथनी।

*स्त्री० १. दे० 'कली'। २. दे० 'कड़ी'।

करीना-पुं० [अ०] ढंग। तरीका।

करीब-क्रि० वि० [अ०] १. समीप। पास। निकट। २. लगभग।

करील-पुं० [सं० करीर] एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं।

करुआ†*वि० दे० 'कड़ुआ'।

पुं० दे० 'करवा'।

करुआना*-अ० दे० 'कड़ुआना'।

करुखी*-स्त्री० दे० 'कनखी'।

करुण-पुं० [सं०] १. दे० 'करुणा'। २. परमेश्वर।

वि० जिसके मन में करुणा हो। करुणा-युक्त। दयार्द्र।

करुणा-स्त्री० [सं०] १. मन का वह दुःखद भाव जो दूसरों के कष्ट देखने से उत्पन्न होता है और जो वे कष्ट दूर करने की प्रेरणा करता है। दया। रहम। २. प्रिय के वियोग से होनेवाला दुःख।

करुणानिधि-वि० [सं०] जिसका हृदय करुणा से भरा हो। बहुत बड़ा दयालु।

करुणामय-वि० [सं०] जिसमें बहुत अधिक करुणा हो।

करुणार्द्र-वि० [सं०] जिसका मन करुणा से द्रवित हुआ हो।

करेजा*-पुं० दे० 'कलेजा'।

करेणु-पुं० [सं०] हाथी।

करेब-स्त्री० [अं० क्रेप] एक प्रकार का महीन रेशमी कपड़ा।

करेर*†-वि० दे० 'कठोर'।

करेला-पुं० [सं० कारुवेल्ल] एक बेल जिसके हरे कड़ुए फल तरकारी के काम में आते हैं।

करेवा-पुं० [हिं० करना] कुछ विशिष्ट

जातियों में विधवा स्त्री को पत्नी के रूप में रखने की प्रथा। धरेवा।

करैत–पुं० [हिं० काला] काला साँप।

करैया*–वि० दे० 'कर्त्ता'।

करैल–स्त्री० [हिं० काला] एक प्रकार की काली मिट्टी जो प्रायः तालों के किनारे मिलती है।

करोछना†–स० = खुरचना।

करोटी*–स्त्री० दे० 'करवट'।

करोड़–वि० [सं० कोटि] सौ लाख की संख्या। १०००००००।

करोड़पति–वि० [हिं० करोड़ + सं० पति] वह जिसके पास करोड़ों रुपये हों।

करोड़ी–पुं० [हिं० करोड़] मुसलमानी शासन-काल का एक राजकीय पद।

करोड़ों–वि० [हिं० करोड़] १. कई करोड़। २. बहुत अधिक। जैसे–करोड़ों जीव-जन्तु।

करोर–वि० = करोड़।

करौंछना–स० दे० 'खुरचना'।

करौंछा*†–वि० [हिं० काला] कुछ-कुछ काला।

करौंदा–पुं० [सं० करमर्द] १. एक कँटीला झाड़ जिसके फल छोटे और खट्टे होते हैं।

करौट*–स्त्री० दे० 'करवट'।

करौत–पुं० दे० 'आरा'।

करौला*–पुं० [हिं० रौला] हँकवा करनेवाला। शिकारी।

करौली–स्त्री० [सं० करवाली] एक प्रकार की सीधी छुरी।

कर्क(ट)–पुं० [सं०] १. केकड़ा। २. बारह राशियों में से चौथी राशि जिसमें पुनर्वसु नक्षत्र का अंतिम चरण तथा पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र हैं। (कैन्सर)।

कर्कर–पुं० दे० 'कुरंड'।

कर्कश–वि० [सं०] [भाव० कर्कशता] १. कठोर। कड़ा। जैसे–कर्कश स्वर। २. खुरखुरा। काँटेदार। ३. तीव्र। प्र

कर्कशा–वि० स्त्री० [सं०] झगड़ा करनेवाली। लड़ाकी। (

कर्ज़–पुं० [अ०] ऋण। उधार।

मुहा०–कर्ज़ उतारना = कर्ज़ **कर्ज़ खाना** = (क) कर्ज़ लेना। (ख) होना। वश में होना।

कर्ज़दार–वि० [फा०] उधार लेने

कर्ण–पुं० [सं०] १. सुनने की कान। २. कुन्ती का सबसे बड़ा बहुत दानी था।

मुहा०–कर्ण का पहरा = प्रभ (दान-पुण्य का समय)

३. नाव की पतवार।

कर्ण-कटु–वि० [सं०] [भाव० क कानों को अप्रिय लगनेवाला। जो कर्कश लगे।

कर्णधार–पुं० [सं०] १. माँझी। २. पतवार। किलवारी। ३. संरक्षता में कोई काम होता हो।

कर्णफूल–पुं० दे० 'करनफूल'।

कर्ण-भूषण–पुं० [सं०] कान में एक गहना।

कर्णवेध–पुं० दे० 'कन-छेदन'।

कर्णाटी–स्त्री० [सं०] १. कर्णाट स्त्री। २ कर्णाट देश की भ शब्दालंकार की एक वृत्ति जिस क-वर्ग के अक्षर आते हैं।

कर्णिका–स्त्री० [सं०] १. कर्ण हाथ की बिचली उँगली। ३. कल

कर्णिकार–पुं० [सं०] कनक-च

कर्त्तन–पुं० [सं०] १. काटना। २. कातना (सूत आदि)।

कर्त्तनी–स्त्री० [सं०] कैंची।

कर्त्तरी–स्त्री० [सं०] १. कैंची। २. कटारी। ३. करताल।

कर्त्तव्य–वि० [सं०] १. करने २. जिसे करना आवश्यक हो।

० अवश्य करने योग्य कार्य्य। धर्म्म।
। (ड्यूटी)
०-कर्त्तव्याकर्त्तव्य = करने और न
ने योग्य काम।
व्यता-स्त्री० [सं०] १. कर्त्तव्य का भाव।
०-इति-कर्त्तव्यता = उद्योग की हद।
कर्म-कांड कराने की दक्षिणा।
-वि० [सं०] १. करनेवाला। २. रचने
बनानेवाला।
०-कर्त्ता-धर्त्ता = (क) जिसे किसी कार्य
सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों। (ख)
कुछ करने-धरनेवाला।
१. वह जो घर का मालिक हो और
की आज्ञा से घर के सब काम होते हों।
व्याकरण के छः कारकों में से पहला
से क्रिया के करनेवाले का बोध होता है।
कर्त्तार। ईश्वर।
ार-पुं० [सं० कर्तृ] ईश्वर।
-वि० [सं०] किया हुआ। सम्पादित।
कार्यकर्त्ताओं या कर्मचारियों का सारा
ह। (स्टाफ़)
त्व-पुं० [सं०] १. कर्त्ता का भाव।
कर्त्ता का धर्म्म।
-निरीक्षक-पुं० [सं०] वह जो कर्त्त-
या कर्मचारियों के कामों का निरीक्षण
ा हो। (स्टाफ़ इन्स्पेक्टर)
वर्ग-पुं० [सं०] किसी कार्यालय के
चारियों का समूह या वर्ग। कर्तृक।
ाफ़)
वाचक-वि० [सं०] कर्त्ता का बोध
नेवाला। (व्या०)
-वाच्य-पुं० [सं०] व्याकरण में वाच्य
) के दो भेदों में से एक, जो इस
का सूचक होता है कि जो कुछ कहा
ा है, वह कर्त्ता की प्रधानता के विचार
है। 'कर्म-वाच्य' का उलटा। (ऐक्टिव
) जैसे-राम ने पुस्तक पढ़ी।
दम-पुं० [सं०] १. कीचड़। २. पाप।

कर्पटी-पुं० [सं० कर्पटिन्] [स्त्री० कर्पटिनी] चिथड़े-गुदड़े पहननेवाला। भिखारी।

कर्पर-पुं० [सं०] १. कपाल। खोपड़ी। २. खप्पर। ३. कछुए की खोपड़ी। ४. एक प्रकार का शस्त्र।

कर्बुर-पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. धतूरा। ३. जल। ४. पाप। ५. राक्षस।

वि० रंग-बिरंगा। चित-कबरा।

कर्म-पुं० [सं० कर्मन् का प्रथमा रूप] १. वह जो किया जाय। क्रिया। कार्य। काम। २. धार्मिक कृत्य। ३. व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। ४. भाग्य।

कर्म-कांड-पुं० [सं०] [कर्त्ता कर्मकांडी] १. धर्म-संबंधी कृत्य। २. वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्म्मों का विधान हो। ३. किसी धर्म्म के वे धार्मिक और औपचारिक कृत्य जो विशेष अवसरों पर होते हैं।

कर्मकांडी-पुं० [सं० कर्मकांडिन्] वह जो कर्मकांड कराता हो।

कर्मकार-पुं० [सं०] १. लोहे या सोने का काम बनानेवाला। २. नौकर। सेवक।

कर्म-क्षेत्र-पुं० [सं०] १. कार्य्य करने का स्थान। २. भारतवर्ष।

कर्मचारी-पुं० [सं० कर्मचारिन्] १. काम करनेवाला। कार्यकर्त्ता। २. वह जिसके हाथ में कोई प्रबन्ध या कार्य हो। (मिनिस्टीरियल सर्वेंट)

कर्मठ-वि० [सं०] १. काम में चतुर। २. धर्म-संबंधी कृत्य करनेवाला। कर्मनिष्ठ।

कर्मणा-क्रि० वि० [सं०] कर्म से। कर्म के अनुसार। जैसे—कर्मणा जाति मानना।

कर्मण्य-वि० [सं०] [भाव० कर्मण्यता] बहुत और अच्छा काम करनेवाला।

कर्मधारय-पुं० [सं०] वह समास जिसमें पहला पद विशेषण हो। जैसे—कमल-नयन।

कर्म-निष्ठ–वि॰ [सं॰] १. संध्या, अग्निहोत्र आदि कर्त्तव्य करनेवाला । क्रियावान् । २. अच्छी तरह कार्य करनेवाला ।

कर्म-प्रधान–वि॰ [सं॰] भौतिक पदार्थों, उनके कार्यों अथवा उनसे होनेवाली अनुभूतियों आदि से सम्बन्ध रखनेवाला । (ऑब्जेक्टिव)

कर्म-भोग–पुं॰ [सं॰] किये हुए कर्मों का फल ।

कर्म-योग–पुं॰ [सं॰] १. चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र-विहित कर्म । २. कर्त्तव्य का वह पालन जो सिद्धि और विफलता में समान भाव रखकर किया जाय ।

कर्मयोगी–पुं॰ [सं॰ कर्मयोगिन्] वह जो कर्मयोग के सिद्धान्तों के अनुसार काम करे ।

कर्म-रेख–स्त्री॰ [सं॰ कर्म + रेखा] कर्म या भाग्य का लेख ।

कर्म-वाच्य–पुं॰ [सं॰] व्याकरण में वाक्य (देखें) के दो भेदों में से एक जो इस बात का सूचक होता है कि जो कुछ कहा गया है, वह कर्म की प्रधानता के विचार से है । 'कर्तृ-वाच्य' का उलटा । (पैसिव वॉयस) जैसे–राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी गई ।

कर्म-वाद–पुं॰ [सं॰] १. मीमांसा-दर्शन, जिसमें कर्म की प्रधानता है । २. दे॰ 'कर्म-योग' ।

कर्म-विपाक–पुं॰ [सं॰] पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल ।

कर्मशील–पुं॰ [सं॰] [भाव॰ कर्मशीलता] १. वह जो फल की अभिलाषा छोड़कर काम करे । कर्मवान् । २. उद्योगी ।

कर्महीन–वि॰ [सं॰] [भाव॰ कर्महीनता] अभागा ।

कर्मिष्ठ–वि॰ दे॰ 'कर्म-निष्ठ' ।

कर्मी–वि॰ [सं॰ कर्मिन्] [स्त्री॰ कर्मिणी] १. कर्म करनेवाला । २. मजदूर ।

कर्मेंद्रिय–स्त्री॰ [सं॰] वे इंद्रियाँ जिनसे काम किये जाते हैं । जैसे–हाथ, पैर आदि ।

कर्रा–वि॰ [हिं॰ कड़ा] कड़ा ।

कर्राना*†–अ॰ [हिं॰ कर्रा] कड़

कर्ष–पुं॰ [सं॰] १. खिंचाव । २. वैद्यक में १६ माशे की तौ प्रकार का पुराना सिक्का । ४. जोताई । ५. वह भार या कुछ अनिष्ट की आशंका हो ।

कर्षक–पुं॰ [सं॰] १. २. किसान । खेतिहर ।

कर्षण–पुं॰ [सं॰] [वि॰ १. खींचना । २. खरोंचकर ३. जमीन जोतना ।

कर्षना*–स॰ दे॰ 'खींचना' ।

कलंक–पुं॰ [सं॰] [वि॰ दाग । धब्बा । २. चन्द्रमा प दाग । ३. कालिख । कजली । बदनामी । ५. ऐब । दोष ।

कलंकी–वि॰ [सं॰ कलंकित कलंकिनी] जिसे कलंक लगा हो पुं॰ [सं॰ कल्कि] कल्कि अव

कलंदर–पुं॰ [अ॰ कलंदूर] प्रकार के मुसलमान फकीर । २. बन्दर नचानेवाला ।

कल–पुं॰ [सं॰] अव्यक्त म जैसे–पक्षियों या नदियों का । वि॰ १. सुंदर । २. मधुर । स्त्री॰ [सं॰ कल्प] १. आरो रुस्ती । २. आराम । सुख । **मुहा॰**–**कल से** = (क) चैन धीरे-धीरे । क्रि॰ वि॰ [सं॰ कल्य] दूसरा दिन । आनेवाला दिन । हुआ अन्तिम दिन । **मुहा॰**–**कल का** = थोड़े दिन स्त्री॰ [सं॰ कला] १. पार्श्व पहलू । जैसे–किसी कल चैन न २. अंग । अवयव । ३. युक्ति ४. पेचों और पुरजों से बनी हुई

उपकरण जिससे कोई काम लिया जाय।
।
०-कलदार = (यंत्र से बना) रुपया।
ेंच। पुर्जा।
[हिं०] 'काला' शब्द का संक्षिप्त
। (यौगिक में, शब्दों के पहले ;
ल-मुहाँ)
-स्त्री० [अ०] [वि० कलईदार] १.
। २. राँगे आदि का वह पतला लेप
बरतनों आदि पर उन्हें चमकाने के
ए लगाते हैं। मुलम्मा ३. बाहरी
मक-दमक। तड़क-भड़क।
०-कलई खुलना = असली भेद
ना। वास्तविक रूप। प्रकट होना।
लई न लगना = युक्ति न चलना।
दीवारों पर का चूने का लेप। सफेदी।
-कंठ-पुं० [सं०] [स्त्री० कलकंठी]
कोयल। २. हंस।
मीठी ध्वनि करनेवाला।
-पुं० [अ० क़लक़] १. बेचैनी।
राहट। २. रंज। दुःख। खेद।
ना*-अ० [हिं० कलकल] १.
ाना। शोर करना। २. चीत्कार
ना।
ल-पुं० [सं०] १. झरनों आदि के
के गिरने या चलने का शब्द। २.
हल। शोर।
० झगड़ा। वाद-विवाद।
ा-पुं० [तु० कल्गी] १. मरसे की
का एक पौधा। जटाधारी। २. दे०
गी'।
ी-स्त्री० [हिं० कलगा, मि० सं०
] कुछ पक्षियों के सुंदर पर या
आकार के बने गुच्छे, जो टोपी, पगड़ी
में लगाये जाते हैं।
ी-स्त्री० [सं० कर + रक्षा] बड़ी
का चम्मच जिससे बटलोई की दाल
आदि चलाते या निकालते हैं।

कल-जिब्भा-वि० [हिं० काला + जीभ] [स्त्री० कल-जिब्भी] १. (पशु) जिसकी जीभ काली हो। २. (मनुष्य) जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः पूरी होकर रहें।

कलत*-स्त्री० [सं० कलत्र] पत्नी। जोरू।

कलत्थना*-अ० = छटपटाना।

कलत्र-पुं० [सं०] पत्नी। जोरू।

कलदार-वि० [हिं० कल + दार] जिसमें कोई कल या पेंच लगा हो।
पुं० सरकारी रुपया।

कलधौत-पुं० [सं०] १. सोना। २. चाँदी।

कलन-पुं० [सं०] [वि० कलित] १. उत्पन्न करना। बनाना। २. धारण करना। ३. आचरण। ४. लगाव। सम्बन्ध। ५. गणित की क्रिया करना। हिसाब लगाना। (कैलकुलेशन) जैसे-संकलन, व्यवकलन। ६. ग्रहण।

कलना-स्त्री० [सं०] १. धारण या ग्रहण करना। २. विशेष बातों का ज्ञान प्राप्त करना। ३. गणना। विचार। ४. लेन-देन। व्यवहार।

कलप-पुं० [सं० कल्प] १. कलफ। २. खिजाब। ३. दे० 'कल्प'।

कलपना-अ० [सं० कल्पन] १. विलाप करना। बिलखना। २. कल्पना करना।
स० [सं० कल्पन] काटना या कतरना।

कलपाना-स० हिं० 'कलपना' का प्रे०।

कलफ-पुं० दे० 'माँड़ी'।

कल-बल-पुं० [सं० कला + बल] उपाय। दाँव-पेंच। युक्ति।
पुं० [अनु०] शोर-गुल।

कलबूत-पुं० [फा० कालबुद] १. साँचा। २. वह ढाँचा जिसपर चढ़ाकर जूता सीया या टोपी, पगड़ी आदि बनाई जाती है।

कलभ-पुं० [सं०] १. हाथी या उसका बच्चा। २. ऊँट का बच्चा।

कलम-स्त्री० [सं०] १. वह उपकरण

जिसकी सहायता से, स्याही के संयोग से, कागज आदि पर लिखते हैं। लेखनी।

मुहा०–कलम चलना = लिखाई होना। **कलम चलाना** = लिखना। **कलम तोड़ना** = अच्छी चीज लिखने की हद कर देना।

२. बही-खाते आदि में लिखा जानेवाला कोई पद। (आइटम) जैसे–इसमें एक कलम छूट गई है। ३. पेड़ की वह टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैबन्द लगाने के लिए काटी जाय।

मुहा०–कलम करना = काटना-छाँटना।

४. कन-पटी के पास का वह स्थान जिसपर गाल की ओर कुछ दूर तक बाल रहते हैं। ५. बालों या गिलहरी की पूँछ की बनी वह कूँची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भरते हैं। ६. चित्र अंकित करने की किसी विशेष स्थान या परम्परा की शैली। जैसे–पहाड़ी कलम, राजस्थानी कलम। ७. शीशे का कटा हुआ लम्बा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है। ८. किसी चीज का जमा हुआ छोटा टुकड़ा। रवा। ९. वह औजार जिससे महीन चीज काटी, खोदी या नकाशी जाय।

कलमख–पुं० दे० 'कल्मष'।

कलम-छोड़ हड़ताल–स्त्री० किसी कार्यालय या विभाग में लिखने-पढ़नेवाले कर्मचारियों की वह हड़ताल जिसमें वे अपने स्थान पर बैठे रहकर कुछ समय के लिए लिखने-पढ़ने का काम बिलकुल बन्द कर देते हैं। (पेन-डाउन स्ट्राइक)

कलम-तराश–पुं० [फा०] कलम बनाने का चाकू।

कलम-दान–पुं० [फा०] कलम, दावात आदि रखने का पात्र।

कलमलना*–अ० [अनु०] १. दाब में पड़ने के कारण अंगों का हिलना-डोलना। २. विकल या बेचैन होना। ३. उद्विग्न और विचलित होना।

कलमस*–पुं० दे० 'कल्मष'।

कलमा–पुं० [अ० कल्मः] १. वा

वह वाक्य जो मुसलमानी धर्म

मंत्र है।

मुहा०–कलमा पढ़ना=मुसलमान

कलमी–वि० [फा०] १. लिखा

लिखित। २. जो कलम लगाने से

हुआ हो। जैसे–कलमी आम।

कलम या रवे के रूप में हो। जैसे

शोरा।

कल-मुँहाँ–वि० [हिं० काला +

जिसका मुँह काला हो। २. क

लांछित। ३. अभागा। (गाली)

कलयिता–पुं० [सं० कलयितृ]

करने या हिसाब लगानेवाला। गणि

वाला। (कैलकुलेटर)

कल-रव–पुं० [सं०] [वि० कल

१. मधुर शब्द। २. कोकिल। को

कलल–पुं० [सं०] गर्भाशय में

बुलबुला जो बढ़कर गर्भ का रूप धारण

कलवरिया–स्त्री० [हिं० कलवार

वार की दूकान। शराब बिकने की

कलवार–पुं० [सं० कल्यपाल] ए

जो शराब बनाती और बेचती है।

कलश–पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा०

१. घड़ा। गगरा। २. मन्दिर

शिखर या ऊपरी भाग। ३. चोटी।

कलसा–पुं० [सं० कलश] [स्त्री०

कलशी] १. पानी रखने का बरतन।

घड़ा। २. मन्दिर का शिखर।

कलहंस–पुं० [सं०] १. हंस। २.

३. श्रेष्ठ राजा। ४. परमात्मा।

कलह–पुं० [सं०] [वि० कलहकारी,

विवाद। झगड़ा।

कलहांतरिता–स्त्री० [सं०] वह

जो नायक का अपमान करके पछता

कलहार*–वि० [स्त्री० कलहारी] दे०

कलही-वि० [सं० कलहिन्] [स्त्री०कलहिनी] झगड़ालू। लड़ाका।

कलाँ-वि० [फा०] बड़ा। दीर्घाकार।

कला-स्त्री० [सं०] १. अंश। भाग। २. चन्द्रमा या उसके प्रकाश का सोलहवाँ भाग। ३. सूर्य या उसके प्रकाश का बारहवाँ भाग। ४. समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है। ५. राशि के तीसवें अंश का साठवाँ भाग। ६. राशि-चक्र के एक अंश का ६०वाँ भाग। ७. छंदः-शास्त्र में मात्रा। ८. किसी कार्य को भली-भाँति करने का कौशल। हुनर। (काम-शास्त्र के अनुसार कलाएँ ६४ हैं।) ९. विभूति। तेज। १०. शोभा। छटा। प्रभा। ११. अद्भुत कार्य। १२. कौतुक। खेलवाड़। १३. छल। कपट। १४. ढंग। युक्ति। १५. नटों की एक कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचे करके उलटता है। १६. सभा या समिति के कार्यों का संक्षिप्त विवरण। (मिनट)

कलाई-स्त्री० [सं० कलाची] हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है। मणिबंध। गट्टा।

स्त्री० [सं० कलाप] सूत का लच्छा।

कलाकंद-पुं० [फा०] बरफी। (मिठाई)

कलाकार-पुं० [सं०] वह जो कोई कलापूर्ण कार्य करता हो। कला-कुशल। जैसे—कवि, अभिनेता आदि। (आर्टिस्ट)

कला-कौशल-पुं० [सं०] १. किसी कला की निपुणता। कारीगरी। २. शिल्प।

कलादा*-पुं० दे० 'कलावा'।

कलाधर-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. शिव। ३. वह जो कलाओं का ज्ञाता हो।

कलानिधि-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

कला-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पुस्तक जिसमें किसी सभा-समिति का संक्षिप्त कार्य-विवरण लिखा जाता है। (मिनट बुक)

कलाप-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। जैसे क्रिया-कलाप। २. मोर की पूँछ। ३. तूणीर। तरकश। ४. कमरबन्द। पेटी। ५. चन्द्रमा। ६. कलावा। ७. व्यापार। ८. जेवर। गहना।

कलापिनी-स्त्री० [सं०] रात्रि। रात।

कलापी-स्त्री० [सं० कलापिन्] [स्त्री० कलापिनी] १. मोर। २. कोकिल।

वि० १. जिसके पास तूणीर या तरकश हो। २. झुंड में रहनेवाला।

कलाबत्तू-पुं० [तु० कलाबतून] रेशम पर बटा हुआ सोने-चाँदी आदि का तार।

कलाबाज-वि० [हिं+फा०] [भाव० कलाबाजी] नट की क्रिया करने या कसरत दिखानेवाला।

कलाम-पुं० [अ०] १. वाक्य। वचन। २. बात-चीत। ३. उज्र। एतराज।

कलार(ल)-पुं० दे० 'कलवार'।

कलावंत-पुं० [सं० कलावान्] १. गवैया। २.कलाबाजी करनेवाला। नट। ३. गाने-बजाने का काम करनेवाली एक मुसलमानी जाति।

वि० किसी कला का ज्ञाता। कलाकार।

कलावा-पुं० [सं० कलापक] [स्त्री० अल्पा० कलाई] १. सूत का लच्छा। २. वह डोरा जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ पर बाँधते हैं। ३. हाथी की गरदन।

कलावान्-वि० [सं०] [स्त्री० कलावती] कला का ज्ञाता। कला-कुशल।

कलिंग-पुं० [सं०] १. कुलंग पक्षी। २. तरबूज। ३. एक प्राचीन देश जो गोदावरी और वैतरणी नदी के बीच में था।

कलिंद-पुं० [सं०] सूर्य्य।

कलिंदजा-स्त्री० [सं०] यमुना।

कलिंदी*-स्त्री० दे० 'कालिंदी'।

कलि-पुं० [सं०] १. कलह। झगड़ा। २. पाप। ३. क्लेश। ४. संग्राम। युद्ध। ५. दे० 'कलि युग'।

कलिका-स्त्री० [सं०] कली। (फूल की)

कलि-काल–पुं० [सं०] कलियुग।

कलिया–पुं० [अ० क़लियः] पकाया हुआ रसेदार मांस।

कलि युग–पुं० [सं०] चार युगों में से अन्तिम और वर्त्तमान युग, जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता मानी जाती है।

कलींदा–पुं० [सं० कलिंद] तरबूज।

कली–स्त्री० [सं० कलिका] १. बिना खिला हुआ फूल।

मुहा०–दिल की कली खिलना = चित्त प्रसन्न होना।

२. कुरते आदि में लगनेवाला तिकोना टुकड़ा। ३. हुक्के का नीचेवाला भाग। स्त्री० [अ० क़लई या सं० कलिका] १. पत्थर का चूना जो दीवारों पर पोता जाता है। २. इस प्रकार चूने से दीवारों पर की जानेवाली पोताई। सफेदी।

कलीट*–वि० [हिं० काला] काला-कलूटा।

कलुष–पुं० [सं०] [वि० कलुषित, कलुषी] १. मलनिता। मैल। २. पाप। ३. क्रोध। ४. कोई बुरी बात या दूषित भाव।

वि० [स्त्री० कलुषा, कलुषी] १. मलिन। मैला। २. निन्दित। बुरा।

कलूटा–वि० [हिं० काला] [स्त्री० कलूटी] काले रंग का। बहुत काला।

कलेऊ–पुं० दे० 'कलेवा'।

कलेजा–पुं० [सं० यकृत् से कृज] १. प्राणियों का वह अवयव जो छाती में बाईं ओर होता है और जिससे शरीर में रक्त चलता है। हृदय। दिल।

मुहा०–कलेजा काँपना = बहुत डर लगना। **कलेजा थामकर बैठ या रह जाना** = दुःख का वेग दबाकर रह जाना॥ **कलेजा धड़कना** = भय से व्याकुल होना। **कलेजा निकालकर रखना** = अत्यन्त प्रिय वस्तु या सर्वस्व दे देना। **कलेजा पक जाना** = दुःख सहते-सहते तंग आ जाना। **कलेजा फट**… मन में अत्यन्त कष्ट होना। **कलेजा**… **को आना** = बहुत घबराना या… होना। **कलेजे पर साँप लोटना**… अत्यन्त दुःख होना।

पद–कलेजे का टुकड़ा = परम… **पत्थर का कलेजा** = ऐसा कठोर… जिसमें दया, प्रेम आदि बिल्कुल न…

२. छाती। वक्षःस्थल।

मुहा०–कलेजे से लगाना =… लगाना। आलिंगन करना।

३. जीवट। साहस। हिम्मत।

कलेजी–स्त्री० [हिं० कलेजा] बकरे… के कलेजे का मांस।

कलेवर–पुं० [सं०] १. शरीर। दे…

मुहा०–कलेवर बदलना = (क)… शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण… (ख) जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्त्ति के… पर नई मूर्त्ति स्थापित होना।

२. ढाँचा।

कलेवा–पुं० [सं० कल्पवर्त्त] १. …

२. विवाह की एक रीति जिसमें वर… में भोजन करने जाता है। खिचड़ी।

कलैया–स्त्री० [सं० कला] सिर नीचे… पैर ऊपर करके उलट जाना। कलाबाजी…

मुहा०–कलैया खाना = एक पक्ष… छोड़कर दूसरे पक्ष में हो जाना।

कलोर–स्त्री० [सं० कल्या] वह गाय… बरदाई या ब्याई न हो।

कलोल–पुं० [सं० कल्लोल] [क्रि०… लना] आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा।

कलौंछ–स्त्री०[हिं० काला + औंछ (प्रत्य… १. कालापन। कालिमा। २. धूएँ की कालि…

कलौंजी–स्त्री० [सं० कालाजाजी] १… रैला। २. भूनी हुई मसालेदार साबुत तर…

कलौंस–स्त्री० दे० 'कलौंछ'।

स्त्री० १. कालापन। २. कलंक।

कल्क–पुं० [सं०] १. चूर्ण। बुकनी।…

ठी । ३. गूदा । ४. मैल । कीट । ५.
प । ६. अवलेह ।

ल्कि-पुं० [सं०] विष्णु का दसवाँ अवतार
जो एक कुमारी कन्या के गर्भ से होगा ।

ल्प-पुं० [सं०] १. विधान । विधि । २. वेद
के छः अंगों में से एक जिसमें यज्ञादि का
विधान है । ३. वैद्यक में शरीर या किसी अंग
को फिर से नया और नीरोग करने की युक्ति ।
जैसे-केश-कल्प । ४. काल का एक विभाग
जिसमें १४ मन्वंतर या ४३२०००००००
र्ष होते हैं ।
वि० तुल्य । समान । जैसे-ऋषि-कल्प ।

ल्पक-पुं० [सं०] नाई । हज्जाम ।
वि० १. रचनेवाला । २. काटनेवाला । ३.
ल्पना करनेवाला ।

ल्पतरु-पुं० [सं०] कल्प-वृक्ष ।

ल्पनक-वि० [सं० कल्पना] १. (व्यक्ति)
जिसमें कल्पना-शक्ति यथेष्ट या बहुत हो ।
(कार्य) जिसमें कल्पना-शक्ति का विशेष
रूप से प्रयोग हुआ हो । (इमैजिनेटिव)

ल्पना-स्त्री० [सं०] १. अच्छी रचना ।
बनावट । २. वह शक्ति जो मन में नई,
अनोखी, अनदेखी, अनसुनी आदि बातों के
रूप उपस्थित करती है । उद्भावना ।
(इमैजिनेशन) ३. किसी वस्तु में दूसरी
वस्तु का आरोप । ४. मान लेना । अनु-
मान करना ।

ल्पनीय-वि० [सं०] १. जिसकी कल्पना
ना हो । २. जिसकी कल्पना की जा सकती
कल्पना में आने योग्य । (इमैजिनेबुल)

ल्पलता-स्त्री० दे० 'कल्प-वृक्ष' ।

ल्पवास-पुं० [सं०] माघ में महीने भर
तट पर रहना ।

ल्पांत-पुं० [सं०] कल्प (दे०'कल्प'
) का अन्त जिसमें सारी सृष्टि नष्ट हो
है । प्रलय ।

न-वि० [सं०] १. जिसकी कल्पना
हो । २. मन से गढ़ा हुआ । मन-

गढ़ंत । ३. बनावटी । नकली ।

कल्पितार्थ-पुं० [सं०] १. केवल तर्क के उद्देश्य से कोई बात कुछ देर के लिए मान लेना । २. यह सोचना या मान लेना कि यदि कहीं ऐसा हुआ, (तो क्या होगा) । (हाइपॉथेसिस)

कल्मश-पुं० [सं०] १. पाप । २. मैल ।

कल्यपाल-पुं० [सं०] कलवार ।

कल्याण-पुं० [सं०] १. मंगल । भलाई । २. संगीत में एक प्रकार का राग ।

कल्लर-पुं० [देश०] १. नोनी मिट्टी । २. रेह । ३. ऊसर । बंजर ।

कल्ला-पुं० [सं० करीर] १. पौधे का अंकुर । २. नई टहनी । ३. मनुष्य की गरदन का पिछला भाग । ४. लालटेन या लम्प का सिरा, जिसमें बत्ती जलती है । (बर्नर)
पुं० [फा०] जबड़ा ।

कल्ले-दराज-वि० [फा०] [भाव० कल्ले-दराजी] बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला । वाचाल ।

कल्लोल-पुं० [सं०] १. पानी की लहर । तरंग । २. आमोद-प्रमोद । क्रीड़ा ।

कल्लोलिनी-स्त्री० [सं०] नदी ।

कल्हारना-स० [हिं० कड़ाह] कड़ाही में भूनना या तलना ।
अ० [सं० कल्ल = शोर] चिल्लाना ।

कवच-पुं० [सं०] [वि० कवची] १. वह ऊपरी मोटा छिलका या आवरण जिसके अन्दर या नीचे कोई फल या जीव रहता हो । (शेल) जैसे—बादाम या कछुए का ऊपरी आवरण २. लोहे की कड़ियों का वह आवरण जो लड़ाई के समय योद्धा पहनते थे । सन्नाह । सँजोया । ३. नगाड़ा । डंका । ४. तंत्र के अनुसार वे मंत्र जो अपने शरीर के अंगों की रक्षा के लिए पढ़े जाते हैं । ५. वह मंत्र, यंत्र आदि जो लिखकर और जंतर में भरकर विपत्ति आदि से रक्षा के लिए पहने जाते हैं । जंतर । तावीज ।

वि० जिसमें किसी उग्र प्रभाव से स्वयं रक्षित रहने अथवा आवृत पदार्थ को रक्षित रखने की शक्ति या गुण हो। (प्रूफ) जैसे–अग्नि-कवच, जल-कवच आदि।

कवच-धारी–पुं० [सं०] वह जिसके ऊपर कवच हो या जो कवच पहने हो।

कवर–पुं० [सं०] [स्त्री० कवरी] १. केश-पाश। २. गुच्छा।
पुं० दे० 'कौर'।
पुं० [अं०] १. ढकना। २. पुस्तक का आवरण-पृष्ठ।

कवरी–स्त्री० [द्रविड़ से गृहीत, सं०] चोटी। जूड़ा।

कवल–पुं० [द्रविड़ से गृहीत, सं०] [वि० कवलित] कौर। ग्रास।

कवलित–वि० [सं०] खाया हुआ। जैसे–काल-कवलित।

कवायद–स्त्री० [अ० क़ायदा का बहु०] १. नियम। व्यवस्था। २. व्याकरण। ३. सिपाहियों की युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया।

कवि–पुं० [सं०] काव्य या कविता रचने-वाला। शायर।

कविता–स्त्री० [सं०] कवि की की हुई पद्यात्मक रचना। काव्य। शायरी। (पोएटरी)

कवित्त–पुं० [सं० कवित्व] १. कविता। काव्य। २. इकीस अक्षरों का एक वृत्त।

कवित्व–पुं० [सं०] कविता का भाव या गुण।

कविराज–पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ कवि। २. भाट। ३. वैद्यों की उपाधि।

कविलास–पुं० दे० 'कैलास'।

कश–पुं० [सं०] [स्त्री० कशा] चाबुक।
पुं० [फा०] १. खिंचाव।
यौ०–कश-मकश।
२. हुक्के या चिलम का दम। फूँक।

कशा–स्त्री० [सं०] कोड़ा।

कशिश–स्त्री० [फा०] आकर्षण।

कश्चित्–वि० [सं०] कोई।
सर्व० [सं०] कोई (व्यक्ति)।

कश्ती–स्त्री० दे० 'किश्ती'।

कश्मल–पुं० [सं०] १. पाप।

कश्मीर–पुं० [सं०] भारत के
का एक प्रसिद्ध पहाड़ी और
अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए
माना जाता है।

कश्मीरी–वि० [सं०] कश्मीर
कश्मीर देश का।
पुं० कश्मीर देश का निवासी।
स्त्री० कश्मीर देश की भाषा।

कश्मीरी कुंडल–पुं० [सं०]
पहनने का एक प्रकार का कुंडल
का बना होता था।

कष–पुं० [सं०] १. सान। २.
(पत्थर) ३. परीक्षा। जाँच।

कषाय–वि० [सं०] १. कसैला। २.
३. गेरू के रंग का। गैरिक।
पुं० [सं०] क्रोध, लोभ आदि

कष्ट–पुं० [सं०] १. मन में
अप्रिय अनुभव जिससे मनुष्य
छुटकारा पाना चाहता है। पीड़ा।
२. संकट। मुसीबत।

कष्ट-कल्पना–स्त्री० [सं०] बहुत
खींचकर कठिनता से बैठनेवाली

कष्ट-साध्य–वि० [सं०]
होनेवाला।

कस–पुं० [सं० कष] १. कसे जाने या
क्रिया या भाव। कसावट। २. खींच
परीक्षा। जाँच। ४. कसौटी। ५.
की लचक जिससे उसकी उत्तमता
होती है। ६. बल। जोर। ७. वश।
मुहा०–कस का = जिसपर वश
कार हो।
८. रोक। अवरोध।
पुं० [सं० कषाय] १. 'कसाव'
रूप। २. सार। तत्व। ३. किसी

निकाला हुआ रस, अरक या आसव।

-क्रि० वि० [सं० कीदृश्] १. कैसे। २. कैसा। ३. क्यों।

सक-स्त्री० [सं० कष] १. हलका या मीठा दर्द। टीस। २. बहुत दिनों का भीतरी द्वेष या वैर। ३. हौसला। अभिलाषा।

सकना-अ० [हिं० कसक] हलका दर्द करना। सालना। टीसना।

सकुट-पुं० [हिं० काँसा] एक प्रकार की मिश्र धातु जिससे बरतन बनते हैं।

कसना-स० [सं० कर्षण] [भाव० कसन] १. बंधन दृढ़ करने के लिए डोरी आदि खींचना। २. बंधन खींचकर बँधी हुई तु को खूब दबाना।

मुहा०-कसकर = (क) जोर से। (ख) अच्छी तरह।

३. जकड़कर बाँधना। ४. पुरजों को दृढ़ करके बैठाना। ५. साज रखकर सवारी के लिए घोड़ा-गाड़ी आदि तैयार करना।

मुहा०-कसा-कसाया = चलने के लिए तैयार।

६. ठूसकर भरना।

अ० १. बंधन का खिंचना जिससे वह अधिक जकड़ जाय। २. बँधना। ३. खूब भर ना।

० [सं० कषण] १. परखने के लिए सोने को कसौटी पर रगड़ना। २. परखना। जाँचना। ३. तलवार को लचाकर उसके लोहे की परीक्षा करना। ४. दूध गाढ़ा करके खोया बनाना।

० [सं० कषण] कष्ट देना।

सनी-स्त्री० [हिं० कसना] स्त्रियों के पहनने की अँगिया। चोली।

सब-पुं० [अ०] १. परिश्रम। मेहनत। २. पेशा। रोजगार। ३. वेश्या-वृत्ति।

सबल-पुं० [हिं० कस + बल] १. बल। २. साहस। हिम्मत।

सबा-पुं० [अ० क़स्बः] [वि० कसबाती] गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती। (टाउन)

कसबी-स्त्री० [अ० क़सब] १. वेश्या। रंडी। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

कसम-स्त्री० [अ०] शपथ। सौगंध।

मुहा०-कसम उतारना = (क) शपथ का प्रभाव दूर करना। (ख) नाम-मात्र के लिए कोई काम करना। **कसम खाने को** = नाम मात्र को।

कसमल-पुं० दे० 'कश्मल'।

कसमसाना-अ० [अनु०] [भाव० कसमसाहट] १. उकताकर हिलना-डोलना। २. घबराना। ३. हिचकना।

कसमीर-पुं० दे० 'कश्मीर'।

कसर-स्त्री० [अ०] १. कमी। न्यूनता। त्रुटि। २. द्वेष। वैर।

मुहा०-कसर निकालना=बदला लेना।

३. टोटा। घाटा। ४. दोष। ऐब। ५. किसी वस्तु के सूखने या उसमें कूड़ा-करकट निकलने से होनेवाली कमी।

कसरत-स्त्री० [अ०] [वि० कसरती] व्यायाम।

क्रि० प्र०-करना।

स्त्री० [अ०] अधिकता। ज्यादती।

कसरती-वि० [अ० कसरत] १. कसरत करनेवाला। २. (कसरत से) पुष्ट और बलवान। जैसे—कसरती बदन।

कसहँड़ा-पुं० [हिं० काँसा] [स्त्री० कसहँड़ी] काँसे का एक प्रकार का बड़ा बरतन।

कसाई-स्त्री० [हिं० कसना] कसने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

पुं० [अ० क़स्साब] [स्त्री० कसाइन] १. वधिक। २. बूचड़।

वि० निर्दय। निष्ठुर। बे-रहम।

कसाना-अ० [हिं० काँसा] काँसे के योग से कसैला हो जाना।

स० हिं० 'कसना' का प्रे०।

क़सार-पुं० [सं० कृसर] चीनी मिला

हुआ भुना आटा या सूजी। पँजीरी।

कसाला-पुं० [सं० कष] १. कष्ट। तकलीफ। २. कठिन परिश्रम। मेहनत।

कसाव-पुं० [सं० कषाय] कसैलापन।

कसीटना*-स० दे० 'कसना'।

कसीदा-पुं० [फा० क़शीदः] कपड़े पर सूई-डोरे से बेल-बूटे बनाने का काम।

कसीस-पुं० [सं० कासीस] एक खनिज पदार्थ जो लोहे का एक विकार है।

कसीसना*-अ० दे० 'खींचना'।

कसूँभ-पुं० दे० 'कुसुम' (पौधा और उसके फूल)।

कसूँभी-वि० [हिं० कुसुम] १. कुसुम (पौधा) के रंग का। २. कुसुम (पौधा) के फूलों के रंग से रँगा हुआ।

कसूमल*-वि० [हिं० कुसुम या कसूँभ] कुसुम के रंग का। कसूँभी।

कसूर-पुं० [अ०] १. अपराध। २. दोष।

कसूरवार-वि० [फा०] दोषी।

कसेरा-पुं० [हिं० काँसा] काँसे, फूल आदि के बरतन बनाने और बेचनेवाला।

कसेरू-पुं० [सं० कशेरुक] एक प्रकार के मोथे की जड़ जो फल के रूप में खाई जाती है।

कसैया*-पुं० [हिं० कसना] कसने, परखने या जाँचनेवाला।

कसैला-वि० [हिं० कसाव] जिसके स्वाद में कसाव हो। जैसे-आँवला, हड़ आदि।

कसैली-स्त्री० [हिं० कसैला] सुपारी।

कसोरा-पुं० [हिं० काँसा + ओरा (प्रत्य०) १. कटोरा। २. मिट्टी का प्याला।

कसौटी-स्त्री० [सं० कषपट्टी] १ एक प्रकार का काला पत्थर जिसपर रगड़कर सोने की उत्तमता परखते हैं। २. परख की कोई ऐसी बात या तत्त्व जिसके आधार पर किसी बात के ठीक या किसी काम के पूरे होने की जाँच हो सके। (क्राइटीरिया)

कस्तूरी-स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगन्धित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाँ निकलता है।

कस्तूरी मृग-पुं० [सं०] बहुत ठंढे पर रहनेवाला एक प्रकार का हिरन नाभि से कस्तूरी निकलती है।

कहँ*-प्रत्य० [सं० कः] के लिए। (अ क्रि० वि० दे० 'कहाँ'।

कहँवाँ†-क्रि० वि० दे० 'कहाँ'।

कह*-वि० [सं० कः] क्या।

कहक*-स्त्री० [?] ध्वनि। आवाज।

कहगिल-स्त्री०[फा०कार = घास + मिट्टी] दीवार में लगाने का गारा।

कहत-पुं० [अ० क़हत] दुर्भिक्ष। अ

कहन-स्त्री० [सं० कथन] १. क उक्ति। २. बात। ३. कहावत।

कहना-स० [सं० कथन] १. मुँह से निकालना। बोलना।

मुहा०-कह-बदकर = प्रतिज्ञा क **कहने को** = (क) नाम मात्र को। भविष्य में स्मरण के लिए।

पद-कहने की बात = वह बात वास्तव में न हो।

२. सूचना देना। ३. नाम रखना। पुं० कही हुई बात। कथन।

कहनूत†-स्त्री० दे० 'कहावत'।

कहर-पुं० [अ० क़ह्र] विपत्ति। आफत *वि० १. विकट। भीषण। २. अधिक। अपार।

कहरना-अ० दे० 'कराहना'।

कहरवा-पुं० [हिं० कहार] १. मात्राओं का एक ताल। २. वह नाच गाना जो इस ताल पर होता है।

कहरी-वि० [अ० क़ह्र] कहर करने आफत ढानेवाला।

कहल*†-पुं० [देश०] १. ऊमस। २. ताप। ३. कष्ट।

कहलना*-अ० [हिं० कहल] १. या बेचैन होना। व्याकुल होना।

कहलना।

कहलाना-स० [हिं० 'कहना' का प्रे०] १. दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना। २. सँदेसा भेजना। अ० पुकारा जाना। अ० दे० 'कहलना'।

कहवा-पुं० [अ०] एक पेड़ का बीज जिसका चूर्ण चाय की तरह पीया जाता है।

कहवैया†-वि० [हिं० कहना] कहनेवाला।

कहाँ-क्रि० वि० [सं० कुहः] किस जगह? किस स्थान पर?

मुहा०-**कहाँ का**=(क) न जाने किस स्थान का। (ख) असाधारण। बहुत भारी। (ग) कहीं का नहीं। **कहाँ का कहाँ** = बहुत दूर। **कहाँ की बात**=यह बात ठीक नहीं है।

कहा*-पुं० [सं० कथन] आज्ञा या उपदेश के रूप में कही हुई बात। *†सर्व० [सं० कः] क्या।

कहा-कही*-स्त्री० दे० 'कहा-सुनी'।

कहाना-स० दे० 'कहलाना'।

कहानी-स्त्री० [सं० कथानिका] १. मन से गढ़ी या किसी वास्तविक घटना के आधार पर प्रस्तुत किया हुआ विवरण। कथा। किस्सा। आख्यायिका। २. झूठी या मनगढ़ंत बात।

यौ०-**राम-कहानी**=लम्बा-चौड़ा वृत्तान्त।

कहार-पुं० [सं० कं = जल + हार] एक जाति जो पानी भरने और डोली ढोने का काम करती है।

कहाल-पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

कहावत-स्त्री० [हिं० कहना] १. लोक में प्रचलित ऐसा बँधा चमत्कार-पूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो। लोकोक्ति। मसल। (प्रावर्ब, मैक्सिम) २. कही हुई बात। उक्ति।

कहा-सुनी-स्त्री० [हिं० कहना + सुनना] जबानी लड़ाई। वाद-विवाद। तकरार।

कहियां†*-क्रि० वि० [सं० कुहः] कब।

कहीं-क्रि० वि० [हिं० कहाँ] १. किसी अनिश्चित या अन-जाने स्थान में।

मुहा०-कहीं और=दूसरी जगह। अन्यत्र। **कहीं का** = न जाने कहाँ का। **कहीं का न रहना** = किसी काम का अथवा कहीं मान्य न रहना। **कहीं न कहीं** = किसी न किसी स्थान पर अवश्य।

२. नहीं। कभी नहीं। (प्रश्न रूप में और निषेधार्थक) जैसे—यह भी कहीं होता है! ३. यदि। अगर। जैसे—कहीं वह न आया तो! ४. बहुत अधिक। जैसे—यह उससे कहीं बढ़कर है।

कही-स्त्री० [हिं० कहना] विधि, उपदेश आदि के रूप में कही हुई बात। कथन। जैसे—हमारी कही मानो।

कहुँ (हूँ)*-क्रि० वि० दे० 'कहीं'।

काँइयाँ-वि० [हिं० काक = कौआ] चालाक। धूर्त्त।

काँकरी†*-स्त्री० दे० 'कंकड़'।

मुहा०-काँकरी चुनना = वियोग के कारण किसी काम में मन न लगना।

कांक्षा-स्त्री० [वि० कांक्षित] दे० 'आकांक्षा'।

कांक्षी-वि० [सं० कांक्षिन्] [स्त्री० काङ्क्षिणी] कांक्षा करने या चाहनेवाला।

काँख-स्त्री० [सं० कक्ष] बाहुमूल के नीचे का गड्ढा। बगल।

काँखना-अ० [अनु०] १. श्रम या पीड़ा से उँह-आँह आदि शब्द करना। २. मल-त्याग के लिए पेट की वायु नीचे दबाना।

काँखा-सोती-स्त्री० [हिं०काँख + सं०श्रोत्र] दाहिनी बगल के नीचे से ले जाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा डालना।

काँगन*-पुं० दे० 'कंगन'

काँच-स्त्री० [सं० कक्ष] १. धोती का वह छोर जो जाँघों के बीच से ले जाकर पीछे खोंसा जाता है। २. गुदेन्द्रिय के अन्दर का भाग। गुदा-चक्र।

मुहा०-काँच निकलना = आघात, परि-

श्रम आदि से दुर्दशा होना ।

पुं० [सं० कांच] एक प्रसिद्ध पारदर्शक मिश्र वस्तु जो बालू, रेह आदि के योग से बनती है । शीशा ।

कांचन–पुं० [सं०] [वि० कांचनीय] १. स्वर्ण । सोना । २. कचनार । ३. चम्पा । ४. धतूरा ।

काँचली*–स्त्री० दे० 'केंचुली' ।

काँचा*–वि० [स्त्री० काँची] दे० 'कच्चा' ।

कांची–स्त्री० [सं०] १. मेखला । करधनी । २. घुँघची । ३. हिन्दुओं की सात पुरियों में से एक (कांजीवरम्) ।

कांचुरी–स्त्री० दे० 'केंचुली' ।

काँचू†–स्त्री० = कंचुकी (चोली) ।

कांजिक–वि० [सं०] सिरके, काँजी आदि से सम्बन्ध रखनेवाला या इनके स्वाद का । खट्टा । (एसेटिक)

पुं० दे० 'काँजी' ।

काँजी–स्त्री० [सं० कांजिक] १. पिसी हुई राई आदि घोलकर बनाया हुआ एक प्रकार का खट्टा रस । २. मठा । छाछ । ३. फटा या बिगड़ा हुआ दूध ।

काँजी-हौद–पुं० [अं० काइन हाउस] सरकारी मवेशी-खाना जिसमें लोगों के छूटे हुए पशु बन्द करके रखे जाते हैं ।

काँटवा*–वि० = कँटीला ।

काँटा–पुं० [सं० कंटक] [वि० कँटीला] बहुत कड़ा नुकीला अंकुर । कंटक ।

मुहा०–काँटा निकलना = बाधा या संकट दूर होना । **(रास्ते में) काँटे बिछाना** = बाधा डालना । **काँटे बोना** = (क) बुराई या अनिष्ट करना (ख) अड़चन डालना । **काँटे-सा खटकना** = बुरा लगना । दुःखदायी होना । **काँटों पर लोटना** = कष्ट से तड़पना ।

२. इस आकार का वह अंग जो नर मोर, तीतर आदि के पंजे में निकलता है । खाँग । ३. वह छोटी नुकीली फुंसियाँ जो जीभ में निकलती हैं । ४. लोहे की बड़ी कै मछली पकड़ने की अँकुड़ी । ६. अँकुड़ियों का वह गुच्छा जिससे कुएँ हुए बरतन आदि निकालते हैं । ७. नुकीली वस्तु । जैसे–साही का काँटा लोहे का वह तराजू जिसकी डाँड़ी लगी होती है ।

पद–काँटे की तौल = उसी प्रकार जिस प्रकार काँटे पर तौली हुई चीज़ में ठीक होती है, न कम, न अधिक और ठीक ।

९. नाक या कान में पहनने की कील १०. कुछ गहनों आदि में वह छोटी दार कीलें जिनमें से हर एक में जड़े हुए नगीने को पकड़े रहती हैं पंजे के आकार का वह उपकरण जिससे लोग खाना खाते हैं । १२. गणित में फल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की क्रिया ।

काँटी–स्त्री० [हिं० काँटा] १. काँटा । २. कील । ३. अँकुड़ी । ४.

काँठा–पुं० [सं० कंठ] १. गला । किनारा । तट । ३. पार्श्व । बगल ।

पुं० [सं० काष्ठ] [स्त्री० काँठी] की लकड़ी । ईंधन ।

कांड*–पुं० [सं०] १. बाँस आदि का वह जो दो गाँठों के बीच में होता है । २. सरकंडा । ३. वृक्षों का तना । शाखा । डाली । ५. किसी कार्य या का विभाग । ६. बहुत बड़ा झगड़ा, या कोई अशुभ घटना । जैसे–आज बहुत बड़ा कांड हो गया ।

काँड़ना*†–स० [सं० कंडन] १. रौंदना कुचलना । २. खूब मारना ।

काँड़ी–स्त्री० [सं० कांड] लकड़ी पतला लट्ठा ।

मुहा०–काँड़ी-कफ़न = मुरदे की का सामान ।

ांत-पुं० [सं०] १. पति। शौहर। २. न्द्रमा। ३. एक प्रकार का बढ़िया लोहा। ंतिसार।

ि० १. सुन्दर। मनोहर। २. प्रिय।

ांता-स्त्री० [सं०] १. सुन्दरी स्त्री। २. ार्या। पत्नी।

ांतार-पुं० [सं०] भयानक वन।

ांति-स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। छवि।

ांतिमान्-वि० [सं० कांतिमत्] [स्त्री० ांतिमती] १. कान्तिवाला। दीप्तियुक्त। २. सुन्दर।

ांतिसार-पुं० [सं० कांत] एक प्रकार ा बढ़िया लोहा।

ांथरि*-स्त्री० दे० 'कथरी'।

ांदना-अ० दे० 'रोना'।

ांदो*-पुं० [सं० कर्दम] कीचड़।

ांध*-पुं० दे० 'कंधा'।

ांधना*-स० [हिं० कंधा] १. कंधे पर ठाना।

मुहा०-(किसी की) बात काँधना = ्वीकृत करना। मान लेना।

२. ठानना। मचाना। ३. किसी को कुछ मझना या उसका महत्त्व स्वीकृत करना।

र, काँधा*-पुं० दे० 'कान्ह'।

ा-पुं० [सं० कंपा] १. बाँस आदि ी पतली लचीली तीली। २. सूअर का ांत। ३. हाथी का दाँत। ४. कान में ने का एक गहना।

ना-स० [सं० कंपन] बार बार हिलाना। ाना। थर्राना।

-स्त्री० [?] कान में पहनने का प्रकार का गहना।

ाँव-स्त्री० [[illegible]] १. कौए का ्द। २. व्यर्थ की बक [illegible]द।

र-स्त्री० [हिं० काँध + आवर (प्रत्य०) सं० कामार्थी ?] १. बाँस के डंडे के िरों पर छींकों में लटकी हुई दो दौरियाँ जिनमें यात्री गंगा जल आदि भर कर तीर्थ-यात्रा के लिए निकलते हैं। २. दे० 'बहँगी'।

काँवरा-वि० [पं० कमला] घबराया हुआ।

काँवरिया-पुं० दे० 'काँवाँरथी'।

काँवरी-स्त्री० दे० 'काँवर'।

काँवरू-पुं० दे० 'कामरूप'।

काँवाँरथी-पुं० [सं० कामार्थी] वह जो किसी कामना से काँवर लेकर तीर्थ-यात्रा करने जाय।

काँस-पुं० [सं० काश] एक प्रकार की लम्बी घास।

काँसा-पुं० [सं० कांस्य] [वि० काँसी] ताँबे और जस्ते या ताँबे और टीन के योग से बनी हुई एक मिश्र धातु। (ब्रांज़) पुं० [फा० कास] भीख माँगने का ठीकरा।

कांस्य-वि० [सं०] काँसे (धातु) का बना हुआ। (ब्रांज)

कांस्य युग-पुं० [सं०] पुरातत्व में प्रागैतिहासिक काल का वह विभाग जो प्रस्तर-युग के बाद का और लौह-युग के पहले का माना जाता है और जिसमें हथियार, औजार, बरतन आदि काँसे के ही बनते थे। इसी को ताम्र-युग भी कहते हैं। (ब्रांज एज)

का-विभि० [सं० प्रत्य० कः] संबंध कारक या षष्ठी का चिह्न अथवा विभक्ति। जैसे–पुस्तक का मूल्य।

पू० हिन्दी में 'को' का एक रूप। जैसे–ओका = उसको।

काइयाँ-पुं० = काँइयाँ।

काई-स्त्री० [सं० कावार] १. जल में होनेवाली एक प्रकार की छोटी घास।

मुहा०-काई छुड़ाना = (क) मैल दूर करना। (ख) दरिद्रता दूर करना। **काई-सा फट जाना** = तितर-बितर हो जाना।

२. मल। मैल।

काउंसिल-स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट

विषयों पर विचार करनेवाली सभा या समिति।

काऊ*–क्रि० वि० [सं० कदा] कभी। सर्व० [सं० कः] १. कोई। २. कुछ।

काक–पुं० [सं०] कौआ।

काक-गोलक–पुं० [सं०] कौए की आँख की पुतली। (कहते हैं कि कौए की आँखें तो दो, पर पुतली एक ही होती है; और वही दोनों आँखों में आती-जाती रहती है।)

काक-तालीय–वि० [सं०] केवल संयोग-वश होनेवाला।

यौ०–काक-तालीय न्याय = उसी प्रकार संयोग-वश कोई काम हो जाना, जिस प्रकार कौए के बैठते ही ताड़ का पेड़ गिर जाय।

काक-पक्ष–पुं० [सं०] बालों के पट्टे जो पुराने जमाने में दोनों ओर कानों के ऊपर रखे जाते थे।

काक-पद–पुं० [सं०] वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिए पंक्ति के नीचे बनाया जाता है।

काकरी*–स्त्री० दे० 'कंकड़ी'।

काकरेजा–पुं० [हिं० काकरेजी] काकरेजी रंग का कपड़ा।

काकरेजी–पुं० [फा०] लाल और काले के मेल से बननेवाला एक रंग। वि० इस रंग का। (पदार्थ)

काकली–स्त्री० [सं०] मधुर ध्वनि। कल-नाद।

काक वंध्या–वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जो एक बार सन्तान प्रसव करके फिर प्रसव न करे। एक-वाँज।

काका–पुं० [फा० कोका = बड़ा भाई] [स्त्री० काकी] बाप का भाई। चाचा।

काका-कौआ–पुं० [मला० ककातुआ] एक प्रकार का बड़ा तोता।

काकु–पुं० [सं०] १. व्यंग्य। ताना। २. अलंकार में वक्रोक्ति का एक भेद, जिसमें शब्दों की ध्वनि से ही दूसरा अभि
जाता है। जैसे–भला आप वहाँ क्यों
अर्थात् आप वहाँ नहीं जायँगे।

काकुना–स्त्री० दे० 'कँगनी' (मोय

काकुल–पुं० [फा०] कन-पटी पर
हुए लम्बे बाल। जुल्फें।

काग–पुं० [सं० काक] कौआ
(मुहा० के लिए दे० 'कौआ' के मु
पुं० [अं० कॉर्क] १. बलूत की
एक बड़ा पेड़। २. बोतल या
डाट जो इस पेड़ की छाल से बनती

कागज–पुं० [अ०] [वि० कागजी]
बाँस आदि सड़ाकर बनाया हुआ
पत्र जिसपर अक्षर लिखे या छापे

यौ०–कागज-पत्र = (क) लिखे
कागज। (ख) प्रमाणिक लेख।

मुहा०–कागज काला करना
रँगना = व्यर्थ कुछ लिखना। **का**
नाव = न टिकनेवाली चीज।
२. लिखा हुआ प्रामाणिक लेख।
३. समाचार-पत्र। अखबार।

कागजी–वि० [अ०] १. कागज
कागज का। २. कागज पर लिखा
जैसे–कागजी सबूत।

मुहा०–कागजी घोड़े दौड़ाना
कार्य के लिए कोई विशेष प्रयत्न
केवल लिखा-पढ़ी या पत्र-व्यवहार
३. फल जिसका छिलका अपेक्षा
हो। जैसे–कागजी बादाम।

कागजी नीबू–पुं० साधारण नीबू जो
कुछ बहुत छोटा और खट्टा होता है

कागद(र)†–पुं० दे० 'कागज'।

कागरी*–[illegible] कागज] तुच्छ

कागला†–पुं० [सं० काकलक]
अन्दर की घाँटी। कौआ।

कागा-रौल–पुं० [हिं० काग =
रोर = शोर] कौओं की तरह मचा
वाला हल्ला। हुल्लड़।

वी-स्त्री० [हिं० कच्चा] १. दूध रखने
ी हँड़ी। २. तीखुर, सिंघाड़े आदि का
हुआ।
-स्त्री० [सं० कक्ष] १. पेड़ू और जाँघ
उसके नीचे का स्थान। २. धोती का
भाग जो पीछे खोंसा जाता है। लाँग।
अभिनय के लिए नटों का वेश धारण
रना।
हा०-काछ काछना = भेस बनाना।
छना-स० [हिं० काछ] १. धोती का
ल्ला पीछे खोंसना। २. बनाना। सँवारना।
० [सं० कर्षण] उँगली आदि से तरल
किनारे की ओर खींचकर उठाना।
छनी-स्त्री० [हिं० काछना] १. धोती
पहनने का वह ढंग जिसमें दोनों लाँगें पीछे
खोंसी जाती हैं। कछनी। २. घाघरे की
तरह का एक पहनावा।
छा-पुं० १. दे० 'काछनी' २. दे० 'काछ'।
छी-पुं० [सं० कच्छ = जल-प्राय देश]
जाति जो तरकारी बोती और बेचती है।
री।
छे-क्रि० वि० [सं० कक्ष] निकट। पास।
ज-पुं० [सं० कार्य्य] १. कार्य्य। काम।
व्यवसाय। रोज़गार। ३. प्रयोजन।
। ४. कोई शुभ कर्म्म।
[पुर्त०] पहनने के कपड़ों में वह छेद
में बटन फँसाते हैं।
री-पुं० दे० 'काजल'।
री-स्त्री० [सं० कज्जली] वह गौ
की आँखों पर काला घेरा हो। कजरी।
ल-पुं० [सं० कज्जल] दीपक के धूएँ
कालिख जो आँखों में लगाई जाती है।
०-काजल घुलाना, डालना या
रना = (आँखों में) काजल लगाना।
जल पारना = दीपक के धूएँ से काजल
या जमाना।
काजल की कोठरी = वह स्थान
जाने से कलंक लगे।

काज़ी-पुं० [अ०] न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी। (मुसल०)

काजू-भोजू-वि० [हिं० काज + भोग] जो अधिक दिनों तक काम में न आ सके।

काट-स्त्री० [हिं० काटना] १. काटने की क्रिया या भाव।
यौ०-काँट-छाँट = कमी-बेशी। घटाव-बढ़ाव। **मार-काट** = तलवार आदि की लड़ाई।
२. काटने का ढंग। कटाव। तराश। ३. घाव। जखम। ४. कपट। चालबाजी। ५. कुश्ती में पेंच का तोड़।

काटना-स० [सं० कर्त्तन] १. धारदार शस्त्र आदि से किसी वस्तु के दो या कई खंड करना।
पद-काटो तो खून नहीं = बिलकुल सन्न या स्तब्ध हो जाना।
२. दाँत गड़ाकर खंड, क्षत या घाव करना। ३. पीसकर चूर करना। पीसना। ४. नष्ट करना। ५. किसी वस्तु में से कोई अंश निकालना। (डिडक्ट) ६. युद्ध में मारना। ७. समय बिताना। जैसे–दिन काटना। ८. रास्ता तै करना। ९. अनुचित ढंग से प्राप्त करना। १०. कलम की लकीर से लिखावट रद करना। मिटाना। ११. ऐसे काम तैयार करना जो लम्बाई में दूर तक चले गये हों। जैसे–सड़क काटना, नहर काटना। १२. जेलखाने में कैद भोगना। १३. विषैले जन्तु का डंक मारना। डसना। जैसे–साँप या मच्छर का काटना। १४. किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर में लगकर जलन पैदा करना। १५. एक रेखा का किसी एक स्थान पर दूसरी रेखा के ऊपर से होते हुए आगे निकल जाना। १६. (किसी मत, विचार या कथन का) खंडन करना। १७. कष्टकर प्रतीत होना। जैसे–अब तो यह घर काटता है।
मुहा०-काटने दौड़ना = (क) बहुत बुरा लगना। (ख) सूना और उजाड़ लगना।

काटर*-वि० [सं० कठोर] १. कड़ा।

कठिन। २. कट्टर। ३. काटनेवाला।

काटू–पुं॰ [हिं॰ काटना] १. काटनेवाला। २. डरावना। भयानक।

काठ–पुं॰ [सं॰ काष्ठ] १. पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर सूख गया हो। लकड़ी। **यौ॰–काठ-कबाड़** = टूटा-फूटा सामान। **पद–काठ का उल्लू** = बहुत बड़ा मूर्ख। **काठ की हाँड़ी** = ऐसी दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके।

मुहा॰–(किसी को)काठ मार जाना= बहुत अधिक चकित, स्तब्ध या सुन्न हो जाना। **काठ होना** = सूखकर बहुत ही कड़ा हो जाना। **काठ हो जाना** = डर या घबराकर सन्न हो जाना। स्तब्ध होना। २. जलाने की लकड़ी। ईंधन। ३. लकड़ी की बनी हुई बेड़ी।

मुहा॰–काठ मारना या काठ में पाँव देना = काठ की बेड़ी पहनाना।

काठा–वि॰ [हिं॰ काठ] जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो। कठिया। जैसे–काठा बादाम।

काठिन्य–पुं॰ = कठिनता।

काठी–स्त्री॰ [हिं॰ काठ] १. घोड़ों आदि की पीठ पर कसने की जीन। २. शरीर की गठन या बनावट।

वि॰ [काठियावाड़ देश] काठियावाड़ का।

काढ़ना–स॰ [सं॰ कर्षण] १. अन्दर से बाहर करना। निकालना। २. अलग करना। ३. आवरण हटाकर दिखाना। ४. कपड़े पर बेल-बूटे बनाना। ५. उधार लेना। ६. बनाना या लगाना। जैसे–टीका काढ़ना।

स॰ [हिं॰ कड़ाही] अच्छी तरह उबालकर गाढ़ा करना। औटाना।

काढ़ा–पुं॰ [हिं॰ काढ़ना] औषधियों को पानी में उबालकर बनाया हुआ रस। क्वाथ।

कातना–स॰ [सं॰ कर्त्तन] चरखे, तकली आदि पर रूई या ऊन बटकर तागे

कातर–वि॰ [सं॰] [भाव॰
१. अधीर। व्याकुल। २. डरा
भयभीत। ३. आर्त्त। दुःखित।

कातिब–पुं॰ [अ॰] दस्तावेज़
लिखनेवाला। लेखक।

कातिल–वि॰ [अ॰] १. प्राणों पर
लनेवाला। घातक। २. मार डालने
हत्यारा। ३. बहुत उग्र या विकट।

काती–स्त्री॰ [सं॰ कर्त्री] १. कैंची
चाकू। छुरी। ३. छोटी तलवार।

कात्यायनी–स्त्री॰ [सं॰] दुर्गा।

काथा–पुं॰ दे॰ 'कत्था'।

कादंबरी–स्त्री॰ [सं॰] १. कोयल
सरस्वती। ३. मदिरा। शराब।

कादंबिनी–स्त्री॰ [सं॰] बादलों का
मेघ-माला।

कादर–वि॰ [सं॰ कातर] १ डर
भीरु। २. अधीर। ३. व्याकुल।

कान–पुं॰ [सं॰ कर्ण] १. वह
जिससे शब्द सुनाई पड़ता है। श्रवण।
श्रोत्र।

मुहा॰–(किसी का) कान उमेठ
(क) दंड के रूप में किसी का कान मरो
(अपना) कान उमेठना = कोई
फिर से न करने की प्रतिज्ञा करना।
करना = ध्यानपूर्वक सुनना। (किसी
कान काटना=मात करना। बढ़कर
कान खाना या खा जाना=बहुत
करना। **कान गरम करना** = दे॰
का) 'कान उमेठना'। (बात पर)
देना या धरना = ध्यान से
(किसी बात से) कान पकड़
कोई काम फिर न करने की प्रतिज्ञा
कान पर जूँ न रेंगना = कुछ
परवा या अनुभूति न होना।
फूँकना = दीक्षा देना। चेला
कान भरना = किसी के विरुद्ध

मन में कोई दूषित बात बैठा देना। **कान**
मलना=दे० 'कान उमेठना'। **(किसी का)**
ान में **तेल डालकर बैठना** = कुछ
ान न देना। **कान में डाल देना** =
ुना या जता देना। **कानों-कान खबर न**
ोना = किसी को जरा भी खबर न होना।
द-**कान का कच्चा** = जो किसी के
हने पर बिना सोचे समझे विश्वास कर ले।
२. कान में पहनने का सोने का एक गहना।
३. चारपाई का टेढ़ापन। कनेव। ४.
िसी वस्तु का ऐसा निकला हुआ कोना
ो भद्दा जान पड़े। ५. नाव की पतवार।
त्री० दे० 'कानि'।
नन-पुं० [सं०] १. जंगल। २. घर।
ना-वि० [सं० काण] [स्त्री० कानी]
जसकी एक आँख फूट गई हो। एकाक्ष।
ुं० [सं० कर्णक] १. (फल) जिसका
ुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो। २. जिसमें
सी प्रकार का दोष या न्यूनता हो। जैसे-
ानी कौड़ी।
ना-गोसी*-स्त्री० दे० 'काना-फूसी'।
ना-फूसी-स्त्री० [हिं० कान + फुस (अनु०)]
बात जो कान के पास धीरे से कही जाय।
-बाती-स्त्री० दे० 'काना-फूसी'।
नि-[?] १. लोक या समाज की
दा या उसका ध्यान। लोक-लज्जा।
हा०-**कानि पड़ना** = लोक या समाज
मर्यादा का ध्यान रखना।
ंश या कुल की अथवा स्वयं अपनी
ा। इज्जत। ३. संकोच। लिहाज।
ी-वि० हिं० 'काना' का स्त्री०।
ी उँगली-स्त्री० [सं० कनीनी + हिं०
] हाथ या पैर की सबसे छोटी और
ी उँगली।
ी कौड़ी-स्त्री० [हिं० काना = त्रुटि-
ौड़ी] १. फूटी या खराब कौड़ी।
हुत ही थोड़ा या नाम को भी धन।
नात्मक) जैसे-मैं तो उन्हें कानी कौड़ी भी न दूँगा।

कानीन-पुं० [सं०] वह जो किसी कुमारी कन्या के गर्भ से पैदा हुआ हो।

कानून-पुं० [अ०, यू० केनन] [वि० कानूनी] १. राज्य में शान्ति रखनेवाले नियम। राज-नियम। विधि।

मुहा०-कानून छाँटना = तुच्छ नियमों के आधार पर कुतर्क या हुज्जत करना।

२. किसी विषय के नियमों का संग्रह। विधान।

कानून-गो-पुं० [अ० कानून + फा० गो] माल विभाग का वह कर्मचारी जो पटवारियों के कागजों की जाँच करता है।

कानून-दाँ-पुं० [अ० कानून + फा० दाँ] कानून जाननेवाला। विधिज्ञ।

कान्यकुब्ज-पुं० [सं०] १. एक प्राचीन प्रान्त जो वर्त्तमान समय के कन्नौज के आस-पास था। २. इस देश का निवासी। ३. उक्त प्रदेश से आये हुए ब्राह्मण जिनकी एक अलग जाति बन गई है।

कान्ह(र)*-पुं० [सं० कृष्ण] श्रीकृष्ण।

कापर*-पुं० दे० 'कपड़ा'।

कापालिक-पुं० [सं०] शैव मत का तांत्रिक साधु।

कापी-स्त्री० [अं०] १. नकल। प्रतिलिपि। २. लिखने की कोरे कागजों की पुस्तिका।

का-पुरुष-पुं० दे० 'कायर'।

काफिया-पुं० [अ०] अन्त्यानुप्रास। तुक। जैसे-काल का काफिया ताल औ माल है।

मुहा०-काफिया तंग करना = हैरान करना। नाकों दम करना।

काफिर-वि० [अ०] १. मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म्म माननेवाला। २. ईश्वर को न माननेवाला। ३. निर्दय।

काफिला-पुं० [अ०] यात्रियों का दल।

काफी-वि० [अ०] जितना आवश्यक हो, उतना। पर्याप्त। यथेष्ट। पूरा।

कावर-वि० दे० 'चित-कबरा'।

काबा-पुं० [अ०] अरब के मक्के शहर

का एक स्थान जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं।

काबिज–वि० [अ०] १. जिसका कब्जा या अधिकार हो। २. मल का अवरोध करनेवाला।

पुं० वह जो किसी जमीन पर या मकान में रहकर उसका उपभोग करता हो। (अकुपेन्ट)

काबिल–वि० [अ०] [भा० काबिलीयत] १. योग्य। लायक। २. विद्वान्।

काबुक–स्त्री० [फा०] कबूतरों का दरबा।

काबुल–पुं० [सं० कुभा] [वि० काबुली] अफगानिस्तान की राजधानी।

काबू–पुं० [तु०] वश। अधिकार।

काम–पुं० [सं०] [वि० कामुक, कामी] १. इच्छा। मनोरथ। २. इन्द्रियों की अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति। ३. सहवास या मैथुन की इच्छा। ४. चतुर्वर्ग या चार पदार्थों में से एक।

पुं० [सं० कर्म्म, प्रा० कम्म] १. वह जो किया जाय। व्यापार। कार्य।

मुहा०–काम आना = (क) उपयोग में आना। (ख) लड़ाई में मारा जाना। **काम करना** = प्रभाव दिखलाना।

पद-'काम रोको' प्रस्ताव = ० 'स्थगनक'।

२. कठिन परिश्रम या कौशल का कार्य्य।

मुहा०–काम रखता है = बहुत कठिन कार्य है।

३. प्रयोजन। अर्थ। मतलब।

मुहा०–काम निकलना = (क) प्रयोजन सिद्ध होना। (ख) आवश्यकता पूरी होना। **काम पड़ना** = आवश्यकता होना।

४. सम्बन्ध। वास्ता। सरोकार।

मुहा०–किसी से काम पड़ना = किसी प्रकार का व्यवहार या संबंध होना। **काम से काम रखना** = केवल अपने कार्य, प्रयोजन, कर्तव्य आदि से सम्बन्ध रखना।

५. उपभोग। व्यवहार। इस्तेमाल।

मुहा०–(वस्तु का) काम देना = हार में आना। उपयोगी होना। **काम लाना** = व्यवहार करना।

६. व्यवसाय। रोजगार। ७. अच्छी कारीगरी। ८. बेल-बूटे या नक्काशी।

काम-काज–पुं० [हिं० काम + काज] काम-धन्धा। कार्य्य। २. व्यापार।

काम-काजी–वि० [हिं० काम +] काम या उद्योग में लगा रहनेवाला।

कामगार–पुं० १. दे० 'कामदार' दे० 'मजदूर'।

काम-चलाऊ–वि० [हिं० काम +] जिससे किसी प्रकार काम निकल सके

कामचोर–वि० [हिं० काम + चोर] से जी चुरानेवाला।

कामज–वि० [सं०] काम या उत्पन्न।

कामतः–क्रि० वि० [सं०] मन में कामना या इच्छा रखकर। जान कोई उद्देश्य पूरा करने के लिए। (

काम-तरु–पुं० दे० 'कल्प-वृक्ष'।

कामता*–पुं० [सं० कामद] चित्र

कामद–वि० [सं०] [स्त्री० मनोरथ पूरा करनेवाला। जैसे- मणि = चिन्तामणि।

काम-दानी–स्त्री० [हिं० काम (प्रत्य०)] बादले के तार या सितारे से बने बेल-बूटे।

कामदार–पुं० [हिं० काम + दार (कर्मचारी। कारिन्दा। अमला।

वि० (वस्त्र आदि) जिसपर कला के बेल-बूटे बने हों। जैसे–कामदार

कामदुहा*–स्त्री० दे० 'कामधेनु'।

कामदेव–पुं० [सं०] स्त्री-पुरुष की प्रेरणा करनेवाला देवता या शक्ति।

काम-धाम–पुं० दे० 'काम-काज'।

कामधुक*–स्त्री० दे० 'काम-धेनु'।

ाम-धेनु–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक ाय जिससे जो कुछ माँगा जाय, वही मिलता है। सुरभी।

मना–स्त्री० [सं०] मन की इच्छा। मनोरथ। ख्वाहिश।

ामयाब–वि० दे० 'सफल'।

ामर, कामरी–स्त्री० दे० 'कंबल'।

ामरूप–पुं० [सं०] १. असम (आसाम) देश का एक जिला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है। २. देवता।

वि० जो मन-माना रूप बना सके।

ामला–पुं० दे० 'कमल' (रोग)।

ली–स्त्री० दे० 'कमली'।

म-शास्त्र–पुं० [सं०] वह विद्या जिसमें -पुरुषों के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो।

ामांध–वि० [सं०] जिसे काम-वासना की प्रबलता में भले बुरे का ज्ञान न रहे।

मातुर–वि० [सं०] काम के वेग से ाकुल या उद्विग्न।

ामायिनी–स्त्री० [सं०] वैवस्त मनु की ी श्रद्धा का एक नाम।

मारि–पुं० [सं०] महादेव।

मित–स्त्री दे० 'कामना'।

ता–स्त्री० [सं०] १. 'कामी' होने भाव। २. वह शक्ति, वृत्ति या गुण जो ों में काम-वासना उत्पन्न करता है। सुऐलिटी)

मिनी–स्त्री० [सं०] १. कामवती स्त्री। सुन्दरी स्त्री। ३. मदिरा।

मिल–वि० [अ०] १. पूरा। पूर्ण। ा। २. योग्य।

ी–वि० [सं० कामिन्] [स्त्री० कामिनी] . कामना रखनेवाला। २. कामुक।

मुक–वि० [सं०] [स्त्री० कामुका] काम-वासना बहुत हो। विषयी।

ोद्दीपक–वि० [सं०] [भाव० कामो-ीपन] जिससे स्त्री-सहवास या प्रसंग की इच्छा बढ़े।

कामोन्माद–पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का उन्माद जो युवकों और युवतियों को, उनकी काम-वासना पूरी न होने के कारण होता है।

काम्य–वि० [सं०] १. जिसकी कामना की जाय। २. जिससे कामना सिद्ध हो।

पुं० [सं०] वह धर्म्म-कार्य जो किसी कामना की सिद्धि के लिए किया जाय। जैसे–पुत्रेष्टि।

कायजा–पुं० [अ० कायजः] घोड़े की लगाम में लगी हुई वह डोरी जो उसकी पूँछ तक बँधी रहती है।

कायथ–पुं० दे० 'कायस्थ'।

कायदा–पुं० [अ० क़ायदः] १. विधि। नियम। २. चाल। दस्तूर। ३. रीति। ढंग। ४. क्रम ! व्यवस्था।

कायफल–पुं० [सं० कट्फल] एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम में आती है।

कायम–वि० [अ०] १. दृढ़तापूर्वक ठहरा हुआ। स्थिर। २. स्थापित। ३. निर्धारित। निश्चित। मुकर्रर।

कायम मुकाम–वि० [अ०] स्थानापन्न।

कायर–वि० [सं० कातर] [भाव० कायरता] डरपोक। भीरु।

कायल–वि० [अ०] जिसने तर्क-वितर्क से सिद्ध बात मान ली हो।

कायली–स्त्री० [सं० द्वेलिका] मथानी।

स्त्री० [हिं० कायर] ग्लानि। लज्जा।

स्त्री० [अ० क़ायल] (तर्क में) क़ायल या परास्त होने का भाव।

यौ०–कायली-माकूली=तर्क करना और तर्क-सिद्ध बात मानना।

कायस्थ–वि० [सं०] काया में स्थित। शरीर में रहनेवाला।

पुं० [सं०] १. जीवात्मा। २. परमात्मा। ३. हिन्दुओं की एक जाति का नाम।

काया–स्त्री० [सं० काय] शरीर। तन।

मुहा०–काया पलट जाना = रूपान्तर हो जाना। और से और हो जाना।

काया-कल्प–पुं० [सं०] औषध के द्वारा वृद्ध या रुग्ण शरीर को फिर से तरुण और सशक्त करने की क्रिया। जैसे–पं० मदन-मोहन मालवीय जी ने अपना काया-कल्प कराया था।

काया-पलट–पुं० [हिं० काया + पलटना] १. बहुत बड़ा परिवर्त्तन। २. एक शरीर या रूप छोड़कर दूसरा शरीर या रूप धारण करना।

कायिक–वि० [सं०] १. काय या शरीर संबंधी। २. शरीर से किया हुआ या उत्पन्न। जैसे–कायिक पाप।

कारंड(व)–पुं० [सं०] हंस या बत्तख की जाति का एक पक्षी।

कारंधमी–पुं० [सं०] लोहे आदि को सोना बनानेवाला। कीमियागर।

कार–पुं० [सं०] १. क्रिया। कार्य्य। जैसे–उपकार, स्वीकार। २. बनाने या रचनेवाला। जैसे–चित्रकार। ३. एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के साथ लगकर उनका स्वतंत्र बोध कराता है। जैसे–ककार, मकार। ४. एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है। जैसे–फूत्कार।

पुं० [फा०] कार्य्य। काम।

स्त्री० [अं०] मोटर (गाड़ी)।

*वि० दे० 'काला'।

कारक–वि० [सं०] [स्त्री० कारिका] १. करनेवाला। जैसे–हानिकारक। २. किसी के स्थान पर या प्रतिनिधि के रूप में काम करनेवाला। (ऐक्टिंग)

पुं० [सं०] व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था या रूप जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है। (केस)

कार-कुन–पुं० [फा०] १. इन्तजाम करनेवाला। प्रबन्धकर्त्ता। २. कारिंदा।

कारखाना–पुं० [फा०] १. वह जहाँ व्यापार के लिए कोई वस्तु अ मात्रा या मान में बनती हो। (फैक्

कार-गुजार–वि० [फा०] [भा० गुजारी] अच्छी तरह काम पूरा करनेव

कारचोब–पुं० [फा०] [वि० कारचो १. लकड़ी का वह चौकठा, जिसपर तानकर जरदोजी का काम बनाया जाता अड्डा। २. दे० 'जरदोज'।

कारज*–पुं० दे० 'कार्य्य'।

कारटा*–पुं० [सं० करट] कौआ।

कारण–पुं० [सं०] १. वह जिसके से या फल-स्वरूप कोई काम हो। वजह। (कॉज) जैसे–धूएँ का आग है। २. वह जिसके विचार से जिसका ध्यान रखकर कोई काम जाय। हेतु। निमित्त। प्रयोजन। (जैसे–आप से मिलने का एक कारण ३. वह जिससे कुछ उत्पन्न या प्रक आदि। मूल। जैसे–सृष्टि का कारण है। ४. साधन। ५. तांत्रिक उ या कर्म।

कारणता–स्त्री० दे० 'कारणिकता'।

कारण-माला–स्त्री० [सं०] १. या हेतुओं की शृंखला। २. साहित्य में अर्थालंकार जिसमें किसी कारण से होनेवाले कार्य्य से पुनः किसी अन्य के होने का वर्णन होता है।

कारणिक–वि० [सं०] [भाव० कारणिकता] १. कारण सम्बन्धी। कारण २. कारण के रूप में होनेवाला। (पुं० [सं०] किसी कार्यालय में लिखने का काम करनेवाले कर्मचारी या कर्म सम्बन्ध रखनेवाला। (मिनिस्टीरियल

कारणिकता–स्त्री० [सं०] 'कारण 'कारणिक' होने की अवस्था या 'कारण' और 'कार्य' में रहनेवाला

या उसका स्वरूप। (कॉजैलिटी)
ारणिक सेवा-स्त्री॰ [सं॰] वह सेवा,
ार्य-विभाग या कर्मचारियों का वर्ग जो
णिकों से सम्बन्ध रखता हो या करणिकों
ा हो। (मिनिस्टीरियल सरविस)
ारतूस-पुं॰ [पुर्त्त॰ कारटूश] बारूद
ी एक नली जो बंदूकों में भरकर
लाते हैं। गोली।
ारन॰-पुं॰ दे॰ 'कारण'।
त्री॰ [सं॰ कारुण्य] रोने का आर्त्त या
रुण स्वर।
ारनिस-स्त्री॰ दे॰ 'कँगनी' २।
रनी॰-पुं॰ [सं॰ कारण] कारण के
प में होने या प्रेरणा करनेवाला। प्रेरक।
ं॰ [सं॰ कारीनि] १. भेद करानेवाला।
ेदक। २. बुद्धि पलटनेवाला।
ार-परदाज-वि॰ [फा॰] [भाव॰
ार-परदाजी] १. किसी की ओर से उसका
ोई काम करनेवाला। कारिन्दा। २.
ार्यकर्त्ता। ३. वह जो बहुत से अथवा
ाने सब काम बहुत अच्छी तरह कर सकता
ो। कार्य-कुशल।
ार-बार-पुं॰ [फा॰] [वि॰ कारबारी]
. काम-काज। व्यापार। २. पेशा।
ताव।
ार-बारी-वि॰ [फा॰] काम-काजी।
॰ कारकुन। कारिन्दा।
ारयिता-वि॰ [सं॰ कारयितृ] [स्त्री॰
ारयित्री] कुछ रचने, बनाने या सृष्ट
रनेवाला। (क्रिएटिव)
ार-रवाई-स्त्री॰ [फा॰] १. काम। कृत्य।
ाई। २. कार्य-तत्परता। कर्मण्यता।
. गुप्त प्रयत्न। चाल।
ार-साज-वि॰ [फा॰] [भाव॰ कारसाजी]
िगड़ा हुआ काम बनाने या ठीक तरह से
ोई काम पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला।
ारसतानी-स्त्री॰ [फा॰] १. कारसाजी।
ारस्तानी। २. चालबाजी।

कारा-स्त्री॰ [सं॰] १. बन्धन। कैद। २. कारागार। ३. पीड़ा। क्लेश।
*वि॰ पुं॰ दे॰ 'काला'।

कारागार-पुं॰ [सं॰] वह स्थान जिसमें दंड पाये हुए लोगों को बन्द करके रक्खा जाता है। बन्दीगृह। जेलखाना। (जेल)

कारागृह-पुं॰ दे॰ 'कारागार'।

कारादंड-पुं॰ [सं॰] कारागार में बन्द रखने का दण्ड। जेल की सजा।

कारावंदी-पुं॰ [सं॰] वह जो कैद में हो।

कारारुद्ध-वि॰ [सं॰] जो कारागार में बन्द किया गया हो। (इम्प्रिजन्ड)

कारारोध-पुं॰ [सं॰] [वि॰ कारारुद्ध] कारागार में बन्द करने या होने की क्रिया या भाव। (इम्प्रिजनमेन्ट)

कारावास-पुं॰ [सं॰] कारागार में बन्द होकर रहना। बन्दी रहना। कैद में रहना। (इम्प्रिजनमेन्ट)

कारिंदा-पुं॰ [फा॰] किसी के अधीन रहकर उसकी ओर से उसका कोई काम करनेवाला। गुमाश्ता।

कारिका-स्त्री॰ [सं॰] किसी सूत्र की श्लोक-बद्ध व्याख्या।

कारिख॰-स्त्री॰ दे॰ 'कालिख'।

कारिणी-वि॰ स्त्री॰ [सं॰] 'कारी' का स्त्री॰। करनेवाली। (शब्दों के अन्त में; जैसे—प्रबन्ध-कारिणी समिति)

कारित-वि॰ [सं॰] कराया हुआ।

कारिता-स्त्री॰ [सं॰] कारी या कारक (करनेवाला) होने का भाव। (यौ॰ के अन्त में जैसे—गुण-कारिता)

कारी-वि॰ [सं॰ कारिन्] [स्त्री॰ कारिणी] करनेवाला। बनानेवाला। जैसे—कार्यकारी। स्त्री॰ [सं॰ कारिता] करने का काम। जैसे—पत्रकारी, चित्रकारी आदि। वि॰ [फा॰] घातक। मर्म-भेदी।

कारीगर-पुं॰ [फा॰] [भाव॰ कारीगरी] लकड़ी, पत्थर आदि से सुन्दर वस्तुओं की

रचना करनेवाला । शिल्पकार ।
वि० हाथ से काम बनाने में कुशल । निपुण । हुनरमन्द ।

कारु–पुं० [सं०] [भाव० कारुता] शिल्पी । कारीगर । दस्तकार ।

कारुणिक–वि० [सं०] १. जिसे देखकर मन में करुणा उत्पन्न हो । जैसे–कारुणिक दृश्य । २. जिसके मन में करुणा हो । कृपालु । दयालु ।

कारुण्य–पुं० [सं०] 'करुणा' का भाव । दया । मेहरबानी ।

कारूँ–पुं० [अ०] हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बहुत बड़ा धनी, पर कंजूस था ।
पद–कारूँ का खजाना = अनन्त सम्पत्ति ।

कारूती–स्त्री० [अ०] एक प्रकार की हकीमी या यूनानी मलहम ।

कारूनी–स्त्री० [?] घोड़ों की एक जाति ।

कारूरा–पुं० [अ०] मूत्र । पेशाब ।

कारोबार–पुं० = कार बार ।

कार्ड–पुं० [अं०] १. मोटे कागज का तख्ता । २. ऐसे कागज का वह टुकड़ा जिसपर समाचार और पता आदि लिखा जाता है ।

कार्त्तिक–पुं० [सं०] वह चान्द्र मास जो कार और अगहन के बीच में पड़ता है ।

कार्त्तिकेय–पुं० [सं०] शिव के पुत्र, स्कन्द जी । षड़ानन ।

कार्मण–पुं० [सं०] मंत्र-तंत्र आदि का प्रयोग ।

कार्मना*–पुं० दे० 'कार्मण' ।

कार्मुक–पुं० [सं०] १. धनुष । २. परिधि का एक भाग । चाप । ३. इन्द्र-धनुष ।

कार्य–पुं० [सं०] १. वह जो कुछ किया जाय । काम । व्यापार । (ऐक्ट) २. काम करने की अवस्था । क्रिया । (ऐक्शन) ३. वह जो कारण का विकार या परिणाम हो, अथवा जिसे लक्ष्य करके कोई काम किया जाय । ४. किसी सिद्धि के लिए वाला प्रयत्न । काम । (वर्क) ५. सेवा, जीविका आदि के विचार से जानेवाला काम । ६. नाटक में प्रकार की अर्थ-प्रकृतियों में से एक नाटक के अन्तिम फल या परिणाम के में होती है ।

कार्य-कर्त्ता–पुं० [सं०] १. वह जो काम करता हो । कोई विशेष काम वाला । २. कर्मचारी ।

कार्य-कारिणी–स्त्री० दे० 'कार्य-समि

कार्यकारी–पुं० [सं०] [स्त्री० कारिणी] १. विशेष रूप से कोई करनेवाला । २. किसी पदाधिकारी अनुपस्थिति में उसके पद पर रहकर सब काम करनेवाला । (ऐक्टिंग)

कार्य-क्रम–पुं० [सं०] १. होने या जानेवाले कार्यों का क्रम । २. इस का क्रम बतलानेवाली कार्यों की (प्रोग्राम)

कार्य-दिवस–पुं० [सं०] दिवस या का उतना अंश जितने में बराबर आदमी कुछ कार्य करता रहता है जिसकी गिनती एक पूरे दिन में होती (वर्किंग डे)

कार्य-प्रणाली–स्त्री० [सं०] कोई करने का ढंग । प्रक्रिया ।

कार्य-भार–पुं० [सं०] किसी कार्य पद से सम्बन्ध रखनेवाले कर्तव्यों का उत्तरदायित्व । किसी काम या पद जिम्मेदारी । (चार्ज)

कार्य-भारी–पुं० [हिं० कार्य-भार जिसने किसी कार्य या पद से रखनेवाले कर्त्तव्यों के पालन आदि का अपने ऊपर लिया हो । (इन्-चार्ज)

कार्यवाही–पुं० [सं० कार्यवाहिन्] का भार उठाने या कार्य करनेवाला । स्त्री० [फा० कारवाई] कोई कार्य

पुराना सिक्का।

काल-पुं० [सं०] १. संबंध की वह सत्ता जिसके द्वारा भूत, वर्त्तमान आदि का बोध होता है। समय। वक्त। (टाइम)

पद-काल पाकर = कुछ दिनों के बाद।

२. किसी एक समय से किसी दूसरे समय तक की अवधि। (पीरियड) ३. अन्तिम समय। मृत्यु। ४. यमराज जो मृत्यु के अधिष्ठाता देवता माने जाते हैं।

मुहा०-काल के गाल में जाना = (क) मर जाना। (ख) ऐसे संकट में पड़ना, जिसमें मर जाने का डर हो।

५. उपयुक्त समय। अवसर। मौका। ६. अकाल। मँहगी। दुर्भिक्ष। ७. [स्त्री० काली] शिव का एक नाम। ८. वह तत्व या क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि वर्णित बात या कार्य हो चुका है, हो रहा है या होगा। (टेन्स) जैसे—भूत, वर्त्तमान या भविष्य काल।

*वि० काले रंग का।

क्रि० वि० दे० 'कल'।

कालकूट-पुं० [सं०] एक प्रकार का अत्यन्त भयंकर विष। काला बछनाग।

काल कोठरी-स्त्री० [हिं० काल + कोठरी] जेलखाने की वह बहुत छोटी और अँधेरी कोठरी जिसमें कैद-तनहाई की सजा पानेवाले कैदी रखे जाते हैं।

काल-क्रम-पुं० [सं०] कार्यों, घटनाओं आदि का वह क्रम जो उनके घटित होने के काल या समय के विचार से लगाया जाता है। कालानुक्रम। (क्रोनालॉजी)

काल-क्षेप-पुं० [सं०] १. दिन काटना। वक्त बिताना। २. निर्वाह। गुजर। बसर।

काल-खंड-पुं० [सं०] किसी एक नियत समय से दूसरे नियत समय तक के बीच का अंश या काल। (पीरियड)

काल-चक्र-पुं० [सं०] १. समय का हेर-

फेर। जमाने की गर्दिश। २. एक अस्त्र।

कालज्ञ–पुं० [सं०] १. समय का हेर-फेर जाननेवाला। २. ज्योतिषी।

काल-ज्ञान–पुं० [सं०] १. स्थिति और अवस्था की जानकारी। २. अपनी मृत्यु का समय पहले से जान लेना।

काल-दोष–पुं० [सं०] वस्तुओं, कार्यों आदि का काल-क्रम निश्चित करने में वह दोष जो उन्हें अपने ठीक समय से कुछ पहले या कुछ बाद का मान लेने में होता है। (एनाक्रानिज्म)

काल-पुरुष–पुं० [सं०] १. ईश्वर का विराट् रूप। २. काल।

काल-बंजर–पुं० [सं० काल + हिं० बंजर] वह भूमि जो बहुत दिनों से जोती या बोई न गई हो।

काल-बूत*–पुं० दे० 'कलबूत'।

काल-यापन–पुं० [सं०] काल-क्षेप। दिन काटना। गुज़ारा करना।

कालर–पुं० दे० 'कल्लर'।
*वि० दे० 'काला'।
पुं० [अं० कॉलर] १. कुत्तों आदि के गले में बाँधने का पट्टा। २. कोट या कमीज में की वह पट्टी जो गले के चारो ओर रहती है।

काल-रात्रि–स्त्री० [सं०] १. अँधेरी और भयावनी रात। २. ब्रह्मा की रात। ३. दिवाली की रात।

काल-सर्प–पुं० [सं० काल (मृत्यु) + सर्प] [स्त्री० काल-सर्पिणी] वह साँप जिसके काटने से आदमी अवश्य और तुरन्त मर जाय।

काला–वि० [सं० काल] [स्त्री० काली] १. काजल या कोयले के रंग का। स्याह।
मुहा०–(अपना) मुँह काला करना= कुकर्म, पाप या व्यभिचार करना। **(दूसरे का) मुँह काला करना** = (क) किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु अथवा व्यक्ति को दूर करना। (ख) कलंक का कार बदनामी का सबब होना। जै कुकर्म से बड़ों का मुँह काल **काला मुँह होना या मुँह होना** = कलंकित होना। बदनाम २. कलुषित। बुरा। ३. भारी।
मुहा०–काले कोसों = बहुत दूर।
पुं० [सं० काल = मृत्यु] काल

काला-कलूटा–वि० [हिं० काला + (अनु०)] बहुत काला। अत्यन्त (मनुष्य)

कालाग्नि–पुं० [सं०] प्रलय-काल की

काला चोर–पुं० [सं०] १. बहु चोर। २. बुरे से बुरा आदमी।

कालातीत–वि० [सं०] जिसका बीत गया हो। बीता हुआ। विगत।

काला नमक–पुं० [हिं० काला + नमक] काले रंग का एक प्रकार का लवण। सोंचर।

काला नाग–पुं० [हिं० काला + १. काला साँप। विषधर सर्प। २. दुष्ट या खोटा आदमी।

कालानुक्रम–पुं० दे० 'काल-क्रम'।

काला पानी–पुं० [हिं० काला + १. बंगाल की खाड़ी का वह अंश पानी अत्यन्त काला है। २. ऐंडमन निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश-नि कैदी भेजे जाते थे। ३. देश-निकाले क द्वीपान्तर-वास का दंड। ४. शराब।

काला-भुजंग–वि० [हिं० काला + बहुत काला।

कालावधि–स्त्री० [सं०] किसी लिए काल या समय के विचार से की हुई अवधि। कोई काम पूरा करने नियत समय। (लिमिटेशन, टाइम

कालास्त्र–पुं० [सं०] एक प्रकार जिसके प्रहार से शत्रु का मरना समझा जाता था।

लिंदी-स्त्री० [सं०] १. कलिंद पर्वत से ली हुई, यमुना नदी । २. अफीम । ोड़-चाल)

-क्रि० वि० दे० 'कल' ।

लिक-वि० [सं०] १. किसी विशेष काल मय से सम्बन्ध रखनेवाला । कालीन । पूर्वकालिक । २.समयोचित । ३. जिसका नियत हो । ४. रह रहकर कुछ निश्चित र पर होनेवाला । (पीरिऑडिक)

लिका-स्त्री० [सं०] काली देवी ।

लिख-स्त्री० [सं० कालिका] वह काला जो धूएँ के जमने से बन जाता है ।

हा०-मुँह में **कालिख लगना** = मी के कारण मुँह दिखलाने लायक ह जाना ।

लिब-पुं० दे० 'कलबूत' ।

लिमा-स्त्री० [सं०] १. कालापन । कालिख । कलौंछ । ३. अँधेरा । ४. ंक । लांछन ।

ी-स्त्री० [सं०] १. चंडी । कालिका । पार्वती । गिरिजा ।

० [हिं० कालिन्] एक नाग जो यमुना में ा था और जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।

ी जबान-स्त्री० [हिं० काली + फा०] वह जबान जिससे निकली हुई अशुभ प्रायः सत्य घटा करें ।

ी दह-पुं० [सं० कालिय + हिं० दह] न में यमुना का एक दह या कुंड जिसमें ी नामक नाग रहा करता था ।

ीन-वि० [सं०] किसी विशेष काल मय से सम्बन्ध रखनेवाला । कालिक । मध्य-कालीन ।

० [अ०] एक प्रकार का प्रसिद्ध मोटा जिसकी बिनावट में बेल-बूटे बने े हैं । गलीचा ।

ी मिर्च-स्त्री० [हिं० काली + मिर्च] मिर्च ।

लौंछ-स्त्री० दे० 'कलौंछ' ।

काल्पनिक-पुं० [सं०] कल्पना करनेवाला । वि० जिसकी कल्पना की गई हो पर जो वास्तव में न हो । मन-गढ़ंत । कल्पित । (इमैजिनरी)

कावा-पुं० [फा०] घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया ।

मुहा०-कावा काटना = (क) वृत्त में दौड़ना । चक्कर खाना । (ख) आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना । **कावा देना** = चक्कर देना ।

काव्य-पुं० [सं०] १. वह रचना, विशेषतः पद्य-रूप की रचना, जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो जाय । कविता । (पोएम) २. वह पुस्तक जिसमें कविता हो । काव्य का ग्रंथ ।

काश-पुं० [सं०] १. एक प्रकार की घास । काँस । २. खाँसी । (रोग)

काशमीर-पुं० दे० 'कशमीर'

काशिका-स्त्री० [सं०] काशी पुरी ।

काशी-स्त्री० [सं०] उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध पुरी और नगरी ।

काशी करवट-पुं० [सं० काशी + करवट (करपत्र)] काशी का एक तीर्थ जहाँ लोग अगले जन्म में अपनी कोई कामना पूरी करने के लिए एक आरे के नीचे अपनी गरदन कटवाते थे ।

काशीफल-पुं० [सं० कोशफल] कुम्हड़ा ।

काश्त-स्त्री० [फा०] १. खेती । कृषि । २. जमींदार को कुछ वार्षिक लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व ।

काश्तकार-पुं० [फा०] [भाव० काश्तकारी] १. किसान । कृषक । खेतिहर । २. वह जिसने जमींदार को लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो । (टेनेन्ट)

सम०-मौरूसी काश्तकार = वह काश्तकार जिसे जमींदार की जमीन वंशानुक्रमिक रूप से जोतने-बोने का अधिकार प्राप्त

हो। (हेरिडेटरी टेनेन्ट) **साकितुल्मिल्कियत काश्तकार** = वह काश्तकार जिसे अपनी काश्तकारी के स्वत्व अन्तरित करने या दूसरे को देने का अधिकार प्राप्त हो। (एक्स-प्रोप्राइटरी टेनेन्ट)

काश्मीर–पुं० दे० 'कशमीर'।

काश्मीरी–वि०,पुं०,स्त्री० दे० 'कशमीरी'।

काषाय–वि० [सं०] १. हड़, बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ। २. गेरू में रँगा हुआ। गेरुआ।

काष्ठ–पुं० [सं०] १. काठ। २. ईंधन।

कास–पुं० [सं०] खाँसी।

पुं० [सं० काश] काँस नामक घास।

कासनी–स्त्री० [फा०] १. एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम में आते हैं। २. इस पौधे का बीज।

वि० कासनी के फूल के रंग की तरह नीला।

कासा–पुं० [फा०] १. प्याला। कटोरा। २. दरियाई नारियल का वह बरतन जो फकीर भीख माँगने के लिए रखते हैं।

काहँ†–अव्य० दे० 'कहँ'।

काह*–क्रि० वि० [सं० कः, को] क्या ?

काहि*–सर्व० [हिं० काहँ] १. किसको। किसे। २. किससे।

काहिल–वि० [अ०] सुस्त।

काहु*–सर्व० दे० 'काहू'।

काहू–सर्व० [हिं० का + हू (प्रत्य०)] १. किसी। २. किसी को।

पुं० [फा०] गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

काहे*–क्रि० वि० [सं० कथं] क्यों ?

यौ०–काहे को = किस लिए ? क्यों ?

किं–अव्य० दे० 'किम्'।

किंकर–पुं० [सं०] [स्त्री० किंकरी] १. दास। २. राक्षसों का एक वर्ग।

किंकर्त्तव्य-विमूढ़–वि० [सं०] जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए। हक्का-बक्का। भौचक्का।

किंकिणी–स्त्री० [सं०] १. छुद्र
२. करधनी।

किंगरी–स्त्री० [सं० किन्नरी] छोटी
जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते हैं।

किंचन–पुं० [सं०] थोड़ी वस्तु।

किंचित्–वि० [सं०] कुछ। थोड़ा।

यौ०–किंचिन्मात्र = बहुत ही

क्रि० वि० कुछ। थोड़ा।

किंजल्क–पुं० [सं०] १. कमल का
२. कमल।

वि० [सं०] कमल के केसर के रं

किंतु–अव्य० [सं०] १. पर। लें
परन्तु। २. वरन्। बल्कि।

किंपुरुष–पुं० [सं०] १. किन्नर
प्राचीन काल की एक मनुष्य जाति।

किंभूत–वि० [सं०] १. किस प्रका
कैसा। २. विलक्षण। अद्भुत। अ
३. भोंडा। भद्दा।

किंवदंती–स्त्री० [सं०] अफवाह।
खबर। जन-रव।

किंवा–अव्य० [सं०] या। अथवा।

किंशुक–पुं० [सं०] पलाश। ढाक।

कि–सर्व० [सं० किम्] १. क्या? २. किस

अव्य० [सं० किम् से फा०] १.
संयोजक शब्द जो कहना, देखना
क्रियाओं के बाद उनके विषय-व
पहले आता है। २. इतने में। ३.

किचकिच–स्त्री० [अनु०] १.
वाद-विवाद। बकवाद। २. झगड़ा।

किचकिचाना–अ० [अनु०] [
किचकिचाहट] १. (क्रोध से)
पीसना। २. भर-पूर बल लगाने के
दाँत पर दाँत रखकर दबाना।

किचड़ाना–अ० [हिं० कीचड़
(प्रत्य०)] (आँख का) कीचड़ से भ

किछु*–वि० दे० 'कुछ'।

किटकिट–स्त्री० दे० 'किचकिच'।

किटकिटाना–अ० [अनु०] [

टि] १. क्रोध से दाँत पीसना । २. दाँत के नीचे कंकड़ी की तरह कड़ा लगना ।

किना-पुं० [सं० कृतक] १. वह जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठेके की चीज का ठेका दूसरे असामियों को ता है । २. युक्ति । तरकीब ।

ट्ट-पुं० [सं०] १. धातु की मैल । २. आदि में नीचे बैठी हुई मैल ।

ता-क्रि० वि० [सं० कुत्र] १. कहाँ । २. किस ओर । किधर । ३. ओर । तरफ ।

तक-वि०, क्रि० वि० दे० 'कितना' ।

तना-वि० [सं० कियत्] [स्त्री० कितनी] किस परिणाम, मात्रा या संख्या का ? (प्रश्नवाचक) २. अधिक । बहुत ।

क्रि० वि० १. किस परिणाम या मात्रा में ? कहाँ तक ! २. अधिक । बहुत । ज्यादा ।

ता-पुं० [अ० कितऽ] १. सिलाई के लिए कपड़े की काट-छाँट । ब्योंत । २. ग । चाल । ३. संख्या । अदद । जैसे-दो किता मकान ।

ताब-स्त्री० [अ०] [वि० किताबी] १. पुस्तक । ग्रंथ । २. पंजी । बही ।

ताबी-वि० [अ० किताब] १. किताब के आकार का । २. लंबोतरा । जैसे-किताबी चेहरा । ३. किताब सम्बन्धी । किताब का । पद-किताबी कीड़ा = वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता हो ।

तिक*†-वि० दे० 'कितना' ।

तेक*†-वि० [सं० कियदेक] १. कितना । २. बहुत ।

तेब*=स्त्री० = किताब ।

तो(ै)*-क्रि० वि० [सं० कुत्र] १. कहाँ । किस जगह । २. किधर ।

त्ति*-स्त्री० दे० 'कीर्त्ति' ।

धर-क्रि० वि० [सं० कुत्र] किस ओर ? किस तरफ ?

धौं*-अव्य० [सं० किम्] १. अथवा । या । २. या तो । न जाने ।

किन-सर्व० हिं० 'किस' का बहुवचन ।
*क्रि० वि० [सं० किम् + न] १. क्यों न । २. चाहे । ३. क्यों नहीं ?
*पुं० [सं० किण] चिह्न । दाग ।

किनका-पुं० [सं० कणिक] [स्त्री० अल्पा० किनकी] अन्न का टूटा हुआ दाना ।

किनारदार-वि० [फा० किनारा + दार] (कपड़ा) जिसमें किनारा बना हो ।

किनारा-पुं० [फा०] १. किसी वस्तु का वह भाग जहाँ उसकी लम्बाई या चौड़ाई समाप्त होती है । अंतिम सिरा । २. नदी या जलाशय का तट । तीर ।
मुहा०-किनारे लगना = (किसी कार्य्य का) समाप्ति पर पहुँचना । समाप्त होना ।
३. कपड़े आदि में छोर पर का वह भाग जो भिन्न रंग या बुनावट का होता है । हाशिया । ४. पार्श्व । बगल ।
मुहा०-किनारा खींचना = दूर या अलग हो जाना । **किनारे न जाना**= अलग रहना । पास न जाना । बचना । **किनारे बैठना, रहना या होना**=अलग हो जाना । छोड़कर दूर हटना ।

किनारी-स्त्री०[फा० किनारा] १. सुनहला या रुपहला पतला गोटा । २. दे० 'किनारा' ३.।

किनारे-क्रि० वि० [हिं० किनारा] १. सीमा की ओर । सिरे पर । २. तट पर । ३. अलग ।

किन्नर-पुं० [सं०] [स्त्री० किन्नरी] १. एक प्रकार के देवता जिनका मुख घोड़े के समान माना जाता है । २. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति ।

किन्नरी-स्त्री० [सं०] किन्नर जाति की स्त्री ।
स्त्री० [सं० किन्नरी वीणा] १. एक प्रकार का तँबूरा । २. छोटी सारंगी । किंगरी ।

किफायत-स्त्री० [अ०] मित-व्यय ।

किफायती-वि० [अ० किफायत] १. कम खर्च करनेवाला । २. कम दाम का । सस्ता ।

किबला-पुं० [अ०] १. पश्चिम दिशा,

जिस ओर मुख करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। २. मक्का नगर। ३. पूज्य व्यक्ति। ४. पिता। बाप।

क़िबलानुमा–पुं० [फ़ा०] दिग्दर्शक यंत्र।

किम्–वि०, सर्व० [सं०] १. क्या ? २. कौन-सा ?

किमपि–अव्य० [सं०] १. कोई। २. कुछ भी।

किमाकार–वि० दे० 'किंभूत'।

किमि*–क्रि० वि० [सं० किम्] कैसे।

किम्मत†–स्त्री० [अ० हिम्मत] १. चतुराई। होशियारी। २. वीरता। बहादुरी।

कियत्–वि० [सं०] कितना।

कियारी*–स्त्री० = क्यारी।

कियाह–पुं० [सं०] कुछ लाली लिये या ताड़ के पके हुए फल के रंग का घोड़ा।

किरकिरा–वि० [सं० कर्कट] जिसमें महीन और कड़े रवे हों।

मुहा०–मजा किरकिरा हो जाना = रंग में भंग हो जाना। आनन्द में विघ्न पड़ना।

किरकिराना–अ० [हिं० किरकिरा] [भाव० किरकिराहट] १. किरकिरी पड़ने की-सी पीड़ा करना। २. दे० 'किटकिटाना'।

किरकिरी–स्त्री० [सं० कर्कर] १. धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा देता है। २. अपमान। हेठी।

किरकिल*–पुं० दे० 'गिरगिट'।

किरच–स्त्री० [सं० कृति = कैंची (अस्त्र)] १. एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है। २. छोटा नुकीला टुकड़ा (जैसे–हीरे, काँच आदि का)।

किरचा†–पुं० दे० 'किरच' २.।

किरण–स्त्री० [सं०] १. ज्योति की वे अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में सूर्य, चन्द्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों से निकलकर फैलती हुई दिखाई देती हैं। रोशनी की लकीर।

मुहा०– करण फूटना= २. बादले की झालर।

किरण-चित्र–पुं० [सं०] सहायता से आँखों की पुतलियों वाला वह चिह्न जो किसी चमकीले पदार्थ पर से सहसा दृष्टि हटा लेने कुछ समय तक बना रहता है।

किरणमाली–पुं० [सं०] सूर्य।

किरन–स्त्री० दे० 'किरण'।

किरनारा–वि० [हिं० किरन + (प्रत्य०)] किरणोंवाला।

किरपा*–स्त्री० दे० 'कृपा'।

किरपान*–पुं० दे० 'कृपाण'।

किरम–पुं० [सं० कृमि] कीड़ा।

किरमाल*–पुं० [सं० करवाल]

किरमिच–पुं० [अं० कैन्वस] का मोटा विलायती कपड़ा जिससे जूते आदि बनते और जिसपर अंकित होते हैं। (कैन्वस)

किरमिज–पुं० [सं० कृमि + ज] किरमिजी] १. मटमैलापन लिये हुए दिया रंग। हिरमिजी। २. इस रंग

किरराना–अ० [अनु०] क्रोध पीसना।

किरवान*–पुं० दे० 'कृपाण'।

किरवार*–पुं० दे० 'करवाल'।

किरात–पुं० [सं०] [स्त्री० किरातिन, किराती] १. एक प्राचीन जाति। २. हिमालय का पूर्वीय उसके आस-पास का देश।

स्त्री० दे० 'करात'। (तौल)

किराना–पु० [सं० क्रपण] हल्दी, मसाले जो पंसारियों के यहाँ बिकते

किरानी–पुं० [अं० क्रिश्चियन] जिसके माता-पिता में से एक यूरोपीय दूसरा भारतीय हो। २. दे० 'लिपि

किराया–पुं० [अ०] वह दाम जो कोई वस्तु काम में लाने के बदले

जो दिया जाय। भाड़ा। (रेन्ट)

रायेदार-पुं० [फा० किरायादार] वह किराये पर मकान या दूकान ले।

रावल-पुं० [तु० करावल] वह सेना आगे या रास्ता ठीक करने के लिए चलती है।

राव-पुं० दे० 'किड़ी का देश'।

रिया-स्त्री० [हिं० क्रिया] १. शपथ। म। कसम। २. मृत व्यक्ति के दि कर्म।

-क्रिया-करम = मृतक-कर्म।

रीट-पुं० [सं०] [वि० किरीटी] सिर पहनने का एक आभूषण।

-स्त्री० = कीड़ा।

-पुं० = क्रोध।

-अव्य० [सं०] १. निश्चय। अवश्य। मुच।

-स्त्री० [हिं० किलकना] १. किल- हर्षध्वनि करने की क्रिया। २. किलकारी।

[फा० किलक] एक प्रकार का नर- कलम बनती है।

ना-अ० [सं० किलकिला] किल- ना। हर्ष-ध्वनि करना।

कारना-अ० [सं० किलकिला] [भाव०] आनन्द या उत्साह के समय स्वर और गम्भीर शब्द करना। नि करना।

री-स्त्री० [हिं० किलक] बहुत होकर चिल्लाने की क्रिया या भाव। नि।

किंचित-पुं० [सं०] संयोग-शृंगार हावों में से एक, जिसमें नायिका अनेक भाव प्रकट करती है।

किला-स्त्री० [सं०] किलकारी। १. ग्रंथों के अनुसार एक का नाम। २. समुद्र में लहरों का शब्द।

पुं० [सं० कलकल] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

किलकिलाना-अ० [अनु०] [भाव० किलकिलाहट] १. दे० 'किलकारना'। २. चिल्लाना। ३. झगड़ा करना।

किलना-अ० [हिं० कील] १. कीला होना। कीला जाना। २. वश में किया जाना। ३. गति का रोका जाना।

किलनी-स्त्री० [सं० कीट, हिं० कीड़ा] पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक छोटा कीड़ा।

किललाई*-स्त्री० दे० 'चिल्लाहट'।

किललाना-अ० दे० 'चिल्लाना'।

किलवाँक-पुं० [देश०] एक प्रकार का काबुली घोड़ा।

किलवारी-†-स्त्री० = पतवार (नाव की)।

किलविष*-पुं० दे० 'किल्विष'।

किला-पुं० [अ०] लड़ाई के समय बचाव के लिए बनाया हुआ सुदृढ़ स्थान। दुर्ग। गढ़। कोट।

किलाया†-पुं० दे० 'किलावा'।

किलावा-पुं० [अ० कलावः] १. हाथी के गले में पड़ा हुआ रस्सा या बंधन जिसमें पैर फँसाकर महावत हाथी को चलाता है। २. हाथी का मस्तक जिसपर महावत बैठता है।

किलेदार-पुं० [अ० किला + फा० दार] [भाव० किलेदारी] किले का प्रधान अधिकारी। दुर्गपति।

किलेबंदी-स्त्री० [फा०] १. लड़ाई के लिए किले या मोरचे बनाने का काम। २. किसी प्रकार के आक्रमण से अपनी रक्षा करने की योजना।

किलोल-पुं० दे० 'कलोल'।

किल्लत-स्त्री० [अ०] १. कमी। २. तंगी। ३. कठिनता।

किल्ला-पुं० दे० 'खूँटा'।

किल्ली-स्त्री० [हिं० कील] १. कील। खूँटी। मेख। २. सिटकिनी। बिल्ली। ३. कल या पेंच चलाने की मुठिया।

मुहा०-किसी की किल्ली किसी के हाथ में होना = किसी का वश किसी पर होना । **किल्ली घुमाना या ऐंठना** = (क) युक्ति लगाना । (ख) किसी ओर घुमाना ।

किल्विष्-पुं० [सं०] [वि० किल्विषी] १. पाप । २. अपराध । दोष । ३. रोग ।

किवाँच-पुं० दे० 'कौंछ' ।

किवाड़(ा)-पुं० [सं० कपाट] [स्त्री० किवाड़ी] लकड़ी का पल्ला जो दरवाजा बन्द करने के लिए चौखट में जड़ा रहता है । पट । कपाट ।

किशमिश-स्त्री० [फा०] [वि० किशमिशी] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर ।

किशलय-पुं० [सं०] नया निकला हुआ कोमल पत्ता । कल्ला ।

किशोर-पुं० [सं०] [स्त्री० किशोरी] १. ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था का बालक । २. पुत्र । बेटा ।

किश्त-स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना । शह ।

किश्ती-स्त्री० [फा० कश्ती] १. नौका । नाव । २. पान, मिठाई आदि रखने की एक प्रकार की लंबी थाली । ३. शतरंज में हाथी या रुख नाम का मुहरा ।

किश्तीनुमा-वि० [फा०] जो देखने में किश्ती या नाव की तरह लम्बोतरा और दोनों सिरों पर नुकीला हो । जैसे-किश्तीनुमा टोपी = एक प्रकार की पुरानी लम्बी टोपी । (वैसी ही, जैसी आजकल गाँधी टोपी होती है) ।

किष्किंध-पुं० [सं०] मैसूर के आस-पास के देश का प्राचीन नाम ।

किष्किंधा-स्त्री० [सं०] किष्किंध देश की एक पर्वत-श्रेणी ।

किस-सर्व० [सं० कस्य] 'कौन' और 'क्या' का वह रूप जो विभक्ति लगने पर उन्हें प्राप्त होता है ।

किसन*-वि० = कृष्ण । पुं० = श्रीकृष्ण ।

किसनई*-स्त्री० दे० 'किसानी' ।

किसबत-स्त्री० [अ०] वह थैली नाई अपने उस्तरे, कैंची आदि रखते

किसमी*-पुं० [अ० कसंबी] श्रम

किसलय-पुं० दे० 'किशलय' ।

किसान-पुं० [सं० कृषाण] खेती करनेवाला । खेतिहर ।

किसानी-स्त्री० [हिं० किसान] का काम । खेती-बारी ।

किसी-सर्व०, वि० [हिं० किस + का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने होता है ।

किसुन*-पुं० = कृष्ण ।

किसू*-सर्व० दे० 'किसी' ।

किस्त-स्त्री० [अ०] १. कई बार ऋण या देना चुकाने का ढंग । २. ऋण या देने का वह भाग जो इस दिया जाय । (इन्स्टॉलमेन्ट)

किस्तबंदी-स्त्री० [फा०] थोड़ करके देन अदा करने का ढंग ।

किस्तवार-क्रि० वि० [फा०] ढंग से । किस्त करके ।

किस्ती-वि० [अ०] किस्त संबंधी । स्त्री० रुपये उधार देने और लेने रीति जिसमें उधार दिये हुए रुपये समेत कुछ नियत किस्तों में वसू जाते हैं ।

किस्म-स्त्री० [अ०] १. प्रकार । तरह । २. ढंग । तर्ज ।

किस्मत-स्त्री० [अ०] १. भाग्य **मुहा०-किस्मत आजमाना** = काम हाथ में लेकर देखना कि उसमें होती है या नहीं । **किस्मत या जागना** = भाग्य प्रबल होना भाग्यवान् होना । **किस्मत फूट** भाग्य मन्द हो जाना ।

२. किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें कई
जिले हों। कमिश्नरी।
स्सा–पुं० [अ०] १. कहानी। २.
त। हाल। ३. झगड़ा-बखेड़ा।
हिं*–सर्व० [सं० कः] १. किसका।
किसको। किसे।
री–स्त्री० दे० 'किंगरी'। (वीना)
–पुं० [अनु०] चीत्कार। चीख।
ट–पुं० [सं०] १. मगध देश का
चीन वैदिक नाम। २. इस देश का
निवासी। ३. घोड़ा।
ना–अ० [अनु०] की की करके
। चीत्कार करना।
–पुं० [सं० किकराल] बबूल।
–पुं० [सं० केकाण] घोड़ा।
नी–पुं० [सं० केकाण (देश)]
पश्चिमोत्तर का केकाण देश। २.
देश का घोड़ा। ३. घोड़ा।
–पुं० दे० 'कीचड़'।
–पुं० [हिं० कीच + ड़ (प्रत्य०)]
पानी में मिली हुई धूल या मिट्टी।
। पंक। २. किसी चीज का गाढ़ा
जैसे–आँखों का कीचड़, तेल का
।
–पुं० [सं०] कीड़ा-मकोड़ा।
[सं० किट्ट] जमी हुई मैल।
भोजी–पुं० [सं०] कीड़े-मकोड़े
पेट भरनेवाला जीव या जन्तु।
टिवोरस)
विज्ञान–पुं० [सं०] वह विज्ञान
कीड़े-मकोड़ों की जीवन-चर्या आदि
विचार होता है। (एन्टामॉलोजी)
णु–पुं० [सं० कीट + अणु] केवल
वीक्षक यंत्र से दिखाई देनेवाले वे
छोटे छोटे कीड़े जो हवा या खाने-
की चीजों में मिले रहते और अनेक
के रोगों के मूल कारण माने जाते
(जर्म्स)

कीड़ना*–अ० [सं० क्रीड़न] क्रीड़ा करना।

कीड़ा–पुं० [सं० कीट, प्रा० कीड़] १. उड़ने या रेंगनेवाला छोटा जन्तु। जैसे–जूँ, खटमल, फतिंगा आदि। कीट। मकोड़ा। २. साँप।

कीड़ी–स्त्री० दे० 'च्यूँटी'।

कीदहुँ*–अव्य० दे० 'किधौं'।

कीनना†–स० [सं० क्रीणन] खरीदना।

कीना–पुं० [फा०] द्वेष। वैर।

कीप–स्त्री० [अ० कीफ] वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन पर रखकर द्रव पदार्थ ढालते हैं। छुच्छी।

कीमत–स्त्री० [अ०] १. मूल्य। २. महत्व।

कीमती–वि० [अ०] अधिक कीमत या दाम का। बहुमूल्य।

कीमा–पुं० [अ०] बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त।

कीमिया–स्त्री० [फा०] [कर्त्ता कीमियागर] रासायनिक क्रिया। रसायन।

कीर–पुं० [सं०] तोता।

कीरति*–स्त्री० दे० 'कीर्त्ति'।

कीरतिदा*–स्त्री० = यशोदा।

कीर्ण–वि० [सं०] १. बिखरा या फैला हुआ। २. छाया हुआ।

कीर्त्तन–पुं० [सं०] १. गुणों या यश का वर्णन। २. ईश्वर या उसके अवतारों के सम्बन्ध का भजन और कथा आदि।

कीर्त्तनियाँ–पुं० [सं० कीर्त्तन] कीर्त्तन करनेवाला।

कीर्त्ति–स्त्री० [सं०] १. पुण्य। २. ख्याति। बड़ाई। यश। ३. वह अच्छा या बड़ा काम जिससे किसी के बाद उसका नाम चले।

कीर्त्तिदा–स्त्री० = यशोदा।

कीर्त्तिमान–वि० [सं०] यशस्वी।

कीर्त्ति-स्तंभ–पुं० [सं०] १. वह स्तम्भ जो किसी की कीर्त्ति का स्मरण कराने के लिए बनाया जाय। २. वह कार्य या

वस्तु जिससे किसी की कीर्त्ति स्थायी हो।

कील–स्त्री० [सं०] १. कहीं ठोंकने या जड़ने के लिए लोहे या काठ की मेख। काँटा। २. वह मूढ़ गर्भ जो योनि में अटक जाता है। ३. कान या नाक में पहनने का लौंग नाम का गहना। ४. मुँहासे का कुछ उभरा हुआ मांस।

कीलक–पुं० [सं०] १. खूँटी। कील। २. वह मंत्र जिससे दूसरे मंत्रों की शक्ति या प्रभाव नष्ट किया जाय।
वि० कीलनेवाला।

कील-काँटा–पुं० [हिं० कील + काँटा] १. कील और मेख आदि सामग्री। २. कोई कार्य सम्पन्न करने के लिए समस्त उपयोगी और आवश्यक सामग्री।

कीलन–पुं० [सं०] [वि० कीलित] १. बाँधना या रोकना। २. मंत्र का प्रभाव रोकना या नष्ट करना।

कीलना–स० [सं० कीलन] १. मेख जड़ना। कील लगाना। २. कील ठोंककर मुँह बन्द करना। जैसे-तोप कीलना। ३. किसी मंत्र या युक्ति का प्रभाव नष्ट करना। ४. साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके।

कीला–पुं० दे० 'खूँटा'।

कीलाक्षर–पुं० [सं० कील + अक्षर] बाबुल की एक बहुत प्राचीन लिपि जिसके अक्षर देखने में कील या काँटे के आकार के होते थे।

कीलाल–पुं० [सं०] १. पानी। २. रक्त। लहू। ३. अमृत। ४. शहद। ५. पशु।
वि० बंधन दूर करनेवाला।

कीली–स्त्री० [सं० कील] १. चक्र के बीच की वह कील जिसपर वह घूमता है। २. दरवाजा बन्द करने के लिए अन्दर से लगाया जानेवाला डंडा। ब्योंड़ा। ३. दे० 'कील'।

कीश–पुं० [सं०] बंदर।

कीसा–पुं० [फा०] १. थैली। २. जेब।

कुँअर–पुं० दे० 'कुँवर'।

कुँआँ–पुं० दे० 'कूआँ'।

कुँआरा–वि० [सं० कुमार] [कुँआरी] जिसका ब्याह न हुआ विवाहित। बिन-ब्याहा।

कुँई–स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कुंकुम–पुं० [सं०] १. केसर। २.

कुंचन–पुं० [सं०] सिकुड़ना।

कुंचित–वि० [सं०] १. घूमा टेढ़ा। २. घूँघरवाले। छल्लेदार।

कुंची†–स्त्री० = कुंजी (चाभी)।

कुंज–पुं० [सं०] वृक्षों या झुरमुट से मंडप की तरह ढका हुआ

कुंजक*–पुं० दे० 'कंचुकी'।

कुंज-गली–स्त्री० [हिं० कुंज+ १. बगीचों में लताओं से छाई हुई २. पतली तंग गली।

कुँजड़ा–पुं० [सं० कुंज + ड़ा [स्त्री० कुँजड़ी, कुँजड़िन] और बेचनेवाली एक जाति।

कुंजर–पुं० [सं०] [स्त्री० कुंजरा, १. हाथी। २. बाल। ३. आठ की
वि० श्रेष्ठ। जैसे–नर-कुंजर।

कुंजल–पुं० दे० 'कुंजर'।

कुंज-विहारी–पुं० [सं०] श्रीकृ

कुंजित–वि० [सं०] कुंजों से यु

कुंजी–स्त्री० [सं० कुंचिका] १. चाभी। **मुहा०–(किसी की) कुंजी** **होना** = किसी का वश में होना। २. वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी का अर्थ खुले। टीका।

कुंठित–वि० [सं०] १. जिसकी चोखी या तीक्ष्ण न हो। कुन्द। २. मद्धिम या धीमा पड़ा हुआ।

कुंड–पुं० [सं०] १. चौड़े मुँह का गहरा और बड़ा बर्तन। कुंडा। तालाब। ३. खोदा हुआ वह गड्ढा धातु आदि का बना हुआ वह पात्र, आग जलाकर हवन करते हैं। ४.

ती का जारज लड़का। ५. दे० 'कूँड'।

डल-पुं० [सं०] १. कान में पहनने एक गहना। २. वह वलय जो कन-साधु कानों में पहनते हैं। ३. ली आदि का गोल घेरा। मंडल। जैसे—साँप कुंडल। ४. गोल घेरे या चक्कर के रूप में ई हुई रस्सी, तार आदि का वह रूप में एक के ऊपर एक छल्ले से बनते चले ते हैं। (कॉयल) ५. वह मंडल जो बदली चन्द्रमा या सूर्य के चारो ओर दिखाई ता है। (हैलो)

डलित-वि० [सं०] (रस्सी, तार आदि) इस प्रकार घेरे या चक्कर के रूप में लपेटा हो कि एक के ऊपर एक छल्ले से पड़े । (कॉयल्ड)

डलिनी-स्त्री० [सं०] हठ-योग में शरीर का एक कल्पित अंग जो मूलाधार में षुम्ना नाड़ी के नीचे माना गया है।

डलिया-स्त्री० [सं० कुंडलिका] दोहे और क रोला के योग से बननेवाला छन्द।

डली-स्त्री० [सं०] १. कुंडलिनी। २. न्म काल में ग्रहों की स्थिति सूचित करने-ला वह चक्र जिसमें बारह घर होते हैं। ज्योतिष) ३. गेंडुरी। ४. साँप के गोला-बैठने की मुद्रा।

डा-पुं० [सं० कुंड] [स्त्री० अल्पा० डी] मिट्टी का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन। मटका।

[सं० कुंडल] दरवाजे की चौखट में हुआ कोंढ़ा जिसमें साँकल फँसाकर लगाया जाता है।

डी-स्त्री० [सं० कुंड] १. कटोरे के का पत्थर या मिट्टी का बरतन।

[हिं० कुंडा] १. जंजीर की कड़ी। २. किवाड़ में लगी हुई साँकल।

-पुं० [सं०] भाला। बरछी।

-पुं० [सं०] १. सिर के बाल। । २. एक देश जो कोंकण और बरार के बीच में था। ३. बहुरूपिया।

कुंती-स्त्री० [सं०] युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता। पृथा।

स्त्री० [सं० कुंत] बरछी। भाला।

कुंद-पुं० [सं०] १. जूही की तरह का एक पौधा। २. कनेर का पेड़। ३. कमल।

† पुं० [हिं कुनना] खराद।

वि० [फा०] १. कुंठित। गुठला। २. मन्द।

कुंदन-पुं० [सं० कुंद] १. बढ़िया सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर नगीने जड़ते हैं। २. बढ़िया सोना।

वि० १. कुंदन की तरह चोखा। २. नीरोग।

कुंदा-पुं० [फा०, मिलाओ सं० स्कंध] १. लकड़ी का बड़ा और बिना चीरा टुकड़ा। लक्कड़। २. लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते या कुंदीगर कपड़े की कुन्दी करते हैं। ३. बन्दूक का पिछला चौड़ा भाग। ४. दस्ता। मूठ। बेंट। ५. लकड़ी की बड़ी मुँगरी।

पुं० [सं० स्कंद] डैना। पंख।

पुं० [सं० कदन] उबालकर गाढ़ा और ठोस किया हुआ दूध। खोआ।

कुंदी-स्त्री० [हिं० कुंदा] १. कपड़ों की तह जमाने के लिए उसे मुँगरी से कूटने की क्रिया। २. खूब मारना। ठोंक-पीट।

कुंदीगर-पुं० [हिं० कुंदी + गर (प्रत्य०)] कपड़ों की कुन्दी करनेवाला।

कुंदुर-पुं० [सं०] एक प्रकार का पीला गोंद।

कुंभ-पुं० [सं०] १. मिट्टी का घड़ा। २. हाथी के सिर के दोनों ओर का ऊपरी भाग। ३. मस्तक। सिर। ४. ज्योतिष में ग्यारहवीं राशि जिसमें धनिष्ठा का उत्तरार्द्ध, पूरा शतभिषा और पूर्व भाद्रपद के प्रथम तीन पाद हैं। ५. एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष पड़ता है।

कुंभक-पुं० [सं०] प्राणायाम में साँस

लेकर वायु को शरीर में रोकना।

कुंभज-पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि जो घटयोनि भी कहलाते हैं।

कुंभीनस-पुं० [सं०] १. साँप। २. रावण।

कुंभीपाक-पुं० [सं०] एक नरक।

कुंभीर-पुं० [सं०] नक्र या नाक नामक जल-जन्तु।

कुँवर-पुं० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवरि] १. लड़का। बालक। २. पुत्र। बेटा। ३. राजा का लड़का। राजपुत्र।

कुँवरेटा-पुं० [हिं० कुँवर] छोटा लड़का। (बड़े आदमियों का)

कुँवारा-वि० दे० 'कुँआरा'।

कुँहकुँह*-पुं० दे० 'कुंकुम'।

कु-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगकर उसके अर्थ में 'नीच' 'कुत्सित' आदि का भाव बढ़ाता है। जैसे-कुमार्ग।

कुअंक-पुं० [सं०कु + अंक] १. दूषित अंक। २. दुर्भाग्य। बद-क़िस्मती।

कुअर बिलास-पुं० एक प्रकार का धान या उसका चावल।

कुआँ-पुं० दे० 'कूआँ'।

कुआर-पुं० 'दे० आश्विन'।

कुइयाँ†-स्त्री० [हिं० कूआँ] छोटा कूआँ। *स्त्री० = कुमुदिनी।

कुई-स्त्री० दे० 'कुइयाँ'। स्त्री० [सं० कुव] कुमुदिनी।

कुकड़ी-स्त्री० [सं० कुक्कुटी] तकले पर लपेटा हुआ कच्चे सूत का लच्छा।

कुकनुस-पुं० [फा०, यू० कुकनू] एक कल्पित पक्षी। (कहते हैं कि इसके गाने पर आग निकलती है जो इसे भस्म कर देती है)

कुकरा-पुं० [स्त्री० कुकरी] = कुत्ता।

कुकरी-स्त्री० = कुकड़ी।

कु-कर्म-पुं० [सं०] [वि० कुकर्मी]बुरा काम।

कु-कर्मी-वि० [हिं० कुकर्म] १. बुरा काम करनेवाला। २. पापी।

कुकुर-मुत्ता-पुं० [हिं० कुक्कुर एक प्रकार की बदबूदार खुमी।

कुकुही*†-स्त्री० [सं० कुक्कुभ]

कुक्कुट-पुं० [सं०] मुरगा। मुर्ग

कुक्कुर-पुं० [सं०][स्त्री० कुक्कुरी]

कुक्ष-पुं० [सं०] पेट। उदर।

कुक्षि-स्त्री० [सं०] १. पेट। २.

कु-खेत-पुं० [सं० कुक्षेत्र] बुरा स्

कु-ख्यात-वि० [सं०] [भाव० कु बदनाम।

कु-गति-स्त्री० [सं०] बुरी गति।

कु-गहनि†*-स्त्री० [सं० कु + आ चित आग्रह या हठ।

कुघा*-स्त्री० [सं० कुक्षि] दिशा।

कु-घात-पुं० [हिं० कु + घात] युक्त अवसर। बे-मौका। २. से किया हुआ घात।

कुच-पुं० [सं०] स्तन। छाती।

कुचकुचाना-स० [अनु० कुचकु लगातार कोंचना। २. बार बार तु गड़ाना या धँसाना।

कु-चक्र-पुं० [कर्त्ता कुचक्री] दे०

कुचना*-अ० दे० 'सिकुड़ना'।

कुचलना-स० [अनु०] १. भार दाब या चोट पहुँचाना कि विकृत

मुहा०—**सिर कुचलना** = पू पराजित करना।

२. पैरों से रौंदना।

कुचला-पुं० [सं० कचीर] एक वृक्ष बीज जो औषध के काम में आते

कु-चाल-स्त्री० [सं० कु + हिं [वि० कुचाली] १. बुरा चाल-चलन। २. पाजीपन। श

कु-चाली-वि० [हिं० कुचाल] १. चलन या आचरणवाला। २. दु

कुचील†*-वि० [सं० कुचैल वस्त्र पहने हो। मैला-कुचैला।

कु-चेष्टा-स्त्री० [सं०][वि० कु

दवा के काम में आती है।

पुं० [सं० कुट = कूटना] कूटकर बनाया हुआ खंड । जैसे-तिलकुट ।

*पुं० दे० 'काल-कूट' ।

कुटकी-स्त्री० [सं० कटु + कीट] उड़नेवाला कोई छोटा कीड़ा ।

कुटन-पन-पुं० [सं० कुट्टनी] १. कुटनी का काम । २. झगड़ा लगाने का काम ।

कुटना-पुं० [हिं० कुटनी] [स्त्री० कुटनी] स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाला । टाल । २. दो आदमियों में झगड़ा करानेवाला ।

पुं [हिं० कूटना] वह हथियार जिससे कोई चीज कूटी जाय ।

अ० [हिं० कूटना] कूटा जाना ।

कुटनाना-स० [हिं० कुटना] किसी स्त्री को बहकाकर पर पुरुष से मिलाना ।

कुटनी-स्त्री० [सं० कुट्टनी] १. स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाली स्त्री । दूती । २. झगड़ा करानेवाली स्त्री ।

कुटिया-स्त्री० [सं० कुटी] झोंपड़ी । कुटी ।

कुटिल-वि० [सं०] [स्त्री० कुटिला, भाव० कुटिलता] १. वक्र । टेढ़ा । २. घूमा या बल खाया हुआ । ३. छल्लेदार । घुँघराला । ४. कपटी । छली ।

कुटिलता-स्त्री० [सं०] १. टेढ़ापन । २. छल । कपट ।

कुटिलाई*-स्त्री० दे० 'कुटिलता' ।

कुटी-स्त्री० [सं०] घास-फूस से बना छोटा घर । कुटिया । झोंपड़ी ।

कुटी-उद्योग-पुं० [सं०] ऐसे उद्योग-धन्धे जो लोग अपने घर में बैठकर करते हैं और जिनके लिए बड़े-बड़े कल-कारखानों में नहीं जाना पड़ता । (कॉटेज इन्डस्ट्री) जैसे-दीया-सलाई, साबुन, खिलौने आदि बनाना ।

कुटीर-पुं० दे० 'कुटी' ।

कुटीरोद्योग-पुं० = कुटी-उद्योग ।

कुटी-शिल्प-पुं० = कुटी-उद्योग ।

कुटुंब–पुं० [सं०] एक साथ रहनेवाले परिवार के लोग। परिवार। कुनबा। (फैमिली)

कुटुम*–पुं० दे० 'कुटुंब'।

कु-टेक–स्त्री० [सं० कु + हिं० टेक] अनुचित हठ।

कु-टेव–स्त्री० [सं० कु + हिं० टेव] खराब या बुरी आदत।

कुट्टनी–स्त्री० दे० 'कुटनी'।

कुट्टमित–पुं० [सं०] संयोग के समय स्त्रियों की बनावटी दुःख-चेष्टा जो हावों में मानी गई है।

कुट्टी–स्त्री० [हिं० काटना] १. चारे के छोटे छोटे टुकड़े। २. कूटा और सड़ाया हुआ कागज जिससे टोकरियाँ बनती हैं। ३. लड़कों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे मित्रता तोड़ने के समय करते हैं।

कुठला–पुं० [सं० कोष्ठ] [स्त्री अल्पा० कुठली] अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

कुठाँव*–स्त्री० [सं० कु + हिं० ठाँव] बुरी ठौर। बुरी जगह।

मुहा०–कुठाँव मारना = ऐसे स्थान पर मारना, जहाँ बहुत कष्ट हो।

कुठार–पुं० [सं०] [स्त्री० कुठारी] १. कुल्हाड़ी। २. परशु। फरसा।

वि० नाशक। (यौ० के अन्त में; जैसे-कुल-कुठार)

कुठाराघात–पुं० [सं०] १. कुल्हाड़ी का आघात। २. ऐसा आघात जिससे कोई चीज पूरी तरह से या बुरी तरह से नष्ट हो जाय।

कुठाली–स्त्री० [सं० कु + स्थाली] मिट्टी की घरिया जिसमें सोना-चाँदी गलाते हैं।

कुठाहर*–पुं० दे० 'कुठौर'।

कु-ठौर–पुं० [सं० कु + हिं० ठौर] १. कुठाँव। बुरी जगह। २. बे-मौका।

कुड़बुड़ाना–अ० [अनु०] मन में कुढ़ना।

कुडमल–पुं० [सं० कुड्मल] कली।

कुड़व–पुं० [सं०] अन्न नापने का एक पुराना मान।

कुड़ा–पुं० [सं० कुष्ठ, प्रा० कुट्ठ] नामक पौधे के बीज। कौरैया।

कु-डौल–वि० [सं० कु + हिं० डौल] भद्दा। भोंडा।

कु ढंग–पुं० [सं० कु + हिं० ढंग] कुचाल। बुरी रीति।

वि० १. दे० 'कुढंगा'। २. दे०

कु-ढंगा–वि० [हिं० कुढंग] [स्त्री० १. जो काम करने का ढंग न बे-शऊर। उजड्ड। २. बेढंगा।

कु-ढंगी–वि० [हिं० कुढंग] बुरे चाल-चलन का।

कुढ़(न)–स्त्री० [सं० क्रुद्ध] होनेवाला दुःख।

कुढ़ना–अ० [सं० क्रुद्ध] १. दुःख करना, खीजना या चिढ़ डाह करना। जलना।

कु-ढब–वि० [सं० कु + हिं० ढब] ढंग का। बेढब। २. कठिन। दु पुं० बुरा ढब। खराब आदत।

कु-ढर–वि० [हिं० कु + ढर = ढ जो ठीक तरह से न ढला हो। २. भोंडा।

कुढ़ाना–स० [हिं० कुढ़ना] करना जिससे कोई कुढ़े। दुःखी

कुतका–पुं० [हिं० गतका] १. २. मोटा डंडा। सोंटा।

कुतना–अ० हिं० 'कूतना' का अ

कुतरना–स० [सं० कर्त्तन] १. में से दाँतों से छोटा टुकड़ा २. बीच ही में से कुछ अंश उ

कु-तर्क–पुं० [सं०] [वि० कुतर्की] बेढंगी दलील। वितंडा।

कु-तर्की–पुं० [सं० कुतार्किन्] करनेवाला। बकवादी। वितंडावादी

कुतवार (ल)*–पुं० दे० 'कोत

कुतिया–स्त्री० हिं० 'कुत्ता' का स्त्री

कुतुब–पुं० [अ०] ध्रुव तारा।

कुतुब-नुमा-पुं० [अ०] दिग्दर्शक यन्त्र।

कुतूहल-पुं० [सं०] [वि० कुतूहली] १. कोई वस्तु या बात देखने या सुनने की प्रबल इच्छा। विनोदपूर्ण उत्कंठा। २. क्रीड़ा। कौतुक। खेलवाड़। ३. आश्चर्य। अचम्भा।

कुत्ता-पुं० [सं० कुक्कुर] [स्त्री० कुत्ती, कुतिया] १. भेड़िए, गीदड़ आदि की जाति का एक प्रसिद्ध पशु जो घर की रखवाली के लिए पाला जाता है। श्वान। कूकुर।

पद—कुत्ते-खसी=व्यर्थ और तुच्छ तथा गंदा काम।

मुहा०—**क्या कुत्ते ने काटा है?** = क्या पागल हुए हैं? **कुत्ते की मौत मरना** = बहुत बुरी तरह से मरना।

२. जयेवाँ नामक घास। ३. वह पुरजा जो किसी चक्कर को पीछे की ओर घूमने से रोकता है। ४. लकड़ी का वह टुकड़ा जिसके नीचे गिरा देने पर दरवाजा नहीं खुल सकता। बिल्ली। ५. बन्दूक का घोड़ा। ६. नीच और तुच्छ मनुष्य।

कुत्सा-स्त्री० [सं०] [वि० कुत्सित] निन्दा।

कुत्सित-वि० [सं०] १. नीच। अधम। २. निन्दित। गर्हित। ३. बुरा। खराब।

कुदकना-अ० दे० 'कूदना'।

कुदरत-स्त्री० [अ०] [वि० कुदरती] १. शक्ति। अधिकार। प्रभुत्व। २. प्रकृति। निसर्ग। ३. ईश्वरी शक्ति। ४. रचना।

कुदरती-वि० दे० 'प्राकृतिक'।

कुदर्शन-वि० [सं०] जो देखने में अच्छा न हो। कुरूप। बदसूरत।

कुदलाना*-अ० [हिं० कूदना] कूदते हुए चलना।

कुदाँई*-वि० [हिं० कुदाँव] बुरे ढंग से घात करनेवाला। विश्वासघाती।

कुदाँव-पुं० [सं० कु + हिं० दाँव] १. बुरा दाँव। कुघात। २. विश्वासघात। दगा। धोखा। ३. संकट की स्थिति। ४. बुरा या विकट स्थान। ५. मर्म-स्थान।

कुदान-पुं० [सं०] १. बुरा दान। (लेनेवाले के लिए) जैसे—शय्यादान, गजदान आदि। २. कुपात्र, अयोग्य आदि को दिया जानेवाला दान।

स्त्री० [हिं० कूदना] १. कूदने की क्रिया या भाव। २. उतनी दूरी, जितनी एक बार में पार की जाय।

कुदाना—स० [हिं० 'कूदना' का प्रे०] किसी को कूदने में प्रवृत्त करना।

कु-दाम*-पुं० [सं० कु + हिं० दाम] खोटा सिक्का। खोटा रुपया।

कुदायँ*-पुं० दे० 'कुदाँव'।

कुदाल-स्त्री० [सं० कुद्दाल] [स्त्री० अल्पा० कुदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औजार।

कु-दिन-पुं० [सं०] १. आपत्ति का समय। बुरे दिन। २. वह दिन जिसमें ऋतु-विरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों।

कु-दृष्टि-स्त्री० [सं०] बुरी नजर। पाप-दृष्टि। बद-निगाह।

कु-देव-पुं० [सं० कु=बुरा + देव] राक्षस।

कुधर-पुं० [सं० कुध्र] १. पहाड़। पर्वत। २. शेषनाग।

कुनकुना-वि० [सं० कदुष्ण] थोड़ा गरम। गुनगुना। (तरल पदार्थ)

कुनना-वि० [सं० क्षुणन] १. चिकने और चमकीले करने के लिए बरतन आदि खरादना। २. खरोचना।

कुनबा-पुं० [सं० कुटुंब] कुटुंब। परिवार।

कुनबी-पुं० दे० 'कुर्मी'।

कुनह-स्त्री० [फा० कीनः] [वि० कुनही] मन में होनेवाली शत्रुता द्वेष। मनोमालिन्य।

कुनाई-स्त्री० [हिं० कुनना] १. किसी वस्तु को खरादने या खुरचने पर निकलनेवाला चूरा। बुरादा। २. कुनने या खरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कु-नाम-पुं० [सं०] बदनामी। अपयश।

कुनित*—वि० दे० 'क्वणित'।

कुनैन—स्त्री० [अं० क्विनाइन] सिनकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो शीत-ज्वर के लिए उपकारी माना जाता है।

कु-पंथ—पुं० [सं० कुपथ] [वि० कुपंथी] १. बुरा मार्ग। २. निषिद्ध आचरण। कुचाल। ३. बुरा मत। कुत्सित सिद्धान्त।

कु-पढ़—वि० [सं० कु + हिं पढ़ना] अनपढ़।

कु-पथ—पुं० [सं०] १. बुरा रास्ता। २. निषिद्ध आचरण। बुरी चाल।

यौ०—कुपथ-गामी = निषिद्ध आचरण-वाला।

*पुं० दे० 'कुपथ्य'।

कु-पथ्य—पुं० [सं०] वह आहार-विहार जो स्वास्थ्य को खराब करे। बद-परहेजी।

कुपना*—अ० दे० 'कोपना'।

कु-पाठ—पुं० [सं०] दुष्टता का परामर्श या शिक्षा। बुरी सलाह।

कु-पात्र—वि० [सं०] [भाव० कुपात्रता] १. बुरा या अयोग्य पात्र। २. अनधिकारी। अयोग्य। ३. नालायक़। ४. वह जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध हो।

कु-पार*—पुं० [सं० अकूपार] समुद्र।

कुपित—वि० [सं०] १. जिसे कोप हुआ हो। क्रुद्ध। २. अप्रसन्न। नाराज़।

कुपुटना†—स० दे० 'कपटना'।

कु-पुत्र—पुं० [सं०] [स्त्री कुपुत्री] वह पुत्र जो कुपथ-गामी हो। दुष्ट पुत्र। कपूत।

कुप्पा—पुं० [सं० कूपक] [स्त्री० अल्पा० कुप्पी] घड़े के आकार या चमड़े का वह बरतन जिसमें घी, तेल आदि रखते हैं।

मुहा०—फूलकर कुप्पा होना या हो जाना = (क) फूल जाना। (ख) बहुत मोटा हो जाना। (ग) बहुत प्रसन्न होना।

कु-प्रबन्ध—पुं० [सं० कु + प्रबंध] बुरा या खराब प्रबन्ध। बद-इंतजामी। (मिस-मैनेजमेन्ट)

कु-प्रयोग—पुं० [सं०] किसी वस्तु, पद, अधिकार आदि का अनुचित या प्रयोग। (एब्यूज़)

कुफर*†पुं० दे० 'कुफ्र'।

पुं० दे० 'कु-फल'।

कु-फल—पुं० [सं०] किसी बात या का होनेवाला बुरा फल या परिणाम।

कुफ्र—पुं० [अ०] १. मुसलमानी भिन्न अन्य मत। २. मुसलमानी विरुद्ध बात।

कुबंड*—पुं० [सं० कोदंड] धनुष।

वि० [कु + बंठ = खंज] टूटे-फूटे वाला। विकृतांग।

कुब*—पुं० दे० 'कूबड़'।

कुबजा—स्त्री० दे० 'कुब्जा'।

कुबड़ा—पुं० [सं० कुब्ज] [स्त्री० कु वह जिसकी पीठ फूली, टेढ़ी या हुई हो।

वि० झुका हुआ। टेढ़ा।

कुबड़ी—स्त्री० [हिं० कुबड़ा] १. दे० २. वह मोटी छड़ी जिसका सिरा झुका

कुबत*—स्त्री० [सं० कु + हिं० बात बुरी बात। २. निन्दा। ३. बुरी चाल

कुबरी—स्त्री० दे० 'कुब्जा'।

कु-बाक*—पुं० दे० 'कुवाच्य'।

कु-बानि—स्त्री० [सं० कु + हिं० बानि] बान या आदत। बुरी लत। कुटेव।

कु-बानी—स्त्री० [सं० कु + बानी (वाणि बुरा और निन्दित या दूषित व्यवसा वाणिज्य।

स्त्री० [सं० कु + वाणी] बुरी या बात।

कुबुज*—वि० = कुबड़ा।

*पुं० दे० 'कुब्जक'।

कु-बुद्धि—वि० [सं०] दुर्बुद्धि। मूर्ख।

स्त्री० [सं०] १. बुरी बुद्धि। खराब २. मूर्खता। बेवकूफी। ३. बुरी सला

कु-बुधि*—स्त्री० = कुबुद्धि।

कु-बेला—स्त्री० [सं० कुवेला] १.

समय। २. अनुपयुक्त समय।
-बोल-पुं० [सं० कु + हिं० बोल (बात)]
री, अनुचित या अशुभ बात।
ोलना*-वि० [हिं० कु + बोलना]
स्त्री० कुबोलनी] बुरी या अशुभ बातें
लनेवाला।
ज-वि० [सं०] [स्त्री० कुब्जा] जिसकी
ठ टेढ़ी हो। कुबड़ा।
ब्जक-पुं० [सं०] १. दे० 'कुबड़ा'।
२. सफेद गुलाब (फूल)।
ब्जा-स्त्री० [सं०] १. कुबड़ी स्त्री। २.
स की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचन्द्र से
म रखती थी। कुबरी।
भाव-पुं० [सं०] बुरा या दुष्ट भाव।
ंडी*-स्त्री० [सं० कमठबाँस] पतली
ची या छड़ी।
मइत-पुं० दे० 'कुम्मैत'।
मक-स्त्री० [तु०] १. सहायता। मदद।
२. सैनिक कार्यों के लिए या सैनिकों आदि के
प में मिलनेवाली सहायता।
मकुम-पुं० [सं० कुंकुम] १. केसर।
२. रोली।
ं० दे० 'कुमकुमा'।
कुमा-पुं० [तु० कुमकुमः] १. लाख
का वह पोला गोला जिसमें अबीर या
ल भरकर एक दूसरे पर फेंकते हैं। २.
क प्रकार का तंग मुँह का लोटा। ३.
च का बना हुआ पोला छोटा गोला।
ाच-पुं० [अ० कुमाश] एक प्रकार का
मी कपड़ा।
ार-पुं० [सं०] [स्त्री० कुमारी]
० कौमार्य] १. पाँच वर्ष की अवस्था
बालक। २. युवावस्था या उससे कुछ
ले की अवस्था का पुरुष। ३. पुत्र।
ा। ४. युवराज। ५. सनक, सनन्दन,
और सुजात आदि कई ऋषि जो सदा
क ही रहते हैं। ६. कार्त्तिकेय। ७. एक
जिसका उपद्रव बालकों पर होता है।

वि० [सं०] बिना ब्याहा। कुँवारा।

कु-मारग*-पुं० दे० 'कुमार्ग'।

कुमार-तंत्र-पुं० [सं०] बच्चों के रोगों के निदान और चिकित्सा का शास्त्र। बाल-तन्त्र।

कुमार-भृत्य-पुं० [सं०] १. गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या। २. गर्भिणी और नव-प्रसूत बालकों के रोगों की चिकित्सा।

कुमारामात्य-पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय राज्यों में वह अधिकारी जो किसी मंत्री या दंड-नायक के अधीन और उसके सहायक के रूप में रहकर काम करता था। (इस पद पर प्रायः राज-परिवार के लोग रखे जाते थे; इसी लिए इसमें 'अमात्य' के पहले 'कुमार' लगता था।)

कुमारिका-स्त्री० [सं०] कुमारी।

कुमारी-स्त्री० [सं०] १. बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या। २. घीकुवार। ३. पार्वती। ४. दुर्गा। ५. एक अंतरीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है।

वि० स्त्री० बिना ब्याही। कुँआरी।

कुमारी-पूजन-पुं० [सं०] वह देवी-पूजा जिसमें कुमारी बालिकाओं का पूजन करके उन्हें भोजन या जलपान कराया जाता है।

कु-मार्ग-पुं० [सं०] [वि० कुमार्गी] १. बुरा मार्ग। बुरी राह। २. अधर्म।

कु-मार्गी-वि० [सं० कुमार्गिन्] [स्त्री० कुमार्गिनी] १. बद-चलन। कुचाली। २. अधर्मी। धर्म-हीन।

कुमुद-पुं० [सं०] १. कूईं। कोका। २. लाल कमल। ३. चाँदी। ४. विष्णु।

कुमुदिनी-स्त्री० [सं०] १. सफेद कमल का पौधा। कुईं। कोईं।

कुमेदान-पुं० [अ० कुम्मः + फा० दान] मुसलमानी शासन-काल में एक सैनिक पद। जैसे-शाही में अब्बा कुमेदान थे।

कुमेरु-पुं० [सं०] 'सुमेरु' का विपरीत। दक्षिणी ध्रुव।

कुमोद*-पुं० दे० 'कुमुद'।

कुमोदिनी–स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कुम्मैत–पुं० [तु० कुमेत] १. घोड़े का एक रंग, जो कुछ कालापन लिये लाल होता है। लाखी। २. इस रंग का घोड़ा। कुरंग। हाँसल। हिनाई।

यौ०–आठो गाँठ कुम्मैत=अत्यन्त चतुर। छँटा हुआ। चालाक। धूर्त्त।

कुम्हड़ा–पुं० [सं० कूष्मांड] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है।

पद–कुम्हड़े की बतिया = (क) कुम्हड़े का छोटा कचा फल। (ख) अशक्त और निर्बल मनुष्य।

कुम्हड़ौरी–स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा + बरी] पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई हुई बरी।

कुम्हरा'–पुं० = कुम्हार।

कुम्हलाना–अ० [सं० कु + म्लान] १. पौधे का हरापन जाता रहना। मुरझाना। २. सूखने पर होना। ३. कान्ति का मलिन पड़ना। प्रभा-हीन होना।

कुम्हार–पुं० [सं० कुम्भकार] [स्त्री० कुम्हारिन] मिट्टी के बरतन बनानेवाला।

कुम्ही*–स्त्री० [सं० कुम्भी] जलकुम्भी।

कु-यश–पुं० [सं० कु + यश] अपयश। बदनामी।

कुरंग–पुं० [सं०] [स्त्री० कुरंगी] १. बादामी या तामड़े रंग का हिरन। २. हिरन।
पुं० [सं० कु + हिं० रंग] बुरा ढंग या लक्षण।
वि० बुरे रंग का। बदरंग।
पुं० दे० 'कुम्मैत'। (घोड़ा)

कु-रंगी–वि० [हिं० कुरंग] बुरे ढंग या लक्षणवाला। कुढंगी।

कुरंड–पुं० [सं० कुरुविंद] एक खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण लाख आदि में मिलाकर हथियार तेज करने की सान बनाते हैं।

कुर*–पुं० = कुल।

कुरकी–स्त्री० दे० 'कुर्की'।

कुरकुरा–वि० [हिं० कुरकुर से अनु०] [स्त्री० कुरकुरी] जिसे तोड़ने पर कुरकु
हो। खरा और करारा।

कुरकुरी–स्त्री० [अनु०] पतली
हड्डी। जैसे–कान की हड्डी।

कुरता–पुं० [तु०] [स्त्री० कुरती] घु
कमर को ढकनेवाला एक पहनावा जो
डालकर पहना जाता है।

कुरबान–वि० [अ०] निछावर।

कुरबानी–स्त्री० [अ०] बलिदान।

कुरमी–पुं० दे० 'कुर्मी'।

कुररी–स्त्री० दे० 'टिटिहरी'।

कुरलना*–अ० [सं० कलरव] मु
से पक्षियों का बोलना।

कुरला*–स्त्री० [हिं० कुरलना] क्री

कुरलाई–स्त्री० [हिं० कुरलना]
के बोलने का शब्द। कल-रव। चहक

कु-रव–पुं० [सं० कु + रव] बुरा या
शब्द।
वि० बुरी बोली बोलनेवाला।

कुरवना–स० [हिं कुरा ना०
एक-बारगी बहुत-सा एक जगह रख
ढेर या राशि लगाना।

कुरवारना*–स० [स० कर्त्तन
बार-बार या थोड़ा-थोड़ा करके या
कर खोदना। जैसे–पक्षियों का चोंच
कुरवारना। २. खरोचना। करोदना

कुरविंद*–पुं० दे० 'कुरुविंद'।

कुरसी–स्त्री० [अ० = राजधानी]
एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें
सहारे के लिए पटरी लगी रहती है।

यौ०–आराम-कुरसी = एक प्र
बड़ी कुरसी जिसपर आदमी लेट सक
२. वह चबूतरा जिसपर इमारत
जाती है। ३. पीढ़ी। पुश्त।

कुरसीनामा–पुं० दे०, 'वंश-वृक्ष'।

कुराय*–स्त्री० [सं० कु + फा०
जमीन में पड़ा हुआ गड्ढा।

कु-राह–स्त्री० [सं० कु + फा०

[वि० कुराही] १. कुमार्ग। बुरी राह। २. बुरी चाल। खोटा आचरण।

कुराहर*-पुं० दे० 'कोलाहल'।

कुरिया*-स्त्री० = कुटिया।

कुरियाल-स्त्री० [सं० कल्लोल] चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना।

मुहा०—**कुरियाल में आना** = (क) चिड़ियों का आनन्द में होना। (ख) मौज में आना।

कुरिहार-पुं० दे० 'कोलाहल'।

कुरी*-स्त्री० [हिं० कूरा] १. छोटा धुस या टीला। २. खंड। टुकड़ा।

स्त्री० [सं० कुल] १. वंश। घराना। २. नदान। घर। ३. ढेर। समूह। राशि।

कुरीति-स्त्री० [सं०] १. बुरी रीति। कुप्रथा। २. बुरी चाल।

कुरु-पुं० [सं०] १. वैदिक आर्य्यों का एक कुल। २. हिमालय के पश्चिम और दक्षिण का एक प्रदेश। ३. एक राजा जिसके वंश में पाण्डु और धृतराष्ट्र हुए थे।

कुरुई-स्त्री० [सं० कुडव] बाँस या मूँज की बुनी हुई छोटी डलिया। मौनी।

कुरुक्षेत्र-पुं० [सं०] एक बहुत प्राचीन तीर्थ जो अम्बाले और दिल्ली के बीच में है। (महाभारत का युद्ध यहीं हुआ था।)

कुरुम*-पुं० [सं० कूर्म्म] कछुआ।

कुरुविंद-पुं० [सं०] १. माणिक नामक रत्न। २. दर्पण। शीशा।

कुरूप-वि० [सं०] [स्त्री० कुरूपा, भाव० कुरूपता] १. बुरी शकल का। बदसूरत। २. बेडौल। बेढंगा।

कुरेदना-स० [सं० कर्त्तन] १. खुरचना। खोचना। करोदना। २. खोदना। ३. या ढेर को इधर-उधर चलाना।

कुरेर*-स्त्री० दे० 'कुलेल'।

कुरेलना-स० दे० 'कुरेदना'।

कुरैना-स० दे० 'कुरवना'।

कुरैया-स्त्री० [सं० कुठज] सुन्दर फूलों-वाला एक पेड़ जिसके बीज 'इन्द्र-जौ' कहलाते हैं।

कुरौना*-स० [हिं० कूरा=ढेर] ढेर लगाना।

कुर्क-वि० [तु० क़ुर्क़] [संज्ञा कुर्की] (माल) जिसकी कुर्की हुई हो। जब्त।

कुर्क-अमीन-पुं० [तु० क़ुर्क़ + फा० अमीन] वह सरकारी कर्मचारी जो जायदाद कुर्क करता है।

क़ुर्की-स्त्री० [तु० क़ुर्क़] कर्जदार का ऋण या अपराधी का जुरमाना वसूल करने के लिए राज्य द्वारा होनेवाला किसी की सम्पत्ति पर अधिकार। आसंजन। (एटैचमेन्ट)

कुर्मी-पुं० [सं० कूर्मि] १. तरकारियाँ आदि बोनेवाली एक जाति। कुनबी। २. गृहस्थ।

कुर्री-स्त्री० [देश०] १. हेंगा। पटरा। २. कुरकुरी हड्डी। ३. गोल टिकिया।

कुलंग-पुं० [फा०] १. मटमैले रंग का एक पक्षी। २. मुरगा।

कुल-पुं० [सं०] १. एक ही पूर्व-पुरुष से उत्पन्न व्यक्तियों का वर्ग या समूह। वंश। घराना। खानदान। २. जाति। ३. समूह। समुदाय। झुंड। ४. घर। मकान। ५. वाम मार्ग। कौल धर्म्म।

वि० [अ०] समस्त। सब। सारा।

यौ०—कुल जमा = (क) सब मिलाकर। (ख) केवल। मात्र।

कुलक-पुं० [सं०] एक ही प्रकार की, एक साथ काम में आनेवाली एक दूसरी से सम्बद्ध वस्तुओं का समूह। (सेट) जैसे—एक ही ग्रंथ-माला के सब ग्रन्थों का कुलक।

कुलकना-अ० [हिं० किलकना] प्रसन्न होकर उछलना।

कुल-कलंक-पुं० [सं०] अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला।

कुल-कानि-स्त्री० [सं० कुल + हिं० कानि = मर्यादा] कुल की मर्यादा। कुल की लज्जा।

कुलकुलाना-अ० [अनु०] कुल कुल शब्द होना।

मुहा०–आँतें कुलकुलाना=भूख लगना।

कु-लक्षण–पुं० [सं०] १. बुरा लक्षण। २. कुचाल। बद-चलनी।
वि० [सं०] [स्त्री० कुलक्षणा, कुलक्षणी] बुरे लक्षणवाला।

कुलच्छन*–पुं०, वि० दे० 'कुलक्षण'।

कुलट–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० कुलटा] १. व्यभिचारी। बद-चलन। २. औरस के अतिरिक्त और प्रकार का पुत्र। जैसे–क्षेत्रज, दत्तक आदि।

कुलटा–वि० स्त्री० [सं०] अनेक पुरुषों से अनुचित सम्बन्ध रखनेवाली। छिनाल। बद-चलन। (स्त्री)
स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो कई पुरुषों से प्रेम रखती हो।

कुल-तंत्र–पुं० [सं०] १. प्राचीन काल की वह शासन-प्रणाली जिसमें किसी विशिष्ट कुल के नायक ही राज्य के शासन का सब काम करते थे। सरदार-तंत्र। २. वह राज्य जिसमें उक्त प्रकार का शासन हो। (एरिस्ट्रोक्रेसी; उक्त दोनों अर्थों के लिए)

कुल-तारन–वि० [सं० कुल+हिं० तारना] [स्त्री० कुल-तारनी] कुल को तारने या उसका यश बढ़ानेवाला।

कुलथी–स्त्री० [सं० कुलस्थिका] एक प्रकार का मोटा अन्न।

कुल-देवता–पुं० [सं०] [स्त्री० कुलदेवी] वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में परम्परा से होती आई हो।

कुल-धर्म–पुं० [सं०] किसी परिवार में प्रचलित नियम या परम्परा। कुल की रीति।

कुल-पति–पुं० [सं०] १. घर का मालिक। २. वह अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। ३. वह ऋषि जो दस हजार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा दे। ४. किसी विश्व-विद्यालय का उप-प्रधान सर्वोच्च अधिकारी। (वाइस-चान्सलर)

कुल-पूज्य–वि० [सं०] जिसका मान परम्परा से होता आया हो।

कुलफ*–पुं० [अ० कुल्फ] ताला।

कुलफा–पुं० [फा० खुर्फः] एक का साग। बड़ी जाति की अमलोनी।

कुलफी–स्त्री० [हिं० कुलफ] १. वै वह चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर की तरह जमाते हैं। २. इस प्रकार हुआ दूध या शरबत। ३. धातु का टुकड़ा जो किसी चीज में घूमने अथवा घुमाने के लिए पेंच से कसा जाता है।

कुलबुलाना–अ० [कुलबुल अनु०] [भा कुलबुली, कुलबुलाहट] १. बहुत से छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हि डोलना। इधर-उधर रेंगना। २. चं होना। आकुल होना।

कुलबुली–स्त्री० [अनु०] कुलबुलाने की या भाव। २. मन में होनेवाली किसी की आतुरता या चंचलता।

कुल-बोरन–वि० [हिं० कुल+बोर [स्त्री० कुलबोरनी] वंश की मर्यादा करनेवाला।

कुल-राज्य–पुं० दे० 'कुल-तंत्र'।

कुलवंत–वि० [स्त्री० कुलवंती] दे० 'कुली

कुलवट*–स्त्री० [हिं० कुल=वंश वाट=मार्ग] कुल या वंश की परम मर्यादा या धर्म्म।

कुल-वधू–स्त्री० [सं०] अच्छे कुल या की और मर्यादा से रहनेवाली स्त्री।

कुलह–स्त्री० [फा० कुलाह] १. टो २. शिकारी चिड़ियों की आँखों बाँधी जानेवाली पट्टी या ढक्कन। अँधि

कुलही–स्त्री० [फा० कुलाह] १. ब पहनने की टोपी। २. कन-टोप।

कुलांगार–पुं० [सं०] कुल को कलं करनेवाला।

कुलाँच(ट)*–स्त्री० [तु० कुलाच] चौक छलाँग। उछाल।

कुलाचार-पुं० [सं०] वह आचार या रीति-व्यवहार जो किसी वंश या कुल में बहुत दिनों से होता आया हो।

ुलावा-पुं० [अ०] १. लोहे का वह ुल्ला जिसके द्वारा चौखट से किवाड़ जकड़ा हता है। पायजा। २. नाली जिसमें होकर पानी निकलता है मोरी।

ुलाल-पुं० [सं०] [स्त्री० कुलाली] मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार।

ुलाह-पुं० [सं०] भूरे रंग का घोड़ा जिसके पैर काले हों।

स्त्री० [फा०] पश्चिमी भारत की एक प्रकार की टोपी जिसके ऊपर पगड़ी बाँधी जाती है।

ुलाहल*-पुं० दे० 'कोलाहल'।

ुलिंग-पुं० [सं०] चिड़िया। पक्षी।

ुलिक-पुं० [सं०] १. शिल्पकार। दस्तकार। कारीगर। २. अच्छे कुल में उत्पन्न पुरुष। ३. कुल का प्रधान पुरुष।

ुलिश-पुं० [सं०] १. हीरा। २. वज्र। बिजली। गाज। ३. कुठार।

ुली-पुं० [तु०] बोझ ढोनेवाला। मजदूर। यौ०-**कुली-कबारी** = छोटे दरजे के लोग।

ुलीन-वि० [सं०] [भाव० कुलीनता] उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे वंश या घराने का। खानदानी।

ुलेल-स्त्री० [सं० कल्लोल] [क्रि० कुलेलना] प्रसन्न होकर की जानेवाली उछल-कूद। क्रीड़ा। कलोल।

ल्या-स्त्री० [सं०] १. नहर। २. नाली।

ल्ली-वि० = कुल (सब या पूरा)।

ल्ला-पुं० [सं० कवल] [स्त्री० कुल्ली] मुँह साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया। गरारा।

पुं० [?] वह घोड़ा जिसकी रीढ़ पर काली धारी हो।

पुं० [फा० काकुल] बालों की लटें। काकुल।

पुं० दे० 'कुल्लाह'।

कुल्ली-स्त्री० [सं० कवल] मुँह साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया। कुल्ला।

कुल्हड़-पुं० [सं० कुल्हर] [स्त्री० कुल्हिया] मिट्टी का छोटा गोल पात्र। पुरवा। चुक्कड़।

कुल्हाड़ा-पुं० [सं० कुठार] [स्त्री० अल्पा० कुल्हाड़ी] पेड़ काटने और लकड़ी चीरने का एक औजार।

कुल्हाड़ी-स्त्री० हिं० 'कुल्हाड़ा' का अल्पा०।

कुल्हिया-स्त्री० [हिं० कुल्हड़] छोटा पुरवा या कुल्हड़। चुक्कड़।

मुहा०-कुल्हिया में गुड़ फोड़ना=इस प्रकार कोई कार्य्य करना, जिसमें किसी को कुछ भी खबर न हो।

कुवलय-पुं० [सं०] [स्त्री० कुवलयिनी] १. नीली कोईं। कोका। २. नील कमल। ३. भू-मंडल।

कु-वाच्य-वि० [सं०] जो कहने योग्य न हो। गन्दा। बुरा। (कथन)

पुं० दुर्वचन। गाली।

कु-विचार-पुं० [सं०] बुरा विचार।

कुवेर-पुं० [सं०] यक्षों के राजा जो इन्द्र की निधियों के भंडारी माने जाते हैं।

कु-व्यवहार-पुं० [सं०] १. बुरा या अनुचित व्यवहार। २. दे० 'कुप्रयोग'।

कुश-पुं० [सं०] [स्त्री० कुशा, कुशी] १. काँस की तरह की एक घास जिसका यज्ञों में उपयोग होता था। २. जल। पानी। ३. श्री रामचन्द्र जी के एक पुत्र का नाम। ४. हल की फाल। कुसी।

कुशल-वि० [सं०] [स्त्री० कुशला, भाव० कुशलता] १. चतुर। दक्ष। प्रवीण। (एफीशिएन्ट) २. श्रेष्ठ। अच्छा। भला। ३. पुण्यशील। ४. क्षेम। मंगल। खैरियत।

कुशल-क्षेम-पुं० [सं०] राजी-खुशी। खैर-आफियत।

कुशलता-स्त्री० [सं०] १. चतुराई।

चालाकी। २. योग्यता। प्रवीणता।

कुशलाई–स्त्री० दे० 'कुशलता'।

कुशलात–स्त्री० = कुशलता।

कुशा–स्त्री० दे० 'कुश' १.।

कुशाग्र–वि० [सं०] कुश की नोक की तरह तीखा। तीव्र। तेज। जैसे–कुशाग्र बुद्धि।

कुशादा–वि० [फा०] [भाव० कुशादगी] १. चारो ओर से खुला हुआ। २. लम्बा-चौड़ा।

कुशासन–पुं० [सं० कुश + आसन] कुश का बना हुआ आसन।

कु-शासन–पुं० [सं० कु + शासन] बुरा शासन।

कुशीलव–पुं० [सं०] १. कवि। २. नट।

कुशेशय–पुं० [सं०] कमल।

कुश्ता–पुं० [फा० कुश्तः] धातुओं को रासायनिक क्रिया से फूँककर बनाया हुआ चूर्ण। भस्म।

कुश्ती–स्त्री० [फा०] दो आदमियों का एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिए लड़ना। मल्ल-युद्ध।

मुहा०–**कुश्ती मारना** = कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना। **कुश्ती खाना** = कुश्ती में हार जाना।

कुष्ठ–पुं० [सं०] कोढ़। (रोग)

कुष्ठी–वि० = कोढ़ी।

कुष्मांड–पुं० [सं०] कुम्हड़ा।

कु-संग–पुं० दे० 'कुसंगति'।

कु-संगति–स्त्री० [सं०] बुरों का संग-साथ। बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना।

कु-संस्कार–पुं० [सं०] बुरा संस्कार, जिससे चित्त में बुरी बातें आती हैं। बुरी वासना।

कु-सगुन–पुं० [सं० कु + हिं० सगुन] बुरा सगुन। असगुन।

कु-समय–पुं० [सं०] १. बुरा समय। खराब वक्त। २. वह समय जो किसी कार्य के लिए ठीक न हो। अनुपयुक्त अवसर। ३. नियत से आगे या पीछे का समय।

कुसल†*–वि० दे० 'कुशल'।

कुसलई*–स्त्री० दे० 'कुशलता'।

कुसलाई*– स्त्री० १. दे० 'कुशलता' दे० 'कुशल-क्षेम'।

कुसलात*–पुं० [सं० कुशल] क्षेम। खैरियत। कल्याण।

कुसली*–वि० दे० 'कुशल'। †स्त्री० [हिं० कसैला] १. आम आ की बड़ी गुठली। २. गोझा या पिराक पकवान।

कु-साइत–स्त्री० [सं० कु + अ० स १. बुरी साइत या मुहूर्त्त। २. अ समय।

कुसी–पुं० [सं० कुशी] हल की

कुसुंभ–पुं० [सं०] १. कुसुम। २. केसर। कुमकुम।

कुसुंभा–पुं० [सं० कुसुंभ] १. का रंग। २. अफीम और भाँग के बना हुआ एक मादक द्रव्य। (इसका राजस्थान में है।)

कुसुंभी–वि० [सं० कुसुंभ] कुसुम के रंग का। लाल।

कुसुम–पुं० [सं०] [वि० कुसुमित फूल। पुष्प। २. वह गद्य जिसमें छोटे वाक्य हों। ३. स्त्रियों का रज। पुं० [सं० कुसुंभ] एक पौधा जिसमें फूल लगते हैं और जिसके बीजों से निकलता है। बर्रे।

कुसुम-बाण–पुं० [सं०] कामदेव।

कुसुम-शर–पुं० [सं०] कामदेव।

कुसुमांजली–स्त्री० [सं०] हाथ की में फूल भरकर देवता पर चढ़ाना। पुष्प

कुसुमाकर–पुं० [सं०] १. वसन्त २. फुलवारी। बगीचा।

कुसुमायुद्ध–पुं० [सं०] कामदेव।

कु-सूत–पुं० [सं० कु + सूत्र] कु अ-व्यवस्था।

कुसेस (सय)-पुं० [सं० कुशेशय] कमल।

कुहक-पुं० [सं०] १. माया। धोखा। छल। फरेब। २. धूर्त। मक्कार। ३. मुर्गे की बाँग। ४. इन्द्रजाल जाननेवाला। जादूगर। स्त्री० पक्षी, विशेषतः कोयल का मधुर शब्द।

कुहकना-अ० [सं० कुहुक] पक्षी का मधुर स्वर में बोलना। पीकना।

कुहकिनी-स्त्री० दे० 'कोयल'।

कुहकुह-पुं० दे० 'कुंकुम'।

कुहकुहाना-अ० दे० 'कुहकना'।

कुहर-पुं० [सं०] १. छेद। सूराख। २. कान के छेद। जैसे-कर्ण-कुहर।

कुहराम-पुं० [अ० क़ह्र + आम] १. विलाप। रोना-पीटना। २. हलचल।

कुहाना-अ० दे० 'रूठना'।

कुहारा-पुं० दे० 'कुल्हाड़ा'।

कुहासा-पुं० दे० 'कोहरा'।

कुही-स्त्री० [सं० कुधि] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।

पुं० [फा० कोही = पहाड़ी] घोड़े की एक जाति। टाँगन।

वि० [हिं० कोह = क्रोध] क्रोधी।

कुहुँचा-पुं० दे० 'पहुँचा' (कलाई)।

कुहुक-पुं० दे० 'कुहक'।

कुहुकना-अ० दे० 'कुहकना'।

कुहुक-बान-पुं० [हिं० कुहकना + बाण] एक प्रकार का बाण जिसके चलते समय शब्द निकलता है।

कुहुकिनी-स्त्री० दे० 'कोयल'।

कुहु-स्त्री० दे० 'कुहू'।

कुहू-स्त्री० [सं०] १. अमावस्या की रात। २. मोर या कोयल की बोली।

कूँक-स्त्री० दे० 'कूक'।

कूँच-स्त्री० दे० 'घोड़ा-नस'।

कूँचना-स० दे० 'कुचलना'।

कूँचा-पुं० [सं० कूर्च] [स्त्री० कूँची] झाड़ू।

कूँची-स्त्री० [हिं० कूँचा] १. छोटा कूँचा। झाड़ू। २. कूटी हुई मूँज का वह गुच्छा जिससे चीजों की मैल साफ करते या दीवारों पर रंग लगाते हैं। ३. चित्रकार की रंग भरने की कलम।

कूँज-स्त्री० [सं० क्रौंच] जलाशयों के किनारे रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी। कराँकुल।

कूँजी*-स्त्री० = कुंजी।

कूँड़-पुं० [सं० कुंड] १. लोहे की वह ऊँची टोपी जो लड़ाई के समय योद्धा लोग पहनते थे। खोद। २. सिंचाई के लिए कूएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का डोल।

कूँड़ा-पुं० [सं० कुंड] [स्त्री० कूँड़ी] १. पानी रखने का काठ या मिट्टी का गहरा बरतन। २. गमला। ३. रोशनी करने की शीशे की बड़ी हाँड़ी।

कूँड़ी-स्त्री० [हिं० कूँड़ा] १. पत्थर की प्याली। पथरी। २. छोटी नाँद।

कूँदना*-स० दे० 'कुनना'।

कूआँ-पुं० [सं० कूप] १. पानी निकालने के लिए पृथ्वी में खोदा हुआ गहरा गड्ढा। कूप।

पद-अंधा कूआँ। (देखें)

मुहा०-(किसी के लिए) कूआँ खोदना = (किसी को) हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। **कूआँ खोदना** = जीविका के लिए प्रयत्न करना। **कूएँ में गिरना**=विपत्ति में पड़ना। **कूएँ में बाँस डालना**=बहुत ढूँढ़ना। **कूएँ में भाँग पड़ना** = सब की बुद्धि खराब होना।

कूई-स्त्री० [सं० कुमुदिनी] जल में होनेवाला एक पौधा, जिसके फूलों का चाँदनी रात में खिलना प्रसिद्ध है। कुमुदिनी। कोकाबेली।

कूक-स्त्री० [सं० कूजन] १. लम्बी सुरीली ध्वनि। २. मोर या कोयल की बोली। स्त्री० [हिं० कुंजी] घड़ी, बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया या भाव।

कूकना-अ० [सं० कूजन] १. कोयल, मोर आदि का बोलना।

स० [हिं० कुंजी] घड़ी या बाजे में कुंजी देना।

कूकर-पुं० दे० 'कुत्ता'।

कूकस-पुं० [?] अन्न की भूसी।

कूकुर*-पुं० [स्त्री० कूकुरी] कुत्ता।

कूख*-स्त्री० दे० 'कोख'।

कूच-पुं० [तु०] कहीं से यात्रा आरंभ करना। प्रस्थान। रवानगी।

मुहा०-कूच कर जाना = मर जाना। **(किसी के) देवता कूच कर जाना** = भय से स्तब्ध हो जाना। **कूच बोलना** = प्रस्थान करना।

*पुं० = क्रौंच (पक्षी)।

कूचा-पुं० [फा०] १. छोटा रास्ता। गली। २. दे० 'कूँचा'।

*पुं० = क्रौंच (पक्षी)।

कूज-स्त्री० [हिं० कूजना] ध्वनि।

*पुं० दे० 'कूजा' (गुलाब)।

कूजन-पुं० [सं०] [वि० कूजित] मधुर शब्द करना (पक्षियों का)।

कूजना-अ० [सं० कूजन] कोमल और मधुर शब्द करना।

कूजा-पुं० [फा० कूजः] १. मिट्टी का पुरवा। कुल्हड़। २. मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई मिस्री।

पुं० [सं० कुब्जक] एक प्रकार का सफेद गुलाब।

कूजित-वि० [सं०] १. बोला या कहा हुआ। ध्वनित। २. गूँजा हुआ या ध्वनिपूर्ण (स्थान)। ३. पक्षियों के मधुर शब्दों से युक्त।

कूट-पुं० [द्रविड़ से गृहीत, सं०][भाव० कूटता] १. पहाड़ की ऊँची चोटी। शृंग। जैसे–चित्र-कूट। २. जानवर का सींग। ३. राशि। ढेर। जैसे–अन्न-कूट। ४. छल। धोखा। ५. गुप्त रहस्य। ६. वह पद जिसमें श्लिष्ट शब्दों का प्र और इसी लिए जिसका अर्थ जल्दी लोगों की समझ में न आवे। जैसे-सूर कूट। ७. वह हास्य या व्यंग्य जिसका गूढ़ हो।

वि० [सं०] १. झूठा। मिथ्या। २. धोखा देनेवाला। कपटी। छली। क्रात्रम। बनावटी। नकली। जाली। कूट-मुद्रा। ४. प्रधान। श्रेष्ठ। मुख्य

स्त्री० [हिं० कूटना] कूटने, पीटने की क्रिया या भाव।

कूटन-स्त्री० [हिं० कूटना] कूटने की क्रिया या भाव।

*स्त्री० दे० 'कुटनी'।

कूटना-स० [सं० कुट्टन] [भाव० कूटन] १. कोई चीज तोड़ने, पीसने के लिए उसपर बार बार किसी बड़ी भारी चीज से आघात करना। जैसे कूटना।

मुहा०-कूट-कूटकर भरना=खूब कर भरना। ठसा-ठस भरना।

२. मारना। पीटना। ३. सिल, आदि में टाँकी से छोटे-छोटे गड्ढे करके खुरदुरा करना।

कूट-नीति-स्त्री० [सं०] व्यक्तियों या राष्ट्रों के पारस्परिक व्यवहार में दाँव की नीति या चाल। छिपी हुई (डिप्लोमेसी)

कूट-मुद्रा-स्त्री० [सं०] खोटा या सिक्का।

कूट-युद्ध-पुं० [सं०] १. वह लड़ाई शत्रु को धोखा दिया जाय। २. लड़ाई।

कूट-योजना-स्त्री० [सं०] षड्यंत्र।

कूट-साक्षी-पुं० [सं०] झूठा गवाह

कूटस्थ-वि० [सं०] १. कूट या ऊँ पर का। सबसे ऊपर का। २. अ अचल। ३. अविनाशी। ४. छिपा हुआ

टू-पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीजों
आय फलाहार के रूप में खाया जाता
। कूटू । कोटू ।
ा-पुं० [सं० कूट, प्रा० कूड़ = ढेर] १.
न पर पड़ी हुई धूल और टूटी-फूटी
द्दी चीजें जिन्हें साफ करने के लिए
ड़ देते हैं। कतवार। २. बिलकुल रद्दी
र निकम्मी चीज।
०-कूड़ा-करकट = बिलकुल रद्दी और
कम्मी चीज।
ा-कोठ-पुं० [हिं० कूड़ा + कोठा =
त्र] वह स्थान या पात्र जिसमें कूड़ा
ा जाता है। (डस्ट-बिन)
-खाना-पुं०[हिं०कूड़ा + फा० ख़ाना]
स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता है।
-वि० [सं० कूढ़, पा० कूध] ना-समझ ।
। बेवकूफ।
मग्ज-वि० [हिं० कूढ़ + फा० मग्ज]
व० कूढ़मग्जी] मन्द-बुद्धि । मूढ़ ।
स्त्री० [हिं० कूतना] कोई चीज देख-
अनुमान या अन्दाज से यह समझना
इतनी अथवा इतने मूल्य की होगी।
ना। (एप्रेजमेन्ट)
-स०[हिं०कूत] १. अनुमान करना ।
लगाना। २. बिना गिने, नापे या
संख्या, मूल्य, मात्रा आदि का अनुमान
।
स्त्री० [हिं० कूदना] कूदने की क्रिया
।
-उछल-कूद या कूद-फाँद = (क)
और उछलना। (ख) व्यर्थ का प्रयत्न।
-अ० [सं० स्कुदन] १. पृथ्वी पर
पूर्वक उछलकर शरीर को किसी ओर
। उछलना। फाँदना।
-किसी के बल पर कूदना =
का सहारा पाकर बहुत बढ़-चढ़कर
रना।
न-बूझकर ऊपर से नीचे को गिरना ।

१८

३. अचानक कहीं आ पहुँचना या बीच में आ पड़ना ।

स० उल्लंघन करना । लाँघना ।

कूनना–स० दे० 'कुनना' ।

कूप–पुं०[सं०] १.कूआँ । २.छेद । सूराख । जैसे–रोम-कूप । ३. गहरा गड्ढा ।

*पुं० दे० 'कुप्पा' ।

कूपन–पुं० [अं०] कागज का वह छपा टुकड़ा जो इस बात का सूचक होता है कि इसके स्वामी को अमुक वस्तु इतनी मात्रा में प्राप्त करने का अधिकार है ।

कूप-मंडूक–पुं० [सं०] वह जो कूएँ में रहनेवाले मेंढ़क की तरह बहुत ही छोटे क्षेत्र में रहता और बाहरी जगत का कुछ भी ज्ञान न रखता हो । २. बहुत थोड़ी जानकारी रखनेवाला ।

कूबड़–पुं० [सं० कूबर] १. पीठ का टेढ़ापन या उभाड़ जो एक प्रकार का रोग है । २. किसी चीज का उभारदार टेढ़ापन ।

कूबरी–स्त्री० दे० 'कुब्जा' ।

कूर–वि० [सं० क्रूर] [भाव० कूरता, क्रूरपन] १. दया-रहित । निर्दय । २. भयंकर । डरावना । ३. दुष्ट । नीच । ४. अकर्मण्य । निकम्मा । ५. मूर्ख । जड़ । बेवकूफ ।

कूरा–पुं० [सं० कूट] [स्त्री० कूरी] १. ढेर । राशि । २. भाग । अंश । हिस्सा । ३. दे० 'कूड़ा' ।

कूरी–स्त्री० [हिं० कूरा] छोटा टीला या धुस्स ।

कूर्म–पुं० [सं०] १. कच्छप या कछुआ नामक जन्तु । २. विष्णु का दूसरा अवतार जो कछुए के रूप में हुआ था ।

कूल–पुं० [सं०] १. नदी या जलाशय का किनारा । तट । तीर । २. नहर । ३. तालाब । ४. किसी बात की सीमा, सिरा, हद या किनारा ।

यौ०–कूल-किनारा = (क) किसी बात की अवधि या सीमा । (ख) झगड़े, विवाद

आदि का निपटारा या अन्त ।

अव्य० समीप । पास । निकट ।

कूल्टू–पुं० दे० 'कूटू' ।

कूल्हा–पुं० [सं० क्रोड़] कमर या पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ ।

कूवत–स्त्री० [अ०] शक्ति । बल । ताकत ।

कूवा*–पुं० दे० 'कूआँ' ।

कूष्मांड–पुं० [सं०] १. कुम्हड़ा । २. पेठा ।

कूह*–स्त्री० [हिं० कूक] १. हाथी की चिग्घाड़ । २. चीख । चिल्लाहट ।

कृच्छ्र–पुं० [सं०] १. कष्ट । दुःख । २. पाप । ३. मूत्र-कृच्छ्र रोग । ४. वह व्रत जिसमें पंचगव्य खाकर दूसरे दिन उपवास किया जाता है ।

वि० कष्ट-साध्य । मुश्किल । कठिन ।

कृत–वि० [सं०] १. किया हुआ । सम्पादित । जैसे–तुलसीकृत रामायण । २. (कार्य) जो किया जा चुका हो । पूरा किया हुआ । (डन) ३. बनाया हुआ । रचित ।

कृत-कार्य–वि० [सं०] [भाव० कृतकार्यता] जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो । अपना कार्य अच्छी तरह पूरा कर लेनेवाला । सफल मनोरथ । कृतार्थ ।

कृतघ्न–वि० [सं०] [भाव० कृतघ्नता] अपने साथ किया हुआ उपकार न माननेवाला या उपकार करनेवाले के प्रति अपकार करनेवाला । अ-कृतज्ञ ।

कृतघ्नी*।–वि० दे० 'कृतघ्न' ।

कृतज्ञ–वि० [सं०] [भाव० कृतज्ञता] अपने साथ किया हुआ उपकार माननेवाला । एहसान माननेवाला ।

कृतयुग–पुं० [सं०] सतयुग ।

कृत-विद्य–पुं० [सं०] जिसे किसी विद्या का बहुत अच्छा ज्ञान हो । पंडित ।

कृतांत–पुं० [सं०] १. यम । धर्मराज । २. मृत्यु । ३. पाप । ४. देवता ।

कृतार्थ–वि० [सं०] १. जो अपना कार्य हो जाने के कारण प्रसन्न और सन्तु कृत-कृत्य । २. किसी की कृपा या से सन्तुष्ट और प्रसन्न ।

कृति–स्त्री० [सं०] १. किया हुआ कार्य । २. चित्र, ग्रन्थ, वास्तु आदि में बनाई हुई वस्तु । ३. कोई अ बड़ा काम । ४. इन्द्रजाल । जादू ।

कृती–पुं० [सं०] १. वह जिसने कोई अच्छा या बड़ा काम किया हो । कृति वाला । २. कुशल । निपुण । साधु । ४. पुण्यात्मा ।

कृत्ति–स्त्री० [सं०] १. हिरन का मृग-चर्म । २. चमड़ा । खाल ।

कृत्तिका–स्त्री० [सं०] १. नक्षत्रों में से तीसरा नक्षत्र । २. कृ

कृत्तिवास–पुं० [सं०] महादेव ।

कृत्य–पुं० [सं०] १. वह जो कु जाय । कार्य । काम । (ऐक्ट) कार्य जो धार्मिक दृष्टि से आवश्य कर्त्तव्य हो । जैसे–यज्ञ, सन्ध्या आदि वह कार्य जो किसी पद पर रहनेवाले कारी के कर्त्तव्य के अन्तर्गत हो । ४. रूप से होनेवाला कोई बड़ा या भा काम । (फंक्शन; अन्तिम दोनों के लिए)

कृत्यवाह–पुं० [सं०] वह जिसे कोई कृत्य या कार्य कर्त्तव्य-रूप से गया हो । किसी पद पर रहकर उ कार्य चलानेवाला । (फंक्शनरी)

कृत्या–स्त्री० [सं०] १. तांत्रिकों के एक भयंकर राक्षसी जो शत्रुओं करनेवाली मानी गई है । २. मंत्र किये जानेवाले घातक कर्म । ३. कर्कशा स्त्री ।

कृत्रिम–वि० [सं०] [भाव० कृ जो असली न हो । बनावटी । (आर्टिफिशल)

कृदंत–पुं० [सं०] वह शब्द जो

कृत् प्रत्यय लगाने से बने । क्रिया से बना हुआ विशेषण । (पार्टिसिपुल) जैसे-पाचक ।

पण-वि० [सं०] [भाव० कृपणता, कृपनाई] १. कंजूस । सूम । २. नीच ।

पया-क्रि० वि० [सं०] कृपा करके । अनुग्रहपूर्वक ।

पा-स्त्री० [सं०] [वि० कृपालु] बिना किसी प्रति-फल की आशा के या हृदय की कोमल वृत्ति, उदारता, दया आदि की भावना या प्रेरणा से दूसरे की भलाई, रक्षा, उन्नति आदि करने की वृत्ति । अनुग्रह । दया । मेहरबानी ।

आकर-वि० [सं०] कृपा करनेवाला । कृपालु ।

पाण-पुं० [सं०] १. तलवार । २. कटार ।

पा-पात्र-पुं० [सं०] वह जो कृपा प्राप्त करने का अधिकारी हो ।

पालु-वि० [सं०] [भाव० कृपालुता] कृपा करनेवाला ।

मि-पुं० [सं०] [वि० कृमिज] १. य कीड़ा । कीट । २. हिरमजी कीड़ा मिट्टी । किरमिजी । ३. लाह । लाख ।

मि-रोग-पुं० [सं०] आमाशय और शय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग ।

विज्ञान-पुं० दे० 'कीट-विज्ञान' ।

-वि० [सं०] [भाव० कृशता, कृशताई] दुबला-पतला । क्षीण । २. अल्प । म । ३. छोटा ।

नु-पुं० दे० 'कृशानु' ।

नु-पुं० [सं०] अग्नि ।

-वि० दे० 'कृश' ।

-पुं० [सं०] १. किसान । खेतिहर । कार । २. हल की फाल ।

-स्त्री० [सं०] [वि० कृष्य] खेतों अनाज आदि बोने और उनमें पैदावार ने का काम । खेती । (एग्रिकल्चर)

-वि० [सं० कृषि] कृषि या खेती- से सम्बन्ध रखनेवाला । (एग्रिकल्चरल)

कृषित-वि० [सं०] (खेत) जो जोता-बोया गया हो । (कल्टिवेटेड)

कृषि-वर्ष-पुं० [सं०] वर्ष का वह मान जो कृषि-सम्बन्धी कार्यों और फसल के विचार से स्थिर होता है । (एग्रिकलचरल ईयर)

कृष्टि-स्त्री० दे० 'कर्षण' ।

कृष्ण-वि० [सं०] [स्त्री० कृष्णा] १. काले रंग का । श्याम । काला । २. नीला । ३. बुरा और निन्दनीय । जैसे—कृष्ण कर्म । पुं० १. यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं । २. अथर्ववेद के अन्तर्गत एक उपनिषद् । ३. वेद-व्यास । ४. अर्जुन । ५. अँधेरा पक्ष ।

कृष्णचन्द्र-पुं० दे० 'कृष्ण' ।

कृष्ण-सूची-[स्त्री० [सं०] ऐसे लोगों के नामों की सूची जो कोई बुरा या निन्दनीय कार्य करने के कारण बदनाम हो चुके हों और जिनसे व्यवहार करना या सम्पर्क रखना निषिद्ध हो । (ब्लैक लिस्ट)

कृष्णा-स्त्री० [सं०] १. द्रौपदी । २. दक्षिण देश की एक नदी । ३. काली दाख । ४. काली (देवी) ।

कृष्णाभिसारिका-स्त्री० [सं०] वह अभिसारिका नायिका जो अँधेरी रात में प्रेमी से मिलने के लिए उसके पास संकेत-स्थान में जाय ।

कृष्य-वि० [सं०] खेती करने योग्य (जमीन) ।

केंचुआ-पुं० [सं० किंचिलिक] १. सूत की तरह का एक बरसाती कीड़ा जो एक बित्ता लम्बा होता है । २. केंचुए के आकार का एक सफेद कीड़ा जो पेट से मल के साथ निकलता है ।

केंचुली-स्त्री० [सं० कंचुक] सर्प आदि के शरीर पर का वह झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर या उतर जाता है ।

मुहा०-**केंचुली बदलना** = पुराना रूप

छोड़कर नया रूप धारण करना। (व्यंग्य)

केंद्र–पुं० [सं०] १. किसी वृत्ति या परिधि के ठीक बीचोबीच का बिन्दु। नाभि। २. वह मूल या मुख्य स्थान जहाँ से चारो ओर दूर दूर तक फैले हुए कार्यों का संचालन या प्रबन्ध होता है। ३. बीच या मध्य। (सेन्टर; उक्त सभी अर्थों में)

केंद्रित–वि० [सं०] एक ही केन्द्र में इकट्ठा किया हुआ। एक जगह लाया या आया हुआ। (सेन्ट्रलाइज्ड)

केंद्रिय–वि० [सं०] १. केन्द्र से सम्बन्ध रखनेवाला। केन्द्र या मध्य भाग का। २. किसी राज्य या राष्ट्र के केन्द्र-स्थान या राजधानी से सम्बन्ध रखनेवाला। (सेन्ट्रल) जैसे–केन्द्रिय शासन।

केंद्रिय शासन–पुं० दे० 'केंद्रिय सरकार'।

केंद्रिय सरकार–स्त्री० [सं० + फा०] किसी राज्य या राष्ट्र की वह सर्व-प्रधान सरकार या शासन-सत्ता जिसका प्रमुख स्थान उसकी राजधानी में होता है और जो वहाँ से सारे देश का शासन या व्यवस्था करती है। (सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट)

केंद्री–वि० [सं० केंद्रिन्] केन्द्र में स्थित। केन्द्र में रहनेवाला।

केंद्रीकरण–पुं० [सं०] चीजों, शक्तियों, अधिकारों आदि को किसी एक केंद्र में लाकर इकट्ठा करना। (सेन्ट्रलाइजेशन)

केंद्रीय–वि० = केंद्रिय।

केंद्रीय सरकार = केंद्रिय सरकार।

के–विभ० [हिं० का] १. संबंध-सूचक 'का' विभक्ति का बहुवचन रूप। जैसे–राम के खेत। २. 'का' विभक्ति का वह रूप जो उसे संबंधवान में विभक्ति लगाने से प्राप्त होता है। जैसे– राम के घर पर।
*सर्व० [सं० कः] कौन।

केउ†–सर्व० [हिं० के + उ] कोई।

केउर*–पुं० दे० 'केयूर'।

केकड़ा–पुं० [सं० कर्कट] पानी में रहने वाला एक छोटा जन्तु जिसके आठ पैर और दो पंजे होते हैं।

केकय–पुं० [सं०] १. उत्तर भारत एक देश का प्राचीन नाम। (यह कश्मीर में है।) २. केकय देश का या निवासी। ३. दशरथ के श्वसुर कैकेयी के पिता।

केकयी–स्त्री० दे० 'कैकेयी'।

केकी–पुं० [सं० केकिन्] मोर। मयूर।

केचित्–सर्व० [सं०] कोई कोई।

केत–पुं० [सं०] १. घर। भवन। मकान। २. स्थान। जगह। ३. ध्वजा।
*पुं० = केतकी (केवड़ा)।

केतक–पुं० [सं०] केवड़ा।
*वि० [सं० कति + एक] १. कितने २. बहुत। ३. बहुत कुछ।

केतकर*–स्त्री० दे० 'केतकी'।

केतकी–स्त्री० दे० 'केवड़ा'।

केतन–पुं० [सं०] १. किसी को बुलाना। आह्वान। निमंत्रण। २. ध्वजा। ३. चिह्न ४. घर। भवन। मकान। ५. स्थान जगह।

केता†*–वि० [स्त्री० केती] दे० 'कितना'।

केतारा–पुं० [देश०] एक तरह का

केतिक†*–वि० दे० 'कितना'।

केतु–पुं० [सं०] १. ज्ञान। २. दीप्ति चमक। ३. ध्वजा। पताका। ४. निशान चिह्न। ५. पुराणानुसार एक राक्षस कबंध जो नौ ग्रहों में माना जाता है। एक प्रकार का तारा जिसके साथ प्रकाश की एक पूँछ-सी दिखाई देती है। पुच्छल तारा। (कॉमेट)

केतो*–वि० दे० 'कितना'।

केन–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध उपनिषद् का नाम।

केनना†–स० दे० 'कीनना'।

केना†–पुं० [हिं० कीनना] १. खरीदने की क्रिया या भाव। खरीद। २.

खरीदा जाय। सौदा।

पुं० दे० 'पोई'। (बनस्पति)

केम*-पुं० दे० 'कदंब'।

केयूर-पुं० [सं०] बाँह में पहनने का बिजायठ। अंगद। भुजबन्द।

केरा-प्रत्य० [सं० कृत] [स्त्री० केरी] संबंध-सूचक विभक्ति। का। (अवधी)

क्रि० वि० की तरह। के समान।

केरा-पुं० दे० 'केला'।

*[स्त्री० केरी] दे० 'केर'।

केराना-पुं० दे० 'किराना'।

केराव-पुं० [सं० कलाय] मटर।

केरि*-प्रत्य० [सं० कृत] दे० 'केरी'।

स्त्री० दे० 'केलि'।

केरी*-प्रत्य० [सं० कृत] की। 'के' विभक्ति का स्त्री-लिंग रूप।

स्त्री० [देश०] आम का कच्चा और छोटा नया फल। अँबिया।

केरोसिन-पुं० [अं०] मिट्टी का तेल।

केल*-स्त्री० = केलि।

केला-पुं० [सं० कदल, प्रा० कयल] एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके पत्ते गज, सवा गज लंबे और फल लंबे, गूदेदार तथा मीठे होते हैं।

केलि-स्त्री० [सं०] १. खेल। क्रीड़ा। २. रति। मैथुन। स्त्री-प्रसंग। ३. हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी।

केलि-कला-स्त्री० [सं०] स्त्री-प्रसंग। समागम। रति।

केउ*-वि० दे० 'कोई'।

केवट-पुं० [सं० कैवर्त्त] एक जाति जो नाव खेने का काम करती है। मल्लाह।

केवटी-दाल-स्त्री० [?] दो या अधिक प्रकार की एक में मिली हुई दालें।

केवड़ा-पुं० [सं० केविका] १. सफेद केतकी का पौधा। २. इस पौधे का प्रसिद्ध, सुगन्धित, काँटेदार फूल। ३. इस फूल का उतारा हुआ अरक।

केवल-वि० [सं०] १. एकमात्र अकेला। २. शुद्ध। पवित्र। ३. उत्कृष्ट य उत्तम। ४. जिसमें और किसी चीज य बात का मेल या योग न हो। (एब्सोल्यूट

पुं० [वि० केवली] वह ज्ञान जो भ्रान्ति शून्य और विशुद्ध हो।

केवल-ज्ञानी-पुं० [सं०] वह साधु जिं विशुद्ध ज्ञान प्राप्त हुआ हो।

केवली-पुं० दे० 'केवल-ज्ञानी।

केवाँच-स्त्री० दे० 'कौंछ'।

केवा-पुं० [सं०कुव = कमल] १. कमल २. केतकी। केवड़ा।

पुं० [सं० किवा] बहाना। टाल-मटोल

केश-पुं० [सं०] १. रश्मि। किरण २. विश्व। ३. विष्णु। ४. सूर्य्य। ५ सिर के बाल।

केश-पाश-पुं० [सं०] बालों की लट।

केशर-पुं० दे० 'केसर'।

केशरी-पुं० दे० 'केसरी'।

केशव-पुं० [सं०] १. विष्णु। २ कृष्णचन्द्र। ३. ब्रह्म। परमेश्वर।

केश-विन्यास-पुं० [सं०] बालों के सजा या सँवारकर उनका जूड़ा बाँधना।

केशी-पुं० [सं० केशिन्] १. एक असु जिसे कृष्ण ने मारा था। २. घोड़ा

वि० [स्त्री० केशिनी] १. किर या प्रकाशवाला। २. अच्छे बालोंवाला

केसर-पुं० [सं०] १. वे पतले सींके य सूत जो फूलों के बीच में होते हैं। २ ठंढे देशों में होनेवाला एक पौधा जिसवे सींके उत्कृष्ट सुगन्ध के लिए प्रसिद्ध हैं कुंकुम। जाफरान। ३. घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गरदन पर के बाल। अयाल ४. नागकेसर।

केसरिया-वि० [सं० केसर + इय (प्रत्य०)] १. केसर के रंग का। पीला जर्द। २. जिसमें केसर मिला या पड़ा हो

केसरी-पुं० [सं० केसरिन्] १. सिंह

२. घोड़ा । ३. नागकेसर । ४. हनुमान जी के पिता का नाम ।

केसारी–स्त्री० दे० 'खेसारी' ।

केसू–पुं० दे० 'टेसू' ।

केहरी*–पुं० दे० 'केसरी' १. ।

केहा–पुं० [सं० केका] १. मोर । मयूर । २. दे० 'खेहा' ।

केहि*–वि० [हिं० के + हि (विभक्ति)] किसको । किसे । (अवधी)

केहूँ*–क्रि० वि० [सं० कथम्] किसी प्रकार । किसी भाँति । किसी तरह ।

केहू–सर्व० [हिं० के] कोई ।

कैं*–अव्य० १. दे० 'के' (या 'के लिए') । २. दे० 'कैधौं' ।

कैंचा–वि० [हिं० काना + ऐंचा = कनैचा] ऐंचा-ताना । भेंगा ।

पुं० [तु० कैंची] बड़ी कैंची ।

कैंची–स्त्री० [तु०] १. बाल, कपड़े आदि कतरने का एक प्रसिद्ध औजार । कतरनी । २. वे दो सीधी तीलियाँ या और वस्तुएँ जो कैंची की तरह एक दूसरी के ऊपर तिरछी रक्खी या जड़ी हों ।

कैंड़ा–पुं० [सं० कांड] १. वह यंत्र जिससे किसी चीज का नकशा ठीक किया जाता है । २. नापने का पात्र । पैमाना । मान । नपना । ३. कोई काम अच्छी तरह करने का ढंग । ढब ।

कै–वि० [सं०कति, प्रा० कइ] १. कितना । किस कदर । २. कई । अनेक ।

अव्य० [सं० किम्] या । वा । अथवा ।

स्त्री० [अ० क़ै] वमन । उलटी ।

कैकस–पुं० [सं०] [स्त्री०कैकसी] राक्षस ।

कैकेयी–स्त्री० [सं०] १. केकय गोत्र या देश में उत्पन्न स्त्री । २. राजा दशरथ की वह रानी जिसने रामचन्द्र को बनवास दिलवाया था ।

कैटभ–पुं० [सं०] एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था ।

कैटभारि–पुं० [सं०] विष्णु ।

कैतव–पुं० [सं०] १. धोखा । कपट । २. जूआ । द्यूत-क्रीड़ा । ३. मणि । लहसुनियाँ ।

वि० १. धोखेबाज । छली । २. मक्कार । ३. जुआरी ।

कैतवापह्नुति–स्त्री० [सं०] वह अलंकार, जिसमें वास्तविक विषय का रूप से गोपन या निषेध न करके बहाने से किया जाता है ।

कैतून–स्त्री० [अ०] एक प्रकार लैस या सुनहरी किनारी जो टाँकी जाती है ।

कैथ–पुं० [सं० कपित्थ] एक जिसमें बेल के आकार के कसैले फल लगते हैं ।

कैथिन–स्त्री० [हिं० कायथ] जाति की स्त्री ।

कैथी–स्त्री० [हिं० कायस्थ] प्रचलित एक पुरानी लिपि जिसमें नहीं होती ।

कैद–स्त्री० [अ०] [वि० कैदी] १. अवरोध । २. अपराधी को दंड लिए बन्द स्थान में रखना । कारावा

मुहा०–कैद काटना या भोगना में दिन बिताना ।

३. वह शर्त्त या प्रतिबन्ध जिसके पर ही कोई बात या काम हो ।

कैदक–स्त्री० [अ०] कागज की जिसमें बाँधकर कागज-पत्र रक्खे जाते

कैद-खाना–पुं० [फा०] वह स्थान कैदी रक्खे जाते हैं । कारागार । बन्दी जेलखाना ।

कैद-तनहाई–स्त्री० [अ० + फा०] कैद जिसमें कैदी को तंग कोठरी में रक्खा जाता है । काल-कोठरी ।

कैदी–पुं० [अ०] वह जिसे कैद दी गई हो । बंदी । बँधुआ ।

कैदु*–अव्य० [हिं० कै = या + दु (धौं)] हो सकता है कि। कदाचित्।

कैधौं–अव्य० [हिं० कै + धौं] या। अथवा।

कैफ़ियत–स्त्री० [अ०] १.विवरण। हाल। बयान।

मुहा०–**कैफ़ियत तलब करना** = कोई भूल या अनुचित कार्य्य होने पर उसके कारण आदि का विवरण माँगना या कारण पूछना।

२. कोई विलक्षण या सुखद घटना।

कैर–स्त्री० [देश०] तीर का फल।

कैवाँ–स्त्री०, अव्य० [हिं० कै = कई + बार] १. कितनी बार। २. कई बार।

कैम–पुं० दे० 'कदंब'।

कैर–पुं० दे० 'करील'। (पौधा)

कैरट–पुं० [अं०] १. दे० 'करात'। (तौल) २. सोने की चीज में विशुद्ध सोने का मान। (सोना २४ कैरट का माना जाता है। यदि कोई चीज २० कैरट की कही जाय, तो इसका अर्थ यह होगा कि उसमें २० हिस्सा सोना और ४ हिस्सा मेल है।)

कैरव–पुं० [सं०] [स्त्री० कैरवी] १. कुमुद। २. सफेद कमल। ३. शत्रु।

कैरवाली–स्त्री० [सं०] कैरवों का समूह।

कैरा–पुं० [सं० कैरव] [स्त्री० कैरी] १. भूरा (रंग)। २. वह सफेदी जिसमें लाली की झलक या आभा हो। ३. वह बैल जिसके चमड़े पर लाली झलकती हो। सोकन। वि० १. कैरे रंग का। २. जिसकी आँखें भूरी हों। कंजा।

कैलास–पुं० [सं०] १. हिमालय की एक चोटी जो तिब्बत में है और जिसपर शिव जी का निवास माना जाता है।

यौ०–**कैलासनाथ,कैलासपति** = शिव। **कैलासवास** = मरण। मृत्यु।

कैलेंडर–पुं० दे० 'दिन-पत्र'।

कैवर्त–पुं० [सं०] केवट। मल्लाह।

कैवल्य–पुं० [सं०] १. 'केवल' का भाव। शुद्धता। २. निर्लिप्तता। ३.मुक्ति। मोक्ष।

कैशिक–वि० [सं०] केशों या रोओं से युक्त। रोएँदार। (कैपिलरी)

कैशिकी–स्त्री० [सं०] नाटक की एक वृत्ति जिसमें नृत्य-गीत तथा भोग-विलास आदि के वर्णन होते हैं। यह करुण, हास्य और शृंगार रसों के लिए उपयुक्त होती है और इससे स्त्रियों के कार्यों या व्यापारों में मधुरता आती है।

कैसर–पुं० [लै० सीज़र] सम्राट्।

कैसा–वि० [सं० कीदृश्] [स्त्री० कैसी] १. किस प्रकार का। किस ढंग का। किस रूप या गुण का। २. (निषेधार्थक, प्रश्न में) किसी प्रकार का नहीं। जैसे-जब काम ही नहीं किया, तब वेतन कैसा? ३. सदृश। समान। जैसा।

कैसे–क्रि० वि० [हिं० कैसा] १. किस प्रकार से। किस ढंग से। २. किस लिए। क्यों।

कैसो*–वि० दे० 'कैसा'।

कैहूँ*–क्रि० वि० [हिं० कै = कैसे + हूँ (प्रत्य०)] किसी तरह। किसी प्रकार।

कोईं–स्त्री० दे० 'कुमुदनी'।

कोंचना–स० [सं० कुच्] नुकीली चीज़ चुभाना। गड़ाना। धँसाना।

कोंचा–पुं० दे० 'क्रौंच' (पक्षी)।

पुं० [हिं० कोंचना] बहेलियों का वह लम्बा छड़ जिसके सिरे पर वे, चिड़ियाँ फँसाने के लिए, लासा लगाते हैं।

कोंछना–स० [हिं० काँछ] (स्त्रियों का) अंचल या कोने में कोई चीज बाँध या रखकर कमर में खोंसना।

कोंढ़ा–पुं० [सं० कुंडल] [स्त्री० अल्पा० कोंढ़ी] धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें कोई वस्तु अटकाई जाय।

कोंप*–स्त्री० दे० 'कोंपल'।

कोंपन*–स्त्री० दे० 'कोंपल'।

कोंपर–पुं० [हिं० कोंपल] छोटा अध-पका

या डाल का पका हुआ आम ।

कोंपल–स्त्री० [सं० कोमल या कुपल्लव] नई और मुलायम पत्ती । अंकुर । कल्ला ।

कोंवरा*–वि०[स्त्री०कौंवरी] दे० 'कोमल'।

कोंहड़ा†–पुं० दे० 'कुम्हड़ा' ।

कोंहड़ौरी†–स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी' ।

कोंहरा†–पुं० = कुम्हार ।

कोंहार†–पुं० = कुम्हार ।

को–विभ० [सं० कः] कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति ।
जैसे–'बैल को हटाओ' में 'को' विभक्ति है ।
* सर्व० कौन ।

कोआ–पुं० [सं० कोश या हिं० कोसा] १. रेशम के कीड़े का कोश या घर । कुसियारी । २. टसर नामक रेशम का कीड़ा । ३. महुए का पका फल । गोलैंदा । ४. कटहल के पके बीज-कोष । ५. आँख का डेला । ६. आँख का कोना ।

कोइरी–पुं० दे० 'काछी' (जाति) ।
स्त्री० दे० 'कुसली' ।

कोइली–स्त्री० [हिं कोयल] १. काले दागवाला वह कच्चा आम जिसमें एक विशेष प्रकार की सुगन्ध होती है । २. आम की गुठली ।

कोई–सर्व०, वि० [सं० कोपि] १. ऐसा (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो । न जाने कौन सा ।
पद–कोई न कोई = एक नहीं तो दूसरा । यह न सही, तो वह ।
२. बहुतों में से चाहे जो । अविशिष्ट वस्तु या व्यक्ति । ३. एक भी ।
क्रि० वि० लगभग । करीब-करीब । जैसे–कोई सौ आदमी गये थे ।

कोउ (ऊ)*†–सर्व० दे० 'कोई' ।

कोक–पुं० [सं०] [स्त्री० कोकी] १. चकवा पक्षी । चक्रवाक । २. मेंढक ।

कोकई–वि० [तु०कोक] ऐसा नीला (रंग) जिसमें गुलाबी (रंग) की भी झलक हो ।

कोकनद–पुं० [सं०] लाल कमल

कोक-शास्त्र–पुं० [सं०] काम-शा

कोका–उभय० [तु०] दूध-भ दूध-बहिन ।
पुं० [सं० कोक] [स्त्री० कोकी]
स्त्री० दे० 'कोकाबेली' ।

कोकाबेली–स्त्री० [सं० कोकनद बेल] नीली कुमुदिनी ।

कोकाह–पुं० [?] सफेद रंग का घो

कोकिल(ा)–स्त्री० [सं०] कोयल

कोकी–स्त्री० [सं०] मादा चकवा

कोकेन–स्त्री० [अं०] कोका की पत्तियों से बना एक मादक द्र लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है ।

कोको–स्त्री० [अनु०] एक कल्पि का नाम, जिसका प्रयोग बच्चों को के लिए होता है । जैसे–जल्दी खा तो कोको ले जायगी ।

कोख–स्त्री० [सं० कुक्षि] १. जठर । पेट । २. पेट के दोनों स्थान । ३. गर्भाशय ।
मुहा०–कोख ठंढी होना = सन्तान प्रसव करके सुखी होना । **सिराना** = कोख ठंढी होना । **उजड़ जाना**–(क) सन्तान मर (ख) गर्भ गिर जाना । कोख **होना** = बन्ध्या होना । कोख, या **माँग से, ठंढी या भरी** रह बालक, या बालक और पति भोगते रहना । (आसीस)
पद–कोख–जली = (स्त्री) जिसकी मर गई हो या हो होकर मर जाती है

कोगी–पुं० [देश०] कुत्ते की त एक छोटा जंगली जानवर जिसके शेर तक को मार डालते हैं ।

कोच–पुं० [अं०] १. एक प्र चौ-पहिया घोड़ा-गाड़ी । २. गद्देदार पलंग, बेंच या कुरसी ।

कोचकी-पुं० [?] एक रंग जो लाली लिये भूरा होता है।

कोचना-पुं० [हिं० कोंचना] नुकीले काँटोंवाला एक यंत्र जिससे अचार-मुरब्बे आदि के लिए फल कोंचे जाते हैं।

० दे० 'कौंचना'।

कोच-बकस-पुं० [अं० कोच + बॉक्स] घोड़ा-गाड़ी आदि में वह ऊँचा स्थान जहाँ हाँकनेवाला बैठता है।

कोचवान-पुं० [अं० कोचमैन] घोड़ा-गाड़ी हाँकनेवाला।

कोचा-पुं० [हिं० कोंचना] १. तलवार, कटार आदि का हलका घाव। २. लगती हुई बात। व्यंग्य। ताना।

कोजागर-पुं० [सं०] आश्विन मास की पूर्णिमा। शरद पूनो। (जागने की रात)

कोट-पुं० [सं०] १. दुर्ग। गढ़। किला। २. शहरपनाह। प्राचीर। ३. महल।

पुं० [सं० कोटि] समूह। यूथ।

पुं० [अं०] अँगरेजी ढंग का एक प्रसिद्ध पहनावा।

कोटपाल-पुं० [सं०] दुर्ग की रक्षा करनेवाला। किलेदार।

कोटर-पुं० [सं०] १. पेड़ का खोखला भाग। २. दुर्ग के आस-पास का वह बन जो रक्षा के लिए लगाते हैं।

कोटा-पुं० [अं०] सम्पूर्ण में का वह भाग या अंश जो किसी के देने या पावने आदि के जिम्मे पड़े। किसी के लिए निश्चित किया हुआ हिस्सा जो उसे दिया जाय या उससे लिया जाय। यथांश।

कोटि-स्त्री० [सं०] १. धनुष का सिरा। २. अस्त्र की नोक या धार। ३. एक-ही प्रकार की चीजों या व्यक्तियों की वह श्रेणी या विभाग जो क्रमिक उत्तमता या श्रेष्ठता के विचार से किया गया हो। ों। श्रेणी। दर्जा। (ग्रेड) ४. किसी विवाद का पूर्व पक्ष। ५. उत्कृष्टता। उत्तमता। ६. समूह। जत्था।

वि० [सं०] सौ लाख। करोड़।

कोटिक-वि० [सं० कोटि] १. करोड़। २. अनगिनत। बहुत अधिक।

कोटि-क्रम-पुं० [सं०] कोई विषय प्रतिपादित या स्थापित करने का क्रम।

कोटि-च्युत-वि० [सं०] जो अपनी कोटि (ग्रेड) से नीचे की कोटि में भेज दिया गया हो ? (डिग्रेडेड)

कोटि-च्युति-स्त्री० [सं०] कोटि-च्युत होने की क्रिया या भाव। अपनी कोटि से नीचे की कोटि में भेजा जाना। (डिग्रेडेशन)

कोटि-बंध-पुं० [सं०] बहुत-सी वस्तुओं, व्यक्तियों या कार्य-कर्त्ताओं को उनके महत्व या वेतन के अनुसार अलग अलग कोटियों में स्थान देना। कोटियाँ स्थिर करना। (ग्रेडेशन)

कोटि-बद्ध-वि० [सं०] १. किसी विशिष्ट कोटि में रक्खा हुआ। २. जो छोटी-बड़ी कोटियों में विभक्त हो। (ग्रेडेड)

कोटिशः-क्रि० वि० [सं०] अनेक प्रकार से। बहुत तरह से।

वि० बहुत अधिक। अनेकानेक।

कोट्टू-पुं० दे० 'कूटू'।

कोठ-वि० [सं० कंठ] १. ऐसा खट्टा (पदार्थ) कि चबाया न जा सके। २. अधिक खट्टे होने से कोई वस्तु न चबा सकनेवाले (दाँत)।

*पुं० वह स्थान जहाँ बहुत-से बाँस घेरा बाँधकर उगते हैं। बाँसों की कोठी।

कोठरी-स्त्री० [हिं० कोठा] चारो ओर दीवारों से घिरा और छाया हुआ छोटा कमरा।

कोठा-पुं० [सं०कोष्ठक] १. बड़ी कोठरी। २. भंडार। ३. मकान में छत के ऊपर का कमरा। अटारी।

यौ०-**कोठेवाली** = वेश्या।

४. उदर। पेट।

मुहा०–कोठा बिगड़ना = अपच आदि रोग होना। **कोठा साफ होना** = साफ दस्त होना।

५. गर्भाशय। ६. घिरा हुआ छोटा स्थान। खाना। घर।

कोठार–पुं० [हिं० कोठा] भंडार।

कोठारी–पुं० [हिं कोठार + ई(प्रत्य०)] वह अधिकारी जो भंडार का प्रबन्ध करता हो। भंडारी।

कोठी–स्त्री० [हिं० कोठा] १. बड़ा और पक्का मकान। हवेली। २. वह मकान जिसमें रुपयों का लेन-देन या कोई कार-बार होता हो। बड़ी दूकान। ३. अनाज रखने का कुठला। ४. कूएँ की दीवार या पुल के खम्भे में पानी के नीचे जमीन तक होनेवाली ईंट-पत्थर ड़ी जोड़ाई।

स्त्री० [सं० कोटि = समूह] एक जगह मंडलाकार उगे हुए बाँसों का समूह।

कोठीवाल–पुं०[हिं०कोठी + वाला (प्रत्य०)] महाजन। साहूकार। बड़ा व्यापारी।

कोठीवाली–स्त्री० [हिं० कोठी] १. कोठी चलाने का काम। २. महाजनों में प्रचलित एक प्रकार की लिपि।

कोड़ना–स० [सं० कुंड] १. खेत की मिट्टी खोदकर उलटना। २. खोदना।

कोड़ा–पुं० [सं० कवर] १. वह बटे हुए सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के समय मारते हैं। चाबुक। २. उत्तेजक या मर्म-स्पर्शी बात।

कोड़ाई–स्त्री० [हिं० कोड़ना] कोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कोड़ी–स्त्री० [अं० स्कोर] बीस का समूह। बीसी।

कोढ़–पुं० [सं० कुष्ठ] [वि० कोढ़ी] रक्त और त्वचा का एक प्रसिद्ध रोग।

मुहा०–कोढ़ चूना या टपकना=कोढ़ के कारण अंगों का गल-गलकर गिरना। **कोढ़ में खाज** = दुःख पर दु

कोढ़ी–पुं० [हिं० कोढ़] वह जि रोग हुआ हो। कुष्ठी।

कोण–पुं० [सं०] [वि० कौ भिन्न दिशाओं से आकर एक मिलनेवाली रेखाओं या धरातलों का स्थान। कोना। (ऐंगिल) दिशाओं के बीच की दिशा। यथा–अग्नि, नैर्ऋति, ईशा वायव्य।

कोत*–स्त्री० दे० 'कूवत'।

कोतल–पुं० [फा०] १. बिन कसा हुआ सजा-सजाया घोड़ा। की सवारी का घोड़ा।

कोतवाल–पुं० [सं० कोटपाल] का एक प्रधान कर्मचारी। इन्स्पेक्टर। २. पंडितों की सभा, अथवा साधुओं की बैठक, भोजन निमंत्रण देनेवाला व्यक्ति।

कोतवाली–स्त्री० [हिं० कोत कोतवाल का पद या काम। २. जहाँ पुलिस के कोतवाल का रहता है।

कोता*†–वि० दे० 'कोताह'।

कोताह–वि० [फा०] १. छो कम। थोड़ा।

कोताही–स्त्री० [फा०] त्रुटि।

कोति*–स्त्री० दे० 'कोद'।

कोदंड–पुं० [सं०] धनुष। क

कोद*–स्त्री० [सं० कोण] १. दि ओर। तरफ। २. कोना।

कोदों–पुं० [सं० कोद्रक] एक प्र अन्न जो प्रायः सारे भारत में होता

मुहा०–कोदों देकर पढ़ सीखना = अधूरी या बेढंगी शि **छाती पर कोदों दलना** = दिखलाकर कोई ऐसा काम करना बहुत बुरा लगे।

-स्त्री० दे० 'कोद' ।

ना-पुं० [सं० कोण] १. किसी विन्दु पर ती हुई या एक दूसरी को काटती हुई रेखाओं के बीच का स्थान । अंतराल । . वह स्थान जहाँ दो सिरे मिलते हों । राड । ३. एकान्त स्थान ।

हा०-कोना झाँकना = भय या लज्जा मुँह छिपाना । बगलें झाँकना ।

नियाँ-स्त्री० [हिं० कोना] १. दीवार कोने पर चीजें रखने की पटरी या टिया । २. चित्र या मूर्त्ति आदि के चारो कोनों का अलंकरण ।

-पुं० [सं०] [वि० कुपित] क्रोध ।

पन-वि० दे० 'कोपी' ।

पना*-अ० [सं० कोप] क्रोध करना ।

प-भवन-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रूठकर जा रहे ।

पर*-पुं० [?] एक प्रकार की बड़ी थाली या परात ।

पी-वि० [सं० कोपिन्] कोप करने-वाला । क्रोधी ।

पीन-पुं० दे० 'कौपीन' ।

मल-वि०[सं०] [स्त्री०कोमला] [भाव० कोमलता]१.मुलायम । नरम । २.सुकुमार । नाज़ुक । ३.अपरिपक्व । कच्चा । ४. सुन्दर । मनोहर । ५. वह स्वर जो साधारण से कुछ नीचा हो । (संगीत)

मलता-स्त्री० [सं०] १. 'कोमल' होने का भाव । मुलायमत । नरमी । २. मधुरता । ३. नजाकत ।

मलताई*-स्त्री० दे० 'कोमलता' ।

मला-स्त्री० [सं०] वह वृत्ति या अक्षर-रचना जिसमें कोमल पद हों ।

मलाई*-स्त्री० दे० 'कोमलता' ।

यँ*-सर्व० दे० 'कोई' ।

यर-पुं० [हिं० कोंपल] हरा चारा ।

यल-स्त्री० [सं० कोकिल] बहुत सुन्दर बोलनेवाला काले रंग का एक पक्षी ।

कोयला-पुं० [सं० कोकिल = अंगारा] १. लकड़ी का बुझा हुआ काला टुकड़ा जो आग जलाने के काम आता है । २. इसी प्रकार का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ । पत्थर का कोयला ।

कोया-पुं० दे० 'कोआ' ।

कोर-स्त्री० [सं० कोण] १. किनारा । सिरा । २. कोना ।

मुहा०- कोर दबना = किसी प्रकार के दबाव या वश में होना ।

३. द्वेष । वैर । वैमनस्य । ४. दोष । ऐब । खराबी । ५. हथियार की धार । बाढ़ ।

कोरक-पुं० [सं०] १. कली । २. फूल या कली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ । फूल की कटोरी । ३. कमल की नाल ।

कोर-कसर-स्त्री० [हिं० कोर + फा० कसर] दोष और त्रुटि । ऐब और कमी ।

कोरना-स० [हिं० कोर + ना (प्रत्य०)] १. लकड़ी आदि में कोर या किनारा निकालना । २. गढ़-छीलकर ठीक करना । ३. खोलना या खरोंचना ।

कोरमा-पुं० [तु०] भुना हुआ मांस ।

कोरहन-पुं० [?] एक प्रकार का धान या उसका चावल ।

कोरा-वि० [सं० कर्बुर ?] [स्त्री० कोरी] १. जो काम में न लाया गया हो । नया ।

पद-कोरी धार या बाढ़=हथियार की वह धार जिसपर अभी सान चढ़ी हुई हो ।

२. (कपड़ा या मिट्टी का बरतन) जो धोया न गया हो । जिसपर पानी न पड़ा हो । ३. जिसपर कुछ लिखा या चित्रित न हो । सादा ।

पद-कोरा जवाब = स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार ।

४. रहित । विहीन । ५. दोषों आदि से रहित । बे-दाग । ६. मूर्ख या अपढ़ । ७. धन-हीन । दरिद्र ।

क्रि० वि० केवल । सिर्फ़ ।

पुं० दे० 'कोना'।

पुं० बिना किनारे की रेशमी धोती।

†पुं० [सं० क्रोड़] गोद। उछंग।

कोरि*–वि० दे० 'कोटि'।

कोरी–पुं० दे० 'कोली'।

कोरैया–पुं० दे० 'इंद्र-जव'।

कोल–पुं० [सं०] १. सूअर। शूकर। २. गोद। उत्संग। ३. बेर। बदरी फल। ४. काली मिर्च। ५. एक जंगली जाति।

कोलना*–स० [?] १. विह्वल या बेचैन होना। २. स्थिर या काम के योग्य न रहना। जैसे–*मति कोलना।

कोलाहल–पुं० [सं०] शोर। हौरा।

कोली–स्त्री० [सं० क्रोड़] गोद।

पुं० हिन्दू जुलाहा। कोरी।

कोल्हू–पुं० [हिं० कूल्हा ?] बीजों का तेल या गन्ने का रस निकालने का यंत्र। **पद–कोल्हू का बैल** = बहुत कठिन परिश्रम करनेवाला। **कोल्हू में डालकर पेरना** = बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना।

कोविद–वि० [सं०] [स्त्री० कोविदा] पंडित। विद्वान्।

पुं० दे० 'कोविदार'।

कोविदार–पुं० [सं०] कचनार।

कोश–पुं० [सं०] १. अंड। अंडा। २. अंड-कोश। ३. डिब्बा। गोलक। ४. फूल की कली। ५. आवरण। गिलाफ। ६. वेदान्त के अनुसार अन्नमय आदि पाँच संपुट जो मनुष्यों के शरीर के अन्दर होते हैं। ७. संचित धन। ८. वह ग्रन्थ जिसमें किसी विशेष क्रम से गहुत से शब्द और उसके अलग अलग अर्थ या पर्याय हों। अभिधान। (डिक्शनरी, लेक्सिकन) ९. रेशम का कोआ। कुसियारी। १०. दे० 'कोषाणु'।

कोशकार–पुं०[सं०]१.म्यान, तलवारों आदि को बनानेवाला। २.शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करके उनके अर्थ बतानेवाला। शब्द-कोश बनानेवाला। (लेक्सिको
रेशम का कीड़ा।

कोशपाल–पुं० [सं०] खजाने
या अधिकारी।

कोशल–पुं० [सं०] १.
दोनों ओर का देश। २. अयो

कोशागार–पुं० [सं०] वह
कोश या बहुत-सा धन रहता हो।
(ट्रेजरी)

कोशिश–स्त्री० [फा०] प्रयत्न।

कोष–पुं० [सं०] १. दे० 'को
खजाना। ३. दे० 'कोषाणु'।

कोषाणु–पुं० [सं०] बहुत
या छोटे छोटे कोषों के रूप
तत्व जिससे जीव-जन्तुओं के
खनिज पदार्थ आदि बने होते हैं।

कोषाध्यक्ष–पुं० [सं०] १.
पास कोष रहता हो। खजानची।
२. वह जिसके पास आय-व्यय
और रोकड़ आदि रहती हो।

कोष्ठ–पुं० [सं०] १. पेट
भाग। २. शरीर के अन्दर
जिसमें कोई विशेष शक्ति हो
पक्वाशय या आमाशय। ३.
४. वह स्थान जहाँ अन्न रखा
गोला। ५. कोश। भंडार।
६. प्राकार। शहर-पनाह। ७.
प्रकार की खुली अलमारी जि
पत्र अलग अलग रखने के लिए
दरबे की तरह के बहुत से छोटे
बने रहते हैं। (पिजन-होल)
'कोष्ठक'।

कोष्ठक–पुं० [सं०] १.
आदि से घिरा हुआ स्थान। खा
२. वह चक्र जिसमें बहुत-से
हों। सारिणी। ३. लिखने में
के चिह्नों का जोड़ा जिसके
व्याख्या या सूचना के रूप में

कौंछ–स्त्री० [सं० कच्छु] एक बेल जिसमें तरकारी के रूप में खाई जानेवाली फलियाँ लगती हैं। केवाँच।

कौंतेय–पुं० [सं०] १. कुन्ती के युधिष्ठिर आदि पुत्र।

कौंध–स्त्री० [हिं० कौंधना] १. कौंधने की क्रिया या भाव। २. बिजली की चमक।

कौंधना–अ०[सं०कनन = चमकना + अंध] बिजली का चमकना।

कौंप* = स्त्री० दे० 'कोंपल'।

कौ*–अव्य० = कब। (व्रज) जैसे–कौ लौं = कब तक।

कौआ–पुं० [सं० ककुत्, प्रा० कउअ = गले के अन्दर की घाँटी] १. एक काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर, गन्दी प्रकृति और चालाकी के लिए प्रसिद्ध है। काक। **मुहा०–कौआ उड़ाना** = कहीं बैठे हुए कौए को उड़ाकर किसी प्रिय के आने या न आने का शकुन देखना। **कौए उड़ाना** = व्यर्थ के और तुच्छ काम करना। **पद–कौआ-गुहार या कौआ-रोर** = (क) बहुत अधिक बकबक। (ख) बहुत शोर। २. बहुत धूर्त्त मनुष्य। काइयाँ। ३. छाजन की वह लकड़ी जो बँडेरी के सहारे के लिए लगाई जाती है। ४. गले के अन्दर का लटकता हुआ मांस का टुकड़ा। घाँटी। लंगर। ५. एक तरह की मछली।

कौटिल्य–पुं० [सं०] १. कुटिलता। टेढ़ापन। २. कपट। ३. चाणक्य का एक नाम।

कौटुंबिक–वि०[सं०] १. कुटुम्ब संबंधी। २. परिवारवाला। गृहस्थ।

कौड़ा–पुं० [सं० कपर्दक] बड़ी कौड़ी। पुं० [सं० कंड] तापने के लिए जलाई हुई आग। अलाव।

कौड़ियाला–वि० [हिं० कौड़ी] कौड़ी के रंग का। नीला और गुलाबी। कोकई। पुं० १. एक प्रकार का जहरीला साँप। २. एक पौधा जिसमें छोटे फूल लगते हैं।

३. कौड़िल्ला पक्षी।

कौड़िल्ला-पुं॰ [हिं॰ कौड़ी] मछली खानेवाली एक चिड़िया। किलकिला।

कौड़ी-स्त्री॰ [सं॰ कपर्दिका] [वि॰ कौड़िया] **१.** घोंघे की तरह का एक कीड़ा जो अस्थि-कोश में रहता है। **२.** उक्त अस्थि-कोश जो सबसे कम मूल्य के सिक्के के रूप में चलता था। वराटिका।

मुहा॰-कौड़ी काम का न होना = निकम्मा या निकृष्ट होना। **कौड़ी के तीन होना** = (क) बहुत सस्ता होना। (ख) तुच्छ होना। **कौड़ी कौड़ी जोड़ना** = बहुत कष्ट से थोड़ा थोड़ा करके धन इकट्ठा करना। **पद-कौड़ी या दो कौड़ी का** = बहुत ही तुच्छ, हीन या निकृष्ट। **कौड़ी भर** = बहुत थोड़ा।

यौ॰-चित्ती कौड़ी = वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभरी हुई गाँठें होती हैं।

३. धन। द्रव्य। ४. वह कर जो सम्राट् अपने अधीनस्थ राजाओं से लेता था। **५.** जंघे, काँख या गले की गिल्टी जो कभी कभी सूज जाती है। **५.** कटार की नोक।

कौणिक-वि॰ [सं॰[जिसमें कोण या नोक हो। नुकीला। (ऐंग्युलर)

कौतिक*-पुं॰=कौतुक।

कौतिग*-पुं॰ दे॰ 'कौतुक'।

कौतुक-पुं॰ [सं॰] [वि॰ कौतुकी] **१.** कुतूहल। **२.** आश्चर्य। अचम्भा। **३.** विनोद। दिल्लगी। **४.** आनंद। प्रसन्नता। **५.** खेल-तमाशा। **६.** केवल मनोविनोद के लिए किया जानेवाला काम या बात। क्रीड़ा। खेल।

कौतुकिया-वि॰ दे॰ 'कौतुकी'।

कौतुकी-वि॰ [सं॰] **१.** कौतुक करनेवाला। विनोद-शील। **२.** विवाह-संबंध स्थिर करानेवाला। **३.** खेल-तमाशा करनेवाला।

कौतूहल-पुं॰ दे॰ 'कुतूहल'।

कौथ-स्त्री॰ [हिं॰ कौन] **१.** कौन तिथि? **२.** क्या संबंध? क्या वास्ता?

कौथा-वि॰ [हिं॰ कौथ] गणना के स्थान का?

कौन-सर्व॰ [सं॰ कः, किम्] एक वाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्य वस्तु की जिज्ञासा करता है।

मुहा॰-कौन होता है? = क्या अ रखता है?

कौपीन-पुं॰ [सं॰] संन्यासियों आ पहनने की लँगोटी। चीर।

कौम-स्त्री॰ [अ॰] जाति।

कौमार-पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ कौ **१.** कुमार होने की अवस्था **२.** जन्म से १६ वर्ष तक की अव **३.** कुमार।

कौमार-भृत्य-पुं॰ दे॰ 'कुमार-भृ

कौमार्य-पुं॰ [सं॰] 'कुमार' अवस्था या भाव। कुमारता।

मुहा॰-कौमार्य भंग करना = पुरुष का किसी कुमारी कन्या से, किसी स्त्री का किसी कुँआरे पुरुष से पहल संभोग करना जिससे उसका कौ नष्ट हो।

कौमी-वि॰ [अ॰ कौम] **१.** कौम जातीय। **२.** राष्ट्र संबंधी। राष्ट्रीय।

कौमुदी-स्त्री॰ [सं॰] **१.** चन्द्र प्रकाश। ज्योत्स्ना। चाँदनी। २. पूर्णिमा।

कौमोदकी-स्त्री॰ [सं॰] विष्णु की

कौर-पुं॰ [सं॰ कवल] उतना जितना एक बार मुँह में डाला जाय। गस्सा। निवाला।

मुहा॰-मुँह का कौर छीनना = को मिलता हुआ अंश छीन लेना।

कौरव-पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ कौरवी राजा की सन्तान। कुरु का वंशज। वि॰ [सं॰] कुरु-संबंधी।

कौरा*-पुं॰ [सं॰ क्रोड़] क्रोड़।

वस्तु या बात ?

मुहा०-क्या कहना है या क्या खूब!= धन्य ! वाह वा ! बहुत अच्छा है! **क्या जाता है !**= क्या हानि है ! कुछ हर्ज नहीं। **क्या जानें !**= कुछ नहीं जानते । ज्ञात नहीं । मालूम नहीं । **क्या पड़ी है ?**= क्या आवश्यकता है ? कुछ जरूरत नहीं। **और क्या !**= हाँ ऐसा ही है।

वि० १. कितना। २. बहुत अधिक। ३. अपूर्व । विलक्षण ।

क्रि० वि० क्यों ? किस लिए ?

अव्य० प्रश्न-सूचक शब्द । जैसे-क्या है ?

क्यारी-स्त्री० [सं० केदार] १. खेतों, बगीचों आदि में थोड़ी थोड़ी दूर पर मेड़ों से बनाये हुए वे विभाग जिनमें पौधे बोये या लगाये जाते हैं। २. इसी प्रकार का वह विभाग जिसमें नमक बनाने के लिए समुद्र का पानी भरते हैं।

क्यों-क्रि० वि० [सं० किम्] १. किसी बात के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द । किस वास्ते ? किस लिए ?

यौ०-क्योंकि = इसलिए कि। **क्योंकर**= किस प्रकार ? कैसे ?

मुहा०-क्यों नहीं != (क) ऐसा ही है। ठीक है । (ख) निःसंदेह । जरूर । (ग) कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता।

* २. किस तरह ? किस प्रकार ?

क्रंदन-पुं० [सं०] रोना । विलाप ।

क्रतु-पुं० [सं०] १. निश्चय । संकल्प । २. इच्छा । ३. विवेक । ४. यज्ञ ।

क्रम-पुं० [सं०] १. पैर रखने या डग भरने की क्रिया । २. वस्तुओं या कार्यों के आगे पीछे होने की योजना । सिलसिला । तरतीब । (ऑर्डर) ३. उचित रूप से काम करने का ढंग ।

मुहा०-क्रम क्रम से = धीरे धीरे । ४. वेद-पाठ की प्रणाली । ५. वह काव्या-

लंकार जिसमें कही हुई बातों या वस्तुओं का क्रम से वर्णन किया जाता है। *पुं० दे० 'कर्म'। (जैसे-मन-क्रम-बचन)

क्रम-चय–पुं० दे० 'प्रस्तार' ५।

क्रम-परिवर्त्तन–पुं० [सं०] क्रम में आगे से पीछे या पीछे से आगे होना। विपर्य्यय। (ट्रांसपोजीशन)

क्रमशः–क्रि० वि० [सं०] १. क्रम से। सिलसिलेवार। २. धीरे-धीरे। थोड़ा-थोड़ा करके।

क्रम संख्या–स्त्री० [सं०] एक क्रम से लिखे जानेवाले नामों, बातों या चीजों के पहले क्रम से लिखी जानेवाली संख्या। (सीरियल नम्बर)

क्रमांक–पुं० दे० 'क्रम-संख्या'।

क्रमागत–वि० [सं०] १. जो क्रम-क्रम से आया या बना हो। २. जो क्रम से बराबर होता आया हो। परम्परा-गत। ३. जिसका क्रम न टूटे। धारा-वाहिक।

क्रमात्–क्रि० वि० [सं०] १. क्रम या सिलसिले से। २. जिस क्रम या सिलसिले से पहले कुछ बातें कही गई हों, उसी क्रम या सिलसिले से आगे भी। (रिस्पेक्टिवली) जैसे–ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य क्रमात् आकर अपने अपने स्थान पर बैठे। ३. क्रम-क्रम से। धीरे-धीरे।

क्रमानुसार–क्रि० वि० दे० 'क्रमात्'।

क्रमिक–वि० [सं०] १. क्रम-युक्त। २. परम्परा-गत। ३. क्रम-क्रम से होनेवाला। (ग्रैजुएटेड) जैसे–क्रमिक मान।

क्रमेलक–पुं० [सं०, यूना० क्रमेलस] ऊँट।

क्रय–पुं० [सं०] मोल लेना या खरीदना। **यौ०–क्रय-विक्रय** = चीजें खरीदने और बेचने का काम। व्यापार। रोजगार।

क्रय-शक्ति–स्त्री० [सं०] किसी समाज या राष्ट्र का वह आर्थिक बल या सामर्थ्य जिसमें वह जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुएँ खरीदता है। (परचेजिंग पावर)

क्रयी–पुं० [सं० क्रयिन्] मोल लेने

क्रय्य–वि० [सं०] १. जो बिक्री के रक्खा जाय। २. जो खरीदा जाने

क्रव्य–पुं० [सं०] मांस।

क्रांत–वि० [सं०] १. दबा या ढका हु २. जिसपर आक्रमण हुआ हो। ३. या दबोचा हुआ। अभिभूत। ४. सीमा, मर्यादा आदि से आगे बढ़ा हुआ

क्रांति–स्त्री० [सं०] १. गति। २. दे० 'क्रांति-मंडल'। ३. वह बहुत परिवर्त्तन या फेर-फार जिससे किसी स्वरूप बिलकुल बदलकर और का जाय। उलट-फेर। (रिवोल्यूशन) राज्य-क्रान्ति।

क्रांतिकारी–वि० [सं० क्रांतिकारिन्] [स्त्री० क्रांति-कारिणी] किसी प्रकार क्रान्ति या बहुत बड़ा और आमूल परि करने या चाहनेवाला। (रिवोल्यूशनरी)

क्रांति-मंडल–पुं० दे० 'क्रांति-वृत्त'।

क्रांतिवादी–पुं० [सं०] वह जो अथवा सब बातों में क्रान्ति या बहुत और आमूल परिवर्तन करने का पक्ष हो। (रिवोल्यूशनिस्ट)

क्रांति-वृत्त–पुं० [सं०] वह वृत्त सूर्य्य पृथ्वी के चारो ओर घूमता हुआ पड़ता है। (एक्लिप्टिक)

क्रियमाण–वि० [सं०] १. जो कि रहा हो। २. जो कार्य-रूप में चल रहा हो। ३. जो सक्रिय होकर अपना कर रहा हो। (आपरेटिव) पुं० इस समय किये जानेवाले कर्म फल आगे मिलेगा।

क्रिया–स्त्री० [सं०] १. किसी होना या किया जाना। कर्म। २. प्रयत्न। चेष्टा। ३. हिलना-डोल गति। हरकत। ४. कार्य का अनुष्ठा आरंभ। ५. व्याकरण में शब्द का जिससे किसी व्यापार का होना या

होता है। (वर्ब) जैसे–खाना, आदि। ६. स्नान, पूजन आदि कर्म। ७. मृतक के श्राद्ध आदि कर्म। क्रिया-कर्म = अन्त्येष्टि क्रिया और आदि।

वि० [सं०] १. जिसमें क्रिया युक्त। २. क्रिया-सम्बन्धी। ३. कार्य के रूप में आया हुआ। करके दिखलाया गया हो। ४. क्रिया या कार्य के रूप में व्यवहार हो सकता हो। व्यावहारिक।

संज्ञा–स्त्री० [सं०] व्याकरण जो किसी क्रिया या कार्य का भी हो। जैसे–करना, कहना, खाना, आदि। (वर्बल नाउन)

विशेषण–पुं० [सं०] व्याकरण में जिससे किसी विशेष प्रकार या होने का बोध होता है। जैसे– अचानक आदि।

पुं० [अं० क्रिश्चियन्] ईसा का । ईसाई।

पुं० दे० 'किरीट'।

पुं० [सं०] १. क्रीड़ा करना। २. क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद।

अ० [सं० क्रीड़न] क्रीड़ा करना।

[सं०] [वि० क्रीड़ित] केवल के लिए किया जानेवाला काम। आमोद-प्रमोद।

स्थल–पुं० [सं०] १. वह स्थान ने क्रीड़ाएँ की हों। जैसे–मथुरा चन्द्र का क्रीड़ा-स्थल है। २. जहाँ तरह तरह के खेल होते हों। जगह। (प्ले-ग्राउंड)

[सं०] मोल लिया हुआ।

१. किसी से मोल लेकर अपना

१६

बनाया हुआ पुत्र। २. मोल लिया हुआ दास। गुलाम।

क्रुद्ध–वि० [सं०] जिसे क्रोध हुआ हो। क्रोध से भरा हुआ।

क्रूर–वि० [सं०] [भाव० क्रूरता] १. दूसरे को कष्ट पहुँचाकर संतुष्ट या सुखी होनेवाला। पर-पीड़क। २. निर्दय। निष्ठुर। ३. कठिन। ४. तीक्ष्ण।

क्रूस–पुं० [अं० क्रॉस] ईसाइयों का एक धर्म-चिह्न जो उस सूली का सूचक है जिसपर ईसा मसीह चढ़ाये गये थे। (क्रॉस)

क्रेता–पुं० [सं०] कोई चीज मोल लेने या खरीदनेवाला। खरीददार। (परचेजर)

क्रोड़–पुं० [सं०] १. आलिंगन के समय दोनों बाहों के बीच का भाग। २. गोद।

क्रोड़-पत्र–पुं० [सं०] वह अलग छपा हुआ पत्र जो समाचार-पत्रों या मासिक-पत्रों आदि के साथ बँटता है। अतिरिक्त पत्र। (सप्लिमेन्ट)

क्रोध–पुं० [सं०] चित्त का वह उग्र भाव जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है। कोप। रोष। गुस्सा।

क्रोधित*–वि० [हिं० क्रोध] कुपित। क्रुद्ध।

क्रोधी–वि० [सं० क्रोधिन्] [स्त्री० क्रोधिनी] स्वभाव से ही अधिक क्रोध करनेवाला। गुस्सावर।

क्रोशिया–पुं० [अं० क्रॉचेट] लोहे आदि की वह तीली या सलाई जिसकी सहायता से गंजी, मोजे, रूमाल आदि केवल हाथों से (करघे पर नहीं) बुने जाते हैं।

क्रौंच–पुं० [सं०] १. कराँकुल नामक पक्षी। २. हिमालय की एक चोटी। ३. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक। ४. एक प्रकार का अस्त्र।

क्लांति–स्त्री० [सं०] [वि० क्लांत] थकावट।

क्लिष्ट–वि० [सं०] [भाव० क्लिष्टता]

१. क्लेश-युक्त। दुःख से पीड़ित। दुःखी। २. बे-मेल या पूर्वापर-विरुद्ध (बात)। ३. कठिन। मुश्किल। ४. जिसका अर्थ कठिनता से निकले।

क्लिष्टता–स्त्री० [सं०] क्लिष्ट होने की अवस्था या भाव।

क्लिष्टत्व–पुं० [सं०] १. क्लिष्ट का भाव। क्लिष्टता। २. काव्य का वह दोष जिससे उसका भाव जल्दी समझ में नहीं आता।

क्लीव–वि०, पुं० [सं०] [भाव० क्लीवता] १. नपुंसक। नामर्द। २. डरपोक।

क्लेद–पुं० [सं०] १. गीलापन। २. पसीना।

क्लेश–पुं० [सं०] १. दुःख। कष्ट। २. व्यथा। वेदना। ३. झगड़ा। लड़ाई।

क्लोम–पुं० [सं०] फेफड़ा।

क्वचित्–क्रि० वि० [सं०] कभी कोई। शायद ही कोई। बहुत कम।

क्वण–पुं० [सं०] १. घुँघरू का शब्द। २. वीणा की झंकार।

क्वणित–वि० [सं०] १. शब्द करता हुआ। २. गुंजार करता हुआ। ३. बजता हुआ।

क्वाँरा–पुं०, वि दे० 'क्वारा'।

क्वाथ–पुं० [सं०] औषधियों को पानी में उबालकर निकाला हुआ गाढ़ा रस। काढ़ा। जोशाँदा।

क्वान*–पुं० [सं० क्वण] १. घुँघरुओं के बजने का शब्द। २. वीणा की झंकार।

क्वारपन–पुं० [हिं० क्वारा + पन (प्रत्य०)] क्वारा होने का भाव। कुमारता।

क्वारा–पुं०, वि० [सं० कुमार] [स्त्री० क्वारी] कुँआरा। बिना ब्याहा।

क्वैला*–पुं० दे० 'कोयल'।

क्ष–क और ष के संयोग से बना हुआ एक संयुक्त अक्षर जो अब प्रायः एक स्वतंत्र वर्ण या अक्षर के रूप में माना जाता है और जो वर्ण-माला में 'ह' के बाद आता है।

क्षंतव्य–वि० दे० 'क्षम्य'।

क्षण–पुं० [सं०] [वि० क्षणिक] १. काल या समय का सबसे छोटा मान। प चौथाई भाग। २. काल। ३. अ मौका।

क्षणदा–स्त्री० [सं०] रात।

क्षण-भंगुर–वि० [सं०] १. शीघ्र भर में नष्ट हो जानेवाला। २. अ

क्षणिक–वि० [सं०] १. क्षण भर वाला। २. क्षण-भंगुर। अनित्य।

क्षणेक*–क्रि० वि० [सं० क्षण+ क्षण भर। बहुत थोड़ी देर।

क्षत–वि० [सं०] जिसे क्षति या पहुँचा हो। घायल।

क्षतज–वि० [सं०] क्षत से जैसे—क्षतज ज्वर।

पुं० [सं०] रक्त। रुधिर। खून।

क्षत-योनि–वि० [सं०] (स्त्री) पुरुष के साथ समागम हो चुका हो।

क्षत-विक्षत–वि० [सं०] जिसे लगी हों। लहू-लुहान।

क्षति–स्त्री० [सं०] १. हानि। नु २. क्षय। नाश। ३. वह घाव जो किसी को किसी कार्य में हो।

क्षति-पूर्त्ति–स्त्री० [सं०] १. किसी या हानि पूरी करके उसे फिर करने का काम। २. उक्त काम या बदले में दिया जानेवाला धन। मूल्य। (डैमेजेज)

क्षत्र–पुं० [सं०] १. बल। २. धन। ४. शरीर। ५. [स्त्री० क्षत्राणी] क्षत्रिय।

क्षत्र-धर्म–पुं० [सं०] क्षत्रियों के यथा-अध्ययन, दान, प्रजा-पालन

क्षत्रप–पुं० [सं० या पुरानी फा०] प्राचीन मांडलिक राजाओं की भारत के शक राजाओं ने धारण

क्षत्रपति–पुं० [सं०] राजा।

क्षत्रिय–पुं० [सं०] [स्त्री० क्षत्रिया, भाव० क्षत्रियत्व] हिन्दुओं के चार

। इस वर्ण के लोगों का काम देश
पालन और शत्रुओं से उसकी रक्षा
था।
-वि० [सं०] निर्लज्ज।
[सं०] १. नंगा रहनेवाला जैन यती।
संन्यासी।
-स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।
-पुं० [सं०] चन्द्रमा।
-वि० [सं०] जिसमें कोई काम करने
या योग्यता हो। योग्य। समर्थ।
)(यौगिक में; जैसे—कार्य्य-क्षम)
] शक्ति। बल।
-स्त्री० [सं०] १. सामर्थ्य। शक्ति।
) २. योग्यता, विशेषतः कोई
या कुछ धारण करने की योग्यता
। (कैपैसिटी)
-स० [सं० क्षमा] क्षमा करना।
-स्त्री० [सं०] १. चित्त की वह वृत्ति
दूसरे द्वारा पहुँचाया हुआ
है और उसके प्रतिकार या
इच्छा नहीं करता। क्षांति। माफी।
। सहन-शीलता। ३. पृथ्वी।
।
-स्त्री० [हिं० क्षमा] क्षमा करना।
-वि० दे० 'क्षमाशील'।
-वि० [सं०] १. क्षमा करने-
। क्षमावान्। २. शान्त प्रकृति का।
[सं०] क्षमा किये जाने के योग्य।
किया जा सके। क्षंतव्य।
[सं०] [भाव० क्षयित्व] [वि० क्षयिष्णु]
धीरे घटना या नष्ट होना। ह्रास।
। नाश। २. क्षयी नामक रोग।
। समाप्ति।
-वि० [सं०] पदार्थों आदि को
या धीरे-धीरे खा जानेवाला।
)
-पुं० [सं०] बहुत दिनों पर
एक चांद्र मास, जिसमें दो संक्रातियाँ होती हैं और जिसके तीन मास पहले और तीन मास पीछे एक एक अधिमास भी पड़ता है।

क्षयिष्णु–वि० [सं०] जिसका क्षय हो सकता हो या होने को हो।

क्षयी–वि० [सं०] १. क्षीण होनेवाला। २. जिसे क्षय रोग हो।
पुं० [सं०] चन्द्रमा।
स्त्री० [सं० क्षय] एक प्रसिद्ध असाध्य रोग, जिसमें रोगी का फेफड़ा सड़ जाता है और सारा शरीर धीरे-धीरे गल जाता है। तपेदिक। यक्ष्मा।

क्षर–वि० [सं०] नाशवान्। नष्ट होनेवाला।
पुं० [सं०] १. जल। २. मेघ। ३. जीवात्मा। ४. शरीर। ५. अज्ञान।

क्षरण–पुं० [सं०] १. रस-रसकर चूना। स्राव होना। रसना। २. क्षीण होना।

क्षात्र–वि० [सं०] क्षत्रिय-संबंधी।

क्षाम–वि० [सं०] [स्त्री० क्षामा] १. क्षीण। २. दुबला-पतला। कृश।

क्षार–पुं० [सं०] [वि० क्षारीय] १. दाहक या जारक ओषधियों अथवा खनिज पदार्थों से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार की हुई राख का नमक जो ओषधि के रूप में काम आता है। खार। (एलकली) २. शोरा। ३. सोहागा। ४. भस्म। राख।

क्षारोद–पुं० [सं०] वे वनस्पतियाँ, जीव-जन्तुओं के अंग या दूसरे पदार्थ जिनमें क्षार का अंश हो। (अलकलॉयड)

क्षालन–पुं० [सं०] [वि० क्षालित] धोना।

क्षिति–स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. वास-स्थान। जगह। ३. क्षय।

क्षितिज–पुं० [सं०] १. मंगल ग्रह। २. वृक्ष। पेड़। ३. दृष्टि की पहुँच की अन्तिम सीमा पर का वह गोलाकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं। (होराइज़न)
वि० दे० 'भूमिज'।

क्षिप्त-वि० [सं०] १. फेंका हुआ। २. छोड़ा या त्यागा हुआ। ३. तिरस्कृत। अपमानित। ४. पतित। ५. उचटा हुआ या चंचल (चित्त)।

क्षिप्र-क्रि० वि० [सं०] १. शीघ्र। जल्दी। २. तत्काल। तुरन्त।

वि० [सं०] १. तेज। जल्द। २. चंचल।

क्षीण-वि० [सं०] [भाव० क्षीणता] १. दुबला-पतला। २. सूक्ष्म। ३. क्षय-शील। ४. घटा हुआ।

क्षीणक-वि० [सं०] क्षीण करनेवाला।

क्षीणक रोग-पुं० [सं०] वह रोग जिसमें शरीर दिन पर दिन क्षीण होता या गलता जाता है। (वेस्टिंग डिज़ीज़)

क्षीर-पुं० [सं०] १. दूध। २. द्रव या तरल पदार्थ। ३. जल। पानी। ४. पेड़ों का रस या दूध। ५. खीर।

क्षीरधि-पुं० [सं०] समुद्र।

क्षीर-सागर-पुं० [सं०] सात समुद्रों में से एक, जो दूध का माना जाता है।

यौ०—**क्षीरोद तनय**=चन्द्रमा। **क्षीरोद-तनया** = लक्ष्मी।

क्षुण्ण-वि० [सं०] १. अभ्यस्त। २. टुकड़े टुकड़े या चूर्ण किया हुआ। ३. जिसका कोई अंश टूट या कट गया हो। खंडित।

क्षुद्र-वि० [सं०] [भाव० क्षुद्रता] १. कृपण। कंजूस। २. अधम। नीच। ३. छोटा या थोड़ा। ४. दरिद्र।

क्षुद्र-घंटिका-स्त्री० [सं०] १. पुरानी चाल की एक प्रकार की करधनी, जिसमें छोटी छोटी घंटियाँ बँधी होती थीं। २. घुँघरूदार करधनी। ३. घुँघरू।

क्षुद्र-प्रकृति-वि० [सं०] ओछे या तुच्छ स्वभाववाला। नीच प्रकृति का।

क्षुद्र-बुद्धि-वि० [सं०] १. दुष्ट या नीच बुद्धिवाला। २. ना-समझ। मूर्ख।

क्षुद्राशय-वि०[सं०] नीच प्रकृतिवाला। कमीना। 'महाशय' का उलटा।

क्षुधा-स्त्री० [सं०] [वि० क्षुधित, क्षु
क्षुधार्थ] भोजन करने की इच्छा। भूख।

क्षुधातुर, क्षुधित-वि० [सं०] भूखा

क्षुप-पुं० [सं०] छोटी डालियोंवाला छो
वृक्ष। पौधा। झाड़ी।

क्षुब्ध-वि० [सं०] १. जिसे क्षोभ हुआ हो
२. चंचल। चपल। ३. व्याकुल। वि
४. कुपित। क्रुद्ध।

क्षुभित-वि० दे० 'क्षुब्ध'।

क्षुर-पुं० [सं०] १. छुरा। २. उस
३. पशुओं के पाँव का खुर।

क्षेत्र-पुं० [सं०] १. खेत। २. भूमि
बड़ा या लम्बा-चौड़ा टुकड़ा। भू
(ट्रैक्ट) ३. प्रदेश। ४. स्थान।
रेखाओं या सीमा आदि से घिरा
स्थान। ६. प्राकृतिक, भौगोलिक, राज
आदि विचारों से कोई ऐसा भू-भाग जि
कोई विशेषता हो अथवा लाई या
गई हो। (ज़ोन) ७. धार्मिक या
स्थान। तीर्थ।

क्षेत्र-गणित-पुं० [सं०] क्षेत्रों को
उनका क्षेत्र-फल निकालने का गणित।

क्षेत्रज-वि० [सं०] जो क्षेत्र में या
उत्पन्न हो।

पुं० [सं०] वह पुत्र जो किसी मृत या
मर्थ पुरुष की स्त्री ने दूसरे पुरुष के
से उत्पन्न किया हो।

क्षेत्रज्ञ-पुं० [सं०] १. जीवात्मा। २.
मात्मा। ३. खेतिहर। किसान।

क्षेत्रपति-पुं० [सं०] क्षेत्र या भूमि
स्वामी जिसे वह भूमि जोतने-बोने
अधिकार होता है। (लैन्ड-होल्डर)

क्षेत्रपाल-पुं० [सं०] १. खेत
वाला। २. किसी स्थान का प्रधान
कर्त्ता। भूमियाँ।

क्षेत्र-फल-पुं० [सं०] किसी भूमि,
या पदार्थ का वर्गात्मक परिमाण जो,
लंबाई-चौड़ाई के घात या गुणन से

[illegible] है। वर्ग-फल। (एरिया)

क्षेत्रमिति-स्त्री० [सं०] गणित की वह शाखा या अंग जिसमें रेखाओं की लंबाई, धरातल का क्षेत्र-फल और ठोस पदार्थों का घनत्व निकालने के नियमों का विवेचन होता है। (मेन्सुरेशन)

क्षेत्र-संन्यास-पुं० [सं०] संन्यास का एक प्रकार जिसमें इस बात की प्रतिज्ञा होती है कि अमुक क्षेत्र या भू-भाग के अन्दर ही [illegible], इसके बाहर नहीं जायँगे।

[illegible]-वि० [सं०] १. क्षेत्र-संबंधी। २. खेत या कृषि से संबंध रखनेवाला। (एग्रेरियन)

क्षेत्री-पुं० [सं० क्षेत्रिन्] १. खेत का [illegible]। २. नियोग करनेवाली स्त्री का [illegible] पति। ३. स्वामी।

क्षेप-पुं० दे० 'क्षेपण'।

क्षेपक-वि० [सं०] १. फेंकनेवाला। २. ऊपर से या बाद में मिलाया हुआ।

पुं० [सं०] ग्रन्थों आदि में ऊपर से या बाद में मिलाया हुआ वह अंश जो उसके मूल [illegible] की रचना न हो।

क्षेपण-पुं० [सं०] १. फेंकना। २. गिराना। ३. बिताना। गुजारना।

क्षेमंकरी-स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की चील। २. एक देवी का नाम।

क्षेम-पुं० [सं०] १. संकट, हानि, घटी, नाश आदि से किसी वस्तु को बचाना। रक्षा। सुरक्षा। (सेफ्टी) २. कुशल-मंगल। ३. सुख। आनन्द। ४. मुक्ति।

क्षैतिज-वि० [सं०] जो क्षितिज से समान अन्तर पर हो। जो दोनों आँखों के सामने उनसे समान अन्तर पर एक सीध में गया हो। (हॉरिजन्टल)

क्षोणि-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

क्षोणिप-पुं० [सं०] राजा।

क्षोभ-पुं० [सं०] [वि० क्षुब्ध, क्षुभित] १. क्षुब्ध होने की अवस्था या भाव। २. खलबली। ३. व्याकुलता। ४. भय। डर। ५. रंज। शोक। ६. क्रोध।

क्षोभित*-वि० दे० 'क्षुब्ध'।

क्षोभी-वि० [सं० क्षोभिन्] १. जल्दी क्षुब्ध होनेवाला। उद्वेगशील। २. व्याकुल। विकल। ३. चंचल।

क्षौम-पुं० [सं०] १. सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा। २. कपड़ा। वस्त्र।

क्षौर-पुं० [सं०] हजामत।

ख

ख—देवनागरी वर्ण-माला में स्पर्श व्यंजनों के अन्तर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर। संज्ञा [illegible] में, यह खाली स्थान, आकाश, [illegible], बिन्दु, ब्रह्म और शब्द आदि का [illegible] होता है।

[illegible]-वि० [सं० कंक] १. रिक्त। खाली। २. [illegible]। वीरान। ३. निर्धन। दरिद्र।

[illegible]-पुं० [देश०] चावल आदि [illegible] ताँबे का बड़ा देग।

[illegible] [देश०] १. जिसमें बहुत-से छेद [illegible]। २. झीना।

[illegible]-पुं० [सं०] १. तलवार। २. गैंडा।

खंगना†-अ० [सं० क्षय] कम होना।

खँगालना-स० [सं० क्षालन] १. हलका या थोड़ा धोना। (बरतन, कपड़ा आदि) २. सब कुछ उड़ा ले जाना।

खँगी-स्त्री० [हिं० खँगना] कमी। घटी।

खँगैल-वि० [हिं० खाँग] जिसे खाँग या दाँत निकले हों।

खँचना†-अ० हिं० 'खाँचना' का अ०।

खँचाना†-स० १. दे० 'खाँचना'। २. दे० 'खींचना'।

खँचिया-स्त्री० दे० 'खाँची'।

खंज-पुं० [सं०] १. एक रोग, जिसमें

मनुष्य के पैर जकड़ जाते हैं । २. लँगड़ा ।

*पुं० [सं० खंजन] खंजन पक्षी ।

खंजन–पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरत् और शीत काल में दिखाई देता है । खँड़रिच । ममोला । २. खँडरिच के रंग का घोड़ा ।

खंजर–पुं० [फा०] कटार ।

खँजरी–स्त्री० [सं० खंजरीट = एक ताल] डफली की तरह का एक छोटा बाजा ।

स्त्री० [फा० खंजर] धारीदार कपड़ा ।

खंड–पुं० [सं०] १. काटकर अलग किया हुआ भाग । टुकड़ा । २. कुछ विशेष कार्यों के लिए व्यवस्थित रूप से किया हुआ विभाग । (डिवीजन) ३. भारतीय आचार्यों के अनुसार पृथ्वी के नौ विभाग, जो इस प्रकार हैं :—भरत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रमा और कुश । ४. नौ की संख्या का सूचक शब्द । ५. खाँड़ । कच्ची चीनी । ६. विधि विधान में कोई धारा या उप-धारा का कोई स्वतंत्र अंश । (क्लॉज़)

वि० १. खंडित । २. छोटा ।

* पुं० दे० 'खाँड़ा' ।

खंडक–वि० [सं०] १. खंड या टुकड़े करनेवाला । २. किसी मत या सिद्धान्त का खंडन करनेवाला ।

खंड-काव्य–पुं० [सं०] वह छोटा प्रबन्ध-काव्य जिसमें कोई पूरी कथा हो ।

खंडन–पुं० [सं०] [वि० खंडनीय, खंडित] १. तोड़ने-फोड़ने या काटने काम । छेदन । २. किसी की कही हुई कोई बात गलत ठहराना । काटना । 'मंडन' का उलटा । (कन्ट्राडिक्शन) ३. अपने ऊपर लगाये हुए अभियोग आदि अथवा ऐसी ही किसी और बात के सम्बन्ध में यह कहना कि यह झूठ है । (रेफ्यूटेशन)

खंडना†–पुं० दे० 'खँडरा' ।

खंडना*–स० [सं० खंडन] १. खंड या टुकड़े करना । तोड़ना । २. बात काटना

खंडनी–स्त्री० [सं० खंडन] १. गुजारी या कर की क़िस्त । खंडी ।

खंड-पाल–पुं० [सं०] हलवाई ।

खँड-पूरी–स्त्री० [हिं० खाँड़ + पूरी] प्रकार की भरी हुई मीठी पूरी ।

खंड-प्रलय–पुं० [सं०] वह प्रलय एक चतुर्युगी बीत जाने पर होता है ।

खँड-बरा–पुं० [हिं० खाँड़ + बरा] मीठा बड़ा । (पकवान) २. दे० 'खँडौरा'

खँडरना*–स० दे० 'खंडना' ।

खँडरा–पुं० [सं० खंड + हिं० बरा] का एक प्रकार का चौकोर बड़ा ।

खँडरिच–पुं० [सं० खंजरीट] खंजन ।

खंड-वर्षा–स्त्री० [सं०] ऐसी वर्षा किसी नगर या स्थान के कुछ भागों में और कुछ में न हो ।

खँडवानी–स्त्री० [हिं० खाँड़ + पानी १. पानी में खाँड़ घोलकर बनाया हुआ रस । शरबत । २. बरातियों को जल या शरबत भेजने की रसम ।

खँड़विला–पुं० [?] एक प्रकार का या उसका चावल ।

खँड़साल–स्त्री० [सं० खंड + शाला खाँड़ या शक्कर बनाने का कारखाना ।

खँड़हर–पुं० [सं० खंड + हिं० घर] या गिरे हुए मकान का बचा हुआ अंश

खंडिका–स्त्री० [सं०] कुछ नि समयों पर थोड़ा-थोड़ा करके दिया वाला देन का अंश । किस्त । (इन्स्टॉलमेंट

खंडित–वि० [सं०] १. टूटा हुआ भग्न । २. जो पूरा न हो । अपूर्ण ।

खंडिता–स्त्री० [सं०] वह नायिका जि नायक रात को किसी अन्य स्त्री के रहकर सबेरे उसके पास आवे ।

खंडी–स्त्री० [सं० खंडिका] १. राज २. चौथ नाम का कर जो मरहठे करते थे ।

ौरा-पुं० [हिं० खाँड़] मिसरी का
। ओला।

-पुं० [सं० खनित्र] [स्त्री० अल्पा०
] १. कुदाल। २. फावड़ा।

-स्त्री० [सं० खं+तृ (प्रत्य०)]
खोदने का फावड़ा। कुदाल।
जाति जो प्रायः जमीन खोदने का
करती है। खाती।

-स्त्री० दे० 'खाईं'।

-वि० [सं० खंतृ] खोदनेवाला।

-स० = खोदना।

-स० [?] खाली कराना।

-पुं० [सं० खंड] खंडिका। खंडी।
।

-पुं० [सं० स्कन्धावार] १.
। छावनी। २. डेरा। खेमा।

[सं० खंडपाल] सामन्त। सरदार।

-पुं० दे० 'खंभा'।

-पुं० [सं० स्कंभ या स्तंभ] [स्त्री०
] १. पत्थर, लकड़ी आदि का वह
ऊँचा खड़ा टुकड़ा या इस
की कोई बनावट जिसके सहारे छत
दूसरी ऊँची भारी चीज रहती है।
। (कॉलम) २. आश्रय। ३. आधार।

-पुं० [सं० क्षोभ, प्रा० खोम]
आशंका। भय। २. घबराहट।
। ३. चिन्ता। ४. शोक। रंज।

-स्त्री० [हिं० खंभा] छोटा खंभा।

-स्त्री० [सं० क्षयी] १. क्षय। २.
। ३. लड़ाई। झगड़ा।

-पुं० [अनु०] १. जोर की हँसी।
। २. अनुभवी पुरुष। ३. बड़ा
।

-पुं० [अनु०] वह कफ जो खखारने
।

-अ० [अनु०] गले से शब्द
थूक या कफ बाहर करना।

-स०[हिं० खदेड़ना] १. दबाना। २. भगाना। ३. घायल करना।

खखेटा*-पुं० [हिं० खखेटना] १. भगदड़। २. घाव। चोट। ३. शंका। खटका। ४. छेद।

खग-पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. गन्धर्व। ३. बाण। तीर। ४. ग्रह, तारे आदि। ५. सूर्य्य। ६. चंद्रमा।

खगना*†-अ० [हिं० खाँग = काँटा] १ धँसना। २. चित्त में बैठना या जमना। ३. लग जाना। लीन होना। ४. चिह्नित या अंकित होना। ५. रुकना। ६. कसा जाना।

स० १. बाँधना। २. कसना।

अ० [सं० क्षीण] १. क्षीण होना। छीजना। २. कम होना। घटना।

खगनाथ-पुं० [सं०] १. सूर्य। २. गरुड़।

खगेश-पुं० [सं०] गरुड़।

खगोल-पुं० [सं०] १. आकाश-मंडल। २. खगोल विद्या।

खगोल-विद्या-स्त्री० [सं०] आकाश के ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गति-विधि का विवेचन करनेवाली विद्या। ज्योतिष शास्त्र। (एस्ट्रॉनोमी)

खग्ग*-पुं० [सं० खड्ग] तलवार।

खग्रास-पुं० [सं०] वह ग्रहण जिसमें सूर्य्य या चन्द्र का पूरा बिम्ब ढँक जाय।

खचन-पुं० [सं०] [वि० खचित] १. बाँधना। जड़ना। २. अंकित करना।

खचना*-अ० [सं० खचन] १. जड़ा जाना। २. अंकित या चित्रित होना। ३. बहुत भरना। ४. अटकना। फँसना।

स० १. जड़ना। २. अंकित करना।

खचरा-वि० [हिं० खच्चर] १. वर्ण-संकर। दोगला। २. दुष्ट। पाजी।

खचाखच-क्रि० वि० [अनु०] कसकर भरा हुआ। ठसाठस।

खचित-वि० [सं०] १. खींचा या अंकित किया हुआ। चित्रित या लिखित। २.

जड़ा हुआ।

खचेरना*–स० [हिं० खदेरना] दबाकर वश में करना। आ० दबाना।

खच्चर–पुं० [देश०] गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक प्रसिद्ध पशु।

खज*–वि० दे० 'खाद्य'।

खजला–पुं० दे० 'खाजा'।

खजहजा*–पुं० [सं० खाद्यान्न] उत्तम खाद्य पदार्थ या खाने के फल।

खजानची–पुं० [फा०] १. खजाने का अधिकारी। कोषाध्यक्ष। (ट्रेज़रर) २. वह जिसके पास रोकड़ और आय-व्यय का हिसाब रहता हो। (कैशियर)

खजाना–पुं० [अ० खजानः] १. धन आदि का कोश। २. वह स्थान जहाँ किसी स्थान, विभाग या राज्य की आय का धन रहता है और जहाँ से व्यय के लिए धन निकलता है। (ट्रेज़री)। ३. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु व्यय, उपयोग आदि के लिए संचित करके रखी जाती हो। जैसे–लालटेन के नीचेवाला भाग, जिसमें तेल रहता है, उसका 'खजाना' कहलाता है। ४. राजस्व। कर।

खजीना–पुं० दे० 'खजाना'।

खजूर–स्त्री० [सं० खर्जूर] १. ताड़ की तरह का एक पेड़, जिसके फल खाये जाते हैं। २. एक प्रकार की मिठाई।

खजूरी–वि० [हिं० खजूर] १. खजूर-संबंधी। खजूर का। २. तीन लड़ों में गूँथा हुआ। जैसे–खजूरी चोटी।

खट-पुं० [अनु०] टकराने, टूटने या ठोंकने-पीटने का शब्द।

मुहा०–खट से = तुरन्त। तत्काल।

खटक-स्त्री० [अनु०] १. खटकने की क्रिया या भाव। २. मन में होनेवाली वेदना, खेद आदि। ३. खटका। आशंका।

खटकना–अ० [अनु०] १. 'खट-खट' शब्द होना। २. रह-रहकर हलकी पीड़ा होना। ३. ठीक न जान पड़ना। मालुम होना। खलना। ४. झगड़ा
५. अनिष्ट की आशंका होना।

खटका–पुं०[हिं०खटकना] १.मार खा
वाला 'खट-खट' शब्द। २. आपत्ति,
आदि का भय या डर। आशंका
चिंता। फिक्र। ४. वह पेंच या
जिसके घुमाने, दबाने आदि से
होता हो। जैसे–बन्दूक का खटका, जिसे
ही आवाज होती या गोली चलती है
पेड़ में बँधा हुआ वह बाँस, जिसे
कर चिड़ियाँ उड़ाते हैं। ६. संगीत में
स्वर के उच्चारण के बाद उससे कुछ
के स्वर पर होते हुए फिर ऊँचे स्वर
का बढ़ाव जो बहुत कलापूर्ण और
होता है।

खटकाना–स० हिं० 'खटकना' का स

खट-कीड़ा–पुं० दे० 'खटमल'।

खट-खट–स्त्री० [अनु०] १. ठोंकने
आदि का शब्द। २. झंझट। बखेड़ा
लड़ाई-झगड़ा।

खटखटाना–स० [अनु०] 'खट-खट
करना। खड़खड़ाना।

खटखटिया–स्त्री० [खट-खट से
वह खड़ाऊँ जिसमें खूँटी की जगह
फँसाने के लिए) रस्सा लगा रहता है

खटना-स० [?] धन कमाना।
अ० १. काम में लगना। २. परिश्रम

खट-पट–स्त्री० [अनु०] अनबन।

खटमल–पुं० [हिं० खाट + मल = मै
कीड़ा जो मैली खाटों, कुरसियों
रहता है। खट-कीड़ा।

खट-मीठा–वि० [हिं० खट्टा + मीठा
खट्टा और कुछ मीठा।

खटराग–पुं० [सं० षट्राग] १.
बखेड़ा। २. झंझट का या टेढ़ा-मेढ़ा

खटाई–स्त्री० [हिं० खट्टा] १.
तुरशी। २. खट्टी चीज।

मुहा०–खटाई में डालना = अनिश्चित
में रखना। कुछ निर्णय न करना।

खट-क्रि० वि० [अनु०] १. 'खटखट'
के साथ। २. जल्दी-जल्दी।

ना-अ० [हिं० खट्टा] किसी वस्तु का
हो जाना।

[सं० स्कन्ध] १. निर्वाह होना।
। २. ठहरना। ३. जाँच में पूरा
।

१. परिश्रम कराना। २. आर्थिक लाभ
।

-पुं० [सं० खट्वास] गंध-बिलाव।

[हिं० खट्टा] खट्टापन।

-पुं० [सं० खट्टिक] [स्त्री० खट-
] तरकारी बेचनेवाली एक जाति।

-स्त्री० दे० 'खाट'।

-पुं० [हिं० खाट + ओला (प्रत्य०)]
अल्पा० खटोली] छोटी खाट।

-वि० [सं० कटु] कच्चे आम, इमली
के स्वाद का। तुर्श। अम्ल।

मुहा०–जी खट्टा होना = चित्त विरक्त
। मन फिर जाना।

नींबू की तरह का एक बहुत खट्टा फल।
।

-पुं० [हिं० खटना] कमानेवाला।

-पुं० [हिं० खड़ा + अंग] फर्श पर
की बिछाई।

खड़ाना-अ० [अनु०] [भाव० खड़-
] खड़खड़ शब्द होना।
खड़खड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे-
खड़खड़ाना।

खड़िया-स्त्री० [अनु०] पालकी।

-पुं० दे० 'खड्ग'।

-वि० [सं० खड्गिन] तलवार लिये
। तलवारवाला।

[सं० खड्ग] गैंडा।

बड़ाना-अ० [अनु०] [भाव० खड़बड़,
] १. विचलित होना। घबराना।
२. सिलसिला टूटना।
स० १. कुछ उलट-पुलटकर खड़बड़ शब्द करना। २. उलट-फेर करना। ३. घबरा देना।

खड़मंडल–पुं० [सं० खंड + मंडल] अव्यवस्था। गड़बड़ी।
वि० १. उलट-पुलट। २. नष्ट-भ्रष्ट।

खड़ा–वि० [सं० खड़क = खंभा] १. ऊपर की ओर सीधा उठा हुआ। जैसे–झंडा खड़ा करना। २. टाँगें सीधी करके उनके आधार पर शरीर ऊँचा किये हुए। दंडायमान।

मुहा०–खड़ा जवाब = साफ इनकार।
३. ठहरा या टिका हुआ। स्थिर। ४. प्रस्तुत। तैयार। ५. (घर, दीवार आदि) निर्मित। बना हुआ। ६. जो अभी उखाड़ा या काटा न गया न हो। जैसे–खड़ी फसल। ७. समूचा।

खड़ाऊँ–स्त्री० [हिं० काठ + पाँव या 'खटखट' अनु०] काठ के तल्ले का खुला जूता। पादुका।

खड़िया–स्त्री० [सं खटिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी।

खड़ी फसल–स्त्री० [हिं० खड़ी + फसल] खेत की वह फसल या उपज जो तैयार तो हो गई हो, पर अभी खेत में से काटी न गई हो। (स्टैंडिंग क्रॉप)

खड़ी बोली–स्त्री० [हिं० खड़ी (खरी ?) + बोली] वर्त्तमान हिन्दी का वह पूर्व रूप जिसमें संस्कृत के शब्द मिलाकर वर्त्तमान हिन्दी भाषा और फारसी तथा अरबी के शब्द मिलाकर उर्दू भाषा बनाई गई है। ठेठ हिन्दी।

खड्ग–पुं० [सं०] १. एक प्रकार की तलवार। खाँड़ा। २. गैंड़ा।

खड्गदान–पुं० [सं०] युद्ध में खड्ग या तलवार चलाना।

खड्ड–पुं० [सं० खात] गड्ढा।

खत–पुं० [सं० क्षत] घाव। जख्म।

पुं० [अ०] १. पत्र । चिट्ठी । २. रेखा । लकीर । ३. ललाट के ऊपरी बाल ।

* पुं० दे० 'खाता' ।

खतना–अ० [हिं० खाता] खाते में लिखा जाना । खतियाया जाना ।

पुं० [अ० खतनः] लिंग के अगले भाग का ऊपरी चमड़ा काटने की मुसलमानी रसम । सुन्नत । मुसलमानी ।

खतम–वि० [अ० खत्म] (काम) जिसका अन्त हो गया हो । समाप्त ।

मुहा०–खतम करना = मार डालना ।

खतमा*–पुं० [अ० खुतबः] १. प्रशंसा । तारीफ । २. दे० 'खुतबा' ।

खतरा–पुं० [अ०] १. डर । भय । २. आशंका । खटका ।

खतरेटा–पुं० दे० 'खत्री' ।

खता–स्त्री० [अ०] १. कसूर । अपराध । २. धोखा । ३. भूल । गलती ।

खताई–स्त्री० दे० 'नानखताई' ।

खतियाना–स० [अ० खत = लकीर] अलग अलग खातों या मदों में हिसाब लिखना ।

खतियौनी–स्त्री० [हिं० खतियाना] १. वह बही जिसमें सब मदों के अलग अलग खाते हों । खाता । २. खतियाने का काम ।

खतौनी–स्त्री० दे० 'खतियौनी' ।

खत्ता–पुं० [सं० खात] [स्त्री० खत्ती] १. गड्ढा । २. अन्न रखने का स्थान ।

खत्म–वि० दे० 'खतम' ।

खत्री–पुं० [सं० क्षत्रिय] स्त्री० खतरानी] पंजाब के क्षत्रियों की एक जाति ।

खद*–वि० = खाद्य ।

खदान–स्त्री० दे० 'खान' ।

खदेड़ना (रना)–स० [हिं० खनना] डरा-धमकाकर हटाना । दूर करना ।

खद्दड़(र)–पुं० [?] हाथ के काते हुए सूत का हाथ से बुना कपड़ा । खादी ।

खद्योत–पुं० [सं०] जुगनूँ ।

खन*–पुं० १. दे० 'क्षण' । २. दे० 'खंड' ।

खनक–पुं० [सं०] जमीन खोदनेवाला ।

स्त्री० [अनु०] धातु-खंडों के टकराने से बजने की क्रिया या शब्द ।

खनकना–अ० [अनु०] धातु-खंडों के टकराने से खनखन शब्द होना ।

खनना*–स० दे० 'खोदना' ।

खनिज–वि० [सं०] खान में से खोदकर निकाला हुआ । (मिनरल)

खनिज पदार्थ–पुं० [सं०] खान से निकलनेवाली चीजें । (मिनरल्स)

खनिज विज्ञान–पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें खानों का पता लगाने, उनमें से पदार्थ निकालने और खनिज पदार्थों के गुण आदि का विवेचन होता है । (मिनरॉलॉजी)

खनोना*–स० दे० 'खनना' ।

खपची–स्त्री० [तु० कमची] बाँस की पतली तीली । कमठी ।

खपड़ा–पुं० [सं० खर्पर] मिट्टी का टुकड़ा जो छप्पर छाने के काम आता है ।

खपत–स्त्री० [हिं० खपना] १. खपने की क्रिया या भाव । २. समाई । गुंजाइश । ३. माल की कटती या बिक्री ।

खपना–अ० [सं० क्षेपण] [भाव० खपत] १. काम में आना या लगाना । २. [illegible] होना । निभना । ३. नष्ट होना । ४. [illegible] परिश्रम करना ।

खपर*–पुं० = खप्पर ।

खपरा†–पुं० = खपड़ा ।

खपरैल–स्त्री० [हिं० खपड़ा] खपड़ों से छाई हुई छाजन ।

खपाना–स० [सं० क्षेपण] १. किसी प्रकार काम में लाना या लगाना । २. [illegible] करना । ३. समाप्त करना । ४. तंग करना ।

ख-पुष्प–पुं० दे० 'आकाश-कुसुम' ।

खप्पर–पुं० [सं० खर्पर] १. तवे के आकार का कोई पात्र । २. भिक्षा [illegible] ३. मरे हुए प्राणी की खोपड़ी ।

खफा–वि० [अ०] [भाव० [illegible]

के समस्त शास्त्रीय लक्षणों से युक्त कोई गेय पद या गीत जो गाये जाने की गति के विचार से तीन प्रकार (विलंबित, मध्य और द्रुत) का होता है।

खर–पुं० [सं०] १. गधा। २. खच्चर। ३. तृण। तिनका। वि० [सं०] १. कड़ा। सख्त। २. तेज। तीक्ष्ण। ३. अशुभ। जैसे–खर मास। ४. तेज धारवाला।

खरक–पुं० [सं० खड्] १. चौपायों को रखने का घेरा। बाड़ा। २. पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह। *स्त्री० दे० 'खटक'।

खरका–पुं० [हिं० खर] तिनका। पुं० दे० 'खरक'।

खर-खौकी*–स्त्री० [हिं० खर + खाना] आग।

खरग*–पुं० दे० 'खड्ग'।

खरगोश–पुं० [फा०] चूहे की तरह का, पर उससे बड़ा, एक प्रसिद्ध जन्तु। खरहा।

खरच–पुं० दे० 'खर्च'।

खरचना–स० [फा० खर्च] १. धन व्यय करना। खर्च करना। २.किसी वस्तु को व्यवहार या उपयोग में लाना।

खरतल–वि० [हिं० खरा] १. खरा। स्पष्टवादी। २. शुद्ध हृदयवाला। ३. साफ। स्पष्ट। ४. प्रचंड। उग्र।

खर-दिमाग–वि० [फा० + अ०] [भाव० खर-दिमागी] (ऐसा मूर्ख) जो बहुत समझाने पर भी न समझे और मूर्खता करता चले।

खरदुक–पुं० [?] एक प्रकार का पुराना पहनावा।

खर-धार–वि० [सं०] तेज धारवाला।

खरब–पुं० [सं० खर्व] सौ अरब की संख्या।

खरबूजा–पुं० [फा० खर्पजः] एक प्रसिद्ध गोल फल।

खरभर–पुं० [अनु०] [क्रि० खरभराना] १. शोर-गुल। २. हलचल।

खरभरना–अ० [हिं० खरभर] १. क्षुब्ध होना। २. घबराना।

खरभराना–स० हिं० 'खरभरना' का स०।

खरमंडल–वि० दे० 'खड़मंडल'।

खर-मस्ती–स्त्री० [फा०] हँसी में किया जानेवाला पाजीपन।

खर-मास–पुं० [सं०] पूस और चैत के महीने जिनमें विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित हैं।

खर-मिटाव–पुं० दे० 'जल-पान'।

खरल–पुं० [सं० खल] पत्थर की वह कूँड़ी जिसमें चीजें कूटी जाती हैं। खल।

खरवाँस–पुं० दे० 'खर-मास'।

खरसा–पुं० [सं० षड्रस] एक प्रकार का पकवान।

खरसान–स्त्री० [हिं० खर + सान] हथियार तेज करने की एक प्रकार की सान।

खरहरना†–[हिं० खर = तिनका + हरना] झाड़ देना।

स०[हिं०खरहरा] घोड़े का शरीर रगड़ना।

खरहरा–पुं० [हिं० खरहरना] [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १. अरहर के डंठलों का झाड़ू। झँखरा। २. घोड़े के रोएँ साफ करने की दाँतीदार कंघी या बुरुश।

खरहरी–स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फल या मेवा (कदाचित् खजूर या छुहारा)।

खरहा–पुं० दे० 'खरगोश'।

खरा–वि० [सं० खर=तीक्ष्ण] १. अच्छा। बढ़िया। २. बिना मिलावट का। विशुद्ध। ३. सेंककर करारा किया हुआ। ४. जिसमें किसी प्रकार की बेईमानी या धोखा न हो। ६. नगद (दाम)।

मुहा०–रुपये खरे होना = रुपये मिलना या मिलने का निश्चय होना

७. साफ कहनेवाला। स्पष्ट-वक्ता।

खराई–स्त्री० [हिं० खरा + ई (प्रत्य०)] 'खरा' का भाव। खरापन।

स्त्री० [देश०] सबेरे जल-पान न करने के कारण तबीयत खराब होना।

खराद–स्त्री० [फा० खर्राद] १. धातु आदि की सतह चिकनी करने औजार। २. खरादने का भाव

खरादना†–स० [हिं० खराद] १. पर चढ़ाकर साफ और सुडौल कर काट-छाँटकर ठीक करना।

खराब–वि० [अ०] [भाव० खरा बुरा। निकृष्ट। २. मर्यादा-भ्रष्ट।

खरायँध–स्त्री० [सं० क्षार + गं या क्षार की-सी दुर्गन्ध।

खरारि–पुं० [सं०] १. राम विष्णु। ३. कृष्णचन्द्र।

खरिया–स्त्री [हिं० खर + इया (१.घास-भूसा बाँधने की जाली। २. स्त्री० दे० 'खड़िया'।

खरियान(हान)–पुं०दे० 'खलियान

खरियाना–स० [हिं० खरिया = झो झोली या थैले में भरना। २. झो गिराना या उलटना।

खरी–स्त्री० दे० 'खली'।

खरी-खोटी–स्त्री० [हिं० खरा + कुछ बिगड़कर कही जानेवाली कटु

खरीता–पुं० [अ०] [स्त्री० खरीती] १. थैली। २. जेब। वह बड़ा लिफाफा जिसमें राजकीय पत्र आदि भेजे जाते हैं।

खरीद–स्त्री० [फा०] १. मोल लेने या भाव। क्रय। २. खरीदी हुई चीज

खरीददार–पुं० [फा०] १. मो वाला। ग्राहक। २. चाहनेवाला।

खरीदना–स० [फा० खरीदन] लेना। क्रय करना।

खरीफ–स्त्री० [अ०] असाढ़ से तक में काटी जानेवाली फसल।

खरेई*–क्रि० वि० [हिं० खरा] सबेरे

खरोटना–स० [सं० क्षुरण] १. गड़ाकर शरीर में घाव करना। २.

…[सं०] एक प्राचीन लिपि
…बाएँ को लिखी जाती थी।
…लिपि।
…दे० 'खड्ग'।
…[अ०] १. किसी काम में किसी
…या लगाना। व्यय। खपत।
…जो किसी काम में लगाया जाय।
…[हिं० खर्च] बहुत खर्च
…।
…दे० 'खप्पर'।
…[अनु०] १. कोई लम्बा कागज
…लेख या विवरण लिखा हो।
…) २. एक रोग जिसमें पीठ
…निकलती हैं।
…[अनु०] वह शब्द जो सोते
…किसी की नाक से निकलता है।
…खर्राटा भरना या लेना =
…होना।
…[सं०] १. जिसका अंग टूटा
…अपूर्ण हो। २. छोटा। लघु।
…। बौना। ४. नाटा।
…] सौ अरब की संख्या। खरब।
…[सं०] [भाव० खलता] १. क्रूर।
…। अधम। ३. दुष्ट।
…[सं०] खरल।
…[अ०] १. सृष्टि के प्राणी या
…। २. दुनिया। संसार।
…-स्त्री० [अ०] १. संसार के सब
…। २. जन-समूह। भीड़।
…-स्त्री० दे० 'खाल'।
…-स्त्री० [अनु०] १. शोर। हल्ला।
…हट।
…-अ० [हिं० खलबल] १.
…शब्द करना। २. खौलना। ३.
…। ४. विचलित होना।
…डालना या मचाना।
…-स्त्री० [हिं० खलबल] १. हलचल।

२. घबराहट। व्याकुलता।

खलल-पुं० [अ०] विघ्न। बाधा।

खलाना*†-स० [हिं० खाली] १. खाली करना। २. गड्ढा करना। ३. तल नीचे धँसाना। पिचकाना।

मुहा०-पेट खलाना = दे० 'पेट' के अन्तर्गत मुहा०।

स० [हिं० खाल] मरे हुए पशु की खाल या चमड़ा उतारना।

खलार-पुं० [हिं० खाल = नीचा] नीची भूमि।

खलास-वि० [अ०] १. छूटा हुआ। मुक्त। २. समाप्त। ३. च्युत। गिरा हुआ।

खलासी-पुं० [फा०] जहाज पर के छोटे-मोटे काम करनेवाला कर्मचारी।

*स्त्री० [हिं० खलास] मुक्ति। छुटकारा। छुट्टी।

खलित*-वि० [सं० स्खलित] १. चलायमान। चंचल। २. गिरा हुआ।

खलियान(हान)-पुं० [सं० खल + धान] वह स्थान जहाँ फसल काटकर रक्खी जाती है।

मुहा०-खलियान करना = किसी चीज का ढेर लगाना।

खलियाना†-स० [हिं० खाली] खाली करना।

स० दे० 'खलाना'।

खली-स्त्री० [सं० खल] तेल निकल जाने पर तेलहन की बची हुई सीठी।

खलीता-पुं० दे० 'खरीता'।

खलीफा-पुं० [अ०] १. अध्यक्ष। अधिकारी। २. कोई बूढ़ा व्यक्ति। ३. खुर्राट। ४. दरजी। ५. हज्जाम। नाई।

खलु-क्रि० वि० [सं०] निश्चयपूर्वक।

अव्य० मत। नहीं।

खल्ल-पुं० [सं० खल्ल] १. चमड़े की मशक या थैला। २. चमड़ा। ३. खरल।

खल्वाट-पुं० [सं०] गंज रोग, जिसमें

सिर के बाल झड़ जाते हैं।

वि० जिसके बाल झड़ गये हों। गंजा।

खवा-पुं० [सं० स्कंध] कन्धा।

खवाना*†-स० दे० 'खिलाना'।

खवास-पुं० [अ०] [स्त्री० खवासिन, भाव० खवासी] राजाओं और रईसों के खास खिदमतगार।

खवासी-स्त्री० [हिं० खवास] खवास का काम या पद।

खवैया-पुं० [हिं० खाना] खानेवाला।

खस-पुं० [सं०] १. गढ़वाल प्रदेश का प्राचीन नाम। २. इस प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति।

स्त्री० [फा० खस] गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़।

खसकना-अ० [अनु०] धीरे धीरे किसी ओर बढ़ना। सरकना।

खसकाना-स० [हिं० खसकना] १. धीरे धीरे किसी ओर बढ़ाना। सरकाना। २. गुप्त रूप से कोई चीज हटाना।

खसखस-स्त्री० [सं० खसूखस] पोस्ते का दाना।

खसखसा-वि० [अनु०] भुरभुरा।

वि० [हिं० खसखस] बहुत छोटे (बाल)।

खस-खाना-पुं० [फा०] खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।

खसना†-अ० [सं० कषण] १. अपने जगह से धीरे धीरे हटना। खिसकना। २. नीचे की ओर आना। गिरना।

खसम-पुं० [अ०] १. पति। खाविन्द। २. स्वामी। मालिक।

खसरा-पुं० [अ०] १. पटवारी का वह कागज जिसमें खेत का नम्बर, रकबा आदि लिखे रहते हैं। २. हिसाब का कच्चा चिट्ठा।

पुं० [फा० खारिश] एक प्रकार की खुजली।

खसाना-स० [हिं० खसना] नीचे गिराना।

खसिया-वि० [अ० खस्सी] १. जिसके अंडकोश निकाल लिये गये हों। बधिया। २. नपुंसक। हिजड़ा।

खसी-पुं० [अ० खस्सी] बकरा।

खसीस-वि० [अ०] कंजूस। कृ

खसोट-स्त्री० [हिं० खसोटना] १. उ या नोचने की क्रिया। २. उचक्कने या की क्रिया। जैसे—नोच-खसोट।

खसोटना-स० [सं० कृष्ट] १. उखाड़ना। नोचना। २. छीनना।

खसोटी-स्त्री० दे० 'खसोट'।

खस्ता-वि० [फा० खस्तः] बहुत दबाव से टूट जानेवाला। भुरभुरा।

ख-स्वस्तिक-पुं० [सं०] वह कल्पित जो सिर के ऊपर आकाश में माना शीर्ष-बिन्दु। (ज़ेनिथ)

खस्सी-पुं० [अ०] बकरा।

खाँखर*-वि० दे० 'खँखरा'।

खाँग-पुं० [सं० खड्ग] १. काँटा। २. वह काँटा जो तीतर आदि प पैरों में निकलता है। ३. गैंडे के का सींग। ४. जंगली सूअर का बड़ा

स्त्री० [हिं० खाँचना] त्रुटि। कमी।

खाँगना-अ० [?] कमी या कसर

खाँच-स्त्री० [हिं० खाँचना] १. जोड़। २. खींचकर बनाया हुआ निशान।

पुं० दे० 'खाँचा'।

खाँचना*-स० [सं० कर्षण] [वि० १. अंकित करना। चिह्न बनाना खींचना। ३. जल्दी-जल्दी लिखना।

खाँचा-पुं० [हिं० खाँचना] [स्त्री० बड़ा टोकरा। झावा।

खाँड़-स्त्री० [सं० खंड] बिना हुई चीनी। शक्कर।

खाँड़ना*-सं०[सं०खंड = टुकड़ा]१. कुचलकर खाना। चबाना। 'खंडना'।

खाँडरा-पुं० [सं० खंड]१. छोटा टु २. पकवान आदि के रूप में बने हुए

टुकड़े।

[सं० खड्ग] खड्ग (अस्त्र)।

[सं० खंड] भाग। टुकड़ा।

[सं० खादन] खाना।

[सं० स्कंधक = कन्धे के बराबर
] १. मिट्टी की चहार-दीवारी।
खाई।

[हिं० खाँसी] गले में कफ
अटकी हुई चीज निकालने
को, कुछ शब्द करते हुए,
निकालना।

[सं० काश, क्कास] १.
खाँसने का रोग। काश रोग। २.
शब्द या भाव।

[सं० खानि] वह छोटी नहर
आदि के चारो ओर रक्षा के लिए
है। खंदक।

[हिं० खाना] १. बहुत खाने-
। २. दूसरे का धन या अंश
।

[फा०] १.मिट्टी। २. धूल।

-वि० [फा०] [भाव० खाकसारी]
में मिला हुआ। २. तुच्छ।
। (नम्रतासूचक)

१. मुसलमानों का एक आधुनिक
दल जो अपने आपको लोक-
है। २. इस दल का सदस्य।

-पुं० [फा० खाकः] १. चित्र, नकशे
ढाँचा। २. कच्चा चिट्ठा।
। आलेख।

-वि० [फा०] १. मिट्टी के रंग का।
२. बिना सींची हुई (भूमि)।
रंग के कपड़े की सैनिकों की वर्दी।

-पुं० [?] पुरानी चाल का
प्रकार का बाजा।

-अ० [?] साथ लगना या
। सटना।
लगाना या मिलाना। सटाना।

खाज-स्त्री० [सं० खर्जु] खुजली।
मुहा०-कोढ़ में खाज = दुःख में दुःख बढ़ानेवाली बात।

खाजा-पुं० [सं० खाद्य, प्रा० खज्ज] १. भक्ष्य या खाद्य पदार्थ। २. एक प्रकार की मिठाई।

खाजी*-स्त्री० दे० 'खाजा'।

खाट-स्त्री० [सं० खट्वा] चारपाई।

खाटा†-वि० १. दे० 'खट्टा'। २. दे० 'खोटा'।

खाड़*-पुं० [सं० खात] गड्ढा। गर्त।

खाड़ी-स्त्री० [हिं० खाड़] समुद्र का वह छोटा भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो। उपसागर।

खात-पुं० [सं०] १. खोदना। खोदाई। २. तालाब। ३. कुआँ। ४. गड्ढा। ५. खाद के लिए कूड़ा-करकट इकट्ठा करने का गड्ढा।

खातमा-पुं० [फा०] अन्त।

खाता-पुं० [हिं० खतियाना] १. किसी व्यक्ति, कार्य, विभाग आदि के लेन-देन या आय-व्यय का अलग लेखा। (एकाउन्ट) २. भूमि-कर, कृषि आदि के क्षेत्रों या विभागों में प्रत्येक असामी या क्षेत्रपति का वह अलग लेखा जिसमें उसके पास रहनेवाले खेतों आदि की नाप-जोख आदि का विवरण रहता है। (होल्डिंग) ३. दे० 'खाता-बही'।
पद-संयुक्त खाता = दो या अधिक असामियों का मिला-जुला खाता। (ज्वाइन्ट होल्डिंग)
†पुं० [सं० खात] अनाज भरकर रखने का खत्ता।

खाता-बही-स्त्री० [हिं० खाता + बही] वह बही जिसमें लोगों या मदों के अलग अलग खाते या हिसाब रहते हैं। (लेजर)

खातिर-स्त्री० [अव्य०] आदर। सम्मान।
अव्य० [अ०] वास्ते। लिए।

खातिर-जमा-स्त्री० [अव्य०] संतोष

इतमीनान। तसल्ली।

ख़ातिरदारी-स्त्री० [फ़ा०] आये हुए का सम्मान। आव-भगत।

ख़ातिरी-स्त्री० [फ़ा०] १. खातिरदारी। २. खातिर-जमा। तसल्ली।

खाती-स्त्री० [सं० खात] खोदी हुई भूमि। गड्ढा।

पुं० [सं० ख्या+तृ (प्रत्य०)] बढ़ई।

स्त्री० [सं० खन्+तृ (प्रत्य०)] एक जाति जो प्रायः जमीन खोदने का काम करती है। खंती।

खातेदार-पुं० [हिं खाता+फ़ा० दार] वह असामी या खेतिहर जिसके नाम पर कोई जमीन जोतने-बोने के लिए चढ़ी हो। (टेन्योर होल्डर)

खाद-स्त्री० [सं० खात, प्रा० खाद] वे सड़े-गले पदार्थ जो खेत की उपज बढ़ाने के लिए उसमें डाले जाते हैं। पाँस।

* वि० जो खाया जा सकता हो या खाने के योग्य हो। खाद्य।

ख़ादक-वि० [सं०] खानेवाला।

खादन-पुं० [सं०] [वि० खादित, खाद्य] भक्षण। भोजन। खाना।

खादर-पुं० [हिं० खात] नीची जमीन। 'बाँगर' का उलटा। कछार।

खादित-वि० [सं०] खाया हुआ।

खादी-स्त्री० दे० 'खद्दड़'।

खाद्य-वि० [सं०] खाने योग्य।

पुं० [सं०] खाने की वस्तु। भोजन।

खाद्यान्न-पुं० [सं०] वे अन्न जो खाने के काम में आते हैं। (फुड ग्रेन्स) जैसे—गेहूँ, चना, चावल, मूँग आदि।

खाध-पुं० = खाद्य।

खाधु*†-पुं० [सं० खाद्य] भोज्य पदार्थ।

खाधुक*-वि० [सं० खादक] वहुत खानेवाला।

खाधू*-वि० दे० 'खाधुक'।

खान-पुं० [हिं० खाना] १. खाने की क्रिया। भोजन। २. भोजन की सामग्री। ३. भोजन करने का ढंग या आचार। यौ०—खान-पान।

स्त्री० [सं०] १. वह स्थान धातुएँ आदि खोदकर निकाली आकर। खदान। २. वह स्थान वस्तु अधिकता से होती हो।

पुं० [ता० काङ्=सरदार] १. २. पठानों की उपाधि।

खानगी-वि० [फ़ा०] १. घर घर-गृहस्थी का। घरेलू। २. निज का। ३. आपस का।

स्त्री० [फ़ा०] कसब करनेवाली।

ख़ानदान-पुं० [फ़ा०] वंश। कुल

खानदानी-वि० [फ़ा०] १. या कुल का। २. वंश-परंपरागत।

खान-पान-पुं० [सं०] १. आब-दाना। २. खाना-पीना। ३. पीने का आचार। ४. साथ बैठकर पीने का सम्बन्ध या व्यवहार।

खानसामाँ-पुं० [फ़ा०] अँगरेजों, मानों आदि का रसोइया।

खाना-स० [सं० खादन] १. भोजन

मुहा०—खाना-कमाना=काम-धंधा जीविका उपार्जित करना। **खा-पका या डालना** = खर्च कर डालना। डालना। **खाना न पचना**= पड़ना। जी न मानना।

२. हिंसक जन्तुओं का शिकार और भक्षण करना। ३. विषैले काटना। डसना। ४. तंग करना। देना। ५. उड़ा देना। न रहने देना। बेइमानी से लेना। हड़प जाना। ७. आदि लेना। ८. (आघात, प्रहार सहना। बर्दाश्त करना।

पुं० भोजन।

पुं० [फ़ा०] १. घर। मकान। २. जगह। जैसे—डाकखाना, दवाखाना। किसी चीज के रखने का घर। (

खाना तलाशी

४. आलमारी, क्षेत्र, घर आदि में बना हुआ विभाग। कोष्ठक।

खाना-तलाशी-स्त्री० [फा०] कोई खोई या चुराई हुई चीज किसी के घर ढूँढ़ना।

खानापुरी-स्त्री० [फा० खाना + हिं० पूरी] किसी चक्र या सारिणी के कोठों में यथा-स्थान संख्या, विवरण आदि लिखना। नक्शा भरना।

खानाबदोश-वि० [फा०] जिसका घर-बार न हो। इधर-उधर घूमनेवाला।

खानि-स्त्री० [सं० खनि] १. दे० 'खान'। २. ओर। तरफ। ३. प्रकार। तरह।

खानिक-वि० [हिं० खान] खान से निकलनेवाला। खनिज। (मिनरल)

खाम-पुं० [हिं० खामना] १. चिट्ठी रखने का लिफाफा। २. संधि। जोड़।

वि० [सं० क्षाम] कटा-फटा या टूटा हुआ। क्षीण।

वि० [फा०] १. कच्चा। २. जिसे अनुभव न हो।

खामखाह-क्रि० वि० दे० 'व्यर्थ'।

खामना-स० [सं० स्कंभन] १. गीली मिट्टी आदि से पात्र का मुँह बन्द करना। २. अन्दर चिट्ठी रखकर लिफाफा बन्द करना।

खामोश-वि० [फा०] चुप। मौन।

खामोशी-स्त्री० [फा०] मौन। चुप्पी।

खार-पुं० [सं० क्षार] १. सज्जी। २. नमक। ३. रेह। ४. धूल। राख। विशेष दे० खारा।

स्त्री० [हिं० खाल = नीचा स्थान] बरसाती नाला। खाड़। (ब्रज)

वि० [सं० खर] १. खरा। २. वास्तविक।

पुं० [फा० खार] १. काँटा। कंटक। २. खीझ। ३. डाह। जलन।

पुं० [सं० क्षार या फा० खार] मन में रहनेवाला द्वेष। गहरा मनोमालिन्य।

मुहा०-खार खाना = (क) मन में वैर रखना। (ख) द्वेष भाव से हानि पहुँचाने की घात में रहना।

खारना-स० [हिं० खार] कुछ विशिष्ट खारे पदार्थों के घोल में कपड़ा या और कोई पदार्थ डालकर धोना।

खारा-पुं० [सं० क्षार] [स्त्री० खारी] १. क्षार या नमक के स्वाद का। २. अरुचिकर। अप्रिय।

पुं० [सं० क्षारक] १. एक प्रकार का धारीदार कपड़ा। २. घास बाँधने का जाला। ३. टोकरा। खाँचा। ४. सरकंडे की बनी एक प्रकार की चौकी।

खारिक*†-पुं० [सं० क्षारक] छोहारा।

खारिज-वि० [अ०] १. बाहर किया या निकाला हुआ। बहिष्कृत।

पद-दाखिल-खारिज-(देखो)

२. भिन्न। अलग। ३. जिस (अभियोग) की सुनाई करने से इनकार किया गया हो या जो ठीक न माना गया हो। (डिस्मिस्ड)

खारी-स्त्री० [हिं० खारा] एक प्रकार का क्षार या नमक।

वि० क्षार-युक्त। जिसमें खार हो।

खाल-स्त्री० [सं० क्षाल] १. शरीर का ऊपरी आवरण। चमड़ा। त्वचा।

मुहा०-खाल उधेड़ना या खींचना = बहुत मारना, पीटना या कड़ा दंड देना।

२. धौंकनी। ३. मृत शरीर।

स्त्री० [सं० खात] १. नीची भूमि जिसमें बरसात का पानी जमा हो जाता हो। २. कोई गड्ढा या नीचा स्थान। ३. खाड़ी। ४. खाली जगह। ५. बरसाती नाला। खार। ६. पशुओं के चरने की जगह, मुख्यतः ऐसी जगह जिसके बीच में कोई छोटा ताल भी हो। (कुमाऊँ) कश्मीर में इसी को 'मर्ग' कहते हैं।

खालसा-वि० [अ० खालिस = शुद्ध] १. जिसपर केवल एक का अधिकार हो।

२. राज्य का। सरकारी।

पुं॰ सिक्खों का एक सम्प्रदाय।

खाला-वि॰ [हिं॰ खाल] [स्त्री॰ खाली] नीचा। निम्न।

स्त्री॰ [अ॰ खालः] मौसी। मासी।

खालिस-वि॰ [अ॰] जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो। बे-मेल। विशुद्ध।

खाली-वि॰ [अ॰] १. जिसके अन्दर का स्थान शून्य हो। जो भरा न हो। रीता। रिक्त। २. जिसमें कोई विशेष वस्तु न हो। ३. रहित। विहीन। ४. जिसे कुछ काम न हो। ५. जो व्यवहार में न हो। जिसका काम न हो। (वस्तु) ६. व्यर्थ। निष्फल। जैसे–निशाना या बात खाली जाना।

खाविंद-पुं॰[फा॰]१. पति। २. मालिक।

खास-वि॰ [अ॰] १. विशेष। मुख्य। प्रधान। 'आम' का उलटा।

पद-खासकर = विशेषतः। प्रधानतः। २. निज का। आत्मीय। ३. स्वयं। खुद। ४. ठेठ। विशुद्ध।

स्त्री॰ [अ॰ कीसा] मोटे कपड़े की थैली।

खासा-पुं॰ [अ॰] १. राजा का भोजन। राज-भोग। २. राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी। ३. एक प्रकार का सूती कपड़ा।

वि॰ पुं॰ [देश॰] [स्त्री॰ खासी] १. अच्छा। बढ़िया। २. सुडौल। सुन्दर! ३. भरपूर। पूरा।

खासियत-स्त्री॰ [अ॰] १. स्वभाव। प्रकृति। २. गुण। ३. विशेषता।

खिंग*-पुं॰ [?] सफेद रंग का घोड़ा।

खिंचना-अ॰ [सं॰ कर्षण] १. किसी ओर ताना या घसीटा जाना। तनना। २. आकृष्ट होना। प्रवृत्त होना। ३. काम में आना। लगना। खपना। ४. भभके से अरक, शराब आदि तैयार होना। ५. प्रभाव, गुण आदि निकल जाना। जैसे–दर्द खिंचना। ६. अंकित या चित्रित होना। ७. अनुराग या सम्बन्ध कम होना। ८. माल कहीं जाना या खपना।

खिंचवाना-स॰ हिं॰ 'खींचना' का प्र॰

खिंचाव-पुं॰ हिं॰ 'खिंचना' का भाव॰

खिंडाना-स॰ [सं॰ क्षिप्त] बिखरा

खिंखिंध*-पुं॰ दे॰ 'किष्किंधा'।

खिचड़वार-पुं॰ [हिं॰ खिचड़ी + मकर संक्रान्ति।

खिचड़ी-स्त्री॰ [सं॰ कृसर] १. ए मिला या पका हुआ चावल और

मुहा॰-खिचड़ी पकाना = गुप्त सलाह करना। **ढाई चावल की खि अलग पकाना** = सबसे अलग कोई कार्य करना या मत रखना। २. विवाह के बाद की एक रसम जिसमें और उसके सम्बन्धी लड़कीवाले के जाकर कच्ची रसोई खाते हैं। ३. एक मिले हुए कई प्रकार के पदार्थ। ४. संक्रान्ति।

वि॰ मिला जुला।

खिजना-अ॰ दे॰ 'खिजलाना'।

खिजमत*-स्त्री॰ दे॰ 'खिदमत'।

खिजलाना-अ॰ [हिं॰ खीजना] लाना। चिढ़ना।

स॰ हिं॰ 'खीजना' का प्रे॰।

खिझना-अ॰ दे॰ 'खीजना'।

खिझाना†-वि॰ [हिं॰ खिझना] [खिझौनी] खिझाने या दिक करनेवा

खिड़की-स्त्री॰ [सं॰ खटक्किका] में छोटे दरवाजे की तरह की दरीचा। झरोखा।

खिड़की-बंद वि॰ [हिं॰ + फा॰] (जो पूरा किराये पर लिया गया हो जिसमें कोई दूसरा किराएदार न हो।

खिताब-पुं॰ [अ॰] पदवी। उपाधि

खित्ता-पुं॰ [अ॰] प्रान्त। देश।

खिदमत-स्त्री॰ [फा॰] सेवा। टह

खिदमतगार-पुं॰ [फा॰] छोटी करनेवाला। सेवक। टहलुआ।

-पुं० = झगा।
वि० [सं०][भाव० खिन्नता] १.
। २. चिन्तित। ३. अप्रसन्न।
-अ० [सं० ख्या = घिसना]
दाँत का घिसने आदि के कारण
होना।
-पुं० [अ०] राजस्व। कर।
-स० [अनु०] १. अनाज
। २. खुरचना।
-स्त्री० [हिं० खैर = कत्था] खैर या
उसकी बनाई हुई टिकिया।
-स्त्री० [अ०] राजा या बड़े की
से मिलनेवाले सम्मान-सूचक कपड़े।
-स्त्री० [अ०] १. सृष्टि। २. भीड़।
-अ० [अनु०] खिलखिल
करके हँसना। जोर से हँसना।
-स्त्री० [हिं० खिलना] खिलने की
।
दे० 'खिलअत'।
-अ० [सं० स्खल] १. कली का
में होना। फूल विकसित
। २. प्रसन्न होना। ३. शोभित
। अच्छा या सुन्दर लगना। ४. बीच
। दरार पड़ना।
-स्त्री० [अ०] एकान्त स्थान।
-पुं० दे० 'खेलवाड़'।
-स्त्री० [हिं० खाना] खाने या
का दाम, भाव या नेग।
[हिं० खेलाना (खेल)] बच्चों को
दाई।
-पुं० [हिं० खेल] [स्त्री०
] १. खेलनेवाला। २. प्रति-
आदि के खेलों में किसी पक्ष या
ओर से खेलने के लिए सम्मिलित
। (प्लेयर) ३. कुश्ती लड़ने,
खाने आदि के काम करने-
।
-स० [हिं० खाना] भोजन
कराना।
स० हिं० 'खेलना' का प्रे०।
स० हिं० 'खिलना' का प्रे०।

खिलाफ-वि० [फा०] विरुद्ध। प्रतिकूल। उलटा।
क्रि० वि० १. तुलना में। २. मुकाबले में। सामने।

खिलौना-पुं० [हिं० खेल + औना (प्रत्य०)] बच्चों के खेलने की चीज। जैसे-मूर्त्ति, लट्टू, चरखी आदि।

खिल्ली-स्त्री० [हिं० खिलना] हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी।
स्त्री० [हिं० खील] पान का बीड़ा।

खिवना*-अ० = चमकना।

खिसकना-अ० दे० 'खसकना'।

खिसाना†*-अ० दे० 'खिसियाना'।

खिसियाना-अ० [हिं० खीस = दाँत] १. लज्जित होना। शरमाना। २. नाराज होना। बिगड़ना।

खिसी†*-स्त्री० [हिं० खिसियाना] १. लज्जा। शरम। २. ढिठाई। धृष्टता।

खिसौहाँ*-वि० [हिं० खिसियाना] खिसियाया हुआ। लज्जित। संकुचित।

खींच-स्त्री० हिं० 'खींचना' का भाव०।

खींच-तान-स्त्री० [हिं० खींचना + तानना] १. व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग। खींचा-खींची। २. शब्द या वाक्य का जबरदस्ती भिन्न अर्थ करना।

खींचना-स० [सं० कर्षण] [प्रे० खिंचवाना] १. बलपूर्वक अपनी तरफ लाना।
मुहा०-हाथ खींचना = देना या और कोई काम रोकना।
२. कोश आदि में से अस्त्र बाहर निकालना। ३. सोखना। चूसना। ४. भभके से अर्क, शराब आदि बनाना। ५. किसी वस्तु का गुण या प्रभाव निकाल लेना। ६. लकीरों से आकार या रूप बनाना।

खींचा-तानी-स्त्री० दे० 'खींच-तान'।

खीज-स्त्री० [हिं० खीजना] १. खीजने का भाव। २. खिजानेवाली बात।

खीजना-अ० [सं० खिद्यते, प्रा० खिज्जइ] दुःखी होकर क्रोध करना। झुँझलाना। खिजलाना।

खीझ-स्त्री० दे० 'खीज'।

खीन†*-वि० [सं० क्षीण] क्षीण।

खीर-स्त्री० [सं० क्षीर] १. दूध। २. दूध में पकाये हुए चावल।

खील-स्त्री० [हिं० खिलना] भूना हुआ धान। लावा।

खीवन*-स्त्री० [सं० क्षावन] मतवालापन। मत्तता।

खीस-स्त्री० [फा० खीस = हल की फाल] १. नुकीले, लंबे दाँत। जैसे-जंगली सूअर की खीस या खाँग। २. खुले हुए और बाहर से दिखाई देनेवाले दाँत।

मुहा०-खीस या खीसें निकालना = कोई भूल हो जाने पर या असमर्थ होने पर भी निर्लज्जता-पूर्वक हँसना।

३. लज्जा। शरम। ४. गौ, भैंस आदि के बच्चा देने पर पहले-पहल कई दिनों तक निकलनेवाला दूध जो पीने के योग्य नहीं होता। पेउस।

मुहा०-खीस निकालना = गौ, भैंस का दूध गर्भ-काल में रुका रहने से उनके थन में जो मांस-कील बन जाती है, उसे खींचकर निकालना।

†*-वि० [सं० कृश] नष्ट। बरबाद।

स्त्री० [हिं० खीज] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २. क्रोध। गुस्सा।

खीसना*-स० [सं० कृश] नष्ट या बरबाद करना। न रहने देना।

खीसा-पुं० [फा० कीसः] [स्त्री० अल्पा० खीसी] १. थैला। २. जेब।

खुँदाना-स० [सं० क्षुण्ण] (घोड़ा) कुदाना।

खुंभी-स्त्री० [सं० कुम्भ] कान में पहनने का एक गहना।

खुआर*-वि० दे० 'ख्वार'।

खुआरी*-स्त्री० दे० 'ख्वारी'।

खुक्ख-वि० [सं० शुष्क] १. जिसके कुछ न हो। २. परम निर्धन।

खुखड़ी-स्त्री० [देश०] १. तकुए चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत। कुकड़ी नैपाली छुरा।

खुगीर-पुं० [फा०] १. वह ऊनी जो घोड़ों के चारजामे के नीचे रख है। नमदा। २. चारजामा। जीन।

मुहा०-खुगीर की भरती = लोगों या पदार्थों का समूह।

खुचर-स्त्री० [सं० कुचर] झूठमूठ दिखलाना। छिद्रान्वेषण।

खुजलाना-स० [सं० खर्जु] मिटाने के लिए नाखूनों से अंग रग सहलाना।

अ० खुजली मालूम होना।

खुजली-स्त्री० [हिं० खुजलाना] स्थिति जिसमें खुजलाने को जी खुजलाहट। सुरसुरी। २. एक रो शरीर बहुत खुजलाता है।

खुजाना-स०, अ० दे० 'खुजला

खुटक*-स्त्री० [हिं० खटकना]

खुटकना-स० [सं० खुड] तोड़ना या नोचना।

खुटका-पुं० दे० 'खटका'।

खुट-चाल-स्त्री० [हिं० खोटी [वि० खुटचाली] १. दुष्टता। २. खराब चाल-चलन।

खुटना†*-अ० [सं० खुड] अ० १. समाप्त होना। खतम कम होना। घटना।

खुटपन-पुं० [हिं० खोटा] खो

खुटला†-पुं० [देश०] कान का एक प्रकार का गहना।

खुटाना†-अ० [सं० खुड]

[हिं० खुट से अनु०] रेवड़ी की प्रसिद्ध छोटी मिठाई।

[हिं० गड्ढा] १. पाखाने में उठने का पायदान। २. पाखाना फिरने का गड्ढा।

=खुटना (समाप्त होना)।

[अ० खुतबः] १. तारीफ। २. सामयिक राजा की प्रशंसा की जाने वाली।

किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना=किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना। (मुसल०)

[हिं० खूँटी] १. फसल कट जाने पर पौधों का बचा भाग। खूँटी। २. धरोहर। अमानत। ३. हिमयानी। ४. धन। दौलत।

[फा०] स्वयं। आप।

खुद-ब-खुद=आपसे आप।

-स्त्री० [फा०] वह जमीन जिसे मालिक उसे स्वयं जोते।

-वि० दे० 'स्वार्थी'।

-अ० हिं० 'खोदना' का अ०।

-वि० [फा०] जिसपर किसी का शासन न हो। स्वतंत्र।

-पुं० [सं० क्षुद्र] १. छोटी और तुच्छ वस्तु। २. फुटकर चीजें। ३. बिक्री का वह प्रकार जिसमें थोड़ी थोड़ी या अलग अलग चीजें बेची जाती हैं। थोक का उलटा।

१. जो छोटे छोटे टुकड़ों या अंशों के रूप में हो। जैसे-खुदरा सौदा, खुदरा नोट। २. थोड़ा थोड़ा करके (इकट्ठा नहीं)। 'थोक' का उलटा। (रिटेल)

-स० हिं० 'खोदना' का प्रे०।

-पुं० [फा०] ईश्वर।

-स्त्री० [हिं० खुदना] १. खोदने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. भूमि की मिट्टी निकालकर उसमें गड्ढे आदि करने का काम। (एक्सकेवेशन) जैसे-नींव की खुदाई, या सारनाथ, नालन्द आदि की खुदाई।

वि० [फा०] ईश्वरीय।

स्त्री० १. ईश्वरता। २. सृष्टि।

खुदाई खिदमतगार-पुं० [फा०] पश्चिमी सीमा-प्रान्त के एक विशेष प्रकार के राष्ट्रीय स्वयंसेवक जो सामाजिक और राजनीतिक कार्य करते हैं।

खुदावंद-पुं० [फा०] १. ईश्वर। २. हुजूर। सरकार।

खुदाव-पुं० [हिं० खोदना] १. खोदे जाने की की क्रिया या भाव। २. खोदकर बनाये हुए बेल-बूटे। नक्काशी।

खुदी-स्त्री० [फा०] अपने आपको कुछ समझना। अहंभाव। अहंकार।

खुद्दी-स्त्री० [सं० क्षुद्र] अन्न के बहुत छोटे टुकड़े।

खुनस-स्त्री० [सं० खिन्न-मनस्] [वि० खुनसी, क्रि० खुनसाना] क्रोध। गुस्सा।

खुफिया-वि० [फा०] गुप्त। छिपा हुआ।

खुफिया पुलिस-स्त्री० [फा० खुफिया + अं० पुलीस] सरकारी जासूस। भेदिया।

खुभना-अ० दे० 'चुभना'।

खुभराना*-अ० [सं० क्षुब्ध] उपद्रव करने के लिए इधर-उधर घूमना।

खुभाना-स० [अनु०] कोई बड़ी चीज जोर से दबाते या गड़ाते हुए जोर से धँसाना। जैसे-बरफी खुभाना।

खुभी-स्त्री० [हिं० खुभना] कान में पहनने का फूल।

खुमान*-वि० [सं० आयुष्मान्] बड़ी आयुवाला। दीर्घजीवी। (आशीर्वाद)

खुमारी-स्त्री० [अ० खुमार] १. मद। नशा। २. नशा उतरने के समय की या रात भर जागने से होनेवाली थकावट।

खुमी-स्त्री० [अ० कुमः] एक उद्भिज वर्ग जिसके अन्तर्गत ढिंगरी, गुन्छी, कुकुरमुत्ता

आदि वनस्पतियाँ हैं।

खुरंड-पुं० [सं० क्षुर] सूखे घाव पर जमनेवाली पपड़ी।

खुर-पुं० [सं० क्षुर] सींगवाले चौपायों के पैर का निचला भाग, जो बीच से फटा होता है।

खुरका-स्त्री० = खुजली।

खुरकना-स० = खुजलाना।

खुरखुरा-वि० दे० 'खुरदरा'।

खुरचन-स्त्री० [हिं० खुरचना] १. खुरचकर निकाली हुई वस्तु। २. एक प्रकार की गाढ़ी रबड़ी।

खुरचना-अ० [सं० क्षुरण] किसी जमी हुई वस्तु को छीलकर अलग करना।

खुर-चाल-स्त्री० दे० 'खुट-चाल'।

खुरजी-स्त्री० [फा०] घोड़े, बैल आदि पर सामान लादने का थैला।

खुरदरा-वि० [हिं० खुर + दर अनु०] जिसका ऊपरी तल जगह जगह कुछ ऊँचा-नीचा हो। जो चिकना न हो।

खुरपा-पुं० [सं० क्षुरप्र] [स्त्री० अल्पा० खुरपी] घास छीलने का एक ओजार।

खुरमा-पुं० [अ० खुर्मः] १. छोहारा। २. एक प्रकार की मिठाई।

खुराक-स्त्री० [फा०] १. भोजन। खाना। २. मात्रा। (औषध की)

खुराकी-स्त्री० [फा०] वह धन जो खुराक के लिए दिया जाय। भोजन-व्यय।

खुराफात-स्त्री० [अ०] १. बेहूदा और वाहियात बात। २. झगड़ा। बखेड़ा।

खुरासान-पुं० [फा०] [वि० खुरसानी] फारस का एक नगर और उसके आस-पास का प्रदेश।

खुरासानी-वि० [फा०] खुरासान नगर या उसके आस-पास के प्रदेश का।
पुं० खुरासान का निवासी।
स्त्री० १. खुरासान की भाषा। २. खुरासान की बनी, पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

खुरुक*-स्त्री० [हिं० खुटका] आ

खुर्रांट-वि० [देश०] १. बूढ़ा। २. अनुभवी। तजरुबेकार। ३. चा

खुलना-अ० [सं० खुड्, खुल् = १. सामने का अवरोध या ऊपर का हटना। बन्द न रहना। जैसे-कि सन्दूक खुलना। २. दरार होना। ३. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु का ४. प्रचलित होना। चलना। जै या नहर खुलना। ५. नित्य का कार्य होना। ६. किसी सवारी का जाना। ७. गुप्त या गूढ़ बात प्रक

पद-खुले आम, खुले खजाने, मैदान = सबके सामने; छिपाकर ८. अपने मन की बात या भेद कह

खुलवाना-स० [हिं० 'खोलना' का किसी को कुछ खोलने में प्रवृत्त कर

खुला-वि० [हिं० खुलना] १. या ढका न हो। २. जिसे कोई न हो। अवरोध-हीन। ३. स्पष्ट। जाहिर।

खुलासगी-स्त्री० [अ०] 'खुल की अवस्था या भाव।

खुलासा-पुं० [अ०] सारांश। वि० [हिं० खुलना] १. खुला २. अवरोध-रहित। ३. साफ। स्प

खुल्लम-खुल्ला-क्रि० वि० [हिं० प्रकाश्य रूप से। खुले आम।

खुश-वि० [फा०] १. प्रसन्न। आ २. अच्छा। (यौगिक के आरम्भ में खुश-किस्मत।)

खुश-किस्मत-वि० [फा०] [भाव किस्मती] भाग्यवान्।

खुश-खबरी-स्त्री० [फा०] प्रस वाला या शुभ समाचार। अच्छी

खुशबू-स्त्री० [फा०] सुगन्ध।

खुशामद-स्त्री० [फा०] [वि० खुशा

को प्रसन्न करने के लिए झूठी प्रशंसा
। चापलूसी।
ामदी-वि० [फ़ा०] खुशामद करने-
। चापलूस।
-वि० [फ़ा० खुशहाल] १. सब
से सम्पन्न और सुखी। सम्पन्न।
तरह से भरा हुआ। पूरित। पूर्ण।
[फ़ा०] प्रसन्नता।
[फ़ा० मि० सं० शुष्क] [भाव०
१. जो तर न हो। सूखा। शुष्क।
रसिकता न हो। रूखा। ३.
जिसके साथ भोजन न हो।
[फ़ा०] १. शुष्कता। २.
। ३. स्थल या भूमि। 'तरी'
रीत।
-वि० [फ़ा० खुश-हाल] प्रसन्न।
।
-पुं० [अ० खुसियः] अंड-कोश।
-वि० दे० 'खुसाल'।
[सं० खोल्क ?] वर्षा आदि
के लिए सिर पर ओढ़ने के लिए
प्रकार से लपेटी हुई चादर।
।
[सं० खंड] १. छोर। सिरा।
ना। ३. ओर। तरफ। ४. भाग।
।
[हिं० खोट] कान की मैल।
[हिं० खुटना = समाप्त होना] कोई
या त्रुटि जिसकी पूर्त्ति करना
हो।
[?] कान में पहनने का एक गहना।
[सं० खोड] पशु या खेमे की
बाँधने के लिए गड़ी लकड़ी।
[हिं० खूँटा] १. छोटा खूँटा।
का वह अंश जो फसल काट लेने
में रह जाता है। ३. हजामत के
हुए बालों के बचे हुए अंकुर।
।

खूँद–स्त्री० हिं० 'खूँदना' का भाव०।

खूँदना–अ० [सं० खुंदन = तोड़ना] [भाव० खूँद] १. चंचल घोड़ों का पैर उठाकर जमीन पर पटकना। २. पैरों से रौंदकर खराब करना। ३. अव्यवस्थित या तितर-बितर करना। ४. उछलना या कूदना।

खूटना†–अ० [सं० खुंडन] छेड़ना। रोक-टोक करना।

अ० दे० 'खुटना'।

खूटा*–वि० [हिं० खोट] १. जिसमें किसी प्रकार की न्यूनता या कमी हो। २. दे० 'खोटा'।

खूद–पुं० दे० 'सीठी'।

खून–पुं० [फा०] १. रक्त। लहू। **मुहा०–खून उबलना या खौलना**= बहुत क्रोध होना। **खून का पानी करना या खून पानी एक करना** = बहुत अधिक शारीरिक परिश्रम या प्रयत्न करना। **सिर पर खून सवार होना** = किसी को मार डालने या कोई बड़ा अनिष्ट करने पर उद्यत होना। **खून पीना** = (क) मार डालना। (ख) बहुत तंग करना। सताना। **खून बहाना**=किसी को मार काटकर उसका खून गिराना। रक्त-पात करना।
२. बध। हत्या। कतल।

खून-खराबी–स्त्री० [हिं०] मार-काट।

खूनी–वि० [फा०] १. खून करने या मार डालनेवाला। हत्यारा। घातक। २. अत्याचारी।
वि० खून-सम्बन्धी। जैसे–खूनी बवासीर।

खूब–वि० [फा०] [भाव० खूबी] १. अच्छा। भला। उत्तम। २. बहुत।

खूबसूरत–वि० [फा०] सुन्दर।

खूबसूरती–स्त्री० [फा०] सुन्दरता।

खूबी स्त्री० [फा०] १. भलाई। अच्छाई। अच्छापन। २. गुण। विशेषता।

खूसट–पुं० [सं० कौशिक] उल्लू (पक्षी)।

वि० १. शुष्क-हृदय । अ-रसिक । २. मूर्ख ।

खेचर–पुं० [सं०] वह जो आसमान में चले या उड़े । आकाश-चारी । जैसे–पक्षी, विमान, वायु, राक्षस आदि ।

खेटक–पुं० [सं० आखेट] शिकार ।

खेटकी–पुं० [सं०] भड्डुरी । भड़ेरिया । पुं० [सं० आखेट] १. शिकारी । २. वधिक । हत्यारा ।

खेड़ा†–पुं० [सं० खेटक] १. छोटा गाँव । २. छोटा कच्चा घर ।

खेड़ी–स्त्री० [देश०] वह मांस-खंड जो जरायुज जीवों के तुरन्त के जनमे बच्चों की नाल के दूसरे सिरे पर लगा रहता है ।

खेत–पुं० [सं० क्षेत्र] १. अनाज पैदा करने के लिए जोतने-बोने की जमीन । २. खेत में खड़ी हुई फसल । ३. किसी चीज के, विशेषतः पशुओं आदि के उत्पन्न होने का प्रदेश । ४. समतल भूमि । चौरस मैदान ।

मुहा०–खेत करना = (क) भूमि समतल करना । (ख) चन्द्रमा का उदित होकर प्रकाश फैलाना ।

५. समर-भूमि ।

मुहा०–खेत आना या रहना=युद्ध में मारा जाना । **खेत रखना** = समर में विजय प्राप्त करना ।

६. तलवार का फल ।

खेत-बँट–स्त्री० [हिं० खेत + बाँटना] खेतों के बँटवारे का वह प्रकार जिसमें हर खेत टुकड़े टुकड़े करके बाँटा जाता है । 'चक-बँट' का उलटा ।

खेतिहर–पुं० [सं० क्षेत्रधर] खेती करनेवाला । कृषक । किसान ।

खेती–स्त्री० [हिं० खेत + ई (प्रत्य०)] १. खेत में अनाज बोने और उपजाने का काम । कृषि । किसानी । २. खेत में बोई हुई फसल ।

खेती-बारी–स्त्री० दे० 'खेती' ।

खेती भूमि–स्त्री० [हिं० खेती + सं० भूमि ऐसी भूमि जिसपर खेती-बारी होती या सकती हो । (कलचरेबुल लैन्ड)

खेद–पुं० [सं०] [वि० खेदित, खिन्न] किसी उचित, आवश्यक या प्रिय बात के होने पर मन में होनेवाला दुःख । २. शिथिलता । थकावट ।

खेदना†–स० दे० 'खदेड़ना' ।

खेदा–पुं० [हिं० खेदना] १. पशुओं मारने या पकड़ने के लिए घेरकर एक पर लाना । २. शिकार । आखेट ।

खेना–स० [सं० क्षेपण] १. नाव चलाना । २. समय बिताना काटना ।

खेप–स्त्री० [सं० क्षेप] १. उतनी जितनी एक बार में लाद या ढोकर ले जाय । २. ढोनेवाले व्यक्ति, गाड़ी की एक बार की यात्रा ।

खेपना–स० [सं० क्षेपण] बिताना । (

खेम*–पुं० दे० 'क्षेम' ।

खेमटा–पुं० [देश०] १. बारह मा का एक ताल । २. इस ताल पर होने गाना या नाच ।

खेमा–पुं० [अ०] तम्बू । डेरा ।

खेरा†–पुं० दे० 'खेड़ा' ।

खेरौरा†–पुं० [हिं० खाँड़] मिठाई लड्डू । खँडौरा । ओला ।

खेल–पुं० [सं० केलि] १. मन या व्यायाम के लिए उछल-कूद, धूप या और कोई मनोरंजक कृत्य, हार-जीत भी होती है । क्रीड़ा ।

मुहा०–खेल खेलाना = व्यर्थ की या काम में फँसाये रखना ।

२. बहुत हल्का या तुच्छ काम । १. नय, तमाशा, स्वाँग, करतब आदि । अद्भुत या विचित्र लीला ।

खेलक*-पुं० दे० 'खिलाड़ी' ।

ना-अ० [सं० केलि, केलन] [प्रे०
] मन बहलाने या व्यायाम के
इधर-उधर उछलना, कूदना आदि।
करना।

हा०–जान या जी पर खेलना =
करना जिसमें मृत्यु का भय हो।
समझना = कुछ न समझना।
समझना।

१. ऐसा काम करना जो खेल के रूप
गेंद खेलना। २. किसी वस्तु
कोई क्रिया या कार्य करना।
खेलना (तलवार चलाना),
खेला (ऐसा काम करना, जिसमें
भीगे)। ३.नाटक या अभि-
करना।

भूमि–स्त्री० [हिं० खेल + भूमि] वह
लड़कों के खेलने के लिए हो।
खेलने की जगह। (प्ले-ग्राउंड)

वाड़–पुं० [हिं० खेल + वाड़ (प्रत्य०)]
क्रीड़ा। २.मन-बहलाव। दिल्लगी।
अथवा बहुत ही साधारण रूप से
हुआ काम।

वाड़ी–वि० [हिं० खेलवाड़ + ई
)] १. बहुत खेलनेवाला। २. विनोद-
।

ना–पुं० १. दे० 'खेल'। २. दे० 'सट्टा'।

ड़ी–वि० १. दे० 'खिलाड़ी'। २. दे०
वाड़ी'।

ना–स० हिं० 'खेलना' का प्रे०।

ना–पुं० दे० 'खिलौना'।

–पुं० [सं० क्षेपक] मल्लाह।

–पुं० [हिं० खेत + वट (प्रत्य०)]
का वह कागज जिसमें पट्टीदार का
लिखा रहता है।

[सं० केवट, हिं० खेना] मल्लाह।
।

ड़ा–पुं० [सं० क्षपणक] बौद्धमत का
। भिक्षु।

खेवनहारा–पुं० [हिं० खेवना = खेना + हारा (प्रत्य०)] १. वह जो नाव खेता या चलाता हो। माँझी। मल्लाह। २. वह जो किसी को संकट आदि से पार करता हो। विकट कार्य के निर्वाह में सहायक होनेवाला।

खेवना*–स० दे० 'खेना'।

खेवरना–स० [हिं० खौर] १. खौर या चन्दन का टीका लगाना। २. स्त्रियों का चन्दन, केसर आदि से अपना मुँह चित्रित करना।

खेवा–पुं० [हिं० खेना] [भाव० खेवाई] १. नाव का किराया। २. नाव द्वारा नदी पार करने का काम। ३. बोझ से लदी नाव। ४. धार्मिक मत या मार्ग। ५. बार। दफा।

खेस–पुं० [फा० ख़ेश] बहुत मोटे सूत की एक एक प्रकार की लम्बी चादर।

खेसारी–स्त्री० [सं० कृसर] एक प्रकार का मटर। दुबिया मटर। लतरी।

खेह (र)–स्त्री० [सं० क्षार] धूल। राख। **मुहा०–खेह खाना** = (क) धूल फाँकना। (ख) व्यर्थ समय खोना। (ग) दुर्दशा-ग्रस्त होना।

खेहा–पुं० [?] बटेर की तरह की एक छोटी चिड़िया।

खैंचना–सं० दे० 'खींचना'।

खैना*–अ० दे० 'खयना' (क्षीण होना)।

खैनी–स्त्री० [हिं० खाना] (खाने का) तमाकू या सुरती का पत्ता जो मलकर चूने के साथ खाया जाता है।

खैर–पुं० [सं० खदिर] १. एक प्रकार का बबूल। कथ-कीकर। २. इस वृक्ष की लकड़ी का सत्त। कत्था।
स्त्री० [फा०] कुशल। क्षेम।
अव्य० १. कुछ चिन्ता नहीं। कुछ परवाह नहीं। २. अस्तु। अच्छा।

खैर-आफियत–स्त्री०[फा० + अ०]कुशल-मंगल। राजी-खुशी। खैरियत।

खैर-खाह–वि० [फा०] [भाव० खैरखाही]

भलाई चाहनेवाला। शुभ-चिन्तक।

खैर-भैर-पुं० [अनु०] १. हो-हल्ला। २. हलचल।

खैरा-वि० [हिं० खैर] खैर के रंग का। कत्थई।

खैरात-स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] दान।

खैरियत-स्त्री० [फा०] १. कुशल-क्षेम। राजी-खुशी। २. भलाई। कल्याण।

खैलर†-स्त्री० दे० 'मथानी'।

खैला†-पुं० दे० 'मथानी'।

खोंगाह-पुं० [सं०] पीलापन लिये सफेद रंग का घोड़ा।

खोंच-स्त्री० [सं० कुच] १. नुकीली चीज से छिलने का आघात। खरोंच। २. काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना। ३. झोली।

खोंचा-पुं० [सं० कुंचन] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लम्बा बाँस।

खोंची-स्त्री० [हिं० खूँट] भिक्षा। भीख। स्त्री० [हिं० खोंचा] जमीन या मकान आदि का किसी ओर निकला या बढ़ा हुआ पतला लम्बा टुकड़ा।

खोंटना-स० [सं० खुड] [भाव० खोंट] किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना।

खोंडर-पुं० [सं० कोटर] पेड़ का भीतरी खोखला भाग या गड्ढा।

खोंड़ा-वि० [सं० खुंड] १. जिसका कोई अंग भंग हो।

खोंप (न)†-स्त्री० [हिं० खोंपना] १. खोंपने या चुभाने के कारण फटा हुआ अंश। चीर। दरार। २. दे० 'खोंच'।

* स्त्री० दे० 'कोंपल'।

खोंपना†-स० [अनु०] जोर से गड़ाना, चुभाना या धँसाना। खोभना।

खोंपा-पुं० [तामिल कोप्पु, मि० सं० कोष] स्त्रियों के सिर के बालों का बँधा हुआ जूड़ा। गोलाकार बँधी हुई वेणी।

खोंसना-स० [सं० कोश + ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु को स्थिर रखने के लिए उ… कुछ भाग दूसरी वस्तु में घुसेड़ … अटकाना।

खोआ-पुं० [सं० क्षोद, प्रा० … ऐसा गाढ़ा किया हुआ दूध जिसकी … बन सके। मावा। खोया।

खोई-स्त्री० [सं० क्षोद] १. रस … जाने पर बची हुई गन्ने के टुक… सीठी। २. भुने हुए धान आदि की … लावा। ३. एक प्रकार के दाने … लड्डू आदि बनते हैं।

स्त्री० [हिं० खोना] सट्टे आदि में … वाली हानि। जैसे–आज खोई है तो … कमाई होगी।

खोखला-वि० [हिं० खुक्ख + ला (प्रत्य… जिसके अन्दर कुछ न हो। पोला।

खोखा-पुं० [हिं० खुक्ख] १. वह … जिसपर हुंडी लिखी जाती है। २. वह … जिसका रुपया चुका दिया गया हो।

खोगीर-पुं० दे० 'खुगीर'।

खोज-स्त्री० [सं० क्षोद्य, प्रा० खोज्ज … पैर का चिह्न] १. पैरों का वह चि… जो चलने से मिट्टी या जमीन पर … है। (इसी से पता लगाया जाता … कोई किधर गया है।)

मुहा०–खोज मिटाना = वे चिह्… लक्षण नष्ट करना जिनसे किसी … घटना का पता चल सकता हो।

२. खोजने या ढूँढने की क्रिया या भा… अनुसंधान। विचयन। तलाश। (… ३. चिह्न। निशान। पता। ४. … के पहिए की लीक अथवा पैर … के चिह्न।

खोजना-स० दे० 'ढूँढ़ना'।

खोजा-पुं० [फा० ख्वाजः] १. वह न… जो मुसलमानी महलों में सेवक की … रहता था। २. सेवक या रक्षक। नौकर। … माननीय व्यक्ति। सरदार। ४. गुज…

की एक जाति।

[हिं० खोज] १. वह जो पैरों देखकर चोरों, अपराधियों, जंगली आदि का पता लगाता हो। २. खोजनेवाला।

दे० 'खोजी'।

[हिं० खोटा] १. दोष। ऐब। २. किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट की मिलावट।

-स्त्री० दे० 'खोटाई'।

[सं० क्षुद्र] [स्त्री० खोटी] हो। बुरा। 'खरा' का उलटा। खोटी-खरी सुनाना=डाँटना-ना।

-स्त्री० [हिं० खोटा+ई (प्रत्य०)] । २. दुष्टता। ३. छल। कपट। । ऐब।

-अ० दे० 'खुटाना'।

-पुं० दे० 'खोटाई'।

[हिं० खोट] भूत-प्रेत आदि

[फा० खोद] युद्ध में पहनने का । कूँड़। शिरस्त्राण।

-स० [सं० खुद्=भेदना] १. मिट्टी आदि हटाकर गहरा गड्ढा । २. इस प्रकार मिट्टी चीज उखाड़ना या गिराना। चीज में उभारदार बेल-। नक्काशी करना। ४. उँगली, आदि से दबाना। गड़ाना। ५. छेड़-

खोद-विनोद=विशेष रूप से छोटी-बातें तक पूछना।

करना। उसकाना। उभाड़ना।

-स० हिं० 'खोदना' का प्रे०।

-स्त्री० दे० 'खुदाई'।

-स० [सं० क्षेपण] १. अपने पास असावधानी से निकल जाने देना। गँवाना। २. नष्ट करना। बिगाड़ना। अ० पास की वस्तु का असावधानी से कहीं छूट, रह या निकल जाना।

पुं० दे० 'दोना'।

खोन्चा-पुं० [फा० ख्वान्चः] बड़ी परात या थाल, जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं।

खोपड़ा-पुं०[सं० खर्पर] १.दे० 'खोपड़ी'। २. सिर। ३. गरी का गोला। ४.नारियल।

खोपड़ी-स्त्री० [हिं० खोपड़ा] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर।

मुहा०-अंधी या औंधी खोपड़ी का=ना-समझ। मूर्ख। **खोपड़ी खा या चाट जाना**=बहुत बातें करके दिक करना। **खोपड़ी गंजी होना**=मार या व्यय आदि के कारण परेशान होना।

३. गोलाकार और बहुत कड़ा ऊपरी आवरण। जैसे—नारियल की खोपड़ी या कछुए की खोपड़ी।

खोपना-स्त्री० [हिं० खोंपना] छप्पर का कोना।

खोपा-पुं० [सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा] १. छप्पर का कोना। २. स्त्रियों की गुथी हुई चोटी की तिकोनी बनावट। जूड़ा। ३. गरी का गोला।

खोभना-स० दे० 'खुभाना'।

खोभरा*-पुं० [हिं० खुभना] १. रास्ते में पड़नेवाली वह उभरी हुई चीज, जो चुभती हो या जिससे ठोकर लगती हो। २. कूड़ा-करकट।

खोभार-पुं० [?] कूड़ा-करकट फेंकने का गड्ढा।

खोम*-पुं० [अ० क़ौम] समूह।

खोया-पुं० दे० 'खोआ'।

खोर-स्त्री० [हिं० खर] १. तंग गली। कूचा। २. चौपायों को चारा देने का नाँद। स्त्री० [हिं० खोरना] स्नान। नहान। वि० [हिं० खोट] १. खराब। बुरा।

२. निकम्मा। बेकाम।

वि० [फा० खोर] एक विशेषण जो शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर ये अर्थ देता है-(क) खानेवाला, जैसे-आदमखोर = नरभक्षी। (ख) लेकर अपने उपयोग में लानेवाला। जैसे-रिश्वतखोर = घूस लेनेवाला। (ख) निर्लज्जतापूर्वक सहन करनेवाला;जैसे-जूताखोर। (घ) किसी के प्रभाव से बहुत कुछ रक्षित रखनेवाला; जैसे-गर्दखोर, मैलखोर आदि।

खोरना*-अ० [सं० क्षालन] स्नान करना। नहाना।

खोरा-पुं० [सं० खोलक या फा० आबखोरा] [स्त्री० अल्पा० खोरिया] कटोरा।

वि० दे० 'खोंड़ा'।

खोरि*-स्त्री० [हिं० खुर] तंग गली।

स्त्री० [सं० खोट या खोर] १. ऐब। दोष। २. बुराई।

खोरिया-स्त्री० [हिं० खोरा] १. छोटी कटोरी। २. माथे पर लगाने के चमकीले बुंदे। (स्त्रियाँ)

खोरी-स्त्री० दे० 'कटोरी'।

खोल-पुं० [सं०खोल=कोश] १. आवरण। गिलाफ। २. कीड़ों का वह ऊपरी चमड़ा जो समय समय पर वे बदला करते हैं। ३. मोटी चादर।

खोलना-स० [सं० खुड्, खुल = भेदना] १. ढकने, बाँधने, जोड़ने या रोकनेवाली वस्तु हटाना। २. दरार या छेद करना। ३. कोई क्रम चलाना या जारी करना। ४. सड़क, नहर आदि चलती करना। ५. व्यापार या दैनिक कार्य आरम्भ करना। ६. गुप्त या गूढ़ बात प्रकट या स्पष्ट कर देना।

खोलरी†-स्त्री० दे० 'खोल' (आवरण)।

खोली-स्त्री० [हिं० खोल] आवरण। गिलाफ। जैसे-तकिये की खोली।

खोव*-पुं० [हिं० खोना] १. खोने या गँवाने की क्रिया या भाव। २.
हानि।

खोसना†-स० दे० 'छीनना'।

खोह-स्त्री० [सं० गोह] गुफा। कन्दरा

खोही-स्त्री० [सं० खोलक] १. पत्तों
छतरी। २. घोघी।

खौं†-स्त्री० [सं० खन्] १. गड्ढा।
अन्न रखने का गड्ढा। खाती।

खौंखोरना†-अ०, स० = खिजलाना।

खौंट*-स्त्री० [हिं० खोंटना] १. खोंटने
क्रिया या भाव। २. दे० 'खरोंट'।

खौफ-पुं० [अ०] [वि० खौफनाक
डर। भय। भीति। दहशत।

खौर-पुं० [सं० क्षौर या क्षुर] [
खौरना] १. चन्दन का तिलक।
२. स्त्रियों के सिर का एक गहना।

खौरहा†-वि० [हिं० खौरा + हा (प्रत्य
[स्त्री० खौरही] १. जिसके बाल
गये हों। २. जिसे खौरा का रोग
हो। (पशु)

खौरा-पुं० [सं० क्षौर, या फा० बाल
पशुओं की एक प्रकार की खुजली,
उनके बाल झड़ जाते हैं।

वि० जिसे खौरा रोग हुआ हो।

खौरी*-स्त्री० दे० 'खोरि'।

खौलना-अ० दे० 'उबलना'।

ख्यात-वि० [सं०] प्रसिद्ध।

स्त्री०[सं० ख्याति] वह कविता जिसमें
की वीरता या कीर्त्ति आदि का वर्णन हो

ख्याति-स्त्री० [सं०] १. प्रसिद्धि।
रत। (रेपुटेशन) २. अच्छा काम
से होनेवाली बड़ाई। कीर्त्ति। यश।

ख्याल*-पुं० [हिं० खेल] १.
२. दिल्लगी।

पुं० दे० 'खयाल'।

ख्याली-वि० दे० 'खयाली'।

ख्रिष्टान-पुं० दे० 'ईसाई'।

ख्रिष्टीय-वि० दे० 'ईसवी'।

ख्वाँद-पुं० दे० 'ईसा' (मसीह)।

ख्वाजा-पुं०[फा०] १.मालिक। २.सरदार। ३. ऊँचे दर्जे का मुसलमान फकीर। ४. ...त का नपुंसक भृत्य। ख्वाजासरा।

ख्वाजासरा-पुं० दे० 'ख्वाजा' ४.

ख्वार-वि० [फा०] [भाव० ख्वारी] १. [illegible]। २. बरबाद। ३. तिरस्कृत।

ख्वारी-स्त्री० [फा०] १. ख्वार या बरबाद होने की क्रिया या भाव। खराबी। २.दुर्दशा।

ख्वाह-अव्य० [फा०] या। अथवा।

यौ०–ख्वाह-मख्वाह = (क) कोई चाहे या न चाहे। जबर्दस्ती। (ख) अवश्य।

ख्वाहिश-स्त्री० [फा०] इच्छा।

ख्वैना*-स० दे० 'खोना'।

ग

ग–देवनागरी वर्ण-माला में कवर्ग का तीसरा ...जिसका उच्चारण-स्थान कंठ है। प्रत्यय ...इसके अर्थ होते हैं—(क) गानेवाला; जैसे-सामग। (ख) जानेवाला;जैसे—निम्नग। ...में यह 'गान्धार' (स्वर) का संक्षिप्त ...और सूचक माना जाता है।

गंग-स्त्री० दे० 'गंगा'।

गंग-बरार-पुं० दे० 'दरिया-बरार'।

गंग-शिकस्त-पुं० दे० 'दरिया-बुर्द'।

गंगा-स्त्री० [सं०] भारतवर्ष की एक ...और प्रसिद्ध पवित्र नदी।

गंगा-गति-स्त्री० [सं०] मृत्यु।

गंगा-जमनी-वि० [हिं० गंगा + जमुना] १. मिला-जुला। दो-रंगा। २. जिसमें दो ...धातुएँ, वस्तुएँ या रंग मिले हों।

गंगा-जली-स्त्री० [सं०गंगा-जल] वह सुराही ...जिसमें यात्री गंगाजल ले जाते हैं।

गंगा-धर-पुं० [सं०] शिव।

गंगा-पुत्र-पुं० [सं०] १. भीष्म। २. ...प्रकार के ब्राह्मण जो नदियों के तट ...बैठकर दान लेते हैं।

गंगा-यात्रा-स्त्री० [सं०] १. मरते हुए ...को नदी के तट पर मरने के लिए ...जाना। २. मृत्यु। मौत।

गंगाल-पुं० दे० 'कंडाल'।

गंगा-लाभ-पुं० [सं०] मृत्यु।

गंगावतरण-पुं० [सं०] गंगा का स्वर्ग ...पृथ्वी पर आना।

गंगा-सागर-पुं० [हिं० गंगा + सागर] १. एक तीर्थ जो उस स्थान पर है, जहाँ गंगा समुद्र में मिलती है। २. एक प्रकार की बड़ी झारी।

गँगेऊ*-पुं० दे० 'गांगेय'।

गंगोझ*-पुं० [सं० गंगोदक] गंगा-जल।

गंगोदक-पुं० [सं०] गंगा-जल।

गँगौटी-स्त्री० [हिं० गंगा + मिट्टी] गंगा के किनारे की मिट्टी।

गंज-पुं० [सं० कंज या खंज] सिर के बाल झड़ने का रोग। खल्वाट।

पुं० [फा०। सं०] १. खजाना। कोष। २. ढेर। राशि। ३. समूह। झुंड। ४. अनाज की मंडी। ५. हाट। बाजार।

गंजन-पुं० [सं०] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. पीड़ा। कष्ट। ३. नाश।

वि० मारने या नष्ट करनेवाला।

गंजना*-स०[सं०गंजन] १.अवज्ञा करना। निरादर करना। २.चूर-चूर करना। ३. नष्ट करना। ४. पूरी तरह से परास्त करना।

गंजा-पुं० [सं० खंज या कंज] वह जिसके सिर के बाल झड़ गये हों।

गँजाना*-स० हिं० 'गाँजना' का स०।

गंजी-स्त्री० [हिं० गंज] १. ढेर। समूह। २. शकर-कंद। कंदा।

स्त्री० बुनी हुई छोटी कुरती। बनियायन।

पुं० दे० 'गँजेड़ी'।

गंजीफा-पुं०[फा०] १. एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है। २.ताश

गँजेड़ी–वि० [हिं० गाँजा + एड़ी (प्रत्य०)] गाँजा पीनेवाला।

गँठ-जोड़ा (वंधन)–पुं० [हिं० गाँठ + जोड़ना] १. विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के दुपट्टे को परस्पर बाँध देते हैं। २. दो चीजों या व्यक्तियों का प्रायः बना रहनेवाला साथ।

गंड–पुं० [सं०] १. कपोल। गाल। २. कनपटी। ३. गंडा, जो गले में पहना जाता है। ४. फोड़ा। ५. चिह्न या निशान। ६. गोल मंडलाकार चिह्न या लकीर। गंडा। ७. गाँठ। ८. गिलटी।

गंडक (ी)–स्त्री० [सं०] गंगा में मिलनेवाली उत्तर भारत की एक नदी।

गँड़दार–पुं० दे० 'गड़दार'।
पुं० [सं० गंड या गँडासा + फा० दार (प्रत्य०)] महावत। हाथीवान।

गंड-माला–स्त्री० दे० 'कंठ-माला' (रोग)।

गंड-स्थल–पुं० [सं०] कन-पटी।

गंडा–पुं० [सं० गंडक] १. गाँठ। २. गिनने में चार का समूह।
पुं० मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ वह धागा जो रोग या प्रेत-बाधा दूर करने के लिए गले या हाथ में बाँधते हैं।
पुं० [सं० गंड = चिह्न] १. आड़ी लकीरों की पंक्ति। २. तोते आदि चिड़ियों के गले की रंगीन धारी। कंठी। हँसली।

गँड़ासा–पुं० [हिं० गँड़ी + सं० असि] [स्त्री० अल्पा० गँड़ासी] चौपायों का चारा या घास के टुकड़े काटने का हथियार।

गँड़ेरी–स्त्री० [सं० कांड या गंड] ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा।

गंदगी–स्त्री० [फा०] १. गंदा होने का भाव। मैलापन। मलिनता। २. अपवित्रता। अशुद्धता। ३. विष्ठा। मल।

गंदना–पुं० [सं० गंधन] लहसुन या प्याज की तरह का एक कंद।

गँदला–वि० दे० 'गंदा'।

गंदा–वि० [फा० गन्दः] [स्त्री० गंदी] मैला। मलिन। २. अशुद्ध। ३.

गंदुमी–वि० [फा० गंदुम = गेहूँ] १. या उसके आटे का बना हुआ। २. रंग का। गेहुँआ।

गंध–स्त्री० [सं०] १. वायु में मि किसी वस्तु के सूक्ष्म कणों का प्रसार, ज्ञान या अनुभव नाक से होता है। महक। २. सुगंध। ३. वह सुगन्धित जो शरीर में लगाया जाता है। ४. अंश। लेश। ५. बहुत ही सूक्ष्म या सूक्ष्म लक्षणों से चलनेवाला का पता। जैसे–देखो! इस बात को गंध न लगने पावे।

गंधक–स्त्री० [सं०] [वि० गंधकी] जलनेवाला पीला खनिज पदार्थ।

गंधकी–वि० [हिं० गंधक] गंधक का। हलका पीला।

गंध-द्रव्य–पुं० [सं०] वह चीज अच्छी गन्ध निकलती हो और उपयोग दूसरी वस्तुओं को सुगन्धित के लिए होता हो। जैसे–कस्तूरी, चन्दन आदि।

गंधर्व–पुं० [सं०] [सं० स्त्री० गंधर्वी, स्त्री० गंधर्विन] १. देवताओं की एक जो गाने में निपुण है। २. प्रेतात्मा। एक जाति जिसकी कन्याओं का नाचना-गाना है।

गंधर्व-नगर–पुं० [सं०] १. मिथ्या काल्पनिक नगर। २. मिथ्या ज्ञान। चन्द्रमा के किनारे का मंडल जो बदली में दिखाई पड़ता है।

गंधवह–पुं० [सं०] १. वायु। २. चन्द वि० १. गन्ध ले जाने या पहुँचाने २. सुगंधित। खुशबूदार।

गंध सफेदा–पुं० दे० 'सफेदा' ३. (यूक्लिप्टस)

गंधा–वि० स्त्री० [सं०] गंधवाली।

जैसे-मत्स्यगंधा)
[हिं० गंध] १. गंध देना ।
करना ।
-पुं० [हिं० गंध + बिरोजा]
वृक्ष का गोंद ।
दे० 'गांधार' ।
[सं० गंधिन्] [स्त्री० गंधिनी,
१. सुगंधित तेल आदि बेचने-
। २. गँधिया घास । गाँधी ।
कीड़ा ।
[हिं० गंध] अप्रिय या बुरी
। बदबूदार ।
[सं०] [भाव० गंभीरता,
] १. बहुत गहरा । २. घना । ३.
अर्थ कठिन हो । गूढ़ । जटिल ।
निराकरण, उपचार, प्रतीकार या
में न हो सके । विकट । भारी ।
) ५. शांत । धीर ।
[सं० गम्य] १. घात । दाँव ।
। प्रयोजन । ३. अवसर । मौका ।
से = (क) अच्छे ढंग या युक्ति
धीरे से । चुपके से ।
[हिं० गाँव से अनु०] जैसे-
।
[सं० ग्रामेयिक, प्रा० गाँवेइअ]
सम्बन्धी । गाँव का ।
रहनेवाला । देहाती । २.
।
-पुं० [हिं० गँवार + अ०
] ग्रामीण कहावत या उक्ति । देहा-
में प्रचलित कहावत ।
दे० 'खोना' ।
[हिं० गाँव + आर (प्रत्य०)]
गँवारिन, वि० गँवारू, गँवारी]
। देहाती । २. असभ्य । ३.
। मूर्ख ।
[हिं० गँवार] १. गँवारपन ।
। बेवकूफी । ३. गँवार स्त्री ।

वि० १. ग्राम्य । गाँव का । २. गँवारों का सा । ३. जिसमें शिष्टता, श्लीलता आदि का अभाव हो । भद्दा । (वल्गर)

गँवारू–वि० दे० 'गँवारी' ।

गँवेला†–वि० [स्त्री० गँवेली] दे० 'गँवार' ।

गँस*–पुं० [सं० ग्रंथि] १. द्वेष । बैर । २. चुभनेवाली बात । ताना ।

स्त्री० [सं० कषा] तीर की नोक ।

गँसना*†–स० [सं० ग्रंथन] १. कसना । जकड़ना । २. बुनावट में सूतों को खूब पास-पास सटाना ।

अ० १. बुनावट का ठस होना । २. कसा या जकड़ा जाना ।

गँसीला–वि० [हिं० गाँसी] [स्त्री० गँसीली] तीर के समान नोकदार ।

गइंद*–पुं० दे० 'गयंद' ।

गइनाही*–स्त्री० [सं० ज्ञान] जानकारी ।

गइयर–स्त्री० दे० 'नील-गाय' ।

गई करना*–अ० दे० 'गया' के अन्तर्गत मुहा० ।

गई-बहोर–वि० [हिं० गया + बहुरना] खोई हुई वस्तु वापस दिलाने अथवा बिगड़ा हुआ काम बनानेवाला ।

गउ-मुख*–पुं०, वि० दे० 'गो-मुख' ।

गऊ–स्त्री० [सं० गो] गाय । गौ ।

गगन–पुं० [सं०] आकाश । आसमान ।

गगन-गढ़–पुं० [सं० गगन + गढ़] बहुत ऊँचा महल या इमारत ।

गगन-चुंबी–वि० [सं० गगन-चुंबिन्] इतना ऊँचा जो आकाश को चूमता या छूता जान पड़े । बहुत ऊँचा ।

गगन-धूल–स्त्री० [सं० गगन + हिं० धूल] १. एक प्रकार का कुकुरमुत्ता । २. केतकी के फूल की धूल ।

गगन-भेड़–स्त्री० [हिं० गगन + भेड़] जलाशयों के पास रहनेवाली कराकुल या कूँज नामक चिड़िया ।

गगन-भेदी–वि० [सं० गगन-भेदिन्] १.

(स्वर या शब्द) जो आकाश को फाड़ता या गूँजता सा जान पड़े। २. दे० 'गगन-चुंबी'।

गगन-वाटिका–स्त्री० [सं०] वैसी ही असंभव बात, जैसी आकाश में वाटिका या बाग-बगीचे के होने की होती है। आकाश-कुसुम।

गगन-स्पर्शी–वि० दे० 'गगन-चुंबी'।

गगरा–पुं० [सं० गर्गर] [स्त्री० अल्पा० गगरी] धातु का बड़ा घड़ा। कलसा।

गच–स्त्री० [चीनी कचु, तुर्की गज़] १. किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द। २. चूने-सुरखी का मसाला। ३. चूने-सुरखी से बनी जमीन। पक्का फर्श।

गचकारी–स्त्री० [हिं० गच + फा० कारी] गच का काम। चूने-सुरखी का काम।

गचना*–स० [अनु० गच] १. बहुत कसकर भरना। २. दे० 'गाँसना'।

गछना–अ० [सं० गच्छ] जाना। चलना। स० १. चलाना। निभाना। २. अपने जिम्मे लेना। अपने ऊपर लेना।

गजंद*–पुं० दे० 'गयंद'।

गज–पुं० [स्त्री० गजी] १. हाथी। २. आठ की संख्या का सूचक शब्द। (आठ दिग्गजों के कारण)

पुं० [फा० गज़] १. लम्बाई नापने की एक नाप जो कपड़ों के लिए सोलह गिरह या तीन फुट और लकड़ी के लिए दो फुट की होती है। २. इस नाप का लोहे या लकड़ी का छड़। ३. लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बन्दूक या तोप भरी जाती थी। ४. एक प्रकार का तीर।

गजक–स्त्री० [फा० कज़क] १. वह चीज जो शराब पीने के समय खाई जाती है। चाट। जैसे–कबाब आदि। २. तिल, दाल आदि की बनी हुई एक प्रकार की मीठी पपड़ी। ३. जलपान।

गज-गति–स्त्री० [सं०] हाथी मन्द और मस्त चाल।

गज-गती–स्त्री० [फा० गज़ + सं० गज से नापकर होनेवाली कपड़े की (पूरे थान की बिक्री से भिन्न)

गजगा–पुं० [सं० गज] हाथियों प्रकार का गहना।

गज-गामिनी–वि० स्त्री० [सं० के समान मंद गति से चलनेवाली।

गजगाह–पुं० दे० 'भूल' (हाथी

गज-गौन*–पुं० [सं० गज-गमन की-सी मस्त चाल।

गज-गौहर*–पुं० = गज-मुक्ता।

गजट–पुं० दे० 'वार्त्तायन'।

गज-दंत–पुं० [सं०] [वि० १. हाथी का दाँत। २. दीवार खूँटी। ३. दाँत के ऊपर निकला हु

गजदान–पुं० [सं०] हाथी का

गजनवी–वि० [फा०] १. गज़नी सम्बन्धी। २. गजनी नगर का नि

गजना*–अ० दे० 'गाजना'।

गजनाल–स्त्री० [सं०] वह बड़ी हाथी खींचते थे।

गजपति–पुं० [सं०] १. बहु हाथी। २. वह जिसके पास हाथी हों। ३. कलिंग देश के कुछ की एक उपाधि।

गजब–पुं० [अ०] १. कोप। २. आपत्ति। आफत। ३. अन्याय। ४. विलक्षण बात।

पद–गजब का = बहुत विलक्षण

गजबाँक (बाग)–पुं० [सं० गज या बाग] हाथी का अंकुश।

गज-मणि–पुं० = गज-मुक्ता।

गज-मुक्ता–स्त्री० [सं०] वह मोती जिसका हाथी के मस्तक से प्रसिद्ध है। गज-मणि।

गज मोती–पुं० दे० 'गजमणि'।

-पुं० [सं० गर्जन, हिं० गरज] १.
घंटा बजने का शब्द । २.
के समय घंटा बजना । ३.
घंटा बजने में ४, ८ और
पर एक बार घंटा बज जाने के
जल्दी जल्दी चार, आठ और
जाना ।
दम–क्रि० वि० [हिं० गजर + फा०
] प्रभात के समय । बहुत सबेरे ।
।
-पुं० [हिं० गंज] १. फूलों की
। २. एक गहना जो कलाई
जाता है ।
-पुं० [सं०] बड़ा हाथी ।
-स्त्री० [फा०] फारसी और उर्दू में
का पद्य ।
-पुं० [सं०] गणेश ।
-पुं० [हिं० गज + वान] हाथीवान ।
-स्त्री० [सं०] हाथियों के बाँधने
। फीलखाना ।
[फा० गज़] नगाड़ा बजाने
।
-पुं० दे० 'गदाधर' ।
-पुं० [सं०] गणेश ।
[फा० गज़] एक प्रकार का
अड़ा । गाढ़ा ।
[सं०] हाथी की मादा । हथिनी ।
-पुं० [सं०] बड़ा हाथी ।
-अ० = गरजना ।
-पुं० [सं० गज + व्यूह] हाथियों
।
[हिं० गठना] १. सघन ।
बुनावट का ।
[गट से अनु०] १.
२. हड़पना ।
[हिं० गटकना] गटकने
।
-स्त्री० [अनु०] निगलने या
२

घोंटने के समय गले में होनेवाला शब्द ।

गटना*–अ० [सं० ग्रन्थन] किसी से लगा, मिला या बँधा होना । युक्त होना । स० किसी से युक्त या सम्बद्ध करना । मिलाना या लगाना ।

गट-पट–स्त्री० [अनु०] १. बहुत अधिक मेल । घनिष्ठता । २. सहवास । संभोग ।

गटर-माला–स्त्री० [गटर ? + माला] बड़े दानों की माला ।

गटा*–पुं० दे० 'गट्टा' (कलाई) ।

गटी*–स्त्री० [सं० ग्रंथि] गाँठ ।

गट्टा–पुं० [सं० ग्रंथ, प्रा० गंट, हिं० गाँठ] १. हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़ । कलाई । २. पैर की नली और तलवे के बीच की गाँठ । ३. एक प्रकार की मिठाई ।

गट्ठर–पुं० [हिं० गाँठ] बड़ी गठरी ।

गट्ठा–पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] १. घास, लकड़ी आदि का बोझ । २. बड़ी गठरी । गट्ठर ।

गठन–स्त्री०[सं० घटन] बनावट ।

गठना–अ० [सं० ग्रंथन] १. वस्तुओं का मिलकर एक होना । जुड़ना । सटना ।

यौ०–गठा बदन = हृष्ट-पुष्ट शरीर ।

२. कोई गुप्त विचार या कुचक्र होना । ३. अनुकूल या ठीक होना । सधना । ४. अच्छी तरह बनना या होना । ५. बहुत मेल-मिलाप होना ।

गठरी–स्त्री० [हिं० गट्ठर] १. कपड़े में गाँठ लगाकर बाँधा हुआ सामान । बड़ी पोटली । २. माल । रकम । धन ।

मुहा०–गठरी मारना=अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना ।

गठवाना–स० [हिं० गाँठना] १. गठाना । २. सिलवाना । ३. जोड़ लगवाना ।

गठा*–पुं० = गट्ठा ।

गठित–वि० [हिं० गठना] गठा हुआ । (अशुद्ध रूप)

गठि-बंध*–पुं० दे० 'गँठ-जोड़ा' ।

गठिया–स्त्री० [हिं० गाँठ] १. बोझ लादने का बोरा या थैला। २. बड़ी गठरी। ३. एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

गठियाना†–स० [हिं० गाँठ] १. गाँठ लगाना। २. गाँठ में बाँधना।

गठीला–वि० [हिं० गाँठ + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गठीली] जिसमें बहुत-सी गाँठें हों। वि० [हिं० गठना] १. गठा हुआ। चुस्त। २. मजबूत। दृढ़।

गठौत–स्त्री० [हिं० गठना] १. मेल-मिलाप। मित्रता। २. मिलकर पक्की की हुई गुप्त बात। अभिसंधि।

गडंग†–पुं० [सं० गर्व] [वि० गडंगिया] १. घमंड। शेखी। २. आत्म-श्लाघा। अपनी बड़ाई। डींग।

गड–पुं० दे० 'गड्डु'।

गड़कना*–अ० [अ० ग़र्क] डूबना। अ० दे० 'गरजना'।

गड़गड़ा–पुं० [अनु०] बड़ा हुक्का।

गड़गड़ाना–अ० [हिं० गड़गड़] [भाव० गड़गड़ाहट] गड़गड़ शब्द होना। स० गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना।

गड़गड़ाहट–स्त्री० [गड़गड़ से अनु०] रह रहकर गड़गड़ होने का शब्द या भाव। गरज। जैसे–बादलों या पत्तियों की गड़गड़ाहट।

गड़दार–पुं० [हिं०गँड़ासा + फा० दार] १. वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ उसे सँभाले रखने के लिए भाला लेकर चलता है। २. महावत।

गड़ना–अ० [सं० गर्त] १. धँसना। चुभना। २. खुरखुरा लगना। ३. दर्द करना। दुखना। ४. मिट्टी के नीचे दबना। दफन होना।

मुहा०–गड़े मुरदे उखाड़ना = दबी-दबाई या पुरानी बातें उठाना। **मारे शर्म के गड़ जाना** = बहुत लज्जित होने के कारण मुँह न दिखा सकना।

गड़पना–सं० [अनु०] १. नि
२. अनुचित रूप से दबा बैठना।

गड़प्पा–पुं० [हिं० गाड़] १. ग
२. धोखा खाने का स्थान।

गड़ बड़–वि० [हिं० गड्ढा + बड़
ऊँचा] [वि० गड़बड़िया] १.
नीचा। २. अव्यवस्थित। ३. खरा
पुं० कु-प्रबन्ध। अव्यवस्था।

यौ०–गड़-बड़ झाला या ग
घोटाला = दे० 'गड़बड़'।

गड़बड़ाना–अ० [हिं० गड़बड़]
करना। चूक जाना। भ्रम में पड़ना
क्रम-भ्रष्ट होना। अव्यवस्थित होना।
स० १. गड़बड़ी या चक्कर में
२. भ्रम में डालना। भुलवाना।
बड़ी या खराबी करना।

गड़बड़ी–स्त्री० दे० 'गड़-बड़'।

गड़रिया–पुं० [सं० गड्डुरिक] [स्त्री०
रिन] भेड़-बकरी पालनेवाली एक

गड़हा–पुं० [स्त्री० अल्पा० गड़ही]
'गड्ढा'।

गड़ा–पुं० [सं० गण] ढेर। राशि
+ पुं० दे० 'गड्ढा'।

गड़ाना–स० [हिं० गड़ना] चुभा
स० हिं० 'गाड़ना' का प्रे०।

गड़ायत*–वि० [हिं० गड़ना] ग
चुभनेवाला।

गड़ारी–स्त्री० [हिं० गाड़ = गड्ढा
गंड] १. अर्द्ध वृत्ताकार गड्ढा जो
दूर तक चला गया हो। २. गोल
गहरी लकीर। ३. पास पास रहनेवा
रेखाओं की शृंखला। गंडा।
की गड़ारी। ४. लकड़ी या धा
डलाकार टुकड़ा जो छड़ आदि में
रहता है और जिसके सहारे
खींचते, चढ़ाते या उतारते हैं।
(पुली) जैसे–कूएँ की गड़ारी।

[हिं० गेरना] टोंटीदार लोटा।
[हिं० गडुआ] पानी रखने
बरतन। झारी।
दे० 'गड़रिया'।
दे० 'गड़ाना'।
[?] एक प्रकार का पान।
[हिं० गण] [स्त्री० गड्डी] १.
एक रखी हुई एक-सी वस्तुओं की
। २. लागत, मूल्य आदि के
एक साथ रहनेवाली छोटी-बड़ी
की चीजों का समूह।
में = छोटी-बड़ी या सब तरह
एक साथ लेने पर। (मूल्य,
के विचार से)
[हिं० गर्त] गड्ढा।
(गड्ड)-पुं० [हिं० गड्ड] बे मेल
। घाल-मेल।
१. बेसिलसिले रखा हुआ। २.
= भेड़।
= गड़रिया।
[हिं० गड्ड] एक ही आकार-
एक पर एक रक्खी हुई चीजों
। जैसे-ताश की गड्डी।
[सं० गर्त, प्रा० गड्ड] १. गहरा
। गड्ढा। २. थोड़े घेरे की
-किसी के लिए गड्ढा खोदना=
का उपाय करना।
[हिं० गढ़ना] कल्पित।
( )। जैसे-मन-गढ़ंत।
की क्रिया या भाव।
[हिं० गढ़ = खाई] [स्त्री० अल्पा०
। २. किला। दुर्ग।
जीतना या तोड़ना =
। (ख) बहुत कठिन काम
[हिं० गढ़ना] १. गढ़ने की

क्रिया या भाव । २. बनावट । गठन ।

गढ़ना–स० [सं० घटन] १. काट-छाँट-कर काम की चीज बनाना । रचना । २. सुडौल करना । सँवारना । ३. बात बनाना । ४. मारना । पीटना ।

यौ०-गढ़ना-छीलना = काट-छाँटकर दुरुस्त या ठीक करना ।

गढ़पति–पुं० [हिं० गढ़ + पति] १. किलेदार । २. राजा । सरदार ।

गढ़वै*–पुं० दे० 'गढ़पति' ।

गढ़ाई–स्त्री० [हिं० गढ़ना] गढ़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

गढ़ाना–स० हिं० 'गढ़ना' का प्रे० ।

गढ़िया–पुं० [हिं० गढ़ना] गढ़नेवाला ।

गढ़ी–स्त्री० [हिं० गढ़] छोटा किला ।

गढ़ीश–पुं० [हिं० गढ़ + सं० ईश] गढ़ का स्वामी या प्रधान अधिकारी ।

गढ़ैया–वि० [हिं० गढ़ना] गढ़नेवाला ।

गढ़ोई*–पुं० दे० 'गढ़पति' ।

गण–पुं० [सं०] १. समूह । झुंड । जैसे–लेखक-गण । २. ऐसे मनुष्यों का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो । ३. शिव के परिषद । ४. दूत । ५. सेवक । ६. अनुचरों का दल । ७. वस्तुओं, जीवों आदि का वह बड़ा विभाग जिसके अन्तर्गत और भी उप-विभाग या भेद हों । (जेनस) ८. छंदःशास्त्र में लघु-गुरु के विचार से तीन-तीन मात्राओं के आठ समूह या वर्ग । यथा–यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण ।

गणक–पुं० [सं०] १. गणना करने या गिननेवाला । २. ज्योतिषी ।

गण-तंत्र–पुं० [सं०] [वि० गण-तंत्री] वह शासन-प्रणाली जिसमें जनता ही अपने प्रतिनिधि और प्रधान शासक चुनती है । (रिपब्लिक)

गण-तंत्री–वि० [सं० गणतंत्रित] १. गण-तंत्र सम्बन्धी । २. जो गण-तंत्र के सिद्धान्तों

के अनुसार हो। ३. गण-तंत्र का पक्षपाती। (रिपब्लिकन)

गणन–पुं० [सं०] [वि० गणित] गिनने की क्रिया या भाव। गिनना।

गणना–स्त्री० [सं०] १. संख्या जानने के लिए गिनती करना। गिनना। २. गिनकर या हिसाब लगाकर यह देखना कि कुल कितना हुआ या है। (कैलकुलेशन, कम्प्यूटेशन) ३. इस प्रकार लगाया हुआ हिसाब या तैयार किया हुआ लेखा। ४. गिने जाने की क्रिया या भाव। गिनती। जैसे–आपकी गणना बहुत बड़े पंडितों में है। ५. किसी स्थान या देश में रहनेवाले लोगों अथवा होनेवाले पदार्थों आदि की पूरी गिनती। (सेन्सस) जैसे–मनुष्य–गणना, पशु गणना, गृह-गणना आदि।

गणनायक–पुं० [सं०] गणेश।

गणपति–पुं० [सं०] गणेश।

गण-पूर्त्ति–स्त्री० दे० 'इयत्ता'।

गण-राज्य–पुं० दे० 'गण-तंत्र'।

गणिका–स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

गणित–पुं० [सं०] [वि० गणितिक] १. वह शास्त्र जिसमें संख्या, परिमाण आदि निश्चित करने के उपायों का विचार होता है। २. हिसाब। (यह तीन प्रकार का होता है—पाटी गणित, बीज गणित और रेखा गणित।)

गणेश–पुं० [सं०] हिन्दुओं के एक प्रधान देवता जिनका शरीर मनुष्य का-सा और सिर हाथी का-सा माना गया है।

गण्य–वि० [सं०] १. गिनने के योग्य। २. प्रतिष्ठित।

यौ०–गण्य-मान्य = प्रतिष्ठित।

गत–वि० [सं०] [स्त्री० गता] १. बीता हुआ। २. मरा हुआ। ३. (शब्द के आरंभ में) रहित। हीन। जैसे–गत-वैभव। ४. (प्रत्यय रूप में) (क) संबंधी। जैसे–जाति-गत, व्यक्ति-गत। (ख) किसी में आया, मिला या लगा हुआ। जैसे-आ
स्त्री० [सं० गति] १. अवस्था।
मुहा०–गत बनाना = दुर्दशा
२. रूप। वेष। ३. प्रयोग। उप
दुर्दशा। ५. बाजों के कुछ बँधे हु

गतका–पुं० [सं० गदा] १. पैंतरा
वह डंडा जिसके ऊपर चमड़ा म
है। २. वह खेल जो फरी और
खेला जाता है।

गतांक–वि० [सं०] गया-बीता।
पुं० समाचार-पत्र का पिछला अंक

गतागत–पुं० [सं०] आने और
क्रिया या भाव। गमनागमन। आ
वि० गया और आया हुआ।

गतानुगतिक–वि० [सं०] १.
आदर्श देखकर उसी के अनुसा
वाला। २. अनुकरण करनेवाला।

गति–स्त्री० [सं०] १. किसी
दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया।
गमन। २. हिलना-डोलना।
३. स्पन्दन। ४. अवस्था। द
बाना। वेष। ६. प्रवेश। पैठ।
की हद। अन्तिम उपाय। ८
अवलम्ब। ९. लीला। माया। १
रीति। ११. मृत्यु के उपरान्त
को प्राप्त होनेवाली अवस्था। १
का क्रिया-कर्म। १३. मोक्ष। मुक्ति

गति-विज्ञान–पुं० [सं०] व
या शास्त्र जिसमें इस बात का
होता है कि वस्तुओं या तत्वों
अथवा आगे-पीछे हटने-बढ़ने
कहाँ से, कैसे और कितनी
(डायनामिक्स)

गति-विधि–स्त्री० [सं०] १.
२. किसी की चाल-ढाल या
का रंग-ढंग।

गति-शील–वि० [सं०] [
शीलता] १. जिसमें गति हो।

गद्गद-वि० [सं०] १. हर्ष, प्रेम आदि के आवेश से पूर्ण। २. हर्ष, प्रेम आदि के आवेग से रुँधा हुआ, अस्पष्ट या असंबद्ध (स्वर)। ३. बहुत अधिक प्रसन्न।

गद्द-पुं० [अनु०] किसी गरिष्ठ चीज के खाने के कारण होनेवाला पेट का भारीपन।

गद्दा-पुं० [हिं० गद्द से अनु०] रूई, पयाल आदि से भरा हुआ मोटा और गुदगुदा बिछौना। भारी तोशक।

गद्दार-वि० [अ०] विद्रोही।

गद्दारी-स्त्री० [अ०] विद्रोह।

गद्दी-स्त्री० [हिं० गद्दा का स्त्री० और अल्पा०] १. छोटा गद्दा। २. घोड़े, ऊँट आदि की जीन। ३. व्यवसायी, दूकान के मालिक आदि के बैठने का स्थान। ४. कोठी या बड़ी दूकान। ५. बड़ा पद। ६. राजा का सिंहासन। ७. राजा के पहले-पहल सिंहासन पर बैठने का कृत्य और उत्सव। राज्याभिषेक।

†पुं० [सं० गड्डुरिक] भेड़ चरानेवाला। गड़ेरिया।

गद्दी-नशीन-वि० [हिं० गद्दी + फा० नशीन] [भाव० गद्दी-नशीनी] १. सिंहासन पर बैठा हुआ। जिसे राज्याधिकार मिला हो। २. किसी का उत्तराधिकारी।

गद्दी-नशीनी-स्त्री० दे० 'गद्दी' ७.।

गद्य-पुं० [सं०] वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या या क्रम आदि का विचार न होता हो। 'पद्य' का उलटा। (प्रोज़)

गधा-पुं० [सं० गर्दभ] १. घोड़े की तरह का, पर उससे छोटा एक प्रसिद्ध चौपाया। **मुहा०-गधे पर चढ़ाना** = बहुत बेइज्जत करना। **गधे का हल चलाना** = पूरी तरह से नष्ट या ध्वस्त करना। (स्थान) २. मूर्ख। बेवकूफ।

गधेरा-पुं० [स्त्री० गधेरी] = गधा।

गन*-पुं० = गण।

स्त्री० [अं०] बन्दूक।

गनक-पुं० [सं० गणक] ज्यौतिषी।

गनगनाना-अ० [अनु० गनगन] १. जाड़े से काँपना। २. (शरीर का) रोमांचित होना।

गनगौर-स्त्री० [सं० गण + गौरी] चैत्र शुक्ला तृतीया। (इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।)

गनना-स० दे० 'गिनना'।

स्त्री० = गणना

गनाना*-अ० [हिं० गिनना] गिना जाना। गिनती में आना।

गनाल*-स्त्री० [सं० घननाल] पुरानी चाल की एक प्रकार की बड़ी तोप।

गनी*-स्त्री० [हिं० गिनना] गिनती।

वि० [अ० ग़नी] १. बहुत अधिक सम्पन्न। मालदार। २. बहुत बड़ा दाता और उदार।

गनीम-पुं० [अ०] १. डाकू। लुटेरा। २. शत्रु। दुश्मन। (विशेषतः सैनिक और आक्रमणकारी)

गनीमत-स्त्री० [अ०] १. लूट का माल। २. मुफ्त का माल। ३. विकट अवस्था में भी होनेवाली सन्तोष की बात।

गन्ना-पुं० [सं० कांड] ईख। ऊख।

गप-स्त्री० [सं० कल्प] [वि० गप्पी] १. इधर-उधर की बात। असत्य बात। २. केवल मन बहलाने की बात। बकवाद। **यौ०-गप-शप** = इधर-उधर की बातें। ३. झूठी खबर। ४. झूठी बड़ाई। डींग।

पुं० [अनु०] १. झट से निगलने की क्रिया या शब्द। २. किसी मुलायम वस्तु में घुसने का शब्द।

गपकना-स० [अनु० गप + हिं० करना] चटपट खा जाना।

गपना*-स० [हिं० गप] गप हाँकना।

गपोड़ा-पुं० [हिं० गप] मिथ्या बात। कपोल-कल्पना। गप।

गप्प-स्त्री० दे० 'गप'।

गप्पी-वि० [हिं० गप] चढ़-बढ़क की बातें करनेवाला। गप मारनेवाला।

गफ़-वि० [अ० ग़फ़्स] घनी का। गाढ़ा। (कपड़ा)

गफलत-स्त्री० [अ०] १. असाव बेपरवाही। २. चेत या सुध का अभा ख़बरी। ३. भूल। चूक।

गफिलाई*-स्त्री० दे० 'ग़फलत'।

गबन-पुं० [अ०] दूसरे का धन रूप से अपने काम में लाना।

गबरा†-वि० दे० 'गब्बर'।

गबरू-वि० [फा० ख़ूबरू] १. जवानी का। पट्ठा। २. भोला-भाला पुं० दूल्हा। पति।

गब्ब*-पुं० = गर्व (अभिमान)।

गब्बर-वि० [सं० गर्व, पा० गब्ब घमंडी। अहंकारी। २. जल्दी करने या उत्तर न देनेवाला। महग। मूल्य। क़ीमती। ४. धनी।

गब्बी*-वि० [सं० गर्विन्] अभि घमंडी।

गभरू-वि० पुं० दे० 'गबरू'।

गभस्ति-पुं० [सं०] १. किर सूर्य्य। ३. बाँह। हाथ।

स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा का एक

गभस्तिमान्-पुं० [सं०] सूर्य्य।

गभीर*-वि० [स्त्री० गभीरा] दे०

गभुआर†-वि० [सं० गर्भ + आर(१. गर्भ का। जन्म-समय के (सिर के २. जिसका मुंडन न हुआ हो। ३. अ

गम-स्त्री० [सं० गम्य] (कि या विषय में) प्रवेश। पहुँच। गति

पुं० [अ०] १. दुःख। २. शोक **मुहा०-गम खाना** = क्षमा जाने देना। ध्यान न देना। ३. चिन्ता। फिक्र।

गमक-पुं० [सं०] १. जानेवा बतलानेवाला। बोधक। सूचक।

१. संगीत में एक श्रुति या स्वर से
श्रुति या स्वर पर जाने का ढंग।
२. की गंभीर आवाज। ३. सुगंध।
। महक।
–अ० [हिं० गमक] महकना।
खोर–वि० [फ़ा० ग़मख्वार] [संज्ञा
री] सहिष्णु। सहन-शील।
पुं० [सं०] [वि० गम्य] १. जाना।
होना। प्रस्थान। २. संभोग। जैसे–
गमन।
–अ० [सं० गमन] १. जाना।
ना।
[अ० ग़म] १. सोच या चिन्ता
। २. रंज करना। ३. ध्यान देना।
गमन–पुं० [सं०] १. जाना और
। २. एक स्थान से दूसरे स्थान
जाने की क्रिया, भाव या साधन।
। (कम्यूनिकेशन)
पुं० [?] १. फूलों के पौधे लगाने
। २. पाखाना फिरने का बरतन।
()
–स० दे० 'गँवाना'।
–स्त्री० [अ० ग़म] १. वह शोक जो
आत्मीय के मरने पर मनाते हैं।
। २. मृत्यु। मरनी।
–वि० [सं०] १. जाने योग्य। २.
। ३. संभोग करने योग्य।
। ४. साध्य। सरल। सहज।
–पुं० [सं० गजेन्द्र] बड़ा हाथी।
–पुं० [सं० गज] हाथी।
–पुं० [सं० गगन] आकाश।
।
–स्त्री० दे० 'गजनाल'।
–पुं० [सं०] बिहार का एक प्रसिद्ध
हिंदू पिंड-दान करते हैं।
[सं० गम] 'जाना' क्रिया का
एक वचन रूप।
गुजरा या गया-बीता = (क) दुर्दशा को पहुँचा हुआ। (ख) निकृष्ट। **मुहा०***–गई करना = ध्यान न देना। जाने देना।

गर–पुं० [सं०] रोग। बीमारी।

*†–पुं० [हिं० गल] गला। गरदन।

प्रत्य० [फा०] करने या बनानेवाला। जैसे–कारीगर, सिकलीगर।

अव्य० दे० 'अगर'।

गरक–वि० [अ० ग़र्क] [भाव० गरकी] १. डूबा हुआ। निमग्न। २. नष्ट। बरबाद।

गरकी–स्त्री० [अ० ग़र्क] १. डूबने की क्रिया या भाव। २. पानी की बाढ़।

गरगज–पुं० [हिं० गढ़ + गज] १. किले का बुर्ज। २. वह ऊँची भूमि जहाँ से शत्रु का पता लगाया जाता है। ३. फाँसी की टिकठी।

† वि० बहुत बड़ा। विशाल।

गरज–स्त्री० [सं० गर्जन] बहुत गंभीर शब्द; जैसे–बादल या सिंह का।

स्त्री० [अ०] १. आशय। प्रयोजन। मतलब। २. आवश्यकता। ३. इच्छा। ४. स्वार्थ।

अव्य० १. इतना होने पर। निदान। आखिरकार। २. मतलब यह कि।

गरजना–अ० [सं० गर्जन] १. गंभीर और घोर शब्द करना। २. मोती का चटकना, तड़कना या फूटना।

*वि० गरजनेवाला।

गरज-मंद–वि० [फा०] [भाव० गरजमंदी] १. जिसे गरज या आवश्यकता हो। २. इच्छुक। चाहनेवाला।

गरजी–वि० दे० 'गरजमंद'।

गरजू–वि० [हिं० गरजना] गरजनेवाला। चलना।

गरट्ट*–पुं० [सं० ग्रंथ] झुंड।

गरट्टना*–अ० [हिं० गरट्ट] झुंड में होकर चलना।

गरद–स्त्री० दे० 'गर्द'।

गरदन–स्त्री० [फा० गर्दन] १. धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। गला।

मुहा०–गरदन उठाना = (क) विरोध करना। (ख) विद्रोह करना। **गरदन उतारना या काटना** = (क) मार डालना। (ख) हानि पहुँचाना। (ग) सर्वनाश करना। **गरदन मारना** = सिर काटकर जान से मार डालना। **गरदन में हाथ देना या डालना** = गरदन पकड़कर बाहर निकाल देना।

२. बरतनों आदि में मुँह के नीचे का भाग।

गरदनियाँ–स्त्री० [हिं० गरदन + इयाँ (प्रत्य०)] गरदन पकड़कर धक्का देना या बाहर निकालना।

गरदनी–स्त्री० [हिं० गरदन] १. कमीज, कुरते, कोट आदि में गले के चारो ओर रहनेवाला अंश। २. गले में पहनने की हँसुली या कंठी। ३. घोड़े की पीठ और गरदन पर डाला जानेवाला कपड़ा। ४. दे० 'कँगनी' २.।

गरदा–पुं० [फा० गर्द] धूल। गुबार।

गरदान–वि० [फा०] घूम-फिरकर एक ही जगह पर आनेवाला।

पुं० १. शब्दों का रूप-साधन। २. वह कबूतर जो घूम-फिरकर पुनः अपने स्थान पर आ जाता हो। ३. फेर। चक्कर।

गरदानना–स० [फा० गरदान] १. शब्दों के रूप साधना। २. उद्धरणी करना। ३. किसी को कुछ समझना या मानना।

गरना*–अ० [हिं० 'गारना' का अ०] १. गारा या निचोड़ा जाना। निचुड़ना। २. किसी चीज के निकल जाने पर उससे रहित या हीन होना।

*अ० १. दे० 'गलना'। २. दे० 'गड़ना'।

गरनाल–स्त्री० [हिं० गर + नली] बहुत चौड़े मुँह की तोप। घननाल।

गरब*–पुं० [सं० गर्व] १. दे० 'गर्व'। २. हाथी का मद

गरबई*–स्त्री० = गर्व।

गरब-गहेला–वि० [सं० गर्व = [...]मान + सं० गृहीत, प्रा० गहिल्ल] [[...] गरब-गहेली] बहुत गर्व या अभिमान [...]वाला। घमंडी।

गरबना*–अ० [सं० गर्व] गर्व करना

गरबीला–वि० [सं० गर्व] घमंडी।

गरभ–पुं० दे० 'गर्भ'।

गरभाना–अ० [हिं० गर्भ] १. ग[...] होना। २. धान, गेहूँ आदि में [...] लगना।

गरम–वि० [फा० गर्म] १. जलता हु[...] तप्त। उष्ण। २. तीक्ष्ण। उग्र। ३. [...]

मुहा०–मिजाज गरम होना = [...] क्रोध आना। (ख) पागल होना।

४. तीव्र। प्रचंड। विकट। ५. गरमी [...] करने या बढ़ानेवाला।

पद–गरम कपड़ा = ऊनी कपड़ा। [...] **मसाला** = धनियाँ, लौंग इलायची, [...] मिर्च आदि मसाले।

६. उत्साहपूर्ण। जोश से भरा हुआ।

गरमाई–स्त्री० १. दे० 'गरमी'। २. [...] 'गरमाहट'।

गरमागरम–वि० [फा० गर्म] १. [...] गरम। २. ताजा।

गरमागरमी–स्त्री० [हिं० + गरम [...] मुस्तैदी। २. आवेशपूर्ण कहा-सुनी।

गरमाना–अ० [हिं० गरम] १. गर[...] उष्ण होना। २. उमंग में [...] मस्त होना। ३. क्रोध या आवेश में [...] ४. कुछ देर तक परिश्रम करने पर [...] का ठीक तरह से काम करना। [...] गरमाना।

स० १. गरम करना। तपाना। २. [...] किसी प्रकार की गरमी, आवेश आदि [...]

गरमाहट–स्त्री० [हिं० गरम] १. [...] होने का भाव। २. साधारण या [...] ताप।

मोहरी। २. बड़ा थैला।

गरावना*-स० = गलाना।

गरास-पुं० दे० 'ग्रास'।

गरासना*-स० दे० 'ग्रसना'।

गरिमा-स्त्री० [सं० गरिमन्] १. गुरुत्व। भारीपन। २. महिमा। महत्व। गौरव। ३. घमंड। अहंकार। ४. आत्म-श्लाघा। शेखी। ५. आठ सिद्धियों में से एक, जिसके द्वारा साधक अपना शरीर भारी कर सकता है।

गरियाना†-अ० = गालियाँ देना।

गरियार-वि० [हिं० गड़ना = एक जगह रुक जाना] चलने में धीमा। सुस्त। मठर। (चौपाया)

गरियारा*-पुं० [स्त्री० अल्पा० गरियारी] दे० 'गलियारा'।

गरिष्ठ-वि० [सं०] १. बहुत गुरु। बहुत भारी। २. जो जल्दी न पचे। (भोजन या खाद्य पदार्थ)

गरी-स्त्री० [सं० गुलिका] १. नारियल के फल के अन्दर का मुलायम गूदा। २. बीज के अन्दर की गिरी। मींगी।

गरीब-वि० [अ० ग़रीब] १. नम्र। २. दीन-हीन। ३. दरिद्र। निर्धन।

गरीब-निवाज-वि० [फा० गरीब + निवाज] गरीबों पर दया करनेवाला। दयालु।

गरीब-परवर-वि० [फा० ग़रीब + परवर] गरीबों को पालनेवाला। दीन-प्रतिपालक।

गरीबी-स्त्री० [अ० ग़रीब] १. दीनता। नम्रता। २. दरिद्रता। निर्धनता।

गरीयस-वि० [सं०] [स्त्री० गरीयसी] १. बहुत भारी। गुरु। २. महान्।

गरु*†-वि० [सं० गुरु] [स्त्री० गरुई, भाव० गरुआई] १. भारी। वजनी। २. गौरवशाली। ३. जिसका स्वभाव गंभीर हो। शान्त। धीर।

गरुश्रा|–वि० दे० 'गरु'। पुं० दे० 'गडुश्रा'।

गरुश्राना|–श्र० [सं० गुरु] भारी होना। स० ऊपर भार रखकर भारी करना या बनाना।

गरुड़–पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी जो सब पक्षियों का राजा, और विष्णु का वाहन माना जाता है।

गरुड़ध्वज–पुं० [सं०] विष्णु।

गरुड़-सिंह–पुं० [सं०] वह कल्पित आकृति, जिसका अगला भाग गरुड़ के समान तथा पिछला सिंह के समान हो।

गरुता–स्त्री० = गुरुता।

गरुवाई|*–स्त्री० = गुरुता।

गरू|–वि० = गुरु (भारी)।

गरूर–पुं० [अ०] घमंड। अभिमान।

गरूरत(।)–स्त्री० दे० 'गरूर'।

गरूरी|–वि० [अ० ग़रूर] घमंडी। * स्त्री० अभिमान। घमंड।

गरेठा|–वि० = टेढ़ा।

गरेबान–पुं० [सं० ग्रीवा से फा०] १. कुर्त्ते, अंगे आदि में का वह भाग जो गर्दन के चारो ओर रहता है। गला।

गरेरना–स० दे० 'घेरना'।

गरेरा|–पुं० = घेरा। वि० [स्त्री० गरेरी] जिसमें घुमाव फिराव हो। चक्करदार।

गरेरी–स्त्री० = गराड़ी।

गरोह–पुं० [फा०] झुंड। जत्था। दल।

गर्ज–स्त्री० दे० 'गरज'।

गर्जक–वि० [सं०] गरजने या जोर से बोलनेवाला। पुं० एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से कही हुई कोई बात कुछ जोर से और अधिक दूर तक सुनाई पड़ती है। (लाउड स्पीकर)

गर्जन–पुं० [स०] घोर शब्द करना। गरजना।

गर्जना–श्र० दे० 'गरजना'। स्त्री० दे० 'गर्जन'।

गर्त्त-पुं० [सं०] १. गड्ढा। २. दरा

गर्द–स्त्री० [फा०] धूल। राख।

गर्दखोर(।)–वि० [फा० गर्दखोर] गर्द या धूल पड़ने से जल्दी मैला न हो पुं० पैर पोंछने का टाट आदि।

गर्द-गुबार–पुं० [फा०] धूल-मिट्टी।

गर्दन–स्त्री० = गरदन।

गर्दभ–पुं० [सं०] गधा।

गर्दिश–स्त्री० [फा०] १. घुमाव। च २. विपत्ति। आफत।

गर्भ–पुं० [सं०] १. पेट के अन्द बच्चा। २. गर्भाशय। पेट।

मुहा०–गर्भ गिरना = गर्भपात हो

गर्भ रहना = पेट में बच्चा आना।

गर्भ-केसर–पुं० [सं०] फूलों में पतले सूत जो गर्भनाल में होते हैं।

गर्भ-गृह–पुं० [सं०] १. मकान के की कोठरी। २. आँगन। ३. मंदि वह कोठरी जिसमें मूर्त्ति रहती है।

गर्भनाल–स्त्री० [सं०] फूलों के अन्द वह पतली नाल जिसके सिर पर गर्भ रहता है।

गर्भ-पात–पुं० [सं०] गर्भ के बच्चे पूरी बाढ़ से पहले पेट में से निकल गर्भ गिरना।

गर्भवती–वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसके में बच्चा हो। गर्भिणी।

गर्भ-विज्ञान–पुं० [सं०] (स्त्री) वह जिसमें इस बात का विवेचन होता गर्भ में कलल किस प्रकार बनता है जीवन किस प्रकार उत्पन्न होता है उसकी वृद्धि या विकास किस प्रकार हो (एम्ब्रायॉलोजी)

गर्भस्थ–वि० [सं०] जो गर्भ में हो।

गर्भ-स्राव–पुं० [सं०] चार महीने का गर्भ गिरना।

-पुं० [सं०] १. एक नाटक में दूसरे नाटक का दृश्य। २. नाटक के में का कोई दृश्य।

-पुं० दे० 'गर्भ-गृह'।

-पुं० [सं०] १. गर्भ ठहरना। २. गर्भ-धारण के समय का

-पुं० [सं०] स्त्रियों के पेट में का जिसमें गर्भ या बच्चा रहता है।

-स्त्री० [सं०] गर्भवती।

-वि० [सं०] किसी के अन्दर भरा हुआ।

-वि० [हिं० गर्भ] (रत्न) जिसके से आभा निकलती हो।

[देश०] १. लाख का रंग। २. इस घोड़ा। ३. इस रंग का कबूतर।

[सं०] अहंकार। घमंड। शेखी।

-अ० [सं० गर्व] गर्व करना।

-वि० स्त्री० [सं०] घमंड

-स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे , गुण आदि का घमंड हो।

-वि० [सं०] जिसे गर्व या अभि- हो। घमंडी।

-वि० [सं० गर्व + इला (प्रत्य०)]] घमंडी। अभिमानी।

-पुं० [सं०] [वि० गर्हणीय, गर्हित] । शिकायत।

-वि० [सं०] बहुत अधिक दूषित, और घृणित। बहुत बुरा। खराब।

[सं०] गला। कंठ।

-पुं० [सं०] गौ के गले के झालर।

-पुं० [हिं० गलना] १. एक प्रकार हाथ की उँगलियों में होता है। का चाबुक।

-पुं० [हिं० गाल + गाँजना]] शोर-गुल। हल्ला।

गलगल–स्त्री० [देश०] १. मैना की तरह की एक चिड़िया। सिरगोटी। २. एक प्रकार का बहुत बड़ा नीबू।

गलगला*–वि० [हिं० गीला] भींगा हुआ। तर।

गलगलाना–अ० [हिं० गाल + गाजना] १. डींग मारना। २. हर्षित होना।

गल-गुथना–वि० [हिं० गाल] जिसका बदन खूब भरा और गाल खूब फूले हों।

गल-ग्रह–पुं० [सं०] आई हुई वह आपत्ति जो कठिनता से टले।

गलछट–स्त्री० दे० 'गलफड़ा'।

गल-जँदड़ा–पुं० [सं० गल + यंत्र, पं० जंदरा] १. पीछा न छोड़नेवाला व्यक्ति, पदार्थ आदि। २. चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिए गले से बँधी हुई पट्टी।

गल-झंप–पुं० [हिं० गला + झाँपना] हाथी के गले की लोहे की जंजीर।

गलतंस–पुं० [सं० गलित + वंश] निःसन्तान व्यक्ति की सम्पत्ति। ला-वारिस जायदाद या माल।

गलत–वि० [अ०] [संज्ञा गलती] १. अशुद्ध। २. असत्य। मिथ्या।

गल-तकिया–पुं० [हिं० गाल + तकिया] गालों के नीचे रखने का तकिया।

गलतान–वि० [फा० गल्ताँ] लुढ़कता या लड़खड़ाता हुआ।

पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

गलती–स्त्री० [अ० गलत + ई (प्रत्य०)] १. भूल। चूक। २. अशुद्धि।

गल-थना–पुं० [सं० गल-स्तन] वे झूठे थन जो कुछ बकरियों के गले में होते हैं।

गलन–पुं० [सं०] १. गिरना। २. गलना।

गलना–अ० [सं० गरण] १. किसी चीज का घनत्व घटना। द्रव या कोमल होना। २. बहुत जीर्ण होना। ३. शरीर क्षीण होना। ४. सरदी से हाथ-पैर ठिठुरना। ५. बेकाम होना।

गलफड़ा-पुं० [हिं० गाल + फटना] १. जल-जंतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं। २. गाल का चमड़ा।

गल-फाँसी-स्त्री० [हिं० गला + फाँसी] १. गले की फाँसी। २. कष्टदायक बात।

गल-बहियाँ(बाँहीं)-स्त्री० [हिं० गला + बाँह] गले में बाँहें डालना। आलिंगन। गले लगाना।

गल-मँदरी-स्त्री० [हिं० गाल + सं० मुद्रा] शिव के पूजन के समय गाल बजाना। गल-मुद्रा।

गल-गुच्छा-पुं० दे० 'गल-मुच्छा'।

गल-मुच्छा-पुं० [हिं० गाल + मूँछ] गालों पर के बढ़े हुए बाल। गल-गुच्छा।

गल-मुद्रा-स्त्री० दे० 'गल-मँदरी'।

गलवाना-स० हिं० 'गलाना' का प्रे०।

गल-शुंडी-स्त्री० [सं०] १. जीभ की जड़ के पास की छोटी घंटी। जीभी। कौआ। २. एक रोग जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है।

गल-सुई*-स्त्री० [हिं० गाल + सं० सूची (तकिया) से हिं० सूई या सुई] गालों के नीचे रखा जानेवाला छोटा गोल तकिया। गल-तकिया।

गल-स्तन-पुं० [सं०] गल-थना।

गलही-स्त्री० [हिं० गला] नाव का अगला उठा हुआ कोना।

गला-पुं० [सं० गल] १. सिर को धड़ से जोड़नेवाला अंग। कंठ। गरदन।

मुहा०-गला काटना = (क) धड़ से सिर अलग करना। (ख) बहुत हानि पहुँचाना। (ग) सूरन आदि का गले में जलन उत्पन्न करना। **गला घुटना** = साँस रुकना। **गला घोंटना** = (क) जोर से गला दबाना। (ख) जबरदस्ती करना। **गला छूटना** = छुटकारा या मुक्ति मिलना। **गला दबाना** = अनुचित दबाव डालना। **गले का हार होना** = कभी अलग न होना। **(बात) गले के नीचे या गले** **उतरना** = मन में बैठना। मन में जँचना। **गले पड़ना** = इच्छा के विरुद्ध **होना। गले बाँधना या मढ़ना** = किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे **गले लगाना** = (क) छाती से मिलना। (ख) किसी की इच्छा के उसे देना। गले मढ़ना।

२. गले की नाली जिससे शब्द और भोजन अन्दर जाता है।

मुहा०-गला फाड़ना = बहुत चिल्लाना। **गला गरमाना** = बोलने गाना आरम्भ करने पर कुछ देर का तीव्र होना।

३. कंठ का स्वर। ४. बरतन के मुँह नीचे का भाग।

गलाना-स० हिं० 'गलना' का स०।

गलानि*-स्त्री० दे० 'ग्लानि'।

गलित-वि० [सं०] १. गिरा हुआ च्युत। २. गला हुआ। ३. अत्यन्त और खंडित। ४. चूआ हुआ। ५. पका या सड़ा हुआ।

गलित कुष्ट-पुं० [सं०] वह कोढ़ अंग गल गलकर गिरने लगते हैं।

गलित-यौवना-स्त्री० [सं०] वह जिसका यौवन ढल गया हो।

गलियारा-पुं० [हिं० गली] १. तरह का छोटा तंग रास्ता। २. किसी या देश में से होकर जानेवाला पतला जिसपर आने-जाने आदि का विशिष्ट एकान्त अधिकार किसी पराये राज्य देश को प्राप्त हो। (कॉरिडोर)

गली-स्त्री० [सं० गल] बस्ती में तंग रास्ता। कूचा।

मुहा०-गली गली मारे फिरना = इधर-उधर व्यर्थ घूमना या भटकना। चारों ओर अधिकता से मिलना।

गलीचा-पुं० [अ० गालीचः]

बिछौना ।
[अ०] १. गन्दा । मैला ।
। अपवित्र ।
२. मल । गुह ।
[अ० गलीज़] मैला-कुचैला ।
दे० 'गनीम' ।
[हिं० गला + फा० बाज]
] १. वह जो बहुत बढ़-
करता हो । २. पक्के गाने
वह गवैया, जिसके संगीत में रस
कम हो ।
[हिं० गला + बाजी]
बढ़कर बातें बनाना । डींग ।
गाना गाते समय बहुत तानें
देना ।
[सं० जल्प या कल्प] १. मिथ्या
। २. छोटी कहानी ।
(पशुओं का) झुंड ।
] १. अन्न । अनाज ।
जिसमें दूकान की रोज की
रहते हैं । गोलक ।
[सं० गल्प] बात करना ।
[सं० गमन] १. गमन ।
गति । चाल । ३. गौना । (रस्म)
[हिं गवन + चार] वधू
वर के घर जाना । गौना ।
[सं० गमन] जाना ।
[सं० गमन] जाना ।
'गौना' ।
[सं०] नील गाय ।
[अं०] १. किसी राज्य का
अधिकारी और शासक । राज्य-
किसी प्रदेश या प्रान्त का सर्व-
और शासक । प्रान्तपति ।
[अं०] किसी देश
अधिकारी और शासक
गवर्नर या प्रान्तपति हों ।
[सं०] छोटी खिड़की ।

गवाख*–पुं० दे० 'गवाक्ष' ।

गवाना–स० हिं० 'गाना' का प्रे० ।
*स० = गँवाना ।

गवारा–वि० [फा०] १. अंगीकार करने योग्य । २. सह्य ।

गवास–स्त्री० [हिं०गाना] गाने की इच्छा ।
*पुं० [सं० गवाशन] कसाई ।

गवाह–पुं० [फा०] [भाव० गवाही] १. वह मनुष्य जिसने कोई घटना स्वयं देखी हो । २. वह जो किसी विवाद के विषय में अपनी जानकारी बतलावे । साक्षी । (विटनेस)

गवाही–स्त्री० [फा०] किसी के सामने यह कहना कि हाँ, ऐसा ही है या हुआ है । गवाह का कथन या बयान । साक्षी । साक्ष्य । (एविडेन्स)

गवेजा*–पुं० [?] वार्त्तालाप । बात-चीत ।

गवेषणा–स्त्री० [सं०] १. खोज । अन्वेषण । २. किसी विषय का अच्छी तरह अनुशीलन करके उसके सम्बन्ध में नई बातों या तथ्यों का पता लगाना । (रिसर्च)

गवेषी–वि० [सं० गवेषिन्] [स्त्री० गवेषिणी] खोजनेवाला ।

गवेसना*–स० [सं० गवेषणा] ढूँढ़ना ।
स्त्री० = गवेषणा ।

गवेसी*–वि० [सं० गवेषण] गवेषणा या छान-बीन करनेवाला ।

गवैया–वि० [हिं० गाना] गायक । अच्छा गानेवाला ।

गव्य–वि० [सं०] जो गाय से उत्पन्न या प्राप्त हो । जैसे–दूध, दही, घी आदि ।
पुं० १. गायों का झुंड । २. पंचगव्य ।

गश–पुं० [अ० गशी से फा०] मूर्च्छा । बेहोशी ।

गश्त–पुं० [फा०] [वि० गश्ती] १. टहलना । घूमना । भ्रमण । २. पहरा देने के लिए चक्कर लगाना । पहरा ।

गश्ती–वि० [फा०] १. घूमनेवाला । २. चलता-फिरता हुआ । ३. कुछ विशेष

प्रकार के लोगों के पास पहुँचनेवाला (पत्र या चिठी आदि) ।

वि० स्त्री० व्यभिचारिणी । कुलटा ।

गस*–स्त्री० दे० 'गाँस' ।

गसना*–स० दे० 'ग्रसना' ।

गसीला–वि० [हिं० गसना] [स्त्री० गसीली] १. जकड़ा, गठा या गुथा हुआ । २. (कपड़ा) जिसके सूत खूब सटे या मिले हों । गफ ।

गस्सा–पुं० [सं० ग्रास] ग्रास । कौर ।

गह–स्त्री० [सं० ग्रह] १. पकड़ने की क्रिया या भाव । पकड़ । २. हथियार आदि की मूठ । दस्ता ।

गहकना–अ० [सं० गद्गद्] १. चाह या लालसा से भरना । ललकना । २. उमंग में आना ।

गहगड्ड–वि० [सं० गह = गहरा + गड्ड = ढेर] गहरा । घोर । (नशा)

गहगह(ा)–वि० [सं० गद्गद्] १. उमंग से भरा हुआ । प्रफुल्लित । प्रसन्न । २. धूमधामवाला । (बाजा)

गहगहाना–अ० [हिं० गहगहा] १. आनन्द से फूलना । बहुत प्रसन्न होना । २. पौधों का लहलहाना ।

गहगहे–क्रि० वि० [हिं० गहगहा] १. बहुत प्रसन्नता से । २. धूम से ।

गहडोरना–स० [देश०] पानी मथकर गंदा करना ।

गहन–वि० [सं०] [भाव० गहनता] १. गम्भीर । २. दुरुह । कठिन । ३. दुर्गम । दुर्भेद्य । ४. निविड़ । घना ।

पुं० १. गहराई । थाह । २. दुर्गम स्थान । ३. वन में का गुप्त स्थान ।

पुं० [सं० ग्रहण] १. ग्रहण । उपराग । २. लेना । पकड़ना । ३. कलंक । ४. कष्ट । विपत्ति । ५. बन्धक । रेहन ।

स्त्री० [हिं० गहना = पकड़ना] १. गहने या पकड़ने की क्रिया या भाव । पकड़ । २. हठ । जिद ।

गहनता–स्त्री० [सं०] गहन, दुर्गम गंभीर होने का भाव ।

गहना–पुं० [सं० ग्रहण = धारण क १. आभूषण । जेवर । २. रेहन । **मुहा०–गहने रखना** = रेहन या रखना ।

स० [सं० ग्रहण] पकड़ना ।

गहवर*–वि० [सं० गह्वर] १. विषम । २. व्याकुल । उद्विग्न । ३. वेग से विकल । ४. आँसुओं से (नेत्र) ।

गहवरन*–स्त्री० [हिं० गहवरना] व्याकुलता । घबराहट ।

गहवरना*–अ० [सं० गह्वर] १. राना । व्याकुल होना । २. करुणा जी भर आना ।

गहभरना*-स० [हिं० भरना] अच्छ भरना ।

गहमह*–स्त्री० [अनु०] चहल रौनक ।

गहर–स्त्री० [?] देर । विलम्ब ।

पुं० [सं० गह्वर] १. दुर्गम । २.

*स्त्री० दे० 'गहराई' ।

*वि० दे० 'गहरा' ।

गहरना–अ० [हिं० गहर = देर लगाना । विलम्ब करना ।

अ० [सं० गहर] १. झगड़ना कुढ़ना ।

गहरा–वि० [सं० गंभीर] [स्त्री० १. (पानी) जिसकी थाह बहुत हो । गम्भीर । **पद–गहरा पेट** = ऐसा हृदय सब बातें छिप जायँ । २. जिसका विस्तार नीचे की ओर हो । ३. बहुत अधिक । ज्यादा । **पद–गहरा असामी** = बड़ा दार आदमी । **गहरे लोग** = चतुर

। **गहरा हाथ** = (क) भारी
। (ख) भारी रकम ।
। विकट । ५. गाढ़ा ।
गहरी घुटना या छनना = (क)
भंग छनना । (ख) बहुत मित्रता
होना ।
-स्त्री० [हिं० गहरा + ई (प्रत्य०)]
का भाव । गहरापन ।
-अ० [हिं० गहरा] गहरा होना ।
करना ।
'गहरना' ।
-पुं० = गहराई ।
-स० हिं० 'गहना' का प्रे० ।
-पुं० [हिं० गहना = पकड़ना]
(झूलने का) । २. झूला । हिंडोला ।
-स्त्री० [हिं० गहना] गहने का
। गहन ।
-पुं० दे० 'गहगड्ड' ।
-स० हिं० 'गहना' का प्रे० ।
-स० = ग्रसना ।
-वि० [सं० गंभीर] गहरा ।
-वि० [स्त्री० गहीली] दे० 'गहेला' ।
-पुं० दे० 'छछूँदर' ।
-वि० = गहेला ।
-वि० [सं० गृहीत, प्रा० गहिल्ल]
] १. कोई चीज ग्रहण या
। जैसे—गरब-गहेला । २.
। ३. घमंडी । ४. पागल । ५.
।
-वि० [हिं० गहना + ऐया (प्रत्य०)]
। २. स्वीकार करनेवाला ।
-पुं० [सं०] १. अँधेरी जगह । २.
। ३. विषम स्थान । ४. गुफा ।
। ६. जंगल ।
। २. विषम । ३. गुप्त ।
[सं०] गंगा-संबंधी । गंगा का ।
[सं०] १. भीष्म । २.
।

वि० १. गंगा सम्बन्धी । गंगा का । २. गंगा से उत्पन्न या निकला हुआ ।

गाँज–पुं० [फ़ा० गंज] राशि । ढेर ।

गाँजना–स० [हिं० गाँज, फ़ा० गंज] राशि या ढेर लगाना ।

गाँजा–पुं० [सं० गंजा] भाँग की तरह का एक पाधा जिसकी कलियों का धूँआँ नशे के लिए पीते हैं ।

गाँठ–स्त्री० [सं० ग्रंथि, प्रा० गंठि] [वि० गँठीला] १. रस्सी, कपड़े आदि में विशेष प्रकार से फेरा देकर बनाया हुआ बन्धन । गिरह ।

मुहा०–हृदय की गाँठ खोलना = भीतरी इच्छा या बात प्रकट करना । **गाँठ जोड़ना** = गँठ-बन्धन करना । **मन में गाँठ पड़ना** = मन-मुटाव होना ।

२. कपड़े के पल्ले में रुपया आदि लपेटकर लगाया हुआ बन्धन ।

पद–गाँठ का = पल्ले का । पास का । **मुहा०–गाँठ का पूरा**=धनी । **गाँठ में बाँधना**=(बात) सदा स्मरण रखना ।

३. कहीं भेजने के लिए एक में बाँधकर रक्खी हुई बहुत सी चीजों का समूह । जैसे–दो गाँठ कपड़ा, चार गाँठ रूई । ४. अंग का जोड़ । ५. शरीर में रक्त-विकार आदि के कारण होनेवाला कोई गोल कड़ा उभार । ६. बाँस आदि की पोर । ७. कुछ विशेष प्रकार की वनस्पतियों में वह उपयोगी गोल और कड़ा अंश जो जमीन के अन्दर होता है । (बल्ब) जैसे–प्याज की गाँठ, हल्दी की गाँठ । ८. जड़ । ९. बोझ । गट्ठा ।

गाँठ-गोभी–स्त्री० [हिं० गाँठ + गोभी] गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में बड़ी गोल गाँठें होती हैं ।

गाँठना–स० [सं० ग्रथन, पा० गंठन] १. गाँठ लगाना । जोड़ना । २. मिलाना । सटाना । ३. गूँथना । ४. क्रम लगाना ।

५. अपने अनुकूल या वश में करना।

मुहा०-मतलब गाँठना = काम निकालना। अपना प्रयोजन सिद्ध करना। स्वार्थ-सिद्धि करना।

६. वार रोकना।

गाँठी-स्त्री० = गाँठ।

गाँडर-स्त्री० [सं० गंडाली] १. गंडदूर्वा नाम की घास। २. दे० 'गाडर'।

गांडीव-पुं० [सं०] अर्जुन का धनुष।

गाँती-स्त्री० दे० 'गाती'।

गाँथना*-स० [सं० ग्रंथन] गूँथना।

गांधर्व-वि० [सं०] गंधर्व संबंधी।

गांधर्व विवाह-पुं० [सं०] वह विवाह जो वर और कन्या स्वेच्छा से कर लेते हैं।

गांधर्व वेद-पुं० [सं०] १. सामवेद का उपवेद। २. संगीत-शास्त्र।

गांधार-पुं० [सं०] [वि० गांधारी] १.सिंधु नद के पश्चिम का देश। २.इस देश का निवासी। ३. संगीत के सात स्वरों में से तीसरा स्वर।

गांधारी-स्त्री० [सं०] १. गांधार देश की स्त्री। २. दुर्योधन की माता का नाम। ३. संगीत में एक रागिनी। ४. हठ योग में दाहिनी आँख की एक नाड़ी।

गांधी-स्त्री० [सं० गान्धिक] १. गँधिया कीड़ा। २. गँधिया घास। ३. गंधी। ४. गुजराती वैश्यों की एक जाति।

गांधी-टोपी-स्त्री० [गाँधी (महात्मा) + टोपी] पुरानी तरह की एक प्रकार की किश्तीनुमा या लम्बोतरी टोपी। महात्मा गाँधी ने भारत में आकर रहने पर इसी प्रकार की टोपी पहनना आरम्भ किया था जिससे अब उसका यही नाम चल पड़ा है।

गांभीर्य-पुं० [सं०] 'गंभीर' का भाव।

गाँव-पुं० [सं० ग्राम] बहुत छोटी बस्ती। खेड़ा।

गाँव-पंचायत-स्त्री० स्वतंत्र भारत में गाँवों के चुने हुए प्रतिनिधियों का वह दल जो साधारण झगड़ों और मुकदमों के फै... और सफाई, स्वास्थ्य आदि की ... करता है।

गाँव-सभा-स्त्री० [हिं० गाँव + सं० ... गाँववालों के चुने हुए लोगों की ... या समिति जो गाँव के स्थानिक ... व्यवस्था करती है।

गाँस-स्त्री० [हिं० गाँसना] १. गँस... गाँसने की क्रिया, अवस्था या भाव। २. ... द्वेष। ३. कपट। ४. भेद। रहस्य... गाँठ। ६. तीर या बरछी का फल... अंकुश। ८. शासन। ९. संकट।

गाँसना-स० [सं० ग्रंथन] १. गूँ... २. सालना। छेदना। ३. (ताने में) ... कसना, जिससे बुनावट ठस हो। ... वश या शासन में रखना। ५. ... पकड़ना। दबोचना। ६. कसकर ... ठूँसना।

गाँसी-स्त्री० [हिं० गाँस] १. तीर ... का फल। २. हथियार की नोक। ३. ... गिरह। ४. कपट। ५. मनोमालिन्य।

गाइ(ई)-स्त्री० [सं० गावी] गाय। (...

गाउन-पुं० [अं०] एक विशेष ... का पहनावा जो वकीलों, डाक्टरों, ... आदि के लिए अलग अलग बना... नियत है।

गाकरी-स्त्री० [?] १. लिट्टी। ... २. रोटी।

गागर(रि)-स्त्री० दे० 'गगरी'।

गाछ-पुं० [सं० गच्छ] पेड़। वृक्ष।

गाज-स्त्री० [सं० गर्ज] १. गर्जन। ... बिजली की कड़क। ३. बिजली। ...

मुहा०-गाज पड़ना=(क) बिजली ... (ख) आफत आना। (ग) नाश होना। ... पुं० [अनु० गजगज] फेन। झाग।

गाजना-अ० [सं० गर्जन, पा० ... १.हुंकार करना। गरजना। २. प्रसन्न ...

गाजर-स्त्री० [सं० गृंजन] एक ...

होता है।
गाजर-मूली = तुच्छ वस्तु।
बाजा—पुं० दे० 'बाजा' में यौ०।
[अ०] १. मुसलमानों में
पुरुष जो धर्म के लिए युद्ध करे
। २. बहादुर। वीर।
[देश०] भूमि या खेत का
जो पूरी इकाई के रूप में
है। (प्लॉट)
[सं० गर्त] १. गड्ढा। २. वह
अन्न रखा जाता है।
[हिं० गाड़] १. गड्ढा
कोई चीज मिट्टी से ढकना।
। २. लंबी चीज का एक सिरा
उसे खड़ा करना। ३.
। ४. छिपाना।
[सं० गड्डुरी] भेड़।
[सं० शकट] बड़ी बैल-
। छकड़ा।
[सं० गर्त, प्रा० गड्ड] वह गड्ढा
शत्रु का पता लेते हैं।
[सं० शकट] एक जगह से
सामान या आदमियों को पहुँ-
यान।
[हिं०+फा०] वह
गाड़ी या गाड़ियाँ रखी
है।
[हिं० गाड़ी+वान
] गाड़ी हाँकनेवाला।
[सं०] [भाव० गाढ़ता] १.
। २. दृढ़। मजबूत। ३.
। ५. बहुत गहरा। ६.
। संकट।
[सं० गाढ़] [स्त्री० गाढ़ी]
के साथ कोई चूर्ण मिला
। ठस। मोटा (कपड़ा
। ३. घनिष्ठ। गहरा। ४. कठिन।

विकट। जैसे—गाढ़े दिन। ५. जिसमें कठिन परिश्रम हुआ हो। जैसे—गाढ़ी कमाई।

पुं० १. संकट। विपत्ति।

पद—गाढ़े दिन = संकट के दिन। **गाढ़े का साथी** = विपत्ति के समय सहायक होने और उससे बचानेवाला।

२. कठिन परिश्रम।

पद—गाढ़े की कमाई = मेहनत से कमाया हुआ धन।

पुं० [सं० गाढ़] १. एक प्रकार मोटा सूती कपड़ा। गजी। २. मस्त हाथी।

गाढ़े†*—क्रि० वि० [हिं० गाढ़ा] १. दृढ़ता से। जोर से। २. अच्छी तरह।

गात—पुं० [सं० गात्र] शरीर। देह।

गाता—वि० [सं० गातृ] गानेवाला।
†पुं० दे० 'गत्ता'।

गाती—स्त्री० [सं० गात्री] १. वह चादर जो गले में बाँधते हैं। २. चादर ओढ़ने का एक विशेष ढंग।

गात्र—पुं० [सं०] देह। शरीर।

गाथ—पुं० [सं० गाथा] १. यश। कीर्त्ति। २. प्रशंसा। तारीफ।

गाथना†—स० [हिं० गथना] १. अच्छी तरह पकड़ना। २. कसना। जकड़ना।

गाथा—स्त्री० [सं०] १. स्तुति। प्रशंसा। २. प्राकृत भाषा का एक प्रसिद्ध छन्द। ३. कथा। वृत्तान्त। ४. छोटे छोटे पद्यों में बहुत ही सीधे-सादे ढंग से और विस्तारपूर्वक कही हुई वह प्रभावोत्पादक कथा जिसमें प्रायः सत्य घटनाओं का वर्णन होता है। (बैलड)

गाद—स्त्री० [सं० गाध] १. तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी मैल। तलछट। २ तेल की कीट।

गादर*—वि० १. दे० 'कायर'। २. दे० 'शिथिल'।

गादा—पुं० [सं० गाध = दलदल] खेत में का अध-पका अन्न। बिना पकी फसल।

गादी–स्त्री० [हिं० गद्दी] १. एक प्रकार का पकवान। † २. दे० 'गद्दी'।

गादुर†–पुं० दे० 'चमगादड़'।

गाध–पुं० [सं०] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का स्थल। थाह।

वि० [स्त्री० गाधा] १. कम गहरा। २. थोड़ा। स्वल्प।

गाधी*–स्त्री० दे० 'गद्दी'।

गान–पुं० [सं०] [वि० गेय] १. गाने की क्रिया। गाना। २. गाने की चीज। गीत।

गाना–स० [सं० गान] १. ताल और स्वर के नियम के अनुसार या आलाप के साथ ध्वनि निकालना। २. मधुर ध्वनि करना। ३. विस्तार से कहना।

मुहा०–अपनी ही गाना = अपनी ही बात कहते जाना।

४. स्तुति करना। प्रशंसा करना।

पुं० १. गाने की क्रिया। २. गीत।

गाफिल–वि० [अ०] [संज्ञा गफलत] १. बेसुध। बे-खबर। २. अ-सावधान।

गाभ–पुं० [सं० गर्भ, पा० गब्भ] १. पशुओं का गर्भ। २. किसी चीज का मध्य भाग। ३. दे० 'गाभा'।

गाभा–पुं० [सं० गर्भ] [वि० गाभिन] १. नया निकला हुआ नरम पत्ता। कल्ला। कोंपल। २. केले आदि के डंठल के अन्दर का कोमल भाग। ३. कच्चा अनाज। ४. खड़ी खेती।

गाभिन–वि० स्त्री० [सं० गर्भिणी] गर्भिणी। (चौपायों के लिए)

गाम*–पुं० [सं० ग्राम] गाँव।

गामी–वि० [सं० गामिन्] [स्त्री० गामिनी] १. चलनेवाला। जैसे–शीघ्रगामी। २. सम्भोग करनेवाला। जैसे–वेश्यागामी।

गाय–स्त्री० [सं० गो] १. सींगवाला एक प्रसिद्ध मादा पशु जो अपने दूध के लिए प्रसिद्ध है। २. सीधा मनुष्य।

गायक–पुं० [सं०] [स्त्री० गा गायिनी] गानेवाला। गवैया।

गायकी–स्त्री० [सं० गायक] गानेवाले स्त्री० [हिं० गाना या सं० गायक गान-विद्या का पूरा ज्ञान। २. गाने के नियमों के अनुसार ठीक तरह से ३. गान-विद्या।

गाय-गोठ–स्त्री० = गो-शाला।

गायत्री–स्त्री० [सं०] १. एक मंत्र जो हिन्दू-धर्म में सबसे अधिक माना जाता है। २. दुर्गा। ३.

गायन–पुं० [सं०] [स्त्री० गायिनी गवैया। २. गाना। गीत।

गायब–वि० [अ०] लुप्त। अंतर्द्धा

गायित्री–स्त्री० दे० 'गायत्री'।

गार–पुं० [अ०] १. गहरा गड्ढा गुफा। कन्दरा।

गारत–वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।

गारद–स्त्री० [अं० गार्ड] १. सि का वह दल जो रक्षा के लिए निय है। २. पहरा। चौकी।

गारना–स० [सं० गालन] १. चोड़ना। २. पानी के साथ घिसना। चन्दन गारना। ३. निकालना त्यागना।

*†–स० [सं० गल] १. गलाना।

मुहा०–तन या शरीर गारना = तप करके शरीर को कष्ट देना। तप २. नष्ट या बरबाद करना। ३. परिश्रम के द्वारा (शरीर को) क्षीण करना।

गारा–पुं० [हिं० गारना] मिट्टी, आदि का वह लेप जिससे ईंटों की होती है। ईंटें जोड़ने का मसाला।

वि० १. गीला। तर। २. खि उदासीन (मन)। जैसे–* दे करना = किसी की ओर से खि उदासीन होना।

गारी†–स्त्री० दे० 'गाली'।

गालिम*–वि० [अ० गालिब] जिसने किसी को दबा लिया हो।

गाली–स्त्री० [सं० गालि] १. निन्दा या कलंक की बात। दुर्वचन।

मुहा०–गाली खाना=दुर्वचन या गालियाँ सुनना। **गाली देना** = दुर्वचन कहना।

२. कलंक-पूर्ण आरोप।

गाली-गलौज–स्त्री० [हिं० गाली + गलौज अनु०] परस्पर गाली देना।

गाली-गुफ्ता–पुं० दे० 'गाली-गलौज'।

गालू–वि० [हिं० गाल] गाल बजाने या व्यर्थ बकवाद करनेवाला। बकवादी।

गाल्हना–अ० [हिं० गाल] बातें करना। बोलना।

गाव–पुं० [सं० गो से फा०] गाय।

गाव-तकिया–पुं० [फा०] बड़ा और लंबा तकिया। मसनद।

गावदी–वि० [हिं० गाय + दी (प्रत्य०)] १. कुंठित बुद्धि का। २. अबोध। ना-समझ।

गाव-दुम–वि० [फा०] जो ऊपर से गौ की पूँछ की तरह पतला होता आया हो।

गासिया–पुं० [अ० गाशियः] जीनपोश।

गाह–पुं० [सं० ग्राह] १. ग्राहक। गाहक। २. पकड़। घात। ३. ग्राह।

गाहक–पुं० [सं०] अवगाहन करनेवाला। पुं० [सं० ग्राहक] १. मोल लेनेवाला। खरीददार। क्रेता।

मुहा०–जी या प्राण का गाहक होना = किसी के प्राण लेने पर उतारू होना।

२. कदर करनेवाला। चाहनेवाला।

गाहकताई*–स्त्री० [सं० ग्राहकता] गुण-ग्राहकता। कदरदानी।

गाहकी–स्त्री० [हिं० गाहक] १. गाहक या ग्राहक होने की क्रिया या भाव। २. ग्राहक के हाथ होनेवाली बिक्री। ३. ग्राहक। गाहक।

गाहन–पुं० [सं०] [वि० गाहित] गोता

लगाना। स्नान करना।

गाहना—स० [सं० अवगाहन] १. डूबकर थाह लेना। २. मथना। विलोड़ना। ३. धान आदि के डंठल झाड़ना जिसमें दाने नीचे गिर जायँ। ओसाना। ४. गड़बड़ा देना।

गाहा*—स्त्री० [सं० गाथा] १. दे० 'गाथा'। २. आर्या छन्द का एक नाम।

गाही—स्त्री० [हिं० गहना = ग्रहण करना] फल आदि गिनने का पाँच पाँच का एक मान।

गिंजना—अ० [हिं० गींजना] किसी चीज (विशेषतः कपड़े) का उलटे-पुलटे जाने से खराब हो जाना। गींजा जाना।

गिंजाई—स्त्री० [सं० गृंजन] एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।

स्त्री० [हिं० गींजना] गींजने की क्रिया या भाव।

गिंडुरी—स्त्री० दे० 'इँडुआ'।

गिंदौड़ा—पुं० [हिं० गेंद] मोटी रोटी के आकार में ढाली हुई चीनी।

गिआन*—पुं० = ज्ञान।

गिउ*—पुं० [सं० ग्रीवा] गला। गरदन।

गिच पिच—वि० [अनु०] जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न हो।

गिजगिजा—वि० [अनु०] १. ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न लगे। २. जो छूने पर कोमल मालूम हो।

गिजा—स्त्री० [अ०] भोजन। खूराक।

गिटकिरी—स्त्री० [अनु०] गाने में तान लेते समय विशेष प्रकार से स्वर कँपाना।

गिटपिट—स्त्री० [अनु०] निरर्थक शब्द।

मुहा०—गिटपिट करना = टूटी-फूटी या साधारण भाषा बोलना।

गिट्टक—स्त्री० [सं० किट्टक] १. चिलम के छेद पर रखने का कंकड़। गिट्टी। २. धातु आदि का छोटा और मोटा टुकड़ा।

गिट्टा—पुं० [सं० किट्टक] चिलम के छेद पर रखने का कंकड़। गिट्टक।

गिट्टी—स्त्री० [हिं० किट्टक] १. वे छोटे टुकड़े जो प्रायः सड़क काम आते हैं। २. चिलम की

गिड़गिड़ाना—अ० [अनु०] [गिड़गिड़ाहट] अत्यन्त नम्र बात कहना या प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट—स्त्री० [हिं० गिड़गिड़ाने की क्रिया या भाव।

गिद्ध—पुं० [सं० गृध्र] एक प्रसिद्ध हारी बड़ा पक्षी।

गिधना*—अ० [?] हिलना-मि परचना।

गिनती—स्त्री० [हिं० गिनना + ती १. गिनने की क्रिया या भाव।

पद—गिनती में आना या हो कुछ महत्व का समझा जाना। **गिनने के लिए** = नाम मात्र

२. संख्या। तादाद।

मुहा०—गिनती के = बहुत थोड़े।

३. उपस्थिति की जाँच। हाजिरी।

४. एक से सौ तक की अंक-माला।

गिनना—स० [सं० गणन] १. गिनती संख्या जानना।

पद—दिन गिनना = (क) आ समय बिताना। (ख) किसी प्रकार बिताना।

२. गणित करना। हिसाब लगा कुछ महत्व का समझना।

गिनवाना—स० = गिनाना।

गिनाना—स० हिं० 'गिनना' का प्रे०

अ० गिनती में आना। गिना जाना

गिन्नी—स्त्री० [अं०] सोने का एक सिक्का।

गिय*—पुं० दे० 'गिउ'।

गियाह—पुं० [?] एक तरह का

गिर—पुं० [सं० गिरि] १. पहाड़ दे० 'गिरि'।

-पुं० [हिं० गलगति] छिपकली
एक जन्तु जो दिन में
रंग बदलता है।

गिरगिट की तरह रंग बद-
=रुचि, व्यवहार, आचरण आदि जल्दी
बदलते रहना।

पुं० [पुर्त० इग्रिजियो] ईसाइयों
मंदिर।

पुं० [फा० गिर्द] १. चक्कर। २.
३. काठ की थाली। ४. ढाल।
५. वह जो दूसरों को अपने जाल
में फँसाता हो।

-पुं० = गिरगिट।

-पुं० दे० 'गिर्दावर'।

-पुं० दे० 'गिरिधर'।

[सं० गलन] १. ऊपर से,
आधार न रहने के कारण, नीचे
२. जमीन पर पड़ या लेट
३. अवनति या घटाव पर होना।
में होना। ४. किसी जल-धारा
बड़े जलाशय में जा मिलना।
या मूल्य आदि का कम या मन्द
६. बहुत चाव या तेजी से आगे
टूट पड़ना। ७. किसी ऐसे रोग
जिसका वेग ऊपर से नीचे को
हुआ माना जाता है। जैसे—फालिज
८. लड़ाई में मारा जाना।

-पुं० [सं० गिरि + नार = नगर]
गिरनारी] गुजरात में रैवतक नाम
जो जैनियों का तीर्थ है।

-स्त्री० [फा०] १. पकड़। २.
का पता लगाने का ढंग।

-वि० [फा०] १. पकड़ा हुआ।
की ओर से किसी अभियोग आदि
के लिए पकड़ा गया हो। ३.
आदि में फँसा हुआ।

-स्त्री० [फा०] १. गिरफ्तार होने
भाव। २. कोई अभियोग लगने

या अपराध करने पर उसके विचार के लिए राज्य द्वारा पकड़े जाने की क्रिया, अवस्था या भाव। (अरेस्ट)

गिरबान–पुं० [सं० ग्रीवा] १. गर्दन। गला। २. दे० 'गरेबान'।

गिरमिट–पुं० [अं० गिलमेट] (लकड़ी में छेद करने का) बड़ा बरमा।
पुं० [अ० एग्रीमेन्ट = इकरारनामा] १. इकरार-नामा। शर्त्तनामा। २. स्वीकृति की प्रतिज्ञा। इकरार।

गिरवान*–पुं० दे० 'गीर्वाण'।
पुं० [फा० गरेबान] १. कुरते आदि में गले का भाग। २. गर्दन। गला।

गिरवाना–स० हिं० 'गिरना' का प्रे०।

गिरवी–वि० [फा०] गिरों रक्खा हुआ। बन्धक। रेहन।

गिरवीदार–पुं० [फा०] वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु बन्धक रक्खी हो।

गिरह–स्त्री० [फा०] १. गाँठ। ग्रन्थि। २. जेब। खीसा। खरीता। ३. दो पोरों के बीच का सन्धि स्थान। गाँठ। ४. एक गज का सोलहवाँ भाग। ५. कलैया। कलाबाजी।

गिरह-कट–वि० [फा० गिरह = गाँठ + हिं० काटना] जेब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट लेनेवाला।

गिरहबाज–पुं० [फा०] एक प्रकार का कबूतर जो उड़ते उड़ते उलटकर कलैया खा जाता है।

गिरही*–पुं० १. दे० 'गृही'। २. दे० 'गृह'।

गिराँ–वि० [फा० गराँ] १. बहुमूल्य। २. मँहगा। ३. भारी। ४. अप्रिय।

गिराँव†–पुं० दे० 'गेराँव'।

गिरा–स्त्री० [सं०] १. वाणी। २. बोलने की शक्ति। ३. जिह्वा। ४. सरस्वती।

गिराना–स० [हिं० गिरना का स०] १. खड़ा न रहने देकर जमीन पर या

नीचे डाल देना। २. बल, महत्व आदि कम करना। अवनत करना। घटाना। ३. प्रवाह को ढाल की ओर ले जाना। ४. लड़ाई में मार डालना।

गिरानी–स्त्री॰ [फा॰] १. मँहगी। २. अकाल। ३. कमी। ४. पेट का भारीपन।

गिरापितु*–पुं॰ [सं॰ गिरा + पितृ] सरस्वती के पिता, ब्रह्मा।

गिरावट–स्त्री॰ [हिं॰ गिरना] गिरने की क्रिया, भाव या ढंग।

गिरास*–पुं॰ दे॰ 'ग्रास'।

गिरासना*–स॰ दे॰ 'ग्रसना'।

गिराह*–पुं॰ दे॰ 'ग्राह'।

गिरि–पुं॰ [सं॰] १. पहाड़। २. दशनामी सम्प्रदाय के एक प्रकार के संन्यासी। ३. परिव्राजकों की एक उपाधि।

गिरिजा–स्त्री॰ [सं॰] १. पार्वती। २. गंगा।

गिरिधर–पुं॰ [सं॰] श्रीकृष्ण।

गिरिधारी–पुं॰ [सं॰] श्रीकृष्ण।

गिरिनाथ–पुं॰ [सं॰] १. हिमालय पर्वत। २. गोवर्धन पर्वत।

गिरि-पथ–पुं॰ [सं॰] १. दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा। २. पहाड़ी रास्ता।

गिरिराज–पुं॰ [सं॰] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. गोवर्धन पर्वत। ४. सुमेरु पर्वत।

गिरिव्रज–पुं॰ [सं॰] १. केकय देश की राजधानी। २. जरासंध की राजधानी, जिसे बाद में राजगृह कहते थे।

गिरि-संकट–पुं॰ [सं॰] दो पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग। दर्रा।

गिरि-सुत–पुं॰ [सं॰] मैनाक पर्वत।

गिरि-सुता–स्त्री॰ [सं॰] पार्वती।

गिरींद्र–पुं॰ [सं॰] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. शिव।

गिरी–स्त्री॰ [हिं॰ गरी] बीज के अन्दर का गूदा।

स्त्री॰ दे॰ 'गीरी'। (प्रत्यय वाचक)

गिरीश–पुं॰ [सं॰] १. शिव। हिमालय पर्वत। ३. सुमेरु पर्वत। कैलाश पर्वत। ५. गोवर्द्धन पर्वत। बड़ा पहाड़।

गिरैया†–वि॰ [हिं॰ गिराना + ऐया (प्रत्य॰)] गिरानेवाला।

स्त्री॰ दे॰ 'गेराँव' (पगहा)।

गिरों–वि॰ [फा॰] रेहन। बंधक। गिरों

गिर्द–अव्य॰ [फा॰] १. आस-पास २. चारो ओर।

यौ॰–इर्द-गिर्द = चारो ओर।

गिर्दावर–पुं॰ [फा॰] १. घूमने या करनेवाला कर्मचारी। २. घूम-घूमकर की जाँच करनेवाला कर्मचारी।

गिल–स्त्री॰ [फा॰] १. मिट्टी। २.

गिलकार–पुं॰ [फा॰] गारे से दी पर पलस्तर करने और बेल-बूटे आदि वाला कारीगर।

गिलकारी–स्त्री॰ [फा॰] गारा या पलस्तर करने और गारे से दीवारों बेल-बूटे आदि बनाने का काम।

गिलगिली–पुं॰ [देश॰] घोड़े की जाति।

गिलट–पुं॰ [अं॰ गिल्ड] १. किसी पर सोना, चाँदी आदि चढ़ाने का २. चाँदी-सी सफेद बहुत हलकी और मूल्य की एक धातु।

गिलटी–स्त्री॰ [सं॰ ग्रंथि] १. शरीर अन्दर की वह छोटी गोल गाँठ जो से कुछ तत्त्व खींचकर शरीर के किसी में पहुँचाती या शरीर के बाहर निका है। (ग्लैंड) २. वह रोग जिसमें गाँठें सूज आती हैं।

गिलन–पुं॰ [सं॰] [वि॰ गिलि निगलना। लीलना।

गिलना*–स॰ [सं॰ गिलन] १. निगल

में छिपाकर रखना ।
-स्त्री० [फा० गिलीम = कम्बल]
नरम और चिकना ऊनी कालीन । २.
मुलायम गद्दा या बिछौना ।
वि० कोमल । नरम । मुलायम ।
-स्त्री० [अनु०] पुरानी चाल
एक प्रकार का कपड़ा ।
-स्त्री० [सं० गिरि = चुहिया] चूहे
रंग का, सफेद और काली धारियोंवाला
बड़ी रोएँदार पूँछवाला एक जन्तु
पेड़ों पर रहता है ।
-पुं० [फा०] १. उलाहना । २.
। निन्दा ।
-स्त्री० दे० 'ग्लानि' ।
-पुं० [अ०] १. लिहाफ आदि
खोल । २. बड़ी रजाई । लिहाफ । ३.
। म्यान ।
-पुं० [फा० गिल + आब] गारा ।
-पुं० [अं० ग्लास] पानी पीने
का एक गोल लंबोतरा बरतन ।
-स्त्री० दे० 'गिलम' ।
-स्त्री० दे० 'गुल्ली' ।
-स्त्री० [देश०] पान का बीड़ा ।
-स्त्री० दे० 'गिलटी' ।
-स्त्री० = ग्लानि ।
-स० [हिं० मींजना] किसी कोमल
विशेषतः कपड़े आदि को इस प्रकार
कि वह खराब हो जाय ।
-स्त्री० दे० 'गीव' ।
-स्त्री० [सं० कीट] आँखों से
कीचड़ या मल ।
-पुं० [सं०] वह वाक्य, पद या छन्द
जाता हो । गाना । (लिरिक)
गीत गाना = बड़ाई करना ।
ही गीत गाना = अपनी ही बात
।
-पुं० [सं०] वह कवि जो गाने
गीत बनाता हो । (लिरिक पोएट)

वि० गाया हुआ । गान के रूप में आया या लाया हुआ ।

गीता–स्त्री० [सं०] १. ज्ञानमय उपदेश । २. भगवद्गीता । ३. वृत्तान्त । कथा ।

गीति–स्त्री० [सं०] गान । गीत ।

गीतिका–स्त्री० [सं०] १. एक मात्रिक छन्द । २. गीत । गाना ।

गीति-काव्य–पुं० [सं०] वह काव्य-ग्रन्थ जिसमें गाने योग्य गीत हों । (लिरिकल पोयम)

गीति-नाट्य–पुं० [सं०] अभिनय जो मुख्यतः गीतों के सहारे होता हो । (ओपेरा)

गीति-रूपक–पुं० [सं०] वह रूपक जिसमें गद्य कम और पद्य अधिक हों ।

गीदड़–पुं० [सं० गृध्र, फा० गीदी] कुत्ते की तरह का एक जंगली पशु । सियार । शृगाल ।

यौ०–गीदड़ भबकी = मन में डरते हुए ऊपर से दिखावटी क्रोध करना ।

वि० डरपोक । कायर ।

गीध–पुं० दे० 'गिद्ध' ।

गीधना*–अ० [सं० गृध्र=लुब्ध] १. गिद्ध की तरह किसी काम बात या चीज के पीछे पड़ना । २ बहुत ही बुरी तरह से लोभ करना । ३. एक बार कोई लाभ उठाकर सदा उसकी इच्छा रखना । परचना ।

गीर–वि० [फा०] [भाव० गीरी] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अन्त में लगकर धारण या ग्रहण करनेवाले का अर्थ देता है । जैसे–राहगीर (रास्ता चलनेवाला) ।

गीरी–स्त्री० [फा०] ग्रहण करने की क्रिया या भाव । प्रत्यय के रूप में यह कुछ शब्दों के अन्त में लगकर उन्हें भाववाचक संज्ञा का रूप देता है ।

गीर्वाण–पुं० [सं०] देवता । सुर ।

गीला–वि० [हिं० गलना] [स्त्री० गीली, भाव० गीलापन] भींगा हुआ । तर ।

गीव(ा)*– स्त्री० दे० 'ग्रीवा' ।

गुंग(ा)–पुं० दे० 'गूँगा' ।

गुंची-स्त्री० दे० 'घुँघची'।

गुंज-स्त्री० [सं० गुंजन] १. भौंरों के भनभनाने का शब्द। गुंजार। २. आनंद-ध्वनि। कल-रव। ३. दे० 'गुंजा'।
* स्त्री० [हिं० गूँज ?] गाँठ।

गुंजन-पुं० [सं०] १. भौंरों की गूँज। भनभनाहट। २. कोमल मधुर ध्वनि।

गुँजना-अ० दे० 'गूँजना'।

गुंजना-अ० [सं० गुंज] १. भौंरों का भनभनाना। २. मधुर ध्वनि निकलना। गुंजरना।

गुंजरना-अ० [हिं० गुंजार] १. गुंजार करना। २. शब्द करना। ३. गरजना।

गुंजा-स्त्री० [सं०] घुँघची।

गुंजाइश-स्त्री० [फा०] १. अँटने या समाने की जगह। अवकाश। समाई। २. सुभीता।

गुंजान-वि० [फा०] घना। सघन।

गुंजायमान-वि० [सं०] १. गूँजता हुआ। २. गूँज से युक्त। गुंजित।

गुंजार-पुं० [सं० गुंज] भौंरों की गूँज। भनभनाहट।

गुंजारित-वि० दे० 'गुंजित'।

गुंजित-वि० [सं०] १. भौंरों आदि के गुंजार से युक्त। २. किसी प्रकार की गूँज से युक्त।

गुंठा*-वि० [हिं० गठना] १. गठा हुआ। २. छोटे आकार का। ३. नाटा।
पुं० छोटे आकार का एक प्रकार का घोड़ा।

गुंडई†-स्त्री० [हिं० गुंडापन] अकारण लोगों से झगड़ना या उन्हें मारना-पीटना।

गुँडली-स्त्री० [सं० कुंडली] १. फेटा। कुंडली। २. गेंडुरी। इँडुरी।

गुंडा-पुं० [सं० गुंडक] [स्त्री० गुंडी, भाव० गुंडई, गुंडापन] १. अकारण लोगों से लड़ने या उन्हें मारने-पीटनेवाला। बदमाश। २. छैला।

गुंडापन-पुं० [हिं० गुंडा + पन (प्रत्य०)] १. गुंडा होने का भाव। गुंडई। २. का सा आचरण या व्यवहार।

गुँथना-अ० [सं० गुत्स = गुच्छ (तागों, बालों की लटों आदि का) झना। २. मोटे टाँकों से सिलना।

गुँधना-अ० [सं० गुध] गूँधा जाना।
†अ० दे० 'गुँथना'।

गुँधवाना-स० हिं० 'गूँधना' का प्रे०

गुँधाई-[स्त्री०] हिं० 'गूँधना' का

गुँधावट-स्त्री० [हिं० गूँधना] भाव या ढंग।

गुंफ-पुं० [सं०] [वि० गुंफित उलझन। फँसाव। २. गुच्छा। ३. गल-मुच्छा।

गुंफन-पुं० [सं०] [वि० गूँथना।

गुंबज(द)-पुं० [फा० गुंबद] गोल और उभरी हुई छत।

गुंभी*-स्त्री० [सं० गुंफ] अंकुर।

गुग्गुल-पुं० [सं०] एक पेड़ गोंद सुगन्ध के लिए जलाते हैं। गूगल

गुच्छ(क)-पुं० [सं०] १. गुच्छा वह पौधा जिसमें केवल पत्तियाँ या टहनियाँ फैलें। झाड़। ३. मोर की

गुच्छा-पुं० [सं० गुच्छ] १. एक या बँधे हुए पत्तों और फूलों का २. एक में लगी या बँधी हुई छोटी का समूह। जैसे-तालियों का गुच्छा फुँदना। झब्बा।

गुच्छी-स्त्री० [सं० गुच्छ] १. कंजा। २. एक प्रकार की खुमी, तरकारी बनती है।

गुजर-पुं० [फा०] १. निकास। २. पैठ। पहुँच। प्रवेश। ३. निर्वा

गुजरना-अ० [फा० गुजर + ना (प्र १. (समय) बीतना या कटना।
मुहा०-किसी पर गुजरना=

या विरक्ति) पड़ना।
से होकर आना या जाना।
गुजर जाना = मर जाना।
होना। निभना।
-पुं० [फा०] निर्वाह।
-पुं० [सं० गुर्जर] [वि० गुज-
का एक दक्षिण-पश्चिमी प्रान्त।
[हिं० गुजरात] गुजरात
गुजरात का।
का निवासी।
की भाषा।
-पुं० दे० 'गुजर' ३.।
-स० दे० 'गुजारना'।
-स्त्री० दे० 'गूजरी'।
[हिं० गूजर] १. कलाई में
एक प्रकार की पहुँची। २.
। ३. दे० 'गूजरी'।
-पुं० [हिं० गूजर] [स्त्री० गुज-
गूजर जाति का लड़का। २.
।
-स० [फा० गुज़र] १. बिताना।
रखना। पेश करना।
-पुं० [फा०] १. निर्वाह। २. वह
जीवन-निर्वाह के लिए मिलती
। ३. चुकाने का स्थान।
-स्त्री० [फा०] निवेदन। प्रार्थना।
-स्त्री० [?] गले में पहनने का
का हार। (गहना)
-वि० दे० 'गुह्य'।
-अ० [सं० गुह्य] छिपना।
-पुं० [सं० गुह्य+आवर्त्त] १.
। शिकन। सिलवट।
नाभि के आस-पास का भाग।
-स० दे० 'छिपाना'।
-स्त्री० [सं० गुह्यक] १. एक
। कुसली। पिराक। २.
मिठाई।

गुझौट*-पुं० दे० 'गुझरौट'।

गुटकना-अ० [अनु०] कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।

स० १. निगलना। २. खा जाना।

गुटका-पुं० [सं० गुटिका] १. दे० 'गुटिका'। २. साधारण से अपेक्षाकृत छोटे आकार की पुस्तक जो प्रायः जेब में रक्खी जा सकती हो। जैसे-गुटका रामायण। ३. लट्टू। ४. गुपचुप नाम की मिठाई।

गुटरगूँ-स्त्री० [अनु०] कबूतरों की बोली।

गुटिका-स्त्री० [सं०] १. गोली। २. एक प्रकार की सिद्धि जिसमें एक गोली मुँह में रखने से मनुष्य दिखाई नहीं देता।

गुट्ट-पुं० [सं० गोष्ठ] १. समूह। २. दल।

गुट्ठल-वि० [हिं० गुठली] १. (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २. जड़। मूर्ख। ३. गुठली के आकार का।

पुं० १. किसी वस्तु के इकट्ठे होने से बँधी हुई गाँठ। गुलथी। २. गिलटी।

गुट्ठी-स्त्री० [सं० गोष्ठ] मोटी गाँठ।

गुठला-पुं० [हिं० गुठली] १. बड़ी गुठली। २. बड़ी गुठली की तरह कोई गोल कड़ी चीज। जैसे-शरीर में मांस का गुठला।

पुं० [सं० अंगुस्थल, प्रा० अंगुट्ठल] अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का गहना।

वि० [सं० कुंठ] जिसकी धार खराब हो गई हो। कुंठित। भोथरा।

गुठली-स्त्री० [सं० गुटिका] ऐसे फल का बीज, जिसमें एक ही बड़ा बीज होता हो। जैसे-आम की गुठली।

गुठाना-अ० [हिं० गुठली] १. गुठली-सी बँध जाना। २. निकम्मा हो जाना।

गुड़ंबा-पुं० [हिं० गुड़+आँब, आम] शीरे में उबाला हुआ कच्चा आम।

गुड़-पुं० [सं०] ऊख, खजूर आदि का रस पकाकर जमाई हुई बट्टी या भेली।

मुहा०-कुल्हिया में गुड़ फोड़ना =

गुप्त रीति से कोई ऐसा कार्य या सलाह करना जो बिना किसी भय के प्रकाश्य रूप से भी किया जा सकता हो।

गुड़गुड़-पुं० [अनु०] वह शब्द जो बन्द चीज में हवा के चलने से होता है। जैसे-हुक्के या पेट में गुड़गुड़ होना।

गुड़गुड़ाना-अ० [अनु०] [भाव० गुड़गुड़ाहट] गुड़गुड़ शब्द होना।
स० [अनु०] १. गुड़गुड़ शब्द करना। २. हुक्का पीना।

गुड़गुड़ाहट-स्त्री० [गुड़गुड़ से अनु०] गुड़गुड़ शब्द होने की क्रिय या भाव। गुड़गुड़ी।

गुड़गुड़ी-स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना] १. एक प्रकार का हुक्का। फरशी। २. गुड़गुड़ाहट।

गुड़-धानी-स्त्री० [हिं० गुड़ + धान] भुने हुए गेहूँ को गुड़ में पागकर बाँधा हुआ लड्डू।
स्त्री० [हिं० गुड़ + धनियाँ] गुड़ के साथ मिलाया हुआ धनियाँ जो कुछ विशिष्ट अवसरों पर खाया जाता है।

गुड़ना*-स्त्री० दे० 'गुणना'।

गुड़रू-पुं०[सं० गरुड़] एक प्रकार का पक्षी।

गुड़हल-पुं० [हिं० गुड़ + हर] अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।

गुड़ाकू-पुं० [हिं० गुड़]गुड़ मिला हुआ पीने का तम्बाकू।

गुड़ाकेश-पुं० [सं०]१.शिव। २. अर्जुन।

गुड़िया-स्त्री० [हिं० गुड्डा] कपड़े की वह पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं।
पद **गुड़ियों का खेल**=सहज काम।

गुड़िला*-पुं० [सं० गुड्, हिं० गुड्डा का पुराना रूप] १. मनुष्य की आकृति का पुतला। २. दे० 'गुड्डा'।

गुड़ी*-स्त्री० दे० 'गुड्डी'।

गुडूची-स्त्री० [सं०] गुरुच। गिलोय।

गुड्डा-पुं० [सं० गुड् = खेलने की
कपड़े का बना हुआ पुतला।
मुहा०-**किसी के नाम का
बाँधना** = किसी की निन्दा करते
पुं० [हिं० गुड्डी] बड़ी पतंग।

गुड्डी-स्त्री० [हिं० गुड्डा] कागज
प्रसिद्ध खिलौना जो हवा में उड़ा
है। पतंग। कनकौआ।
स्त्री० [सं० गुटिका] १. घुटने की
२. एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गुढ़*-पुं० [सं०गूढ़] छिपकर रहने का

गुढ़ना-अ० [सं० गूढ़] १. छिप
गूढ़ अर्थ समझना। जैसे-पढ़ना-गुढ़

गुढ़ा-पुं० [सं० गूढ़] छिपने की
गुप्त स्थान।

गुढ़ासी*-पुं० [सं० गूढ़ाशय]
चर। भेदिया। २. दुष्ट उद्देश्य से
में उपद्रव या लड़ाई-झगड़ा कराने

गुढ़ी-स्त्री० [सं० गूढ़] गाँठ।

गुण-पुं० [सं०] [वि० गुण्य,
गुणित, गुणी] १. किसी वस्तु में पाई
वाली विशेष बात या तत्व जिसके द्वा
दूसरी वस्तु से अलग मानी जाय।
(प्रॉपर्टी) २. उक्त प्रकार की वह
बात या विशेषता जिसके कारण कोई
या पदार्थ औरों की अपेक्षा अच्छा
जाता है। अच्छापन। खूबी। (
मुहा०-**गुण गाना** = प्रशंसा
गुण मानना = एहसान मानना।
३. प्रकृति के अन्तर्गत मानी
तीन प्रकार की वृत्तियाँ या भाव, जो
जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि
जाती हैं। यथा-सत्व, रज और तम
(उक्त वृत्तियों के आधार पर)
संख्या का सूचक शब्द। ५.
प्रवीणता। ६. कला या विद्या।
७. कसी प्रकार की क्रिया या
आदि के फल-स्वरूप पड़नेवाला

८. विशेषता। (क्वालिटी)
१०. रस्सी या तागा। डोरा।
की डोरी।
जो संख्या-वाचक शब्दों
उतनी ही बार और होना
है। गुना। जैसे–त्रिगुण, च-

[सं०] वह अंक जिससे किसी
करते हैं।
[सं०] गुण या फायदा
लाभदायक।
[सं०] १. पतिव्रता। २.
स्त्रियों का एक व्रत।
[सं०] गुणों या गुणियों
करनेवाला। कदरदान।
दे० 'गुणग्राहक'।
[सं०] १. अच्छी बातों या
या उनकी परख करने-
का पारखी। २. गुणी।
[सं०] किसी वस्तु के गुण
और दोष या बुरी बातें।
दोनों पक्ष या अंग। (मेरिट्स)
[सं०] [वि० गुण्य, गुणनीय,
में एक संख्या को दूसरी
करना। जरब देना। २.
अनुमान करना। ४. उद्धरणी
५. मनन करना। सोचना।
[सं०] वह संख्या जो
दूसरी से गुणा करने से
(प्रॉडक्ट)
[सं० गुणन] १. गुणा करना।

दे० 'गुणवान्'।
[सं०] १. वह जो गुणों
२. व्याकरण में वह शब्द,
गुण सूचित हो। विशेषण।
[सं० गुणवत्] [स्त्री०
गुणी।

गुणा–पुं० [सं० गुणन] [वि० गुण्य, गुणित] गणित में जोड़ की एक संक्षिप्त रीति, जिसमें कोई संख्या एक बार में ही कई गुनी कर ली जाती है। जरब।

गुणाकर–वि० [सं०] जिसमें बहुत-से गुण हों। गुण-निधान।

गुणानुवाद–पुं० [सं०] गुण-वर्णन।

गुणित–वि० [सं०] गुणा किया हुआ।

गुणी–वि० [सं० गुणिन्] गुणवाला। जिसमें कोई या कई गुण हों।

पुं० १. कला-कुशल पुरुष। हुनरमन्द। २. झाड़-फूँक करनेवाला। ओझा।

गुण्य–पुं० [सं०] १. वह अंक जिसको गुणा करना हो। २. गुणी।

गुत्थम-गुत्था–पुं० [हिं० गुथना] १. उलझाव। फँसाव। २. हाथा-बाँही।

गुत्थी–स्त्री० [हिं० गुथना] १. एक में गुथने से बनी हुई गाँठ। उलझन। २. समस्या। उलझन।

मुहा०–**गुत्थी या गुत्थियाँ सुलझाना** = (क) जटिल समस्याओं की मीमांसा करना। (ख) कठिनाइयों से बचने का मार्ग निकालना।

गुथना–अ०[सं०गुत्सन]१.कई वस्तुओं का एक में उलझ जाना। २. भद्दी तरह से सीया जाना। ३. किसी से लड़ने के लिए उससे लिपट जाना।

गुथवाँ–वि० [हिं० गूथना] गूथकर बनाया हुआ।

गुथवाना–स० हिं० 'गुथना' या 'गूथना' का प्रे०।

गुद*–पुं० = गुदा।

स्त्री० = गूदा।

गुदकारा–वि० [हिं० गूदा या गुदर] १. गूदेदार। २. गुदगुदा।

गुदगुदा–वि० [हिं० गूदा] १. गूदेदार। २. मांस से भरा हुआ। ३. मुलायम।

गुदगुदाना–अ० [हिं० गुदगुदा] १.

हँसाने या छेड़ने के लिए किसी का तलवा, बगल आदि सहलाना। गुदगुदी करना। २. विनोद या परिहास के लिए छेड़ना। ३. किसी के मन में किसी बात की वासना या उत्कंठा उत्पन्न करना।

गुदगुदी–स्त्री० [हिं० गुदगुदाना] १. वह मधुर अनुभव जो बगल आदि कोमल अंगों को छूने या सहलाने से होता है। २. उत्कंठा। उमंग। ३. मन का उल्लास।

गुदड़ी–स्त्री० [हिं० गूदड़] १. फटे-पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना या ओढ़ना। कंथा।

पद–गुदड़ी में का लाल = तुच्छ स्थान में की उत्तम वस्तु।

२. कपड़ों के फटे-पुराने टुकड़े या चिथड़े। गूदड़।

गुदड़ी बाजार–पुं० [हिं० गुदड़ी + फा० बाजार] वह बाजार जिसमें पुरानी या टूटी-फूटी चीजें बिकती हैं।

गुदना–पुं० दे० 'गोदना'।

अ० [हिं० गोदना] गोदा जाना।

गुदर*–स्त्री० [फा० गुजर] १. दे० 'गुजर'। २. निवेदन। प्रार्थना। ३. निवेदन आदि के लिए किसी की सेवा में होने वाली उपस्थिति। हाजिरी।

गुदरना†*–अ० [हिं० गुजरना] १ किसी के सामने उपस्थित या पेश होना। २. दे० 'गुजरना'।

गुदराना†*–स० [फा० गुज़रान] १. पेश करना। सामने रखना। २. निवेदन करना।

गुदरैन†*–स्त्री० [हिं० गुदरना] १. पढ़ा हुआ पाठ सुनाना। २. परीक्षा।

गुदा–स्त्री० [सं०] मल-द्वार।

गुदाना–स० [हिं० गोदना का प्रे०] गोदने का काम कराना।

गुदार–वि० [हिं० गूदा] गूददार।

गुदारना*–स० [फा० गुज़र, हिं० गुदरना] १. उपेक्षा करना। ध्यान न
२. निवेदन करना। सेवा में
करना। ३. बिताना। गुजारना।

गुदारा†–पुं० [फा० गुज़ारा] १.
नदी पार करने का काम।

मुहा०–गुदारे लगना = (क)
किनारे पहुँचना। (ख) किसी का
समाप्ति या अन्त होना।

२. दे० 'गुजारा'।

गुद्दी–स्त्री० [हिं० गूदा] १.
अन्दर का गूदा। गिरी। २.
पिछला भाग।

गुन†*–पुं० दे० 'गुण'।

गुनगुना–वि० दे० 'कुनकुना'।

गुनगुनाना–अ० [अनु०] १.
शब्द करना। २. नाक में बोलना।
बहुत धीरे-धीरे अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनना–स० [सं० गुणन] १.
करना। जरब देना। २. गिनना।
उद्धरणी करना। रटना। ४. सोचना
किसी को कुछ महत्त्व का
मानना। जैसे–वह तुम्हें क्या गुनता है

गुनरखा–पुं० दे० 'गोनरखा'।

गुनवान–वि० [स्त्री० गुनवती] =

गुनह-गार–वि० [फा०] १.
दोषी। अपराधी।

गुनही†–पुं० दे० 'गुनहगार'।

गुना–पुं० [सं० गुणन] १.
जो किसी संख्या के अन्त में
उसका उतनी ही बार और होना
करता है। जैसे–सात-गुना। २.
(गणित)

पुं० [?] एक प्रकार का मीठा

गुनावन*–स्त्री० [हिं० गुनना]
कुछ सोचने की क्रिया। विचार।

गुनाह–पुं० [फा०] १. पाप।
२. कसूर। अपराध।

गुनाही–पुं० दे० 'गुनहगार'।

[हिं० गुणी] गुणवान।
दे० 'गुनिया'।
पुं० दे० 'गुणी'।
वि०[हिं० गुप + चुप] गुप्त
चुपचाप।
प्रकार की मिठाई।
= गोपाल।
= गुप्त।
[सं०] [भाव० गुप्तता] १.
। २. जिसे जानना कठिन हो।
[सं०] गुप्त रूप से किसी
लगानेवाला। दूत। भेदिया।
[सं०] वह दान जिसे
केवल दाता जाने, दूसरों को
।
[सं०] १. प्रेम-सम्बन्ध छिपाने-
। २. रखेली। रखनी।
[सं० गुप्त] वह छड़ी जिसके
या पतली तलवार छिपी हो।
[सं० गुहा] जमीन या पहाड़
अन्दर विस्तृत और अँधेरी
जिसमें प्रायः पशु आदि रहते
। गुहा।
[हिं० गोबर + ऐला (प्रत्य०)]
में रहनेवाला एक कीड़ा।
[अ०] १. गर्द। धूल। २.
हुआ क्रोध, दुःख, द्वेष आदि।
दे० 'गोविंद'।
[हिं० कुप्पा] कागज, रबर
थैला जो धूआँ या हवा भर-
में उड़ाते हैं।
[फा०] १. छिपा हुआ। गुप्त।
। ३. खोया हुआ।
[सं० गुम्मा + टा (प्रत्य०)]
गुमटी] वह सूजन जो
आने से होती है।

गुमटी-स्त्री० [हिं० गुमटा] १. मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी आदि के ऊपर की छत। २. चौकीदार के रहने का छोटा गोलाकार घर। ३. दे० 'गुमटा'।

गुमना†-अ० [फा० गुम] खो जाना। गुम होना।

गुम-नाम-वि० [फा०] १. अप्रसिद्ध। अज्ञात। २. जिसमें या जिसका नाम न हो। ३. जिसपर लेखक का नाम न हो। जैसे—गुमनाम चिट्ठी।

गुमर-पुं० [फा० गुमान] १. घमंड। शेखी। २. मन का गुबार। ३. कानाफूसी।

गुमराह-वि० [फा०] [संज्ञा गुमराही] १. रास्ता भूला हुआ। २. कुमार्ग पर चलनेवाला।

गुमान-पुं० [फा०] १. अनुमान। कल्पना। २. किसी विषय में मन में होनेवाला बुरा संदेह। ३. घमंड। अभिमान।

गुमाना-स० दे० 'गँवाना'।

गुमानी-वि० [हिं० गुमान] घमंडी।

गुमाश्ता-पुं० [फा०] किसी की ओर से माल खरीदने और बेचने के लिए नियुक्त मनुष्य। एजेन्ट।

गुम्मज*-पुं० = गुंबद।

गुम्मट-पुं० [फा० गुंबद] गुंबद।

गुरंब*-पुं० दे० 'गुडंबा'।

गुर-पुं० [सं० गुरुमंत्र] वह उपाय जिससे कोई काम तुरन्त हो जाय। मूल युक्ति। *पुं० १. दे० 'गुरु' २. दे० 'गोनरखा'।

गुरगा-पुं० [सं० गुरुग] [स्त्री० गुरगी] १. चेला। २. नौकर। ३. जासूस।

गुरगाबी-पुं० [फा०] एक प्रकार का मुंडा जूता।

गुरचना-अ० [अनु०] १. किसी चीज में बल या सिकुड़न पड़ना। २. उलझना।

गुरची-स्त्री० [हिं० गुरचना] १. सिकुड़न। बल। २. उलझन।

गुरचो-स्त्री० [अनु०] दूसरों से छिपा-

कर आपस में बहुत धीरे-धीरे होनेवाली बात-चीत।

गुरझ(न)*-स्त्री० [सं० अवरुंधन, पु० हिं० उरझन] १. पेच की बात। उलझन। २. ग्रन्थि। गाँठ।

गुरझना†-अ० = उलझना।

गुरझाना†-स० = उलझाना।

गुरदा-पुं० [फा० गुर्दः] १. रीढ़दार जीवों का एक भीतरी अंग जो कलेजे के पास होता है। २. साहस। हिम्मत। ३. मध्य युग की एक तरह की छोटी तोप।

गुर-मुख-वि० दे० 'गुरु-मुख'।

गुर-मुखी-स्त्री० [सं० गुरु+मुख+ई (प्रत्य०] सिक्खों के पाँचवे गुरु अर्जुन देव की चलाई हुई एक लिपि जो पंजाब में प्रचलित है और जो देव-नागरी का एक रूपान्तर ही है।

गुरम्मर†-पुं० [हिं० गुड़+आम] १. आम का वह वृक्ष जिसके फल मीठे होते हों। २. दे० 'गुड़ंबा'।

गुरवी*-वि० [सं० गर्व] घमंडी।

गुरसी†-स्त्री० दे० 'गोरसी'।

गुराई-स्त्री० = गोरापन।

गुराब-पुं० [देश०] तोप लादने की गाड़ी।

गुरिद*-पुं० दे० 'गदा'। (अस्त्र)

गुरिया-स्त्री० [सं० गुटिका] १. माला में का दाना या मनका। २. चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा। ३. मछली के माँस की बोटी या टुकड़ा।

गुरीरा*-वि० [हिं० गुड़+ईरा (प्रत्य०)] १. गुड़ का-सा मीठा। २. उत्तम। बढ़िया।

गुरु-वि० [सं०] [स्त्री० गुर्वी, भाव० गुरुत्व] १. बड़े आकार का। २. भारी। वजनी। ३. देर से पचनेवाला (भोजन)। पुं० [सं०] [स्त्री० गुरुआनी] १. बृहस्पति नामक आचार्य। २. बृहस्पति नामक ग्रह। ३. बृहस्पतिवार। ४. किसी मंत्र का उपदेष्टा। ५. विद्या या कला सिखानेवाला। उस्ताद। ६. दो मात्र
या दीर्घ अक्षर जिसका संकेत या चि
है। (पिंगल)

गुरुआई-स्त्री० [सं० गुरु+आई (
१. गुरु का पद या काम। २.
चालाकी।

गुरुआनी-स्त्री० [सं० गुरु+
प्रत्य०)] १. गुरु की स्त्री। २.
वाली स्त्री।

गुरुकुल-पुं० [सं०] १. वह
जहाँ गुरु विद्यार्थियों को अपने पा
कर शिक्षा देता हो। २. वह
संस्था, जिसमें विद्यार्थियों को प्राची
तीय ढंग से और ब्रह्मचर्यपूर्वक
शिक्षा दी जाती है। ३. गुरु का घ
वंश।

गुरु-गम्य-वि० [सं०] १. गुरु या
के द्वारा प्राप्त होनेवाला। २. गु
शिक्षक का बतलाया हुआ।

गुरुच-स्त्री० [सं० गुडूची] एक
की कड़वी बेल जो दवा के काम में
है। गिलोय।

गुरुज*-पुं० दे० 'गुर्ज'।

गुरु-जन-पुं० [सं०] बड़े लोग।
पिता गुरु आदि।

गुरुडम-पुं० [सं० गुरु+अं० प्रत्य०
स्वयं गुरु बनकर दूसरों से अपनी
कराना।

गुरुता-स्त्री० [सं०] १. दे० 'गुरु
२. गुरुआई। गुरुपन।

गुरुताई*-स्त्री० = गुरुता।

गुरुत्व-पुं० [सं०] १. गुरु या
होने का भाव। भारीपन। (ग्रै
२. वजन। बोझ। ३. गुरु या
होने का भाव। ४. महत्व। बड़प्पन।

गुरुत्वाकर्षण-पुं० [सं०] पृथ्वी
शक्ति जिसके द्वारा सभी वस्तुएँ उ
ओर खिचकर आती हैं। (ग्रैविटेशन)

[सं०] वह दक्षिणा
पर गुरु को दी जाय।
[हिं० गुरु + द्वारा] सिक्खों
या मन्दिर।
दे० 'गुर्विणी'।
[सं० गुरु + हिं० भाई]
के शिष्य।
[सं०] वह मंत्र जो कोई
शिष्य बनाने के समय
[सं० गुरु + मुख] जिसने
दृष्टि से दीक्षा ली हो।
१. दे० 'गुर-मुखी'। २.
की चलाई हुई एक लिपि जो
है।
[सं०] वृहस्पति का दिन।
[हिं० गुरु] १. अध्यापक। २. धूर्त।
= बहुत बड़ा चालक।
[सं० गुरु = बड़ा + हेरना]
। घूरना।
[हिं० गुरेरना] १. किसी
या क्रोधपूर्वक देखने की क्रिया
गुरेरा-गुरेरी = एक दूसरे को
। ३. दे० 'गुलेला'।
[फा०] १. गदा नामक अस्त्र।
= गदाधारी योद्धा।
डंडा या सोंटा।
[सं०] १. गुजरात देश। २.
का निवासी। ३. गूजर।
[सं०] १. गुजरात देश
। २. गूजर जाति की स्त्री। ३.
एक प्रकार की रागिनी।
[अनु०] [भाव० गुर्राहट]
का घुर-घुर शब्द करना।
कर्कश स्वर से बोलना।

गुर्राहट–स्त्री० [हिं० गुर्राना] गुर्राने की क्रिया या भाव।

गुर्विणी–वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती।

गुर्वी–स्त्री० [सं०] गुरु की पत्नी। वि० स्त्री० १. बड़ी या भारी। २. गौरव-वाली। ३. गर्भवती।

गुल–पुं० [फा०] १. गुलाब का फूल। २. फूल। पुष्प।

मुहा०–गुल खिलना = (क) विलक्षण घटना होना। (ख) नया बखेड़ा खड़ा होना।

३. पशुओं के शरीर पर का फूल के आकार का दाग। ४. वह गड्ढा जो हँसने के समय कुछ लोगों के गालों में पड़ता और सौन्दर्य-वर्द्धक माना जाता है। ५. गरम धातु से दागने से शरीर पर पड़नेवाला चिह्न। दाग। छाप। ६. दीये की बत्ती का जला हुआ अंश।

मुहा०–(चिराग) गुल करना = बुझाना।

७. तमाकू का जला हुआ अंश। जट्ठा। पुं० [अ० ग़ुल] शोर। हल्ला।

गुलकंद–पुं० [फा०] चीनी मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पंखड़ियाँ जो दस्तावर होती हैं।

गुलकारी–स्त्री० [फा०] बेल-बूटे का काम।

गुल-गपाड़ा–पुं० [अ० गुल + गप्प] चिल्लाहट। शोर-गुल।

गुलगुला–वि० दे० 'गुदगुदा'। पुं० एक प्रकार का मीठा पकवान।

गुलगुलाना–स० [हिं० गुलगुल] गूदेदार चीज को बार बार दबाकर मुलायम करना।

गुल-गोथना–वि० दे० 'गल-गुथना'।

गुलचना*–स० दे० 'गुलचाना'।

गुलचा–पुं० [अ० गुल या हिं० गाल] प्रेम-पूर्वक गालों पर धीरे से किया हुआ हाथ का आघात।

गुलचाना*–स० [हिं० गुलचा + ना (प्रत्य०)] गुलचा मारना या लगाना।

गुल-छर्रा–पुं० [हिं० गुल + छर्रा ?] स्वच्छन्दतापूर्वक और अनुचित रीति से किया जानेवाला भोग-विलास। **मुहा०–गुल-छर्रे उड़ाना** = बहुत ही असंयत रूप से भोग-विलास करना। खूब मौज करना।

गुलजार–पुं० [फा०] बाग। वाटिका। वि० १. हरा-भरा। २. आनन्द और शोभा से युक्त। ३. अच्छी तरह बसा हुआ और रौनकवाला।

गुलझरी*–स्त्री० [हिं० उलझन] १. उलझन। २. सिकुड़न। बल।

गुलथी–स्त्री० [हिं० गोल + सं० अस्थि] १. किसी तरल पदार्थ के गाढ़े होकर जमने से बनी हुई गुठली। २. मांस की जमी हुई गाँठ।

गुल-दस्ता–पुं० [फा०] फूलों का गुच्छा।

गुल दाउदी–स्त्री० [फा० गुल + दाउदी] एक सुन्दर गुच्छेदार फूलोंवाला पौधा।

गुल-दान–पुं० [फा०] फूलों का गुच्छा रखने का पात्र।

गुलदार–वि० दे० 'फूलदार'।

गुल दुपहरिया–स्त्री० [फा० गुल + हिं० दुपहरिया] एक छोटा पौधा जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं।

गुलनार–पुं० [फा०] १. अनार का फूल। २. इस फूल का सा गहरा लाल रंग।

गुल बकावली–स्त्री० [फा० गुल + सं० बकावली] हल्दी की तरह का एक पौधा जिसमें सफेद सुन्दर फूल होते हैं। (यह आँखों के रोगों की औषधि मानी जाती है।)

गुलबदन–पुं० [फा०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

गुल मेंहदी–स्त्री० [फा०गुल + हिं०मेंहदी] अच्छे फूलोंवाला एक प्रकार का पौधा।

गुल-सेख–स्त्री० [फा०] बड़े गोल सिरेवाली कील। फुलिया।

गुललाला–पुं० दे० 'गुल्लाला'।

गुलशन–पुं० [फा०] वाटिका।

गुल-शब्बो–स्त्री० [फा०] का पौधा या फूल। सुगन्धिराज।

गुलाब–पुं० [फा०] १. एक कँटीला पौधा जिसमें सुन्दर सुगन्धि लगते हैं। २. गुलाब-जल।

गुलाब-जल–पुं०[हिं०गुलाब + के फूलों का अरक।

गुलाब जामुन–पुं० [हिं० जामुन] १. एक प्रकार की मिठाई। एक पेड़ जिसका स्वादिष्ट फल कुछ होता है।

गुलाब-पाश–पुं० [हिं० गुलाब + पाश] वह पात्र जिसमें गुलाब-जल लोगों पर छिड़कते हैं।

गुलाब-बाड़ी–स्त्री० [हिं० बाड़ी = क्यारी] आनन्द-मंगल उत्सव जिसमें आस-पास के स्थान और गुलाब के फूलों से सजाई गई हों।

गुलाबी–वि० [फा०] १. गुलाब का। २. गुलाब सम्बन्धी। ३. कम। हलका। जैसे–गुलाबी नशा।

गुलाम–पुं० [अ०] १. मोल लि दास। २. साधारण सेवक। नौकर।

गुलामी–स्त्री० [अ० गुलाम + ई १. दासत्व। २. सेवा। नौकरी पराधीनता।

गुलाल–पुं० [फा० गुल्लाल:] चूर्ण जो होली के दिनों में हिन्दू पर छिड़कते हैं।

गुलाला–पुं० दे० 'गुल्लाला'।

गुलिस्ताँ–पुं० [फा०] बाग।

गुलू–पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसका गोंद 'कतीरा' कहलाता है।

गुलूबंद–पुं० [फा०] १. सिर पर में लपेटने की एक लम्बी पट्टी। २. में पहनने का गहना।

गुलेनार–पुं० दे० 'गुलनार'।

[अ० गिलूल] वह छोटा धनुष
गोलियाँ चलाई जाती हैं।
[फा० गुलूलः] १. मिट्टी
को गुलेल से फेंकी या चलाई
। २. गुलेल।
[सं०] एँड़ी पर की गाँठ।
[हिं०] १. ऐसा पौधा जो एक
के रूप में निकले। जैसे—
आदि। २. सेना की वह टुकड़ी
हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और
होते थे। ३. पेट का एक रोग।
स्त्री० दे० 'गोलक'।
पुं० दे० 'गुलेला'।
[अ० गुल] शोर। हल्ला।
पुं० [फा० गुलेलालः] एक
जिसमें लाल फूल होते हैं।
स्त्री० [सं० गुलिका = गुठली] १.
। २. महुए की गुठली। ३. काठ
आदि का गोल लम्बोतरा टुकड़ा।
डंडा-पुं० [हिं० गुल्ली + डंडा]
एक प्रसिद्ध खेल जो एक गुल्ली
डंडे से खेला जाता है।
पुं० दे० 'गुवाक'।
पुं० [सं०] सुपारी।
पुं० = ग्वाला।
पुं० दे० 'गोविंद'।
स्त्री० = गोष्ठी।
पुं० दे० 'गोसाईं'।
पुं० दे० 'गुस्सा'।
वि० [फा०] [भाव० गुस्ताखी]
संकोच न करनेवाला। धृष्ट।
स्त्री० [फा०] [वि० गुस्ताख]
या उद्दंड होने की दशा या
। उद्दंडता। २. धृष्टतापूर्वक किया
काम या बात जो बड़ों के सामने
हो। उद्दंडता।
पुं० [अ०] स्नान। नहाना।

गुस्ल-खाना-पुं० [अ० गुस्ल + फा० खानः] नहाने का कमरा। स्नानागार।

गुस्सा-पुं० [अ० गुस्सः] [वि० गुस्सावर, गुस्सैल] क्रोध। कोप।

मुहा०-गुस्सा उतरना या निकलना=क्रोध शान्त होना। (**किसी पर**) **गुस्सा चढ़ना**=क्रोध का आवेश होना।

गुस्सैल-वि०[हिं० गुस्सा + ऐल (प्रत्य०)] जल्दी क्रोध करनेवाला। क्रोधी।

गुह-पुं० [सं०] १. कार्त्तिकेय। २. घोड़ा। ३. विष्णु। ४. राम का मित्र एक निषाद। ५. गुफा। ६. हृदय।
†पुं० [सं० गुह्य] गू। मैला। मल।

गुहना†-स० = गूँथना।

गुहराना†-स० = पुकारना।

गुहवाना-स० हिं० 'गुहना' (गूथना) का प्रे०।

गुहांजनी-स्त्री० [सं० गुह्य + अंजन] आँख की पलक पर होनेवाली फुन्सी। बिलनी।

गुहा-स्त्री० [सं०] गुफा। कंदरा।

गुहाई-स्त्री० [हिं० गुहना] गुहने की क्रिया, ढंग, भाव या मजदूरी।

गुहार-स्त्री० दे० 'गोहार'।

गुहारना*-स०[हिं० गुहार] रक्षा के लिए पुकार मचाना। दुहाई देना।

गुहेरा-पुं० [सं० गौधेरक] गोह नामक जन्तु। पुं० [हिं० गुहना = पिरोना] डोरों से गहने आदि गूथनेवाला। पटवा।

गुहेरी-स्त्री० [सं० गौधेरिका] आँख की पलक पर होनेवाली फुन्सी। बिलनी।

गुह्य-वि० [सं०] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. गोपनीय। छिपाने योग्य। ३. जिसका तात्पर्य सहज में न खुले। गूढ़।

गूँगा-वि० [फा० गुंग] [स्त्री० गूँगी] जिसमें बोलने की शक्ति न हो।

पद-गूँगे का गुड़=वह सुखद अनुभव, जिसका शब्दों में वर्णन न हो सके।

गूँज-स्त्री० [सं० गुंज] १. भौंरों के गूँजने का शब्द। गुंजार। २. प्रतिध्वनि। ३.

खेलने के लट्टू में की कील। ४. नथ या बाली में लपेटा हुआ पतला तार। ५. छोटे छोटे छल्लों के रूप में लपेटा या घुमाया हुआ तार या ऐसी ही और कोई चीज।

गूँजना-अ० [सं० गुंजन] १. भौरों का मधुर ध्वनि करना। गुंजारना। २. प्रतिध्वनि से व्याप्त होना या भरना।

गूँथना-स० १. दे० 'गूँधना'। २. दे० 'पिरोना'।

गूँधना-स० [सं० गुध = क्रीड़ा] [भाव० गुँधाई, गुँधावट] पानी में मिलाकर हाथों से दबाना या मलना। माँड़ना।

स० दे० 'पिरोना'।

गूजर-पुं० [सं० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] अहीरों की एक जाति। ग्वाला।

गूजरी-स्त्री० [सं० गर्जरी] १. गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। २. एक प्रकार का गहना।

गूढ़-वि० [सं०] [भाव० गूढ़ता] १. छिपा हुआ। २. जिसमें कुछ विशेष अभिप्राय छिपा हो। गहरे या गम्भीर आशयवाला। ३. जिसका आशय समझना कठिन हो।

गूढ़ गेह*-पुं० [सं० गूढ़ + हिं० गेह] १. मकान के अन्दर का छिपा हुआ कमरा। तहखाना। २. मंत्रणा-गृह। ३. यज्ञशाला।

गूढ़-पुरुष-पुं० [सं०] जासूस। गुप्तचर। भेदिया।

गूढ़ाशय-पुं० = गूढ़-पुरुष।

गूढ़ोक्ति-स्त्री० [सं०] १. गूढ़ कथन या बात। २. किसी को सुनाकर किसी और से कोई गुप्त बात कहना।

गूथना स० [सं० गुम्फन] १. तागे आदि में एक ही तरह की बहुत सी चीजें पिरोना। २. दे० 'गूँधना'।

गूदड़-पुं० [सं० क्षुद्र, हिं० खूद] फटे-पुराने कपड़े। चिथड़ा।

गूदा-पुं० [?] [स्त्री० गूदी] १. फल के अन्दर का कोमल खाद्य अंश। २. खोपड़ी का सार भाग। भेजा। ३. मींगी। गिरी।

गून-स्त्री० [सं० गुण] नाव खींचने की रस्सी।

गूलर-पुं० [सं० उदुंबर] १. जाति का एक पेड़ जिसके छोटे छोटे कीड़े होते हैं। २. फल। उदुंबर। ऊमर।

पद-गूलर का फूल = दुर्लभ या पदार्थ।

गूलू-पुं० दे० 'गुलू' (वृक्ष)।

गूह-पुं० [सं० गुह्य] मैला। विष्ठा।

गृध्र-पुं० [सं०] गिद्ध पक्षी।

गृह-पुं० [सं०] [वि० गृही] घर।

गृहपति-पुं० [सं०] [स्त्री० १. घर का मालिक। २. अग्नि।

गृह-मंत्री-पुं० दे० 'गृह-सचिव'।

गृह-युद्ध पुं० [सं०] १. घर का २. देश के अन्दर की या देश-वासि आपसी लड़ाई। (सिविल वार)

गृह-रक्षक-पुं० [सं०] १. एक का अर्द्ध-सैनिक संघटन जो स्वतन्त्र में स्थानिक शान्ति और सुरक्षा के बनाया गया है। २. इस संघटन सिपाही या अधिकारी। (होम गार्ड)

गृह-संन्यास-पुं० [सं०] घर के ही रहकर सब काम करने और घर न निकलने की प्रतिज्ञा या व्रत, गिनती एक प्रकार के संन्यास में होती है

गृह-सचिव-पुं० [सं०] राज्य मन्त्री जो देश की भीतरी बातों की करता हो। (होम मिनिस्टर)

गृहस्थ-पुं० [सं०] १. गृहस्था रहने वाला व्यक्ति। ज्येष्ठाश्रमी। २. या बाल-बच्चोंवाला। ३. किसान।

गृहस्थाश्रम-पुं० [सं०] चार आ से दूसरा आश्रम, जिसमें लोग विवा घर का काम-काज देखते हैं।

गृहस्थी-स्त्री० [सं० गृहस्थ + ई (प्रत्य गृहस्थाश्रम। २. घर के काम-धंधे। वार। ४. घर का सामान। ५. खे

गृहिणी-स्त्री० [सं०] १. घर

र्ता। पत्नी।
[सं० गृहिन्] [स्त्री० गृहिणी]
। गृहस्थाश्रमी। २. यात्री।
की चेरी)
[सं०] [स्त्री० गृहीता] १.
गया हो। स्वीकृत। २.
या रक्खा हुआ। ३.
उग्र मनोविकार आदि का
हुआ हो। जैसे–गर्व-गृहीत।
भूत-प्रेत आदि की बाधा हो।
ग्रस्त।
[सं०] गृह संबंधी। घर का।
[सं०] विवाह आदि संस्कारों
पद्धति।
दे० 'गेंदुआ'।
[हिं० कुंडली] १. दे० 'इँडुआ'।
कुंडली।
[सं० गेंडुक, कंदुक] कपड़े,
वह गोला जिससे लड़के
कंदुक।
[हिं० गेंद + तड़ (अनु०)]
जिसमें लड़के एक दूसरे को
मारते हैं।
[हिं० गेंद + बल्ला] गेंद
खेला जानेवाला एक प्रकार
खेल। (क्रिकेट)
[हिं० गेंद] १. पीले रंग का
२. इस फूल का पौधा।
= गेंद।
[सं० गेंडुक] १. गोल तकिया।
दे० 'गेंद'।
[सं० गड = चिह्न या हिं० गंडा]
आदि से घेरना। २. स्थान आदि
करना। चारों ओर घूमना।
मेंड़ बनाना। ४. रहट चलाना।
[सं०] गाने के योग्य। जो गाया
गेय पद।

गेर-पुं० = गला।

गेरना† स० [हिं० 'गिराना' का पुराना रूप] १.गिराना। २ डालना। ३. (गले आदि में ऊपर से डालकर) पहनना।

गेरुआ-वि० [हिं० गेरू + आ (प्रत्य०)] १. मटमैले लाल रंग का। २. गेरू से रँगा हुआ। गैरिक। जोगिया।

गेरू-पुं० [सं० गवेरुक] एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी। गिरमाटी। गैरिक।

गेह-पुं० [सं०] घर। मकान।

गेहनी*-स्त्री० दे० 'गृहिणी'।

गेही*-पुं० [स्त्री० गेहिनी] दे० 'गृहस्थ'।

गेहुँअन-पुं० [हिं० गेहूँ] गेहूँ के रंग का एक जहरीला साँप।

गेहुँआँ-वि० [हिं० गेहूँ] गेहूँ के रंग का।

गेहूँ-पुं० [सं० गोधूम] एक प्रसिद्ध अनाज जिसके आटे की रोटी बनती है।

गैंड़*-पुं० = गैंड़ा।

गैंड़ा-पुं० [सं० गंडक] भैंसे के आकार का कड़ी खालवाला एक जंगली पशु।

गैन*-पुं० [सं० गमन] गैल। मार्ग।
*पुं० १. दे० 'गगन'। २. दे० 'गमन'।

गैनी*-वि० स्त्री० [हिं० गैन (गमन) + ई (प्रत्य०)] चलनेवाली। गामिनी। (यौगिक शब्दों के अन्त में)
†स्त्री० दे० 'खंता'।

गैब-पुं० [अ०] वह जो प्रत्यक्ष या सामने न हो। परोक्ष।

गैबर*-पुं० [सं० गजवर] १. बड़ा हाथी। २ एक प्रकार की चिड़िया।

गैबी वि० [अ० ग़ैब] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. अजनबी। अपरिचित। ३. ईश्वर या अप्रत्यक्ष शक्ति की ओर का।

गैयर*-पुं० दे० 'हाथी'।
स्त्री० दे० 'नील गाय'।

गैया-स्त्री० [सं० गविका, प्रा० गाइआ] गाय। गौ।

गैर-वि० [अ०] १. अन्य। दूसरा। २.

अपने कुटुम्ब या समाज से बाहर का। पराया। ३. अभाव या निषेध-सूचक शब्द। जैसे—गैर-हाजिर।
*स्त्री० [?] अत्याचार। अंधेर।

गैर-जिम्मेदार-वि० [अ० + फा०] [भाव० गैर-जिम्मेदारी] अपनी जिम्मेदारी या उत्तरदायित्व न समझनेवाला।

गैरत–स्त्री० [अ०] लज्जा। शरम।

गैर-दखीलकार–पुं० [अ० + फा०] वह असामी या खेतिहर जिसे दखीलकारीवाले अधिकार प्राप्त न हों। (नॉन्-ऑकुपेन्सी टेनेन्ट)

गैर-मनकूला–वि० [अ०] (सम्पत्ति) जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर न ले जा सकें। स्थावर। अचल।

गैर-मामूली–वि० [अ०] असाधारण।

गैर-मुनासिब–वि० [अ०] अनुचित।

गैर-मुमकिन–वि० [अ०] असंभव।

गैर-वाजिब–वि० [अ०] अनुचित।

गैर-सरकारी–वि० [अ० + फा०] १. जो सरकारी न हो। २. जिसके लिए सरकार उत्तरदायी न हो। (वक्तव्य आदि)

गैर-हाजिर-वि० [अ०] अनुपस्थित।

गैर-हाजिरी–स्त्री० [अ०] अनुपस्थिति।

गैरिक-पुं० [सं०] १. गेरू। २. सोना। वि० गेरू से रँगा हुआ।

गैल–स्त्री० [हिं० गली] छोटा रास्ता।

गोंजिया†–स्त्री० = गोभी। (घास)

गोंठ-स्त्री० [सं० गोष्ठ] धोती की लपेट जो कमर पर पड़ती है।

गोंठना–स० [सं० गुंठन] १. किसी अस्त्र की नोक या धार कुंठित करना। २. गुझिया या मालपूए की कोर मोड़ना।
स० [सं० गोष्ठ] चारों ओर से घेरना।

गोंड़–पुं० [सं० गोंड] एक जंगली जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है।

गोंड़रा+–पुं० [सं० कुंडल] [स्त्री० गोंड़री] १. चरखे का मँड़रा। २. गोल आकार की कोई वस्तु। मँड़रा। ३. गोल

गोंद–पुं० [सं० कुंदुरु या हिं० पेड़ों के तनों से निकला हुआ या लसदार स्राव। निर्यास।
यौ०–**गोंद-दानी** = वह बरतन जिसमें भिगोकर रखते हैं।

गोंद-पँजीरी–स्त्री० [हिं० गोंद + गोंद मिली हुई पँजीरी जो प्रसूता को खिलाई जाती है।

गोंदरी–स्त्री० [सं० गुंद्रा] १. होनेवाली एक घास। २. इस घास की चटाई।

गोंदी–स्त्री० दे० 'हिंगोट'।

गो–स्त्री० [सं०] १. गाय। गौ। ३. वृष राशि। ४. इन्द्रिय। ५. ६. सरस्वती। ७. आँख। दृष्टि। बिजली। ९. पृथ्वी। १०. दिशा। माता। १२. बकरी, भैंस आदि वाले पशु। १३. जीभ। जबान।
पुं० [सं०] १. बैल। २. नन्दी शिवगण। ३. घोड़ा। ४. सूर्य चन्द्रमा। ६. बाण। तीर।
अव्य० [फा०] यद्यपि।

गोइँठा†–पुं० दे० 'उपला'।

गोइंदा–पुं० [फा०] गुप्तचर।

गोइ*–पुं० दे० 'गेंद'।

गोइन–पुं० [?] एक प्रकार का

गोइयाँ–पुं० [हिं० गोहन] साथी।
स्त्री० सखी। सहेली।

गोई†–स्त्री० [सं० गोती] हल आदि में जोती जानेवाली बैलों की
*स्त्री० दे० 'गोइयाँ'।

गोऊ–वि० [हिं० गोना + ऊ (छिपानेवाला।

गोकर्ण–पुं० [सं०] १. मलाबार शैव क्षेत्र। २. यहाँ की शिवमूर्ति।
वि० [सं०] गौ के-से लम्बे कानों

गो-कुल–पुं० [सं०] १. गौओं का

गोशाला ।

[सं०] मथुरा के पूर्व-दक्षिण गाँव ।

[सं० गोक्षुर] १. एक छोटी छोटे कँटीले फल लगते हैं । गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः पकड़ने के लिए उनके रास्ते में हैं । ३. गोटे और बादले के पर लगाने का एक साज । आकार का हाथ का एक गहना ।

दे० 'झरोखा' ।

[सं०] पके हुए अन्न का अंश जो भोजन या श्राद्ध के लिए निकाला जाता है ।

[सं०] वह जिसका ज्ञान हो सके ।

[सं०] चरागाह । चरी ।

-स्त्री० [सं०] वह भूमि जो चरने के लिए खाली छोड़ दी चर भूमि । (पास्चर लैंड)

[सं०] अपान वायु । पाद ।

[हिं० गेहूँ + जौ] एक में गेहूँ और जौ ।

[सं० खर्जु] कन-खजूरा ।

[सं० गवाजन] बड़ी लाठी ।

-स्त्री० [देश०] १. साड़ी का । २. फुरती ।

[सं० गुह्यक] [स्त्री० अल्पा० १. गुझिया । २. एक कँटीली । ३. चौक ।

[सं० गोष्ठ] १. वह पट्टी जो पर लगाई जाती है । मगजी । का बना हुआ किनारा ।

गोष्ठी] मंडली । गोष्ठी ।

गुटिका] चौपड़ आदि खेलने । नरद । गोटी ।

[हिं० गोट] १. बादले का वह पर लगाया जाता है ।

२. धनियाँ । ३. गरी या नारियल का गोला । ४. कतरकर एक में मिलाई हुई इलायची, सुपारी और खरबूजे या बादाम की गिरी । ५. सूखा हुआ मल । कंडी ।

*पुं० दे० 'गोला' ।

गोटी-स्त्री० [सं० गुटिका] १. पत्थर या मिट्टी का वह छोटा टुकड़ा जिससे लड़के खेलते हैं । २. चौपड़ खेलने का मोहरा । नरद । ३. गोटियों का एक प्रकार का खेल । ४. लाभ का योग ।

गोठ-स्त्री० [सं० गोष्ठ] १. गोशाला । २. गोष्ठी । ३. श्राद्ध । ४. सैर ।

गोठड़ी(री)*-स्त्री० = गोष्ठी ।

गोड़† पुं० [सं० गम, गो] पैर ।

गोड़इत-पुं० [हिं० गोड़ँड़ + ऐत (प्रत्य०)] गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार ।

गोड़ना-स० दे० 'कोड़ना' ।

गोड़ा†-पुं० [हिं० गोड़] १. पलंग आदि का पाया । २. घोड़िया ।

गोड़ाई-स्त्री० [हिं० गोड़ना] गोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

गोड़ाना-स० हिं० 'गोड़ना' का प्रे० ।

गोड़ा-पाई-स्त्री० [हिं० गोड़ + पाई = जुलाहों का ढाँचा] बार बार आना-जाना ।

गोड़ारी-स्त्री० [हिं० गोड़ = पैर + आरी (प्रत्य०)] १. पैताना । २. जूता ।

गोत-पुं० [सं० गोत्र] १. कुल । वंश । खानदान । २. समूह । जत्था । दल ।

गोतना†-स० [हिं० गोता] १. गोता देना । डुबाना । २. नीचे की तरफ ले जाना । अ० १. नीचे की तरफ झुकना । २. निद्रा या तन्द्रा आदि के वश में होना ।

गोतम-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि ।

गोतमी-स्त्री० [सं०] अहल्या ।

गोता-पुं० [अ० ग़ोतः] डुबकी ।

मुहा०-गोता खाना = धोखे में आना । छल में फँसना । **गोता मारना** = (क) डुबकी लगाना । डूबना । (ख) बीच में

अनुपस्थित रहना।

गोताखोर–पुं० [अ०] १. पानी में डुबकी लगाकर चीजें ढूँढ़नेवाला। २. डुबकनी नाव।

गोतिया–पुं० दे० 'गोती'।

गोती–पुं० [सं० गोत्रीय] अपने ही गोत्र या कुल का कोई दूसरा व्यक्ति जिसके साथ घनिष्ठ पारिवारिक और अशोच आदि का संबंध हो। गोत्रीय। भाई-बंद।

गोत्र–पुं० [स०] १. सन्तान। २. नाम। ३. राजा का छत्र। ४. दल। जत्था। ५. वंश। ६. हिन्दू कुल या वंश की वह विशिष्ट सज्ञा जो किसी मूल पुरुष या गुरु के नाम पर होती है।

गोत्रोच्चार–पुं० [स०] विवाह के समय वर और वधू के वंश, गोत्र और पूर्वजों आदि का दिया जानेवाला परिचय।

गोद–स्त्री० [सं० क्रोड़] जाँघों के ऊपर का वह भाग जिसपर बच्चों आदि को दोनों हाथों से घेरकर बैठाते हैं। उछंग। क्रोड़।

पद–गोद का बच्चा = बहुत छोटा बच्चा जो गोद में ही रहता हो।

मुहा०–गोद पसारना = कुछ माँगने के लिए दीनतापूर्वक पल्ला फैलाना। **गोद बैठाना या लेना** = किसी को अपना दत्तक पुत्र बनाना। **गोद भरना**=सौभाग्यवती स्त्री के अंचल में मंगल-कामना से नारियल, मिठाई आदि रखने की रसम पूरी करना। **गोद भरी होना** = स्त्री के आगे बाल-बच्चे होना। सन्तानवती होना।

गोद-नशीन–पु० [हिं० गोद + फा०नशीन] वह जिसे किसी ने गोद लिया हो। दत्तक।

गोदनहारी–स्त्री० [हिं० गोदना + हारी (प्रत्य०)] गोदना गोदने का व्यवसाय करनेवाली स्त्री।

गोदना–स० [सं० खुद् = भेदना] १. चुभाना। गड़ाना। २. उत्तेजित करना। उसकाना। ३. चुभती या लगी हुई बात कहना। ताना देना।

पुं० तिल के आकार का वह नीला चिह्न या वे फूल-पत्ते जो शरीर में सुइयों से कर बनाये जाते हैं। (टैटू)

गो-दान–पुं० [सं०] १. विधिवत् करके ब्राह्मण को गौ दान करने की २. मुंडन संस्कार।

गोदाम–पुं० [अं० गोडाउन] वह जहाँ बिक्री का बहुत-सा माल इकट्ठा रक्खा जाता हो। (गोडाउन)

गोदी–स्त्री० दे० 'गोद'।

गो-धन–पुं० [सं०] १. गौएँ। २. सम्पत्ति। ३. एक प्रकार का तीर।

†*पु० [सं० गोवर्द्धन] गोवर्द्धन प

गोधना†–पुं० [सं० गोधन] दूज के दिन का एक कृत्य जिसमें गोबर से मनुष्य की आकृति बना मूसल से मारती हैं।

गोधूम–पुं० [सं०] गेहूँ।

गोधूलि(ली)–स्त्री० [सं०] सन्ध्या समय जब चरकर लौटनेवाली गौ खुरों से धूल उड़ती है।

गोन–स्त्री० [सं० गोणी] वह दोह जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है।

स्त्री० [सं० गुण] वह रस्सी जो खींचने के लिए मस्तूल में बाँधते हैं।

गोनरखा–पुं० [सं० गुण-वृक्ष] बड़ी नाव का वह मस्तूल जिसमें रस्सी कर उसे खींचते हैं। २. नाव के मस्तू रस्सी बाँधकर खींचनेवाला मल्लाह या म

गोना*–स० [सं० गोपन] छिपाना।

गोप–पुं० [सं०] १. गौ का रक्षक ग्वाला। अहीर। ३. गोशाला का प्र ४. राजा। ५. गाँव का मुखिया।

पुं० [सं०गुंफ] गले में पहनने का एक ग

गो-पति–पुं०[स०] १. शिव। २. विष्णु श्रीकृष्ण। ४. ग्वाला। गोप। ५. राजा। ६.

गोपन–पुं० [सं०] १. छिपाव। दु २. छिपाना। लुकाना। ३. रक्षा।

गोपना†*–स० [सं० गोपन] छिपा

[सं०] छिपाने के लायक।

स्त्री० [सं०] गोपी।

[सं०] १. गौ का पालक। ग्वाला। ३. श्रीकृष्ण।

स्त्री० दे० 'गोपी'।

[सं०] १. ग्वालिनी। गोप-

२. ब्रज की गोप जाति की कोई (श्रीकृष्ण के समय की सब गोपियाँ ...ऐं मानी जाती हैं)

पुं० [सं०] एक प्रकार की

स्त्री० = गोपी।

[सं०] १. नगर या किले का २. फाटक। ३. स्वर्ग।

[सं०] श्रीकृष्ण।

[सं० गोप्तृ] रक्षा करने-

[सं०] गुप्त रखने योग्य। गोपनीय। (सीक्रेट)

पुं० [सं० गोफण] छींके की जाल जिसमें ढेले आदि भर-ओं पर चलाते हैं। ढेलवाँस। फन्नी।

पुं० [सं० गोमय] गौ का मल

वि० [हिं० गोबर + गणेश] बदसूरत। २. मूर्ख। बेवकूफ।

स्त्री० [हिं० गोबर + ई (प्रत्य०)] ने जमीन पर की जानेवाली लिपाई।

[?] लहर।

'गामा'।

स्त्री० [सं० गोजिह्वा] १. एक प्रकार गोजिया। बन गोभी। २. एक वनस्पति का बहुत बड़ा फूल जो रूप में खाया जाता है। फूल-गोभी।

पुं० [सं०] गोबर।

पुं० [सं०] १. गौ का मुँह। गोमुख नाहर या व्याघ्र = ने में सीधा, पर वास्तव में क्रूर (व्यक्ति)। २. गौ के मुँह के आकार का शंख। ३. नरसिहा नाम का बाजा। ४. एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वि० गौ के मुँह की तरह कुछ नीचे लटकता हुआ।

गोमुखी–स्त्री० [सं०] एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं। जप-माली। जप गुथली।

गो-मूत्रिका–स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का चित्र-काव्य जो लहरियेदार रेखा के रूप में होता है। २. चित्रण आदि में लहरियेदार बेल। बैल-मुतनी। बरध-मुतान।

गोमेद(क)–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मणि या रत्न। राहु-रत्न।

गोमेध–पुं० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन यज्ञ जिसमें गौ के मांस से हवन किया जाता था।

गोय*–पुं० दे० 'गेंद'।

गोया–क्रि० वि० [फा०] मानों। जैसे।

गोर–स्त्री० [फा०] कब्र।

+वि० [सं० गौर] गोरा। (रंग)

गोरख धंधा–पुं० [गोरखनाथ के नाम पर] १. कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों का वह समूह या रचना जिन्हें जोड़ने या अलग करने के लिए विशेष युक्ति या बुद्धि-बल की आवश्यकता होती है। बहुत उलझन की कोई बात या काम जिसे समझना या करना कठिन हो।

गोरखनाथ–पुं० [सं० गोरक्षनाथ] एक प्रसिद्ध प्राचीन हठयोगी अवधूत जिन्होंने अपना एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय चलाया था।

गोरख-पंथ–पुं० [गोरखनाथ + पंथ] महात्मा गोरखनाथ का चलाया हुआ एक साधु सम्प्रदाय।

गोरख-पंथी–पुं० [हिं० गोरख-पंथ] गोरख पंथ का अनुयायी साधु।

गोरखा–पुं० [हिं० गोरख] १. नेपाल के अन्तर्गत एक प्रदेश। २. इस देश का निवासी।

गो-रज–पुं० [सं०] गौ के खुरों से उड़नेवाली धूल।

गोरटा*–वि० = गोरा।

गोरमदाइन†–स्त्री० [?] इन्द्र-धनुष। (बुन्देल०)

गो-रस–पुं०[सं०] १.गौ का दूध। २.दही। ३. मठा। छाछ। ४. इन्द्रियों का सुख।

गोरसी–स्त्री० [सं० गोरस + ई (प्रत्य०)] दूध गरम करने की मिट्टी की एक प्रकार की छोटी अँगीठी। बोरसी।

गोरा–वि० [सं० गौर] १. (मनुष्य का) साफ और सफेद रंग। २. ऐसे रंगवाला। (मनुष्य)

पुं० यूरोप या अमेरिका का निवासी जिसके शरीर का वर्ण बहुत गोर या सफेद होता है फिरंगी।

गोराई–स्त्री० [हिं० गोरा + ई (प्रत्य०)] १. गोरापन। २. सुन्दरता। सौन्दर्य।

गोरा पत्थर–पुं० [हिं० गोरा (गौर) + पत्थर] एक प्रकार का पत्थर जो साबुन की तरह मुलायम और चिकना होता है। घीया पत्थर। (सोप स्टोन)

गोरिला–पुं० [अं०] बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का बन-मानुस।

गोरी–स्त्री० [सं० गौरी] सुन्दर और गोरे रंग की स्त्री। रूपवती स्त्री।

गोरू–पुं० [सं० गो] सींगवाला पशु। चौपाया। मवेशी। (कैटिल)

गोरू-चोर–पुं० [हिं० गोरू + चोर] वह जो दूसरों की गौएँ, भैंसें आदि चुराता हो। (एबैक्टर)

गोरोचन–पुं० [सं०] एक पीला सुगन्धित द्रव्य जो गौ के पित्ताशय में से निकलता है।

गोलंदाज–पुं० [फा०] [संज्ञा गोलंदाजी] तोप में गोला रखकर चलानेवाला। तोपची।

गोलंदाजी–स्त्री०[फा०] तोप में गोला भरकर चलाने का का काम।

गोलंबर–पुं० [हिं० गोल + अंबर] १. गुंब्रद। २. गुंब्रद के आकार का कोई
गोलाकार पदार्थ या रचना। ३. गोलाई।
कलबूत। कालिब।

गोल–वि०[सं०] १. वृत्त या चक्र के
का। २. ऐसे घनात्मक आकार का
तल का प्रत्येक बिन्दु उसके अन्दर के
बिन्दु से समान दूरी पर हो। गेंद आदि
आकार का। सर्व-वर्त्तुल।

पद–गोल बात = ऐसी अस्पष्ट
जिसके कई अर्थ हों या हो सकते हों।

मुहा०–गोल करना = कोई चीज
से चुपके से हटा देना। गायब कर
गोल रहना = बिलकुल चुप
गोल होना = कहीं से चुपचाप हट
खिसक जाना।

पुं०[सं०] १. मंडलाकार क्षेत्र। वृत्त।
गोलाकार पिंड। वटक। गोला। (
पुं० [अ० ग़ोल] मंडली। झुंड।

गोलक–पुं० [सं०] १. गो-लोक।
गोल पिंड। ३. विधवा का जारज पुत्र।
मिट्टी का बड़ा कुंडा। ५. आँख का
६. आँख की पुतली। ७. गुंब्रद।
स्त्री० १. वह सन्दूक या थैली जिसमें धन
किया जाय। गल्ला। गुल्लक। २. वह
जिसमें बिक्री, चन्दे, आय आदि का धन
जाय। (पूल)

गोल-गप्पा–पुं० [हिं० गोल + अनु०
एक प्रकार की छोटी करारी फुलकी।

गोल-माल–पुं० [सं० गोल (योग)] गड़बड़
अव्यवस्था।

गोल मिर्च–स्त्री० दे० 'काली मिर्च'।

गोल-मेज–स्त्री० [हिं० गोल + फा० मेज
वह गोल मेज (या मेजों का मंडला
विन्यास) जिसके चारो ओर बैठकर
लोग पूर्ण समानता के भाव से कुछ
करें। जैसे–गोल-मेज कान्फरेन्स।

गोलयोग–पुं० [सं०] ज्योतिष में एक
राशि में छः या सात ग्रहों का इकट्ठा होना

कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोशवारा–पुं० [फा०] १. कान का बाला। कुंडल। २. वह बड़ा मोती जो सीप में एक ही हो। ३. तुर्रा। कलँगी। सिर-पेच। ४. जोड़। योग। ५. वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर मद का आय-व्यय अलग अलग दिखलाया गया हो।

गोशा–पुं० [फा०] १. कोना। २. एकान्त स्थान। ३. नोक। ४. धनुष की कोटि।

गो-शाला–स्त्री० [सं०] १. गौओं के रहने का स्थान। गोष्ठ। २. वह स्थान जहाँ गौएँ रखी जाती हैं और उनका दूध, मक्खन, घी आदि बेचा जाता है। (डेअरी)

गोश्त–पुं० [फा०] मांस।

गोष्ठ–पुं० [सं०] १. गोशाला। २. परामर्श। सलाह। ३. दल। मडली।

गोष्ठी–स्त्री० [सं०] १. सभा। मंडली। २. बात-चीत। ३. परामर्श। सलाह।

गोस–पु० दे० 'गोश'।

गोसाई–पुं० [सं० गोस्वामी] १. गौओं का स्वामी। २. ईश्वर। ३. संन्यासियों का एक भेद। ४. विरक्त साधु। ५. मालिक। प्रभु।

गोसैयाँ+–पुं० दे० 'गोसाई'।

गोस्वामी–पुं० [सं०] १. जितेन्द्रिय। २. वैष्णव सम्प्रदाय में आचार्यों के वंशधरों या उनकी गद्दी के अधिकारी।

गोह–स्त्री० [सं० गोधा] छिपकली की तरह का एक जंगली जानवर।

गोहन*–पुं० [सं० गोधन] १. संग रहने-वाला। साथी। २. संग। साथ।

गोहरा–पुं० [सं० गो + ईंल्ल या गोहल्ल] [स्त्री० अल्पा० गोहरी] सुखाया हुआ गोबर। कंडा। उपला।

गोहराना*–अ० दे० 'पुकारना'।

गोहार–स्त्री० [सं० गो + हार (हरण)] १. रक्षा या सहायता के लिए चिल्लाना। पुकार। दुहाई। २. हल्ला-गुल्ला। शोर।

गोही*—स्त्री० [सं० गोपन] १. दुराव। छिपाव। २. छिपी हुई बात। गुप्त वार्त्ता।

गौं—स्त्री० [सं० गम, प्रा० गवँ] १. प्रयोजन सिद्ध होने का अवसर। सुयोग। मौका। २. प्रयोजन। मतलब। ३. गरज। स्वार्थ।

पद–गौं का यार = मतलबी। स्वार्थी।

मुहा०–गौं निकलना = काम निकलना। स्वार्थ सिद्ध होना। **गौं पड़ना** = गरज होना।

४. ढंग। ढब। तर्ज। ५. तरह। प्रकार। उदा०–भोग करौ जोइ गौं।–सूर। ६. पार्श्व। पक्ष।

गौंस*—स्त्री० दे० 'गौं' (घात)।

गौ—स्त्री० [सं०] गाय। गऊ।

गौख—स्त्री० [सं० गवाक्ष] १. छोटी खिड़की। २. दलान या बरामदा। ३. आला। ताक। ताखा।

गौखा—पुं० दे० 'गौख'।

गौगा—पुं० [अ०] १. शोर। गुल-गपाड़ा। हल्ला। २. जनश्रुत। अफवाह।

गौ-चरी—स्त्री०[हिं० गौ + चरना] किसी स्थान पर गौएँ चराने का कर।

गौड़—पु० [सं०] १. वंग देश का एक प्राचीन विभाग। २. ब्राह्मणों का एक वर्ग। ३. राजपूतों की एक शाखा।

गौड़ी—स्त्री० [सं०] १. गुड़ से बनी शराब। २. काव्य में एक रीति या वृत्ति जिसमें संयुक्त अक्षर और समास अधिक आते हैं।

गौण—वि०[सं०][भाव० गौणता] १. मुख्य से कम महत्व का। अ-प्रधान। (सेकेंडरी) २. साधारण।

गौतम—पुं० [सं०] १. गोतम ऋषि के वंशज ऋषि। २. न्याय-शास्त्र के आचार्य एक प्रसिद्ध ऋषि। ३. बुद्ध देव।

गौतमी—स्त्री० [सं०] १. अहल्या जो गौतम ऋषि की पत्नी थी। २. गोदावरी नदी। ३. दुर्गा।

गौन*—पुं० दे० 'गमन'।

पुं० दे० 'गाउन'।

गौनहर—स्त्री० [हिं० गौना + हर (प्र वह स्त्री जो वधू के साथ उसकी जाती है।

स्त्री० [हिं० गाना + हर (प्रत्य०)] की पेशा करनेवाली स्त्री।

गौनहारी—स्त्री० दे० 'गौनहर'।

गौना—पुं० [सं० गमन] विवाह के की एक रसम जिसमें वधू को व साथ घर लाता है। द्विरागमन।

गौनि*—स्त्री० दे० 'गून'।

गौमुखी—स्त्री० दे० 'गोमुखी'।

गौर—वि० [सं०] [भाव० गौरता गोरा। २. सफेद।

पुं० [सं०] १. लाल रंग। २. पीला ३. चन्द्रमा। ४. सोना। ५. केसर।

*पुं दे० 'गौड़'।

पुं० [अ० ग़ौर] १. सोच-वि चिन्तन। २. खयाल। ध्यान।

गौरव—पुं० [सं०] [वि० गौरवा १. गुरु या भारी होने का भाव। पन। २. बड़प्पन। महत्त्व। ३. इज्जत।

गौरवान्वित—वि० [सं०] १. महिमा से युक्त। २. मान्य। सम्मा

गौरवित—वि० दे० 'गौरवान्वित'।

गौरा—पुं० १. दे० 'गौरैया' (पक्षी) दे० 'गौरोचन'।

गौरिया—स्त्री० [?] १. एक का पक्षी। २. मिट्टी का छोटा हुक्का।

गौरी—स्त्री० [सं०] १. गोरे रंग की २. पार्वती। गिरिजा। ३. आठ कन्या। ४. तुलसी। ५. सफेद गौ चमेली।

गौरीशंकर—पुं० [सं०] १. शिव हिमालय पर्वत की एक ऊँची चोटी।

गौरैया—स्त्री० दे० 'गौरिया'।

चटक या चिड़ा नामक पक्षी ।

[फा०] मोती ।

दे० 'ज्ञाति' या 'ज्ञाति' ।

दे० 'ज्ञान' ।

[हिं०] चान्द्र मास के किसी
तिथि । एकादशी ।

[सं०] १. पुस्तक । किताब ।
। ग्रंथन ।

(कार)-पुं० [सं०] ग्रंथ की
। लेखक ।

-पुं० [सं०] वह जो बहुत
नहीं, बल्कि यों ही सर-
बहुत से ग्रंथ पढ़ा करता हो ।

-पुं० [सं० ग्रंथ + चुंबन]
] सरसरी तौर पर कहीं
ग्रंथ पढ़ना ।

[सं०] १. गोंद लगाकर
। २. गोंद लगाकर जोड़ना या
। ३. गूँथना ।

दे० 'ग्रंथन' ।

-पुं० [हिं० ग्रंथ + साहब]
धर्म-पुस्तक ।

[सं०] [वि० ग्रंथित] १.
। ३. माया-जाल ।

[सं०] १. जिसमें गाँठ लगी
हो । २.किसी के साथ गूथा

-पुं० [सं०] गँठ-बंधन ।
= ग्रंथित ।

[सं०] १. निगलना । २.
। ३. ग्रहण ।

[सं० ग्रसन] १. बुरी तरह
। २. सताना ।

दे० 'ग्रस्त' ।

[सं०] [स्त्री० ग्रस्ता] १.
। २. पीड़ित । ३. खाया हुआ ।

[सं०] ग्रहण के समय चन्द्रमा
हुए अस्त होना ।

ग्रस्तोदय-पुं० [सं०] चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगे रहने की अवस्था में उदय होना ।

ग्रह-पुं० [सं०] १. वह तारा जो सूर्य की परिक्रमा करता हो । जैसे-पृथ्वी, बुध । **पद-अच्छे ग्रह**=अच्छा या सुख का समय । **बुरे ग्रह** = संकट या दुःख के दिन । २.ग्रहों की संख्या के आधार पर नौ की संख्या का सूचक शब्द । ३. ग्रहण करना । लेना । ४. चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण । ५. छोटे बच्चों को होनेवाले कुछ विशिष्ट रोग जो अलग अलग नामों से प्रसिद्ध हैं । ६. कोई कष्ट-दायक बात या अवांछित व्यक्ति ।

ग्रहण-पुं० [सं०] १. कोई चीज लेने, पकड़ने या अंगीकार करने की क्रिया या भाव । २.मान्य, स्वीकृत या अपने अन्तर्गत करने की क्रिया या भाव । स्वीकार । (एडमिशन) ३. सूर्य, चन्द्रमा या दूसरे ज्योति-पिंड के प्रकाश की वह रुकावट जो उस पिंड के सामने किसी दूसरे पिंड के आ जाने से होती है । उपराग ।

ग्रह-दशा-स्त्री० [स०] १. ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था । २. अभाग्य ।

ग्रह-वेध-पुं० [सं०] वेध करके ग्रहों की स्थिति, गति आदि जानना ।

ग्रहीत*-वि० = गृहीत ।

ग्रांडील-वि० [अं० ग्रैंडिअर] ऊँचे कद का ।

ग्राम-पुं० [सं०] १. गाँव । २. बस्ती । आबादी । ३. समूह । ४. शिव । ५.संगीत में सात स्वरों का समूह । सप्तक ।

ग्रामणी-पुं० [सं०] १. गाँव का मालिक । २. प्रधान । मुखिया ।

ग्राम-देवता-पुं० [सं०] किसी ग्राम में पूजा जानेवाला और वहाँ का अधिष्ठाता या रक्षक माना जानेवाला प्रधान देवता ।

ग्राम-सुधार-पुं० [सं०] गावों की सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और शुचिता सम्बन्धी

अवस्था सुधारने का काम। (रूरल अपलिफ्ट)

ग्रामी*-वि०१.दे०'ग्राम्य'। २.दे०'ग्रामीण'।

ग्रामीण-वि० [सं०] गाँव में रहनेवाला। देहाती।

वि० देहात सम्बन्धी। देहात का।

ग्रामोन्नति-स्त्री० दे० 'ग्राम्य-सुधार'।

ग्राम्य-वि० [सं०] १. गाँव या देहात से सम्बन्ध रखनेवाला। (रूरल) २. ग्रामीण। देहाती। ३. प्रकृत। ठेठ। ४. जो सुनने, देखने आदि में भद्दा जान पड़े। अश्लील। अशिष्ट।

ग्राव-पुं० [सं०] १. पत्थर। २. ओला। ३. पहाड़।

ग्रास-पुं० [सं०] [वि० ग्रस्त, कर्त्ता ग्रासक] १. उतना भोजन, जितना एक बार मुँह में डाला जाय। कौर। निवाला। २. पकड़ने की क्रिया। ३. ग्रहण। उपराग।

ग्रासना-स० दे० 'ग्रसना'।

ग्रासित*-वि० दे० 'ग्रस्त'।

ग्राह-पुं० [सं०] १. मगर। घड़ियाल। २. ग्रहण। उपराग। ३. पकड़ना। लेना।

ग्राहक-पुं० [सं०] १. ग्रहण करनेवाला। २. खरीदनेवाला। खरीदार। ३. लेने का इच्छुक। चाहनेवाला।

ग्राहना*-स०[सं०ग्रहण]ग्रहण करना। लेना।

ग्राही-वि० [सं० ग्राहिन्] [स्त्री० ग्राहिणी] १. ग्रहण या स्वीकार करनेवाला। २. मल रोकनेवाला। (खाद्य पदार्थ या औषध)

ग्राह्य-वि० [सं०] १. जो ग्रहण किया या लिया जा सकता हो। लेने योग्य। (रिसीवेबुल) २. जो नियमानुसार विचार आदि के लिए लिया जा सकता हो। ३. जो ठीक होने के कारण माना जा सकता हो। (ऐडमिसिबुल)

ग्रीवा-स्त्री० [सं०] गर्दन। गला।

ग्रीषम†*-स्त्री० दे० 'ग्रीष्म'।

ग्रीष्म-स्त्री० [सं०] १. गरमी की ऋतु। जेठ-असाढ़ के दिन। २. उष्णता। गरमी

ग्रीष्मावकाश-पुं० [सं०] कुछ विशे गरम स्थानों या प्रदेश में कड़ी गरमी समय लगातार कुछ दिनों तक होने छुट्टी। गरमियों की छुट्टी। (समर वेके

ग्रेह*-पुं० दे० 'गेह'।

ग्रेही*-पुं० दे० 'गृहस्थ'।

ग्लानि-स्त्री० [सं०] १.शारीरिक या मा सिक शिथिलता। २. अपनी दशा या आदि देखकर मन में होनेवाला खेद। पश्चात्ताप।

ग्वार-स्त्री० [सं० गोराणी] एक जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों दाल बनती है। कौरी। खुरथी।

*पुं० [स्त्री० ग्वारिन] दे० 'ग्वाल'।

ग्वार-पाठा-पुं० दे० 'घी कुआँर'।

ग्वाल-पुं० [सं० गो + पाल, प्रा० गोवा [स्त्री० ग्वालिन] अहीर।

ग्वाल गीत-पुं० [सं०] वे गीत जो और चरवाहे गौएँ, भैंसे, बकरियाँ चराने के समय गाते हैं। (पैसूचोरल पोइट्री)

ग्वाला-पुं० [सं० ग्वाल] दूध-दही वाली एक जाति। अहीर।

ग्वालिन-स्त्री० [हिं० ग्वाल] १. ग्वाले स्त्री। ग्वाल-जाति की स्त्री। २. ग्वार की

ग्वैंठना†*-स० [सं० गुंठन, हिं० गुमे १. मरोड़ना। ऐंठना। घुमाना। २. 'गोंठना'।

ग्वैंठा†*-पुं० दे० 'गोइँठा'।

घ

घ—देव-नागरी वर्ण-माला में क-वर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण कंठ से होता है।

घँघोना*—स० दे० 'घँघोलना'।

घँघोरना—स० दे० 'घँघोलना'।

घोलना-स० [हिं० घन + घोलना] १. में हिलाकर घोलना या मिलाना। २. को हिलाकर मैला करना।

[हिं० घट] १. वह घड़ा जो मृतक में पीपल में बाँधा जाता है। २.

[सं०] [स्त्री० अल्पा० घंटी] एक प्रसिद्ध बाजा। घड़ियाल। बजाकर दी जानेवाली समय । ३. दिन-रात का चौबीसवाँ मिनट का समय।

-पुं० [हिं० घंटा + घर] वह लगी हुई घड़ी चारो ओर दिखाई देती हो और जिसके शब्द दूर तक सुनाई दे। (क्लॉक)

-स्त्री० [सं०] १. छोटा घंटा। । ३. कमर में पहनने की करधनी। 'क्षुद्र घंटिका'।

-स्त्री० [सं० घंटिका] पीतल या फूल लुटिया।

[सं० घंटा] १. छोटा घंटा। २. का शब्द। ३. गरदन की वह कुछ आगे निकली रहती है। ४. अन्दर मांस की वह छोटी पिंडी जो के पास होती है। कौआ।

-स्त्री० [सं० गंभीर] १. पानी का भँवर। २. थूनी। टेक।

[सं० गंभीर] बहुत गहरा।

-पुं० दे० 'घाघरा'।

[सं०] १. घड़ा। २. शरीर। या हृदय।

-घट में बसना या बैठना = मन । ध्यान पर चढ़ा रहना।

की हाँडी जो प्रकाश के लिए छत जाती है।

[हिं० घटना] घटा हुआ। कम।

-पुं० [सं०] १. बीच में पड़नेवाला। मध्यस्थ। २. विवाह-संबंध ठीक करानेवाला। बरेखिया। ३. दलाल। ४. काम पूरा करनेवाला, चतुर व्यक्ति।

घटका-पुं० ['घट' शब्द से अनु०] मरने के समय से कुछ पहले गले में होनेवाला, घर-घर शब्द या घरघराहट जो प्रायः गले में कफ रुकने के कारण होती है।

घट-घाट*-वि० [हिं० घटना] किसी की अपेक्षा थोड़ा, हलका या कम। घटकर।

घटती-स्त्री० [हिं० घटना] १. कमी। न्यूनता।

पद-घटती से = अंकित या नियत मूल्य से कम मूल्य पर। (बिलो पार) २. हीनता।

वि० जिसमें कुछ घटी, कमी या न्यूनता हो। (डेफिशिट) जैसे—घटती आय-व्ययिक= वह आय-व्ययिक जिसमें आय की अपेक्षा व्यय अधिक दिखाया गया हो। (डेफिशिट बजट)

घटन-पुं० [सं०] [वि० घटनीय, घटित] १. भिन्न भिन्न तत्त्वों का एक में मिलकर किसी एक वस्तु का रूप धारण करना। (कम्पोजीशन) २. बना या गढ़कर तैयार करने की क्रिया या भाव। गढ़ा जाना। ३. उपस्थित होना।

घटना-अ० [सं० घटन] १. होना। २. ठीक बैठना। लगना। ३. ठीक उतरना

अ० [हिं० कटना] १. कम होना थोड़ा होना। २. पूरा न रह जाना।

स्त्री० [सं०] कोई विलक्षण या विकट बात जो हो जाय। वाक़या। वारदात (एक्सिडेन्ट)

घटना-स्थल-पुं० [सं०] वह स्थल या स्थान जहाँ कोई घटना हुई हो। (प्ले ऑफ अकरेन्स)

घट-बढ़-स्त्री० [हिं०घटना + बढ़ना] १ कुछ घटा और कुछ बढ़ाकर किसी वस् या बात का रूप कुछ बदलने की क्रिर

या भाव। परिवर्त्तन। (वेरिएशन) २. किसी प्रकार होनेवाली कमी-बेशी। न्यूनाधिकता।

घट-योनि–पुं॰ [सं॰] अगस्त्य मुनि जो कुम्भज के नाम से प्रसिद्ध हैं।

घटवाई–पुं॰ [हिं॰ घाट+वाई] घाट का कर लेनेवाला।

स्त्री॰ घाट से पार उतारने की मजदूरी या कर।

घट-वादन–पुं॰ [सं॰] संगीत में मिट्टी का घड़ा औंधा करके उसे तबले की तरह बजने की क्रिया।

घटवाना स॰ हिं॰ 'घटाना' का प्रे॰।

घटवार(ल)–पुं॰ [हिं॰ घाट+पाल या वाला] १. घाट का महसूल लेनेवाला। २. वह जो घाट पर रहकर नावों के आर-पार जाने का प्रबन्ध करता हो। ३. मल्लाह। ४. घाटिया। गंगापुत्र।

घटवाही–स्त्री दे॰ 'घट्ट-कर'।

घटवैया–वि॰ [हिं॰ घटाना] घटाने या घटानेवाला।

पुं॰ दे॰ 'घटवार' (ल)।

घट-स्थापन–पुं॰ [सं॰] १. मंगल-कार्य के पहले जल से भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना। २. नवरात्र का पहला दिन।

घटा–स्त्री॰ [सं॰] मेघों का घना समूह। उमड़े हुए बादल। मेघ-माला।

घटाई*–स्त्री॰ [हिं॰ घटना+ई (प्रत्य॰)] १. हीनता। २. अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

घटाकाश–पुं॰ [सं॰] न्याय या तर्क में, घड़े के अन्दर का आकाश या खाली स्थान।

घटाटोप–पुं॰ [सं॰] १. घनघोर घटा। २. गाड़ी या पालकी को ढकने का परदा। ओहार।

घटाना–स॰ [हिं॰ घटना] १ गुरुत्व, मान आदि कम करना। क्षीण करना। (एबेट) २. अधिक मान, संख्या आदि में से छोटा मान, संख्या आदि निकालकर अलग करना। बाकी निकालना। (डिडक्ट) ३. कम करना।

स॰ [सं॰ घटन] १. घटित कर २. अर्थ आदि के विचार से ठीक उतारना।

घटाव–पुं॰ [हिं॰ घटना] १. कम होने का भाव। न्यूनता। कमी। अवनति। ३. नदी के पानी का उतार।

घटावना*–स॰ = घटाना।

घटिका–स्त्री॰ [सं॰] १. छोटा या नाँद। २. घटी यंत्र। घड़ी। ३. घड़ी या २४ मिनट का समय।

घटित–वि॰ [सं॰] १. जो घटना में हुआ हो। २. रचित। निर्मित। अर्थ आदि के विचार से ठीक उतरा हुआ।

घटिताई*–स्त्री॰ [हिं॰ घटी] न्यू कमी।

घटिया–वि॰ [हिं॰ घट+इया (प्र १. अपेक्षाकृत खराब या सस्ता। २.

घटी–स्त्री॰ [सं॰] १. चौबीस का समय। घड़ी। २. समय यंत्र। घड़ी।

स्त्री॰ [हिं॰ घटना] १. कमी। न्यू २. हानि। नुकसान। घाटा। ३. या महत्व आदि में होनेवाली (डेप्रिसिएशन)

घटूका*–पुं॰ दे॰ 'घटोत्कच'।

घटोत्कच–पुं॰ [सं॰] हिडिंबा से भीमसेन का पुत्र।

घट्ट–पुं॰ [सं॰] नदी आदि का घाट।

घट्ट कर–पुं॰ [सं॰] वह कर जो घाट पर नदी पार करनेवालों से लिया है। (फेरी टोल)

घट्टा–पुं॰ [सं॰ घट्ट] शरीर पर हुआ चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ से पड़ जाता है।

घड़घड़ाना–अ॰ [अनु॰] [भाव॰

या घड़घड़ शब्द करना ।

शब्द उत्पन्न करना ।
स्त्री० [अनु० घड़-घड़ +
)] बार-बार घड़-घड़ शब्द
का भाव ।
[हिं० घड़ा + नैया
)] घड़ों में घड़े बाँधकर बनाया
, जिसपर चढ़कर छोटी नदियाँ
हैं ।
दे० 'गढ़ना' ।
[सं० घट] पानी भरने का
का बरतन । बड़ी गगरी ।
घड़ों पानी पड़ जाना=अत्यन्त
। लज्जा के मारे गड़ जाना ।
घड़ा = वह जिसपर डाँट-
का कोई प्रभाव न पड़ता हो ।
दे० 'गढ़ाना' ।
दे० 'घरिया' ।
[सं० घटिकालि] वह बड़ा
बजते समय या समय की सूचना
बजाया जाता है ।
[सं० ग्राह ?] एक प्रसिद्ध बड़ा
जन्तु । ग्राह ।
[हिं० घड़ियाल] घड़ियाल
वाला ।
दे० 'घड़ोला' ।
[सं० घटी] १. दिन-रात का
। २४ मिनट का समय ।
घड़ी = बार बार ।
घड़ियाँ गिनना=(क) उत्सुकता-
। (ख) मरने के निकट
। ३. अवसर । ४. वह यन्त्र
और मिनट के हिसाब से समय
है ।
] कपड़ों आदि की

लगाई जानेवाली तह ।

घड़ी-दीया–पुं० [हिं० घड़ी + दीया = दीपक] वह घड़ा और दीया जो किसी के मरने पर घर में रक्खा जाता है ।

घड़ीसाज–पुं० [हिं० घड़ी + फा० साज] घड़ी की मरम्मत करनेवाला ।

घड़ोला–पुं० [हिं० घड़ा] छोटा घड़ा ।

घड़ौंची–स्त्री० [हिं० घड़ा + औंची (प्रत्य०)] वह चौकी या ढाँचा जिसपर पानी का घड़ा रखा जाता है ।

घतिया–वि० [हिं० घात + इया (प्रत्य०)] विश्वास-घात करनेवाला । धोखेबाज ।

घतियाना–स० [हिं० घात] १. अपनी घात या दाँव में लाना । मतलब पर चढ़ाना । २. चुरा या छिपाकर लेना ।

घन–पुं० [सं०] १ बादल । २. लोहारों का बड़ा हथौड़ा । ३. समूह । ४. कपूर । ५. वह गुणन-फल जो किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से आता है । ६. लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) का सम्मिलित विस्तार । ७. वह वस्तु या आकार जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई आदि समान हों । ८. ताल देने का बाजा । ९. पिंड । शरीर । वि० १. घना । गझिन । २ गठा या भरा हुआ । ठोस । ३. दृढ़ । मजबूत । ४. बहुत अधिक । ज्यादा ।

घनक–स्त्री० [अनु०] गड़गड़ाहट । गरज ।

घनकना–अ० [अनु०] गरजना ।

घनकारा-वि० [हिं० घनक] गरजनेवाला ।

घन कोदंड–पुं० [सं०] इन्द्र धनुष ।

घन-गरज–स्त्री० [सं० घन + गर्जन] १. बादल की गरज । २. एक प्रकार की तोप ।

घनघनाना–अ० [अनु०] [भाव० घनघनाहट] घंटे की-सी ध्वनि निकालना । स० [अनु०] घन-घन शब्द करना ।

घन-घोर–पुं० [सं० घन + घोर] १. भीषण ध्वनि । २, बादल की गरज ।

वि० १. बहुत घना या गहरा। जैसे–घन-घोर घटा। २. भीषण। विकट।

घन-चक्कर–पुं० [सं०घन + हिं०चक्कर] १. चंचल बुद्धिवाला। २. मूर्ख। ३. वह जो व्यर्थ इधर-उधर फिरता हो। आवारा।

घनता–स्त्री० [सं०] १. 'घना' होने का भाव। घनापन। २. लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई के सम्मिलित रूप का भाव। ३. ठोसपन। (डेन्सिटी)

घनत्व–पुं० = घनता।

घन-फल–पुं० [सं०] १. लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों के मान का गुणन-फल। २. वह गुणन-फल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने पर निकलता है।

घन-बान–पुं० [हिं० घन + बाण] एक प्रकार का बाण, जिसके प्रयोग से बादल छा जाते थे। (कल्पित)

घन-बेला–पुं० एक प्रकार का बेला। (पौधा और फूल)

घन-बेली–स्त्री० दे० 'घन-बेला'।

घन-मूल–पुं० [सं०] गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक। जैसे–६४ का घनमूल ४ होगा।

घन-वर्धन–पुं० [सं०] [वि० घन-वर्धनीय, भाव० घन-वर्धनीयता] धातुओं आदि को पीटकर बढ़ाना।

घन-श्याम–पुं० [सं०] १. काले बादल। २. श्रीकृष्ण।

घनसागर–पुं० = घनसार (कपूर)।

घनसार–पुं० [सं०] कपूर।

घना–वि० [सं० घन] [स्त्री० घनी, भाव० घनापन] १. जिसके अवयव या अंश पास-पास या सटे हों। सघन। २. पास-पास बसा हुआ। ३. बहुत पास का। घनिष्ठ। ४. बहुत अधिक।

घनाक्षरी–स्त्री० [सं०] कवित्त नामक छन्द।

घनात्मक–वि० [सं०] जिसकी चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या समान हो।

घनाली–स्त्री० [सं० घन + अवली] की पंक्ति या समूह।

घनिष्ठ–वि० [सं०] [भाव० १. घना। २. निकट का। (संबंध)

घने–वि० [सं० घन] बहुत-से।

घनेरा†*-वि० [हिं० घना] [स्त्री० १. बहुत। अधिक। २. घना।

घपला–पुं० [अनु०] घपलेबाजी] १. बिना क्रम की २. जान-बूझकर या मनमाने ढंग से की जानेवाली, अथवा अपटुता से होनेवाली गड़बड़ी। गोल-माल।

घपले-बाजी–स्त्री० [हिं० + फा०] या गड़बड़ी उत्पन्न करने की भाव। (बंग्लिंग)

घबराना–अ० [सं० गह्वर या बड़ाना] १. भय या दुःख से होना। व्याकुल होना। २. भौचक्का किंकर्तव्य-विमूढ़ होना। ३. होना। ४. मन न लगना।

स० १. व्याकुल या अधीर भौचक्का करना। ३. हैरान करना।

घबराहट–स्त्री० [हिं० घबराना व्याकुलता। उद्विग्नता। २. विमूढ़ता। ३. उतावली। जल्दी।

घमंड–पुं० [सं० गर्व] १. या कार्य में अपने को औरों से समझना। अभिमान। शेखी। २. किसी का भरोसा।

घमंडी–वि० [हिं० घमंड] अभिमान करनेवाला। अभिमानी।

घमकना–अ० [अनु० घम] का-सा गंभीर शब्द होना। घहरा

स० घूँसा मारना।

घमघमा–पुं० [हिं० घाम = धू

वर्षा के बाद या जाड़े के
कि खूब धूप निकली हो।
-अ० [अनु०] 'घमघम' शब्द

करके मारना।
दे० 'घुमड़'।
-अ० दे० 'घुमड़ना'।
ढलना।
[अनु०] नगाड़े, ढोल आदि
शब्द। गंभीर तान।
[अनु०] १. किसी चीज के
शब्द। २. दे० 'ऊमस'।
-स्त्री० दे० 'घमासान'।
[अनु० घम] १. गदा या
प्रहार। २. भारी आघात का

-स्त्री० [अनु० घम] १. घमा-
। २. धूम-धाम। चहल-

'घम घम' शब्द के साथ।
-अ० [हिं० घाम = धूप] धूप
सूर्य के सामने बैठना।
-स्त्री० [अनु०] बहुत गहरा या
जैसे-घमासान युद्ध।
-स्त्री० दे० 'भड़भाँड़'।
-स्त्री० दे० 'पित्ती' १.।
[सं० गृह] [वि० घराऊ,
] १. मनुष्यों का छाया हुआ
जो दीवारों से घेरकर बनाया
। आवास। मकान।
घर करना = (क) घर बनाकर
रहना। (ख) समाने या अँटने
निकालना। (ग) घुसना। धँसना।
घर करना = बहुत पसन्द आना।
होना।
ना = (क) किसी के घर कलह
ना। (ख) कुल में कलंक
(किसी स्त्री का किसी पुरुष

के) **घर बैठना** = किसी की पत्नी बनकर रहना। किसी को पति बनाना। **घर में** = पत्नी।

पद-घर का = (क) निज का। अपना। (ख) आपस का। सम्बन्धियों या आत्मीय जनों के बीच का। **घर से** = पास से। पल्ले से।

कहा०-घर का, न घाट का = (क) बे-ठिकाने का। (ख) निकम्मा। आवारा। **घर के बाढ़े** = घर में डींग मारनेवाला।

सम०-घर-घाट = (क) रंग-ढंग। चाल-ढाल। (ख) ढब। ढंग। (ग) ठौर-ठिकाना। घर-बार। (घ) स्थिति। हैसियत।

२. जन्म-भूमि। स्वदेश। ३. घराना। वंश। कुल। ४. कोठरी। कमरा। ५. रेखाओं आदि से घिरा हुआ स्थान। कोठा। खाना। ६. कोई वस्तु रखने का डिब्बा। कोश। खाना। (केस) ७. अँटने या समाने की जगह। ८. मूल कारण। जैसे-रोग का घर खाँसी। ९. गृहस्थी।

घर-गृहस्थ-पुं० [हिं० + सं०] वह जिसका घर, पत्नी, बाल-बच्चे और परिवार के लोग हों। (मर्यादा का सूचक)

घर-गृहस्थी-स्त्री० [हिं० घर + गृहस्थी] घर और उसमें की सब सामग्री।

घरघराना-अ० [अनु०] कफ के कारण साँस लेते समय गले से घर्र घर्र शब्द निकलना।

घर-घराना-पुं० [हिं० घर + घराना] कुल, वंश और उसकी मर्यादा आदि। जैसे-ब्याह के पहले किसी का घर-घराना देखना।

घर-घालक(न)-वि० [हिं० घर + घालना] [स्त्री० घर + घालिनी] १. अपना या दूसरों का घर बिगाड़नेवाला। २. कुल में दाग लगानेवाला।

घर-घेरा+-पुं० दे० घर-गृहस्थी।

घर-जाया-पुं० [हिं० घर + जाया = पैदा]

गृह-जात दास। घर का गुलाम।

घरणि*–स्त्री॰ दे॰ 'घरनी'।

घर-दारी–स्त्री॰ [हिं॰ घर + फा॰ दारी] गृहस्थी के सब काम-धन्धे।

घर-दासी*–स्त्री॰ दे॰ 'घरनी'।

घर-द्वार–पुं॰ दे॰ 'घर-बार'।

घरनाल–स्त्री॰ [हिं॰ घड़ा + नाली] एक प्रकार की पुरानी तोप। रहकला।

घरनी–स्त्री॰ [सं॰ गृहिणी, प्रा॰ घरणी] पत्नी। भार्या। गृहिणी।

घर-फोरा–पुं॰ [हिं॰ घर + फोड़ना] [स्त्री॰ घर फोरी] दूसरों के परिवार में कलह फैलानेवाला। घर में लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।

घर-बसा–पुं॰ [हिं॰ घर + बसना] [स्त्री॰ घर-बसी] १. पति। २. उपपति।

घर-बार–पुं॰ [हिं॰ घर + बार = द्वार] [वि॰ घर-बारी] १. निवास-स्थान। २. घर का सामान और परिवार। गृहस्थी।

घर-बारी–पुं॰ [हिं॰ घर + बार] बाल-बच्चोंवाला। गृहस्थ। कुटुम्बी। स्त्री॰ घर-गृहस्थी का काम।

घरमना*–अ॰ [सं॰ घर्म्म + ना (प्रत्य॰)] प्रवाह के रूप में गिरना। बहना।

घरवात†*–पुं॰ [हिं॰ घर + वात (प्रत्य॰)] घर-गृहस्थी का सामान।

घरवाला–पुं॰ [हिं॰ घर + वाला (प्रत्य॰)] स्त्री॰ घरवाली] १. घर का मालिक। २. पति। स्वामी।

घरसा*–पुं॰ [सं॰ घर्ष] रगड़। घिस्सा।

घरहाई†*–वि॰ स्त्री॰ [हिं॰ घर + सं॰ घाती, हिं॰ घाई] १. घर में फूट डालनेवाली। २. लोगों की अपकीर्ति फैलानेवाली।

घरहाया*–पुं॰ [हिं॰ घर + घात] [स्त्री॰ घर-हाई] घर में फूट डालनेवाला।

घरा*–पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ घरी] = घड़ा।

घराती–पुं॰ [हिं॰ घर + आती (प्रत्य॰)] विवाह में कन्या-पक्ष के लोग।

घराना–पुं॰ [हिं॰ घर + आना (प्रत्य॰)] खानदान। वंश। कुल।

घरिया–स्त्री॰ [सं॰ घटिका] १. ... का प्याला। २. वह पात्र जिसमें ... सोना, चाँदी आदि धातुएँ गलाते हैं।

घरियाना*–स॰ [हिं॰ घरी = तह] ... कागज आदि की तह लगाना।

घरियार*–पुं॰ दे॰ 'घड़ियाल'।

घरी–स्त्री॰ [?] तह। परत। *स्त्री॰ घड़ी। (काल-मान)

घरीक†*–क्रि॰ वि॰ [हिं॰ घड़ी + ... घड़ी भर। थोड़ी देर।

घरू–वि॰ [हिं॰ घर + ऊ (प्रत्य॰) ... घर से सम्बन्ध रखनेवाला। घरेलू।

घरेलू–वि॰ [हिं॰ घर + एलू (प्रत्य॰)] १. पालतू। २. घर का। निज का। ... ३. घर का बना हुआ या घर में होने...

घरैया†–वि॰ दे॰ 'घरू' या 'घरेलू'। पुं॰ [हिं॰ घर] घर या कुटुम्ब का ...

घरौंदा(धा)–पुं॰ [हिं॰ घर + ... (प्रत्य॰)] कागज, मिट्टी आदि का ... घर, जिससे बच्चे खेलते हैं।

घर्म–पुं॰ [सं॰] धूप। घाम।

घर्रा–पुं॰ [अनु॰] १. गले की घर... जो कफ के कारण होती है। २. (... कोल्हू पेरने या कूएँ से चरसा खींचने ... कठिन काम।

घर्राटा पुं॰ दे॰ 'खर्राटा'।

घर्षण–पुं॰ [सं॰] किसी वस्तु ... पार्श्व या अंग से दूसरी वस्तु के किसी ... या अंग का रगड़ खाना। रगड़। ... (फ्रिक्शन)

घर्षित–वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ घर्षिता] ... रगड़ा हुआ। २. रगड़ खाया हुआ।

घलना अ॰ [हिं॰ 'घालना' का अ॰] ... या डाला जाना। २. (अस्त्र) ... चलाया जाना। ३. बिगड़ना या नष्ट ... ४. मारा जाना।

घलाघल–स्त्री॰ [हिं॰ घलना] ...

घाँघरा–पुं० दे० 'घाघरा'।

घाँटी†–स्त्री० [सं० घंटिका, प्रा० घंटिआ] १. गले के अन्दर की घंटी। कौआ। २. गला।

क्रि० वि० अपेक्षाकृत कम। घटकर।

घाँह†*–स्त्री० [हिं० घाँ] ओर। तरफ।

घा*–स्त्री० दे० 'घाँ'।

घाइ*–पुं० दे० 'घाव'।

घाइल*–वि० = घायल।

घाईं†*–स्त्री० [हिं० घाँ] १. ओर। तरफ। २. जोड़। संधि। ३. बार। दफा। ४. पानी में का भँवर।

स्त्री० दे० 'घाई'।

घाई–स्त्री० [सं० गभस्ति = उँगली] दो उँगलियों के बीच की जगह। अंटी।

स्त्री० [हिं० घाव] १. दे० 'घाव'। २. धोखा। चालबाजी।

स्त्री० १. दे० 'घाईं'। दे० 'घाँ'।

घाऊ*–पुं० दे० 'घाव' (क्षत)।

घाऊ-घप–वि० [हिं खाऊ + गप अनु०] चुपचाप दूसरों का माल हजम करनेवाला।

घाघ–पुं० १. एक प्रसिद्ध अनुभवी और चतुर व्यक्ति, जिसकी कहावतें उत्तरी भारत में प्रसिद्ध हैं। २. भारी चालाक।

घाघरा–पुं० [सं० घर्घर = क्षुद्र घंटिका] [स्त्री० अल्पा० घाघरी] स्त्रियों का कमर में पहनने का चुननदार और घेरदार पहनावा जिससे नीचे का अंग ढका रहता है। बड़ा लँहगा।

स्त्री० [सं० घर्घर] सरजू नदी।

घाघस–स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मुरगी।

घाट–पुं० [सं० घट्ट] १. नदी या जलाशय के किनारे वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते या नाव पर चढ़ते हैं।

मुहा०–**घाट घाट का पानी पीना** = (क) तरह तरह के काम करना। (ख) तरह

तरह की चीजों का स्वाद लेना। (ग) जगह जगह की सैर करना।

२. चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग। ३. किसी चीज की बनावट में वह अंश जिसमें कुछ चढ़ाव-उतार या गोल रेखा का-सा रूप हो। ४. पहाड़। जैसे–पूर्वी या पश्चिमी घाट। ५. ओर। तरफ। दिशा। ६. रंग-ढंग। चाल-ढाल। ७. तलवार की धार।

स्त्री० [हिं० घटना] घटने या घटकर होने की क्रिया या भाव। न्यूनता। कमी।

†वि० [हिं० घट] १. थोड़ा। २. घटिया। ३. किसी की तुलना में हलका या कम।

घाटना*– अ० = घटना।

घाटवाल–पुं० दे० 'घाटिया'।

घाटा–पुं० [हिं० घटना] १. घटने की क्रिया या भाव। २. घटी। हानि।

घाटारोह†*–पुं० [हिं० घाट + सं० रोध] घाट से जाने न देना। घाट रोकना।

घाटि–†*–वि० [हिं० घटना] कम मान का। घटकर।

स्त्री० [सं० घात] १. नीच कर्म। २. पाप।

घाटिया–पुं० [हिं० घाट] घाट पर बैठकर दान लेनेवाला, ब्राह्मण। गंगापुत्र।

घाटी–स्त्री० [हिं० घाट] दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा।

घात–पुं० [सं०] [वि० घाती] १. प्रहार। चोट। २. वध। हत्या। ३. अहित। बुराई। ४. (गणित में) गुणनफल।

स्त्री० १. सुयोग। दाँव।

मुहा०–घात पर चढ़ना = अभिप्राय-साधन के अनुकूल होना। हत्थे चढ़ना। **घात लगाना** = युक्ति लगाना।

पद–घाते में = (क) मुफ्त में। (ख) प्राप्य के अतिरिक्त। (ग) यों ही। व्यर्थ।

२. आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध कोई कार्य करने के लिए अनुकूल अवसर की खोज। ताक।

मुहा०–घात लगाना = कार्य-सिद्धि का उपयुक्त अवसर देखते रहना।

३. दाँव-पेंच। छल। ४. रंग-ढंग। तरीका।

घातक-वि० [सं०] [स्त्री० घाति १. जो घात करे। घात करनेवाला। (प्रहार या आघात) जिसके कारण द्वारा कोई मर सकता हो या मर (फैटल) जैसे–घातक रोग, घातक प्र

पुं० वह जो किसी को मार डाले।

घातिनी–वि० हिं० 'घाती' का स्त्री०।

घातिया*–वि० पुं० = घातक।

घाती–वि० [सं० घातिन्] [घातिनी] १. घातक। २. नाश करने ३. धोखेबाज। छली।

घान–पुं० [सं० घन = समूह] १. जि एक बार कोल्हू में डालकर पेरा या में पीसा जाय, उतना अंश। २. जितना बार में बनाया या पकाया जाय, उतना अं

पुं० [हिं० घन] प्रहार। चोट।

घाना†*–स० [सं० घात] मारना।

घानी–स्त्री० दे० 'घान'।

घाम–स्त्री० [सं० घर्म] १. धूप। तप। २. कष्ट। विपत्ति।

मुहा०–घाम बचाना या **बराना** कष्टदायक बात से बचना।

घामड़–वि० [हिं० घाम] १. घाम धूप से व्याकुल (चौपाया)। २. मूर्ख

घामरी*–स्त्री० [हिं० घामड़] १. कलता। बेचैनी। २. प्रेम के कारण वाली विह्वलता।

घाय–पुं० दे० 'घाव'।

घायक*–वि० = घातक।

घायल–वि० [हिं० घाय] जिसे घाव हो। आहत। जख्मी। चुटैल।

घाल–पुं० [हिं० घलना] किसी चीज खरीदने-बेचने के बाद, उसी में की सी वह और चीज जो बिना मूल्य दी जाती है। घलुआ।

-पात न गिनना = कुछ भी न या गिनना। तुच्छ समझना।

-पुं० [हिं० घालना] [स्त्री० घालिनी, भाव० घालकता] मारने करनेवाला।

-स० [सं० घटन] १. रखना। २. फेंकना। चलाना। (अस्त्र) नष्ट करना। ४. मार डालना।

-पुं० [हिं० घालना + मेल] १. की वस्तुओं की एक में मिला- २. मेल-जोल।

-पुं० [सं० घात, प्रा० घाअ] १. या चिरा हुआ स्थान। आघात। ३. चोट। क्षत। जख्म।

-घाव पर नमक या नोन = दुःख के समय और भी दुःख घाव पूजना या भरना = घाव होना।

-पुं० [हिं० घाव + पत्ता] एक पत्ते घाव, फोड़े आदि पर हैं।

-पुं० [हिं० घाव + वाला] की चिकित्सा करनेवाला।

-स्त्री० [सं०] वे प्रसिद्ध छोटे उद्भिज चराते हैं। तृण।

-घास-पात या घास-फूस = और वनस्पति। (ख) कूड़ा कर- घास-भूसा = (क) पशुओं का (ख) व्यर्थ की और रद्दी चीज।

-घास काटना, खोदना या = (क) तुच्छ काम करना। (ख) काम करना।

-पुं० [अं० गैस-लाइट] [वि०] १. मिट्टी का तेल। २. तुच्छ, अग्राह्य पदार्थ।

-वि० [हिं० घासलेट + ई (प्रत्य०)] निन्दनीय और निम्न कोटि का। गन्दा।

घाह*-स्त्री० १. दे० 'घाई'। २. दे० 'घाँह'।

घिग्घी-स्त्री० [अनु०] १. लगातार रोने से साँस की रुकावट। हिचकी। २. भय के कारण बोलने में रुकावट।

घिघियाना-अ० [हिं० घिग्घी] करुण स्वर से प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाना।

घिच-पिच-स्त्री० [सं० घृष्ट + पिष्ट] थोड़े स्थान में बहुत-सी वस्तुओं का जमाव। वि० (वह लिखावट) जो बहुत काट-छाँट के कारण अस्पष्ट हो। गिचपिच।

घिन-स्त्री० दे० 'घृणा'।

घिनाना-अ० [हिं० घिन] घृणा करना।

घिनौना†-वि० [हिं० घिन] [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने से मन में घृणा उत्पन्न हो।

घिन्नी-स्त्री० १. दे० 'घिरनी'। २. दे० 'गिन्नी'।

घिय*-पुं० = घी।

घिरत*-पुं० = घृत (घी)।

घिरना-अ० [सं० ग्रहण] १. सब ओर से घेरा या रोका जाना। आवृत्त होना। २. चारो ओर से एक साथ आना।

घिरनी-स्त्री० [सं० घूर्णन] १. गराड़ी। चरखी। २. चक्कर। फेरा।

घिराई-स्त्री० [हिं० घिरना] १. घिरने या घेरने की क्रिया या भाव। २. पशुओं को (घेरकर) चराने की मजदूरी।

घिराव-पुं० [हिं० घेरना] १. घेरने या घिरने की क्रिया या भाव। २. घेरा।

घिरित*-पुं० दे० 'घृत'।

घिर्राना-स० = घसीटना।
अ० = गिड़गिड़ाना।

घिस-घिस-स्त्री० [हिं० घिसना] १. कार्य में शिथिलता या अनुचित विलम्ब। २. व्यर्थ का अनिश्चय।

घिसना-स० [सं० घर्षण] एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दबाकर शीघ्रता से चलाना या फिराना। रगड़ना।

अ० रगड़ खाकर कम होना। छीजना।

घिस-पिस-स्त्री० [हिं० घिसना + पिसना] बहुत अधिक मेल-जोल या पारस्परिक संबंध।

घिसवाना-स० हिं० 'घिसना' का प्रे०।

घिसाई-स्त्री० [हिं० घिसना] घिसने या घिसाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घिस्सा-पुं० [हिं० घिसना] १. रगड़। २. धक्का। टक्कर। ३. कोहनी और कलाई से गरदन पर किया जानेवाला आघात। कुंदा। रद्दा। (पहलवान)

घी-पुं० [सं० घृत, प्रा० घीअ] दूध का वह प्रसिद्ध चिकना सार जो भोजन का मुख्य अंग है। तपाया हुआ मक्खन। घृत।

मुहा०-घी के दीये जलना = (क) मनोरथ सफल होना। (ख) आनन्द-मंगल होना। **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** = (क) खूब सुख-चैन का अवसर मिलना। (ख) खूब लाभ होना।

घी-कुँआर-पुं० [सं० घृतकुमारी] ग्वारपाठा। गोंडपट्ठा।

घीन*-वि० = घृणित।
स्त्री० = घृणा।

घीया-स्त्री० [हिं० घी] एक बेल के फल जिसकी तरकारी बनती है। कद्दू।

घीया-कश-पुं० दे० 'कद्दू-कश'।

घीया-तोरी-स्त्री० [हिं० घीया + तोरी] एक प्रकार की तोरी या फली जिसकी तरकारी बनती है।

घीया पत्थर-पुं० दे० 'गोरा पत्थर'।

घीव*-पुं० = घी (घृत)।

घुँगची†-स्त्री० = घुँघची।

घुँघची-स्त्री० [सं० गुंजा-चिंचिका या कन्नड़ गुरु गुंजि] एक प्रकार की बेल जिसके बीज लाल होते हैं। गुंजा।

घुँघनी-स्त्री० [अनु०] भिगोकर तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।

घुँघराला-वि० [हिं० घुमरना + वाला] [स्त्री० घुँघराली] घूमा हुआ और बल खाया हुआ। छल्लेदार। (बाल)

घुँघरू-पुं० [अनु० घुन घुन] १. पी वह पोली गुरिया जो हिलने से घ बजती है। २. ऐसी गुरियों की चौरासी। मंजीर। ३. ऐसी गुरियों हुआ पैर का गहना।

घुँघुवारा*-वि० दे० 'घुँघराला'।

घुंडी-स्त्री० [सं० ग्रंथि] १. कप गोल बटन। २. पहनने के कड़ों के कि की गाँठ। ३. कोई गोल गाँठ।

घुइयाँ†-स्त्री० = अरवी या अरुई (

घुग्घी-स्त्री० [देश०] १. सिर चादर आदि ओढ़ने का एक प्रकार इस प्रकार ओढ़ने का वस्त्र। घोघी।

घुग्घू-पुं० [सं० घूक] उल्लू पक्षी।

घुघुआ-पुं० = घुग्घू।

घुघुआना-अ० [हिं० घुग्घू] १. का बोलना। २. बिल्ली का गुर्राना।

घुटकना-स० [हिं० घूँट + करना] घूँट घूँट करके पीना। २. निगलना।

घुटना-पुं० [सं० घुंटक] टाँग और के बीच की गाँठ।

अ० [हिं० घोटना] १. साँस रुकना

मुहा०-घुट घुटकर मरना = रुकने के कारण साँसत से मरना।

२. उलझकर कड़ा पड़ जाना। फँ
३. गाँठ या बंधन का दृढ़ होना।

पद-घुटा हुआ = बहुत बड़ा या चालाक।

४. घिसकर चिकना होना। ५. महीन होना। ६. आपस में बहुत घ या मेल-जोल होना।

स० बाँधने, पकड़ने आदि के लिए तरह कसना। बन्धन कड़ा करना। घुटकर बाँधना या पकड़ना।

घुटन्ना-पुं० [हिं० घुटना] पाय

घुटरूँ-पुं० [सं० घुटन्] घुटना।

घुटवाना-स० हिं० 'घोटना' का प्रे०।

[हिं० घुटना] घोटने की
मज़दूरी।
हिं० 'घोटना' का प्रे०।
वि० [हिं० घुटना] घुटनों
(चलना, विशेषतः बच्चों का)
[हिं० घूँट] छोटे बच्चों को दी
घूँटी। विशेष दे० 'जनम-घूँटी'
घुट्टी में पड़ना=स्वभाव में होना।
[सं० घुर] जोर से बोलकर
डाँटना। घुड़की देना।
[हिं० घुड़कना] १. घुड़-
२. डाँट-डपट। फटकार।
घुड़की = झूठ-मूठ डर

दे० 'घुड़-सवार'।
[हिं० घोड़ा + चढ़ना]
वह रीति जिसमें दूल्हा घोड़े
ब्याहने जाता है। २. घुड़-नाल।
की वेश्या जो प्रायः घोड़े पर
में नाचने-गाने जाती हो।
[हिं० घोड़ा + दौड़]
वह दौड़ जिसके लिए हार-जीत
जाती है।
[हिं० घोड़ा + नाल] एक
जो घोड़ों पर चलती थी।
[हिं० घोड़ा + बहल]
घोड़े जुतते हों।
[हिं० घोड़ा + फा० सवार]
] वह जो घोड़े पर
। अश्वारोही।
[हिं० घोड़ा + सवारी]
सवार होने की क्रिया या भाव।
[हिं० घोड़ा + शाला]
। अस्तबल।
दे० 'घोड़िया'।
-पुं० [सं०] १. घुन के
आदि पर बने हुए अक्षरों
चिह्नों का दृष्टान्त। २. अनजान

में ही कोई काम हो या बन जाना।

घुन-पुं० [सं० घुण] एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लगता है।

मुहा०-घुन लगना = अन्दर ही अन्दर किसी वस्तु का क्षीण होना।

घुनना-अ० [हिं० घुन] १. लकड़ी आदि में घुन लगना। २. दोष आदि के कारण अन्दर ही अन्दर क्षीण होना। अन्दर से छीजना।

घुन्ना-वि० [अनु० घुनघुनाना] [स्त्री० घुन्नी] क्रोध, द्वेष आदि भाव मन ही में रखनेवाला। चुप्पा।

घुमंडना*-अ० दे० 'घुमड़ना'।

घुमक्कड़-वि० [हिं० घूमना] बहुत घूमनेवाला। (व्यक्ति)

घुमटा-पुं० [हिं० घूमना] सिर का चक्कर। सिर घूमना।

घुमड़-स्त्री० [हिं० घुमड़ना] बादलों की घेर-घार।

घुमड़ना-अ० [हिं० घूम + अटना] घिरना। उमड़ना। छा जाना। (बादल)

घुमड़ी-स्त्री० [हिं० घूमना] सिर में आनेवाला चक्कर। घुमटा।

घुमरी-स्त्री० = घुमड़ी।

घुमाना-स० [हिं० घूमना] १. घूमने में प्रवृत्त करना। चारो ओर फिराना। २. टहलाना। सैर कराना। ३. मोड़ना। ४. प्रवृत्त करना।

घुमाव-पुं० [हिं० घुमाना] [वि० घुमावदार] चक्कर। मोड़।

मुहा०-घुमाव-फिराव की बात = पेचीली या हेर-फेर की बात।

घुरघुराना-अ० [अनु० घुर घुर] गले से घुर घुर शब्द निकलना।

घुरना*-अ० दे० 'घुलना'।
अ० [सं० घोर] शब्द होना।
अ० [सं० घूर्णन] १. घूमना। २. (आँख) झपकना।
स० शब्द उत्पन्न करना।

घुर-विनिया–स्त्री० [हिं० घूरा + बीनना] कूड़े में से दाने चुनने या गली-कूचों में टूटी-फूटी चीजें चुनने का काम।

घुरमना*-अ० = घूमना।

घुराना*–स० १. = घुलाना। २.=घुमाना।

घुर्मित*–वि० [सं० घूर्णित] घूमता हुआ।

घुलना–अ० [सं० घूर्णन, प्रा० घुलन] १. किसी द्रव वस्तु में अच्छी तरह मिल जाना। हल होना।

मुहा०-घुल-घुलकर बातें करना = खूब मिल-जुलकर बातें करना।

२. पिघलना। ३. पककर पिलपिला होना। ४. रोग या चिन्ता से दुर्बल होना।

मुहा०-घुल घुलकर मरना = बहुत दिनों तक रोग आदि का कष्ट भोगकर मरना।

घुलवाना–स० हिं० 'घोलना' का प्रे०।

घुलाना–स० [हिं० घुलना] १. पिघलाना। २. शरीर दुर्बल करना। ३. यन्त्रणा देना। ४. गरमी या दाब पहुँचाकर नरम करना।

घुलावट–स्त्री० [हिं० घुलना] घुलने या घुलाने की क्रिया या भाव।

घुसड़ना–अ० = घुसना।

घुसना–अ० [सं० कुश = आलिंगन; अथवा घर्षण] १. प्रवेश करना। अन्दर जाना। २. धँसना। ३. बिना अधिकार के कहीं पहुँचना। ४. बात की तह तक पहुँचना।

घुस-पैठ–स्त्री० [हिं० घुसना + पैठना] पहुँच। गति। प्रवेश।

घुसाना–स० [हिं० घुसना] १. अन्दर घुसेड़ना। पैठाना। २. चुभाना। धँसाना।

घुसेड़ना–स० = घुसाना।

घूँघट–पुं० [सं० गुंठ] १. साड़ी का वह खिंचा हुआ भाग जो मुँह ढके रहता है। २. ओट। परदा। ३. सेना का अचानक दाहिने-बाएँ घूम पड़ना।

घूँघर–पुं० [हिं० घुमरना] बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़।

†पुं० दे० 'घूँघट'।

घूँट–पुं० [अनु० घुट घुट] उतना द्रव प जितना एक बार गले के नीचे उतारा

घूँटना–स० [हिं० घूँट] द्रव पदा के नीचे उतारना। पीना।

घूँटा*–पुं० दे० 'घुटना'।

घूँटी–स्त्री० दे० 'घुट्टी'।

घूँसा–पुं० [हिं० घिस्सा] १. मारने के तानी हुई मुट्ठी। मुक्का। २. मुठी का

घूआ–पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० काँस, मूँज आदि के फूल। २. कपास आदि के फूलों में से निकलनेवाला

घूमना–अ० [सं० घूर्णन] १. चारों फिरना। चक्कर खाना। २. किसी ओर मुड़

मुहा०-(किसी पर) घूम पड़ना किसी पर सहसा क्रोध प्रकट करना।

३. व्यायाम, वायु-सेवन आदि के चलना। टहलना। ४. यात्रा करना। ५. में मुड़ना। ६. उन्मत या मतवाला हो

घूमरा†–वि० [हिं० घूमना] १. घूमने या लगानेवाला। २. मतवाला। मस्त।

घूर–पुं० [सं० कूट, हिं० कूरा] कूड़े का ढेर। कतवार।

घूरना–अ० [सं० घूर्णन] बुरे भा आँखें गड़ाकर देखना।

घूरा–पुं० दे० 'घूर'।

अ० = घूमना।

पुं० [अनु०] बँधी हुई हथेली से जानेवाला आघात। मुक्का। घूँसा।

घूस–स्त्री० [देश०] चूहे की तरह पर उससे बड़ा एक जन्तु।

स्त्री० [हिं० घुसना] अपने अनुकूल कराने के लिए अनुचित रीति से जानेवाला द्रव्य। रिशवत। उत्कोच।

यौ०-घूसखोर = घूस खानेवाला।

घृणा–स्त्री० [सं०] बुरी बात या को देखकर उससे दूर रहने की इच्छा भावना। घिन। नफरत।

घृणित–वि० [सं०] घृणा करन योग्य।

घोंघा-पुं० [देश०] [स्त्री० घोंघी] शंख की तरह का एक कीड़ा। शंबुक। वि० १. जिसमें कुछ सार न हो। २. मूर्ख।
यौ०-घोंघा बसंत = परम मूर्ख।

घोंघी-स्त्री० [देश०] १. पत्तों का बना हुआ छाता। २. काड़ी। (दलाल) ३. दे० 'घुग्घी'।

घोंचुआ†-पुं० = घोंसला।

घोंटना-स० १. दे० 'घूँटना'। २. दे० 'घोटना'।

घोंपना-स० [अनु०] जोर से गड़ाना, धँसाना या चुभाना।

घोंसला-पुं० [सं० कुशालय] घास-फूस से बना हुआ पक्षी का घर। नीड़।

घोंसुआ*†-पुं० दे० 'घोंसला'।

घोखना-स० [सं० घुष] बार बार याद करना। रटना। (पाठ)

घोघी-स्त्री० दे० 'घुग्घी'।

घोटक-पुं० [सं०] घोड़ा।

घोटना-स० [सं० घुट] [प्रे० घुटाना, घुटवाना] १. रगड़ना। माँजना। २. महीन पीसना। ३. रगड़कर मिलाना। हल करना। ४. अभ्यास करना। मश्क करना। ५. (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय। ६. उस्तरे से बाल साफ करना। जैसे-दाढ़ी घोटना। पुं० [स्त्री० घोटनी] घोटने का औजार। घोटा।

घोटा-पुं० [हिं० घोटना] १. घोटने की क्रिया या भाव। २. वह डंडा या और कोई उपकरण जिससे कोई चीज घोटी जाय।

घोटाई-स्त्री० [हिं० घोटना + आई (प्रत्य०)] घोटने का काम, भाव या मजदूरी।

घोटाला-पुं० [देश०] घपला। गड़बड़ी।

घोड़साल-स्त्री० दे० 'घुड़साल'।

घोड़ा-पुं० [सं० घोटक, प्रा० घोड़ा] [स्त्री० घोड़ी] १. एक प्रसिद्ध चौपाया जो गाड़ी खींचने और सवारी के काम में आता है। अश्व।
मुहा०-घोड़ा कसना = घोड़े पर जीन कसना। **घोड़ा डालना या फेंकना** = वेग से घोड़ा दौड़ाना। **घोड़ा निकाल-**

ना = घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। **घोड़ा बेचकर सोना** = बे-फिक्र होकर सोना।

२. बंदूक का वह खटका जिसे दबाने से गोली चलती है। ३. दीवार से बाहर निकला हुआ, पत्थर का वह टुकड़ा जो ऊपरी भार सँभालने के लिए लगाया जाता है। ४. शतरंज का एक मोहरा।

घोड़ा-गाड़ी–स्त्री० [हिं० घोड़ा + गाड़ी] वह गाड़ी जिसे घोड़े खींचते हैं।

घोड़ा-नस–स्त्री० [हिं० घोड़ा + नस] एँड़ी के पीछे की मोटी नस। कूँच। पै।

घोड़िया–स्त्री० [हिं० घोड़ी + इया (प्रत्य०)] छज्जे का भार सँभालनेवाला पत्थर। विशेष दे० 'घोड़ा' ३.।

घोड़ी–स्त्री० [हिं० घोड़ा] १. घोड़े की मादा। २. विवाह के समय वर का घोड़ी पर चढ़कर कन्या पक्ष के यहाँ जाना। ३. इस अवसर पर वर-पक्ष की ओर से गाये जानेवाले गीत। ४. दे० 'घोड़िया'।

घोर–वि० [सं०] १. भयंकर। विकराल। २. सघन। ३. दुर्गम। कठिन। ४. बहुत अधिक। ५. गंभीर और भयानक।

पुं० १. गरजना। ध्वनि।

†पुं० दे० 'घोड़ा'।

*पुं० दे० 'घोल'।

घोरना*–अ० [सं० घोर] भारी शब्द करना। गरजना।

स० दे० 'घोलना'।

घोरा†–पुं० = घोड़ा।

घोरिला*†–पुं० [हिं० घोड़ा] के खेलने का काठ आदि का घोड़ा।

घोल–पुं० [हिं० घोलना] १. जिसमें कोई चीज घोली गई हो। मठा। छाछ।

घोलना–स० [हिं० घुलना] अन्य द्रव पदार्थ में चूर्ण आदि मिलाना। हल करना।

घोष–पुं० [सं०] १. अहीरों की २. अहीर। ३. गोशाला। ४. नाद। ५. जोर से की हुई पुकार। या घोर शब्द। गर्जन। गरज। ६. सिद्धान्त, पक्ष या दल की वह पुकार जो लोगों को अपनी ओर आकृष्ट लिए होती है। नारा। (स्लोगन)

घोषणा–स्त्री० [सं०] १. उच्च हुई सूचना। २. सार्वजनिक रूप से हुई राजाज्ञा आदि। (प्रोक्लेमेशन मुनादी। डुग्गी। ४. दे० 'विख्या

यौ०–घोषणापत्र = वह पत्र जि साधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा लिखी हो।

५. गर्जन। ६. ध्वनि। शब्द। अ

घोसी–पुं० [सं० घोष] अहीर।

घौद–पुं० [देश०] एक डंठल में साथ फलनेवाले बहुत से फलों का जैसे–केलों का घौद।

घौर†–पुं० दे० 'घौद'।

घ्राण–पुं०[सं०] [वि०घ्रेय] १. सूँघने की नाक। २. सूँघने की शक्ति। ३.

ङ

ङ–देव-नागरी वर्ण-माला में कंठ और नासिका से उच्चरित होनेवाला क-वर्ग का अन्तिम व्यंजन अक्षर।

च

च–देव-नागरी वर्ण-माला का छठा व्यंजन वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चंक–पुं० [सं० चक्र] सारा। पूरा।

चंक्रमण–पुं० [सं०] टहलना।

] डफ की तरह का एक

चंद्रमा] १. पतंग। गुड्डी।

चढ़ना या उमहना = की वृद्धि होना। खूब चढ़ती

पर चढ़ाना = किसी का उसे अपने अनुकूल करना।

कलंकपूर्ण चर्चा। बदनामी।

[हिं० चंगा या फा० तंग] खींचना।

[सं० चंग] [स्त्री० चंगी] १. । २. अच्छा। बढ़िया।

दे० 'चंगुल'।

[हिं० चौ = चार + अंगुल] १. ओं का मुड़ा हुआ पंजा। की वह मुद्रा जो उँगलियों पकड़ने के समय होती है।

गुल में फँसना = वश में आना।

[सं० चंगोरिक] १. बाँस की या डलिया। डगरी। २. जिसमें बच्चों को सुलाकर पालने हैं।

दे० 'चँगेर'।

दे० 'चंचु'।

[सं०] १. भ्रमर की मादा। । २. एक प्रकार का वर्ण- । ३. छब्बीस मात्राओं के एक छन्द । ४. होली में गाया जानेवाला गीत।

पुं० [सं०] भौंरा।

[सं०] [स्त्री० चंचला,] १. जो स्थिर न रहकर रहे। चलायमान। अस्थिर। । २. एकाग्र न रहनेवाला। । ३. घबराया हुआ। उद्विग्न। । ५. चुलबुला। चंचल।

स्त्री० [सं०] १. अस्थिरता। २. चपलता। ३. नटखटी। शरारत।

चंचलताई*–स्त्री० दे० 'चंचलता'।

चंचला–स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. बिजली।

चंचलाई*–स्त्री० = चंचलता।

चंचु–पुं० [सं०] १. चेंच नाम का साग। २. मृग। हिरन।

स्त्री० चिड़ियों की चोंच।

चंट–वि० [सं० चंड] चालाक। धूर्त्त।

चंड–वि० [सं०] [स्त्री० चंडा] [भाव० चंडता] १. तेज। तीक्ष्ण। २. उग्र। प्रखर। ३. जिसे दबाना कठिन हो। दुर्दमनीय। ४. कठोर। कठिन। ५. उद्धत। ६. क्रोधी।

पुं० १. ताप। गरमी। २. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था।

चंडकर–पुं० [सं०] सूर्य।

चंडांशु–पुं० [सं०] सूर्य्य।

चँड़ाई*–स्त्री० [सं० चंड = तेज] १. शीघ्रता। जल्दी। २. प्रबलता। ३. ऊधम। उपद्रव। ४. अत्याचार।

चंडाल–पुं० दे० 'चांडाल'।

चंडालिका–स्त्री० [सं०] १. प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा। २. दुर्गा का एक नाम।

चंडालिनी–स्त्री० [सं०] १. चंडाल वर्ण की स्त्री। २. दुष्टा या पापिनी स्त्री।

चंडावल–पुं० [सं० चंड + अवलि] १. 'हरावल' का उलटा। सेना के पीछे का भाग। २. वीर सिपाही। ३. सन्तरी।

चंडिका–स्त्री० दे० 'चंडी'।

चंडी–स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. कर्कशा और दुष्ट स्त्री।

चंडू–पुं० [सं० चंड = तीक्ष्ण] अफीम का वह किवाम जो नशे के लिए तमाकू की तरह पीते हैं।

चंडूखाना–पुं० [हिं० चंडू + फा० खानः] वह स्थान जहाँ लोग चंडू पीते हैं।

मुहा०-चंडू-खाने की गप = नशेबाजों की झूठी बकवाद। बिलकुल झूठ बात।

चंडूबाज-पुं० [हिं० चंडू + फा० बाज (प्रत्य०)] चंडू पीनेवाला।

चंडूल-पुं० [देश०] १. खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया। २. परम मूर्ख।

चंडोल-पुं० [सं० चन्द्र + दोल] एक प्रकार की पालकी।

चंद-पु० दे० 'चंद्र'।

वि० [फा०] थोड़े से। कुछ।

चंदक-पुं० [सं० चन्द्र] चन्द्रमा। स्त्री० १. चाँदनी। २. माथे पर पहनने का एक गहना। ३. गहनों में चन्द्रमा या पान के आकार की बनावट।

चंद-चूर*-पुं० दे० 'चंद्र-चूड़'।

चंदन-पुं० [सं०] १. एक पेड़ जिसके हीर की लकड़ी सुगंधित होती है। श्रीखंड। संदल (सैंडल)। २. इस वृक्ष की लकड़ी का टुकड़ा जिसे घिसकर शरीर पर लेप लगाते हैं। ३. पानी से उक्त लकड़ी को घिसकर तैयार किया हुआ लेप।

मुहा०-किसी के मुँह पर चन्दन पोतना = किसी की कीर्त्ति पर कलंक लगाना। कालिख पोतना। (व्यंग्य)

चंदनगिरि-पुं० [सं०] मलयाचल।

चंदनहार-पुं० = चंद्रहार।

चंदना-पुं० दे० 'चंद्रमा'।

चंदनी-वि० [हिं० चंदन + ई (प्रत्य०)] १. चंदन सम्बन्धी। चन्दन का। २. चन्दन का बना हुआ। ३. चंदन के रंग का कुछ कुछ लाली लिये हुए भूरा।

पुं० एक प्रकार का रंग जो कुछ लाली लिये हुए भूरा होता है।

स्त्री० दे० 'चाँदनी'।

चँदनौता-पुं० [हिं० चन्द्र] एक प्रकार का लँहगा।

चँदराना-अ० [हिं० चन्द्र] १. चन्द्रमा के प्रभाव से युक्त होने के कारण पागल होना। सनकना। २. जान-बूझकर बनना।

स० १. किसी को झूठा बनाना। २. धोखे में डालना। चकमा दे काना।

चँदला-वि० [हिं० चाँद = जिसके सिर या चाँद के बाल उड़ गंजा।

चँदवा-पुं० [सं० चन्द्र या कपड़े, फूलों आदि का छोटा मंडप पुं० [सं० चन्द्रक] १. गोल २. मोर की पूँछ पर का अर्द्ध-चन्द्राका

चंदसिरी-स्त्री० [सं० चन्द्र + श्री बड़ा गहना जो हाथियों के मस्त पहनाया जाता है।

चंदा-पुं० [सं० चंद या चन्द्र] १. २. पीतल आदि की गोल चद्दर पुं० [फा० चंद = कई एक] १. करके दान रूप में कई आदमियों आर्थिक सहायता। २. किसी आदि का वार्षिक मूल्य। ३. को उसके सदस्यों से नियत समय पर मित रूप से मिलनेवाला धन। (क्रिप्शन) ४. किसी प्रकार कराने पर उसके लिए समय समय जानेवाला धन। (प्रीमियम)

चंदा मामा-पुं० [हिं० चंदा = चन्द्र मामा] बच्चों का एक प्रिय शब्द लिए चन्द्रमा का वाचक होता है।

चंदावल-पुं० दे० 'चंडावल'।

चंदिका-स्त्री० दे० 'चंद्रिका'।

चंदिनि*-स्त्री० दे० 'चाँदनी'।

चंदेल-पुं० [सं०] क्षत्रियों की एक

चँदोआ-पुं० दे० 'चँदवा'।

चंद्र-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. एक की संख्या का सूचक शब्द। ३. पूँछ पर का चन्द्राकार चिह्न। ४. कपूर जल। ६. सोना। सुवर्ण। ७.

जानेवाली बिन्दी ।
[सं०] १. चन्द्रमा । २.
। ३. मोर के पर की
।
[सं०] १. चन्द्र-मंडल
। २. चन्द्रमा की ज्योति।
का एक गहना ।
[सं०] एक कल्पित रत्न
कहा जाता है कि वह
रखने पर पसीजता है ।
[सं०] १. चन्द्रमा की
। रात ।
[सं०] चन्द्रमा का ग्रहण
में उसके पड़ने के कारण
।
[सं०] शिव ।
[सं०] रात के समय चन्द्र मा
दिखाई देनेवाला इन्द्र-धनुष ।
[सं०] शिव ।
दे० 'चंद्रकांत' ।
[सं०] चन्द्रमा की
। चन्द्रिका ।
दे० 'बीर-बहूटी' ।
[सं०] एक प्रकार का बाण
अर्द्ध-चन्द्राकार होता था ।
[सं०] चन्द्रमा का मंडल ।
[सं०] शिव ।
[सं०] चन्द्रकांत मणि ।
[सं० चन्द्रमस्] रात को प्रकाश
उपग्रह जो सूर्य के प्रकाश के
चमकता है । चाँद । शशि ।
पुं० [सं० चन्द्रमुखिन्]
समान सुन्दर मुखवाला । परम
।
[सं० चंद्रमुख + हिं० प्रत्य० ई]
समान सुन्दर मुखवाली । परम

चंद्रमौलि-पुं० [सं०] शिव ।

चंद्र-रेखा(लेखा)-स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा की कला या किरण। २. द्वितीया का चन्द्रमा।

चंद्र-वंश-पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो आदि कुलों में से एक। (दूसरा सूर्य-वंश है।)

चंद्र-वदन-वि० [सं०] [स्त्री० चन्द्र-वदनी] चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाला। परम रूपवान।

चंद्रवार-पुं० [सं०] सोमवार।

चंद्र-बिंदु-पुं० [सं०] अर्द्ध-अनुस्वार की सूचक बिन्दी जिसका रूप यह ँ है।

चंद्र-शाला-स्त्री० [सं०] १. चाँदनी। चन्द्रमा का प्रकाश। २. घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।

चंद्रशेखर-पुं० [सं०] शिव।

चंद्र हार-पुं० [सं०] १. एक प्रकार की माला या हार। नौ-लखा हार। २. एक प्रकार की आतशबाजी।

चंद्रहास-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा का प्रकाश। २. खड्ग। तलवार।

चंद्रा-स्त्री० [सं०] मरने के समय आँखों की वह अवस्था, जब टकटकी बँध जाती है।

चंद्रातप-पुं० [सं०] १. चाँदनी। चन्द्रिका। २. चँदवा।

चंद्रार्क-पुं० [सं०] चाँदी और ताँबे या सोने के योग से बनी एक मिश्रित धातु।

चंद्रिका-स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी। कौमुदी। २. मोर की पूँछ पर का गोल चिह्न। ३. माथे पर पहनने का एक गहना। बेंदी। बेंदा।

चंद्रोदय-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा का उदय होना। २. वैद्यक में एक रस।

चंपई-वि० [हिं० चंपा] चंपा के फूल के रंग का। पीला।

चंपक-पुं० [सं०] १. चम्पा का फूल। २. चंपा केला।

चंपत-वि० [देश०] गायब। अन्तर्द्धान।

चँपना-अ० [सं० चंप्] १. बोझ से

दबना। २. गुण, बल या उपकार आदि के सामने दबना।

चंपा–पुं० [सं० चंपक] १. एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के सुगन्धित फूल लगते हैं। २. एक पुरी जो अंग देश की राजधानी थी। ३. एक प्रकार का बढ़िया केला। ४. एक प्रकार का घोड़ा।

चंपा-कली–स्त्री० [हिं० चंपा + कली] गले में पहनने का एक गहना।

चंपारण्य–पुं० [सं०] वह भू-भाग जिसे आज-कल चम्पारन कहते हैं।

चंपी–स्त्री० दे० 'मुक्की'।

चंपू–पुं० [सं०] गद्य-पद्य मिश्रित काव्य।

चंबल–स्त्री० [सं० चर्मण्वती] १. मध्य भारत की एक नदी। २. पानी की बाढ़।

चँवर–पुं० [सं० चामर] [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १. सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो डंडी में बाँधकर राजाओं या देव-मूर्त्तियों के ऊपर डुलाया जाता है।

मुहा०–चँवर ढालना या डुलाना = देव-मूर्त्तियों, राजाओं आदि के सिर के ऊपर और इधर-उधर चँवर हिलाना।

२. घोड़ों आदि के सिर पर लगाई जानेवाली कलंगी। ३. झालर।

चँवर-ढार–पुं० [हिं० चँवर + ढारना] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चउरिंदी*–वि० [सं० चतुरींद्रिय] जिसे चार इन्द्रियाँ हों। चार इन्द्रियोंवाला।

चउहट्ट*–पुं० = चौहट्टा।

चउहा*–वि० [हिं० चौ = चार + हा (प्रत्य०)] चार या चारो प्रकार का।

क्रि० वि० १. चार या चारो प्रकार से। २. दे० 'चहूँधा'।

चक–पुं० [सं० चक्र] १. चक्रवाक। चकवा पक्षी। २. चक्र नामक अस्त्र। ३. पहिया। ४. जमीन का बड़ा टुकड़ा। ५. छोटा गाँव।

वि० भरपूर। यथेष्ट।

वि० [सं०] चकपकाया हुआ।

चकई–स्त्री० [हिं० चकवा] माद मादा सुरखाब।

स्त्री० [सं० चक्र] गड़ारी के एक खिलौना जिसे लपेटे हुए सहायता से घुमाते हैं।

चकचकाना–अ० [अनु०] १. पदार्थ का रसकर ऊपर या बाहर २. भींगना।

चकचाना†*–अ० दे० 'चौंधियाना

चक-चाल*–स्त्री० [सं० चक्र + हिं चक्कर। फेरा।

चकचाव†*–पुं० [अनु०] चक

चकचून (र)–वि० [सं० चक्र चूर किया हुआ। चकनाचूर।

चकचूरना*–स० [हिं० चकचूर] करना। चकनाचूर करना।

चकचोह*–स्त्री० [अनु०] [वि० हँसी-ठट्ठा। चुहल।

चकचौंध–स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चकचौंधना*–अ० [सं० चक्षु चकाचौंध होना।

स० चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंह*–स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चकचौहना–अ० [देश०] दृष्टि से देखना।

चकचौहाँ–वि० [देश०] १. उत्पन्न करनेवाला। २. देखने योग्य।

चक-डोर–स्त्री० [हिं० चक्र + चकई नाम का खिलौना।

चकती–स्त्री० [सं० चक्रवत्] १. कपड़े आदि का गोल या चौ टुकड़ा। २. पैबन्द। थिगली।

मुहा०–बादल में चकती लग असम्भव कार्य करने का प्रयत्न कर

चकत्ता–पुं० [सं० चक्र + वर्त विकार आदि के कारण शरीर पर गोल दाग या सूजन। ददोरा।

चगताई] १. तातार अमीर
जिसके वंश में बाबर, अकबर
हुए थे। २. चगताई वंश का पुरुष।
राजा। महाराज। बादशाह।
[सं० चक = भ्रांत] १.
भौचक्का होना। २. चौंकना।
[हिं० चक = भरपूर +
जो बिलकुल टुकड़े-टुकड़े हो
चूर। २. बहुत थका हुआ।
[सं० चक] चकित।

[सं० चक = भ्रांत] १.
इधर-उधर देखना। भौचक्का
चौंकना।
[हिं० चक्र + फेरा] किसी
ओर घूमने की क्रिया या भाव।
[हिं० चक + बाँटना]
बाँटने का वह प्रकार,
अलग अलग नहीं बाँटा
कई खेत अलग अलग
से बाँटे जाते हैं।
[हिं० चक + फा० बंदी]
भागों या चकों में बाँटना।
के कई खेतों को एक में
एक चक बनाना।
दे० 'चकपक'।
[तु०] एक प्रकार का पत्थर,
पड़ने से आग निकलती है।
[सं० चक्र=भ्रांत] भुलावा।

दे० 'चकवा'।
[सं० चक्र] [स्त्री० चकरी]
।
चकरा।
'चक्कर'। २. दे० 'चकला'।
[सं० चक्र] १. (सिर
खाना या घूमना। २. चक्कर
। भ्रांत होना। ३. चकपकाना। चकित होना।

स० चकित करना।

चकरी-स्त्री० [सं० चक्री] १. एक प्रकार की छोटी चक्की। २. चकई। (खिलौना)

चकलई*-स्त्री० = चौड़ाई।

चकला-पुं० [सं० चक्र, हिं० चक + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० चकली] १. पत्थर या काठ का वह गोल पाटा जिसपर रोटी, पूरी आदि बेलते हैं। चौका। २. भूमि-खंड। इलाका। ३. वेश्याओं का बाजार।

वि० [स्त्री० चकली] चौड़ा।

चकलेदार-पुं० [हिं० चकला] किसी भूमि-खंड या चकले का कर संग्रह करनेवाला।

चकल्लस-स्त्री० [अनु० चक] १. झगड़ा-बखेड़ा। झंझट। २. चार मित्रों में बैठकर हँसी-मजाक करना।

चकवँड़-पुं० [सं० चक्रमर्दक] एक प्रकार का जंगली बरसाती पौधा।

चकवा-पुं० [सं० चक्रवाक] [स्त्री० चकवी, चकई] एक जल-पक्षी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह रात को अपने जोड़े से दूर हो जाता है। सुरखाब।

चकवाना†*-अ० दे० 'चकपकाना'।

चकवार*-पुं० दे० 'कछुआ'।

चकवाह*-पुं० दे० 'चकवा'।

चकवै*-पुं० १. दे० 'चक्रवर्त्ती' (राजा)। २. दे० 'चकोर'।

चकहा†*-पुं० दे० 'पहिया'।

चका†*-पुं० [सं० चक्र] १. पहिया। २. चकवा पक्षी।

चकाचक-वि० [अनु०] १. चटकीला। २. मजेदार।

क्रि० वि० बहुत। भर-पूर।

चकाचौंध-स्त्री० [सं० चक् = चमकना + चौ=चारों ओर + अंध] बहुत तेज चमक से आँखों में होनेवाली झपक। तिलमिली।

चकाना*-अ० दे० 'चकपकाना'।

चकाबू-पुं० १. दे० 'चक्रव्यूह'। २. दे०

'भूल-भुलैयाँ'।

चकासना*-अ० दे० 'चमकना'।

चकित-वि० [सं०] [स्त्री० चकिता] १. चकपकाया हुआ। विस्मित। हक्का-बक्का। २. घबराया हुआ। ३. सशंकित।

चकिताई*-स्त्री० [हिं० चकित] चकित होने की क्रिया या भाव। आश्चर्य।

चकुला†*-पुं० [देश०] चिड़िया का बच्चा। चेंटुआ।

चकृत*-वि० दे० 'चकित'।

चकेंड़ी-स्त्री० [सं० चक्रभाण्डिका, प्रा० चक्रहंडिया] मिट्टी की वह हाँड़ी जिसमें पानी भरकर कुम्हार अपने चाक के पास रक्खे रहते हैं।

चकेवा-पुं० = चकवा।

चकेवै-वि० दे० 'चक्रवै' १.।

चकैया-वि० [हिं० चाक या चकई] चाक या चकई की तरह गोल।

*स्त्री० दे० 'चकई'।

चकोटना-स० [हिं० चिकोटी] चुटकी या चिकोटी काटना।

चकोतरा-पुं० [सं० चक्र = गोला] एक प्रकार का बड़ा नीबू।

चकोर-पुं० [सं०] [स्त्री० चकोरी, चकोरिया] एक प्रकार का तीतर जो चन्द्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला माना जाता है।

चकौंध*-स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चक्क-पुं० [सं० चक्र] १. चक्रवाक पक्षी। २. कुम्हार का चाक। ३. दिशा। ओर। ४. दे० 'चक'।

वि० १. बहुत अधिक। २. बहुत बढ़िया।

चक्कर-पुं० [सं० चक्र] १. पहिये की तरह (घूमनेवाली) कोई गोल वस्तु। चाक। २. गोल घेरा। मंडल। ३. गोलाई में घूमना। परिक्रमा। फेरा। ४. पहिये की तरह अक्ष पर घूमना।

मुहा०-चक्कर काटना = चारो ओर घूमना। मँडराना। **चक्कर खाना** = पहिये की तरह घूमना। (ख) हैरान होना।

५. रास्ते का घुमाव-फिराव। फेर। हैरानी। ७. बखेड़ा। झंझट।

मुहा०-किसी के चक्कर में आना पड़ना = किसी के धोखे में फँसना।

८. सिर घूमना। घुमटा।

चक्कवइ*-वि० दे० 'चक्रवर्त्ती'।

चक्का-पुं० [सं० चक्र, प्रा० पहिया। २. पहिये के आकार की वस्तु। ३. कोई ठोस बड़ा टुकड़ा।

चक्की-स्त्री० [सं० चक्री] आय पीसने का पत्थर का यंत्र। जाँता।

मुहा०-चक्की पीसना = कठोर का काम करना।

चक्खी-स्त्री० [हिं० चखना] थोड़ा खाने के लिए कोई स्वादिष्ट चीज। चाट।

चक्र-पुं० [सं०] [विं० चक्रीय] १. गोल (वर्त्तुल) चीज जो प्रायः हो या घूमती रहने के लिए बनाई जैसे-गाड़ी का पहिया, आटा पीसने की या कुम्हार का चाक जिसपर मिट्टी के बनते हैं। २. फेरा। चक्कर। ३. समय जितने में कुछ विशिष्ट घटनाएँ क्रम से होती हैं और फिर उतने ही में जिनकी पुनरावृत्ति होती है। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार जो छोटे पहिये के आकार का ५. योग के अनुसार शरीर में के या विशिष्ट स्थान जो आधुनिक अनुसार कुछ विशिष्ट जीवन-रक्षिणी के आस-पास पड़ते हैं। इनके नाम विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, मूलाधार, चक्र, स्वाधिष्ठान और सहस्रार। विशेष प्रकार या वर्ग के लोगों मंडली। ७. चुपचाप एक जगह

चक्र का। २. चक्र की तरह घूम-घूम या रह-रहकर बार बार होनेवाला। (साइक्लिक)

चक्षु-पुं० [सं० चक्षुस्] आँख। नेत्र।

चक्षुरिंद्रिय-स्त्री० [सं०] नेत्र। आँख।

चख*-पुं० [सं० चक्षुस्] आँख।

चख-चख-स्त्री० [अनु०] तकरार। कलह।

चखचौंध-स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चखना-स० [सं० चष] थोड़ा खाकर स्वाद देखना।

चखाचखी-स्त्री० [हिं० चख = झगड़ा] १. लाग-डाँट। प्रतियोगिता। २. दे० 'चख-चख'।

चखाना-स० [हिं० 'चखना' का प्रे०] स्वाद का परिचय कराना।

चखु*-पुं० दे० 'चक्षु'।

चखोड़ा*-पुं० दे० 'डिठौना'।

चगड़-वि० [देश०] चतुर। चालाक।

चगताई-पुं० [तु०] तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश ! विशेष दे० 'चकत्ता'।

चगर-पुं० [?] बाज की तरह की एक शिकारी चिड़िया।

चचा-पुं० दे० 'चाचा'।

चचिया-वि० [हिं० चाचा] सम्बन्ध में चाचा के स्थान पर पड़नेवाला। जैसे-चचिया ससुर।

चचेरा-वि० [हिं० चचा] १. चाचा से उत्पन्न। जैसे-चचेरा भाई। २. चाचा के विचार से संबद्ध। जैसे-चचेरी सास।

चचोड़ना-स० [अनु०] दाँत से नोच या खींचकर खाना।

चट-क्रि० वि० [सं० चटुल = चंचल] जल्दी से। झट। तुरन्त।

स्त्री० [अनु०] शीशे, हड्डी आदि के टूटने का शब्द।

वि० [हिं० चाटना] चाट-पोंछकर खाया हुआ।

मुहा०-चट कर जाना=सब खा जाना।

चटक-पुं० [सं०] [स्त्री० चटका]

गौरैया। चिड़ा। (पक्षी)

स्त्री० [सं० चटुल = सुन्दर] १. चटकीलापन। चमक-दमक। २. शोभा। छटा।

†वि० १. चटकीला। २. फुर्त्तीला।

स्त्री० [सं० चटुल] तेजी। फुरती।

वि० चटपटा। चटकारा।

चटकदार-वि० दे० 'चटकीला'।

चटकना-अ० दे० 'चिटकना'।

†पुं० [अनु० चट] तमाचा। थप्पड़।

चटक-मटक-स्त्री० [हिं० चटक + मटक] १. बनाव-सिंगार। २. नाज-नखरा।

चटकाई*-स्त्री० [हिं० चटक] चटकीलापन।

चटकाना-स० [अनु० चट] १. किसी वस्तु को चटकने में प्रवृत्त करना। तोड़ना। २. ऐसा करना जिसमें 'चट चट' शब्द हो।

मुहा०-जूतियाँ चटकाना = व्यर्थ इधर-उधर मारा मारा फिरना।

३. अलग या दूर करना। ४. चिढ़ाना।

चटकारा*-वि० १. दे० 'चटपटा'। २. दे० 'चटकीला'।

चटकाली-स्त्री० [सं० चटक + आलि] चिड़ियों की पंक्ति या समूह।

चटकीला-वि० [हिं० चटक + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चटकीली] १. जिसका रंग तेज हो। शोख। भड़कीला। २. चमकीला। चमकदार। ३. चटपटा।

चटकोरा पुं० [देश०] एक प्रकार का खिलौना।

चटखना-अ०, पुं० दे० 'चटकना'।

चट-चट-स्त्री० [अनु०] किसी चीज के चटकने आदि के कारण होनेवाला चट चट शब्द।

चटचटाना-अ० [सं० चट = भेदन] चट-चट करते हुए टूटना, फूटना या जलना।

चट-चेटक-पुं० [सं० चेटक] इन्द्रजाल।

चटनी-स्त्री० [हिं० चाटना] १. वह चीज जो चाटकर खाई जाय। अवलेह। २. भोजन के साथ चाटने की गीली चटपटी वस्तु।

चटपट-क्रि० वि० [अनु०] तुरन्त।

चटपटा-वि० [हिं० चाट] [स्त्री० च
मिर्च, मसाले आदि से युक्त और
मजेदार।

चटपटाना*-अ० दे० 'छटपटाना'।

चटपटी-स्त्री० [हिं० चटपट] [
पटिया] १. उतावली। व्यग्रता।
कुलता। घबराहट।

चटवाना-स० हिं० 'चाटना' का प्रे०।

चट-शाला-स्त्री० दे० 'चटसार'।

चटसार*-स्त्री० [हिं० चट्टा =
सार = शाला] पाठशाला। विद्याल
चटाई-स्त्री० [सं० चट = चटाई]
सींक आदि का बना हुआ बिछावन।
स्त्री० [हिं० चाटना] चाटने या
की क्रिया या भाव।

चटाक-पुं० [हिं० चटकना अनु०]
गिरने, टूटने आदि के कारण हो
(चट) शब्द।

यौ०-चटाक-पटाक=चटपट।
क्रि० वि० १. चट शब्द उत्पन्न करते
२. चटपट। तुरन्त।

चटाना-स० [हिं० चाटना का प्रे०
चाटने में प्रवृत्त करना। २. थोड़ा
खिलाना। ३. घूस या रिशवत के
किसी को कुछ देना। ४. छुरी,
आदि की धार तेज करना।

चटापटी-स्त्री० [हिं० चटपट] १.
२. महामारी आदि, जिनमें लोग
मर जाते हैं।

चटावन-पुं० [हिं चटाना] अन्न-प्र

चटिक*-क्रि० वि० [हिं० चट]

चटियल-वि० [देश०] जिसमें पे
न हों। निचाट। (मैदान)

चटिया*-पुं० [हिं० चटशाला]
की चटशाला में पढ़ा हुआ। चेला। शिष्य

चट्टी-स्त्री० दे० 'चटसार'।

चढ़ना—अ० [सं० उच्चलन] १. ऊपर की ओर जाना। चढ़ाई या ऊँचाई की तरफ जाना।

मुहा०—चढ़ बनना = सफलता मिलने या बात रह जाने के कारण डींग हाँकने का अवसर मिलना।

२. ऊपर की ओर सिकुड़ना। ३. ऊपर से मढ़ा जाना। ४. उन्नति करना। ५. (नदी या पानी का) तल ऊँचा होना या बढ़ना। ६. धावा या चढ़ाई होना। ७. महँगा होना। दाम या भाव बढ़ना। ८. बाजों आदि के कसे होने के कारण उनका सुर ऊँचा होना। ९. देवता आदि को भेंट दिया जाना। १०. सवार होना। ११. संवत्, मास, नक्षत्र आदि आरम्भ होना। १२. खाते आदि में लिखा जाना। टँकना। दर्ज होना। १३. पकने के लिए चूल्हे पर रक्खा जाना। १४. देन, भार आदि के रूप में किसी के ऊपर होना या आना।

चढ़वाना—स० [हिं० 'चढ़ाना' का प्रे०] चढ़ने या चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

चढ़ाई—स्त्री० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऊँचाई की ओर जानेवाली भूमि। ३. धावा। आक्रमण।

चढ़ा-ऊपरी—स्त्री० [हिं० चढ़ना + ऊपर] किसी को पीछे करके आप उससे आगे बढ़ने का प्रयत्न। प्रतियोगिता। लाग-डाँट। होड़।

चढ़ाना—स० [हिं० 'चढ़ना' का प्रे०] १. हिं० 'चढ़ना' का स०। चढ़ाई या ऊपर की ओर ले जाना। २. भेंट के रूप में देना। ३. पीना। ४. पद, मर्यादा, वर्ग आदि में बढ़ाना या ऊपर पहुँचाना। ५. दाम बढ़ाना। ६. खाते, हिसाब आदि में लिखना। ७. देन, भार आदि के रूप में किसी के ऊपर रखना या लगाना। ८. किसी के ऊपर बैठाना या रखना। जैसे—सवारी या माल चढ़ाना। ९. किसी में कुछ

अभिमान उत्पन्न करना । बढ़ाना ।

चढ़ाव-पुं० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने या चढ़ाने की क्रिया या भाव ।

यौ०-चढ़ाव-उतार=ऊँचा-नीचा स्थान ।

२. तेजी । महँगी । ३. वृद्धि । बढ़ती ।

यौ०-चढ़ाव-उतार = एक ओर मोटे और दूसरी ओर पतले होने का भाव । गावदुमी आकृति ।

४. वह दिशा जिधर से जल की धारा बहकर आती हो । 'बहाव' का उलटा ।

५. दे० 'चढ़ावा' ।

चढ़ावा-पुं० [हिं० चढ़ना] १. विवाह के दिन दूल्हे की ओर से दुलहिन के लिए दिये जानेवाले गहने । २. देवता पर चढ़ाई जानेवाली सामग्री । पुजापा । ३. उत्तेजना । बढ़ावा ।

चढ़ैया*-वि० [हिं०चढ़ान + ऐया(प्रत्य०)] चढ़ने या चढ़ानेवाला ।

चणक-पुं० [सं०] चना ।

चतर*-पुं० दे० 'छत्र' ।

चतुःसीमा-स्त्री० [सं०] किसी भवन या क्षेत्र आदि के चारो ओर की सीमा । चौहद्दी । (एब्बटल)

चतुरंग-पुं० [सं०] १. सेना के ये चार अंग-हाथी, घोड़े, रथ और पैदल । २. चतुरंगिणी सेना । ३. शतरज ।

चतुरंगिणी-स्त्री० [सं०] हाथी, घोड़े, रथ और पैदल इन चार अंगोंवाली सेना । अक्षौहिणी । (विशेष दे० 'अक्षौहिणी')

चतुर-वि० [सं०] [स्त्री० चतुरा] [भाव० चतुरता, चतुराई] १. बुद्धिमान् । २. व्यवहार-कुशल । ३. निपुण । दक्ष । ४. धूर्त्त । चालाक ।

चतुरा*-वि० दे० 'चतुर' ।

पुं० साहित्य में एक प्रकार का नायक ।

चतुराई-स्त्री० [हिं०चतुर + आई (प्रत्य०)] १. चतुरता । २. चालाकी । धूर्त्तता ।

चतुरानन-पुं० [सं०] ब्रह्मा जिनके चार मुँह माने जाते हैं ।

चतुर्थ-वि० [सं०] चौथा ।

चतुर्थांश-पुं० [सं०] चौथाई ।

चतुर्थी-स्त्री० [सं०] किसी पक्ष
तिथि । चौथ ।

चतुर्दशी-स्त्री० [सं०] पक्ष की
तिथि । चौदस ।

चतुर्दिक्-क्रि० वि० [सं०] चारो

चतुर्भुज-वि० [सं०] [स्त्री०
जिसकी या जिसमें चार भुजाएँ हों ।
भुजाओंवाला ।

पुं० १.विष्णु । २.चार भुजाओंवाला

चतुर्भुजी-वि० दे० 'चतुर्भुज' ।

चतुर्मास-पुं० = चातुर्मास ।

चतुर्मुख-पु० [स०] ब्रह्मा ।

क्रि० वि० चारो ओर ।

चतुर्युगी-स्त्री० [सं०] चारो
समूह या समय । ४३२००००
समय । चौकड़ी ।

चतुर्वर्ग-पुं० [सं०] अर्थ, धर्म,
मोक्ष, ये चारो पदार्थ ।

चतुर्वर्ण-पुं० [सं०] ब्राह्मण,
वैश्य और शूद्र ।

चतुर्वेदी-पुं० [सं० चतुर्वेदिन्]
वेदों का ज्ञाता । २. ब्राह्मणों का

चतुष्कल-वि० [सं०] जिसमें
या मात्राएँ हों ।

चतुष्कोण-वि० [सं०] चौकोर ।

चतुष्टय-पुं० [सं०] चार चीजों का

चतुष्पथ-पुं० [सं०] चौराहा ।

चतुष्पद-पुं० [सं०] चौपाया ।

वि० चार पदोंवाला ।

चतुष्पदी-स्त्री० [सं०] १. चार
कविता या गीत । २. चौपाई नामक

चत्वर-पुं० [सं०] १.
चबूतरा । वेदी । ३. कोई
हुआ स्थान । (स्क्वेयर)

चदरा†-पुं० = चादर ।

अ० [सं० चपल] १. जल्दी मचाना। २. चुपके से हट जाना। खिसक जाना।

चपरास–स्त्री० [हिं० चपरासी] चौकीदार, अरदली आदि का बिल्ला।

चपरासी–पुं० [फा० चप = बायाँ + रास्त = दाहिना] १. वह नौकर जो चपरास लगाता हो। २. कार्यालय के कागज-पत्र आदि लाने-ले जानेवाला नौकर।

चपरि*–क्रि० वि० [सं० चपल] १. चटपट। एकदम से। २. जल्दी से।

चपल–वि० [सं०] [भाव० चपलता] १. स्थिर या शान्त न रहनेवाला। २. फुरतीला। ३. चंचल। चुलबुला। ४. उतावला। जल्दबाज। ५. चालाक।

चपलता–स्त्री० [सं०] १. 'चपल' का भाव। २. चंचलता। ३. तेजी। ४. धृष्टता। ढिठाई।

चपला–वि० 'चपल' का स्त्री०।

स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. बिजली। ३. दुश्चरित्रा स्त्री। ४. जीभ। जिह्वा।

चपलाई*–स्त्री० = चपलता।

चपलाना*–अ० [सं० चपल] १. चलना। २. हिलना-डोलना।

स० १. चलाना। २. हिलाना।

चपली–स्त्री० = चप्पल।

चपाक*–क्रि० वि० दे० 'चटपट'।

चपाती–स्त्री० [सं० चर्पटी] पतली रोटी।

चपाना–स० [हिं० चपना] १. किसी को चपने में प्रवृत्त करना। २. लज्जित या शरमिन्दा करना।

चपेट–स्त्री० [सं० चर्पट] १. थप्पड़। २. धक्का। ३. झोंका। ४. संकट।

चपेटना–स० [हिं० चपेट] १. दबाना। दबोचना। २. फटकार बताना। डाँटना।

चपेटा–पुं० दे० 'चपेट'।

चपेड़†–स्त्री० [सं० चर्पट] थप्पड़। तमाचा।

चपेरना*–स० = चाँपना।

चप्पड़–पुं० दे० 'चिप्पड़'।

चप्पल–स्त्री० [चप चप से अनु०] खुली एँड़ी का एक प्रकार का जूता, जिसके ऊपर चमड़े के तस्मे लगे रहते हैं।

चप्पा–पुं० [सं० चतुष्पाद] १. थोड़ा या छोटा भाग। २. छोटा भूमि-खंड। ३. चौड़ा टुकड़ा। चिप्पड़।

चप्पी–स्त्री० [हिं० चाँपना = दबाना] १. सेवा के लिए हाथ-पैर दबाने की क्रिया। २. दे० 'चिप्पी'।

चप्पू–पुं० [हिं० चाँपना] नाव का वह डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी।

चबाना–स० [सं० चर्वण] १. दाँतों से कुचलना या कुचलकर खाना।

मुहा०–चबा-चबाकर बातें करना = रुक रुककर एक एक शब्द बोलना। मठार मठारकर बातें करना।

२. दाँतों से काटना या दरदराना।

चबाव(न)–पुं० दे० 'चवाव'।

चबूतरा–पुं० [सं० चत्वर] बैठने के लिए चौरस और ऊँची जगह। चौतरा।

चबेना–पुं० [हिं० चबाना] भुना हुआ अनाज जो चबाकर खाया जाता है। चर्वण।

चबेनी–स्त्री० दे० 'चबेना'।

यौ०–राह-चबेनी।

चभाना–स० [हिं० चाभना] भोजन कराना।

चभोरना–स० [हिं० चुभकी] १. डुबाना। २. तरल पदार्थ से तर करना।

चमक–स्त्री० [चम से अनु०] १. प्रकाश। रोशनी। २. कांति। आभा। ३. कमर या पीठ में अचानक उठा हुआ दर्द। चिलक।

चमकताई*–स्त्री० दे० 'चमक'।

चमक-दमक–स्त्री० [हिं० चमक + दमक] १. दीप्ति। आभा। २. तड़क-भड़क।

चमकदार–वि० दे० 'चमकीला'।

चमकना–अ० [हिं० चमक] १. कांति या आभा से युक्त होना। जगमगाना। दमकना। २. उन्नति करना। ३. वृद्धि पर होना। ४. चौंकना। भड़क उँगलियाँ आदि हिलाकर स्त्रियों मटकना। ६. झटका लगने से कहीं दर्द होना।

चमकाना–स० [हिं० चमकना हिं० 'चमकना' का स०। २. तेजी से बढ़ाना। ३. उँगलियाँ आदि चिढ़ाना या नकल उतारना। मट

चमकारा*–वि० दे० 'चमकीला'।

चमकारी*–स्त्री० दे० 'चमक'।

चमकी–स्त्री० [हिं० चमक] रुपहले हले पत्तरों के छोटे गोल टुकड़े। सितारे

चमकीला–वि० [हिं० चमक (प्रत्य०)] [स्त्री० चमकीली] चमक हो। चमकनेवाला। चमक

चमकौअल–स्त्री० [हिं० चमकना की तरह चमकने की क्रिया या भाव

चमगादड़–पुं० [सं० चर्मचटक प्रकार का उड़नेवाला प्रसिद्ध पैर जालदार होते हैं।

चमचम–स्त्री० [देश०] एक मि क्रि० वि० दे० 'चमाचम'।

चमचमाना–अ० दे० 'चमकना'। स० चमकाना। चमक लाना।

चमचा–पुं० दे० 'चम्मच'।

चमड़ा–पुं० [सं० चर्म] १. प्र शरीर का ऊपरी आवरण। चर्म।

मुहा०–चमड़ा उधेड़ना या ख (क) शरीर से चमड़ा खींचकर अल (ख) बहुत कड़ा दंड देना।

२. मृत पशुओं की उतारी हुई जिससे जूते आदि बनते हैं।

मुहा०–चमड़ा सिझाना = वि क्रिया से चमड़े को मुलायम करना।

३. छाल। छिलका।

चमड़ी–स्त्री० दे० 'चमड़ा'।

चमत्कार–पुं० [सं०] [वि० चम चमत्कृत] १. कोई ऐसा आश्च

चमड़े का वह टुकड़ा जिसपर नाई छूरे की धार तेज करते हैं।

चमोटी–स्त्री० [हिं० चाम + ओटी (प्रत्य०)] १. चाबुक। कोड़ा। २. पतली छड़ी। कमची। बेंत। ३. दे० 'चमोटा'।

चमौवा–पुं० [हिं० चाम] एक तरह का भद्दा देशी जूता।

चम्मच–पुं० [फा०, मि० सं० चमस्] एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी। चमचा।

चय–पुं० [सं०] १. समूह। राशि। २. टीला। ढूह। ३. गढ़। किला। ४. चहारदीवारी। ५. चबूतरा।

चयन–पुं० [सं०] १. संग्रह। संचय। २. चुनने का काम। चुनाई। ३. यज्ञ के लिए अग्नि का एक संस्कार।

चयनक–पुं० [सं०] कुछ चुने हुए व्यक्तियों का वह वर्ग या समूह, जिसमें से किसी विशेष कार्य के लिए कोई या कुछ व्यक्ति फिर से चुने या नियत किये जाते हैं। (पैनेल)

चयना*–स० [सं० चयन] चयन करना। चुनना।

चयनिका–स्त्री० [सं०] १. चुनी हुई वस्तुओं या बातों का संग्रह। २. पत्र-पत्रिकाओं आदि का वह विभाग जिसमें दूसरों से ली हुई अच्छी बातें रहती हैं। (पाठकों की दृष्टि में इस अंश का विशेष महत्व होता है।)

चर–पुं० [सं०] १. राजा या राज्य की ओर से नियुक्त वह मनुष्य जो घूम-घूमकर भीतरी बातों का पता लगाता हो। भेदिया। जासूस। २. विशेष कार्य के लिए भेजा हुआ आदमी। दूत। ३. नदी के किनारे की भूमि। ४. नदियों के बीच का टापू। रेता। वि० [सं०] १. चलनेवाला। जैसे–गुप्तचर, जलचर। २. जो इधर-उधर हटाया जा सके। जंगम। चल।

चरई–स्त्री० [सं० चारिका] जुलाहों की परिभाषा में वह स्थान जहाँ ताने के सूत छोटे तागों से बाँधे जाते हैं।
स्त्री० दे० 'चरनी'।

चर-कटा–पुं० [हिं० चारा + काटना] वह जो जानवरों के लिए चारा, घास आदि काटने का काम करता हो।

चरकना*–अ० दे० 'तड़कना'।

चरका–पुं० [फा० चरकः] १. हलका घाव या जख्म। २. हानि। ३. धोखा। छल।

चरख–पुं० [फा० चर्ख] १. घूमनेवाला गोल चक्कर। २. खराद। ३. ढेलवाँस। ४. वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है। ५. दे० 'चरग'।

चरखा–पुं० [फा० चर्ख] १. घूमनेवाला बड़ा गोल चक्कर। २. सूत कातने का लकड़ी का एक प्रसिद्ध यंत्र। ३. कूएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। ४. गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकाला जाता है। खड़-खड़िया। ५. झंझट का काम।

चरखी–स्त्री० [हिं० चरखा का स्त्री० अल्पा०] १. घूमनेवाली कोई गोल वस्तु। छोटा चरखा। २. कपास ओटने का यंत्र। ओटनी। ३. कूएँ से पानी खींचने की गड़ारी।

चरखुला†–पुं० दे० 'चरखा'। (सूत कातने का)

चरग–पुं० [फा० चरग़] १. एक शिकारी चिड़िया। चरख। २. लकड़बग्घा।

चरचना*–स० [सं० चर्चन] १. शरीर में चन्दन आदि का लेप करना। २. ताड़ना। भाँपना। लखना। ३. अनुमान करना।
स० [?] पहचानना।

चरचराना–अ० [अनु० चरचर] १. चर चर शब्द के साथ टूटना। २. शरीर के अंग का तनाव या रगड़ से दर्द करना। चर्राना।
स० चरचर शब्द करते हुए तोड़ना।

रचा–स्त्री० दे० 'चर्चा'।

चरचारी*–पुं० [हिं० चरचा] १. करनेवाला। २. निंदक।

चरजना*–अ० [सं० चर्चन] १. या धोखा देना। बहकाना। २. लगाना। अनुमान करना।

चरण पुं० [सं०] १. पग। पैर। बड़ों का संग। ३. पद्य या श्लोक का पद। ४. चौथाई भाग। ५. आचरण। सूर्य आदि की किरण। ७. चलना। भक्षण करना। खाना।

चरणदासी–स्त्री० [सं० चरण+ १. जोरू। पत्नी। २. जूता।

चरण-पादुका–स्त्री० [सं०] १. पाँवड़ी। २. पूजन के लिए बनाया चरण-चिह्न।

चरण पीठ–पुं० = चरण-पादुका।

चरण-सेवा–स्त्री० [सं० चरण+ १. पैर दबाना। २. बड़ों की सेवा।

चरणामृत–पुं० [सं०] १. पूज्य व्यक्ति चरणों की धोवन। २. दूध, दही, चीनी और शहद का वह मिश्रण, किसी देव-मूर्त्ति को स्नान कराया गया या उसके चरण धोये गये हों।

चरणोदक–पुं० [सं०] चरणामृत।

चरन*–पुं० दे० 'चरण'।

चरना–स० [सं० चर = चलना] का खेत में उगी हुई घास आदि खाना।
*अ० [सं० चर] १. घूमना-फिरना विचरण करना। चलना। २. आ करना।

चरनि*–स्त्री० [सं० चर = गमन]

चरनी–स्त्री० [हिं० चरना] १. चरागाह। २. वह नाँद जिसमें पशुओं चारा दिया जाता है। ३. पशुओं का

चरपट–पुं० दे० 'चर्पट'।
वि० [सं० चर्पट ?] १. उचक्का। २.

चरपरा–वि० [अनु०] [स्त्री० चरपरी] तीक्ष्ण स्वादवाला। झालदार। तीता।

स्त्री० [हिं० चरपरा] १.
तीक्ष्णता। चरपरापन। झाल।
ईर्ष्या। (क्व०)
अ० दे० 'तड़पना'।
[सं० चार्वाक] १. चतुर।
उद्धत। उद्दंड।
[फा० चरख:] १. लेखे आदि
हुआ पूर्व रूप। खाका। २.

[फा०] वह चिकना, लसीला
पदार्थ जो कुछ प्राणियों के शरीर
है। मेद। वसा।
चर्बी चढ़ना या छाना = (क)
होना। (ख) मद में अंधा होना।
[सं०] १. पराकाष्ठा या हद
हुआ। २. अंतिम। ३. सबसे

[सं०] [वि० चरम-पंथी]
में यह सिद्धान्त कि सब प्रकार
और चाहे जैसे हों दूर किये
(एक्स्ट्रीमिज्म, रैडिकलिज्म)
और आतुरता का सूचक)
पुं० [सं०] वह जो राजनीति
प्रकार के दोष तुरन्त दूर करने
हो। (रैडिकल, एक्स्ट्रीमिस्ट)
पुं० = विभक्ति।
पुं० [अनु०] कड़ी या चिमड़ी
या मुड़ने का शब्द।
अ०, स० [अनु०] चरमर
का करना।
स्त्री० दे० 'चर्मण्वती'।
स्त्री० [हिं० चराना] चराने का
या मजदूरी।
पुं० = चरवाहा।
पुं० [हिं० चरना + वाहा =
बैल आदि चरानेवाला।
स्त्री० दे० 'चरवाई'।
वि० [हिं० चरना + वैया
(प्रत्य०)] १. चरानेवाला। २. चरनेवाला।

चरस–स्त्री० [सं० चर्म] १. चमड़े का बहुत बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिए कूएँ से पानी निकाला जाता है। चरसा। मोट। २. भूमि की एक नाप जो २१०० हाथ की होती है। ३. गाँजे के पेड़ का गोंद या चेप, जिसका धूआँ तमाकू की तरह पीने से नशा होता है।

चरसा–पुं० [हिं० चरस] १. चरस। मोट। २. भैंस, बैल आदि का चमड़ा।

चरसी–पुं० [हिं० चरस + ई (प्रत्य०)] वह जो चरस पीता हो।

चराई–स्त्री०[हिं०चरना] १. पशुओं के चरने या चराने का काम। २. चराने की मजदूरी।

चरागाह–पुं० [फा०] पशुओं के चरने का मैदान। चरनी। चरी।

चराचर–वि० [सं०] १. चर और अचर। चेतन और जड़। २. जगत्। संसार।

चराना–स० [हिं० चरना] [प्रे० चरवाना] १. चरने के लिए छोड़ना। २. बहकाना।

चरावर*।–स्त्री० = बकवाद।

चरिंदा–पुं० [फा०] चरनेवाला पशु।

चरित–पुं० [सं०] १. आचरण। २. कार्य। ३. किसी के जीवन की विशेष घटनाओं का वर्णन। जीवन-कथा। जीवनी।

चरित-नायक–पुं० [सं०] वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का किसी काव्य, नाटक आदि में वर्णन हो।

चरितार्थ–वि० [सं०] [भाव० चरितार्थता] १. कृतार्थ। कृतकृत्य। २. ठीक उतरनेवाला। सार्थक।

चरित्तर–पुं० [सं० चरित्र] १. बुरा चरित्र। २. छलपूर्ण आचरण।

चरित्र–पुं० [सं०] १. स्वभाव। २. जीवन में किये जानेवाले कार्य या आचरण। ३. इस प्रकार के कार्यों या आचरणों का स्वरूप जो किसी की योग्यता, मनुष्यत्व आदि का सूचक होता है। (कैरेक्टर) ४.

करनी । करतूत । ५. दे० 'चरित' ।

चरित्र-नायक–पुं० दे० 'चरित-नायक' ।

चरित्र-पंजी–स्त्री० दे० 'आचरण-पंजी' ।

चरित्रवान्–वि० [सं०] [स्त्री० चरित्रवती] सदाचारी । अच्छे चरित्रवाला ।

चरी–स्त्री० [हिं० चरना] १. चरागाह । २. चारे के लिए ज्वार के हरे पेड़ ।

चरु–पुं० [सं०] [वि० चरव्य] १. हवन के लिए पकाया हुआ अन्न । हविष्यान्न । २. ऐसा अन्न पकाने का पात्र ।

चरेरू†–पुं० [हिं० चरना + एरू (प्रत्य०)] चरनेवाला जानवर । गौ-भैंस, बकरी आदि ।

चरैया–पुं० [हिं० चरना] १. चरनेवाला । २. चरानेवाला ।

चर्चक–पुं० [सं०] चर्चा करनेवाला ।

चर्चन–पुं० [सं०] १. चर्चा । २. लेपन । पोतना । जैसे–अंग में चन्दन का चर्चन ।

चर्चरी–स्त्री० [सं०] १. दे० 'चाचर' । २. करतल-ध्वनि ।

चर्चा–स्त्री० [सं०] १. किसी विषय की बात-चीत । जिक्र । वर्णन । २. किसी प्रकार का कथन या उल्लेख । (मेन्शन) ३. जन-श्रुति । अफवाह ।

स्त्री० [सं० चर्चन] लेपन ।

चर्चित–वि० [सं०] १. लगाया या पोता हुआ । लेपित । जैसे–चन्दन चर्चित मस्तक । २. जिसकी चर्चा, कथन या उल्लेख हुआ हो । (मेन्शन्ड)

चर्पट–पुं० [सं०] तमाचा । थप्पड़ ।

चर्म–पुं० [सं०] १. चमड़ा । २. ढाल । (अस्त्र)

चर्मकार–पुं० [सं०] [भाव० चर्मकारी] चमड़े का काम करनेवाली जाति । चमार ।

चर्म-चक्षु–पुं० [सं०] १. नेत्र । आँख । 'ज्ञान-चक्षु' का विपर्य्याय ।

चर्मण्वती–स्त्री० [सं०] चंबल नदी ।

चर्मदंड–पुं० [सं०] चमड़े का कोड़ा ।

चर्म-दृष्टि–स्त्री० [सं०] आँख की दृष्टि । 'ज्ञान-दृष्टि' का विपर्य्याय ।

चर्म-पादुका–स्त्री० [सं०] जूता ।

चर्य्या–स्त्री० [सं०] १. कार्य । (ए २. आचरण । ३. रहन-सहन । प्रति का कार्य-क्रम । ४. वृत्ति । जीविका । सेवा । ६. चलना । गमन ।

चर्राना–अ० [अनु०] १. टूटने के लकड़ी आदि में चर चर शब्द होना सूखकर, सिकुड़ने या तनने से (चमड़े दर्द होना । ३. सूखने या सिकुड़ कारण चिटकना या फटना । ४. प्रबल होना । जैसे–शौक चर्राना । (

चर्रो–स्त्री० [हिं० चर्राना] चुभती हुई बात । व्यंग्यपूर्ण उक्ति ।

मुहा०–चर्रो छोड़ना = व्यंग्यपूर्ण लगती हुई बात कहना ।

चर्वण–पुं० [सं०] [वि० चर्व्य] चबाना । २. चबाने के लिए भूना दाना । चबेना ।

चर्वित–वि० [सं०] चबाया हुआ ।

चर्वित-चर्वण–पुं० [सं०] किया काम या कही हुई बात फिर से कह कहना । पिष्ट-पेषण ।

चल–वि० [सं०] [भाव० चलता] चल । अस्थिर । २. चलता हुआ । (सम्पत्ति आदि) जो एक स्थान से स्थान पर जा सके । जंगम । (मूर्व जैसे–गहने, कपड़े आदि ।

पुं० [सं०] १. पारा । २. शिव । ३.

चलक–पुं० [सं०] माल । अ (गुड्स)

चल-चित्र–पुं० [सं०] वे चित्र जो पर जीवित मनुष्यों की भाँति काम हुए दिखाये जाते हैं । (सिनेमा)

चलचूक–स्त्री० [सं० चल = चूक] धोखा । छल । कपट ।

चलता–वि० [हिं० चलना] [चलती] १. चलता हुआ । गति

-चलता करना = (क) खाना ... । (ख) कोई काम जैसे-तैसे ... । **चलता बनना** = चल देना । ... क्रम बराबर चला चले । ... । (रनिंग) ३. प्रचलित । ... -चलता खाता । (देखो) ... चलाने या करने योग्य । ५. ... ।

...] १. एक बड़ा पेड़ जिसमें ... फल लगते हैं । २. कवच ।

...खाता-पुं० [हिं० चलता + खाता] ... वह खाता जिसमें लेन-देन ... रहे और जब चाहें, तब रुपये ... या ले सकें । (करेन्ट एकाउन्ट)

...गाना-पुं० [हिं० चलता = साधा- ...] गजल, दादरा या इसी तरह ... कोई गाना जो राग-रागिनियों के ... हो । 'पक्का गाना' का विपर्याय ।

...० [हिं० चलना] किसी की ... का सब जगह माना जाना । ... या प्रभुत्व चलना ।

...० दे० 'चलता' ।

...-पुं० [सं०] पीपल ।

...-पुं० दे० 'चलक' ।

...पुं० [हिं० चलना] १. चलने का ... । २. प्रथा । रवाज । ३. ... व्यवहार या आचरण । ... प्रचार ।

...-पुं० [सं०] गणित ज्यौतिष ... जिससे दिन और रात का मान ... या उनके घटने-बढ़ने का ... जाता है ।

...-वि० [हिं० चलन + सार] १. व्यवहार में प्रचलित । चलता ... २. अधिक दिनों तक चलनेवाला ।

...० [हिं० चलन] १. पैर उठाते ... से दूसरी जगह जाना । गमन करना । २. हिलना-डोलना ।

मुहा०-**पेट चलना** = (क) दस्त आना । (ख) निर्वाह होना । **बस चलना** = शक्ति का काम करना । **मन चलना** = इच्छा या लालसा होना । **चल बसना** = मर जाना । **अपने चलते** = भर-सक । यथा-शक्ति । **चलते हुए बैल को आर लगाना** = ठीक तरह से काम करनेवाले को बीच में इस प्रकार छेड़ना कि उस काम में और भी बाधा हो ।

३. सपरना । निभना । ४. उन्नति पर होना । ५. आगे बढ़ना । ६. आरंभ होना । छिड़ना । ७. जारी रहना । ८. बराबर काम देना । टिकना । ९. लेन देन में काम देना । १०. प्रचलित या जारी होना । ११. उपयोग में आना । १२. तीर, गोली, लाठी आदि का प्रयोग या प्रहार होना । १३. पढ़ा जाना । बाँचा जाना । १४. उपाय या युक्ति लगना । १५. आचरण या व्यवहार होना ।

स० ताश, चौसर, शतरंज आदि खेलों में पत्ता या मोहरा सामने रखना या आगे बढ़ाना ।

चलनी†-स्त्री० दे० 'छानना' ।

चल-पत्र-पुं० [सं०] १. पीपल । २. कागज के रूप में नित्य चलनेवाला वह धन जो सिक्के की जगह काम में आता है । (करेन्सी नोट)

चलवंत-पुं० [हिं० चलना] पैदल सिपाही ।

चलवाना-स० [हिं० 'चलना' का प्रे०] किसी को चलने में प्रवृत्त करना ।

चल-विचल-वि० [सं० चल + विचल] १. अस्त व्यस्त । उखड़ा पुखड़ा । बे-ठिकाने । २. अस्थिर । डाँवाँडोल । पुं० नियम या क्रम का भंग ।

चलवैया†-वि० [हिं० चलना] चलने या चलानेवाला ।

चल-संपत्ति-स्त्री० [सं०] ऐसी संपत्ति

जो उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकें। (मूवेबुल प्रॉपर्टी)

चलाऊ-वि॰ [हिं॰ चलना] १. चलनेवाला। २. टिकाऊ।

चलाक*-वि॰ दे॰ 'चालाक'।

चलाका*†-स्त्री॰ [सं॰ चला] बिजली।

चलाचल*-स्त्री॰ [हिं॰ चलन] १ चलाचली। २. गति। चाल।
वि॰ [सं॰] १. चल और अचल दोनों। २. चंचल। चपल।

चलाचली-स्त्री॰ [हिं॰ चलना] १. प्रस्थान या चलने की तैयारी। २. प्रस्थान। ३. मरने का समय निकट होना।

चलान-स्त्री॰ [हिं॰ चलना] [वि॰ चलानी] १. माल या सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने या भेजे जाने का कार्य। २. अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए भेजा जाना। ३. बाहर से आया हुआ अथवा बाहर भेजा जानेवाला माल। (कन्साइन्मेन्ट) ४. (किसी की सूचना के लिए) भेजी हुई चीजों की सूची या धन का विवरण। रवन्ना।

चलाना-स॰ [हिं॰ चलना] [प्रे॰ चलवाना] १. चलने में प्रवृत्त करना। ऐसा करना कि चले।
मुहा॰-**किसी की चलाना** = किसी की बात कहना। **मुँह चलाना** = खाना। **हाथ चलाना** = मारना।
२. व्यवहार या आचरण कराना। ३. कार्य आदि की ऐसी व्यवस्था करना कि वह अच्छी तरह आगे बढ़ता रहे। (कन्डक्ट) ४. अस्त्र-शस्त्र आदि व्यवहार में लाना। जैसे-लाठी या गोली चलाना।

चलानी-वि॰ [हिं॰ चलान] १. चलान-संबंधी। चलान का। जैसे-चलानी मुकदमा।
स्त्री॰ बिक्री के लिए माल बाहर भेजने का काम। चलान का व्यवसाय।

चलायमान-वि॰ [सं॰] १. च हुआ। २. चंचल। ३ विचलित।

चलावना*-स॰ = चलाना।

चलावा-पुं॰ [हिं॰ चलना] १. रस्म। रवाज। २. द्विरागमन। ३. गाँवों में संक्रामक रोग फैलने के का एक प्रकार का उतारा।

चलित-वि॰ [सं॰] १. जो चल रहा हो। चलायमान। २. प्रचलन या व्यवहार हो। (करेन्ट) जो इस समय हो या होता हो। चलित प्रथा।

चवन्नी-स्त्री॰ [हिं॰ चार+आना] आने मूल्य का सिक्का।

चवा*-स्त्री॰ [सं॰ चौ+बाई= चारो ओर से एक साथ बहनेवाली हवा।

चवाई-पुं॰ [हिं॰ चवाव] [स्त्री॰ इन] बदनामी फैलानेवाला। निन्दक।

चवाव-पुं॰ [हिं॰ चौ+बाई= १. चारो ओर फैली हुई चर्चा। २. बदनामी। ३. निन्दा। चुगली।

चवैया*-स्त्री॰ दे॰ 'चवाव'।

चश्म-स्त्री॰ [फा॰] नेत्र। आँख।

चश्मदीद-वि॰ [फा॰] १. आँ देखा हुआ। २. जिसने कोई घटना देखी
यौ॰-**चश्मदीद गवाह** = प्रत्य गवाह या साक्षी।

चश्मा-पुं॰ [फा॰ चश्म] १. ऐनक। पानी का सोता या नाला।

चष*-पुं॰ [सं॰ चक्षु] आँख।

चषक-पुं॰ [सं॰] १. मद्य पीने प्याला। २. मधु। शहद।

चष-चोल*-पुं॰ [हिं॰ चष+चोल वस्त्र] आँख की पलक।

चसका-पुं॰ [सं॰ चषण] १. २. आदत। लत।

चसना-अ॰ [हिं॰ चाशनी] १. दो का एक में सटना। लगना। चिपक

। २. कपड़े का खिंच या दबकर
जाना ।
दे० 'चश्म' ।
[फ़ा०] चिपका हुआ ।
दे० 'चश्म' ।
[हिं० रथ] १. नाव पर चढ़ने
हुआ चबूतरा । २. नदी पर
आदि का अस्थायी पुल ।
[फ़ा० चाह] गड्ढा ।
[हिं० चहकना] पक्षियों का
चहचहा ।
[अनु०] १. पक्षियों का
मधुर शब्द करना । २.
बोलना ।
= चमकना ।
= चहक ।
-अ० = चहकना ।
[हिं० चहचहाना] १.
। २. हँसी । ठहाका ।
या आनन्द-युक्त । २. सुंदर ।
-अ० [अनु०] चिड़ियों का
शब्द करना । चहकना ।
दे० 'चाहना' ।
[हिं० चाहना = देखना]
की क्रिया या भाव । २. दृष्टि ।
[फ़ा० चाह = कूआँ +
१. पानी जमा करने का छोटा गड्ढा
। २. धन छिपाकर रखने का छोटा
।
दे० 'चहल' ।
[हिं० चहल] आनन्दित
होना ।
[अनु० चहचह] १. आनन्द
। आनन्दोत्सव । २. चहल-पहल ।
का कलरव । चहचहा ।
दे० 'चहला' ।
की बाजी = पक्षियों के कलरव और क्रीड़ा के समान जल्दी ही समाप्त हो जानेवाली बात या काम ।

चहल-कदमी–स्त्री० [हिं० चहल + फ़ा० कदम] धीरे धीरे टहलना या घूमना ।

चहलना–स० [हिं० चहल] पैरों से बार बार दबाना । रौंदना ।

चहल-पहल–स्त्री० [अनु०] १. आनन्द की भीड़-भाड़ । धूम-धाम । २. रौनक ।

चहला–पुं० [सं० चिकिल] कीचड़ ।

चहवारा*–वि० [हिं० चहचह (अनु०) + वार (प्रत्य०)] चहचहानेवाला (पक्षी) ।

चहार-दीवारी–स्त्री० [फ़ा०] किसी मकान या बड़े मैदान के चारो ओर बनी हुई दीवार । घेरा । प्राचीर ।

चहारुम–पुं० [फ़ा०] चौथाई । चतुर्थांश ।

चहाचहा–पुं० [हिं० चाहना = देखना] एक दूसरे को देखने की क्रिया ।

चहुँ*–वि० [हिं० चार] चारो ।

चहुँकना*–अ० चौंकना ।

चहूँ*–वि० दे० 'चहुँ' ।

चहूँघा–क्रि० वि० [हिं० चारो + घा = ओर] चारो ओर । सब तरफ ।

चहूँटना–अ० [हिं० चिमटना] सटना । लगना । मिलना ।

चहेटना–स० [?] १. गारना । निचोड़ना । २. खदेड़ना । भगाना ।

चहेता–वि० [हिं० चाहना + एता (प्रत्य०)] [स्त्री० चहेती] जिसे चाहा जाय । प्यारा । प्रिय ।

चहोरना†–अ० [देश०] १. पौधा रोपना या बैठाना । २. सहेजना । ३. अच्छी तरह कोई काम करना ।

चाँई–पुं० [देश०] १. ठग । उचक्का । २. चालाक । धूर्त्त ।

चाँकना–स० दे० 'चाकना' ।

चाँगला†–वि० [हिं० चंगा] [स्त्री० चाँगली] १. अच्छा । बढ़िया । २. हृष्ट-पुष्ट । स्वस्थ । तदुरुस्त । ३. धूर्त्त । चालाक । सयाना ।

चाँचर(रि)–स्त्री० दे० 'चाचर' ।

चाँचु*–पुं० दे० 'चोंच'।

चाँटा†–पुं० [अनु०] थप्पड़।
पुं० दे० 'च्यूँटा'।

चाँटी–स्त्री० [अनु०] तबले के किनारे पर तर्जनी उँगली से किया जानेवाला आघात।
†स्त्री० दे० 'च्यूँटी'।

चाँड़–वि० [सं० चंड] १. प्रबल। बलवान्। २. उद्धत। उद्दंड। ३. श्रेष्ठ। ४. प्रचंड।
स्त्री० [सं० चंड = प्रबल] १. भार सँभालने के लिए नीचे लगाया जानेवाला खंभा। टेक। थूनी। २. अत्यन्त आवश्यकता। ३. प्रबल इच्छा।
मुहा०–चाँड़ सरना = इच्छा या आवश्यकता पूरी होना।

चाँड़ना–स० [?] १. खोदकर गिराना। २. कसकर दबाना। ३. उखाड़ना। ४. उजाड़ना।

चांडाल–पुं० [सं०] [स्त्री० चांडाली, चांडालिन] १. एक छोटी जाति। डोम। श्वपच। २. पतित मनुष्य। (गाली)

चाँड़िला*–वि० दे० 'चाँड़'।

चाँद–पुं० [सं० चन्द्र] १. चन्द्रमा।
पद–चाँद का टुकड़ा = अत्यन्त सुन्दर।
मुहा०–किधर चाँद निकला है? = आज आप बहुत दिनों पर कैसे दिखाई पड़े? इतने दिनों तक आप कहाँ थे? **चाँद पर थूकना** = ऐसे व्यक्ति पर लांछन लगाना या ऐसे व्यक्ति की निन्दा करना जिससे लांछन लगाने या निन्दा करनेवाला ही बुरा समझा जाय।
२. दूज के चाँद के आकार का गहना। ३. वह काला दाग जिसपर अभ्यास के लिए निशान लगाया जाता है।
स्त्री० खोपड़ी का बिचला भाग।
मुहा०–चाँद गंजी होना = बहुत मार पड़ना।

ाँद-तारा–पुं० एक प्रकार का बूटीदार पतला कपड़ा।

चाँदना–पुं० [हिं० चाँद] १. प्रकाश। उजाला। २. चाँदनी।

चाँदनी–स्त्री० [हिं० चाँद] चन्द्रमा प्रकाश। चाँद का उजाला। चन्द्रिका।
पद–चार दिन की चाँदनी = दिनों का सुख या आनन्द।
स्त्री० [हिं० चंदनी = चंदन के रंग का] बिछाने या ऊपर तानने की चादर। (जहाँ ने एक बार चंदन के रंग का बनवाया था, जो फर्श-ए-चंदनी था। इसी में के चंदनी शब्द से यह शब्द बना है।)

चाँद-बाला–पुं० [हिं० चाँद = चन्द्रमा + बाला] कान में पहनने का एक प्रकार चन्द्राकार बाला।

चाँद-मारी–स्त्री० [हिं० चाँद + मारना] किसी तल पर बने हुए विन्दुओं पर चलाने या निशाना लगाने का अभ्यास।

चाँदी–स्त्री० [हिं० चाँद] एक सफेद कीली धातु जिसके सिक्के, गहने बर्त्तन बनते हैं। रजत।
मुहा०–चाँदी काटना = खूब रुपये करना। **चाँदी होना** = (क) बहुत होना। (ख) जलकर राख होना।
पद–चाँदी का जूता = घूस। रिश्वत।

चांद्र–वि० [सं०] १. चन्द्रमा संबंधी। २. जो चन्द्रमा के विचार से हो। चान्द्र मास।

चांद्रमास–पुं० [सं०] उतने दिन, चन्द्रमा को पृथ्वी की एक बार करने में लगते हैं। पूर्णिमा से पूर्णिमा का महीना।

चांद्रायण–पुं० [सं०] महीने भर का व्रत जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के सार भोजन और कौर घटाने बढ़ाने पड़ते हैं।

चाँप–स्त्री० [हिं० चपना] १. दे० 'चाप'। २. बलवान की प्रेरणा या दबाव।
†*पुं० [हिं० चंपा] चंपा का फूल।

[सं० चपन] दबाना ।
दे० 'चाव' ।
वि० [हिं० चाव] चाव या

[हिं० चक्र] १. कील पर घूमने-
पत्थर जिसपर कुम्हार
। कुलालचक्र । २. पहिया ।
। ४. मंडलाकार रेखा ।
] दरार । चीर ।
१. दृढ़ । मजबूत । २. हृष्ट-
।
चौबंद=(क) हृष्ट-पुष्ट । (ख)
छबीला ।
= मजबूत ।
[हिं०] १. चमक-दमक ।
। २. सुन्दरता ।
[हिं० चाक] १. चारो
चक्कर किसी वस्तु को घेरना ।
। २. खलियान में अनाज की
आदि से छापा लगाना,
निकाले तो पता चल जाय ।
के लिए किसी चीज पर निशान

[फ़ा०] [स्त्री० चाकरानी,
] भृत्य । सेवक । नौकर ।
[फ़ा०] १. सेवा । टहल ।

[सं० चाक्षुष] निर्मली नामक
बीज जिनका चूर्ण आँख
में डाला जाता है ।
दे० 'चक्की' ।
चक्र] बिजली ।
[तु०] छुरी ।
[सं०] १. चक्षु-संबंधी ।
नेत्रों से हो । दिखाई देने-
। ([illegible])
में ऐसा प्रमाण जिसकी सत्यता
से जानी जा सकती हो,

या जानी गई हो ।

चाखना*—स० दे० 'चखना' ।

चाखुर†—स्त्री० [देश०] खेतों आदि को निराकर निकाली हुई घास ।
+स्त्री० [सं० चिकुर] गिलहरी ।

चाचर (रि)—स्त्री० [सं० चर्चरी] १. होली का एक गीत । चर्चरी । २. होली में होनेवाले खेल-तमाशे । ३. हल्ला-गुल्ला ।

चाचरी—स्त्री० [सं० चर्चरी] योग-शास्त्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा ।

चाचा—पुं० [सं० तात] [स्त्री० चाची] पिता का छोटा भाई । काका । पितृव्य ।

चाट—स्त्री० [हिं० चाटना] १. चटपटी चीज खाने की प्रबल इच्छा । २. एक बार किसी वस्तु का स्वाद पाकर फिर उसे पाने की चाह । चसका । शौक । लालसा । ३. प्रबल इच्छा । ४. लत । आदत । ५. खाने की चटपटी और नमकीन चीजें । जैसे—सेव, दालमोठ, कचालू दही बड़ा आदि ।

चाटक*—पुं० [सं० चेटक] जादू । इन्द्रजाल ।

चाटना—स० [अनु० चट चट] १. जीभ से रगड़कर या उठाकर खाना । २. पोंछकर खा लेना । ३. (प्यार से) किसी वस्तु पर जीभ फेरना ।
यौ०—चूमना-चाटना = प्यार करना ।
४. कीड़ों का कागज, कपड़े आदि खा जाना ।

चाटुकार—पुं० [सं०] खुशामदी ।

चाटुकारी—स्त्री० = खुशामद ।

चाड़*—स्त्री० दे० 'चाँड़' ।

चाढ़ा†*—वि० [हिं० चाँड़] [स्त्री० चाढ़ी] प्यारा । प्रिय ।

चाणक्य—पुं० [सं०] राजनीति के एक प्रसिद्ध आचार्य और सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री । कौटिल्य ।

चातक—पुं० [सं०] [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी ।

चातुर*—वि० = चतुर ।

चातुरी–स्त्री० [हिं० चतुर], १. चतुर होने की क्रिया या भाव । चतुरता । २. चालाकी । होशियारी । ३. धूर्त्तता ।

चातुर्मासिक–वि० [सं०] चार महीने में या पर होनेवाला । (यज्ञ, कर्म आदि)

चातुर्मास्य–पुं० [सं०] चौमासे या वर्षा काल में किया जानेवाला एक व्रत ।

चातुर्य्य–पुं० = चतुरता ।

चातुर्वर्ण्य–पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चारो वर्ण ।

चात्रिक†*–पुं० दे० 'चातक' (पक्षी) ।

चादर–स्त्री० [फ़ा०] १. बिछाने या ओढ़ने का लम्बा-चौड़ा कपड़ा । २. हल्का ओढ़ना । दुपट्टा । ३. किसी पहाड़ या चट्टान से गिरनेवाली पानी की चौड़ी धार । ४. पवित्र स्थान पर चढ़ाये जानेवाले फल । (मुसल०) ५. दे० 'चद्दर' ।

चान*–पुं० = चंद्रमा ।

चानक*–क्रि० वि० दे० 'अचानक' ।

चानन*–पुं० १. दे० 'चंदन' । २. दे० 'चाँदना' ।

चाना*–अ० [हिं० चाव + ना (प्रत्य०)] चाव या उमंग में आना ।

चाप–पुं० [सं०] १. धनुष । कमान । २. वृत्त की परिधि का कोई भाग । (आर्क) ३. मेहराब ।

स्त्री० [हिं० चापना = दबाना] १. चापने की क्रिया या भाव । दबाव । दाब । २. पैर की आहट ।

चापट†–वि० १. दे० 'चौपट' । २. दे० 'चिपटा' ।

चापना†–स० [सं० चाप] दबाना ।

चापल*–वि० दे० 'चपल' ।

चापलूस–वि० [फ़ा०] खुशामदी ।

चापलूसी–स्त्री० [फ़ा०] खुशामद ।

चापल्य–पुं० = चपलता ।

चाब–स्त्री० [हिं० चाबना] चबानेवाले चौखूँटे दाँत । डाढ़ । चौभड़ ।

चाबना–स० [सं० चर्वण] १. च
२. खूब भोजन करना । भर-पेट खाना ।

चाबी–स्त्री० [हिं० चाप] कुंजी । ता

चाबुक–पुं० [फ़ा०] १. कोड़ा । २.
तीव्र प्रेरणा ।

चाबुक-सवार–पुं० [फ़ा०] [भाव० चा
सवारी] घोड़े को चाल सिखानेवाला ।

चाभना–स० [हिं० चाबना] खाना ।

चाभी–स्त्री० दे० 'चाबी' ।

चाम–पुं० [सं० चर्म्म] चमड़ा ।
मुहा०–चाम के दाम चलाना =
मानी या अंधेर करना ।

चामर–पुं० दे० 'चँवर' ।

चामीकर–पुं० [सं०] १. सोना
धातु । स्वर्ण । २. धतूरा ।

चामुंडा–स्त्री० [सं०] एक देवी जि
चंड, मुंड आदि दैत्यों का नाश कि

चाय–स्त्री० [चीनी चा] १. एक
जिसकी पत्तियाँ उबलते हुए पानी में
कर तथा चीनी और दूध मिला
गरम पेय बनाते हैं । २. उक्त पौ
पत्तियों से इस प्रकार बनाया हुआ
पेय पदार्थ । ३. किसी वनस्पति
प्रकार से बनाया हुआ पेय पदार्थ ।
तुलसी की चाय, चोकर की चाय ।
यौ०–चाय-पानी = जल-पान ।
*पुं० दे० 'चाव' ।

चायक*–पुं० [हिं० चाव] चाहनेवा

चार–वि० [सं० चतुः] दो का दूना ।
मुहा०–चार चाँद लगना–
प्रतिष्ठा बहुत बढ़ जाना । **चारो फूट**
दृष्टि और बुद्धि दोनों नष्ट होना ।
पुं० [सं०] [वि० चरित] १.
चाल । गमन । २. कारागार । ३.
चर । जासूस । ४. दास । सेवक ।
रीति । रसम । ६. ढब । ढंग ।

चार-आइना–पुं० [फ़ा०] एक प्र
का कवच या बकतर ।

[सं०] भेदिये, गुप्तचर या
। जासूसी। (एस्पॉयनेज)
[फा०] वह कपड़ा जिसमें
पर बने हों।
[फा०] घोड़े की जीन।
[सं०] १. राजाओं और बड़े
और कीर्ति का वर्णन
। बन्दीजन। (बार्ड)
की एक जाति।
[फा०] १. चहार-
पनाह। प्राचीर।
'चारण'।
[सं० चारण] चराना।
[हिं० चार + पाया] छोटा
। खटिया।
धरना, पकड़ना या
लगना = चारपाई से न
बीमार होना।
[फा०] १. चौकोर बाग
। २. एक प्रकार का चौकोर
पर फैलाकर ओढ़ा जाता था।
[हिं० चार + फा० यार]
मित्रों की गोष्ठी। २. सुन्नी
का एक वर्ग।
[हिं० चरना] पशुओं के खाने
आदि।
[फा०] उपाय। तदबीर।
[फा०] फरियाद।
[सं० चारण] चारण जाति
स्त्री०।
[सं०] चलाया हुआ।
[सं०] १. कुल की रीति।
। २. व्यवहार।
[सं० चारिन्] [स्त्री० चारिणी]
। २. आचरण करनेवाला।
[सं०] [भाव० चारुता]

सुन्दर। मनोहर।

*पुं० दे० 'चार'।

चारु-हासिनी–वि० स्त्री०[सं०] सुन्दर हँसी हँसनेवाली। मनोहर मुसकानवाली।

चार्वाक–पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध नास्तिक तार्किक। २. इसका चलाया हुआ मत या दर्शन जिसमें ईश्वर का अस्तित्व नहीं माना जाता।

चाल–स्त्री० [हिं० चलना] १. चलने की क्रिया। गति। २. चलने का ढंग। ३. आचरण। बरताव। व्यवहार। ४. रीति। रवाज। प्रथा। परिपाटी। ५. युक्ति। तरकीब। ६. छल। धूर्त्तता। ७. प्रकार। तरह। ८. शतरंज, ताश, चौसर आदि के खेल में, पत्ता या मोहरा दाँव पर रखने या आगे बढ़ाने का काम। ९. चलने का शब्द। आहट।

चालक–वि० [सं०] चलानेवाला। जैसे–वायु-यान या मोटर का चालक।

चाल-चलन–पुं० [हिं० चाल + चलन] आचरण। व्यवहार। (कैरेक्टर)

चाल-ढाल–स्त्री० [हिं० चाल + ढाल] १. आचरण। व्यवहार। २. रंग-ढंग।

चालन–पुं० [सं०] कोई चीज चलाने की क्रिया या भाव। चलाना।

पुं० [हिं० चालना] भूसी या चोकर जो कोई चीज छानने से निकलता है।

स्त्री० = चलनी।

चालना†–स० [सं० चालन] १. दे० 'चलाना'। २. (बहू) बिदा कराके अपने घर ले आना।

अ० दे० 'चलना'।

स० [हिं० चलनी] चलनी या छाननी में रखकर छानना।

चालबाज–वि० [हिं० चाल + फा० बाज] [भाव० चालबाजी] धूर्त्त। छली।

चालबाजी–स्त्री० [हिं० चालबाज] धूर्त्तता। चालाकी। छल-कपट।

चाला-पुं० [हिं० चाल] १. प्रस्थान। कूच। २. नई बहू का पहले-पहल ससुराल से मैके जाना। ३. यात्रा का महूर्त्त। ४. उतारा या टोटका एक गाँव से दूसरे गाँव में ले जाना।

चालाक-वि० [फा०] १. चतुर। दक्ष। होशियार। २. धूर्त्त। चालबाज।

चालाकी-स्त्री० [फा०] १. चतुराई। २. व्यवहार-कुशलता। दक्षता। पटुता। ३. धूर्त्तता। चालबाजी।

चालान-पुं० दे० 'चलान'।

चालिया-वि० दे० 'चालबाज'।

चाली-वि० [हिं० चाल] १. चालबाज। २. चचल। ३. नटखट।

चालीस-वि० [सं० चत्वारिशत] जो गिनती में तीस से दस अधिक हो। बीस का दूना।

पुं० बीस की दूनी संख्या या अंक।

चालीसा-पुं० [हिं० चालीस] चालीस पद्यों आदि का संग्रह या समूह। जैसे-हनुमान चालीसा।

चालू-वि० [हिं० चलना] १. जो चल रहा हो या वर्त्तमान हो। (सबसिस्टिंग) २. जिसका चलन रुका न हो। प्रचलित। चलता हुआ। (करेन्ट) ३. (विधि या व्यवहार) जो प्रयोग या कार्य-रूप में लाया जा रहा हो। (इन ऑपरेशन)

चाल्ह†-स्त्री० दे० 'चेल्हवा' (मछली)।

चाव-पुं० [हिं० चाह] १. अभिलाषा। वासना। २. प्रेम। अनुराग। ३. शौक। चाह। ४. उमंग। उत्साह।

चावना*-स० दे० 'चाहना'।

चावल-पुं० [सं० तंडुल] १. एक प्रसिद्ध अन्न जो भूसी उतारा हुआ धान है। तंडुल। २. भात। ३. चावल के आकार के दाने। ४. एक रत्ती की तौल।

चाशनी-स्त्री० [फा०] १. आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और लसीला किया हुआ चीनी, मिस्री, गुड़ आदि का चसका। मजा। ३. सोने का जो मिलान के लिए सुनार को वाला गाहक अपने पास रखता है।

चाष-पुं० [सं०] १. नीलकंठ पक्षी। चाहा पक्षी।

चासा-पुं० [देश०] १. हलवाहा। खेतिहर।

चाह-स्त्री० [सं० इच्छा] १. अभिलाषा। २. प्रेम। प्रीति। ३. आदर। कदर। ४. आवश्यकता।

*स्त्री० [हिं० चाल = आहट] १. समाचार। २. टोह। आहट। ३. भेद। मर्म। रहस्य।

चाहक*-पुं० [हिं० चाहना] १. करने या चाहनेवाला। २. प्रेमी।

चाहत-स्त्री० [हिं० चाह] चाह।

चाहना-स० [हिं० चाह] १. अभिलाषा करना। २. प्रेम माँगना। *४. देखना। ५. ढूँढ़ना।

*स्त्री दे० 'चाह'।

चाहा-पुं० [सं० चाष] बगले का एक जल-पक्षी।

चाहि*-अव्य० [सं० चैव = और अपेक्षाकृत। तुलना में।

चाहिए-अव्य० [हिं० चाहना] १. है। २. आवश्यक है।

चाही-वि० स्त्री० [हिं० चाह] प्यारी।

वि० [फा० चाह = कूआँ] कूएँ जानेवाली (जमीन)।

चाहे-अव्य० [हिं० चाहना] इच्छा हो। २. यदि उचित अथवा। या।

चिउँटी-स्त्री० दे० 'च्यूँटी'।

चिंघाड़ना-अ० [सं० चीत्कार] चिंघाड़] १. चीखना। चिल्लाना। हाथी का बोलना या चिल्लाना।

[सं० तिंतिड़ी] इमली

[सं० चिरंजीव] [स्त्री०
लड़का। २. पुत्र। बेटा।

[?] नाव का एक प्रकार।

[सं०] [भाव० चिंतकता]

[सं०] [स्त्री० चिंतना] १.
होनेवाला स्मरण। ध्यान।
विचार। गौर।

स० [सं० चिंतन] १.
या ध्यान करना। २.
करना। ३. सोचना।

[सं०] १. चिन्तन या
योग्य। २. जिसका ठीक होना
न हो। संदिग्ध। विचारणीय।

पुं० दे० 'चिंतन'।

[सं०] १. चिंतन। २. किसी
की सिद्धि के संबंध में मन
होनेवाला विचार। सोच।

पुं० [सं०] १. सब मनोरथ
एक कल्पित रत्न। २.
३. परमेश्वर। ४. सरस्वती का
लड़के की जीभ पर इसलिए
है कि उसे खूब विद्या आवे।

[सं०] [स्त्री० चिंतिता]
। चिन्ता-युक्त।

दे० 'चिंतनीय'।

[देश०] बहुत छोटा टुकड़ा।
की चिन्दी निका-
के सूक्ष्म तर्क करना।

स० = चीथना।

पुं० [अं०] एक प्रकार का

स्त्री० दे० 'च्यूँटी'।

पुं० दे० 'चिड़वा'।

[तु० चिक] बाँस की तीलियों
हुआ परदा। चिलमन।

पुं० पशुओं को मारकर उनका माँस बेचनेवाला, जिसकी दूकान के आगे चिक पड़ी रहती है। कसाई।

चिकट—वि० [सं० चिल्किद] १. तेल और मैल से गन्दा और चिपचिपा।

चिकटना—अ० [हिं० चिक्कट या चिकट] बहुत मैल से चिपचिपा होना।

चिकन—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का बूटीदार सूती कपड़ा।

चिकना—वि० [सं० चिक्कण] [स्त्री० चिकनी, भाव० चिकनाई, चिकनापन, चिकनाहट] १. जो खुरदुरा न हो। साफ और बराबर। २. जिसमें तेल लगा या मिला हो। पद-**चिकना घड़ा** = निर्लज्ज। वेहया। **चिकनी चुपड़ी बातें** = बनावटी स्नेह से भरी या खुशामद की बातें। ३. कृत्रिम व्यवहार करनेवाला। खुशामदी। ४. स्नेही। प्रेमी। ५. धनवान। सम्पन्न। ६. हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ।
पुं० तेल, घी आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाई—स्त्री० = चिकनाहट।

चिकनाना—स० [हिं० चिकना + आना (प्रत्य०)] १. चिकना करना या बनाना। २. मीठी मीठी या खुशामद की बातें कहकर किसी को प्रसन्न करना। ३. कोई बिगड़ी हुई बात बनाने या सँभालने के लिए इधर-उधर की या बनावटी बातें करना।
अ० १. चिकना होना। २. स्निग्ध होना। ३. हृष्ट-पुष्ट होना। मोटा होना।

चिकनापन—पुं० = चिकनाहट।

चिकनाहट—स्त्री० [हिं० चिकना + हट प्रत्य०)] 'चिकना' होने का भाव या दशा। चिकनापन। चिकनाई।

चिकनिया—वि० [हिं० चिकना] छैला।

चिकनी सुपारी—स्त्री० [सं० चिक्कणी] एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।

चिकर—पुं० [?] एक प्रकार का रेशमी

कपड़ा।

चिकरना–अ० दे० 'चिंघाड़ना'।

चिकवा–पुं० १. दे० 'चिकर'। २. दे० 'चिक' (कसाई)।

चिकार*–पुं० = चिंघाड़।

चिकारा–पुं० [हिं० चिकार] [स्त्री० अल्पा० चिकारी] १. सारंगी की तरह का एक बाजा। २. हिरन की तरह का एक जानवर।

चिकारी–स्त्री० = चीत्कार।

चिकित्सक–पुं० [सं०] रोग का इलाज या चिकित्सा करनेवाला। वैद्य।

चिकित्सन–वि० [सं० चिकित्सा] चिकित्सा या चिकित्सक से सम्बन्ध रखनेवाला। (मेडिकल) जैसे–चिकत्सन अधिकारी, चिकित्सन प्रमाणक।

चिकित्सन-प्रमाणक–पुं० [सं०] वह प्रमाण-पत्र जो अस्वस्थता, वयस्कता आदि सिद्ध करने के लिए किसी चिकित्सक से प्राप्त किया जाता है। (मेडिकल सरटिफिकेट)

चिकित्सन-वैचारिक विज्ञान–पुं०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें चिकित्सा संबंधी मूल सिद्धान्तों या तत्वों का विवेचन हो। (मेडिकल ज्यूरिसप्रूडेन्स)

चिकित्सा–स्त्री० [सं०] [वि० चिकित्सिक, चिकित्स्य] रोग दूर करने की युक्ति या प्रक्रिया। इलाज।

चिकित्सा अधिकारी–पुं० [सं०] वह चिकित्सक अधिकारी जो किसी राजकीय विभाग या नगर-पालिका आदि में लोगों की चिकित्सा की व्यवस्था करता हो। (मेडिकल ऑफिसर)

चिकित्सालय–पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ रोगियों की चिकित्सा या दवा होती हो। दवाखाना। अस्पताल। (हॉस्पिटल)

चिकित्सावकाश–पुं० [सं०] वह अवकाश या छुट्टी जो किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के लिए मिलती (मेडिकल लीव)

चिकित्स्य–वि० [सं०] १. (रोग रोगी) जो चिकित्सा करने से अच्छा सके। २. जिसकी चिकित्सा या हो सके।

चिकुटी*–स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चिकुर–पुं० [सं०] १. केश। पर्वत। ३. रेंगनेवाले जन्तु। सरीसृप।

चिकोटी†–स्त्री० दे० 'चुटकी' ४.।

चिक्क-चाक†–वि० [अनु०] चमक वाला। चमकीला। चटकीला।

चिक्कट–वि० दे० 'चिकट'।

चिक्कण–वि० [सं०] चिकना।

चिक्करना–अ० दे० 'चिंघाड़ना'।

चिक्कार–पुं० = चिंघाड़।

चिचड़ा–पुं० [देश०] एक जंगली जो दवा के काम में आता है। अपा लटजीरा।

चिचड़ी–स्त्री० दे० 'किलनी'।

चिचान*–पुं० [सं० सचान] बाज

चिचुकना–अ० दे० 'चुचुकना'।

चिचोड़ना†–स० दे० 'चचोड़ना'।

चिजारा–पुं० दे० 'मेमार' या 'राज'।

चिट–स्त्री० [सं० चीर] १. कागज कम चौड़ा और अधिक लम्बा टुकड़ा पर कोई बात या लेखा लिखा (स्लिप) २. कपड़े की ऐसी ही धज्जी।

चिटकना–अ० [अनु०] [स० काना] १. चिट शब्द करके टूटना। जगह जगह से फटना। ३. लकड़ी का समय 'चिट चिट' शब्द करना। चिढ़ना। ५. कली का फूटकर खिलना।

चिट-नवीस–पुं० [हिं० चिट+ नवीस] लेखक। मुहर्रिर। लिपिक।

चिटनीस–पुं० दे० 'चिट-नवीस'।

चिट्टा–वि० [सं० सित] सफेद। पुं० [?] झूठा बढ़ावा।

चिड़िहार†*–पुं० दे० 'बहेलिया' ।

चिड़ी-मार–पुं० दे० 'बहेलिया' ।

चिड़ौला–पुं० [हिं० चिड़ा + औला (प्रत्य०)] चिड़िया का छोटा बच्चा ।

चिढ़ना–अ० [हिं० चिड़चिड़ाना] [भाव० चिढ़] १. अप्रसन्न होना । बिगड़ना । २. द्वेष रखना ।

चिढ़ाना–स० [हि० चिढ़ना] जान बूझ कर ऐसा काम करना कि कोई चिढ़े ।

चित्–स्त्री० [सं०] चैतन्य । ज्ञान ।

चित–पुं० [सं० चित्त] चित्त । मन । वि० [सं० चित = ढेर किया हुआ] पीठ के बल लेटा या पड़ा हुआ । 'पट' का उलटा ।

चितउन*–स्त्री० दे० 'चितवन' ।

चित-कबरा–वि० [सं० चित्र + कर्बुर] [स्त्री० चितकबरी] भिन्न भिन्न रंगों के धब्बोंवाला ।

चित-चोर–पुं० [हिं० चित + चोर] चित्त चुरानेवाला । प्यारा । प्रिय ।

चित-भंग–पुं० [सं० चित्त + भंग] १. उचाट । उदासी । २. बद-हवासी ।

चितरना*–स० [सं० चित्त] १. चित्रित या अंकित करना । चीतना । २. लगाना । जैसे–काजल चितरना ।

चितरसारी*–स्त्री० = चित्रशाला ।

चितला–वि० = चित-कबरा ।

चितवन–स्त्री० [हिं० चेतना] ताकने या देखने का भाव या ढंग । अवलोकन । दृष्टि ।

चितवना*–स० [हिं० चेतना] देखना ।

चिता–स्त्री० [सं० चित्या] १. चुनी हुई लकड़ियों का वह ढेर जिसपर मुरदा जलाते हैं ।

चिताना–स० दे० 'चेताना' ।

चितारना–स० दे० 'चितरना' । स० [सं० चित्त] ध्यान में लाना ।

चितावनी–स्त्री० दे० 'चेतावनी' ।

चिति–स्त्री० [सं०] १. चिता । २. समूह । ढेर । ३. चुनना । चयन । ४. चैतन्य ।

चित्शक्ति । ६. दुर्गा ।

चितेरा–पुं० दे० 'चित्रकार' ।
*वि० = चित्रित ।

चितैला*–पुं० = चित्रकार ।

चितौनी*–स्त्री० दे० 'चितवन' ।

चित्त–पुं० [सं०] अंतःकरण । मन । दिल ।
मुहा०–चित्त चढ़ना = दे० 'चित्त पर चढ़ना' । **चित्त चुराना** = मन मोहना । **चित्त देना** = ध्यान देना । **चित्त पर चढ़ना** = (क) मन में ध्यान बना रहना । (ख) याद आना । **चित्त बँटना** = चित्त एकाग्र न रहना । **चित्त में जमना या बैठना** = (क) हृदय में दृढ़ होना । (ख) समझ में आना । **चित्त से उतरना** = (क) भूल जाना । (ख) मन में पहले का-सा प्रेम या आदर न रह जाना ।

चित्त-भंग–पुं० दे० 'चित्त-विक्षेप' ।

चित्त-विक्षेप–पुं० [सं०] चित्त की चंचलता या अस्थिरता जो मन के एकाग्र होने में बाधक होती है ।

चित्त-विभ्रम–पुं० [सं०] १. भ्रान्ति । भ्रम । धोखा । २. उन्माद ।

चित्त-वृत्ति–स्त्री० [सं०] चित्त की वह अवस्था, जिसके अनुसार मनुष्य कोई विचार या काम करता है ।

चित्ती–स्त्री० [सं० चित्र] छोटा धब्बा । स्त्री० [हिं० चित] जूआ खेलने की एक प्रकार की चिपटी कौड़ी ।

चित्तौर–पुं० [सं० चित्रकूट] राजपूताने का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर ।

चित्र–पुं० [सं०] [वि० चित्रित] १. चंदन आदि का तिलक । २. रेखाओं या रंगों से बनी हुई किसी वस्तु की आकृति । तसवीर । (पिक्चर) ३. किसी वस्तु की वह प्रतिकृति जो किसी कथन, विवेचन, विवरण आदि को स्पष्ट करने के लिए उपस्थित की जाय । (इलस्ट्रेशन) ४. किसी वस्तु की ज्यों की त्यों तैयार की हुई प्रतिकृति । (फोटो) ५. सजीव विस्तृत वर्णन ।
मुहा०–चित्र उतारना या खींचन ऐसा वर्णन करना कि सब बातें चि दृश्य की तरह सामने आ जायँ । ६. काव्य का एक भेद जिसमें व्यं चमत्कार नहीं रहता । ६. काव्य के रचना जिसमें विशेष क्रम से लिखे के अक्षरों से घोड़े, रथ, कमल आ आकार बन जाते हैं । ७. आकाश एक प्रकार का कोढ़ । ९. चित्रगुप्त । वि० १. अद्भुत । विचित्र । २. रंग

चित्रक–पुं० [सं०] १. चित्रकार चीता । बाघ । ३. चीता नामक

चित्र-कला–स्त्री० [सं०] चित्र ब विद्या या कला ।

चित्रकार–पुं० [सं०] चित्र बनाने चितेरा ।

चित्रकारी–स्त्री० [हिं० चित्रकार चित्र बनाने की कला । २. बने चित्र ।

चित्र-काव्य–पुं० [सं०] ऐसा जिसके अक्षर किसी विशेष क्रम से पर किसी वस्तु का चित्र-सा बन जा

चित्रकूट–पुं० [सं०] १. एक प पर्वत, जिसपर बनवास में राम और बहुत दिनों तक रहे थे । २. चित्तौर ।

चित्रगुप्त–पुं० [सं०] वह दे प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं

चित्र-जल्प–पुं० [सं०] वह भाव बात जो नायक और नायिका रूठ दूसरे से कहते हैं ।

चित्रण–पुं० [सं०] किसी सम असम तल पर रंगों से आकृति उसमें लंबाई, चौड़ाई और गोला आदि दिखलाना । चित्र अंकित क तसवीर बनाना ।

चित्रना*–पु० [सं० चित्र + ना (प्र

करना। २. रंग भरना। ३.
ना। ४. शोभा के लिए स्त्रियों
चन्दन-केसर आदि से

[सं०] [स्त्री० चित्रपटी]
कागज आदि जिनपर चित्र
हों। चित्राधार।

[सं०] लिपि का वह
वस्तु या भाव का बोध
वर्णों या अक्षरों की जगह
का सूचक चित्र ही बना
है। (आइडिओग्राफ) जैसे-
लिपियाँ।

= चित्रकार।

[सं०] १. रंग-
रंगों का। २. बेल-बूटेदार।
का। तरह तरह का।

[सं०] १. वह घर
पर चित्र बने हों। २.
हुआ घर।

स० दे० 'चित्रना'।

[सं० चित्र + शाला]
। २. सजा हुआ शयन-
भवन। रंग-महल। ३.

[सं०] १. चित्र में अंकित
। २. चित्र में अंकित व्यक्ति
या निश्चल।

[सं०] १. सत्ताइस नक्षत्रों
। २. ककड़ी या खीरा।

[सं०] १. वह पुस्तक
प्रकार के चित्र रक्खे जाते
। (एल्बम) २. चित्रपट।

[सं०] काम-शास्त्र में
में से एक।

[सं०] १. चित्र में खींचा
चित्तियों या धारियों
। ४. अंकित।

चिथड़ा—पुं० [सं० चीर्ण या चीर] फटा-पुराना कपड़ा।

चिथाड़ना—स० [सं० चीर्ण] १. चीरना। फाड़ना। २. डाँटना। डपटना।

चिदात्मा—पुं० [सं०] ब्रह्म।

चिदानंद—पुं० [सं०] ब्रह्म।

चिदाभास—पुं० [सं०] अंतःकरण पर का ब्रह्म का आभास या प्रतिबिम्ब।

चिद्रूप—पुं० [सं०] ज्ञान-स्वरूप परमात्मा।

चिद्विलास—पुं० [सं०] चैतन्य-स्वरूप ईश्वर की माया।

चिनगारी—स्त्री० [सं० चूर्ण, हिं० चून + अंगार] आग का छोटा कण या टुकड़ा। अग्नि-कण।

मुहा०—आँखों से चिनगारी छूटना=क्रोध से आँखें लाल होना।

चिनगी—स्त्री० [हिं० चिनगारी] १. चिनगारी। २. वह लड़का जो नटों के साथ बाँस पर चढ़ता और तरह तरह के खेल दिखाता है।

चिनाना*—स० दे० 'चुनवाना'।

चिनिया—वि० [हिं० चीनी] १. चीनी के रंग का। २. चीन का।

पुं० एक प्रकार का रेशा या नकली रेशम।

चिनिया बदाम—पुं० दे० 'मूँगफली'।

चिनिया बेगम—स्त्री० दे० 'अफीम'।

चिन्मय—वि० [सं०] [स्त्री० चिन्मयी] ज्ञान-मय। चेतना-युक्त।

पुं० परमेश्वर।

चिन्ह*—पुं० दे० 'चिह्न'।

चिन्हानी—स्त्री० [हिं० चिह्न] १. याद दिलानेवाली वस्तु। २. स्मारक।

चिन्हार—वि० [हिं० चीन्हना] जान-पहचान का। परिचित।

चिन्हारी—स्त्री० [हिं० चीन्हना] जान-पहचान। परिचय।

पुं० वह जिससे जान-पहचान या परिचय हो। परिचित।

चिपकना-अ० [अनु० चिपचिप] १. गोंद आदि लसीली चीजों से दो वस्तुओं का आपस में जुड़ना। २. लिपटना। चिपटना।

चिपकाना-स० [हिं० चिपकना] लसीली वस्तु से जोड़ना।

चिपचिपा-वि० [अनु० चिपचिप] चिपकनेवाला। लसीला।

चिपचिपाना-अ० [हिं० चिपचिप] छूने से चिपचिपा मालूम होना।

चिपटना-अ० दे० 'चिमटना'।

चिपटा-वि० [सं० चिपिट] [स्त्री० चिपटी] जिसकी सतह उठी हुई न हो। दबा हुआ।

चिपड़ी-स्त्री० दे० 'उपला'।

चिप्पड़-पुं० दे० 'चप्पड़'।

चिप्पी-स्त्री० [हिं० चिपकना] १. कागज का वह छोटा टुकड़ा जो किसी वस्तु पर चिपकाया जाय। २. दे० 'अंकितक'।

चिबुक-पुं० [सं०] ठोढ़ी।

चिमटना-अ० [हिं० चिपटना] १. चिपकना। २. कसकर लिपटना। ३. पीछा या पिंड न छोड़ना।

चिमटा-पुं० [हिं० चिमटना] [स्त्री० अल्पा० चिमटी] दबाकर पकड़ने या उठानेवाला फैले मुँह का एक औजार।

चिमटाना-स० हिं० 'चिमटना' का स०।

चिमड़ा-वि० दे० 'चीमड़'।

चिमनी-स्त्री० [अं०] १. मकान का धूआँ निकालनेवाला छेद या नल। २. लम्प या लालटेन पर का शीशा।

चिमिकना*-अ० = चमकना।

चिरंजीव-वि० [सं०] बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला। चिरजीवी।

अव्य० यह आशीर्वाद कि बहुत दिनों तक जीते रहो।

पुं० पुत्र। बेटा।

चिरंतन-वि० [सं०] पुराना। प्राचीन।

चिर-वि० [सं०] दीर्घ। बहुत। (समय) क्रि० वि० बहुत दिनों तक।

चिरई†-स्त्री० दे० 'चिड़िया'।

चिर-काल-पुं० [सं०] दीर्घ काल।

चिर-कालिक (कालीन)-वि० [सं० बहुत दिनों का। पुराना।

चिरकुट-पुं० दे० 'चिथड़ा'।

चिरगा-पुं० [?] कुछ लाली लिये का घोड़ा।

चिर-जीवन-पुं० [सं०] सदा बना वाला जीवन। अमर जीवन।

वि० दे० 'चिरजीवी'।

चिरजीवी-वि० [सं०] १. अधिक तक जीनेवाला। दीर्घायु। २. अमर।

चिरता*-पुं० दे० 'चिल्ता' (कत्र)

चिरना-अ० [सं० चीर्ण] सीध में

चिर-निद्रा-स्त्री० [सं०] [वि० निद्रित] मृत्यु। मौत।

चिर-परिचित-वि० [सं०] १. बहुत दिनों का परिचय हो। २. जान या समझा हुआ।

चिरमिटी-स्त्री० [देश०] घुँघची।

चिरमी-स्त्री० [देश०] घुँघची।

चिरवाना-स० हिं० 'चीरना' का प्रे०

चिर-स्थायी-वि० [सं० चिरस्था बहुत दिनों तक बना रहनेवाला।

चिर-स्मरणीय-वि० [सं०] बहुत तक याद रहने या रखने योग्य।

चिरहँटा†-पुं० = बहेलिया।

चिराई-स्त्री० [हिं० चीरना] चीरने भाव, काम या मजदूरी।

चिराक*-पुं० दे० 'चिराग'।

चिराग-पुं० [फा०] दीपक। दीया।

चिरागदान-पुं० [फा०] दीयट।

चिरातन*-वि० दे० 'चिरंतन'।

चिराना-स० [हिं० 'चीरना' का चीरने का काम दूसरे से कराना।

*अ० दे० 'चिरना'।

*वि० [सं० चिरंतन] १. पुराना।

चिलम–स्त्री० [फा०] मिट्टी की एक तरह की नलीदार कटोरी जिसपर तम्बाकू रखकर उसका धूआँ पीते हैं।

चिलमची–स्त्री० [तु० चिलपचा से फा०] चौड़े मुँह का वह बरतन जिसमें हाथ-मुँह धोते हैं।

चिलमन–स्त्री० दे० 'चिक'।

चिलवाँस–पुं० [?] चिड़ियाँ फँसाने का फन्दा।

चिलिग–स्त्री० दे० 'चिलक'।

चिल्लड़–पुं० [सं० चिल = वस्त्र] जूँ के आकार का एक सफेद कीड़ा।

चिल्ल-पों–स्त्री० [हिं० चिल्लाना + अनु० पों] चिल्लाहट। शोर-गुल।

चिल्ला–पुं० [फा०] १. चालिस दिनों का समय।

मुहा०–चिल्ले का जाड़ा = कड़ी सरदी जो प्रायः ४० दिनों तक रहती है।

पुं० [देश०] १. चने, मूँग आदि की घी में सिंकी रोटी। उलटा। २. धनुष की डोरी। पतंचिका।

चिल्लाना–अ० [हिं० चीत्कार] [भाव० चिल्लाहट, प्रे० चिल्लवाना] विपत्ति, क्रोध, आवेश आदि के समय जोर से बोलना। शोर या हल्ला करना।

चिल्लाहट–स्त्री० [हिं० चिल्लाना] चिल्लाने की क्रिया या भाव।

चिल्लिका–स्त्री० [सं०] १. झिल्ली या झींगुर नाम का कीड़ा। २. धूप।

चिल्ली–स्त्री० [सं०] झिल्ली (कीड़ा)। स्त्री० दे० 'बिजली'।

चिहुँकना*–अ० दे० 'चौंकना'।

चिहुँटना*–स० [हिं० चिमटना] १. चुटकी काटना। २. चिपटना। लिपटना।

चिहुँटी–स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चिहुर*–पुं० [सं० चिकुर] केश। बाल।

चिह्न–पुं० [सं०] १. दिखाई देने या समझ में आनेवाला ऐसा लक्षण, जिससे

कोई चीज पहचानी जा सके या किसी बात का कुछ प्रमाण मिले। निशान। (मार्क) २. कोई ऐसी छोटी बात जो किसी दूसरी बड़ी बात या घटना की सूचक हो। संकेत। (साइन) ३. किसी चीज या बात का पता देनेवाला कोई तत्व। ४. किसी चीज की पहचान के लिए उसपर लगाया हुआ अंक या निशान। ५. किसी चीज के सम्पर्क, संघर्ष या दाब से पड़ा हुआ निशान। छाप। (इम्प्रेशन) जैसे–चरण-चिह्न। ६. पताका। झंडा।

चिह्नित–वि॰ [सं॰] १. चिह्न किया हुआ। २. जिसपर चिह्न या निशान लगा हो। (मार्क्ड)

चीं-चपड़–स्त्री॰ [अनु॰] विरोध में बहुत दबते हुए कुछ कहना।

चींटवा(टा)–पुं॰ दे॰ 'च्यूँटा'।

चींटी–स्त्री॰ दे॰ 'च्यूँटी'।

चींतना*–स॰ दे॰ 'चित्रना'।

चींथना–स॰ [सं॰ चीर्ण] नोचकर फाड़ना।

चींक–स्त्री॰ दे॰ 'चिल्लाहट'।

चीकट–पुं॰ [हिं॰ कीचड़] १. तेल की मैल। २. लसदार मिट्टी।

वि॰ दे॰ 'चिकट'।

चीकना–अ॰ [सं॰ चीत्कार] जोर से चिल्लाकर बोलना। चिल्लाना।

*वि॰ दे॰ 'चिकना'।

चीकू–पुं॰ [देश॰] महोगनी नामक वृक्ष का गूदेदार मीठा फल जो खाया जाता है।

चीख–स्त्री॰ दे॰ 'चिल्लाहट'।

चीखना–स॰ दे॰ 'चखना'।

अ॰ दे॰ 'चीकना'।

चीखर(ल)*–पुं॰ दे॰ 'कीचड़'।

चीज–स्त्री॰ [फा॰] १. पदार्थ। वस्तु। द्रव्य। २. अलंकार। गहना। ३. गीत। ४. विलक्षण या महत्व की वस्तु या बात।

चीठी–स्त्री॰ दे॰ 'चिट्ठी'।

चीड़–पुं॰ [सं॰ चीडा] एक बहुत ऊँचा और लम्बा पेड़ जिसके गोंद से
बिरोजा निकलता है।

चीड़ा–पुं॰ [?] काँच की बनी हुई
गुरिया या मनका।

चीत*–पुं॰ [सं॰ चित्रा] चित्रा नक्
स्त्री॰ = चेतना।

चीतना*–अ॰ [हिं॰ चेतना] १.
में सोचना। जैसे–किसी का बुरा चीत
२. दे॰ 'चेतना'।

स॰ [सं॰ चित्र] चित्र या बेल-बूटे ब

चीतर*–पुं॰ १. दे॰ 'चीतल'। २. दे॰ चि

चीतल–पुं॰ [हिं॰ चित्ती] १. एक
का हिरन। २. एक प्रकार का बड़ा

चीता–पुं॰ [सं॰ चित्रक] १. एक
हिंसक जंगली पशु। २. ओषध के
का एक पेड़।

वि॰ [हिं॰ चेतना] मन में सोचा हु

चीत्कार–पुं॰ [सं॰] चिल्लाहट।

चीथड़ा–पुं॰ दे॰ 'चिथड़ा'।

चीथना–स॰ [सं॰ चीर्ण] फाड़कर टु
टुकड़े करना।

चीन–पुं॰ [सं॰] १. झंडा। पताका।
तागा। ३. एक प्रकार का रेशमी क
४. भारत के पूर्व का एक प्रसिद्ध देश।

चीनांशुक–पुं॰ [सं॰] १. चीन दे
लाल बनात। २. एक प्रकार का
कपड़ा, जो पहले चीन से आता था।

चीना–वि॰ [सं॰ चीन] चीन देश
पुं॰ एक प्रकार का कपूर।

चीनी–स्त्री॰ [चीन (देश) + ई (प्र
सफेद चूर्ण के रूप में मिठास
जो ईख या खजूर आदि के रस से
है। शक्कर।

वि॰ चीन देश का।

पुं॰ चीन देश का निवासी।

स्त्री॰ चीन देश की भाषा।

चीनी मिट्टी–स्त्री॰ [हिं॰ चीनी (वि॰)
मिट्टी] एक प्रकार की सफेद मिट्टी

आदि बनते हैं।
दे० 'पहचानना'।
दे० 'चिप्पड़'। २. दे० 'चेप'।
-पुं० [अं०] किसी
धर्माधिकरण का सबसे बड़ा
न्यायाधीश या जज।
[हिं० चमड़ा] जो बिना
मोड़ा या झुकाया जा सके।
[हिं० चिंचा] इमली का बीज।
] १. वस्त्र। कपड़ा। २.
। ३. चिथड़ा। लत्ता। ४.
बौद्ध भिक्षुओं का वस्त्र।
चीरना] १. चीरने की क्रिया
। २. चीरने से बनी हुई दरार।
[सं०] १. लेख्य। (डाकु-
रूई की तरह लपेटा हुआ लम्बा
। (रोल, स्क्रोल)
वह स्थान जहाँ आकस्मिक
से मरनेवालों के शव चीर-
मृत्यु का कारण जानने के लिए
हैं। (मॉर्च्युअरी)
-पुं० दे० 'बाघंबर'।
[सं० चीर्ण] १. तेज धार-
से बीच में से काटना। २.
।

या रुपया चीरना =
से धन प्राप्त करना।
-स्त्री० [हिं० चीर + फाड़ना] १.
का काम या भाव। २. अंगों या
चीरने का काम या भाव। अस्त्र-
। (ऑपरेशन)
[हिं० चीरना] १. एक प्रकार
रंगीन कपड़ा जिसकी पगड़ी
है। २. चीरकर बनाया हुआ दात
।

-स्त्री० दे० 'चिड़िया'।
[सं०] फटा या चिरा हुआ।
[सं० चिल्ल] गिद्ध की जाति

की एक चिड़िया।

चील-झपट्टा–पुं० [हिं० चील + झपटना] चील की तरह झपटकर किसी से कोई चीज छीन या ले लेने की क्रिया या भाव।

चीलर–पुं० दे० 'चिल्लड़'।

चीवर–पुं० [सं०] १. संन्यासियों या भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा।

चुंगल–पुं० दे० 'चंगुल'।

चुंगी–स्त्री० [सं० शुल्क, प्रा० शुंक] १. चुटकी या चंगुल भर चीज। २. शहर में आनेवाले बाहरी माल पर लगनेवाला महसूल।

चुँघाना–स० [हिं० चुसाना] चुसाना।

चुंडित*–वि० [हिं० चुंदी] चुंदीवाला।

चुँदरी–स्त्री० दे० 'चूनरी'।

चुंदी–स्त्री० [सं० चूड़ा] बालों का वह गुच्छा जो हिन्दू लोग सिर के ऊपरी मध्य भाग में रखते हैं। शिखा। चोटी।

चुंधा–वि० [हिं० चौ = चार + अंध] [स्त्री० चुंधी] १. अंधा। २. छोटी आँखोंवाला।

चुंधियाना–अ० दे० 'चौंधियाना'।

चुंबक–पुं० [सं०] १. वह जो चुंबन करे। २. ग्रंथों को केवल इधर-उधर से उलटने-पलटनेवाला। ३. वह पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर खींचता है।

चुंबकत्व–पुं० [सं०] १. चुंबक का गुण या भाव। २. आकर्षण शक्ति।

चुंबन–पुं० [सं०] [वि० चुंबनीय, चुंबित] १. चूमने की क्रिया। २. चुम्मा। बोसा। ३. स्पर्श।

चुंबना*–स० = चूमना।

चुंबी–वि० [सं० चुम्बिन्] १. चूमनेवाला। २. छूने या स्पर्श करनेवाला।

चुअना*–अ० दे० 'चूना'।

चुआना–स० हिं० 'चूना' का स०।

चुकंदर–पुं० [फा०] गाजर की तरह का

एक कन्द।

चुक-पुं० दे० 'चूक'।

चुकता(ती)-वि० [हिं० चुकना] (हिसाब या ऋण) जो चुका दिया गया हो। निःशेष। अदा।

चुकना-अ० [सं० च्युत्कृत] १. समाप्त होना। बाकी न रहना। २. दिया जाना। चुकता होना। ३. तै होना। निपटना। *४. दे० 'कूकना'। ५. समाप्ति-सूचक संयोज्य क्रिया। जैसे-खा चुकना।

चुकाना-स० [हिं० चुकना] १. चुकता कर देना। बाकी न रखना। (देन) २. तै करना। निपटाना।

चुकाव-पुं० [हिं० चुकना] चुकने या चुकाये जाने की क्रिया या भाव।

चुक्कड़-पुं० [सं० चषक] मिट्टी का छोटा बरतन। कुल्हड़। पुरवा।

चुखाना-अ०, स० दे० 'चोखाना'।

चुगत-स्त्री० [हिं० चुगना] चुगने की क्रिया या भाव।

चुगना-स० [सं० चयन] चिड़ियों का चोंच से दाने या चारा उठाकर खाना।

चुगलखोर-पुं० [फा०] चुगली खाने या शिकायत करनेवाला। लुतरा।

चुगली-स्त्री० [फा०] झगड़ा लगानेवाली किसी की वह बात जो उसके परोक्ष में किसी से कही जाती है। शिकायत।

चुगा*-पुं० [हिं० चुगना] चिड़ियों के चुगने का चारा।

पुं० दे० 'चोगा'।

चुगाना-स० हिं० 'चुगना' का स०।

चुगुल*†-पुं० दे० 'चुगुलखोर'।

चुचकारना-स० दे० 'चुमकारना'।

चुचाना*-अ० दे० 'चूना'।

चुचुकना†-अ० [सं० शुष्क + ना (प्रत्य०)] ऐसा सूखना कि झुर्रियाँ पड़ जायँ।

चुटकना-स० [हिं० चुटकी] १. चुटकी से तोड़ना। २. साँप का काटना।

चुटकी-स्त्री० [अनु० चुट चुट] १. के लिए अँगूठे और तर्जनी का योग।

मुहा०-चुटकी बजाना=एक प्रकार से अँगूठे को बीच की उँ छटकाकर शब्द निकालना। **बजाते** = बात की बात में। **चुटकियों में उड़ाना** = बहुत सह मझना।

पद-चुटकी भर=जरा सा। में = बहुत शीघ्र।

२. चुटकी बजने का शब्द। ३. अन्न। थोड़ा अन्न।

मुहा०-चुटकी माँगना=भिक्षा माँगना

४. अँगूठे और तर्जनी से किसी का चमड़ा पकड़कर दबाना जिससे पीड़ा हो। चिकोटी।

मुहा०-चुटकी भरना या काट (क) अँगूठे और तर्जनी से चमड़े को पीड़ित करना। (ख) चुभती हुई बात **चुटकी लेना** = (क) हँसी उड़ाना। चुभती हुई बात कहना।

चुटकुला-पुं० [हिं० चोट + कला] चमत्कारपूर्ण हँसी की या छोटी मजेदार

मुहा०-चुटकुला छोड़ना = ऐसी कहना जिससे झगड़ा खड़ा हो।

२. दवा का छोटा और गुणकारी नुस्खा। लटका।

चुटफुटा†-स्त्री० [अनु०] फुटकर

चुटिया-स्त्री० [हिं० चोटी] शिखा।

चुटीला-वि० [हिं० चोट] जिसे चोट हो। घायल।

चुटैल-वि० [हिं० चोट] १. घायल। चोट करनेवाला।

चुड़िहारा-पुं० [हिं० चूड़ी + हारा (प्रत्य०) [स्त्री० चुड़िहारिन] चूड़ियों का व्यवसा

चुड़ैल-स्त्री० [सं० चूड़ा + ऐल (प्रत्य०)] १. भूतनी। डायन। २. कुरूपा स्त्री। क्रूर और लड़ाकी स्त्री।

[हिं० चुनचुनाना] जिसके
जलन लिये हुए
।
[अनु०] कुछ जलन
चुनचुनी होना।
'चुनन'।
[हिं० चुनना] कपड़े आदि
।
[हिं० चयन] १. छोटी छोटी
इकट्ठी करना। जैसे-
२. बहुत-सी चीजों में से कुछ
करके अलग करना।
३. कुछ लोगों में से किसी को
बनाने के लिए कहना।
। ४. अच्छी चीज में से
कूड़ा-करकट छाँटकर अलग
या चावल चुनना। ५.
पर एक करके ठीक तरह
मेख पर खाना या दीवार
।

किसी को दीवार में चुनना=
देने के लिए उसे खड़ा करके
और दीवार उठाना।
छोटी छोटी तह लगाना या
के लिए उसमें जगह जगह
डालना।

[हिं० चुनना] १. दे० 'चूनरी'।
(स्त्री०)

[हिं० चुनना] चुनने की
मजदूरी।

[हिं० चुनना] १. चुनने की
। (सेलेक्शन) २. किसी
किसी व्यक्ति को चुनना।
(इलेक्शन)

चुनाव लड़ना=किसी चुनाव
में स्वयं खड़े होकर या किसी
ओर से किसी दूसरे उम्मेदवार
प्रयत्न करना।

३. वह वस्तु या व्यक्ति जिसे काम के लिए चुना जाय। (सेलेक्शन) जैसे—आपका यह चुनाव कुछ अच्छा नहीं हुआ।

चुनिंदा-वि० [हिं० चुनना + इंदा (प्रत्य०)] १. चुना हुआ। २. बढ़िया।

चुनी*-स्त्री० दे० 'चुन्नी'।

चुनौटी-स्त्री० दे० 'चूनेदानी'।

चुनौती-स्त्री० [हिं० चुनना] १. शत्रु या प्रतिद्वन्दी को दी जानेवाली ललकार। २. किसी से यह कहना कि तुममें शक्ति हो तो अमुक काम कर दिखलाओ या अमुक बात सिद्ध करो। आह्वान। (चैलेंज)

चुन्नी-स्त्री० [सं० चूर्ण] १. मानिक आदि का बहुत छोटा टुकड़ा। बहुत छोटा रत्न। रत्न-कण। २. अनाज या लकड़ी का चूरा। ३. चमकी। सितारा।

चुप-वि० [सं० चुप (चोपन) = मौन] जो कुछ न बोले। अवाक्। मौन।

यौ०—चुप-चाप = (क) बिना कुछ कहे-सुने। शांत भाव से। (ख) छिपे छिपे। (ग) चेष्टा या प्रयत्न से रहित। (घ) निर्विरोध।

चुपका-वि० [हिं० चुप] मौन।

मुहा०—चुपके से = (क) बिना कुछ कहे-सुने। (ख) गुप्त रूप से। चुप-चाप।

चुप-चाप-वि० दे० 'चुप' में यौ०।

चुपड़ना-स० [हिं० चिपचिपा] १. लेप करना। २. इधर-उधर की बातों से दोष या भूल छिपाना। ३. चिकनी-चुपड़ी बातें कहना।

चुपना*-अ० = चुप होना।

चुपाना*-अ० [हिं० चुप] चुप होना। स० किसी को चुप कराना।

चुप्पा-वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुप्पी] प्रायः चुप रहने और कम बोलनेवाला।

चुप्पी-स्त्री० [हिं० चुप] मौन।

चुभना-अ० [अनु०] [स० चुभाना] १. नुकीली वस्तु का नरम स्तर में घुसना। गड़ना। धँसना। २. खटकना। बुरा लगना।

३. मन में बैठना।

चुभलाना-स० [अनु०] मुँह में रखकर घुलाना या इधर-उधर करना।

चुभाना-स० हिं० 'चुभना' का स०।

चुमकार-स्त्री० [हिं० चूमना + कार] चूमने का-सा प्यार का शब्द। पुचकार।

चुमकारना-स० [हिं० चुमकार] प्रेमपूर्वक चूमने का सा शब्द करना। पुचकारना। दुलारना।

चुम्मा-पुं० दे० 'चुंबन'।

चुर-पुं० [देश०] जंगली पशुओं की माँद। विवर।

*वि० [सं० प्रचुर] बहुत। अधिक।

चुरकुस*-वि० [हिं० चूर] तोड़-फोड़कर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। चकनाचूर।

चुरना†-अ० [सं० चूर = जलना, पकना] १. पानी में उबलकर पकना। सीझना। २. गुप्त मंत्रणा होना।

चुरमुरा-वि० [अनु०] चुरचुर शब्द करके सहज में टूटनेवाला।

चुरमुराना-अ० [अनु०] चुर-चुर शब्द करके टूटना।

स० [अनु०] चुर-मुर शब्द करके तोड़ना।

चुराना-स० [सं० चुर = चोरी करना] [प्रे० चुरवाना] १. दूसरे की चीज छिपकर लेना। चोरी करना।

मुहा०-चित्त चुराना = मन मोहित करना। **जी चुराना** = मन न लगाना। २. आड़ में करना। छिपाना।

मुहा०-आँखें चुराना = सामने न आना।

स० [हिं० चुरना] उबालना। पकाना।

चुरी*†-स्त्री० दे० 'चूड़ी'।

चुरुट-पुं० [अं० शेरूट] पत्तों में लपेटा हुआ तंबाकू का चूरा जिसका धूआँ पीते हैं। (सिगार)

चुरू†*-पुं० दे० 'चुल्लू'।

चुल-स्त्री० [सं० चल = चंचल] १. अंग के सहलाये जाने की इच्छा। खुजली। कोई काम करने की प्रबल वासना।

चुलचुलाना-अ० [हिं० चुल] या हलकी खुजली होना।

चुलचुली-स्त्री० दे० 'चुल'।

चुलबुला-वि० [सं० चल + बल] [चुलबुली] [भाव० चुलबुलाहट] चंचल। चपल। २. नटखट।

चुलबुलाना-अ० [हिं० चुलबुल] [चुलबुलाहट] चंचल होना। करना।

चुलाना-स० दे० 'चुआना'।

चुल्लू-पुं० [सं० चुलुक] कुछ लेने के लिए गहरी की हुई हथेली।

मुहा०-चुल्लू भर पानी में मरना = लज्जा के मारे गड़ जाना।

चुवना*-अ० दे० 'चूना'।

त्रि० [हिं० चूना] जो चूता हो।

चुवाना*-स० दे० 'चुआना'।

चुसकी-स्त्री० [हिं० चूसना] १. कर पीने की क्रिया। २. सुरक।

चुसना-अ० [हिं० चूसना] १. जाना। २. सार या रस से हीन जाना। ३. धन देते देते निर्धन हो

चुसनी-स्त्री० [हिं० चूसना] १. (का) मुँह में डालकर चसने का खिलौना २. छोटे बच्चों को दूध पिलाने की

चुसाना-स० हिं० 'चूसना' का प्रे०।

चुस्त-वि० [फा०] १. कसा तंग। २. फुरतीला। ३. दृढ़। मजबूत

चुस्ती-स्त्री० [फा०] १. फुरती। २. कसावट। 'ढीलापन' का विप ३. दृढ़ता। मजबूती।

चुहचुहा-वि० [हिं० चुहचुहाना] [चुहचुही] = चुहचुहाता।

चुहचुहाता-वि० [हिं० चुहचुहाना] १. सरस। मजेदार। २. चटकीला।

चुहचुहाना-अ० [अनु०] १.

क्रि० वि० अत्यन्त । बहुत अधिक ।

पुं० वह अन्तिम सीमा जहाँ तक कोई बात हो या पहुँच सकती हो । पराकाष्ठा । (क्लाइमैक्स)

चूड़ा–स्त्री० [सं०] १. शिखा । चोटी । २. मोर की कलँगी । ३. घुँघची । ४. चूड़ाकरण संस्कार ।

पुं० [सं०] १. हाथ में पहनने का कड़ा । २. एक प्रकार की हाथी-दाँत की चूड़ियाँ ।

चूड़ाकर्म–पुं० [सं०] मुंडन संस्कार ।

चूड़ा-पाश–पुं० [सं०] १. स्त्रियों के सिर के बालों का जूड़ा । २. प्राचीन काल की स्त्रियों का एक प्रकार का केश-विन्यास ।

चूड़ा-मणि–पुं० [सं०] १. सिर का एक गहना । सीसफूल । २. सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु ।

चूड़ी–स्त्री० [हिं० चूड़ा] १. कोई वृत्ताकार वस्तु । २. छल्ला । ३. स्त्रियों, मुख्यतः सुहागिनों के हाथ का एक गहना ।

मुहा०–चूड़ियाँ ठंढी करना = स्त्रियों का नई चूड़ियाँ पहनने के लिए पुरानी चूड़ियाँ तोड़ना । **चूड़ियाँ पहनना** = स्त्रियों की तरह कायर बनना ।

४. ग्रामोफोन बाजे का वह तवा जिसमें गाना भरा रहता है । (रेकार्ड)

चूड़ीदार–वि० [हिं० चूड़ी + फा० दार] जिसमें चूड़ियाँ, छल्ले या घेरे पड़े हों ।

यौ०–चूड़ीदार पाजामा = तंग मोहरी का एक प्रकार का पाजामा ।

चूतड़–पुं० [हिं० चूत + तल] पीठ की ओर का, कमर और जाँघ के बीच का मांसल भाग । नितंब ।

चून–पुं० [सं० चूर्ण] १. चूर्ण । चूरा । २. आटा ।

चूनर(ी)–स्त्री० [हिं० चुनना] स्त्रियों के पहनने या ओढ़ने का वह रंगीन कपड़ा जिसमें छोटी छोटी बुन्दकियाँ होती है ।

चूना-पुं॰ [सं॰ चूर्ण] पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को फूँककर बनाया जानेवाला एक प्रकार का सफेद क्षार।

अ॰ [सं॰ च्यवन] १. बूँद बूँद गिरना। टपकना। २. अचानक ऊपर से नीचे गिरना। ३. किसी चीज में ऐसा छेद हो जाना जिसमें से कोई द्रव पदार्थ टपके। ४. गर्भपात होना।

चूनी†-स्त्री॰ दे॰ 'चुन्नी'।

चूनेदानी-स्त्री॰ [हिं॰ चूना + फा॰ दान] चूना रखने की डिबिया। चुनौटी।

चूमना-सं॰ [सं॰ चुंबन] होंठों से किसी का कोई अंग स्पर्श करना। चुम्मा लेना।

चूमा-पुं॰ दे॰ 'चुंबन'।

चूर-पुं॰ दे॰ 'चूर्ण'।

वि॰ थका हुआ। शिथिल।

चूरणि*-स्त्री॰ दे॰ 'चूर्णी'।

चूरन-पुं॰ दे॰ 'चूर्ण'।

चूरना*-स॰ [सं॰ चूर्णन] १. चूर या छोटे टुकड़े करना। २. तोड़ना।

चूरमा-पुं॰ [सं॰ चूर्ण] घी और चीनी मिला हुआ रोटी या बाटी का चूर।

चूरा-पुं॰ [सं॰ चूर्ण] चूर्ण। बुरादा।

*पुं॰ दे॰ 'चूड़ा'।

चूर्ण-पुं॰ [सं॰] १. किसी पदार्थ के टूटे या पिसे हुए बारीक टुकड़े। चूरा। बुकनी। २. पाचक दवा की बुकनी। चूरन।

वि॰ १. चूर। २. टूटा-फूटा।

चूर्णिका-स्त्री॰ [सं॰] कठिन पदों की व्याख्या अथवा कठिन शब्दों के अर्थ बतानेवाली पुस्तक।

चूर्णित-वि॰ [सं॰] चूर किया हुआ।

चूर्णी-स्त्री॰ [सं॰ चूर्णि] १. भाष्य, व्याख्या, टीका आदि जिनसे कठिन बातें सहज में समझी जा सकें। २. दे॰ 'चूर्ण'।

चूल-पुं॰ [सं॰] १. शिखा। २. बाल।

स्त्री॰ [देश॰] दूसरी लकड़ी के छेद में बैठाने के लिए किसी लकड़ी का पतला सिरा।

चूल्हा-पुं॰ [सं॰ चूल्लि] आग का पात्र जिसपर भोजन पकाते हैं।

मुहा॰-**चूल्हा जलाना या फूँकना** = भोजन बनाना।

पद-**चूल्हे में जाय या चूल्हे भाड़ में जाय** = जो दुर्दशा भोगे हो उससे भी बढ़कर दुर्दशा भोगे। (... और तिरस्कार का सूचक)

चूषण-पुं॰ [सं॰] चूसना।

चूष्य-वि॰ [सं॰] चूसने के योग्य।

चूसना-स॰ [सं॰ चूषण] १. ओंठ मुँह से दबाकर उसका रस पीना। २. धीरे धीरे अनुचित रूप से किसी से रुपये करना।

चूहड़ा-पुं॰ [?] [स्त्री॰ चूहड़ी] या मेहतर।। चांडाल। श्वपच।

चूहा-पुं॰ [अनु॰ चू + हा (प्रत्य॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ चुहिया] एक छोटा जो घरों या खेतों में बिल में रहता अन्न आदि खाता है। मूसा।

चूहा-दंती-स्त्री॰ [हिं॰ चूहा + दाँत] के पहनने की एक प्रकार की पहुँची।

चूहादान-पुं॰ दे॰ 'चूहेदानी'।

चूहेदानी-स्त्री॰ [हिं॰ चूहा + फा॰ दा चूहों को फँसाने का एक प्रकार का पिंजड़ा

चें-चें-स्त्री॰ [अनु॰] १. चिड़ियों, आदि के बोलने का शब्द। चीं चीं। बकवाद। बकबक।

चेंटुआ†-पुं॰ [?] चिड़िया का बच्

चेंपें-स्त्री॰ [अनु॰] चिल्लाहट।

चेक-पुं॰ [अं॰] १. आड़ी और पड़ी हुई धारियाँ। चारखाना। २. कागज जिसपर किसी बंक के नाम यह रहता है कि अमुक व्यक्ति को हमारे में से इतना धन दे दो। ३. यह देखना कोई काम ठीक तरह से या नियम हुआ है या नहीं।

चेचक-स्त्री॰ [फा॰] शीतला रोग।

[हिं०] [स्त्री० चेटी या चेटिका]
। २. पति। ३. कुटना। ४. भाँड़।
[हिं०] [स्त्री० चेटकी] १.
। २. जादू। माया।
स्त्री० = चेटी।
[सं० चिता] १. चिता।
। मरघट।
[हिं०] १. जादूगर। २.
। कौतुकी।
का स्त्री०।
[सं० चेटक] १. चेला।
। दास।
[हिं०] दासी।
[सं० चेतस्] १. चेतना। होश
। ३. सावधानी। चौकसी।
। सुध। ख्याल।
[सं०] १. चेतना उत्पन्न
। २. चेतानेवाला।
अधिकारी जो किसी सभा-समिति
को यह स्मरण कराता है कि
के संबंध में मत देने के लिए
उपस्थिति आवश्यक है। (ह्विप)
३.।
दे० 'चेतना'।
[सं०] जिसमें चेतना या ज्ञान
। (एनिमेट)
। २. प्राणी। ३. ईश्वर।
स्त्री० [सं०] चेतन का धर्म्म।
। होश।
स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। २. बोध
वृत्ति या शक्ति। ३. चेतनता।
[हिं० चेत+ना (प्रत्य०)] १.
। २. सावधान होना। ३. होश
स्त्री० १. दे० 'चेतावनी'। २.
[सं०] १. जिसे चेतना या ज्ञान

हो। २. चित्तवाला। (यौ० के अन्त में; जैसे-दृढ़चेता।)

चेताना–स० [हिं० चेतना] १. सावधान या होशियार करना। २. स्मरण या याद कराना। ३. उपदेश करना। ४. (आग) जलाना या सुलगाना।

चेतावनी–स्त्री० [हिं० चेताना] १. चेताने या सावधान करने के लिए कही जानेवाली बात। २. उपदेश। शिक्षा।

चेतिका*–स्त्री० [सं० चिति] चिता।

चेदि–पुं० [सं०] एक प्राचीन देश।

चेदिराज–पुं० [सं०] शिशुपाल।

चेप–पुं० दे० 'लासा'।

चेर(ा)*–पुं० [सं० चेटक] [स्त्री० चेरी, भाव० चेराई] १. सेवक। दास। २. चेला।

चेरी*–स्त्री० [हिं० चेरा] १. 'चेला' का स्त्री०। चेली। शिष्या। २. दासी। सेविका।

चेला–पुं० [सं० चेटक] [स्त्री० चेलिन, चेली] १. दीक्षित शिष्य। २. वह जिसे कुछ सिखाया गया हो। शिष्य।

चेल्हवा†–स्त्री० [?] एक प्रकार की मछली।

चेल्हा–स्त्री० दे० 'चेल्हवा'।

चेष्टा–स्त्री० [सं०] १. अंगों की गति। २. मन का भाव प्रकट करनेवाली अंगों की स्थिति। मुद्रा। ३. प्रयत्न। कोशिश। ४. कार्य्य। ५. परिश्रम। ६. इच्छा।

चेहरई–स्त्री० [फा० चेहरा] चित्र या मूर्त्ति आदि में चेहरे की रंगत या बनावट।

चेहरा–पुं० [फा०] १. गले से ऊपर के अंग का अगला भाग। मुख। बदन। (फेस) यौ०–**चेहरा-शाही** = नकद रुपया। प्रचलित रुपया।

मुहा०–**चेहरा उतरना** = चेहरे का रंग फीका पड़ना। **चेहरा होना** = सेना में भरती होना।

२. किसी चीज का अगला भाग। आगा। ३. मुख की आकृति का साँचा जो स्वाँग

बनाने के लिए चेहरे पर पहना जाता है।

चै*-पुं० दे० 'चय'।

चैत-पुं० [सं० चैत्र] वर्ष का पहला हिन्दी महीना। (भारतीय)

चैतन्य-पुं० [सं०] १. चेतन आत्मा। २. ज्ञान। चेतना। ३. ब्रह्म। ४. ईश्वर। ५. बंगाल के एक प्रसिद्ध वैष्णव महात्मा। वि० जो होश में हो। सचेत।

चैती-स्त्री० [हिं० चैत + ई (प्रत्य०)] १. चैत में कटनेवाली फसल। २. चैत-बैसाख में गाने का एक चलता गाना। वि० चैत संबंधी। चैत का।

चैत्य-पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. देव-मन्दिर। ३. यज्ञ-शाला। ४. किसी देवी-देवता के नाम पर बना हुआ चबूतरा। ५. बुद्ध की मूर्त्ति। ६. बौद्ध मठ। विहार। ७. चिता।

चैत्र-पुं० [सं०] १. चैत का महीना। २. बौद्ध भिक्षु। ३. यज्ञ-भूमि। ४. मन्दिर।

चैन-पुं० [सं० शयन] आराम। सुख।
मुहा०-चैन उड़ाना = मौज करना।

चैल-पुं० [सं०] कपड़ा। वस्त्र।

चैला-पुं० [हिं० छीलना] [स्त्री० अल्पा० चैली] जलाने के लिए चीरी हुई लकड़ी।

चोंक-स्त्री० [देश०] चूमने पर दाँत लगने से पड़नेवाला निशान।

चोंगा-पुं० [?] कुछ रखने के लिए कागज, टीन आदि की नली।

चोंच-स्त्री० [सं० चंचु] पक्षी का मुँह।
मुहा०-दो दो चोंचें होना = साधारण कहा-सुनी होना।

चोंटना-स० [हिं० चिकोटी] नोचना।

चोंथ-पुं० [अनु०] एक बार में गिरा हुआ गोबर।

चोंथना-स० [अनु०] नोचना। खसोटना।

चोंधर-वि० [हिं० चौंधियाना] १. बहुत छोटी आँखोंवाला। २. जिसे कम दिखाई दे। ३. मूर्ख।

चोंहका†-पुं० [सं० चूषण] वह
सा दूध, जो गौ, भैंस आदि दुहने के
उसके बच्चे को चुसाया जाता है।

चोआ-पुं० [हिं० चुआना] १. अं
गंधित वस्तुओं का एक प्रकार का
रस। २. किसी वस्तु का वह थोड़ा सा
जो बाद में, ऊपर या अलग से
रखा या दिया जाय। ३. दे० 'चोटा'।

चोकर-पुं० [हिं० चून = आटा + कां
छिलका] पिसे हुए गेहूँ, जौ आदि को
पर निकलनेवाले छिलके। भूसी।

चोका-पुं० [सं० चूषण] १. चूसने
क्रिया। चूसना। २. स्तन। छाती। (वि
षतः वह छाती जिसमें दूध भरा हो।)

चोख*-पुं० [हिं० चोखा] १. चोखा
तेजी। २. वेग। फुरती। ३. तीव्रता।
वि० दे० 'चोखा'।
*पुं० [सं० चक्षु] नेत्र। आँख।

चोखना†-स० = चूसना।

चोखा-वि० [सं० चोक्ष] १. शुद्ध। बेमि
वट का। २. उत्तम। ३. पैना। धारदा
पुं० नमक-मिर्च के साथ मसला हुआ,
या भूना हुआ बैंगन, आलू आदि। भर

चोखाना†-स० [सं० चूषण] १.
भैंस आदि दुहने से पहले उसके बच्चे
उसका स्तन इसलिए चुसाना कि दूध
में उतर आवे। २. गौ, भैंस आदि दु
अ० १. गौ, भैंस आदि का दुहा
२. चूसा जाना।

चोगा-पुं० [तु०] घुटनों तक लटकता
एक प्रकार का पहनावा। लबादा।

चोगान-पुं० दे० 'चौगान'।

चोचला-पुं० [अनु०] १. जवानी
उमंग की चेष्टाएँ। हाव-भाव। २. नख

चोज-पुं० [?] १. चमत्कारपूर्ण
विनोदात्मक उक्ति। सुभाषित। २.
ठट्ठा। ३. व्यंगपूर्ण उपहास। ४. प्रसंग
समय किया जानेवाला कोई विनोदपूर्ण

[हिं० चुट] १. किसी वस्तु
वस्तु के वेगपूर्वक आकर
परिणाम जो बहुधा अ-
करता है। आघात। २. इस
हानि या अनिष्ट। ३.
शरीर पर होनेवाला चिह्न या
(इंजरी)। ४. आक्रमण
हथियार का वार। ५.
के द्वारा किसी पर होनेवाला
शेर या साँप का चोट
को हानि पहुँचाने के
चाल। ७. चुभती हुई
व्यंग्य। ताना। ८. बार।
तीन चोट भोजन हुआ है।

[हिं० चोआ] राब का छाना
चोआ।

[हिं० चोटी] १. चोटी
वश में करना।

[हिं० चूड़ा] १. शिखा। चुन्दी।
दबना = किसी से दबने
होना। (किसी की)
हाथ में होना = किसी का अपने
। जैसे—उनकी चोटी हमारे
(अर्थात् वे सब प्रकार हमारे
)
हुए स्त्रियों के सिर के बाल।
बाँधने का डोरा। ४. जूड़े
एक गहना। ५. मुर्गे आदि
उठे हुए पर। कलगी। ६.
। शिखर।
का = सर्वोत्तम।

[हिं० चोर] [स्त्री० चोट्टी] चोर।
चोर।

[हिं० चाव] १. चाह। इच्छा।
शौक। ३. उत्साह। उमंग।

चौबे।

[हिं० चोप] रीझना।

मुग्ध होना।

चोपी*–वि० [हिं० चोप] चोप से युक्त।

चोब–स्त्री० [फा०] १. शामियाने का बड़ा खम्भा। २. नगाड़ा बजाने की लकड़ी। ३. सोने या चाँदी से मढ़ा सोंटा।

चोबदार–पुं० [फा०] १. चोब रखनेवाला नौकर। आसा-बरदार। २. द्वारपाल।

चोर–पुं० [सं० चौर] १. चोरी करनेवाला। तस्कर। २. मन का सन्देह। खटका। **मुहा०–मन में चोर बैठना** = (क) सन्देह होना। (ख) मन में दुर्भाव आना। ३. घाव का अन्दर ही अन्दर बढ़नेवाला विकार। ४. संधि। दरज। ५. खेल में दूसरों को दाँव देनेवाला व्यक्ति, जिसे दंड-स्वरूप कोई काम करना पड़ता है।

वि० आन्तरिक भावों को छिपानेवाला।

चोरकट–पुं० [हिं० चोर] उचक्का।

चोरटा–पुं० दे० 'चोट्टा'।

चोर-दरवाजा–पुं० [हिं० चोर + दरवाजा] १. मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार। २. ऐसा गौण और छिपा हुआ मार्ग या साधन जो सार्वजनिक और प्रमुख मार्ग या साधन से भिन्न हो और जिसके द्वारा किसी का गुप्त रूप से या छलपूर्वक कहीं प्रवेश हो। (बैक डोर)

चोरना–स० दे० 'चुराना'।

चोर-बाजार–पुं० [हिं० चोर + बाजार] [भाव० चोर-बाजारी] १. वह बाजार या क्रय-विक्रय का स्थान, जिसमें चोरी से चीजें अपेक्षाकृत बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर बिकती हों। २. आज-कल ऐसा स्थान जहाँ नियंत्रित वस्तुएँ उचित से बहुत अधिक मूल्य पर बिकती हैं। (ब्लैक मार्केट)

चोर-बाजारी–स्त्री० [हिं० चोर + बाजार] १. चोरी से कोई चीज बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर खरीदना या बेचना। २. आज-कल नियंत्रित मूल्य से बहुत अधिक मूल्य पर कोई वस्तु चुराकर या छिपाकर

बेचना।

चोर-महल-पुं० [हिं० चोर + महल] राजा या रईस की रखेली का महल।

चोर-मिहीचनी*-स्त्री०=आँख-मिचौली।

चोरा-चोरी*-क्रि० वि० [हिं० चोरी] छिपे छिपे। चुपके चुपके। चोरी चोरी।

चोरी-स्त्री० [हिं० चोर] १. छिपकर दूसरे की वस्तु लेने की क्रिया या भाव।

पद-चोरी-चमारी-बहुत ही छोटे और निन्दनीय काम।

२. किसी से कोई बात गुप्त रखना या छिपाना।

स्त्री० दे० 'चोली'।

चोल-पुं० [सं०] १. दक्षिण का एक प्राचीन देश। २. इस देश का निवासी। ३. चोली। ४. ढीला कुरता। चोला। ५. कवच। बकतर।

चोलना*-पुं० दे० 'चोला'।

चोला-पुं० [सं० चोल] १. साधुओं-फकीरों का ढीला-ढाला और लंबा पहनावा। २. नये जनमे हुए बालक को पहले-पहल कपड़े पहनाने की रसम। ३. शरीर। देह।

मुहा०-चोला छोड़ना या बदलना = शरीर त्याग करना। मरना। (साधु)

चोली-स्त्री० [सं० चोल] अँगिया की तरह का स्त्रियों का एक पहनावा।

पद-चोली-दामन का साथ = बहुत अधिक या गहरा संग-साथ।

चोवा-पुं० दे० 'चोआ'।

चोषण-पुं० [सं०] [वि० चोष्य] चूसना।

चौंकना-अ० [?] [भाव० चौंक] १. भय आदि से अचानक काँप उठना। २. चौकन्ना या खबरदार होना। ३. चकित होना। भौचक्का होना। ४. शंकित होना। भड़कना।

चौंध-स्त्री० [सं० चक् = चमकना] चमक।

चौंधना*-अ० [हिं० चौंध] इस प्रकार चमकना कि किसी की आँखों के आगे चकाचौंध हो।

चौंधियाना-अ० [हिं० चौंध] १. चमक के सामने आँखें झिलमिलाना। काचौंध होना। २. आँख से न सूझना।

चौंधी-स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चौंर-पुं० दे० 'चँवर'।

चौंराना*-स० [हिं० चँवर] १. डुलाना। चँवर करना। २. झाड़ू देना।

चौंरी-स्त्री० [हिं० चौंर] १. २. चोटी बाँधने की डोरी। चोटी। सफेद पूँछवाली गाय। ४. दे०

चौ-वि० [सं० चतुः] चार (संख्या) (केवल यौगिक में; जैसे-चौ-पहल।) पुं० मोती तौलने की एक तौल।

चौअर†-वि० दे० 'चौहरा'।

चौआ-पुं० [हिं० चौ = चार] १. की चार उँगलियों का समूह। २. उँगलियों की पंक्ति पर लपेटा हुआ ३. चार अंगुल की नाप।

†पुं० दे० 'चौपाया'।

चौआना*-अ० [हिं० चौंकना] पकाना। चकित होना।

चौक-पुं० [सं० चतुष्क, प्रा० चउ १. चौकोर खुली भूमि। २. घर के में चौकोर खुला स्थान। आँगन। ३. नगर या बस्ती के प्रायः मध्य का खुला, बड़ा और चौकोर स्थान चारो ओर रास्ते जाते हों। ४. चबूतरा। बड़ी वेदी। ५. पूजा के या मंगल अवसरों पर आटे, अबीर की लकीरों से बना हुआ चौकोर

मुहा०-चौक पूरना = जमीन पर प्रकार का चित्रण या अंकन करना।

६. चौहट्टा। ७. चौसर खेलने की ८. सामने के चार दाँतों की पंक्ति।

चौकड़ी-स्त्री० [हिं० चौ = चार + कला = अंग] १. हिरन का चारो पैर साथ उठाते हुए दौड़ना। छलाँग।

चौकड़ी भूल जाना = सिटपिटा जाना।

आदमियों का गुट । मंडली ।

चंडाल-चौकड़ी = उपद्रवियों या की मंडली ।

का गहना । ४. चार युगों चतुर्युगी । ५. जाँघें और टेककर बैठने की एक

चौ + घोड़ा] वह गाड़ी जिसमें जुते हों ।

[हिं० चौ = चारो ओर + सावधान । २. चौंका हुआ ।

[हिं० चौ = चार + कस =] १. सावधान । २. ठीक ।

स्त्री० दे० 'चौकसी' ।

[हिं० चौकस] १. साव- रखवाली ।

[सं० चतुष्क] १. पत्थर का चौखूँटी सिल । २. रोटी चकला । ३. अगले चार दाँतों ४. सीस-फूल । ५. हिन्दुओं का स्थान । ६. सफाई के लिए मिट्टी या गोबर का लेप ।

चौका देना, फेरना या = चौपट करना ।

तरह की चार चीजों का समूह । का चौका ।

बरतन-पुं० रसोई बन चुकने पर करने और बरतन आदि साफ क्रिया या भाव ।

[सं० चतुष्की] १. चार चौकोर आसन । छोटा तख्त । २. का प्रवेश-द्वार । ३. पड़ाव । ४. वह स्थान जहाँ रक्षा के लिए रहते हों । ५. वह स्थान जहाँ बाहर से आनेवाले माल पर कर, चुंगी आदि लेने के लिए कुछ लोग रहते हैं । (आउट-पोस्ट; अन्तिम दोनों अर्थों के लिए) ६. पहरा । ७. देवता या पीर आदि को चढ़ाई जानेवाली भेंट । ८. गले का एक गहना ।

चौकी-घर--पुं० [हिं० चौकी = पहरा + घर] वह स्थान या छोटा-सा घर जिसमें चौकीदार खड़ा होकर पहरा देता है । (स्टैंड-पोस्ट)

चौकीदार–पुं० [हिं० चौकी + फा० दार] १. पहरा देनेवाला । २. गोंड़ैत ।

चौकीदारी–स्त्री० [हिं० चौकीदार] १. चौकीदार का काम या पद । २. चौकीदार रखने के लिए लगनेवाला चन्दा या कर ।

चौकोना–वि० [सं० चतुष्कोण] चार कोनोंवाला । चौखूँटा ।

चौकोर–वि० [सं० चतुष्कोण] जिसके चारो कोने या पार्श्व बराबर हों । (स्क्वेयर)

चौखट–स्त्री० [हिं० चौ = चार + काठ] १. लड़कियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ जड़े रहते हैं । २. देहली । डेहरी ।

चौखटा–पुं० [हिं० चौखट] चित्र या शीशा जड़ने का चौकोर ढाँचा । (फ्रेम)

चौखानि*–स्त्री० [हिं० चौ = चार + खानि = जाति] चार प्रकार के जीव— अंडज, पिंडज, स्वेदज और उद्भिज ।

चौखूँटा–वि० दे० 'चौकोना' ।

चौगड्डा–पुं० दे० 'चौराहा' ।

चौगान–पुं० [फा०] १. गेंद-बल्ले का एक खेल । २. यह खेल खेलने क मैदान । ३. किसी प्रकार की प्रतियोगित का स्थान । ४. नगाड़ा बजाने की लकड़ी चोब ।

चौगिर्द–क्रि० वि० = चारो तरफ ।

चौगुना–वि० [सं० चतुर्गुण] [स्त्री चौगुनी] जितना हो, उतना ही चार बा और । चतुर्गुण ।

चौगोड़ा-पुं० [हिं० चौ = चार + गोड़ = पैर] १. वह जिसके चार पैर हों; अर्थात् चौपाया। पशु। २. खरगोश नामक जन्तु। ३. दे० 'चौघड़िया'।

चौगोशिया-वि० [हिं० चौ = चार + फा० गोशा = कोना] जिसमें चार कोने हों। स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की अर्द्ध-गोलाकार टोपी जो चार तिकोने टुकड़ों को जोड़कर बनाई जाती थी। पुं० तुरकी घोड़ा।

चौघड़-पुं० [हिं० चौ = चार + दाढ़] चौड़े, चिपटे चबानेवाले दाँत। चौभर।

चौघड़ा-पुं०[हिं०चौ = चार + घर=खाना] १. पान-इलायची रखने का चार खानों का डिब्बा। २. तरकारियाँ या मसाले रखने का चार खानों का बरतन। ३. पत्ते में बँधे हुए चार बीड़े पान। ४. दे० 'चौडोल'।

चौघड़िया-स्त्री० [हिं० चौगोड़ा] वह छोटी और ऊँची चौकी जिसके चार पैर या पाये हों।

चौघर†-पुं० [हिं० चौ = चार + घर] घोड़े की सरपट चाल। पोइया।

चौचंद†*-पुं० [हिं० चौथ + चंद या चबाव + चंद] १. कलंक-सूचक चर्चा। बदनामी। निन्दा। २. शोर। हल्ला।

चौचँदहाई*-वि० स्त्री०[हिं० चौचंद + हाई (प्रत्य०)] वह जो सबकी निन्दा करती फिरती हो।

चौड़ा-वि० [सं०चतुष्पटक, प्रा० चउवड़ा] [स्त्री० चौड़ी] १. जिसमें चौड़ाई हो। २. विस्तृत।

चौड़ाई-स्त्री० [हिं० चौड़ा + ई(प्रत्य०)] लंबाई से कम या थोड़ा और उसका उलटा विस्तार। अर्ज। पनहा।

चौड़ान-स्त्री० दे० 'चौड़ाई'।

चौडोल-पुं० [हिं० चंडोल] १. एक प्रकार का बाजा। २. दे० 'चंडोल'।

चौतनी-स्त्री० [हिं०चौ = चार + तनी = बंद] चार बंदोंवाली बच्चों की टोपी।

चौताल-पुं० [हिं० चौ + ताल] १. होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। २. एक प्रकार का ताल। (संगीत)

चौथ-स्त्री० [सं० चतुर्थी] १. चतुर्थी। चौथी तिथि।

पद-चौथ का चाँद = भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी का चन्द्रमा, जिसे देखने से झू कलंक लगना माना जाता है।

२. आमदनी का चतुर्थांश जो मराठे कर रूप में लेते थे। खंडी।

*†वि० दे० 'चौथा'।

चौथपन*-पुं० = बुढ़ापा।

चौथाई-पुं० [हिं० चौथा + ई (प्रत्य०)] चौथा भाग। चतुर्थांश।

चौथी-स्त्री० [हिं० चौथा] १. विवाह के चौथे दिन वर-कन्या के कंगन खोलने की रसम। २. जमींदार को मिलनेवाला फसल का चौथाई अंश।

चौ-दंता-वि० [हिं० चौ + दाँत] १. चार दाँतोंवाला। २. उद्दंड। उद्धत।

चौदाँत†*-पुं० [हिं० चौ = चार + दाँत] दो हाथियों की लड़ाई।

चौधराई(हट)-स्त्री० [हिं० चौधरी] चौधरी का काम, भाव या पद।

चौधरी-पुं० [सं० चतुर + धर] [भाव० चौधराहट) किसी समाज, बिरादरी या मंडली का मुखिया या प्रधान जो प्राय: झगड़े आदि निपटाता और विकट अवसरों पर लोगों को उनके कर्त्तव्य आदि बताता है।

चौपट-क्रि० वि० [हिं० चौ = चार + पट = किवाड़] चारो ओर से (खुला हुआ)। वि० नष्ट-भ्रष्ट। बरबाद।

चौपटा-वि० [हिं० चौपट] चौपट करनेवाला।

चौपड़-स्त्री० [सं० चतुस्सारि] चौसर नामक खेल जो बिसात पर गोटियों से खेला जाता है।

चौपड़ मढ़ना = चौपड़ खेलने
बिसात बिछाना ।

[सं० चतुष्पथ] चौराहा ।

दे० 'चौपाया' ।

[हिं० चौ + फा० पहलू]
पहलवाला । वर्गात्मक ।

[हिं० चौ = चार +
(गाड़ी) जिसके नीचे चार पहिये

[सं० चतुष्पदी] सोलह
प्रसिद्ध छंद ।

[सं० चतुष्पद] चार पैरोंवाला
घोड़ा या बकरी ।

[हिं० चौबार] १. चारो
खुली हुई बैठक । २. दालान ।
की पालकी ।

[हिं० चौ = चार + अं०
आदि की छपाई में) जो
ताव या तख्ते को दो बार
पेजों या पृष्ठों का रूप दिया
(क्वार्टो)

-पुं० [हिं० चौ = चार + अ०
कुर्ते में दाहिने-बाएँ दोनों ओर
वे दो-दो कलियाँ या कपड़े
जो बगल से नीचे की ओर

-स्त्री० [हिं० चौ + बाई = हवा]
ओर से चलनेवाली हवा ।

-पुं० [हिं० चौ + बार] १. बँगला ।
का कमरा । २. चारो ओर से
कोठरी ।

[हिं० चौ = चार + बार =
चौथी दफा । चौथी बार ।

-पुं० [हिं० चौ + बोल] एक
मात्रिक छन्द ।

-पुं० दे० 'चौपड़' ।

-वि० [हिं० चौ + मास]
में होनेवाला । वर्षा-कालीन ।

स्त्री० [हिं० चौ + माशा] चार माशे का बटखरा ।

चौमास*–पुं० दे० 'चौ-मासा' ।

चौमासा–पुं० [सं० चातुर्मास] १. वर्षा के चार महीने—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन । २. वर्षा ऋतु संबंधी गीत या कविता । ३. किसी स्त्री के गर्भवती होने के चौथे महीने का कृत्य या उत्सव ।

वि० हर चार महीनों पर अथवा चौथे महीने होनेवाला ।

चौमुखा–वि० [हिं० चौ = चार + मुख] [स्त्री० चौमुखी] जिसके चारो ओर चार मुख हों ।

मुहा०–चौमुखा दीआ जलाना = दिवाला निकालना । दिवालिया बनना ।

चौमुहानी–स्त्री० [हिं० चौ = चार + फ० मुहाना] वह स्थान जहाँ चारो ओर से आकर चार रास्ते मिलते हों । चौराहा । चौरास्ता । चतुष्पथ ।

चौरंग–पुं० [हिं० चौ = चार + रंग] तलवार चलाने का एक ढंग ।

वि० १. तलवार से पूरा कटा हुआ । २. दे० 'चौरंगा' ।

चौरंगा–वि० [हिं० चौ = चार + रंग] जिसमें चार रंग हों । चार रंगोंवाला ।

चौर–पुं० [सं०] १. दूसरों का माल चुरानेवाला । चोर । २. एक गंध-द्रव्य ।

चौरस–वि० [हिं० चौ = चार + (एक) रस = समान] १. जो ऊँचा-नीचा न हो । सम-तल । बराबर । २. चौपहल ।

चौरसाना–स० [हिं० चौरस] चौरस या समतल करना ।

चौरस्ता–पुं० दे० 'चौमुहानी' ।

चौरा–पुं० [सं० चतुर्] [स्त्री० अल्पा० चौरी] १. चबूतरा । वेदी । २. किसी देवता, सती, मृत, महात्मा या भूत-प्रेत आदि के नाम पर बना हुआ चबूतरा ।

†३. चौपाल। ४. चौबारा।

चौराई–स्त्री० दे० 'चौलाई'।

चौरासी–पुं० [सं० चतुरशीति] १. अस्सी और चार की संख्या। २. जीवों की योनियाँ जो चौरासी लाख मानी गई हैं।

मुहा०–चौरासी में पड़ना या भरमना = बार बार अनेक योनियों में जन्म लेना और मरना। (कष्टकर)

३. वे घुँघरू जो नाचते समय पैरों में बाँधे जाते हैं।

चौराहा–पुं० दे० 'चौमुहानी'।

चौरिंदी*–वि० दे० 'चउरिंदी'।

चौरेठा–पुं० [हिं० चावल + पीठा] पीसा हुआ चावल।

चौर्य–पुं० [सं०] चोरी।

चौलाई–स्त्री० [देश०] एक प्रकार का साग।

चौवर†–वि० दे० 'चौहरा'।

चौवा–पुं० दे० 'चौआ'।

चौसर–स्त्री० [सं० चतुस्सारि] बिसात पर चार रंगों की चार चार गोटियों से खेला जानेवाला एक खेल। चौपड़।

पुं० [सं० चतुरस्रक] चार लड़ों का हार।

चौहट्ट†*–पुं० दे० 'चौहट्टा'।

चौहट्टा–पुं० [हिं० चौ = चार + हाट] वह चौकोर बाजार जिसमें चारो ओर दू हों। चौक। २. चौमुहानी।

चौहद्दी–स्त्री० [हिं० चौ = चार + ह किसी मकान या जमीन के चारो ओर मकानों या जमीनों आदि का विस्तार विवरण।

चौहरा–वि० [हिं० चौ=चार + हरा (प्रत्य०) १. जिसमें चार परतें या तहें †२. चौगुना।

चौहें*–क्रि० वि० [हिं० चौ] चारो ओर

च्युत–वि० [सं०] [भाव० च्युति १. गिरा या झड़ा हुआ। २. भ्रष्ट। ३. अपनी जगह से हटा या गिरा हुआ। ४. विमुख। पराङ्मुख।

च्यूँटा–पुं० [हिं० चिमटना] च्यूँटी जाति का, पर उससे बड़ा एक कीड़ा।

च्यूँटी–स्त्री० [हिं० चिमटना] एक प्रसि छोटा कीड़ा। चींटी। पिपीलिका।

मुहा०–च्यूँटी की चाल चलना = बहुत धीमी चाल से चलना। **च्यूँ के पर निकलना** = मृत्यु या विनाश समय पास आना।

छ

छ–देव-नागरी वर्ण-माला में चवर्ग का दूसरा तालव्य व्यंजन।

छंग*–पुं० दे० 'उछंग'।

छँगुली–स्त्री० [हिं० छोटी + उँगली] सब से छोटी उँगली। कनिष्ठिका।

छँटना–अ० [सं० चटन] १. काटा या छाँटा जाना। छिन्न होना। २. चुनकर अलग कर लिया जाना।

पद–छँटा हुआ = चालाक। धूर्त्त।

३. दूषित अंश निकलना। साफ होना। ४. (मोटाई या आकार) कम होना। क्षीण होना।

छँटनी–स्त्री० [हिं० छाँटना + ई (प्रत्य०)] छाँटने की क्रिया या भाव। छँटाई। (रिडक्श २. निकालने या हटाने के लिए छाँटने काम; विशेषतः कार्यालय के कर्मचारि को। (रिट्रेन्चमेन्ट)

छँटवाना–स० हिं० 'छाँटना' का प्रे०।

छँटाई–स्त्री० [हिं० छाँटना] १. छाँटने या चुनकर अलग करने का काम, भाव मजदूरी। २. दे० 'छँटनी'।

छँटैल–वि० [हिं० छँटना] १. छाँटा चुना हुआ। २. धूर्त्त। चालाक।

छँड़ना*–स० [हिं० छोड़ना] १. त्यागना।

। छाँटना ।
[हिं॰ छुड़ाना] १. छुड़ाना ।
होना ।
'छाँड़ना' का प्रे॰ ।
[हिं॰ छंदस्] १. वेद । २. वर्ण,
गिनती के विचार से होने-
। पद्य । ३. अभिलाषा ।
मन-माना आचरण । ५.
६. संघात । समूह । ७.
उपाय । तदबीर । युक्ति ।
१०. रूप-रचना । अनेक
धारण करना । ११. अभि-
।
] हाथ का एक गहना ।
[सं॰] वह शास्त्र जिसमें
आदि की रचना के नियमों
का विवेचन होता है ।
)
[सं॰] छन्द के रूप में
हुआ ।
[सं॰] १. छंद-रचना में
वह त्रुटि जिससे उसमें
अभाव होता है ।
प्रा॰ छ] पाँच और एक ।
[सं॰ शकट] बोझ लादने
।
[सं॰ चकन] [भाव॰ छाक]
होना । अघाना । २.
होना ।
= भ्रान्त] १. चकराना ।
। ३. परेशान होना ।
हिं॰ 'छकना' का स॰ ।
[हिं॰ छकना] १. छका
। २. मत्त । मत्त ।
[हिं॰ छकना] १. छकाने या
। २. पूरी तरह से छका
।
[हिं॰ छक्का-पंजा या छल] छल-कपट । दाँव-पेंच ।

छक्का–पुं॰ [सं॰ षट्] १. छः का समूह । २. छः अवयवोंवाली वस्तु । ३. जूए का वह दाँव जिसमें छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें । **मुहा॰–छक्का-पंजा** = छल-कपट । ४. धूर्त्तता । चालाकी । ५. साहस । **मुहा॰–छक्के छूटना** = चालाकी या उपाय न सूझना या न चलना ।

छगन–पुं॰ [सं॰ छगट = एक छोटी मछली] छोटा बालक । (प्यार का शब्द)

छगुनी–स्त्री॰ दे॰ 'छँगुली' ।

छछिया–स्त्री॰ [हिं॰ छाछ] छाछ पीने या रखने का एक प्रकार का छोटा बरतन ।

छछूँदर–पुं॰ [सं॰ छछुंदरी] १. चूहे की तरह का एक जन्तु । २. एक प्रकार की आतश-बाजी ।

छजना–अ॰ [सं॰ सज्जा] १. शोभा देना । सजना । २. ठीक जँचना ।

छज्जा–पुं॰ [हिं॰ छाजन या छाना] १. कोठे या पाटन का, दीवार से बाहर निकला हुआ भाग । २. ओलती । ओरी ।

छटकना–अ॰ [अनु॰ या हिं॰ छूटना] १. भार या धक्के से किसी वस्तु का वेग से दूर जाना । २. दूर या अलग रहना । ३. बन्धन से निकल जाना । ४. कूदना ।

छटकाना–स॰ हिं॰ 'छटकना' का स॰ ।

छटपटाना–अ॰ [अनु॰] १. पीड़ा से हाथ-पैर पटकना या फेंकना । तड़फड़ाना । २. बेचैन होना । व्याकुल होना ।

छटपटी–स्त्री॰ [अनु॰] १. बेचैनी । २. प्रबल उत्कंठा । आकुलता ।

छटाँक–स्त्री॰ [हिं॰ छः + टाँक] एक तौल जो एक सेर का सोलहवाँ भाग होती है ।

छटा–स्त्री॰ [सं॰] १. शोभा । सौदर्न्य । २. बिजली ।

वि॰ दे॰ 'छठा' ।

छठ–स्त्री॰ [सं॰ षष्ठी] पक्ष की छठी तिथि ।

छठा–वि॰ [हिं॰ छः] गिनती में छः के

स्थान पर पड़नेवाला।

पद–छठे-छमासे = बहुत दिनों के अंतर पर। कभी कभी।

छठी–स्त्री० [सं० षष्ठी] बालक के जन्म से छठे दिन होनेवाले कृत्य।

मुहा०–छठी का दूध याद आना = (क) शेखी या हेकड़ी भूल जाना। (ख) बहुत दुःख या कष्ट का अनुभव करना।

छड़-पुं०[सं०शर] [स्त्री०अल्पा० छड़ी] धातु, लकड़ी आदि का लम्बा पतला टुकड़ा।

छड़ा–पुं० [हिं० छड़] पैर का एक गहना।

छड़िया–पुं० [हिं० छड़ी] द्वारपाल।

छड़ी–स्त्री० [हिं० छड़] १. हाथ में लेकर चलने की सीधी पतली लकड़ी। २. पीरों की मजार पर चढ़नेवाली झंडी।

छत–स्त्री० [सं० छत्र] १. चूने, ककड़ आदि से बनी हुई घर की छाजन। पाटन। २. ऊपर का ढका भाग।

*पुं० दे० 'क्षत'।

*क्रि० वि० [सं० सत्] रहते हुए। आछत।

छतगीर(ी)–स्त्री० [हिं० छत + फा० गीर] छत पर तानी जानेवाली चाँदनी।

छतना*–पुं० [हिं० छाता] बड़े पत्तों से बना हुआ छाता।

छतनार†–वि० [हिं० छाता या छतना] [स्त्री० छतनारी] जिसकी शाखाएँ छितरी या फैली हुई हों। (वृक्ष)

छतरी-स्त्री० [सं० छत्र] १. छाता। २. एक प्रकार का बहुत बड़ा छाता, जिसके सहारे आज-कल सैनिक लोग हवाई जहाजों से जमीन पर उतरते हैं। (पैराशूट)

यौ०–छतरी फौज = छतरियों के सहारे हवाई जहाजों से उतरनेवाली सेना। ३.मंडप। ४.समाधि का मंडप। (कैनोपी) ५. कबूतरों के बैठने के लिए बाँस की पट्टियों का टट्टर। ६. खुमी।

छतियाना–स० [हिं० छाती] १. छाती के पास ले आना। २. छाती से लगाना।

छतीसा–वि० [हिं० छत्तीस] [
छतीसी] १. चतुर। चालाक। २.

छत्तर–पुं० १. दे० 'छत्र'। २. दे०

छत्ता–पुं० [सं० छत्र] १. छाता।
२. रास्ते के ऊपर की छत या पटाव
मधुमक्खी आदि का घर। ४.
चीज। ५. कमल का बीज कोश।

छत्तेदार–वि० [हिं० छत्ता + फा०
(प्रत्य०)] १. जिसपर पटाव या
२. मधुमक्खी के छत्ते के आकार का।

छत्र–पुं० [सं०] राज-चिह्न के
राजाओं पर लगाया जानेवाला बड़ा

यौ०–छत्रछाँह, छत्रछाया=रक्षा। शर

छत्रक–पुं० [सं०] १. खुमी। कुकुर
२. ताल मखाने की जाति का एक
३. मंदिर। ४. मंडप। ५. शह
मक्खियों का छत्ता।

छत्रधनी*–पुं० दे० 'छत्रधारी'।

छत्रधर–पुं० [सं०] वह जो राजा
छत्र लगाता हो।

छत्रधारी–वि० [सं० छत्र-धारिन्]
धारण करनेवाला। जैसे-छात्रधारी रा

छत्रपति–पुं० [सं०] राजा।

छत्रपन*–पुं० दे० 'क्षत्रियत्व'।

छत्र-बंध-पुं० [सं०] एक प्रकार का
काव्य जिसमें कविता के अक्षर एक
प्रकार से सजाने पर छत्र या
जाता है।

छत्र-बंधु–पुं० [सं०] वह जो
नीच माना जाता हो।

छत्र-भंग–पुं० [सं०] १. राजा
या मृत्यु। २. ज्योतिष का एक
राजा का नाशक माना गया है।
अराजकता।

छत्री–वि० [सं० छत्रिन्] छत्रयुक्त।
पुं० दे० 'क्षत्रिय'।

छद–पुं० [सं०] १. आवरण। २.
का पंख। ३. पत्ता।

हिं० छः+दाम] पैसे का

सं० छद्मन्] १. छिपाव ।
। बहाना । ३. कपट ।
सं० छद्मिन्] [स्त्री० छद्मिनी]
। २. छली । कपटी ।
हुआ ।
[अनु०] छन् छन् शब्द ।
] चौंककर भागना ।
छन+एक] एक क्षण । क्षण

[अनु० छनछन] १. छन्
। २. दे० 'छनछनाना' ।
] चौकन्ना होकर भागना ।
स्त्री० [अनु०] १. गहनों
। २. सज-धज । ३. ठसक ।
चंचला ।
[अनु०] १. तपी हुई
ने पर अथवा खौलते हुए
पदार्थ पड़ने से छन छन
। २. छन छन बजना । ३.
निकलना ।
स्त्री० [सं० क्षण + छवि] बिजली ।
स्त्री० दे० 'क्षणदा' ।
[सं० क्षरण] १. किसी चूर्ण
कपड़े आदि में से इस
कि मैल या सीठी ऊपर
।

हरी छनना = खूब मेल-जोल
मैत्री होना ।
होना । ३. कड़ाही में से पूरी,
आदि निकलना ।
दे० 'क्षणिक' ।
छन+एक] क्षण भर ।
[अनु०] १. तपी हुई चीज पर
पड़ने का शब्द । २. झनकार ।
[हिं० छनना] वह कपड़ा जिससे
छानी जाय । साफी ।

छप–स्त्री० [अनु०] १. पानी पर किसी चीज के गिरने का शब्द । २. जोर से छींटा पड़ने का शब्द ।

छपका–पुं० [अनु०] १. पानी का छींटा । २. सिर पर पहनने का एक गहना ।

छपछपाना–अ० [अनु०] छप छप शब्द होना ।

स० [अनु०] छप छप शब्द उत्पन्न करना ।

छपद–पुं० [सं० षट्पद] भौंरा ।

छपन†–वि० [हिं० छिपना] छिपा हुआ ।

पुं० [सं० क्षपण] नाश ।

छपना–अ० [हिं० चपना = दबना] १. छापे के यंत्र या ठप्पे आदि से छापा जाना । मुद्रित होना । २. चिह्नित या अंकित होना ।

†अ० दे० 'छिपना' ।

छपर-खट–स्त्री० [हिं० छप्पर + खाट] मसहरीदार पलंग ।

छपरी*–स्त्री० [हिं० छप्पर] झोंपड़ी ।

छपवाना–स० दे० 'छपाना' ।

छपा*–स्त्री० दे० 'क्षपा' (रात) ।

छपाई–स्त्री० [हिं० छापना] १. किसी चीज पर अंकित चिह्न, रेखाएँ आदि (स्याही, रंग आदि की सहायता से) दाब पहुँचाकर ज्यों की त्यों दूसरी वस्तु पर उतारना । छापने या छपाने की क्रिया या भाव । मुद्रण । (प्रिन्टिंग) २. छापने की मजदूरी ।

छपाकर–पुं० = क्षपाकर ।

छपाका–पुं० [अनु०] १. पानी पर जोर से गिरने का शब्द । २. दे० 'छपका' ।

छपाना–स० हिं० 'छापना' का प्रे० ।

*स० दे० 'छिपाना' ।

*अ० दे० 'छिपना' ।

छप्पय–पुं० [सं० षट्पद] एक मात्रिक छंद जिसमें छः चरण होते हैं ।

छप्पर–पुं० [हिं० छोपना] घर की फूस आदि की छाजन । छान ।

मुहा०–छप्पर फाड़कर देना = अनायास या अकस्मात् देना ।

छप्परबंद–पुं० [हिं० + फा०] १. वह जो छप्पर छाकर उसके नीचे रहता हो। २. वह जो छप्पर छाने का काम करता हो।

छब-तखत†–स्त्री० [हिं० छवि + अ० तक्तीअ] शरीर की सुन्दर बनावट।

छबना–अ० [हिं० छवि] छवि से युक्त होना। सुन्दर होना या लगना।

छबि–स्त्री० दे० 'छवि'।

छबिकारी*–वि० [हिं० छवि + कारी] सुन्दरता बढ़ानेवाला।

छबिमान–वि० दे० 'छबीला'।

छबीला–वि० [हिं० छवि + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० छबीली] छविवाला। सुन्दर।

छम–स्त्री० [अनु०] घुँघरू का शब्द। *पुं० दे० 'क्षम'।

छमकना–अ० [हिं० छम अनु०] १. घुँघरुओं या गहनों की झनकार होना। २. चमकना।

छमछम–स्त्री० [अनु०] १. दे० 'छम'। २. पानी बरसने का शब्द।

क्रि० वि० १. छम छम शब्द के साथ। २. चमकते हुए।

छमछमाना–अ० [अनु०] १. छमछम शब्द उत्पन्न करना। २. चमकना।

छमता*–स्त्री० दे० 'क्षमता'।

छमना†–स० [सं० क्षमन्] क्षमा करना।

छमा(ई)*–स्त्री० = क्षमा।

छमाछम–क्रि० वि० [अनु०] जोर से छम छम शब्द करते हुए।

छमासी–स्त्री० [हिं० छः + मास] मृत्यु के छः महीने बाद होनेवाला श्राद्ध।

स्त्री० [हिं० छ + माशा] छः माशे की तौल या बटखरा।

छमुख–पुं० दे० 'षड़ानन'।

छय*†–पुं० दे० 'क्षय'।

छयना*–अ० [हिं० छय] क्षीण होना। छीजना।

अ० दे० 'छाना'।

छर–पुं० १. दे० 'छल'। २. दे० 'क्षर'।

वि० [सं० क्षर] भारी। जैसे–
बहुत भारी बोझ।

छरकना†–अ० १. दे० 'छिटकना'।
'छलकना'।

स० दे० 'छिटकाना'।

छरछंद*–पुं० दे० 'छलछंद'।

छरछराना–अ० [सं० क्षार]
छरछराहट] घाव पर नमक आदि
जलन या चुनचुनी होना।

छरद–स्त्री० [सं० छर्दि] वमन।

छरन*–वि० [पुं० हिं० छरना =
[स्त्री० छरनि] छलनेवाला। उदा०
बटु बलि-छरन।

छरना–अ० [सं० क्षरण] चूना।
†*स० दे० 'छलना'।

छरबर*–पुं० = छलबल।

छरभार*–पुं० [स० सार + भार
कार्य्य का भार। २. झंझट। बखेड़ा

छरहरा–वि० [हिं० छड़ + हरा (
[स्त्री० छरहरी] १. दुबला-पतला
हलका। २. तेज। फुरतीला।

छरा*–पुं० [?] १. माला या हार
२. इजारबन्द।

छरिंदा†–वि० दे० 'छरीदा'।

छरी*–स्त्री० १. दे० 'छड़ी'। २.
'छली'। ३. दे० 'अप्सरा'।

छरीदा–वि० [अ० जरीदः] १.
२. जिसके पास बोझ या असबाब
(यात्री)

छरुभारू*–पुं० दे० 'छरभार'।

छर्रा–पुं० [अनु० छर छर] १.
कण। २. बन्दूक की छोटी गोली।

छल–पुं० [सं०] १. कपट का
धोखा। २. वह काम जो किसी को
डालकर कोई स्वार्थ साधने के लिए
जाय। जाल। (फ्रॉड) ३. मिस।
४. धूर्त्तता। ५. कपट।
वि० छल-पूर्वक बना या बनाया

छलावरण–पुं० [सं०] [वि० छलावृत] १. युद्ध-क्षेत्र में अपनी तोपों, मोरचों आदि को शत्रु की दृष्टि से बचाने के लिए उसे वृक्षों की डालियों, पत्तियों आदि से ढकना। २. वास्तविक रूप या बात छिपाने के लिए ऊपर से उसे कोई ऐसा रूप देना जिससे देखनेवाले धोखे में पड़ जायँ। (कैमोफ्लेज)

छलावा–पुं० [हिं० छल] १. भूत-प्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है। २. दलदलों या जंगलों में रह-रहकर दिखाई पड़नेवाला प्रकाश। अगिया बैताल। उल्कामुख प्रेत। ३. इन्द्रजाल या जादू।

छलिया–वि० [सं० छलिन्] छल करनेवाला। कपटी। धोखेबाज।

छली–वि० दे० 'छलिया'।

छल्ला–पुं० [सं० छल्ली = लता] १. मुँदरी। २. मंडलाकार वस्तु। कड़ा। वलय।

छल्लेदार–वि० [हिं० छल्ला + फा० दार] मंडलाकार चिह्न या घेरेवाला।

छवना*–पुं० दे० 'छौना'।

छवा†*–पुं० दे० 'छौना'।
पुं० [देश०] पैर का टखना या एँड़ी।

छवाई–स्त्री० [हिं० छाना] छाने या छवाने का काम, भाव या मजदूरी।

छवाना–स० हिं० 'छाना' का प्रे०।

छवि–स्त्री० [सं०] [वि० छवीला] १. शोभा। सौन्दर्य। २. कान्ति। प्रभा।

छवी–स्त्री० [?] एक प्रकार का बड़ा चाकू या छोटा कृपाण जो सिक्ख लोग अपने पास रखते हैं।

छहरना*–अ० [सं० क्षरण] बिखरना। छितराना।

छहराना*–अ० दे० 'छहरना'।
स० बिखराना। छितराना।

छहरीला†–वि० [हिं० छरहरा] [स्त्री० छहरीली] छितराने या बिखरनेवाला।

छहियाँ–स्त्री० दे० 'छाँह'।

छाँउँ*-स्त्री० दे० 'छाँह'।

छाँगुर-पुं० [हिं० छः + अंगुल] वह जिसके हाथ में छः उँगलियाँ हों।

छाँछ-स्त्री० दे० 'छाछ'।

छाँट-स्त्री० [हिं० छाँटना] १. छाँटने या चुनकर अलग करने की क्रिया या ढंग। २. छाँटकर अलग की हुई निकम्मी वस्तु।
†स्त्री० [सं० छर्दि] वमन। कै।

छाँटना-स० [सं० खंडन] १. काटकर अलग करना। २. किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना। ३. अनाज में से कन या भूसी कूट या फटककर अलग करना। ४. अच्छी या काम की चीजें चुनना। बराना। ५. दूर या अलग करना। ६. साफ करना। ७. अनावश्यक रूप से अपनी योग्यता दिखाना। जानकारी बघारना। ८. उलटी, वमन या कै करना।

छाँटा-पुं० [हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया या भाव। २. किसी को छल से अलग या दूर करना।
मुहा०-छाँटा देना = किसी को छल-पूर्वक संग-साथ से अलग करना।

छाँड़ना†-स० [हिं० छाँटना] १. सूप में अनाज आदि रखकर फटकना। २. वमन करना। कै करना।
*स० = छोड़ना।

छाँदना-स० [सं० छंदन] १. बाँधना। कसना। २. पशु के पिछले पैर सटाकर इसलिए बाँधना कि वह भाग न सके।

छाँदा-पुं० [हिं० छाँदना] १. वह भोजन जो ज्योनार आदि में से अपने घर लाया जाय। परोसा। २. हिस्सा। भाग।

छाँव-स्त्री० दे० 'छाँह'।

छाँवड़ा*-पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छाँवड़ी, छौंड़ी] १. जानवर का बच्चा। छौना। २. छोटा बच्चा। बालक।

छाँह-स्त्री० [सं० छाया] १. वह स्थान जहाँ धूप या प्रकाश आने में रुकाव छाया। २. ऊपर से छाया हुआ स् ३. रक्षा का स्थान। शरण। ४. परछ
मुहा०-छाँह न छूना = पास न जाना। **छाँह बचाना** = बहुत दूर रह
५. प्रतिबिम्ब। ६. भूत प्रेत का प्रभाव।

छाक-स्त्री० [हिं० छकना] १. छके तृप्त होने की क्रिया या भाव। इच्छ पूर्त्ति। तृप्ति। २. दोपहर का कलेवा। शराब पीने के समय खाई जानेवाली पटी चीजें। गजक। ४. नशा। ५. म

छाकना†*-अ० दे० 'छकना'।

छाग-पुं० [सं०] बकरा।

छागर-पुं० = छागल (बकरा)।

छागल-पुं० [सं०] बकरा।
स्त्री० [हिं० साँकल] पैर का एक गह

छाछ-स्त्री० [सं० छच्छिका] मक्खन नि हुआ पनीला दही या दूध। मट्ठा। मट्

छाछरी*-स्त्री० = मछली।

छाज-पुं० [सं० छाद] १. अनाज फ का सींकों का बना एक उपकरण। २. छप्पर। ३. दे० 'छज्जा'।
पुं० [हिं० छजना] १. छजने की या भाव। २. किसी को छलने या के लिए बनाया जानेवाला रूप। स्वाँग। सजावट। सज्जा साज।

छाजन-पुं० [सं० छादन] वस्त्र। कप
स्त्री० १. छाने का काम। छवाई। छप्पर। ३. छाया के लिए ऊपर बनावट।
स्त्री० दे० 'छाज' (छल-कपट)।

छाजना-अ० दे० 'छजना'।

छात†-स्त्री० = छत।
*पुं० = छत्र।

छाता-पुं० [सं० छत्र] १. वर्षा या से बचने के लिए पत्तों या कपड़े का बना एक प्रसिद्ध आच्छादन। २. दे० 'छतरी' ३. जलाशय में पानी पर छाये हुए

।
[सं० छादिन्] १. पेट और
की हड्डी की ठठरियों की
। सीना।
ती पत्थर की करना =
ना। छाती पर मूँग या
ना = किसी को दिखाकर उसका
श्रम करना। छाती पर
ना = दुःख सहने के लिए जी
छाती पर साँप लोटना
(क) कलेजा दहल जाना। (ख)
होना। छाती पीटना =
होकर छाती पर आघात
ती फटना = बहुत अधिक
कष्ट होना। छाती
ते लगाना।
। दी।
ती जलना = शोक, ईर्ष्या या
से हृदय में संताप होना।
होना = मन को शान्ति

। ४. हिम्मत। साहस।
[सं०] [स्त्री० छात्रा] १.
विद्यार्थी।
[सं०] विद्यार्थी को
नेवाली वृत्ति या धन।
)
पुं० दे० 'छात्रावास'।
स-पुं० [सं०] विद्यार्थियों या
ने का स्थान। (बोर्डिंग
)
[सं०] [वि० छादित] १.
ने का काम। २. वह जिससे
या ढका जाय। आवरण।
। ३. छिपाव। ४. कपड़ा।
[सं०] १. वह जिसने छद्म
या भेस बदला हो। २.
। ३. ढोंगी। मक्कार।

छान–स्त्री० [सं० छादन] छप्पर। स्त्री० [हिं० छानना] छानने की क्रिया या भाव।

छानना–स० [सं० चालन या चरण] १. चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े, चलनी आदि के पार निकालना, जिससे उसका कूड़ा-करकट या मोटा अंश ऊपर रह जाय। २. परखना। ३. कोई चीज ढूँढ़ने के लिए सब जगह या सब चीजें अच्छी तरह देखना-भालना। जैसे–सारा घर या शहर छानना। ४. भेदकर पार करना। ५. नशा पीना। जैसे–शराब छानना। *स० दे० 'छादन'।

छानी–स्त्री० [हिं० छानना] वह गोल जालीदार पात्र जिसमें आटा आदि छानते हैं। चलनी। छलनी।

छान-बीन–स्त्री० [हिं० छानना + बीनना] अच्छी तरह की जानेवाली जाँच-पड़ताल। गहरी खोज।

छाना–स० [सं० छादन] १. ढकना। आच्छादित करना। २. छाया के लिए ऊपर से कोई वस्तु तानना या फैलाना। अ० १. फैलना। पसरना। २. डेरा डाल-कर या जमकर कहीं रहना।

छानी–स्त्री० [हिं० छाना] घास-फूस की छाजन। छप्पर।

छाप–स्त्री० [हिं० छापना] १. छापने से पड़ा हुआ चिह्न। मुद्रा। अंक। २. किसी बात के विशेष प्रभावशाली होने या ठीक जान पड़ने के कारण मन पर पड़ने-वाला उसका प्रभाव। (इम्प्रेशन; अन्तिम दोनो अर्थों के लिए) ३. वैष्णवों के अंगों पर गरम धातु से अंकित शंख, चक्र आदि के चिह्न। मुद्रा। ४. ठप्पेदार अँगूठी। ५. कविता के अन्त में रहनेवाला कवि का उपनाम। ६. निशान चिह्न। ७. कर्त्ता की विशेषता के कारण उसकी कृत्ति में दिखाई देनेवाली विशेषता या उसके

सूत्रक चिह्न।

छापना–स० [सं० चपन] १. स्याही आदि की सहायता से एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दबाकर उसकी आकृति उतारना। २. ठप्पे से निशान डालना। ३. मोहर से अंकित करना। ४. छापे की कल से अक्षर या चित्र अंकित करना। मुद्रित करना। मुद्रण।

छापा–पुं० [हिं० छापना] १. वह साँचा जिसपर स्याही या रंग लगाकर उसपर खुदे चिह्न या आकार वस्तु पर छापते या उतारते हैं। ठप्पा। २. मोहर। मुद्रा। ३. ठप्पे या मोहर से अंकित चिह्न या अक्षर। ४. मंगल अवसरों पर हलदी आदि से छापा हुआ पंजे का चिह्न। (दीवार, कपड़े आदि पर) ५. बे-खबर लोगों पर होनेवाला आक्रमण।

छापाखाना–पुं० [हिं० छापा + फा० खाना] वह स्थान जहाँ पुस्तकें आदि छापी जाती हैं। मुद्रणालय। (प्रिन्टिंग प्रेस)

छापामार–पुं० [हिं० छापा = अचानक आक्रमण + मार (प्रत्य०)] वह जो अचानक आक्रमण करता हो। छापा मारनेवाला। (विशेषतः सैनिक या हवाई जहाज)

छाबड़ी–स्त्री० [देश०] वह दौरी या थाल जिसमें खाने-पीने की चीजें रखकर बेची जाती हैं। खोनचा।

छाम*–वि० दे० 'क्षाम'।

छायल†–स्त्री० [?] एक प्रकार की जनानी कुरती।

छाया–स्त्री० [सं०] १. सूर्य या किसी दूसरे प्रकाशमान पदार्थ के बीच में किसी दूसरे पदार्थ के आ जाने से होनेवाला आपेक्षिक अन्धकार। २. ऐसा स्थान जहाँ ऊपर या सामने से आनेवाला ताप या प्रकाश न पड़ता हो। छाँह। ३. उक्त प्रकार से बीच में आ पड़नेवाले पदार्थ की वह छाया जो आकार-प्रकार में उस पदार्थ के बहुत-कुछ अनुरूप होती है। ४. प्रायः किसी के या साथ लगा रहनेवाला व्यक्ति या पदा ५. ऐसी तत्वहीन या निस्सार बात पदार्थ जो किसी वास्तविक और मह बात या पदार्थ के अनुरूप हो या समान जान पड़े। व्यर्थ की, निकम्मी भ्रामक प्रतिकृति। ६. किसी बात पदार्थ का बहुत ही क्षीण या नाम का अवशेष जो उस मूल बात या का बहुत ही सामान्य आभास देता (शैडो; उक्त सभी अर्थों के लिए) भूत-प्रेत या उनके कारण होनेवाली रोग आदि। ८. किसी वस्तु के अनु पर बनी हुई और कुछ कुछ वैसी ही पड़नेवाली, पर कम महत्व की प्रतिकृति। अनुहार। ९. दे० 'छाँह'।

छाया-चित्र–पुं० [सं०] १. वह चि किसी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब पड़ने से एक विशेष प्रकार के शी उतर आता और उस शीशे पर से जाता है। (फोटो) २. दे० 'रजत-

छाया-चित्रण–पुं० [सं०] वह क्रिया जिससे किसी वस्तु की छ प्रतिबिम्ब मात्र से उसका चित्र एक प्रकार के शीशे पर ले लिया जात तब उस शीशे पर से एक विशेष प्र कागज पर छापा जाता है। (फोटो

छाया-पथ–पुं० [सं०] आकाश

छायाभ–वि० [सं० छाया + भ (प्र १. छाया से युक्त। २. जिसपर पड़ी हो।

छायावाद–पुं० [सं०] १. वह जिसके अनुसार अव्यक्त या अ विषय या लक्ष्य बनाकर उसके प्रति विरह आदि के भाव प्रगट करते हैं दे० 'रहस्यवाद'।

छायावादी–वि० [सं०] १. छ संबंधी। छायावाद का। २. छाया

या उसके अनुसार कविता

[सं० क्षार] १. जली हुई
धातुओं की राख का नमक।
नमक। ३. खारा पदार्थ।

छार करना = नष्ट-भ्रष्ट

[सं०] १. भस्म करना।
या नष्ट करना। बरबाद

[सं० छल्ल] पेड़ों के धड़
आवरण। वल्कल।
पत्र (जो पहले छाल पर

[सं० क्षालक] [स्त्री०
या धोकर साफ करनेवाला।
गाथि पुन्य-रासि पाप-छा-

[हिं० छाल] १. ऊपरी छाल
जैसे-मृग-छाला। २. जलने
चमड़े का जल-भरा उभार।

[सं० प्रक्षालित] धोया

= सुपारी।

[हिं० छाना] १. छप्पर।
पड़ाव। ३. सैनिक का पड़ाव।
के पड़ाव के आस-पास की
व्यवस्था कुछ अलग नियमों
होती है। (कैन्टूनमेन्ट)
पुं० दे० 'छौना'।
[सं० शावक] १. बच्चा। २.

[हिं० च्यूँटी] १. एक
। २. एक छोटा उड़नेवाला
चिकोटी।

छिंछ*—स्त्री० [अनु०] छींटा।

छि—अव्य० [अनु०] घृणा, तिरस्कार आदि का सूचक शब्द।

छिउल†—पुं० [?] पलाश। ढाक। टेसू।

छिकना—अ० [हिं० छेकना] १. छेंका या घेरा जाना। घिरना। २. काटा या मिटाया जाना। (नाम पड़ी हुई रकम)

छिगुनी—स्त्री० [सं० क्षुद्र + अँगुली] सबसे छोटी उँगली। कनिष्ठिका।

छिच्छ*—स्त्री० दे० 'छींटा'।

छिछकारना†—स० दे० 'छिड़कना'।

छिछड़ा—पुं० दे० 'छीछड़ा'।

छिछला—वि० [सं० उच्छल] [स्त्री० छिछली] कम गहरा। उथला।

छिछिल*—वि० दे० 'छिछला'।

छिछोरा—वि० [हिं० छिछला] [स्त्री० छिछोरी, भाव० छिछोरपन] क्षुद्र। ओछा।

छिटकना—अ० [सं० क्षिप्ति] इधर-उधर फैलना। बिखरना।
स० चारो ओर फैलाना। बिखेरना।

छिटकाना—स० [हिं० छिटकना] चारो ओर फैलाना। बिखराना।

छिड़कना—स० [हिं० छींटा + करना] पानी आदि के छींटे डालना।

छिड़का—पुं० दे० 'छिड़काव'।

छिड़काव—पुं० [हिं० छिड़कना] पानी आदि छिड़कने की क्रिया या भाव।

छिड़ना—अ० [हिं० छेड़ना] किसी बात या कार्य का आरंभ होना। शुरू होना। जैसे-चर्चा छिड़ना, लड़ाई छिड़ना।

छितनी†—स्त्री० [?] छोटी छिछली टोकरी।

छितराना—अ० [सं० क्षिप्त + करण] बिखरना। फैलना। तितर-बितर होना।
स० १. बिखराना। फैलाना। २. दूर-दूर या विरल करना। ३. तितर-बितर करना।

छिति*—स्त्री० दे० 'क्षिति'।

छितिज—पुं० दे० 'क्षितिज'।

छितिपाल*–पुं० [सं० क्षिति + पाल] राजा।

छितीस*–पुं० [सं० क्षितीश] राजा।

छिदना–अ० [हिं० छेदना] १. छेदा जाना। २. घायल होना। ३. चुभना।

छिदाना–स० हिं० 'छेदना' का प्रे०।

छिद्र–पुं० [सं०] [वि० छिद्रित] १ छेद। सूराख। २. गड्ढा। विवर। बिल। ३. दोष। ऐब।

छिद्रान्वेषण–पुं० [सं०] [वि० छिद्रान्वेषी] किसी व्यक्ति या बात के दोष ढूँढ़ना। खुचुर निकालना।

छिद्रान्वेषी–वि० [सं० छिद्रान्वेषिन्] [स्त्री० छिद्रान्वेषिणी] दूसरों के दोष ढूँढ़नेवाला।

छिन*–पुं० दे० 'क्षण'।

छिनक*–क्रि० वि० [हिं० छिन + एक] क्षण भर। थोड़ी देर।

छिनकना–स० [हिं० छिड़कना] जोर से साँस निकालकर नाक साफ करना।

छिनछबि*–स्त्री० दे० 'बिजली'।

छिनना–अ० हिं० 'छीनना' का अ०।

छिनभंग–वि० दे० 'क्षण-भंगुर'।

छिनरा–वि० = छिनाल।

छिनाना–स० दे० 'छिनवाना'।

छिनाल–वि० [सं० छिन्ना + नारी] १. व्यभिचारिणी। कुलटा। २. व्यभिचारी।

छिनाला–पुं० [हिं० छिनाल] स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास। व्यभिचार।

छिन्न–वि० [सं०] कटा हुआ। खंडित।

छिन्न-भिन्न–वि० [सं०] १. कटा-हुआ। टूटा-फूटा। २. तितर-बितर। ३. नष्ट-भ्रष्ट।

छिपकली–स्त्री० [हिं० चिपकना] एक रेंगनेवाला जन्तु जो प्रायः दीवारों पर दिखाई देता है। गृह-गोधिका। बिस्तुइया।

छिपना–अ० [सं० क्षिप = डालना] आड़ में होना। दिखाई न पड़ना।

छिपाना–स० [सं० क्षिप = डालना] [भाव० छिपाव] १. आँख से ओझल करना। दूसरों की दृष्टि से बचाना। प्रकट न क गुप्त करना। (कन्सील)

छिपाव–पुं० [हिं० छिपाना] छि छिपाने की क्रिया या भाव। (कन्सी

छिपिया–स्त्री० [हिं० छीपा] छोय या डलिया।

पुं० दे० 'छीपी'।

छिप्र*–क्रि० वि० दे० 'क्षिप्र'।

छिमा*–स्त्री० दे० 'क्षमा'।

छिया–स्त्री० [सं० क्षिम] १. घृणित २. मल। गूह।

छिरकना*–स० दे० 'छिड़कना'।

छिरना*–अ० दे० 'छिलना'।

छिरियाना–अ० दे० 'छिटकना'। स० दे० 'छिड़कना'।

छिलक†–पुं० = तिलक (पौधा)।

छिलका–पुं० [हिं० छाल] १. फ का आवरण। २. ऊपरी परत।

छिलन–स्त्री० [हिं० छिलना] १. की क्रिया या भाव। २. शरीर के का ऊपर से छिल जाना। खरोच। (

छिलना–अ० [हिं० छीलना] १. अलग होना। २. ऊपरी चमड़ा नि

छिहानी†–स्त्री० [?] श्मशान। म

छींक–स्त्री० [सं० छिक्का] एक शा व्यापार जिसमें नाक की वायु बहुत और कुछ शब्द करती हुई निकलती है

छींकना–अ० [हिं० छींक] छींक निक

छींका–पुं० [सं० शिक्य] १. रस्सियों का वह जाल जो खाने पीने की चीजें के लिए छत में लटकाया जाता है। हर। २. बैलों के मुँह पर बाँधा जाने जाल। ३. रस्सियों का बना हुआ झूले पुल। झूला।

छींट–स्त्री० [सं० क्षिप्त] १. महीन जल-कण। २. रंगीन बेल-बूटेदार कपड़ा

छींटना–स० दे० 'छितराना'।

[सं० छित, प्रा० छित] १.
छिटकी हुई बूँदें। जल-कण।
२. हल्की वृष्टि। ३. बूँद की तरह
दाग। ४. मदक या चंडू की
५. व्यंग्यपूर्ण उक्ति।

[सं० शिम्बी] १. मटर की
गाय या बकरी के स्तनों में से कोई
छीमी की तरह नीचे लटका
हो।

[अनु०] घृणा-सूचक शब्द।
छी करना = अरुचि या घृणा

= छूना।

[सं० तुच्छ, या हिं० छी ?]
मांस का छोटा और निकम्मा

-स्त्री० [हिं० छी छी] दुर्दशा।

-स्त्री० [हिं० छीजना] १. छीजने
भाव। २. वह अंश जो छीजने
हो। (वेस्टेज)

-अ० [सं० क्षयण] [संज्ञा छीज]
काम में आने से कम होना।

-स्त्री० [सं० क्षति] १. हानि।
२. बुराई। खराबी।

दे० 'क्षीण'।

[सं० छिन्न + ना (प्रत्य०)]
२. जबरदस्ती लेना। हरण
दे० 'रेहना'।

-स्त्री० [हिं० छीनना +
लेने की क्रिया या भाव।

= छाप।

[सं० क्षिप्र] वेगवान। तेज।

[?] [स्त्री० अल्पा० छीपी]
आदि का बड़ा डला। २. थाली।
दे० 'छीपी'।

[हिं० छापा] [स्त्री० छीपिन]
आदि छापनेवाला।

छीर-पुं० दे० 'क्षीर'। पुं० [हिं० छोर] कपड़े की लम्बाईवाले सिरे का किनारा।

छीरज*-पुं० [सं० क्षीरज] चन्द्रमा।

छीरप*-पुं० [सं० क्षीरप] दूध पीता बच्चा। वि० दूध पीनेवाला।

छीलना-अ० [हिं० छाल] १. छिलका उतारना। २. खुरचकर अलग करना।

छीलर-पुं० [हिं० छिछला] पानी भरा हुआ छोटा गड्ढा। तलैया।

छीवना*-स० = छूना।

छुँगनी*-स्त्री० दे० 'छँगुली'।

छुँगली*-स्त्री० [हिं० छँगुली] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।

छुआना-स० दे० 'छुलाना'।

छुगुनूँ*-पुं० दे० 'घुँघरू'।

छुच्छा-वि० दे० 'छूछा'।

छुच्छी-स्त्री० [हिं० छूछा] पतली नली।

छुच्छू-वि० [हिं० छूछा] मूर्ख और फलतः तुच्छ।

छुट-अव्य० [हिं० छूटना] छोड़कर। सिवा। अतिरिक्त।

छुटकाना*-स० [हिं० छूटना] १. अलग करना। छोड़ना। २. मुक्त करना।

छुटकारा-पुं० [हिं० छूटना] १. मुक्ति। रिहाई। २. छुट्टी। निस्तार।

छुटपन†-पु० [हिं० छोटा + पन (प्रत्य०)] १. छोटाई। लघुता। २. बचपन।

छुट्टा-वि० [हिं० छूटना] [स्त्री० छुट्टी] १. जो बँधा न हो। खुला और अलग। २. एकाकी। अकेला। ३. सब प्रकार के बन्धनों से रहित। स्वतंत्र। ४. फुटकर।

छुट्टी-स्त्री० [हिं० छूटना] १. छूटने या छोड़े जाने की क्रिया या भाव। छुटकारा। २. काम कर चुकने पर मिलनेवाला खाली समय। अवकाश। फुरसत। ३. काम बन्द रहने का वह दिन, जिसमें नियमित रूप से लोग काम पर उपस्थित नहीं रहते। तातील।

(हॉलीडे) ४. काम से मिलनेवाला वह अवकाश जो किसी विशेष कारण से अधिकारियों से प्राप्त किया जाता है। अवकाश। रुखसत। (लीव) ५. कहीं से चलने या जाने की अथवा इसी प्रकार के और किसी काम की अनुमति या आज्ञा।

छुड़वाना–स० [हिं० छोड़ना] किसी को कुछ छोड़ने में प्रवृत्त करना।

छुड़ाना–स० [हिं० छोड़ना] १. बंधन या उलझन से निकालना। २. दूसरे के अधिकार से अलग करना। ३. (धब्बा) मिटाना। साफ करना। ४. नौकरी से हटाना। बरखास्त करना। ५. (आदत) दूर करना। ६. किसी को कुछ देते समय उसमें कमी कराना।

छुत*–स्त्री० [सं० क्षुत्] भूख।

छुतहा–वि० १. दे० 'संक्रामक'। २. दे० 'छुतिहा'।

छुतिहा–वि० [हिं० छूत+हा (प्रत्य०)] १. छूतवाला। २. अस्पृश्य।

छुद्र*–वि० दे० 'क्षुद्र'।

छुद्र-घट*–पुं० दे० 'क्षुद्र-घंटिका'।

छुद्रावलि*–स्त्री दे० 'क्षुद्र-घंटिका'।

छुधा*–स्त्री० दे० 'क्षुधा'।

छुप*–पुं० दे० 'क्षुप'।

छुपना*–अ० दे० 'छिपना'।

छुभित*–वि० [सं० क्षुभित] क्षुब्ध।

छुभिराना*–अ०, स० [हिं० क्षोभ] १. क्षुब्ध होना या करना। २. विचलित होना या करना।

छुर-धार*–स्त्री०[सं०क्षुरधार]छुरे की धार।

छुरहँड़ी–स्त्री० [सं० क्षुर-भांडिक] वह पात्र या आधान जिसमें नाई उस्तरा, कैंची आदि औजार रखते हैं। किसबत।

छुरा–पुं० [सं० क्षुर] [स्त्री० अल्पा० छुरी] १. बड़ी छुरी। २. उस्तरा।

छुरी–स्त्री० [हिं० छुरा] काटने या चीरने आदि का एक छोटा औजार। चाकू।

छुलछुलाना–अ० [अनु०] थोड़ा-
करके मूतना।

छुलाना–स० [हिं० छूना] 'छूना'
प्रेरणार्थक रूप। स्पर्श कराना।

छुवाना†–स० दे० 'छुलाना'।

छुहना*–अ० [हिं० छूना] छूआ जा
स० दे० 'छूना'।

छुहारा–पुं० [सं० क्षुत+हारा (प्र
१. एक प्रकार का खजूर। खुरमा।
पिंड-खजूर।

छूँछा–वि० दे० 'छूछा'।

छू–पुं० [अनु०] मंत्र पढ़कर फूँ
का शब्द।

मुहा०–छू-मंतर होना = गायब हो

छूआछूत–स्त्री० [हिं० छूना+छू
अस्पृश्य को न छूने या उससे ब
विचार या प्रथा।

छूई-मूई–स्त्री० [हिं० छूना+मू
मरना] लजालू या लज्जावती नाम का

छूछा–वि० [सं० तुच्छ] [स्त्री० छू
१. खाली। रिक्त। २. निःसार। ३.

छूट–स्त्री० [हिं० छूटना] १. छू
क्रिया या भाव। छुटकारा। २. अ
धानता के कारण कार्य के किसी अं
ध्यान न जाने या उसके छूट अथ
जाने का भाव। चूक। (ओमिशन)
वह अनुमति जो किसी को विशेष अ
में कोई कार्य करने अथवा अपना
अथवा दायित्व पूरा करने के लिए
(एग्जेम्पशन) ४. किसी प्राप्य ध
पूरा अथवा कुछ अंश छोड़ दिया ज
पूरा या बाकी रुपया न लिया ज
(एबेटमेन्ट, रेमिशन, रिबेट) ५.
पारिश्रमिक आदि लेने के समय कुछ
अवस्थाओं में या कारण से होनेवाली
या रिआयत। (डिस्काउन्ट) ६.
बात या कार्य की स्वतन्त्रता। ७, दया
की जानेवाली कोई रिआयत। (कन्से

या गन्दी दिल्लगी।
[सं० छुट] १. किसी वस्तु का
से अलग या मुक्त होना।
शरीर छूटना = मृत्यु होना।
। ३. साफ होना। मिटना।
दाग या धब्बा छूटना।
। ५. चलनेवाली चीज का
होना। जैसे-गाड़ी छूटना,
। ६. अलग होना।
पीछे रह जाना। ८. अस्त्र
बन्द होना। न रह जाना।
नाड़ी छूटना = नाड़ी की गति
। (मरने का लक्षण)
नियम आदि भंग होना। ११.
। १२. रस-रसकर (पानी)
। १३. कण या छींटे निकलकर
जैसे-फुहारा या आतशबाजी
भूल से रह जाना। १५. काम
हटाया जाना।
[हिं० छूटना] एक प्रकार की

[हिं० छूना] १. छूने की
। २. ऐसा निषिद्ध संसर्ग
आदि का संचार होता है। ३.
या संसर्ग।
का रोग = रोगी के संसर्ग से
रोग। संक्रामक रोग।
वस्तु छूने का दोष। ५. अ-
। ६. भूत-प्रेत का प्रभाव।
[सं० छुप] एक वस्तु का दूसरी
या लगाना। स्पर्श होना।
१. किसी वस्तु से अपना कोई अंग
लगाना। स्पर्श करना।
आकाश छूना = बहुत ऊँचा
या हाथ लगाना। ३. दान के
वस्तु स्पर्श करना। ४. दौड़ या
में जा पकड़ना। ५. लेप

करना। पोतना।

छेंकन-स्त्री० [हिं० छेंकना] १. छेंकने की क्रिया या भाव। २. मकान आदि बनाने के समय नींव आदि खोदकर यह निश्चित करना कि कहाँ कहाँ और किस तरह से कोठरियाँ, दीवारें, दालान आदि रहेंगे।

छेंकना-स० [सं० छंद] १. स्थान घेरना। २. जाने से रोकना। न जाने देना। ३. लकीरों से घेरना। ४. काटना। मिटाना। जैसे-किसी के नाम लिखी हुई रकम छेंकना।

छेकानुप्रास-पुं० [सं०] एक प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक ही चरण में दो या अधिक वर्णों की आवृत्ति कुछ अन्तर पर होती है।

छेकोक्ति-स्त्री० [सं०] ऐसी बात या कथन जिसके अन्दर कुछ और अर्थ भी छिपा हो।

छेड़-स्त्री० [हिं० छेद ?] १. छेड़ने की क्रिया या भाव। २. किसी को कुढ़ाने या चिढ़ानेवाली बात। चुटकी। ३. रगड़ा। झगड़ा। ४. कोई कार्य आरंभ करना।

छेड़खानी-स्त्री० [हिं० छेड़] किसी को तंग करने के लिए छेड़ने की क्रिया या भाव। छेड़-छाड़।

छेड़-छाड़-स्त्री० = छेड़खानी।

छेड़ना-स० [हिं० छेदना ?] १. खोद-खाद करना। खोंचना। २. तंग करना। ३. विरोधी को चिढ़ाना। ४. मजाक करना। चुटकी लेना। ५. (बात या कार्य) आरंभ करना। उठाना। ६. बाजा बजाने के लिए उसमें से स्वर निकालना आरम्भ करना।

छेड़वाना-स० हिं० 'छेड़ना' का प्रे०।

छेत*-पुं० [सं० छेद] १. अलग होने की क्रिया या भाव। पार्थक्य अलगाव। २. वियोग। विच्छेद।

छेति*-स्त्री० [सं० छेदन] बाधा।

छेत्र†*-पुं० दे० 'क्षेत्र'।

छेद-पुं० [सं०] १. छेदन। काटना। २.

विनाश।

पुं० [सं० छिद्र] १. सूराख। छिद्र। २. बिल। विवर। ३. दोष। दूषण।

छेदक–वि० [सं०] १. छेदनेवाला। २. काटकर अलग करनेवाला।

छेदन–पुं० [सं०] [वि० छेदक = छेदन करनेवाला] १. छेद या काटकर अलग करना। २. नाश। ध्वंस।

छेदना–स० [सं० छेदन] १. छेद करना। बेधना। भेदना। २. क्षत या घाव करना। †३. छिन्न करना। काटना।

छेना–पुं० [सं० छेदन] फाड़ा हुआ दूध, जिसका पानी निकाल लिया गया हो।

छेनी–स्त्री० [हिं० छेना] पत्थर आदि काटने का लोहे का एक औज़ार। टाँकी।

छेम†*–पुं० दे० 'क्षेम'।

छेरा†–पुं० [?] बच्चा। बालक।

छेरी–स्त्री० [सं० छेलिका] बकरी।

छेव–पुं० [सं० छेद] १. क्षत। घाव। २. नाश। ३. कपटपूर्ण व्यवहार। ४. आपत्ति की आशंका। जोखिम।

वना*–स्त्री० [हिं० छेना] ताड़ी।

स० [हिं० छेदना] १. काटना। छिन्न करना। २. चिह्न लगाना।

स० [सं० क्षेपण] १. फेंकना। २. डालना। अ० झेलना। सहना।

वा†–पुं० दे० 'छेव'।

ह*–पुं० [हिं० छेव] १. दे० 'छेव'। २. ध्वंस। नाश। ३. वियोग। विच्छेद। ४. परम्परा का भंग। ५. अन्त। समाप्ति।

वि० १. खंडित। २. न्यून। कम।

स्त्री० दे० 'खेद'।

†–वि० दे० 'छः'।

पुं० दे० 'क्षय'।

ना–पुं० [?] करताल या जोड़ी की तरह का एक बाजा। झाँझ।

अ० [सं० क्षय] १. क्षीण होना। २. नष्ट होना।

स० १. क्षीण करना। २. नष्ट करना।

छैया†*–पुं० [हिं० छवना] बच्चा।

छैल*–पुं० १. दे० 'छैला'। २. दे० 'छै

छैल-चिकनिया–पुं० दे० 'छैला'।

छैल-छबीला–पुं० दे० 'छैला'।

छैला–पुं० [सं० छवि + ऐला (प्रत्य०)] बना-ठना सुन्दर आदमी। बाँका-तिरछा।

छैलाना–अ० [हिं० छैल] लड़कों का कोई चीज लेने के लिए हठ करना।

छोंड़ा*–पुं० [सं० क्ष्वे] मथानी।

छोआ–पुं० दे० 'खोई'।

छोई†–स्त्री० [?] १. दे० 'खोई'। २. निस्सार वस्तु।

छोकरा–पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छोकरी] लड़का। बालक। (बुरे या उपेक्षा के भाव से)

छोटा–वि० [सं० क्षुद्र] [स्त्री० छोटी, भाव० छोटाई] १. लम्बाई, विस्तार या डील-डौल में कम।

यौ०–छोटा-मोटा = साधारण।

२. अवस्था या उम्र में कम। ३. पद या प्रतिष्ठा में घटकर। ४. तुच्छ। हीन। ५. ओछा। क्षुद्र।

छोटी इलायची–स्त्री० एक प्रकार की इलायची जो छोटी और सफेद होती है। गुजराती इलायची।

छोटी हाजिरी–स्त्री० युरोपियनों आदि का सवेरे का जलपान।

छोड़ना–स० [सं० छोरण] १. अपनी पकड़ से अलग या बन्धन से मुक्त करना। २. अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना। परित्याग करना। ३. ग्रहण न करना। न लेना। ४. कहीं से प्रस्थान करना। स्थान से हटना। ५. चलनेवाली चीज को गति में लाना। जैसे–गाड़ी छोड़ना, आतिशबाजी छोड़ना। ६. किसी का पीछा करने के लिए किसी को लगाना। जैसे–किसी आदमी पर जासूस छोड़ना। ७.

लेकर आप आगे बढ़ना।
निकालना या गिराना।
कर्तव्य से अलग या विरत
रोग या व्याधि का किसी के
। ११. बचाकर रखना।
= अतिरिक्त। सिवा।
आदि से मुक्त करना।
। १२. कारागार या बन्धन
। (डिस्चार्ज)
दे० 'क्षोणिप'।
दे० 'क्षोणी'।
[हिं० छोपना] १. छोपने की
। २. वह अंश जो ऊपर
जाय। छोपकर चढ़ाई
।
[सं० क्षपण] १. अधिक
वस्तु किसी दूसरी वस्तु पर
लेप करना। थोपना। २.
। दबोचना। ३. ढकना।
= क्षोभ।
-अ० [सं० क्षोभ] क्षुब्ध होना।
।
-वि० दे० 'क्षोभित'।
[सं० क्षोम] १. चिकना।
। मुलायम।
[हिं० ओर का अनु०] १. चौड़ाई
। किनारा। सिरा।
-ओर-छोर = आदि और अन्त।
सीमा। सिरा। ३. नोक।
[सं० छोरण] १. खोलना।
।

छोरा†-पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छोरी] छोकरा। लड़का।

छोरा-छोरी-स्त्री० [हिं० छोरना] छीना-झपटी। छीना-छीनी।

छोलना†-स० = छीलना।
पुं० वह औजार जिससे कोई चीज छीली जाय।

छोह-पुं० [सं० क्षोभ] १. प्रेम। स्नेह। २. दया। अनुग्रह।

छोहना*-अ० [हिं० छोह] १. विचलित या क्षुब्ध होना। २. प्रेमपूर्वक दया करना।

छोहरा†*-पुं० [स्त्री० छोहरी] दे० 'छोरा'।

छोहाना*-अ० दे० 'छोहना'।

छोहिनी*-स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी'।

छोही†*-वि० [हिं० छोह] प्रेमपूर्वक दया रखनेवाला। अनुरागी।

छौंक-स्त्री० [अनु०] बघार। तड़का।

छौंकना-स० [अनु० छाँव छाँव] सुगन्धित या सोंधा करने के लिए हींग, मिर्च आदि से मिला हुआ कड़कड़ाता घी दाल आदि में डालना। बघारना।
अ० [सं० चतुष्क] वार करने के लिए झपटना।

छौंड़ा†-पुं० दे० 'छोकरा'।
पुं० [सं० चुंडा] अनाज रखने का गड्ढा। खत्ता।

छौना-पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छौनी] १. पशु का बच्चा। जैसे—मृग-छौना। २. बालक। बच्चा।

छौलदारी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा तंबू।

ज

वर्ण-माला का एक व्यंजन वर्ण
का तीसरा अक्षर है। छंद-
यह जगण का सूचक या संक्षिप्त
जाता है। प्रत्यय रूप में यह
के अन्त में लगाकर 'में उत्पन्न' या 'से उत्पन्न' का अर्थ देता है। जैसे-देशज, जलज आदि।

जंग-स्त्री० [फा०] [वि० जंगी] युद्ध।
पुं० [फा० ज़ंग] लोहे का मोरचा।

जंगम-वि० [सं०] १. चलने-फिरनेवाला।

चर। २. जो एक जगह से दूसरी जगह लाया या पहुँचाया जा सके। चल। (मूवेंबुल) जैसे—जंगम सम्पत्ति।

पुं० दाक्षिणात्य लिंगायत शैव सम्प्रदाय के एक प्रकार के आचार्य।

जंगल—पुं० [सं०] [वि० जंगली] वह स्थान जहाँ बहुत दूर तक पेड़ ही पेड़ आपसे आप उगे हों। वन। (फॉरेस्ट)

जँगला—पुं० [पुर्त्त० जेंगिला] १. वह खिड़की या दरवाजा, जिसमें लोहे के छड़ लगे हों। कटहरा। बाढ़। २. वह चौखट जिसमें छड़ लगे हों।

जंगली—वि० [हिं० जंगल] १. जंगल सम्बन्धी। जंगल का। जांगल। वन्य। २. जंगल में होने या मिलनेवाला। ३. आपसे आप उगनेवाला (पौधा)। ४. जंगल में रहनेवाला। जैसे-जंगली जाति, जंगली हाथी। ५. (प्रदेश या स्थान) जिसमें जंगल हों। जैसे—जंगली द्वीप।

जंगार—पुं० [फा०] [वि० जंगारी] तूतिया।

जंगाल—पुं० दे० 'जंगार'।

जंगी—वि० [फा०] १. लड़ाई से संबंध रखनेवाला। जैसे-जंगी तैयारी। २. सेना संबंधी। फौजी। सैनिक। ३. बहुत बड़ा। दीर्घ-काय।

ंगी कानून—पुं० दे० 'फौजी कानून'।

ंगी जहाज-पुं० [हिं० जंगी + जहाज] जल-युद्ध में काम आनेवाला वह बहुत बड़ा जहाज जिसपर बहुत-सी तोपें लगी रहती हैं। युद्ध-पोत।

ंघा—स्त्री० [सं०] जाँघ। रान।

ंचना—अ० [हिं० जाँचना] १. जाँचा जाना। २. अच्छा लगना। ३. जान ड़ना। प्रतीत होना।

जर*—वि० दे० 'जर्जर'।

जल*—वि० दे० 'जर्जर'।

जाल—पुं० [हिं० जग + जाल] १. झंझट। खेड़ा। २. उलझन। ३. पानी का भँवर। ४. पुराने ढंग की एक प्रकार की पलीतेदार बंदूक। ५. चौड़े मुँह की प्रकार की तोप। ६. मछलियाँ पकड़ने बहुत बड़ा जाल।

जंजीर—स्त्री० [फा०] १. कड़ियों लड़ी। २. बेड़ी। ३. किवाड़ की कुं सिकड़ी।

जँजीरी—स्त्री० [फा० जंजीर] १. गले पहनने की सिकड़ी। २. हथेली के पि भाग पर पहना जानेवाला एक प्रकार गहना। नेवर।

जंतर—पुं० [सं० यंत्र] १. कल। २. तांत्रिक यंत्र। ३. गले आदि में पहनने का धातु का वह छोटा आधान जिसके अंद कोई तांत्रिक यंत्र या टोटके की वस्तु रहती है।

जंतर-मंतर—पुं० [हिं० यंत्र + मंत्र]। यंत्र-मंत्र। टोना-टोटका। जादू-टोना। वेध-शाला।

जंतरी—स्त्री० [सं० यंत्र] १. छोटा जिससे सोनार तार खींचते हैं। २. पंचां तिथि-पत्र। ३. जादूगर। ४. बाजा ब वाला। वादक।

जँतसर—पुं० [हिं० जाँता] वह गीत स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाती हैं।

जँतसार—स्त्री० [हिं० जाँता] वह स्थ जहाँ जाँता या चक्की गड़ी रहती है।

जंता—पुं० [सं० यंत्र] [स्त्री० अल्प जंती, जंतरी] १. यंत्र। कल। २. सोने आदि का तार खींचने का एक औजार। वि० [सं० यंतृ = यंता] दंड देनेवाला।

जंती*—स्त्री० दे० 'जननी'।

जंतु—पुं० [सं०] १. जन्म लेनेवाला। २. जीव। प्राणी। ३. पशु। जानवर।

यौ०—जीव-जन्तु = प्राणी और जानवर।

जंतुघ्न—वि० [सं०] कीड़ों का नाश करने वाला। जंतु-नाशक।

जंतु-विज्ञान—पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें

की उत्पत्ति, विकास,
आदि का विवेचन होता

[हिं० जाँता] जाँता या चक्की

'यंत्र'।

[हिं० जंत्र] १. ताला बन्द
या रोक रखना।

दे० 'जंतर-मंतर'।

[सं० यंत्रित] १. दे० 'यंत्रित'।
बँधा हुआ। ३. जो किसी
अधीन।

दे० 'जंतरी'।

[सं० यंत्रिन्] बाजा बजानेवाला।

[फा० जंद, मि० सं० छन्द]
प्रसिद्ध धर्म-ग्रन्थ। २. वह
धर्म-ग्रंथ है।

[सं० यंत्र] १. दरवाजे में बन्द
। २. बड़ी चक्की। जाँता।

[सं० जल्पन] बोलना।

[सं०] जामुन। (फल)

[सं०] १. बड़ा जामुन।
शृगाल। गीदड़।

[सं०] पुराणानुसार सात
जिसमें भारतवर्ष है।

[सं०] जामुन। (फल)

दे० 'जंबूरा'।

[फा०] तोपची।

[फा० जंबूर = भौंरा] १. वह
जिसपर तोप लादी जाती है। २.
की छोटी तोप। ३. भँवर-
। ४. सँड़सी या चिमटी की तरह
बड़ा औज़ार जिससे कोई जमी या
पेंच घुमाई या निकाली जाती है।

[सं०] १. दाढ़। चौभड़।
। ३. जँभाई। ४. एक दैत्य
। ५. जँबीरी नीबू।

जँभाई–स्त्री० [सं० जृंभा] निद्रा या आलस्य के कारण होनेवाली मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया। उबासी।

जँभाना–अ० [सं० जृंभन] जँभाई लेना।

जई–स्त्री० [हिं० जौ] १. जौ की तरह का एक पौधा। २. जौ का छोटा अंकुर जो मंगल-द्रव्य माना जाता है। ३. वह फूल जिसमें कली के रूप में फल का सूक्ष्म रूप भी हो। जैसे–कुम्हड़े की जई।
*वि० दे० 'जयी'।

जऊ*–अव्य० दे० 'यद्यपि'।

जकंद*–स्त्री० [फा०] छलाँग।

जकंदना*–अ० [हि० जकंद] १. कूदना। उछलना। २. टूट पड़ना।

जक*–पुं० [सं० यक्ष] १. यक्ष। २. कंजूस। कृपण।
स्त्री० [हिं० झक] [वि० जक्की] १. जिद। हठ। अड़। २. धुन। रट।
स्त्री० [?] चैन। आराम।
स्त्री० [अ० ज़क] १. हार। पराजय। २. हानि। घाटा। ३. लज्जा।

जकड़–स्त्री० [हिं० जकड़ना] १. जकड़ने की क्रिया या भाव। २. जकड़े जाने की दशा या स्थिति।

जकड़ना–स० [सं० युक्त + करण] [भाव० जकड़] कसकर बाँधना या पकड़ना।
अ० तनाव, सूजन आदि के कारण अंगों का हिल-डुल न सकना।

जकड़-बंद–वि० [हिं० जकड़ना + बंद] चारो ओर से अच्छी तरह बँधा हुआ।

जकना*–अ० [हिं० जक या चक] १. भौचक्का होना। २. व्यर्थ बकना। ३. रटना।

जकाजक*–पुं० [अनु०] घोर युद्ध। जोरों की लड़ाई।
क्रि० वि० खूब जोरों से। वेग-पूर्वक।

जकात–स्त्री० [अ०] १. दान। खैरात। २. कर। महसूल।

जकित*–वि० दे० 'चकित'।

जखम–पुं० [फा० जख्म] १. क्षत। घाव। २. मानसिक कष्ट या आघात।

मुहा०–जखम हरा हो आना=पिछला कष्ट फिर याद आना।

जखमी–वि० [फा० जख्मी] घायल।

जखीरा–पुं० [अ० जखीरः] १. वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत-सी चीजें हों। २. ढेर। समूह। ३. वह स्थान जहाँ पेड़-पौधे और बीज बिकते हों।

जग–पुं० [सं० जगत्] १. संसार। दुनिया। २. संसार के लोग।

वि० [हिं जागना] जागा हुआ। जाग्रत। उदा०–अग जगरूप भूप सीतावरु।–तुलसी।

*पुं० दे० 'यज्ञ'।

जगजगा†–वि० = चमकीला।

जगजगाना†–अ० दे० 'जगमगाना'।

जगड्वाल–पुं० [सं०] व्यर्थ का आयोजन या आडंबर।

जगण–पुं० [सं०] पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि तथा अंत के अक्षर लघु होते हैं। जैसे–रमेश। (लिखने में इसका सांकेतिक रूप यह है ।ऽ।)

जगत्–पुं० [सं०] संसार। दुनिया।

जगत–स्त्री० [सं० जगति] कूएँ के ऊपर का चबूतरा।

पुं० दे० 'जगत्'।

जगत-सेठ–पुं० [हिं० जगत + सेठ] बहुत बड़ा महाजन या सेठ।

जगती–स्त्री० [सं०] १. संसार। दुनिया। २. पृथ्वी। ३. जीवन।

गदंत–पुं० [स० जगत् + अन्त] १. वह जो जगत का अन्त या नाश करता हो। २. यमराज। ३. शिव। महादेव।

गदंबा–स्त्री० दे० 'जगदंबिका'।

गदंबिका–स्त्री० [सं०] १. जगत की माता। २. दुर्गा।

गदात्मा–पुं० [सं० जगदात्मन्] ईश्वर।

जगदाधार–पुं० [सं०] ईश्वर।

जगदीश–पुं० [सं०] परमेश्वर।

जगद्गुरु–पुं० [सं०] १. परमेश्व २. अनेक देशों में अत्यन्त पूज्य मान्य व्यक्ति।

जगद्धात्री–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

जगद्वंद्य–वि० [सं०] जिसकी व सारा जगत करे। संसार भर में पूज्य।

जगना–अ० [सं० जागरण] १. नींद छो उठना। जागना। २. सचेत या साव होना। ३. देवी-देवता आदि का अ प्रभाव दिखाना। ४. उत्तेजित होना। ५. (आग का) अच्छी तरह जलना। ६. जगमगाना। चमकना।

जगन्नाथ–पुं० [सं०] १. ईश्वर। पुरी (उड़ीसा) के एक प्रसिद्ध देवता।

जगन्नियंता–पुं० [सं० जगन्नियंतृ] ईश

जगबंद*–वि० दे० 'जगद्वंद्य'।

जगमग(ा)–वि० [अनु०] १. जो प्र पड़ने पर चमकता हो। २. चमकी ३. जहाँ बहुत-से दीपक या चमकते पदार्थ हों।

जगमगाना–अ० [अनु०] [भा जगमगाहट] खूब चमकना।

जग-मोहन–पुं० दे० 'सभा-मंडप' २।

जगरन*–पुं० दे० 'जागरण'।

जगर-मगर–वि० दे० 'जगमग'।

जगह–स्त्री० [फा० जायगाह] १. स्था स्थल। २. मौका। अवसर। ३. पद। ओह

जगात†–पुं० दे० 'जकात'।

जगाना–स० [हिं० जागना] १. हि 'जागना' का प्रे०। सोये हुए को उठने प्रवृत्त करना। २. होश या चेत में लाना ३. (आग) सुलगाना। ४. ऐसा साध करना कि यंत्र-मंत्र अपना प्रभाव दिखलाने

जगीत*–स्त्री० दे० 'जगत्'।

जगीला–वि० [हिं० जागना] जागने

आलस्य से भरा हुआ।

दे० 'पत'।

] १. पेड़ू। २. चूतड़।

[सं०] बहुत बुरा या

[फ़ा० जच्चः] प्रसूता स्त्री।

खाना = सूतिका-गृह। सौरी।

दे० 'पत'।

] १. किसी प्रकार का

। निर्णायक। २. न्याय-

अधिकारी जो प्रायः जिले

सुनता या उनपर पुन-

है।

दे० 'यजमान'।

= ययाति।

[अ०] १. दंड। २.

काल में अन्य धर्मवालों

एक प्रकार का कर।

[अं० जज] १. जज का पद

जज की कचहरी।

दे० 'जत'।

= यंत्रा।

[हिं० जाट या सं० जटन ?]

अधिक मूल्य या कोई वस्तु

[जड़ना] जड़ना।

[सं० जटिल] व्यर्थ की

काफिये उड़ाना या

= बे सिर-पैर की और व्यर्थ

।

[सं०] १. लट के रूप में

सिर के बहुत बड़े बड़े बाल।

के पतले सूत। झकरा।

। रम्मन।

पुं० [सं०] १. जटा या लंबे

। २. शिव की जटा।

जटाधर–पुं० [सं०] शिव।

जटाधारी–वि० [सं०] जिसके सिर पर जटा हो।

पुं० शिव। महादेव।

जटाना–अ० [हिं० जटना] ठगा जाना।

जटामासी–स्त्री० [सं० जटामांसी] एक सुगन्धित वनस्पति। बाल-छड़।

जटित–वि० [सं०] जड़ा हुआ।

जटिल–वि० [सं०] [भाव० जटिलता] १. जटाओं से युक्त। जटावाला। २. जिसमें बहुत हेर-फेर या पेच हो और जो इसी लिए जल्दी समझ में न आवे। दुरूह। दुर्बोध। पेचीला। (इन्ट्रिकेट, कॉम्प्लेक्स)

जठर–पुं० [सं०] पेट का भीतरी भाग।

वि० १. वृद्ध। बूढ़ा। २. कठिन।

जठर अगिनी*–स्त्री० दे० 'जठराग्नि'।

जठराग्नि–स्त्री० [सं०] पेट में की अन्न पचानेवाली गरमी।

जड़–वि० [सं०] १. जिसमें चेतनता न हो। चेतना-रहित। २. चेष्टा-हीन। स्तब्ध। ३. वह जिसमें बहुत ही थोड़ी बुद्धि हो। बहुत बड़ा मूर्ख। (ईडियट) ४. ठंढा।

स्त्री० [सं० जटा] १. वृक्षों आदि का जमीन के अन्दर रहनेवाला वह भाग जिसके द्वारा उन्हें जल और आहार मिलता है। मूल। सोर। २. नींव। बुनियाद।

मुहा०–जड़ उखाड़ना या खोदना = (क) ऐसा नष्ट करना कि फिर जल्दी न उभड़ सके। (ख) अपकार या अहित करना। **जड़ जमना** = चल या बढ़ सकने की स्थिति में होना।

३. कारण। सबब। ४. आधार। आश्रय।

जड़कना*–अ० [हिं० जड़] जड़ या स्तब्ध हो जाना।

जड़ता–स्त्री० [सं०] १. जड़ का भाव। चेतनता का विपरीत भाव। अ-चेतनता। २. बहुत अधिक मूर्ख या जड़ होने का भाव। (ईडिएसी) ३. चेष्टा न करने या स्तब्ध रहने की दशा,

जो साहित्य में एक संचारी भाव है।

जड़त्व–पुं० दे० 'जड़ता'।

जड़ना–स० [सं० जटन] १. एक चीज को दूसरी चीज में इस प्रकार बैठाना कि वह जल्दी उखड़ या निकल न सके। (फासेन) २. प्रहार करना। मारना। ३. ठोंकना। ४. चुगली खाना।

जड़वाना–स० हिं० 'जड़ना' का प्रे०।

जड़हन–पुं० [देश०] वह धान जो पहले एक जगह बोया और तब वहाँ से उखाड़कर दूसरी जगह रोपा जाता हो। शालि।

जड़ाई–स्त्री० [हिं० जड़ना] जड़ने का का काम, भाव या मजदूरी।

जड़ाऊ–वि० [हिं० जड़ना] जिसपर नगीने या रत्न जड़े हों।

जड़ाना–स० दे० 'जड़वाना'।
* अ० [हिं० जाड़ा] सरदी खाना।

जड़ाव–पुं० [हिं० जड़ना] १. जड़ने की क्रिया या भाव। २. ऐसा काम या चीज जिसपर दूसरी छोटी चीजें जड़ी हुई हों। जड़ाऊ काम।

जड़ावर–पुं०[हिं० जाड़ा] जाड़े में पहनने के गरम कपड़े।

जड़ित*–वि० [सं० जटित] १. अच्छी तरह बैठाया या जड़ा हुआ। २. जिसमें नगीने जड़े हों। ३. अच्छी तरह बँधा या जकड़ा हुआ।

जड़िमा–स्त्री० [सं०] जड़ता।

जड़िया–पुं० [हिं० जड़ना] गहनों पर नगीने जड़ने का काम करनेवाला।

जड़ी–स्त्री० [हिं० जड़] बनस्पति की वह जड़ जो औषध के काम में आती हो।

जड़ीभूत–वि० [सं०] जो बिलकुल जड़ के समान हो गया हो। सुन्न।

जड़ैया†–स्त्री० दे० 'जूड़ी'।
पुं० दे० 'जड़िया'।

जतत†*–वि० [सं० यत्] जितना।

जतन†*–पुं० दे० 'यत्न'।

जतलाना–स० दे० 'बतलाना'।

जताना–स० [सं० ज्ञात] १. बतलाना। परिचित कराना। २. पहले से सूचना दे

जति*–पुं० = यति (जितेन्द्रिय या साधु)।
स्त्री० = यति (कविता की)।

जती–पुं० दे० 'यति'।

जतेक†*–क्रि० वि० दे० 'जितना'।

जत्त*–पुं० दे० १. 'जगत'। २. दे० (जितेन्द्रिय या साधु)।

जत्था–पुं० [सं० यूथ] मनुष्यों का झुं दल। गरोह।

जथा*–क्रि० वि० दे० 'यथा'।
स्त्री० [सं० गथ] पूँजी। धन।

जद†–क्रि० वि० दे० 'जब'।
अव्य० दे० 'यदि'।

जदपि*–क्रि० वि० दे० 'यद्यपि'।

जदवार–स्त्री० [अ०] निर्विषी ना औषधि।

जदु*–पुं० दे० 'यदु'।

जदुपति*–पुं० दे० 'यदुपति'।

जदुपुर–पुं० [सं० यदुपुर] मथुरा नगरी।

जदुराई(य)–पुं० [सं० यदुराव] श्रीकृ

जद्द†*–वि० [अ० ज्यादः] ज्यादा।
वि० [फा० जद] प्रचंड। प्रबल।

जद्दपि†*–क्रि० वि० दे० 'यद्यपि'।

जद्दी–वि० [अ० जद] बाप-दादा के समय
वि० बहुत बड़ा या भारी।

जन–पुं० [सं०] १. लोक। लोग। प्रजा। ३. सेवक। दास। ४. अनुया अनुचर। ५. समूह। समुदाय। ६. लोकों में से पाँचवाँ लोक।
†अव्य० दे० 'जनि'।

जनक–पुं० [सं०] १. जन्मदाता। पिता। बाप। ३. सीता के पिता।

जनकजा–स्त्री० [सं०] सीता।

जनकौर*–पुं० [सं० जनक + पुर]। जनकपुर। २. राजा जनक के परिवार के लोग

जनखा–वि० [फा० जनखः] हिज

दे० 'मनुष्य-गणना' ।
-स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट
ने वाले ऐसे लोगों का
साधारणतः एक ही पूर्वज
हैं और जो सभ्यता, संस्कृति
से आस-पास के निवासियों
और कुछ निम्न स्तर पर
(ट्राइब)

दे० 'लोक-तंत्र' ।

दे० 'लोक-तंत्री' ।

-पुं० दे० 'लोक-तंत्रीकरण' ।

[सं०] १. 'जन' का भाव ।
। २. किसी देश या स्थान
के निवासी । सर्व-साधारण ।

[सं०] १. उत्पत्ति । उद्भव ।
३. आविर्भाव । ४. पिता ।

[सं० जनन] १. जन्म देना ।
। २. गर्भ से उत्पन्न या बाहर
ना ।

-स्त्री० दे० 'जननी' ।

[सं०] १. उत्पन्न करने-
या वस्तु) । २. माता । माँ ।

-स्त्री० [सं०] वह इन्द्रिय
सन्तान उत्पन्न करते हैं । जैसे-
लिंग या शिश्न; और स्त्री
या योनि ।

-पुं० [सं०] बसा हुआ स्थान ।
बस्ती ।

-वि० [सं०] जिससे सब लोग
हों । सर्व-प्रिय ।

-पुं० [सं० जन्म] १. उत्पन्न होना
में आना । जन्म । २. सारा
। जिन्दगी ।
जनम हारना = (क) व्यर्थ सारा
। (ख) जन्म भर किसी का
रहने की प्रतिज्ञा करना ।

जनम-घुट्टी (घूँटी)-स्त्री० [हिं० जनम + घूँटी] पौष्टिक ओषधियों का बना हुआ वह पेय पदार्थ जो बच्चों को जन्म के समय से एक दो वर्ष तक पिलाया जाता है। **मुहा०-(किसी बात का) जनम-घूँटी में पड़ना** = जन्म से ही (किसी बात का) अभ्यास या चसका होना।

जन-मत-पुं० दे० 'लोक-मत' ।

जनमना-अ० [सं० जन्म] जन्म लेना ।

जनम-सँघाती†*-पुं० [हिं० जन्म + संघाती] १. वह जो जन्म से ही साथ रहा हो। २. वह जो जन्म भर साथ रहे।

जनमाना-स० [सं० जन्म] जन्म देने या प्रसव करने में सहायता देना।

जन-यात्रा-स्त्री० [सं०] बहुत से लोगों का मिलकर प्रदर्शन के लिए निकलना। जलूस । शोभा-यात्रा ।

जनयिता-पुं० [सं० जनयितृ] पिता ।

जनयित्री-स्त्री० [सं०] माता । जननी ।

जन-रव-पुं० [सं०] १. किंवदन्ती । अफवाह । २. बदनामी । ३. कोलाहल । शोर ।

जन-लोक-पुं० [सं०] पुराणानुसार सात लोकों में से एक ।

जनवाई-स्त्री० दे० 'जनाई' ।

जनवाद-पुं० [सं०] [वि० जनवादी] १. यह सिद्धान्त कि राजनीतिक, सामाजिक आदि कार्यों में सब लोगों के अधिकार, कर्तव्य, उत्तरदायित्व आदि बराबर और एक से हैं। (डेमोक्रेसी) २. दे० 'लोक-तंत्र' ।

जनवादिक-वि० [सं०] जनवाद सम्बन्धी। जनवाद का । (डिमोक्रेटिक)

जनवादी-पुं० [सं० जनवादिन्] वह जो जनवाद के सिद्धान्त मानता हो। (डिमोक्रेट)

जनवाना-स० दे० 'जनाना' ।

जनवासा-पुं० [सं० जन + वास] १. सब लोगों के ठहरने या टिकने का स्थान ।

२. बरातियों के ठहरने का स्थान।

जन-श्रुति–स्त्री० [सं०] लोक में प्रचलित खबर। अफवाह। किंवदन्ती। प्रवाद। (रयूमर)

जन-संख्या–स्त्री० [सं०] किसी नगर या देश में बसनेवाले मनुष्यों की गिनती या तायदाद। आबादी। (पापुलेशन)

जन-सेवक–पुं० [सं०] १. वह जो जन-साधारण या जनता की सेवा के काम करता हो। २. दे० 'लोक-सेवक'। (पब्लिक-सर्वेन्ट)

जन-सेवा–स्त्री० [सं०] ऐसे काम जो जन साधारण या जनता के उपकार या हित के लिए हों। (पब्लिक सर्विस)

जन-स्थान–पुं० [सं०] १. मनुष्यों का निवास स्थान। २. दंडकारण्य का एक पुराना प्रदेश।

जना–पुं० [सं० जन] [स्त्री० जनी] मनुष्य। आदमी।

वि० [सं० जन्म] [स्त्री० जनी] किसी से जनमा हुआ (व्यक्ति)। जैसे–राम-जना।

पुं० जन्म। उत्पत्ति। पैदाइश।

जनाई–स्त्री० [हिं० जनना] १. बच्चा जनाने का काम करनेवाली स्त्री। दाई। २. बच्चा जनाने का पारिश्रमिक।

जनाऊ†*–पुं० दे० 'जनाव'।

जनाजा–पुं० [अ०] अरथी या वह सन्दूक जिसमें लाश रखकर गाड़ने के लिए ले जाते हैं।

जनानखाना–पुं० [फा०] घर का वह भाग जिसमें स्त्रियाँ रहती हैं। अन्तःपुर।

जनाना–स० [हिं० जनना] बच्चा जनने का काम कराना। सन्तान प्रसव कराना।

स० [हिं० जानना का प्रे०] किसी को जानने में प्रवृत्त करना। जताना।

वि० [फा०] [स्त्री० जनानी, भाव० जनानापन] १. स्त्रियों का। स्त्री-सम्बन्धी। २. स्त्रियों का-सा।

पुं० १. हिंजड़ा। जनखा। २. अंतः जनानखाना। ३. पत्नी। जोरू।

जनाब–पुं० [अ०] महाशय।

जनार्द्दन–पुं० [सं०] विष्णु।

जनाव–पुं० [हिं० जनाना = जान कराना] जानकारी या परिचय कराने क्रिया या भाव।

जनावनी–स्त्री० दे० 'सुनावनी'।

जनाश्रय–पुं० [सं०] १. धर्म २. सराय। ३. घर। मकान।

जनि–स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। २. नारी। स्त्री। ३. माता। ४.

*†–अव्य० मत। नहीं। न।

जनित–वि० [सं०] [स्त्री० जनि १. जिसने जन्म लिया हो। जनमा हुआ उत्पन्न। २. किसी के कारण होनेवाला किसी से उद्भूत। जैसे–रोग जनित दुः

जनित्री–स्त्री० [सं०] माता। माँ।

जनिया–स्त्री० दे० 'जानी'। (प्रेमी प्रेमिका के लिए सम्बोधन)।

जनी–स्त्री० [सं० जन] १. सबको करनेवाली प्रकृति। २. जन्म देने माता। ३. दासी। अनुचरी। ४. ५. बेटी।

जनु–क्रि० वि० [हिं० जानना] मानो (उत्प्रेक्षावाचक)

जनून–पुं० [अ०] पागलपन। उन्माद

जनेऊ†–पुं० [सं० यज्ञ] १. यज्ञोपवीत ब्रह्मसूत्र। २. यज्ञोपवीत संस्कार।

जनेत–स्त्री० दे० 'बरात'।

जनेव*–पुं० दे० 'जनेऊ'।

जनेश–पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. रा

जनेस*–पुं० = जनेश।

जनैया–वि० [हिं० जानना + ऐया (प्रत्य०)] जाननेवाला। जानकार।

जनौ†–क्रि० वि० [हिं० जानना] मानो।

जन्म–पुं० [सं०] १. गर्भ से निकलकर जी धारण करना। उत्पत्ति। पैदाइश। २

। आविर्भाव। ३. सारा
। जैसे-अगला या पिछला
। जीवन-काल। जैसे-जन्म
के लिए दे० 'जनम')
स्त्री० [सं०] वह चक्र
के जन्म-समय के ग्रहों की
रहती है। (फलित ज्योतिष)
[सं०] जो किसी के
समय से ही उसके साथ उत्पन्न

[सं०] किसी के जन्म
जो प्रायः उत्सव के रूप में
है। वर्ष-गाँठ।
वि० [सं०] जन्म से।
जाति मानना।
जन्म] १. जन्म लेना। पैदा
अस्तित्व में आना। आविर्भूत

स्त्री० [सं०] स्थानिक परि-
पंजी जिसमें किसी क्षेत्र में जन्म
का जन्म-समय, पिता का
स्थान आदि बातें लिखी जाती
रजिस्टर)
स्त्री० [सं०] वह पत्र या
किसी के जीवन-काल के ग्रहों
और उनके फलों आदि का
है।
-पुं० [सं०] इस बात
कि अमुक व्यक्ति का जन्म
और अमुक तिथि को हुआ
सर्टिफिकेट)
भूमि-स्त्री० [सं०] वह स्थान (या
) जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।
सिद्ध-वि० [सं०] जिसकी सिद्धि
हो। जन्म-मात्र में प्राप्त। जैसे-
अधिकार।
-पुं० [सं०] दूसरा जन्म।
पुं० [सं० जन्मन्] वह जिसका जन्म हुआ हो। (समस्त पदों के अन्त में; जैसे-अग्र-जन्मा।

वि० जो पैदा हुआ हो। उत्पन्न।

जन्माना-स० [हिं० जन्मना] उत्पन्न करना। जन्म देना।

जन्माष्टमी-स्त्री० [सं०] भाद्रपद कृष्ण अष्टमी जो भगवान कृष्णचन्द्र का जन्म-दिन और पर्व है।

जन्मेजय-पुं०[सं०] परीक्षित के पुत्र एक प्रसिद्ध राजा जिन्होंने नाग-यज्ञ किया था।

जन्मोत्सव-पुं० [सं०] किसी के जन्म के समय या जन्म-दिन पर होनेवाला उत्सव।

जन्य-पुं० [सं०] [स्त्री० जन्या] १. साधारण मनुष्य। २. राष्ट्र। ३. पुत्र। बेटा। ४. पिता। ५. जन्म।

वि० १. जन-संबंधी। २. राष्ट्रिय। जातीय। ३. जो किसी से उत्पन्न हुआ हो। उद्भूत। जैसे रोग-जन्य दुर्बलता।

जन्हु*-पु० दे० 'जह्नु'।

जप-पुं० [सं०] किसी मंत्र, नाम या वाक्य का बार बार क्रिया जानेवाला उच्चारण।

जप-तप-पुं० [सं० जप + तप] पूजा, जप और पाठ आदि। पूजा-पाठ।

जपना-स० [सं० जपन] १. कोई नाम, वाक्य या शब्द बार बार कुछ देर तक कहना या रटना। जप करना। २. अनुचित रूप से दूसरे की चीज ले लेना।

जपनी-स्त्री० [हिं० जपना] १. जप-माला। २. गोमुखी।

जप-माला-स्त्री० [सं०] वह माला जिसे हाथ में रखकर जप करते हैं।

जपा-स्त्री० [सं०] जवा। अड़हुल।

पुं० [सं० जप] जपनेवाला।

जपिया(पी)-वि० [हिं० जप] जप या जप करनेवाला।

जप्त-वि० दे० 'जब्त'।

जफील-स्त्री० [अ०] [क्रि० जफीलना] दे

'सीटी'।

जब-क्रि॰ वि॰ [सं॰ यावत्] जिस समय। **पद-जब जब** = जब कभी कुछ हो। जिस जिस समय कोई बात हो। **जब तब** = कभी कभी।

मुहा॰-जब देखो, तब=प्रायः। अक्सर।

जबड़ा-पुं॰ [सं॰ प्रंभ] मुँह में ऊपर-नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें दाँत उगे होते हैं। कल्ला।

जबर-वि॰ [अ॰ ज़बर] १. बलवान। २. पक्का। दृढ़।

जबरई†-स्त्री॰ = जबरदस्ती।

जबरदस्त-वि॰ [फा॰] [भाव॰ जबरदस्ती] १. बलवान्। २. दृढ़। मजबूत।

जबरदस्ती-स्त्री॰ [फा॰] १. जबरदस्त या बलवान् होने की दशा या भाव। २. बल-प्रयोग। ३. अत्याचार। जुल्म।

क्रि॰ वि॰ बल का प्रयोग करते हुए। बलपूर्वक।

जबह-पुं॰ [अ॰] पशु या पक्षी का गला काटकर प्राण लेने की क्रिया।

जबहा-पुं॰ [?] जीवट। साहस।

जबान-स्त्री॰ [फा॰] १. जीभ। जिह्वा। **मुहा॰-जबान खींच लेना** = ऐसा कठोर दंड देना कि दंडित व्यक्ति बोलने के योग्य न रह जाय। **जबान पर आना**= मुँह से निकलना। **जबान में लगाम न होना** = सोच समझकर बोलने का ज्ञान न होना। **दबी जबान से बोलना या कहना** = अस्पष्ट रूप से या धीरे से बोलना। विशेष दे॰ 'जीभ' के मुहा॰।

सम॰-बे-जबान = बहुत सीधा।

२. बात। बोल। ३. प्रतिज्ञा। ४. भाषा।

बान-दराज-वि॰ [फा॰] [भाव॰ जबान-दराजी] बढ़-बढ़कर अनुचित बातें कहनेवाला। बात-चीत करने में उद्दंड।

बान-बंदी-स्त्री॰ [फा॰] १. किसी घटना के संबंध में लिखा जानेवाला इजहार या गवाही। २. मौन। चुप्पी। ३. चुप या न बोलने की आज्ञा।

जबानी-वि॰ [हिं॰ जबान] १. बो जबान से कहा गया हो। मौखिक। जो कहा तो गया हो, पर लिखित न मौखिक।

जब्त-वि॰ [अ॰] किसी अपराध में के द्वारा हरण किया हुआ। सरकार छीना हुआ। जैसे-मकान जब्त (कन्फिस्केटेड)

जब्ती-स्त्री॰ [अ॰ जब्त] जब्त होने क्रिया या भाव। (कन्फिस्केशन)

जब्र-पुं॰ [अ॰] ज्यादती। सख्ती।

जभी-क्रि॰ वि॰ [हिं॰ जब + ही (प्रत्य॰)] १. जिस समय ही। २. ज्यों ही।

जम*-पुं॰ दे॰ 'यम'।

जम-कात*-पुं॰ दे॰ 'जम-कातर'।

जम-कातर-पुं॰ [सं॰ यम + हिं॰ पानी का भँवर।

स्त्री॰ [सं॰ यम + कर्त्तरी] १. यम खाँड़ा। २. खाँड़ा।

जमघंट-पुं॰ दे॰ 'यमघंट'।

जमघट-पुं॰ [हिं॰ जमना + घट्ट] मनु की भीड़-भाड़। जमावड़ा।

जम-डाढ़-स्त्री॰ [सं॰ यम + डाढ़] की तरह का एक हथियार।

जमधर-पुं॰ दे॰ 'जम-डाढ़'।

जमन*-पुं॰ दे॰ 'यवन'।

जमना-अ॰ [सं॰ यमन] १. तरल का ठोस या गाढ़ा हो जाना। जैसे जमना। २. अच्छी तरह बैठना। ३. या निश्चल होना। ४. एकत्र या होना। जमा होना। ५. हाथ से काम का पूरा अभ्यास होना। ६. मानव के सामने होनेवाले काम का अच्छी सम्पन्न होना। जैसे-गाना जमना। ७. का अच्छी तरह चलने योग्य होना।

अ॰ [सं॰ जन्म + ना (प्रत्य॰)] उगना

या बाल जमना ।
[सं० यवनिका] १.
। २. काई । ३. मैल ।
[हिं० जमना] काठ का
बनाने के समय उसके
है ।
[हिं० यमद्वार] यम का द्वार
।
] १. संग्रह किया हुआ ।
२. किसी प्रकार के देन के
हुआ । (डिपॉजिटेड)
आय-पक्ष में लिखा हुआ
)।
१. मूल-धन । पूँजी । २.
रुपया-पैसा । ३. भूमि-कर ।
का वह अंग या पक्ष
आया हुआ धन या माल
। 'खर्च' का विपरीत पक्ष ।
सं० जामातृ] दामाद ।
जमना] जमने या जमाने
या मजदूरी ।
[फा० जमा + खर्च] १.
। २. किसी के यहाँ से आई
उसके नाम पड़ी हुई
पूरा करना ।
[अ० जमाअत] १. मनुष्यों
। श्रेणी । दरजा ।
[फा०] [भाव० जमादारी]
का सरदार ।
स्त्री० [अ०] किसी व्यक्ति या
जिम्मेदारी जो जबानी, कुछ
कुछ रुपये जमा करके
जाती है । जामिनी ।
पुं० [अ० + फा०] वह
की जमानत करते समय
है ।

जमाना-स० हिं० 'जमना' का स० । पुं० [फा० जमानः] १. समय । काल । वक्त । २. बहुत अधिक समय । मुद्दत । ३. प्रताप या गौरव के दिन । जैसे-आज-कल आपका जमाना है । ४. संसार । जगत । दुनियाँ ।

पद०-जमाने भर का=जितना अधिक मिल या हो सके, उतना सब ।

जमा-बंदी-स्त्री० [फा०] पटवारी का वह खाता, जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी रहती हैं ।

जमा-मार-वि० [हिं० जमा + मारना] दूसरों का माल दबा रखनेवाला ।

जमाल-गोटा-पुं० [सं० जयपाल] एक पौधा जिसके बीज अत्यन्त रेचक होते हैं ।

जमाव-पुं० [हिं० जमाना] १. जमा या इकट्ठा होने की क्रिया या भाव । २. जमने या जमाने की क्रिया या भाव । ३. दे० 'जमावड़ा' ।

जमावट-स्त्री० [हिं० जमना] [वि० जमावटी] जमने या जमाने की क्रिया या भाव ।

जमावटी-वि० दे० 'जमौआ' ।

जमावड़ा-पुं० [हिं० जमना = एकत्र होना] बहुत-से लोगों का एक जगह इकट्ठा होना । भीड़ ।

जमीकंद-पुं० दे० 'सूरन' ।

जमींदार-पुं० [फा०] वह जो अँगरेजी शासन में जमीन का मालिक होता और किसानों को लगान पर जोतने-बोने के लिए खेत देता था ।

जमींदारी-स्त्री० [फा०] १. जमींदार की जमीन । २. जमींदार का पद । ३. जमींदार होकर जमीनें दूसरों को लगान पर देने की प्रथा जिसका स्वाधीन भारत में अन्त हो गया है ।

जमी*-स्त्री० = यमी ।

जमीन-स्त्री० [फा०] १. पृथ्वी (ग्रह) ।

२. (जल से भिन्न) पृथ्वी का वह ऊपरी भाग, जिसपर हम सब लोग रहते हैं। भूमि। धरती।

मुहा०–जमीन-आसमान एक करना = बड़े-बड़े प्रयत्न करना। **जमीन-आसमान का फरक** = बहुत अधिक अंतर। **जमीन देखना** = (क) कुश्ती में पटका जाना। (ख) नीचा देखना।

३. वह आधार जिसपर बेल-बूटे आदि बने हों। ४. वह वस्तु जिसका उपयोग किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार-रूप से हुआ हो। ५. चित्र बनाने के लिए मसाले से तैयार की हुई सतह या तल।

मुहा०–जमीन बाँधना = अस्तर या मसाला लगाकर चित्र के लिए सतह तैयार करना।

६. आधार-पृष्ठ। ७. डौल। उपक्रम।

जमुहाना†–अ० दे० 'जँभाना'।

जमूरक*–पुं० [फा० जंबूरक] एक प्रकार की छोटी तोप।

जमोग–पुं० [हिं० जमोगना] जमोगने अर्थात् स्वीकार करने या कराने की क्रिया।

जमोगना†–स० [सं० समायोग] १. आय-व्यय की जाँच करना। २. भार या देन से मुक्त होने के लिए दूसरे को वह भार या देन सौंपकर उससे स्वीकृति लेना। सरेखना। (एसाइन्मेन्ट)

जमौआ–वि० [हिं० जमाना] बुनकर नहीं, बल्कि सूत या रोएँ जमाकर बनाया हुआ। जैसे–जमौआ कम्बल या बनात।

जम्हाना–अ० दे० 'जँभाना'।

जयंत–वि० [सं०] [स्त्री० जयंती] १. विजयी। २. बहुरूपिया।

पुं० [सं०] १. रुद्र। २. इंद्र के पुत्र उपेंद्र का एक नाम। ३. स्कंद। कार्त्तिकेय।

जयंती–स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. पार्वती। ३. ध्वजा। पताका। ४. किसी महापुरुष या संस्था की जन्म-तिथि अथवा वि महत्त्वपूर्ण कार्य आरम्भ होने की व तिथि पर होनेवाला उत्सव। (कु काल-मान के विचार से जयन्तियाँ कई की होती हैं। जैसे–रजत जयंती, जयंती, हीरक जयंती आदि। ६. बैत बड़ा पेड़। ७. दे० 'जई'।

जय–स्त्री० [सं०] युद्ध, विवाद में विपक्षियों का पराभव। जीत।

मुहा०–जय बोलना या मनाना = या समृद्धि की कामना करना।

पुं० १. विष्णु के एक पार्षद का नाम। महाभारत नामक महाकाव्य का पुराना नाम

जय-जयकार–पुं० [सं०] किसी की मनाने का घोष।

जयजीव*–पुं० [हिं० जय+जी जीवित रहो] एक प्रकार का अभि जिसका अर्थ है—जय हो और जीवे

जयति–अव्य० [सं०] जय हो। (कामना)

जयद्रथ–पुं० [सं०] महाभारत के का एक प्रसिद्ध राजा जो दुर्योध बहनोई था।

जयना*–स० = जीतना।

जयपत्र–पुं० [सं०] १. वह पत्र जो हुआ पुरुष अपनी हार के प्रमाण विजयी को लिखकर देता है। विज २. दे० 'आज्ञप्ति'।

ज़यफर*–पुं० दे० 'जायफल'।

जय-मार–पुं० = जय-माल।

जय-माल–स्त्री० [सं० जयमाल्य] १. के विजयी होने पर उसे पहनाई माला। २. वह माला जो विवा स्वयंवर के समय कन्या अपने भावी पहनाती है।

जय-स्तंभ–पुं० [सं०] युद्ध में किसी विजय के चिह्न या स्मारक के बनाया हुआ स्तंभ। धरहरा।

[सं०] १. दुर्गा। २. पार्वती।
४. पताका। ध्वजा।
[सं० जयिन्] विजयी।
] जरा। बुढ़ापा।
] १. सोना। स्वर्ण। २.
] एक तरह की शिकारी
[फ़ा० जरकश] (कपड़ा)
सहले तार आदि लगे हों।
बने हों।
[सं०] १. कठोर। कड़ा। २.
३. जीर्ण। पुराना।
] [स्त्री० जरती] १.
२. पुराना। प्राचीन।
[हिं० जरना = जलना] १.
। डाह।
दे० 'जरी'।
दे० 'जरदुश्त'।
[फ़ा० ज़र्द] पीला। पीत। (रंग)
[फ़ा० ज़र्दः] १. चावलों से
। २. पान के साथ
सुर्ती। ३. पीले रंग
[फ़ा०] १. पीलापन। २.
का पीला गूदा।
पारसी धर्म के प्रवर्त्तक एक
[फ़ा०] जरदोजी का काम
स्त्री० [फ़ा०] कपड़े पर सलमे-
से किया हुआ काम।
दे० 'जलन'।
दे० 'जलना'।
दे० 'जलन'।

जरब–स्त्री० [अ०] १. आघात। चोट। **मुहा०–(किसी को) जरब देना** = नीचा दिखाना।
२. गुणा। (गणित)
क्रि० प्र०–देना।

जर-बफ्त–पुं० [फा०] वह रेशमी कपड़ा जिसमें जरी या कलाबत्तू के बेल-बूटे बने हों।

जरबाफ–पुं० दे० 'जरदोज'।

जरबाफी–वि० दे० 'जरदोजी'।

जरबीला†*–वि० [फा० ज़रब] जिसमें चमक दमक हो। भड़कीला।

जरमन–पुं० जरमनी देश का निवासी।
स्त्री० जरमनी देश की भाषा।
वि० जरमनी देश का।

जरमन सिलवर–पुं० [अं०] एक प्रसिद्ध सफेद मिश्र धातु, जिसके बरतन बनते हैं।

जरमनी–पुं० मध्य युरोप का एक प्रसिद्ध देश।

जरर–पुं० [अ०] १. हानि। नुकसान। क्षति। २. आघात। चोट।

जरल*–स्त्री० दे० 'जलन'।

जरवारा*–वि० [फा० ज़र + हिं० वाला] धनी। सम्पन्न।

जरा–स्त्री० [सं०] बुढ़ापा।
वि० [अ० जरः] थोड़ा। कम।

जराऊ*–वि० दे० 'जड़ाऊ'।

जरा-ग्रस्त–वि० [सं०] वृद्ध। बुड्ढा।

जराना*–स० = जलाना।

जरायु–पुं० [सं०] १. वह झिल्ली, जिसमें गर्भ से उत्पन्न होनेवाला बच्चा बँधा रहता है। आँवल। खेड़ी। उल्व। २. गर्भाशय।

जरायुज–पुं० [सं०] वह प्राणी जो जरायु में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो। (पिंडज का एक भेद)

जराव*–पुं० = जड़ाव।
वि० = जड़ाऊ।
*पुं० = जलाव।

जरित*–वि० = जटित।

जरिया*-पुं० [अ० ज़रीअऽ] १. सम्बन्ध । लगाव । २. सबब । हेतु । ३. साधन ।

वि० [हिं० जलना] जो जलाकर बनाया गया हो । जैसे—जरिया नमक ।

*पुं० दे० 'जड़िया' ।

जरी-स्त्री० [फ़ा०] १. बादले से बुना हुआ ताश नामक कपड़ा । २. सोने के वे तार, जिनसे कपड़ों पर बेल-बूटे बनते हैं ।

*स्त्री० = जड़ी ।

जरीब-स्त्री० [फ़ा०] भूमि नापने की जंजीर ।

जरूर-क्रि० वि० [अ०] अवश्य ।

जरूरत-स्त्री० [अ०] आवश्यकता ।

जरूरी-वि० [अ० ज़ुरूर से फ़ा०] १. जो जरूर होने को हो । २. जिसकी जरूरत या आवश्यकता हो । आवश्यक ।

जरौटा-वि० [हिं० जड़ना] जड़ाऊ ।

जर्जर-वि० [सं०] १. जो पुराना होने के कारण काम का न रह गया हो । जीर्ण । २. टूटा-फूटा । खंडित । ३. वृद्ध । बुड्ढा ।

जर्जरित-वि० दे० 'जर्जर' ।

जर्द-वि० [फ़ा०] पीला । पीत ।

जर्दा-पु० दे० 'जरदा' ।

जर्दी-स्त्री० [फ़ा०] पीलापन ।

जर्राह-पुं० [अ०] [भाव जर्राही] फोड़ों आदि की चीड़-फाड़ करनेवाला । चिकित्सक अस्त्र-चिकित्सक ।

जलंधर-पुं० [सं०] एक राक्षस जो समुद्र से उत्पन्न माना जाता है और जिसे विष्णु ने मारा था ।

पुं० दे० 'जलोदर' । (रोग)

जल-पुं० [सं०] पानी ।

जल-अलि-पुं० दे० 'जल-भौंरा' ।

जलकर-पुं० [हिं० जल + कर] १. जलाशयों में होनेवाले पदार्थ । जैसे—मछली, कमल-गट्टा आदि । २. ऐसे पदार्थों पर लगनेवाला कर ।

जल-कल-स्त्री० [सं० जल + हिं० कल] १. नगर के सब घरों में नल या कल के द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनेवाला (वाटर वर्क्स) २. घर घर पानी पहुँचाने कल का नल । ३. आग बुझाने का दम

जल-कवच-वि० [सं०] (पदार्थ) में भीगने या रहने पर भी उसके बचा रहता हो । (वाटर प्रूफ़)

जल-कुंभी-स्त्री० [सं०] जलाश होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति ।

जल-कुकुही-स्त्री० [हिं० जल + कु जल में होनेवाला एक प्रकार का पौधा ।

जल-क्रीड़ा-स्त्री० [सं०] वे क्रीड़ खेल जो जलाशय में किये जाते हैं ।

जल-खई†-स्त्री० = जल-पान ।

जल-खावा†-पुं० = जल-पान ।

जल-घड़ी-स्त्री० [हिं० जल + घड़ी] प्राचीन यंत्र जिसमें नाँद में भरे हु में एक छोटे छेदवाली कटोरी रहती उस कटोरी में भरनेवाले जल के से समय का ज्ञान होता था ।

जल-चर-पुं० [सं०] [स्त्री० जल में रहनेवाले जीव-जन्तु ।

जलचारी-पुं० दे० 'जलचर' ।

जलज-वि० [सं०] जो जल में उत्पन्न हो । पुं० [सं०] १. कमल । २. ३. मछली । ४. जल-जन्तु । ५.

जल-जात-वि० पुं० दे० 'जलज' ।

जल-जान*-पुं० दे० 'जल-यान' ।

जलजावलि*-स्त्री० [सं० जलज + एक प्रकार की मोतियों की माला ।

जल-डमरूमध्य-पुं० [सं०] जल की वह पतली प्रणाली या घाटी बड़े समुद्रों या खाड़ियों के मध्य में उन्हें मिलाती हो । (स्ट्रेट)

जल-तरंग-पुं० [सं०] जल से कटोरियों पर आघात करके बजाने वाला बाजा ।

जल-तोरी-स्त्री० = मछली । (और व्यंग)

जलपना*–अ० [सं० जल्पन] १. लम्बी चौड़ी बातें करना। २. बकवाद करना।

जल-पान–पुं० [सं०] पूरे भोजन से पहले किया जानेवाला थोड़ा और हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता।

जल-प्रपात–पुं० दे० 'प्रपात' २.।

जल-प्रवाह–पुं० [सं०] १. पानी का बहाव। २. कोई चीज नदी में डालकर बहाना। भसान।

जल-प्रांगण–पुं० [सं०] किसी समुद्र-तट पर के देश के तट से मिला हुआ समुद्र का वह अंश जो उसके अधिकार और अधि-क्षेत्र में माना जाता है। (टेरिटोरियल वाटर्स) विशेष-साधारणतः तट से तीन मील तक का समुद्र इसके अंतर्गत आता है।

जल-प्लावन–पुं० [सं०] १. पानी की बाढ़। २. एक प्रकार का प्रलय। (दे० 'प्रलय'।)

जल-भौंरा–पुं० [हिं० जल + भौंरा] पानी पर चलनेवाला एक प्रकार का काला कीड़ा। भौंतुआ।

जल-मानुष–पुं० [सं०] [स्त्री० जल-मानुषी] एक कल्पित जल-जन्तु जिसका कमर से ऊपर का भाग मनुष्य का-सा और नीचे का मछली का-सा माना जाता है।

जल-मार्ग–पुं० [सं०] नदियों, नहरों आदि के रूप में बना हुआ। मार्ग या रास्ता। (वाटरवेज)

जल-यान–पुं० [सं०] जल में चलनेवाला यान या सवारी। (वेसेल) जैसे–नाव या जहाज।

जलरुह–पुं० [सं०] कमल।

जलवाना–स० हिं० 'जलाना' का प्रे०।

जल-वायु–पुं० [सं०] किसी स्थान की वह प्राकृतिक स्थिति जिसका प्राणियों आदि के विकास और स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। हवा-पानी। (क्लाइमेट)

जल-विहार–पुं० [सं०] १. नदी, तालाब आदि में नाव पर घूमकर सैर करना। २.

दे० 'जल-क्रीड़ा'।

जल-शायी–पुं० [सं० जलशायिन्] विष्णु।

जल-समाधि–स्त्री० [सं०] १. जल में डूबकर प्राण देना। २. किसी वस्तु का जल में डूबकर नष्ट होना।

जलसा–पुं० [अ० जल्सः] १. खाने-पीने या गाने-बजाने का समारोह। २. सभा-समिति आदि का बड़ा अधिवेशन। बैठक।

जलसाई–पुं०[हिं०जलाना] वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं। श्मशान। मरघट।

जल-सिंह–पुं० [सं०] एक प्रकार का बड़ा समुद्री जन्तु।

जल-सेना–स्त्री० [सं०] समुद्र में रहकर जहाजों पर से लड़नेवाली फौज। (नेवी)

जल-स्तंभ–पुं० [सं०] एक प्राकृतिक घटना जिसमें जलाशय या समुद्र का जल कुछ समय के लिए ऊपर उठकर स्तम्भ का रूप धारण कर लेता है। सूँड़ी।

जलहर–वि० दे० 'जलहन'।

*पुं० दे० 'जलधर'।

जलहरी–स्त्री० दे० 'जलधरी'।

जलहल*–वि० [हिं० जल] जल से भरा हुआ। जल-मय।

*पुं० = जलाशय।

जलांक–पुं० [सं०] [वि० जलांकित] कागज की बनावट में जल की सहायता से एक विशिष्ट प्रकार से बनाया हुआ चिह्न या अंकन जो कागज को प्रकाश में खड़ा करने पर दिखाई देता है। (वाटर मार्क)

जलांकन–पुं० [सं०] [वि० जलांकित] कागज बनाते समय जल की सहायता से एक विशिष्ट प्रक्रिया से उसमें जलांक या कुछ अक्षर, चिह्न आदि बनाना। (वाटर मार्किंग)

जलांकित–वि० [सं०] (कागज) जिसपर जलांक बना हो। (वाटर मार्क्ड)

जलांजलि–स्त्री० [सं०] मृतक के उद्देश्य से दी जानेवाली जल की अंजलि।

जलाक†–स्त्री० [हिं० जलाना] (जलाने-वाली) गरम हवा। लू।

जलातंक–पुं० [सं०] जल से
वह डर जो कुत्ते आदि के काटने पर
है। (हाइड्रोफोबिया)

जलाद*–पुं० दे० 'जल्लाद'।

जलाना–स० [हिं० 'जलना' का स०]
आग के संयोग से किसी वस्तु को
प्रवृत्त करना। प्रज्वलित करना।
२. आग पर रखकर भाप आदि के
लाना या उड़ाना। ३. किसी के
संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

जलापा–पुं०[हिं०जलाना]। ईर्ष्या।

जलाव–पुं० [हिं० जलना] १.
क्रिया या भाव। २. जलने के
होनेवाला अंश।

जलावतरण–पुं० [सं०] १.
उतरना। २. नये जहाज का तैयार
पहले-पहल पानी या समुद्र में
या पहुँचना।

जलावन–पुं० [हिं० जलाना] १.
२. किसी वस्तु का वह अंश जो
जाने पर कम हो जाता है।

जलावर्त्त–पुं० [सं०] १.
भँवर। नाल। २. एक प्रकार का

जलाशय–पुं० [सं०] वह
पानी जमा होकर ठहरा या बना
जैसे–झील, नदी आदि।

जलाहल–वि० [हिं० जलाजल]

जलीय–वि० [सं०] १.
जल का। २. जल या पानी में
३. जिसमें पानी या उसका कुछ

जलूस–पुं० [सं०] बहुत से
किसी सवारी के साथ या प्रदर्शन
निकलना। जन-यात्रा। शोभा-यात्रा।

जलेबी–स्त्री० [देश०] १. एक
मिठाई। २. गोल घेरा। कुंडली।

जलोदर–पुं० [सं०] एक रोग
पेट के भीतरी भाग में पानी भरने

किया जाना।

जवाबदार–वि० दे० 'जवाब-देह'।

जवाब-दावा–पुं० [अ०] वह पत्र या लेख जो वादी के अभियोग के उत्तर में प्रतिवादी न्यायालय में देता है।

जवाब-देह–वि० [फा०] [भाव० जवाब-देही] उत्तरदाता। जिम्मेदार।

जवाबी–वि० [फा०] १. जवाब का। जैसे–जवाबी कार्ड। २. जिसका जवाब देना हो। ३. जो किसी के जवाब में हो।

जवारा†–पुं० [हिं० जौ] जौ के नये निकले हुए अंकुर।

जवारी–स्त्री० [हिं० जौ] १. एक प्रकार की माला जो जौ, छुहारे, मोती आदि गूँथकर बनाई जाती है। २. सींग, हाथी दाँत आदि का वह टुकड़ा जिसपर सितार, बीन आदि के तार टिके रहते हैं।

पद–जवारीदार गला=ऐसा गला जिससे कुछ बोलने या गाने के समय कोई स्वर निकलने पर उसी के साथ साथ उसी स्वर की बहुत महीन या हलकी रेखा भी छाया के रूप में सुनाई पड़ती है। (संगीत में स्वर का एक प्रकार का सौन्दर्य) ३. दे० 'जवारा'।

जवाल–पुं० [अ० जवाल] १. अवनति। पतन। २. जंजाल। आफत। झंझट।

जवास–पुं० दे० 'जवासा'।

जवासा–पुं० [सं० यवासक] एक प्रकार का कँटीला पौधा जो वर्षा में जलकर सूख जाता है और जिसका उपयोग औषध आदि में होता है।

जवाहर–पुं० [अ०] रत्न। मणि।

जवाहरात–पुं० [अ०] 'जवाहर' का बहु०।

जवाहरी*–पुं० दे० 'जौहरी'।

जवाहिर–पुं० दे० 'जवाहर'।

जवैया–वि० [हिं० जाना] जानेवाला।

जशन–पुं० [फा०] नाच-रंग आदि का बहुत बड़ा समारोह या जलसा।

जस*–क्रि० वि० [सं० यथा] जैसा ।
पुं० दे० 'यश' ।

जसोदा, जसोवै–स्त्री० दे० 'यशोदा' ।

जस्ता–पुं० [सं० जसद] मटमैले रंग की एक प्रसिद्ध धातु ।

जहँ–क्रि० वि० दे० 'जहाँ' ।

जहँड़ना–अ० [सं० जहन] १. घाटा उठाना । २. धोखे में आना । ठगा जाना ।
स० धोखा देना । ठगना ।

जहँड़ाना–अ० दे० 'जहँड़ना' ।

जहतिया–पुं० [हिं० जगात] जगात या कर उगाहनेवाला ।

जहदजहल्लक्षणा–स्त्री० [सं०] लक्षणा का वह प्रकार जिसमें वक्ता के शब्दों के कई अर्थों में से केवल एक अर्थ या भाव ग्रहण किया जाता है ।

जहद्दम*–पुं० दे० 'जहन्नुम' ।

जहना*–अ० [सं० जहन] १. त्यागना । छोड़ना । २. नष्ट करना ।

जहन्नुम–पुं० [अ०] नरक । दोजख ।

जहमत–स्त्री० [अ०] १. आपत्ति । मुसीबत । २. झंझट । बखेड़ा ।

जहर–स्त्री० [अ० जह्र] १. विष । गरल ।
मुहा०–जहर उगलना = लगती हुई और बहुत कड़ु बात कहना । **(कोई चीज या काम) जहर कर देना** = बहुत अधिक कड़ु, अप्रिय या असम्भव कर देना । जैसे–लड़ाई-झगड़ा करके खाना-पीना जहर कर देना । **जहर का घूँट पीकर रह जाना** = बहुत अधिक क्रोध आने पर भी चुप रह जाना ।
पद–जहर का बुझाया हुआ = बहुत अधिक दुष्ट या पाजी ।
२. बहुत अधिक अप्रिय बात या काम ।
वि० १. मार डालनेवाला । घातक । २. बहुत हानि पहुँचानेवाला । (खाद्य पदार्थ)
पुं० दे० 'जौहर' ।

हरबाद–पुं० [फा०] एक तरह का जहरीला बड़ा फोड़ा ।

जहर-मोहरा–पुं० [फा० जहरमुहरः]
काला पत्थर जिसमें शरीर में से
विष सोखने का गुण माना जाता है।

जहरी(ला)–वि० [हिं० जहर]
जहर हो । विषैला ।

जहाँ–क्रि० वि० [सं० यत्र] जिस
पर । जिस जगह ।
पद–जहाँ का तहाँ = जिस जगह
या हो, उसी जगह पर। **जहाँ-तहाँ**
(क) इधर-उधर । (ख) जगह जगह।

जहाँगीरी–स्त्री० [फा०] हाथ में प
का एक जड़ाऊ गहना ।

जहाँ-पनाह–पुं० [फा०] संसार को शर
देनेवाला । (बादशाहों के लिए सम्बोधन)

जहाज–पुं० [अ०] [वि० जहा
समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव ।

जहाजी–वि० [अ० जहाज] जहाज सम्
जहाज का । जैसे–जहाजी कौआ ।
पुं० १. वह जो जहाज पर नौकरी कर
लशकरी । २. जहाज पर यात्रा करने
स्त्री० एक प्रकार की पुरानी चाल की त

जहाजी कौआ–पुं० [हिं० जहाजी + कौ
१. जहाज पर ही रहनेवाला कौआ जो
पर चारो ओर घूम फिरकर फिर
जहाज पर आ जाता है। २. बहुत
धूर्त्त या चालाक ।

जहाजी सुपारी–स्त्री० [हिं० जहाजी
सुपारी] विदेशों से (जहाज पर) आ
वाली एक प्रकार की सुपारी जो सा
सुपारी से प्रायः दूनी बड़ी और कुछ चि
होती है ।

जहाद–वि० [अ० जिहाद] मुसलमानों
वह धर्म-युद्ध जो इसलाम का प्रचार
रक्षा करने के लिए किया जाता हो।

जहादी–वि० [हिं० जहाद] जहाद सम्बन्धी।
जहाद का ।
पुं० वह जो इस्लाम का प्रचार करने अथ

युद्ध या जहाद करता हो।
[फा०] संसार। जगत्।
वि० [सं० यद्] जिस दिन।
[सं० यत्र] जहाँ ही।
= 'ज्यों ही'।
'दहेज'।
] १. विष्णु। २. एक
गंगा को पीकर कान से
। (इसी से गंगा का नाम
)
नी)–स्त्री० [सं०] गंगा।

] घोड़ों की एक जाति।
[हिं० जान या जाँघ] शरीर
।
।
[?] भाट। चारण।
[सं०] ऊसर देश।
। जंगली।
[सं० जंगल] वन या जंगल
ने या उसमें होने अथवा
। जंगली।
[सं० जंघा] कमर के नीचे
के ऊपर का अंग। रान।
जाँघ उघाड़ना =
या कलंक की बात आप
।
[हिं० जाँघ + इया (प्रत्य०)]
का घुटनों तक का एक
।
[हिं० जाँघ] जिसका पैर,
हो। (पशु)
] एक प्रकार की चिड़िया।
[हिं० जाँचना] १. जाँचने की
। २. यह देखना कि कोई
से हुआ है या नहीं।
आदि के कारणों या
अथवा तथ्य का पता
लगाना। अनुसन्धान। (एन्क्वायरी) ४. किसी घटना या विषय के मूल कारणों या रहस्यों का पता लगाना। छान-बीन। (इनवेस्टिगेशन)

यौ०–जाँच-पड़ताल।

जाँचक*–पुं० दे० 'याचक'।

पुं० [हिं० जाँच] जाँच, परीक्षा या आलोचना करनेवाला।

जाँच-घर–पुं० किसी बड़े कार्यालय से सम्बद्ध वह स्थान जहाँ उस कार्यालय से सम्बन्ध रखनेवाली बातों का (पूछने पर) पता चलता है। (एन्क्वायरी ऑफिस)

जाँचना-स० [सं० याचन] १. यह देखना कि कोई काम ठीक हुआ है या नहीं। २. माँगना।

जाँजरा*–वि० दे० 'जाजरा'।

जाँझ*–स्त्री० [सं० झंझा] वह वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी हो।

जाँत†–पुं० = जाँता (बड़ी चक्की)।

जांतव–वि० [सं० जान्तव] १. जंतु-संबंधी। जीव-जंतुओं का। २. जीव-जन्तुओं से उत्पन्न होने या मिलनेवाला। जैसे–जान्तव विष।

जाँता–पुं० [सं० यंत्र] आटा पीसने की बड़ी चक्की।

जाँब†–पुं० दे० 'जामुन'।

जांबवान–पुं० [सं०] सुग्रीव का मंत्री जो राम की ओर से रावण से लड़ा था।

जाँवत*–अव्य० दे० 'यावत्'।

जाँवर†–पुं० [हिं० जाना] जाना।

जा–स्त्री० [सं०] १. माता। माँ। २. देवर की स्त्री। देवरानी।

वि० स्त्री० उत्पन्न। संभूत। (यौ० के अन्त में, जैसे–जनक-जा।)

†सर्व [हिं० जो] जिस।

वि० [फा०] मुनासिब। उचित।

जाइ†–वि० [हिं० जाना] व्यर्थ। वृथा।

वि० [फा० जा] उचित। वाजिब।

जाई-स्त्री० [हिं० 'जाया' का स्त्री०] बेटी। पुत्री।

जाउनि*-स्त्री० दे० 'जामुन'।

जाउर*-स्त्री० दे० 'जावर'।

जाक*-पुं० [सं० यक्ष] यक्ष।
स्त्री० [हिं० जकना] जकने की क्रिया या भाव।

जाकड़-पुं० [हिं० जाकर] १. इस शर्त्त पर कोई चीज ले आना कि यदि यह पसन्द न होगी तो फेर दी जायगी। 'पक्का' का उलटा। २. उक्त प्रकार से ली या दी हुई कोई चीज।

जाकेट-स्त्री० [अं० जैकेट] एक प्रकार की कुरती या सदरी।

जाखिनी*-स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।

जाग-पुं० [सं० यज्ञ] यज्ञ।
†स्त्री० [हिं० जगह] जगह। स्थान।
स्त्री० [हिं० जागना] १. जागने की क्रिया, भाव या दशा। २. ऐसी अधिकता जो स्पष्ट दिखाई पड़े। जागरण।

जागता-वि० [हिं० जागना] १. अपनी महिमा, महत्त्व या प्रभाव तुरन्त और प्रत्यक्ष दिखानेवाला। जैसे-जागता जादू, जागती ज्योति। २. प्रकाशमान्।

जागतिक-वि० [सं०] जगत या संसार से सम्बन्ध रखनेवाला। संसार का। जैसे-जागतिक स्थिति।

जागना-अ० [सं० जागरण] १. सोकर उठना। नींद त्यागना। २. निद्रा-रहित रहना। जाग्रत होना। ३. सजग या सावधान होना। ४. उदित होना। ५. प्रसिद्ध या विख्यात होना। ६. जलना।

जागरण-पुं० [सं०] १. जागना। २. किसी उत्सव या पर्व पर रात भर जागना। जागा ३. किसी वर्ग या जाति की वह अवस्था जिसमें वह गिरी हुई दशा से निकलकर उन्नत होने का प्रयत्न करती है। (अवेकनिंग)

जागरित-वि० [सं०] १. जो जागत
होश में हो। २. जो गिरी हुई द
निकलकर उन्नति का प्रयत्न कर रहा हो

जागरूक-पुं० [सं०] १. वह जो
अवस्था में हो। २. रखवाला। पहरे

जागरूप-वि० [हिं० जागना+रू
बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।

जागर्त्ति-स्त्री० [सं०] १.
जाग्रति। २. चेतनता।

जागा-पुं० दे० 'जागरण' २.।

जागी*-पुं० [सं० याजी] भाट।

जागीर-स्त्री० [फा०] [वि० जागीरी
की ओर से मिली हुई भूमि या प्रदेश

जागीरदार-पुं० [फा०] वह जो जागी
का मालिक हो।

जागृत-वि० दे० 'जाग्रत'।

जाग्रत-वि० [सं०] १. जो जाग र
जागता हुआ। २. (शक्ति, गुण
जो अपना काम कर रहा हो, नि
हो। 'सुप्त' का उलटा।
पुं० वह अवस्था जिसमें सब बातों
ज्ञान होता रहता है।

जाग्रति-स्त्री० [सं० जाग्रत] जा

जाचक†-पुं० [भाव० जाचकता
'याचक'।

जाचन*-पुं० [सं० याचन] मां
क्रिया या भाव। याचना।
पुं० = याचक।

जाचना†-स० [सं० याचन] म
† स्त्री० = यातना। जैसे-भैरवी

जाजरा†-वि० दे० 'जर्जर'।

जाजिम-स्त्री० [तु० जाजम]
बिछाने की छपी हुई चादर।

जाज्वल्य(मान)-वि० [सं०]
ज्वलित। दीप्तिमान्। २. तेजस्वी

जाट-पुं०[?] भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध

जाठ-पुं० [सं० यष्टि] १. व
कोल्हू की कूँड़ी के बीच में लगा र
२. तालाब के बीच में गड़ा हुआ

[सं०] १. जठर-संबंधी ।
२. जठर से उत्पन्न ।
पेट । २. भूख ।
[सं० जाड्य] जड़ता ।

[सं० जड़] १. वह ऋतु
सर्दी पड़ती है । शीत काल ।
शीत । ठंढ ।
[सं०] जड़ता ।
] १. जन्म । २. पुत्र ।
। प्राणी ।
] १. उत्पन्न । जनमा
-जात । २. जनन या प्रसव
रनेवाला । जैसे-*जात पीर =
। ३. व्यक्त । प्रकट ।
'जाति' ।
] १. शरीर । २. व्यक्तित्व ।
[सं०] १. बच्चा । २. महा-
पूर्व-जन्मों की बौद्ध कथाएँ ।
-पुं० [सं०] बालक के जन्म
संस्कार ।
-स्त्री० दे० 'यातना' ।
-स्त्री० [सं० जाति + पंक्ति]
जाति के विभाग ।
[सं०] स्वर्ण । सोना । (धातु)
[सं०] १. जन्म । पैदाइश ।
वह सामाजिक विभाग,
अनुसार था, पर अब जन्मा-
जाने लगा है । (कास्ट) ३.
वंशपरंपरा के विचार से
मानव-समाज का विभाग ।
पदार्थों या जीव-जन्तुओं के धर्म्म,
आदि की समानता के विचार से
विभाग । कोटि । वर्ग । (जेनस)
-वि० [सं०] जाति से निकाला
बहिष्कृत ।
-स्त्री० दे० 'जात-पाँत' ।
-पुं० [सं०] किसी जाति के

बहुत अधिक लोगों का वह वध जो प्रायः राजनीतिक कारणों या जाति-गत द्वेष के कारण होता है । (जेनो साइड)

जाती-स्त्री० [सं०] चमेली की जाति का एक पौधा और फूल । जाही ।
वि० [अ० ज़ाती] १. व्यक्ति-गत । २. अपना निज का ।

जातीय-वि० [सं०] १. जाति-संबंधी । २. सारी जाति या राष्ट्र का । (नेशनल)

जातीयता-स्त्री० [सं०] १. 'जातीय' का भाव । २. अपनी जाति, राष्ट्र या देश की उन्नति, महत्त्व और कल्याण की प्रबल कामना का भाव ।

जातुधान-पुं० [सं०] [वि० जातुधानी] राक्षस ।

जातुधानी-वि० [सं० यातुधान] राक्षसों का-सा । राक्षसी ।

जाद-वि० [सं० जात से फा०] किसी से उत्पन्न । किसी का जनमा हुआ । जात । (यौ० के अन्त में; जैसे-आदमजाद, परीजाद आदि)

जादव-पुं० दे० 'यादव' ।

जादवराय-पुं० [सं० यादवराय] श्रीकृष्णचन्द्र ।

जादा-वि० [सं० जात से फा०] सन्तान के रूप में (किसी से) उत्पन्न । जात । जैसे- शाहबजादा ।
*वि० दे० 'ज्यादा' ।

जादू-पुं० [पहलवी याषत् से फा०, सि० सं० यातु] १. ऐसा आश्चर्य-जनक काम जिसे लोग अलौकिक और अ-मानवी समझें । इन्द्रजाल । तिलस्म । २. वह अद्भुत खेल या कृत्य जिसका रहस्य दर्शकों की समझ में न आवे । (मैजिक) ३. टोना । टोटका । ४. दूसरे को मोहित करने की शक्ति । मोहिनी ।

जादूगर-पुं० [फा०] [भाव० जादूगरी] वह जो जादू के खेल करता हो ।

जादूगरी–स्त्री॰ [फा॰] १. जादुगर का काम या वृत्ति। २. जादूगर के दिखलाये हुए खेल। ३. वह अद्भुत काम जो जादू का-सा जान पड़े।

जादौ†–पुं॰ दे॰ 'यादव'।

जादौराय†–पुं॰ [सं॰ यादव] श्रीकृष्ण।

जान–स्त्री॰ [सं॰ ज्ञान] १. ज्ञान। जानकारी। परिचय।

यौ॰–जान-पहचान = परिचय।

२. ख्याल। अनुमान।

वि॰ १. ज्ञानवान। ज्ञानी। २. सुजान। चतुर।

पुं॰ दे॰ 'यान'।

स्त्री॰ [फा॰] १. प्राण। जीवन।

मुहा॰–जान के लाले पड़ना = प्राण बचना कठिन होना। **जान खाना** = तंग या दिक करना। **जान छुड़ाना या बचाना** = किसी झंझट से अपना पीछा छुड़ाना। (**किसी पर**) **जान देना** = (किसी से) इतना प्रेम करना कि उसके बिना रहा न जाय। **जान निकलना** = (क) मरना। (ख) भय या चिन्ता से प्राण सूखना। **जान पर खेलना** = अपना जीवन भारी संकट में डालना। **जान से जाना** = मरना।

पद–जान-जोखिम या जोखों = ऐसा काम जिसमें जान जाने का डर हो।

२. बल। शक्ति। बूता। सामर्थ्य।

मुहा॰–जान में जान आना = विपत्ति से छुटकारा मिलने पर निश्चिन्तता होना।

३. सार। तत्त्व। ४. शोभा बढ़ानेवाली वस्तु।

मुहा॰–जान आना = शोभा बढ़ना।

जानकार–वि॰ [हिं॰ जानना + कार (प्रत्य॰)] [संज्ञा जानकारी] १. जाननेवाला। ज्ञाता। २. विज्ञ। चतुर।

जानकी–स्त्री॰ [सं॰] सीता।

जानकी-जीवन–पुं॰ [सं॰] रामचन्द्र।

जानदार–वि॰ [फा॰] १. जिसमें हो। २. प्रबल। बलवान्।

जाननहार*–वि = जाननेवाला।

जानना–स॰ [सं॰ ज्ञान] १. ज्ञान करना। अभिज्ञ या परिचित होना। मा करना। २. सूचना या खबर रखना। अनुमान करना। समझना।

जानपद–वि॰ [सं॰] १. जन-पद सं जन-पद का। २. सारे देश से संबंध वाला, पर सैनिक और धार्मिक से भिन्न। (सिविल) जैसे–जानपद (सिविल सर्विस), जानपद विधि (सिविल जानपद न्यायालय (म्युनिसिपल कोर्ट)।

पुं॰ १. जनपद का निवासी। २. देश

जान-पना†–पुं॰ [हिं॰ जान + प (प्रत्य॰)] १. जानकार होने का भा २. बुद्धिमत्ता। चतुराई।

जान-पनी* स्त्री॰ = जान-पना।

जान-बीमा–पुं॰ [फा॰ + अ॰] या ठीके के रूप में होनेवाली वह जिसमें बीमा करानेवाले को कुछ अवधि तक समय समय पर चन्दे के कुछ धन देना पड़ता है; और बीमा वाला उस व्यक्ति के मरने पर उसके धिकारियों को अथवा उसके जीवित पर स्वयं उसे नियत धन और उस का कुछ अंश देता है। (लाइफ-इन्श्यो

जान-मनि*–पुं॰ [हिं॰ जान + म ज्ञानियों में श्रेष्ठ। बहुत बड़ा ज्ञानी।

जानराय–पुं॰ दे॰ 'जान-मनि'।

जानवर–पुं॰ [फा॰] १. प्राणी। २. पशु। हैवान।

जानहार*–वि॰ १. = जाननेवाला। जानेवाला।

जानहु†–अव्य॰ [हिं॰ जानना]

जाना–अ॰ [सं॰ यान = जाना] १. स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने के लि चलना। गमन करना। २. प्रस्थान

पड़ना या पहुँचना =
ही वहाँ जाकर उपस्थित
दो = ध्यान मत दो।
पर जाना = (क) किसी
कुछ अनुमान या निश्चय
किसी बात पर ध्यान देना।
आगे बढ़कर किसी के पास
होना।
या अधिकार से निकलना।
गुम होना। खोना। ५.
। ६. नष्ट होना।
घर = दुर्दशा-प्राप्त घराना।
= निकृष्ट। रद्दी।
बहना। जैसे–खून जाना।
जनन] प्रसव करके उत्पन्न
देना।
= जानकार।
[फा॰] १. जान से संबंध
। २. जान का।
दुश्मन = जान लेने को तैयार
दोस्त = गहरा दोस्त।
जान] प्राण-प्यारी।
[सं॰] जाँघ और पिंडली के
घुटना।
] जाँघ। रान।
[हिं॰ जानना] मानों। जैसे।
।
[सं॰] जप करने या जपने-
।
[जनन् + आपा (प्रत्य॰)]
। सौरी।
[सं॰] जपनेवाला।
स्त्री॰ [अ॰ ज़ोफ़] १. बेहोशी।
२. चक्कर। घुमटा। ३. वृद्धावस्था।
(उर्दू में 'ज़ोफ़' पुंल्लिंग होने पर
स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है।)
पुं॰ [अ॰] [वि॰ ज़ाफ़रानी]
प्रसिद्ध सुगन्धित द्रव्य।

जाबालि–पुं॰ [सं॰] राजा दशरथ के गुरु, एक प्रसिद्ध ऋषि।

जाब्ता–पुं॰ [अ॰] नियम। कायदा। **यौ॰–जाब्ता दीवानी** = आर्थिक व्यवहार या लेन-देन से संबंध रखनेवाला कानून। **जाब्ता फौजदारी** = दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला विधान।

जाम–पुं॰ [सं॰ याम] पहर। प्रहर। पुं॰ [फा॰] १. प्याला। कटोरा। (विशेषतः शराब पीने का) २. एक प्रकार का बढ़िया फल। वि॰ [अं॰ जैम, मि॰ हिं॰ जमना] १. अधिकता, दबाव आदि के कारण रुका हुआ। २. जिसमें चलने के लिए अवकाश न हो। जैसे–रास्ता जाम होना। ३. मैल आदि के कारण अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमा, ठहरा या रुका हुआ।

जामगी–स्त्री॰ [?] वह पलीता जिसे जलाकर तोप या बन्दूक चलाते थे।

जामदानी–स्त्री॰ [फा॰ जामःदानी] एक प्रकार का फूलदार कपड़ा।

जामन–पुं॰ [हिं॰ जमाना] दूध जमाकर दही बनाने के लिए उसमें डाला जानेवाला थोड़ा दही या खट्टा पदार्थ।

जामना*–अ॰ दे॰ 'जमना'।

जामनी–स्त्री॰ [सं॰ यामिनी] रात।

जामा–पुं॰ [फा॰ जामः] १. पहनावा। पोशाक। २. चुननदार घेरे का एक विशेष प्रकार का पहनावा। ३. शरीर। **मुहा॰–जामे से बाहर होना**=आपे से बाहर होना। बहुत क्रोध करना।

जामाता–पुं॰ [सं॰ जामातृ] दामाद।

जामिक*–पुं॰ [सं॰ यामिक] पहरेदार।

जामिनदार–पुं॰ [अ॰] जमानत करनेवाला। प्रतिभू।

जामिनी*–स्त्री॰ दे॰ 'यामिनी'। स्त्री॰ दे॰ 'जमानत'।

जामी*–स्त्री॰ दे॰ 'जमीन'।

जामुन-पुं० [सं० जंबु] [वि० जामुनी] एक सदा-बहार पेड़ जिसके फल बैंगनी या काले होते हैं।

जामेवार-पुं० [फा० जामः + वार] १. एक प्रकार का दुशाला जिसमें सब जगह बेल-बूटे बने रहते हैं। २. इसी प्रकार की छींट।

जायँ†-वि० दे० 'जाय'।

जाय†-अव्य० [फा० जा] वृथा। व्यर्थ। वि० उचित। वाजिब। ठीक।

जायका-पुं० [अ०] स्वाद। विशेषतः खाने पीने की चीजों का।

जायज-वि० [अ०] उचित। मुनासिब।

जायजा-पुं० [अ०] १. जाँच-पड़ताल। २. हाजिरी।

जायदाद-स्त्री० [फा०] भूमि, धन या सामान आदि, जिनका कुछ मूल्य हो। सम्पत्ति।

जायपत्री*-स्त्री० दे० 'जावित्री'।

जायफल-पुं० [सं० जातिफल] एक सुगन्धित फल जो औषध और मसाले के काम में आता है।

जाया-स्त्री० [सं०] पत्नी। जोरू।
पुं० [सं० जनन, हिं० जाना = जन्म देना] [स्त्री० जाई] १. वह जो प्रसव करके उत्पन्न किया गया हो। २. पुत्र। बेटा।

जार-पुं० [सं०] १. पर स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखनेवाला पुरुष। २. उपपति। यार।

जार-कर्म-पुं० [सं०] व्यभिचार। छिनाला।

जारज-पुं० [सं०] किसी स्त्री के उपपति से उत्पन्न सन्तान।

जारज योग-पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में एक योग जिसमें उत्पन्न होनेवाला बालक अपने पिता से नहीं बल्कि अपनी माता के किसी दूसरे प्रेमी से उत्पन्न माना जाता है।

जारण-पुं० [सं०] जलाना।

जारन*-स्त्री० [हिं० जारना = जलाना] जलाने की क्रिया या भाव।
पुं० जलाने की लकड़ी, जलावन। ईंधन।

जारना*-स० दे० 'जलाना'।

जारिणी-स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री।

जारी-वि० [अ०] १. बहता हुआ। प्र
हित। २. चलता हुआ। प्रचलित।
स्त्री० [सं० जार] छिनाला।

जालंधरी विद्या-स्त्री० [सं०
(राक्षस)] इन्द्रजाल। जादू।

जाल-पुं० [सं०] १. एक में
गुथे हुए बहुत से डोरों का समूह। २.
या सूत आदि का वह पट जिसका
मछलिओं और चिड़ियों आदि को
के लिए होता है। ३. किसी को फँसाने
या वश में करने का षड्यंत्र। ४.
५. एक प्रकार की तोप।
पुं० [अ० जअल, मि० सं० जाल]
को फँसाने के लिए चली हुई चा
झूठी कार्रवाई। फरेब।

जालदार-वि० [सं० जाल + हिं० दार]
जाल की तरह बहुत-से छोटे छोटे छेद

जालना*-स० = जलाना।

जालरंध्र-पुं० [सं०] छोटी
झरोखा।

जाल-साज-पुं० [अ० जअल +
साज] [भाव० जालसाजी] धोखा देने
किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करने

जाल-साजी-स्त्री० [अ० जअल +
साजी] धोखा देने के लिए किसी प्र
झूठी कार्रवाई या लेख तैयार करना।

जाला-पुं० [सं० जाल] १. म
जाल जिसमें वह कीड़े-मकोड़ों को
है। २. आँख का एक रोग जिसमें
के आगे झिल्ली-सी पड़ जाती है। ३.
भूसा बाँधने का जाल। ४. पानी र
मिट्टी का बड़ा घड़ा।
*स्त्री० दे० 'ज्वाला'।

जालिम-वि० [अ०] जुल्म करने

जालिया-वि० दे० 'जाल-साज'।

जाली-स्त्री० [हिं० जाल] १. किसी
बने हुए बहुत-से छोटे छोटे छेदों का

मुहा०–जिंदगी के दिन पूरे करना = जैसे-तैसे या बहुत कष्ट से जीवन बिताना।

जिंदा–वि० [फा०] जीवित। जीता हुआ।

जिंदा-दिल–वि० [फा०] [संज्ञा जिंदादिली] सदा प्रसन्न रहने और हँसने-हँसानेवाला।

जिवाना†–स० दे० 'जिमाना'।

जिंस–स्त्री० दे० 'जिन्स'। (जिंस के यौगिक तथा विकारों के लिए दे० 'जिन्स' के यौगिक तथा विकार।)

जिअरा†–पुं० दे० 'जियरा'।

जिआना†–स० दे० 'जिलाना'।

जिउ†–पुं० १. दे० 'जीव'। २. दे० 'जीवन'।

जिउकिया–पुं० [हिं० जीविका] १. जिविका के लिए कोई काम करनेवाला। २. वे पहाड़ी लोग जो जंगलों से चीजें लाकर नगरों में बेचते हैं।

जिउतिया†–स्त्री० दे० 'जिताष्टमी'।

जिक्र–पुं० [अ०] चर्चा।

जिगर–पुं० [फा०, मि० सं० यकृत्] [वि० जिगरी] १. कलेजा। २. चित्त। मन। ३. साहस। हिम्मत।

जिगरा–पुं० [हिं० जिगर] साहस। हिम्मत।

जिगरी–वि० [फा०] १. आन्तरिक। दिली। २. अत्यन्त घनिष्ठ। अभिन्न-हृदय।

जिगीषा–स्त्री० [सं०] १. जीतने की इच्छा। २. उद्योग। प्रयत्न।

जिच(च्च)–स्त्री० [?] १. बेबसी। मजबूरी। २. शतरंज के खेल में वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न मिले। ३. पारस्परिक विवाद में वह अवस्था, जिसमें दोनों पक्ष अपनी शर्तों पर अड़े रहें और समझौते या निपटारे का कोई मार्ग दिखाई न दे। (डेड-लॉक) वि० विवश। मजबूर। बे-बस।

जिज्ञासा–स्त्री० [सं०] १. कोई बात

जानने की इच्छा । २. पूछ-ताछ ।

जिज्ञासु-वि० [सं०] जिज्ञासा करने या जानने की इच्छा रखनेवाला ।

जित्-वि० [सं०] जीतनेवाला । जेता ।

जिता†-क्रि० वि० [सं० यत्र] जिधर ।

जितना-वि० [हिं० जिस + तना (प्रत्य०)] [स्त्री०जितनी] जिस मात्रा या परिमाण का । क्रि० वि० जिस मात्रा या परिमाण में ।
*स० = जीतना ।

जितवार(वैया)-वि० [हिं० जीतना] जीतनेवाला ।

जितात्मा-वि० दे० 'जितेंद्रिय' ।

जिताना-स० हिं० 'जीतना' का प्रे० ।

जिताष्टमी-स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण अष्टमी । (इस दिन स्त्रियाँ अपनी संतान के जीवित रहने की कामना से व्रत और पूजन करती हैं ।

जितेंद्रिय-वि० [सं०] जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो ।

जिते*-वि = जितना (बहु०) । जितने ।

जितै*-क्रि० वि० [सं० यत्र] जिधर ।

जितैया-वि० [हिं० जीतना] जीतनेवाला ।

जितो†-वि०, क्रि० वि० दे० 'जितना' ।

जित्वर-वि० [सं०] जेता । विजयी ।

जिद-स्त्री० [अ०] [वि० जिद्दी] हठ । अड़ । दुराग्रह ।

जिद्दी-वि० [फा०] जिद करनेवाला । हठी । दुराग्रही ।

जिधर-क्रि० वि०[हिं० जिस + धर (प्रत्य०)] जिस ओर । जिस तरफ ।

जिन-पुं० [सं०] १. विष्णु । २. बुद्ध । ३. जैनों के तीर्थंकर ।
वि०, सर्व० [सं० यानि] 'जिस' का बहु० ।
पुं० [अ०] भूत । प्रेत ।

जिना-पुं० [अ० ज़िना] व्यभिचार ।

जिनि†-अव्य० [हिं० जनि] मत । नहीं ।

जिनिस-स्त्री० दे० 'जिन्स' ।

जिन्स-स्त्री० [फा०] [वि० जिन्सी] १.
प्रकार । तरह । २. चीज । वस्तु ।
३. सामग्री । सामान । ४. गेहूँ,
आदि अनाज ।

जिन्सवार-पुं० [फा०] पटवारि
वह कागज जिसमें वे खेतों में
फसलों का विवरण लिखते हैं ।

जिन्सी-वि० [फा०] १. जिन्स
जिन्स का । २. जिन्स या चावल,
अनाजों के रूप में होनेवाला ।
जैसे-जिन्सी लगान ।

जिन्सी लगान-पुं० [फा० + हिं०
का वह लगान जो रुपए पैसे के
बल्कि गेहूँ, चावल आदि पैदावारों के
में हो । (रेन्ट इन काइन्ड)

जिन्ह†-सर्व० दे० 'जिन' ।

जिप्सी-पुं० [ईजिप्ट (मिश्र)
नाम से] १. भारतीय मूल से
यायावर जाति जो पहले मिस्र देश
थी और जो अब संसार के अने
फैल गई है । २. इस जाति का कोई

जिबह-पुं० दे० 'जब्ह' ।

जिब्भा-स्त्री० दे० 'जिह्वा' ।

जिमाना-स० [हिं० 'जीमना' का
भोजन कराना । खिलाना ।

जिमि*-क्रि० वि० = जैसे । जिस

जिमी-स्त्री० = जमीन । (पृथ्वी)

जिम्मा-पुं० [अ०] १. किसी
विषय या बात का लिया जानेवाला
दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा । जवाबदेही । २.
दंगी । देख-रेख । संरक्षा ।

जिम्मादार (वार)-पुं० दे० 'जिम्मे

जिम्मी-पुं० [अ०] इस्लामी रा
प्रजा जो मुसलमान न हो और जिसके
कुछ विशिष्ट हीन कर्त्तव्य तथा कर

जिम्मेदार (वार)-पुं० [फा०] उत्त

जिया†-पुं० [सं० जीव] मन । चित्त ।

जिय-बधा*-पुं० [सं० जीव +
हत्याकारी । हत्यारा ।

[हिं० जीव] जी। हृदय।

दे० 'जीव-जन्तु'।

[अ०] १. घाटा। टोटा।

दे० 'जिलाना'।

[हिं० जीना] १. जीवन।

। ३. वृत्ति। साहस।

[अ० जिर्गः] १. झुंड।

। दल। ३. पठानों

या दलों के लोगों की

[अ० जरह या जुरह] १.

। २. किसी की कही हुई

की जाँच के लिए की जाने-

] लोहे की कड़ियों से

। वर्म। बकतर।

[हिं० जिरह] जो जिरह

धारी।

दे० 'जुराफा'।

[अ०] १. माँजकर या रोगन

चमकाने का काम।

देना=माँजकर चमकाना।

] १. प्रान्त। प्रदेश।

का वह विभाग जो एक

डिप्टी-कमिश्नर के अधीन

। २. किसी क्षेत्र या इलाके

-पुं० [अ० जिला + अं० जज]

का वह अधिकारी जिसे जिले

और फौजदारी मुकदमों की

का अधिकार होता है।

)

[हिं० 'जीना' का स०] १. जीवित

करना। २. पालना। पोसन।

में जान डालना।

जिला बोर्ड-पुं० [अ० जिला + अं० बोर्ड] किसी जिले के चुने हुए प्रतिनिधियों का वह बोर्ड या संस्था जिसके जिम्मे जिले भर के देहातों की, शिक्षा, स्वास्थ्य, वास्तु, यातायात आदि की व्यवस्था रहती है। (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड)

जिलाह*-पुं० [अ० जल्लाद] अत्याचारी।

जिलेदार-पुं० [अ०] जमींदार का वह कर्मचारी जो किसी जिले या इलाके में कर या लगान उगाहता है।

जिल्द-स्त्री० [अ०] [वि० जिल्दी] १. खाल। चमड़ा। त्वचा। २. वह दफ्ती जो किसी किताब के ऊपर-नीचे उसकी रक्षा के लिए मढ़ी जाती है। ३. पुस्तक की एक प्रति। ४. पुस्तक का भाग। खंड।

जिल्दबंद-पुं० [फा०] किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। दफ्तरी।

जिल्लत-स्त्री० [अ०] १. अपमान। बेइज्जती। २. दुर्दशा। दुर्गति।

जिव-पुं० = जीव।

जिवन*-पुं० = जीवन।

जिवाना*-स० दे० 'जिलाना'।

जिवारा*-वि० दे० 'ज्यारा'।

जिष्णु-वि० [सं०] सदा जीतनेवाला। परम विजयी।

पुं० १. विष्णु। २. कृष्ण। ३. इन्द्र। ४. सूर्य। ५. अर्जुन।

जिस-वि० [सं० यः या यस्] 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति-युक्त विशेष्य के पहले रहने पर प्राप्त होता है। जैसे-जिस स्थान पर।

सर्व०-'जो' का वह रूप जो उसमें विभक्ति लगने पर होता है।

जिस्ता-पुं० १. दे० 'जस्ता' (धातु)। २. दे० 'दस्ता' (कागज का)।

जिस्म-पुं० [फा०] शरीर। देह।

जिह*-स्त्री० [फा० जद, सं० ज्या] धनुष की डोरी। पतंचिका। रोदा।

जिहाद–पुं० दे० 'जहाद'।

जिह्वा–स्त्री० [सं०] जीभ। जबान।

जिह्वाग्र–वि० [सं०] जीभ की नोक पर। कंठस्थ। (बात या पाठ)

जींगन–पुं० दे० 'जुगनूँ'।

जी–पुं० [सं० जीव] १. मन। दिल। **मुहा०–जी अच्छा होना** = शरीर स्वस्थ या नीरोग होना। **(किसी पर) जी आना** = किसी पर प्रेम होना। **(किसी के) जी को जी न समझना** = (किसी के) कष्टों आदि की कुछ भी परवा न करना। **जी खट्टा होना** = मन में विरक्ति होना। **जी खोलकर** = बिना किसी संकोच के। दिल खोलकर। **जी चलना** = जी चाहना। इच्छा होना। **जी चुराना** = कुछ करने से भागना। **जी छोटा करना** = (क) हताश होना। (ख) उदारता छोड़ना। कंजूसी करना। **जी दुखना** = मन में कष्ट होना। **जी निढाल होना** = श्रम, चिन्ता आदि के कारण चित्त ठिकाने न रहना। **जी पर आ बनना** = प्राणों पर संकट आना। **जी पर खेलना** = ऐसा काम करना, जिसमें मरने तक का डर हो। **जी बहलाना** = चिन्ता से छूटकर प्रसन्न होना। **(किसी की ओर से) जी बुरा होना** = किसी के प्रति मन में खिन्नता या दुर्भाव होना। **जी भरना** = (क) (अपना) संतोष होना। (ख) तृप्ति होना। (ग) (दूसरे का) संदेह दूर करना। खटका मिटाना। **जी भर आना** = चित्त में दुःख या करुणा उत्पन्न होना। **जी मचलाना** = उलटी या कै मालूम होना। **जी में आना** = मन में विचार उत्पन्न होना। **(किसी का) जी रखना** = (किसी को) प्रसन्न करने के लिए कोई प्रिय या अनुकूल काम करना। **जी लगना** = कोई काम अच्छा लगने पर मन का उसमें प्रवृत्त और लीन होना। **जी से** = मन लगाकर। ध्यान देकर। **जी से जाना** = मर जाना। २. हिम्मत। साहस। ३. संकल्प। वि
अव्य० [सं० जित् या श्री (युत)
कुछ कहने या बुलाये जाने पर उत्त
जानेवाला एक आदर-सूचक शब्द।
के साथ लगनेवाला सम्मान-सूचक
३. बड़े के कथन, प्रश्न या सम्बोधन के
में संक्षिप्त प्रति-सम्बोधन के रू
जानेवाला शब्द।

जीअ–पुं० दे० 'जी' और 'जीव'।

जीअन*–पुं० दे० 'जीवन'।

जीगन–पुं० दे० 'जुगनूँ'।

जीजा–पुं० [हिं० जीजी] बड़ी बहन
पति। बड़ा बहनोई।

जीजी–स्त्री० [अनु०] बड़ी बहन।

जीत–स्त्री० [सं० जिति] १.
क्रिया या भाव। लड़ाई में
विपक्षी को दबाकर प्राप्त की
सफलता। जय। विजय। फतह।
प्रतियोगिता में मिलनेवाली सफलता,
दो या अधिक विरुद्ध पक्ष हों। ३.
फायदा।

जीतना–स० [हिं० जीत + ना (प्र
१. लड़ाई में शत्रु या विपक्षी के
सफल होना। विजय पाना। २. प्रति
में सफलता प्राप्त करना।

जीता–वि० [हिं० जीना] १.
जीवन या जान हो। जीवित। २.
नाप में उचित से थोड़ा अधिक या बड़ा

जीन–स्त्री० [फा०] १. घोड़े की
रखने की गद्दी। चारजामा। २. ए
का मोटा सूती कपड़ा।
*वि० दे० 'जीर्ण'।

जीन-पोश–पुं० [फा०] वह कपड़ा
की जीन के ऊपर रखा जाता है।

जीन-सवारी–स्त्री० [फा०] घोड़े
पर जीन रखकर की जानेवाली
(घोड़े को गाड़ी में जोतने से भिन्न)

[हिं० जीवन] १. जीवित रहकर
। जिंदा रहना ।
ता-जागता = जीवित और
चंगा । जीना भारी हो
कष्ट-कर रहना ।
पाकर बहुत प्रसन्न होना ।
'जीर्ण' । २. दे० 'झीना' ।
] सीढ़ी ।
जिह्वा] १. मुँह के अन्दर
मांस-पिंड जिससे रसों
और शब्दों का उच्चारण होता
। जबान ।
जीभ चलना = (क) भिन्न भिन्न
स्वाद लेने की इच्छा होना ।
बहुत बढ़ बढ़कर बातें निकलना ।
होना । जीभ निकालना=दंड
जीभ उखाड़ लेना । जीभ
=बोलने न देना । बोलने से
जीभ हिलाना = मुँह से कुछ
जीभ के नीचे जीभ होना =
की आदत होना ।
के आकार की कोई लंबी वस्तु ।
[हिं० जीभ] १. धातु का
धनुषाकार पत्तर जिससे जीभ
करते हैं । २. कलम के आगे
धातु का विशेष आकार का वह
लिखा जाता है । (निब)
[सं० जेमन] भोजन करना ।
-पुं० [सं०] १. पर्वत । २. बादल ।
। ४. सूर्य ।
-पुं० दे० 'जी' ।
-पुं० दे० 'जीवट' ।
स्त्री० [हिं० जीना] जीवन ।
पुं० [फा० ज़िरह] जिरह । कवच ।
[सं० जीर्ण] जीर्ण । पुराना ।
-वि० दे० 'जीर्ण' ।
-अ० [सं० जीर्ण] १. जीर्ण या
। २. कुम्हलाना । मुरझाना ।

३. फटना ।

जीरा–पुं० [सं० जीरक] १. एक पौधा जिसके सुगन्धित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम में लाये जाते हैं । २. इस आकार की कोई छोटी, महीन, लंबी चीज । ३. फूलों का केसर ।

जीर्ण–वि० [सं०] [भाव० जीर्णता] १. बुढ़ापे के कारण दुर्बल और क्षीण । २. टूटा-फूटा और पुराना ।
यौ०–जीर्ण-शीर्ण = फटा-पुराना ।
३. बहुत दिनों का । पुराना, जैसे–जीर्ण ज्वर । ४. पेट में अच्छी तरह पचा हुआ । हजम ।

जीर्णोद्धार–पुं० [सं०] टूटी-फूटी पुरानी वस्तु, मुख्यतः भवन आदि का फिर से उद्धार, सुधार या मरम्मत ।

जीला†–वि० दे० 'झीना' ।

जीवंत–वि० दे० 'जीवित' ।

जीव–पुं० [सं०] १. प्राणियों का वह चेतन तत्त्व जिससे वे जीवित रहते हैं । प्राण । जान । २. जीवात्मा । आत्मा । ३. प्राणी । जीवधारी ।
यौ०–जीव-जंतु

जीव-जंतु–पुं० [सं०] पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े आदि ।

जीवट–पुं० [सं० जीवथ] हृदय की दृढ़ता । साहस । हिम्मत ।

जीवत*–वि० दे० 'जीवित' ।

जीव-दया–स्त्री० [सं०] जीवों या प्राणियों पर उनके जीवन की रक्षा के विचार से की जानेवाली दया ।

जीव-दान–पुं० [सं०] १. अपने वश में आये हुए शत्रु या अपराधी को बिना उसके प्राण लिये छोड़ देना । प्राण-दान । २. किसी मरते हुए प्राणी की रक्षा करके उसे मरने से बचाना

जीव-धन–पुं० [सं०] १. जीवों और पशुओं के रूप में संपत्ति । २. जीवनधन ।

जीवधातु–स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट

रासायनिक तत्त्वों से बना हुआ वह पारदर्शक स्वच्छ तत्त्व या धातु जिसमें जीवनी शक्ति होती है और जो जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि के भौतिक स्वरूप का मूल आधार है। (प्रोटोप्लाज्म)

जीवधारी-पुं० [सं०] प्राणी। जानवर।

जीवन-पुं० [सं०] [वि० जीवित] १. जीवित रहने का भाव। प्राण-धारण। २. जन्म से मृत्यु तक का समय। जिन्दगी। ३. जीवित रखनेवाली वस्तु। जैसे-हवा, पानी, अन्न आदि।

वि० परम प्रिय। बहुत प्यारा।

जीवन-चरित-पुं० [सं०] सारे जीवन में किसी के किए हुए कार्यों आदि का वर्णन। जिन्दगी भर का हाल। (बायोग्राफी)

जीवन-धन-पुं० [सं०] १. सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति। २. प्राणाधार। प्राण-प्रिय।

जीवन-नौका-स्त्री० [सं० जीवन + नौका] वह छोटी नौका जो बड़े जहाजों पर इसलिए रखी रहती है कि जब जहाज डूबने लगे तब लोग उसपर सवार होकर अपनी जान बचा सकें। (लाइफ बोट)

जीवन-प्रमाणक-पुं० [सं०] इस बात का प्रमाण-पत्र कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था। अथवा इस समय जीवित है। (लाइफ सर्टिफ़िकेट)

जीवन-बूटी-स्त्री० [सं० जीवन + हिं० बूटी] एक पौधा या बूटी जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि यह मरे हुए आदमी को जिला देती है। संजीवनी।

जीवन-मूरि-स्त्री० दे० 'जीवन-बूटी'।

जीवन-वृत्त-पुं० दे० 'जीवन-चरित'।

जीवन-वृत्ति-स्त्री० [सं०] जीवन-निर्वाह के लिए मिलने या दी जानेवाली वृत्ति। (लिविंग एलाउएन्स)

जीवन-संग्राम-पुं० दे० 'जीवन संघर्ष'।

जीवन-संघर्ष-पुं० [सं०] प्रतिकूल और विकट परिस्थितियों में रहकर अथवा प्रबल शक्तियों का सामना करते हुए अपना अ
त्व बनाये रखने के लिए किया जाने
बहुत बड़ा प्रयत्न (स्ट्रगल फॉर एक्जिस्टेन्स)

जीवना*-अ० = जीवित रहना।

जीवनी-स्त्री दे० 'जीवन-चरित'।

स्त्री० जीवन। जिन्दगी।

वि० १. जीवन सम्बन्धी। जैसे-
शक्ति। २. जीवन देनेवाली।

जीवनोपाय-पुं० [सं०] जीविका।

जीवन्मुक्त-वि० [सं०] जो जीवन
में ही आत्मज्ञान होने के कारण सांस
बन्धनों से छूट गया हो।

जीवन्मृत-वि० [सं०] जो जीवित होने पर भी मरे हुए के समान हो।

जीवरा†-[हिं० जीव] जीव। प्राण।

जीवरी*-पुं० दे० 'जीवन'।

जीव-लोक-पुं० [सं०] भूलोक। पृ

जीव-विज्ञान-पुं० [सं०] वह शा
जिसमें जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों आ
की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास और वि
आदि का विवेचन होता है। (बायॉलॉ

जीव-हत्या(हिंसा)-स्त्री० [सं०] प्रा
का वध। मार डालना।

जीवांतक-वि० [सं०] जीवों या जी
का अंत या नाश करनेवाला।

जीवाणु-पुं० [सं०] १. सेन्द्रिय
का वह मूल और बहुत सूक्ष्म रूप
विकसित होकर एक नये जीव का रूप
करता है। २. जीव-युक्त अणु जो
अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं। (

जीवात्मा-पुं० [सं०] वह तत्त्व
प्राणियों की चेतन-वृत्ति या जीवन का
कारण है। जीव। आत्मा।

जीवावशेष-पुं० [सं०] बहुत प्रा
काल के जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि
वे अवशिष्ट रूप जो जमीन खोदने पर उ
भीतरी स्तरों में दबे हुए मिलते हैं। (फॉसि

जीवाश्म-पुं० दे० 'जीवावशेष'।

[सं०] वह काम जो
के लिए किया जाय। जीवनो-
वृत्ति।
[सं०] बीता हुआ। निंदा।
[सं०] १. ईश्वर। २.
[सं० जीविन्] जीवन वाला।
२. किसी जीविका से पेट भरने
श्रम-जीवी।
[सं०] १. जीवों का स्वामी,
। २. प्रियतम।
दे० 'जीभ'।
[फा०] हिलना-डोलना। गति।
वि० दे० 'जो'।
[हिं० जूआ] वह जो प्रायः
हो। जूआ खेलनेवाला।
= ज्वाला।
[अ०] एक प्रसिद्ध रोग
मुँह से कफ या पानी निकलता
। सरदी। (कोल्ड)
को भी **जुकाम होना**=
भी बड़ा काम करने का
की बराबरी करना।
दे० 'युक्ति'।
[सं० युग्म] १. जोड़ा। युग्म।
के खेल में दो गोटियों का एक
बैठना।
वि० [सं० युग] अनेक
दिनों तक। चिर काल तक।
अ० [हिं० जगना] १. रह
थोड़ा चमकना। टिमटिमाना।
पाकर हीन दशा से कुछ
में आना। उभरना।
[सं० युक्ति] कोई विकट
से पूरा करने की युक्ति।

उपाय।

जुगती–पुं० [हिं० जुगत] १. अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने या लगानेवाला। २. चालाक।
स्त्री० दे० 'जुगत'। (युक्ति)

जुगनी–स्त्री० दे० 'जुगनूँ'।

जुगनूँ–पुं [हिं० जुगजुगाना]। १. एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग रात को खूब चमकता है। खद्योत। पट-बीजना। २. पान के आकार का गले का एक गहना। राम-नामी।

जुगम*–वि० दे० 'युग्म'।

जुगल*–वि० दे० 'युगल'।

जुगवना*–स० [सं०योग + अवना(प्रत्य०)] १. संचित या इकट्ठा करना। २. सँभालकर रखना।

जुगाना–स० दे० 'जुगवना'।

जुगालना–अ० [सं० उद्गिलन] चौपायों का जुगाली या पागुर करना।

जुगाली–स्त्री० [हिं० जुगालना] सींगवाले चौपायों की वह चर्या जिसमें वे निगले हुए चारे को गले से थोड़ा-थोड़ा निकालकर फिर से चबाते हैं। पागुर।

जुगुत–स्त्री० दे० 'जुगत'।

जुगुप्सा–स्त्री० [सं०] [वि० जुगुप्सित] १. निंदा। बुराई। २. अश्रद्धा। ३. घृणा।

जुज–पुं० [फा०, मि० सं० युज्] १. अंग। अंश। २. कागज का पूरा तख्ता जो पृष्ठों के रूप में छापा जाता है।

जुज्झ*–स्त्री० दे० 'युद्ध'।

जुझवाना–स० [हिं०] 'जूझना' का प्रे०।

जुझाऊ–वि० [हिं० जूझ + आऊ (प्रत्य०)] १. दे० 'जुझार'। २. लड़ाई में काम आनेवाला। युद्ध-संबंधी। सैनिक।

जुझार†–पुं० [हिं० जुज्झ + आर (प्रत्य०)] १. जूझने या लड़नेवाला। लड़ाका। २. वीर और योद्धा। बहादुर। ३. युद्ध। लड़ाई।

जुटना–अ० [सं० युक्त + ना (प्रत्य०)] १. चीजों का इस प्रकार मिलना कि उनका कोई अंग या तल दूसरी वस्तु के किसी अंग या तल से दृढ़तापूर्वक लग जाय। संबद्ध या संश्लिष्ट होना। जुड़ना। २. लिपटना। गुथना। ३. संभोग करना। ४. एकत्र होना। इकठ्ठा होना। ५. कार्य में अध्यवसाय या दृढ़तापूर्वक लगना। ६. मिलना।

जुटाना–स० हिं० 'जुटना' का स०।

जुटाव–पुं० [हिं० जुटना] जुटने की क्रिया या भाव। जमावड़ा।

जुठारना–स० [हिं० जूठा] जूठा या उच्छिष्ट करना।

जुठिहारा*–पुं० [हिं० जूठा] [स्त्री० जुठिहारी] दूसरों का जूठा खानेवाला।

जुड़ना–अ० [हिं० जुटना] १. कुछ वस्तुओं का इस प्रकार परस्पर मिलना या सटना कि एक का अंग या तल दूसरी के साथ दृढ़तापूर्वक लग जाय। संबद्ध होना। संयुक्त होना। २. इकठ्ठा होना। एकत्र होना। ३. प्राप्त होना। मिलना। ४. ठंढा होना। ५. दे० 'जुतना'।

जुड़-पित्ती–स्त्री० [हिं० जूड़ + पित्ती] एक प्रकार का रोग जिसमें सारे शरीर में बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं और उनमें बहुत खुजली तथा जलन होती है।

जुड़वाँ-वि० [हिं० जुड़ना] गर्भ-काल से ही एक में सटे या जुड़े हुए। यमल। (छोटे बच्चे)

जुड़वाना–स० [हिं० जूड़] १. शीतल या ठंढा करना। २. शान्त और सुखी करना।

स० दे० 'जोड़वाना'।

जुड़ाई–स्त्री० दे० 'जोड़ाई'।

स्त्री० [हिं० जुड़ाना = ठंढा होना] ठंढे होने की क्रिया या भाव। शीतलता। ठंढक।

जुड़ाना–अ० [हिं० जूड़ी] १. ठंढा होना। २. शान्त होना। ३. तृप्त होना।

स० १. ठंढा करना। शीतल करना। शांत करना। ३. संतुष्ट या तृप्त कर

स० [हिं० 'जोड़ना' का प्रे०] १. जो का काम दूसरे से कराना। २. फलित तिष के अनुसार योग और फल का मि कराना। जैसे—जन्म-पत्री जुड़ाना = वर कन्या की जन्मपत्रियों का मिलान यह जानना कि दोनों का वैवाहिक या संयोग कैसा होगा।

जुड़ावना*–अ० = जुड़ाना।

स० जुड़वाना।

जुत*–वि० दे० 'युक्त' या 'युत'।

जुतना–अ० [हिं० युक्त] १. बैल, घो आदि पशुओं का हल, गाड़ी आदि लगना। जोता जाना। नधना। २. कि काम में परिश्रम पूर्वक लगना।

जुतवाना–स० हिं० 'जोतना' का प्रे०।

जुताई–स्त्री० दे० 'जोताई'।

जुतियाना–स० [हिं० जूता + ना (प्रत्य०)] १. जूते से मारना अत्यन्त अनादर करना।

जुत्थ*–पुं० दे० 'यूथ'।

जुदा–वि० [फा०] १. पृथक्। अ २. भिन्न। निराला।

जुदाई–स्त्री० [फा०] १. जुदा होने भाव। २. विछोह। वियोग।

जुदेन*–वि० = जुदा (भिन्न)।

जुद्ध*–पुं० दे० 'युद्ध'।

जुनब्बा–स्त्री [?] एक प्रकार की

जुन्हाई–स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जो १. चाँदनी। चन्द्रिका। २. चन्द्रमा।

जुन्हैया†–स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।

जुपना†–अ० [हिं० जुड़ना] (का) बुझना।

जुबली–स्त्री० दे० 'जयन्ती' ४.।

जुमकना*–अ० [हिं० जमना] दृढ़ पूर्वक किसी जगह खड़े रहना। डटना।

जुमला–वि० [फा०] सब। कुल।

जो पीछे या इधर-उधर लटके रहते हैं। पट्टा। कुल्ला।

जुल्फी-स्त्री० दे० 'जुल्फ'।

जुल्म-पुं०[अ०] [वि० जुल्मी] अत्याचार।

मुहा०-जुल्म ढाना=(क) अत्याचार करना। (ख) अद्‌भुत काम कर दिखाना।

जुल्मी-वि० [अ०] १. जुल्म करनेवाला अत्याचारी। २. बहुत ही उग्र, प्रबल या विकट। गज़ब का।

जुल्लाब-पुं० दे० 'जुलाब'।

जुव-पुं० = युवक।

जुवती*-स्त्री० = युवती।

जुवा*-पुं० १. दे० 'युवा'। २. दे० 'जूआ'।

जुहाना-स० [सं० यूथ] १. एकत्र करना। संचित करना। २. इमारत के काम में लकड़ी, पत्थर आदि यथा-स्थान बैठाना। ३. चित्र में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिये आकृतियों को यथा-स्थान बैठाना। संयोजन।

जुहार-स्त्री० [सं० अवहार] १. क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन। २. अभिवादन। प्रणाम।

जुहारना-अ० [हिं० जुहार] जुहार या अभिवादन करना।

जुही-स्त्री० दे० 'जूही'।

जूँ-स्त्री० [सं० यूका] सिर के बालों में होनेवाला एक छोटा स्वेदज कीड़ा।

मुहा०-कानों पर जूँ तक न रेंगना=किसी पर किसी घटना का कुछ भी प्रभाव न पड़ना।

जू-अव्य० [सं० (श्री) युक्त] एक आदर सूचक शब्द जो व्रज, बुन्देलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगता है। जी।

*वि० = जो।

*क्रि० वि० = ज्यों (जैसे)।

जूआ-पुं० [सं० युग] १. गाड़ी के आगे की वह लकड़ी जो बैलों के कन्धे पर रहती है। २. चक्की में की वह लकड़ी जिसे पकड़ कर वह चलाई जाती है।

पुं० [सं० द्यूत, प्रा० जूआ] वह खेल जिसमें हारनेवाले को कुछ धन देना पड़ता है और वह धन जीतनेवाले को मिलता है। हार-जीत का खेल। द्यूत। (गैम्बलिंग)

जूआ-घर–पुं० [हिं० जूआ + घर] वह स्थान जहाँ बैठकर लोग जूआ खेलते हों। द्यूतशाला। जूआ-खाना।

जूआ-चोर–पुं० [हिं० जूआ + चोर] भारी धूर्त्त और ठग।

जूआ-चोरी–स्त्री० [हिं० जूआचोर] बहुत बड़ी धूर्त्तता या छल, विशेषतः किसी का धन हड़पने के लिए।

जूजू–पुं० [अनु०] बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित जीव। हौआ।

जूझ*–स्त्री० [सं० युद्ध] लड़ाई।

जूझना*–अ० [सं० युध्य] १. लड़ना। २. लड़कर मर जाना।

जूट–पुं० [सं०] १. जटा की गाँठ। जूड़ा। २. लट। जटा। ३. पटसन।

पुं० [अं०] पटसन।

जूठन–स्त्री० [हिं० जूठा] १. किसी के खाने-पीने से बची हुई वस्तु। उच्छिष्ट भोजन। २. वह पदार्थ जो एक-दो बार पहले काम में लाया जा चुका हो।

जूठा–वि० [सं० जुष्ठ] [स्त्री० जूठी। क्रि० जुठारना] १. किसी के खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट। २. जिसका किसी ने पहले उपभोग कर लिया हो। भुक्त।

पुं० दे० 'जूठन'।

जूड़ा–पुं० [सं० जूट] १. सिर के बालों को लपेटकर उनकी बाँधी हुई गाँठ। २. चोटी। कलगी। ३. मूँज आदि का पूला।

जूड़ी–स्त्री० [हिं० जूड़ = जाड़ा] जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर। (मलेरिया)

जूता–पुं० [सं० युक्त] चमड़े आदि का वह उपकरण जो ठोकर, काँटों आदि से बचने के लिए पैरों में पहना जाता है। पाद-त्राण। उपानह।

मुहा०–(किसी का) जूता उठाना = (क) किसी की तुच्छ सेवा करना। (ख) खुशा करना। **जूता उछलना या चलना** = मार-पीट होना। झगड़ा होना। **जू खाना** = (क) जूतों की मार सहना। (तिरस्कृत या अपमानित होना। **जूतों बँटना** = आपस में लड़ाई-झगड़ा हो

जूता-खोर–पुं० [हिं० जूता + फा० खो खानेवाला] वह बहुत बड़ा निर्लज्ज बराबर घुड़कियाँ-झिड़कियाँ सहकर भी बातें न छोड़ता हो।

जूती–स्त्री० [हिं० जूता] १. स्त्रियों का २. जूता।

मुहा०–जूतियाँ चटकाना=व्यर्थ इध उधर मारा-मारा फिरना।

जूती-पैजार–स्त्री० [हिं० जूती + पैजा १. जूतों की मार-पीट। २. बहुत ही तरह की लड़ाई।

जूथ*–पुं० दे० 'यूथ'।

जून†–पुं० [सं० द्युवन्] समय। का

पुं० [सं० जूर्ण] तृण। घास।

जूप–पुं० [सं० द्यूत] जूआ। द्यूत।

पुं० दे० 'यूप'।

जूमना†–अ० [अ० जमा] इकट्ठा होना।

जूर*–पुं० [हिं० जुरना] १. जोड़। २ संचय। ३. ढेर। राशि।

जूरना*–स० [हिं० जूरी = पूला या गड्डी एक पर एक रखकर गड्डी या थाक लगा

स० दे० 'जोड़ना'।

जूरा*–पुं० दे० 'जूड़ा'।

जूरी–स्त्री० [हिं० जुरना] १. घास पत्तों का पूला। जुट्टी। २. एक प्रका का पकवान।

पुं० [अं० ज्यूरी] एक प्रकार के परामर्श दाता जो जज के साथ बैठकर मुकदमे सुनते हैं।

जूस–पुं० [सं० जूष] पकी हुई दाल या उबाली हुई चीज का रस। रसा।

जेठा–वि० [सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] १. अग्रज । बड़ा । २. सबसे अच्छा ।

जेठाई†–स्त्री० [हिं० जेठा] १. 'जेठा' या 'बड़ा' होने का भाव । २. महत्त्व । बड़प्पन ।

जेठानी–स्त्री० [हिं० जेठ] पति के बड़े भाई की स्त्री ।

जेठी–वि० [हिं० जेठ] जेठ मास का या जेठ में होनेवाला । जैसे–जेठी धान, जेठी कपास । स्त्री० जेठ मास का शेषांश जिसमें अगली फसल के लिए जमीन जोती जाती है ।

जेठी मधु–स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलेठी ।

जेता–पुं० [सं० जेतृ] जीतनेवाला । विजयी । *वि० [स्त्री० जेती] दे० 'जितना' ।

जेतिक†–क्रि० वि० [सं० यः] जितना ।

जेते†–वि० [सं० यः, यस्] जितने ।

जेतो†–क्रि० वि० [सं० यः, यस्] जितना ।

जेन्य–वि० [सं०] १. उच्च कुल में उत्पन्न । अभिजात । २. जो बनावटी न हो । असली । सच्चा । (जेनुइन)

जेब–पुं० [फा०] पहनने के कपड़ों में की वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं । खीसा । खरीता ।

जेब-कट–पुं० [फा० जेब + हिं० काटना] वह जो दूसरों के जेब काटकर रुपये-पैसे निकालता हो । गिरह-कट ।

जेब-खर्च–पुं० [फा०] खास अपने खर्च के लिए मिलनेवाला धन ।

जेब-घड़ी–स्त्री० [फा० जेब + घड़ी] वह छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है ।

जेबी–वि० [फा०] १. जो जेब में रखा जा सके । २. जिसका आकार-प्रकार नियमित या साधारण से बहुत छोटा हो ।

जेय–वि० [सं०] जीतने योग्य ।

जेर–स्त्री० दे० 'आँवल' । (खेड़ी) वि० [फा० ज़ेर] [संज्ञा ज़ेर-बारी] १. परास्त । पराजित । २. जो बहुत दबाया या तंग किया गया हो ।

जेरी†–स्त्री० = आँवल । (खेड़ी)

जेल–पुं० [अं०] वह जगह जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी कुछ समय के लिए बन्द रखे जाते हैं। कारागार। वंदीगृह। *पुं० [फा० ज़ेर] झंझट।

जेलखाना–पुं० दे० 'जेल'।

जेलाटिन–पुं० [अं०] सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मांस, हड्डी और खाल से निकाला जाता है।

जेवनार–स्त्री० दे० 'ज्योनार'।

जेवर–पुं० [फा०] गहना। आभूषण।

जेवरी–स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।

जेह–स्त्री० [फा० जिह = चिल्ला] धनुष की डोरी में वह अंश जो आँख के पास लाया जाता है और जो निशाने की सीध में रक्खा जाता है। चिल्ला।

जेहन–पुं० [अ०] [वि० जहीन] बुद्धि। समझ।

जेहर†–स्त्री० [?] पाजेब। (जेवर)

जेहाद–पुं० दे० 'जहाद'।

जेहि*–सर्व० [सं० यस] १. जिसको। जिसे। २. जिससे।

जै–स्त्री० दे० 'जय'।
†वि० [सं० यावत्] जितने।

जै-जैकार–स्त्री० दे० 'जय-जयकार'।

जैत†–स्त्री० [सं० जयति] विजय।

जैतपत्र*–पुं० [सं० जयति + पत्र] जयपत्र।

जैतवार†–पुं० [हिं० जैत + वार (वाला)] जीतनेवाला। विजयी। विजेता।

जैतून–पुं० [अ०] एक सदा-बहार पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं।

जैन–पुं० [सं०] १. भारत का एक अनीश्वरवादी धर्म्म-संप्रदाय जिसमें अहिंसा परम धर्म्म माना जाता है। २. जैनी।

जैनी–पुं० [हिं० जैन] जैन-मतावलंबी।

जैनु†–पुं० [हिं० जेंवना] भोजन।

जैबी*–अ० दे० 'जाना'।

जैमाल–स्त्री० दे० 'जयमाल'।

जैमिनी–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि और आचार्य जो पूर्व-मीमांसा के कर्त्ता और प्रवर्त्तक हैं।

जैव–वि० [सं०] १. जीव या जीव संबंधी। २. जीवों या उनके शारीरि अंगों से संबंध रखनेवाला। ३. जिसमें जीवनी शक्ति और शारीरिक अंग इन्द्रियाँ हों। (ऑर्गेनिक)

जैस*–वि० दे० 'जैसा'।

जैसा–वि० [सं० यादृश] [स्त्री० जैसी] १. जिस प्रकार का। जिस तरह का।
पद–जैसे का तैसा = ज्यों का त्यों। जैसा पहले था, वैसा ही। **जैसा चाहिए** उपयुक्त।
२. जितना। (केवल विशेषण के साथ)
†३. समान। सदृश। तुल्य।
क्रि० वि० जिस परिमाण का। जितना।

जैसे–क्रि० वि० [हिं० जैसा] जिस तरह जिस प्रकार।
पद–जैसे-तैसे = (क) किसी प्रकार (ख) कुछ कठिनता से।

जैसो†–वि०, क्रि० वि० दे० 'जैसा'।

जों†–क्रि० वि० दे० 'ज्यों'।

जोंक–स्त्री० [सं० जलौका] १ पानी में रहनेवाला एक लम्बा कीड़ा जो जीवों के शरीर में लगकर उनका खून चूसता है। २. वह जो अपना मतलब निकालने के लिए पीछे पड़ जाय।

जोंकी–स्त्री० [हिं० जोंक] लोहे की प्रकार की अँकुड़ी जो पत्थर या लकड़ी के दो टुकड़ों को जोड़ने या एक साथ के लिए लगाई जाती है।

जोंधरी–स्त्री० [सं० जूर्ण] १. ज्वार। २. बाजरा। (क्व०)

जोंधैया*–स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।

जो–सर्व० [सं० यः] एक संबंध सर्वनाम जिसका प्रयोग पहले कही हुई बात अथवा पहले आई हुई संज्ञा, या पद के संबंध में कुछ और कहने पहले किया जाता है। जैसे–वह किताब

लौटा दीजिए।
[सं० यद्] यदि। अगर।
दे० 'जोवना'।
[सं० जाया] जोरू।
[सं० योनि] १. योनि।
=ज्योतिषी।
[सं० जोषण = जाँचना] १.
करना। २. जाँचना।
[हिं० जोखना] जोखने या
की क्रिया या भाव।
स्त्री० दे० 'जोखिम'।
स्त्री० दे० 'योषिता'।
[सं० जोषण] १. संकट
संभावनावाली स्थिति। झोंकी।
जोखिम उठाना या सहना=
काम करना, जिसमें अनिष्ट की संभा-
हो।
पदार्थ या कार्य जिसके कारण
आ सकती हो।
दे० 'जोखिम'।
पुं० [सं० योगंधर] शत्रु के
अस्त्र से अपना बचाव करने
युक्ति।
दे० 'योग'।
[सं० योग्य] को। के निकट। के
(पुरानी हिन्दी) जैसे–भइया
पुं० [हिं० जोग + ड़ा (प्रत्य०)]
हुआ योगी। पाखंडी। २. बहुत
योगी या साधु।
[सं० योग + वना
] १. यत्न से रखना। २. संचित
करना। ३. ध्यान रखना। ४.
। ५. जाने देना। ध्यान न
पूरा करना।
पुं० दे० 'जोगौटा'।

जोगानल–पुं० [सं० योगानल] योग-शक्ति के द्वारा उत्पन्न की जानेवाली अग्नि।

जोगिंदा–पुं० दे० 'योगींद्र'।

जोगिन–स्त्री० [सं० योगिनी] १. 'जोगी' का स्त्री०। २. साधुनी। ३. पिशाचिनी।

जोगिनी–स्त्री० दे० 'योगिनी'।

जोगिया–वि० [हिं० जोगी] १. जोगी सम्बन्धी। जोगी का। २. गेरू के रंग में रँगा हुआ। गैरिक। ३. एक प्रकार का रंग।

जोगी–पुं० [सं० योगी] [स्त्री० जोगिन] १. एक प्रकार के साधु जो सारंगी पर भजन गाकर भीख माँगते हैं। २. दे० 'योगी'।

जोगीड़ा–पुं० [हिं० योगी + ड़ा (प्रत्य०)] १. प्रकार का चलता गाना। २. गाने-बजानेवालों का विशेष प्रकार का दल।

जोगेश्वर–पुं० दे० 'योगीश्वर'।

जोगौटा–पुं० [सं० योगपट्ट, प्रा० जोग-उट्ट] वह चादर जो योगी लोग योग साधने के समय सिर से पैर तक ओढ़ते थे।

जोजन*–पुं० दे० 'योजन'।

जोट*–पुं० [सं० योटक] १. दो चीजों का जोड़ा या जोड़ी। २. साथी।

जोटा+–पुं० [सं० योटक] १. जोड़ा। युग। २. प्रतिपक्षी।

जोटिंग–पुं० [सं०] शिव।

जोटी[1]–स्त्री० दे० 'जोड़ी'।

जोड़–पुं० [सं० योग] १. कई संख्याओं को जोड़ने की क्रिया। (ऐडिशन) २. कई संख्याओं को जोड़ने से निकलनेवाली संख्या। योग। ठीक। (टोटल) ३. दो या अधिक अंगों, टुकड़ों, पुरजों या पदार्थों के जुड़ने का चिह्न या स्थान। सन्धि। (जॉएण्ट) ४. वह टुकड़ा जो किसी चीज में जुड़ा या लगा हो। ५. एक ही तरह की अथवा साथ-साथ काम में आनेवाली दो चीजें। जोड़ा। ६. बराबरी। समानता। ७. वह जो किसी की बराबरी का हो। जोड़ा। (मैच) ८. वे दो व्यक्ति या दल जो किसी

प्रतियोगिता में सम्मलित हों। (मैच) ९. एक बार में पहनने के सब कपड़ों का समूह। पूरी पोशाक। १०. दाँव-पेंच।

जोड़-तोड़—पुं० [हिं० जोड़ना + तोड़ना] १. दाँव-पेंच। छल-कपट। २. विशेष युक्ति या उपाय। तरकीब।

जोड़ती—स्त्री० दे० 'जोड़' १.।

जोड़न—स्त्री० दे० 'जामन'।

जोड़ना—स० [हिं० जोड़ + बाँधना या सं० युक्त] १. दो वस्तुओं को किसी प्रकार मिलाकर एक करना। २. किसी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित करना। ३. वस्तुएँ या सामग्री क्रम से रखना या लगाना। ४. संचित या एकत्र करना। इकट्ठा करना। जैसे—धन जोड़ना, कुनबा जोड़ना। ५. संख्याओं का योगफल निकालना। जोड़ लगाना। ६. वाक्यों या पदों की योजना करना। भद्दी कविता या तुक-बंदी करना। ७. (दीया या आग) जलाना।

जोड़वाना—स० हिं० 'जोड़ना' का प्रे०।

जोड़ा—पुं० [हिं० जोड़ना] [स्त्री० जोड़ी] १. एक ही तरह की दो चीजें। २. जूते। उपानह। ३. एक आदमी के पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। ४. स्त्री और पुरुष या नर और मादा का युग्म। ५. वह जो बराबरी का हो। जोड़।

जोड़ाई—स्त्री०[हिं० जोड़ना + आई(प्रत्य०)] १. जोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दीवार आदि बनाने में ईंटों पर ईंटे रखने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़ी—स्त्री० [हिं० जोड़ा] १. एक ही तरह की दो चीजें। जोड़ा। २. दो घोड़ों या दो बैलों का युग्म।

मुहा०—जोड़ी मिलाना = (क) बराबरी की चीज लाकर सामने रखना। (ख) तुलना करना। (ग) उपमा देना।

३. कसरत या व्यायाम करने के दोनों मुग्दर। ४. मँजीरा। (बाजा)

जोत—स्त्री० [हिं० जोतना] १. चमड़े वह तस्मा या मोटी रस्सी जो एक ओर जानेवाले जानवर के गले में और दूसरी खींची जानेवाली चीज में बँधी रहती २. वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले रहते हैं। ३. किसी की वह भूमि जोतने-बोनेवाले को कुछ विशिष्ट मिल गये हों। (होल्डिंग) † स्त्री० दे० 'ज्योति'।

जोतना—स० [सं० योजन या युक्त] गाड़ी, कोल्हू, हल आदि चलाने के उनके आगे घोड़े, बैल आदि बाँधना। जबरदस्ती किसी काम में लगाना। ३. में कुछ बोने से पहले हल चलाना।

जोता—पुं० [हिं० जोतना] १. बहुत शहतीर। २. वह जो हल जोतता हो। दे० 'जोत'।

जोताई—स्त्री०[हिं० जोतना + आई(प्र जोतने का काम, भाव या मजदूरी।

जोति—स्त्री० दे० 'ज्योति'।

जोतिक*—क्रि० वि० = जैसा।

जोती†—स्त्री० [हिं० जोतना] बोने योग्य भूमि।

जोधा†—पुं० = योद्धा।

जोनि*—स्त्री० = योनि।

जोन्ह(न्हाई)†—स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।

जोन्हैया*—स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।

जो-पै†—अव्य० [हिं० जो + पर] १. अगर। २. यद्यपि। अगरचे।

जोबन—पुं० [सं० यौवन] १. युवा यौवन-काल। २. युवावस्था का (विशेषतः स्त्रियों का)। ३. स्तन, तः युवती स्त्रियों का)। ४. किसी ऊपर से दिखाई पड़नेवाला शोभा। रौनक। बहार।

जोम—पुं० [अ० ज़ोम] १. उत्साह। २. जोश। आवेश। ३. मान। शेखी।

जोश-पुं० [फा०] १. उफान। उबाल। २. चित्त की प्रबल वृत्ति। मनोवेग। ३. सगे-संबंधियों में होनेवाले रक्त-संबंध की उत्कट भावना या आवेश।

पद-खून का जोश = प्रेम का वह आवेश जो अपने सगे-संबंधी के लिए हो।

जोशन-पु० [फा०] १. भुजाओं पर पहनने का एक गहना। २. जिरह-बख्तर।

जोशी-पुं० दे० 'जोषी'।

जोशीला-वि०[फा० जोश + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० जोशीली] जिसमें खूब जोश हो। आवेशपूर्ण। जोशवाला।

जोषित(ा)-स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी।

जोषी-पुं० [सं० ज्योतिषी] १. गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति। २. ज्योतिषी। (क्व०)

जोह†-स्त्री० [हिं० जोहना] १. जोहने की क्रिया या भाव। २. खोज। तलाश। ३. प्रतीक्षा। इन्तजार। ४. कृपा-दृष्टि।

जोहड़-पुं० दे० 'जौहड़'।

जोहन*-स्त्री० दे० 'जोह'।

जोहना-स० [सं० जुषण = सेवन] १. देखना। ताकना। २. पता लगाना। ढूँढ़ना। ३. प्रतीक्षा करना। रास्ता देखना।

जोहर†-पुं० दे० 'जौहड़'।

जोहार-स्त्री० दे० 'जुहार'। पुं० दे० 'जौहर'।

जोहारना†-अ० दे० 'जुहारना'।

जौं†-अव्य० [सं० यदि] यदि। जो। क्रि० वि० दे० 'ज्यों'।

जौरा-भौंरा-पुं० [हिं० भुँइहरा] राज-महलों किलों आदि में खजाना रखने का तहखाना या तल-घर।

जौरे*-क्रि० वि० [फा० जवार] पास। निकट।

जौ-पुं० [सं० यव] १. गेहूँ की तरह का एक पौधा जिसके दानों का आटा बनता है। २. छः राई की एक तौल।

+अव्य० [सं० यद्] यदि । अगर ।
+क्रि० वि० जब ।

जौक*–पुं० [तु० जूक़] १. झुंड । जत्था । २. सेना । फ़ौज ।

जौन+–सर्व०, वि० [सं० यः] जो ।
*पुं० दे० 'यवन' ।

जौ-पै+–अव्य० [हिं० जौ + पै] यदि ।

जौबति*–स्त्री० दे० 'युवती' ।

जौहड़+–पुं० [पहलवी आबे-जोहर = पवित्र जल] १. वह गड्ढा जिसमें बरसात का जल भर जाता है । २. छोटा ताल ।

जौहर–पुं० [फ़ा० गौहर का अरबी रूप] १. रत्न । बहुमूल्य पत्थर । २. सार वस्तु । सारांश । तत्व । ३. धारदार हथियार की चमक । ओप । पानी । ४. विशेषता । खूबी । ५. उत्तमता । श्रेष्ठता ।
पुं० [हिं० जीव-हर] राजपूतों की एक प्रथा जिसमें अपने नगर या गढ़ का पतन निश्चित होने पर स्त्रियाँ और बच्चे दहकती हुई चिता में जल मरते थे । ७. सम्मान की रक्षा के लिए होनेवाली आत्म-हत्या ।
पुं० दे० 'जौहड़' ।

जौहरी–पुं० [फ़ा०] १. रत्न परखने या बेचनेवाला । रत्न-पारखी या विक्रेता । २. किसी वस्तु के गुण-दोष परखनेवाला । पारखी ।

ज्ञ–ज और ञ के योग से बना हुआ एक संयुक्त अक्षर जो अब एक स्वतंत्र वर्ण या अक्षर के रूप में माना जाता है । हिन्दी में इसका उच्चारण 'ग्यँ', मराठी में 'द्न्य' और गुजराती में 'ज्ञ' होता है । प्रत्यय के रूप में यह शब्दों के अंत में लगकर ज्ञाता या जाननेवाला का अर्थ देता है । जैसे—बहुज्ञ, विशेषज्ञ ।

ज्ञप्त–वि० [सं०] जाना हुआ ।

ज्ञप्ति–स्त्री० [सं०] १. किसी को कोई बात जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव । २. वह बात जो किसी को जतलाई या बतलाई जाय । (इन्फ़ॉरमेशन) ३.
कारी । ४. बुद्धि ।

ज्ञात–वि० [सं०] जाना हुआ ।

ज्ञात यौवना–स्त्री० [सं०] वह
नायिका जो यह समझती हो कि मेरा
यौवन-काल आ गया है ।

ज्ञातव्य–वि० [सं०] १. जो जाना
सके । ज्ञेय । बोध-गम्य । २. जिसे
हो । जानने योग्य । (विषय या बात)
जो दूसरों को जतलाया जाने को हो ।

ज्ञाता वि० [सं० ज्ञातृ] [स्त्री०
१. ज्ञान रखनेवाला । जानकार ।

ज्ञाति–स्त्री० दे० 'जाति' ।

ज्ञातृत्व–पुं० [सं०] जानकारी ।

ज्ञान–पुं० [सं०] [वि० ज्ञानीय,
ज्ञातव्य] १. वस्तुओं और विषयों
जानकारी जो मन या विवेक को हो
बोध । जानकारी । (नॉलेज) २.
बात या तत्त्व की पूरी जानकारी ।

ज्ञान-योग–पुं० [सं०] ज्ञान द्वारा
प्राप्त करने का उपाय या साधन ।

ज्ञानवान्–वि० [सं०] ज्ञानी ।

ज्ञान-वृद्ध–पुं० [सं०] वह जो अपने
अधिक ज्ञान या पांडित्य के कारण
और महान् हो ।

ज्ञानी–वि० [सं० ज्ञानिन्] १.
हो । ज्ञानवान् । २. ब्रह्म-ज्ञानी ।

ज्ञानेन्द्रिय–स्त्री० [सं०] वे पाँच
जिनसे विषयों का ज्ञान होता है ।
आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ।

ज्ञापक–वि० [सं०] जतानेवाला ।

ज्ञापन–पुं० [सं०] [वि० ज्ञापित,
जताने या बताने का कार्य या भाव ।

ज्ञापित–वि० [सं०] जताया हुआ ।

ज्ञेय–वि० [सं०] १. जानने योग्य
जो जाना जा सके ।

ज्या–स्त्री० [सं०] १. धनुष की डोरी
२. किसी चाप के एक सिरे से दूसरे

१. पृथ्वी ।
[फ़ा०] १. अधिकता ।
१. अत्याचार । जबरदस्ती ।
[फ़ा०] अधिक । बहुत ।
[फ़ा० ज़ियान] १. हानि ।
२. घाटा । टोटा ।
दे० 'जिलाना' ।
[सं०] गणित का वह
पिंडों की नाप-जोख, रेखा,
का विवेचन होता है। रेखा-
)।
दे० 'जिलाना' ।
[हिं० जिलाना] [स्त्री०
देने या जिलानेवाला ।
दे० 'जिलाना' ।
दे० 'ज्यों' ।
[सं०] [भाव० ज्येष्ठता, स्त्री०
। जेठा । २. वृद्ध । बड़ा-
मर्यादा, वय आदि में किसी
बढ़कर । (सीनियर)
का महीना । २. परमेश्वर ।
[सं०] १. ज्येष्ठ होने का
मर्यादा, वय आदि में किसी
होने की क्रिया या भाव ।
)
[सं०] १. अठारहवाँ नक्षत्र जो
है। २. अपने पति की सबसे
स्त्री । ३. मध्यमा उँगली ।
।
[सं० यः + इव] १. जिस
। जिस तरह या ढंग से ।
= किसी न किसी प्रकार।
। जिस समय ।
= (क) जिस क्रम से ।
मात्रा में । जितना ।
मानो । जैसे ।
[सं० ज्योतिस्] १. प्रकाश ।
। लौ । ३. अग्नि । ४.

सूर्य । ५. दृष्टि । ६. परमात्मा ।

ज्योतिक-पुं० = ज्योतिषी ।

ज्योतित-वि० [सं० ज्योति] ज्योति से भरा हुआ । प्रकाशमान् । चमकता हुआ ।

ज्योतिमान-वि० दे० 'ज्योतिर्मय' ।

ज्योतिरिंगण-पुं० [सं०] जुगनूँ ।

ज्योतिर्मय-वि० [सं०] [स्त्री० ज्योतिर्मयी] प्रकाशमय। जगमगाता या चमकता हुआ ।

ज्योतिर्मान-वि० दे० 'ज्योतिर्मय' ।

ज्योतिर्लिंग-पुं० [सं०] १. शिव । २. शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं ।

ज्योतिर्विद-पुं० = ज्योतिषी ।

ज्योतिष-पुं० [सं०] वह विद्या जिससे ग्रहों, नक्षत्रों आदि की दूरी, गति आदि जानी जाती है ।

विशेष-यह गणित (एस्ट्रॉनॉमी) और फलित (एस्ट्रॉलोजी) दो प्रकार का होता है ।

ज्योतिषी-पुं० [सं० ज्योतिषिन्] ज्योतिष शास्त्र, विशेषतः फलित ज्योतिष का ज्ञाता । दैवज्ञ ।

ज्योतिष्मान-वि० [सं०] [स्त्री० ज्योतिष्मती] चमकता हुआ । प्रकाशमान । पुं० सूर्य का एक नाम ।

ज्योत्स्ना-स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा का प्रकाश । चाँदनी । २. चाँदनी रात ।

ज्योनार-स्त्री० [सं० जेमन = खाना] १. बहुत-से लोगों का साथ बैठकर होनेवाला भोजन । भोज । दावत । २. पका हुआ भोजन । रसोई ।

ज्योरी†-स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी ।

ज्योहत(हर)†-पुं० १. दे० 'आत्महत्या' । २. दे० 'जौहर' (राजपूतों की एक रसम) ।

ज्यौ*-पुं० दे० 'जीव' । २. दे० 'जी' (मन) ।

ज्यौतिष-वि० [सं०] ज्योतिष-संबंधी ।

ज्वर-पुं० [सं०] शरीर की अस्वस्थता का सूचक ताप । बुखार ।

ज्वरा*–स्त्री० [सं० जरा] मृत्यु।

ज्वर्रा*–दे० 'जुर्रा' (पक्षी)।

ज्वलंत–वि० [सं०] १. प्रकाशमान्। चमकता हुआ। २. अत्यन्त स्पष्ट।

ज्वलन–पुं० [सं०] १. जलने की क्रिया या भाव। २. जलन। दाह। ३. अग्नि। आग।

ज्वलित–वि० [सं०] १. जलता हुआ। २. चमकता हुआ। ३. उज्वल। स्वच्छ।

ज्वार–स्त्री० [सं० यवनाल] १. एक प्रकार का पौधा जिसके दानों की गिनती अनाजों में होती है। २. समुद्र के जल का खूब लहराते हुए आगे बढ़ना या ऊपर उठना। 'भाटा' का उलटा।

*स्त्री० दे० 'ज्वाल'।

ज्वार-भाटा–पुं० [हिं० ज्वार + भाटा] समुद्र के जल का खूब लहराते हुए आगे बढ़ना और पीछे हटना, जो चन्द्रमा औ सूर्य के आकर्षण से होता है। (इसके चढ़ को 'ज्वार' और उतार को 'भाटा' कहते है (टाइडल वाटर्स)

ज्वालक–वि० [सं०] प्रज्वलित करने जलानेवाला।

पुं० दीपक या लम्प का वह भाग जो के जलनेवाले अंश के नीचे रहता है जिसके कारण दीप-शिखा नीचे के तेल नहीं पहुँचने पाती। (बर्नर)

ज्वाला–स्त्री० [सं०] १. अग्नि- लपट। २. विष आदि की जलन या ३. बहुत अधिक गरमी। ताप।

ज्वालामुखी(पर्वत)–पुं० [सं०] पर्वत जिसकी चोटी के गड्ढे में से धु राख या आग बराबर अथवा समय पर निकला करती है। (वॉल्केनो)

झ

झ–देव-नागरी वर्णमाला का नवाँ व्यंजन और चवर्ग का चौथा अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

झंकना–अ० दे० 'झीखना'।

झंकार–स्त्री० दे० 'झनकार'।

झंकारना–अ०, स० दे० 'झनकारना'।

झंकृत–वि० [सं०] जिसमें झनकार हुई हो।

झंकृति–स्त्री० दे० 'झनकार'।

झंखना–अ० दे० 'झीकना'।

झंखाड़–पुं० [हिं० झाड़ का अनु०] १. घनी या काँटेदार झाड़ी या पौधा। २. व्यर्थ की और रद्दी चीजों का समूह।

झँगुली*–स्त्री० दे० 'झगा'।

झंझट–स्त्री० [अनु०] बखेड़ा। प्रपंच।

झंझर–स्त्री० [सं० अलिंजर] पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का छोटा बरतन।

झंझरा–वि० [अनु०] [स्त्री० झँझरी] जिसमें बहुत-से छोटे छोटे छेद हों।

झँझरी–स्त्री० [हिं० झर-झर से अ १. लकड़ी, लोहे आदि में बनाये हुए से छोटे-छोटे छेदों का समूह। जाली। झरोखा।

झंझा–स्त्री० [सं०] वह तेज आँधी साथ पानी भी बरसता हो।

झंझानिल (वात)–पुं० दे० 'झंझा'

झँझोड़ना–स० [सं० झंझन] कोई झटके से इस तरह हिलाना कि वह जाय। झकझोरना।

झंडा–पुं० [सं० जयंत] [स्त्री० झंडी] वह तिकोना या चौकोर जिसका एक सिरा डंडों में लगा और जिसका व्यवहार सत्ता, संकेत आदि सूचित करने के लिए होता है। निशान। ध्वजा।

मुहा०–झंडा गाड़ना या फहरा

अपना अधिकार करके
वहाँ झंडा लगाना।
(किसी के) **झंडे के नीचे**
में आकर अनुयायी बनना।
निशान = विशेष प्रकार की
आएँ।
-पुं० [हिं० झंडा + सं०
] झंडे के आगे सिर झुकाकर
और सम्मान करना।
)
हिं० झंडा] छोटा झंडा।
[हिं० झंड + उला (प्रत्य०)]
अभी मुंडन-संस्कार न हुआ
) २. घनी पत्तियोंवाला।
)
-पुं० [हिं० झंडा + सं०
झंडा फहराने की क्रिया या रस्म
)
] उछाल। फलाँग।
] घोड़ों के गले का एक गहना।
दे० झँपना।
[सं० झंप] १. आड़
। २. उछलना। कूदना।
से जा पहुँचना। ४. टूट
। ५. झेंपना।
[सं० झंप] पहाड़ी सवारी के
की खटोली। झप्पान।
[सं० झंप] ढका या छिपा
।
[हिं० झाँपा] [स्त्री० अल्पा०
] छोटा झाँपा या झाबा। टोकरी।
[देश०] गुच्छा।
-वि० [हिं० झाँवला] झाँवले
कुछ काला।
अ० [हिं० झाँवला] १. कुछ
। २. कुम्हलाना। ३. फीका
।
दे० 'झाँवाँ'।

झँवाना–अ० [हिं० झाँवाँ] १. झाँवें के रंग का या कुछ काला हो जाना। २. आग का मन्द होकर बुझने को होना। ३. कुम्हलाना। मुरझाना। ४. फीका या मन्द होना।
स० १. झाँवें के रंग का या कुछ काला कर देना। २. चमक या आभा घटाना। ३. झाँवें से रगड़ना या रगड़वाना।

झँवैला*–वि०[हिं० झाँवाँ + ऐला(प्रत्य०)] [स्त्री० झँवैली] झाँवें से रगड़ा हुआ। (पैर आदि)।

झँसना–स० [अनु०] १. सिर या तलुए आदि पर कोई चिकना पदार्थ रगड़ना। २. धोखे से धन आदि ले लेना।

झई*–स्त्री० दे० 'झाईं'।

झक–स्त्री० [अनु०] पागलों की-सी धुन। सनक। खब्त।
वि० चमकीला। उज्वल।
*स्त्री० दे० 'झख'।

झक-झक–स्त्री० [अनु०] १. व्यर्थ की कहा-सुनी। हुज्जत। तकरार। २. बकवाद।

झकझोर–स्त्री० [अनु०] १. झूलने या बारबार हिलने-डोलने की क्रिया या भाव। २. झटका।

झकझोरना–स० दे० 'झँझोड़ना'।

झकझोरा–पुं० [अनु०] झटका।

झकझोलना–स० [अनु०] जोर जोर से झटके देना। झँझोड़ना।
अ० १. बार बार हिलना। २. काँपना।

झकना–अ० [अनु०] १. बकवाद करना। २. क्रोध में आकर अनुचित बात कहना।

झका*–वि० [हिं० झक] चमकीला।

झकाझक*–वि० [अनु०] खूब साफ और चमकता हुआ। उज्वल।

झकुराना*–अ० [हिं० झकोरा] झकोरा लेना। झूमना।

झकोर*–स्त्री० [अनु०] १. हवा का झोंका। २. झटका। धक्का। ३. लहर।

झकोरना–अ० [अनु०] हवा का झोंका

मारना।

झकोरा–पुं० [अनु०] हवा का झोंका।

झक–वि० [अ०] साफ और चमकता हुआ। स्त्री० दे० 'झक'।

झक्कड़–पुं० [अनु०] तेज आँधी। वि० दे० 'झक्की'।

झक्की–वि० [हिं० झक] जिसे कुछ झक या सनक हो। सनकी।

झक्खना*–अ० दे० 'झीखना'।

झख–स्त्री० [हिं० झीखना] झीखने की क्रिया या भाव।

मुहा०–झख मारना = व्यर्थ के कामों में समय नष्ट करना।

झखना–अ० दे० 'झीखना'।

झखमारी–स्त्री० [हिं० झख + मारना] झख मारने की क्रिया या भाव।

झखी*–स्त्री० [सं० झष] मछली।

झगड़ना–अ० [अनु०] झगड़ा करना।

झगड़ा–पुं० [हिं० झक-झक से अनु०] किसी बात पर होनेवाली कहा-सुनी या विवाद। लड़ाई। हुज्जत। तकरार।

झगड़ालू–वि० [हिं० झगड़ा] बात-बात पर झगड़नेवाला। कलह-प्रिय। लड़ाका।

झगड़ू–वि० दे० 'झगड़ालू'।

झगरा*–पुं० = झगड़ा।

झगरी*–स्त्री० दे० 'झगड़ालू'।

झगरू*–वि० दे० 'झगड़ालू'।

झगा०–पुं० [?] बच्चों के पहनने का एक प्रकार का कुरता।

झगुली*–स्त्री० दे० 'झगा'।

झज्झर–स्त्री० दे० 'झंझर'।

झझक–स्त्री०[हिं० झझकना] १. झझकने की क्रिया या भाव। २. झुँझलाहट। ३. रह रहकर आनेवाली दुर्गंध। ४. रह रहकर होनेवाला पागलपन का हलका दौरा।

झझकन–स्त्री० दे० 'झझक'।

झझकना–अ० [अनु०] १. डर या चौंककर अकस्मात रुक जाना। ठिठकना। भड़कना। झुँझलाना।

झझकारना–स० [अनु०] [संज्ञा झझ- कार] १. डाँटना। २. दुरदुराना।

झट–क्रि० वि० [सं० झटिति] तत्काल। उसी समय। तुरंत। झट-पट।

झटकना–स० [हिं० झट] १. इस प्र- झोंके से हिलाना कि गिर पड़े। जोर झटका या झोंका देना। २. धोखा देकर जबरदस्ती किसी से कुछ ले लेना। ऍठ अ० रोग या चिन्ता से क्षीण होना।

झटका–पुं० [अनु०] १. झटकने की क्रि- या भाव। २. हलका धक्का। झोंका। ३ मांस खाने के लिए पशु-पक्षी आदि वह प्रकार जिसमें उसे हथियार के एक ही वार से काट डाला जाता है। ४. आपद्, रोग, शोक आदि का आघात।

झटकारना–स० दे० 'झटकना'।

झट-पट–अव्य० [हिं० झट + अनु०] बहुत शीघ्र। तुरंत। तत्काल।

झटिति*–क्रि० वि० [सं०] १. झ चट-पट। २. बिना समझे-बूझे।

झड़–स्त्री० दे० 'झड़ी'।

झड़कना–स० दे० 'झिड़कना'।

झड़झड़ाना–स० १. दे० 'झिड़कना'। २. दे० 'झँझोड़ना'।

झड़न–स्त्री० [हिं० झड़ना] १. झड़ने क्रिया या भाव। २. झड़ी हुई चीज।

झड़ना–अ० [सं० क्षरण] किसी चीज छोटे छोटे अंगों या अंशों का कट या कर गिरना। २. झाड़ा या साफ किया

झड़प–स्त्री० [अनु०] थोड़ी कहा-सु सामान्य झगड़ा या तकरार।

झड़पना–अ० [अनु०] १. वेग से पर आक्रमण करना। २. दे० 'झटकना'।

झड़पान–स्त्री० दे० झड़प।

झड़-बेरी–स्त्री० [हिं० झाड़ + बेर] जंगली बेर।

झड़वाना–उ० हिं० 'झाड़ना' का प्रे०।

[अनु०] मुठ-भेड़ । झड़प ।
चट-पट ।
वि० [अनु०] लगातार ।
[हिं० झड़ना] १. किसी
कुछ झड़ने की क्रिया ।
लगातार होनेवाली वर्षा ।
सी बातें कहते जाना या
। ४. लगातार होती रहने
।
अनु०] झन झन शब्द ।
[अनु०] १. झनकार का
२. क्रोध आदि में हाथ-पैर
दे० 'झीखना' ।
-स्त्री० [हिं० झनक + वात]
वात-रोग ।
[सं० झंकार] १. झन झन
झनाहट । २. झींगुर आदि
बोलने का शब्द ।
-अ०, स० [हिं० झनकार]
होना या करना ।
-अ०,स० [अनु०] झन झन
या करना ।
[?] एक प्रकार का बाजा ।
-स्त्री० [अनु०] झंकार का शब्द ।
झन शब्द के साथ ।
दे० 'झीना' ।
-स्त्री० [हिं० झनझनाना + आहट
] झनझनाने की क्रिया या भाव ।
वि० [सं० झंप] जल्दी से ।
-स्त्री० [हिं० झपकना] १. पलक
का समय । २. झपकी ।
-अ० [सं० झंप] १. पलक का
। २. झपकी लेना । ऊँघना ।
-स० [अनु०] पलक गिराना ।
-स्त्री० [अनु०] १. हलकी नींद ।
झपकने की क्रिया या भाव ।
-वि० [हिं० झपकना]. [स्त्री०
] नींद या नशे से झपकता
हुआ (नेत्र) ।

झपट–स्त्री० [सं० झंप] १. झपटने की क्रिया या भाव । २. दे० 'झड़प' ।

झपटना–अ० [सं० झंप] आक्रमण करने या चलने के लिए तेजी से आगे बढ़ना ।

झपटान–स्त्री० [हिं० झपटना] झपटने की क्रिया या भाव । झपट ।

झपटाना–स० हिं० 'झपटना' का प्रे० ।

झपटानी–पुं० [हिं० झपटना] एक प्रकार का लड़ाई का हवाई जहाज, जो झपटकर शत्रुओं के हवाई जहाजों पर आक्रमण करता है ।

झपट्टा–पुं० दे० 'झपट' ।

झपताल–पुं० [सं० झंप + ताल] संगीत में एक प्रकार का ताल ।

झपना–अ० [अनु०] १. (पलकों का) गिरना । आँखें झपकना । २. झुकना । ३. झेंपना । ४. हैरान या परेशान होना । जैसे—लपना-झपना ।

+पुं० [स्त्री० अल्पा० झपनी] किसी चीज के ऊपर का आवरण । ढकना ।

झपनी–स्त्री० [हिं० झाँपना] झाँपे, पिटारी आदि के ऊपर का ढकना ।

झपलैया*–स्त्री० दे० 'झँपोला' ।

झपाका–पुं० [हिं० झप] शीघ्रता ।

क्रि० वि० झट से । चट-पट ।

झपाटा–पुं० [हिं०झपट] झपट । चपेट ।

झपाना–स० [हिं० झपना] १. मूँदना । वन्द करना (पलकें) । २. झुकाना ।

झपित–वि० [हिं० झपना] १. झपका या मुँदा हुआ । २. नशे या नींद से झपकता हुआ (नेत्र) । ३. लज्जित ।

झपेट–स्त्री० दे० 'झपट' ।

झपेटना–स० [अनु०] १. आक्रमण करके दबा लेना । दबोचना । २. झिड़कना ।

झपेटा–पुं० [अनु०] १. चपेट । झपट । २. भूत-प्रेतादि की बाधा । ३. झिड़की ।

झप्पान–पुं० दे० 'झपान' ।

झबरा–वि० [अनु०] [स्त्री० झबरी] बहुत लम्बे लम्बे बिखरे हुए बालोंवाला ।

झबरीला–वि० दे० 'झबरा' ।

झबा*–पुं० दे० 'झब्बा' ।

झबार*–पुं० = झगड़ा ।

झबिया–स्त्री० [हिं० झब्बा] छोटा झब्बा ।

झबूकना*–अ० दे० 'चौंकना' ।

झबूका*–पुं० [?] एक-दम से चौंक उठने की क्रिया या भाव ।

झब्बा–पुं० [अनु०] तारों या सूतों आदि का गुच्छा या फुँदना जो कपड़ों या गहनों में शोभा के लिए लगाते हैं ।

झमक–स्त्री० [अनु०] १. 'चमक' का अनुकरण । २. प्रकाश । उजाला । ३. झमझम शब्द । ४. नखरे या ठसक की चाल ।

झमकना–अ० [हिं० झमक] १. रह-रहकर चमकना । २. झमझम शब्द या झनकार होना । ३. लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना ।

झमकाना–स० [हिं० झमकना का स०] १. चमकाना । २. गहने या हथियार आदि दिखाने के लिए बजाना और चमकाना ।

झमकार*–वि० [हिं० झमझम] बरसनेवाला (बादल) ।

झमकीला–वि० [हिं० झमकना] १. चमकीला । २. चंचल ।

झमझम–स्त्री० [अनु०] १. घुँघरू आदि के बजने का शब्द । छम-छम । २. पानी बरसने का शब्द ।

क्रि० वि० १. झमझम शब्द के साथ । २. चमक-दमक के साथ । झमाझम ।

झमना*–अ० [अनु०] १. झुकना । २. दबना ।

झमरना†–अ० [अनु०] मिलकर एक जगह होना । इकठ्ठा या एकत्र होना ।

झमा*–पुं० दे० 'झाँवाँ' ।

झमाका–पुं० [अनु०] १. पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द । २. ठसक । नखरा ।

झमाझम–क्रि० वि० [अनु०] कांति चमक-दमक के साथ ।

झमाना–अ० दे० 'झँवाना' ।

झमार†–पुं० [?] हवा, वर्षा आदि हलका झोंका ।

झमेला–पुं० [अनु० झाँव झाँव] बखेड़ा । झंझट । झगड़ा । २. भीड़

झमेलिया–पुं० [हिं० झमेल+ (प्रत्य०)] झमेला करनेवाला ।

झर–स्त्री० [सं०] १. पानी का सोता । २. समूह । ३. लगातार वृष्टि ।

*स्त्री० १. दे० 'झाल' । २. दे०

झरक*–स्त्री० दे० 'झलक' ।

झरकना*–अ० १. दे० 'झलकना' । दे० 'झिड़कना' ।

झरझर–स्त्री० [अनु०] जल के बरसने अथवा हवा के चलने का शब्द ।

झरझराना–स० [हिं० झरझर] झरझर शब्द के साथ गिराना । 'झड़झड़ाना' ।

झरन–स्त्री० [हिं० झरना] १. क्रिया या भाव । २. दे० 'झड़न' ।

झरना*–अ० [सं० क्षरण] १. 'झड़ना' । २. ऊँची जगह से पानी या कोई चीज लगातार नीचे गिरना ।

पुं० [सं० झर] १. ऊँचे स्थान से वाला जल-प्रवाह । २. लगातार पानी की छोटी धारा । सोता । चश्मा ।

पुं० [सं० क्षरण] १. अनाज एक प्रकार की छलनी । २. लम्बी झँझरीदार चिपटी कलछी । पौना ।

वि० [स्त्री० झरनी] झरनेवाला ।

झरप*–स्त्री० [अनु०] १. झोंका । २. वेग । तेजी । ३. चिक । ४. दे० 'झड़प' ।

झरपना*–अ० [अनु०] १. मारना । २. दे० 'झड़पना' ।

[illegible], स० दे० 'झुलसना'।

[illegible] [अनु०] झरझर शब्द [illegible]।

[illegible] दे० 'झरझराना'।

[illegible] वि० [अनु०] १. झरझर [illegible]। २. लगातार। बराबर। [illegible] जोर या तेजी से।

[illegible] [!] १. बिलकुल। २. [illegible] कुल।

[illegible] [सं० झरप] चिलमन।

[illegible] [हिं० झरना] १. पानी का [illegible]। २. वह दैनिक कर जो [illegible] में सौदा रखकर बेचनेवालों [illegible] है। ३. दे० 'झड़ी'।

[illegible] [अनु० झरझर+गौखा] [illegible] आने के लिए दीवारों में [illegible]दार छोटी खिड़की। गवाक्ष।

[illegible] [सं० ज्वल=ताप] १. दाह। [illegible] उत्कट इच्छा। उग्र कामना। [illegible] गुस्सा।

[illegible] [सं० झल्लिका] १. चमक। [illegible] आभा। २. आकृति का आभास [illegible]। ३. बहुत थोड़े समय के [illegible] एक बार जरा-सा होनेवाला सामना [illegible]। ४. वह प्रधान रंगत या आभा [illegible] चित्र में व्याप्त हो।

[illegible]-अ० [सं० झल्लिका] १. चमक- [illegible]। २. कुछ कुछ प्रकट होना। आभास [illegible]।

[illegible]-स्त्री० दे० 'झलक'।

[illegible]-पुं० दे० 'फफोला'।

[illegible]-स० हिं० 'झलकना' का स०।

[illegible]-स्त्री० [हिं० झलकना] चमक। [illegible] रह-रहकर चमकते हुए प्रकाश [illegible] के साथ।

[illegible]-अ० = चमकना। [illegible] = चमकना।

झलझलाहट-स्त्री० [हिं० झलझलाना + आहट (प्रत्य०)] झलझलाने की क्रिया या भाव।

झलना-स० [हिं० झलझल (हिलना)] हवा करने के लिए पंखा या और कोई चीज हिलाना।

अ० १. इधर-उधर हिलाना। २. झेलना।

अ० हिं० 'झालना' का अ० रूप।

झलमल-पुं० [सं० ज्वल = दीप्ति] १. अँधेरे में रह-रहकर होनेवाला हलका या सूक्ष्म प्रकाश। २. चमक-दमक।

क्रि० वि० दे० 'झलझल'।

झलमलाना-अ० [हिं० झलमल] १. रह-रहकर चमकना। चमचमाना। २. प्रकाश का हिलना-डोलना।

स० प्रकाश को हिलाना-डुलाना।

झलरा†-पुं० दे० 'झालर'।

झलराना†-अ० [हिं० झालर] झालर के रूप में या यों ही फैलकर छाना।

स० झालर के रूप में लगाना या बनाना। झालर का रूप देना।

झला†-पुं० [हिं० झड़] १. हलकी वर्षा। झड़ी। २. झालर। ३. पंखा। ४. समूह।

झलाऊ-वि० [हिं० झलना या झोल] ढीला-ढाला और लहराता हुआ। झोलदार। (कपड़ा)

झलाझल-वि० [अनु०] चमकता हुआ।

पुं० एक प्रकार का चमकीला कपड़ा।

झलाबोर-पुं० [हिं० झलमल] १. कलाबत्तू का बुना हुआ साड़ी या दुपट्टे का चौड़ा आँचल। २. कारचोबी।

वि० चमकीला।

झलामल-वि० [अनु०] चमकनेवाला। चमकीला।

स्त्री० चमक। दीप्ति।

झल्ल-स्त्री० [अनु०] पागलपन।

झल्ला-पुं० [हिं० झल्लाना] [स्त्री० अल्पार्थक

झल्ली] १. बड़ा टोकरा। झाबा। २. वर्षा। वृष्टि। ३. बौछार।

+[हिं० झल] [स्त्री० झल्ली] १. पागल। २. मूर्ख।

झल्लाना–अ० [हिं० झल] क्रुद्ध या खिन्न होकर बोलना। खिजलाना।

झवा*–पु० दे० 'झावाँ'।

झष–पुं० [सं०] १. मछली। २. मगर। स्त्री० दे० 'झख'।

झषकेतु–पुं० [सं०] कामदेव। मदन।

झहनना*–अ० [अनु०] १. सन्नाटे में आना। २. रोएँ खड़े होना। रोमांच होना। ३. झन-झन शब्द होना।

झहरना*–अ० [अनु०] १. झरझर शब्द करना। २. शिथिल या ढीला होना। ३. झल्लाना। ४. हिलना।

झहराना*–अ० दे० 'झहरना'। स० हिं० 'झहरना' का स०।

झाँई–स्त्री० [सं० छाया] १. परछाईं। छाया। २. अंधकार। अंधेरा। ३. धोखा। छल।

मुहा०–झाँई देना या बताना = इधर-उधर की बातें कहकर धोखा देना।

४. रक्त-विकार से पड़नेवाले हलके काले धब्बे। ५. किसी प्रकार की काली छाया या हलका दाग। ६. आभा। झलक।

झाँक–स्त्री० [हिं० झांकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। जैसे-ताक-झाँक। २. झलक।

झाँकना–अ० [सं० अध्यक्ष] १. आड़ में से या इधर-उधर से कुछ झुक या छिपकर देखना।

झाँकनी*–स्त्री० दे० 'झाँकी'।

झाँका–पुं० दे० 'झरोखा'।

झाँकी–स्त्री० [हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। २. दर्शन। अवलोकन। ३. दृश्य। ४. झरोखा।

झाँखना†–अ० दे० 'झीखना'।

झाँखर–पुं० दे० 'झंखाड़'।

झाँझ–स्त्री० [झनझन से अनु०] १. की तरह के गोलाकार पीतल टुकड़ों का पूजन आदि के समय बजाया जाता है। २. क्रोध। गुस्सा। ३. पाजीपन। ४. दे० 'झाँझन'।

झाँझड़ी†–स्त्री० दे० 'झाँझन'।

झाँझन–स्त्री० [अनु०] पैर में का एक गहना। पैजनी। पायल।

झाँझर†–स्त्री० [अनु०] १. पैजनी। २. छलनी।

वि० १. पुराना। जर्जर। २. दे०

झाँझरी–स्त्री० दे० 'झाँझ'।

झाँझिया–पुं० [हिं० झाँझ] झाँझ छैना बजानेवाला।

झाँप–स्त्री० [हिं० झाँपना] १. कोई चीज ढाँकी जाय। ऊपरी २. झपकी। ३. कान का एक गहना।

झाँपना–स० [सं० उत्थापन] १. करना। आड़ में करना। ढक झेंपना। लजाना। शरमाना। ३.

झाँपा–पु० [हिं० झाँपना] [स्त्री० झाँपी] टोकरा। दौरा।

झाँवँ झाँवँ–स्त्री० [अनु०] १. बकबक। २. हुज्जत। तकरार।

झाँवना*–स० दे० 'झँवाना'।

झाँवरा–वि० दे० 'झाँवला'।

झाँवला–वि० [सं० श्यामल] १. के रंग का। कुछ कुछ काला। २. या कुम्हलाया हुआ। ३. मैला। ४. मन्द। धीमा।

झाँवली–स्त्री० [हिं० छाँव = छाया] झलक। २. आँख से किया हुआ कनखी।

झाँवाँ–पुं० [सं० झामक] जली जिससे रगड़कर पैर साफ करते हैं।

पुं० दे० 'झाँसा'।

झाँसना†–स० दे० 'झँसना'।

[सं० अभ्यास] बहकाने की
। दम-बुत्ता ।
-पट्टी = बातें बनाकर दिया
।
[सं० उपाध्याय] १. मैथिल
। ओझा । २. गुजराती
वर्ग की उपाधि ।
[हिं० गाज] फेन । गाज ।
दे० 'झगड़ा' ।
= जहाज ।
[सं० झाट] १. वह छोटा पेड़
लियाँ जमीन के बहुत पास से
चारों ओर फैलती हैं । २. इस
रोशनी करने का शीशे का वह
छत में लटकाया या जमीन
रहता है ।
झाड़-फानूस । (देखो)
[हिं० झाड़ना] १. झाड़ने की
भाव । २. फटकार । डाँट-डपट ।
पढ़कर झाड़ने या फूँकने की क्रिया ।
झाड़-फूँक ।
-पुं० [हिं० झाड़ + खंड]जंगल ।
-झंखाड़-पुं० [हिं० झाड़ + झंखाड़]
या व्यर्थ के पेड़ पौधों का
। २. निकम्मी और टूटी-फूटी चीजें ।
-वि० [हिं० झाड़ + फा० दार
] १. घनी डालियों या शा-
(वृक्ष) । २. कँटीला ।
-स्त्री० [हिं० झाड़ना] १. वह जो
पर निकले । २. वह कपड़ा जिससे
झाड़ी या साफ की जाती है । (डस्टर)
-स० [सं० शरण या शायन] १.
पड़ी हुई चीज झटके से हटाना या
। २. दूर करना । हटाना । ३.
योग्यता दिखलाने के लिए गढ़-गढ़कर
करना ।
[सं० क्षरण] १. किसी चीज पर पड़ी
हटाने के लिए उसे उठाकर झटका देना या उसपर झाड़ देना । २. किसी चीज पर पड़ी या लगी हुई कोई दूसरी चीज़ झटके से गिराना । झटकारना । ३. किसी से धन ऐंठना । झटकना । ४. रोग या प्रेत-बाधा दूर करने के लिए मंत्र पढ़कर फूँकना । ५. फटकारना । डाँटना । ६. प्रहार करने के लिए चलाना । जैसे—हाथ झाड़ना, तलवार झाड़ना ।

झाड़-फानूस—पुं० [हिं० झाड़ + फा० फानूस] शीशे के झाड़, हाँड़ियाँ आदि जो छत में रोशनी और शोभा के लिए टाँगे जाते हैं ।

झाड़-फूँक—स्त्री० [हिं० झाड़ना + फूँकना] रोग या भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर करने के लिए मंत्र-पढ़कर झाड़ना-फूँकना ।

झाड़ा—पुं० [हिं० झाड़ना] १. झाड़-फूँक २. तलाशी । ३. मल । गुह । ४. पाखाना फिरने की जगह । टट्टी ।

झाड़ी—स्त्री० [हिं० झाड़न] १. छोटा झाड़ या पौधा । २. छोटे पेड़ों का समूह ।

झाड़ू—पुं० [हिं० झाड़न] १. लंबी सींकें या रेशों आदि का बना हुआ वह उपकरण जिससे जमीन या फर्श झाड़ते हैं । कूँचा बुहारी ।

मुहा०—झाड़ू फिरना = कुछ न बचना

झाड़ू मारना = बहुत ही अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना ।

२. पुच्छल तारा । केतु ।

झापड़—पुं० [सं० चपट] थप्पड़ । तमाचा

झाबा—पुं० [हिं० झाँपना] १. टोकरा खाँचा । २. दे० 'झब्बा' ।

झाम†—पुं० [देश०] [वि० झामी १. झब्बा । गुच्छा । २. डाँट-फटकार । धोखा । छल ।

झामर*—पुं० दे० 'झूमर' ।

झामरा*—वि० [हिं० झाँवला] मैला ।

झामा†—पुं० दे० 'झाँवाँ' ।

झामी†—पुं० [हिं० झाँवाँ = झाँसा] चक

या धोखा देनेवाला। चालबाज। धूर्त्त।

झार†–वि० [सं० सर्व] १. एक मात्र। निपट। केवल। २. समस्त। कुल। सब।

मुहा०–झार झार = बहुत अधिक।

पुं० समूह। झुंड।

पुं० [?] प्रयत्न। कोशिश।

*स्त्री० दे० 'झाल'।

झारखंड–पुं० [हिं० झाड़ + खंड] १. गोंड़वाने के अंतर्गत एक प्राचीन प्रदेश जो वैद्यनाथ से जगन्नाथपुरी तक था। २. जंगल।

झारना*–स० दे० 'झाड़ना'।

झारी–स्त्री० [हिं० झरना] पानी रखने का एक प्रकार का लम्बा टोंटीदार बरतन।

*वि० दे० 'झार'।

झाल–पुं० [सं० झल्लक] झाँझ (बाजा)।

स्त्री० [सं० झाला] १. चरपराहट। तीतापन। २. तरंग। लहर। ३. वर्षा की झड़ी। ४. ज्वाला। जलन। ताप। ५. ईर्ष्या। डाह। ६. अंधकार।

स्त्री० [हिं० झड़] १. वर्षा की झड़ी। २. बादलों के कारण होनेवाला अँधेरा।

झालना–स० [?] १. धातु की चीजों को टाँका लगाकर जोड़ना। २. पीने की चीज ठंढी करने के लिए बरफ में रखना।

झालर–स्त्री० [सं० झल्लरी] १. किसी चीज के किनारे पर शोभा के लिए बनाया या लगाया हुआ लटकनेवाला किनारा। २. इस आकार की लटकती हुई कोई चीज। ३. झाँझ।

पुं० [?] एक प्रकार का पकवान।

झालरना*–स० दे० 'झलराना'।

झिक्का†–पुं० [?] जोरों की लड़ाई। विकट युद्ध।

झिझक–स्त्री० [अनु०] १. झिझकने की क्रिया या भाव। २. कोई काम करने में भय आदि के कारण होनेवाला संकोच।

मुहा०–झिझक खुलना = एक बार कुछ कर चुकने पर उसके विषय में भय या संकोच दूर होना।

झिझकना–अ० दे० 'झझकना'।

झिझकारना–स० १. दे० 'झझकारना'। २. दे० 'झटकना'। ३. दे० 'झिड़कना'।

झिड़कना–स० [अनु०] अवज्ञा या ति
स्कारपूर्वक बिगड़कर कड़ी बात कहना।

झिड़की–स्त्री० [हिं० झिड़कना] झि
कर कही हुई बात। डाँट। फटकार।

झिन†–वि० दे० 'झीना'।

झिनवा–पुं० [?] एक प्रकार का
या उसका चावल।

झिपना–अ० दे० 'झेंपना'।

झिपाना–स० हिं० 'झेंपना' का स०।

झिरना*–अ० दे० 'झरना'।

झिरी–स्त्री० [हिं० झरना] १. वह
छेद जिसमें से कोई चीज निकलती
२. पानी का छोटा सोता। ३. पा
तुषार।

झिलना–अ० [?] १. जबरदस्ती
घुसना या धँसना। २. तृप्त होना।
३. झेला या सहा जाना।

झिलम–स्त्री० [हिं० झिलमिल] लोहे
वह टोपी जो युद्ध के समय सिर और
पर पहनी जाती थी। खोद।

झिलमिल–स्त्री० [अनु०] १.
हुआ प्रकाश। २. एक प्रकार का
और मुलायम कपड़ा। ३. दे० 'झिलम'
वि० रह रहकर चमकता हुआ।

झिलमिला–वि० [अनु०] १.
हुआ। २. जो बहुत स्पष्ट न हो।

झिलमिलाना–अ० [अनु०] [भा०
झिलमिलाहट] १. रह-रहकर चमकना।
२. प्रकाश का रह-रहकर हिलना।
स० १. किसी चीज को हिलाकर बार
चमकाना। २. हिलाना।

झिलमिली–स्त्री० [हिं० झिलमिल] १.
बेड़ी पटरियों की वह बनावट जो किवाड़ों में
हवा या प्रकाश आने के लिए लगी र

का नीचे की ओर कुछ लटक आना। निहुरना। नवना। २. किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों का किसी ओर दबना। ३. मन का किसी ओर प्रवृत्त होना। ४. नम्र या विनीत होना। ५. हार मानना। ६. किसी के ऊपर क्रुद्ध या नाराज़ होना। बिगड़ना। (क्व)।

झुकराना–अ० [हिं० झोंका] झोंका खाना।

झुकाना–स० [हिं० झुकना] १. किसी खड़ी चीज को झुकने में प्रवृत्त करना। नवाना। २. प्रवृत्त करना। ३. रुजू करना। ४. नम्र करना। विनीत बनाना। ५. हार मनवाना।

झुकामुखी–स्त्री० दे० 'झुटपुटा'।

झुकाव–पुं० [हिं० झुकना] १. झुकने की क्रिया या भाव। २. किसी ओर कुछ झुके हुए या प्रवृत्त होने का भाव। नति। (इनक्लिनेशन) ३. किसी बात या वस्तु की ओर मन के प्रवृत्त होने का भाव। प्रवृत्ति। (टेन्डेन्सी)

झुगिया†–स्त्री० दे० 'झोंपड़ी'।

झुग्गी†–स्त्री० दे० 'झोंपड़ी'।

झुटपुटा–पुं० [अनु०] ऐसा समय जब कि कुछ अँधेरा और कुछ प्रकाश हो।

झुड्ंग–वि० [हिं० झोंटा] बड़े और बिखरे हुए बालोंवाला।
पुं० भूत-प्रेत।

झुठकाना–स० [हिं० झूठ] झूठी बातें कहकर बहकाना या विश्वास दिलाना।

झुठलाना–स० [हिं० झूठ] १. सच्चे को झूठा ठहराना या बनाना। २. झूठ कहकर धोखा देना। फुसलाना।

झुठाई†–स्त्री० [हिं० झूठ] झूठापन।

झुठाना–स० [हिं० झूठ + आना (प्रत्य०)] झूठा ठहराना।

झुनक–स्त्री० [अनु०] [क्रि० झुनकना, झुनकाना] नूपुर का शब्द।

झुनझुन–पुं० [अनु०] घुँघरू आदि के

बजने का शब्द ।

झुनझुना-पुं० [झुनझुन से अनु०] बच्चों का वह खिलौना जिसे हिलाने से झुन-झुन शब्द होता है । घुनघुना ।

झुनझुनाना-अ० [अनु०] झुन-झुन शब्द होना ।

स० झुन झुन शब्द उत्पन्न करना ।

झुनझुनी-स्त्री० [हिं० झुनझुनाना] १. हाथ या पैर में रक्त का संचार रुकने से होनेवाली सनसनाहट । २. एक प्रकार का रोग जिसमें ऐसी सनसनाहट होती है ।

झुबझुबी-स्त्री० [देश०] कान में पहनने का एक गहना ।

झुमका-पुं० [हिं० झूमना] कान में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना ।

झुमाना-स० हिं 'झूमना' का स० ।

झुरझुरी-स्त्री० [अनु०] कँपकपी ।

झुरना-अ० [हिं० झूरा या चूर] १. सूखना । खुश्क होना । २. किसी व्यक्ति या बात के लिए बहुत अधिक दुःखी होना । मन ही मन अफसोस करना ।

झुरमुट-पुं० [सं० झुंट = झाड़ी] १. पास-पास उगे हुए कई झाड़ या क्षुप । २. बहुत-से लोगों का समूह । गरोह । ३. कपड़े से शरीर को चारो ओर से ढक लेने की क्रिया ।

झुरसना†-अ० स० दे० 'झुलसना' ।

झुराना†-स० [हिं० झुरना] सुखाना । अ० १. सूखना । २. झुरना ।

झुर्री-स्त्री० [हिं० झुरना] शरीर के चमड़े पर होनेवाली सिकुड़न । शिकन ।

झुलनी-स्त्री० [हिं० झूलना] मोतियों का वह गुच्छा जो स्त्रियाँ नथ में लगाती हैं ।

झुलसन-स्त्री० [हिं० झुलसना] १. झुलसने की क्रिया या भाव । २. शरीर झुलसानेवाली गरमी ।

झुलसना-अ० [सं० ज्वल + अंश] अधिक गरमी या जलने के कारण किसी चीज के ऊपरी भाग का सूख या जलकर काला पड़ना ।

स० ऊपरी तल इस प्रकार थोड़ा
कि उसका रंग काला हो जाय ।
अध-जला करना ।

झुलाना-स० [हिं० झूलना] १.
को झूलने में प्रवृत्त करना । २.
या करने के लिए किसी को आगे
और बार बार दौड़ना ।

झुलावना†-स० दे० 'झुलाना' ।

झुल्ला-पुं० [देश०] एक प्रकार

झूँक†-पुं० दे० झोंका' ।

झूँखना*-अ० दे० 'झीखना' ।

झूँझल-स्त्री० दे० 'झुँझलाहट' ।

झूँका†-पुं० दे० 'झोंका' ।

झूक-पुं० दे० 'झोंका' ।

झूकना*-स० दे० 'झोंकना' ।

अ० [हिं० झुकना या झोंकना]
चीज में झोंका, डाला या
पड़ना ।

झूठ-पुं० [सं० जुष्ट, प्रा०
बात जैसी हो, उसके विपरीत
कहना । 'सच' का उलटा ।

मुहा०-झूठ-सच कहना या
झूठी शिकायत करना ।

झूठ-मूठ-क्रि०वि० [हिं० झूठ +
१. बिना किसी आधार के । २.
व्यर्थ ।

झूठा-वि० [हिं० झूठ] १.
ठीक या वास्तविक न हो ।
असत्य । २. झूठ बोलनेवाला ।
वादी । ३. केवल रूप-रंग आदि
चीज के समान । नकली ।
(पुरजे या अंग आदि)
कारण ठीक काम न देनेवाला ।
उक्त सभी अर्थों के लिए)

† वि० दे० 'जूठा' ।

झूठों-क्रि० वि० दे० 'झूठ-मूठ' ।

झूमक-पुं० [हिं० झूमना] १.
का गीत जो फागुन में स्त्रियाँ

ती हैं। झूमर। झूमकरा।
के साथ होनेवाला नाच। ३.
। ४. छोटे झुमकों या गुच्छों की वह
आदि में सिर पर पड़नेवाले
रहती है। ५. दे० 'झुमका'।
-स्त्री० [हिं० झूमक + साड़ी]
में झूमक या मोती आदि की
ती हो।
दे० 'झूमर'।
[सं० झंप] [भाव० झूम]
आगे-पीछे, नीचे-ऊपर या
हिलना। झोंके खाना। २. मस्ती
सिर और धड़ आगे-पीछे और
हिलना।
[हिं० झूमना] १. सिर पर
एक गहना। २. झुमका। ३.
गीत और नाच। ४. एक
का खिलौना। एक ही तरह
का एक स्थान पर एकत्र

दे० 'झूरा'।
[सं० ज्वर ?] [स्त्री० झूरी] १.
। २. फीका। नीरस।
का अभाव। अ-वर्षण। सूखा।
जमीन। स्थल।
[हिं० झूरा] १. झूठ-
। २. व्यर्थ। बे-फायदा।
[हिं० झूलना] १. शोभा के
चौपायों की पीठ पर डाला जानेवाला
। २. दे० 'झूला'।
[हिं० झूलना] वर्षा-ऋतु का
जिसमें मूर्तियाँ झूले पर बैठाकर
जाती हैं। हिंडोला।
अ० [सं० दोलन] १. लटकी हुई
बार बार आगे-पीछे या इधर-
से दूर तक हिलना। २. झूले पर
लेना। ३. किसी बात या काम
में आकर कहीं आते-जाते रहना।

वि० झूलनेवाला। जो झूलता हो। जैसे—झूलना पुल, झूलना या बिस्तर।

* पुं० दे० 'झूला'।

झूला—पुं० [सं० दोल] १. पेड़ या छत आदि में लटकाई हुई रस्सियाँ या रस्से जिनपर बैठकर झूलते हैं। हिंडोला। २. बड़े रस्सों आदि का बना हुआ झूलनेवाला पुल। ३. एक प्रकार का बिस्तर जिसके दोनों सिरे दोनों ओर ऊँची जगहों में बँधे रहते हैं। ४. दे० 'झूलन'।

झेंपना—अ० [हिं० झिपना] लज्जित होना। शरमाना।

झेर†—स्त्री० [फा० देर] १. विलंब। देर। २. बखेड़ा। झंझट। ३. दे० 'झिल'

झेरना†—स० [हिं० झेलना] १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाना। २. हलका झटका या झोंका खाना।

झेल—स्त्री० [हिं० झेलना] १. झेलने की क्रिया या भाव। २. हलका धक्का या झोंका। ३. पानी की लहर या हिलोर। ४. लहर के कारण किनारे पर होनेवाला आघात।

स्त्री० विलंब। देर।

झेलना—स० [सं० क्ष्वेल ?] १. अपने ऊपर लेना। सहना। बरदाश्त करना। २. तैरते समय हाथ-पैरों से पानी हटाना। ३. ढकेलना। अ० पानी में उतरना। हेलना।

झेला-झेली—स्त्री० [हिं० झेलना] १. खींच-तान। २. जीव के बार बार शरीर में आने और उसमें से निकलकर जाने की क्रिया या भाव। आवागमन।

झेलिक-झेला*—पुं० दे० 'झेला-झेली'।

झोंक—स्त्री० [हिं० झुकना] १. झुकाव। प्रवृत्ति। २. बोझ। भार। ३. प्रबल या तीव्र गति। वेग। तेजी।

यौ०—नोक-झोंक = (क) ठाट-बाट। धूम-धाम। (ख) प्रतिद्वंद्विता। विरोध।

झोंकना—स० [हिं० झोंक] १. कोई वस्तु

जलाने के लिए आग में फेंकना।

मुहा०–भाड़ झोंकना = व्यर्थ के और निकम्मे काम करना।

२. जबरदस्ती आगे की ओर या संकट की स्थिति में ढकेलना। बुरी जगह की ओर धक्का देकर बढ़ाना। ३. किसी काम में अंधाधुंध खर्च करना।

झोंका–पुं० [हिं० झोंक] १. झटका। धक्का। रेला। जैसे–हवा का झोंका। २. वर्षा के पानी का हवा के साथ किसी ओर जाना ३. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया।

झोंकी–स्त्री० [हिं० झोंक] १. उत्तर-दायित्व। जवाबदेही। २. जोखिम। (रिस्क)

झोंझ–स्त्री० [देश०] १. पक्षियों का घोंसला। २. कुछ पक्षियों के गले का नीचे लटकता हुआ मांस या थैली। ३. कोलाहल। हल्ला। शोर।

झोंझल–स्त्री० दे० 'झुँझलाहट'।

झोंटा–पुं० [सं० जूट] [स्त्री० अल्पा० झोंटी] १. सिर के बड़े बड़े बालों का समूह।

पुं० [हिं० झोंका] झूले की पेंग।

झोंटा-झोंटी–स्त्री० [हिं० झोंटा] आपस में एक दूसरे का झोंटा पकड़कर होनेवाली लड़ाई।

झोंटी†–स्त्री० हिं० 'झोंटा' का स्त्री० अल्पा०।

झोंपड़ा–पुं० [हिं० छोपना ?] [स्त्री० अल्पा० झोंपड़ी] घास-फूस आदि का वह छोटा घर जो गाँवों या जंगलों में कच्ची मिट्टी की छोटी दीवारें उठाकर बनाते हैं। कुटी। पर्णशाला।

झोंटिंग–वि० दे० 'झुटुंग'।

पुं० भूत-प्रेत या पिशाच आदि।

झोरना†–स० [सं० दोलन] झटका देते हुए कोई चीज इस प्रकार हिलाना कि उसपर पड़ी या लगी हुई दूसरी चीजें गिर जाँय।

झोरा–पुं० दे० 'झोला'।

झोरी†–स्त्री० दे० 'झोली'।

स्त्री० [?] एक प्रकार की रोटी।

झोल–पुं० [हिं० झाल] १. तरकारी आदि गाढ़ा रस। शोरबा। २. चावलों का माँड़ पीच। ३. धातु पर किया हुआ मुलम्मा ४. झंझट, बखेड़े या धोखे की बात। निस्सार या तत्वहीन बात। ६. भस्म।

पुं० [हिं० झूलना] १. कपड़े का जो ढीला होने के कारण झूल या लटक 'तनाव' या 'कसाव' का उलटा। २. थिलता। ढिलाई। ३. दोष। ऐब। त्रुटि। कमी। ५. पल्ला। आँचल। परदा। ७. ओट। आड़।

पुं० [हिं० झिल्ली] १. थैली के आकार की वह झिल्ली जिसमें गर्भ से निकले समय बच्चे या अंडे बंद रहते हैं। २.

पुं० [सं० ज्वाल] १. राख।
२. दाह। जलन।

झोलदार–वि० [हिं० झोल+फा० १. जिसमें झोल या रसा हो। २. गिलट या मुलम्मा हुआ हो। ३. उधर लटकता और लहराता हुआ ढाला (कपड़ा)।

झोला–पुं० [हिं० झूलना] १. झटका। २. आघात। धक्का। ३. लहर। ४. बाधा। अड़चन। ५. दुविधा। ६. चंचलता।

पुं० [हिं० झूलना] [स्त्री० झोली] १. कपड़े टाट आदि की झोली। थैला। २. साधुओं का कुरता। चोला। ३. वात रोग जिसमें कोई अंग विशेषतः हाथ होकर झूलने लगता और बे-काम हो है। लकवा। ४. पाले, लू आदि के पेड़ों के कुम्हला या सूख जाने ५. झटका। झोंका।

झोली–स्त्री० [हिं० झूलना] १. रखने की कपड़े की थैली। २. घाव

चरखा। पुर। ४.

] राख। भस्म।

झुझाना = (क) सब काम
उस करने का ढोंग
होकर या व्यर्थ बैठना।

युग्म] १. झुंड।
या फलों का गुच्छा। ३.
झब्बा।

[अनु०] गूँजना।

[!] झुंड। दल।

[हिं० झूमना] इधर-उधर

] १. रंग काला पड़ जाना। २. मुरझाना। कुम्हलाना।

स० [हिं० झूमना] किसी को हिलने या झूमने में प्रवृत्त करना।

स० [हिं० झावला] १. रंगत में कुछ कालापन लाना। २. मुरझाने में प्रवृत्त करना।

झौंसना–स० दे० 'झुलसना'।

झौआ–पुं० [हिं० झावा] खँचिया।

झौर–पुं० [अनु० झाँव झाँव] १. हुज्जत। तकरार। २. डाँट फटकार।

झौरना–स० [हिं० झपटना] दबाने के लिए झपटकर पकड़ना। छोप लेना।

झौरे–क्रि० वि० [हिं० धौरे] १. समीप। पास। निकट। २. साथ। संग।

झौलना*–स० [सं० ज्वाल] जलाना।

झौंहाना†–अ० [अनु०] बहुत क्रोध से या बिगड़कर कुछ कहना।

ञ

वर्ण-माला का दसवाँ व्यंजन पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है।

ट

वर्ण-माला में ग्यारहवाँ व्यंजन पहला वर्ण, जिसका उच्चारण है।

[सं०] १. चार माशे की एक २. सिक्का। ३. पत्थर गढ़ने छेनी। ४. कुल्हाड़ी। ५.

] १. तालाब। २. पानी रखने या खजाना। ३. लोहे की एक गाड़ी जिसपर तोपें चढ़ी (वह ऊबड़-खाबड़ जमीन पर सकता है और पहाड़ियों पर भी से उतर सकता है)।

[सं०] वह जो टंकण यंत्र काम करता हो। (टाइपिस्ट)

टंकण–पुं० [सं०] १. सुहागा। २. धातु की चीज़ में टाँका या जोड़ लगाना। ३. घोड़े की एक जाति। ४. टंकण-यंत्र पर उसकी सहायता से कुछ लिखने या मुद्रित करने का काम। (टाइप-राइटिंग) ५. धातु के टुकड़ों पर ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने की क्रिया या भाव। (कॉयनेज)

टंकण-यंत्र–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध यंत्र जिसकी सहायता से थोड़ी संख्या में पत्र, सूचनाएँ आदि प्रायः उसी प्रकार छापी जाती हैं, जिस प्रकार छापे के यंत्र से छपती हैं। (टाइप-राइटर)

टँकना–अ० [सं० टंकण] १. टाँका जाना। २. सी कर अटकाया जाना। सिलना। ३.

लिखा जाना। दर्ज किया जाना। ४. सिल, चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना। कुटना।

टंकशाला–स्त्री० [सं०] टकसाल।

टंका–पुं० [सं० टंक] १. एक तोले की तौल। २. ताँबे का एक पुराना सिक्का।

टँकाई–स्त्री० [हिं० टाँकना] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टँकाना–स० [हिं० टाँकना] १. टाँकों से जोड़वाना या सिलवाना। २. याद रखने के लिए लिखवाना।

टंकार–स्त्री० [सं०] [क्रि० टंकारना] १. टन-टन शब्द जो कसे हुए डोरे या तार आदि पर उँगली का आघात करने से होता है। २. धातु के टुकड़े पर आघात लगने का शब्द। टनाका। झनकार।

टंकारना–स० [सं० टंकार] धनुष की डोरी खींचकर उससे शब्द उत्पन्न करना।

टंकी–स्त्री० [सं० टंक = गड्ढा या अं० टैंक] पानी रखने का छोटा कुंड या बड़ा बरतन। टाँका।

टंकोर–पुं० दे० 'टंकार'।

टँगना–अ० [सं० टंगण] टाँगा या लटकाया जाना।

विशेष–दे० 'टाँगना'।

पुं० १. दोनों ओर दो जगहों पर बँधी हुई वह रस्सी जिसपर कपड़े टाँगे जाते हैं। अलगनी। २. इस काम के लिए कुछ इसी प्रकार का बना हुआ काठ का ढाँचा।

टँगाना–स० हिं० 'टाँगना' का प्रे०।

* अ० = टँगना।

टँगारी†–स्त्री० [सं० टंग] कुल्हाड़ी।

टँच†–वि० [सं० चंड] १. सूम। कंजूस। २. कठोर-हृदय। निष्ठुर। ३. धूर्त।

वि० [हिं० टिच्चन] तैयार। मुस्तैद।

टंट घंट–पुं० [अनु० टन टन + घंट] १. घड़ी-घंट आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपंच) २. रद्दी सामान।

टंटा–पुं० [अनु० टन टन] १. व्यर्थ झंझट। खटराग। २. उपद्रव। उत्पात ३. झगड़ा। लड़ाई।

टंडैल–पुं० [अं० टैंडर] मजदूरों का सरदार

टई*–स्त्री० १. दे० 'टही'। २. दे०

टक–स्त्री० [सं० टक या त्राटक] बिना पलक गिराये देर तक देखना। स्थिर दृष्टि।

मुहा०–टक टक देखना = चकित कुछ देर तक देखते रहना। **टक लगाना** = आसरा देखते रहना।

टकटका*–पुं० दे० 'टकटकी'।

टकटकाना†–स० [हिं० टक] १. टक लगाकर ताकना। स्थिर दृष्टि से देखना। २. टकटक शब्द उत्पन्न करना।

टकटकी–स्त्री० [हिं० टक] देर तक प्रकार देखना कि पलक न गिरे। स्थिर

टकटोरना†–स० दे० 'टटोलना'।

स० [हिं० टकटकी] टकटकी देखना।

टकराना–अ० [हिं० टक्कर] १. भिड़ना। टक्करें खाना। २. मारे फिरना। व्यर्थ घूमना।

स० एक चीज पर दूसरी चीज मारना। टक्कर देना।

टकसार–स्त्री० दे० 'टकसाल'।

वि० दे० 'टकसाली'।

टकसाल–स्त्री० [सं० टंकशाला] स्थान जहाँ सिक्के ढलते हैं।

पद–टकसाल बाहर = (वाक्य प्रयोग) जिसका व्यवहार शिष्ट-सम्मत मान्य न हो।

टकसाली–वि० [हिं० टकसाल] १. का। टकसाल संबंधी। २. खरा। चोखा ३. विशेषज्ञों या शिष्टों द्वारा माना हुआ शिष्ट-सम्मत। प्रामाणिक। ४. जँचा हुआ बिलकुल ठीक।

पुं० टकसाल का अधिकारी।

मुहा०–टक्कर मारना = व्यर्थ का बहुत अधिक प्रयत्न करना।

४. घाटा। हानि।

टखना–पुं० [सं० टंक] एड़ी के ऊपर और पिंडली के नीचे की गाँठ। गुल्फ।

टग*–स्त्री० दे० 'टकटकी'।

टगण–पुं० [सं०] छः मात्राओं का एक गण।

टघरना†–अ० दे० 'पिघलना'।

टटका–वि० [स्त्री० टटकी] दे० 'ताजा'।

टटकाई*–स्त्री० [हिं० टटका] ताजापन।

टटोना†–स० दे० 'टटोलना'।

टटोलना–स० [सं० त्वक्+तोलन] [भाव० टटोल] १. मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना या दबाना। २. ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर हाथ फैलाना या दौड़ना। ३. बात-चीत करके किसी के मन का भाव जानना। थाह लेना।

टटोहना*–स० दे० 'टटोलना'।

टट्टर–पुं० [सं० स्थाता ?] ओट या रक्षा के लिए बाँस की पट्टियाँ जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा या परदा।

टट्टी–स्त्री०[हिं०टट्टर] १. बाँस की पट्टियों का बना हुआ छोटा और हलका टट्टर।

मुहा०–टट्टी की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना = (क) किसी की आड़ में रहकर औरों के साथ कोई चाल चलना। (ख) छिपकर बुरा काम करना।

पद–धोखे की टट्टी = धोखा देनेवाली बात या चीज़। अविश्वसनीय वस्तु या बात।

२. चिक। चिलमन। ३. पतली दीवार। ४. पाखाना। ५. बाँस की पट्टियों का वह परदा या छाजन जिसपर बेलें चढ़ाई जाती हैं। जैसे–अंगूर की टट्टी।

टट्टू–पुं० [अनु०] छोटा घोड़ा। टाँगन।

पद–भाड़े का टट्टू = केवल धन के लोभ से दूसरे की ओर से काम करनेवाला।

टनकना–अ० [अनु० टन] १. टन टन

बजना। २. धूप या गरमी लगने के कारण सिर में दर्द होना।

टनटन–स्त्री० [अनु०] घंटे का शब्द।

टनटनाना–स० [हिं० टनाटन] धातु के टुकड़े पर कोई चीज मारकर 'टनटन' शब्द उत्पन्न करना।

अ० 'टनटन' शब्द होना।

टनमन–पुं० दे० 'टोना'।

वि० दे० 'टनमना'।

टनमना–वि० [सं० तन्मनस्] स्वस्थ। चंगा। 'अनमना' का उलटा।

टनाटन–स्त्री० [अनु०] लगातार होनेवाला 'टनटन' शब्द।

वि० बिलकुल ठीक दशा में और दृढ़।

क्रि० वि० 'टनटन' शब्द के साथ।

टप-पुं० [हिं० टोप] किसी चीज के ऊपर का ओहार या छाजन। जैसे–गाड़ी का टप।

पुं० [अं० टब] १. पानी रखने का एक बड़ा खुला बरतन। टाँका। २. कान में पहनने का फूल।

स्त्री० [अनु०] १. बूँद-बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द। २. अचानक ऊपर से गिरने का शब्द।

टपक–स्त्री० [हिं० टपकना] १. टपकने की क्रिया या भाव। २. बूँद-बूँद गिरने का शब्द। ३. रह-रहकर होनेवाला दर्द।

टपकना–अ० [अनु० टप टप] १. बूँद बूँद करके गिरना। चूना। रसना। २. ऊपर से सहसा आकर गिरना या पड़ना। ३. कोई भाव प्रकट होना। जाहिर होना। झलकना। ४. रह-रहकर दर्द करना। चिलकना। टीस मारना।

टपका–पुं० [हिं० टपकना] बूँद बूँद गिरने का भाव। रसाव। २. टपकी हुई वस्तु। ३. पककर आपसे आप गिरा हुआ फल। ४. दे० 'टपक'।

टपका-टपकी–स्त्री० [हिं० टपकना] १. बार बार या रह-रहकर टपकने की क्रिया या भाव। २. बहुत थोड़ी या हल्की बूँदा-बादी।

टपकाना–स० [हिं० टपकना] १. बूँद करके गिराना। चुआना। २. अर्क खींचना। चुआना।

टपना–अ० [हिं० तपना] व्यर्थ रहकर कष्ट उठाना।

स० १. किसी चीज को पार बढ़ना। लाँघना। २. कूदना।

टपरना†–स० [अनु०] दीवार, आदि की दरज भरने से पहले खोदकर चौड़ी या बड़ी करना जिसमें अच्छी तरह भरा जा सके।

टपरी–स्त्री० = झोपड़ी।

टपाटप–क्रि० वि० [अनु०] १. टप टप शब्द के साथ (गिरना)। जल्दी जल्दी।

टपाना–स० [हिं० टपना] व्यर्थ रखकर कष्ट देना।

स० [हिं० टपना] पार कराना।

टप्पा–पुं० [हिं० टाप] १. जितनी कोई फेंकी हुई वस्तु पार उछाल। फलाँग। ३. दो स्थानों के पड़नेवाला बड़ा मैदान। ४. छोटा टुकड़ा। ५. अंतर। फरक। प्रकार का पक्का गाना, जिसमें गले के बहुत छोटे छोटे टुकड़े या दाने विशेष प्रकार से निकाले जाते हैं।

टप्पैत–वि० [हिं० टप्पा] १. टप्पे से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे–टप्पैत २. टप्पा गानेवाला।

टब–पुं० [अं०] १. पानी रखने प्रकार का बड़ा बरतन। २. दे०

टमटम–स्त्री० [अं० टैंडम] ऊँचे की एक प्रकार की हलकी घोड़ा-गाड़ी।

टमाटर–पुं० [अं० टोमैटो] एक का खट्टा विलायती बैंगन।

टर–स्त्री० [अनु०] १. कर्कश या

बहुई बोली।

टर करना, या लगाना =

बहुत बोलते चलना।

बोली। ३. अविनीत आच-

उद्दंडता। ४. हठ। जिद।

दे० 'टलना'।

[अनु०] इधर-उधर की

को हटाना। टालना।

[हिं० टर] १. टर टर

२. टर्राना।

दे० 'टलना'।

टर टर] [भाव० टर्रापन]

से कठोर उत्तर देनेवाला।

उद्धत। उद्दंड।

[अनु० टर] अविनीत भाव

देना।

[सं० टलन] १. सामने से

। २. जगह से हटना।

बात से टलना =

न करना। कहकर मुकरना।

कार्य के लिए) निश्चित समय

का समय स्थिर होना। स्थ-

। ४. (किसी बात का) अन्यथा

ठीक न उतरना। ५. (किसी

अनुरोध का) न माना जाना।

। ६. समय बीतना। ७.

होना।

स्त्री० दे० 'टाल-मटोल'।

[!] छोटी टहनी।

[अनु०] किसी भारी चीज के

कने का शब्द या भाव।

से मस न होना = (क)

अपने स्थान से न हिलना।

हठ न छोड़ना। बात पर अड़े

० [अनु०] टीस। कसक।

अ० [हिं० टस] १. टलना।

२

खिसकना। २. रह-रहकर दर्द करना। टीसना। ३. हठ छोड़ना।

टसकाना–स० [अनु०] किसी को अपने स्थान से हिलाना या हटाना। खिसकाना।

टसर–पुं० [सं० त्रसर] एक प्रकार का घटिया मोटा रेशम।

टसुआ–पुं० [हिं० अँसुआ] आँसू।

टहकन–स्त्री० [हिं० टहकना] टहकने की क्रिया या भाव।

टहकना–अ० [अनु०] १. रह-रहकर दर्द करना। कसकना। २. पिघलना। ३. टक-टक शब्द करना।

टहनी–स्त्री० [सं० तनुः] वृक्ष की पतली या छोटी शाखा। डाली।

टहल–स्त्री० [हिं० टहलना] छोटी और हीन सेवा। खिदमत।

टहलना–अ० [सं० तत् + चलन] व्यायाम या मन-बहलाव के लिए धीरे धीरे चलना। घूमना-फिरना।

मुहा०–टहल जाना = खिसक जाना।

टहलनी–स्त्री० [हिं० टहल] दासी।

टहलाना–स० [हिं० टहलना] १. धीरे धीरे चलना। २. सैर कराना। घुमाना-फिराना।

टहलुआ–पुं० [हिं० टहल] [स्त्री० टहलुई, टहलनी] सेवक। दास।

टही–स्त्री० [!] काम निकालने की युक्ति। क्रि० प्र० बैठाना।

टहोका–पुं० [हिं० ठोकर] हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।

टाँक–स्त्री० [सं० टंक] १. तीन या चार माशे की एक तौल। (जौहरी) २. कूत। अंदाज। आँक।

स्त्री० [हिं० टाँकना] १. टाँके जाने की क्रिया या भाव। २. कलम की नोक।

टाँकना–स० [सं० टंकन] १. सुई-डोरे आदि से कोई छोटी चीज किसी बड़ी चीज के साथ जोड़ना या लगाना। सी कर अट-

काना। २. सिल-चक्की आदि में छोटे गड्ढे करके उन्हें खुरदुरा करना। रेहना। ३. कोई बात याद रखने के लिए लिख लेना। ४. खाते आदि में लिखना या चढ़ाना। ५. भोजन करना। खाना। ६. अनुचित रूप से ले लेना। हड़पना।

टाँका–पुं० [हिं० टाँकना] १. वह चीज जो दो चीजों को जोड़कर एक करती हो। २. धातु जोड़ने का मसाला। ३. सिलाई। सीवन। ४. टँकी हुई चकती या टुकड़ा। थिगली। पैबन्द।

पुं० [सं० टंक] [स्त्री० अल्पा० टाँकी] पानी रखने का छोटा कुंड या बड़ा बरतन।

टाँकी–स्त्री० [सं० टंक] पत्थर गढ़ने या काटने की छेनी।

टाँग–स्त्री० [सं० टंग] कमर के नीचेवाले दोनों अंग जिनसे प्राणी चलते या दौड़ते हैं। चलने का अवयव।

मुहा०–टाँग अड़ाना = (क) व्यर्थ किसी काम में दखल देना। (ख) विघ्न डालना।

टाँग तले से (या नीचे से) निकलना = हार मानना।

टाँगन–पुं [सं० तुरंगम्] छोटा घोड़ा। टट्टू।

टाँगना–स० [हिं० टँगना] १. एक वस्तु किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार रखना कि उसका सब या बहुत-सा भाग नीचे लटकता रहे। लटकाना। २. फाँसी पर चढ़ाना।

टाँगा–पुं० [हिं० टँगना] दो पहियों की एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

टाँगी–स्त्री० [हिं० टाँगा] कुल्हाड़ी।

टाँच(न्)–स्त्री० [हिं० टाँकी] १. टाँचने की क्रिया या भाव। २. दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात या कथन। भाँजी।

टाँचना–स० [हिं० टाँकना] १. टाँका लगाना। टाँकना। २. ठीक करने के लिए काटना या छीलना। ३. काटकर कुछ अंश निकाल लेना। जैसे–सौ रुपये आपने बीच में टाँच लिए।

अ० बहुत प्रसन्न होकर या फूले फूले फिर

टाँड़–स्त्री० [सं० स्थाणु] लकड़ी खम्भों पर बनाई हुई वह पाटन, जि चीजें रखते हैं। (रैक)

पुं० [सं० ताड] बाँह पर पहनने क गहना।

टाँड़ा–पुं० [हिं० टाँड़=समूह] १. की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं क जो व्यापारी लेकर चलते हैं। बरदी। वह माल जो इस प्रकार एक जगह से जगह जाता है। ३. बिक्री के माल की ४. कुटुम्ब। परिवार।

टाँय-टाँय–स्त्री० [अनु०] १. कर्क शब्द। टें टें। २. व्यर्थ की बकवाद।

पद–टाँय-टाँय फिस = बातें बहु काम या फल कुछ भी नहीं।

टाइप–पुं० [अं०] छापने के लि के ढले हुए अक्षर।

टाइप राइटर–पुं० दे० 'टंकण-यंत्र'।

टाट–पुं० [सं० तंतु] १. सन या प डोरियों का बना हुआ मोटा कपड़ा। बोरे, परदे, बिछावन आदि बनते हैं। २ बैठनेवाली बिरादरी या उसका विभाग। कोठीवाल या महाजन की गद्दी।

मुहा०–टाट उलटना = दिवाला म ४. टाट की वह थैली, जिसमें ए रुपये आते हैं। ५. महाजनी बोल एक हजार रुपये। जैसे–इस मुकदमें टाट लग गये।

टाटिका*–स्त्री० = टट्टी। उदा० हरिभगति को बेष बर टाटिका–तुलसी।

टाटी–स्त्री० दे० 'टट्टी'।

टाड़–स्त्री० दे० 'टाँड़'।

टान–स्त्री० [सं० तान] १. तानने की या भाव। २. आकर्षण। ३. छापे के य में कागज हर बार छापे जाने का जैसे–हजार टान, दो हजार टान।

[सं० तान] १. तानना ।
। २. छापे के यंत्र में कागज
ना ।
[सं० स्थापन] १. घोड़े के पैर
जमीन पर पड़ता है । सुम ।
के पैरों के जमीन पर पड़ने
दे० 'टापा' ।
[हिं० टाप + ना (प्रत्य०)]
खड़े खड़े पैर पटकना । खूँद
'टपना' ।
सं० स्थापन] १. लम्बा-चौड़ा
। २. उछाल । ३. किसी
या बन्द करके रखने का
।
[हिं० टप्पा] चारों ओर जल से
या जमीन । द्वीप ।
[पंजाबी टब्बर] १. बालक ।
परिवार । कुटुंब ।
[हिं० टालना का पुराना
] टलने, हटाने या दूर करने-
दे० 'टालना' ।
[सं० अट्टाल] १. ऊँचा ढेर ।
। २. लकड़ी, भूसे आदि
।
[हिं० टालना] टालने का भाव ।
[सं० र] स्त्री और पुरुष का
वाला दलाल । कुटना ।
स्त्री० दे० 'टाल-मटोल' ।
[हिं० टलना] १. हटाना ।
। २. न रहने देना । मिटाना । ३.
के लिए आगे का समय स्थिर
या मुलतवी करना । ४.
अनुरोध) न मानना । ५.
पीछा छुड़ाना । ६. हिलाना ।
स्त्री० [हिं० टालना] केवल
लिए किया जानेवाला बहाना ।
[?] आधा । (दलाल)

टाली–स्त्री० [देश०] १. गाय-बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी । २. चंचल जवान गाय या बछिया । ३. अठन्नी । (दलाल)

टाहली*–पुं० दे० 'टहलुआ' ।

टिकट–पुं० [अं०] १. कागज, गत्ते आदि का वह छोटा टुकड़ा जो कोई विशेष कार्य करने का अधिकार पाने के लिए मूल्य देने पर मिलता है । जैसे–तमाशे का टिकट, रेल का टिकट, डाक का टिकट । २. कागज का वह छोटा टुकड़ा जो किसी वस्तु पर उसके परिचय के लिए लगाया जाता है । चिप्पी ।

पुं० [अं० टैक्स] किसी प्रकार का कर या महसूल ।

टिकठी–स्त्री० [सं० त्रिकाष्ठ] १. वह ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ-पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेंत या कोड़े लगाये जाते हैं या उनके गले में फाँसी का फन्दा लगाया जाता है । २. रत्थी, जिसपर शव लेकर चलते हैं ।

टिकड़ा–पुं० [हिं० टिकिया] [स्त्री० अल्पा० टिकड़ी] १. वह चिपटा गोल टुकड़ा जो किसी चीज में, विशेषतः गहनों में, लगाया जाता है । २. अंगारों पर सेंकी हुई रोटी ।

टिकना–अ०[सं० स्थित] १. कुछ समय के लिए रुकना या ठहरना । २. कुछ दिनों तक काम देना । स्थित रहना । बना या अड़ा रहना ।

टिकरी–स्त्री० [हिं० टिकिया] १. एक प्रकार का नमकीन पकवान । २. टिकिया ।

टिकली–स्त्री० [हिं० टिकिया] १. छोटी टिकिया । २. पन्नी, काँच या धातु की बहुत छोटी बिन्दी, जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं ।

टिकस–पुं० १. दे० 'टिकट' । २. दे० 'टैक्स' ।

टिकसार*–वि० दे० 'टिकाऊ' ।

टिकाऊ–वि० [हिं० टिकना] टिकने या

कुछ दिनों तक काम देनेवाला । मजबूत । (ड्यूरेबुल)

टिकान–स्त्री० [हिं० टिकना] १. टिकने या ठहरने की क्रिया या भाव । २. टिकने का स्थान । पड़ाव ।

टिकाना–स० [हिं० टिकना] १. टिकने या ठहरने के लिए जगह देना । ठहराना । २. दे० 'टेकाना' ।

टिकाव–पुं० [हिं० टिकना] १. स्थिति । ठहराव । २. स्थिरता । स्थायित्व ।

टिकिया–स्त्री० [सं० वटिका] १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा । जैसे–रंग या दवा की टिकिया । २. कोयले की बुकनी से बना हुआ वह गोल टुकड़ा जिसे सुलगाकर तमाकू पीते हैं । ३. इस आकार की एक मिठाई ।

टिकुली–स्त्री० दे० 'टिकली' ।

टिकैत–पुं० [हिं० टीका + ऐत (प्रत्य०)] १. राजा का उत्तराधिकारी कुमार । युवराज । २. अधिष्ठाता । ३. सरदार ।

टिकोरा–पुं० [हिं० टिकिया] आम का छोटा, कच्चा फल ।

टिक्कड़–पुं० [हिं० टिकिया] १. बड़ी टिकिया । २. सेंकी हुई मोटी रोटी ।

टिक्की–स्त्री० [हिं०टिकिया] छोटा टिक्कड़ । स्त्री० [हिं० टीका] १. माथे पर लगाने की बिंदी । २. ताश पर की बूटी ।

टिखटी–स्त्री० दे० 'टिकठी' ।

टिघलना–अ० दे० 'पिघलना' ।

टिचन–वि० [अं० अटेन्शन] १. तैयार । प्रस्तुत । २. उद्यत । मुस्तैद । ३. ठीक । दुरुस्त ।

टिटकारना–स०[अनु०] [संज्ञा टिटकारी] 'टिक टिक' करके हाँकना ।

टिटिहरी–स्त्री० [सं० टिट्टिभ] पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया । कुररी ।

टिट्टिभ–पुं० [सं०] [स्त्री० टिट्टिभी] १. टिटिहरी । कुररी । २. टिड्डी ।

टिड्डा–पुं० [सं० टिट्टिभ] एक प्रकार क छोटा काला फतिंगा ।

टिड्डी–स्त्री० [सं० टिट्टिभ] एक प्रक का उड़नेवाला कीड़ा जो दल बाँध चलता और पेड़-पौधों की पत्तियाँ या खे की पैदावार खा जाता है । (लोकस्ट)

टिड्डी-दल–पुं० [हिं० टिड्डी + सं० द] मनुष्यों, जीव-जन्तुओं आदि का बहुत दल या समूह ।

टिपका–पुं० दे० 'टपका' ।

टिपाई–स्त्री० [हिं० टीपना] १. टी की क्रिया, भाव या मजदूरी । २. चित्र-कला में आकृतियों आदि की आरंभिक रेखा अंकित करना । ३. दे० 'टीप' २, और ७ ।

टिपारा–पुं० [हिं० तीन + फा० पारः टुकड़ा] मुकुट के आकार की एक प्र की तिकोनी टोपी ।

टिप्पणी–स्त्री० [सं०] १. गूढ़ वाक्य का विस्तृत और स्पष्ट अर्थ बतानेवाला लेख । २. घटना आदि का संक्षिप्त वि या उसके संबंध में संपादक का विचार समाचार-पत्र में प्रकाशित होता है । (न ३. किसी व्यक्तिविषय या कार्य के में प्रकट किया जानेवाला संक्षिप्त विच (रिमार्क) ४. स्मरण रखने के लिए लि हुई छोटी बात । (नोट)

टिप्पन–पुं० [सं०] १. टीका । व्याख्या टिप्पणी । २. जन्म-कुंडली । ३.जन्म प

टिप्पस–स्त्री० [देश०] विकट परि में अपना काम निकालने के लिए जानेवाली कोई सहज युक्ति ।

मुहा०–टिप्पस भिड़ाना या लगाना– उक्त प्रकार की कोई युक्ति या उपाय करना ।

टिमटिमाना–अ० [सं० तिम = ठंढा होना] १. (दीपक का) मंद रूप से थोड़ा प्रकाश देना । २. बुझने पर होकर फिर जल उठना ।

दे० 'टर' ।
दे० 'टर्राना' ।
[सं० तिलक] १. गले में
गहना । २. माथे पर पह-
गहना ।
[हिं० टीका] १. टीका या
। २. चिह्न या रेखा बनाना ।
[सं० तिलक] १. चन्दन,
मस्तक या बाँहों पर सम्प्र-
के लिए लगाया जानेवाला
। २. कन्या-पक्ष के लोगों
पर तिलक लगाकर विवाह
। तिलक । ३. शिरोमणि ।
। ४. वह जो किसी से सब बातों
हो । जैसे—पतितों का टीका =
पतित । ५. राज-सिंहासन या
के समय होनेवाला धार्मिक
तिलक । ६. राज्य का उत्तराधि-
। ७. किसी रोग को रोकने के
रोग का चेप या रस शरीर में सूई
करने की क्रिया ।
[सं०] १. गूढ़ लेखों, काव्यों आदि
करनेवाला वाक्य, पद या ग्रन्थ ।
। तिलक (कॉमेन्टरी) २. किसी
चर्चा छिड़ने पर उसके गुण-दोष
में प्रकट किया जानेवाला मत ।
)
-टिप्पणी । (देखो) ।
-पुं० [सं०] किसी गूढ़ ग्रन्थ
या आशय बतलाने के लिए उसकी
। (कॉमेन्टेटर)
टिप्पणी-स्त्री० [सं०] कोई प्रसंग
या बात सामने आने पर उसके
आदि के सम्बन्ध में प्रकट किया
विचार या मत (कॉमेन्ट)
-स्त्री० [हिं० टीका] १. सिर के
चोटी । २. माथे पर लगाई
बिन्दी । छोटा टीका या

बिन्दी ।

टीड़ी–स्त्री० दे० 'टिड्डी' ।

टीन–पुं० [अं० टिन] १. राँगा । २. राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर । ३. इस चद्दर का बना हुआ डिब्बा ।

टीप–स्त्री० [हिं० टीपना] १. टीपने की क्रिया या भाव । टिपाई । २. दबाव । दाब । ३. गच कूटने का काम । ४. गाने में खींची हुई लम्बी तान । विशेष दे० 'पुकार' ४ ।

मुहा० टीप लड़ाना = संगीत में टीप लगाते हुए गाना ।

५. स्मरण के लिए किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया । टाँक लेने का काम । ६. सूचना, व्याख्या या आलोचना के रूप में लिखी हुई कोई बात । (नोट) ७. दस्तावेज । ८. इमारत के काम में ईंट-पत्थरों के जोड़ों में मसाला भरने का काम । ९. जन्म-पत्री ।

टीप-टाप–स्त्री० [हिं० टाप] १. बनावटी सिंगार । २. आडम्बर ।

टीपन–स्त्री० [हिं० टीपना] जन्म-पत्री ।

टीपना–स० [सं० टेपन] १. दबाना । चाँपना । जैसे—किसी का गला टीपना । २. धीरे धीरे ठोंकना या दबाना । ३. चित्र बनाने से पहले उनकी रेखाएँ खींचना । रेखा-कर्म । खत-कशी । (स्केचिंग) ४. इमारत के काम में ईंटों या पत्थरों के संधि-स्थानों पर मसाला लगाकर उन्हें बन्द करना ।

स० [सं० टिप्पनी] याद रखने के लिए लिख या टाँक लेना । टाँकना ।

टीबा–पुं० दे० 'टीला' ।

टीम-टाम–स्त्री० [अनु०] बनाव-सिंगार ।

टीला–पुं० [सं० अष्ठीला] १. मिट्टी-पत्थर का कुछ उभरा हुआ भू-भाग । ढूह । भीटा । २. मिट्टी का ऊँचा ढेर । धुस ।

३. छोटी पहाड़ी ।

टीस–स्त्री० [अनु०] [क्रि० टीसना] रह-रहकर उठनेवाला दर्द । कसक ।

टुंडा–वि० [सं० तुंड] [स्त्री० टुंडी] १. (वृक्ष) जिसकी डाल या टहनी कट गई हो । ठूँठा । २. जिसका हाथ कटा हो । लूला । लुंजा । ३. जिसका कोई अंग खंडित हो ।

टुक–वि० [सं० स्तोक] थोड़ा । जरा ।

टुकड़-गदाई–पुं० [हिं० टुकड़ा + फा० गदा] भिखारी । भिखमंगा ।

वि० १. तुच्छ । २. दरिद्र । कंगाल ।

स्त्री० टुकड़े या भीख माँगने का काम ।

टुकड़-तोड़–पुं० [हिं० टुकड़ा + तोड़ना] दूसरों का दिया हुआ अन्न खाकर रहनेवाला (तुच्छ व्यक्ति) ।

टुकड़ा–पुं० [सं० स्तोक] [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १. किसी वस्तु का वह भाग जो उससे कट-छँटकर अलग हो गया हो । खंड २. चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश । भाग । ३. रोटी का तोड़ा हुआ अंश या खंड ।

मुहा०–**दूसरों के टुकड़े तोड़ना** = दूसरों के दिये हुए भोजन पर निर्वाह करना । **टुकड़ा माँगना** = भीख माँगना ।

टुकड़ी–स्त्री० [हिं० टुकड़ा] १. छोटा टुकड़ा । खंड । जैसे–मिठाई की टुकड़ी । २. दल । जत्था । ३. किसी विशेष प्रकार के कार्य करनेवालों का स्वतन्त्र छोटा दल । (स्क्वायर) जैसे–वैज्ञानिकों या अन्वेषकों की टुकड़ी ।

टुक्का–पुं० [हिं० टूक] १. टुकड़ा । खंड । २. किसी चीज का बहुत थोड़ा अंश ।

मुहा०–**टुक्का सा जवाब देना** = साफ इन्कार करना । कोरा जवाब देना । **टुक्का सा मुँह लेकर रह जाना** = लज्जित होकर रह जाना ।

टुच्चा–वि० [सं० तुच्छ] १. ओछा । २. अपूर्ण या खंडित और भद्दा ।

टुट-पुँजिया–वि० [हिं० टूटी + पूँ जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो ।

टुटरूँ–पुं० [अनु०] छोटी पंडुकी ।

टुटरूँ टूँ–स्त्री० [अनु०] पंडुकी फाख्ता के बोलने का शब्द ।

वि० १. अकेला । २. दुबला-पतला ।

टूँगना–स० [हिं० टुनगा] थोड़ा काटकर खाना ।

टूँड़–पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० टूँड़ी] कीड़ों के मुँह पर की वे नालियाँ जिन्हें गड़ाकर वे कुछ चूसते हैं । २. अनाज की बाल में कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अंश । ३. ढोंढी । नाभी । ४. किसी की दूर तक निकली हुई नोक ।

टूक*–पुं दे० 'टुकड़ा' ।

टूट–स्त्री० [हिं० टूटना का भाव] टूटकर अलग निकला हुआ खंड । टुकड़ा । २. भूल । त्रुटि । ३. टोय ४. न्यूनता । कमी ।

टूटना–अ० [सं० त्रुट] कई टुकड़े खंडित होना । भग्न होना । २. किसी के जोड़ का उखड़ जाना । ३. चलनेवाली क्रिया का क्रम रुकना । किसी ओर एक-बारगी वेग से बढ़ना । एक-बारगी बहुत-सा आ पड़ना । अचानक धावा करना । ७. पृथक् या होना । ८. दुर्बल, क्षीण या अशक्त ९. वैभव, गुण, योग्यता आदि में बहुत कमी होना । १०. युद्ध में शत्रु के हाथ में जाना । ११. कमी होना । १२. शरीर में ऐंठन या लिए हुए पीड़ा होना ।

टूठना*–अ० [सं० तुष्ट] सन्तुष्ट स० सन्तुष्ट या तृप्त करना ।

टूठनि*–स्त्री० [हिं० टूटना] संतोष ।

टूम–स्त्री० [अनु०] गहना । आभूषण ।

टास = २. गहने-कपड़े ।
। २. बनाव-सिंगार ।
[अनु०] तोते की बोली ।
टें = व्यर्थ की बकवाद ।
होना या बोलना = चटपट
।
[देश०] धोती की वह मंडलाकार
ऊपर पर पड़ती है ।
दे० 'ढेंढर' ।
[देश०] करील नामक पौधा
।
टें टें (अनु०)] १. उद्दंडता
करनेवाला । टर्रा ।
। चपल ।
[अनु०] १. तोते की बोली ।
की बकवाद ।
[हिं० टिकना] १. भारी वस्तु
रखने के लिए उसके नीचे
लकड़ी । चाँड़ । थूनी । थंभ ।
। सहारा । ३. आश्रय । अव-
ऊँचा टीला । ५. मन में ठानी
। संकल्प । ६. हठ । जिद ।
टेक निभना या रहना =
या जिद पूरी होना । **टेक पकड़ना**
या गहना = हठ करना । अड़ना ।
पहला पद । स्थायी ।
[हिं० टेक] १. सहारे के लिए
वस्तु पर भार रखना । सहारा लेना या
लेना । २. ठहराना या रखना ।
(किसी के आगे) **माथा**
= (क) प्रणाम करना । (ख)
प्रकट करना ।
के लिए पकड़ना । हाथ का सहारा
४. ग्रहण करना । पकड़ना या लेना ।
हठ करना । ६. बीच में रोकना या
। ७. (वार या आघात) रोकना
। ८. ग्रहण करना । लेना या पकड़ना ।
पुं० [हिं० टेक] [स्त्री० अल्पा०

टेकरी] १. ऊँचा टीला । २. छोटी पहाड़ी ।

टेकला†–स्त्री० [हिं० टेक] धुन । रट ।

टेकान–स्त्री० [हिं० टेकना] १. ऊपर की वस्तु सँभालने के लिए उसके नीचे लगाई हुई लकड़ी । टेक । चाँड़ । २. वह स्थान जहाँ बोझ ढोनेवाले बोझ रखकर सुस्ताते हैं । ३. वह स्थान जहाँ से जुआरियों को जूए के अड्डे का पता मिलता है ।

टेकाना–स० हिं० 'टेकना' का प्रे० ।

टेकी–पुं० [हिं० टेक] अपनी टेक या हठ पर अड़ा रहनेवाला । हठी । जिद्दी ।

टेकुआ†–पुं० दे० 'तकला' ।

टेकुरी–स्त्री दे० 'तकली' ।

टेटका–पुं० [सं० ताटंक] कान में पहनने का एक गहना ।

टेढ़*–स्त्री० [हिं० टेढ़ा] टेढ़ापन । वक्रता । † वि० दे० 'टेढ़ा' ।

टेढ़-बिड़ंगा–वि०[हिं० टेढ़ा + बेढंगा]टेढ़ा ।

टेढ़ा–वि० [सं० तिरस् = टेढ़ा] [स्त्री० टेढ़ी] १. जो बीच में इधर-उधर झुका या घूमा हो । जो सीधा न हो । वक्र । कुटिल । २. जो समानान्तर या सीधा न गया हो । तिरछा । ३. कठिन । मुश्किल । **पद–टेढ़ी खीर** = मुश्किल काम । ४. बात बात में लड़ जानेवाला । उद्धत । **मुहा०–टेढ़ा पड़ना या होना** = (क) उग्र रूप धारण करना । बिगड़ना । (ख) अकड़ना । टर्राना । **टेढ़ी सीधी सुनाना** = भला-बुरा कहना । कटु बातें कहना ।

टेढ़ाई–स्त्री० = टेढ़ापन ।

टेढ़ापन–पुं० [हिं० टेढ़ा + पन] टेढ़े होने का भाव । वक्रता ।

टेढ़े–क्रि० वि० [हिं० टेढ़ा] घुमाव-फिराव के साथ । सीधी तरह से नहीं ।

टेना–स० [देश०] १. तेज करने के लिए पत्थर आदि पर हथियार रगड़ना । २. मूँछ के बालों को खड़ा और तना रखने के लिए उमेठना ।

टेबुल–पुं० [अं०] १. एक प्रकार की बड़ी ऊँची चौकी । मेज । २. सारिणी । जैसे—टाइम टेबुल ।

टेम–स्त्री० [हिं० टिमटिमाना] दीप-शिखा । दीये की लौ । लाट ।

टेर–स्त्री० [सं० तार] १. गाने में ऊँचा स्वर । तान । टीप । २. बुलाने का ऊँचा शब्द । पुकार ।

टेरना–स० [हिं० टेर+ना (प्रत्य०)] १. ऊँचे स्वर से गाना । २. पुकारना । स० [सं० तीरण = तै करना] बिताना । व्यतीत करना । (कष्ट का समय)

टेलिफोन–पुं० [अं०] वह तार जिसके द्वारा एक स्थान पर कही हुई बात बहुत दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है ।

टेव–स्त्री० [हिं० टेक] आदत । बान ।

टेवना†–स० दे० 'टेना' ।

टेवा–पुं० [सं० टिप्पन] जन्म-कुंडली ।

टेसू–पुं० [सं० किंशुक] १. पलाश । ढाक । २. शारदीय नवरात्र का एक उत्सव जिसमें लड़के गाते हुए घूमते हैं । ३. इस उत्सव पर गाया जानेवाला गीत ।

टैक्स–पुं० [अं०] कर । महसूल ।

यौ०–इनकम-टैक्स = आमदनी पर लगनेवाला कर । आय-कर ।

टोंच–स्त्री० [हिं० टोंचना] १. सिलाई । २. सिलाई का टाँका ।

टोंचना–स० [सं० टंकन या अनु०] १. सिलाई करना । सीना । २. गड़ाना । चुभाना ।

टोंटा–पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टोंटी] पानी आदि ढालने के लिए बरतन में लगा हुआ नल । २. कारतूस ।

टोंटी–स्त्री० [हिं० टोंटा] किसी पात्र या नल में आगे की ओर लगा हुआ वह छोटा मुँह जिसमें से होकर कोई तरल पदार्थ गिरता हो । जैसे-झारी की टोंटी । कल की टोंटी ।

टोक†–स्त्री० [सं० स्तोक] १. टोकने की क्रिया या भाव ।

यौ०–रोक टोक = (देखो)

२. किसी के टोकने से लगनेवाली होनेवाला अनिष्ट परिणाम । ३. उ से कही हुई कोई ऐसी बात जो कि में बाधक होने या नजर लगानेवाली जाती है । (स्त्रियाँ)

मुहा०–टोक लगना = किसी के का अनिष्ट प्रभाव पड़ना ।

टोकना–स० [हिं० टोक] किसी काम करने पर उसे कुछ कहकर और उससे कुछ पूछ-ताछ करना । पुं० [?] [स्त्री० टोकनी] १. टो झाबा । २. एक प्रकार का हंडा (

टोकरा–पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० टोकरी] बाँस या पतली टहनियों का बना हुआ और गहरा बरतन । डला । झाबा ।

टोकरी–स्त्री० हिं० 'टोकरा' का अल्पा

टोका–पुं [सं० स्तोक] १. सिरा । जैसे-डोरे या तागे का टोका । २ आदि का कोना या पल्ला । ३. नो

टोकारा–पुं० [हिं० टोक] वह बा किसी को कुछ चेताने या स्मरण दि लिए रोक या टोककर कही जाय ।

टोट*–स्त्री० [हिं० टूटना = कम होना] कमी । त्रुटि । २. अभाव ।

टोटक-हाया–स्त्री० [हिं० टोटका] [टोटकहाई] टोटका, टोना या जादू करने

टोटका–पुं० [सं० त्रोटक] दैवी करने के लिए वह प्रयोग जो किसी अ शक्ति या भूत-प्रेत पर विश्वास करके जाय । टोना ।

टोटा–पुं० [सं० तुंड] बचा या बचा खंड । टुकड़ा । पुं० [हिं० टूटना] १. घाय । हानि । कमी । त्रुटि ! ३. अभाव ।

टोड†–पुं० [सं० तुंड] उदर । पेट ।

टोडिक–पुं० [हिं० टोड] वह जिसे

मुहा०-आँख टोरना = लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या नीची करना।

टोरी*-स्त्री० दे० 'टोली'।

टोल-स्त्री० [सं० तोलिका] १. मंडली। जत्था। झुंड। २. चटसार। पाठशाला। पुं०[अं०] वह कर जो किसी विशेष सुभीते के लिए या यात्रियों आदि पर लगता है।

टोलना†-स० दे० 'टटोलना'।

टोला-पुं० [सं० तोलिका = घेरा, बाड़ा] [स्त्री० टोली] आदमियों की बड़ी बस्ती या नगर का एक भाग। महल्ला। पाड़ा।

टोली-स्त्री० [सं० तोलिका] १. छोटा महल्ला। नगर या बस्ती का छोटा भाग। २. समूह। जत्था।

टोवना†-स० दे० 'टोना' (स्पर्श करना)।

टोह-स्त्री० [हिं० टटोलना?] १. टटोल। खोज। ढूँढ। २. खबर। पता। (किसी व्यक्ति या बात के सम्बन्ध में)

टोहना*-अ० [हिं० टोह] टोह या थाह लेना। स० दे० 'टटोलना'।

टोही-स्त्री० [हिं० टोह] टोह लेने या पता लगानेवाला।

टौर*-पुं० [?] घात। दाँव।

टौरना-स० [हिं० टेरना] १. जाँच करना। परखना। २. पता लगाना।

ट्राम-स्त्री० [अं०] (रेलकी तरह) लोहे की पटरियों पर बिजली से चलनेवाली एक प्रकार की लम्बी गाड़ी जो प्रायः बड़े बड़े नगरों में चलती हैं।

ट्रामवे-स्त्री = ट्राम।

ठ

ठंढक-स्त्री० [हिं० ठंढा] १. शीत। सरदी। जाड़ा। २. ताप या जलन का विपरीत तत्त्व। तरी। ३. संतोष। तृप्ति।

ठंढा-वि० [?] [स्त्री० ठंढी] १. जिसमें ठंढक हो। सर्द। शीतल।

पद-ठंढा साँस = दुःख से भरा लम्बा

साँस । शोकोच्छ्वास । आह ।
२. जो जलता या दहकता हुआ न हो । बुझा हुआ । ३. जिसके स्वभाव में क्रोध या आवेश न हो । धीर । शांत ।
मुहा०–ठंढा करना = (क) क्रोध शांत करना । (ख) ढारस या तसल्ली देना । **ठंढे ठंढे** = बिना विरोध या प्रतिवाद किये । चुपचाप ।
४. जिसमें स्पष्ट रूप से उग्रता या भीषणता न हो । जो चुपचाप और अन्दर ही अन्दर विकट कार्य करता हो । जैसे-ठंढा युद्ध । ५. जिसमें उत्साह या उमंग न हो । ६. सुस्त । धीमा । ७. जिसमें पुंसत्व न हो या कम हो । ८. मृत । मरा हुआ ।
मुहा०–ठंढा होना = मर जाना । **(कोई पवित्र या पूज्य पदार्थ) ठंढा करना** = तोड़कर अलग करना ।

ठंढाई–स्त्री० [हिं० ठंढा] १. वे मसाले जिनसे शरीर की गरमी शांत होती और ठंढक आती है । २. पिसी हुई भाँग ।

ठंढा युद्ध–पुं० [हिं० ठंढा + सं० युद्ध] अन्दर ही अन्दर की जानेवाली ऐसी कार्रवाई जो प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का रूप धारण न करने पर भी युद्ध के मुख्य उद्देश्य सफल या सिद्ध करती हो । (कोल्डवार)

ठक–स्त्री० [अनु०] ठोंकने का शब्द ।
वि० सन्नाटे में छाया हुआ । भौचक्का ।

ठक-ठक–स्त्री० [अनु०] ठोंकने का शब्द ।

ठकुर-सुहाती–स्त्री० [हिं०ठाकुर + सुहाना] लल्लो-चप्पो । खुशामद ।

ठकुराइत (यत)–स्त्री० [हिं० ठाकुर + आइत (प्रत्य०)] १. 'ठाकुर' होने का भाव २. राज्य और उससे सम्बन्ध रखनेवाला अधिकार या वैभव । ३. बड़ों के प्रति होनेवाली श्रद्धा या प्रीति ४. दे. 'ठकुराई' ।

ठकुराइन–स्त्री० दे० 'ठकुरानी' ।

ठकुराई–स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. ठाकुर का अधिकार, पद या भाव । २. सरदारी प्रधानता । ३. वह प्रदेश जो किसी ठा या सरदार के अधिकार में हो । ४. बड़प्प महत्त्व ।
+पुं० ठाकुर या राजपूत क्षत्रिय ।

ठकुरानी–स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. ठा की स्त्री । २. रानी । ३. स्वामिनी ।

ठकुरायत–स्त्री० दे० 'ठकुराई' ।

ठक्कर–स्त्री० दे० 'टक्कर' ।

ठग–पुं० [सं० स्थग] [स्त्री० ठ भाव० ठगी] १. वह जो छल और से दूसरों का माल ले लेता हो । २.

ठगण–पुं० [सं०] पिंगल में ५ म का एक गण ।

ठगना–स० [हिं० ठग] १. धोखे माल ले लेना । २. धोखा देना ।
पद -ठगा-सा = चकित । भौचक
३. सौदा बेचने में अधिक दाम लेना चीज देना ।
अ० १. धोखा खाना । किसी के जा आना । २. चकित होना । दंग र

ठगनी–स्त्री० दे० 'ठगिन ।

ठग-पना–पुं० [हिं० ठग + प ठगने का भाव या काम । धूर्त्तता ।

ठग-मूरी–स्त्री० [हिं० ठग + मू नशोली चीज जो किसी को बेहोश उसका माल लूटने के लिए ठ खिलाते थे ।

ठग-मोदक–पुं० दे० 'ठग-लाड़ू' ।

ठगयारी मूरि–स्त्री दे० 'ठग-मूरि

ठग-लाड़ू–पुं० [हिं० ठग + लड्डू का वह लडडू जिसमें नशीली करनेवाली चीज मिली रहती थी ।
मुहा०–ठग लाड़ू खाना = म बेसुध होना ।

ठगवाह+–पुं० दे० 'ठग' ।

ठग-विद्या–स्त्री० = धूर्त्तता ।

ठगाना–अ० [हिं० ठगना] ठगा

ठगिन(नी)–स्त्री० [हिं० ठग] १.

स्त्री । छुटेरिन । २. ठग
। २. कुटनी ।
दे० 'ठग' ।
[हिं० ठग] १. धोखा देकर
लूटने का काम या भाव ।
। चालबाजी ।
[हिं० ठग + मूरि] १. ठगने
। २. सुध-बुध भुलानेवाली बात
जानहु लाई काहु ठगोरी ।

सी पर) ठगोरी डालना=
अथवा और किसी प्रकार अपने
देना ।
। जादू ।
दे० 'ठगोरी' ।
[हिं० ठाठ] वह टट्टी,
से शिकार किया जाता है ।
[सं० अट्टहास] परिहास । हँसी-

स्याता] १. बहुत-सी वस्तुओं
का समूह । २. दे० 'ठाठ' ।
दे० 'ठट्ठा' ।
दे० 'ठिठकना' ।
[हिं० ठाठ] ठाठदार ।
[हिं० ठाठ] १. ठहराना ।
। २. सजाना ।
रहना । अड़ना । डटना ।
। सुसज्जित होना ।
[हिं० ठठ = समूह] समूह या दल

[हिं० ठठना] १. बनावट ।
। २. ठाठ । सजावट ।
[हिं० ठाठ] १. किसी के
हड्डियों का ढाँचा । २. किसी
ढाँचा । ३. मुरदा ले चलने की
।
[अनु० ठक] मारना । पीटना ।
[सं० अट्टहास] जोर से हँसना ।

ठठेरा-पुं० [अनु० ठक ठक] [स्त्री० ठठेरिन] बरतन बनानेवाला । कसेरा ।

कहा०—ठठेरे ठठेरे बदलौअल = जैसे के साथ तैसा व्यवहार । **ठठेरे की बिल्ली**= ठठेरे की बिल्ली का-सा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न डरे ।

ठठेरी—स्त्री० [हिं० ठठेरा] १. ठठेरे की स्त्री । २ ठठेरे का काम ।

वि० ठठेरों का ।

यौ०—ठठेरी बाजार = कसेरों का बाजार ।

ठठोल-पुं० [हिं० ठट्ठा] १. दिल्लगीबाज । मसखरा । २. दे० 'ठठोली' ।

ठठोली—स्त्री० [हिं० ठट्ठा] हँसी । दिल्लगी ।

ठड़ा(ढ़ा)†—वि० दे० 'खड़ा' ।

ठन—स्त्री० [अनु०] धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द ।

ठनक—स्त्री० [अनु० ठन ठन] १. चमड़े से मढ़े हुए बाजे पर आघात पड़ने का शब्द । २. टीस । कसक ।

ठनकना—अ० [अनु० ठन ठन] [स० ठनकाना] १. ठन ठन शब्द होना ।

मुहा०—तबला ठनकना = नाच-गाना होना ।

२. हलकी पीड़ा होना । टीस मारना ।

मुहा०—माथा ठनकना = कुछ खटका या सन्देह होना ।

ठनकार—स्त्री० [अनु०] ठनठन शब्द ।

ठन-गन—स्त्री० [अनु० ठन ठन] मंगल अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिए आग्रह या हठ ।

ठनठन गोपाल—पुं० [अनु० ठनठन + गोपाल] १. निःसार वस्तु । २. निर्धन मनुष्य ।

ठनठनाना—स० [अनु०] ठनठन शब्द उत्पन्न करना । बजाना ।

अ० ठनठन शब्द होना ।

ठनना—अ० [हिं० ठानना] १. (किसी कार्य का) तत्परता से आरंभ किया जाना ।

अनुष्ठित होना। छिड़ना। २. (मन में) ठहरना। पक्का होना। ३. उद्यत या तैयार होना।

ठनाठन–क्रि॰ वि॰ [अनु॰ ठनठन] ठनठन शब्द के साथ।

ठप–वि॰ [अनु॰] (कार्य या व्यापार) जो चलता-चलता किसी कारण से रुक या बन्द हो गया हो। जैसे–मँहगी के कारण व्यापार या हड़ताल के कारण यातायात ठप हो जाना।

ठप्पा–पुं॰ [सं॰ स्थापन] १. लकड़ी या धातु का वह खंड जिसपर कोई आकृति या बेल-बूटे आदि खुदे हों और उसे किसी दूसरी वस्तु पर रखकर दबाने से वे आकृतियाँ उतर या बन जायँ। साँचा। २. साँचे के द्वारा बनाये हुए बेल-बूटे आदि। छापा।

ठमकना–अ॰ [सं॰ स्तंभ] [भाव॰ ठमक] चलते चलते ठहर जाना। ठिठकना। कुछ रुकना।

ठमकाना(कारना)–स॰ [हिं॰ ठमकना] चलते हुए को रोकना। ठहराना।

ठयऊ†–पुं॰ दे॰ 'ठौर' (स्थान)।

ठयना*–स॰ [सं॰ अनुष्ठान] १. ठानना। २. पूरी तरह से करना। ३. निश्चित करना। ४. आकार, रूप, अस्तित्व आदि देना। बनाना।

स॰ [सं॰ स्थापन] १. स्थापित करना। बैठाना। ठहराना। २. प्रयुक्त करना।

अ॰ १. स्थित होना। बैठना। जमना। २. काम में आना। प्रयुक्त होना। ३. दे॰ 'ठनना'।

ठरना–अ॰ [सं॰ स्तब्ध] १. सरदी से अकड़ना या सुन्न होना। २. बहुत अधिक सरदी पड़ना या लगना।

ठर्रा–पुं॰ [देश॰] १. बहुत मोटा सूत। २. महुए की निकृष्ट शराब।

ठवन–स्त्री॰ [सं॰ स्थापन] १. बैठने का भाव। स्थिति। २. बैठने या खड़े होने का ढंग। मुद्रा। (पोज, पोस्चर)

ठवना*–स॰ दे॰ 'ठयना'।

ठवनि*–स्त्री॰ दे॰ 'ठवन'।

ठवर*–पुं॰ दे॰ 'ठौर'।

ठस–वि॰ [सं॰ स्थास्नु] १. ठोस। २. (कपड़ा) जिसकी बुनावट गफ। ३. दृढ़। मजबूत। ४. वजनी। ५. सुस्त। आलसी। ६. जिसकी झनकार ठीक न हो। ७. कंजूस।

ठसक–स्त्री॰ [हिं॰ ठस] १. चेष्टा। २. नखरा। ३. ठाट-बाट।

ठसका–पुं॰ [अनु॰] १. जिसमें कफ न निकले। २. ठोकर।

ठसाठस–क्रि॰ वि॰ [हिं॰ ठस] कसकर भरा हुआ। खचाखच।

ठस्सा–पुं॰ [देश॰] १. घमंड। ३. ठाठ-बाट।

ठहना*–अ॰ [अनु॰] १. हिनहिनाना। २. शब्द करना। ठहरना। रुकना।

अ॰ [सं॰ संस्था] १. बनाना। २. रक्षा करना। बचाना। की लाज ठहना = बचाना।

ठहर–पुं॰ [सं॰ स्थल] १. स्थान। २. रसोई का स्थान। चौका।

ठहरना–अ॰ [सं॰ स्थैर्य] १. चलते कुछ रुकना। थमना। डालना। टिकना। ३. एक स्थान रहना। स्थित रहना। ४. जल्दी नष्ट न होना। टिकाऊ होना। घुली हुइ वस्तु के नीचे बैठ जाने का थिराना। ६. धैर्य रखना। या पक्का होना।

मुहा॰–किसी बात का ठहर किसी बात का पक्का होना। ठहरा जैसे–वह हमारा मित्र ठहरा।

ठहराना–स॰ [हिं॰ ठहरना] ठहराई, ठहराव] १. चलने से

मंदिर । देव-स्थान ।

ठाकुर-बाड़ी–स्त्री० दे० 'ठाकुर-द्वारा' ।

ठाकुरी–स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. स्वामित्व । आधिपत्य । २. शासन । ३. दे० 'ठकुराई' ।

ठाठ–पुं० [सं० स्थातृ] १. लकड़ी या बाँस की पट्टियों का बना हुआ ढाँचा । २. किसी वस्तु के मूल अंगों और पार्श्वों का वह समूह जिसके आधार पर शेष रचना होती है । ढड्ढा । (फ्रेम) ३. शृंगार । सजावट ।

मुहा०–ठाठ पर रह जाना = उद्देश्य सिद्ध करने में विफल होकर ज्यों के त्यों रह जाना । **ठाठ बदलना** = (क) वेष बदलना । (ख) झूठ मूठ अधिकार या बड़प्पन जताना । रंग बाँधना ।

४. आडंबर । तड़क-भड़क । ५. ढंग । शैली । ६. आयोजन । तैयारी । ७. सामान । सामग्री ।

पुं० [हिं० ठाठ] १. समूह । झुंड । †२. बहुतायत । अधिकता ।

ठाठना†–स० [हिं० ठाठ] १. निर्मित करना । रचना । बनाना । २. अनुष्ठान या आयोजन करना । ठानना । ३. सजाना । अ० ठाठ या वेष बनाना ।

ठाठ-बाट–पुं० [हिं० ठाठ] १. सजावट । सज-धज । २. तड़क-भड़क । आडम्बर ।

ठाठर–पुं० [हिं० ठाठ] १. टट्टर । टट्टी । २. ठठरी । पंजर । ३. ढाँचा । ४. कबूतर आदि के बैठने की छतरी । ५. ठाट-बाट ।

ठाढ़ा†–वि० [सं० स्थातृ] [स्त्री० ठाढ़ी] १. खड़ा । २. समूचा । साबुत । पूरा ।

ठाढ़ेश्वरी–पुं० [हिं० ठाढ़ा] एक प्रकार के साधु जो आध्यात्मिक साधना के लिए बराबर खड़े ही रहते हैं, कभी बैठते या लेटते नहीं ।

ठानना–स० [सं० अनुष्ठान] [भाव० ठान] १. (कार्य) तत्परता के साथ आरम्भ करना । अनुष्ठित करना । छेड़ना । २. पक्का करना । ठहराना । ३. दृढ़ संकल्प करना ।

ठाना†–स० [सं० अनुष्ठान] १. ठानना । २. स्थापित करना । रखना ।

ठाम†–पुं० [सं० स्थान] १. स्थान । जगह । २. ठवन । मुद्रा ।

ठार–पुं० [सं० स्तब्ध] १. कड़ा जाड़ा । गहरी सरदी । २. पाला । हिम ।

ठाला–पुं० [हिं० निठल्ला] १. रोजगार का न चलना या आमदनी का न होना । २. किसी वस्तु या बात का पास में बिलकुल न होना । अभाव ।

वि० जिसे कुछ काम-धंधा न हो । निठल्ला ।

ठाली–वि० [हिं० निठल्ला] १. जिसे कुछ काम न हो । निठल्ला । २. खाली । रिक्त ।

ठावना*–स० दे० 'ठाना' ।

ठाह–स्त्री० [हिं० ठहना] १. ठहने की क्रिया या भाव । २. संगीत में बहुत ठहर-ठहरकर अर्थात् अपेक्षाकृत अधिक समय लगाकर कुछ गाने या बजाने की क्रिया या भाव । विलम्बित ।

स्त्री०[हिं०ठाहना] दृढ़ निश्चय । पक्का विचार ।

ठाहना–स० [हिं० ठहरना] संकल्प करना । मन में विचार पक्का करना ।

ठाहर–पुं० दे० 'ठिकाना' ।

ठिंगना–वि० [हिं० हेठ + अंग] [स्त्री० ठिंगनी] छोटे डील या कद का । नाटा ।

ठिक*–वि० दे० 'ठीक' ।

स्त्री० [हिं० टिकना] स्थिरता । ठहराव ।

ठिक-ठान*–पुं० दे० ठौर-ठिकाना ।

ठिक-ठैना*–पुं० [हिं० ठीक-ठयना] व्यवस्था । प्रबन्ध । आयोजन ।

ठिकरा–पुं० दे० 'ठीकरा' ।

ठिकाना–पुं० [हिं० टिकान] १. स्थान । जगह । २. रहने या ठहरने की जगह । निवास-स्थान ।

मुहा०–ठिकाने आना = बहुत सोच-विचार के बाद यथार्थ निर्णय पर पहुँचना । **ठिकाने की बात** = ठीक, उचित या समझदारी की बात । **ठिकाने पहुँचाना या लगाना** = (क) नष्ट कर न रहने देना । (ख) समाप्त करना । ३. निर्वाह या आश्रय का स्थान । निश्चित आस्तित्व या स्थिति । ठहराव । ५. प्रबन्ध । आयोजन । बस्त । ६. सीमा । अन्त । हद । ७. (कुछ पुरानी रियासतों में)

स० [हिं० टिकाना] अपने छिपा या ठहरा लेना । (दलाल)

ठिकानेदार–पुं० [हिं० ठिकाना + दार] वह जिसे रियासत की ओर से या जागीर मिली हो ।

ठिठकना–अ० [सं० स्थित +] १. चलते-चलते अचानक रुक जाना । स्तम्भित होना । ठक रह जाना ।

ठिठरना–अ० [सं० स्थित] ऐंठना या सिकुड़ना ।

ठिनकना–अ० [अनु०] (रुक-रुककर रोना ।

ठिरना–अ० दे० 'ठरना' ।

ठिलना–अ० [हिं० ठेलना का अ०] १. या ढकेला जाना । २. घुसना । पैठना ।

ठिलिया–स्त्री० [सं० स्थाली] छोटा घड़ा । गगरी ।

ठिलुआ–वि० [हिं० निठल्ला]

ठिल्ला–पुं० [हिं० ठिलिया] मिट्टी का

ठीक–वि० [हिं० ठिकाना] जैसा होना चाहिए, वैसा ही । यथार्थ । णिक । २. उपयुक्त । उचित । ३. शुद्ध । ४. दुरुस्त । ५. जो किसी पर अच्छी तरह बैठे या जमे । ६. रास्ते पर आया हुआ । ७. निश्चित किया हुआ । स्थिर । पक्का । क्रि० वि० जैसे चाहिए, वैसे । उचित या प्रकार से ।

पुं० १. पक्की बात । २. निश्चय । ३. प्रबन्ध । ठहराव । ४. जोड़ । योग ।

ठीक-ठाक–पुं० [हिं० ठीक] १.

कमलगट्टे आदि की ठुड्डी।

ठुमकना–अ० [अनु०] [भाव० ठुमक] १. बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २. नाच में पैर पटककर चलना जिसमें घुँघरू बजें।

ठुमकी–स्त्री० [अनु०] १. ठुमकने या रुक रुककर चलने की क्रिया या भाव। ठिठक। रुकावट। २. छोटी खरी पूरी।

ठुमरी–स्त्री० [देश०] एक प्रकार का चलता गाना, जिसमें एक स्थायी और एक ही अन्तरा होता है।

ठुर्री–स्त्री० [हिं० ठड़ा = खड़ा] वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर भी खिला न हो। ठुड्डी।

ठुसना–अ० [हिं० ठूँसना] कसकर भरा या ठूसा जाना।

ठुसाना–स० [हिं० ठूँसना] १. कसकर भरवाना। २. पेट भर कर खिलाना। (व्यंग्य)

ठूँठ–पुं० [सं० स्थाणु] १. वह पेड़ जिसकी डालें, पत्तियाँ आदि न रह गई हों। सूखा पेड़। २. जिसका हाथ कटा हो।

ठूँठा–वि० [सं० स्थाणु] १. बिना पत्तियों और टहनियों का (पेड़)। २. कटे हुए हाथवाला। लूला। ३. रिक्त। खाली।

ठूसना–स० [हिं० ठस] १. खूब कसकर भरना। २. घुसेड़ना। घुसाना। ३. खूब पेट भरकर खाना। (व्यंग्य)

ठेंगना–वि० दे० 'ठिंगना'।

ठेंगा–पुं० [हिं० अँगूठा] अँगूठा।

मुहा०–ठेंगा दिखाना = आशा में रखकर भी अन्त में उपेक्षापूर्वक निराश करना।

ठेंठी–स्त्री [देश०] १. कान की मैल। २. कोई चीज बन्द करने के लिए उसपर लगाई हुई डाट।

ठेक–स्त्री० [हिं० टिकना] १. सहारे के लिए नीचे लगाई जानेवाली चीज। टेक। चाँड़। २. पेंदा। तल। ३. घोड़ों की एक चाल। ४. छड़ी या लाठी की सामी।

ठेकना–स० [हिं० टेक] टेक या सहारा

लगाना।

अ० टिकना। ठहरना।

ठेका—पुं० [हिं० टिकना] १. सहारे की वस्तु। ठेक। २. ठहरने या रुकने की जगह। अड्डा। ३. तबला या ढोल बजाने का वह प्रकार जिसमें केवल ताल दिया जाता है। ४. तबले के साथ बजाया जाने वाला बाँयाँ। ५. ठोकर। धक्का।

पुं० दे० 'ठीका'।

ठेकेदार—पुं० दे० 'ठीकेदार'।

ठेगना*—स० [हिं० टेकना] १. टेकना। सहारा लेना। २. सहारा लगाना। ३. मना करना। रोकना।

ठेघना*—स० = ठेगना।

अ० = टिकना।

ठेठ—वि० [देश०] १. निपट। निरा। बिलकुल। २. जिसमें कुछ मेल-जोल न हो। खालिस। ३. जिसमें किसी प्रकार की बनावट या कृत्रिमता न हो। ४. शुद्ध। निर्मल। ५. आरंभ। शुरू।

स्त्री० वह बोली जिसमें लिखने पढ़ने की भाषा के शब्दों का मेल न हो, केवल बोलचाल के शब्द हों। सीधी-सादी बोली। जैसे-ठेठ हिन्दी, ठेठ मराठी।

ठेठर†—पुं० दे० 'थिएटर'।

ठेल—स्त्री० [हिं० ठेलना] ठेलने की क्रिया या भाव।

ठेल-ठाल—स्त्री० दे० 'ठेल'।

ठेलना—स० [अनु०] १. धक्का देकर आगे बढ़ाना। ढकेलना। २. अपना भार या दायित्व दूसरे पर रखना।

*अ० बलप्रयोग या जबरदस्ती करना। उदा०—ताही पै ठगावै ठेलि जाही को ठगतु है। केशव

ठेला—पुं० [हिं० ठेलना] १. ठेलने की क्रिया या भाव। २. वह छोटी गाड़ी जिस पर चीजें रख कर हाथ से ठेलते या ढकेलते हुए, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाई जाती हैं। ३. धक्का। टक्कर। ४. भीड़-भाड़।

ठेस—स्त्री० [हिं० ठस] हलका आघात साधारण धक्के की चोट।

ठैन*—स्त्री० [सं० स्थान] स्थान। स्त्री० दे० 'ठवनि'।

ठोंक—स्त्री० [हिं० ठोंकना] १. ठोंकने क्रिया या भाव। २. अन्न के दानों, आदि पर, कीड़े मकोड़े के दंश या की चोंच से लगा हुआ आघात या चिह्न।

ठोंकना—स० [अनु० ठक ठक] १. धँसाने के लिये जोर से ऊपर चोट लगा

यौ०—ठोंकना-पीटना = (क) मार पीटना। (ख) किसी चीज को ठीक करने के लिये उस पर आघात करना। **ठोंकना बजाना** = (क) कोई चीज लेने पहले उसे अच्छी तरह जाँचना। परखना (ख) बात चीत पक्की करने से पहले सब अंगों पर विचार करके, उनके संबं निश्चय करना।

२. प्रहार करना। मारना पीटना। नालिश, अरजी आदि दाखिल करना। करना। ४. काठ में डालना। बेड़ी जकड़ना। (दण्ड)।

ठोंक-पीट—स्त्री० [हिं० ठोंकना + पीट] ठोंकने, पीटने या मारने की क्रिया या

ठोंग—स्त्री० [सं० तुंड] १. चोंच उसकी मार। उंगली की ठोकर।

ठोंगा—पुं० [देश०] कागज का बना एक खास तरह का दोना या पात्र।

ठो—अव्य० [हिं० ठौर] एक शब्द संख्यावाचक शब्दों में लगता है। अदद। (पूर्बी) जैसे-चार ठो आम।

ठोक—स्त्री० दे० 'ठोंक'।

ठोकना—स० = ठोंकना।

ठोकर—स्त्री० [हिं० ठोकना] १. आघात जो चलने में कंकड़, पत्थर के धक्के से पैर में लगता है।

मुहा०—ठोकर लेना = चलते समय ठो

हुआ पत्थर या कंकड़ जिससे
। ३. पैर या पहने हुए
भाग से किसी पर किया जाने
। ४. किसी प्रकार का भारी
। धक्का ।

या ठोकरें खाना = (क)
आरण या दुर्दशा में पड़ कर
(ख) धोखे में आना ।

[सं० तुंड] ओठोंके
लिए हुए उभरा हुआ
। चिबुक । दाढ़ी ।

] इक प्रकार की मीठी
)

] १. पक्षियों की चोंच ।
मकोड़े का वह अंग जिससे
घात करते हैं ।

ठोली–स्त्री० दे० 'ठठोली' ।

स्त्री० [देश०] रखेली स्त्री । उप-पत्नी ।

ठोस–वि० [हिं० ठस] १. जो पोला या खोखला न हो । २. दृढ़ । मजबूत ।

ठोसा–पुं० दे० 'ठेंगा' ।

ठोहना†–स० [हिं० ढूँढ़ना] टोह या पता लगाना । खोजना । ढूँढ़ना ।

ठौनि*–स्त्री० दे० 'ठवन' ।

ठौर–पुं० [हिं० ठाँव] १. जगह । स्थान । **पद–ठौर-कुठौर** = बुरे ठिकाने । अनुपयुक्त स्थानपर । **मुहा०–ठौर रखना** = मार गिराना । **ठौर रहना**–(क) जहाँ का तहाँ पड़ा रहना । (ख) मर जाना ।
२. मौका । अवसर ।

ठौर-ठिकाना–पुं० १. रक्षितरूप से रहने का कोई साधारण स्थान । २. (बात में) दृढ़ता या निश्चय ।

ड

वर्णमाला में व्यंजनों का तेर-
का तीसरा वर्ण जिसका
मूर्द्धा है। इसके दो रूप और
(क) जैसे-डंडा में के दोनों ड,
(ख) जैसे-गड़बड़ में के दोनों ड़ ।

[सं० दंश] १. बिच्छु, मधु-
और भौंड़ों के पीछे का जहरीला
वे जीवों के शरीर में धँसा कर
हैं। २. कीड़े, मकोड़ों के
लम्बा, पतला अंग जिसे वे
में उसका रस चूसने के लिये
। ३. कलम की जीभी (निब)
।

[अनु०] गरजना ।

[सं० ढक्का] एक प्रकार का
।

डंके की चोट कहना = खुल्लम-
सामने कहना । सबको सुनाकर कहना ।

डंका-निशान–पुं० [हिं० डंका + निशान= झंडा] राजाओं की सवारी के आगे बजनेवाला डंका और उसके साथ चलनेवाला झण्डा ।

डंकिनी–स्त्री० दे० 'डाकिनी' ।

डंकिनी बंदोबस्त–पुं० दे० दवामी 'बंदोबस्त' ।

डंख*–पुं० दे० 'दंख' ।

डंगर†–पुं० [देश०] चौपाया । पशु ।

डँगरी–स्त्री० [हिं० डाँगर] ककड़ी ।

स्त्री० [हिं० डाँगर] चुड़ैल । डाइन ।

डँगवारा–पुं० [हिं० डंगर] किसानों में होनेवाली पारस्परिक हल-बैल आदि की सहायता या लेन-देन का व्यवहार ।

डंगू-ज्वर–पुं० [अं० डेंगू] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चकते निकल आते हैं ।

डंठल–पुं० [सं० दंड] छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा ।

डंठी†–स्त्री० [सं० दंड] १. डंठल। २. किसी चीज में लगा हुआ कोई लंबा अंश।

डंड–पुं० [सं० दंड] १. डंडा। सोटा। २. बाहु-दंड। बाँह। ३. हाथ-पैर के पंजों के बल की जानेवाली एक प्रकार की कसरत।

मुहा०–डंड पेलना = आनन्द करना।

४. दंड। सजा। ५. अर्थ-दंड। जुरमाना। ६. किसी प्रकार की आर्थिक हानि। (अपराध या विवशता के कारण)। नुकसान।

मुहा०–डंड भरना = किसी की आर्थिक हानि की पूर्त्ति करना।

डंडवत–पुं० दे० 'दंडवत्'।

डँडवा†–पुं० [मेरुदंड में का दंड] कमर। कटि।

डँडवी†–पुं० दे० 'करद'।

डंडा–पुं० [सं० दंड] [स्त्री० अल्पा० डंडी] १. लकड़ी या बाँस का सीधा लम्बा टुकड़ा। २. मोटी और बड़ी छड़ी। सोंटा। लाठी। ३. चार-दीवारी। डाँड।

डंडाकरन*–पुं० दे० 'दंडाकारण्य'।

डंडा-डोली–स्त्री० दे० 'डोली-डंडा'।

डँड़िया–स्त्री० [हिं० डाँड़ी = रेखा] १. वह साड़ी जिसके बीच में गोटे टाँक कर लकीरें या डंडियाँ बनाई गई हों। २. गेहूँ के पौधे की सींकोवाली बाल।

†–पुं० [हिं० डाँड़] कर उगाहनेवाला।

डंडी–स्त्री० [हिं० डंडा] १. छोटी लंबी पतली लकड़ी। २. किसी वस्तु का वह लंबा पतला अंग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। दस्ता। हत्था। मुठिया। ३. तराजू की वह लकड़ी जिसमें पलड़े बँधे रहते हैं। डाँड़ी। ४. वह लंबा डंठल जिसमें फूल या फल लगते हैं। नाल। ५. झप्पान नाम की पहाड़ी सवारी जिसे आदमी उठा कर ले चलते हैं।

*वि० [सं० द्वंद] चुगलखोर।

पुं० दे० 'डंडी' (साधु)।

डँडोरना†–स० [अनु०] ढूँढ़ना। खोजना।

डंफना–अ० [अनु०] १. जोर से चिल्लाना। २. जोर जोर से रोना।

डंबर–पुं० [सं०] १. आडंबर। विस्तार। ३. एक प्रकार का चँदवा।

यौ०–मेघ-डंबर = बड़ा शामि दल-बादल। **अंबर-डंबर** = वह सन्ध्या समय आकाश में दिखाई दे

डंस–पुं० [सं० दंश] १. एक बड़ा मच्छर। डाँस। २. दे० 'दंश'।

डक–पुं० [अं०] १. एक प्रकार जिससे जहाजों के पाल बनते हैं। प्रकार का मोटा कपड़ा।

[अं० डेक] जहाज की ऊपरी छत।

डकरना–अ० [अनु०] बैल का बोलना।

डकार–पुं० [अनु०] १. पेट भरे का सूचक वह शारीरिक व्यापार पेट की वायु कुछ शब्द करती हुई निकलती है।

मुहा०–डकार तक न लेना = का धन चुपचाप हजम कर जाना।

२. शेर आदि की गरज। दहाड़।

डकारना–अ० [हिं० डकार+ पेट की वायु शब्दपूर्वक मुँह से नि डकार लेना। २. किसी का मा पचा जाना। ३. शेर आदि का दहा

डकैत–पुं० [हिं० डाका] [डकैती] डाका डालनेवाला। डाकू।

डग–पुं० [हिं० डाँकना] १. एक पैर उठाकर दूसरी जगह रखना। कदम।

मुहा०–डग भरना या मारना = बढ़ाना। लम्बे पैर रखना।

२. उतनी दूरी, जितनी पर एक दूसरी जगह पैर पड़ता है। पग। डें

डगडगाना–अ० दे० 'डगमगाना'।

डगडोलना*–अ० दे० 'डगमगाना'।

डगण–पुं० [सं०] पिंगल में चार मा का एक गण।

डपटना–स० [हिं० डपट] डाँटना। घुड़कना।

डपेट–स्त्री० दे० 'डपट'।

डपेटना–स० दे० 'डपटना'।

डपोर-शंख–पुं० [सं० दर्पवत्, प्रा० दप्पुल, दप्पडल + सं० शंख] १. जो कहे बहुत, पर करे कुछ भी न। डींग मारने वाला। २. बड़े डील-डौल का, पर मूर्ख।

डफ–स्त्री० [अ० दफ़] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा। चंग। (ब्रज में इस शब्द का प्रयोग स्त्री० में होता है।)

डफली–स्त्री० [हिं० डफ] छोटा डफ। कहा०–**अपनी अपनी डफली अपना अपना राग** = वह स्थिति जिसमें सब लोग अपनी अपनी बात कहते हैं और एक का मत दूसरे से नहीं मिलता।

डफारना†–अ० [?] १. चिल्लाना। २. जोर जोर से रोना।

डफाली–पुं० [हिं० डफ] डफ, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।

डबकना–अ० [अनु०] १. पीड़ा करना। टीस मारना। २. आँखों में आँसू आना।

डबकौहाँ*–वि० [हिं० डबकना] [स्त्री० डबकौहीं] आँसू भरा हुआ। डबडबाया हुआ। (नेत्र)

डबडबाना–अ० [अनु०] आँसुओं से (आँखें) भर आना। अश्रुपूर्ण होना।

डबरा–पुं० [सं० दभ्र] [स्त्री० डबरी] पानी का छिछला गड्ढा।

डबल–वि० [अं०] १. दोहरा। २. मोटा, बड़ा या भारी।

पुं० एक पैसेवाला सिक्का। पैसा।

डबल रोटी–स्त्री० दे० 'पाव रोटी'।

डबी*–स्त्री० दे० 'डब्बी'।

डबोना–स० दे० 'डुबाना'।

डब्बा–पुं० [सं० डिंब] [अल्पा० डिबिया] १. ढकनजार छोटा गहरा बरतन। संपुट।

२. रेल-गाड़ी में की एक गाड़ी।

डब्बू-पुं० [हिं० डब्बा] खाने की चीजें रखने का एक प्रकार का डब्बा।

डभकना-अ० [अनु० डभ डभ] १. पानी में डूबना-उतराना। डुबकियाँ लेना। २. आँखों में जल भर आना।

डभकौहाँ-वि० दे० 'डबकौहाँ'।

डभकौरी-स्त्री० दे० 'डुभकौरी'।

डमरू-पुं० [सं० डमरु] चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा जो बीच में पतला और दोनों सिरों पर मोटा होता है।

डमरू-मध्य-पुं० [सं० डमरु + मध्य] वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े खंडों के बीच में हो और उन दोनों को मिलाता हो। इसके दो भेद हैं-जल डमरू-मध्य और स्थल डमरू मध्य।

डयन-पुं० [सं०] १. उड़ान। २. पंख।

डर-पुं० [सं० दर] १. अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होनेवाला भाव। भय। भीति। खौफ। २. अनिष्ट की संभावना की मन में होनेवाली कल्पना। आशंका।

डरना-अ० [हिं० डर] १. अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना। भयभीत होना। २. आशंका करना।

मुहा०-डर जाना = भयभीत होना।

*अ० [हिं० डलना] १. दे० 'डलना'। २. कहीं पड़े रहना।

डरपना*-अ० दे = डरना।

डरपाना*-स० = डराना।

डरपोक-वि० [हिं० डरना + पोंकना] बहुत डरनेवाला। भीरु। कायर।

डरवाना-स० दे० 'डराना'।

डरा*-पुं० [स्त्री० अल्पा० डरी] दे० 'डला'

डराना-स० [हिं० डरना] किसी के मन में डर उत्पन्न करना। भयभीत करना।

डरारा*-वि० [स्त्री० डरारी] दे० 'डरावना'।

डरावना-वि० [हिं० डर] [स्त्री० डरावनी] जिसे देखने से डर लगे। भयानक। भयं

†स० डराना।

डरावा-पुं० [हिं० डराना] डराने के कही हुई बात।

डल-पुं० [सं० दल] टुकड़ा। खंड। स्त्री० [सं० तल] झील।

डलना-अ० [हिं० डालना] डा उँड़ेला जाना। पड़ना।

डला-पुं० [सं० दल] [स्त्री० अल्पा १. मोटा बड़ा टुकड़ा। खंड। डली। ढेला। जैसे-नमक का डला। पुं० [सं० डलक] [स्त्री० डलिया] डलिया। टोकरा। दौरा।

डलिया-स्त्री० [हिं० डला] १. छोट टोकरी। दौरी। २. एक प्रकार की

डली-स्त्री० [हिं० डला] १. छोटा या खंड। २. कटी हुई सुपारी। स्त्री० दे० 'डलिया'।

डवा†-पुं० = थैला।

डसना-स० [सं० दशन] डसन] १. विषवाले कीड़े क काटना। २. डंक मारना।

डसाना-स० हिं० 'डसना' का प्र०। †स०[हिं० डासन] (बिछौना) बि उदा०-जागे पुनि न डसैहौं। -तु

डहकना-स० [हिं० ठगना ?] १. देना। ठगना। २. ललचाकर न अ० धोखा खाना। अ० [हिं० दहाढ़, धाड़,] १. वि विलाप करना। २. दहाड़ मारना। अ० [देश०] छितराना। फैल

डहकाना-अ० [हिं० ठगना] आकर पास का धन गँवाना। ठगा स० १. धोखा देकर किसी की लेना। ठगना। जटना। २. कोई दिखाकर या ललचाकर भी न देना।

डहडहा-वि० [अनु०] [स्त्री० ड [भाव० डहडहाट] १. जो सूखा

बात।

डाँटना–स० [हिं० डाँट] डराने के लिए क्रोध-पूर्वक जोर से बोलना। घुड़कना।

डाँट-फटकार–स्त्री० = डाँट-डपट।

डाड़–पुं० [सं० दंड] १. सीधी लकड़ी। डंडा। २. गदका। ३. नाव खेने का बल्ला। चप्पू। ४. ऊँची मेड़। ५. सीमा। हद। ६. अर्थ-दंड। जुरमाना। ७. कर्तव्य, प्रतिज्ञा या निश्चय का पालन न कर सकने के बदले में दिया जानेवाला धन। हरजाना। (पेनैलिटी)

डाँड़ना–स० [हिं० डाँड़] १. अर्थ-दंड से दंडित करना। जुरमाना करना। २. डाँड़ या हरजाना लेना। ३. दंड देना। ४. दे० 'डाँटना'

डाँड़ा-पुं० दे० 'डाँड़'।

डाँड़ी–स्त्री० [हिं० डाँड़] १. दे० 'डंडी' २. हिंडोले में की वे चारो लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिनपर बैठने की पटरी रखी जाती है। ३. डाँड़ खेनेवाला आदमी। ४. लीक। मर्यादा। ५. डंडे में बँधी हुई झोली के आकार की पहाड़ी सवारी। झप्पान। ६. दे० 'डंडी'।

डाँवाँ-डोल–वि० [हिं० डोलना] अपनी ठीक या एक स्थिति में न रहनेवाला। जो कभी इधर होता हो, कभी उधर। अ-स्थिर।

डाँस–पुं० [सं० दंश] १. बड़ा मच्छर। २. एक प्रकार की मक्खी।

डाइन–स्त्री० [सं० डाकिनी] १. भूतनी। चुड़ैल। २. वह स्त्री जिसकी कुदृष्टि के प्रभाव से बच्चे मर जाते या बीमार पड़ जाते हों। टोनहाई। ३. कुरूपा और डरावनी स्त्री।

डाक–पुं० [हिं० डाँकना] १. सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान आदि बदले जाते हों। **मुहा०–डाक बैठाना या लगाना** = शीघ्र यात्रा पूरी करने के लिए स्थान-स्थान

पर सवारी बदलने की व्यवस्था करना । **पद०-डाक-चौकी** = (देखो) २.राज्यकी ओर से, चिट्ठियों पार्सलों आदि के आने-जाने की व्यवस्था । ३. कागज-पत्र आदि, जो इस प्रकार कहीं से भेजे जाँय या आवें । (पोस्ट)

स्त्री० [अनु०] वमन । कै ।

पुं० [बँग] नीलाम की बोली । **विशेष**-दे० 'बोली' ३. ।

डाकखाना-पुं० दे० 'डाकघर' ।

डाक-गाड़ी-स्त्री० वह रेल-गाड़ी जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है और जिसमें डाक जाती है ।

डाक-घर-पुं० [हिं० डाक + घर] वह सरकारी दफ्तर जहाँ से लोग चिट्ठी-पत्री आदि भेजते हैं । और जहाँ से चिट्ठियाँ आदि बाँटी जाती हैं । (पोस्ट ऑफिस)

डाक-चौकी-स्त्री० [हिं० डाक + चौकी] मार्ग में पड़नेवाला वह स्थान जहाँ यात्रा के घोड़े, हरकारे या सवारियाँ बदली जाती हैं ।

डाकना-अ० [हिं० डाक] कै करना ।

स० [हिं० डाक + ना] फाँदना । लाँघना ।

डाक-बँगला-पुं० [हिं० डाक + बँगला] वह मकान जो सरकार की ओर से परदेसियों या सरकारी अधिकारियों के ठहरने के लिए बना हो ।

डाकर-पुं० [पश्तो डाग = सूखी कड़ी भूमि] नदी के किनारे की वह भूमि जिसपर बरसात में नदी में बहकर आई हुई चिकनी मिट्टी जम जाती है । रौसली ।

डाका-पुं० [हिं० डाकना या सं० दस्यु] माल-असबाब लूटने के लिए दल बाँधकर किया जानेवाला धावा । बट-मारी ।

डाका-जनी-स्त्री० [हिं० डाका + फा० जनी] डाका मारने का काम । बट-मारी ।

डाकिन-स्त्री० दे० 'डाकनी' ।

डाकिनी-स्त्री० [सं०] डाइन । चुड़ैल ।

डाकू-पुं० [हिं० डाक या सं०
डाका डालनेवाला । डकैत ।

डॉकेट-पुं० दे० 'खरीता' ३. ।

डाकोर-पुं० [सं० ठक्कुर] १.
देवता । २. विष्णु भगवान् । (गुजरात)

डाक्टर-पुं० [अं०] [स्त्री० डाक्
१. किसी विषय का बहुत बड़ा
या पंडित । २. वह जिसे अंग्रेजी
चिकित्सा करने की शिक्षा मिली
चिकित्सा करने का अधिकार प्राप्त
३. एक प्रकार की उपाधि जो
विद्वानों को कोई उच्च परीक्षा पास
पर अथवा यों ही उनके सम्मानार्थ
जाती है ।

डाक्टरी-स्त्री० [अं० डाक्टर]
का काम, पद, भाव या उपाधि ।

डाग-स्त्री० [?] डुग्गी, ढोल आदि
की लकड़ी । डंडा ।

डाट-स्त्री० [सं० दाँति] १.
जो बोझ सँभालने के लिए
लगाई जाय । टेक । चाँड़ । २.
करने की वस्तु । ३. बोतल, शीशी
का मुँह बन्द करने की वस्तु ।
डट्टा । ४. मेहराब को रोके रखने
ईंटों की जोड़ाई ।

स्त्री० दे० डाँट ।

डाटना-स० [हिं० डाट] १. ए
को दूसरी वस्तु पर कसकर बैठा
टेक या चाँड़ लगाना । ३. छेद
बन्द करना । ४. कसकर या ठूसकर
५. खूब पेट भर खाना । ६. ठाठ
गहने आदि पहनना ।

+अ० १.डटकर सामने बैठना । २.
वेष बनाना ।

स० दे० 'डाँटना' ।

डाढ़-स्त्री० [सं० द्रष्टा] चबाने के
दाँत । चौभड़ । दाढ़ ।

डाढ़ना*-स० [सं० दग्ध] १.

रखना। २. संतप्त या दुखी

[सं० दग्ध] १. दावानल।
२. आग। ३. ताप।
]बहुत बड़ी दाढ़ी (वाला)
दे० 'दाढ़ी'।

[सं० दभ्र] १. वह नीची जमीन
जिसमें बरसाती पानी ठहरा
बरतन जिसमें हाथ-मुँह धोते हैं।
३. मैला या गँदला पानी।

[सं० दर्भ] १. एक प्रकार का
आम की मंजरी या मौर। ३.
जिसके अन्दर का पानी पीया

[सं०] १. शिव-प्रणीत माना
तंत्र। २. हलचल। ३ धूम
। ५. चमत्कार।

] १. साल वृक्ष का गोंद। राल।
प्रकार की मधु-मक्खी जो राल

[अ० दायमुल हब्स] १.
के लिए कैद। २. देश-निकाला।
वि० दे० 'डाँवाडोल'।
दे० 'डाइन'।
= दैनिकी।
दे० 'डाल'।
[सं० डल्लक] डलिया। चँगेरी।
१. दे० 'डालना'। २. दे०

[हिं० डाल] वह रस्सी या
जिस पर कपड़े लटकाये जाते हैं।
दे० 'डाल'।
[सं० दारु] १. पेड़ के धड़
लम्बी लकड़ी जिसमें पत्तियाँ
निकलते हैं। शाखा। शाख।
के गिलास लगाने के लिए दीवार
हुई एक प्रकार की खूँटी। ३.

तलवार का फल। ४. डंडी। डाँड़ी। स्त्री० [हिं० डला] १. डलिया। चँगेरी। २. वे कपड़े और गहने जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिये जाते हैं।

डालना–स० [सं० तलन] १. किसी चीज़ में गिराना या छोड़ना।

मुहा०–डाल रखना = (क) रख छोड़ना। (ख) रोक रखना।

२. एक वस्तु या पात्र में ऊपर से कोई वस्तु गिराना। छोड़ना। ३. मिलाना। ४. प्रविष्ट करना। घुसाना। ५. फैलाना। बिछाना। ६. शरीर पर धारण करना। पहनना। ७. गर्भपात करना (चौपायों के लिए) ८. कै करना। वमन करना। ९. (स्त्री को) पत्नी की तरह घर में रखना। १०. बिछाना।

डालर–पुं० [अं० डॉलर] अमेरिका का चाँदी का एक सिक्का जो साधारणतः भारत के तीन रुपयों से कुछ अधिक का होता है।

डाली–स्त्री० [हिं० डला] १. डलिया। चँगेरी। २. फल, फूल और मेवे जो डलिया में सजाकर किसी बड़े के पास उसके सम्मानार्थ भेजे जाते हैं। ३. दाँई हुई फसल का अनाज हवा में उड़ाकर भूसे से अलग करने की क्रिया या भाव। ओसाना। बरसाना।

मुहा०–डाली देना = उक्त प्रकार से भूसे से अनाज अलग करना। ओसाना। बरसाना।

स्त्री० दे० 'डाल'।

डावरा–पुं० [सं० डिंव] बेटा।

डासन*–पुं० [सं० डाभ = दर्भ + आसन] बिछौना।

डासना*–स० [हिं० डासन] बिछाना।

पुं० दे० 'बिछौना'।

स० [हिं० डसना] डसना। काटना।

डाह–स्त्री० [सं० दाह] ईर्ष्या। जलन।

डाहना–स० [सं० दाहन] १. किसी के मन में ईर्ष्या या डाह उत्पन्न करना। जलाना। २. कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना।

डाही-वि० [हिं० डाह] डाह या ईर्ष्या करनेवाला।

डिंगर-पुं० [सं०] १. मोटा आदमी। २. दुष्ट। पाजी। ३. दास। गुलाम।

डिंगल-वि० [सं० डिंगर] नीच। बुरा। स्त्री० [सं० पिंगल का अनु०] राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावलियाँ लिखते हैं।

डिंडिम-पुं० [तामिल तराणु से सं०] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। २. डुगडुगी। डुग्गी।

डिंब-पुं० [सं०] १. जीव-जन्तुओं में स्त्री जाति का वह जीवाणु जो पुरुष जाति के वीर्य के संयोग से अथवा यों ही आप से आप बढ़कर नये जीव या प्राणी का रूप धारण करता है। (ओवम) २. अंडा। ३. कीड़े का बच्चा। ४. वावैला। रोना-धोना। ५. दंगा। फसाद।

डिंबाणु-पुं० दे० 'डिंब' १।

डिंबाशय-पुं० [सं०] स्त्री जाति के जीवों में वह भीतरी अंग जिसमें डिंब रहता या उत्पन्न होता है।

डिंभ-पुं० [सं०] १. छोटा बच्चा। २. मूर्ख। अज्ञान। अबोध।

*पुं० [सं० दंभ] १. आडंबर। पाखंड। २. अभिमान। घमंड।

डिक्री-स्त्री० दे० 'डिगरी'।

डिगना-अ० [हिं० डग] १. अपनी जगह से टलना। खिसकना। २. निश्चय या विचार पर दृढ़ न रहना। विचलित होना। ३. हिलना।

डिगरी-स्त्री० [अं०] १. विश्वविद्यालय की परीक्षा की पदवी। २. अंश। कला। स्त्री० [अं० डिक्री] दीवानी अदालत का वह फैसला जिसमें वादी को कोई अधिकार मिलता है। जयपत्र। (डिक्री)

डिगरीदार-वि० [हिं० डिगरी + फा० दार] वह जिसके पक्ष में डिगरी या अधिकार का निर्णय हुआ हो।

डिगलाना*-अ० दे० 'डगमगाना'।

डिगाना-हिं० 'डिगना' का स०।

डिठार(ठियार)-वि० [हिं० डीठ =

जिसे दिखाई दे। दृष्टिवाला।

डिठौना-पुं० [हिं० डीठ] वह

टीका जो बच्चों को नजर से बचाने के

लगाया जाता है।

डिठौरा-पुं० दे० 'डिठौना'।

डिढ़*-वि० दे० 'दृढ़'।

डिढ्या-स्त्री० [देश०] अत्यन्त

परम लोभ या लालसा।

डिबिया-स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोटा

या संपुट।

डिब्बा-पुं० दे० 'डब्बा'।

डिभगना*-स० [देश०] १.

करना। २. छलना।

डिम-पुं० [सं०] वह नाटक जिसमें इन्द्र

युद्ध आदि के दृश्य हों।

डिमडिमी-स्त्री० [सं० डिंडिम]

डिल्ला-पुं० [हिं० टीला] बैल के

का उठा हुआ कूबड़। कूजा। ककु

डींग-स्त्री० [सं० डीन] शेखी से

बढ़कर कही जानेवाली बात। सीट।

डीठ-स्त्री० [सं० दृष्टि] १. दृष्टि। नज

निगाह। २. देखने की शक्ति। ३.

समझ। ४. बुरी नजर।

डीठना†-अ० [हिं० डीठ] दिखाई दे

स० १. देखना। २. नजर लगाना।

डीठबंध*-पुं० दे० 'इन्द्रजाल'।

डीठमूठि†-स्त्री० [हिं० डीठि +

टोना। जादू।

डील-पुं० [देश०] १. प्राणियों के शरीर

ऊँचाई, चौड़ाई, मोटाई आदि।

उठान।

यौ०-डील-डौल = (क) देह की

चौड़ाई। (ख) शरीर। देह।

डीली*-स्त्री० = दिल्ली (नगर)।

[सं० देह] १. छोटा गाँव । २.
।
=डुगडुगी (डौंडी) ।
=डुक्का (घूँसा) ।
=डुक्का (घूँसा) ।
[अनु०] चमड़ा मढ़ा हुआ
, जिसे बजाकर किसी बात
जाती है । डुग्गी । डौंडी ।
दे० 'डुगडुगी' ।
[हिं० डुबकी] पानी के अन्दर
नेवाली एक प्रकार की नाव ।
(सब-मरीन)
[हिं० डूबना] १. पानी में
क्रिया या भाव । गोता । २. पीठी
हुई बिना तली बरी ।
[हिं० डूबना] १. पानी या
पदार्थ में समूचा डालना । गोता
चौपट या नष्ट करना ।
नाम डुबाना = नाम या मर्यादा
। लुटिया डुबाना = (क) महत्व
नष्ट करना । (ख) काम
।
[हिं० डूबना] पानी की डूबने
गहराई ।
दे० 'डुबाना' ।
दे० 'पन-डुब्बा' ।
१. दे० 'डुबकी' । २. दे०
।
-स्त्री० [हिं० डुबकी + बरी]
बिना तली बरी ।
-अ० दे० 'डोलना' ।
-स० [हिं० डोलना] १. डोलने
करना । चलाना । २. हटाना ।
-पुं० [सं० तुंग] १. टीला । २.
पहाड़ी । ३. आबादी । बस्ती ।
-पुं० दे० 'डूगर' ।
-अ० [अनु० डुब डुब] १. पानी
और किसी तरल पदार्थ में पूरा समाना ।

गोता खाना ।

मुहा०-चुल्लू भर पानी में डूब मरना = लज्जा के मारे मुँह दिखाने योग्य न रहना । **जी डूबना** = (क) चित्त व्याकुल होना । (ख) हृदय की धड़कन बन्द होती हुई जान पड़ना ।

२. सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों या नक्षत्रों का अस्त होना । ३. चौपट होना । नष्ट होना ।

मुहा०-नाम डूबना = प्रतिष्ठा नष्ट होना ।

४. व्यवसाय में लगाया या ऋण-स्वरूप दिया हुआ धन नष्ट होना । ५. लीन या तन्मय होना । लिप्त होना ।

डेंड़सी-स्त्री० [सं० टिंडिश] ककड़ी की तरह की एक तरकारी । टिंड । टिंडसी ।

डेड़हा†-पुं० [सं० डुंडुभ] पानी में रहनेवाला साँप जिसमें विष नहीं होता ।

डेढ़-वि० [सं० अध्यर्द्ध] पूरा एक और उसका आधा ।

मुहा०-डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना = अपना तुच्छ या अमान्य विचार या कार्य सबसे अलग रखना या चलाना ।

डेढ़ा-वि० दे० 'ड्योढ़ा' ।

डेमरेज-पुं० [अं०] बन्दरगाह या रेल के मालगोदाम में पड़े रहनेवाले माल का किराये के रूप में लिया जानेवाला हरजाना जो माल छुड़ानेवाले को देना पड़ता है ।

डेरा-पुं० [हिं० डालना या ठहरना] १. थोड़े समय के लिए रहने का स्थान या व्यवस्था । टिकान । पड़ाव ।

मुहा०-डेरा डालना = (क) स्थायी रूप से निवास करना । टिकना । ठहरना । (ख) कहीं जमकर बैठ जाना ।

२. खेमा । तम्बू । ३. नाचने-गानेवालों का दल । ४. वेश्या का घर । ५. मकान । घर । (पूरब)

†वि० [सं० डहर ?] [स्त्री० डेरी] बाँयाँ । वाम । सव्य । 'दाहिना' का विपर्याय ।

डेराना†–अ० दे० 'डरना'। स० दे० 'डराना'।

डेल†–पुं०[हिं० डला] १. बड़ी डलिया। झाबा। २. वह झाबा जिसमें बहेलिये फँसाई हुई चिड़ियाँ बन्द करके रखते हैं।

डेला–पुं० [सं० दल] १. आँख में का वह सफेद उभरा हुआ भाग जिसमें पुतली रहती है। कोया। २. डला। ३. ढेला।

डेवढ़–वि० [हिं० डेवढ़ा] डेढ़गुना। पुं० १. सिलसिला। क्रम। तार। २. विकट अवस्था में भी काम निकालने या ठीक करने की व्यवस्था। (ऐडजस्टमेन्ट)

डेवढ़ा–वि०, पुं० दे० 'ड्योढ़ा'।

डेवढ़ी–स्त्री० दे० 'ड्योढ़ी'।

डेहरी–स्त्री० [?] अन्न रखने का एक प्रकार का छोटा बरतन। स्त्री० दे० 'दहलीज'।

डैन*–पुं० दे० 'डैना'।

डैना–पुं० [सं० डयन] चिड़ियों के एक ओर के परों का समूह। पक्ष।

डोंगर–पुं० [सं० तुंग] [स्त्री० अल्पा० डोंगरी] १. पहाड़ी। २. टीला।

डोंगा–पुं० [सं० द्रोण] बड़ी नाव।

डोंगी–स्त्री० [सं० द्रोणी] छोटी नाव।

डोंड़ी–स्त्री० [सं० तुंड] पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है।

डोई–स्त्री० [हिं० डोकी] वह करछी जिससे चाशनी चलाते या घी निकालते हैं।

डोकी–स्त्री० [हिं० डोका] काठ की कटोरी।

डोडा–पुं० [सं० तुंड] १. कपाश, सेमल आदि का बीज जिसके चारो ओर रूई लिपटी रहती है। २. पोस्त की फली।

डोब–पुं० दे० 'डुबकी'।

डोभ†–पुं० [हिं०डुबाना] सिलाई का टाँका।

डोम–पुं० [सं० डम] [स्त्री० डोमिन, डोमनी] १. एक प्रसिद्ध जाति जो श्मशान पर शव को आग देती और टोकरियाँ आदि बनाकर बेचती है। २. ढाढ़ी। मीरासी।

डोम कौआ–पुं० [हिं० डोम (जाति), कौआ] एक प्रकार का बड़ा कौआ।

डोमड़ा–पुं० दे० 'डोम' १.।

डोमनी–स्त्री० [हिं० डोम] १. डोम जाति की स्त्री। २. ढाढ़ी या मीरासी स्त्री जो गाने-बजाने का काम करती है।

डोर–स्त्री० [सं०] १. पतला तागा। डोरा। **मुहा०–डोर पर लगाना** = ठीक सिद्धि के अनुकूल करना। ढब पर लाना। **(किसी की) डोर लगना** = (क) किसी के पीछे पीछे चलना। (ख) अनुयायी बनना। अनुकरण करना। २. सहारा। आसरा।

डोरा–पुं० [सं० डोरक] १. रूई, रेशम, ऊन आदि को बटकर बनाया हुआ सूत या तागा। धागा। १. धारी। लकीर। ३. आँखों की वे महीन लाल नसें जो नशे या यौवन की उमंग में दिखाई देती हैं। ४. तलवार की धार। ५. तपे की धार। ६. स्नेह-सूत्र। प्रेम का बंधन। **मुहा०–किसी पर डोरे डालना** = किसी को अपने प्रेम-पास में फँसाने का प्रयत्न करना। ७. काजल या सुरमे की रेखा।

डोरिया–पुं० [हिं० डोरा] एक प्रकार का कपड़ा जिसमें कुछ मोटे सूतों की रंगीन धारियाँ होती हैं।

डोरिहार*–पुं० दे० 'पटवा'।

डोरी–स्त्री० [हिं० डोरा] १. रस्सी। **मुहा०–डोरी ढीली छोड़ना** = निगरानी या देख-रेख कम करना। २. पाश। बन्धन। ३. डंडीदार डोई।

डोरे*–क्रि० वि० [हिं० डोर] साथ। संग।

डोल–पुं० [सं० दोल] १. हिलने की क्रिया या भाव। २. हलचल। ३. रखने या भरने का लोहे का गोल

| झूला | ५. डोली | पालकी |

[हिं॰ डोलना] चंचल |

[हिं॰ डोल] छोटा डोल |

[सं॰ दोलन] १. गति में
| २. चलना | फिरना |
) विचलित होना | डिगना |

[सं॰ दोल] [स्त्री॰ डोली]
बैठने की बड़ी डोली, जिसे
है |

डोला देना = (क) किसी राजा
को भेंट की तरह अपनी लड़की
(ख) कन्या को वर के घर इसलिए
कि वहीं उसका ब्याह हो |

का झोंका | पेंग |

[हिं॰ डोलना] डोलने में
| चलाना |

[हिं॰ डोला] एक प्रकार की
कहार कंधे पर लेकर चलते हैं |

-पुं॰ [हिं॰ डोली + डंडा]
एक खेल, जिसमें दो लड़के
बाँहें मिलाकर और उनपर किसी
बैठाकर ले चलते हैं |

[हिं॰ डुग्गी] १. दे॰ 'डुगडुगी' | २. घोषणा | मुनादी |

डौर*–पुं॰ = डौल |

डौल–पुं॰ [?] १. ढाँचा | ढड्ढा |

मुहा॰–डौल पर लाना = (क) काट-छाँटकर सुडौल या दुरुस्त करना | (ख) दे॰ 'डौलियाना' |

२. बनावट का ढंग | रचना-प्रकार | ३. तरह | प्रकार | ४. युक्ति | उपाय |

मुहा॰–डौल बाँधना या लगाना = उपाय करना | युक्ति बैठाना |

५. रंग-ढंग | लक्षण |

डौलियाना†–स॰ [हिं॰ डौल] १. फुसलाकर अपने अनुकूल करना | २. गढ़कर दुरुस्त करना |

ड्योढ़ा–वि॰ [हिं॰ डेढ़] जितना हो, उसका आधा और | डेढ़ गुना |

पुं॰ अंकों की डेढ़-गुनी संख्या का पहाड़ा |

ड्योढ़ी–स्त्री॰ [सं॰ देहली] १. फाटक | दरवाजा | २. मकान में घुसने का स्थान | द्वार |

ड्योढ़ीदार–पुं॰ [हिं॰ ड्योढ़ी + फा॰ दार] ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार | द्वारपाल | दरबान |

ढ

वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन
वर्ग का चौथा अक्षर | इसका
स्थान मूर्द्धा है | इसके दो रूप
(क) जैसे 'ढकना' में का 'ढ';
(ख) बढ़ना में का 'ढ़' |

-स॰ दे॰ 'ढाँकना' |

-पुं॰ [सं॰ आषाढ़क] १. ढाक
का पौधा | २. ढाक या पलास
|

[सं॰ तंग (तंगन)] १. कोई
की प्रणाली या शैली | ढब |
(मेथड, मोड) २. कोई काम करने का प्रकार | तरह | (वेज, मैनर)
३. रचना | बनावट | ४. युक्ति | उपाय |

मुहा॰–ढंग पर चढ़ाना या लाना = अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना |

५. चाल-चलन | आचरण | ६. लक्षण |

यौ॰–रंग-ढंग = ऊपरी लक्षण |

ढँगलाना†–स॰ दे॰ 'लुढ़काना' |

ढंगी–वि॰ [हिं॰ ढंग] १. चाल-बाज | धूर्त्त | २. चतुर | चालाक | ३. दे॰ 'ढोंगी' |

ढँढोरना†–स॰ दे॰ 'ढूँढ़ना' |

ढँढोरा–पुं॰ [अनु॰ ढम + ढोल] १. घोषणा करने का ढोल | डुगडुगी | डौंडी |

२. ढोल बजाकर की जानेवाली घोषणा।

ढँढोरिया-पुं० [हिं० डँढोरा] ढँढोरा पीटने या मुनादी करनेवाला।

ढँपना-अ० दे० 'ढकना'

ढकना-पुं० [सं० ढक = छिपना] [स्त्री० अल्पा० ढकनी] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन। अ० किसी वस्तु के नीचे या आड़ में होने पर दिखाई न देना। छिपना। स० दे० 'ढाँकना'।

ढखनी-स्त्री० [हिं० ढकना] ढाँकने की वस्तु। ढकन।

ढका†-पुं० [सं० ढक्का] बड़ा ढोल। *पुं० [अनु०] धक्का। टक्कर।

ढकिल†-स्त्री० [हिं० ढकेलना] चढ़ाई। आक्रमण। धावा।

ढकेलना-स० [हिं० धक्का] धक्के से या ठेलकर आगे गिराना या बढ़ाना।

ढकोसला-पुं० [हिं० ढंग + सं० कौशल] प्रयोजन सिद्ध करने के लिए बनाया हुआ झूठा रूप। आडंबर।

ढक्कन-पुं० [सं०] ढाँकने की वस्तु। ढकना

ढक्का-पुं० [सं०] बड़ा ढोल।

ढगण-पुं० [सं०] तीन मात्राओं का एक गण। (पिंगल)

ढचर-पुं० [हिं० ढाँचा ?] १. झंझट। बखेड़ा। २. आडम्बर। ढकोसला।

ढट्ठा-वि० [देश०] आवश्यकता से अधिक बड़ा और बेढंगा। पुं० [हिं० ठाट] १. ढाँचा। २. झूठा ठाट-बाट। आडम्बर।

ढड्ढी-स्त्री० [हिं० ढड्ढा] बुढ़िया। (व्यंग्य)

ढपना-पुं० दे० 'ढकना'। अ० [हिं० ढकना] ढका होना।

ढपोर शंख-पुं० दे० 'डपोर शंख'।

ढब-पुं० [सं० धव = गति] १. कोई काम करने की विशेष प्रक्रिया। ढंग। रीति। तरीका। २. प्रकार। तरह। ३. बनावट। गढ़न। ४. युक्ति। उपाय। तदबीर। **मुहा०-ढब पर चढ़ाना, लगाना या लाना** = किसी को इस प्रकार फुसला कि उससे कुछ काम निकले। ५. प्रकृति। स्वभाव। ६. आदत।

ढयना-अ० दे० 'ढहना'।

ढरक†-स्त्री० [हिं० ढरकना] १. की क्रिया या भाव। २. दयालुता। दे० 'ढरनि'।

ढरकना†-अ० [हिं० ढार या ढाल] ढलकना। २. लेटना।

ढरका-पुं० [हिं० ढरकना] बाँस वह नली जिससे चौपायों को पिलाते हैं।

ढरकाना†-स० दे० 'ढलकाना'।

ढरकी-स्त्री० [हिं० ढरकना] करघे वह अंग जिससे बाने का सूत इधर-उधर आता-जाता है।

ढरकौंहा*-वि० [हिं० ढरकना] या ढलनेवाला।

ढरना†-अ० दे० 'ढलना'।

ढरनि-स्त्री० [हिं० ढरना] १. ढलने गिरने की क्रिया या भाव। २. डोलने की क्रिया। गति। ३. चित्त प्रवृत्ति। झुकाव। ४. दयालुता। अनु

ढरहरना†-अ० [हिं० ढलना का रूप] १. ढाला या उँडेला जाना। ढलना। ३. पूरी तरह से भरा जाना।

ढरहरा-वि० दे० 'ढरारा'।

ढरारा*-वि० [हिं० ढार या ढाल] ढरारी] १. शीघ्र ढलने, लुढ़कने या होनेवाला। २. ढालुआँ।

ढरिआना†-अ० [हिं० ढारना] ढालना, गिराना या बहाना। २. बहाना।

ढर्रा-पुं० [हिं० ढरना] १. काम की बँधी हुई शैली। ढंग। तरीका। आचरण। पद्धति। चाल-चलन।

[हिं० ढाल] १. द्रव नीचे की ओर जाना । २. लुढ़कना । ३. (किसी पर) होना ।

[हिं० ढलकना] आँखों से बहने का रोग ।

[हिं० ढलकना] ढलकने

[हिं० ढाल] १. द्रव पदार्थ ओर आना । बहना । २. । बीत जाना । जैसे—जोबन ४. उतार पर होना । जैसे-उमर

दिन ढलना = संध्या होना । या चाँद ढलना = सूर्य या डूबने के समीप होना ।

या लुढ़काया जाना । ५. किसी या प्रवृत्त होना । ६. किसी होना । रीझना । ७. साँचे में

में ढला = बहुत सुडौल और

[हिं० ढालना] १. जिसमें की ओर उतार हो । २. बनाया हुआ ।

हिं० 'ढालना' का प्रे० ।

[हिं० ढालना] ढालने की मजदूरी ।

दे० 'ढलवाना' ।

[हिं० ढाल] ढाल रखने

[हिं० ढलना] लौ । लगन ।

[सं० ध्वंसन] १. (मकान) गिर पड़ना । ध्वस्त होना । होना । मिट जाना ।

दे० 'ढलना' ।

[सं० ध्वंसन] किसी से काम कराना । ध्वस्त कराना ।

ढाँकना-स० [सं० ढक = छिपाना] ऊपर से कोई वस्तु रखकर (किसी वस्तु को) ओट में करना । ढकना ।

ढाँख†-पुं० = ढाक (पलाश)

ढाँचा-पुं० [सं० स्थाता] १. कोई चीज बनाने के पहले उसके अंगों को जोड़कर तैयार किया हुआ पूर्व रूप । ठाठ । डौल । २. इस प्रकार जोड़े हुए खंड कि उनके बीच में कोई वस्तु जमाई या लगाई जा सके । (फ्रेम) ३. पंजर । ठठरी । ४. गढ़न । बनावट ।

ढाँढा-पुं० [पश्तो] छोटा कूआँ ।

ढाँपना†-स० दे० 'ढाँकना' ।

ढाँसना-अ० [अनु०] सूखी खाँसी खाँसना ।

ढाँसी-स्त्री० [हिं० ढाँसना] सूखी खाँसी ।

ढाई-वि० [सं० अर्द्धद्वितीय, पु० हिं० अढाई] दो और आधा ।

ढाक-पुं० [सं० आषाढ़क] पलाश का पेड़ ।

कहा०--ढाक के तीन पात = सदा एक सा या ज्यों का त्यों । (व्यंग्य)

पुं० [सं० ढक्का] लड़ाई का ढोल ।

ढाड़-स्त्री० [अनु०] १. चिग्घाड़ । २. दहाड़ । ३. चिल्लाहट ।

मुहा०-ढाड़ मारना = चिल्लाकर रोना ।

ढाढ़स*-पुं० दे० 'ढारस' ।

ढाढ़ी-पुं० [देश०] [स्त्री० डाढ़िन] एक प्रकार के मुसलमान गवैये ।

ढाना-स० [हिं० ढाहना] १. दीवार, मकान आदि तोड़कर गिराना । २. गिराना ।

ढार*-स्त्री० [सं० धार] १. 'ढालुआँ' होने का भाव । ढाल । उतार । २. पथ । मार्ग । ३. ढाँचा । ४. रचना । बनावट । ५ दे० 'ढरनि' ।

†स्त्री०=ढाल (तलवार का वार रोकने की)।

ढारना†-स० दे० 'ढालना' ।

ढारस-पुं० [सं० दृढ़] १. किसी का दुःख या चिन्ता कम करने के लिए उसे समझाना । सान्त्वना । आश्वासन । २.

साहस । हिम्मत ।

ढाल–स्त्री० [सं०] तलवार आदि का अथवा और किसी प्रकार का वार रोकने का एक प्रसिद्ध उपकरण । चर्म । फलक ।

स्त्री० [सं० धार] १. वह जगह जो बराबर नीची होती चली गई हो । उतार । २. ढंग । तरीका । प्रकार ।

स्त्री० [हिं० ढाल] ढालने की क्रिया या भाव ।

ढालना–स० [सं० धार] १. पानी या कोई तरल पदार्थ नीचे गिराना । उँड़ेलना । २. शराब पीना । ३. बेचना ४. कोई चीज बनाने के लिए उसकी सामग्री साँचे में डालना ।

ढालुआँ–वि० [हिं० ढाल] [स्त्री० ढालवीं] १. जो बराबर नीचा होता गया हो । २. जिसमें ढाल हो । ढालू । (स्थान) ३. जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो ।

ढालू–वि० दे० 'ढालुआँ' ।

ढासना–पुं० [सं०धारण + आसन] वह चीज जिसपर पीठ का सहारा लगाया जाय । सहारा । टेक ।

ढाहना†–स० दे० 'ढाना' ।

ढिंढोरा–पुं० [सं० डिंडिम पटह, प्रा० डिंडिबअउअ] वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है । डुगडुगिया । डुग्गी ।

ढिग–क्रि० वि० [सं० दिक्] पास । निकट ।
स्त्री० १. निकटता । सामीप्य । २. किनारा ।

ढिठाई–स्त्री० [हिं० ढीठ] १. ढीठ होने की क्रिया या भाव । धृष्टता । २. अनुचित साहस ।

ढिबरी–स्त्री० [हिं० डिब्बी] मिट्टी का तेल जलाने के लिए डिबिया के आकार का दीपक ।
स्त्री० [हिं० ढपना] कसे जानेवाले पेंच के दूसरे सिरे पर लगाया जानेवाला लोहे का छल्ला ।

ढिलाई–स्त्री० [हिं० ढील] १. ढीला होने का भाव । २. शिथिलता । सुस्ती ।

ढिसरना†–अ० [सं० ध्वंसन] १. फिसल या सरक पड़ना । २. प्रवृत्त होना । झुक

ढींगर†–पुं० [सं० डिंगर] १. हट्टा- आदमी । २. पति । ३. उप-पति । यार

ढींढ़ा†–पुं० [सं० ढुंढि=लंबोदर, गणेश निकला हुआ पेट । २. गर्भ । हमल ।

ढीठ–वि० [सं० धृष्ट] १. बड़ों उचित आदर या संकोच न करनेवा धृष्ट । बे-अदब । शोख । २. अनुचि आवश्यकता से अधिक साहस करने ३. निडर । निर्भय ।

ढीठक*–वि० = ढीठ ।

ढीठता†–स्त्री० दे० 'ढिठाई' ।

ढील–सिर के बालों का कीड़ा । जूँ ।
स्त्री० दे० 'ढिलाई' ।
वि० दे० ढीला ।

ढीलना–स० [हिं० ढील] १. करना । २. बन्धन से अलग क छोड़ देना । ३. (रस्सी का डोर) प्रकार ढीली करना, जिसमें वह आगे की ओर बढ़ती जाय । ४. कम करना । थोड़ी स्वतंत्रता देना ।

ढीला–वि० [सं० शिथिल] १. जो या तना हुआ न हो । २. जो दृढ़ बँधा, जकड़ा या लगा न हो । ३. बहुत गाढ़ा न हो । गीला । ४. जो संकल्प या कर्तव्य पर स्थिर न रहे । धीमा । मन्द । ६. सुस्त । आलसी ।

ढीलापन–पुं० [हिं० ढीला + पन (प्र ढीला होने का भाव । शिथिलता ।

ढुँढ़वाना–स० हिं० 'ढूँढ़ना' का प्र

ढुंढिराज–पुं० [सं०] गणेश ।

ढुकना–अ० [देश०] १. घुसना । करना । (विशेषतः झुक या छि २. अचानक धावा करना । टूट प ३. टोह लेने के लिए आड़ में छि कहीं छिपकर पता लेना । ४. कि पास पहुँचना ।

ढुकाना–स० हिं० 'ढुकना' का स० ।

दे० 'ढोया'।
दे० 'धुर'। (ठिकाने तक)।
दे० 'ढुलकना'।
[हिं० ढार] १. किसी ओर
। २. कभी इधर और कभी
३. प्रवृत्त होना। झुकना।
प्रसन्न होना।
[हिं० ढाल] १. बराबर
खाते हुए नीचे गिरना।
किसी पर अनुरक्त या

हिं० ढुलकना का स०।
[हिं० ढाल] ढुलकना।
ढोना] ढोया जाना।
हिं० 'ढोना' का प्रे०।
[हिं० ढोना] ढोने या ढुलाने
या मजदूरी।
[हिं० ढाल] १. लुढ़काना।
२. प्रवृत्त करना। झुकाना।
करना। प्रसन्न करना। ४.
घुमाना। जैसे—चँवर ढुलाना।
ढोना] ढोने का काम दूसरे

[सं० ढुंढन] यह देखना कि
वस्तु कहाँ है। पता लगाना।
। खोजना।
दे० 'ढूकना'।
[सं० स्तूप] १. ढेर। अटाला।
। भीट।
[सं० ढेक] पानी के किनारे
एक प्रकार की चिड़िया।
दे० 'ढेंकी'।
[हिं० ढेंक (चिड़िया) ?] १.
के लिए कूएँ से पानी निकालने का
। २. धान कूटने का एक यंत्र।
[हिं० ढेंढ] आँख के ढेले पर
या निकला हुआ मांस। (रोग)
दे० 'ढोढा'।

ढेपनी†–स्त्री० [हिं० ढेप] १. पत्ते या फल का वह भाग जिससे वह टहनी से जुड़ा रहता है। ढेंपी। २. स्तन के ऊपर का काला गोल दाना।

ढेर–पुं० [हिं० धरना ?] एक जगह रखी हुई बहुत-सी वस्तुओं का कुछ ऊँचा समूह। राशि। अटाला।

मुहा०–ढेर करना = मार डालना। **ढेर हो रहना या जाना** = मरकर अथवा बहुत शिथिल होकर गिर पड़ना।

†वि० बहुत। अधिक। ज्यादा।

ढेरी–स्त्री० [हिं० ढेर] ढेर। राशि।

ढेलवाँस–स्त्री० [हिं० ढेला + सं० पाश] रस्सी का वह फन्दा जिसमें ढेले भरकर चारो ओर फेंकते हैं। गोफना।

ढेला–पुं० [सं० दल] १. मिट्टी, ईंट, कंकड़ आदि का छोटा कड़ा टुकड़ा। चक्का। २. टुकड़ा। डला।

पुं० [?] एक प्रकार का धान या उसका चावल।

ढेवा†–पुं० [हिं० ढोना ?] १. उतना बोझ जितना एक बार में ढोया जाय। खेप। २. गीली मिट्टी का वह ढेर जो कच्ची दीवार बनाते समय उसपर डाला जाता है।

ढैया–पुं० [हिं० ढाई] १. ढाई सेर का बटखरा। २. ढाई गुने का पहाड़ा।

ढोंका–पुं० [?] पत्थर या और किसी चीज का बड़ा अनगढ़ टुकड़ा।

ढोंग–पुं० [हिं० ढंग] ढकोसला। पाखंड।

ढोंगी–वि० [हिं० ढोंग] ढोंग रचनेवाला। पाखंडी।

ढोंढ़–पुं० [सं० तुंड] १. कपास, पोस्ते आदि का डोडा। २. कली।

ढोंढ़ी–स्त्री० [हिं० ढोंढ़] नाभि।

स्त्री० दे० 'ढोंढ़'।

ढोका–स्त्री० [हिं० ढुकना = झुकना] प्रणाम। नमस्कार।

ढोटा–पुं० [सं० दुहितृ = लड़की] [स्त्री०

ढोटी] १. पुत्र। बेटा। उदा० देखत छोट खोट नृप ढोटा।—तुलसी। २. बालक। लड़का।

ढोना–स० [सं० वोढ़] १. सिर या पीठ पर बोझ लादकर ले जाना। भार ले चलना। २. कहीं से सम्पत्ति आदि उठा ले जाना। ३. विपत्ति, कष्ट आदि में निर्वाह करना। दिन बिताना।

ढोर–पुं० [हिं० ढुरना] चौपाया। पशु।

ढोरना–स० [हिं० ढारना] १. ढरकाना। ढालना। २. लुढ़काना। ३. डुलाना। (चँवर आदि) ४. (अपने या किसी के) पीछे या साथ चलने में प्रवृत्त करना। पीछे लगाना।

अ० १. जमीन पर लोटना या लुढ़कना। २. किसी के अनुयायी बनकर उसके साथ या पीछे चलना।

ढोल–पुं० [सं०] १. एक प्रकार का लंबोतरा बाजा जिसके दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा होता है। २. कान के अन्दर का परदा।

ढोलक–स्त्री० [सं० ढोल] छोटा ढोल।

ढोलकिया–वि० [हिं० ढोलक] ढोलक बजानेवाला।

ढोलकी–स्त्री = ढोलक।

ढोलना–पुं० [हिं० ढोला] १. पति। २. वर। दूल्हा।

ढोलना–पुं० [हिं० ढोल] १. ढोल आकार का छोटा जन्तर।

+स० १. दे० 'ढालना'। २. दे० 'ढोल

ढोला–पुं० [हिं० ढोल] १. सड़े हुए आदि में का एक प्रकार का छोटा २. हद या निशान। ३. पिंड। शरीर। देह। ४. प्रियतम। ५. पति। ६. प्रकार का गीत।

ढोली–स्त्री० [हिं० ढोल] २०० की गड्डी।

ढोवा–पुं० [हिं० ढोना] १. ढोने क्रिया या भाव। ढोवाई। ढुलाई। दूसरों का माल अनुचित रूप से बहुत मात्रा में उठा ले जाना। ३. वे पदा मंगल अवसरों पर राजा या सरदार करते हैं।

ढोहना*–स० १. दे० 'ढोना'। २. दे०

ढौंचा–पुं० [सं० अर्द्ध + हिं० चा चार का पहाड़ा।

ढौर+–पुं = ढंग।

ढौरना +–स० [हिं० ढाल] इध घुमाना। जैसे—चँवर ढौरना।

ढौरी+ -स्त्री० [देश०] रट। धुन। स्त्री० [हिं० ढरना] ढंग। तरीका।

ण

ण–देव-नागरी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। कविता में यह 'णगण' का सूचक चिह्न या संक्षिप्त रूप माना जाता है।

णगण–पुं० [सं०] दो मात्रा एक गण।

त

त–देव-नागरी वर्ण-माला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दन्त है। छन्द शास्त्र में यह तगण का संक्षिप्त रूप माना जाता है; और कविता में क्रिया-विशेषण के रूप में यह 'तो' का अर्थ देता है।

तंग–वि० [फा०] १. जितना चौड़ा होना चाहिए, उससे कम। २. सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ३. कसा। ४. विकल। परेशान।

करना = सताना । दुःख
हाथ तंग होना = रुपये-पैसे की
।
तंग = तस्मा या बंद] घोड़ों
कसने का तसमा । कसन ।
[फा०] १. तंग होने का
संकीर्णता । सँकरापन । ३.
। ४. न्यूनता । कमी ।
[फा०] एक प्रकार की महीन
मलमल ।
[सं०] चावल ।
१. दे० 'तंतु' । २. दे० 'तत्व'
।
[हिं० तुरंत] आतुरता ।
में ठीक हो ।
[सं०] १. सूत । तागा । डोरा ।
। औलाद । ३. विस्तार ।
। ४. ताँत ।
[सं०] जुलाहा ।
[सं०] १. तंतु । ताँत । २.
कुटुम्ब का भरण-पोषण । ४.
का मन्त्र या शास्त्र । ५.
और किसी कार्य का प्रबन्ध । ६.
या शासन की कोई प्रणाली ।
गण-तंत्र आदि । ७. अधी-
। ८. हिन्दुओं का उपा-
एक शास्त्र जो शिव का
हुआ माना जाता है और जिसके
रखे जाते हैं ।
[सं०] [कर्त्ता तंत्रकारी]
।
[सं०] १. सितार आदि बाजों
हुआ तार । २. तारों की सहायता
बाजा । ३. शरीर की नस ।
।
१. जिसमें तार लगे हों । तंत्र संबंधी
।
१. बृहस्पति । २. वह जो

बाजा बजाता हो ।

तंदुरुस्त–वि० [फा०] नीरोग । स्वस्थ ।

तंदुरुस्ती–स्त्री० [फा०] तन्दुरुस्त होने की अवस्था या भाव । स्वास्थ्य ।

तंदुल†–पुं० दे० 'तंडुल' ।

तंदूर–पुं० [फा० तनूर] रोटी पकाने की मिट्टी की एक प्रकार की बड़ी भट्ठी ।

तंदेही–स्त्री० [फा० तनदिही] १. परिश्रम । मेहनत । २. प्रयत्न । कोशिश । ३. ताकीद । ४. तल्लीनता ।

तंद्रा–स्त्री० [सं०] १. वह अवस्था जो पूरी नींद आने के आरम्भ में होती है । ऊँघ । २. हलकी बे-होशी ।

तंद्रालस–पुं० [सं० तन्द्रा + आलस्य] तंद्रा या ऊँघ के कारण होनेवाला आलस्य ।

तंबाकू–पुं० दे० 'तमाकू' ।

तँबिया–पुं० [हिं० ताँबा] ताँबे, पीतल आदि का छोटा तसला ।

तंबीह–स्त्री० [अ०] १. नसीहत । शिक्षा । २. ताकीद । चेतावनी ।

तंबू–पुं० [हिं० तनना] कपड़े, टाट आदि का बना हुआ बड़ा खेमा । शामियाना ।

तंबूर–पुं० [फा०] एक प्रकार का ढोल ।

तंबूरची–पुं० [फा०] तंबूर नामक ढोल बजाने वाला ।

तंबूरा–पुं० [हिं० तानपूरा] सितार की तरह का, पर उससे कुछ बड़ा, एक बाजा । तानपूरा ।

तंबूल†–पुं० दे० 'तांबूल' ।

तँबोली–पुं० दे० 'तमोली' ।

तंभ(न)*–पुं० [सं० स्तंभ] शृंगार रस में स्तंभ नामक भाव ।

तँवाई–स्त्री० [सं० ताप, हिं० ताव] ताप । दाह । जलन ।

तँवार०–पुं [सं० ताप, पुं० हिं० ताँवर] १. ताप । गर्मी । २. मूर्छा । बेहोशी ।

तः–प्रत्य० [सं०] एक संस्कृत प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर ये अर्थ बढ़ाता

है-(क) रूप से; जैसे-साधारणतः। (ख) के अनुसार; जैसे-नियमतः।

तइँ*-प्रत्य॰ [हिं॰ तैं] से।

प्रत्य॰ [प्रा॰ हुंतो] १. प्रति। को। २. से।

*अव्य॰ [सं॰ तावत्] लिए। वास्ते।

तई-स्त्री॰ [हिं॰ तवा] छोटा तवा।

तउ†-अव्य॰ १. दे॰ 'तब'। २. दे॰ 'त्यों'।

तऊ†-अव्य॰ [हिं॰ तब + ऊ (प्रत्य॰)] तो भी। तथापि। तिसपर भी।

तक-अव्य॰ [सं॰ अंत + क] किसी बात या कार्य की सीमा अथवा अवधि सूचित करनेवाली एक विभक्ति। पर्यंत।

स्त्री॰ [हिं॰ ताकना] १. ताकने की क्रिया या भाव। तकाई। २. लगातार या एकटक देखने की क्रिया। टकटकी।

तकदमा-पुं॰ [अ॰ तखमीना] तखमीना। अन्दाज। कूत।

तकदीर-स्त्री॰ [अ॰] भाग्य। प्रारब्ध।

तकदीरवर-वि॰ [अ॰] भाग्यवान्।

तकना†-अ॰ [हिं॰ ताकना] १. दृष्टिपात करना। देखना। २. शरण लेना।

पुं॰ [हिं॰ ताकना] बहुत ताकनेवाला।

स॰ १. आश्रय, सहायता आदि के लिए किसी की ओर देखना। २. आसरा देखना। प्रतीक्षा करना।

तकब्बर*-पुं॰ [अ॰ तकब्बुर] [वि॰ तकब्बरी] अभिमान। घमंड।

तकमा†-पुं॰ १. दे॰ 'तमगा'। २. दे॰ 'तुकमा'।

तकरार-स्त्री॰ [अ॰] हुज्जत। विवाद।

तकरीर-स्त्री॰ [अ॰] १. बात-चीत। २. वक्तृता। भाषण।

तकला-पुं॰ [सं॰ तर्कु] [स्त्री॰ अल्पा॰ तकली] १. चरखे में लोहे की वह सलाई, जिसपर कता हुआ सूत लिपटता है। टेकुआ। २. रस्सी बटने का एक उपकरण।

तकली-स्त्री॰ [हिं॰ तकला] सूत कातने का एक छोटा यन्त्र, जिसमें काठ के एक लट्टू में छोटा-सा तकला लगा रहता है।

तकलीफ-स्त्री॰ [अ॰] १. कष्ट। दुःख। २. विपत्ति। संकट।

तकल्लुफ-पुं॰ [अ॰] शिष्टा (विशेषतः दिखौआ)

तकसीम-स्त्री॰ [अ॰] बाँटने की या भाव। विभाग। बँटाई।

तकसीर-स्त्री॰ [अ॰] अपराध।

तकाजा-पुं॰ दे॰ 'तगादा'।

तकाई-स्त्री॰ [हिं॰ ताकना] देखने की क्रिया या भाव।

तकाना-स॰ हिं॰ 'ताकना' का प्रे॰।

तकाव-पुं॰ [हिं॰ ताकना] तकाने की क्रिया या भाव।

तकावी-स्त्री॰ [अ॰] वह धन जो हरों को बीज, चारा आदि खरीदने के सरकार की ओर से उधार दिया जाता

तकिया-पुं॰ [फा॰] १. रूई भरा हुआ वह थैला जो लेटने या समय सिर के नीचे रखते हैं। २. रोक या सहारे के लिए लगाई वाली पत्थर की पटिया। मुतक्का। ३. करने का स्थान। ४. आश्रय। आसरा। ५. मुसलमान फकीर या रहने का स्थान।

तकिया-कलाम-पुं॰ दे॰ 'सखुन

तकुआ-पुं॰ दे॰ 'तकला'।

तक्कर*-वि॰ दे॰ 'तगड़ा'।

तक्र-पुं॰ [सं॰] मट्ठा। छाछ।

तक्षक-पुं॰ [सं॰] १. एक नाग राजा परीक्षित को काटा था। २. की एक प्राचीन अनार्य जाति। ३. सर्प। ४. बढ़ई।

तक्षण-पुं॰ [सं॰] लकड़ी, पत्थर गढ़कर मूर्त्तियाँ आदि बनाना।

तक्ष-शिला-स्त्री॰ [सं॰] भरत के तक्ष की राजधानी जो रावलपिंडी के खोदकर निकाली गई है।

तगाना–स० हिं० 'तागना' का प्रे०।

तगार–पुं० [पहलवी तग़ार (पीपे की तरह का बरतन) से अ० तग़ार] [स्त्री० अल्पा० तग़ारी] १. उखली गाड़ने का गड्ढा। २. वह स्थान जहाँ इमारत के लिए चूना, गारा आदि साना जाता है।

तगीर*–पुं० [अ० तग़य्युर] परिवर्त्तन।

तचना†–अ० [हिं० तपना] १. गरम होना। तपना। २. जलना। ३. दुःखी या सन्तप्त होना।

तचा†–स्त्री० दे० 'त्वचा'।

तचाना–स० [हिं० तपाना] १. तपाना। २. तपाना। गरम करना। ३. सन्तप्त या दुःखी करना।

तचित*–वि० [हिं० तचना] १. तपा हुआ। तप्त। २. दुःखी। सन्तप्त।

तच्छक*–पुं० दे० 'तक्षक'।

तच्छिन*–क्रि० वि० दे० 'तत्क्षण'।

तज–पुं० [सं० त्वच] १. दारचीनी की तरह का एक सदाबहार पेड़ जिसके पत्ते 'तेजपत्ता' कहलाते हैं। २. इस पेड़ की सुगन्धित छाल या लकड़ी।

तजन†–पुं० [सं० त्यजन] त्याग।

पुं० [सं० तजीन ? मि० फा० ताजियाना] कोड़ा। चाबुक।

तजना–स० [सं० त्यजन] त्यागना।

तजरबा–पुं०[अ०] १.अनुभव। २.प्रयोग।

तजरबाकार–पुं० = अनुभवी।

तजवीज–स्त्री० [अ०] १. सम्मति। राय। २. फैसला। निर्णय। ३. बन्दोबस्त। ४. प्रस्ताव।

तजवीज सानी–स्त्री० [अ०] एक बार निर्णय हो जाने पर कुछ विशिष्ट कारणों से किसी अभियोग की फिर से होनेवाली सुनवाई।

तज्जन्य–वि० [सं०] उससे उत्पन्न।

तज्ञ–वि० [सं०] तत्वज्ञ।

तटंक*–पुं० दे० 'ताटंक'।

तट–पुं० [सं०] १. प्रदेश। २. क्षेत्र।

किनारा। तीर।

क्रि० वि० पास। निकट।

तटनी*–स्त्री० [सं० तटिनी] नदी।

तटस्थ–वि० [सं०] [भाव० तटस्थता] १. तट या किनारे रहनेवाला। २. पास रहनेवाला। ३. परस्पर विरोधी पक्षों से अलग रहनेवाला। उदासीन। निरपेक्ष। (न्यूट्रल)

तटस्थता–स्त्री० [सं०] तटस्थ होने या विरोधी दलों के लड़ाई-झगड़े से दूर रहने की दशा या भाव। (न्यूट्रैलिटी)

तटस्थीकरण–पुं० [सं० तटस्थ + करण] १. तटस्थ या अलग करने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु का कोई गुण हटाकर उस गुण का फल या प्रभाव नष्ट करने की क्रिया या भाव। (न्यूट्रलाइजेशन)

तटिनी–स्त्री० [सं०] नदी।

तटी–स्त्री० [सं०] नदी।

तड़–पुं० [सं० तट] एक ही जाति या समाज के अलग अलग विभाग।

पुं० [अनु०] कोई चीज पटकने या मारने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

तड़क–स्त्री० [हिं० तड़कना] १. तड़कने की क्रिया या भाव। २. तड़कने के कारण पड़ने वाला चिह्न।

तड़कना–अ० [अनु० तड़] १. 'तड़' शब्द के साथ फटना, फूटना या टूटना। चटकना। २. किसी चीज का सूखकर फट जाना।

तड़क-भड़क–स्त्री० [अनु०] ठाट-बाट।

तड़का–पुं० [हिं० तड़कना] १. सबेरा। सुबह। प्रातःकाल। २. छौंक। बघार।

तड़काना–स० हिं० 'तड़कना' का स०।

तड़तड़ाना–अ०, स० [अनु०] तड़ तड़ शब्द होना या करना।

तड़प–स्त्री० [हिं० तड़पना] १. तड़पने की क्रिया या भाव। २. चमक। आभा।

तड़पना–अ० [अनु०] १. अधिक पीड़ा के कारण छटपटाना। २. गरजना।

तड़पाना–स० [हिं० तड़पना] ऐसा करना जिसमें कोई तड़पे।

तड़बंदी–स्त्री० दे० 'दलबंदी'।

तड़ाक–स्त्री० [अनु०] तड़ाके का

क्रि० वि० १. 'तड़' या 'तड़ाक' के साथ। २. जल्दी से। चटपट। तुरं

तड़ाका–पुं० [अनु०] 'तड़' शब्द

क्रि० वि० चटपट। तुरन्त।

तड़ाग–पुं० [सं०] तालाब। सरोव

तड़ागना*–अ० [अनु०] १. हाँकना। २. हाथ-पैर हिलाना। करना।

तड़ातड़–क्रि० वि० [अनु०] तड़ शब्द के साथ।

तड़ाना–स० [हिं० ताड़ना] अनजान इस तरह कोई काम करना जिसमें लो या देखें।

तड़ावा–पुं० [हिं० तड़ाना] केवल या दिखाने के लिए धारण किया हुआ

तड़ित–स्त्री० [सं० तडित्] बिजली

तड़ी–स्त्री० [तड़ से अनु०] १. धौल। २. धोखा। छल। (दलाल)

तत्–पुं० [सं०] १. ब्रह्म। परमात्मा वायु। हवा।

सर्व० उस। जैसे–तत्काल। तत्संबंधी।

तत–पुं० [सं०] १. वायु। २. ३. पिता। ४. पुत्र। ५. वह बाजा बजाने के लिए तार लगे हों। सितार, सारंगी आदि।

+वि० [सं० तप्त] तपा हुआ।

+पुं० दे० 'तत्त्व'।

ततकार–पुं० [अनु०] नृत्य के बोल।

ततखन*–क्रि० वि० दे० 'तत्क्षण'।

ततबाउ+–पुं० दे० 'तंतुवाय'।

ततबीर*–स्त्री० = तदबीर।

ततसार+–स्त्री० [सं० तप्तशाला]

पद जिसका अर्थ है—तू वही अर्थात् ब्रह्म है।

तत्त्व विद्या–स्त्री॰ [सं॰] दर्शनशास्त्र।

तत्त्ववेत्ता–पुं॰ दे॰ 'तत्त्वज्ञ'।

तत्त्वशास्त्र–पुं॰ दे॰ 'दर्शन शास्त्र'।

तत्त्वावधान–पुं॰ [सं॰] किसी काम की ऊपर से होनेवाली देख-रेख।

तत्पर–वि॰ [सं॰] [संज्ञा तत्परता] १. उद्यत। मुस्तैद। सन्नद्ध। २. चतुर।

तत्पुरुष–पुं॰ [सं॰] १. वह समास जिसमें पहले पद में कर्त्ता कारक तो होता ही नहीं, और शेष कारकों की विभक्तियाँ लुप्त होती हैं और अन्तिम पद का अर्थ प्रधान होता जैसे–नभ-चर।

तत्र–क्रि॰ वि॰ [सं॰] उस जगह। वहाँ।

तत्सम्बन्धी–वि॰ [सं॰] उससे (अर्थात् पहले कहे या बतलाये हुए से) सम्बन्ध रखनेवाला। (कनेक्टेड देयरविद)

तत्सम–पुं॰ [सं॰] किसी भाषा का विशेषतः संस्कृत का वह शब्द जिसका व्यवहार दूसरी अथवा देशी भाषाओं में उसके मूल रूप में या ज्यों का त्यों हो। जैसे–सूर्य, पृथ्वी, समय, तकाजा, कोट आदि।

तत्सामयिक–वि॰ [सं॰] उस समय का।

तथा–अव्य॰ [सं॰] १. और। व। २. इसी तरह। ऐसे ही।

यौ॰–तथास्तु। (देखो)

तथा-कथित–वि॰ [सं॰] जो कोई काम करनेवाला या कुछ होनेवाला कहा तो जाय, पर जिसके सम्बन्ध में उस कार्य के कर्त्ता होने अथवा स्वयं उसके वैसे होने का कोई पुष्ट प्रमाण न हो या जिसके वास्तविक कर्त्ता आदि होने में किसी प्रकार का संदेह या आपत्ति हो। यों ही अथवा केवल कहा जाने या कहलानेवाला, परन्तु सर्व-मान्य नहीं। (सो-कॉल्ड)

तथा-कथ्य–वि॰ दे॰ 'तथा-कथित'।

तथागत–पुं॰ [सं॰] गौतम बुद्ध।

तथापि–अव्य॰ [सं॰] तो भी। फिर भी।

तथास्तु-पद [सं०] ऐसा ही हो। एवमस्तु।

तथैव-अव्य० [सं०] १. वैसा ही। उसी प्रकार का। २. जो ऊपर या पहले है, वही यहाँ भी। (डिट्टो)

तथोक्त-वि० दे० 'तथा-कथित'।

तथ्य-वि० [सं०] १. सचाई। यथार्थता। २. कोई ऐसी बात जो किसी विशेष अवस्था में वस्तुतः हुई हो। ३. कोई ऐसी बात जिसकी अनुभूति या ज्ञान किसी विशेष अवस्था में या कोई काम करते समय हुआ हो। (फैक्ट, उक्त सभी अर्थों के लिए)

तथ्यक-वि० [सं०] तथ्य संबंधी। तथ्य का।

तथ्यक साध्या-स्त्री० [सं०] वह साध्या जो वास्तव्य अथवा वास्तविक घटनाओं या तथ्यों से सम्बन्ध रखती हो। (ईश्यू ऑफ फैक्ट्स)

तदंतर-क्रि० वि० [सं०] उसके बाद।

तद्-वि० [सं०] वह। (यौगिक के आरम्भ में) जैसे-तद्गत। तदनन्तर।

†क्रि० वि० [सं० तदा] उस समय। तब।

तदनंतर-क्रि० वि० [सं०] उसके उपरान्त।

तदनुकूल-वि० [सं०] उसके अनुकूल या अनुसार।

तदनुरूप-वि० [सं०] १. (जैसा पहले कोई हो) उसके अनुरूप, सदृश या समान। २. (पहलेवाले से) मेल मिलाने या मेल खानेवाला। (कारेस्पांडिग)

तदनुसार-वि०, क्रि० वि० [सं०] जो हो या हुआ हो, उसके अनुसार। पहलेवाले के मुताबिक।

तदपि-अव्य० [सं०] तो भी। तथापि।

तदबीर-स्त्री० [अ०] काम पूरा या ठीक करने का उपाय। युक्ति। तरकीब।

तदर्थ-क्रि० वि० [सं०] १. उसके लिए। वि० (उसी या) किसी विशेष काम के लिए बना हुआ। जैसे-तदर्थ समिति। (ऐड हॉक)

तदर्थ समिति-स्त्री० [सं०] किसी विशेष कार्य के लिए बनी हुई समिति। (
हॉक कमिटी)

तदर्थीय-वि० [सं०] (वह शब्द
पद) जो किसी दूसरी भाषा के शब्द
अर्थ सूचित करने के लिए उसके
पर बना हो। जैसे-'रजत-पट' अंग्रेज़ी
सिलवर स्क्रीन का तदर्थीय है।

तदाकार-वि० [सं०] १. उसी
या रूप का। तद्रूप। २. तन्मय।

तदारुक-पुं० [अ०] १. अभियुक्त
की खोज। २. दुर्घटना की
दुर्घटना रोकने के लिए पहले से
जानेवाला प्रबन्ध या उपाय।

तदीय-सर्व० [सं०] [भाव०
१. उससे संबंध रखनेवाला। २. उ

तदुपरांत-क्रि० वि० [सं०] उसके

तद्गत-वि० [सं०] १. उससे
रखनेवाला। २. उसके अन्तर्गत।
व्याप्त।

तद्गुण-पुं० [सं०] वह अ
जिसमें किसी एक वस्तु का अ
त्यागकर पास के किसी दूसरे उत्तम
का गुण ग्रहण करने का वर्णन हो।

तद्धित-पुं० [सं०] व्याकरण
प्रत्यय जिसे संज्ञा के अन्त में
भाववाचक संज्ञाएँ या विशेषण
जैसे-'मित्रता' में का 'ता' या
में का 'त्य'।

तद्भव-पुं० [सं०] किसी भाषा
संस्कृत का वह शब्द जिसका रू
अथवा देशी भाषाओं में कुछ
बिगड़ गया हो। अपभ्रंश रूप।
संस्कृत सूत्र से बना हुआ हिन्दी
अँगरेजी 'लैन्टर्न' से बना हिं०
तद्भव है।

तद्यपि*-अव्य० = तथापि।

तद्रूप-वि० [सं०] [भाव०
किसी के रूप के समान। सदृश।

क्रि॰ वि॰ बिना किसी साथी के। अकेले।

तनहाई–स्त्री॰ [फा॰] १. तनहा या अकेले होने का भाव। अकेला-पन।

यौ॰–कैद तनहाई। (देखें)

२. एकान्त स्थान।

तना–पुं॰ [फा॰ मि॰ सं॰ तनुः] वृक्ष का वह नीचेवाला भाग जिसमें डालियाँ नहीं होतीं। पेड़ का धड़।

तनाई–स्त्री॰ [हिं॰ तानना] तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तनाउ–वि॰ दे॰ 'तनाव'।

तनाकु*–क्रि॰ वि॰ दे॰ 'तनिक'।

तनाजा–पुं॰ [अ॰] झगड़ा।

तनाना–स॰ दे॰ 'तनवाना'।

तनाब–स्त्री॰ [अ॰] खेमे आदि खींचकर बाँधने की रस्सी।

तनाव–पुं॰ [हिं॰ तनना] तनने की क्रिया या भाव।

तनि(क)–वि॰ [सं॰ तनु = अल्प] १. थोड़ा। कम। २. छोटा।

क्रि॰ वि॰ बहुत थोड़ा। जरा। टुक।

तनिमा–स्त्री॰ [सं॰] शरीर का दुबलापन। कृशता।

तनिया–स्त्री॰ [हिं॰ तनी] १. लँगोटी। कौपीन। २. कछनी। काछा। ३. स्त्रियों के पहनने की चोली या कुरती। ४. दे॰ 'तनी'।

तनी–स्त्री॰ [हिं॰ तानना] १. डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो पहनने के कपड़ों में उनके पल्ले बाँधने के लिए लगाया जाता है। बंद। बन्धन। २. दे॰ 'तनिया'।

†वि॰ दे॰ 'तनिक'।

तनु*–वि॰ [सं॰] [भाव॰ तनुता] १. दुबला-पतला। २. थोड़ा। कम। ३. कोमल। नाजुक। ४. सुन्दर। बढ़िया।

स्त्री॰ [सं॰] १. शरीर। २. स्त्री।

*अव्य॰ ओर। तरफ। उदा॰-चितै जानकी लखन तनु—तुलसी।

तनुक*–क्रि० वि० दे० 'तनिक'।

तनुज–पुं० [सं०] बेटा। पुत्र।

तनुजा–स्त्री० [सं०] पुत्री। बेटी।

तनुत्राण–पुं० [सं०] कवच। बख्तर।

तनुधारी–वि० [सं०] शरीरधारी।

तनूज*–पुं० दे० 'तनुज'।

तनूजा–स्त्री० [सं० तनुजा] पुत्री। बेटी।

तनूरुह–पुं० [सं०] १. रोम। रोआँ। २. पुत्र। बेटा।

तनेना–वि० [हिं० तनना] [स्त्री० तनेनी] १. तननेवाला। २. टेढ़ा। तिरछा। ३. क्रुद्ध। नाराज।

तनैया*–स्त्री० [सं० तनया] बेटी।

वि० [हिं० तानना] ताननेवाला।

तनोज*–पुं० [सं० तनूज] १. रोम। रोआँ। २. पुत्र। बेटा।

तनोरुह*–पु० दे० 'तनूरुह'।

तन्मय–वि० [सं०] [स्त्री० तन्मयी, भाव० तन्मयता] किसी काम में बहुत मग्न या लगा हुआ। दत्त-चित्त। लव-लीन।

तन्मात्र–पुं० [सं०] पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप। ये पाँच हैं–शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

तन्मात्रा–स्त्री० दे० 'तन्मात्र'।

तन्यक–वि० [सं० तन्य] १. जो खींचने पर लंबा हो सके या बढ़ जाय। (इलैस्टिक) २. (धातु) जिसका तार खींचा जा सके।

तन्यता–स्त्री० [सं०] १. वस्तुओं का वह गुण जिससे वे खिंचने पर बड़ी हो जातीं और फिर ज्यों की त्यों हो जाती हैं। (इलैस्टिसिटी) २. धातुओं आदि का वह गुण जिससे उनके तार खींचे जाते हैं।

तन्वंग–वि० [सं० तनु + अंग] [स्त्री० तन्वंगी] दुबले-पतले अंगोंवाला।

तन्वी–वि० स्त्री० [सं०] दुबली या कोमल अंगोंवाली।

तप–पुं० [सं० तपस्] १. वे कष्टकर धार्मिक कार्य जो चित्त को भोग-विलास से हटाने के लिए किये जायँ। तपस्या। २. शरी
इन्द्रिय को वश में रखना।

पुं० [सं०] १. ताप। गरमी। २. ग्री
ऋतु। ३. ज्वर। बुखार।

तपकना*–अ० [हिं० टपकना] १.
कना। उछलना। २. चमकना। ३. दे.
'टपकना'।

तपन–पुं० [सं०] १. तपने की क्रि
भाव। ताप। २. सूर्य। ३.
वह शारीरिक व्यापार जो नायक के
में नायिका में होते हैं।

स्त्री० [हिं० तपना] गरमी। ताप।

तपना–अ० [सं० तपन] १.
गरमी के कारण खूब गरम होना।
होना। २. प्रभुत्व या अधिकार दिख
३. बुरे कामों में बहुत अधिक खर्च

*अ० [सं० तप्] तपस्या करना।

तप-रितु–स्त्री० [हिं० तपना +
गरमी का मौसिम।

तपश्चरण–पुं० दे० 'तपश्चर्या'।

तपश्चर्या–स्त्री० [सं०] तपस्या।

तपस–पुं० दे० 'तपस्या'।

तपसा–स्त्री० [सं० तपस्या] १.
तप। २. तापती नदी।

तपसी–पुं० [सं० तपस्वी] तपस्वी।

तपस्या–स्त्री० [सं०] तप करने की
या भाव। विशेष दे० 'तप'।

तपस्विनी–स्त्री० [सं०] १.
करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री।

तपस्वी–पुं० [सं० तपस्विन्] [
तपस्विनी] तपस्या करनेवाला।

तपा*–पुं० = तपस्वी।

तपाक–पुं० [फा०] १. आवेश।
२. वेग। तेजी।

तपाकर–पुं० [सं०] १. सूर्य। २.
बड़ा तपस्वी।

तपाना–स० [हिं० तपना] १.
करना। तप्त करना। २. आग पर

आदमियों का समूह।

तबकिया–पुं० दे० 'तबकगर'।

तबदील–वि० [अ०] [संज्ञा तब्दीली] १. बदला हुआ। परिवर्त्तित। २. एक स्थान या पद से हटाकर दूसरे स्थान या पद पर भेजा हुआ।

तबर–पुं० [फा०] कुल्हाड़ी।

तबल–पुं० [अ०] १. बहुत बड़ा ढोल। २. नगाड़ा।

तबलची–पुं० [अ० तब्लः] वह जो तब्ला बजाता हो। तबलिया।

तबला–पुं० [तब्लः] ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा। (इसमें दो बाजे एक साथ बजते हैं, जिनमें से एक तबला और दूसरा बायाँ कहलाता है।)

तबलिया–पुं० दे० 'तबलची'।

तबादला–पुं० [अ०] १. चीजों का बदला जाना। परिवर्त्तन। २. किसी कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। अन्तरण।

तबाशीर–पुं० [सं० तवक्षीर] बंसलोचन।

तबाह–वि० [फा०] [संज्ञा तबाही] पूरी तरह से चौपट। नष्ट। बरबाद।

तबाही–स्त्री० [फा०] नाश। बरबादी।

तबीअत–स्त्री० [अ०] १. चित्त। मन। **मुहा०–(किसी पर) तबीअत आना**=(किसी पर) प्रेम होना। अनुराग होना। **तबीअत फड़क उठना** = किसी बात से चित्त बहुत प्रसन्न होना। **तबीअत लगना** = (क) मन को अच्छा लगना (ख) ध्यान लगा रहना। (ग) किसी से अनुराग या प्रेम होना।

२. बुद्धि। समझ। ज्ञान।

तबीअतदार–वि० [अ० तबीअत + फा० दार] १. समझदार। २. भावुक। रसिक।

तबीयत–स्त्री० दे० 'तबीअत'।

तबेला–पुं० [अ० तवेलः] घोड़ों, एक्कों, गाड़ियों आदि के रहने की जगह। अस्तबल।

मुहा०—तबेले में लत्ती चलना = आपस में लड़ाई झगड़ा होना।

तब्बर*—पुं० १. दे० 'टाबर'। २. दे० 'तब्र'।

तभी—अव्य० [हिं० तब + ही] १. उसी समय। २. इसी कारण।

तमंचा—पुं० [फा०] १. छोटी बंदूक। पिस्तौल। २. वह पत्थर जो दरवाजे के बगल में खड़े बल में लगाया जाता है।

तम—पुं० [सं० तमस्] [भाव० तमता] १. अँधकार। अँधेरा। २. राहु। ३. पाप। ४. क्रोध। ५. अज्ञान। ६. कालिख। कालिमा। ७. नरक। ८. मोह। ९. दे० 'तमोगुण'।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो विशेषण के अन्त में लगकर 'सबसे बढ़कर' का अर्थ देता है। जैसे—श्रेष्ठतम।

तमक—स्त्री० [अक्कड़ी तैमक (आवेश, जोश) सं०अ०] १. जोश। आवेश। उद्वेग। २. तेजी। तीव्रता। ३. क्रोध।

तमकना—अ० [हिं० तमक] १. क्रोध का आवेश दिखलाना। २. दे० 'तमतमाना'।

तमका†—पुं० [हिं० तमक] आवेश। जोश।

तमगा—पुं० [तु०] पदक।

तमचर—पुं० [सं० तमीचर] राक्षस।

तमचुर—पुं० [सं० ताम्रचूड़] मुरगा। (पक्षी)

तमचोर*—पुं० दे० 'तमचुर'।

तमच्छन—वि० दे० 'तमाच्छन्न'।

तमतमाना—अ० [सं० ताम्र] धूप या क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना।

तमन्ना—स्त्री० [अ०] कामना। इच्छा।

तमयी*-स्त्री० [सं० तम + मयी] रात।

तमस—पुं० [सं०] १. अन्धकार। २. पाप।

तमसा—स्त्री० [सं०] टौंस नदी।

तमस्विनी—स्त्री० [सं०] अँधेरी रात।

तमस्वी—वि० [सं० तमस्विन्] अंधकारपूर्ण।

तमस्सुक—पुं० [अ०] वह ऋण लेनेवाला उसके संबंध में लिखकर देता है। दस्तावेज।

तमहाया*—वि० [सं० तम (प्रत्य०)] १. तम या अन्धकार से हुआ। अँधेरा। २. तमोगुण से

तमा—पुं० [सं० तमस्] राहु।

स्त्री० रात। रात्रि। रजनी।

*स्त्री० [अ० तमअ] लोभ।

तमाकू—पुं० [पुर्त्त० टुबैको] १. एक पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में लिए काम में लाये जाते हैं। इन पत्तों से बना एक विशेष प्रकार गीला पदार्थ जिसे चिलम पर सुलगाकर उसका धूआँ पीते हैं। 'सुरती'।

तमाखू†—०पुं दे० 'तमाकू'।

तमाचा—पुं० [फा० तवान्चः] से गाल पर किया जानेवाला थप्पड़। झापड़।

तमाच्छन्न—वि० [सं०] तम या से घिरा या भरा हुआ।

तमाच्छादित—वि० दे० 'तमाच्छ

तमादी—स्त्री० [अ०] किसी विधि विहित अवधि या मियाद वि० विधि, नियम आदि के अवधि समाप्त हो चुकी हो। बाधित। (बार्ड बाइ लिमिटेशन)

तमाम—वि० [अ०] १. पूरा। कुल। २. समाप्त। खतम।

तमारि—पुं० [हिं० तम + अरि]

†स्त्री० दे० 'तमादी'।

तमाल—पुं० [सं०] १. एक सुन्दर सदाबहार वृक्ष। २. एक प्रकार की तलवार। ४.

तमाशबीन—पुं० [अ० तमाश [भाव० तमाशबीनी] १.

गामी। ऐयाश।

[अ०] १. वह खेल या
देखने से मन प्रसन्न हो। २.
। अनोखी बात। ३. बहुत
मित और हास्यास्पद बात
(फार्स) जैसे–सभा क्या है,
। ४. पुरानी चाल की एक प्रकार

दे० 'तमाशा'।

[हिं०] १. अन्धकार। अँधेरा।
गुस्सा।

तमिस्रा] अंधकारपूर्ण।

[सं०] काली या अँधेरी

[सं०] रात।

[सं०] राक्षस।

[अ०] १. भले और बुरे का
। विवेक। २. ज्ञान। बुद्धि।

(मीश)–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

[सं०] [वि० तमोगुणी]
तीन गुणों में से अन्तिम जो दूषित
माना गया है।

[सं० तांबूल] पान।

दे० 'तमोली'।

[सं० तांबूल] पान का

[सं० तांबूल] सादे पान
लगे हुए बीड़े बेचनेवाला।

[सं०] तम या अंधकार

। १. चंद्रमा।

दे० 'तै'।

दे० 'तपना'।

'तपाना'।

(यार)†–वि० दे० 'तैयार'।

[सं०] १. पानी की लहर।
२. प्राकृतिक अथवा कृत्रिम कारणों से उत्पन्न होनेवाली किसी वस्तु की लहर जो किसी शरीर या वातावरण में दौड़ती है। (वेव) जैसे–संगीत में स्वरों की लहर, बिजली की लहर, शीत या ताप की लहर। ३. लकड़ी, धातु आदि के विशिष्ट आकार के टुकड़ों अथवा सब स्वर उत्पन्न करनेवाले एक ही तरह के दूसरे साधनों के द्वारा बाजे के रूप में संगीत उत्पन्न करने की क्रिया। जैसे–जल-तरंग, तबला-तरंग, घुँघुरू-तरंग आदि। ४. चित्त की उमंग। मन की मौज। (ह्विम)

तरंगवती–स्त्री० [सं०] नदी।

तरंगायित–वि० [सं०] १. जिसमें तरंगें उठती हों। तरंगित। २. तरंगों की तरह का। लहरियादार। लहरदार।

तरंगिणी–वि० [सं०] तरंगवाली। जिसमें तरंगें हों।
स्त्री० नदी।

तरंगित–वि० [सं०] १. जिसमें तरंगें हों या उठ रही हों। हिलोरें मारता या लहराता हुआ। २. नीचे-ऊपर उठता हुआ।

तरंगी–वि० [सं० तरंगिन्] [स्त्री० तरंगिणी] १. जिसमें तरंगें हों। २. मनमौजी। मौजी। (ह्विम्सिकल)

तर–वि० [फा०] १. भींगा हुआ। गीला। २. शीतल। ठंढा। ३. जो सूखा न हो। हरा। ४. मालदार। धनवान। जैसे––तर असामी।
†क्रि० वि० [सं० तल] तले। नीचे। उदा०–प्रभु तरु तर कपि डार पर।–तुलसी।
प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों के अन्त में लगकर दूसरों की अपेक्षा उनका आधिक्य या विशेषता सूचित करता है। जैसे–उच्चतर, अधिकतर, कोमलतर।

तरई†–स्त्री० = तारा (नक्षत्र)।

तरक–पुं० [हिं० तर = नीचे] लेख का कोई पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे लिखा जानेवाला वह शब्द जिससे बादवाला पृष्ठ

आरंभ होता है।

*स्त्री० दे० 'तड़क'।

पुं० दे० 'तर्क'।

तरकना*-अ० दे० 'तड़कना'।

अ० [सं० तर्क] १. तर्क करना। बहस करना। २. मन में सोच-विचार करना।

अ० [अनु०] उछलना। कूदना।

तरकश-पुं० [फा०] तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।

तरकश-बंद-पुं० [फा०] वह जो तरकश रखता हो।

तरकस*-पुं० दे० 'तरकश'।

तरकसी-स्त्री० = छोटा तरकश।

तरका-पुं० [अ० तर्कः] मरे हुए व्यक्ति की वह सम्पत्ति जो उसके उत्तराधिकारी को मिलती है।

तरकारी-स्त्री० [फा० तरः = सब्जी + कारी] १. वे डंठल, फल, कन्द आदि जिन्हें पकाकर रोटी, चावल आदि के साथ खाते हैं। भाजी। सब्जी। २. पकाया हुआ मांस। (पं०)

तरकी-स्त्री० [सं० ताड़ंकी] कान में पहनने का एक प्रकार का फूल। (गहना)

तरकीब-स्त्री० [अ०] १. बनावट। रचना। २. रचना-प्रणाली। ३. युक्ति। उपाय। ४. ढंग। ढब।

तरक्की-स्त्री० [अ०] १. वृद्धि। २. उन्नति।

तरखा†-पुं० [सं० तरंग] नदी आदि के पानी का तेज बहाव।

तरखान-पुं० [सं० तक्षण] बढ़ई।

तरछत*-क्रि० वि० [हिं० तर = तले] नीचे की ओर से। नीचे से।

तरछाना*-अ० [हिं० तिरछा] १. तिरछी नजर से देखना। २. आँख से इशारा करना।

तरजन*-पुं० दे० 'तर्जन'।

तरजना*-अ० [सं० तर्जन] डाँटना। डपटना। बिगड़ना।

तरजनी-स्त्री० दे० 'तर्जनी'।

स्त्री० [सं० तर्जन] भय। डर।

तरजीला-वि० [सं० तर्जन] १. पूर्ण। २. उग्र। प्रचंड।

तरजुमा-पुं० [अ०] अनुवाद।

तरजौहाँ-वि० दे० 'तरजीला'।

तरण-पुं० [सं०] १. तरना। २. ३. पार जाना।

तरणि-स्त्री० दे० 'तरणी'।

तरणिजा-स्त्री० [सं०] यमुना।

तरणि-तनूजा-स्त्री० [सं०] यमुना

तरणी-स्त्री० [सं०] नौका। नाव।

तरतराना*-अ० [अनु०] १. शब्द करना। तड़तड़ाना। २. घी बिलकुल तर करना।

तरतीब-स्त्री० [अ०] वस्तुओं युक्त स्थानों पर लगाया हुआ सिलसिला।

तरद्दुद-पुं० [अ०] १. सोच। चिन्ता। २. अन्देशा। खटका।

तरन*-पुं० १. दे० 'तरण'। २. 'तरौना'।

पुं० [सं० तरणी] १. नाव। २. ३. उद्धार। निस्तार।

तरनतार-पुं० [सं० तरण] मोक्ष। मुक्ति।

तरनतारन-पुं० [सं० तरण + हिं० १. उद्धार। निस्तार। २. भव-सागर करनेवाला। (ईश्वर)

तरना-स० [सं० तरण] १. तैरना। तैरकर या नाव आदि से पार करना।

अ० मुक्त होना। सद्गति प्राप्त

*अ० दे० 'तलना'।

तरनि-स्त्री० दे० 'तलना'।

तरनी-स्त्री [सं० तरणि] १. नाव। २. वह ऊँचा मोढ़ा जिसपर खोन्चा जाता है। तन्नी।

तरपट†-पुं० [?] अंतर। भेद।

तरपना*-अ० दे० 'तड़पना'।

वि० [हिं० तर = तले + पर]
। २. एक के बाद दूसरा ।
[हिं० तड़प] चमकदार ।
[अ०] १. ओर । दिशा ।
। ३. पक्ष ।
[अ० तरफ + फा० दार]
] पक्ष में रहनेवाला ।

दे० 'तड़पना' ।
[फा०] भीगा हुआ । आर्द्र ।
[फा० तर्बुज] एक प्रकार
बड़े गोल फल खाने के काम
। कलींदा । हिंदवाना ।
[हिं० तर] तर करना ।

[अनु०] मरोड़ना ।

[सं०] [भाव० तरलता] १.
। चलायमान । २. क्षण-
। ३. चंचल । ४. पानी की तरह
। द्रव । ५. चमकीला । ६
। मंद ।
स्त्री० = तरलता ।
[हिं० तरौना] कान में पहनने
फूल । (गहना)
दे० 'तरुवर' ।
वि० [हिं० तलवार] तलवार
।
दे० 'तलवार' ।
'तरुवर' ।
[सं० त्रस] दया । रहम ।
(किसीपर) तरस खाना =
। रहम करना ।
[सं० तर्षण] बिलकुल न
के कारण किसी वस्तु के लिए लालायित
रहना ।
[सं० त्रसन] त्रस्त या पीड़ित करना ।

तरसाना–स० [हिं० 'तरसना' का स०] ऐसा काम करना जिसमें कोई तरसे । *स० [सं० त्रसन] त्रस्त या पीड़ित करना । कष्ट पहुँचाना ।

तरसौंहाँ*–वि० [हिं० तरसना] तरसनेवाला ।

तरह-स्त्री० [अ०] १. प्रकार । भाँति । किस्म । (विशेष दे० 'प्रकार' ।) २. अलंकारिक रचना-प्रकार । बनावट और रूप-रंग । ३. प्रणाली । रीति । ढंग । ४. युक्ति । उपाय ।

मुहा०–तरह देना = खयाल न करना । जाने देना ।

तरहदार–वि० [फा०] [संज्ञा तरहदारी] १. सुन्दर बनावट का । सजीला । २. शौकीन ।

तरहर(हारि)†-क्रि० वि० [हिं० तर + हर (प्रत्य०)] तले । नीचे ।
वि० १. नीचे का । २. निकृष्ट । बुरा ।

तरहुँड़*-क्रि० वि० दे० 'तरहर' ।

तरहेल–वि० [हिं० वि० तर + हेल (प्रत्य०)] १. अधीन । २. वश में आया हुआ ।
क्रि० वि० नीचे ।

तराइन–स्त्री० [सं० तारक] आकाश के तारे, नक्षत्र आदि ।

तराई–स्त्री० [हिं० तर = नीच] १. पहाड़ के नीचे का मैदान या प्रदेश । २. नीची भूमि ।
स्त्री० = तारा (नक्षत्र) ।

तराज़ू–पुं० [फा०] १. चीज तौलने का वह प्रसिद्ध उपकरण जिसमें एक डाँड़ी के दोनों सिरों पर दो पल्ले लटकते रहते हैं । तुला । २. दे० 'काँटा' ८ ।

तराटक*–पुं० दे० 'त्राटिका' ।

तराना–पुं० [फा०] १. एक प्रकार का चल्ता गाना जिसमें सितार, नाच आदि के बोल होते हैं । जैसे–ता नूम त ना ना दे रा ना । २. गीत । गान ।

तराप*-स्त्री० [अनु०] बन्दूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द ।

तराबोर-वि० [फा० तर + हिं० बोरना] पूरी तरह से भींगा हुआ । तर-बतर ।

तराभर*-स्त्री० [अनु०] १. जल्दी-जल्दी होनेवाली कार्रवाई । २. धूम ।

तरायला*-वि० [हिं० तर ?] १. तरल । २. चपल । चंचल ।

तरारा-पुं० [तर तर से अनु०] १. उछाल । छलाँग । २. कुछ देर तक बराबर गिरती रहनेवाली पतली धार ।

तरावट-स्त्री० [फा० तर + आवट (प्रत्य०)] १. तर होने का भाव । गीलापन । नमी । २. ठंढक । शीतलता । ३. शरीर की गरमी शान्त करनेवाले आहार आदि । ४. स्निग्ध भोजन ।

तराश-स्त्री० [फा०] १. काटने का ढंग या भाव । काट । २. बनावट । रचना-प्रकार ।

तराशना-स० [फा०] काटना । कतरना ।

तरास*-पुं० दे० 'त्रास' ।

तरासना*-स० [सं० त्रसन] त्रास या कष्ट देना ।
स० दे० 'तराशना' ।

तराहीं*-क्रि० वि० [हिं० तले] नीचे ।

तरिका-स्त्री० [सं० तडित्] बिजली ।

तरिता*-स्त्री० दे० 'तड़िता' ।

तरियाना-स० [हिं० तरे = नीचे] १. नीचे कर देना । तह में या नीचे बैठा देना । २. ढाँकना ।
अ० तले बैठ जाना । तह में जमना ।
स० [फा० तर] तर या गीला करना । जैसे-मसाला रखने से पहले जमीन तरियाना ।

तरिवन-पुं० दे० 'तरवन' ।

तरिवर*-पुं० दे० 'तरुवर' ।

तरी-स्त्री० [सं०] नाव । नौका ।
स्त्री० [फा० तर] १. गीलापन । आर्द्रता । नमी । २. ठंढक । शीतलता ।
स्त्री० [हिं० तर = तले] १. वह नीची भूमि जहाँ बरसाती पानी जमा होकर मैं समाता हो । कछार । २. तराई । तरहटी
*स्त्री० दे० 'तरवन' ।

तरीका-पुं० [अ० तरीकः] १. ढंग विधि । रीति । २. चाल । व्यवहार । उपाय । तदबीर ।

तरीनि†-स्त्री० [हिं० तर = तले] १. के नीचे का भाग । तलहटी । (बुन्दे० उदा०—फूटे हैं सुगंध घट श्रवन में ।—केशव ।

तरु-पुं० [सं०] वृक्ष । पेड़ ।

तरुण-वि० [सं०] [स्त्री० तरुणी [भाव० तरुणता] जिसने अभी बा वस्था पार की हो । युवा । जवान । नया । नूतन ।

तरुणाई*-स्त्री० [सं० तरुण] युवावस्था जवानी ।

तरुणाना*-अ० [सं० तरुण] तरुण हो जवानी पर आना ।

तरुणिमा-स्त्री० [सं०] तरुण होने दशा या भाव । तारुण्य । यौवन ।

तरुणी-स्त्री० [सं०] जवान स्त्री । यु

तरुन*-पुं० दे० 'तरुण' ।

तरुनाई*-स्त्री० दे० 'तरुणाई' ।

तरुनापा*-पुं० दे० 'तरुणाई' ।

तरुनि*-स्त्री० दे० 'तरुणी' ।

तरुबाँही*-स्त्री० [सं० तरु + हिं० पेड़ की भुजा । शाखा । डाल ।

तरु-रोपण-पुं० [सं०] १. वृक्ष की क्रिया । २. वह विद्या जिसमें लगाने, बढ़ाने और उनकी रक्षा करने कला सिखायी जाती है । (आरबोरी

तरुवर-पुं० [सं०] श्रेष्ठ या बड़ा वृक्ष

तरेंदा-पुं० [हिं० तरना] पानी पर वाला काठ, बाँस आदि का बना हुआ बेड़ा

तरे†-क्रि० वि० [सं० तल] नीचे ।

तरेटी-स्त्री० दे० 'तोरी' ।

हिं० तर्क+हिं० हेरना]
की दृष्टि से देखना ।
तारः] १. लगातार
की धार । २. जल
। थपेड़ा ।
तारा] तारा । नक्षत्र ।
] १. तरनेवाला । २.

'तौरी' ।
'तरवर' ।
'तलछट' ।
[हिं० तर + औंस (प्रत्य०)]
ना ।
[सं० तालपर्ण, प्रा० ताल-
में पहनने का तरवन नाम
ताड़ के पत्ते की तरह गोल
होता है ।
] १. किसी वस्तु के विषय
के कारण या उपपत्ति के
करने की क्रिया । हेतुपूर्ण
। २. चमत्कारपूर्ण युक्ति ।
। छोड़ना ।
तर्क] तर्क या बहस करना ।
' ।
[सं०] १. यह सोचना
नहीं होगा । ऊहापोह ।
२. वाद-विवाद । बहस ।

[सं०] १. तर्क या विवे-
नियम और सिद्धान्तों के
ढंग बतानेवाला शास्त्र ।
२. न्याय-शास्त्र । (लॉजिक)
[सं०] १. जो तर्क
के अनुसार ठीक हो । २.
पर उसके परिणाम के रूप
में ठीक सिद्ध होनेवाला ।
१. जो युक्ति या बुद्धि के
अनुसार ठीक हो । (रीज़नेबुल)

तर्क-सिद्ध–वि० [सं०] जो तर्क की दृष्टि से बिल्कुल ठीक हो ।

तर्काभास–पुं० [सं०] ऐसा तर्क जो वास्तव में ठीक न हो, यों ही देखने पर ठीक-सा जान पड़े ।

तर्की–पुं० [सं० तर्किन्] [स्त्री० तर्किनी] तर्क करनेवाला ।

तर्क्य–वि० [सं०] जिसके सम्बन्ध में कुछ तर्क या सोच-विचार करने की जगह हो । विचारणीय । चिन्तनीय ।

तर्ज–पुं० [अ०] १. प्रकार । तरह । २. शैली । ढंग । ३. रचना प्रकार । बनावट ।

तर्जन–पुं० [सं० तर्जन] [वि० तर्जित] १. क्रोधपूर्वक या बिगड़ते हुए कुछ कहना । २. डाँटना-डपटना । ३. डराना । धमकाना । ४. क्रोध । ५. फटकार ।

यौ०–तर्जन-गर्जन = क्रोधपूर्वक जोर से बोलना या बिगड़ना ।

तर्जना–अ० [सं० तर्ज्जन] १. डाँटना । डपटना । २. धमकाना ।

तर्जनी–स्त्री० [सं० तर्ज्जनी] अँगूठे के बादवाली उँगली ।

तर्जुमा–पुं० [अ०] अनुवाद । उलथा ।

तर्पण–पुं० [सं०] [वि० तर्पित] १. किसी को तृप्त या सन्तुष्ट करना । २. हिन्दू कर्म-कांड का वह कृत्य जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तृप्त करने के लिए उनके नाम से जल दिया जाता है ।

तर्यौना*–पुं० दे० 'तरौना' ।

तर्ष–पुं० दे० 'तृष्णा' ।

तल–पुं० [सं०] १. नीचे का भाग । पेंदा । तला । २. जलाशय के नीचे की भूमि । ३. किसी के नीचे पड़नेवाला स्थान । ४. पैर का तलवा । ५. हथेली । ६. किसी वस्तु का ऊपरी या बाहरी फैलाव । सतह । ७. सात पातालों में से पहला ।

तलक–अव्य० [हिं० तक का पुराना रूप]

तक। पर्यंत।

तल-कर–पुं० [हिं० ताल + कर] ताल या तालाब में होनेवाली वस्तुओं पर लगनेवाला कर।

तलगृह–पुं० [सं०] तहखाना।

तल-घर–पुं० [सं० तलगृह] जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। भुइँधरा। तहखाना।

तल-छट–स्त्री० [हिं० तल + छँटना] तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल। तलौंछ।

तल-तल–क्रि० वि० दे० 'तिल' के अन्तर्गत 'तिल-तिल'।

तलना–स० [सं० तरण] गरम घी या तेल में डालकर पकाना।

तलप*–पुं० दे० 'तल्प'।

तल-पट–पुं० [सं०] वह पट या फलक जिसमें आय और व्यय का संक्षिप्त विवरण रहता है। तुला-पत्र। आय-व्यय फलक। (बैलेन्स शीट)

तल-पद–पुं० [सं० तल + पद] १. असल चीज या बात। मूल। जड़। २. मूल-धन। पूँजी।

तलफना–अ० दे० 'तड़पना'।

तलब–स्त्री० [अ०] १. खोज। तलाश। २. पाने की इच्छा। चाह। ३. आवश्यकता। ४. बुलावा। बुलाहट। ५. वेतन। तनखाह।

तलबगार–वि० [फा०] चाहनेवाला।

तलबाना–पुं० [फा०] गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में जमा किया जानेवाला व्यय।

तलबी–स्त्री० [अ०] १- बुलाहट। बुलावा। २. माँग।

तलबेली–स्त्री० [हिं० तलफना] बहुत अधिक उत्कंठा। छटपटी।

तलमलाना–अ० दे० 'तिलमिलाना'।

तलवा–पु० [सं० तल] पैर के नीचे की ओर का वह भाग जो चलने में पृथ्वी पर पड़ता है।

मुहा०–(किसीके) तलवे चाटना= बहुत खुशामद करना। **(किसी के) त धो-धोकर पीना** = बहुत सेवा-शुश्रू या आदर-सत्कार करना।

तलवार–स्त्री० [सं० तरवारि] एक प्र धारदार हथियार। असि।

पद०–तलवार का खेत = लड़ा मैदान। **तलवार का घाट** = त में वह स्थान जहाँ से वह कुछ टेढ़ी लगती है। **तलवार का पानी** = त की चमक जो उसके अच्छे होने की सूचक **मुहा०–तलवारों की छाँह में** = स्थान में जहाँ अपने ऊपर तलवारें ही त वारें दिखाई देती हों। **तलवार खींचना** वार करने के लिए म्यान से त निकालना।

तरवारिया–पुं० [हिं० तलवार] वह अच्छी तरह तलवार चलाना जानता हो।

तलवारी–वि० [हिं० तलवार] त संबंधी। तलवार का। जैसे–तलवारी ह

तलहटी–स्त्री० दे० 'तराई'।

तला–पुं० [सं० तल] १. नीचे का पेंदा। २. जूते के नीचे का चमड़ा।

तलाई–स्त्री० दे० 'तलैया'।

स्त्री० [हिं० तलना] तलने या तल क्रिया, भाव या मजदूरी।

तलाक–पुं० [अ०] विधि या नि अनुसार पति-पत्नी का सम्बन्ध-विच्छेद।

तलातल–पुं० [सं०] सात पाता से एक।

तलामली*–स्त्री० दे० 'तलबेली'।

तलाव†–पुं० दे० 'तालाब'।

तलाश–स्त्री० [तु०] १. कोई चीज या देखने के लिए पता लगाना कि वह है और कैसी है। विचयन। अनुसन्धा खोज। (सर्च) २. आवश्यकता पूरी करने के लिए होनेवाली खोज।

तलाशना†–स० दे० 'ढूँढ़ना'।

तवक्षीर-पुं० [सं०, मि० फा० तबाशीर] १. तबाशीर । तीखुर । २. बंसलोचन ।

तवज्जह-स्त्री० [अ०] १. किसी बात की ओर दिया जानेवाला ध्यान । रुख । २. कृपा-दृष्टि ।

तवना-अ० [सं० तपन] १. तपना । गरम होना । २. दुःख आदि से पीड़ित होना । ३. प्रताप या तेज दिखलाना । ४. गुस्से से लाल होना ।

तवा-पुं० [हिं० तवना = जलना][स्त्री० अल्पा० तवी, तौनी] १. लोहे का वह प्रसिद्ध गोल बरतन जिसपर रोटी पकाई जाती है ।

कहा०-तवे पर की बूँद = १. तुरन्त समाप्त हो जानेवाला पदार्थ । २. बहुत थोड़ा । ३. वह गोल ठीकरा जो तमाकू पीने के लिए चिलम पर रक्खा जाता है ।

तवाई‡-स्त्री० [हिं० ताव = ताप] १. ताप । गरमी । २. गरम हवा । लू ।

तवाना*-स० = तपाना ।

तवारीख-स्त्री० [अ०] इतिहास ।

तवालत-स्त्री० [अ०] १. लम्बाई । २. अधिकता । ३. झंझट ।

तवेला-पुं० दे० 'तबेला' ।

तशरीफ-स्त्री० [अ०] १. महत्त्व । बड़प्पन । २. सम्मानित व्यक्तित्व ।

मुहा०-तशरीफ रखना = विराजना । **तरीफ लाना**=पदार्पण करना । पधारना ।

तश्त-पुं० [फा०] बड़ा थाल ।

तश्तरी-स्त्री० [फा०] छोटी छिछली थाली के आकार का छिछला हलका बरतन । रिकाबी ।

तष्टा-पुं० [सं०] १. छील या गढ़कर ठीक करनेवाला । २. विश्वकर्मा ।

पुं० [फा० तश्त] [स्त्री० अल्पा० तष्टी] ताँबे की छोटी तश्तरी ।

तस-वि० [सं० तादृश] तैसा । वैसा ।

तसदीक-स्त्री० [अ०] १. सचाई । २.

प्रमाणों के आधार पर होनेवाली सचाई की परीक्षा या निश्चय। ३. गवाही।

तसदीह*–स्त्री॰ [अ॰ तसदीअ] १. सिर का दर्द। २. कष्ट। दुःख।

तसमा–पुं॰ [फा॰] कोई चीज बाँधने के लिए चमड़े या कपड़े का फीता।

तसला–पुं॰ [देश॰] [स्त्री॰ तसली] एक प्रकार का बड़ा और गहरा बरतन।

तसलीम–स्त्री॰ [अ॰] १. सलाम। अभिवादन। २. मान्यता। स्वीकृति।

तसल्ली–स्त्री॰ [अ॰] १. ढारस। सान्त्वना। आश्वासन। २. धैर्य्य।

तसवीर–स्त्री॰ [अ॰] चित्र।

वि॰ चित्र के समान सुन्दर। मनोहर।

तसू–पुं॰ [सं॰ त्रि+शूक] इमारती काम के लिए प्रायः डेढ़ इंच की एक नाप।

तस्कर–पुं॰ [सं॰] [भाव॰ तस्करता] चोर।

तस्करी–स्त्री॰ [सं॰ तस्कर] १. चोरी। २. चोर की स्त्री। ३. चोर स्त्री।

तस्मात्–अव्य॰ [सं॰] इसलिए।

तस्य–सर्व॰ [सं॰] उसका।

तस्सू–पुं॰ दे॰ 'तसू'।

तहँ–क्रि॰ वि॰ = तहाँ [वहाँ]

तहँई*–क्रि॰ वि॰ [हिं॰ तहाँ] उसी जगह। वहीं।

तहँ (वाँ)*–क्रि॰ वि॰ दे॰ 'तहाँ'।

तह–स्त्री॰ [फा॰] १. किसी वस्तु पर पड़ा हुआ किसी दूसरी वस्तु का मोटा विस्तार। परत।

मुहा॰–तह करना या लगाना = फैली हुई वस्तु मोड़कर समेटना। **तह कर रखो** = अपने पास रहने दो। हमें नहीं चाहिए। **(किसी चीज की) तह देना** = हलका पुट या रंगत देना।

२. नीचे का विस्तार। तल। पेंदा।

मुहा॰–तह तोड़ना = झगड़े का मूल नष्ट कर देना। **तह की बात** = वास्तविक और मुख्य बात। गुप्त रहस्य। **(किसी बात की) तह तक पहुँचना** = वास्तविक बात जान लेना।

३. जलाशय के नीचे की जमीन। तल। सतह।

मुहा॰–तह तोड़ना = कूएँ का सब पानी निकाल देना।

४. महीन परत। वरक। झिल्ली

तहकीकात–स्त्री॰ [अ॰ तहकीक का बहु॰] किसी विषय या घटना की मूल बातों का पता लगाना। अनुसंधान। जाँच।

तहखाना–पुं॰ दे॰ 'तल-घर'।

तह-दरज–वि॰ [फा॰] (कपड़ा या और कोई चीज) जिसकी तह तक न खुली हो। बिलकुल नया।

तहना*–अ॰ दे॰ 'तपना'।

अ॰ [हिं॰ तेह] बहुत क्रोध करना।

तहमत–स्त्री॰ दे॰ 'लुंगी'।

तहरी–स्त्री॰ [देश॰] १. पेठे की बरी, मटर और चावल की खिचड़ी।

तहरीर–स्त्री॰ [अ॰] [वि॰ तहरीरी] १. लिखावट। लिखाई। २. लेख-शैली। ३. लिखी हुई बात या कागज। ले ४. (अदालत के मुंशियों आदि को) लिखने का पारिश्रमिक। लिखाई।

तहलका–पुं॰ [अ॰] १. बरबादी। ना २. खलबली। हलचल।

तहवील–स्त्री॰ [अ॰] खजाना। को

तहस-नहस–वि॰ [देश॰] पूरी त नष्ट-भ्रष्ट।

तहसील–स्त्री॰ [अ॰] १. लोगों से वसूल करने की क्रिया या भाव। उगाही। २. वह धन जो वसूल इकट्ठा हो। ३. तहसीलदार की कचहरी

तहसीलदार–पुं॰ [अ॰ तहसील+ दार] १. कर उगाहनेवाला अधिकारी। तहसील का वह प्रधान अधिकारी जो दारों से सरकारी मालगुजारी वसूल

होना। तपना। २. क्रोध आदि के आवेश में आना।

तावरा-पुं० [सं० ताप] १. ताप। जलन। २. जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।

ताँसना*-स० [सं० त्रास] १. डाँटना। २. धमकाना। ३. सताना।

ता-प्रत्य० [सं०] एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा के अन्त में लगता है। जैसे-उत्तमता या विशेषता में का 'ता'। *[सं० तद्] १. उस। २. उसे। अव्य० [फा०] तक। पर्यन्त।

ताई-अव्य० [सं० तावत्] १. तक। पर्यंत। २. पास। समीप। निकट। ३. (किसी के) प्रति। को। ४. लिए। वास्ते।

ताउ*-पुं० दे० 'ताव'।

ताऊ-पुं० [सं० तात] पिता का बड़ा भाई। ताया।

यौ०-बछिया के ताऊ = परम मूर्ख।

ताक-स्त्री० [हिं० ताकना] १. ताकने की क्रिया या भाव। अवलोकन। २. टकटकी। ३. अवसर की प्रतीक्षा। घात।

मुहा०-ताक में रहना या ताक लगाना = किसी व्यक्ति या अवसर की प्रतीक्षा में रहना।

४. खोज। तलाश।

पुं० [अ० ताक़] आला। ताखा। (दीवार में का)

मुहा०-ताक पर रखना = अनावश्यक या व्यर्थ समझकर अलग करना।

वि० १. जो बिना खंडित हुए दो सम भागों में न बँट सके। 'जूस' का उलटा। विषम। जैसे-पाँच, सात, नौ आदि। २. अद्वितीय। अनुपम। बे-जोड़।

ताक-झाँक-स्त्री० [हिं० ताकना + झाँकना] १. कुछ जानने या देखने के लिए रह-रहकर ताकने-झाँकने की क्रिया। २. छिपकर देखने की क्रिया।

ताकत-स्त्री० [अ०] १. ज़ोर। बल।

२. शक्ति । सामर्थ्य ।

ताक़तवर-वि० [फ़ा०] १. शक्तिशाली । बलिष्ठ । २. शक्तिमान् । समर्थ ।

ताकना-स० [सं० तर्कण] १. अवलोकन करना । देखना । (विशेषतः कुछ बुरे भाव या विचार से) २. मन में सोचना । विचार करना। जैसे-किसी का बुरा ताकना। ३. समझ जाना । ताड़ना । ४. पहले से देखकर स्थिर करना । तजवीज करना । ५. देख-रेख या रखवाली करना । ६. अवसर की प्रतीक्षा या घात में रहना ।

ता कि-अव्य० [फ़ा०] इसलिए कि । जिसमें

ताकीद-स्त्री० [अ०] १. किसी काम या बात के लिए जोर देकर कहना । २. अच्छी तरह चेताकर कही जानेवाली बात ।

ताखा-पुं० [अ० ताक़] गत्ते पर लपेटा हुआ कपड़े का थान ।

पुं० आला । ताक । (दीवार में का)

ताग-स्त्री० [हिं० तागना] १. तागने की क्रिया या भाव ।

*पुं० दे० 'तागा' ।

तागड़ी-स्त्री० दे० 'करधनी' ।

तागना-स० [हिं० तागा] तागे से दूर दूर पर मोटी सिलाई करना ।

तागा-पुं० [पहलवी ताक = रेशा, मि० सं० तार्गव] रूई, रेशम, ऊन आदि का वह लंबा रूप जो बटने से तैयार होता है । डोरा । धागा ।

पुं० दे० 'प्रत्याय' ।

ताछन०-पुं० [सं० तक्षण] शत्रु के आक्रमण से बचने और उसपर वार करने के लिए बगल से होते हुए आगे बढ़ना । कावा ।

ताछना*-अ० [हिं० ताछन] वार करने के लिए बगलसे होकर आगे बढ़ना ।

ताज-पुं० [फ़ा०] १. राज-मुकुट । २. मोर, मुरगे आदि के सिर पर की चोटी । शिखा । ३. आगरे का ताज महल नामक प्रसिद्ध मकबरा ।

ताजक-पुं० [फ़ा०] एक ईरानी जाति ।

ताजगी-स्त्री० [फ़ा०] १. ताजापन । २

प्रफुल्लता-पूर्ण स्वस्थता ।

ताजदार-पुं० [फ़ा०] बादशाह ।

ताजन*-पुं० [फ़ा० ताजियानः] कोड़ा

ताज-पोशी-स्त्री० [फ़ा०] राज-सि

पर बैठकर राजमुकुट धारण करने का

ताजा-वि० [फ़ा० ताज़ः] [स्त्री० ता

[भाव० ताजापन, ताजगी] १. जो

बनकर तैयार हुआ हो । बिलकुल नया ।

जो सूखा या कुम्हलाया न हो । हरा

३. (फल, फूल आदि) जो अभी

तोड़ा गया हो । ४. जो थका-माँदा न

स्वस्थ और प्रसन्न ।

यौ०-मोटा-ताजा = हृष्ट-पुष्ट ।

५. जो अभी व्यवहार में आने को

बिलकुल नया ।

ताजिया-पुं० [फ़ा०] मकबरे के

का बनाया हुआ वह छोटा मंडप जो

में शीया मुसलमान दस दिन तक

गाड़ते हैं ।

ताजी-वि० [फ़ा०] अरब देश का ।

पुं० १. अरब देश का घोड़ा ।

प्रकार का शिकारी कुत्ता ।

ताजीर-स्त्री० [अ०] [वि० ताजीरी]

ताजीरात-पुं० [अ०] आपराधि

से सम्बन्ध रखनेवाले कानूनों का सं

ताजीरी-वि० [अ०] दंड के

लगाया या बैठाया हुआ । जैसे-ता

ताजीरी पुलिस ।

ताजीरी कर-पुं० [अ० + सं०]

जो किसी स्थान पर दंड-स्वरू

नियत होने पर उसका खर्च नि

लिए लगता है ।

ताजीरी पुलिस-स्त्री० [अ० ता

अं० पुलिस] पुलिस के सिपाहि

दस्ते जो किसी ऐसे स्थान में दंड

रक्खे जाते हैं, जहाँ कोई विशेष

खर्च उस स्थान के
जाता है।
तअज्जुब] आश्चर्य।
[सं०] कान में पहनने का
] १. एक बड़ा और प्रसिद्ध
के रूप में सीधा ऊपर
जिसके सिरे पर बड़े बड़े
२. ताड़न। प्रहार। भार।
[सं०] एक राक्षसी जिसे
मारा था।
'ताड़ना'।
[सं०] १. प्रहार। मार।
। ३. दंड। सजा। ४.
देना। ५. दोषी अपराधी
दंड न देकर उसके कार्य
या असन्तोष प्रकट करते
में सचेत रखने के लिए
। झिड़की (रेप्रिमान्ड)
। पीटना। २. डाँटना-
पहुँचाना।
] छिपी हुई बात लक्षणों
। लखना।
] जिसे ताड़ना की या
ताड़] ताड़ के डंठलों
जो मद्य की तरह पीया
] १. पिता। बाप। २.
। ३. भाई या मित्र
के लिए व्यवहृत
] [स्त्री० ताती]
२. 'ताथेई'।

तातार–पुं० [फा०] मध्य एशिया का एक देश जो फारस के उत्तर है।

तातारी–वि० [फा०] तातार देश का। पुं० तातार देश का निवासी। स्त्री० तातार देश की भाषा।

तातील–स्त्री० [अ०] छुट्टी का दिन।

तात्कालिक–वि० [सं०] १. तत्काल या तुरन्त का। २. उस समय का।

तात्पर्य–पुं० [सं०] १. आशय। अभिप्राय। मतलब। २. तत्परता।

तात्त्विक–वि० [सं०] १. तत्त्व या मूल सिद्धान्त संबंधी। (फन्डामेन्टल) जैसे–तात्त्विक मत-भेद। २. तत्त्व-ज्ञान युक्त। ३. यथार्थ। वास्तविक। ४. किसी महत्वपूर्ण गुण या तत्त्व से युक्त। (सबस्टेन्शल)

तात्त्विक विज्ञान–पुं० [सं०] विज्ञान की दो शाखाओं में से एक जिसमें कार्यों और कारणों के पारस्परिक सम्बन्ध बतलानेवाले और कार्यों के वास्तविक स्वरूप अथवा तत्त्वों का विवेचन करनेवाले विज्ञान आते हैं। (पॉजिटिव साइन्स) जैसे–ज्योतिष, रसायन या भौतिक विज्ञान। (दूसरी शाखा 'आदर्श विज्ञान' कहलाती है।)

तादात्म्य–पुं० [सं०] १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलकर उसके साथ एक हो जाना। २. देख-समझकर यह कहना कि यह वही है। पहचानना। (आईडेन्टिफिकेशन)

तादाद–स्त्री० [अ०] संख्या। गिनती।

तादृश–वि० [सं०] [स्त्री० तादृशी] उस तरह का। उसके समान। वैसा।

तान–स्त्री० [सं०] १. तानने की क्रिया या भाव। खींच। २. संगीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार।

मुहा०–तान उड़ाना या लड़ाना = तान लेते हुए गीत गाना। **किसी पर तान तोड़ना** = किसी पर सारा दोष मढ़ना या गुस्सा उतारना।

तानता–स्त्री० [सं०] वह गुस्सा या शक्ति

जिसमें वस्तुएँ या उनके अंग आपस में दृढ़तापूर्वक सटे, जुड़े या मिले रहते हैं। (टेनैसिटी)

तानना–स० [सं० तान] १. कसने के लिए जोर से अपनी ओर या ऊपर खींचना। २. खींचकर फैलाना।

मुहा०–तानकर सोना=निश्चिन्त हो जाना। ३. ऊपर फैलाकर बाँधना। ४. मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना।

तानपूरा–पुं० [सं० तान+हिं० पूरना] सितार की तरह का, पर उससे बड़ा, एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा। तंबूरा।

तान-बान*–पुं० दे० 'ताना-बाना'।

ताना–पुं० [हिं० तानना] कपड़े की बुनावट में लम्बाई के बल के सूत।

स० [हिं० ताप+ना (प्रत्य०)] १. तपाना। गरम करना। २. तपाकर परीक्षा करना। (सोना आदि धातुएँ) ३. जाँचना। परखना।

पुं० [अ०] आक्षेप-पूर्ण बात। बोली-ठोली। व्यंग्य।

ताना-पाई–स्त्री० [हिं० ताना+पाई] व्यर्थ बार बार आना-जाना।

ताना-पाही–स्त्री०=ताना-पाई।

ताना-बाना-पुं० [हिं० ताना+बाना] कपड़े की बुनावट में लम्बाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत।

ताना-रीरी–स्त्री० [हिं० तान+अनु० रीरी] साधारण गाना।

ताना शाह–पुं० वह जो अपने अधिकारों का बहुत मन-माना दुरुपयोग करे।

ताना शाही–स्त्री० १. अधिकारों का मन-माना उपयोग। २. वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो।

तानी–स्त्री० [हिं० ताना] कपड़े की बुनावट में करघे में लम्बाई के बल लगे हुए या लगनेवाले सूत।

ताप–पुं० [सं०] [वि० तापक] १. व प्राकृतिक, वैद्युत या अग्निसे उत्पन्न होनेवा शक्ति जिसके प्रभाव से चीजें गरम होक पिघल या भाप के रूप में हो जाती हैं औ जिसका अनुभव गरमी या जलन के रूप होता है। 'शीत' का विरोधी भाव तत्त्व। उष्णता। गर्मी। (हीट) २. आँच लपट। ३. ज्वर। बुखार। ४. शारीरिक मानसिक आदि कष्ट। दुःख। (हमारे यह तीन प्रकार का माना गया है–आ त्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तापक–वि० [सं०] १. ताप उत्पन्न या गर्मी लाने वाला। २. संतप्त करने कष्ट पहुँचाने वाला।

पुं० बिजली की सहायता से काम करने एक उपकरण जिससे कमरे, कोठरियाँ गरम की जाती हैं। (हीटर)

ताप-क्रम–पुं० [सं०] किसी विशिष्ट या पदार्थ का वह ताप जो विशेष अव में घटता-बढ़ता रहता है।

ताप-क्रम यंत्र–पुं० [सं०] वह जिससे किसी स्थान या पदार्थ के घ बढ़नेवाले ताप-क्रम का पता चलता (बैरोमीटर)

ताप-चालक–पुं० [सं०] वह पदार्थ ताप एक सिरे से चलकर दूसरे सि व्याप्त हो जाता हो। जैसे–धातु।

ताप-चालकता–स्त्री [सं०] पद वह गुण जिससे गरमी या ताप उ सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँ उसमें व्याप्त होता है।

ताप-तरंग–स्त्री० [सं०] ग्रीष्म ताप या गरमी की वह तरंग जो कुछ प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होकर किसी में बढ़ती है और जिसके कारण दो-चार के लिए गरमी साधारण से बहुत अधि जाती है। (हीट वेव)

ताप-तिल्ली–स्त्री० [हिं० ताप=ज्वर+

लाश रखकर गाड़ी जाती है।

ताबे-वि० [अ० ताबऽ] १. वशीभूत। अधीन। २. आज्ञा माननेवाला।

ताबेदार-वि० [अ० ताबऽ+फा० दार] [संज्ञा ताबेदारी] १. आज्ञाकारी। २. सेवक। नौकर।

ताम-पुं० [सं०] १. दोष। विकार। २. व्याकुलता। बेचैनी। ३. दुःख। क्लेश। ४. इच्छा। वासना। ५. थकावट।

वि० १. भीषण। डरावना। २. व्याकुल।

*पुं० [सं० तमस्] १. क्रोध। २. अँधेरा।

तामजान (म)-पुं० [?] एक प्रकार की छोटी खुली पालकी।

तामड़ा-वि० [हिं० ताँबा] ताँबे के रंग का। कुछ लाली लिये हुए भूरा।

तामरस-पुं० [सं०] १. कमल। २. सोना। ३. ताँबा। ४. धतूरा।

तामलेट-पुं० [अं० टंबलर] लोहे, टीन आदि का ऐसा बरतन जिस पर चीनी मिट्टी की तरह का चमकीला रोगन किया रहता है।

तामस-वि० [सं०] [स्त्री० तामसी] तामोगुण से युक्त। तमोगुणवाला।

पुं० १. साँप। २. दुष्ट। ३. क्रोध। ४. अन्धकार। ५. अज्ञान। मोह।

तामसी-वि० स्त्री० [सं०] तमोगुणवाली। वि० दे० 'तामस'।

तामिल-पुं० [देश०] दक्षिण-भारत की एक जाति।

स्त्री० उक्त जाति के लोगों की भाषा।

तामिस्र-पुं० [सं०] १. एक नरक का नाम। २. क्रोध। ३. द्वेष।

तामीर-स्त्री० [अ०] [बहु० तामीरात] इमारत बनाने का काम।

तामील-वि० [अ०] १. (आज्ञा) जिसका पालन हुआ हो। २. (आकारक, सूचना आदि) जो यथा स्थान पहुँचा या उद्दिष्ट व्यक्ति को दे दिया गया हो। (सर्व्ड)

स्त्री० दे० 'तामीली'।

तामीली–स्त्री० [अ०] १. (आज्ञा का) पालन । निष्पादन । (एग्जीक्यूशन) २. (सूचना आदि) अभिष्ट स्थान पर पहुँचाया जाना । (सरविस)

तामोर*–पुं० दे० 'तांबूल' (पान) ।

ताम्र–पुं० [सं०] ताँबा ।

ताम्रचूड़–पुं० [सं०] मुर्गा ।

ताम्रपट–पुं० दे० 'ताम्र-पत्र ।

ताम्र-पत्र–पुं० [सं०] ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिसपर प्राचीन काल में दानपत्र आदि लिखकर खोदे जाते थे । (कापर-प्लेट)

ताम्रपर्णी–स्त्री० [सं०] १. बावली । तालाब । २. मदरास की एक छोटी नदी ।

ताम्रयुग–पुं० [सं०] पुरातत्त्व के अनुसार किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय, जब कि वह पहले-पहले ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी । यह युग प्रस्तर-युग के बाद और लौह-युग के पहले पड़ता है । इसे कांस्य-युग भी कहते हैं । (ब्रांज एज)

ताम्रलिप्त–पुं० [सं०] मेदिनीपुर (बंगाल) जिले का तमलूक नामक स्थान ।

ताम्र-लेख–पुं० दे० 'ताम्र-पत्र' ।

ताय*–पुं० दे० 'ताप' ।

*सर्व० दे० 'ताहि' ।

तायना*–स० [हिं० ताप] तपाना ।

तायफा–पुं० [फा०] वेश्या और उसके समाजिओं की मंडली ।

स्त्री० गाने-बजानेवाली वेश्या ।

ताया–पुं० [सं० तात] [स्त्री० ताई] पिता का बड़ा भाई । बड़ा चाचा ।

तार–पुं० [सं०] १. रूपा । चाँदी । २. धातु को खींचकर बनाया हुआ तंतु । धातु-तंतु । ३. उक्त स्वरूप का वह तंतु जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार भेजे जाते हैं । (टेलिग्राफ) ४. इस प्रकार भेजा या आया हुआ समाचार। (टेलिग्राम) ५. सूत । तागा । मुहा०–तार-तार करना = कप नोचकर उसके टुकड़े टुकड़े करना । ६. अखंड परंपरा । सिलसिला । क्रम ७. कार्य-सिद्धि का योग या सुभीता । ८ संगीत में एक ऊँचा सप्तक जिसे 'उच्च' कहते हैं ।

वि० [सं०] निर्मल । स्वच्छ ।

*पुं० [सं० ताल] करताल (बाजा) ।

*पुं० [सं० तल] तल । सतह ।

*पुं० [सं० तल्ल] तालाब ।

*पुं० [हिं० ताड़] ताटंक या तरकी का गहना ।

*पुं० १ दे० 'तारा' । २. दे० 'ताल' ।

तारक–पुं० [सं०] १. नक्षत्र । तारा । २ छापे आदि में आकाश के तारे की तरह एक चिह्न जो प्रायः पाद-टिप्पणी के या शब्द-सूची आदि में किसी शब्द कोई विशेषता सूचित करने के लिए जाता है । इसका रूप है–* (एस्टे ३. आँख की पुतली । ४. दे० 'तारक ५. 'ओं रामाय नमः' का मन्त्र ।

वि० तारने या पार लगानेवाला ।

तारक-चिह्न–पुं० दे० 'तारक' २. ।

तार-कश–पुं० [हिं० तार + फा० [भाव० तारकशी] धातु के तार या बनानेवाला कारीगर ।

तारका–स्त्री० [सं०] १. नक्षत्र । २. आँख की पुतली ।

*स्त्री दे० 'ताड़का' ।

तारकासुर–पुं० [सं०] एक असुर कार्तिकेय ने मारा था ।

तारकेश–पुं० [सं० तारका + ईश]

तारकेश्वर–पुं० [सं०] शिव ।

तारकोल–पुं० दे० 'अलकतरा' ।

तार-घर–पुं० [हिं० तार + घर] स्थान जहाँ से तार द्वारा समाचार जाते हैं ।

तार-घाट–पुं० [हिं० तार + घाट]

बहुत ही कठिन काम कर दिखाना। **तारों की छाँह** = बहुत सबेरे। तड़के। २. आँख की पुतली। ३. भाग्य। किस्मत। स्त्री० [सं०] १. दस महाविद्याओं में से एक। २. बृहस्पति की स्त्री जिसे चन्द्रमा ने रख लिया था और जिससे बुध का जन्म हुआ था। ३. बालि नामक बन्दर की स्त्री। पुं० दे० 'ताला'।

ताराधिप–पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. शिव। ३. बृहस्पति। ४. बालि नामक बन्दर।

ताराधीश–पुं० दे० 'ताराधिप'।

तारा-पथ–पुं० [सं०] आकाश।

तारा-मंडल–पुं० [सं०] तारों या नक्षत्रों का समूह।

तारिका*–स्त्री० दे० 'तारका'।

तारिणी–वि० स्त्री० [सं०] तारनेवाली। स्त्री० तारा देवी।

तारी–स्त्री० [अ० तारी = बेहोशी] १. ईश्वर के ध्यान में तन्मय हो जाना। समाधि। २. टकटकी। ३. दे० 'ताली'। ४. 'ताड़ी'।

तारीक–वि० [फा०] [संज्ञा तारीकी] १. काला। स्याह। २. धुँधला। अँधेरा।

तारीख–स्त्री० [फा०] [वि० तारीखी] १. महीने का हर एक दिन (२४ घंटों का)। तिथि। २. वह तिथि जिसमें कोई विशेष घटना हुई हो। ३. नियत तिथि।

मुहा०–तारीख डालना = तारीख या दिन नियत करना।

तारीफ–स्त्री० [अ०] १. किसी बात या चीज के लक्षण, स्वरूप गुण, विशेषता आदि बतलानेवाला कथन। परिभाषा। २. वर्णन। विवरण। ३. प्रशंसा। ४. विशेषता। मुख्य-गुण।

तारुण्य–पुं० [सं०] तरुणता। जवानी।

तारू*–पुं० = तालू।

तारेश–पुं० [हिं० तारा + ईश] चन्द्रमा।

तार्किक-पुं० [सं०] १. तर्कशास्त्र का जाननेवाला । २. तत्त्ववेत्ता । दार्शनिक ।

ताल-पुं० [सं०] १. कर-तल । हथेली । २. करतल-ध्वनि । ताली । ३. नाचने-गाने में उसके समय का परिमाण ठीक रखने का एक साधन । ४. जाँघ या बाँह पर जोर से हथेली मारकर उत्पन्न किया जानेवाला शब्द । (पहलवान)

मुहा०-ताल ठोंकना=लड़ने के लिए ललकारना ।

५. मँजीरा । झाँझ । ६. चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला या टुकड़ा । (लेन्स) ७. ताड़ का पेड़ । ८. ताला ।

पुं० [सं० तल्ल] तालाब ।

तालपत्र-पुं० [सं०] ताड़ वृक्ष का पत्ता, जिसका व्यवहार प्राचीन काल में ग्रन्थ आदि लिखने के लिए, कागज की तरह, होता था।

ताल-बेताल-पुं० [सं० ताल + बेताल] दो कल्पित यक्ष जिनके विषय में कहा जाता है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध करके वश में किया था ।

ताल-मखाना-पुं० [हिं० ताल + मखाना] एक पौधा जिसके गोल या चिपटे सफेद बीज खाये जाते हैं ।

ताल-मेल-पुं० [हिं० ताल + मेल] १. ताल और स्वर का सामंजस्य । २. उपयुक्त और ठीक संयोग या मेल ।

तालव्य-वि० [सं०] तालु-सम्बन्धी । पुं० तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण । (पैलेटल) जैसे-इ, ई, च, छ, य, श आदि ।

ताला-पुं० [सं० तलक] १. धातु का वह यंत्र जो किवाड़ सन्दूक आदि बन्द करने के लिए कुंडी में लगाया जाता है । २. लोहे का वह तवा जो योद्धा लोग युद्ध के समय छाती पर पहनते थे ।

तालाब-पुं० [सं० तल्ल] पानी का बड़ा कुंड । सरोवर । पोखरा ।

तालाबेली*-स्त्री० दे० 'तलबेली' ।

तालिका-स्त्री० [सं०] १. ताली । कुं
२. सूची । फेहरिस्त (लिस्ट) ३. व्यक्ति की नामावली । (रोल)

तालिम*-स्त्री० [सं० तल्प] बिछौना

ताली-स्त्री० [सं०] १. ताले के साथ वह उपकरण जिससे वह खोला और किया जाता है । कुंजी । चाबी । २. का मद या रस । ताड़ी । नीरा ।

स्त्री० [सं० ताल] १. शब्द उत्पन्न के लिए हथेलियों को एक दूसरी पर की क्रिया । करतल-ध्वनि । थपोड़ी । इस प्रकार हथेलियाँ मारने से उत्पन्न शब्द करतल-ध्वनि ।

स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल । तलैया

तालीम-स्त्री० [अ०] शिक्षा ।

तालु-पुं० [सं०] तालू । (पैलेट)

तालुका-पुं० दे० 'ताल्लुका' ।

तालू-पुं० [सं० तालु] मुँह के अन्दर ऊपरी अंग या भाग जिसके नीचे जीभ है । तालु । (पैलेट)

मुहा०-तालू में दाँत जमना=दु या विनाश के दिन निकट होना । ता **जीभ न लगना**=चुपचाप न रह बराबर कुछ न कुछ बोलते जाना ।

ताल्लुक-पुं० [अ० तअल्लुक] सं लगाव । वास्ता ।

ताल्लुका-पुं० [अ० तअल्लुकः] गाँवों का समूह । बड़ा इलाका ।

ताल्लुकेदार-पुं० [अ० तअल्लुकः + दार] १. किसी ताल्लुके का जमींदार । २. अवध में एक विशेष प्रकार के जिन्हें कुछ विशिष्ट अधिकार होते थे ।

ताव-पुं० [सं० ताप] १. कोई चीज या पकाने के लिए पहुँचाई जानेवाली गर्मी ।

मुहा०-ताव खाना = आँच पर गरम होना । **ताव देना**=तपाना । गरम करना **मूछों पर ताव देना** = विजय, अभिमा

तास*-पुं० = ताश ।

तासीर-स्त्री० [अ०] १. प्रभाव । असर । २. किसी वस्तु की गुण-सूचक प्रकृति ।

तासु*-सर्व० [सं० तस्य] उसका ।

तासों*-सर्व० [हिं० तासु] उससे ।

ताहम-अव्य० [फा०] तो भी । तिस पर भी ।

ताहि*-सर्व० [हिं० ता] उसको । उसे ।

ताहीं-अव्य० दे० 'ताईं' या 'तईं' ।

ताहूँ*-क्रि० वि० [हिं० ता + हूँ (प्रत्य०)] तो भी । तिसपर भी ।

तिआ*-स्त्री० दे० 'तिया' ।

तिआह-पुं० [हिं० ति = तीन + विवाह] १. तीसरा विवाह । २. वह जिसका तीसरा ब्याह हुआ हो या होने को हो ।

तिउरी-स्त्री० = तेवर या त्योरी ।

तिकड़म-पुं० [सं० त्रि + क्रम ?] [कर्त्ता-तिकड़मी] गहरी और गुप्त युक्ति या चाल ।

तिकड़मी-पुं० [हिं० तिकड़म] तरह तरह की चालें चलकर अपना काम निकालनेवाला । चालबाज ।

तिकोना-वि० [सं० त्रिकोण] जिसमें तीन कोने हों । तीन कोनोंवाला ।
पुं० समोसा नाम का पकवान ।

तिकोनिया-वि० दे० 'तिकोना ।

तिक्का-पुं० [फा० तिकः] मांस की बोटी ।

तिक्ख*-वि० [सं० तीक्ष्ण] १. तीखा । २. चोखा । तेज । ३. तीव्र-बुद्धि । चालाक ।

तिक्त-वि० [सं०] [भाव० तिक्तता] नीम या चिरायते के-से स्वादवाला । तीता ।

तिच्छ*-वि० दे० 'तीक्ष्ण' ।

तिच्छता*-स्त्री० = तीक्ष्णता ।

तिखटी*-स्त्री० दे० 'टिकठी' ।

तिखारना-अ० [सं० त्रि + हिं० आखर = अक्षर] जोर देने के लिए कोई बात कई बार कहना । ताकीद करना ।

तिखूँटा-वि० दे० 'तिकोना' ।

तिग*-पुं० दे० 'त्रिक' ।

तिगना†–स० [वेश०] देखना (दलाल)।

तिगुना–वि० [सं० त्रिगुण] [स्त्री० तिगुनी] जितना हो, उसका दूना और। तीन गुना।

तिच्छ*–वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तिच्छन*–वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तिजरा†–पुं० [हिं० तीन (दिन) + ज्वर] हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर। तिजारी।

तिजहरी*–स्त्री० [हिं० तीन + पहर] दिन का तीसरा पहर।

तिजारत–स्त्री० [अ०] [वि० तिजारती] वाणिज्य। व्यापार। रोजगार।

तिजारी–स्त्री० [हिं० तीजा = तीसरा] हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।

तिजोरी–स्त्री० [देश०] लोहे का वह सन्दूक या छोटी अलमारी जिसमें रुपये आदि रक्खे जाते हैं। (सेफ)

तिड़ी–स्त्री० [हिं० तीन] ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं।

वि० जो चुपचाप धीरे से गायब हो गया हो।

तिड़ी-बिड़ी†–वि० दे० 'तितर-बितर'।

तित*–क्रि० वि० [सं० तत्र] १. वहाँ। उस जगह। २. उधर। उस ओर।

तितना†–क्रि० वि० दे० 'उतना'।

तितर-बितर–वि० [हिं० तिधर + अनु०] १. जो यथा स्थान या क्रम से न हो। छितराया या बिखरा हुआ। २. अस्त-व्यस्त।

तितली–स्त्री० [हिं० तीतर ?] १. एक उड़नेवाला सुन्दर पतिंगा जो फूलों पर मँडलाता है। २. एक प्रकार की घास।

तितलौकी†–स्त्री० [हिं० तीता + लौआ] कड़ुआ कद्दू।

तितारा–पुं० [हिं० त्रि + तार] सितार की तरह का तीन तारोंवाला एक बाजा।

तितिक्षा–स्त्री० [सं०] [वि० तितिक्षु] १. सरदी-गरमी या शारीरिक कष्ट सहने की शक्ति। सहिष्णुता। २. क्षमा। क्षान्ति। ३. दे० 'मर्षण'।

तिते*–वि० [सं० तति] उतने।

तितेक*–वि० [हिं० तिते + एक] उतना।

तिथि–स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष का कोई दिन, जिसका नाम संख्या के विचार से होता है। मिती। (प्रतिपदा से अमावस या पूर्णिमा तक १५ तिथियाँ होती हैं।)

तिथि-पत्र–पुं० [सं०] वह पुस्तिका जिससे यह जाना जाता है कि किस दिन कौन तिथि या तारीख होगी। पंचांग। पत्रा। (एलमैनक)

तिन–सर्व० [सं० तेन] 'तिस' का बहु०।

*पुं० [सं० तृण] तिनका। तृण।

तिनउर*–पुं० [सं० तृण + उर या और (प्रत्य०)] तिनकों का ढेर। तृण-समूह।

तिनकना–अ० [अनु०] कुछ नाराज होना। चिड़चिड़ाना। चिढ़ना।

तिनका–पुं० [सं० तृण] सूखी घास का टुकड़ा। तृण।

पद–तिनके का सहारा = बहुत थोड़ा या नाम मात्र का सहारा।

मुहा०–दाँतों में तिनका पकड़ना या लेना = क्षमा या कृपा के लिए दीनता प्रकट करना। **तिनका तोड़ना** = (क) किसी के मरने पर उसका शव कर तिनका तोड़ना, जो सब प्रकार के टूटने का सूचक होता है। (ख) पूरी तरह से सब प्रकार के सम्बन्ध तोड़ (ग) बच्चे को नजर से बचाने के टोटका करना। **तिनके को पहाड़ बनाना** = जरा-सी बात को बहुत बढ़ाना।

तिनका-तोड़–पुं० [हिं० तिनका-तोड़ना] पारस्परिक सम्बन्ध इस प्रकार टूटना फिर स्थापित न हो सके। (मृतक की क्रिया के उपरान्त उसके नाम पर जो तोड़ा जाता है, उसीसे यह प्रयोग चला है।)

तिनगना–अ० दे० 'तिनकना'।

तिन-पहला–वि० [हिं० तीन + पहल]

तिरखूँटा–वि० दे० 'तिकोना'।

तिरगुन–पुं० वि० दे० 'त्रिगुण'।

तिरछई†–स्त्री० दे० 'तिरछापन'।

तिरछा–वि० [सं० तिरश्चीन] [क्रि० तिरछाना] १. जो सीधा नहीं, बल्कि इधर-उधर हट-बढ़कर गया हो। २. जिसमें टेढ़ापन या वक्रता हो। टेढ़ा। वक्र। **पद–तिरछी चितवन या नजर** = बिना सिर फेरे हुए बगल की ओर देखना। (प्रेम, क्रोध आदि का सूचक) **तिरछी बात या वचन** = कटु या अप्रिय बात।

तिरछौंहाँ*–वि० [हिं० तिरछा + औंहाँ (प्रत्य०)] जो कुछ तिरछा हो।

तिरना–अ० [सं० तरण] १. पानी पर तैरना या उतराना। २. पार होना। ३. भवसागर से पार या आवागमन से मुक्त होना।

तिरप–पुं० [सं० त्रि] नृत्य में तिहाई आने पर तीन बार पैर पटकना।

तिरपट–वि० [देश०] १. तिरछा। टेढ़ा। २. मुश्किल। कठिन। विकट।

तिरपाई–स्त्री० दे० 'तिपाई'।

तिरपाल–पुं० [अं० टरपोलिन] रोगन किया हुआ एक प्रकार का टाट जो धूप और वर्षा से रक्षा के लिए चीजों के ऊपर डाला या ताना जाता है।

तिरपित*–वि० दे० 'तृप्त'।

तिरबेनी–स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

तिरमिरा–पुं० [सं० तिमिर] [क्रि० तिरमिराना] १. आँखों का एक रोग जिसमें कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देता है। २. तेज रोशनी में नजर न ठहरना। चकाचौंध।

तिरमिराना–अ० [हिं० तिरमिरा] प्रकाश या चमक के सामने (आँखों का) चौंधियाना।

तिर-मुहानी–स्त्री० [हिं० तीन + मुहाना] वह स्थान जहाँ तीन रास्ते मिलते हों।

तिरलोक†–पुं० दे० 'त्रिलोक'।

तिर-विक्रम*–पुं० दे० 'त्रिविक्रम'।

तिरवाहाँ–पुं० [सं० तीर = किनारा] नदी का किनारा।

तिरस्कार–पुं० [सं०] [वि० तिरस्कृत] १. अनादर। अपमान। २. डाँट-डपट। फटकार। ३. अनादर या उपेक्षा पूर्वक त्याग।

तिरस्कृत–वि० [सं०] [स्त्री० तिरस्कृता] जिसका तिरस्कार हुआ हो। अनादृत।

तिराना–स० [हिं० तिरना] १. पानी पर तैराना। २. पार करना। ३. उबारना। उद्धार करना।

अ० दे० 'तिरना'।

तिराहा–पुं० दे० 'तिर-मुहानी'।

तिराहीं*–क्रि० वि० = नीचे।

तिरिन*–पुं० दे० 'तृण'।

तिरियक*–पुं० दे० 'तिर्यक्'।

तिरिया–स्त्री० [सं० स्त्री०] स्त्री। औरत।

पद०–तिरिया-चरित्तर = स्त्रियों की स्वाभाविक धूर्तता या छल-कपट, जिसे पुरुष जल्दी नहीं समझ सकते।

तिरीछा*–वि० दे० 'तिरछा'।

तिरोधान–पुं० [सं०] अन्तर्द्धान।

तिरोभाव–पुं० [सं०] १. अन्तर्द्धान। अदर्शन। २. गोपन। छिपाव।

तिरोहित–वि० [सं०] १. छिपा हुआ। अंतर्हित। २. गायब। लुप्त।

तिरौंछा†–वि० दे० 'तिरछा'।

तिर्पित*–वि० = तृप्त।

तिर्यक्–वि० [सं०] तिरछा। टेढ़ा।

पुं० पशु, पक्षी आदि जीव।

तिर्य्यग्गति–स्त्री० [सं०] १. तिरछी या टेढ़ी चाल। २. पशु योनि में जन्म लेना।

तिर्य्योनि–स्त्री० [सं०] पशु, पक्षी आदि जीव या उनकी जीवन-दशा।

तिलंगा–पुं० [सं० तैलंग] भारतीय सैनिक। देशी सिपाही।

तिलंगाना–पुं० [सं० तैलंग] तैलंग देश।

तिलंगी–वि० [सं० तैलंग] तिलंगाने का निवासी।

स्त्री० [हिं० तीन + लंग] आकाश उड़ाने की गुड्डी। पतंग।

तिल–पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके दोनों से तेल निकलता है।

मुहा०–तिल का ताड़ करना या **बनाना** = जरा सी बात को बहुत देना। **तिल तिल** = थोड़ा थोड़ा **तिल धरने की जगह न होना** = जरा-सी भी जगह खाली न रहना। **तिल भर** = जरा सा। थोड़ा सा।

कहा०– तिल की ओट पहाड़ = सी आड़ के पीछे होनेवाली कोई बहुत बात या काम।

२. शरीर पर होनेवाला काले रंग का छोटा प्राकृतिक चिह्न या दाग। ३. चिह्न के आकार का गोदना। ४. आँख पुतली के बीच की बिन्दी।

तिलक–पुं० [सं०] १. चन्दन, आदि से मस्तक, बाहु आदि पर, जानेवाला साम्प्रदायिक चिह्न। टीका। राज्याभिषेक। राज-गद्दी। ३. विवाह करने की एक रीति जिसमें भावी वर मस्तक पर टीका लगाकर उसे कुछ जाता है। टीका। ४. माथे पर पहनने एक गहना। टीका। ५. ग्रन्थ की सूचक व्याख्या। टीका। ६. वसन्त में फूलनेवाला एक प्रकार का पौधा।

वि० १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. शोभा, आदि बढ़ानेवाला। जैसे–रघुकुल तिलक।

तिलक कामोद–पुं० [सं०] संगीत एक प्रकार का राग।

तिलकना†–अ० दे० 'फिसलना'।

तिलक-मुद्रा–स्त्री० [सं०] चन्दन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि के या मुद्राएँ जो धार्मिक लोग अपने पर लगाते हैं।

तिल-कुट–पुं० [हिं० तिल] कूटे हुए

या पट्टी।
[हिं० तेल + चाटना] एक
बरहा।
[हिं० तिल + चावल]
मिला हुआ।
[अनु०] विकल होना।
रहना।
[हिं० तिल + यष्टि] तिल
डंठल जिसमें से तिल झाड़
है।
[हिं० तीन + लड़] तीन
का हार।
[हिं० तिरमिर] चका-
[अनु०] अचानक
होने से विकल होना।
[यू० टेलिस्मन] [वि० ति-
जादू। इन्द्रजाल। २. अद्भुत
करामात। चमत्कार।
[सं०] १. किसी के
में जल और तिल लेकर
छोड़ना। २. सदा के लिए
का संकल्प।
[अ०] वह औषध-मिश्रित
पुंसत्व की शक्ति बढ़ाने
मालिश के रूप में)
दे० 'तिलक'।
[अ० गुलाम से अनु०]
दासानुदास। परम तुच्छ
[हिं० तिल्ला + फ़ा०
के लिए सूई-तागा आदि
[सं०] पुराणानुसार
अप्सरा।
दे० 'तिलांजलि'।
दे० 'तिलौना'।

तिलौंछना–स० [हिं० तेल + औंछना] थोड़ा-सा तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा–वि० [हिं० तेल + औंछना] जिसमें तेल का मेल, स्वाद, गंध या रंगत हो।

तिलौरी–स्त्री० [हिं० तेल + बरी] वह बरी जिसमें तिल भी मिला हो। स्त्री० दे० 'तेलिया मैना'।

तिल्ला–पुं० [अ० तिला] १. कलाबत्तू या बादले आदि का काम। २. दुपट्टे या साड़ी आदि का बादले या कलाबत्तू का अंचल।

तिल्लाना–पुं० दे० 'तराना' १.।

तिल्ली–स्त्री० [सं० तिलक] १. पेट के भीतरी भाग का वह छोटा अवयव जो पसलियों के नीचे बाईं ओर होता है। प्लीहा। २. इस अंग के सूजने का रोग। स्त्री० [सं० तिल] तिल नाम का बीज।

तिल्लेदार–वि० (कपड़ा) जिसमें बादले या कलाबत्तू का अंचल हो।

तिवई*–स्त्री० = स्त्री।

तिवान†–पुं० [?] चिन्ता। फिक्र।

तिवारी–पुं० दे० 'त्रिपाठी'।

तिष्टना*–स० [सं० सृष्टि] बनाना। रचना।

तिष्ठना*–अ० [सं० तिष्ठ] १. ठहरना रुकना। २. बैठना।

तिष्यन*–वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तिस†–सर्व० [सं० तस्मिन्] 'ता' का ए रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्रा होता है।

यौ०–तिस पर = इतना होने पर भी

तिसना*–स्त्री० दे० 'तृष्णा'।

तिसरैत–पुं० [हिं० तीसरा] १. परस विरोधी पक्षों से अलग, तीसरा मनुष्य तटस्थ। २. तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसाना*–अ० [सं० तृषा] प्यासा होना

तिसार*–पुं० दे० 'अतिसार'।

तिहाई–स्त्री० [सं० त्रि + भाग] १. ती

भाग या हिस्सा। तृतीयांश। २. संगीत में सम पर का और उसके ठीक पहलेवाले दो ताल या उनके खंड।

तिहायत*–पुं० दे० 'तिसरैत'।

तिहारा(रो)*–सर्व० [स्त्री० तिहारी] दे० 'तुम्हारा'।

तिहिं–सर्व० दे० 'तेहि'।

तिहूँ†–वि० [हिं० तीन] तीनों।

ती*–स्त्री० [सं० स्त्री] १. स्त्री। औरत। २. जोरू। पत्नी।

तीक्षण(न)*–वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीक्ष्ण–वि० [सं०] [भाव० तीक्ष्णता] १. तेज नोक या धारवाला। २. प्रखर। तीव्र। तेज। ३. उग्र। प्रचंड। ४ जिसका स्वाद तीखा या चरपरा हो। ५. सुनने में अप्रिय। कर्ण-कटु। ६. जो सहा न जा सके।

तीक्ष्ण-बुद्धि–वि० [सं०] जिसकी बुद्धि बहुत तीव्र या तेज हो।

तीखन†–वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीखा–वि० [सं० तीक्ष्ण] १. तेज धारवाला।। तीक्ष्ण। २. तीव्र। प्रखर। तेज। ३. जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ४. सुनने में अप्रिय। कटु। ५. अच्छा। बढ़िया।

तीखुर–पुं० [सं० तवक्षीर] एक प्रकर का पौधा जिसकी जड़ के सत्त का व्यवहार पकवान आदि बनाने में होता है।

तीछन(छा)*–वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीज–स्त्री० [सं० तृतीया] १. चान्द्र मास के पक्ष की तीसरी तिथि। २. दे० 'हरतालिका'।

तीजा–पुं० [हिं० तीन] मुसलमानों में किसी के मरने पर तीसरे दिन के कृत्य। वि० दे० 'तीसरा'।

तीतर–पुं० [सं० तित्तिर] एक प्रसिद्ध पक्षी जो लड़ाने के लिए पाला जाता है।

कहा०–आधा तीतर आधा बटेर=कुछ एक प्रकार का और कुछ दूसरे प्रकार का। भद्देपन से मिला-जुला।

तीता–वि० [सं० तिक्त] १. तीखे चरपरे स्वादवाला। तिक्त। मिर्च आदि स्वाद का। २. कड़ुआ। कटु। नीम के स्वाद का।

तीतुरी†–स्त्री० दे० 'तितली'।

तीतुल*–पुं० दे० 'तीतर'।

तीन–वि० [सं० त्रीणि] दो और एक। पुं० दो और एक के जोड़ की सूचक

मुहा०–तीन पाँच करना= फिराव या चालाकी की बातें करना। **तेरह होना** = तितर-बितर या भिन्न होना। अलग अलग होना।

कहा०–न तीन में न तेरह में= किसी गिनती में न हो।

तीय–स्त्री० [सं० स्त्री०] स्त्री। औरत

तीरंदाज–पुं० [फा०] [भाव० तीरंदा तीर चलानेवाला।

तीर–पुं० [सं०] १. नदी का किना कूल। तट। २. स्थान। जगह। क्रि० वि० पास। निकट। पुं० [फा०] बाण। शर।

तीरथ†–पुं० दे० 'तीर्थ।

तीरवर्त्ती–वि० [सं०] १. तट किनारे पर होनेवाला। २. पास रहनेवा पार्श्ववर्त्ती।

तीर्थंकर–पुं० [सं०] जैनियों के उपास्य देवता जो सब देवताओं से और मुक्तिदाता माने जाते हैं।

तीर्थ–पुं० [सं०] १. वह पवित्र या स्थान जहाँ लोग धर्म-भाव से पूजा, या उपासना के लिए जाते हैं। २. पवित्र स्थान। ३. शास्त्र। ४. यज्ञ। सन्यासियों का एक भेद।

तीर्थ-यात्रा–स्त्री० [सं०] तीर्थ-स्थानों धार्मिक फल प्राप्त करने के लिए जाना।

तीर्थराज–पुं० [सं०] प्रयाग।

तीर्थाटन–पुं० [सं०] तीर्थ-यात्रा।

तुंबा-पुं० दे० 'तूँबा'।

तुंबुरु-पुं० [सं०] १. धनिया। २. एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिये के आकार का होता है।

तुअ*-सर्व० १. दे० 'तुव'। २. दे० 'तव'।

तुअना*-अ० [हिं० चूना] १. चूना। टपकना। २. खड़ा न रह सकना। गिर पड़ना। ३. (गर्भ) गिरना।

तुअर†-पुं० दे० 'तूअर'।

तुक-स्त्री० [हिं० टूक] १. किसी कविता या गीत का कोई चरण या पद। कड़ी। २. पद्य के अन्तिम अक्षरों की ध्वनि-संबंधी एकता या मेल। अन्त्यानुप्रास। काफिया।

मुहा०-तुक जोड़ना = भद्दी या बहुत साधारण कविता करना।

३. दो बातों या कार्यों का पारस्परिक सामंजस्य। ४. किसी बात की उपयुक्तता या संगति। जैसे-आखिर इस विरोध में क्या तुक है?

तुक-बंदी-स्त्री० [हिं० तुक + फा० बंदी] १. काव्य के गुणों से रहित और केवल तुक जोड़कर साधारण कविता रचने का काम। २. भद्दी या साधारण कविता, जिसमें काव्य के गुण न हों।

तुकमा-पुं० [फा० तुक्मः] वह फन्दा जिसमें पहनने के कपड़ों की घुंडी फँसाई जाती है।

तुकांत-पुं० [हिं० तुक + सं० अन्त] पद्य के चरणों के अन्तिम अक्षरों या तुक का मेल। अन्त्यानुप्रास। काफिया।

तुकार-स्त्री० [हिं० तू + सं० कार] 'तू' का प्रयोग जो अपमानजनक या अशिष्टता-सूचक माना जाता है।

तुकारना-स० [हिं० तुकार] तू तू करके बुलाना। अशिष्ट सम्बोधन करना।

तुक्कल-स्त्री० [फा० तुक्कः] बड़ी पतंग या गुड्डी (उड़ाने की)।

तुक्का-पुं० [फा० तुक्कः] वह तीर जिसमें गाँसी या फल न हो (इसका प्रयोग केवल

निशाना साधने में होता है)।

तुखार–पुं० [सं०] १. हिमालय के उत्तर-पश्चिम का एक प्राचीन देश। (यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे होते थे।) २. इस देश का निवासी। ३. इस देश का घोड़ा।
*पुं० दे० 'तुषार'।

तुचा*–स्त्री० दे० 'त्वचा'।

तुच्छ–वि० [सं०] [भाव० तुच्छता] १. हीन। क्षुद्र। हेय। २. ओछा। ३. नीच। ४. अल्प। थोड़ा।

तुच्छातितुच्छ–वि० [सं०] बहुत ही तुच्छ। अत्यन्त हेय या क्षुद्र।

तुझ–सर्व० [सं० तुभ्यम्] 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के सिवा दूसरी विभक्तियाँ लगने से पहले प्राप्त होता है।

तुझे–सर्व० [हिं० तुझ] 'तू' का कर्म और सम्प्रदान कारकों में रूप। तुझको।

तुट*–वि० [सं० त्रुट] बहुत थोड़ा।

तुट्ठना*–स० [सं० तुष्ट] तुष्ट या प्रसन्न करना। राजी करना।
अ० तुष्ट या प्रसन्न होना।

तुड़ाना–स० [हिं० 'तोड़ना' का प्रे०] [भाव० तुड़ाई] १. दूसरे से तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २. संबंध छोड़कर अलग होना। ३. बड़े सिक्के को उतने ही मूल्य के छोटे छोटे सिक्कों से बदलना। भुनाना।

तुतरा†–वि० दे० 'तोतला'।

तुतराना*–अ० दे० 'तुतलाना'।

तुतरौहाँ*–वि० दे० 'तोतला'।

तुतलाना–अ० [हिं० तोता] (तोते की तरह) शब्दों और वर्णों का रुक-रुककर अधूरा और अस्पष्ट उच्चारण करना। (जैसे–बच्चों का)

तुत्थ–पुं० [सं०] तूतिया।

तुन–पुं० [सं० तुन्न] एक बड़ा पेड़ जिसके फूलों से बसंती रंग निकलता है।

तुनक–वि० [फा०] १. दुर्बल। कमजोर। २. कोमल। नाजुक।
यौ०–तुनक-मिजाज = बात बात
रूठने या बिगड़नेवाला।

तुनीर*–पुं० दे० 'तूणीर'।

तुपक–स्त्री० [तु० तोप] १.
२. बन्दूक। कड़ाबीन।

तुफंग–स्त्री० [तु० तोप] १. हवाई
२. वह नली जिसमें मिट्टी की
भरकर फूँक के जोर से चलाते हैं।

तुभना*–अ० [सं० स्तोभन] स्तब्ध
चकित रह जाना।

तुम–सर्व० [सं० त्वम्] 'तू'
बहुवचन रूप, जिसका व्यवहार
पुरुष के लिए होता है।

तुमड़ी–स्त्री० दे० 'तूँबी'।

तुमरा(रे)–सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तुमुर*–पुं० दे० 'तुमुल'।

तुमुल–पुं० [सं०] १. सेना या
कोलाहल या धूम। २. सेना की
भेड़। घोर युद्ध।

तुम्ह*–सर्व० = तुम।

तुम्हारा–सर्व० [हिं० तुम]
सम्बन्ध कारक का रूप।

तुम्हें–सर्व० [हिं० तुम] कर्म और
में 'तुम' का विभक्ति-युक्त रूप।

तुरंग(म)–पुं० [सं० तुरंग] १.
२. चित्त। ३. सात की संख्या।

तुरंज–पुं० [फा०] १. चकोतरा
२. बिजौरा नीबू।

तुरंत–क्रि० वि० [सं० तुर] १.
अत्यन्त शीघ्र। चटपट। २. उसी
तत्काल। (एट वन्स)

तुर*–क्रि० वि० [सं० त्वरा] जल्दी से।
स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।

तुरई–स्त्री० दे० 'तोरी'।

तुरकटा–पुं० [फा० तुर्क]
(उपेक्षा-सूचक)

तुरकाना–पुं० [फा० तुर्क] १.

। २. तुर्कों का महल्ला या

[फा० तुर्क] १. तुर्क
मुसलमान स्त्री।
] तुर्क देश का।
तुर्किस्तान की भाषा।
] घोड़ा।
सं० तुर] तुरन्त। चटपट।
[हिं० तुरपना] १. तुरपे
की क्रिया या भाव। २.

[हिं० तोपा] तोपे लगाना।

सं० तुरग] घोड़ा।
[सं० तूर] फूँककर बजाया
प्रकार का लम्बा बाजा।
दे० 'त्वरा'। २. दे० 'तुरही'।
] घोड़ा।
[सं० तूलिका] १. गद्दा।

] शीघ्रता। जल्दी।
[सं० तुर] आतुर होना।

स्त्री० [सं० त्वरावती]
या बहनेवाली।

[सं० त्वरा] १. वेग।
जल्दी। ३. फुरती।

दे० 'त्वरित'।

दे० 'तुरीय'।

[सं०] चतुर्थ। चौथा।
रूप या अवस्था,

जब वह मुँह में आकर उच्चरित होती है। वैखरी। २. प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था जो मोक्ष है। (वेदान्त) पुं० निर्गुण ब्रह्म।

तुरुक*-पुं० [स्त्री० तुरुकिन, तुरुकी] = तुर्क।

तुरुष्क-पुं० [सं०] १. तुर्क जाति। तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य। २. तुर्किस्तान देश। ३. इस देश का घोड़ा।

तुर्क-पुं० [सं० तुरुष्क] १. तुर्किस्तान का निवासी। २. मुसलमान।

तुर्कमान-पुं० [फा० मि० फा० तुर्क] १. तुर्क जाति का मनुष्य। २. तुर्की घोड़ा।

तुर्की-वि० [फा० तुर्क] तुर्किस्तान का। स्त्री० १. तुर्किस्तान की भाषा। २. तुर्किस्तान का घोड़ा। ३. तुर्कों का-सा अभिमान या अक्खड़पन।

तुर्रा-पुं० [अ०] १. वह पर या कलगी जो पगड़ी में लगाई जाती है। गोशवारा। **मुहा०—तुर्रा यह कि** = तिसपर विशेषता यह कि।

२. फूलों का वह गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है। ३. पक्षियों के सिर पर की कलगी या चोटी।

वि० [फा०] अनोखा। अद्भुत।

तुर्श-वि० [फा०] [संज्ञा तुर्शी] खट्टा।

तुर्शी-स्त्री० [फा०] १. खट्टापन। खटाई। २. व्यवहार, बातचीत आदि में दिखाई जानेवाली कटुता।

तुल*-वि० दे० 'तुल्य'।

तुलना-स्त्री० [सं०] १. कई वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरे से कम या अधिक अथवा अच्छी या बुरी होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २. सादृश्य। समानता। ३. उपमा।

अ० [सं० तुल] १. तराजू पर तौला जाना। २. तौल या मान में बराबर उतरना। ३. आधार पर इस प्रकार जमकर

खड़ा होना या ठहरना कि कोई भाग किसी ओर झुका न रहे। ४. नियमित होना। बँधना। ५. गाड़ी के पहियों का औंगा जाना। ६. उद्यत होना। *७. किसी से युक्त होना।

तुलनात्मक-वि० [सं०] जिसमें और प्रकार के विवेचनों या विचारों के सिवा किसी के साथ हो सकनेवाली तुलना का भी विचार हो। (कम्पेरेटिव)

तुलवाना-स० [हिं० तौलना] [संज्ञा तुलवाई] १ तौल या वजन कराना। २. गाड़ी के पहियों में तेल दिलाना। औंगवाना।

तुलसी-स्त्री० [सं०] पवित्र माना जानेवाला एक छोटा पौधा, जिसकी पत्तियों में गन्ध होती है।

तुलसी-दल-पुं० [सं०] तुलसी के पौधे की पत्तियाँ जो देवताओं पर चढ़ती हैं।

तुलसीवन-पुं० = वृन्दावन।

तुला-स्त्री० [सं०] १. तुलना। मिलान। २. गुरुत्व या भार नापने का यन्त्र। तराजू। काँटा। ३. मान। तौल। ४. बारह राशियों में से सातवीं राशि।

तुलाई-स्त्री० [हिं० तुलना] १. तौलने का काम, भाव या मजदूरी। २. तूलने या औंगने का भाव या मजदूरी।

स्त्री० दे० 'दुलाई'।

तुला-दान-पुं० [सं०] सोलह महादानों में से एक जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर अन्न या दूसरे पदार्थ दान किये जाते हैं।

तुलाना*-अ० [हिं० तुलना] १. आ पहुँचना। २. पूरा उतरना। ३. नष्ट हो जाना। न रह जाना।

अ० [सं० तुल्य] किसी के तुल्य या समान होना। बराबर होना।

स० दे० 'तुलवाना'।

तुला-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें आय, व्यय, बचत, लाभ आदि का लेखा लि रहता है। तल-पट। (बैलेन्स शीट)

तुल्य-वि० [सं०] [भाव० तुल्यता] समान। बराबर। २. सदृश। अनुरूप।

तुल्य-योगिता-स्त्री० [सं०] एक अ कार जिसमें बहुत से उपमेयों या उपमा का एक ही धर्म बतलाया जाता है।

तुव*-सर्व० दे० 'तव'

तुष-पुं० [सं०] १. अन्न का छिल भूसी। २. अंडे का ऊपरी छिल्का।

तुषानल-पुं० [सं०] भूसी या घास की आग, जिसमें लोग प्रायश्चित्त कर लिए जल मरते थे।

तुषार-पुं० [सं०] १. हवा में मिली भाप जो जमकर पृथ्वी पर गिरती पाला। २. हिम। बरफ। ३. दे० 'तुल

तुषार रेखा-स्त्री० [सं०] पर्वतों प वह कल्पित रेखा, जिसके ऊपरी भा बरफ बराबर जमा रहता है, कभी नहीं। और नीचे के भाग का बरफ के दिनों में गल जाता है। (स्नो-लाइ

तुष्ट-वि० [सं०] [भाव० तुष्टता] जिसका तोष या तृप्ति हो चुकी हो। २. प्रसन्न। खुश।

तुष्टना*-अ० [सं० तुष्ट] तुष्ट या प्र होना।

तुष्टि-स्त्री० [सं०] १. किसी वि कार्य के ठीक तरह से होने पर मन में वाली प्रसन्नता और सन्तोष। परितोष किसी बात या काम से अच्छी तरह जाना। तृप्ति।

तुसी-स्त्री० [सं० तुष] भूसी।

सर्व० वि० [पं०] आप।

तुहिं-सर्व० [हिं० तू] तुझको।

तुहिन-पुं० [सं०] १. पाला। कुहरा तुषार। २. हिम। बरफ। ३. चाँदनी ज्योत्स्ना। ४. ठंढक। शीत।

तुहिनांशु-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

*पुं० दे० 'तूण' (तूणीर)।

तूफ़ान-पुं० [अ०, चीनी ताई फू] १. समुद्र-तल पर चलनेवाली बहुत तेज आँधी। २. वह तेज आँधी जिसमें खूब धूल उड़े और पानी बरसे। ३. आपत्ति। आफत। ४. हल्ला-गुल्ला। ५. झगड़ा। बखेड़ा। ६. झूठा दोषारोपण या अभियोग। तोहमत।

तूफानी-वि० [फा०] १. बखेड़ा करनेवाला। उपद्रवी। २. झूठा अभियोग या कलंक लगानेवाला। ३. उग्र। प्रचंड। ४. तूफान की तरह तेज। जैसे—तूफानी दौरा।

तूमड़ी-स्त्री० [हिं० तूँबा] १. छोटा तूँबा। २. तूँबी का बना हुआ सँपेरों का एक प्रकार का बाजा।

तूम-तड़ाक-स्त्री० [फा०] १. तड़क-भड़क। शान-शौकत। २. ठसक।

तूमना-स० [सं० स्तोम] १. रूई के रेशे या पहल अलग अलग करना। २. धज्जी-धज्जी करना। ३. हाथ से मसलना।

तूमरी-स्त्री० दे० 'तूँबी'।

तूमार-पुं० [अ०] साधारण बात का व्यर्थ विस्तार। बात का बतंगड़।

तूर-पुं० [सं०] १. नगाड़ा। २. तुरही।

तूरज*-पुं० दे० 'तूर्य'।

तूरण(न)*-क्रि० वि० [सं० तूर्ण] १. चट-पट। तुरन्त। २. शीघ्र। जल्दी।

तूरना†-स० दे० 'तोड़ना'।

†पुं० [सं० तूर] तुरही।

तूरा-पुं० दे० 'तुरही'।

तूर्ण-अव्य० [सं०] शीघ्र। जल्दी।

तूल-पुं० [सं०] १. आकाश। २. कपास, सेमल आदि के डोडों के अन्दर का घूआ। रूई।

पुं० [हिं० तून] १. चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। २. गहरा लाल रंग।

*वि० [सं० तुल्य] तुल्य। समान।

पुं० [अ०] लम्बाई। विस्तार।

मुहा०-तूल खींचना या पकड़ना =

किसी बात का बहुत बढ़ जाना ।

यौ०–तूल-कलाम = (क) लम्बी-चौड़ी बातें । (ख) कहा-सुनी । **तूल-तवील** = लम्बा-चौड़ा ।

तूलना–स० [हिं० तुलना] पहिये की धुरी में तेल या चिकना देना । **औंगना** ।

तूलम-तूल–क्रि० वि० [अ० तूल = लम्बाई] १. लम्बाई के बल । २. आमने-सामने ।

तूलिका–स्त्री० [सं०] चित्र अंकित करने की कलम या कूँची ।

तूली–स्त्री० दे० 'तूलिका' ।

तूस–पुं० [सं० तुष] १. भूसी । २. भूसा ।
पुं० [सं० तूष्य, तिब्बती थोश] १. एक प्रकार का बढ़िया ऊन जिससे दुशाले बनते हैं । पशम । पशमीना । २. इस ऊन का बना कपड़ा, विशेषतः चादर ।

तूसना*–अ०, स० [सं० तुष्ट] सन्तुष्ट, तृप्त या प्रसन्न होना या करना ।

तृखा–स्त्री० दे० 'तृषा' ।

तृजग*–वि० दे० 'तिर्यक्' ।

तृण–पुं० [सं०] १. वह उद्भिज्ज जिसमें हीर या काठ नहीं होता । जैसे–घास, सरपत आदि ।

मुहा०–(मुँह या दाँतों में) तृण गहना या पकड़ना = गौ की तरह हीनता या दीनता प्रकट करना । **तृणवत्** = अत्यन्त तुच्छ । कुछ भी नहीं । **तृण-तोड़ना** = कोई सुन्दर वस्तु या प्राणी देखकर उसे नजर से बचाने के लिए टोटके के रूप में तिनका तोड़ने की प्रक्रिया करना ।

तृणमय–वि० [सं०] घास का बना हुआ ।

तृतीय–वि० [सं०] तीसरा ।

तृतीयांश–पुं० [सं०] तीसरा भाग ।

तृतीया–स्त्री० [सं०] १. चान्द्र मास के किसी पक्ष की तीसरी तिथि । तीज । २. व्याकरण में करण कारक ।

तृन*–पुं० दे० 'तृण' ।

तृपति*–स्त्री० दे० 'तृप्ति' ।

तृप्त–वि० [सं०] जिसकी इच्छा या वास पूरी हो चुकी हो । अघाया हुआ ।

तृप्ति–स्त्री० [सं०] इच्छा या वासना होने पर मिलनेवाली शान्ति, सन्तोष आनन्द ।

तृषा–स्त्री० [सं०] १. प्यास । २. इच्छा अभिलाषा । ३. लोभ । लालच ।

तृषित–वि० [सं०] १. प्यासा । २. अभिलाषी । इच्छुक । ३. ललचाया हुआ ।

तृष्ण–वि० [सं०] १. जिसे तृषा हो । प्यासा । २. किसी प्रकार की अभि या कामना रखनेवाला ।

तृष्णा–स्त्री० [सं०] १. कोई वस्तु पा के लिए आकुल करनेवाली इच्छा । वासना २. लोभ । लालच । ३. प्यास ।

तृस्ना*–स्त्री० = तृष्णा ।

तें*–प्रत्य० [सं० तस्] से । (देखो)

तेंदुआ–पुं० [देश०] चीते की तरह एक हिंसक पशु ।

तेंदू–पुं० [सं० तिंदुका] मझोले आ का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी आब कहलाती है ।

ते*–अव्य० दे० 'से' ।
सर्व० [सं० ते] वे । वे लोग ।

तेह*–सर्व० = उसे । (व्रज०)

तेउ*–पुं० [सं० तेजस्, हिं० तेज] १. ते २. अग्नि । आग ।

तेऊ*–पद [हिं० ते = वे + ऊ = भी] वे भ

तेखना*–अ० [हिं० तेहा] क्रुद्ध होना ।

तेग–स्त्री० [अ०] तलवार ।

तेगा–पुं० [अ० तेग] खड्ग ।

तेज–पुं० [सं० तेजस्] १. दीप्ति । कां चमक । आभा । २. पराक्रम । बल । ३. वीर्य । ४. सार भाग । तत्त्व । ५. ता गरमी । ६. तेज़ी । प्रखरता । ७. प्रता रोब-दाब । ८. पाँच महाभूतों में से तीसरा जिसमें ताप और प्रकाश होता है । अग्नि ।
वि० [फा० तेज़] १. तीक्ष्ण धारवाला

। २. जल्दी चलने-
करनेवाला फुर-
। तीता। झालदार।
हुआ। महँगा।
। ७. तुरन्त अधिक प्रभाव
या तीव्र बुद्धिवाला।
'तेजना'।
तेजपत्र] दारचीनी
पत्ता जो तरकारियों
डाला जाता है।
तेज पत्ता'।
-वि० दे० 'तेजवान्'।
तेजोवान्] १. जिसमें
। २. वीर्यवान्। ३.

'तेज'।
'तेजस्वी'।
तेजस्विन्] [भाव०
जिसमें तेज हो। तेज से
।
] [वि० तेजाबी]
और अम्ल सार जो
। (एसिड)
तेजाब] १. तेजाब
की सहायता से बनाया
।
पुराने गहनों को गला-
सहायता से अच्छी तरह
किया जाता है।
[सं० तेज + आयतन]
परम तेजस्वी। उदा०-
। तुलसी।
] १. तेज होने का भाव।
। ३. उग्रता। प्रचं-
। ५. भाव या
। महँगी। 'मंदी' का
[सं०] बहुत आभा,
कान्ति, तेज या ज्योतिवाला।

तेजोहत-वि० [सं०] जिसका तेज नष्ट हो गया हो। श्री-हत।

तेता*-वि० पुं० [स्त्री० तेती] दे० 'उतना'।

तेतिक*-वि० [हिं० तेता] उतना।

तेतो*-वि० दे० 'उतना'।

तेपि*-पद दे० 'तेऊ'।

तेरस-स्त्री० [सं० त्रयोदशी] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। त्रयोदशी।

तेरह-वि० [सं० त्रयोदश] दस और तीन। पुं० दस और तीन का जोड़।

मुहा०-तीन तेरह होना = नष्ट-भ्रष्ट या छिन्न-भिन्न होना। **तेरह बाइस करना** = इधर-उधर की बात करना। बहाने-बाजी करना।

तेरहीं-स्त्री० [हिं० तेरह] किसी के मरने के दिन से तेरहवाँ दिन जिसमें पिंड-दान होता है और ब्राह्मण-भोजन कराके घर के लोग शुद्ध होते हैं।

तेरा-सर्व० [सं० तव] [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एक-वचन सर्वनाम जो 'तू' का संबंध-कारक रूप है।

तेरुस*-पुं० दे० 'त्योरस'। स्त्री० दे० 'तेरस'।

तेल-पुं० [सं० तैल] १. बीजों आदि से निकाला जानेवाला अथवा आपसे आप निकलनेवाला प्रसिद्ध, चिकना तरल पदार्थ। चिकना। रोगन। २. विवाह से पहले की एक रीति जिसमें वर और वधू को हल्दी मिलाकर तेल लगाया जाता है।

मुहा०-तेल उठना या चढ़ना = विवाह से पहले उक्त रसम होना।

३. किसी पशु की चरबी जिसका उपयोग प्रायः औषध के रूप में होता है। जैसे-मछली का तेल, साँड़े का तेल।

तेलगू-स्त्री० [सं० तैलंग] तैलंग देश की भाषा।

तेलहन-पुं० [हिं० तेल] वे बीज जिनसे

तेल निकलता है। जैसे–सरसों, तिल।

तेलहा–वि० पुं० [हिं० तेल] [स्त्री० तेलही] १. जिसमें तेल हो या लगा हो। २. तेल के योग से बना या पका हुआ। जैसे–तेलही पूरी।

तेलिया–वि० [हिं० तेल] तेल की तरह काला, चिकना और चमकीला।

पुं० १. काला रंग। २. इस रंग का घोड़ा। ३. सींगिया नामक विष।

तेलिया पखान–पुं० [हिं० तैलिया + पाषाण] एक प्रकार का चिकना पत्थर।

तेलिया मैना–स्त्री० एक प्रकार की मैना। (चिड़िया)

तेली–पुं० [हिं० तेल] [स्त्री० तैलिन] एक जाति जो तिल, सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का काम करती है।

कहा०–तेली का बैल = हर समय काम में जुता रहनेवाला व्यक्ति।

तेलौंना†–वि० [हिं० तेल + औना (प्रत्य०)] १. जिसमें तेल हो या लगा हो। तेल से युक्त। स्निग्ध। २. जिसमें सुगन्धित तेल या फुलेल लगा हो।

तेवन*–पुं० [सं० अंतेवन] १. घर या महल के सामने का छोटा बाग। नजरबाग। २. आमोद-प्रमोद का स्थान या वन। ३. क्रीड़ा। मनोविनोद।

तेवर–पुं० [सं० त्रिकुटी, पुं० हिं० तिउरी] १. देखने का ढंग। दृष्टि। चितवन।

मुहा०–तेवर चढ़ना = दृष्टि का क्रोधपूर्ण होना। **तेवर बदलना या बिगड़ना** = व्यवहार में क्रोध या उदासीनता प्रकट करना।

२. भौंह। भृकुटी।

पुं० [हिं० तीन] स्त्रियों के पहनने के तीन कपड़ों (साड़ी, ओढ़नी और चोली) का समूह।

तेवान*–पुं० [?] चिन्ता फिक्र। २. सोच-विचार।

तेवाना*–अ० [?] १. चिन्ता या
करना। २. विचार करना। सोचना।

तेह*–पुं० [हिं० तेखना] १. क्रोध। रो
गुस्सा। २. घमंड। ३. तेजी। प्रचंडता
४. तीखापन। तीव्रता।

तेहरा–वि० पुं० [हिं० तीन + हरा]
तीन परतों या लपेटों का। २. जो एक
तीन हों। ३. तिगुना। (क्व०)

तेहराना–स० [हिं० तेहरा] कोई
दोहराने के बाद फिर तीसरी बार
देखना या जाँचना।

तेहवार–पुं० दे० 'त्योहार'।

तेहा–पुं० [हिं० तेह] १. क्रोध। गुस्
२. अहंकार। घमंड। ३. उग्रता। तेज़ी
तेहि*–सर्व० [सं० ते] उसको। उसे।

तेही–पुं० [हिं० तेह + ई (प्रत्य०)]
गुस्सा करनेवाला। क्रोधी। २. अभिमानी
घमंडी। ३. उग्र स्वभाववाला।

तैं†–सर्व० [सं० त्वम्] १. तू। २. तू
(व्रज०)

*अव्य० [हिं० ते] से। (व्रज०)

तै–अव्य० [सं० तत्] उतना।

पुं० [अ०] १. निपटारा। फैसला।

यौ०–तै-तमाम = जिसका निपटारा
चुका हो।

२. काम पूरा होना।

वि० १. जिसका निपटारा या फैसला
चुका हो। निपटा हुआ। निर्णीत। २.
पूरा हो चुका हो। ३. ठहराया या
किया हुआ। निश्चित।

तैना*–स० दे० 'तपाना'।

अ० दे० 'तपना'।

तैनात–वि० [अ० तअय्युन] [संज्ञा तैनाती]
किसी काम पर लगाया या नियत कि
हुआ। नियुक्त। मुकर्रर।

तैयार–वि० [अ०] १. जो काम में
आने के योग्य और ठीक हो गया हो।
दुरुस्त। लैस।

तोंद–स्त्री० [सं० तुंड] फूले हुए पेट का आगे बढ़ा या निकला हुआ भाग ।

तोंदल–वि० [हिं० तोंद + ल (प्रत्य०)] जिसका पेट आगे निकला हो । तोंदवाला ।

तोंदी–स्त्री० [सं० तुंड] नाभी । ढोंढ़ी ।

तोंर*–पुं० दे० 'तोमर' ।

तोंहका†–सर्व० = तुम्हें ।

तो–अव्य० [सं० तु] एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी शब्द या बात पर जोर देने या ऐकान्तिकता प्रकट करने के लिए अथवा कभी कभी यों ही होता है । जैसे–मेरे तो गिरि धर गोपाल, दूसरो न कोई ।—मीरा

अव्य० [सं० तद्] उस दशा में । तब ।

*सर्व० [सं० तव] १. तुझ (व्रज) २. तेरा ।

*अ० [हिं० हतो = था] था (क्व०)

तोइ*–पुं० [सं० तोय] पानी । जल ।

तोई–स्त्री० [देश०] मगजी । गोट ।

तोख*–पुं० दे० 'तोष' ।

तोड़–पुं० [हिं० तोड़ना] १. तोड़ने की क्रिया या भाव । २. नदी आदि के जल का तेज बहाव । तरखा । ३. प्रभाव, वार, युक्ति या दाँव से बचने के लिए की हुई युक्ति दाँव या वार । प्रतिकार । मारक । ४. बार । दफा । जैसे–आज चार तोड़ पानी बरसा ।

तोड़क–वि० [हिं० तोड़ना] तोड़नेवाला । (अशुद्ध रूप)

तोड़ना–स० [हिं० टूटना] १. आघात या झटके से किसी पदार्थ के खंड या टुकड़े करना । अंग को मूल वस्तु से जुदा करना । २. किसी वस्तु का कोई अंग खंडित, भग्न या बे-काम करना । ३. खेत में पहले पहल हल चलाना । ४. क्षीण, दुर्बल या अशक्त करना । ५. वैभव, गुण, योग्यता आदि कम करना या घटाना । ६. संघटन, व्यवस्था, स्वरूप आदि नष्ट-भ्रष्ट करना । ७. निश्चय, आज्ञा, नियम आदि का उल्लंघन करना ।

तोड़-फोड़-पुं० [हि० तोड़ना + फोड़ना] १. किसी चीज को तोड़-फोड़ कर नष्ट करने की क्रिया या भाव। २. दे० 'ध्वंसन' २.।

तोड़र*-पुं० [हिं० तोड़ा] हाथ या पैर में पहनने का तोड़ा नामक गहना।

तोड़वाना-स० दे० 'तुड़वाना'।

तोड़ा-पुं० [हिं० तोड़ना] १. सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर जो हाथों, पैरों या गले में पहनी जाती है। २. रुपये रखने की टाट की वह थैली जिसमें १०००) आते हैं।

मुहा०-तोड़े उलटना या गिनना = बहुत धन देना।

३. घटी। टोटा। कमी। ४. किसी चीज का आवश्यकता से कम होना। ऊनता। घटती। (डेफिसिट) ५. नाच का कुछ विशेष प्रकार का कोई टुकड़ा या विभाग।

पुं० [सं० तुड या हिं० टोटा] तोड़ेदार बन्दूक छोड़ने की नारियल की जटा की रस्सी।

यौ०-तोड़ेदार बन्दूक = पुरानी चाल की वह बन्दूक जो तोड़ा या पलीता लगाकर छोड़ी जाती है।

तोण*-पुं० [सं० तूण] तरकश।

तोत†-पुं० [फा० तोदः] ढेर। राशि।

तोतई-वि० [हिं० तोता + ई (प्रत्य०)] तोते के रंग का-सा। धानी।

तोतक*-पुं० [हिं० तोता] पपीहा।

तोतराना*-अ० दे० 'तुतलाना'।

तोतला-वि० [हिं० तुतलाना] तुतलाकर या अस्पष्ट बोलनेवाला।

तोता-पुं० [फा० तूती] हरे या लाल रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो आदमियों की बोली की नकल करता और इसी लिए पाला जाता है। शुक। कीर। सूआ।

मुहा०-हाथों के तोते उड़ जाना = भारी अनिष्ट के कारण बहुत घबरा जाना। **तोते की तरह आँखे फेरना या बदलना** = बहुत बे-मुरौवत होना। **तोता पालना** = जान बूझकर कोई दुर्व्यसन रोग अपने पीछे लगाना या बढ़ाना।

तोता-चश्म-पुं० [फ़ा०] तोते की आँखें फेर लेनेवाला। बे-मुरौवत।

तोता-परी-पुं० एक प्रकार का आम (फल)।

तोद-पुं० [सं०] १. कष्ट। दुःख। पीड़ा। वेदना।

तोदन-पुं० [सं०] १. चाबुक। कोड़ा। २. व्यथा। कष्ट। ३. पीड़ा। दर्द।

तोप-स्त्री० [तु०] एक प्रसिद्ध आग्नेय अस्त्र जिसमें गोला रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर छोड़ा जाता है।

मुहा०-तोप कीलना = तोप की नली इस प्रकार बन्द करना कि वह गोला न छोड़ सके। **तोप की सलामी उतारना** = किसी मान्य अधिकारी के आने अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के समय तोपों में खाली बारूद भरकर तुमुल शब्द करना।

तोपखाना-पुं० [तु० तोप + फा० ख १. वह स्थान जहाँ तोपें रहती हैं। २. के लिए प्रस्तुत तोपों का समूह।

तोपची-पुं० [अ० तोप + ची (प्रत्य० तोप चलानेवाला। गोलंदाज।

तोपा-पुं० [देश०] एक टाँके में वाली या एक टाँके भर की सिलाई।

तोबड़ा-पुं० [फा० तोबरः] चमड़े या की वह थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े खिलाने के लिए उसके मुँहपर बाँधते हैं।

मुहा०-किसी के मुँह पर तोबड़ा चढ़ाना = किसी को बोलने से रोकना।

तोबा-स्त्री० [अ० तौबः] भविष्य में बुरा काम न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।

मुहा०-तोबा-तिल्ला करना या मचाना = रोते, चिल्लाते या दीनता दि लाते हुए रक्षा की प्रार्थना करना। **तोबा बुलवाना** = (क) पूर्ण रूप से परास्त करना। (ख) भविष्य में कोई काम न करने की पक्की प्रतिज्ञा कराना।

] समूह। ढेर।
] १. एक प्रकार का
लकड़ी के डंडे में लोहे
रहता था। २. एक
३. एक प्राचीन देश।
सिपाही। ५. क्षत्रियों की

] जल। पानी।
[सं०] मेघ। बादल।
[सं०] समुद्र।
[सं०] समुद्र।
'तोड़'।

दे० 'तोरी'।
[सं०] १. घर या नगर का
। २. सजावट के लिए
में लटकाई जानेवाली
आदि। बन्दनवार।
दे० 'तोरण'।
दे० 'तोड़ना'।
दे० 'तेरा'।
(स्त्री)।
दे० 'तुड़ाना'।
[सं० त्वरावत्] [स्त्री०
। तेज।
[सं० तूर] एक प्रकार की
की तरकारी बनती है।
=मछली। (परिहास में)

[सं०] १. वजन करना।
उठाना।
दे० 'तौलना'।
[सं० तोलक] १. बारह माशे
इस तौल का बाट।
[तु०] बिछाने का रूईदार
[फा० तोशःदान] १. वह

थैली जिसमें यात्रा के समय जलपान आदि आवश्यक चीजें रहती हैं। २. सिपाहियों की कारतूस रखने की थैली।

तोशा–पुं० [फा० तोशः] वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रखता है। पाथेय।

तोशाखाना–पुं० [फा० तोशः या तु० तोशक+फा० खाना] वह स्थान जहाँ राजाओं या अमीरों के पहनने के कपड़े, गहने आदि रहते हैं।

तोष–पुं० [सं०] [वि० तोषक, तोषित, तुष्ट] १. अघाने या मन भरने का भाव। २. असन्तोष, कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार हो जाने पर मन में होनेवाली तुष्टि। तृप्ति। (सोलेस) ३. प्रसन्नता। आनन्द।

तोषक–वि० [सं०] सन्तुष्ट करनेवाला।

तोषण–पुं० [सं०] [वि० तुष्ट, तोषणीय और तोषित] १. तृप्ति। सन्तोष। २. सन्तुष्ट करने की क्रिया या भाव। तोष। वि० सन्तुष्ट या प्रसन्न करनेवाला। (यौ० शब्दों के अन्त में)

तोषणिक–पुं० [सं०] वह धन जो किसी को तुष्ट करने के लिये दिया जाय। वि० तोष संबंधी।

तोषन*–पुं०, वि० दे० 'तोषण'।

तोषना*–अ०, स० [सं० तोष] सन्तुष्ट होना या करना।

तोस*–पुं० दे० 'तोष'।

तोसा*–पुं० दे० 'तोशा'।

तोसागार*–पुं० दे० 'तोशाखाना'।

तोहफा–पुं० [अ०] सौगात। उपहार। वि० [भाव० तोहफगी] बढ़िया।

तोहमत–स्त्री० [अ०] झूठ-मूठ लगाया हुआ दोष। झूठा अभियोग या कलंक।

तोहिं*–सर्व० [हिं० तू या तैं] तुझको। तुझे।

तौंकनी–स्त्री० दे० 'ताँस'।

तौंकना*–अ० दे० 'तौंसना'।

तौंस–स्त्री० [हिं० ताप+ऊमस] १.

गरमी । ताप । २. ऊमस ।

तौसना-अ० [हिं० तौस] [भाव० तौस] १. गरमी से झुलसना । २. ऊमस होना ।

तौ-क्रि० वि० दे० 'तो' ।

*अ० [हिं० हतो] था ।

वि० [सं० तव] तेरा या तुम्हारा ।

†अव्य० हाँ । ठीक है ।

तौक-पुं० [अ०] १. वह भारी गोल पटरी जो अपराधी या पागल के गले में उसे कहीं भागने से रोकने के लिये पहनाई जाती थी । २. इस आकार का गले में पहनने का एक गहना । ३. इस आकार का वह प्राकृतिक चिह्न जो कुछ पक्षियों के गले में होता है । हँसुली ।

तौन†-सर्व० [सं० ते] वह ।

तौनी-स्त्री० [हिं० तवा का स्त्री० अल्पा०] रोटी पकाने का छोटा तवा । तई । तवी ।

तौबा-स्त्री० दे० 'तोबा' ।

तौर-पुं० [अ०] १. ढंग । तरीका । २. प्रकार । भाँति । तरह । ३. चाल-चलन ।

यौ०-तौर तरीका = (क) चाल-चलन । (ख) रंग-ढंग ।

तौरि*-स्त्री० [हिं० ताँवरि] सिर में आनेवाला चक्कर । घुमटा ।

तौरेत-स्त्री० [इब्रा०] हजरत मूसा कृत यहूदियों का प्रधान धर्म्म-ग्रन्थ ।

तौल-स्त्री० [सं० तोलन] १. किसी पदार्थ के गुरुत्व या भारीपन का परिमाण । भार का मान । वजन । (वेट) २. तौलने की क्रिया या भाव । ३. बटखरों के मान के विचार से तौलने की नियत प्रणाली या मानक । जैसे-छोटी या बड़ी तौल, कच्ची या पक्की तौल । ४. महत्व, गम्भीरता आदि की थाह ।

तौलना-स० [सं० तोलन] [स० तौलाना] १. तराजू, काँटे आदि पर रखकर किसी वस्तु के गुरुत्व या भारीपन का परिमाण जानना । वजन करना । २. अस्त्र आदि चलाने के लिए हाथ में लेकर ठीक मैं लाना । साधना । ३. तुलना करके और अधिकता जानना । मिलान कर ४. दे० 'तूलना' ।

तौलवाना-स० हिं० 'तौलना' का प्रे०

तौला-पुं० [हिं० तौलना] अनाज तौलनेवाला । बया ।

तौलाई-स्त्री० [हिं० तौलना] तौलने क्रिया, भाव या मजदूरी ।

तौलाना-स० = तौलवाना ।

तौलिया-पुं० [अं० टॉवेल] एक प्रकार का मोटा अँगोछा ।

तौहीन-स्त्री० [अ०] अपमान ।

त्यक्त-वि० [सं०] [वि० त्यक्तव्य = करने के योग्य] जिसका त्याग किया हो । छोड़ा या त्यागा हुआ ।

त्यजन-पुं० [सं०] [वि० त्यक्त, त्यज त्यागने या छोड़ने का काम । तजना ।

त्याग-पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अधिकार से निकालने की क्रिया या उत्सर्ग । २. कोई काम या संबंध छोड़ क्रिया । ३. वैराग्य आदि के कारण सां भोगों और पदार्थों आदि को छोड़ क्रिया या भाव । ४. किसी अच्छे काम लिए अपना सुख, लाभ आदि छोड़ क्रिया या भाव । (सैक्रिफाइस)

त्यागना-स० [सं० त्याग] छोड़ तजना ।

त्याग-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो कार्य या पद से अलग होते समय त्याग के प्रमाण-स्वरूप लिखकर दिया है । इस्तीफा । (रेज़िग्नेशन)

त्यागी-वि० [सं० त्यागिन्] १. सां सुखों को छोड़नेवाला । २. अपने स्वार्थ हित का त्याग करनेवाला । (विशेषतः कि अच्छे काम के लिए)

त्याजना*-स० दे० 'त्यागना' ।

त्रसन-पुं॰ [सं॰] १. त्रस्त करने की क्रिया या भाव। २. भय। डर।

त्रसना*-अ॰ [सं॰ त्रसन] १. भय से काँप उठना। बहुत डरना। २. कष्ट पाना। स॰ १. डराना। २. कष्ट देना।

त्रसरेणु-स्त्री॰ [सं॰] वायु में भरे हुए वे बहुत सूक्ष्म कण जो प्रायः छेद में से आनेवाली धूप में उड़ते हुए दिखाई देते हैं। पुराणों के अनुसार यह सूर्य की पत्नी है।

त्रसरैनि*-स्त्री॰ = त्रसरेणु।

त्रसाना*-स॰ [हिं॰ त्रसना] डराना।

त्रसित*-वि॰ दे॰ 'त्रस्त'।

त्रस्त-वि॰ [सं॰] १. भयभीत। डरा हुआ। २. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित। ३. घबराया हुआ। व्याकुल।

त्राण-पुं॰ [सं॰] [वि॰ त्राता] १. रक्षा। बचाव। २. वह वस्तु जिसके द्वारा रक्षा हो। ३. कवच। बकतर।

त्राता(र)-पुं॰ [सं॰ त्रातृ] रक्षक।

त्रास-पुं॰ [सं॰] १. डर। भय। २. कष्ट। तकलीफ।

त्रासक-पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ त्रासिका] १. डरानेवाला। २. कष्ट देनेवाला। ३. हटाने या दूर करनेवाला। निवारक।

त्रासना*-स॰ [सं॰ त्रासन] १. डराना। २. कष्ट पहुँचाना।

त्रासमान*-वि॰ [सं॰ त्रास + मान (प्रत्य॰)] डरा हुआ। भयभीत।

त्रासित-वि॰ दे॰ 'त्रस्त'।

त्राहि-अव्य॰ [सं॰] रक्षा करो। बचाओ।

त्रिंबक*-पुं॰ दे॰ 'त्र्यंबक'।

त्रि-वि॰ [सं॰] तीन। जैसे—त्रिकाल।

त्रिक-पुं॰ [सं॰] १. तीन चीजों का समूह या वर्ग। २. वह स्थान जहाँ से तीन चीजें तीन ओर से आकर मिलती हों। ३. कमर के बीच का वह स्थान जहाँ कूल्हे की दोनों हड्डियाँ रीढ़ के अन्तिम सिरे से मिलती हैं। ४. कमर। कटि।

त्रिकाल-पुं० [सं०] १. भूत, वर्त्तमान और भविष्य ये तीनों काल। २. प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।

त्रिकालज्ञ-पुं० [सं०] वह जो भूत, वर्त्तमान और भविष्य की सब बातें जानता हो। सर्वज्ञ।

त्रिकालदर्शी-पुं० [भाव० त्रिकालदर्शिता] दे० 'त्रिकालज्ञ'।

त्रिकुटी-स्त्री० [सं० त्रिकूट] भौहों के बीच का ऊपरी भाग।

त्रिकूट-पुं० [सं०] हठ-योग के अनुसार शरीर के अन्दर का एक चक्र जिसका स्थान दोनों भौहों के मध्य में माना गया है।

त्रिकोण-पुं० [सं०] १. ऐसा क्षेत्र जिसके तीन कोने हों। त्रिभुज क्षेत्र। २. तीन कोनोंवाली कोई चीज।

त्रिकोण-मिति-स्त्री० [सं०] गणित की वह प्रक्रिया या अंग जिसमें त्रिभुज के कोण, बाहु, वर्ग विस्तार आदि का मान निकाला जाता है।

त्रिखा*-स्त्री० दे० 'तृषा'।

त्रिगर्त्त-पुं० [सं०] जालंधर और काँगड़े के आस-पास के प्रान्त का पुराना नाम।

त्रिगुण-पुं० [सं०] सत्व, रज और तम प्रकृति के ये तीनों गुण।

वि० [सं०] तीन गुना। तिगुना।

त्रिजग*-पुं० १. दे० 'तिर्यक्'। २. दे० 'त्रिलोक'।

त्रिजामा*-स्त्री० दे० 'रात्रि'।

त्रिज्या-स्त्री० [सं०] वृत्त के केन्द्र से परिधि तक की रेखा जो व्यास की आधी होती है।

त्रिण*-पुं० दे० 'तृण'।

त्रिताप-पुं० [सं०] दैहिक, दैविक और भौतिक ताप या कष्ट।

त्रिदेव-पुं० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता।

त्रिदोष-पुं० [सं०] १. वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष। २. सन्निपात रोग जि उक्त तीनों दोष बढ़ते हैं।

त्रिदोषना*-अ० [सं० त्रिदोष] १. पित्त और कफ के प्रकोप में पड़ना। काम, क्रोध और लोभ के फेर में फँसना

त्रिधा-क्रि० वि० [सं०] तीन प्रकार से

वि० [सं०] तीन प्रकार का।

त्रिन*-पुं० दे० 'तृण'।

त्रिनयन-पुं० [सं०] महादेव।

त्रिपथगा-स्त्री० [सं०] गंगा।

त्रिपाठी-पुं० दे० 'त्रिवेदी'।

त्रिपिटक-पुं० [सं०] भगवान बुद्ध उपदेशों का तीन खंडों (सूत्रपिटक, विन पिटक और अभिधम्म पिटक) का संग्रह जो बौद्धों का प्रधान धर्म-ग्रन्थ है

त्रिपिताना†-अ०, स० [सं० तृप्त आना (प्रत्य०)] तृप्त या सं होना या करना।

त्रिपुंड-पुं० [सं० त्रिपुंड्र] भस्म की आड़ी रेखाओं का वह तिलक जो शैव माथे पर लगाते हैं।

त्रिपुरारि-पुं० [सं०] शिव।

त्रिफला-स्त्री० [सं०] आँवले हड़ बहेड़े का समूह।

त्रिवली-स्त्री० [सं०] पेट के ऊपर दि पड़नेवाले तीन बल या रेखाएँ। (सौन्द सूचक)

त्रिविक्रम-पुं० [सं०] वामन विराट रूप।

त्रिबेनी-स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

त्रिभंग-पुं० [सं०] खड़े होने की वा जिसमें टाँग कमर और गरदन तीनों कुछ कुछ टेढ़े रहते हैं।

त्रिभुज-पुं० [सं०] तीन भुजाओं रेखाओं से घिरा हुआ धरातल या क्षे (ट्रैंगिल)

त्रिभुवन-पुं० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।

[सं०] तीन मात्राओं-

] [वि० त्रैमासिक]
समय। २. वर्ष के तीन
विभागों में कोई एक।
चन्दा इस वर्ष की
है।

[सं०] ब्रह्मा, विष्णु और
देवता।

[सं० स्त्री] औरत।

चरित्र = दे० 'तिरिया' के
चरित्तर'।

[सं० तरण] १. पानी के
ना। २. तैरकर पार होना।

[सं०] रात्रि। रात।

[सं०] स्वर्ग, मर्त्य और
लोक।

दे० 'त्रिलोक'।

[सं०] शिव। महादेव।

[सं०] १. अर्थ, धर्म और
समूह। २. सत्व, रज और
। ३. ब्राह्मण, क्षत्रिय और
जातियाँ या वर्ण।

[सं०] विष्णु का वामन
।

[सं०] तीन प्रकार का।

] तीन प्रकार से।

[सं०] १. वह स्थान जहाँ
ती हों। २. गंगा, यमुना
का संगम जो प्रयाग में है।
और सुषुम्ना इन तीनों
स्थान। (हठ योग)

[सं०] १. ऋक्, यजुः और
का ज्ञाता। २. ब्राह्मणों
।

] १. तिरपाई। तिपाई।
।

[सं०] एक प्रसिद्ध सूर्य-वंशी राजा जिन्होंने इसी शरीर से स्वर्ग जाने के लिए यज्ञ किया था, पर जो देवताओं के विरोध के कारण बीच आकाश में ही रोक दिये गये थे।

त्रिशूल–पुं० [सं०] १. एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं। (शिव जी का अस्त्र) २. दे० 'त्रिताप'।

त्रिषित–वि० दे० 'तृषित'।

त्रिसंध्या–स्त्री० [सं०] प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों सन्धि-काल।

त्रिसना*–पुं० = तृष्णा।

त्रुटि–स्त्री० [सं०] १. ऐसा अभाव जिससे कोई बात या कार्य अधूरा रहे या ठीक और उपयुक्त न माना जाय। कमी। न्यूनता। (डिफेक्ट) २. भूल। चूक।

त्रुटित–वि० [सं०] १. कटा या टूटा हुआ। २. आहत। घायल। ३. त्रुटिपूर्ण।

त्रेता–पुं० [सं०] चार युगों में से दूसरा, जो १२९६००० वर्षों का माना गया है।

त्रै–वि [सं० त्रय] तीन।

त्रैकालिक–वि० [सं०] १. भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनों कालों में या सदा होनेवाला। २. प्रातः, मध्याह्न और सायं तीनों कालों में होनेवाला।

त्रैमासिक–वि० [सं०] हर तीन महीनों पर या हर तीसरे महीने होनेवाला। (क्वर्टरली)

त्रैराशिक–पुं० [सं०] गणित की वह प्रक्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का मान जाना जाता है।

त्रैलोक्य–पुं० दे० 'त्रिलोक'।

त्रैवार्षिक–वि० [सं०] हर तीन वर्षों पर या में होनेवाला। २. तीन वर्षों का। (ट्रीनियल)

त्रोटक–पुं० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमें ५, ७, ८ या ९ अंक होते हैं।

त्र्यंबक–पुं० [सं०] शिव। महादेव।

त्वक्-पुं० [सं०] १. छाल। २. चमड़ा। खाल। ३. पाँच ज्ञानेन्द्रियों में से एक जो सारे शरीर के ऊपरी भाग पर फैली हुई है।

त्वचकना*-अ० [सं० त्वचा] वृद्धावस्था के कारण शरीर का चमड़ा झूलना।

त्वचा-स्त्री० [सं०] १. शरीर पर का चमड़ा। २. छाल। वल्कल। ३. साँप की केंचुली।

त्वदीय-सर्व० [सं०] तुम्हारा।

त्वरा-स्त्री० [सं०] शीघ्रता। जल्दी।

त्वरित-वि० [सं०] १. जल्दी च जाने या पहुँचनेवाला। २. जिसका पहुँचना या जिसके सम्बन्ध में कार्रवाई होना आवश्यक हो। (एक्स क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

त्वेष-पुं० [सं० त्वेषस्] १. उमंग। २. भाव का आवेश।

थ

थ-देव नागरी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण और त-वर्ग का दूसरा अक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान दन्त है।

थंडिल*-पुं० [सं० स्थंडिल] यज्ञ की वेदी।

थंब(भ)-पुं० [सं० स्तंभ] [स्त्री० थंभी] १. खंभा। स्तंभ। २. सहारा। टेक।

थंभन-पुं० दे० 'स्तंभन'।

थँभना†-अ० = थमना। (रुकना)

थंभा†-पुं० [सं० स्तम्भ] खम्भा।

थंभित*-वि० [सं० स्तभित] १. रुका या ठहरा हुआ। २. अचल। स्थिर। ३. स्तंभित। चकित।

थकन-स्त्री० दे० 'थकावट'।

थकना-अ० [सं० स्था + कृ] १. परिश्रम करते करते इतना शिथिल होना कि फिर और परिश्रम न हो सके। क्लांत होना। २. ऊबना। ३. बुढ़ापे के कारण अशक्त होना। *४. मोहित होना।

थकाथक†-क्रि० वि० [अनु०] १. थक थंक शब्द करते हुए। २. लगातार। निरंतर

थकान-स्त्री० दे० 'थकावट'।

थकाना-स० हिं० 'थकना' का स०।

थका-माँदा-वि० [हिं० थकना + माँदा] जो थककर चूर हो गया हो। श्रान्त।

थकावट-स्त्री० [हिं० थकना] थकने का शारीरिक परिणाम या भाव। शिथिलता। थकान।

थकित*-वि० [हिं० थकना] १. थका हुआ श्रान्त। शिथिल। २. मोहित। मुग्ध

थकौंहाँ-वि० [हिं० थकना] [थकौंहीं] थका हुआ। शिथिल।

थक्कर†-पुं० [हिं० थक्का] १. किसी का जमा हुआ पिंड। थक्का। २. समूह।

थक्का-पुं० [सं० स्था + कृ] [स्त्री० थकिया] जमी हुई गाढ़ी चीज की तह या दल। जैसे-खून का थक्का।

थगित*-वि० [हिं० थकित] १. या रुका हुआ। २. शिथिल। ढीला मन्द। धीमा।

थति*-स्त्री० दे० 'थाती'।

थन-पुं० [सं० स्तन] चौपायों विशे दूध देनेवाले चौपायों का स्तन।

थनु*-पुं० = स्थाणु।

थनुसुत*-पुं० [सं० स्थाणु + सुत] के पुत्र, गणेश और कार्त्तिकेय।

थनैत-पुं० [हिं० थान] १. गाँव का मुखि २. गाँव का लगान, वसूल करनेवा कर्मचारी। २. दे० 'थाँगी'।

थपक-स्त्री० दे० 'थपकी'।

थपकना-स० [अनु० थप थप] १. प्या से या आराम पहुँचाने के लिए किसी के शरीर पर धीरे धीरे हथेली से आघात

थरथराहट–स्त्री [अनु० थर थर] थर्राने की क्रिया या भाव ।

थरथरी–स्त्री० = कँपकँपी ।

थरसना*–अ० [सं० त्रसन] त्रस्त या पीड़ित होना । कष्ट भोगना ।

थरिया–स्त्री० = थाली ।

थरी–स्त्री० [सं० स्थली] १. शेरों आदि की माँद । २. गुफा ।

थरु*–पुं० [सं० स्थल] जगह ।

थर्राना–अ० [अनु० थर थर] १. डर से काँपना । २. भयभीत होना । दहलना ।

थल–पुं० [सं० स्थल] १. स्थान । जगह । २. जल से रहित भूमि । ३. स्थल का मार्ग । ४. शेर, चीते आदि जंगली पशुओं की माँद ।

थलकना–अ० [सं० स्थूल] १. भारी चीज का कुछ ऊपर नीचे हिलना । २. मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलना ।

थलचर–पुं० [सं० स्थलचर] पृथ्वी पर या स्थल में रहनेवाले जीव ।

थलज–पुं० [हिं० थल] १. वह जो स्थल में उत्पन्न हो । जैसे–पेड़ पौधे आदि । २. गुलाब ।

थलथलाना–अ० [हिं० थलकना] मोटे शरीर के मांस का झूलकर या ऊपर नीचे हिलना । थलकना ।

थलपति–पुं० [सं० स्थल + पति] राजा ।

थलरुह* वि० [सं० स्थलरुह] स्थल पर उत्पन्न होनेवाले जीव, वृक्ष आदि ।

थली–स्त्री० [सं० स्थली] १. स्थान । जगह । २. जल के नीचे की भूमि । ३. ठहरने या बैठने का स्थान ।

थवई–पुं० [सं० स्थपति] मकान बनानेवाला कारीगर । राज । राजगीर ।

थसर*–वि० = शिथिल ।

थसरना*–अ० = शिथिल होना ।

थहना*–स० [हिं० थाह] थाह लेना ।

थहरना–अ० [अनु० थर थर] १. दुर्ब-

लता, भय आदि से काँपना। २. थर्राना।

थहाना–स० [हिं० थाह] गहराई, गुण आदि की थाह लेना या पता लगाना।

थाँग–स्त्री० [सं० स्थान] १. चोरों या डाकुओं के छिपकर रहने का स्थान। २. खोज। तलाश।

थाँगी–पुं० [हिं० थाँग] १. चोरी का माल खरीदने या अपने पास रखनेवाला आदमी। २. चोरों का सरदार। ३. जासूस। भेदिया।

थाँवला–पुं० दे० 'थाला'।

था–अ० [सं० स्था] 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

थाक–पुं० [सं० स्था] १. गाँव की हद। २. एक पर एक रक्खी हुई चीजों का ढेर।

थाकना*–अ० दे० 'थकना'।

थात*–वि० दे० 'स्थित'।

थाती–स्त्री० [सं० स्थाता] १. कठिन समय पर काम आने के लिए बचाकर रखा हुआ धन। २. जमा। पूँजी। ३. धरोहर। अमानत।

थान–पुं० [सं० स्थान] १. जगह। स्थान। २. निवास-स्थान। डेरा।

मुहा०–(कहीं) थान करना = जम या अड़कर बैठ जाना।

३. घोड़ों या चौपायों के बाँधे जाने का स्थान। ४. कुछ निश्चित लम्बाई का कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा। ५. संख्या। अदद। जैसे–चार थान मोती।

थाना–पुं० [सं० स्थान] १. टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २. पुलिस विभाग का वह भवन जहाँ सरकारी सिपाही रहते हैं। पुलिस की बड़ी चौकी। (पुलिस स्टेशन)

थानु-सुत*–पुं० [सं० स्थाणु + सुत] गणेश जी।

थानेदार–पुं० [हिं० थाना + फा० दार] पुलिस के थाने का प्रधान अधिकारी।

थानैत–पुं० [हिं० थाना + ऐत (प्रत्य०)] चौकी या अड्डे का प्रधान।

पुं० [सं० स्थान] ग्राम-देवता।

थाप–स्त्री० [सं० स्थापन] १. तबले मृदंग आदि पर पूरे पंजे से किया जाने वाला आघात। २. थप्पड़। ३. छाप ४. गुण, प्रधानता आदि की धाक। शपथ। कसम।

थापन*–पुं० [सं० स्थापन] स्थापित करने जमाने या बैठाने की क्रिया या भाव।

थापना*–स० [सं० स्थापन] १. स्थापित करना। जमाकर बैठाना या लगाना (प्रायः पूजा, सम्मान आदि के विचार से जैसे—देवी थापना। २. हाथ या साँचे पीट अथवा दबाकर कोई चीज बनाना जैसे–कंडे थापना।

†स्त्री० [सं० स्थापना] १. स्थापन प्रतिष्ठा। २. नव-रात्र में दुर्गा-पूजा लिए घट-स्थापन।

थापर*–पुं० दे० 'थप्पड़'।

थापा–पुं० [हिं० थाप] १. दीवारों पर लगाई जानेवाली पंजे की छाप। खलियान में अनाज के ढेर पर मिट्टी, से लगाया हुआ चिह्न। ३. वह जिससे कोई चिह्न अंकित किया छापा। ४. ढेर। राशि।

थापी–स्त्री० [हिं० थापना] १. वह मुँगरी जिससे राज-मजदूर गच पीटकर मसाला अच्छी तरह अपने स्थान जमाते हैं। २. प्रशंसा, आशीर्वाद आदि के में किसी की पीठ ठोंकने की क्रिया या

थामना–स० [सं० स्तंभन] १. पकड़ना २. गिरती या चलती हुई चीज रोकना ३. सहारा देना। सँभालना। ४. ऊपर कार्य्य का भार लेना।

थायी*–वि० दे० 'स्थायी'।

थाल–पुं० [हिं० थाली] बड़ी थाली।

थाला–पुं० [सं० स्थालक] १. किसी पेड़ या पौधे के चारो ओर का वह घेरदार

के लिए पानी डाला
। आल-बाल। ३. ईंट,
वह छोटा गोल चबूतरा
के चारो ओर बनाया जाता
में फोड़े फुन्सी आदि के
दूर तक होनेवाली सूजन।
।-बाँधना।
[सं० स्थालिका] बड़ा
। थाँवला।
भव-भार, भक्ति-कल्प-
।
करने का एक प्रसिद्ध छिछला
गोल तश्तरी।
के आगे की थाली
किसी के निश्चित लाभ में बाधक

का बैंगन = लाभ और
भी इस पक्ष में और कभी
होनेवाला आदमी।
दे० 'स्थावर'।
[सं० स्था] १. गहराई, ज्ञान,
सीमा। (ज्ञान प्राप्त करने
जैसे—नदी की थाह; किसी के
आदि। २. गहराई, ज्ञान,
पता या परिचय। ३.
।
[हिं० थाह] थाह लेना।
लगाना।
[हिं० थाह] छिछला।
[अं०] किसी प्रकार का रंग-
नाटक आदि के अभिनय
।
[हिं० टिकली] कपड़े, चमड़े
करने के लिए ऊपर से
टुकड़ा। चकती। पैबंद।
में थिगली लगाना =
करना।

थिति*—स्त्री० दे० 'स्थिति'।

थिर*-वि० दे० 'स्थिर'।

थिरकना—अ० [सं० अस्थिर + करण] [भाव० थिरक] नाचने के समय पैर बार-बार रह-रहकर और धीरे धीरे उठाना और पटकना।

थिरकौंहाँ—वि० [हिं० थिरकना] थिरकने या बार बार ऊपर उठने और नीचे हिलनेवाला।

वि० [हिं० स्थिर] ठहरा हुआ। स्थिर।

थिरजीह*—स्त्री० [सं० स्थिर जिह्व] मछली।

थिरता(ई)*—स्त्री [सं० स्थिरता] १. ठहराव। २. स्थायित्व। ३. शान्ति।

थिर-थानी-वि० [सं० स्थिर + स्थान] एक जगह जम कर रहनेवाला।

थिरना—अ० [सं० स्थिर] १. पानी आदि का हिलना-डोलना बंद होना। २. स्थिर होना। ३. निथरना।

थिरा—स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी।

थिराना—स० [हिं० थिरना] १. हिलते डोलते हुए जल को स्थिर होने देना। २. स्थिर करना। ३. निथारना।

*अ० दे० 'थिरना'।

थीता—पुं० [सं० स्थित] १. स्थिरता। २. शान्ति। ३. आराम। चैन। सुख।

थीथी—स्त्री० [सं० स्थिति] १. स्थिरता। दृढ़ता। २. स्थिति। अवस्था। ३. धैर्य। धीरज।

थीर*—वि० दे० 'थिर'।

थीरा*— वि० दे० 'स्थिर'।

थुकाना—स० [हिं० थूकना का प्रे०] १. किसी को थूकने में प्रवृत्त करना। २. उगलवाना। ३. किसी की बहुत निन्दा करना।

थुक्का-फजीहत—स्त्री० [हिं० थूक + अ० फजीहत] बहुत निकृष्ट कोटि का लड़ाई-झगड़ा।

थुड़ी—स्त्री० [अनु० थू थू] १. घृणा और तिरस्कार पूर्वक थूकने का शब्द। २.

धिक्कार। लानत।

मुहा०-थुड़ी थुड़ी करना = बहुत घृणा प्रकट करते हुए धिक्कारना।

थुथकार-स्त्री० [हिं० थूक] थूकने की क्रिया, भाव या शब्द।

थुथकारना-थुड़ी थुड़ी करना। परम घृणा प्रकट करना।

थुर-हथा*-वि० [हिं० थोड़ा + हाथ] [स्त्री० थुरहथि] १. हाथ छोटे होने के कारण जिसकी हथेली में थोड़ी चीज आवे। उदा०—कन दैबो सौंप्यो ससुर बहु थुरहथि जान।—बिहारी। २. कम खर्च करने वाला। मितव्ययी। कंजूस।

थू-अव्य० [अनु०] १. थूकने का शब्द। २. घृणा या तिरस्कार का शब्द। छिः।

थूक-स्त्री० [अनु० थू थू] वह गाढ़ा, लसीला सफेद रस जो मुँह से निकलता है। खखार। लार।

मुहा०-थूकों सत्तू सानना = बहुत किफायत से कोई बड़ा काम करने चलना।

थूकना-अ० [हिं० थूक] मुँह से थूक निकालकर बाहर फेंकना।

मुहा०-किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना = अत्यन्त तुच्छ या घृणित समझकर दूर रहना। **थूककर चाटना** = (क) कहकर मुकर जाना अथवा देकर लौटा लेना। (ख) भविष्य में कोई अनुचित काम न करने की प्रतिज्ञा करना।

० मुँह में रखी हुई वस्तु बाहर गिराना। उगलना।

थन-पुं० [देश०] कुछ लम्बा और मोटा आगे निकला हुआ मुँह। जैसे—सूअर का।

न*-पुं० [सं० स्थूण] १. खंभा। स्तम्भ। २. चाँड़। टेक।

ी-स्त्री० [सं० स्थूणा] किसी बोझ को रने से रोकने के लिये उसके नीचे लगाया नेवाला खंभा। चाँड़। टेक।

ना-स० [सं० थूर्वण] १. कूटना। २. मारना। पीटना। ३. कसकर भरना।

थूल*-वि० [सं० स्थूल] १. जो स्प दिखाई दे। 'सूक्ष्म' का उलटा। २. मोटा और भारी। ३. भद्दा।

थूहर-पुं० [सं० स्थूण] एक छोटा पेड़ जिसके डंठल डंडे के आकार के होते हैं। सेंहुड़।

थेई-थेई-स्त्री० [अनु०] १. थिरक थिरक कर नाचने की मुद्रा। २. नाच का बोल।

थेगली-स्त्री० दे० 'थिगली'।

थेथर-वि० [देश०] [भाव० थेथरई] १. लस्त-पस्त। बहुत थका हुआ। २. परेशान।

थैला-पुं० [सं० स्थल] [स्त्री० अल्पा० थैली] कपड़े आदि का एक प्रकार का झोला जिसमें चीज रखी जाती है। बड़ा बटुआ। झोला।

थैली-स्त्री० [हिं० थैला] १. छोटा थैला। २. वह धन (मुख्यतः चन्दे से इकट्ठा किया हुआ) जो प्रायः थैली में रखकर किसी बड़े आदमी को उसके शुभागमन पर अथवा और किसी महत्त्वपूर्ण अवसर पर, किसी अच्छे काममें लगाने के लिए भेंट किया जाता है। (पर्स)

थोक-पुं० [सं० स्तोमक] १. ढेर। राशि। २. दल। झुंड। ३. एक साथ बहुत-सा या इकट्ठा माल खरीदने या बेचने का काम। 'खुदरा' का उलटा। (होल सेल) ४. सारी वस्तु। कुल या पूरी चीज।

थोड़ा-वि० [सं० स्तोक] [स्त्री० थोड़ी] मात्रा या परिमाण में उचित या आवश्यक से कम या घटकर। न्यून। अल्प। कम।

यौ०-थोड़ा-बहुत = न बहुत थोड़ा और न पूरा। कुछ कुछ।

क्रिया वि० जरा। तनिक।

थोथा-वि० [देश०] [स्त्री० थोथी] १. जिसमें कुछ सार या तत्त्व न हो। २. खोखला। पोला। ३. व्यर्थ का। ४. जिसकी धार तेज न हो। कुंठित।

सं० स्थापन] १. गीली
ऊपर से डाल, रख या जमा
ले चढ़ाना। २. (दोत्र)
झूठा अभियोग लगाना।
दे० 'तोबड़ा'।

थोर(ा)*–वि० दे० 'थोड़ा'।

थोरिक*–वि० [हिं० थोड़ा] थोड़ा-सा।

थौंद*–स्त्री० दे० 'तोंद'।

थ्यावस–स्त्री० [?] १. स्थिरता। २. धैर्य।

द

वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन
का तीसरा वर्ण। इसका उच्चा-
में जिह्वा के अगले भाग के
है। शब्दों के अन्त में लग-
वाला' का अर्थ देता है। जैसे–
आदि।

[फा०] विस्मित। चकित।

[फा० दंगा] १. दंगा करने-
वाला। २. प्रचंड। विकट।
दंगा'।

[फा०] १. बराबर के पहल-
कुश्ती जो जोड़ बदकर लड़ी
जिसमें जीतनेवाले को कुछ इनाम
किसी प्रकार के कौशल की
।

भारी।

[फा० दंगल] १. दंगल संबंधी।
।

[फा० दंगल] बहुत से लोगों
झगड़ा जिसमें मार-पीट भी हो।

] १. डंडा। सोंटा। लाठी।
तरह की कोई चीज। जैसे–
३. किसी चीज में लगी हुई
४. दंडवत्। ५. अपराधी
अपराध के फल-स्वरूप पहुँचाई
या आर्थिक हानि। सजा। ६.
रूप में दिया जानेवाला धन।
(पेनल्टी)
भरना = दूसरे का नुकसान
धन देकर पूरा करना। **दंड सहना** = हानि या घाटा सहना।
७. दमन। शमन। ८. एक प्रकार का व्यायाम जो पंजों के बल औंधे लेटकर किया जाता है। ९. साठ पल या चौबीस मिनट का समय। घड़ी।

दंडक–पुं० [सं०] १. डंडा। २. दंड देनेवाला पुरुष। शासक। ३. वे छन्द जिनमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो।

दंडक वन–पुं० दे० 'दंडकारण्य'।

दंडकारण्य–पुं० [सं०] विन्ध्य पर्वत से गोदावरी के किनारे तक फैला हुआ एक प्राचीन वन।

दंडधर–पुं० [सं०] १. यमराज। २. शासनकर्त्ता। ३. संन्यासी। चोबदार। ५. दे० 'दंड-नायक'।

दंडना*–स० [सं० दंडन] दंड देना।

दंड-नायक–पुं० [सं०] १. सेनापति। २. दंड विधान करने या अपराधियों को दंड देनेवाला एक प्राचीन अधिकारी।

दंड-नीति–स्त्री० [सं०] दंड देकर शासन या वश में रखने की नीति।

दंडनीय–वि० [सं०] [स्त्री० दंडनीया] १. (व्यक्ति) जो दंडित होने के योग्य हो। जिसे दंड देना उचित हो। २. (कार्य या अपराध) जिसके लिए किसी को दंड दिया जाना उचित हो या दिया जा सकता हो। (पनिशेबुल)

दंड-पाणि–पुं० [सं०] १. यमराज। २. भैरव की एक मूर्त्ति।

दंड-प्रणाम–पुं० [सं०] दंडवत्। सादर अभिवादन।

दंडमान*–वि० दे० 'दंडनीय'।

दंडवत्–पुं० [सं०] १. दंड के समान सीधे पृथ्वी पर लेटकर किया जानेवाला नमस्कार। साष्टांग प्रणाम। २. प्रणाम।

दंड-विधान–पुं० १. दे० 'दंड-विधि'। २. दे० 'दंड संहिता'।

दंड-विधि–स्त्री० [सं०] वह नियम या विधान जिसमें अपराधों के लिए दंडों का विवेचन या विधान होता है।

दंडाकरन*–पुं० दे० 'दंडकारण्य'।

दंड-संहिता–स्त्री० [सं०] वह ग्रन्थ जिसमें किसी देश में अपराधों के लिए दिये जानेवाले दंडों का विधान हो (पेनल कोड)

दंडाधिकारी–पुं० [सं०] वह राजकीय अधिकारी जिसे आपराधिक अभियोगों का विचार करने और अपराधियों को दंड देने का अधिकार होता है। (मजिस्ट्रेट)

दंडायमान–वि० [सं०] खड़ा।

दंडित–वि० [सं०] [स्त्री० दंडिता] जिसे दंड मिला हो। सजा पाया हुआ।

दंडी–पुं० [सं० दंडिन्] १. वह जो दंड धारण करता हो। २. एक विशेष प्रकार के संन्यासी जो सदा हाथ में दंड रखते हैं।

दंड्य–वि० दे 'दंडनीय'।

दंत–पुं०[सं०] १.दाँत। २.बत्तीस की संख्या।

दंत-कथा–स्त्री० [सं०] वह बात जो परम्परा से लोग सुनते चले आये हों, पर जिसके ठीक होने का कोई प्रमाण न हो।

दंत-धावन–पुं० [सं०] १. दाँत और मुँह धोना या साफ करना। २. दातुन।

दंत-मूलीय–वि० [सं०] दाँतों के मूल से उच्चारण किया जानेवाला (वर्ण)। जैसे–तवर्ग। (पौस्ट-डेन्टल)

दँतार†–वि० [हिं० दाँत] बड़े दाँतोंवाला।

दँतिया–स्त्री० [हिं० दाँत] छोटा दाँत।

दँतुरिया*–स्त्री० दे० 'दँतिया'।

दँतुला–वि० [सं० दंतुल] [स्त्री० दँतुली] जिसके दाँत बड़े हों।

दंतोष्ठ्य–वि० [सं०] दाँतों और होंठ के योग से उच्चरित होनेवाला (वर्ण)। (लेबिओ डेन्टल) जैसे–'व' वर्ण दंतोष्ठ्य है।

दंत्य–वि० [सं०] १. दंत-सम्बन्धी। २. (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। जैसे–त, थ, द, ध,। (डेन्टल)

दंद*–पुं० १. दे० 'द्वंद्व'। २. दे० 'दाँत'।

दंदन*–वि० [सं० द्वंद्व] [स्त्री० दंदनी] दमन करनेवाला।

दंदाना–पुं० [फा०] [वि० दंदानेदार] दाँत की तरह उभरी हुई सींकों या दानों की पंक्ति। जैसी कंघी या आरे में की।

दंपति(ती)–पुं० [सं०] पति और पत्नी का जोड़ा।

दंपा*–स्त्री० [हिं० दमकना] बिजली।

दंभ–पुं० [सं०] [वि० दंभी] महत्त्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिए अपने आपको बहुत बड़ा समझने के कारण होनेवाला अभिमान।

दंभान*–पुं० दे० 'दंभ'।

दंभी–वि० [सं० दंभिन्] [स्त्री० दंभिनी] १. जिसे दंभ हो। २. पाखंडी। ढकोसलेबाज। ३. अभिमानी। घमंडी।

दँवरी–स्त्री० [सं० दमन, हिं० दाँवना] फसल की बालों से दाने निकलवाने का काम जो प्रायः बैलों से लिया जाता है।

दँवारि*–स्त्री० दे० 'दावानल'।

दंश–पुं० [सं०] १. वह घाव जो दाँत काटने या लगने से हुआ हो। दंत-क्षत। २. दाँत काटने या गड़ाने की क्रिया। ३. विषैले जंतुओं का डंक।

दंशक–पुं० [सं०] १. दाँत से काटनेवाला। २. डसनेवाला।

दंशन–पुं० [सं०] [वि० दंशित, दंशी] १. दाँत से काटना। २. डंक मारना। डसना।

दंशना*–स० दे० 'दंशन'।

दक्षिण । दाहिना ।

पुं॰ एक प्रजापति जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे ।

दक्ष-कन्या—स्त्री॰ [सं॰] शिवजी की पहली पत्नी, सती ।

दक्षिण—वि॰ [सं॰] १. 'बाँया' का उलटा । दाहिना । २. जो किसी की कार्य-सिद्धि में अनुकूल या सहायक हो । ३. निपुण । दक्ष । ४. चतुर ।

पुं॰ १. उत्तर के सामने की दिशा । (साउथ) २. वह नायक जो अपनी सब नायिकाओं पर एक-सा प्रेम रखता हो । ३. प्रदक्षिणा ।

दक्षिण-मार्ग—पुं॰ [सं॰] [वि॰ दक्षिण मार्गी] १. वैदिक धर्म या मार्ग जिसके विपरीत होने के कारण तांत्रिक मत या धर्म 'वाम-मार्ग' कहलाया । २. परवर्त्ती तांत्रिक मत के अनुसार एक प्रकार का आचार जो वैदिक, वैष्णव और शैव मार्गों की अपेक्षा अच्छा, परन्तु वाम मार्ग से निम्न कोटि का बताया गया है । ३. आधुनिक राजनीति में वह मार्ग या पक्ष जो साधारण और वैधानिक रीति तथा शान्त उपायों से विकास चाहता हो और उग्र उपायों से क्रांति करने का विरोधी हो । (राइट विंग)

दक्षिणा—स्त्री॰ [सं॰] १. दक्षिण दिशा । २. वह धन जो किसी दान की हुई चीज के साथ ब्राह्मणों को दिया जाता है । ३. भेंट के रूप में नगद दिया जानेवाला धन । ४. वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने पर भी उससे पूरी प्रीति रखती और सद्व्यवहार करती हो ।

दक्षिणा पथ—पुं॰ [सं॰] विन्ध्य पर्वत के दक्षिण ओर का प्रदेश ।

दक्षिणायन—वि॰ [सं॰] भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर । जैसे—दक्षिणायन सूर्य ।

पुं॰ सूर्य का कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर जाना या खिसकना, जो २१ जून से २२ दिसम्बर तक होता है ।

दक्षिणावर्त्त—वि॰ [सं॰] १. जिसका मुख

या प्रवृत्ति दाहिनी ओर हो। २. जो परिभ्रमण करने या घूमने में दाहिनी ओर से आगे बढ़ता हो। 'वामावर्त्त' का उलटा। (काउन्टर-क्लॉकवाइज)

दक्षिणी-वि० [सं० दक्षिणीय] दक्षिण का।

दखल-पुं० [अ०] १. अधिकार। कब्जा। २. हस्तक्षेप। ३. पहुँच। प्रवेश।

दखल-दिहानी-स्त्री० [अ० + फा०] अदालत से किसी को किसी सम्पत्ति पर अधिकार, कब्जा या दखल दिलाने का काम। (डिलेवरी ऑफ पजेशन)

दखिन-पुं० दे० 'दक्षिण'।

दखील-वि० [अ०] जिसका दखल या कब्जा हो। अधिकार रखनेवाला।

दखीलकार-पुं० [अ० दखील + फा० कार] [भाव० दखीलकारी] वह किसान जिसे किसी जमींदार का खेत कम से कम बारह वर्षों तक जोतने-बोने के कारण उसपर सदा के लिए अधिकार मिल गया हो। (ऑकुपेन्सी टेनेन्ट)

दखीलकारी-स्त्री० [फा०] १. दखीलकार का कार्य, भाव या पद। २. दखीलकार को मिले हुए अधिकार। (ऑकुपेन्सी राइट)

दगड़-पुं० [?] बड़ा ढोल।

दगदगा-पुं० [अ०] १ डर। भय। २. सन्देह।

दगदगो स्त्री० दे० 'दगदगा'।

दगध†-पुं० दे० 'दाह'।
वि० दे० 'दग्ध'।

दगधना*-अ० [सं० दग्ध] जलना।
स० १. जलाना। २. दुःख देना।

दगना-अ० [सं० दग्ध + ना (प्रत्य०)] १. दागा या चिह्नित किया जाना। अंकित होना। २. दागा या दग्ध किया जाना। ३. (बंदूक, तोप आदि का) दागा या छोड़ा जाना। छूटना। चलना। ४ झुलस जाना। ५. कलंकित होना। ६. किसी नये या विशेष नाम से प्रसिद्ध होना

*स० दे० 'दागना'।

दगल(ा)-पुं० [?] १. रूईदार अँगरखा। २. मोटा और भारी लबादा।

दगवाना-स० हिं० 'दागना' का प्रे०।

दगहा-वि० [हिं० दाग] जिसमें या जि पर दाग हो। दागवाला।
वि० [हिं० दाह = प्रेत कर्म + हा (प्रत्य) जिसने मृतक का दाह-कर्म किया हो और जो अभी श्राद्ध आदि करके शुद्ध न हुआ
वि० [सं० दग्ध] १. दग्ध किया या ज हुआ। २. दागा या चिह्न लगाया हुआ।

दगा-स्त्री० [अ०] छल-कपट। धोखा

दगादार-वि० दे० 'दगाबाज'।

दगाबाज-वि० [फा०] [भाव० दगाबा धोखा देनेवाला। धोखेबाज। छली।

दगैल-वि० [अ० दाग + ऐल (प्रत्य० १. जिसमें या जिसपर दाग हो। दागदा २. जो कारागार का दंड भोग चुका हो।

दग्ध-वि० [सं०] १. जला या ज हुआ। २. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ि

दग्धाक्षर-पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में ह, र, भ और ष ये पाँचों अक्षर जि छंद के आरंभ में रखना अशुभ माना जाता

दग्धित*-वि० दे० 'दग्ध'।

दचक-स्त्री० [हिं० दचकना] दचकने क्रिया या भाव।

दचकना-अ० [अनु०] [भाव दचक १. झटका, ठेस या हलकी ठोकर खा २. कुछ दब जाना।
स० १. ठेस या हलका धक्का लगा झटका देना। २. दबाना।

दचका-पुं० दे० 'दचक'।

दच्छना*-स्त्री० दे० 'दक्षिणा'।

दच्छिन*-वि० दे० 'दक्षिण'।

दढ़ना*-अ० [सं० दहन] जलना।

दढ़ियल-वि० [हिं० दाढ़ी + इयल (प्रत्य०) जिसे दाढ़ी हो। दाढ़ीवाला।

दतना*-अ० [?] मग्न या लीन होना।

दद्रु-पुं० [सं०] दाद रोग।

दध*-पुं० दे० 'दधि'।

दधि-पुं० [सं०] १. दही। २. कपड़ा। *पुं० [सं० उदधि] समुद्र। सागर।

दधि-काँदो-पुं० [सं० दधि + हिं० काँदो = कीचड़] जनमाष्टमी के बाद होनेवाला एक उत्सव जिसमें हलदी मिला हुआ दही लोग एक दूसरे पर छिड़कते हैं।

दधि-सुत*-पुं०[सं०उदधि + सुत] चन्द्रमा।

दनदनाना-अ० [अनु०] १. दनदन शब्द करना। २. आनन्द करना। ३. निःशंक होकर कोई काम करना।

दनादन-क्रि० वि० [अनु०] १. दनदन शब्द के साथ। २. लगातार। निरन्तर।

दनुज-पुं० [सं०] [भाव० दनुजता, दनुजत्व] असुर। राक्षस।

दपट-स्त्री० [हिं० डपट] डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव। डपट।

दपटना-अ० [हिं० डपट] डाँटना।

दप*-पुं० दे० 'दर्प'।

दपेट-स्त्री० दे० 'दपट'।

दफन-पुं० [अ०] कोई चीज विशेषतः मृत शरीर जमीन में गाड़ना।

दफनाना-स० [अ० दफ़न + आना] दफन करना। गाड़ना। (विशेषतः मृत शरीर)

दफा-स्त्री० [अ०दफ़अ] १. बार। मरतबा। २. विधान आदि का वह कोई एक अंश जिसमें किसी एक अपराध, विषय या कार्य के सम्बन्ध में कोई बात कही गई या कोई विधान किया गया हो। धारा।

मुहा०-दफा लगाना = अभियुक्त पर किसी दफा के नियम घटाते हुए, अधिकारी का यह निश्चय करना कि अभियुक्त इस दफा के अनुसार दंडित हो सकता है।

वि० [अ० दफ़ऽ] दूर किया या हटाया हुआ। तिरस्कृत।

दफ्तर-पुं० [फा०] १. कार्यालय। २. सविस्तर वृत्तान्त। चिट्ठा।

दफ्तरी–पुं० [फा०] १. किसी दफ्तर के कागज आदि सँभालकर रखनेवाला कर्मचारी। २. किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। जिल्दसाज। जिल्दबन्द।

दफ्ती-स्त्री० [अ० दफ़्तीन] कागज की परतों को जोड़कर बनाया हुआ मोंटा वरक। पतला गत्ता। (कार्ड बोर्ड)

दबंग–वि० [हिं० दबाव या दबाना] प्रभावशाली। दबाववाला।

दब–वि० [हिं० दबना] किसी की तुलना में कम या घटिया।

•पुं० दे० 'दबाव'।

दबकगर–पुं० [फा० तबकगर] धातु के पत्तर पीटकर तबक या पत्तर बनाना।

दबकना–अ० [हिं० दबाना] १. भय, संकोच, लज्जा आदि के कारण छिपना। २. लुकना। छिपना।

स० धातु का पत्तर पीटकर बड़ा करना।

दबकाना–स० [हिं० दबकना] आड़ में करना। छिपाना।

दबकिया–पुं० दे० 'दबकगर'।

दबदबा–पुं० [अ०] आतंक। रोब-दाब।

दबना–अ० [सं० दमन] १. भारी चीज के नीचे आना या होना। बोझ के नीचे पड़ना। २. किसी ओर से बहुत जोर पड़ने पर अपने स्थान से पीछे हटना। ३. ऊपरी तल का कुछ नीचा हो जाना। ४. किसी के दबाव में पड़कर उसके इच्छानुसार काम करने के लिए विवश होना। ५. किसी के सामने हलका ठहरना। ६. किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना और उसपर कोई कार्रवाई न होना। ७. अपनी चीज या प्राप्य धन का किसी दूसरे के अधिकार में चला या रह जाना। ८. बात-चीत या झगड़े में धीमा या मन्द पड़ना। ९. संकोच करना।

मुहा०–दबी जबान से कहना = बहुत ही धीरे से, दृढ़ता छोड़कर या संकोचपूर्वक कोई बात कहना। डरते डरते दबते हुए कुछ कहना।

दबाना–स० [सं० दमन] [भाव० दा
दबाव] १. ऊपर से इस प्रकार भार रख
जिसमें कोई चीज नीचे की ओर धँसे
इधर-उधर हट न सके। २. किसी पर कि
ओर से इस प्रकार जोर पहुँचाना कि
पीछे हटना पड़े। ३. किसी पर ऐसा
पहुँचाना कि वह कुछ कह या कर न स
४. मुकाबले में मन्द या हलका कर दे
५. किसी बात को बढ़ने न देना। ६.
में गाड़ना। ७. उभड़ते हुए वेग, वि
आदि का दमन करना। शान्त करना।
अपने हाथ में आई हुई किसी दूसरे
चीज अपने पास रोंक रखना।

दबाव–पुं० [हिं० दबाना] दबाने की क्रि
या भाव। चाँप।

दबैल–वि० [हिं० दबना + ऐल (प्रत्य०)
१. जिसपर किसी का प्रभाव या दबाव
२. बहुत दबने या डरनेवाला। ३. कि
के उपकार, आतंक आदि से दबा हुआ।

दबोचना–स० [हिं० दबाना] १. कि
को झट से पकड़कर दबा लेना।
दबाना। २. छिपाना।

दबोरना*–स० = दबाना।

दमंकना*–अ० = दमकना।

दम–पुं० [सं०] १. वह दंड जो द
करने के लिए दिया जाता है। सजा।
इन्द्रियों को वश में रखना और उन्हें
मार्ग पर न लगने देना।

पुं० [फा०] १. साँस। श्वास।

मुहा०–दम अटकना = मरने के स
साँस रुकना। **दम खींचना** = (क) कु
रह जाना। कुछ न बोलना। (ख) ठ
ऊपर चढ़ाना। **दम घुटना** = हवा की
कमी के कारण साँस लेने में कष्ट होना।
दम तोड़ना = मरने के समय अन्तिम
साँस लेना। **दम फूलना** = अधिक

यौ०–दम-झाँसा, दम-दिलासा, दम-पट्टी या दम-बुत्ता।

मुहा०–दम देना = बहकाना। धोखा देना।

९. एक प्रकार का पुराना हथियार।

दमक–स्त्री० दे० 'चमक'।

दमकना–अ० = चमकना।

दम-कल–स्त्री० [हिं० दम + कल] वह यंत्र जिसके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर अथवा और किसी ओर झोंक से फेंका जाता है। (पंप) २. वह यंत्र जिसकी सहायता से पानी डालकर लगी हुई आग बुझाई जाती है। (पंप) ३. कूएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र। (पंप) ४. दे० 'दम-कला'।

दम-कला–पुं० [हिं० दम-कल] १. एक प्रकार का बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी से जन-समूह पर गुलाब-जल या रंग छिड़का जाता है। २. दे० 'दम-कल'। ३. दे० 'दम-चूल्हा'।

दम-खम–पुं० [फा०] १. दृढ़ता। मजबूती। २. जीवनी शक्ति। प्राण। ३. तलवार की धार, घाट और लचीलापन। ४. मूर्ति की सुन्दर और सुडौल गढ़न। ५. चित्र में वह गोलाई लिये लगातार चलनेवाली रेखाएँ जिनसे वह जानदार मालूम होता है।

दम-चूल्हा–पुं० [हिं० दम + चूल्हा] एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दम-झाँसा–पुं० दे० 'दम-बुत्ता'।

दमड़ी–स्त्री० [सं० द्रविण = धन] पैसे का आठवाँ भाग।

पद–दमड़ी का पूत = बहुत ही हीन और अयोग्य व्यक्ति।

दमदमा–पुं० [फा०] मोरचा। धुस।

दमदार–वि० [फा०] १. जिसमें पूरा दम या जीवनी-शक्ति हो। २. मजबूत।

दम-दिलासा–पुं० दे० 'दम-बुत्ता'।

दमन–पुं० [सं०] १. दबाने या रोकने की

क्रिया। जैसे-इन्द्रियों या वासनाओं का दमन। निग्रह। २. विरोध, उपद्रव, विद्रोह आदि को बल का प्रयोग करके दबाना। (रिप्रेशन) ३. दंड। सजा।

*स्त्री दे० 'दमयंती'।

दमनशील–वि०[सं०][भाव०दमनशीलता] जिसकी प्रकृति दमन करने की हो।

दमना–अ० [हिं० दम] अधिक परिश्रम के कारण दम भर जाना। साँस फूलना। पुं० = दौना (पौधा)।

दमनीय–वि० [सं०] १. जिसका दमन किया जा सके। २. जिसका दमन करना आवश्यक हो।

दम-पट्टी–स्त्री० दे० 'दम-बुत्ता'।

दम-बाज–वि० [फा०दम + बाज़] [भाव० दमबाजी] १.दम-बुत्ता या चकमा देनेवाला। फुसलानेवाला। २. गाँजा, चरस आदि पीनेवाला। गाँजा का दम लगानेवाला।

दम-बुत्ता–पुं० [हिं० दम] केवल फुसलाने या शान्त रखने के लिए कही जानेवाली झूठी बात।

दमयंती–स्त्री० [सं०] विदर्भ के राजा भीमसेन की कन्या जो नल को ब्याही थी।

दमरी*–स्त्री० दे० 'दमड़ी'।

दमशील–वि० [सं०] १. इन्द्रिय को वश में रखनेवाला। २. दे० 'दमनशील'।

दमा–पु० [फा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस बहुत कष्टपूर्वक और कुछ जोर से चलता है।

दमाद–पुं० [सं० जामातृ] कन्या का पति। जँवाई। जामाता।

दमामा–पुं० [फा०] नगाड़ा। डंका।

दमारि*–स्त्री० = दावाग्नि (दावानल)।

दमावति*–स्त्री० = दमयंती।

दमैया*–वि० दे० 'दमनशील'।

दयंत*–पुं० दे० 'दैत्य'।

दया–स्त्री० [सं०] वह मनोवेग जो दूसरे का दुःख देखकर वह दुःख दूर करने की प्रेरणा करता है। करुणा। रहम।

दया-दृष्टि–स्त्री० [सं०] दया या की दृष्टि। मेहरबानी की नजर।

दयानत–स्त्री० [अ०] सत्य ईमानदारी।

दयानतदार–वि० [भाव० दयानत = ईमानदार।

दयाना*–अ० [हिं० दया + ना (दया करना। कृपालु होना।

दया-निधान–पुं० दे० 'दया-निधि'

दया-निधि–पुं० [सं०] १. पुरुष। २. ईश्वर।

दयापर–वि० = दयालु।

दया-पात्र–पुं० [सं०] वह जो द जाने के योग्य हो अथवा जिस करना उचित या आवश्यक हो।

दयामय–पुं० [सं०] १. दया दयालु। २. ईश्वर।

दयार–पुं० [अ०] १. प्रान्त। २. आस-पास का स्थान।

दयार्द्र–वि० [सं०] [भाव० द दया-पूर्ण। दयालु।

दयाल*–वि० दे० 'दयालु'।

दयालु–वि० [सं०] [भाव० दयाद बहुत दया करनेवाला। दयाशील।

दयावंत*–वि० दे० 'दयालु'।

दयावना*–वि० [हिं० दया] [दयावनी] दया के योग्य। दयनीय। अ० दया या कृपा करना।

दयावान्–वि० [सं०] [स्त्री० द जिसके मन में दया हो। दयालु।

दया-सागर–पु० दे० 'दया-निधि'।

दयो*–स० [सं० दान] ब्रज० में क्रिया का एक वचन भूत कालिक रूप।

दर–पुं० [सं०] १. शंख। २. दरार। ३. गुफा। कंदरा। ४. फाड़ने क्रिया या भाव। विदारण।

*पुं० १. दे० 'दल'। २. दे० 'डर'।

छोटे बड़े के क्रम के विचार से नियत स्थान। श्रेणी। वर्ग। २. इस प्रकार किया हुआ विभाग। ३. पद। ओहदा।

दरजी-पुं० [फा० दर्ज़ी] [स्त्री० दरजिन] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करता हो। २. एक प्रकार का पक्षी।

दरण-पुं० [सं०] १. दलने या पीसने की क्रिया या भाव। २. ध्वंस। विनाश।

दरद-पुं० [फा० दर्द] १. पीड़ा। व्यथा। २. दया। करुणा।

पुं० १. कश्मीर के पश्चिम का एक प्राचीन देश। २. एक प्राचीन म्लेच्छ जाति जो उक्त देश में रहती थी।

दर-दर-क्रि० वि० [फा० दर] द्वार द्वार। लोगों के दरवाजे-दरवाजे।

दरदरा-वि० [सं० दरण = दलना] [क्रि० दरदराना, स्त्री० दरदरी] जिसके कण या रवे महीन न हों, कुछ मोटे हों।

दरदवंत(द)-वि० [फा० दर्द + वंत (प्रत्य०)] १. दूसरों का कष्ट समझनेवाला। कृपालु। २. पीड़ित। दुःखी।

दरन*-वि०, पुं० दे० 'दलन'।

दरना†-स० दे० 'दलना'।

दरप*-पुं० दे० 'दर्प'।

दरपन*-पुं० दे० 'दर्पण'।

दरपना*-अ० [सं० दर्पण] १. दर्प या क्रोध करना। २. घमंड करना।

दर-बंदी-स्त्री० [फा०] १. अलग अलग दर या विभाग बनाना। २. चीजों की दर या भाव निश्चित करना।

दरब*-पुं० [सं० द्रव्य] धन। दौलत।

दरबर*-स्त्री० [अनु०] आतुरता। उतावली।

दरबा-पुं० [फा० दर] पक्षियों के रहने के लिए काठ का बना हुआ खानेदार घर।

दरबान-पुं० [फा०, मि० सं० द्वारवान्] ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।

दरबार-पुं० [फा०] [वि० दरबारी]

१. वह स्थान जहाँ राजा-महाराज अपने सरदारों या मुसाहबों के साथ बैठते हैं। २. राज-सभा। ३. महाराज। राजा। (रियासतों में)

दरबार-दारी–स्त्री० [फा०] किसी बड़े आदमी के यहाँ प्रायः जाकर बैठना और उसे प्रसन्न करनेवाली बातें या काम करना।

दरबार-विलासी*–पुं० दे० 'दरबान'।

दरबारी–पुं० [फा०] किसी के दरबार में प्रायः जाकर बैठनेवाला आदमी।

वि० १. दरबार का। २. दरबार के योग्य।

दरबी–स्त्री० [सं० दर्वी] कलछी।

दरभ–पुं० दे० 'दर्भ'।

पुं० [?] बन्दर।

दरमाहा–पुं० [फा०] मासिक वेतन।

दरमियान–पुं० [फा०] मध्य। बीच।

क्रि० वि० बीच या मध्य में।

दरमियानी–वि० [फा०] बीच का।

दररना*-स० दे० 'दरेरना'।

दर-लोहा*–पुं० [दर ? + हिं० लोहा] अस्त्र-शस्त्र। हथियार।

दरवाजा–पुं० [फा०] १. द्वार। फाटक। २. किवाड़। कपाट। ३. वह चौखटा जिसमें किवाड़े जड़े रहते हैं।

दरवी–स्त्री० [सं० दर्वी] १. कलछी। पौनी। २. साँप का फन।

दरवेश*–पुं० [फा०] १. साधु। फकीर। २. मुसलमान त्यागी भिक्षुओं का एक सम्प्रदाय।

दरशन–पुं० दे० 'दर्शन'।

दरशनी–स्त्री० [सं० दर्शन] दर्पण।

दरशनी हुंडी–स्त्री० दे० 'दर्शनी हुंडी'।

दरशाना–अ०, स० दे० 'दरसाना'।

दरस–पुं० [सं० दर्श] १. देखा-देखी। दर्शन। दीदार। २. भेंट। मुलाकात। ३. छवि। शोभा।

दरसन*–पुं० = दर्शन।

दरसना*–अ० [सं० दर्शन] दिखाई देना।

स० [सं० दर्शन] देखना।

दरसनियाँ–पुं० [सं० दर्शन] व शीतला आदि की शान्ति की लिए पू उपचार कराता हो।

दरसनी*–स्त्री० [सं० दर्शन] द

दरसाना–स० [सं० दर्शन] १. लाना। २. कुछ कुछ प्रकट झलकाना।

*अ० दिखाई देना।

दराँती–स्त्री० [सं० दात्र] हँसिया का एक औजार जो घास, वनस्पति, आदि काटने के काम में आता है।

दराज–वि० [फा०] १. बहुत। २.

स्त्री० [अं० ड्रॉअर] टेबुल या लगा हुआ वह खाना जो बाहर खोला जा सकता हो।

दरार–स्त्री० [सं० दर] किसी चीज पर बीच में पड़नेवाली खाली सन्धि। दरज।

दरिद्र–वि० [सं०] [स्त्री० दरिद्रा] पास कुछ भी धन-सम्पत्ति न हो गरीब। निर्धन। कंगाल।

दरिद्रता–स्त्री० [सं०] निर्धनता।

दरिद्र-नारायण–पुं० [सं०] दरिद्र दीन-दुःखियों के रूप में रहने या माने वाले नारायण या ईश्वर।

दरिद्री–वि० दे० 'दरिद्र'।

दरिया–पुं० [फा०] १. नदी। २.

दरियाई–वि० [फा०] १. दरिया संबंधी। २. नदी के पास या किनारे ३. समुद्र सम्बन्धी।

स्त्री० [फा० दाराई] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

दरियाई घोड़ा–पुं० गैंडे की तरह का जानवर जो जलाशयों के पास रहता है

दरियाई नारियल–पुं० एक प्रकार बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पा कमंडल बनता है।

जमीन सम-तल या बराबर करना ।

दरैया*–पुं० [सं० दरण] १. दलनेवाला । २. घातक । विनाशक ।

दरोग-पुं० [अ०] झूठ । असत्य ।

दरोग-हलफी–स्त्री० [अ०] न्यायालय के सामने सच बोलने की कसम खाकर या हलफ लेकर भी झूठ बोलना ।

दरोगा-पुं० दे० 'दारोगा' ।

दर्ज–स्त्री० दे० 'दरज' ।
वि० [फा०] कागज या अपने स्थान पर लिखा या चढ़ा हुआ ।

दर्जन-पुं० दे० 'दरजन' ।

दर्जा–पुं० दे० 'दरजा' ।

दर्जी–पुं० दे० 'दरजी' ।

दर्द-पुं० [फा०] १. पीड़ा । व्यथा । २. दुःख । तकलीफ । कष्ट । ३. किसी का कष्ट देखकर मन में उत्पन्न होनेवाली दया ।

दर्दमंद–वि० [फा०] [भाव० दर्दमंदी] १. पीड़ित । दुःखी । २. दयावान् ।

दर्दी–वि० दे० 'दर्दमंद' ।

दर्दुर–पुं० [सं०] मेंढ़क ।

दर्प-पुं० [सं०] [वि० दर्पित] १. घमंड । अभिमान । गर्व । २. अहंकार मिला हुआ क्रोध । मान । ३. उद्दंडता । अक्खड़पन । ४. आतंक । रोब ।

दर्पण-पुं० [सं०] वह शीशा जिसमें मुँह देखते हैं । आईना ।

दर्पी–पुं० [सं० दर्पिन्] दर्प से भरा हुआ । अभिमानी । घमंडी ।

दर्ब*–पुं० [सं० द्रव्य] १. द्रव्य । धन । २. धातु । (सोना, चाँदी आदि)

दर्भ–पुं० [सं०] कुश । डाभ ।

दर्रा–पुं० [फा०] दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता । घाटी ।।

दर्श–पुं० [सं०] १. दर्शन । २. अमावास्या तिथि । ३. अमावास्या के दिन होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ ।

दर्शक–पुं० [सं०] १. दिखानेवाला । २.

वह जो कहीं उपस्थित होकर कोई काम होता हुआ देखता हो। देखनेवाला।

दर्शन–पुं० [सं०] १. नेत्रों के द्वारा होनेवाला बोध या ज्ञान। साक्षात्कार। २. किसी देवता, देव-मूर्त्ति या बड़े से होनेवाला साक्षात्कार। (श्रद्धा, भक्ति और नम्रता सूचक) ३. दिखाई पड़नेवाला आकार या रूप। ४. दे० 'दर्शन-शास्त्र'।

दर्शन-प्रतिभू–पुं० [सं०] वह प्रतिभू या जमानतदार जो इस बात की जिम्मेदारी लेता है कि अभियुक्त अमुक समय पर न्यायालय मे उपस्थित होगा। (श्योरिटी फॉर एपीएरेन्स)

दर्शन-शास्त्र–पुं० [सं०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा और जीवन के अन्तिम लक्ष्य आदि का विवेचन होता है। तत्त्व-ज्ञान। (फिलॉसफी)

दर्शनीय–वि० [सं०] १. दर्शन करने या देखने योग्य। २. सुन्दर। मनोहर।

दर्शनी हुंडी–स्त्री० [सं० दर्शन] वह हुंडी जिसे देखते ही उसमें लिखा हुआ धन चुका देना आवश्यक हो। (ऐसी हुंडी प्रायः किसी से अपना पावना प्राप्त करने के लिए उसके नाम भेजी जाती है।)

दर्शाना–स० दे० 'दरसाना'।

दर्शित–वि० [सं०] जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

पुं० वे पत्र, लेख्य या वस्तुएँ जो किसी पक्ष की ओर से प्रमाण के रूप में न्यायालय में उपस्थित की जायँ। (एग्ज़िबिट)

दर्शी–वि० [सं० दर्शिन्] देखनेवाला।

दल–पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का वह खंड जो उसी प्रकार के दूसरे खंड से जुड़ा हो, पर जरा सो दबाव पड़ने से अलग हो जाय। जैसे–दाल के दो दल। २. पौधों का पत्ता। पत्र। ३. फूल की पंखड़ी। जैसे–कमल के दल। ४. समूह। झुंड। गरोह। ५. किसी एक कार्य या उद्देश्य की सिद्धि के लिए बना हुआ लोगों का गुट (पार्टी) ६. सेना। फौज। ७. परत तरह फैली हुई किसी लंबी चीज की मोटा ८. भुना हुआ मैदा जो कुछ विशेष प्रकार पकवान बनाने के काम में आता है। जै दल का लड्डू।

दलक(न)–स्त्री० [हिं० दलक] १. लकने की क्रिया या भाव। २. आघात। थरथराहट। धमक। ४. रह रहकर वाली पीड़ा। टीस।

दलकना–अ० [सं० दलन] १. फट चिरना। २. थर्राना। काँपना। चौंकना। ४. उद्विग्न या विकल होना।

स० [सं० दलन] डराना।

दलदल–स्त्री० [सं० दलाढ्य] [दलदली] वह गीली जमीन जिसपर होने से पैर नीचे धँसता हो।

मुहा०–दलदल में फँसना = झंझ बखेड़े में पड़ना।

दलदार–वि० [हिं० दल+फा० दा मोटे दल, तह या परतवाला।

दलन–पुं० [सं०] [वि० दलनीय, द १. दलने की क्रिया या भाव। २. वि० संहार या नाश करनेवाला। (अन्त में; जैसे–दुष्ट-दलन।)

दलना–स० [सं० दलन] १. चक्की में पीसकर छोटे छोटे टुकड़े करना। चूर्ण करना। २. रौंदना। कुचलना। मसलना। मींड़ना। ४. नष्ट या करना।

दलपति–पुं० [सं०] १. मुखिया। दार। २. सेनापति।

दलबंदी–स्त्री० [हिं० दल+फा० किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए छो अपने अलग अलग दल बनाना।

दल-बल–पुं० [सं०] १. लावलश फौज। २. संगी-साथी, नौकर- और अनुयायी आदि।

दव–पुं० [सं०] १. वन । जंगल । २. जंगल में आपसे आप लगनेवाली आग । दावाग्नि । दावानल ।

दवन*–पुं० [सं० दमन] नाश ।

दवना*–पुं० दे० 'दौना' ।

अ० [सं० दव] जलना ।

स० जलाना ।

दवनी–स्त्री० [सं० दमन] फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर उनमें से दाने निकालने का काम । दँवरी ।

दवरि*–स्त्री० दे० 'दाँवरी' ।

दवा–स्त्री० [फा०] १. रोग दूर करनेवाली ओषधि या औषध । २. रोग दूर करने का उपाय । चिकित्सा । इलाज । ३. ठीक या दुरुस्त करने की तरकीब ।

*स्त्री० दे० 'दव' या 'दावानल' ।

दवाई–स्त्री० दे० 'दवा' ।

दवाखाना–पुं० [फा०] औषधालय ।

दवागि (ी)*–स्त्री० दे० 'दावानल' ।

दवाग्नि–स्त्री० दे० 'दावानल' ।

दवात–स्त्री० [अ० दावात] वह छोटा बर्त्तन जिसमें लिखने की स्याही रहती है । मसिपात्र ।

दवामी–वि० [अ०] जो सदा के लिए हो । स्थायी । (परमानेन्ट)

दवामी काश्तकार–पुं० [अ० + फा०] वह काश्तकार जिसे जमींदार से सदा के लिए काश्तकारी का अधिकार मिल गया हो । (परमानेन्ट टेन्योर होल्डर)

दवामी पट्टा–पुं०[अ० + हिं०] किसी चीज के विषय में लिखा हुआ वह पट्टा जिसमें उसके भोग का सदा के लिए अधिकार दे दिया जाता है । इस्तमरारी पट्टा । (परमानेन्ट लीज़)

दवामी बन्दोबस्त–पुं० [अ० + फा०] खेती की जमीन का वह बन्दोबस्त जिसमें कुछ दिन पहले सरकारी मालगुजारी सदा के लिए स्थिर कर दी गई थी । (परमानेन्ट सेटिलमेन्ट)

दवारी*–स्त्री० दे० 'दावानल'।

दशकंधर–पुं० [सं०] रावण।

दशक–पुं० [सं०] १. दस वस्तुओं या वर्षों आदि का समूह। २. सन्, संवत आदि में हर एक इकाई से दहाई तक के दस दस वर्षों के समूह। (डीकेड)

दश-गात्र–पुं० [सं०] किसी के मरने से दस दिनों तक होनेवाला पिंड-दान आदि।

दशन–पुं० [सं०] १. दाँत। २. कवच।

दशना–वि०स्त्री०[सं०] दशन या दाँतोंवाली। (यौ० के अंत में)

दशनाम–पुं० [सं०] संन्यासियों के ये दस भेदः–तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।

दशनाम –पुं० [हिं० दश + नाम] संन्यासियों का दंशनाम वर्ग, जो शंकराचार्य के शिष्यों से चला है।

वि० दशनाम संबंधी।

दशनावरण–पुं० [सं०] होंठ, जिनसे दाँत ढके रहते हैं।

दशनावली–स्त्री० [सं०] दाँतों की पंक्ति।

दशम–वि० [सं०] गिनती में दस के स्थान पर पड़नेवाला। दसवाँ।

दशम अवस्था–स्त्री० [सं०] मनुष्य जीवन में मानी जानेवाली दस अवस्थाओं में से अन्तिम अर्थात् मृत्यु।

दशमलव–पुं० [सं०] गणित में इकाई से कम मान अथवा इकाई का कोई अंश सूचित करनेवाले वे अंक (भिन्न) जिनको भाग देनेवाला अंक (हर) १० या उसका दस गुना, सौ-गुना, हजार-गुना आदि (कोई अंक) हो। (डेसिमल)जैसे–३'७ का अर्थ होगा-पूरे तीन और एक के दस भागों में से सात भाग;या ४'८४ का अर्थ होगा-पूरे चार और एक के सौ भागों में से चौरासी भाग।

दशमिक–वि० [सं०] दसवें से संबंध रखनेवाला। (डेसिमल)

दशमिक प्रणाली–स्त्री० [सं०] सिक्के, तौल आदि का मान स्थिर करने की पद्धति या प्रणाली जिसमें हर मान अपने निकटस्थ बड़े मान का दसवाँ भाग निकटस्थ छोटे मान का दस गुना होता है। (डेसिमलसिस्टम) जैसे–यदि दस पैसे का आना और दस आने का एक रुपया दस तोले की एक छटाँक और दस छटाँ का एक सेर माना जाय तो यह दशमि प्रणाली के अनुसार होगा।

दशमी–स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के पक्ष की दसवीं तिथि।

दश-मुख–पुं० [सं०] रावण।

दशरथ–पुं० [सं०] अयोध्या के सुप्रसि रघुवंशी राजा जो राम, लक्ष्मण आदि के पिता थे।

दशशीश*–पुं० [सं० दशशीर्ष] रावण

दशहरा–पुं० [सं०] १. ज्येष्ठ शु दशमी। गंगा दशहरा। २. विजयादश

दशांग–पुं० [सं०] देव-पूजन के जलाने का एक प्रकार का सुगंधित धूप

दशा–स्त्री० [सं०] १. अवस्था। हाल २. कोई ऐसी विशेष अवस्था, कोई विशेष बात हुई हो, हो सकती या होने को हो। (केस) ३. सा में रस के अंतर्गत विरही या विरहि अवस्था। ४. मनुष्य के जीवन में अलग ग्रहों के निश्चित भोग (फलित ज्योतिष) ५. दीपक की उदा०—'ज्योति बढ़ावत दशा उन —केशव

दशानन–पुं० [सं०] रावण।

दशार्ण–पुं० [सं०] १. विन्ध्य पर्व पूर्व-दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश। उक्त प्रदेश का निवासी।

दशाह–पुं०[सं०] १. दस दिनों का समय २. किसी के मरने के दिन से दसवाँ दिन, जिसमें कुछ विशेष कृत्य होते हैं।

दशी–स्त्री० दे० 'दशक'।

बरदारी] जिसने किसी वस्तु पर से अपना अधिकार या स्वत्व छोड़ दिया हो।

दस्तरखान-पुं० [फा० दस्तरख्वान] वह कपड़ा जो भोजन करने के समय थालियाँ, कटोरियाँ आदि रखने के लिए बिछाया जाता है।

दस्ता-पुं० [फा० दस्तः] १. औजार, हथियार आदि का वह अंग जो हाथ में पकड़ा जाता है। मूठ। बेंट। २. वर्दी पहने हुए सैनिकों, सिपाहियों आदि का छोटा दल। (स्क्वाड्रन) ३. कागज के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी।

दस्ताना-पुं० [फा० दस्तानः] १. हाथ की उँगलियों या हथेली में पहनने का मोजा। २. पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

दस्तावर-वि० [फा०] जिसे खाने या पीने से दस्त आवे। दस्त लानेवाला। विरेचक।

दस्तावेज-स्त्री० [फा०] वह कागज जिसपर कुछ लोगों के पारस्परिक व्यवहार या लेन-देन की शर्तें लिखी हों और जिसपर उन लोगों के दस्तखत हों। व्यवहार-संबंधी लेख्य।

दस्ती-वि० [फा० दस्त = हाथ] १. हाथ में रहनेवाला। जैसे—दस्ती छड़ी, दस्ती मशाल। २. किसी आदमी के हाथ आने या जानेवाला। जैसे—दस्ती वारन्ट या परवाना।

स्त्री० हाथ में लेकर चलने की बत्ती।

दस्तूर-पुं० [फा०] १. रवाज। चाल। प्रथा। २. नियम। विधि। कायदा।

दस्तूरी-स्त्री० [फा० दस्तूर] वह धन जो मालिक का सौदा खरीदने पर नौकर को दुकानदार से पुरस्कार के रूप में मिले।

दस्यु-पुं० [सं०] [भाव० दस्युता] १. डाकू। चोर। २. असुर। राक्षस। ३. अनार्य। म्लेच्छ। ४. दास। गुलाम।

दह-पुं० [सं० ह्रद] १. नदी में वह स्थान

जहाँ आस-पास की अपेक्षा पानी बहुत अधिक गहरा हो। पाल। २. कुंड। हौज।

स्त्री० [सं० दहन] ज्वाला। लपट।

*वि० = दस। (संख्या)

हकना–अ० [सं० दहन] १. लपट फेंकते हुए जलना। धधकना। २. उत्तप्त होना। तपना। ३. सन्तप्त होना। बहुत दुःखी होना।

हकाना–स० [हिं० दहकना] १. आग अच्छी तरह सुलगाना। धधकाना। २. क्रोध दिलाना। भड़काना।

हन–पुं० [सं०] [वि० दहनीय] १. जलने की क्रिया या भाव। दाह। २. आग।

हना*–अ० [सं० दहन] १. जलना। भस्म होना। २. क्रोध से संतप्त होना।

स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त या दुःखी करना। कष्ट पहुँचाना। ३. क्रोध दिलाना। भड़काना।

अ० [हिं० दह] धँसना। नीचे बैठना।

वि० दे० 'दाहिना'।

हपटना-स० [देश०] [भाव० दहपट] १. ध्वस्त या नष्ट करना। न रहने देना। २. कुचलना। रौंदना।

हर*–पुं० दे० 'दह'।

हरना*–अ० दे० 'दहलना'।

स० दे० 'दहलाना'।

हरौरा*–पुं० [हिं० दही + बड़ा] १. दही में पड़ा हुआ बड़ा। २. एक प्रकार का गुलगुला।

हल–स्त्री० [हिं० दहलना] दहलने की क्रिया या भाव।

हलना–अ० [सं० दर = डर + ल + ना (प्रत्य०)] [भाव० दहल] डरकर थम जाना। भय से स्तंभित होकर रुक जाना।

हला–पुं० [हिं० दह = दस] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसपर दस बूटियाँ होती हैं।

हलाना–स० [हिं० दहलना] ऐसा डराना कि कोई काम करने से आदमी रुक जाय।

दहलीज–स्त्री० [फा०] द्वार के चौखट में नीचेवाली लकड़ी या पत्थर। देहली।

दहशत–स्त्री० [फा०] डर। भय।

दहाई–स्त्री० [फा० दह = दस] १. दस का मान या भाव। २. कई अंक लिखने के समय स्थानों की गिनती के विचार से दूसरा स्थान, जिसपर लिखे हुए अंक से उसके दस गुने का बोध होता है।

दहाड़–स्त्री० [अनु०] [क्रि० दहाड़ना] १. शेर आदि का घोर शब्द। गरज। २. चिल्लाकर रोने की आवाज। आर्त्त-नाद।

दहाड़ना–अ० [अनु०] १. घोर शब्द करना। गरजना। २. चिल्लाकर रोना।

दहाना–पुं० [फा०] १. चौड़ा मुँह। २. वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में मिलती है। मुहाना।

दहिना–वि० दे० 'दाहिना'।

दही–पुं० [सं० दधि] खटाई के योग से जमाया हुआ दूध।

मुहा०–दही दही करना = सबसे कहते फिरना कि यह ले लो, यह ले लो।

दहु*–अव्य० [सं० अथवा] १. अथवा। या। २. कदाचित्। शायद।

दहेंड़ी–स्त्री० [हिं० दही + हंडी, सं० दधि हंडिका] दही जमाने का मिट्टी का बरतन या हाँड़ी। उदा०–अहे दहेंड़ी जनी घरै जनी तू ले ही उतार। —बिहारी

दहेज–पुं० [अ० जहेज] वह धन, माल और गहने आदि जो विवाह के समय कन्या-पक्ष से वर-पक्ष को मिलते हैं। दायजा। यौतुक।

दहेला–वि० [हिं० दहन + एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दहेली] १. जला हुआ। दग्ध। २. संतप्त। दुःखी। ३. भीगा हुआ। गीला।

दह्य–वि० [सं०] जो जल सकता हो। जलने योग्य। (कंबसचिबुल)

दह्यो*–पुं० दे० 'दही'।

दाँ*–पुं० [सं० दाच् (प्रत्य०) जैसे–एकदा]

ड़ी।
] इता। जाननेवाला। (यौ०
ानून-दाँ)
दे० 'गरजना'।
[हिं० डंका] नगाड़ा। धौंसा।
] छोटी पहाड़ी। टीला।
[सं० उदाहार्य्य] बराबरी।
[सं० दंड] १. दंड या सज़ा
माना करना।
[सं० दंत] १. जीवों के मुँह,
आदि में अंकुर के रूप में निकली
या हड्डियों की ऊपर-नीचे की
जिनसे वे कुछ खाते, किसी को
ज़मीन खोदते हैं। दंत। रद।

दाँत-काटी रोटी होना =
गाढ़ मित्रता होना। **दाँत खट्टे**
प्रतिद्वंद्विता या लड़ाई में बहुत
करना। **दाँत किटकिटाना**
=(क्रोध में) दाँतों पर दाँत
इस प्रकार रगड़ना कि जान पड़े
जायगा। **दाँत बजना** =
दाँतों के हिलने या काँपने के कारण
का शब्द होना। **दाँत बैठ**
दाँतों की पंक्तियों का परस्पर इस
जाना कि मुँह न खुल सके।
ाना या गड़ाना = कोई चीज
में रहना। **दाँतों तले**
दबाना = परम चकित होना।
। **दाँतों में तिनका**
के लिए गौ की तरह दीन
करना। २. (किसी वस्तु पर)
तरह निकली या उभरी हुई
पंक्ति। दाँता।
[सं०] १. जिसका दमन हुआ
हुआ। २. इन्द्रियों को वश में
संयमी।
[हिं० दाँव] दाँतों की तरह

का उभरा हुआ कोई भाग। जैसे-आरी के दाँते, किसी यंत्र में लगे हुए पहिये के दाँते।

दाँता-किटकिट–स्त्री०[हिं० दाँत + किट-किट (अनु०)] नित्य या बराबर होती रहनेवाली कहा-सुनी या झगड़ा।

दांति–स्त्री० [सं०] १. इन्द्रिय-निग्रह। इन्द्रियों का दमन। २. विनय-शीलता।

दाँती–स्त्री० [सं० दात्री] हँसिया। विशेष दे० 'दराँती'।

स्त्री० [हिं० दाँत] १. दाँतों की पंक्ति। दंतावलि। २. छोटा दाँत। ३. दे० 'दर्रा'।

दाँना–स० [सं० दमन] फसल के डंठलों में से दाने अलग करना।

दांपत्य–वि० [सं०] दंपति या पति-पत्नी से संबंध रखनेवाला। जैसे–दांपत्य प्रेम।

दांभिक–वि० [सं०] १. दंभ करने या अपने को बड़ा समझनेवाला। २. आडंबर रचनेवाला। पाखंडी। ३. अभिमानी।

दाँव–पुं० [सं० द्रव्य (जूए में लगाया जानेवाला धन)] १. बार। दफ़ा। मरतबा। २. कोई कार्य करने या खेल खेलने का वह अवसर या पारी जो सब खेलाड़ियों को बारी बारी से मिलती है। पारी। ३. उपयुक्त या अनुकूल अवसर। मौका।

मुहा०–दाँव लगना = अनुकूल अवसर मिलना। **दाँव लेना** = बदला लेना।

४. कुश्ती में विपक्षी को हराने या दबाने के लिए काम में लाई जानेवाली युक्ति। चाल। पेंच। ५. पाँसे, जूए की कौड़ियों आदि का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो। ६. वह धन जो ऐसे खेलों के समय हार-जीत के लिए खेलाड़ी सामने रखते हैं। ७. स्थान। ठौर। जगह। ८. कार्य-साधन की युक्ति। चाल।

मुहा०–दाँव पर चढ़ना = ऐसी विवश स्थिति में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल सके।

ाँवरी–स्त्री० [सं० दाम] रस्सी । डोरी ।

ा*–[हिं० 'का' विभक्ति का पंजाबी रूप]

ाइ*–पुं० १. दे० 'दाय' । २. दे० 'दाँव' ।

ाइज(ा)–पुं० दे० 'दहेज' ।

ाई–वि० स्त्री० [हिं० दायाँ] दाहिनी ।
स्त्री० [सं० दारू] दफा । बार ।

ाई–स्त्री० [सं० धात्री, मि० फा० दायः] १. दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलाने या उसकी देख-रेख करनेवाली स्त्री । धाय । २. प्रसूता का उपचार और सेवा-शुश्रूषा करनेवाली स्त्री । ३. दासी । मजदूरनी ।
*वि० दे० 'दायी' १. । (जैसे–सुखदाई)

ाउँ*–पुं० दे० 'दाँव' ।

ाउ*–पुं० दे० 'दाँव' (बाजी) ।

ाऊ–पुं० [सं० देव] १. बड़ा भाई । २. कृष्ण के बड़े भाई, बलदेव ।

ाऊदखानी*–पुं० [दाऊदखाँ] एक प्रकार का धान या उसका चावल ।

ाक्षायण–वि० [सं०] दक्ष-संबंधी ।

ाक्षायणी–स्त्री० [सं०] १. दक्ष की कन्या, सती । २. दुर्गा ।

ाक्षिणात्य–वि० [सं०] दक्षिण का ।
पुं० १. भारतवर्ष का वह विभाग जो विन्ध्याचल के दक्षिण है । दक्षिण भारत । २. इस भाग का निवासी ।

ाक्षिण्य–पुं०[सं०] १. दक्षिण (अनुकूल, कुशल, प्रसन्न आदि) होने का भाव । २. दूसरे को अनुकूल या प्रसन्न करने की शक्ति । ३. कौशल । दक्षता ।
वि० १. दक्षिण का । २. दक्षिणा संबंधी ।

ाख–स्त्री० [सं० द्राक्षा] १. अंगूर । २. मुनक्का । ३. किशमिश ।

ाखिल–वि० [फा०] १. घुसा या पैठा हुआ । प्रविष्ट । २. दिया या जमा किया हुआ । ३. पहुँचा या आया हुआ । ४. किसी विशेष उद्देश्य से नियत स्थान पर पहुँचाया, भेजा या दिया हुआ । (फाइल्ड)

ाखिल-खारिज–पुं० [फा०] सरकारी कागजों पर किसी सम्पत्ति के पुराने मालि की जगह नये मालिक का नाम चढ़ना ।

दाखिल-दफ्तर–वि० [फा०] बिना विचार के दफ्तर में डाल रखा हुआ (कागज) ।

दाखिला–पुं० [फा०] प्रवेश ।

दाग–पुं० [सं० दग्ध] १. जलाने क काम । दाह । २ मुरदा जलाने की क्रिया । **मुहा०-दाग देना** = मुरदे को जलाना । ३. जलन । दाह । ४. जले होने का चिह्न ।
पुं० [फा० दाग़] [वि० दाग़ी] १. धब्बा । चित्ती । (विशेषतः किसी वस्तु के दूषित होने के कारण दिखाई देनेवाला धब्बा) **यौ०–सफेद दाग** (देखो) । २. निशान । चिह्न । अंक । ३. फलों आदि पर पड़ा हुआ सड़ने या दबने का चिह्न । ४. ऐब । दोष । ५. जले होने का चिह्न ।

दागदार–वि० [फा०] जिसपर या जिस दाग या धब्बा हो ।

दागना–स० [हिं० दाग] १.किसी प्रकार क दाग या चिह्न लगाना । अंकित या चिह्नि करना । निशान लगाना । २. तपे हुए लोहे तेजाब या दवा आदि से किसी अंग को इतन जलाना कि उसपर दाग पड़ जाय । ३ दाग या कलंक लगाना । कलंकित करना । ४. कष्ट या दुःख पहुँचाना । जलाना । ५ तोप, बन्दूक आदि छोड़ना ।

दाग-बेल–स्त्री० [फा० दाग़ + हिं० बेल] भूमि पर के वे चिह्न जो सड़कें बनाने, नींव खोदने आदि से पहले सीमा या विस्तार सूचित करने के लिए बनाये जाते हैं ।

दागर*–वि० [हिं० दागना १] नष्ट करने वाला । नाशक ।

दागी–वि० [फा० दाग़] १. जिसपर किसी प्रकार का दाग या धब्बा हो । २. कलंकित । ३. लांछित । ४. जिसको जेल की सजा मिल चुकी हो ।

दाघ–पुं० [सं०] गरमी । ताप ।

दात्र-पुं० [सं०] फसल आदि काटने का दराँती या हँसिया नाम का औजार।

दात्री-स्त्री० [सं०] देनेवाली।

†स्त्री० दे० 'दराँती'।

दाद-स्त्री० [सं० दद्रु] एक प्रसिद्ध चर्म-रोग जिसमें बहुत खुजली होती है।

स्त्री० [फा०] न्याय। इन्साफ।

मुहा०-दाद देना = किसी अच्छे काम की, न्याय-दृष्टि से, प्रशंसा करना।

दादनी-स्त्री० [फा०] १. वह रकम जो चुकानी हो। दातव्य। देन। २. वह रकम जो पेशगी दी जाय। अग्रिम।

दादरा-पुं०[?] एक प्रकार का चलता गाना।

दादा-पुं० [सं० तात] [स्त्री० दादी] १. पिता का पिता। पितामह। आजा। २. बड़ा भाई। ३. बड़ों के लिए आदर-सूचक शब्द।

दादि*-स्त्री० [फा० दाद] न्याय।

दादुर*-पुं० [सं० दर्दुर] मेंढ़क।

दादूदयाल-पुं० अहमदाबाद के एक साधु जो अकबर के समय हुए थे और जिनके नाम पर एक पंथ चला आ रहा है।

दादू-पंथी-पुं० [दादूदयाल + पंथी] दादूदयाल के चलाये हुए पंथ का अनुयायी।

दाध*-स्त्री० [सं० दाह] जलन। दाह।

दाधना*-स० [सं० दग्ध] जलाना।

दान-पुं० [सं०] १. देने का कार्य। देना। २. वह धर्मार्थ कृत्य जिसमें श्रद्धा या दयापूर्वक किसी को धन आदि दिया जाता है। खैरात। ३. वह वस्तु जो इस प्रकार या और किसी रूप में किसी को सदा के लिए दी जाय। (गिफ्ट) ४. कर, महसूल, चुंगी आदि। ५. प्राचीन राजनीति में धन-सम्पत्ति देकर शत्रु या विरोधी को दबाने और अपना काम निकालने की नीति ६. हाथी का मद। ७. मत्तता। मस्ती।

पुं० [सं० आधान से फा०] [स्त्री० अल्पा० दानी] एक शब्द जो कुछ विशिष्ट शब्दों

के अन्त में लगकर आधान या पात्र का अर्थ देता है। जैसे—नमकदान, पानदान आदि।

दान-पत्र—पुं० [सं०] वह लेख या पत्र जिसमें कोई सम्पत्ति किसी को सदा के लिए दे दिये जाने का उल्लेख हो।

दान-प्रतिष्ठा—स्त्री० दे० 'दक्षिणा' १.।

दान-लेख—पुं० [सं०] वह लेख जिसमें किसी किये हुए दान का उल्लेख हो।

दानव—पुं० [सं०] [स्त्री० दानवी] कश्यप के वे पुत्र जो उनकी 'दनु' नाम की पत्नी से उत्पन्न हुए थे और जो देवताओं के घोर शत्रु थे। असुर। राक्षस।

दानवारि—पुं० [सं० दानव + अरि] वह जो दानवों का शत्रु और नाश करनेवाला हो।

दान-वारि—पुं० [सं० दान + वारि] हाथी का मद।

दानवी—वि० [सं० दानवीय] दानव का। स्त्री० दानव जाति की स्त्री। राक्षसी।

दान-वीर—पुं० [सं०] वह जो प्रायः बहुत अधिक दान देता हो। बहुत बड़ा दानी।

दानशील—वि० [सं०] [भाव० दानशीलता] दान करनेवाला। दानी।

दाना—पुं० [फा० दानः] १. अनाज का बीज या कण। कन।

मुहा०—दाने दाने को तरसना या मोहताज होना = दरिद्रता आदि के कारण भोजन का बहुत अधिक कष्ट सहना।

२. अनाज। अन्न। ३. सूखा भुना हुआ अन्न। चबेना। ४. फल या उसका छोटा बीज। ५. कोई छोटी गोल वस्तु। जैसे—मोती, अनार या घुँघरू का दाना। ६. उक्त प्रकार की वस्तुओं की संख्या का सूचक शब्द। अदद। जैसे—चार दाना आम। ७. रवा। कण। ८. कोई छोटा गोल उभार। ९. गाने, विशेषतः टप्पा गाने के समय किसी स्वर का बहुत ही छोटे-छोटे खंडों में गले से निकलनेवाला रूप।

वि० [फा०] बुद्धिमान्। समझदार।

दानादेश—पुं० [सं०] वह पत्र या आदे जिसके अनुसार किसी को कुछ दिया या देन चुकाया जाता है। देयादेश। (पे आर्डर)

दाना-पानी—पुं० [फा० दाना + हिं० पा खान-पान। अन्न-जल। (किसी स्था पर रहने या किसी से जीविका प्राप्त होने विचार से)

मुहा०—दाना-पानी उठना = दू जगह जाने का संयोग होना। **दाना-पा छोड़ना** = अन्न-जल ग्रहण न करना।

दानी—वि० [सं० दानिन्] [स्त्री० दानिनी] बहुत दान करनेवाला। उदार। दाता। पुं० [सं० दानीय] कर उगाहनेवाला। *पुं० [हिं० दान] दान या भिक्षा लेनेवा स्त्री० [सं० आधान से फा०] एक जो कुछ विशिष्ट शब्दों के अन्त में आधान या पात्र का अर्थ देता है। चूहेदानी, सुरमेंदानी, बालूदानी आदि।

दानेदार—वि० [फा०] जिसमें या जि दाने या रवे हों।

दानौ*—पुं० दे० 'दानव'।

दाप—पुं० [सं० दर्प, प्रा० दप्प] १. अ मान। घमंड। शेखी। २. शक्ति। ३. उत्साह। उमंग। ४. दबदबा। आ ५. क्रोध। गुस्सा। ६. जलन।

दापना*—स० [हिं० दाप] १. द २. वारण या मना करना। रोकना।

दाब—पुं० [हिं० दबना] १. दबने या की क्रिया या भाव। २. वह वस्तु जो दूसरी वस्तु के ऊपर रहकर उसे दबाये हो। भार। ३. पत्थर, शीशे आदि का छोटा टुकड़ा जो कागजों को उड़ने बचाने या उन्हें दबाये रखने के लि उनपर रखा जाता है। (पेपरवेट) ४ आतंक। जैसे—रोब-दाब।

दामी–वि० [हिं० दाम] अधिक मूल्य का। कीमती।

दामोदर–पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु।

दायँ–पुं० दे० 'दाँव'।

स्त्री० दे० 'दाँज'।

दाय–पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी को दिया जाने को हो। दातव्य। २. दान, दहेज आदि के रूप में दिया जानेवाला धन। ३. वह पैतृक या किसी संबंधी का धन जो उत्तराधिकारियों में बँटता या बँट सकता हो। ४. दान।

*पुं० [सं० दायित्व] १. जिम्मेदारी। दायित्व। २. जवाबदेही। उत्तर-दायित्व। जैसे–**जम-दाय** = यमराज के सामने उपस्थित होनेवाला लेखा या दिया जानेवाला उत्तर।

*पुं० १ दे० 'दाँव'। २. दे० 'दाव'।

दायक–पुं० [सं०] [स्त्री० दायिका] देनेवाला। दाता। (यौ० के अन्त में; जैसे–सुख-दायक।)

दायज(ा)–पुं० दे० 'दहेज'।

दाय-भाग–पुं० [सं०] पैतृक धन-संपत्ति के पुत्रों, पौत्रों या दूसरे उत्तराधिकारी संबंधियों में बाँटे जाने की व्यवस्था। (हिन्दू धर्म शास्त्र का एक प्रधान विषय)

दायमुलहब्स–पुं० [अ०] जन्म-भर कैद में रहने की सजा। काला पानी।

दायर–वि० [फा०] १. चलता। जारी। २. न्यायालय में उपस्थित किया हुआ। (अभियोग)

दायरा–पुं० [अ०] १. गोल घेरा। कुंडल। मंडल। २. वृत्त। घेरा।

दायाँ–वि० दे० 'दाहिना'।

दाया*–स्त्री० दे० 'दया'।

स्त्री० [फा०] दाई। धाय।

दायाद–पुं० [सं०] [स्त्री० दायादा] वह जो दाय-भाग के नियमों के अनुसार

किसी की सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी हो। सपिंड कुटुंबी।

दायित्व–पुं० [सं०] १. किसी बात या काम के लिए उत्तरदायी होने का भाव। जिम्मेदारी। (ऑब्लिगेशन) २. किसी देन के देनदार होने का भाव। (लायबिलिटी)

दायी–वि० [सं० दायिन्] [स्त्री० दायिनी] १. दायक। देनेवाला। जैसे–सुखदायी। २. जिसपर किसी प्रकार का दायित्व या भार हो। (लायबुल)

दार–स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या। जोरू।
*पुं० दे० 'दारु'।
प्रत्य० [फा०] रखनेवाला। (यौ० के अन्त में; जैसे–मकानदार, दुकानदार।)

दारचीनी–स्त्री० [सं० दारु + चीन (देश)] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी सुगन्धित छाल दवा और मसाले के काम आती है।

दारण–पुं० [सं०] [वि० दारित] १. चीरने-फाड़ने का काम। २. फोड़े आदि चीरने का काम। शस्त्र-चिकित्सा। ३. इस काम में आनेवाले औजार।

दारना*–स० [सं० दारण] १ फाड़ना। २. नष्ट करना।

दार-परिग्रह–पुं० [सं०] पुरुष का विवाह।

दार-मदार–पुं० [फा०] १. आश्रय। ठहराव। २. किसी कार्य या बात का किसी दूसरे कार्य या बात पर अवलम्बन।

दारा–स्त्री० [सं० दार] पत्नी। भार्या।

दारि*–स्त्री० १. दे० 'दाल'। २. दे० 'दार'।

दारिउँ–पुं० दे० 'दाड़िम'।

दारिका–स्त्री० [सं०] १. पत्नी। भार्या। २. स्त्री। औरत। ३. कठ-पुतली।

दारिद*–पुं० [सं० दारिद्र्य] दारिद्रता।

दारिद्र्य–पुं० [सं०] दरिद्रता। निर्धनता।

दारिम*–पुं० दे० 'दाड़िम'।

दारी–स्त्री० [सं० दारिका] दासी। लौंडी।

दारी-जार–पुं० [हिं० दारी + सं० जार] दासी या लौंडी का पति या पुत्र। (गाली)

दारु–पुं० [सं०] १. काठ। लकड़ी।
बढ़ई। ३. कारीगर। शिल्पी।

दारुण–वि० [सं०] १. भयंकर। भीष
घोर। २. कठिन। प्रचंड। विकट।
(रोग) जो बहुत बढ़ गया हो और स
में अच्छा न हो सकता हो। (सीरियस)

दारुन*–वि० दे० 'दारुण'।

दारु-योषित–स्त्री० [सं०] कठ-पुत

दारु-हलदी–स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा]
पौधा जिसकी जड़ और डंठल दवा के
में आते हैं।

दारू–स्त्री० [फा०] दवा। औषध।
पुं० १. मद्य। शराब। २. बारूद।

दारों*–पुं० दे० 'दाड़िम'।

दारोगा–पुं० [फा०] १. किसी काम
ऊपर से देख-भाल रखने या प्रबन्ध
वाला व्यक्ति। २. पुलिस के थाने का
अधिकारी। थानेदार।

दार्यों*–पुं० दे० 'दाड़िम'।

दार्यौ*–पुं०=दाड़िम (अनार नामक

दार्शनिक–वि० [सं०] १. दर्शन-शा
ज्ञाता। तत्व-ज्ञानी। २. दर्शन-शास्त्र

दाल–स्त्री० [सं० दालि] १. द
अरहर, मूँग आदि अन्न, जो स
तरह पकाकर खाये जाते हैं। २.
भात आदि के साथ खाने के लिए
अन्नों का उबाला या पकाया हुआ
मुहा०–(**किसी की**) **दाल ग**
(किसी का) प्रयोजन सिद्ध होना।
लब निकलना। **दाल में कुछ**
होना = कुछ खटके या सन्देह
होना। **जूतियों दाल बँटना** =
में खूब लड़ाई-झगड़ा होना।
यौ०–**दाल-दलिया**=रूखा-सूखा
दाल-रोटी = सादा और सामान्य
३. दाल के आकार की कोई गोल,
चीज। ४. चेचक, फुन्सी आदि के
हो जाने पर उनके ऊपर का

जाता है। खुरंड।
'दार-चीनी'।
[हिं० दाल + मोट=एक
तली हुई दाल या
कुछ और पदार्थ।
]१. कमरे का वह
भाग जो ऊपर से छाया
हो। २. बरामदा।
दरिद्रता।
'दाड़िम'।
]१. वन। जंगल। २.
आग। ४. जलन।
बड़े डंठल आदि काटने
ज़ औज़ार।
दश्रवत] १. ज्योनार।
। बुलावा।
'दाँना'।
] दमन करना।
दामिनी] माथे पर
का गहना।
]१. यह कहना कि अमुक
हम हैं। किसी चीज पर
। ममाग्रह। अध्यर्थन।
। हक़। ३. सम्पत्ति या
प्राप्ति के लिए चलाया
नालिश। अभियोग।
उनपर हमारा इतना
उनसे जो चाहें, वह करा
इस कहना।
'।
'दावानल'।
'दवात'।
[सं०] वन में वृक्षों की
लगनेवाली आग।
[फ़ा० दावा + फ़ा० दार]
अपना हक़ जतानेवाला।

दाशमिक-वि० [सं०] १. 'दशम' सम्बन्धी। 'दशम' का। २. जिसका सम्बन्ध प्रत्येक दस या उसके घात से हो। ३. दशमलव के अनुसार दस या उसके घात से सम्बन्ध रखनेवाला। विशेष दे० 'दशमलव'।

दाशरथि-पुं० [सं०] दशरथ के पुत्र, श्री रामचन्द्र आदि।

दास-पुं० [सं०] [स्त्री० दासी] [भाव० दासता] १. अपनी सेवा कराने के लिए मूल्य देकर लिया हुआ व्यक्ति। गुलाम। (स्लेव) २. दूसरे की सेवा करनेवाला। सेवक। चाकर। नौकर। ३. दूसरे के अधीन या वश में रहनेवाला। ४. एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के पीछे लगती थी। *पुं० दे० 'डासन'।

दासता-स्त्री० [सं०] १. 'दास' होने की क्रिया या भाव। २. सेवा कराने के लिए मूल्य देकर किसी को खरीदने और बेचने की प्रथा। गुलामी। (स्लेवरी)

दासन*-पुं० दे० 'डासन'।

दासपन-पुं० = दासता।

दासा-पुं० [सं० दासी = वेदी] १. दीवार से सटाकर बनाया हुआ पुश्ता या चबूतरा। २. वह तख्ता या पत्थर जो दरवाजे के चौखटे के ऊपर रहता है।

दासानुदास-पुं० [सं०] सेवक का सेवक। अत्यन्त तुच्छ सेवक। (नम्रता)

दासी-स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली स्त्री। मजदूरनी। लौंडी।

दासेय-वि० [सं०] [स्त्री० दासेयी] दास से उत्पन्न। दास या गुलाम का वंशज।

दास्तान-स्त्री० [फ़ा०] १. वृत्तान्त। हाल। २. कहानी। किस्सा। ३. वर्णन।

दास्य-पुं० [सं०] १. दासता। सेवा। २. भक्ति के नौ भेदों में से एक, जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उसका दास समझता है।

दाह-पुं० [सं०] १. जलाने की क्रिया या

भाव। २. शव जलाने या मुरदा फूँकने का काम। ३. जलन। ताप। ४. अत्यन्त दुःख। संताप। ५. डाह। ईर्ष्या।

दाहक–वि॰ [सं॰] [भाव॰ दाहकता] १. जलानेवाला। २. जलन पैदा करनेवाला।

दाह-कर्म–पुं॰ दे॰ 'दाह' २.।

दाहन–पुं॰ [सं॰] जलाना।

दाहना–स॰ [सं॰ दाहन] १. भस्म करना। जलाना। २. बहुत दुःख पहुँचाना।

वि॰ दे॰ 'दाहिना'।

दाहिँ–स्त्री॰ = दाईं।

दाहिना–वि॰ [सं॰ दक्षिण] [स्त्री॰ दाहिनी] १. शरीर के उस पार्श्व का, जिसके अंगों में अपेक्षाकृत अधिक शक्ति होती है और जिससे मनुष्य अधिकतर काम लेता है। 'बायाँ' का उलटा। दक्षिण।

मुहा॰–(किसी का) दाहिना हाथ होना = बहुत बड़ा सहायक होना।

२. दाहिने हाथ की ओर पड़नेवाला। जैसे–मकान का दाहिना। ३. अनुकूल। प्रसन्न।

दाहिनावर्त्त*–वि॰ दे॰ 'दक्षिणावर्त्त'।

दाहिने–क्रि॰ वि॰ [हिं॰ दाहिना] दाहिने हाथ की तरफ। दाहिनी ओर।

मुहा॰–दाहिने होना = अनुकूल या प्रसन्न होना।

यौ॰–दाहिने-बाएँ = इधर-उधर। दोनों ओर।

दाही–वि॰ दे॰ 'दाहक'।

दिअना†–पुं॰ [सं॰ दीपक] दीया। चिराग। उदा॰—'सबके महल में दिअना जरतु हैं, हमरी झोंपड़िया प्रभु कीन्ह अन्धेरा'। —गीत।

दिअली–स्त्री॰ [हिं॰ 'दीया' का स्त्री॰ अल्पा॰] मिट्टी का बहुत छोटा दीया।

दिआ*–पुं॰ दे॰ 'दीया'।

दिआना*–स॰ दे॰ 'दिलाना'।

दिउली†–स्त्री॰ १. दे॰ 'दाल' ४.। २. दे॰ 'दिअली'।

दिक्–स्त्री॰ [सं॰] दिशा। ओर।

दिक–वि॰ [अ॰] १. जिसे पहुँचा हो। पीड़ित। २. हैरान। ३. अस्वस्थ। बीमार। 'तबीअत' पुं॰ क्षयी रोग। तपेदिक।

दिक्कत–स्त्री॰ [अ॰] १. 'दिक' परेशानी। २. तकलीफ। ३.

दिक्करी–पुं॰ दे॰ 'दिग्गज'।

दिक्पाल–पुं॰ [सं॰] पुराणानु दिशाओं के रक्षक देवता। जैसे– कुबेर, दक्षिण के यम आदि।

दिक्शूल–पुं॰ [सं॰] कुछ दि में विशिष्ट दिशाओं में काल का यात्रा के लिए अशुभ माना (फलित ज्योतिष)

दिखना–अ॰ [हिं॰ देखना] दिखा

दिखराना*–स॰ दे॰ 'दिखलाना'

दिखरावनी*–स्त्री॰ [हिं॰ दि दिखाने की क्रिया, भाव या पु

दिखलाई–स्त्री॰ [हिं॰ दिखलान दिखलाने की क्रिया, भाव, पारि पुरस्कार। २. वह धन जो दे दिखाने के बदले में दिया जाय।

दिखलाना–स॰ हिं॰ 'देखना' का

दिखहार*–पुं॰ = देखनेवाला।

दिखाई–स्त्री॰ दे॰ 'दिखलाई'।

दिखाऊ†–वि॰ दे॰ 'दिखौआ'

दिखा-दिखी–स्त्री॰ दे॰ 'देखा

दिखाना–स॰ हिं॰ 'देखना' का

दिखाव–पुं॰ [हिं॰ देखना] की क्रिया या भाव। २. दृश्य।

दिखावट–स्त्री॰ [हिं॰ दिखाना] से दिखाई देनेवाला रूप-रंग। बनावट। २. दिखौआ ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

दिखावटी–वि॰ [हिं॰ दिखावट] केवल रूप-रंग, आकार-प्रकार वि्चार से दिखाने के लिए हो। दि

दिग्दर्शन–पुं० [सं०] १. वह जो उदाहरण-स्वरूप उपस्थित किया जाय। नमूना। २. नमूना दिखाने या स्वरूप का साधारण परिचय कराने का काम।

दिग्दाह–पुं० [सं०] एक अशुभ दैवी घटना जिसमें संध्या समय दिशाएँ लाल हो जाती और जलती हुई जान पड़ती हैं।

दिग्देवता–पुं० = दिक्पाल।

दिग्पति–पुं० = दिक्पाल।

दिग्पाल–पुं० = दिक्पाल।

दिग्भ्रम–पुं० [सं०] दिशाओं के संबंध में भ्रम होना। दिशा भूल जाना।

दिग्मंडल–पुं० [सं०] दिशाओं का समूह। सब दिशाएँ।

दिग्वधू–स्त्री० [सं०] दिशा का वह रूप जिसमें उसे वधू या सुहागिन स्त्री मानते हैं।

दिग्विजय–स्त्री० [सं०] १. प्राचीन काल के राजाओं का, अपना महत्त्व दिखलाने के लिए, दूसरे देशों में अपनी सेनाएँ ले जाकर युद्ध करना और उन्हें जीतना। २. अपने गुणों के द्वारा आस-पास के देशों में अपना महत्त्व स्थापित करना।

दिग्विजयी–वि० [सं०] [स्त्री० दिग्विजयिनी] जिसने दिग्विजय किया हो।

दिग्शूल–पुं० दे० 'दिक्शूल'।

दिच्छित*–पुं०, वि० दे० 'दीक्षित'।

दिज*–पुं० = द्विज।

दिजराज*–पुं० = द्विजराज।

दिठवन–स्त्री० दे० 'देवोत्थान'।

दिठा-दिठी–स्त्री० दे० 'देखा-देखी'।

दिठाना*–अ० [हिं० दीठ] बुरी दृष्टि या नजर लगना।
स० बुरी दृष्टि या नजर लगाना।

दिठियार–वि० [हिं० दीठ + आर (प्रत्य०)] १. जिसे दिखाई देता हो। २. समझदार। बुद्धिमान्। ३ जो दिखाई देता हो।

दिठौना†–पुं० [हिं० दीठ = दृष्टि + औना (प्रत्य०)] वह काली बिन्दी जो बालकों

को नजर से बचाने के लिए उनके माथे गाल आदि पर लगाई जाती है।

दिढ़–वि० दे० 'दृढ़'।

दिढ़ाना*–स० [सं० दृढ़ + आना (प्रत्य०)] १. दृढ़ या मजबूत करना। २. निश्चित करना। पक्का करना।

अ० दृढ़ या पक्का होना।

दिढ़ाव*-पुं० = दृढ़ता।

दिति*–स्त्री० दे० 'अदिति'।

दिति-सुत–पुं० [सं०] दैत्य। राक्षस।

दित्सा–स्त्री० [सं०] १. देने की इच्छा। २. वह व्यवस्था जिसके अनुसार कोई व्यक्ति यह निश्चय करता है कि मेरे मरने पर मेरी सम्पत्ति अमुक अमुक व्यक्तियों को इस प्रकार दी या बाँटी जाय। वसीयत। (विल)

दित्सा-क्रोड़–पुं० [सं०] १. दित्सापत्र या वसीयतनामे के अन्त में लिखा हुआ परिशिष्ट रूप में कोई संक्षिप्त लेख या टिप्पणी जो किसी प्रकार की व्यवस्था या स्पष्टीकरण के रूप में होती है। २. दित्सापत्र का वह अंश जिसमें उक्त प्रकार का लेख होता है। (कोडिसिल)

दित्सा-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र या लेख जिसमें कोई व्यक्ति यह लिखता है कि मेरी सम्पत्ति अमुक अमुक व्यक्तियों को इस प्रकार मिले। वसीयतनामा। (विल)

दिदार*–पुं० दे० 'दीदार'।

दिन–पुं० [सं०] १. सूर्य निकलने से उसके अस्त होने तक का समय।

मुहा०–दिन को तारे दिखाई देना= इतना कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। **दिन को दिन, रात को रात, न समझना** = कोई काम करते समय अपने विश्राम का ध्यान छोड़ देना। **दिन छिपना या डूबना** = सूर्य अस्त होना। **दिन ढलना** = संध्या का समय निकट आना। **दिन दहाड़े** = ठीक दिन के समय। **दिन दूना, रात चौगुना होना या बढ़ना** = बहुत जल्दी और बराबर बढ़ते रहना।

यौ०–दिन-रात = सदा। हर समय।

२. एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक समय। आठ पहर या चौबीस घंटे समय।

मुहा०–दिन-दिन या दिन-पर-दिन नित्य प्रति सदा। हर रोज।

३. समय। काल। वक्त।

मुहा०–दिन काटना या पूरे करना किसी प्रकार कष्ट का समय बिताना **दिन बिगड़ना** = संकट या अवनति दिन आना।

४. नियत, उपयुक्त या उचित समय।

मुहा०–दिन धरना=दिन निश्चित

५. उतना समय जितने में कोई कार्य या बात हो। जैसे–जाड़े छुट्टी के दिन।

मुहा०–दिन चढ़ना = गर्भ- आरंभ होना। **दिन फिरना** = दरिद्रता के दिनों के बाद सुख या के दिन आना।

दिनअर*–पुं० = सूर्य।

दिनकंत*–पुं० [सं० दिन + कांत]

दिनकर*–पुं० = सूर्य

दिनकार*–पुं० = दिनकर (सूर्य)

दिन-चर्य्या–स्त्री० [सं०] नित्य में किया जानेवाला काम-धंधा।

दिन-दानी*–पुं० [सं० दिन+ नित्य बहुत दान करनेवाला। बड़ा

दिननाथ–पुं० = सूर्य।

दिन-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र समूह जिसमें दिन या वार, तिथि तारीखें आदि दी रहती हैं। (कैलेंडर)

दिन-मणि–पुं० [सं०] सूर्य।

दिन-मान–पुं० [सं०] सूर्योदय से तक के समय या दिन भर का मान।

दिनांक–पुं० [सं० दिन + अंक]

बक-बककर सिर खानेवाला। बकवादी।

दिमागदार–वि० [अ० दिमाग + फा० दार] १. अच्छी मानसिक शक्तिवाला। बहुत समझदार। २. घमंडी।

दिमागी–वि० [अ०] १. दिमाग-सम्बन्धी। दिमाग का। २. दे० 'दिमागदार'।

दिमात*–वि० [सं० द्विमातृ] जिसकी दो माताएँ हों।

वि० [सं० द्विमात्रा] जिसमें दो मात्राएँ हों।

दिमान†–पुं० = दीवान।

दिमाना*–वि० दे० 'दीवाना'।

दियना*–पुं० = दीया (दीपक)।

दियरा†–पुं०[हिं०दीया + रा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का पकवान। २. दे० 'दीया'।

दियारा–पुं० [फा० दयार = प्रदेश] १. नदी के पास की जमीन। कछार। खादर। २ छोटा भू-भाग।

पुं० [सं० दिवाकर] १. मृग-तृष्णा। २. रात के समय मैदान में दिखाई पड़नेवाला लुक। छलावा।

दिरद*–पुं० दे० 'द्विरद'।

दिरमान–पुं० [फा० दरमान] १. औषध। दवा। २. इलाज। चिकित्सा।

दिरमानी–पुं० [हिं० दिरमान] चिकित्सा या इलाज करनेवाला। चिकित्सक।

दिल–पुं० [फा०] १. कलेजा। हृदय। २. मन। चित्त।

मुहा०–**दिल कड़ा करना** = हिम्मत या साहस करना। **दिल का ग़वाही देना** = मन का किसी काम के लिए अनुकूल या सम्मत होना। **दिल के फफोले फोड़ना** = भली बुरी बातें कहकर मन का क्रोध या दुःख कम करना। **दिल जमना** = (क) किसी काम में ध्यान या जी लगना। (ख) संतोष होना। जी भरना। **दिल ठिकाने होना** = (क) मन में शांति, सन्तोष या धैर्य्य होना। (ख) चित्त स्थिर होना। **दिल देना** = किसी से प्रेम करना।

दिल बुझना = मन में उत्साह या उमंग न रह जाना । **दिल में फरक आना** = पहले का सा सद्भाव न रह जाना । मन-मोटाव होना । **दिल से दूर करना** = भुला देना । ध्यान छोड़ देना ।

३. साहस । हिम्मत । ४. प्रवृत्ति । इच्छा ।

दिलगरी*–स्त्री० दे० 'दिलगीरी' ।

दिलगीर–वि० [फा०] जिसके मन में कोई दुःख या कष्ट हो । दुःखी ।

दिलगीरी–स्त्री० [फा०] मन में होनेवाला दुःख या कष्ट ।

दिल-चला–वि० दे० 'मन चला' ।

दिल-चस्प–वि० [फा०] [भाव० दिलचस्पी] जिसमें दिल लगे । मनोरंजक ।

दिलचस्पी–स्त्री० [फा०] १. किसी चीज़ में होनेवाला वह गुण या बात जो मन को आकृष्ट करे । २. किसी वस्तु या बात के प्रति मन में होनेवाला अनुराग ।

दिल-जमई–स्त्री० [फा० दिल + अ० जमअई] किसी विषय में मन का सन्देह दूर हो जाना । इतमीनान । तसल्ली ।

दिल-जला–वि० [फा० दिल + हिं० जलना] जिसे बहुत मानसिक कष्ट पहुँचा हो ।

दिलदार–वि० [फा०] [भाव० दिलदारी] १. उदार । दाता । २. रसिक । ३. प्रेमी । ४. प्रिय ।

दिलबर–वि० [फा०] प्यारा । प्रिय ।

दिलहा–पुं० दे० 'दिल्ला' ।

दिलाना–स० हिं० 'देना' का प्रे० ।

दिलासा–पुं० [फा० दिल] आश्वासन । ढारस । तसल्ली ।

यौ०–दम-दिलासा = (क) तसल्ली । धैर्य्य । (ख) धोखे या चकमे की बात ।

दिली–वि० [फा० दिल] १. हृदय या दिल सम्बन्धी । हार्दिक । २. बहुत घनिष्ठ ।

दिलेर–वि० [फा०] [भाव० दिलेरी] १. बहादुर । वीर । २. साहसी । हिम्मती ।

दिलेरी–स्त्री० [फा०] १. दिलेर होने की अवस्था या भाव । २. साहस । हिम्म
३. बहादुरी । वीरता ।

दिल्लगी–स्त्री० [फा० दिल + हिं० लग
१. दिल लगने या लगाने की क्रिया
भाव । २. केवल मन बहलाने या हँ
हँसाने की बात । परिहास । ठट्ठा । मज
मुहा०–दिल्लगी उड़ाना = (किसी
अमान्य या तुच्छ ठहराने के लिए (
सम्बन्ध में) हँसी की बातें कहना । उ
करना ।

दिल्लगी-बाज–पुं० [हिं० दिल्लगी +
बाज] हँसी-दिल्लगी करनेवाला । ठठो

दिल्ला–पुं० [देश०] किवाड़ के पल्ले
के वे चौकोर टुकड़े जो शोभा के लि
लगाये जाते हैं ।

दिव–पुं० [सं०] [भाव० दिवता] १. स्व
२. आकाश । ३. दिन ।

दिवला*–पुं० दे० 'दीया' ।

दिवस–पुं० [सं०] दिन । रोज ।

दिवस्पति–पुं० [सं०] सूर्य ।

दिवांध–वि० [सं०] जिसे दिन
दिखाई देता हो ।
पुं० १. दिन में भी न दिखाई दे
रोग । २. उल्लू ।

दिवा–पुं० [सं०] दिन । दिवस ।

दिवाकर–पुं० [सं०] सूर्य ।

दिवान†–पुं० दे० 'दीवान' ।

दिवाना†–पुं० दे० 'दीवाना' ।
*स० दे० 'दिलाना' ।

दिवाभिसारिका–स्त्री० [सं०] दि
समय अपने प्रेमी से मिलने के लिए
स्थल में जानेवाली नायिका ।

दिवाल–वि० [हिं० देना + वाल (प्रत्य०)]
जो देता हो । देनेवाला ।
†स्त्री० दे० 'दीवार' ।

दिवाला–पुं० [हिं० दीया + बालना] १. व
आर्थिक हीन अवस्था जिसमें ऋण चु
के लिए पास में कुछ भी न रह जाय ।

दिव्यांगना–स्त्री० [सं०] १. किसी देवता की स्त्री। २. अप्सरा।

दिव्या–स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं में से वह जो स्वर्ग में रहनेवाली या अलौकिक हो। जैसे–राधा।

दिव्यास्त्र–पुं० [सं०] देवता का दिया हुआ या मंत्र से चलनेवाला अस्त्र।

दिश–स्त्री० [सं०] दिशा। दिक्।

दिशा–स्त्री० [सं०] [वि० दिश्य] १. नियत या वर्ण्य स्थान के इधर-उधर का शेष विस्तार। ओर। तरफ। २. क्षितिज वृत्त के चार कल्पित (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) विभागों में से किसी ओर का विस्तार। (हर दो दिशाओं के बीच के चारो कोणों की भी चार दिशाएँ तथा इनके सिवा, सिर के ऊपर की और पैर के नीचे की ये दो दिशाएँ और मानी जाती हैं।) ३. दस की संख्या।

दिशा-भ्रम–पुं० दे० 'दिग्भ्रम'।

दिशाशूल–पुं० दे० 'दिक्शूल'।

दिशि–स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिश्य–वि० [सं०] दिशा-सम्बन्धी।

वि० दे० 'निर्दिष्ट'।

दिष्ट-बंधक–पुं० दे० 'दृष्ट-बंधक'।

दिष्टि*–स्त्री० दे० 'दृष्टि'।

दिसंतर*–पुं० [सं० देशांतर] पर-देस।

क्रि० वि० बहुत दूर तक।

दिस*–स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिसना*–अ० दे० 'दिखना'।

दिसा–स्त्री० दे० 'दिशा'।

†स्त्री० [सं० दिशा = ओर] मल-त्याग।

दिसावर–पुं० [सं० देशांतर] [वि० दिसावरी] दूसरा देश। पर-देस। विदेश।

दिसि*–स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिसिप*–पुं० दे० 'दिक्पाल'।

दिसिराज*–पुं० दे० 'दिक्पाल'।

दिसैया*–वि० [हिं० दिसना] देखने या दिखानेवाला।

दिस्ता–पुं० दे० 'दस्ता'।

दिहंदा–वि० [फा०] देनेवाला। (यौ० के अन्त में, जैसे–राह-दिहंदा।)

दिहल–स० [पू० हिं० में 'देना' क्रिया का भूत कालिक रूप] दिया। उदा०–'हमहिं दिहल करि कुटिल करमचँद'। –तुलसी।

दिहाड़ा–पुं० दे० 'दिन' १.।

दिहाड़ी–स्त्री० दे० 'दिन' १.।

दीश्रा–पुं० दे० 'दीया'।

दीक्षक–पुं० [सं०] १. दीक्षा देनेवाला। गुरु। २. शिक्षक।

दीक्षांत–पुं० [सं०] १. वह श्रवभृथ यज्ञ या स्नान जो किसी यज्ञ के श्रन्त में उसकी त्रुटियों या दोषों की शांति के लिए हो। २. किसी महाविद्यालय की पढ़ाई का सफलतापूर्ण श्रन्त।

दीक्षांत भाषण–पुं० [सं०] किसी बड़े विद्वान् का वह भाषण जो किसी विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण छात्रों के समक्ष उन्हें उपाधि या प्रमाण-पत्र श्रादि देने के समय होता है। (कॉन्वोकेशन एड्रेस)

दीक्षा–स्त्री० [सं०] १. यज्ञों का संकल्पपूर्वक श्रनुष्ठान। यजन। २. गुरु या श्राचार्य का मंत्रोपदेश।

दीक्षा-गुरु–पुं० [सं०] वह गुरु जिससे किसी मंत्र का उपदेश या दीक्षा मिली हो।

दीक्षित–वि० [सं०] १. जिसने संकल्प करके यज्ञ श्रारम्भ किया हो। २. जिसने गुरु से दीक्षा या मंत्र लिया हो।

पुं० ब्राह्मणों की एक जाति।

दीखना–श्र० [हिं० देखना] दिखाई देना।

दीघी–स्त्री० [सं० दीर्घिका] तालाब।

दीच्छा*–स्त्री० दे० 'दीक्षा'।

दीठ–स्त्री० [सं० दृष्टि] १. दृष्टि। नजर। निगाह।

मुहा०–दीठ मिलाना = किसी के सामने होकर उसे देखना।

२. किसी श्रच्छी वस्तु पर ऐसी बुरी दृष्टि लगना जिसका बुरा प्रभाव पड़े। नजर।

मुहा०–दीठ उतारना या झाड़ना = किसी उपचार से बुरी दृष्टि का प्रभाव न करना। **दीठ जलाना** = बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करने के लिए राई-नोन श्रादि श्राग में डालना।

३. देख-भाल। ४. परख। पहचान। ५. कृपा-दृष्टि। ६. श्राशा की भावना।

दीठ-बंदी*–स्त्री० [हिं० दीठ-बंद] जादू

दीठवंत–वि० [सं० दृष्टि + वंत] १. जि दिखाई दे। सुझाखा। २. ज्ञानी।

दीता*–स० [हिं० देना] हिं० 'देना' क्रि का स्थानिक भूत कालिक रूप जो 'दिया' का वाचक है।

दीदा–पुं० [फा० दीदः] १. दृष्टि नजर। २. श्राँख। नेत्र।

मुहा०–दीदा लगना = किसी काम मन लगना।

दीदार–पुं० [फा०] दर्शन। देखा-देखी

दीदी–स्त्री० [पुं० हिं० दादा = बड़ा भा बड़ी बहन।

दीन–वि० [सं०] [स्त्री० दीना, भाव दीनता] १. दरिद्र। गरीब। २. दुः ३. संतप्त। ४. नम्र। विनीत।

पुं० [श्र०] मत। मजहब।

दीनता–स्त्री० [सं०] १. दीन होने क्रिया या भाव। २. गरीबी। ३. नम्र

दीनताई*–स्त्री० = दीनता।

दीन-दयालु–वि० [सं०] दीनों पर करनेवाला।

दीन-दुनिया–स्त्री० [श्र० दीन + दुनि] यह लोक श्रौर पर-लोक।

दीन-बंधु–पुं० [सं०] १. दीन-दुःखियों का सहायक श्रौर मित्र। २. ईश्वर।

दीनानाथ–पुं० [सं० दीन + नाथ] १. दीनों का नाथ या रक्षक। २. ईश्वर।

दीनार–पुं० [सं०] स्वर्ण-मुद्रा। मोहर।

दीप–पुं० [सं०] दीया। चिराग।

] १. दीया। चिराग।
जिसमें वर्णित वस्तु का
है अथवा कई उप-
एक ही कर्त्ता होता है।
दूसरा राग।
दीपिका] १. प्रकाश
। २. पाचन शक्ति
३. मन की उमंग बढ़ाने-
।
[सं०] वह जिसका काम
। दीया जलानेवाला।
दे० 'दीपकर'।
दे० 'दीप्ति'।
[हिं०] १. देवता के सामने
। २. मरते हुए व्यक्ति से
हुए दीये का दान या संकल्प

] [वि० दीप्ति, दीप्य]
के लिए जलाना। प्रकाशन।
। ३. मन में आवेग
।
शक्ति बढ़ानेवाला। २.
।
[सं० दीपन] चमकना।

[सं०] दीवाली।
[सं०] दीये की लौ।
[सं०] १. वह स्तंभ
चारों ओर रखकर दीपक
। २. समुद्र में जहाजों को
दिखाने या उन्हें चट्टानों
के लिए बना हुआ उक्त
। (लाइट हाउस)
दे० 'दीवाली'।
[सं०] १. छोटा दीया।
जलानेवाली पुस्तक।
।

दीपित–वि० दे० 'दीप्त'।

दीप्त–वि० [सं०] १. जलता हुआ। २. चमकता हुआ। चमकीला।

दीप्ति–स्त्री० [सं०] १. प्रकाश। उजाला। २. चमक। द्युति। ३. शोभा। छवि।

दीप्तिमान्–वि० दे० 'दीप्त'।

दीबो–पुं० [हिं० देना] देने की क्रिया या भाव। उदा०–दीनदयाल दीबोई भावै, जाचक सदा सोहाहीं। –तुलसी।

दीमक–स्त्री० [फा०] च्यूँटी की तरह का एक सफेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि में लगकर उन्हें खा जाता है। बल्मीक।

दीयट–स्त्री० [हिं० दीया] लकड़ी या धातु का वह आधार जिसपर रखकर दीया जलाते हैं।

दीया–पुं० [सं० दीपक] १. प्रकाश करने के लिए किसी आधार में रखकर जलाई जानेवाली बत्ती। दीपक। चिराग। **मुहा०–दीया ठंढा करना या बढ़ाना** = दीया बुझाना। २. [अल्पा० दिवली] छोटा कसोरा।

दीया-सलाई–स्त्री० [हिं०] लकड़ी की वह छोटी पतली तीली जिसका एक सिरा गंधक आदि मसाले लगे रहने के कारण रगड़ने से जल उठता है।

दीरघ*–वि० दे० 'दीर्घ'।

दीर्घ–वि० [सं०] १. विस्तृत। लम्बा। २. बड़ा। विशाल। पुं० 'ह्रस्व' का उलटा। जैसे–'अ' का दीर्घ 'आ' या 'उ' का दीर्घ 'ऊ' है।

दीर्घ-काय–वि० [सं०] बड़े डील-डौलवाला। बहुत बड़ा।

दीर्घ-जीवी–वि० [सं० दीर्घ-जीविन्] जो बहुत दिनों तक जीता रहे।

दीर्घ-सूत्र–पुं० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन यज्ञ जो बहुत दिनों तक चलता था।

दीर्घ-सूत्रता–स्त्री० [सं०] १. हर काम में आवश्यक या उचित से अधिक समय

लगाने की वृत्ति। हर काम धीरे धीरे और बहुत देर में करना। २. कार्यालयों, विशेषतः सरकारी कार्यालयों में व्यर्थ की और पेचीली कार्रवाइयों के कारण होनेवाली बहुत देर। (रेड टेप)

दीर्घ-सूत्री-वि० [सं०] [भाव० दीर्घ-सूत्रता] हर काम में बहुत देर लगानेवाला।

दीर्घा-स्त्री० [सं०] १. आने-जाने के लिए कोई लंबा और ऊपर से छाया हुआ मार्ग। २. किसी भवन के अन्दर कुछ ऊँचाई पर दर्शकों आदि के बैठने के लिए बना हुआ स्थान। (गैलरी)

दीर्घायु-वि० दे० 'दीर्घ-जीवी'।

दीर्घिका-स्त्री० [सं०] छोटा तालाब।

दीर्ण-वि० [सं०] १. फटा हुआ। विदीर्ण। २. टूटा हुआ। भग्न।

दीवट-स्त्री० दे० 'दीयट'।

दीवा-पुं० दे० 'दीया'।

दीवान-पुं० [अ०] १. वह स्थान जहाँ राजा का दरबार लगता हो। राज-सभा। २. राज्य का मंत्री। वजीर। ३. किसी शायर की सब गजलों का संग्रह।

दीवान-आम-पुं० [अ०] वह दरबार जिसमें साधारणतः सब लोग राजा के सामने जा सकते हों।

दीवानखाना-पुं० [फा०] वह कमरा जिसमें बड़े आदमी बैठकर लोगों से मिलते और बातें करते हैं। बैठक।

दीवान-खास-पुं० [फा०+अ०] वह दरबार जिसमें राजा अपने मंत्रियों या मुख्य सरदारों के साथ बैठकर परामर्श करता है। खास दरबार।

दीवाना-वि० [फा०] [स्त्री० दीवानी] पागल। विक्षिप्त।

दीवानी-स्त्री० [फा०] १. दीवान का पद या कार्य। २. =दीवानी न्यायालय।

दीवानी अधिकरण-पुं० =दीवानी न्यायालय।

दीवानी न्यायालय-पुं० [फा०+सं०] वह न्यायालय जिसमें सम्पत्ति या अर्थ सम्बन्धी व्यवहारों या मुकदमों का विचार और निर्णय होता है। (सिविल कोर्ट)

दीवार-स्त्री० [फा०] १. पत्थर, ईं मिट्टी आदि के द्वारा खड़ा किया हुआ परदा जिससे कोई स्थान घेरकर को या मकान आदि बनाते हैं। भीत। किसी वस्तु का कुछ ऊपर उठा हुआ घेर

दीवारगीर-पुं० [फा०] दीया आ रखने का दीवार में लगा आधार।

दीवाल-स्त्री० दे० 'दीवार'।

दीवाली-स्त्री० [सं० दीपावली] कार्ति की अमावस्या का एक प्रसिद्ध उ जिसमें रात को बहुत से दीपक जला लक्ष्मी का पूजन किया जाता और जूआ खेला जाता है।

दीसना*-अ० [सं० दृश् = देखना] दिखाई देना। दृष्टिगोचर होना।

दीह*-वि० [सं० दीर्घ] १. लम्बा और २. बहुत ऊँचा।

पुं० चहार दीवारी। परकोटा।

दुंद*-पुं० [सं० द्वंद्व] १. दे० 'द्वंद्व'। उत्पात। उपद्रव। ३. झगड़ा-बखेड़ा।

पुं० [सं० दुंदुभि] नगाड़ा। डंका।

दुंदभ-पुं० [सं०] नगाड़ा।

*पुं० [सं० द्वंद्व] बार बार जन्म और मरने का कष्ट।

दुंदुभि-स्त्री० [सं०] नगाड़ा। धौं

दुंदुह*-पुं० [सं० डुंडुभ] पानी में र साँप। डेड़हा।

दुंबा-पुं० [फा० दुंबालः] एक का मेढ़ा, जिसकी दुम बहुत भारी मोटी होती है।

दुःख-पुं० [सं०] १. मन की वह और कष्ट देनेवाली अवस्था या बात छुटकारा पाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। 'सुख' का उलटा। तकली

बाँटना = किसी के संकट
देना। दुःख भरना =
भोगना।
'३. मानसिक कष्ट।
पीड़ा। दर्द। ५. रोग।
दे० 'दुःखद'।
-वि० [सं०] [स्त्री०
] दुःख या कष्ट देनेवाला।
दे० 'दुःखद'।
[सं०] [वि० दुःखवादी]
।
[सं०] १. जिसका अन्त
। २. जिसके अन्त का वर्णन
जैसे—दुःखान्त कहानी।
की समाप्ति। २. दुःख की
।
[सं०] जिसे दुःख पहुँचा
।
दे० 'दुःखित'।
[सं०] [भाव० दुःशीलता]
स्वभाववाला।
[सं०] जिसे सहन करना बहुत
[सं०] १. जिसका साधन
बहुत कठिनता से होनेवाला।
उपाय या प्रतीकार करना
[सं०] [वि० दुःहसाहसी]
या अनुचित साहस। २.
।
] 'दो' का संक्षिप्त रूप
में शब्द के पहले लगता
, दुचित्ता।
।
।
[हिं० दो + आना] दो आने

दुआ—स्त्री० [अ०] १. ईश्वर से की जानेवाली प्रार्थना। २. आशीर्वाद।

मुहा०—दुआ लगना = आशीर्वाद फलदायक होना।

दुआबा—पुं० दे० 'दोआबा'।

दुआल—स्त्री० दे० 'दुवाल'।

दुआह—पुं० [हिं० दो + विवाह] पहली स्त्री मर जाने पर पुरुष का होनेवाला दूसरा विवाह।

दुइ†—वि० दे० 'दो'।

दुइज*—स्त्री० दे० 'दूज'।

*पुं० [सं० द्विज] दूज का चन्द्रमा।

दुई—स्त्री० [हिं० दो] १. अपने को ईश्वर से अलग समझना, उसका अंश न समझना। २. दे० 'दुजायगी'।

दुऊ—वि० दे० 'दोनों'।

दुऔ*—वि० = दोनों।

दुकड़ा—पुं० [हिं० दु + कड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकड़ी] १. एक साथ या एक में लगी हुई दो वस्तुएँ। जोड़ा। २. एक पैसे का चौथाई भाग। छदाम।

दुकड़ी—स्त्री० [हिं० दो] १. दो रुपये। २. धोतियों आदि का जोड़ा। (दलाल)

दुकना*—अ० [देश०] लुकना। छिपना।

दुकान—स्त्री० [फा०] १. वह स्थान जहाँ बिक्री की चीजें रहती और बिकती हैं। माल बिकने का स्थान। हट्ट।

मुहा०—दुकान बढ़ाना = दुकान बन्द करना। **दुकान लगाना** = दुकान का सामान सजाकर बिक्री के लिए रखना।

२. इधर-उधर फैली हुई बहुत-सी चीजें।

दुकानदार—पुं० [फा०] [भाव० दुकानदारी] १. दुकान पर बैठकर चीजें बेचनेवाला। दुकानवाला। २. वह जिसने धन कमाने के लिए परोपकारी होने का ढोंग रच रखा हो।

दुकानदारी—स्त्री० [हिं० दुकानदार] १. दुकानदार का काम या भाव। २.

चीजों का दाम बहुत बढ़ाकर कहना। ३. किसी को अपने जाल में फँसाने या ठगने के लिए तरह तरह की बातें करना।

दुकाल-पुं० दे० 'अकाल'।

दुकूल-पुं० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। २. स्त्रियों के पहनने की साड़ी।

दुकूलिनी-स्त्री० [सं०] नदी।

दुकेला-पुं० [हिं० दुक्का] [स्त्री० दुकेली] जिसके साथ कोई एक और भी हो।

यौ०-अकेला-दुकेला = जो अकेला हो या जिसके साथ कोई एक और साथी हो।

दुक्कड़-पुं० [हिं० दो+कूँड़] १. शहनाई के साथ बजनेवाले दो (चमड़े से मढ़े) बाजों का जोड़ा। २. एक में बँधी हुई दो बड़ी नावों का जोड़ा।

दुक्का-वि० [सं० द्विक्] [स्त्री० दुक्की] जो एक साथ दो हों।

यौ०-इक्का-दुक्का = दे० 'दुकेला' के अन्तर्गत 'अकेला-दुकेला'।

दुक्की-स्त्री० [हिं० दो] ताश का वह पत्ता जिसपर दो बूटियाँ होती हैं।

दुख-पुं० दे० 'दुःख'।

दुखड़ा-पुं० [हिं० दुःख+ड़ा (प्रत्य०)] १. किसी के दुःख या कष्ट का वर्णन।

मुहा०-दुखड़ा रोना = अपना दुःख दीनतापूर्वक किसी से कहना।

२. विपत्ति। संकट। आफत।

दुखदानि*-वि० दे० 'दुःखद'।

दुख-दुंद*-पुं० [सं० दुखद्वंद्व] दुःख और आपत्ति अथवा उनसे होनेवाला सन्ताप।

दुखना-अ० [सं० दुःख] (शरीर के किसी अंग का) दर्द करना। पीड़ा होना।

दुखहाया*-वि० [हिं० दुख+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखहाई] जिसे बहुत दुःख पहुँचा हो। परम दुखी।

दुखाना-स० [सं० दुःख] १. दुखी करना या दुःख देना। कष्ट पहुँचाना।

मुहा०-जी दुखाना = किसी को मानसिक कष्ट पहुँचाना।

२. किसी का मर्म-स्थान या पका घा आदि छूना, जिससे उसे पीड़ा हो। †अ० दे० 'दुखना'।

दुखारा(ी)-वि० दे० 'दुःखी'।

दुखित*-वि० दे० 'दुःखित'।

दुखिया-वि० दे० 'दुःखित'।

दुखी-वि० [सं० दुःखिन्] १. जिसे दुः या कष्ट पहुँचा हो। दुःख में पड़ा हुआ २. जिसके मन में खेद हुआ हो। खिन्न ३. रोगी। बीमार।

दुखौंहाँ*-वि० [हिं० दुःख+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखौंहीं] दुःख देनेवाला।

दुग*-वि० [सं० द्विक्] दो।

दुगई†-स्त्री० [?] मकान के आगे उसारा। दालान। (बुन्देल०) उदा- 'अति अद्भुत थंभन की दुगई'। -केश

दुगदा*-वि० = दुर्गम।

दुगदुगी-स्त्री० दे० 'धुकधुकी'।

दुगना-वि० दे० 'दूना'।

दुगम*-वि० = दुर्गम।

दुगुण*-वि० दे० 'दूना'।

दुग्ग*-पुं० दे० 'दुर्ग'।

दुग्ध-पुं० [सं०] दूध। पय।

दुघड़िया*-पुं० दे० 'दोघड़िया' (मुहू

दुघरी*-स्त्री० = दुघड़िया।

दुचंद-वि० [फा० दोचंद] दूना। दुग

दुचित*-वि० दे० 'दुचित्ता'।

दुचितई(ताई)*-स्त्री० [हिं० दुचि १. चित्त की अस्थिरता। दुबधा। उ 'जब आनि भई सबको दुचिताई'। — २. खटका। आशंका।

दुचित्ता-वि० [हिं० दो+चित्त][दुचित्ती, भाव० दुचित्तापन] १. जि चित्त दो बातों में लगा हो। जो दुब चिन्ता में हो। २. संदेह में पड़ा हुआ।

दुज*-पुं० दे० 'द्विज'। ('दुज' के के लिए दे० 'द्विज' के यौ०।)

दुजायगी-स्त्री० [हिं० दोज = दो+आन (प्रत्य०)] किसी को अपना न समभ

दुनरना(वना)*-अ० [हिं० दो + नवना= झुकना] लचकर दोहरा-सा हो जाना। स० लचाकर दोहरा-सा करना।

दुनाली-वि० स्त्री० [हिं० दो + नाल] दो नलियों या नलोंवाली। जैसे-दुनाली बन्दूक।

दुनियाँ-स्त्री०[अ० दुनिया]१.संसार। जगत्। **मुहा०-दुनियाँ के परदे पर** = सारे संसार में। **दुनियाँ की हवा लगना** = (क) सांसारिक अनुभव या ज्ञान होना। (ख) सांसारिक छल-कपट या दुर्व्यसनों में लगना। **दुनिया भर का** = बहुत-सा। २. संसार के लोग। जनता।

दुनियाँदार-पुं० [फा० दुनियादार] [भाव० दुनियाँदारी] १. सांसारिक झगड़ों में पड़ा हुआ मनुष्य। गृहस्थ। २. युक्ति से अपना काम निकालनेवाला मनुष्य। ३. व्यवहार-कुशल व्यक्ति।

दुनियाई-वि०[हिं०दुनिया + ई (प्रत्य०)]दुनिया या संसार से सम्बन्ध रखनेवाला। सांसारिक।

दुनी*-स्त्री० दे० 'दुनियाँ'।

दुपटा*-पुं० दे० 'दुपट्टा'।

दुपटी†-स्त्री० [हिं० दो + पट] १. चादर। २. छोटा दुपट्टा।

दुपट्टा-पुं० [हिं० दो + पाट] [अल्पा० दुपट्टी] १. ओढ़ने का कपड़ा। चादर। **मुहा०-दुपट्टा तानकर सोना** = निश्चिन्त हो जाना। २. कन्धे पर रखने का कपड़ा।

दुपट्टी*-स्त्री० दे० 'दुपट्टा'।

दुपद*-वि० पुं० दे० 'द्विपद'।

दुपहर-स्त्री० दे० 'दोपहर'।

दुपहरिया-स्त्री० [हिं० दो + पहर] १. दिन का मध्य भाग। मध्याह्न। दोपहर। २. एक छोटा फूलदार पौधा।

दुपहरी-स्त्री० दे० 'दोपहर'।

दु-फसली-वि० [हिं० दो + अ० फस्ल] रबी और खरीफ दोनों फसलों में होनेवाला

अथवा ऐसा ही और कोई पदार्थ।

स्त्री० दुबधा की बात।

दुबधा–स्त्री० [सं० द्विविधा] १. उपस्थित दो बातों में से कोई बात स्थिर न कर सकने की क्रिया या भाव। मन का अनिश्चय या अस्थिरता। २. संशय। सन्देह। ३. असमंजस। आगा-पीछा। ४. आशंका। खटका।

दुबरा†–वि० दे० 'दुबला'।

दुबला–वि० [सं० दुर्बल] [स्त्री० दुबली] [भाव० दुबलापन] १. हलके और पतले बदनवाला। कृश। २. अशक्त। निर्बल।

दुबारा–क्रि० वि० दे० 'दोबारा'।

दुबाह–पुं० [हिं० दो + बाहना = चलाना] दोनों हाथों से एक साथ दो तलवारें चलाने की क्रिया या भाव।

दुबाहना–स० [हिं० दुबाह] दोनों हाथों से साथ साथ दो तलवारें चलाना।

दुबिधा–स्त्री० दे० 'दुबधा'।

दु-भाषिया–पुं० [सं० द्विभाषी] दो भाषाएँ जाननेवाला वह मनुष्य जो उन भाषाओं में बात-चीत करनेवाले दो मनुष्यों को एक दूसरे की बात समझाता है। (इन्टरप्रेटर)

दु-मंजिला–वि० [फा०] [स्त्री० दुमंजिली] दो मरातिब या दो खंड का। (मकान)

दुम–स्त्री० [फा०] १. पूँछ। पुच्छ।

मुहा०–दुम दबाकर भागना = डरकर चुपचाप भागना। **दुम हिलाना** = दीनतापूर्वक प्रसन्नता या अधीनता प्रकट करना।

२. पूँछ की तरह पीछे लगी हुई वस्तु या व्यक्ति। ३. किसी काम का अन्तिम और सूक्ष्म अंश।

दुमची–स्त्री० [फा०] घोड़े के साज में का वह दोहरा तसमा जो उसकी पूँछ या दुम के नीचे दबा रहता है।

दुमदार–वि० [फा०] १. दुम या पूँछ-वाला। २. जिसके पीछे पूँछ की-सी कोई चीज लगी हो। जैसे–दुमदार सितारा।

दुमन (।)–वि० दे० 'दुचित्ता'।

दुमाता–वि० [सं० दुर्मातृ] १. बुरी दुष्ट माता। सौतेली माँ। विमाता।

दुमाहा–वि० [हिं० दो + माह] हर महीने में या पर होनेवाला।

दुमुँहाँ–वि० दे० 'दोमुँहाँ'।

दुरंगा–वि० [हिं० दो + रंग] [स्त्री० दुरंगी] १. जिनमें दो रंग हों। २. तरह का। ३. दोहरी चाल चलनेवाला

दुरंगी–स्त्री०[हिं० दुरंगा] १. दो रंग प्रकार का होने का भाव। दोरंगापन। २. कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में जाना। दोनों तरफ रहना या चलना। ३. कभी एक प्रकार का और कभी दूसरे प्रकार व्यवहार या आचरण करना।

दुरंत–वि०[सं०]१. बहुत बड़ा या भारी। दुस्तर। कठिन। ३. घोर। भीषण। जिसका अंत या परिणाम बुरा हो। दुष्ट। पाजी।

दुरंतर–वि०[सं० दुरंत] दुर्गम। कठिन

दुरंधा*–वि० [सं० द्विरंध्र] १. दो छे वाला। २. आर-पार छेदा हुआ।

दुर्–उप० [सं०] दूषण या निषेध कारक एक उपसर्ग। जैसे–दुर्दशा, दुराग्रह।

दुर–अव्य० [हिं० दूर] 'दूर हो' संक्षिप्त रूप। (तिरस्कारसूचक)

मुहा०–दुर दुर करना = तिरस्क कुत्ते की तरह हटाना या भगाना।

पुं० [फा०] १. नथ या नाक में जानेवाला मोती का लटकन। लोलक। कान में पहनने की छोटी बाली।

दुरजन*–पुं० दे० 'दुर्जन'।

दुरथल*–पुं० [सं० दुः + स्थल] जगह।

दुरद*–पुं० दे० 'द्विरद'।

दुरदाम*–वि० दे० 'दुःसाध्य'।

दुरदाल*–पुं० [सं० द्विरद] हाथी।

हिं० दुर दुर] तिरस्कार-
हटाना ।
] १. दुर्भाग्य । अभाग्य ।
। दुष्कर्म ।
दूर] १. सामने से
ना ।
= द्रौपदी ।
[सं०] दुष्ट अभिप्राय
हुई सलाह ।
[सं० दुर्भाव] १ बुरा
। मनोमालिन्य ।
वि० = दुर्मति ।
[सं० दुर (उप०) + मुस=
या मिट्टी पीटकर सड़क
उपकरण ।
दे० 'दुर्लभ' ।
[सं०] १. बुरी दशा ।
२. दुःख, कष्ट आदि की दशा ।
[सं०] [वि० दुराग्रही]
या अनुचित बात के
अनुचित हट । २. अपने
सिद्ध होने पर भी उसपर

दे० 'दुराचार' ।
[सं०] [वि० दुराचारी] दुष्ट
चाल-चलन । बद-चलनी ।
[सं० दुराचारिन्] बुरे
-चलनवाला । बद-चलन ।
[सं० दुर् + राज्य] अत्या-
बुरा राज्य या शासन ।
[सं० द्विराज्य] दो राजाओं
राजा हों । (देश)

[सं० दुरात्मन्] दुष्ट और
। नीचाशय ।
[हिं० दुरना = छिपना]

[सं०] १. जिसका दमन

करना कठिन हो । २. प्रचंड । उग्र ।

दुराना-अ० [हिं० दूर] १. दूर होना । टलना । २. छिपना ।
स० १. दूर करना । हटाना । २. छोड़ना । त्यागना । ३. छिपाना ।
*स० [?] (हाथ, आँख आदि अंग) नचाना । मटकाना ।

दुराप-वि० [सं०] जिसे पाना कठिन हो । दुष्प्राप्य । उदा०—पदद्वंद्व मंदात्म मनुजै-र्दुरापं—तुलसी ।

दुराराध्य-वि० [सं०] आराधना के द्वारा जिसे प्रसन्न करना बहुत कठिन हो ।

दुराव-पुं० [हिं० दुराना + आव (प्रत्य०)] किसी से कोई बात गुप्त रखने या छिपाने का भाव ।

दुराशय-पुं० [सं०] [भाव० दुराशयता] दुष्ट आशय या उद्देश्य ।
वि० बुरे आशय या उद्देश्यवाला । खोटा । नीच ।

दुराशा-स्त्री० [सं०] वह आशा जो पूरी न हो सके । व्यर्थ की आशा ।

दुरित-पुं० [सं०] पाप । पातक ।
वि० [स्त्री० दुरिता] पापी । पातकी ।

दुरियाना-स० [हिं० दूर] दूर करना ।

दुरुत्साहक-पुं० [सं०] वह जो किसी को किसी अनुचित या नियम-विरुद्ध कार्य में या किसी दुष्ट उद्देश्य से प्रवृत्त करे या लगावे । (एबेटर)

दुरुत्साहन-पुं० [सं०] [वि० दुरुत्साहित, कर्त्ता दुरुत्साहक] किसी को किसी अनुचित या विधि-विरुद्ध कार्य के लिए या किसी दुष्ट उद्देश्य से उत्साहित या प्रवृत्त करना । बुरे काम के लिए उकसाना । (एबेटमेन्ट)

दुरुत्साहित-वि० [सं०] जिसे किसी से किसी अनुचित कार्य के लिए प्रोत्साहन मिला हो ।

दुरुपयोग-पुं० [सं०] किसी चीज का अनुचित या बुरे ढंग से किया जानेवाला उपयोग । वह उपयोग जो ठीक या अच्छा न हो । (एब्यूज)

दुरुस्त-वि० [फा०] [भाव० दुरुस्ती] १. जो अच्छी या ठीक दशा में हो । जो टूटा-फूटा या खराब न हो । ठीक । २. जिसमें दोष या त्रुटि न हो । ३. उचित ।

दुरुस्ती-स्त्री० [फा०] दुरुस्त या ठीक होने अथवा किये जाने की क्रिया या भाव । संशोधन ।

दुरूह-वि० [सं०] [भाव० दुरूहता] जल्दी समझ में न आनेवाला । कठिन ।

दुर्गंध-स्त्री० [सं०] बुरी गंध या महक । बदबू ।

दुर्ग-वि० [सं०] दे० 'दुर्गम' ।

पुं० विशेष प्रकार का वह बड़ा और दृढ़ भवन जिसमें राजा और सिपाही आदि रहते हैं । गढ़ । कोट । किला ।

दुर्गत-स्त्री० दे० 'दुर्गति' ।

दुर्गति-स्त्री० [सं०] बुरी गति । दुर्दशा ।

दुर्गपति-पुं० [सं०] दुर्ग या गढ़ का स्वामी या प्रधान अधिकारी । किलेदार ।

दुर्गपाल-पुं० [सं०] दुग या गढ़ का रक्षक । किलेदार ।

दुर्गम-वि० [सं०] [भाव० दुर्गमता] १. (स्थान) जहाँ पहुँचना कठिन हो । औघट । २. जिसे जानना या समझना कठिन हो । दुर्ज्ञेय । ३. कठिन । विकट ।

दुर्गा-स्त्री० [सं०] १. देवी का एक रूप । (यह आदि शक्ति मानी जाती है।) २. एक देवी जिसका अनेक असुरों को मारना प्रसिद्ध है । (काली, भवानी, चंडी आदि इसी के रूप हैं ।) ३. नौ वर्ष की कन्या ।

दुर्गुण-पुं० [सं०] [वि० दुर्गुणी] बुरा गुण । दोष । ऐब ।

दुर्गोत्सव-पुं० [सं०] नवरात्र में होनेवाला दुर्गा-पूजा का उत्सव ।

दुर्घट-वि० [सं०] जिसका होना कठिन

दुर्घटना-स्त्री० [सं०] ऐसी आक
बात जिसमें कष्ट या शोक हो । अ
और बुरी घटना । वारदात । (एक्सिडेंट

दुर्घात-पुं० [सं०] १. बुरी तरह से
जानेवाला घात या प्रहार । २. बुरी त
से किया जानेवाला छल । धोखेबाजी ।

दुर्जन-पुं० [सं०] [भाव० दुर्जन
दुष्ट या खोटा आदमी । खल ।

दुर्जय-वि०[सं०] जो जल्दी जीता न जा

दुर्जेय-वि० दे० 'दुर्जय' ।

दुर्ज्ञेय-वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न
आ सके । दुर्बोध ।

दुर्दम-वि० दे० 'दुर्दमनीय' ।

दुर्दमनीय-वि० [सं०] जिसका दम
करना या जिसे दबाना बहुत कठिन हो ।

दुर्दम्य-वि० दे० 'दुर्दमनीय' ।

दुर्दर*-वि० दे० 'दुर्द्धर' ।

दुर्दशा-स्त्री० [सं०] बुरी दशा
अवस्था । दुर्गत ।

दुर्दांत-वि० [सं०] जिसे दबाना
कठिन हो । दुर्दमनीय ।

दुर्दिन-पु० [सं०] १. बुरे दिन । २.
दिन जिसमें बादल छाये हों और
बरसता हो । मेघाच्छन्न दिन । ३. दु
दुःख और कष्ट के दिन ।

दुर्दैव-पुं० [सं०] दुर्भाग्य ।

दुर्द्धर-वि० [सं०] १. जिसे
कठिन हो । २. प्रबल । प्रचंड ।

दुर्नाम-पुं० [सं० दुर्नामन्] १. बदना
कलंक । २. गाली ।

दुर्निवार-वि० दे० 'दुर्निवार्य्य' ।

दुर्निवार्य्य-वि० [सं०] १. जो
रोका या हटाया न जा सके । २.
होना प्रायः निश्चित हो ।

दुर्नीति-स्त्री० [सं०] १. बुरी नीति । २.
अन्याय । ३. बुरा आचरण ।

दुर्बल-वि० [सं०] [भाव० दुर्बलता]

कहीं या बहुत कम मिलता हो। (रेयर) ३. अनोखा। बहुत विलक्षण और बढ़िया।

दुर्ललित-वि० [सं०] १. जिसका रंग-ढंग अच्छा न हो। २. बुरा। खराब।

दुर्लेख्य-पुं० [सं०] वह लेख या विलेख जो विधिक व्यवहार में नियम-विरुद्ध या अप्रामाणिक माना जाय। (इनवैलिड डीड)

दुर्वचन-पुं० [सं०] गाली।

दुर्वाद-पुं० [सं०] १. दुर्वचन। गाली। २. अपवाद। बदनामी।

दुर्विनीत-वि० [सं०] जो विनीत या नम्र न हो। अशिष्ट। अक्खड़।

दुर्विपाक-पुं० [सं०] १. अशुभ और दुःखद घटना। दुर्घटना। (ट्रेजेडी) २. बुरा परिणाम या फल।

दुर्वृत्त-वि० [सं०] [भाव० दुर्वृत्ति] दुश्चरित्र। दुराचारी।

दुर्वृत्त-फलक-पुं० [सं०] वह पत्र या फलक जिसपर किसी दुर्वृत्त या दुश्चरित्र व्यक्ति के किये हुए अपराधों आदि का लेखा लिखा रहता है। (हिस्ट्री शीट)

दुर्व्यवस्था-स्त्री० [सं०] कुप्रबंध। बुरी व्यवस्था।

दुर्व्यवहार-पुं० [सं०] बुरा या अनुचित व्यवहार। बुरा बर्त्ताव।

दुर्व्यसन-पुं० [सं०] [वि० दुर्व्यसनी] किसी बुरी और हानिकारक बात की आदत। बुरा व्यसन। लत।

दुलकना-स० दे० 'दुलखना'।

दुलकी-स्त्री० [हिं० दलकना] घोड़े की एक चाल जिसमें वह हर पैर अलग अलग उठाकर उछलता हुआ दौड़ता है।

दुलखना-स० [हिं० दो + लक्षण] कोई बात दोबारा कहना या बतलाना। अ० कहकर मुकरना।

दुलड़ी-स्त्री० [हिं० दो + लड़] दो लड़ों की माला या हार।

दुलत्ती-स्त्री० [हिं० दो + लात] घोड़े

आदि चौपायों का पिछले दोनों पैर उठाकर किसी को मारना। पुश्तक।

दुलदुल-पुं० [अ०] वह खच्चरी जो असकंदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को भेंट की थी। (लोग इसे भूल से घोड़ा समझते और मुहर्रम में इसका जलूस निकालते हैं।)

दुलना*-अ० दे० 'डुलना'।

दुलरा*-वि० [स्त्री० दुलरी] दे० 'दुलारा'।

दुलराना-अ० [हिं० दुलार] १. बच्चों का दुलार या लाड़ करना। २. दुलारे बच्चों का-सा व्यवहार या आचरण करना। स० बच्चों से दुलार या लाड़ करना।

दुलरी*-स्त्री० दे० 'दुलड़ी'।

दुलहन-स्त्री० [हिं० दुलहा] नई व्याही हुई स्त्री। नव-वधू।

दुलहा-पुं० [सं० दुर्लभ] १. वह जिसका व्याह तुरन्त होने को हो या हुआ हो। वर। २. पति। स्वामी।

दुलही-स्त्री० दे० 'दुलहन'।

दुलहेटा-पुं० [हिं० दुलारा + बेटा] १. लाड़ला या दुलारा लड़का। २. दुलहा।

दुलाई-स्त्री० [सं० तूल] ओढ़ने की रूईदार चादर। हलकी रजाई।

दुलाना*-स० दे० 'डुलाना'।

दुलार-पुं० [हिं० लाड़] बच्चों को प्रसन्न करने की प्रेम-पूर्ण चेष्टा। लाड़।

दुलारा-वि० [हिं० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार हो। लाड़ला।

दुलारी-स्त्री० [हिं० दुलार] एक प्रकार की माता या चेचक (रोग)।

दुलीचा(लैचा)*-पुं० दे० 'गलीचा'।

दुलोही-स्त्री० [हिं० दो + लोहा] एक प्रकार की तलवार।

दुल्लभ*-वि० दे० 'दुर्लभ'।

दुव-वि० [सं० द्वि] दो।

दुवन-पुं० [सं० दुर्मनस्] १. दुष्ट। दुर्जन। २. शत्रु। दुश्मन। ३. राक्षस।
वि० बुरा। खराब।

दुवाज-पुं० [?] एक प्रकार का घोड़

दुवादस-वि० दे० 'द्वादश'।

दुवादसबानी*-वि० [सं० द्वाद
सूर्य + वर्ण] बारह बानी का।
(विशेषतः स्वर्ण या सोना)

दुवार+-पुं० दे० 'द्वार'।

दुवाल-स्त्री० [फा०] रिकाब में का
या तस्मा।

दुवाली-स्त्री० [देश०] वह घोंटा
घोंटकर कपड़ों पर चमक लाते हैं।
स्त्री० [फा० दुवाल] कमर में तलवार
लटकाने का चमड़े का परतला।

दुविधा-स्त्री० दे० 'दुबधा'।

दुवौ*-वि० [हिं० दुव = दो] दोनों।

दुशवार-वि० [फा०] कठिन। दुस

दुशाला-पुं० [सं० द्विशाट] एक
की ऊनी (प्रायः दोहरी) चादर
किनारों पर बेल-बूटे बने रहते हैं।

दुश्चक्र-पुं० [सं०] १. किसी दुष्ट
से चली जानेवाली छिपी हुई चाल।
यन्त्र। २. ऐसा बुरा चक्र या दौर
दोष बराबर बढ़ते ही चलें, और जिससे
सकना बहुत कठिन हो। (विशस

दुश्चरित्र-वि० [सं०] [स्त्री०
रित्रा] बुरे या निन्दनीय चरि
बद-चलन।

दुश्चिंता-स्त्री० [सं०] बुरी या विकट

दुश्मन-पुं० [फा०] शत्रु। वैरी।

दुश्मनी-स्त्री० [फा०] वैर। शत्रुत

दुष्कर-वि० [सं०] जिसे करना कठि
दुःसाध्य।

दुष्कर्म-पुं० [सं०] बुरा या अनुचित

दुष्कीर्त्ति-स्त्री० [सं०] बदनामी। अप

दुष्ट-वि० [सं०] [स्त्री० दुष्टा] [
दुष्टता] १. जिसमें दोष हो। दूषित।
ग्रस्त। २. बुरे स्वभाववाला। दुर्जन।

दुष्टात्मा-वि० [सं०] जिसका अन्तः

दुहना-स० [सं० दोहन] १. गौ, भैंस आदि के स्तन से दूध निकालना। ('दूध' और 'दूहा जानेवाला पशु' दोनों के लिए)। २. सत्त या सार खींचना। ३. खूब धन वसूल करना।

दुहनी-स्त्री० दे० 'दोहनी'।

दुहरा-वि० दे० 'दोहरा'।

दुहाई-स्त्री० [सं० द्वि + आह्वान] १. उच्च स्वर से या चिल्लाकर सबको दी जानेवाली सूचना। मुनादी। घोषणा। २. अपनी रक्षा के लिए किसी को चिल्लाकर बुलाना। **मुहा०-दुहाई देना** = अपने बचाव के लिए किसी को पुकारना।
३. शपथ। कसम। सौगन्ध।
स्त्री० [हिं० दुहना] गाय, भैंस आदि दुहने का काम, भाव या मजदूरी।

दुहाग-पुं० [सं० दुर्भाग्य] [वि० दुहागी] १. दुर्भाग्य। २. वैधव्य। रँड़ापा।

दुहागिन-स्त्री० [हिं० दुहाग] विधवा। 'सुहागिन' का उलटा।

दुहागिल-वि० [हिं० दुहाना] १. अभागा। २. अनाथ। ३. सुनसान। सूना। निर्जन।

दुहाना-स० हिं० 'दुहना' का प्रे०।

दुहावनी-स्त्री० [हिं० दुहना] दूध दुहने की मजदूरी। दुहाई।

दुहिता-स्त्री० [सं० दुहितृ] बेटी। पुत्री।

दुहुँघा*-क्रि० वि० [हिं० दु = दो + घा = ओर] दोनों ओर से।

दुहूँ-वि० [हिं० दो] दोनों।

दुहेला-पुं० [सं० दुर्हेल] दुःख। विपत्ति।

दुहेला-वि० [सं० दुर्हेल] [स्त्री० दुहेली] १. दुःखदायी। २. दुःसाध्य। कठिन। ३. जिसके मन में दुःख हो। दुःखी। ४. दुःखमय। दुःखपूर्ण।
पुं० विकट या दुःखदायक कार्य।

दुहैया†-वि० [हिं० दुहना] गौ, भैंस आदि दुहनेवाला।
स्त्री० दे० 'दुहाई'।

दुहोतरा*–वि० [सं० दु या द्वि + उत्तर] दो अधिक। दो ऊपर या और।

दूँद*–पुं० दे० 'दुंद'।

दूँदना*–अ० [हिं० दुंद] लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव करना।

दूँदि*–स्त्री० दे० 'दुंद'।

दू†–वि० = दो।

दूआ–पुं० [हिं० दो] १. जूए आदि के खेलों में दो से सम्बन्ध रखनेवाला दाँव। २. ताश का वह पत्ता जिसपर दो बूटियाँ होती हैं। दुक्की। ३. दे० 'दुई'।
*वि० = दूसरा।

दूइज†–स्त्री० दे० 'दूज'।

दूक*–वि० [सं० द्वैक] दो-एक। कुछ।

दूकान–पुं० दे० 'दुकान'।

दूखना*–स० [सं० दूषण + ना (प्रत्य०)] दोष या ऐब लगाना।
अ० दे० 'दुखना'।
अ० [?] नष्ट होना।

दूज–स्त्री० [सं० द्वितीया] चान्द्र मास के किसी पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया।
मुहा०–दूज का चाँद होना = बहुत दिनों पर मिलना या दिखाई देना।

दूजा*–वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।

दूत–पुं० [सं०] [स्त्री० दूती] [भाव० दूतता] १. वह जो कोई विशेष कार्य करने या सँदेसा पहुँचाने के लिए कहीं भेजा जाय। बसीठ। २. प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य। †३. इधर की बातें उधर लगाकर आपस में लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।

दूत-कर्म–पुं० [सं०] दूत का काम।

दूतता–स्त्री० [सं०] दूत का काम या भाव।

दूतपन–पुं० दे० 'दूतता'।

दूत-मंडल–पुं० [सं०] किसी काम के लिए भेजे हुए दूतों का समूह या दल।

दूतर*–वि० दे० 'दुस्तर'।

दूतायन–पुं० दे० 'दूतावास'।

दूतावास–पुं० [सं०] किसी न वह स्थान जहाँ दूसरे राष्ट्र या रा दूत और उसके साथी, कर्मचारी रहते हों। (लीगेशन)

दूतिका–स्त्री० दे० 'दूती'।

दूती–स्त्री० [सं०] प्रेमी और प्रेमिक समाचार एक दूसरे तक पहुँचाने स्त्री। कुटनी।

दूध–पुं० [सं० दुग्ध] १. वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की के स्तनों से निकलता है और जो छोटे बच्चे पीते हैं। पय। दुग्ध।
मुहा०–दूध का दूध और पानी का पानी होना = ऐसा न्याय होना कि किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्य हो। **दूध की मक्खी की तरह कालकर/फेंक देना** = किसी को तुच्छ पराया समझकर बिलकुल अलग कर दे **दूध के दाँत न टूटना** = बहुत छो बच्चा होना। सयाना न होना। **दूध फ या बिगड़ना** = खटाई आदि पड़ किसी और प्राकृतिक कारण से दूध का अलग और सार भाग अलग हो **(छाती में) दूध भर आना** = के प्रेम से माता के स्तनों में दूध उतर
कहा०–दूधों नहाओ पूतों फ धन, सन्तान आदि की यथेष्ट वृ (आशीर्वाद या शुभ कामना)
२. अनाज के हरे बीनों या पौधों की और डंठलों का वह सफेद रस जो तोड़ने पर निकलता है।

दूध-पिलाई–स्त्री० [हिं० दूध + पि १. दूध पिलानेवाली दाई। २. दूध के बदले में मिलनेवाला धन।

दूध-पूत–पुं० [हिं० दूध + पूत] धन सन्तति।

दूध-भाई–पुं० [हिं० दूध + भाई] [दूध-बहन] पारस्परिक संबंध के विचार

विस्तार, काल, संबंध आदि के विचार से बहुत अन्तर पर। 'पास' या 'निकट' का उलटा।

मुहा०-दूर करना = (क) अलग करना। हटाना। (ख) न रहने देना। नष्ट करना।

यौ०-दूर की बात = बहुत बारीक और समझदारी की बात। (ख) कठिन बात।

मुहा०-दूर भागना या रहना = बहुत बचकर और अलग रहना।

वि० जो अन्तर या फासले पर हो।

दूरता-स्त्री० [सं०] दूर होने का भाव। अंतर। दूरी। फासला।

दूरदर्शक-वि० [सं०] दूर तक की बात देखने या समझनेवाला।

दूरदर्शक यंत्र-पुं० [सं०] दूरबीन।

दूरदर्शिता-स्त्री० [सं०] दूर की बात सोचने या समझने का गुण।

दूरदर्शी-वि० [सं०] भविष्य में बहुत दूर तक की बातें देखने या सोचनेवाला। अग्रशोची।

दूर-पूर्व-पुं० [सं०] एशिया का पूर्वी भाग जिसमें जापान, कोरिया, चीन आदि देश हैं। (फार ईस्ट)

दूरबीन-स्त्री० [फा०] वह प्रसिद्ध यंत्र जिससे दूर की चीजें पास, साफ और बड़ी दिखाई देती हैं।

दूरवर्त्ती-वि० [सं०] दूर का। जो दूर हो।

दूरस्थ-वि० [सं०] दूर का।

दूरागत-वि०[सं०] दूर से आया हुआ।

दूरी-स्त्री० [सं० दूर + ई (प्रत्य०)] १. दूर होने की क्रिया या भाव। २. दो वस्तुओं के बीच का स्थान। अन्तर। फासला। (डिस्टेन्स)।

दूर्वा-स्त्री० [सं०] दूब। (घास)

दूलन*-पुं० दे० 'दोलन'।

दूलह-पुं० दे० 'दुलहा'।

दूलित*-वि० दे० 'दोलित'।

दूल्हा-पुं० दे० 'दुलहा'।

दूषक–वि॰ [सं॰] १. दूसरों पर दोष लगाने और उनकी निन्दा करनेवाला। २. दोष उत्पन्न करनेवाला (पदार्थ)।

दूषण–पुं॰ [सं॰] [वि॰ दूषणीय] १. अवगुण। दोष। ऐब। बुराई। २. दोष या ऐब लगाना।

दूषना*–स॰ [सं॰ दूषण] दोष लगाना।

दूषित–वि॰ [सं॰] १. जिसमें दोष हो। दोषयुक्त। २. बुरा। खराब।

दूष्य–वि॰ [सं॰] १. जिसमें दोष लगाया या निकाला जा सके। २. निन्दनीय।

दूसना–स॰ दे॰ 'दूषना'।

दूसर*–वि॰ दे॰ 'दूसरा'।

दूसरा–वि॰ [हिं॰ दो] १. क्रम में पहले के बाद पड़नेवाला। द्वितीय। २. जिसका प्रस्तुत विषय या बात से कोई संबंध न हो। अन्य। अपर। कोई और। (अदर)

दूहना–स॰ दे॰ 'दुहना'।

दूहा*–पुं॰ दे॰ 'दोहा'।

दृक्पथ–पुं॰ [सं॰] दृष्टि-पथ।

दृक्पात–पुं॰ [सं॰] दृष्टि-पात।

दृगंचल–पुं॰ [सं॰] १. पलक। २. कटाक्ष। चितवन। उदा॰–चंचल चारु दृगंचल सों।—केशव।

दृग*–पुं॰ [सं॰ दृक्] १. आँख। २. दृष्टि। ३. दो की संख्या।

दृग-मिचाव–पुं॰ दे॰ 'आँख-मिचौली'।

दृग्गोचर–वि॰ [सं॰] जो आँख से दिखाई दे।

दृढ़–वि॰ [सं॰] [भाव॰ दृढ़ता] १. अच्छी तरह बँधा या मिला हुआ। प्रगाढ़। २. पुष्ट। मजबूत। ३. कड़ा। ठोस। ४. बलवान। ५. हृष्ट-पुष्ट। ६. जो जल्दी खराब न हो। स्थायी। ७. निश्चित। ध्रुव। पक्का।

दृढ़-चेता–वि॰ [सं॰ दृढ़-चेतस्] पक्के विचारोंवाला।

दृढ़ता–स्त्री॰ [सं॰] १. दृढ़ या पक्के होने का भाव। २. अपने विचार, प्रति आदि पर जमे रहने का भाव।

दृढ़-प्रतिज्ञ–वि॰ [सं॰] अपनी प्रति पर दृढ़ रहनेवाला।

दृढ़ाई*–स्त्री॰ = दृढ़ता।

दृढ़ाना*–स॰ [सं॰ दृढ़] दृढ़ या प करना।

अ॰ दृढ़ या पक्का होना।

दृढ़ायन–पुं॰ [सं॰] १. दृढ़ या पक्का कर २. किसी की कही हुई बात, किये हुए अथवा किसी की नियुक्ति आदि को प या ठीक ठहराना। (कनफर्मेशन)

दृढ़ाव*–पुं॰ = दृढ़ता।

दृप्त वि॰ [सं॰] १. उग्र। प्रचंड। प्रज्वलित। ३. तेज-युक्त। ४. अभिमानी

दृप्ति–स्त्री॰ [सं॰] १. चमक। आभ २. तेजस्विता। ३. प्रकाश। रोशनी। अभिमान। गर्व। ५. उग्रता। प्रचंडता

दृश्य–वि॰ [सं॰] १. जो देखने में सके। जिसे देख सकें। चाक्षुष। (वि अल) २. जो दिखाई देता या साफ में आता हो। स्पष्ट। (विजिबुल) ३. दे योग्य। दर्शनीय। ४. सुन्दर।

पुं॰ १. वह पदार्थ, घटना या स्थल जो आँखों के सामने हो। दिखाई देनेवा चीजें या घटना। (व्यू) २. को कृतिक या अंकित स्थल या घटना, जि देखने योग्य। (सीनरी) ३. व जिसका अभिनय हो। नाटक। ४. 'दृश्य-जगत'।

दृश्य जगत–पुं॰ [सं॰] यह जगत हमें प्रत्यक्ष अपने सामने दिखाई देता है वास्तविक जगत। (फिनामेनल वर्ल्ड)

दृश्यालेख्य–पुं॰ दे॰ 'स्थलालेख्य'।

दृष्ट–वि॰ [सं॰] १. देखा हुआ। २. हुआ। ज्ञात। ३. गोचर। प्रत्यक्ष।

दृष्ट-कूट–पुं॰ [सं॰] १. पहेली। २. व कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ

दृष्टि-कूट–पुं० दे० 'दृष्ट-कूट'।

दृष्टि-कोण–पुं० [सं०] १. वह अंग या कोण जिससे कोई चीज या कोई बात सोची-समझी जाय। (एंगिल ऑफ विज़न) २. किसी विषय में किसी के विचार या दृष्टि से निश्चित किया हुआ मत। (व्यू-पॉइंट) ३. नाटक के किसी अंक का वह भाग जो एक बार में एक साथ सामने आता है और जिसमें किसी एक घटना का अभिनय होता है। (सीन)

दृष्टि-क्रम–पुं० [सं०] चित्रों आदि में वह अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को यथा-क्रम प्रत्येक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर और ठीक मान में दिखाई दे। मुनासिबत। (पर्सपेक्टिव)

दृष्टि गत–वि० [सं०] जो दिखाई पड़ता हो।

दृष्टि-गोचर–वि० [सं०] जो देखने में आवे।

दृष्टि-परंपरा–स्त्री० दे० 'दृष्टि-क्रम'।

दृष्टि-पात–पुं० [सं०] देखना।

दृष्टिबंध–पुं० [सं०] इंद्रजाल। जादू।

दृष्टि-बंधक–पुं० [सं० + हिं०] कोई चीज बंधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें रुपये देनेवाले को सिर्फ सूद मिलता है, संपत्ति की आय या देख-रेख से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। (सिम्पुल मॉर्टगेज)

दृष्टि-मांद्य–पुं० [सं०] आखों से कम दिखाई देने की अवस्था या रोग।

दृष्टिवंत–वि० [सं० दृष्टि + वंत (प्रत्य०)] १. जिसे दृष्टि हो। २. ज्ञानी। ज्ञानवान्।

देख–स्त्री० [हिं० देखना] देखने की क्रिया या भाव। (यौ० में; जैसे–देख-रेख।)

देखन*–स्त्री० दे० 'देख'।

देखनहारा*–पुं० [हिं० देखना] [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

देखना–स० [सं० दृश्] १. आँखों से किसी व्यक्ति या पदार्थ के रूप-रंग और आकार-प्रकार आदि का ज्ञान प्राप्त करना। अवलोकन करना।

मुहा०–**देखते-देखते** = तुरन्त। चटपट। **देखते रह जाना** = चकित होकर चुपचाप रह जाना। **देखना-सुनना** = जानकारी प्राप्त करना। पता लगाना। **देखा जायगा** = जो कुछ होगा, वह समझ लिया जायगा। (उपेक्षा)
२. जाँच या निरीक्षण करना। ३. ढूँढ़ना। पता लगाना। ४. परीक्षा करना। आजमाना। परखना। ५. देख-भाल या निगरानी करना। ६. अनुभव करना। भोगना। ७. ग्रन्थ, पत्र आदि पढ़ना।

देख-भाल–स्त्री० [हिं० देखना + भालना] १. जाँच-पड़ताल। २. देख-रेख। निगरानी।

देखराना*–स० दे० 'दिखलाना'।

देखरावना*–स० दे० 'दिखलाना'।

देख-रेख–स्त्री० [हिं० देखना + सं० प्रेक्षण] १. देख-भाल। २. निरीक्षण। निगरानी।

देखा-देखी–स्त्री० [हिं० देखना] एक दूसरे को देखने की क्रिया, दशा या भाव। साक्षात्कार।
क्रि० वि० दूसरे को कुछ करते देखकर उसी के अनुकरण पर (कोई काम करना)।

देखाना*–स० दे० 'दिखाना'।

देखावना–स० दे० 'दिखाना'।

देग–पुं० [फा०] दाल-चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन।

देगचा–पुं० [फा० देगचः] [स्त्री० अल्पा० देगची] छोटा देग।

देदीप्यमान–वि० [सं०] चमकता हुआ।

देन–स्त्री० [हिं० देना] १. देने की क्रिया या भाव। दान। २. किसी की दी हुई या किसी से मिली हुई वस्तु। प्रदत्त या प्राप्त वस्तु। जैसे–ईश्वरीय देन। (गिफ्ट) ३. वह धन जो किसी को देना या चुकाना हो। बाकी रकम। ४. किसी प्रकार का देन चुकाने का भार। धार्यत्त्व। (लायबिलिटी; अन्तिम दोनों अर्थों के लिए)

देनदार–पुं० [हिं० देना + फा० दार] १. ऋणी। कर्जदार। २. वह जिसके जिम्मे ऋ देन या देना बाकी हो। (लायबुल)

देन-लेन–पुं० [हिं० देना + लेना] लेने और देने का व्यवहार।

देनहारा*–वि० [हिं० देना] देनेवाला।

देना–स० [सं० दान] १. अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में पहुँचाना। दान करना। (कॉन्फर) २. हवाले करना। सौंपना। (डेलिवर) ३. सूचना, लेख आदि के रूप में या यों ही लिखकर यथा-स्था रखना या पहुँचाना। जैसे–मासिक पत्र में लेख देना। ४. अनुभव कराना। भोगाना। जैसे–कष्ट देना। ५. अपने में से उत्पन्न करके या निकालकर किसी को लाभ पहुँचाना। ६. प्रहार करना। मारना। ७. किसी प्रकार पूरा करना, रखना, लगान डालना आदि। (संयोज्य क्रिया के रूप में जैसे–रख देना, खपा देना, मिटा देना।
पुं० उधार लिया हुआ रुपया। कर्ज।

देमान*–पुं० दे० 'दीवान'।

देय–वि० [सं०] १. जो दिया जा सके २. जो बाकी होने के कारण दिया जाने हो। देन। दातव्य। (ड्यू) जैसे–कि पर कुछ देय रखना। ३. (धन) दिया जाने को हो। (पेएबुल) ४. जो किसी दूसरे को दी जा सकती हो (अलीनिएबुल)

देयक–पुं० [सं० देय + क (प्रत्य०)] पत्र, जिसमें किसी के नाम, विशेषतः के नाम यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति हमारे खाते में से इतने रुपये दे दो। (चे

देयादेश–पुं० [सं०] किसी को कुछ देने के संबंध में दिया जाने आदेश। यह आज्ञा कि अमुक व्यक्ति इतना धन दे दिया जाय। दानादेश (पे-आर्डर या पेमेन्ट-आर्डर)

देयासी–वि० [?] [स्त्री० देयासिन] झाड़-फूँक करनेवाला। ओझा।

] १. जितना समय लगना
समय । अतिकाल ।
। वक्त । जैसे–यह काम
।
[स्त्री० देवी] १. देवता ।
। २. बड़ों के लिए आदर-
।
। राक्षस ।
[सं०] देवताओं के ऋण से
लिए किये जानेवाले यज्ञादि
।
दे० 'देवर्षि' ।
[सं०] देवता की कन्या

[सं०] देवताओं को प्रसन्न
किये जानेवाले होम, पूजा
कार्य ।
[सं०] वसुदेव की स्त्री
श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था ।
-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण ।
[सं०] ऐरावत ।
[सं०] बृहस्पति ।
दे० 'देवोत्थान' ।
[सं०] स्वर्ग में रहनेवाले वे
पूज्य माने जाते हैं । सुर ।
[सं०] 'देवता' का भाव ।
[सं० देवदारु] एक बहुत
अलकतरा और तारपीन
निकलता है ।
[सं०] १. किसी देवता
की हुई या उसके मन्दिर
या नर्तकी । २. वेश्या ।
)
[सं०] वह जो देवता या
कोई सन्देशा लेकर आने-
। पैगंबर । (प्रॉफेट)
[सं० देवगृह] देवालय

देवधुनि–स्त्री० [सं०] गंगा नदी ।

देव-नागरी–स्त्री० [सं०] भारत की राष्ट्र-लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी, मराठी, राजस्थानी आदि अनेक देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं । इसके जिस रूप में ऋ, लृ और लॄ ये स्वर नहीं होते, वह हिन्दी वर्ण-माला कहलाता है । (बंगला, गुजराती, गुरुमुखी आदि इसी के रूपान्तर हैं ।)

देव-पथ–पुं० [सं०] आकाश ।

देव-पुरी–स्त्री० [सं०] अमरावती ।

देव-भाषा–स्त्री० [सं०] संस्कृत भाषा ।

देव-मंदिर–पुं० [सं०] देवता का मन्दिर । देवालय ।

देव-यज्ञ–पुं० [सं०] पंच महायज्ञों में से एक जिसमें होम आदि कृत्य किये जाते हैं ।

देव-यान–पुं० [सं०] वह मार्ग जिससे जीवात्मा ब्रह्म-लोक को जाता है ।

देव-यानी–स्त्री० [सं०] शुक्राचार्य की कन्या और राजा ययाति की पत्नी का नाम ।

देव-योनि–स्त्री० [सं०] स्वर्ग, अन्तरिक्ष आदि में रहनेवाले वे जीव, जो देवताओं के समान माने जाते हैं । जैसे–अप्सरा, यक्ष, किन्नर आदि ।

देवर–पुं० [सं०] [स्त्री० देवरानी] स्त्री के लिए उसके पति का छोटा भाई ।

देवरा–पुं० [सं०] छोटा देवता ।

देवराज–पुं० [सं०] इन्द्र ।

देवरानी–स्त्री० [हिं० देवर] पति के छोटे भाई अर्थात् देवर की स्त्री ।

देवराय*–पुं० दे० 'देवराज' ।

देवर्षि–पुं० [सं०] नारद, अत्रि, मरीचि, भृगु आदि जो ऋषि होने पर भी देवता माने जाते हैं ।

देवल–पुं० [सं० देवालय] देव-मन्दिर । पुं० [?] एक प्रकार का धान या उसका चावल ।

देव-लोक–पुं० [सं०] स्वर्ग ।

देव-वधू–स्त्री०[सं०] १.देवी । २. अप्सरा ।

देव-वाणी–स्त्री० [सं०] १. देवता या ईश्वर के मुँह से निकली हुई बात। २. ऐसी बात जो देवता या ईश्वर की कही हुई मानी जाय। ३. आकाश-वाणी। (ओरेकल) ४. संस्कृत भाषा जो देवताओं की भाषा मानी गई है।

देव-सभा–स्त्री० [सं०] देवताओं की सभा या समाज।

देव-स्थान–पुं० [सं०] देव-मन्दिर।

देवांगना–स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। २. अप्सरा।

देवानीक–पुं० [सं०] देवताओं की सेना।

देवार्पण–पुं० [सं०] देवता के निमित्त किसी वस्तु का अर्पण, दान या उत्सर्ग।

देवाल†–वि० [हिं० देना] १. देनेवाला। २. बेचनेवाला।

देवालय–पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. वह स्थान जहाँ देवता की मूर्त्ति हो। मन्दिर।

देवी–स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। २. प्राचीन भारत में वह रानी जिसका राजा के साथ अभिषेक होता था। पटरानी। ३. सदाचारिणी स्त्री। ४. स्त्रियों के नाम के साथ लगनेवाली एक आदर-सूचक उपाधि।

देवेन्द्र–पुं० [सं०] इन्द्र।

देवैया–वि० [हिं० देना] देनेवाला।

देवोत्तर–पुं० [सं०] देवता को चढ़ाया हुआ धन या सम्पत्ति।

देवोत्थान–पुं० [सं०] कार्त्तिक शुक्ला एकादशी को विष्णु का सोकर उठना, जो एक पर्व माना जाता है।

देश–पुं० [सं०] १. पृथ्वी का वह विशिष्ट विभाग जिसमें अनेक प्रान्त, नगर आदि हों। जनपद। २. एक राजा या शासक के अधीन अथवा एक शासन-पद्धति के अन्तर्गत रहनेवाला भू-भाग। राष्ट्र। ३. स्थान। जगह।

देशज–वि० [सं०] १. देश से उत्पन्न। २. (शब्द) जो किसी दूसरी भाषा से न निकला हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोलचाल से बन गया हो।

देश-निकाला–पुं० [हिं० देश + निकाला] देश से निकाले जाने का दण्ड। निर्वासन।

देश-भक्त–पुं० [सं०] [भाव० देश-भक्ति] जो अपने देश की सच्चे हृदय से उन्नति और कल्याण चाहता और उसकी सिद्धि के लिए प्रयत्न करता हो। (पेट्रिऑट)

देश-भक्ति–स्त्री० [सं०] अपने देश का कल्याण और उन्नति चाहने तथा उसके लिए प्रयत्न करते रहने की वृत्ति। (पेट्रिऑटिज्म)

देश-भाषा–स्त्री० [सं०] किसी देश या प्रदेश की भाषा। जैसे–बंगला या पंजाबी।

देशांतर–पुं० [सं०] १. दूसरा देश। विदेश। परदेस। २. पृथ्वी के मान-चित्र पर उत्तर-दक्षिण खींची हुई एक सर्व-मान्य मध्य-रेखा से पूर्व या पश्चिम के देशों या स्थानों की दूरी। लंबांश। (भूगोल)

देशाचार–पुं० [सं०] वह आचार या रीति-व्यवहार जो किसी देश में बहुत दिनों से होता आया हो।

देशाटन–पुं० [सं०] दूर दूर के देशों की यात्रा या भ्रमण।

देशी–वि० [सं० देशीय] १. देश का। देश सम्बन्धी। २. अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ। स्वदेश का। जैसे–देशी कपड़ा। पुं० संगीत में एक प्रकार का राग।

देशीय–वि० दे० 'देशी'।

देशी राज्य–पुं० वे अनेक छोटे-बड़े राज्य जो ब्रिट्रिश शासन-काल में सारे भारत में जगह जगह राजाओं-महाराजाओं के अधीन थे और जिनका बाद में स्वतन्त्र भारत में विलय हो गया। रियासतें।

देश्य–वि० [सं०] १. देश सम्बन्धी। देश का। २. जो अपने ही देश में हो या उत्पन्न हुआ हो। देशी। जैसे–देश्य भाषा।

देसंतर–पुं० = देशांतर।

देस–पुं० दे० 'देश'।

देसावर–पुं० दे० 'दिसावर'।

*स्त्री दे० 'देह'।

दें*-अव्य० [अनु०] से। (किसी क्रिया के प्रकार का सूचक) जैसे—चपाक दें।

दैअ*-पुं० दे० 'दैव'।

दैआ*-स्त्री० दे० 'दैया'।

दैउ*-पुं० दे० 'दैव'।

दैत्य-पुं० [सं०] १. असुर। राक्षस। २. लम्बा-चौड़ा या असाधारण बलवाला मनुष्य।

दैत्यारि-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. इन्द्र।

दैनंदिनी-स्त्री० दे० 'दैनिकी'।

दैन*-वि० = दायक। (यौगिक के अन्त में; जैसे—सुखदैन)

दैनदिन-वि० [सं०] नित्य का। क्रि० वि० १. प्रति दिन। २. दिनोदिन।

दैनिक-वि० [सं०] १. प्रति दिन से संबंध रखनेवाला। नित्य या रोज का। जैसे-दैनिक कार्य-क्रम। २. प्रति दिन या नित्य होनेवाला।
पुं० दे० 'दैनिक पत्र'।

दैनिक पत्र-पुं० [सं०] वह समाचार-पत्र जो नियमित रूप से नित्य प्रकाशित होता हो। हर रोज छपनेवाला अखबार।

दैनिकी-स्त्री० [सं० दैनिक] वह पुस्तिका जिसमें नित्य दिन भर के किये हुए कार्य आदि लिखे जाते हैं। (डायरी)

दैन्य-पुं० [सं०] १. 'दीन' का भाव। दीनता। २. वियोग, दुःख आदि से चित्त का बहुत नम्र हो जाना, जो काव्य में एक संचारी भाव माना गया है। कातरता।

दैया*-पुं० [हिं० दैव] दैव। ईश्वर। स्त्री० [हिं० दाई] माता। माँ।

दैव-वि० [सं०] १. देवता-संबंधी। २. देवता या ईश्वर का किया हुआ। पुं० १. प्रारब्ध। भाग्य। २. होनेवाली बात। होनहार। ३. ईश्वर। ४. आकाश। **मुहा०-दैव बरसना** = पानी बरसना।

दैव-कृत-वि० [सं०] ईश्वर का किया

हुआ (मनुष्य का नहीं) । दैवी ।

दैव-गति–स्त्री० [सं०] १. ईश्वरी बात या घटना । २. भाग्य ।

दैवज्ञ–पुं० [सं०] फलित ज्योतिष का ज्ञाता । ज्योतिषी ।

दैवत–वि० [सं०] १. देवता-संबंधी । २. देवता या ईश्वर का किया हुआ ।

दैव-योग–पुं० [सं०] संयोग । इत्तफाक ।

दैव-वश (वशात्)–क्रि० वि० [सं०] संयोग से । दैव-योग से । अकस्मात् ।

दैव-वाणी–स्त्री० [सं०] १. आकाश-वाणी । २. संस्कृत भाषा ।

दैव-वाद–पुं० [सं०] [वि० दैव-वादी] १. यह सिद्धान्त कि जो कुछ होता है, वह सब ईश्वर की प्रेरणा से ही होता है । नियतिवाद । २. यह सिद्धान्त कि सब बातें भाग्य से ही होती हैं ।

दैव-वादी–पुं० [सं० दैव-वादिन्] १. दैव को ही प्रधान कर्त्ता माननेवाला । २. भाग्य के भरोसे रहनेवाला ।

दैव-विवाह–पुं० [सं०] हिन्दू धर्म-शास्त्रों के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से वह, जिसमें यज्ञ करनेवाला पुरोहित को अपनी कन्या देता है ।

दैवागत–वि० [सं०] १. देवता या ईश्वर के कारण होनेवाला । दैवी । २. आकस्मिक ।

दैवात्–क्रि० वि० [सं०] अकस्मात् । दैव-योग से । अचानक ।

दैविक–वि० दे० 'दैवी' ।

दैवी–वि० [सं०] १. देवता-संबंधी । २. देवताओं का किया हुआ । ३. प्रारब्ध या संयोग से होनेवाला । ४. अचानक और आपसे आप होनेवाला । आकस्मिक ।

दैशिक–वि० [सं०] १. देश-सम्बन्धी । देश का । २. दे० 'जानपद' ।

दैहिक–वि० [सं०] १. देह-संबंधी । शारीरिक । २. देह से उत्पन्न ।

दो–वि०[सं०द्वि] एक और एक का योग ।

यौ०–दो-एक या दो-चार = कु थोड़े ।

मुहा०–दो दिन का = थोड़े दिनों का

दोआब(ा)–पुं० [फा०] किसी देश का भाग जो दो नदियों के बीच में पड़ता है।

दोउ (ऊ)*–वि० [हिं० दो] दोनों ।

दोख*–पुं० = दोष ।

दोखना*–स० [हिं० दोष] दोष लगान

दोखी*–पुं० = दोषी ।

दोगला–पुं० [फा० दोग़लः] [स्त्री० दोग १. वह जो अपनी माता के उप-पति उत्पन्न हुआ हो । जारज । २. वह जिसके माता-पिता भिन्न-भिन्न वर्गों जातियों के हों ।

दो-घड़िया (मुहूर्त्त)–पुं०[हिं०दो + घड़ फलित ज्योतिष में एक प्रकार का मुहूर्त्त बहुत जल्दी होनेपर तुरंत निकाला जाता है

मुहा०–दो-घड़िया साधना = तु उक्त प्रकार का मुहूर्त्त निकालकर उ अनुसार कार्य करना ।

दोच(न)*–स्त्री० [हिं० दबोचना] दुबधा । असमंजस । २. दबाव । ३. दुःख

दोचना*–स० [हिं० दोच] दबाव डाल

दो-चित्ता–वि० [हिं० दो + चित्त] [भा स्त्री० दो-चित्ती] जिसका मन दो तर बातों में लगा हो । उद्विग्न-चित्त ।

दोजख–पुं० [फा०] [वि० दोजखी] नरक (मुसल०)

दोजखी–पुं० [फा०] बहुत बड़ा पापी दोजख या नरक में जाने को हो । नार

दो-तरफा–वि० [फा०] दोनों ओर हो या लगनेवाला ।

क्रि० वि० दोनों तरफ से । दोनों ओर से ।

दो-तल्ला–वि० [हिं० दो + तल] दो त या खंड का । दो-मंजिला । (मकान)

दोतारा–पुं० [हिं० दो + तार (धातु का)] दो तारों का एक प्रकार का बाजा ।

दो-धारा–वि० [हिं० दो + धार] [स्त्री०

(ख) जिसमें दोनों ओर

दूध] एक प्रकार
जो बादाम, कमलगट्टे,
पीसकर दूध में उबालने

दो] १. तराई । दून । २.
का प्रदेश । दोआबा ।
[हिं० दो + नल] जिसमें
जैसे-दो-नली बन्दूक ।
द्रोण] [स्त्री० दोनी]
के आकार का पात्र ।
दो] वे विशिष्ट दो, जिनमें
जा सके । उभय ।
[हिं० दो + पल्ला] [स्त्री०
दो पल्ले हों ।
की हलकी टोपी ।
[हिं० दो + पहर] वह समय
आकाश में पहुँचता है ।

[हिं० दो + पीठ] १. दे०
दोनों ओर छपा या लिखा
)।
[हिं० दो + अ० फसल]
दोनों फसलों से सम्बन्ध
२. जो दोनों ओर लग सके
। जैसे-दो-फसली बात ।
] दोष । अपराध ।
'दुबधा' ।
[फा०] एक बार हो
दूसरी बार । एक बार और ।
दे० 'दो-तल्ला' ।
[हिं० दो + मुँह] १. जिसके
। जैसे-दो-मुँहा साँप । २.
। कपटी ।
दो' । २. दे० 'दोनों' ।
[हिं० दो + रंग] [स्त्री०
रंगोंवाला । २. जो दोनों

ओर लग या चल सके ।

दोरदंड*-वि० दे० 'दुर्दंड' ।

दो-रसा वि० [हिं० दो + रस] दो प्रकार के रस या स्वादवाला ।

यौ०-दो-रसे दिन = (क) गर्भावस्था के दिन । (ख) दो ऋतुओं के बीच के दिन ।

दोरी†-स्त्री० = डोरी (रस्सी) ।

दो-रुखा-वि० [फा०] [स्त्री० दो-रुखी] १. जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों । २. जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो ।

दोल-पुं० दे० 'दोला' ।

दो-लत्ती-स्त्री० दे० 'दुलत्ती' ।

दोला-स्त्री० [सं०] [वि० दोलित] १. हिंडोला । झूला । २. डोली या चंडोल ।

दोलित-वि० [सं०] [स्त्री० दोलिता] हिलता या झूलता हुआ ।

दोष-पुं० [सं०] [वि० दूषित, दूष्य, दूषणीय] १. वह बात जिसके कारण कोई व्यक्ति या वस्तु खराब समझी जाय । अवगुण । बुराई । खराबी । (फॉल्ट)

मुहा०-दोष लगाना = किसी के सम्बन्ध में यह कहना कि उसमें अमुक दोष है ।

२. कोई ऐसी बात या अभाव जिसके कारण कोई वस्तु पूरी तरह से उपयोगी न हो । अपूर्णता । त्रुटि । कमी । (डिफेक्ट) ३. किसी पर लगाया हुआ अपराध । अभियोग । ४. अपराध । कसूर । ५. पाप । पातक । ६. शरीर में के वात, पित्त और कफ, जिनके बिगड़ने से रोग उत्पन्न होते हैं । *पुं० [सं० द्वेष] द्वेष । वैर ।

दोषन*-पुं० [सं० दूषण] दोष ।

दोषना*-स० [सं० दूषण + ना (प्रत्य०)] १. दोष लगाना । २. अपराध लगाना ।

दोषारोपण-पुं० [सं० दोष + आरोपण] [वि० दोषारोपित] किसी पर कोई दोष लगाना । यह कहना कि इसने अमुक दोष या अपराध किया है ।

दोषिन†–स्त्री० [हिं० दोषी] १. अपराधिनी। २. पाप करनेवाली स्त्री। ३. दुष्ट स्वभाववाली स्त्री।

दोषिल*–वि० दे० 'दूषित'।

दोषी–पुं० [सं० दोषिन्] १. जिसमें दोष हो। २. अपराधी। कसूरवार। ३. पापी। ४. अभियुक्त।

दोस*–पुं० दे० 'दोष'।

दोसदारी*–स्त्री० दे० 'दोस्ती'।

दोस्त–पुं० [फा०] [भाव० दोस्ती] मित्र। स्नेही।

दोस्ताना–पुं० [फा०] मित्रता।
वि० दोस्ती का। मित्रता का।

दोस्ती–स्त्री० [फा०] दोस्तों या मित्रों में होनेवाला पारस्परिक सम्बन्ध। मित्रता।
पुं० वह रोटी या पराँठा जो दो अलग अलग पेड़े बेलकर और तब दोनों को एक साथ सटाकर पकाते हैं।

दोह*–पुं० दे० 'द्रोह'।

दोहग*–पुं० = दुर्भाग्य।

दोहता–पुं० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दोहती] लड़की का लड़का। नाती।

दो-हत्थड़–वि० [हिं० दो + हाथ] दोनों हाथों से मारा जानेवाला। (थप्पड़)

दोहद–स्त्री० [सं०] १ गर्भवती स्त्री की इच्छा या वासना। २. गर्भावस्था। ३. गर्भ के लक्षण या चिह्न। ४. यह प्राचीन भारतीय विश्वास कि सुन्दर स्त्री के स्पर्श से प्रियंगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, पैरों के आघात से अशोक, देखने से तिलक, मधुर गान से आम, और नाचने से कचनार आदि वृक्ष फूलते हैं।

दोहदवती–स्त्री० [सं०] गर्भवती।

दोहन–पुं० [सं०] १. गाय, भैंस आदि का दूध दुहना। २. दोहनी।

दोहना*–स० [सं० दूषण] १. दोष लगाना। २. तुच्छ ठहराना।
स० दे० 'दुहना'।

दोहनी–स्त्री० [सं०] १. वह बरतन जिसमें दूध दुहते हैं। २. दूध दुहने का काम।

दोहर–स्त्री० [हिं० दो + घड़ी = तह] दो पल्लों या परतों की एक प्रकार की चादर।

दोहरना–अ० [हिं० दोहरा] १. दे० 'दोहराना'। २. दोहरा करना।

दोहरा–वि० [हिं० दो + हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० दोहरी] १. जिसमें दो पल्ले, परतें या तहें हों। २. दो बार या दूसरी बार का।
*पुं० दोहा नाम का छन्द।

दोहराई–स्त्री० [हिं० दोहराना] दोहराने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

दोहराना–स० [हिं० दोहरा] १. कोई बात या काम दूसरी बार कहना या करना। पुनरावृत्ति करना। (रिपीट) २. किसी किये हुए काम को जाँचने के लिए फिर से अच्छी तरह देखना। (रिवाइज) ३. कपड़े, कागज आदि की दो तहें करना। दोहरा करना।

दोहा–पुं० [हिं० दो + हा (प्रत्य०)] चरणों का एक प्रसिद्ध हिन्दी छन्द (इसके चरण के खंडों को उलट देने से सोरठा हो जाता है।]

दोहाई–स्त्री० दे० 'दुहाई'।

दोहाग*–पुं० दे० 'दुहाग'।

दोहिला*–वि० [स्त्री० दोहिली] = कठिन।

दोही*–स्त्री० दे० 'दुहाई'।

दौं*–अव्य० १. दे० 'धौं'। २. दे० 'दौ'।

दौंकना*–अ० दे० 'दमकना'।

दौंचना*-स० दे० 'दोचना'।

दौंरी–स्त्री० दे० 'दँवरी'।

दौ*–स्त्री० [सं० दव] १. जंगल की आग। २. वन या जंगल। ३. संताप। कष्ट। ४. दाह। जलन।

दौड़–स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की क्रिया या भाव।

मुहा०–दौड़ मारना या **लगाना** = (क) दौड़ते हुए जाना। (ख) लम्बी यात्रा करना।

। ३. प्रयत्न में इधर-
ने की प्रतियोगिता।
योग आदि की सीमा।
। लम्बाई। ७. अप-
मारकर पकड़ने के लिए
हुए कहीं जाना।
[हिं० दौड़ + धपना] वह
उधर दौड़ना पड़े।
[सं० धोरण] १. बहुत जल्दी
चलना।
धूप।
दौड़ना = धावा या चढ़ाई
दौड़कर **जाना** = बार
जाना।
उधर आना-जाना। ३.
होना। जैसे–बिजली दौड़ना।
[हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की
। २. दौड़-धूप।
वि० [हिं० दौड़]
।
[हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की
। २. लंबाई। विस्तार।
[हिं० 'दौड़ना' का स०] १.
में प्रवृत्त करना। २. किसी
बार-बार कहीं भेजना। ३.
जगह से दूसरी जगह तक
ले जाना। जैसे–रस्सी या
।
] दूत का काम।
'दमन'।
दमनक] एक पौधा
में तेज गंध निकलती है।
।
] दमन करना।
] १. चक्कर। भ्रमण।
वैभव के दिन।
= वैभव या प्रताप के

३. बारी। पारी। ४. दे० 'दौरा'।

दौरना*–अ० दे० 'दौड़ना'।

दौरा–पुं० [अ० दौर] १. चक्कर। भ्रमण। २. अधिकारी का अपने अधिक्षेत्र में जाँच-पड़ताल के लिए अनेक स्थानों पर जाना। **मुहा०–(मुकदमा) दौरा सपुर्द करना** = विचार के लिए सेशन जज के न्यायालय में भेजना। **दौरे पर जाना** = अधिकारी का अपने अधिक्षेत्र में जाँच-पड़ताल या निरीक्षण के लिए जाना। ३. बीच-बीच में आते-जाते रहना। फेरा। ४. उस रोग का प्रकट होना जो समय समय पर या रह-रहकर होता हो।
पुं० (सं० द्रोण) बाँस की पट्टियों का बना टोकरा।

दौरा जज–पुं० [हिं० दौरा + अं० जज] सत्र न्यायालय का प्रधान अधिकारी या विचारक।

दौरात्म्य–पुं० [सं०] दुरात्मा होने का भाव। दुर्जनता।

दौरान–पुं० [फा०] १. दौरा। चक्र। २. दो घटनाओं के बीच का समय।

दौरी–स्त्री० [हिं० दौरा] छोटी टोकरी।

दौर्बल्य–पुं० [सं०] दुर्बलता।

दौलत–स्त्री० [अ०] धन। सम्पत्ति। (वेल्थ)

दौलत-खाना–पुं० [फा०] निवास-स्थान। घर। (बड़ों के लिए आदरार्थक)

दौलतमंद–वि० [फा०] [भाव० दौलतमंदी] धनवान। अमीर।

दौवारिक–पुं० [सं०] द्वारपाल।

दौहित्र–पुं० [सं०] दोहता। नाती।

द्याना(वना)*–स० दे० 'दिलाना'।

द्यु–पुं० [सं०] १. आकाश। २. स्वर्ग। ३. सूर्य्य-लोक।

द्युति-स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा।

द्युतिमान्–वि० [सं० द्युतिमत्] [स्त्री० द्युतिमती] जिसमें चमक या आभा हो।

द्युलोक–पुं० [सं०] स्वर्ग-लोक।

द्यूत–पुं० [सं०] दाँव लगाकर खेला जानेवाला हार-जीत का खेल । जूआ ।

द्यूत-क्रीड़ा–स्त्री० [सं०] हार-जीत के लिए कुछ धन या दाँव लगाकर खेला जानेवाला जूआ या इस प्रकार होनेवाला खेल ।

द्योतक–वि० [सं०] १. प्रकाश करनेवाला । २. दिखलाने या बतलानेवाला । सूचक ।

द्योतन–पुं० [सं०] [वि० द्योतित] प्रकाशित करना, दिखलाना या बतलाना ।

द्योहरा*–पुं० दे० 'देवालय' ।

द्यौस* पुं० [सं० दिवस] दिन ।

द्रव–वि० [सं०] [वि० द्रवित, भाव० द्रवता] १. पानी की तरह पतला । तरल । २. गीला । ३. गला या पिघला हुआ ।

द्रवण–पुं० [सं०] [वि० द्रवित] १. गलने, पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव । २. चित्त के कोमल होने की वृत्ति ।

द्रवण-शील–वि० [सं०] [भाव० द्रवणशीलता] जो पिघलता या पसीजता हो ।

द्रवना*–अ० [सं० द्रवण] १. प्रवाहित होना । बहना । २. पिघलना । पसीजना । ३. दयार्द्र होना ।

द्रविड़–पुं० [सं० तिरमिक्र] १. दक्षिण भारत का एक देश । २. इस देश का निवासी । ३. ब्राह्मणों का एक विभाग जिसके अंतर्गत आंध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड़ और महाराष्ट्र ये पाँच वर्ग हैं ।

द्रवित–वि० दे० 'द्रवीभूत' ।

द्रवीभूत–वि० [सं०] १. जो तरल या द्रव हो गया हो । २. पिघला हुआ । ३. जिसके मन में दया आ गई हो । दयार्द्र । दयालु ।

द्रव्य–पुं० [सं०] [भाव० द्रव्यता] १. वस्तु । पदार्थ । चीज । २. वह मूल तथा विशुद्ध तत्व जिसमें केवल गुण अथवा उसके साथ कोई क्रिया भी हो, तथा जो समवायि कारण हो और जिसमें कोई दूसरा तत्त्व या द्रव्य न मिला हो । (वैशेषिक में ये नौ द्रव्य कहे गये हैं-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन । पर आज-कल के वैज्ञानिकों का मत है कि जल और वायु आदि वस्तुतः द्रव्य नहीं हैं, बल्कि कई दूसरे मूल द्रव्यों के योग से बने हैं और वास्तविक या मूल द्रव्य सौ के लग-भग हैं ।) ३. सामग्री । सामान । ४. धन । दौलत । ५. लेन-देन के लिए रुपये-पैसे या दूसरे सिक्के, नोट आदि । (मनी)

द्रष्टव्य–वि० [सं०] १. देखने योग्य । दर्शनीय । २. जो दिखाया जाने को हो ।

द्रष्टा–वि० [सं०] देखनेवाला । दर्शक । पुं० सांख्य के अनुसार पुरुष और योग के अनुसार आत्मा ।

द्राक्ष शर्करा–स्त्री० [सं०] दाख या अंगूर के रस में से निकाली हुई चीनी । (ग्ल्यूकोज)

द्राक्षा–स्त्री० [सं०] दाख । अंगूर ।

द्राव–पुं० [सं०] १. गमन । २. हरण । ३. बहने या पसीजने की क्रिया ।

द्रावक–वि० [सं०] [स्त्री० द्राविका] १. ठोस चीज को पानी की तरह पतला करने, गलाने या बहानेवाला । २. हृदय को दयार्द्र बनानेवाला ।

द्रावण–पुं० [सं०] गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव ।

द्राविड़–वि० [सं०] [स्त्री० द्राविड़ी] द्रविड़ देश का ।

यौ०–द्राविड़ प्राणायाम = कोई काम सीधी तरह से नहीं, बल्कि कुछ घुमा-फिराकर या उलटे ढंग से करना ।

द्राविड़ी–वि० [सं०] द्रविड़-संबंधी ।

सम०–द्राविड़ी प्राणायाम = दे० 'द्राविड़' के अन्तर्गत 'द्राविड़ प्राणायाम' ।

द्रुत*–वि० [सं०] १. द्रवीभूत । गला या पिघला हुआ । २. शीघ्रगामी । तेज । पुं० १. संगीत में ताल की एक मात्रा का आधा । २. संगीत में मध्यम से कुछ तेज

सं॰ द्रुतगामिन्] [स्त्री॰
तेज चलनेवाला ।
[सं॰] एक प्रकार का
प्रत्येक चरण एक नगण,
एक रगण का होता है ।

] द्रुव । पेड़ ।
] १. जल आदि रखने का
पुराना बरतन । कठवत ।
या सोलह सेर की एक
। ३. पत्तों का दोना । ४.
। ५. दे॰ द्रोणाचार्य' ।
[सं॰] महाभारत काल
वीर जो भरद्वाज ऋषि के.

[सं॰] १. डोंगी । नाव ।
। ३. काठ का बड़ा थाल ।
दो पहाड़ों के बीच की भूमि ।
।
[सं॰][वि॰ द्रोही] दूसरे को
वृत्ति । वैर । द्वेष ।
[सं॰ द्रोहिन्] [स्त्री॰ द्रोहिणी]
हानि पहुँचानेवाला ।
[सं॰] राजा द्रुपद की
जो प्रवाद के अनुसार पाँचो
गई थी ।
[सं॰] १. युग्म । मिथुन ।
। जोड़ । ३. दो पक्षों
लड़ाई । द्वंद्व-युद्ध । ४.
। ५. राग-द्वेष आदि मनो-
दो वस्तुओं का जोड़ा । जैसे–
सुख-दुःख आदि । ७. कष्ट ।
। ऊधम । ९. दुबधा ।
दुंदुभी] दुंदुभी ।
[सं॰ द्वंद] झगड़ालू ।
[सं॰] १. दे॰ 'द्वंद' । २. एक
जिसमें दोनों पद प्रधान

होते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है । जैसे–दाल-चावल ।

द्वंद्व-युद्ध–पुं॰ [सं॰] दो पुरुषों या दलों में होनेवाली बराबरी की लड़ाई ।

द्वय–वि॰ [सं॰] दो ।

द्वयता–स्त्री॰ [सं॰ द्वय + ता (प्रत्य॰)] १. दो का भाव । द्वैत । २. अपनेपन और परायेपन का भाव । भेद-भाव ।

द्वात*–स्त्री॰ दे॰ 'दवात' ।

द्वादश–वि॰ [सं॰] १. दस और दो का योग । बारह । २. बारहवाँ ।

द्वादश-बानी–वि॰ दे॰ 'बारह-बानी' ।

द्वादशाह–पुं॰ [सं॰] किसी के मरने पर बारहवें दिन होनेवाला श्राद्ध ।

द्वादशी–स्त्री॰ [सं॰] चान्द्र मास के किसी पक्ष की बारहवीं तिथि ।

द्वादस-बानी*–वि॰ दे॰ 'बारह-बानी' ।

द्वापर–पुं॰ [सं॰] चार युगों में से तीसरा युग, जो ८६४००० वर्षों का माना गया है।

द्वार–पुं॰ [सं॰] १. इधर-उधर घिरे हुए स्थान के बीच में वह खुला स्थान, जिससे होकर लोग अन्दर-बाहर आते-जाते हों । २. घर में आने-जाने के लिए दीवार में बना हुआ थोड़ा-सा खुला स्थान । दरवाजा । ३. इन्द्रियों के मार्ग या छेद । जैसे–आँख, नाक, कान आदि । ४. कोई काम करने का वह विधि-विहित या नियत मार्ग जो उपाय या साधन के अंग के रूप में हो । (चैनेल)

द्वारका–स्त्री॰ [सं॰] काठियावाड़ की एक प्राचीन पवित्र पुरी या नगरी ।

द्वारकाधीश–पुं॰ [सं॰] श्रीकृष्ण ।

द्वारकानाथ–पुं॰ = श्रीकृष्ण ।

द्वार-चार–पुं॰ दे॰ 'द्वार-पूजा' ।

द्वार-पटी–स्त्री॰ [सं॰] दरवाजे पर टाँगने का परदा ।

द्वारपाल–पुं॰ [सं॰] दरबान ।

द्वार-पूजा–स्त्री॰ [सं॰] विवाह की एक

रसम जो लड़कीवाले के द्वार पर बरात पहुँचने के समय होती है और जिसमें वर का पूजन होता है।

द्वारा–पुं० [सं० द्वार] द्वार। दरवाजा। अव्य० [सं० द्वारात्] जरिये से। साधन से।

द्वारावती–स्त्री० [सं०] द्वारकापुरी।

द्वारी*–स्त्री० [सं० द्वार] छोटा दरवाजा। पुं० दे० 'द्वारपाल'।

द्वि–वि० [सं०] दो।

द्विक–वि० [सं०] जिसमें दो हों।

द्विकर्मक–वि० [सं०] (क्रिया) जिसके दो कर्म हों। (व्याकरण)

द्विकल–पुं० [हिं० द्वि + कला] छंदः-शास्त्र में दो मात्राओं का समूह या वर्ग।

द्विगु–पुं० [सं०] वह कर्मधारय समास जिसमें पूर्व-पद संख्यावाचक होता है।

द्विगुण–वि० [सं०] दुगना। दूना।

द्विगुणित–वि० [सं०] १. दो से गुणा किया हुआ। २. दूना। दुगना।

द्विगूढ़–पुं० [सं०] वह गीत जिसमें सब पद सम और सुन्दर हों, संधियाँ वर्त्तमान हों तथा जो रस और भाव से पूर्ण रूप से युक्त हो। (नाट्य-शास्त्र)

द्विज–वि० [सं०] दो बार जनमा हुआ। पुं० [सं०] १. अंडज प्राणी जो पहले अंडे में आते और तब अंडे से निकलकर दोबारा जन्म लेते हैं। जैसे–चिड़िया, साँप आदि। २. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिनका यज्ञोपवीत संस्कार के समय फिर से जन्म लेना माना जाता है। ३. ब्राह्मण। ४. चन्द्रमा। ५. दाँत, जो एक बार गिरकर फिर निकलते हैं। उदा०–नासिका चारु, सुकपोल, द्विज ब्रजदुति।—तुलसी।

द्विजन्मा–वि० पुं० = द्विज।

द्विजपति–पुं० = द्विजराज।

द्विजराज–पुं० [सं०] १. ब्राह्मण। २. चन्द्रमा।

द्विजाति–पुं० दे० 'द्विज'।

द्विजेंद्र(जेश)–पुं० दे० 'द्विजपति'।

द्वितक–पुं० [सं०] १. किसी को दी जानेवा पावती (रसीद), प्राप्यक या सूचना आदि की वह प्रतिलिपि जो अपने पास रखी जा है। २. किसी दिये हुए लेख आदि की व दूसरी प्रतिलिपि जो पानेवाले को फिर से दी जाय। (डुप्लिकेट)

द्वितीय–वि० [सं०] [स्त्री० द्वितीया] दूसरा।

द्वितीयक–वि० [सं०] जिसका स्था प्रमुख या सबसे पहलेवाले के बाद हो। दूसरे स्थान का। (सेकेन्डरी)

द्वितीया–स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष की दूसरी तिथि। दूज। वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।

द्वित्व–पुं० [सं०] १. दो का भाव। दोहरे होने का भाव। दोहरापन।

द्विदल–वि० [सं०] जिसमें दो दल हों। पुं० दो दलोंवाला अन्न। दाल।

द्विधा–क्रि० वि० [सं०] १. दो प्रका से। दो तरह से। २. दो भागों में।

द्वि-पक्षी–वि० [सं०] १. दो पक्षों पाश्वों से सम्बन्ध रखनेवाला। (बाई-लेटर

द्विपद–वि० [सं०] दो पैरोंवाला। पुं० मनुष्य।

द्विपार्श्विक–वि० [सं०] १. दो या दो पाश्वों से सम्बन्ध रखनेवाला। २. दो दोनों पक्षों की ओर से होनेवाला। (लेटरल)

द्विबाहु–वि० [सं०] दो बाँहोंवाला।

द्विभाषी–पुं० दे० 'दुभाषिया'।

द्विरद–पुं० [सं०] हाथी। वि० [स्त्री० द्विरदा] दो दाँतोंवाला।

द्विरागमन–पुं० [सं०] विवाह के बा वधू का अपने ससुराल में दूसरी बार आना। गौना।

द्विरुक्त–वि० [सं०] दो बार या दूसरी बार कहा हुआ।

] पहले या एक बार
कहना ।
] भ्रमर । भौंरा ।
] दो तरह का ।
है ।
दे० 'दुबधा' ।
द्विवेदिन्] ब्राह्मणों की
है ।
] वह जन्तु जिसे दो ही

] १. चारो ओर जल से
। टापू । २. पुराणानुसार
विभाग । यथा-जंबू द्वीप,
द्वीप, कुश द्वीप, क्रौंच
और पुष्कर द्वीप ।
[सं०] समुद्र में होनेवाला
और पास-पास के द्वीपों
समूह । (आर्कीपैलेगो)
[सं०] १. किसी को एक
से दूसरे द्वीप में भेजने की
। २. किसी बड़े या विकट
दंड के रूप में देश के
में रहने के लिए भेजना ।
(ट्रांसपोर्टेशन)
] १. कोई बात मन को अप्रिय
चिढ़ । २. शत्रुता । वैर ।
द्वेषिन्] [स्त्री० द्वेषिणी]
करनेवाला । २. शत्रु ।
'द्वेषी' ।
] १. दो । २. दोनों ।
[हिं० दो + एक] एक या दो

(अर्थात् बहुत थोड़े) । कुछ । (व्यक्ति या पदार्थ)

द्वैज*–स्त्री० दे० 'दूज' ।

द्वैत–पुं० [सं०] १. दो का भाव । युग्म । युगल । २. अपने और पराये का भाव । भेद-भाव ।

द्वैतवाद-पुं० [सं०] १. वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें आत्मा और परमात्मा या जीव और ईश्वर को दो भिन्न तथ्य मानकर विचार किया जाता है । २. दो स्वतंत्र और भिन्न सिद्धान्त एक साथ माननेवाली विचार-शैली । (ड्यूअलिज़्म)

द्वैध–पुं० [सं०] १. विरोध । २. राजनीति में दूसरे राष्ट्रों के साथ व्यवहार करते समय मुख्य उद्देश्य छिपाकर दूसरा उद्देश्य प्रकट करना । (डिप्लोमेसी) ३. वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों । (डायार्की)

द्वैपायन–पुं० [सं०] वेद व्यास ।

द्वैमातुर–पुं० [सं०] गणेश ।

द्वै-राज्य–पुं० [सं०] एक प्रकार का आधुनिक शासन-प्रणाली जिससे किसी छोटे और दुर्बल देश पर दो बड़े और प्रबल राज्य मिलकर शासन करते और उसे अपने सम्मिलित नियंत्रण में रखते हैं । (कॉन्डोमीनियम)

द्वैवार्षिक–वि० [सं०] प्रति दो वर्षों पर होनेवाला । (बाईनियल)

द्वौ*–वि० [हिं० दो + ऊ, दोउ] दोनों । वि० दे० 'दव' ।

ध

माला का उन्नीसवाँ व्यंजन
चौथा वर्ण, जिसका उच्चा-
होता है । संगीत में यह
संक्षिप्त रूप और सूचक
है ।

धंधक–पुं० [हिं० धंधा] संसार के काम-धंधों का झगड़ा । जंजाल ।

धंधक-धोरी–पुं० [हिं० धंधक + धोरी] सदा किसी न किसी काम या जंजाल में लगा या फँसा रहनेवाला । बहु-धंधी ।

धंधरक*–पुं० दे० 'धंधक'।

धँधला*–पुं० [हिं० धंधा] १. आडम्बर। ढोंग। २. बहाना। मिस।

धँधलाना–अ० [हिं० धँधला] १. छल-कपट करना। २. आडम्बर या ढोंग रचना।

धंधा–पुं० [सं० धन-धान्य] १. जीविका के लिए किया जानेवाला काम। उद्योग। काम-काज। २. व्यवसाय। कार-बार। ३. भोजन बन जाने के बाद बरतन आदि माँजने और चूल्हा-चौका साफ करने या धोने आदि का काम।

धँधार–स्त्री० [हिं० धूआँ] आग की लपट।

धँधारी*–स्त्री० दे० 'गोरख-धंधा'।

धँधोर*–पुं० [अनु० धायँ धायँ = आग जलना] १. होली। २. आग की लपट।

धँवना*–स० दे० 'धौंकना'।

धँसना–अ० [सं० दंशन] [भाव० धँसन, धँसान] १. ऊपर से दाब पाकर कड़ी वस्तु का अपेक्षाकृत कोमल वस्तु में घुसना। गड़ना।

मुहा०–जी या मन में धँसना = मन पर प्रभाव उत्पन्न करना।

२. अपने लिए जगह निकालते हुए आगे बढ़ना या अन्दर घुसना। ३. नीचे की ओर धीरे धीरे बैठना या जाना।

*अ० [सं० ध्वंसन] नष्ट होना।

धँसान–स्त्री० [हिं० धँसना] १. धँसने की क्रिया, भाव या ढंग। २. वह जगह जिसपर कोई चीज धँसे।

धँसाना–स० हिं० 'धँसना' का स०।

धँसाव–पुं० दे० 'धँसान'।

धक–स्त्री० [अनु०] १. भय आदि से हृदय की गति तीव्र होने का भाव या शब्द।

मुहा०–जी धक धक करना = कलेजा धड़कना। **जी धक हो जाना** = (क) डर, दुःख आदि से जी दहल जाना। (ख) चौंक उठना।

२. मन की उमंग।

क्रि० वि० अचानक। सहसा।

धकधकाना*–अ० [अनु० धक] १. भय, उद्वेग आदि से हृदय की गति का तीव्र होना। +२. (आग) दहकना। सुलगना।

धकधकी–स्त्री० [अनु० धक] १. हृदय की धड़कन। २. पेट और छाती के बीच का वह गड्ढा जिसके नीचे धड़कन होती है। धुकधुकी। ३. हृदय। कलेजा। ४. किसी बात की आशंका या भय।

धकना*–अ० = दहकना।

धक-पक–स्त्री० [अनु०] किसी अनिश्चित या भावी बात के सम्बन्ध में मन में होने वाली दुबधा या आशंका।

धकपकाना–अ० [अनु० धक] जी में धक-पक होना। डर या आशंका होना।

धकपेल*–स्त्री० दे० 'धक्कम धक्का'।

धका*–पुं० दे० 'धक्का'।

धकियाना–स० = धक्का देना।

धकेलना–स० दे० 'ढकेलना'।

धक्कम-धक्का–पुं० [हिं० धक्का] १. भीड़ में आदमियों का एक दूसरे को धक्का देना। धकापेल। २. ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से धक्के खाते हों।

धक्का–पुं० [सं० धम, हिं० धमक] १. एक वस्तु का दूसरी के साथ वेग पूर्ण स्पर्श। टक्कर। २. झोंका। ३. ढकेलने की क्रिया या भाव। ४. बहुत भीड़। कशमकश। ५. दुःख, शोक, हानि आदि का आघात। ६. विपत्ति। संकट। ७. हानि।

धक्काड़–वि० [अनु० धाक] १. जिसकी खूब धाक जमी हो। २. किसी विषय में बहुत बढ़ा-चढ़ा। ३. बहुत बड़ा।

धक्का-मुक्की–स्त्री० [हिं० धक्का + मुक्का] एक दूसरे को ढकेलना और मुक्के मारना।

धगधगाना*–अ० दे० 'धकधकाना'।

धगड़ा–पुं० [सं० धव = पति] [स्त्री० धगड़ी] स्त्री का यार। उप-पति।

धगा*–पुं० दे० 'धागा'।

] १. धक्का। २.

] १. सजावट या

=तैयारी। सजावट।

। ३. बैठने-उठने

। ४. शोभा।

'धजा'।

=धजी।

[हिं० धज + ईला (प्रत्य०)]

] अच्छी धजवाला।

[सं० धटी] धातु, लकड़ी,

आदि में से कटकर निकली हुई

उड़ाना = (क) टुकड़े-

(ख) (किसी की) पूरी दुर्गति

करना।

[हिं० धड़ + अंग] नंगा।

[सं० धर] १. शरीर में गले के

का सारा भाग। २. पेड़

] अचानक गिरने या टकराने

शब्द।

[अनु० धड़] १. हृदय के

, भाव या शब्द। हृदय का

। २. आशंका। खटका।

= बिना भय या संकोच के।

करने से पहले होनेवाली

खुलना = कोई काम

पर उसके सम्बन्ध को

[हिं० धड़क] भय, दुर्बलता

होनेवाला हृदय का स्पंदन।

करना।

[हिं० धड़क] [भाव०

आदि के कारण हृदय

का स्पंदित होना। हृदय का धक धक करना। **मुहा०—कलेजा, छाती, जी या दिल धड़कना** = भय या आशंका से हृदय का स्पंदन या धड़कन बढ़ जाना।

धड़का—पुं० [अनु० धड़] १. हृदय या कलेजे में होनेवाली धड़क। २. आशंका। खटका। ३. चिड़ियों को डराने के लिए खेतों में खड़ा किया हुआ पुतला आदि। धोखा।

धड़काना—स० हिं० 'धड़कना' का स०।

धड़धड़ाना—अ० [अनु० धड़ धड़] भारी चीज के गिरने का-सा धड़ धड़ शब्द होना। **मुहा०—धड़धड़ाता हुआ** = बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के। बे-**धड़क**। स० धड़ धड़ शब्द करना।

धड़ल्ला—पुं० [अनु० धड़] किसी काम में दिखाई देनेवाली वह फुरती या तेजी, जिसमें कहीं कुछ भी हिचक या रुकावट न हो। **मुहा०—धड़ल्ले से** = (क) बिना रुके। तेजी से। (ख) बे-धड़क।

धड़ा—पुं० [सं० धट] १. बँधी हुई तौल की वह चीज जिसके बराबर तराजू पर कोई चीज तौलते हैं। बाट। बटखरा। २. तौलने से पहले तराजू के दोनो पलड़ों की बराबर और ठीक स्थिति।

मुहा०—धड़ा करना या बाँधना=कोई वस्तु तौलने से पहले आवश्यकतानुसार किसी ओर कुछ भार रखकर तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना। बड़ा तराजू। ३. चार सेर की एक तौल। ४. तराजू।

धड़ाका—पुं० [अनु० धड़] जोर से गिरने का 'धड़' शब्द। धमाका।

मुहा०—धड़ाके से = जल्दी से। चटपट।

धड़ाधड़—क्रि० वि० [अनु० धड़] १. लगातार 'धड़ धड़' शब्द के साथ। २. लगातार और जल्दी जल्दी।

धड़ा-बंदी—स्त्री० [हिं० धड़ा + बंद] १. तौलने के समय धड़ा बाँधना। २. युद्ध के समय दोनों पक्षों का अपना सैनिक बल

शत्रु के सैनिक बल के बराबर करना।

धड़ाम-पुं० [अनु० धड़] ऊँचाई से कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी-स्त्री० [सं० घटिका, घटी] १. चार सेर की एक तौल। २. मिस्सी लगाने या पान खाने से ओंठों पर पड़नेवाली लकीर।

धत्-अव्य० [अनु०] तिरस्कारपूर्वक हटाने या दुतकारने अथवा किसी को तुच्छ या बुरा सूचित करने का शब्द। जैसे—धत् तेरे की।

धतकारना-स० दे० 'दुतकारना'।

धता-वि० [अनु० धत्] दूर भगाया हुआ। **मुहा०—धता करना या बताना** = किसी को उपेक्षापूर्वक हटाना या भगाना।

धतूरा-पुं० [सं० धुस्तूर] एक पौधा जिसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।

धधकना-अ० [हिं० धधक] [भाव० धधक, स० धधकाना] १. आग की लपट के साथ जलना। दहकना। २. भड़कना।

धधाना*-अ० दे० 'धधकना'।

धनंजय-पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। २. अर्जुन का एक नाम। ३. विष्णु। ४. शरीर में रहनेवाली एक प्रकार की वायु जिससे उसका पोषण होता है।

धनंतर*-पुं० दे० 'धन्वंतरि'।

धन-पुं० [सं०] १. रुपया पैसा, सोना-चाँदी आदि। द्रव्य। दौलत। धन-सम्पत्ति। (वेल्थ) २. वह सभी मूल्यवान् सामग्री जो किसी के पास हो और जो खरीदी और बेची जा सकती हो। सम्पत्ति। जायदाद। ३. एक ही प्रकार की उपयोगी और मूल्यवान् वस्तुओं आदि का वर्ग या समूह या बहुत अधिक मात्रा। जैसे—गो-धन, गज-धन, विद्या-धन। ४. अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। ५. गणित में जोड़ का चिह्न। 'ऋण' का उलटा। ६. मूल। पूँजी।
वि० १. महत्व आदि के विचार से जो श्रेष्ठ, मान्य या ग्राह्य हो। 'ऋण' का विपर्याय। (पॉज़िटिव) २. हिसाब-किताब, लेखे आदि में जो किसी के यहाँ से आया और उसके न से जमा हो। 'ऋण का विपर्याय। (क्रेडि
*स्त्री० [सं० धन्या] १. युवती स्त्री या वधू। २. नायिका या प्रेमिका।
*वि० दे० 'धन्य'।

धन-कुबेर-पुं० [सं०] बहुत बड़ा धन-वान। अत्यन्त धनी।

धनतर*-पुं० दे० 'धन्वंतरि'।

धनद-वि० [सं०] धन देनेवाला।
पुं० कुबेर।

धन-धान्य-पुं० [सं०] धन और अन्न आदि, जो सम्पन्नता के सूचक माने गये हैं।

धन-धाम-पुं० [सं०] घर-बार और रुपया-पैसा।

धन-धारी-पुं० [सं० धन + धारी] १. कुबेर। २. बहुत बड़ा अमीर।

धन-पत्त-पुं० [सं०] १. बही-खाते आ में वह पत्त या अंग जिसमें आने या दूसरे से मिलनेवाले रुपये आदि लिखे जाते हैं। जमावाला पत्त। (क्रेडिट साइड) २. व पत्त जिसमें पूँजी, लाभ या उपयोगी बातें का विचार या उल्लेख हो।

धन-पति-पुं० [सं०] १. कुबेर। २. धनी।

धन-पत्र-पुं० [सं०] वह धन जो छ हुए सरकारी पत्र या कागज के रूप में हो और जो सिक्कों की जगह चलता हो। नोट। (करेन्सी नोट)

धन-राशि-स्त्री० [सं०] १. धन का ढेर। बहुत अधिक धन। २. लेन-देन आदि विशेष कार्यों के लिए देय या प्राप्य नि धन। रकम। (एमाउन्ट, सम)

धनवंत-वि० दे० 'धनवान्'।

धनवान्-वि० [सं०] [स्त्री० धनवती] धनी। सम्पन्न। अमीर।

धन-संपत्ति-स्त्री० [सं०] रुपये-पैसे, जमीन-जायदाद आदि मूल्यवान् वस्तुएँ जो खरीदी या बेची जा सकती हों। दौलत। (वेल्थ)

षाढ़ा का एक चरण आता है। (सैगिटेरिअस)

धनुआ-पुं० [सं० धन्वा] [स्त्री० धनुई] १. धनुष। कमान। २. रुई धुनने की धुनकी।

धनुक*-पुं० १. दे० 'धनुष'। २. दे० 'इंद्र-धनुष'।

धनुर्द्धर (र्धर)-पुं०[सं०] १. धनुष धारण करनेवाला पुरुष। २. धनुष चलाने में निपुण व्यक्ति।

धनुर्द्धारी-पुं० दे० 'धनुर्द्धर'।

धनुर्वात-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का लकवा (रोग)। २. दे० 'धनुष टंकार'। (रोग)

धनुर्विद्या-स्त्री० [सं०] धनुष चलाने की विद्या या कला। तीर चलाने का हुनर।

धनुर्वेद-पुं० [सं०] यजुर्वेद का उपवेद, जिसमें धनुर्विद्या का विवेचन है।

धनुष-पुं० [सं० धनुस्] १. बाँस या लोहे के छड़ को कुछ झुकाकर उसके दोनों सिरों के बीच डोरी बाँधकर बनाया हुआ अस्त्र, जिससे तीर चलाते हैं। कमान। २. दूरी की चार हाथ की एक माप।

धनुष-टंकार-स्त्री० [सं०] वह 'टन' शब्द जो धनुष पर बाण रखकर खींचने से होता है।

पुं० व्रण या क्षत के विषाक्त होने के कारण होनेवाला एक भीषण और घातक रोग जिसमें रोगी की गरदन और पीठ अकड़कर धनुष के समान कुछ टेढ़ी हो जाती है। (टिटानस)

धनुष-यज्ञ-पुं० [सं०] वह यज्ञ जो राजा जनक ने सीता के स्वयंवर के लिए किया था और जिसमें रामचन्द्र ने शिव का धनुष तोड़कर सीता को प्राप्त किया था।

धनुस*-पुं० = धनुष।

धनुहाई*-स्त्री० [हिं० धनु + हाई (प्रत्य०)] धनुष से होनेवाली लड़ाई।

धनुही†-स्त्री० [हिं० धनु + ही (प्रत्य०)] लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

धन्न*-वि० दे० 'धन्य'।

धन्ना सेठ-पुं० [हिं० धन + सेठ] बहुत बड़ा धनी। परम धनाढ्य। (परिहास और व्यंग्य)

धन्य-वि० [सं०] [स्त्री० धन्या] १. प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। २. पुण्यवान्। सुकृती।

धन्यवाद-पुं० [सं०] १. साधु-वाद। प्रशंसा। २. उपकार, अनुग्रह आदि के बदले में कृतज्ञता प्रकट करने का शब्द।

धन्या-स्त्री० [सं०] १. पत्नी। जोरू। २. धाय। दाई।

धन्वंतरि-पुं० [सं०] एक देवता जो आयुर्वेद के सबसे बड़े आचार्य और देवताओं के वैद माने जाते हैं। (कहते हैं कि ये समुद्र-मंथन के समय समुद्र से निकले थे।)

धन्वा-पुं० [सं० धन्वन्] धनुष।

धन्वाकार-वि० [सं०] धनुष के आकार का। आधी गोलाई के रूप में झुका हुआ।

धपना-अ० [सं० धावन, या हिं० धाप] तेजी से आगे बढ़ना। झपटना।

स० [हिं० धप्पा] मारना। पीटना।

धप्पड़-पुं० = थप्पड़।

धप्पा-पुं० [धप से अनु०] थप्पड़।

यौ०-धौल-धप्पा।

धब्बा-पुं० [देश०] १. किसी तल पर पड़ा हुआ भद्दा चिह्न या निशान। दाग। २. कलंक। लांछन।

मुहा०-नाम में धब्बा लगाना = कीर्त्ति नष्ट करनेवाला काम करना।

धमंकना*-स० [?] नष्ट करना।

धम-स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका।

यौ०-धमाधम = लगातार धम धम शब्द के साथ।

धमक-स्त्री० [अनु० धम] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. चलने से पृथ्वी पर होनेवाला कम्प और शब्द। ३. आघात आदि से होनेवाला कम्प।

धमकना-अ० [हिं० धमक] १. 'धम' शब्द करते हुए गिरना। धमाका करना।

मुहा०-आ धकमना = अवांछित रूप से आ पहुँचना।

२. दर्द करना। (सिर)

धमकाना-स० [हिं० धमक] धमकी देते हुए डराना। भय दिखाना।

धमकी-स्त्री० [हिं० धमकाना] दंड देने हानि पहुँचाने का भय दिखाना।

मुहा०-धमकी में आना = किसी के डराने से डरकर कोई काम कर बैठना।

धम-गजर-पुं० [देश०] उपद्रव। उत्पात

धमधमाना-अ० [अनु० धम] 'धम धम' शब्द उत्पन्न करना।

धमनी-स्त्री० [सं०] १. शरीर में की नलियाँ जिनके द्वारा हृदय से चलकर सारे शरीर में पहुँचता या फैलता (आर्टरी) (सुश्रुत में ये २४ कही हैं, पर इनकी हजारों शाखाएँ सारे में फैली हुई हैं।) २. वह नली जिसमें हृदय का शुद्ध रक्त निकलकर शरीर फैलता है। नाड़ी। (आधु०)

धमाका-पुं० [अनु०] १. भारी वस्तु गिरने का शब्द। २. बन्दूक, तोप छूटने का शब्द। ३. हाथी पर से जानेवाली एक प्रकार की बड़ी तोप।

धमा-चौकड़ी-स्त्री० [अनु० धम + चौकड़ी] १. उछल कूद। २. उपद्रव।

धमाना*-स० [?] जोर से हवा या भरना। धौंकना।

धमार-स्त्री० [अनु०] १. उछल धमा-चौकड़ी। २. एक विशेष प्रकार कला या युक्ति से साधुओं का दहकती आग पर चलना।

पुं० एक प्रकार का गीत।

धर-वि० [सं०] १. रखने या धारण वाला। जैसे-मुरलीधर, धनुर्धर। २.

३. छत या पाटन का बोझ सँभालने के लिए दीवारों या खंभों पर आड़ा रक्खा हुआ लम्बा मोटा शहतीर। बड़ी कड़ी। ४. गर्भाशय को धारण करनेवाली उसके नीचे की नस। ५. गर्भाशय। ६. हठ। जिद।

धरनहार*–वि० [हिं० धरना + हार (प्रत्य०)] १. धारण करनेवाला। २. पकड़नेवाला।

धरना–स० [सं० धारण] [प्रे० धराना, धरवाना] १. पकड़ना। थामना। २. लेना। ग्रहण करना।

मुहा०–धर-पकड़कर = जबरदस्ती।

३. स्थित या स्थापित करना। रखना।

मुहा०–धरा रह जाना=काम न आना।

४. अधिकार या रक्षा में लेना। ५. धारण करना। पहनना। ६. किसी का पल्ला पकड़ना। आश्रय लेना। ७. अपनी बात पर अड़े रहना। हठ या जिद करना। ८. फैलनेवाली वस्तु का किसी दूसरी वस्तु में लगना या उसपर अपना प्रभाव डालना। जैसे–आग धरना। ९. गिरवी, रेहन या बंधक रखना।

पुं० १. किसी से अपना कोई काम कराने का निश्चय करके उसके पास या कहीं अड़कर बैठना। जैसे–कोई मन्नत मानकर देव-स्थान में धरना देना। २. किसी से अपनी कोई माँग पूरी कराने या उसे कोई अनुचित काम करने से रोकने के लिए उसके दरवाजे पर अड़कर बैठना। (पिकेटिंग) जैसे–शराब की दूकान पर धरना देना।

धरनी–स्त्री० दे० 'धरणी'।

स्त्री० [हिं० धरना] हठ। टेक।

धर-पकड़–स्त्री० [हिं० धरना + पकड़ना] १. अपराधी, शत्रु आदि को पकड़ने की क्रिया या भाव। २. दे० 'बीच-बचाव'।

धरम*–पुं० दे० 'धर्म'।

धरमसार*–स्त्री० [सं० धर्म्मशाला] १. धर्म्मशाला। २. सदावर्त।

धरमाई*–स्त्री० [सं० धर्म्म + आई (प्रत्य०)] धार्मिक होने का भाव। धार्मिकता।

धरमी–वि० [सं० धर्म्मिन्] १. धर्म्म का आचरण करनेवाला। धार्म्मिक। २. किसी धर्म्म या मत का अनुयायी।

धरषना*–अ०, स० दे० 'धरसना'।

धरसना*–अ० [सं० धर्षण] १. दब जाना। २. डर या सहम जाना।

स० १. दबाना। २. अपमानित करना।

धरसनी*–स्त्री० दे० 'धर्षणी'।

धर-हर*–पुं० १. दे० 'धर-पकड़'। २. दे० 'बीच-बचाव'। ३. दे० 'रोक-थाम'।

धरहरना*–अ० १. दे० 'धड़कना'। २. दे० 'धड़धड़ाना'।

धरहरा–पुं० [सं० धवलगृह] १. खम्भे की तरह की वह बहुत ऊँची इमारत जिसपर चढ़ने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनी होती हैं। धौरहर। मीनार। २. दे० 'जल-स्तंभ'।

धरा–स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। जमीन। २. संसार। दुनियाँ।

धराऊ–वि० [हिं० धरना + आऊ (प्रत्य०)] १. जो दुर्लभ होने के कारण केवल विशेष अवसरों के लिए रक्खा रहे। २. बहुत दिनों का रक्खा हुआ। पुराना।

धरातल–पुं० [सं०] १. पृथ्वी। धरती। २. वह तल जिसमें केवल लम्बाई-चौड़ाई हो, मोटाई आदि न हो। पृष्ठ। तल। सतह। ३. क्षेत्र-फल। रकबा।

धराधर–पुं० [सं०] १. शेषनाग। २. पर्वत। पहाड़। ३. विष्णु।

धराधरन*–पुं० दे० 'धराधर'।

धराशायी–वि० [सं० धराशायिन्] [स्त्री० धराशायिनी] जमीन पर गिरा, पड़ा या लेटा हुआ।

धरित्री–स्त्री० [सं०] धरती। पृथ्वी।

धरी*–स्त्री० [हिं० धार] १. नदी की धारा। २. पानी की धार। ३. वर्षा की झड़ी।

स्त्री० दे० 'धड़ी'।

धरेजा–पुं० [हिं० धरना = रखना + एजा (प्रत्य०)] किसी स्त्री को पत्नी की तरह घर में रखने की क्रिया या प्रथा।

स्त्री० दे० 'धरेल'।

धरेल(ली)–स्त्री० [हिं० धरना] उप-पत्नी। रखेली।

धरेवा–पुं० दे० 'करेवा'। (विवाह का एक प्रकार)

धरैया–वि० [सं० धारण, हिं० धरना + ऐया (प्रत्य०)] १. धारण करनेवाला। २. धरने या पकड़नेवाला।

पुं० शेष नाग, कच्छप आदि जो पृथ्वी को धारण करने या अपने ऊपर उठाये रखने-वाले माने जाते हैं।

धरोहर–स्त्री० [हिं० धरना] जरूरत पर काम आने के लिए किसी के पास रक्खी हुई दूसरे की वस्तु या द्रव्य। थाती। अमानत।

धर्त्ता–पुं० [सं० धर्तृ] १. धारण करने वाला। २. अपने ऊपर भार लेनेवाला।

यौ०-कर्त्ता-धर्त्ता = सब कुछ करने धरनेवाला। सब कामों का मालिक।

धर्म–पुं० [सं० धर्म्म] १. किसी वस्तु या व्यक्ति में सदा रहनेवाली उसकी मूल वृत्ति। प्रकृति। स्वभाव। मूल गुण। २. गुण। वृत्ति। ३. स्वर्गादि शुभ फल देनेवाले कार्य। ४. किसी जाति, वर्ग, पद आदि के लिए निश्चित किया हुआ कार्य या व्यवहार। कर्त्तव्य। जैसे–क्षत्रिय का धर्म्म, सेवक का धर्म्म। ५. सदाचार। ६. पुण्य। सत्कर्म।

मुहा०–धर्म कमाना=धर्म का या अच्छा काम करके उसका शुभ फल संचित करना। **धर्म बिगाड़ना** = (क) धर्म-भ्रष्ट करना। (ख) स्त्री का सतीत्व नष्ट करना।

७. पर-लोक, ईश्वर आदि के सम्बन्ध में विशेष प्रकार का विश्वास और उपासना की विशेष प्रणाली। ८. मत। सम्प्रदाय। पंथ। मजहब। (रेलिजन) ९. नैतिक व्यवस्था। नीति। कानून। नैश्चेल्टि

विवेक। ईमान।
ती कहना = उचित
ने कहना = सच कहना।
[सं०] किसी धर्म-ग्रन्थ में
कृत्य।
[सं०] १. कुरुक्षेत्र। २.
कार्यों के लिए विशिष्ट
है।
[सं०] १. वह ग्रन्थ या
की शिक्षा हो। २. वह ग्रन्थ
मुख्य और उसका आधार
। आगम। (स्क्रिप्चर)
[सं० धर्म + हिं० घड़ी]
की घड़ी।
[सं०] महात्मा बुद्ध का धर्म-
से आरम्भ हुआ था।
[सं०] धर्म का आचरण
।
[सं० धर्मचारिन्] [स्त्री०
धर्म के अनुसार आचरण
।
[सं०] [भाव० धर्मच्युति]
गिरा या हटा हुआ।
[सं०] धर्म जाननेवाला।
[सं०] धर्म के विचार से
।
दे० 'धर्मणा'।
[सं०] धर्म का आडंबर
साधनेवाला मनुष्य।
[सं०] [संज्ञा धर्म-निष्ठा]
श्रद्धा रखनेवाला। धार्मिक।
।
[सं०] धर्म की रीति
। विवाहिता स्त्री।
[सं०] वह जो धार्मिक
पिता बन गया हो, वास्त-
।
[सं०] [स्त्री० धर्म-पुत्री]
वह जो किसी का औरस पुत्र न होने पर भी केवल धार्मिक भाव से उसका पुत्र बन गया हो।

धर्म-पुस्तक–स्त्री० [सं० धर्म + पुस्तक] वह पुस्तक जो किसी धर्म का मूल आधार हो। किसी धर्म का आधार-ग्रन्थ।

धर्म-प्राण–वि० [सं०] धर्म्म को प्राणों के समान प्रिय समझनेवाला। बहुत बड़ा धार्मिक।

धर्म-बुद्धि–स्त्री० [सं०] धर्म-अधर्म या भले-बुरे का विचार।

धर्म-भीरु–वि० [सं०] जिसे धर्म का भय हो। अ-धर्म से डरनेवाला।

धर्म-युद्ध–पुं० [सं०] १. वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अधर्म या अन्याय न हो। २. धर्म के लिए या किसी बहुत अच्छे उद्देश्य से किया जानेवाला युद्ध। (क्रूसेड)

धर्मराज–पुं० [सं०] १. धर्म का पालन करनेवाला राजा। २. युधिष्ठिर। ३. यमराज। ४. न्यायाधीश।

धर्मराय*–पुं० दे० 'धर्मराज'।

धर्म-लिपि–स्त्री० [सं०] १. वह लिपि जिसमें किसी धर्म की मुख्य धर्म-पुस्तक लिखी हो। जैसे–अरबी मुसलमानों की धर्म लिपि है। २. स्तम्भों पर खुदे हुए सम्राट् अशोक के प्रज्ञापन।

धर्मलुप्ता उपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें समान धर्म का कथन न हो।

धर्म-वीर–पुं० [सं०] वह जो धर्म-सम्बन्धी कार्य करने में साहसी हो।

धर्म-शाला–स्त्री० [सं०] यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मार्थ बना हुआ मकान।

धर्म-शास्त्र–पुं० [सं०] [वि० धर्म-शास्त्री] १. किसी धर्म्म के वे शास्त्र या ग्रन्थ, जिनमें समाज के शासन और व्यवस्था से सम्बन्ध रखनेवाले नैतिक और आचारिक नियमों का उल्लेख हो। २. किसी धर्म

के अनुयायियों की निजी विधि या नैतिक नियम जो उनके सामाजिक, जातीय और धार्मिक आचार-विचार आदि मर्यादित रखते हैं। व्यक्तिगत विधि। (पर्सनल लॉ) जैसे—हिन्दू धर्म-शास्त्र। (हिन्दू लॉ)

धर्म-शास्त्री–पुं० [सं०] वह जो धर्म-शास्त्र का ज्ञाता या पंडित हो।

धर्म-शील–वि० [सं०] [भाव० धर्म-शीलता] जिसकी धर्म में प्रवृत्ति हो। धार्मिक।

धर्म-संकट–पुं० [सं०] ऐसी स्थिति जिसमें दोनों पक्षों में से हर एक पक्ष ग्रहण करने में कुछ न कुछ संकट या हानि सहनी पड़े। उभय संकट। (डिलेम्मा)

धर्म-सभा–स्त्री० [सं०] न्यायालय।

धर्मांध–वि० [सं०] [भाव० धर्मांधता] जो धर्म के नाम पर अंधा हो रहा हो और उसके लिए बुरे से बुरा काम करे। (फैनेटिक)

धर्माचार्य–पुं० [सं०] किसी धर्म का वह आचार्य या गुरु जो लोगों को उस धर्म के अनुसार चलने की शिक्षा देता हो।

धर्मात्मा–वि० [सं० धर्मात्मन्] धर्म-शील।

धर्माधिकरण–पुं० [सं०] १. न्यायालय। २. किसी प्रान्त या राज्य का वह सबसे बड़ा न्यायालय जिसे प्रान्त या राज्य भर के सभी न्यायालयों के निर्णयों आदि पर पुनर्विचार करने का अधिकार प्राप्त होता है।

धर्माधिकारी–पुं० [सं०] १. धर्म और अ-धर्म की व्यवस्था देनेवाला, न्यायाधीश। २. किसी राजा की ओर से दान के प्रबन्ध के लिए नियुक्त व्यक्ति। दानाध्यक्ष।

धर्माध्यक्ष–पुं० दे० 'धर्माधिकारी'।

धर्मार्थ–क्रि० वि० [सं०] केवल धर्म या पुण्य के विचार से। परोपकार के लिए। पुं० १. धर्म के विचार से कुछ करने का उद्देश्य। (रेलिजस पर्पज) २. वह दान या और कोई काम जो केवल धार्मिक दृष्टि या विचार से किया जाय।

धर्मावतार–पुं० [सं०] साक्षात् धर्म्म का रूप। परम धर्मशील। अत्यन्त धर्मात्मा।

धर्मासन–पुं० [सं०] न्यायाधीश का आसन।

धर्मिष्ठ–वि० [सं०] [भाव० धर्मिष्ठता] धर्मशील। धार्मिक। पुण्यात्मा।

धर्मी–वि० [सं०] [स्त्री० धर्मिणी] १. जिसमें कोई धर्म या गुण हो। २. धार्मिक। ३. कोई मत या धर्म माननेवाला। पुं० गुण या धर्म का आश्रय। (पदार्थ)

धर्मोन्मत्त–वि० दे० 'धर्मांध'।

धर्मोन्माद–पुं० [सं०] १. वैद्यक के अनु सार एक प्रकार का उन्माद या पाग जिसमें मनुष्य दिन-रात धर्म-सम्बन्धी का और विचारों में मग्न रहता है। २. मनुष्य की वह मानसिक अवस्था जिसमें वह ध के नाम पर अन्धा होकर भले-बुरे का वि छोड़ देता है। (थियोमेनिया)

धर्मोपदेशक–पुं० [सं०] धर्म-सं उपदेश देनेवाला।

धर्षण–पुं० [सं०] [वि० धर्षक, धर्ष धर्षित] १. अपमान। २. दबोचन ३. आक्रमण। ४. दबाना या दमन कर

धर्षणी–स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी। कु

धव–पुं० [सं०] १. औषध के काम का जंगली पेड़। २. पति। स्वामी। माधव। ३. पुरुष। मर्द।

धवनी*–स्त्री० दे० 'धौंकनी'।

धवर*–वि० [सं० धवल] सफेद। उज

धवरी–स्त्री० [हिं० धवरा] सफेद ग

धवल–वि० [सं०] [भाव० धवल १. श्वेत। उजला। २. निर्मल। ३. सु पुं० बैल।

धवलना*–स० [सं० धवल] उज्ज स्वच्छ करना। चमकाना।

धवला–वि० [सं०] सफेद। उजली। स्त्री० सफेद गाय।

धवलाई*–स्त्री० [सं० धवलता] सफेदी।

धवलागिरि–पुं० [सं० धवल+गिरि] हिमालय पर्वत की एक प्रसिद्ध चोटी।

] १. सफ़ेद । उजला ।
[सं०] १. सफ़ेदी ।
] सफ़ेद गाय ।
[हिं० 'धाना' का प्रे०]
दौड़ने में प्रवृत्त करना ।
] १. ध्वनि या शब्द
होना ।
[अनु०] १. सूखी खाँसी में
शब्द । २. सूखी खाँसी ।
धसकना] १. धसकने की
। २. ईर्ष्या । डाह ।
[हिं० धँसना] १. नीचे
या बैठना । २. ईर्ष्या
। ४. डरकर रुकना या
।
[सं० ध्वंसन] ध्वस्त या
।
। मिटाना ।
-अ० = धँसना ।
-अ० दे० 'धँसना' ।
।
दे० 'धँसान' ।
[देश०] १. बन्द करना ।
ला लेना ।
[हिं० धाँधना + ल
उपद्रव । उत्पात । शरारत ।
जल्दी । ३. स्वेच्छारिता ।
अपनी गलत बात आगे
।
[अनु०] सुँघनी, मिर्च
में मिली हुई, उग्र गंध ।
[सं०] तरह । भाँति । जैसे-
आदि ।
] १. संगीत में धैवत
संक्षिप्त रूप । ध । २.

मृदंग, तबले आदि का एक बोल।

धाई*–स्त्री० दे० 'दाई' ।

धाक–स्त्री० [अनु०] १. रोब । आतंक । **मुहा०–धाक जमना या बँधना** = रोब या दबदबा होना ।

२. ख्याति । प्रसिद्धि । शोहरत ।

धाकड़–पुं० [हिं० धाक] १. जिसकी बहुत अधिक धाक बँधी हो । २. बहुत प्रबल या बलवान् । विशेष शक्तिशाली ।

धाकना*–अ० [हिं० धाक + ना (प्रत्य०)] धाक या रोब जमाना ।

धाकरा–पुं० दे० 'धाकड़' ।

धागा–पुं० [हिं० तागा] बटा हुआ सूत । डोरा । तागा ।

धाड़–स्त्री० १ दे० 'डाढ़'। २. दे० 'दहाड़' । ३. दे० 'दाढ़' ।

स्त्री० [हिं० धार] १. डाकुओं का आक्रमण । २. जत्था । झुंड । दल । ३. सेना । फौज ।

धातवीय–वि० [सं०] धातु सम्बन्धी । धातु का ।

धाता–पुं० [सं० धातृ] १. ब्रह्मा । २. विष्णु । ३. महादेव । ४. विधाता ।

वि० १. पालन करनेवाला । पालक । २. रक्षा करनेवाला । रक्षक । ३. धारण करनेवाला । धारक ।

धातु–स्त्री० [सं०] १. वह अपारदर्शक चमकीला खनिज विशुद्ध द्रव्य जिससे बरतन, तार, गहने, शस्त्र आदि बनते हैं । जैसे-सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि । २. शरीर को बनाये रखनेवाले भीतरी तत्व या पदार्थ जो वैद्यक के अनुसार सात हैं—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र । ३. शुक्र । वीर्य ।

पुं० १. भूत । तत्व । २. क्रिया का मूल रूप । जैसे-संस्कृत में भू, कृ, धृ आदि ।

धातु-पुष्ट (वर्द्धक)–वि० [सं०] (औषधि) जिससे वीर्य बढ़े और गाढ़ा हो ।

धातु-मल–पुं० [सं०] खनिज पदार्थों या धातुओं को गलाने पर उनमें से निकलनेवाली मैल । (स्लैग)

धातृका–स्त्री० [सं० धातृ] वह जो रोगियों की सेवा-शुश्रूषा, बालकों के पालन-पोषण और प्रसूता की देख-रेख की विद्या जानती और ये सब काम करती हो । दाई । (नर्स)

धात्र*–पुं०, वि० दे० 'धाता' ।

धात्री–स्त्री० [सं०] १. माता । माँ । २. बच्चे को दूध पिलाने और उसका लालन-पालन करनेवाली स्त्री । धाय । दाई । ३. गायत्री स्वरूपिणी भगवती । ४. गंगा । ५. पृथ्वी । ६. गाय । गौ ।

धात्री विद्या–स्त्री० [सं०] स्त्री को प्रसव कराने और बच्चे पालने आदि की विद्या ।

धात्वर्थ–पुं० [सं०] किसी शब्द का धातु से निकलनेवाला मूल अर्थ ।

धान–पुं० [सं० धान्य] १. एक पौधा जिसके बीजों में से चावल निकलते हैं । शालि । २. अन्न । अनाज । ३. किसी का दिया हुआ भोजन ।

धानक–पुं० दे० 'धानुक' ।

धान-पान–वि० [हिं० धान + पान] १. दुबला-पतला । २. कोमल । नाजुक ।

धाना*–अ० [सं० धावन] १. दौड़ना । २. दौड़-धूप या प्रयत्न करना ।

*स० दे० 'ध्याना ।

धानी–स्त्री० [सं०] १. वह जिसमें कोई चीज रखी जाय । २. स्थान । जगह । जैसे–राजधानी ।

स्त्री० [हिं० धान] हलका हरा रंग ।

वि० हलके हरे रंग का ।

स्त्री० [सं० धाना] भूना हुआ जौ या गेहूँ ।

स्त्री० दे० 'धान्य' ।

धानुक–पुं० [सं० धानुष्क] १. धनुष चलानेवाला । धनुर्धर । २. रूई धुननेवाला । धुनियाँ । ३. एक अर्द्ध-सभ्य या जंगली जाति ।

धान्य–पुं० [सं०] १. धान । २. अन्न मात्र ।

धाप–पुं० [हिं० टप्पा] १. दूरी की एक अनिश्चित नाप जो प्रायः चौथाई से आध मील तक होती है । २. लम्बा-चौड़ा मैदान ।

स्त्री० [सं० तृप्ति] तृप्ति । सन्तोष ।

धापना*–अ० [सं० तर्पण] सन्तुष्ट या तृप्त होना । अघाना ।

स० सन्तुष्ट या तृप्त करना ।

अ० [सं० धावन] दौड़ना ।

धाबा–पुं० [देश०] १. अटारी । २. कच्ची व पक्की रसोई बिकने का स्थान । बासा । (पश्चिम)

धा-भाई–पुं० दे० 'दूध-भाई' ।

धाम–पुं० [सं० धामन्] १. मकान । घर । २. किसी चीज के रहने का स्थान । जैसे–शोभा-धाम । ३. शरीर । ४. शोभा । ५. देव-स्थान या पुण्य-स्थान । पवित्र तीर्थ । जैसे–काशी धाम, वैद्यनाथ धाम ।

पद–चारो धाम = भारत के चारो दि पर के ये चार प्रसिद्ध तीर्थ—जगन्नाथ पुरी, रामेश्वर, द्वारका और बदरी-केदार ।

धामिन–स्त्री० [हिं० धाना = दौड़ना] एक प्रकार का जहरीला साँप जो बहुत तेज दौड़ता है ।

धाय–स्त्री० [सं० धात्री] दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करनेवाली स्त्री । धात्री । दाई ।

धार–पुं० [सं०] १. औषध के काम के लिए इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल । २. उधार । ऋण । ३. प्रान्त । प्रदेश ।

स्त्री० [सं० धारा] १. पानी आदि के गिरने या बहने का क्रम । प्रवाह ।

मुहा०–धार चढ़ाना=देवी-देवता आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना ।

२. पानी का सोता । ३. जोर की वर्षा । ४. धारदार हथियार का तेज सिरा । किनारा । बाढ़ । ५. तलवार । ६. किनारा । सिरा । ७. सेना । फौज । ८. समूह । ९. रेखा । लकीर । १०. ओर । दिशा । ११.

श्रेणी ।
।
] १. धारण करनेवाला ।
२. उधार लेनेवाला । ४.
जानेवाला । (बेयरर)
के रुपये धारक को दे

] १. थामना, रखना
लेना । २. पहनना । ३.
। ४. ऋण लेना ।
[सं०] १. धारण करने
। २. मन में धारण
लाने आदि की शक्ति ।
। ३. किसी विषय में मन में
विचार या मत । (कन्सेप्शन)
। ५. योग के आठ अंगों

[सं०] १. ऋणी । धरता ।
वह आदमी जिसके पास या
धन जमा किया जाय ।
[सं०] [स्त्री० धारणीया]
।
[सं० धारण] १. धारण
मन में निश्चय करना । २
। रखना । उदा०–जहँ जहँ
धाम ।–तुलसी ।
।
[सं०] १. किसी जल-राशि के
किसी निश्चित दिशा में
। २. किसी वस्तु या तत्व
में बराबर चलते रहना ।
धारा । ३. लगातार या
रहनेवाला किसी बात का
विचार-धारा । (करेन्ट; उक्त
) ४. विधान आदि
स्वतंत्र अंग जिसमें किसी
बातें या आदेश हों ।
उसके साथ क्रमांक रहते हैं ।

जैसे–इसकी ४० वीं धारा अ-स्पष्ट है ।)

धाराधर–पुं० [सं०] बादल ।

धारा-प्रवाह–वि० [सं०] जो बीच में बिना रुके बराबर धारा की तरह चलता रहता हो । जैसे–धारा-प्रवाह भाषण ।

धारा-यंत्र–पुं० [सं०] १. पिचकारी । २. फुहारा ।

धारा-वाहिक(वाही)–वि० [सं०] १. धारा के रूप में बिना रुके आगे बढ़ने या चलनेवाला । २. बराबर कुछ समय तक क्रम से चलनेवाला । जैसे–धारावाहिक उपन्यास या लेख । (पत्र-पत्रिका आदि में क्रमशः छपने के समय)

धारा सभा–स्त्री० दे० 'विधायिका' ।

धारि*–स्त्री० दे० 'धार' ।

धारिणी–स्त्री० [सं०] धरणी । पृथ्वी । वि० धारण करनेवाली ।

धारी–वि० [सं० धारिन्] [स्त्री० धारिणी] १.धारण करनेवाला । जैसे–शरीर-धारी । २. पहननेवाला । जैसे–कवचधारी । स्त्री० [सं० धारा] १. सेना । फौज । २. समूह । झुंड । ३. रेखा । लकीर ।

धारोष्ण–वि० [सं०] थन से निकला हुआ, ताजा और गरम (दूध) ।

धार्तराष्ट्र–पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के वंशज ।

धार्मिक–वि० [सं०] १. धर्म से सम्बन्ध रखनेवाला । धर्म का । (रेलिजस) जैसे–धार्मिक कृत्य या विचार । २. (व्यक्ति) जिसे धर्म का विशेष ध्यान रहता हो । धर्मशील ।

धार्य–वि० [सं०] धारण करने के योग्य । जैसे–शिरोधार्य ।

धार्यत्व–पुं० [सं०] १. 'धार्य' का भाव । २. ऋण, देन आदि जिनका चुकाना आवश्यक हो । देन । (लायबिलिटी)

धावक–पुं० [सं०] दौड़कर कोई काम करने, विशेषतः पत्र ले जानेवाला । हरकारा ।

धावन–पुं० [सं०] १. बहुत जल्दी या

दौड़कर जाना। २. दूत। हरकारा। ३. धोकर साफ करना। ४. वह जिससे कोई चीज धोई या साफ की जाय।

धावना*-अ० दे० 'धाना'।

धावनि*-स्त्री०[सं० धावन] धावा। चढ़ाई।

धावरा*-वि० [स्त्री० धावरी] = धवल।

धावरी*-स्त्री० दे० 'धवरी'।

धावा-पुं० [सं० धावन] १. आक्रमण। चढ़ाई। २. कहीं पहुँचने के लिए जल्दी जल्दी या दौड़ते हुए जाना। दौड़।

मुहा०-धावा मारना = जल्दी चलना।

धावित-वि० [सं०] दौड़ता हुआ।

धाह*-स्त्री० [अनु०] जोर से या चिल्लाकर रोना। धाड़।

धाही*-स्त्री० दे० 'धाय'।

धिक् (क)-स्त्री० दे० 'धिक्कार'।

धिकना-अ० [सं० धिकाना] = दहकना।

धिक्कार-स्त्री० [सं०] [क्रि० धिक्कारना] तिरस्कार या घृणा-व्यंजक शब्द। लानत।

धिग*-स्त्री० दे० 'धिक्कार'।

धिठाई*-स्त्री० = धृष्टता।

धिय (I)*-स्त्री० [सं० दुहिता] १. पुत्री। बेटी। २. लड़की। बालिका।

धिरना (रवना)*-स० दे० 'धमकाना'।

धिराना*-स०[सं० धैर्य्य] धैर्य्य दिलाना। आश्वासन देना।
अ० [सं० धीर] १. धीमा पड़ना। मन्द होना। २. धैर्य्य रखना।
स० दे० 'धमकाना'।

धींग-पुं० [सं० दृढ़ांक] [क्रि० धिंगाना, भाव० धिंगाई] १. हट्टा-कट्टा। मजबूत। २. बदमाश। लुच्चा। ३. पापी।

धींगड़ा (रा)-पुं० [स्त्री० धींगड़ी] दे० 'धींग'।

धींगा-धींगी-स्त्री०[हिं० धींग] अनुचित बल-प्रयोग या दबाव। जबरदस्ती।

धींगा-मुश्ती-स्त्री० दे० 'धींगा-धींगी'।

धींद्रिय-स्त्री० दे० 'ज्ञानेंद्रिय'।

धींवर-पुं० दे० 'धीवर'।

धी-स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। २. मन।
स्त्री० [सं० दुहिता] बेटी। पुत्री।

धीजना*-स० [सं० धैर्य्य] ग्रहण, स्वीकार या अंगीकार करना।
अ० १. धीरज धरना। २. सन्तुष्ट होना। ३. स्थिर या शान्त होना।

धीठ*-वि० दे० 'ढीठ'।

धीमर*-पुं० दे० 'धीवर'।

धीमा-वि० [सं० मध्यम] [स्त्री० धीमी] १. धीरे चलनेवाला। मन्द गतिवाला। २. साधारण से नीचा। मन्द (स्वर)।

धीमान्-पुं० [सं० धीमत्] बुद्धिमान्।

धीय (I)-स्त्री० दे० 'धिय'।

धीर-वि० [सं०] [भाव० धीरता] १. दृढ़ और शान्त मनवाला। धैर्यवान्। २. गंभीर। ३. मन्द। धीमा।
*पुं० [सं० धैर्य्य] धीरज। ढारस।

धीरक*-पुं० दे० 'धैर्य्य'।

धीरज-पुं० दे० 'धैर्य्य'।

धीरना*-अ० [हिं० धीर + ना (प्रत्य०)] धैर्य्य धारण करना। धीरज धरना।
स० धैर्य्य धारण कराना। धीरज धराना।

धीर-ललित-पुं० [सं०] सदा बना-ठना और प्रसन्न रहनेवाला नायक। (साहित्य)

धीर-शांत-पुं० [सं०] सुशील, दयालु और गुणवान् नायक। (साहित्य)

धीरा-स्त्री० [सं०] अपने नायक में स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यंग्य से कोप प्रकट करनेवाली नायिका। (साहित्य)
वि० [सं० धीर] मन्द। धीमा।

धीराधीरा-स्त्री०[सं०] अपने नायक पर स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध प्रकट करनेवाली नायिका। (साहित्य)

धीरे-क्रि० वि० [हिं० धीर] १. आहिस्ते से। मन्द या धीमी गति से। २. हलके या नीचे स्वर से। ३. चुपके से।

। २. मन।
पुत्री।
यँ] भरण,
सन्तुष्ट होना।
[स्त्री० धी
गतिवाला
(स्वर)।
] बुद्धिमान्।
व० धीरता
। धैर्यवा
।
ढारस।
- ना (प्रत्य०)
रना।
ीरज धरान
सदा बना
। (साहित्य
ील, दय
हित्य)
नायक में
व्यंग्य से
साहित्य)
ीमा।
अपने ना
कर कुछ
ना क्रोध
य)
] १. आदि
। २.
से।

] दयालु, बलवान्,
। (साहित्य)
] बहुत प्रचंड, चंचल
आप वर्णन करने-
साहित्य)
] [स्त्री० धीवरी]
और बेचने का काम करने-
। मछुआ। मल्लाह।
धूम्र + आधार] [क्रि०
। तड़का। छौंक।
धूम्र + अंध] १. हवा में
भाप के कारण होने-
। २. हवा में उड़ती हुई
का एक रोग जिसमें चीजें
देती हैं।
[सं० दुंदुभि ?] १. गड़-
। गरज।
[हिं० धुंध] १. हवा में
। २. अँधेरा।
[हिं० धुंध + ला (प्रत्य०)]
, भाव० धुँधलापन] १.
या अँधेरा-सा। २. जो
। अ-स्पष्ट।
दे० 'धुँधलापन'।
[हिं० धुंध + आना (प्रत्य०)]
धूआँ देते हुए जलना।
।
में धूआँ लगाना।
, स० दे० 'धुँधाना'।
[हिं० धुंध] [वि० *धुंध-
या धूएँ से होनेवाला
, स० दे० 'धुँधाना'।
'धूआँ'।
[हिं० धूआँ + ना (प्रत्य०)]
, धूआँ लगने के
गंध बिगड़ जाना।

धुआँयँध–स्त्री० [हिं० धूआँ + गंध] धूएँ की-सी गंध। स्त्री० अपच में आनेवाला डकार। धूम।

धुआँस-स्त्री० [हिं० धूर + माष] उरद का आटा।

धुआ†-पुं० [?] शव। लाश।

धुकड़-पुकड़–स्त्री० [अनु०] १. भय आदि से चित्त की व्याकुलता या अस्थिरता। घबराहट। २. आगा-पीछा। असमंजस।

धुकधुकी–स्त्री० [धुकधुक से अनु०] १. पदिक या जुगनूँ नाम का गहना। २. दे० 'धकधकी'।

धुकना*–अ० [हिं० झुकना] [स० धुकाना] १. नीचे झुकना। नवना। २. गिर पड़ना। ३. झपटना। टूट पड़ना। स० [सं० धूम + करण] धूनी देना।

धुकरना†–अ० [अनु०] शब्द करना।

धुकार(ी)–स्त्री० [धु से अनु०] १. नगाड़े का शब्द। २. किसी प्रकार का भारी शब्द।

धुक्कन*–स्त्री० [अनु०] १. नगाड़े का शब्द। २. कोई घोर शब्द।

धुक्कना*–अ० दे० 'धुकना'।

धुक्करना*–अ०[अनु०]घोर शब्द करना।

धुज(ा)*–स्त्री० दे० 'ध्वजा'। पुं० दे० 'ध्वज'।

धुजानी*–स्त्री० [सं० ध्वजा] सेना।

धुड़ंगा*–वि० [हिं० धूर + अंग] [स्त्री० धुड़ंगी] १. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो। २. जिसपर धूल पड़ी हो।

धुतकार–स्त्री० दे० 'दुतकार'।

धुताई*–स्त्री० = धूर्त्तता।

धुतारा*–वि० दे० 'धूर्त्त'।

धुधुकार–स्त्री० [धू धू से अनु०] १. जोर का धू धू शब्द। २. घोर शब्द। गरज।

धुन–स्त्री० [हिं० धुनना] १. बिना आगा-पीछा सोचे बराबर काम करते रहने की प्रवृत्ति या दशा। लगन।

यौ०–धुन का पक्का = आरंभ किये हुए काम में बराबर लगा रहनेवाला। २. मन की तरंग। मौज। ३. चिन्ता।

स्त्री० [सं० ध्वनि] १. किसी गीत के विशिष्ट स्वर-क्रम या लय से गाये जाने का ढंग। किसी गाने की खास तर्ज। २. दे० 'ध्वनि'।

धुनकना–स० दे० 'धुनना'।

धुनकी–स्त्री० [सं० धनुस्] १. धुनियों की वह कमान जिससे वे रूई धुनते हैं। २. लड़कों के खेलने की छोटी कमान।

धुनना–स० [हिं० धुनकी] [प्रे० धुनवाना] १. धुनकी की सहायता से रूई में से बिनौले अलग करना। २. खूब मारना-पीटना। ३. दूसरे की बात बिना सुने अपनी बात बराबर कहते जाना। ४. कोई काम लगातार करते जाना।

धुनि*–स्त्री० १. दे० 'ध्वनि'। २. दे० 'धुनी'।

धुनियाँ–पुं० [हिं० धुनना] वह जो रूई धुनने का काम करता हो। बेहना।

धुनी–स्त्री० [सं०] नदी।

स्त्री० दे० 'धूनी'।

धुपधूप–वि० [हिं० धूप] १. साफ। स्वच्छ। २. उज्वल। चमकीला।

धुप्पस–स्त्री० [देश०] किसी को डराने या धोखा देने के लिए किया जानेवाला कार्य। धौंस।

धुमिला*–वि० दे० 'धूमिल'।

धुमिलाना*–अ० [हिं० धूमिल] धूमिल होना। काला पड़ना।

धुरंधर–वि० [सं०] [भाव० धुरंधरता] १. भार उठानेवाला। २. जो सबमें बहुत बड़ा, मान्य व बलवान हो। ३. श्रेष्ठ। प्रधान।

धुर–पुं० [सं० धुर्] १. गाड़ी का धुरा। अक्ष। २. शीर्ष या उच्च स्थान। ३. आरम्भ। शुरू। ४. दे० 'धूर'।

अव्य० [सं०] १. बिलकुल ठीक या ठिकाने तक।

मुहा०–धुर सिर से = बिलकुल शुरू से।

वि० [सं० ध्रुव] १. पक्का। दृढ़।

पद–धुर का = (क) परले सिरे
हद दरजे का। (ख) अत्यन्त। परम।
२. सीधे। ३. बहुत दूर।

धुरजटी*–पुं० दे० 'धूर्जटी'।

धुरना*–स० [सं० धूर्वण] १. मा
पीटना। २. बजाना।

धुरवा*–पुं० [सं० धुर + वाह] बादल।

धुरा–पुं० [सं० धुर] [स्त्री० अल्पा०
लोहे का वह डंडा जिसके दोनों सि
गाड़ी आदि के पहिये लगे रहते हैं। अ

धुरी–स्त्री० [हिं० धुरा] गाड़ी का धु

धुरीण–वि० [सं०] १. बोझ सँभाले
वाला। २. मुख्य। प्रधान। ३. धुरंधर

धुरी राष्ट्र–पुं० [हिं० धुरी + सं० रा
दूसरे महायुद्ध से पहले सार्वराष्ट्रीय रा
में जरमनी, इटली और जापान ये
राष्ट्र, जिनका एक गुट बना था।

धुरेटना*–स० [हिं० धूर + लपे
धूल से लपेटना। धूल लगाना।

धुर्रा–पुं० [हिं० धूर] १. धूल। चू

मुहा०–धुर्रा करना = शीत से
सुन्न होने पर सोंठ की बुकनी आदि म

धुर्रे उड़ाना = (क) किसी वस्तु के टु
कर डालना। (ख) किसी के मत का
आदि करके बहुत दुर्दशा करना।

धुलना–अ० [हिं० 'धोना' का अ०
[प्रे० धुलाना] पानी से साफ
जाना। धोया जाना।

धुलाई–स्त्री० [हिं० धोना] धोने का
भाव या मजदूरी।

धुलेंडी–स्त्री० [हिं० धूल + उड़ाना]
जलने के दूसरे दिन होनेवाला त्यो
(इस दिन लोग एक दूसरे पर
गुलाल आदि डालते हैं।)

धुव*–पुं० दे० 'ध्रुव'।

धुवाँ–पुं० दे० 'धूआँ'।

धुवाँस–स्त्री० दे० 'धुआँस'।

या देश०] १. ढूह ।
बाँध । बूंद ।
ढिराट या दूर्शं, पाली
ढी लोई या चादर ।
'धुँधला' ।
।
०]जोर का शब्द करना ।
।
धूम्र] १. आग से नि-
ने भार । धम ।
धौरहर=क्षण-भंगुर वस्तु ।
के बादल उड़ाना = भारी
अनहोनी बात कहना ।
के बादल = (क) ऐसे बादल
हों, पर जिनसे वर्षा न हो ।
बात या चीज जो देखने में
पड़े, पर जिसमें सार कुछ

ड़ता हुआ ढेर । भारी समूह ।
[हिं० धूआँ + फा० कश]
चलनेवाला जहाज । अगिन-
)
[हिं०धूआँ + धार] १. धूएँ
। २. गहरे काले रंग का ।
। ३. बहुत जोर का । घोर ।
अधिक या बहुत जोर से ।
धूआँ] धूनी ।
दे० 'दुकना' ।
[सं० धूर्जटि] शिव ।
[सं० धूत] १. हिलना । २.

[सं०] १. हिलता या काँपता
हुआ । त्यक्त । ३. चारो
घिरा हुआ ।
धूर्त] १. धूर्त । चालाक ।
।
[हिं० धूर्त] धूर्तता करना ।
=धूर्तता ।

धूतुक (तू)-पुं० [अनु०] १. तुरही । २. धू धू शब्द करनेवाला कोई बाजा ।

धू धू-पुं० [अनु०] आग के दहकने या जोर से जलने का शब्द ।

धूनना*-स० [हिं० धूनी] कुछ जलाकर उसका धूआँ उठाना । धूआँ या धूनी देना । स० दे० 'धुनना' ।

धूनी-स्त्री०[हिं०धूआँ]१.गुग्गुल आदि गन्ध-द्रव्य जलाकर निकाला हुआ धूआँ । **मुहा०-धूनी देना** = कोई चीज जलाकर उसका धूआँ उठाना । २. साधुओं के तापने की आग । **मुहा०-धूनी जगाना, रमाना या लगाना**=(क) साधुओं का आग जलाकर उसके सामने बैठना । (ख) साधु या विरक्त होना ।

धूप-पुं० [सं०] गंध-द्रव्यों को जलाकर निकाला हुआ धूआँ । सुगंधित धूम । स्त्री० १. एक प्रसिद्ध मिश्रित गंध-द्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धूआँ निकलता है । २. सूर्य की किरणों का विस्तार । सूर्यातप । घाम । **मुहा०-धूप खाना** = शरीर गरम करने के लिए धूप में बैठना । **धूप दिखाना** = धूप में रखना । **धूप में बाल सफेद करना** = बिना कुछ सीखे या अनुभव प्राप्त किये उम्र बिताना ।

धूप-घड़ी-स्त्री० [हिं० धूप + घड़ी] धूप की सहायता से समय का ज्ञान प्राप्त करने का एक यंत्र । (इसमें एक गोल चक्कर के बीच में गड़ी हुई कील की परछाईं से समय जाना जाता है ।)

धूप-छाँह-स्त्री० [हिं० धूप + छाँह] एक विशेष प्रकार से बनाया हुआ वह कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई देता है, कभी दूसरा ।

धूप-दान-पुं० [सं० धूप + आधान] [अल्पा० धूपदानी] धूप या गंध द्रव्य जलाने का पात्र ।

धूपना*–अ० [सं० धूपन] धूप या और कोई गंध-द्रव्य जलाकर उसका धूआँ उठाना।
स० सुगन्धित धूएँ से बासना।
अ० [सं० धूपन = श्रांत होना] दौड़ना। हैरान होना। जैसे–दौड़ना-धूपना।

धूप-बत्ती–स्त्री० [हिं० धूप + बत्ती] धूप आदि सुगंधित मसालों से बनी हुई वह बत्ती जिसे जलाने से सुगन्धित धूआँ निकलता है।

धूपित–वि० [सं०] १. धूप जलाकर सुगन्धित किया हुआ। २. थका हुआ।

धूम–पुं० [सं०] १. धूआँ। २. अपच में उठनेवाला डकार। धुआँयँध। ३. धूमकेतु।
स्त्री० [सं० धूम = धूआँ] १. बहुत से लोगों के इकट्ठे होकर शोर मचाने आदि का व्यापार। २. हलचल। आन्दोलन। ३. उपद्रव। ऊधम। ४. ठाठ-बाट। समारोह। ५. कोलाहल। हल्ला। शोर। ६. प्रसिद्धि। ख्याति।
वि० १. धूएँ की तरह का। २. जिसका कोई आधार न हो। ३. झूठ-मूठ का और निस्सार। (यौ० के आरम्भ में; जैसे–धूम गयंद = दृष्टि-दोष, धोखे आदि के कारण दिखाई पड़नेवाली कोई ऐसी चीज जिसमें वास्तविकता या सार कुछ भी न हो।)

धूम-केतु–पुं० [सं०] १. पुच्छल तारा। २. अग्नि। आग।

धूम-धड़का–पुं० दे० 'धूम धाम'।

धूम-धाम–स्त्री० [हिं०धूम + धाम (अनु०)] बहुत अधिक तैयारी। ठाठ बाट। समारोह।

धूम-धामी–वि० [हिं० धूम-धाम] जिसमें धूम-धाम हो। धूम-धाम या आडंबर से होनेवाला।
वि० [हिं० धूम] धूम या उपद्रव मचानेवाला। नटखट। उपद्रवी।

धूम-ध्वज–पुं० [सं०] अग्नि। आग।

धूम-पट–पुं०[सं०] वास्तविक स्थिति या तथ्य छिपाने के लिए उसके सामने खड़ी की जानेवाली कोई आड़ या पुरदा। (स्मोक-स्क्रीन)

विशेष–युद्ध-क्षेत्र में कभी कभी अपनी सेनाएँ, तोपें आदि शत्रु की निगाह से बचाने के लिए उनके आगे धूएँ के जो बादल खड़े किये जाते हैं उन्हीं से इस पद का प्रयोग चला है।

धूम-पान–पुं० [सं०] तमाकू, बीड़ी आदि (का धूआँ) पीना।

धूम-पोत–पुं० [सं०] धूआँकश।

धूमर*–वि० दे० 'धूमिल'।

धूमिल*–वि० [सं० धूमल] १. धूएँ के रंग का। काला। २. धुँधला।

धूम्र–वि० [सं०] धूएँ के रंग का।
पुं० दे० 'धूम' (धूआँ)।

धूम्र-पट–पुं० दे० 'धूम-पट'।

धूम्र-पान–पुं० दे० 'धूम-पान'।

धूर–स्त्री० दे० 'धूल'।
पुं० [सं० धुर] एक बिस्वे का बीसवाँ भाग। बिस्वांसी।

धूरजटी–पुं० दे० 'धूर्जटि'।

धूर-धुरेटा–पुं० [हिं० धूल] वह स्थान जहाँ धूल और गर्द हो।
वि० धूल में लिपटा हुआ।

धूरा–पुं० १. दे० 'धुर्रा'। २. दे० 'धूर'।

धूरि*–स्त्री० दे० 'धूल'।

धूर्जटि–पुं० [सं०] शिव। महादेव।

धूर्त्त–वि०[सं०] [भाव०धूर्त्तता] १.मायावी छली। २. वंचक। ठग। ३. दाँव पेंच या चालबाजी से काम निकालनेवाला।

धूल–स्त्री० [सं० धूलि] १. मिट्टी, आदि का बहुत महीन चूर। रज। गर्द।
मुहा०–(कहीं) **धूल उड़ना** = (क) बरबादी आना। (ख) रौनक न रहना। (**किसी की**) **धूल उड़ना** = (क) बहुत दोष प्रकट होना। (ख) बदनामी या उपहास होना। (**किसी की**) **धूल उड़ाना** = (क) बदनामी करना। (ख) हँसी उड़ाना। **धूल की रस्सी बटना** = (क) असंभव कार्य के पीछे पड़ना। (ख) कोरी धूर्तता में

धूल चाटना =
दिखाना । (किसी
डालना = उपेक्षापूर्वक
फाँकना = मारा मारा
मिलना = चौपट होना ।
डालना = सिर धुनना ।

तुच्छ वस्तु ।
के पैर की धूल होना =
में अत्यन्त तुच्छ होना ।
] धूल । गर्द ।
[सं०] वे चित्र, कोष्ठक
चूर्ण जमीन पर भुरककर
ड़ी ।
] १. धूल या मिट्टी के
। खाकी । २. धूल से
हुआ ।
धूसर = धूसर ।
दे० 'धूसर' ।
दे० 'धिक्कार' ।
] [स्त्री० धृता] १.
। २. धारण किया हुआ । ३.
। ४. स्थिर किया हुआ ।
] १. धरने या पकड़ने की
। धारण । २. स्थिर रहने
भाव । ठहराव । ३.
। ५. धैर्य । धीरज ।
धृतिन्] धीर । धैर्यवान् ।
] [स्त्री० धृष्टा, भाव०
। बेहया । २. ढीठ ।

अपराध करता रहता,
और फिर भी
रहता है । (साहित्य)
] १. थोड़े दिनों की ब्याई
। २. गाय ।
] नरसिंह (राजा) ।
[सं० ध्यान] ध्यान करना ।

उदा०-सेइ न धेइ न सुमिरि कै पद-प्रीति सुधारी ।—तुलसी ।

धेरी-स्त्री० [सं० दुहिता] पुत्री । बेटी ।

धेली-स्त्री० [हिं० आधा] अठन्नी ।

धै†-अव्य० [हिं० दुहाई] (किसी की) दुहाई । शपथ । सौगन्द । जैसे-राम-धै ।

धैर्य-पुं० [सं०] १. संकट या कठिनाई के समय मन की स्थिरता । धीरता । धीरज । २. चित्त में उद्वेग या उतावलापन न उत्पन्न होने का भाव । ३. शान्ति । सब्र ।

धैवत-पुं० [सं०] संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जिसका संकेत धा या ध है ।

धोंधा-पुं० [सं० ढुंढि ?] बे-डौल या ठेढ़ा-मेढ़ा पिंड ।

वि० १. मूर्ख । ना-समझ । २. बेडौल, भद्दा या बे-ढंगा ।

धोंधा वसंत-पुं० = निरा मूर्ख ।

धोई-स्त्री० [हिं० धोना] वह दाल, जिसका छिलका धोकर अलग कर दिया गया हो ।

धोखा-पुं० [सं० धूकता = धूर्त्तता] १. भ्रम में डालनेवाला मिथ्या व्यवहार । भुलावा । छल । दगा । २. किसी के झूठे व्यवहार से उत्पन्न भ्रम । भुलावा । भ्रान्ति ।

मुहा०-**धोखा खाना** = ठगा या छला जाना । **धोखा दे जाना** = असमय में मरना या नष्ट होना । **धोखा देना**=भ्रम में डालना । छलना ।

३. भ्रम उत्पन्न करनेवाली बात या वस्तु ।

यौ०-**धोखे की टट्टी** = (क) वह टट्टी या आवरण जिसकी आड़ से शिकारी शिकार करते हैं । (ख) दूसरों को भ्रम में डालनेवाली चीज या बात ।

मुहा०-**धोखा खड़ा करना** = आडंबर रचना ।

४. अज्ञान से होनेवाली भूल ।

मुहा०-**धोखे में या धोखे से** = भूल से ।

५. अनिष्ट की संभावना । जोखिम । ६.

आशा या विश्वास के विरुद्ध होनेवाला कार्य या फल। जैसे–धोखा हो गया। ७. चिड़ियों को डराने के लिए खेत में खड़ा किया हुआ पुतला। बिजूखा। ८. चिड़ियाँ उड़ाने के लिए पेड़ में बँधी हुई लकड़ी। खट-खटा। ९. बेसन का एक प्रकार का पकवान।

धोखेबाज–वि० [हिं० धोखा + फा० बाज] [भाव० धोखे-बाजी] दूसरों को धोखा देनेवाला। कपटी। धूर्त्त।

धोटा*–पुं० दे० 'ढोटा'।

धोती–स्त्री० [सं० अधोवस्त्र] कमर से घुटनों के नीचे तक (और स्त्रियों का प्रायः सारा शरीर) ढकने के लिए कमर में लपेटकर पहनने का कपड़ा।

मुहा०–धोती ढीली होना = हिम्मत छूट जाना।

स्त्री० दे० 'धौति'।

धोना–स० [सं० धावन] [प्रे० धुलाना] १. पानी में रगड़ और डुबाकर साफ करना। प्रक्षालित करना। पखारना।

मुहा०–(किसी वस्तु से) हाथ धोना = खो या गँवा देना। वंचित होना। **हाथ धोकर पीछे पड़ना** = जी-जान से किसी व्यक्ति या काम के पीछे लग जाना।

२. दूर करना। हटाना या मिटाना।

मुहा०–धो बहाना = न रहने देना।

धोप*†–स्त्री० [सं० धूर्वा] तलवार।

धोपना†–स० = मारना-पीटना।

धोव–पुं० [हिं० धोना] १. धोये जाने की क्रिया। (गिनती के विचार से) जैसे–इस कपड़े पर चार धोव पड़े हैं।

धोबी–पुं० [हिं० धोना] [स्त्री० धोबिन] कपड़े धोने का काम करनेवाला। रजक।

कहा०–धोबी का कुत्ता = व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला व्यक्ति। निकम्मा आदमी।

धोरी–पुं० [सं० धौरेय] १. धुरा या भार उठानेवाला। २ रक्षक। ३. बैल। वृषभ। ४. प्रधान। मुखिया। ५. श्रेष्ठ पुरुष।

धोरे†–वि० [सं० धर] पास। निकट।

धोवन–स्त्री० [हिं० धोना] १. धोने की क्रिया या भाव। २. कोई चीज धोने से निकला या बचा हुआ पानी।

धोवना*–स० = धोना।

धोवा*–पुं० [हिं० धोना] १. धोवन। २. जल। ३. अरक।

धोवाना*–स० [हिं० धोना] धुलाना। अ० धोया जाना। धुलना।

धौं*–अव्य० [हिं० दँव, दहुँ] १. ए अव्यय जो ऐसे प्रश्नों के पहले आता जिनमें जिज्ञासा का भाव कम और सन्दे का भाव अधिक होता है। न जानें क्या मालूम नहीं। २. विकल्प या सन्देह-सूच वाक्यों के पहले लगनेवाला अव्यय। कि या। अथवा। ३. जोर देने के लिए या 'भला' के अर्थ में आनेवाला शब्द ४. विधि, आदेश आदि में केवल जोर के लिए एक शब्द।

धौंकना–स० [सं० धम् = धौंकना] [भा धौंक] १. आग सुलगाने के लिए को हवा देना। २. ऊपर डालना। दंड आदि देना या लगाना।

धौंकनी–स्त्री० [हिं० धौंकना] १. या धातु की बनी हुई आग सुलगाने नली। २. भाथी।

धौंकी†–स्त्री० १. दे० 'धौंकनी'। २. 'भाथी'।

धौंज*–स्त्री० [हिं० धौंजना] १. धूप। २. घबराहट। उद्विग्नता।

धौंजना†*–अ० [सं० ध्वंजन] दौड़ करना।

स० पैरों से रौंदना। कुचलना।

धौंताल–वि० [हिं० धुन + ताल] १. असाधारण धुन हो। २. फुरतीला। चालाक। ४. साहसी। ५. हेकड़। उपद्रवी। शरारती।

] १. धमकी । घुड़की ।
२. झाँसा-पट्टी ।
] १. धमकाना ।
२. दमन करना ।
'धूवर' ।
के ऊपर जमी हुई धूल ।
[हिं० धौंसना] १. बड़ा
२. सामर्थ्य । शक्ति ।
] एक प्रकार का धान
] १. धोया और साफ
२. उजला । सफेद ।
] १. शुद्धि । २. शरीर
बाहर से शुद्ध करने के लिए
विशेष क्रिया ।
'धरहरा' ।
धवल] [स्त्री० धौरी]
। २. पंडुक पक्षी ।
'धरहरा' ।
[सं० धौरेय] बैल ।
[हिं० धौरा] १. सफेद गाय ।
प्रकार की चिड़िया ।
दे० 'धौरे' ।
अनु०] १. सिर पर लगने-
२. नुकसान । हानि ।
या धौल-धप्पड़ =
की मार ।
] उजला । सफेद ।
= बहुत बड़ा धूर्त ।
'धरहरा' ।
[सं० धवल] [स्त्री० धौली,
] सफेद । उजला ।
दे० 'धवलागिरि' ।
] [स्त्री० ध्यात्री]
।
] १. किसी बात या कार्य में

मन के लीन होने की क्रिया, दशा या भाव। २. मानसिक अनुभूति। **मुहा०–ध्यान में डूबना या मग्न होना** = सब बातें भूलकर किसी एक बात पर मन में विचार करना। तल्लीन होना। **ध्यान धरना**=मन लगाना। चिन्तन करना। ३. चित्त की ग्रहण या विचार करने की वृत्ति या शक्ति। मन। **मुहा०–ध्यान में न लाना**=(क) चिन्ता न करना। ध्यान न देना। (ख) न विचारना। ४. चेतना की वृत्ति। चेत। ख्याल। **मुहा०–ध्यान जमना** = चित्त एकाग्र होना। **ध्यान दिलाना** = चेताना। सुझाना। **ध्यान देना** = विचार या गौर करना। **ध्यान पर चढ़ना** = खयाल लगा या बना रहना। चित्त से न हटना। **ध्यान बँटना** = ख्याल इधर-उधर होना। **ध्यान लगना**=चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना। ५. बोध या ज्ञान करानेवाली वृत्ति या शक्ति। समझ। बुद्धि। ६. स्मृति। याद। **मुहा०–ध्यान आना** = याद आना। **ध्यान दिलाना** = स्मरण कराना। **ध्यान पर चढ़ना** = स्मरण होना। **ध्यान रखना** = याद रखना। **ध्यान से उतरना** = याद न रहना। भूलना। ७. चित्त की एकाग्रता। ८. किसी विषय, विशेषतः धार्मिक विषय या अलौकिक सत्ता का लगातार कुछ समय तक होनेवाला गम्भीर मनन या चिन्तन जो योग का सातवाँ तथा समाधि के पूर्व का अंग माना जाता है। (मेडिटेशन)

मुहा०–ध्यान छूटना=चित्त की एकाग्रता भंग होना। **ध्यान करना** = परमात्मा के चिंतन के लिए चित्त एकाग्र करके बैठना।

ध्याना*–स० [सं० ध्यान] ध्यान करना या लगाना। (किसी को) जैसे–ईश्वर को ध्याना।

ध्यानी–वि० [सं० ध्यानिन्] १. ध्यान में

लगा हुआ। २. समाधि लगानेवाला।

ध्येय-वि० [सं०] १. ध्यान करने योग्य। २. जिसका ध्यान किया जाय। ३. जिसे ध्यान में रखकर कोई काम किया जाय। उद्देश्य। (ऑब्जेक्ट)

ध्रुपद-पुं० [सं० ध्रुवपद] एक प्रकार का पक्का गाना जिसकी लय और स्वर बिलकुल बँधे हुए होते हैं और जिसमें देवताओं की स्तुति आदि होती है।

ध्रुव-वि० [सं०] [वि० ध्रुवीय, भाव० ध्रुवता] १. सदा एक ही स्थान पर या एक ही अवस्था में रहनेवाला। स्थिर। अचल। २. जिसके ठीक या सत्य होने में कुछ भी सन्देह न हो। निश्चित। पक्का। (डेफिनिट)

पुं० १. आकाश। २. शंकु। कील। ३. पहाड़। ४. ध्रुपद। ५. भगवान के एक प्रसिद्ध भक्त जो राजा उत्तानपाद के पुत्र थे और जिनकी माता का नाम सुनीति था। ६. उत्तर आकाश में सदा एक ही स्थान पर रहनेवाला एक तारा जो उत्तानपाद का उक्त पुत्र माना जाता है। ७. पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी सिरे, जिनके बीचोंबीच अक्षरेखा की स्थिति मानी जाती है।

ध्रुव-दर्शक-पुं० [सं०] १. सप्तर्षि-मंडल। २. एक प्रसिद्ध यंत्र जिसकी सूई सदा उत्तरी ध्रुव की ओर रहती है और जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है। कुतुबनुमा।

ध्रुवीय-वि० [सं०] १. ध्रुव-सम्बन्धी। २. ध्रुव प्रदेश का।

ध्वंस-पुं० [सं०] विनाश। नाश।

ध्वंसक-वि० [सं०] नाश करनेवाला। पुं० दे० 'विध्वंसक'।

ध्वंसन-पुं० [सं०] [वि० ध्वंसनीय, ध्वंसित, ध्वस्त] १. ध्वंस या नाश करने की क्रिया या भाव। क्षय। विनाश। २. कल-कारखानों, रेलों, पुलों आदि का जान-बूझकर और सार्वजनिक कामों को रोकने अथवा ऐसे दूसरे दुष्ट उद्देश्यों से कि
जानेवाला विनाश। तोड़-फोड़। (सैबोटेज)

ध्वंसावशेष-पुं० [सं०] १. किसी ची
के टूट-फूट जाने पर बचा हुआ अंश। २.
खँडहर।

ध्वंसी-वि० [स्त्री० ध्वंसिनी] दे० 'ध्वंसक'।

ध्वज-पुं० [सं०] १. चिह्न। निशान। २. लंबे या ऊँचे डंडे के सिरे पर
हुआ कोई कपड़ा या कागज जो चिह्न
रूप में काम आता है। पताका। झंडा।

ध्वजा-स्त्री० [सं० ध्वज] पताका। झंडा।

ध्वजी-वि० [सं० ध्वजिन्] [स्त्री० ध्व
जिनी] चिह्न या पताका रखनेवाला।

ध्वनि-स्त्री० [सं०] १. वह जो सुनाई दे।
श्रवणेंद्रिय का विषय। शब्द। आवाज।
(साउंड) २. कुछ विशेष परिस्थितियों
शब्दों की वह पुनरावृत्ति जो शब्द-तरं
के किसी बाधक स्तर के साथ टकराने
होती है। आवाज की गूँन। ३. कि
घटना के बाद उसकी आलोचना आदि
रूप में किसी और स्थान पर होने
चर्चात्मक प्रतिक्रिया। (ईको) ४. कि
कथन या उक्ति के वाच्यार्थ या शब्दों
साधारण अर्थ को छोड़कर उसमें छि
हुआ, गूढ़ या व्यंग्य के रूप में निक
वाला अर्थ या आशय। झलकता हु
अर्थ या आशय।

ध्वनि-क्षेपक-वि० [सं०] ध्वनि को च
और फैलानेवाला।

ध्वनि-क्षेपक यंत्र-पुं० [सं०] वह
जिसकी सहायता से किसी एक स्थान
उत्पन्न होनेवाली ध्वनि एक विशेष प्र
की वैद्युत् क्रिया से चारो ओर बहुत
दूर तक पहुँचाई या फैलाई जाती है।
(माइक्रोफोन)

ध्वनि-क्षेपण-पुं० [सं०] (आधुनि
रेडियो आदि में) किसी स्थान पर उत्प
होनेवाली ध्वनि, एक विशेष प्रकार के वैद्यु

चारो ओर बहुत दूर
…ना।
…] १. जो ध्वनि या
… हुआ हो। २. शब्द
… हुआ। व्यंजित।
… वादित।
… [सं०] हवा में चारो
… तरंग जो किसी स्थान
… शब्द होने पर उठती है
… कानों को उस ध्वनि या
… है। (साउंड वेव)
… [सं०] वह विज्ञान
… विवेचन होता है कि
… के गले से किस प्रकार
… उत्पन्न होते हैं और उन्हें किस प्रकार बोला या लिखा जाता है। (फोनेटिक्स)

ध्वन्यात्मक–वि० [सं०] १. ध्वनियुक्त। २. जिसमें व्यंग्य अर्थ प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ–पुं० [सं० ध्वन्यर्थ] शब्द की व्यंजना शक्ति से निकलनेवाला अर्थ।

ध्वन्यालेखन–पुं० [सं०ध्वनि + आलेखन] आधुनिक बोलते चित्र-पट में वह प्रक्रिया जिसके द्वारा पात्रों की बात-चीत या संगीत आदि की ध्वनियाँ एक विशेष यंत्र के द्वारा इस प्रकार गृहीत और अंकित की जाती हैं कि आवश्यकता पड़ने पर चित्रपट दिखाने के समय उसके साथ सुनाई जा सकें।

ध्वांत–पुं० [सं०] अन्धकार। अँधेरा।

ध्वांतचर–पुं० [सं०] राक्षस।

न

… का बीसवाँ और तवर्ग
… वर्ण, जिसका उच्चारण-
… अव्यय के रूप में इसका
… 'नहीं' या 'मत' के अर्थ में,
… के रूप में और (ख)
… के अन्त में 'या नहीं' के
… मानोगे नहीं न?)

…] १. नग्नता। नंगा-
… का गुप्त अंग।
… [हिं० नंगा + धड़ंग
… नंगा। दिगंबर। वि-वस्त्र।
…] १. जिसके शरीर
… न हो। दिगंबर। वस्त्र-
… ऊपर कोई आवरण न
… । ४. लुच्चा। पाजी।
… । (देखो)
… [हिं० नंगा + झोरना]
… के लिए या सन्देह-
… आदि उतरवाकर अथवा यों ही अच्छी तरह देखना। पहने हुए कपड़ों की तलाशी।

नंगा नाच–पुं० [हिं० नंगा + नाच] बहुत ही निर्लज्जतापूर्वक और बिलकुल मनमाने ढंग से अनेक प्रकार के अनुचित, नियम-विरुद्ध और दोषपूर्ण कार्य करना।

नंगा-बूचा–वि० [हिं०नंगा + बूचा=खाली] जिसके पास कुछ भी न हो। परम निर्धन।

नंगा-लुच्चा–वि० [हिं० नंगा + लुच्चा] नीच और दुष्ट। बदमाश।

नँगियाना–स० [हिं० नंगा] १. नंगा करना। शरीर पर से वस्त्र उतार लेना। २. कपट का आवरण हटाना। ३. सब कुछ छीन लेना।

नँग्याना*–स० दे० 'नँगियाना'।

नँचना*–अ० = नाचना।

नंद–पुं० [सं०] १. आनन्द। हर्ष। २. परमेश्वर। ३. पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ४. विष्णु। ५. बेटा। पुत्र। ६. गोकुल के गोपों के मुखिया, वसुदेव के मित्र

और श्रीकृष्ण के पालक पिता।

नंद-किशोर–पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदकुमार–पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदनंदन–पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदनंदिनी–स्त्री० [सं०] योग-माया।

नंदन-पुं० [सं०] १. स्वर्ग में इन्द्र का उपवन। २. शिव। ३. विष्णु। ४. बेटा। जैसे–नंदनंदन। ५. मेघ। बादल।
वि० आनंद देने या प्रसन्न करनेवाला।

नंदना*–अ० [सं० नंद] आनंदित होना।
स० आनन्दित या प्रसन्न करना।
स्त्री० [सं० नंद = बेटा] लड़की। बेटी।

नंदनी–स्त्री० दे० 'नंदिनी'।

नंद-रानी–स्त्री० = यशोदा।

नंदलाल–पुं० = श्रीकृष्ण।

नंदा–स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. एक प्रकार की कामधेनु। ३. संपत्ति। धन-दौलत। ४. पति की बहन। ननद।
वि० स्त्री० १. आनंद देनेवाली। २. शुभ।

नंदि–पुं० [सं०] १. आनंद। २. परमेश्वर। ३. दे० 'नंदी'।

नंदित-वि० [सं०] आनंदित। प्रसन्न।
*वि० [हिं० नादना] बजता हुआ।

नंदिन*–स्त्री० [सं० नंदिनी] लड़की

नंदिनी–स्त्री० [सं०] १. पुत्री। बेटी। २. उमा। दुर्गा। ३. गंगा। ४. पति की बहन। ननद। ५. वसिष्ठ की कामधेनु, जिसकी सेवा करके राजा दिलीप ने रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था। ६. पत्नी। जोरू।

नंदी–पुं० [सं० नंदिन्] १. शिव के एक प्रकार के गण। २. शिव का द्वार-पाल, बैल। ३. शिव के नाम पर दागकर छोड़ा हुआ बैल। ४. गाँठों से युक्त शरीरवाला बैल। (यह खेती के काम का नहीं होता।) ५. विष्णु।
वि० आनंद-युक्त। प्रसन्न।

नंदी-गण–पुं० [हिं० नंदी + गण] १. शिव का द्वारपाल, बैल। २. किसी के नाम पर दागकर छोड़ा हुआ बैल। साँड़।

नंदीमुख–पुं० दे० 'नांदीमुख'।

नंदीश्वर–पुं० [सं०] १. शिव। २. शिव का एक गण।

नंदेऊ†*–पुं० दे० 'नंदोई'।

नंदोई–पुं० [हिं० ननद + ओई (प्रत्य०) ननद का पति। पति का बहनोई।

नंबर–वि० [अं०] संख्या। अदद।
पुं० १. संख्या। अंक। २. दे० 'नं गज'। ३. दे० 'अंक'।

नंबरदार–पुं० [अं० नंबर + फा० (प्रत्य०)] १. गाँव का वह अधि जो मालगुजारी आदि वसूल करता है २. मुखिया।

नंबरवार–क्रि० वि० [अं० नंबर + वार] संख्या के क्रम से। एक एक क्रमशः।

नंबरी–वि० [अं० नंबर + ई (प्रत्य० १. जिसपर नंबर लगा हो। २. सम्बन्धी। नंबर का। जैसे–नंबरी गज मशहूर। ४. बहुत बड़ा। जैसे–नंबरी

नंबरी गज–पुं० [हिं० नंबरी + कपड़े नापने का ३६ इंच का गज।

नंबरी चोर–पुं० [हिं० नंबर + चो वह बहुत बड़ा और प्रसिद्ध चोर जि पुलिस के अभिलेखों में विशेष उल्लेख हो।

नंबरी तह–स्त्री० [हिं० नंबरी (परत)] कपड़े के थानों की वह तह कपड़ा प्रायः एक एक नम्बर या दूरी पर उलटकर एक के ऊपर दूस के रूप में लगाया जाता है। (मि थान आते हैं, उनकी तह प्रायः इसी लगी होती है।)

नंबरी नोट–पुं० [हिं० नंबर + अं० सौ रुपये या इससे अधिक मूल्य सरकारी नोट जिसका कुछ दिनों पहले लेन देन के समय बही-खातों में नम्बर लिख

[हिं० नंबरी + सेर]
रुपए भर का सेर ।
नाश] नष्ट । बरबाद ।
नय] नीतिज्ञ ।
। २. 'नया' का स्त्री० ।
'नव' । २. दे० 'नौ' ।
दे० 'नौका' ।
दे० 'नौज' ।
'नत' ।
[सं० नवल] नया ।
दे० 'नवोढ़ा' ।
[हिं० नाक + कटना]
] १. जिसकी नाक कटी
। बे-हया ।
[हिं० नाक + घिसना]
आने या कोई काम कराने
पूर्वक बिनती करना या
।
[हिं० नाक + छींकना]
पौधा जिसके फूल सूँघने से
।
[हिं० नाक + कटना] [स्त्री०
एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ
मंगल अवसरों पर गाती हैं ।
' ।
दे० 'नगद' ।
दे० 'नगद' ।
[हिं० नाकना] १. लाँघना ।
गना ।
कियाना] नाक में दम
होना ।
' ।
दे० 'सँघ' ।
[हिं० नाक + बानी]
। हैरानी । परेशानी ।
[हिं० नाक + बेसर]
।

नकल–स्त्री०[अ०] १.किसी दूसरे के आकार या प्रकार के अनुसार तैयार की हुई वस्तु। अनुकृति। २. कोई वस्तु या कार्य देखकर उसके अनुसार वैसी ही कोई वस्तु बनाना या कार्य करना। अनुकरण। ३. लेख आदि की अक्षरशः की या उतारी हुई प्रतिलिपि। ४. अभिनय। ५. हास्य रस की कोई छोटा कहानी। चुटकुला। ६. दे० 'स्वाँग'।

नकल-नवीस–पुं० [अ० नकल + फा० नवीस] वह जो दूसरों के लेखों आदि की नकल करता हो। (अदालती)

नकल-बही–स्त्री० [हिं० नकल + बही] वह बही जिसपर चिट्ठियों और हुंडियों आदि की नकल रखी जाती है।

नकली-वि० [अ०] १. नकल करके बनाया हुआ। २. कूट। बनावटी। जाली। झूठा।

नकवानी*–स्त्री० दे० 'नक-बानी'।

नकशा–पुं० दे० 'नक्शा'।

नकसीर–स्त्री० [हिं०नाक + सं०क्षीर=जल] एक रोग जिसमें नाक से रक्त बहता है।

नकाना*–अ० दे० 'नकना'।
स० दे० 'नकियाना'।

नकाब-स्त्री० [अ०] १. चेहरा छिपाने के लिए उसपर डाला हुआ कपड़ा।
यौ०–नकाब-पोश = जो नकाब पहने हो।
२. स्त्रियों के मुख पर का घूँघट।

नकार–पुं० [सं०] १. अस्वीकृति-सूचक शब्द या बात। नहीं। २. इनकार। अस्वीकृति। ३. 'न' अक्षर।

नकारना–अ० [हिं० नहीं] १. किसी बात के सम्बन्ध में कहना कि यह ऐसी नहीं है, हमने ऐसा नहीं किया अथवा हम ऐसा नही करेंगे। 'नहीं' कहना या करना। २. अस्वीकृत करना।

नकारा†–वि० [हिं० न + कार्य] निकम्मा। निरर्थक।

नकारात्मक–वि० [सं० नकार + आत्मक] १. (उत्तर या कथन) जिसमें कोई बात

न मानी गई हो या कुछ करने से इनकार किया गया हो। 'सकारात्मक' का विपर्य्याय। २. जिसमें कोई 'नहीं' हो। 'नहीं' वाला। (निगेटिव)

नकाशना†-स० [अ० नक्काशी] धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र या बेल-बूटे आदि बनाना।

नकाशी-स्त्री० दे० 'नक्काशी'।

नकियाना†-अ० [हिं० नाक] १. बोलते समय शब्दों का अनुनासिक-युक्त उच्चारण करना। २. दे० 'नकना'।

स० बहुत परेशान या तंग करना।

नकीब-पुं० [अ०] १. बंदीजन। भाट। २. दे० 'कड़खैत'।

नकुड़ा-पुं० [सं० नक्र + पुट, प्रा० नक्कउड] १. नाक के अगले भाग का छेद। नथना। २. नाक का अगला भाग।

नकुल-पुं० [सं०] १. नेवला (जंतु)। २. राजा पांडु के चौथे पुत्र, जो माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

नकेल-स्त्री० [हिं० नाक] ऊँट, बैल आदि की नाक में पिरोई हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है। मुहरा।

मुहा०-किसी की नकेल हाथ में होना = किसी व्यक्ति पर पूरा वश या नियंत्रण होना।

नक्कना*-स० [सं० लंघन] उछलकर पार जाना। लाँघना।

नक्कारखाना-पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ नगाड़ा बजता है। नौबतखाना।

कहा०-नक्कारखाने में तूती की आवाज = बड़ों-बड़ों के सामने छोटों की न सुनी जानेवाली बात।

नक्कारा-पुं० दे० 'नगाड़ा'।

नक्काल-पुं० [अ०] १. किसी का अनुकरण या नकल करनेवाला। २. भाँड़।

नक्काश-पुं० [अ०] नक्काशी करनेवाला।

नक्काशी-स्त्री० [अ०] [वि० नक्काशीदार] १. धातु, काठ, पत्थर आदि प खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने की क्रिया। २. इस प्रकार बनाये हुए बेल-बूटे।

नक्की-वि० [देश०] १. पक्का। दृढ़। २. ठीक। ३. निश्चित।

स्त्री० [हिं० नाक] गाने का वह ढं जिसमें स्वर का कुछ अंश नाक से भी निकलता है।

नक्की-मूठ-स्त्री० [हिं० नक्की + मूठ] कौड़ियों से खेला जानेवाला एक प्रकार का जूआ।

नक्कू-वि० [हिं० नाक] १. बड़ी ना वाला। २. अपने आपको बहुत बड़ा स मझनेवाला। ३. सबसे अलग रहकर उलटा या बुरा काम करनेवाला।

नक्र-पुं० [सं०] १. नाक नामक जंतु। २. मगर। घड़ियाल। कुंभीर।

नक्श-वि० [अ०] अंकित, चित्रित लिखित।

पुं० [अ०] १. तसवीर। चित्र। खोदकर या कलम से बनाये हुए बेल-बू ३. मोहर। छाप। ४, यंत्र। तावीज।

नक्शा-पुं० [अ०] १. रेखाओं द्वा आकार का निर्देश। रेखा-चित्र। २. कृति। गढ़न। ३. चाल-ढाल। ढंग। अवस्था। ५. दशा। ६. साँचा। ठप्पा। पृथ्वी या खगोल के किसी भाग की आदि के विचार से बनाया हुआ सूचक वह चित्र, जिसमें देश, नगर, पहाड़, समुद्र आदि दिखाये गये हों। भवन आदि का उक्त प्रकार का रेखा-चि

नक्शा-नवीस-पुं० [अ० + फा०] न बनाने या अंकित करनेवाला।

नक्शाबंद-पुं० [अ० + फा०] व धोतियों, साड़ियों आदि के बेल-बूटे नक्शे या तर्ज तैयार करता है।

नक्षत्र-पुं० [सं०] [वि० नाक्षत्र] चंद्रमा के मार्ग में पड़नेवाले स्थिर तारों के २ समूह, जिनके भिन्न भिन्न रूप या आकार

जिनके अलग-अलग

)

] चंद्रमा।

नक्षत्रिन्] चंद्रमा।

] भाग्यवान्।

१. नाखून। २.एक प्रसिद्ध

खंड। टुकड़ा।

] गुड्डी उड़ाने की डोर।

[सं०] शरीर पर नाखून

हुआ चिह्न।

दे० 'नख-क्षत'।

पुं० दे० 'नख-क्षत'।

दे० 'नक्षत्र'।

-पुं० = चन्द्रमा।

[हिं० नाखना] डाँका, किया जाना।

करना।

] १.नष्ट करना। २.डाँकना।

[हिं० नख] नाखून।

[फा०] किसी को रिझाने या अस्वीकृति या सुकुमारता के लिए स्त्रियों की अथवा

। चोचला।

-पुं० दे० 'नखरा'।

दे० 'नखरेबाज'।

[सं० नख + रेखा] शरीर नखों का चिह्न जो प्रायः होता है। नखरौटा।

[फा०] [भाव० नखरे- करनेवाला।

दे० 'नख-रेख'।

[सं०] १. नख से शिख । २. नख से शिख तक वर्णन।

[सं०] १. शेर, चीता आदि जानवर। २. नृसिंह।

[अ० नख्खास] वह बाजार घोड़े बिकते हैं।

नखियाना*–स० [सं० नख + इयाना (प्रत्य०)] नाखून गड़ाना।

नखी–पुं० दे० 'नखायुध'। स्त्री० [सं०] नख नामक गंध-द्रव्य।

नखेद*–पुं० दे० 'निषेध'।

नखोटना*–स० [सं० नख + ओटना (प्रत्य०)] नाखूनों से खरोचना या नोचना।

नग–पुं० [सं०] १.पर्वत। पहाड़। २.वृक्ष। ३. सात की संख्या। ४. साँप। ५. सूर्य। पुं० [फा०नगीना, मि० सं० नग] १. दे० 'नगीना'। २. अदद। संख्या।

नगज–वि० [सं०] जो नग या पहाड़ से उत्पन्न हुआ हो। पहाड़ पर या पहाड़ से पैदा होनेवाला। जैसे–शिलाजीत, गेरू आदि। पुं० हाथी।

नगण–पुं० [सं०] तीन लघु अक्षरों का एक गण। जैसे–कमल। (पिंगल)

नगण्य–वि० [सं०] [भाव० नगण्यता] जिसकी कोई गिनती न हो। गया-बीता। दीन, हीन या तुच्छ।

नगद–पुं० [अ० नक़्द] वह धन जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-पैसा। रोक। वि० १. (रुपया) जो तैयार या सामने हो। २. जिसका मूल्य रुपये-पैसे आदि के रूप में दिया या चुकाया जाय। रोक। क्रि० वि० तुरंत दिये हुए रुपये के बदले में। 'उधार' का उलटा।
†वि० बढ़िया। अच्छा।

नगदी–क्रि० वि० [हिं० नगद] नगद या सिक्के (रुपये-पैसे आदि) के रूप में। (इन् कैश)
पुं०, वि० दे० 'नगद'

नगन*–वि० दे० 'नग्न'।

नगपति–पुं० [सं०] १. हिमालय पर्वत। २. शिव। ३. सुमेरु।

नगमा–पुं०[अ०नग्मः]१. संगीत। २.राग।

नगर–पुं० [सं०] मनुष्यों की वह बस्ती, जो गाँव और कस्बे से बहुत बड़ी होती है

और जिसमें सब तरह के बहुत-से लोग रहते और बाजार होते हैं। शहर। (सिटी)

नगर-कीर्त्तन–पुं० [सं०] नगर की गलियों में घूम-घूमकर होनेवाला धार्मिक गाना-बजाना या कीर्त्तन।

नगर-नारि–स्त्री० [सं०] वेश्या।

नगर पार्षद–पुं० [सं०] वह जो नगर-पालिका का सदस्य हो। (म्युनिसिपल कमिश्नर)

नगरपाल–पुं० [सं०] एक प्राचीन अधिकारी जिसका काम नगर की रक्षा और व्यवस्था करना होता था।

नगरपालिका–स्त्री०[सं० नगर + पालिका] वैधानिक आधार पर संगठित किसी नगर के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह संस्था जो उस नगर के स्वास्थ्य, शुचिता, सड़कों, भवन-निर्माण, जल-कल आदि लोकोपकारी कार्यों की व्यवस्था करती है। (म्युनिसिपैलिटी)

नगर-पिता–पुं०[सं० नगर + पिता] किसी नगर-बोर्ड का कोई सदस्य। (सिटी-फादर)

नगर-बोर्ड–पुं० [सं० नगर + अं० बोर्ड] किसी नगर के चुने हुए प्रतिनिधियों का वह निकाय या परिषद् जो वहाँ की नगर-पालिका के सब कामों की व्यवस्था करती हो। (म्युनिसिपल बोर्ड)

नगराई*–स्त्री० [हिं० नगर + आई (प्रत्य०)] १. नागरिकता। २. चतुराई।

नगरी–स्त्री० [सं०] छोटा नगर। कस्बा। (टाउन)

वि० दे० 'नागर'।

पुं० दे० 'नागरिक'।

नगरी क्षेत्र–पुं० [सं०] कोई नगरी और उसके आस-पास का वह क्षेत्र जिसकी लोक-हित सम्बन्धी व्यवस्थाएँ स्थानिक संस्था के अधीन हों। (टाउन एरिया)

नगला–पुं० [सं० नगर ?] छोटी बस्ती। कस्बा। गाँव। (प्रायः स्थानों के नामों के अन्त में; जैसे–नायक नगला।

नगवास*–पुं० दे० 'नाग-पाश'।

नगवासी*–स्त्री० दे० 'नाग-पाश'।

नगाड़ा–पुं० [फा० नक्कारः] डुगडु
बाएँ की तरह का एक प्रकार का
बड़ा बाजा। डंका। धौंसा।

नगाधिप–पुं० [सं०] १. हिमालय २. सुमेरु पर्वत।

नगारि–पुं० [सं०] इंद्र।

नगी–स्त्री०[सं० नग = पर्वत + ई (प्र
१. रत्न। नग। २. पार्वती।

नगीना–पुं० [फा०] रत्न। मणि।

नगेंद्र (गेश)–पुं० [सं०] हिमालय।

नगेसरि*–पुं० दे० 'नागकेसर'।

नग्न–वि० [सं०] [भाव० न
१. नंगा। २. आवरण-रहित।

नग्मा–पुं० दे० 'नगमा'।

नग्र*–पुं० दे० 'नगर'।

नघना–स० दे० 'नखना'।

नचना*–अ० [हिं० नाचना] नाच
वि० [स्त्री० नचनी] नाचने या हिलने

नचनि*–स्त्री० [हिं० नाचना] नाच

नचनियाँ–पुं० [हिं० नाचना] न
का पेशा करनेवाला। नर्त्तक।

नचवैया–पुं० [हिं० नाच] नाचने
नचानेवाला।

नचाना–स० [हिं० 'नाचना' का प्रे
किसी को नाचने में प्रवृत्त करना।
किसी को कोई काम करने के लिए
बार दौड़ाना या तंग करना। ३.
चीज हाथ में लेकर इधर-उधर घु
या हिलाना।

नचीला–वि० [हिं० नाच] जो न
या इधर-उधर हिलता-डोलता या घू
रहे। चंचल।

नचौंहाँ*–वि० [हिं० नाचना + औं
(प्रत्य०)] बराबर नाचता या इध
उधर घूमता रहनेवाला।

नछत्र*–पुं० दे० 'नक्षत्र'।

नछत्री–वि० दे० 'नक्षत्री'।

] [संज्ञा, वि० नज-

] १. दृष्टि। निगाह।
आना = दिखाई पड़ना।
= पसन्द आ जाना।
= दिखाई देना। **नजर**
जादू करना कि लोगों को
दिखाई पड़े।
३ निगरानी। देख-रेख।
। ५. परख। पहचान।
प्रिय मनुष्य या वस्तु
दृष्टि का बुरा प्रभाव।
उतारना = किसी उप-
का प्रभाव नष्ट करना।
बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना!
] १. भेंट। उपहार। २.
के सामने भेंट रखकर अ-
करने की एक प्रथा।
[अ० नजर + फा० बंद]
बंदी] ऐसी निगरानी में
निश्चित स्थान या सीमा से
सके।
वह खेल जो लोगों
देकर किया जाता है।
[अ०] महलों आदि के
ओर का बाग।
[अ० नज़र] जो देखते ही
अपना मँहगी या सस्ती

[हिं० नजर + आनना
१. नजर या भेंट करना।
। २. नजर लगाना।
[हिं० नजर] ऐसी बुरी
कुछ अनिष्ट हो। नजर
डालना जिससे कुछ
आना।
१. भेंट। उपहार। २.

किराये, पट्टे आदि पर मकान या जमीन लेने से पहले उसके स्वामी को भेंट-स्वरूप दिया जानेवाला धन। पगड़ी। ३. किसी विशिष्ट कार्य के लिए नियत धन के अतिरिक्त पहले दिया जानेवाला कुछ और धन। (प्रीमियम)

नजला-पुं० [अ०] जुकाम। सरदी।

नजाकत-स्त्री० [फा०] नाजुक होने का भाव। सुकुमारता।

नजिकाना*-अ० [हिं० नजीक (नजदीक)] निकट या पास पहुँचना।

नजीक*-क्रि० वि० [फा० नजदीक] निकट।

नजीर-स्त्री० [अ०] १. उदाहरण। २. दृष्टान्त।

नजूल-पुं० [अ०] नगर की वह भूमि जो सरकार के अधिकार में चली गई हो। राजग।

नट-पुं० [सं०] [भाव० नटता, स्त्री० नटी] १. नाट्य या अभिनय करनेवाला मनुष्य। नाटक का पात्र। (एक्टर) २. एक जाति जो प्रायः गा-बजाकर, खेल-तमाशे करके या कुश्ती-कलाबाजी दिखाकर निर्वाह करती है।

नटई-स्त्री० [देश०] १. गला। गरदन। २. गले की घंटी। घाँटी।

नट-खट-वि० [हिं० नट + अनु० खट] [भाव० नटखटी] १. पाजी। दुष्ट। २. चालाक। धूर्त्त।

नटन-पुं० [सं०] १. नृत्य। नाचना। २. नाट्य या अभिनय करना।

नटना*-अ० [सं० नटन] १. नाट्य या अभिनय करना। २. नाचना। ३. कहकर मुकर जाना।

नट नागर-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण का वाचक एक पद।

नटनि*-स्त्री० [सं० नर्त्तन] नृत्य। नाच। स्त्री० [हिं० नटना] इनकार। अस्वीकृति।

नटनी-स्त्री० [सं० नट + नी (प्रत्य०)]

नट की या नट जाति की स्त्री।

नटराज–पुं० [सं०] महादेव। शिव।

नटवना*–अ० [सं० नटन] १. नाट्य या अभिनय करना। २. नृत्य करना। नाचना।

नटवर–पुं० [सं०] १. नाट्य-कला का अच्छा ज्ञाता। २. श्रीकृष्ण।

नटसार*–स्त्री० दे० 'नाट्यशाला'।

नटसारी*–स्त्री०[हिं०नट] नट का काम।

नटसाल–स्त्री० [?] १. शरीर में गड़े हुए काँटे या तीर की गाँसी का वह भाग जो टूटकर शरीर में रह गया हो। २.कसक।

नटिन–स्त्री० दे० 'नटनी'।

नटी–स्त्री० [सं०] १. नट जाति की स्त्री। २. अभिनेत्री। पात्री। (ऐक्ट्रेस) ३. नर्त्तकी।

नटेश–पुं० [सं०] महादेव।

नटैया–स्त्री० दे० 'नटई'।

नठना*–अ० [सं० नष्ट] नष्ट होना। स० नष्ट करना।

नढ़ना†–स० [हिं० नाथना] १. गूँथना। पिरोना। २. बाँधना। ३. कसना।

नत–वि० [सं०] झुका हुआ।

नतन–पुं० [सं०] 'नत' होने या झुकने की क्रिया या भाव। झुकाव।

नत-पाल–वि० [सं०] अपने सामने आकर झुकनेवालों की रक्षा और पालन करनेवाला।

नत-मस्तक–वि० [सं०] जिसका सिर किसी के आगे झुका हो। (अधीनता या आदर का सूचक)

नत-माथ* वि० [सं० नत + हिं० माथा] १. जिसका सिर झुका हो। नत-मस्तक। २. विनीत। नम्र।

नतर(रु)*–क्रि० वि० [हिं० न + तो] नहीं तो। अन्यथा।

नति–स्त्री० [सं०] १. 'नत' होने की दशा। २. झुकाव। प्रवृत्ति। (इन्क्लिनेशन) ३. प्रणाम। ४. विनय। नम्रता।

नतीजा–पुं० [फा०] परिणाम। फल।

नतु*–क्रि० वि० [हिं०न+तो] नहीं तो।

नतुवा–अव्य० [सं०] नहीं तो क्या।

नतैत–पुं० [अ०नाता] नातेदार। संबंधी।

नतैती–स्त्री०[हिं०नतैन] रिश्तेदारी। संबंध।

नतोदर–वि० [सं०] जिसका ऊपरी भा या तल कुछ नीचे या अन्दर की ओर हो। (कॉन्केव)

नत्थी–स्त्री० [हिं० नथ या नाथना] कागज आदि के कई टुकड़ों को एक मिलाकर नाथना या फँसाना। २. प्रकार नाथे हुए काग़ज़ों आदि का मिसिल। (फाइल)

नत्वर्थक–वि० [सं०] १. जिसमें वस्तु या बात का अस्तित्व न माना हो। २. जिसमें कोई प्रस्ताव या मान्य न किया गया हो। (नेगेटिव)

नथ–स्त्री० [हिं० नाथना] नाक में का एक प्रसिद्ध गहना।

नथना–पुं० [सं० नस्त] नाक का भाग, जिसमें दोनों छेद होते हैं।

मुहा०–नथना फुलाना = रुष्ट हो

अ० [हिं० 'नाथना' का अ० रूप] किसी के साथ नत्थी होना या नाथा २. छेदा जाना।

नद–पुं० [सं०] वह बड़ी नदी नाम पुंलिंग-वाची हो। जैसे– ब्रह्मपुत्र, सिन्धु आदि।

नदना*–अ० [सं० नदन = शब्द १. पशुओं का-सा शब्द करना। २. ढँचाना। ३. शब्द करना। बजना। घोर शब्द करना। गरजना।

नदवान–पुं० [?] क्षत्रियों की शाखा का नाम।

नदारद–वि० [फा०] जो सामने प्रस्तुत न हो। लुप्त। गायब।

नदी–स्त्री० [सं०] १. जल का प्राकृतिक प्रवाह जो किसी पर्वत, आदि से निकलकर निश्चित मार्ग से

करने के योग्य नहीं रह जाते। (इम्पोटेन्सी)

नपुत्री*-वि० दे० 'निपुत्री'।

नफर-पुं० [फा०] १. सेवक। २. व्यक्ति।

नफरत-स्त्री० [अ०] घृणा।

नफरी-स्त्री० [फा०] किसी मजदूर या कारीगर की दिन भर की मजदूरी या काम।

नफा-पुं० [अ०] लाभ। फ़ायदा।

नफीरी-स्त्री० [फा०] तुरही।

नफीस-वि० [अ०] [भाव० नफासत] १. अच्छा। बढ़िया। २. सुन्दर।

नबी-पुं० [अ०] वह जिसे लोग ईश्वर का दूत मानते हों। पैगंबर। रसूल।

नबेड़ना-स० [संज्ञा नबेड़ा] दे० 'निबेड़ना'।

नब्ज-स्त्री० [अ०] कलाई की नाड़ी।

नभ-पुं० [सं० नभस्] १. आकाश। २. जल। ३. मेघ। बादल। ४. वर्षा।

नभ-गामी-पुं० [सं० नभोगामिन्] १. सूर्य, चंद्र या तारा। २. देवता। ३. पक्षी। वि० आकाश में चलनेवाला।

नभ-चर-पुं० दे० 'नभ-गामी'।

नभधुज*-पुं० [सं० नभःध्वज] मेघ।

नभवार*-पुं० [सं० नभ + बाल = व्योमकेश] शिव। महादेव।

नभश्चर-पुं० दे० 'नभ-गामी'।

नभोवाणी-स्त्री० दे० 'रेडियो'।

नम-वि० [फा०] [भाव० नमी] भींगा हुआ। गीला। तर।

नमक-पुं० [फा०] १. भोज्य पदार्थों में एक विशेष स्वाद उत्पन्न करने के लिए, थोड़ी मात्रा में डाला जानेवाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ। लवण। नोन।

मुहा०-नमक अदा करना = अपने मालिक के उपकार का अच्छा बदला चुकाना। **(किसी का) नमक खाना** = किसी के दिये हुए अन्न से पेट भरना। **कटे या जले पर नमक छिड़कना** = अत्यंत दुःखी को और दुःख देना। **नमक फूटकर निकलना** = कृतघ्नता का बुरा

फल या दंड मिलना। **नमक-मिर्च मिलाना** = किसी बात में अपनी ओर से भी कुछ मिलाना या बढ़ाना। २. सलोनापन। लावण्य।

नमक-हराम–पुं० [फा० नमक + अ० हराम] [भाव० नमक-हरामी] किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उससे द्रोह करनेवाला। कृतघ्न।

नमक-हलाल–पुं० [फा० नमक + अ० हलाल] [भाव० नमक-हलाली] स्वामी या अन्नदाता का कार्य या सेवा ईमानदारी से करनेवाला। स्वामिभक्त।

नमकीन–वि० [फा०] १. नमक मिला हुआ या नमक के स्वादवाला। २. खूबसूरत। पुं० नमक डालकर बनाया हुआ पकवान।

नमदा–पुं० [फा०] एक प्रकार का ऊनी कंबल जो ऊन जमाकर बनाया जाता है।

नमना*–अ० [सं० नमन] १. झुकना। २. प्रणाम करना।

नमनीय–वि० [सं०] १. जिसके आगे झुककर नमस्कार किया जाय। पूजनीय। २. जो झुक सके या झुकाया जा सके। लचीला। (फ्लेक्सिबुल)

नमनीयता–स्त्री० [सं०] नमनीय या लचीला होने की अवस्था या भाव। लचीलापन। (फ्लेक्सिबिलिटी)

नमस्कार–पुं० [सं०] झुककर आदरपूर्वक अभिवादन करना। प्रणाम।

नमस्कारना*–स० = नमस्कार करना।

नमस्ते–पुं० [सं०] आपको नमस्कार है।

नमाज–स्त्री० [फा०, मि० सं० नमन] मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना।

नमाजी–पुं० [फा०] नमाज पढ़नेवाला।

नमाना*–स० [सं० नमन] १. झुकाना। २. झुका या दबाकर अपने अधीन करना।

नमामि–पद [सं०] मैं नमस्कार करता हूँ।

नमित–वि० [सं०] झुका हुआ।

नमी–स्त्री० [फा०] गीलापन। तरी।

वि० [सं० नमन] १. झुकनेवाला। जो झुक सकता हो।

नमूना–पुं० [फा०] १. किसी पदार्थ प्रकार या गुण का परिचय कराने के लिए उसमें से निकाला हुआ थोड़ा अंश बानगी। २. वह जिससे उसी प्रकार वर्ग के दूसरे पदार्थों, बातों आदि का चल सके। उदाहरण। (एग्जाम्पुल) वह जिसे देखकर उसके अनुसार वैसा कुछ और बनाया जाय। आदर्श। दे० 'प्रतिमान'। ४. ढाँचा।

नम्य–वि० [सं०] जो झुक सके झुकाया जाने को हो।

नम्र–वि० [सं०] [भाव० नम्रता] जो सबसे झुककर या विनयपूर्वक व्य करे। विनीत। २. झुका हुआ।

नम्रता–स्त्री० [सं०] वह गुण कारण मनुष्य सबके सामने झुककर, बनकर और विनयपूर्वक रहता है और किसी से कठोर या उद्दंड व्यवहार करता। (ह्यूमिलिटी)

नय–पुं० [सं०] १. नीति। २. नम्र *स्त्री०, [सं० नद] नदी। दरिया।

नयकारी*–पुं० [सं० नृत्यकारी] ना वाला। नचनियाँ।

नयन–पुं० [सं०] १. आँख। २. ले

नयन-गोचर–वि० [सं०] आँ दिखाई देनेवाला।

नयन-पट–पुं० [सं०] आँख की

नयना*–अ० [सं० नमन] १. नम्र विनयपूर्ण व्यवहार करना। २ झुक पुं० [सं० नयन] आँख। नेत्र।

नयनी–स्त्री० [सं०] आँख की पुत वि० स्त्री० आँखोंवाली। जैसे मृगन

नयनूँ–पुं० [सं० नवनीत] १. म २. एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

नयर*–पुं० [सं० नगर] नगर।

नयवाद–पुं० [सं०] एक प्रकार

रामचन्द्र।

नरकासुर–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पौराणिक असुर जिसे विष्णु ने मारा था।

नरकुल–पुं० दे० 'नरकट'।

नर-केहरी–पुं० दे० 'नृसिंह'।

नरगिस–स्त्री० [फा०] एक पौधा जिसमें सफेद रंग के फूल लगते हैं। (उर्दू कवि इन फूलों से आँखों की उपमा देते हैं।)

नरजना*–अ० [फा० नाराज़] नाराज या अप्रसन्न होना।

स० [?] कोई चीज नापना या तौलना।

नरजीꜝ–पुं० [?] वह जो अनाज आदि तौलने का काम करता हो। बया।

नरद–स्त्री० [फा० नर्द] चौसर खेलने की गोटी।

*स्त्री० [सं० नर्द] ध्वनि। नाद।

नरदमा(दा)–पुं० [फा० नाबदान] मैले पानी का नल। पनाला।

नर-देव–पुं० [सं०] ब्राह्मण।

नर-नाथ–पुं० [सं०] राजा।

नर-नारि–स्त्री० [सं०] द्रौपदी।

नरनाह*–पुं० दे० 'नरनाथ'।

नर-नाहर–पुं० दे० 'नृसिंह'।

नरपति–पुं० [सं०] राजा।

नर-पिशाच–पुं० [सं०] मनुष्य होने पर भी पिशाचों के से काम करनेवाला।

नरम–वि० [फा० नर्म, मि० सं० नम्र] [भाव० नरमी] १. नर्म। मुलायम। २. लचीला। ३. 'तेज' का उलटा। मंदा। ४. धीमा। सुस्त। आलसी। ५. जल्दी पचनेवाला। लघु-पाक। ६. जिसमें पौरुष या पुंसत्व कम हो।

नरमद*–वि०, पुं० दे० 'नर्मद'।

नरमा–स्त्री० [हिं० नरम] १. एक प्रकार की कपास। देव-कपास। २. सेमर की रूई। ३. कान के नीचे का लटकता हुआ भाग। लोल।

पुं० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

नरमाना–अ० [हिं० नरम] १. कोमल, मुलायम या नरम पड़ना । २. व्यवहार में उग्रता छोड़कर नम्र होना ।
स० नरम या मुलायम करना ।

नरमाहट–स्त्री० दे० 'नरमी' ।

नरमी–स्त्री० [फा० नर्म] नरम होने की क्रिया या भाव । कोमलता ।

नर-मेध–पुं० [सं०] १. प्राचीन काल में मनुष्य के मांस की आहुति से होनेवाला एक यज्ञ । २. मनुष्यों का संहार ।

नर-लोक–पुं० [सं०] संसार । जगत ।

नर-वध–पुं० [सं०] किसी मनुष्य को जान-बूझकर या किसी उद्देश्य से मार डालना । (मर्डर)

नर-वाहन–पुं० [सं०] वह सवारी जिसे मनुष्य उठाकर या खींचकर ले चलते हों । जैसे–पालकी, रिक्शा आदि ।

नरसल–पुं० दे० 'नरकट' ।

नरसिंघ–पुं० दे० 'नृसिंह'

नरसिंघा–पुं० [हिं० नर = बड़ा + सिंघा= सींग] तुरही की तरह का एक बड़ा बाजा ।

नरसिंह–पुं० दे० 'नृसिंह' ।

नर-हत्या–स्त्री० [सं०] मनुष्य की साधारण चोट से होनेवाली वह मृत्यु, जिसमें मारने या चोट पहुँचानेवाले का उद्देश्य यह न हो कि वह मर जाय । (होमीसाइड)

नरहरि–पुं० [सं०] नृसिंह भगवान, जो चौथे अवतार माने जाते हैं ।

नराच–पुं० [सं० नाराच] तीर । बाण ।

नराज*–वि० दे० 'नाराज' ।

नराजना*–अ०, स० [फा० नाराज़] अप्रसन्न या नाराज होना या करना ।

नराट*–पुं० [सं० नरराट्] राजा ।

नराधिप–पुं० [सं०] राजा ।

नरिंद*–पुं० [सं० नरेंद्र] राजा ।

नरियर†–पुं० दे० 'नारियल' ।

नरियरी–स्त्री० दे० 'नरेली' ।

नरियाना†–अ० [देश०] चिल्लाना ।

नरी–स्त्री० [फा०] १. सिझाया हुआ मुलायम चमड़ा । २. करघे की वह न जिसपर सूत लपेटा रहता है । नार ।
†स्त्री० [सं० नलिका] नली । नाथी ।
*स्त्री० [सं० नर] स्त्री । नारी ।

नरेंद्र–पुं० [सं०] राजा । नृप ।

नरेंद्र-मंडल–पुं० [सं०] अँगरेजी शास में भारत की देशी रियासतों के राजाओं वह संस्था, जो देशी रियासतों की समृ व्यवस्था और हित-रक्षा के लिए बनी थी । (चेम्बर ऑफ प्रिन्सेज़)

नरेली–स्त्री० [हिं० नारियल] १. नारि यल की खोपड़ी । २. नारियल की खोप से बना हुआ हुक्का ।

नरेश–पुं० [सं०] राजा । नृप ।

नरोत्तम–पुं० [सं०] ईश्वर ।

नर्क*–पुं० दे० 'नरक' ।

नर्त्तक–पुं० [सं०] [स्त्री० नर्त्तकी] नाच या नृत्य करनेवाला । नचनियाँ ।

नर्त्तकी–स्त्री० [सं०] १. नाचनेवा स्त्री । २. वेश्या ।

नर्त्तन–पुं० [सं०] नृत्य ।

नर्त्तना*–अ० [सं० नर्त्तन] नाचना ।

नर्त्तित–वि० [सं०] नृत्य करता हुआ नाचता हुआ ।

नर्द–स्त्री० [फा०] चौसर की गोटी ।

नर्दन–स्त्री० [सं०] भीषण ध्वनि । गर

नर्म–पुं० [सं० नर्मन्] १. परि हँसी-ट्ठा । २. साहित्य में नायक का ठट्ठा करनेवाला सखा ।
वि० दे० 'नरम' ।

नर्मद–पुं० [सं०] १. मसखरा । २. भाँ
वि० सुख देनेवाला । सुखद ।

नर्मदेश्वर–पुं० [सं०] नर्मदा नदी निकलनेवाला अंडाकार शिव-लिंग ।

नर्म-सचिव–पुं० [सं०] विदूषक ।

नल–पुं० [सं०] १. नरकट । २. क ३. निषध देश के राजा वीरसेन के पुत्र,

वि० १. नया। २. अनोखा।

नव-कलेवर–पुं० [सं०] जगन्नाथ पुरी में, ठीक अधिमास के बाद पड़नेवाली रथ-यात्रा के समय होनेवाला वह विशेष उत्सव जिसमें उनकी पुरानी मूर्त्ति की जगह नई मूर्त्ति स्थापित की जाती है।

नव-खंड–पुं० [सं०] पृथ्वी के ये नौ खंड—भरत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत्त, कुश और रम्य।

नव-ग्रह–पुं० [सं०] सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह।

नवछावरि*–स्त्री० दे० 'न्योछावर'।

नव-जात–वि० [सं०] जिसने अभी या कुछ ही समय पहले जन्म लिया हो। हाल का जनमा हुआ।

नवतन*–वि० [सं० नवीन] नया।

नव-दुर्गा–स्त्री० [सं०] नौ दुर्गाएँ जिनका नवरात्र में पूजन होता है। यथा-शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्मांडा, स्कन्द-माता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा।

नवधा भक्ति–स्त्री० [सं०] भक्ति के नौ प्रकार जो ये हैं-श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्म-निवेदन।

नवना*–अ० [सं० नमन] १. झुकना। २. नम्र या विनीत होना।

नवनि*–स्त्री० [सं० नमन] १. नवने या झुकने की क्रिया या भाव। २. नम्रता। विनय।

नवनीत–पुं० [सं०] मक्खन।

नव-प्रसूत–वि० [सं०] जो अभी प्रसव से उत्पन्न हुआ हो। नव-जात।

नवम–वि० [सं०] संख्या-क्रम में नवाँ।

नव-मल्लिका–स्त्री० [सं०] चमेली।

नवमी–स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।

नव-युवक–पुं० [सं०] [स्त्री० नव-युवती] तरुण। जवान।

नव-यौवना–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने अभी यौवन-काल में प्रवेश किया हो। नौजवान औरत।

नव-रत्न–पुं० [सं०] १. मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनियाँ, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। २. गले में पहनने का उक्त नौ रत्नों का हार। ३. एक प्रकार की चटनी।

नव-रस–पुं० [सं०] काव्य के ये नौ रस— श्रृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत।

नवरात्र–पुं० [सं०] चैत सुदी प्रतिपदा से नवमी तक और कुँआर सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन, जिनमें नवदुर्गा का व्रत और पूजन होता है। (इनमें से पहला वासंती और दूसरा शारदीय नवरात्र कहलाता है।)

नवल–वि० [सं०] [स्त्री० नवला] १. नवीन। नया। २. सुंदर। ३. जवान। युवा।

नवलकिशोर–पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।

नवला–स्त्री० [सं०] नव-युवती स्त्री।

नव-शिक्षित–पुं० [सं०] १. वह जिसने हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो। नौसिखुआ। २. वह जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो।

नव-सत*–पुं० [सं० नव+सत=सप्त] (नव और सात) सोलह श्रृंगार।

नव-ससि*–पुं० [सं० नवशशि] द्वितीया का चंद्रमा। नया चाँद।

नव-सात*–पुं० दे० 'नव-सत'।

नवाई–स्त्री० [हिं० नवना] नवने या विनीत होने की क्रिया या भाव।

*वि० [सं० नव] नया। नवीन।

नवागत–वि० [सं०] नया आया हुआ।

नवाज–वि० [फा०] कृपा करनेवाला। (यौ० के अन्त में; जैसे–गरीब-नवाज।)

नवाजना*–स० [फा० नवाज़] कृपा करना।

नवाड़ा–पुं० [देश०] १. एक प्रकार की छोटी नाव। २. नाव को बीच धारा में ले जाकर चक्कर देने की जल-क्रीड़ा। नवरा।

नवाना–स० [सं० नवन] १. झुकाना। २. विनीत या नम्र करना।

नवान्न–पुं०[सं०] नया उपजा हुआ अनाज।

नवाब–पुं०[अ०नव्वाब] १. मुगल बादशाहों का वह प्रतिनिधि जो किसी प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त होता था। २. एक उपाधि जो आज-कल कुछ रईस मुसलमान अपने नाम के साथ लगाते हैं।

वि० खूब ठाठ-बाट से रहने और खूब खर्च करनेवाला।

नवाबी–स्त्री० [हिं० नवाब] १. नवाब का पद या काम। २. नवाबों का शासन-काल। ३. नवाबों की-सी अमीरी।

नवाभ्युत्थान–पुं० दे० 'नवोत्थान'।

नवाह–वि० [सं०] नौ दिनों तक चलता रहनेवाला या नौ दिनों में पूरा होनेवाला। जैसे–नवाह पाठ।

नवीकरण–पुं० [सं०] १. फिर से नये रूप में लाना। नया रूप देना। २. जिसकी अवधि बीत चुकी हो, उसे फिर से आगे के लिए वैध या नियमित करना। (रिन्यूअल)

नवीन–वि० [सं०] [भाव० नवीनता] १. जिसे बने, निकले या प्रस्तुत हुए थोड़े ही दिन हुए हों। बहुत ही थोड़े दिनों का। हाल का। नया। २. जो पहले-पहल मूल रूप में बना हो। (ओरिजिनल) ३. अपूर्व। विचित्र।

नवीस–पुं० [फा०] लिखनेवाला। लेखक। जैसे–अरजी-नवीस।

नवेद–वि० [सं० निवेदन] निमंत्रण।

नवेला–वि० [सं० नवल] [स्त्री० नवेली] १. नया। २. युवक। जवान।

नवोढ़ा–स्त्री० [सं०] १. नई व्याही हुई स्त्री। वधू। २. युवती स्त्री। ३. साहित्य में

त-यौवना नायिका जो
के पास न जाती हो।
[सं०] १. नये सिरे से या
उत्थान। २. किसी देश में
कौशल आदि का नये ढंग
या उत्थान। (रिनैजेन्स)
[सं०] जिसका अभी
हुआ हो।
[सं०] जो अभी हाल में
अस्तित्व में आया हो।
] [भाव० नव्यता] नया।
= नष्ट होना।
या अ० नशः] १. वह
जो शराब, भाँग आदि
सेवन करने से होती है।
जमना = अच्छी तरह
। नशा हिरन होना = किसी
के कारण नशा या अभिमान
जाना।
चीज। मादक द्रव्य।
पानी = नशे का सामान।
, अधिकार आदि का अभि-
।
उतारना = घमंड दूर
दे० 'नशेबाज'।
, स० [सं० नाश] नष्ट
।
दे० 'नाशक'।
[फा०] [भाव० नशीनी]
गद्दी-नशीन।
[फा० नशा + ईला (प्रत्य०)]
नशा होता हो। मादक। २.
प्रभाव हो।
[फा०] वह जो प्रायः नित्य
सेवन करता हो।
[फा०] फोड़े चीरने का बहुत

नश्वर–वि० [सं०] [भाव० नश्वरता] जो जल्दी नष्ट हो जाय। नष्ट हो जानेवाला। (मॉर्टल)

नषत*–पुं० दे० 'नक्षत्र'।

नष्ट–वि० [सं०] [भाव० नष्टता] १. जिसका नाश हो गया हो। २. जो दिखाई न दे। ३. अधम। नीच। ४. निष्फल। व्यर्थ।

नष्ट-भ्रष्ट–वि० [सं०] जो पूरी तरह से रद्दी या बरबाद हो गया हो।

नष्टा–स्त्री० [सं०] बद-चलन स्त्री। कुलटा।

नसंक*–वि० दे० 'निःशंक'।

नस–स्त्री० [सं० स्नायु] १. शरीर में तंतु के रूप की वह नली जो पेशी को किसी कड़े स्थान से जोड़ती है। २. कोई शरीर-तंतु या रक्त-वाहिनी नली।

मुहा०–नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना = किसी नस का अपनी जगह से कुछ हट या बल खा जाना। **नस नस में** = सारे शरीर में। **नस-नस फड़क उठना** = बहुत अधिक प्रसन्नता होना। **नस ढीली होना** = तेजी या शेखी दूर होना। पहले की-सी शान न रह जाना।

नस-तरंग–पुं० [हिं० नस + तरंग] शहनाई की तरह का एक बाजा जो गले की नसों पर रखकर बजाया जाता है।

नसना*–अ० = नष्ट होना।

अ० [हिं० नटना] भागना।

नसल–स्त्री० [अ०] वंश। कुल।

नसवार–स्त्री० दे० 'सुँघनी'।

नसाना–स० [हिं० 'नसना' का प्रे०] १. भगाना। २. (कष्ट आदि) दूर या नष्ट करना। अ० दूर या नष्ट होना।

नसावन*–वि० [हिं० नसाना] १. नसाने या भगानेवाला। २. (कष्ट आदि) दूर या नष्ट करनेवाला।

नसीत*–स्त्री० दे० 'नसीहत'।

नसीब–पुं० [अ०] भाग्य। तकदीर।

नसीबवर–वि० [अ०] भाग्यवान्।

नसीहत-स्त्री० [अ०] १. अच्छा और भलाई का उपदेश। सीख। २.बुरे काम से फल-स्वरूप मिलनेवाली अच्छी शिक्षा।

नसेनी-स्त्री० [सं० श्रेणी] सीढ़ी।

नस्तित-वि० [सं०] नस्ती या नत्थी में लगाया हुआ। नत्थी किया हुआ। (फाइल्ड)।

नस्ती-स्त्री० दे० 'नत्थी'।

नस्य-पुं० [सं०] सुँघनी। नास।

नहँ†-पुं० दे० 'नाखून'।

नहछू-पुं० [सं० नख-क्षौर] विवाह से पहले की एक रीति जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और उसे मेंहदी लगाई जाती है।

नहना*-स० दे० 'नाधना'।

नहर-स्त्री० [अक्कड़ी नारु (नहर) से फा०] सिंचाई, यात्रा आदि के लिए छोटी नदी के रूप में तैयार किया हुआ कृत्रिम जल-मार्ग। कुल्या।

नहरनी-स्त्री० [सं० नखहरणी] नाखून काटने का एक प्रसिद्ध औजार।

नहरुआ-पुं० [देश०] एक रोग जिसमें घाव में से सूत की तरह का लंबा सफेद कीड़ा निकलता है।

नहलाई-स्त्री० [हिं० नहलाना] नहलाने की क्रिया या मजदूरी।

नहलाना-स० हिं० 'नहाना' का स०।

नहवाना-स० दे० 'नहलाना'।

नहान-पुं० [सं० स्नान] १. नहाने की क्रिया या भाव। २. स्नान का पर्व।

नहाना-अ० [सं० स्नान] १. शरीर साफ करने के लिए उसे जल से धोना। स्नान करना।

पद-दूधों नहाओ, पूतों फलो = दे० 'दूध' के अन्तर्गत मुहा०।

२. तरल पदार्थ से सारे शरीर का तर होना।

नहार-वि० [फा०, मि० सं० निराहार] जिसने सवेरे से कुछ खाया न हो। बासी मुँह।

नहारी-स्त्री० दे० 'जल-पान'।

नहिक-वि० [सं० नहि = नहीं + क (प्रत्य०)]
१. अस्वीकृत करने या न माननेवाला।
'नहीं' कहने या करनेवाला। नकारात्मक।
२. जिसमें किसी विशेष वस्तु का अभा
हो। किसी विशिष्ट वस्तु, तत्व या बात से
रहित। ३. जो किसी तत्व या बात का
अवरोधक, बाधक या मारक हो। ४.
(प्रतिकृति या मूर्त्ति) जिसमें मू
छाया के स्थान पर प्रकाश और प्रका
के स्थान पर छाया हो। ('अहिक' का
विपर्याय; अपोजिट। उक्त सभी अ
के लिए)

पुं० १. वह कथन या बात जिसमें को
दूसरी बात न मानी गई हो या कुछ इ
कार किया गया हो। असम्मतिसू
बात। २. किसी विषय, निश्चय आदि
वह अंग या पक्ष जिसमें उसके अहिक
सकारात्मक पक्ष का खंडन या विरोध हो
३. किसी की वह प्रतिकृति या मूर्त्ति जि
मूल की छाया के स्थान पर प्रकाश
प्रकाश के स्थान पर छाया हो। ४. छाया-चि
में वह शीशा जिसपर किसी वस्तु का उ
प्रतिबिम्ब या आकृति अंकित होती है
जिससे कागज पर उसकी अहिक प्र
छापी जाती हैं। ('अहिक' का वि
नेगेटिव। उक्त सभी अर्थों के लिए)

नहीं-अव्य० [सं० नहिं] निषेध या अस्वी
सूचित करनेवाला एक अव्यय।

मुहा०-नहीं तो = यदि ऐसा न हो

नहूसत-स्त्री० [अ०] मनहूस होने
भाव। मनहूसी।

नाँ-अव्य० दे० 'नहीं'।

नाँउँ*-पुं० दे० 'नाम'।

नाँगा*-वि० दे० 'नंगा'।

नाँघना*-स० दे० 'लाँघना'।

नाँठना*-अ० = नष्ट होना।

नाँद-स्त्री० [सं० नंदक] मिट्टी का

पशुओं को चारा दिया
ता है।
[सं० नाद] १. शब्द
।
१.आनन्दित या प्रसन्न होना।
दीपक का भभकना।
] १. अभ्युदय। समृद्धि।
त्मक पद्य जो सूत्रधार
रने के पहले पढ़ता है।

[सं०] एक मांगलिक
आदि मंगल अवसरों से
।
दे० 'नाधना'।
दे० 'नाम'।
हीं।
'नाम'।
=नाम।
[सं० नाथ] स्वामी।
हीं।
[सं०] नहीं। न।
नी] हिं 'का' विभक्ति का
। (राज० और गुज०)
[हिं० नाई] नाई की स्त्री।
दे० 'नायक'।
[सं० न्याय] समान दशा।
ान। तुल्य। २. की तरह।
[सं० नापित] वह जो हजामत
करता हो। हज्जाम।
दे० 'नाम'।
दे० 'नाइन'।
[फा०] निराश।
'नाई'।
[फा० ना+कंदः] १. बिना
(घोड़ा)। २. अल्हड़।
नक्र] १.होठों के ऊपर की
लेने की इंद्रिय। नासिका।
का बाल होना = सदा साथ रहकर घनिष्ठ मित्र या मंत्री होना। **नाक घिसना** = दे० (किसी के आगे) 'नाक रगड़ना'। **नाकों चने चबवाना** = बहुत तंग करना। हैरान करना। **नाक-भौं चढ़ाना या सिकोड़ना**=अरुचि या अप्रसन्नता प्रकट करना। **नाक में दम करना** = बहुत तंग करना या सताना। **(किसी के आगे) नाक रगड़ना** = (क) गिड़गिड़ाकर विनती करना। (ख) अपने अपराध मानकर दीनतापूर्वक भविष्य में अपराध न करने की प्रतिज्ञा करना।

२. सिर की नसों आदि का मल जो नाक से निकलता है। रेंट। नेटा। ३.प्रतिष्ठा या शोभा बढ़ानेवाली वस्तु। ४.प्रतिष्ठा। मान। इज्जत।

मुहा०—नाक कटना = अप्रतिष्ठा या बेइज्जती होना। **नाक रख लेना** = प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।

पुं०[सं०नक्र]मगर की तरह का एक जल-जंतु।

पुं०[सं०] १. स्वर्ग। २.आकाश। ३.इन्द्र।

*पुं० दे० 'नाका'।

नाकड़ा—पुं० [हिं० नाक] नाक का एक रोग जिसमें वह पक जाती है।

नाकना*—स० [सं० लंघन] १. लाँघना। उदा०—सूगनि नाकति ज्यों अहि देखि।—केशव। २. आगे बढ़ जाना। मात करना।

नाका—पुं० [हिं० नाकना] १. रास्ते का सिरा। मुहाना। २. नगर, दुर्ग, क्षेत्र आदि का प्रवेश-स्थान।

मुहा०—नाका छेंकना = आने जाने का रास्ता रोकना।

३. वह स्थान जहाँ पहरा देने या कर उगाहने के लिए सिपाही रहते हों। चौकी। ४. सूई में का छेद।

नाका-बंदी—स्त्री० [हिं० नाका+फा० बंदी] शत्रु, अपराधी आदि को घेरने या पकड़ने के लिए किसी स्थान के आने-जाने के मार्ग रोकना। (ब्लॉकेड)

नाकेदार–पुं० [हिं० नाका + फा० दार] नाके पर रहनेवाला पहरेदार या अधिकारी।

नाक्षत्र–वि० [सं०] नक्षत्र-सम्बन्धी। नक्षत्र या नक्षत्रों का।

नाखना*-स० [सं० नष्ट] १. नष्ट करना। २. फेंकना। ३. डालना। ४. (शस्त्र) चलाना। ५. रखना। डालना। स० दे० 'लाँघना'।

ना-खुश–वि० [फा०] अप्रसन्न।

नाखून–पुं० [फा० नाखुन मि० सं० नख] उँगलियों के सिरे पर होनेवाली हड्डी की-सी बड़ी वस्तु। नख। नँह।

नाग–पुं० [सं०] [स्त्री० नागिन] १. साँप, विशेषतः फनवाला साँप।

मुहा०–नाग से खेलना = ऐसा कार्य करना जिसमें प्राण जाने का भय हो।

२. कद्रु से उत्पन्न कश्यप के वंशज, जिनका निवास पाताल में माना गया है। इनके ये आठ कुल माने गये हैं—वासुकि, तक्षक, कुलक, कर्कोटक, पद्म, शंखचूड़, महापद्म और धनंजय। ३. हिमालय की एक प्राचीन जाति। ४. हाथी। ५. राँगा। ६. सीसा। (धातु) ७. पान। तांबूल। ८. बादल। ९. आठ की संख्या।

नाग-कन्या–स्त्री० [सं०] नाग जाति की कन्या जो बहुत सुंदर मानी जाती है।

नाग-केसर–पुं० [सं० नागकेशर] एक पेड़ जिसके सूखे फूल औषध, मसाले और रंग बनाने के काम में आते हैं।

नाग-झाग*–पुं० दे० 'अफीम'।

नाग-नग–पुं० [सं०] गज-मुक्ता।

नागना*–अ० [हिं० नागा] नागा करना। अंतर डालना।

नाग-पाश–पुं० [सं०] १. वह फंदा जो नाग किसी की ओर लिपटकर उसे बाँधने या फँसाने के लिए बनाता है। २. वह विकट संकट जिससे सहज में छुटकारा न हो। ३. वरुण के अस्त्र का नाम। ४. शत्रुओं को बाँधने का एक प्राचीन अस्त्र।

नाग-फनी–स्त्री० [हिं० नाग + फन] थूहर की जाति का एक काँटेदार पौधा।

नाग-फाँस–पुं० दे० 'नाग-पाश'।

नाग-बंध–पुं० [सं०] किसी चीज़ को लपेटकर बाँधने का वह विशेष प्रकार, जो प्रायः वैसा ही होता है, जैसा नाग का कि जीव जंतु या वृक्ष आदि को अपने श से लपेटने का होता है।

नागबेल–स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान।

नाग-यज्ञ–पुं० [सं०] महाभारत के अ सार एक प्रसिद्ध यज्ञ जिसमें जनमेजय ने नागों (सर्पों या नाग-जाति ?) का पूर्ण विनाश किया था।

नागर–वि० [सं०] १ नगर से सं रखनेवाला। (अर्बन) २. नगर-निवासि से संबंध रखनेवाला। (सिविल) जैसे नागर अधिकार। ३. नगरपालिका नगर-परिषद से सम्बन्ध रखनेवाला। (म्यु निसिपल) जैसे - नागर-निधि। (म्युनि पल फंड) ४. चतुर। होशियार। पुं० [स्त्री० नागरी, *नागरि, भाव० न गरता] १. नगर का निवासी। २. व चतुर, सभ्य और शिष्ट हो। भला आद

नागर नट*-पुं० दे० 'नट नागर'।

नागर-मोथा–पुं० [सं० नागरमुस्त एक प्रकार की घास जिसकी जड़ द काम आती है।

नागर-युद्ध–पुं० [सं०] वह आपसी या लड़ाई जो किसी राष्ट्र के नागरि होती है। (सिविल वार)

नागर-विवाह–पुं० [सं०] वह वि जो धार्मिक बन्धनों से रहित होता विशुद्ध नागरिक की हैसियत से जाता है। (सिविल मैरिज)

नागराज-पुं० [सं०] १. शेषनाग। ऐरावत।

नागरिक–वि० [सं०] [भाव० न गरि

। नगर का। २. नगर में
। ३. चतुर। सभ्य।
[सं०] १. 'नागरिक'
या भाव। २. किसी स्थान,
नागरिक होने पर प्राप्त होने-
स्थिति और राजनीतिक

–पुं० [सं०] वह शास्त्र
समाज और देश के हित
संस्कृति, परिस्थितियों और
का ध्यान रखते हुए वास्त-
और सद् जीवन व्यतीत करने
होता है। (सिविक्स)

[सं०] १. नगर की रहनेवाली
२. स्त्री। औरत। ३. पशुओं
। जैसे—*नाग-नागरी =
देवनागरी लिपि। ५. हिन्दी
)

–पुं० [सं०] पाताल।
[सं०] पान।
[फा०] न रुचनेवाला।

[सं० नग्न] १. एक प्रसिद्ध
। २. इस संप्रदाय के साधु जो
हैं।

नाग] आसाम के पूर्व की
जाति।

नागः] नियत समय पर होते
का किसी बार न होना।
[हिं० नाग] १. नाग या
। २. पीठ पर की एक
भौंरी या रोम-राजी।
। ३. वह स्त्री जिसकी पीठ पर
भौंरी या लक्षण हो। (कहते
विधवा हो जाती है।)
[सं०] १. शेष, वासुकि आदि
साँपों का राजा। ऐरावत।
हाथी। गजेन्द्र।

नागेसर*–पुं० दे० 'नाग-केसर'।

नागौरी–वि०[हिं० नागौर (नगर)] नागौर का (बैल या बछड़ा जो अच्छा समझा जाता है)। वि० स्त्री० नागौर की (अच्छी गाय)। स्त्री० एक प्रकार की बहुत छोटी खस्ती पूरी।

नाच–पुं० [सं० नाट्य] १. नाचने की क्रिया या भाव।

मुहा०–नाच काछना=नाचने को तैयार होना। **नाच दिखाना** = विलक्षण आचरण करना। **नाच नचाना** = (क) जैसा चाहना, वैसा काम कराना। (ख) हैरान या तंग करना। **नाच नाचना** = भ्रम-वश या दिखावे के लिए या व्यर्थ तरह तरह के काम करना। उदा०—नाच्यौ नाच लच्छ चौरासी।—सूर।

पद-नंगा नाच। (देखो)

२. नाचने का उत्सव या जलसा।

नाच-कूद–स्त्री० [हिं०नाच + कूदना] १. नाच-तमाशा। २. योग्यता, शौर्य आदि प्रकट करने का निरर्थक प्रयत्न।

नाच-घर–पुं० दे० 'नृत्यशाला'।

नाचना–अ० [हिं० नाच] १. प्रसन्न होकर उछलना-कूदना। २. संगीत के साथ ताल-स्वर के अनुसार हाव-भाव दिखाते हुए उछलना, घूमना और इसी प्रकार की दूसरी चेष्टाएँ करना। नृत्य करना। ३. चक्कर लगाना। मँडराना।

मुहा०–सिर पर नाचना = (क) घेरना। ग्रसना। (ख) बहुत पास आना। **आँख के सामने नाचना** = प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना।

४. प्रयत्न में दौड़ना-धूपना। ५. क्रोध में उछलना-कूदना।

नाच-रंग–पुं० [हिं० नाच + रंग] संगीत या गाने नाचने का जलसा।

नाज–पुं० [फा० नाज़] १. नखरा।

मुहा०–नाज उठाना = चोचले सहना।

२. घमंड। गर्व।

†पुं० [हिं० अनाज] गेहूँ, चावल आदि अनाज। अन्न।

नाज-बरदारी–स्त्री० [फा०] नाज उठाना। चोचले सहना।

ना-जायज–वि० [अ०] १. जो जायज या वैध न हो। अवैध। २. अनुचित। ना-मुनासिब।

नाजिम–पुं०[अ०] १.मुसलमानी राज्य-काल का वह प्रधान कर्मचारी जो किसी देश का प्रबंध करता था। २. आज-कल किसी न्यायालय-सम्बन्धी कार्यालय का प्रबन्धकर्त्ता।

नाजिर–पुं०[अ०] १.निरीक्षक। देख-भाल करनेवाला। २. न्यायालय के लिपिकों का अधिकारी। ३. वेश्याओं का दलाल।

नाजी–पुं० [जर० नात्सी] १. जरमनी का एक बहुत बलवान दल जो अपने आपको राष्ट्रीय साम्यवादी कहता था और जिसका पराभव दूसरे महायुद्ध में हुआ था। २. इस दल का सदस्य।

नाजुक–वि० [फा०] १.कोमल। सुकुमार। **यौ०–नाजुक-मिजाज** = जो कुछ भी कष्ट न सह सके। २. पतला। महीन। ३.सूक्ष्म। ४. गूढ़। ५. जरा से आघात से टूट-फूट जानेवाला। ६. जिसमें हानि या अनिष्ट का डर हो। जोखिम का।

नाजो–वि० स्त्री० [हिं० नाज] १. दुलारी। २. प्रियतमा। ३. कोमलांगी।

नाटक–पुं०[सं०] १. रंग-मंच पर अभिनेताओं का हाव-भाव, वेष और कथोपकथन द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन। अभिनय। २. वह ग्रंथ जिसमें इस प्रकार दिखाया जानेवाला चरित्र या घटना हो। दृश्य-काव्य।

नाटकिया(की)–पुं० दे० 'नट'।

नाटकीय–वि० [सं०] १. नाटक-संबंधी। २. नाटक या नटों की तरह का।

नाटना*–अ० दे० 'नटना'।

नाटा–वि० [सं० नत = नीचा] [स्त्री० नाटी] छोटे डील या कद का। कम ऊँचा।

नाटिका–स्त्री० [सं०] चार अंकों का ए प्रकार का दृश्य-काव्य।

नाट्य–पुं० [सं०] १. नटों का काम- नृत्य, गीत, वाद्य और अभिनय आदि। अभिनय। २. स्वाँग।

नाट्यकार–पुं० [सं०] १. नट। २. जो नाटक लिखता हो।

नाट्य-मंदिर–पुं० [सं०] नाट्य-शाला।

नाट्य-शाला–स्त्री० [सं०] वह स्थान नाटक या अभिनय होता हो।

नाट्य-शास्त्र–पुं० [सं०] नृत्य, गी अभिनय आदि की विद्या या शास्त्र।

नाठ*–पुं० [सं० नष्ट] [क्रि० नाठना] १. नाश। ध्वंस। २. अभाव।

नाठना*–स० [सं० नष्ट] नष्ट करना। अ० नष्ट होना।

अ० [हिं० नाटना] भागना।

नाठा*–वि० = नष्ट।

नाड़–स्त्री० [सं० नाल] ग्रीवा। गर्दन।

नाड़ा–पुं० [सं० नाड़ी] १. घाँघ पाजामा आदि बाँधने की डोरी। इज़ा बंद। नीवी। २. वह मांगलिक लाल जो देवताओं पर चढ़ाया या हाथ में बाँध जाता है। मौली।

मुहा०–नाड़ा बाँधना = किसी अ उस्ताद या कारीगर का किसी को अ विद्या या कला सिखाने के लिए अ शिष्य बनाना।

३. पेट के अन्दर की वह नली जिससे हो मल आँतों की ओर जाता है।

मुहा०–नाड़ा उखड़ना = पेट के अ अंग में कुछ विकार होना जिससे द आने लगें। **नाड़ा बैठाना** = मालि आदि प्रक्रियाओं से उखड़ा हुआ नाड़ा फि ठीक स्थान पर लाना। (लोक में प्रचलि विश्वास)

नाड़ी–स्त्री० [सं०] १. नली। २. ध

जिनमें से होकर रक्त
।
वलना = कलाई की नाड़ी
होना। (जीवन का
छूटना = (क) नाड़ी का न
मृत्यु हो जाना। **नाड़ी**
की नाड़ी पर हाथ रखकर
जाना।
में अनुभूति और श्वास-
नलियाँ। ४. काल का एक
का होता है। ५. डोरी।
)
पुं० दे० 'विषुवत् रेखा'।
[सं०] शरीर में होनेवाला
घाव। (साइनस)
[सं० ज्ञाति] १.नाता। संबंध।
।
नअ्त] १. प्रशंसा। स्तुति। २.
प्रवर्त्तक मुहम्मद साहब की
स्तुति का गीत या कविता।
)
दे० 'नातरु'।
[हिं० न+तो+अरु]
अन्यथा।
[सं० ज्ञाति] १. मनुष्यों का
संबंध जो एक ही कुल में
विवाह आदि करने से होता
। २. संबंध। रिश्ता।
[सं० नप्तृ] [स्त्री० नतिनी,
का लड़का। दोहता।
[हिं० नाता] १. संबंध
नाते। २. वास्ते। लिए।
[हिं० नाता+फा० दार]
संबंधी। रिश्तेदार।
'नाबी'।
[सं०] १. प्रभु। स्वामी।
पति। ३. गोरख-पंथी
।

स्त्री० १. नाथने की क्रिया या भाव। २. बैल, भैंसे आदि की नाक में नाथने की रस्सी। नकेल।

स्त्री० = नथ (नाक में पहनने की)।

नाथना-स० [सं० नाथ] [भाव० नाथ, नथाई] १. बैल, भैंसे आदि को वश में रखने के लिए उनकी नाक छेदकर उसमें रस्सी पिरोना। नकेल डालना। २. पिरोना। ३. नत्थी करना।

नाद-पुं० [सं०] १. शब्द। आवाज। २. वर्णों के उच्चारण में वह प्रयत्न जिसमें कंठ को न तो बहुत फैलाकर और न बहुत सिकोड़कर वायु या ध्वनि निकालनी पड़ती है। ३. संगीत।

यौ०–नाद विद्या = संगीत-शास्त्र।

नादना*-स० [सं० नदन] बजाना।

अ० १. बजना। २. गरजना।

अ० [सं० नंदन] प्रफुल्लित होना।

नादली-स्त्री० दे० 'हौल-दिली'।

नादान-वि० [फा०] [भाव० नादानी] ना-समझ। मूर्ख।

नादित-वि० [सं०] जिसमें नाद या शब्द होता हो। शब्दित।

नादिर-वि० [फा०] अद्भुत। अनोखा।

नादिर-शाही-स्त्री० [नादिर शाह] १. मनमानी आज्ञाएँ प्रचलित करना। २. भारी अंधेर या अत्याचार।

वि० बहुत कठोर या विकट (आज्ञा, कार्य आदि)।

ना-दिहंद-वि० [फा०] ऋण न चुकाने-वाला। जिससे पावना जल्दी वसूल न हो।

नादी-वि० [सं० नादिन्] [स्त्री० नादिनी] १. शब्द करनेवाला। २. बजनेवाला।

नादौट-स्त्री० [?] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

नाध-स्त्री० [हिं० नाधना] १. नाधने की क्रिया या भाव। २. किसी बड़े कार्य का आयोजन और आरंभ।

मुहा०—नाध नाधना=कोई बड़ा काम ठानना।

नाधना—स० [हिं० नाथना] १. बैल, घोड़े आदि को सवारी आदि खींचने के लिए उसके आगे बाँधना। जोतना। २. लगाना। ३. गूँथना। पिरोना। ४. आरंभ करना। ठानना। ५. दे० 'नाथना'।

नानक—पुं० एक प्रसिद्ध पंजाबी महात्मा जो सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक और सिक्खों के आदि-गुरु थे।

नानक-पंथी(शाही)—पुं० [हिं० नानक-पंथ] गुरु नानक के संप्रदाय का, सिक्ख।

नान-खताई—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की सोंधी मीठी टिकिया।

नान-बाई—पुं० [फा० नानबा] रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला। (मुसल०)

नाना—वि० [सं०] १. अनेक प्रकार के। तरह तरह के। २. अनेक। बहुत।

पुं० [देश०] [स्त्री० नानी] माता का पिता। मातामह।

†स० [सं० नमन] १. दे० 'नवाना'। (झुकाना) २. डालना या घुसाना। प्रविष्ट करना।

पुं० [अ०] पुदीना।

यौ०—अर्क नाना = पुदीने का अरक।

नानिहाल—पुं० [हिं० नाना] नाना-नानी का घर।

नानी—स्त्री० [देश०] माता की माता।

मुहा०—नानी याद आना या मर जाना = संकट या आपत्ति-सी आ जाना।

ना-नुकर—पुं० [हिं० न] इनकार।

नानुसारी—वि० [हिं० न + अनुसारी] अनुसरण न करनेवाला। उदा०—दान-वारि सुखद, जनकजातनानुसारी।—केशव।

नान्हा‡—वि० दे० 'नन्हा'।

नाप—स्त्री० [हिं० नापना] १. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि जिसका विचार किसी निर्दिष्ट लंबाई के आधार पर या तुलना में होता है। परिमाण। माप। (मेजर डाइमेन्शन्स) २. वह क्रिया जिसे किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई आदि जानी या स्थिर की जाती है। नापने का काम। (मेजरमेन्ट) ३. वह निर्दिष्ट लंबाई जि एक मानकर किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई या विस्तार स्थिर किया जाता है। मान। ४. निर्दिष्ट लंबाईवाली वह वस्तु जिससे प्रकार का विस्तार स्थिर किया जाता है। जैसे—गज, फुट आदि।

नाप-जोख—स्त्री० [हिं० नाप + जोख तौल] किसी चीज़ को नापने-जोखने क्रिया या भाव।

नाप-तौल—स्त्री० [हिं० नाप + तौल] कि चीज को तौलने की क्रिया या भाव।

नापना—स० [सं० मापन] १. लम्बा चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई आदि हिसाब लगाना। मापना।

मुहा०—गरदन नापना = धक्का दे हटाना या बाहर निकालना। सिर **नापना** = सिर काटना।

२. किसी बात की गहराई या थाह का या कि व्यक्ति की जानकारी आदि का पता लगा

ना-पसंद—वि० [फा०] जो पसंद न हो

ना-पाक—वि० [फा०] [भाव० नापाकी] १. अ-पवित्र। २. मैला-कुचैला।

ना-पास—वि० [फा० ना + अं० पास] पास या उत्तीर्ण न हुआ हो। अनुत्तीर्ण

नापित—पुं० [सं०] नाई। हज्जाम।

नापैद—वि० [फा० ना + पैदा] १. जो पैदा हुआ हो। २. विनष्ट। ३. अप्राप्य। ४. दुर्ल

नाफा—पुं० [फा० नाफ़ः] कस्तूरी की जो कस्तूरी-मृगों की नाभि में होती है।

नाबदान—पुं० [फा०] [वि० नाबदानी] मल-मूत्र और गन्दे पानी की नाली। पनाला। (गटर)

नाबदानी—वि० [फा०] १. नाबदान

। २. नाबदान या
स्पृश्य, गन्दा और
। जैसे—नाबदानी पत्र।
।
दे० 'पनालिया पत्र'।
[अ० + फा०] [भाव०
अभी पूरा जवान न हुआ
।
[हिं०] नष्ट। ध्वस्त।
=नाभि।
[वि० नाभिक] १. पहिये
। चक्र-मध्य। २. जरायुज
र का मध्य का वह गड्ढा जहाँ
रायुनाल रहता है। ढोंढी।
री मध्य भाग का कल्पित
में रहनेवाला वह भाग या
चारों ओर दूसरे भाग, अंग
इकट्ठी होती या मिलती
घन पदार्थ का केन्द्र।
)
[फा० + अ०] [भाव०
मंजूर न हो। अस्वीकृत।
नामन्] [वि० नामी]
जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति
हो या वह पुकारा जाय।
। (नेम)
उछलना = लोक में बहुत
निन्दा होना। **नाम उ-**
=बदनामी कराना। **नाम का,**
लिए या **नाम को** = (क)
। (ख) दिखाने भर को, काम
। **नाम चढ़ना** = किसी
नाम लिखा जाना। **नाम**
में नाम का स्मरण या
। **नाम जपना** =
नाम लेना। (**किसी**
धरना = (क) बदनाम
दोष निकालना। **नाम न**

लेना = दूर या अलग रहना। **नाम निकल जाना** = प्रसिद्धि हो जाना। **किसी के नाम पर** = (क) किसी को अर्पित करके। किसी के निमित्त। (ख) किसी की ओर से। (**किसी के नाम पर बैठना** = किसी के भरोसे संतोष करके चुपचाप बैठे रहना। **नाम बिकना** = प्रसिद्धि के कारण आदर या पूछ होना। **नाम मिटना** = (क) स्मारक या कीर्त्ति नष्ट होना। (ख) नाम तक बाकी न रहना। (**किसी का**) **नाम लगाना** = दोष मढ़ना। अपराध लगाना। **नाम लेना** = (क) दे० 'नाम जपना'। (ख) गुण गाना। प्रशंसा करना। (**किसी के**) **नाम से काँपना** = नाम सुनते ही डर जाना। २. यश या कीर्त्ति की सूचक प्रसिद्धि।

मुहा०—नाम कमाना = प्रसिद्धि प्राप्त करना। **नाम को मरना** = (क) यश या कीर्त्ति पाने के लिए प्रयत्न करना। (ख) यह ध्यान रखना कि बदनामी न हो। **नाम जगाना** = अच्छी कीर्त्ति प्राप्त करना। **नाम डूबना** = यश और कीर्त्ति का नाश होना। **नाम पाना** = प्रसिद्ध होना। **नाम रह जाना** = कीर्त्ति की चर्चा होती रहना। यश बना रहना।

३. बही-खाते का वह विभाग या अंश जिसमें किसी को दिया हुआ धन या माल लिखा जाता है।

मुहा०—नाम डालना = खाते में यह लिखना कि अमुक व्यक्ति को इतना धन या माल दिया गया।

नामक—वि० [सं०] नाम से प्रसिद्ध। नामवाला।

नाम-करण—पुं० [सं०] १. किसी का नाम निश्चित करना। नाम रखना या स्थिर करना। २. हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बालक का नाम रखा या स्थिर किया जाता है।

नाम-कीर्त्तन–पुं० [सं०] ईश्वर के नाम का जप। भगवान् का भजन।

नाम-कोष–पुं० [सं०] वह कोश जिसमें नामवाचक संज्ञाओं के विवरण रहते हैं। जैसे–स्थल-नाम कोश, ऐतिहासिक नाम कोश।

नाम-चढ़ाई–स्त्री० [हिं० नाम + चढ़ाना] वह क्रिया जिसमें सम्पत्ति आदि के स्वामित्व पर से एक व्यक्ति का नाम हटाकर दूसरे का नाम चढ़ाया जाता है। दाखिल खारिज। (म्यूटेशन)

नाम-जद–वि० [फा०] [भाव० नाम-जदगी] १. जिसका नाम किसी बात के लिए निश्चित किया या चुना गया हो। नामांकित। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

नाम-जदगी–स्त्री० [फा०] कोई काम करने के लिए या किसी चुनाव आदि में खड़े होने के लिए किसी का नाम निश्चित किया जाना।

नामतः–क्रि० वि० [सं०] नाम अथवा नाम के उल्लेख से। नाम से। (बाई नेम)

नामदार–वि० दे० 'नामवर'।

नामदेव–पुं० [सं०] गुजरात के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

नाम-धराई–स्त्री० दे० 'बदनामी'।

नाम-धाम–पुं० [हिं० नाम + धाम] नाम और रहने का पता-ठिकाना।

नामधारी–वि० [सं०] नामक।

नाम-निवेश–पुं० [सं०] किसी विशेष कार्य के लिए किसी बही या नामावली में किसी का नाम लिखा जाना। (एनरोलमेन्ट)

नाम-निशान–पुं० [फा०] चिह्न।

नाम-पट्ट–पुं० [सं०] वह पट्ट या तख्ता आदि जिसपर किसी व्यक्ति, दूकान या संस्था आदि का नाम लिखा रहता है। (साइनबोर्ड)

नाम-राशि–पुं० [सं०] एक दूसरे के विचार से ऐसे दो व्यक्ति जो एक ही ना के हों। जैसे–वे हमारे नाम राशि हैं; अर्थ उनका भी वही नाम है, जो हमारा है।

नाम-रासी-पुं० दे० 'नाम-राशि'।

नामर्द–वि० [फा०] [भाव० नामर्दी १. नपुंसक। २. डरपोक। कायर।

नामर्दी–स्त्री० [फा०] १. नामर्द होने अवस्था या भाव। २. नपुंसकता ना रोग। ३. कायरता। भीरुता।

नाम-लिखाई–स्त्री० [हिं० नाम + लिख १. किसी पंजी, तालिका आदि में लिखा जाना। (एनरोलमेन्ट) २. धन जो इस प्रकार नाम लिखने के शुल्क के रूप में लिया या दिया जाता

नाम-लेवा–पुं० [हिं० नाम + लेना] नाभ लेने या स्मरण करनेवाला। संतति। औलाद।

नामवर–वि० [फा०] [भाव० नामव प्रसिद्ध। मशहूर।

नाम-शेष–वि० [सं०] १. जिसका के नाम रह गया हो। २. नष्ट। ध्वस्त। मरा हुआ। मृत।

नाम-हँसाई–स्त्री० [हिं० नाम + हँस लोक-निन्दा। बदनामी।

नामांक–पुं० [सं०] किसी सूची में हुए बहुत-से नामों में प्रत्येक नाम के लगा हुआ उसका क्रमांक। (रोल ना

नामांकन–पुं० [सं०] [वि० नामां किसी कार्य विशेषतः किसी निर्वाचन सम्मिलित होने के लिए किसी का लिखा जाना। नाम-जदगी। (नॉमिने

नामांकित–वि० [सं०] १. जिसपर लिखा या खुदा हो। २. जिसका काम या पद के लिए नाम लिखा गया है नामजद। (नॉमिनेटेड) ३. प्रसि मशहूर।

नामांतर–पुं० [सं०] एक ही वस्तु व्यक्ति का दूसरा नाम। पर्याय।

[सं०] किसी सम्पत्ति
नाम को हटाकर उसकी
लिखा या चढ़ाया जाना।
। (म्यूटेशन)
[सं०] १. एक ही
बहुत से नामों अथवा
वस्तुओं के अलग
सूची या तालिका। २.
राम, कृष्ण आदि नाम

[सं०] जो केवल नाम के
रूप में हो, और जिसका
या तथ्य से कोई विशेष
नाम भर का। (नॉमिनल)
नाम] १. नामधारी।
प्रसिद्ध। मशहूर।
[फा०] अनुचित।
[फा० + अ०] असम्भव।
=बदनामी।
=नाम।

[सं०] [स्त्री० नायिका] १.
आज्ञा के अनुसार चलाने-
। नेता। अगुआ। २.
स्वामी। मालिक। ३. किसी
का प्रधान। सरदार। ४.
पुरुष, विशेषतः रूप-
, जिसका चरित्र किसी
में मुख्य रूप से आया हो।

[सं० नायिका] १. वह
किसी वेश्या को अपने पास
कराती हो। २. कुटनी।
'नायिका'।
[हिं० नाई] नाई की स्त्री।
[अ०] १. किसी की ओर से
। २. सहायक।

नायाब-वि० [फा०] १. जो जल्दी न मिले। अप्राप्य या दुष्प्राप्य। २. बहुत बढ़िया।

नायिका-स्त्री० [सं०] रूप-गुण से युक्त युवती स्त्री जो श्रृंगार रस का आलंबन हो या किसी काव्य, नाटक आदि में जिसका चरित्र मुख्य रूप से दिखाया गया हो। (हीरोइन)

नारंगी-स्त्री० [सं० नागरंग, अ० नारंज] नीबू की जाति का एक पेड़ जिसके फल मीठे, सुगंधित और रसीले होते हैं।
वि० पीलापन लिये कुछ लाल रंग का।

नार-स्त्री० [सं० नाल] १. गरदन। ग्रीवा। २. जुलाहों की ढरकी। नाल।
पुं० [सं० नारः] जल। पानी।
पुं० [सं० नारं] १. समूह। झुंड। २. आगार। भंडार।
†पुं० १. आँवल नाल। नाल।
मुहा०-नाल छीनना=दे० 'नाल' में 'नाल काटना'।
२. बहुत मोटा रस्सा। ३. इजारबंद। नारा। नाला।
‡स्त्री० दे० 'नारी'।

नारकी-वि० [सं० नारकिन्] १. नरक में जाने योग्य। बहुत बड़ा पापी। २. नरक में रहनेवाला।

नारद-पुं० [सं०] १. ब्रह्मा के पुत्र, एक प्रसिद्ध हरि-भक्त देवर्षि। (कुछ लोगों का मत है कि नारद किसी व्यक्ति का नाम नहीं, बल्कि साधुओं के एक संप्रदाय का नाम था।) २. लोगों में झगड़ा करानेवाला व्यक्ति।
वि० १. जल देनेवाला। २. वंशज।

नारा-पुं० [अ० नअरः] किसी विशेष सिद्धान्त, पक्ष या दल का वह घोष जो लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए होता है। घोष। (स्लोगन)
*पुं० १. दे० 'नाड़ा'। २. दे० 'नाला'।

नाराच-पुं० [सं०] लोहे का बाण।

नाराज-वि० [फा०] [भाव० नाराजगी, नाराजी] अप्रसन्न। रुष्ट। खफा।

नाराजगी-स्त्री० [फा०] अप्रसन्नता। रोष।

ना-राजी-स्त्री० दे० 'नाराजगी'।

†वि० जो राजी या सम्मत न हो।

नारायण-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. भगवान्। ईश्वर।

नारायणी--स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. गंगा।

वि० नारायण सम्बन्धी। नारायण का। जैसे-नारायणी माया।

नारि-स्त्री० दे० 'नारी'।

स्त्री० [सं० नारं] १. समूह। झुंड। २. आगार। भंडार। उदा०-अति उच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिंतामणि नारि। —केशव।

नारिदा(न)*-पुं० दे० 'नाबदान'।

नारियल-पुं० [सं० नारिकेल] १. खजूर की जाति का एक पेड़ जिसके बड़े गोल फलों में मीठी गिरी होती है। २. उक्त फल की खोपड़ी का बना हुआ हुक्का।

नारी-स्त्री० [सं०] [भाव० नारीत्व] स्त्री। औरत।

*स्त्री० १. दे० 'नाड़ी'। २. दे० 'नाली'।

नारू-पुं० [देश०] १. जूँ। ढील। २. नहरुआ नामक रोग।

नालंब*-वि० [सं० निरवलंब] [स्त्री० नालंबा*] जिसका कोई अवलंब या सहारा न हो। निरवलंब। असहाय।

नाल-स्त्री० [सं०] १. कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लंबी डंडी। २. पौधे का डंठल। कांड। ३. गेहूँ, जौ आदि की बाल, जिसमें दाने होते हैं। ४. नली। जैसे-बंदूक की। ५. सुनारों की फुकनी। ६. रस्सी के आकार की वह नली जो एक ओर गर्भ के बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय से मिली होती है। आँवल नाल। नारा।

मुहा०-नाल काटना = बच्चा
होने पर नाल काटकर उसे माता के
से अलग करना। (किसी की कहीं
नाल गड़ी होना = (क) किसी का
स्थान से ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध या
होना कि वह जल्दी वहाँ से हट न सके।
७. मोटे कागज, बाँस आदि की वह
नली जिसके अन्दर चरखियों आदि में
वाला मसाला भरा रहता है। (आतिश
स्त्री० [अ०] १. वह अर्द्ध-चन्द्रा
लोहा जो घोड़ों की टाप के नीचे या
की एँड़ी में जड़ा जाता है। २. पत्थ
वह भारी कुंडलाकार टुकड़ा, जो
करनेवाले उठाते हैं। ३. लकड़ी
चक्कर जो कूएँ की नींव में रखा
है और जिसके ऊपर उसकी जोड़ाई
है। ४. वह रुपया जो जूए के
मालिक जीतनेवाले से अपने अंश
में लेता है।

नालकी-स्त्री० [सं० नाल = डंडा या
एक प्रकार की मेहराबदार छाजन
पालकी।

नालत(ति)*-स्त्री० = लानत (धिक्का

नालबंद-पुं० [अ० + फा०] जूते
या घोड़े के पैरों में नाल जड़नेवाला।

नाला-पुं० [सं० नाल] [स्त्री०
नाली] १. वह प्रणाली या जल-मार्ग
वर्षा का पानी बहता है। प्रणाली।
गन्दे जल के बहने का मार्ग या प्रण

ना-लायक-वि० [फा० + अ०] अ

ना-लायकी-स्त्री० [अ० + फा०]
ग्यता।

नालिश-स्त्री० [फा०] न्यायालय में
किसी बड़े के सामने किसी के
होनेवाली फरियाद। अभियोग।

नाली-स्त्री० [हिं० नाला] १. ज
का छोटा नाला। २. गन्दा पानी बहने

गहरी लकीर। ४.
।
।
] जल में चलने-
आदि की बनी सवारी।
। किश्ती।
] बाण। तीर।
।
नामन] १. झुकाना।
डालना।
[हिं० नाव] १. नाव।
को नदी के बीच में ले
। (जल-विहार)
[सं०] किसी राज्य
और नाविक विभाग
कारियों का वर्ग अथवा
कार्यालय। (ऐडमिरलटी)
[सं०] १. मल्लाह। केवट।
ने या जहाज पर काम करने-
।
[सं०] (नदी, जलाशय
नावें, जहाज आदि चल
य। (नैविगेबुल)
[सं०] अस्तित्व न रह जाना।
।
[सं०] १. नाश करनेवाला।
ला। ३. दूर करने या
।
[सं०] नाश करना।
नाशिनी] नाश करनेवाला।
= नाश करना।
[तु०] सेब की तरह
फल।
वि० दे० 'नश्वर'।
[सं० नाशिन्] [स्त्री०
नाशक। २. नश्वर।
[सं०] जल-पान।
[सं० नासा] नाक से

सूँघी जानेवाली दवा। सुँघनी।

नासना*–स० [सं० नाशन] १. नष्ट करना। २. मार डालना।

ना-समझ–वि० [फा० ना + समझ] [भाव० ना-समझी] जिसे समझ न हो। मूर्ख।

नासा–स्त्री० [सं०] [वि० नास्य] १. नाक। २. नाक का छेद। नथना।

नासा-खत*–पुं० दे० 'नक-घिसनी'।

नासिका–स्त्री० [सं०] नाक।

नासीर–पुं० [अ०] सेना का अगला भाग।

नासूर–पुं० [अ०] शरीर में कुछ दूर तक अंदर गया हुआ वह छोटा घाव जिससे बराबर मवाद निकला करता हो। नाड़ी-व्रण। (साइनस)

नास्तिक–पुं० [सं०] [भाव० नास्तिकता] ईश्वर, परलोक आदि को न माननेवाला। (एथिइस्ट)

नास्तिकता–स्त्री० [सं०] वह अवस्था या सिद्धान्त जिसमें मनुष्य ईश्वर, मत-मतान्तर, लोक-परलोक आदि का अस्तित्व नहीं मानता। (एथीइज्म)

नाह–पुं० दे० 'नाथ'।

नाहक–क्रि० वि० [फा०] वृथा। व्यर्थ।

नाहर–पुं० [सं० नरहरि] शेर।

नाहरू*–पुं० १. दे० 'नहरुआ'। २. दे० 'नाहर'।

नाहिनै*–अव्य० [हिं० नाहीं] १. नहीं (है)। २. कदापि नहीं। कभी नहीं।

नाहीं–अव्य० १. दे० 'नहीं'। २. कदापि नहीं। कभी नहीं।

निंत*–क्रि० वि० दे० 'नित्य'।

निंद*–वि० दे० 'निंदनीय'।

निंदक–वि० [सं०] निंदा करनेवाला।

निंदना*–स० = निंदा करना।

निंदनीय–वि० [सं०] जिसकी निंदा करना उचित हो। निन्दा के योग्य। बुरा। खराब।

निंदरना*–स० दे० 'निंदना'।

निंदरिया*–स्त्री० दे० 'नींद'।

निंदा–स्त्री० [सं०] १. किसी की वास्तविक या कल्पित बुराई या दोष बतलाना। २. अपकीर्त्ति। बदनामी।

निंदाई–स्त्री० दे० 'निराई'।

निंदाना–स० दे० 'निराना'।

निंदासा–वि० [हिं० नींद] जिसे नींद आ रही हो। उनींदा।

निंदित–वि० [सं०] [स्त्री० निंदिता] १. जिसकी निंदा होती हो। २. दूषित। बुरा।

निंदिया†–स्त्री० दे० 'नींद'।

निंद्य–वि० दे० 'निंदनीय'।

निंबू–पुं० दे० 'नीबू'।

निःशंक–वि० [सं०] निडर। निर्भय।

निःशब्द–वि० [सं०] १. जहाँ या जिसमें शब्द न हो। २. जो शब्द न करे।

निःशुल्क–वि० [सं०] जिसपर या जिससे शुल्क न लिया जाय। बिना शुल्क का। (फ्री ऑफ चार्ज, टैक्स)

निःशेष–वि० [सं०] जो बच न रहा हो। समाप्त। खतम।

निःश्रेयस–पुं० [सं०] १. सब प्रकार के कष्टों या दुःखों का अभाव। २. मोक्ष। मुक्ति। ३. कल्याण। मंगल।

निःश्वास–पुं० [सं०] १. नाक से साँस बाहर निकलना। २. नाक से निकाली हुई वायु।

यौ०–दीर्घ निश्वास=गहरा या ठंढा साँस।

निःसंकोच–क्रि० वि० [सं०] संकोच के बिना। बे-धड़क।

निःसंग–वि० [सं०] १. बिना संपर्क या लगाव का। २. किसी से संबंध न रखनेवाला। निर्लिप्त। ३. जिसके साथ कोई और न हो। अकेला।

निःसंतान–वि० [सं०] जिसे संतान या बाल-बच्चा न हो।

निःसंदेह–वि० [सं०] जिसमें कुछ भी संदेह न हो। संदेह-रहित।
अव्य० किसी प्रकार के संदेह के बिना।

निःसत्त्व–वि० [सं०] जिसमें कुछ सत्त्व या सार न हो। निःसार।

निःसरण–पुं० [सं०] [वि० निःसृत] १. निकलना। २. निकलने का मार्ग। निकास।

निःसार–वि० दे० 'निःसत्त्व'।

निःसारण–पुं० [सं०] १. कहीं से बाहर निकालना। २. वनस्पतियों की या शरीर की गिल्टियों का अपने अन्दर कोई तत्व या तरल अंश बाहर निका जो अंगों को विशुद्ध और ठीक दशा रखने या ठीक तरह से चलाने के आवश्यक होता है। ३. इस प्रकार निकलने वाला कोई पदार्थ। (सीक्रेशन)

निःसीम–वि० [सं०] १. जिसकी सी न हो। बेहद। २. बहुत बड़ा या अधि

निःस्पंद–वि० [सं०] जिसमें किसी प्र का स्पंदन न हो। निश्चल।

निःस्पृह–वि० [सं०] १. जिसे कोई या आकांक्षा न हो। २. जिसे कुछ लेने पाने की इच्छा न हो। निर्लोभ।

निःस्वन–वि० दे० 'निःशब्द'।
पुं० ध्वनि। शब्द।

निःस्वार्थ–वि० [सं०] १. जो अप लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो। (काम या बात) जो अपने लाभ या के लिए न हो।

नि–अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों पहले लगकर अर्थ-सम्बन्धी ये विशे उत्पन्न करता है–झुंड या समूह; निकर। अधोभाव; जैसे–निपतित। जैसे–निग्रह। आदेश; जैसे–निदेश।
पुं० संगीत में 'निषाद' (स्वर) का संक्षिप्त रूप।

निअर*–अव्य० [सं० निकट] निकट। पा
वि० समान। तुल्य।

निअराना*–स० [हिं० निअर] पहुँचाना।

बाहर आना। निर्गत होना। **मुहा०–निकल जाना** = (क) आगे बढ़ या चला जाना। (ख) पास में न रह जाना। (ग) कम हो जाना। (घ) पहुँच या पकड़ के बाहर होना। **(स्त्री का) निकल जाना** = (स्त्री का) पर-पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर से चली जाना। २. मिली, सटी या लगी हुई चीज़ अलग होना। ३. एक ओर से दूसरी ओर चला जाना। पार होना। ४. प्रस्थान करना। जाना। ५. उदय होना। ६. अपने उद्गम स्थान से प्रादुर्भूत, निर्गत या प्रकाशित होना। जैसे–नदी निकलना, आज्ञा निकलना, पुस्तक निकलना आदि। ७. किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। ८. स्पष्ट होना। प्रकट होना। जैसे–अर्थ निकलना। ९. सिद्ध या पूरा होना। सरना। जैसे–मतलब या काम निकलना। १०. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना। ११. मुक्त होना। छूटना। १२. आविष्कृत होना। १३. शरीर पर उत्पन्न होना। १४. कहकर नहीं करना। मुकरना। १५. माल की खपत या बिक्री होना। बिकना। १६. हिसाब होने पर कुछ धन किसी के जिम्मे ठहरना। १७. पास से जाता रहना। हाथ में न रह जाना। १८. व्यतीत होना। बीतना। गुज़रना। १९. घोड़े, बैल आदि का गाड़ी या सवारी लेकर चलना आदि सीखना।

निकलवाना–स०हिं० 'निकालना' का प्रे०।

निकष–पुं० [सं०] १. कसौटी का पत्थर। २. तलवार की म्यान।

निकसना†–अ० दे० 'निकलना'।

निकाई*–पुं० दे० 'निकाय'। स्त्री० [हिं० नीक = सुन्दर या भला] १. नीक या अच्छे होने का भाव। अच्छापन। २. सुन्दरता। ३. भलाई।

निकाज*–वि० [हिं० नि + काज (कार्य)] १. निकम्मा। २. रद्दी।

क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदा।

निकाना†–स० दे० 'निराना'।

निकाम*–वि० १. दे० 'निकम्मा'। २. दे० 'निष्काम'।

क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदा।

*वि० [?] प्रचुर। बहुत अधिक।

निकाय–पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. कोई विशेष कार्य करने के लिए बना हुआ कुछ व्यक्तियों का संघटित समूह। संघात। (बॉडी) ३. ढेर। राशि। ४. घर। मकान।

निकारना–स० = निकालना।

निकालना–स० [सं० निष्कासन] १. अन्दर से बाहर करना या लाना। निर्गत करना। २. मिली, सटी या लगी हुई चीज़ अलग करना। ३. किसी से आगे बढ़ा ले जाना। ४. गमन कराना, चलाना या ले जाना। ५. आगे की ओर बढ़ाना। ६. निश्चित करना। ठहराना। जैसे–अर्थ निकालना। ७. सबके सामने उपस्थित करना या रखना। ८. स्पष्ट करना। खोलना। ९. आरंभ करना। चलाना। छेड़ना। १०. स्थान, स्वामित्व, अधिकार, पद आदि से अलग करना। ११. घटाना। कम करना। १२. नौकरी से छुड़ाना या हटाना। १३. दूर करना। हटाना। १४. बेचकर अलग करना। १५. निभाना। बिताना। १६. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। हल करना। १७. जारी करना। प्रचलित करना। १८. आविष्कृत करना। ईजाद करना। १९. निस्तार या उद्धार करना। २०. प्रकाशित करना। २१. रकम जिम्मे ठहराना। किसी पर ऋण या देना निश्चित करना। २२. ढूँढ़कर सामने रखना। बरामद करना। २३. पशु या व्यक्ति को कोई काम करने की शिक्षा देकर आगे बढ़ाना। २४. कपड़े पर सूई से बेल-बूटे बनाना।

निकाला–पुं० [हिं० निकालना] निकालने की क्रिया या भाव। २. निकाले जाने का दंड। निष्कासन।

निकाश–पुं० [सं०] १. आकृति। २. समानता। बराबरी। ३. निकटता। ४. क्षितिज।

निकास–पुं० [हिं० निकासना] १. कलने या निकालने की क्रिया या भाव। निकलने के लिए खुला स्थान या मार्ग। बाहर का खुला स्थान। मैदान। ४. गम। मूल-स्थान। ५. रक्षा या उपाय। ६. आमदनी का रास्ता। आय। आमदनी। ८. दे० 'निकासी'।

*पुं० [सं० निकाश] समानता। उदा०–सनीर जीमूत-निकाश —केशव।

निकासना†–स० दे० 'निकालना'।

निकासी–स्त्री० [हिं० निकास] १. कलने या निकालने की क्रिया या (इश्यू) २. यात्रा के लिए प्रस्थान। रवानगी। ३. वह जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या से निकलकर बाहर जा सके। (पास) ४. आय। आमदनी। ५. सम्पत्ति से लाभ या आय के रूप में होनेवाला धन। (एसेट्स) जैसे– की निकासी। ६. लाभ। मुनाफा। बिक्री के लिए माल बाहर जाना। भरती। ८. माल की बिक्री। खपत।

निकाह–पुं० [अ०] मुसलमानी अनुसार होनेवाला विवाह।

निकिष्ट*–वि० दे० 'निकृष्ट'।

निकुंज–पुं० [सं०] घनी लताओं से या घिरा हुआ स्थान। लता-मंडप।

निकृष्ट–वि० [सं०] [भाव०] खराब। बुरा।

निकेत(न)–पुं० [सं०] १. घर।

आपके जिम्मे होगी।)

निखरना-अ० [सं० निक्षरण] १. मैल छूट जाने पर साफ या निर्मल होना। २. रंगत का खुलता या साफ होना।

निखरी-स्त्री० [हिं० निखरना] पक्की या घी में पकी हुई रसोई। 'सखरी' का उलटा।

निखवख*-वि० [सं० न्यक्ष = सब] पूरा। सब।

क्रि० वि० पूरा। बिलकुल।

निखाद*-पुं० दे० 'निषाद'।

निखार-पुं० [हिं० निखरना] १. निखरने की क्रिया या भाव। २. निर्मलता। स्वच्छता।

निखारना-स० हिं० 'निखरना' का स०।

निखालिस†-वि० दे० 'खालिस'।

निखिद्ध*-वि० दे० 'निषिद्ध'।

निखिल-वि० [सं०] संपूर्ण। सारा। पूरा।

निखुटना-अ० [?] समाप्त होना।

निखेद*-पुं० = निषेध।

निखेधना*-स० = निषेध करना।

निखोट*-त्रि० [हिं० उप० नि + खोट] १. जिसमें कोई खोटाई या दोष न हो। निर्दोष। २. स्पष्ट या खुला हुआ।

क्रि० वि० बिना संकोच के। बे-धड़क।

निखोटना-स० [हिं० नख] नाखून से नोचना, तोड़ना या काटना।

निगंदना-स० [फा० निगंदः = बखिया] रूई भरे हुए कपड़े में दूर दूर पर मोटी और लंबी सिलाई करना।

निगंध*-वि० [सं० निर्गंध] गंध-हीन।

निगड-स्त्री० [सं०] १. हाथी के पैर में बाँधने का सिक्कड़। आँदू। २. बेड़ी।

निगति*-पुं० [हिं० नि + सं० गति] वह जिसे मरने पर अच्छी गति प्राप्त न हो; अर्थात् पापी। उदा०—निगति सदा गति सुनिये।—केशव।

निगद (न)-पुं० [सं०] [वि० निगदित] भाषण। कथन।

निगम–पुं० [सं०] १. मार्ग। रास्ता। २. वेद। ३. हाट। बाजार। ४. मेला। ५. व्यापार। रोजगार। ६. व्यापारियों का संघ। ७. निश्चय। ८. वह अदृश्य और स्थायी संस्था जिसे विधि के द्वारा शरीर अथवा शरीरधारी का रूप प्राप्त हुआ हो। (कारपोरेशन)

निगमन–पुं० [सं०] [वि० निगमित, निगमीकृत] १. न्याय में वह कथन जो कोई प्रतिज्ञा सिद्ध कर चुकने पर उस प्रतिज्ञा के फिर से उल्लेख के रूप में होता है। सिद्ध की हुई बात के सम्बन्ध में अन्तिम कथन। २. किसी संस्था को निगम का रूप देने की क्रिया या भाव। विशेष दे० 'निगम' ८.। (इन्कारपोरेशन)

निगमित–वि०[सं०] संस्था जिसे निगम का रूप दिया गया हो। (इन्कॉरपोरेटेड)

निगमीकरण–पुं० [सं०] [वि० निगमीकृत, निगमित] किसी संस्था को निगम का रूप देना। (इन्कॉरपोरेशन)

निगमीकृत–वि० = निगमित।

निगर–वि०, पुं० दे० 'निकर'।

निगरना*–स० दे० 'निगलना'।

निगरानी–स्त्री० [फा०] निरीक्षण। देख-रेख।

निगरु*–वि० [सं० नि + गुरु] हलका।

निगलना–स० [सं० निगरण] १. मुँह में रखकर गले के नीचे उतार लेना। लीलना। २. दूसरे का धन दबा लेना।

निगह–स्त्री० दे० 'निगाह'।

निगहबान–पुं० [फा०] रक्षक।

निगाली–स्त्री० [देश०] हुक्के की वह (काठ की) नली जिससे धूआँ खींचते हैं।

निगाह–स्त्री० [फा०] १. दृष्टि। नजर। २. देखने का ढंग। चितवन। ३. कृपा-दृष्टि। ४. परख। पहचान।

निगिभ*–वि०[सं० निगुप्त] बहुत प्यारा।

निगुरा–वि० [हिं० उप० नि + गुरु] जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो। 'सगुर का उलटा। (उपेक्ष्य और तुच्छ)

निगूढ़–वि० [सं०] अत्यंत गुप्त।

निगृहीत–वि० [सं०] जिसका निग्र हुआ हो। विशेष दे० 'निग्रह'।

निगोड़ा–वि० [हिं० निगुरा] [स्त्री० निगोड़ी] १. जिसके ऊपर या आगे कोई न हो। २. अभागा। ३. दु बुरा। (स्त्रियाँ)

निगोद*–वि० [सं० निगूढ़] बीच छिपा हुआ।

निग्रह–पुं० [सं०] [वि० निगृहीत] रोकने की क्रिया या साधन। रोक। अ रोध। २. किसी प्रकार की रोक-थाम नियन्त्रण या दमन। (कन्ट्रोल) जै संतान-निग्रह। ३. दंड। ४. पीड़ सताना। ५. बंधन।

निग्रहना*–स० [सं० निग्रहण] पकड़ना। २. रोकना। ३. दंड देना।

निग्रही–वि० [सं० निग्रहिन्] १. या दबानेवाला। २. दमन करनेवाला। दण्ड देनेवाला।

निघंटु–पुं० [सं०] १. वैदिक शब्दों कोश। २. शब्द-संग्रह मात्र।

निघट*–वि० [हिं० नि (उपसर्ग) घटना] १. न घटनेवाला। ज्यों बना रहनेवाला। २. घटित न होने जो अस्तित्व में न आवे।

निघटना*–अ० [हिं० घटना = कम बहुत अधिक या निश्चित रूप से बहुत कम या क्षीण होना।

निघर-घट–वि० [हिं० नि = नहीं + घाट] १. जिसका कहीं घर-घाट या ठिकाना न हो। २. निर्लज्ज। बेहया। ढीठ। ४. उद्दंड।

निचय–पुं० [सं०] १. समूह। ढे २. निश्चय। ३. संचय। ४. किसी निमि कार्य के लिए इकट्ठा या जमा किया

छत्र का। २. बिना राज-चिह्न का।

निछद्म-पुं० [सं० निः + छद्म या देश ?] १. ऐसा एकांत स्थान जहाँ कोई पराया न हो। २. पूरी निश्चिंतता और अवकाश का समय।

निछल*-वि० [सं० निश्छल] छल हीन।

निछावर-स्त्री० [सं० न्यासावर्त्त, मि० अ० निसार] १. किसी की मंगल-कामना से कोई वस्तु उसके सिर के ऊपर से घुमाकर दान करने या कहीं रख आने का उपचार या टोटका। वारा फेरा। २. वह धन या वस्तु जो इस प्रकार घुमाकर दी या छोड़ी जाय। उतारा।

निछोह(ी)-वि० [हिं० नि + छोह] १. जिसे किसी के प्रति छोह या प्रेम न हो। २. निर्दय। निठुर।

निज-वि० [सं०] १. अपना। स्वकीय। २. मुख्य। प्रधान। ३. ठीक। यथार्थ। अव्य० १. निश्चित रूप से। २. विशेष रूप से। मुख्यतः।

निजवर्त्ती-वि० [सं०] (किसी व्यक्ति की दृष्टि से) आश्रय में या पास रहनेवाला। उदा०-पहिले निजवर्त्तिन देहु अन्नै।-केशव।

निजस्व-पुं० [सं०] १. अपनापन। निजता। २. मौलिकता।

निजाअ-पुं० [अ०] १. झगड़ा। तकरार। २. शत्रुता। वैर।

निजाई-वि० [अ०] जिसके संबंध में निजाअ या झगड़ा हो। विवादास्पद।

निजाम-पुं० [अ०] १. व्यवस्था। बंदोबस्त। २. हैदराबाद के शासकों की उपाधि।

निजी-वि० [सं० निज] १. निज का। अपना। २. किसी एक व्यक्ति, वर्ग आदि से सम्बन्ध रखनेवाला। व्यक्तिगत। (पर्सनल) ३. जिसके स्वामित्व, अधिकार आदि से औरों का कोई सम्बन्ध न हो। (प्राइवेट)

निजी सहायक-पुं० [सं०] वह जो

किसी बड़े आदमी, विशेषतः अधिकारी के साथ रहकर उसके कार्यों में सहायता देता हो। (पर्सनल असिस्टेन्ट)

निजु*–अव्य० [?] निश्चयपूर्वक। निश्चित रूप से। उदा०–निजु ये अविकारी, सब सुखकारी······।—केशव।

निजू†–वि०[हि०निज] निज का। अपना।

निजोर*–वि० दे० 'निर्बल'।

निझरना–अ० [हिं० उप० नि + झरना] १. अच्छी तरह झड़ना। २. सार भाग से रहित या वंचित होना। ३. अपने आप को निर्दोष सिद्ध करना।

निट्ठि*–क्रि० वि० दे० 'नीठि'।

निठल्ला–वि० [हिं० नि + टहल = काम] जिसके पास कोई काम धन्धा न हो। खाली।

निठल्लू–वि० दे० 'निठल्ला'।

निठाला–पुं० दे० 'ठाला'।

निठुर–वि० दे० 'निष्ठुर'।

निठुरई*–स्त्री० दे० 'निष्ठुरता'।

निडर–वि० [हिं० उप० नि + डर] १. जिसे किसी का डर न हो। निर्भय। २. साहसी। ३. ढीठ।

निड़ै*–क्रि० वि० दे० 'निकट'।

निढाल–वि०[हिं०नि + ढाल = गिरा हुआ] १. शिथिल। थका-माँदा। २ अशक्त।

निढिल*–वि० [हिं० नि + ढीला] १. कसा या तना हुआ। २. कड़ा। कठोर।

नितंत*–क्रि० वि० दे० 'नितांत'।

नितंब–पुं० [सं०] १. चूतड़ (विशेषतः स्त्रियों का)। २. कंधा।

नितंबिनी–स्त्री० [सं०] सुंदर नितंबों-वाली स्त्री।

नित–अव्य० दे० 'नित्य'।

नितांत–वि० [बँगला] १. बहुत अधिक। २. बिल्कुल। एक-दम। ३. परम। हद दरजे का।

निति*–अव्य० दे० 'नित्य'।

नित्य–वि० [सं०] [भाव० नित्यता] सदा ज्यों का त्यों बना रहनेवाला। शा अविनाशी। अव्य० १. प्रति दिन। हर रोज। २. हमेशा।

नित्य-कर्म–पुं० [सं०] १. नित्य का २. प्रति दिन आवश्यक रूप से किये वाले कार्य, विशेषतः धर्म-कार्य।

नित्य-क्रिया–स्त्री० दे० 'नित्य-कर्म'।

नित्य-नियम–पुं० [सं०] प्रति दि बँधा हुआ नियम या कायदा।

नित्य-प्रति–अव्य० [सं०] हर रोज।

नित्यशः–अव्य० [सं०] १. प्रति दि हर रोज। २. सदा। हमेशा।

निथंब(भ)*–पुं० दे० 'खंभा'।

निथरना–अ० [हिं० नि + थिर + (प्रत्य०)] तरल पदार्थ में घुली हुई या मैल आदि नीचे बैठ जाना।

निथारना–स० [हिं० निथरना][निथार] तरल पदार्थ इस प्रकार करना कि उसमें घुली हुई चीज नीचे बैठ जाय।

निदई*–वि० दे० 'निर्दय'।

निदरना*–स० [हिं० निरादर] अनादर या अपमान करना। २. तिर करना। ३. मात करना। दबाना।

निदर्शन–पुं० [सं०] १. दि प्रदर्शित करने का काम या भाव। वस्तु या बात जो आदर्श या प्रमा सामने रखी जाय। उदाहरण। २. को बतलाने या समझाने के लिए विशद और स्पष्ट रूप से कहने की भाव। (इलस्ट्रेशन; उक्त सभी अर्थों

निदर्शना–स्त्री० [सं०] एक अ जिसमें एक बात या काम से कोई बात या काम ठीक तरह से कर का वर्णन होता है।

निदलन*–पुं० दे० 'निर्दलन'।

निदहना*–स० = जलाना।

] १ गरमी । ताप । २.
। गरमी के दिन ।
] १. कारण, विशेषतः
। २. चिकित्सक का
कि रोगी को कौन रोग
) रोग की पहचान ।
को विद्या या शास्त्र ।
४. अंत । अवसान ।
में । आखिर । २.इसलिए ।
दे० 'निदाघ' ।
[सं०] फिर फिर स्मरण
ध्यान में लाना ।
] १. शासन । २. आज्ञा ।
। उक्ति । ४. किसी आज्ञा,
आदि के सम्बन्ध में लगाई
बन्धन । (प्रॉविजन)
दे० 'निर्दोष' ।
दे० 'निधि' ।
] प्राणियों की वह अवस्था
चेतन वृत्तियाँ बीच में
लिए निश्चेष्ट होकर रुकी
उन्हें शारीरिक तथा मानसिक
है । नींद ।
[सं०] जिसे नींद आ रही हो ।
[सं०] सोया हुआ ।
वि० दे० 'बे-धड़क' ।
[सं०] १. विनाश । २.
श्रेष्ठ या आदरणीय व्यक्तियों
( ))
।
] १. आधार । आश्रय ।
। ३. वह जिसमें किसी गुण
हो । जैसे—दया-निधान ।
] १. गड़ा हुआ खजाना ।
पद्म, महापद्म, शंख,
, कुंद, नील और
संख्या का सूचक शब्द ।
किसी विशेष कार्य के लिए

अलग रखा या जमा कर दिया जाय । (एन्डाउमेन्ट) ५. संस्था आदि का या किसी विशेष कार्य के लिए रक्षित वह धन-राशि जिसमें आय का धन रखा जाता हो और जिसमें से उस संस्था या कार्य के लिए व्यय भी होता हो । (फंड) जैसे—स्थानिक या नागर निधि । ६. वह स्थान जहाँ इस प्रकार धन रखा जाय । ७. समुद्र । सागर । ८. किसी वस्तु या विषय का बहुत बड़ा आधार । आगार । घर । जैसे—गुण-निधि ।

निधिपाल—पुं० [सं०] वह जिसकी देख-रेख में कोई निधि, सम्पत्ति या कुछ वस्तुएँ रखी गई हों या रहती हों । (कस्टोडियन)

निनरा*—वि० दे० 'न्यारा' ।

निनाद—पुं० [सं०] [वि० निनादित] १. शब्द । आवाज । २. जोर का शब्द ।

निनादना*—अ० [सं० निनाद] निनाद या शब्द करना ।

निनान*—क्रि० वि०, अव्य० दे० 'निदान' । वि० बुरा । निकृष्ट ।

निनारा—वि० [स्त्री० निनारी] दे० 'न्यारा' ।

निनावाँ—पुं० [देश०] मुँह के भीतरी भाग में निकलनेवाले छोटे छाले ।

निन्यारा*—वि० दे० 'न्यारा' ।

निपंक(ग)*—वि० दे० 'पंगु' ।

निपजना*—अ० [सं० निष्पद्यते] १. उत्पन्न होना । उपजना । २. बनना । ३. पुष्ट या पक्का होना ।

निपजी*—स्त्री० [हिं० निपजना] १. लाभ । मुनाफा । २. उपज ।

निपट—अव्य० [देश०] १. निरा । विशुद्ध । केवल । २.सरासर । एक-दम से । बिलकुल ।

निपटना—अ० [सं० निवर्त्तन] [संज्ञा निपटारा] १. निवृत्त होना । छुट्टी पाना । २. समाप्त या पूरा होना । ३. निर्णीत या तै होना । ४. खतम होना । ५. शौच, स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होना ।

निपटाना—स० [हिं० निपटना] १. पूरा

करना। समाप्त करना। २. चुकाना। (देन, ऋण आदि) ३. समाप्त या तै करना। (काम, झगड़ा आदि) (डिस्पोज)

निपटारा (टेरा)–पुं० [हिं० निपटना] १. निपटने की क्रिया या भाव। २. किसी बात के तै या निश्चित होने की क्रिया या भाव। (सेटिल्मेन्ट) ३. अन्त। समाप्ति। ४. फ़ैसला। निर्णय।

निपत्र–वि० [सं० निष्पत्र] पत्र-हीन। ठूँठा। (वृक्ष, पौधे आदि)

निपाँख*–वि० [हिं० नि+पक्ष] १. जिसे पंख या पर न हों। २. जिसके पक्ष में या सहायता के लिए कोई न हो। असहाय।

निपात–पुं० [सं०] १. पतन। गिरना। २. विनाश। ३. मृत्यु। ४. क्षय। नाश। ५. वह शब्द जो व्याकरण के नियमों के विरुद्ध बना हो और फलतः अशुद्ध हो।
*वि० [हिं० नि+पत्ता] बिना पत्तों का। (वृक्ष या पौधा)

निपातन*–पु० [सं०] [वि० निपातित] १. गिराने की क्रिया या भाव। २. नाश। ३. वध करना। मार डालना।

निपातना*–स० [सं० निपातन] १. काटकर या यों ही नीचे गिराना। २. नष्ट करना। ३. मार डालना।

निमाती–वि० [सं० निपातिन्] १. गिरानेवाला। २. मार डालनेवाला।
*वि० [हिं० नि+पाती] बिना पत्तों का। (वृक्ष या पौधा)

निपीड़ना*–स० [सं० निष्पीड़न] १. दबाना। २. कष्ट पहुँचाना।

निपुण–वि० [सं०] [भाव० निपुणता] दक्ष। कुशल। प्रवीण। (कला या विद्या में)

निपुणता–स्त्री० [सं०] किसी विषय में निपुण या कुशल होने का भाव। दक्षता।

निपुणाई*–स्त्री० = निपुणता।

निपुन*–वि० दे० 'निपुण'।

निपुनाई*–स्त्री० = निपुणता।

नि-पुरुष*–वि० = पुरुषत्व-हीन।

निपूत(ा)*–वि० [हिं० नि+पूत=पुत्र] [स्त्री० निपूती] जिसे पुत्र न हो। पुत्र-हीन। निःसन्तान। (गाली)

निपेटा*–वि० [स्त्री० निपेटी] = भुक्खड़।

निफन*–वि० [सं० निष्पन्न] पूर्ण। पूरा। क्रि० वि० पूरी तरह से।

निफरना*–अ० [हिं० नि+फाड़ना] या धँसकर आर-पार होना।
अ० [सं० नि+स्फुट] १. खुलना। २. स्पष्ट होना।

निफल*–वि० दे० 'निष्फल'।

निबंध–पुं० [सं०] १. अच्छी तरह बाँधने की क्रिया या भाव। २. बंधन। ३. किसी विषय का वह सविस्तर विवेचन जिसमें उस संबंध रखनेवाले अनेक मतों, विचारों, मन्त आदि का तुलनात्मक और पांडित्य-पूर्ण विवेचन हो। (एसे) ४. उक्त प्रकार वह छोटा लेख जो विद्यार्थी अपनी लेखन शक्ति और विवेचन-बुद्धि बढ़ाने के अभ्यास के रूप में लिखते हैं।

निबंधक–पुं० [सं०] १. निबंधन करने वाला। २. वह अधिकारी जो लेख आ की प्रामाणिकता सिद्ध करने लिए उन्हें राजकीय पंजी में प्रतिलिपि के रू निबंधित करता या लिखता है। (स्ट्रार, न्याय और शासन विभाग ३. इसी से मिलता-जुलता वह अधि जो किसी विभाग या संस्था के सब प्रकार लेख रखता और निबंधित करता है (रजिस्ट्रार) जैसे-विश्वविद्यालय या सह समितियों का निबंधक, महाधिकरण या हा कोर्ट का निबंधक।

निबंधन–पुं० [सं०] [वि० निबंधि निबद्ध] १. बाँधना। २. बंधन। ३. हुआ ढंग या नियम। बंधेज। ४. हे कारण। ५. लेखों आदि का प्रामाणि होने के लिए किसी राजकीय पंजी में लिखा

। रजिस्टरी होना ।
दे० 'निबद्ध' ।
दे० 'निबौरी' ।
[!] १.एकांत (स्थान) ।
का (समय) ।
दे० 'निपट' ।
ना)-अ० दे० 'निपटना' ।
सं०] १. बँधा हुआ । २.
गुथा हुआ । ४. बैठा या
५. नियम, विधान आदि के
निबंधन हुआ हो । र-
हुआ । (रजिस्टर्ड)
दे० 'निर्बल' ।
[सं० निवृत्त] १. अलग
। २. मुक्त होना । उद्धार
में मिली-जुली वस्तुओं का
। ४. अड़चन दूर होना । ५.
समाप्त या पूरा होना । ७.
।
[सं० निर्बल] [भाव०
। अशक्त । कमजोर ।
दे० 'निभना' ।
[हिं० नि + बहुरना]
से लौटकर कोई न आवे
।
अ० [हिं० निबहुर] कहीं जा-
लौटना ।
[हिं० निबहुर] जाकर न
(गाली)
[सं० निर्वाह] १. निभने या
या भाव । गुजारा ।
आदि के अनुसार व्यव-
रक्षा या पालन करना ।
आदि पूरा करना । पालन ।
[हिं०निबाह + क(प्रत्य०)]
करनेवाला । निभानेवाला ।
[सं० निर्वाह] १. निर्वाह या

या निबाह करना । निभाना । २. निस्तार करना । छुड़ाना ।

निबुकना*–अ० [सं० निर्मुक्त] काम से छुट्टी पाना । काम पूरा करके निश्चित होना ।

निबेड़ना-स० [सं० निवृत्त] १. बंधन से छुड़ाना । २. चुनना । छाँटना । ३. हटाना । ४. दे० 'निपटाना' ।

निबेड़ा–पुं० [हिं० निबेड़ना] १. निबेड़ने, निपटाने या सुलझाने की क्रिया या भाव । निपटारा । २.छुटकारा । मुक्ति । ३.बचाव । रक्षा । ४. निर्णय । फैसला ।

निबेरना*–स० दे० 'निबेड़ना' ।

निबेहना*–स० दे० 'निबेड़ना' ।

निबौरी(ली)–स्त्री० [हिं० नीम + औरी (प्रत्य०)] नीम का फल ।

निभ–पुं० [स०] १. प्रकाश । २. चमक । दीप्ति । ३. चंद्रमा की चाँदनी । ४. कपट । वि० तुल्य । समान ।

निभना–अ० [हिं० निबहना] १. संबंध, व्यवहार आदि का ठीक तरह से चलता रहना । गुजारा होना । २.छुट्टी या छुटकारा पाना । ३. जारी या चलता रहना । ४. पूरा होना । भुगतना । ५. पालन या चरितार्थ होना । (आज्ञा, कार्य आदि)

निभरम*–वि० [सं० निर्भ्रम] जिसे या जिसमें कोई भ्रम न हो । शंका-रहित । क्रि० वि० बे-खटके । बे-धड़क ।

निभरोसी*–वि०[हिं०नि = नहीं + भरोसा] जिसे किसी का भरोसा न हो या न रह गया हो । निराश्रय ।

निभाउ(ऊँ)*–वि० [हिं० नि (उप०) + सं० भाव] १. भाव-रहित । २. अच्छे भावों या गुणों से रहित सद्भाव से हीन । पुं० दे० 'निबाह' ।

निभागा–वि० दे० 'अभागा' ।

निभाना–स० [हिं० 'निभना' का स०] १. संबंध, व्यवहार आदि ठीक तरह से चलाये चलना । २. चरितार्थ करना । ३.

बराबर पूरा करते जाना। चलाना।

निभृत–वि० [सं०] १. रखा हुआ। २. निश्चल। ३. अटल। ४. छिपा हुआ। गुप्त। ५. निश्चित। स्थिर। ६. शांत। धीर। ७.निर्जन। एकांत। ८. भरा हुआ।

निभ्रांत*–वि० दे० 'निर्भ्रांत।

निमंत्रण–पुं० [सं०] [वि० निमंत्रित] १. किसी कार्य्य के लिए या किसी अवसर पर आने के लिए किसी से आदरपूर्वक कहना। बुलावा। आह्वान। न्योता। २. भोजन के लिए दिया जानेवाला बुलावा।

निमंत्रण-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें यह लिखा हो कि आप अमुक समय पर हमारे यहाँ आने की कृपा करें।

निमंत्रना*–स० [सं० निमंत्रण] न्योता देना।

निमंत्रित–वि० [सं०] जिसे निमंत्रण दिया गया हो। बुलाया हुआ। आहूत।

निमकौड़ी–स्त्री० दे० 'निबौरी'।

निमगारना*–अ० [?] उत्पन्न करना।

निमग्न–वि० [सं०] [स्त्री० निमग्ना] १. डूबा हुआ। मग्न। २. तन्मय। लीन।

निमज्जन–पुं० [सं०] [वि० निमज्जित] १. गोता लगाकर किया जानेवाला स्नान। २. किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ में डुबाने की क्रिया या भाव। (इम्मर्शन)

निमज्जना*–अ० [सं० निमज्जन] १. गोता लगाना। २. लीन होना।

निमटना+–अ० दे० 'निपटना'।

निमता*–वि० [हिं० नि + माता = मत्त] १. जो उन्मत्त न हो। २. धीर। शांत।

निमर्म–वि० [सं० नि + मर्म] जिसमें मर्म न हो। मर्म-रहित।

निमाज*–वि० दे० 'नवाज'। स्त्री० दे० 'नमाज'।

निमान*–पुं० [सं० निम्न] १. नीचा स्थान। २. जलाशय।

निमाना–वि० [सं० निम्न] [स्त्री० निमानी] १. नीचे की ओर गया हुआ। ढालुआँ। २. नम्र। विनीत। ३. दब्बू।

निमानिया*–वि० [हिं० न मानना] नियम, मर्यादा, विनय आदि न मानता मनमानी करनेवाला।

निमानी*–स्त्री० [हिं० न मानना] नियम, मर्यादा आदि न मानने की अवस्था भाव। मन-मानो। स्वेच्छाचार।

निमि+–स्त्री० = नीम (वृक्ष)।

निमिख*–पुं० दे० 'निमेष'।

निमित्त–पुं० [स०] १. वह बात या क जिससे कोई दूसरी बात या कार्य हो। हेतु। २. वह बात जिसके विचार या उद्देश्य कोई काम या बात हो। कारण। ३. वह नाम मात्र के लिए सामने आया हो, वास्त- विक कर्त्ता न हो। ४. उद्देश्य। अव्य० वास्ते। लिए।

निमित्तक–वि० [सं०] किसी हेतु अथवा किसी के लिए होनेवाला।

निमित्त कारण–पुं० [सं०] वह जिस सहायता या कर्तृत्व से कोई काम हो कोई वस्तु बने। (न्याय)

निमिराज*–पुं० [सं०] राजा जनक।

निमिष*–पुं० दे० 'निमेष'।

निमीलन–पुं० [सं०] [वि० निमीलि १. बन्द करना। मूँदना। २. सिकोड़ना

निमीलना*–स० [सं० निमीलन] १. करना। मूँदना। २. सिकोड़ना।

निमुहाँ-वि० [हिं० नि + मुँह] १. बिना का। २. जो बहुत बोलना न जानता हो।

निमूँद*–वि० [हिं० मुँदना] मुँदा हु

निमेख*–पुं० दे० 'निमेष'।

निमेखना*–स०=पलक गिराना या झपका

निमेट*–वि० [हिं० नि + मिटना] मिटनेवाला। अमिट।

निमेष–पुं० [सं०] १. पलक गिरन झपकना। २. पलक गिरने भर का सम पल। क्षण।

निम्न–वि० [सं०] नीचा।

] नदी । दरिया ।
[सं०] नीचे लिखा
फॉलोइंग)
] समाज का वह नीचे-
जो बहुत गरीब होता
मजदूरी या छोटी नौकरी-
करता है। (लोअर क्लास)
[सं०] नीचे कहा हुआ।
[सं० नियंतृ] [स्त्री०
नियम बनानेवाला। २.
व्यवस्था करनेवाला। ३.
। ४. नियम के अनुसार
शासक।
दे० 'नियंता'।
[सं०] १. नियम या किसी
में बाँधना। व्यवस्थित
अधिकार में लेकर या
में रखकर कार्य, व्यापार
। (कन्ट्रोल)
[सं०] १. जिसपर नियंत्रण
बँधा हुआ। २. कायदे में
बँधा हुआ।
[सं०] १. नियम, प्रथा,
द्वारा निश्चित किया हुआ।
२. समझौते आदि के द्वारा
ठहराया हुआ। निश्चित।
विधान आदि के द्वारा
हुआ। (प्रेस्क्राइब्ड) ४. पद,
नियुक्त किया हुआ।
। तैनात। (पोस्टेड)
।
'।
[सं०] वह तिथि या
पूरा करने या कोई देन
निश्चित हो।
[सं०] १. नियत होने की
। २. ईश्वरीय या
द्वारा पहले से नियत वह बात जो अवश्य होकर रहे। होनी। ३. भाग्य। अदृष्ट।

नियतिवाद–पुं० [सं०] [वि० नियतिवादी] यह सिद्धांत कि जो कुछ होता है, वह सब पहले से ईश्वर द्वारा नियत रहता है और किसी प्रकार टल नहीं सकता। (डिटरमिनिज्म)

नियम–पुं० [सं०] [वि० नियमित] १. व्यवहार या आचरण के विषय में नीति, विधि, धर्म आदि के द्वारा निश्चित सिद्धांत, ढंग या प्रतिबंध। कायदा। (रूल) २. कोई निश्चित या परंपरागत रीति या व्यवस्था। ३. वे निश्चित बातें जिनके अनुसार कोई संस्था चलाई या काम किया जाता है। ४. किसी बात का बहुत दिनों से बँधा या चला आया हुआ क्रम। परंपरा। दस्तूर। ५. योग के आठ अंगों में से एक जिसमें पवित्रता और संतोषपूर्वक रहकर तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर का चिन्तन किया जाता है। ६. एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात के किसी एक या विशेष स्थान में ही होने का वर्णन होता है।

नियमतः–क्रि०वि०[सं०] नियम के अनुसार।

नियमन–पुं० [सं०] [वि० नियमित] किसी विषय या कार्य्य को नियमों में बाँधने या नियमित करने की क्रिया या भाव। नियम-बद्ध करना। (रेगुलेटिंग)

नियम-बद्ध–वि० दे० 'नियमित'।

नियमानुसार–क्रि० वि० [सं०] नियम, परिपाटी, विधि आदि के अनुसार।

नियमावली–स्त्री० [सं०] १ किसी सभा, संस्था आदि के संचालन से सम्बन्ध रखनेवाले सब नियम या उनका संग्रह। २. किसी कार्य-क्षेत्र या विभाग के कार्य-संचालन और कार्य-कर्त्ताओं का पथ-प्रदर्शन करनेवाले नियमों आदि की पुस्तिका। (मैनुअल)

नियमित–वि० [सं०] [भाव० नियमितता] १. नियमों से बँधा हुआ। नियम-बद्ध। २. नियम, कायदे या कानून के अनुसार

बना हुआ और उन्हीं के अनुसार कार्य-रूप में परिणत होनेवाला। (गवर्न्ड बाई) ३. बराबर या ठीक समय पर होता रहनेवाला।

नियर†–अव्य० दे० 'निकट'।

नियराना†–अ० [हिं० नियर+आना (प्रत्य०)] निकट या पास आना अथवा पहुँचना।

स० निकट या पास पहुँचाना।

नियाई*–वि० दे० 'न्यायी'।

नियाज–स्त्री० [फा०] १. इच्छा। २. दीनता। ३. बड़ों का प्रसाद। ४. मृतक के उद्देश्य से दरिद्रों को दिया जानेवाला भोजन। (मुसल०) ५. बड़ों से होनेवाली भेंट।

नियान*–पुं०, अव्य० दे० 'निदान'।

नियामक–पुं० [सं०] [स्त्री० नियामिका] १. नियम बनाने या नियमों से बाँधकर रखनेवाला। २. व्यवस्था या विधान करनेवाला।

नियामत–स्त्री० दे० 'न्यामत'।

नियार–पुं० [हिं० न्यारा] जौहरियों या सुनारों की दुकान का वह कूड़ा-कर्कट जिसमें से न्यारिये सोने या रत्न के टुकड़े आदि ढूँढ़कर निकालते हैं।

नियारा–वि० दे० 'न्यारा'।

नियारिया–पुं० दे० 'न्यारिया'।

नियाव*–पुं० दे० 'न्याय'।

नियुक्त–वि० [सं०] १. जिसकी किसी कार्य, स्थान या पद पर नियुक्ति हुई हो। किसी काम पर लगाया हुआ। तैनात। मुकर्रर। (एपॉइन्टेड) २. नियत या स्थिर किया हुआ।

नियुक्ति–स्त्री० [सं०] नियुक्त होने की क्रिया भा भाव। मुकर्ररी।

नियोक्ता–पुं० [सं० नियोक्तृ] १. नियोग करनेवाला। २. लोगों को अपने यहाँ काम पर नियुक्त करनेवाला। (एम्प्लॉयर)

नियोग–पु० [सं०] १. नियोजित करना या किसी काम में लगाना। तैनाती। मुकर्ररी। २. प्राचीन आर्यों की एक प्रथा जिसके अनुसार कोई स्त्री पति के न रहने पर या अपने पति से संतान न होने पर देवर या पति के किसी गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी। ३. दे० 'आयोग'।

नियोगस्थ–वि० [सं०] जिसका नियो हुआ हो।

नियोगी–पुं० [सं०] वह जिसका नि हुआ हो।

नियोजक–पुं० [सं०] काम में लगाने नियुक्त करनेवाला। मुकर्रर करनेवाला।

नियोजन–पुं० [सं०] १. किसी काम लगाने या नियुक्त करने की क्रिया या भा नियुक्ति। तैनाती। २. दे० 'आयोज

निरंकार*–पुं० दे० 'निराकार'।

निरंकुश–वि० [सं०] [स्त्री० निरंकु भाव० निरंकुशता] जिसके लिए अंकुश या रुकावट न हो; अथवा कोई अंकुश या रुकावट न माने।

निरंग*–वि० [सं० निर्+अंग] जिसके अंग न हों। अनंग। २. जि कोइ एक अंग न हो।

वि० [हिं० नि+रंग] जिसका कोई न हो। वर्ण-हीन।

निरंजन–वि० [सं०] १. बिना अं या काजल का। जैसे–निरंजन नेत्र। दोष-रहित। ३. माया से अलग (ई ४. अविनाशी।

पुं० परमात्मा।

निरंजनी–वि० [सं० निरंजन] १. नि संबंधी। निरंजन का। २. ईश्वर के नि रूप का उपासक। जैसे–निरंजनी साधु।

स्त्री० [सं० नीरांजनी] वह आधार य जिसमें आरती के लिए दीपक जलाया है। आरती।

निरंतर–वि० [सं०] [भाव० निरंत १. जिसके बीच में अंतर न पड़े। च्छिन्न। २. लगातार या बराबर होने

। नित्य । स्थायी ।
। २.बिना रुके ।
क्रि॰ वि॰ दे॰ 'निरंतर'।
दे॰ 'निराकार' ।
[सं॰ निर् + केवल] १.
विशुद्ध । २. स्वच्छ ।
[सं॰] भूमध्य रेखा के
जिसमें रात और दिन दोनों
के होते हैं ।
दे॰ 'निरीक्षण' ।
[सं॰] जिसने कुछ भी
।
दे॰ 'विषुवत् रेखा' ।
दे॰ 'देखना' ।
'दृग' ।
दे॰ 'निर्गुण' ।
दे॰ 'निर्घात' ।
[सं॰ निरक्षि] अंधा ।
[सं॰ निर्यास] १. निचोड़ ।
।
[सं॰] किसी काम में लगा
।
।
= नाचना ।
[सं॰] १. हद दरजे का ।
बढ़कर ।
दे॰ 'निर्दय' ।
दे॰ 'निर्दोष' ।
[हिं॰ निर = नहीं +
भी तत्व न हो । निस्सार ।
[सं॰ निर्धारण] निर्धारण
। निश्चय ।
रूप से ।
[सं॰निर्धारण] १.निर्धारण
। २. मन में समझना ।
= निर्णय ।
[सं॰] (वर्ण) जो
। जिसमें अनुस्वार न हो ।

निरनै*-पुं॰ = निर्णय ।

निरन्न-वि॰ [सं॰] १. अन्न-रहित । २. जिसने कुछ खाया न हो । निराहार ।

निरपख*-वि॰ = निष्पक्ष ।

निरपना*-वि॰ [सं॰ निर + हिं॰ अपना] १. जो अपना न हो । २. पराया । गैर ।

निरपराध-वि॰ [सं॰] जिसका कोई अपराध न हो । बेकसूर । निर्दोष ।
क्रि॰ वि॰ बिना कोई अपराध किये ।

निरपवाद-वि॰[सं॰] १. जिसमें कोई अपवाद न हो । २. जिसमें कोई दोष न हो । निर्दोष ।

निरपेक्ष-वि॰ [सं॰] [भाव॰ निरपेक्षा, निरपेक्षता] १. जिसे किसी बात की अपेक्षा या कामना न हो । बे-परवा । २. जो किसी पर आश्रित न हो । ३. जो दोनों में से किसी पक्ष में न हो । अलग । तटस्थ ।

निरपेक्षता-स्त्री॰ [सं॰] निरपेक्ष होने की अवस्था या भाव ।

निरपेक्षा-स्त्री॰ दे॰ 'निरपेक्षता' ।

निरबंसी-वि॰ दे॰ 'निर्वंश' ।

निरबल*-वि॰ दे॰ 'निर्बल' ।

निरबहना*-अ॰ दे॰ 'निभना' ।

निरबान*-पुं॰ = निर्वाण ।

निरबेद*-पुं॰ दे॰ 'निर्वेद' ।

निरबेरा*-पुं॰ दे॰ 'निपटारा' ।

निरभर*-वि॰ = निर्भर ।

निर-भर*-वि॰ [हिं॰ निर = नहीं + भरना] जो भरा न हो । अपूर्ण ।

निरभिमान-वि॰ [सं॰] जिसे अभिमान न हो । अहंकार-रहित ।

निरभिलाष-वि॰ [सं॰] जिसे किसी बात की अभिलाषा न हो ।

निरभ्र-वि॰ [सं॰] बिना बादल का ।

निरमत्सर-वि॰ = निर्मत्सर ।

निरमना*-स॰ [सं॰ निर्माण] निर्माण करना । रचना या बनाना । उदा॰—रामायण जिन्ह निरमयउ ।—तुलसी ।

निरमर(ल)*–वि० दे० 'निर्मल'।

निरमाना*–स० दे० 'बनाना'।

निरमायल*–पुं० दे० 'निर्माल्य'।

निरमारा*–वि० = निर्मल।

निरमूलना*–स० [सं० निर्मूलन] १. निर्मूल करना। २. नष्ट करना।

निरमोल(लक)*–वि० दे० 'अनमोल'।

निरमोही*–वि० दे० 'निर्मोही'।

निरय–पुं० [सं०] नरक।

निरयण–पुं० [सं०] ज्योतिष में गणना की वह रीति जो अयन-रहित होती है।

निरर्थ–वि० दे० 'निरर्थक'।

निरर्थक–वि० [सं०] १. जिसका कोई अर्थ न हो। अर्थ-शून्य। २. बिना मतलब का। व्यर्थ। ३. निष्फल।

निरवच्छिन्न–वि० [सं०] जिसका क्रम न टूटा हो। सिलसिलेवार।

निरवध–वि०[सं०] निन्दा या दोष से रहित।

निरवधि–वि० [सं०] १. जिसकी कोई अवधि न हो। २. असीम। अनन्त।

क्रि० वि० लगातार। निरंतर।

निरवलंब–वि० [सं०] १. अवलंब हीन। आधार-रहित। बिना सहारे का। २. जिसका कोई सहायक न हो। जिसे कहीं कोई सहारा न मिलता हो। (हेल्पलेस)

निरवारना*–स० [सं० निवारण] १. रोकनेवाली चीज आगे से हटाना। २. मुक्त करना। छुड़ाना। ३. छोड़ना। त्यागना। ४. गाँठ आदि खोलना या सुलझाना। ५. निर्णय करना।

निरवाह*–पुं० दे० 'निर्वाह'।

निरवाहना*–अ० [सं० निर्वाह] निर्वाह करना। निभाना।

निरशन–पुं० [सं०] भोजन न करना। लंघन। उपवास।

निरसंक*–वि० दे० 'निःशंक'।

निरस–वि० दे० 'नीरस'।

निरसन–पुं० [सं०] [वि० निरस्त] १. दूर करना। हटना। २. पहले का नि या आज्ञा आदि रद करना। (कैन्सिले ३. निराकरण। ४. परिहार। ५. ना ६. वध। ७. निकालना। बाहर क (डिस्चार्ज)

निरस्त–वि० [सं०] १. जिसका नि हुआ या किया गया हो। २. जो व्यर्थ कर दिया गया हो। (कैन्सि जैसे–कोई आज्ञा या निर्णय निरस्त क

निरस्त्र–वि० [सं०] जिसके पास अस्त्र हथियार न हो। अस्त्र-हीन।

निरस्त्रीकरण–पुं०[सं०] [वि० निरस्त्री अस्त्र-शस्त्रों से युक्त देश, राज्य या से अस्त्र-शस्त्र छीनकर उसे निरस्त्र क क्रिया या भाव। (डिस्-आर्मामेन्ट,

निरहेतु*–वि० दे० 'निर्हेतु'।

निरा–वि० [सं० निरालय] [स्त्री० नि १. बिना मेल का। विशुद्ध। खालि २. केवल। सिर्फ। ३. निरट। एक बिलकुल।

निराई–स्त्री० [हिं० निराना] निराने क्रिया, भाव या मजदूरी।

निराकरण–पुं० [सं०] [वि० नि करणीय, निराकृत] १. अलग अ करना। छाँटना। २. सोच-समझकर निर्णय करना या परिणाम निकालना। मिटाना। रद करना। ४. शमन। वारण। परिहार। ५. किस की का खंडन।

निराकांक्षा–स्त्री० [सं०] [वि० नि कांक्षी] आकांक्षा या कामना का अभा

निराकार–वि० [सं०] जिसका कोई आ न हो। आकार-हीन।

पुं० १. ईश्वर। २. आकाश।

निराखर*–वि० [सं० निरक्षर] १. मौ चुप। २. अशिक्षित। अपढ़।

निराट–वि० [हिं० निरा] १. जिसमें और किसी चीज का मेल न हो। विशुद्ध। २.

न हो। अकेला। ३.
)। सुनसान।
।
[हिं० निराला] [स्त्री० निराटी]
।
[हिं० निर + आदर] 'आदर'
। अपमान। बेइज्जती।
[सं०] १. जिसका कोई
न हो। निर्मूल। (बेसलेस)
आरोप निराधार है। २.
सिद्ध न हो सके। अयुक्त।
या निर्वाह का सहारा न
सहायता करनेवाला कोई

[सं०] आनंद-रहित। जिसमें
।
का अभाव। दुःख।
[सं० निराकरण] [भाव०
के आस-पास की घास नि-
पौधों की बाढ़ ठीक तरह से
। निकालना।
[सं०] १. जिसमें कोई
न हो। सुरक्षित। २.
अनर्थ का डर न हो।
दे० 'पराया'।
[सं०] नीरोग। स्वस्थ।
[सं०] १. (भोजन)
न मिला हो। २. मांस न
(प्राणी)
[स्त्री० निरारी] = निराला।
[हिं० नि + आलंब] १.
या सहारा देनेवाला कोई
। २. जिसका कोई आधार
।
[हिं० निराला] १. बिना
के मेल या मिलावट का। २.
।
[सं० निरालय] ऐसा स्थान
जहाँ कोई मनुष्य न हो। एकांत स्थान।
वि० १. [स्त्री० निराली] जहाँ कोई आदमी या बस्ती न हो। एकांत। निर्जन। २. सबसे अलग तरह का। अद्भुत। विलक्षण। ३. अनूठा। अपूर्व। बहुत बढ़िया।

निरावृत–वि० [सं०] बिना ढँका हुआ।

निराश–वि० [हिं० नि + आशा] जिसे आशा न रह गई हो। ना-उम्मीद।

निराशा–स्त्री० [हिं० निर् + आशा] आशा का अभाव। ना-उम्मेदी।

निराशावाद–पुं० [हिं० निराशा + सं० वाद] [वि० निराशावादी] संसार और उसके सब व्यापारों को दुःखमय मानकर सदा सब बातों के संबंध में निराश और फलतः हतोत्साह रहने का सिद्धान्त या वृत्ति। सदा यही मानना या सोचना कि अंत में सफलता का शुभ परिणाम नहीं होगा या हम सुखी नहीं हो सकते।

निराशावादी–पुं० [सं० निराशावादिन्] जो सब बातों के सम्बन्ध में निराश और फलतः हतोत्साह रहता हो। (पेसिमिस्ट)

निराशी*–वि० दे० 'निराश'।

निराश्रय–वि० [हिं०] १. जिसे कहीं आश्रय न मिलता हो। अशरण। २. असहाय।

निरास*–वि० = निराश।

निरासल*–वि० = निराश।

निरासी*–वि० [हिं० निराश] १. दे० 'निराश'। २. जिसमें चहल-पहल या रौनक न हो। उदास।

निराहार–वि० [सं०] १. जिसने भोजन न किया हो। २. (व्रत आदि) जिसमें भोजन न किया जाता हो।

निरिंद्रिय–वि० [सं०] जिसे या जिसमें कोई इंद्रिय न हो। इंद्रिय रहित। (इन्-ऑर्गनिक)

निरिच्छन*–पुं० दे० 'निरीक्षण'।

निरीक्षक–पुं० [सं०] १. देखनेवाला।

२. निरीक्षण या देख-रेख करनेवाला। (इन्स्पेक्टर)

निरीक्षण–पुं० [सं०] [वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य] १. देखना। दर्शन। २. यह देखना कि सब बातें ठीक हैं या नहीं। देख-देख। (इन्स्पेक्शन) ३. देखने की मुद्रा या ढंग। चितवन।

निरीश्वर–वि० [सं०] जिसमें ईश्वर न हो। ईश्वर से रहित।
पुं० = निरीश्वरवादी।

निरीश्वरवाद–पुं० [सं०] [अनुयायी निरीश्वरवादी] वह सिद्धान्त जिसमें ईश्वर का अस्तित्व न माना जाता हो। (एथीइज्म)

निरीस*–वि० [सं० निरीश] १. दे० 'निराश'। २. जो बड़ों का आदर करना न जानता हो।

निरीह–वि० [सं०] [भाव० निरीहता] १. चुपचाप पड़ा रहनेवाला। २. जिसे कोई अभिलाषा न हो। ३. विरक्त। उदासीन। ४. सीधा-साधा और निर्दोष। बेचारा।

निरुआर†–पुं० दे० 'निरुवार'।

निरुआरना*–स० दे० 'निरवारना'।

निरुक्त–वि० [सं०] १. निश्चित रूप से कहा या बताया हुआ। २. निश्चित किया हुआ।
पुं० १. छः वेदांगों में से एक जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है। २. व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति या मूल और उनके रूपों के विकास आदि का विवेचन होता है। (एटिमॉलोजी)

निरुक्ति–स्त्री० [सं०] १. किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा विवेचन हो। २. इस बात का विवेचन कि कोई शब्द मूलतः किस भाषा का था और किस प्रकार बदलता हुआ अपने वर्त्तमान रूप में आया है। ३. शब्द की व्युत्पत्ति। ४ एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मन-माना युक्ति-संगत अर्थ किया जाता है।

निरुज*–वि० दे० 'नीरुज'।

निरुत्तर–वि० [सं०] १. जिसका उत्तर न हो। २. जो उत्तर न दे सके।

निरुत्साह–वि० [सं०] जिसमें न हो। उत्साह-हीन।

निरुत्सुक–वि० [सं०] जो उत्सु हो। जिसमें किसी बात के लिए उ का अभाव हो।

निरुदन–पुं० [सं०] [वि० निर रासायनिक तत्व या वनस्पतियों आदि जल या उसका अंश निकालना या सुखा (डी-हाइड्रेशन)

निरुद्देश्य–वि० [सं०] जिसका उद्देश्य न हो।
क्रि० वि० बिना किसी उद्दश्य के।

निरुद्ध–वि० [सं०] रुका या बँधा हु

निरुद्यम–वि० [सं०] [भाव० निरुद्यम जिसके हाथ में कोई उद्यम या काम न निकम्मा।

निरुपधि–वि० दे० 'निरुपाधि'।

निरुपम–वि० [सं०] [स्त्री० निरुप जिसकी उपमा न हो। उपमा-रहि बेजोड़।

निरुपयोगी–वि० [सं०] जो काम आ सके। व्यर्थ का।

निरुपाधि(क)–वि० [सं०] १. प्रकार की उपाधियों, बन्धनों और से रहित हो। परम। (एब्सोल्यूट) सांसारिक बंधनों या माया-जाल से और मुक्त। ३. जिसमें किसी प्रकार विघ्न या वाधा न हो। निर्विघ्न।
पुं० ब्रह्मा।

निरुपाय–वि० [सं०] १. जो उपाय न कर सकता हो। २. जिसका उपाय न हो सके।

निरुवरना*–अ० [सं० निवारण]

निरोधी-वि० दे० 'निरोधक'।

निर्ख-पुं० [फा०] भाव। दर।

निर्खनामा-पुं० [फा०] वह पत्र जिसपर सब चीजों के निर्ख या भाव लिखे हों।

निर्खबंदी-स्त्री० [फा०] चीजों के भाव या दर निश्चित करना।

निर्गंध-वि० [सं०] [भाव० निर्गंधता] जिसमें कोई गंध न हो। गंध-रहित।

निर्गत-वि० [सं०] [स्त्री० निर्गता] निकला या आया हुआ।

निर्गम-पुं० [सं०] [वि० निर्गमित] १. बाहर निकलने की क्रिया या भाव। निकासी। २. वह मार्ग जिससे कोई चीज बाहर निकलती हो। निकास। ३. आज्ञा आदि का निकलना या प्रकाशित होना। ४. किसी वस्तु, विशेषतः धन आदि का किसी स्थान या देश से बहुत अधिक मात्रा में बाहर जाना। (ड्रेन)

निर्गमना*-अ० [सं० निर्गमन] निकलना।

निर्गुण-वि० [सं०] [भाव० निर्गुणता] १. सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे २. जिसमें कोई अच्छा गुण न हो। गुण-रहित।

निर्गुणिया-वि० [सं० निर्गुण + इया (प्रत्य०)] निर्गुण ब्रह्म की उपासना करनेवाला

निर्गुन*-वि० = निर्गुण।

निर्ग्रंथ-वि० [सं०] [भाव० निर्ग्रंथता] १. जिसमें ग्रंथि, बंधन आदि न हो। २. जिसका ग्रंथ से सम्बन्ध न हो। ग्रंथ-रहित।

निर्घात-पुं० [सं०] १. विनाश। बरबादी। २. आँधी। तूफान। ३. बादलों की गरज और बिजली की कड़क। ४. भूकंप। ५. आघात। प्रहार। मार।

निर्घिन*-वि०[हिं०निः + घिन=घृणा] परम घृणित पदार्थ या कार्य से भी घृणा न करनेवाला। बहुत ही नीच प्रवृत्तिवाला।

निर्छल*-वि० दे० 'निश्छल'।

निर्जन-वि० [सं०] (स्थान) जहाँ कोई न हो। एकांत। सुनसान।

पुं० [वि० निर्जित] ब्याज, लाभ आदि के रूप में बढ़कर प्राप्त होनेवाला धन।

निर्जल–वि० [सं०] १. बिना जल का (स्थान)। २. (व्रत) जिसमें जल तक पीने का विधान न हो।

निर्जित–वि०[सं०] १.जो पूरी तरह से जीत लिया गया हो। २. किसी प्रकार प्राप्त किया हुआ।

निर्जीव–वि०[सं०]१. जीव-रहित। बे-जान। २.मुरदों का-सा। अशक्त। ३.उत्साह-हीन।

निर्झर–पुं० [सं०] पानी का झरना। सोता। चश्मा।

निर्झरिणी–स्त्री० [सं०] १. नदी। दरिया। २. पानी का सोता। झरना।

निर्णय–पुं० [सं०] १. औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके यह निश्चय करना कि यह ठीक या वास्तविक है अथवा ऐसा होना चाहिए। निपटारा। २. वादी और प्रतिवादी की बातें और तर्क सुनकर उनके ठीक होने या न होने के विषय में मत स्थिर करना। फैसला। (डिसीज़न)

निर्णायक–पुं० [सं०] वह जो निर्णय या फैसला करे।

निर्णायक मत–पुं० दे० 'भारिक मत'।

निर्णीत–वि० [सं०] जिसका या जिसके विषय में निर्णय हो चुका हो।

निर्त*–पुं० दे० 'नृत्य'।

निर्तक*–पुं० दे० 'नर्त्तक'।

निर्तना*–अ० दे० 'नाचना'।

निर्दंभ–वि० [सं०] जिसे दंभ या अभिमान न हो। अहंकार-शून्य।

निर्दई*–वि० दे० 'निर्दय'।

निर्दय–वि० [सं०] जिसके मन में दया न हो। निष्ठुर। बेरहम।

निर्दयता–स्त्री० [सं०] निर्दय होने की क्रिया या भाव। बेरहमी। निष्ठुरता।

निर्दयपन–पुं० दे० 'निर्दयता'।

निर्दयी*–वि० दे० 'निर्दय'।

निर्दल–वि० [सं०] १. जिसमें दल या प
हों। २. जिसका कोई दल या जत्था न
३. जो किसी दल में न हो। तटस्थ।

निर्दहना*–स० [सं० दहन] जलाना।

निर्दिष्ट–वि० [सं०] १. जिसका नि
हुआ हो। २. विशेष रूप से बतलाया
नियत किया हुआ। ठहराया हुआ। नि
र्दिष्ट। (स्पेसिफायड) ३. किसी को
सौंपा या सहेजा हुआ। (एसाइन्ड)
(बात या नियम) जिसके लिए
व्यवस्था की गई, गुंजाइश निकाली
या शर्त्त लगाई गई हो। (प्रोवाइडेड)

निर्दूषण*–वि० दे० 'निर्दोष'।

निर्देश–पुं० [सं०] [वि० निर्देशक
निर्दिष्ट] १. विशेष रूप से यह बतलाना
कि यह वस्तु या कार्य है। २. यह कहना
अमुक कार्य अच्छा है और यही
चाहिए। उपदेश। (प्रिसेप्ट) ३.
कार्य का स्वरूप, प्रकार या विधि बतला
(डाइरेक्शन) ४. आज्ञा। हुकुम।
बात, कार्य या नियम के सम्बन्ध में ल
जानेवाली कोई शर्त्त, बतलाई जाने
कोई बात या की जानेवाली कोई व्यवस्
(प्रोवीजन) ६. किसी को कोई
किसी काम के लिए देना या सौंपना
(एसाइन्मेन्ट) ७. वर्णन। वृत्तान्त
नाम। ६. दे० 'अभिदेश'।

निर्देशक–पुं० [सं०] १. वह जो
प्रकार का निर्देश करता या कुछ
हो। २. आधुनिक रजत-पट की कला
अधिकारी जो पात्रों की वेष-भूषा,
या आचरण और दृश्यों के स्वरूप
निश्चित करता है। (डाइरेक्टर)

निर्देशन–पुं० [सं०] १. निर्देश करने
क्रिया या भाव। २. आधुनिक
वे सब कार्य जो उसके निर्देशक को
पड़ते हैं। विशेष दे० 'निर्देशक' ४.।

निर्देशिका–स्त्री० [सं०] वह पुस्त

ापार, व्यवसाय, विभाग
सब बातें और उनसे
के नाम, पते आदि
)

] [भाव० निर्दोषता]
दोष न हो। बे-ऐब।
बेकसूर।

'निर्दोष'।

[सं०] १. जिसका विरोध
न हो। २. राग, द्वेष आदि
। ३. स्वच्छंद।

[हिं० नि + धंधा] जिसके
न हो। बे-रोजगार।

[सं०] [भाव० निर्धनता]
न हो। धन-हीन। गरीब।

'निर्धारण'।

[सं०] [स्त्री० निर्धारिका,
जो किसी बात का निर्धारण
हो।

[सं०] १. कोई बात ठह-
करना। २. न्याय में एक
पदार्थों में से गुण, कर्म
के विचार से कुछ का
। ३. यह निश्चित करना
या महत्त्व क्या है, अथवा
कर लगाना चाहिए।
)

[सं० निर्धारण] निश्चित
करना। ठहराना।

[सं०] निश्चित किया या
।

[सं० निर्धारित] वह
में यह निर्धारित किया जाय कि
होगा। (एसेसी)

[सं०] १. अच्छी तरह धुला
। साफ।

[सं०] बिना पलक
।

वि० १. जिसकी पलक न गिरे। २. जिसमें पलक न गिरे।

निर्बंध–पुं० [सं०] १. बाधा। अड़चन। २. हठ। जिद। ३. आग्रह। ४. किसी व्यक्ति पर अथवा किसी विषय में शर्त्तों आदि के रूप में लगाई जानेवाली रोक। रुकावट। (रिस्ट्रिक्शन)

निर्बल–वि० [सं०] [भाव० निर्बलता] जिसमें बल या शक्ति न हो। कमजोर।

निर्बलता–स्त्री० [सं०] बल या शक्ति न होने या बहुत कम होने की अवस्था या भाव। (इनफर्मिटी)

निर्बहना*–अ० [सं० निर्वाह] १. पार होना। २. अलग या दूर होना। ३. पालन होना। निभना।

निर्बाध (धित)–वि० [सं०] जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो। बाधा-रहित।
क्रि० वि० बिना किसी बाधा के।

निर्बुद्धि–वि० [सं०] मूर्ख। बेवकूफ।

निर्बोध–वि० [सं०] जिसे अच्छे-बुरे का ज्ञान न हो। अज्ञान। अनजान।

निर्भय–वि० [सं०] [भाव० निर्भयता] जिसे भय या डर न हो। निडर।

निर्भर–वि० [सं०] १. भरा हुआ। पूर्ण। २. मिला हुआ। युक्त। ३. किसी के आश्रय पर ठहरा या टिका हुआ। अवलंबित। आश्रित। (बेस्ड) (आधु०)

निर्भीक–वि० [सं०] [भाव० निर्भीकता] जिसे भय न हो। निडर।

निर्भ्रम–वि० [सं०] जिसे भ्रम न हो। भ्रम-रहित। शंका-रहित।
क्रि० वि० बे-धड़क। बे-खटके।

निर्भ्रांत–वि० [सं०] १. जिसमें कोई भ्रम या संदेह न हो। २. जिसको कोई भ्रम या संदेह न हो।

निर्मत्सर–वि० [सं०] जिसके मन में मत्सर या ईर्ष्या-डाह न हो।

निर्मना*–स० दे० 'निर्माना'।

निर्मम–वि० [सं०] [भाव० निर्ममता] १. जिसे ममता या मोह न हो। निर्मोही। २. जिसको कोई वासना न हो। निष्काम। ३. निर्दयता-पूर्ण। जैसे—निर्मम हत्या।

निर्मल–वि० [सं०] [भाव० निर्मलता] १. जिसमें किसी प्रकार का मल या दोष न हो। शुद्ध। पवित्र। निर्दोष। २. जिसमें किसी प्रकार की मैल या मलिनता न हो। मल-रहित। साफ। स्वच्छ। जैसे-निर्मल जल। ३. जो अपने विशुद्ध रूप में हो। जैसे-निर्मल आकाश।

निर्मली–स्त्री० [सं० निर्मल] एक प्रकार का वृक्ष, जिसके बीजों के चूर्ण से गँदला पानी साफ किया जाता है। चाकसू।

निर्माण–पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का बनाया जाना। बनाने का काम। रचना। (कॉन्स्ट्रक्शन, बिल्डिंग) २. वह वस्तु जो बनकर तैयार हुई हो। जैसे-भवन, ग्रन्थ आदि। ३. कोई चीज बना या गढ़कर उसे कोई रूप या आकार देना। (फॉरमेशन)

निर्माता–पुं० [सं०निर्मातृ] निर्माण करने या बनानेवाला।

निर्मान–वि० [हिं० नि + मान] बहुत अधिक। अपार।
*पुं० दे० 'निर्माण'।

निर्माना*–स० [सं० निर्माण] बनाना।

निर्मायक–वि० [सं०] निमार्ण करने या बनानेवाला।

निर्मायल–वि० दे० 'निर्माल्य'।

निर्माल्य–पुं० [सं०] किसी देवता पर चढ़ा हुआ पदार्थ।

निर्मित–वि० [सं०] जिसका निर्माण हुआ हो। बनाया हुआ। रचित।

निर्मुक्ति–स्त्री० [सं०] बहुत से अपराधियों, विशेषतः राजनीतिक बन्दियों को एक-साथ क्षमा करके छोड़ देना। (एम्नेस्टी)

निर्मूल–वि० [सं०] १. बिना जड़ या मूल का। २. जड़ से उखाड़ा हुआ। ३. जिसका कोई आधार न हो। निराधार। ४. बिलकुल नष्ट हो चुका हो। जो नाम को न रह गया हो।

निर्मूलन–पुं० [सं०] १. निर्मूल करने की क्रिया या भाव। २. जड़ से उखाड़ नष्ट करना।

निर्मोल*–वि० दे० 'अनमोल'।

निर्मोही–वि० [सं० निर्मोह] जिसे या ममता न हो।

निर्यात–पुं० [सं०] १. वह जो बाहर निकले। २. देश से माल बाहर की क्रिया। ३. देश से बाहर जाने माल। (एक्सपोर्ट)
वि० (माल आदि) जो देश के भेजा गया हो। दूसरे देशों को भेजा हुआ (एक्सपोर्टेड)

निर्यातक–पुं० [सं०] वह जो लिए माल देश से बाहर भेजने का करता हो। (एक्सपोर्टर)

निर्यात-कर–पुं० [सं०] वह कर किसी देश में वहाँ से बाहर वस्तुओं या माल पर लगता है।

निर्यातन–पुं० [सं०] १. बदला २. मार डालना। ३. दे० 'निर्यात'।

निर्यास–पुं० [सं०] १. वृक्षों या में से निकलनेवाला रस। २. गोंद बहना या झरना। क्षरण।

निर्युक्तिक–वि० [सं०] १. जिसमें कारणों आदि का अभाव हो। २. के आधार पर न हो। युक्ति-रहित।

निर्लज्ज–वि० [सं०] [भाव० निर्लज्जता] जिसे लज्जा न हो। बे-शर्म। बेहया।

निर्लज्जता–स्त्री० [सं०] निर्लज्ज या हीन होने की अवस्था या भाव। बेशर्मी।

निर्लिप्त–वि० [सं०] जो किसी लिप्त या आसक्त न हो।

निर्लेप–वि० दे० 'निर्लिप्त'।

निर्लोभ–वि० [सं०] जिसे लोभ न हो।

[सं०] [भाव० निर्वंशता]
रिवार नष्ट हो गया हो।
[सं०] १. निश्चित रूप से
। निरूपण। २. इस बात
कोई शब्द कैसे बना और
है, अथवा कहाँ से आया
त्पत्ति।
।
[सं०] [स्त्री० निर्वसना]
। नंगा।
दे० 'निर्वाह'।
दे० 'निभना'।
[सं०] मौन। चुप।
[सं०] वह जो निर्वाचन
चुननेवाला। (इलेक्टर)
-स्त्री० [सं०] वह सूची
के नाम-पते आदि लिखे
टोरल रोल)
[सं०] किसी काम के लिए
या कुछ को प्रतिनिधि के
। (इलेक्शन)
कारी-पुं० [सं०] वह
किसी निर्वाचन की देख-रेख
के लिए नियुक्त हो और उसका
हो। (रिटर्निंग ऑफिसर)
-पुं० [सं०] वह स्थान या
प्रतिनिधि चुनने का अधि-
स्टिट्युएन्सी)
[सं०] चुना हुआ।
[सं०] [वि० निर्वाणी] १.
होना। २. न रह जाना।
अस्त होना। डूबना।
क्ति।
[सं० निर्वाण] १. निर्वाण
। २. निर्वाण का
। जैसे-निर्वाणी अखाड़ा।
'निर्वापण'।
[सं०] [वि० निर्वापित,
निर्वाप्य] १. बुझने या बुझाने का काम। २. विनाश। नाश। ३. (अधिकार या स्वत्व का) अंत या समाप्ति करना। (एक्सटिंक्शन)

निर्वासक-पुं० [सं०] १. वह जो निर्वासन करता हो। २. देश-निकाला देनेवाला।

निर्वासन-पुं० [सं०] १. मार डालना। वध। २. गाँव, नगर, देश आदि से दंड-स्वरूप बाहर निकाल देना। देश-निकाला।

निर्वासित-वि० [सं०] जिसे देश-निकाले का दंड मिला हो। अपने निवास-स्थान से निकाला हुआ।

निर्वाह-पुं० [सं०] १. क्रम या परंपरा का चलता रहना। निबाह। २. किसी निश्चय या प्रथा के अनुसार होनेवाला आचरण। पालन। ३. समाप्ति।

निर्वाहक-वि० [सं०] १. निर्वाह करनेवाला। निभानेवाला। २. आज्ञा का निर्वाहण या पालन करनेवाला। (एक्ज़िक्यूटर)

निर्वाहण-पुं० [सं०] [वि० निर्वाहणिक, निर्वाहणीय] १. निर्वाह करना। निभाना। २. किसी की आज्ञा या निश्चय के अनुसार ठीक तरह से काम करना। ३. कुछ समय के लिए किसी दूसरे का काम या भार अपने ऊपर लेना। अस्थायी रूप से स्थानापन्न के रूप में काम करना।

निर्वाहणिक-वि० [सं०] १. निर्वाहण संबंधी। निर्वाहण का। २. जो किसी कार्य का निर्वाह करता हो। निर्वाहण करनेवाला। ३. किसी के पद पर अस्थायी रूप से रहकर उसके कार्य का निर्वाहण करनेवाला। स्थानापन्न। (ऑफिशिएटिंग)

निर्वाहना*-अ० = निभाना।

निर्विकल्प-वि० [सं०] १. जिसमें विकल्प, परिवर्त्तन या भेद न हो। (एब्सोल्यूट) २. स्थिर। निश्चित।

निर्विकार-वि० [सं०] जिसमें कोई

विकार या परिवर्त्तन न होता हो।

निर्विघ्न–वि० [सं०] जिसमें विघ्न या बाधा न हो।
क्रि० वि० बिना किसी विघ्न या बाधा के।

निर्विरोध–वि० [सं०] जिसमें कोई विरोध, बाधा या रुकावट न हो।
क्रि० वि० बिना किसी विरोध, बाधा या रुकावट के।

निर्विवाद–वि० [सं०] जिसमें कोई विवाद या झगड़े की बात न हो। जो बिना किसी विवाद के ठीक माना जाता हो।

निर्वीज–वि० [सं०] १. जिसमें बीज न हो। बीज-रहित। २. जो कारण से रहित हो। ३. जिसका बीज तक न रह गया हो। सर्वथा नष्ट।

निर्वीर्य्य–वि० [सं०] १. वीर्य्य-हीन। बल या तेज-रहित। २. अशक्त। कमजोर।

निर्वेद–पुं० [सं०] १. (अपना) अपमान। २. खेद। दुःख। ३. वैराग्य। ४. मन में आशा या दृढ़ता न रह जाने के कारण होनेवाली खिन्नता और विरक्ति।

निर्वेदी*–पुं० [सं० निः + वेद] वह जो वेदों से भी परे हो, अर्थात् ब्रह्म।

निर्वैर–वि० [सं०] वैर या द्वेष से रहित।

निर्व्यलीक–वि० [सं०] १. निर्मल। २. निष्कपट।

निर्व्याज–वि० [सं०] १. निष्कपट। छल-रहित। २. विघ्न या बाधा से रहित।

निलजई*–वि० = निर्लज्जता। उदा०—रीझिबे लायक तुलसी को निलजई।—तुलसी।

निलज्ज–वि० दे० 'निर्लज्ज'।

निलय–पुं० [सं०] १. मकान। घर। २. स्थान। जगह।

निलाज*–वि० = निर्लज्ज।

निवछुरा*–वि० [सं० निवृत्त] (ऐसा समय) जिसमें बहुत काम-काज न हो।

निवर्त्तक–वि० [सं०] निवर्त्तन या रद्द करनेवाला। (रिपीलिंग) जैसे–निवर्त्तक विधान।

निवर्त्तन–पुं० [सं०] [वि० निवर्त्तित] प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई बना हुआ नि समाप्त कर दिया जाता है। विधान आदि अन्त करना। कानून रद्द करना। (रि

निवर्त्तित–वि० [सं०] (विधान) नि निवर्त्तन हुआ हो। रद्द किया हुआ। (रि

निवसना*–अ० = निवास करना।

निवाज–वि० दे० 'नवाज'।

निवाजना*–अ० दे० 'नवाजना'।

निवाड़ा–पुं० दे० 'नवाड़ा'।

निवार–स्त्री० [फा० नवार] मोटे सू बुनी वह पट्टी जिससे पलंग बुनते हैं।

निवारक–वि० [सं०] १. निवारण कर या रोकनेवाला। २. दूर करनेवाला।

निवारण–पुं० [सं०] १. रोकना। २. हटा दूर करना। ३. निवृत्ति। छुटकारा।

निवारना*–स० [सं० निवारण] रोकना। २. दूर करना। हटाना। अपनी रक्षा का ध्यान रखते हुए रहना। ४. निषेध या मना करना।

निवारी–स्त्री० [सं० नेपाली] तरह का सफेद फूलों का एक पौधा।

निवाला–पुं० [फा०] भोजन का कौर।

निवास–पुं० [सं०] १. कहीं रहने क्रिया या भाव। २. रहने का स्थान भौगोलिक दृष्टि से वह स्थान या क्षेत्र कोई विशेष जीव-जन्तु रहता या कोई वनस्पति उत्पन्न होती हो। (हैबिटैट)

निवास-स्थान–पुं० [सं०] रहने की

निवासित*–वि० [सं० निवास] करनेवाला। बसा या बसाया हुआ।

निवासी–पुं० [सं० निवासिन्] [स्त्री० सिनी] रहने या बसनेवाला। वासी।

निविड़–वि० [सं०] १. घना। २. ३. गम्भीर। गहरा।

निविष्ट–वि० [सं०] १. जिसका एकाग्र हो। २. ठहराया या रखा हु स्थापित। ३. बाँधा हुआ। ४. कहीं

प्रभात । तड़का ।

निशा–स्त्री० [सं०] रात । रजनी ।

निशाकर–पुं० [सं०] चन्द्रमा ।

निशा-खातिर–स्त्री० [अ० खातिर + फा० निशाँ] निश्चिंतिता । तसल्ली । इतमीनान।

निशाचर–पुं० [सं०] १. राक्षस । २. गीदड़ । ३. उल्लू । ४. साँप । ५. भूत-प्रेत । ६. चोर ।

वि० जो रात को बाहर निकले या चले ।

निशाचरी–स्त्री० [सं०] १. राक्षसी । २. कुलटा । व्यभिचारिणी । ३. अभिसारिका नायिका ।

वि० [हिं० निशाचर] १. निशाचर-संबंधी । २. निशाचरों का-सा । जैसे–निशाचरी माया ।

निशान–पुं० [फा०] १. ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाय या जिससे किसी बात या घटना का परिचय मिले । २. बना या बनाया हुआ चिह्न । ३. शरीर या किसी पदार्थ पर का प्राकृतिक या और किसी प्रकार का चिह्न या दाग । ४. वह चिह्न जो अशिक्षित लोग अपने हस्ताक्षर के बदले में बनाते हैं । ५. पता । ठिकाना ।

मुहा०–निशान देना = सम्मन आदि तामील करने के लिए यह बताना कि यही असामी है ।

६. एक प्रकार का बहुत बड़ा झंडा जो प्रायः राजाओं की सवारी के आगे चलता है । ७. राजाओं की सवारी के आगे बजनेवाला डंका । नगाड़ा । ८. दे० 'लक्षण' । ९. दे० 'निशाना' । १०. दे० 'निशानी' ।

निशाना–पुं० [फा०] १. वह जिसपर अस्त्र, शस्त्र आदि का लक्ष या वार किया जाय । लक्ष्य । २. किसी को लक्ष्य बनाकर उसपर वार करने की क्रिया ।

मुहा०–निशाना मारना या लगाना = ताककर अस्त्र आदि का वार करना

२. वह जिसे लक्ष्य करके कोई बात कही जाय।

निशा-नाथ-पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशानी-स्त्री० [फा०] १. स्मृति बनाये रखने के लिए दिया या रखा हुआ पदार्थ। स्मृति-चिह्न। यादगार। २. वह चिह्न जिससे कोई वस्तु पहचानी जाय। निशान।

निशा-पति-पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशामुख-पुं० [सं०] संध्या का समय।

निशास्ता-पुं० [फा०] १. गेहूँ या आटे का जमाया हुआ सत या गूदा। २. माड़ी। कलफ।

निशि-स्त्री० [सं०] रात।

निशिकर-पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशिचर(चारी)-पुं० दे० 'निशाचर'।

निशित-वि० [सं०] धारदार। तेज धारवाला।

पुं० लोहा।

निशि-नाथ-पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशि-वासर*-क्रि० वि० [सं०] १. रात-दिन। २. सदा। हमेशा।

निशीथ-पुं० [सं०] रात।

निशेश-पुं० [सं०] निशा के पति या स्वामी, चन्द्रमा।

*वि० दे० 'निःशेष'।

निश्चय-पुं० [सं०] १. ऐसी धारणा या ज्ञान जिसमें कोई भ्रम या दुबधा न हो। २. विश्वास। यकीन। ३. निर्णय। ४. दृढ़ संकल्प या विचार। पक्का इरादा। ५. सभा-समिति आदि में ठहराई या स्थिर की हुई बात। ६. एक अर्थालंकार जिसमें एक बात का निषेध करके प्रकृत या यथार्थ बात के स्थापन का उल्लेख होता है।

श्चयात्मक-वि० [सं०] पूरी तरह निश्चित। ठीक। पक्का।

श्चल-वि० [सं०] [स्त्री० निश्चला, ाव० निश्चलता] १. जो अपने स्थान से हटे। स्थिर। २. अचल। अटल।

श्चायक-वि० [सं०] १. निश्चय या प्रतीति करानेवाला। २. जिसके द्वारा कारण किसी बात का निश्चित ज्ञान हो (कन्क्लूजिव) जैसे—दोष या अपराध निश्चायक प्रमाण। (कन्क्लुजिव प्रूफ)

निश्चिंत-वि० [सं०] [भाव० निश्चिंतता] जिसे कोई चिंता या फिक्र न हो। बेफि

निश्चिंतई*-स्त्री० = निश्चिंतता।

निश्चिंतता-स्त्री० [सं०] निश्चिन्त हो की क्रिया या भाव। बे-फिक्री।

निश्चित-वि० [सं०] १. जिसके सम्बन्ध निश्चय हो चुका हो। निर्णीत। २. जि कोई परिवर्त्तन न हो सके। दृढ़। पक्का। ३. जो बिलकुल ठीक हो और जिसके नि या अन्यथा होने की कोई सम्भावना न हो। ध्रुव। (डेफिनिट) ४. जो नियम, नि आज्ञा, विधि आदि के द्वारा नियत या प कर दिया गया हो। (फिक्स्ड)

निश्चेतन-वि० [सं०] १.बेहोश। २.जड़।

निश्चेष्ट-वि०[सं०]१.जिसमें चेष्टा या गति हो। २.बेहोश। अचेत। ३.निश्चल। स्थि

निश्चै*-पुं० = निश्चय।

निश्छल-वि० [सं०] जो छल-कपट जानता हो। सरल प्रकृति का। सीधा।

निश्वास-पुं० [सं०] नाक या मुँह बाहर निकलनेवाला श्वास या साँस।

निश्शंक-वि० दे० 'निःशंक'।

निश्शेष-वि० दे० 'निःशेष'।

निषंग-पुं० [सं०] [वि० निषंगी] तरकश। २. खड्ग।

निषाद-पुं० [सं०] १.एक प्राचीन अन जाति जो भारत में आर्य्यों के आने से प रहती थी। २. एक प्राचीन देश जो क चित् शृंगवेरपुर के पास था। ३.उक्त जा और देश की प्राचीन भाषा जो आधुनि भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मुंडा भाषाओं वर्ग में गिनी जाती है। ४. संगीत में सात और सबसे ऊँचा स्वर।

निषादी-पुं० [सं० निषादिन्] हाथीवान।

] जिसके अन्दर या
रखी या भरी गई हो।
हो। (इम्प्रेग्नेटेड)
] १. जिसका निषेध किया
हुआ। २. बुरा।
] [वि० निषिक्त] १.
डुबाना। ३. भबके आदि
। ४. गर्भ धारण कराना।
कोई चीज या शक्ति
प्रकार भरी हुई वस्तु या
)
] १. यह कहना कि अमुक
करो। वर्जन। मनाही।
। ३. न होने की अवस्था
। (नेगेशन)
] १. निषेध या मना करने-
या कथन) जिसके द्वारा
जाय। (प्रॉहिबिटरी)
।
[सं०] १. जिसमें निषेध
हो। २. जिसमें 'नहीं' या
हो। नकारात्मक। (नेगेटिव)
-पुं० [सं०] १. किसी
कार्य को पहले से ही
करके रोकने का अ-
आदि के प्रमुख अधिकारी या
हाथ में रहनेवाला वह अधि-
पर किसी प्रकार का
या विधायिका द्वारा स्वीकृत
रूप में परिणत होने से
हो। ३. किसी संस्था के
के हाथ में रहनेवाला उक्त
जिससे कोई स्वीकृत प्रस्ताव
में रोका जा सकता है। (वीटो)
[सं०] जिसमें कोई कंटक,
न हो। बिना झंझट का।
] जो काँपता या हिलता

निष्क–पुं० [सं०] १. वैदिक काल का सोने का एक सिक्का। २. वैद्यक में चार मासे की तौल। टंक।

निष्कपट–वि० [सं०] [भाव० निष्कपटता] जिसके मन में कपट न हो। निश्छल। छल-रहित। सीधा। सरल।

निष्करुण–वि० [सं०] जिसमें या जिसके मन में करुणा न हो। करुणा-रहित।

निष्कर्ष–पुं० [सं०] १. सारांश। खुलासा। २. विचार या विवेचन के अंत में निकलनेवाला सिद्धान्त। निचोड़। सार।

निष्कलंक–वि० [सं०] जिसमें कलंक न हो। निर्दोष। बे-ऐब।

निष्काम–वि० [सं०] [भाव० निष्कामता] १. (मनुष्य) जिसके मन में कोई कामना या इच्छा न हो। २. बिना किसी कामना या इच्छा के किया जानेवाला (काम)।

निष्कारण–वि० [सं०] बिना कारण का। क्रि० वि० १. बिना किसी कारण के। २. व्यर्थ। वृथा। बे-फायदा।

निष्कासन–पुं० [सं०] [वि० निष्कासित] १. निकालना। बाहर करना। २. किसी को दंड आदि के रूप में किसी स्थान, क्षेत्र आदि से हटाकर बाहर या दूर करना।

निष्कृत–वि० [सं०] [भाव० निष्कृति] १. निकला हुआ। २. छूटा हुआ। मुक्त।

निष्क्रमण–पुं० [सं०] [वि० निष्क्रांत] बाहर निकलना।

निष्क्रमणार्थी–पुं० [सं०] १. कहीं से निकलने की इच्छा रखनेवाला। २. दे० 'निष्क्रमिती'।

निष्क्रमिती–पुं० [सं० निष्क्रमित] वह जो किसी संकट आदि से बचने के लिए अपना निवास-स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाय या जाना चाहे। (इवैकुई)

निष्क्रय–पुं० [सं०] [वि० निष्क्रीत] १. वेतन। तनखाह। २. विनियम। बदला। ३. किसी वस्तु के स्थान पर दिय

जानेवाला धन। (कम्पेन्सेशन) जैसे-गोदान के समय गौ न देकर उसके स्थान पर दिया जानेवाला धन।

निष्क्रांत-वि० [सं०] [भाव० निष्क्रांति] १. निकला या निकाला हुआ। २. मुक्त।

निष्क्रिय-वि० [सं०] [भाव० निष्क्रियता] १. जिसमें कोई क्रिया, चेष्टा या व्यापार न हो। क्रिया या चेष्टा-रहित। २. जिसकी क्रिया या गति बीच में रुक गई हो। (इन-ऐक्टिव)

निष्क्रिय प्रतिरोध-पुं० [सं०] किसी अनुचित आज्ञा या निर्णय का वह विरोध जिसमें उचित काम बराबर किया जाता है और दंड की परवा नहीं की जाती।

निष्क्रीत-वि० [सं०] १. जिससे या जिसके लिए निष्क्रय दिया गया हो। (कम्पेन्सेटेड) २. (ऋण या देन) जिसका विमोचन हुआ हो। (रिडीम्ड)

निष्ठ-वि० [सं०] १. ठहरा हुआ। स्थित। २. काम में लगा हुआ। तत्पर। ३. किसी के प्रति निष्ठा, श्रद्धा या भक्ति रखनेवाला। (लॉयल)

निष्ठा-स्त्री० [सं०] १. स्थिति। ठहराव। २. विश्वास। निश्चय। ३. बड़े आदि के प्रति पूज्य बुद्धि और भक्ति का भाव। (फेथ) ४. राज्य या शासन के प्रति प्रजा का पूज्य और श्रद्धापूर्ण भाव। (एलीजिएन्स)

निष्ठुर-वि० [सं०] [स्त्री० निष्ठुरा, भाव० निष्ठुरता] निर्दय। बे-रहम।

निष्ण, निष्णात-वि० [सं०] किसी विषय का पूरा ज्ञाता या पंडित। (एक्सपर्ट)

निष्पंद-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का स्पंदन, कंप या गति न हो।

निष्पक्ष-वि० [सं०] [भाव० निष्पक्षता] जो विरोधियों में से किसी का पक्ष न करे। पक्षपात-रहित। तटस्थ। (इम्पार्शल)

निष्पक्षता-स्त्री० [सं०] निष्पक्ष होने की दशा या भाव। (इम्पारशैलिटी)

निष्पत्ति-स्त्री० [सं०] १. समाप्ति। अंत। २. निर्वाह। ३. निश्चय। निर्धार

निष्पन्न-वि० [सं०](काम) जो आज्ञ नियम, निश्चय आदि के अनुसार समाप्त पूरा किया जा चुका हो। (एक्जिक्यूटेड)

निष्पादक-पुं० [सं०] १. आज्ञ नियम आदि के अनुसार कोई काम करने वाला व्यक्ति। २. वह जो किसी की दि या वसीयत में लिखी बातों का पालन व्यवस्था करने का अधिकारी बनाया ग हो। (एक्जिक्यूटर)

निष्पादन-पुं० [सं०] [वि० निष्पाद निष्पादनीय, निष्पादित, निष्पन्न] आज्ञा, नियम आदि के अनुसार कोई का ठीक तरह से पूरा करना। तामील। २. किसी अधिकारी आदि के बतलाये हु काम ठीक तरह से पूरे करना। तामील (एक्जिक्यूशन)

निष्पादित-वि० दे० 'निष्पन्न'।

निष्पाप-वि० [सं०] १. जो पाप से रहे। २. जिसमें पाप न हो। पाप-रहित

निष्प्रभ-वि० [सं०] जिसमें प्रभा चमक न हो या न रह गई हो। प्रभा-रहित

निष्प्रभाव-वि० [सं०] १. जिसका जिसमें कोई प्रभाव न हो। २. जिसका कार्य या प्रभाव रोका या नष्ट किया गया हो। जैसे-अब यह नियम निष्प्रभाव गया है।

निष्प्रयोजन-वि० [सं०] १. जि कोई प्रयोजन न हो। २. व्यर्थ। क्रि० वि० १. बिना किसी प्रयोजन मतलब के। २. व्यर्थ। वृथा। फजूल।

निष्प्राण-वि० [सं०] जिसमें प्राण न हो।

निष्फल-वि०[सं०] जिसका कोई फल या प णाम न हो। व्यर्थ। निरर्थक। (एबोर्टिव)

निसंक*-वि० दे० 'निःशंक'।

निसंग*-वि० दे० 'निःसंग'।

निसँठ*-वि० दे० 'निर्धन'।

निसंस*-वि० दे० 'नृशंस'।

] १. जिसमें साँस
प्राय। मुरदा-सा।
=हाँफना।
'निशा'।
[illegible]'।
=निशाकर (चन्द्रमा)।
=निश्चय।
'निःसत्व'।
[सं० निस्तार] निस्तार
। मुक्त होना।
वि० [सं० निशा + दिन]
। २. सदा। हमेशा।
वि० [सं०निशि + दिवस]
२. सदा। नित्य।
दे० 'निर्मोही'।
[अ०] १. सम्बन्ध। लगाव।
स्थिर करने की प्रथा।
। मुकाबला।
[हिं० निस = नहीं +
बुध ठिकाने न हो। विकल।
[हिं० नि + सयाना]
ठिकाने न हो।
= निकलना।
[सं० निस्सरण] ब्राह्मण
कच्चा अन्न। सीधा।
] १. प्रकृति। (नेचर)
। ३. दान। ४. सृष्टि।
वि० [सं० निःस्वाद] जिसमें
न हो। स्वाद-हीन।
क्रि० वि० दे० 'निस-द्यौस'।
दे० 'निसाँस'।
दे० 'निःशंक'।
[सं० निः + श्वास]
श्वास। निस्वास।
साँस न हो। निर्जीव।
दे० 'निशा'।
[हिं० नि + साथ] जिसके

साथ कोई न हो। अकेला।

निसान*–पुं० दे० 'निशान'।

निसानन*–पुं० [सं० निशानन] संध्या।

निसाफ*–पुं० [अ० इन्साफ] न्याय।

निसार–पुं० [अ०] निछावर। सदका। *वि० दे० 'निस्सार'।

निसारना*–स० = निकालना।

निसास(ी)*–पुं० दे० 'निसाँस'।

निसि–स्त्री० दे० 'निशि'।

निसिअर*–पुं० [सं० निशाकर] चन्द्रमा।

निसित*–वि०, पुं० दे० 'निशित'।

निसि-दिन*–क्रि० वि० दे० 'निस-दिन'।

निसियर*–पुं० = निशाकर। (चन्द्रमा)

निसिवासर*–क्रि० वि० दे० 'निस-दिन'।

निसीठा*–वि० दे० 'निःस्सार'।

निसु*–स्त्री० दे० 'निशा'। ('निसु' के यौ० के लिए दे० 'निस' के यौ०)

निसुका*–वि० [सं० निस्वक्] १. गरीब। निर्धन। २. बेचारा।

निसृष्ट–वि० [सं०] १. छोड़ा या निकाला हुआ। २. भेजा हुआ। ३. दिया हुआ।

निसेनी†–स्त्री० दे० 'सीढ़ी'।

निसेष*–वि० दे० 'निःशेष'।

निसेस*–पुं० [सं० निशेश] चंद्रमा।

निसोग*–वि० [सं० निःशोक] जिसे शोक या दुःख न हो। शोक-रहित।

निसोच*–वि०[सं०निःशोच]·चिंता-रहित।

निसोत(ा)*–वि० [?] [स्त्री० निसोती] असली। सच्चा। उदा०—······कहौं सो साँच निसोतो।—तुलसी।

निसोध(धु)*–स्त्री० [हिं० सुध] १. सुध। होश। २. हाल। खबर। ३. सँदेसा।

निस्तंद्र–वि० [सं०] १. जिसे तंद्रा न आई या न आती हो। २. जागा हुआ। जाग्रत।

निस्तत्त्व–वि० [सं०] जिसमें कोई तत्त्व या सार न हो। निस्सार।

निस्तब्ध–वि० [सं०] [भाव० निस्तब्धता] १. जो हिलता-डुलता न हो। २. जड़

के समान निश्चेष्ट ।

निस्तरंग–वि० [सं०] १. जिसमें तरंग या लहर न हो । २. शांत । ३. जिसमें कुछ भी गति या शब्द न हो ।

निस्तर*–पुं० = निस्तार ।

निस्तरण–पुं० दे० 'निस्तार' ।

निस्तरना*–अ० [सं० निस्तार] निस्तार या छुटकारा पाना । मुक्त होना ।
स० = निस्तारना (निस्तार करना) ।

निस्तल–वि० [सं०] [भाव० निस्तलता] १. जिसका तल न हो । २. जिसके तल की थाह न हो । बहुत गहरा । ३. गोल । वृत्ताकार । ४. नीचा । निम्न ।

निस्तार–पुं० [सं०] १. पार होने का भाव । २. छुटकारा । उद्धार । ३. काम पूरा करके उससे छुट्टी पाना ।

निस्तारण–पुं० [सं०] [वि० निस्तारित] १. निस्तार करने या छुटकारा दिलाने की क्रिया या भाव । २. सामने आये हुए कार्य या व्यवहार (मुकदमे आदि) को नियमित रूप से पूरा करना अथवा उसका निराकरण करना । (डिस्पोजल) ।

निस्तारना–*स० = निस्तार करना ।

निस्तेज–वि० [सं० निस्तेजस्] जिसमें तेज न हो । तेज-रहित ।

निस्पंद–वि० [सं०][भाव० निस्पंदता] १. जो हिलता-डोलता न हो । स्थिर । निश्चल । २. निश्चेष्ट । स्तब्ध ।

निस्पृह–वि० [सं०] [भाव० निस्पृहता] जिसे किसी प्रकार का लोभ या कामना न हो । निर्लोभ ।

निस्फ–वि० [अ०] आधा । अर्द्ध ।

निस्बत–स्त्री० दे० 'निसबत' ।

निस्यों*–वि० [सं० निश्चित] निश्चिन्त । बे-फिक्र । जैसे–*निस्यों करि = निश्चिन्त होकर ।

निस्वन–पुं० [सं०] ध्वनि । शब्द ।

निस्संकोच–वि० [सं०] जिसे या जिसमें संकोच या लज्जा न हो । बेधड़क ।
क्रि० वि० बिना किसी संकोच के ।

निस्संग–वि० [सं०] १. जो कि कोई संबंध न रखता हो । २. वि वासनाओं आदि से रहित । ३. नि एकांत । ४. अकेला ।

निस्संतान–वि० [सं०] जिसे सन्तान या बाल-बच्चा न हो । संतति-
निस्संदेह–क्रि० वि० [सं०] १. संदेह के । २. अवश्य । जरूर ।
वि० जिसमें संदेह न हो ।

निस्संबल–वि० [सं०] जिसका संबल, सहारा या ठिकाना न हो ।

निस्सरण–पुं० [सं०] १. निकलने मार्ग । २. निकलना । (डिस्चार्ज)

निस्सहाय–वि० [सं०] जिसका सहायक न हो । असहाय । निरव (हेल्पलेस)

निस्सार–वि० [सं०] १. सार-रहि २. जिसमें काम की बात न हो ।

निस्सारण–पुं० [सं०] निकालने क्रिया या भाव । (डिस्चार्ज)

निस्सीम–वि० [सं०] १. जिसकी सीमा न हो । असीम । (एब्सोल्यू २. बहुत अधिक । बे-हद ।

निस्स्नेह–वि० [सं०] जिसमें या स्नेह या प्रेम न हो ।

निस्स्वार्थ–वि० [सं०] जिसमें या अपने स्वार्थ या हित का कोई विचार न

निहंग(म)–वि० [सं० निःसंग] एकाकी । अकेला । २. स्त्री से सम्ब रखने और अकेला रहनेवाला । ३. ४. निर्लज्ज ।
पुं० सिक्खों का एक सम्प्रदाय ।

निहंग-लाडला–वि० [हिं० निहंग लाडला] जो लाड या दुलार के उद्दंड और स्वेच्छाचारी हो गया हो ।

निहकरमी*–वि० [सं० निष्कर्मी]

...लित हो।
...दे० 'निष्काम'।
...दे० 'निश्चय'।
...दे० 'निश्चल'।
...१. दे० 'निश्चित'।
...ों।
...] १. नष्ट। २. जो मार
...।
...[हिं० नि+हाथ] १.
...हो। २. जिसके हाथ में
...न हो।
...दे० 'हनना'।
...दे० 'निष्पाप'।
...दे० 'निष्फल'।
...[सं० निघाति, मि० फा०
...वह आधार जिसपर
...आदि कोई चीज रखकर
...ते हैं।
...दे० 'निहाई'।
...[अ०] अत्यंत। बहुत।
...[सं०] १. कुहरा। पाला।
...हिम। बरफ।
...दे० 'देखना'।
...[हिं० निहारना] नि-
...भाव।
...[फा०] भली-भाँति संतुष्ट
...आम।
...= देखना।
...[फा०] १. गद्दा। तोशक।
...निहाई।
...[सं०] कहीं या किसी के
...छिपा हुआ।
...[सं०] वाक्य का वह
...आशय जो साधारणतः
...पर जो वस्तुतः महत्त्व
...(स्त्रीं०)
...दे० 'झुकना'।
...[हिं० निहुरना] निहुरने

या झुकने की क्रिया या भाव।
*स्त्री० दे० 'निष्ठुरता'।

निहुराना-स० हिं० 'निहुरना' का स०।

निहोरना*-स० [सं० मनोहार] १. किसी बात के लिए प्रार्थना करना। २ याचना करना। माँगना। उदा०—गाँव बसत बामदेव, मैं कबहुँ न निहोरे।—तुलसी। ३. रूठे हुए को प्रसन्न करना। मनाना। ४. निहोरा या उपकार मानना। कृतज्ञ होना। ५. खुशामद या चापलूसी करना।

निहोरा†-पुं० [सं० मनोहार] १. एहसान। कृतज्ञता। २. विनती। प्रार्थना। ३. भरोसा। सहारा। आसरा।
क्रि० वि० १. कारण से। द्वारा। २. के लिए। वास्ते। निमित्त।

नींद-स्त्री० [सं० निद्रा] प्राणियों की वह अवस्था जिसमें बीच-बीच में अथवा नित्य रात को उनकी चेतन क्रियाएँ रुक जाती हैं और शरीर तथा मस्तिष्क विश्राम करता है। सोने की अवस्था। निद्रा।
मुहा०-नींद उचटना, खुलना या टूटना = नींद का अन्त होना। जाग पड़ना। **नींद हराम होना** = चिंता आदि के कारण नींद तक न आना।

नींदड़ी(री)*-स्त्री० दे० 'नींद'।

नींदना*-अ०[हिं० नींद] नींद लेना। सोना। स० दे० 'निराना'।

नींबू-पुं० [सं० निंबूक, अ० लेमूँ] एक छोटा पेड़ जिसके गोल, छोटे फल खट्टे होते हैं। (कई प्रकार के नीबू मीठे और बड़े भी होते हैं)
यौ०-नीबू-निचोड़ = बहुत बड़ा कंजूस।

नींव-स्त्री० [सं० नेमि, प्रा० नेइ] १. मकान आदि बनाने के समय उसका वह मूल भाग जो दीवारों की दृढ़ता के लिए जमीन खोदकर और उसमें से दीवारों की जोड़ाई आरम्भ करके बनाया जाता है। २. किसी वस्तु या कार्य का आरम्भिक भाग।
मुहा०-नींव जमाना या डालना =

दे० 'नींव देना'। **नींव देना** = (क) गड्ढा खोदकर दीवार का मूल भाग बनाना। (ख) कारण या आधार खड़ा करना। जड़ खड़ी करना। उपक्रम करना। **नींव पड़ना** = (क) घर की दीवार का बनना आरम्भ होना। (ख) कार्य का सूत्रपात्र होना।

३. जड़। मूल। ४. आधार।

नीक(ा)*–वि० [सं० निक्त = स्वच्छ] [स्त्री० नीकी] उत्तम। अच्छा। बढ़िया। †पुं० उत्तमता। अच्छापन।

नीके–क्रि० वि० [हिं० नीक] अच्छी तरह।

नीच–वि० [सं०] [भाव० नीचता] १. जाति, गुण आदि में बहुत घटकर या कम। २. अधम। बुरा। निकृष्ट।

यौ०–नीच-ऊँच = (क) अच्छा-बुरा। (ख) अच्छा और बुरा परिणाम। हानि-लाभ। (ग) सुख-दुःख।

नीचा–वि० [सं० नीच] [स्त्री० नीची] १. जो कुछ उतार या गहराई में हो। गहरा। निम्न। 'ऊँचा' का उलटा।

यौ०–ऊँचा-नीचा या नीचा-ऊँचा = कहीं कुछ गहरा और कहीं कुछ उठा हुआ। ऊबड़-खाबड़।

२. जो अधिक ऊपर तक न गया हो। ३. निम्न स्तर की ओर दूर तक आया हुआ।

मुहा०–नीचा दिखाना = (क) तुच्छ ठहराना। अपमानित करना। (ख) परास्त करना। हराना। (ग) लज्जित करना। **नीचा देखना** = (क) तुच्छ ठहरना। (ख) हारना। परास्त होना। **नीची दृष्टि करना**=लज्जा या संकोच से सिर झुकाना। सामने या ऊपर न ताकना।

४ झुका हुआ। नत। ५. जो तीव्र या जोर का न हो। धीमा। मद्धिम। ६. जाति, गुण आदि में घटकर। ७. ओछा। क्षुद्र।

नीचाशय–वि० [सं०] क्षुद्र। ओछा।

नीचू†–क्रि० वि० दे० 'नीचे'।

स्त्री० दे० 'लीची'।

नीचे–क्रि० वि० [हिं० नीचा] १. तल की ओर। अधोभाग में। '

उलटा।

यौ०–नीचे-ऊपर = (क) एक पर

(ख) अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित।

मुहा०–नीचे गिरना=अवनत

होना। **ऊपर से नीचे तक**=

पैर तक। एक सिरे से दूसरे सिरे

२. तुलना में घटकर या कम।

धीनता या मातहती में।

नीजन*–वि० दे० 'निर्जन'।

नीझर*–पुं० दे० 'निर्झर'।

नीठ*–स्त्री० [सं० अनिष्टि]

रुचि न होना।

क्रि० वि० १. किसी न किसी

जैसे-तैसे। २. कठिनता से।

नीठि*–क्रि० वि० दे० 'नीठ'।

तहँ साख बैठो नीठि। तब पलो

दीठि।—केशव।

नीठो*–वि० [सं० अनिष्ट] १.

कारी। बुरा। २. अप्रिय। अरुचिकर

नीड़·पुं० [सं०] १. चिड़ियों का

२. ठहरने या रहने का स्थान।

नीड़ज–पुं० [सं०] चिड़िया। पक्षी

नीति–स्त्री० [सं०] १. ले जाने

चलने की क्रिया या भाव। २.

या बरताव का ढंग। आचार-पद्धति

व्यवहार की वह रीति जिससे अपना

हो और दूसरों को कष्ट या हानि न

४. जनता या समाज के हित के

निश्चित आचार-व्यवहार। अच्छा

और चलन। नय। (एथिक्स) ५.

और राष्ट्र की रक्षा तथा हित के

निश्चित रीति या व्यवहार। राजनीति

६. कोई कार्य्य ठीक तरह से पूरा करने के

लिए की जानेवाली युक्ति, उपाय, ढंग

प्रकार। (पॉलिसी)

] नीति जाननेवाला ।
नीतिमत्] [स्त्री०
। २. सदाचारी।
] वह जो सब काम
के अनुसार करना
हो।
-पुं० [सं०] १.
देश, काल और पात्र का
के आचरण करने के नियम
शास्त्र जिसमें समाज के
आचार-व्यवहार बतलाये
)
दे० 'निर्धन'।
] कदंब का पेड़ । कदंब ।
दे० 'लीपना'।
दे० 'नीवि'।
नींबू'।
निंब] एक प्रसिद्ध पेड़
कडुए होते हैं।
] आधा । अर्द्ध ।
[फा०] जामे के नीचे पहना
पहनावा ।
स्त्री० [फा० नीम + आस्तीन]
कुरती या फतूही ।
[अ०] मन में रहनेवाला
उद्देश्य । आशय । मंशा ।
बदल जाना या नीयत
आना = दे० 'नियत बिगड़ना'।
= संकल्प करना । इरादा
बिगड़ना = अच्छे संकल्प
बुरा हो जाना । **नीयत**
भरना । तृप्ति होना । **नीयत**
= लालसा बनी रहना ।
] [भाव० नीरता] १. पानी।
ढलना = मरते समय आँखों
या रस । ३. छाले आदि

से निकलनेवाला चेप ।

नीरज-पुं० [सं०] १. जल में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ । २. कमल । ३. मोती ।

नीरद-पुं० [सं०] बादल । मेघ ।
वि० [सं०] जल देनेवाला ।
वि० [सं० निः + रद] बे-दाँत का । अदंत ।

नीरधर-पुं० [सं०] बादल । मेघ ।

नीरधि-पुं० [सं०] समुद्र ।

नीरव-वि० [सं०] [भाव० नीरवता] १. जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो । निःशब्द । २.जो कुछ न बोलता हो । चुप ।

नीरस-वि० [सं०] १. जिसमें रस न हो । रस-हीन । २. सूखा । शुष्क । ३. जिसमें कोई स्वाद न हो । फीका । ४. जिसमें कोई आकर्षक या रुचिकर बात या तत्त्व न हो ।

नीरांजन-पुं० [सं०] देवता की आरती ।

नीरांजनी-स्त्री० [सं०] वह आधार या पात्र जिसमें आरती के लिए दीपक जलाया जाता है । आरती ।

नीरा-स्त्री० [सं० नीर] ताड़ के वृक्ष का वह रस जो प्रातःकाल उतारा जाता है और जो पीने में बहुत स्वादिष्ट और गुणकारी होता है ।
*क्रि० वि० [हिं० नियर] समीप । पास ।

नीराजन-पुं० दे० 'नीरांजन' ।

नीराजना*-अ०[सं० नीरांजन] १. आरती करना । २.शस्त्र आदि साफ करके चमकाना ।

नीरुज-वि० दे० 'नीरोग' ।

नीरे*-क्रि० वि० दे० 'नियर' ।

नीरोग-वि० [सं०] जिसे कोई रोग या बीमारी न हो । स्वस्थ । तन्दुरुस्त ।

नील-वि० [सं०] नीले रंग का ।
पुं० [सं०] १. नीला रंग । गहरा आसमानी रंग । २. एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नीला रंग निकलता है । ३. इस पौधे से निकलनेवाला नीला रंग ।
मुहा०-नील का टीका लगाना = कलंक लगाना । **आँखों में नील की सलाई फेरवाना**=आँखें फोड़वा डालना ।

अंधा करा देना।
४. शरीर पर पड़ा हुआ चोट का नीले रंग का दाग। ५. सौ अरब की संख्या। ६. राम की सेना का एक बन्दर। ७. नौ निधियों में से एक।

नीलकंठ–वि० [सं०] जिसका कंठ नीला हो। नीले गलेवाला।
पुं० १. शिव का एक नाम। २. मोर नामक पक्षी। ३. एक प्रकार की चिड़िया जिसके डैने और गला नीला होता है। चाष पक्षी।

नील-गाय–स्त्री० [हिं० नील + गाय] एक प्रकार का बड़ा हिरन जो देखने में बहुत-कुछ गौ के समान जान पड़ता है।

नीलम–पुं० [सं० नीलमणि से फा०] नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न। नील-मणि। स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

नील-मणि–पुं० [सं०] नीलम।

नीलांबर–पुं० [सं०] नीले रंग का कपड़ा।

नीलांबुज–पुं० [सं०] नीला कमल।

नीला–वि० [सं० नील] आकाश या नील के रंग का।
मुहा०–चेहरा नीला पड़ जाना = भय आदि के कारण चेहरे का रंग उतर जाना।

नीलाम–पुं० [पुर्त्त० लीलाम] १. चीजें बेचने का वह ढंग जिसमें सबसे अधिक बोली बोलनेवाले (दाम लगानेवाले) आदमी के हाथ माल बेचा जाता है। (ऑक्शन) २. उक्त प्रकार से होनेवाली चीजों की बिक्री। (सेल)

नीलिका–स्त्री० [सं०] १. एक रोग जिसमें आँखें तिलमिलाती हैं। २. चोट आदि के कारण शरीर पर पड़ा हुआ नीला दाग या निशान। नील।

नीलिमा–स्त्री० [सं० नीलिमन्] १. नीलापन। २. श्यामता। स्याही।

नीलोत्पल–पुं० [सं०] नीला कम

नीलोफ़र–पुं० [फा०; मि० सं० त्पल] १. नीला कमल। २. कुई।

नीवँ–स्त्री० दे० 'नींव'।

नीवि–स्त्री० [सं०] १. कमर में हुई धोती की वह गाँठ जो धोती को खिसकने से रोकने के लिए बाँधी है। २. वह डोरी जिससे स्त्रियाँ लहँ गाँठ बाँधती हैं। फुफँदी। फुन्ती।

नीवी–स्त्री० १. दे० 'नीवि'। २. दे०

नीसक*–वि० [सं० निःशक्त] कम

नीहार–पुं० [सं०] १. कुहरा। पाला। ३. हिम। बरफ़।

नीहारिका–स्त्री० [सं०] आका दूर तक कुहरे की तरह फैला हुआ प्रकाश-पुंज जो अँधेरी रात में सफ़ेद की तरह दिखाई देता है।

नुकता–पुं० [अ० नुक़्तः] बिंदु। लि

नुकता-चीनी–स्त्री० [फा०] छिद्रान् ऐब या दोष निकालना।

नुकती–स्त्री० [फा० नख़ुदी = चने बेसन की महीन मीठी बुँदिया।

नुकना*–अ० दे० 'लुकना'।

नुकरा–पुं० [अ० नुकर ऽ] १. चाँ २. सफेद रंग का घोड़ा।

नुकसान–पुं० [अ०] १. हानि।
मुहा०–नुकसान उठाना=हानि **नुकसान पहुँचाना** = किसी की करना। **नुकसान भरना** = किसी क्षति की पूर्त्ति करना।
२. कमी। ३. घाटा। घटी। ४. शा क्षति। स्वास्थ्य में होनेवाली हानि।

नुकीला–वि० [हिं० नोक + ईला (प्रत्य [स्त्री० नुकीली] १. जिसमें नोक हो नोकदार। २. बाँका-तिरछा।

नुक्कड़–पुं० [हिं० नोक] मकान का या रास्ते पर आगे की ओर निकला हुआ सिरा या कोना।

नूह-पुं० [अ०] ईसाइयों, मुसलमानों आदि के अनुसार एक पैगम्बर।

नृ-पुं० [सं०] नर। मनुष्य। आदमी।

नृतक*-पुं० दे० 'नर्त्तक'।

नृत्त-पुं० [सं०] उच्च कोटि का और सुसंस्कृत अभिनय।

नृत्तना*-अ० = नाचना।

नृत्य-पुं० [सं०] नाच। नर्त्तन।

नृत्यकी*-स्त्री० दे० 'नर्त्तकी'।

नृत्यशाला-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ नृत्य या नाच होता हो। नाच-घर।

नृप(ति)-पुं० [सं०] राजा।

नृप-रिषि*-पुं० = राजर्षि।

नृपाल-पुं० [सं०] राजा।

नृ-यज्ञ-पुं० [सं०] पाँच महायज्ञों में से एक जिसमें अतिथि-पूजन आदि कृत्य होते हैं।

नृवंश-पुं० [सं०] आधुनिक विज्ञान में मानव जाति के अलग अलग वंश या जातियाँ।

नृशंस-वि० [सं०] [भाव० नृशंसता] १. क्रूर। निर्दयी। २. अत्याचारी।

नृसिंह-पुं० [सं०] १. विष्णु का चौथा अवतार जो आधे पुरुष और आधे सिंह के रूप में हुआ था। २. श्रेष्ठ पुरुष।

नृहरि-पुं० [सं०] नृसिंह।

ने-विभ० १. एक विभक्ति जो सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता का चिह्न है। *२. हिं० 'को' विभक्ति का स्थानिक रूप। (राज०, गुज०)

नेई*-स्त्री० दे० 'नींव'।

नेक-वि०[फा०][भाव०नेकी]भला। अच्छा। *क्रि० वि० दे० 'तनिक'।

नेक-चलन-वि० [फा० नेक + हिं० चलन] [भाव० नेक-चलनी] अच्छे चाल-चलनवाला। सदाचारी।

नेक-नाम-वि० [फा०] [भाव० नेक-नामी] जिसका अच्छा नाम हो। कीर्तिशाली।

नेक-नीयत-वि० [फा० नेक + अ० नीयत]

[भाव० नेक-नीयती] १. अच्छी नीयत या संकल्पवाला। २. उत्तम विचारोंवाला।

नेकी–स्त्री० [फा०] १. भलाई। उपकार। २. सज्जनता। भल-मनसी।

यौ०–नेकी-बदी = (क) भलाई-बुराई। (ख) पाप-पुण्य।

नेकु*–वि०, क्रि० वि० दे० 'तनिक'।

नेग–पुं० [सं० नैयमिक] १. विवाह आदि शुभ अवसरों पर सम्बन्धियों और आश्रितों आदि को कुछ धन आदि देने की प्रथा। २. इस प्रकार दी जानेवाली वस्तु या धन। ३. रीति। प्रथा।

*पुं० [सं० निकट ?] १. निकटता। सामीप्य। २. सम्बन्ध। सम्पर्क।

मुहा०–(किसी के) नेग लगना = (क) सम्बन्ध या सम्पर्क होना। (ख) किसी में लीन होना। समाना। **(किसी चीज या बात का) नेग लगना** = सार्थक या सफल होना।

नेग-चार(जोग)–पुं० दे० 'नेग'।

नेगटी*–पुं० [हिं० नेग] नेग या रीति का पालन करनेवाला।

नेगी–पुं० [हिं० नेग] १. नेग लेने या पाने का अधिकारी। २. धन, सम्पत्ति आदि का प्रबंध करनेवाला। प्रबंधक। उदा०–बिप्र न नेगी कीजिये, मूढ़ न कीजै मित्त।—केशव।

नेछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर'।

नेजा–पुं० [फा०] भाला। बरछा।

नेजाल*–पुं० दे० 'नेजा'।

नेठना*–अ० दे० 'नाठना'।

नेड़े–क्रि० वि० [सं० निकट] पास।

नेत–पुं० [सं० नेत्र] मथानी की वह रस्सी जिसे खींचने से वह चलती है।

पुं० [सं० नियति] १. निर्धारण। ठहराव। २. संकल्प। इरादा। ३. व्यवस्था। प्रबन्ध।

स्त्री० [देश०] स्त्रियों की चादर। ओढ़नी।

पुं० [देश०] एक प्रकार का गहना।

* स्त्री० दे० 'नीयत'।

नेतक*–स्त्री० [देश०] चुँदरी।

नेता–पुं० [सं० नेतृ] किसी विषय में लोगों को रास्ता दिखाने उनके आगे चलनेवाला। अगुआ। (लीडर)

पुं० [सं० नेत्र] मथानी की रस्सी।

नेतागिरी–स्त्री० दे० 'नेतृत्व'।

नेति–पुं० [सं०] एक संस्कृत पद अर्थ है 'इति' या 'अंत' नहीं है जिसका प्रयोग ईश्वर की महिमा के के सम्बन्ध में होता है।

नेती–स्त्री० [हिं० नेता] मथानी की रस्सी।

नेती-धोती–स्त्री० [हिं० नेत + सं० हठ योग की एक क्रिया जिसमें मुँह से पेट में कपड़ा डालकर आँतें साफ की हैं। धौति।

नेतृत्व–पुं० [सं०] नेता होने का कार्य या पद। नायकत्व। सरदारी।

नेत्र–पुं० [सं०] १. आँख। २. दो की का सूचक शब्द। ३. मथानी की र

नेत्र-जल–पुं० [सं०] आँसू।

नेत्र-विंदु–पुं० [सं० नेत्र + विंदु] बूँद करके आँख में डाली जानेवाली (आई ड्रॉप)

नेपथ्य–पुं० [सं०] अभिनय रंग-मंच के परदे के पीछे का वह जहाँ नट और नटियाँ वेष बनाती हैं।

नेपुर*–पुं० दे० 'नूपुर'।

नेफा–पुं० [फा०] पायजामे, लहँगे, आदि में वह जगह जिसमें नाड़ा, इजारबन्द डाला जाता है।

नेब*–पुं० दे० 'नायब'।

नेम–पुं० [सं० नियम] १. बँधी हुई बराबर होती रहनेवाली बात। नियम २. रीति। दस्तूर। ३. धार्मिक क्रिया का पालन।

=पूजा-पाठ, देव-दर्शन,
कृत्य।
मत'।
] १. पहिये का चक्कर।

[हिं० नेम] १. नियम का
। २. नियमित रूप से
, जप आदि धार्मिक कृत्य

वि० [हिं० नी] [स्त्री० नेरी]
कुछ भी।
हो। पासवाला।
[हिं० नियर] निकट। पास।
दे० 'नेग'।
दे० 'नैवेद्य'।
[हिं० न्योता] किसी को
निमंत्रित करना।
दे० 'न्योता'।
[सं० नमन] झुकना।
[सं० नूपुर] १. बजनेवाला
में पहनने की पाजेब जिसमें
लगे रहते हैं। ३. हाथ में
नाम का गहना।
+वर=श्रेष्ठ] बुरा। खराब।
[सं० निवारण] १. निवारण
होना। ३.निवृत्त होना।

'।
[सं० नकुल] गिलहरी की
मांसाहारी जन्तु जो साँप को

दे० 'निवाज'।
[सं० नमन] झुकाना।
दे० 'निवारना'।
[सं० नेपाली] जूही की
फूलोंवाला एक पौधा।
[हिं० नेकु] तनिक। जरा।

नेस्त–वि० [फा०] जिसका अस्तित्व न हो या न रह गया हो।

यौ०–नेस्त-नाबूद=पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट।

नेह–पुं० [सं० स्नेह] १. स्नेह। प्रेम। मुहब्बत। २. तेल।

नेहरा*–पुं० = नेह (स्नेह)।

नेहार*–पुं० = नेह (स्नेह)।

नेही*–वि० दे० 'स्नेही'।

नै*–स्त्री० दे० 'नय'।

*स्त्री० [सं० नदी] नदी।

स्त्री० [फा०] १. बाँस की नली। २. हुक्के की निगाली। ३. बाँसुरी।

नैऋत*–वि०, पुं० दे० 'नैर्ऋत'।

नैक(कु)*–वि०, क्रि० वि० दे० 'तनिक'।

नैगम–वि० [सं०] १. निगम सम्बन्धी। २. जो निगम के रूप में लाया गया हो। (कॉरपोरेट) ३. (ग्रन्थ) जिसमें ब्रह्म आदि का विवेचन हो।

नैचक–पुं० [सं० नाभिचक्र] वह गोल लकड़ी जो कूआँ बनाते समय उसके तल में जमाकर रखी जाती है। जमवट।

नैचकी–स्त्री० [सं० नैत्यिकी = नित्य या सदा दूध देनेवाली] १. वह गाय जो अगली बार ब्याने के समय तक बराबर दूध देती रहे। २. अच्छी या बढ़िया गाय।

नैचा–पुं० [फा० नैचः] हुक्का पीने की एक प्रकार की लचीली नली।

नैचिकी–स्त्री० दे० 'नैचकी'।

नैत*–अ० [?] सुअवसर। अच्छा मौका।

नैतिक–वि० [सं०] [भाव० नैतिकता] नीति सम्बन्धी। नीति का।

नैत्यिक–वि० [सं०] नित्य होने या किया जानेवाला। नित्य का। जैसे–नैत्यिक कर्म।

नैत्रिक–वि० [सं०] नेत्र सम्बन्धी। आँखों का।

नैन*–पुं० दे० 'नयन'।

*पुं० [सं० नय + न] अन्याय। अनीति।

*पुं० [सं० नवनीत] मक्खन।

नैन-पटी*–स्त्री० [सं० नयन + पट]

आँखों पर बाँधी जानेवाली पट्टी ।

नैना*–अ० दे० 'नवना' ।

स० दे० 'नवाना' ।

पुं० = नयन (आँख) ।

नैनूँ–पुं० [सं० नवनीत] मक्खन ।

नैपुण्य–पुं० [सं०] निपुणता । दक्षता ।

नैमित्तिक–वि० [सं०] जो किसी निमित्त से या कोई विशेष उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किया गया अथवा हुआ हो ।

नैया*–स्त्री० [हिं० नाव] नाव । नौका ।

नैयायिक–वि० [सं०] न्याय-शास्त्र का ज्ञाता । न्यायवेत्ता । (लॉजीशियन)

नैरंतर्य–पुं० = निरंतरता ।

नैर*–पुं० [सं० नगर] १. नगर । शहर २. देश । जनपद ।

नैराश्य–पुं० [सं०] निराश होने का भाव । ना-उम्मेदी ।

नैर्ऋत–वि० [सं०] नैर्ऋति सम्बन्धी । पुं० १ राक्षस । २. पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी

नैर्ऋति–स्त्री० [सं०] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा या कोण ।

नैर्मल्य–पुं० [सं०] निर्मलता ।

नैवेद्य–पुं० [सं०] वह खाद्य पदार्थ जो देवता को चढ़ाया जाता है । भोग ।

नैश–वि० [सं०] निशा सम्बन्धी । रात का ।

नैष्ठिक–वि० [सं०] १. निष्ठा सम्बन्धी । २. निष्ठा रखनेवाला । ३. धर्म में निष्ठा रखनेवाला ।

नैसर्गिक–वि० [सं०] १. निसर्ग या प्रकृति सम्बन्धी । प्राकृतिक । २. स्वाभाविक । (नेचुरल)

नैसा*–वि० [सं० अनिष्ट] बुरा । खराब ।

नैसिक(सुक)*–वि० [हिं० नेक] थोड़ा । जरा सा ।

नैहर–पुं० [सं० ज्ञातिगृह] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता आदि का घर । पीहर । मायका ।

नोइनी–स्त्री० [हिं० नोवना] वह
जो गौ दुहते समय उसके पिछले
बाँधी जाती है ।

नोई–स्त्री० दे० 'नोइनी' ।

नोक–स्त्री० [फा०] [वि० नुकी
१. अपेक्षाकृत बहुत पतला सिरा ।
सूक्ष्म भाग । २. आगे की ओर
हुआ पतला भाग, सिरा या कोना ।

नोक-झोंक–स्त्री० [फा० नोक + हिं०
१. बनाव-सिंगार । सजावट । २.
दर्प । ३. चुभनेवाली बात । व्यंग्य ।
४. आपस में होनेवाले आक्षेप
हुई प्रतिद्वंद्विता ।

नोकना–स० [?] ललचना ।

नोकी(ला)–वि० = नुकीला ।

नोखा–वि० दे० 'अनोखा' ।

नोच–स्त्री० [हिं० नोचना] नोचने
क्रिया या भाव ।

नोच-खसोट–स्त्री० [हिं० नोचना
सोटना] जबरदस्ती नोच या खसोटकर
छीना-झपटी ।

नोचना–स० [सं० लुंचन] १. लगी हुई
को झटके से तोड़कर अलग करना ।
नाखून या दाँतों आदि से इस प्रकार
कि कुछ अंश निकल आवे । ३. किसी
देकर चटपट उससे कुछ माँगना या
पुं० बाल नोचने या उखाड़ने की

नोट–पुं० [अं०] १. ध्यान रहने के
टाँकने या लिख लेने का काम । २.
चिट्ठी । ३. टिप्पणी । ४. सरकार का
हुआ वह कागज जिसपर कुछ
संख्या छपी रहती है और जो उतने
के सिक्के के रूप में चलता है ।

नोटिस–स्त्री० = सूचना (देखें) ।

नोन–पुं० = नमक ।

नोनचा–पुं० [हिं० नोन] १. नमक
हुई बदाम की गिरी । २. नमकीन
नोन-हरामी–वि० दे० 'नमकहराम' ।

] [स्त्री० नोनी]
दीवारों या खारवाली
आता है। २. लोनी
। सीताफल।
।
।
[हिं० नोना] नमक बनाने
एक जाति।
दे० 'नवल'।
[हिं० नद्ध] गौ दुहते समय
पैर बाँधना।
नोपलभ्य] १. अलभ्य।
। अनोखा।
] आठ और एक।
ग्यारह होना=चल देना।
सम्बन्धी। जैसे—नौ-सेना।
'नाई'।
] [स्त्री० नौकरानी]
पर किसी का काम करने-
वैतनिक कर्मचारी। २.
खिदमतगार।
[फा० नौकर + शाही]
जिसमें सब अधिकार
कर्मचारियों के हाथ में रहते
)
[हिं० नौकर] नौकरों को
दस्तूरी आदि।
नौकर] १. नौकर का
। खिदमत। २. वह पद
लिए वेतन मिलता हो।
] नाव। किश्ती।
पुं० दे० 'नावाधिकरण'।
दे० 'नौतरण'।
स्त्री० दे० 'नौ-ग्रही'।
[हिं० नौ + ग्रह] गले में
जिसमें नौ ग्रहों की
प्रकार के रत्न या नग

नौछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर'।

नौज–अव्य० [सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज] १. ईश्वर न करे। (अनिच्छा-सूचक) २. न हो। न सही। (उपेक्षा-सूचक; स्त्रियाँ)

नौ-जवान–वि० [फा०] नव-युवक।

नौजी–स्त्री० दे० 'न्योजी'।

नौटंकी–स्त्री० [देश०] व्रज में होनेवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध नाटक जिसमें नगाड़े पर चौबोले गाकर अभिनय करते हैं।

नौतन*–वि० दे० 'नूतन'।

नौतम*–वि० [सं० नवतम] १. बिल्कुल नया। २. ताजा।

पुं० [हिं० नवना] नम्रता। विनय।

नौतरण–पुं० [सं०] [वि० नौतरणीय] नदी, समुद्र आदि के मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना। जल-यात्रा। (नैविगेशन)

नौतरणीय–वि० [सं०] (नदी, जलाशय आदि) जिसमें नाव, जहाज आदि चल सकते हों। (नैविगेबुल)

नौता*–वि० [सं० नव = नया] [स्त्री० नौती] १. नवीन। नया। २. ताजा।

स्त्री० = नम्रता।

नौधा*–वि० दे० 'नवधा भक्ति'।

नौना*–अ० दे० 'नवना'।

नौनी*–स्त्री० दे० 'नोइनी'।

नौबत–स्त्री० [फा०] १. बारी। पारी। २. दशा। हालत। ३. संयोग। ४. वैभव या मंगल-सूचक शहनाई आदि बाजे जो देव-मंदिरों आदि में बजते हैं।

मुहा०–नौबत झड़ना या बजना = (क) मंगल-उत्सव होना। (ख) प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा या वृद्धि होना।

नौबत-खाना–पुं० [फा०] फाटक के ऊपर का वह स्थान जहाँ नौबत बजती है। नक्कारखाना।

नौमि*–पद [सं० नमामि] मैं नमस्कार करता हूँ।

नौ-मुस्लिम–वि० [फ़ा०नौ + अ०मुस्लिम] जो अभी हाल में मुसलमान हुआ हो।

नौरंग*–पुं० औरंग (औरंगजेब)का अप०।
पुं० = नारंगी।
पुं० [हिं० नौ = नया + रंग] नया रंग या आमोद-प्रमोद।

नौ-रतन–पुं० दे० 'नवरत्न'।
पुं० [सं० नवरत्न] नौ-नगा गहना।
स्त्री० एक प्रकार की चटनी।

नौल*–वि० दे० 'नवल'।

नौलखा–वि० [हिं० नौ + लाख] १.जिसका मूल्य नौ लाख हो। २. जड़ाऊ और बहुमूल्य।

नौ-शक्ति–स्त्री० [सं०] राज्य की वह शक्ति जो उसकी नौ-सेना के रूप में होती है। (नैवल फोर्स)

नौ-सत*–पुं० दे० 'नव-सत'।

नौसर*–पुं० [हिं० नौ + सर=बाजी] १. धूर्त्तता। चालबाजी। २. जालसाजी।

नौसरा–पुं० [हिं० नौ + सर = लड़ी] नौ लड़ियों का हार।

नौसरिआ–वि० [हिं० नौसर] १. धूर्त्त। चालबाज। २. जालसाज।

नौसादर–पुं० [फ़ा० नौशादर] एक प्रकार का तीक्ष्ण खार या नमक।

नौ-सिखुआ–वि० [सं० नव-शिक्षित, हिं० सीखना] जिसने कोई काम अभी हाल में सीखा हो; फलतः उस काम का बहुत थोड़ा ज्ञान और अनुभव रखनेवाला।

नौ-सेना–स्त्री० [सं०] [वि० नौ-सैनिक] वह सेना जो जहाजों पर रहती और नदी या समुद्र में रहकर युद्ध करती है। (नैवी)

नौ-सेवा–स्त्री० [सं०] १. राज्य या राष्ट्र के नौ-सेना विभाग में की जानेवाली सेवा या नौकरी। २. नौ-सेना विभाग में काम करनेवालों का वर्ग या समूह। (नैवल सर्विस)

नौ-सैनिक–वि० [सं०] नौ-सेना या उसके विभाग से सम्बन्ध रखनेवाला। (नैवल)

नौहँड़†–पुं० [सं० नव = नया + हिं० मिट्टी की हाँडी।

न्यस्त–वि० [सं०] १. रखा या २. बैठाया या जमाया हुआ। ३. चुनकर सजाया हुआ। ४. डाला फेंका हुआ। ५. छोड़ा हुआ। न्यास के रूप में या अमानत ७. जमा किया हुआ।

न्याउ†–पुं० दे० 'न्याय'।

न्याति*–स्त्री० [सं० ज्ञाति]

न्याना*–वि० [सं० अज्ञान]

न्यामत–स्त्री० [अ० निअ़मत अच्छा, बहुमूल्य या अलभ्य पदार्थ।

न्याय–पुं० [सं०] १. उचित के अनुकूल बात। वाजिब बात। व्यवहार या मुकदमे में दोषी और या अधिकारी और अनधिकारी विचारपूर्वक निर्धारण। ३. से एक दर्शन या शास्त्र जिसमें के यथार्थ ज्ञान के लिए मतों या उचित विवेचन होता है। (वह वाक्य जिसका व्यवहार लोक के रूप में होता हो। जैसे– न्याय।

न्यायक*–पुं० दे० 'न्यायकर्त्ता'।

न्यायकर्त्ता–पुं० [सं०] न्याय अधिकारी।

न्यायतः–क्रि० वि० [सं०] अनुसार। २. ठीक ठीक।

न्याय-परता–स्त्री० [सं०] का भाव। न्यायशीलता।

न्याय-मूर्त्ति–पुं० [सं०] किसी सर्वोच्च या मुख्य अधिकरण या के विचारक या जज की उपाधि।

न्याय शास्त्र–पुं० दे० 'न्याय' ३.

न्याय शुल्क–पुं० [सं०] [वि० शुल्कीय] वह शुल्क जो कोई प्रार्थनापत्र उपस्थित करने के

…) के रूप में देना पड़ता
…)
…[सं०] १. न्याय,
… आदि की दृष्टि से
…) २. जिसके निर्णय में
… हुआ हो। (जस्ट)
… दे० 'न्यायालय'।
…पुं० [सं०] विवाद-
… विचार करके उनका न्याय
…ता अधिकारी, अधिकारी
…। वैचारिक मंडल।

…[सं०] किसी प्रान्त के
… अधिकरण या न्यायालय
…। (जस्टिस)
…[सं०] वह जगह जहाँ
… के मुकदमों का न्याय होता
… कचहरी। (कोर्ट)
[सं० न्यायिन्] न्याय के
…। न्यायशील।
… दे० 'न्याय-संगत'।
[सं०] न्याय की दृष्टि से ठीक।
[सं० निर्निकट] [स्त्री०
… अलग। दूर। जुदा। २.
…। ३. निराला। अनोखा।
[हिं० न्यारा] जौहरियों या
… (कूड़ा-करकट) को
… निकालनेवाला।
…न्याय।
[सं०] [वि० न्यस्त] १.
…। रखना। २. धरोहर।
… विशेष कार्य के लिए
… को सौंपी हुई सम्पत्ति या
…) ४. संन्यास।
…[सं०] १. किसी की
… का दुरुपयोग। २. किसी
… के विरुद्ध कोई काम करना।

(ब्रीच ऑफ ट्रस्ट)

न्यासी-वि० [सं० न्यास] वह जिसे किसी विशेष कार्य के लिए कुछ धन या सम्पत्ति सौंपी गई हो। (ट्रस्टी)

न्यून-वि० [सं०] [भाव० न्यूनता] १. कम। थोड़ा। २. घटकर। हलका।

न्यूनतम-वि० [सं०] जितना न्यून होना संभव हो। जितना कम हो सकता हो। (मिनिमम)

न्यूनाधिक-वि० [सं०] [भाव० न्यूनाधिक्य] १. जो कुछ बातों में कहीं कुछ कम और कुछ बातों में कहीं कुछ अधिक हो। २. उक्त प्रकार से कम या अधिक हो सकनेवाला। (मार्जिनल) जैसे—न्यूनाधिक संधान।

न्योछावर-स्त्री० दे० 'निछावर'।

न्योजी-स्त्री० दे० 'लीची' (फल)।
स्त्री० [फा० नेजः] चिलगोजा। नेजा। (मेवा)

न्योतना-स० [हिं० न्योता + ना (प्रत्य०)] किसी को अपने यहाँ बुलाने के लिए न्योता देना। निमंत्रित करना।

न्योतहरी-पुं० [हिं० न्योता] न्योते में आया हुआ आदमी। निमंत्रित व्यक्ति।

न्योता-पुं० [सं० निमंत्रण] १. आनन्द, उत्सव या मंगल-कार्यों आदि में सम्मिलित होने के लिए लोगों को अपने यहाँ बुलाना। बुलावा। निमंत्रण। २. वह धन जो इष्ट-मित्रों या सम्बन्धियों के यहाँ से निमन्त्रण आने पर भेजा जाता है। ३. भोजन के लिए ब्राह्मण को अपने यहाँ बुलाना।

न्योला-पुं० दे० 'नेवला'।

न्योली-स्त्री० [सं० नली] हठ योग में पेट के नलों को पानी से साफ करने की क्रिया।

न्वैनी*-स्त्री० दे० 'नोइनी'।

न्वौनी*-स्त्री० दे० 'नोइनी'।

न्हाना-अ० दे० 'नहाना'।
वि० दे० 'नन्हा'।

प

प-देवनागरी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अन्तिम वर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण ओठ से होता है; इसलिए यह स्पर्श वर्ण है। शब्दों के अन्त में यह प्रत्यय के रूप में दो अर्थ देता है; (क) पति अथवा रक्षा या पालन करनेवाला; जैसे—क्षोणिप; (ख) पीनेवाला; जैसे—मद्यप। संगीत में यह 'पंचम' (स्वर) का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।

पंक-पुं० [सं०] कीचड़। कीच।

पंकज-पुं० [सं०] कमल।

पंकजराग-पुं० [सं०] पद्मराग मणि।

पंकरुह-पुं० [सं०] कमल।

पंकिल-वि० [सं०] [स्त्री० पंकिला] १. जिसमें कीचड़ हो। २. मलिन। मैला।

पंक्ति-स्त्री० [सं०] १. ऐसी परम्परा जिसमें एक ही प्रकार की बहुत-सी वस्तुएँ, व्यक्ति या जीव एक दूसरे के बाद एक सीध में हों। श्रेणी। कतार। २. खींची हुई सीधी रेखा। लकीर। ३. सेना में दस दस योद्धाओं की श्रेणी। ४. दस की संख्या। ५. साथ बैठकर भोजन करनेवाले लोग।

पंक्ति-बद्ध-वि० [सं०] पंक्ति या कतार में बँधा, रखा या लगाया हुआ।

पंख-पुं० [सं० पक्ष] पर। डैना।

मुहा०-पंख जमना = (क) मृत्यु या विनाश के लक्षण प्रकट होना। (ख) बुरे रास्ते पर जाने का रंग-ढंग दिखाई पड़ना। ***पंख लगना*** = गति में बहुत वेग होना।

पंखड़ी-स्त्री० [सं० पद्म] फूलों का वह रंगीन पटल जिसके खिलने या छितराने से फूल का रूप बनता है। पुष्प-दल।

पंखा-पुं० [हिं० पंख] [स्त्री० अल्पा० पंखी] विशेष प्रकार से बनाया हुआ वह उपकरण जिससे हवा चलाते हैं। बेना।

पंखा-कुली-पुं० वह कुली या नौकर जो पंखा खींचता हो।

पंखी-पुं० [हिं० पंख] पक्षी। स्त्री० १. पतंगा। फतिंगा। २. पं ३. एक प्रकार की बढ़िया ऊनी स्त्री० [हिं० पंखा] छोटा पंखा।

पँखुड़ा†-पुं० [सं० पक्ष] कंधे का जोड़। पखौरा।

पँखुड़ी*-स्त्री० दे० 'पंखड़ी'।

पंग*-वि० [सं० पंगु] १. जिसके कटे हों। पंगु। २. जो कुछ कर न हो। अकर्मण्य। ३. चकित। स्त

पंगत(ति)-स्त्री० [सं० पंक्ति] १. कतार। २. एक साथ भोजन की पंक्ति या वर्ग। ३. समाज।

पंगा*-वि० = पंगु।

पंगु-वि० [सं०] जो पैरों से न चल हो। लँगड़ा।

पंगुल-वि० [सं० पंगु] पंगु। लँ

पंच-पुं० [सं०] १. पाँच की संख्या २. समुदाय। समाज। ३. जनता। ४. कुछ आदमियों का चुना हुआ जो कोई झगड़ा या मामला नि लिए नियत हो और जिसका निर्णय रणतः दोनों पक्षों को मान्य होता है। करनेवाला समाज। (आरबिट्रेशन वे लोग जो फौजदारी के मुकदमे समय दौरा जज की सहायता के लि साथ बैठते हैं। ६. खेल, साधार आदि में हार-जीत, औचित्य-अ आदि का निर्णय करने के लिए नि हुआ व्यक्ति। (अम्पायर)

पंच अंग*-पुं० = पंचांग।

पंचक-पुं० [सं०] एक ही प्रकार की पाँच चीजों का समूह। स्त्री० धनिष्ठा से रेवती तक के पाँच जो अशुभ माने जाते हैं। (फलित

पंच-कन्या-स्त्री० [सं०] अहल्या, द्रौप कुंती, तारा और मंदोदरी ये पाँच

समय लिखते हैं। २. वह कागज जिसपर पंचों ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो।

पंच-पल्लव–पुं॰ [सं॰] आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल के पत्ते।

पंचपात्र–पुं॰ [सं॰] पूजा के काम के लिए गिलास की तरह का एक छोटा बरतन।

पंचप्राण–पुं॰ [सं॰] शरीर में रहनेवाले ये पाँच प्राण—अपान, उदान, प्राण, ब्यान और समान।

पंचबान*–पुं॰ = पंचवाण।

पंचभूत–पुं॰ दे॰ 'पंचतत्व'।

पंचम–वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ पंचमी] पाँचवाँ। पुं॰ [सं॰] १. सात स्वरों में से पाँचवाँ स्वर जो कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। इसका संक्षिप्त रूप 'प' है। २. रागों में तीसरा राग।

पंच-मकार–पुं॰ [सं॰] वाम-मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंच महापातक–पुं॰ [सं॰] ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातकों के करनेवालों का संसर्ग, ये पाँच पातक।

पंच महायज्ञ–पुं॰ [सं॰] अध्यापन और संध्यावंदन, पितृतर्पण या पितृयज्ञ, होम या देवयज्ञ, बलिवैश्वदेव या भूतयज्ञ, और अतिथि-पूजन ये पाँच कृत्य जो गृहस्थों को नित्य करने चाहिएँ।

पंचमांग–पुं॰ [सं॰] आधुनिक राजनीति में भेदियों आदि का वह वर्ग जो शत्रु के राज्य में उपद्रव आदि कराने के लिए और वहाँ के भेद लेते रहने के लिए तैयार किया जाता है। (फिफ्थ कॉलम)

विशेष–राज्य के पहले चार अंग स्थल-सेना, जल-सेना, वायु-सेना और समाचार-पत्र होते हैं। यह पाँचवाँ अंग बहुत हाल में बना है।

पंचमांगी–पुं॰ [सं॰ पंचमांगिन्] व जो किसी राज्य के पंचमांग में हो औ

उसके शत्रु-देश में रहकर अपने देशको वहाँ के भेद भेजता हो और शत्रु-देश में अशान्ति, उपद्रव आदि फैलाने में सहायक होता हो। (फिफ्थ कॉलमिस्ट) विशेष दे० 'पंचमांग'।

पंचमी–स्त्री० [सं०] १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथि। २. द्रौपदी। ३. व्याकरण में अपादान कारक।

पँच-मेल–वि० [हिं० पाँच + मेल] १. जिसमें पाँच प्रकार की चीजें मिली हों। २. जिसमें सब प्रकार की चीजें हों।

पंच-मेवा–पुं० [हिं० पाँच + मेवा] बदाम, छुहारा, किसमिस, चिरौंजी और गरी इन पाँच मेवों का समूह।

पँचरंग(ा)–वि० [हिं० पाँच + रंग] १. पाँच रंगों का। २. अनेक रंगों का।

ंच-रत्न–पुं० [सं०] सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती ये पाँचो रत्न।

ंचराशिक–पुं० [सं०] गणित की एक क्रिया जिसमें चार ज्ञात राशियों की सहायता से पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

च-लड़ा–वि० [हिं० पाँच + लड़] पाँच लड़ों का। जैसे–पँचलड़ा हार।

चवाण–पुं० [सं०] १. कामदेव के ये पाँच वाण—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद। २. कामदेव के पाँच पुष्पवाण—कमल, अशोक, आम्र, नव-ल्लिका और नीलोत्पल। ३. कामदेव।

वशर–पुं० [सं०] कामदेव।

वांग–पुं० [सं०] १. पाँच अंगोंवाली स्तु। २. वृक्ष के ये पाँच अंग–जड़, ाल, पत्ती, फूल और फल। (वैद्यक) ३. ह पुस्तिका जिसमें किसी सम्वत् के वार, थि, नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार खे रहते हों। पत्रा। ४. प्रणाम करने ा वह प्रकार जिसमें घुटने, हाथ और ाथा पृथ्वी पर टेककर आँखें देवता की ओर करके मुँह से 'प्रणाम' कहते हैं।

पंचांग मास–पुं० [सं०] पहली से अन्तिम तिथि या तारीख तक का वह पूरा महीना जो पंचांग में किसी महीने के अन्तर्गत दिखाया जाता है।

पंचांग वर्ष–पुं० [सं०] किसी पंचांग में दिखाया हुआ आदि से अन्त तक पूरा वर्ष।

पंचाग्नि–स्त्री० [सं०] १. अन्वाहार्य, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य नाम की पाँच अग्नियाँ। २. एक प्रकार की तपस्या जिसमें चारो ओर आग सुलगाकर दिन में धूप में बैठा जाता है।

पंचानन–वि० [सं०] पाँच मुँहोंवाला। पुं० १. शिव। २. सिंह।

पंचामृत–पुं० [सं०] दूध, दही, घी, चीनी और शहद मिलाकर देवताओं के स्नान के लिए बनाया जानेवाला वह पदार्थ जो पवित्र मानकर पीया जाता है।

पंचायत–स्त्री० [सं० पंचायतन] [वि० पंचायती] १. किसी विवाद या झगड़े का निपटारा करने के लिए चुने हुए लोगों का समाज या दल। (आरबिट्रेशन) २. एक साथ बहुत-से लोगों की बकवाद। ३. झगड़ा। विवाद।

पंचायतन–पुं० [सं०] किसी देवता और उसके साथ के चार देवताओं की मूर्तियों का समूह। जैसे–शिव-पंचायतन, राम-पंचायतन।

पंचायती–वि० [हिं० पंचायत] १. पंचायत संबंधी। पंचायत का। २. बहुत से या सब लोगों का मिला जुला। साझे का।

पंचाल–पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश जो हिमालय और चंबल के बीच गंगा के दोनों ओर था। २. [स्त्री० पंचाली] पंचाल देशवासी। ३. महादेव। शिव।

पंचालिका–स्त्री० [सं०] १. गुड़िया। पुतली। २. अभिनेत्री। नटी।

पंचाली–स्त्री० [सं०] १. बच्चों के खेलने

गुड़िया । २. द्रौपदी ।
की स्त्री ।
[हिं० पाँच + सं० आवर्त]
ी गई हों । पाँच तह
हुआ । पँचहरा ।
[हिं० पानी + छाला] प्राणियों
पेड़-पौधों के अंगों से
ाव ।
पक्षी] चिड़िया । पक्षी ।
'पाँच' ।
[हिं० पंजा] हाथ के पंजे का
छापा जो प्रायः मांगलिक
ों पर लगाया जाता है ।
[सं०] १. शरीर की हड्डियों
शरीर के कोमल भागों को
ाये रहता है । ठठरी ।
शरीर । देह । ३. पिंजड़ा ।
दे० 'पजरना' ।
०, मि० सं० पंचक] १.
पाँचों उँगलियों का समूह ।
झाड़कर पीछे पड़ना या
जी-जान से लगना या तत्पर

=पकड़ या वश में ।
। गाही । ३. उँगलियों
संपुट । ४. दो व्यक्तियों में
की बल-परीक्षा । ५.
भाग, जिसमें उँगलियाँ
। ६. पाँचों उँगलियों के आ-
सादा वह दो पल्लोंवाला
कागज-पत्र दबाकर रखे
वह पत्ता जिसपर
होती है ।
पंजा=दाँव-पेंच । चालबाजी ।
।
[हिं०] १. पंचांग । २. पंजी ।
[सं०] १. पंचांग । पंजिका ।
लिखने की पुस्तिका ।

बही । (रजिस्टर) ३. गोलाई में लिपटा हुआ लम्बे कागज का मुट्ठा । (रोल)

पंजीबद्ध–वि० दे० 'निबंधित' ।

पंजीयन–पुं० [सं०] १. किसी लेख या लेखे का पंजी में लिखा जाना । पंजी पर चढ़ाया जाना । २. नाम-सूची में नाम लिखा या चढ़ाया जाना । (एनरोलमेन्ट)

पँजीरी–स्त्री० [हिं० पाँच + ईरा(प्रत्य०)] आटे को घी में भूनकर बनाया हुआ मीठा चूर्ण ।

पंडर*–वि० [सं० पांडुर] १. श्वेत । सफेद । २. पीला ।

पंडव*–पुं० = पांडव ।

पंडा–पुं० [सं० पंडित] [स्त्री० पंडाइन] किसी तीर्थ या मंदिर में लोगों को देव-दर्शन करानेवाला व्यक्ति ।

पंडाल–पुं० [?] सभा के अधिवेशन या उत्सव के लिए बनाया हुआ बड़ा मंडप ।

पंडित–वि० [सं०] [स्त्री० पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी] १. वह जिसे किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञान हो । विद्वान् । २. कुशल । प्रवीण ।
पुं० १. शास्त्रज्ञ । २. ब्राह्मण ।

पंडिताई–स्त्री० [हिं० पंडित + आई (प्रत्य०)] १. विद्वत्ता । पांडित्य । २. पंडितों का काम या व्यवसाय ।

पंडिताऊ–वि० [हिं० पंडित] पंडितों की तरह या ढंग का । जैसे—पंडिताऊ हिंदी ।

पंडुक–पुं० [सं० पांडु] [स्त्री० पंडुकी] कबूतर की तरह का एक प्रसिद्ध पक्षी । पेंड़की । फाख्ता ।

पंडौ*–पुं० = पांडव ।

पंत–पुं० दे० 'पंथ' ४. ।

पँत्यारी*–स्त्री० दे० 'पंक्ति' ।

पंथ–पुं० [सं० पथ] १. मार्ग । रास्ता । राह ।

मुहा०–पंथ गहना = रास्ता पकड़ना । चलना । **किसी के पंथ लगना** = (क)

किसी के दिखाये हुए रास्ते पर चलना। अनुयायी होना। (ख) किसी को तंग करने के लिए उसके पीछे पड़ना। ***पंथ सेना**= प्रतीक्षा करना। आसरा देखना।

२. आचार-व्यवहार का ढंग। रीति।

मुहा०–पंथ गहना=आचरण आदि ग्रहण करना। नये रंग-ढंग पर चलना।

३. संप्रदाय। मत। ४. पहाड़ी, महाराष्ट्र आदि कुछ ब्राह्मणों का अल्ल।

पंथकी*–पुं० दे० 'पथिक'।

पंथाई–पुं० दे० 'पंथी'।

पंथान*–पुं० [सं० पंथ] मार्ग। रास्ता।

पंथिक*–पुं० दे० 'पथिक'।

पंथी–पुं० [हिं० पंथ] १. पंथ या रास्ता चलनेवाला। राही। बटोही। पथिक। २. किसी संप्रदाय या पंथ का अनुयायी। जैसे–नानक-पंथी, दादू-पंथी।

पंद–स्त्री० [फा०] शिक्षा। उपदेश।

पंप–पुं० [अं०] १. वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँचाई जाती है। २.एक प्रकार का जूता।

पंपा–स्त्री०[सं०] १. दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी। २. इस नदी के किनारे का एक नगर। ३. इस नगर के पास का एक सर या तालाब। (रामायण)

पंपा सर–पुं० दे० 'पंपा' ३।

पँवरिया–पुं० दे० 'पौरिया'।

पँवरी†–स्त्री० दे० 'ड्योढ़ी'।

स्त्री० [हिं० पाँव] खड़ाऊँ। पाँवरी।

पँवाड़ा–पुं० [सं० प्रवाद] १. व्यर्थ के विस्तार से कही हुई बात। २. एक प्रकार का देहाती गीत।

पँवारना†–स० = फेंकना।

पँवारी*–स्त्री० [?] लोहे में छेद करने का एक औजार।

पंसारी–पुं० [सं० पण्यशाली] मिर्च, मसाले आदि बेचनेवाला बनिया।

पंसा-सार*–पुं० [सं० पाशक+सारि= गोटी] पासे का खेल। चौसर।

पंसेरी–स्त्री० दे० 'पसेरी'।

पइठना(सना)*–अ० दे० 'पैठना'।

पइसार†–पुं० [हिं० पइसना] पैठ। प्रवे

पउआ†–पुं० = पौआ।

पकड़–स्त्री० [सं० प्रकृष्ट] १. पकड़ने क्रिया या भाव। ग्रहण। २. पकड़ने ढंग। ३. लड़ाई या प्रतियोगिता में बार आकर परस्पर गुथना। ४. भिड़ं हाथा-पाई। ५. वह त्रुटि या सूत्र जिससे बात के वास्तविक दोष या तथ्य का पता

पकड़-धकड़–स्त्री० दे० 'धर-पकड़'।

पकड़ना–स० [सं० प्रकृष्ट] १. कोई इस प्रकार हाथ में लेना कि वह बचो न सके। धरना। थामना। ग्रहण २. (दोषी, अपराधी आदि को) अधिकार या बंधन में लेना। गिर करना। ३. ढूँढ़ निकालना। पता ४. किसी बात में आगे बढ़े हुए के या पास हो जाना। ५. फैलनेवाली में लगकर उसमें अपना संचार अथवा उसमें संचरित होना। सम्ब के कारण फैलना। ६. अपने स्व वृत्ति के अन्तर्गत करना। ७. करना। ग्रसना। घेरना। ८. किसी च चीज तक पहुँचना। जैसे–रेल पक

पकड़ाना–स० हिं० 'पकड़ना' का

पकना–अ० [सं० पक्व] १. का पुष्ट होकर खाने के योग्य हो पूर्णता की अवस्था तक पहुँचना।

मुहा०–बाल पकना=(वृद्धा कारण) बाल सफेद होना।

३. आग के ऊपर पहुँचकर गलना, या तैयार होना। पका होना। जैसे–रसोई पकना। ४. (फोड़े या मवाद आ जाना। पीब से भरना। या पक्का होना।

पकरना*–स० दे० 'पकड़ना'।

[सं० पक्वान्न] घी में तला हुआ कोई खाद्य पदार्थ।
समोसा आदि।
[हिं० पकाना] पकाने की
या मजदूरी।
[हिं० पकना] [प्रे० पकवाना]
आदि को पुष्ट और तैयार करना। २.
गलाना या तैयार करना।
। ३. फोड़े आदि को किसी
इस अवस्था में पहुँचाना कि
आ जाय। ४. पक्का करना।
–पुं० दे० 'पकवान'।
[हिं० पक्का + बरी, बड़ी]
पकौड़ी] एक पकवान
आदि को छोटे टुकड़ों के रूप में
में तलकर बनाया जाता है।
[सं० पक्व] [स्त्री० पक्की] १.
बाढ़ पर आकर या पुष्ट होकर
। पुष्ट। २. जो आग पर पकाया
। ३. दृढ़। मजबूत। ४. ठहराया
हुआ। निश्चित। ५. जिसमें
या त्रुटि न रह गई हो।
से व्यय, लागत या छीजन आदि
हों। 'कच्चा' या 'स्थूल' का
(नेट) ७. जिसमें किसी प्रकार की
रिआयत न हो सकती हो। जैसे–
। ८. जिसे अभ्यास हो। अनु-
। ९. कानून या विधि
मान्य और प्रामाणिक।
कागज = वह कागज जिसपर
बात, कानून या नियम से ठीक
।
मान प्रामाणिक हो। (नाप या
) जैसे–पक्का सेर। ११. न टलने-
।
–पुं० राग-रागिनियाँ आदि
।
–पुं० वह गाना जो राग-रा-
गिनियों के रूप में हो। शास्त्रीय संगीत।

पक्का चिट्ठा–पुं० आय-व्यय का दोहराया हुआ और ठीक लेखा।

पक्की निकासी–स्त्री० किसी संपत्ति में से होनेवाली वह आय जिसमें से व्यय आदि निकाला जा चुका हो। कुल आय में से होनेवाली बचत। (नेट एसेट्स)

पक्की रसोई–स्त्री० घी के योग से पके या घी में तले हुए खाद्य पदार्थ।

पक्खर*–स्त्री० दे० 'पाखर'।

वि० [सं० पक्व] पक्का। दृढ़।

पक्व–वि० [सं०] [भाव० पक्वता] १. पका हुआ। २. पक्का। दृढ़। ३. परिपुष्ट।

पक्वान्न–पुं० [सं०] १. पका हुआ अन्न। २. दे० 'पकवान'।

पक्वाशय–पुं० [सं०] पेट के अन्दर का वह स्थान जहाँ पहुँचकर अन्न पचता है।

पक्ष–पुं० [सं०] १. किसी विशेष स्थिति से दाहिने या बाएँ पड़नेवाले विस्तार। ओर। पार्श्व। तरफ। २. किसी विषय के दो या अधिक परस्पर विरोधी तत्त्वों, सिद्धान्तों या दलों में से कोई एक। **मुहा०–पक्ष गिरना** = तर्क या युक्तियों से किसी पक्ष का अप्रामाणिक सिद्ध होना। ३. वह बात जिसे कोई सिद्ध करना चाहता हो और जिसका किसी ओर से विरोध होता या हो सकता हो। ४. झगड़ा या विवाद करनेवालों में से कोई एक व्यक्ति या दल। (पार्टी) **मुहा०–(किसी का) पक्ष करना** = पक्षपात करना। **(किसी का) पक्ष लेना** = (क) (झगड़े में) किसी की ओर होना। (ख) पक्षपात करना। ५. न्याय या तर्क में वह वस्तु या तत्त्व जिसके विषय में साध्य की प्रतिज्ञा करते हैं। जैसे– 'तेल जलता है' में 'तेल' पक्ष है और उसके सम्बन्ध में साध्य 'जलता है' की प्रतिज्ञा की गई है। ६. सहायकों या

सवर्गों का दल। ७. चिड़ियों का डैना। पंख। पर। ८. तीर के पिछले भाग में लगा हुआ पर। ६. चान्द्र मास के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक।

क्षक-पुं० [सं०] वह पक्ष जिसमें ऐसे लोग हों जो किसी विषय में या किसी कार्य के लिए मिलकर एक हो गये हों। दल। (पार्टी)

क्षधर-पुं० दे० 'पक्षपाती'।

क्षपात-पुं० [सं०] औचित्य या न्याय का विचार छोड़कर किसी एक पक्ष के अनुरूप होनेवाली प्रवृत्ति या सहानुभूति और उस पक्ष का समर्थन।

क्षपाती-पुं० [सं०] वह जो किसी के पक्ष का समर्थन या पोषण करे। तरफदार।

क्षाघात-पुं० [फा०] एक रोग जिसमें शरीर के किसी एक पार्श्व के सब अंग सुन्न और क्रिया-हीन हो जाते हैं। अर्द्धांग रोग।

क्षराज-पुं० [सं०] गरुड़ जो सब पक्षियों का राजा माना गया है।

क्षी-पुं० [सं०] १. चिड़िया। २. तरफदार। वि० पक्ष सम्बन्धी। पक्ष का।

क्षी विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें पक्षियों की प्रकृति और रहन-सहन आदि का विवेचन होता है। (ऑर्नि-कॉलोजी)

क्ष्म-पुं० [सं०] [वि० पक्ष्मिल] आँख की बरौनी।

खंड*-पुं० = पाखंड।

खंडी-वि० = पाखंडी।

पुं० [सं० पाखंड] वह जो कठपुतलियों का नाच दिखाता हो।

ख-स्त्री० [सं० पक्ष] १. ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बाधक बात या शर्त्त। अड़ंगा। २. झगड़ा। बखेड़ा। ३. दोष। त्रुटि।

खड़ी-स्त्री० दे० 'पंखड़ी'।

खराना-स० हिं० 'पखारना' का प्रे०।

पखरी-स्त्री० दे० 'पाखर'।

पखरैत-पुं० [हिं० पाखर + ऐत (प्रत्य०)] वह पशु जिसपर लोहे की पाखर पड़ी हो।

पखवाड़ा(रा)-पुं० [सं० पक्ष + वार] १. पंद्रह दिनों का समय। २. दे० 'पक्ष' ६.।

पखा*-पुं० = पंख। (जैसे-मोर-पखा)

पखाउज*-स्त्री० = पखावज (मृदंग)।

पखान*-पुं० १. दे० 'पाषाण'। २. दे० 'पखाना'। (उपाख्यान)

पखाना†-पुं० [सं० उपाख्यान] १. कथा। कहानी। किस्सा। २. कहावत। लोकोक्ति। मसल।

पुं० दे० 'पाखाना'।

पखारना-स० = धोना।

पखाल-स्त्री० [सं० पय = पानी + खाल] १. बैल के चमड़े की बनी हुई पानी भरने की मशक। २. धौंकनी।

पखाली-पुं० दे० 'भिश्ती'।

पखावज-स्त्री० दे० 'मृदंग'।

पखावजी-पुं० [हिं० पखावज] पखावज या मृदंग बजानेवाला।

पखी(रा)*-पुं० दे० 'पक्षी'।

पखेरू-पुं० [सं० पक्षालु] पक्षी। चिड़िया।

पग-पुं० [सं० पदक] १. पैर। पाँव।

मुहा०-पग रोपना*=कोई प्रतिज्ञा करके किसी जगह पैर रखना या अड़ाना। २. चलने में एक जगह से पैर उठा दूसरी जगह रखना। डग। फाल।

पद-पग पग पर = बहुत ही थोड़ी थो दूरी या देर पर। बराबर। लगातार।

पगडंडी-स्त्री० [हिं० पग + डंडी] जंगलों या खेतों में का वह पतला रास्ता जो लोगों के आने-जाने से बन जाता है।

पगड़ी-स्त्री० [सं० पटक] १. सिर प लपेटकर बाँधा जानेवाला प्रसिद्ध लंब कपड़ा। पाग। साफा। उष्णीष।

मुहा०-(किसी से) पगड़ी अटकना= मुकाबला होना। **पगड़ी उछालना**=

करना। **पगड़ी उतारना** =
करना। (**किसी के सिर**)
बाँधना = (क) पद, स्थान या
। (ख) किसी बात का श्रेय या
होना। (**किसी के साथ**)
बदलना = भाई का नाता जोड़ना।
जो मालिक अपना मकान या
किराये पर देने के समय किराये के
ही ले लेता है। नजराना।
-स्त्री० [हिं० पग + तल] जूता।
-स्त्री० [हिं० पग + दासी] १.
२. खड़ाऊँ।
[सं० पाक] १. शरबत या
पागा जाना। २. किसी बात के
के प्रेम से पूर्ण होना।
-पुं० दे० 'पग'।
पगाह] प्रभात। तड़का।
पुं० दे० 'पागल'।
-पुं० दे० 'पघा'।
-स०[सं०पाक] पगने में प्रवृत्त करना।
-पुं० [सं० प्राकार] चहार-दीवारी।
पग + गारना] १. पैरों से कुचली
गारा। २. वह नाला या नदी
इतना कम पानी हो कि पैदल चलकर
सकें। उदा०—जल कै पगार,
के सिंगार, अरि···।—केशव।
पगड़ी] पगड़ी के ऊपर बाँधा जाने-
प्रकार का आभूषण। सिरपेच।
-स० दे० 'पगाना'।
-स्त्री० दे० 'पगड़ी' १.।
-अ० [हिं० पागुर] पागुर
करना। विशेष दे० 'जुगाली'।
[सं० प्रग्रह] गौओं-भैंसों के गले
वाली मोटी रस्सी। पगहा।
-अ० दे० 'पिचकना'।
[हिं० प्रपंच + ड़ा (प्रत्य०)]
। बखेड़ा। पँवाड़ा। प्रपंच।

२. वह गीत जो ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते हैं। ३. लावनी की तरह का एक प्रकार का गीत।

पचन–पुं० [सं०] पचने या पकने की क्रिया या भाव।

पचना–अ० [सं० पचन] १. खाई हुई वस्तु का हजम होकर रस आदि के रूप में परिणत होना। हजम होना। २. समाप्त या नष्ट होना। ३. पराया माल इस प्रकार हाथ में आ जाना कि अपना हो जाय। ४. परिश्रम करके हैरान होना।

मुहा०–पच मरना = किसी काम के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना।

५. एक वस्तु का दूसरी में पूरी तरह से लीन होना। समाना। ६. खपना।

पचवना*–स० १. दे० 'पचाना'। २. दे० 'पकाना'।

पचहरा–वि० [हिं० पाँच + हरा (प्रत्य०)] १. पाँच परतों या तहोंवाला। २. पाँच बार का। ३. पँचगुना।

पचाना–स० [हिं० पचना] १. 'पचना' का सकर्मक रूप। हजम करना। २. समाप्त नष्ट या क्षीण करना। ३. पराया माल लेकर हज़म कर जाना। ४. परिश्रम कराकर या कष्ट देकर किसी के शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ५. एक वस्तु का दूसरे वस्तु को अपने आप में आत्मसात् या लीन करना।

पचारना*–स० [सं० प्रचारण] लड़ने के लिए ललकारना।

पचास–वि० [सं० पंचदश] चालिस दस और अधिक। पचीस का दूना। पुं० उक्त संख्या का सूचक अंक।

पचासा–पुं० [हिं० पचास] १. एक प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह। २. वह घंटा जो किसी विकट अवसर पर सब सिपाहियों को थाने में बुलाने के लिए बजाया जाता है।

पचासों-वि० [हिं० पचास] १. कई पचास। २. पचास से बहुत अधिक। जैसे-पचासों आदमी, पचासों काम।

चित-वि० [सं० पचित = पचा हुआ] १. पचा हुआ। २.पच्ची किया या जड़ा हुआ।

चीसी-स्त्री० [हिं० पचीस] १. एक ही प्रकार की २५ वस्तुओं का समूह। २. आयु के प्रारंभिक २५ वर्ष। ३. वह गणना जिसमें सैकड़ा पचीस गाहियों अर्थात् १२५ चीजों का माना जाता है। ४. चौसर का एक प्रकार का खेल जो कौड़ियों से खेला जाता है। ५. चौसर खेलने की बिसात।

चौनी-स्त्री० [हिं० पचना] पेट के अंदर की वह थैली जिसमें भोजन पचता है।

च्चड़ (र)-पुं० [सं० पचित या पच्ची] लकड़ी की वह गुल्ली जो काठ की चीजों को कसने के लिए उनमें ठोंकी जाती है।

च्ची-स्त्री० [सं० पचित] १. पचने या पचाने की क्रिया या भाव। जैसे-सिर-पच्ची। २. जड़ाव का एक प्रकार, जिसमें जड़ी जानेवाली वस्तु अच्छी तरह जमकर बैठ जाती है।

च्चीकारी-स्त्री० [हिं०पच्ची + फा० कारी] १. पच्ची करने की क्रिया या भाव। २. पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।

च्छ*-पुं० [सं० पक्ष्म] १. आँखों की बरौनो या पलक।

पुं० १. = पक्ष। २ = पंख (पर)।

च्छताई*-स्त्री० = पक्षपात।

च्छिम-पुं० = पश्चिम।

च्छिराज*-पुं० = गरुड़।

च्छी*-पुं० [स्त्री०पच्छिनी] दे० 'पक्षी'।

छ†-पुं० १. दे० 'पक्ष'। २. दे० 'पक्षपात'।

छड़ना-अ० [हिं० पीछा] १. पछाड़ा या पटका जाना। २. दे० 'पिछड़ना'।

छताना-अ० [हिं० पछतावा] अपने किये हुए किसी अनुचित कार्य के संबंध में पीछे से मन में दुःखी या खिन्न होना। पश्चात्ताप करना।

पछतानि*-स्त्री० = पछतावा।

पछतावा-पुं० [सं० पश्चात्ताप] पछताने की क्रिया या भाव। पश्चात्ताप।

पछना-अ० हिं० 'पाछना' का अ०।

पुं० १. पाछने का औजार। २. फस्द।

पछमन*-क्रि० वि० [हिं० पीछे] पीछे।

पछलगा†-वि० दे० 'पिछलगा'।

पछवाँ-वि० [सं० पश्चिम] पश्चिम का।

पछाँह-पुं० [सं० पश्चिम] [वि० पछँ-हियाँ, पछाँही] पच्छिम की ओर का देश।

पछाड़-स्त्री० [हिं० पछड़ना] १. पछाड़ने या पछड़ने की क्रिया या भाव। २. बे-सुध या मूर्च्छित होकर गिर पड़ना।

मुहा०-पछाड़ खाना = बे-सुध होकर खड़े खड़े जमीन पर गिर पड़ना।

पछाड़ना-स० [हिं० पीछे] १. कुश्ती में विपक्षी को जमीन पर पटकना या गिराना। २. प्रतियोगिता में विपक्षी को हराना।

स० [सं० प्रक्षालन] कपड़ा धोते समय उसे जोर जोर से बार बार पटकना।

पछानना*-स० दे० 'पहचानना'।

पछावर*-स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का शिखरन या शरबत। २. छाछ से बना हुआ एक प्रकार का पेय पदार्थ जो भोजन के अन्त में पीया जाता है।

पछिआवर-स्त्री० दे० 'पछावर'।

पछिला†-वि० = पिछला।

पछेत†-क्रि० वि०[हिं० पीछे] पीछे की ओर।

पछेली†-स्त्री० [हिं० पीछे + एली (प्रत्य०)] हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

पछोड़न-स्त्री० [हिं० पछोड़ना] अनाज आदि का वह कूड़ा-करकट जो उसे पछोड़ने पर निकलता है।

पछोड़ना†-स० [सं० प्रच्छालन] अनाज

कना'। ३. अंकुरित होना। ४. प्रकट होना। सामने आना।

पटकनियाँ(नी)–स्त्री० दे० 'पटकान'।

पटका–पुं० [सं० पट्टक] वह कपड़ा जो कमर में लपेटकर बाँधते हैं। कमरबंद।

पटकान–स्त्री० [हिं० पटकना] पटकने, पटके जाने या गिरने की क्रिया या भाव।

पट-चित्र–पुं० [सं०] कपड़े पर बना हुआ ऐसा चित्र जो लपेटकर रखा जा सके।

पटझोल*–पुं० [हिं० पट+झोल] आँचल।

पटतर*–पुं० [सं० पट्ट+तल] १. समानता। बराबरी। २. उपमा।

*वि० सम-तल। चौरस।

पटतरना*–अ० [हिं० पटतर] १. उपमा देना। २. तुलना करना।

पटतारना*–स० [हिं० पटा+तारना=अंदाज लगाना] चलाने के लिए अस्त्र या शस्त्र उठाना या खींचना।

स० [हिं० पटतर] ऊँची-नीची जमीन को समतल या चौरस करना।

पटना–अ० [हिं० पट=जमीन की सतह के बराबर] १. गड्ढे आदि का भरकर आस-पास के ऊँचे तल के बराबर हो जाना। २. किसी स्थान में किसी वस्तु का बहुत अधिक मात्रा में इकट्ठा होना। ३. दीवारों पर छत बनना। ४. खेत का सींचा जाना। ५. विचारों या स्वभाव में समानता होने के कारण मेल या निर्वाह होना। बनना। ६. लेन-देन आदि में मूल्य या शर्तें निश्चित होना। ७. (ऋण) चुकना।

पुं० बिहार प्रान्त के एक शहर का नाम।

पटनी–स्त्री० [हिं० पटना=तै होना] वह जमीन जो इस्तमरारी पट्टे पर मिली हो।

पटपटाना–अ० [हिं० पटकना] १. भूख-प्यास या गरमी आदि से बहुत कष्ट पाना। छटपटाना। २. पटपट शब्द होना। ३. खेद या दुःख करना।

स॰ पटपट शब्द उत्पन्न करना।

पटपर–वि॰ [हिं॰ पट] समतल। चौरस। पुं॰ लम्बा-चौड़ा और उजाड़ स्थान।

पट-बंधक–पुं॰ [हिं॰ पटना + सं॰ बंधक] रेहन का वह प्रकार जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई संपत्ति की आय में से अपना सूद लेने के बाद शेष धन मूल ऋण के हिसाब में जमा करता चलता है।

पटबीजना†–पुं॰ दे॰ 'जुगनूँ'।

पटरा–पुं॰ [सं॰ पटल] [स्त्री॰ अल्पा॰ पटरी] १. काठ का अधिक लंबा और कम चोड़ा चौकोर और चौरस टुकड़ा। तख्ता। **मुहा॰–पटरा कर देना**=(क) मार-काटकर गिरा या बिछा देना। (ख) चौपट कर देना।

२. काठ का पीढ़ा। ३. हेंगा। पाटा।

पट-रानी–स्त्री॰ [सं॰ पट्ट + रानी] वह प्रधान और पहली विवाहिता रानी जो राजा के साथ पट या सिंहासन पर बैठती हो। पाट-महिषी।

पटरी–स्त्री॰ [हिं॰ पटरा] १. छोटा और हलका पटरा।

मुहा॰–पटरी जमना या बैठना=मन मिलना। पटना।

२. लिखने की तख्ती। पटिया। ३. सड़क के दोनों किनारों के वे भाग जिनपर लोग पैदल चलते हैं। ४. सुनहले या रुपहले तारों से बना हुआ फीता जो कपड़ों पर टाँका जाता है। ५. हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी। ६. लोहे के वे लंबे समानान्तर छड़ जिनपर रेल के पहिये चलते हैं।

पटल–पुं॰ [सं॰] [भाव॰ पटलता] १. छप्पर। २. आवरण। परदा। ३. परत। तह। ४. पहल। पार्श्व। ५. आँख की भीतरी बनावट के परदे। ६. पटरा। तख्ता। ७. परिच्छेद। अध्याय। ८. पंखड़ी। ९. समूह। झुंड।

पटवा–पुं॰ [सं॰ पाट + वाह (प्रत्य॰) [स्त्री॰ पटइन] १. वह जो गहनों मनकों या दानों आदि को सूत या रे में गूँथने या पिरोने का काम करता है गुहेरा। २. पटसन। पाट।

पटवारी–पुं॰ [सं॰ पट्ट + हिं॰ वह सरकारी अधिकारी जो गाँव की उपज और लगान आदि का हिसाब-कि रखता है।

*स्त्री॰ [सं॰ पट + वारी (प्रत्य॰)] को कपड़े और गहने पहनानेवाली दासी

पटवास–पुं॰ [सं॰] १. खेमा। २. स्त्रियों का लहँगा।

पटसन–पुं॰ [सं॰ पाट + हिं॰ सन] एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से बोरे, टाट आदि बनते हैं। २. इस के रेशे। पाट। जूट।

पटह–पुं॰ [सं॰, मि॰ तामिल परै= दुंदुभी। नगाड़ा।

पटहार–पुं॰ दे॰ 'पटवा'।

पटा–पुं॰ [सं॰ पट्ट] लोहे की जिससे लोग तलवार का वार और बचाव करना सीखते हैं।

पुं॰ [सं॰ पट्ट] पीढ़ा। पटरा।

यौ॰–पटा-फेर = विवाह की एक जिसमें वर-वधू परस्पर आसन बदले

मुहा॰–पटा बाँधना = राजा रानी को अपनी पटरानी बनाना।

पुं॰ [सं॰ पट] १. वस्त्र। २. दुपट्टा। ३. पगड़ी।

*पुं॰ [हिं॰ पटना] १. सौदा क्रिया या भाव। २. चौड़ी लकीर। ३. दे॰ 'पट्टा'।

पटाई–स्त्री॰ [हिं॰ पटना] पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पटाका–पुं॰ [पट (अनु॰)] १. पटाक शब्द। २. ऐसे शब्द से छूटने गोली के आकार की एक छोटी

४. नाटक का परदा । यवनिका ।

पटीलना–स० [हिं० पटाना] १. किसी को इधर-उधर की बातें समझाकर अपने अर्थ-साधन के अनुकूल करना । ढंग पर लाना । २. ठगना । छलना ।

पटु–वि० [सं०] [भाव० पटुता] १. प्रवीण । निपुण । कुशल । दक्ष । २. चतुर । चालाक । होशियार ।

पटुआ–पुं०[सं०पाट] १. पटसन। २. पटवा।

पटुका(टूका)*–पुं० दे० 'पटका' ।

पटे–वि० [हिं० पटना = चुकाया जाना] (देन आदि) जो चुका दिया गया हो। चुकता किया हुआ ।

पटेबाज–पुं० [हिं० पटा + फा० बाज] पटा खेलनेवाला । पटैत । वि० व्यभिचारी और धूर्त्त ।

पटेल–पुं० [हिं० पट्टा + एल (प्रत्य०)] गुजरात, मध्य प्रदेश आदि में गाँव का नंबरदार या मुखिया ।

पटैत–पुं० दे० 'पटेबाज' ।

पटोर–पुं० दे० 'पटोल' ।

पटोरी–स्त्री० [सं० पट + ओरी (प्रत्य०)] १. रेशमी साड़ी या धोती । २. रेशमी चादर।

पटोल–पुं० [सं०] १. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा । २. परवल ।

पटोसिर†–पुं० [हिं० पट + सिर] सिर पर बाँधने का कपड़ा । जैसे–साफा या पगड़ी । (ब्रज०)

पटौतन–पुं० [हिं० पटना] ऋण आदि का परिशोध । कर्ज चुकना ।

पटौनी–स्त्री० [हिं० पटना] पटने या पाटने की क्रिया या भाव ।

पटौहाँ*–पुं० [हिं० पटना] १. पटा हुआ स्थान । पाटन । २. पट-बंधक ।

पट्ट–पुं० [सं०] १. पीढ़ा । पाटा । २. पटरी । तख्ती । ३. धातु की वह चिपटी पट्टी जिसपर राजाज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी । ४. काठ या धातु

का वह बड़ा टुकड़ा जिसपर नाम आदि या सूचनाएँ लिखी या लगाई जाती हैं। (बोर्ड) जैसे–नाम-पट्ट, सूचना-पट्ट आदि। ५. किसी वस्तु का ऊपरी चिपटा या चौरस भाग। ६. ढाल। ७. पगड़ी, दुपट्टा आदि वस्त्र। ८. नगर। ९. राज-सिंहासन। १०. तलवार का वार रोकने की ढाल। ११. दे० 'पट्टा'।

वि० [सं०] मुख्य। प्रधान। जैसे–पट्ट शिष्य।

वि० [अनु०] दे० 'पट'।

पट्टक–पुं० = पट्ट।

पट्टन–पुं० [सं०] नगर।

पट्ट-महिषी–स्त्री० [सं०] पटरानी।

पट्टा–पुं० [सं० पट्ट] १. किसी स्थावर संपत्ति या भूमि के उपभोग का वह अधिकार-पत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को मिलता है। (लीज) २. कोई अधिकारपत्र। सनद। ३. चमड़े आदि का वह तसमा जो कुत्तों, बिल्लियों आदि के गले में पहनाया जाता है। ४. पीढ़ा। ५. पीछे या दाहिने-बाएँ गिरे और बराबर कटे हुए कुछ लंबे बाल। ६. चमड़े का कमरबंद। पेटी। ७. एक प्रकार की तलवार। ८. लड़ाई के समय का पैंतरा।

पट्टिश(स)–पुं० [सं०] एक प्रकार का खाँड़ा जिसके फल के दोनों ओर धारें होती हैं।

पट्टी–स्त्री० [स० पट्टिका] १. लकड़ी की वह तख्ती या पटरी जिसपर बच्चे लिखने का अभ्यास करते हैं। पाटी। पटिया। तख्ती। २. पाठ। सबक। ३. उपदेश। शिक्षा। ४. बुरी नीयत से दी जानेवाली सलाह। ५. धातु, लकड़ी, कागज, कपड़े आदि की लंबी धज्जी। जैसे–पलंग या खाट की पट्टी, घाव पर बाँधने की पट्टी। ६. एक ही चीज में अथवा बीच में कुछ इधर-उधर होकर कुछ दूर तक जानेवाली कोई कम चौड़ी और अधिक लंबी या भू-भाग। (बेल्ट) जैसे–सू पट्टी, जंगल या पहाड़ की पट्टी। ७. दाल आदि को चाशनी में पागकर जानेवाली एक प्रकार की मिठाई। सिर की माँग के दोनों ओर, कंघी से हुए बाल जो देखने में पट्टी की तरह पड़ते हैं। पाटी। पटिया। ९. किसी या उससे होनेवाली आय का भाग या हिस्सा। पत्ती।

पट्टीदार–पुं० [हिं० पट्टी + फा० १. वह जिसका किसी संपत्ति या हिस्सा या पट्टी हो। हिस्सेदार। २. का अधिकारी।

पट्टू–पुं० [हिं० पट्टी] एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

पट्टेदार–पुं० [हिं० पट्टा + फा० वह जिसने पट्टा लिखाकर कोई जमी हो। (लीसी)

पट्ठमान*–वि० [सं० पठ्यमान] पढ़ने

पट्ठा–पुं० [सं० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ] [पठिया] १. जवान। तरुण। २. कुश्तीबाज। अखाड़िया। ३. पेशियों को आपस में अथवा ह साथ जोड़नेवाले मोटे तंतु या स्नायु। ४. लंबा और दलदार मोट जैसे–घी-कुआर का पट्ठा। ५. ए का चौड़ा गोटा।

पठन–पुं० [सं०] [वि० पठनीय]

पठनेटा–पुं० [हिं० पठान + ए (प्रत्य०)] पठान का लड़का।

पठवना*–स० = भेजना।

पठान–पुं० [पश्तो पख्तून या पु [वि० स्त्री० पठानी] अफगानिस्ता पश्चिमी सीमान्त प्रदेश आदि में वाली एक योद्धा मुसलमान जाति।

पठाना*–स० = भेजना।

पठार–पुं० [सं० पृष्ठ + धार] १.

ऊँचा मैदान जो आस-
की जमीन से बहुत
(प्लेटो) २. एक पहाड़ी

[हिं० पठाना] दूत।
[हिं० पठाना] किसी
संदेसा पहुँचाने के लिए
क्रिया या भाव।
] १. पढ़ा हुआ। जिसे
(ग्रन्थ, लेख आदि) २.
हो। पढ़ा लिखा।
प्रयोग)
[हिं० पठा + इया (प्रत्य०)]
स्त्री।
दे० 'पठावनि'।
दे० 'परछत्ती'।
दे० 'पड़ता'।
[हिं० पड़ना] १. किसी चीज
दुलाई आदि पर व्यय
और उसका हिसाब जिसके
मूल्य निश्चित होता है।
खाना, पड़ना या
स्थिति होना जिसमें लागत,
दाम मिल जाय। खर्च और
आना। **पड़ता फैलाना**
= लागत आदि का हिसाब
से = पड़ता फैलाने से जो
आवे, उसके अनुसार।

लगान की दर।
[सं० परितोलन] [क्रि०
१. किसी वस्तु या बात के ठीक
। अनुसंधान। (चेकिंग) २.
खेतों और उन्हें जोतनेवालों
प्रकार की जाँच।
[हिं० पड़ना] जोतने-बोने
को कुछ समय से खाली
न गई हो।

पड़ना–अ० [सं० पतन] १. ऊँची जगह से अचानक नीचे आ गिरना। पतित होना। २. दुःख, कष्ट, भार आदि ऊपर आना। जैसे-मुसीबत पड़ना।

मुहा०–किसी पर पड़ना = (क) किसी पर विपत्ति या संकट आना। (ख) किसी पर कार्य का भार या उत्तरदायित्व आना।

३. ठहरना। टिकना। ४. विश्राम के लिए लेटना या सोना। आराम करना। ५. बीमार होकर बिस्तर पर रहना। ६. प्राप्त होना। मिलना। ७. आय, लाभ आदि का हिसाब ठीक बैठना। पड़ता बैठना या लागत मिलना। ८. रास्ते में होना। मार्ग में मिलना। जैसे—रास्ते में नदी पड़ना। ९. उपस्थित होना।

मुहा०–बीच में पड़ना=समझौता कराने या हस्तक्षेप करने के लिए सामने या बीच में आना।

१०. आवश्यकता या गरज होना। जैसे—हमें क्या पड़ी है जो हम बीच में बोलें।

पड़पड़ाना–अ० [अनु०] १. पड़पड़ शब्द होना। २. दे० 'परपराना'।
स० 'पड़पड़' शब्द करना।

पड़पोता–पुं० दे० 'परपोता'।

पड़वा–स्त्री० दे० 'प्रतिपदा'।
पुं०[देश०] [स्त्री०पड़िया] भैंस का नर बच्चा।

पड़ाव–पुं० [हिं० पड़ना = बैठना या लेटना + आव (प्रत्य०)] १. पैदल यात्रा के समय कहीं बीच में कुछ समय या दिनों के लिए ठहरना। २. वह स्थान जहाँ इस प्रकार यात्री ठहरते हैं।

पड़िया–स्त्री० [हिं० पड़वा] भैंस का मादा बच्चा।

पड़िहार–पुं० [सं० प्रतिहार] राजपूतों की एक शाखा का नाम।

पड़ोस–पुं० [सं० प्रतिवेश या प्रतिवास] १. किसी स्थान के आस-पास का स्थान।
यौ०–पास-पड़ोस = समीपवर्ती स्थान।

मुहा०-पड़ोस करना=पड़ोस में बसना।

पड़ोसी-पुं० [हिं० पड़ोस] [स्त्री० पड़ोसिन] पड़ोस में रहनेवाला।

पढ़ंत-स्त्री० दे० 'पढ़ाई'।

पढ़त-स्त्री० [हिं० पढ़ना] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २. मंत्र।

पढ़ना-स० [सं० पठन] १. पुस्तक या लेख आदि में लिखी हुई बातें या विषय इस प्रकार देखना कि उनका ज्ञान हो जाय। २. शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने के लिए ग्रन्थ आदि कई बार देखना। अध्ययन करना। ३. लेख के शब्दों का उच्चारण करना। बाँचना। ४. किसी को सुनाने के लिए स्मरण-शक्ति से मंत्र, कविता आदि कहना। ५. मंत्र पढ़कर फूँकना। जादू करना। ६. तोते, मैना आदि का मनुष्यों के सिखाये हुए शब्दों का उच्चारण करना।

पढ़वाना-स० हिं० 'पढ़ना' और 'पढ़ाना' का प्रे०।

पढ़वैया-वि० [हिं० पढ़ना + वैया (प्रत्य०)] पढ़ने या पढ़ानेवाला।

पढ़ाई-स्त्री० [हिं० पढ़ना + आई (प्रत्य०)] १. शिक्षा प्राप्त करने के लिए पढ़ने का काम। विद्याभ्यास। पठन। २. पढ़ने का काम, भाव या ढंग। ३. पढ़ने के बदले में मिलनेवाला धन।

स्त्री० [हिं० पढ़ाना + आई (प्रत्य०)] १. पढ़ाने का काम या भाव। अध्यापन। २. पढ़ाने का ढंग। अध्यापन-शैली। ३. पढ़ाने के बदले में मिलनेवाला धन।

पढ़ाना-स० [हिं० 'पढ़ना' का प्रे०] १. किसी को पढ़ने या सीखने में प्रवृत्त करना। अध्यापन करना। शिक्षा देना। २. कोई कला या हुनर सिखाना। ३. तोते, मैना, कोयल आदि पक्षियों को मनुष्यों की बोली बोलना सिखाना। ४. शिक्षा देना। सिखाना। समझाना।

पढ़िना†-स्त्री० दे० 'पहिना' (मछली)।

पढ़ैया-पुं० [हिं० पढ़ना] पढ़नेवाला। स्त्री० पढ़ने-पढ़ाने की क्रिया या भाव।

पढ़ैला†-त्रि० [हिं० पढ़ना + ऐला (प्र १. पढ़ा-लिखा। शिक्षित। २. जो प्रकार की बुरी बातें सीख चुका हो। धूर्त और दुष्ट। (व्रज०) उदा०-स्यौमें, मुकरवा, झगरू, बड़ौ पढ़ैलो लूआ।

पण-पुं० [सं०] १. हार जीत की बात या खेल जिसमें बाजी बदी लगाई जाय। जूआ। द्यूत। २. ठेके आदि की शर्त्त। (टर्म, कन्डिशन वह चीज जिसके देने का करार हो। जैसे-किराया, शुल्क, मूल्य आ ४. संपत्ति। जायदाद। ५. क्रय-विक्रय वस्तु। ६. व्यापार। व्यवसाय। ७. प्र काल का ताँबे का एक सिक्का।

पणाया-स्त्री०[सं०] किसी प्रकार का प्रदान या लेन-देन। (ट्रैन्ज़ैक्शन)

पण्य-वि० [सं०] जो खरीदा जा सके (माल)।

पुं० १. सौदा। माल। २. व्यापार गार। ३. बाजार। हाट। ४. दूकान

पण्य-चिह्न-पुं० [सं०] वह चिह्न जो या कारखानेदार अपनी बिक्री के यहाँ बने हुए माल पर औरों से पार्थक्य और अपनी विशिष्टता सूचि के लिए लगाते हैं। (मर्चेन्डाइज़

पण्य-द्रव्य-पुं० [सं०] वे वस्तुएँ जो खरीदने और बेचने के लिए बिक्री की चीजें। (मर्चेन्डाइज)

पण्यांक-पुं० दे० 'पण्य-चिह्न'।

पतंग-पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़ि शलभ। टिड्डी। ३.भुनगा। फतिंगा। ४ पुं० [सं० पत्रंग] एक प्रकार वृक्ष जिससे लाल रंग निकलता है। पुं० [सं० पतंग = उड़नेवाला] उड़नेवाला कागज का एक प्रसिद्ध खिलौ गुड्डी। कनकौआ।

हिं० पतंग + फा० बाज]
] वह जिसे पतंग या
हो।
[सं० पतंग] १. पक्षी ।
। पतंगा ।
पतंग] उड़नेवाला
। फतिंगा ।
[सं०] धनुष की डोरी या

] १. पति । खसम ।
।
] प्रतिष्ठा । इज्जत ।
=प्रतिष्ठा । आबरू ।
उतारना या लेना = बे-
रखना=इज्जत बचाना ।
[हिं० पत्ता + क्षीण] जिस-
। बिना पत्तों का (वृक्ष) ।
[हिं० पत = पत्ता + झड़ना]
प्रायः पेड़ों की पुरानी
और नई निकलती हैं ।
के महीने । २. अवनति-

दे० 'पतझड़' ।
] [वि० पतनशील, पतित,
से नीचे आने या गिरने
। गिरना । २. उन्नत
ऊँचे पद, मर्यादा आदि से
पर आना । अवनति ।
के समय किले, नगर
से निकलकर शत्रु के
में चला जाना । (फॉल;
के लिए) ४. मृत्यु ।
जाना ।
[सं० पतन] गिरना ।
[सं०] १. जो गिरने
पतन या दुर्गति समीप

] पतला । कृश ।

पुं० [सं० पत्र] १. पत्ता । २. पत्तल ।

पतला–वि० [सं० पात्रट] [स्त्री० पतली, भाव० पतलापन] १. कम घेरे, लपेट, मोटाई या चौड़ाईवाला । 'मोटा' का उलटा । २. जिसका घेर या तल स्थूल या मोटा न हो । कृश । ३. जो अधिक दलदार न हो । झीना । बारीक । ४. जिसमें जल का अंश अधिक हो । अधिक तरल । 'गाढ़ा' का उलटा । ५. जैसा या जितना होना चाहिए, उससे कम । जैसे—फसल या उसका अनाज पतला होना । ६. अशक्त । असमर्थ ।
यौ०–पतला हाल = निर्धनता और विपत्ति की अवस्था ।

पतलून–स्त्री० [अं० पैंटलून] अँगरेजी ढंग का एक प्रकार का पाजामा ।

पतवार–स्त्री० [सं० पात्रपाल] नाव या जहाज का वह तिकोना पिछला अंग या उपकरण जो आधा जल में और आधा बाहर होता है और जिसके द्वारा नाव इधर-उधर घुमाई जाती है ।
पुं० [हिं० पत्ता] १. पौधों, विशेषतः सरकंडे आदि की लंबी सूखी पत्तियाँ । २. कूड़ा-करकट । जैसे—खर-पतवार ।

पता–पुं० [सं० प्रत्यय] १. ठिकाना या स्थान सूचित करनेवाली वह बात जिससे किसी तक पहुँच या किसी को पा सकें ।
यौ०–पता-ठिकाना = किसी वस्तु या व्यक्ति का स्थान और उसका परिचय ।
२. पत्र आदि के ऊपर लिखा हुआ किसी का नाम और रहने का स्थान आदि । (एड्रेस) ३. अनुसंधान । खोज । टोह । ४. अभिज्ञता । जानकारी । ५. गूढ़ तत्त्व । रहस्य । भेद ।
मुहा०–पते का = वास्तव में ठीक उस स्थान का जिसका ज्ञान सब लोगों को न हो।
पद–पते की बात = भेद प्रकट करने या वास्तविक स्वरूप बतलानेवाली बात ।

पताई–स्त्री० दे० 'पतवार' (वनस्पति) ।

पताक*–स्त्री० दे० 'पताका'।

पताका–स्त्री० [सं०] १. झंडा। ध्वजा। फरहरा। (मुहावरों के लिए दे० 'झंडा' के मुहा०) २. वह डंडा जिसमें झंडे का कपड़ा पहनाया रहता है। ध्वज। ३. कागज आदि का वह छोटा टुकड़ा जो किसी बड़े कागज पर उसकी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए लगाया जाता है। (फ्लैग) ४. दस खर्व की संख्या। ५. नाटक का वह स्थल जहाँ एक पात्र कुछ सोचता रहता है और दूसरा पात्र आकर किसी और सम्बन्ध की कोई बात कहने लगता है।

पताकित–वि० [सं०] १. जिसमें पताका लगी हो। पताका से युक्त। २. (कागज-पत्र) जिसमें विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करने के लिए पताका की तरह का कागज लगा हो। (फ्लैग्ड)

पताकिनी–स्त्री० [सं०] सेना।

पतार*–पुं० दे० 'पाताल'।
पुं० [?] जंगल। वन।

पताल–पुं० दे० 'पाताल'।

पतासा*–पुं० दे० 'बताशा'।

पतिंग–पुं० दे० 'पतंगा'।

पतिंवरा–वि० स्त्री० [सं०] जो अपना पति स्वयं चुने। स्वयंवरा। (स्त्री)

पति–पुं० [सं०] [स्त्री० पत्नी, भाव० पतित्व] १. मालिक। स्वामी। अधिपति। २. स्त्री की दृष्टि से उसका विवाहित पुरुष। दूल्हा। ३. मर्यादा। प्रतिष्ठा।

पतिआना†–अ० दे० 'पतियाना'।

पतिआर*–पुं० [हिं० पतिआना] विश्वास। वि० विश्वसनीय।

पतिकामा–वि० स्त्री० [सं०] पति पाने की कामना करनेवाली (स्त्री)।

पतित–वि० [सं०] [स्त्री० पतिता, भाव० पतितता] १. नीचे गिरा या आया हुआ। २. नीचे की ओर झुका हुआ। नत। ३. बहुत बड़ा पापी। महापापी। अति पातकी। ४. जाति से निकाला हुआ। जाति- ५. अति नीच।

पतित-उधारन*–वि० [सं० पतित + उधारना] पतितों का उद्धार करने

पतितेस*–पुं० [सं० पतित + ईश] का सरदार। बहुत बड़ा पतित।

पतित्व–पुं० [सं०] पति या होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व।

पतिनी*–स्त्री० दे० 'पत्नी'।

पतिपारना*–स० [सं० प्रतिपालन पालन-पोषण करना। पालना। २. या वचन) पूरा करना। निभाना।

पतियाना†–अ० [सं० प्रत्यय] किसी की हुई बात ठीक मानकर उसपर विश्वास

पतियार†–वि० [हिं० पतियाना] करने योग्य। विश्वसनीय।

पतियारा*–पुं० [हिं० पतियाना]

पतियारी†–स्त्री० [हिं० पति प्रतीति। विश्वास।

पतिवती–वि० दे० 'सौभाग्यवती'।

पतिव्रत–पुं० [सं०] पत्नी की पर अनन्य प्रीति और भक्ति। पा

पतिव्रता–वि० [सं०] (स्त्री) पति में अनन्य अनुराग रखती और उसकी पूरी सेवा करती हो। सती।

पतीजना*–अ० [हिं० प्रतीत विश्वास या एतबार करना।

पतीला–पुं० [सं० पातिली = हँ अल्पा० पतीली] ताँबे या पीतल प्रकार की बटलोई।

पतुकी*–स्त्री० दे० 'पतीली'।

पतुरिया–स्त्री० [सं० पातिली]

पतोखा–पुं० [हिं० पत्ता] [स्त्री० पतोखी] १. पत्ते का बना पात्र। २. पत्तों का बना छोटा छाता।

पतोह(हू)–स्त्री० [सं० पुत्रवधू]

पतौआ*–पुं० दे० 'पत्ता'।

पत्तन–पुं० [सं०] १. नगर। शहर

पत्तीदार–पुं० [हिं० पत्ती + फा० दार] साझीदार। हिस्सेदार।

पत्थ*–पुं० दे० 'पथ्य'।

पत्थर–पुं० [सं० प्रस्तर] [वि० पथरीला, क्रि० पथराना] १. पृथ्वी के स्तर में का वह कठोर प्रसिद्ध पिंड या खंड जो चूने, बालू आदि के जमने से बना होता है। प्रस्तर। शिलाखंड।

पद–पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय = ऐसा हृदय या मन जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियाँ न हों। **पत्थर की लकीर** = (क) सदा-सर्वदा बनी रहनेवाली वस्तु। (ख) बिलकुल निश्चित या पक्की बात।

मुहा०–पत्थर चटाना = औजार आदि पत्थर पर रगड़कर धार तेज करना। **पत्थर तले हाथ आना या दबना** = किसी भारी संकट में फँस जाना। **पत्थर पर दूब जमना** = अनहोनी या असंभव बात हो जाना। **पत्थर से सिर फोड़ना या मारना** = ऐसा प्रयत्न करना जिसमें फल-सिद्धि के बदले उलटे अपनी हानि हो। २. सड़कों पर लगा हुआ दूरी या नाप बतानेवाला पत्थर। ३. ओला। बिनौली।

मुहा०–पत्थर पड़ना = (क) आकाश से ओले गिरना। (ख) चौपट या नष्ट हो जाना।

यौ०–पत्थर-पानी = आँधी चलना और पानी बरसना। तूफान।

४. हीरा, लाल, पन्ना, नीलम आदि रत्न। ५. कठोर और भारी अथवा गलने, पचने आदि के अयोग्य वस्तु। ६. कुछ नहीं। बिलकुल नहीं। (तिरस्कृत अभाव का सूचक; जैसे–वह पत्थर समझते हैं।)

पत्थरकला–पुं० दे० 'पथरकला'।

पत्नी–स्त्री० [सं०] विधिपूर्वक विवाहित स्त्री। भार्या। सहधर्मिणी। जोरू।

पत्नी-व्रत–पुं० [सं०] अपनी विवाहिता

स्त्री को छोड़कर और किसी स्त्री से संबंध न रखने का संकल्प, नियम या व्रत।

पत्याना*–अ० दे० 'पतियाना'।

पत्यारी*–स्त्री०[सं०पंक्ति]पंक्ति। पाँत।

पत्र–पुं० [सं०] १. वृक्ष का पत्ता। पत्ती। पर्ण। २. लिखा हुआ कागज, विशेषतः वह कागज जिसपर किसी विषय की कोई महत्व की बात लिखी हो। ३. वह कागज जिसपर किसी को भेजने के लिए कोई समाचार या विवरण लिखा हो। चिट्ठी। पत्री। खत। (लेटर) ४. समाचार-पत्र। अखबार। ५. समाचार-पत्रों या सामयिक पत्रों का वर्ग या समूह। (प्रेस) ६. पुस्तक या लेख का कोई पन्ना। पृष्ठ। ७. धातु का पत्तर। ८. दे 'पत्रक'।

पत्रक–पुं० [सं० पत्र + क (प्रत्य०)] वह पत्र जिसपर स्मृति के लिए या सूचना आदि के रूप में कोई बात लिखी हो। (मेमो, नोट)

वि० १.पत्र-सम्बन्धी। पत्र का। २. पत्र या कागज का बना हुआ। जैसे—पत्रक धन।

पत्रक धन–पुं० [सं०] वह धन जो छपे हुए कागज या पत्र के रूप में हो। (पेपर मनी) जैसे धन-पत्र या नोट।

त्रकार–पुं० [सं०] [भाव० पत्रकारिता] १. समाचार-पत्र का संपादक। २. वह जो समाचार-पत्र में बराबर लेख आदि लिखकर भेजता रहता हो।(पब्लिसिस्ट, जरनलिस्ट)

त्रकार सम्मेलन–पुं० [सं०] समाचार-पत्रों के संवाददाताओं आदि का वह सम्मेलन जो कोई बड़ा आदमी किसी विषय पर अपना वक्तव्य देने के लिए बुलाता है। (प्रेस कॉन्फरेन्स)

त्रजात–पुं० [सं०] १. किसी विषय से संबंध रखनेवाले पत्रों आदि का समूह। (पेपर्स) २.इस प्रकार के पत्रों की नत्थी। (फाइल)

त्र-पंजी–स्त्री० [सं०] वह पंजी या बही जिसमें आये हुए पत्रों अथवा उनके उत्त का विवरण रहता है। (लेटर बुक)

पत्र-पुष्प–पुं० [सं०] १. सत्कार या पू की बहुत साधारण सामग्री। २. साम या तुच्छ उपहार।

पत्र-पेटी–स्त्री० [सं० पत्र + हिं० पेटी] १. वह पेटी या बक्स जिसमें डाक द्वा बाहर जानेवाले पत्र छोड़े जाते हैं। २. किसी की वह निजी पेटी या बक्स जिस लोग उसके नाम के पत्र छोड़ जाते हैं। (लेटर बॉक्स)

पत्र-भंग–पुं० [सं०] वे बेल-बूटे या रेखाएँ जो स्त्रियाँ सौंदर्य-वृद्धि के लिए माथे, गा आदि पर बनाती हैं। पत्रावली।

पत्र-वारक–पुं० [सं०] धातु, लकड़ी, शीशे, पत्थर आदि का वह छोटा टुकड़ा जो काग पत्रों को उड़ने से बचाने के लिए उन ऊपर दाब या भार के रूप में रखा जा है। (पेपर-वेट)

पत्रवाह–पुं० [सं०] १. वह जिसका का पत्र आदि लोगों के यहाँ पहुँचाना होता है। २. डाक विभाग का वह कर्मचारी जिसका काम घर-घर लोगों के पत्र, नीआर्डर, पार्सल आदि पहुँचाना होता है। डाकिया। (पोस्टमैन)

पत्र-वाहक–पुं० [सं०] १. पत्र ले ज वाला। २. डाकिया। हरकारा।

पत्रवाह पंजी–स्त्री० [सं०] वह पंजी बही जिसपर पत्रवाह द्वारा भेजे जानेवाले प चढ़ाये जाते हैं और जिसपर पत्र पानेवा के हस्ताक्षर होते हैं। (पियन बुक)

पत्र-व्यवहार–पुं० [सं०] १. वह व्यवहार या संबंध जिसमें किसी को पत्र लिखे ज हैं और उसके उत्तर आते हैं। पत्राचार। चिट्ठी-पत्री। (कॉरेस्पॉन्डेन्स) २. इस प्रकार भेजे हुए पत्र और आये हुए उनके उत्तर।

प ा–पुं० [सं० पत्र] १. तिथिपत्र।

जिससे औजार की धार तेज करते हैं।

पथरीला–वि० [हिं० पत्थर + ईला(प्रत्य०)] [स्त्री० पथरीली] पत्थरों से युक्त। (स्थान)

पथरौटा–पुं० [हिं० पत्थर] [स्त्री० अल्पा० पथरौटी] पत्थर का कटोरा।

पथिक–पुं० [सं०] [स्त्री० पथिका] मार्ग चलनेवाला। यात्री। मुसाफिर।

पथी–पुं० [सं० पथिन्] यात्री। पथिक।

पथु*–पुं० [सं० पथ] पथ। मार्ग।

पथेरा–पुं० [हिं० पाथना] १. पाथने का काम करनेवाला। २. कुम्हार।

पथौरा–पुं० [हिं० पाथना] वह स्थान जहाँ कंडे पाथे और रखे जाते हैं।

पथ्य–पुं० [सं०] १. वह जल्दी पचनेवाला भोजन जो रोगी को उपवास की समाप्ति पर दिया जाता है। २. उपयुक्त आहार।

मुहा०–पथ्य से रहना = स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए संयमपूर्वक रहना।

वि० १. पथ-सम्बन्धी। पथ या मार्ग का। २. जो पथ की तरह काम दे सके। जिसपर चल सकें।

पद–पुं० [सं०] १. व्यवसाय। काम। २. योग्यता के अनुसार कर्मचारी या कार्यकर्त्ता का नियत स्थान। (पोस्ट) ३. राजकीय, सैनिक आदि सेवाओं में अधिकार का कोई ऊँचा पद। पदवी। (रैंक) ४. पैर। पाँव।

मुहा०–पद टेकना =पैर जमाकर रखना।

५. व्यक्ति या बात की उचित और वास्तविक स्थिति।

पद-पद की बात = उचित और न्यायसंगत बात।

६. वह जो औचित्य के विचार से प्राप्य हो। उदा०–··अपनो पदु लै, पितु जा लगि मारे।—केशव। ७. किसी श्लोक या छंद का चतुर्थांश। श्लोक-पाद। ८. कोई विशेष अर्थ रखनेवाला शब्द या शब्द-समूह।

(टर्म, एक्सप्रेशन) ९. उपाधि । १०. ईश्वर-भक्ति संबंधी गीत । भजन । ११. दान के लिए जूते, छाते, कपड़े, आसन, बरतन आदि का समूह ।

पदक–पुं० [सं०] १. देवता के पैरों के बनाये हुए चिह्न जिनकी पूजा की जाती है । २. धातु का कुछ विशिष्ट आकार का बनाया हुआ वह छोटा टुकड़ा जो किसी को कोई विशेष अच्छा कार्य करने पर प्रमाण और पुरस्कार रूप में अथवा सम्मानित करने के लिए दिया जाता है । तमगा । (मेडल)

पद-गृहीता–वि० [सं० पद + गृहीत + आ (प्रत्य०)] जो किसी (अधिकारी) के पद पर पहुँचकर उसे अपने पद से कुछ समय के लिए हटने का अवसर दे । (रिलीविंग) जैसे–पद-गृहीता अधिकारी ।

पदचर–पुं० [सं०] पैदल ।

पदचार(ण)–पुं० [सं०] १. पैदल चलना । २. घूमना-फिरना । टहलना ।

पदचारी–पुं० [सं० पदचारिन्] [स्त्री० पदचारिणी] पैदल चलनेवाला ।

पदच्छेद–पुं० [सं०] किसी वाक्य के पद, व्याकरण के विशिष्ट नियमों के अनुसार, अलग अलग करना ।

पद-च्युत–वि० [सं०] [संज्ञा पद-च्युति] १. जो स्थान या पद से हटा दिया गया हो । २. जो अपनी नौकरी से हटा दिया गया हो । (डिस्मिस्ड]

पद-च्युति–स्त्री० [सं०] १. किसी स्थान या पद से हटाये जाने की क्रिया या भाव । २. नौकरी से हटा दिया जाना । (डिस्मिसल)

पदज–पुं० [सं०] पैर की उँगलियाँ ।

पद-तल–पुं० [सं०] पैर का तलवा ।

पद-त्याग–पुं० [सं०] अपना पद या अधिकार छोड़ना । (एब्डिकेशन)

पदत्राण–पुं० [सं०] जूता ।

पद-दलित–त्रि० [सं०] १. पैरों से रौंदा हुआ । २. जो दबाकर बहुत दीन दिया गया हो ।

पद-नाम–पुं० [सं०] १. वह नाम किसी अधिकारी के पद आदि का हो (आफिशियल टाइटिल) जैसे–मं तहसीलदार, निरीक्षक आदि । २. कार्य, संस्था या व्यवहार का वह मुख्य जिससे वह प्रसिद्ध हो । (डेज़िग्नेशन)

पद-न्यस्ता–वि० [सं० पद + न्यस्त + आ (प्रत्य०)] जो किसी कारणवश समय के लिए अपना पद छोड़कर उसका अधिकार किसी दूसरे (पद-गृ को सौंपकर हटा हो । (रिलीव्ड) जैसे-पद-न्यस्ता अधिकारी ।

पद-प्रवर–पुं० [सं०] वह जो किसी का आदि में पद और अधिकार के विच सबसे बड़ा हो । (सुपीरियर ऑफ़ ऐन ऑ

पद-भार–पुं० [सं०] किसी पद या पर रहकर उसके सब काम करने का या उत्तरदायित्व । (चार्ज)

पदम*–पुं० दे० 'पद्म' ।

पदमिनी–स्त्री० दे० 'पद्मिनी' ।

पद-मैत्री–स्त्री० [सं०] अनुप्रास ।

पद-योजना–स्त्री० [सं०] कविता के जोड़ने या बैठाने की क्रिया या

पदवी–स्त्री० [सं०] १. वह प्रति पद (शब्द-समूह) जो राज्य अथ मान्य संस्था की ओर से किसी यो को मिलता है । उपाधि । खिताब । (टा २. राजकीय, सैनिक आदि सेवाओं में कार का कोई ऊँचा पद । ओहदा । पद । (रैंक)

पदाक्रांत–वि० [सं०] पैरों तले या रौंदा हुआ ।

पदाति(क)–पुं०[सं०]१. पैदल चल प्यादा । २. पैदल सिपाही । ३. नौकर ।

पदाधिकार–पुं०[सं०] किसी पद या अ पर होने के कारण प्राप्त होनेवाला अधि

-पुं० [सं०] वह जो किसी पद
और जिसे उस पद के सब
हों। ओहदेदार। अधिकारी।
[हिं० 'पादना' का प्रे०] बहुत
करना।
[सं०] १. शब्द-समूह या पद
२. वह जिसका कुछ नाम हो
ज्ञान प्राप्त किया जा सके।
) ३. वह जिसका कोई आकार
और जो पिंड, शरीर आदि के
वस्तु। चीज। (ऑब्जेक्ट) ४.
में प्रतिपादित वह विषय जिसके
यह माना जाता हो कि उसका
दायक होता है। ५. पुराणानुसार
काम और मोक्ष।
-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसमें
पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता
जिसमें आत्मा अथवा ईश्वर आदि
जाते। (मैटिरियलिज्म)
विज्ञान-पुं० दे० 'भौतिक विज्ञान'।
विद्या-स्त्री० = पदार्थ विज्ञान।
-पुं० [सं०] कहीं पैर रखने या जाने
। (बड़ों के लिए आदरसूचक)
-स्त्री० [सं०] १. वाक्यों की
। २. भजनों का संग्रह।
[सं०] पैदल सेना।
[सं० पदक] १. गले में पहनने
नाम का गहना। २. हीरा।
हार=रत्नहार। मणिमाला।
[सं० पद] पैदल। प्यादा।
-स्त्री० दे० 'पद्मिनी'।
वि० [सं०] किसी पद के अथवा
पर आरूढ़ होने के अधिकार से।
शियो, वाइ वरचू ऑफ ऑफिस)
-स्त्री० [सं०] अधिकारी या
के पद में होनेवाली उन्नति।
से ऊँचे पद पर भेजा जाना
। (प्रोमोशन)

पद्धति–स्त्री० [सं०] १. राह। पथ। मार्ग। २. रीति। रस्म। रवाज। ३. प्रणाली। विधि। ढंग।

पद्म–पुं० [सं०] १. कमल का फूल या पौधा। २. सामुद्रिक के अनुसार पैर के तलवे का एक भाग्य-सूचक चिह्न। ३. विष्णु का एक अस्त्र। ४. गणित में सोलहवें स्थान की संख्या। (१०० नील)

पद्मजा–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी (देवी)।

पद्मनाभ–पुं० [सं०] विष्णु।

पद्म-नाल–स्त्री० [सं०] कमल का डंठल भसींड।

पद्म-बंध–पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमें अक्षरों को एक विशेष क्रम से रखने पर पद्म या कमल का चित्र-सा बन जाता है।

पद्म-बीज–पुं० [सं०] कमल-गट्टा।

पद्मराग–पुं० [सं०] मानिक। लाल।

पद्मा–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

पद्माकर–पुं० [सं०] वह तालाब या झील जिसमें कमल पैदा होते हों।

पद्मासन–पुं० [सं०] योग-साधन में बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।

पद्मिनी–स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। २. वह जलाशय जिसमें कमल हो। ३. लक्ष्मी। ४. कोक-शास्त्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में से एक जो सर्वोत्तम मानी गई है।

पद्य–पुं० [सं०] नियमित मात्राओं या वर्णोंवाली कोई वाक्य-रचना या छन्द। 'गद्य' का उलटा। (पोएट्री)

पद्यात्मक–वि० [सं०] पद्य के रूप में बना हुआ। छंदोबद्ध।

पधराना–स० [हिं० पधारना] १. आदर पूर्वक बैठाना। २. प्रतिष्ठित करना।

पधरावनी–स्त्री० [हिं० पधराना] १. किसी देवता की स्थापना। २. किसी को आदर पूर्वक लाकर अपने यहाँ बैठाना।

पधारना–अ० [हिं० पग + धरना] आदरणीय व्यक्ति का आना या जाना।

ान–पुं० [सं० पर्वन्=विशेष अवस्था] आयु के चार भागों में से कोई एक। अवस्था।

प्रत्य० भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओं में लगनेवाला एक प्रत्यय। जैसे—बचपन।

*पुं० [सं० प्रण] १. मन में किया जानेवाला संकल्प या निश्चय। २. प्रतिज्ञा। प्रण। **मुहा०–पन रोपना** = प्रतिज्ञा करना। ***पन लेना** = प्रतिज्ञा करना। उदा०—द्विज मुख ह्वै पन लीन्हों।—सूर।

*पुं० [सं० पण्य] मूल्य। दाम। उदा०–नाहीं लोल लोचनी! बड़वा बड़े पन की।—केशव।

न-काल–पुं० [हिं० पानी + अकाल] बहुत वर्षा के कारण पड़नेवाला अकाल।

नग*–पुं० [स्त्री० पनगिन] दे० 'पन्नग'।

नघट–पुं० [हिं० पानी + घाट] वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हों।

नच*–स्त्री० [सं० प्रत्यंचा] वह डोरी जिससे धनुष के दोनों सिरे बँधे रहते हैं।

न-चक्की–स्त्री० [हिं० पानी + चक्की] पानी के बहाव के जोर से चलनेवाली चक्की या कल।

न-डब्बा–पुं० दे० 'पानदान'।

न-डुब्बा–पुं० [हिं० पानी + डूबना] पानी में गोता लगाकर तल की चीजें निकालनेवाला। गोताखोर।

न-डुब्बी–स्त्री० [हिं० पानी + डूबना] १. जलाशयों के पास रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया। २. पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाली एक प्रकार की आधुनिक नाव। (सब मेरीन)

नपना–अ० [सं० पर्णय = हरा होना] १. नये पौधे का पत्तों से युक्त और हरा-भरा होना। २. नये सिर से अथवा फिर से तन्दुरुस्त, समर्थ या सशक्त होना।

न-भरा–पुं० दे० 'पनहरा'।

नरंगा–वि० [हिं० पानी + रंग][स्त्री० पनरंगी] पानी के रंग का। कुछ मटमैलापन लिये हुए सफेद।

पनव*–पुं० दे० 'प्रणव'।

पनवाड़ी–पुं० दे० 'तमोली'।

पनवार–स्त्री० [सं० पर्ण] (पत्तों की बनी हुई) पत्तल।

स्त्री० दे० 'पनवारी'।

पनवारी–स्त्री० [हिं० पान + वारी] पान के पौधों का भीटा।

पनस–पुं० [सं०] कटहल का वृक्ष य उसका फल।

पनसारी–पुं० दे० 'पंसारी'।

पनसाल–स्त्री० दे० 'पौसरा'।

स्त्री० पानी की गहराई नापने का एक उपकरण।

पनसुइया–स्त्री० [हिं० पानी + सूई] एक प्रकार की छोटी नाव।

पनह*–स्त्री० दे० 'पनाह'।

पनहरा–पुं० [हिं० पानी + हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० पनहारन, पनहारिन, पनहारी] दूसरों के घर पानी भरने का काम करनेवाला आदमी। पन-भरा।

पनहा–पुं० [सं० परिणाह] १. कपड़े या दीवार की चौड़ाई। २. गूढ़ तात्पर्य। मर्म।

पनहारा–पुं० दे० 'पनहरा'।

पनही†–स्त्री० [सं० प्रनद्धा, प्रा० पनहा] पैर में पहनने का जूता।

पना–पुं० [सं० प्रपानक या पानीय] एक तरह का शरबत जो आम, इमली आदि से बनता है। प्रपानक। पन्ना।

†प्रत्य० दे० 'पन'। (जैसे–पानीपना)

पनाती–पुं० [सं० प्रनप्तृ] [स्त्री० पनातिन] पोते अथवा नाती का पुत्र।

पनाला–पुं० [सं० प्रणाली] [स्त्री० अल्पा० पनाली] [वि० पनालिया] १. गन्दा पानी बहने की मोरी। परनाला। २. नाबदान। नाला। (गटर)

पनालिया–वि० [हिं० पनाला] पनाले के समान अस्पृश्य, गन्दा और त्याज्य। जैसे

[हिं० पनालिया +
समाचार-पत्र (या समाचार
) जिसमें अधिकतर बातें बहुत
अशिष्टतापूर्ण रहती हैं और
के लोगों पर कीचड़ उछाला
बहुत ही निम्न कोटि का सामयिक
पत्रों का वर्ग। (गटर प्रेस)
[हिं० पनासना] १. पालन-
२. दे० 'पोस' ।
[सं० पानाशन] पालन-
। पालना-पोसना ।
[फा०] १. रक्षा । बचाव ।
(किसी से) पनाह माँगना =
हुए बहुत दूर रहना ।
का स्थान । शरण । आड़ ।
दे० 'प्रत्यंचा' ।
[हिं० पानी + या (प्रत्य०)]
में रहनेवाला। जैसे-पनिया साँप ।
मिला हुआ। जैसे-पनिया दूध ।
] भेदिया। जासूस ।
= पनिया ।
दे० 'पनहार' ।
[सं०] १. दूध फाड़कर उसका
हुआ अंश। छेना। २.
हुआ दही ।
[देश०] १. वे छोटे पौधे
जगह ले जाकर रोपने के लिए
हैं। २. वह क्यारी जिसमें ऐसे
जाते हैं।
दे० 'पनैला' ।
[हिं० पनीला=एक प्रकार का सन]
रंगीन चमकीला कपड़ा ।
] १. जिसमें पानी मिला हो ।
२. जो पानी में रहता या होता हो।
[सं०] [स्त्री० पन्नगी] साँप ।
] पन्ना। मरकत। (रत्न)

पन्नगारि-पुं० [सं०] गरुड़, जो साँपों का परम शत्रु और भक्षक माना जाता है।

पन्ना-पुं० [सं० पर्ण ?] फीरोज़ी या हरे रंग का एक प्रसिद्ध रत्न । मरकत ।
पुं० [हिं० पान] पृष्ठ । वरक । (पुस्तक का)
पुं० दे० 'पना' ।

पन्नी-स्त्री० [हिं० पन्ना = पत्रा] राँगे या पीतल का पतला पीटा हुआ पत्तर ।

पपड़ी-स्त्री० [हिं० पापड़] [क्रि० पपड़ियाना] [वि० पपड़ीला] १. सूखकर या सिकुड़ने से जगह जगह चिटकी हुई किसी वस्तु की पतली परत । २. मवाद सूख जाने से घाव के ऊपर जमी हुई परत । खुरंड । ३ सोहन पपड़ी नाम की मिठाई ।

पपीता-पुं० [मला० पपाया] एक प्रसिद्ध बड़ा पौधा जिसके फल खाये जाते हैं ।

पपीलि*-स्त्री० [सं० पिपीलिका] च्यूँटी ।

पपीहरा-पुं० दे० 'पपीहा' ।

पपीहा-पुं० [पी पी से अनु०] वर्षा और वसन्त ऋतु में सुरीली ध्वनि में बोलनेवाला एक पक्षी । चातक ।

पपोटा-पुं० [सं० प्र + पट] आँख के ऊपर की पलक । दृगंचल । पोटा ।

पबारना*-स० = फेंकना ।

पब्बय*-पुं० दे० 'पर्वत' ।

पब्बि*-पुं० दे० 'पवि' ।

पमाना*-अ० [?] डींग हाँकना ।

पय-पुं० [सं० पयस्] १. दूध । २. पानी ।

पयद*-पुं० दे० 'पयोद' ।

पयधि*-पुं० दे० 'पयोधि' ।

पयनिधि*-पुं० दे० 'पयोनिधि' ।

पयस्विनी-स्त्री० [सं०] १. दूध देनेवाली गाय । २. नदी । ३. हठ-योग में बाएँ कान की नाड़ी ।

पयहारी-पुं० [सं० पयस् + आहारी] केवल दूध पीकर रहनेवाला तपस्वी या साधु ।

पयान-पुं० [सं० प्रयाण] गमन । जाना ।

पयार(ल)-पुं० [सं० पलाल] धान आदि के

वे सूखे डंठल जिनमें से दाने निकाल लिये गये हों। पुराल।

पयोद-पुं० [सं०] बादल। मेघ।

पयोधर-पुं० [सं०] १. स्तन। २. बादल। ३. तालाब। ४. पहाड़।

पयोधि(निधि)-पुं० [सं०] समुद्र।

परंच-अव्य०[सं०] १.और भी। २.परंतु।

परंतु-अव्य० [सं० परं + तु] तो भी। पर। किंतु। लेकिन। मगर।

परंद*-पुं० दे० 'परिंद'।

परंपरा-स्त्री० [सं०] [वि० पारंपरीण, भाव० पारंपर्य] १. बहुत-सी घटनाओं, बातों या कामों के एक एक करके होने का क्रम। अनुक्रम। पूर्वापर क्रम। २. वह विचार, प्रथा या क्रम जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप में चला आया हो। (ट्रैडिशन) ३. किसी घटना, कार्य, पद आदि का बहुत दिनों से चला आया हुआ क्रम।

परंपरागत-वि० [सं०] परंपरा से चला आया हुआ। (ट्रैडिशनल)

पर-वि० [सं०] [भाव० परता, वि० परकीय] १. अपने से भिन्न। गैर। दूसरा। अन्य। और। २. दूसरे का। पराया। ३. पीछे या बाद का। किसी के उपरान्त होनेवाला। जैसे-परवर्त्ती, परलोक। ४. इस ओर से भिन्न, दूसरी ओर का। जैसे—पर-पार। ५. वर्त्तमान के ठीक पहले या बाद का। जैसे—पर-साल। ६. दूर। अलग। ७.श्रेष्ठ। उत्तम। ८.वैरी। शत्रु।

उप० [सं० प्र] एक उपसर्ग जो सम्बन्ध या रिश्ता बतलानेवाले कुछ शब्दों के पहले लगकर उनके ठीक पहले या ठीक बादवाली पीढ़ी का सूचक होता है। जैसे—पर-दादा या पर-पोता।

विभ० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर (क) निमग्न, रत, लीन, उद्यत आदि (जैसे—तत्पर, स्वार्थपर, आहार-पर आदि) और (ख) पीछे या साथ लगा हुआ आदि अर्थ सूचित करता है। विशेष दे० 'परक'।

प्रत्य० [सं० उपरि] सप्तमी या अधि करण का चिह्न। जैसे—इसपर।

अव्य० [सं० परम्] १. पश्चात्। पीछे। २. परंतु। लेकिन।

पुं० [फा०] पक्षी का पंख। डैना। पर।

मुहा०—बे-पर की उड़ाना = बिलकु बे सिर-पैर की और मन-गढ़ंत बात कह। **पर जमना** = किसी में कोई नई अ वृत्ति उत्पन्न होना। **पर न मारना** = किसी जगह या किसी के पास न आ सकना।

परक-स्त्री० [हिं० परकना] परकने क्रिया या भाव।

प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों अन्त में लगकर 'पीछे या अन्त में हुआ' का अर्थ सूचित करता है। विष्णु-परक नामावली = ऐसी नामा जिसके अन्त में 'विष्णु' या उसका और कोई शब्द हो।

पर-कटा*-वि० [फा० पर + हिं० क जिसके पर या पंख कटे हों। जैसे-पर कबूतर।

परकना*-अ० [हिं० परचना] परकाना] १. परचना। हिलना मि २. अभ्यास पड़ना। चसका लगना।

परकसना*-अ० [हिं० परकासना जगमगाना। २. प्रकट होना।

परकाजी-वि० दे० 'परोपकारी'।

परकार-पुं० [फा०] [क्रि० परका वृत्त या गोलाई खींचने का एक उपक

*पुं० दे० 'प्रकार'।

परकाल-पुं० दे० 'परकार'।

परकाला-पुं० [फा० परगालः] टुकड़ा। खंड। २. शीशे या और किसी चीज का धारदार टुकड़ा। ३. बड़ी वि

२. चसका लगना ।

परचा-पुं० [फा०] १. कागज का टुकड़ा । २. पत्र । चिट्ठी । ३. परीक्षा का प्रश्नपत्र । ३. समाचारपत्र आदि का कोई अंक । ४. कोई छोटा विज्ञापन या सूचनापत्र ।

पुं० [सं० परिचय] १. परिचय । २. परख । जाँच ।

परचाव-पुं० [हिं० परचना + आव (प्रत्य०)] १. परचने की क्रिया या भाव । २. हेल-मेल । मेल-जोल ।

परचून-पुं० [सं० पर + चूर्ण] १. आटा, दाल, मसाले आदि वस्तुएँ जो बनिये के यहाँ बिकतीं हैं । २. दे० 'खुदरा' ३. ।

वि० दे० 'खुदरा' ।

परचूनियाँ-वि० [हिं० परचून] वह जो फुटकर, खुदरा या थोड़ा थोड़ा करके माल या सौदा बेचता हो । (रिटेलर)

परचै*-पुं० = परिचय ।

परछत्ती-स्त्री० [हिं० पर + छत] सामान रखने के लिए घर के अन्दर दीवार से लगाकर बनाई हुई पाटन । टाँड़ ।

परछन-स्त्री० [सं० परि + अर्चन] [क्रि० परछना] विवाह की एक रीति जिसमें स्त्रियाँ द्वार पर वर के आने के समय उसके ऊपर मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं ।

परछाईं-स्त्री० [सं० प्रतिच्छाया] १. प्रकाश के सामने आने से पीछे की ओर अथवा पीछे की ओर प्रकाश होने पर आगे की ओर पड़ी हुई किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया ।

मुहा०-किसी की परछाईं से डरना या भागना = किसी के पास जाने तक से डरना ।

२. जल, दर्पण आदि में दिखाई पड़नेवाला किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब । अक्स ।

परछालना*-स० [सं० प्रक्षालन] धोना ।

परजंक*-पुं० दे० 'पर्यंक' । (पलंग)

परजन*-पुं० दे० 'परिजन' ।

परजन्य*-पुं० दे० 'पर्जन्य'।

परजरना(जलना)*-अ० [सं० प्रज्वलन] प्रज्वलित होना। सुलगना। दहकना।

परजरा*-वि० = प्रज्वलित।

परजा†-स्त्री० = प्रजा। (रैयत)

पर-जात-स्त्री० [सं० पर + जाति] दूसरी जाति।

वि० दूसरी जाति का।

परजाता-पुं० [सं० पारिजात] एक प्रकार का वृक्ष जिसमें पीली डंठीवाले छोटे सफेद फूल लगते हैं। पारिजात।

परजाय*-पुं० दे० 'पर्याय'।

परजारना*-स० = प्रज्वलित करना।

परजालना*-स० = प्रज्वलित करना।

पर-जीवी-पुं० [सं० परजीविन्] १. वह जो दूसरों के सहारे रहकर जीवन बिताता हो। २. कुछ विशिष्ट प्रकार की बनस्पतियाँ या कीड़े-मकोड़े जो दूसरे वृक्षों और जीव-जन्तुओं के शरीर पर रहकर और उनका रस या खून चूसकर पलते हैं। जैसे-आकाश-बेल, पिस्सू आदि। (पैराज़ाइट)

परजौट-पुं० [हिं० परजा + औत (प्रत्य०)] [वि० परजौटी] घर आदि बनाने के लिए वार्षिक कर या देन पर जमींदार से जमीन लेने की व्यवस्था।

परणना*-स० [सं० परिणयन] ब्याहना।

परतंत्र-वि० [सं०] [भाव० परतंत्रता] पराधीन। पर-वश।

परतः-अव्य० [सं० परतस्] १. दूसरे से। २. पश्चात्। पीछे। ३. और। आगे। परे।

परत-स्त्री० [सं० पत्र] १. सतह पर फैली हुई वस्तु की मोटाई। स्तर। तह। २. कपड़े आदि को लपेटने या मोड़ने पर बननेवाला उसका हर भाग या मोड़। तह।

परतच्छ*-वि० = प्रत्यक्ष।

परतर-वि० [सं०] [भाव० परतरता] बाद या पीछे का।

परतला-पुं० [सं० परितन] [स्त्री० अल्पा० परतली] कंधे से कमर तक पहनी जानेवाली चमड़े या कपड़े की गोलाकार पट्टी।

परता*-पुं० दे० 'पड़ता'।

परताल-स्त्री० दे० 'पड़ताल'।

परतिंचा*-स्त्री० दे० 'पतंचिका'।

परतिग्या*-स्त्री० दे० 'प्रतिज्ञा'।

परती-स्त्री० [हिं० परत] एक में हुए बहुत से कागजों या उनके छोटे की गड्डी। पत्राली। (पैड) जैसे के कागजों की परती।

स्त्री० दे० 'पड़ती'।

परतीछा*-स्त्री० = प्रतीक्षा।

परतीति*-स्त्री० = प्रतीति।

परतेजना*-स० = छोड़ना।

परत्व-पुं० [सं०] 'पर' का भाव० परता।

परथन†-पुं० दे० 'पलेथन'।

परद*-पुं० दे० 'परदा'।

परदनी*-स्त्री० [सं० परिधान]

स्त्री० [सं० प्रदान] दान-दक्षिणा।

परदा-पुं० [सं०] १. आड़ लिए लटकाया हुआ कपड़ा, चिक पट। (कर्टेन)

मुहा०-परदा खोलना = छिपी या रहस्य प्रकट करना। **परदा** छिपाना। **आँखों पर परदा** साफ बात भी दिखाई न देना।

२. आड़ करनेवाली कोई वस्तु। ३. विभाग या आड़ करने के लिए हुई मकान, बाग आदि की आड़। ओट। ५. दुराव। छिपाव। स्त्रियों के बाहर निकलकर लोगों के न होने की प्रथा।

मुहा०-परदा करना = स्त्री का रहना और पर-पुरुष के सामने न ७. मर्यादा। इज्जत। लाज।

पद-ढका परदा = (क) छिपा

पर-पार–पुं० [सं०] दूसरी ओर का तट।

पर-पीड़क–पुं० [सं०] १. दूसरों को दुःख देनेवाला। २. परायी पीड़ा या कष्ट समझनेवाला। (क्व०) उदा०—ऐसे प्रभु पर-पीरक।—सूर।

पर-पुरुष–पुं० [सं०] स्त्रियों के लिए अपने पति के अतिरिक्त दूसरे पुरुष।

परपूठा*–पुं० [सं० परिपुष्ट] पक्का।

परपोता–पुं० [सं० प्रपौत्र] पोते का लड़का। पुत्र के पुत्र का बेटा।

परब–पुं० = पर्व।

परबत†–पुं० = पर्वत (पहाड़)।

परबल*–वि० = प्रबल।

पर-बस–वि० [हिं० पर + वश] दूसरे के वश में पड़ा हुआ। परतंत्र। पराधीन।

पर-बसताई*–स्त्री० = पराधीनता।

परबाल–पुं० १. दे० 'परवाल'। २. दे० 'प्रवाल'।

परबीन*–वि० दे० 'प्रवीण'।

परबोधना*–स० [सं० प्रबोधन] १. जगाना। २. ज्ञान का उपदेश करना। ३. दिलासा या तसल्ली देना।

पर-ब्रह्म–पुं० [सं०] निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म जो जगत से परे है।

परभाई*–पुं० दे० 'प्रभाव'।

परभृत–पुं० [सं०] १. कार्त्तिकेय। २. कोयल।

परम–त्रि० [सं०] [स्त्री० परमा] १. जिससे आगे या अधिक और कुछ न हो। (एब्-सोल्यूट) २. सबसे बढ़कर। उत्कृष्ट। ३. प्रधान। मुख्य। ४. आद्य। आदिम। ५. अत्यन्त।

परम आज्ञा–स्त्री० [सं०] ऐसी आज्ञा जो अन्तिम हो और जिसमें किसी प्रकार का परिवर्त्तन या फेर-बदल न हो सकता हो। (एब्सोल्यूट ऑर्डर)

परमक–वि० [सं०] चरम सीमा का। पल्ले सिरे का।

परम गति–स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

परमटा-पुं० दे० 'पनैला'।

परम तत्त्व-पुं० [सं०] १. वह मूल तत्त्व जिससे सारे विश्व की सृष्टि या विकास हुआ है। २. ईश्वर। ब्रह्म।

परम धाम-पुं० [सं०] वैकुंठ।

परम पद-पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

परम पुरुष-पुं० [सं०] परमात्मा।

परम सत्ता-स्त्री० [सं०] वह सत्ता या शक्ति जो सबसे बढ़कर हो और जिसके ऊपर और कोई सत्ता या शक्ति न हो। (एब्सोल्यूट पॉवर)

परम सत्ताधारी-पुं० [सं०] वह जिसे परम या सबसे बढ़कर सत्ता या अधिकार प्राप्त हो। (सॉवरेन)

परमहंस-पुं०[सं०] १.ज्ञान की परमावस्था तक पहुँचा हुआ संन्यासी। २. परमात्मा।

परमाणु-पुं० [सं०] किसी तत्व का वह अत्यन्त सूक्ष्म भाग जिसका बिना किसी विशिष्ट वैज्ञानिक या वैद्युतिक प्रक्रिया के और विभाग या खंड हो ही न सकता हो। (एटम)

परमाणुवाद-पुं० [सं०] [वि० परमाणुवादी] यह दार्शनिक सिद्धान्त कि संसार के सब पदार्थ परमाणुओं के संयोग या घनीभूत होने से बने हैं। (एटमिज्म)

परमाणुवादी-वि० [सं० परमाणुवादिन्] परमाणुवाद का सिद्धान्त माननेवाला। (एटोमिस्ट)

परमात्मा-पुं० [सं० परमात्मन्] ईश्वर।

परमानंद-पुं० [सं०] १. ब्रह्म के साक्षात् या ज्ञान का सुख। ब्रह्मानंद। २. परब्रह्म।

परमान*-पुं० दे० 'प्रमाण'।

परमानना*-स० [सं० प्रमाण] १. किसी वस्तु या बात को प्रमाण के रूप में मानना। प्रामाणिक समझना। २. स्वीकृत करना।

परमायु-स्त्री० [सं० परमायुस्] मनुष्य के जीवन-काल की चरम सीमा जो १०० वर्ष मानी जाती है।

परमारथ*-पुं० = परमार्थ।

परमार्थ-पुं० [सं०] [वि० परमा
१. सबसे बढ़कर वस्तु या सत्ता। २.
कार। ३. मोक्ष। मुक्ति।

परमिट-पुं० [अं०] कोई विशेष का
या कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए मि
आज्ञापत्र या अधिकारपत्र। अनुज्ञा

परमिति*-स्त्री० [सं० परिमिति] १.
सीमा। अन्तिम मर्यादा या हद। २
'परिमिति'।

परमुख*-वि० [सं० पराङ्मुख
विमुख। २. प्रतिकूल आचरण करने

परमेश(श्वर)-पुं० [सं०] सृष्टि का
ईश्वर। परमात्मा।

परमेश्वरी-वि० [सं०] ईश्वरीय।
स्त्री० शक्ति या दुर्गा का एक नाम।

परमेष्ट-वि० [सं० परम+इष्ट]
इष्ट या प्रिय हो।

परमेष्ठी-पुं० [सं० परमेष्ठिन्] १.
शिव, विष्णु आदि देवता। २.
जल, वायु आदि तत्त्व। भूत। ३.
काल का एक प्रकार का यज्ञ।

परमेसरी*-स्त्री० = परमेश्वरी।

परमोक*-पुं० [सं० परिमोक्ष
मोक्ष। २. मुक्ति। छुटकारा। ३.

परमोद*-पुं० दे० 'प्रमोद'।

परमोदना*-स० [सं० प्रबोध
'परबोधना'। २. मीठी मीठी
अपनी ओर मिलाना।

पर-राष्ट्र-पुं० [सं०] [वि० प
अपने राष्ट्र से भिन्न दूसरे राष्ट्र।

पर-राष्ट्रिय-वि० [सं०]
क्षेत्र में अपने राष्ट्र से भिन्न, दूसरे
राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला। (
जैसे-पर-राष्ट्रिय विभाग।

परलउ(लय)*-पुं० दे० 'प्रलय'।

परला-वि० [सं० पर = उधर] [
परली] उस ओर का। उधर का। उर
का विरोधी।

परस-पखान–पुं० दे० 'पारस' (पत्थर)।

परसमनि*–पुं० = स्पर्शमणि (पारस पत्थर)।

पर साल–पद [सं० पर + फा० साल] १. पिछले वर्ष। २. अगले साल।

परसाल*–स्त्री० [सं० प्रशाला] बड़ी कोठरी। कमरा।

परसिद्ध*–वि० = प्रसिद्ध।

परसेद*-पुं० दे० 'प्रस्वेद'।

परसों–अव्य० [सं० परश्वः] १. बीते हुए कल से पहलेवाला दिन। २. आगामी कल के बादवाला दिन।

परसोतम†–पुं० = पुरुषोत्तम।

परसौंहाँ–वि० [सं० स्पर्श] छूनेवाला।

परस्पर–क्रि०वि०[सं०] एक दूसरे के साथ। आपस में।

परस्परोपमा–पुं० दे० 'उपमेयोपमा'।

परस्व–पुं० [सं०] १. 'पराया' होने का भाव। परायापन। 'निजस्व' का उलटा। २. पराधीनता। परतंत्रता।

परहरना*–स० = त्यागना।

परहेज–पुं० [फा०] [वि० परहेजगार] १. खाने-पीने आदि का संयम। २. दोषों, पापों या बुराइयों से दूर रहना।

परहेलना*–स० [सं० प्रहेलन] अनादर या तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।

परांग-भक्षी–पुं० [सं० परांग + भक्षिन्] १. वह जो दूसरों के अंग खाकर रहता हो। २. दे० 'पर-जीवी'।

पराँठा–पुं० [हिं० पलटना] वह चपाती जो घी लगाकर तवे पर सेंकी जाती है। परौठा।

परा–स्त्री० [सं०] १. चार प्रकार की वाणियों में पहली जो नाद स्वरूप मानी जाती है। २. परमार्थ का ज्ञान कराने वाली विद्या। ब्रह्म-विद्या।

पुं० [हिं० पर = पंख ?] पंक्ति। कतार।

पराकाष्ठा–स्त्री० [सं०] वह अन्तिम सीमा जहाँ तक कोई बात हो या पहुँच सकती हो।

चरम सीमा। चूड़ान्त। (क्लाइमैक्स)

पराक्रम–पुं० [सं०] [वि० पराक्रमी] १. बल। शक्ति। २. पुरुषार्थ।

पराग–पुं० [सं०] १. फूलों के लंबे केसरों पर जमी हुई धूल या रज। पुष्प-रज। २. नहाने के पहले शरीर में मलने का एक सुगंधित चूर्ण। ३. चंदन। ४. उपराग।

पराग-केसर–पुं० [सं०] फूलों के बीच का केसर या सींका।

परागना*–अ० [सं० उपराग] अनुरक्त होना।

पराङ्मुख–वि० [सं०] १. मुँह फेरे हुए। विमुख। २. उदासीन। ३. विरुद्ध।

पराजय–स्त्री० [सं०] हार जाने की क्रिया या भाव।

पराँजित–वि० [सं०] हारा हुआ।

परात–स्त्री० [सं० पात्र] बड़ी थाली।

परात्पर–वि० [सं०] सर्व-श्रेष्ठ।
पुं० १. परमात्मा। २. विष्णु।

पराधीन–वि० [सं०] [भाव० पराधीनता] जो दूसरे के अधीन हो। परतंत्र। परवश।

परानंद–पुं० दे० 'परमानंद'।

परान*–पुं० = प्राण।

पराना*–अ० [सं० पलायन] बहुत जल्दी कहीं से हट जाना। भागना।
स० १. दूर करना। भगाना। २. नष्ट करना। हटाना।

परान्न–पुं० [सं०] पराया या दूसरे का दिया हुआ अन्न या भोजन।

पराभव–पुं० [सं०] १. पराजय। हार। २. तिरस्कार। मान-भंग। ३. दूसरे को दबाकर अपने अधीन करना। (सबजुगेशन)

पराभूत–वि० [सं०] १. पराजित। हारा हुआ। २. तिरस्कृत

परामर्श–पुं० [सं०] १. किसी विषय का विवेचन। २. आपस में मिलकर यह सोचना या किसी से मिलकर यह जानना कि क्या ठीक है अथवा क्या होना चाहिए। सलाह। मंत्रणा। (कन्सल्टेशन)

परामर्शालय–पुं०[सं० परामर्श +
वह स्थान या कमरा जिसमें
दूसरों को किसी विशेष विषय में
देता हो। (कन्सल्टिंग रूम) जै—
डाक्टर या वकील का परामर्शालय।

परायण–वि० [सं०] [भाव० परा
स्त्री० परायणा] १. गया हुआ।
हुआ। प्रवृत्त। ३. किसी विषय
पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ या स्थिर।
आदर्श-परायण, सत्य-परायण।

पराया–वि० [सं० पर] [स्त्री०
१. दूसरे का। अन्य का। अपना
मुहा०–पराये गुलाल की खेलना = दूसरे के धन या
सुख-भोग या आनन्द करना।
२. जो आत्मीय न हो। दूसरा।

परार(रा)*–वि० दे० 'पराया'।

परार्थ–पुं० [सं०] [भाव० परार्थ
का उपकार या भलाई। परोपकार।
वि० जो दूसरे के लिए हो।

परार्थवाद–पुं० [सं०] [वि० परार्थ
सिद्धान्त कि मनुष्य को सदा दूसरों
के काम करते रहना चाहिए। (

परालब्ध–स्त्री० दे० 'प्रारब्ध'।

पराव*–पुं० [हिं० पराना = भाग
की क्रिया या भाव।
पुं० [हिं० पर = पराया] १.
२. दुराव। छिपाव।

परावधि–स्त्री० = पराकाष्ठा।

परावर्त्तन–पु० [सं०] [वि०
परावृत] १. फिर अपने स्थान पर
लौटना। २. उलटकर फिर ज्यों
होना। (रिवर्शन)

परावर्त्ती–वि० [सं०] १. लौट
अपने स्थान पर आनेवाला। २.
ज्यों का त्यों हो जानेवाला।

परावृत्त–वि० [सं०] [भाव०
१. लौटा या लौटाया हुआ। २.

(प्रिज़म्पशन)

परिकल्पित–वि० [सं०] १. जो अभी हुआ तो न हो, पर सम्भव होने के कारण जिसकी कल्पना पहले से की जाय। (हाई-पॉथेटिक) २. जो केवल तर्क के लिए मान लिया गया हो। ३ जो कुछ विशिष्ट आधारों पर ठीक मान लिया हो। (प्रिज़्यूम्ड)

परिक्रम–पुं० [सं०] किसी काम की जाँच या निरीक्षण के लिए जगह जगह जाना या घूमना। दौरा। (टूर)

परिक्रमण–पु० [सं०] १. किसी काम की देख रेख के लिए जगह जगह जाना। दौरा करना। २. दे० 'परिक्रमा'।

परिक्रमा–स्त्री० [सं० परिक्रम] १. चारो ओर, विशेषतः देवता या पवित्र स्थान के चारो ओर, घूमना। २. मंदिर या तीर्थ के चारो ओर घूमने के लिए बना हुआ मार्ग।

परिक्षेत्र–पुं० दे० 'परिनगर'।

परिक्षेत्रिक–वि० दे० 'परिनागर'।

परिखना†–अ० = प्रतीक्षा करना।
स० = परखना।

परिखा–स्त्री० [सं०] खंदक। खाई।

परिखावन–†स्त्री० १. दे० 'परख'। २. दे० 'परीक्षा'।

परिगणन–पुं० [सं०] [वि० परिगणित] गणना करना। गिनना।

परिगणित–वि० [सं०] [संज्ञा परिगणन] १. जो गिनती में आया हो। गिना या गिनाया हुआ। २. जिसका उल्लेख या गणना किसी अनुसूची आदि में की गई हो। (शेडयूल्ड) जैसे–परिगणित जातियाँ या जन जातियाँ।

परिगत–वि० [सं०]१. चारो ओर से घिरा या घेरा हुआ। २. बीता हुआ। व्यतीत। गत। ३. मरा हुआ। मृत। ४. जाना हुआ। ज्ञात।

परिगह*–पुं० [सं० परिग्रह] परिवार के लोग। बाल बच्चे।

परिगहना*-स० = परिग्रहण करना

परिगृहीत-वि० [सं०] १. ग्रहण किया हुआ। स्वीकृत। २. मिला हुआ। प्राप्त।

परिग्रह-पुं० [सं०] [वि० परिग्राह्य, परिगृहीत] १.दान लेना। प्रतिग्रह। २. पाना। ३. आदरपूर्वक लेना। ४. धन आदि का संग्रह। ५. विवाह। ६. पत्नी। ७. परिवार। बाल-बच्चे।

परिग्रहण-पुं० [सं०] ग्रहण या स्वीकृत करने अथवा लेने की क्रिया या भाव।

परिघ-पुं० [सं०] १. दरवाजा बन्द करने का अर्गला। ब्योंड़ा। २. आड़ या रुकावट के लिए खड़ी की हुई कोई चीज। बाढ़। (बेरियर) ३. वह डण्डा जिसके सिर पर लोहा जड़ा हो। लोहाँगी। ४. तीर। ५. भाला। ६. घोड़ा। ७. फाटक। ८. घर। ९. पानी का घड़ा।

परिचना*-अ० = परचना।

परिचय-पुं० [सं०] १. जानकारी। अभिज्ञता। २. पहचान। लक्षण। ३. किसी व्यक्ति के नाम-धाम या गुण-कर्म आदि से सम्बन्ध रखनेवाली सब या कुछ बातें जो किसी को बतलाई जायँ। (इन्ट्रोडक्शन) ४. जान-पहचान।

परिचय-पत्र-पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय लिखा हो। २.किसी वस्तु या संस्था से सम्बन्ध रखनेवाला वह पत्रक या पुस्तिका जिसमें उस वस्तु की सब बातों या संस्था के उद्देश्यों, कार्य-क्षेत्रों और कार्य-प्रणालियों आदि का परिचय या विवरण दिया हो। (मेमोरैन्डम)

परिचर-पुं० [सं०] [स्त्री० परिचरी] १. सेवक। २. रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचर्या-स्त्री० [सं०] १.सेवा। टहल। २. रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

परिचायक-पुं० [सं०] १. किसी बात या व्यक्ति का परिचय करानेवाला (तथ्य या वस्तु)। (इन्ट्रोडक्टरी) जैसे—परिचायक पत्र या सूचना। २.सूचित करानेवाला। सूचक

परिचार-पुं० [सं०] १. सेवा। टह २. छोटे बच्चों, गर्भवती स्त्रियों, रोगि आदि की वह देख रेख और सेवा-शुश्र जो उन्हें पुष्ट और नीरोग करने के लिए जाती है। (नार्सिंग)

परिचारक-वि० [सं०] [स्त्री० परिचारि रोगियों आदि का परिचार या सेवा-शुश्र करनेवाला।

पुं० नौकर। सेवक।

परिचारना*-स० [सं० परिचारण सेवा या टहल करना।

परिचारिका-स्त्री० [सं०] दासी।

परिचालक-पुं० [सं०] परिचालन क या चलानेवाला। (कन्डक्टर)

परिचालन-पुं० [सं०] [वि० परिचालि १. चलाना। २. किसी कार्य के च रहने की व्यवस्था करना। ३. हिलाना।

परिचित-वि० [सं०] १. जाना हुआ ज्ञात। २. जिसका या जिसे परिचय हो ३. जिससे जान-पहिचान हो।

परिच्छद-पुं०[सं०] १. ऊपर से ढकने कपड़ा। आच्छादन। २. पहनने के पूरे क पहनावा। पोशाक। (ड्रेस) ३. एक ही तरह वे कपड़े जो किसी विशेष वर्ग या दल लोगों के पहनने के लिए निर्धारित होते वर्दी। (यूनिफॉर्म) जैसे—सैनिकों का परि

परिच्छन्न—वि० [सं०] १. ढका या हुआ। २. जो कपड़े पहने हो। ३.स

परिच्छा*-स्त्री० = परीक्षा।

परिच्छिन्न-वि० [सं०] १. परिमि सीमित। २. बँटा हुआ। विभक्त।

परिच्छेद-पुं० [सं०] १. किसी चीज अलग अलग खंड या विभग कर विभाजन। २. क्षेत्रों, विभागों, कर्त आदि के अलग अलग विभाग करके उनकी सीमाएँ, विस्तार आदि निश्चित या स्थिर करना। (डिमारकेशन) ३. ग्रन्थ

हुआ निष्कर्ष। नतीजा। (कन्क्लूजन)

परिणाम-दर्शी–वि० [सं० परिणामदर्शिन्] १. जो पहले से ही किसी बात का परिणाम जान या समझ लेता हो। २. फल या परिणाम का ध्यान रखकर कार्य करनेवाला। दूरदर्शी।

परिणामी–वि० [सं० परिणामिन्] १. जिसका परिणाम या अन्त होता हो। २. परिणाम-सम्बन्धी। ३. दे० 'परिणाम-दर्शी'।

परिणीत–वि० [सं०] १. विवाहित। ब्याहा हुआ। २. समाप्त। पूर्ण।

परितप्त–वि० [सं०] १. तपा हुआ। उत्तप्त। २. जिसे दुःख पहुँचा हो। पीड़ित। ३. परिताप करने या पछतानेवाला।

परिताप–पुं० [सं०] [कर्त्ता परितापी, वि० परितप्त] १. गरमी। आँच। २. दुःख। क्लेश। ३. शोक। ४. पश्चाताप। पछतावा।

परितापना–अ० [सं० परिताप] परिताप या पश्चाताप करना।

परितापी–वि० = परिताप करनेवाला।

परितुष्ट–वि० [सं०] [भाव० परितुष्टि] १. परम संतुष्ट। २. प्रसन्न। खुश।

परितृप्त–वि० [सं०] [भाव० परितृप्ति] जिसका अच्छी तरह परितोष हो गया हो। भली भाँति तृप्त।

परितृप्ति–स्त्री० [सं०] परितृप्त होने की क्रिया या भाव। अच्छी तरह तृप्त होना।

परितोष–पुं० [सं०] [वि० परितुष्ट] १. किसी काम या बात के ठीक तरह से होने पर प्रसन्नता और सन्तोष होना। वह सुख जो मन के अनुसार काम होने पर होता है। तुष्टि। सन्तोष। (सैटिस्फैक्शन) २. प्रसन्नता। खुशी।

परितोषण–पुं० [सं०] १. किसी का परितोष करने की क्रिया या भाव। पूरी तरह से सन्तुष्ट करना या होना। २. वह धन जो किसी को संतुष्ट करने या उसका परितोष करने के लिए दिया जाय। (ग्रैटिफिकेशन)

परितोषद–वि० [सं०] परितोष देने या

सन्तुष्ट करनेवाला । जिससे परितोष हो ।

परितोस*-पुं० = परितोष ।

परित्यक्त-वि०[सं०][स्त्री०परित्यक्ता]त्यागा, छोड़ा या अलग किया हुआ । (अबैन्डन्ड)

परित्याग-पुं० [सं०] [वि० परित्यागी, परित्यक्त, परित्याज्य] १. छोड़ देना । त्याग देना । २. अपना अधिकार या स्वत्व सदा के लिए और पूरी तरह से छोड़ना । जैसे-पद या राज्य का परित्याग । ३. किसी वस्तु या प्राणी से सदा के लिए सम्बन्ध तोड़ लेना । जैसे-पत्नी या शिशु का परित्याग ।

परित्यागना-स० [सं० परित्याग] छोड़ देना । त्यागना ।

परित्यागी-पुं० [सं०] वह जिसने किसी व्यक्ति, सम्पत्ति या वस्तु का परित्याग कर दिया हो । त्यागने या छोड़ देनेवाला ।

परित्याज्य-वि० [सं०] छोड़ देने योग्य ।

परित्राण-पुं० [सं०] कष्ट, हानि आदि से किया जानेवाला बचाव । रक्षा । (प्रोटेक्शन)

परित्राता-पुं० [सं० परित्रातृ] परित्राण या रक्षा करनेवाला ।

परिदर्शन-पुं० [सं०] १. घूमकर देखना । २. देख-रेख करना । निरीक्षण । ३. न्यायालय में किसी व्यवहार या मुकदमे की होनेवाली सुनवाई । (ट्रायल)

परिधन*-पुं० [सं० परिधान] कमर और जाँघों पर पहनने का कपड़ा । धोती आदि ।

परिधान-पुं० [सं०] १.वस्त्र । कपड़ा । २. पहनने के कपड़े । पोशाक । ३. पहनावा ।

परिधि-स्त्री० [सं०] १. वृत्त को घेरनेवाली गोल रेखा या उसकी लंबाई की नाप । (सरकंफरेन्स) २. नियत या नियमित और प्रायः गोलाकार वह मार्ग जिसपर कोई चीज चलती, घूमती या चक्कर लगाती हो । कक्षा । ३ प्रायः गोलाकार माना जानेवाला कोई ऐसा वास्तविक या कल्पित घेरा जो दूसरे बाहरी क्षेत्रों से अलग हो । कुछ विशेष लोगों या कार्यों का स्वतंत्र क्षेत्र । वृत्त । (सर्किल) ४.परिधान । ५.दे० 'परिवेष' ।

परिधिक-वि० [सं०] १. परिधि-सम्बन्धी । परिधि का । २ जिसका कार्य-क्षेत्र कि विशेष परिधि में हो । जैसे-परिधिक नि क्षक । (सर्किल इन्स्पेक्टर)

परिनगर-पुं० [सं० परि+नगर] कि नगर के आस पास या चारो ओर की छोटी छोटी बस्तियाँ जो उसकी नियत सी के बाहर होने पर भी, कुछ विशेष कार्यों के लिए उसी नगर के अंग के रूप में मा जाती हैं । (सबर्ब)

परिनागर-वि० [हिं० परिनगर] परिन सम्बन्धी । परिनगर का । (सबर्बन)

परिपंच*-पुं० = प्रपंच ।

परिपक्व-वि० [सं०] [भाव० परिपक्वता] १.अच्छी तरह पका या पचा हुआ । २.पू तरह से विकसित । प्रौढ़ । ३. बहुदर्शी अनुभवी । ४ निपुण । कुशल । प्रवीण ।

परिपत्र-पुं० [सं०] १. वह पत्र जि किसी संस्था या दल के उद्देश्य, वि कार्य-प्रणाली या संघटन के मूल नि अथवा किसी विषय पर विचार या सम्मति आदि दी गई हों । (मैमोरैन्डम) २.वि सूचना आदि के लिए बहुत से सम्बद्ध लोगों के पास भेजा जानेवाला पत्र । (सर्कुल

परिपाक-पुं० [सं०] १. पकना या प जाना । २. पचना । ३. प्रौढ़ता । पू जैसे-साहित्य में रस का परिपाक । ४. प णाम । फल । जैसे-कर्म का परिपाक । निपुणता । दक्षता ।

परिपाटी-स्त्री० [सं०] १. क्रम । सि सिला । २. चली आई हुई प्रणाली शैली । ३. पद्धति । रीति ।

परिपालन-पुं० [सं०] [वि० परिपा परिपालित] १. रक्षा करना । बचाना । २. रक्षा । बचाव ।

परिपुष्ट-वि० [सं०] १. जिसका भली भाँति पोषण हुआ हो । २. पूर्ण पुष्ट ।

] १. पवित्र । २. साफ
शुद्ध ।
] परिपूर्ण करनेवाला ।
] [वि० परिपूरक,
परिपूर्णता] १. अच्छी
। २. पूर्ण तृप्त । ३.
।
] कोई बात जानने के लिए
प्रश्न । पूछ-ताछ ।(एन्क्वायरी)
[सं० परिप्रश्न] वह स्थान
कार्यालय या कार्य से सम्बन्ध
पूछ-ताछ की जाती या
हो । (एन्क्वायरी ऑफिस)
[सं०] १. तैरना । २. बाढ़ ।
।
वि० दे० 'परिप्लुत' ।
[सं०] १. प्लावित । डूबा
हुआ । गीला । तर ।
स्त्री० [सं०] १. चिन्ता ।
में कुतूहल सूचित करने-
जिससे उत्सुकता बढ़े ।
[सं०] वि० परिभाषित,
१. किसी शब्द या पद का अर्थ
करनेवाला स्पष्ट कथन ।
(डेफिनेशन) २. वह शब्द जो
विज्ञान में किसी एक कार्य,
का सूचक मान लिया गया
टर्म) जैसे-जीव-विज्ञान
। ३. किसी शब्द की वह
करण, जिससे उसकी वि-
पूरी तरह से निश्चित या
।
वि० [सं०] जिसकी परिभाषा
गई हो । (डिफाइन्ड)
[सं०] १. घूमना-फिरना ।
घूमना । चक्कर लगाना । ३.
या उसकी परिधि पर चार
। (   )

परिमल-पुं० [सं०] सुवास । सुगन्ध ।

परिमाण-पुं० [सं०] [वि० परिमित, परिमेय] भार, विस्तार, घनत्व आदि का मान । नाप या तौल । मात्रा । (क्वान्टिटी)

परिमाप-पुं० [सं०] [वि० परिमापक] १. नापने की क्रिया या भाव । २. वह पदार्थ या आदर्श जिससे दूसरे पदार्थों का माप किया जाय । मान-दंड । मानक ।

परिमार्जन-पुं० [सं०] [वि० परिमार्जित, परिमृज्य] १. माँज या धोकर साफ या ठीक करना । २. दोष, त्रुटियाँ आदि दूर करके ठीक करना ।

परिमित-वि० [सं०] [भाव० परिमिति, वि० परिमेय] १. जिसकी नाप-तौल की गई हो । २. जिसकी सीमा, संख्या या विस्तार नियत हो । सीमित । (लिमिटेड) ३. जो न अधिक हो न कम । ठीक या उचित मात्रा में । ४. थोड़ा । कम । जैसे-हमारा ज्ञान बहुत परिमित है ।

परिमिति-स्त्री० [सं०] [वि० परिमित] १. परिमित या सीमित होने की दशा या भाव । (लिमिटेशन) २. किसी चीज की नाप, तौल सीमा आदि । ३. किसी क्षेत्र को घेरनेवाली रेखाएँ या उनका परिमाण । ४. मान-मर्यादा । प्रतिष्ठा ।

परिमेय-वि० [सं०] १. जो नापा या तौला जा सके । २. जिसे नापना या तौलना हो ।

परिया-पुं० [तामिल परैयान] १. दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति । २. अछूत । अस्पृश्य । ३. क्षुद्र । तुच्छ ।

परियात्रा-स्त्री० दे० 'परियान' ।

परियान-पुं० [सं०] [वि० परियात] अपना देश छोड़कर स्थायी रूप से दूसरे देश में जाना । (एमिग्रेशन)

परियुद्धक-पुं० [सं०] युद्ध-काल में वह राष्ट्र या देश जो किसी युद्ध में सम्मिलित होकर अपने हित या उन्नति के उद्देश्य से किसी दूसरे देश या राष्ट्र से लड़ रहा हो ।

(बेलीगरेन्ट)

परिरंभ(ण)-पुं० [सं०] [वि० परिरंभ्य, परिरंभित, क्रि० * परिरंभना] गले या छाती से लगाकर मिलना। आलिंगन।

परिरक्षण-पुं० [सं०] [वि० परिरक्षक] अच्छी तरह सँभाल या बचाकर रखने की क्रिया या भाव। (प्रिजर्वेशन)

परिरूप-पुं० [सं०] १. किसी होनेवाले कार्य के स्वरूप आदि के सम्बन्ध में पहले से की जानेवाली कल्पना। २. किसी कलात्मक कृति, रचना, सजावट आदि के सम्बन्ध की वह मूल कल्पना या रूप-रेखा जिसके अनुसार उसका बाकी सारा काम पूरा होता है। नमूना। ३. किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक और सुन्दर ढंग या प्रकार। तर्ज। (डिज़ाइन; उक्त सभी अर्थों के लिए)

परिरूपक-पुं० [सं०] वह जो किसी वस्तु का परिरूप प्रस्तुत करता हो। (डिजाइनर)

परिलेख-पुं० [सं०] १. चित्र का ढाँचा। रेखा-चित्र। खाका। २. चित्र। तसवीर। ३. चित्र अंकित करने की कूँची या कलम। ४. उल्लेख। वर्णन। ५. बड़े अधिकारियों के पास भेजा जानेवाला विवरण। (रिटर्न)

परिलेखना*-स० [सं० परिलेख] कुछ महत्त्व का समझना या मानना।

परिवर्जन-पुं० [सं०] [वि० परिवर्जनीय, परवर्जित] मना करना। रोकना।

परिवर्त्तक-वि० [सं०] १. घूमने-फिरने या चक्कर खानेवाला। २. घुमाने-फिराने या चक्कर देनेवाला। ३.परिवर्त्तन करने या बदलनेवाला।

परिवर्त्तन-पुं० [सं०] [कर्त्ता परिवर्त्तक, वि० परिवर्त्तनीय, परिवर्त्तित, परिवर्त्ती] १. घुमाव। चक्कर। २. कुछ घटा-बढ़ाकर रूप बदलना। एक रूप से दूसरे रूप में लाना। उलट-फेर। (चेंज, आल्टरेशन, वेरिएशन) ३. उपयोगिता आदि की दृष्टि से कोई नई बात बढ़ाना या कुछ अंशों को नया रूप देना। सुधारना। (मॉडिफिकेशन) ४. एक चीज के बदले में दूसरी लेना या देना। विनिमय। तबादला। (एक्स्चेंज) जैसे- समाचार-पत्रों या पुस्तकों का परिवर्त्तन। ५. एक को छोड़कर उसकी जगह दू ग्रहण करना। जैसे-जलवायु का परिवर्त्तन। ६. किसी को पसन्द या सुभीते की ची उसे देकर उससे उसके बदले में अपनी प या सुभीते की चीज लेना। जैसे-नोटों रुपयों में या रुपये का रेजगी में परिवर्त्तन। (कम्यूटेशन)

परिवर्द्धन-पुं० [सं०] [वि० परिवर्द्धित] १. संख्या, गुण, तथ्य आदि में विशेष करने की क्रिया या भाव। परिवृद्धि बढ़ाना। (एडिशन). २. आकार, मा विस्तार आदि बढ़ाने की क्रिया या भाव (एनलॉर्जमेन्ट)

परिवहन-पुं० [सं०] १. कोई एक जगह से दूसरी जगह उठाकर ले जा वहन। २. समुद्री या हवाई जहाज आ चलाना। (नैविगेशन)

परिवा-स्त्री० दे० 'प्रतिपदा'।

परिवाद-पुं० [सं०] १. निंदा। अपवाद २. अधिकारियों के सामने की जाने किसी की शिकायत। (कम्प्लेन्ट)

परिवार-पुं० [सं०] १. आवरण। म्यान। कोष। ३. घर के लोग। कु ४. वंश। खानदान। ५. बाल-बच्चे। एक ही तरह की वस्तुओं का वर्ग। कु जाति। (फैमिली) ७. किसी राजा या के पास रहने और उसके साथ चलने लोग। परिषद।

परिवृत्त-वि० [सं०] [भाव० परिवृत्ति]। उलटा-पलटा हुआ। २. घेरा या घिरा हुआ। पुं० घटना, कार्य आदि का वह विवरण जो किसी के सामने उपस्थित कि जाय। विवरण। (स्टेटमेन्ट)

परिवृत्ति-स्त्री० [सं०] [वि० परिवृत्त] १. घुमाव। चक्कर। २. घेरा। वेष्टन। ३.

। अंत । ५. दोहराने
क्रिया या भाव । ६.
काम को देखकर उसके
और कोई काम करना ।
अलंकार जिसमें एक
बदले में दूसरी वस्तु लेने
है।
= परिवर्द्धन ।
] १ (हलकी बदली में दिखाई
या चन्द्रमा के चारो ओर
। २. दे० 'प्रभा-मंडल' ।
[सं०] [वि० परिवेष्टव्य,
मोजन परोसना । २. घेरा ।
या चन्द्रमा के चारो ओर
। ४. परकोटा ।
[सं०] [वि० परवेष्टित]
से घेरना । २. आच्छादन ।
।
[सं०] १.मूल्य । २. शुल्क ।
। ४, भाड़े आदि के रूप में
जो किसी से लिया या
। (चार्ज) ५.किसी चीज
धन । लागत । (कॉस्ट)
वि० [सं०] जो परिव्यय
से लिया या किसी को
। (चार्जेबुल)
[सं०] १. इधर-उधर
। ३. संसार से विरक्त
तरह जीवन बिताना ।
पुं० [सं०] १. सदा भ्रमण
संन्यासी । २. संन्यासी ।
।
[सं०] कुछ पशुओं और
निष्क्रिय अवस्था जिसमें
बिना कुछ खाये-पीये चुप-
रहते हैं । (हाइबरनेशन)
[सं०] रचा हुआ ।
पुस्तक, लेख आदि का वह

अन्तिम भाग जिसमें वे आवश्यक या उपयोगी बातें रहती हैं जो पहले अपने स्थान पर न आ सकी हों।(एपेंडिक्स) २.अनुसूची। (शेड्यूल)

परिशीलन-पुं० [सं०] [वि० परिशीलिता] खूब सोचते-समझते हुए पढ़ना। मनन-पूर्वक किया जानेवाला अध्ययन।

परिशुद्ध-वि० [सं०] [भाव० परिशुद्धता] बिल्कुल ठीक और पूरा। जिसमें कुछ भी कमी-बेशी या भूल आदि न हो। (एक्योरेट)

परिशोध(न)-पुं० [सं०] [वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित] १. पूरी तरह साफ या शुद्ध करना। २. लिया हुआ धन या ऋण चुकाना। (रि-पेमेन्ट) ३. किसी प्रकार का देन चुकाना। (डिस्चार्ज)

परिश्रम-पुं० [सं०] १. ऐसा काम जिसे करते करते थकावट आने लगे। आयास। श्रम। मेहनत। (लेबर) २. थकावट।

परिश्रमी-वि० [सं० परिश्रमिन्] बहुत परिश्रम करनेवाला। मेहनती।

परिश्रांत-वि० [सं०] थका हुआ।

परिषद्-स्त्री० [सं०] १. विद्वान् ब्राह्मणों की वह सर्व-मान्य सभा जो प्राचीन काल में राजा किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था। २. सभा। समाज। ३. चुने हुए या नियुक्त किये हुए सदस्यों की सभा। (काउन्सिल)

परिषद-पुं० [सं०] १. दे० 'परिषद्'। २. सदस्य। सभासद। ३. मुसाहब। ४. राज्य के मन्त्रियों या परामर्शदाताओं की वह सभा जिसकी सहायता से राज्य का सर्व-प्रधान अधिकारी (राष्ट्रपति, राज्यपाल, महा प्रशासक आदि) शासन सम्बन्धी सब कार्य करता है।

यौ०-स-परिषद (देखो)।

परिष्करण-पुं० [सं०] १. स्वच्छ या शुद्ध करना। २. दोष या त्रुटियाँ दूर करके ठीक करना। (मॉडिफिकेशन)

परिष्कार-पुं० [सं०] १. संस्कार। शुद्धि।

२ भूलें, त्रुटियाँ आदि दूर करके ठीक या अच्छा करने की क्रिया या भाव। परिष्करण। (मॉडिफिकेशन) ३. स्वच्छता। सफाई। ४. सजावट। सिंगार।

परिष्कृत-वि० [सं०] १. जिसका परिष्करण हुआ हो। २. सुधारा हुआ। ३. साफ या शुद्ध किया हुआ। ४. सँवारा या सजाया हुआ।

परिसंख्या-स्त्री०[सं०]१.गणना। गिनती। २. एक अर्थालंकार जिसमें कोई बात वैसी ही किसी दूसरी बात को व्यंग्य या वाच्य से वर्जित करने के अभिप्राय से कही जाती है। ३. साहित्य में एक अलंकार जिसमें साधारणतः कुछ स्थानों में पाई जानेवाली बातों के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि अब वे वहाँ नहीं रह गईं, केवल अमुक एक जगह में रह गई हैं। जैसे—राम-राज्य की प्रशंसा करते समय यह कहना कि उसमें कुटिलता और कहीं नहीं रह गई थी, केवल स्त्रियों के नयनों में दिखाई देती थी।

परिसंख्यान-पुं० दे० 'अनुसूची'।

परिसंघ-पुं० [सं०] राज्यों, राष्ट्रों, संघों आदि का ऐसा संघटन जो एक दूसरे की सहायता करने और कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए सबको एक में रखने के लिए होता है। (कॉनफेडरेशन)

परिसंपद्-स्त्री० [सं०] वह पूँजी जो सम्पत्ति आदि के रूप में हो; अथवा वह धन जो कारबार में लगा हो और जल्दी डूबनेवाला न हो। (एसेट्स)

परिसमाप्ति-स्त्री० [सं०] [वि० परिसमाप्त] किसी चलते हुए काम का समाप्त या पूरा होना। (टर्मिनेशन)

परिसर-पुं०[सं०] १.आस-पास की जमीन। २. मैदान। ३. पड़ोस। ४. स्थिति।

परिसिद्धक-पुं० [सं०] अपराधियों में से वह जो सरकार की ओर मिल गया हो और उसका साक्षी बनकर दूसरे अपराधियों का अपराध सिद्ध या प्रमाणित करने में सहायता दे। सरकारी गवाह। (एप्रू

परिसिद्धि-स्त्री० [सं०] [वि० परि अपराधियों में से किसी का सरकार की मिलकर और उसका गवाह बनकर अपराधियों के अपराध सिद्ध करना।

परिसीमन-पुं० [सं०] किसी प्रदेश स्थान की सीमा निश्चित या स्थिर हद बाँधना। (डेलिमिटेशन)

परिसीमा-स्त्री० [सं० परि+सीमा] विषय या बात की अन्तिम या चरम (एक्स्ट्रीम)

परिसीमित-वि० [सं०] १. सीमा निश्चित कर दी गई हो। २. (व्यापार या व्यवसाय) जिसकी हिस्सेदारी आदि कुछ विशिष्ट नियम सीमाओं के अन्दर रखी गई हो। (लिमि

परिसेवन(सेवा)-स्त्री० दे० 'सेवा'।

परिसोधना*-स० [सं० परिशो अच्छी तरह साफ, शुद्ध या ठीक कर

परिस्तान-पुं० [फा०] १. परि कल्पित देश। २. वह स्थान मनुष्यों विशेषतः स्त्रियों का जमघट हो

परिस्थिति-स्त्री० [सं०] किसी कार्य आदि के आस-पास या चारो वास्तविक या तर्क-संगत स्थिति या वे बातें या अवस्थाएँ जो किसी घटना के चारो ओर होती या (सर्कम्स्टैंसेज)

परिस्फुट-वि० [सं०] १. अत्यंत २. व्यक्त। प्रकाशित। ३. खूब मिला

परिहँस*-पुं० [सं० परिहास] १. को तुच्छ समझकर उसकी हँसी उ २. ईर्ष्या। डाह।

परिहरण-पुं० [सं०] [वि० परिह परिहृत, क्रि० *परिहरना] १. जबरद बलपूर्वक लेना। छीन लेना। २. परि छोड़ना। ३.दोष, अनिष्ट आदि दूर कर

[सं० परिहरण] १.
। २.दूर करना । हटाना ।
[सं० परिहास] १. हँसी-
। २. नाम-हँसाई । उपहास ।
के भय से मन में होने-
देर ।
= प्रहार करना ।
[सं०] [वि० परिहारक,
अनिष्ट आदि दूर करना ।
करने का उपाय । उपचार ।
छोड़ना । ४. युद्ध में जीता
धन आदि । (लूटी) ५. कर
माफी । छूट ।
दे० 'परिहरना' ।
[सं०] जिसका परिहार हो
जाना उचित हो ।
[सं०] १. हँसी । दिल्लगी ।
। ३. निन्दा । उपहास ।
[फा०] १. फारस की अनुश्रुति
पर्वत पर बसनेवाली परों
परम सुन्दर स्त्रियाँ । २.
स्त्री ।
[सं०] [स्त्री० परीक्षिका]
करता या लेता हो । इम्त-
लेनेवाला । (इग्ज़ामिनर)
[सं०] १. परीक्षा लेने, परख-
करने का काम । २. किसी
की इस बात की जाँच कि
से काम निकल सकता है या
होना चाहिए, वैसा है या
प्रोबेशन) ३.दे० 'परीक्षा' ।
वि० [सं०] १. परीक्षण
का । २.वह (कर्मचारी)
के लिए पहले अस्थायी रूप
हो । (प्रोबेशनरी)
[सं०] १. योग्यता, विशेषता,
आदि जानने के लिए अच्छी
या परखने की क्रिया या

भाव । समीक्षा । इम्तहान । (इग्जामिनेशन) २. वह प्रयोग जो किसी वस्तु के गुण-दोष आदि का अनुभव करने के लिए हो । आजमाइश । (एक्सपेरिमेन्ट) ३.वह प्रक्रिया जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का पता लगाते थे । दिव्य । ४. जाँच-पड़ताल । देख-भाल ।

परीक्षालय–पुं० [सं० परीक्षा + आलय] वह कमरा या भवन जिसमें किसी प्रकार की परीक्षा ली जाती है । (इग्जामिनेशन रूम या हॉल)

परीक्षित–वि० [सं०] जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो या हो चुकी हो ।
पुं० अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, एक प्रसिद्ध राजा ।

परीक्षिती–पुं० [सं० परीक्षित] वह जो परीक्षा देने को हो या जिसकी परीक्षा ली जाय । परीक्षा देनेवाला । (एग्जामिनी)

परीक्ष्य–वि०[सं०] जिसकी परीक्षा लेनी हो ।

परीख*–स्त्री० १.दे०'परख'। २.दे०'परीक्षा'।

परीखना*–स० = परखना ।

परीछत*–पुं० = परीक्षित ।

परीछा*–स्त्री० = परीक्षा ।

परीत*–पुं० = प्रेत ।

परीसना*–स० = स्पर्श करना ।

परु*–क्रि० वि० [सं० परश्व] परसों ।
क्रि० वि० [हिं० पर] १. बीता हुआ पिछला वर्ष । परसाल । २.आनेवाला वर्ष । परसाल ।

परुख*–वि०[भाव० परुखाई] दे० 'परुष' ।

परुष–वि० [सं०] [स्त्री० परुषा, भाव० परुषता] १. कठोर । कड़ा । २. कटु । अप्रिय । (वचन आदि) ३.निष्ठुर । निर्दय ।

परुषा–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह वृत्ति या शब्द-योजना जिसमें टवर्गीय, द्वित्व और संयुक्त वर्ण, रेफ और श, ष आदि कठोर वर्ण तथा लम्बे लम्बे समास आते और रचना में ओज गुण उत्पन्न होता है । यह वीर रस के लिए उपयुक्त होती है ।

परूसना*-स० दे० 'परोसना'।

परे-अव्य०[सं०पर] १.उस ओर। उधर।२. दूर। अलग। ३ ऊपर। ४. आगे। बाद।

परेखना*-स० = परखना।
अ० [सं० प्रतीक्षा] प्रतीक्षा करना। राह देखना।
अ० [?] पश्चात्ताप करना। पछताना।

परेखा*-पुं० [सं० परीक्षा] १. परीक्षा। जाँच। २. विश्वास। प्रतीत।
पुं० = प्रतीक्षा।
पुं० [?] १. पश्चात्ताप। पछतावा। २. चिन्ता। फिक्र।

परेग-स्त्री० [अं० पेग] छोटी कील। कँटिया।

परेड-स्त्री० [अं०] सैनिकों की कवायद।

परेता-पुं० [सं० परितः] १. तीलियों का बना हुआ वह उपकरण जिसपर जुलाहे सूत लपेटते हैं। २. वह उपकरण जिसपर पतंग उड़ाने की डोर लपेटी जाती है।

परेवा-पुं० [सं० पारावत] [स्त्री० परेई] १. पंडुक पक्षी। पेंडुकी। २. कबूतर।
*पुं० दे० 'पत्रवाहक'।

परेशान-वि० [फा०] [भाव० परेशानी] व्यग्र। आकुल। उद्विग्न।

परों*-वि० दे० 'परसों'।

परो*-अव्य दे० 'परे'।

परोक्ष-पुं० [सं०] १. अनुपस्थिति। गैर-हाजिरी। २. अभाव। ३. आड़। ओट।
वि० [सं०] १. जो सामने या प्रत्यक्ष न हो। आँखों से ओझल। २. जो सीधी और साफ तरह से या सामने न होकर घुमाव-फिराव से या दूसरे द्वार से हो। अप्रत्यक्ष। (इन्-डाइरेक्ट)

परोक्ष-कर-पुं०[सं०] वह कर जो किसी को, विशेषतः उपभोक्ता को स्वयं प्रत्यक्ष रूप से नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से दूसरे के द्वारा देना पड़े। जैसे-प्रातिभागिक शुल्क और आयात-निर्यात कर। (इन्-डाइरेक्ट टैक्स)

परोजन*-पुं० [सं० प्रयोजन] १. गृहस्थी से सम्बन्ध रखनेवाला कोई काम जिसमें सम्बन्धियों और इष्ट-मि की उपस्थिति आवश्यक हो। २. दे० 'प्रयोजन'।

परोना-स० दे० 'पिरोना'।

परोपकार-पुं० [सं०] [वि० परोपकारी भाव० परोपकारिता] दूसरों की भलाई उपकार का काम।

परोपकारवाद-पुं० दे० 'परार्थवाद'।

परोपकारी-पुं० [सं० परोपकारिन्] [स्त्री० परोपकारिणी] दूसरों का उप या भलाई करनेवाला।

परोरना†-स० [?] मंत्र पढ़कर फूँकना।

परोल-पुं० दे० 'पेरोल'।

परोसना-स० [सं० परिवेषण] खि के लिए भोजन की सामग्री ला-लाकर खा वाले के सामने रखना।

परोसा-पुं० [हिं० परोसना] वह भो जो किसी के घर भेजा जाता है।

परोहन†-पुं० [सं० प्ररोहण] वह जिसपर कोई सवार हो, या कुछ लादा जा

परौठा-पुं० दे० 'पराँठा'।

पर्जंक*-पुं० दे० 'पर्यंक'।

पर्जन्य-पुं० [सं०] बादल। मेघ।

पर्ण-पुं० [सं०] १. पेड़ का पत्ता। प २. पुस्तक, पंजी आदि का कोई ३. कागज का वह टुकड़ा या परत जि वैसा ही दूसरा टुकड़ा या परत प्रति रूप में काटकर अलग करते हैं। (फॉ

पर्णकुटी(शाला)-स्त्री० [सं०] झोंपड़ी।

पर्पटी-स्त्री० [सं०] १. गोपी-चंदन। २ पपड़ी। ३. स्वर्ण-पर्पटी नामक औषध।

पर्यंक-पुं०-[सं०] पलंग। बड़ी खाट।

पर्यंत-अव्य० [सं०] तक।

पर्यंत-रेखा-स्त्री० [सं०] रेखाओं का समूह जो किसी वस्तु की सीमाएँ बतला हो। रूप-रेखा। खाका।

समानार्थक। (सिनॉनिमस, ईक्वेलेन्ट)

पर्यायोक्ति–स्त्री॰ [सं॰] साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई बात सीधी तरह से न कहकर कुछ घुमाव फिराव से पर अधिक चमत्कारिक और विलक्षण रूप से कही जाती है। जैसे—नायक से बिछुड़ने के समय रोती हुई नायिका का अपने आसुओं से यह कहना कि जरा ठहरो, और मेरे प्राण भी अपने साथ लेते जाओ।

पर्यालोकन–पुं॰ = पर्यालोचन।

पर्यालोचन–पुं॰ [सं॰] १. किसी वस्तु के गुण-दोष या सब अंगों के स्थूल स्वरूप जानने के लिए उसे अच्छी तरह से देखना। (सर्वे) २. दे॰ 'समीक्षा'।

पर्यालोचना–स्त्री॰ = पर्यालोचन।

पर्युपासन–पुं॰ [सं॰] सेवा।

पर्व–पुं॰ [सं॰ पर्वन्] १. धर्म-कार्य या उत्सव आदि करने का समय। पुण्य-काल। २. चातुर्मास्य। ३. अवसर। ४. बड़ा उत्सव। ५. ग्रन्थ का विभाग या खंड।

पर्वणी–स्त्री॰ [सं॰] पूर्णिमा।

पर्वत–पुं॰ [सं॰] १. पहाड़। २. दश-नामी संन्यासियों का एक भेद।

पर्वत-माला–स्त्री॰[सं॰] एक सीध में बहुत दूर तक चले-चलनेवाले पर्वत या पहाड़।(रेंज)

पर्वतराज–पुं॰ [सं॰] १. बहुत बड़ा पहाड़। २. पर्वतों का राजा, हिमालय।

पर्वतारि–पुं॰ [सं॰ पर्वत + अरि] इन्द्र।

पर्वतीय–वि॰ [सं॰] १. पहाड़ी। पहाड़-सम्बन्धी। २.पहाड़ पर रहने या होनेवाला।

पर्वरिश–स्त्री॰ [फा॰] पालन-पोषण।

पर्हेज–पुं॰ दे॰ 'परहेज'।

पलंका+–स्त्री॰ [हिं॰ लंका का अनु॰] लंका से भी आगे और दूर स्थान। उदा॰—लंका छोड़ पलंका जाय।—कहा॰। पुं॰ दे॰ 'पलंग'।

पलंग–पुं॰ [सं॰ पल्यंक] [स्त्री॰ अल्पा॰ पलँगड़ी] बड़ी चारपाई। पर्यंक।

पलँगड़ी–स्त्री० [हिं० पलंग] छोटा पलंग।

पल–पुं० [सं०] १. समय का एक सूक्ष्म विभाग जो २४ सेकेंड के बराबर होता है। २.तराजू। तुला। ३.एक पुरानी तौल या मान। पुं० [सं० पलक] आँख की पलक।

मुहा०-पल-मारते = तुरंत।

पलक–स्त्री० [सं० पल+क] आँख के ऊपर का चमड़े का परदा जिसके गिरने से वह बंद होती है।

मुहा०-पलक झपकते = बहुत थोड़े समय में। ***पलक पाना** = पलक झपकाना। **पलकें बिछाना** = (क) किसी का प्रेमपूर्वक स्वागत करना। (ख) उत्कंठा के साथ प्रतीक्षा करना। **पलक मारना** = आँखों से संकेत करना। **पलक लगना** = नींद आना। झपकी लगना। **पलक से पलक न लगना** = नींद न आना।

पलका*–पुं० १.दे०'पलंग'। २.दे०'पल्ला'।

पलटन–स्त्री० [अं० प्लैटून] १. सेना। २. सैनिकों का दल। ३. समुदाय। झुंड।

पलटना-अ० [सं० प्रलोठन] १. उलट जाना। २. अवस्था या दशा बदलना। ३. स्वरूप बिलकुल बदल जाना। पहला रूप न रहना और उसकी जगह दूसरा रूप प्राप्त होना। ४. लौटना। वापस होना। स० १. उलटा या औंधा करना। २. अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत दशा में लाना। उलटना। ३. बार बार उलटना। फेरना। ४. पहले की अवस्था या रूप बदलकर नई अवस्था या रूप में लाना। बदलना। ५. एक बात से मुकरकर दूसरी बात कहना। *६. लौटाना। वापस करना। फेरना।

पलटनिया-पुं० [हिं० पलटन] पलटन का सिपाही। सैनिक।

पलटा-पुं० [हिं० पलटना] १. पलटने की क्रिया या भाव। विपरीत दिशा में होनेवाला परिवर्त्तन।

मुहा०-पलटा खाना = दशा का
बदल जाना।

२. बदला। प्रतिफल। ३. गाने में
आरोही स्वरों के बाद थोड़े से
जल्दी जल्दी हेर-फेरकर अवरोही
उच्चारण करना।

पलटाना-स० [हिं० पलटना] १.
२. लौटाना। ३. बदलना। (स्त्र०)
*अ० दे० 'पलटना'।

पलटाव-पुं० [हिं० पलटा]
उलटे जाने की क्रिया या भाव।

पलटे+–क्रि० वि० [हिं० पलटा]

पलड़ा+–पुं० [सं० पलल] १.
पल्ला। २. विरोधियों में से कोई पक्ष

पलथी–स्त्री० [सं० पर्यस्त]
का पंजा बाईं पिंडली के और बाएँ
पंजा दाहिनी पिंडली के नीचे दबा
की स्थिति या मुद्रा।

पलना–अ० [सं० पालन] १.
जाना। २. खा-पीकर हृष्ट-पुष्ट होना
*पुं० दे० 'पालना'।

पलनाना*–स० दे० 'पलानना'।

पलवा*–पुं० [सं० पल्लव] अंड

पलस्तर–पुं० [अं० प्लास्टर]
आदि पर लगाया जानेवाला चूने
के गारे का मोटा लेप।

मुहा०-पलस्तर ढीला हो
बिगड़ना = परिश्रम, हानि आदि
शिथिल होना। मन्द या सुस्त पड़
२. शरीर के रुग्ण अंग पर ल
वाला औषध का मोटा लेप। (

पलहना*–अ० दे० 'पलुहना'।

पलहा*–पुं० [सं० पल्लव] कोंप

पला–पुं० १. दे० 'पल्ला'। २. दे०

पलान–पुं० [सं० पल्याण,
पलाम] लादने या चढ़ने के लि
आदि की पीठ पर कसी जाने
चार-जामा। जीन।

होना* = घोड़े पर जीन

लान + ना (प्रत्य०)]
लान कसना । २. चलने
री करना ।

= भागना ।

[सं०] अपना पद, स्थान
छोड़कर या दंड के भय से
। (एब्सकांडर)

[सं०] [वि० पलायित]
क्रिया या भाव। भागना।
न, कार्य, पद या उत्तरदायित्व
दंड आदि से बचने के लिए
स्कांड)

[सं०] १. पलास या ढाक का
२. पत्र। पत्ता। ३. राक्षस।

[सं० पलाश] १. एक प्रसिद्ध
लाल फूल लगते हैं। ढाक।
२. एक मांसाहारी पक्षी।

र्स] जंबूरे की तरह का
औज़ार जिससे जड़े हुए काँटे
निकाले जाते हैं। (प्लायर्स)

[सं० पर्यंक] पलंग।

[सं० परिघ] बड़े बरतन में से
निकालने की एक प्रकार
ची।

पली जोड़ना = थोड़ा
इकट्ठा या जमा करना।

[फ़ा० फ़लीतः] [स्त्री०
] १. कोई मंत्र लिखकर
बत्ती की तरह लपेटा हुआ
या तोप की रंजक में
बत्ती। ३. कपड़ा लपेट-
जलाने की बत्ती।

[सं०] १. अपवित्र। २. नीच।

[हिं० पलना] पालतू।

[सं० पल्लवन] [स० पलु-
होना। हरा-भरा होना।

२. हीन दशा से निकलकर अच्छी दशा में आने लगना। पनपना।

पलुहाना*–स० [हिं० पलुहना] किसी को पल्लवित होने या पनपने में प्रवृत्त करना।
अ० दे० 'पलुहना'।

पलेड़ना*–स० = ढकेलना।

पलेथन—पुं० [सं० परिस्तरण] १. बेलने के समय आटे के पेड़े या लोई में लगाया जानेवाला सूखा आटा। परथन।
मुहा०–पलेथन निकालना = (क) खूब मारना। (ख) तंग करना।
२. हानि होने पर साथ में होनेवाला आवश्यक व्यय।

पलोटना–स० [सं० प्रलोठन] १. पैर दबाना। २. सेवा करना।
अ० [हिं० लोटना] तड़पते हुए इधर-उधर लोटना।

पलोवना*–स० दे० 'पलोटना'।

पलोसना*–स० [हिं० परसना] १. धोना। २. मीठी मीठी बातें करके फुसलाना।

पलौ*–पुं० = पल्लव।

पल्लव–पुं० [सं०] १. नये निकले हुए कोमल पत्ते। कोंपल। २. हाथ में पहनने का कड़ा या कंकण।

पल्लवग्राही–वि० [सं०] केवल ऊपर ऊपर से थोड़ा ज्ञान प्राप्त करनेवाला।

पल्लवन–पुं० [सं०] [वि० पल्लवित] १. (पौधों का) पल्लव उत्पन्न करना या निकालना। २. किसी बात या विषय का विस्तार करना।

पल्लवना*–अ० [सं० पल्लव] १. पल्लवित होना। पत्तों से युक्त होना। २. पनपना।

पल्लवित–वि० [सं०] १. नये पत्तों से युक्त। हरा-भरा। २. लंबा-चौड़ा। ३. जिसे रोमांच हुआ हो। कंटकित।

पल्ला–पुं० [सं० पटल] कपड़े का छोर या सिरा। आँचल।
मुहा०–पल्ला छूटना = पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। **पल्ला पसारना** =

याचना करना। माँगना। **पल्ले पड़ना** = प्राप्त होना। मिलना। **(अपने) पल्ले बाँधना** = कोई बात अपने मन में अच्छी तरह या ध्यानपूर्वक रखना। **(किसी के) पल्ले बाँधना** = जिम्मे लगाना।

पुं० [सं० पटल] १. दुपल्ली टोपी का आधा भाग। २. धोती, किवाड़ों आदि की जोड़ी में से कोई एक। ३. पहल। ४. दूरी।

पुं० [सं० पल] १. तराजू का पलड़ा। २. दो विरोधी पक्षों में से कोई एक।

मुहा०-पल्ला भारी होना = पक्ष बलवान् या प्रबल होना।

+वि० दे० 'परला'।

पल्ली-स्त्री० [सं०] छोटा गाँव।

पल्लू†-पुं० [हिं० पल्ला] १. आँचल। छोर। दामन। २. चौड़ी गोट। पट्टा।

पल्ले-अव्य० [हिं० पल्ला] १. अधिकार या पास में। २. गाँठ में।

पल्लेदार-पुं० [हिं० पल्ला + फा० दार] १. अनाज ढोनेवाला मजदूर। २. अनाज तौलनेवाला आदमी। बया।

वि० अपेक्षाकृत भारी या जोर का। जैसे- पल्लेदार आवाज = ऐसी ऊँची आवाज जो दूर तक सुनाई दे।

पवन-पुं० [सं०] १. वायु। हवा। (इस शब्द अथवा इसके वाचक दूसरे शब्दों में सुत, पुत्र, कुमार आदि शब्द लगने से उनका अर्थ 'हनुमान' होता है) २. वायु की वह अवस्था या रूप जब वह एक दिशा से दूसरी दिशा में बहती हो। चलती हुई हवा। हमारे यहाँ इसके ४९ भेद माने गये हैं, जिनके अलग अलग नाम हैं। (विंड) ३. श्वास। साँस। ४. प्राण-वायु।

*वि० दे० 'पावन'।

पवन-कुमार-पुं० [सं०] हनुमान्।

पवन-चक्की-स्त्री० [सं० पवन + हिं० चक्की] हवा के जोर से चलनेवाली चक्की। (विंड मिल)

पवन-सुत-पुं० [सं०] हनुमान्।

पवनी*-स्त्री० दे० 'पौनी'।

पवमान-पुं० [सं०] १. पवन। वा
हवा। २. गार्हपत्य अग्नि।
वि० पवित्र करनेवाला।

पवारना*-स० = फेंकना।

पवि-पुं० [सं०] १. वज्र। २. बि

पविताई*-स्त्री० = पवित्रता।

पवित्र-वि० [सं०] [भाव० पवित्र
जो गंदा या मैला न हो। निर्मल।

पवित्री-स्त्री० [सं० पवित्र] कर्मकांड
अनामिका में पहनने का कुश का छल्ला

पवित्रीकरण-पुं० [सं०] किसी
वस्तु को पवित्र या शुद्ध करना। शुद्धि

पशम-स्त्री० [फा०पश्म] १. बढ़िया
ऊन जिससे पशमीने आदि बनते हैं।
बहुत तुच्छ वस्तु।

पशमीना-पुं० [फा०] १. पशम।
पशम का बना हुआ बढ़िया कपड़ा।

पशु-पुं० [सं०] [भाव० पशुता
चार पैरों से चलनेवाला बड़ा
चौपाया। जानवर। (ऐनिमल) जैसे-
गौ, कुत्ता, हिरन आदि। २. गौ,
घोड़े आदि ऐसे जानवर जो पाले
और जिनका मनुष्यों के लिए विशेष
होता हो।

पशु-चर-पुं०[सं०] १. पशुओं के
घास आदि। २.पशुचर भूमि। (
पशु-चर भूमि-स्त्री० = गोचर-भूमि।

पशु-चिकित्सा-स्त्री० [सं०] [वि०
चिकित्सक] वह शास्त्र जिसमें
रोगों की चिकित्सा का वर्णन हो

पशु-चोर-पुं० १. वह जो दूसरों के
चुराता हो। २. दे० 'गोरू-चोर'।

पशुपतास्त्र-पुं० [सं०] महादेव का
या त्रिशूल नामक अस्त्र।

पशुपति-पुं० [सं०] शिव। महादेव।

पशु-पाल-पुं० [सं०] १. जो पशुओं का
पालन-पोषण करता हो। २. अहीर।

आदि की छाती के पंजर में की आड़ी और कुछ गोलाकार हड्डी।

मुहा०-पसली तोड़ना = बहुत मारना।

पसाई-स्त्री० [हिं० पसाना] (माँड़ आदि) पसाने की क्रिया या भाव।

†स्त्री० [सं० प्रसातिका, प्रा० पसाइआ] एक प्रकार की घास जो प्रायः तालों या जलाशयों में होती है।

पसाउ (ऊ)*-पुं० [सं० प्रसाद] १. कृपा। अनुग्रह। २. भेंट। उपहार। ३. प्रसन्नता। खुशी। ४. दे० 'प्रसाद'।

पसाना-स० [सं० प्रस्रावण] भात पक जाने पर उसमें से माँड़ या बचा हुआ पानी निकालना।

पसार-पुं० [सं० प्रसार] १. प्रसार। फैलाव। २. लंबाई-चौड़ाई। ३. दालान।

पसारना-स० [सं० प्रसारण] फैलाना।

पसारा-पुं० दे० 'पसार'।

पसाव-पुं० [हिं० पसाना] भात पसाने पर निकलनेवाला जल। माँड़। पीच।

पसाहन*-पुं० [सं० प्रसाधन] अंगराग।

पसित*-वि० [सं० पस्] बँधा हुआ।

पसीजना-अ० [सं० प्र+स्विद्] १. घन पदार्थ में से द्रव अंश का रस-रसकर बाहर निकलना। रसना। २. पसीने से तर होना। ३. मन में दया आना।

पसीना-पुं० [सं० प्रस्वेदन] परिश्रम अथवा गरमी के कारण शरीर से निकलनेवाला जल। प्रस्वेद। स्वेद।

पसेरी-स्त्री० [हिं० पाँच+सेर+ई (प्रत्य०)] पाँच सेर का मान या बाट। पंसेरी।

पसेव-पुं० [सं० प्रस्राव] १. किसी चीज के पसीजने पर उसमें निकलनेवाला तरल पदार्थ। २. दे० 'पसाव'।

*पुं० [सं० प्रस्वेद] पसीना। स्वेद।

पसोपेश-पुं० [फा० पस व पेश] आगा-पीछा। असमंजस। दुविधा। सोच-विचार।

पस्त-वि० [फा०] १. हिम्मत हारा हुआ।

२. थका हुआ।

पहँ*–अव्य० [सं० पार्श्व] १. निकट। पास। २. से।

पह*–स्त्री० दे० 'पौ'।

पहचान–स्त्री० [सं० प्रत्यभिज्ञान] १. पहचानने की क्रिया या भाव। २. किसी का गुण, मूल्य या योग्यता जानने की क्रिया, भाव या योग्यता। परख। ३. लक्षण। चिह्न। ४. किसी को देखकर यह बतलाना कि यह वही है। (आइडेन्टिफिकेशन) ५. जान-पहचान। परिचय।

पहचानना–स० [हिं० पहचान] [प्रे० पहचनवाना] १. देखकर जान लेना कि यह कौन या क्या है। २. किसी वस्तु के रूप-रंग से परिचित होना। ३. अंतर समझना या करना। (डिस्टिंग्विश) ४ योग्यता या विशेषता को जानना।

पहन*–पुं० दे० 'पाहन'।

पहनना–स० [सं० परिधान] [भाव० पहनाई] वस्त्र, आभूषण आदि शरीर पर धारण करना। परिधान करना।

पहनाना–स० [हिं०पहनना] १. किसी को कपड़े, गहने आदि पहनने में प्रवृत्त करना। धारण कराना।

पहनावा–पुं०[हिं०पहनना]१.पहनने के मुख्य कपड़े। परिच्छद। पोशाक। (ड्रेस) २.विशेष स्थान अथवा समाज में पहने जानेवाले कपड़े।

पहपट–स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का स्त्रियों का गीत। २. शोर-गुल। हल्ला। ३. झगड़ा। तकरार।

पहर–पुं० [सं० प्रहर] पूरे दिन रात का आठवाँ भाग। तीन घंटों का समय।

पहरना†–स० = पहनना।

पहरा–पुं० [हिं० पहर] १. किसी वस्तु या व्यक्ति की देख-रेख या रक्षा आदि के लिए अथवा उसे निर्दिष्ट स्थान से हटने से रोकने के लिए आदमियों की नियुक्ति। रक्षा का प्रबंध। चौकसी। चौकी।

मुहा०–पहरा देना = रखवाली **पहरा बदलना** = पुराने के स्थान नया रक्षक नियुक्त करना या होना। २. रखवाली। ३. रक्षा-कार्य का समय। ४. एक समय या बार में रक्षा के नियुक्त व्यक्ति या दल। ५. चौकी गश्त या फेरा। *६. समय। युग।

पहरादूत*–पुं० दे० 'पहरेदार'।

पहराना†–स० = पहनाना।

पहरावन–पुं० [हिं० पहराना] १. पोशाक। २. दे० 'पहरावनी'।

पहरावनी–स्त्री० [हिं० पहराना] के वे सब कपड़े जो कोई बड़ा देता है। खिलअत।

पहरी–पुं० [सं० प्रहरी] पहरेदार।

पहरुआ(रू)†–पुं० दे० 'पहरेदार'।

पहरेदार–पुं० [हिं० पहरा + दार ([भाव०पहरेदारी] पहरा देनेवाला। चौ

पहल–पुं० [फा० पहलू, मि० सं० १. घन पदार्थ के सिरों अथवा बीच की सम भूमि। २. बगल। ३. पृष्ठ। सतह। ४. जमी हुई रुई ऊन का टुकड़ा।

पुं० [सं० पटल] तह। परत।

पुं० [हिं० पहला] किसी कार्य ओर से आरंभ। छेड़। (इनी

पहलवान–पुं० [पह्लवी पह्लवान (राजा) से फा०] [भाव० पहल कुश्ती लड़नेवाला पुरुष। मल्ल। २. और हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति।

पहला–वि० [सं० प्रथम] [स्त्री० १. गिनती आदि में एक के स्थान पर वाला। क्रम के विचार से आरंभ प्रथम। २. जो कुछ दिन पहले हो हो। पहलेवाला। (फॉर्मर)

पहलू–पुं० [फा०] १. करवट। गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु भिन्न-भिन्न अंग। पक्ष। (एस्पेक्ट)

पहला] १. आरंभ
प्रथम । २. स्थिति
प्रथम । ३. पुराने
आगे । (फॉर्मरली)
[हिं॰ पहले] सबसे
।
[हिं॰ पहला + औठा
स्त्री॰ पहलौठी] किसी स्त्री
पहल उत्पन्न (लड़का) ।
[हिं॰ पहलौठा] पहले-
। प्रथम प्रसव ।
[?] तेज करना ।
पाषाण] [स्त्री॰ अल्पा॰
भूमि का बहुत ऊँचा ऊबड़-
प्रायः पथरीला प्राकृतिक
।
ड़ टूटना = अचानक भारी
पड़ना । **पहाड़ से टक्कर**
बलवान् से भिड़ना ।
। बड़ा ढेर । ३. बहुत भारी
कठिन कार्य ।
ड़ उठाना = भारी काम
देना ।
और भारी ।
[सं॰ प्रस्तार] किसी अंक के
क्रमागत सूची जो बच्चे याद
सूची ।
[हिं॰ पहाड़ + ई (प्रत्य॰)]
रहने या होनेवाला । पहाड़
जिसमें पहाड़ हों । जैसे—
।
पहाड़] १. छोटा पहाड़ । २.
में एक विशेष प्रकार की शैली
कांगड़े और उसके आस-पास
थी ।
पुं॰ दे॰ 'पहरेदार' ।
= पहचान ।
[सं॰ पहित] खाने के लिए

पकाई हुई दाल ।

पहिना–स्त्री॰ [सं॰ पाठीन] एक प्रकार की मछली ।

पहियाँ*–अव्य॰ दे॰ 'पहँ' ।

पहिया–पुं॰ [सं॰ पथ्य (पथ-संबंधी), प्रा॰ पह्य से पहिय] गाड़ी अथवा कल में लगा हुआ वह चक्कर जिसके धुरी पर घूमने से गाड़ी या कल चलती है । चक्का । चक्र ।

पहिरना†–स॰ = पहनना ।

पहिराना–स॰ = पहनाना ।

पहिला–वि॰ = पहला ।

पहीति*–स्त्री॰ दे॰ 'पहिती' ।

पहुँच–स्त्री॰ [सं॰ प्रभूत] १. पहुँचने की क्रिया या भाव । २. किसी स्थान या बात तक पहुँचने की शक्ति या सामर्थ्य । गति । पैठ । प्रवेश । (ऐक्सेस) ३. किसी व्यक्ति या वस्तु के कहीं पहुँचने की सूचना । ४. कोई बात अच्छी तरह समझने की शक्ति । पकड़ । ५. अभिज्ञता की सीमा । ज्ञान की सीमा । जानकारी की हद ।

पहुँचना–अ॰ [सं॰ प्रभूत] १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत होना । **मुहा॰–पहुँचा हुआ** = (क) ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ । सिद्ध । (ख) किसी बात का अच्छा जानकार । २. किसी स्थान तक फैलना । ३. एक दशा या रूप से दूसरी दशा या रूप में जाना । ४. प्रविष्ट होना । घुसना । पैठना । ५. अभिप्राय या आशय समझना । ६. भेजी हुई चीज का पानेवाले को मिलना । ७. बढ़कर किसी के बराबर या तुल्य होना ।

पहुँचा–पुं॰ [सं॰ प्रकोष्ठ] कुहनी के नीचे का भाग । कलाई । मणिबन्ध ।

पहुँचाना–स॰ [हिं॰ 'पहुँचना' का स॰] १. ऐसा करना कि कोई वस्तु या व्यक्ति एक स्थान या अवस्था से दूसरे स्थान या अवस्था में चला या हो जाय । २. किसी के साथ किसी स्थान तक इसलिए जान

कि रास्ते में उसपर कोई संकट न आने पावे। ३.प्रविष्ट करना। ४.कोई चीज किसी के पास ले जाना। ५.किसी के समान बना देना।

पहुँची–स्त्री० [हिं० पहुँचा] १. कलाई पर पहनने का एक गहना। २. युद्ध में कलाई पर पहना जानेवाला एक आवरण।

पहुड़ना*–अ० १. दे० 'पौढ़ना'। २. दे० 'तैरना'।

पहुनाई–स्त्री० [हिं० पहुना + ई (प्रत्य०)] १. पाहुना होना। अतिथि के रूप में कहीं जाना। २. अतिथि-सत्कार। मेहमानदारी।

पहुप*–पुं० दे० 'पुष्प'।

पहुमी–स्त्री० = पृथ्वी।

पहुला†–पुं० [सं० प्रफुल्ल] एक प्रकार फूल किसी ने इसे सफेद गुलाब और किसी ने कोई माना है। उदा०–पहुला-हारु हियैं लसै, सन की बेंदी भाल।––बिहारी।

पहेटना†–स० [अनु०] १. कोई कठिन या परिश्रम का काम पूरा करना। २. अच्छी तरह या डटकर कोई चीज खाना।

पहेली–स्त्री० [सं० प्रहेलिका] १. किसी वस्तु या विषय का ऐसा गूढ़ वर्णन जिसके आधार पर उत्तर देने या उस वस्तु का नाम बताने में बहुत सोच-विचार करना पड़े। बुझौवल। २. ऐसी जटिल बात जो जल्दी किसी की समझ में न आवे। समस्या। घुमाव-फिराव की बात।

मुहा०–पहेली बुझाना = कोई बात इस प्रकार घुमा-फिराकर कहना कि जल्दी किसी की समझ में न आवे।

ह्लव–पुं० [सं०] १. प्राचीन पारसी या ईरानी। २. पारस देश का पुराना नाम।

ह्लवी–स्त्री० [फा० अथवा सं० पह्लव] प्राचीन पारसी और मध्य-कालीन पारसी के मध्यवर्ती काल की फारस या ईरान की भाषा जो वहाँ सासानी शासन-काल (ई० तीसरी से पाँचवी शती) तक प्रचलित थी। यह आर्य भाषाओं के परिवार की थी; और संस्कृत से कुछ मिलती जुलती थी।

पाँइ(उ)*–पुं० = पाँव।

पाँक–पुं० [सं० पंक] कीचड़।

पाँख†–पुं० [सं० पक्ष] पंख। पर। स्त्री० दे० 'पंखड़ी'।

पाँखी†–स्त्री० [सं० पक्षी] १. पतिंगा। २. पक्षी। चिड़िया।

पाँगुर(ा)*–वि० = पंगु या पंगुल।

पाँच–वि० [सं० पंच] चार और एक।

मुहा०–पाँचो उँगलियाँ घी में होना = खूब लाभ होना। **पाँचो सवारों में नाम लिखाना** = अनुचित रूप से बड़ों में अपनी भी गिनती कराना।

पुं० [सं० पंच] १. कुछ लोग। २. पंच या मुखिया लोग।

पांचजन्य–पुं० [सं०] १. कृष्ण के शंख का नाम। २. अग्नि। आग।

पांचाल–पुं० दे० 'पंचाल'।

वि० [सं०] पंचाल देश का।

पांचालिका–स्त्री० दे० 'पंचालिक'।

पांचाली–स्त्री० [सं०] १. गुड़िया। २. साहित्य में वाक्य-रचना की वह शैली जिसमें प्रायः य, र, ल, व, स, ह आते हैं और कहीं कहीं छोटे समास भी प्रयोग होता है। किसी किसी के मत से गौड़ी और वैदर्भी का सम्मिश्रण पांचाली है। ३. द्रौपदी।

पाँजना†–स० दे० 'झालना'।

पाँजर–पुं० [सं० पंजर] १. शरीर में बगल और कमर के बीच का भाग। २. पसली। ३. पार्श्व। बगल।

पांडव–पुं० [सं०] राजा पांडु के पाँचो पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

पांडित्य–पुं० [सं०] १. 'पंडित' होने का भाव। २. विद्वत्ता। पंडिताई।

पांडु–पुं० [सं०] [भाव० पांडुता] १. कुछ लाली लिये हुए पीला रंग। २. सफेद रंग। ३. एक रोग जिसमें शरीर का

है। पीलिया। ४.प्राचीन
। (युधिष्ठिर आदि पांडव
।)
] [भाव० पांडुरता] १.
।
[हिं०] १. पुस्तक, लेख
की लिखी हुई वह प्रति जो
)२.दे० 'पांडु-लेख'।
]लेख्य, विधान आदि का
काट-छाँट या घटाने बढ़ाने के
गया हो। मसौदा। (ड्राफ्ट)
[सं०] वह जो लेख्य आदि
लिखकर तैयार करता हो।
)
[सं०] लेख्य आदि की
का काम। (ड्राफ्टिंग)
दे० 'पांडु-लिपि'।
पंक्ति] १. पंक्ति। कतार।
भोजन करनेवाले लोग।
= पंथ (रास्ता)।
] १. पथिक। २. वियोगी।
दे० 'पाँव'।
[फा०] १. पाखानों आदि
बना हुआ पैर रखने का
पायजामे की मोहरी जिससे
है।
[हिं० पाँयँ + तल] पलंग या
ओरवाला भाग। पैंताना।
] प्राणियों का वह अंग जिसके
खड़े होते या जिससे वे चलते हैं।
किसी बात या काम में)
= दे० 'टाँग अड़ाना'।
मिट्टी निकल जाना =
सुनकर चकित या स्तब्ध
। (किसी के) **पाँव धरना** =
प्रणाम करना। (ख
विनय करना। **पाँव पखार-**
आदर करने के लिए

उसके पैर धोना। **पाँव पड़ना** = दे० 'पाँव धरना'। **पाँव पाँव चलना** = पैरों से या पैदल चलना। **पाँव फैलाना** = और अधिक पाने के लिए आग्रह या जिद करना। **पाँव रोकना**=प्रण या प्रतिज्ञा करना। **पाँव लगना** = दे० 'पाँव धारना'। शेष मुहावरों के लिए दे० 'पैर' के मुहावरे।

पाँवड़ा–पुं० [हिं० पाँव] १. वह बिछौना जो किसी बड़े या पूज्य आगंतुक के मार्ग में बिछाया जाता है। २. पैर पोंछने का बिछौना। पायंदाज।

पाँवड़ी–स्त्री०[हिं०पाँव]१.खड़ाऊँ। २.जूता।

पाँवर–वि० दे० 'पामर'।

पाँवरी–स्त्री० [हिं० पौरि] १. ड्योढ़ी। २. दालान। ३. दे० 'पाँवड़ी'।

पाँस–स्त्री० [सं० पांशु] [क्रि० पाँसना] १. खेत में डाली जानेवाली खाद। २.किसी वस्तु को सड़ाकर उठाया हुआ खमीर।

पाँसा–पुं० दे० 'पासा'।

पाँसुरी†–स्त्री० दे० 'पसली'।

पाँही*–अव्य० दे० 'पहँ'।

पा–पुं० [सं० पाद से फा०] पैर। पाँव।

पाइ*–पुं० [सं० पाद] पैर। पाँव।

पाइक*–पुं० दे० 'पायक'।

पाइट–स्त्री० दे० 'आड़' ३.।

पाइतरी*–स्त्री० दे० 'पाँयँता'।

पाइप–पुं० [अं०] किसी प्रकार का नल, जिसके अन्दर से होकर कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह जाती हो। जैसे–पानी का पाइप, गैस का पाइप आदि

पाइल*–स्त्री० = पायल।

पाई–स्त्री० [सं० पाद, हिं० पाय] १. पैर। पाँव। २. घेरा बाँधकर नाचने या चलने की क्रिया। चक्कर। घूमना। ३. पैसे के तिहाई मूल्य का एक छोटा सिक्का। ४. किसी अंक के आगे $\frac{1}{4}$ का मान प्रकट करनेवाली सीधी खड़ी रेखा। जैसे–२। अर्थात् सवा दो। ५. पतली छड़ियों या बेंतों का

बना हुआ जुलाहों का एक ढाँचा जिसपर ताने के सूत फैलाकर माँजे जाते हैं।

मुहा०–ताना-पाई करना = बार-बार इधर-उधर आना-जाना।

६. पिंगल में दीर्घ-स्वर की सूचक मात्रा। ७. लेख में पूर्ण विराम की सूचक खड़ी रेखा।

स्त्री० [हिं० पापा = कीड़ा] धान आदि में लगनेवाला एक छोटा लम्बा कीड़ा।

स्त्री० [अं०] १. ढेर के रूप में मिले हुए छापे के अक्षर या टाइप। २. छापे के वे टूटे फूटे अक्षर जो बिलकुल खराब हो गये हों।

पाउँ*–पुं० = पाँव।

पाउंड–पुं० [अं०] १. एक प्रकार की अँगरेजी तौल जो आध सेर से कुछ कम होती है। २. एक प्रकार का सोने का अँगरेजी सिक्का।

पद–पाउंड-पावना। (देखें)

पाउंड-पावना–पुं० [अं० पाउंड + हिं० पावना] इंगलैंड से किसी देश के पावने या लेने की वह रकम जो पाउंडों के रूप में होती है। पाउंडों के रूप में प्राप्य धन। (स्टर्लिंग बैलेन्स)

पाउक-पुं० = पावक।

पाउडर–पुं० [अं०] १. चूर्ण। बुकनी। २. वर्ण का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए चेहरे या शरीर पर लगाने का एक प्रसिद्ध चूर्ण।

पाक–पुं० [सं०] १. पकने या पकाने की क्रिया या भाव। २. रसोई। ३. पकवान। ४. चासनी में मिलाकर बनाया हुआ औषध। ५. भोजन पचने की क्रिया। पाचन। ६. श्राद्ध में पिंडदान के लिए पकाई हुई खीर या भात।

वि० [फा०] १. पवित्र। शुद्ध। २. पाप-रहित। ३. निर्दोष। ४. समाप्त।

मुहा०–झगड़ा पाक करना = (क) कोई बड़ा कार्य समाप्त करना। (ख) बाधा दूर करना। (ग) मार डालना।

५. निर्मल। शुद्ध। साफ।

पुं० [फा० पाकिस्तान] पाकिस्तान का संक्षि०। जैसे–भारत-पाक समझौता।

पाकना*–अ० = पकना।

पाकर–पुं० [सं० पर्कटी] [अल्पा० पा

एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

पाकशाला–स्त्री० [सं०] रसोई-घर।

पाकशासन-पुं० [सं०] इन्द्र।

पाक-शास्त्र–पुं० [सं०] वह शास्त्र

तरह तरह के खाद्य-पदार्थ या व्यंजन ब

प्रक्रियाओं या कला का विवेचन होता

पाकस्थली–स्त्री० दे० 'पक्वाशय'।

पाकिस्तान–पुं० [फा०][वि० पाकि

भारत के कुछ अंशों को अलग

बनाया हुआ वह नया मुसलमानी

जिसमें पश्चिम की ओर सिन्ध,

पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्त औ

की ओर केवल पूर्वी बंगाल है।

पाकिस्तानी–वि० [फा०] पाकि

सम्बन्धी। पाकिस्तान का।

पाकेट–पुं० [अं०] जेब। खीसा।

यौ०–पाकेट-मार = गिरह-कट।

पाक्षिक–वि० [सं०] १. एक

पन्द्रह दिनों का या उनसे सम्बन्ध रखने

२. हर पक्ष में या पन्द्रह दिनों पर प्र

होनेवाला (पत्र)। (फोर्टनाइटली)

पाखंड–पुं० [सं० पाषंड] १. वेद

आचरण। २. ढोंग। आडम्बर। ३.

धोखा। ४. धूर्त्तता। चालाकी।

मुहा०–पाखंड फैलाना = कि

ठगने के लिए आडंबर या उपाय र

पाखंडी–वि० [सं० पाषंडिन्] १.

धार्मिकता या सत्य-शीलता दिखाने

ढोंगी। २. धोखेबाज। धूर्त्त।

पाख–पुं० [सं० पक्ष] १. पंद्रह दि

पखवाड़ा। २. कच्चे मकानों की चौड़ा

दीवारों के वे ऊँचे भाग जिनपर बँड़ेर

है। ३. पंख। पर।

पाखर–स्त्री० [सं० प्रखर] युद्ध में

घोड़ों पर डाली जानेवाली लोहे की झू

] १. सोना । २.

] १. मल त्याग करने
निश्चित स्थान । शौच·

ड़ी'।

] शीरे या चाशनी
ना या लपेटना ।
[स्त्री॰ पगली, पागलिनी,
] १. जिसके मस्तिष्क में
हो । जिसके दिमाग ने ठीक
करना छोड़ दिया हो ।
। (ल्यूनैटिक) २. क्रोध,
आपे से बाहर । ३.

[हिं॰ पागल + फा॰
जहाँ चिकित्सा के लिए
हैं ।
[हिं॰ पागल] १. वह
जिसमें मनुष्य की बुद्धि बेकाम
उन्माद । विक्षिप्तता । २.
मूर्खतापूर्ण आचरण ।
दे॰ 'जुगाली'।
[सं॰] पचाने या पकानेवाला ।
१. पाचन-शक्ति बढ़ानेवाली
स्त्री॰ पाचिका] रसोइया ।
] १. पचाना या पकाना ।
पचने या हजम होने की
औषध । ४. खट्टा रस ।
पचाने की शक्ति । अग्नि ।
(पदार्थ)।
स्त्री॰ [सं॰] वह शक्ति
है । हाजमा ।
१. दे॰ 'पचाना' । २. दे॰
= बादशाह ।
पचाने या पकाने योग्य ।

पाछ–स्त्री॰ [हिं॰ पाछना] रक्त, रस आदि निकालने के लिए जंतु या पौधे के शरीर पर छुरी आदि से किया हुआ हलका घाव ।
+पुं॰ [सं॰ पश्चात्] पीछा ।
वि॰, क्रि॰ वि॰ पीछे ।

पाछना–स॰ [हिं॰ पंछा] रक्त या रस निकालने के लिए छुरे आदि से शरीर या पौधे पर हलका घाव करना ।

पाछा*–पुं॰ = पीछा ।

पाछिल*–वि॰ = पिछला ।

पाछे*–क्रि॰ वि॰ = पीछे ।

पाज†–पुं॰ [?] १. सेतु । पुल । २. आधार । जड़ । ३. ढेर । राशि ।
*पुं॰ दे॰ 'पाँजर' ।
स्त्री॰ दे॰ 'बाँध' ।

पाजामा–पुं॰ [फा॰] पैरों में पहना जाने-वाला एक पहनावा जिससे कमर से एड़ी तक का भाग ढका रहता है ।

पाजी–वि॰ [सं॰ पाय्य] [भाव॰ पाजीपन] दुष्ट । लुच्चा । शरारती ।
*पुं॰ [सं॰ पदाति] १. पैदल सिपाही । प्यादा । २. रक्षक ।

पाजीपन–पुं॰ [हिं॰ पाजी + पन (प्रत्य॰)] पाजी होने का भाव । दुष्टता । शरारत ।

पाजेब–स्त्री॰ [फा॰] पैरों में पहनने का स्त्रियों का एक गहना । मंजीर । नूपुर ।

पाटंबर–पुं॰ [सं॰] रेशमी कपड़ा ।

पाट–पुं॰ [सं॰ पट] १. रेशम । २. रेशम का तागा । ३. रेशमी कपड़ा । ४. पटसन के रेशे । ५. वस्त्र । कपड़ा ।
पुं॰ [सं॰ पट्ट] १. राज-सिंहासन । राज-गद्दी । २. चौड़ाई । ३. पटरा । पीढ़ा । ४. वह पत्थर जिसपर धोबी कपड़े धोते हैं । ५. चक्की के ऊपर या नीचे के दो भाग या पत्थरों में से कोई एक ।

पाटन–स्त्री॰ [हिं॰ पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव । पटाव । २. छत आदि, जो पाटकर बनाई जाती है ।

पाटना–स० [हिं० पाट] १. मिट्टी, कूड़े आदि से गड्ढा भरना। २. दीवारों के बीच में छाया आदि के लिए या किसी गहरे स्थान के आर-पार आधार बनाने के लिए बल्ले, धरन आदि बिछाना। पाटन या छत बनाना। ३. ढेर लगाना।

पाटल–पुं० [सं०] १. पाढर नाम का पेड़। २. गुलाब।
वि० १. गुलाब सम्बन्धी। गुलाब का। २. गुलाब के रंग का। गुलाबी। उदा०—कर लै प्यौ पाटल बिमल, प्यारी-पठए पान।
—बिहारी

पाटला–पुं० [सं० पाटल] १. पाढर का वृक्ष। २. बढ़िया और खरा सोना। (धातु)

पाटव–पुं० [सं०] पटुता। कुशलता।

पाटवी–वि० [हिं० पाट] १. पटरानी से उत्पन्न (राजकुमार)। २. रेशमी (वस्त्र)।

पाटा–पुं० [सं० पाटीर] १. वह लम्बी लकड़ी जिससे जोते हुए खेत के मिट्टी के ढेले तोड़े जाते हैं। २. दे० 'पीढ़ा'। ३. दे० 'सिंहासन'।

पाटी–स्त्री० [सं०] १. परिपाटी। शैली। रीति। २. जोड़, बाकी, गुणा आदि गणित के क्रम। ३. श्रेणी। पंक्ति।
स्त्री० [सं० पट्टिका] १. पलंग या खाट के चौखटे की लम्बाई के बल की लकड़ी। २. सिर के बालों में निकाली जानेवाली माँग।
मुहा०–*पाटी पारना = सिर के बालों में कंघी से माँग निकालना।
३. दे० 'पट्टी'।

पाटी गणित–पुं० [सं०] गणित का वह अंग या शाखा जिसमें ज्ञात अंकों या संख्याओं की सहायता से अज्ञात या उदिष्ट अंक या संख्याएँ जानी जाती हैं। (एरिथमेटिक)

पाटीर–पुं० [सं०] १. चंदन। २. खेत। ३. खेत जोतने का हल।

पाठ–पुं० [सं०] १.पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २. नियम या विधिपूर्वक धर्म-ग्रन्थ पढ़ने की क्रिया या भाव। ३. पढ़ने या पढ़ाने का विषय। ४. एक बार मे जानेवाला अंश। संथा। सबक।
मुहा०–(किसी को) पाठ पढ़ाना अपना स्वार्थ साधने के लिए किसी को काना। **उलटा पाठ पढ़ाना** = कुछ समझा देना।
५.ग्रन्थ, लेख आदि के शब्दों, पदों का क्रम या योजना। (रीडिंग)

पाठक–पुं० [सं०] १. पढ़नेवाला। २. पढ़ानेवाला। अध्यापक।

पाठन–पुं० [सं०] पढ़ाने की भाव। अध्यापन।

पाठना*–स० = पढ़ाना।

पाठ-भेद–पुं० दे० 'पाठांतर'।

पाठशाला–स्त्री० [सं०] वह विद्यार्थी पढ़ते हैं। विद्यालय। मदरसा

पाठांतर–पुं० [सं०] एक ही पुस्तक या अधिक प्रतियों के लेखों में शब्द, पद या वाक्य में दिखाई भेद। पाठ-भेद।

पाठा–पुं० [सं० पुष्ट] [स्त्री० पाठी] 'पट्ठा'। २. जवान बैल, भैंसा या

पाठावली–स्त्री० [सं०] १. समूह। २. किसी विषय की जिसमें विद्यार्थियों के पढ़ने योग्य संग्रह होता है। (रीडर)

पाठी–पुं० [सं० पाठिन्] पढ़नेवाला। पाठक। (यौ० शब्दों में; जैसे–वेदपाठी।)

पाठ्य–वि० [सं०] १. पढ़ने योग्य नीय। २. पढ़ाया जानेवाला।

पाठ्य-क्रम–पुं० [सं०] १. कोई पारित करने के लिए पाठ्य पुस्तकें वह समूह या क्रम जिसके अनुसार को वे सब पुस्तकें पढ़नी पड़ती हैं। २. किसी संस्था द्वारा ली जानेवाली परीक्षाओं के लिए निर्धारित सभी की विवरण-युक्त नामावली। (करिकुलम)

पुस्तक ।
[सं०] वह पुस्तक
विद्यार्थियों को निय-
ती हो। पढ़ाई की
)
] १. धोती आदि का
। पाइट। ३. कूएँ के
। चह। ४. बाँध।
का तख्ता।
हल्ला'।
पाटा] १. पाटा। २.
बैठकर किसान खेत
हैं। ३. इमारत में दीवार
किया हुआ वह ढाँचा जिस-
या राज-मजदूर काम
। ४. धोती, साड़ी आदि
लम्बाई के बल में अलग
है।
[हिं० पढ़ना] १. पढ़ने की
। पाठ। २. शिक्षा। ३.
जानेवाला जादू।
] एक प्रकार का पेड़।
] एक प्रकार का हिरन।
'।
] हाथ।
-वि० [सं०] (स्त्री) जिसका
गया हो। विवाहिता (पत्नी)।
-पुं० [सं०] [वि० पाणि-
।
] १. गिरने या गिराने की
। पतन। २. नाश। बर-
। मौत।
।
[सं०] पाप। गुनाह।
[सं०] पापी।
[सं०] गिराने की क्रिया या भाव।
पत्रट] [स्त्री० पातरि, पातरी] १. हिं० 'पतला' का पुराना रूप। २ जिसका दल मोटा न हो। पतला। ३. क्षीण शरीरवाला। दुबला। ४. बहुत ही संकीर्ण और तुच्छ स्वभाववाला।

स्त्री० १. दे० 'पत्तल'। २. दे० 'पातुर'।

पातशाह*–पुं० = बादशाह।

पाता–पुं० = पत्ता।

वि० [सं० पदत्राता ?] रक्षा करनेवाला। रक्षक। उदा०–रुद्र-अवतार संसार पाता।–तुलसी।

पाताब–पुं० [फा०] पैरों में पहनने का मोजा।

पाताल–पुं० [सं०] १. पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में सबसे नीचे का या सातवाँ लोक। २. पृथ्वी से नीचे का कोई लोक।

पातिव्रत(त्य)–पुं० [सं०] पतिव्रता होने का भाव।

पातिसाहि–पुं० = बादशाह।

पाती*–स्त्री० [सं० पत्री] १. चिट्ठी। पत्र। २. वृक्ष के पत्ते।

स्त्री० [हिं० पति] प्रतिष्ठा। पत।

पातुर(री)†–स्त्री० [सं० पातली] १. वेश्या। २. नटी।

पात्र–पुं० [सं०] [स्त्री० पात्री, भाव० पात्रता] १. वह जिसमें कुछ रखा जा सके। आधार। बरतन। २. कुछ पाने या लेने के योग्य (व्यक्ति)। जैसे–दान-पात्र। ३. नाटक में अभिनय करनेवाला। अभिनेता। नट। (एक्टर) ४. कथानक, उपन्यास आदि में का वह व्यक्ति जिसका कथावस्तु में कोई स्थान हो या कुछ चरित्र दिखाया गया हो।

वि० जो किसी कार्य या पद के लिए उपयुक्त होने के कारण चुना या नियुक्त किया जा सकता हो। (एलिजिबुल)

पात्रता–स्त्री० [सं०] १. पात्र होने की अवस्था या भाव। २. किसी काम के लिए चुने जाने या किसी पद पर नियुक्त होने के लिए आवश्यक योग्यता या गुण। (एलिजिबिलिटी)

पात्री–स्त्री० [सं०] १. छोटा बर्तन। २. कथानक, अभिनय आदि में स्त्री पात्र।

नटी। (एक्ट्रेस)।

पाथ–पुं० [सं०] पानी। जल।
पुं०[सं०पथ्]१.मार्ग। रास्ता। २.पाथेय।
स्त्री० [हिं० पाथना] पाथने की क्रिया या भाव।

पाथना–स० [सं० प्रथन] १. गीली मिट्टी आदि वस्तुओं को थाप-पीट या दबाकर (ईंट, खपड़े, उपले आदि के) विशेष आकार में लाना। २. दे० 'पथना'।

पाथर*–पुं० दे० 'पत्थर'।

पाथेय–पुं० [सं०] १. पथ या रास्ते में काम आनेवाला खाद्य पदार्थ। २. यात्रा की सामग्री और व्यय के लिए धन।

पाथोज–पुं० [सं०] कमल।

पाथोधि–पुं० [सं०] समुद्र।

पाद–पुं० [सं०] १. पैर। पाँव। २. श्लोक या पद्य का चरण। पद। ३. चतुर्थांश। चौथाई भाग। ४. पुस्तक का प्रकरण। ५. नीचे का भाग। तल।
पुं० [सं० पर्द] अधोवायु। अपान वायु।

पाद-टिप्पणी–स्त्री० [सं०] वह टिप्पणी जो किसी ग्रन्थ में पृष्ठ के नीचे सूचना, निर्देश आदि के लिए लिखी जाती है। (फुट नोट)

पाद-त्राण–पुं० [सं०] जूता।

पादना–अ० [हिं० पाद] गुदा से वायु त्याग करना।

पादप–पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़।

पाद-पूरक–वि० [सं०] कविता में पद की पूर्ति करने के लिए लगाया जानेवाला (अक्षर या शब्द)।

पाद-पूरण–पुं० [सं०] १. कविता के किसी अधूरे चरण को पूरा करना। २. केवल पद या चरण पूरा करने के लिए उसमें अनावश्यक या भरती के शब्द रखना।

पादरी–पुं० [पुर्त्त० पैड्रे] ईसाई पुरोहित जो अन्य ईसाइयों के संस्कार और उपासना कराता है।

पादशाह*–पुं० = बादशाह।

पादाक्रांत–वि० [सं०] १. पद-दलित। पैर से कुचला हुआ। २. विजित। पराजि

पादारघ*–पुं० दे० 'पाद्यार्घ'।

पादुका–स्त्री० [सं०] १. खड़ाऊँ। २. ज ३. पैरों में पहनने का कोई उपकरण। (वियर) जैसे–जूता, चप्पल खड़ाऊँ आदि।

पादोदक–पुं०[सं०पाद + उदक]चर

पाद्य–पुं० [सं०] पूजनीय व्यक्ति के लिए पैर धोने का जल।

पाद्यार्घ–पुं० [सं०] १. हाथ-पैर लिए दिया जानेवाला जल। २. पू भेंट की सामग्री। ३. ब्राह्मण को में दी हुई वह भूमि जिसका कर न जाता हो। माफी।

पाधा–पुं० दे० 'उपाध्याय'।

पान–पुं० [सं०] १. जल आदि द्रव पीना। २. पीने का पदार्थ। पेय द्र ३. मदिरा पीना।
पुं० [सं०पर्ण] १. पत्ता। २. एक लता जिसके पत्तों पर कत्था, चूना लगाकर और उनका बीड़ा बनाकर जाता है। ताम्बूल।
मुहा०–पान देना = किसी के वि के समय उसे सत्कार के रूप में बीड़ा देना। **पान पाना** = किसी से विदा होते समय सत्कार के रूप का बीड़ा पाना। **पान खाने** **धन) देना** = (क) रिश्वत या (ख) पुरस्कार आदि के रूप में देना। **पान बनाना** = पान सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार **पान लेना** = दे० 'बीड़ा उठाना'। **यौ०–पान-पत्ता** = (क) सामान्य भेंट। पान-फूल। (ख) पान आदि की सामग्री। **पान-फूल** = (क) दे० पत्ता'। (ख) बहुत कोमल वस्तु। *३. पुस्तक का पन्ना। वरक। पृष्ठ। *पुं० दे० 'पाणि'।

पान-इलायची–स्त्री०[हिं०] किसी

होनेवाला वह सामाजिक
जिसमें पान-इलायची
लोगों का सत्कार किया

[हिं० पान+फा० दान
कत्था आदि रखने का
।
दे० 'फानूस'।
(री)—स्त्री० दे० 'पान-

दे० 'पनही'।
प्रापण] १. आने पर अपने
में करना। प्राप्त करना।
बुरा फल भोगना। ३. दी
चीज फिर से हाथ में लेना।
वस्तु उठाना। ५. देख या
। अनुभव करना। जैसे—
(पीड़ा) पाना = किसी का
।६. समर्थ होना। सकना। (सं-
में) जैसे—कहीं बैठ या घुस
किसी के पास या निकट पहुँचना।
। ८. बराबरी कर सकना।
ना। खाना। (साधु)
। प्राप्तव्य धन।
उपानह] एक प्रकार का जूता।
)
'ना'। (आम आदि का)
।
[सं० पाणि] हाथ।
[हिं०पानी] १. ओप। कांति।
शोभा या सुन्दरता। २. पानी।
[सं० पानीय] १. नदी, कूएँ
मिलनेवाला वह प्रसिद्ध यौगिक
जो पीने, नहाने, खेत आदि
काम आता है। जल। नीर।
पानी करना = किसी का क्रोध
शान्त करना। **पानी की तरह बहाना** = अधिक खर्च करना। उड़ाना। **पानी के मोल होना** = बहुत सस्ता होना। **पानी देना** = (क) सींचना। (ख) पितरों के नाम अंजलि में पानी लेकर गिराना। तर्पण करना। **पानी पढ़ना** = मंत्र पढ़कर पानी पर फूँकना। ***पानी परोरना** = दे० 'पानी पढ़ना'। **पानी पानी होना** = बहुत लज्जित होना। **पानी फूँकना** = मंत्र पढ़कर पानी पर फूँक मारना। **(किसी पर) पानी फेरना या फेर देना** = सर्वनाश कर देना। **पानी भरना** = (क) तुलना में तुच्छ सिद्ध होना। (ख) अधीन या दास होकर रहना। (ग) दुर्दशा झेलना। **पानी में आग लगाना** = जहाँ अशान्ति, उपद्रव या झगड़ा न हो सकता हो, वहाँ भी अशान्ति, उपद्रव या झगड़ा करा देना। **पानी फेंकना** = नष्ट करना। **मुँह में पानी आना** = खाने या लेने के लिए गहरा लोभ होना।

पद—पानी का बुलबुला = क्षण-भंगुर वस्तु। न टिकनेवाली चीज।

२. जीभ, आँख, घाव आदि में से रसनेवाला तरल पदार्थ। **३.** वर्षा। मेंह। वृष्टि। **४.** पानी की तरह पतली वस्तु। **५.** रस। अरक। जूस। **६.** चमक। कांति। ओप। **७.** धारदार हथियारों के फल की वह रंगत या चमक जिससे उनकी उत्तमता प्रकट होती है। आब। जौहर। **८.** मान प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०—पानी उतारना=बेइज्जत करना। **९.** वर्ष। जैसे-पाँच पानी का पेड़। **१०.** मुलम्मा। **११.** वीरता। बहादुरी। **१२.** स्वाद में पानी की तरह फीका पदार्थ। **१३.** लड़ाई या युद्ध। **१४.** बार। दफा। **१५.** जल-वायु।

***पुं** [सं० पाणि] हाथ। कर। उदा०—करौं प्रनाम जोरि जुग पानी।—तुलसी।

पानी-कल–स्त्री० दे० 'जल-कल'।

पानीदार–वि० [हिं० पानी + फा० दार (प्रत्य०)] १. चमकदार। २. इज्जतदार। ३. जीवटवाला। साहसी।

पानी-फल–पुं० = सिघाड़ा (फल)।

पानूस†–पुं० दे० 'फानूस'।

पानेवाला–पुं० [हिं० पाना] १. जिसे कुछ मिले या प्राप्त हो। २. वह जिसे किसी प्रकार का देय या कुछ धन दिया जाय। (पेई)

पानौरा–पुं० [हिं० पान + बरा] पान के पत्ते की पकौड़ी।

पान्यो*–पुं० दे० 'पानी'।

पाप–पुं० [सं०] १. इस लोक में बुरा माना जानेवाला और परलोक में अशुभ फल देनेवाला कर्म। धर्म या पुण्य का उलटा। पातक। गुनाह।

मुहा०–पाप उदय होना = पिछले पापों का फल मिलने का योग या अवसर आना। **पाप कटना** = पापों का नाश होना। **पाप कमाना या बटोरना** = पाप करके उसके फल के भागी बनना।

२. अपराध। कसूर। जुर्म। ३. पाप करने का विचार। बुरी नीयत। ४. व्यर्थ की झंझट। बखेड़ा।

मुहा०–पाप कटना = झगड़े या जंजाल से पीछा छूटना। **पाप मोल लेना** = जान बूझकर अपने सिर झंझट लेना। ***पाप पड़ना** = मुश्किल हो जाना।

पाप-कर्म–पुं० [सं०] पाप समझा जानेवाला काम।

पाप-कर्मा–वि० दे० 'पापी'।

पाप-ग्रह–पुं० [सं०] शनि, राहु, केतु आदि अशुभ फल देनेवाले ग्रह। (फलित ज्योतिष)

पापघ्न–वि० [सं०] पाप-नाशक।

पापड़–पुं० [तामिल पर्पु = दाल से सं० पर्पट] उर्द या मूँग के आटे की मसालेदार पतली चपाती।

मुहा०–पापड़ बेलना=(क) बहुत परि
करना। (ख) दुःख से दिन काटना।
से पापड़ बेलना = बहुत तरह के
करना।

पाप-नाशक–वि० [सं०] पापों का
करनेवाला। पापनाशी।

पापाचार–पुं० [सं०] [वि० पापा
पाप का आचरण। दुराचार।

पापात्मा–वि० दे० 'पापी'।

पापिष्ठ–वि० [सं०] बहुत बड़ा पापी।

पापी–वि० [सं० पापिन्] [स्त्री०
१. पाप करनेवाला। अघी। पात
क्रूर। निर्दय।

पाबंद–वि० [फा०] [भाव० पा
बँधा हुआ। बद्ध। २. नियम, वि
का नियमित रूप से पालन करने
उनके पालन के लिए विवश।

पामर–वि० [सं०] [भाव० पामर
खल। दुष्ट। कमीना। २. पापी। ३.

पामरी†–स्त्री० [?] दुपट्टा। उ
पाट, पामरी, जीभ, पद, प्रेम,
बिचार।—केशव।

पायँ*–पुं० = पाँव।

पायँ-जेहरि*–स्त्री० दे० 'पाजेब'।

पायँता–पुं० [हिं० पायँ + सं०
बिछौने या चारपाई का वह सिरा जि
रहते हैं। 'सिरहाना' का उलटा।

पायंदाज–पुं० [फा०] पैर
बिछावन। पाँवड़ा।

पाय*–पुं० दे० 'पाँव'।

पायक–पुं० [सं० पादातिक, पावि
दूत। हरकारा। २. दास। सेवक।
पैदल सिपाही।

पायजा†–पुं० दे० 'कुलाबा' १.।

पायतन*–पुं० दे० 'पायँता'।

पायदार–वि० [फा०] [भाव० पा
बहुत दिनों तक काम आने या टिकने
दृढ़। मजबूत। पक्का।

+ल (प्रत्य०)]
का गढ़ना। २.
।
के जन्म के समय
हों। २. बहुत तेज
।
।
] चोर।
'पड़ोस'।
] १. पलंग, चौकी
छोटे खंभे जिनके सहारे
रहता है। गोड़ा। पावा।
३. पद। दरजा। ओहदा।
पायिन्] पीनेवाला।
पायी।)
] [स्त्री० पारंगता] १.
हो। २. पूर्ण पण्डित।
[सं०] परंपरा से चला
रागत।
] १. 'परंपरा' का क्रम
-परंपरा।
१. जलाशयों में सामने या
। दूसरी ओर का तट।
र = इस किनारे या सिरे
सिरे तक।
उतरना = (क) नदी के
। (ख) कोई काम पूरा
पाना। (नदी आदि)
= जलाशय आदि के इस
किनारे पहुँचना। पार
आदि के दूसरे किनारे पर
से) पार लगना =
पार लगाना = (क) उस
किनारे पर पहुँचाना। (ख)
। (ग) काम पूरा या
।
पार्श्व। दूसरी तरफ।

३. अंत। सिरा। छोर। **मुहा०-(किसी का) पार पाना** = किसी की गहराई या थाह तक पहुँचना। **(किसी से) पार पाना**=किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना या उससे जीत सकना। अव्य० परे। आगे। दूर।

*वि० [हिं० पालन] पालन करनेवाला।

वि० [हिं० पारण] पार लगानेवाला।

पारख*–स्त्री० दे० 'परख'।

पुं० दे० 'पारखी'।

पारखी–पुं० [हिं० परख] परख या पहचान रखनेवाला। परखनेवाला।

पारग–वि० [सं०] १. जो पार चला गया हो। २. अच्छा ज्ञाता। जानकार।

पारजात*–पुं० दे० 'पारिजात'।

पारण–पुं० [सं०] [वि० पारित] १. पार करने या उतरने की क्रिया या भाव। २. परीक्षा या जाँच में पूरा उतरना। उत्तीर्ण होना। (पासिंग) ३. रुकावट या बन्धन की जगह पार करके आगे बढ़ना। (पासिंग) ४. धार्मिक व्रत या उपवास के दूसरे दिन का पहला भोजन और तत्संबंधी कृत्य। ५. समाप्ति।

पारणक–वि० [सं०] पारण करनेवाला। पुं० १. वह पत्र जो किसी परीक्षा आदि में उत्तीर्ण होने का सूचक हो। २. वह पत्र जिसे दिखलाकर कोई कहीं आ-जा सके या इसी प्रकार का और कोई काम कर सके। (पास)

पारणपत्र पुं० दे० 'पारणक'।

पारतंत्र्य–पुं० [सं०] परतंत्रता।

पारत्रिक–वि० दे० 'पारलौकिक'।

पारथ*–पुं० दे० 'पार्थ' (अर्जुन)।

पारथी–पुं० [सं० पापर्द्धिक = बहेलिया] १. चिड़ियाँ फँसानेवाला। बहेलिया। २. पशुओं का शिकार करनेवाला। शिकारी। अहेरी। व्याध। ३. हत्यारा।

पारद–पुं० [सं०] १. पारा। २. फारस

देश की एक प्राचीन जाति।

पारदर्शक-वि० [सं०] [भाव० पारदर्शकता] जिसके सामने या बीच में रहने पर भी उस पार की चीज दिखाई पड़े। (ट्रान्स-पेअरेन्ट) जैसे-शीशा पारदर्शक होता है।

पारदर्शिता-स्त्री० [सं०] पारदर्शी होने का भाव।

पारदर्शी-वि० [सं० पारदर्शिन्] [स्त्री० पारदर्शिनी] [भाव० पारदर्शिता] १. (किसी विषय में) बहुत दूर, उस पार या बाद तक की बात देखने या समझनेवाला। दूरदर्शी। २. दे० 'पारदर्शक'।

पारन*-पुं० दे० 'पारण'।

पारना-स० [हिं पारना (पड़ना) का स० रूप] १. डालना। गिराना। उदा०-कौरव-सुत को पार्‍यौ ताज।-सूर। २. लेटाना। ३. कुश्ती या लड़ाई में पछाड़ना या मार डालना। ४. रखना या देना।

मुहा०-पिंडा पारना=पिंडदान करना। ५. किसी के अंतर्गत करना। मिलाना। ६. शरीर पर धारण करना। पहनना। ७. बुरी बात या दुर्घटना घटित करना। ८. साँचे आदि में ढालना। ९. कोई काम स्वयं करना अथवा दूसरे से करा देना। उदा०-भाँवरि पारि जगत जस लीन्हों।-केशव। १०. कोई काम करने में प्रवृत्त या समर्थ होना। कर सकना। ११. किसी कार्य का सम्पादन करना। पूरा करना। उदा०-जन-प्रहलाद-प्रतिज्ञा पारी।-सूर।

*अ० [हिं० पार + लगना] कर सकना। करने में समर्थ होना।

*स० दे० 'पालना'।

पार-ब्रह्म-पुं० = पर-ब्रह्म।

पारमार्थिक-वि० [सं०] परमार्थ-संबंधी। जिससे परमार्थ सिद्ध हो।

पारलौकिक-वि० [सं०] १. परलोक संबंधी। २. परलोक में शुभ फल देनेवाला।

पारशव-पुं० [सं०] १. पराई स्त्री से उत्पन्न पुरुष। २. एक वर्ण-संकर ३. लोहा। ४. एक प्राचीन देश जहाँ निकलते थे।

पारषद*-पुं० दे० 'पार्षद'।

पारस-पुं० [सं० स्पर्श] १. एक पत्थर। कहते हैं कि यदि लोहा जाय तो सोना हो जाता है। २. बहुत लाभदायक और उपयोगी

पुं० [हिं० परसना] खाने के लिए हुआ भोजन।

*अव्य० [सं० पार्श्व] पास।

पुं० [सं० पारस्य] अफगानिस्तान का एक प्राचीन देश। फारस।

पारसनाथ-पुं० दे० 'पार्श्वनाथ'।

पारसल-पुं० [अं०] किसी पोटली या गठरी। (विशेषतः आदि से कहीं भेजने के लिए)

पारसव*-पुं० दे० 'पारशव'।

पारसी-वि० [फा० पारस] का। पारस देश-संबंधी।

पुं० १. पारस देश का निवासी। और गुजरात में हजारों वर्षों से फारस-निवासी जिनके पूर्वज मु भय से यहाँ चले आये थे।

पारसीक-पुं० [सं०] १. २. इस देश का निवासी। ३. घोड़ा।

पारस्परिक-वि० [सं०] [पारस्परिकता] १. परस्पर होने दूसरे का। आपस का। (म्यूचुअल) या कर्त्तव्य) जिसका पालन दोनों बराबर होता हो। जिसमें एक ओर बात होने पर दूसरी ओर से बात हो। (रेसीप्रोकल)

पारा-पुं० [सं० पारद] एक सफेद, बहुत वजनी और चमकीली साधारणतः द्रव रूप में रहती है। (

मुहा०-पारा पिलाना =

२. पारिषद् । ३. नाटक में वह नट जो स्थापक का अनुचर होता है ।

पारिभाव्य–वि० [सं०] जमानत आदि के रूप में या कोई शर्त्त पूरी कराने के लिए लिया हुआ । जैसे–पारिभाव्य धन। (कॉशन मनी)

पारिभाषिक–वि० [सं०] १. परिभाषा' से संबंध रखनेवाला । २. (शब्द) जिसका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में, संकेत रूप से होता हो । (टेकनिकल)

पारिभाषिकी–स्त्री० [सं०] विधान आदि का वह पूरक अंग या अंश जिसमें उनके विशिष्ट शब्दों की परिभाषायें रहती हैं। (टरमिनालोजी)

पारिश्रमिक–पुं० [सं०] वह धन जो किसी को कुछ परिश्रम करने पर उसके बदले या पारितोषिक आदि के रूप में दिया जाता है । (रिम्यूनरेशन)

पारिषद–पुं० [सं०] १. परिषद् में बैठनेवाला । सभासद । सभ्य । २. अनुयायी वर्ग । गण ।

पारी–स्त्री० [हिं० बार, बारी] किसी बात या कार्य के लिए वह अवसर जो कुछ अंतर देकर क्रम से प्राप्त हो । बारी ।

पारुष्य–पुं० [सं०] १. 'परुष' का भाव । २. वचन की कठोरता । बात का कड़वापन ।

पार्क–पुं० [अं०] उद्यान । बाग ।

पार्टी–स्त्री० [अं०] १. कुछ लोगों का दल । २. वह समारोह जिसमें लोगों को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाता है ।

पार्थ–पुं० [सं०] १. पृथ्वीपति । २. (पृथा का पुत्र) अर्जुन । ३. युधिष्ठिर और भीम । ४. अर्जुन वृक्ष ।

पार्थक्य–पुं० [सं०] १. पृथक् होने का भाव । अलगाव । भेद । २. वियोग ।

पार्थिव–वि० [सं०] १. पृथ्वी-सम्बन्धी । २. पृथ्वी से उत्पन्न । ३. पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं का बना हुआ ।
पुं० मिट्टी का शिवलिंग, जिसके पूजन का

विशेष महात्म्य कहा गया है।

पार्थी–वि० दे० 'पार्थिव'।

पार्लमेंट–स्त्री० दे० 'संसद्'।

पार्वण–पुं० [सं०] एक प्रकार का श्राद्ध जो किसी पर्व के समय किया जाता है।

पार्वती–स्त्री० [सं०] हिमालय पर्वत की कन्या और शिव की पत्नी। गौरी। भवानी। उमा। गिरिजा।

पार्वतीय–वि० [सं०] पहाड़ का। पहाड़ी।

पार्श्व–पुं० [सं०] [वि० पार्श्विक] १. किसी वस्तु या शरीर का दाहिना या बायाँ भाग। बगल। २. अगल-बगल की जगह। पास का स्थान।

पार्श्वनाथ–पुं० [सं०] जैनों के तेईसवें तीर्थंकर।

पार्श्ववर्त्ती–पुं० [सं०] [स्त्री० पार्श्ववर्त्तिनी] किसी के पास या साथ रहनेवाला। मुसाहब।

पार्श्विक–वि० [सं०] १. पार्श्व-सम्बन्धी। पार्श्व का। २. किसी एक पार्श्व या अंग में होने या रहनेवाला। ३. किसी एक पार्श्व या अंग की ओर से आने या चलनेवाला। (लेटरल)

पार्षद–पुं० [सं०] १. पास रहनेवाला। २. सेवक। परिषद। ३. मुसाहब।

पार्सल–पुं० दे० 'पारसल'।

पाल–वि० [सं०] १. पालनकर्त्ता। पालक। २. कार्य, विभाग आदि का प्रधान संचालक या अधिकारी। (यौ० के अन्त में, जैसे–कोटपाल, राज्यपाल आदि।)

स्त्री० [हिं० पालना] कृत्रिम रूप से गरमी पहुँचाकर फलों को पकाने के लिए पत्तों आदि से ढककर रखने की विधि।

पुं० [सं० पट या पाट] १. वह बहुत बड़ा कपड़ा जो नाव के मस्तूल में इसलिए बाँधा जाता है कि उसपर पड़नेवाले हवा के दबाव से नाव तेजी से चले। २. तंबू। शामियाना। ३. गाड़ी या पालकी को ऊपर से ढकने का ओहार।

स्त्री० [सं० पालि] १. पानी रोकने
बाँध या मेड़। २. ऊँचा तट या कि

पालक–वि० [सं०] [स्त्री० पालि
पालन करनेवाला।

पुं० पाला हुआ लड़का। दत्तक पुत्र।

पुं० [सं० पालंक] एक प्रकार का

*पुं० दे० 'पलंग'।

पालकी–स्त्री० [सं० पल्यंक] बड़े
तरह की एक प्रकार की सवारी जिसे
पर लेकर चलते हैं। मियाना। खड़

स्त्री० [सं० पालंक] पालक का

पालकी गाड़ी–स्त्री० [हिं० पालकी +
पालकी के आकार की छायादार घोड़ा

पालट–पुं० [हिं० पालना] दत्तक पुत्र

पालतू–वि० [हिं० पालना]
पोसा हुआ (जानवर)।

पालथी–स्त्री० दे० 'पलथी'।

पालन–पुं० [सं०] [वि०
पालित, पाल्य] १. भोजन,
देकर की जानेवाली जीवन-रक्षा।
पोषण। परवरिश। (मेन्टनेन्
अनुकूल आचरण द्वारा किसी
रक्षा या निर्वाह। (एबाइड)
निर्देश, वचन, कर्त्तव्य आदि के
काम करना। (डिस्चार्ज,
४. जीव-जन्तुओं आदि को रख
वंश, सामर्थ्य या उनसे होनेवाली
बढ़ाने का काम। (कल्चर) जैसे
अश्व-पालन।

पालना–स० [सं० पालन] १.
वस्त्र आदि देकर जीवित रख
पोषण करना। परवरिश करना। २.
आदि को मनोविनोद के लिए
रखकर खिलाना-पिलाना। ३. भंग
न टालना। (बात, आज्ञा आदि)

पुं० [सं० पल्यंक] छोटे बच्चों के लिए
प्रकार का झूला या हिंडोला। गहवार

पालनीय–वि० [सं०] पालन

करता हो। पाल्य।
'लव'।
प्रालेय] १. हवा में
अत्यंत सूक्ष्म अणु जो
पर सफ़ेद तह के रूप
हिम।
मार जाना = पाला गिरने
आ नष्ट हो जाना।
। ३. ठंढ। सरदी।
] व्यवहार करने का
वास्ता। साबिका।
से) पाला पड़ना =
का संयोग होना। काम
के) पाले पड़ना =
होना।
हिं० पाड़ा] १. प्रधान
सीमा निर्धारित करनेवाली
खेलों में प्रत्यद पक्ष या दल
स्थान जो ठीक आमने-
। ४. अनाज भरने का मिट्टी
। ५. अखाड़ा।
स्त्री० [हिं० पाँय + लगना]
। नमस्कार।
[सं०] पालन करनेवाली।
[सं०] [स्त्री० पालिता]
हुआ हो। २. पाला-
. रक्षित।
स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।
[सं०] १. चिकनाई और
। २. वह मसाला या क्रिया
पर खूब चमक आती है।
[सं० पालिन्] [स्त्री०
रक्षा करनेवाला।
] १. पंक्ति। श्रेणी।
तल या भाग। पार्श्व।
= नाव का ऊपरी तल।
जिसमें चौद्धों के
। ४. लोहे का वह

मोटा नल जिसमें आतिशबाज गोला रखकर छोड़ते हैं। तोप।

स्त्री० [हिं० पारी] १. पारी। बारी। २. प्रतियोगिता के खेलों में किसी खिलाड़ी या खेलाड़ियों के किसी दल के खेलने की पारी। बारी। (इनिंग) ३. कल-कारखाने आदि में कुछ निश्चित समय तक एक श्रमिक दल का काम करना जिसके बाद उतने समय तक दूसरा श्रमिक दल काम करता है। (शिफ्ट)

पालू–वि० दे० 'पालतू'।

पालो (लौ)†–पुं० = पल्लव।

पाल्य–वि० [सं०] पालने के योग्य।

पावँ–पुं० दे० 'पाँव'।

पावँर*–वि० [सं० पामर] १. तुच्छ। क्षुद्र। २. नीच। दुष्ट।

पुं० दे० 'पाँवड़ा'।

स्त्री० दे० 'पाँवड़ी'।

पाव–पुं० [सं० पाद] १. चौथाई भाग या अंश। २. एक सेर का चौथाई भाग, जो चार छटाँक का होता है। ३. इतनी तौल का बटखरा।

*स्त्री० दे० 'पौ'। (पासे का दाँव)

पावक–पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। २. तेज। कान्ति। ३. सदाचार। ४. सूर्य।

वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला।

पावती–स्त्री० [हिं० पावना] रुपये या और कोई चीज पाने का सूचक पत्र। रसीद।

पावदान–पुं० [हिं० पाँव + दान (प्रत्य०)] १. इक्के, गाड़ी आदि में पैर रखने के लिए बना हुआ स्थान। २. तारों, रेशों आदि का बना वह खंड जिसपर पैर पोंछे जाते हैं। पाँवड़ा।

पावन–वि० [सं०] [स्त्री० पावनी, भाव० पावनता] १. पवित्र करनेवाला। २. पवित्र। शुद्ध।

पुं० १. अग्नि। २. प्रायश्चित। ३. जल। ४. गोबर। ५. रुद्राक्ष।

पावनता-स्त्री० [सं०] 'पावन' होने की दशा या भाव।

पावनताई*-स्त्री० = पावनता।

पावना-पुं० [हिं० पाना] वह रुपया जो दूसरे से पाना हो। प्राप्य धन। लहना। *स० दे० 'पाना'

पाव रोटी-स्त्री० [पाव ? + हिं० रोटी] एक प्रकार की मोटी, बड़ी और फूली हुई खमीरी रोटी।

पावस*-पुं० [सं० प्रावृष] वर्षा ऋतु।

पावा*-पुं० दे० 'पाया'।

पाश-पुं० [सं०] १. रस्सी, तार आदि का वह फंदा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और बंधन कसने से प्रायः मर भी जाता है। फंदा। २. पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। ३. किसी प्रकार का बंधन।

पाशव-वि० [सं०] [भाव०पाशवता] १. पशु-संबंधी। २. पशुओं का-सा।

पाशविक-वि० दे० 'पाशव'।

पाशा-पुं० [तु०, मि० फा० पादशाह] तुर्की सरदारों की उपाधि।

पाशुपत-वि० [सं०] पशुपति सम्बन्धी। पुं० पशुपति या शिव का उपासक।

पाश्चात्य-वि०[सं०] १. पीछे का। पिछला। २. पश्चिम दिशा का। पश्चिमी। ३. पश्चिमी महादेश (युरोप) अथवा सुदूर पश्चिम के देशों से सम्बन्ध रखनेवाला। (ऑक्सिडेन्टल)

पाश्चात्यीकरण-पुं०[सं०पाश्चात्य + करण] किसी देश या जाति आदि को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे में ढालना या पाश्चात्य ढंग का बनाना।

पाषंड-पुं० दे० 'पाखंड'।

पाषाण-पुं०[सं०] [वि०पाषाणीय] पत्थर। वि० [स्त्री० पाषाणी] निर्दय। हृदय-हीन।

पाषाणी-वि० [सं०] पत्थर की तरह कठोर हृदयवाली।

पासंग-पुं० [फा०] तराजू की डंडी या तौल बराबर करने के लिए बंधे हुए पल्ले पर रखा हुआ कोई बोझ। पसंघा। वि० १. बहुत थोड़ा। २. तुच्छ। (तुलना

मुहा०-(**किसी का**) **पासंग भी न होना** = किसी के सामने कुछ भी न हो

पास-पुं० [सं० पार्श्व] १. बगल। तरफ़। २. सामीप्य। निकटता। समी ३. अधिकार। कब्ज़ा।

अव्य० १. निकट। समीप। नज़दीक

यौ०-**आस-पास** = (क) अगल- समीप। (ख) लगभग। करीब। प्रा

मुहा०-(**किसी के**) **पास बैठ** संगत या साथ में रहना। **पास न टकना** = निकट न जाना।

२. अधिकार में। कब्जे में। ३. कि प्रति। किसी से।

*पुं० १. दे० 'पाश'। २. दे० 'पा

वि० [अं०] परीक्षा आदि में उत्तीर्ण। पारित।

पुं० [अं०] वह कागज़ जिसे किसी को बे-रोक-टोक कहीं आने- अधिकार या अनुमति हो। पारप

पासमान*-पुं०[हिं०पास + मान(१. पास रहनेवाला। पार्श्ववर्त्ती। २ दास।

पासवर्त्ती*-वि० दे० 'पार्श्ववर्ती

पासा-पुं० [सं० पाशक, प्रा० प काठ या हड्डी के वे छः-पहले जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी है जिनसे चौसर और कई प्रक या जूए खेलते हैं।

मुहा०-(**किसी का**) **पासा प** भाग्य अनुकूल और प्रबल होना। **पलटना**=(क)अच्छे से बुरा भा (ख) युक्ति या उपाय का होना। (ग) जो कुछ हो रहा उलटा करना। (सकर्मक में) २. पासों से खेला जानेवाला खेल

कार की गुम्भी । जैसे-
पता ।
० दे० 'चौपड़' ।
[सं० पाश] १. फंदा ।

० पाशिन्] १. जाल या
चिड़ियाँ पकड़नेवाला । २.
ड़ के पेड़ों से ताड़ी उतारने
है ।
, हिं० पास + ई (प्रत्य०)]
। २. घोड़े के पैर बाँधने

दे० 'पसली' ।
दे० 'पाहिं' । (किसी के प्रति)
[सं० पाषाण] १. पत्थर ।
पत्थर ।
दे० 'पाहिं' ।
[सं० पाषाण] पत्थर ।
[सं०पार्श्व] १. पास । निकट ।
सी के प्रति । किसी से ।
पद जिसका अर्थ है—
'बचाओ' ।
दे० 'पाहिं' ।
[सं० पाथेय] गाँव से सम्बद्ध,
भूमि या खेत (जिस तक
कुछ दूर तक चलना पड़े)।
[सं० प्राघूर्ण] [स्त्री० पाहुनी]
मेहमान । २. दामाद ।
[हिं० पाहुना] रखेली स्त्री ।
[सं०] पीलापन लिये हुए
।
[सं०] १. पीला । पीत ।
हुए लाल । तामड़ा ।
शास्त्र के पहले आचार्य एक
। २. छंदःशास्त्र । ३. बंदर ।
पक्षी ।
[सं०] १. हठ योग और
तीन प्रधान नाड़ियों में

से एक । २. लक्ष्मी ।

पिंजड़ा-पुं० दे० 'पिंजरा' ।

पिंजर-पुं० [सं०] १. शरीर के अन्दर, हड्डियों की ठठरी । पंजर । २. पिंजरा । ३. सोना । स्वर्ण । ४. भूरापन लिये लाल रंग का घोड़ा ।

पिंजरा-पुं० [सं० पंजर] लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ वह झाबा जिसमें पक्षी बन्द करके रखे जाते हैं ।

पिंजरापोल-पुं०=गोशाला या पशुशाला।

पिंड-पुं० [सं०] १. गोल पदार्थ। ठोस गोला। २. पके हुए अन्न या उसके चूर्ण आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों के नाम पर दिया जाता है । ३. शरीर । देह । **मुहा०-पिंड छोड़ना** = साथ रहकर या पीछे लगकर तंग करने से विरत होना । **(किसी के) पिंड पड़ना** = किसी काम या बात के लिए बहुत अधिक आग्रह करना । किसी के पीछे लग या पड़ जाना ।

पिंड खजूर-स्त्री० [सं० पिंडखर्जूर] एक प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं ।

पिंडज-पुं० [सं०] गर्भ से शरीर या पिंड के रूप में और सजीव निकलनेवाले जंतु । जैसे-आदमी, कुत्ता, घोड़ा आदि ।

पिंड-दान-पुं० [सं०] श्राद्ध में पितरों को पिंड देना ।

पिंडरी*-स्त्री० दे० 'पिंडली' ।

पिंड-रोगी-पुं० [हिं० पिंड = शरीर + रोगी] वह जिसे सदा या प्रायः कोई न कोई रोग बना रहता हो और जो कभी पूर्ण स्वस्थ न रह सकता हो ।

पिंडली-स्त्री० [सं० पिंड] घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग ।

पिंडा-पुं० [सं० पिंड] १. दे० 'पिंड' । **मुहा०-पिंडा-पानी देना** = श्राद्ध और तर्पण करना । **पिंडा पारना** = पिंड-दान । करना । २. शरीर । देह ।

पिंडारी-पुं० [देश०] दक्षिण भारत की एक मुसलमान जाति जो लूट-मार का पेशा करती थी।

पिंडिका–स्त्री० [सं०] १. छोटा पिंड। २. पिंडली। ३. शिव की लिंग-मूर्त्ति।

पिंड़िया–स्त्री० [सं० पिंडिक] १. गुड़ या कुछ पकवानों की छोटी लंबोत्तरी पिंडी। २. दे० 'पिंडी'।

पिंडी–स्त्री० [सं०] १. छोटा डला या पिंड। २. पिंडखजूर। ३. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा। ४. दे० 'पिंडिका'।

पिंडुरी*–स्त्री० दे० 'पिंडली'।

पिअ–वि०, पुं० दे० 'प्रिय'।

पिअराई*–स्त्री० [हिं० पीला] पीलापन।

पिउ*–पुं० [सं० प्रिय] पति।

पिउरी†–स्त्री० दे० 'पूनी'।

पिऊख*–पुं० = पीयूष।

पिक–पुं० [सं०] [स्त्री० पिकी] १. कोयल। २. पपीहा।

पिघलना–अ० [सं० प्र + गलन] [स० पिघलाना] १. घन पदार्थ का गरमी से गलकर तरल होना। द्रवीभूत होना। २. चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।

पिचकना–अ० [सं० पिच्च = दबना] [स० पिचकाना] फूले या उभरे हुए तल का दबना।

पिचकारी–स्त्री० [हिं० पिचकना] १. नली के आकार का एक उपकरण जिससे तरल पदार्थ अन्दर खींचे और बाहर फेंके जाते हैं। २. चिकित्सा-क्षेत्र में उक्त प्रकार का एक छोटा उपकरण जिससे शरीर की नसों या रक्त में तरल दवाएँ पहुँचाई जाती हैं। वस्ति। सूई। (सीरिंज) मुहावरों के लिए दे० 'सूई' ४. के मुहा०।

पिचकी*–स्त्री० दे० 'पिचकारी'!

पिचपिचा–वि० [अनु०] १. लसदार। चिपचिपा। २. दबा हुआ और गुलगुला।

पिच्ची–वि० दे० 'पच्ची'।

पिच्छल†–वि० १. दे० 'पिच्छिल'।
दे० 'पिछला'।

पिच्छिल–वि० [सं०] [स्त्री० पि
१. ऐसा गीला और चिकना जिस
पड़ने से फिसले। २. चूड़ायुक्त (प
३. खट्टा, फूला हुआ और
(पदार्थ)।

पिछड़ना–अ० [हिं० पीछे] १.
से छूटकर पीछे रह जाना। २. प्रति
आदि में पीछे रह जाना।

पिछलगा–पुं० [हिं० पीछे + लगन
वह जो किसी के पीछे लगा फिरे। पि
२. अनुगामी। ३. सेवक। ४. आ

पिछलग्गू†–पुं० [हिं० पीछे + लग
वह जो किसी का अन्ध अनुयायी
उसके पीछे पीछे चलता हो। बिना
बूझे अनुकरण करनेवाला।

पिछ-लत्ती–स्त्री० [हिं० पीछा +
घोड़ों आदि का पिछले पैरों से मार

पिछला–वि० [हिं० पीछा] [स्त्री०
ली] १. जो पीछे की ओर हो।
का उलटा। २. बाद का। पर
'पहला' का उलटा।

यौ०–पिछला पहर = दिन या
अंतिम पहर। **पिछली रात** = आ
के बाद का समय।

३. बीता हुआ। गत। ४. आखिरी।

पिछवाई–स्त्री० [हिं० पीछा]
पीछे की ओर लटकाया जानेवाला

पिछवाड़ा–पुं० [हिं० पीछा] १. घर
पीछे का भाग। २. घर के पीछे की

पिछाड़ी–स्त्री० [हिं० पीछा] १.
का भाग। २. वह रस्सी जिससे
पिछले पैर बाँधे जाते हैं।

पिछानना*–स० दे० 'पहचानना'।

पिछुआर–पुं० दे० 'पिछवाड़ा'।

पिछेलना–स० [हिं० पीछे] १.
ढेकर पीछे हटाना! २. पीछे छोड़ना।

[हिं० पीछा] १.
पीछे की ओर से ।
[हिं० पत्तपट] [स्त्री०
दुपट्टा या चादर ।
] १. पिटारा । २. ग्रन्थ
हंड ।
[हिं० पीटना] 'पीटना' का
जाना ।
] चूने आदि की छत
। थापी ।
= पिटारी ।
[हिं० पीटना] १. पीटने
का काम या भाव । २.
टी ।
[हिं० 'पीटना' का स०]
काम दूसरे से कराना । पिट-
किसी को इतना तंग करना कि
।
' ।
[सं० पिटक] [स्त्री०
री] बाँस आदि की पट्टियों
ढक्कनेदार पात्र ।
[हिं० पीटना] शोक के
जोर से छाती पीटना ।
[हिं० पीठ + ऊ (प्रत्य०)] १.
या पीछे से छिपकर सहायता
करनेवाला । २. कुछ विशिष्ट
खिलाड़ी का वह कल्पित
दूसरे उसे फिर से खेलने का
मिलता है । ३. दे० 'पिछलगा' ।
[हिं० पीठ (पर होने-
।
[हिं० पीठी + चरी] पीठी
या पकौड़ी ।
दे० 'पीतांबर' ।
[सं० पितृ] मरे हुए पूर्वज ।
[सं० पितृ] किसी के सम्बन्ध के
या पुरुष जिसने अपने

वीर्य से उसे जन्म दिया हो । जनक । बाप ।

पितामह–पुं० [सं०] [स्त्री० पितामही] १. पिता का पिता । दादा । २. भीष्म । ३. ब्रह्मा ।

पितु*–पुं० दे० 'पिता' ।

पितृ–पुं० [सं०] [भाव० पितृत्व] १. किसी व्यक्ति के मृत बाप, दादा, पर-दादा आदि पूर्वज । पूर्व-पुरुष । (ऐन्सेस्टर) २. वह मृत पूर्व-पुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो । ३. वह जो घर का बड़ा और मालिक हो तथा घर-गृहस्थी, सम्पत्ति आदि का सारा प्रबन्ध करता हो । पिता के स्थान पर माना जानेवाला परिवार का अध्यक्ष । (पेट्रिऑर्क) ३. दे० 'पिता' ।

पितृ-ऋण–पुं० [सं०] धर्म-शास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में एक । (पुत्र उत्पन्न करने से मनुष्य इस ऋण से उद्धार होता है ।)

पितृक–वि० [सं० पितृ + क (प्रत्य०)] १. पिता सम्बन्धी । पिता का । २. (व्यवहार, उत्तराधिकार आदि की प्रथा) जिसमें गृहपति या पिता का पक्ष प्रधान माना जाता हो, गृह-स्वामिनी या माता के पक्ष का कोई विचार न होता हो । 'मातृक' का विपर्याय । (पेट्रिआर्कल)

पितृ-गृह–पुं० [सं०] स्त्रियों के लिए उनके माता-पिता का घर । पीहर । मायका ।

पितृ-तर्पण–पुं० [सं०] पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला तर्पण ।

पितृत्व–पुं० [सं०] पिता या पितृ होने का भाव ।

पितृ-पक्ष–पुं० [सं०] १. आश्विन की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का पक्ष जिसमें पितरों का श्राद्ध और ब्राह्मण-भोजन होता है । २. पिता, प्रपिता आदि से सम्बन्ध रखनेवाला पक्ष ।

पितृ-प्रणाली–स्त्री० [सं०] वह पारिवारिक प्रणाली जिसमें पिता या घर का बड़ा (गृह-स्वामी) ही घर के सब प्रबन्ध करता है; और उसी के नाम से परिवार या वंश

तथा उत्तराधिकार चलता है। 'मातृ-प्रणाली' का विपर्याय। (पेट्रिआर्की)

पितृ-भूमि–स्त्री० [सं०] १. पितरों के रहने का स्थान। २. पूर्वजों का देश। ३. पिता की जन्म-भूमि।

पितृ-यज्ञ–पुं०[सं०] पंच महायज्ञों में से एक जिसमें पितृ-तर्पण आदि कृत्य किये जाते हैं।

पितृ-लोक–पुं० [सं०] वह लोक जिसमें मरे हुए पितृ रहते हैं।

पितृ-विसर्जन–पुं० [सं०] पितृ-यज्ञ के अंतिम दिन अर्थात् आश्विन कृष्ण अमावास्या को समस्त पितरों का विसर्जन करने के लिए होनेवाला धार्मिक कृत्य।

पितृव्य–पुं० [सं०] पिता का भाई। चाचा।

पितृ-हत्या–स्त्री० [सं०] पिता की हत्या करना। बाप को मार डालना। (पेट्रिसाइड)

पित्त–पुं० [सं०] शरीर के अन्दर का एक तरल पदार्थ जो यकृत में बनता है और पाचन में सहायक होता है।

पित्तघ्न–वि० [सं०] पित्त-नाशक।

पित्ता–पुं०[सं०]१.दे०'पित्ताशय'। २.पित्त। **मुहा०–पित्ता मरना**=प्रकृति या मन में क्रोध, आवेश आदि न रह जाना। **पित्ता मारना** = (क) दूषित मनोविकार उभड़ने न देना। (ख) धैर्य-पूर्वक कठिन परिश्रम का काम करना।

३. हिम्मत। साहस।

पित्ताशय–पुं० [सं०] यकृत् में की वह थैली जिसमें पित्त रहता है।

पित्ती–स्त्री० [सं० पित्त + ई (प्रत्य०)] १. गरमी के दिनों में पसीने के कारण होनेवाला एक रोग जिसमें शरीर में छोटे छोटे दाने निकल आते हैं। अम्हौरी। घमौरी। २. वे दाने जो गरमी के दिनों में निकलते हैं। अँभौरी। गरमी-दाना।

पित्तेमार–वि० [हिं० पित्ता + मारना] [भाव० पित्तेमारी] (काम) जिसमें बहुत ही धैर्य या अध्यवसाय से बहुत समय तक लगे रहना पड़े।

पित्र्य–वि० दे० 'पैतृक'।

पिथौरा–पुं० दिल्ली के महाराज पृथ्वी चौहान के नाम का एक रूप।

पिदड़ी–स्त्री० दे० 'पिद्दी'।

पिदारा*–पुं० दे० 'पिद्दी'।

पिद्दा–पुं० दे० 'पिद्दी'।

पिद्दी–स्त्री० [अनु०] १. एक प्रकार छोटी चिड़िया। २. वह जो बहुत ही और नगण्य हो।

पिधान–पुं० [सं०] १. आवरण। २. तलवार की म्यान। ३. किवाड़ा।

पिनक–स्त्री० [हिं० पिनकना] किसी विशेषतः अफीम के नशे में सिर रहकर आगे झुकना।

पिनकना–अ० [अनु०] अफीम के में ऊँघना। पिनक लेना।

पिनपिनाना–अ० [पिनपिन से अनु पिनपिन स्वर निकालते हुए रोना।

पिनाक–पुं० [सं०] १. शिव का जो रामचन्द्र जी ने तोड़ा था। अज २. धनुष। ३. त्रिशूल।

पिन्नी–स्त्री० [सं० पिंडी] चावल या आटे का एक प्रकार का लड्डू।

पिपर–पुं० = पीपल का वृक्ष।

पिपराहा–पुं० [हिं० पीपल (प्रत्य०)] पीपल के वृक्षों का

पिपरिहा–पुं० [पिपरहा (स्थ राजपूतों की एक शाखा का अल्ल।

पिपासा–स्त्री० [सं०] [वि० पिपा जल पीने की इच्छा। तृषा। प्यास।

पिपीलिका–स्त्री० [सं०] च्यूँटी।

पिय*–पुं० [सं० प्रिय] पति। स्वा

पियरा†–वि० = पीला।

पियराई†–स्त्री० = पीलापन।

पियराना*–अ० = पीला पड़ना।

पियरी†–स्त्री० [हिं० पियरा] १. पीली रँगी हुई धोती। २. पीलापन।

=रेलना।
[सं० प्रियाल] एक वृक्ष
चिरौंजी निकलती है।
[स्त्री० पियारी] = प्यारा।

[?] नदी में का गहरा और
दह।

= प्याला।
[?] एक प्रकार की मछली।
= पीयूष (अमृत)।
= पीयूष (अमृत)।
= पृथ्वी।
= पीलापन।
[सं० पिटक] गुझिया नामक

[हिं० पीर = पीड़ा] दर्द
ना। (किसी अंग का)
= प्रीति।
[सं० प्रीति] १. प्रीति
।२. (किसी पर) प्रसन्न
ना।
दे० 'प्रियतम'।
[सं० प्रिय] प्रिय। प्यारा।
[सं० प्रोत] १. सूत, तागे
गूथना। पोहना। जैसे—माला
सूई के छेद या नाके में तागा

दे० 'पिरोना'।
दे० 'पुलिंदा'।
[सं० पिच्छिल] १. गिरना।
फिसलना।
[फा० पलीदी, पलीदोह = गन्दी
स्त्री० अल्पा० पिलही] १.
।२. बहुत ही गन्दी या
गन्दगी। ३. वह रूप जो
बहुत बुरी तरह से कूटने-
होता है। कचूमर।
[सं० पिल = प्रेरण] १. वेग
से किसी ओर टूट पड़ना। २. दृढ़ता-पूर्वक प्रवृत्त होना। भिड़ जाना। ३. रस या तेल निकालने के लिए पेरा जाना।

पिलपिला–वि० [अनु०] बहुत थोड़े दबाव से दब जानेवाला (कोमल पिंड)।

पिलपिलाना–स० [हिं० पिलपिला] बार बार दबाकर पिलपिला करना जिससे रस या गूदा बाहर निकलने लगे।

पिलाई–स्त्री० [हिं० पिलाना] १. पिलाने की क्रिया या भाव। २. तरल पदार्थ इस प्रकार उँड़ेलना कि वह नीचे के छेदों या सन्धियों में समा जाय। (ग्राउटिंग)

पिलाना–स० [हिं० पीना] १. पीने का काम दूसरे से कराना। पान कराना। २. पीने के लिए देना। ३. अन्दर भरना।

पिल्ला–पुं० [तामिल] कुत्ते का बच्चा।

पिल्लू–पुं० [सं० पीलु = कृमि] वह सफेद छोटा कीड़ा जो सड़े हुए फलों आदि में पड़ जाता है। ढोला।

पिव*–पुं० दे० 'पिय'।

पिवाना†–स० दे० 'पिलाना'।

पिशाच–पुं० [सं०] [स्त्री० पिशाचिनी, पिशाची] निम्न कोटि के और वीभत्स कर्म करनेवाली एक हीन देव-योनि। भूत। प्रेत।

पिशुन–पुं० [सं०] चुगलखोर।

पिष्ट–वि० [सं०] पिसा या पीसा हुआ।

पिष्ट-पेषण–पुं० [सं०] १. पिसे हुए को फिर से पीसना। २. कही हुई बात या किया हुआ काम व्यर्थ फिर फिर कहना या दोहराना।

पिसनहारी–स्त्री० [हिं० पीसना + हारी (प्रत्य०)] आटा पीसनेवाली स्त्री।

पिसना–अ० [हिं० पीसना] १. पीसा जाना। चूर्ण होना। २. कुचला जाना। ३. बहुत कष्ट या हानि सहना।

पिसवाज*–पुं० दे० 'पेशवाज'।

पिसवाना–स० हिं० 'पीसना' का प्रे०।

पिसाई–स्त्री० [हिं० पीसना] १. पीसने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. बहुत

अधिक परिश्रम। कड़ी मेहनत।

पिसाच*-पुं० दे० 'पिशाच'।

पिसान†-पुं० दे० 'आटा'।

पिसाना-स० हिं० 'पीसना' का प्रे०।

‡ अ० दे० 'पिसना'।

पिसुन*-पुं० दे० 'पिशुन'।

पिस्ता-पुं० [फा० पिस्तः] १. एक छोटा पेड़ जिसकी गिरी मेवों में मानी जाती है। २. इसके फल की गिरी।

पिस्तौल-स्त्री० [अं० पिस्टल] बन्दूक की तरह का एक छोटा अस्त्र। तमंचा।

पिस्सू-पुं० [फा० पश्शः] शरीर का रक्त चूसनेवाला एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।

पिहकना-अ० [अनु०] कोयल, पपीहे आदि का चहकना या बोलना।

पिहानी-स्त्री० [पिहानी स्थान ?] एक प्रकार की तलवार।

पिहित-वि० [सं०] १. ढका हुआ। आवृत। २. छिपा हुआ।

पुं० साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी की आकृति आदि से उसका कोई गुप्त भेद जानकर कोई ऐसा कार्य करने का उल्लेख होता है जिससे सूचित हो कि वह भेद खुल गया। यह 'सूक्ष्म' अलंकार से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है।

पींजना-स० [सं० पिंजन] रूई धुनना।

पींजरा*-पुं० दे० 'पिंजरा'।

पींड†-पुं० [सं० पिंड] १. दे० 'पिंड'। २. वृक्ष का धड़। तना। ३. पिंड-खजूर।

पींडरी*-स्त्री० दे० 'पिंडली'।

पी*-पुं० दे० 'पिय'।

स्त्री० [अनु०] पपीहे की बोली।

पीउ*-वि० [सं० प्रिय] परम प्रिय।

पुं० पति।

पीक-स्त्री० [सं० पिच] खाये हुए पान आदि के रस की थूक।

पीकदान-पुं० दे० 'उगालदान'।

पीकना†-अ० दे० 'पिहकना'।

पीच-स्त्री० [सं० पिच्च] भात का

पीछा-पुं० [सं० पश्चात्] १. पीछे की
का भाग। 'आगा' का विपर्याय।
२. मनुष्य के शरीर में पीठ का भाग
मुहा०-पीछा दिखाना = पीठ
भागना। **पीछा देना** = किसी
लगकर फिर पीछे हट जाना।
३. किसी के पीछे लगे रहने की क्रिया
मुहा०-पीछा करना = (क)
के लिए किसी को तंग करना
पड़ना। (ख) किसी को पकड़ने
रहस्य आदि जानने के लिए उस
पीछे रहना। **पीछा छुड़ाना** = (क)
करनेवाले से जान बचाना। (ख)
या अवांछित सम्बन्ध का अंत करना।
छोड़ना = (क) किसी व्यक्ति को तंग
से विरत होना। (ख) हाथ में लि
काम से अलग होना। *(किसी
पीछा लेना = अनुयायी बनना।
करण करना। उदा०—प्रभु मैं पीछे
तुम्हारो।—सूर।
४. कोई बात हो जाने के बाद का

पीछू*-अव्य० = पीछे।

पीछे-अव्य० [हिं० पीछा] १. पीठ की
पृष्ठ भाग में या दूसरी ओर।
मुहा०-(किसी के) पीछे च
(क) किसी का अनुगामी बनना।
करण या नकल करना। (कि
पीछे छोड़ना या लगाना =
पीछा करने के लिए किसी को
करना। (धन) पीछे डालना =
के लिए बचाकर रखना। पीछे पड़
(क) कोई काम कर डालने पर तु
(ख) किसी काम के लिए किसी से
कहना। तंग करना। (ग) बराबर
की बुराई करते रहना। पीछे लगना
(क) दे० 'पीछा करना'। (ख) साथ में ल
होना। (अपने) पीछे लगाना

स्थापित करना ।
) पीछे लगाना =
न्ध स्थापित कराना ।
' । पीछे हटना =
पालन न करना ।
कुछ दूर पर ।
टना या पड़ना = किसी
से घटकर होना ।
) पीछे छोड़ना = किसी
से आगे बढ़ जाना ।
उपरांत । बाद । ४. अंत
की अनुपस्थिति या अभाव
। वास्ते । जैसे–तुम्हारे पीछे मैं
हूँ ।
[सं० पीड़न] १. हाथ से
। प्रहार करना । मारना ।
पीटना = दुःख या शोक
हाथ से आघात करना ।
आघात लगाकर चिपटा या
। जैसे–चाँदी या सोने का पत्तर
जैसे-तैसे कोई काम समाप्त
से कुछ ले लेना ।
के मरने पर होनेवाला शोक ।
कठिनता । दिक्कत ।
] [स्त्री० पीठिका] १.
आदि का बैठने का आसन
। २. विद्यार्थियों के पढ़ने का
किसी वस्तु के रहने या होने की
। ४. सिंहासन । ५. वेदी ।
पवित्र स्थान । ७. वि-
आदि में किसी विशिष्ट दल
बैठने का सुरक्षित स्थान ।
-पीठ, विरोध पीठ ।
यालय में न्यायाधीश या
बैठने का स्थान । ९. न्यायाधीश
का वर्ग । (बेंच)
] १. शरीर में पेट की दूसरी
वाला भाग । पृष्ठ ।

मुहा०–पीठ ठोंकना = किसी की पीठ पर हाथ रखकर उसकी प्रशंसा करना या उसे उत्साहित करना । शाबाशी देना । **पीठ दिखाना** = दे० 'पीछा दिखाना' । **पीठ दिखाकर जाना**=स्नेह या ममता छोड़कर दूर चले जाना । **पीठ देना** = (क) विमुख होना । मुँह मोड़ना । (ख) भाग जाना । (ग) लेटना । **पीठ पर** = एक ही के गर्भ से किसी के पीछे जन्म लेने पर, या जन्म लेनेवाला ।

पीठ मींजना या पीठ पर हाथ फेरना = दे० '**पीठ ठोंकना**' । **पीठ पर होना** = मदद या हिमायत पर होना । **पीठ फेरना** = (क) प्रस्थान करना । (ख) भाग जाना । (ग) विमुख होना । (घ) अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना । **(घोड़े बैल आदि की) पीठ लगना** = जीन की रगड़ से पीठ पर घाव हो जाना । **पीठ लगाना** = लेटकर विश्राम करना । **पद–पीठ पर का** = जन्म-क्रम के विचार से अपने बड़े भाई या बड़ी बहन के बाद होनेवाला । **पीठ-पीछे** = किसी की अनुपस्थिति या परोक्ष में ।

२. किसी वस्तु की बनावट का पीछेवाला भाग । पृष्ठ-भाग ।

पीठना*–स० दे० 'पीसना' ।

पीठमर्द–पुं० [सं०] १. नायक का वह सखा जो मीठी बातों से रुष्ट नायिका को मना सके । २. रुष्ट नायिका को प्रसन्न कर सकनेवाला नायक ।

पीठ-स्थविर–पुं० [सं०] १. किसी पीठ, विशेषतः विद्या-पीठ का प्रधान अधिकारी । २. आज-कल, किसी महाविद्यालय का प्रधान अधिकारी । आचार्य । (प्रिन्सिपल)

पीठ-स्थान–पुं० दे० '**पीठ**' ६. ।

पीठा–पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान ।

पीठिका–स्त्री० [सं०] १. आधार । २.

आसन। ३. छोटा पीढ़ा। ४. परिच्छेद।

पीठी–स्त्री० [सं० पिष्टक] पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

पीड़–स्त्री० [सं० आपीड़] सिर पर बाँधा जानेवाला एक आभूषण।
स्त्री० दे० 'पीड़ा'।

पीड़क–पुं० [सं०] पीड़ा या कष्ट देनेवाला।

पीड़न–पुं० [सं०] [वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित] १. दबाना। २. पेरना। ३. दुःख या कष्ट देना। ४. अत्याचार करना। ५. अच्छी तरह पकड़ना।

पीड़ा–स्त्री० [सं०] १. वेदना। व्यथा। दर्द। २. कष्ट। तकलीफ। ३. रोग। व्याधि।

पीड़ित– वि० [सं०] १. जिसे पीड़ा हो। २. जिसे पीड़ा या कष्ट पहुँचाया गया हो। सताया हुआ। ३. रोगी। बीमार। ४. जोर से दबाया हुआ।

पीडरी*–स्त्री० दे० 'पिंडली'।

पीढ़ा†–पुं० [सं० पीठक] [स्त्री० अल्पा० पीढ़ी] १. बैठने के लिए काठ का छोटा और कम ऊँचा आसन। पाटा।
मुहा०– (किसी को) ऊँचा पीढ़ा देना = किसी को ऊँचे आसन या पद पर बैठाना। सम्मानित करना।
२. सिंहासन।

पीढ़ी–स्त्री० [सं० पीठिका] १. कुल-परंपरा में किसी के बाप, दादे, परदादे आदि अथवा बेटे, पोते, परपोते आदि के विचार से क्रमात् कोई स्थान। पुश्त। २. किसी विशेष समय में होनेवाले व्यक्तियों की समष्टि। (जेनरेशन)
†स्त्री० [हिं० पीढ़ा] बैठने के लिए काठ आदि का बना एक प्रकार का आसन। छोटा पीढ़ा।

पीत–वि० [सं०] [स्त्री० पीता, भाव० पीतता] १. पीला। २. भूरा।
पुं० १. पीला रंग। २. भूरा रंग।
वि० [सं० 'पान' का भूत०] पीया हुआ।

पीत धातु*–स्त्री० दे० 'गोपी-चंदन'।

पीतम*– वि० दे० 'प्रियतम'।

पीत मणि–पुं० [सं०] पुखराज।

पीतर†–पुं० = पीतल।
पुं० = पितृ।

पीतल–पुं० [सं० पित्तल] ताँबे और के मेल से बनी हुई वह प्रसिद्ध पीली धातु जिससे बरतन बनते हैं।

पीतांबर–पुं० [सं०] १. पीला २. रेशमी धोती जो पूजा-पाठ के पहनी जाती है। ३. श्रीकृष्ण।

पीदड़ी–स्त्री० दे० 'पिद्दी'।

पीन–वि० [सं०] [भाव० पीनता] स्थूल। मोटा। २. पुष्ट। ३. भरापू

पीनक–स्त्री० दे० 'पिनक'।

पीनस–पुं० [सं०] नाक का एक रो
स्त्री० [फा० फीनस] पालकी। (सवा

पीना–स० [सं० पान] १. तरल मुँह में रखकर गले के नीचे उतार पान करना। २. कोई बात या मन छिपा या दबा जाना। कोई विचार मनोविकार मन ही मन दबा देना। शराब पीना। ४. तमाकू, गाँजे आदि धूआँ मुँह में खींचकर बाहर निका धूम्रपान करना। ५. सोखना।

पीप–स्त्री० [सं० पूय] फोड़े आदि निकलनेवाला सफेद लसीला विषाक्त पीब। मवाद।

पीपरपर्न*–पुं० [हिं० पीपल + पर्ण कान में पहनने का एक गहना। पत्ता

पीपल–पुं० [सं० पिप्पल] एक बड़ा वृक्ष जो हिन्दुओं में बहुत पवित्र जाता है।
स्त्री० [सं० पिप्पली] एक लता चरपरी कलियाँ पाचक होती हैं।

पीपा–पुं० [?] १. काठ या लोहे का बड़ा गोल पात्र जिसमें घी, तेल, शराब, शीरा आदि रखे जाते हैं। २. एक प्रकार

राज्य छोड़कर विरक्त
दे।
'।
'पिय'।
'पीला'।
दे॰ 'पीयूष'।
[हिं॰] १. अमृत। सुधा।
दे॰ 'पेउस'।
[हिं॰ पीड़ा] १. पीड़ा। दर्द।
ख।
किसी की) पीर जानना या
का कष्ट या दुःख समझना।
।
][भाव॰ पीरी] १. वृद्ध।
महात्मा। सिद्ध! ३. गुरु।
(उल्ल॰)
[सं॰ पीडक] १. किसी को
ने या पीड़ित करनेवाला। २.
ड़ा या कष्ट समझने या दूर
। सहृदय और दयालु। उदा॰—
बीरक।—सूर।
दे॰ 'पेरना'।
दे॰ 'पीड़ा'।
पीरी] दे॰ 'पीला'।
[फा॰] १. बुढ़ापा। वृद्धा-
२. स्वयं पीर बनकर दूसरों को
नुयायी बनाने का काम। ३.
रूप से प्रकट की जानेवाली
मर्थ्य आदि।
[फा॰] हाथी। गज।
पुं॰ [फा॰ फ़ीलपा] श्लीपद
जिसमें हाथ या पैर फूल जाता
है।
पुं॰ दे॰ 'फ़ीलवान'।
पुं॰ दे॰ 'फ़ीलबान'।
पुं॰ [फा॰ फ़लीतसोज़] दीया
। चिरागदान।
[सं॰ पीत] [स्त्री॰ पीली, भाव॰ पीलापन] १. हल्दी, केसर आदि के रंग का। जर्द। २. कांतिहीन। निस्तेज। **मुहा॰-पीला पड़ना** = (क) भय, चिन्ता या रोग के कारण शरीर में रक्त का अभाव सूचित होना। (ख) भय से चेहरे पर सफेदी आना।
पुं॰ हल्दी की तरह का रंग।

पीलिया–पुं॰ [हिं॰ पीला] कमल रोग।

पीलू–पुं॰ [सं॰ पीलु] १. एक वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है। २. दे॰ 'पिल्लू'।
पुं॰ संगीत में एक प्रकार का राग।

पीव–पुं॰ [हिं॰ पिय] पिय। पति।

पीवना*–स॰ दे॰ 'पीना'।

पीवर–वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ पीवरा, भाव॰ पीवरता] १. मोटा। स्थूल। २. भारी।

पीसना–स॰ [सं॰ पेषण] १. रगड़कर आटे या चूर्ण के रूप में करना। २. जल की सहायता से रगड़कर महीन करना। ३. इस प्रकार दबाना या पीड़ित करना कि उभरने की शक्ति न रह जाय। ४ विशेष परिश्रम का काम करना।

पीहर–पुं॰ [सं॰ पितृ + हिं॰ घर] स्त्रियों के लिए, माता-पिता का घर। मैका।

पीहा–पुं॰ [अनु॰] पपीहे की बोली।

पुंगव–पुं॰ [सं॰] बैल। वृष।
वि॰ श्रेष्ठ। उत्तम।

पुंगीफल–पुं॰ [सं॰] सुपारी।

पुँछार*–पुं॰ [हिं॰ पूँछ] मयूर। मोर।

पुंज–पुं॰ [सं॰] राशि। ढेर।

पुंजन–पुं॰ [सं॰ पुंज] [वि॰ पुंजित] धीरे धीरे जमा होने, बढ़ने आदि के कारण मिलकर बड़े मान या रूप में होना। (अक्यूम्यूलेशन)

पुंजातीय–वि॰ [सं॰] लिंग के विचार से पुरुष या नर जाति का। (मेल)

पुंजित–वि॰ [सं॰] जो धीरे धीरे जमा होने, बढ़ने आदि के कारण मिलकर बड़े

मान या रूप में हो गया हो। (अक्यूम्यूलेटेड)

पुंजी*–स्त्री० दे० 'पूँजी'।

पुंडरीक–पुं० [सं०] १. कमल। २. सिंह। शेर। ३. तिलक। टीका। ४. सफेद रंग का हाथी। ५. अग्नि कोण के दिग्गज का नाम। ६. अग्नि। आग।

पुंडरीकाक्ष–पुं० [सं०] विष्णु।

पुंलिंग–पुं० [सं०] १. पुरुष का चिह्न। २. वह जो पुरुष के चिह्न या लिंग से युक्त हो। (मैस्कुलिन) ३. व्याकरण में वह शब्द जो पुरुष जाति या उससे सम्बन्ध रखनेवाले विशेषणों, क्रियाओं आदि का बोधक हो।

पुंश्चली–स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी या दुश्चरित्रा स्त्री। कुलटा। छिनाल।

पुंसंतति–स्त्री० [सं०] पुरुष या नर जाति की सन्तान। (मेल डिसेन्डेन्ट)

पुंस*-पुं० [सं०] पुरुष। मर्द।

पुंसक–वि० [सं०] १. जिसमें स्त्री-संभोग और संतान उत्पन्न करने की शक्ति हो। २. जिसमें कुछ कर सकने की शक्ति हो। (पोटेन्ट)

पुंसत्व–पुं० [सं०] १. पुरुषत्व। २. स्त्री के साथ संभोग करने और संतान उत्पन्न करने की शक्ति। (पोटेन्सी)

पुंसवन–पुं० [सं०] १. दूध। २. एक संस्कार जो गर्भाधान से तीसरे महीने होता है।

पुआ–पुं० दे० 'मालपूआ'।

पुआल–पुं० दे० 'पयाल'।

पुकार–स्त्री० [हिं० पुकारना] १. पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव। टेर। २. रक्षा, सहायता, प्रतिकार आदि के लिए बुलाना। दुहाई। ३. किसी वस्तु की बहुत अधिक माँग। ४. किसी बात की बहुत अधिक चर्चा या प्रसिद्धि। ५. संगीत में किसी स्वर को खींचकर ऊपर चढ़ाते हुए यथेष्ट ऊँचाई पर ले जाना और
उसे ठहराकर कुछ देर तक उसका
करना। टीप।

पुकारना–स० [सं० प्रकुश = पुकार
१. नाम लेकर बुलाना। आवाज
२. नाम रटना। ३. चिल्लाकर
माँगना, सुनाना या बुलाना। ४.
करना। अभियोग लगाना।

पुखर*–पुं० [सं० पुष्कर] तालाब।

पुखराज–पुं० [सं० पुष्पराग] एक
का पीला रत्न।

पुख्ता–वि० [फा० पुख्तः] [
पुख्तगी] पक्का। दृढ़। मजबूत।

पुगना–अ० दे० 'पूजना'।

पुचकारना–स० [अनु०] [भाव०
कार, पुचकारी] चूमने का सा शब्द
हुए प्यार जताना। चुमकारना।

पुचकारी–स्त्री० [हिं० पुचकारना]
से निकाला हुआ चूमने का-सा प्रेम
शब्द। चुमकार।

पुचारा–पुं० [पुच पुच से अनु० या
१. गीले कपड़े से पोछने या पतला
करने का काम। २. हलका लेप।
वह कपड़ा या घुली हुई वस्तु जिससे
या पुचारा देते हैं। ४. प्रसन्न या
करने के लिए कही जानेवाली बात।
झूठी प्रशंसा। चापलूसी। खुशामद

पुच्छ–स्त्री० [सं०] १. दुम। पूँ
अंतिम या पिछला भाग।

पुच्छल–वि० [हिं० पुच्छ] पूँछ
दुमदार।

यौ०–पुच्छल तारा = दे० 'केतु'

पुछल्ला–पुं० [हिं० पूँछ] १. पूँछ
तरह पीछे लगी हुई और प्रायः अनाव
वस्तु। २. सदा पीछे लगा रहनेवा
पीछा न छोड़नेवाला।

पुछवैया–वि० [हिं० पूछना] १. पूछने-
वाला। २. खोज-खबर लेनेवाला।

चीज। आच्छादन। २. कटोरे या दोने के आकार का कोई पात्र। ३. औषध पकाने के लिए चारो ओर से बंद किया हुआ पिंड या पात्र। संपुट। (वैद्यक)

पुटकी–स्त्री० [सं० पुटक] पोटली। गठरी। स्त्री० [हिं० पटपटाना = मरना] १. आकस्मिक मृत्यु। २. दैवी विपत्ति।

पुटरी(ली)–स्त्री० दे० 'पोटली'।

पुटियाना†–स० [हिं० पुट देना] फुसलाना।

पुटी–स्त्री० [सं० पुट] १. छोटा दोना या कटोरा। २. पुड़िया। ३. कौपीन। लँगोटी।

पुटीन–स्त्री० [अं० पुटी] लकड़ी के जोड़, छेद आदि भरने का एक मसाला।

पुट्ठा–पुं० [सं० पुष्ट या पृष्ठ] १. चूतड़ के ऊपर का भाग। २. पुस्तक की जिल्द बाँधने के लिए बना हुआ गत्ते का आवरण।

पुठवार–क्रि० वि० [हिं० पुट्ठा] १. पीछे। २. बगल में।

पुठवाल–पुं० [हिं० पुट्ठा + वाला] पृष्ठ-रक्षक। सहायक। मददगार।

पुड़ा–पुं० [सं० पुट] [स्त्री० अल्पा० पुड़ी, पुड़िया] बड़ी पुड़िया।

पुड़िया–स्त्री० [सं० पुटिका] १. कागज मोड़ या लपेटकर बनाया हुआ वह संपुट जिसमें कोई वस्तु रखी हो। २. इस प्रकार लपेटी हुई दवा की एक मात्रा। ३. धन-संपत्ति और पूँजी। जैसे–अब तो उनकी लाख रुपये की पुड़िया हो गई है।

पुढ़वी*–स्त्री० = पृथ्वी।

पुढ़ाई*–स्त्री० = प्रौढ़ता।

पुण्य–वि० [सं०] १. पवित्र। २. शुभ। पुं० १. धार्मिक दृष्टि से शुभ फल देनेवाला काम। धर्म-कार्य। २. ऐसे शुभ कार्य का फल। ३. परोपकार आदि का काम।

पुण्य-काल–पुं० [सं०] दान-पुण्य या पवित्र कार्य करने का समय।

पुण्य-क्षेत्र–पुं० [सं०] तीर्थ-स्थान।

पुण्य-तिथि–स्त्री० [सं०] १. पुण्य या

शुभ कार्य करने के लिए कोई अच्छा दिन या तिथि। २. किसी महापुरुष के निधन की तिथि जिसमें उसके गुणों और कीर्त्ति का वर्णन और स्मरण किया जाता है। जैसे–लोकमान्य तिलक की पुण्य-तिथि।

पुण्य-भूमि–स्त्री० [सं०] आर्यावर्त्त।

पुण्यवान्–वि० [सं० पुण्यवत्] [स्त्री० पुण्यवती] पुण्य करनेवाला। धर्मात्मा।

पुण्य-श्लोक–वि० [सं०] [स्त्री० पुण्य-श्लोका] पवित्र आचरणवाला। शुद्ध-चरित्र।

पुण्य-स्थान–पुं० [सं०] तीर्थ-स्थान।

पुण्याई–स्त्री० [हिं० पुण्य] पुण्य का फल या प्रभाव।

पुण्यात्मा–पुं० [सं० पुण्यात्मन्] वह जो बराबर पुण्य करता रहे। धर्मात्मा।

पुण्यार्थ–वि० [सं०] धार्मिक दृष्टि से किसी पुण्य-कार्य अथवा यों ही किसी लोकोपकार के लिए दान के रूप में दिया हुआ। (चैरिटेबुल) जैसे–पुण्यार्थ संपत्ति।

पुं० १. उक्त प्रकार का उद्देश्य, भावना या विचार। (चैरिटेबुल पर्पज़) २. उक्त प्रकार के उद्देश्य से दान किया हुआ धन या संपत्ति।

पुण्यार्थ-निधि–स्त्री० [सं०] वह निधि या धन-संपत्ति जो पक्की लिखा-पढ़ी करके किसी धार्मिक या सामाजिक लोकोपकारी कार्य के लिए दान की गई हो। (चैरिटेबुल एन्डाउमेन्ट)

ुतना–अ० [हिं० पोतना] [स० पोतना] पोता जाना। पुताई होना।

ुतरा*–पुं० [स्त्री० पुतरी] दे० 'पुतला'।

ुतरिका*–स्त्री० दे० 'पुत्रिका'।

ुतला–पुं० [सं० पुत्रक] [स्त्री० पुतली] लकड़ी, घास, कपड़े आदि का बना हुआ मनुष्य का आकार।

मुहा०–(किसी का) पुतला बाँधना = चारो ओर किसी की बदनामी करते फिरना। **पुतला जलाना** = (क) दूसरे देश में मरनेवाले का पुतला बनाकर दाह करना। (ख) किसी के प्रति घृणा प्रकट या उसकी मृत्यु मनाने के लिए उस पुतला बनाकर जलाना।

पुतली–स्त्री० [हिं० पुतला] १. छोटा पुत गुड़िया। २. आँख के बीच का काला

मुहा०–पुतली फिर जाना = मरने समय आँखें पथरा जाना।

पुतली-घर–पुं० [हिं० पुतली+घर] कार विशेषतः कपड़े बुनने का बड़ा कारखाना।

पुताई–स्त्री० [हिं० पोतना + आई (प्रत्य पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पुतारा–पुं० दे० 'पुचारा'।

पुत्त*–पुं० दे० 'पुत्र'।

पुत्तरी*–स्त्री० १. दे० 'पुत्री'। २. दे 'पुतली'।

पुत्तलिका(ली)–स्त्री० [सं०] १. पुत २. गुड़िया।

पुत्र–पुं० [सं०] [स्त्री० पुत्री] लड़का। बे

पुत्रवती–वि० स्त्री० [सं०] जिसके पु हो। पुत्रवाली (स्त्री)।

पुत्र-वधू–स्त्री० [सं०] पुत्र की स्त्री।

पुत्रवान्–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० पु वती] जिसके पुत्र हो। पुत्रवाला।

पुत्रिका–स्त्री० [सं०] १. लड़की। बे २. पुत्र के स्थान पर और उसके मानी हुई कन्या। ३. गुड़िया। ४. कठपुतली। ५. मूर्त्ति।

पुत्री–स्त्री० [सं०] लड़की। बेटी।

पुत्रेष्टि–पुं० [सं०] पुत्र-प्राप्ति की से किया जानेवाला एक यज्ञ।

पुदीना–पुं० [फा० पोदीनः] एक छो पौधा जिसकी सुगन्धित पत्तियाँ मसाले काम में आती हैं।

पुद्गल–पुं० [सं०] १. कोई ऐसा पदार्थ जिसमें रूप, रस, स्पर्श आदि हों। (जै २. शरीर। बदन। (बौद्ध) ३. आत्मा।

पुनः–अव्य० [सं० पुनर्] १. फिर से। दोबारा।

होता है जो सुनने में तो एकार्थक और फलतः पुनरुक्त से जान पड़ें पर वास्तव में प्रसंगतः भिन्न भिन्न अर्थ रखते हों। जैसे—'अंबर-बास सने बसन, हरि लै चढ़े कदंब।' में अंबर, बास और बसन देखने में तो एकार्थक जान पड़ते हैं, पर वास्तव में यहाँ उनका अर्थ है—अंबर नामक सुगन्धित द्रव्य से सुगन्धित किये हुए वस्त्र।

पुनरुक्ति—स्त्री० [सं०] [वि० पुनरुक्त] १. एक बार कही हुई बात फिर कहना। २. दोबारा कही हुई बात। (रिपीटीशन)

पुनरुज्जीवन—पुं० [सं०] [वि० पुनरुज्जीवित] फिर से जीवित होना। (रिवाइवल)

पुनरुज्जीवित—वि० [सं०] [संज्ञा पुनरुज्जीवन] जिसे फिर से जीवित किया गया हो। जिसमें फिर से जान लाई गई हो। (रिवाइव्ड)

पुनरुत्थान—पुं० [सं०] १. फिर से उठना। २. पतन होने के बाद फिर से उठना, उन्नति करना या समर्थ होना। साहित्य, कला आदि में फिर से आगे बढ़ना या उन्नत होना। (रिनेसान्स)

पुनरुद्धार—पुं० [सं०] टूटी-फूटी या नष्ट हुई चीज को फिर से ठीक करके उसे यथावत् या उसका उद्धार करना। (रिस्टोरेशन, रिनोवेशन)

पुनर्ग्रहण—पुं० [सं०] छोड़ा हुआ कार्य या पद फिर से ग्रहण करना। (रिज़म्पशन)

पुनर्घटन—पुं० [सं०] किसी चीज का फिर से रचा या बनाया जाना।

पुनर्जन्म—पुं० [सं०] मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में जन्म लेना। आत्मा का फिर से दूसरा शरीर धारण करना। (ट्रान्स-माइग्रेशन)

पुनर्जीवन—पुं० १. दे० 'पुनरुज्जीवन'। २. दे० 'पुनर्जन्म'।

पुनर्निर्माण—पुं० [सं०] गिरे या टूटे-फूटे हुए को फिर से बनाना। (री-कन्सट्रक्शन)

पुनर्परीक्षण–पुं० [सं०] एक बार जिसकी परीक्षा की या ली जा चुकी हो, उसकी फिर से परीक्षा करना या लेना। (री-इग्ज़ामिनेशन)

पुनर्मुद्रण–पुं० [सं०] १. एक बार छपे हुए ग्रन्थ, लेख, पत्रिका आदि को फिर से छापने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार छापे हुए ग्रन्थ, लेख, पत्रिका आदि।

पुनर्वाद–पुं० [सं०] [वि० पौनर्वादिक] १. किसी न्यायालय से विवाद का निर्णय हो जाने पर उसके विरोध में, ऊँचे न्यायालय में फिर से उस विवाद पर विचार होने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। (अपील) २. कोई कही हुई बात फिर से ज्यों की त्यों या कुछ उलट-फेरकर कहना। (टॉटॉलोजी)

पुनर्वादी–पुं० [सं०] किसी ऊँचे न्यायालय में पुनर्वाद उपस्थित करनेवाला। (एपेलेन्ट)

पुनर्वास–पुं० [वि० पुनर्वासित] दे० 'पुनर्वासन'।

पुनर्वासन–पुं० [सं०] (उजड़े हुए लोगों को) फिर से बसाना या आबाद करना। (री-हैबिलिटेशन)

पुनर्विधान–पुं० [सं०] किसी चीज का फिर से रचा या बनाया जाना। पुनर्घटन।

पुनर्विधायन–पुं० [सं०] [वि० पुनर्विहित] किसी बने हुए विधान को घटा या बढ़ाकर नये सिरे से विधान का रूप देना। (री-एनैक्टमेन्ट)

पुनर्विधायित–वि० दे० 'पुनर्विहित'।

पुनर्विभाजन–पुं० [सं०] एक बार जिसका विभाजन हो चुका हो, उसका फिर से विभाजन करना। (री-डिस्ट्रीब्यूशन)

पुनर्विवाह–पुं० [सं०] किसी का, विशेषतः विधवा स्त्री का, फिर से होनेवाला विवाह।

पुनर्विहित–वि० [सं०] १. जिसका फिर से विधान हुआ हो या किया गया हो। २. (पहले से बना हुआ विधान) जो फिर से घटा-बढ़ाकर ठीक किया गया और फिर से नये विधान के रूप में लाया गया हो। (री-एनैक्टेड)

पुनर्व्यंजन–पुं० [सं०] [वि० पुनर्व्यं
पहले से बनी हुई चीज फिर से ज्यों की
या उसी तरह बनाकर सबके सामने रखना
(री-प्रोडक्शन)

पुनर्व्यक्त–वि० [सं०] ज्यों का त्यों
पहले की तरह बनाकर फिर से सामने
या रखा हुआ। (री-प्रोड्यूस्ड)

पुनर्सारण–पुं० [सं०] [वि० पुनर्सा
रेडियो के एक आस्थान से प्रसारित
वाला कार्यक्रम ज्यों का त्यों उसी
दूसरे आस्थान से भी प्रसारित कि
जाना। (रिले)

पुनि*–क्रि० वि० [सं० पुनः] फिर। पु

पुनी*–पुं० दे० 'पुण्यात्मा'।

*स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

*क्रि० वि० [सं० पुनः] पुनः। फि

पुनीत–वि० [सं०] [स्त्री० पुनीत
पवित्र।

पुन्न†–पुं० = पुण्य।

पुन्य*–पुं० = पुण्य।

पुन्यता(ई)*–स्त्री० [सं० पुण्य]
धर्मशीलता। २. पवित्रता। ३. दे० 'पुन

पुरंदर–पुं० [सं०] १. इन्द्र। २. वि

पुरः–अव्य० [सं० पुरस्] १. आगे
पहले।

पुरःदत्त–वि० [सं०] पहले से दिया
(शुल्क, परिव्यय आदि) (प्री-पेड)

पुरःदान–पुं० [सं०] (शुल्क, देन
पहले से देना। (प्री-पेमेन्ट)

पुरःसंगी–वि० [सं०] किसी कार्य, वि
तथ्य में उससे पहले, सहायक या स
में होनेवाला। (एक्सेसरी बिफोर दी
पुरःसर–वि० [सं०] १. अगुआ।
साथी। ३. मिला हुआ। युक्त।

पुर–पुं० [सं०] [स्त्री० पुरी] १. नगर
शहर। २. आगार। घर। ३. लोक

हो।

] आगे। सामने।
कहौ पुर मेरे।

हुआ। पूर्ण।

।
[हिं० पुटकिनी] १. कमल
।
[सं०] प्राचीन भारत
वह प्रधान अधिकारी
लेख्यों या दस्तावेजों
रहती थी। (इसका पद
के रजिस्ट्रार के पद के
।)
पुरुष] [स्त्री० पुरखी]
आदि पूर्वज।
तर जाना = (पुत्र आदि
) पूर्व-पुरुषों को पर-लोक
मिलना।
और फलतः बुद्धिमान तथा
—है तो जरा सा लड़का,
तरह बातें करता है।
[फ़ा० पुर्ज़ः] १. टुकड़ा।
हुआ टुकड़ा। कतरन।
अंग। ४. अंश। भाग।
कोई महत्त्व-पूर्ण अंग

पुरजा=चालाक आदमी।
] स्वर्ण। सोना।
[हिं० पूरा] १. समाप्त या
पूरा पड़ना। यथेष्ट होना।
[सं० पूर्व] पूर्व या पिछले

[हिं० पूरब] पूरब का।
दे० 'पुरवला'।
[सं० परमट] चमड़े का वह
द्वारा बैलों की सहायता
के लिए पानी खींचा

जाता है। चरसा। मोट।

पुरवना*-स० [हिं० पूरना] १. किसी की आशा या कामना पूरी करना। २. पूर्ण करना। भरना। ३. (प्रतिज्ञा या वचन) पूरा करना।

मुहा०-साथ पुरवना = अन्त तक पूरा साथ देना।

अ० १. पूरा होना। २. यथेष्ट होना।

पुरवा-पुं० [सं० पुर] छोटा गाँव।

पुं० दे० 'पुरवाई'।

पुं० [सं० पुटक] मिट्टी का छोटा गोल पात्र। कुल्हड़।

*पुं० = पूर्वा (नक्षत्र)।

पुरवाई(वैया)-स्त्री० [सं० पूर्व + वायु] पूरब से चलने या आनेवाली वायु।

पुरश्चरण-पुं० [सं०] १. किसी काम के लिए पहले से उपाय सोचना और प्रबन्ध करना। २. तंत्र शास्त्र में मंत्र, स्तोत्र आदि का किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए, नियमपूर्वक पाठ करना।

पुरसा-पुं० [सं० पुरुष] साढ़े चार या पाँच हाथ की ऊँचाई की एक नाप।

पुरस्कार-पुं० [सं०] [वि० पुरस्कृत] १. आगे करने या लाने की क्रिया। २. आदर। सम्मान। ३. किसी अच्छे काम के लिए आदरपूर्वक दिया जानेवाला धन या द्रव्य। पारितोषिक। इनाम। ४. स्वीकार।

पुरस्कृत-वि० [सं०] १. आगे किया, रखा या बढ़ाया हुआ। २. आदृत। सम्मानित। ३. जिसे पुरस्कार मिला हो।

पुरस्सर-वि० दे० 'पुरःसर'।

पुरहूत*-पुं० दे० 'पुरूहूत'।

पुरांगना-स्त्री० [सं०] नगर में रहनेवाली स्त्री। नगर-निवासिनी।

पुरा-वि० [सं०] प्राचीन। पुराना। (यौ० के आरम्भ में; जैसे-पुराकाल, पुरातत्व।)

पुं० [सं० पुर] छोटा गाँव।

पुराकृत-वि० [सं० पुरा + कृत] १. प्राचीन काल का बना हुआ। २. प्राचीन। पुराना।

पुराण-वि० [सं०] प्राचीन। पुराना। पुं० १. मनुष्यों, देवताओं, दानवों आदि की वे कथाएँ जो परंपरा से चली आ रही हों। २. हिन्दुओं के वे १८ धार्मिक आख्यान या धर्म-ग्रंथ जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, लय और प्राचीन ऋषियों तथा राज-वंशों आदि के वृत्तांत और देवी-देवताओं, तीर्थों आदि के माहात्म्य हैं। ३. अठारह की संख्या।

पुरातत्व-पुं० [सं०] वह विद्या जिसमें प्राचीन काल, मुख्यतः इतिहास पूर्व-काल की वस्तुओं के आधार पर पुराने अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है। प्रत्न-विज्ञान। (आर्कियॉलोजी)

पुरातत्वज्ञ-पुं० [सं०] वह जो पुरातत्व का अच्छा ज्ञाता हो। (आरकियालॉजिस्ट)

पुरातन-वि० [सं०] प्राचीन। पुराना। पुं० विष्णु।

पुरान†-वि० दे० 'पुराना'।
पुं० दे० 'पुराण'।

पुराना-वि० [सं० पुराण] [स्त्री० पुरानी] १. जिसे हुए या बने बहुत दिन हो गये हों। बहुत दिनों का। प्राचीन। पुरातन। २. जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी या ठीक दशा में न रह गया हो। जीर्ण। ३. जिसे बहुत दिनों का अनुभव या ज्ञान हो। परिपक्व।

मुहा०-पुराना खुर्राट=बहुत अनुभवी। **पुराना घाघ** = बहुत बड़ा चालाक।

४. बहुत काल या समय का। ५. जिसका प्रचलन उठ गया हो।

*स० [हिं० 'पूरना' का प्रे०] १. पूरा करना या कराना। २. पालन करना या कराना।

पुरारि-पुं० [सं०] शिव।

पुराल*-पुं० दे० 'पयाल'।

पुरा-लिपि-स्त्री० [सं०] प्राचीन
में प्रचलित लिपि।

पुरा-लिपि-शास्त्र-पुं० [सं०] वह
जिसमें प्राचीन काल की (सैकड़ों
वर्ष पहले की) लिपियाँ पढ़ने का
होता है। (एपिग्राफी)

पुरावना*-स० दे० 'पुराना' (पूरा

पुरावृत्त-पुं० [सं०] प्राचीन
वृत्तान्त या हाल।

पुरिया†-स्त्री० [हिं० पूरना]
की वह नली जिसपर (कपड़ा बुने
पहले) बाने के सूत फैलाये जाते हैं।
†स्त्री० १. दे० 'पुड़िया'। २. दे०
(पकवान)।

पुरी-स्त्री० [सं०] १. नगरी।
शहर। २. उड़ीसा की जगन्नाथ पुरी।

पुरीष-पुं० [सं०] विष्ठा। मल।

पुरु-पुं० [सं०] १. देव-लोक। २.
३. शरीर। ४. एक प्राचीन
ययाति के पुत्र थे।

पुरुख*-पुं० दे० 'पुरुष'।

पुरुष-पुं० [सं०] [भाव० पुरुषत्व]
नर जाति का मनुष्य। मर्द। २.
में एक अकर्त्ता और असंग चेतन
जो प्रकृति से भिन्न और उसका पूरक
माना गया है। आत्मा। ३. विष्णु
सूर्य। ५. जीव। ६. व्याकरण में
नाम और उसके साथ आनेवाली
के रूपों का वह भेद जिससे यह
है कि सर्वनाम या क्रियापद
वक्ता (कहनेवाले) के लिए हुआ है
श्रोता या संबोध्य (जिससे कहा
लिए अथवा किसी दूसरे के लिए।
सन) जैसे-'मैं' उत्तम पुरुष है,
मध्यम पुरुष है, और 'वह' अन्य
७. पूर्वज। पुरखा। ८. पति। स्वामी।
वि० नर जाति का (जीव)।

पुरुषानुक्रम-पुं० [सं०] पुरखों

पुल–पुं० [फा०] नदियों आदि के ऊपर, उन्हें पार करने के लिए, नावें पाटकर, मोटे रस्से बाँधकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया हुआ रास्ता और उससे संबंध रखनेवाली सारी रचना। सेतु। **मुहा०**–**(किसी बात का) पुल बाँधना** = बहुत अधिकता कर देना। झड़ी लगाना। **(किसी वस्तु का) पुल टूटना** = बहुत अधिक मान में आ पड़ना।

पुलक–पुं० [सं०] प्रेम, हर्ष आदि के आवेग से रोएँ खड़े होना। रोमांच।

पुलकना*–अ० [सं० पुलक] प्रेम, हर्ष आदि से रोएँ खड़े होना। पुलकित या गद्गद होना।

पुलकाई*–स्त्री० दे० 'पुलक'।

पुलकालि*–स्त्री० दे० 'पुलकावलि'।

पुलकावलि–स्त्री० [सं०] हर्ष के कारण खड़ी या प्रफुल्ल होनेवाली रोमावली।

पुलकित–वि० [सं०] जिसे प्रेम या हर्ष के आवेग से पुलक हुआ हो। गद्गद।

पुलट†–स्त्री० दे० 'पलट'।

पुलटिस–स्त्री० [अं० पाउल्टिस] फोड़े आदि पकाने के लिए उनपर लगाकर बाँधा जानेवाला दवाओं का मोटा लेप।

पुलत्थना*–स० = पलटना। (जैसे–*उलत्थना-पुलत्थना।)

पुलपुला–वि० [अनु०] [क्रि० पुलपुलाना] १. इतना ढीला और मुलायम कि जरा-सा में दबाने से झट दब जाय। २. बार बार दबने और उभड़ने या खुलने और बन्द होनेवाला।

पुलहना*–अ० दे० 'पलुहना'।

पुलाक–पुं० [सं०] १. उबाला हुआ चावल। भात। २. पुलाव।

पुलाव–पुं० [सं० पुलाक] मांस और चावल एक में पकाकर बनाया हुआ एक व्यंजन। मांसोदन।

पुलिंदा–पुं० [हिं० पूला] लपेटे हुए कपड़े,

कागज आदि का मुट्ठा। (बंडल)

पुलिन-पुं० [सं०] १. जल के हट जाने से निकली हुई जमीन। चर। २. तट। किनारा।

पुलिया-स्त्री० [हिं० पुल + इया (प्रत्य०)] वह बहुत छोटा पुल जो प्रायः छोटे नालों को पार करने के लिए सड़कों पर बनाया जाता है।

पुलिस-स्त्री० [अं०] १. प्रजा की जान और माल की रक्षा करनेवाला सिपाही या अफसर। आरक्षी। २. इस प्रकार के कार्य-कर्त्ताओं का विभाग।

पुलोमजा-स्त्री० [सं०] इन्द्र की पत्नी, शची।

पुल्लिंग-पुं० दे० 'पुंलिंग'।

पुवा†-पुं० दे० 'मालपूआ'।

पुश्त-स्त्री० [फा०] १. पृष्ठ। पीठ। २. पिछला भाग। पीछा। ३. वंश-परंपरा में कोई स्थान। विशेष दे० 'पीढ़ी'।

यौ०-**पुश्त-दर-पुश्त**=वंश-परंपरा में। **पुश्तहा पुश्त** = कई पीढ़ियों से या तक।

पुश्तक-स्त्री० दे० 'दुलत्ती'।

पुश्ता-पुं० [फा० पुश्तः] १. पानी की रोक या दीवार की मजबूती के लिए ईंट, पत्थर आदि की चुनाई या बनावट, जो मोटी दीवार के रूप में होती है। बाँध। २. ऊँची मेंड़। ३. दे० 'पुट्ठा'।

पुश्तैनी-वि० [फा० पुश्त] १. कई पुश्तों या पीढ़ियों से चला आया हुआ। २. आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला।

पुष्कर-पुं० [सं०] १. जल। २. जलाशय। ताल। ३. कमल। ४. बाण। तीर। ५. युद्ध। ६. सूर्य। ७. पुराणों के अनुसार सात द्वीपों में से एक। ८. राजस्थान का एक प्रसिद्ध तीर्थ जो अजमेर के पास है।

पुष्करिणी-स्त्री० [सं०] छोटा तालाब।

पुष्कल-वि० [सं०] १. बहुत। अधिक। प्रचुर। २. भरा-पूरा। परिपूर्ण। ३. श्रेष्ठ। उत्तम। ४. पवित्र। निर्मल।

पुष्ट-वि० [सं०] [भाव० पुष्टता, १. जिसका पोषण हुआ हो। पाला हु २. मोटा-ताजा। ३. मोटा-ता बलिष्ठ करनेवाला। बल-वर्द्धक। ४. पक्का। मजबूत।

पुष्टई-स्त्री० [सं० पुष्ट + ई (प्रत्य० बल-वीर्य-वर्द्धक या पुष्टिकारक औ ताकत की दवा।

पुष्टि-स्त्री० [सं०] १. पोषण। होने की दशा। बलिष्ठता। ३. वृद्धि। ४. दृढ़ता। मजबूती। ५. कथन या पक्ष को ठीक बतलाना। ६. एक बार कही हुई बात पक्की लिए फिर से कहना। (एफरमेशन)

पुष्टिकारक-वि० दे० 'पौष्टिक'।

पुष्टि मार्ग-पुं० [सं०] वल्लभाचा चलाया हुआ एक वैष्णव भक्ति-मार्ग।

पुष्टीकरण-पुं० [सं०] किसी बात या किये हुए काम को ठीक हुए उसकी पुष्टि करना। (कन्फर्मेशन

पुष्प-पुं० [सं०] १. वृक्षों, पौधों के फूल। कुसुम। २. ऋतुमती रज। ३. मांस। (वाममार्गी)

पुष्पक-पुं० [सं०] १. फूल। २. का विमान जो रावण ने छीन और राम ने उससे छीनकर फिर दे दिया था।

पुष्पपुर-पुं० [सं०] उत्तर-पश्चिमी स्तान के पेशावर नगर का पुराना

पुष्पवती-वि० स्त्री० [सं०] १. वाली। फूली हुई (लता आदि)। रजस्वला (स्त्री)।

पुष्पवाटिका-स्त्री० [सं०] फुलवारी।

पुष्पबाण-पुं० [सं०] कामदेव।

पुष्प-वृष्टि-स्त्री० [सं०] ऊपर से वाली फूलों की वर्षा। (मंगल सूचक)

पुष्पसार-पुं० [सं०] फूलों का

पुहुपराग*–पुं० दे० 'पुखराज'।

पुहुमी*–स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी।

पुहुरेनु*–पुं० [सं० पुष्परेणु] पराग।

पुहुवी*–स्त्री० [सं० पृथिवी] भूमि।

पूँगी–स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बाँसुरी।

पूँछ–स्त्री० [सं० पुच्छ] १. जंतुओं, पक्षियों आदि के शरीर का पिछला लम्बा भाग। पुच्छ। दुम। २. किसी पदार्थ का पिछला भाग। पुछल्ला। ३. पिछलग्गू।

पूँजी–स्त्री० [सं० पुंज] १. इकट्ठा किये हुए पास के रुपये। धन। जमा। २. उन सब वस्तुओं और संपत्ति का समूह जो पास में हों। ३. वह धन जो किसी व्यापार में लगाया गया हो। मूलधन। (प्रिंसिपल) ४. किसी विषय में किसी की सारी योग्यता या ज्ञान।

पूँजीदार–पुं० [हिं० पूँजी + फा० दार] वह जिसके पास पूँजी हो या जो किसी काम में पूँजी लगावे। पूँजीपति।

पूँजीदारी–स्त्री० [हिं० पूँजी + फा० दारी] ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें पूँजीदारों का स्थान प्रधान और सबसे बढ़कर हो।

पूँजीपति–पुं० दे० 'पूँजीदार'।

पूँजीवाद–पुं० [हिं० पूँजी + सं० वाद] वह सिद्धान्त जिसमें पूँजीदारों का स्थान आर्थिक क्षेत्र में आवश्यक रूप से प्रमुख माना जाता है। (कैपिटलिज्म)

पूँठ†–स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।

पूआ–पुं० दे० 'मालपूआ'।

पूखन*–पुं० दे० 'पोषण'।

पूग–पुं० [सं०] १. सुपाड़ी का पेड़ या फल। २. राशि। समूह। ढेर। ३. किसी विशेष कार्य या व्यापार के लिए बना हुआ संघ। (कंपनी)

पूगना–अ० [हिं० पूजना] १. पूरा होना। भरना। २. नियत समय आ पहुँचना।

पूछ–स्त्री० [हिं० पूछना] १. पूछने या पूछे जाने की क्रिया या भाव। जिज्ञासा।

२. खोज। चाह। तलाश। ३. आदर। सम्मान।

पूछ-ताछ–स्त्री० [हिं० पूछना] कुछ जानने के लिए बार बार पूछना। जिज्ञासा।

पूछना–स० [सं० पृच्छण] १. जानने के लिए प्रश्न करना। जिज्ञासा करना। दरियाफ्त करना। २. खोज खबर लेना। ३. सत्कार या सम्मान का भाव प्रकट करना।

मुहा०–बात न पूछना = तुच्छ समझकर ध्यान न देना। उपेक्षा करना।

४. महत्व या मूल्य जानना या समझना।

पूछरी*–स्त्री० दे० 'पूँछ'।

पूछाताछी–स्त्री० दे० 'पूछ-ताछ'।

पूजक–पुं० [सं०] पूजा करनेवाला। पूजनेवाला।

पूजन–पुं० [सं०] [वि० पूजक, पूजनीय, पूज्य] १. देवता की पूजा, सेवा आदि करना। अर्चन। २. आदर। सम्मान।

पूजना–स० [सं० पूजन] १. देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उनकी पूजा करना। २. आदर-सत्कार या सम्मान करना। ३. घूस या रिशवत देना।

अ० [सं० पूर्यते] १. पूर्ण या पूरा होना। भरना। २. गहराई या घाव आदि का भरना। ३. नियत समय आ पहुँचना। ४. पूरा या समाप्त होना। जैसे–महीना पूजना। ५. किसी की बराबरी तक पहुँचना। उदा०–ये सब पतित न पूजत मो सम-सूर।

पूजनीय–वि० [सं०] [स्त्री० पूजनीया] १. जिसकी पूजा करना उचित हो। पूजने योग्य। अर्चनीय। २. आदरणीय। सम्मान के योग्य।

पूजबंद–पुं० [फा०] जानवरों के मुँह पर बाँधने की जाली।

पूजा–स्त्री० [सं०] १. वह कार्य जो ईश्वर या देवी-देवता को प्रसन्न या अनुकूल करने के लिए श्रद्धा-भक्तिपूर्वक किया जाय। २. किसी देवी-देवता पर जल, फूल आदि चढ़ाकर या उनके आगे कुछ रखकर
जानेवाला धार्मिक कार्य। अर्चा। ३. आ
सत्कार। खातिर। ४. किसी को प्रस
अनुकूल करने के लिए उसे कुछ देना।
दंड। सजा।

पूजार्ह–वि० [सं०] पूजा के योग्य।

पूजित–वि० [सं०] [स्त्री० पूजि
जिसकी पूजा की गई हो। अर्चित।

पूजी–स्त्री० [फा० पूजबंद] घोड़े का
प्रकार का साज जो उसके मुँह पर रह

पूज्य–वि० [सं०] [स्त्री० पूज्या] १.
किये जाने के योग्य। जिसकी पूजा क
कर्त्तव्य हो। पूजनीय। २. आदर,
आदि के योग्य।

पूज्य-पाद–वि० [सं०] जिसके पै
जाने के योग्य हों। अत्यंत पूज्य और मा

पूठि*–स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।

पूड़ी–स्त्री० दे० 'पूरी'।

पूत–वि० [सं०] [भाव० पूतता]
शुद्ध।

पुं० [सं०] सत्य।

+पुं० दे० 'पुत्र'।

पूतना–स्त्री० [सं०] १. एक राक्षसी
कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए
भेजा था और जिसे, स्तन में दाँत गड़ा
कृष्ण ने मार डाला था। बकासुर की
वकी। २. वैद्यक के अनुसार बाल
होनेवाले रोगों का एक वर्ग।

पूतनारि–पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

पूतरा+–पुं० दे० 'पुतला'।

पूति–स्त्री० [सं०] [वि० पौतिक]
पवित्रता। शुचिता। २. दुर्गन्ध।
३. घावों, फोड़ों आदि में विपाक की
आदि के उत्पन्न होने के कारण उनका
लगना जो प्रायः रोगी के लिए घातक
होता है। सड़ायँध। (सेप्सिस)

पूती–स्त्री० [सं० पोत = गट्ठा] १.
रूप में होनेवाली जड़। २. लहसुन की

दे० 'पूर्णिमा' ।

र्तिका] सूत कातने के
हुई धुनी रूई की बत्ती ।

दे० 'पूर्णिमा' ।

] मालपूआ ।

] पीप । मवाद ।

पूरना = भरना] १. कचौरी,
आदि पकवानों के अन्दर
मसाले । २. नदी आदि की
आदि की तेज धारा ।

ड़ं ।

र्त्ती ।

[सं०] १. पूर्त्ति या पूरा
। २. किसी के साथ मिलकर उसे
देनेवाला । (कॉम्प्लिमेन्टरी)

] १. प्राणायाम का वह पहला
क्रिया जिसमें नाक से श्वास
अन्दर ले जाते हैं । २. वह
वस्तु के साथ मिलकर उसे पूरा
पूर्ण बनाने या करनेवाला अंग ।
) ३. वह अंक जिसते गुणा
है । गुणक अंक ।

वेदक' ।

[सं०] [वि० पूरणीय] १.
भरने की क्रिया या भाव । २.
। ३. अंकों का गुणा करना ।

र्ण' ।

[हिं० पूरना = भरना] समोसे
के बीच में भरा जानेवाला
उससे युक्त दूसरे खाद्य पदार्थ ।

] १. जलाशयों में होनेवाली
। २. नदी की धारा या प्रवाह ।

र्ण' ।

-वि० = पूर्ण-काम ।

-पुं० दे० 'पूर्णिमा' ।

स्त्री० [हिं० पूरना + पूरी] एक
पूड़ी । (पकवान)

[सं० पूरण] १. पूरा करना । पूर्त्ति करना । २. आच्छादित करना । ढाँकना । ३. भरना । ४. (मनोरथ) सफल या सिद्ध करना । ५. मंगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि से देव-पूजन के लिए गोल, तिखूँटे और चौकोर क्षेत्र बनाना । चौक बनाना । ६. बँटना । जैसे–तागा पूरना । ७. फूँककर बजाये जानेवाले बाजे में मुँह से हवा भरकर उसे बजाना । जैसे–शंख या सिंगी पूरना ।

अ० १. पूर्ण होना । भर जाना । २. पूरने का काम होना । पूरा जाना ।

पूरब–पुं० [सं० पूर्व] वह दिशा जिसमें सूर्य निकलता है । पूर्व । प्राची । (ईस्ट)
*वि०, क्रि० वि० दे० 'पूर्व' ।

पूरबल*–पुं० [हिं० पूरबला] १. पुराना समय । २. पूर्व-जन्म ।

पूरबला*–वि० [सं० पूर्व + हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० पूरबली] १. प्राचीन काल का । पुराना । २. पिछले जन्म का ।

पूरबी–वि० दे० पूर्वी ।
स्त्री० बिहारी बोली का एक प्रकार का दादरा ।

पूरा–वि० [सं० पूर्ण] [स्त्री० पूरी] १. जो खाली न हो । भरा हुआ । परिपूर्ण । २. समूचा । सारा । समस्त । ३. जिसमें कोई त्रुटि या कोर-कसर न हो । पूर्ण । ४. भरपूर । यथेष्ट । काफी ।

मुहा०–पूरा पाना = यथेष्ट या मनमाना फल या सुख पाना । उदा०–कबहुँ न पूरौ पायो ।–सूर । **पूरी पड़ना**=आवश्यकताओं की भली भाँति पूर्त्ति होना । जैसे–इन बातों से पूरी नहीं पड़ेगी ।

५. पूरी तरह से सम्पादित या सम्पन्न किया हुआ ।

मुहा०–(कोई काम) पूरा उतरना = अच्छी तरह समाप्त होना । जैसा चाहिए, वैसा होना । **(बात) पूरी उतरना** = ठीक निकलना । सत्य ठहरना । **दिन पूरे करना** = किसी प्रकार समय बिताना ।

दिन पूरे होना = अंतिम समय आना। ९. तुष्ट। पूर्ण-काम।

पूरित–वि० [सं०] [स्त्री० पूरिता] १. पूरा किया हुआ। परिपूर्ण। २. गुणा किया हुआ। गुणित।

पूरी–स्त्री० [सं० पूलिका] १. खौलते हुए घी में छानकर बनाया हुआ रोटी की तरह का एक प्रसिद्ध पकवान। २. मृदंग, तबले ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा या उसपर लगी हुई गोल काली टिक्की।

पूर्ण–वि० [सं०] [भाव० पूर्णता] १. जो सब दृष्टियों से पूरा हो और अपने अस्तित्व, कार्य आदि के लिए किसी की अपेक्षा न रखता हो। (एब्सोल्यूट) २. जिसमें किसी तरह की कमी या अपेक्षा न हो। सब अंगों से युक्त और पूरा। (परफेक्ट) ३. जिसकी इच्छा पूरी हो चुकी हो। तृप्त। ४. जो किसी दूसरी चीज से भरा हुआ हो। ५. भरपूर। यथेष्ट। काफी। ६. समूचा। सारा। सब। समस्त। ७. सिद्ध। सफल। ८. (काम) जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।

पूर्ण-काम–वि० [सं०] जिसकी सब कामनाएँ या इच्छाएँ पूरी हो चुकी हों।

पूर्ण-घट–पुं० [सं०] जल से भरा हुआ घड़ा जो मंगल-सूचक माना जाता है और शुभ अवसरों पर भरकर दरवाजे आदि पर रखा जाता है।

पूर्णतः–क्रि० वि० दे० 'पूर्णतया'।

पूर्णतया–क्रि० वि० [सं०] १. पूरी तरह से। पूर्ण रूप से। (फुल्ली) २. जितना हो, उस सब के विचार से। (होल्ली, इन होल)

पूर्णता–स्त्री० [सं०] सब प्रकार से पूर्ण होने की अवस्था या भाव। पूरापन। (परफेक्शन)

पूर्णमासी–स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

पूर्ण विराम–पुं० [सं०] लेखों आदि में वह चिह्न जो किसी वाक्य की समाप्ति पर उसके अन्त में लगाया जाता है। यह गोल बिन्दी (.) और खड़ी पाई (।) में होता है।

पूर्णायु–स्त्री० [सं० पूर्णायुस्] पूरी (मनुष्यों के लिए १०० वर्ष की) वि० सौ वर्षों तक जीनेवाला।

पूर्णाहुति–स्त्री० [सं०] १. यज्ञ समाप्त होने पर अन्त में दी आहुति। २. किसी कार्य की समा समय होनेवाला अन्तिम कृत्य।

पूर्णिमा–स्त्री० [सं०] चान्द्र मा शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि, चन्द्रमा अपनी सब कलाओं से यु पूरा दिखाई देता है।

पूर्णोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अ का वह प्रकार जिसमें उसके चारों (उपमेय, उपमान, वाचक और वर्त्तमान रहते हैं।

पूर्त्त–पुं० [सं०] १. पालन। २. कूएँ, बगीचे, सड़कें आदि बनाने वि० १. भरा हुआ। पूरित। २. हुआ। ३. दे० 'समायुक्त'।

पूर्त्त-विभाग–पुं० [सं० पूर्त्त+वि वह राजकीय विभाग जो सड़कें, पु बनवाता है। तामीर का महकमा।

पूर्त्ति–स्त्री० [सं०] १. पूर्ण या अथवा करने की क्रिया या भाव। पूरापन। २. आरंभ किये हुए समाप्ति। ३. किसी प्रकार की अपेक्षा या कमी पूरा करने की भाव। जैसे–अभाव की पूर्त्ति, सम पूर्त्ति। ४ किसी बही, रूपक, आ आदि के कोष्ठकों में आवश्यकतानुसार लिखने या खाने भरने की क्रिया या (इन्ट्री) ५. किसी की आवश्यक करने के लिए उसे चीजें देना। सम (सप्लाई) ६. गुणा करने की गुणन।

पूर्व–पुं० [सं०] वह दिशा जिधर

के सामने की दशा।
जो पहले हुआ हो या
पहले का। २. पहले से
(प्रीवियस) ३. प्राचीन।
के का। पिछला।
पहले। पेश्तर। आगे।
वि० [सं०] युक्त। सहित।
कृपापूर्वक।
वि० [सं०] १. पूर्व-काल
। पुराना। २. जिसकी
पूर्व-काल में हुई हो।
क्रिया-स्त्री० [सं०] व्या-
किसी वाक्य की वह क्रिया जो
क्रिया से पहले और उस वाक्य
आती तथा उस क्रिया की
सूचक होती है। जैसे–'उठकर
'उठकर' पूर्व-कालिक क्रिया है।
[सं०] १ बड़ा भाई। अग्रज।
दादा, परदादा आदि जो पहले
। पूर्व-पुरुष। पुरखा। (ऐन्से-
टर्स)
पुं० [सं० पूर्व-जन्मन्] इस
का जन्म। पिछला जन्म।
[सं०] [भाव० पूर्वतरता]
। २. पहले या पूर्व का।
वि० [सं०] जिसपर पहले
वाली तिथि या तारीख लिखी
डेटेड)
[सं०] (शुल्क, कर
पहले ही चुका दिया गया हो।
)
[सं०] देन, शुल्क, कर
हो, वह पहले ही दे देना।
देना। पेशगी दे देना।
[सं०] १. किसी विषय के
हुई चर्चा, प्रश्न या शंका,
उत्तर देना या समाधान
। २. मुद्दई का दावा या
अभियोग।

पूर्व-पद–पुं० [सं०] किसी समस्त पद में का पहला शब्द। 'उत्तर पद' का विपर्य्याय। जैसे–ताल पर्ण में का 'ताल'।

पूर्व-प्लावनिक–वि० [सं०] वैवस्वत मनु अथवा हजरत नूर के समय के प्लावन से पहले का। (एन्टी-डिलूविअल) विशेष द० 'प्लावन' २.।

पूर्व-रंग–पुं० [सं०] वह संगीत जो नाटक आरंभ होने से पहले विघ्नों की शांति या दर्शकों को सावधान करने के लिए होता है।

पूर्व-राग–पुं० [सं०] साहित्य में किसी के गुण सुनकर या किसी का चित्र अथवा स्वयं किसी को देखकर उत्पन्न होनेवाला आरम्भिक प्रेम।

पूर्व-रूप–पुं० [सं०] १. वह रूप जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। २. किसी वस्तु का वह रूप जो उस वस्तु के पूर्ण रूप से प्रस्तुत होने के पहले बना हो। ३. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी के विनष्ट गुण, रूप, वैभव आदि के फिर से आ जाने या प्राप्त होने और उस वस्तु या व्यक्ति के फिर से अपने पुराने रूप में आ जाने का वर्णन होता है।

पूर्ववत्–क्रि० वि० [सं०] पहले की तरह। जैसा पहले था, वैसा ही।

पूर्ववर्ती–वि० [सं० पूर्ववर्त्तिन्] १. पहले का। २. जो पहले रह चुका हो।

पूर्वा–पुं० दे० 'पूर्वाषाढ़ा'।

पूर्वाधिकारी–पुं० [सं०] १. वह अधिकारी जो किसी पद पर उसके वर्त्तमान अधिकारी से पहले रहा हो। २. सम्पत्ति का वह स्वामी या अधिकारी जो उसके वर्त्तमान अधिकारी से पहले रहा हो। 'उत्तराधिकारी' का विपर्य्याय। (प्रेडिसेसर)

पूर्वानुराग–पुं० दे० 'पूर्व-राग'।

पूर्वापर–क्रि० वि० [सं०] आगे-पीछे। वि० आगे का और पीछे का। अगला और

पिछला।

पूर्वार्द्ध–पुं० [सं०] आरंभ का आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।

पूर्वाषाढ़ा–पुं० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से बीसवाँ नक्षत्र जिसमें चार तारे हैं। वर्षा का आरम्भ प्रायः इसी नक्षत्र से माना जाता है।

पूर्वाह्न–पुं० [सं०] सवेरे से दोपहर तक का समय। दिन का पहला आधा भाग।

पूर्वी–वि० [सं० पूर्वीय] पूर्व दिशा से संबंध रखनेवाला। पूरब का।

स्त्री० दे० 'पूरबी'।

पूर्वोक्त–वि० [सं०] पहले का कहा हुआ। जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी हो। (एफोरसेड, फोरगोइंग)

पूला–पुं० [सं० पूलक] [अल्पा० पूली] सरपत, मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा।

पूलिका–स्त्री० [सं०] १. छोटा पूला या मुट्ठा। २. पुलिंदा। पोटली।

पूषण्–पुं० [सं०] सूर्य।

पूषा–पुं० [सं० पूषण्] सूर्य।

स्त्री० [सं०] हठ-योग में दाहिने कान की नाड़ी।

पूस–पुं० [सं० पौष] अगहन के बाद और माघ के पहले का महीना। पौष।

पृच्छक– वि० [सं०] १. पूछनेवाला। प्रश्न करनेवाला। २. जिज्ञासु।

पृथक्–वि० [सं०] [भाव० पृथक्ता, पार्थक्य] १. भिन्न। अलग। जुदा। २. अपने कार्य या पद से हटाया हुआ।

पृथकता–स्त्री० दे० 'पृथक्ता'।

पृथक्करण–पुं० [सं०] १. पृथक् या अलग करने की क्रिया या भाव। २. किसी को किसी पद या अधिकार से हटाना या अलग करना। (रिमूवल]

पृथक्ता–स्त्री० [सं०] पृथक् या अलग होने का भाव। पार्थक्य। अलगाव।

पृथग्न्यास–पुं० [सं०] [वि० पृथग्न्यस्त] १. अलग करना, लगाना या रखना। २. आस-पास की परिस्थिति से अ
करना। ३. दो वस्तुओं के बीच में को
ऐसी वस्तु लगाना जिससे एक के तार
विद्युत् का दूसरी में संचार न होने पा

पृथिवी–स्त्री० दे० 'पृथ्वी'।

पृथु–वि० [सं०] [भाव० पृथुता]
चौड़ा। विस्तृत । २. विशाल। मह
३. अगणित। असंख्य। ४. चतुर। प्र
५. कीर्त्तिशाली। यशस्वी।

पुं० [सं०] १. अग्नि। २. विष्णु।

पृथुल–वि० [सं०] [भाव० पृथु
१. स्थूल। बड़ा। २. विशाल। ३. वि

पृथ्वी–स्त्री० [सं०] [वि० पार्थि
१. सौर जगत् का वह ग्रह जिसपर हम
लोग रहते हैं। अवनी। धरा। (अ
२. मिट्टी, पत्थर आदि का बना पृथ्वी
वह ऊपरी ठोस भाग जिसपर हम सब
चलते-फिरते हैं। भूमि। जमीन। धर
(अर्थ) ३. पंचभूतों या तत्त्वों में से ए
जिसका प्रधान गुण गंध है। ४. मिट्टी

पृष्ट–वि० [सं०] पूछा हुआ।

पृष्ठ–पुं० [सं०] १. पीठ। २. किसी
का ऊपरी तल। ३. पीछे का भाग।
(रिवर्स) ४. पुस्तक के पन्ने के एक ओर
का तल या भाग। पन्ना। (पेज)

पृष्ठ-पोषक–पुं०[सं०] १.पीठ ठोंकने
२. सहायक। मददगार।

पृष्ठभूमि–स्त्री० दे० 'पृष्ठिका' २।

पृष्ठ-वंश–पुं० [सं०] [वि० पृष्ठ-वं
पशुओं और मनुष्यों में पीठ की ओर
दन से कमर तक छोटी छोटी हड्डियों
गुरियों की लम्बी शृंखला। मेरु दंड।
(स्पाइन)

पृष्ठिका–स्त्री० [सं०] १. पिछला भा
२. वह भूमि या तल जो किसी वस्तु के
पिछले भाग में हो। ३. पहले की वे बातें
या परिस्थितियाँ जिनके आगे या सामने औ

बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है। (स्क्रू) ७. पतंग या गुड्डी लड़ने के समय दो या अधिक पतंगों या गुड्डियों की डोरों का एक दूसरी में फँस जाना। ८. कुश्ती में प्रतिद्वंदी को पछाड़ने की युक्ति या चाल। ९. टोपी पर या पगड़ी में आगे की ओर शोभा के लिए लगाया जानेवाला एक आभूषण। कलगी। सिर-पेच।

पेचक–स्त्री० [फा०] बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।

पुं० [सं०] [स्त्री० पेचिका] उल्लू।

पेचकश–पुं० [फा०] १. वह औजार जिससे पेच जड़ा और निकाला जाता है। २. एक प्रकार का चक्करदार काँटा जिससे बोतल का काग निकाला जाता है।

पेचवान–पुं० [फा०] १. फरशी या बड़े हुक्के में लगाई जानेवाली बड़ी सटक। २. बड़ा हुक्का।

पेचिश–स्त्री० [फा०] पेट में आँव होने के कारण होनेवाला मरोड़।

पेचीदा–वि० दे० 'पेचीला'।

पेचीला–वि० [फा० पेच] १. जिसमें पेच हो। पेचदार। २. जो टेढ़ा-मेढ़ा या कठिन हो। विकट। मुश्किल।

पेज–स्त्री० [सं० पेय] रबड़ी। बसौंधी।

पुं० [अं०] पुस्तक का पृष्ठ। पन्ना।

*स्त्री० [?] १. लज्जा। शरम। २. प्रतिष्ठा। मर्यादा। इज्जत।

पेट–पुं० [सं० पेट = थैला] १. शरीर में छाती के नोचे का वह अंग जिसमें पहुँचकर भोजन पचता है। उदर।

मुहा०–अपना पेट काटना = (क) जान बूझकर कम खाना, जिसमें कुछ बचत हो। **(किसी का) पेट काटना** = किसी को मिलनेवाले धन में कमी करना। **पेट का पानी न पचना** = रहा न जाना। †**पेट खलाना** = पेट पर हाथ फेरकर भूखे होने का संकेत करना। उदा०–

तौ कत द्वार द्वार कूकर ज्यों फिरते पेट खलाए। –तुलसी। **पेट चलना** = दस्त आना। **पेट जलना** = बहुत भूख लगना। **पेट पालना** = जीवन निर्वाह करना। **पेट फूलना** = (क) कोई काम करने या कोई बात कहने या सुनने के लिए बहुत उत्सुकता होना। (ख) बहुत हँसने के कारण पेट में हवा-सी भर जाना। (ग) पेट में वायु का प्रकोप होना। **पेट मारकर मर जाना** = आत्मघात करना। **पेट में पाँव होना** = अत्यंत दुष्ट या कपटी होना। **(कोई वस्तु) पेट में होना** = गुप्त रूप से पास में होना। **पेट से पाँव निकालना** = बढ़कर अनुचित काम करना।

पद-पेट का धंधा = जीविका का उपाय। **पेट की आग** = भूख।

२. गर्भ। हमल।

मुहा०-पेट गिरना = गर्भपात होना। **पेट रहना**=गर्भ रहना। **पेट से होना**= गर्भवती होना।

पद-पेट की आग = संतान के प्रति होनेवाला माता का प्रेम या ममता।

यौ०-पेटवाली = गर्भवती (स्त्री)।

३. अंतःकरण। मन। दिल।

पद-पेट की बात = मन की बात।

मुहा०-पेट में घुसना या बैठना = रहस्य जानने के लिए मेल-जोल बढ़ाना। **पेट में होना**=मन में होना।

४. पोली वस्तु के बीच का या खाली भाग। ५. गुंजाइश। अवकाश। समाई।

टा–पुं० [हिं० पेट] १. किसी पदार्थ के बीच का भाग। २. किसी चीज के बीच का वह खाली भाग जो भरा जाने को हो या जिसकी पूर्त्ति करना आवश्यक हो। ३. ब्योरा। विवरण।

मुहा०-पेटा भरना=विवरण आदि से बीच का खाली स्थान भरना।

४. सीमा। हद। ५. घेरा। वृत्त।

पेटागि*–स्त्री० [हिं० पेट + अग्नि] भूख।

पेटार्थी(र्थू)–वि० दे० 'पेटू'।

पेटिका–स्त्री० [सं०] १. संदूक। पेटी। २. पिटारी।

पेटी–स्त्री० [सं० पेटिका] १. छोटा संदूक। २. छाती और पेड़ू के बीच का पेट का आगे निकला हुआ नीचेवाला भाग।

मुहा०-पेटी पड़ना = तोंद निकलना। ३. अन्न के दानों का भीतरी भाग, जि पुष्ट होने से अन्न अधिक समय तक ठह है। जैसे-कच्ची (या पक्की) पेटी का गेहूँ। ४. कमर में बाँधने का चौड़ा तस कमरबंद। ५. चपरास। (बेल्ट; अं दोनों अर्थों के लिए)

पेटू–वि० [हिं० पेट] जिसे सदा पेट भ या खाने की चिन्ता रहती हो। भुक्खड़।

पेट्रोल–पुं० [अं०] मिट्टी के तेल तरह का एक प्रसिद्ध खनिज तरल प जिसके ताप से मोटरें आदि चलती हैं। पुं० [अं० पैट्रोल] १. सैनिक रक्षा लिए घूम-घूमकर पहरा देना। २. सिपाही जो इस प्रकार पहरा देता हो।

पेठा–पुं० [देश०] सफेद कुम्हड़ा।

पेड़–पुं० [सं० पिंड] वृक्ष। दरख्त।

पेड़ा–पुं० [सं० पिंड] १. खोये की प्रसिद्ध गोलाकार चिपटी मिठाई। गुँधे हुए आटे की लोई जिसे बेलकर पूरी आदि बनाते हैं।

पेड़ी–स्त्री० [हिं० पेड़] १. पेड़ का धड़। कांड। २. छोटा पेड़। पौधा। मनुष्य का धड़। ४. पान का पु पौधा। ५. ऐसे पौधे के पान। ६. कर जो प्रति वृक्ष के हिसाब से लगता है।

पेड़ू–पुं० [हिं० पेट] १. मनुष्य की ना के नीचे और मूत्रेंदिय के ऊपर का भाग। उपस्थ। २. गर्भाशय।

पेन्शन–स्त्री० [अं०] वह वृत्ति जो कि

पेला*-पुं॰ [हिं॰ पेलना] १. पेलने की क्रिया या भाव । २. आक्रमण । धावा । चढ़ाई । ३. अपराध । कसूर । ४. झगड़ा ।

पेव†-पुं॰ दे॰ 'प्रेम' ।

पेवस-पुं॰ [सं॰ पीयूष] हाल की ब्याई हुई गाय या भैंस का दूध जो कुछ पीला होता है और पीने योग्य नहीं होता ।

पेश-क्रि॰ वि॰ [फा॰] सामने । आगे । **मुहा॰-पेश आना**=(क) बरताव करना । व्यवहार करना । (ख) घटित होना । सामने आना । **पेश करना** = (क) उपस्थित करना । दिखलाना । (ख) भेंट करना । नजर करना । **पेश जाना या चलना** = वश चलना ।

पुं॰ दे॰ 'पेशकश' ।

पेश-कब्ज-स्त्री॰ [फा॰] एक प्रकार की छोटी तलवार या कटार ।

पेशकश-पुं॰ [फा॰] भेंट । उपहार ।

पेशकार-पुं॰ [फा॰] न्यायालय में हाकिम के सामने कागज-पत्र पेश करने या रखनेवाला कर्मचारी ।

पेशखाना-पुं॰ [फा॰] राजाओं की यात्रा के समय वे खेमे, तम्बू आदि जो एक दिन पहले ही उद्दिष्ट स्थान पर पहुँचकर, उनके निवास के लिए लग जाते हैं ।

पेशगी-स्त्री॰ [फा॰] निश्चित पारिश्रमिक का वह थोड़ा अंश जो किसी को कोई काम करने के लिए पहले दे दिया जाय । अगाऊ ।

पेशबंदी-स्त्री॰ [फा॰] पहले से की हुई बचाव की युक्ति या प्रबंध ।

पेशल-वि॰ [सं॰] १. कोमल । नाजुक । २. सुन्दर । सुहावना । ३. बहुत अच्छा । उत्तम । ४. दक्ष । चतुर । होशियार ।

पेशवा-पुं॰ [फा॰] १. नेता । सरदार । २. महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की उपाधि ।

पेशवाई-स्त्री॰ [हिं॰ पेशवा + ई (प्रत्य॰)]

१. पेशवाओं की शासन-कला । २. पेशवा का पद या कार्य । ३. दे० 'अगवानी' ।

पेशवाज–स्त्री० [फा०] नर्त्तकियों का बड़ा घाघरा जो वे नाचते समय पहनती हैं ।

पेशा–पुं० [फा०] [कर्त्ता पेशावर] जीविका के लिए किया जानेवाला धंधा । उद्यम । व्यवसाय ।

मुहा०–पेशा कमाना = स्त्री का व्यभिचार के द्वारा धन कमाना ।

पेशाब–पुं० [फा०] मूत्र । मूत ।

मुहा०–पेशाब करना = अत्यंत तुच्छ समझना । **(किसी के) पेशाब से चिराग जलना** = किसी का अत्यंत प्रतापी होना । बहुत अधिक दबदबा होना ।

पेशाबखाना–पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ लोग पेशाब करते हों ।

पेशावर–पुं० [सं० पुष्पपुर] [वि० पेशावरी] उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर ।

वि० दे० 'पेशेवर' ।

पेशी–स्त्री० [फा०] १. सामने या आगे होने की क्रिया या भाव । २. न्यायालय अथवा अधिकारी के सामने किसी अभियोग या मुकदमे के पेश होने और सुने जाने की कार्रवाई ।

स्त्री० [सं०] शरीर के अन्दर मांस की वह मांसल गुत्थी या गाँठ जिससे अंगों का संचालन होता है ।

पेशेवर–पुं० [फा० पेशःवर] वह जो कोई पेशा या व्यवसाय करता हो ।

वि० स्त्री० व्यभिचार के द्वारा अपनी जीविका चलानेवाली ।

पेश्तर–क्रि० वि० [फा०] पहले । पूर्व ।

पेषण–पुं० [सं०] पीसना ।

यौ०–पिष्ट-पेषण । (देखें)

पेस*–क्रि० वि०, पुं० दे० 'पेश' ।

पेसना†–स० [सं० पेषण] कोई छोटी चीज किसी बड़ी चीज के अन्दर धँसाना या घुसाना ।

पैं*–अव्य० [हिं० पहँ] पास । (ब्रज)

पैंग*–स्त्री० दे० 'पेंग' ।

पैंजनी–स्त्री० [हिं० पायँ + अनु० झन

पैरों में पहनने का झन झन बजनेवाला

गहना । झाँझर ।

पैंठ–स्त्री० [सं० पण्य-स्थान] १.

बाजार । २. दुकान ।

पैंड़–पुं० [हिं० पायँ + ड़ (प्रत्य०)

डग । कदम । २. मार्ग । रास्ता ।

विधि । ढंग ।

पैंड़ा–पुं० [हिं० पैंड़] १. रास्ता ।

मुहा०–(किसी के) पैंड़े पड़ना =

पीछे पड़ना । तंग करना । (ख)

करना । अनुगामी बनना ।

२. घुड़साल । अस्तबल ।

पैंता*–स्त्री० [सं० पणाकृत] दाँव ।

वि० [देश०] सात (संख्या) ।

पैंतरा–पुं० [सं० पदांतर] १. वार

या लड़ने के समय पैर जमाकर

की मुद्रा या ढंग । २. चालाकी से

चाल या युक्ति ।

मुहा०–पैंतरा दिखाना = चाल

के द्वारा अपनी चालाकी दिखाना ।

पै†*–अव्य० [सं० परं] १. परंतु ।

यौ०–जो पै = यदि । अगर । तो

२. अवश्य । जरूर । ३. पीछे ।

अव्य० [हिं० पहँ] १. पास ।

निकट । २. प्रति । ३. ओर । तरफ । ४.

प्रत्य० [सं० उपरि] १. पर ।

जैसे–कापै = किसपर । २. द्वारा ।

(बुन्देल०) उदा०–विदा है चले

शत्रुहंता ।–केशव ।

स्त्री० [सं० आपत्ति] दोष । त्रुटि ।

पुं० दे० 'पय' ।

स्त्री० दे० 'घोड़ा-नस' ।

पैकरमा*–स्त्री० दे० 'परिकमा' ।

पैकार–पुं० [फा०] घूम-घूमकर

की गड्डी ।

पैड़ी–स्त्री० [हिं० पैर] सीढ़ी ।

पैतरा–पुं० दे० 'पैंतरा' ।

पैताना–पुं० दे० 'पायँता' ।

पैतृक–वि० [सं०] १. पितृ-संबंधी । २. बाप-दादा के समय से चला आया हुआ । पुश्तैनी । पुरखों का । (ऐन्सेस्ट्रल) जैसे–पैतृक संपत्ति ।

पैत्रिक–वि० दे० 'पैतृक' ।

पैदल–वि० [सं० पदाति] पैरों से चलकर कहीं जानेवाला ।

क्रि० वि० पाँव-पाँव । पैरों से ।

पुं० १. बिना किसी सवारी के पैरों से चलने की क्रिया । २. वह सिपाही जिसके पास घोड़ा या और कोई सवारी न हो और जो पैरों से चलकर कहीं जाता हो । पदाति । ३. शतरंज का 'प्यादा' नाम का मोहरा ।

पैदा–वि० [फा०] १. उत्पन्न । जन्मा हुआ । प्रसूत । २. प्रकट, आविर्भूत या घटित । ३. कमाया हुआ । अर्जित ।

स्त्री० १. आय । आमदनी । २. लाभ ।

पैदाइश–स्त्री० [फा०] उत्पत्ति । जन्म ।

पैदाइशी–वि० [फा०] १. जन्म-काल से ही होनेवाला । २. स्वाभाविक । प्राकृतिक ।

पैदावार–स्त्री० [फा०] अन्न आदि जो खेत में उपजा हो । उपज । फसल ।

पैना–वि० [सं० पैण] [स्त्री० पैनी] १. पतली और चोखी धारवाला । २. नुकीला ।

पैनी–स्त्री० [सं० पैण] लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी रहती है । आर । अनी ।

पैमाइश–स्त्री० [फा०] १. किसी चीज की लम्बाई, चौड़ाई आदि नापने की क्रिया या भाव । नाप । (मेजरमेन्ट) २. जमीनों की लम्बाई-चौड़ाई जानने के लिए होनेवाली नाप-जोख । (सर्वे)

पैमाना–पुं० [फा०] १. वह चीज जिससे कुछ नापा जाय । २. वह पात्र जिससे कुछ

नापा जाय। २. मद्य पीने का पात्र।

पैमाल*†–वि० दे० 'पामाल'।

पैयाँ‡–स्त्री० [हिं० पायँ] पाँव। पैर। क्रि० वि० पैरों के सहारे (चलना)।

पैर–पुं० [सं० पद] वह अंग जिससे प्राणी खड़े होते और चलते-फिरते हैं। पाँव। पग। **मुहा०–पैर उखड़ जाना** = लड़ाई या मुकाबले में ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना। **पैर उठाना** = (क) चलने के लिए कदम बढ़ाना। (ख) जल्दी-जल्दी पैर आगे रखना। **पैर छूना** = (क) बड़ों का आदर करने के लिए उनके पैरों पर हाथ रखना। चरण स्पर्श करना। (ख) दीनतापूर्वक विनय करना। **पैर जमना** = (क) स्थिर भाव से खड़ा होना। (ख) दृढ़ रहना। हटने या विचलित होने की अवस्था न आना। **पैर तोड़ना** = (क) बहुत चलकर पैर थकाना। (ख) बहुत दौड़-धूप करना। **पैर तोड़कर बैठना** = (क) कहीं न जाना। एक ही जगह रहना। (ख) हारकर बैठना। **बुरे रास्ते पर पैर धरना या रखना** = बुरे काम में प्रवृत्त होना। **पैर पकड़ना** = (क) बिनती करके किसी को कहीं जाने से रोकना। (ख) पैर छूना। (ग) दीनता से विनय करना। **पैरों पड़ना** = (क) पैरों पर गिरना। साष्टांग दंडवत् करना। (ख) अत्यन्त दीनता से विनय करना। **पैरों पर गिरना या पड़ना** = (क) दंडवत् या प्रणाम करना। (ख) दीनतापूर्वक विनय करना। **पैर पसारना या फैलाना** = (क) आराम से लेटना या सोना। (ख) आडंबर खड़ा करना। ठाट-बाट करना। (ग) दे० 'पाँव फैलाना'। **पैरों चलना** = पैदल चलना। **पैर पूजना** = बहुत आदर-सत्कार करना या पूज्य मानना। **फूँककर पैर रखना** = बहुत सँभलकर कोई काम करना। बहुत सावधानी रखना। **पैर बढ़ाना** = (क) चलने में पैर आगे रखना। (ख) आगे बढ़ना। अतिक्रमण करना। **भर जाना** = चलने की थकावट मैं बोझ-सा मालूम होना। **पैर होना** = गर्भ रहना। हमल होना। **में (या से) पैर बाँधकर** सदा अपने पास रखना। अलग न देना। **पैर सो जाना** = रक्त रुकने से पैर सुन्न हो जाना। (किसी **पैर न होना** = ठहरने की शक्ति न होना। दृढ़ता न होना। **पैर न रखना** = (क) बहुत घमंड (ख) फूले अंग न समाना। (शेष लिए दे० 'टाँग' और 'पाँव' के २. धूल आदि पर पड़े हुए पैरों के †पुं० [सं० प्रकर] अन्न की राशि

पैर-गाड़ी–स्त्री० [हिं० पैर + गाड़ी] हलकी गाड़ी जो पैर के चलाने से हो। जैसे-बाइसिकिल आदि।

पैरना–अ० दे० 'तैरना'।

*अ० [हिं० पैर] चलना। गमन

पैरवी–स्त्री० [फा०] १. किसी के चलना। अनुगमन। २. मुकदमें अपने पक्ष के समर्थन आदि के जानेवाली कार्रवाई। ३. प्रयत्न।

पैरवीकार–पुं० [फा०] पैरवी

पैराउ (ऊ)*–पुं० दे० 'पैराव'।

पैराक–पुं० [हिं० पैरना] अच्छा तैराक।

पैराव–पुं० [हिं० पैरना] जितना चलकर नहीं, बल्कि पैरकर कर सकें।

पैराशूट–पुं० दे० 'छतरी' २.।

पैरी–स्त्री० १. दे० 'पीढ़ी'। 'पैड़ी'।

पैरोकार–पुं० दे० 'पैरवीकार'।

पैवंद–पुं० [फा०] [वि० पैवंदी] कपड़े आदि का छेद बंद करने के

चाल जिसमें वह दो दो पैर साथ उठाकर दौड़ता है। सरपट चाल।

पोइस–स्त्री० [फा० पोयः, हिं० पोइया] १. सरपट दौड़। २. दृढ़ता और अध्यवसाय-पूर्वक चलते हुए आगे बढ़ना।

अव्य० [फा० पोश] हटो। बचो।

पोई–स्त्री० [सं० पोदकी] एक बरसाती लता जिसकी पत्तियों का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं।

पोखना*–स० दे० 'पोसना'।

पोखरा–पुं० [सं० पुष्कर] [स्त्री० अल्पा० पोखरी] १. जमीन में बहुत बड़ा गड्ढा खोदकर बनाया हुआ जलाशय। तालाब। २. पाखाना।

पोगंड–पुं० दे० 'पौगंड'।

पोच–वि० [फा० पूच] १. तुच्छ। क्षुद्र। २. हीन। निकृष्ट। ३. बुरा। खराब। ४. अशक्त। निर्बल।

पोट–स्त्री० [सं० पोट = ढेर] १. चीजों की वह गठरी या पोटली जो चारो ओर से कपड़े, टाट, कागज आदि से बँधी हो। (पार-सल) जैसे–पोट-डाक। २. बहुत सी चीजों का अटाला। राशि। ढेर।

पोट-डाक–स्त्री० [हिं० पोट + डाक] १. डाक से चीजें भेजने की वह व्यवस्था जिसमें चीजें चारो ओर से कपड़े आदि में सीकर या टीन के डब्बों आदि में बन्द करके भेजी जाती हैं। (पारसल पोस्ट) २. इस प्रकार भेजी हुई कोई चीज।

पोटना*–स० [हिं० पुट] १. समेटना। बटोरना। २. फुसलाना। बहलाना।

पोटली–स्त्री० [हिं० पोट] कपड़े का वह छोटा टुकड़ा जिसमें कोई चीज बँधी हो। छोटी गठरी। जैसे–रत्नों की पोटली, औषध या ओषधि की पोटली।

पोटा–पुं० [सं० पुट = थैली] [स्त्री० अल्पा० पोटी] १. पेट की थैली। २. सामर्थ्य। शक्ति। ३. समाई। औकात।

४. आँख की ऊपरी पलक। पपोटा। ५. उँगली का सिरा।

पुं॰ [सं॰ पोत] चिड़िया का बच्चा।

पोटी–स्त्री॰ [हिं॰ पोटा] कलेजा।

पोढ़ा–वि॰ [सं॰ प्रौढ़] [स्त्री॰ पोढ़ी, क्रि॰ पोढ़ाना, भाव॰ पोढ़ापन] १. पुष्ट। मजबूत। २. कड़ा। कठोर। ३. दृढ़। पक्का।

पोत–पुं॰ [सं॰ पोतः] १. पशु या पक्षी का छोटा बच्चा। उदा॰-चित-चातक को पोतो।—तुलसी। २. कपड़ा। वस्त्र। ३. एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा। ४. सूतों के मोटे या पतले होने के विचार से कपड़े की गफ या झीनी बुनावट। ५. बड़ी नाव। ६. जहाज।

स्त्री॰ [सं॰ प्रोता] १. माला में का छोटा दाना। २. काँच की छोटी गुरिया।

पुं॰ [सं॰ प्रवृत्ति] १. ढंग। ढब। उदा॰-नीच हियैं हुलसे रहैं, गहे गेंद के पोत।—बिहारी। २. बारी। पारी।

पुं॰ [फा॰ फ़ोतः] जमीन का लगान।

पुं॰ [हिं॰ पोतना] पोतने की क्रिया या भाव। पुताई।

पोतक–पुं॰ [सं॰] किसी प्राणी या जीव का छोटा बच्चा।

पोतड़ा–पुं॰ [हिं॰ पोतना] छोटे बच्चे के नीचे बिछाने का कपड़े का टुकड़ा।

पोतदार–पुं॰ [हिं॰ पोत + दार] १. खजानची। २. खजाने में रुपया परखनेवाला।

पोतना–स॰ [सं॰ पोतन = पवित्र] १. गीली वस्तु की तह चढ़ाना। २. कोई घोल किसी वस्तु पर इस प्रकार लगाना कि वह उसपर बैठ या जम जाय।

पुं॰ वह कपड़ा जिससे कोई गीली चीज पोती या लगाई जाय। पोता।

पोता–पुं॰ [सं॰ पौत्र] बेटे का बेटा। पौत्र।

पुं॰ [फा॰ फोतः] १. पोत। लगान। भूमि-कर। २. अंड-कोष।

पुं॰ [हिं॰ पोतना] १. गीली चीज पोतने का कपड़ा। पोतना। २. वह घोल किसी वस्तु पर पोता जाय। ३. मिट्टी वह लेप जो धातु के बर्तनों को चढ़ाने के पहले उनके नीचे लगाया

पोताई–स्त्री॰ दे॰ 'पुताई'।

पोती–स्त्री॰ [हिं॰ पोता] पुत्र की

स्त्री॰ [हिं॰ पोतना] पोतने की या भाव। पुताई।

पोथा–पुं॰ [हिं॰ पोथी] बड़ी पुस्तक या लिखे हुए कागजों का

पोथी–स्त्री॰ [सं॰ पुस्तिका] पुस्तक

पोद्दार–पुं॰ दे॰ 'पोतदार'।

पोना–स॰ [हिं॰ पूआ + ना (१. गीले आटे की लोई उँगलियों से कर रोटी के रूप में बढ़ाना। २. (पकाना।

स॰ दे॰ 'पिरोना'।

पोप–पुं॰ [अं॰] ईसाई धर्म का बड़ा प्रधान या आचार्य।

पोपला–वि॰ [हिं॰ पुलपुला] पोपलाना] १. जिसमें दाँत न हों जिसके मुँह में दाँत न हों। ३. दे॰

पोप-लीला–स्त्री॰ [अं॰ पोप + सं॰ पोपों और धर्म-पुरोहितों के आडंबर सीधे-सादे धर्म-निष्ठ लोगों को फँसानेवाली बातें या कार्य।

पोया–पुं॰ [सं॰ पोतक] १. पौधा। २. बहुत छोटा बच्चा, या साँप का।

पोर–स्त्री [सं॰ पर्व] १. उँगली या जोड़ जहाँ से वह झुकती या २. उँगली में दो गाँठों के बीच ३. ईख, बाँस आदि की दो गाँठों का भाग। ४. जूए में किसी के पड़नेवाली रकम।

पोल–स्त्री॰ [हिं॰ पोला] १. खाली २. अवकाश। पोलापन। ३. के अन्दर की सार-हीनता।

) पोल खुलना =
होना । भंडा फूटना ।
] १. फाटक । २.

] [स्त्री० पोली]
भाग खाली हो । २.
न हो । खोखला । ३.

'पौरिया' ।
] घोड़े पर चढ़कर खेला
(खेल) ।
] १. वह जिससे कोई चीज
-मेज-पोश, तख्त-पोश ।
संकेत, जिसका अर्थ
ओ ।
। जैसे-सफेद-पोश ।
[फा० पोश] पहनने के

[फा०] छिपा हुआ । गुप्त ।
[सं०] १. पोषण करनेवाला ।
। वर्द्धक । ३. पुष्टि, समर्थन

)-पुं० [सं०] प्रायः खाद्य
ही सूक्ष्म मात्रा में पाया
प्रकार का नव-आविष्कृत
के अंगों की वृद्धि, स्वास्थ्य-
लिए आवश्यक और उपयोगी
। इसके बहुत से भेद होते हैं ।

[सं०] [वि० पोषित, पुष्ट,
] १. किसी वस्तु में आवश्यक
पहुँचाकर उसे पुष्ट
या बढ़ाना । (एलिमेन्ट)
या ऐसी सहायता देना
जीवन बिता सके और
सके । पालना ।
। वर्द्धन । ४. समर्थन
ठहराना या पक्का करना । जैसे-किसी के मत का पोषण करना ।

पोषण-वृत्ति-स्त्री० [सं०] वह वृत्ति जो किसी को भरण-पोषण या जीविका के लिए दी जाती हो । (मेन्टेनेन्स एलाउएन्स)

पोषिका-स्त्री० [सं०] गले के अन्दर की वह नली जिससे भोजन पेट तक पहुँचता है । (एलिमेन्टरी केनाल)

पोष्य-वि० [सं०] १. पाले जाने के योग्य । पालनीय । २. पाला हुआ । जैसे-पोष्य पुत्र ।

पोष्य पुत्र-पुं० [सं०] १. पुत्र की तरह पाला हुआ लड़का । २. दत्तक ।

पोस-पुं० [सं० पोषण] पालनेवाले के प्रति होनेवाला प्रेम और कृतज्ञता ।

पोसना-स० [सं० पोषण] १. पालन या रक्षा करना । २. अपने पास अपनी रक्षा में रखना ।

*स० दे० 'पोंछना' ।

पोस्टर-पुं० दे० 'प्रज्ञापक' २. ।

पोस्त-पुं० [फा०] १. छिलका । बकला । २. खाल । चमड़ा । ३. अफीम का पौधा । ४. अफीम के पौधे का डोड़ा । पोस्ता ।

पोस्ती-पुं० [फा०] नशे के लिए पोस्त के डोड़े पीसकर पीनेवाला ।

पोस्तीन-पुं० [फा०] १. समूर आदि पशुओं की खाल का बना हुआ एक गरम पहनावा । २. ऐसी खाल का बना हुआ कोट या कुरता ।

पोहना-स० [सं० प्रोत] १. पिरोना । गूँथना । २. छेदना । ३. पोतना । ४. जड़ना । ५. पीसना । ६. दे० 'पोना' ।

पोहमी*-स्त्री० = पृथ्वी ।

पौंचा-पुं० [सं० पौंड्रक] साढ़े पाँच का पहाड़ा ।

पौंढ़ा-पुं० [सं० पौंड्रक] एक प्रकार का गन्ना ।

पौ-स्त्री० [सं० प्रभा, प्रा० पव, पउ] प्रातः-काल के सूर्य के प्रकाश की रेखा या मद्धिम ज्योति ।

मुहा०-पौ फटना = सबेरे का प्रकाश

दिखाई पड़ना । दिन निकलने लगना ।

पुं० [सं० पाद] १. पैर । २. जड़ ।

स्त्री० [सं० पाद] पासे के खेल में एक दाँव।

मुहा०–**पौ बारह होना** = जीत, सफलता या लाभ का योग आना ।

स्त्री० [सं० प्रपा] वह स्थान जहाँ जनसाधारण को पानी पिलाया जाता है। पौसरा ।

पौआ–पुं० [हिं० पाव] १. सेर का चौथाई भाग। पाव । २. इस तौल या मान का बटखरा या बरतन ।

पौगंड–पुं० [सं०] बालक की पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था ।

वि० पाँच से दस वर्ष तक की अवस्थावाला (बालक)।

पौड़ना–अ० दे० 'तैरना' ।

पौढ़ना–अ० [सं० प्लवन] झूलना ।

अ० [सं० प्रलोठन] लेटना ।

पौतिक–वि० [सं० पूति से वि०] (घाव या फोड़ा) जो विषाक्त कीटाणुओं के उत्पन्न होने से सड़ने लगा हो । (सेप्टिक)

पौत्र–पुं० [सं०] [स्त्री० पौत्री] लड़के का लड़का । पोता ।

पौद(ध)–स्त्री० [सं० पोत] १. वह छोटा पौधा जो एक जगह से हटाकर दूसरी जगह लगाया जा सके । २. उपज । पैदावार ।

स्त्री० दे० 'पाँवड़ा' ।

पौधा–पुं० [सं० पोत] १. उगनेवाले वृक्ष का आरम्भिक रूप । नया और छोटा पेड़ । २. क्षुप । छोटे आकार का वृक्ष ।

पौनःपुनिक–वि० [सं०] पुनः-पुनः या बार बार होनेवाला ।

पौन–उभय० [सं० पवन] १. हवा । २. प्राण-वायु । ३. प्रेत । भूत ।

वि० [सं० पाद + ऊन] एक में से चौथाई कम । तीन चौथाई ।

पौनर्वादिक–वि० [सं०] १. पुनर्वाद सम्बन्धी । पुनर्वाद का । (एपेलेट) जै पौनर्वादिक न्यायालय । (एपेलेट कोर्ट) २. पुनर्वाद के विचार के परिणाम-स होनेवाला । जैसे–पौनर्वादिक आज्ञा । (ए लेट आर्डर)

पौना–पुं० [सं० पाद + ऊन] पौन पहाड़ा ।

वि० दे० 'पौन' ।

पुं० [हिं० पोना] [अल्पा० पौनी] प्रकार की कलछी ।

पौनार(री)*–स्त्री०=पद्म-नाल ।

पौनी–स्त्री० [हिं० पावना] नाई, आदि जो मंगल अवसरों पर नेग पाते

स्त्री० [हिं० पौना] छोटा पौना । कल

पौने–वि० [हिं० पौन] तीन-चौथा (संख्या के विचार से) जैसे–पौने चार

पौर–वि० [सं०] पुर या नगर सम्ब नगर का ।

स्त्री० दे० 'पौरी' ।

पौरजन–पुं० [सं०] नगर-निवासी । नाग

पौर-जानपद–पुं० [सं०] प्राचीन भार राज्य-तंत्र में पुर या नगर और ज या बाकी देश के प्रतिनिधियों की सभ का सम्मिलित रूप ।

विशेष–प्रायः पौर और जानपद अ अलग ही काम करते थे; पर कुछ वि अवसरों पर दोनों के सम्मिलित अधि भी होते थे । इन दोनों का वही सम्मि रूप पौर-जानपद कहलाता था ।

पौरत्व–पुं० दे० 'नागरिकता' ।

पौर-लेखक–पुं० [सं०] प्राचीन भा राज्य-तंत्र में वह अधिकारी जिसके पुर या नगर के लेख्यों या दस्तावेजों नकल और विवरण रहता था ।

पौरव–पुं० [सं०] पुरु का वंशज ।

पौर-वृद्ध–पुं० [सं०] किसी पुर नगर के वे बड़े और प्रधान प्रतिनिधि आदि जो प्राचीन भारतीय राज्य-तंत्र में नगर

पौली-स्त्री० [सं० प्रतोली] ड्योढ़ी।

पौष-पुं० [सं०] अगहन के बाद और माघ के पहले का महीना। पूस।

पौष्टिक-वि० [सं०] १. पुष्ट करनेवाला। २. बल-वीर्य्य बढ़ानेवाला।

पौसरा(ला)-पुं० [सं० पयःशाला] वह स्थान जहाँ सर्व-साधारण को पानी पिलाया जाता है। सबील।

पौहारी-पुं० [सं० पयस् = दूध + आहार] अन्न छोड़कर और केवल दूध पीकर रहनेवाला।

प्याऊ-पुं० दे० 'पौसरा'।

प्याज-पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध कंद जिसकी उग्र गन्ध अप्रिय होती है।

प्याजी-वि० [फा०] हलके गुलाबी रंग का।

प्यादा-पुं० [फा०] १. पैदल सिपाही। दूत। हरकारा। २. शतरंज का एक मोहरा या गोटी जो सबसे छोटी मानी जाती है। पैदल।

प्यार-पुं० [सं० प्रिय] मुहब्बत। प्रेम।

प्यारा-वि० [सं० प्रिय] [स्त्री० प्यारी] १. जिसे प्यार किया जाय। प्रेम-पात्र। प्रिय। २. भला मालूम होनेवाला।

प्याला-पुं० [फा०] [स्त्री० अल्पा० प्याली] १. छोटा कटोरा। २. तोप, बंदूक आदि में वह जगह जिसमें रंजक भरी जाती है।

प्यावना*-स० = पिलाना।

प्यास-स्त्री० [सं० पिपासा] १. जल पीने की प्रवृत्ति या इच्छा। तृषा। पिपासा। २. प्रबल वासना या कामना।

प्यासा-वि० [हिं० प्यास] जिसे प्यास लगी हो। तृषित।

प्यूनी*-स्त्री० दे० 'पूनी'।

प्योंदा-पुं० [फा० पैवंद] १. वृक्षों आदि को काटकर लगाई जानेवाली कलम। पैवंद। २. थिगली।

वि० [स्त्री० प्योंदी] १. (वृक्ष) जो कलम या पैवंद लगाने से तैयार हुआ हो। २. ऐसे

वृक्ष का फल। जैसे–प्योंदा बेर।

प्यो*+-पुं० [हिं० पिय] पति। स्वामी।

प्योसर-पुं० दे० 'पेवस'।

प्योसार+-पुं० दे० 'मायका'।

प्यौ(र)*-पुं० [सं० प्रिय] १. पति। स्वामी। २. प्रियतम।

प्रकंप(न)-पुं० [सं०] [वि० प्रकंपित] कँपकँपी। काँपना।

प्रकट–वि० [सं०] १. जो सबके सामने हो। सामने आया हुआ। जाहिर। २. आविर्भूत। ३. स्पष्ट। साफ।

प्रकटना*-अ० दे० 'प्रगटना'।

प्रकटित–वि० [सं०] प्रकट किया हुआ।

प्रकथन–पुं० [सं०] कही हुई बात या किये हुए काम की पुष्टि। (एफरमेशन)

प्रकरण–पुं० [सं०] १. उत्पन्न करना। २. चर्चा। वर्णन। वृत्तांत। ३. प्रसंग। विषय। ४. ग्रन्थ के अंतर्गत उसका छोटा विभाग। अध्याय। ५. दृश्य-काव्य में रूपक का एक भेद।

प्रकरी–स्त्री० [सं०] १. नाटक में किसी स्थानिक घटना की अवांतर कथा की सहायता से कथा-वस्तु का प्रयोजन सिद्ध करना, जो एक अर्थ-प्रकृति है। २. वह कथा-वस्तु जो थोड़े समय तक चलकर रुक जाय।

प्रकर्ष-पुं० [सं०] १. उत्कर्ष। २. अधिकता।

प्रकला–स्त्री० [सं०] कला (समय) का साठवाँ भाग।

प्रकांड–वि० [सं०] बहुत बड़ा।

प्रकाम–वि० [सं०] १. प्रचुर। बहुत। अधिक। २. यथेष्ट। काफी।

प्रकाम्य–वि० दे० 'प्राकाम्य'।

प्रकार–पुं० [सं०] १. एक ही तरह की अथवा एक ही मूल से उत्पन्न वस्तुओं, जीवों आदि का ऐसा वर्ग जो उसे दूसरी वस्तुओं या जीवों से अलग करता हो। तरह। किस्म। (काइन्ड) जैसे–घोड़े कई प्रकार के होते हैं। २. उन तत्वों, या विशेषताओं का समूह जिनसे वस्तु का स्वतन्त्र स्वरूप प्रकट होता भेद। (डेस्क्रिप्शन) जैसे-शास्त्रों में कई प्रकार बतलाये गये हैं। ३. कोई पूरा करने के लिए व्यवहार में लाई वाली क्रिया या प्रक्रिया। ढंग। (मैनर) जैसे—यह काम इस प्रकार होगा। ४. वह प्राकृतिक तत्व जिसके किसी वस्तु का कोई अलग वर्ग है। (नेचर)

स्त्री० दे० 'प्राकार'।

प्रकारांतर-पुं० [सं०] दूसरा प्रकार।

मुहा०-प्रकारांतर से = सीधी नहीं, बल्कि घुमाव-फिराव से। रूप से।

प्रकाश-पुं० [सं०] १. वह शक्ति या जिसके योग से वस्तुओं का रूप को दिखाई देता है। आलोक। २. प्रकट या गोचर होना। ३. पुस्तक का खंड। ४. धूप। घाम।

प्रकाशक–पुं० [सं०] [वि० १. वह जो प्रकाश करे। २. वह जो करे। ३. वह जो पुस्तकें या छापकर बेचता या बाँटता हो। (

प्रकाशकीय–वि० [सं०] १. सम्बन्धी। २. प्रकाशक का। जैसे-कीय निवेदन।

प्रकाश-गृह–पुं० [सं०] वह भारत, विशेषतः समुद्र में बनी हुई जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश निकलकर और फैलता हो। (लाइट हाउस)

प्रकाशन–पुं० [सं०] १. करने का काम। २. वे ग्रंथ आदि प्रकाशित किये जायँ। प्रकाशित पत्र आदि। (पब्लिकेशन)

प्रकाशमान-वि० [सं०] चमकता हुआ

प्रकाशित-वि० [सं०] १.

प्रकृतिस्थ-वि० [सं०] १. जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो। २. स्वाभाविक। ३. जिसके होश-हवास ठिकाने हों।

प्रकृष्ट-वि० [सं०] १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. खिंचा हुआ। ३. जोता हुआ (खेत)।

प्रकोप-पुं० [सं०] १. बहुत अधिक कोप। २. क्षोभ। ३. बीमारी का बढ़नेवाला जोर। ४. शरीर के वात, पित्त आदि में विकार होना जिससे रोग होते हैं।

प्रकोष्ठ-पुं० [सं०] १. मुख्य द्वार के पास की कोठरी। २. बड़ा आँगन। ३. बड़ा कमरा। कोठा। ४. संसदों, विधायिका सभाओं आदि में वह बाहरी कमरा जिसमें उसके सदस्य बैठकर बात-चीत करते और बाहरी लोगों से मिलते-जुलते हैं। (लॉबी)

प्रक्रम-पुं० [सं०] १. क्रम। २. उपक्रम।

प्रक्रिया-स्त्री० [सं०] १. वह क्रिया या प्रणाली जिससे कोई वस्तु होती, बनती या निकलती हो। (प्रोसेस) २. किसी कृत्य, विशेषतः अभियोग आदि की सुनवाई में होनेवाले आदि से अन्त तक के सब कार्य या उनके ढंग। (प्रोसीजर) ३. किसी कार्य की सिद्धि या पूर्त्ति के सम्बन्ध में वह सारी कार्रवाई जो अब तक हो चुकी हो। (प्रोसीडिंग)

प्रच्छ*-वि० [सं० पृच्छक] पूछनेवाला।

प्रक्षालन-पुं० [सं०] [वि० प्रक्षालित] जल से साफ करना। धोना।

प्रक्षिप्त-वि० [सं०] १. फेंका या छितराया हुआ। २. पीछे से किसी में मिलाया या बढ़ाया हुआ। ३. आगे की ओर बढ़ा या निकला हुआ। (प्रोजेक्टेड)

प्रक्षेप-पुं० [सं०] १. दे० 'प्रक्षेपण'। २. वह जो पीछे से या बाद में बढ़ाया गया हो। ३. किसी बहुत बड़े काम की योजना। (प्रॉजेक्ट)

प्रक्षेपण-पुं० [सं०] १. फेंकने, छितराने या बिखेरने की क्रिया या भाव। २. प्रक्षेप।

प्रखंड–पुं० [सं०] [वि० प्राखंडिक] किसी विशेष कार्य या विभाग के लिए बनाया हुआ प्रान्त का कोई खंड या भाग। (डिवीजन)

प्रखर–वि० [सं०] [भाव० प्रखरता] बहुत तीक्ष्ण या प्रचंड ।

प्रख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध । मशहूर ।

प्रख्यापक–पुं० [सं०] वह जो किसी प्रकार का प्रख्यापन करे । (डिक्लेरेटरी)

प्रख्यापन–पुं० [सं०] [वि० प्रख्यापनिक, प्रख्यापित] १. किसी को जतलाने के लिए कोई बात स्पष्ट रूप से कहना । २. वह लिखित वक्तव्य जो किसी अधिकारी के सामने अपने किसी कार्य या उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में उपस्थित किया जाय । (डिक्लेरेशन)

प्रख्यापनिक–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का प्रख्यापन हो । (डिक्लेरेटरी)

प्रख्यापित–वि० [सं०] जिसके सम्बन्ध में कोई प्रख्यापन हुआ हो । (डिक्लेयर्ड)

प्रगट–वि० दे० 'प्रकट' ।

प्रगटना*–अ० [सं० प्रकटन] [स० प्रगटाना] प्रकट होना । सामने आना ।

प्रगति–स्त्री० [सं० प्र + गति] १. आगे की ओर बढ़ना । अग्रसर होना । २. उन्नति ।

प्रगतिवाद–पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसके अनुसार समाज, साहित्य आदि को बराबर आगे की ओर बढ़ाते रहना ही हितकर माना जाता है। (आज-कल साधारणतः इसका यह अर्थ समझा जाता है कि प्राचीन अथवा वर्तमान सभी बातें दूषित अथवा त्रुटिपूर्ण हैं; और नई बातें ग्रहण करना ही आगे बढ़ना है ।)

गतिशील–स्त्री० [हिं० प्रगति + सं० शील] वह जो बराबर आगे की ओर बढ़ता हो ।

गल्भ–वि० [सं०] [भाव० प्रगल्भता] १. चतुर । होशियार । २. प्रतिभाशाली । ३. निर्भय । निडर । ४. उद्धत । उद्दं

प्रगसना*–अ० दे० 'प्रगटना' ।

प्रगाढ़–वि० [सं०] १. बहुत गाढ़ गहरा । २. बहुत अधिक ।

प्रगासना*–स० [सं० प्रकाशन] प्रकाशित या प्रकट करना । २. प्र करना । जलाना ।

प्रग्रह–पुं० [सं०] १. ग्रहण करने या का भाव या ढंग । धारण । २. पग्हा ।

प्रघट*–वि० = प्रकट ।

प्रघट्टक*–वि० [सं० प्रकट] प्रकट क वाला ।

प्रघोर–वि० [सं०] 'घोर' से भी ब अर्थात् परम घोर ।

प्रचंड–वि० [सं०] [भाव० प्रचंडता] बहुत तीव्र या तेज । प्रखर । २. भयं ३. कठोर । कड़ा । ४. असह्य । ५ ब बड़ा । विशाल । भारी ।

प्रचरना*–अ० [सं० प्रचार] प्रचा आना । फैलना ।

प्रचलन–पुं० [सं०] [वि० प्रचलि १. चलते या जारी रहने की क्रिया भाव । २. किसी वस्तु का निरंतर व्यव प्रयोग या चलन में आना, रहना या हो (करेन्सी) ३. प्रथा । रवाज ।

प्रचलित–वि० [सं०] १. जिसका प्र या चलन हो । चलता हुआ । जारी । प्रचलित सिक्का, प्रचलित प्रथा । २. समय चल रहा हो । (करेन्ट, एग्जि जैसे–प्रचलित मास या वर्ष । ३. जो प्र में लाया गया हो । कार्य या व्यव रूप में चलाया या लाया हुआ । (इन जैसे–आज्ञा या विधान प्रचलित करना ।

प्रचार–पुं० [सं०] १. किसी व बात का बराबर व्यवहार में आना या च रहना । चलन । रवाज । २. कोई वि मत या बात बहुत से लोगों के स रखना । (प्रोपेगेंडा)

] [स्त्री० प्रचारिणी,
करनेवाला ।
] १. प्रचार करने अथवा
या भाव । जैसे–इस
में प्रचारण कर दिया
में प्रचार या प्रचलन के
क्रिया या भाव । प्रचलन ।
(क) इस पत्रिका का
बहुत बढ़ गया है । (ख)
प्रचारण नहीं रह गया ।
[सं० प्रचारण] १. प्रचार
। २. सामने आकर लड़ने
। ३. आह्वान करना ।

[सं०] १. जिसका प्रचार
किया हुआ । २. (नियम,
) जिसे काम में लाने या
काम करने की आज्ञा दी
)
= परिचालन या संचालन ।
[सं०] [भाव० प्रचुरता]
।
[सं०] १. ढका या लपेटा
हुआ । गुप्त ।
[सं०] घनी छाया ।
[सं०] ग्रहण के समय
चन्द्रमा की छाया अथवा
पृथ्वी की छाया ।

[सं० प्रक्षालन] धोना ।
= पर्वत ।
[सं०] १. संतान उत्पन्न
। २. बच्चा जनाने का
।
[सं० प्र + जरना] अच्छी
।
[सं०] १. संतान । औलाद ।
या देश में रहनेवाला

जन-समूह । रिआया । रैयत । ३. किसी राजा के अधीन या उसके राज्य में रहनेवाले लोग । (सब्जेक्ट)

प्रजातंत्र–पुं० दे० 'गण-तंत्र' ।

प्रजातंत्री–वि० दे० 'गण-तंत्री' ।

प्रजापति–पुं० [सं०] १. सृष्टि उत्पन्न करनेवाला । सृष्टिकर्त्ता । २. ब्रह्मा । ३. मनु । ४. सूर्य्य । ५. घर का मालिक या बड़ा । ६. दे० 'प्राजापत्य' ।

प्रजारना†*–स० [सं० प्र + हिं० जारना] अच्छी तरह जलाना ।

प्रजावान्–वि० [सं०] [स्त्री० प्रजावती] जिसके आगे बाल-बच्चे हों ।

प्रजासत्ता–स्त्री० दे० 'प्रजातंत्र' ।

प्रजा-सत्तात्मक–वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमें प्रजा या उसके प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो । 'राज-सत्तात्मक' का विपर्य्याय ।

प्रजुरना*–अ० [सं० प्रज्वलन] १. प्रज्वलित होना । जलना । २. प्रकाशित होना । चमकना ।

प्रजुलित*–वि० = प्रज्वलित ।

प्रजोग*–पुं० = प्रयोग ।

प्रज्ञ–पुं० [सं०] विद्वान् ।

प्रज्ञप्ति–स्त्री० [सं०] १. जताने या सूचित करने की क्रिया या भाव । (इन्फॉरमेशन) २. सूचना-पत्र । ३. सूचना । ४. वह पत्र जो माल के साथ सूचना-रूप में भेजा जाता है और जिसमें भेजे हुए माल का विवरण, मूल्य आदि रहता है । बीजक । (एडवाइस)

प्रज्ञा–स्त्री० [सं०] १. वह वृत्ति या मानसिक शक्ति जो सब बातें समझने-बूझने में समर्थ करती है । बुद्धि । ज्ञान । समझ । (इन्टेलेक्ट) २. सरस्वती ।

प्रज्ञा-चक्षु–पुं० [सं०] वह जिसके हृदय के नेत्र या मानसिक दृष्टि बहुत प्रबल हो । बहुत बड़ा विद्वान् और ज्ञानी । (साधारणतः अन्धे विद्वानों के लिए प्रयुक्त)

प्रज्ञापक-पुं० [सं०] १. प्रज्ञापन करनेवाला। २. बड़े या मोटे अक्षरों में लिखा या छपा हुआ विज्ञापन। (पोस्टर)

प्रज्ञापन-पुं० [सं०] १. विशेष रूप से ज्ञात करने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार का सूचक लेख आदि।

प्रज्ञाशील-पुं० [सं०] १. बुद्धिमान्। समझदार। २. वह जिसमें सब काम अच्छी तरह समझ-बूझकर करने की शक्ति या योग्यता हो।

प्रज्वलन-पुं० [सं०] [वि० प्रज्वलित] जलने की क्रिया। जलना।

प्रज्वलित-वि० [सं०] १. जलता हुआ। २. चमकता हुआ। ३. बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष। जैसे-प्रज्वलित उदाहरण।

प्रण-पुं० [सं० पण] दृढ़ या पक्का निश्चय। प्रतिज्ञा।

प्रणत-वि० [सं०] १. झुका हुआ। २. झुककर प्रणाम करता हुआ। ३. नम्र।

प्रणत-पाल-पुं० [सं०] दीनों या भक्तों का पालन करनेवाला।

प्रणति-स्त्री० [सं०] १. प्रणाम। २. नम्रता। ३. निवेदन। प्रार्थना।

प्रणमना*-अ० [सं० प्रणमन] १. प्रणाम करना। २. किसी के आगे झुकना। नम्र होना।

प्रणम्य-वि० [सं०] जिसके आगे झुककर प्रणाम करना उचित या कर्त्तव्य हो।

प्रणय-पुं० [सं०] १. प्रेमपूर्वक की हुई प्रार्थना। २. प्रेम। ३. विश्वास।

प्रणयन-पुं० [सं०] रचना। बनाना।

प्रणयिनी-स्त्री० [सं०] १. प्रेमिका। २. पत्नी। भार्या।

प्रणयी-पुं० [सं० प्रणयिन्] [स्त्री० प्रणयिनी] १. प्रणय या प्रेम करनेवाला। प्रेमी। २. स्वामी। पति।

प्रणव-पुं० [सं०] १. ओंकार मंत्र। २. परमेश्वर।

प्रणवना*-अ० दे० 'प्रणमना'।

प्रणाम-पुं० [सं०] झुककर अभि करना। नमस्कार। दंडवत्।

प्रणामी-स्त्री० [सं० प्रणाम] वह या भेंट जो किसी बड़े को प्रणाम करने समय उसके सामने रखी जाय।

प्रणाली-स्त्री० [सं०] १. पानी नि या बहने की नली। २. जल के दो भागों को मिलानेवाला छोटा जल- (चैनेल) ३. रीति। प्रथा। चाल। ढंग। रीति। तरीका। ५. कोई काम या कोई चीज कहीं भेजने का उपयुक्त, विधि-विहित या नियत मा साधन। (चैनेल)

प्रणिधान-पुं० [सं०] १. रखा २. समाधि (योग की)। ३. परम ४. मन की एकाग्रता। ध्यान।

प्रणिधि-पुं० [सं०] १. राज्य के विशेष कार्य से कहीं भेजा जानेवाला (एमिसरी) २. गुप्त रूप से काम वाला दूत या अभिकर्त्ता। (सीक्रेट ए स्त्री० १. प्रार्थना। निवेदन। २. म एकाग्रता। ३. तत्परता।

प्रणिपात-पुं० [सं०] १. सिर झु २. प्रणाम। नमस्कार।

प्रणीत-वि० [सं०] १. रचित। हुआ। २. भेना हुआ। ३. लाया हु

प्रणेता-पुं० [सं० प्रणेतृ] [स्त्री० बनानेवाला। रचयिता।

प्रतंचा*†-स्त्री० दे० 'प्रत्यंचा'।

प्रतच्छ*†-वि० दे० 'प्रत्यक्ष'।

प्रतति-स्त्री० [सं०] १. लम्बाई-चौ विस्तार। २. लम्बी-चौड़ी और बड़ी

प्रतनु-वि०[सं०] १. हलके या छोटे वाला। २. दुबला-पतला। ३. सूक्ष्म।

प्रताप-पुं० [सं०] १. पौरुष। वीरता। शक्ति, वीरता आदि का ऐसा प्रभाव आतंक जिससे विरोधी दबे रहें। इक

[सं० प्रतापिन्] जिसका
हो। इकबालमंद।
[सं०] १. धोखा देनेवाला।
चालाक। धूर्त्त।
[सं०] धोखा देना।

[सं०] १. जो ठगा गया
धोखा दिया गया हो।
[सं० पतंचिका] धनुष की

[सं०] १. एक उपसर्ग जो
आरम्भ में लगकर नीचे लिखे
है—विपरीत; जैसे—प्रतिवाद।
बदले में; जैसे—प्रत्यु-
जैसे—प्रति दिन। समान;
मुकाबले का; जैसे—प्रतिद्वंद्वी।
कर्मचारी; जैसे—प्रति-समाहर्त्ता,
आदि। २. एक अव्यय जो
के आरम्भ में 'प्रति पुरुष' के
संक्षिप्त रूप की तरह लगता है।
(डेपुटी डाइरेक्टर)।

] पुस्तक या समाचार-पत्र की
) २. प्रतिबिम्ब। परछाईं।
अपनी प्रति।
-पुं० दे० 'प्रत्यभिदेश'।
[सं०] वह धन जो किसी
हानि होने पर उसके बदले में
। हरजाना। (कम्पेन्सेशन)
[सं०] १. प्रतिकर या
संबंध रखनेवाला। २. प्रतिकर
के रूप में दिया जानेवाला।
]
-पुं० [सं०] किसी कार्य के
या उत्तर में किया जानेवाला
ऐक्शन)
-पुं० [सं० प्रति = नकल +
] किसी कवि, लेखक, कलाकार

आदि की किसी कृति की प्रतियाँ छापने या प्रस्तुत करने का वह स्वत्व जो उसके कर्त्ता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता। (कॉपी राइट)

प्रतिकार-पुं० [सं०] १. किसी कार्य के प्रभाव रोकने या कम करने के लिए अथवा उसका बदला चुकाने के लिए उसके मुकाबले में किया जानेवाला कार्य। २. कम करने या घटाने आदि का कार्य।

प्रतिकारक-पुं० [सं०] वह जो किसी बात का प्रतिकार करता हो।

प्रतिकूल-वि० [सं०] [भाव० प्रतिकूलता] १. जो अनुकूल न हो। २. विरुद्ध। विपरीत। उलटा। (कन्ट्रैरी) ३. रुचि, वृत्ति, निश्चय आदि के विरुद्ध या उलटा पड़नेवाला। (रिपगनेन्ट)

प्रतिकृति-स्त्री० [सं०] १. किसी के अनुकरण पर बनाई हुई मूर्ति या रूप। जैसे—प्रतिमा, चित्र आदि। २. किसी व्यक्ति की आकृति के अनुसार बना हुआ उसका चित्र। (पोर्ट्रेट) ३. प्रतिबिम्ब। छाया। ४. बदला। प्रतिकार।

प्रतिक्रम-पुं० [सं०] चीजों या बातों का जो क्रम पहले बतलाया गया हो, उसका उलटा या विपरीत क्रम।

मुहा०-प्रतिक्रम से भी = बतलाये हुए क्रम के उलटे क्रम से भी। (वाइसी वर्सा)

प्रतिक्रमात्-क्रि० वि० [सं०] बतलाये हुए क्रम के उलटे क्रम से। (वाइसी वर्सा)

प्रतिक्रिया-स्त्री० [सं०] १. प्रतिकार। बदला। २. कोई क्रिया होने पर उसके विरोध में या परिणाम-स्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया। ३. विरुद्ध या विपरीत दिशा में होनेवाली क्रिया या गति (रि-ऐक्शन)

प्रतिक्रियावाद-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त कि जो बातें चली आ रही हों, उनमें सुधार या परिवर्तन चाहनेवालों का विरोध करना

चाहिए। (रि-ऐक्शनिज्म)

प्रतिक्रियावादी-पुं० [सं०] वह जो उन्नति, सुधार आदि के विरुद्ध या विपरीत चलता हो। (रि-ऐक्शनरी)

प्रतिग्या*-स्त्री० = प्रतिज्ञा।

प्रतिग्रह-पुं० [सं०] [वि० प्रतिग्राह्य, प्रतिग्राहक] १. किसी की दी हुई चीज ले लेना। दान ग्रहण या स्वीकृत करना। २. (ब्राह्मण का) वह दान लेना जो (उसे) विधिपूर्वक दिया जाय। ३. पाणि-ग्रहण। विवाह। ४. रक्षापूर्वक रखने के लिए मिली हुई किसी की संपत्ति। ५. अभियुक्त या संदिग्ध व्यक्ति का अधिकारियों के हाथ में जाँच या विचार के लिए जाना। (कस्टडी)

प्रतिग्राहक-पुं० [सं०] १. लेने या ग्रहण करनेवाला। २. वह जो किसी की दी हुई कोई वस्तु, संपत्ति आदि ग्रहण करता हो। (रिसीवर)

प्रतिग्राही-पुं० [सं०] वह जो दान ले।

प्रतिघात-पुं० [सं०] [वि० प्रतिघाती] १. वह आघात जो किसी दूसरे के आघात करने पर किया जाय। २. सामने से होनेवाला ऐसा आघात जिससे रुकावट हो।

प्रतिच्छबि-स्त्री० [सं०] १. प्रतिबिम्ब। परछाईं। छाया। २. चित्र।

तिच्छा*-स्त्री० = प्रतीक्षा।

तिच्छाया-स्त्री० [सं०] [वि० प्रतिच्छायित] १. चित्र। तसवीर। २. परछाईं। प्रतिबिम्ब।

तिच्छायित-वि० [सं०] जिसकी परछाईं कहीं पड़ी हो। २. जिसपर किसी की परछाईं पड़ी हो।

तिछाँह-स्त्री० दे० 'परछाईं'।

तिछाया-स्त्री० दे० 'प्रतिच्छाया'।

तिज्ञ-वि० [सं०] प्रतिज्ञा करनेवाला। (यौ० के अन्त में, जैसे—दृढ़-प्रतिज्ञ।)

तिज्ञा-स्त्री० [सं०] १. कुछ करने या न करने के सम्बन्ध में पक्का निश्चय। प्रण।

मुहा०—प्रतिज्ञा पारना = प्रतिज्ञा पू करना। उदा०—जन-प्रहलाद-प्रतिज्ञा पारी। —सूर। २. शपथ। सौगन्द। कसम। ३. न्याय में वह बात जिसे सिद्ध करना हो।

प्रतिज्ञात-वि० [सं०] जिसके विषय प्रतिज्ञा की गई हो।

प्रतिज्ञापत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिस कोई प्रतिज्ञा लिखी हो। इकरारनामा।

प्रतितुलन-पुं० [सं०] [वि० प्रतितुलि किसी एक ओर पड़े हुए भार की बरा करने या उसका प्रभाव नष्ट करने दूसरी ओर का भार। (काउन्टर-बैलेन्स

प्रतिदान-पुं० [सं०] [वि० प्रतिद १. लौटाना। वापस करना। २. परिव बदला। ३. किसी दी हुई वस्तु के ब में मिलनेवाली वस्तु। (रिटर्न)

प्रतिदेश-पुं० [सं०] सीमा पर का दे

प्रतिद्वंद-पुं० दे० 'प्रतिद्वंदिता'।

प्रतिद्वंदिता-स्त्री० [सं०] बराबर की लड़ाई या विरोध। प्रतियोगिता।

प्रतिद्वंदी-पुं० [सं० प्रतिद्वंद्विन्] [भा प्रतिद्वंदिता] सामने आकर लड़ने विरोध करनेवाला। प्रतिस्पर्धी। (राइ

प्रतिध्वनन-पुं० [सं०] प्रतिध्वनि क करना या होना। (ईकोइंग)

प्रतिध्वनि-स्त्री० [सं०] [वि० प्रतिध्व १. वह ध्वनि या शब्द जो अपनी उ के स्थान से चलकर कहीं टकराता लौटे और फिर वहीं सुनाई पड़े। शब्द। गूँज। २. दूसरों के विचारों का किसी दूसरे रूप में या इस दोहराया जाना कि उससे मूल विचारों ध्वनि या छाया निकलती हो। (ईको)

प्रतिनंदन-पुं० [सं०] [वि० प्रतिनंदि बधाई। (कांग्रेचुलेशन)

प्रतिना-स्त्री० दे० 'पृतना'।

प्रति-निचयन-पुं० [सं०] [वि० प्रतिनिचि किसी का दिया हुआ धन, शुल्क आदि

होने पर उसे लौटाना
करना । (रिफ़ंड)
[सं०] १. किसी को
स्वत्व, कर्त्तव्य आदि
) २. वह व्यक्ति या
जो प्रतिनिधि बनाकर
। (डेलिगेसी)
पुं० [सं०] १. प्रतिनिधि
या कुछ लोगों को कहीं
) २. प्रतिनिधियों
कहीं किसी काम के लिए
)
[सं०] [भाव० प्रतिनिधित्व]
प्रतिमूर्त्ति । २. किसी की ओर
करने के लिए नियुक्त व्यक्ति ।
देखकर उसी के वर्ग, जाति
के स्वरूप, रंग-ढंग, आचार-
अनुमान या कल्पना की
४. वह जो अपने वर्ग के औरों
आ सके । (रिप्रेज़ेन्टेटिव)
पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें
अपने प्रतिनिधि के रूप में
में उपस्थित रहकर कुछ
मुख्यतः किसी विषय पर
अधिकार दिया जाता
)
-वि० [सं०] (वह
) जिसमें प्रजा के चुने हुए
सत्ता प्रधान हो । 'राज-
विपर्याय ।
[सं०] प्रतिनिधि या
के रूप में बनाकर कहीं
) । (डेप्यूटेड)
पुं० [सं०] किसी को कहीं
अधीनस्थ कर्मचारी के रूप
। (डेप्यूटेशन)
[सं०] विरुद्ध पक्षवाला ।

प्रतिपत्ति–स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति । पाना । २. ज्ञान । ३. अनुमान । ४. प्रतिपादन । निरूपण । ५. मानना । स्वीकृति । (ऐक्सेप्टेन्स)

प्रतिपदा–स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की पहली तिथि । प्रतिपद् । परिवा ।

प्रतिपन्न–वि० [सं०] १. अवगत । ज्ञात । २. ग्रहण किया या माना हुआ । अंगीकृत । स्वीकृत । (एक्सेप्टेड) ३. प्रमाणित । ४. निश्चित । ५. भरा-पूरा । ६. शरणागत ।

प्रति-परीक्षण–पुं० [सं०] [वि० प्रति-परीक्षित] किसी के कुछ कह चुकने पर उससे दबी-दबाई बातों का पता लगाने के लिए उससे कुछ और प्रश्न करना । (क्रॉस-इग्ज़ामिनेशन)

प्रतिपर्ण–पुं० [सं०] दो टुकड़ोंवाली पावती या रसीद, प्रमाणपत्र आदि में का वह एक टुकड़ा जो देनेवाले के पास रह जाता है और जिसपर किसी को दिये हुए दूसरे टुकड़े की प्रतिलिपि रहती है । (काउन्टर-फॉयल)

प्रति-पादन–पुं०[सं०] [कर्त्ता प्रतिपादक, वि० प्रतिपादित] १. अच्छी तरह समझाकर कोई बात कहना । प्रतिपत्ति । २. अपना मत पुष्ट करने के लिए प्रमाणपूर्वक कुछ कहना ।

प्रतिपार*–पुं० दे० 'प्रतिपाल' ।

प्रति-पाल(क)*–पुं० [सं०] [स्त्री० प्रति-पालिका] पालन-पोषण करनेवाला । पोषक ।

प्रतिपालक अधिकरण–पुं० [सं०] वह राजकीय विभाग जो सम्पन्न विधवाओं, अल्प वयस्कों अथवा अयोग्य व्यक्तियों की सम्पत्ति की रक्षा और व्यवस्था करता है । (कोर्ट ऑफ वार्ड्स)

प्रति-पालन–पुं० [सं०] [वि० प्रतिपालित] १. पालन करने की क्रिया या भाव । २. आज्ञा आदि का निर्वाह । तामील ।

प्रतिपालना*–स० [सं० प्रतिपालन] १. पालन करना । २. रक्षा करना । बचाना ।

स्त्री० दे० 'प्रतिपालन'।

प्रति-पुरुष–पुं० [सं०] किसी के अधीन रहकर अथवा यों ही किसी के स्थान पर उसकी ओर से काम करनेवाला। (डेपुटी)

प्रति-पूर्त्ति–स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति या मद से लिया हुआ या व्यय किया हुआ धन उसे देकर उसकी पूर्त्ति करना। (री-इम्बर्स-मेन्ट)

प्रति-प्राप्ति–स्त्री० [सं०] [वि० प्रतिप्राप्त] खोई या किसी के हाथ में गई हुई चीज फिर से प्राप्त करना। (रिकवरी)

प्रतिफल–पुं० [सं०] [वि० प्रतिफलित] १. परिणाम। नतीजा। २. परिणाम के रूप में प्राप्त होनेवाला फल। बदला (रिटर्न) ३. बदले में मिली हुई चीज, विशेषतः धन या और कोई मूल्यवान पदार्थ। (कन्सिडरेशन)

प्रति-फलक–पुं० [सं०] वह यन्त्र जो कोई प्रतिबिम्ब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो। (रिफ्लेक्टर)

प्रतिबंध–पुं० [सं०] [वि० प्रतिबद्ध, कर्त्ता-प्रतिबंधक] १. रोक। रुकावट। २. विघ्न। बाधा। ३. किसी बात या काम में लगाई हुई शर्त्त। पण। अट। (कन्डिशन) ४. किसी निश्चय, विधि आदि में पड़नेवाली कठिनता से बचने के लिए, निकाला हुआ मार्ग या निश्चित किया हुआ विधान। शर्त्त। (प्राविज़ो) जैसे–परन्तु प्रतिबंध यह है कि......।

प्रतिबंधु–पुं० [सं०] वह जो बंधु नहीं, बल्कि बिरोधी या शत्रु हो। प्रतिपक्षी।

प्रतिबद्ध–वि० [सं०] जिसमें कोई प्रतिबंध हो। शर्त्त से बँधा हुआ।

प्रतिबिंब–पुं० [सं०] [वि० प्रतिबिंबित] १. किसी वस्तु के एक ओर प्रकाश होने के कारण दूसरी ओर पड़नेवाली उसकी छाया। परछाईं। (शैडो) २. किसी वस्तु की प्रायः ज्यों की त्यों वह आकृति या प्रतिकृति जो प्रकाश की सहायता, अनुकरण और किसी कारण से उसके विपरीत पड़ती या दिखाई देती है। (रिफ्ले ३. मूर्त्ति। प्रतिमा। ४. चित्र। ५. दर्पण।

प्रतिभट–पुं० [सं०] बहुत बड़ा योद्धा। उदा०–प्रतिभट, उदभट, जहँ, लरत लच्छ पर लच्छ। –

प्रतिभा–स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। २. वह विशिष्ट और असाधारण शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम में अधिक योग्यता के कार्य कर दिखला असाधारण बुद्धि-बल। (जीनीअस)

प्रतिभाग–पुं० [सं०] [वि० प्रातिभ १. प्राचीन काल का एक प्रकार का २. आज-कल वह शुल्क जो राज्य में वाले कुछ विशिष्ट पदार्थों (यथा मादक-द्रव्य, दीया सलाई, कपड़ों पर उनके बनते ही और बाजार में लिए जाने से पहले ले लिया जाता (एक्साइज़ ड्यूटी)

प्रतिभागिक–वि० दे० 'प्रातिभागिक'

प्रतिभाज्य–वि० [सं०] जिसपर (शुल्क) लगता या लग सकता हो।

प्रतिभात–वि० [सं०] १. चमकता प्रकाशित। प्रदीप्त। २. जिसका हुआ हो। सामने आया हुआ। ३. ४. ज्ञात।

प्रतिभावन–पुं० [सं०] [वि० प्रतिभ एक ओर से दिखाई पड़नेवाली भावना, व्यवहार, वृत्ति आदि के स्वरूप दूसरी ओर से दिखाई भावना, व्यवहार या वृत्ति। (रेस्पांस

प्रतिभावान्(शाली)–वि० [सं०] प्रतिभा हो। प्रतिभावाला। (जीनिय

प्रतिभास–पुं० [सं०] १. छाया, आदि के द्वारा ज्ञान पड़नेवाला रूप। २. स्वरूप। आकृति।

[सं०] किसी की जमानत
। जामिन। लग्नक।
)
। (देखें)
[सं०] [वि० प्रतिभूत]
किसी बात की जमानत
हो। जमानत की रकम।
जिसके आधार या बल पर
है।
ति-न्यास = जमानत के
करना।
आधार या बल पर लिया
ऐसा ऋण जिसका चुकता
निश्चित हो। ४. वह लेख्य
के ऋण से संबंध रखने-
रहती हैं। (सिक्योरिटी;
के लिए)
[सं०] वह पत्र जिसमें
जमानतदार अपने उत्तर-
स्वीकृति लिखकर देता है।
रिटी)
[सं० प्रतिभा] शरीर का
।
[सं० प्रतिनिधि + मंडल]
दल या मंडल।
[सं०] १. किसी के स्वरूप
हुई मूर्त्ति, चित्र आदि।
देवताओं की मूर्त्ति। ३.
। ४. साहित्य में एक
किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति
में उसी के समान किसी
व्यक्ति की स्थापना का
।
[सं०] १. प्रतिबिंब।
। बराबरी। ३. तौल।
। बटखरा। ५. दृष्टांत।
वस्तु जो आदर्श-रूप में
और वस्तुएँ बनाने के लिए
सामने रखी जाय। (मॉडल) ७. किसी आदर्श को देखकर उसके अनुरूप बनाई हुई वस्तु। (मॉडल) ८. (छपाई आदि में) छापे जानेवाले लेखों आदि का वह नमूना जो छापने से पहले संशोधन आदि के लिए तैयार किया जाता है। (प्रूफ या प्रूफ़-शीट) ९. दे० 'मानक'।

प्रति-मुद्रण–पुं० [सं० प्रति + मुद्रण] १. खुदी या लिखी हुई आकृति, लेख आदि पर से उसकी ठीक प्रतिलिपि उतारने या छापने की क्रिया या भाव। २. उक्त प्रकार से ज्यों की त्यों उतारी या छापी हुई प्रति। (फैक-सिमिली) जैसे–शिला-लेख या हस्त-लिपि का प्रतिमुद्रण।

प्रति-मुद्रांकन–पुं० [सं०] १. जिसपर पहले मुद्रांकन हो चुका हो या मोहर लग चुकी हो उसपर बड़े अधिकारी का अपनी स्वीकृति या सहमति सूचित करने के लिए अपनी मोहर भी लगाना। २. उक्त प्रकार से किया हुआ मुद्रांकन या लगाई हुई मोहर। (काउन्टर-सील)

प्रतिमूर्त्ति–स्त्री० [सं०] किसी के अनुरूप ज्यों की त्यों बनी हुई मूर्त्ति।

प्रतियोगिता–स्त्री० [सं०] १. किसी काम में औरों से आगे बढ़ने का प्रयत्न। प्रति-द्वंदिता। चढ़ा-ऊपरी। मुकाबला। २. ऐसा कार्य जिसमें बहुत-से लोग अलग अलग सफल होने का प्रयत्न करें। (कॉम्पि-टीशन)

प्रतियोगी–पुं० [सं०] १. प्रतियोगिता करनेवाला। २. हिस्सेदार। ३. शत्रु। वैरी। ४. सहायक। मददगार।

प्रतिरक्षा–स्त्री० [सं०] किसी के आक्रमण से अपनी रक्षा या बचाव के लिए अथवा अभियोग आदि का उत्तर देने के लिए किये जानेवाले कार्य या व्यवस्था। बचाव। (डिफेन्स)

प्रतिरूप–पुं० [सं०] १. प्रतिमा। मूर्त्ति।

२. तसवीर। चित्र। ३. नमूना। (स्पेसिमेन) ४. दे० 'प्रतिनिधि' ३. और ४.। वि० नकली या जाली। कृत्रिम। बनावटी। कूट। (काउन्टरफीट)

प्रतिरूपक–पुं० [सं०] वह जो नकली या बनावटी चीजें, विशेषतः सिक्के, नोट आदि बनाता हो। (काउन्टरफीटर)

प्रतिरोध–पुं० [सं०] [वि० प्रतिरोधक] १. विरोध। २. रुकावट। बाधा। ३. किसी आवेग, आक्रमण आदि को रोकने के लिए किया जानेवाला कार्य।

प्रतिलिपि–स्त्री० [सं०] [वि० प्रतिलिपित] लेख आदि की ज्यों की त्यों नकल। (कॉपी)

प्रतिलिपिक–पुं० [सं०] वह जो लेखों आदि की प्रतिलिपि करता हो। नकल करनेवाला। (कॉपिस्ट)

प्रतिलिपित–वि० [सं०] जिसकी प्रतिलिपि या नकल कर ली गई हो। प्रतिलिपि किया हुआ। (कॉपीड)

प्रति-लेखन–पुं० [सं०] किसी लिखी हुई चीज की ज्यों की त्यों नकल उतारने या उसे फिर उसी तरह लिखने की क्रिया या भाव। (ट्रान्सक्रिप्शन)

प्रति-लेखा–पुं० [सं० प्रति + हिं० लेखा] वह पुस्तिका जो बंक की ओर से उन लोगों को मिलती है, जिनके रुपये बंक में जमा रहते हैं और जिसपर बंक में जमा किये हुए और उसमें से निकाले या लिये हुए रुपयों का हिसाब रहता हो। (पास बुक)

प्रतिलोम–वि० [सं०] १. प्रतिकूल। २. नीचे से ऊपर की ओर या उलटी दिशा में जानेवाला। उलटे क्रमवाला। 'अनुलोम' का उलटा। (कॉनवर्स)

प्रति-वचन–पुं० [सं०] १. उत्तर। जवाब। २. प्रतिध्वनि।

प्रतिवर्त्तन–पुं० [सं०] [वि० प्रतिवर्त्तित] १. चक्कर काटना। फेरा लगाना। घूमना। २. घूमकर फिर अपने स्था

आना। लौटना।

प्रतिवस्तूपमा–स्त्री० [सं०] सा
उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें
और उपमान के साधारण या समा
का अलग-अलग, परन्तु एकार्थवाची
में वर्णन किया जाता है।

प्रतिवाद–पुं० [सं०] [कर्त्ता प्रति
वह कथन जो किसी के मत, क
अभियोग को मिथ्या या अ-यथार्थ
करने के लिए हो। विरोध।
(कन्ट्राडिक्शन)

प्रतिवादिक–वि० [सं०] जिस
जिसके द्वारा प्रतिवाद या खंडन
विरोधी। (कन्ट्राडिक्टरी) जैसे
एक दूसरी की प्रतिवादिक हैं।

प्रतिवादी–पुं० [सं०] १.
करनेवाला। प्रतिपक्षी। (डिफेन्डेन्

प्रतिवास–पुं० [सं०] पड़ोस।

प्रतिवासी–पुं० [सं०] पड़ोसी।

प्रतिविधान–पुं० [सं०] १. किसी
के मुकाबले में किया जानेवाला
२. प्रतिकार।

प्रतिविधि–स्त्री० [सं०] वह विधि
या उपाय जो किसी कार्य या घटना
स्वरूप होनेवाले अपकार या
परिहार करने के लिए किया जा
चार। (रेमेडी)

प्रतिवेश–पुं० [सं०] १. पड़ो
आस-पास की वस्तुएँ या प
(एनविरनमेन्ट)

प्रतिवेशी–पुं० [सं० प्रतिवेशिन्] प

प्रति शत-पद [सं०] हर सौ या
हिसाब से। हर सौ पर। फी सदी। (

प्रति-शतक–पुं० [सं०] प्रति श
सौ के हिसाब से लगाया जानेवा
या बैठाया जानेवाला पड़ता। (

प्रति-शब्द–पुं० [सं०] १. प्रति

शब्द। (अशुद्ध

[सं०] केवल बदला
ऐसे देश से आने-
जानेवाला कर या
पहले (ऐसा कर लगाने-
माल पर अपने
शुल्क लगा रखा हो।
बदला चुकाने के
नेवाला कर या शुल्क।
ड्यूटी)

[सं० प्रति + शोध] किसी
चुकाने के लिए किया जाने·

[सं०] जुकाम। (कोल्ड)

[सं०] [वि० प्रतिश्रुत]
। २. प्रतिरूप। ३. मंजूरी।
किसी बात या काम के लिए
वचन। (प्रॉमिस) ५.
जिम्मेदारी कि कोई चीज या
इससे भिन्न, विपरीत या
है। (गारन्टी)

-पुं० दे० 'विश्रुति-पत्र'।

[सं०] जिसका प्रतिषेध
हो। (प्रॉहिबिटेड)

[सं०] [वि० प्रतिषिद्ध,
] १. निषेध। मनाही।
बिलकुल न करने का पूरा
। (प्रॉहिबिशन) ३.
साहित्य में एक अलंकार
निषिद्ध या वर्जित बात का
अभिप्राय से और कोई अन्तर
फिर से किसी नई तरह से
किया जाता है।

[सं०] वह जो प्रतिषेध
)
आदि). जिसमें या
प्रकार का प्रतिषेध हो।

(प्रॉहिबिटरी)

प्रतिषेधन-पुं० [सं०] प्रतिषेध करने की क्रिया या भाव।

प्रतिष्ठा-स्त्री० [सं०] १. स्थापन। रखा जाना। जैसे—देवता की प्रतिमा की प्रतिष्ठा। २. मान-मर्यादा। गौरव। ३. यश। कीर्त्ति। ४. आदर। सत्कार। इज्जत।

प्रतिष्ठान-पुं० [सं०] १. स्थापित या प्रतिष्ठित करना। रखना या बैठाना। जमाना। २. देव-मूर्त्ति की स्थापना।

प्रतिष्ठा-पत्र-पुं० [सं०] किसी का आदर-सम्मान करने या प्रतिष्ठा सूचित करने के लिए उसे दिया जानेवाला पत्र। सम्मान-पत्र।

प्रतिष्ठित-वि० [सं०] १. जिसकी प्रतिष्ठा हो। सम्मानित। इज्जतदार। २. जो स्थापित किया गया हो। रखा हुआ।

प्रति-संस्कार-पुं० [सं०] टूटी-फूटी चीज फिर से बनाकर ठीक करना। मरम्मत।

प्रति-सम-वि० [सं०] [भाव० प्रतिसाम्य] जिसके अंगों में अनुपात और सुन्दरता के विचार से पारस्परिक समानता और एक-रूपता हो। प्रतिसाम्य से युक्त। (सिमेट्रिकल)

प्रति-साम्य-पुं० [सं०] किसी कृति या रचना के आकार, बनावट, मान आदि के भिन्न भिन्न अंगों में अनुपात और सुन्दरता के विचार से होनेवाली पारस्परिक समानता और एक-रूपता। भिन्न भिन्न अंगों का ठीक और समंजित विन्यास। (सिमेट्री)

प्रतिसारक-वि० [सं०] प्रतिसारण करनेवाला।

पुं० वह जो घावों की मरहम-पट्टी आदि का काम करता हो। (ड्रेसर)

प्रतिसारण-पुं० [सं०] १. अलग या दूर करना। हटाना। २. किसी अंग पर दवा लगाकर मलना। ३. वैद्यक की एक प्राचीन प्रक्रिया जिसमें किसी रुग्ण अंग की चिकित्सा के लिए उसे गरम घी या तेल से दागा जाता था। ४. घावों और फोड़े-फुन्सियों

के धोने और उनपर दवा लगाकर मरहम-पट्टी आदि बाँधने का काम। मरहम-पट्टी। (ड्रेसिंग)

प्रति-स्थापन–पुं०[सं०] [वि० प्रतिस्थापित] १. अपने स्थापन से हटी हुई वस्तु या व्यक्ति को फिर उसी स्थान पर रखना या बैठाना। (री-प्लेसमेन्ट)

प्रति-स्पर्धा–स्त्री० [सं०] किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न। प्रतियोगिता। लाग-डाँट। चढ़ा-ऊपरी। होड़। (राइवलरी)

प्रति-स्पर्धी–पुं० [सं० प्रतिस्पर्धिन्] प्रतिस्पर्धा या होड़ करनेवाला। प्रतिद्वंद्वी। (राइवल)

प्रतिहत–वि० [सं०] जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो। चोट खाया हुआ।

प्रतिहस्त–पुं० [सं०] वह जो किसी के बदले में उसकी जगह हो या रखा जाय। (सब्स्टीच्यूट)

प्रतिहस्तापन–पुं० [सं०] [वि० प्रतिहस्तापित] एक काम चलाने के लिए उसके बदले में या उसकी जगह दूसरा रखने की क्रिया या भाव। (सब्स्टीट्यूशन)

प्रतिहस्तापित–वि० [सं०] [संज्ञा प्रतिहस्तापन] एक काम चलाने के लिए उसकी जगह रखा हुआ दूसरा। (सब्स्टीट्यूटेड)

प्रतिहार–पुं० [सं०] [स्त्री० प्रतिहारी] १. द्वारपाल। दरबान। २. प्राचीन काल का एक राज-कर्मचारी जो राजाओं को समचार आदि सुनाता अथवा लोगों के पास राजा का सँदेसा ले जाता था। ३. चोबदार। नकीब।

प्रतिहारी–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो प्राचीन काल में राजाओं के यहाँ प्रतिहार के काम करती थी।

प्रतिहिंसा–स्त्री० [सं०] मन में हिंसा का भाव रखकर वैर चुकाना या बदला लेना।

प्रतीक–पुं० [सं०] १. चिह्न। निशान। २. मुख। मुँह। ३. आ रूप। सूरत। ४. किसी के स्थान बदले में रखी हुई या काम आनेवाली प्रतिरूप। ५. प्रतिमा। मूर्ति। ६. किसी समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में उसकी सब बातों का सूचक या हो। (सिम्बल)

प्रतीकार–पुं० दे० 'प्रतिकार'।

प्रतीकी–वि० [सं० प्रतीक+हि० (प्रत्य०)] जो केवल प्रतीक या रूप में हो। लाक्षणिक। (सिम्बॉलि

प्रतीकोपासन–स्त्री० [सं०] देवता का कोई प्रतीक बना या उसकी पूजा या उपासना करना।

प्रतीक्षा–स्त्री० [सं०] कोई काम किसी के आने के आसरे रहना। प्रत्याशा। इन्तजार।

प्रतीक्षा-गृह–पुं० दे० 'प्रतीक्षालय'।

प्रतीक्षालय–पुं० [सं०] वह कमरा आगन्तुक लोग घर के मालिक या से मिलने के लिए अथवा यात्री लोग हवाई जहाज आदि के आने की प्र बैठते हैं। (वेटिंग रूम)

प्रतीक्ष्य–वि० [सं०] १. प्रतीक्षा योग्य। २. जिसकी प्रतीक्षा की

प्रतीची–स्त्री० [सं०] पश्चिम दि

प्रतीच्य–वि० [सं०] पश्चिम

प्रतीत–वि० [सं०] १. ज्ञात। जाना हुआ। २. ऊपर से देखने पड़नेवाला। जैसे–ऐसा प्रतीत होता वह चला गया। ३. प्रसन्न। खुश।

प्रतीतवाद–पुं० [सं०] [वि० वादी] वर्णनों, उल्लेखों आदि में विषयों या वस्तुओं को उनके रूपों से भिन्न और केवल प्रतीकों के रूप उपस्थित करने की क्रिया, भाव या सिद्धान्त (सिम्बॉलिज्म)

[सं०] १. ज्ञान। जान-
। ३. वचन, लेन-देन
वाली प्रामाणिकता।
) ४. प्रसन्नता।
[सं० प्रतीत] १. प्रतीति
। २. विश्वास करने
नीय।
ति।
[सं०] १. आशा के विरुद्ध
। २. साहित्य में एक अलं-
को ही उपमेय के रूप
ता है अथवा उपमेय की
को तुच्छ ठहराकर उसका
जाता है। इसके पाँच भेद

प्रतीपता] १. प्रतिकूल।
होना चाहिए, उसका
। (पर्वर्स) ३. विमुख।
[सं०] १. प्रतिकूलता।
। (पर्वर्सिटी)
[सं०] १. (रूप) जो
देता या समझ में आता
) जो वास्तविक से भिन्न
में बहुत-कुछ वास्तविक
। ऊपर से दिखाई पड़ने या
। (एपरेन्ट) २. (अर्थ)
आदि के रूप में निकलता
या आशय के रूप में
। अर्थ या उद्देश्य के रूप
। (पर्पर्टेड)
दे० 'प्रतिहार'।
[सं०] १. किसी को कोई
लिए उत्तेजित या विवश
। कोड़ा। ३. अंकुश।

[सं० परितोषण] परिता
[सं०] पुराना। प्राचीन।

प्रत्न-जीव-विज्ञान–पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें बहुत प्राचीन काल के ऐसे जीव-जन्तुओं की जातियों, आकृतियों आदि का विवेचन होता है जो अब कहीं नहीं मिलते। (पेलियन्टॉलोजी)

प्रत्नतत्त्व(विज्ञान)–पुं० दे० 'पुरातत्त्व'।

प्रत्यंकन–पुं० [सं०] [वि० प्रत्यंकित] १. किसी अंकित वस्तु या आकृति की ठीक ठीक प्रतिकृति प्रस्तुत करना। हू-बहू नकल तैयार करना। २. किसी आकृति के ऊपर पतला कागज रखकर प्रस्तुत की हुई उसकी प्रतिकृति। (ट्रेसिंग)

प्रत्यंचा–स्त्री० [सं० पतंचिका] धनुष की डोरी जिसकी सहायता से बाण छोड़ा जाता है। चिल्ला।

प्रत्यंत–वि० [सं०] १. बिलकुल सीमा पर का। २. अंतिम सिरे का।

प्रत्यंतर–पुं० [सं०] किसी अंतर या विभाग के अंदर का और छोटा अंतर या विभाग। जैसे–प्रत्यंतर दशा।

प्रत्यक्ष–वि० [सं०] [भाव० प्रत्यक्षता] १. जो आँखों के सामने हो और साफ दिखाई दे। २. जिसका ज्ञान इन्द्रियों से हो। ३. जिसमें कोई घुमाव-फिराव न हो; नियम, परिपाटी आदि के विचार से सीधा। ४. जिसमें किसी बाहरी साधन या आधार का उपयोग न हुआ हो। (डाइरेक्ट) पुं० चार प्रकार के पुराणों में से वह जिसका आधार देखी या जानी हुई बातों पर होता है। क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।

प्रत्यक्षदर्शी–पुं० [सं० प्रत्यक्षदर्शिन्] वह जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो। (आई-विटनेस)

प्रत्यक्षवाद–पुं० [सं०] एक प्रकार की दार्शनिक प्रणाली जिसमें केवल प्रत्यक्ष या दृश्य बातों या तत्त्वों को प्रामाणिक और वास्तविक माना जाता है, और उनके मूल अदृश्य या अज्ञात कारणों का विचार नहीं

किया जाता । (पॉज़िटिविज़्म)

प्रत्यक्षवादी–पुं० [सं० प्रत्यक्षवादिन्] [स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी] वह जो केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण माने । प्रत्यक्षवाद का सिद्धान्त माननेवाला । (पॉजिटिविस्ट)

प्रत्यक्षीकरण–पुं० [सं०] किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान या साक्षात्कार करना ।

प्रत्यनंतर–पुं० [सं०] १. किसी के उपरान्त उसके स्थान या पद पर बैठनेवाला । २. उत्तराधिकारी ।

प्रत्यनीक–पुं० [सं०] १. शत्रु । दुश्मन । २. प्रतिपक्षी । विरोधी । ३. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी शत्रु या प्रतिपक्षी का कोई अपकार या अहित न कर सकने की अवस्था में उसके किसी संबंधी या साथी का अपकार या अहित करने का वर्णन होता है ।

प्रत्यपकार–पुं० [सं०] अपकार के बदले में किया जानेवाला अपकार ।

प्रत्यभिज्ञान–पुं० [सं०) १. स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान । २. दे० 'विभावन' ।

प्रत्यभिज्ञापत्र–पुं० दे० 'विभावन-पत्र' ।

प्रत्यभिदेश–पुं० [सं० प्रति + अभिदेश] [वि० प्रत्यभिदिष्ट] १. जिससे अभिदेश लेना या कुछ जानना चाहें, उसका किसी और को अभिदिष्ट करना या किसी दूसरे की ओर संकेत करना । जैसे–कोश में यदि आप शब्द का अर्थ ढूँढ़ें और उस शब्द के आगे किसी दूसरे शब्द की ओर संकेत किया गया हो, तो यह प्रत्यभिदेश कहलावेगा । (क्रॉस रेफरेन्स)

प्रत्यय–पुं० [सं०] १. विश्वास । प्रतीति । २. एतबार । साख । (क्रेडिट) ३. प्रमाण । सबूत । ४. विचार । खयाल । ५. बुद्धि । समझ । ६. व्याख्या । ७. आवश्यकता । जरूरत । ८. प्रसिद्धि । ९. चिह्न । लक्षण । १०. वे रीतियाँ
द्वारा छंदों के भेद और उनकी संख्या
जाती है । ११. व्याकरण में वे अक्षर
किसी धातु या मूल शब्द के अन्त में
उसके अर्थ में कोई विशेषता आते
(सफिक्स) जैसे–'सरलता' में 'ता' प्रत्यय

प्रत्यय-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र
यह लिखा रहता है कि इसे ले
को इतना धन हमारे खाते में से
दे दिया जाय । (लेटर आफ क्रेडिट)

प्रत्यर्पण–पुं० [सं०] [वि० प्रत्य
गई हुई चीज लौटाकर ला देना या
स्थान पर वैसी ही दूसरी वस्तु
(रेस्टोरेशन)

प्रत्यवाय–पुं० [सं०] [वि० प्रत्य
१. पाप । दुष्कर्म । २. विरोध । ३.
कार । हानि । ४. बाधा । ५. निरर्

प्रत्यवेक्षण–पुं० [सं०] किसी
पदार्थ का किसी व्यक्ति की देख
रहना । अवधान । (चार्ज)

प्रत्याक्रमण–पुं० [सं०] किसी
के उत्तर में किया जानेवाला आक्र
जवाबी हमला । (काउन्टर अटैक)

प्रत्याख्यात–वि० [सं०] (वि
कथन) जिसका प्रत्याख्यान हुआ हो

प्रत्याख्यान–पुं० [सं०] [वि० प्रत्
१. कथन, सिद्धान्त आदि का खंड
किसी कार्य, निश्चय आदि के सम
की जानेवाली आपत्ति अथवा
(प्रोटेस्ट) ३. निर्णय आदि को
अथवा आंशिक रूप में अमान्य या
करना । (प्रोटेस्ट) ४. अवज्ञा या
पूर्वक कोई चीज लौटाना या लेने से
करना । ५. दे० 'अपासन' ।

प्रत्यागत–वि० [सं०] लौटकर आया

प्रत्यागमन–पुं० [सं०] १. लौट
वापसी । २. दोबारा या फिर से आ

प्रत्यानयन–पुं० दे० 'प्रत्यर्पण' ।

प्रत्युत-अव्य० [सं०] बल्कि। वरन्। इसके विपरीत।

प्रत्युत्तर-पुं० [सं०] उत्तर मिलने पर दिया हुआ उसका उत्तर। जवाब का जवाब। (रि-ज्वाइन्ड)

प्रत्युत्पन्न-वि० [सं०] १. जो फिर से उत्पन्न हो। २. जो ठीक समय पर सामने आवे।

यौ०- प्रत्युत्पन्न-मति = जो तुरंत कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले।

प्रत्युपकार-पुं० [सं०] किसी उपकार के बदले में किया जानेवाला उपकार।

प्रत्यूष-पुं० [सं०] प्रभात। तड़का।

प्रत्येक-वि० [सं०] बहुतों में से या जितने हों, उन सब में से हर एक। (एवरी)

प्रथम-वि० [सं०] १. गिनती में सबसे पहले आनेवाला। पहला। २. सर्व-श्रेष्ठ। सबसे अच्छा।

क्रि० वि० [सं०] पहले। आगे।

प्रथम कारक-पुं० [सं०] व्याकरण में 'कर्त्ता' कारक।

प्रथमता-स्त्री० [सं०] १. 'प्रथम' का भाव या गुण। २. औरों की तुलना में पहला स्थान मिलने की दशा या भाव। प्राथमिकता। (प्रायॉरिटी)

प्रथम पुरुष-पुं० दे० 'उत्तम पुरुष'।

प्रथमा-स्त्री० [सं०] व्याकरण में कर्त्ता कारक।

प्रथा-स्त्री० [सं०] बहुत दिनों से या बहुत-से लोगों में प्रचलित रीति। रवाज। चाल।

प्रथित-वि० [सं०] [स्त्री० प्रथिता] १. लंबा-चौड़ा। विस्तृत। २. प्रसिद्ध।

प्रद-वि० [सं०] देनेवाला। दायक। (यौगिक में; जैसे—फलप्रद)

प्रदक्षिणा-स्त्री० [सं०] देव-मूर्त्ति या तीर्थ के चारो ओर घूमना। परिक्रमा।

प्रदत्त-वि० [सं०] दिया हुआ।

प्रदर–पुं० [सं०] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग जिसमें उनके गर्भाशय से लसीला सफेद पानी निकलता है।

प्रदर्शक–पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदर्शिका] १. दिखलानेवाला। वह जो कोई चीज दिखलावे। २. प्रदर्शन करनेवाला।

प्रदर्शन–पुं० [सं०] १. दिखलाने का काम। २. जलूस, नारे आदि ऐसे काम जो किसी बात से अपना असन्तोष प्रकट करने या अपने विचार प्रकट करने तथा जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से किये जाते हैं। (डिमॉन्स्ट्रेशन) ३. दे० 'प्रदर्शनी'।

प्रदर्शनी–स्त्री० [सं०] १. तरह तरह की चीजें लोगों को दिखलाने के लिए एक जगह रखना। २. वह स्थान जहाँ इस प्रकार चीजें रखी जायँ। नुमाइश। (एक्जिहिबिशन)

प्रदर्शिका–स्त्री० [सं०] वह पुस्तक जिसमें किसी स्थान आदि के संबंध की मुख्य मुख्य बातें लोगों को उनका सामान्य य विशेष ज्ञान कराने के लिए दी गई हों।

प्रदर्शित–वि० [सं०] १. दिखलाया हुआ। २. प्रदर्शनी में रखा हुआ।

प्रदर्शिनी–स्त्री० दे० 'प्रदर्शनी'।

प्रदाता–वि० दे० 'प्रदायक'।

प्रदान–पुं० [सं०] १. किसी को कुछ देने की क्रिया। २. वह जो दिया जाय। ३. दिया या चुकाया जानेवाला धन या रकम। (पेमेन्ट) ४. सहायता, व्यय आदि के लिए स्वीकृत अथवा दिया जानेवाला धन। अनुदान। (ग्रान्ट)

दानी*–वि० दे० 'प्रदायक'।

दायक(दायी)–पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला। जो दे।

दाह–पुं० [सं०] ज्वर, फोड़े, सूजन आदि के कारण शरीर में होनेवाली जलन। दाह।

दिशा–स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

प्रदिष्ट–वि० [सं०] १. जिसके संबं आज्ञा, नियम आदि के रूप में यह बत गया हो कि यह इस प्रकार होना चाहिए। जिसके विषय में प्रदेशन हुआ हो। (प्रेसक्राइब्ड) २. सुभीते के लिए या भाग के रूप में लोगों में बाँटा या दिया हुआ। (एलॉटेड)

प्रदीप–पुं० [सं०] दीपक। दीया।

प्रदीपन–पुं० [सं०] [वि० प्रदीप्त] प्रकाश या उजाला करना। २. करना। चमकाना।

प्रदीप्ति–स्त्री० [सं०] [वि० प्रदीप्त] उजाला। प्रकाश। २. चमक। आभा।

प्रदुमन*–पुं० दे० 'प्रद्युम्न'।

प्रदुष्ट–वि० [सं०] १. बहुत बड़े दो युक्त। २. लोभ, स्वार्थ आदि के नैतिक दृष्टि से पतित। (करप्ट)

प्रदेय–वि० [सं०] प्रदान करने के

प्रदेश–पुं० [सं०] १. किसी देश का विभाग जिसके निवासियों की भाषा, सहन, व्यवहार, शासन-पद्धति आदि से भिन्न और स्वतंत्र हों। प्रांत। सूबा। स्थान। जगह। ३. अंग। अवयव।

प्रदेशन–पुं० [सं०] [वि० प्रदिष्ट, १. आज्ञा, निर्देश, नियम आदि के यह बतलाना कि यह काम इस प्रकार चाहिए। (प्रेसक्रिप्शन) २. वस्तु आदि के छोटे छोटे खंड या भाग सुभीते के लिए उन्हें अलग अलग लो देना या उनमें बाँटना। (एलॉटमेंट)

प्रदेष्टा–पुं० [सं०] वह जो प्रदेशन हो। (प्रेसक्राइबर)

प्रदोष–पुं० [सं०] १. सूर्य के अस्त का समय। संध्या। २. प्रत्येक पक्ष त्रयोदशी को होनेवाला एक व्रत संध्या समय शिव का पूजन करके किया जाता है। ३. बहुत बड़ा दोष

लोभ, स्वार्थ, पक्ष-
होनेवाला व्यक्तियों का
शन)
] १. कामदेव। कंदर्प।
बड़े पुत्र का नाम।
] १. किरण। २. दीप्ति।

] [भाव० प्रधानता]
। खास। (प्रिन्सिपल)
१. मुखिया। सरदार। २.
। ३. कुछ नियत काल के
संस्था का चुना हुआ मुख्य
(चेयरमैन) ४. किसी कार्य
का मुख्य या सबसे बड़ा
। (हेड)
-पुं० [सं०] व्यापारिक
संस्थाओं का मुख्य और सबसे
, जहाँ से उनके सब कार्यों
का संचालन होता है।
)
[हिं० प्रधान + ई(प्रत्य०)]
का कार्य।
'प्रण'।
दे० 'प्रणति'।
[सं० प्रणन] १. प्रणाम या
। २. नम्र होना। झुकना।
आना। उदा०—प्रनत-जन-
-चालिका।—तुलसी।
दे० 'प्रणमना'।
[सं० प्रणाम + ई(प्रत्य०)]
। जो प्रणाम करे।
जो गुरु, ब्राह्मण आदि के
करने के समय रखी जाय।
दे० 'प्रणिपात'।
[सं० प्र + नियम] विधि-विधानों
के सर्व-सामान्य नियम।
)
[सं० प्र + न्यास] किसी विशेष

कार्य के लिए किसी को या कुछ लोगों को सौंपा हुआ धन या संपत्ति। (ट्रस्ट)

प्रपंच-पुं० [सं०] १. संसार और उसका जंजाल। २. विस्तार। फैलाव। ३. बखेड़ा। झगड़ा। झमेला। ४. आडंबर। ढोंग। ५. छल। कपट।

प्रपंची-वि० [सं० प्रपंचिन्] १. प्रपंच रचनेवाला। ढोंगी। २. छली। कपटी।

प्रपत्ति-स्त्री० [सं०] अनन्य भक्ति।

प्रपन्न-वि० [सं०] १. आया हुआ। प्राप्त। २. शरणागत।

प्रपात-पुं० [सं०] १. वह बहुत ऊँचा स्थान जहाँ से कोई वस्तु सीधी नीचे गिरे। २. पहाड़ या ऊँचे स्थान से गिरनेवाली जल की धारा। झरना। दरी। (वाटरफाल)

प्रपितामह-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपितामही] १. दादा का बाप। परदादा।

प्रपुत्र-पुं० दे० 'पौत्र'।

प्रपूर्ण-वि० [सं०] [भाव० प्रपूर्णता] अच्छी तरह भरा हुआ।

प्रपौत्र-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपौत्री] पड़पोता। पोते का पुत्र।

प्रफुलना*-अ० [सं० प्रफुल्ल] फूलना।

प्रफुला*-स्त्री० [सं० प्रफुल्ल] १. कुमुदिनी। कूई। २. कमलिनी। कमल।

प्रफुलित-वि० दे० 'प्रफुल्ल'।

प्रफुल्ल-वि० [सं०] १. खिला हुआ। विकसित। (फूल) २. जिसमें फूल लगे हों। (वृक्ष) ३. खुला हुआ। ४. प्रसन्न।

प्रबंध-पुं० [सं०] १. कोई काम ठीक तरह से पूरा करने की व्यवस्था। इन्तजाम। बन्दोबस्त। (मैनेजमेन्ट) २. आयोजन। उपाय। ३. गद्य अथवा संबद्ध पद्यों में लिखा हुआ काव्य। ४. कोई ऐसा लेख या निबन्ध, विशेषतः विश्वविद्यालयों के विचारार्थ उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों का लिखा हुआ वह लेख जिसमें कोई नई खोज की गई हो या युक्तियों या प्रमाणों के द्वारा

कोई नया सिद्धान्त प्रतिपादित हो। (थीसिस)

प्रबंधक (कर्त्ता)–पुं० [सं०] प्रबंध या इंतजाम करनेवाला। (मैनेजर)
वि० प्रबन्ध करनेवाला। (मैनेजिंग) जैसे–प्रबंधक संचालक। (मैनेजिंग डाइरेक्टर)

प्रबंध-कारिणी–स्त्री० दे० 'प्रबंध-समिति'।

प्रबंध-परिव्यय–पुं० [सं०] वह परिव्यय या खर्च जो किसी बात का प्रबन्ध करने के बदले में लिया जाय। (मैनेजमेन्ट चार्जेज)

प्रबंध-व्यय–पुं० [सं०] वह व्यय या खर्च जो किसी बात का प्रबन्ध करने में लगे। (कॉस्ट ऑफ मैनेजमेन्ट)

प्रबंध-समिति–स्त्री० [सं०] वह समिति जो किसी सभा, समाज या आयोजन के सब प्रबन्ध करती हो। (मैनेजिंग कमिटी)

प्रबल–वि० [सं०] [स्त्री० प्रबला] १. बलवान। २. जोर का। प्रचंड। उग्र। तेज। ३. घोर।

प्रबुद्ध–वि० [सं०] १. जागा हुआ। २. होश में आया हुआ। ३. ज्ञानी।

प्रबोध(न)–पुं० [सं०] [वि० प्रबुद्ध, कर्त्ता प्रबोधक] १. नींद खुलना। जागना। २. यथार्थ और पूरा ज्ञान। ३. ढारस। दिलासा।

प्रबोधना–स० [सं० प्रबोधन] १. जगाना। २. सचेत या होशियार करना। ३. समझाना-बुझाना। ४. सान्त्वना या ढारस देना। तसल्ली देना।

प्रभंजन–पुं० [सं०] १. बहुत अधिक तोड़-फोड़। २. प्रचंड वायु। आँधी।

प्रभंजन-जाया*–पुं० = हनुमान।

प्रभव–पुं० [सं०] १. उत्पत्ति का कारण या स्थान। २. जन्म। ३. सृष्टि। संसार।

प्रभविष्णु–वि० [सं०] [वि० प्रभविष्णुता] १. दूसरों पर प्रभाव डालनेवाला। प्रभावशाली। २. बलवान्।

प्रभा–स्त्री० [सं०] आभा। चमक।

प्रभाउ*–पुं० दे० 'प्रभाव'।

प्रभाकर–पुं० [सं०] १. सूर्य। २. चंद्रमा। ३. अग्नि। ४. समुद्र।

प्रभात–पुं० [सं०] सवेरा। तड़का।

प्रभातकर–पुं० [सं०] सूर्य।

प्रभात-फेरी–स्त्री० [सं० प्रभात+ फेरी] प्रचार आदि के लिए बहुत सवेरे बाँधकर गाते-बजाते और नारे लगाते शहर का चक्कर लगाना।

प्रभाती–स्त्री० [सं० प्रभात] एक का गीत जो सवेरे गाया जाता है।

प्रभा-मंडल–पुं० [सं०] देवताओं दिव्य पुरुषों आदि के मुख के चारों का वह प्रभा-पूर्ण मंडल जो या मूर्त्तियों में दिखलाया जाता है। वेश। भा-मण्डल। (हैलो)

प्रभाव–पुं० [सं०] १. होना या आना। प्रादुर्भाव। २. किसी वस्तु पर किसी क्रिया का होनेवाला परि फल। असर। (एफेक्ट) जैसे–ओ प्रभाव। ३. किसी व्यक्ति की आतंक, सम्मान, अधिकार आदि व्यक्तियों, घटनाओं, कार्य्यों आदि पर वाला परिणाम। (इन्फ्लुएन्स) सामर्थ्य। शक्ति।

प्रभावक–वि० [सं०] प्रभाव दिखलाने या डालनेवाला।

प्रभावशाली–वि० [सं० प्रभाव जिसका दूसरे पर यथेष्ट या बहुत पड़ता हो। (इन्फ्लुएन्शल)

प्रभावान्वित–वि० [सं०] जिस पड़ा हो। प्रभावित।

प्रभावित–वि० [सं० प्रभाव] प्रभाव पड़ा हो।

प्रभावी–वि० [सं० प्रभाव + ई (जिसका किसी बात पर कोई प्रभाव पड़ता हो। (मेटीरियल) प्रभावी दिनांक, प्रभावी साक्षी।

प्रभास–पुं० [सं०] १. दीप्ति। २. एक प्राचीन तीर्थ। सोम तीर्थ।

[सं० प्रभासन] भासित

[भाव० प्रभुता, प्रभुत्व]
२. स्वामी। मालिक।

[सं०] १. प्रभु या ईश्वर
२. प्रभु या स्वामी होने
दे० 'प्रभुत्व'।
= प्रभुता।

[सं०] १. ऐसा प्रभावपूर्ण
जिसके सामने और
हों। २. स्वामी, राजा,
की दशा या भाव। ३.

[सं०] देश, राज्य
सबसे बड़ी सत्ता या अधि-
और कोई बड़ी सत्ता या
और जो अपने सभी कार्य-क्षेत्रों
पूर्ण स्वतन्त्र हो। (सॉव-

[सं०] १. निकला हुआ।
२. प्रचुर। बहुत अधिक।

[सं०] इत्यादि। वगैरह।

[सं०] भेद। प्रकार। तरह।
दे० 'प्रभेद'।

[सं०] प्रदेश का वह विभाग
या जिले हों। (कमिश-

[सं०] [भाव० प्रमत्तता]
। मस्त। २. पागल।
बुद्धि ठिकाने न हो।

[सं०] शिव के एक प्रकार

। २. पीड़ित करने या

[सं०] १. मतवालापन। २.

। मद। २. मस्त। प्रसन्न।

प्रमदा–स्त्री० [सं०] युवती स्त्री।

प्रमा–स्त्री० [सं०] १. शुद्ध और यथार्थ ज्ञान। २. माप। नाप।

प्रमाण–पुं० [सं०] १. वह कथन या तत्त्व जिससे कोई बात सिद्ध हो। सबूत। (प्रूफ) २. ऐसी बात जो किसी दूसरी बात के ठीक होने का निश्चय कराती हो। (एविडेन्स) ३. वह कथन या तत्त्व जिसे सब लोग ठीक मानते हों। ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी बात का कोई प्रमाण मिलने पर उस बात के प्रत्यक्ष या सिद्ध होने का वर्णन होता है। (न्याय-शास्त्र में प्रमाण के जो आठ भेद कहे गये हैं, उन्हीं के अनुसार इसके भी आठ प्रकार या भेद माने गये हैं।) ५. सत्यता। सचाई। ६. मान। आदर। ७. इयत्ता। हद। जैसे–दस हाथ ही इसकी लंबाई का प्रमाण है। अव्य० पर्यंत। तक।

प्रमाणक–पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर प्रमाण के रूप में कोई लेख हो। प्रमाण-पत्र। (सर्टीफिकेट)
वि० प्रमाणित करनेवाला।

प्रमाणकर्त्ता–पुं० [सं०] वह जो कोई बात प्रमाणित करता हो। (सर्टिफ़ायर)

प्रमाणना*–स० दे० 'प्रमानना'।

प्रमाणपत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर कोई बात प्रमाणित करनेवाला कोई लेख हो। प्रमाणक। (सर्टिफिकेट, टेस्टिमोनिअल)

प्रमाणिक–वि० दे० 'प्रामाणिक'।

प्रमाणित–वि० [सं०] १. जो प्रमाण द्वारा ठीक सिद्ध हुआ हो। साबित। (प्रूव्ड) २. जिसके सम्बन्ध में यह लिखा गया हो कि यह प्रामाणिक या ठीक है। (सर्टिफ़ायड) ३. जिसके संबंध में यह लिखा गया हो कि यह सत्य या वास्तविक है। सत्यापित। (एटेस्टेड)

प्रमाणीकरण–पुं० [सं०] यह लिखना कि अमुक बात या लेख ठीक और प्रा-

माणिक है। (सर्टिफिकेशन) २. किसी लेख पर यह लिखना कि यह वास्तविक और सत्य है। (एटेस्टेशन)

प्रमाता–पुं० [सं० प्रमातृ] १. प्रमा का ज्ञान रखनेवाला। २. आत्मा या चेतन पुरुष। ३. द्रष्टा। साक्षी।
स्त्री० [सं०] पिता की माता। दादी।

प्रमाद–पुं० [सं०] [वि० प्रमादी] १. भूल। चूक। २. भ्रम। भ्रान्ति। धोखा। ३. अभिमान आदि के कारण कुछ का कुछ समझना या करना। ४. ठीक तरह से ध्यान न देने के कारण कर्त्तव्य-पालन में त्रुटि करना। जिस रूप में काम करना चाहिए, उस रूप में उसे पूरा न करना। ५. कर्त्तव्य-पालन या कार्य्य-निर्वाह में होनेवाली उक्त प्रकार की त्रुटि या भूल। (नेग्लिजेन्स)

प्रमादतः–क्रि० वि० [सं०] प्रमाद के वश में हो या रहकर। प्रमाद के कारण। (नेग्लिजेन्टली)

प्रमान*–वि० [सं० प्रामाणिक] १. प्रामाणिक। २. निश्चित। पक्का। उदा०–यह प्रमान मन मोरे—तुलसी।
पुं० = प्रमाण।

प्रमानना*–स०[सं० प्रमाण + ना (प्रत्य०)] १. प्रमाण के रूप में मानना। ठीक समझना। २. प्रमाणित या सिद्ध करना। ३. स्थिर या निश्चित करना।

प्रमानो*–वि० दे० 'प्रामाणिक'।

प्रमित–वि० [सं०] १. परिमित। २. ठीक या निश्चित।

प्रमीत–वि० [सं०] जिसकी मृत्यु हो गई हो। मरा हुआ। मृत। (डिसीज्ड) (केवल स्वाभाविक या प्रकृत रूप से मरनेवाले मनुष्यों के लिए)

प्रमीति–स्त्री० [सं०] मनुष्य का स्वाभाविक या प्रकृत रूप से मरना। साधारण मृत्यु। (डिसीज)

प्रमुख–वि० [सं०] १. प्रथम। पहला। २. प्रधान। मुख्य।
अव्य० इत्यादि। वगैरह।

प्रमुद–वि० दे० 'प्रमुदित'।
*पुं० दे० 'प्रमोद'।

प्रमुदना*–अ० [सं० प्रमोद] होना। प्रसन्न होना।

प्रमुदित–वि० [सं०] हर्षित। प्रस

प्रमेय–वि० [सं०] १. जो प्रमाण हो सके। २. जो प्रमाणित किया हो। ३. जो नापा जा सके।

प्रमेह–पुं० [सं०] एक रोग के साथ या उसके मार्ग से शरीर आदि धातुएँ निकलती रहती हैं।

प्रमोद–पुं० [सं०] हर्ष। आनंद।

प्रयंक*–पुं० दे० 'पर्यंक'।

प्रयंत*–अव्य० दे० 'पर्यंत'।

प्रयत्न–पुं० [सं०] १. कार्य या कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए जाय। प्रयास। चेष्टा। कोशिश वर्णों के उच्चारण में होनेवाली आदि की क्रिया। (व्याकरण)

प्रयत्नशील–वि० [सं०] जो प्रय रहा हो। प्रयत्न या कोशिश में लगा

प्रयाण–पुं० [सं०] १. एक स्थान से स्थान को जाना या चलना। यात्रा। (डिपार्चर) २. युद्ध-यात्रा। ३. यह लोक छोड़कर (मरकर) परलोक जाना।

प्रयास–पुं० [सं०] १. प्रयत्न। कोशिश। २. परिश्रम। मेहनत।

प्रयासी–वि० [सं० प्रयासिन्] कोशिश करनेवाला।

प्रयुक्त–वि० [सं०] १. अच्छी तरह या जोड़ा हुआ। सम्मिलित। २. प्रयोग हो चुका हो या होता हो। काम में लाया गया हो। हुआ हो। (यूज्ड)

प्रयोक्ता–पुं० [सं० प्रयोक्तृ] १.

। २. उपयोग या
।
] १. किसी काम में
वस्तु के कार्य में लाये
भाव। व्यवहार।
ना। ३. बल, अधिकार
या उपयोग करना।
)
में लाना = बल, अधि-
या व्यवहार में लाना।
एप्लिकेशन)
जानने या समझने के लिए,
जाँच आदि के रूप में
क्रिया का साधन।
) ५. आज्ञा आदि
काम करना। अनुपालन।
) ६. मारण, मोहन
उपचार या कृत्य। ७.
।
स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ
विशेषतः रासायनिक प्रयोग
हो। (लेबोरेटरी)
[सं०] १. प्रयोग या अनुष्ठान
२. काम में लगानेवाला। प्रेरक।
[सं०] १. काम। अर्थ।
जिसे पूरा करने के लिए कोई
। उद्देश्य। अभिप्राय।
३. उपयोग। व्यवहार।
(लक्षणा)-स्त्री० [सं०] वह
द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न
है। (साहित्य में इसके दो
उपभेद कहे गये हैं।)
[सं०] प्रयोजन या
। काम का।
[सं०] १. जिसका प्रयोग
हो या किया जाने को हो।
के रूप में काम में लाया
। (एक्सरसाइजेबुल)

प्ररोह(ण)-पुं० [सं०] १. आरोह। चढ़ाव। २. उगना। जमना।

प्रलंब-वि० [सं०] १. नीचे की तरफ कुछ दूर तक लटकता हुआ। २. लंबा। ३. आगे निकला हुआ।

प्रलंबन-पुं० [सं०] किसी कर्मचारी के दोष या अपराध की सूचना पाने पर उसकी ठीक जाँच होने तक के लिए उसका अपने पद से हटाया जाना। मुअत्तल होना। (सस्पेन्शन)

प्रलंबित-वि० [सं०] (कार्यकर्त्ता) जिसका किसी अभियोग या अपराध के कारण प्रलंबन हुआ हो। जो अन्तिम निर्णय तक के लिए अपने कार्य या पद से हटा दिया गया हो। मुअत्तल। (सस्पेंडेड)

प्रलंबी-वि० [सं० प्रलंबिन्] [स्त्री० प्रलंबिनी] १. दे० 'प्रलंब'। २. सहारा लेनेवाला।

प्रलयंकर-वि० [सं०] [स्त्री० प्रलयंकरी] प्रलय का-सा सर्वनाश करनेवाला।

प्रलय-पुं० [सं०] १. लय को प्राप्त होना। न रह जाना। २. संसार का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना, जो बहुत दिनों पर होता है और जिसके बाद फिर नई सृष्टि होती है। (दे० 'प्लावन' २.) ३. साहित्य में शृंगार-रस के अन्तर्गत वह अवस्था जिसमें किसी विषय या बात में तन्मय होने के कारण तन-मन की सुध नहीं रहती। यह सात्विक अनुभावों के अन्तर्गत माना गया है।

प्रलयकर-वि० दे० 'प्रलयंकर'।

प्रलाप-पुं० [सं०] [वि० प्रलापी] पागलों की तरह कही हुई व्यर्थ की बातें।

प्रलेख-पुं० [सं०] वह करण या साधन-पत्र जिसमें दो पक्षों में होनेवाली संविदा, पण या अनुबन्ध लिखा हो और जो निष्पादक के द्वारा हस्ताक्षरित होकर दूसरे पक्ष को दिया गया हो। (डीड)

प्रलेखक–पुं० [सं०] वह जो लेख या दस्तावेज और प्रार्थनापत्र आदि लिखता हो। (अर्जीनवीस या कातिब)

प्रलेखन–पुं० [सं०] लेख या दस्तावेज और प्रार्थना-पत्र आदि लिखने का काम।

प्रलेप–पुं० [सं०] अंग पर लगाई जानेवाली कोई गीली दवा। लेप।

प्रलेपन–पुं० [सं०] [वि० प्रलेपक, प्रलेप्य] लेप करने या लगाने की क्रिया।

प्रलोभ(न)–पुं० [सं०] [वि० प्रलोभित, प्रलोभक] १. लोभ दिखाना। लालच देना। २. कोई कार्य, विशेषतः अनुचित कार्य करने के लिए मन में उत्पन्न होनेवाली वृत्ति। लोभ। (टेम्प्टेशन) ३. वह बात या कार्य जो किसी को लुभाकर अपनी ओर खींचने या उससे कोई काम करानेवाला हो। (एल्योरमेन्ट)

प्रवंचन–पुं० दे० 'प्रवंचना'।

प्रवंचना–स्त्री० [सं०] [वि० प्रवंचक] किसी को धोखा देने या ठगने का काम। छल। ठग-पना।

प्रवंचित–वि० [सं०] [स्त्री० प्रवंचिता] जो ठगा गया हो।

प्रवक्ता–पुं० [सं० प्रवक्तृ] १. अच्छी तरह समझकर कहनेवाला। २. किसी संस्था या विभाग की ओर से अधिकारिक रूप में कोई बात कहनेवाला। (स्पोक्समैन)

प्रवचन–पुं० [सं०] [वि० प्रवचनीय] १. अच्छी तरह समझाकर कहना। २. धर्म-ग्रन्थ या धार्मिक, नैतिक आदि बातों की जबानी की जानेवाली व्याख्या।

प्रवण–पुं० [सं०] [भाव० प्रवणता] १. क्रमशः नीचे गई हुई भूमि। ढाल। उतार। २. चौराहा। ३. उदर। पेट। वि० १. ढालुआँ। २. झुका हुआ। नत। ३. प्रवृत्त। रत। ४. नम्र। विनीत। ५. उदार। ६. दक्ष। निपुण। ७. समर्थ।

प्रवत्स्यत्पतिका–स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति विदेश जाने को हो और उसके वियोग की कल्पना से दुःखी हो।

प्रवर–वि० [सं०] १. औरों की बड़ा, मुख्य या श्रेष्ठ। २. अधि योग्यता आदि के विचार से ऊँचा माना जानेवाला। (सुपीरियर) प्रवर क्षेत्र-पति या स्वामी, प्रवर अधि या अधिकारी।

पुं० १. किसी गोत्र या वंश का कोई विशेष महत्त्व का मुनि। २. ३. वह जो किसी विषय का विशेष ज्ञाता हो। अच्छा जानकार। (

प्रवर समिति–स्त्री० [सं०] किसी पर विचार करके सम्मति देने के लि विषय के चुने हुए विशेषज्ञों की समिति। (सेलेक्ट कमिटी)

प्रवर्त्तक–पुं० [सं०] १. कोई काम वाला। संचालक। २. प्रचलित या करनेवाला। ३. किसी को किसी विशेषतः अनुचित या विधि-विरुद्ध में, लगाने और उसकी सहायता वाला। (एबेटर) ४. कोई नया बात निकालने या चलानेवाला। (नेटर) ५. नाटक में प्रस्तावना प्रकार जिसमें सूत्रधार के वर्तमान का वर्णन करने पर, पात्र उसी करता हुआ रंगमंच पर आता है।

प्रवर्त्तन–पुं० [सं०] [वि० प्रवर्त्तनीय, प्रवर्त्तक] १. कार्य करना। काम ठानना। २. करना। चलाना। ३. दे० 'दुरुत्साहन

प्रवर्षण–पुं० [सं०] १. वर्षा। २. किष्किन्धा के पास का एक पर्वत।

प्रवह–पुं० [सं०] १. तेज बहाव। सात वायुओं में से एक वायु।

प्रवहमान–वि० [सं० प्रवहमत्] से बहता या चलता हुआ।

प्रवाद–पुं० [सं०] १. बात-चीत। २

प्रचलित कोई ऐसी बात
आधार न हो। जन-
किंवदंती। अफवाह।
झूठी बदनामी। अपवाद।
दी जानेवाली सूचना।

=प्रमाण।
[सं०] १. मूँगा। विद्रुम।
नये और कोमल पत्ते।

[सं०] १. अपना देश छोड़-
में जा बसना। २. यात्रा।
[सं० प्रवासिन्] परदेस में
रहनेवाला।
[सं०] १. जल का बहाव।
हुआ पानी। धारा। ३. नदी
पानी में कोई चीज डालकर
। (एमर्शन) जैसे—किसी
अस्थियों या देवी-देवता की
।४. काम का चलना या
।५ चलता हुआ क्रम। तार।
।
[सं०][स्त्री० प्रवाहिका]
वहन करनेवाला। २.
बहानेवाला।
[सं०] बहता हुआ।
[सं० प्रवाहिन्] [स्त्री०
बहनेवाला। २. तरल। द्रव।
[सं०] विधायिका सभा
हुआ विधान। (स्टैट्यूट)
[सं०] १. किसी विशेष
रखनेवाली या किसी विशेष
। जैसे—साक्ष्य प्रविधि। (लॉ
) २. किसी विशेष पद पर
विशेष प्रकार का कार्य करने-
निश्चित नियम आदि।
[सं०] जिसका प्रवेश हुआ
हुआ।

प्रविसना*–अ० [सं० प्रवेश] घुसना।

प्रवीण–वि० [सं०] [भाव० प्रवीणता] किसी कार्य में विशेष रूप से निपुण। कुशल। दक्ष। होशियार।

प्रवृत्त–वि० [सं०] १. किसी बात की ओर झुका हुआ। २. किसी काम में लगा हुआ। ३. उद्यत। तैयार।

प्रवृत्तक–पुं० [सं०] वह जो किसी को किसी कार्य में प्रवृत्त करे या लगावे।

प्रवृत्ति–स्त्री० [सं०] १. प्रवाह। बहाव। २. यों ही, स्वभावतः अथवा कुछ रुचि होने के कारण किसी ओर होनेवाला मन का झुकाव। (टेन्डेन्सी) ३. सांसारिक विषयों या भोगों का ग्रहण। 'निवृत्ति' का विपर्य्याय।

प्रवेक्षा–स्त्री० [सं०] [वि० प्रवेक्षित] किसी काम या बात के होने के संबंध में पहले से की जानेवाली आशा या अनुमान। (एन्टिसिपेशन)

प्रवेश–पुं० [सं०] १. अंदर जाना। घुसना। पैठना। २. किसी क्षेत्र, वर्ग आदि में उसके विशिष्ट नियम पूरे करते हुए पहुँचना या लिया जाना। (एडमिशन) ३. किसी विषय में होनेवाली विशेष जानकारी। गति। पहुँच। ४. किसी विषय का ज्ञान।
*पुं० दे० 'परिवेश'।

प्रवेशक–पुं० [सं०] १. प्रवेश करानेवाला। २. नाटक में वह स्थल जहाँ बीच की किसी घटना का परिचय केवल बातचीत से कराया जाता है।

प्रवेश-द्वार–पुं० [सं०] वह द्वार या दरवाजा या कोई ऐसा तंग, पर निश्चित मार्ग जिससे होकर किसी मकान या घिरे हुए क्षेत्र आदि में जाना पड़ता है। अन्दर जाने का दरवाजा या रास्ता। (एन्टरेन्स)

प्रवेशपत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जिसे दिखलाने पर किसी स्थान में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त हो। (पास या टिकट)

प्रवेश-शुल्क–पुं० [सं०] १. वह शुल्क जो

किसी संस्था में सम्मिलित होने या पहले-पहल नाम लिखाने के समय देना पड़ता है। (एडमिशन फी) २. वह शुल्क जो किसी स्थान में प्रवेश करने के समय देना पड़ता है। (एन्ट्रेन्स फी)

प्रवेशिका–स्त्री० [सं०] १. वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने का अधिकार मिलता है। (पास) २. प्रवेश-शुल्क के रूप में दिया जानेवाला धन। ३. निम्न-वर्ग की वह अन्तिम परीक्षा जिसमें उत्तीर्ण होने पर उच्च-वर्ग में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त होता है। (एन्ट्रेन्स)

प्रवेष*–पुं० दे० 'परिवेष'।

प्रवेसना*–अ० [सं० प्रवेश] प्रवेश करना। घुसना। पैठना।

स० प्रविष्ट करना। पैठाना। घुसाना।

प्रव्रज्या–स्त्री० [सं०] संन्यास।

प्रशंस*–स्त्री० दे० 'प्रशंसा'।

वि० [सं० प्रशंस्य] प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसक–वि० [सं०] प्रशंसा करनेवाला।

प्रशंसन–पुं० [सं०] [वि० प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य] प्रशंसा करना।

प्रशंसना*–स० [सं० प्रशंसन] प्रशंसा या तारीफ करना। सराहना।

प्रशंसनीय–वि० [सं०] प्रशंसा के योग्य। बहुत अच्छा।

प्रशंसा–स्त्री० [सं०] [वि० प्रशंसित, प्रशंसनीय] किसी व्यक्ति या वस्तु के गुणों या अच्छी बातों के संबंध में कही हुई आदर-सूचक बात, कथन या विचार। बड़ाई। तारीफ।

प्रशंसित–वि० [सं०] [स्त्री० प्रशंसिता] जिसकी प्रशंसा की गई हो।

प्रशंसोपमा–स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमान को प्रशंसनीय ठहराते हैं।

प्रशंस्य–वि० [सं०] प्रशंसनीय।

प्रशम(न)–पुं० [सं०] [वि० प्रशम्य] १. शमन। शांति। २. नष्ट या करना।

प्रशम्य–वि० [सं०] १. जिसका शमन शान्ति हो सके। २. (झगड़ा या जिसे आपस में निपटा लेने का दोनों पक्षों को हो। (कम्पाउंडेबुल)

प्रशस्त–वि० [सं०] १. प्रशं अच्छा। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. लंबा या बड़ा। भव्य। ४. उचित। उप

प्रशस्ति–स्त्री० [सं०] १. प्रशंसा। २. प्राचीन काल के राजाओं के एक के प्रख्यापन जो चट्टानों या ता आदि पर खोदे जाते थे। ३. ग्रन्थों के आदि या अंत की वे पंक्तियाँ जिनमें पुस्तक के कर्त्ता, काल आदि का उल्लेख रहता है।

प्रशांत–वि० [सं०] १. चंचलता स्थिर। २. निश्चल वृत्तिवाला। शांत

पुं० एशिया और अमेरिका के महासागर। (पैसिफिक ओशन)

प्रशांति–स्त्री० [सं०] १. प्रशां निश्चल होने का भाव। २. पूर्ण विशेषतः किसी देश या समाज में पूर्ण शांति। किसी प्रकार के उपद्रव आदि का अभाव। (ट्रैंक्विलि

प्रशाखा–स्त्री० [सं०] शाखा निकली हुई छोटी शाखा। टहनी।

प्रशासक–पुं० [सं०] [वि० प्र वह जो राज्य का प्रशासन या प्रब हो। (एडमिनिस्ट्रेटर)

प्रशासन-पुं० [सं०] [वि० प्रशा प्रशासनीय] राज्य या लोक-प्रबन्ध के पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाले काम। परिचालन का प्रबंध या (एडमिनिस्ट्रेशन)

प्रशासनिक–वि० [सं०] प्रशा राज्य-प्रबंध से सम्बन्ध रखनेवाला। (एड मिनिस्ट्रेटिव)

ऐसा संग्रह जिसमें कुछ प्रश्न करके और उनका उत्तर देकर किसी बात या विषय का स्वरूप स्पष्ट किया गया हो। (कैटेकिज्म)

प्रश्रय–पुं० [सं० आश्रय] १. आश्रय। स्थान। २. टेक। सहारा। आधार।

प्रश्रुति–स्त्री० [सं०] कोई कार्य करने के लिए की जानेवाली प्रतिज्ञा या दिया जानेवाला वचन।

प्रश्रुति-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी से धन उधार लेने पर उसके प्रमाण-स्वरूप और माँगने पर चुका देने के वचन के रूप में लिखा जाता है। (प्रो नोट)

प्रश्वास–पुं० [सं०] नथने से बाहर निकलनेवाली वायु। 'श्वास' का उलटा।

प्रष्टव्य–वि० [सं०] १. पूछने योग्य। २. पूछने का। जो पूछना हो।

प्रसंग–पुं० [सं०] १. संबंध। लगाव। २. विषय का लगाव या सम्बन्ध। ३. विवेच्य विषय का स्वरूप और परम्परा। (कन्टेक्स्ट) ४. स्त्री-पुरुष का संभोग। मैथुन। ५. बात। वार्ता। विषय। ६. उपयुक्त संयोग। अवसर। मौका। ७. प्रकरण। अध्याय।

प्रसंसना*– स० = प्रशंसा करना।

प्रसन्न–वि० [सं०] १. सन्तुष्ट। तुष्ट। २. हर्षित। खुश। ३. अनुकूल।

प्रसन्नता–स्त्री० [सं०] १. तुष्टि। संतोष। २. हर्ष। आनंद। ३. कृपा। अनुग्रह।

प्रसन्नित*–वि० = प्रसन्न।

प्रसर–पुं० [सं०] न्यायालय का वह आज्ञा-पत्र जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु को न्यायालय में उपस्थित करने का आदेश लिखा होता है। (प्रोसेस)

प्रसरण–पुं० [सं०] [वि० प्रसरणीय, प्रसरित] १. आगे बढ़ना या खिसकना। २. फैलना। बढ़ना। ३. विस्तार।

प्रसर-पाल–पुं० [सं०] वह जो न्यायालय से निकलनेवाले प्रसर लोगों के पास पहुँचाता हो। (प्रोसेस सर्वर)

प्रसर-शुल्क–पुं० [सं०] वह शुल्क जो न्यायालय से कोई प्रसर निकलवाने के लिए देना पड़ता है। (प्रोसेस फी)

प्रसव–पुं० [सं०] १. बच्चा जनने की क्रिया। जनन। प्रसूति। (डेलिवरी) २. बच्चा जनने के समय स्त्री को होनेवाला कष्ट और पीड़ा। (लेबर) ३. वह अवस्था जिसमें स्त्री बच्चा जनकर माता बनती है। मातृत्व। (मेटर्निटी) ४. जन्म। उत्पत्ति। ५. बच्चा। संतान।

प्रसवना*–स० [सं० प्रसव] (बच्चा) उत्पन्न करना। गर्भ से सन्तान को जन्म देना।

प्रसवा(विनी)–स्त्री० [सं०] प्रसव करनेवाली। जन्म देनेवाली।

प्रसाद–पुं० [सं०] १. प्रसन्नता। २. अनुग्रह। कृपा। मेहरबानी। ३. वह खाने की वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय या चढ़ाई जा चुकी हो।

मुहा०–प्रसाद पाना = देवता के प्रसाद के रूप में भोजन करना।

४. वह वस्तु जो देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर भक्तों या छोटों को दें। ५. भोजन।

मुहा०–प्रसाद पाना = भोजन करना।

६. काव्य का वह गुण जिससे भाषा स्वच्छ और साधु होती और सुनते ही समझ में आ जाती है। ७. शब्दालंकार के अंतर्गत कोमला वृत्ति।

* पुं० दे० 'प्रासाद'।

प्रसाद-दान–पुं० [सं०] वह दान जो प्रसन्न होकर या प्रेम-भाव से किसी को दिया जाय। (एफेक्शनेट गिफ्ट)

प्रसादन–पुं० [सं०] किसी को संतुष्ट करके अपने अनुकूल करना। (प्रॉपिसिएशन)

प्रसादना*–स०, अ० [सं० प्रसादन] प्रसन्न या सन्तुष्ट करना या होना।

प्रसादनीय–वि० [सं०] प्रसन्न किये जाने के योग्य।

प्रसादी–स्त्री० दे० 'प्रसाद' ३. और

प्रसाधक–पुं० [सं०] [स्त्री० प्रसा
१. वह जो किसी कार्य का निर्
संपादक। २.सजावट का काम करने
३. दूसरों के शरीर या अंगों का
करनेवाला।

प्रसाधन–पुं० [सं०] १. अलंकार
से युक्त करना। शृंगार करना।
२. शरीर सजाने और रूप
बढ़ाने का कार्य अथवा ऐसे कार्यों
आवश्यक साधन या सामग्री।
सजावट का सामान। (टॉयलेट)
का संपादन। ४. कंघी से बाल झाड़

प्रसाधिका–स्त्री० [सं०] वह
रानियों को गहने-कपड़े पहनाती और
शृंगार करती हो।

प्रसार–पुं० [सं०] १. किसी
फैले हुए होने की क्रिया, दशा
विस्तार। फैलाव। पसार। २. वह
जहाँ तक कोई चीज गई हुई हो
विषय पहुँचता हो। विस्तार। (
३. संचार। ४. गमन। ५. कोई
ओर फैलाना या सब को सुनाना।

प्रसारण–पुं० [सं०] [वि० प्र
प्रसार्य्य] १. पसारना। फैलाना
सीमा, क्षेत्र आदि में विस्तार
करना। बढ़ाना। (एक्सटेन्शन)
विषय या चर्चा का प्रचार
रेडियो के द्वारा कोई बात,
आदि लोगों को सुनाने के लिए
फैलाना। (ब्रॉड-कास्टिंग)

प्रसाविका–स्त्री० [सं० प्रसव से
स्त्री जो गर्भवती स्त्रियों के सन्तान
करने के समय उनकी देख-भाल और
शुश्रूषा करती है। प्रसव करानेवाली
दाई। (मिडवाइफ)

प्रसिद्ध–वि० [सं०] [भाव० प्रसिद्धि]
सब लोग जानते हों। विख्यात। म

] [वि० प्रसिद्ध]
भाव। ख्याति।

] १. सोया हुआ। २.
हुआ।
] नींद।
] जन्म देने या उत्पन्न
प्रसू।
प्र + सूचना] किसी
विशेष रूप से दी जाने-
। (रिपोर्ट)
] [स्त्री० प्रसूता] १.
। २. निकला हुआ।
के उपरांत होनेवाला

] प्रसव करने या बच्चा
बच्चा।
] १. प्रसव। जनन।
।
'प्रसूता'।
[सं०] वह कमरा
बच्चा जनती है। सौरी।

] १. फूल। २. फल।
प्रस्वेद] पसीना।
] १. पत्थर। २.
सतह।
[सं०] पत्थर को
और उसपर ओप आदि
।
[सं०] मुद्रण या
जिसमें छापे जानेवाले
विशेष प्रकार के
पहले एक प्रकार के
और तब उस पत्थर पर से
थोग्राफ)
[सं०] पुरातत्व के
जाति की संस्कृति

के इतिहास में वह समय जब कि अस्त्र-शस्त्र और औजार आदि केवल पत्थर के बनते थे। (यह सभ्यता का बिलकुल आरंभिक काल था और इस काल तक धातुओं का आविष्कार नहीं हुआ था।) (स्टोन एज)

प्रस्तार-पुं० [सं०] १. फैलाव। विस्तार। २. अधिकता। ३. परत। तह। ४. छंदः-शास्त्र में वह प्रक्रिया जिससे छंदों के भेदों की संख्याएँ और रूप जाने जाते हैं। ५. वस्तुओं, अंकों आदि के पंक्तिबद्ध समूहों या वर्गों के क्रम या विन्यास में संगत और संभव परिवर्त्तन या हेर-फेर करना। (परम्यूटेशन)

प्रस्ताव-पुं० [सं०] १. छिड़ी हुई चर्चा। प्रस्तुत प्रसंग। २. पुस्तक की भूमिका या प्रस्तावना। ३. कोई काम करने के लिए किसी के सामने रक्खा जानेवाला विचार। योजना, कार्य-प्रणाली आदि के सम्बन्ध में किसी को बतलाई जानेवाली कोई बात। सुझाव। (प्रोपोजल) ४. वह बात जो किसी सभा या समाज में विचार या स्वीकृति के लिए उपस्थित की जाय। (रिजोलूशन) ५. विवाद आदि में अथवा यों ही किसी से यह कहना कि आप अमुक वस्तु या इतना धन लेकर झगड़ा निपटा लें या अमुक कार्य करें। (ऑफर)

प्रस्तावक-पुं० [सं०] १. वह जो किसी सभा या समाज के सामने स्वीकृति के लिए कोई प्रस्ताव उपस्थित करे। (प्रोपोजर) २. वह जो किसी के सामने यह मंतव्य प्रकट करे कि आप अमुक वस्तु या इतना धन लेकर अमुक कार्य करें। (ऑफरर)

प्रस्तावना-स्त्री० [सं०] १. आरंभ। २. पुस्तक की भूमिका। उपोद्घात। (इन्ट्रोडक्शन) ३. अभिनय के पहले नाटक के विषय का परिचय देने के लिए छेड़ा हुआ प्रसंग।

प्रस्तावित-वि० [सं०] जिसके लिए या

जिसके विषय में प्रस्ताव किया गया हो। (प्रोपोज्ड)

प्रस्तावित्ती–पुं० [सं० प्रस्ताव] वह जिसके सामने कोई वस्तु या धन भेंट करने का प्रस्ताव भेंट करनेवाले की ओर से रखा जाय। (ऑफ़री)

प्रस्तुत–वि० [सं०] १. जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो। २. जो कहा गया हो। उक्त। कथित। ३. उद्यत। तत्पर। तैयार। ४. प्रस्ताव के रूप में या विचार, निर्णय आदि के लिए किसी के सामने रखा हुआ। (प्रेजेन्टेड) ५. जो इस समय उपस्थित या वर्त्तमान हो। मौजूद। (प्रेजेंट) ६. बनाकर या और किसी प्रकार तैयार किया हुआ। (प्रोड्यूस्ड) ७. लिखकर या कोष्ठक आदि भरकर तैयार किया हुआ। (फिल्ड) ८. (साहित्य में विषय या व्यक्ति) जिसका वर्णन प्रत्यक्ष रूप से हो रहा हो और प्रसंगवश जिसके साथ दूसरे विषय या व्यक्ति का भी (उपमा, तुलना आदि के विचार से) गौण रूप से उल्लेख या वर्णन होता हो। इसका विपर्य्याय 'अप्रस्तुत' है।

प्रस्तुतालंकार–पुं०[सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी प्रस्तुत तथ्य के विषय में कुछ कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत तथ्य पर घटाया जाता है।

प्रस्तोता–पुं० [सं० प्रस्तोतृ] प्रस्ताव करनेवाला। प्रस्तावक।

प्रस्थ–पुं० [सं०] १. विस्तार। २. चौड़ाई।

प्रस्थान–पुं० [सं०] १. किसी स्थान से दूसरे स्थान को जाना या चलना। गमन। यात्रा। रवानगी। (डिपार्चर) २. मुहूर्त्त पर यात्रा न करने की दशा में अपना कोई वस्त्र यात्रा की दिशा में मुहूर्त्त साधने के लिए रखना। ३. दे० 'प्रयाण'।

प्रस्थाना–पुं० दे० 'प्रस्थान' २.।

प्रस्थानित–वि० [सं० प्रस्थान] जिसने प्रस्थान किया हो। जो चला गया हो।

प्रस्थानी–वि० [सं० प्रस्थान] प्रस्थान
या जानेवाला।

प्रस्थापन–पुं० [सं०] [वि०
प्रस्थाप्य] १. प्रस्थान करने या
क्रिया या भाव। प्रस्थान। रवानगी।
स्थित या स्थापित करने की क्रिया या
स्थापन। ३. काम में लाने के लिए
कल-पुर्जों आदि को यथा-स्थान
लगाने की क्रिया। जैसे-वैद्युत्
बिजली के तार, पंखे, लट्टू आदि
स्थान लगाना। ४. उक्त प्रकार से
हुए कल-पुर्जे, यंत्र आदि। (
अंतिम तीनों अर्थों के लिए)

प्रस्थित–वि० [सं०] १. ठहरा
हुआ। २. दृढ़। पक्का। ३. जिसने
किया हो। गया हुआ।

प्रस्थिति–स्त्री०[सं०] १. प्रस्थान।
२. अभियान। ३. चढ़ाई।

प्रस्फुटित–वि० [सं०] १.
हुआ। २. खिला हुआ। विकसित।

प्रस्फुरण–पुं० [सं०] १.
फूलना। खिलना। ३. प्रकाशित

प्रस्फोटन–पु० दे० 'स्फोट'।

प्रस्रवण–पुं० दे० 'प्रस्राव'।

प्रस्राव–पुं० [सं०] १.
टपकना या रसना। २. पेशाब।

प्रस्वेद–पुं० [सं०] पसीना।

प्रह*–पुं० = प्रातःकाल।

प्रहर–पुं० [सं०] दिन-रात के
में से एक। तीन घन्टे का समय

प्रहरखना*–अ० [सं० प्रहर्ष
या प्रसन्न होना।

प्रहरी–पुं० [सं० प्रहरिन्] पहरेदार

प्रहर्षण–पुं० [सं०] १. आनंद
साहित्य में एक अलकार जिसमें
अथवा बिना कोई विशेष
ही किसी अभीष्ट और हर्ष-वर्द्धक

वर्णन होता है। इसके
हैं।
'प्रह्लाद'।
१. हँसी। दिल्लगी। २.
एक प्रकार का रूपक।

[सं०] १. हँसी से भरा
हँसी उड़ाई जाय।

[सं० प्रहाण] १. परित्याग।
एकाग्रता। ध्यान।
[कर्त्ता प्रहारक, प्रहारी]
। २. मार।
[सं० प्रहार] १. मारना।
। २. मारने के लिए अस्त्र
।
[सं० प्रहार से वि०] जिसपर
।

[सं०] १. जोर की हँसी।
। २. किसी कृति या
अंगों को घटा-बढ़ा या
अथवा और किसी प्रकार
हँसी उड़ाने के लिए
या आकृति। (कैरिकेचर)
[सं०] पहेली।
[सं०] १. बहुत अधिक
हिरण्यकश्यप का पुत्र, एक
।
[सं०] घर का आँगन।
[सं०] १. सरल। सीधा। २.
(भाषा)।
[सं०] [वि० प्रांतीय, प्रांतिक]
। २. किनारा। सिरा। ३.
। ४. खंड। प्रदेश। ५.
का कोई शासनिक विभाग।
[सं०] राज्य के किसी प्रान्त
प्रधान अधिकारी और

प्रांतर–पुं० [सं०] १. वह प्रदेश जिसमें जल और वृक्ष न हों। उजाड़। २. जंगल। वन। ३. वृक्ष का कोटर।

प्रांतिक, प्रांतीय–वि० [सं०] किसी एक प्रान्त से सम्बन्ध रखनेवाला। (प्रॉविन्शल)

प्रांतीयता–स्त्री० [सं०] १. प्रांतीय होने का भाव। २. अपने प्रान्त का विशेष या अतिरिक्त पक्षपात या मोह। (प्रॉविन्शलिज्म)

प्रांतीय सरकार–स्त्री० [सं० + फा०] किसी प्रान्त की वह सरकार जो उस प्रान्त की सारी व्यवस्था करती, पर केन्द्रीय सरकार के आधीन होती है। (प्राविन्शल गवर्नमेन्ट)

प्राइवेट–वि० [अं०] १. अपना। निजी। **पद–प्राइवेट सेक्रेटरी** = किसी बड़े आदमी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार आदि कार्य करनेवाला। २. व्यक्तिगत। ३. दूसरों से छिपाने योग्य। गोपनीय।

प्राक्-वि० [सं०] १. आरम्भ या शुरू में होनेवाला। आरंभिक। जैसे–प्राक्कथन। २. किसी की अपेक्षा या तुलना में पहले का। किसी से पुराना या पूर्व-काल का। (ऐन्टी, प्री) जैसे–प्राक्-ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक।

प्राकाम्य–पुं० [सं०] १. आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक, जिससे मनुष्य जहाँ चाहे, वहाँ आ-जा सकता है। २. प्रचुरता। अधिकता। ३. यथेष्टता।

प्राकार–पुं० दे० 'प्राचीर'।

प्राकृत–वि० [सं०] १. प्रकृति से उत्पन्न। २. निसर्ग या प्रकृति-सम्बन्धी। स्वभाविक। स्त्री० १. किसी स्थान की बोल-चाल की भाषा। २. एक प्राचीन भारतीय बोल-चाल की भाषा जिसका संस्कार करके संस्कृत बनाई गई थी और जिससे भारत की आज-कल की आर्य-भाषाएँ बनी हैं।

प्राकृतिक–वि० [सं०] १. प्रकृति-संबधी। प्रकृति का। २. स्वाभाविक। सहज। (नेचुरल)

प्राकृतिक चिकित्सा–स्त्री० [सं०] रोगों की चिकित्सा या इलाज करने का एक ढंग जिसमें दवाओं आदि को छोड़कर केवल प्राकृतिक उपायों (जैसे–उपवास, मिट्टी का लेप; आतप-स्नान आदि) से काम लिया जाता है। (नेचर क्योर)

प्राक्कथन–पुं० [सं०] आरंभ में परिचय मात्र के लिए कही हुई कोई संक्षिप्त बात। भूमिका। (फोरवर्ड)

प्राखंडिक–वि० [सं०] किसी प्रखंड या विशिष्ट भू-भाग से सम्बन्ध रखनेवाला। (डिविजनल)

प्रागैतिहासिक–वि० [सं०] जिस समय का निश्चित और पूरा इतिहास मिलता हो, उससे पहले का। इतिहास-पूर्व काल का। (प्री-हिस्टॉरिक)

प्राची–स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा। पूरब।

प्राचीन–वि० [सं०] [भाव० प्राचीनता] १. पूरब का। २. बहुत दिनों का। पुराना।

प्राचीर–पुं० [सं०] चारो ओर से घेरनेवाली दीवार। परकोटा। चहार-दीवारी।

प्राच्छित*–पुं० = प्रायश्चित्त।

प्राच्य–वि० [सं०] १. प्राची दिशा से सम्बन्ध रखनेवाला। पूर्व दिशा का। २. पूर्वीय या एशिया महाद्वीप के देशों से सम्बन्ध रखनेवाला। 'पाश्चात्य' का विपर्याय। पौर्वात्य। (ओरिएन्टल) ३. पुराना। प्राचीन।

पुं० कोशल, काशी, विदेह (विहार और मगध) तथा अंग (दक्षिण विहार) के प्राचीन निवासियों की संज्ञा जो उन्हें कुरु-पांचाल तथा अन्य पश्चिमी देशों के निवासियों से प्राप्त हुई थी। (दे० 'प्राच्या'।)

प्राच्या–स्त्री० [सं०] कोशल, काशी, विदेह और अंग के 'प्राच्य' कहलानेवाले प्राचीन निवासियों की भाषा। इसके दो विभाग थे—पश्चिम प्राच्या और पूर्व प्राच्या। इनमें से पश्चिम प्राच्या तो बहुत अधिक
प्रचलित थी, पर पूर्व प्राच्य विभ
थी। आगे चलकर पश्चिम प्राच्या ने
मागधी का और पूर्व प्राच्या ने मा
रूप धारण किया। (विशेष दे०
मागधी' और 'मागधी'।)

प्राजापत्य–वि० [सं०] १.
सम्बन्धी। २. प्रजापति से उत्पन्न।

प्राजापत्य विवाह–पुं० [सं०] व
जिसमें पिता अपनी कन्या को वह
के हाथ में देता था कि तुम लोग
धर्म का पालन करो।

प्राज्ञ–वि० [सं०] [स्त्री० प्राज्ञा,
१. बुद्धिमान। समझदार। २. वि

प्राड्विवाक–पुं० [सं०] १. न्
२. वकील।

प्राण–पुं० बहु० [सं०] [भाव० प्रा
१. वायु। हवा। २. शरीर की व
जिससे मनुष्य और जीव-जन्तु जी
हैं। जीवनी शक्ति। जान।

मुहा०–प्राण गले तक आना=
को होना। **प्राण जाना, छूट**
निकलना = जीवन का अंत
मरना। **प्राण डालना** = जीवन
करना। **प्राण देना** = मरना। (
पर) प्राण देना = किसी के लि
तक तैयार रहना। (**किसी** के लिए
देना = (क) किसी के लिए मरने
रहना। (ख) किसी के लिए बहुत
परिश्रम या प्रयत्न करना। **प्राण**
ना = (क) मृत्यु होना। मरना।
मरने का-सा कष्ट होना। **प्राण ले**
हरना = मार डालना। **प्राण हार**
(क) मर जाना। (ख) उत्साहहीन
३. श्वास। साँस। ४. बल। शक्ति।
वि० परम प्रिय। बहुत प्यारा।

प्राण-अधार*–पुं० दे० 'प्राणाधार'।

प्राण-दंड–पुं० [सं०] वह दंड जिसमें
किसी के प्राण ले लिये जाते हैं। (कैपि

जानेवाले कार्य। जैसे—शौच, स्नान आदि।

प्रातःकाल—पुं० [सं०] [वि० प्रातःकालीन] दिन चढ़ने का समय। सबेरा।

प्रातःकृत्य—पुं० दे० 'प्रातःकर्म'।

प्रातःस्मरणीय—वि० [सं०] सबेरे उठते ही स्मरण करने के योग्य। (परम श्रेष्ठ और पूज्य)

प्रात—अव्य० [सं० प्रातः] सबेरे। तड़के। पुं० सबेरा। प्रातःकाल।

प्रात-कृत*—पुं० = प्रातःकृत्य (प्रातःकर्म)।

प्रातिकूल्य—पुं० [सं०] १. प्रतिकूल या विरुद्ध होने का भाव। प्रतिकूलता। २. धर्म-शास्त्र के अनुसार इस बात का विचार कि परस्पर प्रतिकूल अवस्थाओं में कोई काम कब और कैसे करना चाहिए। जैसे—घर में अशौच होने पर शुभ या मांगलिक कार्य के समय आदि का विचार।

प्रातिभ—वि० [सं०] १. प्रतिभा-सम्बन्धी। प्रतिभा का। २. प्रतिभा से उद्भूत। प्रतिभा-जन्य।

प्रातिभागिक—वि० [सं०] प्रतिभाग नामक शुल्क से सम्बन्ध रखनेवाला। (एक्साइस)

प्रातिभाज्य—वि० [सं०] जिसपर प्रतिभाग-शुल्क लगता या लग सकता हो।

प्राथमिक—वि० [सं०] १. प्रथम का। प्रथम सम्बन्धी। २. आरम्भ का। प्रारंभिक। ३. सबसे अधिक महत्त्व का। मुख्य। ४. सबसे पहले होनेवाला। पहले का। (प्रिलिमिनरी)

प्राथमिकता—स्त्री० [सं०] १. 'प्राथमिक' होने का भाव। २. किसी व्यक्ति या वस्तु को किसी कार्य के लिए औरों से पहले मिलनेवाला स्थान, अवसर आदि। प्रथमता। (प्रायॉरिटी) जैसे—आज-कल रेलवे में खाद्य पदार्थों को और सब चीजों से प्राथमिकता मिलती है।

प्रादुर्भाव—पुं० [सं०] १. आविर्भाव। प्रकट होना। २. उत्पत्ति।

प्रादुर्भूत-वि० [सं०] १. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। सामने आया हुआ। २. उत्पन्न।

प्रादेशिक-वि० [सं०] १. प्रदेश संबंधी। किसी प्रदेश का। २. किसी प्रदेश के भीतरी भागों से सम्बन्ध रखनेवाला। प्रदेश की सीमाओं के अन्दर होने या रहनेवाला। (टेरिटोरिअल)

प्रादेशिकता—स्त्री० दे० 'प्रांतीयता'।

प्रादेशिक सेना-स्त्री० [सं०] किसी देश या प्रदेश के भीतरी भागों या उसकी सीमाओं के अन्दर रहकर ही स्थानिक सुरक्षा, शान्ति आदि की व्यवस्था करनेवाली सेना। (टेरिटोरिअल आर्मी)

प्राधान्य-पुं० [सं०] प्रधानता।

प्राधिकार-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति को विशेष रूप से मिलनेवाला वह अधिकार या सुभीता जो उसे कुछ कठिनाइयों या बाधाओं से बचाता हो। (प्रिविलेज)

प्राधिकृत-वि० [सं०] जिसे प्राधिकार या सुभीता मिला हो। (प्रिविलेज्ड)

प्राध्यापक-पुं० [सं०] १. बड़ा अध्यापक; विशेषतः वह अध्यापक जो महाविद्यालय या कालेज आदि में पढ़ाता हो। २. किसी विषय का अच्छा विद्वान्। विशेषज्ञ। (प्रोफेसर)

प्रान*-पुं० = प्राण।

प्रापक-वि० [सं०] प्राप्त करने या पानेवाला। आदाता।

प्रापण-पुं० [सं०] [वि० प्रापक, प्राप्य, प्राप्त] प्राप्ति। मिलना।

प्रापति*-स्त्री० = प्राप्ति।

प्रापना*-स० [सं० प्रापण] प्राप्त करना। पाना।

प्राप्त-वि० [सं०] १. जो किसी प्रकार अपने अधिकार में आया या लाया गया हो। मिला या पाया हुआ। (एक्वायर्ड) २. सामने आया हुआ। उपस्थित।

प्राप्तव्य-वि० दे० 'प्राप्य'।

प्राप्ति-स्त्री० [सं०] १. प्राप्त होने, हाथ मे आने या मिलने की क्रिया या भाव। प्राप्त होना। मिलना। २. ऐसी चीज मिलना या अवस्था आना जिसमें कुछ हित या लाभ हो। लाभ। फायदा। ३. उक्त रूप से मिलनेवाला धन या और कोई चीज। (गेन; उक्त तीनों अर्थों के लिए) ४. किसी चीज के आकर पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच। जैसे-पत्र या उसके उत्तर की प्राप्ति। ५. आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिसके प्राप्त होने पर सब कामनाओं का पूरा होना माना जाता है। ६. नाट्यशास्त्र में रूपक या नाटक का सुखद उपसंहार।

प्राप्तिका-स्त्री० [सं० प्राप्ति] वह पत्र जिस पर किसी वस्तु की प्राप्ति या पहुँच का उल्लेख हो। रसीद। पावती। (रिसीट)

प्राप्य-वि० [सं०] १. जो प्राप्त हो सके। मिल सकने के योग्य। २. जो किसी को आवश्यक रूप से प्राप्त करना हो। धन या वस्तु जो किसी से लेनी हो।

प्राप्यक-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी के जिम्मे या नाम पड़ी हुई रकम या उसको दिये हुए माल का ब्योरा और लिखा रहता है। बाकी या प्राप्य सूचक पत्र। (बिल)

प्राप्यक-समाहर्त्ता-पुं० [सं०] प्राप्यक का बाकी धन उगाहने करता हो। (बिल कलेक्टर)

प्राबल्य-पुं० [सं०] प्रबलता।

प्राभाविक-वि० [सं०] प्रभाव या उत्पन्न करनेवाला। (एफेक्टिव)

प्रामंडलिक-वि० दे० 'प्राखंडिक'।

प्रामाणिक-वि० [सं०] [भाव० प्रामाणिकता] १. जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध २ प्रमाण के रूप में मानने योग्य। (ऑथॉरिटेटिव) ३. ठीक। सत्य। ४.

या शुरू का। सबसे पहले होनेवाला। पहले का। (प्रिलिमिनरी)

प्रारब्ध–वि० [सं०] आरंभ किया हुआ। पुं० १. वह कर्म जिसका फल-भोग आरम्भ हो चुका हो। २. भाग्य। किसमत।

प्रार्थना–स्त्री० [सं०] १. किसी से कुछ देने या करने के लिए नम्रतापूर्वक कहना। याचना। २. विनय। निवेदन। विनती। *स० प्रार्थना या विनती करना।

प्रार्थनापत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें कोई प्रार्थना लिखी हो। निवेदनपत्र। अरजी। (एप्लिकेशन)

प्रार्थित–वि० [सं०] जिसके लिए प्रार्थना की गई हो।

प्रार्थी–वि० [सं० प्रार्थिन्] [स्त्री० प्रार्थिनी] प्रार्थना यां निवेदन करनेवाला। (एप्लिकेन्ट, पेटिशनर)

प्रालब्ध–स्त्री० दे० 'प्रारब्ध'।

प्रालेख–पुं० [सं०] लेख्य, विधान आदि का वह पूर्व-रूप जो काट-छाँट या घटाने-बढ़ाने के लिए तैयार किया गया हो। मसौदा। (ड्राफ्ट)

प्रालेखक–पुं० [सं०] वह जो लेखों के पांडु-लेख या प्रालेख लिखने का काम करता हो। (ड्राफ्ट्समैन)

प्रालेखन–पुं० [सं०] लेखों के पांडु-लेख या प्रालेख लिखने का काम। (ड्राफ्टिंग)

प्रालेय–पुं० [सं०] १. हिम। पाला। २. बरफ।

प्राविट*–पुं० [सं० प्रावृट्] वर्षा ऋतु। बरसात।

प्राविधानिक–वि० [सं०] १. प्रविधान संबंधी। प्रविधान का। २. जिसे प्रविधान में स्थान मिला हो। (स्टैट्यूटरी)

प्राशन–पुं० [सं०] [वि० प्राशी] १. खाना। भोजन। २. चखना। जैसे–अन्न-प्राशन।

प्रासंगिक–वि० [सं०] १. प्रसंग संबंधी।

प्रसंग का। २. प्रसंग-वश या संयोग से बीच में और आप से आप आ जाने या हो जानेवाला। आनुषंगिक। (इन्सिडेन्टल) ३. किसी प्रसंग में आकस्मिक रूप से सामने आनेवाला (व्यय आदि)। (कन्टिन्जेन्ट)

प्रासंगिकी–स्त्री० [सं० प्रसंग] आकस्मिक रूप से उपस्थित होनेवाला ऐसा प्रसंग जिसमें कुछ विशेष कार्य या व्यय आदि करने की आवश्यकता आ पड़े। (कन्टिन्जेन्सी)

प्रासविक–वि० [सं० प्रसव से वि०] १. प्रसव सम्बन्धी। प्रसव का। २. प्रसव करानेवाली दाई से सम्बन्ध रखनेवाला। ३. प्रसव कराने की कला या विज्ञान से सम्बन्ध रखनेवाला। प्रासविक विज्ञान का। (ऑब्स्टेट्रिकल)

प्रासविक विज्ञान–पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें गर्भवती स्त्रियों को सन्तान प्रसव कराने की कला या विद्या का विवेचन होता है। (मिडवाइफरी, ऑब्स्टेट्रिक्स)

प्रासाद–पुं० [सं०] बड़ा और ऊँचा पक्का घर। विशाल भवन। महल।

प्रासूतिक–वि० [सं०] प्रसूता या प्रसव से सम्बन्ध रखनेवाला। (नेटल)

प्रिथमी*–स्त्री० = पृथ्वी।

प्रियंवद–वि० दे० 'प्रियभाषी'।

प्रिय–वि० [सं०] १. जिससे प्रेम हो। प्यारा। २. मनोहर। सुन्दर।

पुं० [स्त्री० प्रिया] पति। स्वामी।

प्रियतम–वि० [सं०] [स्त्री० प्रियतमा] सबसे बढ़कर प्यारा। परम प्रिय।

पुं० स्वामी। पति।

प्रियभाषी–वि० [सं० प्रियभाषिन्] [स्त्री० प्रियभाषिणी] मीठी बातें कहनेवाला।

प्रियवर–वि० [सं०] अति प्रिय। बहुत प्यारा। (पत्रों आदि में संबोधन)

प्रियवादी–पुं० दे० 'प्रियभाषी'।

प्रिया–स्त्री० [सं०] १. नारी। स्त्री। पत्नी। जोरू। ३. प्रेमिका।

प्रीत–वि० [सं०] प्रीतियुक्त।

*स्त्री० दे० 'प्रीति'।

प्रीतम–वि० पुं० = प्रियतम।

प्रीति–स्त्री० [सं०] १. संतोष। आनंद। प्रसन्नता। ३. प्रेम। प्यार।

मुहा०–(किसी की) प्रीति मान किसी के प्रेम से प्रसन्न होकर उसके वैसा ही प्रेम करना।

प्रीति-भोज–पुं० [सं०] मित्रों और बान्धवों के साथ बैठकर प्रेमपूर्वक पीना। दावत।

प्रीथी*–स्त्री० = पृथ्वी।

प्रूफ–पुं० [अं०] १. प्रमाण। २. छपनेवाली चीज का वह छपा हु नमूना जिसमें अशुद्धियाँ ठीक की जाती

प्रेक्षण–पुं० [सं०] देखना।

प्रेक्षा–स्त्री० [सं०] १. देखना। नृत्य, अभिनय आदि देखना। ३. निगाह। ४. प्रज्ञा। बुद्धि।

प्रेक्षागार(गृह)–पुं० [सं०] १. मंत्र गृह। २. नाट्यशाला।

प्रेक्ष्य–वि० [सं०] १. जो देखा जाय। जो देखने के योग्य हो। प्रेक्षणीय।

प्रेत–पुं० [सं०] [भाव० प्रेतत्व] मरा हुआ मनुष्य। मृत प्राणी। कल्पित शरीर जो मरने के बाद धारण करता है। ३. पिशाचों की एक कल्पित देव-योनि।

पद–प्रेत का जूठा = भूत-प्रेत आदि उद्देश्य से अलग किया हुआ कोई पदार्थ जो परम निषिद्ध और अग्राह्य गया है।

४. बहुत ही कृपण, दुष्ट, स्वार्थी और व्यक्ति।

प्रेत-कर्म(कार्य)–पुं० [सं०] हिन्दुओं में मृत शरीर जलाने से सपिंडी तक के सब काय।

किया जाय। प्रेयसी।

प्रेमी–पुं० [सं० प्रेमिन्] प्रेम करनेवाला।

प्रेयसी–स्त्री० [सं०] प्रेमिका।

प्रेरक–पुं० [सं०] प्रेरणा करनेवाला।

प्रेरण–पुं० दे० 'प्रेरणा'।

प्रेरणा–स्त्री०[सं०] १.मन में उत्पन्न होनेवाला कोई ऐसा विचार या धारणा जिसके विषय में यह माना या समझा जाता हो कि वह दैवी साधन या कृपा से उत्पन्न हुई है। (इन्स्पिरेशन) २. किसी प्रभावशाली व्यक्ति या क्षेत्र की ओर से कुछ कहने या करने के लिए होनेवाला संकेत। (इन्स्पिरेशन)

प्रेरणार्थक क्रिया–स्त्री० [सं०] क्रिया का वह रूप जिससे सूचित होता है कि वह क्रिया किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुई है। (कॉजेटिव) जैसे–'पढ़ना' या 'पढ़ाना' का प्रेरणार्थक 'पढ़वाना' है।

प्रेरना*–स० [सं० प्रेरणा] प्रेरणा करना।

प्रेरित–वि० [सं०] १. भेजा हुआ। प्रेषित। २. जिसे दूसरे से प्रेरणा मिली हो।

प्रेषक–पुं० [सं०] वह जो किसी के पास कोई चीज भेजे। (सेंडर, कन्साइनर)

प्रेषण–पुं० [सं०] १. कोई चीज कहीं से किसी के पास भेजना। रवाना करना। (रेमिटेन्स, ट्रान्समिशन) २. वह वस्तु जो कहीं से किसी को भेजी जाय। (रेमिटेन्स, कन्साइन्मेन्ट)

प्रेषितक–पुं० [सं०] वह वस्तु जो कहीं भेजी जाय। (कन्साइन्मेन्ट)

प्रेषिती–पुं० [सं० प्रेषित] वह जिसके नाम कोई वस्तु प्रेषित की या भेजी जाय। (एड्रेसी, कन्साइनी)

प्रेस–पुं० [अं०] १. छापाखाना। २. छापने की कल। ३. समाचार-पत्रों का वर्ग। ४. रूई आदि चीजें दबाने की कल।

प्रेसिडेंट–पुं० [अं०] १. सभापति। २. राष्ट्रपति।

प्रोक्त–वि० [सं०] १. कहा हुआ। कथित।

२. उद्धरण या अवतरण के रूप में कहीं से लिया हुआ। उद्धृत। (कोटेड)

प्रोक्ति–स्त्री० [सं०] [वि० प्रोक्त] १. उक्ति। कथन। २. दूसरे की कही हुई वह बात या उक्ति जो कहीं उद्धृत की गई हो या की जाय। (कोटेशन)

प्रोग्राम–पुं० [अं०] कार्य-क्रम।

प्रोत्साहन–पुं० [सं०] [वि० प्रोत्साहित] कोई काम करने के लिए उत्साह बढ़ाना। हिम्मत बँधाना।

प्रोन्नति–स्त्री० [सं०] [वि० प्रोन्नत] वर्ग, पद, मर्यादा आदि में ऊपर चढ़ाना या उन्नत करना। (प्रोमोशन)

प्रोफेसर–पुं० दे० 'प्राध्यापक'।

प्रोषित–वि० [सं०] विदेश गया हुआ।

प्रोषित नायक (पति)–पुं० [सं०] वह नायक या पति जो विदेश में होने के कारण अपनी पत्नी के वियोग से दुःखी हो।

प्रोषितपतिका (नायिका)–स्त्री० [सं०] (वह नायिका) जो अपने पति के परदेस जाने पर दुःखी हो।

प्रौढ़–त्रि० [सं०] [स्त्री० प्रौढ़ा, भाव० प्रौढ़ता] १. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। २. जो युवावस्था पार कर चला हो। ३. पक्का। ४. ढीठ। धृष्ट।

प्रौढ़ता–स्त्री० [सं०] प्रौढ़ होने की अवस्था या भाव।

प्रौढ़ा–स्त्री० [सं०] १. अधिक वयसवाली स्त्री। २. श्रृंगार रस में काम-कला आदि अच्छी तरह जाननेवाली, तीस-चालीस वर्ष की अवस्थावाली नायिका। ३. साहित्य मे वह शब्द-योजना जिसके द्वारा रचना मे प्रासाद गुण आता है।

प्रौढ़ोक्ति–स्त्री० [सं०] साहित्य में ए अर्थालंकार जिसमें किसी कार्य या के उत्कर्ष का कोई ऐसा कारण मान लि जाता है जो वास्तव में उसका कारण न होता। जैसे–गंगा-तट पर रहने के का ही वह महात्मा हो गया था।

प्लॉट–पुं० [अं०] १. कथावस्तु। षड़यंत्र। ३. जमीन का बड़ा टुकड़ा।

प्लावन–पुं० [सं०] [वि० प्ला प्लावनिक] १. पानी की बाढ़। २. दिनों के अन्तर पर, सारे संसार में हो वाली पानी की बहुत बड़ी बाढ़ जिस गिनती प्रलय में होती है। हिन्दुओं के अनु वैवस्वत मनु के समय में और ईसाइ मुसलमानों आदि के अनुसार हजरत के समय ऐसी बाढ़ आई थी। (डेल्यू ३. खूब अच्छी तरह धोना। ४. तैरना

प्लावनिक–वि० [सं०] १. प्लावन बाढ़ से सम्बन्ध रखनेवाला। (विशेष प्लावन २.) २. (भूमि या क्षेत्र) प्रायः बाढ़ के समय जल में डूब जाता (डिल्यूविअल)

प्लीहा–स्त्री० दे० 'तिल्ली'।

प्लुत–पुं० [सं०] दीर्घ से भी बड़ तीन मात्राओं का स्वर।

प्लेग–पुं० [अं०] १. महामारी। एक भीषण संक्रामक रोग। ताऊन।

फ

फ–नागरी वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन और प-वर्ग का दूसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

फंका*–पुं० [स्त्री० फंकी] १. दे० 'फंकी'। २. दे० 'फाँक'।

फंकी–स्त्री० [हिं० फंका] १. फाँकने लिए चूर्ण के रूप में कोई दवा। २. उतना मात्रा जितनी एक बार में फाँकी जाय।

फक्कड़बाजी–स्त्री० [हिं० फक्कड़ + फा० बाजी] गंदी और वाहियात बातें बकना।

फखर–पुं० [फा० फ़ख्र] गौरव।

फग*–पुं० दे० 'फंग'।

फगुआ–पुं० १. दे० 'फाग'। २. दे० 'होली'।

फगुनहट–स्त्री० [हिं० फागुन] फागुन में चलनेवाली तेज हवा।

फजर–स्त्री० [अ०] सबेरा।

फजल–पुं० [अ० फ़ज़्ल] अनुग्रह।

फजीहत–स्त्री० [अ०] दुर्दशा। दुर्गत।

फजूल–वि० [अ० फ़ज़ूल] व्यर्थ।

फजूल-खर्च–वि० [फा०] [भाव० फजूल-खर्ची] व्यर्थ और बहुत खर्च करनेवाला। अपव्ययी।

फटक*–पुं० दे० 'स्फटिक'।

फटकन–स्त्री० [हिं० फटकना] १. फटकने की क्रिया या भाव। २. वह रद्दी अंश जो कोई चीज फटकने पर निकले।

फटकना–स० [अनु० फट] १. फट फट शब्द करना। २. पटकना। ३. मारने के लिए चलाना (अस्त्र आदि)। ४. सूप में अन्न आदि रखकर उसे उछालते हुए सा करना। ५. रूई आदि धुनना।

अ० [अनु०] १. कुछ पास जाना या पहुँचना। २. फड़फड़ाना।

फटकरना–अ० [हिं० फटकारना] फटकारा जाना।

स० [हिं० फटकना] फटकना।

फटका†–पुं० [अनु०] १. रूई धुनने की धुनकी। २. काव्य के रस आदि गुणों से हीन कोरी तुक-बंदी।

पुं० दे० 'फाटक'।

फटकाना†–स० [हिं० फटकना] १. फटकने का काम दूसरे से कराना। २. दू करना। हटाना। ३. फेंकना।

फटकार–स्त्री० [हिं० फटकारना] १ फटकारने की क्रिया या भाव। २. झिड़की

भर्त्सना। ३. दे० 'फिटकार'।

फटकारना–स० [अनु०] १. इस प्रकार झटका मारना कि ऊपर की चीजें छितराकर गिर जायँ। २. कुछ अनुचित रूप से धन प्राप्त करना। ३. कपड़ा पटक पटककर साफ करना। ४. खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना। ५. शस्त्र आदि चलाना।

फटन–स्त्री० [हिं० फटना] १. फटने की क्रिया या भाव। २. फटने के कारण होनेवाला शिगाफ या दरार। ३. (शरीर के किसी अंग में) फटने की-सी होनेवाली पीड़ा।

फटना–अ० [हिं० 'फाड़ना' का अ० रूप] १. ऊपर के तल में इस प्रकार दरार पड़ना कि कुछ भाग अलग हो जाय।

मुहा०–छाती फटना=बहुत दुःख होना। **मन या चित्त फटना** = मन में रोष होने पर संबंध रखने को जी न चाहना। **फटे-हाल**=बहुत ही दुरवस्था में। २. अलग या पृथक् हो जाना। ३. द्रव पदार्थ में सार भाग से पानी अलग हो जाना। जैसे–दूध फटना। ४. किसी बात का बहुत अधिक होना।

मुहा०–फट पड़ना = (क) अचानक आ पहुँचना। (ख) बहुत अधिक मात्रा में आ पहुँचना या प्राप्त होना।

फटफटाना–स० [अनु०] फटफट शब्द करना।

अ० १. फड़फड़ाना। २. कठिन स्थिति से निकलने के लिए जोर लगाना। ३. फटफट शब्द होना।

टहा†–वि०[हिं० फटना] १. फटा हुआ। २. गाली-गलौज बकनेवाला। लुच्चा।

टा–वि० [हिं० फटना] फटा हुआ।

मुहा०–किसी के फटे में पैर देना = दूसरे की आपत्ति अपने ऊपर लेना।

†पुं० फन (साँप का)।

टिक–पुं०[सं० स्फटिक] १. एक सफेद पारदर्शी पत्थर। बिल्लौर। स्फटिक। उदा०–स्फटिक सेला बैठे दोउ भाई।–तुलसी। २. संग-मरमर।

फड़–पुं० [सं० पण] १. वह जगह जहाँ दूकानदार बैठकर माल खरीदते और बेचते हैं। २. जूआ खेलने का स्थान। ३. वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की प्रतियोगिता हो। ४. लड़ाई का मैदान। रण-क्षेत्र। पुं० [सं० पटल] तोप लादने की गाड़ी।

फड़कन–स्त्री० [अनु०] फड़कने की क्रिया या भाव।

फड़कना–अ० [अनु०] १. रह-रहकर नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना। फड़फड़ाना। जैसे–भुजा या आँख फड़कना।

मुहा०–फड़क उठना या जाना = बहुत प्रसन्न होना। **बोटी बोटी फड़कना** = अत्यंत चंचल होना।

२. कुछ करने के लिए व्यग्र होना।

फड़काना–स० हिं० 'फड़कना' का प्रे०।

फड़नवीस–पुं० [फा० फर्दनवीस] मराठों के राज्य-काल का एक बड़ा अधिकारी।

फड़फड़ाना–स० दे० 'फटफटाना'।

फड़बाज–पुं० [हिं० फड़ + फा० बाज] वह जो लोगों को अपने यहाँ बैठाकर जूआ खेलाता और उसके बदले में उनसे कुछ धन लेता हो।

फड़िया–पुं० [हिं० फड़] १. खुदरा बेचनेवाला। २. फड़बाज।

फण–पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० फणी] १. साँप का फन। २. रस्सी का फंदा।

फणधर–पुं० [सं०] साँप।

फणींद्र–पुं० [सं०] १. शेषनाग। २. बड़ा साँप।

फणी–पुं० [सं० फणिन्] साँप।

फतवा–पुं० [अ०] किसी बात के उचित या अनुचित होने के सम्बन्ध में (विशेषतः मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार) दी जानेवाली व्यवस्था।

] १. विजय। जीत।

'पतंगा'।

'पलीता'।

] १. विकार। दोष।

। ३. कमी। न्यूनता। ४.

। नुकसान।

[अ० फतूर] फतूर या

करनेवाला। उपद्रवी।

[अ०] १. विजय। जीत।

लूट में मिला हुआ माल।

[अ० फतूह] १. बिना बाँह

की कुरती। सदरी। २.

दे० 'फतह'।

] कुछ साँपों के सिर का

फैलकर पत्ते का आकार

होता है।

] १. गुण। खूबी। २. विद्या।

। ४. छल-कपट।

स० [?] तैयार करना या

दे० 'फणींद्र'।

दे० 'फणी'। २. दे० 'फण'।

[सं० फणिन्] १. साँप। २.

(क्रीड़ा)।

फणींद्र (शेष-नाग)।

'फानूस'।

'फरार'।

[सं० फुफ्फुस] फेफड़ा।

] १. फूला हुआ और अंदर

(फल) जिसका स्वाद बिगड़

गया हो।

१. दे० 'नीबी'। २. दे०

[हिं० प्रस्फोट] १. शरीर पर

मुहा०–दिल के फफोले फोड़ना = कुछ कहकर अपने मन की जलन या क्रोध शान्त करना।

२. पानी का बुलबुला। बुद्बुद।

फबती–स्त्री० [हिं० फबना] व्यंग्य।

मुहा०–फबती उड़ाना = हँसी उड़ाना। उपहास करना। **फबती कसना** = चुभती हुई या व्यंग्यपूर्ण बात कहना।

फबन–स्त्री० [हिं० फबना] १. फबने की क्रिया या भाव। २. शोभा। छबि।

फबना–अ० [सं० प्रभवन] सुंदर या सुहावना लगना। खिलना।

फबि–स्त्री० दे० 'फबन'।

फबित*–वि० [हिं० फबना + इत (प्रत्य०)] जो फब रहा हो। देखने में भला या फबता हुआ जान पड़नेवाला।

फबीला–वि० [हिं० फबना + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फबीली] सुहावना या सुन्दर दिखाई देनेवाला।

फर*–पुं० दे० 'फल'।

फरक–पुं० [अ० फ़र्क़] १. पार्थक्य। अलगाव। २. भेद। अंतर। ३. दूरी।
†क्रि० वि० अलग। पृथक्।

फरकन–स्त्री० दे० 'फड़क'।

फरकना*–अ० दे० 'फड़कना'।

फरकाना*–स० [हिं० फरक] अलग करना।

फरकौंहाँ*–वि० [हिं० फरकना (फड़कना) + औंहाँ (प्रत्य०)] फड़कनेवाला या फड़कता हुआ।

फरजी–वि० [फा०] १. नकली। बनावटी। २. माना हुआ। कल्पित।
पुं० शतरंज में 'वजीर' नाम का मोहरा।

फरजी मात–स्त्री० [फा० + हिं०] शतरंज के खेल में वह मात जो केवल एक फरजी और एक प्यादे की सहायता से दी जाती है।

फरद–स्त्री० [अ० फ़र्द] १. स्मरण रखने के लिए लिखा हुआ लेखा या सूची आदि।

२. कागज का तख्ता। ताव। ३. एक साथ काम में आनेवाली या रहनेवाली दो चीजों में से कोई एक।
वि० जिसकी बराबरी का दूसरा न हो। बे-जोड़।

फरना*–अ० दे० 'फलना'।

फरफंद–पुं० [हिं० फर + फंदा] [वि० फरफंदी] १. छल-कपट। २. नखरा।

फरमा–पुं० [अं० फ्रेम] लकड़ी, मिट्टी, मोम, धातु आदि का वह साँचा जिसमें ढालकर चीजें बनाई जाती हैं। (फ्रेम)
पुं० [अं० फॉर्म] कागज का पूरा ताव जो एक बार में छपता है। (फॉर्म)

फरमाइश–स्त्री० [फा०] [वि० फरमाइशी] कोई चीज लाने या बनाने अथवा कोई काम करने के लिए दी जानेवाली आज्ञा।

फरमाइशी–वि० [फा०] १. फरमाइश करके बनाया हुआ। २. बहुत अच्छा और बढ़िया।

फरमान–पुं० [पहलवी और पुरानी ईरानी फ्रमान (मि० सं० प्रमाण) से फा०] १. राज्य या राजा की आज्ञा। २. वह पत्र जिसपर इस प्रकार की आज्ञा लिखी हो।

फरमाना–स० [फा० फरमान] किसी बड़े का कुछ कहना। (आदरार्थक)

फरश–पुं० [अ० फ़र्श] १. बैठने आदि के लिए समतल और पक्की भूमि। २. ऐसी भूमि पर बिछाया हुआ कपड़ा।

फरशबंद–पुं० [फा० फ़र्श + बन्द] ऊँची समतल भूमि।

फरशी–स्त्री० [फा०] एक प्रकार का बड़ा हुक्का। गुड़गुड़ी।

फरसा–पुं० [सं० परशु] १. एक प्रकार की तेज धार की कुल्हाड़ी। २. फावड़ा।

फरहरना†–अ० [अनु० फरफर] १. फरफराना। २. फहराना।

फरहरा–पुं० दे० 'झंडा'।

फरहरी†–स्त्री० दे० 'फलहरी'।

फराक*–पुं० [फा० फ़राख]
वि० लंबा-चौड़ा। विस्तृत।
पुं० [अं० फ्रॉक] स्त्रियों और बच्चों
प्रकार का पहनावा।

फराख–वि० [फा०] लंबा-चौड़ा।

फरागत–स्त्री० [अ०] १. छुट
मुक्ति। २. निश्चिंतता। बे-फिक्री।
पाखाना फिरना।

फराना*–स० दे० 'फलाना'।

फरामोश–वि० [फा०] भूला हुआ

फरार–वि० [अ०] भागा हुआ।

फरास*–पुं० दे० 'फर्राश'।

फरित*–वि० = फलित।

फरियाद–स्त्री० [फा०] १. अ
दुःख से बचाये जाने के लिए
नालिश या प्रार्थना। २. निवेदन।

फरियादी–वि० [फा०] फरियाद करने

फरिश्ता–पुं० [फा०] १.
दूत। (मुसल०) २. देवता।

फरी–स्त्री० [सं० फल] चमड़े
छोटी ढाल जिससे गतके का वार रोके

फरीक–पुं० [अ०] १. प्रतिद्वंद्वी।
२. दो पक्षों में से कोई एक पक्ष
पक्ष का आदमी। (पार्टी)
यौ०–फरीक सानी=प्रतिपक्षी।

फरेब–पुं० [फा०] छल। कपट।

फरेबी–पुं० [फा० फ़रेब]
कपट करनेवाला। धोखेबाज।

फरेरी†–स्त्री० [हिं० फल]

फरोश–पुं० [फा०] [भाव०
बेचनेवाला। (यो० के अंत में,
मेवा फरोश)

फर्क–पुं० दे० 'फ़रक़'।

फर्ज–पुं० [अ०] १. कर्तव्य।
मान लेना। कल्पना करना।

फर्जी–वि० दे० 'फरजी'।

फर्द–स्त्री० दे० 'फरद'।

फ़र्राटा–पुं० [अनु०] वेग। तेजी।

] [भाव० फर्राशी]
फर्श बिछाने, सफाई
जलाने आदि का काम
ी।
[फर्रुखशाह (नाम)]
एक प्रकार की तलवार।
'।
'फलाँग'।
] आकाश।
दे० 'फलाँग'।
दे० 'फलाँगना'।
[हिं० फलना + अंत(प्रत्य०)]
फलने की क्रिया या भाव।
] १. वह वस्तु जो किसी
खेतों में पैदा होती है।
नतीजा। ३. धर्म की दृष्टि
आदि के रूप में मिलनेवाला
। ४. शुभ कर्मों के ये
—अर्थ, धर्म, काम और
ज्योतिष में सुख, दुःख
में होनेवाले ग्रहों के योग
परिणाम। ६. प्रतिफल।
, छुरी आदि का वह
जिससे आघात किया जाता
की क्रिया का परिणाम-

[सं०] १. तखता। पट्टी।
चौड़ा कागज जिसपर कोई
या कोष्ठक अंकित
) जैसे—दुर्वृत्त फलक।
। तबक। ४. पत्र।
।
काश।
[हिं० फल + कर] वृक्षों
कर।
[सं०] फल के रूप
परिणाम-स्वरूप। (कॉन्सि-
निकृष्ट और फलतः

त्याज्य है।

फलत–स्त्री० [हिं० फल] वृक्षों में लगनेवाले फलों का समूह। पेड़ों से फलों आदि के रूप में होनेवाली उपज।

फलद–वि० [सं०] फल देनेवाला।

फल-दान–पुं० [हिं० फल + दान] विवाह सम्बन्ध स्थिर करने की एक रसम। (हिन्दू)

फलना–अ० [सं० फलन] १. वृक्षों का फल उत्पन्न करना। फलों से युक्त होना। **यौ०–फलना-फूलना** = सुखी और सम्पन्न होना।

२. शरीर में छोटे छोटे दानों का निकलना।

फल भरता–स्त्री० [हिं० फल + भरना] फलों से युक्त या लदे होने का भाव।

फलवान्–वि० [सं०] १. फलों से युक्त। (वृक्ष) २. सफल।

फल-श्रुति–स्त्री० [सं०] (धार्मिक क्षेत्रों में) वह कथन या वाक्य जिसमें किसी काम के फल का उल्लेख होता है। जैसे–(क) यज्ञ और दान करने से स्वर्ग मिलता है। (ख) रामायण या गीता का पाठ करने से मुक्ति होती है।

फलहर*–पुं० दे० 'फलाहार'।

फलहरी†–स्त्री० [हिं० फल] वृक्षों के फल।

फलहार–पुं० दे० 'फलाहार'।

फलहारी–वि० [हिं० फलाहार] जिसकी गिनती फलहार में हो।

फलाँग–स्त्री० [सं० प्रलंघन] [क्रि० फलाँगना] १. एक जगह से उछलकर दूसरी जगह जाना। कुदान। २. एक फलाँग भर की दूरी या अन्तर।

फलाना–वि० [अ० फलाँ] [स्त्री० फलानी] कोई अनिश्चित या अ-कथित। अमुक। स० हिं० 'फलना' का प्रे०।

फलाहार–पुं० [सं०] १. केवल फल खाना। २. वह खाद्य पदार्थ जो केवल फलों से बना हो और जिसमें अन्न का अंश न हो।

फलाहारी–पुं॰ [सं॰ फलाहारिन्] [स्त्री॰ फलाहारिणी] केवल फल खाकर निर्वाह करनेवाला ।

वि॰ दे॰ 'फलहारी' ।

फलित–वि॰ [सं॰] १. जिसका या जिसमें फल हो या हुआ हो । २. फल सम्बन्धी । फल का ।

यौ॰–फलित ज्योतिष = ज्योतिष का वह अंग जिसमें ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विचार होता है ।

फली–स्त्री॰ [हिं॰ फल + ई (प्रत्य॰)] छोटे बीजोंवाला लंबा और चिपटा फल ।

फलीता–पुं॰ दे॰ 'पलीता' ।

फलीभूत–वि॰ [सं॰] जिसका फल या परिणाम हो या हुआ हो ।

फलोदय–पुं॰ [सं॰] १. किसी किये हुए कार्य का फल दिखाई देना या मिलने लगना । २. लगाई हुई पूँजी से होनेवाला लाभ । फायदा । (प्रॉफिट)

फसद–स्त्री॰ [अ॰ फस्द] नस छेदकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया ।

मुहा॰–फसद खुलवाना या लेना= (क) शरीर का दूषित रक्त निकलवाना । (ख) मूर्खता या पागलपन की दवा करना ।

फसल–स्त्री॰ [अ॰ फ़स्ल] १. ऋतु । मौसिम । २. समय । काल । ३. खेत की उपज । फलत । पैदावार । (क्रॉप)

फसली–वि॰ [सं॰] फसल या ऋतु का । पुं॰ अकबर का चलाया हुआ एक संवत्, जिसका व्यवहार प्रायः खेती-बारी के कामों में होता है ।

स्त्री॰ विशूचिका । हैना ।

फसाद–पुं॰[अ॰] [वि॰और कर्त्ता फसादी] १ विकार । खराबी । २. उत्पात । उपद्रव । ३. लड़ाई । हुज्जत ।

फहम–स्त्री॰ [अ॰] बुद्धि । समझ ।

फहरन–स्त्री॰ [हिं॰ फहराना] फहराने की क्रिया या भाव ।

फहरना–अ॰ [सं॰ प्रसरण] [भा॰ फहर, फहरान] वायु में उड़ना या फराना । (झंडा आदि)

फहरान†–स्त्री॰ दे॰ 'फहरन' ।

फहराना–स॰ [सं॰ प्रसारण] कपड़ा आदि वायु में उड़ाना ।

*अ॰ दे॰ 'फहरना' ।

फाँक–स्त्री॰ [सं॰ फलक] फल आदि काटा या चीरा हुआ लंबोतरा टुकड़ा ।

फाँकना–स॰ [हिं॰ फंकी] दाने या खाने के लिए ऊपर से उन्हें मुँह में डा

मुहा॰–धूल फाँकना = व्यर्थ इधर- घूमकर दुर्दशा भोगना ।

फाँट–पुं॰ [देश॰] वनस्पतियों आदि उबालकर निकाला हुआ रस । काढ़ा ।

फाँटना–स॰ [हिं॰ फाँट] काढ़ा बनाना

फाँड़*–पुं॰ दे॰ 'फाँड़ा' ।

फाँड़ा–पुं॰ [सं॰ भांड ?] धोती का वह अंश जो कमर पर लपेटकर जाता है । मुहा॰के लिए दे॰'फेंट' ।

फाँदना–अ॰ [सं॰ फणन] [फाँद] उछलना । (कूदना के साथ) स॰ उछलकर किसी चीज को लाँघते उसके उस पार जाना ।

*स॰ [हिं॰ फंदा] १. फंदे में फँ २. बाँधना या बन्द करना ।

फाँस–स्त्री॰ [सं॰ पाश] १. पाश । २. वह फंदा जिसमें पशु-पक्षी फँ हैं । ३. शरीर में चुभा हुआ लकड़ी का लंबा छोटा टुकड़ा ।

फाँसना–स॰ = फँसाना ।

फाँसी–स्त्री॰ [सं॰ पाश] १. फँसने फंदा । पाश । २. रस्सी का वह जिसमें गला फँसाने से दम घुटता आदमी मर जाता है । ३. इस प्रकार घोंटकर दिया जानेवाला प्राण-दंड । (ग्जीक्यूशन)

मुहा॰-फाँसी चढ़ाना = राज्य की ओर

दंड देने के लिए उसके
ता।
दे० 'नथी'।
[अ० फाक़ः] उपवास।
[फा०] खाने-पीने का
भी मस्त रहनेवाला।
[हिं० फागुन] १. फागुन का
लोग एक दूसरे पर रंग डालते
उत्सव के समय गाया जानेवाला

[सं० फाल्गुन] माघ के बाद
पड़नेवाला महीना। फाल्गुन।
[सं० कपाट] बड़ा दरवाजा।
२.।
पुं० [हिं० फाटक + बंद] वह
रात के समय कहीं का फाटक
पहरा देने का काम हो।
दे० 'फटना'।
[सं० स्फाटन] [भाव०
बीच से चीरकर दो भागों में
करना। चीरना। जैसे-
फाड़ना। २. संधि या जोड़
जैसे-मुँह फाड़ना। ३.
पदार्थ में ऐसा विकार उत्पन्न
सार भाग अलग हो जाय।

[फा०] छत में टाँगने के
चारो ओर लगे हुए शीशे
गिलास आदि जिनमें मोम-
हैं।

= फबना।
[अ० फाइदः] १. लाभ।
मलाई। २. अच्छा फल
(औषध आदि का)
[फा०] लाभदायक।

[अ० फारिग़ + खती]
लेख कि अब हमारा
कोई प्राप्य या अधिकार नहीं रह गया।

फारम-पुं० [अं० फॉर्म] १. प्रार्थना, विवरण आदि से सम्बन्ध रखनेवाले पत्रों आदि के वह निश्चित और विहित रूप जिनमें भिन्न भिन्न बातों का उल्लेख करने के लिए अलग अलग स्थान या कोष्ठक बने होते हैं। रूपक। २. इस प्रकार का बना, विशेषतः छपा हुआ कोई कागज। (फॉर्म)

पुं० [अं० फार्म] खेती-बारी की जमीन का वह बड़ा टुकड़ा या खंड जिसमें कुछ विशिष्ट रीतियों से अधिक मात्रा में चीजें बोई जाती हों अथवा पशु आदि पालन या वर्द्धन के लिए रक्खे जाते हों। (फार्म)

फारस-पुं० दे० 'पारस' (देश)।

फारसी-स्त्री० [फा०] फारस देश की भाषा जो संस्कृत परिवार की है।

फार्म-पुं० दे० 'फारम'।

फॉर्म-पुं० दे० 'फारम'।

फाल- पुं० [सं०] लोहे का वह फल जो हल के नीचे लगा रहता है और जिससे जमीन खुदती या जुतती है।

पुं [सं० फलक] पतले दल का कटा हुआ टुकड़ा।

पुं० [सं० प्लव] १. चलने के लिए उठाया हुआ पैर। डग। २. चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक की दूरी।

फालतू-त्रि० [हिं० फाल = टुकड़ा] १. आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। २. व्यर्थ। निकम्मा।

फालूदा-पुं० [फा०] गेहूँ के सत्त से बननेवाला एक प्रकार का पेय पदार्थ।

फाल्गुन-पुं० दे० 'फागुन'।

फावड़ा-पुं० [सं० फाल] मिट्टी खोदने का फरसा। कुदाल।

फासला-पुं० [अ०] दूरी। अन्तर।

फाहा-पुं० [सं० फाल] तेल, अतर, मरहम आदि में तर की हुई रूई या कपड़े

का टुकड़ा ।

फ़ाहिशा–वि०[अ०] छिनाल (स्त्री) ।

फ़िकर–स्त्री० दे० 'फ़िक्र' ।

फ़िकरा–पुं० [अ०] १. वाक्य । २. दमबुत्ता । झाँसा-पट्टी । ३. व्यंग्य । फबती ।

फ़िकैत–पुं० दे० 'फेकैत' ।

फ़िक्र–स्त्री० [अ०] १. चिंता । सोच । २. ध्यान । विचार । ३. उपाय । यत्न ।

फ़िटकार–स्त्री० [हिं० फिट (अनु०)+ कार (प्रत्य०)] धिक्कार । लानत ।

फ़िटकिरी–स्त्री० [सं० स्फटिका] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो प्रायः औषध के काम आता है । (एलम)

फ़िटकी†स्त्री० दे० 'फुटकी' ।

फ़िटन–स्त्री० [अं०] एक प्रकार की बड़ी और खुली घोड़ा-गाड़ी ।

फ़िट्टा–वि० [हिं० फिट] १. जिसपर फिटकार पड़ी हो । २. (अपमानित या लज्जित होने के कारण) श्री-हत ।

फ़ितूर–पुं० दे० 'फतूर' ।

फ़िरंग–पुं० (अं० फ्रांक] १. युरोप का एक प्राचीन देश । २. गरमी या आतशक नामक रोग ।

फ़िरंगी–वि०[हिं०फिरंग]१.फिरंग देश का । २. फिरंग देश में रहनेवाला ।

स्त्री० विलायती तलवार ।

पुं० १. फिरंग देश का निवासी । फ्रांसीसी । २. युरोप या अमेरिका का कोई निवासी । गोरा ।

फ़िरंट–वि० [अं० फ्रंट] विरुद्ध पक्ष में रहनेवाला । विरोधी ।

फ़िर–वि० [हिं० फिरना] १. एक बार हो जाने पर और एक बार । दोबारा । पुनः ।

यौ०–फिर फिर = बार बार ।

२. भविष्य में किसी समय । बाद में । ३. उस दशा में । तब ।

मुहा०–फिर क्या है ? = तब कोई हर्ज की बात नहीं है । तब ठीक है ।

४. इसके अतिरिक्त या सिवा ।

फिरका–पुं० [अ०] १. जाति । २. जत्था । दल । ३. पंथ । संप्रदाय ।

फिरकी–स्त्री० [हिं० फिरना] १. घूमनेवाला काठ का एक गोल खिलौना । फिरहरी । भँभीरी । २. कील के आधार पर घूमनेवाला कोई गोल टुकड़ा या चक्कर । ३. चकई नाम का खिलौना ।

फिरगाना*–वि० दे० 'फिरंगी' ।

फिरता–वि० [हिं० फिरना] [स्त्री० फिरती] वापस किया या लोटाया हुआ ।

फिरना–अ० [हिं० 'फेरना' का अ०] १. पीछे की ओर लौटकर आना । वापस होना । २. चक्कर खाना । घूमना । ३. चलना । टहलना । ४. मरोड़ा या बटा जाना । ५. मुड़ना । घूमना ।

मुहा०–किसी ओर फिरना = प्रवृ होना । **जी फिरना** = चित्त विरक्त होना ।

६. उलटा या विपरीत होना ।

मुहा०–सिर फिरना=बुद्धि भ्रष्ट होना । हर बात उलटी समझ में आना ।

७. मुकरना । ८. प्रचारित या घोषित होना जैसे–डुग्गी फिरना । ९. किसी वस्तु पोता, लगाया या चढ़ाया जाना । जैसे– या रंग फिरना ।

फिरनी–स्त्री० [फा० फीरीनी] एक की आटे की खीर ।

फिराक–पुं० [अ०] १. वियोग । २. चिन्ता । सोच । ३. खोज ।

फिराद†–स्त्री० दे० 'फरियाद' ।

फिराना–स० [हिं० फिरना] १. में प्रवृत्त करना । २. दे० 'फेरना' ।

फिरि*–वि० = फिर ।

फिलहाल–क्रि० वि० [अ०] समय में । इस समय के लिए ।

फिल्म–स्त्री० [अं०] १. फोटो या चित्र उतारने के लिए वह लंबा पट्टी जिसपर जेलाटिन आदि मसाले

२. इसी प्रकार की वह पट्टी जिसपर
सिनेमा के चित्र अंकित होते
चित्र का कोई खेल या प्रदर्शन।
[हिं० फ़िल्म] फ़िल्म संबंधी।

[अनु०] कुछ नहीं। (व्यंग्य)
टाँय फ़िस = बहुत बातें होने
में कुछ फल नहीं।
[अनु० फ़िस] प्रतियोगिता,
में सबसे पिछड़ा हुआ।
-स्त्री० [हिं० फ़िसलना] ऐसी
जिसपर पैर फिसले।
-अ० [सं० प्र + सरण] १. गीली
के कारण पैर आदि रखने पर
स्थान से आगे बढ़ या पीछे हट
२. लोभ से प्रवृत्त होना।
-स्त्री० [फ़ा०] सूची।
[अ०] प्रत्येक। हर एक।
सदी = हर सैकड़े के हिसाब से।

[सं० अपक्व] १. स्वाद, रस
के विचार से हीन या निकृष्ट। २.
शोभा आदि के विचार से हीन

[फ़ा०] कोई वस्तु लपेटने,
आदि के लिए विशेष प्रकार की
लम्बी धज्जी।
-स्त्री० दे० 'फ़िरनी'।
-पुं० [फ़ा०] [वि० फ़ीरोजी]
नीले रंग का एक रत्न।
[फ़ा०] हाथी।
-पुं० [फ़ा०] हाथीवान।
-स्त्री० = पिंडली (पैर की)।
= प्रति शत।
-अ० दे० 'फुकना'।
-पुं० [हिं० फूल + फंदा] डोरी,
के सिरे पर शोभा के लिए बना
आकार का गुच्छा। झब्बा।

फुँदिया†-स्त्री० = फुँदना।

फुंसी-स्त्री० [सं० पनसिका] छोटा फोड़

फुकन-स्त्री० [हिं० फूँकना] १. फूँकने क्रिया या भाव। २. जलन। दाह।

फुकना-अ० [हिं० फूँकना] [प्रे०फुकवा १. फूका या जलाया जाना। २. नष्ट बरबाद होना। (धन)

पुं० १. शरीर का वह अवयव जिसमें रहता है। २. दे० 'फुकनी'।

फुकनी-स्त्री० [हिं० फूँकना] वह जिससे फूँक मारकर आग सुलगाते हैं।

फुट-वि० [सं० स्फुट] १. जोड़े या मैं से एक। २. एकाकी। अकेला। अलग।

पुं० [अं०] लंबाई आदि नापने की इंच की एक नाप।

फुटकर-वि० [सं० स्फुट + कर (प्रत्य १. विषम। फुट। अकेला। २. अल पृथक्। ३. कई प्रकार का। मिला-जु ४. थोड़ा थोड़ा। इकट्ठा नहीं। खुद 'थोक' या 'इकट्ठा' का विपर्याय।

फुटकल-वि० दे० 'फुटकर'।

फुटकी-स्त्री० [सं० फुटक] किसी वस्तु पड़ा हुआ कोई छोटा दाग या दा जैसे–कपड़े की बुनावट में ऊपर नि हुआ गोल सूत।

फुट-मत-पुं० [हिं० फुट + मत] मत-फूट।

फुदकना-अ० [अनु०] चिड़ियों क चिड़ियों की तरह रह-रहकर एक जग दूसरी जगह उछलते हुए चलना।

फुन*-अव्य० [सं० पुनः] पुनः। फिर

फुनगी-स्त्री० [सं० पुलक] पौधे शाखाओं का ऊपरी भाग।

फुनि-अव्य० [सं० पुनः] १. फिर और। २. भी।

फुप्फुस-पुं० [सं०] फेफड़ा।

फुफँदी-स्त्री० दे० 'नीवी'।

फकारना-अ० [अनु०] [भाव० फ़फकार] क्रोध में साँप का फू फू करते हुए ुँह बढ़ाना । फूत्कार करना ।

फू*-स्त्री० दे० 'बूआ' ।

फेरा-वि० [हिं० फूफा] [स्त्री० फुफेरी] फ़ूफा के सम्बन्ध से सम्बद्ध । जैसे-फुफेरा भाई, ़फेरी सास ।

र†-वि० [हिं० फुरना] सत्य । सच्चा । ़व्य० सचमुच । वास्तव में ।

ुरती-स्त्री० [सं० स्फूर्त्ति] चटपट काम रने की शक्ति या भाव । शीघ्रता । जल्दी ।

तीला-वि० [हिं० फुरती] [स्त्री० रतीली] हर काम फुरती से करनेवाला । ज ।

ना*-अ० [सं० स्फुरण] १. सामने ाना । प्रकट होना । २. चमकना । ३. ड़कना । फड़फड़ाना । ४. मुँह से शब्द कलना । ५. पूरा या ठीक उतरना ।

नी दाना-पुं० [हिं० फुरफुर से अनु० रनी + दाना] भुने हुए चिड़वे जिनमें छ मिर्च-मसाला पड़ा हो ।

सत-स्त्री० [अ०] १. काम से खाली ने का समय या भाव । अवकाश । छुट्टी। ीग में होनेवाली कमी ।

हरी-स्त्री० [अनु०] १. चिड़ियों का फड़फड़ाना । फड़फड़ाहट । २. भय, हर्ष ादि के कारण शरीर में होनेवाला रोमांच।

ना*-स० [हिं० फुर] बात सच्ची करके बलाना । कथन पूरा उतारना ।

० दे० 'फुरना' ।

ी-स्त्री० [हिं० फुरफुराना] १. अतर, , दवा आदि में डुबाई हुई वह सींक सके सिरे पर रूई लिपटी हो । २. रोमांच साथ होनेवाली कँपकपी । फुरहरी ।

हा०-फुरेरी लेना = (क)काँपना । थर- ाना । (ख) चिड़ियों का पर फड़फड़ाना ।

ा- क्रि० वि० = सचमुच ।

का-पुं० [हिं० फूलना] १. हलकी, पतली और फूली हुई रोटी । चपाती । २. दे० 'छाला' ।

फुलकारी-स्त्री० [हिं० फूल + फा० कारी = काम] पुरानी चाल का एक प्रकार का दुपट्टा या ओढ़नी जिसपर हाथ से काढ़े हुए फूल और बेल-बूटे बने होते थे।

फुलचुही†-स्त्री० दे० 'फुलसुँघनी' ।

फुलझरी-स्त्री० [हिं० फूल + झड़ना] १. एक प्रकार की छोटी लंबी आतशबाजी। २. झगड़ा लगानेवाली बात ।

फुलरा†-पुं० दे० 'फुँदना' ।

फुलवर-स्त्री० [हिं० फूल] एक प्रकार का रंगीन बूटीदार कपड़ा । गाच ।

फुलवा†-पुं० = फूल (पुष्प) ।

फुलवाई*-स्त्री० = फुलवारी ।

फुलवार*-वि० दे० 'प्रफुल्ल' ।

फुलवारी-स्त्री० [हिं० फूल + वारी] १. फूलों के पौधों का छोटा बाग । पुष्प-वाटिका। उद्यान । बगीचा । २. कागज के बने हुए फूल और पेड़ जो बारात के साथ शोभा के लिए चलते हैं । ३. बाल-बच्चे और परिवार के लोग ।

फुलसुँघनी-स्त्री० [हिं० फूल + सूँघना] एक प्रकार की छोटी चिड़िया ।

फुलहारा-पुं० [स्त्री० फुलहारी] दे० 'माली' ।

फुलाना-स० [हिं० फूलना] फूलने में प्रवृत्त करना । विशेष दे० 'फूलना' ।

मुहा०-मुँह फुलाना = रोष प्रकट करने वाली आकृति बनाना ।

*अ० दे० 'फूलना' ।

फुलायल*-पुं० = फुलेल ।

फुलाव-पुं० दे० 'फुलावट' ।

फुलावट-स्त्री० [हिं० फूलना] फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

फुलिंग*-पुं० = स्फुलिंग ।

फुलिया-स्त्री० [हिं० फूल] फूल के आकार का काँटा या कील ।

फुलेल-पुं० [हिं० फूल + तेल] फूलों से

किया हुआ तेल।
[हिं० फूल + बरी] पीठी
बड़ी।
[भाव० फुल्लता] १. खिला
। विकसित। २. प्रसन्न।
= फुफकारना।
[अनु०] जल्दी टूटने या
जानेवाला।
[अनु०] बहुत ही धीमे
में कुछ कहना।
[हिं० फिसलना] मीठी
सन्तुष्ट या अनुकूल करना।
(-बच्चों को)
[सं० फूत्कार] १. ऊपर
जल के बहुत छोटे टुकड़े,
। २. हल्की वर्षा। झींसी।
[हिं० फुहार] वह उपकरण
दबाव के कारण जल की
छींटे जोर से निकलकर चारो
है।
दे० 'फुहार'।
[अनु० फू फू] १. फूँकने पर
वाली हवा और शब्द।
फूँक = मंत्र-तंत्र का उपचार।
।
निकल जाना=मर जाना।
[हिं० फूँक] मुँह बहुत
जोर से हवा छोड़ना।
फूँककर पैर रखना या
से कोई काम करना।
किसी पर फूँक मारना।
बजाना। ३. जलाना।
देना। धन उड़ाना।
तापना = व्यर्थ खर्च करके
।
[हिं० फूँक] वह प्रक्रिया जिसमें
में नलिका ओषधियाँ भरकर
आदि के स्तन में लगाकर,

उनका सारा दूध बाहर निकाल लेने के लिए फूँकते हैं।

फूँदा*-पुं० १. दे० 'फुँदना'। २. दे० 'नीवी'।

फूट-स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटने की क्रिया या भाव। २. विरोध या वैमनस्य के कारण होनेवाला भेद। ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटन-स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटकर अलग होनेवाला अंश। २. जोड़ों या हड्डियों में होनेवाला दर्द।

फूटना-अ० [सं० स्फुटन] १. कड़ी या ठोस वस्तु का आघात से थोड़ा टूटना। २. ऐसी वस्तु का फटना जिसके अन्दर का भाग पोला अथवा मुलायम चीज से भरा हो। ३. भर जाने के कारण आवरण फाड़कर निकलना। जैसे-फोड़ा फूटना या शरीर में भरा हुआ जहर फूटना।

मुहा०-फूट-फूटकर रोना = बहुत अधिक रोना। विलाप करना।

४. अंकुर, शाखा आदि निकलना। ५. एक पक्ष छोड़कर दूसरे पक्ष में हो जाना। ६. मुँह से शब्द निकलना। (व्यंग्य और तिरस्कार)

मुहा०-मुँह से कुछ फूटना = कुछ कहना या बोलना।

७. व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होना। ८. गुप्त बात या रहस्य प्रकट हो जाना। ९. शरीर के जोड़ों में दर्द होना। *१०. दे० 'फूलना'।

फूत्कार-पुं० [सं०] मुँह से फू फू करते हुए हवा छोड़ने का शब्द। फुफकार।

फूफा-पुं० [अनु०] फूफी या बूआ का पति। पिता का बहनोई।

फूफी-स्त्री० [अनु०] पिता की बहन। बूआ।

फूल-पुं० [सं० फुल्ल] १. पौधों में वह अंग जो गोल या लम्बी पंखड़ियों का बना होता है और जिसमें फल उत्पन्न करने को

शक्ति होती है। पुष्प। कुसुम। सुमन।
मुहा०–फूल-सा = बहुत हलका, कोमल या सुन्दर। **फूल सूँघकर रहना** = बहुत थोड़ा भोजन करना। (व्यंग्य)
२. फूल के आकार के बनाये हुए बेल-बूटे। ३. फूल के आकार का कोई गहना। जैसे–करनफूल। ४. कुष्ट रोग के कारण शरीर पर पड़नेवाले सफेद या लाल दाग। ५. स्त्रियों का मासिक रज। पुष्प। ६. वे हड्डियाँ जो शव जलाने पर बच रहती हैं। ७. राँगे और राँगे के मेल से बननेवाली एक मिश्र धातु।
स्त्री० १. फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव। फुलावट। उदा०–मृगनैनी दृग की फरक, उर उछाह तन-फूल।–बिहारी। २. प्रसन्नता। खुशी। उदा०–फूलि-फूलि तरु फूल बढ़ावत।–केशव।

फूल-गोभी–स्त्री० दे० गोभी २।

फूलदान–पुं० [हिं० फूल + फा० दान (प्रत्य०)] फूलों के गुच्छे रखने का काँच, धातु, मिट्टी आदि का लंबा बरतन। गुलदान।

फूलना–अ० [हिं० फूल] [प्रे० फुलाना, भाव० फुलाव] १. वृक्षों का फूलों से युक्त या पुष्पित होना।
मुहा०–फूलना-फलना = सन्तान से सुखी और धन से सम्पन्न होना।
२. (फूल की) पंखड़ियाँ फैलना। विकसित होना। खिलना। ३. किसी वस्तु के अन्दर का भाग हवा, जल आदि के भर जाने के कारण अधिक फैल या बढ़ जाना अथवा ऊँचा हो जाना। ४. शरीर का कोई अंग सूजना। ५. मोटा या स्थूल होना। ६. घमंड करना। ७. बहुत प्रसन्न होना।
मुहा०–फूले फूले फिरना = बहुत प्रसन्न होकर रहना या घूमना। **फूले अंग न समाना** = बहुत प्रसन्न होना।

फूल-बत्ती–स्त्री० देवताओं की आरती आदि के लिए बनाई जानेवाली रूई की बत्ती जिसके नीचे का भाग खिले हुए फूल की तरह गोलाकार होता है।

फूल शराब–पुं० दे० 'सुरासार'।

फूली–स्त्री० [हिं० फूलना] १. एक जिसमें आँख की पुतली पर कुछ हुआ सफेद दाग पड़ जाता है। २. या कान में पहनने का फूल नाम का गहना।

फूस–पुं० [सं० तुष] सूखी लम्बी घास डंटल आदि। सूखा तृण। खर।

फूहड़–वि० [अनु०] १. जिसे अच्छी काम करने का ढंग न आता हो। बेशऊर २. बे-ढंगा। भद्दा। ३. अश्लील। (कथन या वार्त्तालाप)

फूही–स्त्री० दे० 'फुहार'।

फेंकना–स० [सं० प्रेषण] १ झोंके से हटाना या डालना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। ३. असावधानी या भूल से कोई चीज कहीं छोड़ या देना। ४. तिरस्कारपूर्वक छोड़ना। व्यर्थ धन व्यय करना।

फेंकरा†–वि० [?] १. (सिर) टोपी, पगड़ी आदि न हो। २. जिसपर आवरण न हो।

फेंट–स्त्री० [हिं० पेट या पेटी] १. का घेरा या मंडल। २. धोती का जो कमर पर लपेटा जाता है।
मुहा०–फेंट कसना = कोई काम के लिए कमर कसकर तैयार होना। **फेंट बाँधना** = दे० 'फेंट कसना'। **फेंट या पकड़ना** = फेंट इस प्रकार पकड़ना आदमी भागने न पावे।
३. कमर में बाँधने का कपड़ा। कमरबंद। ४. फेरा। लपेट। घुमाव। स्त्री० [हिं० फेंटना] फेंटने या मिलाने की क्रिया या भाव।

फेंटना–स० [सं० पिष्ट] [भाव० फेंट] १. द्रव पदार्थ में कुछ डालकर अच्छी तरह

घुमा-घुमाकर हिलाना ।
को ऊपर-नीचे या आगे-
तरह मिलाना ।
हिं० फेंट] १. दे० 'फेंट' ।

ना ।
[हिं० फेंकना] (सिर)
हुआ ।
चिल्लाकर या जोर से रोना ।
हिं० फेंकना] १. वह जो फेंकता
। ३. वह जो गदका-फरी
तेलता हो ।
सं०] [वि० फेनिल] पानी के
कुछ गठा या सटा हुआ

दे० 'फेन' ।
[सं०] फेन या झाग से युक्त

[सं० फेनिका] १. सूत के लच्छे
एक मिठाई । २. दे० 'फेन' ।
[सं० फुप्फुस + ड़ा (प्रत्य०)]
अन्दर का वह अवयव जिसके
साँस लेते हैं । फुप्फुस ।
[हिं० फेरना] १. फिरने या
। २. चक्कर । घुमाव ।
नबे का फेर = निन्नानबे
पर सौ रुपये पूरे करने की
धन जमा करने का चसका ।
र खाना = सीधे न जाकर
रास्ते से जाना ।
। रद-बदल । हेर-फेर ।
फेर = (क) उलट-फेर । (ख)
कुछ लेते-देते या खरीदते-
।
का फेर = समय के प्रभाव
, विशेषतः अच्छे से बुरे रूप
परिवर्तन ।
। ५. भ्रम । धोखा. । ६. चाल-
। ७. युक्ति । उपाय । ढंग ।

८. अदला-बदला । परिवर्त्तन । विनिमय । ९. हानि । घाटा । १०. अंतर । फरक । ११. ओर । दिशा ।

*अव्य० फिर । पुनः । एक बार और ।

फेरना–स० [सं० प्रेरण] १. किसी ओर घुमाना । मोड़ना । २. स्वयं या दूसरे से कोई चीज लौटाना । वापस करना । ३. चक्कर देना । घुमाना । ४. इधर-उधर चलाना । जैसे—हाथ फेरना, घोड़ा फेरना । ५. तह चढ़ाना । पोतना ।

मुहा०–(किसी चीज या बात पर) पानी फेरना = नष्ट करना ।

६. उलट-पलट या इधर-उधर करना । जैसे–पान फेरना । ७. सबके सामने बारी बारी से उपस्थित करना । घुमाना ।

फेर-फार–पुं० [हिं० फेर] १. परिवर्त्तन । उलट-फेर । २. घुमाव-फिराव । पेच चक्कर । ३. धूर्त्तता । चालबाजी ।

फेरवट–स्त्री० [हिं० फेरना] १. फिरने का भाव । फेरा । २. धूर्त्तता । चालबाजी ।

फेरा–पुं० [हिं० फेरना] १. चारो ओर घूमने की क्रिया । परिक्रमण । चक्कर । २. लपेटने या चक्कर लगाने में हर बार का घुमाव । लपेट । ३. बार बार आना जाना । ४. लौटकर आना । ५. आवर्त्त । घेरा । मण्डल ।

फेरि*–अव्य० दे० 'फिर' ।

फेरी–स्त्री० [हिं० फेरना] १. दे० 'फेरा' । २. दे० 'फेर' । ३. परिक्रमा । प्रदक्षिणा ।

फेरीदार–पुं० [हिं० फेरी + फा० दार] वह नौकर जो घूम-घूमकर अपने मालिक के लिए कर्जदारों से रुपये वसूल करता है

फेरीवाला–पुं० [हिं० फेरी + वाला] घूम-घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी ।

फेरू†–पुं० [?] शृगाल । गीदड़ (बुन्देल०)

फेल–पुं० [अ०] कर्म्म । काम ।
वि० [अं०] १. जो परीक्षा में पूरा

उतरे। अनुत्तीर्ण। २. जो समय पर ठीक या पूरा काम न दे।

फेहरिस्त–स्त्री० दे० 'सूची'।

फैल*–पुं० [अ० फ़ेल] १. काम। कार्य। २. क्रीड़ा। खेल।

स्त्री० [हिं० फैलना] १. हठ। दुराग्रह। २. वह हठ जो लड़के रोते हुए करते हैं।

फैलना–अ० [सं० प्रसरण] १. कुछ दूर तक आगे बढ़कर और अधिक स्थान घेरना। २. अधिक बड़ा या विस्तृत होना। पसरना। ३. मोटा होना। ४. वृद्धि होना। ५. छितराना। बिखरना। ६. प्रचलित या प्रसिद्ध होना। ७. अधिक पाने के लिए हठ करना। मचलना।

फैलसूफ–वि० [अ० फिलसफ़ऽ] [भाव० फैलसूफी] फजूल-खर्च। अपव्ययी।

फैलाना–स० [हिं० फैलना] १. फैलाने में प्रवृत्त करना। २. विस्तृत करना। पसारना। ३. इधर-उधर बिखेरना। छितराना। ४. बढ़ती करना। बढ़ाना। ५. प्रचलित या प्रसिद्ध करना। प्रकट करना। ६. हिसाब या लेखा लगाकर कोई निष्कर्ष या फल निकालना। गणित करना। जैसे—पड़ता फैलाना, व्याज फैलाना।

फैलाव–पुं० [हिं० फैलाना] विस्तार। प्रसार। (फैले होने का भाव)

फैशन–पुं० [अं०] १. ढंग। तर्ज। २. रीति। प्रथा। ३. बनाव-सिंगार, सजावट आदि का नया, अच्छा या शिष्ट-सम्मत ढंग।

फैसला–पुं० [अ०] निर्णय। निपटारा।

फैसिज्म–पुं० [अं०] फैसिस्ट दल का संघटन और सिद्धान्त।

फैसिस्ट–पुं० [अं०] १. इटली के राष्ट्रवादियों का एक आधुनिक दल जो दूसरे महायुद्ध से पहले बोल्शेविकों का विरोध करने के लिए बना था। २. वह जो सारा अधिकार अपने (अथवा अपने नेता या दल के) ही हाथ में रखना चाहता हो, प्रजा के प्रतिनिधि रखने का विरोधी

फोंक–पुं० [सं० पुंख] तीर का पिछ जिसपर पंख लगाये जाते हैं।

फोक–पुं० दे० 'सीठी'।

स्त्री० [?] वेदना। पीड़ा। व्यथा।

वि० [?] दलालों की परिभाषा में, च (संख्या)

फोकट–वि० [हिं० फोक] निःसार। **पद-फोकट में** = मुफ्त में। यों

फोकला†–पुं० [सं० वल्कल] छिल

फोका–वि० [हिं० फोकला] निस्सार। तत्त्व-हीन।

पुं० दे० 'फोकला'।

फोट–पुं० [सं० स्फोट] १. फूटने की या भाव। २. मुँह से निकलनेवाली मन बात। उद्गार।

फोटक*–वि० दे० 'फोकट'।

फोटा–पुं० १. दे० 'टीका'। २. दे० 'बिं

फोटो (ग्राफ)–पुं० [अं०] १. आधु वैज्ञानिक रीति से छाया के द्वारा उतारा हु चित्र। छाया-चित्र। २. प्रतिबिम्ब।

फोटोग्राफी–स्त्री० [सं०] आधु वैज्ञानिक रीति से फोटो या छाया उतारने का काम।

फोड़ना–स० [सं० स्फोटन] १. फू प्रवृत्त करना। तोड़ना। २. किसी को पक्ष से निकालकर अपनी ओर मि ३. भेद-भाव उत्पन्न करना। ४. (भे खोलना। (रहस्य) प्रकट करना।

फोड़ा–पुं० [सं० स्फोटक] [स्त्री० अ फोड़िया] शरीर में कहीं विष एकत्र हो से उत्पन्न वह शोथ जिसमें रक्त सड़कर म बन जाता है। व्रण।

फोता–पुं० [फा०] १. भूमि-कर। २. रुपये रखने की थैली। ३. अण्डकोष।

फोतेदार–पुं० [फा०] १. खजानची। २. रोकड़िया।

फोरना*–स० = फोड़ना।

१. ढेर। २. झुण्ड।
] सेनापति।
] १. फौजदार
दिव। २. ऐसा
रपीट भी हो और
ते। ३. फौजदारी

-पुं० [फा० + सं०]
से राज्य की ओर से
का विचार होता और

अपराधियों को दंड दिया जाता है। (क्रिमिनल कोर्ट)

फौजी-वि० [फा०] सैनिक।

फौजी कानून-पुं० सैनिक शासन से सम्बन्ध रखनेवाले कानून जो साधारण कानूनों से बहुत कठोर होते हैं और किसी बड़े उपद्रव या सैनिक आक्रमण आदि के समय ही साधारण नागरिकों के लिए प्रयुक्त होते हैं। (मार्शल लॉ)

ब

का तेईसवाँ व्यंजन और
जो ओष्ठ्य है।
क, वंक] १. टेढ़ा।
। २. पराक्रमी। वीर।
हिर की तरह का एक
ा।
र संस्था जो लोगों के
ा करती है और उन्हें
अथवा ऋण के रूप में

ंकाई] दे० 'बंक'।
पन।
।
] १. टेढ़ा। २. उद्दंड।

बंगाल] बंगाल देश
।
की भाषा।
से खुला हुआ वह
या मंजिल का हो।
पर बना हुआ छोटा
] [स्त्री० बंगी]
।

बंगाल-पुं० [सं० बंग] पूर्वी भारत का एक प्रसिद्ध देश।

बंगाली-पुं० [हिं० बंगाल] बंगाल देश का निवासी।
स्त्री० बंगाल की भाषा।
वि० बंगाल का।

बंचक*-पुं० दे० 'वंचक'।

बंचना*-स्त्री० [सं० वंचना] ठगी।
*स० [सं० वंचन] ठगना।
स० [सं० वाचन] पढ़ना।

बंछना*-स० [सं० वांछा] अभिलाषा या इच्छा करना। चाहना।

बंछित*-वि० दे० 'वांछित'।

बंजा-पुं० दे० 'बनिज'।

बंजर-पुं० दे० 'ऊसर'।

बंजारा-पुं० [हिं० बनिज = वाणिज्य] वह जो बैलों, घोड़ों आदि पर माल लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर बेचता हो।

बंझा-वि०, स्त्री० दे० 'बाँझ'।

बँटना-अ० [सं० वितरण] १. हिस्से के अनुसार कुछ मिलना या दिया जाना। २. कुछ हिस्सों में अलग अलग होना।

बँटवाना-स०, हिं० बाँटना' का प्रे०।

बँटवारा-पुं० [हिं० बाँटना] अलग अलग भागों में बाँटने की क्रिया या भाव। विभाजन। (पार्टिशन)

बंटा-पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बंटी] छोटा डब्बा।

बँटाई-स्त्री० [हिं० बाँटना] १. बाँटने का काम या भाव। २. खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से जमीन का मालिक उपज का कुछ अंश लेता है।

बंटाधार-वि० [?] विनष्ट। बरबाद।

बँटाना-स० [हिं० बँटना] १. बँटवाना। २. दूसरे का भार या कष्ट हलका करने के लिए उसका कुछ अंश अपने ऊपर लेना।

बँटावन*-वि० [हिं० बँटाना] बँटानेवाला।

बंडल-पुं० [अं०] पुलिंदा।

बंडा-पुं० [?] अरुई की जाति का एक प्रसिद्ध कन्द।

बंडी-स्त्री० [हिं० बंद] एक प्रकार की कुरती।

बँड़ेरी†-स्त्री० [सं० वरदंड] खपरैल की छाजन में सबसे ऊपर रहनेवाली मोटी लकड़ी या बल्ला।

बंद-पुं० [फा०, मि० सं० बंध] १. वह चीज जिससे कुछ बाँधा जाय। जैसे-लोहे की पत्ती, फीता आदि। २. बाँध। ३. शरीर के अंगों का जोड़। ४. बंधन। ५. कैद।

वि० [फा०] १. चारो ओर से रुका हुआ। २. जिसके मुँह पर कोई आवरण या अवरोध हो। ३. जो खुला न हो। ४. जिसका चलना रुक गया हो। स्थगित। ५. जो किसी तरह की कैद या बन्धन में हो।

बंदगी-स्त्री० [फा०] १. ईश्वर की बंदना। उपासना। २. सलाम। नमस्ते।

बंद गोभी-स्त्री० दे० 'करम-कल्ला'।

बंदन-पुं० [सं० वंदनीय = गोरोचन] १. ईंगुर। सेंदुर। २. रोचन। रोली।

बंदनवार-स्त्री० [सं० बंदनमाला] फूल-
पत्तों की वह झालर जो मंगल
दीवारों में बाँधी जाती है। तोरण

बंदना-स्त्री० दे० 'वंदना'।
अ० [सं० वंदन] प्रणाम क

बंदनी*-वि० दे० 'वंदनीय'।

बंदनी-माल-स्त्री० [सं०
घुटनों तक लटकनेवाली लंबी मा

बंदर-पुं० [सं० वानर] दु
वाला एक प्रसिद्ध स्तनपायी
कपि। मर्कट।
पुं० दे० 'बंदरगाह'।

बंदरगाह-पुं० [फा०]
जहाज ठहरने का स्थान।

बंदर-घुड़की-स्त्री० [हिं०
बंदरों की तरह डराते हुए
ऐसी धमकी जो दिखाने भर को
पूरी न की जाय।

बंदर-बाँट-स्त्री० [हिं०
न्याय के नाम पर ऐसा
जिसमें न तो वादी को ही
प्रतिवादी को ही; सब कुछ
वाला किसी न किसी बहाने
अधिकार में कर ले।

बंदर-भबकी-स्त्री० दे० 'बंदर-घु

बंदवान-पुं० दे० 'बंदीवान'।

बंदसाल†-स्त्री० दे० 'कारागा

बंदा-पुं० [फा० बन्दः] सेव
पुं० [सं० वंदी] वंदी। कैदी।

बंदि-छोर*-पुं० दे० 'बंदी-छोर'

बंदिश-स्त्री० [फा०] १. बँधने
क्रिया या भाव। २. पहले से
प्रबंध। ३ गीत, कविता आदि
योजना।

बंदी-पुं० [सं० वंदिन्] भाट।
स्त्री० [हिं० बेंदी] स्त्रियों
पहनने का एक गहना।
पुं० [सं० वन्दिन्] कैदी।
स्त्री० [सं० बंध] १. बंधन। २.

—राज-रवनि सुमिरे
हिये छुड़ाई।—सूर।
होने की क्रिया या
बंदी। २. स्थिर
क्रिया या भाव। जैसे—

'कारागार'।
'कारागार'।
[फ़ा० बंदी + हिं०
बंधन से छुड़ानेवाला।
कारागार का रक्षक।
एक प्रसिद्ध अस्त्र जिससे
जाती है।
[फ़ा०] बंदूक चलानेवाला

बंदी। २. दे० 'बंदा'।
[फ़ा०] १. प्रबंध। व्य-
आदि नापकर उनका
करने का काम। आबंध।
३. वह सरकारी विभाग
काम रहता है।
] १. बाँधनेवाला तत्व या
२. गाँठ। गिरह। ३. वह
बाँधी जाय। बंद। ४.
रोकने का बाँध। ६. स्त्री-
मुद्रा या आसन। ७.
कोई मुद्रा या आसन। ८.
ऐसी पद्यात्मक रचना
विशेष प्रकार के विन्यास
आकृति या चित्र बन
के अनुसार मान्य कोई
लिखी हुई बातें या शर्तें
लेखक बाध्य होता है।
एक प्रकार का सार्वजनिक
निश्चित समय के अन्दर
कुछ विशिष्ट नियमों के
की प्रतिज्ञा होती है और
बड़ी बड़ी व्यापारिक संस्थाओं द्वारा प्रचलित होता है। (बॉण्ड)

बंधक-पुं० [सं०] १. बाँधनेवाला। २. किसी से कुछ ऋण लेकर उसके बदले कोई चीज उसके पास रखना। गिरों। रेहन। *३. दे० 'बंध' ६.।

बंधक-कर्त्ता-पुं० [सं०] वह जो किसी के पास कोई चीज रेहन या बंधक रखे। (मॉर्टगेजर)

बंधक-पत्र-पुं० [हिं० + सं०] वह पत्र जिसपर कोई चीज बंधक रखने की शर्तें आदि लिखी होती हैं। रेहननामा। (मार्टगेज डीड)

बंधकी-पुं० [हिं० बंधक] वह जिसके पास कोई चीज बंधक या रेहन रखी गई हो। (मॉर्टगेजी)

बंधन-पुं० [सं०] १. बाँधने की क्रिया या भाव। २. वह वस्तु जिससे कोई चीज बाँधी जाय। ३. रुकावट। प्रतिबंध। ४. कारागार। कैदखाना। ५. शरीर के अंगों का संधि-स्थान। जोड़।

बँधना-अ० [सं० बंधन] १. किसी प्रकार के बंधन में आना। बाँधा जाना। २. कैद होना। ३. प्रतिज्ञा, वचन आदि प्रतिबंधों से बद्ध होना। ४. ठीक बैठना। दुरुस्त होना। ५. क्रम निर्धारित होना। पुं० [सं० बंधन] वह जिससे कोई जीज बाँधी जाय। बन्द।

बँधवाना-स० हिं० 'बाँधना' का प्रे०।

बंधान-पुं० [हिं० बँधना] १. लेन-देन, व्यवहार आदि की नियत या बँधी हुई प्रथा। (कस्टम) २. ऐसी प्रथा के अनुसार दिया जानेवाला धन।

बँधाना-स० = बँधवाना।

बंधी-पुं० [सं० बंधिन्] बँधुआ। कैदी। स्त्री० [हिं० बँधना] निश्चित रूप से नित्य या नियमित समय पर बराबर होता रहनेवाला काय; विशेषतः कोई वस्तु कहीं देना। जैसे—दूध या तरकारीवालों की बंधी।

बंधु-पुं० [सं०] [भाव० बन्धुता] १.

भाई। २. सहायक। ३. मित्र। दोस्त। ४. पिंगल में एक प्रकार का छन्द या वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु होते हैं। इसे 'दोधक' भी कहते हैं।

बँधुआ-पुं० [हिं० बँधना] १. कैदी। बंदी। वि० किसी प्रकार के बन्धन में पड़ा हुआ। बँधा हुआ।

बंधुक-पुं० [सं०] गुलदुपहरिया का फूल।

बंधेज-पुं० दे० 'बंधान'।

बंधोदय-पुं० [सं०] वह समय जब किये हुए कर्मों के फल का भोग आरंभ होता है।

बंध्या-वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री या मादा) जिसे संतान न होती हो और न हो सकती हो। बाँझ।

बंध्या-पुत्र-पुं० [सं०] ठीक वैसी ही असंभव बात, जैसी बंध्या को पुत्र होने की है।

बं-पुलिस-पुं० [अनु० बं + अं० प्लेस] नगरों में मल-त्याग के लिए बना हुआ सार्वजनिक स्थान।

बंब-स्त्री० [अनु०] १. युद्ध के समय वीरों का नाद। रण-नाद। २. नगाड़ा। डंका। पुं० दे० 'बम'।

बंबा-पुं० [अनु०] १. दे० 'बम'। २. पानी की कल का वह अगला भाग जिसमें से पानी निकलता है। ३. इस आकार का कोई लंबोतरा गोल पात्र या आधार। जैसे-डाक की चिट्ठियाँ डालने का बंबा।

बंबाना-अ० दे० 'रँभाना'।

बंबू-पुं० [मलाया बैंबू = बाँस] १. चंडू पीने की बाँस की नली। २. लम्बी मोटी नली।

बंबू-काट-पुं० [मलाया बैंबू = बाँस + कार्ट= गाड़ी] ताँगे की तरह की एक प्रकार की सवारी। (पश्चिम)

बँभनाई-स्त्री० [हिं० ब्राह्मण] ब्राह्मणत्व।

बंस-पुं० १. दे० 'वंश'। २. दे०
३. दे० 'बाँसुरी'।

बंसकार*-पुं० = बाँसुरी।

बंस-लोचन-पुं० [सं० वंशलोचन]
का सार भाग जो छोटे सफेद टुकड़ों
में होता और औषध के काम में आ

बँसवाड़ी-स्त्री० [हिं० बाँस+वाड़ी (
एक जगह उगे हुए बाँसों का
या समूह।

बंसी-स्त्री० [सं० वंशी] १.
मुरली। २. मछली फँसाने की काँटा

बंसीधर-पुं० = श्रीकृष्ण।

बँहगी-स्त्री० दे० 'बहँगी'।

बँहुटा-पुं० [हिं० बाँह] बाँह पर
का एक गहना।

बँहोलनी*-स्त्री० [हिं० बाँह] कुर्ते
की आस्तीन।

बउरा*-वि० दे० 'बावला'।

बक-पुं० [सं० वक] बगला। स्त्री० दे० 'बकवाद'।

बकचक-स्त्री० [अनु०] मध्ययुग का
प्रकार का हथियार।

बकतर-पुं० [फा०] [स्त्री० अ
बकतरी] युद्ध के समय पहनने का
प्रकार का कवच। सन्नाह।

बकता(र)*-वि० दे० 'वक्ता'।

बक-ध्यान-पुं० [सं० वक-ध्यान]
की तरह चुपचाप शान्त भाव से दुष्ट
की सिद्धि के लिए बैठे रहना।
साधु भाव।

बकना-स० [सं० वचन] व्यर्थ
बोलना या बातें करना। प्रलाप करना।

बकबक-स्त्री० दे० 'बकवाद'।

बकर-कसाव-पुं० दे० 'कसाई'।

बकरना-स० [हिं० बकना] १. आप
आप कुछ कहना। बड़बड़ाना। २. अपना
दोष आप कह देना।

बकरा-पुं० [सं० वर्कर] [स्त्री० बकरी]

बकैयाँ–क्रि० वि० [सं० वक्र + ऐयाँ (प्रत्य०)] बच्चों का घुटनों के बल चलना।

बकोटना–स० [?] नाखूनों से नोचना।

बकौरी*–स्त्री० दे० 'गुल-बकावली'।

बक्कल–पुं० [सं० वल्कल] १. छिलका। २. छाल।

बक्की–वि० = बकवादी।

बक्स–पुं० दे० 'बकस'।

बखत†–पुं० [अ० वक्त] समय। काल। पुं० [अ० बख्त] भाग्य। किस्मत।

बखतर–पुं० दे० 'बकतर'।

बखतरी–स्त्री० [फा० बकतर] एक प्रकार का छोटा बकतर। (विशेष दे० 'बकतर'।)

बखरा–पुं० [फा० बखरः] भाग। हिस्सा।

बखरी†–स्त्री० [हिं० बखार] कच्चा मकान।

बखान–पुं० [सं० व्याख्यान] १. वर्णन। २. प्रशंसा। बड़ाई।

बखानना–स० [हिं० बखान + ना] १. वर्णन करना। २. प्रशंसा करना। ३. गाली देना। (व्यंग्य)

बखार†–पुं० [सं० प्राकार] [स्त्री० अल्पा० बखारी] वह गोल घेरा या बड़ा पात्र जिसमें किसान अन्न रखते हैं।

बखिया–पुं० [फा०] [क्रि० बखियाना] एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई।

बखील–वि० [अ०] कंजूस। कृपण।

ब-खूबी–क्रि० वि० [फा०] अच्छी तरह।

बखेड़ा–पुं० [पश्तो ?] [वि० बखेड़िया] १. झंझट। २. झगड़ा। ३. कठिनता। मुश्किल।

बखेड़िया–वि० [हिं० बखेड़ा+इया (प्रत्य०)] झगड़ा या बखेड़ा खड़ा करनेवाला।

बखेरना–स० दे० 'बिखराना'।

बख्शना–स० [फा० बख्श] १. प्रदान करना। २. क्षमा करना। माफ करना।

बख्शवाना–स० हिं० 'बख्शना' का प्रे०।

बख्शिश–स्त्री० [फा०] १. दान। २. पुरस्कार। इनाम।

बग-पुं० [सं० वक] १. बगला (पक्षी)। २. जलाशयों के आस-पास रहनेवाला पक्षी। पुं० हिं० 'बाग' (लगाम) का संक्षिप्त रूप। (यौ० में पहले; जैसे—बग-छुट, बग-मेल आदि।)

बगछुट (टुट)-क्रि० वि० [हिं० बाग + छूटना या टूटना] सरपट या बहुत वेग से। (दौड़ना, भागना)

बगड़†-स्त्री० = बगल।

बगदना†-अ० [हिं० बिगड़ना] [स० बगदाना] १. नष्ट या बरबाद होना। २. भ्रम में पड़ना। भूलना।

बगदहा*-वि० [हिं० बगदना + हा प्रत्य०)] [स्त्री० बगदही] चौंकने या भड़कनेवाला।

बग-मेल पुं० [हिं० बाग + मेल] १. दूसरे के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना। २. घुड़-सवारों की पंक्ति। ३. यात्रा, युद्ध आदि में होनेवाला लोगों का संग-साथ। ४. बराबरी। समता।

क्रि० वि० १. घोड़े की सवारी में किसी के साथ बाग मिलाये हुए। २. साथ-साथ।

बगर*-पुं० [सं० प्रघण] १. महल। प्रासाद। २. कोठरी। ३. आँगन। ४. गौएँ-भैंसें बाँधने की जगह। गोठ।

*स्त्री० दे० 'बगल'।

बगरना-अ० [सं० विकिरण] १. चारो ओर फैलना। २. छितराना। बिखरना।

स० दे० 'बगराना'।

बगराना-स० [हिं० बगरना] १. फैलाना। २. छितराना। बिखेरना।

बगरूरा*-पुं० दे० 'बगूला'।

बगल-स्त्री० [फा०] १. कंधे के नीचे का गड्ढा। काँख। २. दाहिने-बाएँ या इधर-उधर का भाग। पार्श्व।

मुहा०-बगल में दबाना या धरना= ले लेना। **बगलें झाँकना** = उत्तर न दे सकने पर इधर-उधर देखना। **बगलें बजाना** = बहुत प्रसन्नता प्रकट करना।

बगल-गंध-स्त्री० [हिं० बगल + गं
एक रोग जिसमें बगल से बहुत दु
निकलती है।

बगल-बंदी-स्त्री० [हिं० बगल + बंद]
प्रकार की कुरती।

बगला-पुं० [सं० वक] [स्त्री० ब
सफेद रंग का एक प्रसिद्ध बड़ा पक्षी।

बगला भगत-पुं० साधु बना
वाला, कपटी।

बगली-वि० [हिं० बगल] १. ब
संबंध रखनेवाला। २. बगल या पास

पद-बगली घूँसा = पास या साथ
कर धोखे से किया जानेवाला वार।

बगलेंदी-स्त्री० [हिं० बगला]
प्रकार का पक्षी।

बगसना*-स० दे० 'बख्शना'।

बगा*-पुं० १. दे० 'बागा'। २.
'बगला'।

बगाना*-स० [हिं० 'बगना का
टहलाना। घुमाना।

*अ० भागना।

बगारना*-स० [सं० विकिरण]
फैलाना। २. छितराना। बिखेरना।

बगावत-स्त्री० [अ०] विद्रोह।

बगिया*-स्त्री० [फा० बाग़] छोटा बा

बगीचा-पुं० [फा० बाग़चः] [
बगीची] वाटिका। छोटा बाग।

बगुचा†-पुं० [फा० बुगचः] १.
२. राशि। ढेर।

बगुरदा-पुं० [?] एक प्रकार का
अस्त्र या हथियार।

बगुला†-पुं० = बगला (पक्षी)।

बगूला-पुं० [हिं० बाउ + गोला]
ही स्थान पर चक्कर काटनेवाली आँ
हवा। बवंडर।

बगेरी-स्त्री० [?] भरद्वाज या
नाम की छोटी चिड़िया।

बगैर-अव्य० [अ०] बिना। विहीन

बचपन–पुं० [हिं० बच्चा] 'बच्चा' होने का भाव या दशा । लड़कपन । बाल्यावस्था ।

बचवैया–पुं० [हिं० बचाना] बचानेवाला ।

बचा*–पुं० दे० 'बच्चा' ।

बचाना–स० [हिं० बचना] १. आपत्ति, कष्ट, प्रभाव आदि से रक्षित रखना । २. कुछ अंश काम में आने या खर्च होने से रोक रखना । ३. पता न लगने देना । ४. अलग या दूर रखना ।

बचाव–पुं० [हिं० बचाना] बचने या बचाने का भाव । रक्षा । त्राण ।

बच्चा–पुं० [सं० वत्स से फा० बच्चः] [स्त्री० बच्ची] १. नवजात शिशु । २. बालक ।

पद–**बच्चों का खेल** = सहज काम ।

बच्छल*–वि० दे० 'वत्सल' ।

बच्छस*–पुं० दे० 'वक्ष' ।

बच्छा–पुं० दे० 'बछड़ा' ।

बच्छोज*–पुं० = वक्षोज (स्तन) ।

बछड़ा–पुं० [सं० वत्सरूप] [स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा ।

बछनाग–पुं [सं० वत्सनाभ] एक प्रकार का विष । सींगिया । तेलिया ।

बछरू–पुं० १. दे० 'बछड़ा' । २. दे० 'बछेड़ा' ।

बछल*–वि० दे० 'वत्सल' ।

बछिया–स्त्री० [हिं० 'बछड़ा' का स्त्री०] गौ का मादा जाति का बच्चा ।

पद–**बछिया के ताऊ**=(बैल के समान) परम मूर्ख और निर्बुद्धि ।

बछेड़ा–पुं० [सं० वत्सतरक] घोड़े का बचा ।

बछेरू*–पुं० १. दे० 'बछड़ा' । २. दे० 'बछेड़ा' ।

बजंत्री–पुं० दे० 'बजनियाँ' ।

बजट–पुं० दे० 'व्याकल्प' ।

बजना–अ० [हिं० बाजा] १. आघात आदि के कारण शब्द होना । २. बाजे आदि से शब्द उत्पन्न होना । ३. शस्त्रों का चलना ।

४. लड़ाई या मार-पीट होना। ५. प्रसिद्ध होना। ६. हठ या जिद करना। अड़ना। (क्व०)

बजनियाँ–उभय० [हिं० बजाना] बाजा बजानेवाला (या वाली)।

बज-मारा*–वि० [हिं० वज्र+मारा] [स्त्री० बजमारी] जिसपर वज्र का आघात या प्रहार हुआ हो। वज्र से मारा हुआ। (गाली)

बजरंग*–वि० [सं० वज्रांग] वज्र के समान दृढ़ अंगोंवाला।

बजरंग बली–पुं० दे० 'हनुमान'।

बजर-बट्टू–पुं० [हिं० वज्र+बट्टा] एक प्रकार के वृक्ष का बीज जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए पहनाते हैं।

बजरा–पुं० [सं० वज्रा] एक प्रकार की छायादार बड़ी नाव।
पुं० दे० 'बाजरा'।

बजरागि*–स्त्री० = बिजली। (वज्र)

बजरी|–स्त्री० [सं० वज्र] १. कंकड़ या पत्थर के बहुत छोटे टुकड़े। २. ओला।

बजवैया†–वि० [हिं० बजाना] बजानेवाला।

बजा–वि० [फा०] उचित। ठीक।

बजागि*–स्त्री० [सं० वज्राग्नि] आकाश से गिरनेवाली बिजली या उससे लगनेवाली आग। उदा०–सूरज, आग, बजागि-दुख, तृष्णा, पाप, बिलाप।–केशव।

बजाज–पुं० [अ० बज़्ज़ाज़] कपड़े बेचनेवाला। कपड़ों का व्यवसायी।

बजाजा–पुं० [फा०] वह बाजार जिसमें बजाजों या कपड़ों की दूकानें हों।

बजाजी–स्त्री० [फा०] बजाज का काम या व्यापार।

बजाना–स० [हिं० बाजा] १. आघात करके या और किसी प्रकार शब्द उत्पन्न करना।
मुहा०–बजाकर = खुल्लमखुल्ला। पहले से कहकर।
यौ०–ठोंकना-बजाना = जाँचने के लिए अच्छी तरह देखना-भालना।
२. आघात पहुँचाना।
स० [फा० बजा] पालन करना। हुकुम बजाना।

बजार*–पुं० दे० 'बाजार'।

बजावनहारा|–पुं० [हिं० बजाना+ (प्रत्य०)] (बाजा) बजानेवाला।

बजावना|–स० = बजाना।

बज्जर*–पुं० दे० 'वज्र'।

बज्र–वि० [सं० वज्र] बहुत कठोर। खूब कड़ा।
पुं० = वज्र।

बझना–अ० [सं० बद्ध] १. बँधना। फँसना। ३. झगड़ना। ४. हठ क

बझाना|*–स० [हिं० 'बझना' का स] किसी को बझने में प्रवृत्त करना। फँसाना

बट–पुं० [सं० वट] १. दे० 'वट'। २. 'बड़ा'। (पकवान) ३. गोला।
पुं० [हिं० बटना] रस्सी की ऐंठन या
पुं० [हिं० बाट] मार्ग। रास्ता।

बटखरा–पुं० [सं० वटक] तौलने के कुछ निश्चित मान का पत्थर, लोहे का टुकड़ा। बाट। (वेट)

बटन–पुं० [अं०] पहनने के कपड़ों में वाली चिपटी घुंडी। बुताम।
स्त्री० [हिं० बटना] १. बटने या भाव। ऐंठन। २. बल।

बटना–स० [सं० वट = बटना] तारों आदि को एक में मिलाकर इस मरोड़ना कि वे मिलकर रस्सी आदि में एक हो जायँ।
स० दे० 'पीसना'।
पुं० दे० 'उबटन'।

बटपरा*– पुं० दे० 'बटपार' (डाकू)

बटपार(मार)–पुं० [हिं० बाट+मा रास्ते में लोगों को लूटनेवाला। डाकू।

बटली, बटलोई–स्त्री० दे० 'देगची'।

बटवार*–पुं० [हिं० बाट+वाल

बटोही–पुं० [हिं० बाट] रास्ता चलनेवाला । पथिक । यात्री ।

बट्टा–पुं० [सं० वार्त्त] १. किसी विशेष कारण से मूल्य में होनेवाली कमी । (डिस्काउन्ट) २. दलाली । दस्तूरी । ३. धातु आदि में मिलावट या उस मिलावट के कारण मूल्य में होनेवाली कमी । ४. टोटा । घाटा । हानि । ५. कलंक । दाग ।

पुं० [सं० वर्त्तन, पं० वटना = बेचकर रुपया लेना] कुछ बेचकर प्राप्त किया हुआ धन । बिक्री के रुपए ।

पद–बिक्री-बट्टा = माल का बिकना । बिक्री । विक्रय । **बोहनी-बट्टा** = पहले-पहले की जानेवाली बिक्री और उससे मिलनेवाला धन ।

पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बट्टी, बटिया] १. कूटने-पीसने आदि का पत्थर । लोढ़ा । २. छोटा गोल डिब्बा ।

बट्टा-खाता–पुं० [हिं० बट्टा + खाता] न वसूल होनेवाली रकमों का लेखा या मद ।

बट्टी–स्त्री० [हिं० बट्टा] १. किसी चीज का गोल छोटा टुकड़ा । २. टिकिया । ३. यशब या अकीक पत्थर का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते हैं । ओपनी ।

बट्टू–पुं० दे० 'बजरबट्टू' ।

बट्टेबाज–वि० [हिं० बट्टा + फा० बाज] [भाव० बट्टेबाजी] १. जादूगर । २. धूर्त्त ।

बड़–स्त्री० [अनु० बड़बड़] बकवाद ।

पुं० [सं० वट] बरगद का पेड़ ।

* वि० [सं० वर = श्रेष्ठ] १. आकार, मान आदि में बड़ा या भारी । २. हिं० 'बड़ा' का संक्षिप्त रूप । जैसे–बड़-भागी = बहुत भाग्यवान ।

बड़क–स्त्री० [हिं० बड़] १. डींग । शेखी । २. बकवाद ।

बड़प्पन–पुं० [हिं० बड़ा] १. 'बड़ा' होने का भाव । २. महत्त्व । बड़ाई ।

बड़बड़-स्त्री० [अनु०] बकवाद ।

बड़बड़ाना-अ० [अनु०] १. बकवाद करना । २. धीरे धीरे और अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना ।

बड़बोल (ा)-वि० [हिं० बड़ा + बोल] [स्त्री० बड़बोली] बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला ।

बड़भाग (ी)-वि० = भाग्यवान ।

बड़रा*-वि० दे० 'बड़ा' ।

बड़वा†-स्त्री० [?] घोड़ी । (बुन्देल०) उदा०-नाहीं लोललोचनी ! बड़वा बड़ेपन की ।

बड़वाग्नि-पुं० [सं०] वह आग जो समुद्र के अन्दर जलती हुई मानी जाती है ।

बड़वानल-पुं० दे० 'बड़वाग्नि' ।

बड़हन-पुं० [जड़हन का अनु० या हिं० बड़ा + हन (धान्यवाचक प्रत्य०)] एक प्रकार का धान; और उसका चावल ।

बड़हार-पुं० [हिं० वर + आहार] विवाह के बाद होनेवाली बरातियों की ज्योनार ।

बड़ा-वि० [सं० वर्द्धन] १. अधिक विस्तार-वाला । लंबा-चौड़ा और विशाल ।

यौ०-बड़ा घर (दे०) ।

२. अधिक अवस्था या उमर का । ३. श्रेष्ठ । ४. महत्त्व का । ५. बढ़कर । अधिक । पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बड़ी] उर्द की पीठी की गोल टिकिया जो तलकर खाई जाती है ।

बड़ाई-स्त्री० [हिं० बड़ा + ई (प्रत्य०)] १. 'बड़ा' होने का भाव । २. बड़प्पन । श्रेष्ठता । ३. महिमा । महत्त्व । ४. प्रशंसा । तारीफ ।

बड़ा घर-पुं० [हिं० बड़ा + घर] १. ईश्वर के रहने का स्थान, स्वर्ग । २. कैदखाना ।

बड़ा दिन-पुं० [हिं० बड़ा + दिन] २५ दिसम्बर जो ईसाइयों का प्रसिद्ध त्योहार है ।

बड़ी-स्त्री० [हिं० बड़ा] दाल, आलू आदि पीसकर सुखाई हुई छोटी टिकिया ।

बड़ी इलायची-स्त्री० एक प्रकार की लायची जो अपेक्षाकृत कुछ बड़ी और होती है ।

बड़ी माता-स्त्री० दे० 'चेचक' ।

बड़ेरा*-वि० दे० 'बड़ा' ।

बड़ौना*-पुं० दे० 'बड़ाई' ।

बढ़-स्त्री० दे० 'बढ़ती' ।

बढ़ई-पुं० [सं० वर्द्धकि] लकड़ी दरवाजे, मेज, चौकियाँ आदि चीजें वाला कारीगर । (कार्पेन्टर)

बढ़ती-स्त्री० [हिं० बढ़ना] १. तौल, मान आदि में होनेवाली अधिक आवश्यकता, उपभोग, व्यय आदि हो चुकने पर भी कुछ बच रहने या भाव । बचत । बचती । (सरप्लस) धन-संपत्ति आदि की वृद्धि या ४. मूल्य की वृद्धि ।

पद-बढ़ती से = साधारणतः जो निश्चित या अंकित हो, उससे कुछ मूल्य पर । (एबव पार)

बढ़ती फसल-स्त्री० [हिं० बढ़ना + फसल] वह फसल जो अभी खेत रही हो, पर अभी पूरी तैयार न हुई (ग्रोइंग क्रॉप)

बढ़ना-अ० [सं० वर्द्धन] १. मान आदि में पहले से अधिक हो गिनती या नाप-तौल में अधिक होना मूल्य, अधिकार, योग्यता, सामर्थ्य में वृद्धि होना । ४. किसी स्थान से जाना या चलना । ५. किसी बात में से अधिक होना । ६. (दूकान आदि बंद होना । ७. (दीपक) बुझना ।

बढ़नी*-स्त्री० = झाड़ू ।
स्त्री० [हिं० बढ़ाना] अग्रिम । पेशगी

बढ़वना*-स० [सं० वर्धन] बढ़ा उदा०-बढ़यौ बसन उमंगी ।-सूर ।

बढ़वार*-स्त्री० [हिं० बढ़ना] बढ़ती वृद्धि ।

हिं० बढ़ना] १. विस्तार,
में अधिक करना। वृद्धि
) २. बढ़ने में प्रवृत्त
व्यापक, विस्तृत, प्रबल
। उदा०–सूरदास करुणा
हुआ मक बढ़ाये।—सूर।
। ५. (दूकान) बंद
) बुझाना।

'बढ़हार'।
हिं० बढ़ना] १. बढ़ने की
। २. नदी आदि के जल का
। ३. मूल्य आदि का बढ़ना,
होना।
[हिं० बढ़ाव] कुछ करने के
मन बढ़ानेवाली बात।
।
[हिं० बढ़ना] उत्तम। अच्छा।
[हिं० बढ़ना] बढ़ानेवाला।
।
दे० 'बढ़ती'।
[हिं०] १. व्यापार या व्यव-
। व्यवसायी। रोजगारी।

[हिं० बात] किसी साधारण-
हुआ बहुत बड़ा या झगड़े-
—बात का बतंगड़ बनाना।
[हिं० बात + कहना] १.
बिताने या मन-बहलाव
बात-चीत। वार्त्तालाप।
अनुज सन, मन सिय-
। २. वाद-विवाद।
। ३. झूठ-मूठ या मन से बनाकर
बात।
[हिं० बात + बढ़ाव]
व्यर्थ की बात पर झगड़ा

[हिं० बात] १. बे-सिर-पैर
।

बतर*-वि० दे० 'बदतर'।

बतरस-पुं० [हिं० बात + रस] [वि० बतरसिया] बात-चीत का आनंद।

बतरान-स्त्री० [हिं० बात] १. बात-चीत। २. बोली।

बतराना*-अ० [हिं० बात] बात-चीत करना।

बतरौहाँ-वि० [हिं० बात] [स्त्री० बतरौहीं] बात-चीत करने का इच्छुक। बोलने के लिए लोलुप।

बतलाना-स० = बताना।

बताना-स० [हिं० बात + ना (प्रत्य०)] १. परिचित कराना। जताना। २. ज्ञान कराना। ३. निर्देश करना। दिखाना। ४. नाच-गाने में अंगों की चेष्टा से भाव प्रकट करना।

बतास-†स्त्री० [सं० वात] वायु। हवा।

बतासना-†अ० [हिं० बतास] हवा चलना या बहना। (पूरब)

बतासा-पुं० [हिं० बतास = हवा] १. चीनी की चाशनी टपकाकर बनाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी गोल मिठाई। २. एक प्रकार की छोटी आतशबाजी।

बतिया-स्त्री० [हिं० बत्ती] बत्ती के आकार का छोटा, कच्चा लंबा फल।

बतियाना†-अ० [हिं० बात] बातें करना।

बतू*-पुं० दे० 'कलाबत्तू'।

बतोला-पुं० [हिं० बात + ओला (प्रत्य०)] १. इधर-उधर की या व्यर्थ की बात-चीत। २. टाल-मटोल की बात-चीत।

ब-तौर-क्रि० वि० [अ०] १. तरह पर। रीति से। २. सदृश। समान।

बतौरी-स्त्री० [सं० वात] शरीर में माँस का उभड़ा हुआ अंश। गुमड़ी।

बत्तक-स्त्री० [अ० बत] हंस की जाति का एक प्रकार का जल-पक्षी।

बत्तिस†-वि० [सं० द्वात्रिंशत] तीस से दो अधिक। तीस और दो।

बत्ती–स्त्री० [सं० वर्त्ति] १. रूई या सूत का बटा हुआ लंबा लच्छा जो दीपक में रखकर जलाते हैं। २. मोमबत्ती। ३. दीपक। ४. पलीता। ५. सलाई के आकार की कोई वस्तु। ६. कपड़े की वह धज्जी जो घाव में मवाद सोखने के लिए रखी जाती है।

बत्तीस–वि० = बत्तिस।

बत्तीसा–पुं० [हिं० बत्तीस] १. बत्तीस मसालों का बना हुआ एक प्रकार का लड्डू। २. एक प्रकार की बड़ी आतशबाजी।

बत्तीसी–स्त्री० [हिं० बत्तीस] १. बत्तिस का समूह। २. मनुष्य के बत्तिस दाँतों का समूह। **मुहा०–बत्तीसी खिलना**=हँस पड़ना।

बथुआ–पुं० [सं० वास्तुक] एक प्रकार का साग।

बद–वि० [फा०] १. बुरा। खराब। २. दुष्ट। नीच।

स्त्री० [सं० वर्ध्म=गिलटी] बाघी नामक रोग।

स्त्री० [सं० वर्त्त] १. पलटा। बदला। २. पक्ष। ३. जोखिम।

पद-बद का = ओर से। जिम्मे का। जैसे–इतना माल हमारी बद का ले लो।

बद-अमली–स्त्री० [फा० बद + अ० अमल] राज्य का कुप्रबंध। अराजकता।

बद-इंतजामी–स्त्री० [अ० + फा०] कुप्रबंध। अराजकता।

बद-करमी*–वि० = बदकार (कुकर्मी)।

बद-कार–वि० [फा०] [भाव० बदकारी] १. कुकर्मी। २. व्यभिचारी।

बद-किस्मत–वि० [फा० + अ०] अभागा।

बद-चलन–वि० [फा०] दुश्चरित्र।

बद-जबान–वि० [फा०] [भाव० बद-जबानी] गाली-गलौज बकनेवाला।

बदजात–वि० [फा० + अ०] १. नीच। लुच्चा। २. दुष्ट। पाजी।

बदतर–वि० [फा०] किसी की अपेक्षा और भी बुरा। निकृष्ट-तर।

बद-दुआ–स्त्री० दे० 'शाप'।

बदन–पुं० [सं० वदन से फा०] शरीर।
मुहा०–बदन टूटना = ज्वर आने
मरने के पहले शरीर के अंगों में तनाव
ऐंठन होना। **बदन तोड़ना** = (
अँगड़ाई लेना। (ख) मरने से पहले
में हाथ-पैर आदि हिलाना-डुलाना
पटकना।

बद-नसीब–वि० [फा० + अ०] अभाग

बदना–स० [सं० वद = कहना] [
बदनी] १. वर्णन करना। कहना। २. म
लेना। ३. नियत करना। ठहराना।
मुहा०–बदा होना = भाग्य में
होना। **बदकर** = (क) जान-बूझकर
हठपूर्वक (कुछ करना)। (ख) हद
कहकर।

४. बाजी या शर्त्त लगाना। ५.
महत्त्व का मानना या समझना।

बदनाम–वि० [फा०] [भाव० बदन
जिसे लोग बुरा कहते हों। कुख्यात।

बदनामी–स्त्री० [फा०] लोक-नि
कुख्याति। अपवाद।

बदनी–स्त्री० [हिं० बदना = कहना]
बहुत बातें करने की क्रिया या भा
वाचालता।

बद-परहेज–वि० [अ० + फा०] [
बद-परहेजी] जो खान-पान, रहन-सह
में परहेज या संयम न करता हो। अ

बद-परहेजी–स्त्री० [अ० + फा०]
पान, रहन-सहन आदि में परहेज या
का अभाव। असंयम।

बदबू–स्त्री० [फा०] दुर्गंध।

बदबूदार–वि० [फा०] जिसमें से
आती हो। दुर्गंध-युक्त।

बद-मस्त–वि० [फा०] [भाव० बदम
नशे में चूर। मस्त।

बद-मस्ती-स्त्री० [फा०] १. बुरी त
से मस्त या मत्त होना। २. इस प्रकार की
अवस्था में होकर किया जानेवाला उपद्रव।

[फ़ा० बद+अ० मआश=
बदमाशी] १. बुरे कामों
वाला। दुर्वृत्त। २. पाजी।
शी।
[हिं० बदमाश] १.
चलन। ३. व्यभिचार।
[१] पुरानी चाल की एक
कार।
= बादल।
[फ़ा०] बुरे रास्ते पर
कुमार्गी।
= बदली। (मेघ)
[हिं०] बेर का वृक्ष या फल।
।
बदी'।
[फ़ा०+अ०] [भाव०
१. जिसका कुछ रोब न हो।
२. भद्दा।
दे० 'बद-चलन'।
[अ० बदल] १. जैसा हो,
प्रकार का हो जाना। परिवर्त्तित
की जगह दूसरा हो जाना।
से दूसरी जगह नियुक्त होना।
हो, उससे भिन्न रूप देना।
। २. एक चीज हटाकर
दूसरी रखना।
बदलना = पहले कुछ
और कहना।
देकर दूसरी लेना।
[हिं० बदलना] १. परस्पर
कुछ देने का व्यवहार।
२. किसी प्रकार की हानि या
पूर्ति के लिए दी हुई या
मिलनेवाली दूसरी वस्तु।
। ३. किसी के व्यवहार के
से होनेवाला वैसा ही
। प्रतीकार।
लेना = किसी के बुराई
करने पर उसके साथ भी वैसी ही बुराई करना। ४. किये हुए काम का फल। नतीजा।

बदली–स्त्री० [हिं० बादल] छाया हुआ बादल। मेघ।

स्त्री० [हिं० बदलना] १. बदले जाने की क्रिया या भाव। २. एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर की जानेवाली नियुक्ति। तबादला। (ट्रान्सफरेन्स)

बदलौवल–स्त्री० [हिं० बदलना] अदल-बदल। विनिमय।

बद-शकल–वि० [फा०] भद्दा। कुरूप।

ब-दस्तूर–क्रि० वि० [फा०] जैसा पहले रहा हो, वैसा ही। परंपरा के अनुसार।

बद-हजमी–स्त्री० [फा०] अजीर्ण। अपच।

बद-हवास–वि० [फा०] [भाव० बद-हवासी] १. जिसके होश ठिकाने न हों। २. उद्विग्न।

बदा–वि० [हिं० बदना] भाग्य में लिखा हुआ।

मुहा०–बदा होना = भाग्य में लिखा होना। अवश्यंभावी होना।

बदान–स्त्री० [हिं० बदना] शर्त्त या बाजी बदे जाने की क्रिया या भाव। (बेटिंग)

बदाबदी–स्त्री० [हिं० बदना (शर्त्त)] १. प्रतिस्पर्द्धा। होड़। २. दे० 'बदान'।

क्रि० वि० दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा करते हुए। कह-बदकर। उदा०–बदाबदी ज्यौं लेत हैं, ए बदरा बदराह।–बिहारी।

बदाम–पुं० दे० 'बादाम'।

बदि*–स्त्री० दे० 'बदला'।

अव्य० १. बदले में। २. लिए। वास्ते।

बदी–स्त्री० [?] चान्द्र मास का कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख। जैसे–जेठ बदी दूज।

स्त्री० [फा०] बुराई। खराबी।

बदूख*–स्त्री० दे० 'बंदूक'।

बदौलत–क्रि० वि० [फा०] (किसी की) कृपा या अनुग्रह के द्वारा।

बद्दर(ल)*–पुं० = बादल।

बद्दू–पुं० [फा० बद = बुरा] अरब में रहनेवाली एक अर्द्ध-सभ्य जाति जो प्रायः लूट-मार करके अपना निर्वाह करती है।

†वि० = बदनाम।

बद्ध–वि० [सं०] [भाव० बद्धता] १. बाँधा या बँधा हुआ। (बाउन्ड) २. संसार के बंधन में पड़ा हुआ। ३. जिसके लिए कोई रुकावट या बंधन हो। (बाउन्ड) ४. निर्धारित।

बद्ध-कोष्ठ–पुं० [सं०] कब्जियत।

बद्ध-परिकर–वि० [सं०] कमर कसे हुए। उद्यत। तैयार।

बद्धांजलि–वि० [सं०] जो हाथ जोड़े हुए हो। कर-बद्ध।

बद्धी–स्त्री० [सं० बद्ध] १. डोरी या बाँधने की कोई चीज। २. गले का गहना।

बधना–स० [सं० वध] वध करना। मार डालना।

पुं० [?] टोंटीदार लोटा। (मुसल०)

बधवा†–पुं० १. दे० 'बधावा'। २. दे० 'बधाई'।

बधाई–स्त्री० [सं० वर्द्धन] १. वृद्धि। बढ़ती। २. मंगल अवसर पर होनेवाला गाना-बजाना। मंगलाचार।

मुहा०–बधाई बजना = (क) शुभ या मांगलिक अवसर पर बधाई का सूचक गाना-बजाना होना। (ख) लोक में निन्दा या बदनामी होना। (व्यंग्य)

३. मंगल-उत्सव। ४. किसी के यहाँ कोई शुभ बात या काम होने और शुभ कामना पर आनंद प्रकट करनेवाली बातें। मुबारकबाद। (काँग्रैचुलेशन)

बधाना–स० [हिं० 'बधना' का प्रे०] बधने या हत्या करने का काम दूसरे से कराना। किसी को बधने में प्रवृत्त करना।

†अ० [हिं० बधिया] बधिया किया जाना।

†स० [सं० वर्द्धन] बढ़ाना।

बधावन–स्त्री० दे० 'बधाई'।

बधावना (रा)–पुं० = बधावा।

बधावा–पुं० [हिं० बधाई] १.

२. वह उपहार जो संबंधियों या मित्रों यहाँ मंगल अवसरों पर गाजे-बाजे के भेजा जाता है।

बधिक–पुं० [सं० वधक] [भाव०
१. बध करनेवाला। हत्यारा। २.
३. ब्याध। बहेलिया।

बधिया–पुं० [हिं० बध = मारना]
जिसका अंडकोश निकाल दिया गया

मुहा०–बधिया बैठना = बहुत
होना।

बधिर–पुं० [सं०] जो कान से
हो। न सुन सकनेवाला। बहरा।

बधूटी–स्त्री० [सं० वधूटी] १. पुत्र
२. सुहागिन स्त्री। ३. नई आई हुई

बधैया*–स्त्री० दे० 'बधाई'।

पुं० १. दे० 'बधिक'। २. दे०

बन–पुं०[सं०वन] १. जंगल। कानन।

पद*–**बन की धातु** = गेरू नामक
मिट्टी।

२. झुंड। समूह। ३. जल।
४. बगीचा। बाग। ५.
उदा०–सनु सूक्यौ, बीतौ बनौ,
उखारि।–बिहारी।

स्त्री० [हिं० बनना] १. सज-धज।
२. बाना। भेस।

बनक*–स्त्री० [हिं० बनना] १.
सज-धज। २. पशु-पक्षियों को
लिए उनके सामने डाला जानेवाला
वि० [सं० वन = जंगल] बन में
होनेवाला। जंगली।

बन-कटा–वि० [हिं० बन] जंगल।

बन-कपास–स्त्री० [सं०] एक प्रकार
कपास।

बन-कर–पुं० [सं० वन + कर]
होनेवाली लकड़ी या फलों पर का कर।

गंभीर होने की झूठी मुद्रा धारण करना।

बननि*–स्त्री० [हिं० बनना] १. बनावट। २. बनाव-सिंगार।

बनपट*–पुं० [सं० वन + पट] छाल आदि से बना हुआ आच्छादन या कपड़ा।

बनबास–पुं० [सं० बनवास] [वि० बनवासी] बन में जाकर बसना या रहना।

बन-मानुष–पुं०[हिं०बन + मानुष] आकृति आदि में मनुष्य से मिलता-जुलता जंगली जंतु। जैसे–गोरिल्ला, चिंपैंजी आदि।

बन-मुरगी–स्त्री० [हिं० बन + फा० मुर्ग़] एक प्रकार की जंगली चिड़िया। कुकुही।

बनर–पुं० [देश०] एक प्रकार का अस्त्र।

बन-रखा–पुं० [हिं० बन + रखना=रक्षा करना] जंगल की रखवाली करनेवाला।

बनरा*–पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनरी] १. वर। दूल्हा। २. विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

†पुं० दे० 'बंदर'।

बनराज–पुं० १. दे० 'बन-राय'। २. दे० 'वृंदावन'।

बन-राय*–पुं० [सं०बनराज] १. सिंह। शेर। २. बहुत बड़ा पेड़।

बनवाना–स० हिं० 'बनाना' का प्रे०।

बनवारी–पुं० [सं० बनमाली] श्रीकृष्ण।

बनसपति–स्त्री० = वनस्पति।

बना–पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनी] दूल्हा। बर।

बनाइ*–क्रि० वि० [हिं० बनाकर = अच्छी तरह] १. अत्यंत। निपट। २. अच्छी तरह। भली भाँति।

बनाउर*–स्त्री० दे० 'बाणावली'।

बनात–स्त्री० [हिं० बाना] एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

बनाना–स० [हिं० बनना] [भाव० बनावट] १. अस्तित्व में लाना। तैयार करना। रचना।

मुहा०–**बनाकर** = भली भाँति।

२. ठीक दशा या रूप में लाना। ३. एक रूप से दूसरे रूप में लाना। ४. किसी पद, मर्यादा या अधिकार का अधिकारी करना। ५. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ६. किसी को इस प्रकार मूर्ख या उपहासास्पद ठहराना कि वह जल्दी समझ न सके।

बनाफर–पुं० [?] राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा।

बना-बनत*–स्त्री० [हिं० बनना + बनत= बनाव] विवाह-संबंध के लिए लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।

ब-नाम–अव्य० [फा०] १. के नाम। नाम पर। २. के विरुद्ध। जैसे–सरकार बनाम रामनन्दन का अर्थ होगा—रामनन्दन पर चलाया हुआ सरकार का मुकदमा। ३. आज-कल 'तुलना में' के अर्थ में प्रचलित (अशुद्ध प्रयोग)।

बनाय*–क्रि० वि० दे० 'बनाइ'।

बनाव–पुं० [हिं० बनाना] १. बनावट। २. सजावट। ३. युक्ति। तदबीर। उपाय।

बनावट–स्त्री० [हिं० बनाना] १. बनने या बनाने का भाव या ढंग। रचना। २. ऊपरी दिखावा। आडंबर। ३. कृत्रिमता।

बनावटी–वि० [हिं० बनावट] नकली।

बनावरि*–स्त्री० दे० 'बाणावली'।

बनासपती–स्त्री० = वनस्पति।

बनि*–वि० [हिं० बनना] सब। कुल।

बनिज–पुं० [सं० वाणिज्य] १. व्यापार। रोजगार। २. क्रय-विक्रय की वस्तु। सौदा।

बनिजना*–अ० = व्यापार करना।

स० वश में करना।

बनिजारा†–पुं० दे० 'बंजारा'।

बनित*–स्त्री० दे० 'भेस'।

बनिया–पुं० [सं० वणिक्] [स्त्री० बनियाइन, बनैनी] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति। व्यापारी। २. आटा, दाल आदि बेचनेवाला। मोदी। ३. वैश्य।

बनियाइन–स्त्री० दे० 'गंजी'।

ब-निस्बत–अव्य० [फा०] तुलना अपेक्षाकृत।

बनी–स्त्री० [हिं० बन] १. बन-स्थ बन का कोई भाग। २. वाटिका। उदा०—महादेव की-सी बनी चित्त —केशव।

स्त्री० [हिं० बना] १. दुलहिन। २.

बनीनी*–स्त्री० दे० 'बनैनी'।

बनीर*–पुं० दे० 'बेंत'।

बनेठी–स्त्री० [हिं० बन + सं० यष्टि बाजों का वह डंडा जिसके सिरों पर लगे रहते हैं।

बनैनी–स्त्री० [हिं० बनिया का स्त्री०] की या वैश्य जाति की स्त्री। वैश्य

बनैला–वि० [हिं० बन] जंगली।

बनौटी–वि० [हिं० बन (कपास)] के रंग का।

स्त्री० एक प्रकार का रंग जो कपास के से मिलता-जुलता है।

बन्ना–पुं० [हिं० बनना ?] [स्त्री० ब १. दूल्हा। वर। २. विवाह के अव पक्ष से गाया जानेवाला एक प्रकार

बन्नी–स्त्री० [हिं० बन्ना] दुलहिन।

बप*–पुं० [सं० वप्र] बाप। पि

बप-तिस्मा–पुं० [अं० बैप्टिज्म] का वह संस्कार जो नव-जात बाल किसी विधर्मी को ईसाई बनाने के होता है।

बपना*–स० [सं० वपन] बीज बोना।

बपु*–पुं० = वपु (शरीर)।

बपुख*–पुं० [सं० वपुस्] शरीर।

बपुरा*–वि० दे० 'बापुरा'।

बपुवार*–पुं० = वपु (शरीर)।

बपौती–स्त्री० [हिं० बाप] बाप से मिल हुई या बाप की सम्पत्ति।

बप्पा†–पुं० दे० 'बाप'।

बम-मार-वि० [हिं० बम + मारना] बम मारनेवाला।

पुं० दे० 'बम-वर्षक'।

बम-वर्षक—पुं० [हिं० बम + सं० वर्षक] एक प्रकार का बड़ा हवाई जहाज जो शत्रुओं पर बड़े बड़े बम फेंकने के काम में आता है। (बॉम्बर)

बमूजिब-क्रि० वि० [फा०] अनुसार।

बय*-स्त्री० [सं० वयस्] अवस्था। वय। उमर।

†पुं० दे० 'बै'। (जुलाहों का औजार)

बयन*-पुं० = वचन।

बयना*-स० [सं० वपन] खेत में बीज बोना। उदा०-अग्रज बीज बई।—सूर।

†-पुं० दे० 'बैना'।

स० [सं० वचन] वर्णन करना। कहना।

बयर*-पुं० = वैर।

बया-पुं० [सं० वयन = बुनना] एक प्रकार का प्रसिद्ध पक्षी।

पुं० [अ० बायः = बेचनेवाला] अनाज तौलने का काम करनेवाला आदमी।

बयाई†-स्त्री० [हिं० बया = अनाज तौलनेवाला] अनाज तौलने का कार्य, भाव या मजदूरी।

बयान-पुं० [फा०] १. वर्णन। कथन। २. विवरण। वृत्तान्त।

मुहा०-बयान देना = अभियुक्त, साक्षी आदि का यह बतलाना कि मेरा वक्तव्य या पक्ष क्या है? **बयान लेना** = अभियुक्त, साक्षी आदि से यह पूछना या जानना कि उसका वक्तव्य या कथन क्या है। (इग्जामिन)

बयाना-पुं० [अ० बै = बिक्री + फा० आनः (प्रत्य०)] मूल्य, पारिश्रमिक आदि का वह अंश जो कोई काम कराने या कोई चीज खरीदने की बात-चीत पक्की करने के समय पहले लिया या दिया जाता है। पेशगी।

†-अ० यों ही या सोते समय आप से आप अस्पष्ट या व्यर्थ बोलना।

बयार–स्त्री॰ [सं॰ वायु] हवा।

बरंगा–पुं॰ [देश॰] छत पाटने की पत्थर की पटिया या लकड़ी का तख्ता।

बर–पुं॰ [सं॰ वट] बरगद। बड़।

पुं॰ [हिं॰ बल] १. रेखा। लकीर। २. दृढ़तापूर्वक कही हुई कोई बात या की हुई प्रतिज्ञा।

मुहा॰–बर खाँचना = (क) किसी बात में बहुत दृढ़ता दिखलाना। (ख) दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा करना। (ग) हठ या जिद करना।

२. किसी व्यापार में वह कोई विशेष पदार्थ जो उसी मेल के पदार्थों से अलग हो। जैसे–कपड़ों में साड़ी का बर, साफे का बर।

*पुं॰ १. दे॰ 'वर' (दूल्हा)। २. दे॰ 'बल' (शक्ति)।

अव्य॰ [फा॰] १. ऊपर। २. बाहर या सामने।

मुहा॰–बर आना या पाना = मुकाबले या प्रतियोगिता में सामने ठहरना।

वि॰ १. श्रेष्ठ। २. पूरा। पूर्ण। (आशा)

*अव्य॰ [सं॰ वरं] वरन्। बल्कि।

बरई†–पुं॰ [निषाद भाषा का बर = पत्ता] पान उपजाने, बनाने और बेचनेवाला अर्थात् तमोली। (दे॰)

बरकंदाज–पुं॰ [अ॰ + फा॰] वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी या तोड़ेदार बंदूक रहती है।

बरकत–स्त्री॰ [अ॰] [वि॰ बरकती] १. किसी चीज की वह यथेष्टता जिससे वह जल्दी कम नहीं होती। बहुतायत। २. लाभ। फायदा। ३. प्रसाद। कृपा।

बरकना†–स॰ [सं॰ वर्जन] मना करना। रोकना।

अ॰ १. संकट आदि से बचने के लिए कहीं से हटना। २. दूर रहना। बचना।

बरखा*–स्त्री॰=वर्षा।

बरखास्त–वि॰ [फा॰] १. जो नौकरी से हटा दिया गया हो। २. विसर्जित। (सभा आदि)

बर-खिलाफ–क्रि॰ वि॰ [फा॰] वि

बरग*–पुं॰ दे॰ १. दे॰ 'वर्ग'। २. 'वरक'।

बरगद–पुं॰ [सं॰ वट, हिं॰ बड़] की तरह का एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़।

बरच्छा–पुं॰ [सं॰ वर + ईक्षा] संबंध स्थिर करने के लिए कन्या होनेवाला वह कृत्य जिसमें तिलक से ठीक वर को देखकर कन्या के लिए निश्चित पक्का कर लिया जाता है।

बरछा–पुं॰ [सं॰ व्रश्चन] [स्त्री॰ भाला।

बरछैत–पुं॰ [हिं॰ बरछा] या रखनेवाला।

बरजना*–अ॰ [सं॰ वर्जन] मना करना। कुछ करने से रोकना।

स॰ १. सामने आने पर भी करना। त्यागना। छोड़ना। २. उपयोग में न लाना। बराना। उदा॰–सवा पहर जो बरजो मोहिं।

बरजनि*–स्त्री॰ दे॰ 'वर्जन'।

बर-जबान–वि॰ [फा॰] जो हो। कंठस्थ।

बर-जोर–वि॰ [हिं॰ बल + फा॰ १. प्रबल। बलवान्। २. क्रि॰ वि॰ जबरदस्ती। बलपूर्वक।

बर-जोरी*–स्त्री॰ [हिं॰ बर-जोर जबरदस्ती। बल-प्रयोग। २. क्रि॰ वि॰ ज़बरदस्ती। बलपूर्वक।

बरत†–स्त्री॰ [सं॰ वर्त्त] रस्सी। डीठि बरत, बाँधी अटनु, चढ़ि डरात।—बिहारी।

पुं॰ दे॰ 'व्रत'।

बरतन–पुं॰ [सं॰वर्त्तन] घाव, शीशे, आदि का वह आधार जिसमें की चीजें रखी जाती हैं। पात्र। भाँड़ा।

बरतना–अ॰ [सं॰ वर्त्तन] १.

बरने (जलने) की क्रिया या भाव। उदा०—औंधाई सीसी, सु लखि, बिरह-बरनि बिललात।—बिहारी।

बरनेत—स्त्री० [सं० वरण] विवाह की एक रीति।

बर-पटे—वि० [फा० बर + हिं० पटना = चुकता होना] (देन आदि) जो चुका दिया गया हो। चुकता किया या पटाया हुआ। पटे।

बरफ—पुं० [फा० बर्फ] १. भाप के अणुओं की वह तह जो वातावरण की ठंढक के कारण धूएँ के रूप में ऊपर से जमीन पर गिरती है। २. मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी जिससे पीने के लिए जल आदि ठंढा करते हैं। ३. कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों का रस। जैसे—मलाई का बरफ। ४. दे० 'ओला'।

बरफानी—वि० [फा०] जिसमें या जिस पर बरफ हो। (देश, पर्वत आदि)

बरफिस्तान—पुं० [फा०] वह स्थान या प्रदेश जहाँ बरफ ही बरफ हो।

बरफी—स्त्री० [फा० बर्फ] एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई।

बरफीला—वि० दे० 'बरफानी'।

बरबंड*—वि० [सं० बलवंत] १. बलवान्। शक्तिशाली। २. उद्दंड। उद्धत। ३. प्रचंड। प्रखर। तेज।

बरबट*—क्रि० वि० दे० 'बर-बस'।

बर-बर—स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बकवाद। बक-बक।

बर-बस—क्रि० वि० [सं० बल + वश] १. बलपूर्वक। जबरदस्ती। २. व्यर्थ।

बरबाद—वि० [फा०] [भाव० बरबादी] नष्ट। चौपट।

बरम*—पुं० = वर्म (कवच)।

बरमन—पुं० = वर्मन या वर्मा।

बरमा—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० बरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का एक औजार।

बरमी-पुं० [हिं० बरमा + ई (प्रत्य०)] बरमा देश का निवासी।
स्त्री० बरमा देश की भाषा।
वि० बरमा देश का। जैसे-बरमी चावल।

बरम्हा-पुं० = ब्रह्मा।

बरम्हाना*-स० [सं० ब्रह्म] [भाव० बरम्हाव] (ब्राह्मण का) किसी को आशीर्वाद देना। उदा०-तोरन तूर न ताल बजैं, बरम्हावत भाट न गावत टाढ़ी।-केशव।

बरराना*-अ० दे० 'बर्राना'।

बरवट-स्त्री० दे० 'तिल्ली' (रोग)।

बरवै-पुं० [देश०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ होती हैं।

बरषा*-स्त्री० = वर्षा।

बरषासन*-पुं० [सं० वर्षाशन] वर्ष भर की भोजन-सामग्री।

बरस-पुं० [सं० वर्ष] वर्ष। साल।
पद-बरस-बियावर। (दे०)

बरस-गाँठ-स्त्री० [हिं० बरस + गाँठ] किसी पूरे वर्ष के बाद आनेवाला जन्म-दिन। साल-गिरह।

बरसना-अ० [सं० वर्षा] १. आकाश से जल गिरना। वर्षा होना। २. वर्षा के जल की तरह ऊपर या चारो ओर से अधिक मात्रा में आना या गिरना। जैसे-फूल या रुपये बरसना।
मुहा०-बरस पड़ना = बहुत क्रुद्ध होकर लगातार उलटी-सीधी बातें सुनाना।
३. अच्छी तरह प्रकट होना।

बरस-बियावर-वि० स्त्री० [हिं० बरस (वर्ष) + बियावर = बच्चा देनेवाली] हर साल बच्चा देनेवाली (गौ आदि)।

बरसाइत†-स्त्री० [सं० वट + सावित्री] जेठ बदी अमावस। (इस दिन स्त्रियाँ वट-सावित्री की पूजा करती हैं।)

बरसात-स्त्री० [सं० वर्षा] सावन-भादो के दिन, जब बहुत पानी बरसता है। वर्षा-काल। वर्षा-ऋतु।

बरसाती-वि० [हिं० बरसात] बरसा होनेवाला। बरसात का।
स्त्री० १. कोठियों आदि की इमा प्रवेश-द्वार पर वह छायादार स्थान सवारियाँ उतारने-चढ़ाने के लिए खड़ी होती हैं। २. एक प्रकार के मो का कपड़ा जिसे पहन लेने, पर शरीर नहीं भींगता।

बरसाना-स० [हिं० 'बरसना' का प्रे० जल की वर्षा करना। २. वर्षा के तरह ऊपर या इधर-उधर से बहुत सा गिराना। ३. दाँया हुआ प्रकार हवा में गिराना जिससे दाने और भूसा अलग हो जाय। दाँये ओसाना।

बरसी-स्त्री० [हिं० बरस = वर्ष, सा (प्रत्य०)] मृतक का वार्षिक श्राद।

बरसीला-वि० = बरसनेवाला।

बरसोला-पुं० [सं० वर्षोपल से वर्षे चीनी या खाँड़ के वे गोले जिनमें इ केसर आदि मिले होते थे और जिन योग शरबत बनाने में होता था।

बरसौंहाँ-वि० [हिं० बरसना + (प्रत्य०)] बरसने या बरसानेवाला।

बरहा-पुं० [हिं० बहा] [अल्पा० १. खेत सींचने की नाली। २.
पुं० [सं० वर्हि] मोर (पक्षी)।

बरही-पुं० [सं० वर्हि] १. मोर। २.
स्त्री० [हिं० बारह] १. सन्तान होने के बारहवें दिन का प्रसूता का और तत्सम्बन्धी उत्सव तथा कृत्य।
* क्रि० वि० [सं० बल] जबरदस्ती।

बरहीपीड़*-पुं० = मोर-मुकुट।

बरहीमुख*-पुं० = देवता।

बरह्माना*-स० दे० 'बरम्हाना'।

बरा-पुं० [सं० वटी] १. पीठी का एक प्रकार का पकवान। बड़ा। २.

बरिबंड-वि० दे० 'बरबंड' ।

बरिया*-वि० दे० 'बलवान्' ।
स्त्री० = बारी (बार या दफा) ।

बरियाइन-स्त्री० [सं० वर = श्रेष्ठ] १. श्रेष्ठता । २. बड़प्पन । महत्व । उदा०—विरद मनौ बरियाइन छाँड़े । —सूर ।

बरियाई†-क्रि० वि० [सं० बलात्] बलपूर्वक । जबरदस्ती ।
स्त्री० [सं० = वर = श्रेष्ठ] १. श्रेष्ठता । २. बड़प्पन । महत्व ।
स्त्री० १.बलवान् होने की अवस्था या भाव । शक्तिमत्ता ।

बरियार†-वि० = बलवान ।

बरिस†-पुं० [सं० वर्ष] वर्ष । साल ।

बरी-स्त्री० [सं०वटी] १.छोटी गोल टिकिया । बटी । २.पीठी के सुखाये हुए छोटे टुकड़े ।
वि० [फा०] छूटा हुआ । मुक्त ।
*वि० दे० 'बली' ।

बरीस*-पुं० = बरस (वर्ष) ।

बरीसना-अ० = बरसना ।

बरु (क)*-अव्य०[हिं०वरन्] १.भले ही । चाहे । २. बल्कि । वरन् ।

बरुनी-स्त्री० [सं० वरण] पलकों के आगे के बाल ।

बरेंड़ा-पुं० [सं० वरंडक] वह लकड़ी जो खपरैल या छाजन में लंबाई के बल लगी रहती है ।

बरे*-क्रि० वि० [सं० बल] १. जोर से । २. बलपूर्वक । जबरदस्ती । ३. ऊँचे स्वर से ।
अव्य०[सं० वर्त्त] १. बदले में । २. वास्ते ।

बरेखी-स्त्री० [देश०] बाँह पर पहनने का एक गहना ।
स्त्री० [हिं०वर + देखना] विवाह संबन्ध स्थिर करने के लिए वर या कन्या को देखना ।

बरेठा-पुं० [स्त्री० बरेठिन] दे० 'धोबी' ।

बरोक-पुं० [हिं० वर + रोकना] १.विवाह-सम्बन्ध निश्चित होने के पहले होनेवाला बरच्छा नामक कृत्य । २.वह धन जो कन्या-

पक्ष से वर-पक्ष को विवाह सम्बन्ध स्थिर करने के समय दिया जाता है।

क्रि० वि० [सं० बलौक'] जबरदस्ती।

*पुं० [सं० बलौकः] सेना ;

बरोठा–पुं० [सं० द्वार] १. ड्योढ़ी।

पद–बरोठे का चार = द्वार-पूजा।

२. बैठक।

बरोह–पुं० [सं० वट + रोह = उगनेवाला] बरगद की डालियों का वह अंश जो जमीन पर आकर जम जाता और नये वृक्ष का रूप धारण करता है। बरगद की जटा।

बरोही*–क्रि० वि० [हिं० वर = बल या शक्ति] १. किसी के बल या आधार पर। सहारे। २. बल पूर्वक। जबर्दस्ती।

बरौनी–स्त्री० दे० 'बरुनी'।

बरौरी*–स्त्री० = बरी (पीठी की)।

बर्णना*–स० = वर्णन करना।

बर्त्तना–स० = बरतना।

बर्दवानी–स्त्री० [बर्दवान (स्थान)] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

बर्न–पुं० दे० 'वर्ण'।

बर्फ–स्त्री० दे० 'बरफ'।

बर्बर–पुं०[सं०] [भाव० बर्बरता] १.आर्यों के अनुसार वर्णाश्रम धर्म न माननेवाला और असभ्य मनुष्य। जंगली आदमी। २. उजड्ड और मूर्ख।

बर्राना–अ० [अनु० बर बर] १. व्यर्थ बकना। २. नींद या बेहोशी में बकना।

बर्रै*–पुं० [सं० वरट] १. भिड़ नाम का उड़नेवाला कीड़ा। २. दे० 'कुसुम'।

बलंद–वि० [फा०] [भाव० बलंदी] ऊँचा।

बल–पुं० [सं०] १. किसी व्यक्ति या वस्तु की वह शक्ति जो दूसरे व्यक्ति या वस्तु को दबाती, वश में रखती या उसका परिचालन करती है। सामर्थ्य। ताकत। जोर। २. भार उठाने की शक्ति। संभार। ३. किसी से प्राप्त होनेवाली सहायता या आश्रय। सहारा। आसरा। भरोसा। ४. राज्य के सशस्त्र सैनिकों आदि का या निकाय जिसकी सहायता से युद्ध, शान्ति-स्थापन आदि कार्य होते हैं। (जैसे–सैनिक बल, आरक्षी बल आदि। सेना। फौज। ६. पार्श्व। अंग। पक्ष

पुं० [सं०वलन] १. ऐंठन। २. फेरा।

मुहा० -बल खाना = टेढ़ा होना।

३. टेढ़ापन। ४. सिकुड़न। शिकन। लचक। झुकाव। ६. कमी। घाट।

मुहा०–बल खाना = दबकर हानि स

७. अन्तर। फरक। ८. ओर। तरफ

बलकन–स्त्री० [हिं० बलकना] बल क्रिया या भाव।

† अव्य० दे० 'बल्कि'।

बलकना–अ० [अनु०] १. उ

२.उमड़ना। ३.आवेश में आना। उम

बलकल*–पुं० दे० 'वल्कल'।

बलकवा†–पुं० = बालक।

बलकारक–वि० [सं०] बल बढ़ानेवा

बलगना–अ० दे० 'बलकना'।

बलगम–पुं० [अ०] कफ। श्लेष्मा

बल-तंत्र–पुं० [सं०] शक्ति या सेना का प्रबन्ध। सैनिक व्यवस्था।

बलदाऊ–पुं० दे० 'बलदेव'।

बलदेव–पुं [सं०] कृष्णचंद्र के बड़े जो रोहिणी के पुत्र थे।

बलना–अ० [सं० वर्हण] जलना।

* स० [हिं० बल] बल डालना।

बल-परीक्षा–स्त्री० [सं०] १. बल, या ताकत के सम्बन्ध में होनेवाली प्रकार की परीक्षा या जाँच। २. विरोधी दलों या वर्गों में होनेवाली जो एक दूसरे को दबाने या प्र से अपनी बातें मनवाने के लिए हो (शो-डाउन)

बलबलाना–अ० [अनु०] [भाव० बलाहट] ऊँट का बोलना।

बलबीर*–पुं० [हिं० बल = बलराम

बलाय–स्त्री० दे० 'बला'। (आपत्ति)

बलाह–पुं० [सं० वोल्लाह] वह घोड़ा जिसकी गरदन और दुम पीली हो। बुलाह।

बलाहक–पुं० [सं०] मेघ। बादल।

बलि–पुं० [सं०] १. राज-कर। २.उपहार। भेंट। ३. पूजा की सामग्री। ४. नैवेद्य। भोग। ५. किसी देवता के नाम पर मारा जानेवाला पशु।

मुहा–बलि चढ़ना = (क) किसी देवता के नाम पर मारा जाना। (ख) किसी के लिए भारी हानि सहना। **बलि जाना** = निछावर होना।

*स्त्री० [सं० बला = छोटी बहन] सहेली। अव्य० एक प्रकार का सम्बोधन। (विशेषतः स्त्रियों में प्रचलित जिसका अर्थ होता है— मैं तुमपर बलि या निछावर जाऊँ।)

बलिक नीति–स्त्री० [सं० बल + नीति] विरोधियों, प्रतियोगियों आदि के मुकाबले में अपना बल, प्रभुत्व, अधिकार आदि बढ़ाने अथवा स्थापित करने की नीति। (पॉवर पॉलिटिक्स)

बलित*–वि० [हिं० बलि] १. जिसका बलिदान हुआ हो। २. मारा हुआ। हत। *वि० दे० 'वलित'।

बलिदान–पुं० [सं०] [वि० बलिदानी] देवी-देवता के उद्देश्य से बकरे आदि पशु काटकर मारना।

बलि-पशु–पुं० [हिं० बलि + पशु] वह पशु जो देवता के लिए चढ़ाया जाय।

बलिया–वि० [हिं० बल] बलवान्।

बलिवैश्वदेव–पुं० [सं०] एक प्रकार का कृत्य जो भूत-यज्ञ के अन्तर्गत किया जाता है।

बलिष्ठ–वि० = बलवान्।

बलिहारना*–स० [हिं० बलि] निछावर करना।

बलिहारी–स्त्री० [हिं० बलि + हारना] प्रेम, श्रद्धा आदि के कारण अपने आपको किसी के अधीन या किसी पर निछावर कर देना।

मुहा०–बलिहारी जाना = निछावर होना।

बली–वि० [सं० बलिन्] बलवान्।
पुं० गैंडा नामक जंगली जानवर।

बलीमुख*–पुं० = बंदर।

बलीयस्–वि० [सं०] [स्त्री० बलीयसी] बहुत अधिक बलवान।

बलु*–अव्य० दे० 'बरु'।

बलुआ–वि० [स्त्री० बलुई] दे० 'रेतीला'।

बलूची–पु० दे० 'बलोच'।

बलैया–स्त्री० [अ० बला] बला। आपत्ति।
मुहा०–(किसी की) बलैया लेना = किसी का रोग या कष्ट अपने उपर लेने की कामना प्रकट करना।

बलोच–पुं० [?] एक जाति जिसके नाम पर उसके देश का नाम बलोचिस्तान पड़ा है।

बलोतरा–पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

बल्कि–अव्य० [फा०] १. अन्यथा। इसके विरुद्ध। प्रत्युत। २. अच्छा यह कि।

बल्देव–पुं० दे० 'बलदेव'।

बल्मीक–पुं० १. दे० 'वल्मीक'। २. दे० 'वाल्मीकि'।

बल्लम–पुं० [सं० बल, हिं० बल्ला] १. सोंटा। डंडा। २. वह सुनहला या रुपहला डंडा जो चोबदार बड़े आदमियों के आगे लेकर चलते हैं। ३. बरछा।

बल्लम-टेर–पुं० दे० 'स्वयंसेवक'।

बल्ला–पुं० [सं० बल] [स्त्री० अल्पा० बल्ली] १. लंबा, मोटा और बड़ा शहतीर या डंडा। २. गेंद खेलने का लकड़ी का डंडा।

बवंडर–पुं० [सं० वायु + मंडल] १. चक्कर की तरह घूमती हुई हवा। चक्रवात। २. आँधी। तूफान।

बवघूरा*–पुं० दे० 'बवंडर'।

बवन*–पुं० दे० 'वमन'।

बवना*–स० दे० 'बोना'।
अ० छितराना। बिखरना।

बवासीर–स्त्री० [अ०] एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से निकलते हैं। अर्श।

बसंत–पुं० = वसंत।
यौ०–उल्लू बसंत = भारी मूर्ख।

बसंती–वि० [हिं० बसंत] १. बसंत का। बसंत ऋतु में होनेवाला। २. रंग का।

बसंदर–पुं० [सं० वैश्वानर] आग।

बस–वि० [फा०] यथेष्ट। भर-पूर।
अव्य० १. पर्याप्त। काफी। २.
पुं० [सं० वश] बल। जोर।
मुहा०–बस चलना = शक्ति मर्थ्य का ठीक तरह से पूरा काम
स्त्री० [अं०] एक प्रकार की लम्बी मोटर गाड़ी जो प्रायः यात्रियों को नगरों में एक स्थान स्थान तक पहुँचाती है।

बसति (ती)*–स्त्री० दे० 'बस्ती'।

बसना–अ० [सं० वसन] १. बिताने के लिए कहीं निवास करना। (व्यक्ति का) २. निवासियों से युक्त आबाद होना। (स्थान का)
मुहा०–घर बसना = घर में बाल-बच्चे होना।
३. आकर रहना। टिकना।
मुहा०–मन में बसना = बहुत के कारण ध्यान में बना रहना।
पुं० वह कपड़ा जिसमें कागज खाते आदि बाँधकर रखे जाते हैं। (कोठीवाल)
अ० [सं० वेशन] बैठना।
अ० [हिं० वास = गन्ध] वास युक्त होना।

बसनि*–स्त्री० [हिं० बसना]

बसनी–स्त्री० [सं० वसन] वह लंबी थैली जो रुपये भरकर कमर में जाती है। हिमयानी।

बसर–पुं० [फा०] गुजर। निर्वाह।

या भाव । निवास ।

बसुधा–स्त्री० = वसुधा (पृथ्वी) ।

बसूला–पुं० [सं० वासि] [स्त्री० अल्पा० बसूली] लकड़ी गढ़ने का बढ़इयों का एक औजार ।

बसेरा–पुं० [हिं० बसना] १. ठहरने या टिकने की जगह । **मुहा०–बसेरा देना** = रहने के लिए स्थान या आश्रय देना । **बसेरा लेना** = विश्राम के लिए ठहरना या रहना । २. वह जगह जहाँ पक्षी रात बिताते हैं । * ३. बसनेवाला । निवासी ।

बसेरी*–वि० [हिं० बसेरा] १. बसेरा लेनेवाला । २. रहनेवाला । निवासी ।

बसैया*–वि० [हिं० बसना] बसनेवाला ।

बसोबास–पुं० [हिं० बास + आवास] रहने की ठीक जगह । निवास-स्थान ।

बसौंधी–स्त्री० दे० 'रबड़ी' ।

बस्ता–पुं० [फा०] १. वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियें आदि बाँधी जाती हैं । बेठन । बसना । २. इस प्रकार बाँधी हुई पुस्तकें या कागज आदि ।

बस्ती–स्त्री० [सं० बसति] १. वह स्थान जहाँ कुछ लोग घर बनाकर रहते हों । आबादी । * २. रक्खी हुई स्त्री । उप-पत्नी । रखेली ।

बस्साना–अ० [सं० वास] सड़ने आदि के कारण दुर्गन्ध से युक्त होना ।

बहँगी–स्त्री० [सं० विहंगिका] बोझ ढोने के लिए वह ढाँचा, जिसमें लकड़ी के दोनों ओर बड़े छींके लटके रहते हैं । काँवर ।

बहकना–अ० [हिं० बहना] १. उचित व्यवहार छोड़कर दूसरी ओर जा पड़ना । पथ-भ्रष्ट होना । २. ठीक रास्ते पर न जाकर भूल से दूसरी ओर जा पड़ना । ३. किसी के धोखे में आ जाना । ४. किसी प्रकार के मद या आवेश में चूर होना । **मुहा०–बहकी बहकी बातें करना** = पागलों की-सी या बढ़ी-चढ़ी बातें करना ।

बहकाना—स० [हिं० बहकना] १. ठीक रास्ते से हटाकर धोखे से दूसरी तरफ ले जाना। २. लक्ष्य से हटाकर इधर-उधर करना। ३. दे० 'बहलाना'।

बहतोल*—स्त्री० [हिं० बहना] पानी बहने की नाली।

बहन—स्त्री० [सं० भगिनी] १. (भाई के लिए उसकी) माता की कन्या। २. चाचा, मामा, बूआ आदि की लड़की।

पुं० [सं० वहन, हिं० बहना] झोंका।

बहना—अ० [सं० वहन] १. द्रव पदार्थ का नीचे स्तर की ओर चलना। प्रवाहित होना। **मुहा०—बहा फिरना या बहे फिरना**= दुर्दशा भोगते हुए भटकना। मारा मारा फिरना। उदा०—कब लगि फिरिहौं दीन बह्यौ।—सूर। **बहती गंगा में हाथ धोना** =किसी अवसर से सहज में लाभ उठाना।

२. पानी की धारा में पड़कर निरन्तर उसके साथ चलना। ३. निरन्तर रस के रूप में निकलना। ४. (हवा) चलना। ५. दुर्दशा-ग्रस्त होकर इधर-उधर घूमना। मारा-मारा फिरना। ६. कुमार्गी या आवारा होना। ७. गर्भ-पात होना। (चौपायों के लिए) ८. (रुपया आदि) नष्ट हो जाना। ९. निर्वाह होना।

स० १. कोई चीज अपने ऊपर लाद या खींचकर ले चलना। ढोना। २. किसी प्रकार का भार अपने ऊपर लेना। वहन करना। उदा०—कबहुँक भार बहौं।—सूर। धारण करना।

बहनापा—पुं० [हिं० बहन + आपा (प्रत्य०)] बहन का जोड़ा या माना हुआ संबंध।

बहनी*—स्त्री० [सं० वह्नि] आग।

†स्त्री० [सं० भगिनी] बहन।

बहनु*—पुं० [सं० वाहन] सवारी।

बहनेली—स्त्री० [हिं० बहन + एली (प्रत्य०)] १. वह जिसके साथ बहन का नाता
जाय। २. बहन की तरह मानी
कोई सम-वयस्क स्त्री। सखी।
(स्त्रियाँ)

बहनोई—पुं० [हिं० बहन] बहन का

बहनोली—स्त्री० दे० 'बहनेली'।

बहबहा†—वि० = बहेतू।

पुं० [हिं० बहना] १. व्यर्थ इधर
मारे फिरने का भाव। आवारापन।
उपद्रव। नटखटी। शरारत।

बहरा—वि० [सं० बधिर] [स्त्री०
जो कान से न सुने या कम सुने।

बहराना—स० [हिं० भुलाना] १.
२. बहकाना। फुसलाना।

पुं० [हिं० बाहर] शहर या
बाहरी भाग।

स० [हिं० बाहर] १. बाहर की
करना या ले जाना। २. अलग

बहरावन—पुं० [हिं० बहराना]
की क्रिया या भाव।

बहरियाना†—स० = बाहर करना।

बहरी—स्त्री० [अ०] एक शिकारी
वि० [हिं० बाहर] बाहर का।
यौ०—बहरी अलंग या ओर।

बहरी अलंग (ओर)—स्त्री० दे०
तरफ'।

बहरी तरफ—स्त्री० [हिं० बाहरी
तरफ] नगर के बाहर का वह
रमणीक स्थान जहाँ लोग प्रायः
के लिए जाते हैं।

बहल—स्त्री० दे० 'बहली'।

बहलना—अ० [हिं० बहलाना] [
बहलाव] १. चिन्ता या दुःख
भूलकर चित्त का दूसरी ओर लगना।
मनोरंजन होना। ३. भुलावे में
बहलाना—स० [हिं० भूलना] १.
उधर की बातें करके चिन्तित या
व्यक्ति का मन दूसरी ओर ले

१. अपने स्थान पर फिर से या पूर्ववत् स्थित। २. भला-चंगा। स्वस्थ।

बहाला–पुं०, वि० दे० 'बहल्ला'।

बहाली–स्त्री० [फा०] १. किसी पद या स्थान पर बहाल या नियुक्त होना। २. फिर से अपने पद या स्थान पर नियुक्त किया जाना। पुनर्नियुक्ति।

†स्त्री० [हिं० बहलाना] बहाना। मिस।

बहाव–पुं० [हिं० बहना] १. बहने की क्रिया या भाव। प्रवाह। २. बहता हुआ पानी। ३. प्रबल वेग या प्रवृत्ति।

बहिक्रम*–पुं० [सं० वयःक्रम] अवस्था। वय। उम्र।

बहिन–स्त्री० = बहन।

बहियाँ–स्त्री० = बाँह।

बहिया†–स्त्री० [हिं० बहना] नदी के बहने की क्रिया, भाव या गति। (फ्लूविअल ऐक्शन) जैसे–इस साल इस नदी की बहिया बहुत बदल गई है।

बहिरंग–वि० [सं०] बाहरी। बाहर का। 'अंतरंग' का विरुद्धार्थक।

बहिर*–वि० दे० 'बहरा'।

बहि-रति*–स्त्री० दे० 'बाह्य-रति'।

बहिर्गत–वि० [सं०] बाहर निकला या आया हुआ।

बहिर्जगत्–पुं० [सं०] बाहरी या दृश्य जगत्।

बहिर्मुख–वि० [सं०] विमुख। विपरीत।

बहिर्रति–स्त्री० दे० 'बाह्य-रति'।

बहिर्लापिका–स्त्री० [सं०] वह पहेली जिसमें उसके उत्तर का शब्द उसकी पद-योजना में नहीं रहता। 'अंतर्लापिका' का विपर्य्याय।

बहिर्वाणिज्य–पुं० [सं०] किसी देश का दूसरे या बाहरी देशों के साथ होनेवाला वाणिज्य या व्यापार। (एक्स्टर्नल ट्रेड)

बहिश्त–पुं० [फा० बिहिश्त] मुसलमानों के अनुसार, स्वर्ग।

बहिष्करण–पुं० = बहिष्कार।

बहिष्कार–पुं० [सं०] [वि० बहिष्कृत] १. बाहर करना। निकालना। २. किसी विषय में किसी से मत-भेद होने पर विरोध या असन्तोष प्रकट करने के लिए तब तक के लिए उससे सब सम्बन्ध छोड़ देना जब तक वह ठीक रास्ते पर न आ जाय। (बॉयकॉट)

बहिष्कृत–वि० [सं०] १. बाहर किया या निकाला हुआ। २. छोड़ा या त्यागा हुआ।

बही–स्त्री० [हिं० बँधी ?] हिसाब-किताब लिखने की (विशेषतः लंबी) पुस्तक। (बुक)

बही-खाता–पुं० [हिं० बही + खाता] वे सब बहियाँ जिनमें लेन देन, क्रय-विक्रय आदि से सम्बन्ध रखनेवाले सब लेखे या हिसाब लिखे जाते हैं।

बहीर–स्त्री० [फा०] १. सेना के साथ साथ चलनेवाले नौकर-चाकर, दूकानदार आदि। २. सेना की सामग्री। ३. दे० 'भीड़'।

* अव्य० दे० 'बाहर'।

बहु–वि० [सं०] बहुत। अनेक।

बहुक–वि० [सं०] १. बहुतों से सम्बन्ध रखनेवाला। २. जिसमें बहुत-से अंग, पदार्थ या व्यक्ति हों।

बहुक-निगम–पुं० [सं०] वह शारीरक जिसमें बहुत से लोग हों या जिसका संबंध बहुत-से लोगों से हो। (कारपोरेशन एग्रिगेट)

बहुज्ञ–वि० [सं०] [भाव० बहुज्ञता] बहुत-सी बातें जाननेवाला। अच्छा जानकार।

बहुत–वि० [सं० बहुतर] १. गिनती में अधिक। अनेक। २. मात्रा या परिमाण में अधिक। ३. यथेष्ट। काफी।

पद–बहुत अच्छा = ठीक है। ऐसा ही होगा। **बहुत कुछ** = यथेष्ट। **बहुत खूब** = बहुत अच्छा।

मुहा०–बहुत करके = (क) संभव है। (ख) बहुधा। प्रायः।

क्रि० वि० यथेष्ट से कहीं अधिक या ज्यादा।

बहुतक*–वि० दे० 'बहुतेरा'।

बहुतायत–स्त्री० [हिं० बहुत] 'बहुत'
भाव। अधिकता। ज्यादती।

बहुतेरा–वि० [हिं० बहुत] [
बहुतेरी] बहुत-सा। अधिक।
क्रि० वि० अनेक प्रकार से।

बहुत्व–पुं० [सं०] 'बहु' का भाव। अ
कता। ज्यादती। बहुतायत।

बहुदर्शी–पुं० [सं० बहुदर्शिन्] [
बहुदर्शिता] जिसने संसार या व्यव
बहुत-सी बातें देखी हों।

बहु-धंधी–वि० [हिं० बहु = बहुत +
जो बहुत-से काम एक साथ अपने
ले लेता हो। बहुत से काम ए
करनेवाला।

बहुधा–क्रि० वि० [सं०] प्रायः। अ

बहु-भाषज्ञ–वि० [सं०] बहुत सी
जाननेवाला। (पालिग्लॉट)

बहुभाषी–वि० [सं० बहुभाषिन्]
बोलनेवाला। बतक्कड़।

बहु-भुज–पुं० [सं०] वह क्षेत्र
बहुत-से भुज या किनारे हों। (पॉलि

बहु-मत–पुं० [सं०] १. बहुत-से
का अलग अलग मत। २. बहुत-से
का एक मत या राय। (मेजॉरिटी)

बहु-मूत्र–पुं० [सं०] बहुत
बार बार पेशाब होने का रोग।

बहु मूल्य–वि० [सं०] जिसका मू
या अधिक हो। कीमती। दामी।

बहु-रंगा–वि० [हिं० बहु + रंग]
जुले रंगों का।

बहु रंगी–वि० [हिं० बहुरंग + ई
बहुत-से रंगोंवाला। २. अनेक
कौतुक दिखानेवाला। ३. बहुरूपिया।

बहुरना†–अ० [सं० व्याघुट, प्रा०
ना (प्रत्य०)] कहीं जाकर वहाँ से
आना। लौटना।

बहुरि*–क्रि० वि० [हिं० बहुरना]

बहेतू-वि० [हिं० बहना] १. मनमाने ढंग से चारो तरफ घूमनेवाला। २. इधर-उधर मारा मारा फिरनेवाला (व्यक्ति)। ३. मुफ्त में या बिना परिश्रम मिलनेवाला (धन या पदार्थ)

बहेरी*-स्त्री० दे० 'बहाना' (मिस, हीला)।

बहेला†-वि० [?] [स्त्री० बहेली] प्रिय। प्यारा।

बहेलिया-पुं० [सं० वध + हेला] पशु-पक्षियों को फँसाने या मारने का काम करनेवाला। चिड़ीमार।

बहोर*-पुं० [हिं० बहुरना] 'बहुरना' का भाव। फेरा। चक्कर।

बहोरना†-स० [हिं० बहुरना] गये हुये को फिर पहले या पुराने स्थान पर ले आना। लौटाना।

बहोरि*-अव्य० [हिं० बहोर] पुनः। फिर।

बाँक-स्त्री० [सं० बंक] १. बाँह पर पहनने का एक गहना। २. पैरों में पहनने का एक गहना। ३. कमान। धनुष। ४. एक प्रकार की छुरी।
*वि०[सं०वंक] १.टेढ़ा। २. बाँका-तिरछा।

बाँकड़ी-स्त्री० [सं० वंक] बादले या कलाबत्तू का एक प्रकार का फीता।

बाँक-डोरी-स्त्री० [हिं० बाँक + डोरी] एक प्रकार का शस्त्र।

बाँकपन-पुं० [हिं०बाँका + पन] १. 'बाँका' होने का भाव। २. छबि। शोभा।

बाँकरा-पुं० [सं० वंक] पुरानी चाल का एक प्रकार का हथियार। बंक।

बाँका-वि० [सं० वंक] १. टेढ़ा। २. सुंदर और बना-ठना। छैला। ३. बहादुर।
यौ०-बाँका-तिरछा = बहुत बना-ठना और सुन्दर।
पुं० १. वह सुन्दर बालक या नवयुवक जो शोभा के लिए खूब सजाकर बरातों आदि में घोड़े पर निकाला जाता है। २. घरकारों का वह औजार जिससे वे टोकरियाँ आदि

बनाने के लिए बाँस छीलते हैं।

बाँकुड़ा*–वि॰ दे॰ 'बाँकुरा'।

बाँकुरा*–वि॰ [हिं॰ बाँका] १. बाँका। टेढ़ा। २.तेज धार का। ३.कुशल। चतुर।

बाँग–स्त्री॰ [फा॰] १. पुकार। चिल्लाहट। २. लोगों को मसजिद में नमाज के समय बुलाने के लिए मुल्ला की पुकार। अजान। ३. मुरगे का सबेरे बोलना।

बाँगड़–पुं॰ [देश॰] हिसार, रोहतक और करनाल तथा इनके आस पास का प्रदेश। हरियाना।

बाँगड़ू–स्त्री॰ [हिं॰ बाँगड़] बाँगड़ प्रदेश की भाषा। हरियानी।

वि॰ उजड्ड। जंगली।

बाँगुर+–पुं॰ [?] १. पाश। बन्धन। २. जाल। उदा॰–तुलसिदास यह बिपति बाँगुरो, तुमहिं सों बनै निबेरे।—तुलसी।

बाँचना*–अ॰ [हिं॰ 'बचना' का पुराना रूप] १. बाकी रहना। बचना। २. संकट आदि से बचना। उदा॰–सुमिरत नाम द्रौपदी बाँची।—सूर।

स॰ = रक्षा करना। बचाना।

+ स॰ [सं॰ वाचन] पाठ करना। पढ़ना। जैसे—चिट्ठी या पुस्तक बाँचना।

बाँछना*–स॰ [सं॰ वांछा] १. इच्छा करना। चाहना। २. चुनना। छाँटना।

बांछा–स्त्री॰ = वांछा।

बांछी*–पुं॰ [सं॰ वांछिन्] अभिलाषा करने या चाहनेवाला।

बाँझ स्त्री॰ [सं॰ बंध्या] [भाव॰ बाँझपन] वह स्त्री या स्त्री-जाति का पशु जिसे संतान होती ही न हो। बंध्या।

बाँट–स्त्री॰ [हिं॰ बाँटना] बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग।

बाँटना–स॰ [सं॰ वितरण] १. किसी चीज के कई भाग करके अलग अलग रखना, लगाना या जमाना। २. हिस्सा या विभाग करके लोगों को देना। वितरण करना।

बाँटा–पुं॰ [हिं॰ बाँटना] १. बाँटने की क्रि
या भाव। २. बँटने पर मिलनेवाला भा
हिस्सा।

मुहा॰–बाँटे पड़ना = हिस्से में आ
३. बाजेवाले, भाँड़ों, सपरदाइयों आदि
परिभाषा में कहीं से मिले हुए पारि
और पुरस्कार का सब लोगों में बाँट
वाला अंश या हिस्सा। क्रि॰ प्र॰–लग

बाँड़ा–वि॰ [देश॰] १. बिना पूँछ क
दुम-कटा। (पशु) २. असहाय। दी

बाँदा–वि॰ [सं॰ वदाक] वृक्षों
शाखाओं पर फैलनेवाली एक वनस्पति।

बाँदी–स्त्री॰ [फा॰ बंदा] लौंडी। दासी

बाँध–पुं॰ [हिं॰ बाँधना] १. बाँधने
क्रिया या भाव। २. शोभा, दिखावे अ
के लिए ऊपर से बाँधी हुई चीज।

मुहा॰–बाँध बाँधना = आडंबर र
३. नदी या जलाशय का जल रोकने के
उसके किनारे बना हुआ मिट्टी, पत्थर
का धुस्स। पुश्ता। बंद। (एन्बैन्कमे
४. वह बन्धन जो किसी बात को रो
या उसके आगे बढ़ने पर नियंत्रण रख
लिए लगाया जाता हो। (बार)

बाँधना–स॰ [सं॰ बंधन] १. चलने
जकड़ने के लिए घेरकर रोकना। २.
कपड़े आदि में लपेटकर उसमें गाँठ
३. पकड़कर बन्द या कैद करना। ४.
निश्चय आदि द्वारा किसी सीमा में रख
पाबंद करना। ५. मंत्र आदि की श
से कोई काम होने से रोकना। ६.प्रेम
में बद्ध करना। ७. क्रम, व्यवस्था
ठीक या नियत करना। ८. नदी या ज
शय का पानी रोकने के लिए बाँध ब
९. चूर्ण आदि को पिंड के रूप में
जैसे–लड्डू या गोली बाँधना। १०.उपक्रम
योजना करना। ११. अस्त्र-शस्त्र
धारण करना।

बाँहें रहती हैं। आस्तीन।

बाँह-बोल–पुं० [हिं० बाँह + बोल=वचन] रक्षा करने या सहायता देने का वचन।

बाँहाँ-जोड़ी–क्रि० वि० [हिं० बाँह+जोड़ना] कंधे के साथ कंधा मिलाकर। साथ-साथ।

बा–पुं० [सं० वा = जल] जल। पानी। स्त्री० [फा० बार] बार। दफा। * स्त्री० दे० 'बाई'। (स्त्रियों का संबोधन)

बाइ*–स्त्री० [सं० वापी] छोटा तालाब। बावली। उदा०–अति अगाधु, अति औथरो, नदी, कूपु, सरु, बाइ।—बिहारी।

बाइगी†–स्त्री० [सं० वार्ता या हिं० बाई = वायु ?] व्यर्थ की बकवाद। उदा०–कौन बाइगी सुनैं, ताहि किन मोंहि बतायौ।—नन्ददास।

बाइबिल–स्त्री० [अं०] ईसाइयों की एक मुख्य और प्रसिद्ध धर्म-पुस्तक।

बाइसिकिल–स्त्री० [अं०] दो पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी जो पैरों से चलाते हैं।

बाई–स्त्री० [सं० वायु] त्रिदोषों में से वात नामक दोष। विशेष दे० 'वात'।

पद–बाई की झोंक = रोग आदि के समय वायु का प्रकोप या वेग जिसमें आदमी अंड-बंड बातें बकता है।

मुहा०–बाई चढ़ना = (क) वायु का प्रकोप होना। (ख) आवेश या क्रोध के मारे पागल होना। **बाई पचना** = अभिमान का आवेश नष्ट हो जाना। घमंड टूटना।

स्त्री० [हिं० बाबा, बाबी] १. स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द। २. वेश्याओं के नाम के साथ लगनेवाला एक शब्द।

स्त्री० [सं० वापी] छोटा तालाब। बावली।

बाउ†–पुं० = वायु।

बाउर†–वि० [सं० वातुल] बावला। पागल।

बाएँ–क्रि० वि० [हिं० बायाँ] बाईं ओर या तरफ।

बाक*–पुं० [सं० वाक्य] बात। वचन।

बाकचाल*–वि० दे० 'व वाल'।

बाकना*–अ० दे० 'बकना'।

बाकल†–पुं० दे० 'वल्कल'।

बाका–स्त्री० दे० 'वाचा'।

बाकी–वि० [अ०] १. जो बच रहा हो। अवशिष्ट। शेष। २. जो हिसाब करने पर निकले या बचा रहे।

स्त्री० १. बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने पर बची हुई संख्या। २. गणित में इस प्रकार घटाने की प्रक्रिया।

अव्य० लेकिन। परन्तु।

बाकीदार–पुं० [अ० + फा०] वह जिसने समय पर अपना देन न चुकाया हो और इसी लिए जिसके जिम्मे कुछ पावना बाकी रह गया हो। वितथी। (डिफॉल्टर)

बाकुल*–पुं० दे० 'वल्कल'।

बाखरि–स्त्री० दे० 'बखरी'।

बाग–पुं० [अ०] १. वह स्थान जहाँ शोभा के लिए फूलों आदि के पेड़-पौधे लगे हों। उद्यान। वाटिका। (गार्डेन) २. वह स्थान जहाँ फलों या इमारती लकड़ी प्राप्त करने के लिए पेड़ लगाये गये हों। (ग्रोव)

स्त्री० [सं० वल्गा] घोड़े की लगाम।

मुहा०–बाग मोड़ना = किसी ओर घुमाना, प्रवृत्त करना या लगाना।

बागडोर–स्त्री० [हिं० बाग + डोर] लगाम।

बागदार–पुं० [अ० बाग + फा० दार] वह जो किसी ऐसे बाग का मालिक हो, जिसके वृक्षों से फल, इमारती लकड़ी या इसी तरह की और चीजें मिलती हों। (ग्रोव होल्डर)

बागना*–अ० [सं० वक = चलना] यों ही चलना-फिरना या टहलना।

† अ० [सं० वाक्] बोलना।

बागबान–पुं० [फा०] [भाव० बागबानी] बगीचे में पेड़-पौधे लगाने और उनकी देख-रेख करनेवाला। माली।

बागबानी–स्त्री० [फा०] बगीचों में पौधे लगाने और उनकी देख-रेख करने विद्या या कला। (गार्डेनिंग)

बागल*–पुं० दे० 'बगला'।

बागा–पुं० [देश०] अंगे की तरह एक पुराना पहनावा। जामा।

बागी–पुं० [अ०] वह जो किसी के विद्रोह करे। विद्रोही।

बागीचा–पुं० [फा० बागचः] छोटा

बागुर (गुल)*–पुं० [?] पशु को फँसाने का जाल। फंदा।

बाघंबर–पुं० [सं० व्याघ्राम्बर] खाल जो ओढ़ने-बिछाने के काम आ

बाघ–पुं० [सं० व्याघ्र] शेर नामक

बाघी–स्त्री० [देश०] एक प्रकार जो गर्मी या आतश के रोगियों की सन्धि में होता है।

बाच*–वि० [सं० वाच्य] १. वर्णन के योग्य। अच्छा। २. सुन्दर।

बाचना‡–अ० [हिं० बचना] बचना

स० बचाना।

बाचा*–स्त्री० दे० 'वाचा'।

बाचा-बंध*–वि० [सं० वाचा + बद्ध] कोई वचन दिया हो। प्रतिज्ञा बद्ध।

बाछा–पुं० [सं० वत्स, प्रा० बच्छ गौ का बछड़ा। २. बालक। लड़का

बाज–पुं० [अ० बाज़] १. एक बड़ी शिकारी चिड़िया। २. तीर लगा हुआ पर।

प्रत्य० [फा०] एक प्रत्यय जो अंत में लगकर रखनेवाले, व्यसनी, या कर्त्ता आदि का अर्थ देता है। बहानेबाज, नशेबाज।

वि० [फा०] वंचित। रहित।

मुहा०–बाज आना = (क) कर वंचित या रहित होना। जैसे– नफे से-बाज आये। (ख) दूर रहना। **रखना** = रोकना। मना करना।

बाजार उतरना या मंदा होना = किसी चीज का भाव या दाम घटना। २. वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय, तिथि, वार या अवसर पर दूकानें लगती हों। हाट। पैंठ।

बाजारी-वि० [फा०] १. बाजार संबंधी। बाजार का। २. ऐसा साधारण, जैसा बाजार में हर जगह मिलता हो। मामूली। ३. बाजार में रहने या बैठनेवाला। जैसे—बाजारी औरत।

बाजारू-वि० दे० 'बाजारी'

बाजि*-पुं० [सं० वाजिन्] १. घोड़ा। २. तीर। ३. चिड़िया।
वि० गमन करने या चलनेवाला।

बाजी-स्त्री० [फा० बाज़ी] १. ऐसी शर्त्त जिसमें हार-जीत होने पर कुछ धन लिया या दिया जाय। शर्त्त। बदान।
मुहा०-बाजी मारना = किसी बात में जीतना। **बाजी ले जाना** = प्रतियोगिता में आगे बढ़ जाना या सफल होना। २. आदि से अंत तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें हार-जीत हो या दाँव लगा हो।
†पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा।

बाजीगर-पुं० [फा०] १. जादूगर। २. कसरत के खेल दिखानेवाला। नट।

बाजीगरी-स्त्री० [फा०] बाजीगर का काम या खेल-तमाशा।

बाजु*-पुं० [फा० बाजू] १. भुजा। बाँह। २. बाजूबंद। (गहना)

बाजूबंद-पुं० [फा०] बाँह पर पहनने का एक गहना। भुजबंद। बाजू।

बाजूबीर*-पुं० दे० 'बाजूबंद'।

बाझ*-अव्य० [फा०] बगैर। बिना।

बाझन*-स्त्री० [हिं० बझना = फँसना] १. बझने या फँसने की क्रिया या भाव। २. उलझन। पेंच। ३. बखेड़ा। झंझट।

बाझना*-अ० दे० 'बझना'।

बाट-पुं० [सं० वाट] मार्ग। रास्ता।

मुहा०-बाट करना* = नया रास्ता खोलना या निकालना। मार्ग बनाना। **बाट जोहना या देखना** = प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। **(किसी के) बाट पड़ना** = पीछे पड़ना। तंग करने के लिए किसी के काम में बाधक होना। **बाट पड़ना** = डाका पड़ना। उदा०—बाट परइ मोरि नाउ उड़ाई।—तुलसी। **बाट पारना** = डाका डालना।

पुं० [सं० वटक] १. चीजें तौलने का वटखरा। (वेट) २. बट्टा।

बाटकी*—स्त्री० दे० 'बटलोई'।

बाटना†-स० [हिं० बट्टा] पीसना।
स० दे० 'बटना'।

बाटिका—स्त्री० [सं०] छोटा बाग। बगीचा।

बाटी—स्त्री० [सं० बटी] १. बड़ी गोली। पिंडी। २. उपलों पर सेंक कर बनाई जानेवाली एक प्रकार की गोल रोटी।
स्त्री० दे० 'कटोरी'।

बाड़*—स्त्री० दे० 'बाढ़'।

बाड़व—पुं० दे० 'बड़वानल'।

बाड़ा—पुं० [सं० वाट] १. चारो ओर से घिरा हुआ बड़ा मैदान। पशु-शाला।

बाड़ी—स्त्री० [सं० वारी] बाटिका।

बाढ़—स्त्री० [हिं० बढ़ना] १. बढ़ने की क्रिया या भाव। बढ़ाव। वृद्धि। २. अधिक पानी बरसने के कारण नदी या तालाब के जल का अपनी नियत या साधारण सीमा से बढ़कर इधर-उधर फैलना। जल-प्लावन। सैलाब। (फ्लड) ३. किसी चीज, बात या काम में होनेवाली बहुत अधिकता। प्रचुरता। भर-मार। जैसे—आज-कल समाचार-पत्रों की बाढ़ आ गई है। ४. बंदूक या तोप का लगातार छूटना।
मुहा०-बाढ़ दगना = बन्दूकों या तोपों में से गोली या गोलों का लगातार छूटना या उनके छूटने का खाली शब्द होना।
५. रक्षा आदि के लिए मार्ग में खड़ी की जानेवाली किसी प्रकार की रुकावट। परि
(बेरियर)
मुहा०—बाढ़ बँधना = काँटेदार झाड़ि
या ईंट, मिट्टी आदि से आने-जाने का मा
बन्द करना।
६. एक प्रकार का गहना।
स्त्री० [सं० वार, हिं० बारी] तल
छुरी आदि शस्त्रों की धार।

बाढ़ना*—अ० = बढ़ना।

बाढ़ि (ढ़ी)*—स्त्री० दे० 'बाढ़'।

बाढ़ीवान*—वि० [हिं० बाढ़] शस्त्रों
पर बाढ़ या सान रखनेवाला।

बाण—पुं० [सं०] १. तीर। शर। २.
की संख्या।

बाणिज्य—पुं० [सं० वाणिज्य] व्यव
रोजगार। सौदागरी। व्यापार।

बात—स्त्री० [सं० वार्त्ता] १. कहा
सार्थक वाक्य। कथन। वचन। वार्
मुहा०-(कोई) बात उठाना =
छेड़ना। बात-चीत शुरू करना। (कि
की) बात उठाना = (क) कि
कठोर बचन सहना। (ख) किसी का
या बात न मानना। **बात कहते** =
थोड़े समय में। तुरंत। झट। **बात**
काटना = (क) किसी के बोलते सम
में बोल उठना। (ख) किसी बात का
या खंडन करना। **बात की बात** में
बहुत थोड़े समय में। झट। तुरंत।
खाली जाना = प्रार्थना या कथन
मान्य न होना। **बात टालना** = (
सुनकर भी ध्यान न देना। (ख) इध
मानना। **बात न पूछना** = कुछ
आदर न करना। **(किसी की)**
पर जाना = (क) बात पर ध्यान दे
(ख) कहने पर भरोसा करना।
पूछना = (क) पता रखना। खबर ले
(ख) आदर करना। **बात बढ़ना** =
साधारण बात-चीत का बढ़कर विवा

करना। **बात या**
=इधर-उधर की झूठी बातें
उठना, **चलना या**
या चर्चा छिड़ना। **बात**
काम बनना। प्रयोजन सिद्ध
होना। **बात बात**
अवसर पर। हर समय।
बतंगड़ = साधारण-सी
बढ़ाकर या झगड़े-बखेड़े
रूप।
या प्रस्तुत अवस्था।
संदेश। सँदेसा। ४. वार्त्ता-
। ५. कुछ निश्चय करने के
की चर्चा। ६. फँसाने या
बात।
की) बातों में आना =
से धोखा खाना।
।
धनी, पक्का या पूरा =
बात का पालन करनेवाला।
अपनी) बात रखना = (क)
। (ख) अपनी बात पर अड़ा
हारना = वचन का पूरा न
की) बात रखना = (क)
बात मान लेना। (ख) दूसरे
की पूर्ति में सहायक होना।
। एतबार। ९. मान-
। इज्जत।
बात खोना = प्रतिष्ठा
बिगाड़ना।
। नसीहत। ११. रहस्य।
या प्रशंसा का विषय।
कथन। विलक्षण उक्ति।
। तात्पर्य। आशय। १५.
। १६. कथन का सार
। १७. कोई काम करने का
या उपाय।
।

बात-चीत–स्त्री० [हिं० बात+(चीत)चिन्तन] दो या कई मनुष्यों में होनेवाला कथोपकथन। वार्त्ता।

बाती†–स्त्री० दे० 'बत्ती'।

बातुल–वि० [सं० वातुल] पागल।

बातूनिया (नी)–वि० [हिं० बात + ऊनी (प्रत्य०)]बहुत या व्यर्थ की बातें करनेवाला। बकवादी।

बाथ†–पुं० [?] गोद। अंक। क्रोड़।

बाद–अव्य० [अ०] उपरांत। पीछे।

वि० १. अलग हटाया या छोड़ा हुआ। २.दस्तूरी, छूट आदि के रूप में दाम में से कटा हुआ (धन)। (लेस) जैसे–बाद छूट, पचीस रुपये। ३. अतिरिक्त। सिवा।

पुं० [सं० वाद] १. वाद-विवाद। तर्क-वितर्क।

मुहा०–बाद मेलना*=वाद-विवाद करना २. हुज्जत करना। तकरार करना।

मुहा०–बाद मेलना = हुज्जत या झगड़े की बात पैदा करना।

२. शर्त्त। बाजी

मुहा०–बाद मेलना = शर्त्त लगाना। बाजी बदना।

*पुं० [सं० वात] वायु। हवा।

*अव्य० [सं० वाद] व्यर्थ। बे-फायदा।

*पुं० दे० 'वाद'।

बादना†–अ० [सं० वाद + ना (प्रत्य०)] १. बकवाद करना। २. हुज्जत करना। झगड़ना। ३. ललकारना।

बादर†–पुं० दे० 'बादल'।

वि० [?] प्रसन्न। खुश।

बादरिया†–स्त्री० दे० 'बदली'। (मेघ)

बादल–पुं० [सं० वारिद, हिं० बादर] पृथ्वी पर के जल से निकली हुई वह भाप जो घनी होकर आकाश में फैल जाती है और जिससे पानी बरसता है। मेघ। घन।

मुहा०–बादल उठना, उमड़ना, घिरना या चढ़ना = बादलों का किसी

ओर से समूह के रूप में आना। **बादल गरजना** = मेघों की रगड़ से आकाश में घोर शब्द होना। **बादल में चकती लगाना** = बहुत ही कठिन या प्रायः असम्भव-सा काम कर दिखलाना। **बादल छँटना** = मेघों का इधर-उधर हट या छितरा जाना।

बादला–पुं० [?] एक प्रकार का सुनहला या रुपहला चिपटा चमकीला तार।

बादशाह–पुं० [फा०] [भाव० बादशाहत, वि० बादशाही] १. बड़ा राजा। शासक। २. किसी विषय या कार्य में सबसे श्रेष्ठ पुरुष। ३. मनमाने काम करनेवाला।

बादशाही–वि० [फा०] १. बादशाह-सम्बन्धी। बादशाह का। २. बादशाहों का-सा। जैसे = बादशाही ठाठ।

स्त्री० १. बादशाह का राज्य। साम्राज्य। २. बादशाह या बादशाहों का शासन-काल।

बाद-हवाई–वि० [फा० बाद + अ० हवा] बिना सिर-पैर का। ऊट-पटाँग।

बादाम–पुं० [फा०] एक वृक्ष जिसके प्रसिद्ध फल मेवों में गिने जाते हैं।

बादामी–वि० [फा० बादाम + ई (प्रत्य०)] १. बादाम के छिलके के रंग का। हलका पीला। २. बादाम के आकार का।

बादि*–अव्य० [सं० वादि] व्यर्थ। फजूल।

बादित*–वि० [सं० वादन] बजाया हुआ।

बादिहिं*–क्रि० वि० [सं० वाद = व्यर्थ] बिना किसी सदुपयोग के। व्यर्थ ही। उदा०–जनम तौ बादिहिं गयौ सिराइ।—सूर।

बादी–वि० [सं० वाद से फा०] १. वायु विकार-संबंधी। २. शरीर में वायु का विकार उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला।

स्त्री० शरीर में वायु का प्रकोप।

* पुं० [सं० वादी] १. वाद या झगड़ा करनेवाला। २. शत्रु। वैरी। दुश्मन।

ादीगर*–पुं० दे० 'बाजीगर'।

ादुर–पुं० [देश०] चमगादड़।

बाध–पुं० [सं०] १. अड़चन। २. साहित्य में किसी कथन में पाई जाने वह असंगति जो उसकी शब्दावली अर्थ या आशय में तर्क-सिद्ध सम्ब अभाव के कारण आती है। जैसे– इस कथन में मुख्य अर्थ का बाध है। उन्नति, प्रगति आदि के मार्ग में खड़ी जानेवाली वह बाधा या रुकावट, जि करने के लिए विशिष्ट कार्य-दक्षता या दिखानी पड़ती है। (बार, उक्त सभी में) जैसे–कौशल-बाध। (एफिशिएन्सी ४. कठिनता। दिक्कत। ५. पीड़ा।

†पुं० [सं० बद्ध] खाट बुनने की की रस्सी। बान।

बाधक–पुं० [सं०] [स्त्री० बाधि १. रुकावट डालनेवाला। २. कष्टदा

बाधन–पुं० [सं०] [वि० बाधित, १. बाधा या रुकावट डालना। २. कष्ट

बाधना*–स० [सं० बाधन] मार्ग में बाधा या रुकावट डालना।

बाधा–स्त्री० [सं० वि० बाधक, बाधित, १. वह बात जिससे कोई काम रुके। रुकावट। अड़चन (ऑब्स्ट्रक्शन) भूत-प्रेत आदि के कारण शारीरिक कष्ट

बाधित–वि० [सं०] १. जो रो दबाया गया हो। २. जिसके रुकावट हो। ३. जो किसी प्रकार की बंधेज आदि के द्वारा परिमित या सीमित गया हो। (बार्ड) जैसे–अवधि-बाधित ४. जो किसी प्रकार (जैसे–भूत-प्रेत की बाधा से ग्रस्त हो। ५. दे० 'बाध'।

बाध्य–वि० [सं०] [भाव० बाध्यता] १. रोका या दबाया जानेवाला हो। किसी बात से विवश या मजबूर हो या किया गया हो। (कम्पेल्ड) २. विधि, नियम, आज्ञा आदि के द्वारा बँधा हो या कुछ करने के लिए विवश हो। (बाउन्ड)

बाध्यता–स्त्री० [सं०] किसी को बाध्य

रेशमी डोरा जिससे कपड़े सीते व पतंग उड़ाते हैं।

स० [सं० व्यापन] १. सिकुड़नेवाली वस्तु का (अपना) मुँह या छेद फैलाना। जैसे–मुँह बाना। २. बालों में कंघी करना।

बानावरी*–स्त्री० [हिं० बान = तीर] बाण या तीर चलाने की कला या विद्या।

बानि*–स्त्री० १. दे० 'बानी'। २. दे० 'बान'।

बानिक*–उभय० दे० 'बानक'।

बानिज†–पुं० = वाणिज्य।

बानिनि†–स्त्री० [हिं० बनियाँ] बनिया जाति की स्त्री। बनियाइन।

बानिया–पुं० = बनिया।

बानी–स्त्री० [सं० वाणी] १. मुँह से निकलनेवाला सार्थक शब्द या बात। वचन। २. मनौती। मन्नत। ३. सरस्वती। ४. साधु-महात्मा का उपदेश। जैसे–दादूदयाल की बानी, कबीर की बानी।

स्त्री० [सं० वाण] बाना नामक हथियार।

*स्त्री० [सं० वर्ण] १. चमक। आभा। कान्ति। २. प्रकार। तरह। उदा०–शिक्षा द्विप कह्यौ बरणि, छप्पय बारह बानि।–केशव।

पुं० दे० 'बनिया'।

स्त्री० दे० 'वाणिज्य'।

बानीर*–पुं० दे० 'बेंत'।

बानैत–पुं० [हिं० बाण या बाना = बनेठी] १. पटा या बाना फेरनेवाला। २. तीर चलानेवाला। ३. योद्धा सैनिक।

पुं० [हिं० बाना] किसी प्रकार का भेस या बाना धारण करनेवाला।

बानो–स्त्री० [फा०] भले घर की स्त्री का वाचक शब्द या संबोधन महिला। जैसे–जमीला बानो।

बाप–पुं० [सं० वाप = बीज बोनेवाला] पिता। जनक।

यौ०–**बाप-दादा** = पूर्वज। पूर्व-पुरुष।

बाप-माँ = पालन और रक्षण करनेवाला।

बापुरा–वि० [सं० बर्बर = तुच्छ] [स्त्री० बापुरी] बेचारा। दीन-हीन।

बापू–पुं० १. दे० 'बाप'। २. दे० 'बाबू'।

बाफ़ता–पुं० [फ़ा०वाफ़्तः] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

बाबत–अव्य० [अ०] १. सम्बन्ध में। २. विषय में।

बाबा–पुं० [तु०] १. पिता। २. पिता का पिता। दादा। ३. साधु-संन्यासियों या बूढ़ों के लिए आदर-सूचक शब्द। ४. लड़कों के लिए प्यार का सम्बोधन।

बाबी*–स्त्री० [हिं० बाबा = साधु] १. साधु स्त्री। २. लड़कियों के लिए प्यार का सम्बोधन।

बाबुल–पुं० [हिं०बाबू] १.पिता। २.बाबू।

बाबू–पुं० [हिं० बाबा] १. बड़े आदमियों, शिक्षितों, भले आदमियों और बड़ों के लिए आदर-सूचक शब्द। २. पिता के लिए सम्बोधन।

बाभन–पुं०१.दे०'ब्राह्मण'।२.दे०'भूमिहार'।

बाम*–वि० दे० 'वाम'।

स्त्री० [सं० वामा] औरत। स्त्री।

बाय*–स्त्री० [सं० वायु] १.हवा। २.बाई।

स्त्री० दे० 'बावली' (जल की)।

बायक*–पुं० [सं० वाचक] १. कहने या बतलानेवाला। २. पढ़नेवाला। ३. दूत।

बॉयकाट–पुं० [अं०] बहिष्कार।

बायन*–पुं० [सं० वायन] १. वह मिठाई आदि जो मंगल अवसरों पर इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजी जाती है। २. उपहार।

पुं० [अ० बयाना] बयाना। पेशगी।

मुहा०–बायन देना = छेड़-छाड़ करना।

बायब*–पुं० = वायव्य (कोण)।

बायबी–वि० [सं० वायवीय] १. बाहरी। २. अपरिचित। ३.नया आया हुआ। अजनबी।

बायला–वि० [हिं० बाय = बात + ला (प्रत्य०)] १. बात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला। २. जिसे वायु का प्रको

पुं० दे० 'बायबी'।

बायस–पुं० [सं० वायस] कौआ।

बायाँ–वि० [सं० वाम] [स्त्री०

१. शरीर के उस भाग का, जो

पूरब की तरफ़ मुँह करके खड़े

उत्तर की ओर हो। 'दहिना' का

मुहा०–बायाँ देना = (क)

निकल जाना। बचा जाना। (ख) छो

२. उलटा। विपरीत। ३. अहित,

या हानि करनेवाला। विरोधी या श

पुं० तबले के साथ बाएँ हाथ से

जानेवाला वाद्य। डुग्गी।

बायें–वि० दे० 'बाएँ'।

बारंबार–क्रि० वि० = बार बार।

बार–पुं० [सं० वार] १. द्वार। द

२. आश्रय-स्थान। ठौर-ठिकाना।

सभा। दरबार।

स्त्री० [सं०] १. काल। सम

देर। विलम्ब। ३. दफ़ा। मरतबा।

मुहा०–बार बार = रह रहकर।

फिर फिर।

पुं० [फ़ा०, मि० सं० भार] बोझ।

स्त्री० दे० 'बाढ़' और 'बारी'।

†पुं० १. दे० 'बाल'। २. दे०

३. दे० 'वार'।

†वि० १. दे० 'बाल'। २. दे०

बारक*–क्रि० वि० [हिं० बार =

एक] एक बार। एक दफ़ा। उदा

कहियो कृपालु ! तुलसिदास मेरो।–

स्त्री० दे० 'बैरक'।

बारगह (गाह)–स्त्री० [फ़ा०

१. ड्योढ़ी। २. डेरा। खेमा। ३.

ऐश्वर्य।

बारजा–पुं० [हिं० बार = द्वार] १.

२. बरामदा। ३. कोठा।

बारता*–स्त्री० दे० 'वार्ता'।

बार-तिय*–स्त्री० = वेश्या।

बारह-मासी–वि० [हिं० बारह + मास] १. सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला। सदा-बहार (वृक्ष)। २. बारहो महीने होनेवाला।

बारहसिंगा–पुं० [हिं० बारह + सींग] एक प्रकार का बड़ा हिरन।

बारहाँ–वि० [?] बहादुर। वीर।

बारहा–क्रि० वि० [फा० बी] कई बार।

बारा*–पुं० [सं० बाल] [स्त्री० बारी] १. बालक। बच्चा। २. पुत्र। बेटा।
वि० थोड़ी अवस्था का। कम उम्रवाला।

बारात–स्त्री० = बरात।

बारानसी*–स्त्री० = बाराणसी (काशी)।

बारानी–वि० [फा०] बरसाती। वर्षा का।
स्त्री० वह भूमि जिसमें केवल वर्षा के जल से फ़सल होती हो।

बाराह–पुं० = बराह।

बारि*–स्त्री० = बारी।

बारिक–स्त्री० दे० 'बैरक'।

बारिगर*–पुं दे० 'बाढ़ीवान'।

बारिगह*–स्त्री० दे० 'बारगह'।

बारिज*–पुं० [सं० वारिज] कमल।

बारिधर–पुं० [सं० वारिधर] बादल।

बारिश–स्त्री० [फा०] १. वर्षा। वृष्टि। २. वर्षा ऋतु। बरसात।

बारी–स्त्री० [सं० अवार] १. किनारा। तट। २. छोर पर का भाग। हाशिया। ३. चारो ओर बना हुआ घेरा। बाड़ा। ४. बरतन का ऊपरी घेरा। ओंठ। ५. हथियार की धार। बाढ़।
स्त्री० [सं० वाट (उद्यान) से बाटी] १. बाग। बगीचा। २. बागवान। माली। उदा०–बारी, बारी आपनी सींचि सुहृदता-वारि-बिहारी। ३. एक जाति जो दोने, पत्तल आदि बनाने का काम करती है। ४. खेत या बाग की क्यारी। ५. घर। मकान। ६. खिड़की। झरोखा। ७. बन्दरगाह।
स्त्री० [हिं० बार] आगे-पीछे के क्रम से

आनेवाला अवसर या मौका । पारी ।

मुहा०–बारी बँधना = आगे-पीछे का क्रम नियत होना । **बारी बारी से** = क्रम से एक के पीछे एक ।

स्त्री० [हिं० बार (बाल) = छोटा] १. छोटी लड़की । बालिका । २. युवती ।

†स्त्री० दे० 'बाली' ।

पुं० दोने, पत्तल आदि बनानेवाली एक जाति ।

बारीक–वि० [फा०] [भाव बारीकी] १. महीन । पतला । २. बहुत छोटा । सूक्ष्म । ३. जिसमें कला की निपुणता और सूक्ष्मता प्रकट हो । ४. गंभीर । गूढ़ ।

बारीकी–स्त्री० [फा०] १. बारीक या पतले होने का भाव । पतलापन । २. भाव, विचार आदि की गहनता या सूक्ष्मता । जैसे–आभी आपने इस बातकी बारीकी नहीं समझी ।

बारुणी*–स्त्री० = वारुणी ।

बारूद–स्त्री० [तु० बारूत] एक प्रसिद्ध विस्फोटक चूर्ण जो आग लगने से भड़क उठता है और जिससे तोप-बंदूक चलती हैं । दारू ।

यौ०–गोली-बारूद = युद्ध की सामग्री ।

बारूदखाना–पुं० [हिं०बारूद + फा०खाना] वह स्थान जहाँ गोला-बारूद रहती है ।

बारे–क्रि० वि० [फा०] अंत को (या में) ।

बारे में–अव्य० [फा० बारः + हिं० में] विषय में । संबंध में ।

बारोठा–पुं० दे० 'बरोठा' ।

बाल–पुं० [सं०] [स्त्री० बाला] १. बालक । लड़का । २. ना-समझ । अनजान । ३. हाथी ।

*स्त्री० दे० 'बाला' (युवती) ।

वि० १. जो सयाना न हुआ हो । २. जो पूरी बाढ़ को न पहुँचा हो । ३. जो अभी निकला हो । जैसे–बाल-सूर्य ।

पुं० [सं०] सूत की तरह की वह पतली लंबी वस्तु जो जंतुओं के चमड़े निकली रहती है । केश ।

मुहा०–बाल की खाल निकाल बहुत ही छोटा, व्यर्थ या तुच्छ तर्क व्यर्थ का दोष निकालना । **बाल बाँका न होना** = नाम को भी हानि न पहुँचना । (किसी काम **बाल न पकाना** = (कोई काम करते) बुड्ढे हो जाना । बहुत अनुभवी होना । **बाल बाल बचा** संकट आदि से इस प्रकार बचना थोड़ी कसर रह जाय ।

स्त्री० [?] १. जौ, गेहूँ आदि के वह अगला भाग जिसपर दाने २. दे० 'भुट्टा' ।

बालक–पुं० [सं०] [भाव० स्त्री० बालिका] १. मनुष्य का का बच्चा । लड़का । २. पुत्र । ३. अनजान या थोड़े ज्ञान का *४. हाथी का बच्चा । उदा० मृणालनि जो तोरि डारैं ।

बालकताई*–स्त्री० दे० 'बालकपन

बालकपन†–पुं० दे० 'बालपन' ।

बालकृष्ण–पुं० [सं०] के कृष्ण ।

बालखोरा–पुं० [फा०] सि झड़ने या उड़ने का रोग । गंज ।

बालगोविंद–पुं० दे० 'बालकृ

बालचर–पुं० [सं०] वह अनेक प्रकार की सामाजिक शिक्षा मिली हो । (बॉय स्काउट)

बालटी–स्त्री० [अं० बकेट] के लिए धातु की एक प्रकार की

बालटू–पुं० [अं० बॉल्ट] आदि का वह पेचदार छल्ला जो हुए पेंच के दूसरे सिरे पर ठने पकड़े रहने और निकलने से रोकने कसा जाता है ।

पुं० [हिं० बाल] १. बालकों के समान अनजान। २. नया। नवीन। ३. सरल। निश्छल।

यौ०-बाला भोला = बहुत सीधा सादा।

बालाई-वि० [फा०] १. ऊपर का। ऊपरी। २. साधारण या नियत से भिन्न और अतिरिक्त। जैसे-**बालाई आमदनी** = घूस आदि से अथवा और किसी प्रकार यों ही हो जानेवाली आय।

स्त्री० दे० 'मलाई'।

बालाखाना-पुं० [फा०] मकान के ऊपर की बैठक या कमरा।

बाला-नशीन-पुं० [फा०] १. बैठने का सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ स्थान। २. वह जो सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा हो।

वि० सबसे अच्छा। बहुत बढ़िया।

बालापन†-पुं० दे० 'बालपन'।

बालार्क-पुं० दे० 'बाल-सूर्य'।

बालि-पुं० [सं०] किष्किंधा का बानर राजा जो सुग्रीव का बड़ा भाई और अंगद का पिता था। यह भगवान रामचन्द्र के हाथ से मारा गया था।

बालिका-स्त्री० [सं०] १. छोटी लड़की। कन्या। २. पुत्री। बेटी।

बालिग-पुं० [अ०] वह जो बाल्यावस्था पार करके जवान हो चुका हो। वयस्क। 'ना-बालिग' का उलटा।

बालिश-स्त्री० [फा०] तकिया।

वि० [सं०] [भाव० बालिश्य] १. अज्ञान। ना-समझ। २. मूढ़। मूर्ख।

बालिश्त-पुं० दे० 'बित्ता'।

बालिश्य-पुं० [सं०] १. बाल्यावस्था। लड़कपन। २. किसी मनुष्य में ज्ञान उत्पन्न ही न होना, अथवा उत्पन्न होने पर भी बहुत कम विकसित होना। बड़े होने पर भी छोटे बालकों की तरह अबोध और कम समझ होना। (एमेन्शिया)

बालिस*-वि०, पुं० दे० 'बालिश'।

बाली-स्त्री० [सं० बालिका] [पुं० बाला] कान में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना।
स्त्री० दे० 'बाल'। (जौ गेहूँ आदि की)
पुं० दे० 'बालि'।

बालुका-स्त्री० [सं०] रेत। बालू।

बालू-पुं० [सं० बालुका] पत्थर का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ आकर नदियों के किनारे जम जाता या ऊसर जमीनों और रेगिस्तानों में भरा हुआ मिलता है। रेणुका। रेत।
पद-बालू की भीत=जल्दी नष्ट हो जानेवाला और अविश्वसनीय। (पदार्थ)

बालूदानी-स्त्री० [हिं० बालू+फा० दान (पात्र)] धातु आदि का वह छोटा पात्र जिस पर जा़लीदार ढकना होता है और जिसमें तुरंत के लिखे लेखों आदि की स्याही सुखाने के लिए बालू रखा जाता है।

बालेंदु-पुं० [सं०] बाल्यावस्था का अर्थात् शुक्ल पक्ष के शुरू में तीन चार दिनों का मुख्यतः द्वितीया का चन्द्रमा।

बाल्टी-स्त्री० दे० 'बालटी'।

बाल्य-पुं० [सं०] १. 'बाल' का भाव या अवस्था। २. लड़कपन। बचपन।
वि० १. बालक का। २. बचपन का।

बाल्यावस्था-स्त्री० [सं०] १. मनुष्यों में सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन। २. छोटी या कम अवस्था।

बाल्हा†-वि० [स्त्री० बाल्ही] दे० 'बहेला'।

बाव*-पुं० [सं० वायु] १. वायु। हवा। २. वायु का प्रकोप। बाई। ३. अपान वायु। पाद।

बावज*-स्त्री०=बात-चीत।

बावजूद-क्रि० वि० [फा०] इतना होने पर भी। इस पर भी।

बावड़ी-स्त्री० दे० 'बावली'।

बावन-पुं० दे० 'बामन'।
वि० [सं० द्विपंचाशत] पचास और दो।
कहा०-बावन तोले, पाव र
सब तरह से। बिल्कुल ठीक और पू

बावन-बीर-पुं० [सं० वामन+
बहुत अधिक वीर और चतुर।

बावर-वि० दे० 'बावला'।

बावरची-पुं० [फा०]
(मुसल०)

बावरचीखाना-पुं० [फा०] र

बावरा-वि० [स्त्री० बावली] दे०

बावला-वि० [सं० वातुल][
बावलापन] १. पागल। २. मूर्ख।

बावली-स्त्री० [सं० वाप+ड़ी
(प्रत्य०)] १. वह बड़ा और चौ
जिसमें नीचे उतरने के लिए
हों। २. छोटा गहरा तालाब।

बावाँ-वि० दे० 'बायाँ'।

बाशिंदा-पुं० [फा०] निवासी।

बास-पुं० [सं० वास] १. रहने
या भाव। निवास। २. रहने का
३. गंध। महक। ४. वसन।
कपड़ा।
स्त्री० [सं० वासना] वासना।
स्त्री० [सं० वाशिः] १. अग्नि।
२. एक प्रकार का अस्त्र। ३.
गोले के अन्दर भरी हुई छुरि
धारवाले दूसरे छोटे अस्त्र।

बासक†-पुं० [सं० वासुकि]
नाग। २. बहुत पुराना और
बासन-पुं०=बरतन।

बासना-स्त्री० [सं० वास] गंध
स० [सं० वास] सुगंधित कर

बासमती-पुं० [हिं० बास=म
(प्रत्य०)] एक प्रकार का बढ़िया

बासर*-पुं०=वासर।

बासा-पुं० [सं० वास] वह
पकी हुई रसोई बिकती है। घा
पुं० दे० 'बास'।

बासी-वि० [हिं० वास=गंध]

बाहिज*–पुं० [सं० वाह्य] ऊपर से देखने में। बाह्य रूप में।

बाहिनी*–स्त्री० दे० 'वाहिनी'। (सेना)

बाहु–स्त्री० [सं०] १. भुजा। बाँह। २. दे० 'भुज' ५.।

बाहुज–पुं० [सं०] १. वह जो बाहु से उत्पन्न हुआ हो। २. क्षत्रिय।

बाहु-त्राण*–पुं० [सं०] युद्ध में हाथों की रक्षा के लिए पहना जानेवाला दस्ताना।

बाहु-बल–पुं० [सं०] बाहुओं या शरीर का वह बल जिससे मनुष्य अच्छे या बड़े काम करता है। शारीरिक शक्ति। पराक्रम।

बाहु-मूल–पुं० [सं०] कंधे और बाँह के बीच का जोड़।

बाहु-युद्ध–पुं० [सं०] कुश्ती।

बाहुल्य–पुं० [सं०] १. 'बहुल' का भाव। बहुतायत। अधिकता। २. व्यर्थता। फालतूपन।

बाह्य–वि० [सं०] १. बाहर का। बाहरी। २. किसी निवासस्थान या घिरे हुए निवास स्थान के बाहर होनेवाला अथवा बाहरी भाग से सम्बन्ध रखनेवाला। 'आंतरिक' का विरुद्धार्थक। (आउटडोर) ३. किसी प्रकार के क्षेत्र, परिधि सीमा आदि फे बाहर रहने या होनेवाला। 'गत' का विरुद्धार्थक। (यौ० के अन्त में) जैसे–आलम्बन-वाह्य = आलम्बन में न होकर उससे अलग या उसके बाहर रहने या होनेवाला।

बाह्य-नाम–पुं० [सं०] लिफाफों आदि के ऊपर लिखा जानेवाला (पानेवाले का) नाम और ठिकाना। पता। (एड्रेस)

बाह्य-नामिक–पुं० [सं०] वह जिसके नाम पत्र आदि भेजे जायँ। (एड्रेसी)

बाह्य-रति–स्त्री० [सं०] आलिंगन, चुंबन, आदि कार्य (स्त्री संभोग से भिन्न) जो बाहरी रति के विशेष रूप मान गये हैं। दे० 'रति' २.

बाह्यांचल–पुं० [सं० बाह्य+अंचल]

किसी नगर या बस्ती के बाहरी या आस-पास के स्थान (आउट-स्कर्ट्स)

बाह्येंद्रिय–स्त्री० [सं०] आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ये पाँचों इन्द्रियाँ जिनसे बाहरी विषयों का ज्ञान होता है।

बिंग*–पुं० दे० 'व्यंग्य'।

बिंजन*–पुं० दे० 'व्यंजन'। (पंखा)

बिंदा–पुं० दे० 'बेंदा'।

बिंदी–स्त्री० [सं०विंदु] १. शून्य का सूचक चिह्न, जो यह है—०। सुन्ना। सिफर। विंदु। २. माथे पर लगाया जानेवाला छोटा गोल टीका। ३. इस प्रकार का कोई चिह्न या पदार्थ।

बिंदु*–पुं० दे० 'विंदु'।
स्त्री० दे० 'बिंदी'।

बिंदुली–स्त्री० दे० 'बिंदी'।

बिंध†–पुं० दे० 'विंध्याचल'।

बिंधना–अ० [सं० वेधन] १. बींधा या छेदा जाना। २. फँसना। उलझना।

बिंब–पुं० [सं० बिंब] [वि० बिंबित] १. प्रतिबिंब। छाया।

पद–बिंब-प्रतिबिंब भाव=ऐसी अवस्था जिसमें दो वस्तुएँ एक दूसरी की छाया या बिंब से युक्त और उसके प्रतिबिंब के रूप में होती या जान पड़ती हैं।

२. प्रतिमूर्त्ति। प्रतिकृति। ३. कुँदरू नामक फल। ४. सूर्य, चंद्रमा आदि का मंडल। ५. आभास।

बिंबा–पुं० [सं० बिंब] कुँदरू (फल)।

बिंबित–वि० [सं० बिम्बित] जिसका बिंब या छाया पड़ रही हो।

बिआना–स० दे० 'ब्याना'।

बिआहना*–स० = ब्याहना।

बिकना–अ० [सं० विक्रय] किसी पदार्थ का कुछ धन के बदले में दूसरे के हाथ में जाना। बेचा जाना। बिक्री होना।

मुहा०–किसी के हाथ बिकना = किसी का पूरा अनुयायी या दास होना।

बिकरम†–पुं० १. दे० 'विक्रमा
२. दे० 'विक्रम'।

बिकरार*–वि० = विकराल।

बिकल‡–वि० = विकल।

बिकलाई*–स्त्री० = व्याकुलता।

बिकलाना*–अ० [सं० विकल]
या विकल होना। बेचैन होना।
स० व्याकुल या बेचैन करना।

बिकली*–स्त्री० = विकलता।

बिकवाल–पुं० [हिं० बेचना] बेचने

बिकसना–अ० दे० 'विकसना'।

बिकाऊ–वि० [हिं० बिकना]
के लिए हो। बिकनेवाला।

बिकाना†–अ०=बिकना।

बिकार*–पुं० = विकार।
वि० = विकराल।

बिकारी–स्त्री० [सं० विकृत
वह टेढ़ी पाई जो अंकों आदि
रुपयों की संख्या या मन, सेर
मान सूचित करने के लिए लगाई

बिकासना*–स० [सं० विकास
विकसित करना। २. (फूल
खिलाना।

बिकुंठ*–पुं० = वैकुंठ।

बिक्ख*–पुं० = विष।

बिक्री–स्त्री० [सं० विक्रय]
चीज के बेचे जाने की क्रिया
विक्रय। २. बेचने से मिलनेवाला

बिक्री-कर–पुं० [हिं०] वह
जो ग्राहकों से उनके हाथ बेची
पर लिया जाता है। (सेल्स टैक्स)

बिख†–पुं० [सं० विष] विष।

मुहा०–बिख बोना = बहुत
का सूत्र-पात करना। बिख
बहुत ही कटु और लगती हुई

बिखम*–वि० = विषम।

बिखय*–पुं०=विषय।

बिखयी*–वि० = विषयी।

[हिं० विकीर्ण] तितर-
।
दे० 'बिखेरना'।
दे० 'बिषाद'।
[सं० विषाण] पशुओं

[हिं० 'बिखरना' का स०]
। छितराना।
[हिं० विकार=बिगाड़] १.
में विकार होना। खराब हो
समय किसी वस्तु में
होना जिससे वह ठीक
बुरी दशा में आना। ४.
होना। बद-चलन होना।
। नाराज होना। ६. विरोधी
करना। ७. (पशुओं
चलानेवाले के अधिकार से
। ८. परस्पर विरोध या
। ९. व्यर्थ व्यय होना।
[हिं० बिगड़ना + फा०
या विकट स्वभाव वाला।
नेवाला। ३. दे० 'बिगड़ैल'
[हिं० बिगड़ना] बात बात
पड़नेवाला।
दे० 'बगैर'।
= बिगड़ना।
[हिं० बिगड़ना] बिगड़ा
। (पूरब)
दे० 'विकसना'।
दे० 'बीघा'।
[हिं० बिगड़ना] १. बिगड़ने
। २. खराबी। दोष।
मन-मुटाव।
[सं० विकार] १. किसी
गुण या रूप में विकार
। २. कुछ बनाते समय उसमें
कर देना जिससे वह ठीक
। ३. बुरी दशा में लाना या

पहुँचाना। ४. अनीति या बुरे मार्ग में लगाना। ५. व्यर्थ खर्च करना।

बिगारना*–स० = बिगाड़ना।

बिगारी–स्त्री० = बेगारी।

बिगास*–पुं० = विकास।

बिगिर*–क्रि० वि = बगैर।

बिगुन–वि० [सं० विगुण] जिसमें कोई गुण न हो। गुण-हीन।

बिगुर–वि० दे० 'निगुरा'।

बिगुरचना†–स्त्री० दे० 'बिगूचन'।

बिगुरचना†–अ० [सं० विकुंचन] असमंजस, कठिनता या संकोच में पड़ना।

बिगुरचा†–पुं० = बिगूचन।

बिगुरचिन*–स्त्री० दे० 'बिगूचन'।

बिगुरदा*–पुं० [देश०] एक प्रकार का पुराना हथियार।

बिगुल*–पुं० [अं०] सैनिकों को एकत्र करने के लिए बजाई जानेवाली तुरही।

बिगूचन–स्त्री० [सं० विकुंचन] १. वह अवस्था जिसमें कर्तव्य का निश्चय न हो सके। असमंजस। २. कठिनता।

बिगूचना–अ० [हि० बिगूचन] अड़चन या असमंजस में पड़ना। २. पकड़ा या दबाया जाना।

स० दे० 'दबोचना'।

बिगोउ (ऊ)–पुं० [हिं० बिगोना] १. नाश। बरबादी। २. खराबी। बुराई।

बिगोना–स० [सं० विगोपन] १. खराब करना। बिगाड़ना। २. दुरुपयोग करना। उदा०–इहिं राजस को,को न बिगायौ ?–सूर। ३. छिपाना। ४. तंग करना ५. बहकाना। ६. बिताना।

अ० नष्ट या खराब होना।

बिघटना*–स० [सं० विघटन] १. विघटित करना। २. विनष्ट करना। ३. बिगाड़ना। ४. तोड़ना-फोड़ना।

बिघन–पुं० = विघ्न।

बिघन-हरन*–वि० [सं० विघ्नहरण]

विघ्न या बाधा दूर करनेवाला। पुं० गणेश।

बिघूरना*-अ० [सं० विघूरन] १. घूमना। २. बार बार इधर-उधर चलते रहना।

बिच†-क्रि० वि० दे० 'बीच'।

बिचकना-अ० [अनु०] १. (मुँह का) टेढ़ा होना। २. भड़कना। चौंकना।

बिचकाना-स०[अनु०] १.(मुँह)चिढ़ाना। २. (अप्रिय बात या वस्तु देखकर) मुँह टेढ़ा करना। (मुँह) बनाना। २. भड़कना। चौंकना।

बिचच्छन*-वि० दे० 'विचक्षण'।

बिचरना*-अ० दे 'विचरना'।

बिचलना*-अ० दे० 'विचलना'।

बिचला-वि०[हिं० बीच] [स्त्री० बिचली] जो बीच में हो। मध्य का।

बिचवई-पुं० [हिं० बीच] बीच में पड़कर झगड़ा निपटानेवाला। मध्यस्थ। स्त्री० बीच में पड़कर झगड़ा निपटाने की क्रिया या भाव। मध्यस्थता।

बिचवानी-पुं० दे० 'बिचवई'।

बिचहुत*-पुं०[हिं० बीच] १. अंतर। फरक। २. दुबधा। संदेह।

बिचारना*-अ० दे० 'बिचारना'।

बिचारा-वि० दे० 'बेचारा'।

बिचारी*-पुं० = बिचार करनेवाला।

बिचाल*-पुं० [सं० विचाल] १. अलग करना। २. अलगाव। ३. अंतर। भेद।

बिचेत*- वि० [सं० विचेतस्] १. मूर्छित। अचेत। २. घबराया हुआ।

बिचौनी (हाँ)-पुं० दे० 'बिचवई'।

बिच्च*-पुं० १. दे० 'बीच'। २. दे० 'बिचवई'।

बिच्छी-स्त्री० दे० 'बिच्छू'।

बिच्छू-पुं० [सं० वृश्चिक] १. एक प्रसिद्ध जहरीला छोटा जानवर। २. एक तरह की जहरीली घास।

बिच्छेप-पुं० = विक्षेप।

बिछड़ना-अ० [सं० विच्छेद] [
बिछड़न, बिछोड़ा] अलग या जुदा हो

बिछना-अ० हिं० 'बिछाना' का अ०।

बिछलन-स्त्री० दे० 'फिसलन'।

बिछलना-अ० = फिसलना।

बिछाई-स्त्री० [हिं० बिछाना] १. बि
की क्रिया या भाव। जैसे-सड़क पर
की बिछाई। २. बिछाने के पारिश्रमिक
में मिलनेवाला धन। बिछाने की मजदूरी
३. दे० 'बिछौना'।

बिछाना-स० [सं० विस्तरण] [
बिछवाना] १. (बिस्तर या कपड़ा)
पर पूरी दूरी तक फैलाना। २. कोई
या चीजें जमीन पर कुछ दूर तक फै
बिखेरना। बिखराना। ३. मारके
जमीन पर गिराना या लेटाना।

बिछायत*-स्त्री० दे० 'बिछौना'।

बिछाव-पुं० [हिं० बिछाना] १. बि
की क्रिया या भाव।
* २. दे० 'बिछौना'।

बिछावन†-पुं० दे० 'बिछौना'।

बिछावना*-स० = बिछाना।

बिछिआ†-स्त्री० [हिं० बिच्छू] पै
उँगलियों में पहनने का घुँघरूदार

बिछिप्त*-वि० दे० 'विदित'।

बिछुआ-पुं० [हिं० बिच्छू] १.
पहनने का एक गहना। २. एक प्र
छुरी। ३. एक प्रकार की करधनी।

बिछुड़ना-अ० दे० 'बिछड़ना'।

बिछुरंता*-पुं० [हिं० बिछड़ना]
बिछड़नेवाला। २. बिछड़ा हुआ।

बिछुरना*-अ० दे० 'बिछड़ना'।

बिछूक*-पुं० = बिच्छू।

बिछूना*-पुं०[हिं० बिछुड़ना]बिछड़ा हु

बिछेद*-पुं० = बिच्छेद।

बिछोड़ा-पुं० [हिं० बिछड़ना] बि
की क्रिया या भाव। वियोग।

बिछोह-पुं० दे० 'बिछोड़ा'।

बिछाना] वे कपड़े
के लिए बिछाये जाते
र।
= बिछाना।
हिं० व्यजन] छोटा पंखा।
] एकान्त (स्थान)।
ोई न हो। अकेला।
[हिं० विद्युत्] १. आकाश
के लिए दिखाई देनेवाला
बादलों में वातावरण की
संचार के कारण होता है।
लिंग)
गिरना या पड़ना =
का वेगपूर्वक पृथ्वी की
(इसके स्पर्श से मार्ग में
गलकर नष्ट हो जाती हैं
जीव प्रायः मर जाते हैं)
कना = आकाश में बिजली
में जोर का शब्द होना।
क्रियाओं से उत्पन्न की
प्रसिद्ध शक्ति जिससे वस्तुओं
और अपकर्षण तथा ताप और
है। विद्युत्। (इलेक्ट्रिसिटी)
गुठली के अंदर की गिरी।
एक गहना। ५. कान का

चंचल या प्रकाशमान्।
[हिं० बिजली + घर]
से सारे नगर या आस-पास
बिजली पहुँचाई जाती है।
[हिं० बीज + हनन] जिसका
हो गया हो।
दे० 'बिजातीय'।
दे० 'अनजान'।
[सं० विजय] बाजूबंद।
= बिजली।
पुं० [देश०] १. पक्षियों

आदि को डराने के लिए खेत में उलटी टाँगी हुई काली हाँड़ी या इसी तरह की कोई चीज। २. दे० 'धोखा'।

बिजोग*–पुं० = वियोग।

बिजोना*–स० [हिं० जोवना] अच्छी तरह देखना।

बिजोरा–वि० [सं० वि + फा० जोर] जिसमें जोर या बल न हो। कमजोर। निर्बल।

बिजौरा–वि० [हिं० बीज + औरा प्रत्य०] (वृक्ष) जो बीज बोने से उत्पन्न हुआ हो। बीजू। (कलमी से भिन्न)
पुं० एक प्रकार का निबू।

बिजौरी–स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी'।

बिज्जल*–स्त्री० = बिजली।

बिज्जु*–स्त्री० = बिजली।

बिज्जुपात*–पुं० दे० 'वज्रपात'।

बिज्जुल*–पुं० दे० 'छिलका'।
स्त्री० [सं० विद्युत्] बिजली।

बिज्जू–पुं० [देश०] बिल्ली की तरह का एक जंगली जानवर।

बिझुकना*–अ० [हिं० झोंका] [स० बिझुकाना] १. भड़कना। २. डरना। ३. तनने के कारण कुछ टेढ़ा होना। ४. चंचल होना।

बिटारना–स० [सं० विलोड़न] [अ० बिटरना] घँघोलकर गंदा करना।

बिटिया†–स्त्री० दे० 'बेटी'।

बिठाना–स० = बैठाना।

बिडर–वि० [हिं० बिडरना] बिखरा या छितराया हुआ।
†वि० दे० 'निडर'।
*वि० = विरल।

बिडरना*–अ० [सं० विट्] [स० बिडराना] १. इधर-उधर होना। बिखराना। २. बिचकना। बिदकना। (पशुओं का) ३. नष्ट होना। ४. खराब होना। बिगड़ना।

बिडवना*–स० = तोड़ना।

बिडारना-स० [हिं० बिडरना] १. भयभीत करना । डराना । २. डराकर भगाना । स० दे० 'बिगाड़ना' ।

बिढ़तो*-पुं० [हिं० बढ़ाना] लाभ । नफा ।

बिढ़वना*-स० [हिं० बढ़ाना] १. कमाना । २. संचित या इकट्ठा करना ।

बिढ़ाना*-स० दे० 'बिढ़वना' ।

बित*-स्त्री० दे० 'वित्त' ।

बितत*-वि० [सं० व्यतीत] बीता हुआ ।

बितताना-अ० [सं० व्यथित] १. व्याकुल होना । २. दुखी होकर बिलखना । स० संतप्त करना । सताना ।

बितना†-अ० [सं० व्यतीत] व्यतीत होना । बीतना ।

बितनु*-वि० = वितनु ।

बितरना*-स० = बाँटना ।

बितवना*-स० = बिताना ।

बिताना-स० [सं० व्यतीत] (समय) व्यतीत करना । गुजारना । काटना ।

बितावना*-स० = बिताना ।

बितीतना*-अ० [सं० व्यतीत] बीतना । स० बिताना । गुज़ारना ।

बितु*-स्त्री० दे० 'वित्त' ।

बित्त-स्त्री० [सं० वित्त] १. धन । २. सामर्थ्य । शक्ति । ३. ऊँचाई या आकार ।

बित्ता-पुं० [?] हाथ की उँगलियाँ पूरी फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की लंबाई । बालिश्त ।

बिथकना*-अ० [हिं० थकना] १.थकना । २. चकित होना । ३. मोहित होना ।

बिथकाना-अ० दे० 'बिथकना' । स० [हिं० 'बिथकना' का स०] १. थकाना । २. चकित करना । हैरान करना ।

बिथरना-अ० [सं० विकीर्ण] इधर-उधर छटककर गिरना । बिखरना । स० १. इधर-उधर बिखराना । २. (बीज) बोना । (व्रज०) उदा०-बारि, बीन बिथरै ।—सूर ।

बिंथा*-स्त्री० दे० 'व्यथा' ।

बिथारना†-स० [हिं० बिथरना] बि
राना । बिखेरना ।

बिथित*-वि० दे० 'व्यथित' ।

बिथुरना-अ० दे० 'बिखरना' ।

बिथुरिन*-वि० [हिं० बिखरना] बि
या छितराया हुआ ।

बिथोरना*-स० दे० 'बिथारना' ।

बिद*-वि० [सं० विद्] जानने
ज्ञाता । जैसे*—जोगबिद = योग का
बिदकना-अ० [सं० विदारण]
बिदकाना] १. फटना । चिरना
घायल होना । ३. भड़कना । बि

बिदरन*-स्त्री० [सं० विदीर्ण]
दरज ।
वि० फाड़ने या चीरनेवाला ।

बिदरना*-अ० [सं० विदारण]
अ० [सं० विदल] नष्ट होना ।

बिदायगी-स्त्री० दे० 'विदाई' ।

बिदारना†-स० [सं० विदारण
चीरना-फाड़ना । २. नष्ट करना ।

बिदीरना*-स० [सं० विदीर्ण]

बिदुराना*-अ०=मुस्कराना ।

बिदुरानी-स्त्री० = मुस्कराहट ।

बिदूषना*-अ० [सं० विदूषण] १.
या कलंक लगाना । २. खराब
बिगाड़ना ।

बिदेह†-वि०=विदेह ।

बिदोख*-पुं० दे० 'विद्वेष' ।

बिदोरना†-स० [सं० विदारण]
या दाँत) खोलकर दिखाना ।

बिद्धत-स्त्री० [अ० बिदअत] १.
बुराई । २. कष्ट । तकलीफ । ३.
आफत । ४. अत्याचार । ज़ुल्म
दुर्दशा । दुर्गति ।

बिधँसना*-स० [सं० विध्वंसन]
या नाश करना ।

बिध-स्त्री० [सं० विधि] १.

तरकीब । उपाय ।
=उपाय या रास्ता

=लाभ] जमा-खर्च
में मिलाया जाता है ।
मिलाना = १. इस बात
आय और व्यय की सब
गई हैं या नहीं । रोकड़
कराना ।
[सं० विधि] विधाता ।

दे० 'वैधव्य' ।
[सं० विध्वंसन] विध्वंस

दे० 'विधायक' ।
[सं० विधान] विधान
। रचनेवाला ।
= ब्रह्मास्त्र ।
= नष्ट करना ।
दे० 'बिना' ।
दे० 'विनयी' ।
दे० 'विनय' ।
[हिं० बुनना] [संज्ञा

[हिं० विनती] १.
। २. विवशता । ३. दीनता
। उदा०-तेरी विनता बेरी ।—

[सं० विनय] प्रार्थना ।

[हिं० बिनना = चुनना] १.
की क्रिया, भाव या ढंग ।
जो किसी चीज को
पर निकले ।
[सं० वीक्षण] १. छोटी छोटी
उठाना । चुनना ।
करना ।

† स० दे० 'बुनना' ।

बिनवट–स्त्री० [हिं० बनेठी] पटा-बनेठी चलाने की क्रिया या खेल ।

बिनवना*–अ० [सं० विनय] विनय या प्रार्थना करना ।

बिनवाना–अ० [हिं० बीनना या बुनना] बुनने या बीनने का काम दूसरे से करवाना ।

बिनसना*–अ० [सं० विनाश] [स० बिनसाना] नष्ट होना । बरबाद होना ।

बिनस्टी*–स्त्री० = विनाश ।

बिना–अव्य० [सं० बिना]छोड़कर । बगैर ।

बिनाई–स्त्री० [हिं० बिनना] १. बीनने या चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी । २. बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी । बुनाई ।

स्त्री० [अ० बिनाऽ] मूल आधार । कारण ।

बिनाती†–स्त्री० दे० 'बिनती' ।

बिनानी*–वि० [सं० विज्ञानी] १.ज्ञानवान । ज्ञानी । २. अनजान ।

स्त्री० [सं० विज्ञान] अच्छी तरह होनेवाला विचार । विवेचन । गौर ।

बिनावट–स्त्री० = बुनावट ।

बिनावन†–स्त्री० [हिं० बीनना = चुनना] अनाज आदि बीनने पर निकलनेवाला कूड़ा-करकट ।

स्त्री० दे० 'बुनावट' ।

बिनास*–पुं० = विनाश ।

बिनासना*–स० [सं० विनाश] विनष्ट या बरबाद करना ।

बिनाह*–पुं० = विनाश ।

बिनि (नु)*–अव्य० दे० 'बिना' ।

बिनुआ–वि० [हिं० बीनना] १. जो बीन या चुनकर इकट्ठा किया गया हो । २. दे० 'छँटुआ' ।

बिनूठा*–वि० दे० 'अनूठा' ।

बिनै*–स्त्री० = विनय ।

बिनौरा†–पुं० = बिनौल ।

बिनौरी–स्त्री० [?] ओले के छोटे टुकड़े ।

बिनौला–पुं० [सं० वन = कपास + औला

(प्रत्य०)] कपास का बीज।

बिपच्छ*–पुं० दे० 'विपक्ष'।

बिपच्छी*–पुं० दे० 'विपक्षी'।

बिपत(द)*–स्त्री० दे० 'विपत्ति'।

बिपर*–पुं० दे० 'विप्र'।

बिपरीत*–वि० = विपरीत।

बिपरीति*–स्त्री० [सं० विपरीत] विपरीत या विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। विपरीतता। उदा०–यह विपरीति जानि तुम जन की, अन्तर दै बिच रहे लुकानें।–सूर।

बिफर*–वि० दे० 'विफल'।

बिफरना*–अ० [सं० विप्लवन] १. विद्रोही या बागी होना। २. नाराज़ होना। अ० दे० "बफरना'।

बिबछना*–अ० [सं० विपक्ष] १. विरोध करना। २. उलझना। फँसना।

बिबरन*–वि० दे० 'विवर्ण'। पुं० दे० 'विवरण'।

बिबस*–वि० दे० 'विवश'।

बिबसना*–अ० = विवश होना।

बिबहार*–पुं० = व्यवहार।

बिबाक*–वि० दे० 'बेबाक'।

बिबि–वि० [सं० द्वि] दो।

बिभचार*–वि० [सं०व्यभिचार] उलटा। विपरीत। उदा०–फल विभचार न होइ होइ सुख परम अपारा।–नंददास। पुं० = व्यभिचार।

बिभाना*–अ० [सं० विभा] चमकना।

बिभिचारी*–वि० दे० 'व्यभिचारी'।

बिभोर–वि० दे० 'विभोर'।

बिमन*–वि० दे० 'विमन'।

बिमानी–वि० [सं० वि+मान] जिसे अभिमान न हो। निरभिमान।

बिमुद*–वि० [सं० वि+मुद (मोद)] १. दुःखी या चिन्तित। २. खिन्न। उदास।

बिमूखा*–वि० = विमुख।

बिमोहना–स० दे० 'मोहना'। अ० मोहित होना। लुभाना।

बिय*–वि० [सं० द्वि] १. दो। दूसरा। ३. अन्य। और। *पुं० दे० 'बीज'।

बिया†–वि० = दूसरा। पुं० = बीज (बीया)।

बियाना–स० दे० 'ब्याना'।

बियापना*–स० दे० 'व्यापना'।

बियाबान–पुं० [फा०] १. उजाड़ २. जंगल। ३. सुनसान मैदान।

बियारी(लू)*–स्त्री० दे० 'ब्यालू'।

बियावर–वि०, स्त्री० [हिं० बियाना ब्याना = बच्चा देना] ब्याने या देनेवाली।

पद–बिरस-बियानर (देखो)

बियाह*–पुं०=विवाह।

बियाहा†–वि० [स्त्री० बियाही] विवाहित।

बियो*वि० = दूसरा।

बिरंगा–वि० [सं० विरंग] कई रंगों

बिरई†–स्त्री० [हिं० बिरवा] १. बिरवा। २. जड़ी-बूटी।

बिरख*–पुं० = वृष।

बिरचना*–अ० [सं० वि+रुचि] किसी की ओर से विरक्त या उदासीन हो उदा०–बिरच्यौ किहि दोष न जानि गयौ मन मो तजि रोषन तैं।–घन २. अप्रसन्न या नाराज होना। स० [सं० विचरन] रचना। बना

बिरछ*–पुं० = वृक्ष।

बिरछिक*–पुं० = वृश्चिक।

बिरझना†–अ० [सं० विरुद्ध]

बिरतंत*–पुं० = वृत्तांत।

बिरता–पुं० [सं०वृत्ति] सामर्थ्य।

बिरतानवी–वि० [हिं० बिरतानिया] तानिया या ब्रिटेन नामक देश से रखनेवाला। (अंग्रेजी)

बिरताना*–स० दे० 'बरताना'।

बिरतानीया–पुं० [अं० ब्रिटेन]

द्वीप जो अँगरेजों का
=हुआ।
'विरद'।
[हिं० विरद] प्रसिद्ध वीर
नी। मशहूर।
'वृद्ध'।
[सं० वृद्ध] वृद्धावस्था।
[सं० विलंब] १. दे०
२. मोहित होकर कहीं रुक
देर लगाना। विलम्ब करना।
अलग होना। छोड़ना।
है हौं नहिं विरमत।—सूर।
[हिं० बिरमना] १. रोक
ना। २. मोहित करके रोक
लाना।
[हिं० विटपक, प्रा० बिरवअ]
।
[सं० विरस] जिसमें रस न
।
विरसता] १. रस, प्रेम, अनुराग
। २. अनबन। बिगाड़।
अ० [सं० विलास] विलास
।
=विरह।
[हिं० विरह ?] एक प्रकार
(पूर्वी युक्त-प्रांत)
अ० [सं० विरह] विरह से
।
दे० 'विरही'।
पुं० [प्रा० विरूल्हक = नाग]
] सर्प। साँप। उदा०—चोइनी
।—कबीर।
अ० [सं० वि + रंजन] १.
। २. बैठना। (आदर-सूचक)
[फा०] भाई। भ्राता।
[फा०] एक जाति के

लोगों का समूह या वर्ग।

बिरान*—वि० दे० 'बेगाना'।

अ० [सं० बिख = शब्द] मुँह चिढ़ाना।

बिराना—स० [सं० विरूपण ?] हँसी उड़ाने के लिए किसी की चेष्टा आदि का अनुकरण करना। जैसे—मुँह बिराना = मुँह चिढ़ाना।

वि०=बेगाना।

बिरावना†—स० दे० 'बिराना'।

बिरासी*—वि० = विलासी।

बिरिख*—पुं० १. दे० 'वृष'। २. दे० 'वृक्ष'।

बिरिछ*—पुं० = वृक्ष।

बिरियाँ—स्त्री० [हिं० बेला] समय।

स्त्री० [सं० वार] १. बार। दफा। २. पारी। बारी।

बिरी*—स्त्री० १. दे० 'बीड़ी'। २. दे० 'बीड़ा'।

बिरुझना†—अ० [सं० विरुद्ध] झगड़ना।

बिरुदैत—पुं० दे० 'बिरदैत'।

बिरुधाई—स्त्री० १. दे० 'बुढ़ापा'। २. दे० 'विरोध'।

बिरोग—पुं० [सं० वियोग] १. वियोग। बिछोह। २. दुःख। कष्ट। ३. चिंता।

बिरोधना†—अ० [सं० विरोध] विरोध या बैर करना। (किसी को) अपना विरोधी या शत्रु बनाना।

बिरोलना*—स० दे० 'बिलोरना'।

बिलंद—वि० [फा० बुलंद] १. ऊँचा। २. बड़ा या भारी। ३. जो विफल हो गया हो। (व्यंग्य)।

बिलंबना*—अ० 'बिलमना'।

बिल—पुं० [सं० बिल] जमीन के अंदर खोदकर बनाई हुई जीव-जन्तुओं के रहने की तंग छोटी जगह। विवर।

पुं० [अ०] १. पावने का वह हिसाब जिसमें प्राप्य मूल्य या पारिश्रमिक का ब्योरा रहता है। २. कानून का मसौदा जो स्वीकृति

के लिए उपस्थित होता है।

बिलकुल-क्रि० वि० [अ०] १. पूरा पूरा। सब। २. निरा। निपट।

बिलकैत-पुं० [?] राजपूत क्षत्रियों की शाखा का एक अल्ल।

बिलखना-अ० [सं० विलाप] [सं० बिलखना] १. बहुत रोना। विलाप करना। २. दुःखी होना। ३. सिकुड़ना।

बिलग-वि० [सं० विलग] १. अलग। जुदा। पृथक्। २. निन्दनीय या बुरा। उदा०—इनको बिलगु न मानिये, बोलहिं न बिचारी।—तुलसी।

पुं० १. अलग होने का भाव। पार्थक्य। २. मैत्री या सम्पर्क का अभाव या परित्याग।

बिलगाना*-अ० [हिं० विलग] अलग या जुदा होना।

स० १. अलग करना। २. चुनना।

बिलगाव-पुं० [हिं० विलग + आव (प्रत्य०)] विलग या अलग होने की क्रिया या भाव। अलगाव। पार्थक्य।

बिलच्छन-वि० = विलक्षण।

बिलछना*-अ० [सं० लक्ष] देखकर समझ लेना। ताड़ना।

बिलटी-स्त्री० [अं० बिलेट] रेल से भेजे जानेवाले माल की वह रसीद जिसे दिखलाने पर पानेवाले को वह माल मिलता है।

बिलना-अ० [हिं० 'बेलना' का अ०] बेला जाना। (विशेष दे० 'बेलना')

बिलनी-स्त्री० [हिं० बिल ?] १. मिट्टी की दीवारों पर रहनेवाली काली भौंरी। २. वह छोटी फुन्सी जो आँख की पलक पर होती है। गुहांजनी।

बिलपना*-अ० [सं० विलाप] रोना।

बिलबिलाना-अ० [अनु०] १. छोटे कीड़ों का रेंगना। २. दे० 'बिलखना'।

बिलम*-पुं० दे० 'विलंब'।

बिलमना*-अ० [सं० बिलंब] [स० बिलमाना] १. विलंब या देर करना। २. ठहरना। ३. किसी से प्रेम हो कारण उसके पास रुक या रह जाना।

बिललाना-अ० दे० 'बिलखना'।

बिलल्ला-वि० [अनु०] [स्त्री० जिसे किसी बात क कुछ भी शऊर न हो। गावदी। मूर्ख।

बिलसना*-अ० [सं० विलसन] [बिलसाना] शोभा देना। भला या लगना। अच्छे जँचना।

स० भोग करना। भोगना।

बिला-अव्य० [अ०] बिना। बगैर।

बिलाई-स्त्री० दे० 'बिल्ली'।

बिलाना-अ० [सं० विलयन] [बिलवाना] १. नष्ट होना। २. होना।

बिलापना*-अ० = विलाप करना।

बिलारी†-स्त्री० दे० 'बिल्ली'।

बिलाव-पुं० [हिं० बिल्ली] नर

बिलासना-स० [सं० विलसन] भोग

बिलुठना*-अ० [सं० लुंठन] जमी लोटना। (कष्ट, पीड़ा आदि से)

बिलुद्धना-अ० [सं० विलुप्त] नष्ट न रह जाना।

स० नष्ट करना।

बिलूर*-पुं० दे० 'बिल्लौर'।

बिलैया†-स्त्री० = बिल्ली।

पद—**बिलैया दंडवत्** = भीगी की तरह बहुत ही झुककर और नम्रता दिखाते हुए किया जानेवाला या अभिवादन। **बिलैया भगत** = जो केवल दूसरों को दिखाने के लिए या सज्जन बना हो, पर अन्दर ही अपने दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करता रहता है।

बिलोकना*-स० [सं० विलोकन] देखना। २. परीक्षा करना। जाँचना।

बिलोकनि*-स्त्री० [सं० विलोकन] १. देखने की क्रिया या भाव। देखना। २. दृष्टि। चितवन। निगाह।

बिषै*-वि०=विषय।

बिसंच*-पुं० [सं० वि + संचय] १. संचय का अभाव। सँभालकर न रखना। २. बाधा। विघ्न। ३. भय। डर।

बिसंभर*-पुं० दे० 'बिश्वंभर'। *वि० [सं० उप० वि + हिं० सँभार] १. जो ठीक तरह से सँभालकर न रख सके। २. बे-खबर। असावधान। ३. जिसे ठीक तरह से सँभालकर न रखा जाय। ४. दे० 'बिसँभार'।

बिसँभार (ा)†-वि० [सं० उप० वि + हिं० सँभार] जिसे अपने शरीर की सुध-बुध न हो।

बिस-पुं० [सं० विष] जहर।

पद-बिस की गाँठ = बहुत बड़ा दुष्ट।

†पुं० = भसींड। (बुन्देल०)

बिसतरना*-अ० [सं० विस्तरण] बिस्तार करना। फैलाना या बढ़ाना।

बिसद*-वि० दे० 'विशद'।

बिसन*-पुं० दे० 'व्यसन'।

बिसनी-वि० [सं० व्यसन] १. दे० 'व्यसनी'। २. छैला। ३. वेश्या-गामी।

बिसपना†-अ० [?] अस्त होना। डूबना। (सूर्य आदि का)

बिसमउ*-पुं० दे० 'विस्मय'।

बिसमरना*-स० [सं०विस्मरण] भूलना।

बिसमिल-वि० [फा० बिस्मिल] जबह करते समय जिसका अभी आधा ही गला कटा हो।

बिसमौ*-पुं० [सं० विस्मय] १. विस्मय। आश्चर्य। २. विषाद। दुख। रंज।

बिसयक*-पुं० [सं० विषय] १. देश। २. राज्य।

बिसरना-स० [सं० विस्मरण] भूलना।

बिसरात*-पुं० [सं०वेशर] खच्चर। (पशु)

बिसराना-स० [हिं० बिसरना] ध्यान में न रखना। भुलाना।

बिसराम*-पुं० = विश्राम।

बिसरामी*–वि० [सं० विश्राम] १. जिसे विश्राम या सुख मिले। २. किसी के साथ रहकर सुख भोगनेवाला। उदा०–विषयिनी सँग बिसरामी।—सूर।

बिसवा–पुं० दे० 'बिस्वा'।
+स्त्री० = वेश्या।

बिसवास*–पुं० = विश्वास।

बिसवासी–वि० [सं० विश्वासिन्] १. विश्वास करनेवाला। २. विश्वास करने योग्य। विश्वासनीय।
वि० [सं० अविश्वासिन्] जिसपर विश्वास न किया जा सके।

बिससना*–स० [सं० विश्वसन] विश्वास या भरोसा करना।
स० [सं० विशसन] १. मार डालना। २. शरीर के अंग काटना।

बिसहना*–स० दे० 'बिसाहना'।

बिसहर*–पुं० [सं० विषधर] सर्प। साँप।
वि० [सं० विष + हर] विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

बिसा†–पुं० दे० 'बिस्वा'।

बिसाख*–स्त्री दे० 'विशाखा'।

बिसात–स्त्री० [अ०] १. हैसियत। वित्त। औकात। २. जमा। पूँजी। ३. सामर्थ्य। शक्ति। ४. वह कपड़ा या दफ्ती जिसपर शतरंज या चौपड़ खेलते हैं।

बिसातबाना–पुं० [हिं० बिसात + फा० बाना] बिसाती के यहाँ मिलनेवाली चीजें; जैसे–सुई, तागा, कलम, खिलौने आदि।

बिसाती–पुं० [अ०] बिसातबाने की चीजें बेचनेवाला।

बिसाना–अ० [सं० वश] वश चलना।
†–अ० [हिं० विष + ना (प्रत्य०)] विष का प्रभाव होना। ज़हर भरना।

बिसायँध–वि० [सं० वसा = चरबी + गंध] जिसमें सड़ी मछली की-सी गंध हो।

बिसारना–स० [हिं० बिसरना] याद न रखना। भूल जाना।

बिसारा*-वि० [सं० विषालु] [
विसारी] विष-युक्त। विषाक्त।
स्त्री० सड़ी मछली की-सी गंध।

बिसास*–पुं० १. दे० 'विश्वा
विश्वासघात।

बिसासिन(नी)–स्त्री० [सं० अविश्व
(स्त्री) जिसका विश्वास न हो।
स्त्री० [सं० विश्व + आशिनी]
खा जानेवाली। मृत्यु।

बिसासी* -वि० [सं०-अविश्वासी] [
बिसासिन, बिसासिनी] १. जिसपर
न किया जा सके। अविश्वसनीय
कपटी। धोखेबाज।
पुं० [सं० विश्व + आशिन्]
खानेवाला। काल।

बिसाह–पुं० = विश्वास।

बिसाहना–स० [हिं० बिसाह + ना (
१. खरीदना। मोल लेना। २. (
झंझट आदि) जान बूझकर अपने
लेना या पीछे लगाना।

बिसाहनी*–स्त्री० [हिं० बिसाहना]
ली जानेवाली वस्तु। सौदा।

बिसाहा*–पुं० दे० 'बिसाहिनी'।

बिसिख*–पुं० दे० 'विशिख'।

बिसियर*–वि० [सं० विषधर]

बिसूरना–अ० [सं० विसूरण =
१. मन में खेद या दुःख करना। २.
सिसक कर रोना।
स्त्री० चिन्ता। फिक्र। सोच।

बिसेख*–वि० दे० 'विशेष'।

बिसेखना*–अ० [सं० विशेष] १.
प्रकार से या ब्योरेवार वर्णन
निर्णय या निश्चय करना। ३.
युक्त होना।

बिसेष*–त्रि० = विशेष।

बिसेस*–वि० = विशेष।

बिसेसर*–पुं० = विश्वेश्वर।

बिसैंधा†–वि० [हिं० बिसायँध] १.

आती हो। २. मांस
गंधवाला।
[सं॰] एक प्रकार
जो छोटी चिपटी
होता है।
से फा॰] बिछाने के
बिछावन। (बेड)
दे॰ 'शय्याव्रण'।
[सं॰ विस्तरण] विस्तृत
बढ़ना।
। २. किसी बात का
करना।
[फा॰] वह डोरी या
या इन चीजों से युक्त
का लंबा थैला जिसमें
बिस्तर या बिछौना बाँधकर

'बिस्तर'।
=विस्तार (ण)।
[सं॰ विस्तारण]
करना। बढ़ाना।
= छिपकली।
अरबी वाक्य का पूर्वार्द्ध
—ईश्वर के नाम से (इसका
आरंभ करते समय या
करते समय होता है।)
[हिं॰ बिस्वा] जमीन की
का बीसवाँ भाग।
[हिं॰ बीसवाँ] एक बीघे का
(जमीन की नाप)
बिस्वे = निश्चित रूप से।

= विश्वास।
[हिं॰ बेढंगा] कुरूप। भद्दा।
[सं॰ विघटन] १. तोड़ना।
२. मार डालना।
= हँसाना।
[सं॰ विहसन] १. दे॰

'बिहँसना'। २. खिलना। (फूल का)
स॰ हँसाना।

बिहँसौहाँ*–वि॰ = हँसता हुआ।

बिहग*–पुं॰ दे॰ 'विहंग'।

बिहद्द*–वि॰ दे॰ 'बेहद'।

बिहबल*–वि॰ दे॰ 'विह्वल'।

बिहरना*–अ॰ [सं॰ विहरण] विहार या सैर करना। घूमना-फिरना।
*अ॰ [सं॰ विघटन] १. फटना। २. टूटना-फूटना।

बिहराना*–अ॰ = फटना।
स॰ = फाड़ना।

बिहान–पुं॰ [सं॰ वि + अह्नि] १. सबेरा २. आनेवाला दूसरा दिन। कल।

बिहाना*–स॰ [सं॰ विहीन] छोड़ना।
अ॰ [सं॰ वि॰ + अह्नि] (समय आदि) व्यतीत होना। बीतना। गुजरना।

बिहारना–अ॰ [सं॰ विहरण] विहार या क्रीड़ा करना।

बिहाल–वि॰ [फा॰ बेहाल] १. विकल। बेचैन। २. थका हुआ। शिथिल।

बिहिश्त–पुं॰ [फा॰] स्वर्ग। (मुसल॰)

बिहुना*–अव्य॰ [सं॰ विहीन] छोड़कर। बिना। बगैर।

बिहुरना*–अ॰ दे॰ 'बिथुरना'।

बिहून*–अव्य॰ [हिं॰ विहीन] बिना। बगैर।

बिहोरना*–अ॰ दे॰ 'बिछुड़ना'।

बींदना*–स॰ १. दे॰ 'चुभाना'। २. दे॰ 'बींधना'।
अ॰ [?] अनुमान करना।

बींधना*–अ॰ [सं॰ विद्ध] फँसना।
स॰ विद्ध करना। बेधना। छेदना।

बी–स्त्री॰ दे॰ 'बीवी'।

बीका†–वि॰ [सं॰ वक्र] टेढ़ा।

बीख*–पुं॰ [सं॰ वीखा] कदम। डग।

बीग(र)†–पुं॰ [सं॰ वृक] भेड़िया। (जन्तु)

बीघा–पुं० [सं० विग्रह] जमीन, खेत आदि की बीस बिस्वे की एक नाप।

बीच–पुं० [सं० द्वीच] १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य।

मुहा०–बीच खेत = (क) खुले मैदान। सबके सामने। (ख) अवश्य। जरूर। **बीच बीच में** = (क) थोड़ी थोड़ी देर में। (ख) थोड़ी थोड़ी दूरी पर। **बीच में पड़ना**= झगड़ा निपटाने के लिए मध्यस्थ होना। **(किसी से) बीच रखना** = पराया समझना। **बीच में कूदना** = व्यर्थ हस्तक्षेप करना। **(ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना** = (ईश्वर आदि की) शपथ या क़सम खाना।

२. दो चीजों के बीच का अंतर या स्थान। ३. अन्तर। भेद। फरक। अवकाश। ४. अवसर। मौका।

क्रि० वि० अंदर। में।

स्त्री० [सं० वीचि] लहर। तरंग।

बीच-बचाव–पुं० [हिं० बीच + बचाव] लड़नेवालों के बीच में पहुँचकर दोनों को लड़ने-झगड़ने से बचाने की क्रिया या भाव।

बीचि(ी)–स्त्री० [सं० वीचि] लहर। तरंग।

बीचु*–पुं० दे० 'बीच'।

बीचोबीच–क्रि० वि० [हिं० बीच] बिल्कुल या ठीक बीच में।

बीछना*–स० दे० 'चुनना'।

बीछी*–स्त्री० दे० 'बिच्छू'।

बीछू–पुं० १. दे० 'बिच्छू'। २. दे० 'बिछुआ'। (हथियार और गहना)

बीज–पुं० [सं०] १. फूलवाले पौधों या अनाजों के वे दाने अथवा वृक्षों के फलों की वे गुठलियाँ, जिनसे वैसे ही नये पौधे, अनाज या वृक्ष उत्पन्न होते हैं। बीया। २. प्रधान कारण। मूल। जड़।

मुहा०–बीज बोना = किसी बात या कार्य का आरंभ या सूत्रपात करना। जैसे–वैमनस्य का बीज बोना।

३. हेतु। कारण। ४. अव्यक्त संख्या संकेत। विशेष दे० 'बीज गणित'। तंत्र में वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द किसी देवता को अनुकूल या प्रसन्न की शक्ति मानी जाती है। ६. दे०

*स्त्री० [सं० विद्युत] बिजली। आँगन बीज करत मन चोटैं। घर अधार कट घौटें।—नन्ददास।

बीजक–पुं० [सं०] १. सूची। २. वह सूची जिसमें भेजे हुए ब्योरा, दर आदि लिखी हो। (३. गड़े हुए धन की वह सूची साथ मिलती है। ४. कबीरदास के एक संग्रह का नाम।

बीज गणित–पुं० [सं०] गणित प्रकार जिसमें अक्षरों को संख्या स्थान पर मानकर अज्ञात मान या जानी जाती हैं। (अलजबरा)

बीजन*–पुं० दे० 'पंखा'।

बीजना–स० दे० 'बोना'।

बीजपूर–पुं० [सं०] १. बिजौरा २. चकोतरा।

बीज-मंत्र–पुं० [सं०] १. किसी उपासना का मूल मंत्र। २. वह या सिद्धान्त जिससे कोई कार्य हो जाय। गुर।

बीजरी*–स्त्री० दे० 'बिजली'।

बीजा–वि० [सं० द्वितीय] दूसरा

बीजाक्षर–पुं० [सं०] तंत्र में मंत्र का पहला अक्षर।

बीजी–स्त्री० [सं० बीज + ई (१. गिरी। मींगी। २. गुठली।

बीजु (री)*–स्त्री० दे० 'बिजली'।

बीजू–वि० [हिं० बीज + ऊ ((वृक्ष या फल) जो बीज बोने हुआ हो। ('कलमी' से भिन्न) जैसे–आम।

फँसना । २. आर-पार होना । छेदा जाना । ३. युक्त होना । ४. किसी प्रकार के प्रभाव के अधीन होना ।

स० दे० 'बींधना' ।

बीन–स्त्री० [सं० वीणा] १. सितार की तरह का एक प्रसिद्ध बड़ा बाजा । वीणा । २. सँपेरों के बजाने की तूमड़ी ।

बीनकार–पुं० [हिं० बीन + फा० कार] वह जो बीन बजाता हो । बीन बजानेवाला ।

बीनना*–स० १. दे० 'चुनना' । २. दे० 'बींधन' । ३. दे० 'बुनना' ।

बीफै–पुं० [सं० बृहस्पति, प्रा० बिहफै] बुधवार के बाद और शुक्रवार के पहले का दिन । गुरुवार ।

बीबी–स्त्री० [फा०] १. भले घर की स्त्री । महिला । २. पत्नी । जोरू ।

बीमा–पुं० [फा० बीम=भय मि० सं० भीम] १. किसी प्रकार की संभावित हानि होने पर कुछ रकम देने की जिम्मेदारी, जो कुछ निश्चित धन एक साथ या कुछ किस्तों में लेकर उसके बदले में ली जाती है । (इन्श्योरेन्स) २. भेजा जानेवाला वह पत्र या पारसल जिसकी संभावित क्षति की पूर्त्ति का इस प्रकार डाकखाने ने भार लिया हो ।

बीमा-पत्र–पुं० [हिं० बीमा + सं० पत्र] वह पत्र या लेख जिसमें बीमे से सम्बन्ध रखनेवाली सब बातें या शर्तें रहती हैं । (पॉलिसी)

बीमार–वि० [फा०] जिसे कोई बीमारी हुई हो । रोगी ।

बीमारी–स्त्री० [फा०] १. रोग । व्याधि । २. झंझट । ३. दुर्व्यसन । बुरी आदत ।

बीय*–वि० दे० 'बीजा' ।

बीया*–वि० [सं० द्वितीय] दूसरा । पुं० [सं० वीज] वृक्ष या पौधे का बीज ।

बीर–पुं० [सं० वीर] भाई । भ्राता । स्त्री० १. सखी । सहेली । २. कान का एक गहना । तरना । बीरी । ३. कलाई

में पहनने का एक गहना। ४. गोचर भूमि। चरागाह।

वि० [सं० वीर] बहादुर।

बीरउ*–पुं० दे० 'बिरवा'।

बीरज*–पुं० दे० 'वीर्य्य'।

बीरन–पुं० [सं० वीर] भाई।

बीर-बहूटी–स्त्री० [सं० वीर + वधूटी] गहरे लाल रंग का एक छोटा, सुंदर और कोमल बरसाती कीड़ा। इंद्रवधू।

बीरा*–पुं० [हिं० बीड़ा] [स्त्री० अल्पा० बीरी] १. दे० 'बीड़ा'। २. देवता के प्रसाद के रूप में मिलनेवाले फल-फूल आदि।

बीरी–स्त्री० [हिं० बीड़ा] १. पान का बीड़ा। २. दे० 'बीड़ी'। ३. दे० 'बीर'। (गहना)

बीरो†–पुं० [हिं० बिरवा] वृक्ष। पेड़।

बील–वि० [सं० विल] पोला। खोखला।
पुं० नीची भूमि।
पुं० [सं० बीज-मंत्र] मंत्र।

बीवी–स्त्री० दे० 'बीबी'।

बीस–वि० [सं० विंशति] १. जो गिनती में उन्नीस से एक अधिक हो। २०.
पद–बीस बिस्वे=बहुत संभव है।
२. किसी से कुछ बढ़कर या अच्छा।

बीसियों–वि० दे० 'बीसों'।

बीसी–स्त्री० [हिं० बीस] १. बीस चीजों का समूह। कोड़ी। २. ज्योतिष में साठ संवत्सरों के बीस बीस वर्षों के तीन विभागों में से कोई एक। ३. बीस गाहियों का सैकड़ा।

बीसों–वि० [हिं० बीस] १. कई बीस। २. बीस से बहुत अधिक। जैसे–बीसों वाक्य, बीसों पुस्तकें।

बीह*–वि० = बीस।

बीहड़–वि० [सं० विकट] १. जो सरल न हो। २. ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़।

बीहर†–वि० [?] अचल। स्थावर।

बुंद–स्त्री० दे० 'बूँद'।

बुँदका†–पुं० [सं० बिंदुक] [
अल्पा० बुँदकी] १. कोई गोल और
दाग या धब्बा। २. माथे पर
जानेवाला गोल टीका। ३. दे० 'बुंदा'।

बुँदकी–स्त्री० [सं० बिंदु + की (
छोटी गोल बिंदी या धब्बा। (जैसी
आदि में होती है)।

बुंदा–पुं० [सं० बिंदु] १. कान में
का एक गहना। लोलक। २. माथे
लगाने की बिन्दी। टिकली।

बुँदिया–स्त्री० दे० 'बूँदी'।

बुँदोरी–स्त्री० [हिं० बूँदी] बुँदिया
बूँदी नाम की मिठाई।

बुआ–स्त्री० दे० 'बूआ'।

बुकचा–पुं० [तु० बुकचः] [स्त्री० अ
बुकची] गठरी।

बुकनी–स्त्री० [हिं० बूकना + ई (
महीन पीसा हुआ चूर्ण।

बुकवा*–पुं० [हिं० बूकना] १.
२. बुक्का।

बुक्का–पुं० [हिं० बूकना = पी
अबरक या अभ्रक का चूरा।

बुखार–पुं० [अ०] १. वाष्प।
२. शरीर में होनेवाला ज्वर (रोग
ताप। ३. दुःख, क्रोध आदि का
मुहा०–जी का बुखार निकाल
मन का दुःख या व्यथा कहकर प्रक
और इस प्रकार जी हलका करना।

बुजदिल–वि० [फा०] [भाव० बु
कायर। डरपोक।

बुजुर्ग–वि० [सं० वज्रक (शक्ति
और पहलवी बजर्ग से फा०] [
बुजुर्गी] वृद्ध। बड़ा।
पुं० बहु० बाप-दादा। पूर्वज। पुरखे।

बुझना–अ० [?] १. अग्नि का
आपसे आप, या जल पड़ने के कार
समाप्त होना। जैसे–आग बुझना। २.

या इससे अधिक अवस्थावाली स्त्री। वृद्धा।

पद-बुढ़िया का काता=एक प्रकार की मिठाई जो काते हुए सूत के लच्छों की तरह होती है।

बुढ़ौती†–स्त्री॰ दे॰ 'बुढ़ापा'।

बुत–पुं॰ [फा॰, मि॰ सं॰ बुद्ध] १. मूर्त्ति। प्रतिमा। २. वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रियतम।

बुतना†–अ॰=बुझना।

बुताना†–अ॰=बुझना।

स॰=बुझाना।

बुताम–पुं॰ [अं॰ बटन ?] १. बटन। २. घुंडी।

बुत्ता–पुं॰ [देश॰] १. धोखा। झाँसा-पट्टी। २. बहाना। हीला।

बुदबुद–पुं॰ दे॰ 'बुद्‌बुद'।

बुद्ध–वि॰ [सं॰] १. जागा हुआ। जागरित। २. ज्ञानी। ३. विद्वान्।

पुं॰ बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध महात्मा जिनका जन्म ई॰ पू॰ ५५० में नेपाल की तराई में हुआ था।

बुद्धजी*–सं॰ [सं॰ बुद्धि] समझना।

बुद्धि–स्त्री॰ [सं॰] सोचने-समझने और निश्चय करने की वृत्ति या मानसिक शक्ति। अक्ल। प्रज्ञा। (इन्टलेक्ट)

बुद्धि-जीवी–वि॰ [सं॰] वह जो केवल बुद्धि-बल से जीविका उपार्जन करता हो। जैसे—चिकित्सक, प्राध्यापक आदि।

बुद्धि-तत्त्व–पुं॰ [सं॰] वह मानसिक शक्ति या तत्व, जिससे बातें समझने-बूझने की योग्यता आती है। (इन्टेलैक्चुऐलिटी)

बुद्धि-भ्रंश–पुं॰ [सं॰] पागलपन के अन्तर्गत एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें बुद्धि ठीक तरह से और पूरा काम नहीं देती। (डिमेन्शिआ)

बुद्धिमत्ता–स्त्री॰ [सं॰] बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अक्लमंदी।

बुद्धिमान्–वि॰[सं॰] [भाव॰ बुद्धमत्ता]

वह जिसमें बहुत बुद्धि हो। समझदार।

बुद्धिमानी–स्त्री० दे० 'बुद्धिमत्ता'।

बुद्धिवंत*–वि० =बुद्धिमान्।

बुद्धि-वाद–पुं०[सं०] [वि० बुद्धिवादी] १. यह सिद्धान्त कि मनुष्य को सब बातों का ज्ञान बुद्धि के द्वारा ही प्राप्त होता है। (इन्टलेकचुअलिज्म) २. वह सिद्धांन्त जिसमें केवल बुद्धि-संगत या समझ में आनेवाली बातें मानी जाती हैं। (रैशनलिज्म)

बुद्धिशाली–वि० दे० 'बुद्धिमान्'।

बुद्धिहीन–वि० [सं०] मूर्ख। बेवकूफ।

बुद्बुद–पुं० [सं०] पानी का बुलबुला। बुल्ला।

बुधंगड़–पुं० [हिं० बुद्ध] मूर्ख। बेवकूफ।

बुध–पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ग्रह जो सूर्य्य के बहुत पास है। (मरकरी) २. देवता। ३. बुद्धिमान् और विद्वान (व्यक्ति)।

बुधवान्*–वि० दे० 'बुद्धिमान्'।

बुधि*–स्त्री० = बुद्धि।

बुधिवाही*–वि० दे० 'बुद्धिमान'।

बुनकर–पुं [हिं० बुनना] कपड़ा बुननेवाला। जुलाहा।

बुनकरी–स्त्री० [हिं० बुनकर] कपड़े आदि बुनने का काम। बिनाई।

बुनत–स्त्री० [हिं० बुनना] बुनने की क्रिया या भाव। बुनाई।

बुनना–स० [सं० वयन] १. तागों की सहायता से करघे पर कपड़ा तैयार करना। जैसे–साड़ी बुनना। २. हाथ या यंत्र से कुछ सूतों को ऊपर और और कुछ को नीचे से निकालकर कोई चीज बनाना। जैसे–मोजा या गंजी बुनना।

बुना*–स्त्री० [फा० बिनाऽ] मूल कारण। आधार।

बुनाई–स्त्री० [हिं० बुनना + ई (प्रत्य०)] बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बुनावट–स्त्री० [हिं० बुनना + आवट (प्रत्य०)] बुनने की क्रिया, भाव या ढंग।

बुनिया–पुं० दे० 'बुनकर'।

बुनियाद–स्त्री० [पहलवी बुन (आ
से फा०, मि० सं० बुध्न (पेंदा या त
१. जड़। मूल। २. नींव। ३. असलि
वास्तविकता।

बुनियादी–स्त्री० [फा०] १. बुनिया
जड़ से संबंध रखनेवाला। २. नि
प्रारंभिक। आधारिक।

बुबुकारी–स्त्री० [अनु०] जोर से
का शब्द।

बुभुक्षा–स्त्री० [सं०] भूख। क्षुधा।

बुभुक्षित–वि० [सं०] भूख। क्षुधा।

बुयाम–पुं० [अं० ?] चीनी मिट्ट
एक प्रकार का बड़ा पात्र।

बुरकना–स० [अनु०] चूर्ण आदि
चीज पर छिड़कना। भुरभुराना।

बुरका–पुं० [अ०] एक प्रकार का
नावा जिससे मुसलमान स्त्रियाँ सिर से
तक के सब अंग ढकती हैं।

बुरा–वि० [सं० विरूप] अच्छा या
का उलटा। निकृष्ट। मंद। खराब।

मुहा०–बुरा मानना = अनुचि
खराब समझना। (किसी से)
मानना = द्वेष या वैर रखना।
त्यागना।

यौ०–बुरा-भला = १. हानि-ला
गाली गलौज।

बुराई–स्त्री० [हिं० बुरा + ई (प्रत्य
१. बुरा होने का भाव। बुरापन।
२. अवगुण। दोष। दुर्गुण। ३. नि
निंदा। ४. द्वेष। दुर्भाव।

बुरादा–पुं० [फा०] लकड़ी चीर
निकलनेवाला उसका चूर्ण। कुनाई।

बुरुश–पुं० [अं० ब्रश] रँगने या
करने के लिए खास तरह की बनी हुई

बुर्ज–पुं० [अ०] १. किले आदि की
में वह ऊपरी भाग जिसमें बैठने के
थोड़ा स्थान होता है। गरगज। २.

१. बेसन के तले हुए छोटे गोल टुकड़े। २. इन टुकड़ों से बना हुआ लड्डू। ३. बरसनेवाले जल की बूँदें।

बू–स्त्री० [फ़ा०] १. गंध। महक। २. दुर्गंध।

बूआ–स्त्री० [देश०] १. पिता की बहन। फूफी। २. बड़ी बहन। (मुसल०)

बूक–पुं० [हिं० बकोटा] कोई वस्तु उठाने के लिए हथेली की गहरी की हुई मुद्रा। चंगुल। बकोटा।

बूकना–स० [देश०] १. महीन पीसना। २. केवल योग्यता दिखाने के लिए बातें करना। जैसे-अंग्रेज़ी बकना।

बूका–पुं० १. दे० 'गंगा-बरार'। २. दे० 'बुक्का'।

बूकी†–स्त्री० दे० 'बुकनी'।

बूचड़–पुं० [अं० बुचर] कसाई।

बूचा–वि० [?] १. जिसके कान कटे हुए हों। कनकटा। २. जो किसी अंग के न होने या कटे होने के कारण भद्दा या बुरा जान पड़े।

बूजना–स० [?] धोखा देना।

बूझ–स्त्री० [सं० बुद्धि] १. समझ। बुद्धि। अक्ल। २. बुझौवल। पहेली।

बूझना–स० [सं० बुध्य] १. समझना। जानना। २. पूछना। ३. पहेली का उत्तर निकालना।

बूट–पुं० [सं० विटप] १. चने का हरा पौधा या दाना। २. पेड़ या पौधा।

पुं० [अं०] एक प्रकार का जूता।

बूटना*–अ० [?] भागना।

बूटनि*–स्त्री० दे० 'बीर-बहूटी'।

बूटा–पुं० [सं० विटप] १. छोटा वृक्ष। पौधा। २. कपड़ों, दीवारों आदि पर बने हुए फूलों या वृक्षों आदि के आकार के चिह्न। बड़ी बूटी।

बूटी–स्त्री० [हिं० 'बूटा' का स्त्री० अल्पा० रूप] १. बनस्पति। जड़ी। २. भांग। ३. छोटे फूलों के से वे चिह्न जो किसी चीज़ पर बने होते हैं। छोटा बूटा।

बूड़ना†-स० = डूबना।

बूड़ा†-पुं० [हिं० डूबना] १. जल की बाढ़। २. आदमी के डूबने भर का गहरा पानी।

बूढ़-स्त्री० [हिं० 'बूढ़ा' का स्त्री०] बीरबहूटी। व्रज में बीरबहूटी को सावन की बूढ़ी कहते हैं, जिससे यह शब्द बना है। उदा०—गूढ़-मानु मन क्यों रहै, भपे बूढ़-रँग नैन। —बिहारी।

वि० = बुड्ढा।

बूढ़ा-वि० = बुड्ढा।

बूता-पुं० [हिं० बित्त] कोई काम करने की शक्ति। सामर्थ्य।

बूरना*-अ० = डूबना।

बूरा-पुं० [हिं० भूरा] १. भूरे रंग की कच्ची चीनी। शक्कर। २. साफ की हुई चीनी। ३. बुकनी। चूर्ण।

बृच्छ*-पुं० = वृक्ष।

बृहत्-वि० [सं०] बहुत बड़ा। विशाल।

बृहत्तर-वि० [सं० बृहत् + तर (प्रत्य०)] १. किसी बड़े की तुलना में और अधिक बड़ा। २. उस रूप, प्रकार या विस्तार का जिसमें किसी मूल पदार्थ, देश आदि के अतिरिक्त उसके प्रभाव से युक्त आस-पास के कुछ और पदार्थ या देश भी सम्मिलित हों। (ग्रेटर) जैसे—बृहतर भारत = भारत के अतिरिक्त सिंहल, बर्मा, सुमात्रा, मलाया आदि देश, जिनपर किसी समय भारत का यथेष्ट प्रभाव या बहुत कुछ अधिकार था।

बृहद्-वि० [सं०] बहुत बड़ा। विशाल।

बृहस्पति-पुं० [सं०] १. सब देवताओं के गुरु, एक प्रसिद्ध वैदिक देवता। २. सौर जगत् का पाँचवाँ ग्रह। (जुपिटर)

बेंग-पुं० [सं० भेक] मेढ़क।

बेंच-स्त्री० [अं०] १. लकड़ी, लोहे आदि की एक प्रकार की लंबी चौकी। २. सरकारी न्यायालय के न्यायकर्त्ता।

बेंट(ठ)-स्त्री० [देश०] औजारों में लगी हुई काठ की मूठ। दस्ता।

बेंड़-स्त्री० [हिं० बेड़ा] टेक। चाँड़।

बेंड़ना*-स० दे० 'बेढ़ना'।

बेंड़ा†-वि० [सं० विकांड] जो खड़ा न हो सके] १. आड़ा। २. विकट। कठिन। विशेष दे० (विशेषण)

बेंत-पुं० [सं० वेतस्] एक प्रसिद्ध जिसके डंठलों से छड़ियाँ और बनती और कुरसियाँ बुनी जाती हैं। **मुहा०**-बेंत की तरह काँपना से थर थर काँपना।

बेंदा-पुं० [सं० विंदु] १. माथे पर की गोल बड़ी बिंदी। बड़ी गोल २. दे० 'बेंदी'।

बेंदी-स्त्री० [सं० विंदु, हिं० बिंदी दे० 'बिंदी'। २. दावनी (गहना)

बेंवत-स्त्री० दे० 'ब्योंत'।

बे-अव्य० [फा०, मि० सं० वि०] हीन। जैसे—बे-होश, बे-दम।

अव्य० [हिं० हे] तिरस्कारपूर्ण

बे-अंत*-वि० [हिं० बे + सं० जिसका कोई अंत न हो। अनंत।

बे-अदब-वि० [फा० बे + अ० [भाव० बे-अदबी] जो बड़ों का सम्मान करना न जाने या न करे।

बे-आबरू-वि० [फा०] बेइज्जत।

बे-इज्जत-वि० [फा० बे + अ० [भाव० बेइज्जती] १. जिसकी कुछ न हो। अप्रतिष्ठित। २. अपमानित।

बे-ईमान-वि० [फा०] [भाव० बे १. जो ईमान या धर्म का विचार अधर्मी। २. छल-कपट या और प्रकार का अनाचार करनेवाला।

बे-कदर-वि० [फा०] [भाव० बे बेइज्जत। अप्रतिष्ठित।

बे-कदरा-वि० [फा० बेकद्र] १. कोई कदर या आदर न हो। २. या आदर करना न जाने। ३.

बेगड़ी– पुं० [सं० वैकटिक = जौहरी, प्रा० बेगड़िअ] १. रत्न-परीक्षक। जौहरी। २. वह जो नगीने आदि काट या तराशकर उन्हें सुडौल बनाता हो। हीरा-तराश।

बेगम–स्त्री० [तु० बेग का स्त्री० रूप] १. रानी। राज-पत्नी। २. स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। ३. पत्नी। जोरू। जैसे–बेगम मुहम्मद अली।

बेगर†–वि० दे० 'बहर'।
क्रि० वि०दे० 'बगैर'।

बे-गरज़–वि० [फा० बे + अ० ग़रज़] जिसे कोई गरज या परवा न हो।

बेगाना–वि० [फा०] १. गैर। दूसरा। पराया। २. अपरिचित। अनजान।

बेगार–स्त्री० [फा०] १. बिना मजदूरी दिये जबरदस्ती लिया जानेवाला काम। २. वह काम जो मन लगाकर न किया जाय।

मुहा०–बेगार टालना = बिना मन लगाये यों ही कुछ काम कर देना।

बेगारी–स्त्री० [फा०] १. बेगार में काम करनेवाला आदमी। २. दे० 'बेगार'।

बेगि*–क्रि० वि० [सं० वेग] जल्दी से।

बे-गुनाह–वि० [फा०] [भाव० बेगुनाही] जिसने कोई गुनाह न किया हो। निरपराध। बेकसूर।

बेचना–स० [सं० विक्रय] मूल्य लेकर किसी को कुछ देना। विक्रय करना।

मुहा०–बेच खाना = १. बेचकर मूल्य खा जाना। २. रहित या हीन हो जाना। जैसे–तुमने तो अक्ल बेच खाई है।

बेचवाल–पुं० [हिं० बेचना] बेचनेवाला।

बेचान–स्त्री० [हिं० बेचना] बेचने की क्रिया या भाव। बेची।

बेचारा–वि० [फा०] [स्त्री० बेचारी] दीन और निस्सहाय। संबल-रहित।

बेची–स्त्री० [हिं० बेचना] १. बेचने की क्रिया या भाव। विक्रय। (डिस्पोजीशन) २. वह लेख जो हुंडी आदि की पीठ पर

उसे बेचनेवाला यह सूचित करने के लिए लिखता है कि मैंने इसे अमुक के हाथ बेच दिया।

बेची-लेख–पुं० दे० 'अनुलेख'।

बेचूँ–वि० [फा०] उपमा-रहित। अनुपम। (ईश्वर का विशेषण)

बेचू–वि० [हिं० बेचना] बेचनेवाला।

बेचून*–वि० [फा० बेचूँ = अनुपम] जिसकी बराबरी का और कोई न हो। अनुपम। (ईश्वर का एक विशेषण)

बेचैन–वि० [फा०] [भाव० बेचैनी] १. जिसे चैन न मिलता हो। २. व्याकुल।

बे-जबान–वि० [फा०] १. जिसमें बोलने की शक्ति न हो। २. गूँगा। मूक। ३. जो विरोध करना न जानता हो। दीन।

बेजा–वि० [फा०] अनुचित। ना-मुनासिब।

बे-जान–वि० [फा०] १. जिसमें जान न हो। निर्जीव। २. मुरदा। मृतक। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४. बहुत दुर्बल या कमजोर।

बे-जाब्ता–वि [फा० + अ०] भाव० बेजाब्तगी] जाब्ते या नियम आदि के विरुद्ध।

बे-जोड़–वि० [फा० बे + हिं० जोड़] १. जिसमें जोड़ न हो। अखंड। २. जिसकी जोड़ी का और कोई न हो। अद्वितीय। (यूनीक)

बेझना*–स० [सं० बेधन] विद्ध करना। बेधना। उदा०–चल-चिन-बेझैं चुकति नहिं बंक-विलोकति बान।—बिहारी।

बेझा*–पुं० [सं० बेध] निशाना। लक्ष्य।

बेट–पुं० [सं० विष्टि] बेगार।

स्त्री० दे० 'बेंट'।

अव्य० [?] वास्ते। लिए।

बेटकी*–स्त्री० = बेटी।

बेटला*–पुं० = बेटा।

बेटा–पुं० [सं० वटु = बालक] [स्त्री० बेटी] नर सन्तान। पुत्र। लड़का।

बेठन–पुं० [सं० वेष्टन] वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियाँ, थान आदि जाते हैं। बस्ता।

बे-ठिकाने–वि० [फा० बे + हिं०
१. जो अपनी ठीक जगह पर
२. अनुपयुक्त। ३. व्यर्थ। निरर्थक।

बेड़–पुं० [हिं बाड़] १. वृत्त के चारों
की मेंड़। २. रुपया। (दलाल)

बेड़ना–स० दे० 'बेढ़ना'।

बेड़ा–पुं० [सं० वेष्ट] नदी पार
लिए लट्ठों आदि से बनाया हुआ
तिरना।

**मुहा०–बेड़ा पार करना
लगाना** = संकट से पार या मुक्त
२. बहुत-सी नावों, जहाजों या हवाई
आदि का समूह या दल।

वि० [सं० विकांड = जो सीधा खड़ा
सके, अ० वियड, पुं० हिं० बड़ंड]
आँखों के समानान्तर दाहिनी ओर
ओर गया हो। जो सीधे बल में न हो,
आड़े बल में हो। आड़ा। २.
मुश्किल। विकट।

बेड़िन(नी)–स्त्री० [?] नट
नाचने-गानेवाली स्त्री।

बेड़ी–स्त्री० [सं० वलय] लोहे के
की वह जोड़ी जो अपराधियों के पैरों में
बाँध रखने के लिए पहनाई जाती है।
स्त्री० [हिं० बेड़ा] नौका। छोटी
बे-डौल–वि० [हिं० बे + डौल]
बनावट का। भद्दा। २. दे० 'बेढं

बेढंगा–वि० [हिं० ढंग] [भाव०
पन] १. जिसका ढंग ठीक न हो
भद्दी तरह से लगाया, रखा या
हुआ। बे सिलसिले। ३. भद्दा।

बेढ़–पुं० [?] नाश। बरबादी।

बेढ़ई–स्त्री० [हिं० बेढ़ना] कचौड़ी।

बेढ़ना–स० [सं० वेष्टन] १. वृक्षों
की रक्षा के लिए चारो ओर मेंड़
उन्हें घेरना। रूँधना। २. चौपायों को

बे-मेल। २. बेढंगा। बेढब।

बेद–पुं० = वेद।

पुं० [फा० मि० सं० वेतस्] बेंत।

बे-दखल–वि० [फा०] [भाव० बेदखली] जिसका दखल, कब्जा या अधिकार हटा दिया गया हो। अधिकार-च्युत।

बे-दखली–स्त्री० [फा०] संपत्ति पर से किसी का दखल या अधिकार हटाकर उसे उसके मार्ग से रहित करना। बेदखल करना। (ईनेक्टमेन्ट)

बेदम–वि० [फा०] १. मृतक। निर्जीव। मृतप्राय। अधमरा। ३. जर्जर। बोदा।

बेदर्द–वि० [फा०] [भाव० बेदर्दी] जो किसी की व्यथा या कष्ट पर ध्यान न दे। कठोर-हृदय।

बेदवा†–पुं० [सं०] वेदों का ज्ञाता या पंडित। (उपेक्षा-सूचक)

बेदाग–वि० [फा०] १. जिसमें दाग या धब्बा न हो। साफ। २. निरपराध। बेकसूर।

बेदाना–पुं० [हिं० बिहीदाना] १. एक प्रकार का बढ़िया अनार। २. बिहीदाना नामक फल का बीज।

बेदाम–वि० [फा०] बिना दाम का। मुफ्त। पुं० दे० 'बादाम'।

बेध–पुं० [सं० वेध] १. छेद। २. दे० 'वेध'।

बे-धड़क–क्रि० वि० [फा० बे + हिं० धड़क] १. बिना किसी प्रकार की धड़क या संकोच के। निःसंकोच। २. निडर होकर।

वि० १. जिसे कोई संकोच या खटका न हो। निर्द्वंद्व। २. निर्भय। निडर।

बेधना–स० [सं० वेधन] नुकीली चीज से छेदना। भेदना।

बे-धर्म–वि० [सं० विधर्म] १. जिसे अपने धर्म का ज्ञान न हो। २. जिसने अपना धर्म छोड़ दिया हो।

बेधिया–वि० [सं० बेधना] बेधने या छेदनेवाला ।

पुं० हाथी को चलाने का अंकुश ।

बेधीर*–वि० दे० 'अधीर' ।

बेन†–पुं० [सं० वेणु] १. मुरली । बाँसुरी । २. बाँस ।

*पुं० दे० 'वेण' ।

बे-नसीब–वि० = अभागा ।

बेना–पुं० [सं० वेणु] [स्त्री० बेनिया] १. बाँस का छोटा पंखा । २. बाँस । ३. खस ।

बेनिसून*-वि० दे० 'बेजोड़' ।

बेनिया–स्त्री० [हिं० बेना] छोटा पंखा । पंखी ।

बेनी–स्त्री० [सं० वेणी] १. स्त्रियों की चोटी । २. दे० 'त्रिवेणी' ।

बेनु–पुं० १. दे० 'बेन' । २. दे० 'वेण' ।

बे-परद–वि० [फा० बे + परदा] [भाव० बेपर्दगी] १. जिसके आगे कोई परदा या ओट न हो । अनावृत । २. नंगा । नग्न ।

बेपरवा(ह)–वि० [फा० बेपरवाह] [भाव० बेपरवाही] १. जिसे कोई परवा न हो । बेफिक्र । २. परम उदार ।

बेपाइ–वि० [हिं० बे + उपाय] जिसे कोई उपाय न सूझे । हक्का-बक्का ।

बेपीर–वि० दे० 'बे-दर्द' ।

बे-पेंदी–वि० [हिं० बे = पेंदा] जिसमें पेंदा या तल न हो ।

बोल०–बेपेंदी का लोटा = जिसका कोई निश्चित मत या सिद्धान्त न हो ।

बे-फायदा–वि०, क्रि० वि० [फा०] व्यर्थ ।

बे-फिक्र–वि० [फा०] [भाव० बेफिक्री] जिसे कोई फिक्र न हो । निश्चिन्त ।

बेबस–वि० [सं० विवश] [भाव० बेबसी] १. जिसका वश न चले । लाचार । २. पराधीन । पर वश ।

बेबाक–वि० [फा०] [भाव० बेबाकी] चुकता किया या चुकाया हुआ । (ऋण, देन आदि)

बेबान*–पुं० = विमान ।

बेमुरव्वत–वि० [फा०] [भाव०
मुरव्वती] जो मुरव्वत न करे । तोता-च

बेमौका–वि० [फ़ा०] जो ठीक मौके
अवसर पर न हो ।

पुं० मौके का न होना ।

बे-मौसिम–वि० [फा०] १. मौसि
होने पर भी होनेवाला । २. जि
मौसिम न हो ।

बेर–पुं० [सं० वदरी] एक प्रसिद्ध कँ
वृक्ष जिसके फल खाये जाते हैं ।

स्त्री० [हिं० बार] १. बार । दफा ।
विलम्ब । देर ।

बे-रहम–वि० [फा० बेरह्म] [
बेरहमी] दयाशून्य । निर्दय । निठुर ।

बेरा†–पुं० [सं० वेला] १. समय ।
२. सबेरा । प्रातःकाल ।

† पुं० दे० 'बेड़ा' ।

बेराम†–वि० दे० 'बीमार' ।

बेरिध*–पुं० [सं० वृद्ध] वृद्धा
बुढ़ापा ।

वि० दे० 'वृद्ध' ।

बेरियाँ†–स्त्री० [हिं० बेर] समय ।

बेरी–स्त्री० १. दे० 'बेर' । २. दे०

† स्त्री० [हिं० बार] १. बार ।
२. देर । विलम्ब ।

बेरुख–वि० [फा०] [भाव० बे
१. जो काम पड़ने पर रुख (मुँह)
उदासीन या अप्रसन्न हो जाय । बे-मु
२. अप्रसन्न । नाराज ।

बेलंब*–पुं० दे० 'विलंब' ।

बेल–पुं० [सं० बिल्व] १. एक
कँटीला वृक्ष जिसके गोल फल खाये
हैं । श्रीफल ।

स्त्री० [सं० वल्ली] १. वह बहुत ही
पेड़ी और पतले डंठलों का वह छोटा
पौधा जो दूसरे वृक्षों आदि के आ
ऊपर की ओर बढ़ता हो । बल्ली । ल

चढ़ना = काई काम
करता।
। ३. कपड़े आदि पर
हुई फूल-पत्तियाँ।
ई।
] १. एक प्रकार की
निश्चित करने के लिए
पर डाली हुई लकीरें।
।
] कुदाल। कुदारी।
] [भाव० बेलज्जती
या स्वाद न हो।
] फावड़ा चलानेवाला

वेलन] लंबोतरे आकार
खंड जिससे कोई स्थान
अथवा कंकड़-पत्थर कूटकर
। (रोलर) २. यंत्रों में
आकार का कोई बड़ा पुरजा
को चलाने या उसका कोई
नेवाला पुरजा। (सिलेंडर)
की मुठिया या हत्था।
[सं० वेलन] काठ, पीतल
प्रसिद्ध उपकरण जिससे रोटी,
जाती है।
आदि बनाने के लिए आटे
पर रखकर बेलने की
बड़ा और पतला करना।
बेलना = व्यर्थ के या
ना।
= लहर] विनोद के लिए
ना।
] चौपट या नष्ट करना।
बरसात ने कई मकान
[हिं० बेलना] कपास ओटने
।
दे० 'बेलपत्र'।

बेलपत्र–पुं० [सं० बिल्वपत्र] बेल (वृक्ष) के पत्ते जो शिव जी पर चढ़ाये जाते हैं।

बेलरी*–स्त्री० दे० 'बेल'।

बेलसना–अ० [सं० विलास + ना (प्रत्य०)] भोग करना। सुख लेना।

बेला–पुं० [सं० विचकिल, प्रा० बिअइल्ल] १. चमेली की तरह का सुगंधित फूलोंवाला एक छोटा पौधा। २. इस पौधे का फूल। स्त्री० [सं० वेला] १. तरंग। लहर। २. समुद्र का किनारा।
उभय० समय। वक्त।
पुं० [फा० बेलः] १. रुपये आदि रखने की थैली। २. डण्डी लगी हुई चमड़े की वह छोटी कुप्पी जिससे तेल आदि किसी बर्तन में से निकालते हैं। ३. कटोरा। प्याला।
पुं० [अं० वायोलिन] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

बे-लाग–वि० [फा बे + हिं० लाग = सम्बन्ध] १. जो किसी पर टिका न हो। बिना आधार का। २. बिलकुल अलग। ३. व्यवहार में सच्चा और साफ। खरा।

बेलि*–स्त्री० [सं० वल्ली] लता। बेल।

बेली–पुं० [सं० बल] संगी। साथी। स्त्री० बेल (लता)।

बे-लौस–वि० [हिं० बे + फा० लौस] १. पक्षपात न करनेवाला। २. सच्चा। खरा।

बेवकूफ–वि० [फा०] [भाव० बेवकूफी] मूर्ख। नासमझ।

बेवक्त–क्रि० वि० [फा०] कुसमय में।

बेवट†–स्त्री० [?] १. संकट। २. विवशता।

बेवपार*–पुं० दे० 'व्यापार'।

बेवरा*–पुं० दे० 'ब्योरा'।

बेवहरना*–अ० [सं० व्यवहार] १. व्यवहार करना। बरताव करना। बरतना। २. व्यापार या रोज़गार करना।

बेवहरिया–पुं० [सं० व्यवहार] लेन-देन का व्यापार करनेवाला। महाजन।

बेवहार†–पुं० = व्यवहार।

बेवा–स्त्री० [फा० बेवः] विधवा । राँड़ ।

बेवाई–स्त्री० दे० 'बिवाई' ।

बेवान*–पुं० दे० 'विमान' ।

बे-शऊर–वि० [हिं० बे + अ० शऊर] [भाव० बेशऊरी] जिसे कोई काम करने का शऊर न हो या ठीक ढंग न आता हो ।

बेशऊरी–स्त्री० [हिं० बेशऊर] 'बेशऊर' होने की अवस्था या भाव ।

बेशक–क्रि० वि० [फा० बे + अ० शक] अवश्य । निःसन्देह । जरूर ।

बेशरम–वि० [फा० बेशर्म] जिसे शरम न हो । निर्लज्ज । बेहया ।

बेशी–स्त्री० [फा०] अधिकता ।

बे-शुमार–वि० [फा०] जिसकी गिनती न हो सके । अगणित । असंख्य ।

बेसंदर–पुं० [सं० वैश्वानर] अग्नि ।

बे-सँभर(भार)–वि० दे० 'बेसुध' ।

बेस–पुं० [सं० वेष] भेस ।

बेसन–पुं० [देश०] चने की दाल का महीन चूर्ण या आटा ।

बेसनी–स्त्री० [हिं० बेसन] १. बेसन से बना हुआ एक प्रकार का पकवान । २. बेसन से भरी हुई रोटी या कचौरी । वि० १. बेसन से बना हुआ । जैसे–बेसन हलुआ । २. बेसन संबंधी । बेसन का ।

बे-सबरा–वि० [फा० बे + अ० सब्र] १. जिसे सब्र या संतोष न हो । २. उतावला ।

बे-सबरी–स्त्री० [फा० बे + अ० सब्र] बे-सबरा होने की दशा या भाव । अधीरता । आतुरता ।

-समझ–वि० [हिं० बे + समझ] [भा० बेसमझी] ना-समझ । मूर्ख ।

बे-समझी–स्त्री० [हिं० बे-समझ] 'बे-समझ' का भाव । ना-समझी । मूर्खता ।

बेसर–पुं० [सं० वेशर] खच्चर । पुं० [?] नाक में पहनने की नथ ।

बेसवा*–स्त्री० दे० 'वेश्या' ।

बेसा*–स्त्री० दे० 'वेश्या' ।

बेसारा*–वि० [हिं० बैठना] बै रखने या जमानेवाला ।

बेसाहना†–स० [सं० व्यसन] [बेसाहनी] १. मोल लेना । खरीद जान-बूझकर अपने सिर लेना । (बैर, संकट आदि)

बेसुध–वि० [हिं० बे + सुध = जिसे सुध या होश न हो । बद-हवास ।

बेसुर(ा)–वि० [हिं० बे + सुर = १. अपने नियत स्वर से हटा हुआ । २. बे-मौका ।

बेस्वा†–स्त्री० = वेश्या ।

बेहंगम–वि० [सं० विहंगम] १. बेढंगा । २. बेढब । विकट ।

बेहँसना*–अ० दे० 'बिहँसना' ।

बेह*–पुं० [सं० वेध] छेद । छिद्र ।

बेहट–पुं० [गोंड भाषा] गाँव । नामों के अंत में) जैसे–ताल बेहट ।

बेहतर–वि० [फा०] [भाव० किसी की तुलना में अच्छा । अपेक्षा अच्छा । बढ़कर ।

बे-हद–वि० [फा०] १. जिसकी सीमा न हो । असीम । २. बहुत

बेहना†–पुं० [देश०] धुनियाँ । *स० [सं० वेध] छेद करना ।

बे-हया–वि० [फा०] [भाव० जिसे दया या शरम न हो । निर्लज्ज ।

बेहयाई–स्त्री० [फा०] बेहया होने की दशा या भाव । बेशरमी ।

बेहर*–वि० [हिं० बेहरना] जुदा । पृथक् ।

बेहरना*–अ० [सं० विदीर्ण]

बेहरा–वि० [सं० विघट] अलग । पुं० [अं० बेयरर] बड़े अधिकारी निजी चपरासी या आदमी ।

बेहराना*–स० [सं० विदीर्ण]

] बहुत से लोगों से
थोड़ा धन । चंदा ।

[फा० बे + अ० हाल]
] १. जिसका हाल या
। २. व्याकुल । बेचैन ।
[फा० बे + अ० हिसाब]
और पूरा हिसाब न रखा
अधिक । बेहद ।
[हिं० बे + फा० हुनर]
विद्या न आती हो ।
] [भाव० बेहूदगी]
हो । अशिष्ट ।
[सं० विहीन] बिना ।

] जिसे होश न हो ।

] मूर्च्छा । अचेतनता ।

] एक पौधा
तरकारी बनती है । भंटा ।
वि० [हिं० बैंगन] बैंगन
नीले रंग का ।
] अँगरेजी बाजे या उनके
समूह ।
। (विशेषण)
। २. दे० 'बेंत' ।
] जुलाहों का कंघा या
। (दे० 'कंघा' २.)
= व्यर्थ ।
(अवस्था) ।
] बेचना । बिक्री ।
दे०
[सं० विकल] १. विकल ।
।
।
। (थैला)
।

बैटरी–स्त्री० [अं०] १. चीनी या शीशे आदि का वह पात्र जिसमें रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम में लाई जाती है । २. इसी प्रकार की प्रक्रिया से तैयार किया हुआ लोहे आदि का छोटा मुँह-बंद पात्र जो रोशनी आदि करने के लिए होता है । ३. तोपखाना ।

बैठक-स्त्री० [हिं० बैठना] १. बैठने का स्थान या आसन । २. वह स्थान जहाँ बहुत-से लोग बैठते हों । चौपाल । ३. बैठने की मुद्रा या ढंग । ४. मूर्त्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी । पदस्तल । ५. सभा-समिति आदि का एक बार का अधिवेशन । (सिटिंग) ६. दे० 'बैठकी' ।

बैठकबाज–वि० [हिं० बैठक + फा० बाज] [भाव० बैठकबाजी] केवल बातें बनाकर काम निकालनेवाला । धूर्त्त । चालाक ।

बैठकी–स्त्री० [हिं० बैठक + ई (प्रत्य०)] १. एक कसरत जो बार बार कुछ विशेष प्रकार से उठ और बैठकर की जाती है । बैठक । २. दीपक के लिए धातु आदि का बना हुआ आधार । ३. वह आधा मोती जो अँगूठी आदि पर नगीने के रूप में बैठाया या जड़ा जाता है । ४. (नाच से भिन्न) वेश्या का वह गाना जो महफिल में बैठकर गाती है । ५. दे० 'बैठक' ।

बैठना–अ० [सं० वेशन] १. टाँगों का आश्रय छोड़कर ऐसी स्थिति में होना कि चूतड़ किसी आधार पर रहें । २. स्थित या आसीन होना । आसन जमाना ।
मुहा०–बैठे-बैठाये या बैठे-बैठे = (क) बिना कुछ किये । (ख) अचानक । एकाएक । **बैठते-उठते** = हर समय । सदा ।
२. किसी जगह ठीक तरह से जमना । ३. अभ्यस्त होना । जैसे–हाथ बैठना । ४. जल आदि में घुली हुई वस्तु का नीचे तल में जा लगना । ५. पचकना । ६. (कार-बार) बिगड़ना । ७. तौल में ठहरना या उतरना ।

८. लागत आना। ९. लक्ष्य या निशाने पर लगना। १०. पौधे का जमीन में लगाया या रोपा जाना। ११. किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी-रूप में जा रहना। १२. पक्षियों का अंडे सेना। १३. निर्वाचन आदि में उम्मेदवार का प्रतियोगिता से हट जाना। खड़ा न रहना।

बैठाना–स० [हिं० बैठाना] [प्रे० बैठवाना] 'बैठना' का स०। किसी को बैठने में प्रवृत्त करना। विशेष दे० 'बैठाना'।

बैठारना (लना)*–स० = बैठाना।

बैठावन–पुं० [हिं० बैठाना] जुलाहों का एक औजार जिससे बाने के उभरे हुए सूत या तंतु ठीक जगह पर बैठाये जाते हैं। उदा०–तीनि लोक एक करिगह कीन्हों, दिगमन कीन्हों ताना। आदि पुरुष बैठावन बैठे, कबिरा जोति समाना।–कबीर।

बैढ़ना†–स० दे० 'बेढ़ना'।

बैत–स्त्री० [अ०] छन्दोबद्ध रचना। पद्य।

बैतरनी–स्त्री० दे० 'वैतरणी'।

बैताल–पुं० दे० 'बेताल'।

बैद–पुं० दे० 'वैद्य'।

बैदई–स्त्री० [सं० वैद्य, हिं० बैद] वैद्य का काम या पेशा। बैदगी। उदा०–अर्थ, सुनारी, बैदई, करि जानत पतिराम।–बिहारी।

बैदगी–स्त्री० [हिं० बैद] वैद्य या चिकित्सक का काम या व्यवसाय।

बैदाई*–स्त्री० दे० 'बैदगी'।

बैदेही–स्त्री० दे० 'वैदेही'।

बैन*–पुं० [सं० वचन] वचन। बात।

मुहा०–बैन झरना = मुँह से वचन या बात निकलना।

बैन सगाई†–स्त्री० [हिं० बैन = वचन + सगाई = एक रूपता] रचना आदि में रखा जानेवाला अनुप्रास। वर्ण-मैत्री।

बैना–पुं० [सं० वायन] वह मिठाई आदि जो मंगल अवसरों पर संबंधियों और इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।

*स [सं० वपन] बोना।

बैनामा–पुं० [अ० बै + फा० नामा]
पत्र जिसके किसी वस्तु, विशेषतः
या जमीन आदि के बेचने और उसके
रखनेवाली शर्तों आदि का उल्लेख
है। विक्रय-पत्र।

बैपार–पुं० दे० 'व्यापार'।

बैयर*–स्त्री० [सं० वधूवर] औरत।

बैयाँ*–क्रि० वि० [?] घुटनों के बल।

बैया*–पुं० [सं० वाय] बै। बैसर।

बैरंग–वि० [अं० बियरिंग] १.
भेजी जानेवाली वह चिट्ठी आदि
महसूल भेजनेवाले ने न चुकाया हो।
विफल।

बैर–पुं० [सं० वैर] १. शत्रुता। दुश्
२. वैमनस्य। द्वेश।

मुहा०–बैर निकालना = बदला
बैर ठानना = दुश्मनी खड़ी
बैर पड़ना=शत्रु होकर पीछे लगना
बिसहना या मोल लेना=
ठानना'। **बैर लेना**=दे० 'बैर निकाल
पुं० [सं० बदरी] बेर का वृक्ष या

बैरक–उभ० [तु०] सैनिक झंडा।

मुहा०–बैरक बाँधना = कोई
करने और उसके लिए लोगों को अ
अनुयायी बनाने के लिए झंडा
करना। उदा०–अपने नाम की बैर
सुबस बसौं इहि गाँव।–सूर।
स्त्री० [अं०] (सैनिक छावनियों
एक प्रकार का बहुत लंबा मकान
सिपाहियों के रहने के लिए छोटी
कोठरियाँ होती हैं।

बैरख–उभ० दे० 'बैरक'।

बैराग–पुं० दे० 'वैराग्य'।

बैरागर†–पुं० [हिं० बैर ? + सं०
खान (रत्नों आदि की)। उदा०–
बैरागर, धीरज को सागर...। केशव।

बैरागी–पुं० [सं० विरागी] [स्त्री० बै

बोझ-पुं० [?] १. एक में बँधा हुआ वस्तुओं का भारी ढेर। भार। २. भारीपन। गुरुत्व। वजन। ३. कठिन या रुचिविरुद्ध काम। ४. किसी काम का उत्तरदायित्व। भार। ५. एक आदमी या पशु के एक बार ले जाने योग्य भार।

बोझना-स० [हिं० बोझ] बोझ लादना।

बोझल (झिल)-वि० [हिं० बोझ] भारी बोझवाला। वजनी।

बोझा-पुं० दे० 'बोझ'।

बोट-स्त्री० [अं०] नाव। नौका।

बोटा-पुं० [सं० वृन्त] कटा हुआ टुकड़ा।

बोटी-स्त्री० [हिं० बोटा] मांस का छोटा कटा हुआ टुकड़ा।

मुहा०-बोटी बोटी करना या काटना = शरीर को काटकर टुकड़े टुकड़े करना।

बोड़ना-स० दे० 'बोरना'।

बोड़ा-पुं० [देश०] १. अजगर। २. एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है। लोबिया।

बोड़ी-स्त्री० [?] एक प्रकार के पौधे की कली जिसकी तरकारी और अचार बनता है।

बोत-पुं० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

बोतल-स्त्री० [अं० बॉटल्] लंबी गरदनवाला काँच का एक प्रसिद्ध पात्र।

मुहा०-बोतल ढालना = शराब पीना।

बोदरी-स्त्री० [देश०] खसरा नामक रोग।

बोदा-वि० [सं० अबोध] [भाव० बोदापन] १. मूर्ख। गावदी। २. सुस्त। ३. जो पक्का या कड़ा न हो। कमजोर।

बोध-पुं० [सं०] [वि० बोध्य, बोधव्य, कर्त्ता बोधक] १. ज्ञान। जानकारी। २. सान्त्वना। ३. धैर्य। तसल्ली।

बोधक-वि० [सं०] १. ज्ञान करानेवाला। २. सूचक। ३. वाचक।

पुं० साहित्य में संयोग शृंगार के अन्तर्गत एक हाव जिसमें प्रेमी और प्रेमिका संकेतों

से एक दूसरे पर अपने मन के भाव प्रकट करते हैं।

बोधगम्य–वि० [सं०] समझ में आने योग्य।

बोधन–पुं० [सं०] [वि० बोध्य, बोधित] १. बोध या ज्ञान कराना। २. जगाना।

बोधना–स० [सं० बोधन] १. समझाना। २. ज्ञान कराना।

बोधव्य–वि० [सं०] १. जिसका बोध या ज्ञान हो सकता हो। २. जिसका बोध या ज्ञान प्राप्त करना उचित या आवश्यक हो। ३. जिसे किसी बात का बोध या ज्ञान कराया जा सके या कराया जाय।

बोधिवृक्ष–पुं० [सं०] गया के पास पीपल का वह वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध भगवान् को बोध या ज्ञान हुआ था।

बोधिसत्त्व–पुं० [सं०] वह जो बुद्ध बनने का अधिकारी हो गया हो। (महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम)

बोध्य–वि० [सं०] जिसका बोध या ज्ञान हो सके।

बोना–स० [सं० वपन] १. खेत में उपजाने के लिए बीज छिड़कना या बिखेरना। २. किसी बात का सूत्रपात करना। अंकुर लगाना।

*स० [हिं० बोरना का व्रज० रूप] पानी में बोरना। डुबाना। उदा०–करि निरजीव जमुन-जल बोयौ।–सूर।

बोय–स्त्री० [फा० बू] गंध। महक।

बोर–पुं० [हिं० बोरना] कपड़े को रंग में बोरने या डुबाने की क्रिया या भाव।

बोरना–स० [हिं० बूड़ना] १. दे० 'डुबाना'। २. कलंकित या बदनाम करके नष्ट करना। (नाम, कीर्त्ति आदि) ३. पानी मिले हुए रंग में डुबाकर रँगना।

बोरसी–स्त्री० दे० 'अँगीठी'।

बोरा–पुं० [सं० पुर = पात्र] [स्त्री० अल्पा० बोरी] टाट का वह बड़ा थैला जिसमें अनाज आदि भरकर रखते हैं।

बोरिया–पुं० [फा०] १. चटाई। टाट आदि का साधारण बिछौना।

मुहा०–बोरिया बाँधना या बोरिया बिस्तर उठाना = सारा सामान चलने की तैयारी करना।

बोरी–स्त्री [हिं० बोरा] छोटा बोरा।

बोरो–पुं० [हिं० बोरना] एक प्रकार घटिया या मोटा धान।

बोर्ड–पुं० [अं०] १. किसी स्थायी के लिए बनी हुई समिति। जैसे बोर्ड, जिला बोर्ड आदि। २. मामलों का फैसला करनेवाला अधिक भू-आगम बोर्ड का संक्षिप्त नाम 'भू-आगमन बोर्ड'। ३. कागज की दफ्ती। ४. नाम-पट्ट।

बोर्डिंग हाउस–पुं० दे० 'छात्रावास

बोल–पुं० [हिं० बोलना] १. कही हुई बात। वाणी। वचन। २. आक्षेपपूर्ण बात, ताना या गीत और बाजे के बँधे या गठे हुए जैसे–(क) खयाल या ठुमरी के (ख) मृदंग या सितार के बोल। ४. पूर्ण कथन। प्रतिज्ञा।

मुहा०–बोल बनाना = संगीत में समय किसी गीत के एक एक शब्द बार अलग-अलग तरह से कोमलता-पूर्वक उच्चारण करना।

मुहा०–(किसी का) बोल रहना या होना = मान-मर्यादा रहना या बढ़ना।

बोल-चाल–स्त्री० [हिं० बोल + अनु० १. बात-चीत। कथोपकथन। २. व्यवहार की बँधी हुई कथन-प्र मुहावरे की तरह होने पर भी भिन्न होती है।

बोलता–पुं० [हिं० बोलना] १. आत्म २. विवेक। ३. जीवनी शक्ति। प्राण।

मारना = किसी को लक्ष्य करके व्यंग्य-पूर्ण बात कहना ।

बोल्लाह-पुं०[देश०] एक प्रकार का घोड़ा ।

बोल्शेविक-पुं० [रूसी] रूस के साम्यवादी दल का चरम-पंथी सदस्य ।
वि० उक्त दल संबंधी ।

बोल्शेविज्म-पुं० [अं०] रूस के साम्य-वादी दल के चरम-पंथ का सिद्धान्त ।

बोवना†-स० दे० 'बोना' ।

बोवाना-स० हिं० 'बोना' का प्रे० ।

बोह*-स्त्री० [हिं० बोर] डुबकी । गोता ।

बोहनी-स्त्री० [सं० बोधन = जगाना] किसी चीज या दिन की पहली बिक्री या उससे प्राप्त होनेवाला धन ।

सम०-बोहनी-बट्टा = किसी चीज की पहले-पहले होनेवाली बिक्री और उससे मिलनेवाला धन ।

बोहारना*-स० दे० 'बुहारना' ।

बोहित*-पुं० [सं० वोहित्थ] बड़ी नाव ।

बौंड़ी-स्त्री० [सं० वृन्त] १. पौधों लताओं आदि के कच्चे फल या कलियाँ । २. फली । छीमी । ३. दमड़ी । छदाम ।

बौंर†-स्त्री० [सं० वेलि] बेल । लता ।

बौंरना†-अ० [हिं० बौंर] लता, पौधे आदि का फूलना ।

बौखलाना-अ० [?] क्रोध में आकर अंड-बंड बातें कहना ।

बौछार-स्त्री० [वायु + क्षरण] १. हवा के झोंके से आनेवाली वर्षा की झड़ी । २. किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या या मात्रा में आकर गिरना या पड़ना । झड़ी । ३. लगातार कही जानेवाली व्यंग्यपूर्ण या कटु आलोचना की बातें । जैसे-जरा सी भूल हुई और चारों ओर से बौछार होने लगी ।

बौड़ाना-अ० दे० 'बौराना' ।

बौद्ध-पुं० [सं०] गौतम बुद्ध के चलाये हुए धर्म का अनुयायी ।

वि० गौतम बुद्ध या उनके चलाये हुए धर्म से संबंध रखनेवाला। जैसे–बौद्ध शास्त्र।

बौद्ध-धर्म–पुं० [सं०] गौतमबुद्ध का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध भारतीय धर्म।

बौध*–पुं० १. दे० 'बौद्ध'। २. दे० 'बुद्ध'।

बौधा*–क्रि० वि० [सं० बहुधा] अनेक प्रकार से। तरह तरह से।

बौना–पुं० [सं० वामन] [स्त्री० बौनी०] बहुत ठिंगने या नाटे कद का मनुष्य।

बौर†–पुं० [सं० मुकुल] आम की मंजरी। मौर।

वि० दे० बौरा। (पागल)

बौरई–स्त्री० [हिं० बौरा = पागल] बावलापन। पागलपन।

बौरना–अ० [हिं० बौर] आम के पेड़ में बौर या मंजरी निकलना। मौरना।

बौरहा†–वि० दे० 'बावला'।

बौरा–वि० [सं० वातुल] [स्त्री० बौरी] १. पागल। बावला। विक्षिप्त। २. (खेल प्रतियोगिता में) जिसमें प्रतियोगी या जोड़ पहले से निश्चित न हो बल्कि सब के एकत्र हो जानेपर लोग मनमाने ढंग से अपना प्रतियोगी या जोड़ चुन लें। जैसे–बौरा दंगल।

बौराई*–स्त्री० [हिं० बौरा] पागलपन।

बौराना–अ० [हिं० बौरा] [भाव० बौरापन, बौराई] १. पागल हो जाना। सनक जाना। २. पागलों की तरह काम या बातें करना। ३. पागलों की तरह घूमना या भटकना। उदा०–ऐसहि जनम बहुत बौरायौ।–सूर।

स० किसी को बौरा या पागल करना।

बौराह*–वि० दे० 'बावला'।

बौलसिरी*–स्त्री० दे० 'मौलसिरी'।

बौला†–पुं०=बै। (जुलाहों का औजार)

ब्यतीतना–स० दे० 'बिताना'।

अ० दे० 'बीतना'।

ब्यवहार–पुं० दे० 'व्यवहार'

ब्यवहारिया–पुं० [हिं० व्यवहार] लोगों को रुपये उधार देनेवाला। महाजन।

ब्याज–पुं० [सं० व्याज] १. कि
उधार दिये हुए रुपये के बदले में उ
तक मिलनेवाला वह कुछ निश्चित ध
समय तक मूलधन चुका न दिया
सूद। (इन्टरेस्ट] २. दे० 'ब्याज

ब्याजू–वि० [हिं० ब्याज] ब्याज
पर दिया जानेवाला। (धन)।

ब्याधा†–पुं० = व्याधा।

ब्याधि–स्त्री० = व्याधि।

ब्याना–स० [हिं० बियाना = दू
गर्भ से उत्पन्न करना। जनना।
के लिए)

ब्यापना*–अ० [सं० व्यापन] १.
होना। चारों ओर छाना। फैल
प्रभाव दिखाना।

ब्यार*–स्त्री० = बयार (हवा)।

ब्यारी–स्त्री० दे० 'ब्यालू'।

ब्यालू–पुं० [सं० विकाल = सं
भोजन] संध्या समय या रात के
पहर में किया जानेवाला भोजन।

ब्याह–पुं० [सं० विवाह] धा
सामाजिक कृत्य या उसकी रीति जो
पुरुष में पति-पत्नी का संबंध स्थापित
लिये होती है। विवाह। पाणि-ग्रहण।

ब्याहता–वि० [सं० विवाहित]
विवाह हुआ हो। (विशेषतः

ब्याहना–स० [सं० विवाह +
[वि० ब्याहता] १. ब्याह करके
स्त्री को अपनी पत्नी और स्त्री को
अपना पतोह बनाना। २. किसी
के साथ ब्याह करना।

ब्याहुला†–वि० [हिं० ब्याह]

ब्योंचना–अ० [सं० विकुंचन]
जोर से मुड़ जाने के कारण नस
से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन
है। मुड़कना

स० मरोड़ना।

ब्योहरना†–अ० [सं० व्यवहार या उपयोग में लाना । काम में लाना । स० दे० 'व्यवहारना' ।

ब्योहरिया–पुं० [सं० व्यवहार] सूद पर रुपया उधार देने का काम करनेवाला ।

ब्योहार–पुं० = व्यवहार ।

ब्योहारना*–स०[सं० व्यवहार] व्यवहार या आचरण करना । बर्त्ताव करना । उदा०—ऐसे जनम करम के ओछे, औछनि हूँ ब्यौहारत ।—सूर ।

ब्यौसाइ*–पुं० = व्यवसाय ।

ब्यौसाई–पुं० = व्यवसायी ।

ब्रंद*–पुं० दे० 'वृंद' ।

ब्रज–पुं० दे० 'व्रज' ।

ब्रजना*–अ० [सं० व्रजन] चलना ।

ब्रह्मंड–पुं० दे० 'ब्रह्मांड' ।

ब्रह्म–पुं० [सं० ब्रह्मन्] १. वह सबसे बड़ी परम और नित्य चेतनसत्ता जो जगत का मूल कारण और सत्, चित्, आनन्द-स्वरूप मानी गई है । २. ईश्वर । परमात्मा । ३. आत्मा । ४. ब्राह्मण । (समास में) ५. ब्रह्मा (समास में) ६. एक की संख्या । ७. दे० 'ब्रह्म-राक्षस' ।

ब्रह्मचर्य–पुं० [सं०] चार आश्रमों में से पहला जिसमें स्त्री संभोग आदि से बचकर केवल अध्ययन किया जाता है ।

ब्रह्मचार*–पुं० = ब्रह्मचर्य ।

ब्रह्मचारी–पुं० [सं० ब्रह्मचारिन] [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] संयम पूर्वक रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला ।

ब्रह्म-ज्ञान–पुं० [सं०] [वि० ब्रह्मज्ञानी] ब्रह्म या परमार्थिक सत्ता का ज्ञान ।

ब्रह्मण्य–वि०[सं०] १.ब्राह्मणों से संबंध रखने वाला । २. ब्रह्म से सम्बन्ध रखनेवाला । ३. ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला । ४. ब्राह्मणों के उपयुक्त या योग्य फलतः उत्तम । ५. सभ्य और शिष्ट समाज के उपयुक्त या भाग्य और फलतः आदर्शस्वरूप । भक्त ।

ब्रह्मत्व–पुं० [सं०] १. ब्रह्म का भाव। २. ब्राह्मण का भाव।

ब्रह्म-पद–पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

ब्रह्म-पुरी–स्त्री०[सं०]१. ब्राह्मणों की बस्ती। २. ऐसे बहुत से मकानों का समूह या महल्ला जो राजा-महाराजा ब्राह्मणों को एक साथ दान करते थे। ३. ब्रह्मलोक।

ब्रह्म-भोज–पुं० [सं०] ब्राह्मण भोजन।

ब्रह्म-यज्ञ–पुं० [सं०] पंच महायज्ञों में से एक जिसमें अध्यापन, संध्या-वंदन आदि कृत्य किये जाते हैं।

ब्रह्म-राक्षस–पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो अकाल मृत्यु से मर कर प्रेत या राक्षस हो गया हो।

ब्रह्मर्षि–पुं० [सं०] ब्राह्मण ऋषि।

ब्रह्म-लेख–पुं० [सं०] ब्रह्मा का लिखा भाग्य का लेख जो ध्रुव माना जाता है।

ब्रह्म-लोक–पुं० [सं०] ब्रह्मा के रहने का लोक।

ब्रह्मवाद–पुं० [सं०] [वि० ब्रह्मवादी] यह दार्शनिक सिद्धांत कि सारा विश्व ब्रह्म से ही निकलता है, ब्रह्म ही उसे चलाता है, और वह ब्रह्ममय है। (एब्सोल्यूटिज्म) विशेष दे० 'अद्वैतवाद'।

ब्रह्मवादी–वि० [सं० ब्रह्मवादिन] ब्रह्मवाद का सिद्धांत माननेवाला या उसके अनुयायी (एब्सोल्यूटिस्ट)।

ब्रह्म-विद्–वि० [सं०] ब्रह्म को जानने और समझनेवाला। ब्रह्मज्ञानी।

ब्रह्म-विद्या–स्त्री० [सं०] ब्रह्म के स्वरूप और तत्त्वों आदि की विद्या जिसकी चर्चा उपनिषदों में है।

ब्रह्म-समाज–पुं० दे० 'ब्राह्म-समाज'।

ब्रह्म-सूत्र–पुं० [सं०] यज्ञोपवीत। जनेऊ।

ब्रह्म-हत्या–स्त्री० [सं०] ब्राह्मण को मार डालना, जो महापातक माना गया है।

ब्रह्मांड–पुं० [सं०] १. अनंत लोकों या भुवनों अर्थात् तारों, ग्रहों, नक्षत्रों आदि से युक्त संपूर्ण विश्व। २. खोपड़ी के का बीचवाला भाग।

ब्रह्मांड विज्ञान–पुं० [सं०] वह जिसमें इस बात का विवेचन होता ब्रह्मांड में तारे, ग्रह आदि किस बनते, बढ़ते और अन्त में नष्ट (कॉस्मोलोजी)

ब्रह्मा–पुं० [सं०] ब्रह्म के तीन रूपों में वह पहला रूप जो सृष्टि की करनेवाला माना गया है। विधाता।

ब्रह्मानंद–पुं० [सं०] ब्रह्म के मिलनेवाला आनंद।

ब्रह्मावर्त्त–पुं० [सं०] सरस्वती दृशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।

ब्रह्मास्त्र–पुं० [सं०] १. मंत्र से वाला एक प्रकार का प्राचीन कल्पित २. कभी विफल न होनेवाली युक्ति।

ब्रह्मीभूत–वि० [सं०] १. जो मिलकर उसके साथ एक हो गय २. मृत। स्वर्गीय। (साधु-मह के लिए)

ब्रात*–पुं० दे० 'व्रात्य'।

ब्राह*–पुं० = वराह।

ब्राह्म–वि० [सं०] ब्रह्म-संबंधी। पुं० हिंदुओं के आठ प्रकार के से वह जो आज-कल प्रचलित है।

ब्राह्मण–पुं० [सं०] [स्त्री० हिंदुओं के चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति काम पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश हैं। २. उक्त जाति या वर्ण का ३. वेद के मंत्र-भाग से भिन्न भाग।

ब्राह्मण-भोजन–पुं० [सं०] धार्मिक से ब्राह्मणों को कराया जानेवाला भोजन

ब्राह्म मुहूर्त्त–पुं० [सं०] १. सूर्योदय घड़ी पहले का समय। २. प्रभात।

ब्राह्म-वेला–स्त्री० दे० 'ब्राह्म मुहूर्त'।

ब्राह्म समाज–पुं० [सं०] [वि०

त्र ब्रह्म की उपासना
धुनिक सम्प्रदाय।
] १. दुर्गा। २. भारत
लिपि जिससे नागरी आदि
याँ निकली हैं। ३. एक
नेवाली मानी जाती है।
]ब्राह्म-समाज का अनुयायी।
]१. ग्रेट ब्रिटेन या इग्लैंड
अँगरेजों का। अँगरेजी।

ब्रीड़ना*–अ० [सं० व्रीड़न] लज्जित होना।

ब्रीषभ*–पुं० = वृषभ।

ब्लॉक–पुं० [अं०] १. छापे के काम के लिए काठ, ताँबे, जस्ते आदि पर बना हुआ चित्रों आदि का ठप्पा। २. इमारतों का वह समूह जिसके चारो ओर कुछ खाली जगह छुटी हो।

ब्वै†–वि० = बिय (दो)।

ब्वौना†–स० = बोना। (बीज आदि)

भ

माला का चौबीसवाँ और
वर्ण, जिसका उच्चारण
है। छंदःशास्त्र में यह 'भगण'
रूप है।
[अ०] विकट शब्द।
][वि० भग्न] १. टूटने,
विघटित होने की क्रिया या
निश्चय, प्रतीति, नियम आदि
अंतर। बीच। ३. ध्वंस।
टेढ़े होने या झुकने की क्रिया
रन।
।
'भँगेड़ी'।
[हिं० भंग] १. टूटना।
। २. दबाना।
[हिं० भाँग] भाँग के रेशों का
।
[सं०] १. टेढ़ापन।
स्त्रियों के हाव-भाव या कोमल
। ४. प्रतिकृति।
भंगिन्] [स्त्री० भंगिनी]
तोड़नेवाला। २. नष्ट
भंग या नष्ट हो जानेवाला।
भंगिमा] पुरुषों को मोहित
नेवाली स्त्रियों की कोमल

चेष्टाएँ। हाव-भाव। जैसे–भाव-भंगी।

पुं० [सं० भक्त] [स्त्री० भंगिन] मैला या विष्ठा उठानेवाली एक जाति।

पुं० [हिं० भाँग] भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगुर–वि० [सं०] १. जल्दी भंग या नष्ट होनेवाला। नाशवान्। २. टेढ़ा।

भँगेड़ी–वि० [हिं० भाँग] बहुत या नित्य भाँग पीनेवाला। भंगड़।

भँगेला–पुं० दे० 'भँगरा'।

भंजक–वि० [सं०] [स्त्री० भंजिका] भंग करने या तोड़नेवाला।

भंजन–पुं० [सं०] १. तोड़ना। भंग करना। २. ध्वंस। नाश।

वि० तोड़ने, बिगाड़ने या नष्ट करनेवाला। (यौ० शब्दों के अन्त में, जैसे–भव-भय-भंजन)

भँजना–अ० [सं० भंजन] १. टुकड़े होना। टूटना। २. दे० 'भुनना'। (सिक्का)

अ० [हिं० भाँजना] १. भाँजा जाना। २. कागज के तावों का कई परतों में मोड़ा जाना। (दफ्तरी)

भंजना–स० [हिं० भंजन] तोड़ना।

भँजाई–स्त्री० [हिं० भाँजना] भाँजने की क्रिया भाव या मजदूरी।

स्त्री० दे० 'भुनाई'।

भँजाना†–स० [सं० भंजन] १. भाँजने,

तोड़ने आदि का काम दूसरे से कराना। २. दे० 'भुनना'। (सिक्का)

भंटा†–पुं० दे० 'बैंगन'।

भंड–पुं० दे० 'भाँड़'।

वि० [सं०] १. गंदी, भद्दी या अश्लील बातें करनेवाला। २. धूर्त्त। ३. पाखंडी।

भंडता–स्त्री० [सं०] १. भाँड़ों का काम। २. भाँड़ों की सी तुच्छ हँसी-दिल्लगी। ओछा परिहास। ३. मन में उत्पन्न होनेवाली बुरी चेतना या भाव।

भँड़ताल–पुं० [हिं० भाँड़+ताल] १. तालियाँ बजा-बजाकर गाया जानेवाला, निम्न कोटि का, एक प्रकार का गाना। २. इस गाने के साथ होनेवाला नाच।

भँडतिल्ला–पुं० दे० 'भँड़ताल'।

भंडना–स० [सं० भंडन] १. हानि पहुँचाना। २. बिगाड़ना। ३. तोड़ना-फोड़ना। अ० चारो ओर बदनामी करते फिरना।

भंडर–पुं० दे० 'भड्डुर'।

वि० [सं० भंड] १. पाखंडी। २. धूर्त्त।

भँडरिया–स्त्री० [हिं० भंडारा] दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताख या छोटी अलमारी।

भंडा–पुं० [सं० भांड] १. बरतन। पात्र। भाँड़ा। २. भेद। रहस्य।

मुहा०-भंडाफूटना = रहस्य प्रकट होना।

भँडाना–स० दे० 'भंडना'।

भंडा-फोड़–पुं० [हिं० भाँड़ा+फूटना] भेद प्रकट होना। रहस्य खुलना।

भंडार–पुं० [सं० भांडागार] १. कोष। खजाना। २. खाने-पीने की चीजें रखने का स्थान। कोठार। ३. पेट। उदर। ४. दे० 'भंडारा'।

भंडारा–पुं० [हिं० भंडार] १. दे० 'भंडार'। २. समूह। झुंड। ३. साधु-सन्तों का भोज।

भंडारी–पुं० [हिं० भंडार] १. कोषाध्यक्ष। २. भंडार का प्रबन्ध करनेवाला अधिकारी। ३. रसोइया।

भँडेरिया–पुं० दे० 'भड्डुर'।

भँडेहर†–पुं० [सं० भांड] १. छोटे ... विशेषता मिट्टी के बरतन। २. थोड़ी ... जगह में भरी हुई व्यर्थ की बहुत-सी ची...

भँड़ैती–स्त्री० [हिं० भाँड] १. भाँड़ों ... काम या पेशा। २. भाँड़ों की सी हुर... भरी या उछल कूद की चेष्टा या बात-ची...

भँड़ौआ–पुं० [हिं० भाँड़] १. भाँड़ों ... गाने का अशिष्टता पूर्ण गीत या कवि... २. हास्यपूर्ण निम्न कोटि की कविता।

भँभीरी–स्त्री० [सं० भ्रमरी] फिरकी ... का काठ का खिलौना जो खूब चक्कर ... है। उदा०–जिउ बावर भा फिरै भँभीरी ... जायसी।

भँभेरि*–स्त्री० दे० 'भय'।

भँवन†–स्त्री० [सं० भ्रमण] भँवने ... घूमने की क्रिया या भाव। भ्रमण।

भँवना–अ० [सं० भ्रमण] १. घूम... २. चक्कर या फेरा लगाना।

भँवर–पुं० [सं० भ्रमर] १. भौंरा। ... नदी के बहाव में वह स्थान जहाँ ... चक्कर की तरह घूमता है। ३. गड्ढा। ...

भँवर-कली–स्त्री० [हिं० भँवर+... वह ढीली कड़ी जो कील में इस प्र... लगी रहती है कि चारो ओर घूम ...

भँवर-जाल–पुं० [हिं० भ्रम... सांसारिक झगड़े बखेड़े। भ्रम-जा...

भँवरा–पुं० दे० 'भौंरा'।

भँवरी–स्त्री० [हिं० भँवरा] १. ... चक्कर। भँवर। २. दे० 'भौंरी'। स्त्री० दे० 'भाँवर'।

भँवा*–पुं० [हिं० भँवना] फेरा। च...

भँवाना*–स० [हिं० भँवना] १. घु... चक्कर देना। २. धोखे में डालना।

मुहा०-भँवा कर जोतना = किसी ... धोखा देकर उसे कार्य-साधने के ... बनाना।

[हिं० भँवना + आरा
या घूमनेवाला ।
[हिं० भँवाना] १. घुमाने
नेवाला । २. तरह-तरह
या खेल खेलानेवाला ।
[हिं० भाई] १. भाई । २.
ों के लिए संबोधन ।
वन' ।
भाई] बोल-चाल में 'भाई'
। जैसे-भई, वाह ! क्या

के 'भइया' (दुओं) का

[अनु०] १. भक-भक
ना । २. चमकना ।
[सं० भेक] १. मूर्ख ।
ठडु ।
[अनु०] हौआ ।
[सं० भेक] मूर्ख ।
[हिं० भकुआ] चक-
होना ।
देना । २. मूर्ख बनाना ।
[सं० भक्षण] जल्दी या
। (व्यंग्य)
[सं०] १. कई भागों में बाँटा
के लिए बाँटा हुआ । ३.
किया हुआ । ४. ईश्वर
करनेवाला । ५. किसी
रखनेवाला ।
[सं०] [भाव० भक्त-
पर कृपा करनेवाला ।
दे० 'भक्ति' ।
[सं०] १. अलग-अलग
करना । २. भाग ।
विभाग करनेवाली रेखा ।
ईश्वर के प्रति होने-
और प्रेम, जो नौ प्रकार
और इसीलिए जिसे नवधा भक्ति कहते हैं । यथा-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन । ५. किसी बड़े के प्रति होनेवाली श्रद्धा या आदर-भाव ।

भक्ति-मार्ग–पुं० [सं०] धार्मिक क्षेत्र में ईश्वर या देवता की वह उपासना जिसमें उसकी नवधा-भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करने का प्रयत्न होता है ।

भक्ष–पुं० दे० 'भक्षण' ।

भक्षक–वि० [सं०] [स्त्री० भक्षिका] १. खानेवाला । खादक । २. अपने स्वार्थ के लिए किसी का सर्वनाश करनेवाला ।

भक्षण–पुं० [सं०] [वि० भक्ष्य, भक्षित] भोजन करना । खाना ।

भक्षना*–स० = भोजन करना ।

भक्षित–वि० [सं०] खाया हुआ ।

भक्षी–वि० [सं० भक्षयी] दे० 'भक्षक' ।

भक्ष्य–वि० [सं०] जो खाया जा सके । पुं० आहार । भोजन ।

भख*–पुं० [सं० भक्ष] भोजन ।

भखना*–स० [सं० भक्षण] भोजन करना । खाना ।

भगंदर–पुं० [सं०] गुदा के भीतरी भाग में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा ।

भग–पुं० [सं०] १ सूर्य्य । २. धन-सम्पत्ति । ऐश्वर्य । ३. सौभाग्य । स्त्री० स्त्री की योनि या जननेन्द्रिय ।

भगण–पुं० [सं०] १. खगोल में ग्रहों का ३६० अंशों का पूरा चक्कर । २. छंदः-शास्त्र में एक मत जिसमें पहले एक वर्ण गुरु और तब दो वर्ण लघु होते हैं । जैसे–मानस । इसका रूप यह है–।ऽऽ

भगत–वि० [सं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] १. भक्त । सेवक । २. वह जो मांस आदि न खाता हो । ३. दे० 'भगतिया' ।

भगत-बछल*–वि दे० 'भक्त-वत्सल' ।

भगति*–स्त्री० दे० 'भक्ति' ।

भगतिया–पुं० [हिं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] गाने-बजाने का काम करनेवाली राजपुताने की एक जाति।

भगती–स्त्री० दे० 'भक्ति'।

भगदड़–स्त्री० [हिं० भागना + दौड़ना] बहुत से लोगों का एक-साथ इधर-उधर या किसी एक ओर भागना।

भगन†–वि० दे० 'भग्न'।

भगना†–अ० दे० 'भागना'।

पुं० दे० 'भानजा'।

भगर(ल)*–पुं०[देश०] [वि०भगरी(ली)] १. छल। कपट। २. ढोंग। ३. जादू।

भगवंत*†–पुं० दे० 'भगवत्'।

भगवत्–पुं० [सं०] परमेश्वर।

भगवती–स्त्री० [सं०] १. देवी। २.दुर्गा।

भगवदीय–वि० [सं० भगवत्] १.भगवत्-संबंधी। २. भगवान् का भक्त।

भगवान् (न)–वि० [सं०भगवत्] १.धन-संपत्ति या ऐश्वर्यवाला। २. पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

भगाना–स० [हिं० 'भागना' का प्रे०] १. किसी को कहीं से जल्दी हटने या भागने में प्रवृत्त करना। २. ऐसा काम करना जिससे कोई कहीं से हट या भाग जाय। ३. स्त्री-बच्चे आदि को उनके घर के लोगों से छुड़ाकर अपने साथ कहीं ले जाना। अपनयन। (एब्डकशन)

*अ० दे० 'भागना'।

भगिनी–स्त्री० [सं०] बहन।

भगीरथ–पुं० [सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्य्य-वंशी राजा जो उत्कट तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाये थे।

वि० [सं०] (भगीरथ की तपस्या की तरह का) बहुत बड़ा या भारी।

भगोड़ा–पुं० [हिं० भागना] १. वह जो अपना काम, पद या कर्तव्य छोड़कर किसी डर से दूसरी जगह चला गया हो। (फ्यूजीटिव) २. वह जो दंड भोगने के भय से कहीं भाग गया हो। (एब्सकांडर)

भगोल–पुं० दे० 'खगोल'।

भगौती*†–स्त्री० = भगवती।

भगौहाँ–वि० [हिं० भागना] १. के लिए सदा तैयार रहनेवाला। २.

भग्गी‡–स्त्री० दे० 'भगदड़'।

भग्गुल†–वि० दे० 'भगोड़ा'।

भग्गू†–वि० [हिं० भागना] डरकर भा वाला। कायर।

भग्न–वि०[सं०] [स्त्री०भग्ना] टूटा हुआ

भग्नांश–पुं० [सं०] किसी पूरी या संख्या या वस्तु का कोई भाग या (फ्रैक्शन) जैसे–$\frac{1}{4}$ जो १.का भागांश

भग्नावशेष–पुं० [सं०] १ टूटी इमारत या उजड़ी हुई बस्ती का खुचा अंश। खँडहर। २. किसी टूटे-फूटे और बचे हुए टुकड़े।

भग्नाश–वि० [सं०] जिसकी आश हो गई हो। निराश।

भचकना–अ० [हिं० भौचक] आ स्तब्ध होकर रह जाना।

अ० [अनु० भच] [भाव० भ चलने में पैर इस प्रकार लचकाक कि देखने में चलनेवाला लँगड़ा जान पड़े।

भ-चक्र–पुं० दे० 'राशि-चक्र'।

भच्छ*–पुं० दे० 'भक्ष्य'।

भच्छन*–पुं० = भक्षण।

भच्छना†–स० [सं० भक्षण] खा

भजन–पुं० [सं०] १. बार बार या देवता का नाम लेना। २. जिसमें ईश्वर या देवता के गुणों या का श्रद्धा-पूर्ण वर्णन हो।

भजना–अ० [सं० भजन] १. देवता का नाम रटना। भजन करना। २. किसी के ध्यान में लगकर उसकी करना। उदा०–है अनुकूल विधारि

भजै।—तुलसी। ३.
या वहन करना।
भय-भीत है घुन, चन्दनु,
।
, पा० वजन] १.
होना। पहुँचना।
[सं० भजनानंद + ई]
मग्न रहनेवाला।
[हिं० भजन] भजन
।
दे० 'भगाना'।
] १. योद्धा। २. सैनिक।
। मल्ल।
[हिं० भाट] १. भाट का
। भाटपन। २. दूसरों की
और खुशामद।
[सं० भ्रम ?] १. कुछ ढूँढ़ने
इधर-उधर भूलकर घूमते
रास्ता भूलकर इधर-उधर
। ३. भ्रम में पड़ना।
हिं० 'भटकना' का स०।
[हिं० भटकना] १.
। २. भटकानेवाला।
[हिं० भटकना]
।
[अनु०] ऐसी अवस्था
में चकाचौंध होने के कारण
न पड़े।
[हिं० भट + भिड़ना] १.
आस में भिड़ना। भिड़ंत।
। ३. रास्ते में अनायास
भेंट।
[सं० वधू] १. स्त्रियों के लिए
सम्बोधन। २. वधू। बहू।
[सं० भट] १. ब्राह्मणों की एक
। ३. योद्धा। सूर।
[सं०] [स्त्री० भट्टारिका]
। पंडित। ३. सूर्य। ४.

राजा। ५. देवता।

वि० माननीय। मान्य।

भट्ठा—पुं० [सं० भ्राष्ट्र] १. बड़ी भट्ठी। २. ईंटे आदि पकाने का पजावा।

भट्ठी—स्त्री० [सं० भ्राष्ट्र, प्रा० भट्ठ] १. ईंटों आदि का बना वह बड़ा चूल्हा जिसपर कारीगर अनेक प्रकार की वस्तुएँ पकाते हैं। २. देशी शराब बनाने का स्थान या कारखाना। ३. देशी शराब की दूकान।

भठियारा—पुं० [हिं० भट्ठी] [स्त्री० भठियारिन, भाव० भठियारापन] सराय की देख-रेख और उसमें ठहरनेवालों के भोजन का प्रबंध करनेवाला।

भड़ंबा—पुं० [सं० विडंबन] आडंबर।

भड़क—स्त्री० [अनु०] १. भड़कने की क्रिया या भाव। २. भड़कीले होने का भाव। ऊपरी चमक दमक।

भड़कदार—वि० दे० 'भड़कीला'।

भड़कना—अ० [भड़क (अनु०) + ना (प्रत्य०)] १. तेजी से जल उठना। जैसे—आग भड़कना। २. अचानक चौंकना। डरकर पीछे हटना। (पशुओं का) ३. अचानक कुछ उग्र रूप धारण करना। (मनुष्य या उसके मनोविकार का)

भड़काना—स० हिं० 'भड़कना' का स०।

भड़कीला—वि० [हिं० भड़क] तड़क-भड़क या चमक-दमकवाला।

भड़-भड़—स्त्री०[अनु०]१. आघात आदि से होनेवाला भड़-भड़ शब्द। १. व्यर्थ की बकवाद।

भड़भड़ाना—स० [अनु०] आघात करके भड़-भड़ शब्द उत्पन्न करना।

भड़भड़िया—वि० [अनु० भड़भड़] बहुत बढ़-बढ़कर व्यर्थ की बातें करनेवाला।

भड़भाँड़—पुं० [सं० भांडीर] एक प्रकार का कँटीला पौधा, जिसके बीजों का तेल जहरीला होता है। घमोय। सत्यानाशी।

भड़भूँजा—पुं०[हिं०भाड़ + भूँजना]भाड़ में

अन्न भूनने का काम करनेवाली एक जाति।

भड़साई–स्त्री॰ दे॰ 'भाड़'।

भड़हर†–पुं॰ = भाँड़ा। (बरतन)

भड़ार*†–पुं॰ दे॰ 'भंडार'।

भड़ास–स्त्री॰ [अनु॰] १. मन में छिपा हुआ सन्तोष या क्रोध की वह अवस्था जब कि वह किसी उपयुक्त अवसर पर प्रकट किया जाता है। २. वह गर्मी जो पहल-पहल पानी छिड़कने पर भूमि के अन्दर से निकलता है।

भड़िहाई*†–क्रि॰ वि॰ [सं॰ भांडहर] चोरों की तरह लुक-छिपकर।

भड़ी–स्त्री॰ [हिं॰ भड़काना] झूठा बढ़ावा।

भड़ुआ–पुं॰ [हिं॰ भाँड़] १. वेश्याओं का दलाल। २. सपरदाई।

भड़ेरिया–पुं॰ दे॰ 'भड्डर'।

भड़ैत–पुं॰ [हिं॰ भाड़ा] दूसरे के मकान में किराए पर रहनेवाला। किरायादार।

भड़ैती पुं॰ = भड़ैत।

भड़ौआ–पुं॰ [हिं॰ भाँड़] १. वह हास्य-रसपूर्ण कविता जो भाँड़ों की तरह किसी का उपहास करने के लिए हो। २. किसी की कविता के अनुकरण पर बनी हुई, पर उसका उपहास करनेवाली, अथवा हास्य-पूर्ण कविता। (पैरोडी)

भड्डर–पुं॰ [सं॰ भद्र] एक प्रकार के ब्राह्मण जो सामुद्रिक आदि के द्वारा भविष्य बतलाकर अथवा तीर्थों में लोगों को देव-दर्शन कराके जीविका चलाते हैं। भंडर।

भणना*†–अ॰ [सं॰ भणन] कहना।

भणित–वि॰ [सं॰] कहा हुआ। कथित।

भणिति–स्त्री॰ [सं॰] लोकोक्ति। कहावत।

भतार†–पुं॰ [सं॰ भर्तार] पति। खसम।

भतीजा–पु॰ [सं॰ भ्रातृज] [स्त्री॰ भतीजी] भाई का लड़का।

भत्ता–पुं॰ [सं॰ भक्तक] वह मासिक या दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा, महँगी आदि के समय अथवा कोई अ-तिरिक्त कार्य करने के लिए मिलता है। (एलाउएन्स)

भदंत–वि॰ [सं॰ भद्र] पूज्य। मान्
पुं॰ बौद्ध भिक्षुक या साधु।

भदई–स्त्री॰ [हिं॰ भादों] भादों में
होनेवाली फसल।

भद्दा–वि॰ [अनु॰ भद] [स्त्री॰
भाव॰ भद्दापन] १. जो देखने में
न लगे। कुरूप। २. अश्लील।

भद्र–वि॰[सं॰] भाव॰भद्रता] १.
शिष्ट। २.मंगलकारी। श्रेष्ठ। ३. साधु
पुं॰ [सं॰ भद्राकरण] सिर, दाढ़ी
के बालों का मुंडन।

भद्रा–स्त्री॰ [सं॰] १. गाय। २.
३. पृथ्वी। ४. फलित ज्योतिष के
एक अशुभ योग। ५.बाधा। विघ्न। अड़
भनक–स्त्री॰ [सं॰ भणन] १.
शब्द। ध्वनि। २. उड़ती हुई खबर।

भनकना*–स॰ = कहना।

भनना*–स॰ = कहना।

भनभनाना–स्त्री॰ [अनु॰] [भाव॰
भनाहट] भन-भन शब्द करना। गुंजा

भनित*–वि॰ दे॰ 'भणित'।

भनीजना*–स॰ [सं॰ भणन] कह
बोलना।

भभक–स्त्री॰ [अनु॰] १. भभकने की
या भाव। २. रह-रहकर आनेवाली
भभकना–अ॰ [अनु॰] १.
२. जोर से जलना। भड़कना। (
भभका–पुं॰ [हिं॰ भाप] अरक
का एक प्रकार का घड़ा। करावा।

भभकी–स्त्री॰ [हिं॰ भभक] झूठी
या घुड़की।

भभरना†–अ॰ [हिं॰ भय] १.
भीत होना। डरना। २. घबरा
३. भ्रम में पड़ना। ४. एकदम से
पड़ना। भहराना।

भभूका–पुं॰ [हिं॰ भभक] ज्वाला।
भभूत–स्त्री॰ [सं॰ विभूति] वह भस्म

भयावनी] डरावना।

भयावह–वि० [सं०] १. जिसे देखकर भय या डर लगे। भय उत्पन्न करनेवाला। भयानक। २. जिसके कारण कोई विकट या विपत्ति-जनक घटना होने की संभावना या आशंका हो।

भयो†–स्त्री० [सं० भ्रात-जाया] छोटे भाई की स्त्री। छोटी भावज या भौजाई।
*पूर्वी हिन्दी में 'हुआ' का एक रूप।

भरंत–स्त्री० [हिं० भरना] भरने की क्रिया या भाव। भराई।
*स्त्री० [सं० भ्रांति] संदेह।

भर–वि० [हिं० भरना] १. कुल। पूरा। सब। २. (पात्र, मान, नाप आदि के विचार से) भरा हुआ या पूरा। जैसे–कटोरा भर दूध। गज भर कपड़ा।
†क्रि० वि० [हिं० भार] बल से। द्वारा।
*पुं० [सं० भार] १. बोझ। २. दे० 'भराव'।
पुं० [सं० भरत] हिन्दुओं में एक जाति।

भरकना†–अ० दे० 'भड़कना'।

भरका–पुं० [देश०] पहाड़ों या जंगलों में वह गहरा गड्ढा जिसमें चोर-डाकू छिपते हैं।

भरण–पुं० [सं०] १. भरने की क्रिया या भाव। २. पालन। पोषण। ३. किसी के पास उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ पहुँचाना। (सप्लाई)

भरण-पोषण–पुं० [सं०] किसी को जीवित और निश्चिन्त रखकर उसका पालन करने की क्रिया या भाव। (मेन्टीनेन्स सपोर्ट)

भरत–पुं० [सं०] १. रामचंद्र के छोटे भाई जो कैकेई के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। २. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र, जिनके नाम पर इस देश का 'भारतवर्ष' नाम पड़ा है। ३. नाट्य-शास्त्र के प्रधान आचार्य्य एक प्रसिद्ध मुनि।
स्त्री० [हिं० भरना] भरने या भरे हुए होने की क्रिया या भाव। भरन। भराव।
पुं० [सं० भरद्वाज] लवा पक्षी।

पुं० [देश०] काँसा नामक धातु ।

भरतखंड–पुं० = भारतवर्ष ।

भरता–पुं० [देश०] १. बैंगन, आलू आदि को भूनकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का सालन । चोखा । २. वह जो दबने आदि से बिलकुल विकृत हो गया हो ।

भरतार–पुं० [सं० भर्त्ता] १. पति । खसम । २. स्वामी । मालिक ।

भरती–स्त्री० [हिं० भरना] १. किसी चीज में (या के) भरे जाने का काम या भाव । २. सेना, सेवा आदि में प्रविष्ट होने या लिये जाने का भाव । (रिक्रूटमेन्ट) ३. कक्षा आदि में प्रविष्ट होने या लिये जाने का भाव । ४. केवल स्थान-पूर्त्ति के लिए रखी या भरी हुई व्यर्थ की चीजें या बातें ।

मुहा०—भरती का = बहुत ही साधारण । व्यर्थ का या निकम्मा ।

भरथ†-पुं० दे० 'भरत' ।

भरथरी–पुं० दे० 'भर्तृहरि' ।

भरदूल–पुं० [सं० भरद्वाज] लवा (पक्षी) ।

भरद्वाज–पुं० [सं०] १. एक प्राचीन गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि जो राजा दिवोदास के पुरोहित थे । २. बगेरी या भरदूल नामक पक्षी ।

भरन–स्त्री० [हिं० भरना] १. भरने की क्रिया या भाव । भराव । २. दे० 'भरनी' ।

पुं० [सं० भार] बोझ । भार । उदा०—सब खल भूप भये भूतल-भरन ।—तुलसी ।

भरना–स० [सं० भरण] १. खाली जगह को पूरा करने के लिए उसमें कोई चीज डालना । पूर्ण करना । (फिल) जैसे–हवा भरना । २. उँड़ेलना । उलटना । डालना । जैसे–पानी भरना । ३. तोप या बंदूक में गोला, गोली, बारूद आदि रखना । ४. ऋण चुकाना या क्षति-पूर्त्ति करना । चुकाना । देना । ५. गुप्त रूप से किसी के सम्बन्ध में किसी से कुछ निन्दात्मक बातें करना । ६. निर्वाह करना । निबाहना । ७. समय काटना या बि
जैसे–दिन भरना । ८. सहना । भे
भोगना । उदा०—तात-मरन, सिय
राम बन-बपु धरि बिपति भरै ।—सू

अ० १. रिक्त पात्र या खाली स्था
किसी और पदार्थ के आने से पूर्ण हो
२. उँड़ेला या डाला जाना । ३. तो
बंदूक में गोला, गोली, बारूद आदि
जाना । ४. ऋण या देन का चुकाया
५. मन का क्रोध, असंतोष या अभि
से युक्त होना । ६. घाव का अच्छे
पर आना । ७. अधिक परिश्रम के
किसी अंग का दर्द करने लगना ।
शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना । ९.
आदि का गर्भवती होना ।

पुं० १. भरने की क्रिया या भाव ।
रिश्वत । घूस ।

भरनि†–स्त्री० [सं० भरण] पहनाव

भरनी–स्त्री० [हिं० भरना] १. कर
की ढरकी । नार । २. खेत में
भरने की क्रिया या भाव ।

भर-पाई–स्त्री० [हिं० भरना + पाना]
पूरा-पूरा पावना पा जाना । २. इस प्र
पूरा पा जाने पर लिखी जानेवाली रसीद

भर-पूर–वि० [हिं० भरना + पूरा]
पूरी तरह से भरा हुआ । २. जिसमें
कमी न हो । पूरा-पूरा ।

क्रि० वि० पूरी तरह से ।

भरभराना–अ० [अनु०] १. (शरीर के
खड़े होना । २. घबराना । ३. अ
नीचे आ गिरना ।

भरभेंटा†-पुं० १. दे० 'भेंट' ।
मुठभेड़ ।

भरम†–पुं० [सं० भ्रम] १. भ्र
संदेह । २. भेद । रहस्य । ३. आतं
धाक ।

मुहा०—भरम गँवाना = बँधी या
हुई धाक नष्ट करना ।

भरु*–पुं० [सं० भार] बोझ। भार।

भरूही–स्त्री० दे० 'बगेरी'।

भरैया†–वि०[सं०भरण] १. भरण या पालन करनेवाला। पालक। २. भरनेवाला।

भरोसा–पुं० [सं०भर = भार + आशा] १. यह विचार कि अमुक कार्य हो जायगा। आशा। उम्मेद। २. आश्रय। सहारा। अवलंब। ३. दृढ़ विश्वास।

भर्ग–पुं० [सं० भर्ग्य] महादेव। शिव।

भर्त्ता–पुं० [सं० भर्तृ] १. भरण-पोषण करनेवाला। २. अधिपति। ३. स्वामी। मालिक। ४. पति।

भर्त्तार–पुं० [सं० भर्तृ] पति। स्वामी।

भर्तृ–पुं० दे० 'भर्त्ता'।

भर्तृहरि–पुं०[सं०] संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जो राजा विक्रमादित्य के भाई थे।

भर्त्सना–स्त्री०[सं०] किसी अनुचित काम के लिए बुरा-भला कहना। फटकार।

भर्म†–पुं० दे० 'भ्रम'।

भर्मन*†–पुं० दे० 'भ्रमण'।

भर्रा–पुं० [अनु०] झाँसा। दम-पट्टी।

भर्राना–अ० [अनु०] १. भर्र-भर्र शब्द होना। जैसे–आवाज का। २. भरभराना।

भर्सन†–स्त्री० = भर्त्सना।

भलका†–पुं०[हिं०फल]तार का फल। गाँसी।

भलपति–पुं० [हिं० भाला + सं० पति] भाला रखने या चलानेवाला सैनिक।

भलमनसत(सी)–स्त्री० [हिं० भला + मनुष्य] भला मानस होने का भाव। सज्जनता। सौजन्य।

भलहिं*–क्रि० वि० [हिं० भला] भली-भाँति। अच्छी तरह। उदा० 'एहि विधि भलहिं सो रोग नसाहीं'। —तुलसी।

भला–वि० [सं० भद्र] १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. बढ़िया। अच्छा।

यौ० भला-बुरा = किसी की कही जानेवाली अनुचित या भर्त्सना की बात।

भला-चंगा = स्वस्थ और सशक्त।

पुं० १. कुशल। भलाई। २. लाभ। हित।

यौ०-भला-बुरा = हानि और लाभ।

अव्य० १. अच्छा। खैर। अस्तु। २. काकु से 'नहीं' का सूचक अव्यय। (वाक्यों के आरंभ अथवा मध्य में)

मुहा०-भले ही = ऐसा हुआ करे। कुछ चिन्ता या हर्ज नहीं।

भलाई-स्त्री० [हिं० भला] १. 'भला' होने का भाव। भलापन। २. उपकार। नेकी। ३. हित। लाभ।

भले-क्रि० वि० [हिं० भला] भली भाँति। अच्छी तरह।

अव्य० खूब। वाह। जैसे-भले आये।

भलेरा*-पुं० दे० 'भला'।

भवंग(म)*-पुं० [सं० भुजंग] साँप।

भव-पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. शिव। ३. मेघ। बादल। ४. संसार। जगत्। ५. कामदेव।

वि० १. शुभ। २. उत्पन्न।

*पुं० [सं० भय] डर। भय।

भव-चक्र-पुं० [सं०] १. संसार में बार बार जन्म लेने और मरने का क्रम। आवागमन। २. दे० 'भव-जाल'।

भव-जाल-पुं० [सं० भव + जाल] १. संसार का जाल या माया। २. झंझट।

भवदीय-सर्व० [सं०] [स्त्री० भवदीया] आपका। (पत्रों के अन्त में)

भवन-पुं० [सं०] १. मकान। घर। २. प्रासाद। महल। ३. ईंट, पत्थर, लकड़ी आदि की कोई ऐसी बनावट जो वास्तु के अंतर्गत आती हो। इमारत। (बिल्डिंग) ४. आश्रय या आधार का स्थान। जैसे-करुणा-भवन।

पुं० [सं० भुवन] जगत्। संसार।

भवना*-अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

भव-भय-पुं० [सं०] बार-बार जन्म लेने और मरने या संसार में आने का भय।

भव-भूप*-पुं० [सं०] संसार के भूप

भव-सागर-पुं० [सं०] संसार रूपी सा

भवाँना†-स० [सं० भ्रमण] घुमा

भवानी-स्त्री० [सं०] १. भव अर्थ की पत्नी पार्वती। २. दुर्गा।

भवाब्धि, भवार्णव-पुं० [सं०] रूपी सागर।

भवितव्य-पुं० [सं०] वह बो में अवश्य होनेवाला हो। होनहार।

मुहा०-भविष्य में = (क) अ समय में। (ख) इसके बाद। आगे च (हीयेर आफ्टर)

भवितव्यता-स्त्री० दे० 'भवितव्य'।

भविष्य-पुं० [सं० भविष्यत्] आ काल या समय।

भविष्यगुप्ता-स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने पति से मिलने पर पहले से उसे छिपाने का प्रयत्न

भविष्यत्-पुं० [सं०] १. भ होनेवाली बातें पहले से कहनेवा ज्योतिषी।

भविष्यद्वक्ता-पुं० [सं०] भविष्य

भविष्यद्वाणी-स्त्री० [सं०] आगे होनेवाली वह बात जो पहले से ने कह दी हो।

भविष्य-वक्ता-पुं० = भविष्यद्व

भवीला†-वि० [हिं० भाव + ईल १. भावयुक्त। भावपूर्ण। २. बाँ

भवेश-पुं० [सं०] महादेव। शि

भव्य-वि० [सं०] [भाव० १. देखने में विशाल और सुंदर। दार। २. शुभ। मंगलकारक। ३. सच्चा। ४. आगे चलकर होनेवा

भष*-पुं० [सं० भक्ष्य] भोजन।

भषना†-स० [सं० भक्षण] खाना।

भसना†-अ० [बँ०] १. पानी पर २. पानी में डूबना।

भसम-पुं० वि० दे० 'भस्म'।

भाँज–स्त्री०[हिं० भाँजना] १. भाजने की क्रिया या भाव। २. वह बट्टा जो रुपये, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाता है। भुनाई। ३. कई तहों में कागज मोड़ने की क्रिया या भाव।

भाँजना–स० [सं० भंजन] [भाव० भाँज] १. तह करना। मोड़ना। २. मुगदर आदि घुमाना। (व्यायाम) ३. तोड़-फोड़कर या और किसी प्रकार नष्ट करना। ४. कागज आदि मोड़कर तह लगाना। (छापाखाना)

भांजा–पुं० [सं० भागिनेय या हिं० बहन + जा = जाया] [स्त्री० भांजी] सम्बन्ध के विचार से किसी की बहन का लड़का। भगिनेय।

भाँजी†–स्त्री० [हिं० भाँजना = मोड़ना] किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिए कही जानेवाली बात। चुगली।

भाँटा†–पुं० दे० 'बैंगन'।

भाँड़–पुं० [सं० भंड] [भाव० भँड़ैती] १. विदूषक। मसखरा। २. महफिलों आदि में नाच-गाकर और हास्यपूर्ण अभिनय करके जीविका चलानेवाला व्यक्ति। ३. विनाश। पुं० [सं० भांड] १. बरतन। भाँड़ा। २. भंडाफोड़। रहस्योद्घाटन। ३. उपद्रव।

भांड–पुं० [सं०] १. भाँड़ा। बरतन। २. व्यापार की वस्तुएँ। पण्य द्रव्य। माल। ३. दे० 'भांडागार'।

भाँड़ना†–अ० [सं० भंड] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमना। २ चारो ओर किसी की निंदा या बदनामी करते फिरना। स० १. बिगाड़ना। २. नष्ट करना।

भाँड़ा–पुं० [सं० भांड] बरतन। पात्र। **मुहा०–भाँड़े भरना** = पछताना।

भांडागार–पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत-सी वस्तुएँ किसी उद्देश्य से रक्खी हों। भण्डार। कोश। (माल-खाना)

भांडागारिक–पुं० [सं०] भंडारी।

भांडार–पुं०[सं० भांडागार] १. वह स्थान जहाँ तरह तरह की बहुत-सी चीजें रखी रहती हों। भंडार। २. वह स्थान जहाँ बेची जानेवाली बहुत-सी चीजें इकट्ठी रहती हों। (स्टॉक) ३. खजाना। कोश। ४. बहुत अधिक मात्रा में गुण आदि का आश्रय या आधार-स्थान। जैसे-विद्या के भांडार।

भांडार-पंजी–स्त्री०[हिं० भांडार+सं० पंजी] वह बही या पंजी जिसमें भांडार में रहनेवाली चीजों की सूची और उनके आने जाने का लेखा रहता है। (स्टॉक बुक)

भांडारपाल–पुं०[हिं० भांडार + सं० पाल] वह जिसकी देख-रेख में कोई भांडार रहता हो। भांडार का मुख्य अधिकारी। (स्टोर-कीपर)

भांडारिक–पुं० [हिं० भांडार] वह जो बेचने के लिए अपने पास वस्तुओं का भाण्डार रखता हो। (स्टॉकिस्ट)

भाँति–स्त्री० [सं० भेद] १. तरह। प्रकार। २. रीति। ढंग।

भाँपना†–स० [?] १. दूर से देखकर समझ लेना। ताड़ना। २. देखना।

भाँयँ भाँयँ–पुं० [अनु०] निर्जन स्थान या सन्नाटे में आप से आप होनेवाला शब्द।

भाँवना†–स०[सं० भ्रमण] १. चक्कर देना। २. खरादना। ३.खूब गढ़कर सुन्दरतापूर्वक बनाना।

भाँवर–स्त्री० [सं० भ्रमण] १. चारो ओर घूमना। चक्कर लगाना। २. अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह होने पर वर और वधू करते हैं।

मुहा०*–**भाँवर पारना** = विवाह के समय उक्त प्रकार से अग्नि की परिक्रमा करना या कराना।

*पुं० दे० 'भौंरा'।

भाँस†–स्त्री० [?] आवाज। शब्द।

भा–स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। ३. किरण। ४. बिजली।

*अव्य० चाहे। या। वा।

*अ० = हुआ। (अवधी)

भाइ*–पुं० [सं० भाव] १. मन का या विचार। उदा०–जिहिं जिहिं भाइ जन सेवा।—सूर। २. प्रेम। प्रीति स्वभाव। ४. विचार।

स्त्री० [हिं० भाँति] १. प्रकार। उदा०—करि सन्मान कह्यो या भाइ। २. चाल-ढाल। ३. रंग-ढंग।

*स्त्री० [सं० भाव] चमक। दीप्ति

भाइप*–पुं० दे० भाईचारा'।

भाई–पुं० [सं० भ्रातृ] १. एक ही पिता से उत्पन्न व्यक्तियों में से एक दूसरा व्यक्ति। सहोदर। भ्राता। वंश की किसी पीढ़ी के व्यक्ति के या पितृ-कुल की उसी पीढ़ी का व्यक्ति। जैसे—चचेरा या मौसेरा भाई बराबरवालों के लिए आदर-सूचक

भाईचारा–पुं० [हिं०भाई + चारा भाई के समान परम प्रिय होने और व्यवहार।

भाई दूज–स्त्री० [हिं० भाई + दूज शुक्ल द्वितीया, जिस दिन भाई टीका लगाती है। भैया दूज।

भाई-बंद–पुं० [हिं० भाई + बंद एक ही वंश या गोत्र के लोग। और मित्र-बंधु आदि।

भाई-बंधु–पुं० = भाई-बंद।

भाई-बिरादरी–स्त्री० [हिं० भाई + बिरादरी] जाति या समाज के लोग।

भाउ*–पुं० [सं० भाव] १. चित्त २. विचार। ३. भाव। ४. प्रेम। पुं० [सं० भव] उत्पत्ति। जन्म।

भाऊ*–पुं० [सं० भाव] १. स्नेह। २. मन की भावना। स्वभाव। ४. दशा। अवस्था स्वरूप। शक्ल। ६. सत्ता। ७. पुं० दे० 'भाई'।

भाएँ†–क्रि० वि० [सं० भाव]

माना जाता है। २. ईश्वर का भक्त।
वि० भगवत्-संबंधी। भगवत का।

भागाभाग–स्त्री० दे० 'भागड़'।

भागिनेय–पुं० [सं०] बहन का लड़का। भानजा।

भागी–पुं० [सं० भागिन्] [स्त्री० भागिनी] १. हिस्सेदार। अंशी। २. अधिकारी। हकदार।
* वि० [सं० भाग्य] भाग्यवाला। (यौ० के अंत में) जैसे–बड़-भागी।

भागीरथ–पुं० दे० 'भगीरथ'।

भागीरथी–स्त्री० [सं०] गंगा नदी, जिसके सम्बन्ध में यह माना जाता है कि उन्हें राजा भगीरथ पृथ्वी पर लाये थे।

भाग्य–पुं० [सं०] वह निश्चित और अटल दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य्य पहले ही से नियत किये हुए माने जाते हैं और जिसका स्थान माथा या ललाट माना गया है। तकदीर। किस्मत। नसीब।
वि० हिस्सा करने लायक।

भाग्यवान–पुं० [सं०] [स्त्री० भाग्यवती] वह जिसका भाग्य अच्छा हो। सौभाग्यशाली। किस्मतवर।

भाजक–वि० [सं०] विभाग करनेवाला।
पुं० वह अंक जिससे किसी संख्या या राशि का भाग किया जाय। (गणित)

भाजन–पुं० [सं० भाजनं] [वि० भाजक, भाज्य] १. किसी चीज के टुकड़े या विभाग करने की क्रिया या भाव। २. गणित में भाग की क्रिया। ३. बरतन। भाँडा। ४. किसी बात या वस्तु के लिए उपयुक्त आधार या आश्रय। कुछ लेने या पाने के योग्य पात्र। जैसे–विश्वास-भाजन, कोप-भाजन आदि।

भाजना*–अ० = भागना।
स० १. दे० 'भाँजना'। २. दे० 'भूनना'।
स० = विभक्त करना।

अ० = विभक्त होना।

भाजी–स्त्री० [हिं० भाजना = भूनना] १. तरकारी, साग आदि के रूप में खाने की बनस्पतियाँ और फल। २. माँड़। पीच।

भाज्य–पुं० [सं०] वह अंक जिसे भाजक अंक से भाग दिया जाता है।

वि० विभक्त किये जाने के योग्य। जिसके भाग कर सकें। (डिविजिबुल)

भाट–पुं० [सं० भट्ट] [स्त्री० भाटिन] १. राजाओं की कीर्ति का वर्णन करनेवाला व्यक्ति या जाति। चारण। बंदी। (बार्ड) २.खुशामदी।

भाटक–पुं०[सं०] भाड़ा। किराया। (रेन्ट)

भाटक-अधिकारी–पुं० [सं०] वह अधिकारी जो लोगों से भाटक इकट्ठा करता है। (रेन्ट-आफिसर)

भाटक-समाहर्त्ता–पुं० [सं०] वह अधिकारी जिसका काम भाटक (भाड़ा) उगाहना होता है। (रेन्ट कलेक्टर)

भाटा–पुं० [हिं० भाट] १. पानी का उतार। २. समुद्र के जल का उतार या पीछे हटना। ज्वार का उलटा।

भाट्यौ*–पुं० दे० 'भटई'।

भाठी*–स्त्री० दे० 'भट्ठी'।

भाड़–पुं० [सं० भ्राष्ट्र] भड़भूँजों की अनाज भूनने की भट्ठी।

मुहा०–भाड़ झोंकना = तुच्छ या नगण्य काम करना। **भाड़ में झोंकना या डालना** = १. उपेक्षा से फेंकना। २. नष्ट करना।

भाड़ा–पुं० [सं० भाटक] किसी स्थान पर रहने, किसी सवारी पर चढ़ने या कोई चीज कहीं भेजने के लिए बदले में दिया जानेवाला कुछ निश्चित धन। किराया।

पद–भाड़े का टट्टू = केवल धन के लोभ से दूसरों का काम करनेवाला।

भाड़ैत–वि० [हिं० भाड़ा] [भाव भाड़ैती] १. धन के लोभ से किसी का कोई काम कर देनेवाला। (हायर्ड)

पुं० दे० 'भड़ैत'।

भाड़ैती–स्त्री० [हिं० भाड़ैत] १. धन
से कोई काम करना। २. धन
दिखाकर किसी को अपनी ओर
या किसी काम में लगाना। (ह

भाण–पुं० [सं०] १. हास्य-
दृश्य-काव्य या रूपक जिसमें ए
होता है। २. व्याज। ३. बहाना।

भात–पुं० [सं० भक्त] १.
उबाला हुआ चावल। २. विव
रसम जिसमें वर-पक्ष वालों को
खिलाया जाता है।

भाति–स्त्री० [सं०] १. शोभा।

भाथा–पुं० [सं० भस्त्रा, पा०
तरकश। तूणीर। २. बड़ी भाथी

भाथी–स्त्री० [सं० भस्त्रा] भट्ठी
सुलगाने की धौंकनी।

भान–पुं० [सं०] १. प्रकाश।
२. दीप्ति। चमक। ३. ज्ञान।
ज्ञान या अनुभव जिसका कोई
न हो। जान पड़ना। प्रतीति।
५. कल्पित विचार या भ्रमपूर्ण
*पुं० = भानु (सूर्य)।

भानजा–पुं० [स्त्री० भानजी] दे०

भानना†–स० [सं० भंजन]
या तोड़ना। भंग करना। २.
उदा०–है परिनाम भलो
नागत भय भानिहौ।–तुलसी।
स० [हिं० भान] समझना।

भानमती–स्त्री० [सं० भानुम
प्रसिद्ध, पर कदाचित् कल्पित
पद–भानमती का पिटारा =
मेल संग्रह जिसमें बहुत तरह की

भानवी*–स्त्री० [सं० भानवीया]

भाना†–अ० [सं० भान = ज्ञान]
भान होना। जान पड़ना।
उदा०–असुभ इव भाति कल्यान

भाय†–पुं० [हिं० भाई] भाई।
*पुं० १. दे० 'भाव'। २. दे० 'प्रकार'।

भायप–पुं० दे० 'भाईचारा'।

भार–पुं० [सं०] [वि० भारित] १. किसी पदार्थ का वह गुरुत्व जो तौल के द्वारा जाना जाता है। बोझ। २. वह बोझ जो किसी अंग, यान या वाहन पर रखकर ढोया जाता है। (बर्डेन; उक्त दोनों अर्थों के लिए) ३. किसी प्रकार का कार्य चलाने, कुछ धन चुकाने या किसी वस्तु की रक्षा आदि करने का उत्तरदायित्व। (चार्ज) ४. बन्धक या रेहन पड़े रहने अथवा ऋण ग्रस्त होने की अवस्था या भाव। (इन्कम्ब्रेन्स)

मुहा०–भार उठाना = उत्तरदायित्व लेना। **भार उतरना** = कर्त्तव्य पूरा हो चुकने पर उससे मुक्त होना।

५. दो हजार पल या बीस पसेरी की एक पुरानी तौल। ६. देख-भाल। सँभाल। रक्षा।
†पुं० दे० 'भाड़'।

भार-ग्रस्त–वि० दे० 'भारित'।

भारत–पुं० [सं०] १. भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। २. महाभारत का वह मूल या पूर्व-रूप जो २४००० श्लोकों का था। ३. लंबी-चौड़ी कथा। बहुत बड़ी कहानी। ४. घोर युद्ध। भारी लड़ाई। ५. दे० 'भारतवर्ष'।

भारतवर्ष–पुं० [सं०] हमारा वह महादेश जो हिमालय से कन्या कुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। (अब इसके कुछ पूर्वी और पश्चिमी प्रान्त पाकिस्तान बन गये हैं)। आर्यावर्त्त। हिन्दुस्तान।

भारतवासी–पुं० [सं०] भारतवर्ष का रहनेवाला। भारतीय।

भारती–स्त्री० [सं०] १. वचन। वाणी। २. सरस्वती। ३. नाटक में एक वृत्ति

जिसके अनुसार केवल पुरुष पात्र रहते हैं और उच्च वर्ग के लोग संस्कृत में कथोपकथन करते हैं। यह प्रायः सभी रसों में काम आती है। ४. ब्राह्मी बूटी। ५. दशनामी संन्यासियों का एक भेद।

भारतीय–वि० [सं०] [भाव० भारतीयता] भारत संबंधी। भारत का।

पुं० भारतवर्ष का निवासी।

भार-धारक–पुं० [सं०] वह जिसपर कोई कार्य करने-कराने या किसी वस्तु की रक्षा आदि करने का भार हो। भार धारण करनेवाला। (चार्ज होल्डर)

भारना†–स० [हिं० भार०] १. बोझ लादना। २. भार डालना। ३. दबाना।

भार-प्रमाणक–पुं० [सं०] वह प्रमाणक (प्रमाण-पत्र) जो इस बात का सूचक हो कि अमुक व्यक्ति ने दूसरे को अमुक कार्य, पद, कर्त्तव्य आदि का भार सौंप दिया है। (चार्ज-सार्टिफिकेट)

भारवाह–वि० [सं०] १. बोझ ढोनेवाला। २. जिसपर किसी कार्य या पद के कर्त्तव्यों का भार हो। अवधामक।

भारवाह अधिकारी–पुं० [०] वह अधिकारी जिसपर किसी पद और उससे सम्बन्ध रखनेवाले कार्यों आदि का भार हो। अवधायक अधिकारी। (आफिसर-इन-चार्ज)

भारवाहक–वि० दे० 'भारवाह'।

भारवाही–पुं० [सं० भारवाहिन्] [स्त्री० भारवाहिनी] भार या बोझ ढोनेवाला।

भार-शिव–पुं० [सं०] एक प्राचीन शैव सम्प्रदाय जिसके अनुयायी सिर पर शिव की मूर्ति रखते थे।

भारा†–वि० दे० 'भारी'।

*पुं० = भाला।

भाराक्रांत–वि० [सं०] (संपत्ति) जिस पर देन आदि का भार, उसे रेहन रखकर डाला गया हो। (हाइपाथेकेटेड)

भाराक्रांति–स्त्री० [सं०] रेहन रखकर संपत्ति पर देन का भार रखना। (हा केशन)

भारिक–वि० [सं० भार] १. भार भार का। २. जिसमें भार हो या कारण भार पड़े। जैसे–भारिक मत।

भारिक मत–पुं० [हिं० भारिक+ सभा-संस्था आदि के सभापति का (वोट) जो वह किसी पक्ष का बल बढ़ाने के लिए उस समय जब किसी विषय में उपस्थित मत दो समान भागों में विभक्त उनके मत-दान से उस विषय का न होता हो। इसीलिए कुछ लोग इसे यक मत भी कहते है। (कास्टिंग

भारित–वि० [सं०] १. जिस भार या बोझ हो। २. जिसपर किसी का ऋण या देन हो। (एनकम्बर्ड

भारी–वि० [हिं० भार] [भाव० पन] १. जिसमें या जिसका अधि या बोझ हो। गुरु। बोझिल। २. विकट। ३. विशाल। बड़ा।

यौ०–भारी भरकम = बड़ा और

४. असह्य। दूभर। ५. सूजा हुआ। ६. प्रबल। ७. गंभीर और

भारीपन–पुं० [हिं० भारी+पन 'भारी' होने का भाव। गुरुत्व।

भारोपीय–वि० [सं० भारत+ भारत और युरोप दोनों में सम पाये जानेवाले या दोनों के सम उत्पन्न। (जाति-समूह या भाषाओं भारतीय, पारसी, अरमनी, यूनानी, लियन आदि जातियों और सम्बन्ध में प्रयुक्त) (इंडो-युरोपियन

भार्गव–पुं० [सं०] १. भृगु के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। २. परशुराम। उत्तर प्रदेश में रहनेवालों की एक जाति

वि० भृगु-सम्बन्धी। भृगु का।

भार्या–स्त्री० [सं०] पत्नी। जोरू।

पुं० [पहलवी बहाक् (मूल्य या दर) से फा० बहा० (मूल्य)] किसी चीज की बिक्री आदि का प्रचलित या निश्चित किया हुआ मूल्य । दर । निर्ख । (रेट)

मुहा०-भाव उतरना या गिरना = दाम घट जाना । **भाव चढ़ना** = दाम बढ़ जाना ।

भावइ*-अव्य० [हिं० भाना] यदि जी चाहे तो । इच्छा हो तो ।

भावक-वि० [सं० भाव + क (प्रत्य०)] १. भाव, सत्ता, अस्तित्व आदि से युक्त । (पॉजिटिव) विशेष दे० 'सहिक' । २. दे० भावुक' । क्रि० वि० [सं० भाव] थोड़ा । जरा ।

भाव-गीत-पुं० [सं०] वह गीत जिसमें मुख्यतः मनोभावों की प्रधानता हो । (मुख्यतः मराठी में प्रचलित)

भावज-स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई की पत्नी । भाभी । भौजाई ।

भावज्ञ-वि० [सं०] [भाव० भावज्ञता] मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला ।

भावता-वि० [हिं० भावना] [स्त्री० भावती] १. जो भला लगे । २. प्रेम-पात्र । प्रिय ।

भाव-ताव-पुं० [हिं० भाव] १. किसी चीज का मूल्य या भाव आदि । दर । २. रंग-ढंग ।

भावन*-वि० [हिं० भावन] मन को भाने या अच्छा लगनेवाला । प्रिय ।

भावना-स्त्री० [सं०] १. अनुभव और स्मृति से मन में उत्पन्न होनेवाला कोई विकार । ध्यान । विचार । ख्याल । २. साधारण विचार या कल्पना । ३. इच्छा । चाह । ४. कोई काम करने का विचार । उद्देश्य । (इन्टेन्शन) जैसे-अपराध की कामना से कोई काम करना । ५. किसी विशेष विषय या भाव से संबंध रखनेवाले ऐसे विचार जिनसे मनुष्य की मनोवृत्ति

बनती हो। धारणा। (कॉम्प्लेक्स) जैसे—श्रेष्ठक भावना; हीनक भावना (देखो)। ६. चूर्ण आदि किसी तरल पदार्थ में मिलाकर घोटना, जिसमें घोटी जानेवाली वस्तु में उस तरल पदार्थ का गुण या गंध आ जाय। पुट। (वैद्यक) ७. इस प्रक्रिया से किसी चीज में आया हुआ गुण या गंध।

*अ० विचार करना। सोचना।

स० दे० 'भाना'।

वि० [हिं० भाना] प्रिय। प्यारा।

भावनि*–स्त्री० [हिं० भाना] वह बात जो मन या जी में आवे।

भावनीय–वि० [सं०] भावना करने या सोचने विचारने के योग्य।

भाव-प्रवण–वि० [भाव० भाव-प्रवणता] दे० 'भावुक'।

भाव-भक्ति–स्त्री० [सं० भाव + भक्ति] १. ईश्वर की भक्ति का भाव। २. आदर। सत्कार।

भावर(रि)–स्त्री० [हिं० भाना = पसंद आना] १. भाने या पसंद आने की क्रिया या भाव। २. अभिरुचि। पसंद। उदा०—भावरि-अनभावरि भरे, करौ कोरि बकवादु।—बिहारी।

ावली–स्त्री० [देश०] जमींदार और असामी में होनेवाली उपज की बँटाई।

ाव-वाचक–पुं० [सं०] व्याकरण में किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित करनेवाली संज्ञा। जैसे—सज्जनता।

ाव-शांति–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह अवस्था जब मन में किसी नए विरोधी भाव के उत्पन्न होने पर पहले का कोई भाव शांत या समाप्त हो जाता है।

ाव-संधि–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह अवस्था जब मन में एक साथ एक से अधिक प्रबलाभाव उत्पन्न होते हैं। जैसे—ुटै न लाज न लालचौ, प्यौ लखि नैहर ोह, सटपटात लोचन खरे, भरे सकोच सनेह।—बिहारी।

भावाभास–पुं० दे० 'रसाभास'।

भाविक–पुं० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी बीती हुई अथवा भविष्य में होनेवाली घटना या बात का प्रकार से उल्लेख या वर्णन होता है मानो वह वर्त्तमान काल में हो रही हो।

वि० दे० 'भावुक'।

भावित–वि० [सं०] १. जिसका ध्यान विचार किया गया हो। जो सोचा गया हो। २. चिन्तित। उद्विग्न। ३. जिसमें पदार्थ की भावना या सुगंध दी गई हो। विशेष दे० 'भावना' ४.।

भावी–स्त्री० [सं० भाविन्] १. भविष्य काल। आनेवाला समय। २. भविष्य होनेवाली बात। भवितव्यता। होनी। भाग्य। तकदीर।

वि० भविष्य में आने या होनेवाला। जैसे भावी युग।

भावुक–वि० [सं०] १. भावना करने सोचनेवाला। २. जिसके मन में कोमल भावों की प्रबलता हो अथवा जिस कोमल भावों का जल्दी और अधिक प्रभाव पड़ता हो। (सेन्टिमेन्टल)

भावुकता–स्त्री० [सं०] १. 'भावुक' होने की अवस्था या भाव। २. वह मान अवस्था जिसमें मनुष्य की वृत्ति कोमल भावो के अधीन रहती हो। (सेन्टिमेन्टलि)

भावै†–अव्य० [हिं० भाना] चाहे।

भाव्य–वि० [सं०] भावना या चि करने या सोचने योग्य। विचारणीय।

भाषण–पुं० [सं०] १. बात-चीत। २. बहुत से लोगों के सामने किसी वि का सविस्तर कथन। व्याख्यान। वक्तृता।

भाषण-स्वातंत्र्य–पुं० [सं०] राज्य शासन की ओर से लोगों को (नीति-विरु बातों को छोड़कर) राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि विषयों पर भाषणों आदि के

करने के लिए मिलने
र्टी ऑफ स्पीच)
॰ भाषण] बोलना ।
] भोजन करना ।
] [वि॰ भाषांतरित]
ा दूसरी भाषा में किया
आ ।
] १. मुँह से निकलने-
या सार्थक शब्दों और
जिसके द्वारा मन के
प्रकट किये जाते हैं ।
णी । २. किसी देश के
लित बात-चीत करने का
आधुनिक हिन्दी । ४.

[सं॰] १. भाषा के रूप
हुआ । २. साधारण
हुआ ।
[सं॰] वह विज्ञान
विवेचन होता है कि
त्ति और विकास किस
और उनमें कैसा पारस्परिक
। (लिंग्विस्टिक्स, फाइलॉ-

[सं॰] वह जो अपनी
ओं का बहुत अच्छा
)
[सं॰] एक प्रकार का
केवल ऐसे शब्दों की
जो कई भाषाओं में समान
।
] कथित । कहा हुआ ।
] [स्त्री॰ भाषिणी]
।
] १. सूत्रों की व्याख्या
गूढ़ या कठिन ग्रन्थ
व्याख्या या विवेचन ।

भाष्यकार-पुं॰ [सं॰] किसी गूढ़ ग्रन्थ या विषय, विशेषतः सूत्र-बद्ध शास्त्रों का भाष्य या टीका करनेवाला । (कामेन्टेटर)

भास-पुं॰ [सं॰] १. दीप्ति । चमक । २. प्रकाश । ३. किरण । ४. इच्छा ।

भासन*-पुं॰ = भाषण ।

भासना-अ॰ [सं॰ भास] १. चमकना । २. कुछ-कुछ मालूम होना । जान पड़ना । ३. दिखाई देना । ४. लीन या लिप्त होना । फँसना ।

†अ॰ [सं॰ भाषण] कहना ।

भासमान-वि॰ [सं॰] जान पड़ता हुआ ।

भासित-वि॰ [सं॰] १. चमकीला । २. कुछ-कुछ प्रकट या व्यक्त होनेवाला ।

भास्कर-पुं॰ [सं॰] १. सूर्य । २ आग । ३. पत्थर पर बेल-बूटे आदि बनाना ।

भास्वर-पुं॰ [सं॰] १. दिन । २. सूर्य ।

भिंग*-पुं॰ [सं॰ भृंग] १. भौंरा । २. बिलनी । (कीड़ा)

भिंजाना (जोना)-स॰ दे॰ 'भिगोना' ।

भिंदिपाल-पुं॰ [सं॰] १. एक प्रकार का डंडा जो फेंककर मारा जाता था । २. गोफना । ढेलवाँस ।

भिक्षा-स्त्री॰ [सं॰] १. याचना । माँगना । २. दीनतापूर्वक खाने आदि के लिए कुछ माँगना । भीख । ३. इस प्रकार माँगने पर मिलनेवाली चीज । भीख ।

भिक्षा-पात्र-पुं॰ [सं॰] वह पात्र जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं ।

भिक्षु-पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ भिक्षुणी] १. भिखमंगा । २. बौद्ध-संन्यासी ।

भिक्षुक-पुं॰ [सं॰] भिखमंगा ।

भिखमंगा-पुं॰ [हिं॰ भीख + माँगना] वह जो भीख माँगता हो । भिक्षुक ।

भिखारिणी-स्त्री॰ दे॰ 'भिखारिन' ।

भिखारिन-स्त्री॰ [हिं॰ भिखारी] भीख माँगनेवाली स्त्री । भिखमंगिन ।

भिखारी-पुं॰ दे॰ 'भिखमंगा' ।

भिगाना–स० दे० 'भिगोना'।

भिगोना–स० [सं० अभ्यंज] किसी चीज को पानी या तरल पदार्थ से तर करने के लिए उसमें डुबाना। भिगोना।

भिच्छा–स्त्री० दे० 'भिक्षा'।

भिजवना†–स०[हिं० भिगोना] १. भिगोना। २. किसी को भिगोने में प्रवृत्त करना।

भिजवाना–स० हिं० 'भेजना' का प्रे०।

भिजाना–स० १. दे० 'भिगोना'। २. दे० 'भिजवाना'।

भिजोना†–स० दे० 'भिगोना'।

भिज्ञ–वि० [सं०] जानकार। ज्ञाता।

भिड़ंत–स्त्री० [हिं० भिड़ना] भिड़ने की क्रिया या भाव। मुठ-भेड़।

भिड़–स्त्री० [सं० वरट] बर्रें। ततैया।

भिड़ना–अ० [सं० भिद् या अनु० भड़ ?] १. टक्कर खाना। टकराना। २. मुकाबले में आकर लड़ना। ३. साथ लगना। सटना।

भितरिया–पुं० [हिं० भीतर] मंदिर के भीतरी भाग में रहनेवाला पुजारी।
वि० भीतरी। अंदर का।

भितल्ला–पुं० [हिं० भीतर + तल] दोहरे कपड़े में अन्दर का पल्ला। अस्तर।
वि० भीतर या अन्दर का।

भिताना†–अ० [सं० भीति] डरना। स० डराना।

भित्ति–स्त्री० [सं०] १. दीवार। २. वह पदार्थ जिसपर चित्र बनाया जाता है। ३. डर। भय।

भित्ति-चित्र–पुं० [सं०] दीवार पर अंकित किया हुआ चित्र।

भिदना–अ० [सं० भिद्] १. अन्दर धँसना। २. छेदा जाना। ३. घायल होना।

भिनकना–अ० [अनु०] १. दे० 'भिनभिनाना'। २. मन में घृणा उत्पन्न होना।

भिनभिनाना–अ० [अनु०] भिन-भिन शब्द करना। (मक्खियों का)

भिनसार†–पुं० [सं० वि + अहि + सार (प्रत्य०)] प्रातःकाल। सवेरा। (पूरब)

भिन्न–वि० [सं०] [भाव० भिन्नता] १. अलग। पृथक्। जुदा। २. जिसकी च या उल्लेख हो, उसे छोड़कर कोई और दूसरा। अन्य। (अदर) ३. जिसकी चर्चा या उल्लेख हो, उससे अलग प्रकार का और तरह का। (डिफरेन्ट) ४. अ वर्ग या मेल के औरों से कुछ अलग विशेष प्रकार का। (डिस्टिंक्ट)
पुं० गणित में, एकाई से कुछ कम उसका कोई भाग सूचित करनेवाली संख्या। (फ्रैक्शन)

भिन्नात्मक–वि० [सं०] गणित में, अंक या संख्या जिसमें भिन्न या एकाई कोई भाग भी लगा हो। (फ्रैक्शनल)

भिन्नाना–अ० [अनु०] १. (दुर्गंध से) सिर चकराना। २. खिजलाना।

भियना†–अ० [सं० भीति] डरना।

भिलनी–स्त्री० [हिं० भील] भील की

भिलावाँ–पुं० [सं० भल्लातक] एक जिसका जहरीला फल औषध के आता है।

भिल्ल–पुं० दे० 'भील'।

भिश्त†–पुं० दे० 'बिहिश्त'।

भिश्ती–पुं० [?] मशक में भरकर ढोनेवाला व्यक्ति। सक्का। माशकी।

भिषक(ज)–पुं० [सं०] वैद्य।

भिस्त*–पुं० [फा० बिहिश्त] मुसल के अनुसार स्वर्ग।

भिस्स†–पुं० दे० 'भसींड'।

भींचना†–स० [हिं० खींचना] खींचना। तानना। २. दे० 'मीचना'।

भींज*–स्त्री० [हिं० भींजना] १. भी की क्रिया या भाव। २. आर्द्रता। नमी तरी।

भींजना†–अ० [हिं० भीगना] १.

पुलकित या गद्‌गद् होना।
आपसदारी पैदा करना।
१. अच्छी तरह किसी के
६. किसी के योग से पूरी
बढ़ना।
[हिं० भीटा] वह जमीन
टीले हों।
[हिं० ही] १. किसी के साथ
निश्चयपूर्वक या अवश्य।
आता है। २. अधिक।
और भी बुरा है। ३. तक।
भी नहीं आती।
] भय। डर।
'भीमसेन'।
'भिदा'।
[सं० अभ्यंज] पानी या
पदार्थ के संयोग से तर
होना। आर्द्र होना।
[हिं०] १. टीले की तरह कुछ
। २. टीले की तरह बनाई
ऊँची जमीन जिसपर पान
जाते हैं।
[?] वह खेत जिसमें केवल
होती है। (पूरब)
[हिं० भिड़ना] १. एक स्थान
समय में होनेवाला बहुत से
जमाव। जन-समूह। ठठ।
छँटना = भीड़ न रह

की अधिकता। जैसे—काम
संकट। आपत्ति। मुसीबत।
(किसी की) भीड़ हरना =
हुआ संकट दूर करना।
। उदा०—'जुग जुग भीर
मन की'—मीराँ।
[हिं० भिड़ाना] १. हिं०
। २. बन्द करना। ३.

भीड़-भड़क्का—पुं० दे० 'भीड़-भाड़'।

भीड़-भाड़—स्त्री० [हिं० भीड़+भाड़ (अनु०)] एक ही स्थान पर बहुत-से लोगों का जमाव। जन-समूह। भीड़।

भीड़ा†—वि० [हिं० भिड़ना] संकुचित। तंग।

भीत—स्त्री० [सं० भित्ति] १. दीवार। **मुहा०—भीत में दौड़ना** = सामर्थ्य से बाहर अथवा असंभव कार्य में लगना। **भीत के बिना चित्र बनाना** = बिना किसी आधार के कोई काम करना। २. चटाई। ३. छत। गच।

भीतर—क्रि० वि० [?] अंदर। पुं० १. अंतःकरण। हृदय। २. रनिवास। अंतःपुर। जनानखाना।

भीतरी—वि० [हिं० भीतर] १. अंदर का। २. छिपा हुआ। गुप्त।

भीति—स्त्री० [सं०] १. डर। भय। २. किसी अनिष्ट या अप्रिय बात के होने की आशंका। खटका। (एप्रिहेन्शन) स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार।

भीती†—स्त्री० १. दे० 'भित्ति'। २. दे० 'भीति'।

भीना†—पुं० [हिं० विहान] सवेरा।

भीनना—अ० [हिं० भीगना] किसी वस्तु से भर या युक्त हो जाना। पैवस्त होना।

भीम—पुं० [सं०] [भाव० भीमता] १. भयानक रस। २. शिव। ३. भीमसेन। **पद—भीम के हाथी** = भीमसेन के फेंके हुए हाथी। (कहते हैं कि एक बार भीमसेन ने सात हाथी ऊपर फेंके थे, जो आज तक आकाश में चक्कर खा रहे हैं।) वि० [स्त्री० भीमा] १. भयानक। २. बहुत बड़ा।

भीम-रथी—पुं० [सं० भीम-रथिन्] वह जो जीवन में ७७ वर्ष, ७ महीने और ७ दिन पार कर चुका हो। (इस से अधिक अवस्था वाला मनुष्य दीर्घजीवी या दीर्घायु

कहलाता है ।)

भीमसेन–पुं० [सं०] पाँचो पांडवों में से एक जो बहुत अधिक बलवान थे । भीम ।

भीमसेनी कपूर–पुं० एक प्रकार का बढ़िया कपूर । बरास ।

भीम्राथली–पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति ।

भीर*–स्त्री० [हिं० भीड़] १. दे० 'भीड़' । २. कष्ट । दुःख । ३. विपत्ति । आफत । *वि० [सं० भीरु] १. डरा हुआ । भयभीत । २. डरपोक । कायर ।

भीरना*–अ० [हिं० भीरु] डरना ।

भीरु–वि० [सं०] [भाव० भीरुता] डरपोक ।

भीरे†–क्रि० वि० [हिं० भिड़ना] समीप । निकट । पास ।

भील–पुं० [सं० भिल्ल] [स्त्री० भिलनी] एक प्रसिद्ध जंगली जाति ।

मीवँ*–पुं० = भीमसेन ।

ीषज†–पुं० [सं० भषज] वैद्य ।

ीषण–वि० [सं०] [भाव० भीषणता] १. भयानक । डरावना । २.विकट । घोर । पुं० [सं०] भयानक रस ।

ीष्म–पुं० [सं०] गंगा के गर्भ से उत्पन्न राजा शान्तनु के पुत्र । देवव्रत । गांगेय । वि० भीषण । भयंकर ।

ीष्म पितामह–पुं० दे० 'भीष्म' ।

ुँइ*–स्त्री० [स० भूमि] पृथ्वी ।

ुँइघरा(हरा)†–पुं० [सं० भूमिगृह, पुं० भुँइ + घर] जमीन के नीचे खोदकर बनाया हुआ घर या रहने का स्थान । तहखाना ।

ँकाना–स० [हिं० भूँकना] किसी को भूँकने में प्रवृत्त करना ।

ँगल–पुं० [?] युद्ध-क्षेत्र में बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा ।

ँजना†–अ० दे० 'भुनना' ।

ँजौना†–पुं० [हिं० भूँजना = भूनना] १. भूनने के बदले में लिया जानेवाला पारिश्रमिक । २. भूना हुआ अन्न । ३. रुपये आदि भुनाने में लगनेवाला बट्टा । भुनाई । भाँज ।
स० = भूनना ।

भुंडा–वि० [सं० रुंड का अनु०] १. बिना सींग का । २. दुष्ट । बदमाश ।

भुअंग†–पुं० [सं० भुजंग] [स्त्री० भुअंगिनी] साँप ।

भुअन*–पुं० दे० 'भुवन' ।

भुआल†–पुं० [सं० भूपाल] राजा ।

भुइँ*–स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी ।

भुइँचाल (डोल)–पुं० दे० 'भूकंप' ।

भुइँ*–स्त्री० = भूमि ।

भुक–पुं० [सं० भुज्] १. भोजन । आहार । २. अग्नि । आग ।

भुकड़ी–स्त्री० [अनु०] सड़े हुए खा पदार्थों पर निकलनेवाली एक बनस्पति ।

भुकराँद (रायँध)–स्त्री० [हिं० भुकड़ी बनस्पतियों आदि के सड़ने की दुर्गंध ।

भुकान†–स्त्री० [हिं० भूँकना] कु आदि के भूँकने या भौंकने की क्रिया भाव ।

भुक्खड़–पुं० [हिं० भूख + अड़ (प्रत्य०)] १. जिसे सदा भूख लगी रहती हो । पेटू २. कंगाल ।

भुक्त–वि० [सं०] १. खाया हुआ । भक्षि २. भोगा हुआ । उपयुक्त । ३. (अधि पत्र आदि) जिसका नगद धन या प्र वस्तु ले ली गई हो । जो भुना लिया ग हो । (कैश्ड)

भुक्ति–स्त्री० [सं०] १. भोजन । आहार । २. लौकिक-सुख-भोग । ३. भोग । अधिकार । कब्जा । ४. अधिकार-पत्र के अनुसार रुपये या और कोई चीज लेना । भुनाना । (कैश)

भुख-मरा–वि० [हिं० भूख + मरना] १. जो भूखों मरता हो । २. भुक्खड़ । पेटू ।

भुख-मरी–स्त्री० [हिं० भूख + मरना]

लोग अन्न के अभाव में
। (स्टारवेशन)
[हिं० भूख] भूखा होना।
दे० 'भुक्ति'।
[सं० भुक्ति] भोगना।
पूरा होना। निपटना।
१. चुकती होना।
[हिं० भुगतना] १. भुगताने
। २. मूल्य, देन आदि
। (पेमेन्ट) ३. ऋण या
। अपाकरण। (लिक्विडेशन
)
[हिं० 'भुगतना' का स०]
समर्थक रूप। २. (काम)
संपादन करना। ३. बिताना।
) चुकाना। ५. दुःख देना
।
[सं० भुक्ति] १. खाने
भोजन। २. खाने-पीने की
। आहार।
दे० 'भोगवाना'।
दे० 'भुक्ति'।
[हिं० भूत + चढ़ना] मूर्ख।
[सं०] [स्त्री०भुजंगिनी] साँप।
-पुं० [सं०] पिंगल में एक
जिसका प्रत्येक चरण चार
है।
[हिं० भुजंग] १. काले रंग
। २. दे० 'भुजंग'।
)-स्त्री० [सं०] साँपिन।
)-पुं० [सं०] शेषनाग।
] १. बाहु। बाँह।
में भरना = गले लगाना।
. हाथी का सूँड़। ४. वृत्त
। ५. ज्यामिति में किसी
या किनारे की रेखा।
. सम-कोणों का पूरक कोण।
का सूचक शब्द।

भुजइल*–पुं० दे० 'भुजंगा'। (पक्षी)

भुजग–पुं० [सं०] साँप।

भुज-दंड–पुं० [सं०] बाहु रूपी दंड।

भुजपात*–पुं० दे० 'भोजपत्र'।

भुज-पाश–पुं० [सं०] दोनों हाथों की वह मुद्रा जिससे किसी को गले लगाते हैं।

भुजबंद–पुं० [सं० भुजबंध] बाजूबंद।

भुजबाथ*–पुं० दे० 'भुज-पाश'।

भुज-मूल–पुं०[सं०] १. कंधा। २. काँख।

भुजा–स्त्री० [सं०] बाँह। हाथ।

मुहा०–भुजा उठाना या टेकना = प्रतिज्ञापूर्वक कुछ कहना।

भुजाली–स्त्री० [हिं०भुज + आली (प्रत्य०)] एक प्रकार की बरछी।

भुजिया+–पुं० [हिं० भूँजना = भूनना] १. उबाले हुए धान का चावल। २. बिना रसे की भूनी हुई तरकारी।

भुजैल–पुं० दे० 'भुजंगा'। (पक्षी)

भुट्टा–पुं० [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्ठी] मक्के, ज्वार, बाजरे आदि अनाजों की बाल।

भुठौर–पुं० [हिं० भूड़ + ठौर] घोड़ों की एक जाति।

भुतना†–पुं० दे० 'भूत' ७.।

भुतवा†–पुं० दे० 'भूत' ७.।

भुथरा–वि० दे० 'भोथरा'।

भुथराई*–स्त्री० [हिं० भोथरा] होने की दशा या भाव।

भुनगा–पुं० [अनु०] [स्त्री० भुनगी] एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।

भुनना–अ० हिं० 'भूनना' का अ०।

भुनभुनाना–अ० [अनु०] १. भुन भुन शब्द करना। २. मन ही मन कुढ़कर बहुत धीरे धीरे कुछ कहना। बड़बड़ाना।

भुनवाई(नाई)–स्त्री० [हिं० भुनाना] भुनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भुनाना–स० हिं० 'भूनना' का प्रे०। स० [सं० भंजन] १. बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्कों आदि से बदलना।

किसी आज्ञा-पत्र आदि में लिखी हुई चीज नियत स्थाना से लेना। भुक्ति। (कैश) जैसे—चेक भुनाना।

भुवि*–स्त्री० [सं० भू०] पृथ्वी। भूमि।

भुरकना–अ० [सं० भुरण] [स० भुरकाना] १. सूखकर भुरभुरा हो जाना। २. भूलना।

स० दे० 'भुरभुराना'।

भुरकस(कुस)–पुं० [हिं० भुरकना] किसी वस्तु का वह रूप जो उसे खूब कुचलने या कूटने से प्राप्त होता है।

मुहा०–भुरकस निकलना = आघात आदि से दुर्दशा-ग्रस्त होना।

भुरटा†–पुं० दे० 'भरट्टा'।

भुरता–पुं० दे० 'भरता'।

भुरभुरा–वि० [अनु०] जरा-सा आघात लगने पर चूर-चूर हो जानेवाला।

भुरभुराना*–स० [अनु०] १.(चूर्ण आदि) छिड़कना। बुरकना। २.भुरभुरा करना।

भुरवना*–स० [सं० भ्रमण] १. भ्रम में डालना। २. फुसलाना।

भुरहरे†–क्रि० वि० दे० 'भोरहरे'।

भुराई*–स्त्री० [हिं० भोला] भोलापन।

पुं० [हिं० भूरा] भूरापन।

भुराना†–स० दे० 'भुरवना'।

अ० दे० 'भूलना'।

भुलक्कड़–वि० [हिं० भूलना] जिसका स्वभाव भूलने का हो। प्रायः भूलनेवाला।

ुलना–वि० [हिं० भूलना] जल्दी भूल जानेवाला। जैसे–भुलना मनुष्य या स्वभाव

*स० = भूलना।

ुलवाना–स० [हिं० 'भूलना' का प्रे०] १. भ्रम में डालना। २. दे० 'भुलाना'।

लाना–स० [हिं० भूलना] १. 'भूलना' का प्रे०। २. भ्रम में डालना।

प्र० स० 'भूलना'।

लावा–पुं० [हिं० भूलना] धोखा।

वंग–पुं० [सं० भुजंग] साँप।

भुवः–पुं० [सं०] भूमि और सूर्य के बीच का लोक या आकाश। अंतरिक्ष लोक।

भुव–स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

*स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह। भ्रू।

भुवन–पुं० [सं०] १. जगत्। २. जल। ३. जन। लोग। ४. लोक, जो पुराणानुसार चौदह हैं। यथा–भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य ये सात ऊपर के लोक और अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत, महातल, रसातल और पाताल ये सात नीचे के। ५. चौदह की संख्या। ६. सृष्टि।

भुवनपति(पाल)*–पुं० दे० 'भूपाल'।

भुवर्लोक–पुं० [सं०] अंतरिक्ष लोक।

भुवाल*–पुं० [सं० भूपाल] राजा।

भुशुंडी–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र।

भुस–पु० दे० 'भूसा'।

भुसी*–स्त्री० दे० 'भूसी'।

भूँकना–अ० [अनु०] १. भूँ-भूँ या भौं-भौं शब्द करना। (कुत्तों का) २.व्यर्थ बकना।

भूँचाल–पुं० दे० 'भूकंप'।

भूँजना†–स० दे० 'भूनना'।

अ० दे० 'भोगना'।

भूँड़–पुं० दे० 'भूर'। (बलुई मिट्टी या जमीन)

भूँडोल–पुं० दे० 'भूकंप'।

भूँसना–अ० दे० 'भूँकना'।

भू–स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. स्थान।

*स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह।

भूआ–स्त्री० दे० 'बूआ'।

पुं० [स्त्री० अल्पा० भूई] दे० 'घूआ'।

भू-आगम–पुं० [सं०] राज्य की भूमि या भू-सम्पत्ति से होनेवाली आय। भू-राजस्व। (रेवेन्यू, लैंड रेवेन्यू)

भू-आगम बोर्ड–पुं० [सं० भू-आगम+अं० बोर्ड] भू-आगम विभाग के कुछ विशिष्ट अधिकारियों का वह वर्ग या निकाय जो भू-आगम विभाग की व्यवस्था और उसके झगड़ों, मुकदमों आदि का विचार करता है। (बोर्ड ऑफ रेवेन्यू)

] प्राकृतिक कारणों से
में कुछ उथल-पुथल
का सहसा हिलना ।
)
[सं०] वह विज्ञान
कारणों, गति-विधि,
विवेचन होता है ।
)
[सं०] वह यन्त्र
जाता है कि किस दिशा
और कैसा भूकंप आया
)
] १. पृथ्वी का कोई
अंश । (ट्रैक्ट) २. जमीन
। (प्लॉट)
बुभुक्षा] १. खाने की
। २. आवश्यकता । जरूरत ।
खरीदने की)
[सं० भूषण] सजाना ।
स्त्री० दे० 'अनशन' ।
[हिं० भूख] [स्त्री० भूखी]
लगी हो । क्षुधित । २. किसी
। इच्छुक । ३. दरिद्र ।

] पृथ्वी का भीतरी भाग ।
नीचे का अंश ।
पुं० [सं०] वह शास्त्र जो
है कि पृथ्वी के ऊपरी और
किन किन तत्त्वों से बने हैं,
भाग में क्या क्या वस्तुएँ हैं
वर्तमान रूप किस प्रकार
। (जियॉलोजी)
[सं०] भूगर्भ या पृथ्वी के
में होनेवाला । अन्तभौंम ।
)
[सं०] १. पृथ्वी । २. वह
के ऊपरी स्वरूप और
(नदियों, पहाड़ों, देशों

आदि) का विवेचन या वर्णन होता है । (जियॉग्रैफी)

भूचर–पुं० [सं०] भूमि पर रहनेवाले प्राणी ।

भूचाल-(डोल)–पुं० दे० 'भूकंप' ।

भू-चुंगी–स्त्री० दे० 'भू-शुल्क' ।

भूजा*–पुं० = भोग ।

भूत–पुं० [सं०] [भाव० भूतत्त्व] १. वे मूल द्रव्य जिनसे सृष्टि की रचना हुई है । तत्त्व । (एलिमेन्ट) २. सृष्टि के सभी जड़ पदार्थ और चेतन प्राणी ।

यौ०–भूत-दया = जड़ और चेतन सब पर की जानेवाली दया ।

३. प्राणी । जीव । ४. बीता हुआ समय । ५. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो किसी कार्य या व्यापार के समाप्त हो चुकने का सूचक हो । ६. मृत शरीर या उसकी आत्मा । भूतात्मा । ७. किसी मृत व्यक्ति की आत्मा का वह कल्पित रूप जो मोक्ष या मुक्ति के अभाव में उसे प्राप्त होता है और जिसमें वह प्रायः कष्टदायक और अमांगलिक कार्य करता है । प्रेत । शैतान ।

मुहा०–भूत चढ़ना या सवार होना = बहुत अधिक आवेश या क्रोध होना । **भूतों का पकवान** = सहज में नष्ट हो जानेवाला पदार्थ ।

वि० १. बीता हुआ । गत । २. मिला हुआ । ३. समान । तुल्य । ४. जो हो चुका हो ।

भू-तनया–स्त्री० [सं०] जानकी । सीता ।

भूतना–पुं० [स्त्री० भूतनी] दे० 'भूत' ७. ।

भूतनाथ–पुं० [सं०] शिव ।

भूत-पूर्व–वि० [सं०] १. इस समय से पहले का । वर्त्तमान से पूर्व का । २. (व्यक्ति) जो पहले किसी पद पर रह चुका हो, पर अब किसी कारण से उस पद पर न हो । जैसे–किसी संस्था का भूतपूर्व मन्त्री या किसी पत्र का भूतपूर्व संपादक ।

भूत-यज्ञ–पुं० [सं०] पंच महायज्ञों में से

एक जिसमें बलि, वैश्व, देव आदि कृत्य किये जाते हैं।

भू-तल–पुं० [सं०] १. पृथ्वी का ऊपरी तल या भाग। २. संसार। दुनियाँ।

भूतवाद–पुं० दे० 'पदार्थवाद'।

भूतागति*–स्त्री० [हिं० भूत = प्रेत + गति] भूत-प्रेत की लीला की तरह का अद्भुत व्यापार। बहुत ही विलक्षण काम या बात।

भूतात्मा–पुं० [सं० भूतात्मन्] १. मृत शरीर या उसकी आत्मा। २. पार्थिव शरीर। ३. शरीर।

भूति–स्त्री० [सं०] १. वैभव। धन-संपत्ति। २. भस्म। राख। ३. उत्पत्ति। ४. वृद्धि।

भूतिनी–स्त्री० [हिं० भूत] भूत-योनि की स्त्री।

भू-देव–पुं० [सं०] ब्राह्मण।

भूधर–पुं० [सं०] पहाड़। पर्वत।

भू-धृति–स्त्री० [सं०] जोतने बोने के लिए जमीन पर होनेवाला किसान का अधिकार। (लैन्ड टेन्योर)

भून†–पुं० दे० 'भ्रूण'।

भूनना–स० [सं० भर्जन] १. जल की सहायता के बिना गरम करके पकाना। २. बहुत अधिक कष्ट देना।

भूप–पुं० [सं०] राजा।

भूपति (पाल)–पुं० [सं०] राजा।

भूपार*–पुं० = भूपाल।

भू-पृष्ट–वि० [सं०] जिसकी पीठ समतल भूमि पर हो। 'मेरु पृष्ट' का उलटा। जैसे—भू-पृष्ट यंत्र (तांत्रिकों का)।

भूभल–पुं० [?] गरम राख या धूल। ततूरी।

भू-भाग–पुं [सं०] पृथ्वी या जमीन का कोई भाग या टुकड़ा, विशेषतः ऐसा टुकड़ा जो किसी नगर या राज्य के चारो ओर और उसके अधिक्षेत्र में हो। (टेरिटरी)

भुर*–स्त्री० दे० 'भूभल'।

भू-भुरी*–स्त्री० दे० 'भूभल'।

भूमंडल–पुं० [सं०] पृथ्वी।

भूमा†–स्त्री० = भूमि।

भू-मध्यरेखा–स्त्री० [सं०] भूगोल पृथ्वी तल का ठीक मध्य सूचित करने वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से बरा दूरी पर पड़ती है। (ईक्वेटर)

भू-मध्य सागर–पुं० [सं०] युरोप अफ्रिका के बीच का समुद्र। (मेडिटरेनि

भू-माप–पुं० [सं०] १. भूमि के खंड या टुकड़े की नाप या परिमा २. दे० 'भू-मापन'।

भू-मापक–पुं० [सं०] वह जिसका भू-माप करना हो। जमीन की नाप-जो करनेवाला। (सर्वेयर)

भू-मापन–पुं० [सं०] खेती-बारी के जमीन के टुकड़ों या किसी देश-प्रदेश की भूमि की नाप-जोख। (सर्वे)

भूमि–स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी-तल के का वह ठोस भाग जिसपर नदियाँ, आदि हैं और जिसपर लोग रहते और स्पतियाँ उगती हैं। जमीन। (लैंड)

मुहा०–***भूमि होना** = पृथ्वी पर गिरना

२. उक्त का कोई छोटा टुकड़ा जिसपर किसी का अधिकार हो या जिसमें कुछ उप आदि हो। (एस्टेट) ३. उक्त का ऐसा छोटा टुकड़ा जो खेती-बारी करने, बाग, बगीचा लगाने या घर आदि बनाने के लिए उपयुक्त हो। (सॉयल) ४. स्थान जगह। ५. नींव, पेंदें, आधार आदि रूप में वह सबसे नीचेवाला अंग जिसके ऊपर उसके और अन्न अंग, उभार आदि बने या ठहरें हों। (बेस) जैसे-चित्र की पृष्ट-भूमि।

भूमिक–वि० दे० 'भौमिक'।

भूमिका–स्त्री० [सं०] १. रचना। २. किसी ग्रन्थ के आरंभ का वह वक्तव्य जिससे उस ग्रन्थ की ज्ञातव्य बातों का पता चले।

वि० [सं०] १. बहुत। २. भारी।

भूरुह–पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़।

भूल–स्त्री० [हिं० भूलना] १. भूलने की अवस्था या भाव। २. अज्ञान, असावधानता, भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ समझने और उसके अनुसार कुछ करने की अवस्था या भाव। गलती। (एरर) ३. अर्थ, तथ्य, प्रक्रिया आदि ठीक तरह से न जानने या समझने और उसके फल-स्वरूप कुछ कर डालने की अवस्था या भाव। अशुद्धि। गलती। (मिस्टेक) ४. पूरा ध्यान न देने या जल्दी में रहने से होनेवाली कोई त्रुटि। चूक। (स्लिप) ५. अनजान में या असावधानी के कारण होनेवाला कोई अपराध या दोष। कसूर।

भूलना–स० [सं० विह्वल ?] १. विस्मृत करना। याद न रखना। २. याद न रहने से खो देना।

अ० १. विस्मृत होना। याद न रहना। २. गलती होना। ३. आसक्त होना। लुभाना। ४. घमंड में रहना।

वि० भूलनेवाला। जैसे–भूलना स्वभाव।

भूल-भुलैयाँ–स्त्री० [हिं० भूल + भुलाना + ऐयाँ (प्रत्य०)] १. वह चक्करदार वास्तु-रचना जिसमें आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि जल्दी ठिकाने पर नहीं पहुँच सकता। चकाबू। २. रेखाओं आदि से बनाई हुई इस प्रकार की आकृति।

भूलोक–पुं० [सं०] संसार। जगत्।

भू-विज्ञान–पुं० दे० 'भूगर्भ-शास्त्र'।

भूशायी–वि० [सं० भूशायिन्] १. पृथ्वी पर सोनेवाला। २. पृथ्वी पर गिरा, लेटा या पड़ा हुआ।

भू-शुल्क–पुं० [सं०] वह शुल्क, राज-कर या चुंगी जो भू-सम्पत्ति पर लगती है। भू-चुंगी। (एस्टेट ड्यूटी)

भूषण–पुं० [सं०] १. अलंकार। गहना। जेवर। २. शोभा बढ़ानेवाली चीज।

भूषना†–स० [सं० भूषण] भूषित करना। सजाना।

भूषा–स्त्री० [सं० भूषण] १. आभूषण। गहना। २. सजाने की क्रिया। सजावट। ३. सजाने की सामग्री।

भूषित–वि० [सं०] १. गहने पहने हुए। अलंकृत। २. सजाया हुआ। सज्जित।

भू-संपत्ति–स्त्री० [सं०] वह संपत्ति जो खेती-बारी, जंगल, मकान आदि के रूप में हो। (एस्टेट)

भूसना*–अ० दे० 'भूँकना'।

भूसा–पुं० [सं० तुष] अनाजों के पौधों के डंठलों का महीन चूरा।

भूसी–स्त्री० [हिं० भूसा] १. भूसा। २. दाने आदि के ऊपर का छिलका।

भूसुर–पुं० [सं०] ब्राह्मण।

भू-स्वामी–पुं० [सं०] वह जो किसी भूमिखंड का स्वामी हो, और वह भूमि दूसरों को लगान, भाड़े आदि पर देता हो। जमीन का मालिक। (लैंड-लॉर्ड)

भूहरा*–पुं० दे० 'भुँइहरा'।

भृंग–पुं [सं०] भौंरा।

भृंगराज–पुं० [सं०] १. भँगरैया। (वनस्पति) २. काले रंग की एक चिड़िया।

भृंगी–पुं० [सं० भृंगिन्] शिव जी का एक गण।

स्त्री० [सं०] १. भृंग या भौंरे की मादा। भौंरी। २. बिलनी।

भृकुटी–स्त्री० [सं०] भौंह।

भृगु–पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने विष्णु की छाती पर लात मारी थी। २. परशुराम। ३. समुद्र-तट की ऊँची ढालुआँ चट्टान। कगार। (क्लिफ)

भृगु-रेखा–स्त्री० [सं०] विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु की लात लगने से हुआ था।

भृगुवार–पुं० [सं०] शुक्रवार।

भृत–पुं० [सं०] [स्त्री० भृता] दास।

वि० [सं०] १. भरा हुआ। पूरित। पाला-पोसा हुआ।

भृति-स्त्री० [सं०] १. भरने की क्रिया भाव। २. सेवा। नौकरी। ३. मजदूरी ४. वेतन। तनखाह। ५. मूल्य। दाम। पालन करना। पालना। ७. वह धन पत्नी को निर्वाह के लिए पति द्वारा जाने पर मिलता है। (एलिमनी) जीविका निर्वाह के लिए मिलनेवाला वृत्ति। ९. दे० 'भत्ता'।

भृत्य–पुं० [सं०] नौकर। सेवक।

भेंगा–पुं० [देश०] वह जिसकी आँखें पुतलियाँ टेढ़ी-तिरछी चलती या रहती हैं

भेंट–स्त्री० [हिं० भेंटना] १. मिल मुलाकात। २. उपहार। नजराना।

भेंटना†–अ० [हिं० भिड़ना ?] काल करना। मिलना।

स० गले लगाना।

भेइ(उ)†–पुं० [सं० भेद] रहस्य।

भेक–पुं० दे० 'मेंढक'।

भेख*–पुं० दे० 'वेष'।

भेखज*–पुं० दे० 'भेषज'।

भेजना–स० [सं० व्रजन्] १. किसी कहीं जाने के लिए चलने में प्रवृत्त करना २. कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्था लिए रवाना करना। प्रेषण।

भेजवाना–स० हिं० 'भेजना' का प्रे०

भेजा–पुं० [?] सिर के अन्दर का गूदा मग्ज।

भेड़–स्त्री० [सं० मेष] [पुं० भेड़ा बकरी की तरह का एक प्रसिद्ध चौपाया

कहा०–**भेड़िया-धसान** = बिना समझे दूसरों का अनुसरण करना।

भेड़ा–पुं० [हिं० भेड़] भेड़ जाति का 'मेढ़ा। मेष।

भेड़िया–पुं० [हिं० भेड़] कुत्ते की का एक प्रसिद्ध जंगली हिंसक जंतु जो जानवरों को उठा ले जाता है।

१. भेदने या छेदने की
के लोगों को एक-
कर कुछ लोगों को
। ३. भीतरी छिपा
। ४. मर्म। तात्पर्य।
। ६. प्रकार। तरह।
] १. भेदने या छेदने-
। दस्तावर। (वैद्यक)
-स्त्री० [सं०] साहित्य
अलंकार का एक भेद
उपमेय का उल्लेख
कुछ और ही' या 'इन
और ही' है आदि कहकर
ठहराया जाता है।
] [वि० भेदनीय, भेद्य,
की क्रिया या भाव।
। ३. भेद लेने की क्रिया
)
] १. वेधना। छेदना।
का आशय जानने के
गंभीर दृष्टि से देखना।
दुर्योधन भेधौ सिर दिसी
।-सूर।
[सं०] वह बुद्धि या
अनुसार प्रायः समानता
पदार्थों आदि में भेद-
है।
] प्रायः समान माने जाने-
, पदार्थों आदि के प्रति
विचार या भाव रखना।
एक तरह का या अच्छा
साथ दूसरी तरह का
। (डिस्क्रिमिनेशन)
भेद-बुद्धि।
भेद + इया (प्रत्य०)]
। २. भेद या भीतरी

भेदी–पुं० दे० 'भेदिया'।
वि० [सं० 'भेदिन्'] भेदन करनेवाला। छेदनेवाला।

भेदू–पुं० दे० 'भेदिया'।

भेर–पुं० = भेरी (ढोल)।

भेरा†–पुं० दे० 'बेड़ा'।

भेरी–स्त्री० [सं०] लड़ाई में बजाया जानेवाला एक प्रकार का बड़ा ढोल। ढक्का। दुंदुभी।

भेला†–पुं० [हिं० भेंट] १. भिड़ंत। २. भेंट। मुलाकात।
†पुं० दे० 'भिलावाँ'।
पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० भेली] बड़ा गोला या पिंड। जैसे–गुड़ का भेला।

भेली–स्त्री० [?] गुड़ आदि की गोल बट्टी या पिंडी।

भेव†–पुं० [सं० भेद] १. भेद। रहस्य। २. बारी। पारी।

भेष–पुं० दे० 'वेष'।

भेषज–पुं० [सं०] औषध। दवा।

भेषना*–स० दे० 'भेसना'।

भेस–पुं० [सं० वेष] १. केवल दूसरों को दिखाने के लिए बनाया हुआ बाहरी रूप-रंग और पहनावा आदि। वेष। २. किसी के अनुकरण पर बनाया हुआ कृत्रिम रूप और पहने हुए वस्त्र आदि।

भेसना*–स० [हिं० भेष] १. भेस बनाना। २. कपड़े पहनना।

भैंस–स्त्री० [सं० महिष] [पुं० भैंसा] एक चौपाये की मादा जो गाय से अधिक दूध देती है और इसी लिए पाली जाती है।

भैंसा–पुं० [हिं० भैंस] [स्त्री० भैंस] भैंस का नर।

भैंसासुर–पुं० दे० 'महिषासुर'।

भै*–पुं० दे० 'भय'।

भैचक (क्क)*–वि० दे० 'भौचक'।

भैजन–वि० दे० 'भयानक'।

भैजल*–पुं० दे० 'भव-जाल'।

भैदा*-वि० = भयदायक। (भयानक)

भैन (ा)-स्त्री० दे० 'बहन'।

भैया-पुं० [हिं० भाई] १. भाई। २. बराबरवालों के लिए संबोधन का शब्द।

भैयाचारी-स्त्री० दे० 'भाईचारा'।

भैरव-वि० [सं०] १. भीषण शब्दवाला। २. भयानक। विकट।
पुं० [सं०] १. शिव के एक प्रकार के गण। २. साहित्य में भयानक रस। ३. छः रागों में से एक। (संगीत)

भैरवी-स्त्री० [सं०] १. एक देवी का नाम। चामुंडा। २. सबेरे गाई जानेवाली एक रागिनी। ३. सबेरे होनेवाला संगीत।
वि० भैरव संबंधी। भैरव का। जैसे—भैरवी यातना।

भैरवी-चक्र-पुं० [सं०] तांत्रिकों का वह मंडल जो देवी के पूजन के लिए एकत्र होता है।

भैरवी यातना-स्त्री० [सं०] हिन्दुओं के विश्वास के अनुसार वह कष्ट जो प्राणियों को मरते समय भैरव जी देते हैं।

भैषज-पुं० [सं०] औषध। दवा।

भैषज्य-पु० [सं०] १. रोगी को औषध आदि देने का काम। चिकित्सा। २. औषध। दवा।
वि० औषध या चिकित्सा संबंधी। जैसे—भैषज्य विधि विज्ञान।

भैषज्य विधि विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें औषधों और चिकित्सा-प्रणाली आदि के नियमों, विधियों, सिद्धान्तों आदि का विवेचन होता है। (मेडिकलजूरिसप्रूडेन्स)

भैहा+-पुं० [हिं० भव] १. भयभीत। डरा हुआ। २. जो भूत-प्रेत देखकर डर गया हो या जिसपर भूत का आवेश हो।

भौंकना-स० [भक से अनु०] नुकीली चीज जोर से धँसाना। घुसाना।

भौंड़ा-वि०[हिं० भद्दा ?] [भाव० भौंडापन, स्त्री० भौंडी] भद्दा। बदसूरत। कुरू

भौंदू-वि० [हिं० बुद्धू] मूर्ख।

भौंपा(पू)-पुं० [भौं अनु० + प (प्रत्य०)] १.फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रक का बाजा। २. कल कारखानों आदि कर्मचारियों को सचेत करने के लिए जोर से बजाई जानेवाली एक प्रकार सीटी।

भो*-अ० [हिं० भया] हुआ।

भोकस+-वि० [हिं० भूख] भुक्खड़। पुं० [?] एक प्रकार के राक्षस।

भोक्ता-वि० [सं० भोक्तृ] [भाव० भोक्त भोग करने या भोगनेवाला।

भोग-पुं० [सं०] १. सुख, दुख आदि अनुभव करना। २ देह या शरीर सुख दुख आदि का अनुभव करता या भोगता है। उदा०—भुजगभोग-भुजदण्ड दर चक्र, गदा बनि आई।—तुलसी। पाप-पुण्य का वह फल जो सुख-दुख के रूप में भोगा जाता है। प्रारब्ध। राशियों में ग्रहों के रहने का समय। कोई वस्तु अपने अधिकार में करके सुख या लाभ उठाना। वह स्थिति जि कोई चीज अपने पास रखकर उसका भोगा या उपभोग किया जाता है। अधि [पाजेशन] ६. भक्षण। खाना। दे के आगे रखे जानेवाले खाद्य नैवेद्य। ७. स्त्री संभोग। मैथुन।

भोगना-अ० [सं० भोग] सुख दुख सहना। भुगतना।

भोग-बंधक-पुं० [सं० भोग्य + बंधक रेहन] बंधक या रेहन का वह प्रकार जि ब्याज के बदले में बँधकी को बंधक हुई चीज का अधिकार या स्वा अस्थायी रूप से दे दिया जाता है और उसकी आय आदि का उपभोग करता (मार्टगेज विद पोजेशन) 'दृष्ट बंधक' उलटा।

भोजन ग्रहण करता हो। (डायटेड)। जैसे–इस अस्पताल में २० भोजनग्राही रोगी हैं।

भोजन-भट्ट–पुं० [सं० भोजन + भट] बहुत अधिक खानेवाला।

भोजनालय–पुं० [सं०] १. रसोईघर। २. वह स्थान जहाँ पका हुआ भोजन मिले।

भोजपत्र–पुं० [सं० भूर्जपत्र] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल ग्रन्थ आदि लिखने के काम आती थी।

भोजपुरी–स्त्री० [हिं० भोजपुर + ई(प्रत्य०)] भोजपुरी की भाषा।
वि० भोजपुर का। भोजपुर संबंधी।

भोज-विद्या–स्त्री० दे० 'इन्द्रजाल'।

भोजी–पुं० [सं० भोजिन्] खानेवाला। (यौ० के अंत में। जैसे—माँस भोजी)

भोजू*–पुं० दे० 'भोजन'।
वि० [सं० भोग्य] काम में आने योग्य।
यौ०–काजू-भोजू= साधारण रूप से काम में आने योग्य। (अधिक पुष्ट या स्थाई नहीं।)

भोज्य–पुं० [सं०] खाद्य पदार्थ।
वि० खाने योग्य।

भोट–पुं० [सं० भोटग] भूटान देश।

भोटा*–वि० दे० 'भोला'।

भोटिया–पुं० [हिं० भोट + इया(प्रत्य०)] भोट या भूटान देश का निवासी।
स्त्री० भूटान देश की भाषा।
वि० भूटान देश का।

भोडर (ल)–पुं० [देश०] अभ्रक। अबरक। (माइका)

भोथरा–वि० [अनु०] जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। कुंद। (शस्त्र आदि)

भोना*–अ० [हिं० भीनना] १. भींगना या भीनना। २. लिप्त या लीन होना। ३. आसक्त। हीन। ४. युक्त होना। मिलना। ५. धोखे में पड़ना।
स० १. भिगोना या तर करना। २. युक्त

करना। मिलाना। ३. लिप्त, लीन या आसक्त करना। ४. किसी को धोखे में डालना।

भोयन*–पुं० = भोजन।

भोर–पुं० [सं० विभावरी] तड़का।

†पुं० [सं० भ्रम] भ्रम। धोखा।

वि० चकित। भौचक्का।

*वि० दे० 'भोला'।

भोरना*–स०[सं० भ्रम]१. भ्रम में डालना। २. धोखा देना। ठगना। ३. बहकाना। उदा०–ज्यौं दूती पर-बधू भोरि कै, लै पर-पुरुष दिखावै।–सूर।

भोरहरा†–पुं० दे० 'भोर'।

भोरहरे†–क्रि० वि० [हिं० भोर] भोर या तड़के का समय। बहुत सवेरे।

भोरा†–पुं० दे० 'भोर'।

वि० [स्त्री० भोरी] भोला (सीधा)।

भोराई*–स्त्री० = भोलापन।

भोराना*–स० [हिं० भोर = भ्रम] भ्रम में डालना। भुलाना।

अ० भ्रम या धोखे में आना।

भोलना*–स० [हिं० भुलाना] भुलावा देना। बहकाना।

भोला–वि० [हिं० भूलना] [भाव० भोलापन] सीधा-सादा। सरल।

भोलानाथ–पुं० [हिं० + सं०] महादेव।

भोला-भाला–वि० दे० 'भोला'।

भौं–स्त्री० दे० भौंह'।

भौंकना–अ० दे० 'भूकना'।

भौंतुआ–पुं० [हिं० भौंना = घूमना] १. कंधे के नीचे निकलनेवाली एक प्रकार की गिल्टी। २. तेली का बैल, जिसे दिन भर घूमते रहना पड़ता है। ३. दे० 'जल-भौंरा'।

वि० बराबर घूमता रहनेवाला।

भौंना*–अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

भौंर–पुं० [सं० भ्रमर] १. भौंरा। २. भँवर। ३. मुश्की घोड़ा।

भौंरा–पुं० [सं० भ्रमर] [स्त्री० भौंरी] काले रंग का एक पतंगा। २. बड़ी
मक्खी।

पुं० [सं० भ्रमरक, प्रा० भँउरअ]
काठ का वह लट्टू (खिलौना) जिसे
डोरी की सहायता से घुमाते या नचाते
२. हिंडोले की वह लकड़ी जिसमें
के रस्से बाँधकर लटकाये जाते हैं।

पुं० [हिं० भुँइहरा] १. तहखाना।
अन्न रखने का गड्ढा। खात। खत्ता।

भौंराना*–स० [सं० भ्रमण] १.
देना। घुमाना। २. विवाह के समय
दिलाना।

अ० चक्कर काटना। घूमना।

भौंराला*–वि० दे० घुँघराला'।

भौंराही*–स्त्री० [हिं० भौंरा +
(प्रत्य०)] भौंरों के मँडराने की
या भाव।

भौंरी–स्त्री० [सं० भ्रमण] १. पशु
शरीर पर वे चक्करदार बाल, जिनसे
शुभ या अशुभ लक्षणों या गुण-दो
निर्णय करते हैं। २. दे० 'भाँवर'।

भौंह–स्त्री० [सं० भ्रू] आँख के ऊ
हड्डी पर के बाल। भृकुटी। भौं।

मुहा०–**भौंह चढ़ाना या तानना**
क्रुद्ध होना। (किसी की) **भौं**
जोहना = खुशामद के कारण कि
दृष्टि से उसके मनोभावों का पता ल
रहना। **भौंह नचाना** = बारबार
हिलाना जो स्त्रियों के हाव-भाव और
चंचलता का सूचक है।

भौंहरा*–पुं० दे० 'भुँइहरा'।

भौ*–पुं० [सं० भव] १. संसार।
उत्पत्ति। जन्म।

पुं० [सं० भय] डर। भय।

भौकन*–स्त्री० [हिं० भभक] १. ज्वा
आग की लपट। २. ताप। जलन।

भौगोलिक–वि० [सं०] भूगोल का।

भय + चकित] हक्का-
हुआ। चकित।
'भावज'।
'भव-जाल'।
दे० 'भावज'।
] [भाव०भौतिकता]
रखनेवाला। २.
हुआ। पार्थिव। ३.

[सं०] भूगोल की
इस बात का विवेचन
किस अंश की प्राकृतिक
है और उसमें कैसे कैसे
। (फिजिकल जियॉग्रैफी,
)
दे० 'पदार्थवाद'।
पुं० [सं०] वह विज्ञान
वायु, प्रकाश आदि
विवेचन होता है। पदार्थ
)
स्त्री० [सं०] १. भूत-प्रेतों
दूर करने की विद्या।
विज्ञान'।
मरन।
=घूमना।
] १. भूमि संबंधी।
भूमि या पृथ्वी से उत्पन्न।
।
] मंगलवार।
] भूमि का स्वामी।
। भूमि का।
पुं० [सं०] भूमि
आदि का वह अधिकार
स्वामी से प्राप्त होता
(टेन्योर)
पुं० [सं०] भूमि
मित्व, भोग आदि से
अभिलेख। (लैंड

रेकर्ड्स)

भौंर*–पुं० १. दे० 'भौंरा'। २. दे० 'भँवर'।

भ्रंश–पुं० [सं०] १. नीचे गिरना। पतन। २. नाश। ध्वंस। बरबादी।

भ्रम–पुं० [सं०] १. किसी को कुछ और ही या दूसरा समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति। धोखा। २. संदेह। शक। ३. साहित्य में भ्रांति नामक अलंकार का दूसरा नाम। विशेष दे० 'भ्रांति' ६.।
पुं० [सं० सम्भ्रम] मान। प्रतिष्ठा।

भ्रमण–पुं० [सं०] १. घूमना फिरना। चलना-फिरना। विचरण। २. यात्रा। सफर। (टूर)

भ्रमना*–अ० [सं० भ्रमण] चक्कर खाना या लगाना। घूमना। उदा०–सुर सू भुजा समेत सुन्दरसन देखि भ्रम्यो।-सूर।
अ० [सं० भ्रम] १. भ्रम या सन्देह में पड़ना। २. धोखा खाना। ३. भूल या गलती करना।

भ्रमनि*–स्त्री० = भ्रमण।

भ्रम-मूलक–वि० [सं०] जिसके मूल में भ्रम हो। भ्रम के कारण उत्पन्न।

भ्रमर–पुं० [सं०] [स्त्री० भ्रमरी] १. भौंरा। २. उद्धव का एक नाम।

भ्रमरावली–स्त्री० [सं०] भौंरों की पंक्ति।

भ्रमात्मक–वि० [सं०] १. जिसके मूल में भ्रम हो। भ्रम मूलक। २. जिसके संबंध में भ्रम हो। संदिग्ध।

भ्रमाना†–स० हिं० 'भ्रमना' का स०।

भ्रमित–वि० [सं०] १. भ्रम में पड़ा हुआ। २. घूमता या चक्कर खाता हुआ।

भ्रमीन*–वि० [सं० भ्रमण] भ्रमण करता या घूमता हुआ।

भ्रष्ट–वि० [सं०] १. अपने स्थान से नीचे गिरा हुआ। पतित। २. बहुत बुरा या खराब। दूषित। ३. बद-चलन। दुश्चरित। ४. नीति-पथ से गिरा हुआ। निंदनीय

आचरणवाला। (कोरप्ट)

भ्रष्टा–स्त्री० [सं०] कुलटा। दुश्चरित्रा।

भ्रष्टाचरण–पुं० दे० 'भ्रष्टाचार'।

भ्रष्टाचार–पुं० [सं०] [वि० भ्रष्टाचारी] १. नीति-पथ से गिरा हुआ और समाज में बहुत बुरा माने जानेवाला आचरण या व्यवहार। २. शासनिक क्षेत्र में राज कर्मचारियों आदि का घूस लेना, पक्षपात करना और अनुचित रूप से सरकारी या जनता का धन खा जाना आदि बातें। (कोरप्शन)

भ्रांत–वि० [सं०] जिसे भ्रांति हुई हो। भ्रम या धोखे में पड़ा हुआ।

भ्रांतापह्नुति–स्त्री० [सं०] साहित्य में अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी को किसी एक बात या वस्तु में दूसरी बात या वस्तु की भ्रांति या भ्रम होने पर वास्तविक बात बतलाकर वह भ्रम दूर करने का उल्लेख होता है।

भ्रांति–स्त्री० [सं०] १. भ्रम। धोखा। २. संदेह। शक। ३. भ्रमण। ४. पागलपन। ५. भूल-चूक। ६. साहित्य में एक अलंकार जिसमें उपमेय को देखकर भ्रम से उसे उपमान ही समझ लिया जाता है। जैसे–पलाश के पत्तों (उपमेय) को देखकर विरहिणी नायिका का भूल से उन्हें जलते हुए अंगारे (उपमान) समझ लेना। इसे 'भ्रम' भी कहते हैं।

भ्राजना*–अ० [सं० भ्रजन] शोभा पाना

भ्राजमान*–वि० [हिं० भ्रजना] शोभा मान। सुशोभित।

भ्राता–पुं० [सं० भ्रातृ] भाई।

भ्रातृ जाया–स्त्री० [सं०] भावज।

भ्रातृत्व–पुं० [सं०] १. भाई होने भाव या धर्म। २. भाई-चारा।

भ्रातृ-भाव–पुं० [सं०] १. भाई का सा या संबंध। २. दूसरों को अपने भाई झना या उनसे भाइयों का-सा व्यवहार कर भाई-चारा।

भ्राम*–पुं० दे० 'भ्रम'।

भ्रामक–वि० [सं०] १. भ्रम उत्पन्न वाला। धोखे में डालकर इधर-उधर जानेवाला। (मिसलीडिंग) २. घुम वाला। चक्कर खिलानेवाला।

भ्रिंगी–स्त्री० पुं० = भृंगी।

भ्रू–स्त्री० [सं०] भौंह।

भ्रूण–पुं० [सं०] १. स्त्री० का गर्भ। बालक की गर्भ में रहने की अवस्था, वि षतः गर्भाधान में प्रायः चार मास त अवस्था। (एम्ब्रायो)

भ्रूण-हत्या–स्त्री० [सं०] गर्भ में या बालक को मार डालना।

भ्रू-विक्षेप–पुं० [सं०] १. दृष्टि डाल देखना। २. त्योरी चढ़ाना।

भ्वहरना†–अ० = डरना।

म

म–नागरी वर्ण-माला का पच्चीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण, जिसका उच्चारण होंठ और नासिका से होता है। संगीत में यह 'मध्यम' स्वर और छन्दःशास्त्र में 'मगण' का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।

मंकुर*–पुं० [सं० मुकुर] शीशा।

मँगता–पुं० दे० 'मंगन'।

मंगन†–पुं० [हिं० माँगना] १. माँ की क्रिया या भाव। २. भीख माँगनेवा भिक्षुक। भिखमंगा।

मंगना*–स० = माँगना। उदा०– बिदुर की जाति बरन है, आइ लाग लि मंगी।—सूर।

मँगनी–स्त्री० [हिं० माँगना + ई (प्रत्य०) १. किसी के माँगने पर उसे कुछ समय

देना। २. अपना काम
किसी से माँग कर उसकी
द में लौटा देने के लिए)
प्रकार दी हुई चीज। ४.
वर और कन्या का संबंध
होता है।
दे० 'मंगलना'।
०] १. कल्याण। भलाई।
२. एक प्रसिद्ध ग्रह।
(मार्स) ३. मंगलवार।
की एक कठोर धातु, जिसका
के सामान बनाने में होता है।

(घट)-पुं० [सं०] मंगल-
पूजा के लिए अथवा यों ही
पानी का घड़ा।
[सं० मंगल = शुभ]
जलाना। जैसे-दीया
मंगलना। (मंगल-भाषित

दे० 'मंगलाचरण'।
पुं० [सं०] बन्दीजन।
पुं० [सं०] किसी अप्रिय
को प्रिय या शुभ रूप में
। जैसे-'चूड़ियाँ तोड़ना' न
'चढ़ाना' कहना।
[सं०] किसी देवता के
भलाई पर बाँधा जानेवाला

पुं० [सं०] वह पद्य जो
पहले मंगल की कामना से
जाता है। (प्रिल्यूड)
स्त्री० दे० 'वेश्या'।
[सं० मंगल (ग्रह)] जिसकी
के चौथे, आठवें या बारहवें
पड़ा हो। (अशुभ)
[हिं० 'माँगना' का प्रे०]

१. माँगने का काम दूसरे से कराना। २. किसी से कोई चीज लाकर देने के लिए कहना। ३. मँगनी कराना।

मँगारना*–स० दे० 'मंगलना'।

मँगेतर–वि० [हिं० मँगनी + एतर (प्रत्य०)] जिसके साथ किसी की मँगनी हुई हो।

मंगोल–पुं० [मंगोलिया प्रदेश से] मध्य-एशिया में बसनेवाली एक जाति।

मंच(क)–पुं० [सं०] १. खाट। खटिया। २. छोटी पीढ़ी। मँचिया। ३. वह ऊँचा मण्डप जिसपर बैठकर सर्व-साधारण के सामने कोई कार्य किया जाय। (स्टेज, डायस) जैसे–रंग-मंच, न्याय-मंच, सभा-मंच। ४. दे० 'रंग-मंच'।

मंछर*–पुं० १. दे० 'मत्सर'। २. दे० 'मच्छर'।

मंजन–पुं० [सं० मज्जन] १. दाँत साफ करने का चूर्ण या बुकनी। २. दे० 'मज्जन'। (स्नान)

मँजना–अ० [हिं० माँजना] १. माँजा जाना। २. अभ्यास होना। जैसे–हाथ मँजना।

मंजरित–वि० [सं० मंजरी + त (प्रत्य०)] जिसमें मंजरी लगी हो। मंजरियों से युक्त।

मंजरी–स्त्री० [सं०] [वि० मंजरित] १. नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २. कुछ विशिष्ट पौधों के सीके में लगे हुए बहुत-से दानों का समूह। ३. लता।

मँजाई–स्त्री० [हिं० मँजाना] मँजाने या माँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मँजाना–स० हिं० 'माँजना' का प्रे०।

मँजार*–पुं० [सं० मार्जार] [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली का नर। बिल्ला।

मंजिल–स्त्री० [अ०] १. यात्रा के समय मार्ग में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २. मकान का खंड। मरातिब।

मंजीर–पुं० [सं०] नूपुर। घुँघरू।

मंजु–वि० [सं०] [भाव० मंजुता] सुन्दर ।

मंजुल–वि० [सं०] [स्त्री० मंजुला, भाव० मंजुलता] सुन्दर । मनोहर ।

मंजूर–वि० [अ०] स्वीकृत ।

मंजरी–स्त्री० [अ० मंजूर] स्वीकृति ।

मंजूषा–स्त्री० [सं०] १. छोटा पिटारा या डिब्बा । पिटारी । २. हाथी का हौदा । ३. आज-कल वह चोंगा, तश्तरी आदि जिनमें रखकर अभिनन्दनपत्र आदि भेंट किये जाते हैं । (कास्केट)

मंझ*–वि० = मध्य ।

मँझ-धार–स्त्री० [हिं० मँझ = मध्य + धार] १. नदी या उसके प्रवाह का मध्य भाग । २. किसी काम का मध्य ।

मँझरिया†–पु० दे० 'माँझी' । (केवट)

मँझला–वि० [हिं० मँझ (मध्य)] बीच का ।

मंझा*–वि० [सं० मध्य] बीच का ।

*पुं० मध्य । बीच ।

पुं० [सं० मंच] पलंग । खाट ।

पुं० दे० 'माँझा' ।

मँझार (री)†–क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच में ।

स्त्री० मध्य । बीच ।

मँझोला–वि० दे० 'मझोला' ।

मँड़ई–स्त्री० [सं० मंडप] झोंपड़ी । कुटी ।

मंडई†–स्त्री० दे० = मंडी (बाजार) ।

मंडन–पुं० [सं०] १. शृंगार करना । सजाना । २. साहित्य में सखियों आदि का नायिका को गहने-कपड़े पहना कर और उसकी चोटी आदि करके सजाना । ३. वह वस्तु जिससे किसी की शोभा या सुन्दरता बढ़े । ४. प्रमाण देकर कोई बात सिद्ध करना । 'खंडन' का उलटा ।

मंडना*–स० [सं० मंडन] १. सजाना । २. युक्ति से सिद्ध करना । ३. भरना । ४. पूरित या युक्त करना । ५. फैलाना । बिछाना ।

स० [सं० मर्दन] दलित करना । रौंदना ।

अ० मंडित होना । सजना ।

मँडनी–स्त्री० [सं० मृणन, हिं० माँडना] खलिहान में रखे हुए फसल के डंठलों आ में से अनाज के दाने अलग करने की क्रि या भाव ।

मंडप–पुं० [सं०] १. किसी उत्सव मंगल कार्य के लिए बाँस, फूस, कपड़े आ से छाकर बनाया हुआ स्थान । मंच । देव-मंदिर के ऊपर की गोल बनावट उसके नीचे का स्थान ।

मँडरना*-अ० [सं० मंडल] चारो से छाना या घेर लेना ।

मँडराई*–स्त्री० [सं० मंडल] पक्षि आदि के मंडल या घेरा बाँधकर उड़ने क्रिया या भाव ।

मँडराना–अ० दे० 'मँडलाना' ।

मंडल–पुं० [सं०] १. परिधि । चक्र घेरा । २. गोल विस्तार या कोई हूआ क्षेत्र । (सर्किल) ३. सूर्य या चं के चारो ओर दिखाई पड़नेवाला घे परिवेश । ४. ऋग्वेद का कोई खण्ड । प्रांत आदि का वह विभाग या अंश जो विशेष अधिकारी के अधीन हो । (डिस्ट्रिक्ट) ६ एक ही प्रकार के या विशेष दृष्टि से साथ रहनेवाले कुछ लोगों का समाज या समुदाय । (सर्कि ७. दे० 'कटिबंध' २. ।

मंडल-परिषद्–स्त्री० दे० 'जिला बो

मंडलाकार-वि० [सं०] गोल ।

मँडलाना–अ० [सं० मंडल] १. कि वस्तु के ऊपर चारो ओर घूमते हुए उड़ २. बराबर किसी के आस-पास रहना ।

मंडली–स्त्री० [सं०] १. समूह । सम २. किसी विशेष कार्य, प्रदर्शन, व्य आदि के लिए बना हुआ कुछ लोगों संघटित दल । (कम्पनी)

पु० [सं० मंडलिन्] सूर्य ।

मंडव*–पु = मंडप ।

मँड़वा–पु० दे० 'मंडप' ।

मंडी] बड़ी मंडी या

मंडल १] गड्ढा ।
] १. सजाया हुआ ।
२. भरा हुआ ।
[सं०] किसी घटिया
विशिष्ट प्रक्रिया से पत्तर के
हुआ सोना ।
मंडप] बहुत बड़ा बाजार ।
अनाज की मंडी ।
] मेंढक ।
] १. सलाह । २. मंत्र ।
] १. मन में स्थिर किया
विचार । २. किसी विषय में
नेवाला मत । ३. विचार,
करनेवाली किसी सभा,
के किसी निकाय का स्थिर
कोई निश्चय या निर्णय ।
विचार के लिए उपस्थित की
प्रकार की कोई बात ।
(रिजोलूशन; अन्तिम दोनों
)
] १. गुप्त रखने योग्य रहस्य
परामर्श । २. वेद के वे
द्वारा यज्ञ आदि करने का
वे शब्द या वाक्य, जिनका
किसी देवता की प्रसन्नता
किया जाता है । ४. वे शब्द
उच्चारण झाड़ फूँक करने-
विष आदि का प्रभाव दूर
करते हैं ।
=जादू-टोना ।
[सं०] मंत्र रचनेवाला ।
वेदों के मंत्रों का)
[सं०] १. किसी को यह
और कैसे करना चाहिए ।
(एडवाइस) २. आपस
हुआ मत । मंतव्य ।

मंत्र-द्रष्टा–वि० [सं०] वेद का मंत्र प्रकाश करनेवाला । (ऋषि)

मंत्र-पूत–वि० [सं०] १. मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ । १. मंत्र पढ़कर फूँका हुआ ।

मंत्रालय–पुं० दे० 'सचिवालय' ।

मंत्रिणी–स्त्री० [सं०] मंत्रणा देनेवाली स्त्री ।

मंत्रित–वि० [सं०] १. जिसका मंत्र से संस्कार किया गया हो । अभिमंत्रित । २. जिसे किसी प्रकार की मंत्रणा, परामर्श या सलाह दी गई हो । (ऐडवाइज्ड) ३. (कार्य या बात) जिसके सम्बन्ध में मंत्रणा या सलाह दी गई हो । (ऐडवाइज्ड)

मंत्रित्व–पु०[सं०] मन्त्री का कार्य या पद ।

मंत्रि-मंडल–पुं० [सं०] किसी देश, राज्य, संस्था आदि के मंत्रियों का समूह ।(कैबिनेट)

मंत्री–पुं० [सं० मंत्रिन्] [स्त्री० मंत्रिणी] १. परामर्श या सलाह देनेवाला । २. वह प्रधान अधिकारी जिसके परामर्श से राज्य के अथवा राज्य के किसी विभाग के सब काम होते हों । सचिव । (मिनिस्टर) ३. किसी संस्था या सरकारी विभाग का वह अधिकारी जो नियमित रूप से उसके सब काम चलाता हो । (सेक्रेटरी)

मंत्रेला–पुं० [सं० मन्त्र] मंत्र-तंत्र या झाड़-फूँक जाननेवाला ।

मंथन–पुं० [सं०] १. मथना । बिलोना । २. गहरी छानबीन । ३. मथनी ।

मंथर–वि० [सं०] [भाव० मंथरता] धीमी गतिवाला । मंद । धीमा ।

मंद–वि० [सं०] १. धीमा । सुस्त । २. आलसी । ३. जड़ बुद्धि । मूर्ख । ४. दुष्ट ।

मंदग–वि० [सं०] धीरे धीरे चलनेवाला ।

मंदन*–वि० [सं० मन्द] मन्द या थोड़ी बुद्धिवाला । मूर्ख ।

मंद-बुद्धि–वि० [सं०] जिसकी बुद्धि मन्द या हीन हो । मूर्ख ।

मंदर–पुं० [सं०] १. पुराणों में उल्लिखित वह प्रसिद्ध पर्वत जिससे देवों और असुरों ने

समुद्र मथा था। २. स्वर्ग। ३. दर्पण।

*पुं० [सं० मंद्र] गंभीर ध्वनि या शब्द।

वि० मंद। धीमा।

†पुं० दे० 'मरदल'।

मंदराचल-पुं० = मंदरा। (पर्वत)

मंदल*-पुं० = मृदंग।

मंदा-वि० [सं० मंद] [स्त्री० मंदी] १. दे० 'मंद'। २. कम मूल्य का। सस्ता। ३. जिसका भाव या दाम उतर या गिर गया हो। ४. घटिया। ५. बुरा। खराब। ६. अशुभ।

मंदाकिनी-स्त्री० [सं०] आकाश-गंगा।

मंदाग्नि-स्त्री० [सं०] अन्न न पचने का रोग। बद-हजमी। अपच।

मंदार-पुं० [सं०] १. स्वर्ग का एक वृक्ष। २. आक या मदार का पेड़। ३. स्वर्ग। ४. हाथी। ५. मंदर नामक पर्वत।

मंदिल*-पुं० १. दे० 'मंदिर'। २. दे० 'मंदील'।

मँदिलरा*-पुं० १. दे० 'मंदिर'। २. दे० 'मंदिल' (मृदंग)।

मंदी-स्त्री० [हिं० मंद] १. भाव कम होना। 'मँहगी' का उल्टा। सस्ती। २. बाजार में बिक्री कम होना। 'तेजी' का उलटा।

मंदील-पुं० [सं० मुंड ?] एक प्रकार का कामदार रेशमी साफा।

मंदोदरी-स्त्री० [सं०] रावण की पटरानी, जो मय दानव की कन्या थी।

मंद्र-वि० [सं०] १. मनोहर। सुन्दर। २. प्रसन्न। ३. गंभीर। ४. धीमा। (स्वर, शब्द आदि)

मंशा-स्त्री० [अ०, मि० सं० मनस्] १. इच्छा। चाह। २. आशय। मतलब।

मँहगा-वि० दे० 'महँगा'।

मँहगाई-स्त्री० दे० 'महँगाई'।

मँहगी-स्त्री० दे० 'महँगी'।

मइँ†-सर्व दे० 'मैं'।

मइका-पुं० दे० 'मायका'।

मइमंत-वि० दे० 'मैमंत'।

मई*-वि० [सं० मय का स्त्री] संस्कृ 'मयी' (प्रत्य०) का कवियों द्वारा प्रयु रूप। जैसे-नेहमई = स्नेहमयी।

मकड़ी-स्त्री० [सं० मर्कटक] एक प्रसि कीड़ा जो अपने शरीर से निकले हुए ए प्रकार के तन्तुओं से जाला तानकर उस मक्खियाँ आदि फँसाता है।

मकना-वि०, पुं० दे० 'मकुना'।

मकबरा-पुं० [अ०] वह इमारत जि किसी की कब्र हो। रौजा। मजार।

मकरंद-पुं० [सं०] १. पुष्प-रस। फूलों का केसर।

मकर-पुं० [सं०] [स्त्री० मकरी] १. मग या घड़ियाल नामक जल-जन्तु। मछली। ३. बारह राशियों में से दस राशि जिसमें उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के अन्ति तीन पाद, पूरा श्रवण नक्षत्र और धनि के आरम्भ के दो पाद हैं।

पुं० [फा०] १. छल। धोखा। २. नख

मकर-कुंडल-पुं० [सं०] मगर नाम जल-जन्तु के आकार का कुण्डल।

मकराकृत-वि० [सं०] मकर (म नामक जल-जन्तु) या मछली के आकार

मकरालय-पुं० [सं०] समुद्र।

मकसूद-पुं० [अ०] १. उद्देश्य। अभिप्राय। तात्पर्य। मतलब।

वि० १. उद्दिष्ट। २. अभिप्रेत।

मकान-पुं० [फा०] गृह। घर।

मकुंद-पुं० दे० 'मुकुंद'।

मकु*-अव्य० [सं० म] १. चाहे। बल्कि। ३. कदाचित्। शायद।

मकुना-पुं० [सं० मनाक = हाथी] बि दाँतवाला छोटा नर हाथी।

वि० १. अपेक्षाकृत कम ऊँचाई का नाटा। २. छोटा।

मकोई-स्त्री० [हिं० मकोय] एक प्रका की जंगली छोटी मकोय। (पौधा और उस

एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

मख-शाला–स्त्री० = यज्ञ-शाला।

मखाना–पुं० दे० 'ताल मखाना'।

मखौल–पुं० [देश०] हँसी-ठट्ठा। उपहास। दिल्लगी।

मखौलिया–वि० [हिं० मखौल] दिल्लगीबाज। हँसोड़।

मग–पुं० [सं० मार्ग] मार्ग। रास्ता। पुं० [सं०] मगध देश।

मगज–पुं० [अ० मग्ज] १. मस्तिष्क। **मुहा०–मगज खाना या चाटना** = व्यर्थ बकवाद करके तंग करना। २. गिरी। मींगी।

मगज-पच्ची–स्त्री० [हिं० मगज + पचाना] कुछ सोचने या करने के लिए बहुत दिमाग लड़ाना। सिर खपाना।

मगजी–स्त्री० दे० 'गोट'। (कपड़े की)

मगण पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में तीन गुरु वर्णों का एक गण। जैसे–जामाता।

मगदल--पुं० [सं० मुद्ग] उड़द या मूँग के आटे का एक प्रकार का लड्डू।

मगदूर*–वि० दे० 'मकदूर'।

मगध–पुं० [सं०] १. दक्षिणी बिहार का पुराना नाम। २. बन्दीजन।

मगन–वि० [सं० मग्न] १. परम प्रसन्न। बहुत खुश। २. दे० 'मग्न'।

मगर–पुं० [सं० मकर] दे० 'मकर' १, २। अव्य० [फा०] लेकिन। परन्तु। पर।

मगर-मच्छ–पुं० [हिं० मगर + मछली] १. मगर या घड़ियाल नामक जल-जन्तु। २. बहुत बड़ी मछली।

मगरिब–पुं० [अ०] [वि० मगरिबी] पश्चिम दिशा। पच्छिम।

मगरिबी–वि० [अ०] मगरिब या पश्चिम दिशा का। पश्चिमी। स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

मगरूर–वि० [अ०] [भाव० मगरूरी] अभिमानी, घमंडी।

मगसर†-पुं० = मार्ग शीर्ष (महीना)।

मगह†-पुं० [सं० मगध] मगध देश।

मगहर†-पुं० दे० 'मगध'।

मगही-वि० [हिं० मगह] मगध देश का।

मग्ग*-पुं० [सं० मार्ग] रास्ता।

मग्न-वि० [सं०] [भाव० मग्नता] १. डूबा हुआ। २. तन्मय। लीन। ३. प्रसन्न।

मघवा-पुं० [सं० मघवन्] इन्द्र।

मघा-स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र। (हिन्दी में प्रायः पुं०)

मघोनी*-स्त्री० [सं० मघवन्] इन्द्राणी।

मघौना†-पुं० [सं० मघवा] इन्द्र।
पुं० दे० मेघौना।

मचकना-स०, अ० [भाव० मचक] दे० 'मचमचाना'।

मचका-पुं० [हिं० मचकना] १. धक्का। २. झोंका। ३. झूले की पेंग।

मचना-अ० [अनु०] १. आरम्भ होना। (शोर इत्यादि) २. छा जाना। फैलना। (धूम, कीर्त्ति आदि)

मचमचाना-स०, अ० [अनु०] इस प्रकार दबाना या दबना कि मच-मच शब्द हो।

मचलना-अ [अनु०] [भाव० मचल] किसी चीज के लिए बालकों या स्त्रियों की तरह हठ करना। अड़ना।

मचला-वि० [हिं० मचलना] १. बोलने के समय जान-बूझकर चुप रहनेवाला। २. मचलनेवाला।

मचलाई*-स्त्री० [हिं० मचलना] मचलने की क्रिया या भाव। मचल।

मचलाना-अ० [अनु०] कै मालूम होना। (जी) मिचलाना।
स० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना।
*अ० दे० 'मचलना'।

मचान-स्त्री० [सं० मंच + आन (प्रत्य०)] १. शिकार खेलने या खेत की रखवाली के लिए लट्ठों पर बाँधकर बनाया हुआ ऊँचा स्थान। २. ऊँची बैठक। मंच।

मचाना-स० हिं० 'मचना' का स०।

मचिया†-स्त्री० [सं० मंच] १. छोटी चारपाई। २. पीढ़ी।

मच्छ-पुं० [सं० मत्स्य] बड़ी मछली।

मच्छड़-पुं० [सं० मशक] एक प्रसिद्ध छोटा उड़नेवाला कीड़ा। इसकी मादा काटती और खून चूसती है।

मच्छर-पुं० = मच्छड़।
*पुं० = मत्सर।

मच्छरता-स्त्री० दे० 'मत्सर'।

मच्छरदानी*-स्त्री० दे० 'मसहरी'।

मच्छी-स्त्री० = मछली।

मच्छोदरी*-स्त्री० [सं० मत्स्योदरी] व्यास की माता, सत्यवती।

मछली-स्त्री० [सं० मत्स्य] प्रसिद्ध जल-जन्तु जिसकी अनेक छोटी बड़ी जातियाँ होती हैं। मीन।

मछुआ(वा)-पुं० [हिं० मछली] मछली मारनेवाला। (मल्लाह)

मजा†-सर्व० = मुझे। (राज० और गुज०)

मजकूरी-पु० [फा०] सम्मन तामील करनेवाला चपरासी।

मजदूर-पुं० [फा०] [स्त्री०, मजदूरनी, मजदूरिन] १. दूसरों का साधारण शारीरिक श्रम का कार्य करके निर्वाह करनेवाला। मजूर। श्रमिक। (लेबरर) २ मोटिया। बोझ ढोनेवाला।

मजदूरी-स्त्री० [फा०] १. मजदूर का काम या भाव। २. मजदूर को मिलनेवाला पारिश्रमिक या धन। (वेजेज़)

मजन*-पुं० १. दे० 'मज्जन'। २. दे० 'मार्जन'।

मजना*-अ० दे० 'मज्जना'।

मजबूत-वि० [अ०] [भाव० मजबूती] १. दृढ़। पुष्ट। पक्का। २. बलवान्।

मजबूर-वि० [अ०] [भाव० मजबूरी] विवश। लाचार।

मजबूरन्-क्रि० वि० [अ०] लाचारी की हालत में। विवश होकर।

या स्वभाववाला। २. अभिमानी। घमंडी।

मजेदार–वि० [फा०] १. स्वादिष्ट। २. आनन्ददायक। ३. बढ़िया। ४. मनोरंजक।

मज्ज*–स्त्री० दे० 'मजा'।

मज्जन–पुं० [सं०] [वि० मज्जित] स्नान। नहाना।

मज्जना*–अ० [सं० मज्जन] १. डूबना। उदा०–अब मोंहिं मज्जत क्यों न उबारौ। —सूर। २. नहाना। ३. अनुरक्त होना।

मज्जा–स्त्री० [सं०] हड्डी की नली के अन्दर का गूदा।

मज्झ (झ)*–वि० [सं० मध्य] बीच।

मझाना*–स० [सं० मध्य] १. प्रविष्ट करना। बीच में धँसाना। २. बीच में होकर पार करना। अ० थाह लेना।

मझार*–वि० [सं० मध्य] बीच में।

मझियाना*–अ० [हिं० माँझी] नाव खेना।

मझियारा*–वि० [सं० मध्य] बीच का।

मझीला*-वि० दे० 'मझोला'।

मझु*–सर्व० [हिं० मैं] १. मैं। २. मेरा।

मझोला–वि० [सं० मध्य] १. मझला। मध्य या बीच का। २. मध्यम आकार का।

मझोली–स्त्री० [हिं० मझोला] एक प्रकार की बैल गाड़ी।

मटक–स्त्री० [सं० मट = चलना] १. मटकने की क्रिया या भाव। २. गति। चाल।

मटकना–अ० [सं० मट = चलना] १. लचककर नखरे से चलना। २. नखरे से हाथ या आँखें नचाना। *३. देखना। ताकना। (क्व०)

†पुं० [हिं० मटका का अल्प०] १. छोटा मटका। २. मिट्टी का पुरवा।

मटकनि*-स्त्री० [हिं० मटकना] १. दे० 'मटक'। २. नाचना।

मटका–पुं० [हिं० मिट्टी] मिट्टी का बा घड़ा। कमोरा। माट।

मटकाना-स० [हिं० 'मटकना' का स०] नखरे से स्त्रियों की तरह उँगलियाँ, हाथ, आँखें आदि नचाना।

मटकी-स्त्री० [हिं० मटका] छोटा मटका। स्त्री० दे० 'मटक'।

मटकीला-वि० [हिं० मटकना] मटकनेवाला।

मटकौअल-स्त्री० दे० 'मटक'।

मट-मैला-वि० [हिं० मिट्टी + मैला] मिट्टी के रंग का। खाकी।

मटर-पुं० [सं० मधुर] एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल और तरकारी बनती है।

मटर-गश्त-पुं० [हिं० = मंद + फा० गश्त] सैर-सपाटा।

मटर-गश्ती-स्त्री० दे० 'मटरगश्त'।

मटिआना-स० [हिं० मिट्टी] १. मिट्टी लगाकर माँजना। २. मिट्टी लगाना।

मटिआ-मेट-वि० दे० 'मलिया मेट'।

मटिआला(टीला)-वि० दे० 'मट-मैला'।

मटिया-वि० [हिं० मिट्टी] मिट्टी का बना हुआ।

†स्त्री० = मिट्टी।

मट्ठक†-पुं० दे० 'मुकुट'।

मट्ठका-पुं० दे० 'मटका'।

मट्टी-स्त्री० = मिट्टी।

मट्ठर†-वि० [सं० मन्द ?] धीरे-धीरे काम करने या चलनेवाला। सुस्त।

मट्ठा-पुं० [सं० मंथन] मथकर मक्खन निकाल लेने पर बचा हुआ दही का पानी। मही। छाछ।

मट्ठी-स्त्री० [देश०] एक पकवान।

मठ-पुं० [सं०] १. निवास-स्थान। २. २. साधुओं के रहने का मकान। आश्रम।

मठधारी-पुं० [सं० मठधारिन्] किसी मठ का अधिकारी महन्त। मठाधीश।

मठरी-स्त्री० दे० 'मट्ठी'।

मठा-पुं० दे० 'मट्ठा'।

मठाधीश-पुं० दे० 'मठधारी'।

मठिया-स्त्री० [हिं० मठ] छोटा मठ।

†स्त्री० दे० 'माँठी'।

मठोर-स्त्री० [हिं० मट्ठा] दही मथने और मट्ठा रखने की मटकी।

मड़ई†-स्त्री० = झोपड़ी।

मड़क-स्त्री० [अनु०] १. ऐसी पेचीली बात जो जल्दी समझ में न आवे। २ भेद। रहस्य।

मड़वा†-पुं० दे० 'मंडप'।

मड़हट*-पुं० दे० 'मरघट'।

मडुआ-पुं० [देश०] एक प्रकार मोटा अन्न।

†पुं० दे० 'मंडप'।

मड़ैया-स्त्री० = झोंपड़ी।

मढ़-वि० [हिं० मट्ठर] १. अड़कर बैठनेवाला २. जल्दी अपनी जगह से न हिलनेवाला

†पुं० = मठ।

मढ़ना-स० [सं० मंडन] [मढ़वाना, मढ़ाना] १. चारों लगाना या लपेटना। २. बाजे के मुँह चमड़ा लगाना। ३. पुस्तक जिल्द लगाना। ४. चित्र, दर्पण चौखटे में जड़ना। ५. किसी के सिर या दोष थोपना।

अ० १. आरंभ होना। ठनना। २. मचना ३. अस्तित्व में आना। वर्त्तमान होना।

मढ़ा†-पुं० [सं० मंडप] १. मंडप घेरा।

मढ़ाई-स्त्री० [हिं० मढ़ना] मढ़ने क्रिया, भाव या मजदूरी।

मढ़ी-स्त्री० [सं० मठ] छोटा मठ। छोटा घर। ३. समाधि।

मणि-स्त्री० [सं०] १. बहुमूल्य रत्न जवाहिर। २. श्रेष्ठ और परम योग्य

मणिगुण-पुं० [सं०] 'शरन' नामक या छन्द का दूसरा नाम।

मणिधर-पुं० [सं०] साँप।

मणिपुर-पुं० [सं०] हठ-योग में शरीर

में से एक जो नाभि के
है। आधुनिक वैज्ञानिकों
केंद्र से शरीर की भिन्न-
का पोषण और वर्द्धन

[हिं०] १. कलाई। गट्टा।

[हिं०] १. हाथी। २. बादल।
[सं० मतंगिन्] हाथी का

] १. सम्मति। विचार।
)
उपाना = सम्मति स्थिर

। ३. पंथ। संप्रदाय।
आशय। ५. जिस विषय में
या जानकारी रखता हो,
में उसका प्रकट किया हुआ
। ६. निर्वाचन आदि के
के पक्ष में दी जानेवाली
)
मा] न। नहीं। (निषेध)
[सं०] वह जो प्रतिनिधि
अथवा उसके निर्वाचन
(वोट) देने का अधिकारी
)
[सं०] प्रतिनिधि के निर्वा-
में मत (वोट) देने की
। (वोटिंग, पोलिंग)
[हिं० मति] मत स्थिर करना।
] मत्त या पागल होना।
[सं०] वह पत्र जिसपर
व्यक्तियों के नाम या
है और जिसपर अपनी
लगाकर मतदाता किसी
अपना मत (वोट) देता
)
[सं०] वह पेटी जिसमें निर्वाचक या मतदाता अपना मत-पत्र छोड़ता या डालता है। (बैलट बॉक्स)

मत-भिन्नता–स्त्री० दे० 'मतभेद'।

मत-भेद–पुं० [सं०] दो या अधिक व्यक्तियों या पक्षों के मत एक-से न होना। आपस में मत न मिलना।

मतलब–पुं० [अ०] १. तात्पर्य। आशय। २. अर्थ। मानी। ३. स्वार्थ। ४. उद्देश्य। ५. सम्बन्ध। लगाव।

मतलबी–वि० [अ० मतलब] स्वार्थी।

मतली–स्त्री० दे० 'मिचली'।

मतवाला–वि० [सं० मत्त + वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० मतवाली] १. नशे में चूर। २. हर्ष से उन्मत्त। मस्त। ३. पागल।
पुं० १. नीचे खड़े हुए शत्रुओं को मारने के लिए किले या पहाड़ पर से लुढ़काया जानेवाला भारी पत्थर। २. एक प्रकार का गावदुमा लंबा खिलौना।

मतवाली–स्त्री० [हिं० मतवाला] १. मतवाले या मत्त होने की अवस्था या भाव। मत्तता। मद। २. अभिमान। घमंड।

मताधिकार–पुं० [सं०] निर्वाचन में मत (वोट) देने का अधिकार; मुख्यतः राजनीतिक क्षेत्रों या विषयों में (सफरेज)

मतानुयायी–पुं० [सं०] किसी धार्मिक संप्रदाय या किसी व्यक्ति के मत को माननेवाला। मतावलम्बी।

मतानुसार–क्रि० वि० [सं०] (किसी के) मत के अनुसार। (किसी की) राय या समझ में।

मतारी†–स्त्री० = माता।

मतावलंबी–पुं० दे० 'मतानुयायी'।

मति–स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। समझ। साहित्य में कोई अनुचित बात हो जाने पर उसके सम्बन्ध में कोई अच्छी या नीति की बात सूझना जो एक संचारी भाव माना गया है।
क्रि० वि० दे० 'मत'। (नहीं)

मति-भंगी–वि० [सं० मति + भंगिन्] मति या बुद्धि भ्रष्ट करनेवाला ।

मति-भ्रम–पुं० [सं०] बुद्धि में होनेवाला वह विकार जिसके कारण मनुष्य कुछ का कुछ समझने या कोई निराधार बात मानने लगता है । (हैल्यूसिनेशन)

मति-मंद–वि० [सं०] कम बुद्धि रखनेवाला । मूर्ख । बेवकूफ ।

मतिमान्–वि० [सं०] बुद्धिमान् ।

मतिमाह*–वि० दे० 'मतिमान्' ।

मतीरा–पुं० [सं० मेट] तरबूज ।

मतीस–पुं० [?] एक प्रकार का बाजा ।

मते*–क्रि० वि० = मत । (निषेध)

मतेई*–स्त्री० दे० 'विमाता' ।

मतैक्य–पुं० [सं०] किसी विषय में सब या कुछ लोगों का विचार या मत एक होना । ऐकमत्य । (यूनैनिमिटी)

मत्कुण–पुं० [सं०] खटमल ।

मत्त–वि० [सं०] मतवाला । मस्त ।

मत्ता–प्रत्य० [सं० मत् (मान्) + ता] सं० मान् से बननेवाला भाववाचक रूप । जैसे–बुद्धिमान् से बुद्धिमत्ता ।

मत्था†–पुं० दे० 'माथा' ।

मत्थे–क्रि० वि० [हिं० माथा] १. मस्तक या सिर पर । जैसे–किसी के मत्थे मढ़ना । २. आसरे या भरोसे पर ।

मत्सर–पुं०[सं०][भाव० मत्सरता, मात्सर्य, वि० मत्सरी, मात्सरिक] १. डाह । ईर्ष्या । जलन । २. क्रोध । गुस्सा ।

मत्स्य–पुं० [सं०] १. बड़ी मछली । २. विष्णु का पहला अवतार । ३. प्राचीन विराट देश का एक नाम ।

मथन–पुं० [सं०] [वि० मथित] १. मथने की क्रिया या भाव । बिलोना । २. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र ।
वि० मारने या नष्ट करनेवाला । (यौ० में)

मथना–स० [सं० मथन] १. मथानी या लकड़ी आदि से तरल पदार्थ तेजी से चलाना । बिलोना । २. नष्ट करना । ध्वंस करना । ३. घूम-घूमकर पता लगाना । छानना । ४. अच्छी तरह विचार करना ।
†पुं० मथानी । रई ।

मथनियाँ†–स्त्री० दे० 'मथनी' ।

मथनी–स्त्री० [हिं०मथना] १.दही मथने बरतन । २. दे० 'मथानी' । ३. 'मथन'

मथवाह†–पुं० [हिं० माथा + वाह=वाय] सिर में होनेवाला दर्द या पीड़ा ।
पुं० दे० 'महावत' ।

मथानी–स्त्री०[हिं० मथना]दही मथने के लि काठ का बना हुआ एक प्रकार का डंडा

मथित–वि० [सं०] मथा हुआ ।

मथी*–स्त्री० दे० 'मथानी' ।

मथूल*–पुं० दे० 'मस्तूल' ।

मथौत–पुं० [हिं० माथा + औत (प्रत्यय प्रत्येक व्यक्ति के हिसाब से लगनेवाला क प्रत्याय ।

मथ्या*–पुं० दे० 'माथा' ।

मदंध*–वि० दे० 'मदांध' ।

मद–पुं० [सं०] १. मादक पदार्थ खाने पीने से उत्पन्न होनेवाली मानसिक अवस नशा । २. धन, बल, विद्य आदि का अहंकार या घमंड जिसमें भले-बुरे का न रह जाता हो । जैसे–धन-मद । ३. हित्य में वह अवस्था जिसमें अपने यौवन, सौभाग्य आदि के कारण या गर्व प्रकट किया जाता है, अपना आदि में उलटी-सीधी बातें कही जाती इसकी गणना संचारी भावों में होती मत्तता । मस्ती । ५. कुछ विशिष्ट वस्थाओं में वृक्षों के तने में निकलनेवाला प्रकार का तरल पदार्थ । ६. मतवाले हा की कनपटी से बहनेवाला गंध युक्त पदार्थ । दान । ७. आनन्द । प्रसन्नता । ८. मद्य । शराब । ९. कस्तूरी । १०.
स्त्री० [अ०] १. विभाग । सरिश्ता । खाता । ३. कोई एक रकम या

मदारी-पुं० [अ० मदार] १. वह जो बंदर, भालू आदि नचाकर, उनका तमाशा दिखाता है। कलंदर। २. लाग आदि के तमाशे दिखानेवाला। बाजीगर।

मदिर-वि० [सं०] १. मत्तता उत्पन्न करनेवाला। मस्त करनेवाला। २. नशा लानेवाला। नशीला। मादक। ३. मत्त। मस्त।

मदिरा-स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध तरल मादक पदार्थ जो कई प्रकार से कुछ चीजों को सड़ा कर बनाया जाता है; और जिसका सेवन नैतिक दृष्टि से निन्दनीय और धार्मिक दृष्टि से पाप समझा जाता है। मद्य। शराब।

मदिराभ-वि० [सं०] १. मदिरा की मत्तता से भरा हुआ। २. मस्त। मतवाला। ३. मदिरा के रंग या गंध का।

मदिरालस-पुं०[सं० मदिरा + अलस] मदिरा से उत्पन्न होनेवाला आलस्य। खुमारी।

मदी*-स्त्री० = मदिरा।

मदीय-वि० [सं०] [स्त्री० मदीया] मेरा।

मदीयून-वि० [अ०] कर्जदार। ऋणी।

मदीला-वि० [हिं० मद] नशीला।

मदुरा-पुं० [सं०] काठ आदि का एक प्रकार का आभूषण जो योगी लोग हाथ में पहनते हैं।

मदोद्धत-पुं० दे० 'मदोन्मत्त'।

मदोन्मत्त-पुं० [सं०] १. वह जो मद्य आदि के नशे के कारण उन्मत्त हो रहा हो। २. वह जो अधिकार आदि के कारण उन्मत्त हो गया हो। ३. जिसे घमण्ड के कारण भले बुरे का ज्ञान न हो।

मदोवै*-स्त्री दे० 'मंदोदरी'।

मद्दत*-स्त्री० [अ० मदद] सहायता। स्त्री० [अ० मदह] प्रशंसा। तारीफ।

मद्धिम*-वि० [सं० मध्यम] १. मध्यम। कम अच्छा। २. कुछ खराब या घटकर।

मद्धे-अव्य० [सं० मध्ये] १. बीच में।

२. विषय में। सम्बन्ध में। ३. लेखे या हिसाब में। बाबत। (ऑन एकाउन्ट ऑफ़)

मद्य–पुं० [सं०] मदिरा। शराब। (देखो)

मद्यप–पुं० [सं०] मद्य पीनेवाला। शराबी।

मद्र–पुं० [सं०] १. उत्तर कुरु नामक प्राचीन देश। २. रावी और झेलम नदियों के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम।

मध(धि)*–पुं० दे० 'मध्य'।
अव्य० [सं० मध्य] में।

मधिम*–वि० १. दे० 'मध्यम'। २. दे० 'मद्धिम'।

मधु–पुं० [सं०] १. शहद। २. मकरन्द। ३. वसन्त ऋतु। ४. चैत्र का महीना। चैत। ५. अमृत। ६. जल। पानी। ७. मदिरा। शराब। ८. मधूक। महुआ।
वि० [सं०] १. मीठा। २. स्वादिष्ट।

मधु ऋतु–स्त्री० [सं०] वसंत-ऋतु।

मधु-कंठ–पुं० [सं०] कोयल। (पक्षी)

मधुकर–पुं० [सं०] [स्त्री० मधुकरी] १. भ्रमर। भौंरा। २. एक प्रकार का धान और उसका चावल।

मधुकरी–स्त्री० [सं० मधुकर] साधु-संन्यासियों की वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ भोजन लिया जाता है।

मधु-चक्र–पुं० [सं०] शहद की मक्खी का छत्ता।

मधुप–वि० [सं०] मधु पीनेवाला।
पुं० १. देवता। २. भौंरा।

मधुपति–पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

मधुपर्क–पुं० [सं०] देवताओं को चढ़ाने के लिए एक में मिलाया हुआ दही, घी, जल, चीनी और शहद।

मधुपुरी–स्त्री० [सं०] मथुरा नगरी।

मधु-मक्खी–स्त्री० [सं० मधुमक्षिका] फूलों का रस चूसकर मधु एकत्र करनेवाली मक्खी। मुमाखी।

मधु-मक्षिका–स्त्री० दे० 'मधु-मक्खी'।

मधु-मास–पुं० [सं०] चैत और वैशाख के महीने।

मधु-मासी†–स्त्री० दे० 'मधु-मक्खी'।

मधु-मेह–पुं० [सं०] बढ़ा हुआ प्रमेह रोग जिसमें मूत्र अधिक और गाढ़ा होता है।

मधुर–वि० [सं०] [भाव० मधुरा *मधुराई] १. स्वाद में मीठा। २. सुन में प्यारा। ३. सुंदर। ४. कोमल।

मधुरा–स्त्री० [सं०] १. मथुरा नगरी। २. साहित्य में वह शब्द-योजना जि रचना में माधुर्य या मिठास आती है।

मधुराना*–अ० [हिं० मधुर+आ (प्रत्य०)] १. मीठा होना। २. सुन्दर हो

मधुरान्न–पुं० [सं०] मिठाई।

मधुरिपु–पुं० दे० 'मधुसूदन'।

मधुरिमा–स्त्री० [सं० मधुरिमन्] १. म रता। मिठास। २. सुन्दरता। सौन्दर्य

मधुरी*–स्त्री० दे० 'माधुर्य'।

मधु-वन–पुं० [सं०] १. व्रज का वन। २. किष्किन्धा के पास का एक

मधु-व्रत–पुं० [सं०] भ्रमर। भौंरा।

मधु-शाला–स्त्री० [सं०] शराब और बिकने का स्थान। कलवरिया।

मधु-सूदन–पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

मधूक–पुं० [सं०] महुआ। (पेड़ और

मधूकड़ी(री)–स्त्री० दे० 'मधुकरी'।

मध्य–पुं० [सं०] १. बीच का (सेंटर) २. कमर। कटि। ३. फरक।
वि० जो बीच में हो। बीचवाला। मध्य भाग।

मध्यक–पुं० [सं०] कई संख्याओं, या मानों आदि को एक में मिलाकर उन समष्टि का किया हुआ सम विभाग उनका मध्यम मान सूचित करता बराबर का पड़ता। सामान्य। (एवरेज
वि० उक्त प्रकार के मध्यम मानवाला बहुत छोटा और न बहुत बड़ा। (एवरेज

मध्य-कालीन–वि० [सं०] १. मध्य

(मेडीवल)

मध्यवर्त्ती–वि० [सं०] १. जो किसी वस्तु के मध्य या बीच में हो। २. जो दो पक्षों के बीच में रहकर उनमें सम्बन्ध स्थापित करता हो। (इन्टरमिडिअरी)

मध्यस्थ–वि० [सं०] जो बीच में हो। पुं० [भाव मध्यस्थता] १. वह जो बीच में पड़कर किसी प्रकार का विवाद या विरोध दूर करता हो। आपस में मेल या समझौता करानेवाला (मीडिएटर) २. वह जो दो दलों या पक्षों के बीच में रहकर उनके पारस्परिक व्यवहार या लेन-देन में कुछ सुभीते उत्पन्न करके लाभ उठाता हो। जैसे–उत्पादकों और उप-भोक्ताओं में व्यापारी; अथवा राज्य और कृषकों में जमींदार आदि। (मिडिल मैन)

मध्यस्थता–स्त्री० [सं०] १. 'मध्यस्थ' होने की दशा या भाव। २. मध्यस्थ का काम या पद।

मध्या–स्त्री० [सं०] १. साहित्य में वह नायिका जिसमें लज्जा और काम समान भावों से हों। २. नाप, मान, समय आदि के विचार से दो या दूसरों के बीच में पड़नेवाली नाप या मान। (मीन)

मध्यावकाश–पुं०[सं०] न्याय, पढ़ाई, खेल आदि में, बीच में थोड़े समय के लिए होनेवाला वह अवकाश जो लोगों के सुस्ताने जल-पान आदि करने के लिए मिलता है। (रिसेस)

मध्याह्न–पुं० [सं०] ठीक दोपहर।

मध्ये–क्रि० वि० दे० 'मद्धे'।

मनः पूत–वि० [सं०] १. मन-चाहा। २. यथेष्ट। ३. मन को प्रसन्न करनेवाला।

मन–पुं०[सं०मनस्]१. प्राणियों में अनुभव, संकल्प-विकल्प, इच्छा, विचार आदि करनेवाली शक्ति। २. अंतःकरण की वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है।

मुहा०–मनकचोटना = कष्ट, पश्चात्ताप,

वियोग आदि के कारण मन में दुःख या क्लेश होना। **मन टूटना** = साहस या उत्साह न रहना। **मन बढ़ना** = उत्साह बढ़ना। **मन बूझना** = मन की थाह लेना। **मन हरा होना** = प्रसन्न होना। **मन के लड्डू खाना** = व्यर्थ आशा रखकर प्रसन्न होना। **मन चलना** = इच्छा होना। **मन डोलना** = (क) चित्त चंचल होना। (ख) लालच होना। ***मन धरना** = ध्यान देना। **मन तोड़ना या हारना** = हिम्मत छोड़ना। **मन फेरना** = ध्यान हटाना। **मन बढ़ाना** = साहस या उत्साह बढ़ाना। **मन में बसना** = बहुत पसन्द आना। **मन बहलाना** = दुःखी चित्त को किसी काम में लगाकर प्रसन्न करना। **अपना मन भरना** = सन्तोष या तृप्ति होना। **(किसी का) मन भरना** = सन्देह आदि दूर करके सन्तुष्ट करना। समाधान करना। **मन भर जाना** = किसी के दोष अपराध आदि के कारण उसके प्रति अनुराग न रह जाना। **मन मरना** = मन में वासना आदि न रह जाना। **मन मानना** = (क) सन्तोष होना। (ख) निश्चय या प्रतीति होना। (ग) प्रेम होना। **मन में रखना** = (क) स्मरण रखना। (ख) छिपा रखना। **(बात) मन में लाना** = सोचना। ध्यान करना। **मन मिलना** = प्रकृति या विचार में समानता होना। **मन मारना** = (क) उदास होना। (ख) इच्छा को रोकना। **मन मैला या मोटा करना** = मन में दुर्भाव रखना = संतुष्ट करना। **मन रखना**–संतुष्ट करना। ***मन लाना** = (क) जी लगाना। (ख) प्रेम करना। **मन से उतरना** = १. मन में अनुराग या आदर न रह जाना। २. भूल जाना।

३. विचार। इरादा।

पुं॰ [सं॰ मणि] मणि। रत्न।

पुं॰ [सं॰ मान] चालीस सेर की एक तौल।

मनकना*–अ॰ [अनु॰] हिलना-डोलना।

मनकरा*–वि॰ दे॰ 'चमकीला'।

मनका–पुं॰ [सं॰ मणिका] माला का दाना।

पुं॰ [सं॰ मन्यका] गरदन के पीछे रीढ़ की सबसे ऊपर की हड्डी।

मुहा॰–मनका ढलना या ढरकना = मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मन-कामना–स्त्री॰ दे॰ 'मनोकामना'।

मनकूला–वि॰ [अ॰ मन्कूलः] जो स्थि या स्थावर न हो। चल। चंचल।

यौ॰–जायदाद मनकूला = चल सम्प **गैर-मनकूला** = स्थिर। स्थावर।

मन-गढ़ंत–वि॰ [हिं॰ मन + गढ़ना] यथार्थ न हो, केवल कल्पित हो। अपने म से गढ़ा हुआ। कपोल-कल्पित।

स्त्री॰ केवल मन की कल्पना।

मन-चला–वि॰ [हिं॰ मन + चलना [स्त्री॰ मनचली] १. साहसी। २. रसि

मन-चाहा–वि॰ [हिं॰ मन + चाहना १. इच्छित। चाहा हुआ। २. यथेष्ट।

मन-चीतना*–अ॰ [हिं॰ मन + चाहना सबको अच्छा लगना।

मन-चीता–वि॰ [हिं॰ मन + चेतना [स्त्री॰ मन-चीती] मन में सोचा हुआ।

मनजात–पुं॰ = मनसिज। (कामदेव)

मनन–पुं॰ [सं॰] १. चिंतन। सोचना। २. अच्छी तरह समझकर किया जाने अध्ययन या विचार।

मननशील–वि॰ [सं॰ मनन + शील] बराबर मनन या चिंतन करता रहता हो।

मन-वांछित–वि॰ दे॰ 'मनोवांछित'।

मन-भाया–वि॰ [हिं॰ मन + भाना] [स्त्री॰ मन-भाई] १. जो मन को भावे। २. प्यारा

मन-भावता(वन)–वि॰ दे॰ 'मन-भाया'।

मनमत*–वि॰ दे॰ 'मद-मत्त'।

मनमथ–पुं॰ दे॰ 'मन्मथ'।

मनमथारि–पुं॰ [सं॰ मनमथ + अरि]

को भस्म करनेवाले,

।

[हिं० मन + मानना]

] १. जो अच्छा लगे ।

२. जो कुछ मन में आवे ।

[हिं० मन + मोटा] मन

या विराग ।

[हिं० मन + मोदक] मन

सुखद, पर असम्भव बात ।

।

[हिं० मन + मोहन]

मोहनी] १. मन को मोहने-

। २. प्रिय । प्यारा ।

।

[हिं० मन + मौज] बिना

विचार के मन-माने काम करने-

च्छाचारी । तरंगी । मौजी ।

)

दे० 'नरमा' ।

पुं० दे० 'मनोरंजन' ।

[अ०] १. विचार । इरादा ।

। आशय । मतलब ।

[हिं० मानस] १. इच्छा

या निश्चय करना ।

दान करना ।

[अ०] १. पद । ओहदा ।

।

[फ़ा०] [भाव० मनसबदारी]

मनसब पर हो । ओहदेदार ।

काल का एक पदाधिकारी ।

[सं०] एक देवी का नाम ।

। इच्छा या विचार से ।

।

मनसा + कर]

[हिं०

आना ।] उत्साह

का प्रे० ।

मनसायन–पुं० [हिं० मानुस] चहल-पहल । रौनक ।

मनसि*–क्रि० वि० [हिं० मन] मन से । हृदय से ।

मनसिज–पुं० [सं०] कामदेव ।

मनसुफ*–पुं० दे० 'मुनसिफ' ।

मनसूख–वि० [अ०] [भाव० मनसूखी] अप्रामाणित ठहराया हुआ । अतिवर्तित ।

मनसूबा–पुं० [अ०] १. युक्ति । ढंग । **मुहा०–मनसूबा बाँधना** = युक्ति सोचना । २. इरादा । विचार ।

मनस्ताप–पुं० [सं०] १. मन में होनेवाला कष्ट । १. पश्चात्ताप । पछतावा ।

मनस्तोष–पुं० [सं०] १. मन में होनेवाला संतोष । २. तृप्ति ।

मनस्वी–वि० [सं० मनस्विन्] [स्त्री० मनस्विनी, भाव० मनस्विता] १. बुद्धिमान् । २. स्वेच्छाचारी ।

मनहर–वि० दे० 'मनोहर' ।

मनहार(रि)–वि० दे० 'मनोहारी' ।

मनहुँ*–अव्य० दे० 'मानों' ।

मनहूस–वि० [अ०] [भाव० मनहूसियत, मनहूसी] १. अशुभ । २. देखने में कुरूप और अप्रिय । ३. सदा दुःखी, चुप और उदास रहनेवाला ।

मना–वि० [अ०] निषिद्ध । वर्जित ।

मनाक*–वि० [सं० मनाक्] बहुत ही थोड़ा या कम । नाम मात्र को ।

मनाग*–वि० = मनाक ।

मनागवि*–वि० = मनाक ।

मनादी–स्त्री० दे० 'मुनादी' ।

मनाना–स० [हिं० 'मानना' का प्रे०] १. रूठे हुए को प्रसन्न करना । २. राजी करना । ३. ईश्वर, देवता आदि से किसी काम या बात के लिए प्रार्थना करना ।

मनावन–पुं० [हिं० मनाना] रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव ।

मनाही-स्त्री० [हिं० मना] मना करने की क्रिया या भाव । निषेध । रोक ।

मनिया-स्त्री० [सं० माणिक्य] १. दे० 'मनका' । २. छोटी माला । कंठी ।

मनियार*-वि० [हिं० मणि] १. उज्वल । चमकदार । २. सुन्दर । मनोहर ।
पुं० दे० 'मनिहार' ।

मनियारा*-पुं० [सं० मणि] १. जौहरी । २. दे० 'मनिहार' ।

मनिहार-पुं० [सं० मणिकार] [स्त्री० मनिहारिन्, मनिहारी] चुड़िहारा ।

मनी*-स्त्री० [हिं० मान] अहंकार ।
स्त्री० [सं० मणि] १. दे० 'मणि' । २. वीर्य ।

मनीषा-स्त्री० [सं०] बुद्धि । अक्ल ।

मनीषी-वि० [सं० मनीषिन्] १. पंडित । ज्ञानी । २. बुद्धिमान् । अक्लमंद ।

मनु-पुं० [सं०] १. ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं । २. अन्तःकरण । मन । वैवस्वत मनु । ४. चौदह की संख्या ।
*अव्य० [हिं० मानना] मानों । जैसे ।

मनुआँ*-पुं० १. दे० 'मन' । २. दे० 'मनुष्य' ।
स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कपास । नरमा ।

मनुज-पुं० [सं०] मनुष्य । आदमी ।

मनुजाद-पुं० [सं०] वह जो मनुष्यों को अथवा उनका मांस खाता हो ।

मनुजोचित-वि० [सं०] जो मनुष्य के लिए उचित हो । मनुष्य के उपयुक्त ।

मनुष*-पुं० [सं० मनुष्य] १. मनुष्य । आदमी । २. पति । खसम ।

मनुष्य-पुं० [सं०] वह द्विपद प्राणी जो अपने बुद्धि-बल के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है और जिसके अन्तर्गत हम, आप और सब लोग हैं । आदमी । नर ।

मनुष्य-गणना-स्त्री० [सं०] किसी स्थान या देश के निवासियों की होनेवाली गिनती । (सेन्सस)

मनुष्यता-स्त्री० [सं०] १. 'मनुष्य' का भाव । २. मनुष्यों के लिए उपयुक्त या आवश्यक और अच्छे गुण । शील । ३. शिष्टता ।

मनुष्यत्व-पुं० दे० 'मनुष्यता' ।

मनुष्य-लोक-पुं० [सं०] यह संसार मर्त्यलोक । जगत ।

मनुसा*-पुं० = मनुष्य ।

मनुसाई*-स्त्री० [हिं० मनुष्य + आई] मनुष्यता । आदमीपन । २. पुरुषार्थ पराक्रम ।

मनुहार-स्त्री० [हिं० मान + हरना] रूठे हुए को मनाना । मनावन । खुशा २. विनय । प्रार्थना । ३. सत्कार । आदर ४. शान्ति । ५. मनस्तोष । तृप्ति ।

मनुहारना*-स० दे० 'मनाना' ।

मनुहारी†-पुं० [हिं० मन + हरना [स्त्री० मनुहारिन] प्रिय । प्रेमी । उदा०

पासा सार खेलि कित कौन मनुहारिन
जीति मनुहारि मनु हारि हारि आये हो
—पद्माकर ।

मनै†-वि० = मुझे । (राज और गुज०)

मनौं*-अव्य० दे० 'मानौं' ।

मनोकामना-स्त्री० [हिं० मन +

मन की इच्छा । अभिलाषा ।

मनोगत-वि० [सं०] मन में होने आनेवाला । (विचार आदि)

मनोज-पुं० [सं०] कामदेव ।

मनोज्ञ-वि० [सं०] सुन्दर । मनो

मनोदेवता-पुं० [सं०] वि
मन का निग्रह ।

मनोनिग्रह-पुं० [सं० में रखना ।
मन को रोकना या [सं०] किसी काम में

मनोनियोग-पुं० लगाना ।
अच्छी तरह [सं०] १. मन के अनुकूल ।

मनोनी किया या चुना हुआ । २. जो
स्थान पर नियुक्त होने के लिए चुना

गीत।

मनोलीला–स्त्री० [सं०] ऐसी कल्पित बात या विचार जो केवल मन में उठा हो, पर जिसका कोई वास्तविक आधार या अस्तित्व न हो। (फैन्टम)

मनोवांछा–स्त्री दे० 'मनोकामना'।

मनोविकार–पुं० [सं०] मन में उठनेवाले भाव। जैसे–क्रोध, दया, प्रेम आदि।

मनोविज्ञान–पुं० [सं०] [वि० मनोवैज्ञानिक] वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों या मन में उठनेवाले विचारों आदि का विवेचन होता है। (साइकॉलोजी)

मनोविश्लेषण–पुं० [सं०] इस बात का विश्लेषण या जाँच करना कि मनुष्य का मन किन अवस्थाओं में किस प्रकार कार्य करता है। (साइको-अनैलिसिस)

मनोवृत्ति–स्त्री० [सं०] १. मन के चलने या काम करने का ढंग। २. भले या बुरे कामों की ओर प्रवृत्त होने अथवा अच्छे या बुरे होने के विचार से मन की स्थिति।

मनोवेग–पुं०[सं०] १. मनोवृत्ति। (डिस्पोजीशन) २. मन की वह अवस्था जिसमें वह कभी एक बात की ओर और कभी दूसरी बात की ओर प्रवृत्त होता है।(मूड)

मनोवैकल्य–पुं० [सं०] वह अवस्था जिसमें ठीक और पूरी तरह से मानसिक विकास न होने के कारण मनुष्य की बुद्धि परिपक्व नहीं होती। (मेन्टल अफिसिएन्सी)

मनोसर*–पुं० दे० 'मनोविकार'।

मनोहर–वि० [सं०] [भाव० मनोहरता] १.मन को आकर्षित करनेवाला। २. सुन्दर।

मनोहारी–वि० दे० 'मनोहर'।

मनौति(ती)*–स्त्री० दे० 'मन्नत'।

मनौवल†–स्त्री० [हिं० मनाना] रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव।

मन्नत–स्त्री० [हिं० मनाना] किसी कामना की पूर्त्ति के लिए मानी हुई किसी देवता की पूजा। मानता। मनौती।

मुहा०–मन्नत मानना = कामना पूर्त्ति के लिए पूजा आदि करने का संकल्प करना।

मन्यु–पुं० [सं०] क्रोध।

मन्वंतर–पुं० [सं०] इकहत्तर चतुर्युगियों का काल जो ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग माना गया है।

मम–सर्व० [सं०] मेरा। (मेरी)।

ममता–स्त्री० [सं०] १. अपने मन का भाव। ममत्व। २. स्नेह। प्रेम। ३. लोभ। लालच। ४. मोह। माया।

ममरखी*–स्त्री० [अ० मुबारक] बधाई।

ममाखी–स्त्री० = मधु-मक्खी।

ममाग्रह–पुं० [सं० मम + आग्रह] किसी वस्तु पर अपना अधिकार जतलाते हुए यह कहना कि यह हमारी होनी और हमें मिलनी चाहिए। दावा। (क्लेम)

ममास*–पुं० दे० 'मवास'।

ममिया–वि० [हिं० मामा] संबंध में मामा के स्थान का। जैसे–ममिया ससुर।

ममीरा–पुं० [अ० मामीरान] एक पौधे की जड़ जो आँख के रोगों की दवा है।

ममोला–पुं० [हिं० मन + मोल ?] मन का हौसला। उमंग।

वि० परम प्रिय। प्रियतम।

मयंक–पुं० [सं० मृगाङ्क] चन्द्रमा।

मय–पुं० [सं०] १. पुराणों में उल्लिखित एक प्रसिद्ध दानव जो बहुत बड़ा शिल्पी था। २. अमेरिका में रहनेवाली एक प्राचीन जाति जो सभ्यता और संस्कृति में बहुत उन्नत और प्रायः प्राचीन भारतियों के समान ही थी।

प्रत्य० [सं०] [स्त्री० मयी] एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्रचुरता का बोधक है। जैसे–सामय, दुःखमय, जलमय।

मयगल–पुं० [सं० मदकल] मत्त हाथी।

मयन*–पुं० [सं० मदन] कामदेव।

मयना*–स्त्री० दे० 'मैना'।

मयमंत–वि० [सं० मदमत्त] मस्त।

मयस्सर–वि० [अ०] प्राप्त। सुलभ।

मया*–स्त्री० दे० 'माया'।

मयार*–वि० [सं० मायालु] सबसे विशे प्रेम या स्नेह रखनेवाला। दयालु।

स्त्री० [सं० मध्य ?] हिंडोले के बीचवा डंडा जिसमें झूले या पालने की रस्सि बँधी रहती है। उदा०–फूलन के दोड, डाँड़ी चारु फूलन की, फूल मयार, फूल रही बलना।—नंददास।

मयारी–स्त्री० दे० 'मयार'।

मयूख–पुं० [सं०] १. किरण। रश्मि २. दीप्ति। चमक। ३. प्रकाश। ४. शोभ ५. पर्वत।

मयूर–पुं० [सं०] मोर। (पक्षी)

मरंद*–पुं० दे० 'मकरंद'।

मर*–वि० = मृतक।

मरक*–स्त्री० [हिं० मड़क] १. रह भेद। २. आकर्षण। खिचाव। ३. मन रहनेवाला वैर या द्वेष।

मुहा०*–मरक काढ़ना = वैर चुक बदला लेना।

४. मन का हौसला या उमंग।

स्त्री० दे० 'मरी'।

मरकट–वि० [हिं० मरना] बहुत ही दु पतला और क्षीण।

*पुं० = मर्कट (बन्दर)।

मरकत–पुं० [सं०] पन्ना। (रत्न)

मरकना–अ० दे० 'मुड़कना'।

मरगज–वि० दे० 'मलगजा'।

मरगजना–स० [हिं० मलना + गीं वि मल या मसल कर विकृत या वि करना।

मरगजा–मि०, पुं० दे० 'मलगजा'।

मरघ–पुं० = मृग।

मरघट–पुं० दे० 'मसान'।

मरज–पुं० [अ० मर्ज़] रोग। बिमारी।

मरजाद*–स्त्री० [सं० मर्यादा] १. सीमा २. प्रतिष्ठा। ३. रीति। परिपाटी।

[हिं० मरना + जीना]
। २. मरणासन्न । ३.
उतारू हो ।
। गोताखोर । जिवकिया ।
स्थान पर पहुँच कर
कोई काम करनेवाला ।
[अ०] १. इच्छा । २.
। ४. आज्ञा । स्वीकृति ।
] मरने की अवस्था या
प्राण-वायु का निकल जाना ।
(साहित्य में यह एक संचारी
है) ।
-पुं० [सं०] किसी मृत
रखनेवाला वह प्रमाणपत्र
जाता है कि वह व्यक्ति सच-
हुआ है । (डेथ सर्टिफिकेट)
[सं०] जो मरने के बहुत

-वि० [सं०] किसी की
का । किसी के मरने के
। (पोस्ट-ह्यूमस)
दे० 'मृत्यु' ।
[अ० मर्तबः] १. पद ।
बार । दफा ।
[सं० मर्त्य ?] १. मीठी-
किसी को अपने अनुकूल
ग्राहक, यजमान आदि को
करके उससे कुछ धन

दे० 'मर्द' ।
दे० 'मर्दन' ।
[सं० मर्दन] १. मसलना ।
करना । ३. गूँधना ।
दे० 'मर्दल' ।
[फा०] १. पौरुष । २.
। ३. साहस । हिम्मत ।
[फा०] १. पुरुष संबंधी ।
। २. वीरोचित ।

पुं० [स्त्री० मरदानी] वीर । बहादुर ।

मरन†-पुं० = मरण ।

मरन-सेज-स्त्री० दे० 'मृत्यु-शय्या' ।

मरना-अ० [सं० मरण] १. प्राणियों की सब शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिए अन्त होना । शरीर से प्राण निकलना । २. मरने का सा कष्ट उठाना ।

मुहा०-किसी पर मरना = आसक्त होना । **मर मिटना** = प्रयत्न करते करते बहुत बुरी दशा में पहुँचना । **मरा जाना** = बहुत व्याकुल होना । **मर लेना**= प्रयत्न करते-करते, मरने का-सा कष्ट भोग चुकना । जैसे-हम तो इसके लिए मर-लिये । **पानी मरना** = (क) दीवार, छत आदि में पानी धँसना । (ख) किसी पर कोई कलंक लगाना । **(आँखों का) पानी मरना** = शील या संकोच खो देना ।

३. कुम्हलाना । सूखना । ४. लज्जा, भय आदि के कारण दबना । ५. बे-काम हो जाना । ६. किसी मनोवेग का दबकर नहीं के समान हो जाना । ७. खेल में, हारने पर फिर उस पारी में खेलने योग्य न रह जाना ।

मरनी-स्त्री० [मरना] १. मृत्यु । मौत । २. मृतक के लिए उसके सम्बन्धियों द्वारा मनाया जानेवाला शोक । ३. मृतक-सम्बन्धी क्रिया कर्म ।

मर-पुरी*-स्त्री० [हिं० मरना + पुरी = नगरी] यमराज की पुरी । यम-पुरी ।

मरम-पुं० [सं० मर्म] १. रहस्य । भेद । २. दे० 'मर्म' ।

मरमर-पुं० [यू०] एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर । जैसे-संग मरमर ।

मरमराना-अ०, स० [अनु०] १. मर-मर शब्द होना या करना । २. इस प्रकार दबना या दबाना कि मर-मर शब्द हो ।

मरमी*-वि० दे० 'मर्मज्ञ' ।

मरम्मत-स्त्री० [अ०] किसी वस्तु का टूटा फूटा या बिगड़ा हुआ अंश ठीक करने का

काम । दुरुस्ती । (रिपेयर्स)

मरयाद*-स्त्री० = मर्यादा ।

मरवट†-स्त्री० [?] वे रेखाएँ या फूल-पत्तियाँ आदि जो स्त्रियाँ अपना सौन्दर्य बढ़ाने के लिए माथे और चेहरे पर बनाती हैं ।

मरसा-पुं० [सं० मरिष] एक साग ।

मरहट*-पुं० दे० 'मसान' ।

*स्त्री० [देश०] मोठ । (अन्न)

मरहठा-पुं० [सं० महाराष्ट्र] [स्त्री० मरहठिन] महाराष्ट्र देश का निवासी ।

मरहठी-स्त्री० दे० 'मराठी' ।

मरहम-पुं० [अ०] घाव पर लगाने का औषध का गाढ़ा, चिकना लेप ।

मरहम-पट्टी-स्त्री० [अ० मरहम + हिं० पट्टी] घाव, फोड़े-फुन्सी आदि पर दवा लगाकर पट्टी बाँधने का काम । प्रतिसारण । (ड्रेसिंग)

मरहला-पुं० [अ०] १. पड़ाव । २. कठिन काम या प्रसंग । विकट समस्या ।

मराठा-पुं० दे० 'मरहठा' ।

मराठी-स्त्री० [सं० महाराष्ट्री] महाराष्ट्र देश की भाषा ।

मरातिब-पुं० [अ०] १. पद । ओहदा । २. उत्तरोत्तर या क्रमशः आनेवाली अवस्थाएँ । ३. मकान का खण्ड । तल्ला । मंजिल । ४. एक प्रकार का बड़ा झंडा जो मुग़ल बादशाहों के आगे चलता था ।

मरायल*-वि० [हिं० मारना] १. जिसने कई बार मार खाई हो । २. निःसत्व । निस्सार । ३. शक्तिहीन ।

पुं० घाटा । टोटा । हानि ।

मराल-पुं० [सं०] [स्त्री० मराली] १. हंस । २. घोड़ा । ३. हाथी ।

मरिंद*-पुं० १. 'मलिंद' । २. दे० 'मकरंद' ।

मरियल-वि० [हिं० मरना] बहुत दुर्बल ।

मरी-स्त्री० [हिं० मरना] किसी संक्रामक रोग से कुछ दिनों तक लोगों के मरने का चलनेवाला क्रम ।

मरीचि(का)-स्त्री० [सं०] १. किरण । २.
प्रभा । कान्ति । ३. मृग-तृष्णा ।

मरीची-पुं० [सं० मरीचिन्] १. सूर्य
२. चन्द्रमा ।

मरीज-पुं० [अ०] [वि० मरीजी] जि
कोई मरज या रोग हुआ हो । रोगी ।

मरुंडा-पुं० [हिं० मरोड़ना या सं० मंड]
भुने हुए गेहूँ आदि को गुड़ में पाग
बनाया हुआ लड्डू ।

वि० तोड़-मरोड़कर विकृत किया हुआ ।

मरु-पुं० [सं०] [भाव० मरुता]
मरुभूमि । २. मारवाड़ देश ।

मरुआ-पुं० [सं० मरुव] १. तुलसी
तरह का सुगंधित पत्तियों वाला एक पौ
२. हिंडोले में ऊपर की वह लकड़ी जि
झूले की रस्सियाँ बँधी रहती हैं ।

मरुत्-पुं० [सं०] १. वायु । २. प्रा
३. दे० 'मरुत्त्वान्' ।

मरुत्त्वान्-पुं० [सं० मरुत्वत्] १. इ
२. धर्म के वंशज देवताओं का एक ग
३. हनुमान ।

मरुद्वीप-पुं० [सं०] मरुस्थल में स्थि
छोटा सजल उपजाऊ स्थान । शाद्वल
(ओएसिस)

मरु-भूमि-स्त्री० [सं०] बालू का नि
मैदान । रेगिस्तान । मरुस्थल ।

मरुम-पुं० दे० 'मोरम' ।

मरुवा-पुं० दे० 'मयार' । (हिंडोले की र

मरु-स्थल-पुं० दे० 'मरु-भूमि' ।

मरू*-वि० दे० 'मसू' ।

पुं० = मूलधन ।

मरूर-पुं० [हिं० मरोड़] १. मरो
२. पीड़ा ।

मरूरा*-पुं० दे० 'मरोड़' ।

मरोड़-पुं० [हिं० मरोड़ना] १. मरोड़ने
की क्रिया या भाव । २. घुमाव । ऐंठन
३. पेट में होनेवाली ऐंठन । ४. व्यथा । क

मर्दल–पुं० [सं०] एक प्रकार का बड़ा ढोल, जिसका प्रचलन बंगाल में है।

मर्दुम-शुमारी–स्त्री० [फा०] १. किसी स्थान के निवासियों की गणना या गिनती होना। २. कहीं की जन-संख्या।

मर्दुमी–स्त्री० [फा०] पौरुष।

मर्म–पुं० [सं० मर्म्म] १. स्वरूप। २. रहस्य। भेद। ३. संधि-स्थान। ४. दे० 'मर्म-स्थल'।

मर्मज्ञ–वि० [सं०] [भाव० मर्मज्ञता] किसी बात का मर्म, रहस्य या तत्त्व जाननेवाला। तत्त्वज्ञ।

मर्म-भेदी–वि० [सं० मर्म-भेदिन्] हृदय में चुभनेवाला। हार्दिक कष्ट पहुँचानेवाला।

मर्मर–पुं० दे० 'मरमर'।

पुं० [अनु०] पत्तों आदि का मरमर शब्द।

मर्मरित–वि० [अनु० मरमर] जिसमें मरमर शब्द होता हो।

मर्म-वचन–पुं० [हिं० मर्म + वचन] वह बात जिससे सुननेवाले का हृदय दुखे।

मर्म-वाक्य–पुं० दे० 'मर्म-वचन'।

मर्मविद्–वि० [सं०] मर्मज्ञ।

मर्म-स्थल–पुं० [सं०] १. शरीर के वे कोमल अंग जिनपर चोट लगने से बहुत अधिक पीड़ा होती है और जिनसे मनुष्य मर भी सकता है। जैसे–हृदय, कंठ, नाक, अण्डकोश, कपाल आदि। २. वह स्थल जिसपर आघात या आक्षेप होनेसे मनुष्य को विशेष मानसिक कष्ट हो। जैसे–हृदय।

मर्म स्थान–पुं० दे० 'मर्म स्थल'।

मर्म-स्पर्शी–वि०[सं० मर्मस्पर्शिन्] [स्त्री० मर्मस्पर्शिनी, भाव० मर्मस्पर्शिता] हृदय को स्पर्श करने, फलतः उस पर प्रभाव डालनेवाला।

मर्मांतक(तिक)–वि० दे० 'मर्मभेदी'।

मर्मी–वि० [हिं० मर्म] तत्त्वज्ञ। मर्मज्ञ।

मर्यादा–स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. तट। किनारा। ३. प्रतिज्ञा। ४. नियम।

५. सदाचार। ६. प्रतिष्ठा। ७. धर्म्म।

मर्यादित–वि० [सं०] १. जिसकी सीमा या हद निश्चित हो। २. जो अपनी मर्यादा या सीमा के अन्दर हो।

मर्षण–पुं० [सं०] [वि० मर्षणीय, मर्षित] १. क्षमा। माफी। २. किसी प्रकार का कष्ट, अन्याय, आघात, हानि आदि धैर्यपूर्वक और चुपचाप सहने की क्रिया या भाव। (सफरेन्स) ३. ऐसा अभ्यास या शक्ति जो मनुष्य को किसी असाधारण, कठिन या कष्ट-दायक स्थिति में समर्थ करती है। (एन्ड्योरेन्स)

वि० १. नाशक। २. दूर करनेवाला।

मलंग–पुं० [फा०] एक प्रकार के मुसलमान फ़कीर या साधु।

मल–पुं० [सं०] १. मैल। गंदगी। २. विष्टा। गूह। ३. दोष। विकार। ४. पाप।

मलकन–स्त्री० [हिं० मलकना] मलकने की क्रिया या भाव।

मलकना†–अ० [अनु०] १. हिलना। डोलना। २. इठलाना। इतराना।

स० १. इधर-उधर आँखें नचाना या तिरछी नजर से देखना। २. दे० 'मच-मचाना'।

मलका–स्त्री० [अ० मलिकः] महारानी।

मलकाना–स० [अनु०] १. तिरछी नजर से इधर-उधर देखना। २. दे० 'मचमचाना'।

पुं० [अ० मलिक, मालिक ?] राजपूत मुसलमानों की एक जाति।

मलखंभ–पुं० दे० 'मालखंभ'।

मलगजा–वि० [हिं० मलना + गींजना] [स्त्री० मलगजी] जो मल या मसलकर विकृत और विरूप कर दिया गया हो या रौंदा हुआ।

पुं० [?] गाढ़े बेसन में लपेटकर तला हुआ बैंगन का टुकड़ा या फाँक।

मलता–वि० [हिं० मलना] घिसा हुआ। (सिक्का)

मल-द्वार–पुं० [सं०] १. वह इन्द्रिय जिससे शरीर के भीतर का मल निकल है। २. गुदा।

मलना–स० [सं० मलन] [प्रे० म मलवाना] १. हाथ से घिसना या रगड़ना। **मुहा०–हाथ मलना** = पछताना। २. माँजना। ३. मालिश करना। मरोड़ना ऐंठना।

मलबा–पुं० [हिं० मल ?] १. कूड़ा-कर्क २. गिरी हुई इमारत की ईंटें, पत्थर आ या उनका ढेर।

मलमल–स्त्री० [सं० मलमल्लक] प्रकार का महीन कपड़ा।

मलमास–पुं० [सं०] प्रति तीसरे पड़नेवाला वह बढ़ा हुआ या अधिक मास जो दो संक्रान्तियों के बीच में है। (ऐसा मास अपने नाम के दूसरे शुद्ध मास के बीच में होता है।) अ मास। पुरुषोत्तम।

मलय–पुं० [सं० मलय (पर्वत)] १. के दक्षिण और ट्रावंकोर के पूर्व का प्रदे २. मलाबार। ३. मलाबार के निवा ४. सफेद चन्दन।

मलयगिरि–पुं० [सं०] १. दक्षिण का मलय पर्वत। २. इस पर्वत पर होनेवाला चन्दन।

मलयज–पुं० [सं०] चन्दन।

वि० मलय पर्वत पर या से उत्पन्न।

मलयाचल–पुं० [सं०] १. मलय पर्व

मलयानिल–पुं० [सं०] १. मलय की ओर से आनेवाली वायु, जिसमें च की सुगन्ध होती है। २. वसन्त ऋतु सुखद और सुगन्धित वायु।

मल-युग–पुं० = कलि-युग।

मलराना*–स० दे० मल्हाना।

मलहम–पुं० दे० 'मरहम'।

मलाई–स्त्री० [देश०] १. देर तक गरम किये हुए दूध के ऊपर जमा हुआ भाग। साढ़ी। २. सार। तत्व।

] मलने की क्रिया,

] एक प्रकार का

व।

दे॰ 'म्लान'।

[अ॰] १. डाँट-फटकार।

मलामत = डाँट-फटकार।

ती।

दे॰ 'मल्लार'।

दे॰ 'मल्लारी'।

[अ॰] दुःख। रंज।

[सं॰ मल + अवरोध]

पेट में मल रुका रहता है

नहीं निकलता। कब्जियत।

दे॰ 'मल्लाह'।

दे॰ 'मल्लाही'।

दे॰ 'मलंग'।

[सं॰ मिलिन्द] भौंरा।

[अ॰] [स्त्री॰ मलिका]

अधीश्वर। २. सरदार।

दे॰ 'म्लेच्छ'।

[सं॰] [स्त्री॰ मलिना, भाव॰

१. मैला। गन्दा। २. कपट-

विकार-युक्त। ४. पापी। ५.

। उदासीन। फीका।

[सं॰ मल्लिका] १. छोटे

एक प्रकार का बरतन।

२. एक प्रकार का खेल

कुछ खाने बनाकर गोटियों

(यही खाने अंकित करके

'मलिया-मेट करना' मुहा-

)

[हिं॰ मलिया (खेल) +

। बरबादी।

] १. चूरमा। २. एक

मुलायम ऊनी कपड़ा।

'मलिन'।

मलूक–वि॰ [अ॰ मलिक] सुन्दर। मनोहर।

मलेच्छ–पुं॰ दे॰ 'म्लेच्छ'।

मलेरिया–पुं॰ [अ॰] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।

मलोलना–अ॰ [हिं॰ मलोला] १. मन में दुःखी होना। २. पछताना।

मलोला–पुं॰ [अ॰ मलूल] १. मानसिक व्यथा। दुःख। रंज।

मुहा॰–मलोले खाना = मानसिक व्यथा सहना। मन में बहुत दुःखी होना।

२. उत्कट इच्छा या लालसा। अरमान।

मल्ल–पुं॰ [सं॰] १. द्वन्द्व युद्ध में निपुणता के लिए प्रसिद्ध, एक प्राचीन पंजाबी जाति। २. पहलवान।

मल्ल-युद्ध–पुं॰ [सं॰] कुश्ती।

मल्लार–पुं॰ [सं॰ मल्लार = लोला या खेल] वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रसिद्ध राग।

मल्लारी–स्त्री॰ [सं॰ मल्लार] ओड़व जाति की एक रागिनी जो वर्षा ऋतु में सवेरे के समय गाई जाती है।

मल्लाह–पुं॰ [अ॰] [स्त्री॰ मल्लाहिन] एक जाति जिसका पेशा मछली मारना और नाव खेना है। केवट। माँझी।

मल्लाही–वि॰ [हिं॰ मल्लाह] मल्लाह संबंधी। मल्लाह का।

स्त्री॰ १. मल्लाह का कार्य पद या भाव। २. एक विशेष प्रकार की तैराई। तैरने का प्रकार। (ब्रेस-स्ट्रोक)

मल्लिका–स्त्री॰ [सं॰] १. एक प्रकार का बेला। मोतिया। २. सुमुखी नामक छन्द का दूसरा नाम।

मल्हाना–स॰ [सं॰ मल्ह = गौ का स्तन] चुमकारना। पुचकारना।

मल्हारना*–स॰ दे॰ 'मल्हाना'।

मवाद–पुं॰ [अ॰] १. पीब। (फोड़े में की) २. मल। गन्दगी।

मवास–पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ अल्पा॰ मवासी]

१. दुर्ग । गढ़ । किला । (विशेषतः पहाड़ के ऊपर बना हुआ) २. शरण या रक्षा का स्थान ।

मवासी–स्त्री० [हिं० मवास] छोटा गढ़ । पुं० १. गढ़पति । किलेदार । २. सरदार ।

मवेशी–पुं० [अ० मवाशी] चौपाया ।

मवेशीखाना–पुं० [फा०] पशुशाला ।

मशक–पुं० [सं०] १. मच्छड़ । २. शरीर पर का मसा ।

स्त्री० [सं०] चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर लाते हैं । परवाल ।

मशक्कत–स्त्री० [अ०] परिश्रम । मेहनत ।

मशरू–पुं० [अ० मशरूअ] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा ।

मशहूर–वि० [अ०] प्रसिद्ध । विख्यात ।

मशाल–स्त्री० [अ०] डंडे में चीथड़े लपेटकर बनाई हुई, जलाने की बहुत मोटी बत्ती जो हाथ में लेकर चलते हैं ।

मशालची–पुं० [फा०] [स्त्री० मशालचिन] जलती हुई मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला ।

मशीन–स्त्री० [अं० मेशीन] पेचों और पुरजों से बना हुआ वह यंत्र जिससे काम जल्दी होता हो । कल । यन्त्र ।

मशीन गन–स्त्री० [अ०] वह मशीन या यंत्र जो बन्दूक की तरह पर बहुत जल्दी जल्दी गोलियाँ चलाता है ।

मश्क–पुं० [अ०] अभ्यास ।

स्त्री० दे० 'मशक' । (पानी भरने की)

मष*–पुं० = यज्ञ ।

मष्ट–वि० [सं० मष्ठ] मौन । चुप ।

मुहा०–मष्ट धारना या मारना = मौन धारण करना । बिलकुल चुप रहना ।

मस*–स्त्री० दे० 'मसि' ।

स्त्री० [सं० श्मश्रु] मूछें निकलने से पहले उसके स्थान पर होनेवाली रोमावली ।

मुहा०–मस भींजना = मूछें निकलना या आरम्भ होना ।

मसकत†–स्त्री० [अ० मशक्कत] परिश्र
मेहनत । उदा०–काहे कौं हरि बिरद बुला
बिनु मसकत को ताख्यो ।–सूर ।

मसकना–अ० स० [अनु०] १. इस प्र
दबना या दबाना कि टूट या फट जाए
अ० दे० 'मसोसना' ।

मसकला–पुं० [अ०] (हँसिया के
का) सिकलीगरों का वह औजार जि
धातुएँ चमकाते हैं ।

मसका–पुं० [फा०] नवनीत । मक्खन

मसकीन*–वि० दे० 'मिसकीन' ।

मसखरा–पुं० [अ०] परिहास करने
हँसोड़ । दिल्लगी-बाज ।

मसखरी–स्त्री० [फा० मसखरा +
दिल्लगी । हँसी । मजाक । परिहास ।

मसजिद–स्त्री० [फा० मस्जिद]
मानों के एकत्र होकर सामूहिक रूप से न
पढ़ने का भवन ।

मसनद–स्त्री० [अ०] बड़ा त
गावतकिया ।

मसमुंद*–क्रि० वि० [हिं० मस = मूँद
ठेलम-ठेल या धक्कम-धक्का करते हुए

मसयारा*–पुं० [हिं० मशाल
मशाल । २. मशालची ।

मसरना*–स० = मसलना ।

मसरफ–पुं० [अ०] व्यवहार । उपयो

मसल–स्त्री० [अ०] कहावत ।

मसलति*–स्त्री० दे० 'मसलहत' ।

मसलन्–क्रि० वि० [अ०] मिसाल
तौर पर । उदाहरणार्थ । जैसे ।

मसलन–स्त्री० [हिं० मसलना] म
की क्रिया या भाव ।

मसलना–स० [हिं० मलना] [
मसलन] १. उँगलियों से दबाते
रगड़ना । मलना । २. जोर से दबाना ।

मसलहत–स्त्री० [अ०] १. रहस्य । २.
गुप्त और हितकर तत्त्व जो सहसा सम
में न आ सके । छिपा हुआ शुभ हेतु ।

पुं० मस़ल्] १. कहावत ।

तला। (देखें)

विचारणीय विषय। समस्या।

दे० 'मसौदा' ।

[हिं० मशहरी] १. मच्छड़ों

पलंग के ऊपर और चारों

झालीदार कपड़ा । २.

उक्त कपड़ा लगा हो ।

दे० 'मांसाहारी' ।

हिं० मांस-कील] १. काले रंग

मांस का वह दाना जो

निकलता है । २. बवा-

वाला मांस का दाना ।

] मच्छड़ ।

[सं० श्मशान] १. शव

। मरघट ।

जगाना = श्मशान पर

या किसी मन्त्र की तान्त्रिक

आदि। ३.युद्ध-क्षेत्र।(क्व०)

[हिं० मसान] १. मसान

। २. होम ।

। मसान का ।

[सं० श्मशानी] डाकिनी,

।

१. दे० 'मशाल' । २.

[फा० मसालह] १. साधा-

। २. किसी विशेष

हुआ ओषधियों या

मिश्रण अथवा उसका

भोजन को स्वादिष्ट बनाने-

। जैसे—लौंग, मिर्च, जीरा,

। ४. आतिशबाजी ।

[अ० मसालह + फा०

मिला या पड़ा हो ।

१. स्याही । रोशनाई ।

२. काजल । ३. कालिख ।

मसिपात्र–पुं० [सं०] दावात ।

मसियर*–स्त्री० दे० 'मशाल' ।

मसियारा*–पुं० दे० 'मशालची' ।

मसीत(द)–स्त्री० दे० 'मसजिद' ।

मसीना†–पुं० [देश०] मोटा अन्न । कदन्न ।

मसीह(ा)–पुं० [अ०] [वि० मसीही] १. ईसाइयों के धर्म-गुरु हजरत ईसा । २. वह जो मरे हुए को जिला सके । (उर्दू कविताओं में प्रेमपात्र के लिए)

मसीही–पुं० [अ० मसीह] ईसाई ।

मसू*–क्रि० वि० [हिं० मरू = मरकर] कठिनता से । मुश्किल से । जैसे तैसे ।

मुहा०–मसू करके = बहुत कठिनता से ।

मसूड़ा–पुं० [सं० श्मश्रु] मुँह के अन्दर का वह अंग जिसमें दाँत उगे होते हैं ।

मसूर–पुं० [सं०] एक प्रकार की दाल ।

मसूरिका–स्त्री० दे० 'शीतला' (रोग) ।

मसूसना–अ० दे० 'मसोसना' ।

मसृण–वि० [सं०] ऐसा गाढ़ा तरल जिसमें चिकनापन और मुलायमत हो । (जैसे–घी, चरबी, तेल आदि)

मसेवरा†–पुं० [हिं० मांस] मांस के योग से बनी हुई भोजन-सामग्री ।

मसोस†–पुं० = अफसोस ।

मसोसना–अ० [फा० अफसोस ?] १. किसी मनोवेग को रोकना । जब्त करना । २. मन ही मन खेद या दुःख करना । कुढ़ना । स० १. ऐंठना । मरोड़ना । २. निचोड़ना ।

मसोसा–पुं० [हिं० मसोसना] मन का दुःख ।

मसौदा–पुं० [अ० मसविदा] १. लेख का वह पूर्व-रूप जिसमें काट-छाँट और सुधार किया जाने को हो । प्रालेख । २. युक्ति । तरकीब ।

मुहा०–मसौदा गाँठना या बाँधना= किसी कार्य की युक्ति सोचना ।

मस्करा*–पुं० दे० 'मसखरा' ।

मस्कला–पुं० दे० 'मसकला' ।

मस्त-वि० [सं० मत्त से फा०] [भाव० मस्ती] १. मतवाला। मदोन्मत्त। २. प्रसन्न और निश्चिन्त। परम आनन्दित। ३. यौवन-मद से भरा हुआ।

मस्त-मौला-वि० [फा० मस्त + अ० मौला] जो बिना सोचे-समझे और मनमाने ढंग से काम करता हो। मन-मौजी।

मस्ताना-वि० [फा० मस्तानः] १. मस्तों का-सा। २. मस्त।

अ० [फा० मस्त] मस्त होना।

मस्तिष्क-पुं० [सं०] १. मस्तक के अन्दर का गूदा। भेजा। मगज। २. मस्तक में होनेवाली सोचने-समझने की शक्ति। मानसिक शक्ति। दिमाग। बुद्धि।

मस्ती-स्त्री० [फा०] १. मस्त होने की क्रिया या भाव। मतवालापन। २. कुछ विशिष्ट पशुओं की कनपटी से बहनेवाला तरल स्राव। मद। ३. कुछ वृक्षों, पत्थरों आदि में से होनेवाला स्राव। मद।

मस्तूल-पुं० [पुर्त०] बड़ी नावों के बीच का वह लट्ठा जिसमें पाल बाँधते हैं।

मस्सा-पुं० दे० 'मसा'।

महँ-अव्य० [सं० मध्य] में।

महँई-वि० [सं० महान्] महान्। बड़ा।

महँगा-वि० [सं० महार्घ] १. जिसका उचित से अधिक मूल्य हो। २. बहु-मूल्य। ३. जो बहुत अधिक परिश्रम या व्यय से अथवा बहुत कठिनता से प्राप्त हुआ हो। (डियर) जैसे—यह मंत्रित्व आपको बहुत महँगा पड़ा है।

महँगाई-स्त्री० [हिं० महँगा] १. महँगी के कारण मिलनेवाला भत्ता। २. दे० 'महँगी'।

महँगी-स्त्री० [हिं० महँगा + ई (प्रत्य०)] १. महँगे होने का भाव या अवस्था। महँगापन २. दुर्भिक्ष। अकाल।

महंत-पुं० [सं० महत् = बड़ा] १. साधु समाज का प्रधान। २. मठाधीश।

महंती-स्त्री० [सं० महत्] महंत का भाव या पद।

महक-स्त्री० [मह मह से अनु०] गंध।

महकना-अ० [हिं० महक] गंध देना।

महकमा-पुं० [अ०] व्यवस्था करनेवाला विभाग। सरिश्ता।

महकान-स्त्री० दे० 'महक'।

महकीला-वि० [हिं० महक] मह वाला।

महज-वि० [अ०] केवल। सिर्फ।

महजिद*-स्त्री० दे० 'मसजिद'।

महज्जन-पुं० [सं०] महापुरुष।

महत्-वि० [सं०] [स्त्री० महती] बहुत बड़ा।

पुं० १. ब्रह्म। २. दे० 'महत्तत्त्व'।

महत†-पुं० = महत्त्व।

महता-पुं० [सं० महत्] गाँव का मुखिया महतो। सरदार।

महताब-स्त्री० [फा०] १. चाँद चंद्रिका। २. दे० 'महताबी'।

महताबी-स्त्री० [फा०] १. नली के की वह आतिशबाजी जिससे केवल होती है। २. बाग के बीच का चबूतरा

महतारी†-स्त्री० = माता।

महती-वि०, स्त्री० [सं०] बहुत बड़ी।

महतु*-पुं० दे० महत्त्व।

महतो-पुं० [हिं० महता] १. कहार। प्रधान। ३. सरदार। ४. गाँव मंडली आदि का मुखिया।

महत्तत्त्व-पुं० [सं०] १. सांख्य में का पहला विकार। बुद्धि तत्त्व। २.

महत्तम-वि० [सं०] सबसे बड़ा।

पुं० १. सब से बड़ा या ऊँचा वह अंक परिमान जो अंतिम सीमा के निश्चित या प्राप्त हो और जिसके आगे के लिए अवकाश या विधान न हो। २. वस्तु का वह मान या मूल्य जिसके उसका बढ़ना बन्द हो जाता है और केवल कमी या घटाव के लिए

विधान न हो। २. इतना घनिष्ठ परिचित जो सभी निजी और भेद की बातें जानता हो। परम आत्मीय।

स्त्री० १. अंगिया। चोली। २. अंगिया की कटोरी।

महरम हाल–पुं० दे० 'मरहम' २.।

महरा–पुं० [हिं० महता] [स्त्री० महरी, भाव० महराई] १. कहार। २. मुखिया। ३. नौकर-चाकर का सरदार।

महराई–स्त्री० [हिं० महर] महर होने की अवस्था या भाव।

पुं० महाराज। उदा०–कह्यौ, सुनौ विनती महराई।—सूर।

महराना–पुं० [हिं० महर] महरों के रहने का स्थान।

महरि (ी)–स्त्री० [सं० महिला] (व्रज में) प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए एक आदर सूचक शब्द। मालकिन। घरवाली।

महरूम–वि० [अ०] जिसे उसका वांछित या प्राप्य न मिला हो। वंचित।

महरेटा–पुं० = श्रीकृष्ण।

महरेटी–स्त्री० = राधिका।

महर्घ–वि० दे० 'महार्घ'।

महर्षि–पुं० [सं० महा + ऋषि] बहुत बड़ा या श्रेष्ठ ऋषि।

महल–पुं० [अ०] १. राजाओं आदि के रहने का बड़ा और बढ़िया मकान। प्रासाद। २. रनिवास। अन्तःपुर।

महलती–पुं० [अ० महल] [स्त्री० महलतिन] मकान का वह मालिक जो स्वयं उसमें रहकर उसके कुछ अंशों में कियारेदार भी रखता हो।

महलसरा–स्त्री० [अ०] अंतःपुर।

महल्ला–पुं० [अ०] शहर का वह विभाग जिसमें बहुत-से मकान हों।

महसूल–पुं० [अ०] १. वह धन जो राज्य या सरकार किसी विशेष कार्य के लिए ले। कर। (टैक्स) २. भाड़ा। किराया। ३.

जमीन की लगान। (पुरानी हिन्दी)

महसूली–वि॰ [हिं॰ महसूल] जिसपर महसूल लगता हो।

महसूस–वि॰ [अ॰] जिसका ज्ञान या अनुभव हो। अनुभूत।

महाँ–अव्य॰ दे॰ 'महँ'।

महा–वि॰ [सं॰] १. बहुत अधिक। २. सर्व-श्रेष्ठ। सबसे बड़ा। ३. बहुत बड़ा। †पुं॰ [हिं॰ महना = मथना] दही मथने पर बचा हुआ तरल पदार्थ। मट्ठा।

महाउत*–पुं॰ दे॰ 'महावत'।

महाकाय–वि॰ [सं॰] जिसका शरीर बहुत बड़ा हो। बड़े डील-डौल शरीर का।

महाकाल–पुं॰ [सं॰] महादेव।

महाकाली–स्त्री॰ [सं॰] दुर्गा।

महाकाव्य–पुं॰ [सं॰] १. साहित्य-शास्त्र के अनुसार वह सर्ग-बद्ध काव्य-ग्रन्थ जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों आदि का वर्णन हो। २. बहुत बड़ा और श्रेष्ठ काव्य। (एपिक्स)

महागति–स्त्री॰ [सं॰] परम पद की प्राप्ति। मोक्ष।

महाजन–पुं॰ [सं॰] १. श्रेष्ठ पुरुष। २. धनवान्। ३. रुपये-पैसे का लेन-देन करनेवाला। कोठीवाल। ४. ऋण देनेवाला। (क्रेडिटर)

महाजनी–स्त्री॰ [हिं॰ महाजन + ई (प्रत्य॰)] १. रुपये के लेन-देन का व्यवसाय। कोठीवाली। २. महाजनों के व्यवहार की एक लिपि। मुड़िया।

महातम*–पुं॰ = माहात्म्य।

महात्मा–पुं॰ [सं॰ महात्मन्] १. बहुत श्रेष्ठ, उच्च विचारोंवाला और सदाचारी पुरुष। २. बहुत बड़ा साधु या महापुरुष।

महादान–पुं॰ [सं॰] ग्रहण आदि के समय किया जानेवाला दान।

महादेव–पुं॰ [सं॰] शंकर। शिव।

महादेवी–स्त्री॰ [सं॰] १. दुर्गा। २. राजा की प्रधान रानी या महिषी। पटरानी।

महादेश (द्वीप)–पुं॰ [सं॰] पृथ्वी के स्थल-भाग के पाँच बड़े विभागों में से को एक, जिसमें अनेक देश होते हैं। (कान्टि नेन्ट) जैसे–एशिया, योरप।

महान्–वि॰ [सं॰] बहुत बड़ा।

महानता–स्त्री॰ दे॰ 'महत्त्व' या 'महत्व'।

महानस–पुं॰ [सं॰] रसोई-घर।

महानाटक–पुं॰ [सं॰] दस अंकोंवा एक प्रकार का बहुत बड़ा नाटक।

महानिद्रा–स्त्री॰ [सं॰] मृत्यु।

महानिर्वाण–पुं॰ [सं॰] बौद्धों के अनु वह उच्चि कोटि का निर्वाण या परिनि जिससे अधिकारी अर्हत् या बुद्ध होते हैं

महानिशा–स्त्री॰ [सं॰] १. आधी रात। कल्प के अन्त में होनेवाली प्रलय की रा

महानुभाव–पुं॰ [सं॰] [भाव॰ म भावना] बड़ा और आदरणीय व्यक्ति

महापातक–पुं॰ [सं॰][वि॰ महापातकी पाँच बहुत बड़े पाप–ब्रह्म-हत्या, मद्य- चोरी, गुरु की पत्नी से व्यभिचार और पाप करनेवालों का साथ।

महापातर*–पुं॰ = महापात्र।

महापात्र–पुं॰ [सं॰] मृतक-कर्म का लेनेवाला ब्राह्मण। महाब्राह्मण।

महापुरुष–पुं॰ [सं॰] श्रेष्ठ पुरुष।

महाप्रभु–पुं॰ [सं॰] १. एक आदर पदवी जिसका व्यवहार वल्लभाचार्य बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य के लिए होता है। २. ईश्वर।

महाप्रलय–पुं॰ [सं॰] वह प्रलय सारी सृष्टि का विनाश हो जाता है।

महा-प्रशासक–पुं॰ [सं॰] वह बड़ा प्र सक जो पद, मर्यादा आदि में प्रकाशकों से बहुत उच्च होता है। (ए निस्ट्रेटर जनरल)

महाप्रसाद–पुं॰ [सं॰] १. जगन्ना जी पर चढ़ाया हुआ भात। २. मांस। (

प्रयुक्त) जैसे–महामहिम सम्राट् पंचम जार्ज।

महामांस–पुं॰ [सं॰] गाय या मनुष्य का मांस। (परम त्याज्य)

महामाई–स्त्री॰ १. दे॰ 'दुर्गा'। २. दे॰ 'काली'।

महामात्य–पुं॰ दे॰ 'महामंत्री'।

महामाया–स्त्री॰ [सं॰] १. प्रकृति। २. दुर्गा। ३. गंगा।

महामारी–स्त्री॰ [सं॰] वह संक्रामक भीषण रोग जिससे कुछ दिनों तक या बहुत दिनों तक बहुत-से लोग एक साथ या जल्दी मरें। वबा। मरी (एपिडेमिक) जैसे–प्लेग, हैजा आदि।

महायज्ञ–पुं॰ [सं॰] धर्म-शास्त्र-विहित वे कर्म या यज्ञ जिनके नित्य करने का विधान है और जो पाँच हैं। यथा–ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।

महायात्रा–स्त्री॰ [सं॰] मृत्यु।

महायान–पुं॰ [सं॰] बौद्धों के तीन प्रधान सम्प्रदायों में से एक।

महायुद्ध–पुं॰ [सं॰] वह बहुत बड़ा युद्ध जिसमें बहुत से बड़े बड़े देश या राष्ट्र सम्मिलित हों।

महारथ–पुं॰ = महारथी।

महारथी–पुं॰ [सं॰ महारथिन्] प्राचीन भारत में, वह बहुत बड़ा योद्धा जिसके अधीन अनेक रथी योद्धा रहते थे।

महाराज–पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ महारानी] १. बहुत बड़ा राजा। २. ब्राह्मण, गुरु आदि के लिए आदरसूचक सम्बोधन।

महाराजाधिराज–पुं॰ [सं॰] अनेक राजाओं का प्रधान महाराज।

महाराज्ञी–स्त्री॰ [सं॰] महारानी।

महाराणा–पुं॰ [सं॰ महा + हिं॰ राणा] मेवाड़ के राजाओं की उपाधि।

महारानी–स्त्री॰ [सं॰ महाराज्ञी] महाराज की रानी। बहुत बड़े राज्य की रानी।

महाराष्ट्र–पुं॰ [सं॰] १. बहुत बड़ा

राष्ट्र। २. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। ३. इस प्रदेश के निवासी।

महाराष्ट्री–स्त्री० दे० 'मराठी'।

महार्घ–वि० [सं०] [भाव० महार्घता] १. बहुत अधिक मूल्य का। २. महँगा।

महाल–पुं० [अ० 'महल' का बहु०] १. मुहल्ला। टोला। २. जमीन के बन्दोबस्त के विचार से कई गाँवों का समूह।

महालक्ष्मी–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति।

महालय–पुं० [सं०] पितृ-पक्ष।

महालया–स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण अमावस्या जो पितृ-पक्ष का अन्तिम और पितृ-विसर्जन का दिन होता है।

महावकी–स्त्री० [सं०] पूतना राक्षसी का एक नाम।

महावट–स्त्री० [हिं० माह = माघ + वट] माघ के दिनों की झड़ी या वर्षा। उदा०–नैन चुवहि जस महवट (महावट) नीरू। —जायसी।

महावत–पुं० [सं० महामात्र] हाथी चलाने या हाँकनेवाला। हाथीवान।

महावर–पुं० [सं० महावर्ण ?] वह लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैर रँगती हैं। यावक। जावक।

महावरी–स्त्री० [हिं० महावर] महावर में भिगोई हुई रूई जिससे पैर में महावर लगाते हैं। उदा०–फिरि फिरि, जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाइ —बिहारी।

महाविद्या–स्त्री० [सं०] १. तंत्र में मानी हुई दस देवियाँ जिनके नाम इस प्रकार हैं—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। २. दुर्गा।

महाविद्यालय–पुं० [सं०] वह बड़ा और ऊँचा विद्यालय जिसमें साधारण विद्यालय (स्कूल) के अतिरिक्त या उससे ऊँची, कक्षाओं के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती हो। (कॉलेज)

महावीर–पुं० [सं०] १. हनुमान जी। २. चौबीसवें और अन्तिम जैन तीर्थंकर। वि० बहुत बड़ा बहादुर।

महावीर चक्र–पुं० [सं०] स्वतंत्र भार में केन्द्रीय सरकार की ओर से बहुत अधि वीरतापूर्ण कार्य करने पर, सैनिकों मिलनेवाला एक प्रकार का चक्र या पद

महाशय–पुं० [सं०] [स्त्री० महाशया महान् या उच्च आशय और विचारोंवा व्यक्ति। महानुभाव। सज्जन।

महाश्मशान–पुं० [सं०] काशीनगरी

महासंधि-विग्रहक–पुं० [सं०] गु कालीन भारत का वह उच्च अधिकारी दूसरे राज्यों से संधि और विग्रह करने का अधिकार होता था।

महिं*–अव्य० दे० 'महँ'।

महि–स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

महिजा–स्त्री० [सं०] सीता जी।

महिदेव–पुं० [सं०] ब्राह्मण।

महिधर–पुं० [सं०] १. पर्वत। शेषनाग।

महिनंदिनी–स्त्री० [सं०] जानकी।

महिपाल*–पुं० दे० 'महीपाल'।

महिमा–स्त्री० [सं० महिमन्] १. मह बड़ाई। २. प्रभाव। प्रताप। ३. सिद्धियों में से एक, जिससे मनुष्य बड़ा रूप धारण कर सकता है।

महिमावान्–वि० [सं०] महिमा गौरववाला।

महियाँ*–अव्य० [सं० मध्य] में। बीच मे

महियाउरी–पुं० [हिं० मही = मठा चावल] मठे में पकाया हुआ चावल।

महिला–स्त्री० [सं०] भले घर की

महिष–पुं० [सं०] [स्त्री० महिषी] १. भैंस २. शास्त्रानुसार अभिषिक्त राजा।

महिषाकर*–वि० [सं० महिष + आकार (भैंस के आकार का) बहुत बड़ा।

महूरत*–पुं० दे० 'मुहूर्त्त'।

महूष*–पुं० दे० 'मधूख'।

महेंद्र–पुं० [सं०] १. विष्णु। २. इन्द्र।

महेरा–पुं० [हिं० महेर या मही] एक प्रकार का व्यंजन।

महेरी–स्त्री० [हिं० महना = मथना] दही मथकर मक्खन निकालनेवाली स्त्री। स्त्री० दे० 'महरि'।

महेल*–पुं० = महल।

महेला*–वि० [?] सुन्दर।

महेश–पुं० [सं०] शिव। महादेव।

महेशानी–स्त्री० [सं० महेश] पार्वती।

महेश्वर–पुं० [सं०] [स्त्री० महेश्वरी] १. ईश्वर। २. शिव।

महेस*–पुं० = महेश।

महेसी*–स्त्री० [सं० महेश्वरी] पार्वती।

महेसुर*–पुं० = महेश्वर।

महोख–पुं० [सं० मघोक] खैरे या लाल रंग का एक प्रकार का पक्षी।

महोगनी–पुं० [अं०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत और टिकाऊ होती है। इसका फल चीकू या स्पाट् कहलाता है।

महोच्च–वि० [सं०] परम या बहुत अधिक उच्च। बहुत ऊँचा।

महोच्छव*–पुं० दे० 'महोत्सव'।

महोत्सव–पुं० [सं०] बहुत बड़ा उत्सव।

महोदधि–पुं० [सं०] समुद्र।

महोदय–पुं० [सं०] [स्त्री० महोदया] १. बड़े आदमियों के लिए एक आदर-सूचक सम्बोधन। (सर) २. कान्यकुब्ज देश। ३. स्वर्ग।

महोला*–पुं० [अ० मुहेल] १. हीला। बहाना। २. धोखा। छल।

महौघ–पुं० [सं०] समुद्री तूफान।

मह्यो*–पुं० [हिं० मही] मठा। छाछ।

माँ–स्त्री० [सं० अम्बा या माता] माता। यौ०–माँ-जाया = सगा भाई।

+अव्य० [सं० मध्य] में।

माँखना*-अ० दे० 'माखना'।

माँग-स्त्री० [हिं० माँगना] १. माँगने की क्रिया या भाव। २. कोई चीज मँगाने विशेषतः खरीदने के समय किसी को यह लिखना कि अमुक चीज भेज दो। (आर्डर) ३. वह बात जिसके लिए किसी से याचना, प्रार्थना या आग्रह किया जाय। (डिमांड) ४. किसी बात की चाह या आवश्यकता होने की अवस्था या भाव। जैसे-आजकल बाजार में कपड़े की माँग कम है।

स्त्री० [सं० मार्ग ?] सिर पर के बालों को कंघी से विभक्त करने पर उनके बीच में बनी हुई रेखा। सीमन्त।

मुहा०-माँग-कोख से सुखी रहना= सौभाग्यवती और सन्तानवती रहना।

माँग-टीका-पुं० [हिं० माँग + टीका] वह माँग फूल जिसमें मोतियों की लड़ी लगी रहती है।

माँगन*-पुं० दे० 'मंगन' (भिक्षुक)।

माँगना-स० [सं० मार्गण = याचना] १. किसी से कुछ लेने के लिए इच्छा प्रकट करना। यह कहना कि यह करो या यह दो। २. प्रार्थना करना। ३. चाहना।

माँग-पत्र-पुं० [हिं० माँग + सं० पत्र] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक माँग की गई हो। (रिट ऑफ डिमान्ड) २. वह पत्र जिसमें कोई चीज मँगाने विशेषतः दाम देकर मँगाने के समय किसी को यह लिखा जाता है कि अमुक चीजें भेज दो। (आर्डर फॉर्म)

माँग-फूल-पुं० [हिं० माँग + फूल] स्त्रियों के सिर पर या माँग में पहनने का एक प्रकार का गहना।

मांगलिक-वि० [सं०] [भाव० मांगलिकता] मंगल करनेवाला।

पुं० नाटक में मंगल-पाठ करनेवाला पात्र।

मांगल्य-वि० [सं०] शुभ। मंगलकारक।

पुं० 'मंगल' का भाव।

माँगा-पुं० [हिं० माँगना] अपने व्यवहा के लिए किसी से कोई चीज कुछ समय के लिए माँगकर लेने की क्रिया या भाव मँगनी। जैसे—माँगे के कपड़े।

माँचना*-अ० दे० 'मचना'।

माँचा-पुं० दे० 'माचा'।

माँज-स्त्री० दे० 'गंग-बरार'।

माँजना-स० [सं० मज्जन] मैल छुड़ा चिकना करने या मजबूत बनाने के लि किसी वस्तु को रगड़ना।

स० अभ्यास करना। जैसे-लिखने या बनाने में हाथ मँजना।

माँजर*-स्त्री० दे० 'पंजर'।

माँजा-पुं० [देश०] पहली व जलाशयों में होनेवाला फेन जो मछ के लिए मादक माना गया है।

माँझ*-अव्य० [सं० मध्य] में।

*पुं० अन्तर। फरक।

माँझा-पुं० [सं० मध्य] १. नदी में टापू। २. पगड़ी पर पहनने का एक का आभूषण। ३. वृक्ष का तना। विवाह के अवसर पर पहनने के वर कन्या के पीले कपड़े। ५. करघे में ढाँचा जो पाई को जमीन पर गिरने रोके रहता है।

पुं० [हिं० माँजना] वह मसाला पतंग की डोर पर, उसे कड़ा और म करने के लिए लगाया जाता है।

माँझिल*-क्रि०वि०[सं०मध्य] बीच का

माँझी-पुं० [सं० मध्य] १. केव मल्लाह। २. मध्यस्थ।

माँट-पुं०[सं०मट्टक] १. मटका। घ २. कोठा। अटारी।

माँठी*-स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार चूड़ी। २. मठी या मठरी नामक पकवान

माँड-स्त्री० [हिं० माँडना = सामने रखना राजस्थान में गाया जानेवाला एक प्रका

मात । पराजित ।

स्त्री० [देश०] हिंसक जन्तुओं के रहने का गड्ढा । बिल । गुफा ।

माँदगी–स्त्री० [फा०] बीमारी ।

माँदा–वि० [फा० माँदः] १. थका हुआ । २. रोगी । बीमार ।

मांद्य–पुं० [सं०] 'मंद' का भाव । धीमा, मद्धिम या कम प्रबल होना । मन्दता । जैसे—अग्नि-मांद्य, दृष्टि-मांद्य ।

माँपना*–अ० दे० 'मातना' ।

माँयँ*–अव्य० [सं० मध्य] में ।

मांस–पुं० [सं०] १. शरीर में हड्डियों और चमड़े के बीच का मुलायम और लचीला पदार्थ । २. कुछ पशुओं के शरीर का उक्त अंश जो कुछ लोग खाते हैं । गोश्त ।

मांस तंतु–पुं० [सं०] बहुत छोटे छोटे खंडों या तंतुओं के रूप में वह तत्व जिससे पशुओं, मनुष्यों आदि के शरीर की खाल, पट्ठे, मांस आदि बने होते हैं । (टिस्यू)

मांसपेशी–स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर का मांसल भाग । पट्ठा ।

मांसभक्षी(भोजी)-पुं० दे० 'मांसाहारी' ।

मांसल–वि० [सं०] [भाव०माँसलता] १. मांस से भरा हुआ । २. मोटा-ताजा । पुष्ट ।

मांसाहारी–पुं० [सं० मांसाहारिन्] १. मांस खानेवाला । आमिष-भोजी । २. दूसरे जीव-जंतुओं का मांस खाकर निर्वाह करनेवाला । (कारनिवोरा)

माँह(हि)*–अव्य० [सं० मध्य] में ।

मा–स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी । २. माता ।

माई–स्त्री० [सं० मातृ] १. माता । माँ । **पद–माई का लाल** = बहुत उदार, योग्य या समर्थ व्यक्ति ।

२. बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिए सम्बोधन ।

माकूल–वि०[अ०] १. उचित । वाजिब । २. ठीक । अच्छा । बढ़िया । ३. तर्क में परास्त । कायल ।

माख*–पुं० [सं० मक्ष] १. अप्रसन्नता ।

२. क्षोभ। ३. पछतावा। ४. आवेश।

माखन-पुं० = मक्खन।

माखनचोर-पुं० [हिं०] श्रीकृष्ण।

माखना*-अ० [हिं० माख] १. अप्रसन्न या नाराज होना। २. मन में खेद या दुःख करना।

माखा†-पुं० [हिं० मक्खी] १. मक्खी का नर। २. बड़ी मक्खी।

माखी*-स्त्री० = मक्खी।

माखो-स्त्री० [हिं० मक्खी] शहद की मक्खी। (पश्चिम)

*स्त्री० [हिं० मुख ?] लोगों में फैलनेवाली चर्चा। जनरव। जन-श्रुति।

मागध-पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति जिसका काम राजाओं की विरुदावली वर्णन करना था। भाट।

वि० [सं०] मगध देश का राजा।

मागधी-स्त्री० [सं०] मगध देश में प्रचलित पुरानी प्राकृत भाषा।

विशेष-प्राचीनकाल में कोशल (अवध), काशी, विदेह (बिहार और मगध) तथा अंग (दक्षिण बिहार) के निवासी 'प्राच्य' और उनकी भाषा 'प्राच्या' कहलाती थी। 'प्राच्या' के दो विभाग थे—पश्चिम प्राच्य और पूर्व प्राच्या। इनमें से 'पूर्व प्राच्या' को हम 'मागधी' कह सकते हैं। विशेष दे० 'अर्द्ध-मागधी' और 'प्राच्या'।

माघ-पुं० [सं०] [वि० माघी] पूस के बाद और फागुन से पहले का महीना।

माच*-पुं० दे० 'मचान'।

माचना*-अ० = मचना।

माचल*-त्रि० [हिं० मचलना] १. मचलने वाला। हठी। २. मन चला। ३. जान-बूझकर अनजान बना रहनेवाला। मचला।

उदा०—महा माचल, मारिबे कि सकुच नाहिंन मोहिं।—**सूर**

पुं० [हिं० मचला] मचले होने या जान बूझकर अनजान बने रहने की अवस्था या भाव। मचलापन।

मुहा०-माचल मारना = जान-बूझ अनजान बने रहना। मचला होना।

माचा†-पुं० [सं० मंच] [अल्पा० माची १. पलंग। खाट। २. मचान।

माछ†-स्त्री० = मछली।

माछर*-पुं० दे० 'मच्छड़'।

पुं० [सं० मत्स्य] मछली।

माछी†-स्त्री० १. दे० 'मक्खी'। २ 'मछली'।

माजरा-पुं० [अ०] १. विवर वृत्तान्त। हाल। २. घटना।

माजून-स्त्री० [अ०] औषध के बनी कोई मीठी चटनी। अवलेह।

माट-पुं० [हिं० मटका] मटका।

माटा†-पुं० [हिं० मटा] लाल चूँ

माटी*-स्त्री० = मिट्टी।

माठ†-पुं० = मटका (घड़ा)।

माड़ना*-अ० दे० 'माँड़ना'।

स० [सं० मंडन] १. सजाना। २. करना। पहनना। ३. आदर करना।

स० दे० 'माँड़ना'।

माढ़ा*-पुं० [सं० मंडप] [स्त्री० माढ़ी] १. घर के उपर की छत चौबारा। २. मंच। ३. मचिया।

माणिक(क्य)-पुं० दे० 'मानिक'।

मातंग-पुं० [सं०] १. हाथी। २. चां

मात-स्त्री० [अ०] पराजय। हार। (खेलों प्रतियोगिताओं आदि में होने

क्रि० प्र०—देना।

वि० [अ०] १. पराजित। हारा २. किसी की तुलना में फीका, मन्द

*स्त्री० दे० 'माता'।

*वि० [सं० मत्त] उन्मत्त। मस्त।

मातदिल-वि० [अ० मोतदिल] न गरम, न बहुत ठण्डा। शीतोष्ण।

मातना*-अ० [सं० मत्त] १. मस्त मत्त होना। २. बहुत नशे में हो जाना

होता हो। 'पितृक का उलटा'। (मैट्रिआर्कल)

मातृक-प्रणाली—स्त्री० [सं०] कुछ भारतीय जन जातियों में प्रचलित वह प्रणाली या व्यवस्था जिसमें वंश परंपरा, उत्तराधिकार आदि माता या गृह-स्वामिनी के विचार से चलते हैं पिता या गृह-स्वामी के विचार से नहीं। (मैट्रिआर्की)

मातृका—स्त्री० [सं०] १. माता। जननी। २. धाय। ३. तान्त्रिकों की ब्राह्मी आदि सात देवियाँ। ४. एक प्रकार की देवियों का वर्ग जो १६ कही गई हैं और जिनके नाम हैं—गौरी, पद्मा, शचि, मेधा, सावित्री विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, माता और आत्म देवता। ५. वर्णमाला के वे अक्षर, जिनकी तांत्रिक लोग देवी के रूप में पूजा करते हैं। ६. वह स्त्री जो लड़कियों, दाइयों आदि के कामों की देख-रेख करती हो। (मेट्रन)

मातृ-कुल—पुं० [सं०] माता अथवा नाना का कुल या वंश।

मातृत्व—पुं० [सं०] माता होने का भाव। माँ-पन। (मैटर्निटी)

मातृ-देश—पुं० [सं०] विदेश में जाकर बसे हुए लोगों की दृष्टि से उनके पूर्वजों का देश या मातृ-भूमि। (मदर-कन्ट्री) जैसे—ब्रर्मा या मलाया में रहनेवाले भारतियों का मातृ-देश भारत है।

मातृ-भाषा—स्त्री० [सं०] वह भाषा जो बालक बचपन में माता के पास रहकर बोलना सीखता है। मादरी जबान। (मदर-टंग)

मातृ-भूमि—स्त्री० [सं०] वह भूमि या देश जिसमें किसी का जन्म हुआ हो। (मदर-लैण्ड)

मातृ-हत्या—स्त्री० [सं०] अपनी माता की हत्या करना। माँ को मार डालना। (मैट्रिसाइड)

मात्र—अव्य० [सं०] केवल। सिर्फ। भर।

मात्रक—पुं० [सं०] १ वह निश्चित मात्रा

या मान जिसे एक मानकर उसी के हिसाब से उस मेल की बाकी चीजों की गिनती या कल्पना की जाय। एकाई। (यूनिट) २. एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओं के योग से बने हुए किसी समूह में की प्रत्येक वस्तु। ३. किसी का वह अंग जो कुछ दशाओं में स्वतन्त्र रूप से भी अलग एक सत्ता के रूप में माना जाता है। (यूनिट)

मात्रा–स्त्री० [सं०] १. किसी का उतना अंश या मान जितना एक बार में लिया या काम में लाया जाय, अथवा जितना एक इकाई के रूप में अलग हो। परिमाण। मिकदार। (क्वान्टिटी) २. एक बार खाने भर का औषध। ३. लेन देन या हिसाब-किताब के काम के लिए उतना धन जितना एक बार में दिया, लिया या लिखा जा सके। धन-राशि। रकम। (एमाउन्ट) ४. स्वर की सूचक वह रेखा या चिह्न जो किसी अक्षर या वर्ण में लगता है। जैसे–'कि' में 'ि' अथवा 'है' में 'ै'। ५. पिंगल में अक्षरों, मात्राओं आदि की गिनती या उनके उच्चारण में लगनेवाले समय के विचार से कोई अक्षर या वर्ण या कोई दीर्घ मात्रा। (इसमें ह्रस्व मात्राओं की गिनती नहीं होती) जैसे–'किमि' दो मात्राओं और 'माता' चार मात्राओं का शब्द है।

मात्रिक–वि० [सं०] १. मात्रा-संबंधी। मात्रा का। २. जिसमें मात्राओं की गणना या विचार हो। जैसे–मात्रिक-छंद।

मात्रिक-छंद–पुं० [सं०] वह छन्द जिसके चरणों का विस्तार मात्राओं की गिनती के विचार से होता है वर्णों या अक्षरों की नहीं। जैसे–रोला, दोहा आदि।

मात्सिकी–स्त्री० दे० 'मीन-क्षेत्र'।

माथ–पुं० दे० 'माथा'।

माथना–स० दे० 'मथना'।

माथा–पुं० [सं० मस्तक] १. सिर का ऊपरी और सामनेवाला भाग। मस्तक। **मुहा०–माथा टेकना** = प्रणाम कर **माथा ठनकना** = अनिष्ट की आशं होना। **माथे चढ़ाना या धरना** = सादर स्वीकार करना। शिरोधार्य करन **माथे पर बल पड़ना** = आकृति से या असन्तोष के लक्षण प्रकट होना। २. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी जैसे–नाव का माथा।

माथा-पच्ची–स्त्री० [हिं० माथा + प ऐसा काम जिसमें मस्तिष्क की बहुत शक्ति व्यय हो। सिर-पच्ची।

माथुर–पुं० [सं०] [स्त्री० माथुरानी मथुरा का निवासी। २. कायस्थों की जाति।

माथे–क्रि० वि० दे० 'मत्थे'।

माद*–पुं० दे० 'मद'।

मादक–वि० [सं०] [भाव० मादकता लानेवाला। नशीला।

मादन–वि० [सं०] १. मादक मस्त करनेवाला।

पुं० कामदेव के पाँच बाणों में से ए

मादर–स्त्री० [फा०] माँ। माता।

†पुं० [सं० मर्दल] एक प्रकार का (बाजा)

मादर-जाद–वि० [फा०] १. जन्म पैदाइशी। २. सहोदर या सगा (भा ३. बिलकुल नंगा।

मादरिया–स्त्री० [फा० मादर] माता।

मादरी–वि० [फा०] मादर या सम्बन्धी। माता का। जैसे–मादरी

मादा–स्त्री० [फा०] स्त्री जाति का 'नर' का उलटा।

*स्त्री० [सं० मेद] चरबी।

मादिक*–स्त्री० = मदिरा।

माद्दा–पुं० [अ०] १. मूल तत्त्व। योग्यता। सामर्थ्य। ३. मवाद। पीब।

माधव–पुं० [सं०] १. विष्णु। २. वसंत ऋ वि० [स्त्री० माधवी, माधविका]

(ख) प्रतिष्ठा। इज्जत। ६. अपने प्रिय व्यक्ति के किसी दोष या अपराध के कारण होनेवाला मन का वह विकार जो उसे प्रिय की ओर से कुछ समय के लिए उदासीन कर देता है। रूठना। (साहित्य) ७. सामर्थ्य। शक्ति।

मानक–पुं० [सं०] वह निश्चित या स्थिर किया हुआ सर्व-मान्य, मान या माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान या कल्पना की जाय। मान-दंड। (स्टैंडर्ड)

मानकीकरण–पुं० [सं०] एक ही प्रकार की बहुत-सी वस्तुओं का मानक स्थिर करना। (स्टैंडर्डाइजेशन) जैसे–बटखरों या गजों का मानकीकरण।

मान-चित्र–पुं० [सं०] १. किसी देश, प्रान्त आदि का ऐसा नक़शा जिसमें नदी, पहाड़, जंगल, नगर आदि यथा-स्थान बतलाये गये हों। (मैप) २. किसी स्थान का ऐसा नकशा जिसमें उसके भिन्न-भिन्न अंग दिखाये गये हों। ३. किसी प्रकार की सूचना या जानकारी करानेवाला ऐसा नकशा जिसमें उसकी मुख्य-मुख्य बातों, अंगों आदि का क्रम-बद्ध और यथा-स्थान प्रदर्शन हो। (चार्ट) जैसे–जहाजियों का मानचित्र (जिसमें समुद्र के तट, चट्टानें, गहराई, मार्ग में पड़नेवाले स्थान आदि अंकित होते हैं)।

मानता–स्त्री० दे० 'मन्नत'।

मानदंड–पुं० दे० 'मानक'।

मानद–वि० [सं०] मान या प्रतिष्ठा देने या बढ़ानेवाला।

मानदेय–पुं० [सं०] वह धन जो किसी व्यक्ति को कोई काम करने पर उसके बदले में सम्मान-पूर्ण पारिश्रमिक के रूप में दिया जाता है। (ऑनरेरिअम)

मान-धन–वि० [सं०] जो अपने मान या इज्जत को ही धन (मुख्य) समझता हो।

मानना–अ० [सं० मानन] १. सहमत होना। राजी होना। २. प्रसन्न होना। अनुकूल होना। ३. कल्पना करना। फर्ज करना। ४. ठीक रास्ते पर आना। ५. किसी के प्रति आदर का भाव रखना। ६. महत्त्व समझना।

स० १. किसी की कही हुई बात, दी हुई आज्ञा या किये हुये आग्रह आदि का पालन करना। अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. धार्मिक दृष्टि से किसी बात पर श्रद्धा या विश्वास करना। ३. देवता आदि की भेंट या पूजा करने का संकल्प करना। मन्नत करना। ४. सहन करना। सहना। उदा०—उपजत दोष नैन नहिं सूझत, रवि की किरन उलूक न मानत।—सूर

माननीय–वि० [सं०] [स्त्री० माननीया] जिसका मान या सम्मान करना उचित और आवश्यक हो। मान्य।

पुं० एक उपाधि जो कुछ विशिष्ट और उच्च राजकीय अधिकारियों और राज्य के मन्त्रियों आदि के नाम के पहले लगाई जाती है। (ऑनरेबुल)

मान-परेखा*–पुं० [?] आशा। भरोसा।

मान-मंदिर–पुं० [सं०] १. कोप-भवन। २. वेध-शाला।

मान-मरोर*–स्त्री० दे० 'मन-मुटाव'।

मानव–पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।

मानवता–स्त्री० [सं०] १. मनुष्य होने की अवस्था, गुण या भाव। मनुष्यत्व। आदमीयत। आदमी-पन। २. मनुष्य में प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक रूप से होनेवाले गुणों, भावनाओं, विशेषताओं आदि का समूह। ३. संसार के समस्त मनुष्यों का समूह या समाज। सारी मनुष्य जाति। (ह्यूमैनिटी)

मानवती–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो अपने प्रिय के अपराध करने पर मान करे।

मानव-शास्त्र–पुं० [सं०] मनुष्यों उत्पत्ति, विकास, विभेद आदि का विवे करनेवाला शास्त्र। (एन्थ्रोपॉलोजी)

मानवी–स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत। वि० दे० 'मानवीय'।

मानवीय–वि० [सं०] मानव-सम्बन्धी।

मानवेंद्र–पुं० [सं०] १. राजा। बहुत श्रेष्ठ पुरुष।

मानस–पुं० [सं०] [भाव० मानस १. मन। हृदय। २. मान-सरोवर। कामदेव। ४. संकल्प-विकल्प।

वि० १. मन से उत्पन्न। मनोभव। विशुद्ध मनोबल से उत्पन्न। जैसे- पुत्र (देखो)। ३. मन में सोचा हु ४. मन सम्बन्धी। मन का। ५. म द्वारा होनेवाला।

क्रि० वि० मन के द्वारा।

मानसता–स्त्री० [सं०] १. मान मन का भाव या स्थिति। २. मन विशेष स्थिति या वृत्ति जिसके व होकर मनुष्य कोई विचार या काम है। (मेन्टैलिटी)

मानस-पुत्र–पुं० [सं०] पुरा अनुसार किसी देवता का वह पुत्र जो शारीरिक संभोग के, केवल मनो इच्छा मात्र से उत्पन्न हुआ हो। ब्रह्मा के मानस-पुत्र।

मान सरोवर–पुं० [सं० मानस + सरो १. हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध परम पवित्र मानी जानेवाली बड़ी झी २. हठ-योग के अनुसार शरीर के का वह शून्य स्थान जो अमृत का माना गया है। अमृत-कुंड।

मानस-विज्ञान–पुं० [सं०] वह विज्ञा शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन हो कि मनुष्य का मन किस प्रकार अपने काम करता है। (मन्टल साइन्स)

मानस-शास्त्र–पुं० [सं०] मनोविज्ञा

१.मान या अभिमान करनेवाला। अहंकारी। घमंडी। २. मान या प्रतिष्ठा रखनेवाला। सम्मानित। उदा०—ऐसौ सूरदास जन हरि को, सब अधमनि मैं मानी।—सूर। पुं० [सं०] वह नायक जो अपराध करनेवाली नायिका के प्रति मान करे।

मानुख*–पुं० = मनुष्य।

मानुष–वि० [सं०] मनुष्य का। पुं० [सं०] [स्त्री० मानुषी] मनुष्य।

मानुषिक–वि० [सं०] मनुष्य का।

मानुषी–वि० [सं० मानुषीय] मनुष्य सम्बन्धी। मनुष्य का।

मानुष्य–पुं० [सं०] १. मनुष्य का धर्म या भाव। मनुष्यता। २. मनुष्य का शरीर।

मानुस–पुं० = मनुष्य।

माने–पुं० [अ० मानी] अर्थ। मतलब।

मानो–अव्य० [हिं० मानना] मान लो कि यह ऐसा है या होगा। जैसे। गोया।

मान्य–वि० [सं०] [स्त्री० मान्या, भाव० मान्यता] १. मानने योग्य। २. माननीय। ३. जिसे नियमानुसार मान्यता प्राप्त हुई हो। (रिकाग्नाइज्ड) (दे० मान्यता ३. और ४.)

मान्यक–वि० [सं०] बिना वेतन लिए प्रतिष्ठित पद पर काम करनेवाला। (आनरेरी) जैसे–मान्यक मंत्री जी।

मान्यता–स्त्री० [सं०] १. मान्य होने की क्रिया या भाव। २. किसी बात या सिद्धान्त के माने जाने की क्रिया या भाव। माना जाना। (ऐडमिशन) ३. किसी बड़ी संस्था द्वारा दूसरी छोटी संस्था के सम्बन्ध में यह मान लिया जाना कि वह प्रामाणिक है और उसके किये हुए कार्य ठीक समझे जायँगे। ४. वह अवस्था जिसमें उक्त प्रकार की बात मान ली जाती और उसके अनुसार छोटी संस्था को काम करने का अधिकार मिल जाता है। (रिकाग्निशन, अन्तिम दोनों अर्थों के लिए)

माप–स्त्री० [सं०] १. मापने की क्रिया भाव या नाप। (मेजरमेन्ट) २. वह मान जिससे कोई चीज नापी जाय। मान। ३. किसी मान से मापने या नापने पर निकलनेवाला फल। (मेजर)

मापक–पुं० [सं०] १. वह जिससे कुछ नापा जाय। २. वह जो नापता हो।

मापन–पुं० [सं०] मापने या नापने की क्रिया या भाव। (मेजरमेन्ट)

मापना–स० [सं० मापन] किसी वस्तु के विस्तार, घनत्व आदि का मान या परिमाण निकालना। नापना।

*अ० [सं० मत्त] मतवाला होना।

माप-मान–पुं० दे० 'मानक'।

माफ–वि० [अ०] क्षमा किया हुआ। क्षमित।

माफिक+–वि० [अ० मुआफिक] १. अनुकूल। २. अनुसार। मुताबिक।

माफी–स्त्री० [अ०] १. क्षमा। २. वह भूमि जिसका कर या लगान सरकार या राज्य ने माफ कर दिया हो।

माफीदार–पुं० [फा०] वह जिसको माफी की जमीन मिली हो। (ग्रान्टी)

माम*–पुं० [सं० माम्] १. ममता। ममत्व। २. प्रेम। ३. अहंकार। ४. कोई काम करने की शक्ति या अधिकार।

मामता–स्त्री० दे० 'ममता'।

मामलत*–स्त्री० दे० 'मामला'।

मामला–पुं० [अ० मुआमिलः] १. व्यापार। काम। २. लेन-देन, आदान-प्रदान आदि का कार्य। व्यवहार। (ट्रेन्जैक्शन) ३. झगड़ा। विवाद। ४. व्यवहार या विवाद की बात या विषय। ५. किसी प्रकार की नालिश या मुकदमा। अभियोग (केस)

मामा–पुं० [अनु०] [स्त्री० मामी] माता का भाई।

स्त्री० [फा०] १. माता। माँ। २. रोटी पकानेवाली स्त्री। (मुसल०)

मामी–स्त्री० [सं० मा = नहीं] अपने
या भूल पर ध्यान न देना।

मुहा०–***मामी पीना** = मुकर जाना।

मामूल–पुं० [अ०] रीति। प्रथा।

मामूली–वि० [अ०] १. नियमित।
नियत। ३. सामान्य। साधारण।

माय*–स्त्री० १. दे० 'माता'। २.
'माया'।

मायक*–वि० [सं०] मायावी। उद
'सायक सम मायक नयन, रँगे त्रिवि
गात'।—बिहारी।

मायका–पुं० [सं० मातृ] स्त्री के
से उसके माता-पिता का घर। पीहर।

मायन*–पुं० [सं० मातृका+आन
विवाह से पहले मातृका-पूजन और
निमन्त्रण का कृत्य।

माया–स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २.
सम्पत्ति। ३. कोई ऐसा कार्य या
वास्तविक या सत्य न रहने पर भी
और ठीक जान पड़े। जैसे–वेद
के मत से यह संसार माया है। ४.
प्रकार की मिथ्या धारणा या वि
५. किसी मिथ्या बात या रूप को
वास्तविक समझने का तथ्य या भाव।
(इल्यूजन, अन्तिम तीनों अर्थों के लि
६. अज्ञान। ७. छल। धोखा। ८.
जाल। जादू। (मैजिक) ९.
१०. भगवान् या देवता की लीला,
या प्रेरणा। ११. ममता। मोह।
स्त्री० [सं० ममता] १. किसी को
समझने की क्रिया या भाव। २.
अनुग्रह।

*स्त्री० दे० 'माता'।

मायापति–पुं० [सं०] ईश्वर। परमे

माया वर्ग–पुं० [सं०] वह बड़ा
जिसमें कई छोटे-छोटे वर्ग हों और
छोटे वर्गों में से हर एक में कुछ अंक
संख्याएँ ऐसे ढंग या क्रम से दी गई हैं

से जोड़ने पर उस
जोड़ या योगफल
स्कयर)
] यह सिद्धान्त कि
और जगत् मिथ्या है,
सत्य प्रतीत होता है ।
मायाविन्] [स्त्री०
चालाक । धूर्त्त । २.
। ३. जादूगर ।
आदि से सम्बन्ध रखने-
)
] १. माया से बना
। (मैजिकल) २ बना-
के कारण या द्वारा उत्पन्न
य या वास्तविक जान
) ४. दे० 'मायावी' ।
१.कामदेव । २.विष । जहर ।
] १. मारने या पीटने
। २. आघात । चोट ।
। ४. मार-पीट ।
।
] १. मार डालनेवाला ।
का प्रभाव दूर या नष्ट
वेग आदि को दबाकर
। (एन्टीडोट)
[अं० मार्क] १. चिह्न ।
अधिकार, स्वामित्व, विशे-
चिह्न । छाप ।
। २. बहुत बड़ी घटना ।
(हिं० मारना + काटना)
का काम या भाव ।
।
] किसी की जन्म-
वह योग जो उसके लिए
है ।
मार्ग] रास्ता ।
मारना = रास्ते में यात्री
मारना ।

मारगन*–पुं० [सं० मार्गण] १. वाण । तीर । २. भिक्षुक । भिखमंगा ।

मारण–पुं० [सं०] १. मार डालना । प्राण लेना । २. एक तान्त्रिक प्रयोग जो किसी को मार डालने के लिए होता है ।

मारतौल–पुं० [पुर्त० मोर्टलो] एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा ।

मारना–स० [सं० मारण] १. चोट पहुँचाने के लिए प्रहार करना । पीटना । २. जीवन का अन्त कर देना । प्राण लेना । ३. कुश्ती में विपक्षी को पछाड़ना । ४. शस्त्र आदि चलाना । प्रहार करना । **मुहा०–गोली मारना** = (क) किसी पर बन्दूक की गोली चलाना । (ख) उपेक्ष्य या तुच्छ समझकर जाने देना । **कुछ पढ़कर मारना** = मन्त्र से फूँककर कोई चीज किसी पर फेंकना । (जादू-टोना) ५. आवेग या मनोविकार आदि रोकना । जैसे–मन मारना । ६. नष्ट कर देना । न रहने देना । ७. शिकार या आखेट करना । ८. वैद्यक या रासायनिक प्रक्रियाओं से धातु आदि फूँककर उनका भस्म तैयार करना । ९. बिना परिश्रम के अथवा बहुत अधिक प्राप्ति करना या अनुचित रूप से दबा रखना । १०. बल या प्रभाव घटाना ।

मार-पीट–स्त्री० [हिं० मारना + पीटना] वह लड़ाई जिसमें लोग मारे और पीटे जायँ ।

मार-पेच–पुं० [सं० मारना + पेच] धूर्त्तता । चालाकी । चालबाजी ।

मारफत–अव्य० [अ०] द्वारा । जरिये से ।

मारा–वि० [हिं० मारना] १. जो मार डाला गया हो । निहत । २. जिसपर मार पड़ी हो । **मुहा०–मारा-मारा फिरना** = बुरी दशा में इधर-उधर घूमना । टक्कर खाना । *स्त्री० = माला ।

मारामार–क्रि० वि० [हिं० मारना] अत्यंत शीघ्रता से । बहुत जल्दी ।

मारी–स्त्री० दे० 'महामारी'।

मारुत–पुं० [सं०] वायु। हवा।

मारुति–पुं०[सं०] १. हनुमान। २. भीम।

मारू–पुं० [हिं० मारना] युद्ध के समय बजाया और गाया जानेवाला एक राग। वि० [हिं० मारना] १. मारनेवाला। २. जान मारनेवाला। ३. हृदय-वेधक।

मारे–अव्य० [हिं० मारना] वजह से।

मार्ग–पुं० [सं०] १. गंतव्य स्थान तक पहुँचने के लिए बीच में पड़नेवाला वह समस्त भू-भाग जिसपर होकर चलना पड़ता है। रास्ता। पथ। (रूट) २. वे साधन, प्रकार आदि जिनका अवलम्बन कोई काम ठीक या पूरा करने के लिए किया जाता हो। रास्ता।

मार्ग-कर–पुं० [सं०] वह कर जो पथिकों से किसी विशेष मार्ग पर चलने के बदले में लिया जाता है। (टोल टैक्स)

मार्गण–पुं० [सं०] १. किसी से कुछ माँगना। याचना। २. ढूँढ़ना। तलाश करना। ३. अच्छी तरह देख-भाल, छान-बीन और पूछ-ताछ करके घटनाओं आदि के कारण और वास्तविक स्वरूप का पता लगाना। अन्वेषण। जाँच। (इन्वेस्टिगेशन)

मार्ग-दर्शक–पुं० दे० 'पथ-दर्शक'।

मार्ग-दर्शन–पुं० दे० 'पथ-दर्शन'।

मार्गन*–पुं० [सं० मार्गण] वाण। तीर।

मार्गशीर्ष–पुं० [सं०] अगहन महीना।

मार्गी–पुं० [सं० मार्गिन्] १. मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। (यौ० के अन्त में; जैसे–वाम-मार्गी) २. यात्री। पथिक।

मार्जन–पुं० [सं०] [वि० मार्जनीय, मार्जित] १. शुद्ध या पवित्र करना। २. अपने आप को पवित्र करने के लिए तीर्थ आदि का जल अपने ऊपर छिड़कना। ३. भूल, दोष आदि का परिहार।

मार्जनी–स्त्री० [सं०] झाड़ू।

मार्जार–पुं० [सं०] [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली।

मार्जित–वि० [सं०] जिसका मा
हुआ हो।

मार्तंड–पुं० [सं०] सूर्य।

मार्दव–पुं० [सं०] १. अहंकार
छोड़ देना। २. दूसरे को दुःखी दे
दुःखी होना। ३. कोमलता। ४. सरल

मार्मिक–वि० [सं०] [भाव० मार्मिक
१. जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े।
प्रभावशाली। २. मर्मज्ञ।

मार्शल लॉ–पुं० [अं०] १. फौजी
२. फौजी कानूनों और अधिक
शासन, जो बहुत कठोर होता है।

माल–स्त्री० [सं० माला] १. माला।
२. वह डोरी जिससे चरखे में का
घूमता है। ३. पंक्ति। कतार।
*पुं० [सं० मल्ल] पहलवान।
पुं० [अ०] १. सम्पत्ति। धन।
मुहा०–माल चीरना या मार
दूसरे की सम्पत्ति या धन दबा बैठ
२. सामान। असबाब।
यौ०–माल-मता = माल-असबाब।
३. क्रय-विक्रय की वस्तुएँ। (गुड्स
कर के रूप में राज्य को मिलनेवाला
या उपज का अंश। ५. उत्तम और
भोजन। ६. कोई अच्छी और ब
चीज। ७. वह द्रव्य जिससे कोई
बनी हो। सामग्री।
*पुं० [सं० मल्ल] पहलवान।

मालकंगनी–स्त्री० [सं० कंकु]
लता जिसके बीजों से तेल निकलता है।

मालखंभ–पुं० [सं० मल्ल + हिं०
१. एक प्रकार का खंभा जिसपर
और उतर कर तरह तरह की कसरतें
जाती हैं। २. वह कसरत जो इस प्रक
खंभे पर की जाती है।

मालखाना–पुं० [फा०] वह
या विभागीय स्थान जहाँ माल-असबाब
रहता हो। भंडार।

४. समूह। झुंड। ५. एक ही प्रकार की वस्तुओं का एक के बाद एक करके चलनेवाला क्रम। (सीरीज) जैसे–पुस्तकमाला।

माला दीपक–पुं० [सं०] दीपक अलंकार का वह प्रकार या भेद जिसमें किसी वस्तु के एक ही गुण या धर्म के आधार पर उत्तरोत्तर अनेक वस्तुओं का सम्बन्ध बतलाया जाता है। जैसे–रस से काव्य, काव्य से वाणी, वाणी से रसिक और रसिक से सभा की शोभा बढ़ती है।

मालामाल–वि० [फा०] बहुत सम्पन्न या धनी।

मालिक–पुं० [अ०] [स्त्री० मालिकिन] १. अधिपति। स्वामी। प्रभु। २. पति।

मालिका–स्त्री० दे० 'माला'।

मालिकाना–पुं० [फा०] स्वामी का अधिकार या स्वत्व। स्वामित्व।

क्रि० वि० मालिकों का-सा।

मालिनी–स्त्री०[सं०] १. माली जाति की स्त्री। मालिन। २. 'सवैया' छन्द का एक नाम।

मालिन्य–पुं० = मलिनता।

मालियत–स्त्री० [अ०] १. बिक्री, लागत आदि के विचार से किसी वस्तु का मूल्य। २. धन सम्पत्ति।

मालिया–पुं० दे० 'मालगुजारी'।

मालिवा*–पुं० दे० 'माल्यवान'।

मालिश–स्त्री० [फा०] मलने की क्रिया या भाव। मलाई। मर्दन।

माली–पुं० [सं० मालिन] [स्त्री० मालिन, मालन, मालिनी] बाग के पौधे आदि सींचने और उनकी रक्षा, वृद्धि आदि करनेवाला व्यक्ति। बागवान।

वि० [सं० मालिन्] [स्त्री० मालिनी] जो माला पहने हो।

वि० [फा०] माल या धन से सम्बन्ध रखनेवाला। आर्थिक।

मालूम–वि० [अ०] जाना हुआ। विदित।

मालोपमा–स्त्री० [सं०] साहित्य में उपमा

अलंकार का एक भेद या प्रकार जिसमें एक उपमेय के (क) एक ही धर्मवाले अथवा (ख) भिन्न-भिन्न धर्मोंवाले अनेक उपमान बतलाये जाते हैं।

माल्य–पुं॰ [सं॰] १. फूल। २. माला।

माल्यवंत–पुं॰ दे॰ 'माल्यवान्'।

माल्यवान्–पुं॰ [सं॰] १. एक पौराणिक पर्वत का नाम। २. एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी से रावण उत्पन्न हुआ था।

मावत*–पुं॰ दे॰ 'महावत'।

मावस*–स्त्री॰ दे॰ 'अमावस'।

मावा–पुं॰ [सं॰ मंड] १. माँड़। २. सत्त। सार। ३. किसी वस्तु की प्रकृति। ४. दूध जलाकर बनाया हुआ खोया।

माविजा–पुं॰ दे॰ 'मुआवजा'।

माशकी–पुं॰ दे॰ 'भिश्ती'।

माशा–पुं॰ [सं॰ माष] ८ रत्ती का प्रसिद्ध मान या तौल।

माशूक–पुं॰ [अ॰] [स्त्री॰ माशूका] प्रेमपात्र। प्रिय।

माष–पुं॰ [सं॰] १. उड़द। २. माशा।
*स्त्री॰ दे॰ 'माख'।

मास–पुं॰ [सं॰] १. वर्ष के बारहवें भाग (प्रायः ३० दिनों) का काल विभाग, जिसका कुछ निश्चित नाम होता है। जैसे—चैत, जनवरी, रमजान। महीना। (मन्थ) २. कहीं से आरम्भ करके तीस दिनों का समय। जैसे—एक मास में यह काम हो जायगा।
पुं॰ दे॰ 'मांस'।

मासना*–अ॰ = मिलना।
स॰ = मिलाना।

मासांत–पुं॰ [सं॰] १. महीने का अन्त या समाप्ति। २. सौर मास की अन्तिम तिथि जिसमें यात्रा तथा कुछ और विशिष्ट कार्य वर्जित होते हैं।

मासिक–वि॰ [सं॰] १. मास सम्बन्धी। महीने का। २. हर महीने में एक बार या महीने-महीने भर पर होनेवाला। (मन्थली) क्रि॰ वि॰ प्रति मास के हिसाब से। (मेन्सम) जैसे—एक रुपये सैकड़े मासिक
पुं॰ १. प्रति मास मिलनेवाला वेतन प्रति मास प्रकाशित होनेवाला पत्र। महीने होनेवाला स्त्रियों का मासिक धर्म। (मेन्सेस)

मासिक धर्म–पुं॰ [सं॰] स्त्रियों का मास रजस्वला होना। मासिक। (

मासी–स्त्री॰ [सं॰ मातृष्वसा] बहन। मौसी।
*स्त्री॰ = माछी (मक्खी)।

माह*–अव्य॰ [सं॰ मध्य] बीच
*पुं॰ [सं॰ माघ] माघ महीना।
पुं॰ [फा॰] मास। महीना।

माहत*–स्त्री॰ = महत्त्व।

माहना*–अ॰ स॰ दे॰ 'उमाहना'

माहला*–वि॰ [हिं॰ मध्य या [स्त्री॰ माहली] १. अन्दर रहने २. हृदय या मन में रहनेवाला।
†वि॰ [स्त्री॰ माहली] बीच का।

माहली–पुं॰ [हिं॰ महल] सेवक अन्तःपुर में रहनेवाला।

माहवार–क्रि॰ वि॰ [फा॰] प्रति
वि॰ हर महीने का। मासिक।

माहवारी–वि॰ [फा॰] हर महीने
स्त्री॰ स्त्रियों का मासिक धर्म।

माहाँ*–अव्य॰ दे॰ 'महँ'।

माहात्म्य–पुं॰ [सं॰] १. महिमा। (विशेषतः धार्मिक) २. आदर।

माहिं*–अव्य॰ [सं॰ मध्य] १. अन्दर। २. अधिकरण कारक का 'में' या 'पर'।

माहिला†–पुं॰ [सं॰ मध्य, माहिं] अन्तर। फरक।
वि॰ [स्त्री॰ माहिली] १. मध्य का। २. अन्दर का। आन्तरिक मँझला।
*पुं॰ दे॰ 'माँझी'।

मिजाज–पुं० [अ०] १. किसी पदार्थ का स्थायी और मूल गुण। प्रकृति। तासीर। २. स्वभाव। प्रकृति। ३. मन की अवस्था। तबीयत।

मुहा०–मिजाज खराब होना = (क) अप्रसन्नता, अरुचि आदि होना। (ख) अस्वस्थ या बीमार होना। **मिजाज पूछना**= तबीयत या स्वास्थ्य का हाल पूछना।

४. अभिमान। घमंड। शेखी।

मुहा०–मिजाज न मिलना = घमंड के कारण किसी से ठीक तरह से व्यवहार न करना।

मिटना–अ० [सं० मृष्ट] १. अंकित चिह्न आदि नष्ट होना। २. न रह जाना।

मिटाना–स० [हिं० 'मिटना' का स०] १. अंकित रेखा, दाग, चिह्न आदि इस प्रकार रगड़ना कि वह न रह जाय। लुप्त करना। २. आज्ञा, निश्चय आदि रद करना। ३. नष्ट या खराब करना।

मिट्टी–स्त्री० [सं० मृत्तिका] १. वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल पर प्रायः सब जगह पाया जाता है। धूल। खाक।

मुहा०–मिट्टी करना = नष्ट या खराब करना। **मिट्टी के मोल** = बहुत सस्ता। **मिट्टी डालना** = (क) उपेक्षापूर्वक जाने देना। (ख) किसी के दोष पर परदा डालना। **मिट्टी में मिलना** = नष्ट या चौपट होना।

पद–मिट्टी का घोंघा = (क) मनुष्य का पार्थिव शरीर। (ख) बहुत बड़ा मूर्ख या नासमझ।

यौ०–मिट्टी खराबी = दुर्दशा। दुर्गति

२. शरीर। बदन।

मुहा०–मिट्टी पलीत या बरबाद करना = दुर्दशा करना।

३. मृत शरीर। शव। लाश। ४. शारीरिक गठन या बनावट।

मिट्टी का तेल–पुं० [हिं० मिट्टी + तेल]

एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जो दीपक, लालटेन आदि जलाने के काम आता है।

मिठू–पुं० [हिं० मीठा + ऊ (प्रत्य०)] १. मीठा बोलनेवाला। २. तोता।
वि० चुप रहनेवाला।

मिठ-बोला–पुं० [हिं० मीठा + बोलना] १. मधुर-भाषी। २. वह जो केवल दिखाने के के लिए मीठी-मीठी बातें करता हो।

मिठ-लोना–पुं० [हिं० = कम + नोन] जिसमें नमक कम या थोड़ा हो।

मिठाई–स्त्री० [हिं० मीठा + आई(प्रत्य०)] १.मीठापन। मिठास। माधुरी। २. विशेष प्रकार से बनी हुई खाने की मीठी चीज।

मिठाना–अ० [हिं० मीठा] मीठा होना।

मिठास–स्त्री० [हिं०मीठा + आस(प्रत्य०)] मीठा होने का भाव। माधुर्य्य।

मितंग*-पुं० दे० 'हाथी'।

मित–वि० [सं०] १. जिसकी सीमा बँधी हो। परिमित। २. नियत या उचित सीमा के अन्दर। जैसे–मितव्यय, मिताहार। ३. थोड़ा। कम।

मित-भाषी–पुं० [सं० मितभाषिन्] कम या थोड़ा बोलनेवाला।

मितव्यय–पुं० [सं०] [भाव० मितव्ययता] कम खर्च करना। किफ़ायत।

मितव्ययी–पुं० [सं० मितव्ययिन्] थोड़ा या कम खर्च करनेवाला।

मिताई*–स्त्री० = मित्रता।

मिति–स्त्री० [सं०] १. मान। परिमाण। २. सीमा। हद। ३. अवधि।

मिती–स्त्री० [सं० मिति] चान्द्र मास की तिथि जो प्रत्येक पक्ष में १ से १५ तक होती है।

मिती-काटा–पुं० [हिं० मिती + काटना] एक-एक दिन और एक-एक रकम का सूद जोड़ने का एक महाजनी सहज ढंग।

मित्त*–पुं० = मित्र।

मित्र–पुं० [सं०] १. वह जो सब बातों में सहायक और शुभ-चिन्तक हो। सखा। दोस्त। २. सूर्य। ३. आर्यों के एक प्राचीन देवता।

मित्रता–स्त्री० [सं०] मित्र होने या धर्म्म। दोस्ती।

मित्राई*–स्त्री० = मित्रता।

मिथिला–स्त्री० [सं०] आज तिरहुत प्रदेश का पुराना नाम।

मिथुन–पुं० [सं०] १. स्त्री और वर और बधू का जोड़ा। २. मेल। ३. मेष, सिंह आदि बारह से तीसरी राशि। (जेमिनी)

मिथ्या–वि० [सं०] [भाव० मि १. जो सत्य, तथ्य या वास्तविकता सार न हो। असत्य। झूठ। २. कोई उचित आश्रय या ठीक हो। जैसे–मिथ्या अभिमान। (

मिथ्याचार–पुं० [सं०] कपटपूर्ण

मिथ्याध्यवसिति–स्त्री० [सं०] में एक अलंकार जिसमें किसी मिथ्यात्व सिद्ध करने के लिए बढ़कर किसी और मिथ्या बात का लिया जाता है। जैसे–'उनकी दान की प्रशंसा तो मैंने कई गूँगों से थी', में गूँगों से सुनने की चर्चा सिद्ध किया गया है कि उनमें थी ही नहीं।

मिथ्याभास–पुं० [सं०] जो बात वास्तव में जैसी हो, उसके उससे उलटी दिखाई पड़ना। स्थिति के विरुद्ध होनेवाला (पैराडॉक्स)

मिथ्यावादी–पुं० [सं०] [स्त्री० मि वादिनी] झूठ बोलनेवाला। झूठा।

मिदुराना*–अ० [सं० मृदु] मधुर होना। कोमल होना।

मिनकना†–अ० [मिनमिन से अनु० बहुत ही दबकर या धीरे से कुछ बोल

मिरचा–पुं० दे० 'लाल मिर्च'।

मिरजई–स्त्री० [फा० मिरज़ा] एक प्रकार की बन्ददार कुरती।

मिरजा–पुं० [अ०] मुसलमानों में शाहजादों आदि की एक उपाधि।

मिरदंग–पुं = मृदंग।

मिरदंगी–स्त्री०[सं०मृदंग] १. छोटा मृदंग। २. एक प्रकार की आतिशबाजी जो मृदंग के आकार की होती है। ३. एक प्रकार का शीशे का आधार, जिसमें मोमबत्ती जलती है।

मिरियास*–स्त्री० दे० 'मीरास'।

मिर्च–स्त्री० [सं० मरिच] १. एक प्रकार की कड़ुई फली जो व्यंजनों में मसाले की तरह पड़ती है। लाल मिर्च। २. उक्त की तरह काम आनेवाला एक प्रसिद्ध काला, छोटा दाना। गोल मिर्च। काली मिर्च।

मिल–स्त्री० [अं०] १. अनाज, गल्ले या दाने आदि पीसने की चक्की जो भाप या बिजली आदि की सहायता से चलती हो। २. रूई ओटने, सूत कातने और कपड़ा बुनने आदि का कारखाना।

मिलक†–स्त्री० [अ० मिल्क] १. जमीन-जायदाद। २. जागीर।

मिलकना*–अ० [?] जलना।

मिलन–पुं० [सं०] मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। भेंट।

मिलनसार–वि० [हिं० मिलन + सार (प्रत्य०)] [भाव० मिलनसारी] सबसे अच्छी तरह मिलने-जुलनेवाला।

मिलना–अ० [सं० मिलन] १. दो अलग-अलग पदार्थों का सम्मिलित या मिश्रित होकर एक होना।

यौ०–मिला-जुला = (क) सम्मिलित। (ख) मिश्रित।

२. समुदाय या समूह में समा जाना। ३. साथ लगना। सटना।

मुहा०–गले मिलना = आलिंगन करना।

गले लगना।
४. बहुत कुछ समान होना। ५. सामना, भेंट या मुलाकात करना।
स० प्राप्त या हस्तगत होना।

मिलनी–स्त्री० [हिं० मिलना] विवाह की एक रसम जिसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलकर उन्हें कुछ धन देते हैं।

मिलवना*–स० = मिलाना।

मिलवाना–स० [हिं० 'मिलना' का प्रे०।

मिलाई–स्त्री० [हिं० मिलाना] १. मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २. भेंट। मुलाकात। (जेल के कैदियों से)

मिलान–पुं० [हिं० मिलाना) १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. तुलना। मुकाबला। ३. ठीक होने की वह जाँच जो सम्बद्ध वस्तुओं को मिलाकर की जाय। *४. लोगों के पहुँचकर मिलने का उद्दिष्ट स्थान या पड़ाव।

मिलाना–स० [सं० मिलन] [भाव० मिलाई, मिलावट] १. एक चीज में कोई दूसरी चीज या चीजें डालकर सबको एक करना। सम्मिलित या मिश्रित करना। २. जोड़ना। ३. तुलना करना। मुकाबला करना। ४. ठीक होने की जाँच करना। ५. भेंट या परिचय कराना। ६. अपने पक्ष में करना। साथी बनाना। ७. बजाने से पहले बाजों के सुर ठीक करना।

मिलाप–पुं० [हिं० मिलना + आप(प्रत्य०)] मिलने की क्रिया या भाव। मेल।

मिलावट–स्त्री० [हिं० मिलाना] १. मिलाये जाने का भाव। मिश्रण। २. बढ़िया चीज में घटिया चीज का मिश्रण। ३. वह चीज जो इस प्रकार मिलाई जाय। मल। खोट।

मिलिंद–पुं० [सं०] भौंरा।

मिलिक*–स्त्री० दे० 'मिलक'।

मिलित–वि० [सं०] मिला हुआ। युक्त।

मिलोना–स० [हिं० मिलाना] १. 'मिलाना'। २. गौ दुहना।

मिलौनी–स्त्री० दे० 'मिलाई'।

मिल्कियत–स्त्री० [अ०] १. मालि स्वामी होने का अधिकार या २. वह वस्तु, सम्पत्ति आदि मालिकों का,सा या स्वामित्व का हो। ३. धन-सम्पत्ति। जायदाद।

मिल्लत–स्त्री० [हिं० मिलन] जोल। मिलाप। २. मिलनसारी। स्त्री० [अ०] धार्मिक सम्प्रदाय।

मिशन–पुं०[अं०] १. किसी विशिष्ट लिए कुछ व्यक्तियों का जाना या भेजा २. इस प्रकार भेजे जानेवाले लोग। धर्म-प्रचारकों का धर्म-प्रचार के जाना। ४. उक्त का निवास-स्थान।

मिशनरी–पुं० [अं०]ईसाई धर्म- वि० मिशन सम्बन्धी। मिशन का।

मिश्र–वि० [सं०] १. एक में मिलाया हुआ। मिश्रित। २. संयुक्त पुं० कुछ ब्राह्मणों के वर्ग की उपाधि

मिश्रक–वि० [सं०] मिश्रण मिलानेवाला।
पुं० वह जो ओषधियों आदि का करके औषध तैयार करता है। बनानेवाला। (कम्पाओन्डर)

मिश्रण–पुं० [सं०] [वि० मि मिश्रणीय] १. कुछ वस्तुओं को मिलाने की क्रिया या भाव। (एलॉय) २. वह तरल औषध ओषधियों के मेल से बना हो।

मिश्र-धातु–स्त्री० [सं०] कई के योग या मिश्रण से बनी हुई (एलॉय) जैसे–पीतल या जरमन-

मिश्र वाक्य–पुं० [सं०] व्याकरण तीन प्रकार के वाक्यों में से एक, बहुत छोटा होता है और न बहुत बड़ा जिसमें मुख्य बात तो एकही रहती है,

छोटी-मोटी बातें भी
(काम्प्लेक्स सेन्टेन्स)
] एक में मिले हुए।
] १. छल। कपट। २.

] मीठा। मधुर।
दे० 'मधुर-भाषी'।
] मिठाई।
] १. बहाना। हीला।
आडंबर।
] बिना ब्याही। कुमारी।
[अनु० या फा० मिस-
प्रकार धीरे-धीरे बोलना कि
शब्द सुनाई पड़े। मिन-

दे० 'मिस्की'।
[अ० मिस्कीन] [भाव०
] १. बेचारा। दीन। २.

[अ० मिस्कीन+
)] १. दरिद्रता। गरीबी।
दीनता। उदा०—लाभ जोग
मिसकीनता।—तुलसी।
अ० = मिलना।
का अ०।
[अ० मिसरऽ] उर्दू-फारसी
कोई चरण या पद।
[मिस्र देश से] १. मिस्र
२. साफ करके जमाई
रवेदार चीनी।
का।
का निवासी।
[हिं० मिस] १. बहाने-
। ढोंगी।
[अ०] १. उपमा। २.
कहावत।
[अ०] समान। तुल्य।
या मुकदमे से सम्बन्ध

रखनेवाले सब कागज-पत्रों की नत्थी।

मिस्की–स्त्री० [हिं० मिसकना] १. धीरे-धीरे बोलने या मिनमिनाने की क्रिया या भाव। २. गाने का वह ढंग जिसमें पूरी तरह से गला खोलकर और ऊँचे स्वर से नहीं, बल्कि बहुत धीरे से और धीमी आवाज से गाते हैं। साँसी।

मिस्कोट–पुं० [अं० मेस] १. भोजन। २. गुप्त परामर्श।

मिस्तरी–पुं० [अं० मास्टर] वह जो मकान, काठ, धातु आदि के सामान बनाने अथवा यन्त्रों आदि की मरम्मत करने का अच्छा कारीगर हो।

मिस्री–स्त्री० दे० 'मिसरी'।

मिस्ल–वि० दे० 'मिसिल'।

मिस्सा–पुं० [हिं० मीसना] कई तरह की दालें आदि एक में पीसकर बनाया हुआ आटा।

मिस्सी–स्त्री० [फा० मिसी = ताँबे का] एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो स्त्रियाँ दातों में लगाती हैं।

मिहचना*–स० दे० 'मीचना'।

मिहानी*–स्त्री० दे० 'मथानी'।

मिहिर–पुं०[सं०] १. सूर्य्य। २. चन्द्रमा।

मिहीं*–वि० दे० 'महीन'।

मींगी–स्त्री० दे० 'गिरी'।

मींजना†–स० [हिं० माँड़ना] हाथों से मलना। मसलना।

मींडक*–पुं० दे० 'मेंढक'।

मींडना–स० [सं० मृण् या मर्दन] १. हाथों से मलना। मसलना। २. कुचलना या रौंदना। मर्दन करना। ३. दे० 'माँड़ना'।

मीआद–स्त्री० दे० 'मीयाद'।

मीच–स्त्री० [सं० मृत्यु] मौत।

मीचना–स० दे० 'मूँदना'।

मीचु*–स्त्री० [सं० मृत्यु] मौत।

मीजान–स्त्री० [अ०] संख्याओं का योग।

जोड़। (गणित)

मीटर–पुं० [अं०] १. वह यन्त्र जिससे नल में से गुजरनेवाले पानी, बिजली के तार में से गुजरनेवाली बिजली या किसी चलनेवाली चीज की गति आदि नापी जाती है। माप-यन्त्र। २. लम्बाई की एक नाप जो ३९. ३७ इंचों की होती है।

मीठा*–वि० [सं० मिष्ट] [स्त्री० मीठी] १. जिसमें चीनी या शहद आदि का-सा स्वाद हो। मधुर। २. स्वादिष्ट। ३. प्यारा। प्रिय। ४. अच्छा। भला। ५. धीमा। सुस्त। ६. हलका। मद्धिम। मन्द।

पुं० १. मिठाई। २. गुड़।

मीठी छुरी–स्त्री० [हिं० मीठी + छुरी] ऊपर से मित्र बनकर अन्दर-अन्दर घात या द्रोह करनेवाला। विश्वास-घातक।

मीत–पुं० [सं० मित्र] १. मित्र। दोस्त। २. पति। ३. प्रेमी।

मीन–पुं० [सं०] [भाव० मीनता] १. मछली। २. बारह राशियों में से अन्तिम जिसमें पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र और उत्तर भाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र हैं। (पिसेस)

मीनकी–स्त्री० [सं० मीन] मछलियों का पालन-पोषण या संवर्द्धन करने की क्रिया या विद्या। (फिशरी)

मीन क्षेत्र–पुं० [सं०] १. वह क्षेत्र जिसमें मछलियाँ विशेष रूप से सुरक्षित रखकर पाली जाती हैं और उनकी नसल बढ़ाई जाती है। २. वह राजकीय विभाग जिसके अधीन मछलियों के पालन-पोषण, संवर्द्धन, क्रय-विक्रय, निर्यात आदि की व्यवस्था होती है। (फिशरीज)

मीन-मार्ग–पुं० [सं०] मोक्ष प्राप्त करने के लिए हठ-योग की साधना का मार्ग, जो उसी प्रकार गुप्त रहता है, जिस प्रकार पानी के अन्दर मछली के चलने का मार्ग गुप्त रहता है।

मीन-मेख–पुं० [सं० मीन + मेष (राशियाँ)] १. सोच-विचार। आगा-पीछा। अ मंजस। २. दूसरे के किये हुए कामों छोटे-मोटे दोष ढूँढ़ना।

मीना–पुं० [देश०] राजपूताने की ए प्रसिद्ध योद्धा जाति।

पुं० [फा०] १. सोने-चाँदी आदि किया जानेवाला एक प्रकार का रंग-बि काम। २. शराब रखने का कंटर।

मीनाकारी–स्त्री० [फा०] [कर्त्ता मीना सोने या चाँदी पर होनेवाला मीना।

मीना बाजार–पुं० [फा०] बहुत और सजा हुआ बढ़िया बाजार।

मीनार–स्त्री० [अ० मनार] बहुत और गोलाकार स्तम्भ। लाट। धरहरा

मीनाशय–पुं० [सं०] नदी या स से मछलियाँ या इसी प्रकार की उपयोगी चीजें निकालने का काम। (फि

मीमांसक–पुं० [सं०] १. किसी मीमांसा या विवेचन करनेवाला। २. मी शास्त्र का ज्ञाता।

मीमांसा–स्त्री० [सं०] १. अनुमान तर्क-वितर्क से यह निश्चय करना कि बात वास्तव में कैसी है। २. हिन्दु छः दर्शनों में से पूर्व मीमांसा और मीमांसा नामक दो दर्शन।

मीयाद–स्त्री० [अ०] किसी लिए नियत समय। अवधि।

मीयादी–वि० [अ०] जिसकी कु या अवधि निश्चित हो। जैसे-मि मीयादी बुखार।

मीयादी बुखार–पुं० दे० 'मोतीझरा'।

मीर–पुं० [फा०] १. सरदार। २. मुसलमानों में सैयद जाति की उपाधि। ३. वह जो प्रतियोगिता काम सबसे पहले करे।

मीरग (गा)*–पुं० = मृग।

मीराँता–स्त्री० दे० 'मीराथ'।

मीरा–पुं० [अ० मीर] १. प्रधान।

मुंडमाली–पुं० [सं०] शिव ।

मुंडमालिनी–स्त्री० [सं] कालिका या काली नाम की देवी ।

मुंडा–पुं० [सं० मुंडी] [स्त्री० मुंडी] १. वह जिसके सिर के बाल न हों या मुँड़े हुए हों । २. साधु या योगी । ३. वह पशु जिसके सींग न निकले हों । ४. वह जिसके ऊपरी अथवा इधर-उधर के अंग न हों । ५. कोठीवाली या महाजनी लिपि, जिसमें मात्राएँ नहीं होतीं । ६. एक प्रकार का जूता ।

स्त्री० भाषा-विज्ञान के अनुसार कुछ विशिष्ट अनार्य बोलियों का एक वर्ग जिसके अन्तर्गत निषाद, शबर, उराँव आदि बोलियाँ हैं ।

मुँडाई(ड़ाई)–स्त्री० [हिं० मूँड़ना] मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

मुँडाना(ड़ाना)–स० [सं० मुंडन] मुंडन कराना । जैसे–सिर मुँडाना ।

अ० १. मूँडा जाना । मुँडना । २. धोखे में आकर कुछ धन गँवाना । ३. किसी की अधीनता, शिष्यता आदि ग्रहण करना ।

मुँड़ासा–पुं० [हिं० मूड़] पगड़ी । साफा ।

मुंडित–वि० [सं०] जिसका मुंडन हुआ हो । जैसे–मुंडित मस्तक ।

मुँडेरा–पुं० [हिं० मूँड + एरा (प्रत्य०)] छत की दीवार का ऊपरी उठा हुआ भाग ।

मुँदना–अ० [सं० मुद्रण] १. खुली रहनेवाली या खुली हुई वस्तु का बंद होना । २. छिपना ।

मुँदरा–पुं० [सं० मुद्रा] १. योगियों के कान का एक प्रकार का कुंडल । २. कान का एक आभूषण ।

मुँदरी–स्त्री० दे० 'अँगूठी' ।

मुंशी–पुं० दे० 'मुनशी' ।

मुँह–पुं० [सं० मुख] १. वह अंग जिससे प्राणी बोलते और भोजन करते हैं । २. मनुष्य का उक्त अंग ।

मुहा०–मुँह आना = गरमी या आतशक

के रोगी के मुँह में छाले पड़ना और मुँह सूजना । **मुँह खुलना** = बढ़-बढ़कर बोलने की आदत पड़ना । **मुँह चलना** = (क) भोजन होना । खाया जाना । (ख) मुँह से बहुत बातें निकलना । **मुँह चिढ़ाना** = किसी का उपहास करने के लिए उसकी आकृति, हाव-भाव, कथन आदि को बिगाड़कर नकल करना । **मुँह छूना** = नाम मात्र के लिए या ऊपरी मन से कहना । **मुँह-पेट चलना** = कै-दस्त का रोग या हैजा होना । **मुँहबाँधकर बैठना** = चुप-चाप बैठना । **मुँह भरना**=किसी को घूस देना । **किसी का मुँह मीठा करना या कराना** = (क) प्रसन्न होकर मिठाई खिलाना । (ख) पुरस्कार, घूस आदि देकर प्रसन्न करना । **मुँह में खून या लहू लगना** = किसी प्रकार के लाभ का चसका लगना या चाट पड़ना । **मुँह में पानी भर आना** = कुछ पाने के लिए ललचना । **मुँह में लगाम न होना** = बिना सोचे-समझे बोलने की आदत होना । **मुँह सीना** = (क) बोलने से रुकना । (ख) बोलने से रोकना । **मुँह से फूल झड़ना** = मुँह से बहुत मधुर या प्रिय बातें निकलना ।

पद०—आपके मुँह में घी शक्कर = (क) आपकी शुभ कामना पूरी हो । (ख) ईश्वर करे आपका यह कहना सच हो ।

२. सिर का अगला भाग जिसमें माथा, आँखें, नाक, मुँह, कान, गाल आदि अंग होते हैं । चेहरा ।

मुहा०—अपना-सा मुँह लेकर रह जाना = लज्जित होकर रह जाना । **(अपना) मुँह काला करना** = (क) व्यभिचार करना । (ख) अपनी बदनामी करना । **(दूसरे का) मुँह काला करना** = उपेक्षापूर्वक दूर करना या हटाना । **मुँह की खाना** = अपमानित या लज्जित होना । **मुँह के बल गिरना** = बहुत धोखा खाना । **मुँह छिपाना** = लज्जा
कारण सामने न आना । (**किसी का**
मुँह ताकना = (क) आशा लगा
किसी की ओर देखना । (ख) चकित हो
किसी की ओर देखना । **मुँह ताकना**
कुछ न कर सकने के कारण चुपचाप
रहना । **मुँह धो रखना** = कुछ
की आशा छोड़ बैठना । **मुँह पर**
सामने । **मुँह फुलाना** = अप्रसन्न
प्रकट करनेवाली आकृति बनाना ।
फूँकना या झुलसना = मुँह में
लगाना । (गाली) (**किसी के**)
लगना = (क) बड़ों के सामने बढ़-ब
या अनुचित बातें करना । (ख) बड़ों
बातों का उत्तर देना । (**किसी चीज**
मुँह लगना = (क) किसी ची
खाया जाना । (ख) किसी चीज का
इतना स्वादिष्ट लगना कि उसका
पड़ जाय । (**किसी को**) **मुँह लगा**
ढीठ बनाना । सिर चढ़ाना । (कि
चीज में) **मुँह लगाना** = कोई
खाना आरम्भ करना । **मुँह सूखना**
भय या लज्जा से चेहरे का तेज नष्ट हो
४. किसी पदार्थ का ऊपरी कुछ
हुआ भाग । ५. छेद । छिद्र । ६.
या सम्बन्ध का ध्यान । मुलाहजा ।
मुहा०—मुँह देखने का = दो
न हो । केवल ऊपरी या दिखौआ ।
मुलाहजे का = वह परिचित जिसके
शीलपूर्ण व्यवहार करना पड़ता हो ।
७. सामने की या ऊपरी सतह । सामने

मुँह-अखरी*-वि० दे० 'जबानी' ।

मुँह-काला-पुं० [हिं० मुँह + काला]
अप्रतिष्ठा । बेइज्जती । २. बदनामी ।

मुँहचंग-पुं० दे० 'मुरचंग' ।

मुँह-चोर-वि० [हिं० मुँह + चोर]
औरों के सामने जाने में हिचकता हो ।

मुँह-छुट-वि० दे० 'मुँह-फट' ।

[हिं० मुँह + जोर] १.
ला। बकवादी। २.
(घोड़ा) लगाम का
ठीक तरह से सवार के
ता।

स्त्री० = मुँह-दिखाई।
[हिं० मुँह + दिखाना]
सुराल में नई वधू के आने
जिसमें वर-पक्ष के लोग वधू
। मुँह देखनी। २. वह धन
पर वधू को दिया जाता है।
देखरावनी)—स्त्री० = मुँह-

[हिं० मुँह + देखना]
] केवल सामना होने पर
वाला (व्यवहार)।
[हिं० मुँह + फटना] अनु-
बातें कहने में संकोच न

[हिं० मुँह + बोलना]
जो वास्तव में न होने पर
कर बनाया गया हो। जैसे–
।

[हिं० मुँह + माँगना]
हुआ। मनोनुकूल।
[हिं० मुँह + चाहना =
में एक दूसरे को देखना।

[हिं० मुँह] मुँह पर के वे
में निकलते हैं।
[अ०] [भाव० मुअत्तली]
अभियोग लगने पर जाँच
तक के लिए अपने पद
हो।

[अ०] [भाव० मुआफि-
। २. सदृश। समान।
= निरीक्षण।
[अ०] १. बदला।

पलटा। २. हानि आदि के बदले में मिलनेवाला धन। प्रतिकर। (कम्पेन्सेशन)

मुकतई*–स्त्री [सं० मुक्त] १. मुक्ति। २. छुटकारा।

मुकता–वि० [हिं० अ + मुकता = समाप्त होना] [स्त्री० मुकती] बहुत अधिक। यथेष्ठ। ('अमुकता' का विकृत रूप)
*स्त्री० [सं० मुक्ता] मोती।

मुकताफल(हल)–पुं० [सं० मुक्ताफल] मोती।

मुकतालो–स्त्री० दे० 'मुक्तावली'।

मुकति*–स्त्री० दे० 'मुक्ति'।

मुकदमा–पुं० [अ० मुक़द्दमाः] १. अभियोग, अपराध, अधिकार या लेन-देन आदि से सम्बन्ध रखनेवाला वह विवाद जो न्यायालय के सामने किसी पक्ष की ओर से विचार के लिए रखा जाय। अभियोग। (केस) २. दावा। नालिश। ३. ग्रन्थ की भूमिका।

मुकदमेबाज–पुं० [अ० मुकदमा + फा० बाज (प्रत्य०)] [भाव० मुकदमेबाजी] वह जो प्रायः मुकदमें लड़ता रहता हो।

मुकद्दमा–पुं० दे० 'मुकदमा'।

मुकना*–अ० [सं० मुक्त] १. मुक्त होना। छूटना। २. समाप्त होना। खतम होना।

मुकम्मल–वि० [अ०] पूरा किया हुआ। पूर्ण। (कार्य)

मुकरना–अ० [सं० मा = नहीं + करना] कोई बात कहकर उससे इनकार करना या पीछे हटना। नटना।
वि० पुं० [हिं० मुकरना] कोई बात कहकर उससे इन्कार कर जानेवाला।

मुकरबा*–पुं० दे० 'मकबरा'।

मुकरवा†–पुं० दे० 'मुकरा'।

मुकरा–पुं० [हिं० मुकरना] वह जो कोई बात कहकर उससे फिर जाता हो। मुकरनेवाला।

मुकराना–स० [सं० मुक्त] १. मुक्त कराना। छुड़ाना। उदा०–ग्राह गहे गजपति मुकरायौ, हाथ चक्र ले धायौ।—सूर।

स॰ हिं॰ 'मुकरना' का प्र॰।

मुकरानी-स्त्री॰ दे॰ 'मुकरी'।

मुकरी-स्त्री॰ [हिं॰ मुकरना + ई (प्रत्य॰)] वह कविता जिसमें पहले कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही बात बनाकर कही जाय। कह-मुकरी। साहित्य में यह छेका-पह्नुति अलंकार है। जैसे—सगरि रैन वह मोंह सँग जागा, भोर भई तब बिछुरत लागा। वाके बिछुरत फाटत हिया, कहु सखि साजन, ना सखि दिया।—खुसरो।

मुक़र्रर-वि॰ [अ॰] [भाव॰ मुकर्ररी] १. निश्चित। नियत। २. नियुक्त।

मुकलाना*-स॰ [सं॰ मुक्त या मुकलित?] १. खोलना। २. छोड़ना।

मुकाना*-स॰ [सं॰ मुक्त] १. मुक्त कराना। छुड़ाना। २. समाप्त या खतम करना।

*अ॰ दे॰ 'मुकना'।

मुकाबला-पुं॰ [अ॰] १. सामना। २. मुठभेड़। ३. तुलना। ४. मिलान। ५. विरोध।

मुकाबिल-क्रि॰ वि॰ [अ॰] सम्मुख। सामने।

पुं॰ १. प्रतिद्वन्द्वी। २. शत्रु। वैरी।

मुकाम-पुं॰ [अ॰] १. स्थान। जगह। २. यात्रा करते समय मार्ग में ठहरने की क्रिया या स्थान। ३. अवसर। मौका।

मुकामी-वि॰ दे॰ 'स्थानीय' या 'स्थानिक'।

मुकाला-पुं॰ दे॰ 'मुँह-काला'।

मुकित*-वि॰ = मुक्त।

मुकुंद-पुं॰ [सं॰] विष्णु।

मुकुट-पुं॰ [सं॰] देवताओं, राजाओं आदि के सिर पर रहनेवाला एक प्रसिद्ध शिरोभूषण।

मुकुत*-वि॰ = मुक्त।

मुकुता*-पुं॰ दे॰ 'मुक्ता'।

मुकुति*-स्त्री॰ = मुक्ति।

मुकुर-पुं॰ [सं॰] १. शीशा। दर्पण। २. कली।

पुं॰ दे॰ 'मुकरा'।

मुकुल-पुं॰ [सं॰] [वि॰ मुकुलित] १. कली। २. शरीर। ३. आत्मा।

मुकुलित-वि॰ [सं॰] १. (पौधा) जिसमें कलियाँ निकली हों। २. कुछ खि हुई (कली)। ३. आधा खुला और आ बन्द। (फूल, नेत्र आदि)

मुकेश*-पुं॰ दे॰ 'मुक्कैश'।

मुक्का-पुं॰ [सं॰ मुष्टिका] [स्त्री॰ अल्पा मुक्की] आघात या प्रहार के लिए बाँधी मुट्ठी। घूँसा।

+पुं॰ दे॰ 'मोखा'।

मुक्की-पुं॰ [हिं॰ मुक्का + ई (प्रत्य॰) १. मुक्का। घूँसा। २. एक प्रकार का युद्ध जिसमें एक दूसरे पर मुक्कों से प्र किया जाता है। मुक्केबाजी। (बाक्सि ३. बँधी मुट्ठियों से किसी के शरीर उसकी थकावट दूर करने के लिए, धीरे आघात करना।

मुक्केबाजी-स्त्री॰ [हिं॰ मुक्का + फा॰ (प्रत्य॰)] मुक्कों की लड़ाई। घूँसेबा मुक्की। (बाक्सिंग)

मुक्कैश-पुं॰ [अ॰] १. बादला। २. का बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।

मुक्त-वि॰ [सं॰] १. जिसे मुक्ति मिल हो। २. बन्धन से छूटा हुआ। ३. अभियोग आदि चलने पर छोड़ दिया हो। (रिलीज्ड)। ४. बन्धन-र स्वच्छन्द। (फ्री) ५. चलाने के लिए छोड़ा या फेंका हुआ।

मुक्त-कंठ-वि॰ [सं॰] बिलकुल स्पष्ट से, बिना किसी संकोच या दबाव के कृतज्ञतापूर्वक कहा हुआ। जैसे-मुक्त-कं से प्रशंसा करना।

मुक्तक-पुं॰ [सं॰] फुटकर या कई प्रकार के विषयों की कविता।

मुक्त व्यापार-पुं॰ [सं॰] १. दूसरे देशों के साथ होनेवाला ऐसा व्यापार जिसमें आयात और निर्यात संबंधी विशेष बाधाएँ न हों।

मुख-चित्र–पुं० [सं०] किसी पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर या बिलकुल आरम्भ में दिया हुआ चित्र।

मुखड़ा–पुं० [सं० मुख] मुख। चेहरा। (सुन्दरता का सूचक)

मुखतार–पुं० [अ०] [भाव० मुखतारी] १. जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करने के लिए नियत किया हो। २. एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और कार्यकर्त्ता। अधिकर्त्ता।

मुखतारनामा–पुं० [अ० मुखतार + फा० नामः] वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने का अधिकार मिला हो। अभिकर्त्तापत्र।

मुखतारी–स्त्री० [अ० मुखतार] १. मुखतार का काम, पेशा या भाव। २. एक प्रकार के कानूनी सलाहकार बनने की परीक्षा जो अब बन्द हो गई है।

मुख-पत्र–पुं० [सं०] किसी संस्था या दल की ओर से निकलनेवाला वह सामयिक पत्र जिसमें उसके विचारों, सिद्धान्तों, उद्देश्यों आदि का प्रतिपादन होता है। (ऑर्गन)

मुखपात्र–पुं० [सं०] वह जिसकी आड़ में रहकर कोई काम किया जाय।

मुख-पृष्ठ–पुं० [सं०] किसी पुस्तक में सबसे ऊपर का पृष्ठ। पहला आवरण-पृष्ठ। (टाइटिल पेज)

मुखबंध–पुं० [सं०] ग्रन्थ की प्रस्तावना।

मुखबिर–पुं० [अ०] [भाव० मुखबिरी] खबर देनेवाला जासूस। गोइन्दा।

मुखबिरी–स्त्री०[हिं० मुखबिर+ई (प्रत्य०)] गुप्त रूप से भेद देना। मुखबिर का काम।

मुख-भेड़*–स्त्री० दे० 'मुठ-भेड़'।

मुखर–वि० [सं०] [स्त्री० मुखरा, वि० मुखरित] १. अप्रिय या कटु बोलनेवाला। २. बहुत बोलनेवाला। ३. दे० 'मुखरित'।

मुखरित–वि० [सं०] शब्दों या ध्वनियों से युक्त। बोलता हुआ।

मुख-शुद्धि–स्त्री० [सं०] १. मुँह साफ करना। २. भोजन के बाद पान, सुपारी आदि खाकर मुँह शुद्ध करना।

मुख-संधि–स्त्री० दे० 'मुख' ४.।

मुखाग्र–वि० [सं०] जो जबानी याद हो। कण्ठस्थ।

मुखापेक्षा–स्त्री० [सं०] [वि० मुखापेक्षी] आश्रित रूप में दूसरों का मुँह ताकना।

मुखापेक्षी–पुं० [सं०] वह जो आश्रय, सहायता आदि के लिए दूसरों का मुँह ताकता हो।

मुखारी–स्त्री० [सं० मुख] १. चेहरे की बनावट। मुखाकृति। किसी वस्तु का वह ऊपरी या सामने का भाग जो रूप, आकार-प्रकार आदि का सूचक हो। (फेस) जैसे–छापे में सीसे के अक्षरों की मुखारी जो अक्षर के स्वतंत्र रूप या लेख-प्रकार की सूचक होती है। २. दे० 'दतुअन'।

मुखालिफ–वि० [अ०] [भाव० मुखालिफत] १. विरोधी। २. शत्रु। ३. प्रतिद्वंद्वी।

मुखिया–पुं० [सं० मुख्य + इया (प्रत्य०)] १. नेता। सरदार। २. अगुआ।

मुखौटा–वि० [सं० मुखपट] धातु आदि का बना हुआ मुख के आकार का वह खंड जो देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के मुख पर लगाया जाता है। चेहरा।

मुख्तसर–पुं० [अ०] १. संक्षिप्त। २. अल्प। थोड़ा।

मुख्तार–पुं० = मुखतार।

मुख्य–वि० [सं०] [भाव० मुख्यता] १. सबसे बड़ा, ऊपर या आगे रहनेवाला। प्रधान। (प्रिंसिपल) २. जिसमें औरों की अपेक्षा बहुत अधिक विशेषता या महत्त्व हो। अधिक महत्त्ववाला। ३. अपने वर्ग या विभाग में सबसे बड़ा या प्रधान। (चीफ) जैसे–मुख्य न्यायाधीश। (चीफ जस्टिस) मुख्य अधिकारी (चीफ आफिसर)

मुख्यतः–क्रि० वि० [सं०] मुख्यरूप खास तौर पर।

मुख्यावास–पुं० [सं०] वह मुख्य प्रधान स्थान जहाँ कोई बड़ा अधि नियमित रूप से रहता हो और जहाँ उस सबसे बड़ा कार्यालय हो। (हेडक्वार्टर)

मुगदर–पुं० [सं० मुद्गर] वह मुँगरी का जोड़ा जिसका उपयोग व्याय के लिए होता है। जोड़ी।

मुगल–पुं० [फा०] [स्त्री० मुग १. मंगोल देश का निवासी। २. तु एक वर्ग जो तातार देश में रहता था।

मुगलई–वि० [सं० मुग़ल] मुगलो तरह का।

स्त्री० मुगल होने का भाव। मुगलपन।

मुगलाई–वि० स्त्री० दे० 'मुगलई'।

मुगलानी–स्त्री० [हिं० मुगल] १. स्त्री। २. दासी। ३. कपड़ों की करनेवाली स्त्री।

मुगुध*–वि० = मुग्ध।

मुग्ध–वि० [सं०] [भाव० मुग्धता] जिसे मोह या भ्रम हुआ हो। २. आस मोहित। ३. मूढ़। मूर्ख।

मुग्धकर–वि० [सं०] [स्त्री० मुग्ध मुग्ध करनेवाला। मोहक।

मुग्धा–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह जिसमें यौवन के लक्षण तो प्रकट हों, पर जिसमें काम-चेष्टा उत्पन्न न हुई हो

मुचकुंद–पुं० [सं० मुचुकुन्द] एक पेड़ जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं।

मुचना*–अ० [सं० मोचन] मोचन हो अ० [हिं० मोच] अंग में मोच आ

मुचलका–पुं० [तु०] वह पत्र द्वारा कोई अनुचित काम न करने नियत तिथि पर न्यायालय में उपस्थि होने की प्रतिज्ञा हो और प्रतिज्ञा पूरी न करने पर कुछ अर्थ-दण्ड देना पड़े।

मुछंदर–पुं० [हिं० मूँछ] १. बड़ी

बल खाकर किसी ओर फिरना। सीधे न जाकर इधर उधर या पीछे प्रवृत्त होना। घूमना। २. लौटना।

मुड़ला*-वि० [स्त्री० मुड़ली] दे० 'मुंडा'।

मुड़वाना-स० [हिं० 'मूँड़ना' का प्रे०] १. मुंडन कराना। मुँड़ाना। २. किसी को मूँड़ने में प्रवृत्त करना।

मुड़ाना-स० दे० 'मुँड़ाना'।

मुतअल्लिक-वि० [अ०] सम्बन्ध या लगाव रखनेवाला। सम्बद्ध।

क्रि० वि० सम्बन्ध में। विषय में।

मुतक्का-पुं० [देश०] १. दे० 'मुँडेरा'। २. छोटा खंभा। ३. मीनार। लाट।

मुतबन्ना-पुं० [अ०] दत्तक पुत्र।

मुतलक क्रि० वि० [अ०] कुछ भी। तनिक भी। जरा भी।

वि० बिलकुल। निपट। निरा।

मुतवल्ली-पुं० [अ०] किसी बालक या विधवा और उसकी संपत्ति, हित आदि की रक्षा और देखरेख करनेवाला व्यक्ति। वली। संरक्षक।

मुतसद्दी-पुं० [अ०] १. लेखक। मुन्शी। २. प्रबन्धकर्त्ता। ३. मुनीम।

मुतसिरी*-स्त्री० [हिं० मोती] मोतियों की माला या कंठी।

मुताबिक-क्रि० वि० [अ०] अनुसार।

वि० अनुकूल।

मुतालबा-पुं० दे० 'पावना'।

मुताह-पुं० [अ० मुताअ] मुसलमानों में प्रचलित एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुति-लाडू*-पुं० [हिं० मोती + लड्डू] मोतीचूर का लड्डू।

मुतेहरा*-पुं० [हिं० मोती + हार] कलाई पर पहनने का एक गहना।

मुत्तिय(मुत्ती)*-स्त्री० [सं० मुक्ता] मोती।

मुद-पुं० [सं०] हर्ष। आनन्द।

मुदगर-पुं० दे० 'मुगदर'।

मुदति-स्त्री० दे० 'मुद्दत'।

मुदना*-अ० [सं० मोद] मुदित या प्रसन्न होना।

मुदर्रिस-पुं० [अ०] [भाव० मुदर्रिसी] अध्यापक।

मुदवंत*-वि० [सं० मोद] प्रसन्न। खुश।

मुदा*-अव्य० [अ० मुद्दआ = अभिप्राय] १. तात्पर्य यह कि। २. मगर। लेकिन। परन्तु।

मुदाम-क्रि० वि० [फा०] १. सदा। हमेशा। २. निरंतर। लगातार। † ३. ज्यों का त्यों। (क्व०)

मुदामी-वि० [फा०] सदा होता रहनेवाला।

मुदित-वि० [सं०] [स्त्री० मुदिता] प्रसन्न। खुश।

मुदिता-स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो सब बातें या अवसर अपने अनुकूल देखकर प्रसन्न हो।

मुदिर-पुं० [सं०] बादल। मेघ।

मुदीर*-पुं० दे० 'मुदिर'।

मुद्गर-पुं० [सं०] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। २. दे० 'मुगदर'।

मुद्दई-पुं० [अ०] [स्त्री० मुद्दइया] १. दावा दायर करने या अभियोग उपस्थित करनेवाला। वादी। २. शत्रु। दुश्मन।

मुद्दत-स्त्री० [अ०] [वि० मुद्दती] १. अवधि। २. बहुत दिन। अधिक समय।

मुद्दती-वि० [अ०] जिसकी कोई मुद्दत या अवधि नियत हो।

मुद्दा†-पुं० [अ० मुद्दआ] अभिप्राय। आशय। मतलब।

क्रि० वि० तात्पर्य यह कि।

मुद्दालेह-पुं० [अ० मुद्दआअलेह] वह जिसपर दीवानी दावा हो। प्रतिवादी।

मुद्ध*-वि० दे० 'मुग्ध'।

मुद्धा-पुं० [देश०] पिंड़ली के नीचे का गाँठवाला भाग। टखना।

मुद्धी-स्त्री० [देश०] रस्सी की वह गाँठ जिसके अन्दर से उसका कोई सिरा इधर-उधर खिसक सके।

मुद्रक-पुं० [सं०] १. छापनेवाला। समाचारपत्र आदि का वह अधिकारी पर उसके छापने का भार होता है जो वैधानिक दृष्टि से उस छपी हुई सब बातों के लिए उत्तरदायी होता है।

मुद्रण-पुं० [सं०] [वि० मुद्रित] एक वस्तु पर बने हुए अंक आदि की सहायता से अथवा और प्रकार किसी दूसरी वस्तु पर या उतरना। २. ढले, खुदे या अक्षरों आदि की सहायता से आदि पर उसकी छाप लेना। काम। (प्रिन्टिंग)

मुद्रण-यंत्र-पुं० [सं०] वह यंत्र सहायता से साधारणतः समाचारपत्र आदि छापी जाती हैं।

मुद्रण-स्वातंत्र्य-पुं० [सं०] शासन की ओर से सामयिक को मिलनेवाली वह स्वतंत्रता वे अश्लील, हिंसात्मक, देशद्रोह आदि कुछ नीति-विरुद्ध बातों को शेष सब बातें दंडित होने के भय होकर छाप सकते हैं। (फ्रीडम

मुद्रणालय-वह स्थान जहाँ सहायता से समाचारपत्र, छपती हैं। छापाखाना। (

मुद्रांक-पुं० [सं०] [वि० धातु आदि का बना हुआ वह जिसपर नाम या कुछ विशिष्ट खुदे रहते हैं और जिससे कागज, पर किसी चीज की प्रामाणिकता करने के लिए अंकित करते हैं। (सील)

मुद्रांकन-पुं० [सं०] १. मुद्रा या के द्वारा अंकित करने या छापने की या भाव। २. उक्त प्रकार से हुई या छपी हुई कोई चीज। ३.

पर उन्हें छापनेवाले
उल्लेख। (इम्प्रिंट)
] जिसपर मुद्रा या

] १. किसी के नाम
। (सील) २. रुपये-
। ३. अँगूठी। छल्ला।
शीशे के ढले हुए अक्षर।
पंथी साधुओं का कान
या काठ का वलय
होने, बैठने आदि में
कोई स्थिति। ठवन।
विष्णु के आयुधों के चिह्न
शरीर पर अंकित कराते
योग में ये अंग-विन्यास-
चाचरी, गोचरी और
में एक अर्थालंकार
या प्रस्तुत अर्थ तो
उसके सिवा कोई दूसरी
होती है अथवा कोई और
है। (यह श्लेष का एक

दे० 'मुद्रा-स्फीति'।
[सं०] छापने या मुद्रण
की कल।
दे० 'मुद्रा-शास्त्र'।
स्त्री० [सं०] कृत्रिम रूप
प्रचलन या स्फीति को
या साधारण स्थिति में
उलटा। (डिफ्लेशन
[सं०] वह शास्त्र जिसमें
आधार पर ऐतिहासिक
विवेचन होता है।
)

[सं०] किसी देश
आदि का अपेक्षा-
होने पर अथवा
बहुत बढ़ जाने की

स्थिति, जिससे मुद्रा का मूल्य बहुत घट और वस्तुओं का मूल्य बहुत बढ़ जाता है। (इन्फ्लेशन)

मुद्रिका—स्त्री० [सं०] अँगूठी।

मुद्रित—वि० [सं०] १. जिसका मुद्रण हुआ हो। छपा हुआ। (प्रिंटेड) २. जिसपर कोई मुद्रा अंकित हुई हो। मोहर किया हुआ। ३. चारो ओर से घिरा हुआ। वेष्टित। (सील्ड) ४. मुँदा हुआ। मुँह बन्द।

मुधा-क्रि० वि० [सं०] व्यर्थ। वृथा। वि० १. व्यर्थ का। २. मिथ्या। झूठ।

मुनशी—पुं० [अ०] १. लेख आदि लिखनेवाला। लेखक। २. पंडित। विद्वान्।

मुनसरिम—पुं० [अ०] १. प्रबन्ध करनेवाला। २. कचहरी के कार्यालय का वह अधिकारी जो मिसलें या नत्थियाँ यथास्थान रखता है।

मुनसिफ—पुं० [अ० मुन्सिफ] [भाव० मुन्सिफी] १. वह जो न्याय या इन्साफ करता हो। २. न्याय विभाग का एक अधिकारी।

मुनहसर—वि० [अ०] अवलंबित। आश्रित।

मुनादी—स्त्री० [अ०] ढोल आदि पीटकर की जानेवाली घोषणा। ढिंढोरा। डुग्गी।

मुनाफा—पुं० [अ०] लाभ। नफा।

मुनारा+—पुं० दे० 'मीनार'।

मुनासिब—वि० [अ०] [भाव० मुनासिबत] उचित। वाजिब।

मुनासिबत—स्त्री० [अ०] १. मुनासिब होने की दशा या भाव। औचित्य। २. दे० 'अनुदृष्टि'।

मुनिंद*—पुं० = मुनींद्र।

मुनि—पुं० दे० 'ऋषि'।

मुनिया—स्त्री० [हिं० रायमुनी] लाल या रायमुनी नाम की सुंदर छोटी चिड़िया।

मुनींद्र—पुं० [सं०] बहुत बड़ा मुनि या ऋषि।

मुनीब—पुं० दे० 'मुनीम'।

मुनीम—पुं० [अ० मुनीब] आय-व्यय का

हिसाब लिखनेवाला। लिपिक।

वि० मुनीम संबंधी। मुनीमका।

मुनीमी–स्त्री० [हिं० मुनीम] मुनीम का काम या पद।

मुनीश(श्वर)–पुं० [सं०] मुनियों में श्रेष्ठ। बहुत बड़ा मुनि।

मुन्ना(न्नू)–पुं० [देश०] १. छोटों के लिए प्रेम-सूचक शब्द। २. प्रिय। प्यारा।

मुफलिस–वि० [अ०] [भाव० मुफलिसी] निर्धन। दरिद्र। कंगाल।

मुफलिसी–स्त्री० [अ०] १. मुफलिस या दरिद्र होने की अवस्था या भाव। गरीबी। दरिद्रता। २. विधिक क्षेत्रों में वह अवस्था जब वादी या प्रतिवादी यह कहता है कि मेरे पास मुकदमा लड़ने के लिए एक पैसा भी नहीं है। ऐसा सिद्ध होने पर उसके मुकदमे से संबंध रखनेवाला उचित व्यय और वकील सरकार की ओर से मिलते हैं। (पॉपरिज़्म)

मुफस्सल–वि० [अ०] ब्योरेवार। विस्तृत। पुं० केन्द्रस्थ नगर के आस-पास के स्थान।

मुफ्त–वि० [अ०] जिसके प्राप्त करने में कुछ धन न लगे या व्यय न हो।

मुहा०- मुफ्त में = बिना मूल्य दिये या कुछ व्यय किये।

क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदा।

मुफ्तखोर–वि० [अ० मुफ्त + फा० खोर] [भाव० मुफ्तखोरी] बिना परिश्रम किये मुफ्त का माल खानेवाला।

मुफ्ती–पुं० [अ०] १. मुसलमान धर्म-शास्त्री।

स्त्री० वर्दी पहनने के अधिकारी सैनिकों, सिपाहियों आदि के सादे और साधारण कपड़े। (वर्दी से भिन्न)

वि० [अ० मुफ्त] मुफ्त का।

मुबलिग–पुं० [अ०] धन की संख्या। रकम।

मुबारक–वि० [अ०] १. जिसके कारण बरकत हो। २. शुभ। मंगलकारी।

मुबारकबाद–पुं० दे० 'बधाई'।

मुबारकी–स्त्री० दे० 'बधाई'।

मुमकिन–वि० [अ०] जो हो सके।

मुमानियत–स्त्री० दे० 'मनाही'।

मुमुक्षु–वि० [सं०] मुक्ति की काम इच्छा करनेवाला।

मुमुच्छू*–वि० दे० 'मुमुक्षु'।

मुमूर्षा–स्त्री० [सं०] मरने की इ

मुमूर्षु–वि० [सं०] १. जो मरने हो। २. मूर्छित।

मुरकना–अ० [हिं० मुड़ना] मुरक, स० मुरकाना] १. किसी ओर झुकना। मुड़ना। आना। लौटना। ३. किसी अंग ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि उ होने लगे। मोच खाना। ४. ५. नष्ट होना।

मुरकी–स्त्री० [हिं० मुरकना] में किसी स्वर को बहुत कोमल सुन्दरतापूर्वक घुमाते हुए दूसरे स्व जाने की क्रिया। २. कान में प एक प्रकार की बाली।

मुरखाई*–स्त्री० दे० 'मूर्खता'।

मुरगा–पुं० [फा० मुर्ग] [स्त्री० एक प्रसिद्ध पक्षी जो बहुत सवेरे बो

मुरगाबी–स्त्री० [फा०] मुरगे का एक जल-पक्षी।

मुरचंग–पुं० [हिं० मुँह + चंग] बजाया जानेवाला एक बाजा। मुँ

मुरचा–पुं० दे० 'मोरचा'।

मुरछना (छाना)*–अ० [सं० १. मूर्छित होना। २. शिथिल हो

मुरछा*–स्त्री० = मूर्छा।

मुरछावंत (छित)–वि० दे० 'मूर्छि

मुरज–पुं० [सं०] पखावज। मृदंग।

मुरझना*–अ० दे० 'कुम्हलाना'।

मुरझाना–अ० [सं० मूर्च्छन] १. 'कुम्हलाना'। २. सुस्त या उदास हो

से फा० मुर्दः] मरे
शरीर। शव।
। मृत। २. जिसमें
हो। बेदम। जिसकी
शक्ति निकल गई
या कुम्हलाया हुआ।
दे० 'इस्पंज'।
[फा०] १. मरा हुआ।
। ३. अशक्त। बहुत

दे० 'मुड़ना'।
अ० मुरब्बः] चीनी आदि
पकाया हुआ फलों आदि
आम का मुरब्बा।
[अनु०] एक प्रकार का
या ज्वार जो अंदर से
। फरवी। लावा।
दे० 'मुर्री'।
दे० 'मुरली'।
[सं०] बाँसुरी। वंशी।
[सं०] श्रीकृष्ण।
=मोर। (पक्षी)
एड़ी के ऊपर का चारो ओर
की हड्डी।
[सं० मौर्वी] धनुष की
।
दे० 'मुरौवत'।
[अ० मुर्शिद] १. गुरु।
और पूज्य व्यक्ति।
] श्रीकृष्ण।
।
[अ०] १. मन की कामना
। चाहना।
पाना = मनोरथ सिद्ध
माँगना = मनोरथ सिद्ध
या प्रार्थना करना।
। मतलब।
[हिं० मुराद] जिसके मन में
कोई मुराद या कामना हो।

मुराना–स० १. दे० 'चुभलाना'। २. दे० 'मोड़ना'।

मुरार–पुं० [सं० मृणाल] कमल की नाल। भसींड।

मुरासा†–पुं० [अ० मुरस्सऽ = जड़ाऊ] एक प्रकार का जड़ाऊ करन-फूल। उदा०–लहै मुरासा तिय-स्रवन, यों मुकतनु दुति पाइ।—बिहारी।

मुरासिला–पुं० [अ० मुरासिलः] १. पत्र। चिट्ठी। खत। २. राज-दरबार से भेजा जानेवाला पत्र। खरीता।

मुरारी–पुं० [सं० मुरारि] श्रीकृष्ण।

मुरीद–पुं० [अ०] १. शिष्य। चेला। २. पक्का अनुयायी और भक्त।

मुरुंडा–वि०, पुं० दे० 'मरुंडा'।

मुरुख*–वि० दे० 'मूर्ख'।

मुरुछना* -अ० [सं० मूर्छा] १. मूर्छित या बेहोश होना। २. कुम्हलाना। मुरझाना।

मुरेठा–पुं० [हिं० मूँड़] पगड़ी। साफा।

मुरेरना†–स० दे० 'मरोड़ना'।

मुरौवत–स्त्री० [अ० मुरव्वत] शील। संकोच। लिहाज।

मुर्ग(ा)–पुं० दे० 'मुरगा'।

मुर्दनी–स्त्री० [फा० मुर्दन = मरना] १. चेहरे पर दिखाई देनेवाले मृत्यु के लक्षण। २. शव की अंत्येष्टि क्रिया के लिए लोगों का उसके साथ जाना।

मुर्दा–पुं०, फा० दे० 'मशत'।

मुर्दाबादल–पुं० दे० 'इस्पंज'।

मुर्दाघली–स्त्री० दे० 'मुर्दनी'। वि० मुरदे से सम्बन्ध रखनेवाला।

मुर्रा–स्त्री० [हिं० मुड़ना] एक प्रकार की भैंस जिसके दोनों सींग कुंडल की तरह मुड़े हुए या गोलाकार होते हैं।
पुं० १. एक प्रकार की छोटी आतिशबाजी। २. भुने हुए चावल। फरवी।

मुर्री–स्त्री० [हिं० मरोड़ना] १. कपड़े,

डोरे आदि का सिरा मरोड़कर लगाई हुई गाँठ। २. कपड़े आदि में लपेटकर उसमें डाली हुई ऐंठन या बल।

मुल†–अव्य० [देश०] १. मगर। लेकिन। पर। २. तात्पर्य यह कि। (पश्चिम) स्त्री० [अ०] शराब। मद्य।

मुलकना*–अ० [सं० पुलकित] १. पुलकित होना। २. मुस्कराना। ३. मचकना।

मुलकाना*–स० हिं० 'मुलकना' का स०।

मुलकित–वि० [सं० पुलकित] १. मुस्कराता हुआ। २. प्रसन्न। खुश।

मुलजिम–वि० दे० 'अभियुक्त'।

मुलतवी–वि० दे० 'स्थगित'।

मुलना†–पुं० दे० 'मौलवी'।

मुलम्मा–पुं० [अ०] १. किसी चीज पर रासायनिक प्रक्रिया से चढ़ाई हुई सोने, चाँदी आदि की हलकी रंगत या तह। गिलट। कलई। २. ऊपरी तड़क-भड़क।

मुलहा†–वि० [सं० मूल (नक्षत्र)] १. जो मूल नक्षत्र में पैदा हुआ हो। (अशुभ) २. अनाथ। ३. उपद्रवी। नटखट।

मुलाकात–स्त्री० [अ०] १. दो या कई व्यक्तियों का आपस में मिलना। भेंट। मिलन। २. जान-पहचान या मेल-मिलाप।

मुलाकाती–पुं० [अ० मुलाकात] १. वह जिससे जान-पहचान हो। परिचित। २. मुलाकात करने के लिये आनेवाला।

यौ०–मुलाकाती कार्ड = वह कार्ड जो कोई मुलाकाती अपने आने की सूचना और परिचय देने के लिए भेजता है।

मुलाजिम–पुं० [अ०] नौकर। सेवक।

मुलाजिमत–स्त्री० [अ०] नौकरी। सेवा।

मुलायम–वि० [अ०] १. जो कड़ा न हो। 'सख्त' का उलटा। २. हलका। धीमा। कोमल। सुकुमार।

यौ०–मुलायम चारा = वह जो सहज में दबाया या अधीन किया जा सके।

मुलायमियत (मी)–स्त्री० [अ० मुलायम] मुलायम होने का भाव। कोमलता।

मुलाहजा–पुं० [अ०] १ निरीक्षण देख-भाल। २. शील-संकोच। ३. रिआयत

मुलेठी–स्त्री० [सं० मूलयष्टि] घुँघची की जड़ जो दवा के काम आती है। जेठी म

मुल्क–पुं० [अ०] [वि० मुल्की] देश। २. प्रांत। प्रदेश। ३. संसार।

मुल्ला–पुं० दे० 'मौलवी'।

मुवक्किल–पुं० [अ०] वह जो अपने के लिए वकील नियुक्त करता है।

मुवना*–अ० = मरना।

मुशल–पुं० [सं०] १. धान कूटने मूसल। २. मूर्ख। लंठ।

मुशायरा–पुं० [अ० मशायरः] वह स जिसमें बहुत-से लोग मिलकर शेर पढ़ते हैं। उर्दू कवि-सम्मेलन।

मुशाहरा–पुं० [फा०] वेतन। तन

मुश्क–पुं० [फा०] १. कस्तूरी। गंध। बू।

स्त्री० [देश०] कन्धे और कोहनी के का मांसल भाग। भुजा। बाँह।

मुहा०–मुश्कें कसना या बाँधना दोनों भुजाओं को पीठ की ओर ले रस्सी से बाँधना। (अपराधियों आदि

मुश्क बिलाई–स्त्री० दे० 'मुश्क बिलाव

मुश्क बिलाव–पुं० [फा० मुश्क + बिलाव = नर बिल्ली] एक प्रकार का बिल्ला (नर बिल्ली) जिसके अंडकोश एक प्रकार का सुगन्धित तरल पदार्थ नि लता है। फारसी में इस पदार्थ को कहते हैं। गन्ध मार्जार।

मुश्किल–वि० [अ०] कठिन। दुष्कर स्त्री० १. कठिनता। दिक्कत। २. वि

मुश्की–वि० [फा०] १. कस्तूरी के का। काला। २. जिसमें कस्तूरी पड़ी हो पुं० काले रंग का घोड़ा।

मुश्त–पुं० [फा०] मुट्ठी।

पद–एक-मुश्त = एक साथ या एक

लेवाला (धन या देन)।
[अ० मुश्तरकः] जिसमें
हों। जिसमें और
हों। साझे का।
'मुखर'।
[सं०] १. मुट्ठी। २.
= मुस्कराहट।
= मुस्कराना।
[अ० मुशजर] एक प्रकार
[हिं० 'मूसना' का अ०]
[अ०] १. असल लेख की
प्रतिलिपि। २. रसीद आदि
भाग जिसपर उसकी नकल
रसीद देनेवाले के पास
[अ०] नाम्नी।
जैसे मुसम्मात राधा।
औरत।
[अ०] नामवाला। नामक।
जैसे-मुसम्मी रामकृष्ण।
(अफ्रीका का एक प्रदेश)]
बढ़िया मीठा नीबू।
'मूसला'।
[फा०] [स्त्री० मुसल
साहब के चलाये हुए
अनुयायी।
[फा०] मुसलमान का।
[फा०] पूरा। अखंड।
[अ०] वह दरी या चटाई जिस-
बैठकर नमाज पढ़ते हैं।
(उपेक्षासूचक)
=चूहा + हर(प्रत्य०)]
एक बंगाली जाति।
[अ०] यात्री।

मुसाफिरखाना-पुं० [अ० मुसाफिर + फा० खाना] १. यात्रियों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। सराय। २. रेल के स्टेशन पर बना हुआ यात्रियों के ठहरने का स्थान। यात्री-गृह। विश्रामालय।

मुसाफिरत(फिरी)-स्त्री० [अ०] यात्रा।

मुसाहब-पुं० [अ०] [भाव० मुसाहबी] धनवान् या राजा आदि का पार्श्ववर्ती।

मुसीबत-स्त्री० [अ०] १. तकलीफ। कष्ट। २. विपत्ति। संकट। आफत।

मुस्कराना-अ० [सं० स्मय + कृ] बहुत ही मंद रूप से या धीरे से हँसना।

मुस्कराहट-स्त्री० [हिं० मुस्कराना] मुस्कराने की क्रिया या भाव। मंद हास।

मुस्काना-अ० = मुस्कराना।

मुस्की-स्त्री० = मुस्कराहट।

मुस्क्यान*-स्त्री० = मुस्कराहट।

मुस्टंडा-वि० [सं० पुष्ट] १. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २. बदमाश। गुंडा।

मुस्तैद-वि० [अ० मुस्तअद] [भाव० मस्तैदी] १. तत्पर। सन्नद्ध। २. अच्छी तरह और पूरा काम करनेवाला।

मुस्लिम-पुं० [अ०] मुसलमान।

मुहकमा-पुं० [अ०] विभाग। सरिश्ता।

मुहब्बत-स्त्री० [अ०] १. प्रीति। प्रेम। स्नेह। २. लगन। लौ।

मुहर्रम-पुं० [अ०] १. अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे। २. इस महीने में इमाम हुसेन का शोक मनाने के दस दिन।

मुहा०-मुहर्रम की पैदाइश होना = बहुत ही मनहूस या रोनी सूरतवाला होना।

मुहर्रमी-वि० [अ० मुहर्रम + ई (प्रत्य०)] १. मुहर्रम सम्बन्धी। मुहर्रम का। २. शोक-सूचक। ३. मनहूस।

मुहर्रिर-पुं० [अ०] [भाव० मुहर्रिरी] लेखक। मुनशी।

मुहल्ला-पुं० = महल्ला।

मुहसिल-पुं० [अ० मुहासिल] १. कर उगाहनेवाला। २. प्यादा। फेरीदार। ३. कर, लगान आदि प्राप्य धन।

मुहाफिज-वि०[अ०] [भाव० मुहाफिजत] हिफ़ाजत करनेवाला। रक्षक। रखवाला।

मुहार-स्त्री० [फा० महार] ऊँट की नकेल। **पद-शुतुर बे-मुहार** = वह जो व्यर्थ या यूँ ही इधर-उधर घूमता फिरता हो।

मुहाल-वि० [अ०] १. असंभव। ना-मुमकिन। २. कठिन। दुष्कर।
पुं० दे० 'महाल'।

मुहावरा-पुं० [अ०]१. किसी विशिष्ट भाषा में प्रचलित वह वाक्य या पद जिसका अर्थ लक्षणा या व्यंजना से निकलता हो। वह अर्थ जो शब्दों के प्रत्यक्ष या शाब्दिक अर्थ से भिन्न और विलक्षण हो। २. अभ्यास। मश्क।

मुहावरेदार-वि० [अ० महावरः + फा० दार (प्रत्य०)] (भाषा) जिसमें मुहावरों का ठीक-ठीक प्रयोग हुआ हो।

मुहावरेदारी-स्त्री० [अ० मुहावरः + फा० दारी (प्रत्य०)] १. मुहावरों के ठीक प्रयोग का ज्ञान। २. मुहावरों से युक्त या अभिज्ञ होने की दशा।

मुहासिल-पुं० [अ०] १. आय। आमदनी। २. लाभ। मुनाफा। ३. उगाहने पर मिला हुआ धन। (कर, चन्दा आदि)

मुहिं*-सर्व० दे० 'मोहिं'।

मुहिम-स्त्री० [अ०] १. विकट या बड़ा काम। २. लड़ाई। युद्ध। ३. फ़ौज की चढ़ाई। अभियान।

मुहम*-स्त्री० दे० 'महिम'।

मुहूर्त्त-पुं० [सं०] १. दिन-रात का तीसवाँ भाग। २. निर्दिष्ट क्षण या समय। ३. फलित ज्यौतिष के अनुसार निकाला हुआ वह समय जब कोई शुभ काम किया जाय।

मुह्य-वि० [सं०] [भाव० मुह्यता] १. मोह में पड़ा हुआ। २. मूर्छित। बेहोश। बेसुध।

मुह्यमान-वि० दे० 'मुग्ध'।

मूँग-पुं० [सं० मुद्ग] एक प्रसिद्ध
जिसकी दाल बनती है।

मूँग-फली-स्त्री० [हिं० भूँ (भूमि) +
एक प्रकार का पौधा जिसका फल बादाम
तरह का, पर जमीन के अंदर होता है। चिनि
बादाम। (अंग्रेजी में इसे ग्राउन्ट नट
हैं। इसी से तदर्थीय रूप में इसे पहले
(भूमि) फली' कहते थे, जिससे बिगड़कर
फली' या मूमफली और तब मूँगफ

मूँगर (ा)-पुं० [सं० मुद्गर] काठ
हथौड़ा। मुँगरा।

मूँगरी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार की

मूँगा-पुं० [हिं० मूँग] एक प्रकार के
कीड़ों की लाल ठठरी जिसकी गिनती
में होती है। प्रवाल। विद्रुम।

मूँछ-स्त्री० [सं० श्मश्रु] ऊपरी ओंठ
के बाल जो केवल पुरुषों के होते हैं।
मुहा०-मूँछें उखाड़ना-गर्व दूर करके
देना। **मूँछों पर ताव देना** = अभिम
से मूँछ मरोड़ना। **मूँछें नीची होना**
हार या अप्रतिष्ठा होना।

मूँछी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार की

मूँज-स्त्री० [सं० मुंज] एक प्रकार का तृ

मूँठ-स्त्री० दे० 'मूठ'।

मूँड़†-पुं० [सं० मुंड] सिर। म
मुहा०-मूँड़ मूँड़ाना = संन्यासी,
या साधु होना।

मूँड़न-पुं० दे० 'मुंडन'।

मूँड़ना-स० [सं० मुंडन] १. उस्तरे
सिर, माल आदि के बाल साफ करना
हजामत बनाना। २. धोखा देकर धन लेना
ठगना। ३. किसी को चेला बनाना।

मूँड़ी†-स्त्री० दे० 'मूँड़'।

मूँदना-स० [सं० मुद्रण] १. ऊपर कोई
चीज डालकर छिपाना। बंद करना।
ढाँकना। २. द्वार, मुँह आदि पर कुछ

मूत–पुं० दे० 'मूत्र'।

मूतना–अ० [सं० मूत्र] पेशाब करना।

मूत्र–पुं० [सं०] शरीर का वह तरल विषैला पदार्थ जो उपस्थ मार्ग या जननेन्द्रिय से निकलता है। पेशाब। मूत।

मूत्र-कृच्छ्र–पुं० [सं०] एक रोग जिसमें बार-बार और थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब आता है और पेशाब के साथ शरीर से शर्करा या चीनी का भी कुछ अंश निकलता है। (डाइबिटीज़)

मूत्राशय–पुं० [सं०] नाभि के नीचे का वह भीतरी भाग जिसमें मूत्र संचित रहता है। मसाना। फुकना। (ब्लैडर)

मूर*–पुं० [सं० मूल] १. मूल। जड़। २. जड़-बूटी। ३. मूल नक्षत्र। स्त्री० दे० 'मूरि'।

मूरख*–वि० दे० 'मूर्ख'।

मूरछना*–स्त्री० दे० 'मूर्च्छना'।

मूरछा*–स्त्री० = मूर्च्छा।

मूरत*–स्त्री० = मूर्त्ति।

मूरतिवंत*–वि० दे० 'मूर्तिमान्'।

मूरि(री)–स्त्री० [सं० मूल] १. मूल। जड़। २. जड़ी-बूटी।

मूर्ख–वि० [सं०] जिसे बुद्धि न हो, या बहुत कम हो। बेवकूफ। अज्ञ। मूढ़।

मूर्खता–स्त्री० [सं०] मूर्ख होने का भाव। ना-समझी। बेवकूफी।

मूर्च्छन–पुं० [सं०] १. संज्ञा या चेतना का लोप होना या करना। २. मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग।

मूर्च्छना–स्त्री० [सं०] संगीत में, स्वर को बहुत ही कोमलतापूर्वक और सुन्दर ढंग से कँपाते हुए और नियमित रूप से उतार-चढ़ाव का ध्यान रखते हुए नीचे स्वर से ऊँचे स्वर पर जाने और ऊँचे स्वर से नीचे स्वर पर आने की क्रिया; अथवा ऐसी क्रिया में गले से निकलनेवाला स्वर।

मूर्च्छा–स्त्री० [सं०] रोग, भय, शोक

आदि से उत्पन्न वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट या संज्ञा-हीन हो जाता है। अचेत होना। बेहोशी।

मूर्च्छित–वि० [सं०] [स्त्री० मूर्च्छिता] १. जिसे मूर्च्छा आई हो। बेहोश। अचेत। २. मारा या भस्म किया हुआ। (पारा या और कोई रस या धातु)

मूर्त्त–वि० [सं०] [भाव० मूर्त्तता] १. जिसका कोई प्रत्यक्ष रूप या आकार हो। साकार। (कॉन्क्रीट) २. ठोस।

मूर्त्त विधान–पुं० [सं०] केवल कल्पना के आधार पर घटनाओं, कार्यों आदि के स्वरूप, चित्र आदि बनाने की क्रिया या भाव। (इमेजरी)

मूर्त्ति–स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। २. आकृति। सूरत। ३. किसी की आकृति के अनुरूप गढ़ी हुई आकृति। प्रतिमा। विग्रह। ४. चित्र। तसवीर।

मूर्त्ति-कला–स्त्री० [सं०] मूर्त्तियाँ या प्रतिमाएँ आदि बनाने की विद्या या कला।

मूर्त्तिकार–पुं० [सं०] मूर्त्ति बनानेवाला।

मूर्त्तित–वि० [सं०] मूर्त्ति के रूप में लाया या बनाया हुआ।

मूर्त्ति-पूजक–पुं० [सं०] १. वह जो मूर्त्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो। (आइडलेटर)

मूर्त्ति-पूजा–स्त्री० [सं०] मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसे पूजना। (आइडलेटरी)

मूर्त्ति-भंजक–पुं० [सं०] १. वह जो मूर्त्तियों को व्यर्थ मानकर तोड़ता हो। २. मुसलमान।

मूर्त्तिमंत–वि० दे० 'मूर्त्तिमान्'।

मूर्त्तिमान्–वि० [सं०] [स्त्री० मूर्त्तिमती] १. जो मूर्त्ति या शरीर के रूप में हो। २. साक्षात्। प्रत्यक्ष।

मूर्द्ध–पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धन्य–वि० [सं०] १. मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला। (सरेब्रल) २. मस्तक में स्थित। ३. सबसे अच्छा। सर्व-श्रेष्ठ।

पुं० [सं०] वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। जैसे–ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, और ष।

मूर्द्धा–पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूल–पुं० [सं०] १. पृथ्वी के नीचे रहने वाला वृक्षों आदि का वह भाग जिस उनका पोषण और वर्द्धन होता है। जड़ २. खाने के योग्य मोटी जड़। जैसे– दुख कंद मूल फल खाई।—तुलसी। ३. आरंभ या उत्पत्ति का कारण या स्थान ४. असल जमा या धन जो किसी व्य आदि में लाभ के लिए लगाया जाय। मू धन। पूँजी। (प्रिंसिपल)

मुहा०–*मूल पूजना = व्यापार में हुई पूँजी या मूलधन निकल आना।

५. नींव। ६. स्वयं ग्रंथाकार का हुआ वाक्य या लेख, जिसपर टीका जाती है। ७. उन्नीसवाँ नक्षत्र। *८. 'मूलाधार'।

वि० [सं०] १. किसी बात की ब मुख्य आधार के रूप में रहने या होनेवा जैसे–मूल सिद्धान्त। २. जिसके आधार आगे चलकर कुछ और परिवर्द्धन विकास हो। जैसे–मूल अधिनियम। ३.प्रध मुख्य। सर्व-श्रेष्ठ। (प्रिंसिपल)

मूलक–वि० [सं०] १. उत्पन्न करने जनक। २. जो मूल में हो या जिस में कुछ हो। (यौ० के अंत में, विवादमूलक बात)

मूल द्रव्य–पुं० [सं०] वे आदिम या भूत, जिनसे सब पदार्थ बने हैं।

मूल-द्वार–पुं० [सं०] सदर या बड़ा फाटक

मूल-धन–पुं० [सं०] वह असल धन किसी के पास हो या लाभ आदि के लि व्यापार में लगाया जाय। मूल। पूँजी (प्रिंसिपल)

मूल-पुरुष–पुं० [सं०] किसी वंश का आदि-पुरुष जिससे वह वंश चला हो।

] किसी वस्तु के मूल
लनेवाला। असल।
[सं०] १. पूर्वजों का
प्रधान स्थान।
] हठ-योग में शरीर
चक्रों में से एक जिसका
शिश्न के मध्य में है।
मूल + हिं० प्रत्य० इक]
क्रम आदि के विचार
पहले से न चला आया हो,
बार हुआ हो। (ओरि-
व्यवहार का मूलिक
साइड) या मूलिक
। (ओरिजिनल सिविल
२. दे० 'मौलिक'।
लय-पु० [सं०] वह न्या-
कोई वाद या मुकदमा पहले-
लिए रक्खा जाय। (कोर्ट
)
] १. एक प्रसिद्ध पौधे
और चरपरी होती है।
को) मूली-गाजर
तुच्छ या हीन समझना।
] १. कोई वस्तु खरीदने
में दिया जानेवाला धन।
(प्राइस) २. वह गुण
कारण किसी वस्तु का
होता है। (वैल्यू) जैसे-
मूल्य नहीं समझता। ३.
अनुमान से ठहराया या
महत्त्व। (वैलुराबल)
मूल्य + हिं० न (प्रत्य०)]
मूल्य निश्चित या स्थिर
आँकना। मूल्यांकन।
[सं०] जिसका मूल्य अधिक
। कीमती। (वैल्यूशन)
[सं०] १. कोई वस्तु

देखकर अनुमान से उसका मूल्य समझना या स्थिर करना। दाम आँकना। (वैलुएशन) २. किसी वस्तु का गुण, उपयोगिता या महत्त्व आँकना या समझना। (एप्रिसिएशन, एस्टिमेशन)

मूल्यानुसार-क्रि० वि० [सं०] (वस्तुओं पर उनके) मूल्य के विचार या अनुपात से लगनेवाला (आयात या निर्यात कर)। (ऐड वैलोरम)

मूष(क)-पुं० [सं०] १. चूहा। २. वह जो चुरा-छिपाकर या जबरदस्ती दूसरों का धन ले लेता हो। मूसनेवाला। उदा०-'कलहा, कूही, मूष रोगी अरु काँहू नैंकु न भावै'।-सूर।

मूसना-स० [सं० मूषण] १. किसी का माल छीन या चुरा कर ले जाना। २. लूटना। ३. ठगना।

मूसर(ल)-पुं० [सं० मुशल] १. धान कूटने का लंबा मोटा डंडा। २. एक प्रकार का पुराना अस्त्र।

मूसलचंद-पुं० [हिं० मूसल] हट्टा-कट्टा, पर निकम्मा पुरुष।

मूसलधार-क्रि० वि० [हिं० मूसल + धार] मूसल के समान मोटी धार से। (वर्षा)

मूसला-पुं० [हिं० मूसल] वह मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर शाखाएँ नहीं होतीं। 'झखरा' का उलटा।

मूसलाधार-पुं० = मूसलधार।

मूसा-पुं० [सं० मूषक] चूहा।

पुं० [इबरानी] यहूदियों के मूल पैगंबर।

मूहजन-पुं० [अं० नियोन] वायु-मंडल में रहनेवाला एक प्रकार का वाष्प।

मृग-पुं० [सं०] [स्त्री० मृगी] १. पशु। २. हिरन। ३. मृगशिरा नक्षत्र। ४. चार प्रकार के पुरुषों में से एक। (काम शास्त्र)

मृग-चर्म-पुं० [सं०] हिरन की खाल जो पवित्र मानी जाती है और जिसे प्राचीन ऋषि-मुनि आदि ओढ़ते-बिछाते थे।

मृग-छाला-स्त्री० दे० 'मृग-चर्म'।

मृग-तृष्णा–स्त्री० [सं०] जल की लहरों की वह भ्रांति जो कभी कभी रेगिस्तान में कड़ी धूप पड़ने पर होती है, और जिसे जल समझकर मृग बहुत दूर तक व्यर्थ दौड़ता है। मृग-मरीचिका।

मृगधर–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

मृग-नाभि–पुं० [सं०] कस्तूरी।

मृग-नैनी–स्त्री० दे० 'मृग-लोचनी'।

मृग-मद–पुं० [सं०] कस्तूरी।

मृग-मरीचिका–स्त्री० दे० 'मृग-तृष्णा'।

मृगया–स्त्री० [सं०] शिकार। आखेट।

मृग-लांछन–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

मृग-लोचना–वि० [सं०] हिरन के समान सुंदर नेत्रोंवाली (स्त्री)।

मृगलोचनी–स्त्री० दे० 'मृगलोचना'।

मृग-वारि–पुं० [सं०] १. मृग-तृष्णा में दिखाई देनेवाला जल। २. झूठी आशा दिखलानेवाली चीज या बात।

मृगशिरा–पुं० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र जो तीन तारों से मिलकर बना है।

मृगांक–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

मृगाक्षी–वि० दे० 'मृग-लोचना'।

मृगिनी*–स्त्री० दे० 'मृगी'।

मृगी–स्त्री० [सं०] हिरन की मादा। हरिणी। हिरनी।

मृगेंद्र–पुं० [सं०] सिंह। शेर।

मृडानी–स्त्री० [सं०] शिव की पत्नी। पार्वती।

मृणाल–पुं० [द्रविड़ से गृहीत, सं०] १. कमल का डंठल। कमल-नाल। २. कमल की जड़। मुरार।

मृणालिनी–स्त्री० [सं०] कमलिनी।

मृण्मय–वि० [सं०] [स्त्री० मृण्मयी] मिट्टी का बना हुआ।

मृण्मूर्ति–स्त्री० [सं०] १. मिट्टी की बनी हुई मूर्ति। २. प्राचीन और मध्य युग में कुछ विशेष प्रक्रिया से बनी हुई मिट्टी की मूर्त्ति मुख्यतः मुँह और सिर। (टेरा कोटा)

मृत–वि० [सं०] [स्त्री० मृता] १. मरा हुआ २. जिसे मरे कुछ समय हुआ हो। जिसमें जीवनी-शक्ति, उपयोगिता या क्रिया शीलता, बिलकुल न रह गई हो। (जैसे–मृत भाषा, मृत भंडार।

मृतक–पुं० [सं०] १. मरा हुआ प्राणी मृत व्यक्ति। (डेड, डिसीज्ड) २. हुए प्राणी का शरीर।

वि० मरा हुआ। मृत। प्रमीत। (

मृतक-कर्म–पुं० [सं०] मरे हुए की सद्गति के लिए किया जानेवाला अंत्येष्टि।

मृत-कल्प–वि० दे० 'मृत-प्राय'।

मृत-प्राय–वि० [सं०] जो मरा तो पर मरे हुए के समान हो। बे-दम।

मृत-भाषा–स्त्री० [सं०] वह भाषा प्राचीन काल में कहीं प्रचलित रही हो, अब जिसे बोलनेवाले न रह गये हों। (लैंग्वेज)

मृत-संजीवनी–स्त्री० दे० 'संजीवनी'।

मृताशौच–पुं० [सं०] किसी प्रा के मरने पर होनेवाला अशौच।

मृति–स्त्री० दे० 'मृत्यु'।

मृत्तिका–स्त्री० [सं०] मिट्टी।

मृत्युंजय–पुं० [सं०] १. वह जिसने को जीत लिया हो। २. शिव का एक

मृत्यु–स्त्री० [सं०] शरीर से प्राण निक मरना। मौत। (डेथ) (सभी प्रकार प्राणियों के लिए)

मृत्यु-कर–पुं० [सं०] वह कर जो राज्य ओर से किसी ऐसे व्यक्ति के मरने पर जो और सम्पत्ति का मालिक हो, उसके उत्त धिकारियों से लिया जाता है। (डेथ-ड्यूटी

मृत्यु-लोक–पुं० [सं०] १. यम-लोक २. मर्त्य-लोक।

मृत्यु-शय्या–स्त्री० [सं०] रोगी की शय्या या बिस्तर पर पड़े रहने की वह अवस्था

१. खेतों आदि की सीमा का सूचक मिट्टी की ऊँची रेखा या बाँध। २. सीमा। हद। ३. सम्मान या गौरव की सीमा। मर्य्यादा।

मेंड-बंदी–स्त्री० [हिं० मेंड + बाँधना] मेंड बनाने का काम या भाव।

मेंडरा–पुं० [सं० मंडल] [स्त्री० अल्पा० मेंडरी] १. घेरकर बनाया हुआ कोई गोल चक्कर। २. एँडुआ। गेंडुरी। ३. किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा। ४. किसी वस्तु का मंडलाकार ढाँचा। जैसे-चलनी या खँजरी का मेंडरा।

मेंढ़क–पुं० [सं० मंडूक] एक छोटा प्रसिद्ध बरसाती जल-स्थलचारी जन्तु जो प्रायः वर्षा ऋतु में तालाबों, कुओं आदि में दिखाई पड़ता है। दर्दुर।

मेंढ़ी–स्त्री० [सं० वेणी] १. माथे के ऊपरी भाग के दोनों तरफ के वे थोड़े-से बाल जिन्हें कुछ स्त्रियाँ तीन लड़ों में गूँथकर जूड़े की तरफ ले जाकर बाँधती हैं। २. तीन लड़ियों में गूँथी हुई चोटी या बाल। ३. घोड़ों के माथे पर की एक भौंरी।

मेंबर–पुं० दे० 'सदस्य'।

मेंह–पुं० [सं० मेघ] आकाश से बरसनेवाला पानी। वर्षा।

मेंहरा*–पुं० दे० 'मेंह'।

मेकल–पुं० [सं०] विन्ध्य प्रदेश का वह पर्वत जिससे नर्मदा नदी निकली है।

मेख–स्त्री० [फा०] १. कील। काँटा। २. लकड़ी का खूँटा।

मेखचू–पुं०[फा०] मेख ठोंकने की हथौड़ी।

मेखला–स्त्री० [सं०] १. किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरनेवाली डोरी, शृंखला, रेखा आदि। २. करधनी। तागड़ी। किंकिणी। ३. मंडल। मेंडरा। ४. पर्वत का मध्य भाग। ५. वह कपड़ा जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफनी। अलफी।

मेघ–पुं० [सं०] १. बादल। २. संगीत

में छः रागों में से एक।

मेघडंबर-पुं० [सं०] १. बादल की गरज। २. बहुत बड़ा शामियाना।

मेघनाद-पुं० [सं०] १. बादल की गरज। २. रावण का पुत्र, इन्द्रजीत्। ३. मोर।

मेघराज-पुं० [सं०] इन्द्र।

मेघवाई*-स्त्री० [हिं० मेघ] बादलों की घटा।

मेघा†-पुं० दे० 'मेढ़क'।

मेघागम-पुं० [सं०] वर्षा ऋतु का आरम्भ।

मेघाच्छन्न-वि० [सं०] मेघों या बादलों से भरा या छाया हुआ (आकाश)।

मेघावर*-पुं० दे० 'मेघवाई'।

मेघावारि*-स्त्री० दे० 'मेघवाई'।

मेघौना-पुं० [सं० मेघ + वर्ण] नीले रंग का एक प्रकार का कपड़ा।

मेचक-वि० [सं०] [भाव० मेचकता] १. काला। श्याम। २. अँधेरा।
पुं० १. धूआँ। २. बादल।

मेज-स्त्री० [फा०] लिखने-पढ़ने आदि के लिए बनी ऊँची चौकी। (टेबुल)

मेजबान-पुं० [फा०] १. वह जिसके यहाँ कोई अतिथि या मेहमान आकर ठहरे। २. वह जो लोगों को अपने यहाँ किसी कार्य, विशेषतः भोजन, जल-पान आदि के लिए निमंत्रित करे। आतिथ्य करनेवाला। मेहमानदार।

मेजबानी-स्त्री० [फा० मेजबान] १. मेजबान का भाव या धर्म। २. वे खाद्य पदार्थ जो बरात आने पर पहले-पहल कन्या पक्ष से बरातियों के लिए भेजे जाते हैं।

मेजा†-पुं० = मेंढ़क।

मेट-पुं० [अं०] मजदूरों का सरदार।

मेटक, मेटनहारा*-वि० [हिं० मेटना] मिटानेवाला।

मेटना†-स० = मिटाना।

मेटा†-पुं० दे० 'मटका'।

मेड़-स्त्री० दे० 'मेंड'।

मेड़राना*-अ० दे० 'मँड़लाना'।

मेढ़क-पुं० दे० 'मेंढ़क'।

मेढ़ा-पुं० [सं० मेढ़] [स्त्री० मेढ़ी] भेड़ की तरह का पर उससे कुछ बड़ा
प्रकार का चौपाया।

मेढ़ी†-स्त्री० दे० 'मेंढ़ी'।

मेथी-स्त्री० [सं०] एक छोटा
जिसकी पत्तियों का साग बनता है।

मेथौरी-स्त्री० [हिं० मेथी + औरी] बड़
जिसमें मेथी का साग मिला रहता है।

मेद-पुं० [सं० मेदस्, मेद] १. च
२. कस्तूरी।
स्त्री० = मेदा (ओषधि)।

मेदनी-स्त्री० [सं० मेदिनी ?] या
का वह दल जो झंडा लेकर किसी ती
देव-थान को जाता है।

मेदा-स्त्री० [सं०] एक प्रकार की सुग
जड़ जो औषध के काम में आती है।
पुं० [अ०] पेट का वह भीतरी
जिसमें अन्न पचता है। पक्वाशय।

मेदिनी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

मेदुर-वि० [सं०] १. चिकना। स्नि
२. मोटा या गाढ़ा।

मेध-पुं० [सं०] यज्ञ।

मेधा स्त्री० [सं०] बातें समझने
स्मरण रखने की शक्ति। धारणा शक्ति

मेधावी-वि० [सं०] [स्त्री० मेधावि
१. जिसकी मेधा या धारणा शक्ति
हो। बुद्धिमान्। २. पंडित विद्वान्।

मेध्य-वि० [सं०] १. यज्ञ-संबंधी। २.
पुं० १. बकरी। २. जौ। ३. खैर।

मेना-स० [हिं० मोयन] १
आदि में मोयन डालना। २. मिलाना।

मेम-स्त्री० [अं० मैडम] युरोप, अमेरि
आदि पाश्चात्य देश की स्त्री।

मेमना-पुं० [मैं-मैं से अनु०] १. भेड़
बच्चा। २. घोड़े की एक जाति।

मेमार-पुं० [अ०] [भाव० मेमारी
मकान बनानेवाला कारीगर। राज।

का उलटा। जैसे-मेरु-पृष्ठ यंत्र (तांत्रिकों का)

मेरे-सर्व० [हिं० मेरा] १. 'मेरा' का बहुवचन। २. 'मेरा' का वह रूप जो उसके बाद की संज्ञा में विभक्ति लगने पर होता है। जैसे-मेरे भाई का।

मेल-पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया या भाव। समागम। मिलाप। २. आपस का सद्भाव। 'वैर-विरोध' का उलटा। मैत्री। मित्रता। ३. आपस में एक समान होना। विरुद्ध न होना। संगति। अनुरूपता। (एग्रिमेंट)

मुहा०-मेल खाना, बैठना या मिलना = (क) संगति या संयोग का ठीक और उपयुक्त होना। (ख) दो चीजों का जोड़ ठीक बैठना। ***मेल बिसारना** = स्नेह या मैत्री का व्यवहार भूल जाना या छोड़ देना।

४. मिश्रण। मिलावट। †५. ढंग। ६. प्रकार। तरह।

स्त्री० [अं०] १. डाक। २ डाक गाड़ी।

मेलक-पुं० [सं०] १. संग-साथ। पहचान। २. मिलान। ३. समूह। ४. मेला।

वि० [हिं० मेल] मेल कराने या मिलानेवाला।

मेल-जोल-पुं० [हिं० मिलना + जुलना] प्रायः मिलते रहने से उत्पन्न सम्बन्ध। मेल-मिलाप। घनिष्टता।

मेलना*-स० [हिं० मेल] १. मिश्रित करना। मिलाना। २. डालना। ३. पहनाना। ४. लगाना। ५. फेंकना।

अ० इकट्ठा होना। मिलना।

मेल-मिलाप-पुं० दे० 'मेल-जोल'।

मेला-पुं० [सं० मेलक] १. उत्सव, त्योहार आदि के समय होनेवाला बहुत से लोगों का जमावड़ा। २. भीड़।

मेलान-पुं० [हिं० मेलक] १. ठहराव। २. पड़ाव। डेरा। उदा०-'सागर तीन मेलान पुनि करिहैं रघुकुल नाह'।-केशव।

मेली-वि० [हिं० मेल] १. जिससे मेल-

मिलाप हो। २. जल्दी हिल-मिल जानेवाला। मिलनसार। ३. संगी। साथी।

मेल्हना†-अ० [?] १. विकल होना। २. आना-कानी करके समय बिताना।

मेवा-पुं० [फा०] किशमिश, बादाम, आदि सुखाये हुए बढ़िया फल।

मेवाटी-स्त्री० [फा० मेवा + बाटी] मेवे भरकर बनाया जानेवाला एक पकवान।

मेवासा*-पुं० [हिं० मवासा] १. किला। गढ़। २. सुरक्षित स्थान। ३. घर।

मेवासी-पुं० [हिं० मेवासा] १. घर का मालिक। २. किले में रहनेवाला। वि० सुरक्षित और प्रबल।

मेष-पुं० [सं०] १. भेड़। २. बारह राशियों में से पहली राशि। जिसमें छाछठ तारे इस प्रकार हैं कि उन सबके योग से मेढ़े की आकृति बन जाती है। (एरीज़)

मेसू-पुं० [?] बेसन की बनी हुई बरफी।

मेहँदी-स्त्री० [सं० मेन्धी] एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ पीसकर स्त्रियाँ हथेली या तलवे रँगने के लिए लगाती हैं।

मेह-पुं० [सं०] १. मूत्र। २. प्रमेह रोग। *पुं० १. दे० 'मेघ'। २. दे० 'मेंह'।

मेहतर-पुं० [फा०] [स्त्री० मेहतरानी] १. मुसलमान भंगी। २. हलालखोर।

मेहनत-स्त्री० [अ०] परिश्रम।

मेहनताना-पुं० दे० 'पारिश्रमिक'।

मेहनती-वि० [हिं० मेहनत] परिश्रमी।

मेहमान-पुं० [फा०] अतिथि।

मेहमानी-स्त्री० [फा० मेहमान] १. अतिथि-सत्कार। २. मेहमान बनकर रहना। ३. दे० 'मेजबानी' २.।

मेहर-स्त्री० [फा०] कृपा। दया। †स्त्री० दे० 'मेहरी'।

मेहरबान-वि० [सं०] कृपालु।

मेहरबानी-स्त्री० [फा०] दया। कृपा।

मेहरा-पुं० [हिं० मेहरी] स्त्रियों की-सी चेष्टा या हाव भाव करनेवाला। जनखा।

*पुं० [सं० मेघ] मेघ। बादल।

मेहराना†-स० [हिं० मेंह + राना(प्रत्य०)] वर्षा आदि होने पर नमकीन और कुर पकवानों आदि का इस प्रकार मुलायम जाना कि उनका कुरकुरापन जाता रहे।

मेहराब-स्त्री० [अ०] द्वार आदि ऊपर की अर्द्ध-मंडलाकार रचना।

मेहरारू†-स्त्री० दे० 'मेहरी'।

मेहरी-स्त्री० [सं० महिला] १. औरत। २. पत्नी। जोरू।

मैं-सर्व० [सं० अहम्] सर्वनाम उ पुरुष में कर्त्ता का रूप। स्वयं। खुद। †विभ० हिंदी की 'में' विभक्ति का ब्रज०

मैड़*-स्त्री० दे० 'मेंड़'।

मै-स्त्री० [अ०] शराब। मद्य। *अव्य० दे० 'मय'।

मैका-पुं० दे० 'मायका'।

मैगर*-पुं० = मैगल।

मैगल-पुं० [सं० मदकल] मस्त हाथी

मैच-पुं० [अं०] खेल की प्रतियोगिता

मैजल*-स्त्री० [अ० मंजिल] १. प टिकान। २. यात्रा। प्रवास।

मैत्री-स्त्री० [सं०] मित्रता। दोस्ती।

मैथिल-पुं० [सं०] मिथिला का निवासी

मैथिली-स्त्री० [सं०] जानकी।

मैथुन-पुं० [सं०] स्त्री के साथ पुरु समागम। संभोग।

मैथुनिक-वि० [सं०] १. मैथुन से रखनेवाला। २. स्त्रीलिंग और पुंलिंग दोनों के पारस्परिक व्यवहार या संबंध रखनेवाला। (सैक्सुअल)

मैदा-पुं० [फा०] बहुत महीन आटा।

मैदान-पुं० [फा०] [वि० मैदानी] लंबा-चौड़ा खाली स्थान। सपाट भूमि। **मुहा०-मैदान में आना** = मुकाबले आना। **मैदान साफ होना** = मार्ग में बाधा या रुकावट न आना। २. युद्ध क्षेत्र। रण भूमि।

की दृष्टि या विचार से उसकी माता (और फलतः पिता) का घर । मायका । नैहर ।

मौं*-अव्य० दे० 'मैं' ।

मौंछ-स्त्री० दे० 'मूँछ' ।

मौंढ़ा-पुं० दे० 'कंधा' ।

मो*-सर्व० [सं० मम] १. मेरा । २. अवधी और व्रजभाषा में 'मैं' का वह रूप जो उसे कर्त्ता कारक के सिवा दूसरे कारक का चिह्न लगने पर प्राप्त होता है ।

मोकना*-स० दे० 'छोड़ना' ।

मोकल*-वि० दे० 'मुक्त' ।

मोकला†-वि० [हिं० मोकल] १. लंबा-चौड़ा । विस्तृत । २. छुटा या खुला हुआ ।

मोक्ष-पुं० [सं०] १. बंधन से मुक्त । छुटकारा । २. जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना । मुक्ति । ३. मृत्यु ।

मोख*-पुं० दे० 'मोक्ष' ।

मोखा-पुं० [सं० मुख] दीवार में बना हुआ छोटा छेद ।

मोगरा-पुं० [सं० मुद्गर] एक प्रकार का बढ़िया बड़ा बेला (फूल) ।

मोगल-पुं० दे० 'मुगल' ।

मोगा-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का रेशम । २. इस रेशम का बना हुआ कपड़ा ।

मोघ-वि० [सं०] १. जो अपना प्रभाव या फल दिखला सके । २. जो न होने के समान हो । जिसके होने का कोई फल या महत्त्व न हो । ३. रद्द या निरर्थक किया हुआ । (निल्ल)

मोघन-पुं० [सं०] १. न किये हुए के समान करने की क्रिया या भाव । रद्द या व्यर्थ करना । व्यर्थन । (नलिफिकेशन)

मोच-स्त्री० [सं० मुच] शरीर के किसी अंग के जोड़ का कुछ इधर-उधर हट जाना ।

मोचन-पुं० [सं०] १. बंधन आदि खोलकर मुक्त करना । २. दूर करना । हटाना । ३. छीन लेना । ४. दे० 'विमोचन' ३. ।

मोचना-स० [सं० मोचन] १. बंधन,

संकट आदि से मुक्त करना या कराना, बचाना या उबारना। उदा०—काटि कै अघ-फाँस पठवहु, ज्यौं दियौ गज मोचि।—सूर। २. गिराना। ३. बहाना।

पुं० हज्जामों का बाल उखाड़ने का औजार या चिमटी।

मोची–पुं० [सं० मोचन] जूते आदि बनानेवाला कारीगर।

वि० [सं० मचिन्] [स्त्री० मोचीनी] १. छुड़ानेवाला। २. दूर करनेवाला।

मोच्छ*–पुं० दे० 'मोक्ष'।

मोछ–स्त्री० दे० 'मूँछ'।

*पुं० दे० 'मोक्ष'।

मोजा–पुं० [फा०] १. पैरों में पहनने का पायताबा। जुर्राब। २. पिंडली के नीचे का भाग।

मोट–स्त्री० [हिं० मोटरी] १. गठरी। २. ढेर। राशि।

पुं० चमड़े का बड़ा थैला जिससे खेत सींचते हैं। चरसा। पुर।

*वि० दे० 'मोटा'।

मोटर–स्त्री० [अं०] १. एक प्रकार का यंत्र जो विद्युत्, पेट्रोल, कोयले आदि से चलता और दूसरे यंत्रों का संचालन करता है। चालक-यन्त्र। २. एक प्रकार की प्रसिद्ध गाड़ी जो इस यंत्र से चलती है।

मोटरी–स्त्री० [हिं० मोट] छोटी गठरी।

मोटा–वि० [सं० मुष्ट] [स्त्री० मोटी] १. फूले हुए या स्थूल शरीरवाला। 'दुबला' का उलटा। २. दलदार। 'पतला' का उलटा। ३. अधिक घेरे या मानवाला। ४. सबल और संपन्न।

यौ०–मोटा असामी = अमीर।

५. दरदरा। ६. साधारण या घटिया।

मुहा०–मोटे हिसाब से = अंदाज या अनुमान से। **मोटा दिखाई देना** = कम दिखाई देना।

†७. बड़ा। (राज० और गुन०)

मोटाई–स्त्री० [हिं० मोटा + ई (प्रत्य०)] १. 'मोटा' होने का भाव। मोटापन। शरारत। पाजीपन।

मोटाना†–अ० [हिं० मोटा] १. होना। २. घमंडी होना। ३. धनी

स० दूसरे को मोटा करना।

मोटापा–पुं० [हिं० मोटा] १. मोटापन या स्थूलता। २. दे० 'मोटा

मोटा-मोटी–क्रि० वि० [हिं० मोटा हिसाब से। अनुमानतः।

मोटिया–पुं० दे० 'खद्दर'।

पुं० [हिं० मोट = बोझ] मोट ढोनेवाला मजदूर।

मोट्टायित–पुं० [सं०] साहित्य में जिसमें प्रिय के रूप, गुण आदि की सुनकर मन मुग्ध होने के कारण अनुराग प्रकट किया जाता है।

मोठ–स्त्री० [सं० मकुष्ठ] मूँग की एक मोटा अन्न।

मोड़–पुं० [हिं० मुड़ना] १. मुड़ने की क्रिया या भाव। २. रास्ते का वह अंश या स्थान जहाँ से ओर मुड़ता या घूमता है।

मोड़ना–स० [हिं० मुड़ना] १. मुड़ने में प्रवृत्त करना।

मुहा०–मुँह मोड़ना = विमुख

२. कुछ अंश उलट या समेटकर करना। ३. कुंठित करना। जैसे-

मोढ़ा†–पुं० १. दे० 'मूढ़ा'। २. दे०

मोतिया–पुं० [हिं० मोती] १. एक का बेला। २. एक प्रकार का

वि० मोती की तरह छोटे गोल

*पुं० = मोती।

मोतियाबिंद–पुं० [हिं० मोतिया विंदु] आँख का एक रोग जिसमें आगे गोल झिल्ली पड़ जाती है।

मोतिया भात–पुं० एक प्रकार का भात या पके हुए चावल।

मोती–पुं० [सं० मौक्तिक] समुद्री

स्त्री० [मो + मति] मेरी मति । मेरी सम्पत्ति ।

मोमबत्ती–स्त्री० [फ़ा० मोम + हिं० बत्ती] मोम आदि की बत्ती जो प्रकाश के लिए जलाई जाती है ।

मोमियाई–स्त्री० [फ़ा०] १. नकली शिलाजीत । २. प्राचीन मिस्र में मृतकों के शरीर जो विशेष प्रक्रिया से सुरक्षित किये जाते थे ।

मोमी–वि० [फ़ा०] मोम का बना हुआ ।

मोय*–सर्व० = मुझे ।

मोयन–पुं० [हिं० मैन = मोम] गूँधे हुए आटे में डाला जानेवाला घी या तेल जिसके कारण उससे बननेवाली वस्तु खसखसी और मुलायम हो ।

मोर–पुं० [सं० मयूर] [स्त्री० मोरनी] एक अत्यंत सुन्दर प्रसिद्ध नाचनेवाला बड़ा पक्षी । *सर्व० [सं० मम] [स्त्री० मोरी] अवधी में 'मैं' का संबंध-कारक का रूप । मेरा ।

मोरचंग–पुं० दे० 'मुरचंग' ।

मोरचंद्रिका–स्त्री० [हिं० मोर + चंद्रिका] मोर-पंख पर की चंद्राकार बूटी ।

मोरचा–पुं० [फ़ा०] १. लोहे पर चढ़नेवाला वह काला अंश जो वायु और नमी के प्रभाव से उत्पन्न होता है । जंग । २. शीशे, दर्पण पर जमी हुई मैल ।

पुं० [फ़ा० मोरचाल] १. वह गड्ढा जो किले के चारो ओर रक्षा के लिए खोदा जाता है । २. वह स्थान जहाँ से गढ़ या नगर की रक्षा की जाती है । ३. द्वन्द्व या प्रतियोगिता में होनेवाला सामना ।

मुहा०–मोरचा जीतना या मारना = विजय प्राप्त करना । **मोरचा लेना** = (क) युद्ध करना । (ख) द्वन्द्व या प्रतियोगिता में सामने आना ।

मोरचा-बंदी–स्त्री० [हिं० मोरचा + फ़ा० बंदी] शत्रु पर आक्रमण करने या अपनी रक्षा करने के लिए मोरचा बनाना ।

मोरछड़*–पुं० दे० 'मोरछल' ।

मोरछल–पुं० [हिं० मोर + छड़] मोर के

परों से बना हुआ चँवर।

मोरछाँह*–स्त्री॰ दे॰ 'मोरछल'।

मोरन*–स्त्री॰ दे॰ 'शिखरन'।

मोरना*–स॰ [हिं॰ मोरन] दही मथकर मक्खन निकालना।

*स॰ = मोड़ना।

मोरनी–स्त्री॰ [हिं॰ मोर] १. मोर पक्षी की मादा। २. नथ में लगनेवाला मोर के आकार का टिकड़ा।

मोर-पंख–पुं॰ [हिं॰ मोर + पंख] १. मोर का पर। २. मोर के पर की कलगी।

मोर-पंखा*–पुं॰ = मोर-पंख।

मोरम–पुं॰ [तेलगु मोरमु, पाली मरुम्ब] एक प्रकार का पहाड़ी लाल बालू या रेत जो सड़कों आदि पर बिछाते हैं।

मोर-मुकुट–पुं॰ [हिं॰ मोर + मुकुट] मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।

मोरा*–वि॰ दे॰ 'मेरा'।

मोराना*–स॰ [हिं॰ मोड़ना] चारो ओर घुमाना।

मोरी–स्त्री॰ [हिं॰ मोहरी] गंदा पानी बहने की नाली।

*स्त्री॰ दे॰ 'मोरनी'।

मोल–पुं॰ [सं॰ मूल्य] दाम। मूल्य।

मुहा॰–मोल लेना = दाम देकर लेना। खरीदना। **(कोई अनिष्ट बात) मोल लेना** = अपने ऊपर लेना। अपने साथ लगाना। कैसे–झगड़ा मोल लेना। रोग मोल लेना।

पद॰–मोल का लिया = खरीदा हुआ। क्रीत। उदा॰–मोंसो कहत मोल को लीन्हों।—सूर।

मोल-चाल = (क) किसी वस्तु का दाम बढ़ाकर कहना। (ख) किसी चीज का दाम घटा-बढ़ाकर तै करना।

मोलना–पुं॰ [अ॰ मौलाना] मौलवी।

मोलाना*–स॰ [हिं॰ मोल] मूल्य या दाम पूछना या तै करना।

मोवना*–स॰ दे॰ 'मोना'।

मोष (षु)–पुं॰ = मोक्ष।

मोह–पुं॰ [सं॰] १. अज्ञान। २. भ्रांति। ३. ईश्वर का ध्यान छो शरीर और सांसारिक पदार्थों को सर्वस्व समझना। ४. प्रेम। प्यार चिंता, दुख, भय, विरह आदि के अपनी सुध-बुध भूल जाना जो में एक संचारी भाव माना गया ६. मूर्च्छा। बेहोशी।

मोहक–वि॰ [सं॰] [भाव॰ मो १. मोह उत्पन्न करनेवाला। २. करने या लुभानेवाला। मनोहर।

मोहताज–वि॰ [अ॰ मुहताज] १. कंगाल। २. विशेष कामना रखने

मोहन–पुं॰ [सं॰] १. मोहित क्रिया या भाव। २. किसी को मूर्छित करने का एक तांत्रिक प्रयोग एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्छित किया था। ४. श्रीकृष्ण।

वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ मोहनी] १. मोह करनेवाला। २. मन को लुभानेवाला

मोहन-भोग–पुं॰ दे॰ 'हलुआ'।

मोहन-माला–स्त्री॰ [सं॰] सोने की बनी हुई माला।

मोहना–अ॰ [सं॰ मोहन] १. होना। रीझना। २. मूर्छित होना।

स॰ [हिं॰ मोहन] १. मोहित रक्त करना। लुभाना। २. भ्रम में डा

मोह-निद्रा–स्त्री॰ [सं॰] १. वह जिसमें किसी भ्रामक बात या दूषित के वश में पड़कर मनुष्य वास्तविक भूल जाता है। २. मोह के कारण होने अज्ञान।

मोह-निशा–स्त्री॰ दे॰ 'मोह-रात्रि'।

मोहनी–स्त्री॰ [सं॰] १. भगवान् का स्त्रीवाला रूप जो उन्होंने समुद्र मंथन उपरान्त अमृत बाँटने के समय बनाया

मोहिं*-सर्व० [सं० मह्यम्] मुझे ।

मोहित-वि० [सं०] [स्त्री० मोहिता] १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ । मुग्ध । २. लुभाया हुआ । आसक्त । लुब्ध ।

मोहिनी-वि०, स्त्री० [सं०] मोहनेवाली । स्त्री० दे० 'मोहनी' ।

मोही-वि० [सं० मोहिन्] मोहित करनेवाला । वि० [हिं० मोह + ई (प्रत्य०)] १. मोह या प्रेम करनेवाला । २. लोभी । लालची ।

मौं*-अव्य० [सं० मध्य] ब्रज भाषा में अधिकरण कारक का चिह्न । में । उदा०-काकैं बन हौं तरौ गुसाईं, कछु न भक्ति मौं ।-सूर ।

मौंगा*-वि० [सं० मौन] मौन । चुप ।

मौंगी*-स्त्री० [हिं० मौन] चुप्पी । मौन ।

मौंडा*-पुं० [सं० माणवक] [स्त्री० मौंडी] लड़का । बच्चा ।

मौका-पुं० [अ०] १. किसी घटना के घटित होने का स्थान । २. अवसर । समय ।

मौकूफ-वि० [अ०] [भाव० मौकूफी] १. रोका या बंद किया हुआ । २. नौकरी से हटाया हुआ । बरखास्त । ३. रद किया हुआ । ४. अवलंबित । आश्रित ।

मौके-बेमौके-क्रि० वि० [अ० मौकः + फा० बे + मौकः] उचित और अनुचित या उपयुक्त और अनुपयुक्त सभी अवसरों पर । समय-कुसमय ।

मौक्तिक-पुं० [सं०] मुक्ता । मोती । वि० १. मोतियों का । २. मुक्ता संबंधी ।

मौक्तिक-माला (छंद)-स्त्री० [सं०] पिंगल में एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, तगण, नगण और अन्त में दो गुरु होते हैं ।

मौखर्य-पुं० = मुखरता ।

मौखिक-वि० [सं०] १. मुख, वाणी या उच्चारण से सम्बन्ध रखनेवाला । कंठ से निकलनेवाले शब्द का । (वोकल) २. मुख का । ३. मुह स कहा या कहलाया हुआ । जबानी । 'लिखित' से भिन्न ।

(ओरल, वरबल)

मौज–स्त्री॰ [अ॰] १. लहर। तरंग। २. मन की उमंग। तरंग। (व्हिम)

मुहा॰–(किसी की) मौज पाना = इच्छा या मनोवृत्ति से अवगत होना। ३. सुख। आनन्द। मजा।

मौजा–पुं॰ [अ॰] गाँव।

मौजी–वि॰ [हिं॰ मौज + ई (प्रत्य॰)] १. जो जी में आवे, वही करनेवाला। मनमौजी। तरंगी। २. सदा प्रसन्न रहने और सुख-भोग करनेवाला। आनंदी।

मौजूद–वि॰ [अ॰] [भाव॰ मौजूदगी] १. उपस्थित। विद्यमान। २. जो सामने हो। प्रस्तुत। तैयार।

मौजूदा–वि॰ [अ॰] १. वर्त्तमान काल का। इस समय का। २. उपस्थित। वर्त्तमान।

मौत–स्त्री॰ [अ॰] १. मरण। मृत्यु।

मुहा॰–मौत सिर पर खेलना = मृत्यु या भारी संकट समीप होना। **मौत के मुँह में** = घोर संकट में।

२. मरने का समय या काल। ३. मरने के समय का-सा कष्ट।

मौन–पुं॰ [सं॰] १. मुनियों का व्रत या चर्या। २. चुप रहना। न बोलना। चुप्पी।

मुहा॰–मौन लेना या साधना = चुप रहना या चुप रहने का संकल्प करना। न बोलना। **मौन सँभारना*** = मौन साधना। चुप होना।

वि॰ [सं॰ मौनी] जो न बोले। चुप।

*पुं॰ [सं॰ मौण] बरतन।

मौनी–वि॰ [सं॰ मौनिन्] मौन धारण करने या चुप रहनेवाला।

मौर–पुं॰ [सं॰ मुकुट] [स्त्री॰ अल्पा॰ मौरी] १. विवाह के समय वर का पहनाया जानेवाला एक प्रकार का शिरोभूषण। २. शिरोमणि। प्रधान।

पुं॰ [सं॰ मुकुल] मंजरी। बौर।

पुं॰ [सं॰ मौलि] १. सिर। २. गरदन।

मौरना*-स॰ दे॰ 'बौरना'।

मौरसिरी*–स्त्री॰ = मौलसिरी।

मौरूसी–वि॰ [अ॰] बाप-दादा के से चला आया हुआ। पैतृक। (धन-स

मौरूसी-काश्तकार–पुं॰ दे॰ 'काश्त के अंतर्गत।

मौल–वि॰ [सं॰] १. मूल संबंधी। मूल का। ३. बिल्कुल आरंभिक या काल से चला आनेवाला।

मौलवी–पुं॰ [अ॰] मुसलमान शास्त्र का आचार्य।

मौलसिरी–स्त्री॰ [सं॰ मौलि + श्री] बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे फूल लगते हैं। बकुल।

मौला–पुं॰ [अ॰] १. मित्र। २. सहायक। मददगार। ३. मालिक। ४. ईश्वर।

मौलाना–पुं॰ दे॰ 'मौलवी'।

मौलि–पुं॰ [सं॰] १. चोटी। शिर मस्तक। सिर। ३. किरीट। ४. ज ५. प्रधान। सरदार। मुखिया।

मौलिक–वि॰ [सं॰] [भाव॰ मौलि १. मूल या जड़ से संबंध रखनेवाला। मूल तत्त्व या सिद्धान्त से सम्बन्ध रखने तात्त्विक। (फन्डामेन्टल) ३. असली (ग्रंथ या विचार) जो किसी का नकल या आधार पर न हो, उद्भावना से निकला हो। (ओरि ५. दे॰ 'मूलिक'।

मौलि-मणि–पुं॰ = शिरोमणि।

मौली–वि॰ [सं॰ मौलिन्] मौलि करनेवाला।

स्त्री॰ पूजा आदि के लिए रँगा हुआ नारा।

मौसर*–वि॰ दे॰ 'मयस्सर'।

मौसा–पुं॰ [हिं॰ मौसी] [स्त्री॰ मौसी माता की बहन (मौसी) का पति।

मौसाल†–स्त्री॰ [हिं॰ मौसी +

सी और मौसा का घर

] [वि० मौसिमी]
, वायु की खुश्की और
आदि के विचार से किसी
की वह अवस्था जिसमें
परिवर्तन होते रहते हैं।
आदि का उपयुक्त समय
फसल आदि के विचार
आम, पपीते आदि का

दे० 'मौसेरा'।
[सं० मातृष्वसा] [वि०
की बहन। मासी।
[हिं० मौसी + एरा (प्रत्य०)]
का। जैसे-मौसेरा भाई।
[अनु०] १. बिल्ली की बोली।
म्यावँ करना = दीनता-
दबकर धीरे से बोलना।

'म्यावँ'।
[फा० मियान] १. वह खाना
आदि के फल रहते हैं।
[हिं० म्यान] म्यान में रखना।

*पुं० दे० 'मियाना'।

म्युनिसिपैलिटी-स्त्री० [अं०] किसी नगर की सीमा के अन्दर, स्वास्थ्य, शुचिता, लोक वास्तु, आदि की व्यवस्था करनेवाली वह संस्था जो साधारणतः नागरिकों के चुने हुए प्रतिनिधियों के अधीन रहती है। नगर-पालिका।

म्यूजियम-पुं० [अं०] अजायब-घर।

म्रजाद*-स्त्री० दे० 'मर्यादा'।

म्रितक*-वि० = मृतक।

म्रितक-थान*-पुं० = श्मशान।

म्रियमाण-वि० [सं०] मरे हुए के समान। मरा हुआ-सा।

म्लान-वि० [सं०] [भाव० म्लानता] १. कुम्हलाया हुआ। मलिन। २. दुर्बल। ३. मैला। मलिन।

म्लानता-स्त्री० [सं०] १. म्लान होने का भाव। मलिनता। २. दुर्बलता।

म्लानि-स्त्री० दे० 'म्लानता'।

म्लेच्छ-पुं० [सं०] हिन्दुओं की दृष्टि से वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो। वि० १. नीच। २. पापी।

म्हा*-सर्व० दे० 'मुझ'।

म्हार*-सर्व० दे० 'हमारा'।

य

माला का २६ वाँ अक्षर,
स्थान तालू है। छन्द
का संक्षिप्त रूप और
है।
] [वि० यांत्रिक, यंत्रित]
कुछ विशिष्ट प्रकार के
जिनमें कुछ अलौकिक शक्ति
। २. उक्त प्रकार के कोष्ठकों
जो अनिष्ट आदि से रक्षा
धारण किया या और कई
लाया जाता है। जंतर।

(एम्युलेट) ३. वह उपकरण जो कोई विशेष कार्य करने या कोई वस्तु बनाने के लिए हो। कल। (मशीन) ४. बाजा। वाद्य। ५. ताला।

यंत्रणा-स्त्री० [सं०] १. कष्ट। तकलीफ। २. दर्द। पीड़ा।

यंत्र-मंत्र-पुं० [सं०] जादू-टोना।

यंत्र-युक्त-वि० दे० 'यंत्र-सज्ज'।

यंत्र-विद्या-स्त्री० [सं०] कलें या यंत्र चलाने और बनाने की विद्या। (इंजीनियरिंग)

यंत्र-शाला–स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के यंत्र रखे हों या बनते हों। २. वेधशाला।

यंत्र-सज्ज–वि० [सं०] मशीन-गनों और टैंकों आदि से युक्त और आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सजी हुई (सेना)।

यंत्रालय–पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कलें हो। २. छापाखाना।

यंत्रिका–स्त्री० [सं०] ताला।

यंत्रित–वि० [सं०] १. यंत्र के द्वारा रोका या बंद किया हुआ। २. ताले में बंद।

यंत्री–पुं० [सं० यंत्रिन्] १. यंत्र-मंत्र करनेवाला। तांत्रिक। २. बाजा बजानेवाला। ३. यंत्र या मशीन की सहायता से काम करनेवाला। ४. दे० 'यांत्रिक'।

यंत्रीकरण–पुं० दे० 'यांत्रीकरण'।

यकायक–क्रि०वि०[फा०]अचानक। सहसा।

यकीन–पुं० [अ०] विश्वास। एतबार।

यकृत–पुं० [सं०] १. पेट में दाहिनी ओर को वह थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। जिगर। २. तापतिल्ली नामक रोग।

यक्ष–पुं० [सं०] १. कुबेर की निधियों के रक्षक, एक प्रकार के देवता। २. कुबेर।

यक्षिणी–स्त्री० [सं०] १. यक्ष जाति की स्त्री। २. कुबेर की पत्नी।

यक्ष्मा–पुं० [सं० यक्ष्मन्] यक्ष नामक रोग।

यखनी–स्त्री० [फा०] उबाले हुए मांस का रसा या शोरबा।

यगण–पुं० [सं०] छंदशास्त्र में एक लघु और दो गुरु मात्राओं का एक गण जिसका संक्षिप्त रूप 'य' है। (।ऽऽ)।

यच्छ†–पुं० दे० 'यक्ष'।

यजन–पुं० [सं०] यज्ञ करना।

यजना*–स० [सं० यजन] १. यज्ञ करना। २. पूजा करना।

यजमान–पुं० [सं०] [भाव० यजमानी] १. यज्ञ करनेवाला। यष्टा। २. ब्राह्मण की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उससे अपने कृत्य कराता है।

यजुर्वेद–पुं० [सं०] [वि० यजु चार वेदों में से एक, जिसमें यज्ञ विधान और विवरण है।

यज्ञ–पुं० [सं०] १. प्राचीन भारतीय का एक प्रसिद्ध धार्मिक कृत्य जिसमें आदि होते थे। मख। याग। अच्छा और शुभ कार्य विशेषतः धा लोकोपकार का कार्य।

यज्ञ-कुंड–पुं० [सं०] यज्ञ या हव का कुंड या वेदी।

यज्ञ-पशु–पुं० [सं०] यज्ञ में बलि जानेवाला पशु।

यज्ञ-पात्र–पुं० [सं०] यज्ञ में का वाला काठ का पात्र या बरतन।

यज्ञ-भूमि–स्त्री० [सं०] वह स्थ यज्ञ होता हो। यज्ञ-क्षेत्र।

यज्ञ-मंडप–पुं० [सं०] वह मंडप करने के लिए बनाया गया हो।

यज्ञ-शाला–स्त्री० = यज्ञ-मंडप।

यज्ञेश–पुं० [सं०] यज्ञ अथवा देवता। बृहस्पति। विष्णु।

यज्ञोपवीत–पुं० [सं०] १. यज्ञसूत्र। २. उपनयन संस्कार। जने

यतः–अव्य० [सं०] इस कारण से जब कि ऐसी अवस्था है। चूँकि। सम्बन्ध-पूरक 'अतः' है)

यति–पुं० [सं०] १. संन्यासी। २. ब्रह्मचारी।

स्त्री० [सं०] छंदों के चरणों में वह जहाँ पढ़ते समय कुछ विराम होता है।

यति-भंग–पुं० [सं०] छंद की रचना वह दोष जिसमें किसी चरण के वि स्थान के अंतिम शब्द के एक-दो अक्षर या अधिक हों या इधर-उधर जा पड़ें।

यति-भ्रष्ट–वि० [सं०] (कविता) जि यति-भंग दोष हो।

यथार्थ-अव्य० [सं०] [भाव० यथार्थता] १. ठीक। उचित। २. जैसा है, वैसा। ३. सत्य।

यथार्थतः-अव्य० [सं०] यथार्थ में। वास्तव में। सचमुच। (डी फैक्टो)

यथार्थता-स्त्री० [सं०] यथार्थ या वास्तविक होने की अवस्था या भाव। वास्तविकता। (रियेलिटी)

यथार्थवाद-पुं० [सं०] १. जो बात या पदार्थ वस्तुतः जिस रूप में हो उसे उसी रूप में मानना या ग्रहण करना। २. यह दार्शनिक विश्वास या सिद्धान्त कि भौतिक जगत की स्वतन्त्र सत्ता या आस्तित्व है और हमें सारा ज्ञान भौतिक तत्त्वों से होता है। (यह सिद्धांत आदर्शवाद के सिद्धांतों का उलटा या विरोधी है।) ३. साहित्य में यह सिद्धांत कि संसार में हमें जो चीजें जिन रूपों में दिखाई देती या मिलती हैं उनका ग्रहण तथा वर्णन हमें ठीक उन्हीं रूपों में करना चाहिए। (रियलिज्म, उक्त सभी अर्थों के लिए)

यथार्थवादी-पुं० [सं०] १. यथार्थ या सत्य कहनेवाला। सत्यवादी। २. साहित्य में यथार्थवाद का सिद्धांत माननेवाला। (रियलिस्ट)

यथावत-वि० [सं०] १. जैसा था, वैसा ही। २. जैसा होना चाहिए या जैसा होता हो, वैसा। ठीक तरह का। (ड्यूली) जैसे-**यथावत् व्यवहार** = विधि, विधान या कानून के अनुसार जैसा व्यवहार या प्रक्रिया होनी चाहिए वैसा व्यवहार या प्रक्रिया। (ड्यू प्रोसस ऑफ लॉ)

क्रि० वि० नियमानुसार जिस तरह होना चाहिए, उस तरह। (ड्यूली)

यथावसर-क्रि० वि० [सं०यथा + अवसर] जब जैसा अवसर हो। अवसर के अनुसार। मौके से।

यथा-विधि-क्रि० वि० [सं०] १. विधि के अनुसार ठीक। २. जिस प्रकार होना

चाहिए, ठीक उसी प्रकार। उचित रीति या ढंग से। (ड्यूली)

यथा-शक्ति–अव्य० [सं०] शक्ति के अनुसार। जहाँ तक हो सके। भर सक।

यथा-शक्य–अव्य० दे० 'यथा-शक्ति'।

यथा-शीघ्र–क्रि० वि० [सं०] जितनी जल्दी हो सके।

यथा-संख्य–पुं० [सं०] 'क्रम' नामक अलंकार का दूसरा नाम।

यथा-साध्य–अव्य० दे० 'यथा-शक्ति'।

यथास्थित–वि० [सं०] जैसा है, वैसा ही रहनेवाला। जैसे–**यथा-स्थित समझौता**=वह समझौता जो अब तक चली आई हुई स्थिति को उसी रूप में बनाये रखने और चलाये चलने के लिए हो। (स्टैंडिस्टल एग्रिमेन्ट)

यथेच्छ–अव्य० [सं०] इच्छा के अनुसार। जितना या जैसा चाहिए उतना या वैसा।

यथेच्छाचार–पुं० [सं०] [वि० यथेच्छाचारी] मन-माना काम करना। जो मन में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।

यथेच्छित–वि० दे० 'यथेच्छ'।

यथेष्ट–वि० [सं०] [भाव० यथेष्टता] जितना चाहिए, उतना भरपूर। पर्याप्त। (सफीशेन्ट)

यथेष्टता–क्रि० वि० [सं०] जितना या जैसा चाहिए, उतना या उस प्रकार से। पर्याप्ततः। (सफीशिएन्टली)

यथोचित–वि० [सं०] जैसा या जितना उचित हो, वैसा या उतना। (प्रॉपर)

यदपि*–अव्य० = यद्यपि।

यदा–अव्य० [सं०] जिस समय। जब।

यदा-कदा–अव्य० [सं०] कभी-कभी।

यदि–अव्य० [सं०] अगर। जो।

यदुराई*–पुं० = यदुराज।

यदुराज–पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

यदुवंशी–पुं० दे० 'यादव'।

यदृच्छया–क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। २. दैव संयोग से। ३. मन-माने ढंग

यद्यपि–अव्य० [सं०] यदि ऐसा
अगरचे। गो कि।

यम-पुं० [सं०] १. दे० 'यमराज'
इंद्रियों को वश में रखना। निग्रह।

यमक–पुं० [सं०] १. साहित्य में एक
का अनुप्रास (शब्दालंकार) जिसमें
स्वर अथवा वर्ण अलग अलग
कई बार आते और हर बार अपने
साथ अलग-अलग अर्थ के सूचक
जैसे–तू मोहन के उर बसी, है उरबसी

यम-कातर–पुं० [सं० यम + हिं०
१. यम का छुरा। २. एक प्रकार की त

यम-घंट–पुं० [सं०] दीपावली का
दिन।

यमज–पुं० [सं०] १. एक सा
हुए दो बच्चों का जोड़ा। जुड़वाँ
अश्विनीकुमार।

यमधार–पुं० [सं०] दुधारी तल

यमन*–पुं० = यवन।

यमनाह*–पुं० = यमराज।

यम-पट–पुं० [सं०] यमराज के
पापियों को मिलनेवाली यातनाओं
चित्र जो प्राचीन काल में लोग
दिखलाकर भीख माँगते फिरते थे।

यमपुर–पुं० = यम-लोक।

यम-यातना–स्त्री० [सं०] मृत्यु
होनेवाला शारीरिक और मानसिक

यमराज–पुं० [सं०] मृत्यु के बाद
व्यवस्था करनेवाले देवता। धर्मराज।

यमल–पुं० [सं०] युग्म। जोड़ा।

यम-लोक–पुं० [सं०] यमराज का
जहाँ मरने पर लोग जाते हैं। यमपुरी।

यमी–पुं० [सं० यमिन्] संयम करने
व्यक्ति। संयमी।
स्त्री० [सं०] यम की बहन, जो पीछे
नदी बन गई।

यमुना–स्त्री० [सं०] १. यम की

की एक प्रसिद्ध नदी।
] राजा नहुष का पुत्र
से हुआ था।
१. जौ (अन्न)। २.
जौ की तौल। ३. एक
की एक नाप।
] [स्त्री॰ यवनी] १.
। २. मुसलमान।
[सं॰] रंगशाला का परदा।
यशस्] १. अच्छा काम
होनेवाली सुख्याति। नेक-
। २. बड़ाई। प्रशंसा।
गाना = (क्रि॰) प्रशंसा करना।
करना। **यश मानना** =
एहसान मानना।
] एक प्रकार का हरा
बेल-दिली बनती है।
[सं॰ यशस्विन्] [स्त्री॰
यश मिला हो। कीर्त्तिमान्।
स्वी।
= यशोदा।
[सं॰] १. नंद की पत्नी,
को पाला था।
दे॰ 'यशोदा'।
] यज्ञ करनेवाला।
[सं॰] छड़ी।
यष्टि] छड़ी।
इदं] (बहु॰ ये) एक
प्रयोग वक्ता और श्रोता
अतिरिक्त सभी संज्ञाओं या
है।
[सं॰ इह] इस स्थान
।
[हिं॰ यह] १. पुरानी
रूप जो उसे कोई
प्राप्त होता है। २.
[हिं॰ यहाँ+ही] इसी
स्थान पर। इसी जगह।

यही-अव्य॰ [हिं॰ यह+ही] 'यह ही' का संक्षिप्त रूप। निश्चित रूप से यह।

यहूद-पुं॰ पश्चिमी एशिया के जुदा नामक प्रदेश का पुराना नाम।

यहूदी-पुं॰ [यहूद (देश)] [स्त्री॰ यहूदिन] यहूद या इसराईल नामक प्रदेश में बसनेवाली एक प्राचीन जाति जो पैगम्बर इब्राहीम की अनुयायी है। आज कल इस जाति के लोग सारे संसार में फैले हुए हैं। (ज्यू)

वि॰ यहूद देश संबंधी। यहूद का।

यहै*-सर्व॰ = यही (यह ही)।

यांत्रिक-वि॰ [सं॰] यंत्र-सम्बन्धी। यंत्र या यंत्रों का।

पुं॰ वह जो यंत्रों का बनाना, चलाना या सुधारना जानता हो। यंत्र-विद्या का ज्ञाता। (मकैनिक)

यांत्रीकरण-पुं॰ [सं॰] १. यंत्रों आदि से युक्त या सज्जित करना। २. कल-कारखाने आदि स्थापित करना।

या-अव्य॰ [फा॰] यदि यह न हो। अथवा। वा।

सर्व॰, वि॰ व्रज भाषा में 'यह' का कारक-चिह्न लगने के पहले का रूप।

याग-पुं॰ [सं॰] यज्ञ।

याचक-पुं॰ [सं॰] १. याचना करने या माँगनेवाला। भिखमंगा।

याचना-स्त्री॰ [सं॰] [वि॰ याच्य, याचक, याचित] कुछ पाने के लिए प्रार्थना करने की क्रिया या भाव। माँगना।

*स॰ १. माँगना। २. प्रार्थना करना।

याचिका-स्त्री॰ [सं॰] वह पत्र जिसमें किसी से कुछ याचना की गई हो। याचना-पत्र। (पेटिशन)

याचित-वि॰ [सं॰] माँगा हुआ।

याज*-पुं॰ = यज्ञ।

याजक-पुं॰ [सं॰] यज्ञ करनेवाला। यष्टा।

याजन-पुं० [सं०] यज्ञ करना।

याजी-वि० = याजक।

याज्ञिक-पुं० [सं०] १. यज्ञ करने या करानेवाला। २. ब्राह्मणों की एक जाति।

यातना-स्त्री० [सं०] कष्ट। पीड़ा।

यातायात-पुं० [सं०] एक स्थान से दूसरे स्थान को (व्यक्ति, माल आदि) आने-जाने की क्रिया या साधन। (कम्यूनिकेशन)

यातुधान-पुं० [सं०] [वि० यातुधानी] राक्षस।

यात्रा-स्त्री० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे दूरवर्ती स्थान तक जाने की क्रिया। सफर। २. धार्मिक उद्देश्य या भक्ति से पवित्र स्थान पर दर्शन, पूजा आदि के लिए जाना।

यात्रावाल-पुं० [सं० यात्रा + हिं० वाला] यात्रियों को देव-दर्शन करानेवाला पंडा।

यात्री-पुं० [सं०] १. यात्रा करनेवाला। मुसाफिर। २. धार्मिक दृष्टि से तीर्थयात्रा करनेवाला। ३. वह जो सैर-सपाटे के लिए देश-विदेश में घूमने के लिए चला हो। (टूरिस्ट)

याथातथ्य-पुं० [सं०] यथातथ होने का भाव। ज्यों का त्यों होना।

याद-स्त्री० [फा०] १. स्मरण। २. स्मृति।

यादगार-स्त्री० [फा०] स्मृति-चिह्न।

याददाश्त-स्त्री० [फा०] १. स्मरण-शक्ति। २. स्मरण रखने योग्य बात।

यादव-पुं० [सं०] [स्त्री० यादवी] १. यदु के वंशज। २. श्रीकृष्ण।

यादृश-वि० [सं०] जिस तरह का। जैसा।

यान-पुं० [सं०] १. वह चलनेवाला उपकरण जिसपर चढ़कर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते हैं। सवारी। (कनवेयेन्स) २. आकाश-यान। विमान। ३. शत्रु पर होनेवाली चढ़ाई। अभियान।

यान-भत्ता-पुं० [सं० यान + हिं० भत्ता] वह भत्ता जो किसी को कहीं आने-जाने लिए, सवारी के खर्च के रूप में मिले (कनवेयेन्स एलाउएन्स)

याना*-पुं० [सं० सज्ञान] ज्ञानवा सयाना। उदा०-'बाहर मूढ़ सु अ यानो'।—केशव।

यानी, याने-अव्य० [अ०] अर्थात्

यापक-पुं० [सं०] वह जिसके नाम वस्तु भेजी जाय और जिसका नाम ऊपर लिखा हो। भेजी हुई चीज वाला। (ऐड्रेसी)

यापन-पुं० [सं०] [वि० यापित, १. चलाना। २. व्यतीत करना।

यापित-वि० [सं०] बिताया या किया हुआ। (समय)

याम-पुं० [सं०] १. तीन घंटे पहर। २. काल। समय।

*स्त्री० [सं० यामि] रात।

यामिक-वि० [सं०] १. याम या सम्बन्ध रखनेवाला। २. दैनिक। पुं० पहरेदार।

यामिनी-स्त्री० [सं०] रात।

यायावर-पुं० [सं०] १. वह जो जगह टिककर न रहता हो। २. वह कोई नियत निवास-स्थान न हो और खान-पान आदि के सुभीते के कभी कहीं और कभी कहीं रहते हों। बदोश। (नोमड) ३. संन्यासी। ब्राह्मण। ५. अश्वमेध का घोड़ा।

यार-पुं० [फा०] १. मित्र। दोस्त। किसी स्त्री का उपपति। जार।

यारी-स्त्री० [फा०] १. यार या होने का भाव। प्रेम और आपसदारी सम्बन्ध। मित्रता। २. स्त्री और पुरु अनुचित संबंध।

यावज्जीवन-क्रि० वि० [सं०] जब जीवन रहे। जीवन भर। जन्म भर।

यावत्-अव्य० [सं०] १. जब

समय। जमाना।

मुहा०-युग युग = बहुत दिनों तक।

युगति†-स्त्री० = युक्ति।

युग-धर्म-पुं० [सं०] वे विशिष्ट और मुख्य बातें जो किसी युग में प्रधान रूप से होती हों। जैसे-दल-बन्दी और स्वार्थ-साधन तो आज-कल के युग-धर्म हैं।

युग-पुरुष-पुं० [सं०] अपने समय का वह बहुत बड़ा आदमी जिसके जोड़ का उस युग में और कोई न हुआ हो।

युगम*-पुं० दे० 'युग्म'।

युगल-पुं० [सं०] युग्म। जोड़ा।

युगांत-पुं० [सं०] युग का अंत।

युगांतर-पुं० [सं०] १. दूसरा युग। २. दूसरा समय और जमाना।

मुहा०-युगांतर उपस्थित करना = पुरानी बातें हटाकर उनके स्थान पर नई बातें या नया युग चलाना।

युग्म(क)-पुं० [सं०] [भाव० युग्मता] १. जोड़ा। युग। २. द्वंद्व।

युग्मज-पुं० दे० 'यमज'।

युत-वि० [सं०] मिला हुआ। युक्त।

युति-स्त्री० [सं०] योग। मिलना।

युत्थप*-पुं० = यूथप।

युद्ध-पुं० [सं०] राज्यों या राष्ट्रों के दो पक्षों में होनेवाली सैनिक लड़ाई। संग्राम। रण।

मुहा०-*युद्ध माँडना = लड़ाई छेड़ना।

युद्धक-वि० [सं०] १. युद्ध करनेवाला। जैसे-युद्धक वायु-यान। २. युद्ध-संबंधी।

युद्ध-पोत-पुं० [स०] लड़ाई का समुद्री जहाज। (वारशिप)

युद्ध-बंदी-स्त्री० दे० 'लड़ाई बंदी'। पुं० दे० 'लड़ाई-बंदी'।

युद्ध-मंत्री-[सं०] राज्य का वह मंत्री जिसके जिम्मे युद्ध-विभाग हो।

युद्धमान-वि० [सं०] युद्ध करनेवाला।

युद्ध-वंदी-पु० [सं० युद्ध + वंदिन्] शत्रु-पक्ष का वह आदमी जो युद्ध-क्षेत्र में पकड़-

कर कैद कर लिया गया हो । लड़ाई का कैदी । (प्रिजनर ऑफ़ वार)

युधिष्ठिर–पुं॰ [सं॰] पाँचो पांडवों में सबसे ज्येष्ठ, जो बहुत धर्म-परायण थे ।

युयुत्सा–स्त्री॰ [सं॰] १. युद्ध करने की इच्छा । २. शत्रुता । दुश्मनी ।

युयुत्सु–वि॰ [सं॰] युद्ध करने या लड़ने की इच्छा रखनेवाला ।

युवक–स्त्री॰ [सं॰] सोलह से पैंतीस वर्ष तक की अवस्था का पुरुष । जवान । युवा ।

युवती–स्त्री॰ [सं॰] जवान स्त्री ।

युवराई*–स्त्री॰ दे॰ 'युवराजी' ।

युवराज–पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ युवराज्ञी] राजा का वह सबसे बड़ा लड़का जो राज्य का उत्तराधिकारी हो ।

युवराजी–स्त्री॰ [सं॰ युवराज] युवराज का पद या भाव । यौवराज्य ।

युवराज्ञी–स्त्री॰ [सं॰] युवराज की पत्नी ।

युवरानी*–स्त्री॰ = युवराज्ञी ।

युवा–वि॰ [सं॰ युवन्] [स्त्री॰ युवती] युवक । जवान ।

यूँ†–अव्य॰ दे॰ 'यों' ।

यूथ–पुं॰ [सं॰] १. समूह । झुंड । गरोह । २. सेना । फ़ौज ।

यूथप(ति)–पुं॰ [सं॰] १. दल का सरदार । २. सेनापति ।

यूनियन–पुं॰ [अं॰] किसी विशेष कार्य के लिए बना हुआ कोई संघटित समाज या सभा ।

यूप–पुं॰ [सं॰] यज्ञ का वह खंभा जिसमें बलि चढ़ाया जानेवाला पशु बाँधा जाता था ।

यूह†–पुं॰ दे॰ 'यूथ' ।

ये–सर्व॰ हिं॰ 'यह' का बहु॰ ।

येई†–सर्व॰ = यही ।

येऊ†–सर्व॰ [हिं॰ ये + ऊ] यह भी ।

येतो†–वि॰ = इतना ।

येन-केन-प्रकारेण–क्रि॰ वि॰ [सं॰] जैसे-तैसे । किसी तरह से ।

येहु†–अव्य॰ [हिं॰ यह + हू] यह भी ।

यों–अव्य॰ [सं॰ एवमेव] इस प्र इस तरह । ऐसे ।

यों ही–अव्य॰ [हिं॰ यों + ही] किसी कार्य या कारण के । व्यर्थ ।

योग–पुं॰ [सं॰] [भाव॰ योगत् मिलना । संयोग । २. उपाय । त ३. प्रेम । ४. छल । धोखा । ५. औ दवा । ६. लाभ । फायदा । ७. शो काल । ८. धन और संपत्ति प्राप्त कर बढ़ाना । ९. वैराग्य । १०. यो जोड़ । (टोटल) ११. सुभीता । १२. फलित ज्योतिष में कुछ विशि या अवसर । १३. चित्त को एकाग्र उपाय या शास्त्र । विशेष दे॰ 'योग-

योग-क्षेम–पुं॰ [सं॰] १. प्राप्ति और उसकी रक्षा । २. जी गुजारा । ३. कुशल-मंगल । ४. राष्ट्र की शान्ति और सु (पीस एण्ड आर्डर)

योग-दर्शन–पुं॰ दे॰ 'योग-शास्त्र'

योग-दान–पुं॰ [सं॰] किसी साथ देना या सहायक होना ।

योग-फल–पुं॰ [सं॰] दो या संस्थाओं का जोड़ । (टोटल)

योग-माया–स्त्री॰ [सं॰] भगवती

योग-यति–पुं॰ = योगी ।

योग-रूढ़–पुं॰ [सं॰] [भाव॰ वह यौगिक शब्द जो किसी विशे में रूढ़ हो ।

योग-शास्त्र–पुं॰ [सं॰] पतं का दर्शन जिसमें चित्त को एक ईश्वर में लीन करने का विधान है ।

योगाभ्यास–पुं॰ [सं॰] [वि॰ भ्यासी] योग-शास्त्र के अनुसार साधन ।

योगिनी–स्त्री॰ [सं॰] १. योग करनेवाली तपस्विनी । २. रण-पिशाचि

योगींद्र–पुं॰ [सं॰] बहुत बड़ा यो

योगिन्] १. आत्मज्ञानी।
न या अभ्यास करनेवाला।
[सं०] १. श्रीकृष्ण।
बहुत बड़ा योगी।
[सं०] [भाव० योग्यता]
ई काम करने की शक्ति या
किसी कार्य के लिए उपयुक्त।
(युक्त) २. जो किसी पद,
आदि के लिए ठीक हो।
टि) ३. विद्या, गुण आदि
ऊँचे दरजे का और अच्छा।
से कुछ किया जाना उचित
। पात्र। जैसे—यह विद्यार्थी
के योग्य है। उचित। वाजिब।
आपके योग्य नहीं है।
[सं०] १. वह गुण या
कोई कुछ काम करने के योग्य
र्य। २. किसी वस्तु में होने-
जिससे लोक में उसका आदर
३. किसी विषय या कार्य की
जानकारी। लियाकत। (मेरिट,
यों के लिए) ४. ज्ञान, अनु-
आदि की दृष्टि से वह विशेषता
के आधार पर कोई किसी
के लिए उपयुक्त समझा जाता
फिकेशन) ५. उपयुक्तता।
[सं०] १. मिलाने या जोड़ने-
योजना करने या बनानेवाला।
[सं०] १. योग। २. मिलाना।
किसी काम में लगाना। ४.
आदि अपने काम में ले आना
ना। (एप्रोप्रिएशन) ५.
नाप जो दो से आठ कोस
की गई है।
स्त्री० [सं०] व्यास की माता
मछली, सत्यवती।
[सं०] [वि० योजनीय,
१. प्रयोग। व्यवहार। २. मिलान। मेल। ३. बनावट। रचना। ४. कोई कार्य या उद्देश्य सिद्ध करने के उपाय, साधन, व्यवस्था आदि की पहले से निश्चित की हुई रूप-रेखा। (प्रोजेक्ट, प्लान) ५. उक्त प्रकार की वह रूप-रेखा जो अभी कल्पना के क्षेत्र में ही हो, पूरी तरह से निश्चित न हुई हो। (स्कीम)

योजनीय, योज्य–वि० [सं०] १. योजन, संयोग या मिलान करने योग्य। २. जो कहीं प्रयुक्त हो सकता हो। योग या प्रयोग करने अथवा काम में लाने योग्य। (एप्लिकेबुल)

योद्धा–पुं० [सं० योद्धृ] १. वह जो युद्ध करता हो। लड़ाई में लड़नेवाला। २. युद्ध में लड़नेवाला। सिपाही। सैनिक।

योनि–स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति-स्थान। उद्गम। २. स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। ३. प्राणियों की जातियाँ जिनकी कुल संख्या ८४ लाख कही गई हैं। ४. देह। शरीर।

योनिज–पुं० [सं०] जो 'योनि' से उत्पन्न हुआ हो (अंडे आदि से न हुआ हो)। जिसने माता के गर्भ से स-शरीर और जीवित रूप में जन्म लिया हो।

योषिता–स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।

यों†–अव्य० दे० 'यों'।

यौ*–सर्व० [हिं० यह] यह।

यौक्तिक–वि० [सं०] १. युक्ति संबंधी। २. युक्ति-संगत।

यौगिक–वि० [सं०] १. योग संबंधी। योग का। २. किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ।

पुं० १. प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। २. दो शब्दों के मेल से बना हुआ शब्द। जैसे—योग क्षेम।

यौतक(तुक)–पुं० [सं०] विवाह के समय वर और कन्या को मिलनेवाला धन। दाइजा। जहेज। दहेज।

यौद्धिक–वि० [सं०] युद्ध संबंधी। युद्ध का।

यौधेय–पुं० [सं०] १. योद्धा। २. एक प्राचीन देश का नाम। ३. इस देश में रहनेवाली एक प्राचीन योद्धा जाति।

यौन–वि० [सं०] १. योनि संबंधी। २. दे० 'लैंगिक'।

यौवन–पुं० [सं०] १. बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के बीच की अवस्था। २. जवानी। ३. दे० 'जोवन'। ४. स्त्रियों के स

यौवराज्य–पुं० [सं०] 'युवराज' का या पद। युवराजी।

यौवराज्याभिषेक–पुं० [सं०] प्रा काल का वह अभिषेक या (उत्सव) राजा के उत्तराधिकारी पुत्र के 'युव बनाये जाने के समय होता था।

र

र–नागरी वर्ण-माला का सत्ताइसवाँ अन्तस्थ व्यंजन, जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

रंक–वि० [सं०] १. दरिद्र। २. कंजूस।

रंग–पुं० [सं०] १. राँगा नामक धातु। २. नाचना-गाना। ३. नृत्य या अभिनय का स्थान। ४. रण-क्षेत्र। ५. पदार्थ का, उसके आकार से भिन्न, वह गुण जिसका ज्ञान केवल आँखों के द्वारा होता है। वर्ण। (कलर) जैसे–हरा, काला। ६. वह पदार्थ जिससे कोई चीज रँगी जाती है। ७. बदन और चेहरे की रंगत। वर्ण। (कौम्प्लेक्शन)

मुहा०-(चेहरे का) रंग उड़ना या उतरना = भय या लज्जा से चेहरे का तेज कम होना। **रंग निखरना** = चेहरा साफ और चमकदार होना। **रंग बदलना** = (क) क्रुद्ध होना। (ख) रूप या वेष बदलना।

८. युवावस्था। जवानी।

मुहा०–रंग चूना या टपकना = भरी जवानी में होना। यौवन उमड़ना।

९. शोभा। सौन्दर्य। १०. आतंक। धाक।

मुहा०–रंग जमना = दृढ़ प्रभाव पड़ना। धाक बैठना। **रंग जमाना या बाँधना**= प्रभाव डालना। **रंग लाना** = प्रभाव या गुण दिखलाना।

११. प्रभुत्व, समृद्धि, मान आदि बढ़े-चढ़े होने की अवस्था या भाव। जैसे–आज-कल हर जगह आप का रंग है। १२. क्रीड़ा। आनन्द उत्सव।

यौ०—रंग-रलियाँ = आमोद-प्रमो मौज।

मुहा०–रंग में भंग पड़ना = आन बाधा होना। **रंग रचाना**=उत्सव

१३. युद्ध। लड़ाई।

मुहा०–रंग मचाना*=खूब युद्ध

१४. उमंग। मौज। १५. आनंद।

मुहा०–रंग जमना=खूब आनंद

१६. दशा। हालत। जैसे–धीरे-धीरे बदल रहा है। १७. अनुराग। प्रेम।

मुहा०–(किसी के) रंग में बाँध किसी पर पूरी तरह से अनुरक्त होना।

१८. ढंग। चाल।

यौ०–रंग ढंग=१. दशा। हालत चाल-ढाल। ३. बरताव। ४. लद

मुहा०–रंग काछना = नया ढंग यार करना।

१९. भाँति। प्रकार। २०. चौस गोटियों के दो वर्णों में से कोई एक।

मुहा०–रंग मारना = बाजी जीत

*पुं० दे० 'अग-राग'।

रंगत–स्त्री० [हिं० रंग + त (प्रत्य०)] रंग। वर्ण। २. दशा। अवस्था।

रंग-थल–पुं० दे० 'रंग-स्थल'। (रंग

रँगना–स० [हिं० रंग + ना (प्रत्य० १. किसी चीज को घुले हुए रंग में ड या डुबाकर रंगीन करना या उसपर

रंग-शाला—स्त्री० दे० 'रंग-भूमि'।

रंगसाज-पुं० [फा०] [भाव० रंगसाजी] १. चीजों पर रंग चढ़ानेवाला। २. रंग बनानेवाला।

रंग-स्थल–पुं० = रंग-भूमि।

रँगाई–स्त्री० [हिं० रंग + आई (प्रत्य०)] रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

रंगा-रंग-वि० [हिं० रंग] १. अनेक रँगों का। २. तरह-तरह का।

रँगावट–स्त्री० [हिं० रंग] रँगने की क्रिया या भाव।

रंगी-वि० [हिं० रंग + ई (प्रत्य०)] [स्त्री० रंगिणी, रंगिनी] १. दे० 'रँगीला'। २. रंगोंवाला। रंगीन।

रंगीन-वि० [फा०] [भाव० रंगीनी] १. रँगा हुआ। रंगदार। २. विलासप्रिय। ३. चमत्कारपूर्ण। मजेदार।

रँगीला–वि० [हिं०रंग] [स्त्री० रँगीली] १. रंगीन। २. रसिक। ३. सुन्दर।

रंच(क)–वि० [सं० न्यंच] थोड़ा।

रंज-पुं० [फा०] [वि० रंजीदा] १. दुःख। खेद। २. शोक।

रंजक–वि० [सं०] १. रँगनेवाला। २. प्रसन्न करनेवाला। (यौ० के अन्त में, जैसे—मनोरंजक)

स्त्री० [हिं० रंच = अल्प] बत्ती लगाने के लिए बंदूक की प्याली पर रखी जानेवाली बारूद।

रंजन-पुं० [सं०] [वि० रंजनीय] १. रँगने की क्रिया या भाव। २. चित्त प्रसन्न करने की क्रिया। ३. रंगों आदि से अंकित किया हुआ चित्र। (पेन्टिंग)

वि० [सं० रंजिनी] मन प्रसन्न करनेवाला।

रंजना*–स० [सं० रंजन] १. दे० 'रँगना'। २. किसी का मनोरंजन करना।

रंजित–वि० [सं०] १. रँगा हुआ। २. जिसके शरीर अथवा ऊपरी भागपर कोई विशेष रंग या वर्ण हो। ३. वास्तविक रूप

या वर्ण छिपाने के लिए जिसका ऊपरी या बाहरी रूप कुछ बदल और बढ़ा दिया गया हो । (कलर्ड, उक्त तीनों अर्थों के लिए) जैसे—किसी घटना का रंजित वर्णन । ४. आनंदित । प्रसन्न । ५. अनुरक्त ।

रंजिश—स्त्री० [फा०] किसी के प्रति मन में होनेवाली अप्रसन्नता । मन-मुटाव ।

रंजीदा—वि० [फा०] [भाव० रंजीदगी] १. जिसे रंज हो । दुःखित । २. अप्रसन्न ।

रंडा—स्त्री० [सं०] राँड़ । विधवा ।
पुं० दे० 'रंडुआ' ।

रँड़ापा—पुं० [हिं० राँड़] राँड या विधवा होने का भाव या अवस्था । विधवा-पन । वैधव्य ।

रंडी—स्त्री० [सं० रंडा] १. वेश्या । २. विधवा ।

रंडुआ(वा)—पुं० [हिं० राँड़] वह जिसकी पत्नी मर गई हो ।

रंता†—वि० [सं० रत] अनुरक्त । रत । उदा०—'मुनि मानस रंता, जगत नियंता आदिहु अंत न जाहि'—केशव ।

रंति—स्त्री० [सं०] क्रीड़ा । केलि ।

रँदना—स० [हिं० रंदा] रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी और साफ करना ।

रंदा—पुं० [सं० रदन] लकड़ी छीलकर चिकनी और साफ करने का औजार ।

रंधन—पुं० [सं०] [वि० रंधित, रंधक] रसोई बनाना या पकाना ।

रंध्र—पुं० [सं०] छेद । छिद्र ।

रंभ—पुं० [सं०] भारी या घोर शब्द ।

रंभण—पुं० [सं०] १. गले लगाना । आलिंगन । २. रँभाना ।

रंभन*—पुं० दे० 'रंभण' ।

रंभना*—अ० [सं० रंभण] १. जोर का शब्द करना । २. (गायका) रंभाना ।

रंभा—स्त्री० [सं०] १. केला (फल) । २. गौरी । ३. वेश्या । ४. एक प्रसिद्ध अप्सरा ।
पुं० [सं० रंभ] लोहे के मोटे छड़ का
वह औजार जिससे दीवार खोदी जाती है

रँभाना—अ० [सं० रंभण] गाय का
करना ।

रँह-चटा†—पुं० [हिं० रस + चाट = च
लालच । लोभ । उदा०—क्यौं नहि
वति देह सौं, नेह रँहचटौ लाइ ।-मति

रँहट—पुं० दे० 'रहट' ।

रँहटा†—पुं० दे० 'रहँटा' ।

रइकौ†—क्रि० वि० दे० 'रंच' ।

रइनि†—स्त्री० [सं० रजनी] रात ।

रई—स्त्री० [सं० रय] मथानी ।
वि०, स्त्री० [सं० रंजन] १. डूबी
हुई । २. अनुरक्त । ३. युक्त । सहित

रईस—पुं० [अ०] [भाव० रईसी]
धनी । बड़ा आदमी ।

रईसी—स्त्री० [सं० रईस] रईस हो
अवस्था या भाव । अमीरी ।

रउताई†—स्त्री० दे० 'रवताई' ।

रउरे†—सर्व० [हिं० राव] आप ।

रकत—पुं०, वि० दे० 'रक्त' ।

रकबा—पुं० [अ०] क्षेत्र-फल ।

रकम—स्त्री० [अ०] १. धन । संपत्ति
गहना । जेवर । ३. धन की
(एमाउंट) ४. प्रकार । भाँति ।

रकसाई*—स्त्री० [हिं० राकस =
राक्षस का धर्म या स्वभाव । राक्षस-

रकाब—स्त्री० [फा०] सवारी के घो
काठी या जीन में लटकनेवाला पावदान
मुहा०—रकाब पर पैर रखना =
के लिए तैयार होना ।

रकाबी—स्त्री० [फा०] तश्तरी ।

रक्त—पुं० [सं०] १. शरीर की नसों
बहनेवाला लाल रंग का प्रसिद्ध
पदार्थ । खून । २. काम करनेवालों का
समाज या वर्ग जो साधारणतः दूसरे प्र
के कार्यकर्त्ताओं के समाज या वर्ग से कुछ
भिन्न प्रकार का हो । जैसे-अब कांग्रेस

नाश आदि से बचाना। बचाव। (प्रोटेक्शन) २. वह सूत्र या यंत्र जो बालकों को भूत-प्रेत, रोग, नजर आदि की बाधा से बचाने के लिए बाँधा जाता है।

रक्षाइद*-स्त्री० [हिं० रक्षा + आइद (प्रत्य०)] राक्षसपन।

रक्षा-कवच-पुं० दे० 'रक्षा' २.।

रक्षागृह-पुं० [सं०] १. प्रसूतिगृह। २. हवाई हमलों आदि की गोले बारी से बचने के लिए जमीन के अन्दर बना हुआ सुरक्षित स्थान।

रक्षा-दल-पुं० [सं०] रक्षियों या पुलिस-वालों की तरह और उनके सहायक के रूप में काम करनेवाला एक नया राजकीय दल या संघटन। (होमगार्ड)

रक्षा-बंधन-पुं० [सं०] श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होनेवाला एक त्योहार जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है। राखी पूनो। सलोनो!

रक्षित-वि० [सं०] [स्त्री० रक्षिता] १. जिसकी रक्षा की गई हो। २. पाल-पोसा हुआ। ३. किसी व्यक्ति या काम के लिए अलग किया हुआ। (रिजर्व्ड)

रक्षित-राज्य-पुं० [सं०] वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य या साम्राज्य के संरक्षण में हो और जिसे साम्राज्य से बहुत से परिमित अधिकार प्राप्त हों। (प्रोटेक्टरेट)

रक्षिता-स्त्री० [सं० रक्षित] बिना विवाह किये, यों ही रखी हुई स्त्री। रखेली।

रक्षी-पुं० = रक्षक।

रक्षी-दल-पुं० [सं० रक्षा + दल] आरक्षी (पुलिस) विभाग के साधारण सिपाहियों के वर्ग का सामूहिक नाम। (कॉन्स्टेबुलरी)

रक्ष्यमाण-वि० [सं०] १. जिसकी रक्षा हो सके। २. जिसकी रक्षा होती हो।

रखना-स० [सं० रक्षण] [प्रे० रखाना, रखवाना] १. स्थित करना। ठहराना। टिकाना। धरना। २. रक्षा करना। नष्ट न

होने देना।

मुहा०—**रख लेना** = रक्षा करना। बचाना। ३. सुपुर्द करना। सौंपना। ४. रेहन रखना। बन्धक में देना। ५. अपनी रक्षा या अपने अधिकार में लेना। ६. नियुक्त करना। ७. जिम्मे लगाना। ८ मन में अनुभव या धारण करना। ९. उपपत्नी (या उपपति) बनाना। १०. पालना।

रखनी—स्त्री० दे० 'रखेली'।

रखया*—पुं० [हिं० रक्षा] १. रक्षक। २. देख-रेख करनेवाला। रखवाला।

रख-रखाव—पुं० [रखना + रखाना] १. दूसरों की बात और मर्यादा की रक्षा करते हुए अपनी बात और मर्यादा की भी रक्षा करना। २. किसी चीज या काम की देख-रेख रखते हुए उसे बनाये रखने और अच्छी तरह चलाये रखने की क्रिया या भाव। (मेन्टेन) ३. पालन-पोषण। भरण-पोषण।

रखला*—पुं० दे० 'रहँकला'।

रखवाई—स्त्री० दे० 'रखाई'।

रखवाना—स० हिं० 'रखना' का प्रे०।

रखवार†—पुं० दे० 'रखवाला'।

रखवाला—पुं० [हिं० रखना] १. रक्षा या रखवाली करनेवाला। २. पहरेदार।

रखवाली—स्त्री० [हिं० रखना] रक्षा या देख-भाल करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।

रखाई—स्त्री० [हिं० रखना] रक्षा करने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

रखाऊँ—वि० [हिं० रखना] बहुत दिनों का रखा हुआ। पुराना। (माल या पदार्थ)

रखाना—स० हिं० 'रखना' का प्रे०।

† अ० [सं० रक्षा] रखवाली या रक्षा करना।

रखाव†—स्त्री० [हिं० रखना] गोचर-भूमि।

रखिया†—पुं० = रक्षक।

रखीसर*—पुं० [सं० ऋषीश्वर] १. नारद ऋषि। २. बहुत बड़ा ऋषि। ऋषीश्वर।

रखेली(खैल)—स्त्री० [हिं० रखना] उपपत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री। रखिता

रग—स्त्री० [फा०] १. शरीर में की न
यौ०—**रग पट्ठा** = रग-रग।
मुहा०—**रग दबना** = किसी के अधी
अधिकार में होना। **रग-रग फड़क**
बहुत अधिक उत्साह या चंचलता
रग-रग में = सारे शरीर में।
२. पत्तों में दिखाई पड़नेवाली नसें।
स्त्री० [?] हठ। जिद।

रगड़—स्त्री० [हिं० रगड़ना] १. रग
क्रिया या भाव। २. दे० 'रगड़ा'।

रगड़ना—स० [सं० घर्षण]
रगड़वाना] १. घर्षण करना।
२. पीसना। ३. किसी से बहुत
लेना। ४. तंग करना।
अ० बहुत मेहनत करना।

रगड़ा—पुं० [हिं० रगड़ना] १.
की क्रिया या भाव। २. अत्यंत प
३. बराबर चलता रहनेवाला झगड़ा

रगण—पुं० [सं०] छंद-शास्त्र में ए
एक लघु और एक गुरु का एक गण।

रगत*—पुं० दे० 'रक्त'।

रग-पट्ठा—पुं० [फा० रग + हिं०
शरीर के अन्दर की रगें और मांस

रगमगा*—वि० [सं० रग + मग्न] अ
प्रेम आदि में मग्न या लीन।

रग-रेशा—पुं० [फा० रग + रेशा]
२. किसी की सूक्ष्म से सूक्ष्म बात।

रगेदना—स० [भाव० रगेद] दे० 'खदे

रघु—पुं० [सं०] अयोध्या के प्रसिद्ध
वंशी राजा जो श्री रामचंद्र के परद

रघु-कुल—पुं० [सं०] राजा रघु का

रघुनाथ—पुं० [सं०] श्री रामचंद्र।

रघुराई*—पुं० [सं० रघुराज] श्री राम

रघुराज—पुं० [सं०] श्री रामचंद्र।

रघु-वंश—पुं० [सं०] [वि० रघुवंशी
महाराज रघु का वंश या खानदान।

रघुवर—पुं० [सं०] श्री रामचंद्र।

अ० [सं० रंजन] हाथ-पैरों में मेंहदी, महावर आदि लगवाना।

रचित–वि० [सं०] रचा या बनाया हुआ।

रचौहाँ*–वि० [हिं० रचना] १. रचा हुआ। २. रँगा हुआ। ३. अनुरक्त।

रच्छनहार*–वि० = रक्षक।

रच्छना*–स० = रक्षा करना।

रच्छा*–स्त्री० = रक्षा।

रज–पुं० [सं० रजस्] १. स्त्रियों की जननेन्द्रिय से प्रति मास तीन-चार दिन तक निकलनेवाला रक्त। कुसुम। ऋतु। २. फूलों का पराग। ३. दे० 'रजोगुण'।

स्त्री० [सं०] धूल। गर्द।

वि०, हिं० 'राज' का संक्षिप्त रूप। (यौ० के आरम्भ में; जैसे—रज-ब्रह्म)

*पुं० [सं० रजक] धोबी।

रजक–पुं० [सं०] [स्त्री० रजकी] धोबी।

रज-गज†–स्त्री० [हिं० रज + गज (अनु०)] राजसी ठाठ-बाट।

रजतंत*–स्त्री० दे० 'वीरता'।

रजत–स्त्री० [सं०] चाँदी। रूपा।

वि० १. सफेद। शुक्ल। २. लाल।

रजत-जयंती–स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति, संस्था आदि या किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के जन्म या आरम्भ होने के २५ वर्ष पूरे होने पर मनाई जानेवाली जयन्ती। (सिलवर जुबिली)

रजत-पट–पुं० [सं० रजत + पट] वह परदा जिसपर सिनेमा के चित्र दिखाये जाते हैं। (अँगरेजी के 'सिलवर स्क्रीन' का तदर्थीय)

रजन–स्त्री० दे० 'राल'।

रजना*–अ० [सं० रंजन] रँगा जाना। स० रँगना।

रजनी–स्त्री० [सं०] रात।

रजनी-गंधा–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल जो रात को फूलता है

रजनी-चर–पुं० [सं०] राक्षस।

रजनी-मुख–पुं० [सं०] सन्ध्या का समय। सायंकाल।

रजपूत†–पुं० दे० 'राजपूत'।

रज-बहा–पुं० [सं० राज+हिं० बहना] वह प्रधान नल अथवा नहर जिससे अनेक शाखाएँ निकली हों।

रजवती–स्त्री० दे० 'रजस्वला'।

रजवाड़ा–पुं० [हिं० राजा] १. रियासत। २. राजा।

रजवार*–पुं० [सं० राजद्वार] १. राजा के महल की ड्योढ़ी। २. राजा का दरबार।

रजस्वला–वि०, स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसका रज निकल रहा हो। ऋतुमती।

रजा–स्त्री० [अ० मि० सं० राजादेश] १. मरजी। इच्छा। २. छुट्टी। ३. अनुमति। आज्ञा। ४. स्वीकृति।

रजाइ–स्त्री० १. दे० 'आज्ञा'। २. दे० 'रजा'।

रजाई–स्त्री० [?] एक प्रकार का रूईदार ओढ़ना। मोटी दुलाई। लिहाफ।

*स्त्री० [सं० राजादेश, प्रा० रजाएस] आज्ञा। आदेश। हुकुम।

रजाकार–पुं० [फा०] १. स्वयंसेवक। २. दक्षिण हैदराबाद की एक मुस्लिम संस्था, उसके सदस्य और स्वयंसेवक जिन्होंने सन् १९४८ में वहाँ के हिन्दुओं पर घोर अत्याचार करने और अराजकता फैलाने में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

रजामंद–वि० [फा०] [भाव० रजामंदी] सहमत।

रजाय†–स्त्री० दे० 'रजा'।

रजायसु*–स्त्री० [सं० राजादेश, प्रा० रजाएस] राजा की आज्ञा।

रजिस्टर–पुं० [अं० रजिस्टर] सादे कागज की वह बड़ी बही जो किसी विशेष प्रकार का विवरण या लेखा लिखने के लिए होती है। पंजी।

रजिस्टरी–स्त्री० [अं० रजिस्टर] राज्य अथवा उसके किसी विभाग के निश्चित नियमों के अनुसार किसी लेख्य या का राजकीय अथवा विभागीय रजिस्ट चढ़ाया या लिखा जाना जो आवश्य पड़ने पर, उसकी प्रामाणिकता का होता है। निबंधन। (रेजिस्ट्रेशन) वि० जो उक्त प्रकार से किसी राज विभागीय रजिस्टर में चढ़ाया जा चु निबंधित।

रजिस्टरी डाक–स्त्री० [अं०] १. कोई चीज कहीं भेजने की वह रीति वह चीज नियमानुसार अतिरिक्त शुल्क डाकखाने में निबद्ध करा दी जा (रजिस्टर्ड पोस्ट)

रजिस्ट्रार–पुं० [अं०] १. वह जो विधिक लेख्य आदि राजकीय में निबंधित करता हो। दस्तावेजों रजिस्टरी करनेवाला अधिकारी। विद्यालयों आदि में कार्यालय का प्रधान अधिकारी जिसकी देख-रेख में पढ़ी के सब काम होते हैं।

रजु*–स्त्री० [सं० रज्जु] रस्सी।

रजोगुण–पुं० [सं०] प्रकृति के तीन में से एक जो मन को चंचल और काम, क्रोध, लोभ, द्वेष आदि विकार करनेवाला माना गया है। राजस। दो गुण सत् और तम हैं।)

रजोदर्शन–पुं० [सं०] रजस्व

रजोधर्म–पुं० [सं०] स्त्रियों का धर्म या रज-प्रवाह।

रज्जु–स्त्री० [सं०] रस्सी।

रटंत–स्त्री० [हिं० रटना] रटने की या भाव।

वि० रटा हुआ।

रट(न)–स्त्री० [हिं० रटना] कोई शब्द बात बार-बार कहने की क्रिया या भाव।

रटना–स० [अनु०] १. कोई बात शब्द बार-बार कहना। २. कंठस्थ क के लिए बार-बार कहना या पढ़ना।

राता = लाल] लाली । सुर्खी । वि० लाल । सुर्ख (रंग) ।

रतनाकर–पुं० = रत्नाकर ।

रतनागर*–पुं० = रत्नाकर ।

रतनार(ा)–वि० [सं० रत्न] [स्त्री० रतनारी] कुछ लाल । सुरखी लिये हुए ।

रतनारी–पुं [सं० रतनार] एक प्रकार का धान या उसका चावल ।

रत-मुँहाँ*–वि० [हिं० रत = लाल + मुँह] [स्त्री० रत-मुँहीं] लाल मुँहवाला ।

रतल–स्त्री० दे० 'रत्तल' ।

रति–स्त्री० [सं०] १. कामदेव की पत्नी जो परम रूपवती मानी गई है । २. मैथुन । संभोग । साहित्य में इसके दो भेद माने गये हैं—अंतर्रति (मैथुन) और बाह्य रति (आलिंगन, चुम्बन आदि) । ३. प्रीति । प्रेम । (साहित्य में शृंगार-रस का स्थायी भाव ।) ४. शोभा । छवि ।

*स्त्री० = रति ।

रतिक*–क्रि० वि० [हिं० रत्ती] थोड़ा ।

रतिज–वि० [सं० रति + ज (प्रत्य०)] रति या स्त्री संभोग से होनेवाला । (विनीरियल) जैसे–रतिज-रोग ।

रतिज रोग–पुं० [सं०] गर्मी, सुजाक या इसी प्रकार का जननेंद्रिय का और कोई रोग जो रति या स्त्री संभोग से उत्पन्न होता है । (विनीरियल डिसीज़)

रतिनाह*–पुं० [सं रतिनाथ] कामदेव ।

रतिपति–पुं० [सं०] कामदेव ।

रति-प्रीता–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जिसे अपने प्रिय का चिंतन और ध्यान करना ही अच्छा लगता हो ।

रति-मंदिर–पुं० [सं०] प्रेमी और प्रेमिका के संभोग तथा क्रीड़ा का स्थान ।

रतिराई*–पुं० दे० 'रतिराज' ।

रतिराज*–पुं० [सं०] कामदेव ।

रती+–स्त्री० १. दे० 'रति' । २. दे० रत्ती । क्रि० वि० बहुत थोड़ा । जरा सा ।

रतीक*-क्रि॰ वि॰ दे॰ 'रतिक'।

रतोपल*-पुं॰ [पुं॰ रक्तोत्पल] लाल कमल।

रतौंधी-स्त्री॰ [हिं॰ रात+अंधा] एक रोग जिसमें रात के समय दिखाई नहीं पड़ता।

रतौंहा*-वि॰ [हिं॰ रत या अनुरक्त] किसी की ओर रत या अनुरक्त होने की प्रवृत्ति रखनेवाला।

रत्त*-पुं॰ दे॰ 'रक्त'।

रत्तल-स्त्री॰ [देश॰] आध सेर के लगभग का एक तौल।

रत्ती-स्त्री॰ [सं रक्तिका] आठ चावल या बीस घुँघची का तौल।

मुहा॰-**रत्ती भर**=बहुत थोड़ा। जरा सा।

*स्त्री॰ [सं॰ रति] १. शोभा। छबि। २. रति। संभोग। ३. प्रेम। अनुराग।

रत्थी-स्त्री॰ [सं॰ रथ] काठ का वह ढाँचा, तख्ता या संदूक जिसपर या जिसमें शव रखकर स्मशान तक ले जाते हैं। अरथी।

रत्न-पुं॰ [सं॰] १. बहुमूल्य, चमकीले प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो आभूषणों आदि में जड़े जाते हैं। मणि। जवाहर। नगीना।

वि॰ सर्व-श्रेष्ठ या बहुत अच्छा।

रत्न-गर्भा-स्त्री॰ [सं॰] पृथ्वी।

रत्न-माला-स्त्री॰ [सं॰] रत्नों या जवाहिरात की माला।

रत्नसू-स्त्री॰ [सं॰] पृथ्वी।

रत्नाकर-पुं॰ [सं॰] १. समुद्र। २. खान।

रत्नावली-स्त्री॰ [सं॰] १. मणियों या रत्नों की अवली या श्रेणी। २. रत्नों की माला। ३. साहित्य में अर्थालंकार जिसमें किसी बात के प्रकृत वर्णन के साथ-साथ प्रसंगवश कुछ क्रमिक तत्त्वों, बातों आदि का भी यथाक्रम उल्लेख होता है।

रथ-पुं॰ [सं॰] १. दो या चार पहियों की एक प्रकार की पुरानी सवारी या गाड़ी। बहल। २. शरीर। ३. पैर। ४. शतरंज में, ऊँट नामक मोहरा।

रथ-यात्रा-स्त्री॰ [सं॰] आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होनेवाला जगन्नाथ जी
उत्सव, जिसमें उन्हें रथ पर बैठाकर निका
जाता है।

रथवान(ह)-पुं॰ दे॰ 'सारथी'।

रथांग-पुं॰ [सं॰] १. रथ का पहि
२. चक्र नामक अस्त्र। ३. चकवा (प

रथिक-पुं॰ दे॰ 'रथी'।

रथी-पुं॰ [सं॰ रथिन्] १. रथ पर च
चलनेवाला। २. रथपर बैठकर लड़ने
३. बहुत बड़ा योद्धा।

वि॰ रथ पर चढ़ा हुआ।

स्त्री॰ दे॰ 'रत्थी'।

रथोद्धता-स्त्री॰ [सं॰] चार चर
एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चर
रगण, नगण, रगण और लघु, गु
व, र, ल, ग) होते हैं।

रद-पुं॰ [सं॰] दंत। दाँत।

वि॰ दे॰ 'रद्द'।

रदच्छद-पुं॰ [सं॰] अधर। होंठ

रद-छद*-पुं॰ [सं॰ रदच्छद] होंठ

पुं॰ [सं॰ रद-क्षत] संभोग के समय
पर दाँतों के गड़ने का चिह्न।

रदन-पुं॰ [सं॰] दाँत।

रदनच्छद-पुं॰ [सं॰] अधर। हों

रद-पट-पुं॰ [सं॰] होंठ।

रद्द-वि॰ [अ॰] १. बदला हुआ। परि

यौ॰-**रद्द-बदल**=परिवर्त्तन।

२. खराब या निकम्मा ठहराया हुआ।

स्त्री॰ वमन। कै। उल्टी।

रद्दा-पुं॰ [देश॰] १. दीवार पर चु
ईंटों की एक पंक्ति या मिट्टी की एक
२. थाली में चुनी हुई मिठाइयों का
३. स्तर। तह।

रद्दी-वि॰ [फा॰ रद] जो किसी
न आ सके। निकम्मा। बेकार।

स्त्री॰ पुराने और व्यर्थ के कागज।

रन*-पुं॰ [सं॰ रण] युद्ध। लड़ाई।

*पुं॰ [सं॰ अरण्य] जंगल। वन।

रब-पुं० [अ०] परमेश्वर । ईश्वर ।

रबड़-पुं० [अं० रबर] १. वट की जाति का एक वृक्ष । २. इस वृक्ष के दूध को सुखाकर बनाया हुआ प्रसिद्ध लचीला पदार्थ, जिससे बहुत-सी चीजें बनती हैं ।

रबड़-छंद-पुं० [हिं० रबड़ + छेद] कविता का ऐसा छंद जिसमें मात्राओं आदि की गिनती का कुछ विचार न हो । (व्यंग्य)

रबड़ी-स्त्री० दे० 'बसौंधी' ।

रबाना-पुं० [देश०] एक प्रकार का डफ ।

रबाब-पुं० [अ०] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा ।

रबाबी-वि० [हिं० रबाब] रबाब बजानेवाला ।

रबी-स्त्री० [अ० रबीऽ] १. वसंत ऋतु । २. वसंत ऋतु में काटी जानेवाली फसल ।

रब्त-पुं० [अ०] १. अभ्यास । २. विशेष संपर्क या संबंध । मेल-जोल ।

यौ०-रब्त-जब्त = मेल-मिलाप ।

रब्ब-पुं० दे० 'रब' ।

रभस-पुं० [सं०] १. वेग । तेजी । २. प्रसन्नता । आनंद । ३. प्रेम का उत्साह । उमंग । ४. पछतावा । ५. खेद । रंज ।

रमक-स्त्री० [हिं० रमकना] १. झूले की पेंग । २. 'झोंका' ।

रमकना-अ० [हिं० रमना] १. झूले पर बैठकर झूलना । २. झूमते हुए चलना ।

रम-जना-पुं० दे० 'राम-जना' ।

रम-झल्ला†-पुं० दे० 'झमेला' ।

रमड़ना*-अ० [सं० रमण] १. रमण करना । रमना । २. किसी बात में मन लगाना । ३. युक्त होना ।

रमण-पुं० [सं०] १. विलास । क्रीड़ा । २. मैथुन । ३. विचरण । घूमना । ४. पति । ५. साहित्य में नायक ।

वि० १. सुंदर । २. प्रिय । ३. विलास या क्रीड़ा करनेवाला । ४. किसी में रमने या किसी का सुख भोगनेवाला ।

रमणी-स्त्री० [सं०] स्त्री, विशेषतः युवती ।

रमणीक-वि० [सं०] रमणीय सुंदर।

रमणीय-वि० [सं०] [भाव० रमणीयता] सुंदर। मनोहर।

रमता-वि० [हिं० रमना] १. जो बराबर घूमता-फिरता रहता हो। जैसे—रमता जोगी। २. जो स्थिर न रहे। चंचल। जैसे—रमता मन।

रमन*-पुं०, वि० दे० 'रमण'।

रमना-अ० [सं० रमण] १. भोग-विलास के लिए कहीं जाकर ठहरना या रहना। २. आनंद करना। मजा उड़ाना। ३. व्याप्त होना। ४. अनुरक्त या लीन होना। ५. घूमना-फिरना। ६. चल देना।
पुं० [सं० आराम या रमण] १. वह स्थान या घेरा जिसमें पाले हुए पशु चराने के लिए छोड़ दिये जाते हैं। २. बाग। ३. कोई सुन्दर और रमणीक स्थान।

रमनी*-स्त्री० = रमणी।

रमल-पुं० [अ०] [वि० रमली] पासे फेंककर शुभाशुभ फल या भविष्य जानने और बतलाने की विद्या।

रमसरा*-पुं० दे० 'रामशर'।

रमा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी। (देवी)

रमाकांत-पुं० [सं०] विष्णु।

रमाना-स० [हिं० रमना का स० रूप] अनुरक्त या लीन करना।

रमापति-पुं० [सं०] विष्णु।

रमा-रमण-पुं० [सं०] रमा अर्थात् लक्ष्मी के स्वामी, विष्णु।

रमित*-वि० [हिं० रमना] जिसका मन किसी में रमा हो। मुग्ध।

रमेसरी*-स्त्री० [सं० रामेश्वरी] लक्ष्मी।

रमैनी-स्त्री० [हिं० रामायण] दोहे-चौपाइयों में कहे हुए कबीरदास के कुछ विशिष्ट वचन या उनका संग्रह।

रमैया†-पुं० [हिं० राम] १. राम। २. ईश्वर। ३. चैतन्य आत्मा।

रम्माल-पुं० [अ०] रमल जाननेवाला।

रम्य-वि० [सं०] [स्त्री० रम्या, मान रम्यता] १. मनोहर। सुंदर। २. रमणीय

रय*-पुं० [सं० रज] रज। धूल। गर्द
*-क्रि० वि०, स० [रव] वेग पूर्वक तेजी से।

रयति*-स्त्री० [अ० रिऐयत] प्रज रिआया।

रयन†-स्त्री० [सं० रजनि] रात।

रयना†-स० [सं० रंजन] रँगना।
*अ० १. अनुरक्त या रंजित होना रँगा जाना। ३. मिलना।
स० [स० रवण] १. शब्द उत्पन्न क २. उच्चारण करना। कहना। बो उदा०—'हा-हा सब ही यह शब्द र केशव।

रयवारा*-पुं० दे० 'रजवाड़ा'।

रय्यत†-स्त्री० [अ० रऐयत] प्र

रर*-स्त्री० दे० 'रट'।

ररना†-स० दे० 'रटना'।

ररिहा†-पुं० [हिं० ररना] १. दे० 'र २. हठी भिखमंगा।

रलना†-अ० [सं० ललन] १. मि २. पूर्ण होना। भरना। ३. युक्त हो

रलाना-स० [हिं० 'रलना' का स०] करना। मिलाना।

रलिका*-स्त्री० दे० 'रली'।

रली-स्त्री० [सं० ललन] १. क्रीड़ा। २. आनंद। प्रसन्नता।
यौ०—रंग-रली = आनन्दपूर्ण विहार

रल्ला†-पुं० दे० 'रेला'।

रव-पुं० [सं०] १. गुंजार। नाद आवाज। शब्द। ३. शोर। हल्ला।
*पुं० [सं० रवि] सूर्य।

रवताई*-स्त्री० [हिं रावत] १. रा रावत होने का भाव। २. प्रभुत्व।

रवन*-पुं०, वि० दे० 'रमण'।

रवना*-अ० [सं० रमण] १. रम क्रीड़ा करना। २. रमना।

शब्द] १. शब्द करना।
या पुकारा जाना। ३.

[सं० रमणी] १.
। २. भार्या। पत्नी।
[फ़ा० रवाना] १. वह कागज
हुए माल का ब्योरा लिखा
२. वह पत्र जिससे किसी
श्रधिकार मिलता है।

रव] १. बहुत छोटा टुकड़ा।
। २. सूजी।
] १. उचित। २. प्रचलित।
[फ़ा०] प्रथा। परिपाटी।
[फ़ा० रवा + दार (प्रत्य०)]
रखनेवाला।
[फ़ा०] प्रस्थान।
[फ़ा०] [भाव० रवानगी] जो
दूसरी जगह के लिए चल
। २. भेजा हुश्रा।

[फ़ा०] १. चलते हुए होने
। गति। २. ऐसी गति
हो।
दे० 'रवाब'।
[सं०] सूर्य।
[सं०] सूर्य के चारो श्रोर
लाल गोला।
[फ़ा०] १. गति। चाल।
। ३. बाग की क्यारियों के
मार्ग।
[सं०] रवि या सूर्य के

[हिं० रवा] जिसमें कण या
।
रविश या रवाँ] १.
२. तरीका। ढंग।
[सं०] १. करधनी। २.

कमर में बाँधी जानेवाली पेटी। कमरपेटी। *स्त्री० दे० 'रसना'।

रशनोपमा–स्त्री० [सं०] साहित्य में उपमा श्रलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय क्रमशः उत्तरोत्तर उपमान होते जाते हैं श्रौर इस प्रकार उपमेयों तथा उपमानों की एक लड़ी या श्रृंखला बन जाती है।

रश्क–पुं० [फ़ा०] ईर्ष्या। डाह।

रश्मि–पुं० [सं०] १. किरण। २. घोड़े की लगाम। बाग।

रस–पुं० [सं०] १. वनस्पतियों श्रथवा उनके फूल-पत्तों, श्रादि में रहनेवाला वह तरल पदार्थ जो दबाने, निचोड़ने श्रादि पर निकलता या निकल सकता है। (जूस) जैसे–श्रंगूर, ऊख, जामुन श्रादि का रस। २. वृक्षों के शरीर से निकलने या पाछकर निकाला जानेवाला तरल पदार्थ। निर्यास। जैसे–ताड़, शाल श्रादि वृक्षों में से निकला या निकाला हुश्रा रस। ३. किसी चीज को उबालने पर निकनेवाला उसका सार भाग। रसा। ४. प्राणियों के शरीर में से निकलनेवाला कोई तरल पदार्थ। जैसे–दूध, पसीना, रक्त श्रादि।

यौ०–गो-रस = दूध, दही, मक्खन श्रादि।

५. प्राणियों, विशेषतः मनुष्यों के शरीर में खाद्य पदार्थों के पहुँचने पर उनका पहले-पहल बननेवाला वह तरल रूप जिससे आगे चलकर रक्त बनता है। (वैद्यक में इसे शरीरस्थ सात धातुश्रों में से पहली धातु माना गया है।) ६. जल। पानी। ७. पानी में घोला हुश्रा गुड़, चीनी, मिसरी श्रादि। शरबत। ८. किसी पदार्थ का सार भाग। तत्त्व। सत्त। ९. वैद्यक में धातुश्रों श्रादि का फूँककर तैयार किया हुश्रा भस्म। १०. पारा। ११. शिंगरफ। हिंगुल। १२. जहर। विष। १३. खाने-पीने की चीज मुँह में पड़ने पर उससे जीभ को होनेवाला श्रनुभव या मिलनेवाला स्वाद। (हमारे यहाँ वैद्यक में ये छः

रस माने गये हैं—**अम्ल**, **कटु**, **कषाय**, **तिक्त**, **मधुर** और **लवण**।) १४. कविता आदि में उक्त रसों के आधार पर माना हुआ छः की संख्या का वाचक शब्द। १५. कार्य, विषय, व्यक्ति आदि के प्रति होनेवाला अनुराग। प्रीति। प्रेम। मुहब्बत।

यौ०-रस-रंग = प्रेम-क्रीड़ा। केलि। **रस-रीति** = प्रेम का व्यवहार।

१६. यौवन काल में मनुष्य के मन में अनुराग या प्रेम का होनेवाला संचार।

मुहा०-रस भीजना या भीनना = (क) मनुष्य में यौवन का आरंभ होना। (ख) अनुराग या प्रेम का संचार होना।

१७. किसी काम या बात से किसी प्रकार का सम्बन्ध होने पर उससे मिलनेवाला आनन्द या उसके प्रति होनेवाली रुचि। कार्य या व्यापार के प्रति होनेवाली कुतूहल-मूलक प्रवृत्ति या उससे होनेवाली सुखद अनुभूति। दिलचस्पी। (इन्टरेस्ट) जैसे—(क) इस पुस्तक में हमें कोई रस नहीं मिला। (ख) वे अब सार्वजनिक कार्यों में विशेष रस लेने लगे हैं। १८. साहित्यिक क्षेत्र में (क) कथानकों, काव्यों, नाटकों आदि में रहनेवाला वह तत्त्व जो अनुराग, करुणा, क्रोध, रति आदि मनोभावों को जाग्रत, प्रबल तथा सक्रिय करता है। यह तत्त्व कवियों, लेखकों आदि की प्रतिभा, रचना-कौशल और उपयुक्त शब्द-योजना तथा वाक्य-विन्यास से उत्पन्न होता है। (ख) हमारे यहाँ के साहित्यकारों के मत से यह उक्त तत्त्व और अनुभाव, विभाव और संचारी की सहायता से सहृदय पाठकों के मन में रहनेवाले स्थायी भावों को परिपक्व, पुष्ट और व्यक्त करके उन्हें उत्कृष्ट चरम सीमा तक पहुँचाता और उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करके उनके साथ एकात्मता स्थापित करता है। इसके ये नौ प्रकार या भेद कहे गये हैं—अद्‌भुत, करुण, भयानक, रौद्र, वीभत्स, वीर, शान्त, श्रृंगार और हास्य।

१६. कविता में उक्त नौ रसों के आधार पर
नौ की संख्या का सूचक शब्द। २०.
अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियों के
में रहने की अवस्था या भाव। उदा०—
राजत अँग रस विरस अति, सरस
रस भेव।—केशव। २१. मन की तरंग
मौज। २२. उमंग। जोश। २३.
क्रीड़ा। केलि। विहार। २४. गुण,
रूप, विशेषता आदि के विचार से होने
वर्ग या विभाग। तरह। प्रकार। जैसे—
रस, सम रस।

रस-केलि—स्त्री० [सं०] १. विहार। क्रीड़ा
२. दिल्लगी। हँसी।

रस-गुल्ला—पुं० [हिं० रस+गोला]
प्रकार की बँगला मिठाई।

रसज्ञ—वि० [सं०] [भाव० रसज्ञता]
रस को जाननेवाला। २. काव्य या
का मर्म और गुण समझनेवाला।

रसद—वि० [सं०] १. रस या
देनेवाला। सुखद। २. स्वादिष्ट।
स्त्री० [फा० मि० सं० रसद = स्वादि
कच्चा अनाज जो अभी पकाया जाने
हो। (भोजन के लिए)

रसना—स्त्री० [सं०] १. जिह्वा। जीभ
मुहा०-रसना तालू से लगाना=
करना। बोलना बंद करना।
२. जीभ से मिलनेवाला स्वाद।
अ० [हिं० रस+ना (प्रत्य०)][
रसाव] १. धीरे-धीरे बहना या टप
२. किसी पदार्थ का गीला होकर
रस छोड़ना या टपकाना।
मुहा०-रस-रस या रसे-रसे=धीरे-धीरे
३. तन्मय या मग्न होना। ४. स्वाद लेना
५. प्रेम में अनुरक्त होना।
स्त्री० [सं० रश] १. रस्सी। २. लगाम

रसनेंद्रिय—स्त्री० [सं०] जीभ। जिह्वा।

रसनोपमा—स्त्री० दे० 'रशनोपमा'।

रस-प्रबंध-पुं० [सं०] १. नाटक। २.

पानीवाला अंश । झोल । शोरबा ।

रसाइनी*-पुं० = रसायनिक ।

रसाई-स्त्री० [फा०] किसी तक पहुँचने की क्रिया या भाव । पहुँच ।

रसातल-पुं० [सं०] नीचे के सात लोकों में छठा लोक ।

मुहा०-रसातल में जाना = नष्ट होना ।

रसाना*-स० [सं० रस] १. रस से युक्त या रस-पूर्ण करना । २. प्रसन्न करना । ३. किसी पदार्थ को रसने में प्रवृत्त करना ।

अ० १. रस-युक्त होना । २. आनंद लूटना ।

रसाभास-पुं० [सं०] १. रस के परिपाक या पूर्णरूप के अभाव में दिखाई पड़नेवाला उसका आभास या छाया मात्र । साहित्य में (क) रस की वह अ-परिपक्व और अ-पूर्ण अवस्था जब कि अनुभावों, विभावों और संचारी भावों की सहायता से स्थायी भावों की ठीक और पूरी पुष्टि नहीं होती और 'रस' तत्त्व का पूरा आविर्भाव नहीं होता; अथवा (ख) वह अवस्था जिसमें रस का ठीक तरह से परिपाक होने पर भी उसका प्रयोग अनुचित ही होता हो ।

विशेष-रस की अ-परिपक्वता तो रसाभास है ही; पर यदि कहीं गुरु-पत्नी या वि माता के साथ होनेवाले अनुचित प्रेम के वर्णन में रस का ठीक तरह से परिपाक हुआ हो तो भी वह रसाभास ही माना जायगा ।

२. ऐसी उक्ति या कथन जिसमें उक्त प्रकार के दोष हों । (कुछ लोगों ने इसे भी एक अलंकार माना है ।)

रसायन-पुं० [सं०] १. मनुष्य को सदा स्वस्थ और पुष्ट बनाये रहनेवाला औषध । (वैद्यक) २. ताँबे से सोना बनाने का एक कल्पित योग । ३. दे० 'रसायन शास्त्र' ।

रसायनज्ञ-पुं० [सं०] वह जो रसायन-शास्त्र का ज्ञाता हो । रसायन-शास्त्री ।

रसायन-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के तत्त्वों तथा भिन्न-भिन्न

दशाओं में उनमें होनेवाले विकारों का विवेचन होता है। (कैमिस्टरी)

रसायनिक–वि० दे० 'रासायनिक'।

रसायनी–वि० [हिं० रसायन] रसायन-सम्बन्धी।

पुं० दे० 'रसायनज्ञ'।

रसाल–पुं० [सं०] [भाव० रसालता] १. गन्ना २. आम।

वि० [स्त्री० रसाला] १. रससे युक्त जिस में रस हो। २. रसिक। रसीला। ३. मधुर। मीठा।

*पुं० [अ० इरसाल] कर। राजस्व।

रसाला–पुं० = रिसाला।

रसाली–पुं० [सं० रस] भोग-विलास में रस या आनन्द लेनेवाला। रसिक।

रसाव–पुं० [हिं० रसना] १. रसने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार निकला हुआ अंश।

रसावर(ल)†–पुं० [हिं० रस + चावल] ऊख के रस में पकाये हुए चावल।

रसिक–पुं० [सं०] [भाव० रसिकता] १. रस या आनन्द लेनेवाला। २. जिसके हृदय में सौन्दर्य, प्रेम, भक्ति आदि कोमल और मधुर बातों के प्रति अनुराग हो। स-हृदय। भावुक। ३. काव्य का मर्मज्ञ।

सिया–पुं० [सं० रसिक] १. रसिक। २. एक प्रकार का गाना जो फागुन में व्रज में गाया जाता है।

सी*–पुं० = रसिक।

सीद–स्त्री० [फा०] १. किसी चीज की प्राप्ति या पहुँच। २. किसी चीज के प्राप्त होने या पहुँचने के प्रमाण के रूप में लिखा हुआ पत्र। प्राप्तिका।

सीला–वि० [हिं० रस] [स्त्री० रसीली, भाव० रसीलापन] १. जिसमें रस हो। सदार। २. स्वादिष्ट। ३. रसिक। ४. ाँका। सुन्दर।

सूख–पुं० [अ० रुसूख] १. धैर्य। २. अध्यवसाय। ३. किसी के यहाँ तक होनेवाली पहुँच। ४. विश्वास। एतबार।

रसूम–पुं० [अ०] १. नियम। कानून। २. प्रचलित प्रथा या विधान के अनुसार किसी को दिया जानेवाला धन। नियत शुल्क या देय।

रसूल–पुं० [अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर।

रसेस*–पुं० [सं० रसेश] श्रीकृष्ण।

रसोइया–पुं० [हिं० रसोई] रसोई पकाने वाला आदमी।

रसोई–स्त्री० [हिं० रस + ओई (प्रत्य०)] १. पकाई हुई खाने की चीजें।

मुहा०–रसोई तपना = भोजन पकाना।

२. दे० 'रसोई-घर'।

रसोई-घर–पुं० [हिं० रसोई + घर] भोजन बनाने की जगह। पाकशाला। चौका।

रसोईदार–पुं० दे० 'रसोइया'।

रसोय*–स्त्री० दे० 'रसोई'।

रसौर†–पुं० दे० 'रसावर'।

रस्ता–पुं० = रास्ता।

रस्म–स्त्री० दे० 'रसम'।

रस्मी–वि० [अ० रस्म] १. रस्म या प्रथा से सम्बन्ध रखनेवाला। २. जो नियमित रूप से अथवा मान्य रीति के अनुसार हो। रीतिक। (फॉर्मल)

रस्सा–पुं० [सं० रशना, प्रा० रसणा, हिं० रसरा] [स्त्री० अल्पा० रस्सी] बहुत मोटी रस्सी।

रस्सी–स्त्री० [सं० रश्मि] रूई, सन आदि को बटकर बनाई हुई बाँधने के काम की लंबी चीज। डोरी।

रहँकला–पुं० [हिं० रथ + कल] १. एक प्रकार की तोप। २. तोप लादने की गाड़ी।

रहँचटा–पुं० [हिं० रस + चाट] आतुरता-पूर्ण लालसा या उत्कंठा। चसका। उदा०–रूप रहचटैं लगि लग्यौ, माँगन सब जगु आनि।—बिहारी।

रहँटा†–पुं० [सं० अरघट्ट] सूत कातने

छूट जाना ।

यौ०-रहा-सहा = बचा-खुचा ।

मुहा०-(अंग आदि) रह जाना = (क) थक जाना । शिथिल हो जाना । (ख) निकम्मा हो जाना । **रह जाना** = (क) पीछे छूट जाना । (ख) शेष रहना ।

रहनि*-स्त्री० दे० 'रहन' ।

स्त्री० [?] प्रेम । प्रीति ।

रहम-पुं० [अ० रहम] १. करुणा । दया ।

यौ०-रहम-दिल = दयालु ।

२. कृपा । अनुग्रह ।

पुं० [अ०] गर्भाशय ।

रहम-दिल-वि० [अ० रहम + फा० दिल] [भाव० रहमदिली] जिसके दिल या मन में रहम या दया हो । दयालु ।

रहमान-पुं० [अ०] ईश्वर का एक नाम जो उसके रहम-दिल या दयालु होने का सूचक है ।

रहरु(लू)-पुं० दे० 'रहड़' ।

रहस-पुं० [सं० रहस्] १. गुप्त-भेद । रहस्य । २. लीला । क्रीड़ा । ३. आनन्द । ४. गुप्त या एकान्त स्थान । उदा०-रहसि रानि राम रुख पाई ।—तुलसी । ५. रति । ६. समुद्र । सागर । ७. स्वर्ग ।

रहस-चाव†-पुं० [हिं० रहस = क्रीड़ा + चाव] उत्साह पूर्वक मनाया जानेवाला आनन्द-मंगल । रंग-रली ।

रहसना-अ० [हिं० रहस] प्रसन्न होना ।

रहसि*-स्त्री० दे० 'रहस' ।

रहस्य-पुं० [सं०] १. गुप्त भेद । छिपी हुई बात । भेद । २. मर्म । ३. गूढ़ तत्त्व ।

रहस्यवाद-पुं० [सं०] वह धार्मिक वृत्ति जिसमें मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर के साथ संबंध स्थापित करने का प्रयत्न करता है । (मिस्टिसिज़्म)

रहस्यवादी-पुं० [सं० रहस्यवादिन्] वह जो रहस्यवाद के सिद्धान्तों का अनुयायी हो । वि० रहस्यवाद संबंधी । रहस्यवाद का ।

रहाई-स्त्री० [हिं० रहना] १. दे० 'रहन'। २. सुख। चैन। आराम।

रहाना*-अ० [हिं० रहना] १. होना। २. रहना।

रहित-वि० [सं०] किसी वस्तु, गुण आदि से खाली या हीन। बिना। बगैर।

रहितत्व-पुं० [सं०] १. रहित या खाली होने का भाव। २. नियम, बंधन, भार आदि से मुक्त या रहित किए जाने का भाव। (एग्जेम्शन)

रहीम-वि० [अ०] कृपालु। दयालु। पुं० ईश्वर का एक नाम। (मुसल०)

राँक†-वि० दे० 'रंक'।

राँका*-वि० [सं० रंक] १. दरिद्र। गरीब। २. बहुत ही दीन, हीन और तुच्छ।

यौ०-राँका-फीका = बहुत दीन, तुच्छ या निकम्मा।

राँगा-पुं० [सं० रंग] सीसे के रंग की एक प्रसिद्ध मुलायम धातु।

राँच†-अव्य० दे० 'रंच'।

राँचना†-अ० दे० 'राचना'।

राँजना*-स० [सं० रंजन] १. रंजित करना। रंगना। २. टाँका लगाना।

राँटी†-स्त्री० [?] टिट्टिभि। टिटिहरी। (बुन्देल)

राँड़-स्त्री० [सं० रंडा] १. विधवा। २. वेश्या।

राँध-पुं० [सं० परांत] १. आस-पास का स्थान। २. पड़ोस।

क्रि० वि० पास। समीप।

स्त्री० [हिं० राँधना] भोजन बनाने या राँधने की क्रिया या भाव।

वि० परिपक्व अवस्था या बुद्धिवाला।

राँधना-स० [सं० रंधन] भोजन पकाना।

राँभना*-अ० दे० 'रँभाना'।

राआ†-पुं० दे० 'राजा'।

राइ*-पुं० [सं० राजा] १. राजा। २. छोटा राजा।

वि० सबसे बढ़कर। उत्तम। श्रेष्ठ।

राइफल-स्त्री० [अं०] एक प्रकार बन्दूक जो पैदल सिपाहियों के पास रहती है

राई-स्त्री० [सं० राजिका] १. एक प्रका की छोटी सरसों।

मुहा०-राई नोन उतारना = जिसे न लगी हो उस पर से राई और नमक उ कर आग में डालना। (टोना) **राई पर्वत करना** = बहुत छोटे से बहुत बनाना। **राई-काई करना** = छिन्न-भि करना।

२. बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।

*स्त्री० [सं० राज] १. राय, रा राजा का पद। २. बहुत बड़ा पद उसके साथ का वैभव, मान-मर्यादा आ

*पुं० दे० 'राइ'।

राउ*-पुं० दे० 'राव'।

राउत*-पुं० = रावत।

राउर-पुं० [सं० राज + पुर] रनिवास। (अ

†-वि० [स्त्री० राउरी] श्रीमान् आपका। (अव०)

राउल†-पुं० दे० 'राजा'।

राकस†-पुं० = राक्षस।

राका-स्त्री० [सं०] पूर्णिमा की रात

राकेश-पुं० [सं० राका + ईश] चन्द्रम

राक्षस-पुं० [सं०] [स्त्री० राक्षसी दैत्य। असुर। २. क्रूर और पापी एक प्रकार का विवाह जिसमें युद्ध कन्या छीन लाते और तब उसे बनाते थे।

राक्षसपति-पुं० [सं०] रावण।

राक्षसी-वि० [हिं० राक्षस] १. रा संबंधी। राक्षस का। २. राक्षसों की जघन्य भीषण या विकट। जैसे-राक्ष अत्याचार, राक्षसी उपचार।

राख-स्त्री० [सं० रक्षा] किसी चीज बिलकुल जल जाने पर उसका बचा हुआ अंश। भस्म।

[हिं० रक्षण] १. रक्षा
। २. रखवाली करना। ३.
। ५. दे० 'रखना'।
[हिं० रक्षा] रक्षा बंधन के
बाँधने का डोरा। रक्षा।

।
] १. प्रिय वस्तु के प्रति
भाव या झुकाव। २.
। ३. प्रेम। अनुराग। ४.
राग। ६. रंग, विशेषतः
। ७. महावर। ८. संगीत
विशेष प्रकार और क्रम या
से बना हुआ गीत का
संगीत में छः राग माने
. चार चरणों का एक वर्ण-
चरण में रगण, जगण,
और गुरु (र, ज, र, ज, ग)

राग अलापना=अपनी
चलना।
[हिं० राग + फा० दारी]
शास्त्र के नियमों के अनुसार
पक्के गाने गाना।
[हिं० राग] १. अनुरक्त
जाना। ३. निमग्न होना।

] गीत गाना।
[सं०] एक ही पद
साथ मिले हुए अनेक
अंगों का समूह।
दे० 'राग-माला'।
[सं०] संगीत में किसी
। (प्रत्येक राग की प्रायः
गई हैं।)
रागिन्] १. अनुरागी।
गानेवाला। गवैया।
। रंजित। २. लाल।
में लिप्त।

*स्त्री० [सं० राज्ञी] रानी।

राघव-पुं० [सं०] रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। २. श्री रामचन्द्र।

राचना*-स० दे० 'रचना'।

अ० रचा जाना। बनना।

अ० [सं० रंजन] १. रँगा जाना। २. अनुरक्त होना। ३. लिप्त या लीन होना। ४. प्रसन्न होना। ५. शोभा देना।

राछ-स्त्री० [सं० रक्ष] १. कारीगरों का औजार। २. जुलाहों के करघे में का वह अंग या उपकरण जिससे ताने के तागे ऊपर उठते और नीचे गिरते हैं। ३. जलूस।

राछस*-पुं० = राक्षस।

राज-पुं० [सं० राज्य] १. राज्य। शासन। (गवर्नमेन्ट)

यौ०-राज-काज = राज्य का प्रबन्ध। **राज-पाट** = (क) राज-सिंहासन। (ख) राज्याधिकार।

२. राजा द्वारा शासित देश। राज्य। ३. पूरा अधिकार। प्रभुत्व।

मुहा०-राज रजना = बहुत अधिक सुख और अधिकार भोगना।

४. राज्य या शासन का काल। ५. बड़ी जमींदारी और भू-सम्पत्ति। (एस्टेट)

पुं० [सं० राजन्] राजा। प्रायः यौगिक शब्दों के अन्त में; सर्व-प्रधान शासक या सर्व-श्रेष्ठ आदि के अर्थ में जैसे-(क) मगध-राज = मगध का राजा; (ख) सर्व-श्रेष्ठ; जैसे-पंडित राज = पंडितों में सर्व-श्रेष्ठ।

वि० [हिं० राजा] परम प्रिय और आदरणीय। (किसी बड़े या प्रिय के लिए सम्बोधन के रूप में)

पुं० दे० 'राजगीर'।

राज-ऋण-पुं० [सं०] १. राज्य या राष्ट्र के नाम पर और उसके कार्यों के लिए सरकार द्वारा लिया हुआ ऋण। सरकारी ऋण। २. वह पत्र जो इस प्रकार का ऋण लेने पर उसके प्रमाण-स्वरूप उन लोगों

को दिया जाता है, जिनसे ऋण लिया जाता है। (स्टॉक)

राज-कर–पुं० [सं०] १. राजा या राज्य का लगाया हुआ कर। २. राजस्व।

राजकीय–वि० [सं०] राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।

राज-कुमार–पुं० [सं०] [स्त्री० राज-कुमारी] राजा का पुत्र।

राज-कुल–पुं० दे० 'राज वंश'।

राजग–पुं० [सं० राज + ग = जानेवाला] नगर की वह भूमि जो किसी प्रकार राज्य को मिल गई हो और जिसकी व्यवस्था राज्य की ओर से होती हो। नजूल।

राज-गद्दी–स्त्री० [हिं० राज + गद्दी] १. राज-सिंहासन। २. राज्याभिषेक।

राजगीर–पुं० [हिं० राज+फा० गीर (प्रत्य०)] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। थवई।

राजगृह–पुं० [सं०] १. राजा का महल। २. बिहार में पटने के पास का एक प्राचीन स्थान।

राजतंत्र–पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबन्ध केवल राजा के हाथ में हो; और जिसके प्रबन्ध करने में प्रजा या उसके प्रतिनिधियों का कोई स्थान न हो। (मानर्की)

राज-तिलक–पुं० दे० 'राज्याभिषेक'।

राजत्व–पुं० [सं०] राजा का पद, भाव या काम।

राज-दंड–पुं० [सं०] १. वह दंड जो राजा के पास उसके राजत्व के सूचक चिह्न के रूप में रहता है। २. राज्य या राजा की आज्ञा से दी जानेवाली सजा।

राज-दरबार–पुं० [हिं० राज + फा० दरबार] राजा का दरबार। राज-सभा।

राजदूत–पुं० [सं०] वह दूत जो किसी राज्य की ओर से दूसरे राज्य में भेजा या नियुक्त किया जाता है। (एम्बेसेडर)

राजद्रोह–पुं० [सं०] [वि० राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह। (सेडिशन

राज-द्वार–पुं० [सं०] १. राजा के की ड्योढ़ी। २. न्यायालय।

राजधानी–स्त्री० [सं०] किसी देश राज्य का वह प्रधान नगर जहाँ से शासन होता है और जहाँ उसके अधिकारी रहते तथा कार्यालय होते हैं

राजना*–अ० [सं० राजन] १. वि होना। रहना। २. शोभित होना।

राजनि*–स्त्री० [हिं० रजना] १. की क्रिया या भाव। २. उपस्थि विद्यमानता। ३. शोभा। छटा।

राजनीति–स्त्री० [सं०] [वि० राज राज्य की वह नीति जिसके अनुसा का शासन और पालन तथा दूसरे से व्यवहार होता है। (पॉलिटिक्स

राजनीतिक–वि० [सं०] राजनीति

राजनीतिज्ञ–पुं० [सं०] राज अच्छा ज्ञाता। (पॉलिटीशियन)

राजन्य–पुं० [सं०] १. क्षत्रिय। २.

राज-पथ–पुं० [सं०] सब लोगों योग के लिए बनी हुई बड़ी और पक्की सड़क। (हाईवे)

राज-पद–पुं० [सं०] राजा का पद

राज-परिवार–पुं० [सं०] परिवार, जिसमें उसके सगे-संबंधी के लोग होते हैं।

राज-पीठ–पुं० [सं०] विधायिका आदि में वे आसन जिनपर राज्य के और विभागीय मंत्री आदि (ट्रेजरी बेंचेज)

राजपुत्र–पुं० [सं०] राजकुमार।

राज-पुरुष–पुं० [सं०] १. राज्य चारी। २. राज्य या शासन की नीति व्यवहार का ज्ञाता। (स्टेट्समैन)

राजपूत–पुं० [सं० राजपुत्र] क्षत्रि कुछ विशिष्ठ वंशों की सूचक संज्ञा।

राजपूताना–पुं० दे० 'राज-स्थान'।

[सं०] राजा के रहने
महल।

[सं०] राज्य या राजा की
नेवाला या भेजे जाने के
सर्विस) जैसे–राज्य प्रेष्य
पोस्टेज स्टाम्प)

[सं० राजबंदिन्] वह जिसे
ने बिना मुकदमा चलाये किसी
लिया हो। (स्टेट प्रिजनर)

[सं०] [भाव० राजभक्ति]
या राज्य के प्रति भक्ति
ता हो। (लॉयल)

–स्त्री० [सं०] अपने राजा या
भक्ति, निष्ठा और प्रेम।
)

–पुं० [सं०] राजा का महल।

–स्त्री० [सं०] किसी देश में
भाषा जिसका उपयोग प्रायः
कार्यों और न्यायालयों आदि
। (स्टेट लैंग्वेज)

–पुं० [सं०] १. राज्य का सुख
करना। २. देवताओं के
रखा जानेवाला भोग।

–पुं० [हिं० राज + महल] राजा
महल। राज-प्रासाद।

–स्त्री० [सं०] पटरानी।

–स्त्री० [सं०] किसी देश के
की माता।

–पुं० [सं०] चौड़ी सड़क।

–स्त्री० [सं०] १. राजा या राज्य
जो राजकीय पत्रों आदि पर
जाती है। (रॉयल सील) २.
।

–पुं० [सं०] क्षय नामक रोग।

–पुं० [सं०] १. पतंजलि के दर्शन
योग। २. फलित ज्योतिष
योग जिसके अनुसार मनुष्य
राज्य का-सा सुख भोगता है।

राज-राजेश्वर–पुं० [सं०] [स्त्री० राज-राजेश्वरी] अनेक राजाओं का प्रधान राजा। सम्राट्।

राज-रोग–पुं० [हिं० राज + रोग] १. बहुत बड़ा और असाध्य रोग। २. यक्ष्म रोग।

राजर्षि–पुं० [सं०] राज-वंश में उत्पन्न ऋषि।

राज-लिपि–स्त्री० [सं०] किसी देश के राज-कार्यों में काम आनेवाली लिपि।

राज-लोक*–पुं० दे० 'राज-प्रासाद'।

राज-वंश–पुं० [सं०] राजा का कुल, वंश या परिवार।

राजवीं–पुं० = राजा। (राज०)

राजस–वि० [सं०] [स्त्री० राजसी] रजोगुण से उत्पन्न या युक्त। रजोगुणी।
पुं० १. रजोगुण। २. क्रोध। ३. राजा का पद या सिंहासन। ४. शासन करने का अधिकार। राज्याधिकार। उदा०–इहिं राजस को को न बिगोयौ।—सूर।

राज-सत्ता–स्त्री० [सं०] १. राज-शक्ति राज्य की सत्ता। २. राज्याधिकार।

राज-सत्तात्मक–वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो। 'प्रजा-सत्तात्मक' का उलटा।

राज-सदन–पुं० [सं०] १. राजा का महल राज-प्रासाद। २. आधुनिक भारत में किसी राज्य की राजधानी का वह भवन जिसमें उस राज्य का राज्यपाल रहता है। (गवर्नमेन्ट हाउस)

राज-सभा–पुं० [सं०] १. राज्य का दरबार। २. राजाओं की सभा।

राज-सिंहासन–पुं० [सं०] राजा के बैठ का सिंहासन। राज-गद्दी।

राजसिक–वि० दे० 'राजस' और 'राजसी'

राजसी–वि० [हिं० राजा] राजाओं योग्य या राजाओं का-सा।

राजसूय–पुं० [सं०] एक यज्ञ जो सम्र पद के अधिकारी राजा करते थे।

राजस्थान-पुं० [सं०] संयुक्त प्रान्त के पश्चिम और पूर्वी पंजाब के दक्षिण का वह प्रदेश जो पहले राजपूताना कहलाता था।

राजस्थानी-वि० [हिं० राजस्थान] राजस्थान या राजपूताने का।

स्त्री० राजस्थान या राजपूताने की भाषा।

राजस्व-पुं० [सं०] कर, शुल्क आदि के रूप में राजा या राज्य को होनेवाली आय। (रेविन्यू)

राजस्व-न्यायालय-पुं० दे० 'माल-न्यायालय'।

राजहंस-पुं० [सं०] [स्त्री० राजहंसी] एक प्रकार का बड़ा हंस।

राजा-पुं० [सं० राजन्] [स्त्री राज्ञी, रानी] किसी देश या जाति का प्रधान शासक और स्वामी।

राजाज्ञा-स्त्री० [सं०] राजा या राज्य की आज्ञा।

राजाधिराज-पुं० [सं०] राजाओं का राजा। बहुत बड़ा राजा।

राजावर्त्त-पुं० [सं०] एक प्रकार का रत्न।

राजिंदा*-पुं० [सं० राजेन्द्र] १. स्वामी। पति। २. परमप्रिय व्यक्ति।

राजि-स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। श्रेणी। २. रेखा। लकीर। ३. राई।

राजिका-स्त्री० [सं०] सरसों की तरह का छोटा दाना। राई। २. दे० 'राजि'।

राजिव*-पुं० [सं० राजीव] कमल।

राजी-वि० [अ०] १. सहमत। २. नीरोग। स्वस्थ। ३. प्रसन्न। खुश। ४. सुखी।

यौ०-राजी-खुशी = (क) सही सलामत। (ख) कुशल-मंगल।

*स्त्री० दे० 'राजि'।

राजीनामा-पुं० [फा०] वह लेख जिसे प्रमाण और निश्चय के रूप में मानकर दो विरोधी पक्ष आपस में मेल करते हैं।

राजीव-पुं० [सं०] कमल। पद्म।

राजेश्वर-पुं० [सं०] [स्त्री० राजेश्व राजाओं का राजा। महाराज।

राज्य-पुं० [सं०] १. राजा का का शासन। २. एक राजा अथवा एक के सत्ता द्वारा शासित देश। ३. स्वतंत्र में कोई वह बड़ा भू-भाग जो पहले प्रान्त प्रदेश कहलाता था पर अब जिसे बहु बातों में पूर्ण स्वतंत्रता मिल गई है। (अन्तिम दोनों अर्थों के लिए) जैसे प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा अब राज्य हैं।

राज्य-तंत्र-पुं० [सं०] देश या रा शासन, व्यवस्था, संघटन आदि की प्र ढंग या प्रकार। (पॉलिटी) जैसे राज्य-तंत्र, पाश्चात्य राज्य-तंत्र।

राज्य-त्याग-पुं० [सं०] राजा का राज्य त्याग या छोड़ देना। (एब्डिके

राज्य-परिषद्-स्त्री० [सं०] किसी के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह बड़ी षद जो साधारण विधायिका से ऊँची और उसके निर्णयों पर पुनर्विचार है। (काउन्सिल आफ स्टेट)

राज्य-श्री-स्त्री० [सं०] राज्य की और वैभव।

राज्य-संघ-पुं० [सं०] अनेक ऐसे स्व प्राय राज्यों का वह संघ या समूह जो किसी एक राष्ट्र के अंग और कुछ एक प्रबल केन्द्र के अधीन रहते हैं (फिडरेशन)

राज्य-सरकार-स्त्री० [सं० राज्य + सरकार] स्वतंत्र भारत में किसी रा (विशेष दे० 'राज्य' ३.) की सरकार बहुत-सी बातों में स्वतंत्र और कुछ बातों भारत-सरकार के अधीन है। (स्टेट गवर्नमेन्ट)

राज्याभिषेक-पुं० [सं०] किसी रा के राजगद्दी पर बैठने के समय होनेवाला औपचारिक कृत्य या उत्सव। राज्यारोह

राज्यारोहण-पुं० [सं०] किसी राजा

सिंहासन पर बैठकर राज्य
करना ।
'राज्य' । २. दे० 'राजा' ।
[सं० राट्] १. राजा । २.
आदि राज्यों के राजाओं

[सं० रात्रि] सूर्यास्त से सूर्योदय
रात्रि । निशा ।
दिन = सदा । हमेशा ।
(लाल) ।
[सं० रक्त] [स्त्री० राती,
] १. लाल रंग का । अरुण ।
रंजित । ३. किसी के प्रेम
। ४. किसी कार्य में लगा

राता होना = लाभ या

[अ०] पशुओं का भोजन ।
[सं०] रात । निशा ।
-स्त्री० [सं०] वह पाठ-
दिन में काम करनेवाले
जो रात्रि के समय लिखना-
जाता है । (नाइट स्कूल)
[सं०] १. प्रसन्न और सन्तुष्ट
आराधना करना ।
[सं० आराधन] १.
पूरा करना । २. (काम)
करना । जैसे—साध राधना ।
[illegible])
दे० 'राधिका' ।
[सं०] श्री कृष्णाचन्द्र ।
[सं०] १. वृषभानु की
। २. एक प्रकार का मात्रिक
चरण में २२ मात्राएँ
मात्रा पर यति होती है ।
लोकगीत इसी छंद
राज्य ।

रान–स्त्री० [फा०] जंघा । जाँघ ।

राना*–अ० [सं० राग] अनुरक्त होना । पुं० दे० 'राणा' ।

रानी–स्त्री० [सं० राज्ञी] १. राजा की स्त्री । २. स्वामिनी । मालकिन ।

रानी काजल–पुं० एक प्रकार का धान या उसका चावल ।

राब–स्त्री० [सं० द्रावक] पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस ।

राम–पुं० [सं०] १. परशुराम । २. बलराम । बलदेव । ३. श्री रामचंद्र ।

मुहा०–राम-राम करके = बहुत कठिनता से ।

४. तीन की संख्या । ५. ईश्वर । भगवान् ।

राम-चंगी–स्त्री० [देश०] एक प्रकार की तोप ।

रामचंद्र–पुं० [सं०] अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र जो दस अवतारों में माने जाते हैं ।

राम-जना–पुं० [हिं० राम + जना = उत्पन्न] [स्त्री० रामजनी] एक जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति और नाच-गाने का काम करती हैं ।

राम-तारक–पुं० [सं०] राम जी का तारक मंत्र जो यह है—रां रामाय नमः ।

रामति†–स्त्री० [हिं० रमना] भीख माँगने के लिए इधर-उधर घूमना ।

राम-दल–पुं० [सं०] १. रामचन्द्र जी की बंदरोंवाली सेना । २. बहुत बड़ी और प्रबल सेना ।

राम-दूत–पुं० [सं०] हनुमान जी ।

राम-धुन–स्त्री० [सं० राम + हिं० धुन] १. भक्तिपूर्वक राम का नाम जपने की क्रिया या भाव । २. वह भजन या गीत जिसमें बार बार राम का नाम आता हो ।

राम नवमी–स्त्री० [सं०] चैत्र सुदी नवमी, जो रामचन्द्र जी की जन्म-तिथि है ।

राम नामी–स्त्री० [हिं० राम + नाम] १. वह कपड़ा जिस पर राम-राम लिखा रहता है ।

२. एक प्रकार का हार। (गहना)

रामपुरी–स्त्री० [सं०] अयोध्या नगरी। २. साकेत। ३. स्वर्ग।

राम-फटाका–पुं० [हिं० राम + फटाका] वह लंबा तिलक जो रामानुज आदि संप्रदायों के अनुयायी मस्तक पर लगाते हैं।

राम-बाण–वि० [सं०] १. अचूक। अमोघ। २. तुरन्त लाभ करनेवाला। (औषध)

राम बास–पुं० [हिं० राम + बास=गंध] एक प्रकार का धान या उसका चावल।

राम-रज–स्त्री० [सं०] तिलक लगाने की एक प्रकार की पीली मिट्टी।

राम-रस–पुं० = नमक।

राम-राज्य–पुं० [सं०] ऐसा काल्पनिक और आदर्श राज्य जो सब लोगों के लिए अत्यंत सुखदायक हो और जिसमें किसी को किसी बात का कष्ट न हो। (उटोपिया)

राम-रौला–पुं० [हिं० राम + रौला] व्यर्थ का हल्ला या शोर-गुल।

राम-लीला–स्त्री० [सं०] राम के चरित्रों का अभिनय।

राम-शर–पुं० [सं०] एक प्रकार का नरसल या सरकंडा।

रामा–स्त्री० [सं०] १. सुंदर स्त्री। २. नदी। ३. लक्ष्मी। ४. सीता। ५. राधा। ६. पत्नी।

रामायण–पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन हो।

रामायणी–पुं० [सं० रामायण] रामायण की कथा कहनेवाला।

राय–पु० [सं० राजा] १. राजा। २. सरदार। ३. राज्य। ४. भाटों की उपाधि। वि० १. बड़ा। २. बढ़िया। (यौगिक शब्दों के अन्त में; जैसे–यदुराय)

स्त्री० [फा०] सम्मति। सलाह।

रायता–पुं० [सं० राजिकाक्त] दही में पड़ा हुआ कद्दू, बुँदिया आदि।

राय भोग–पुं० एक प्रकार का धान या उसका चावल।

रायमुनी–स्त्री० [हिं० राय + मुनिया] लाल नामक पक्षी की मादा। मदिया। मुनिया।

राय-रासि*–स्त्री० [सं० राजराशि] रा का कोष।

रॉयल्टी–स्त्री० दे० 'स्वामित्व'।

रायसा–पुं० दे० 'रासो'।

राया*–पुं० = राजा।

†स्त्री० = राल (धूना)।

रार–स्त्री० [सं० राटि] झगड़ा। विवा

रारी*–वि० [हिं० रार] रार या झ करनेवाला। झगड़ालू।

स्त्री० = रार (झगड़ा)।

राल–स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का वृ २. इस वृक्ष का निर्यास जो अपने सुगं धूएँ के लिए जलाया जाता है। धूना।

स्त्री० [सं० लाला] लार।

मुहा०–राल टपकना = कुछ प लिए बहुत लालच या लालसा होना।

राव–पुं० दे० 'राय'।

रावट–पुं० [हिं० राव] राज-महल।

रावटी–स्त्री० [हिं० रावट] १. छोटा तं छोलदारी। २. छोटा घर। ३. बारह-द

रावण–पुं० [सं०] लंका का प्रसिद्ध रा राजा जिसे रामचन्द्र ने मारा था।

रावत–पुं० [सं० राजपुत्र] १. छोटा रा २. शूर। वीर। ३. सरदार।

रावना*–स० [सं० रावण] रुलान

रावर(ा)*–सर्व० [हिं० रावल] आ (ब्रज०)

*पुं० दे० 'रावल'।

रावरो†–वि० = रावर (ा)

रावल–पुं० [सं० राजपुर] राजा का मह रनिवास।

पुं० [पा० राजुल] [स्त्री० रावली] राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि २. दे० 'रावत'।

रावला†–सर्व० [स्त्री० रावली] = रावर

हिं० राजपु०] राजाओं का
। अंतःपुर।
=रावरो।
हिं० रैशन] १. खाने-पीने
मिलनेवाली सामग्री। २.
जिसमें लोगों को खाने-
आवश्यकताओं की वस्तुएँ
में और कुछ नियत काल
ती हैं।
दे० 'रैशनिंग'।
[हिं० राशन] राशन संबंधी।
-राशनी आटा।
[सं०] १. ढेर। २. उत्तरा-
क्रान्तिवृत्त में पड़नेवाले तारों के
जो ये हैं-मेष, वृष, मिथुन,
कन्या, तुला, वृश्चिक, धन,
और मीन।
[सं०] क्रान्तिवृत्त में पड़ने-
समूह जो बारह भागों में
में से प्रत्येक भाग राशि
भचक्र। (जोडिएक)
सं०] १. राज्य। २. देश।
में बसनेवाला समस्त या पूरा
(नेशन)
[सं०] १. किसी आधुनिक
द्वारा चुना हुआ उसका सर्व-
। २. भारतीय राष्ट्रीय महासभा
सभापति।
-स्त्री० [सं०] किसी राष्ट्र के
या प्रतिनिधियों की
आफ स्टेट)
स्त्री० [सं०] किसी देश या
वह प्रधान भाषा जिसका
या राष्ट्र के रहनेवाले अन्य
सार्वजनिक पारस्परिक कामों
(नेशनल लैंग्वेज)
[सं०] कुछ ऐसे राष्ट्रों का

वह समूह जिसमें सबको समान अधिकार प्राप्त हों और सबके कुछ निश्चित कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व हों। ऐसे संघटन में कोई केन्द्रिय शक्ति या सत्ता नहीं होती। (कामनवेल्थ)

राष्ट्र-मुद्रा–स्त्री० [सं०] राष्ट्र की वह मुद्रा या मोहर जो राष्ट्रिय कागज-पत्रों पर मुद्रित या अंकित की जाती है। (स्टेट सील)

राष्ट्र-लिपि–स्त्री० [सं०] वह लिपि जिसमें किसी देश की राष्ट्र-भाषा लिखी जाती है।

राष्ट्रवाद–पुं० [सं०] [वि० राष्ट्रवादी] वह सिद्धांत जिसमें अपने राष्ट्र के हितों को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है।

राष्ट्रवादी–पुं० [सं०] वह जो अपने राष्ट्र या देश की एकता, महत्ता और कल्याण का पक्षपाती हो। (नैशनलिस्ट)

राष्ट्र-संघ–पुं० [सं०] संसार के कुछ प्रमुख राष्ट्रों का एक संघ जो दूसरे युरोपीय महायुद्ध के बाद बना था और जिसका उद्देश्य संसार में शान्ति बनाये रखना है। (यूनाइटेड नेशसन्स ऑर्गनिजेशन)

राष्ट्रिक–वि० [सं०] राष्ट्र का। राष्ट्रिय। पुं० जातीय, धार्मिक, राजनीतिक आदि सूत्रों से बँधे हुए किसी राष्ट्र या देश का निवासी या किसी राष्ट्र का अंग या सदस्य। (नैशनल) जैसे–हमारा भारतीय राष्ट्र अनेक राष्ट्रिकों के योग से बना है। विशेष दे० 'राष्ट्रिकता'।

राष्ट्रिकता–स्त्री० [सं०] जातीय, धार्मिक, राजनीतिक आदि सूत्रों से बँधे हुए किसी संघटित राष्ट्र के निवासी, अंग या सदस्य होने का भाव अथवा स्थिति। राष्ट्रिक होने की अवस्था। (नैशनैलिटी) जैसे–पहले तो वे भारत के ही राष्ट्रिक थे; पर अब उन्होंने पाकिस्तान की राष्ट्रिकता ग्रहण कर ली है।

राष्ट्रिय–वि० [सं०] १. राष्ट्र-संबंधी। राष्ट्र का। २. अपने राष्ट्र की एकता, महत्ता

और उन्नति आदि से संबंध रखनेवाला। (नैशनल)

राष्ट्रियता–स्त्री० [सं०] १. किसी राष्ट्र के विशेष गुण। २. अपने देश या राष्ट्र के प्रति उत्कट प्रेम।

राष्ट्रीय–वि० दे० 'राष्ट्रिय'।

रास–स्त्री० [सं० मूलतः कदाचित् लास्य, प्रा० रास्स] १. प्राचीन भारत के गोपों की एक क्रीड़ा जिसमें वे घेरा बाँधकर नाचते थे। २. श्री कृष्ण की रास-लीला या उसका अभिनय।

स्त्री० [सं० रश्मि, प्रा० रस्सि] घोड़े, बैल आदि की लगाम की रस्सी। बाग-डोर।

स्त्री० [सं० राशि] १. खलिहान में लगाया जानेवाला अन्न का ढेर। २. जोड़। ३. गोद या दत्तक लेने की क्रिया या भाव। ४. सूद। ब्याज। ५. दे० 'राशि' ३.।

स्त्री० [अ० राश = सिर] १. चौपायों की गिनती में इकाई या संख्या का सूचक शब्द। जैसे–दो रास गाय, चार रास घोड़े। (हेड, आफ केटल) २. चौपायों का झुंड।

वि० [फा० रास्त] १. अनुकूल। २. उचित। ठीक। वाजिब।

ासक–पुं० [सं०] हास्य-रस का एक प्रकार का एकांकी नाटक।

ास कुमारी–स्त्री० दे० 'कन्या कुमारी'।

ासधारी–पुं० [सं० रासधारिन्] कृष्ण-लीला का अभिनय करनेवाला व्यक्ति।

ास-नशीन–पुं० [हिं० रास + फा० नशीन] १. गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक। २. उत्तराधिकारी।

ासभ–पुं० [सं०] १. गधा। २. खच्चर।

ास-मंडली–स्त्री० [सं०] रासधारियों का समाज या मंडली।

ास-लीला–स्त्री० [सं०] रासधारियों का कृष्ण-लीला संबंधी अभिनय।

ास-विलास–पुं० [सं०] १. रास-क्रीड़ा। २ आनंद-मंगल।

रासायनिक–वि० [सं०] रसायन-शास्त्र से सम्बन्ध रखनेवाला। रसायन का। पुं० दे० 'रसायनज्ञ'।

रासायनिक परीक्षक–पुं० [सं०] व जो किसी वस्तु के रासायनिक तत्वों विश्लेषण या जाँच करके उनका ठीक प लगाता हो। (केमिकल इग्जामिनर)

रासु–वि० दे० 'रास्त'।

रासो–पुं० [सं० रहस्य] किसी राजा वीरतापूर्ण युद्धों के विवरणों से युक्त में लिखा हुआ जीवन-चरित्र। जैसे हम्मीर रासो।

रास्त–वि० [फा०] [भाव० रास्ती] १. सीधा। सरल। २. दुरुस्त। ठीक ३. उचित। वाजिब। ४. अनुकूल।

रास्ता–पुं० [फा० रास्तः] १. एक से दूसरी जगह जानेके समय बीच में प वाला स्थान। मार्ग। राह।

मुहा०-रास्ता देखना = प्रतीक्षा करना **रास्ता पकड़ना** = चले जाना। **रास्ता बताना** = धता करना। हटा देना।

२. चाल। ढंग। ३. कठिनता दूर करने या उससे बचने का उपाय। तरकीब।

राह–स्त्री० दे० 'रास्ता'।

राह-खर्च–पुं० [फा० राह + खर्च] यात्रा समय रास्ते में होनेवाला खर्च। मार्ग-व्यय

राहगीर–पुं० [फा०] पथिक। बटो

राह-चबेनी–स्त्री० [हिं० राह + चबेना] हिन्दुओं का एक धार्मिक कृत्य जिसमें लड्डू या इसी तरह की कुछ चीजें व्यक्ति यह समझ कर दान करता है कि मैं मर जाऊँगा तब मोक्ष होने ३६० दिनों तक इनमें से एक एक लड्डू दान की हुई चीज मुझे नित्य मिलती रहेगी।

राह-चलता–पुं० [फा० राह + हिं० चलना] १. पथिक। २. जिसका प्रस्तुत विषय से कोई सम्बन्ध न हो। गैर।

राहत–स्त्री० [अ०] आराम। सुख।

[फ़ा॰] १. रास्ते का
हसूल। २. चुंगी।
परवाना = रवन्ना।
'रहना'।
] १. 'रहित' का भाव।
। २. दे॰ 'रहिततत्र'।
] कोई चीज किसी के
रखनेवाला।
] पथिक। यात्री।
होना = चलते बनना। चल
ना।
] नौ ग्रहों में से एक।
'रोहू' (मछली)।
प्र॰ रिंगाना] दे॰ 'रेंगना'।
] १. धार्मिक बंधनों को
न माननेवाला। २.
स्वच्छंद पुरुष।
१. मतवाला। २. मस्त।
[अ॰] १. कोमल और
। नरमी। २. कृपा।
क्रिया या लिया जाना
कुछ कमी करना। छूट।
)
[अ॰] प्रजा।
[अ॰] प्रजा। रिआया।
[?] उड़द की पीठी का
पकवान।
'रकाब'।
] [भाव॰ रिक्तता] १.
।
[सं॰] रिक्त या खाली होने
। (वैक्युइटी)
] १. रिक्त या खाली
भाव। खाली होना।
या कर्मचारी के हट
पद या स्थान खाली
)

रिक्थ-पुं॰ [सं॰] १. भू-सम्पत्ति और धन-दौलत। (एस्टेट) २. दे॰ 'परिसंपद्'।

रिक्शा-पुं॰ [जा॰ जिन-रिकि-शा] एक प्रकार की हलकी सवारी जिसे आदमी खींचते या चलाते हैं।

रिक्ष-पुं॰ दे॰ 'ऋक्ष'।

रिखभ*-पुं॰ दे॰ 'ऋषभ'।

रिच्छ*-पुं॰ = रीछ।

रिच्छेस*-पुं॰ [सं॰ ऋक्षेश] रीछों के राजा, जांबूवान्।

रिछेस*-पुं॰ दे॰ 'रिच्छेस'।

रिजक-पुं॰ [अ॰ रिज़्क़] नित्य के निर्वाह के लिए भोजन आदि। जीविका। रोजी।

रिजु*-वि॰ दे॰ 'ऋजु'।

रिझवार-पुं॰ [हिं॰ रीझना] १. प्रसन्न या मोहित होनेवाला। २. अनुरागी। प्रेमी। ३. गुण-ग्राहक।

रिझाना-स॰ [सं॰ रंजन] किसी को अपने पर प्रसन्न या मोहित कर लेना।

रिझायल*-वि॰ [हिं॰ रीझना] रीझनेवाला।

रिझाव-पुं॰ [हिं॰ रीझना] रीझने की क्रिया या भाव।

रिझावना-स॰ = रिझाना।

रिझौंहाँ*-वि॰ [हिं॰ रीझ+औंहाँ (प्रत्य॰)] बहुत रीझने की प्रवृत्ति रखनेवाला।

रिझौना*-वि॰ दे॰ 'रिझौहाँ'।

रिढ़ना-अ॰ [?] घसिटते हुए चलना।

रित-स्त्री॰ दे॰ 'ऋतु'।

रितआ*-वि॰ [सं॰ रिक्त] [स्त्री॰ रितई] रिक्त। रहित। खाली।

रितवना*-स॰ दे॰ 'रिताना'।

रिताना-स॰ [हिं॰ रीता = खाली + आना (प्रत्य॰)] खाली करना। रिक्त करना। अ॰ रिक्त या खाली होना।

रितु*-स्त्री॰ = ऋतु।

रिद्धि-स्त्री॰ दे॰ 'ऋद्धि'।

रिधिर*-पुं॰ = रुधिर।

रिन*-पुं॰ = ऋण।

रिनी*-वि० = ऋणी ।

रिपु-पुं० [सं०] [भाव० रिपुता] शत्रु ।

रिपोर्ट-स्त्री० [अं०] १. किसी घटना की सूचना, जो किसी को दी जाय । आख्या । २. कार्य-विवरण । (संस्था आदि का)

रिपोर्टर-पुं० [अं०] समाचार-पत्र का संवाददाता ।

रिम-झिम-स्त्री० [अनु०] वर्षा की छोटी-छोटी बूँदें गिरना । फुहार ।
क्रि० वि० छोटी बूँदों के रूप में (वर्षा) ।

रियासत-स्त्री० [अ०] [वि० रियासती] १. राज्य । अमलदारी । २. देशी राज्य । (देखो) ३. अमीरी । रईसी । ४. वैभव । ऐश्वर्य ।

रियासती-वि० [हिं० रियासत] रियासत सम्बन्धी । रियासत का ।

रियाह-स्त्री० [अ० रीह का बहु०] शरीर के अन्दर की वायु । बाई ।

रिर*-स्त्री० [हिं० रार] १. हठ । जिद । २. झगड़ा । ३. गिड़गिड़ाहट ।

रिरना†-अ० [अनु०] गिड़गिड़ाना ।

रिरिहा†-वि० [हिं० रिरना] गिड़गिड़ाकर और दीनतापूर्वक माँगनेवाला ।

रिलना*-अ० [हिं० रेलना] १. पैठना । घुसना । २. मिल जाना ।
पद-रिलना-मिलना=(क) अच्छी तरह मिलना । (ख) मेल-मिलाप रखना ।

रिल-मिल-स्त्री० [हिं० रिलना + मिलना] मेल-जोल । मेल-मिलाप ।

रिवाज-पुं० [अ०] प्रथा । रस्म ।

रिवाल्वर-पुं० [अं०] एक प्रकार का तमंचा जिसमें एक साथ कई गोलियाँ भरने की जगह होती है और वे गोलियाँ लगातार छोड़ी जा सकती हैं ।

रिश्तेदार-पुं० [फा०] संबंधी । नातेदार ।

रिश्वत-स्त्री० [अ०] घूस । उत्कोच ।

रिश्वतखोर-वि० [अ० रिश्वत + फा० खोर] रिश्वत लेने या खानेवाला । घूसखोर ।

रिश्वती-वि० दे० 'रिश्वतखोर' ।

रिष*-पुं० = ऋषि ।

रिषभ*-पुं० = ऋषभ ।

रिषय*-पुं० = ऋषि ।

रिषि*-पुं० = ऋषि ।

रिष्ट*-वि० [सं० हृष्ट] १. प्रसन्न । लंबा-चौड़ा या मोटा-ताजा ।

रिस-स्त्री० [सं० रुष] क्रोध । गुस्सा ।
मुहा०*-**रिस मारना** = क्रोध रोक
*स्त्री० दे० 'रीस' ।

रिसाना†-अ० [हिं० रिस] क्रुद्ध हो
स० दूसरे को क्रुद्ध करना ।

रिसानी*-स्त्री० दे० 'रिस' ।

रिसाल†-पुं० [अ० इरसाल] राज्य
*पुं० [सं० रसाल] आम (पेड़ और

रिसालदार-पुं० [फा०] घुड़-सवा
का एक छोटा अधिकारी ।

रिसाला-पुं० [फा०] १. घुड़-सवार
२. पुस्तकाकार प्रकाशित होनेवाला स
पत्र, विशेषतः पाक्षिक या मासिक ।

रिसिआना-अ०, स० दे० 'रिसाना' ।

रिसिक-*स्त्री० [सं० रिषीक] तल

रिसौहाँ*-वि० [हिं० रिस + औहाँ (प्र
कुछ क्रोध से भरा हुआ ।

रिहा-वि० [फा०] [भाव० रिहाई]
आदि से छुटा हुआ । मुक्त ।

रिहाई-स्त्री० [फा०] छुटकारा ।

रिहाना*-स० [फा० रिहा] रिहा
कराना । छुड़ाना । उदा०-सूर कृ
करुनामय, आपुन हाथ सों दूत रिहा
अ० रिहा या मुक्त होना । छूटना ।

रींधना-स० दे० 'राँधना' ।

रीछ-पुं० [सं० ऋक्ष] भालू । (हिंस
रीझना-अ० [सं० रंजन] [भाव०
किसी के रूप, गुण आदि के कारण
प्रसन्न, अनुरक्त, या मोहित होना ।

रीठ*-स्त्री० [सं० रिष्ट] तलवार ।
वि० १. अशुभ । २. बुरा । खराब ।

] एक जंगली वृक्ष का
के काम में आता है।
ढ़क] १. पीठ के बीच
। पृष्ठ-वंश। मेरु-दण्ड।
वह अंग या तत्त्व जिसके
चीज खड़ी रह सके।
ी।
[सं० रिक्त] खाली
करना।
रिक्त] खाली। रिक्त।
[सं०] १. कोई काम करने
। (मैनर) २. रिवाज।
नियम। ४. कोई काम
ढंग या प्रणाली। (कोर्स)
उचित रीति से आना
साहित्य में वर्णों की ऐसी
में ओज, प्रसाद, माधुर्य
हैं।
[सं०] [भाव० रीतिकता]
। रीति का। २. जो निश्चित
रीति, नियम, व्यवहार
किया जाय। (फॉर्मल)
[सं०] कोई काम निश्चित
रीति, नियम या व्यवहार के
अवस्था या भाव।
[सं०] हिन्दी साहित्य के
सोलहवीं शताब्दी से
तक का समय, जब कि
अधिक बनते थे।
[सं०] वह ग्रंथ जिसमें
अर्थात् इस बात का विवेचन
वर्णन में ओज, प्रसाद,
किस प्रकार लाये जाने
, अलंकार आदि के ग्रन्थ
हैं।)
=रुधिर।
=ऋद्धि-सिद्धि।

रीस-स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १. डाह। २. किसी की बराबरी करने की इच्छा। स्पर्द्धा। स्त्री० दे० 'रिस'।

रीसना*-अ० [हिं० रिस] क्रोध करना।

रुंड-पुं० [सं०] १. सिर कट जाने पर खाली बचा हुआ धड़। कबंध। २. वह शरीर जिसमें के हाथ पैर कट गये हों।

रुँधना-अ० [सं० रुद्ध] १. मार्ग रुकना या घिरना। २. उलझना। ३. घेरा जाना।

रु*-अव्य० [हिं० अरु] और।

रुआ†-पुं० दे० 'रोआँ'।

रुआना*-स० दे० 'रुलाना'।

रुऐंदा†-वि० [हिं० रोना + ऐंदा (प्रत्य०)] जिसे रुलाई आना चाहती हो। रोआँसा। उदा०—कुंजन की कूल की कलिंदी की रुऐंदी दसा, देखि देखि आँस औ उसाँस उमगत हैं।—रत्ना०।

रुकना-अ० [हिं० रोक] [भाव० रुकावट, प्रे० रुकवाना] १. गति, प्रवाह आदि में किसी प्रकार का विश्राम या अवरोध होना। अवरुद्ध होना। अटकना। २. ठहर जाना। ३. किसी कार्य या चलते हुए क्रम का बीच में बंद हो जाना।

रुकाव-पुं० दे० 'रुकावट'।

रुकावट-स्त्री० [हिं० रुकना] [वि० रुकावटी] १. रोकने या रोके जाने की क्रिया या भाव। रोक। २. रोकने या बाधक होनेवाली चीज या बात। अड़चन। बाधा। विघ्न (ऑब्स्ट्रक्शन) ३. रोकनेवाली बात या चीज। (चेक)

रुकावटी-वि० [हिं० रुकावट] जो रुकावट डालने या रोकने के लिए हो। जैसे—रुकावटी चिट्ठी या हुक्म।

रुक्का-पुं० [अ० रुक्कऽ] पत्र। चिट्ठी।

रुक्ख*-पुं० [सं० रूक्ष] पेड़। वृक्ष।

रुक्मिणी-स्त्री० [सं०] श्री कृष्ण की एक पटरानी का नाम।

रुक्ष-वि० [सं० रुक्ष] [भाव० रुक्षता] १. जिसमें चिकनाहट न हो। रुखा। २.

जिसमें घी, तेल या कोई चिकनी वस्तु न पड़ी या लगी हो। ३. खुरदरा। ४. नीरस। शुष्क। ५. शील-रहित।

रुख-पुं० [फा०] १. मुँह। २. आकृति। चेष्टा। ३. चेहरे या आकृति से प्रकट होनेवाली मन की इच्छा। ४. कृपा-दृष्टि। ५. सामने का भाग। ६. अंग। पार्श्व। ७. शतरंज का हाथी या किश्ती नामका मोहरा। क्रि० वि० १. तरफ। २. सामने।

रुखसत-स्त्री० [अ०] छुट्टी। अवकाश। वि० जो कहीं से चल पड़ा हो। विदा या रवाना हो जानेवाला।

रुखसती-स्त्री० [अ० रुखसत] विदाई, विशेषतः दुलहिन की।

रुखाई-स्त्री० [हिं० रूखा] १. 'रूखा' होने का भाव। रुक्षता। रूखापन। २. शुष्कता। खुश्की। ३. व्यवहार में संकोच या शील का अभाव। बे-मुरौवती।

रुखाना*-अ० [हिं० रूखा] १. रूखा होना। २. नीरस होना। सूखना। स० रूखा या नीरस करना।

रुखावट-स्त्री० दे० 'रुखाई'।

रुखित*-स्त्री० [सं० रुषिता] मान करने या रूसनेवाली नायिका।

रुग्ण-वि० [सं०] जिसे कोई रोग हुआ हो। रोगयुक्त। रोगी। बीमार।

रुचना-अ० [सं० रुचि] अच्छा लगना। **मुहा०***-**रुच-रुच** = बहुत रुचि से।

रुचि-स्त्री० [सं०] [वि० रुचित, रुचिर, रुच्य; भाव० रुचिता] १. मन की वह अवस्था या वृत्ति जिसके कारण मनुष्य कुछ चीजों को अच्छा और काम में लाने योग्य मानता है और कुछ को इनके विपरीत। २. कला, साहित्य, प्रकृति आदि की कृति को पसंद करनेवाली या न करनेवाली मन की वृत्ति। (टेस्ट) ३. खाने पीने या उपभोग के संबंध में कुछ वस्तुओं के संबंध में होनेवाली इच्छा या चाह। जैसे-इस बीमारी के बाद से भोजन में रुचि नहीं र
गई। ४. प्रेम। चाह। ५. किरण।
शोभा। कांति। ७. स्वाद।
*वि० [सं० रुचिर] १. सुंदर।
अच्छा। बढ़िया।

रुचिकर-वि० [सं०] १. अच्छा लग
वाला। २. रुचि उत्पन्न करनेवाला।
भूख बढ़ानेवाला। (वैद्यक)।

रुचिकारक-वि० दे० 'रुचिकर'।

रुचि-चूरन-पुं० दे० 'रुचि-चूर्ण'।

रुचि-चूर्ण-पुं० [सं०] तान्त्रिक प्रयोग
बनाया हुआ एक प्रकार का चूर्ण
विभूति। (कहते हैं कि यह चूर्ण किसी
छिड़ककर उसे वश में किया जा सकता है

रुचिमान-वि० [सं० रुचि + मान (
प्रत्य०)] मनोहर। सुंदर। रुचिर।

रुचिर-वि० [सं०] [भाव० रुचिर
रुचिराई] १. सुंदर। २. मीठा।

रुचिरता-स्त्री० [सं०] रुचिर या
होने का भाव।

रुचिरा-स्त्री० [सं०] चार चरणों
एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण
३० मात्राएँ (१६वीं मात्रा पर यति
और अंत में गुरु होता है। यह ता
नामक छंद का ही एक दूसरा रूप है।

रुचिराई*-स्त्री० = रुचिरता।

रुज-पुं० [सं०] १. रोग। २. कष्ट।
क्षत। घाव। ४. भाँग। भंग। (

रुजा-पुं० [सं० रुज] १. बीमारी। २.
कुष्ठ नामक रोग। कोढ़।

रुजाली-स्त्री० [सं०] १. रोगों का
समूह। २. दुःखों या कष्टों का समूह।

रुजू-वि० [अ० रुजूअ = प्रवृत्त] प्रवृत्त।

रुझना*-पुं० [अ० रुद्ध] घाव आदि
भरना या पूजना।
अ० दे० 'उलझना'।

रुझान-पुं० [अ० रुजहान] १. किसी
ओर प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव। २.

प्रवृत्ति।
] बजता हुआ।
'ऋतु'।
] पद। ओहदा।
रोदन] रोने की क्रिया।
[हिं० रोदन] रोना। उदा०—
नृप दिन अति रुदति पुर
—सूर।
दे० 'रुद्राक्ष'।
] एक प्रकार का धान या
] १. घेरा, रोका या रूँधा
] १. एक प्रकार के गण
में ग्यारह हैं। २. ग्यारह
शिव का एक रूप जो बहुत
माना जाता है और जो
को भस्म करने तथा दक्ष
करने के समय धारण किया
का रौद्र रस। ५. संगीत
का ताल। ६. एक प्रकार

कार्तिकेय का दूसरा नाम।
[सं०] शिव। महादेव।
। भयानक। २. उग्र।
। जैसे—रुद्र रूप धारण
। महान।
[सं०] एक प्रसिद्ध वृक्ष के
जप, पूजा आदि करने की

[सं०] रुद्र या शिव की

[सं०] रक्त। खून। लहू।
दे० 'रक्तोत्पल'।
[अनु०] नूपुर आदि के
। झनकार।
[सं० अरुण] अरुणता।
। उदा०—नील स्वेत पर पीत

लाल मनि लरकनि भाल रुनाई।—सूर।

रुनित*-वि० [सं० रुणित] बजता हुआ।

रुपना-अ० हिं० 'रोपना' का अ०।

रुपमनी*-स्त्री० [हिं० रुपवती] सुंदर स्त्री। उदा०—एक सों एक चाहि रुपमनी।—जायसी।

रुपया-पुं० [सं० रूप्य] १. चाँदी का सबसे बड़ा (भारतीय) सिक्का जो सोलह आने का होता है। २. लेन-देन आदि के लिए नियत, देय या प्राप्य ऐसे सिक्कों का वह मान जिसके अन्तर्गत आने और पाइयाँ भी हो सकती हैं। (एमाउन्ट) जैसे—इस माल का रुपया अभी नहीं आया। ३. दौलत। धन। संपत्ति।

रुपहला-वि० [हिं० रूपा = चाँदी + हला (प्रत्य०)] [स्त्री० रुपहली] १. चाँदी के रंग का। २. चाँदी का-सा।

रुमंच*-पुं० दे० 'रोमांच'।

रुमावली*-स्त्री० दे० 'रोमावली'।

रुरना-अ० [सं० आरूढ़ ?] आच्छादित होना। छाना।

रुराई*-स्त्री० [हिं० रूरा] सुन्दरता।

रुरुआ-पुं० [हिं० ररना] एक प्रकार का बड़ा उल्लू। (पक्षी)

रुलना†-अ० [सं० ललन] इधर-उधर मारा फिरना। ठोकरें खाना या रौंदा जाना। उदा०—लाल की ललक रंग-रेलन की रुलि (रुलि) गई।—रत्ना।

रुलाई-स्त्री० [हिं० रोना] १. रोने की क्रिया या भाव। रोना। २. रोने की प्रवृत्ति।

रुलाना-स० [हिं० रोना का प्रे०] दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।

स० [हिं० रुलना का स०] १. इधर-उधर रुलने देना। २. खराब करना।

रुष्ट-वि० [सं०] [भाव० रुष्टता] जिसे रोष हुआ हो। कुपित। अप्रसन्न। नाराज।

रुसना*-अ० दे० 'रूसना'।

रुसवा-वि० [फा०] [भाव० रुसवाई]

लोक में जिसका दुर्नाम हो । बदनाम ।

*पुं० = रुसवाई (बदनामी) । उदा०-आप आपु चेते नहीं, कहौं तो रुसवा होय ।-कबीर ।

रुसवाई-स्त्री० [फा०] दुर्नाम । बदनामी ।

रुसित*-वि० [सं० रुषित] रुष्ट । नाराज ।

रुसूम-पुं० दे० 'रसूम' ।

रुस्तम-पुं० [अ०] १. फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान । २. बहुत बड़ा वीर ।

पद-छिपा रुस्तम = देखने में सीधा-सादा, पर वास्तव में बहुत वीर या गुणी ।

रुह-वि० [सं०] उत्पन्न । जात ।

रुहठि*-स्त्री० [हिं० रूठना] रूठने की क्रिया या भाव ।

रुहिर*-पुं० = रुधिर । (लहू)

रुहेलखंड-पुं० आधुनिक उत्तर प्रदेश का उत्तर पश्चिमी भाग ।

रुहेला-पुं० [?] १. रुहेलखंड का निवासी । २. पठानों की एक जाति ।

रुँधना-स० [सं० रुंधन] १. कँटीले पौधों आदि से कोई स्थान घेरना । २. चारों ओर से घेरना । ३. बंद करना । रोकना ।

रूआ*-पुं० दे० 'धूआ' ।

रूई-स्त्री० [सं० रोम] कपास के डोडे में का रेशेदार घूआ जिसे कात कर सूत बनाते या जो गद्दे, रजाई आदि में भरते हैं ।

रूईदार-वि० [हिं० रूई + फा० दार (प्रत्य०)] (कपड़ा) जिसमें रूई भरी हो ।

रूख†-पुं० [सं० रूक्ष] पेड़ । वृक्ष ।

*वि० दे० 'रूखा' ।

रूखना*-अ० दे० 'रूठना' ।

रूखरा*-वि० = रूखा ।

रूखा-वि० [सं० रूक्ष] [भाव० रूखापन] १. जो चिकना न हो । २. जिसमें घी, तेल आदि कोई चिकनी वस्तु न पड़ी या मिली हो । ३. स्वाद-रहीत । फीका । ४. सूखा । नीरस । ५. खुरदरा ६. संकोच न करनेवाला । शील-रहित ।

पद-रूखा सूखा-(क) जिसमें चिकना या सरस पदार्थ न हो । (ख) साधारण भोजन ।

रूखापन-पुं० दे० 'रुखाई' ।

रूचना*-अ० = रुचना ।

रूझना*-अ० = उलझना ।

रूठ(न)-स्त्री० [हिं० रूठना] क्रिया या भाव ।

रूठना-अ० [सं० रुष्ट] अप्रसन्न उदासीन, चुप या अलग हो जाना ।

रूढ़-वि० [सं०] [स्त्री० रूढ़ा] १. हुआ । आरूढ़ । २. प्रसिद्ध । ३. ४. चलता हुआ । प्रचलित । ५. तरकारी आदि) जिसमें बहुत कड़ा गया हो । (प्रायः अपने मौसिम के चीजों के पकने पर और कोमल जाने पर वह जिस रूप में होते 'रूढ़' कहते हैं ।)

पुं० संस्कृत व्याकरण में वह शब्द धातु से न निकलता हो और जिस निरुक्त-संगत व्युतपत्ति न हो, फिर किसी विशेष अर्थ में चल पड़ (आधुनिक हिंदी में जिस प्रकार के को 'देशज' कहते हैं प्रायः उसी संस्कृत शब्द 'रूढ़' कहलाते हैं)

रूढ़ा (लक्षणा)-स्त्री० [सं०] में लक्षणा का एक प्रकार या भेद मुख्यार्थ का बाध होने पर केवल कारण किसी दूसरे सम्बद्ध, अर्थ होता है । जैसे-'लड़का दूकान आशय रूढ़ि के कारण यह होगा कि दूकान पर किसी काम से गया है ।

रूढ़ि-स्त्री० [सं०] १. रूढ़ का भाव प्रसिद्धि । ३. बहुत दिनों से चली प्रथा । चाल । (कस्टम) ४. दे० (लक्षणा) ।

रूनी-पुं० [देश०] घोड़ों की एक

रूप-पुं० [सं०] १. शकल । सूरत । (

मुहा०-(किसी का) रूप भरना

। स्वाँग बनाना ।
ती ।
का) **रूप हरना** =
े किसी को लज्जित करना ।
। ४. वेष । भेस ।
दिखाना = स्वाभाविक के
त्रिम वृत्ति या भाव धारण
ना काम निकालने के लिए
दिखाये । **रूप भरन्त** =
।
आकार । ७. चाँदी । रूपा ।
४. ।
[सं०] १. मूर्त्ति । प्रतिकृति ।
जिसका अभिनय किया जाय ।
माने गये हैं–नाटक, प्रकरण,
, समवकार, डिम, ईहामृग,
और प्रहसन । ३. किसी विषय
ढंग या प्रकार जिसमें उस
से बहुत मिलते जुलते किसी
वर्णन के रूप में सब बातें कही
मेय के वर्णन से ही उपमान
परिचय कराने का ढंग, जो
कुछ बढ़ाया हुआ रूप है ।
मानस में मानस या तालाब
। ४. एक अर्थालंकार जिसमें
अथवा निषेधसूचक शब्दों का
बिना ही उपमेय का उपमान के
किया जाता है और उसी
का ज्ञान या परिचय कराया
(सस्टेन्ड मेटाफर) ५. प्रार्थना,
से संबंध रखनेवाले पत्रों आदि
रूप जिसमें भिन्न भिन्न बातें
प्रायः कोष्ठक आदि बने रहते
। (फ़ॉर्म) ६. केवल दिखलाने
हुआ रूप । बनावटी मुद्रा
।
[सं० रूप + करण] घोड़ों

रूपकातिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] साहित्य में अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेयों का उल्लेख न करके केवल उपमानों का ही इस प्रकार रूपक की भाँति उल्लेख होता है कि उनसे उपमेयों का बोध हो जाय । जैसे–नायिका और उसके भिन्न-भिन्न अंगों का उल्लेख न करके उन उपमानों का ही उल्लेख करना जिनसे नायिका के अंगों की उपमा दी जाती है, और यह कहना कि वह (नायिका) सुन्दर बगीचा है ।

रूपकार–पु० [सं०] मूर्ति बनानेवाला ।

रूपगर्विता–स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व या अभिमान हो ।

रूप-घनाक्षरी–स्त्री० [सं०] कवित्त नामक छंद का एक प्रकार या भेद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ वर्ण (१६वें वर्ण पर यति) होते हैं । इसका अंतिम वर्ण लघु होता है ।

रूपधारी–पुं० [सं०] रूप धारण करनेवाला । (विशेषतः दूसरे का)

रूप-भेद–पुं० [सं०] चित्र-कला में हर प्रकार की आकृति और उसकी विशेषताओं का विभेद, जो भारतीय चित्र कला के छः अंगों में से एक है ।

रूपमनो*–वि० [हिं० रूपमान] सुन्दरी ।

रूपमय–वि० [हिं० रूप + मय (प्रत्य०)] [स्त्री० रूपमयी] बहुत सुंदर ।

रूपमान*–वि० दे० 'रूपवान' ।

रूप-रेखा–स्त्री० [सं०] १. किसी बनाये जानेवाला रूप या किये जानेवाले काम का वह स्थूल अनुमान जो उसके आकार, प्रकार आदि का परिचायक होता है । (ड्राफ्ट) २. वह चित्र जो अभी केवल रेखाओं के रूप में हो । (स्केच) ३. किसी आकृति, चित्र आदि की वे बाहरी या सिरों के ओर की वह रेखा जिससे वह आकृति या चित्र घिरा रहता है । ४. किसी कार्य के सम्बन्ध की वह मुख्य बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक होती है । (आउट लाइन; अन्तिम

दोनों अर्थों के लिए)

रूपवंत-वि० दे० 'रूपवान्'।

रूपवति-स्त्री० [सं०] चम्पकमाला वृत्त का दूसरा नाम।

रूपवान्-वि० [सं० रूपवत्'] [स्त्री० रूपवती] सुन्दर। खूबसूरत।

रूप-साधन-पुं० [सं०] व्याकरण में, भिन्न-भिन्न कारकों, लिंगों, वचनों आदि में किसी शब्द के होनेवाले अलग-अलग रूप या उनके वे रूप बनाने की प्रक्रिया। (डिक्लेन्शन)।

रूपसी-स्त्री० [सं०] सुंदरी। स्त्री।

रूपांतर-पुं०[सं०] [वि०रूपांतरित]१.किसी वस्तु के साधारण अथवा किसी निश्चित रूप के सिवा उसका कोई और बदला हुआ रूप। जैसे—गेहूँ का रूपान्तर आटा है। २. अलग-अलग अवस्थाओं में अथवा भिन्न-भिन्न कारणों अथवा प्रक्रियाओं से किसी वस्तु को प्राप्त होनेवाले दूसरे रूप। (वेरिएशन्स)

रूपांतरण-पुं० [सं०] एक रूप से दूसरे रूप में आना या लाया जाना। रूप बदलना या बदला जाना। (ट्रान्सफॉरमेशन)

रूपांतरित-वि० [सं०.] एक रूप से दूसरे रूप में लाया हुआ। जिसका रूपांतरण हुआ हो। (ट्रांस्फॉर्म्ड)

रूपा-पुं० [सं० रूप्य] १. चाँदी। २. घटिया चाँदी। ३. सफेद घोड़ा। नुकरा।

रूपी-वि० [सं० रूपिन्] [स्त्री० रूपिणी] १. रूपवाला। रूपधारी। २. तुल्य। समान।

रूपोश-वि० [फा०] [भाव० रूपोशी] १. छिपा हुआ। २. छिपकर भागा हुआ।

रूप्यक-पुं० [सं०] रुपया।

रूबकार-पुं० [फा०] १. किसी को बुलाने के लिए अदालत का आज्ञापत्र। आकारक। २. आज्ञापत्र।

रूबरू-क्रि० वि० [फा०] सम्मुख। सामने।

रूम-पुं० [फा०] तुर्किस्तान देश। पुं० [अं०] बड़ी कोठरी। कमरा।

रूमना-स० हिं 'झूमना' का अनु०।

रूमाल-पुं० [फा०] १. हाथ मुँह पो के लिए कपड़े का चौकोर टुकड़ा। चौकोर शाल या दुपट्टा।

रूमी-वि० [फा०] रूम देश संबंधी। पुं० रूम देश का निवासी। स्त्री० १. रूम देश की भाषा। २. पु चाल की एक प्रकार की तलवार।

रूरना*-अ० [सं० रोरवण] चिल्ला

रूरा-वि० [सं० रूड़ = प्रशस्त] [रूरी] १. उत्तम। बढ़िया। श्रेष्ठ। सुंदर। ३. बहुत बड़ा।

रूल-पुं० [अं०] १. दे० 'रूलर' सीधी खींची हुई लकीर। ३. वह डंडा जिससे लकीरें खींचते हैं।

रूलना†-अ० दे० 'रुलना'।

रूलर-पुं० [अं०] १. सीधी खींचने की पट्टी या डंडा। २. शास

रूष*-पुं० दे० 'रूख'।

रूस-पुं० [अं० रशा] एक बहुत देश जो यूरोप और एशिया में हुआ है।

रूसना-अ० दे० 'रूठना'।

रूसी-पुं० [हिं० रूस] रूस देश का निवा स्त्री० रूस देश की भाषा। वि० रूस देश सम्बन्धी। रूस का। स्त्री० [देश०] सिर के चमड़े के वह पतली झिल्ली जो बहुत छोटे टु रूप में फट या कटकर निकलती है।

रूह-स्त्री० [अ०] [वि० रूहानी] आत्मा। जीव। २. सत्त। सार। ३. प्रकार का इत्र।

रूहना*-अ० [सं० रोहण] १. चढ़ २. उमड़ना। ३. चारों ओर से घिर स० दे० 'रूँधना'।

रुहेलखंड-पुं० दे० 'रुहेलखंड'।

रुहेला-पुं० दे० 'रुहेला'।

] १. गधे का बोलना ।
रेंगाना या बोलना ।
] [स० रेंगाना]
से रगड़ खाते हुए
या च्यूँटों का रेंगना ।
रेंगना] किसी को रेंगने में

] एक पौधा जिसके
ता है ।
रेंड] रेंड़ के बीज जो
आते हैं और जिनका तेल

छोटे या तुच्छ आदमियों
धन ।
स्वर का सूचक संक्षिप्त
रे, ग, म ।
रेखा] १. लकीर । रेखा ।
काढ़ना, खींचना या
) प्रतिज्ञा करना । (ख) जोर
कुछ कहना ।
। ३. नई निकलती

भींजना या भीनना =
आरम्भ होना ।
] १. उर्दू भाषा में एक
जो पिंगल के विचार से
होती है । २. उर्दू-भाषा
और नाम ।
सं० रेखना या लेखन] १.
२. नाम चित्र आदि अंकित
ना ।
] [वि० रेखांकित]
रेखा बनाने के लिए रेखाएँ
। खतकशी । (स्केचिंग)
' ।
] १. लंबा और पतला
(डाइन) २. वह जिसमें
चौड़ाई या मोटाई न

हो । (रेखा-गणित) ३. गणना । गिनती । ४. रूप । आकार । ५. हथेली, तलवे आदि की वे लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभा-शुभ फलों या लक्षणों का विचार होता है ।

रेखा-कर्म-पुं० दे० 'रेखांकन' ।

रेखा-गणित-पुं० [सं०] गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं, कोणों, चापों आदि का विवेचन या हिसाब होता है । यह ज्यामिती का एक विशेष अंग है । (ज्योमेट्री)

रेखा-चित्र-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का केवल रेखाओं से बनाया हुआ चित्र । खाका । (स्केच) २. घर, भवन आदि बनाने से पहले उसकी भूमि पर बननेवाली दीवारों, कोठरियों आदि का रेखाओं से बना हुआ चित्र । (प्लान)

रेखा-चित्रण-पुं० [सं०] रेखा-चित्र बनाने का काम ।

रेखित-वि० [सं० रेखा] जिसपर रेखाएँ या लकीरें पड़ी हों ।

रेग-स्त्री० [फा०] बालू । रेत ।

रेगमाल-पुं० [फा० रेग + हिं० मलना] एक प्रकार का कागज जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिससे रगड़कर धातुएँ या लकड़ियाँ साफ की जाती हैं ।

रेगिस्तान-पुं० [फा०] मरुस्थल ।

रेचक-वि० [सं०] (पदार्थ) जिसे खाने से दस्त आवे । दस्तावर ।

पुं० प्राणायाम में वह क्रिया, जिसमें खींचा हुआ साँस बाहर निकाला जाता है ।

रेचन-पुं० [सं०] १. पेट साफ करने के लिए दस्त लाना । २. जुलाब ।

रेचना*-स० [सं० रेचन] वायु, मल आदि पेट से बाहर निकालना ।

रेज*-वि० [सं० न्यंच, पुं० हिं० रंच या फा० रेजः ?] बहुत थोड़ा, अल्प ।

रेजगारी(गी)-स्त्री० [फा० रेजः] १. एकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी और छोटे सिक्के । २. छोटे टुकड़े या कतरन आदि ।

रेजा–पुं० [फा०] १. बहुत छोटा टुकड़ा। २. कपड़ों, रत्नों आदि में का कोई एक थान या खंड।

रेडियम–पुं० [अं०] एक उज्ज्वल मूल धातु जिसमें बहुत तेज संचित रहता है।

रेडियो–पुं० [अं०] एक प्रसिद्ध विद्युतयंत्र जिसके द्वारा बिना तार के संबंध के बहुत दूर से कही हुई बातें सुनाई देती हैं।

रेढ़ना–स० [?] १. लुढ़काना। २. घसीटते हुये चलने में प्रवृत्त करना।

रेढ़ी–स्त्री० [हिं० रेढ़ना] छकड़ा। लढ़िया।

रेणु–स्त्री० [सं०] १. धूल। २. बालू। ३. बहुत छोटा खंड। कण।

रेत–स्त्री० [सं० रेतजा] बालू।

रेतना–स० [हिं० रेती] रेती से रगड़कर काटना या ऊपरी अंश कम करना।

रेती–स्त्री० [हिं० रेत] एक प्रसिद्ध औजार जिसे किसी धातु पर रगड़ने से उसके महीन कण कटकर गिरते हैं।

स्त्री० [हिं० रेत] रेतीली या बलुई भूमि।

रेतीला–वि० [हिं० रेत] [स्त्री० रेतीली] जिसमें या जहाँ रेत हो। बालूवाला।

रेनु*–स्त्री० दे० 'रेणु'।

रेफ–पुं० [सं०] १. किसी अक्षर के ऊपर आनेवाला हलंत रकार। जैसे–'हर्ष' या 'धर्म' में 'ष' या 'म' के ऊपर का रकार। २. रकार (र अक्षर)।

रेरना†–स० = टेरना (पुकारना)।

रेरी–स्त्री० [हिं० रे = ओ + री (प्रत्य०)] किसी को 'रे', 'तू' आदि कहकर उससे बातें करना। (तुच्छता का बोधक और अवज्ञा का सूचक)

रेल–स्त्री० [अं०] भाप के इंजन के द्वारा चलनेवाली गाड़ी। रेल-गाड़ी।

रेल-गाड़ी–स्त्री० = रेल।

रेल-ठेल–स्त्री० दे० 'रेल-पेल'।

रेलना–स० [देश०] धक्के या दबाव से आगे बढ़ाना। ढकेलना।

रेल-पेल–स्त्री० [हिं० रेलना + पेलना] भारी भीड़। २. भर-मार। बहुत अधिक

रेलवे–स्त्री० [अं०] १. रेल-गाड़ी सड़क। २. रेल का महकमा या विभाग

रेला–पुं० [देश०] १. पानी का तेज तोड़। २. समूह द्वारा चढ़ाई। ३. जन-समूह का जोरों से आगे बढ़ना दे० 'रेल-पेल'।

रेलिंग–स्त्री० [अं०] बेड़े बल में वह इमारती बनावट जो एक सिरे पर को गिरने से रोकने के लिए होती है

रेवड़–पुं० [अकड़ी रेऊ = भेड़] बकरियों आदि का झुंड। लहँड़ा।

रेवड़ी–स्त्री० [देश०] छोटी टिकियों में तिल और चीनी की बनी एक

रेशम–पुं० [फा०] एक प्रकार के तैयार किये हुए महीन चमकीले तंतु जिनसे रेशमी कपड़े बनते हैं।

रेशमी–वि० [फा०] १. रेशम का हुआ। २. रेशम की तरह चिकना मुलायम। जैसे–रेशमी बाल।

रेशा–पुं० [फा० रेशः] महीन सूत में वह तत्त्व जो पशुओं, पेड़-पौधों भीतरी बनावट में दिखाई देता है। (फाइबर)

रेस†–पुं० [हिं० रोष] १. क्रोध। २. ईर्ष्या। डाह। जलन।

स्त्री० [अं०] १. किसी प्रकार की २. घुड़-दौड़।

रेह–स्त्री० [?] खाद मिली हुई वह जो ऊसरी मैदान में पाई जाती है।

*स्त्री० [सं० रेखा] रेखा। लकीर। लसै कसौटी में मनो तनक कनक की मतिराम।

रेहन–पुं० [फा० रिहन] किसी के कोई चीज इस शर्त पर रखना कि जब चुका दिया जायगा तब वह चीज लौटा जायगी। बंधक। गिरवी। (मार्टगेज)

२. वनस्पति आदि पर के उक्त प्रकार के तंतु।

रोआसा-वि० [हिं० रोना + आसा (प्रत्य०)] जिसे रुलाई आना चाहती हो। रोने को उद्यत।

रोईं-स्त्री० [हिं० रोआँ का अल्पा०] बहुत छोटा रोआँ, जैसा तरकारियों, फलों आदि पर होता है।

रोउँ*-पुं० दे० 'रोआँ'।

रोउ¹-वि० [हिं० रोना] १. बहुत अधिक रोनेवाला। २. बहुत गिड़गिड़ाकर या दीनता पूर्वक प्रार्थना करनेवाला।

रोएँदार-वि० [हिं० रोआँ + दार] १. जिसके शरीर पर बहुत अधिक रोएँ हों। २. जिसपर रोएँ की तरह सूत, रेशे आदि हों।

रोक-स्त्री० [हिं० रोकना] १. रोकने की क्रिया या भाव। रुकावट। अवरोध। २. रोकनेवाली कोई बात या चीज। ३. मनाही। निषेध। ४. वह निश्चय, आज्ञा आदि जो किसी प्रकार का नियन्त्रण रखने के लिए हो। प्रतिबंध। (चेक)

वि० रुपये-पैसे आदि के रूप में। नगद। (कैश)

रोक-टीप-स्त्री० [हिं० रोक (ड़) + टीप] वह चिट या पावती जो बेचनेवाला कोई चीज बेचने पर खरीदनेवाले को उस बिक्री के प्रमाण-स्वरूप देता है और जिसपर बेची हुई चीज का नाम और मूल्य लिखा रहता है। (कैश मेमो)

रोक-टोक-स्त्री० [हिं० रोकना + टोकना] १. वह जाँच या पूछ-ताछ जो कहीं आने-जाने या कुछ करने के समय बीच में हो। मनाही। निषेध।

रोकड़-स्त्री० [सं० रोक = नगद] १. नगद रुपया-पैसा आदि। (कैश) २. जमा। धन। पूँजी।

रोकड़-बही-स्त्री० [हिं०] वह बही जिसपर प्रति दिन की आय और व्यय लिखा जाता है। (कैश बुक)

रोकड़-बाकी–स्त्री० [हिं०] व्यय आदि निकल जानेपर बाकी बची हुई रकम। (क्लोजिंग बैलेन्स)

रोकड़िया–पुं० [हिं० रोकड़] वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ और आमदनी-खर्च का हिसाब रहता है। (कैशियर)

रोक-थाम–स्त्री० [हिं० रोकना + थामना] किसी अनुचित या अनिष्ट कार्य को रोकने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न।

रोकना–स० [हिं० रोक] १. किसी को आगे बढ़ने न देना। गति, प्रवाह आदि में बाधा डालना। २. कहीं जाने या कोई काम करने से मना करना। ३. चली आती हुई बात या प्रथा बन्द करना। ४. अपने ऊपर कोई भार लेकर बीच में बाधक होना। जैसे–गिरते हुए को रोकना या किसी का वार रोकना।

रोग–पुं० [सं०] [वि० रोगी, रुग्न] शरीर को अस्वस्थ रखनेवाली शारीरिक प्रक्रिया। व्याधि। मर्ज। बीमारी। जैसे–ज्वर पक्षाघात, संग्रहणी आदि। (डिजीज)

रोगन–पुं० [फा० रोग़न] [वि० रोगनी] १. तेल, घी, चरबी आदि मसृण पदार्थ। २. वह चिकना लेप जो कोई वस्तु चमकाने के लिए उसपर लगाया जाता है। (वारनिश)

रोगी–वि० [सं० रोगिन्] [स्त्री० रोगिणी] १. जिसे रोग हुआ हो। अस्वस्थ। बीमार। २. जो सदा या प्रायः बीमार रहता हो। ३. वह जो अपनी चिकित्सा कराने के लिए किसी के पास जाय अथवा किसी से अपनी चिकित्सा करावे। (पेशेन्ट)

रोचक–वि० [सं०] [भाव० रोचकता] १. अच्छा लगनेवाला। २. मनोरंजक।

रोचन–वि० [सं०] १. रोचक। २. शोभा बढ़ानेवाला। ३. लाल।
पुं० गोरोचन।

रोज–पुं० [फा०] दिन। दिवस।
अव्य० प्रति दिन। नित्य।

*पुं० [सं० रोदन] रोना। रुदन।

रोजगार–पुं० [फा०] १. व्यापार। व्यवसाय। कार-बार। तिजारत।

रोजगारी–पुं० [फा०] व्यापारी।

रोजनामचा–पुं० दे० 'दैनिकी'।

रोजमर्रा–अव्य० [फा०] नित्य।
पुं० नित्य के व्यवहार में आनेवाली चाल की भाषा का विशिष्ट प्रयोग।

रोजा–पुं० [फा०] १. मुसलिम शास्त्र की विधि से रखा जानेवाला उप
पुं० दे 'रौजा'।

रोजी–स्त्री० [फा०] दैनिक निर्
सामग्री और साधन। जीविका।

रोजीना–पुं० [फा०] दैनिक
मजदूरी।

रोझ–स्त्री० [देश०] गवय या
नामक पशु।

रोट–पुं० [हिं० रोटी] १. मोटी
रोटी। लिट्ट। २. मीठी रोटी या पू
देवी-देवताओं को चढ़ाया जाता है। उ
ऐपन घुघुरी रोट अर्पि कोउ दीप दिख
—रत्ना०

रोटा*–वि० [हिं० रोट] जो पिस
हो गया हो।
पुं० चूर्ण। बुकनी।

रोटी–स्त्री० [तामिल ?] १.
आटे की आँच पर सेंकी या पकाई हुई
या टिकिया। चपाती। २.
रसोई। ३. जीविका।
यौ०–**रोटी-कपड़ा** = खाने-पहनने
सामग्री या व्यय।
मुहा०–**किसी बात की रोटी खा**
किसी बात से जीविका चलाना। कि
के यहाँ रोटियाँ तोड़ना = कि
घर रहकर उसके दिये हुए अन्न से नि
करना। **रोटी-दाल चलाना** = साधार
जीवन-निर्वाह होना।

रोठा*–पुं० दे० 'रोड़ा'।

तोड़] ईंट या पत्थर का
ड़ा ।
अटकाना=विघ्न डालना ।
] रोना ।
] १. स्वर्ग । २. पृथ्वी ।
रोध] धनुष की डोरी ।

] [वि० रोधित]
। अवरोध । (चेक)
रुदन] रोना । विलाप ।
] रोकने की क्रिया या

=रोकना ।
'रमण' ।
रुदन] १. दुःखी होकर
। रुदन करना ।
रोकर = बहुत कठिनता से ।
गाना = गिड़गिड़ाना ।
खी या खिन्न होना । ३. अपने
करना । ४. किसी के व्यव-
जना । चिढ़ना ।
। खेद । २. कष्ट । विपत्ति ।
की बात का रोना होना =
अभाव या कष्ट होना ।
कष्ट या विपत्ति का करुणा-

रोनी] जरा-सी बात पर भी

[सं०] रोपनेवाला ।
[सं०] [वि० रोपित, रोप्य]
पौधा) कहीं से लाकर लगाना
। जमाना । बैठाना ।
पैर' ।
[सं० रोपण] १. (पौधे आदि)
या बैठाना । २. स्थित
। ३. बीज डालना । बोना ।
बैठाना । (हाथ या पाँव)

रोब-पुं० [अ० रुअब] [वि० रोबीला] शक्तिशाली होने की ऐसी धाक कि विरोधी कुछ कह या कर न सके । आतंक । दबदबा । मुहा०-**रोब जमाना** = आतंक उत्पन्न करना । **रोब में आना** = किसी के आतंक के कारण दब या रुक जाना ।

रोम-पुं० [सं० रोमन] १. रोआँ । लोम । मुहा०-**रोम-रोम में** = सारे शरीर में । **रोम-रोम से** = शुद्ध और पूर्ण हृदय से । २. छेद । सूराख । ३. ऊन !
पुं० इटली की राजधानी या उसके आस-पास का प्रदेश ।

रोमक-पुं० [सं०] १. रोम का निवासी । रोमन । २. रोम नगर या देश ।

रोम-कूप-पुं० [सं०] शरीर के वे छेद जिनमें से रोएँ निकलते हैं ।

रोमन-वि० [अं०] रोम नगर या राष्ट्र का । पुं० रोम या रूम देश का निवासी । स्त्री० वह लिपि जिसमें अँगरेजी, रूसी आदि युरोपीय भाषाएँ लिखी जाती हैं ।

रोम-हर्षण-पुं० [सं०] अचानक बहुत अधिक आनन्द अथवा भय से रोएँ खड़े होना । रोमांच । सिहरन ।
वि० भयंकर । भीषण ।

रोमांच-पुं० [सं०] [वि० रोमांचित] १. आनंद या भय से रोएँ खड़े होना । २. साहित्य में हर्ष या भय से होनेवाला उक्त प्रकार का शारीरिक व्यापार जो सात्विक अनुभावों के अन्तर्गत माना गया है ।

रोमाली*-स्त्री० दे० 'रोमावलि' ।

रोमावलि-स्त्री० [सं०] पेट के बीचोबीच नाभि से ऊपर की रोओं की पंक्ति । रोमराजी ।

रोमिल-वि० [सं० रोम] रोएँदार ।

रोयाँ-पुं० दे० 'रोआँ' ।

रोर-स्त्री० [सं० रवण] १. कोलाहल । शोर-गुल । २. उपद्रव । उत्पात ।
वि० १. प्रचंड । २. उपद्रवी ।

*पुं० = रोड़ा।

पुं० [?] दरिद्रता। निर्धनता।

रोरित*—वि० [हिं० रोर] जिसमें रोर हो। रोर से युक्त।

रोरी*—स्त्री० [हिं० रोर] चहल-पहल।

वि० स्त्री० [हिं० रूरा] सुंदर।

†स्त्री० दे० 'रोली'।

रोल*—स्त्री० [सं० रवण] १. दे० 'शोर'। २. ध्वनि। शब्द।

पुं० पानी का बहाव। प्रवाह। रेला।

रोला—पुं० [?] १. कोलाहल। शोर (हल्ला)। २. घमासान युद्ध। ३. चार चरणों का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएँ (११वीं मात्रा पर यति) होती है। अंतिम दो मात्राएँ गुरु हों तो अच्छा है।

रोली—स्त्री० [सं० रोचनी] तिलक लगाने का प्रसिद्ध लाल चूर्ण।

रोवंदा*—पुं० [हिं० रोना] रोने की क्रिया, भाव या प्रवृत्ति। रुलाई।

वि० रोने की प्रवृत्ति या स्वभाव रखनेवाला।

रोवना—अ०, वि० दे० 'रोना'।

रोशन—वि० [फा०] १. जलता हुआ। प्रदीप्त। २. चमकदार। ३. प्रसिद्ध। ४. प्रकट। जाहिर।

रोशन चौकी—स्त्री० [फा०] शहनाई।

रोशनदान—पुं० [फा०] दीवार के ऊपरी भाग में प्रकाश आने का छेद। झरोखा।

रोशनाई—स्त्री० दे० 'स्याही'।

रोशनी—स्त्री० [फा०] १. उजाला। प्रकाश। २. दीपक। दीया।

रोष—पुं० [सं०] [वि० रोषी, रुष्ट] १. क्रोध। गुस्सा। २. चिढ़। ३. कुढ़न। ४. वैर-विरोध। ५. लड़ने का आवेश।

रोस*—पुं० = रोष।

रोहज—पुं० [?] नेत्र।

रोहण—पुं० [सं०] ऊपर चढ़ना। आरोह।

रोहना*—अ० [सं० रोहण] १. चढ़ाना। २. ऊपर की ओर जाना या चढ़ना। स० १. चढ़ाना। २. सवार कराना। पहनना।

रोहिणी—स्त्री० [सं०] १. गाय। गौ। बिजली। ३. वसुदेव की स्त्री और की माता। ४. सत्ताइस नक्षत्रों में से

रोहित—वि० [सं०] लाल रंग का। पुं० १. लाल रंग। २. एक प्र हिरन। ३. केसर। ४. रक्त। लहू।

रोही—वि० [सं० रोहिन्] [स्त्री० रो चढ़नेवाला।

पुं० [देश०] एक प्रकार का हथिया

रोहू—स्त्री० [सं० रोहिष] एक प्रक बड़ी मछली।

रौंथ—स्त्री० [?] चौपायों की जुगा

रौंद—स्त्री० [हिं० रौंदना] रौंदने की या भाव।

स्त्री [अं० राउंड] पहरे, देख-रेख या पड़ताल के लिए लगाया जानेवाला च (राउंड)

रौंदना—स० [सं० मर्दन] पैरों से कुच दबाकर नष्ट-भ्रष्ट करना। मर्दित करना

रौ—स० [फा०] १. गति। चाल। वेग। तेजी।

*पुं० दे० 'रव'।

रौगन—पुं० दे० 'रोगन'।

रौजा—पुं० [अ०] वह कब्र जिसपर बनी हो। समाधि।

रौणी*—स्त्री० दे० 'रमणी'।

रौताई*—स्त्री० [हिं० रावत] रावत्व (सरदार आदि) का भाव या पद। (दे० 'रा

रौद्र—वि० [सं०] [भाव० रौद्रता] रुद्र-संबंधी। २. प्रचंड। उग्र। क्रोधपूर्ण।

पुं० १. साहित्य में नौ रसों में से एक किसी प्रकार का अत्याचार अन्याय, अपमान अशिष्टता आदि का व्यवहार देखक उसे रोकने या उसका प्रतिकार करने

होनेवाले क्रोध से उत्पन्न
ली। ताप।
रुख'।
] १. चमक-दमक। दीप्ति।
. शोभा। ४. सुहावनापन।
] चाँदी। रूपा।

[हिं० रौर] शोर-गुल। हल्ला।
] भयंकर।
नरक का नाम।
[हिं० राव] आप। संबोधन।

रौला-पुं० [सं० रवण] हल्ला। शोर।

रौस-स्त्री० [फा० रविश] १. दे० 'रविश'। २. रंग-ढंग। तौर-तरीका। ३. छज्जा या बरामदा। ४. निशान। चिह्न।

रौसली-स्त्री० [सं० रजस्वला, प्रा० रजस्सला] वह चिकनी उपजाऊ मिट्टी जो बरसाती (रजस्वला) नदी अपने किनारों पर छोड़ जाती है। डाकर।

रौहार(ल)-वि० [फा० रहवार = चलनेवाला] चलनेवाला। उदा०—जदपि तेज रौहाल बल, पलकौं लगी न बार।—बिहारी।

ल

का अट्ठाईसवाँ अल्प-
उच्चारण स्थान दंत है।
] कमर। कटि।
] लंका द्वीप।
[सं० लंका + पति] लंका
।
[अं० लाँगकलाथ] एक प्रकार
तथा चिकना सूती कपड़ा।
] भारत के दक्षिण में
टापू। कहते हैं कि यहीं पर
था।
'लाँग'।
] लँगड़ापन।
१. दे० 'लँगड़ा'। २. दे०

[फा० लंग] जिसका एक
टूट गया हो।
का बनारसी बढ़िया आम।
[हिं० लँगड़ा] लँगड़े होकर

लंघट या लंघनट] १.
पाजी। २. धृष्ट। ढीठ।
] १. लोहे का वह
जिसे नदी या समुद्र में

गिरा देने पर नावें या जहाज एक ही स्थान पर ठहरे रहते हैं। २. लकड़ी का वह कुंदा जो नट-खट गाय या बैल के गले में बाँधा जाता है। ३. लटकती हुई कोई भारी चीज। जैसे—घड़ी का लंगर। ४. पैर में पहनने का चाँदी का तोड़ा। ५. कपड़े में वह टाँके जो पक्की सिलाई के पहले डाले जाते हैं। ६. वह स्थान जहाँ से गरीबों को भोजन मिलता है। वि० १. भारी। २. बहुत बड़ा। (एनकर) वि० दे० 'लंगर'।

लँगराई*-स्त्री० [हिं० लँगर + आई (प्रत्य०)] पाजीपन। शरारत। स्त्री० दे० 'लँगरई'।

लँगरी-स्त्री० दे० 'लँगरई'।

लँगी†-वि० = लँगड़ा।

लंगूर-पुं० [सं० लांगूली] १. एक प्रकार का बड़ा बंदर जिसका मुँह काला और पूँछ बहुत लम्बी रहती है। * २. बंदर की दुम।

लँगोट (।)-पुं० [सं० लिंग + पट्ट] [स्त्री० लँगोटी] कमर पर बाँधने का वह पहनावा जिससे केवल उपस्थ और चूतड़ ढके रहते हैं। रूमाली।

लँगोटी-स्त्री० [हिं० लँगोट] छोटा लँगोट। **मुहा०-लँगोटी तक उतार लेना** =

पास में कुछ भी धन न रहने देना। कंगाल कर देना। **लँगोटी में फाग खेलना**= गरीब होने पर भी बहुत व्यय करना।

यौ०-लँगोटिया यार = बच्चपन का साथी।

लंघन-पुं० [सं०] लाँघने की क्रिया या भाव। डाँकना। अतिक्रमण। २. उपवास। अनहार। फाका।

लंघनट-पुं० [सं०] कलाबाजी के खेल दिखानेवाला। नट।

लँघना*-दे० 'लाँघना'।

लंठ-वि० [हिं० लट्ठ] मूर्ख।

लँडूरा-वि० [देश० या सं० लांगूल] कटी हुई पूँछ वाला। (पशु या पक्षी)

लंप-पुं० [अं० लैम्प] पाश्चात्य ढंग का बना हुआ, मिट्टी के तेल से जलनेवाला दीपक या चिराग जिसके ऊपर, प्रकाश दूर तक फैलाने के लिए चिमनी भी लगी होती है।

लंपट-वि० [सं०] [भाव० लंपटता] व्यभिचारी। विषयी। बद-चलन।

लंब-पुं० [सं०] किसी रेखा पर सीधी और खड़ी गिरनेवाली रेखा।

वि० १. लंबा। २. जो क्षितिज की ओर एक ही सीध में बहुत दूर तक चला गया हो। (हॉरिजन्ट)

*स्त्री० दे० 'विलंब'।

लंबन-पुं० [सं०] [वि० लंबित] १. लंबा करना। २. कोई काम या बात कुछ समय के लिए रुकी या टली रहना। (एबेयेन्स)

लंबरदार-पुं० दे० 'नंबरदार'।

लंबा-वि० [सं० लंब] [स्त्री० लंबी, भाव० लंबाई] १. जो एक ही दिशा में दूर तक सीधा चला गया हो। 'चौड़ा' का उलटा।

मुहा०-लंबा करना=धता करना। हटाना।

२. अधिक विस्तार या ऊँचाईवाला। बड़ा।

लंबाई-स्त्री० [हिं० लंबा] 'लंबा' होने का भाव या अवस्था। लंबापन।

लंबान-स्त्री० = लंबाई।

लंबायमान-वि० [हिं० लंबा] १. बहु लंबा। २. लेटा हुआ।

लंबित-वि० [सं०] १. लंबा किया हुआ। २. विचार, निश्चय आदि के लिए कु समय तक रोका या टाला हुआ। (पेंडि

लंबोतरा-वि० [हिं० लंबा] लंबे आका वाला। जो कुछ अपेक्षाकृत लंबा हो।

लँहडा-पुं० दे० 'लहँडा'।

लउटी*-स्त्री० दे० 'लकुटी'।

लकड़बग्घा-पुं० दे० 'लग्घड़' २.।

लकड़हारा-पुं० [हिं० लकड़ी + जंगल से लकड़ी काटकर बेचनेवाला।

लकड़ी-स्त्री० [सं० लगुड] १. पे कटा हुआ कोई ठोस या स्थूल अंग। २. ईंधन। ३. छड़ी या लाठी।

मुहा०-लकड़ी चलना = लाठि मार-पीट होना।

लकवा-पुं० [अ०] एक वात-रोग कोई अंग सुन्न और बेकार हो जाता है

लकीर-स्त्री० [सं० रेखा] १. व आकृति जो एक सीध में दूर तक च हो। रेखा। खत। २. प्राचीन चली आई हुई परम्परा या मर्यादा।

मुहा०-लकीर का फकीर होना, **लकीर पीटना** = पुरानी प्रथा पर च

३. धारी। ४. पंक्ति। सतर।

लकुच-पुं० दे० 'लुकाठ'।

लकुट-पुं० दे० 'लुकाठ'।

स्त्री० दे० 'लकुटी'।

लकुटी-स्त्री० [सं० लगुड] लाठी।

लक्कड़†-पुं० [हिं० लकड़ी] लकड़ी का बड़ा और अनगढ़ टुकड़ा। कुंदा।

लक्खी-पुं० [हिं० लाख = वृक्ष का नि घोड़े की एक जाति।

पुं० [हिं० लाख (संख्या)] लाख

वि० लाखों से संबंध रखनेवाला। जैसे लक्खी बाग, लक्खी मेला।

लक्ष-वि० [सं०] एक लाख। सौ हजार

उद्देश्य से किसी वस्तु
रखना । २. दे० 'लक्ष्य' ।
की संख्या ।
[सं०] १. वह विशेषता जिसके
कोई चीज पहचानी जाय ।
। २. नाम । ३. परिभाषा ।
अंगों पर शुभ और अशुभ
कुछ विशेष प्राकृतिक चिह्न ।
। रंग-ढंग ।
-स्त्री० [सं०] लक्षणा का
भेद जिसमें किसी शब्द का
अपने स्वरूप को गौण करके
लक्ष्य अर्थ का उपलक्षण मात्र
। जैसे—'वह गंगावासी है' का
गंगा-तट का निवासी है' ।
[सं०] शब्द की वह शक्ति
अर्थ का बोध होने पर केवल रूढ़ि
अथवा किसी विशेष प्रयोजन के
अर्थ से सम्बन्ध किसी दूसरे अर्थ
है । यह तीन प्रकार की कही
लक्षणा, जहत्लक्षणा और
इसके अतिरिक्त अलग-
से इसके और कई भेद किये
-(क) उपादान और लक्षण-
(ख) गौणी और शुद्धा; (ग)
और रूढ़ा और (घ) साध्य-
सारोपा ।
दे० 'लखना' ।
[सं०] १. बतलाया हुआ ।
देखा हुआ । ३. लक्षणा शक्ति
में आनेवाला । (अर्थ)
-स्त्री० दे० 'लक्षण-लक्षणा' ।
[सं०] साहित्य में वह नायिका
प्रेम, नायक-मिलन, सम्भोग
देखकर सखियों आदि को
का पता चल गया हो ।
[सं०] वह अर्थ जो शब्द
से निकलता है । (साधारण अर्थ से भिन्न) लक्ष्यार्थ ।

लक्षी*–स्त्री० = लक्ष्मी ।

लक्ष्म–पुं० [सं०] लक्षण । चिह्न । निशान ।

लक्ष्मण–पुं० [सं०] सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के दूसरे पुत्र और रामचन्द्र के छोटे भाई जो उनके साथ वन गये थे ।

लक्ष्मी–स्त्री० [सं०] १. धन की अधिष्ठात्री देवी जो विष्णु की पत्नी कही गई है । कमला । रमा । २. धन संपत्ति । दौलत । ३. शोभा । छवि । ४. घर की मालकिन । गृह-स्वामिनी ।

लक्ष्मी-पुत्र–पुं० [सं०] धनवान । अमीर ।

लक्ष्य–पुं० [सं०] १. वह जिसपर किसी उद्देश्य से दृष्टि रखी जाय । उद्दिष्ट पदार्थ या बात । जैसे—गेहूँ के उत्पादन का लक्ष्य इस वर्ष दस लाख मन रक्खा गया है । २. वह जिसे ध्यान में रखकर कोई वार या आघात किया जाय । निशाना । (टार्गेट) ३. वह जिसपर किसी प्रकार का आक्षेप हो । ४. दे० 'लक्षितार्थ' । 'लक्ष्यार्थ' ।

लक्ष्यक–वि० [सं०] १. लक्ष्य करने या करानेवाला । २ संकेत रूप से सूचित करनेवाला ।

लक्ष्य-भेद–पुं० [सं०] चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना लगाना ।

लक्ष्यार्थ–पुं० [सं०] किसी शब्द या वाक्य को उसके साधारण अर्थ से भिन्न, वह अर्थ जो उसकी लक्षणा शक्ति से निकलता है । लक्षितार्थ । जैसे—यदि हमारा कोई अपकार करे और हम उससे कहें—'वाह ! आपने हमारा खूब उपकार किया ।' तो यहाँ 'उपकार' का लक्ष्यार्थ 'अपकार' होगा ।

लक्ष्योपमा–स्त्री० [सं०] साहित्य में उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें सम, समान आदि शब्दों या इनके वाचकों का प्रयोग न करके यह कहा जाता है कि यह वस्तु अमुक की कोटि या वर्ग की है । उसे लजित

करती है, उससे होड़ करती है अथवा इसने उससे अमुक गुण या बात चुरा या छीन ली है।

लख-घर*-पुं० दे० 'लाक्षागृह'।

लखन*-पुं० = लक्ष्मण।

लखना-स० [सं० लक्ष] [भाव० लखन] १. लक्षण देखकर अनुमान करना या समझना। ताड़ना। २. देखना। उदा०-हौं कबीर सबकौं लखौं, मोकौं लखै न कोय।--कबीर।

लखपति-पुं० दे० 'लखपती'।

लखपती-पुं० [सं० लक्ष + पति] जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।

लख-पेड़ा-वि० [हिं० लाख + पेड़] (बाग आदि) जिसमें बहुत अधिक वृक्ष हों।

लखरावँ-पुं० [हिं० लाख (संख्या) + रावँ (प्रत्य०)] १. वह बाग जिसमें लाख पेड़ हों। २. बहुत बड़ा बाग।

लखाउ*-पुं० दे० 'लाक्षागृह'।

लखा-घर*-पुं० दे० 'लाक्षागृह'।

लखाना-स० हिं० 'लखना' का प्रे०। †अ० दे० 'लखना'।

लखाव*-पुं० दे० 'लक्षण'।

लखित*-वि० दे० 'लक्षित'।

लखिया*-पुं० [हिं० लखना] लखनेवाला।

लखेरना-स० = 'लथेड़ना'।

लखेरा-पुं० [हिं० लाख = वृक्ष का निर्यास] लाख की चूड़ियाँ आदि बनानेवाला।

लखौटा-पुं० [हिं० लाख + औटा (प्रत्य०)] १. चंदन, केसर आदि से बनाया जानेवाला उबटन। २. वह डिब्बा जिसमें स्त्रियाँ सिंदूर आदि रखती हैं।

लखौरी-स्त्री० [सं० लाक्षा] १. एक प्रकार की भौंरी (कीड़ा) का घर। २. पुरानी चाल की पतली छोटी ईंट।

स्त्री० [हिं० लाख (संख्या)] देवी-देवता को उनके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना।

लग*-अव्य० [हिं० लगना, पु० हिं० लागि] १. तक। पर्यंत। २. निकट। पास। स्त्री० लगन। लौ। अव्य० १. वास्ते। लिए। २. साथ।

लगन-स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी व्यक्ति या काम की ओर पूरी तरह से ध्या लगाना। लौ। २. स्नेह। प्रेम। पुं० [सं० लग्न] १. विवाह का मुहूर्त।

मुहा०-लगन धराना = विवाह मुहूर्त स्थिर कराना। उदा०-अंध अंधा पतियात, जस त्रिसवा के सा धराय।--कबीर।

२. हिन्दुओं में वे विशिष्ट दिन जिनमें वि होते हैं। सहालग। ३. दे० 'लग्न'। पुं० [फा०] एक प्रकार की थाली।

लगनवट-स्त्री० [हिं० लगन] लगन।

लगना-अ० [सं० लग्न] १. किसी के तल से दूसरे पदार्थ का तल मिलन सटना। जुड़ना। २. किसी चीज पर सीया, टाँका, चिपकाया, जड़ा या म जाना। ३. सम्मिलित होना। मिल ४. तल, सीमा या आधार पर पहुँच टिकना या रुकना। ५. क्रम से ल या सजाया जाना। ६. व्यय होना। होना। ७. जान पड़ना। मालूम हो ८. संबंध या रिश्ते में कुछ होना। आघात या चोट पहुँचाना। १०. चुनचुनाहट आदि मालूम होना। ११. कार्य आदि में रत होना।

मुहा०-लगे हाथ या लगे हाथों = कोई काम करते रहने की दशा में या पूरा करके निश्चिन्त होने से पहले। जैसे- लगे हाथ यह काम भी कर डालो। १२. फलों आदि का सड़ना या गलना प्रारं होना। १३. मन पर किसी बात का प्रभा या असर होना।

मुहा०-लगती बात कहना = मर्म-भेदी बात कहना।

होना। १५. गणित की क्रिया
१६. दूध देनेवाले पशुओं का
१७. छेड़-छाड़ करना। १८.
रखा जाना। १९. घात या
हा।
तरह का जंगली हिरन।
वि० [हिं० लग = पास +
] प्रायः। बहुत कुछ। (संख्या
के संबंध में)
[हिं० लगाना + सं० मात्रा]
लगनेवाली स्वरों की मात्राएँ या
चिह्न।
दे० 'लघड़'।
[अ० लग्व] १. झूठ। मिथ्या।
व्यर्थ। बेकार।
हिं० 'लगाना' का प्रे०।
[हिं० लगना = स्त्री के साथ
] उप-पति। यार।
वि० [हिं० लगना + तार =
क्रम टूटे। बराबर। निरंतर।
लगे हुए क्रम के अनुसार
के बाद एक आता या चलता
बराबर होता रहनेवाला (फन्सी-

[हिं० लगावट] प्रेम। प्रीति।
तक।
[हिं० लगाना] १. लगने या
या भाव। २. खेती बारी की
वाला कर। पोत। (रेन्ट)
-पुं० दे० 'जिन्सी लगान'।
-पुं० दे० 'बकाया लगान'।
[हिं० 'लगना' का स०] १.
से दूसरी वस्तु का तल
। २. किसी के साथ
। सम्मिलित करना। ३.
करना। जमाना। ४.
रखना। चुनना। ५.
। ६. आघात करना।

चोट पहुँचाना। ७. किसी में कोई नई प्रवृत्ति, व्यसन, चसका आदि उत्पन्न करना। ८. काम में लाना। ९. दोष या अभियोग का अरोप करना। १०. ठीक स्थान पर बैठना। ११. गणित या हिसाब करना। १२. चुगली खाना। शिकायत करना। १३. कार्य में संलग्न करना। १४. अधिकारियों का नियम, बन्धेज, कर आदि नियत करना। (इम्पोज) १५. गौ, भैंस आदि दूहना। १६. स्पर्श करना। छुआना। १७. जूए में दाँव पर धन रखना। १८. किसी बात या काम में अपने आपको औरों से श्रेष्ठ समझना।

लगाम–स्त्री० [फा०] घोड़े के मुँह में लगाया जानेवाला वह ढाँचा जिसके दोनों ओर (घोड़े को चलाने के लिए) रस्से या चमड़े के तस्मे बँधे रहते हैं। रास। बाग। **मुहा०–जबान या मुँह में लगाम न होना** = बिना सोचे-समझे बोलने की आदत होना।

लगामी–स्त्री० [हिं० लगाम] वह जाली जो गौ, बैल, घोड़े आदि के मुँह पर इसलिए बाँधी जाती है कि वे कुछ चर या खा न सकें।

लगाय*–स्त्री० [हिं० लगन या लगावट] प्रेम। प्रीति। उदा०–सूर जहाँ लौं श्याम गात हैं, तिन सौं क्यों कीजिए लगाय।–सूर।

लगायत–क्रि० वि० [हिं० लगाना] पर्यंत। तक।

लगार*–स्त्री० [हिं० लगना] १. नियमपूर्वक नित्य या बराबर काम करना। बंधी। बंधेज। २. लगाव। संबंध। ३. सिलसिला। क्रम। ४. लगन। लौ। ५. प्रेम। वि० मेल-मिलाप या सम्बन्ध रखनेवाला।

लगा-लगी–स्त्री० दे० 'लगावट'।

लगाव–पुं० [हिं० लगना] १. लगे होने का भाव। २. संबंध। वास्ता।

लगावट–स्त्री० [हिं० लगाव] १. संबंध। लगाव। २. प्रेम या आपसदारी का संबंध।

लगि*–अव्य० [हिं० लग या लौं] १. तक। पर्यन्त। २. समीप। निकट। ३. लिए। वास्ते। पास। उदा०–कौड़ी लगि मग की रज छानत।–सूर।

स्त्री० = लग्गी।

लगी*–स्त्री० [हिं० लग्घा] छोटा लग्घा। लग्घी।

लगु*–अव्य० दे० 'लग'।

लगुड़–पुं० [सं०] डंडा। लाठी।

लगूल*–स्त्री० [सं० लागूल] पूछ। दुम।

लगौहाँ*–वि० [हिं० लगना + औहाँ (प्रत्य०)] जो किसी से लगन लगाने के लिए उत्सुक या उद्यत हो।

लगत–स्त्री० [हिं० लगना] १. वह धन-राशि जो व्यापार, सम्पत्ति आदि में पूँजी के रूप में लगी हो। (इन्वेस्टमेन्ट) २. दे० 'लागत'।

लग्गा–पुं० [हिं० लगना] [स्त्री० अल्पा० लग्गी] १. कार्य्य का आरंभ या सूत्र-पात। काम में हाथ लगना। २. किसी दाँव पर जुआरी के सिवा दूसरे लोगों का लगनेवाला धन या दाँव।

लग्घड़*–पुं० [देश०] १. बाज। २. चीते की तरह का एक छोटा पशु। लकड़-बग्घा।

लग्घा–पुं० [सं० लगुड][स्त्री० अल्पा० लग्घी] १. लंबा बाँस, विशेषतः वृक्षों से फल आदि तोड़ने का बाँस। २. दे० 'लग्गा' २.।

लग्घी–स्त्री० [हिं० लग्घा] १. वह बाँस जिसे नदी के तल तक पहुँचाकर उसके जोर से नाव चलाते हैं। (डाँडे से भिन्न) २. दे० 'लग्घा'।

लग्न–पुं० [सं०] १. ज्योतिष में उतना समय, जितने में कोई राशि किसी विशिष्ट स्थान में वर्त्तमान रहती है। २. शुभ कार्य्य का मुहूर्त्त। विवाह। शादी।

वि० [स्त्री० लग्ना] लगा या सटा हुआ।

लग्नक–पुं० [सं०] जमानत करनेवाला। प्रतिभू। (बॉन्ड्समैन)

लघिमा–स्त्री० [सं० लघिमन्] १. 'लघु' का भाव। लघुता। २. एक कल्पित सिद्धि जिसके प्राप्त होने से मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है।

लघु–वि० [सं०] [भाव० लघुता] १. कनिष्ट। छोटा। २. हलका। ३. निःसार। ४. थोड़ा। कम।

पुं० १. एक मात्रा का व्यजन या ह्रस्व स्वर। जैसे–अ, इ, उ। २. छन्द शास्त्र में वह अक्षर या वर्ण जिसमें एक ही मात्रा हो। 'गुरु' का उलटा। इसका चिह्न '।' है।

लघुचेता–पुं० [सं० लघुचेतस्] तुच्छ या बुरे विचारोंवाला। नीच।

लघुता–स्त्री० [सं०] 'लघु' या छोटे होने का भाव। लघुत्व। छोटाई।

लघु-शंका–स्त्री० [सं०] पेशाब करने की क्रिया या उसका वेग।

लच–स्त्री० दे० 'लचक'।

लचक–स्त्री० [हिं० लचकना] १. लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। २. लचकने का गुण।

लचकना–अ० [हिं० लच (अनु०)] [स० लचकाना] १. मार पड़ने पर बीच से दबना या झुकना। लचना। २. कोमलता आदि के कारण या हाव-भाव के समय स्त्रियों की कमर या दूसरे अंग झुकना।

लचकनि*–स्त्री० दे० 'लचक'।

लचकाना–स० हिं० 'लचकना' का प्रे०।

लचकौहाँ*–वि० दे० 'लचीला'।

लचन–स्त्री० दे० 'लचक'।

लचना–अ० दे० 'लचकना'।

लच-पच†–वि० [हिं० लचना] १. ढीला-ढाला। शिथिल। २. दुर्बल। कमजोर। ३. हीन। तुच्छ।

लचारी–स्त्री० [देश०] १. भेंट। नजर। २. एक प्रकार का देहाती गीत।

लचाव–पुं० दे० 'लचक'।

[हिं० लचना + ईला
लचीलापन] १. जो
झुक सकता हो । लचक
(फ्लेक्सिबुल) २. जिसमें
उतार-चढ़ाव या कमी-
हो ।
[हिं० लचीला + पन
लचीले या नमनीय होने की
। पदार्थों का वह गुण
बीच में झुक सकती हो ।
(फ्लेक्सिबिलिटी)
लक्ष्य] १. बहाना । मिस ।
ताक । ३. वह बात जिसपर
हो । लक्ष्य । उदा०—लच्छ दुरे
अलच्छ रहे, एक हाथ पाती,
छाती पर ।—रत्ना० ।
लक्ष्मी' ।
'लक्ष' (लाख की संख्या)
[सं० लक्षण] १. लक्षण ।
। तौर-तरीका । ३. शरीर में
विशेष प्रकार का काला दाग
के अनुसार शुभ माना जाता है ।
लक्षण ।
दे० 'लखना' ।
= लक्ष्मी ।
[अनु०] [स्त्री० अल्पा०
गुच्छे के रूप में गुथे हुए सूत
सूत की तरह लंबे और पतले
। ३. हाथ या पैर में पहनने
का गहना ।
पुं० दे० 'लाक्षागृह' ।
= लक्ष्मी ।
[सं० लक्षित] १ देखा
निशान लगा हुआ । अंकित ।
पुं० = विष्णु ।
[देश०] एक प्रकार का घोड़ा ।
लच्छा] छोटा लच्छा ।
लक्षण] लक्षणों से युक्त ।

लक्षणवाला । उदा०—कच्छी कलित कमान पीठ सारे सुभ लच्छी ।—रत्ना० ।

*स्त्री० = लक्ष्मी ।

लच्छेदार-वि० [हिं० लच्छा + फा० दार (प्रत्य०)] १. (खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे बने हों । २. चिकनी-चुपड़ी और मजेदार (बात) ।

लछमन-पुं० = लक्ष्मण ।

लछमी-स्त्री० = लक्ष्मी ।

लछारा*-वि० दे० 'लंबा' ।

लज*-स्त्री० दे० 'लाज'

लजना-अ० दे० 'लजाना' ।

लजवाना-स० हिं० 'लजाना' का प्रे० ।

लजाना-अ०, स० [सं० लज्जा] लज्जित या शरमिन्दा होना या करना ।

लजारा-वि० [हिं० लाज = लज्जा] [स्त्री० लजारी] १. लज्जाशील । २. लज्जित ।

लजालू-पुं० [सं० लज्जालु] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ या कुछ मुरझा-सी जाती हैं ।

लजीला-वि० दे० 'लज्जाशील' ।

लजुरी†-स्त्री० [सं० रज्जु] कूँए से पानी खींचने की रस्सी ।

लजौहाँ-वि० [सं० लज्जावह] [स्त्री० लजौहीं] लज्जाशील ।

लज्जत-स्त्री० [अ०] स्वाद ।

लज्जा-स्त्री० [सं०] [वि० लज्जाशील, लज्जित] १. वह मनोभाव जो स्वभावतः अथवा संकोच, दोष आदि के कारण दूसरों के सामने सिर उठाने या बोलने नहीं देता । व्रीड़ा । शर्म । हया । (साहित्य में इसे एक संचारी भाव माना गया है) २. मान-मर्यादा । इज्जत ।

लज्जाशील-वि० [सं०] [भाव० लज्जाशीलता] जिसे स्वभावतः जल्दी लज्जा आती हो ।

लज्जित-वि० [सं०] जिसे लज्जा हुई हो । शरमाया हुआ ।

लट-स्त्री० [सं० लट्वा] १. बालों का गुच्छा। केश-पाश। अलक। २. उलझे हुए बाल। स्त्री० [हिं० लपट] लपट। लौ।

लटक-स्त्री० [हिं० लटकना] १. लटकने की क्रिया या भाव। २. अंगों की कोमल, लचीली और मनोहर चेष्टा। अंग-भंगी।

लटकन-पुं० [हिं० लटकना] १. लटकती हुई चीज या अंग। २. नाक में पहनने का एक गहना। ३. एक प्रकार की वनस्पति के दाने जिनसे बढ़िया और सुगंधित वसन्ती या गेरुआ रंग निकलता है। ४. इन दानों को उबालकर निकाला हुआ रंग।

लटकना-अ० [सं० लटन = झूलना] १. ऊपर टिके रहने पर भी कुछ अंश का नीचे की ओर कुछ दूर तक बिना आधार के अधर में झुका रहना। झूलना। २. खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ३. काम का कुछ समय तक अधूरा पड़ा रहना।

लटका-पुं० [हिं० लटक] १. ढंग। ढब। २. बनावटी कोमल चेष्टा और बात-चीत। हाव-भाव। ३. उपचार आदि की छोटी और सहज युक्ति। टोटका।

लटकाना-स० हिं० 'लटकना' का स०।

लटना-अ० [सं० लड] १. थककर बेकाम होना। २. वृद्धा अवस्था, रोग आदि के कारण दुबला और अशक्त होना। ३. विकल या बेचैन होना। ४. मुरझाना। ५. हीन अवस्था को प्राप्त होना। क्षीण होना। अ० [सं० लल] १. चाह या लोभ में पड़ना। २. तत्पर या लीन होना।

लटपट-स्त्री० [हिं० लटपटाना।] १. कुछ साधारण और आरम्भिक, पर अनुचित या बुरे उद्देश्य से किया जानेवाला सम्बन्ध। २. दे० 'लटपटी'। वि० दे० 'लटपटा'।

लटपटा-वि० [हिं० लटपटाना] [स्त्री० लटपटी] १. लड़खड़ाता हुआ। २. ढीला-ढाला। ३. अस्त-व्यस्त। ४. अस्पष्ट और क्रम-विरुद्ध (कथन)। ५. अशक्त। ६. जो न बहुत पतला हो और न बहुत गाढ़ा (खाद्यदार्थ, रस आदि) हो।

लटपटाना-अ० [सं० लड + पत्] १. लड़खड़ाना। २. ठीक तरह से कोई काम कर सकना। अ० [सं० लसन] १. लुभाना। मोहित होना। २. लीन या अनुरक्त होना।

लटा†-वि० [सं० लट्ट] [स्त्री० लटी] १. लंपट। लुच्चा। २. तुच्छ। हीन।

लटापटी†-स्त्री० [हिं० लट + पट] १. लट-पट होने की दशा या भाव। २. कि से उलझने या लड़ने-झगड़ने का भाव भिड़ंत।

लटापोट*-वि० दे० 'लहालोट'।

लटी-स्त्री० [हिं० लटा = बुरा] १. या झूठ बात। २. साधुनी या भक्तिन। ३. वेश्या। रंडी।

लटूरी-स्त्री० दे० 'लट' (बालों की)।

लट्टू-पुं० [सं० लुंठन = लुढ़कना] १. एक प्रकार का गोल खिलौना जो जमीन फेंककर नचाया जाता है।

मुहा०-(किसी पर) लट्टू होना = मोहित या लुब्ध होना।

२. शीशे का वह गोला जिसमें बिजली प्रकाश होता है। (बल्ब)

लट्ठ-पुं० [सं० यष्टि] बड़ी लाठी।

लट्ठ-बाज-वि० [हिं० लट्ठ + फा० बाज] लाठी चलाने या उससे लड़नेवाला। लठैत।

लट्ठ-मार-वि० [हिं० लट्ठ + मारना] १. लठबाज। २. अप्रिय और कठोर (बात)।

लट्ठा-पुं० [हिं० लट्ठ] १. लकड़ी का बड़ा बल्ला। शहतीर। २. एक प्रकार का कपड़ा।

लठ-बाँसी†-वि० [हिं० लठ + बाँस] लाठी, बाँस आदि से मारपीट करनेवाला लठ-मार।

लठिया-स्त्री० दे० 'लाठी'।

लठैत-पुं० दे० 'लठ-बाज'।

लड़-पुं० [सं० यष्टि] [स्त्री० अल्पा० लड़ी]

दुलारा। ३. मूर्ख। ना-समझ। ४. गँवार। अनाड़ी।

लड़ाई–स्त्री० [हिं० लड़ना + आई (प्रत्य०)] १. वह क्रिया जिसमें दो दल या पक्ष एक दूसरे को मार गिराने या हानि पहुँचाने के लिए वार करते हैं। २. संग्राम। युद्ध। ३. झगड़ा। तकरार। हुज्जत। ४. वाद-विवाद। बहस। ५. किसी के विरुद्ध सफल होने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ६. अन-बन। विरोध। वैर।

लड़ाई-बंदी–स्त्री० [हिं० लड़ाई + फा० बंदी] दोनों पक्षों का आपसी समझौते से चली हुई लड़ाई या युद्ध बन्द करना। (सीज़ फायर)

लड़ाका–वि० [हिं० लड़ना + आका (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ाकी] १. योद्धा। २. लड़ाई-झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

लड़ाना–स० हिं० 'लड़ना' का प्रे०। *स० [हिं० लाड़ = प्यार] लाड़-प्यार या दुलार करना। उदा०–साँची कहौ केते कहि लालन लड़ावै हैं।–रत्ना०।

लड़ी–स्त्री० [हिं० 'लड़' का स्त्री० अल्पा०] १. माला आदि का छोटा लड़। २. एक ही तरह की बातों या चीजों का लगातार चलनेवाला क्रम। जैसे-बातों की लड़ी।

लड़ीला*–वि० [हिं० लाड़ + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ीली] १. लाड़ला। दुलारा। २. प्रिय। उदा०–विपिन-विहारी वेष वानक लड़ीली कौ।–रत्ना०।

लड़ैता–वि० [हिं० लाड़ = प्यार + ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ैती] १. लाडला। दुलारा। २. जो लाड़-प्यार के कारण बहुत बिगड़ गया हो। धृष्ट। शोख। ३. प्रिय। वि० [हिं लड़ना] लड़नेवाला। योद्धा।

लड्डू–पुं० [सं० लड्डुक] एक प्रसिद्ध गोल मिठाई। मोदक।

मुहा०–**ठग के लड्डू खाना** = धोखे में आकर ना-समझी करना। **मन के लड्डू खाना** = किसी बड़े सुख या लाभ की व्यर्थ

या निराधार कल्पना या आशा करना।

लड्याना†–स० [हिं० लाड़ = प्यार] लाड़-प्यार करना। दुलार करना।

लढ़ा–पुं० दे० 'लढ़िया'।

लढ़िया†–स्त्री० [हिं० लुढ़कना] बैल-गाड़ी।

लत–स्त्री० [सं० रति] बुरी आदत।

लत-खोर–वि० [हिं० लात + फा० खोर = खानेवाला] [स्त्री० लत-खोरिन] १. प्रायः लात खाने या दुर्दशा भोगनेवाला। २. कमीना। नीच।

लत-खोरा–पुं० [हिं० लतखोर] पैर पोंछने का बिछावन। पायँदाज।

लत-मर्दन–स्त्री० [हिं० लात + सं० मर्दन] पैरों से रौंदने की क्रिया या भाव।

लतर–स्त्री० [सं० लता] लता। बेल।

लतरी–स्त्री० [हिं० लतर] एक प्रकार की खेसारी। दुबिया मटर।

स्त्री० [हिं० लात] १. एक प्रकार का छोटा हल्का जूता। २. पुराना और फटा हुआ जूता।

लता–स्त्री० [सं०] जमीन पर फैलने या किसी आधार पर चढ़नेवाला कोमल पतला पौधा। वल्ली। बेल।

लतागृह–पुं० [सं०] लताओं से घिरा और घर के रूप में बना हुआ स्थान।

लताड़–स्त्री० [हिं० लताड़ना] १. लताड़ने की क्रिया या भाव। २. दे० 'लथाड़'।

लताड़ना–स० [हिं० लात] [भाव० लताड़] १. पैरों से कुचलना। रौंदना। २. खड़े होकर पैरों के भार से किसी के अंग दबाना। ३. तंग करना।

लता-पता–पुं० [सं० लतापत्र] १. पेड़-पत्ते। २. जड़ी-बूटी। ३. रद्दी चीजें।

लता-मंडप–पुं० [सं०] लतागृह।

लतिका–स्त्री० [सं०] छोटी लता।

लतियर (यल)–वि० दे० 'लत-खोर'।

लतियाना–स० [हिं० लात + आना (प्रत्य०)] १. पैरों से दबाना। २. पैरों से आघात करना। लातें मारना।

स० [हिं० लत्ती = लट्टू की डोरी + आना (प्रत्य०)] लत्ते या डोरी आदि से ल को लपेटना। उदा०–लतियावहु जैतो लट्टू लौं तेतहि गावैं।–रत्ना०।

लतीफा–पुं० दे० 'चुटकुला'।

लत्ता–पुं० [सं० लक्तक] फटा-पुरा कपड़ा या उसका चीथड़ा।

लत्ती–स्त्री० [हिं० लात] पशुओं के मारने की क्रिया।

स्त्री० [हिं० लत्ता] नचाये जानेवाले पर लपेटने की डोरी।

लथ-पथ–वि० [अनु०] १. भीगा हुआ तर। २. (कीचड़ आदि से) सना हुआ

लथाड़–स्त्री० [अनु० लथ-पथ] १. पर घसीटने की क्रिया। २. झिड़की।

लथेड़ना–स० [अनु० लथ-पथ] १. मिट्टी लगाकर मैला या गंदा करना। जमीन पर पटककर घसीटना। ३. करना। २. डाँटना। डपटना।

लदना–अ० [हिं० 'लादना' का अ०

†वि० [स्त्री० लदनी] (पशु) जि अधिकतर माल ही लादा जाता हो। ढोनेवाला। जैसे–लदनी घोड़ी।

लदनी–स्त्री० दे० 'लदान'।

लदनुआँ–वि० [हिं० लादना] १. बोझ आदि लादनेवाला। २. (पशु) जि बोझ लादा जाता हो।

लदवाना–स० हिं० 'लादना' का प्रे०।

लदाई–स्त्री० [हिं० लादना] लादने क्रिया, भाव या मजदूरी।

लदान–स्त्री० [हिं० लादना] १. की क्रिया या भाव। २. बाहर भेजने के यानों या वाहनों पर माल लादना। जैसे गुड़ या गेहूँ की लदान। ३. दे० 'लदा

लदाव–पुं० [हिं० लादना] १. की क्रिया या भाव। २. भार। बोझ। ३ छत का एक प्रकार का पटाव जिसमें उस

ने नहीं होतीं, केवल
होती है। जैसे-लदाव की

॰ लादना] जिसपर बोझ
) जैसे-लद्दू घोड़ा।
हिं॰ लादना] मोटा और
आलसी।
[सं॰ लब्ध] प्राप्त करना।
ु॰] लपलपाने की क्रिया

अँजली।
[अनु॰] [भाव॰ लपक]
ेजी से आगे बढ़ना।
[हिं॰ लपकना] लत।
ा।
[हिं॰ लौ+पट] १. आग
ेवाली लौ। अग्नि-शिखा।
का झोंका। ३. गंध से युक्त
। ४. गन्ध। गमक।
॰ दे॰ 'लिपटना'।
[हिं॰ लपटना] १. गाढ़ी
पिंड। २. लपसी। ३.
ा-बहुत संबंध या लगाव।
१. दे॰ 'लिपटाना'। २.
।
पटना'।
[हिं॰ लपटना] एक प्रकार
जो कपड़ों में लपटकर
।

[अनु॰ लप-लप] १. इधर-
नीचे लचना या झुकना।
१. हैरान होना।
ना-झपना = हैरान या परे-

[अनु॰ लप-लप] [भाव॰
१. झपना। २. छुरी, तलवार
ना।
लवार आदि हिलाकर

चमकाना। २. दे॰ 'लपाना'।

लपसी–स्त्री॰ [सं॰ लप्सिका] १. एक प्रकार का पतला हलुआ। २. गीले गाढ़े पिंडों का समूह।

लपाना–स॰ हिं॰ 'लपना' का स॰।

लपेट–स्त्री॰ [हिं॰ लपटना] १. लपेटने की क्रिया या भाव। २. लपेटकर डाला हुआ घुमाव या फेरा। ऐंठन। बल। ३. घेरा। परिधि। ४. उलझन।

लपेटना–स॰ [हिं॰ लिपटना] १. घुमाते हुए चारो ओर लगाना। २. सूत आदि लच्छे के रूप में करना। ३. किसी चीज के चारों ओर घुमाते हुए उस पर जमाना या बैठाना। ४. उलझन या झंझट के लिए किसी को उत्तरदायी बनाकर उसे अपने साथ लगाना।

लफंगा–वि॰ [फा॰ लफंग] १. लंपट। दुश्चरित्र। २. लुच्चा। बदमाश।

लफना*–अ॰ दे॰ 'लपना'। (लचना या लचकना)

लफ्ज–पुं॰ [अ॰] शब्द।

लबड़-धों-धों–स्त्री॰ [हिं॰ लबाड़ + धों-धों (अनु॰)] १. अंधेर। कुव्यवस्था। २. बेईमानी और जबरदस्ती की चाल।

लबड़ना*–अ॰ [सं॰ लप = बकना] १. झूठ बोलना। २. गप हाँकना।

लबधि*–स्त्री॰ = लब्धि।

लबनी–स्त्री॰ दे॰ 'लभनी'।

लबराई*–स्त्री॰ दे॰ 'लबारी'।

लबादा–पुं॰ [फा॰] चोंगा। (पहनावा)

लबार†–वि॰ [सं॰ लपन] [भाव॰ लबारी] १. झूठा। २. गप्पी।

लबारी–स्त्री॰ [हिं॰ लबार] लबार होने की अवस्था या भाव। व्यर्थ की झूठी और बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। वि॰ दे॰ 'लबार'।

लबालब–वि॰ [फा॰] १. ऊपर या किनारे तक भरा हुआ। २. छलकता हुआ।

लवासी*–वि० [हिं० लवार ?] बहुत बढ़-बढ़कर झूठी और व्यर्थ की बातें करनेवाला । लवार । गप्पी ।

स्त्री० व्यर्थ की झूठी और बहुत बढ़ाकर कही हुई बात ।

लवेद–पुं० [सं० वेद का अनु०] लोकाचार की भद्दी या भौंडी बात या प्रथा ।

लब्ध–वि० [सं०] मिला हुआ । प्राप्त । पुं० भाग करने पर निकलनेवाला फल । (गणित)

लब्ध-प्रतिष्ठ–वि० [सं०] जिसने किसी कार्य में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की हो । प्रतिष्ठित ।

लब्धि–स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति । लाभ । २. दे० 'भागफल' ।

लभनी–स्त्री० [सं० लभन = प्राप्त करना] वह हाँडी जो ताड़ के पेड़ में उससे ताड़ी निकालने के लिए बाँधी जाती है । लबनी ।

लभ्य–वि० [सं०] १. जो मिल सके । २. उचित । मुनासिब ।

लभ्यांश–पुं० [सं०] व्यापार या क्रय-विक्रय आदि में होनेवाला आर्थिक लाभ । मुनाफा । (प्रॉफिट)

लमकना†–अ० [हिं० लपकना] १. लपकना २. उत्कंठित होना । ३. लटकना ।

लम-छड़–वि० [हिं० लंबा] बहुत लंबा । पुं० भाला । बरछा ।

लम-तड़ंग–वि० [हिं० लंबा + ताड़ + अंग] [स्त्री० लम-तड़ंगी] बहुत लंबा या ऊँचा ।

लमधी†–पुं० [हिं० समधी का अनु०] १. समधी का बाप । २. समधी का दूसरा समधी ।

लमहा–पुं० [अ०] समय का एक बहुत ही सूक्ष्म मान । क्षण ।

लमाना†–स० [हिं० लंबा] लंबा करना । अ० १. लंबा होना । २. दूर निकल जाना ।

लय–पुं० [सं०] १. एक का दूसरे में समाना । विलीन होना । २. स्थान में होना । लौ । लगन । उदा०—गई न
पर-बुद्धि सुद्ध है, रहे न राम-लय आवे
तुलसी । ३. अन्त में सारी सृष्टि या
का होनेवाला विनाश । प्रलय । ४. विना
५. तिरोहित या अदृश्य होना । ६. थि
विश्राम । ७. रहने का स्थान । आलय ।
स्त्री० १. संगीत में नृत्य, वाद्य और
के एक-रस रहने की अवस्था या
२. संगीत में लगनेवाले समय के
से कोई चीज ठीक और नियमित
गाने की क्रिया या भाव । इसके ये
प्रकार या भेद हैं—द्रुत, मध्य और वि
(देखें) ३. गीत गाने का विशेष
सुंदर ढंग । धुन । ४. कोई ऐसी
शब्द जो बीच में कुछ रुक-रुकक
नियमित रूप से उसी प्रकार हो फि
उत्तम संगीत होता है । (रिद्म; उ
अर्थों के लिए)

लयक–वि० [सं० लय + क (प्रत्य
१. 'लय' से संबंध रखनेवाला । २.
की लय के रूप में अथवा उसके
होनेवाला । (रिद्मिकल) जैसे—ना
हृदय का लयक स्पंदन ।

लयलीन*–वि० दे० 'लवलीन' ।

लयिक–वि० दे० 'लयक' ।

लरकई*–स्त्री० [पु० हिं० लरका =
१. लड़के या बालक होने की अ
भाव । बाल्यावस्था । लड़कपन । २.
का सा आचरण, व्यवहार या स्वभा

लरखरनि*–स्त्री० [हिं० लड़खड़
लड़खड़ाने की क्रिया या भाव ।

लरजना–अ० [फा० लरजा = कंप]
काँपना । २. हिलना । ३. डर
दहलना ।

लर-झर*–वि० [हिं० लद + झड़ना] ब
अधिक । प्रचुर ।

लरना*–अ० = लड़ना ।

ललना–स्त्री॰ [सं॰] सुन्दर स्त्री।
*पुं॰ दे॰ 'ललन'।

ललना चक्र–पुं॰ [सं॰] परवर्ती एक योगियों के अनुसार शरीर के अंदर का हल कमल या चक्र। (अष्ट-कमल और षट्-चक्र से अतिरिक्त)

ललनी†–स्त्री॰ [सं॰ नलिनी] छोटा पतला चोंगा। नली।

लला–पुं॰ [हिं॰ लाल] [स्त्री॰ लली] १. प्यारा और दुलारा लड़का। २. नायक या पति।

ललाई–स्त्री॰ = लाली। (रंगत)

ललाट–पुं॰ [सं॰] मस्तक। माथा।

ललाना*–अ॰ = ललचना।

ललाम–वि॰ [सं॰] [भाव॰ ललामता] १. रमणीय। सुंदर। २. लाल। सुर्ख। ३. श्रेष्ठ। उत्तम।
पुं॰ १. अलंकार। गहना। २. रत्न।

ललामी*–स्त्री॰ [सं॰ ललाम] १. सुन्दरता। २. लाली। सुर्खी।

ललित–स्त्री॰ [सं॰] [भाव॰ लालित्य] १. सुन्दर। मनोहर। २. प्रिय। प्यारा।
पुं॰ १. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी प्रस्तुत कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से वर्णन न करके उसके समान अथवा प्रतिबिम्ब-रूप किसी दूसरे कार्य या घटना का इस प्रकार उल्लेख होता है कि वह प्रस्तुत कार्य या घटना पर ठीक तरह से घटित हो। जैसे–'तुमने उसे बिगाड़ करके मानों घर आनेवाली लक्ष्मी का द्वार बन्द कर दिया'। २. एक प्रकर का विषम वर्ण-वृत्त। ३. षाडव जाति का एक राग जो रात के अंतिम पहर में गाया जाता है। ४. शृंगार रस में सुकुमारता से और आकर्षक रूप से अंग हिलाना जो एक हाव माना गया है। मनोहर अंग-भंगी।

ललित कला–स्त्री॰ [सं॰ ललित + कला] वह कला जिसके अभिव्यंजन में सुकुमारता

और सौन्दर्य की अपेक्षा हो और जिसकी सृष्टि मुख्यतः मनोविनोद के लिए हो। जैसे–संगीत, चित्रकला आदि। (फाइन-आर्ट्स)

ललित साहित्य–पुं० [सं०] ऐसा साहित्य जिसे पढ़ने के लिए कुछ विशेष सोचने-समझने की आवश्यकता न पड़े और जो मुख्यतः मनोविनोद और समय बिताने के लिए पढ़ा जाय। (लाइट लिटरेचर)

ललिताई*–स्त्री० = लालित्य।

लली–स्त्री० [हिं० लला] १. 'लड़की' का वाचक प्यार का शब्द। २. नायिका। ३. प्रेमिका। प्रेयसी।

ललौहाँ*–वि० [हिं० लाल] [स्त्री० ललौहीं] लाली लिये हुए।

लल्ला–पुं० दे० 'लला'।

लल्लाट*–पुं० = ललाट।

लल्लो–स्त्री [सं० ललना] जीभ। जबान।

लल्लो-चप्पो(पत्तो)–स्त्री० [सं० लल + अनु० चप] चिकनी-चुपड़ी और खुशामद की बातें।

लवंग–पुं० [सं०] लौंग। (मसाला)

लव–पुं० [सं०] १. बहुत थोड़ी मात्रा। २. दो काष्ठा या छत्तीस निमेष का समय।

*–स्त्री० दे० 'लौ'।

लवका†–स्त्री० [हिं० लौकना] बिजली। उदा०–लवका लपकै, ठनका ठनकै छतिया दरद उठि जाय।–गीत

लवण(न)–पुं० [सं०] नमक।

लवना*–स० दे० 'लुनना'।

अ० = चमकना।

लवनी–स्त्री० [सं० लवन] अनाज की पकी फसल काटने की क्रिया। लुनाई।

*स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन।

लव-लासी*–स्त्री० [हिं० लव = प्रेम + लासी = लसी] १. प्रेम की लगावट। २. सम्बन्ध स्थापित करने की चाह।

लवली–स्त्री० [सं०] हरफारेवड़ी नाम का वृक्ष और उसका फल।

लव-लीन–वि० [हिं० लय + लीन

तन्मय। तल्लीन। मग्न।

लव-लेश–पुं० [सं०] बहुत थोड़ा अं

या संसर्ग।

लवा–पुं० [सं० लावक] तीतर की

का एक पक्षी।

*–पुं० दे० 'लावा'।

*वि० [हिं० लाना = लगाना] ल

वाला। जैसे–*कंठ-लवा=गले लगानेवा

लवाई–स्त्री० [देश०] नई ब्याई गौ

स्त्री० दे० 'लवनी'।

लवाजमा–पुं० [अ० लवाजिम]

बड़े आदमियों के साथ रहनेवाले लोग

साज-सामान। २. आवश्यक सामग्री

लवारा–पुं० [हिं० लवाई] गौ का

†वि० दे० 'आवारा'।

लवासी*–वि० [सं० लव = बकना]

बकवादी। २. लंपट। बद-चलन।

लशकर–पुं० [फा०] [वि० लशक

१. सेना। फौज। २. सेना की छा

३. जहाज पर काम करनेवाले सा

नौकर-चाकरों, मजदूरों आदि का

या समूह।

लशकरी–वि० [फा०] लशकर सम्ब

लशकर का। जैसे–लशकरी भाषा।

पुं० १. वह जो लशकर में काम

हो। २. जहाज पर काम करनेवाला

साधारण कर्मचारी या मजदूर।

लषन*–पुं० = लक्ष्मण।

लस–पुं० [सं०] १. वह गुण या

जिससे कोई चीज किसी से चिपकती

लासा। २. दे० 'लसी'।

लसना–स० [सं० लसन] १. चि

काना। सटाना। २. ऊपर रखना। उदा

हौं जमुना जल भरन जात ही सिर

गागरि लसिकै।—मीराँ।

अ० १. चिपकना। २. शोभित होना

लहकाना–स० हिं० 'लहकना' का स०।

लहकौर–स्त्री० [?] १. ललकार। २. विवाह के समय गाये जानेवाले व्यंग्यात्मक गीत। ३. वे औपचारिक खेल जो वर और वधू को कोहबर में खेलाये जाते हैं।

लहनदार–पुं० [हिं० लहना + फा० दार (प्रत्य०)] जो किसी से अपना प्राप्य धन या दिया हुआ ऋण लेने का अधिकारी हो।

लहना–पुं० [सं० लभन] उधार दिया हुआ या बाकी रुपया जो मिलने को हो। *स० [सं० लसन] प्राप्त करना। अ० [सं० लसन] कही हुई बात का ठीक मौके पर बैठ कर अभिप्राय की सिद्धि में सहायक होना। जैसे–एक बात थी जो उस समय लह गई।

लहबर–पुं० [हिं० लहर ?] १. एक प्रकार का चोगा। २. ऊँचा लंबा झंडा।

लहर–स्त्री० [सं० लहरी] १. नदी, समुद्र आदि के जल में थोड़ी-थोड़ी दूर पर रह-रहकर उठने और फिर नीचे बैठनेवाली जल-राशि जो बराबर आगे बढ़ती हुई सी जान पड़ती है। तरंग। (वेव) २. उमंग। जोश। ३. रोग या पीड़ा आदि का रह-रहकर होनेवाला वेग। जैसे–साँप काटने की लहर। ४. आनंद की उमंग। मौज। **यौ०–लहर-बहर** = सब प्रकार की प्रसन्नता, सम्पन्नता और सुख। ५. टेढ़ी-तिरछी चाल या रेखा।

लहरदार–वि० [हिं० लहर + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें लहर या उसकी तरह की धारियाँ हों। स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

लहरना–अ० [हिं० लहर] लहरों के रूप में या लहरों से युक्त होना। लहराना।

लहर-पटोर–पुं० [हिं० लहर + पट] पुरानी चाल का एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

लहरा-पुं० [हिं० लहर] १. लहर। तरंग। २. मौज। आनंद। ३. नाच या गाना आरम्भ होने से पहले सारंगी, तबले आदि साजों पर बजनेवाली गत।

लहराना-अ० [हिं० लहर] [भाव० लहर, लहरान] १. हवा के झोंके से लहरों की तरह इधर-उधर हिलना-डोलना। लहरें खाना। २. हवा के झोंके से पानी का अपने तल से कुछ ऊपर उठना और गिरना। ३. इस प्रकार झोंका खाते हुए बढ़ना या हिलना। ४. मन का उमंग में होना। ५. आग भड़कना या सुलगना। ६. शोभित होना।

स० १. हवा के झोंके से लहरों की तरह इधर-उधर हिलाना। २. टेढ़ी चाल से चलाना या ले जाना।

लहरिया-पुं० [हिं० लहर] १. लहर की तरह टेढ़ी लकीरों की श्रेणी। २. एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

लहरी-स्त्री० [सं०] १. लहर। तरंग। विशेष विवरण के लिए ये दोनों शब्द देखें। २. ऊँचे-नीचे स्वरों की किसी दिशा में होनेवाली वह गति जो कंठ या वैद्युतिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न होकर कानों तक पहुँचती है। (वेव)

†वि० [हिं० लहर] १. मन-मौजी। २. सदा प्रसन्न रहने और सुख-भोग करनेवाला। आनन्दी।

लहलहाना-अ० [अनु०] १. हरी पत्तियों से युक्त या हरा-भरा होना। २. प्रफुल्लित या प्रसन्न होना।

लहसुन-पुं० [सं० लशुन] एक पौधा जिसकी जड़ मसाले के काम में आती है।

लहसुनिया-पुं० [हिं० लहसुन] एक प्रकार का रत्न।

लहा*-पुं० = लाभ।

लहा-छेह-पुं० [?] १. नाचने में एक प्रकार की गति। २. शीघ्रता। फुर्ती। ३. चंचलता।

वि० १. तीव्र गतिवाला। २. चंचल। चपल।

लहाना*-स० [सं० लभन] १. ल या प्राप्त कराना। मिलाना। उदा०—वै वह पुनि आइ हमैं दृग-लाहु लहावै।—र

स० [सं० लसन, हिं० लहना] ऐसे से बात कहना कि अभिप्राय सिद्ध हो जा

लहालोट-वि० [हिं० लाह+लोटना] हँसी से लोटता हुआ। २. बहुत मोहित

लहास†-स्त्री० [हिं० लाश] मृत शरीर

लहासी-स्त्री० [सं० रज्जु, पुं० हिं० नाव खींचने या बाँधने की मोटी रस्सी

लहु*-वि० = लघु।

लहुरा†-वि० [सं० लघु] [स्त्री० ल लहुरिया] अवस्था, पद आदि के से छोटा।

लहू-पुं० [सं० लोह] रक्त। खून।

यौ०-लहू-लुहान। (देखें)

पद- लहू का प्यासा = बहुत बड़ा श

लहू-लुहान-वि० [हिं० लहू] चोट के कारण जिसका सारा शरीर लहू से गया हो।

लाँक†-स्त्री० [हिं० लंक] कमर।

लाँग-स्त्री० [सं० लांगूल] धोती का भाग जो पीछे खोंसा जाता है। काछ।

लाँगर-वि० दे० 'लँगर' (ढीठ)।

† स्त्री० दे० 'लाँग'।

लाँघ*-स्त्री० [सं० लंघन] बाधा। रु

लाँघना-स० [सं० लंघन] इस उस पार जाना। ऊपर से डाँकना।

लाँच-स्त्री० [देश०] रिशवत। घूस।

लांछन-पुं० [सं०] १. चिह्न। निशान २. दाग। धब्बा। ३. दोष। ऐब।

लांछित-वि० [सं०] जिसे लांछन कलंक लगा हो। कलंकित।

लाँझ*-स्त्री० [सं० लंघन ?] विघ्न। बाधा।

लाँबा*-वि० = लंबा।

अलात = लुक] अग्नि ।

ता = लगाना] १. लगने
क्रिया या भाव । २. प्रेम की
। उदा०—लगा-लगी करि
मैं लाई लाइ ।—बिहारी ।

[अं०] १. पंक्ति । कतार । २.
रेखा । लकीर । ४. रेल की
छावनी आदि में घरों की वह
सिपाही रहते हैं । बैरिक ।

[हिं० लाजा] धान का लावा ।

लगाना] चुगली ।

लुतरी=१. चुगली । २.चुगल-
)।

दे० 'लाव' ।

= लकड़ी ।

[अं०] वह लटकन जो घड़ी
किसी प्रकार की पहनने की
शोभा के लिए लगाया जाता है ।

-वि० [सं०] १. लक्षण
। २. जिससे लक्षण प्रकट हो ।
के रूप में होनेवाला (काम) ।
प्रतीक, प्रतिनिधि या संकेत
हो । प्रतीकी । (सिम्बलिक)

[सं०] लाख । लाह ।

-पुं० [सं०] लाख का वह घर
ने पांडवों को जला डालने के
था ।

-वि० [सं०] १. लाख का बना
२. लाख संबंधी ।

[सं० लक्ष] १. सौ-हजार ।
अधिक ।

बहुत । अधिक ।

लाक्षा] एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ
वृक्षों की टहनियों पर लाल
छोटे कीड़े बनाते हैं । लाह ।

दे० 'लखना' ।

लाख] १. लाख लगाकर बरतनों का छेद बन्द करना । २. लाख से बना हुआ घोल मिट्टी के बरतन पर लगाना ।

लाखा—पुं० [हिं० लाख] लाख से बनाया हुआ एक प्रकार का रंग जो स्त्रियाँ होठों पर लगाती हैं ।

लाखा-मंदिर—पुं० दे० 'लाक्षागृह' ।

ला-खिराज—वि० [अ०] (ज़मीन) जिसका खिराज या लगान न देना पड़े । माफ़ी ।

लाखी—वि० [हिं० लाख + ई (प्रत्य०)] १. लाख के रंग का । २. लाख का बना हुआ । पुं० लाख के रंग का घोड़ा ।

लाखों—वि० [हिं० लाख] १. कई लाख । २. बहुत अधिक । जैसे—लाखों आदमियों की भीड़ ।

लाग—स्त्री० [हिं० लगना] १. संपर्क । संबंध । लगाव । २. प्रेम । प्रीति । ३. लगन । लौ । ४. वह स्वाँग जिसमें कोई ऐन्द्र-जालिक कौशल हो । ५. वह नियत धन जो मंगल कार्यों के समय ब्राह्मणों, भाटों आदि को दिया जाता है । ६. मुठभेड़ । ७. दे० 'लाग-डाँट' ।
*क्रि० वि० [हिं० लौं] पर्य्यंत । तक ।
*अव्य० लिए । वास्ते ।

लाग-डाँट—स्त्री० [हिं० लाग + डाँट] १. शत्रुता । वैर । दुश्मनी । २. प्रतियोगिता । चढ़ा-ऊपरी ।

लागत—स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी चीज की तैयारी या बनाने में होने या लगनेवाला व्यय । (कॉस्ट) २. दे० 'लग्गल' ।

लागना*—अ० = लगना ।

लागि*—अव्य० [हिं० लगना] १. कारण । हेतु । वास्ते । लिए । २. द्वारा । से ।
क्रि० वि० [हिं० लौ] तक । पर्य्यंत ।
स्त्री० [हिं० लग्गी] लंबी लकड़ी । लग्गी ।
उदा०—दर-दर लोग लागि लिये डोलति नाना स्वाँग बनावै ।—सूर ।

लागू—वि० [हिं० लगना] १. जो कहीं लग सके या प्रयुक्त हो सके । लगाये जा

के योग्य। २. जो कहीं प्रयुक्त किया या लगाया गया हो। (एप्लायड) ३. जो कहीं लगाया जा सकता हो या लगाया जाने को हो। (एप्लिकेबुल)

लाघव-पुं० [सं०] १. 'लघु' का भाव। लघुता। छोटापन। २. कमी। न्यूनता। ३. वर्णन में, थोड़े शब्दों में अधिक भाव प्रकट करना। कथन संक्षिप्त रखकर भी अधिक बातें प्रकट करने का भाव। (ब्रेविटी) ४. कोई काम करने में हाथ की सफाई। हस्त-कौशल। ५. फुरती। तेजी।

लाघवी*-स्त्री० [सं० लाघव] शीघ्रता।

लाचार-वि० [फा०] [भाव० लाचारी] १. जिसका कुछ वश न चले। विवश। मजबूर। २. जो शारीरिक असमर्थता के कारण कुछ कर न सकता हो। असमर्थ। क्रि० वि० विवश होकर। मजबूरी से।

लाचारी-स्त्री० [फा०] लाचार होने की अवस्था या भाव। विवशता।

लाची-पुं० [हिं० इलायची ?] एक प्रकार का धान या उसका चावल। †स्त्री० दे० 'इलायची'।

लाछी*-स्त्री० = लक्ष्मी।

लाज-स्त्री० [सं० लज्जा] १. लज्जा। शरम। २. मान-सम्मान। प्रतिष्ठा। **मुहा०-लाज धरना** = (क) अपनी मर्यादा की रक्षा करना। (ख) दे० 'लाज बचाना'। **लाज बचाना या रखना** = किसी को लज्जित या अपमानित होने से बचाना। नष्ट होती हुई प्रतिष्ठा की रक्षा करना। ***लाज सम्हारना** = लाज बचाना या रखना।

ाजना†-अ० [हिं० लाज] लज्जित होना। उदा०-कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।—तुलसी। स० लज्जित करना। उदा०-तौ लाजौं ले गंगा जननी तौ सांतनु-सुत न कहाऊँ।—सूर।

ाजबान-स्त्री० [अ० ला + फा० जबान] कु-वाच्य। गाली।

लाजवई-पुं० [फा० मि० सं० राजावर्त] एक प्रकार का रत्न।

लाजवर्दी-वि० [फा०] लाजवर्द के रंग का। हलका नीला। पुं० हलका नीला रंग।

ला-जवाब-वि० [फा०] अनुपम। बे-जोड़।

लाजा-स्त्री० [सं०] लावा (धान आदि का)।

लाजिम (ी)-वि० [अ०] १. आवश्यक। २. अनिवार्य। ३. उचित। मुनासिब।

लाट-स्त्री० [हिं० लट्ठा ?] १. मोटा, ऊँचा और बहुत बड़ा खंभा। २. इस आकार की कोई इमारत या बनावट। पुं० [अं० लॉर्ड] १. एक अँग्रेजी उपाधि। २. प्रान्त का प्रधान शासक। गवर्नर। स्त्री० दे० 'लाटी'।

लाटरी-स्त्री० [अं० लाटरी] वह खे जिसमें लोगों को गोटी या गोली उठा उनके भाग्य के अनुसार, धन बाँध या कोई बहुमूल्य चीज दी जाती है।

लाटानुप्रास-पुं० [सं०] साहित्य में एक शब्दालंकार जिसमें शब्दों पदों, वाक्यों आदि की द्विरुक्ति होने पर भी किसी प अक्षर या शब्द के बदलने से ही आश या तात्पर्य बदल जाता है। जैसे-पूत सपूत तो क्यों धन संचय। पूत कपूत तो धन संचय।—कहा०।

लाटी-स्त्री० [सं० लाला = लार] १. गला सूखने के कारण ओठों पर जमने वाली पपड़ी। २. मुँह के अंदर की या लसी।

लाठ-स्त्री० दे० 'लाट'।

लाठी-स्त्री० [सं० यष्टि] बड़ा डंडा। **मुहा०-लाठी चलना** = लाठियों से मार-पीट होना।

लाठी-चार्ज-पुं० [हिं० लाठी + अं० चार्ज] भीड़ आदि हटाने के लिए पुलिस आदि का लोगों पर लाठियाँ चलाना।

लालन] बच्चों के साथ
पूर्ण व्यवहार। दुलार।
दे० 'लाडला'।
लाड़] [स्त्री० लाडली]
साथ। दुलारा।
लट्टू'।
] १. पैर। पाँव। २. पैर
आघात।
खाना = (क) पैरों का
। (ख) बेइज्जती सहना।
ना=तुच्छ समझकर दूर हटाना
।
हिं० लादना] १. लादने की
। लदाई। २. पेट।

सं० लब्ध] १. किसी के
चीजें रखना। २. ढोने
लिए वस्तुएँ ऊपर रखना
देना आदि का भार रखना।
[हिं० लादना] वह जो
माल लादकर दूसरे स्थान
पहुँचाता हो।
[हिं० लादना] पशु पर
या बोझ।
सं० लाभ] प्राप्ति।
[सं० लब्ध] प्राप्त
।
[अ० लअनत] धिक्कार।
[हिं० लेना + आना] १.
लेकर आना। २. उपस्थित
रखना।
= आग] आग लगाना।
—चौरि सो धरी है बे-दरद
मेरी बिरहागि की उलूकन
—पद्माकर।
पुं० हिं० लावना] १.
आना। २. लपेटना।
लाला] वास्ते। लिए।

लाप*–पुं० = आलाप या संलाप।

ला-पता–वि० [अ० ला = बिना + हिं० पता] जिसका पता न लगे या न हो।

ला-परवाह–वि० [अ० ला + फा० परवाह] [भाव० ला-परवाही] १. जिसे किसी बात की परवाह या चिन्ता न हो। बे फिक्र। २. असावधान।

लाबी–स्त्री० [अं० लॉबी] विधायिका सभाओं आदि में वह बाहरी कमरा जिसमें उसके सदस्य बैठकर आपस में बात-चीत करते और बाहरी लोगों से मिलते-जुलते हैं।

लाभ–पुं० [सं०] १. हाथ में आना। मिलना। प्राप्ति। २. व्यापार आदि में होनेवाला मुनाफा। नफा। (प्रॉफिट) ३. किसी प्रकार प्राप्त होनेवाला कोई सुख या सुभीता या होनेवाली कोई भलाई। उपकार। (बेनिफिट)

लाभ-कर–वि० [सं०] १. लाभ-कारी। २. जिससे या जिसमें आर्थिक लाभ अथवा बचत हो। (इकॉनोमिक)

लाभकारी–वि० [सं०] फायदा करनेवाला। गुणकारक।

लाभदायक–पुं० [सं०] १. जिससे किसी प्रकार का लाभ हो। लाभकारी। २. आर्थिक दृष्टि से जिससे कुछ लाभ या बचत हो। फायदेमन्द। (प्राफिटेबुल)

लाभांश–पुं० [सं०] किसी व्यापार से होनेवाले आर्थिक लाभ का वह अंश जो उस व्यापार में रुपये लगानेवाले सब हिस्सेदारों को उनके हिस्से के अनुसार मिलता है। (डिविडेंड)

लाभार्थी–पुं० [सं० लाभ + अर्थिन्] १. वह जो किसी प्रकार का लाभ करना चाहता हो। २. वह जिसे किसी वस्तु से लाभ होने को हो। (बेनिफीशीअरी)

लाभालाभ–पुं० [सं०] लाभ और अलाभ या हानि। (प्रॉफिट ऐंड लॉस)

लाम–पुं० [फा० लाम] १. सेना।

फौज। २. बहुत से लोगों का साथ मिलकर चलना या जाना। ३. भीड़। समूह।

लामन*-पुं॰ [देश॰] लहँगा। उदा॰—लामन लिखियो सोतली, चलत फिरत रंग जाय।—गीत।

लामा-पुं॰ [तिब्बती] तिब्बत के बौद्धों का धर्म्माचार्य।

लाय*-स्त्री॰ [सं॰ अलात] १. आग। अग्नि।

मुहा॰-लाय देना = आग लगाना। जलाना। उदा॰—खवाय विष, गृह लाय दीन्हो, तउ न पाए जरन।—सूर।

२. आग की लपट। ज्वाला। लौ।

लायक-वि॰ [अ॰] [भाव॰ लायकी] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. उपयुक्त। मुनासिब। ३. सुयोग्य। गुणवान। ४. समर्थ। सामर्थ्यवान्।

लायचा-पुं॰ [हिं॰ इलायची ?] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। उदा॰—ललित लायचा दरियाई ज्यौली पंजाबी।—रत्ना॰।

लायची-स्त्री॰ दे॰ 'इलायची'।

लार-स्त्री॰ [सं॰ लाला] १. मुँह से निकलनेवाली पतली लसदार थूक।

मुहा॰-लार टपकना = कोई चीज लेने या पाने की परम लालसा होना।

२. लासा। लुआब।

स्त्री॰ [?] पंक्ति। कतार।

† अव्य॰ [राज॰] संग। साथ।

*क्रि॰ वि॰ [मारवाड़ी लैर = पीछे] १. साथ। २. पीछे।

लारी-स्त्री॰ [अं॰ लॉरी] वह लंबी मोटर-गाड़ी जिसपर बहुत से आदमियों के बैठने और माल लादने की जगह होती है।

लाल-पुं॰ [सं॰ लालक] १. बेटा। पुत्र। २. प्यारा लड़का या आदमी। ३. किसी प्रिय व्यक्ति के लिए सम्बोधन।

†पुं॰ १. दे॰ 'लाड' २. दे॰ 'लार'।

पुं॰ [अ॰ लअल] मानिक। (रत्न)

वि॰ १. रक्त वर्ण का। २. बहुत क्रुद्ध।

मुहा॰-लाल-पीला होना=क्रोध कर

३. खेल में पहले जीतनेवाला (खेलाड़ी)

मुहा॰-लाल होना = बहुत अधिक पाकर सम्पन्न होना।

४. कम्युनिज्म के सिद्धान्त मानने उनका पालन करनेवाला। कम्युनि जैसे—लाल चीन = आजकल का चीन जो कम्युनिस्टों के हाथ में है।

पुं॰ एक प्रकार की छोटी सुन्दर चि जो प्रायः घरों में पाली जाती है। मुनी। मुनिया।

*स्त्री॰ [सं॰ लालसा] इच्छा। चाह

लाल कुरती-स्त्री॰ [हिं॰ लाल + कु भारत की पश्चिमोत्तर सीमा के खुदाई मतदारों की वर्दी और दल का सूचक (रेडशर्ट)

लाल कोठी-स्त्री॰ [हिं॰ लाल + को व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा जहाँ कर वे कसब कमाती हैं।

लाल चंदन-पुं॰ वह चंदन जिसे घि लाल रंग का सार निकलता है। रक्त-चं देवी चंदन।

लालच-पुं॰ [सं॰ लालसा] [लालची] कुछ पाने की बहुत अधिक अनुचित इच्छा। लोभ।

लालची-वि॰ [हिं॰ लालच] जिसे अधिक लालच हो। लोभी।

लालटेन-स्त्री॰ [अं॰ लैन्टर्न] प्रका वह आधार जिसमें तेल और बत्ती रहती और जिसके चारो ओर गोल शीशा रहता है। कंदील।

लालन-पुं॰ [सं॰] [वि॰ लालनी प्रेमपूर्वक बालकों को प्रसन्न करना। ला

*पुं॰ [हिं॰ लाला] प्यारा बच्चा।

लालना*-स॰ [सं॰ लालन] दुलार लाड करना।

लाल फीता-पुं॰ १. लाल रंग का

यों विशेषतः सरकारी
क कागज-पत्र, नत्थियाँ
है। २. लाक्षणिक और
सरकारी कार्यों के सम्पा-
आदि में लगनेवाली वह
की पेचीली और प्रायः
ओं के कारण होती है।
(रेड टेप)

-पुं० [हिं० लाल + बूझना]
-पथू और मूर्खतापूर्ण
या अनुमान करनेवाला।

-स्त्री० दे० 'मिर्च'।

-स्त्री० दे० 'लालूवार'। (तलवार)

[सं०] ललचाया हुआ।

[सं०] कुछ पाने की बहुत
या चाह। लिप्सा।

-पुं० दे० 'मुरगा'।

[सं० लालसा] लालसा
करनेवाला।

-स्त्री० कम्यूनिस्ट सिद्धान्त मानने-
जिसका झंडा लाल रंग का
(रेड आर्मी)

[सं० लालक] १. एक प्रकार
सूचक संबोधन। महाशय। २.
का वाचक शब्द। ३. बच्चों
बोधन।

] लार। थूक।

[सं०] [स्त्री० लाला
बहुत लालसा हो। लोलुप।

[सं०] [स्त्री० लालिता]
लालन हो। दुलारा। प्यारा।
हुआ।

[सं०] 'ललित' का भाव।
सुन्दरता।

[हिं० लाल] 'लाल'
लाली।

[हिं० लाल + ई (प्रत्य०)]

१. लाल होने का भाव। लालपन। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।

लालूवार-स्त्री० [?] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

लाले-पुं० बहु० [सं० लाला] अभिलाषा। **मुहा०-किसी चीज के लाले पड़ना**=अप्राप्य वस्तु के अभाव में उसके लिए बहुत तरसना।

लाव-स्त्री० [सं० रज्जु ?] मोटी रस्सी, विशेषतः नाव खींचने की। उदा०-फिरि-फिरि चित उतहीं रहतु, टुटी लाज की लाव। स्त्री० [हिं० लाय] आग। पुं० [हिं० लाना = लगना] १. संबंध। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। ३. लौ। लगन।

लावक-पुं० [सं०] लवा नाम का पक्षी।

लावण्य-पुं० [सं०] १. 'लवण' का भाव या धर्म। नमकीनी। २. सरस सुंदरता।

लावन*-स्त्री० 'लावना' की क्रिया या भाव। पुं० = लावण्य।

लावना*-स० = लाना। स० [हिं० लगाना] १. स्पर्श कराना। लगाना। २. जलाना। स० दे० 'लवना' (लुनना) अ० [?] = चलना।

लावनि*-स्त्री० दे० 'लावण्य'।

लावनी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का लोक-गीत जो प्रायः चंग पर गाया जाता है। यह राधिका नामक छन्द में होता है।

ला-परवाली-स्त्री० [अ०] १. अविचार। २. ला-परवाही। उपेक्षा। वि० १. आवारा। २. ला-परवाह।

लाव-लश्कर-पुं० [फा०] सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।

लावा-पुं० [सं०] लवा (पक्षी)। पुं० [सं० लाजा] भूने हुए धान, ज्वार, रामदाने आदि के दाने जो फूल जाते हैं। खील। लाई। **मुहा०-(किसी पर) † लावा मेलना**=

जादू-टोना करके किसी को अपने वश में करना। (कहते हैं कि मंत्र पढ़कर किसी पर धान का लावा फेंकने से वह वश में हो जाता है।)

पुं० [सं० लावक, हिं० लवना] खेत की फसल काटनेवाला मजदूर। लुनने या लवनी करनेवाला। कपटा।

ला-वारिस–वि० [अ०] १. जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो। २. (वस्तु) जिसका कोई मालिक न हो।

ला-वारिसी–स्त्री० [अ०] लावारिस होने की अवस्था या भाव।

वि० दे० 'ला-वारिस'।

लाश–स्त्री० [फा०] मृत शरीर। लोथ। शव।

लास*–पुं० दे० 'लास्य'।

लासा–पुं० [हिं० लस] १. कोई लसदार चीज। २. वह लसदार पदार्थ जो बहेलिये चिड़ियाँ फँसाने के लिए उनके परों में लगाने के उद्देश्य से बनाते हैं। लोयन। ३. किसी को जाल में फँसाने का साधन।

लास्य–पुं० [सं०] १. नृत्य। नाच। २. शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन करनेवाला कोमल और स्त्रियों का-सा नृत्य।

लाह*–स्त्री० दे० 'लाख' (लाक्षा)।

पुं० [सं० लाभ] लाभ। नफा।

स्त्री० [?] चमक। दीप्ति।

लाहक*–वि० [हिं० लाह = लाभ + क (प्रत्य०)] १. इच्छा करने या चाहने वाला। २. आदर या कदर करने वाला।

लाहु*–पुं० = लाभ।

लिंग–पुं० [सं०] १. चिह्न। लक्षण। निशान। २. न्याय में वह लक्षण या बात जिसे देखकर कोई बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है। साधक। हेतु। ३. सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति। ४. पुरुष की गुप्त इंद्रिय। शिश्न। ५. शिव की इस आकार की मूर्त्ति। ६. प्राणियों के शरीर में होनेवाले स्त्री या पुरुष के चिह्नों के आधार पर किया जानेवाला स्त्री-जाति और पुरुष-जाति का विभाग। ७. व्याकरण वह तत्त्व जिससे पुरुष और स्त्री के भेद पता लगता है। (जेन्डर, अन्तिम दोनों अर्थों के लिए) जैसे–पुंलिंग, स्त्रीलिंग।

लिंग-शरीर–पुं० दे० 'सूक्ष्म शरीर'।

लिंगी–वि० [सं० लिंगिन्] लिंग से यु लिंगवाला।

स्त्री० [सं० लिंग] हिं० 'लिंग' का अल्पा०। छोटा लिंग। (शिव की पिंडी या मूर्ति)

लिंगेंद्रिय–पुं० [सं०] पुरुषों की मूत्रेंद्रिय

लिंबा†–पुं० = नीबू। (फल)

लिए–अव्य० संप्रदान कारक का एक चि जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके लि किसी क्रिया का होना सूचित करत जैसे–उसके लिए, पानी लाओ।

लिक्खाड़–पुं० [हिं० लिखना] बहुत लेखक। (व्यंग्य)

लिक्षा–स्त्री० [सं०] १. जूँ नामक कीड़े अंडा। २. एक प्रकार का बहुत छो परिमाण या तौल।

लिखत–स्त्री० [हिं० लिखना] १. लेख रूप में लाये जाने की अवस्था या भा २. लेख के रूप में लिखी हुई कोई या निश्चय। ३. दस्तावेज। लेख। लि दे० 'करण' ३.।

लिखधार†–पुं० [हिं० लिखना] लि वाला। लिपिकार।

लिखना–स० [सं० लिखन] १. कलम और स्याही से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपि-बद्ध करना। २. चित्रित या अंकित करना। चित्र बनाना। ३. ग्रन्थ, लेख, काव्य आदि की रचना करना। ४. धातु आदि पर नक्काशी करने के लिए कलम (औजार या उपकरण से रेखाएँ बनाना)।

लिखनी*–स्त्री० दे० 'लेखनी'।

लिखहार*–पुं० [हिं० लिखना + हार=

१. लिखनेवाला। लेखक।
लिखहार कहावै।–सूर
या लेखा रखनेवाला।
लिखना] जिसे लिखना
पढ़ा-लिखा।
लेख। जैसे–भाग्य का लिखा।

[हिं० लिखना] १. लिखने
ढंग या पारिश्रमिक। २.
करने की क्रिया या भाव।
हिं० 'लिखना' का प्रे०।
[हिं० लिखना + पढ़ना]
पढ़ने का काम। २. पत्रों
उनके उत्तर जाना। पत्र-
किसी बात या व्यवहार का
और पक्का होना।
दे० 'लिखहार'।
[हिं० लिखना + आवट
१. लिखने की क्रिया, भाव
शैली।
[सं०] १. लिखा हुआ।
जो लेख या लेख्य के रूप में
मेन्टरी)
दे० 'लिक्षा' २.।
–पुं० [सं०] नेपाल, मगध
का शासक एक प्रसिद्ध प्राचीन

= लेटाना।
] [स्त्री० अल्पा० लिट्टी]
पकाई हुई बड़ी और

[सं० लिप्त] १. चारो ओर
या लगाना। २. गले
करना। ३. काम में
लगाना।
हिं० 'लिपटना' का स०।
'लीपना' का अ०।
[हिं० लीपना] लीपने की

क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिपाना–स० हिं० 'लीपना' का प्रे०।

लिपि–स्त्री० [सं०] १. अक्षरों या वर्णों के चिह्न। २. वर्ण-माला के अक्षर लिखने की कोई विशिष्ट प्रणाली। जैसे–ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि। (कैरेक्टर स्क्रिप्ट) ३. लिखी हुई बात। लेख।

लिपिक–पुं० [सं० लिपि] १. लिखनेवाला। २. कार्यालयों में लिखा-पढ़ी का काम करनेवाला। लेखक। (क्लर्क)

लिपिकार–वि० [सं०] प्रतिलिपि या लेख की नकल करनेवाला लेखक।

लिपि-बद्ध–वि० [सं०] लिपि के रूप में लाया हुआ। लिखा हुआ। लिखित।

लिप्त–वि० [सं०] १. लिपा या पुता हुआ। २. कार्य में लगा हुआ। लीन।

लिप्सा–स्त्री० [सं०] पाने की इच्छा।

लिफाफा–पुं० [अ०] १. कागज का वह चौकोर घर या पुट जिसके अन्दर चिट्ठियाँ आदि रखी जाती हैं। (एनवेलप) २. दिखावटी तड़क-भड़क। आडंबर।

लिबड़ना–अ०, स० [अनु०] कीचड़ आदि में लथ-पथ होना या करना।

लिबड़ी-बरताना–पुं० [अं० लिवरी = वर्दी + अं० बैटन = सिपाहियों का डंडा] साधारण या तुच्छ गृहस्थी अथवा निर्वाह का सब सामान। सारी सामग्री या असबाब। (तुच्छता सूचक)

लिबास– पुं० [अ०] पहनने के कपड़े। परिच्छद। पोशाक।

लियाकत–स्त्री० [अ०] लायक या योग्य होने का भाव। योग्यता।

लिलाट(र)*–पुं० दे० 'ललाट'।

लिव*–स्त्री० [हिं० लौ] लगन। उदा०–केवल राम रहहु लिव लाई।–कबीर

लिवाल–पुं० दे० 'लेवाल'।

लिवैया†–वि० [हिं० लेना] लेने, लाने या लिवा ले जानेवाला।

लिह*-पुं० दे० 'लेह'।

लिहाज-पुं० [अ०] १. व्यवहार या बरताव में किसी बात या व्यक्ति का आदरपूर्ण ध्यान। मुलाहजा। २. शील-संकोच। ३. सम्मान या मर्य्यादा का ध्यान। ४. लज्जा। शर्म। हया।

लिहाड़ा-वि० [हिं० लुँगाड़ा ?] [स्त्री० लिहाड़ी] १. खराब। बुरा। (पदार्थ) २. तुच्छ, नीच प्रकृति का और बेहूदा या वाहियात बातें बकनेवाला। वाहियात (मनुष्य)।

लिहाड़ी-स्त्री० [हिं० लिहाड़ा] दूसरों के सामने किसी पर किया जानेवाला ऐसा आक्षेप जिससे उसे नीचा देखना और लज्जित होना पड़े।

मुहा०-(किसी की) लिहाड़ी लेना = उक्त प्रकार की बातें करके किसी को तुच्छ ठहराना।

लिहाफ-पुं० [अ०] ओढ़ने का एक प्रकार का रूईदार कपड़ा। भारी रजाई।

लिहित*-वि० [सं० लिह] चाटता हुआ।

लीक-स्त्री० [सं० लिख] १. लकीर। रेखा।

मुहा०-*लीक खींचना = किसी विषय में दृढ़ निश्चय या प्रतिज्ञा करना। **लीक खींचकर**=दृढ़तापूर्वक। जोर देकर। २. व्यवहार, आचरण आदि का स्वतन्त्र और निश्चित मार्ग। बँधी हुई मर्यादा या क्रम। लोक-नियम।

मुहा०-लीक लगना = किसी के दिखलाये हुए मार्ग पर चलना। अनुकरण करना। **लीक खींचना** = मर्यादा या साख स्थापित करना। **(किसी की) लीक खँचना या खिंचना** = भली-भाँति किसी की कीर्त्ति फैलना या प्रसिद्धि होना। ३. प्रतिष्ठा। ४. प्रथा। चाल। ५. सीमा। हद। ६. कलंक। लांछन।

लीकति*-स्त्री० दे० 'लीक' २.। उदा०-श्रीरज मोचन लोचन लोल विलोक कै लोक की लीकति छूटी'।—केशव।

लीख-स्त्री० [सं० लिक्षा] १. जूँ का अं
२. लिक्षा नामक बहुत छोटा परिमाण।

लीखा*-स्त्री० दे० 'लिक्षा' २.।

लीग-स्त्री० [अं०] १. कुछ वि
दलों का किसी उद्देश्य से आप
मिलना। २. बहुत बड़ी सभा या सं
३. लंबाई की एक नाप जो स्थल के
तीन मील की और समुद्र के लिए साढ़े
मील की होती है।

लीगी-वि० [अं० लीग] लीग का।
पुं० लीग का सदस्य।

लीचड़-वि० [देश०] १. सुस्त। आल
२. निकम्मा। ३. जल्दी पीछा
छोड़नेवाला।

लीद-स्त्री० [देश०] घोड़े, गधे,
आदि पशुओं का मल।

लीन-वि० [सं०] [भाव० लीनता]
किसी में समाया हुआ। २. काम में
तरह से लगा हुआ। तन्मय। मग्न।

लीन्हें*-अव्य० [पुं० हिं० लीन्ह =
१. लिए। वास्ते। २. फेर या चक्कर
पड़कर। उदा०-कंचन मनि तजि
सैंतत, या माया के लीन्हें।—सूर

लीपना-स० [सं० लेपन] गीली
का पतला लेप चढ़ाना। पोतना।

मुहा०-लीप-पोतकर बराबर कर
पूरी तरह से चौपट या नष्ट करना।

लीपा-पोती-स्त्री० [हिं० लीपना
पोतना] १. जमीन, दीवार आदि लीपने
पोतने का काम। २. दोष, भूल
छिपाने के लिए ऊपर से की जानेवाली
दिखौआ कार्रवाई। ३. नाश। बरबादी

लीबर*-वि०[हिं० लिबड़ना] कीचड़
से भरा या सना हुआ। उदा०-आँखि
लीबर बेसवै नासै, बावै नासै दासी।-घाघ

लीर†-स्त्री० [सं० चीर] १. कपड़े
धज्जी। २. चिथड़ा।

लीलना-स० दे० 'निगलना'।

या लुढ़का हुआ हो। २. जो लूटा-खसोटा गया हो।

लुंड-वि० दे० 'रुंड'।

लुंड-मुंड-वि० [सं० रुंड+मुंड] १. जिसके सिर, हाथ, पैर आदि अंग कट गये हों। २. लुढ़कता हुआ।

लुंडा-वि० [सं० रुंड] [स्त्री० लुंडी] पक्षी जिसकी दुम और पर झड़ गये हों।

लुआठा-पुं० [सं० लोक=काष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लुआठी] जलती हुई लकड़ी।

लुआब-पुं० [अ०] लासा।

लुआर-स्त्री० दे० 'लू'।

लुकंजन*-पुं० दे० 'लोपांजन'।

लुक-पुं० [सं० लोक=चमकना] १. चमकीला रोगन। वार्निश। २. आग की लपट। लौ। ज्वाला। ३. दे० 'लुलावा' १. और २.।

लुकना-अ० दे० 'छिपना'।

लुकाट-पुं० [सं० लकुच] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल। लकुट।

*पुं० दे० 'लुआठा'।

लुकाना-अ० [हिं० लुकना] लुकना-छिपना। उदा०-तरु पल्लव महँ रहा लुकाई।-तुलसी।

स०-आड़ में करना। छिपाना।

लुकार*-स्त्री० दे० 'लुक'।

लुगड़ा-पुं० दे० 'लूगा'।

लुगदी-स्त्री० [देश०] छोटा गीला पिंड।

लुगाई-स्त्री० [हिं० लोग] स्त्री। औरत।

लुग्गा†-पुं० दे० 'लूगा'।

लुचकना*-स० = छीनना।

लुचुई†-स्त्री० दे० 'लुच्ची'।

लुच्चा-वि० [हिं० लुचकना] [स्त्री० लुच्ची] नीच और पाजी। बदमाश।

लुच्ची-स्त्री० [हिं० रुचि या लोच?] मैदे की बनी एक प्रकार की बहुत पतली और बड़ी पूरी।

स्त्री० हिं० लुच्चा का स्त्री० रूप।

लुटत*-स्त्री० = लूट ।

लुटना-अ० हिं० 'लूटना' का अ० ।
*अ० दे० 'लुठना' ।

लुटरना-अ० = लुढ़कना ।

लुटाना-स० [हिं० 'लूटना' का प्रे०] १. कोई चीज इस प्रकार लोगों के सामने रखना कि वे उसे लूटें । दूसरों को लूटने देना । २. बहुत सस्ते दाम पर बेचना । ३. व्यर्थ बहुत अधिक व्यय करना । अंधा-धुंध खरचना, बाँटना या दान करना ।

लुटिया-स्त्री० [हिं० लोटा] छोटा लोटा ।

लुटेरा-पुं० [हिं० लूटना] लूटनेवाला ।

लुठना*-अ० [सं० लुंठन] १. भूमि पर गिरकर लोटना । २. लुढ़कना ।

लुठाना*-स० हिं० 'लुठना' का स० ।

लुढ़कना-अ० [सं० लुंठन] नीचे-ऊपर चक्कर खाते हुए आगे या नीचे की ओर जाना । ढुलकना ।

लुढ़काना-स० हिं० 'लुढ़कना' का स० ।

लुढ़की-स्त्री० [हिं० लुढ़कना] गाढ़े दही में छानी हुई भाँग या भंग ।

लुढ़ना*-अ० दे० 'लुढ़कना' ।

लुतरा-वि० [देश०] [स्त्री० लुतरी] १. चुगलखोर । २. पाजी । दुष्ट ।

लुत्थ*-स्त्री० दे० 'लोथ' ।

लुनना-स० [सं० लवन] १. खेत से पकी फसल काटना । २. नष्ट करना ।

लुनाई*-स्त्री० १. दे० 'लावण्य' । २. दे० 'लवनी' ।

लुनेरा-पुं० [हिं० लुनना] खेत की फसल काटने या लुननेवाला ।

लुपना*-अ० = छिपना ।

लुप्त-वि० [सं०] १. छिपा हुआ । गुप्त । २. अदृश्य । गायब ।

लुप्तकार-पुं० [सं० लुप्त + अकार] संस्कृत वर्णमाला का एक चिह्न जो आधे 'अ' (स्वर) का सूचक होता और कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार समस्त पदों के बीच में लिखा जाता है । जैसे-कोऽपि में काऽ ।

लुप्तोपमा-स्त्री० [सं०] साहित्य में उ
अलंकार का एक भेद जिसमें, उ
उपमान, साधारण धर्म और उपमावा
शब्द इन चारो में से एक, दो या ती
अभाव या लोप हो ।

लुबुधना†-अ०, स० = लुभाना ।

लुबुधा*-वि० १. दे० 'लोभी' । २
'लुब्ध' ।

लुब्ध-वि० [सं०] पूरी तरह से लु
हुआ । मोहित ।

लुब्धक-वि० [सं०] १. लुब्ध क
लुभानेवाला । २. धोखा देने या ठगनेवा
पुं० १. चिड़ीमार । बहेलिया । २. ठग
उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत चमकीला

लुभाना-अ० [सं० लुब्ध] मोहित
रीझना ।
स० १. लुब्ध या मोहित करना ।
२. किसी के मन में कुछ पाने की
चाह उत्पन्न करना । ललचाना ।

लुभौहाँ-वि० [हिं० लुभाना +
(प्रत्य०)] १. लुभाने या मोहित
वाला । सुंदर । उदा०-सत्र मिलि
बार लुभौहैं हगनि रिझावैं ।-रता । २.
या मोहित होनेवाला ।

लुमरा†-वि० [स्त्री० लुमरी] दे०

लुरकना†-अ० = लटकना ।

लुरकी-स्त्री० दे० 'बाली' । (गह

लुरना*-अ० [सं० लुलन] १.
२. लटकना । ३. ढल या झुक पड़
जमीन पर इधर-उधर लोटना । ५.
आ पहुँचना ।

लुरी-स्त्री० दे० 'लवाई' ।

लुहना*-अ = लुभाना ।

लुहार-पुं० = लोहार ।

लूँ*-अव्य० = लौ ।

लूँबरी†-स्त्री० = लोमड़ी ।

लू-स्त्री० [सं० लुक या हिं० लौ]

लूली] १. जिसका हाथ कटा हो। लुंजा। टुंडा। २. असमर्थ। अशक्त।

लूसना†–स० [?] मटिया-मेट करना। चौका लगाना। उदा०–सब ग्रंथनि वे पढ़ैं, पढ़ैं जो सो सब लूसैं।–रत्ना०।

लूह–स्त्री० दे० 'लू'।

लूहरा†–पुं० = लुआठा (बुन्देल)।

लूलू–वि० [अनु०] मूर्ख। बेवकूफ।

लेंड़ी–स्त्री० [देश०] १. बँधे हुए मल की बत्ती। २. बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़(ा)–पुं० [देश०] पशुओं का झुंड या दल। गल्ला।

लेई–स्त्री० [सं० लेही] १. किसी चूर्ण का गाढ़ा लसीला रूप। अवलेह। २. लपसी। ३. गाढ़ा उबाला हुआ मैदा जो कागज आदि चिपकाने के काम में आता है। ४. वह गीला घोला हुआ बरी का चूना, सीमेन्ट या इसी प्रकार का और कोई मसाला जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है।

यौ०–लेई-पूँजी = सारी संपत्ति। सर्वस्व।

लेऊ–वि० दे० 'लेवाल'।

लेख–पुं० [सं०] १. लिखे हुए अक्षर। लिपि। २. लिखावट। लिखाई। ३. किसी विषय पर लिखकर प्रकट किये हुए विचार। मजमून। (राइटिंग, उक्त तीनों अर्थों के लिए) ४. कोई ऐसी लिखी हुई आज्ञा या आदेश जो विधान के अनुसार किसी बड़े अधिकारी ने प्रचलित किया हो। (रिट) *वि० लिखने योग्य। लेख्य। स्त्री० [हिं० लीक] पक्की बात।

लेखक–पुं० [सं०] [स्त्री० लेखिका] १. लिखनेवाला। लिपिकार। २. ग्रंथ० लिखनेवाला। ग्रंथकार। ३. दे० 'लिपिक'।

लेखन–पुं० [सं०] [वि० लेखनीय, लेख्य] १. लिखने की क्रिया या भाव। (विधिक व्यवहार में मुद्रण या छापा और छाया-चित्रण आदि भी इसी में आते हैं।) २. लिखने की कला या विद्या। ३. चित्र

बनाने का काम। ४. हिसाब लगाना। लेखा करना।

लेखन-सामग्री—स्त्री० [सं०] कागज, कलम, स्याही आदि लिखने की सामग्री। (स्टेशनरी)

लेखन-हार*—वि० =लिखनेवाला। उदा०—आपुहि कागर, आपु मसि, आपुहि लेखनहार।—कबीर।

लेखना*—स० [सं० लेखन] १. लिखना। २. कुछ समझना या गिनना। ३. समझना। सोचना। विचारना।

लेखनी—स्त्री० [सं०] कलम।

लेखा—पुं० [हिं० लिखना] १. गणना। हिसाब। २. आय व्यय अथवा घटना आदि का विवरण। (एकाउन्ट)

मुहा०—लेखा ड्योढ़ा या डेवढ़ करना = (क) हिसाब चुकता या बराबर करना। (ख) समाप्त करना। न रहने देना।

३. किसी कार्य, घटना आदि का हाल। विवरण। परिवृत्त। (स्टेटमेन्ट) ४. किसी के सम्बन्ध में मन में होनेवाली कल्पना या विचार।

मुहा०—किसी के लेखे = किसी के विचार के अनुसार। किसी की समझ से।

स्त्री० [सं०] १. हाथ की लिखावट। लेख। २. चित्र। ३. रेखा। ४. श्रेणी। पंक्ति। ५. रश्मि। किरण।

लेखा-कर्म—पुं० [सं०] आय-व्यय आदि का हिसाब लिखने या रखने का काम। (एकाउन्टेन्सी)

लेखाध्यक्ष—पुं० [सं० लेख + अध्यक्ष] वह जिसके जिम्मे रोकड़ रखने और खर्च करने अथवा आय-व्यय आदि का लेखा या हिसाब रखने का काम हो। (एकाउन्टेन्ट)

लेखा-परीक्षक—पुं० [सं० लेखा + परीक्षक] वह जो किसी के आय-व्यय के लेखे की जाँच-पड़ताल करता हो। (ऑडिटर)

लेखा-परीक्षा—स्त्री० [हिं० लेखा + परीक्षा] अच्छी तरह जाँचकर यह देखना कि आय-व्यय का जो लेखा तैयार किया गया है वह ठीक है या नहीं। (ऑडिटिंग)

लेखा-बही—स्त्री० [हिं०] वह बही जिस आय-व्यय आदि का हिसाब लिखा है। (एकाउन्ट-बुक)

लेखिका—स्त्री० [सं०] १. लिखनेवा २. ग्रन्थ या पुस्तक रचने या बनानेवा

लेखी—स्त्री० [हिं० लेख] खाते में लि जानेवाली रकम। पद। (एन्ट्री)

लेख्य—वि० [सं०] १. लिखा जाने २. जो लिखा जाने को हो।

पुं० १. लिखी हुई वस्तु, पत्र या बात आ लेखा। २. वह लेख जो विधिक क्षे साध्य के रूप में काम आवे या आ दस्तावेज। (डॉक्यूमेन्ट)

लेजा—स्त्री० दे० 'लेजुर' (रस्सी)।

लेजम—स्त्री० [फा०] १. वह क जिससे धनुष चलाने का अभ्यास है। २. कसरत करने की वह भारी क जिसमें लोहे की जंजीरें लगी रहती हैं

लेजिम—स्त्री० दे० 'लेजम'।

लेजुर(ी)—स्त्री० [सं० रज्जु] पानी खींचने की रस्सी।

लेट—पुं० [देश०] चूने-सुरखी की वह जो गच या छत पर डाली जाती है।

लेटना—अ० [सं० लुंठन] १. फ़र्श से पीठ लगाकर सारा शरीर उस पर राना। २. बगल की ओर झुककर पर गिर जाना।

लेटाना—स० हिं० 'लेटना' का प्रे०।

लेदी—स्त्री० [देश०] जलाशयों के रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया।

लेन—पुं० [हिं० लेना] १. लेने की या भाव। २. वह धन जो किसी से जाने को हो। लहना। पावना। 'दे विरुद्धार्थक।

लेनदार—पुं० [हिं० लेन + फ़ा०

कुछ धन या पावना
लेनेवाला। लहनेदार।
हिं॰ लेना + देना] १.
हार। आदान-प्रदान।
या रुपये उधार देने
हार।
[हिं॰ लेना] लेनेवाला।
लहना] १. किसी के
या अधिकार में करना।
ना।
हाथों लेना = गूढ़ व्यंग्य
सुनाकर लज्जित करना।
ना = जहाँ कुछ आय या
हो वहाँ उलटे हानि होने
ना या बीतना = (क)
चौपट करना। (ख) पूरा
करना।
एक न देना दो = कोई
नहीं है।
१. मोल लेना। खरीदना।
अभ्यर्थना करना। ५. भार
अपने लेना। ६. सेवन करना।
। ७. कुछ कहकर अपने
आरोप करना। जैसे-प्रतिज्ञा
प्रतिज्ञा पूरी करने का भार
सुख हैं पन लीन्हों।—सूर।
[हिं॰ लेना + हार
लेनेवाला।
।
] १. लीपने, पोतने या
। २. ऐसी चीज की वह
पर चढ़ाई जाय।
सं॰ लेपन] गाढ़ी गीली
। लेप लगाना।
'लेवक'।
सं॰] सर्प। साँप।
चखने या चाटनेवाला।
।

लेवा–पुं॰ [सं॰ लेप्य] १. मिट्टी का वह लेप जो बर्त्तन को आग पर चढ़ाने से पहले उसकी पेंदी में लगाते हैं। २. लेप।

वि॰ [हिं॰ लेना] लेनेवाला। जैसे—नामलेवा।

लेवाल–पुं॰ [हिं॰ लेना] लेने या खरीदनेवाला।

लेश–पुं॰ [सं॰] १. अणु। २. बहुत ही थोड़ा अंश। ३. चिह्न। निशान। ४. संसर्ग। सम्बन्ध। ५. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी गुण के कारण भी कोई दोष या खराबी होने का, अथवा किसी दोष के कारण भी कोई अच्छी बात या भलाई होने का उल्लेख होता है।

लेस–स्त्री॰ [हिं॰ लेसना] १. लेसने की क्रिया या भाव। २. लासा।

*वि॰ = लेश (बहुत थोड़ा)।

लेसना–स॰ [सं॰ लेश्य] प्रज्वलित करना। जलाना। जैसे—दीया लेसना।

स॰ [सं॰ लस] १. लेप लगाना। पोतना। २. चिपकाना। सटाना।

लेह–पुं॰ [सं॰] [वि॰ लेह्य] चाटकर खाई जानेवाली चीज। चटनी।

लेहड़ा–पुं॰ दे॰ 'रहड़'।

लेहन–पुं॰ [सं॰ लेटक] चखने या चाटने की क्रिया या भाव।

लेह्य–वि॰ [सं॰] जो चाटा जाता हो। चाटने के योग्य। जैसे—चटनी आदि।

लैंगिक–वि॰ [सं॰] १. लिंग-सम्बन्धी। लिंग का। २. स्त्री या पुरुष के लिंग या जननेन्द्रिय से संबंध रखनेवाला। योनि-संबंधी। (सेक्सुअल)

लै*–अव्य [हिं॰ लगना] तक। पर्य्यंत।

लैटिन–स्त्री॰ [प्राचीन रोम नगर-संबंधी] दो-ढाई हजार वर्ष पूर्व की रोम नगर और इटली देश की भाषा।

वि॰ प्राचीन रोम नगर क निवासियों, भाषा आदि से संबंध रखनेवाला।

लैर†-क्रि० वि० [?] १. संग। साथ। २. पीछे।

पुं० १. संगति। साथ। २. पिछला भाग।

लैरू-पुं० [?] १. बछड़ा। २. बच्चा।

लैस-वि० [अं० लेस] १. हथियारों आदि से सजा हुआ। २. सब तरह से तैयार।

पुं० कपड़े पर लगाने का सुनहला फीता।

पुं० [देश०] एक प्रकार का तीर।

लोंदा-पुं० [सं० लुंठन] [स्त्री० अल्पा० लोंदी] १. गीले पदार्थ का डले की तरह बँधा हुआ पिंड। २. गलाई हुई धातु की वह अवस्था या आकृति जो उसे गलने के बाद ठण्डा होने के लिए छोड़ने पर प्राप्त होती है।

लोइ*-पुं० [सं० लोक] लोग।

स्त्री० [सं० रोचि] १. प्रभा। दीप्ति। २. लौ।

लोइन*-पुं० [सं० लोचन] आँख। नेत्र।

पुं० [सं० लावण्य] मधुर सौन्दर्य। नमक। लावण्य।

स्त्री० [सं० लावक] लवा नामक पक्षी।

लोई-स्त्री० [सं० लोप्ती] गुँधे हुए आटे का पेड़ा जिसे बेलकर रोटी बनाई जाती है।

स्त्री० [सं० लोमीय] एक प्रकार की ऊनी चादर।

*पुं० [सं० लोक] जनसमुदाय। लोग।

उदा०—माया-मोह बँधे सब लोई।—कबीर।

लोकंजन*-पुं० दे० 'लोपांजन'।

लोकंदा-पुं० [?] [स्त्री० लोकंदी] वह दास जो विवाह हो चुकने पर बधू के डोले के साथ उसकी ससुराल को भेजा जाता है।

लोक-पुं० [सं०] १. ऐसा स्थान जिसका बोध प्राणी को हो अथवा जिसकी उसने कल्पना की हो। जैसे-इह-लोक, पर-लोक। २. पृथ्वी के ऊपर-नीचे के कुछ विशिष्ट कल्पित स्थान। भुवन। विशेष दे० 'भुवन'। ३. संसार। जगत। ४. लोग। जन। ५. सारा समाज। जनता। (पब्लिक)। वि० सब लोगों से संबंध रखनेवाला। (के आरम्भ में, जैसे—लोक स्वास्थ्य)

लोक-कंटक-पुं० [सं०] ऐसी बात जन-साधारण को कष्ट पहुँचे। जैसे— पर धूआँ करना या कूड़े का ढेर (पब्लिक नुइसेन्स)

लोक-गाथा-स्त्री० [सं०] जन- विशेषतः ग्राम्य लोगों में प्रचलित या कहानियाँ।

लोक-गीत-पुं० [सं०] गाँव या गाये जानेवाले जन-साधारण के वे परम्परागत रूप से किसी जन प्रचलित रहते हैं। (पब्लिकसाँग)

लोक-जीवन-पुं० [सं०] किसी निजी या घरेलू जीवन से भिन्न या चर्चा जिसमें वह सार्वजनिक में रहकर या योंही लोकोपकारक हो। सार्वजनिक जीवन। (पब्लिक

लोकटी*-स्त्री० = लोमड़ी।

लोक-तंत्र-पुं० [सं०] [वि० १. वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रभु लोक या जनता अथवा उसके प्रतिनिधियों या अधिकारियों के होती है और जिसकी नीति आदि करने का सब लोगों को समान अधिकार होता है। २. यह सार्वजनिक कार्य सब लोगों अथवा प्रतिनिधियों की सम्मति से होने जनवाद। (डेमोक्रेसी)

लोक-तंत्रिक-वि० [सं० लोकतंत्र] लोक-तंत्र का। तंत्र-संबंधी। (डिमोक्रेटिक)

लोक-तंत्री-पुं० [सं० लोक-तांत्रिक] जो लोक-तंत्र का सिद्धान्त मानता जनवादी। (डिमोक्रैट)

वि० दे० 'लोक-तंत्रिक'।

लोक-तांत्रिक-वि० दे० 'लोक-तंत्रिक'।

लोक-धुनि*-स्त्री० दे० 'जन-श्रुति'।

लोपन] १. ऊपर से
में रोकना। २.बीच
ले लेना।
] दे० 'लोकंदा'।
[सं०] गावों-देहातों में
। (फोक डान्स)
[सं०] १. ब्रह्मा। २.
।
[सं०] लोक या जनता
रखनेवाला पद।
)
[सं०] [भ.व० लोक-
सब लोग प्रेम करते
या बहुत से लोगों को
भला जान पड़ता हो।

स्त्री० [सं०] लोक-प्रिय
भाव। (पॉपुलैरिटी)
स्त्री० [सं०] लोक या
सेवा, उपकार आदि करने
या विचार। (पब्लिक

[सं०] किसी विषय में
की राय। समाज के बहुत
मत जो किसी एक वर्ग
हो नहीं बल्कि समष्टि के
का सूचक हो। जन-मत
नियन)
स्त्री० [हिं० लोक + लीक]
।
स्त्री० [सं०] इतिहास, पुरा-
अध्ययन का वह अंग जिसमें
, धारणाओं, विश्वासों,
से सम्बन्ध रखनेवाली
जन-साधारण में प्रचलित
या विवेचन होता है।
[सं०] राज्य आदि का

वह विभाग जो लोक के कल्याण या उपयोग के लिए सड़कें, कुएँ, नहरें आदि बनाता है। (पब्लिक वर्क्स)

लोक-शांति–स्त्री० [सं०] लोक या जन-साधारण अथवा समाज में बनी रहनेवाली ऐसी शांति, जिसमें किसी प्रकार का उपद्रव उत्पात या लड़ाई-झगड़ा न हो। (पब्लिक पीस)

लोक-संग्रह–पुं० [सं०] [वि० लोक-संग्रही] १. संसार के लोगों को प्रसन्न रखना। २. सबकी भलाई। लोकोपकार। ३. लोगों को अपनी ओर मिलाना या अपने पक्ष में करना।

लोक-सत्ता–स्त्री० [सं०] [वि० लोक-सत्ताक] वह शासन-प्रणाली जिसमें सब अधिकार लोक या जनता के हाथ में हो।

लोक-सत्ताक-वि० [सं०] लोक-सत्ता से सम्बन्ध रखनेवाला।

लोक-सदन–पुं० दे० 'लोक-सभा'।

लोक-सभा–स्त्री० [सं०] १. प्रतिनिधि-सत्तात्मक राज्यों में साधारण जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो विधान आदि बनाती है। २. भारतीय संविधान में उक्त प्रकार की सभा। (हाउस ऑफ पीपुल) ३. इंगलैंड की उक्त प्रकार की सभा। (हाउस ऑफ कामन्स)

लोक सेवक–पुं० [सं०] १. वह जो जनता के हित के काम या सेवा करता हो। २. वह जो राज्य की ओर से लोक या जनता की सेवा के लिए नियत हो। (पब्लिक सर्वेन्ट)

लोक-सेवा–स्त्री० [सं०] १. जन-साधारण के हित या उपकार के लिए सेवा-भाव से किये जानेवाले कार्य। २. राज्य की सेवा या नौकरी, जो वस्तुतः जन-साधारण के लिए होती है। (पब्लिक सरविस)

लोक-सेवा आयोग–पुं० [सं०] राज्य द्वारा नियुक्त कुछ व्यक्तियों का वह आयोग

या समिति जिसके जिम्मे लोक-सेवा-सम्बन्धी पदों पर नियुक्त करने के लिए प्रार्थियों में से उपयुक्त व्यक्ति चुनने का काम होता है। (पब्लिक सर्विसेज कमीशन)

लोक-स्वास्थ्य–पुं० [सं] सामूहिक रूप से सब लोगों के स्वस्थ और निरोग रहने की अवस्था या व्यवस्था। (पब्लिक हेल्थ)

लोकाचार–पुं० [सं०] जनता में प्रचलित व्यवहार। लोक-व्यवहार।

लोकाना†–सं० हिं० 'लोकना' का प्रे०।

लोकापवाद–पुं० [सं०] लोगों में होने वाली बदनामी। लोक-निन्दा।

लोकायत–पुं० [सं०] १. चारवाक का चलाया हुआ एक प्राचीन दर्शन जिसमें आत्मा, ईश्वर, परलोक आदि का अस्तित्व नहीं माना जाता था और सब बातों के निर्णय का आधार विशुद्ध बुद्धिवाद माना जाता था। २. उक्त दर्शन या मत का अनुयायी। लोकायत्तिक।

लोकापतिक–पुं० = 'लौकापतिक'।

लोकालोक–पुं० [सं० लोक + अलोक] ब्रह्मांड में फैले हुए अनन्त लोक।

लोकेश(श्वर)–पुं० [सं०] सब लोगों का स्वामी, ईश्वर।

लोकोक्ति–स्त्री० [सं०] १. लोक में प्रचलित कोई ऐसा चमत्कारपूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात सुंदर ढंग से और संक्षेप में कही गई हो। कहावत। मसल। (प्रावर्ब, मैक्सिम) २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें कहावत के द्वारा कुछ चमत्कार लाया जाता है।

लोकोत्तर–वि० [सं०] [भाव० लोकोत्तरता] ऐसा अद्भुत, जैसा इस संसार में न होता हो। अलौकिक।

लोग–पुं०, बहु० [सं० लोक] आस पास के सब आदमी। जन-समूह।

लोच–स्त्री० [हिं० लचक] १. लचक। २. कोमलतापूर्ण सौन्दर्य।

स्त्री० [सं० रुचि] अभिलाषा।

लोचन–पुं० [सं] आँख। नयन।

लोचना†–स० [हिं० लोचन] १. प्रका-शित करना। चमकाना। २. किसी चा की रुचि उत्पन्न करना। ३. इच्छा कामना करना। चाहना। ४.विचार करना सोचना।

अ० १. शोभा देना। २. इच्छा या का करना। ३. ललचना। तरसना। उदा० लोचन उतावरे हैं लोचैं हाय कैसे हो घनानंद।

पुं० [हिं० लोचन] दर्पण। शीशा।

लोट–स्त्री० [हिं० लोटना] १. लोटने की क्रिया या भाव। २. स्त्रियों के पेट पड़नेवाले तीन बल। (सुन्दरता के सू त्रिबली। उदा०–कीजै कहा विधि की कौं दियो दारुन लोट पटा करिबे को पद्माकर।

†पुं० दे० 'नोट' (धन-पत्र)।

लोटन–वि० [हिं० लोटना] १. लो वाला। २. इधर-उधर लुढ़कनेवाला

स्त्री० १. लोटने की क्रिया या भाव छोटी कंकड़ियाँ जो हवा चलने पर उधर लुढ़कती रहती हैं। ३. कँटीली

पुं० १. एक प्रकार का कबूतर जो पर लुढ़का देने से लोटने लग २. साँप।

लोटक-पोटक–वि० दे० 'लोट-पोट'

लोटना-अ० [सं० लुंठन] १. चित पट होते हुए इधर-उधर करना।

मुहा०–लोट जाना = (क) बेसुध पड़ या लेट जाना। (ख) मर जाना। २. लुढ़कना। ३. कष्ट से करवटें बदलना तड़पना। ४. लेटना। ५. मुग्ध होना

लोट-पोट–स्त्री० [हिं० लोटना] लेटे आराम करने की क्रिया या भाव।

वि० १. हँसी या प्रसन्नता के कारण जानेवाला। २. बहुत अधिक प्रसन्न।

। विपर्यस्त । ४. छिन्न-
।
लोटना] [स्त्री० अल्पा०
रखने का धातु का एक
।
[सं० लोड़ = अवाकश्यता]
। जरूरत होना ।
[सं० लुचन] १. फूल
। २. ओटना ।
[सं० लोष्ठ] [स्त्री० अल्पा०
के साथ का पत्थर का
चीजें पीसते हैं । बट्टा ।
[सं० लोत्र (शरीर), प्रा० लोत्त]
लाश । शव ।
की) लोथ गिरना =
में किसी का) मारा जाना ।
[हिं० लोथ] मांस का कटा
। मांस-पिंड ।
(नमक) ।
।
-वि० दे० 'नमक-हरामी' ।
[स्त्री० लोनी] [भाव०
'सलोना' ।
।
] एक कल्पित चमारी जो
दक्ष मानी गई है ।
लवण] फसल काटना ।

दे० 'लावण्य' ।
= नोनिया (जाति) ।
(वनस्पति) ।
] सुन्दर । उदा०—
फूलत मुकता भरननि
—आनन्दघन ।
= अमलोनी (वनस्पति) ।
] [भाव० लोपन, वि०
। नाश । क्षय । २. गायब
। ३. व्याकरण में वह

नियम जिसके अनुसार शब्द-साधन में कोई वर्ण निकाल या छोड़ देते हैं ।

लोपना*–स० [सं० लोपन] १. लुप्त या गायब करना । २. छिपाना । ३. न रहने देना । नष्ट करना । मिटाना । ४. अवज्ञा या उपेक्षा करना । न मानना । उदा०—भले-बुरे गुरुजन बचन लोपत कबहूँ न धीर । —वृन्द ।

अ० १. लुप्त होना । २. नष्ट होना ।

लोपांजन–पुं० [सं०] एक कल्पित अंजन । यह कहा जाता है कि इसे लगाने से आदमी दूसरों को दिखाई नहीं देता ।

लोबान–पुं० [अ०] एक प्रकार का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में आता है ।

लोभ–पुं० [सं०] [वि० लुब्ध, लोभी] दूसरे के पास की कोई वस्तु प्राप्त करने की कामना । लालच । लिप्सा ।

लोभना†–स० [हिं० लोभ] मोहित करना ।
अ० मोहित होना ।

लोभनीय–वि० [सं० लोभ] १. जिसपर लोभ हो सके । २. सुन्दर । मनोहर ।

लोभार*–वि० [हिं० लोभ] लुभानेवाला ।

लोभी-वि० [सं० लोभिन्] जिसे बहुत लोभ हो । लालची ।

लोम–पुं० [सं०] १. रोआँ । २. बाल ।
पुं० [सं० लोमश] लोमड़ी ।

लोमड़ी–स्त्री० [सं० लोमश] गीदड़ की तरह का एक प्रसिद्ध जंगली छोटा पशु ।

लोमबड़*–स्त्री० = लोमड़ी ।

लोम-हर्षण–वि० [सं०] (ऐसा भीषण) जिसे देखकर रोएँ खड़े हो जायँ । भयानक ।

लोय*–पुं० [सं० लोक] लोग ।
स्त्री० [हिं० लौ] आग की लपट । लौ ।
पुं० [सं० लोचन] आँख । नयन ।
अव्य० दे० 'लो' ।

लोयन*–पुं० [सं० लोचन] आँख । नेत्र ।
पुं० [?] चिड़िया फँसाने का लासा ।

लोर-वि० [सं० लोल] १. चंचल। लोल। २. उत्सुक।

पुं० १. कान का कुंडल। २. लटकन। ३. आँसू। उदा०-झपसि पैसल हो लछ्मन तैना पोछे लोरवा।-गीत।

लोरना*-अ० [सं० लोल] १. चंचल होना। २. लपकना। ३. लिपटना। ४. झुकना। ५. लोटना।

लोरा†-पुं० [?] आँसू। अश्रु।

लोरी-स्त्री० [सं० लाल] वह गीत जो स्त्रियाँ छोटे बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं। (ललत्री)

लोल-वि० [सं०] १. हिलता हुआ। २. बदलता हुआ। ३. उत्सुक।

पुं० पानी की बहुत बड़ी और ऊँची लहर। विशेषतः समुद्र की।

लोलक-पुं० [सं०] नथों, बालियों आदि में का लटकन। कान की लौ।

लोलन-पुं० [सं०] हिलने या हिलाने-डुलाने की क्रिया या भाव।

लोलना*-अ० = हिलना।

लोलुप-वि० [सं०] १. लोभी। लालची। २. परम उत्सुक।

लोवा*-स्त्री० = लोमड़ी।

पुं० = लवा (पक्षी)।

लोष्ठ-पुं० [सं०] १. पत्थर। २. ढेला।

लोहँड़ा-पुं० [हिं० लोहा + भाँड़ा] [स्त्री० अल्पा० लोहँड़ी] लोहे का बना हुआ एक प्रकार का तसला।

लोह-पुं० [सं०] लोहा। (धातु)

लोह-चूर्न-पुं० [हिं० लोहा + चूर] लोहे का चूरा या बुरादा।

लोहबान-पुं० दे० 'लोबान'।

*पुं० [हिं० लोहा] युद्ध। समर।

लोहसार-पुं० [हिं० लोहा + सार] पक्का लोहा। फौलाद।

लोहाँगी-स्त्री० [हिं० लोहा] वह डण्डा जिसके सिरे पर आघात करने के लिए मुठिया के आकार का मोटा लोहा रहता है। परिघ।

लोहा-पुं० [सं० लोह] १. काले रंग एक प्रसिद्ध धातु जिससे बरतन, यंत्र आदि बनते हैं।

कहा०-लोहे के चने = अत्यंत काम।

२. अस्त्र। ३. हथियार।

मुहा०-लोहा गहना = युद्ध के हथियार उठाना। लोहा बजना = होना। (किसी का) लोहा मानना किसी विषय में किसी का प्रभुत्व या कार मानना। लोहा लेना = (क) करना। (ख) किसी प्रकार की लड़ना।

लोहार-पुं० [सं० लोहकार] [स्त्री० रिन, लोहाइन, भाव० लोहारी] चीजें बनानेवाली एक प्रसिद्ध (आयरनस्मिथ)

लोहित-वि० [सं०] लाल (रंग)। पुं० [सं० लोहितक] मंगल ग्रह।

लोही-स्त्री० [सं० लोहित] उषा [illegible] के समय की लाली।

लाहू-पुं० दे० 'लहू'।

लौं*-अव्य० [हिं० लग] १. पर्य्यंत। २. समान। तुल्य। बराबर।

लौंग-पुं० [सं० लवंग] १. एक कली जो सुखाकर मसाले और दवा के लाई जाती है। २. इस आकार या कान में पहनने का एक गहना।

लौंग-चूरी-पुं० [हिं० लौंग + चूरी] प्रकार का धान और उसका चावल।

लौंडा-पुं० [?] बालक। लड़का।

लौंडी-स्त्री० [हिं० लौंडा] दासी।

लौंद-पुं० दे० 'मल-मास'।

लौ-स्त्री० [हिं० लपट] १. आग ज्वाला। २. दीपक की शिखा। टेम।

स्त्री० [हिं० लाग] मन की सच्ची लगन

चित की वृत्ति।
=किसी के ध्यान अथवा
हुआ। तन्मय।
[हिं० लो] १. दिखाई
रना।
[सं०] वह जो चार्वाक
का अनुयायी हो।
संबंधी। लोकयातकी।
[सं०] १. इस लोक या
रखनेवाला। पारमार्थिक,
आदि से भिन्न। सांसारिक।
लर) २. व्यवहारिक।
ह-पुं० [सं०] वह विवाह
वधू में होता है जो किसी
का बन्धन नहीं मानते
द्वारा निश्चित नियमों के
बन्धन में बंधते हैं। (सिविल

दे० 'कद्दू'।
[हिं० लौ + जोड़ना]
जोड़ने या बनानेवाला।
[हिं० उलटना] [भाव० लौट]
कर वहाँ से आना। वापस
। २.पीछे की ओर घूमना।
। उलटना।
दे० 'उलट-फेर'।
[हिं० लौटना] १. हिं०
। २. नियत या उचित
लिया हुआ धन देनेवाले को

वर्ण-माला का उन्नीसवाँ
अंतस्थ अर्द्धव्यंजन माना
के रूप में यह 'और' का

] [भाव० वंकता] टेढ़ा।
] टेढ़ा। वक्र।

वापस करना। (रिफंड) ३. दे० 'उलटना'।

लौन*-पुं० = नमक।

लौना*-वि० दे० 'सलोना'।

स० दे० 'लुनना'।

लौनी†-स्त्री० दे० 'लवनी'।

स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन। नैनूँ।

लौरी-स्त्री० [?] बछिया (गौ की)।

लौह-पुं० [सं०] लोहा।

वि० १. लोहे का बना हुआ। जैसे–लौह-विमान। २. लोहे से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे–लौह युग।

लौह पट-पुं० [सं०] १. लोहे का बना हुआ परदा या आवरण। २. ऐसी व्यवस्था या रुकावट जिसकी आड़ में होनेवाली बातें या कार्य दूसरों पर किसी प्रकार प्रकट न हो सकें। ऐसा आवरण जो अन्दर का कुछ भी देखने या जानने न दे। (आयरन कर्टेन)

लौह-युग-पुं० [सं०] संस्कृति के इतिहास में वह युग जब अस्त्र-शस्त्र, औजार आदि लोहे के ही बनते थे। (आयरन एज)

लौहित्य-पुं० [सं०] लाल सागर।

वि० १. लोहे का। २. लाल रंग का।

ल्याना(वना)-स० = लाना।

ल्वारि*-स्त्री० दे० 'लू'।

ल्हेसना*-अ०, स० दे० 'लसना'।

ल्हेसित*-वि० [सं० लसन] सजने या शोभा देनेवाला। सुशोभित। उदा०–लखति लाल की ओर लाज लेहसित नैननि सौं।—रत्ना०।

व

वंग-पुं० [सं०] [वि० वंगीय] १. बंगाल प्रदेश। २. राँगा (धातु)। ३. राँगे का भस्म। (वैद्यक)

वंगीय-वि० [सं०] वंग देश से सम्बन्ध रखनेवाला। बंगाल का। जैसे–वंगीय साहित्य परिषद्।

वंचक-वि० [सं०] [भाव० वंचकता] १. धूर्त्त। २. ठग।

वंचकता-स्त्री० [वंचक का भाव०] ठगपना। ठगी।

वंचन-पुं० [सं०] १. धोखा। छल। २. धोखा देना। ठगना। ३. किसी की प्राप्य या भोग्य वस्तु उसे प्राप्त करने या भोगने से रहित करना। (प्राइवेशन, डिप्राइवेशन)

वंचना-स्त्री० [सं०] [वि० वंचित] धोखा। छल।

*स० [सं० वंचन] १. ठगना। २. धोखा देना।

†स० [सं० वाचन] पढ़ना। (लेख आदि)

वंचित-वि० [सं०] १. जो ठगा गया हो। २. अलग किया हुआ। ३. जिसे कोई वस्तु प्राप्त न हुई हो या न करने दी गई हो। जैसे—सुख से वंचित। (डिप्राइव्ड) ४. हीन। रहित।

वंजुल-पुं० [सं०] १. बेंत। २. अशोक का पेड़। ३. एक प्रकार का पक्षी।

वंदन-पुं० [सं०] १. स्तुति। २. प्रणाम। ३. शरीर पर बनाए हुए तिलक आदि चिह्न। ४. सिन्दूर। उदा०—बूका, वंदन, अगर, कुमकुमा भरै गुलालन झोरी है।—आनंदघन।

वंदनमाला-स्त्री० दे० 'वंदनवार'।

वंदना-स्त्री० [सं०] [वि० वंदित, वंदनीय वंद्य] १. स्तुति। २. प्रणाम। अभिवादन।

*स० वन्दना या स्तुति करना।

वंदनीय-वि० [सं०] जिसकी वंदना करना उचित हो। वंदना करने योग्य।

वंदारु-वि० [सं०] वंदनीय।

वंदित-वि० [सं०] [स्त्री० वंदिता] १. जिसकी वंदना की जाय। २. पूज्य।

वंदी-पुं० [सं० वंदिन्] १. वह जो पकड़कर कैद किया गया हो। कैदी। २. वह जिसे दंड स्वरूप कारागार में रखा गया हो। कैदी। (प्रिजनर)

वंदी-गृह-पुं० [सं०] कारागार। कैदखाना। जेलखाना। (प्रिजन)

वंदीजन-पुं० [सं०] राजाओं की की का वर्णन करनेवाली एक जाति। चारण।

वंद्य-वि० [सं०] [भाव० वंद्यता] वंदनी

वंश-पुं० [सं०] १. बाँस। २. पीठ हड्डी। रीढ़। ३. नाक की हड्डी। बाँस ४. बाँसुरी। ५. परिवार। खानदान।

वंशज-पुं० [सं०] किसी के वंश में उत्प संतान। औलाद। (डिसेन्डेन्ट)

वंशधर-पुं० दे० 'वंशज'।

वंश-परंपरा-स्त्री० [सं०] किसी व की बराबर चलती रहनेवाली परं या क्रम।

वंश-वृत्त-पुं० [सं०] वह लेख जो वंश के मूल पुरुष से लेकर उसके विकास और उस वंश में होनेवाले लोगों के स्थान आदि सूचित करता (प्रायः वृक्ष और उसकी शाखाओं रूप में अंकित होता है)

वंशानुक्रम-पुं० [सं०] [वि० वंशा क्रमिक] किसी वंश में बराबर च रहनेवाला क्रम या परंपरा।

वंशानुक्रमण-पुं० [सं०] किसी वंश में निरंतर चलते रहना। वंश-परम्प

वंशानुक्रमिक-वि० [सं०] वंश में अनुक्रम के अनुसार बराबर चलते र वाला। पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता या च रहनेवाला। आनुवंशिक। पुरुषानुक्रमि मौरूसी। (हेरीडेटरी)

वंशावली-स्त्री० [सं०] किसी वं लोगों की काल-क्रम से बनी हुई सूची (जीनिएलॉजी)

वंशी-स्त्री० [सं०] मुँह से बजाया जाने एक प्रसिद्ध बाजा। बाँसुरी। मुरली।

वंशीधर-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

वक-पुं० [सं०] बगला। (पक्षी)

वकालत-स्त्री० [अ०] १. दूत का

पुष्ट करने के लिए उसके
करना। ३. वकील का
।
-पुं० [अ० वकालत + फा०
अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई
अपनी ओर से न्यायालय में
के लिए नियत करता है।
[सं०] पूतना राक्षसी का

[अ०] १. दूत। २. राजदूत।
प्रतिनिधि। ४. दूसरे के पक्ष
करनेवाला। ५. वह जिसने
परीक्षा पास की हो और जो
किसी की ओर से बहस करे।
[अ०] १. समय। काल। २.
। ३. अवकाश। फुरसत।
[सं०] किसी विषय में
बात; विशेषतः ऐसी बात
को स्पष्ट करने को हो।
)
के योग्य।
-स्त्री० [सं०] किसी बात के
या उत्तर देने का भार।
। (ऐसनरेबिलिटी)
[सं० वक्तृ] १. बोलनेवाला।
कहनेवाला।
कहनेवाला, व्यास।
[सं०] १. वाक-पटुता।
देने की योग्यता या शक्ति।
। भाषण।
[सं०] वक्तृता देने की
शक्ति। वाग्मिता।
-स्त्री० [सं०] कोई बात
तरह समझाकर और प्रभाव-
कहने या बहुत अच्छे ढंग से
या वक्तृता देने की कला या
यूशन)
[अ०] १. धर्मार्थ दान की

हुई सम्पत्ति। २. किसी के लिए कोई चीज छोड़ देना।

वक्र-वि० [सं०] [भाव० वक्रता] १. टेढ़ा। तिरछा। २. झुका हुआ। ३. कुटिल।

वक्र-दृष्टि-स्त्री० [सं०] टेढ़ी दृष्टि। (प्रायः रोष या क्रोध की सूचक)

वक्रोक्ति-स्त्री० [सं० वक्र+उक्ति] १. परिहास, व्यंग्य आदि के लिए कही हुई ऐसी बात जिसमें श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ हो। २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी सुनी हुई बात का कुछ दूसरा ही अर्थ लगाया जाता है। जिसमें शब्दों को तोड़-मरोड़कर अथवा वर्णों को इधर-उधर लगाकर दूसरा अर्थ लगाया जाय उसे 'शब्द-वक्रोक्ति' और जिसमें ऐसा न करके केवल श्लेष के द्वारा दूसरा अर्थ लगाया जाय, उसे 'अर्थ वक्रोक्ति' या 'श्लेष-वक्रोक्ति' कहते हैं।

वक्षःस्थल-पुं० [सं०] छाती।

वक्ष-पुं० [सं० वक्षस्] छाती।

वक्षोज,वक्षोरुह-पुं० [सं०] स्तन। कुच।

वगैरह-अव्य० [सं०] इत्यादि। आदि।

वचन-पुं० [सं०] १. मनुष्य के मुँह से निकलेवाले सार्थक शब्द। वाणी। २. कथन। उक्ति। ३. किसी से दृढ़ता या प्रतिज्ञापूर्वक यह कहना कि हम अमुक काम अवश्य करेंगे अथवा कभी न करेंगे। वादा। (प्रॉमिस, अंडरटेकिंग) ४. व्याकरण में वह विधान जिसके द्वारा शब्द के रूप से एक या अनेक का बोध होता है। (नम्बर) (हिन्दी में दो वचन हैं—एकवचन और बहुवचन)

क्रि० प्र०—देना। लेना।

वजन-पुं० [अ०] [वि० वजनी] १. भारीपन। गुरुत्व। २. भार का मान। तौल। ३. भार। बोझ। (वेट) ४. मान-मर्यादा। गौरव। ५. वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अंग दूसरे से न्यून या

विषम हो जाय। (चित्रकला)

वजह–स्त्री० [अ०] कारण। हेतु।

वजा–स्त्री० [अ० वज़न] १. रचना या बनावट का प्रकार या ढंग। २. सज-धज। ३. प्रथा। रीति। प्रणाली। ४. धन या और कुछ देते समय उसमें से कुछ काट लेना या कम करना। मुजरा। मिनहा।

वजादार–वि० [अ० वजा + फा० दार] जिसकी बनावट या ढंग बहुत सुन्दर हो।

वजीफा–पुं० [अ०] १. विद्वानों, छात्रों आदि को दी जानेवाली आर्थिक सहायता। वृत्ति। २. जप या पाठ। (मुसल०)

वजीर–पुं० [अ०] मंत्री।

वजीरी–स्त्री० 'वजीर' का भाव०।
पुं० घोड़ों की एक जाति।

वजू–पुं० [अ० वुज़ू] मुसलमानों में, नमाज पढ़ने से पहले हाथ-पैर और मुँह धोने की क्रिया।

वजूद–पुं० [अ०] अस्तित्व। मौजूदगी।
यौ०–बावजूद = इतना होने पर भी।

वज्र–पुं० [सं०] १. इन्द्र का प्रधान शस्त्र। कुलिश। पवि। २. आकाश में बिजली चमकने और बादल गरजने के बाद का वह विद्युत् प्रवाह जो आकाश से चलकर पृथ्वी पर कहीं आ गिरता और बहुत घातक सिद्ध होता है। विद्युत। बिजली। (लाइटनिंग) ३. हीरा। ४. भाला। बरछा।
वि० १. बहुत कड़ा और दृढ़। जैसे–वज्र लेप। २. बहुत बड़ा या भीषण। विकट। जैसे–वज्र मूर्ख।

वज्र-धर–वि०, पुं० = वज्र-धारक।

वज्र-धारक वि० [सं०] जो अपने पास वज्र रक्खे। वज्रधारण करनेवाला।
पुं० एक विशेष प्रकार का धातु का टुकड़ा या छोटा यंत्र जो ऊँची इमारतों आदि पर उन्हें वज्र-पात से बचाने और आकाश से गिरनेवाली बिजली को खींचकर जमीन के अन्दर ले जाने के लिए लगाया जाता है। (लाइटनिंग अरेस्टर)

वज्रपाणि–पुं० [सं०] इन्द्र।

वज्र-पात–पुं० [सं०] १. आकाश में बिजली चमकने और बादल गरजने के बाद बिजली का आकर पृथ्वी पर कहीं गिरना जो बहुत नाशक और घातक होता है। २. सहसा होनेवाला कोई बहुत बड़ा अनर्थ या अनिष्ट।

वज्रयान–पुं० [सं०] प्राचीन बौद्धों का वह संप्रदाय या शाखा जिसमें यन्त्र, मन्त्र और तांत्रिक प्रयोगों का विशेष रूप से प्रचलन था।

वज्र-लेप–पुं० [सं०] एक प्रकार का मसाला जिसके प्रयोग से दीवार, मूर्त्ति आदि उनके जोड़ मजबूत हो जाते हैं।

वज्राग्नि–स्त्री० [सं०] आकाश से गि वाली बिजली या उससे उत्पन्न होने वाली आग।

वज्रोली–स्त्री० [हिं० वज्र] हठ-योग एक मुद्रा।

वट–पुं० [सं०] बरगद (पेड़)।

वटक–पुं० [सं०] बड़ी टिकिया गोली। बट्टा।

वटिका, वटी–स्त्री० [सं०] छोटी गो या टिकिया।

वटु(क)–पुं० [सं०] १. बालक। लड़ २. ब्रह्मचारी। ३. एक भैरव। (देव

वणिक्–पुं० [सं०] १. व्यापारी वैश्य। बनिया।

वतन–पुं० = जन्म-भूमि।

वत्–पुं० [सं०] समान। तुल्य।

वत्स–पुं० [सं०] १. गौ का ब बछड़ा। २. बालक। लड़का।

वत्सनाभ–पुं० [सं०] बछनाग नाम विष। मीठा जहर।

वत्सर–पुं० [सं०] वर्ष। साल।

वत्सल–वि० [सं०] [स्त्री० वत्सल भाव० वत्सलता] १. सन्तान के प्रेम

२. छोटों से अत्यंत स्नेह और
जनेवाला ।
(पीछे से बढ़ाया हुआ)
में माता-पिता का संतान के
जाता है ।
[सं०] १. मुख । मुँह । २.
। बोलना ।
[सं०] [भाव० वदान्यता]
दानी । २. मधुर-भाषी ।
[सं० अवदिन्] कृष्ण पक्ष ।
) जैसे—माघ वदि २. ।
[सं० विदूषण] १. दोष
ाना ।
कहना ।
[सं०] [वि० वधक, वध्य] किसी
जान-बूझकर किसी उद्देश्य से
। (मर्डर)
[सं०] १. वध करनेवाला । २.
ारी ।
[सं०] १. दे० 'वधक' । २.
-दंड पानेवालों का वध करता
चढ़ानेवाला । (एग्जिक्यूशनर)
[सं०] १. नई ब्याही हुई
। २. पत्नी । भार्या । ३. पुत्र

दे० 'वधू' ।
[सं०] १. जंगल । २. बगीचा ।
। ४. घर । ५. दशनामी
में से एक वर्ग की उपाधि ।
)-वि० [सं०] वन में घूमने
।
[सं०] १. वन (जंगल या पानी)
वाला पदार्थ । २. कमल ।
[सं० वन=जल + द (प्रत्य०)]

-पुं० [सं०] स्वतंत्र भारत
ओर से चलाया हुआ वन
लगाने का कार्य-क्रम ।

वन-माला—स्त्री० [सं०] जंगली फूलों की माला ।

वनमाली—पुं० [सं०] श्रीकृष्ण ।

वनरुह—पुं० [सं०] कमल ।

वन-रोपण—पुं० [सं०] किसी बड़े भू-भाग में वन तैयार करने के उद्देश्य से बहुत से वृक्ष लगाना । (फारेस्टेशन)

वन-लक्ष्मी—स्त्री० [सं०] वन की शोभा ।

वन-वास—पुं० [सं०] १. वन या जंगल में रहना । २. बस्ती छोड़कर जंगल में रहने का विधान या दंड ।

वन-स्थली—स्त्री० [सं०] सुन्दर जंगली स्थान । वन-भूमि ।

वनस्पति—स्त्री० [सं०] पेड़-पौधे ।

वनस्पति घी—पुं० [सं० वनस्पति + हिं० घी] बिनौले, मूँगफली, नारियल आदि का साफ किया हुआ तेल, जो देखने में प्रायः घी के समान होता है ।

वनस्पति विज्ञान—पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें पेड़-पौधों की जातियों, अंगों आदि का विवेचन होता है । (बोटैनी)

वनिता—स्त्री० [सं०] औरत । स्त्री ।

वन्य—वि० [सं०] १. वन में उत्पन्न होनेवाला । वनोद्भव । २. जंगली ।

वपन—पुं० [सं०] [वि० वपित] बीज बोना ।

वपु—पुं० [सं० वपुस्] शरीर । देह ।

वपुमान—पुं० [सं० वपुष्मान] सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला ।

वबाल—पुं० [अ०] १. बोझ । भार । २. आपत्ति । आफत । झंझट ।

वमन—पुं० [सं०] [वि० वमित] १. कै करना । उलटी करना । २. वमन या कै किया हुआ तरल पदार्थ ।

वमि—स्त्री० [सं०] वमन का रोग ।

वयःसंधि—स्त्री० [सं०] बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का समय ।

वय—स्त्री० [सं० वयस्] अवस्था । उम्र । (एज)

वयन–पुं० [सं०] बुनने का काम। बुनाई।

वयस–पुं० [सं० वयस्] बीता हुआ जीवन-काल। अवस्था। उम्र।

वयस्क–वि० [सं०] [स्त्री० वयस्का] १. उमर या अवस्थावाला। (यौ० में; जैसे–अल्प वयस्क) २. पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ। बालिग। (मेजर)

वयस्कता–स्त्री० [सं०] १. वयस्क होने का भाव। २. विधि या कानून के अनुसार पूर्ण वयस्क होना। (मेजॉरिटी)

वयस्क मताधिकार–पुं० [सं०] निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने का वह अधिकार जो किसी स्थान के सभी वयस्क निवासियों को बिना किसी प्रकार के भेद-भाव के प्राप्त होता है। (एडल्ट सफरेज)

वयस्य–पुं० [सं०] १. समान अवस्था या उम्रवाला। २. मित्र। दोस्त। सखा।

वयोवृद्ध–वि० [सं०] बुड्ढा। वृद्ध।

वरंच–अव्य० [सं०] १. ऐसा नहीं, बल्कि ऐसा। बल्कि। २. परन्तु। लेकिन।

वर–पुं० [सं०] १. देवता आदि से माँगा हुआ मनोरथ। २. किसी देवता या बड़े से मिला हुआ मनोरथ का फल या सिद्धि। ३. वह जिसके साथ कन्या का विवाह निश्चित हो। ४. पति। दूल्हा।

वि० १. श्रेष्ठ। उत्तम। २. उच्च कोटि का। ऊँचे दरजे या श्रेणी का।

वरक–पुं० [अ०] १. पत्र। २. पुस्तकों का पन्ना या पृष्ठ। ३. धातु का पतला पत्तर।

वरण–पुं० [सं०] १. किसी को किसी काम के लिए चुनना। (सेलेक्शन) २. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने और विवाह पक्का करने की रीति।

वरणी–स्त्री० [सं० वरण] मंगल अवसरों पर ब्राह्मणों को दिया जानेवाला आसन, वस्त्र, पात्र आदि का समूह।

वरद–वि० [सं०] [स्त्री० वरदा] वर देनेवाला। वर-दाता।

वर-दान–पुं० [सं०] किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई माँगी हुई वस्
या सिद्धि देना।

वरदी–स्त्री० [अ० वर्दी] वह पहनावा जो किसी विशेष विभाग के कार्य-कर्त्ताओं
लिए नियत हो। परिच्छद। (यूनिफॉर्म

वरन्–अव्य० [सं० वरम] बल्कि।

वरना*–स० [सं० वरण] १. किसी
किसी काम के लिए चुनना या मुक
करना। वरण करना। २. विवाह के सम
कन्या का वर को अंगीकार करना।
ग्रहण या धारण करना।

पुं० ऊँट।

अव्य० [फा० वर्नः] नहीं तो।

वरम–पुं० [फा०] सूजन। शोथ।

वर-यात्रा–स्त्री० = बरात।

वरही*–पुं० दे० 'वर्हीं'।

वराक–वि० [सं०] [स्त्री० वराकी]
दरिद्र। गरीब। २. दया का पात्र। द
नीय। ३. अभागा। ४. दीन-हीन।
नीच।

पुं० [सं० वराकः] १. शिव। २. युद्ध

वराटिका–स्त्री० [सं०] कौड़ी।

वरानना–स्त्री० [सं०] सुन्दर स्त्री।

वरापन–पुं०[हिं० वर + आपन (प्रत्य०)
१. विवाह से पहले होनेवाली एक रीति।
२. विवाह के समय वर पक्ष की ओर
गाया जानेवाला गीत।

वरासत–स्त्री० [अ० विरासत] १. 'वारिस'
होने का भाव। उत्तराधिकार। २. उत्तरा-
धिकार से मिला हुआ धन। तरका।

वराह–पुं० [सं०] सूअर। (पशु)

वरिष्ठ–वि० [सं०] १. श्रेष्ठ। बड़ा। २.
उच्च कोटि का। 'कनिष्ठ' का उलटा।
(सुपीरियर)

वरीयता–स्त्री० [सं०] ग्रहण या मान्य
करने के लिये किसी वस्तु या बात को औरों
की अपेक्षा अच्छा समझना। अधिमान।

वर्जित] १. त्याग। छोड़ना। २. कुछ करने से रोकना। मनाही। मुमानियत। ३. कोई काम करते समय किसी विशेष कारण से कोई बात छोड़ देना या अलग कर देना। (एक्सक्ल्यूजन)

वर्जना-स्त्री० दे० 'वर्जन'।

*स० [सं० वर्जन] मना करना।

वर्जित-वि० [सं०] १. जिसके संबंध में मनाही हुई हो। निषिद्ध। २. जो कोई विशेष कारण से छोड़ या अलग कर दिया गया हो। (एक्सकलूडेड)

वर्ण-पुं० [सं०] १. पदार्थों के लाल, काले आदि भेदों के नाम। रंग। (कलर) २. मनुष्य जाति के गोरे, काले भूरे, पीले और लाल ये पाँच भेद। (कलर) ३. हिन्दुओं के चार विभाग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। जाति। ४. भेद। प्रकार। ५. अकारादि अक्षरों के चिह्न या संकेत। अक्षर। ६. रूप। सूरत।

वर्णक-पुं० [सं०] वास्तविक रूप छिपाने के लिए ऊपर से धारण किया जानेवाला कोई और रूप या आवरण। (मास्क)

वर्णच्छटा-स्त्री० [सं०] १. किसी वस्तु की वह आकृति जो उसे देखने के बाद आँखें बन्द कर लेने पर भी कुछ देर तक दिखाई देती है। २. प्रकाश में के रंग, जो कुछ विशेष प्रक्रिया से किसी परदे पर डालकर विश्लेषण आदि के लिए देखे जाते हैं। (स्पेक्ट्रम)

वर्ण-तूलिका-स्त्री० [सं०] चित्रों आदि में रंग भरने की कूँची या बुरुश।

वर्णन-पुं० [सं०] [वि० वर्णनीय, वर्णित] १. विस्तारपूर्वक कहा जानेवाला हाल। बयान। (एकाउन्ट) २. विवरण, लक्षण आदि से युक्त वह कथन जिससे किसी वस्तु, घटना या बात का ठीक स्वरूप जाना जाय। (डेस्क्रिप्शन)

वर्णनातीत-वि० [सं०] जिसका वर्णन

न हो सके। वर्णन के बाहर।

वर्णनीय–वि० [सं०] वर्णन करने योग्य। वर्ण्य।

वर्णपट–पुं० [सं०] किसी स्थान पर दिखाई पड़नेवाली वह रंगीन पट्टी जिसमें कहीं दूर से आनेवाले प्रकाश की कुछ आभा दिखाई पड़ती है। जैसे–अंधेरी रात में आकाश में दिखाई पड़नेवाला सूक्ष्म प्रकाश या चमक।

वर्ण-भेद–पुं० [सं०] १. हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चारो वर्णों में होनेवाला विभाग, भेद-भाव या ऊँच-नीच का विचार। २. गोरी, काली, पीली आदि जातियों में शरीर के वर्ण की दृष्टि से होनेवाला भेद-भाव या ऊँच-नीच का विचार।

वर्ण-माला–स्त्री० [सं०] किसी लिपि के सब अक्षरों की क्रम से सूची। (ऐल्फाबेट्स)

वर्ण-विचार–पुं० [सं०] व्याकरण का वह अंग जिसमें वर्णों या अक्षरों के स्वरूप, भेद, उच्चारण, प्रयोग आदि का विवेचन या विचार होता है। शिक्षा। (ऑरथोग्रैफी)

वर्ण-विपर्य्यय–पुं० [सं०] निरुक्त के अनुसार शब्दों के वर्णों का बोलचाल के कारण कुछ आगे-पीछे हो जाना। जैसे–'हिंस' शब्द से 'सिंह' शब्द में हुआ है।

वर्ण-वृत्त–पुं० [सं०] पिंगल में चार चरणों का वह वृत्त या छन्द जिसके चारो चरण एक से होते हैं और प्रत्येक चरण में वर्णों या अक्षरों और मात्राओं का क्रम तथा संख्या निश्चित होती है।

वर्ण-व्यत्यय–पुं० दे० 'वर्ण-विपर्य्यय'।

वर्ण-संकर–पुं० [सं०] वह जो दो भिन्न जातियों के यौन-सम्बन्ध से उत्पन्न हुआ हो। दोगला।

वर्णांध–वि० [सं०] जिसे लाल, पीले, काले आदि रंगों का ज्ञान न होता हो। (कलर-ब्लाइंड)

वर्णांधता–स्त्री० [सं०] नेत्रों का एक प्रकार का रोग या विकार जिसमें मनुष्य लाल, काले, पीले आदि रंगों की पहचा नहीं रह जाती। (कलर-ब्लाइंडनेस)

वर्णिक छन्द(वृत्त)–पुं० दे० 'वर्ण-वृत्त

वर्णिका–स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट का समावय जो किसी चित्र या शैली विशेष रूप से बरता जाय। (चित्र-कल

वर्णित–वि० [सं०] जिसका वर्णन हो। कहा हुआ। (डिस्क्राइब्ड)

वर्ण्य–वि० [सं०] १. वर्णन के यो २. जिसका वर्णन हो रहा हो।

वर्त्तन–पुं० [सं०] [वि० वर्त्तित बरताव। व्यवहार। २. फेरना। घुमा ३. पात्र। बरतन।

वर्त्तमान–वि० [सं०] १. जो इस हो या चल रहा हो। (एग्जिस्टिंग) उपस्थित। मौजूद। विद्यमान। (३. आधुनिक। आज-कल का। हाल पुं० १. व्याकरण में क्रिया का वह जिससे सूचित होता है कि कार्य अ रहा है, समाप्त नहीं हुआ। २. वृत्त समाचार।

वर्त्तिका–स्त्री० [सं०] १. कपड़े, आदि की बटी हुई बत्ती। २. पेंसि तरह का एक उपकरण जो चित्र-क रेखा-चित्र बनाने के काम आता है।

वर्त्ती–वि० [सं० वर्त्तिन्] [स्त्री० वर्ति १. बरतनेवाला। २. स्थित रहनेवा जैसे–पार्श्ववर्त्ती।

वर्त्तल–वि० [सं०] वृत्ताकार। गोल

वर्त्म–पुं० [सं०] १. मार्ग। रास्ता। किनारा। ३. आँख की पलक।

वर्दी–स्त्री० दे० 'वरदी'।

वर्द्धक–वि० [सं०] बढ़ानेवाला।

वर्द्धन–पुं० [सं०] [वि० वर्द्धित] बढ़ाना। २. वृद्धि। बढ़ती। ३. पशु आदि को पाल-पोसकर उनकी उन्नति और वृद्धि करना। (ब्रीडिंग)

वलभी–स्त्री० [सं०] १. घर के ऊपर का छोटा कमरा । चौबारा । २.गुजरात की एक प्राचीन नगरी जहाँ इसी नाम के एक प्रसिद्ध राज्यवंश का राज्य था ।

वलय–पुं० [सं०] १. मंडल । घेरा । २. कंकड़ । ३. चूड़ी ।

वलाक–पुं० [सं०] [स्त्री० वलाका] बगला ।

वलाहक–पुं० [सं०] १. मेघ । बादल । २. पर्वत । पहाड़ ।

वलि–पुं० [सं०] १. रेखा । लकीर । २. पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा । बल । ३. देवता को चढ़ाई जानेवाली चीज या उसके उद्देश्य से चढ़ाया या मारा जानेवाला पशु । ४. एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था । ५. श्रेणी । पंक्ति ।

वलित–वि० [सं०] १. बल खाया या घूमा हुआ । २. झुका या मुड़ा हुआ । ३. घेरा या घिरा हुआ । ४. लिपटा हुआ । ५. मिला हुआ । युक्त ।

वली–स्त्री० [सं०] १. झुर्री । सिलवट । २. श्रेणी । पंक्ति । ३. रेखा । लकीर । पुं० [अ०] १. मालिक । स्वामी । २. साधू । फकीर । ३. अल्प-वयस्क बालक की देख-रेख करनेवाला । अभिभावक ।

वल्कल–पुं० [सं०] वृक्ष की छाल ।

वल्द–पुं० [अ०] औरस पुत्र । बेटा । जैसे–मोहन वल्द परमानन्द; अर्थात् परमानन्द का बेटा मोहन ।

वल्दियत–स्त्री० [अ०] १. वालिद या पिता होने का भाव । पितृत्व । २. पिता के नाम का उल्लेख ।

वल्मीक–पुं० [सं०] १. दीमकों के रहने की बाँबी । बिमौट । २. साँप का बिल ।

वल्लभ–वि० [सं०] [भाव० वल्लभता] [स्त्री० वल्लभा] प्रियतम । प्यारा । पुं० १. पति । स्वामी । २. अध्यक्ष । मालिक । ३. वैष्णव-संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक

प्रसिद्ध आचार्य ।

वल्लभा-स्त्री० [सं०] प्रेमिका । प्रेयसी ।

वल्लभी-स्त्री० दे० 'वलभी'।
*स्त्री = वल्लभा ।

वल्लरी-स्त्री० [सं०] बेल । लता ।

वल्लाह-अव्य० [अ०] ईश्वर की शपथ है।

वल्ली-स्त्री० [सं०] लता । बेल ।

वश-पुं० [सं०] १. अधिकार । काबू । २. शक्ति या अधिकार की सीमा । काबू । **मुहा०-वश चलना** = शक्ति या सामर्थ्य का अपना फल या प्रभाव दिखलाना । ३. स्वामित्व-जन्य अधिकार । कब्जा ।

वशवर्त्ती-वि० [सं० वशवर्तिन्] किसी के वश या अधिकार में रहनेवाला । अधीन ।

वशीकरण-पुं० [सं०] [वि० वशीकृत] मंत्र-तंत्र के द्वारा किसी को वश में करना ।

वशीभूत-वि० दे० 'वशवर्ती' ।

वश्य-वि० [सं०] [भाव० वश्यता] वश में आने या रहनेवाला ।

वसंत-पुं० [सं०] [वि० वासंत, वासंतिक, वसंती] १. सर्व-प्रधान मानी जानेवाली वह ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और बैसाख के महीने माने गये हैं । बहार का मौसिम । २. शीतला या चेचक नामक रोग । ३. षाड़व-संपूर्ण जाति का एक राग जो आधी रात के बाद गाया जाता है ।

वसंत-तिलका-स्त्री० [सं०] चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, दो जगण और दो गुरु वर्ण (न, भ, ज, ज, ग, ग,) होते हैं ।

वसंतोत्सव-पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक उत्सव जो वसंत-पंचमी के दूसरे दिन होता था । मदनोत्सव ।

वसति (ी)-स्त्री० [सं०] १. निवास । २. घर । ३. बस्ती ।

वसन-पुं० [सं०] १. वस्त्र । कपड़ा । २. रहना या बसना । निवास ।

वसवास-पुं० [अ०] [वि० वसवाती]

शंका । भ्रम । संदेह ।

वसह*-पुं० = बैल । (पशु)

वसा-स्त्री० [सं०] चरबी । मेद ।

वसीका-पुं० [अ०] सरकारी ख
जमा किये हुए धन का वह सूद जो
करनेवाले के वंशजों को मिलता है।

वसीयत-स्त्री० [अ०] यह कहना या
खना कि हमारे मरने पर हमारी सं
विभाग या प्रबन्ध इस तरह हो । दि

वसीयतनामा-पुं० [अ० वसीयत
नामा] वह लेख या पत्र जिसमें व
सब शर्तें लिखी हों । दित्स पत्र । (

वसीला-पुं० [अ०] १. संबंध ।
२. जरिया । द्वार ।

वसुंधरा-स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

वसु-पुं० [सं०] १. आठ वैदिक
का एक गण । २. आठ की सं
रत्न । ४. धन । ५. अग्नि । ६.
सुवर्ण । सोना । ८. सूर्य ।

वसुधा-स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

वसुमति-स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

वसूल-वि० [अ०] १. मिला या लिया
प्राप्त । २. उगाहा हुआ ।

वसूली-स्त्री० [अ० वसूल] १.
धन या और कोई वस्तु लेकर इकट्ठा
की क्रिया या भाव । समाहरण । (
२. दूसरे से अपना धन या वस्तु
क्रिया या भाव । उगाही । (रिक

वस्ति-स्त्री० [सं०] १. पेड़ू । २.
शय । ३. आँतें साफ करने के लि
के मार्ग से जल ऊपर चढ़ाने की
जिससे रेचन होता है । (एनिमा)

वस्ति-कर्म-पुं० [सं०] लिंगेंद्रिय,
न्द्रिय आदि मार्गों में पिचकारी लगा

वस्तु-स्त्री० [सं०] [वि० वास्तव,
विक] १. वास्तविक या कल्पित
पदार्थ । चीज । २. वह जो किसी
विवाद, आलोचना या विचार का

दे॰ 'कथावस्तु'।
[सं॰] १. वास्तव में।
२. सचमुच। (इन फैक्ट,

स्त्री॰ [सं॰] वास्तविक
स्थिति।
स्त्री॰ [सं॰] साहित्य में उत्प्रेक्षा
एक भेद जिसमें किसी उपमेय
वस्तु के कार्य या गुण की
जाती है। इसमें मानों, जानों
के वाचक दूसरे शब्द रखे
गोरे मुख पर स्याम तिल,
नाम। मनहुँ चन्द बिछाइकै,
न।
सं॰] कपड़ा।
अ॰] मिलन। मिलाप।
सं॰ सः] वक्ता और श्रोता
किसी तीसरे मनुष्य या दूर के
संकेत करनेवाला सर्वनाम या
का सूचक शब्द।
वहन करनेवाला। वाहक।
में, जैसे–भारवह।)
सं॰] [वि॰ वहनीय, वहित]
ढोकर एक जगह से दूसरी
ना। २. ऊपर लेना। उठाना।
[सं॰] १. वह जो वहन
हो। २. वह जिसपर या
चीज रखकर कहीं ले जाई या
। (केरियर)
[सं॰] वह पत्र जो किसी
अधिकारी अपने जहाज
माल की रसीद के रूप में
को देता है और जिसके
को माल पहुँचाने का
(बिल ऑफ लेडिंग)
सं॰ वहन] १. वहन करना।
ऊपर लेना। धारण करना।
प्रकार के भार या अनिष्ट बात

के वशीभूत होना। २. अपने आपको कुरूप या खराब करना। उदा॰–ज्यों गयंद अन्हाइ सरिता, बहुरि वहै सुभाइ।–सूर।

वहम–पुं॰ [अ॰] [वि॰ वहमी] १. मन में होनेवाली मिथ्या धारणा। २. भ्रम। धोखा। ३. झूठी शंका या संदेह।

वहशत–स्त्री॰ [अ॰] १. वहशी होने की अवस्था या भाव। २. पागलपन।

वहशी–वि॰ [अ॰] १. जंगली। २. असभ्य।

वहाँ–अव्य॰ [हिं॰ वह] उस जगह।

वहिःशुल्क–पुं॰ दे॰ 'सीम शुल्क'।

वहित्र–पुं॰ [सं॰ वहित्थ] १. जहाज। २. नाव।

वहिरंग–पुं॰ [सं॰] शरीर, पदार्थ, क्षेत्र आदि का बाहरी या ऊपरी भाग। 'अंतरंग' का उलटा।

वि॰ ऊपरी या बाहरी।

वहिर्गत–वि॰ [सं॰] बाहर निकला या निकाला हुआ। बाहर का।

वहिर्द्वार–पुं॰ [सं॰] बाहरी दरवाजा।

वहिर्भूत–वि॰ [सं॰] वहिर्गत।

वहिर्मुख–वि॰ [सं॰] विमुख।

वहिष्कार–पुं॰ दे॰ 'बहिष्कार'।

वहीं–अव्य॰ [हिं॰ वहाँ+ही] उसी स्थान पर। उसी जगह।

वही–सर्व॰ [हिं॰ वह+ही] १. जिसका उल्लेख हुआ हो, वह ही। पूर्वोक्त ही। २. निर्दिष्ट व्यक्ति ही, और कोई नहीं।

वहै*–सर्व॰ = वही (वह ही)।

वह्नि–पुं॰ [सं॰] अग्नि। आग।

वांछनीय–वि॰ [सं॰] १. चाहने योग्य। २. जिसे प्राप्त करने की इच्छा हो। इष्ट। ३. जिसका होना अनुचित या अप्रिय न हो।

वांछा–स्त्री॰ [सं॰] [वि॰ वांछित, वांछनीय] अभिलाषा। चाह।

वांछित–वि॰ [सं॰] चाहा हुआ।

वा–अव्य॰ [सं॰] या। अथवा।

*सर्व॰ [हिं॰ वह] १. वह। २. उस।

जैसे–वाको = उसका या उसे।

वाइ*–सर्व० दे० 'वाहि'।

वाक्–पुं० [सं०] १. वाणी। २. सरस्वती। ३. बोलने की इंद्रिय।

वाकई–अव्य० [अ०] सचमुच। वस्तुतः।

वाकिफ़–वि० [अ०] १. ज्ञाता। २. परिचित।

वाक्छल–पुं० [सं०] धोखा देने के लिए श्लिष्ट, समानक या भ्रामक शब्दों का प्रयोग करना। ऐसी बात कहकर अपना मतलब निकालना जिसके दो अर्थ हो सकते हों। (इक्विवोकेशन)

वाक्पटु–वि० [सं०] बातें करने में चतुर।

वाक्-सिद्धि–स्त्री० [सं०] ऐसी शक्ति या सामर्थ्य जिससे मनुष्य इस योग्य हो जाता है कि वह भविष्य या परोक्ष के संबंध में जो कुछ कहे वह बिल्कुल ठीक और सत्य सिद्ध हो।

वाक्य–पुं० [सं०] व्याकरण के नियमों के अनुसार क्रम से लगा हुआ वह सार्थक शब्द-समूह जिसके द्वारा किसी पर अपना अभिप्राय प्रकट किया जाता है।

वाक्य-रचना–स्त्री० [सं०] १. यथा-स्थान शब्द रखकर वाक्य बनाना। २. शब्द-योजना के विचार से वाक्यों की बनावट या रूप। (फ्रेज़ियालोजी)

वाक्य-विन्यास–पुं० [सं०] वाक्यों की बनावट। वाक्य-रचना।

वाक्य-सिद्धि–स्त्री० दे० 'वाक्-सिद्धि'।

वाक्यांश–पुं० [सं०] पूरे वाक्य का कोई अंश, खंड या टुकड़ा। (फ्रेज)

वागीश–पुं० [सं० वाक् + ईश] १. बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३. कवि। वि० अच्छा बोलनेवाला। सु-वक्ता।

वागीश्वरी–स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वाग्जाल–पुं० [सं०] बातों का ऐसा आडंबर जिसमें अर्थ या तथ्य बहुत कम हो।

वाग्दत्त–वि० [सं०] जिसे दूसरे को देने का वचन दिया जा चुका हो।

वाग्दत्ता–स्त्री० [सं०] वह कन्या जिस विवाह की बात किसी के साथ पक्की जा चुकी हो।

वाग्दान–पुं० [सं०] [वि० वाग्दत्त] १. देने या करने का वचन। वादा। (प्रॉमि २. कन्या के पिता का किसी से यह कि मैं अपनी कन्या तुम्हारे साथ ब्याहूँगा

वाग्देवी–स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वाग्मी–पुं० [सं०] [भाव० वाग्मि १. अच्छा वक्ता। २. पंडित। विद्वान

वाग्विलास–पुं० [सं०] आपस में और सुख की बातें करना।

वाङ्मय–पुं० [सं०] साहित्य।

वाङ्मुख–पुं० [सं०] उपन्यास।

वाचक–वि० [सं०] किसी व्य वस्तु आदि का निर्देश करने या देनेवाला (शब्द)। वाची। 'सारंग' शब्द 'मोर' का वाचक है। पुं० १. नाम। संज्ञा। २. वह जो बड़े अधिकारी को कागज आदि सुनाने के लिए नियत हो। पेशकार।

वाचन–पुं० [सं०] १. पढ़ने का पठन। २. विधायिका सभा में किसी यक (बिल) के उपस्थित होने पर तीन बार पढ़े जाने में से किसी का पढ़ जाना। आवृत्ति। (विशेष—पहली बार विधेयक पढ़कर सुनाया जाता है कि सब लोग सामान्य स्वरूप समझ लें। इसे वाचन' कहते हैं। दूसरे वाचन में छाँट, संशोधन, परिवर्तन और सुधार हैं। तीसरे या अंतिम वाचन में उसका रूप सामने आता है जिसमें वह होने को होता है।) ३. किसी लिखी छपी हुई बात की शब्दावली। अपने मूल में वे शब्द, वाक्य आदि जिनका लिखने के समय किया गया हो। पाठ

आदि के द्वारा निश्चित
वली या वाक्यावली जो
में मूल लेखक की शब्दावली
से अधिकतम सादृश्य रखती
) ५. किसी की कही
बात या विवरण आदि का
ों का त्यों रूप ।
दे० 'वाचन' ।
पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ
के लिए समाचार-पत्र या
रहती हैं। (रीडिंग रूम)
पुं० [सं०] १. वाणी । २.
बहुत बड़ा विद्वान ।
[सं०] [वि० वाचाबद्ध]
वचन से बँधा हुआ ।
[सं०] [भाव० वाचालता]
बोलनेवाला । बकवादी । २.
चतुर । वाक्पटु ।
[सं०] वाणी-सम्बन्धी । वाचा
कहा या किया हुआ ।
वह प्रकार जिसमें केवल
और उसके ढंग से ही अभिनय
समझा जाता है ।
[सं० वाचिन्] प्रकट करने
। वाचक । जैसे-भाववाची ।
[सं०] १. कहने योग्य । २.
या परिचय शब्दों के द्वारा
।
में क्रिया से सम्बन्ध रखनेवाला
यह कहा जाता है कि जो
वह कर्त्ता की प्रधानता
या कर्म की प्रधानता के
(वॉयस) इसके दो भेद
और कर्म-वाच्य (दोनों
[सं०] शब्दों के नियत
होनेवाला आशय । विशुद्ध

वाजिब–वि० [अ०] उचित । मुनासिब ।

वाजिबी–वि० = वाजिब ।

वाजिमेध–पुं० = अश्वमेध ।

वाजी–पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा ।

वाजीकरण–पुं० [सं०] [वि० वाजीकृत] वह प्रयोग जिससे मनुष्य का वीर्य बढ़ता है और उसमें घोड़े के समान बल आता है । (वैद्यक)

वाट–पुं० [सं०] मार्ग । रास्ता ।

वाटिका–स्त्री० [सं०] बाग । बगीचा ।

वाड़वाग्नि–स्त्री० [सं०] वह कल्पित प्रबल अग्नि जो समुद्र के अंदर जलती हुई मानी गई है ।

वाण–पुं० [सं०] धारदार फलवाला वह अस्त्र जो धनुष की सहायता से चलाया जाता है । तीर ।

वाणिज्य–पुं० [सं०] व्यापार । रोजगार । (कॉमर्स)

वाणिज्य-दूत–पुं० [सं०] किसी राज्य का वह दूत जो दूसरे देश में व्यापारिक सम्बन्ध सुरक्षित रखने और बढ़ाने के लिए रखा जाता है । (कॉन्सल)

वाणी–स्त्री० [सं०] १. सरस्वती । २. मुँह से निकलनेवाले सार्थक शब्द । वचन । **मुहा०–वाणी फुरना** = मुँह से बात निकलना ।

वात–पुं० [सं०] १. वायु । हवा । २. शरीर में की वह वायु जिसके बिगड़ने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं । (वैद्यक)

वातज–वि० [सं०] वायु या वात से उत्पन्न (रोग आदि) ।

वातायन–पुं० [सं०] झरोखा ।

वातावरण–पुं० [सं०] १. वह हवा जिसने पृथ्वी को चारो ओर से घेर रखा है । २. आस-पास की परिस्थिति या चारो ओर की वे सब बातें जिनका जीवन, विकास, निर्वाह आदि बातों पर प्रभाव पड़ता है । (ऐटमॉस्फियर)

वातुल-पुं० [सं०] बावला । पागल ।

वातुलता-स्त्री० [सं०] १. वातुल होने की क्रिया या भाव । २. पागलपन ।

वात्या-स्त्री० [सं०] बवडंर ।

वात्सरिक-वि० [सं०] वार्षिक । सालाना ।

वात्सल्य-पुं० [सं०] १. प्रेम । स्नेह । २. माता-पिता का सन्तान पर होनेवाला प्रेम ।

वात्सल्य-भाजन-पुं० [सं०] वह जिसके प्रति सन्तान का-सा प्रेम रखा जाय । पुत्र-पौत्र आदि के समान प्रिय ।

वाद-पुं० [सं०] १. किसी तथ्य या तत्त्व के निर्णय के लिए होनेवाला तर्क । शास्त्रार्थ । २. तत्त्वज्ञों द्वारा निश्चित तत्त्व या सिद्धांत । (इज्म) (कुछ संज्ञाओं के अंत में प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त; जैसे—साम्यवाद, पूँजीवाद, अवसरवाद) ३. बहस । विवाद । ४. न्यायालय में उपस्थित किया हुआ । अभियोग । मुकदमा । (सूट)

वाद-ऋणी-पुं० [सं०] वह जो किसी वाद या मुकदमे में न्यायालय के निर्णय के अनुसार ऋणी या कर्जदार ठहराया गया हो । (जजमेन्ट क्रिडेटर)

वादक-पुं० [सं०] १. बाजा बजानेवाला । २. वाद या शास्त्रार्थ करनेवाला ।

वाद-ग्रस्त-वि० [सं०] जिसके सम्बन्ध में विवाद या मत-भेद हो ।

वाद-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो न्यायालय में वाद उपस्थित करते समय लिखकर दिया जाता हैं । (प्लेन्ट)

वादन-पुं० [सं०] बाजा बजाना ।

वाद-विवाद-पुं० [सं०] १. किसी पक्ष के खण्डन और मंडन में होनेवाली बातचीत । तर्क-वितर्क । बहस । (कॉन्ट्रोवर्सी) २. किसी विषय में ठीक निश्चय या विचार करने के लिए कुछ लोगों में होनेवाला वाद-विवाद । (डिस्कसन)

वाद-व्यय-पुं० [सं०] किसी वाद या मुकदमे में होनेवाला उच्चति और निय व्यय । (कॉस्टस)

वादा-पुं० [अ० वाइदा] वचन । इ रार । (प्रामिस, अंडरटेकिंग)

वादानुवाद-पुं० दे० 'वाद-विवाद' ।

वादिम-पुं० [सं०] वाद्य । बाजा ।

वादी-पुं० [सं० वादिन] १. वक्त बोलनेवाला । २. न्यायालय में कोई वाद मुकदमा पेश करनेवाला । फरिया मुद्दई । ३. विचार के लिए कोई पक्ष तर्क उपस्थित करनेवाला । ४. संगीत वह स्वर जो अन्य स्वरों की अपेक्षा प्र रूप में व्यवहृत होता है और किसी रा विशिष्ट स्वरूप का बोधक होता है ।

वाद्य-पुं० [सं०] वह उपकरण जि संगीत के स्वर निकलते या ताल दि हैं । बाजा ।

वाद्य-गोष्ठी-स्त्री० दे० 'वाद्यवृंद' ।

वाद्य-वृंद-पुं० [सं०] स्वर उत्पन्न करने और ताल देनेवाले अनेक प्रकार के बा का एक साथ मिलकर बजना । (आरके

वाद्य-संगीत-पुं० [सं०] बाजों से हो वाला संगीत । साज-संगीत । 'कंठ-सं से भिन्न । (इन्सट्रूमेन्टल म्यूजिक)

वान-प्रस्थ-पुं० [सं०] प्राचीन भा आश्रमों में से तीसरा आश्रम जिसमें के पच्चास वर्ष के हो जाने पर जाकर रहने का विधान है ।

वानर-पुं० [सं०] बंदर ।

वानस्पतिक-वि० [सं०] १. वन संबंधी । वनस्पति का । २. वनस्पति निकला या बना हुआ । जैसे—वानस्प दूध या घी ।

वानस्पत्य-पुं० [सं०] वनस्पतियों तत्त्वों और उनकी वृद्धि, पोषण आदि सम्बन्ध रखनेवाला शास्त्र या विद्या (आरबोरिजल्चर)

वि० = वाचस्पतिक ।

एक वृत।

वामावर्त्त–वि० [सं०] १. बाईं ओर घूमा हुआ। २. (विशेषतः चक्कर के रूप में) चलने या घूमने के लिए बाईं ओर से आरम्भ होनेवाला।

वाय*–सर्व० दे० 'वाई'।

*स्त्री० = वायु (हवा)।

वायविक–वि० [सं०] वायु-सम्बन्धी। वायु का। (एरियल)

पुं० बासों आदि में लगा हुआ तार जिसकी सहायता से रेडियो वायु में से शब्द ध्वनि आदि ग्रहण करता है। (एरियल)

वायव्य–वि० [सं०] वायु-सम्बन्धी। वायु का।

पुं० १. उत्तर-पश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर। २. एक प्रकार का अस्त्र।

वायस्–पुं० [सं०] कौआ। पक्षी।

वायु–स्त्री० [सं०] पांच तत्त्वों में से एक जो पृथ्वी के चारो ओर ऊपर आकाश तक भरा है और जिसे सब प्राणी सांस लेते समय अन्दर खींचते और बाहर फेंकते हैं। हवा। (एअर)

वायुपथ–पुं० [सं०] आकाश में हवाई जहाजों के आने-जाने के रास्ते। (एयरवेज)

वायुमण्डल–पुं० [सं०] १. आकाश। २. दे० 'वातावरण'।

वायु-यान–हवा में उड़ने वाला यान। हवाई जहाज। (एयरोप्लेन)

वायु-सेना–स्त्री० दे० 'विमान-बल'।

वायु-सेवन–पुं० [सं०] स्वास्थ्य सुधारने के लिए खुली हवा में ठहरना या बैठना।

वायुसेवा–स्त्री० [सं०] वायु यान के द्वारा होनेवाली सार्वजनिक या लोक उपकारक काम। सेवा (एयर सर्विस)

वारंट–पुं० दे० 'अधिपत्र'।

वार–पुं० [सं०] १. द्वार। दरवाजा। २. रुकावट। रोक। ३. अवसर। ४. बार। दफा। सप्ताह का कोई दिन। जैसे–रविवार।

५. किनारा। तट। (विशेषतः वक्ता की ओर का)

यौ०–वार-पार। (देखें)

पुं० [सं० वार = दाँव] १. चोट। आघात। २. आक्रमण। हमला।

प्रत्य० [फा०] एक प्रत्य० जो शब्दों के अंत में लगकर 'क्रम से' 'क्रमात्' अथवा 'के अनुसार' का अर्थ देता है। जैसे–जिलेवार, नाववार सूची या भाषावार प्रांत।

वारक–वि० [सं०] १. वारण या निषेध करने वाला। २. दूर करने वाला।

वारण–पुं० [सं०] [वि० वारक, वारित, वार्य] १. निषेध। मनाही। २. रुकावट।

पुं० [सं० वारणः] हाथी।

वारणक–पुं० [सं०] अनिष्ट, हानि आदि रोकने या उनसे चलने के लिए अथवा अपने हित, कल्यान आदि के विचार से पहले से किया जाने वाला उपाय या कार्य। (प्रिकॉशन)

वारणिक–वि० [सं०] (उपाय या कार्य) जो अनिष्ट, हानि आदि से बचने अथवा अपने हित साधन के विचार से पहले से किया जाता है। (प्रिकाशनरी)

वारद–पुं० = बादल।

वारदात–स्त्री० [अ०] १. भीषण या विकट दुर्घटना। २. मार-पीट। दंगा-फसाद।

वारन*–स्त्री० [हिं० वारना] वारने की क्रिया या भाव। निछावर। बलि।

पुं० [सं० वारणः] हाथी।

स्त्री० दे० 'बंदनवार'।

वारना–स० [हिं० उतारना] कोई चीज किसी के ऊपर चारों ओर घुमाकर किसी को देना या फेंकना। निछावर करना। (किसी की श्रेष्ठता या आदर का सूचक)

पुं० निछावर। उत्सर्ग।

मुहा०–वारने जाना=निछावर होना।

वार-नारी–स्त्री० = वेश्या।

वारनिश–स्त्री० [अं०] कोई चीज चमकाने के लिए उसपर लगाया जाने वाला रोगन।

वार-पार–पुं० [सं० पार] १. नदी का इ ओर का और सामने की ओर का किनारा यह पार और वह पार। २. गहरा योग्यता आदि की थाह। अन्त। जैसे–वि का वार-पार नहीं है। ३. दे० 'वारापार

क्रि० वि० इस सिरे से उस सिरे त जैसे–तीर वार-पार होना।

वार-वधु–स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी

वारांगना–स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी

वारा–पुं० [सं० वारण] खर्च की या बात। किफायत। २. लाभ। फायद

उदा०–उनके वारे की कछू मोरै क जाइ।–रसनिधि।

वि० १. कम या थोड़े दाम का। सस्त २. जिसमें आर्थिक दृष्टि से कुछ लाभ बचत हो।

*प्रत्य० = वाला। (जैसे–देखन वारा)

वाराणसी–स्त्री० [सं०] काशी नगरी

वारा-न्यारा–पुं० [हिं० वार+न्यार किसी बात का पूरी तरह से इधर या उ होने का निश्चय या निपटारा।

वारापार–पुं० [हिं० वार+पार] अन्ति सीमा या हद।

वाराह–पुं० [सं०] १. शूकर या सुअर नाम पशु। २. विष्णु का तीसरा अवतार जो शुक रूप में हुआ था।

वारि–पुं० [सं०] जल। पानी।

वरि-चर–पुं० [सं०] मछली।

वारिज–पुं० [सं०] १. कमल। २. शंख ३. खरा सोना।

वारित–वि० [सं०] जिसका नारण मनाही की गई हो। वर्जित।

वारिद–पुं० [सं०] बादल। मेघ।

वारिधि–पुं० [सं०] समुद्र।

वारिवर्त्त*–पुं० [सं०] मेघ। बादल।

वालिद–पुं० [अ०] [स्त्री० वालिदा] पिता । बाप ।

वाल्मीक(कि)–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि-कवि हैं ।

वावैला–पुं० [अ०] १. विलाप । रोना-कल्पना । २. कोलाहल । हल्ला । शोर ।

वाष्प–पुं० [सं०] भाप । (विशेष दे० 'भाप')

वाष्पीकरण–पुं० [सं०] किसी वस्तु को कुछ विशेष प्रक्रिया से वाष्प के रूप में लाना । (एवोपोरेशन)

वासंतिक–वि० [सं०] वसंत का । वसंती ।

वासंती–स्त्री० [सं०] १. माधवी लता । २. वसंतोत्सव । ३. चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, तगण, नगण, मगण और दो गुरु (म, त, न, म, ग, ग,) होते हैं ।

वि० वासंतिक । वसन्त ऋतु का ।

वासंती नवरात्र–पुं० [सं०] चैत्र शुक्ल पक्ष में पड़नेवाला नवरात्र ।

वास–पुं० [सं०] १. रहना । निवास । २. स्थान । घर । मकान ।

स्त्री० १. गंध । महक । बू । २. बहुत ही सूक्ष्म लक्षणों से मिलनेवाला किसी बात का पता । जैसे–पुलिस को भी इस घटना की वास लग गई है ।

वासक–पुं० [सं०] १. वासर । दिन । २. अड़ूसा नामक वृक्ष और उसका फल ।

वासक-सज्जा–स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक की प्रतीक्षा में शयन आदि की सब सामग्री ठीक करके और स्वयं शृंगार करके बैठी हो ।

वासना–स्त्री० [सं०] कुछ पाने की इच्छा या कामना ।

वासर–पुं० [सं०] १. दिन । दिवस । २. मकान । घर । ३. वह कोठरी या घर जिसमें वर-वधू की सुहाग रात होती है । ४. सुख-भोग ।

वासव–पुं० [सं०] इन्द्र।

वासा–पुं० [सं० वास] रहने की जगह। निवास-स्थान। उदा०–मैं ही स्थिर भूतों का वासा, मैं मरघट का पीपल तरु हूँ।—नरेन्द्र।

वासित–वि० [सं०] सुगंध से युक्त या सुगंधित किया हुआ।

वासिल–वि० [अ०] १. मिला या पहुँचा हुआ। प्राप्त। २. जो वसूल हुआ हो।

यौ०–वासिल-बाकी = वसूल की हुई और बाकी रकम।

वासी–पुं० [सं० वासिन्] किसी स्थान पर रहनेवाला। निवास करनेवाला।

वासुकी–पुं० [सं० वासुकि] आठ नागराजों में से दूसरा नागराज।

*स्त्री० [हिं० वास = गंध] सुगंधित फूलों की माला।

वासुदेव–पुं० [सं०] १. वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्णचन्द्र। २. पीपल का पेड़।

वास्कट–स्त्री० [अं० वेस्टकोट] एक प्रकार की कुरती। फतूही।

वास्तव–वि० [सं०] [भाव० वास्तवता] प्रकृत। यथार्थ। असली।

वास्तविक–वि० [सं०] [भाव० वास्तविकता] १. जो वास्तव में हो या हुआ हो। बिलकुल ठीक। (ऐक्चुअल) २. जिसका वास्तव में कोई दृढ़ अधिकार, स्वत्व आदि हो। (राइटफुल) जैसे–वास्तविक अधिकार।

वास्तविकता–स्त्री० [सं०] वास्तविक या यथार्थ होने की क्रिया या भाव। यथार्थता। (रियेलिटी)

वास्तव्य–त्रि० [सं०] रहने या बसने योग्य।

पुं० बस्ती। आबादी।

वास्ता–पुं० [अ०] संबंध। लगाव।

वास्तु–पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ घर बनाया जाय। २. घर। मकान। ३. ईंट-पत्थर आदि से बनी चीज। इमारत।

वास्तुकला–स्त्री० [सं०] वास्तु या मकान, महल आदि बनाने की कला।

वास्तुकार–पुं० [सं०] वह जो वा
रचना करता या इमारतें आदि बनाता
भवन, सेतु आदि बनानेवाला। (आर्कि

वास्तु-काष्ठ–पुं० [सं०] वास्तु-वृ
वह सूखी लकड़ी जो भवन, कुरसी,
मारी आदि बनाने के काम में आती
(टिम्बर)

वास्तु-वृक्ष–पुं० [सं०] वह वृक्ष
लकड़ी घर, अलमारी, मेज, कुरसी
बनाने के काम में आती हो। (टिम्बर

वास्तु-शास्त्र–पुं० [सं०] वह
जिसमें वास्तु-कला का विवेचन होता है

वास्ते–अव्य० [अ०] १. लिए। नि
२. हेतु। कारण।

वाह–वि० [सं०] वहन करने या ढोने
(प्रत्यय के रूप में शब्दों के अंत
जैसे–भार-वाह।

अव्य० [फा०] १. प्रशंसा या
सूचक शब्द। धन्य। २. घृणा या ति
सूचक शब्द।

वाहक–वि० [सं०] [स्त्री० वा
१. बोझ ढोने या खींचनेवाला। २
ग्रहण करनेवाला। ३. हाँकने या च
वाला। ४. दे० 'वाही'।

पुं० सारथी।

वाहन–पुं० [सं०] १. वह जिस पर
कर चलते हों। सवारी। जैसे–घोड़ा
पालकी आदि। २. वह जिस पर कोई
चढ़ाई, बैठाई या रखी हो। ३. वह
जिसके आधार पर कोई चीज कहीं पहुं
हो। जैसे–बिजली की धारा का वाहन
और तार हैं। (वीहिकिल)

वाहना–स० दे० 'बाहना'।

वाह-वाही–स्त्री० [फा०] लोगों की प्रशं
स्तुति। साधुवाद।

वाहि*–सर्व० [हिं० वा] उसको। उसे

वाहित–त्रि० [सं०] १. वहन किया हुआ

विंदुक–पुं॰ [सं॰ विन्दु + क (प्रत्य॰)] पिचकारी की तरह का एक प्रकार का छोटा उपकरण जिससे आँख, कान, नाक आदि में बूंद-बूंद करके दवा डाली जाती है। (ड्रापर)

विंध्य–पुं॰ [सं॰] भारत के मध्य-पूर्व-पश्चिम में फैली हुई एक प्रसिद्ध पर्वत-माला।

विंध्यवासिनी–स्त्री॰ [सं॰] एक देवी जिसका मंदिर मिर्जापुर जिले में विंध्य पर्वत पर है।

विंध्याचल–पुं॰ [सं॰] विंध्य नामक पर्वत-माला।

विंश–वि॰ [सं॰] बीसवाँ।

वि–उप॰ [सं॰] एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर ये अर्थ देता है–(क) विशेष; जैसे–विक्षुब्ध। (ख) अनेक-रूपता; जैसे–विविध। (ग) निषेध या विपरीतता; कुछ अवस्थाओं में 'अं॰ सब' और कुछ अवस्थाओं में 'अं॰ डी' के अर्थ में जैसे–विक्रय, विपक्ष, विनियंत्रण, विसामान्य।

विकंपन–पुं॰ [वि॰ विकंपित] = कंपन।

विकच–वि॰ [सं॰] १. खिला हुआ। विकसित। २. जिसके कच या बाल न हो। पुं॰ बालों की लट।

विकट–वि॰ [सं॰] [भाव॰ विकटता] १. भयंकर। भीषण। २. कठिन। मुश्किल। ३. दुर्गम।

विकर–पुं॰ [सं॰ वि = विशिष्ट + कर] कुछ विशेष अवस्थाओं में या विशिष्ट पदार्थों पर लगनेवाला कर। अबवाब। (सेस) पुं॰ [सं॰] रोग। बीमारी।

विकराल–वि॰ [सं] [भाव॰ विकरालता] भीषण। डरावना।

विकर्ण–पुं॰ [सं॰] वह रेखा जो किसी चतुर्भुज को तिरछे बल में पड़नेवाले आमने-सामने के विन्दुओं को मिलाती और उस चतुर्भुज को दो भुजों में विभक्त करती है। कर्ण। (डायगनल)

वि० [सं०] चार या अधिक कोणोंवाले क्षेत्र में किसी कोण से उसके ठीक विपरीत कोण तक होने या पहुँचनेवाला। टेढ़े बल में नीचे से ऊपर जाने या ऊपर से नीचे आनेवाला। (डायगनल)

विकर्णतः–क्रि० वि० [सं०] विकर्ण के रूप में। तिरछे बल में। (डायगनली)

विकर्षण–पुं० [सं०] [वि० विकृष्ट] १. आकर्षण। खिचाव। २. प्राचीन काल का एक शास्त्र जिसमें किसी को अपनी ओर खींचने या अपने पर अनुरक्त करने की विद्या का वर्णन है। ३. न रहने देना। जैसे–किसी प्रथा, पद्धति आदि का विकर्षण। (एबॉलिशन) ४. दे० 'निवर्त्तन'।

विकल–वि० [सं०] [भाव० विकलता] १. जिसके मन में शांति न हो। विह्वल। व्याकुल। बेचैन। २. जिसमें 'कला' न हो। 'कला' से रहित या हीन। ३. टूटा-फूटा। खंडित। ४. अपूर्ण। अधूरा।

विकलता–स्त्री० [सं०] १. 'विकल' होने की अवस्था या भाव। व्याकुलता। बेचैनी। २. कला-हीनता।

विकलन–पुं० [सं०] खाते या रोकड़-बही में किसी के नाम उसे दिया हुआ धन लिखना। किसी के नाम या खर्च की मद में लिखना। (डेबिड)

विकलांग–वि० [सं०] जिसका कोई अंग टूटा या बेकाम हो। खंडित अंगवाला।

विकला–स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा की कला का सोलहवाँ भाग। २. गणित में समय का एक बहुत छोटा मान।

विकलाना*–अ०, स० [सं० विकल] व्याकुल या बेचैन होना या करना। घबराना।

विकलित–वि० दे० 'विकल'।

विकल्प–पुं० [सं०] [वि० विकल्पित, वैकल्पिक] १. एक कल्पना के बाद उसके विरुद्ध या उससे मिलती-जुलती की जाने वाली दूसरी कल्पना। पहले कोई बात सोचकर फिर उसके विरुद्ध और-और सोचना। २. वह अवस्था जिसमें सा आये हुए कई विषयों या बातों में से एक विषय या बात अपने लिए चुनने अधिकार रहता है। (ऑपशन) ३. आये हुए दो या अधिक ऐसी बा कामों में से हर एक जिनमें से कोई लिए ग्रहण किया जाने को हो। (अ नेटिव) ४. व्याकरण में किसी विष कई नियमों में से अपनी इच्छा के अ कोई एक नियम लेना या मानना भ्रम। धोखा। ६. योग के अनुसा प्रकार की चित्त-वृत्ति जिसमें मन में सन्देह बना रहता है। ७. एक प्रक समाधि। ८. साहित्य में एक अर् जिसमें दो ऐसी विरोधी बातें रख एक साथ न हो सकती हों, यह क है कि या तो यह होगा या वह। (कि, अथवा, वा, या आदि शब्द सूचक होते हैं।) जैसे–पार्वती का प्रतिज्ञा करना कि या तो मैं शंकर विवाह करूँगी या जन्म भर कुमारी र

विकसन–पुं० [सं०] वि० विक १. विकसित होने की क्रिया या विकास होना। २. (कलियों आदि खिलना।

विकसना–अ० [हिं० विकास] १. सित होना। विकास को प्राप्त होना। (कलियों आदि का) खिलना। (मन का) प्रसन्न होना।

विकसाना–स० हिं० 'विकसना' का स

विकसित–वि० [सं०] १ जिसका वि हुआ हो। विकास को प्राप्त होनेवा २. खिला हुआ।

विकस्वर–पुं० [सं०] साहित्य में अर्थालंकार जिसमें पहले कोई बात सा रण रूप से कही जाती है और तब को उदाहरण या उपमा देकर विशेष रू

समर्थन किया जाता है ।
[सं०] [वि० विकृत, विकारी]
जिसके कारण किसी वस्तु का
जाता है और वह खराब होने
ड़ । २. दोष । खराबी । बुराई ।
उत्पन्न होनेवाला कोई प्रबल भाव
४. व्याकरण में उसके नियम
किसी शब्द का रूप बदलना ।
ने लगा' में 'चलने' वस्तुतः
विकार या विकृत रूप है ।
[सं०] १. जिसमें किसी
विकार या बिगाड़ हुआ हो ।
बुरा । उदा०—असुभ होइ
तें, बानर, रीछ विकारी ।
जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन
हुआ हो । ४. जिसके मन में
दि विकार उत्पन्न हुये हों ।
में वह शब्द जिसका रूप कुछ
के अनुसार या कुछ विशेष
में बदलता हो । जैसे—प्रायः
क्रियाएँ और विशेषण
हैं ।
[सं०] १. किसी कार्य के
नियत समय के बीत जाने के
। अति-काल । देर । २.
पहर के बाद का समय ।

[सं०] १. प्रकाश । रोशनी ।
फैलाव । ३. दे० 'विकास' ।
पुं० [सं०] किसी वस्तु में अच्छे-
बढ़ाकर उसे उन्नत करना ।
या सम्पन्न दशा की ओर ले
(डेवलपमेन्ट)
[सं०] [वि० विकसित] १. किसी
बढ़कर कुछ नया, बड़ा
प्रभावक रूप धारण करना ।
। (डेवलपमेन्ट) २.
) खिलना । ३. विज्ञान

में मानी जानेवाली वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई वस्तु अपनी आरम्भिक सामान्य अवस्था से धीरे-धीरे बढ़ती, फैलती और सुधरती हुई उन्नत और पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है । (इवोल्यूशन)

विकासना*—स० = विकसित करना । अ० दे० 'विकसना' ।

विकासवाद—पुं० [सं०] आधुनिक वैज्ञानिकों का एक प्रसिद्ध सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि आरंभ में पृथ्वी पर एक ही मूल-तत्त्व था और सब वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीव-जंतु, मनुष्य आदि क्रमशः उसी से निकले, फैले और बढ़े हैं ।

विकिर—पुं० [सं०] पक्षी । चिड़िया ।

विकिरण—पुं० [सं०] बहुत सी किरणों का एक केन्द्र में इकठा किया जाना या होना । जैसे—आतशी शीशे में ।

विकीर्ण—वि० [सं०] १. चारो और बिखरा या फैला हुआ । २. प्रसिद्ध । मशहूर ।

विकुंठ*—पुं० = वैकुंठ ।

विकृत—वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार का विकार हो गया हो । बिगड़ा हुआ । २. जिसका रूप बिगड़ गया हो । ३. जो युक्ति, तर्क या बुद्धि के अनुसार ठीक न हो, बल्कि उसके विपरीत अनुचित या भ्रमपूर्ण हो । (परवर्स)

विकृत-चित्त—वि० [सं०] किसी प्रकार के मानसिक विकार, नशे आदि के कारण जिसका चित्त या बुद्धि ठिकाने न हो । (ऑफ अनसाउन्ड माइंड)

विकृति—स्त्री० [सं०] १. विकार । बिगाड़ । २. वह रूप जो किसी वस्तु के बिगड़ने पर उसे प्राप्त होता है । किसी वस्तु का बिगड़ा हुआ रूप । ३. सांख्य में मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर उसे प्राप्त होता है । ४. मन का क्षोभ । ५. व्याकरण में शब्द का वह रूप जो मूल धातु में विकार होने पर उसे प्राप्त होता है । ६. सत्य,

औचित्य, न्याय, तर्क, नियम, विधान आदि के सिद्धान्तों से विपरीत या विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। (परवर्शन, परवर्सिटी)

विकृष्ट–वि० [सं०] १. खींचा या खिंचा हुआ। आकृष्ट। २. (विधान, आज्ञा आदि) जिसका अन्त कर दिया गया हो। जो न रहने दिया गया हो।

विकेंद्रीकरण–पुं० [सं०] सत्ता आदि को एक केन्द्र से हटाकर आस-पास के भिन्न-भिन्न अंगों में बाँटना। (डिसेन्ट्रलाइजेशन)

विक्रम–पुं० [सं०] १. पराक्रम। वीरता। बहादुरी। २. बल। शक्ति। ताकत। ३. दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमाजीत–पुं० दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमादित्य–पुं० [सं०] उज्जयिनी का एक प्रसिद्ध और बहुत प्रतापी राजा जिसका ठीक-ठीक समय इतिहासज्ञ अभी तक निश्चित नहीं कर सके हैं। विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रमाब्द–पुं० [सं०] दे० 'विक्रमी संवत्'।

विक्रमी–वि० [सं०] १. जिसमें विक्रम या वीरता हो। २. विक्रम-संबंधी। विक्रम का।

विक्रमी संवत्–पुं० [सं०] भारत में प्रचलित एक प्रसिद्ध संवत् जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रय–पुं० [सं०] मूल्य लेकर कोई वस्तु किसी को देना। बेचना। बिक्री। विक्रय। (डिस्पोजीशन, सेल)

विक्रय कर–पुं० दे० 'बिक्री कर'।

विक्रय-कला–स्त्री० [सं०] ग्राहकों के हाथ चीजें बेचने की कला या हुनर। माल बेचने का कौशल। (सेल्समैनशिप)

विक्रयार्थ–वि० [सं०] जो बिकने के लिए हो। बिक्री का। (फॉर सेल)

विक्रयिक–पुं० [सं० विक्रय] वह जो ग्राहकों के हाथ माल बेचने में चतुर हो। विक्रय-कला का ज्ञाता। (सेल्समैन)

विक्रयिका–स्त्री० [सं०] वह पुरजा जो नगद माल बेचने पर बेचनेवाला लिखकर खरीदनेवाले को देता है। नगद बिक्री का पुरजा। (कैशमेमो)

विक्रयी–पुं० [सं० विक्रयिन्] १. वह जो बेचता हो या जिसने बेचा हो। बेचनेवाला। विक्रेता। २. दे० 'विक्रयिक'।

विक्रियोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय के अवलंबन का वर्णन होता है।

विक्रेता–पुं० [सं०] १. वह जिसने कि के हाथ कोई चीज बेची हो। २. लोगों के हाथ माल बेचनेवाला। विक्रयी।

विक्रेय–वि० [सं०] (वस्तु या माल) जो बेचा जाने को हो। बिकाऊ।

विक्षत–वि० [सं०] चोट खाया हुआ। जिसे क्षत लगा हो। घायल।

विक्षिप्त–वि० [सं०] फैला, बिखरा या छितराया हुआ।

पुं० [भाव० विक्षिप्तता] १. जिसके मस्तिष्क में विकार हो गया हो। पागल। (ल्यूनैटिक) २. योग के अनुसार चित्त की वह अवस्था जिसमें कभी वह स्थिर और कभी चंचल होता है।

विक्षुब्ध–वि० [सं०] जो विशेष रूप से क्षुब्ध हुआ हो। जिसे या जिसमें विक्षोभ हुआ हो।

विक्षेप–पुं० [सं०] १. ऊपर या इधर-उधर फेंकना। २. मन का इधर-उधर भटकना। मन का संयत या शांत न रहना। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ४. विघ्न। बाधा।

विक्षोभ–पुं० [सं०] [वि० विक्षुब्ध] १. मन की चंचलता। उद्वेग। २. किसी अप्रिय या अनिष्ट घटना के कारण मन में होनेवाला विकार। ३. उथल-पुथल।

विखान*–पुं० = विषाण।

विख्यात–वि० [सं०] [भाव० विख्याति] जिसकी बहुत ख्याति हो। प्रसिद्ध।

नाश । ३. हत्या । ४. विफलता । ५. बाधा ।

विघूर्णन–पुं० [सं०] [वि० विघूर्णित] चक्कर खाना । घूमना ।

विघोषण–पुं० [सं० वि + घोष] [वि० विघोषित] १. घोषणा करने की क्रिया या भाव । २. सूचना, विधान आदि का वह प्रकाशन जो उसके प्रचलित किये जाने का सूचक हो । (प्रोमल्गेशन)

विघ्न–पुं० [सं०] अड़चन । बाधा ।

विघ्न-हरण–पुं० [सं०] गणेश ।

विचकित–वि० = चकित ।

विचक्षण–वि० [सं०] १. चमकता हुआ । २. किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता । निपुण । (एक्सपर्ट) ३. पंडित । विद्वान् । ४. बहुत बड़ा बुद्धिमान् ।

विचच्छन*–पुं० = विचक्षण ।

विचयन–पुं० [सं०] १. कोई चीज ढूँढने या तलाश करने की क्रिया या भाव । तलाश । खोज । २. चुराई या छिपाई हुई चीज ढूँढ़ निकालने के लिए किसी के पहने हुए वस्त्रों या घर में की जानेवाली खोज । तलाशी । (सर्च)

विचयन प्रकाश–पुं० [सं०] वह बहुत तेज रोशनी जो अँधेरे में किसी ओर बहुत दूर तक चली गई हो और जिसकी सहायता से उस ओर की सब चीजें देखी या ढूँढ़ी जा सकती हों । (सर्च लाइट]

विचरण–पुं० [सं०] १. चलना । २. घूमना-फिरना ।

विचरना–अ० [सं० विचरण] चलना-फिरना । घूमना ।

विचल–वि० [सं०] [भाव० विचलता, वि० विचलित] १. जो स्थिर न हो । चलता या हिलता हुआ । अस्थिर । २. स्थान, प्रतिज्ञा आदि से हटा हुआ ।

विचलना*–अ० [सं० विचलन] १. अपने स्थान से हटकर इधर-उधर होना । २. घबराना । ३. प्रतिज्ञा या संकल्प से हट

जाना या उसपर दृढ़ न रहना।

विचलाना*–स० हिं० 'विचलना' का स०।

विचलित–वि० [सं०] १. अस्थिर। चंचल। २. अपने स्थान, प्रतिज्ञा, सिद्धान्त आदि से हटा हुआ।

विचार–पुं० [सं०] १. मन में सोचा या सोचकर निश्चित किया हुआ तत्त्व या बात। संकल्प। २. मन में उत्पन्न होनेवाली बात। भावना। ख्याल। ३. किसी बात के सब अंग देखना या सोचना-समझना (कन्सिडरेशन) ४. मुकदमे की सुनवाई और फैसला।

विचारक–पुं० [सं०] १. विचार करनेवाला। २. न्याय-विभाग का वह अधिकारी जो अर्थ-संबंधी व्यवहार या मुकदमों का विचार करता है। (मुन्सिफ)

विचारणा–स्त्री० [सं०] १. विचार करने की क्रिया या भाव। २. अभियोग, विवाद आदि के सम्बन्ध में न्यायालय का किया हुआ निर्णय। (जजमेन्ट)

विचारणीय–वि० [सं०] [स्त्री० विचारणीया] १. जिसपर कुछ विचार करना आवश्यक या उचित हो। २. जो विचार के लिए सामने आया हो, पर जो किसी कारण से विचार के लिए रोक रखा गया हो। (पेन्डिंग) ३. जिसके ठीक होने में संदेह हो। संदिग्ध।

विचारना–अ०, स० [सं० विचार + ना (प्रत्य०)] १. विचार करना। सोचना। *२. पूछना। ३. ढूँढ़ना। पता लगाना।

विचार-पति–पुं० [सं०] न्याय-विभाग का वह उच्च अधिकारी जो किसी व्यवहार या मुकदमे पर विधि या कानून और न्याय के अनुसार विचार करके अपना निर्णय देता है। (जज)

विचारवान्–पुं० = विचारशील।

विचारशील–पुं० [सं०] [भाव० विचारशीलता] वह जिसमें अच्छा तरह विचार करने की शक्ति हो। विचारवान्।

विचार-स्वातंत्र्य–पुं० [सं०] रा
शासन आदि की ओर से मिलनेवाली
स्वतंत्रता जिसमें मनुष्य हर तरह की
सोच सकता और उनके सम्बन्ध में
विचार प्रगट कर सकता है। (लि
ऑफ थॉट)

विचारालय–पुं० = न्यायालय।

विचारित–वि० [सं०] जिसपर वि
हुआ हो। विचार किया हुआ।

विचारी–पुं० [सं० विचारिन्] वह
विचार करता हो। विचार करनेवाला।

विचार्य्य–वि० = विचारणीय।

विचिकित्सा–स्त्री० [सं०] छान
ऊहापोह।

विचित्र–वि० [सं०] [भाव० विचित्र
१. कई रंगोंवाला। २. अद्भुत। विलक्ष
पुं० साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें
कार्य सिद्ध करने के लिए कोई उलय प्र
करने का उल्लेख होता है। जैसे–विरहि
नायिका का जल मरने की इच्छा से
में कपूर, चन्दन आदि का लेप करना।

विचित्रता–स्त्री० [सं०] विचित्र, वि
या अद्भुत होने की अवस्था या भा
विलक्षणता। अनोखापन।

विचूर्ण(चूर्णित)–वि० [सं०]
तरह पीसा या चूर्ण किया हुआ।

विचेतन–वि० [सं०] बेहोश।

विचेष्ट–वि० [सं०] चेष्टा-रहित।

विच्छित्ति–स्त्री० [सं०] १. विच्छे
अलगाव। २. कमी। त्रुटि। ३. साहित्य
एक हाव जिसमें स्त्री ऐसे साधारण शृंगा
से ही, उसकी शोभा बहुत बढ़ा देता
पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है

विच्छिन्न–वि० [सं०] १. काट या छेद
अलग किया हुआ। विभक्त। २. अलग

विच्छेद–पुं० [सं०] [वि० विछिन्न
विच्छेदक] १. काट या छेदकर अल

क्रम टूटना। ३. टुकड़े
होना। ४. नाश। ५.

सं०] [भाव० विच्युति]
से गिरा हुआ। च्युत।

=वियोगी।

=वियोग।

सं०] १. जिसमें जन या
२. एकान्त। निराला।

=पंखा।

सं०] युद्ध, विवाद, प्रतियो-
होनेवाली जीत। जय।

[हिं० विजस] विजय
विजेता। उदा०–विस्व-विजय
तें जय करि डारत।–रत्ना०।
की क्रिया। खाना। (पूरब)
बहु बिजै बैकुंठ छिप्र'।–

-स्त्री० [सं०] किसी को जीतने
नेवाली यात्रा।

(श्री)-स्त्री० [सं०] विजय
और विजय प्राप्त कराने-

[सं०] १. दुर्गा। २. भाँग।
का एक मात्रिक छन्द
चरण में दस मात्राएँ होती
दंडक और शुभ दंडक इसी
भेद हैं।) ४. चार चरणों
जिसके प्रत्येक चरण में
के चार टुकड़े और अन्त
और या नगण होता है।
दशमी'।

-स्त्री० [सं०] आश्विन
। (हिन्दुओं का त्यौहार)
[सं० विजयिन्] [स्त्री०
प्राप्त करने या जीतने-
।

[सं०] १. विजया दशमी

का उत्सव। २. किसी पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में होनेवाला उत्सव।

विजल–वि० [सं०] जल-रहित। पुं० वर्षा का अभाव। अवर्षण।

विजातीय–वि० [सं०] दूसरी जाति का।

विजानना*–स० [हिं० जानना] अच्छी तरह जानना।

विजित–वि० [सं०] जिसे या जो जीत लिया गया हो। जीता हुआ।

विजेता–पुं० [सं० विजेतृ] जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। विजयी।

विजै*–स्त्री० = विजय।

विजोग*–पुं० = वियोग।

विज्ञ–वि० [सं०] [भाव० विज्ञता] १. जानकार। २. बुद्धिमान्। ३. विद्वान्।

विज्ञप्त–वि० [सं०] १. जिसकी जानकारी कराई गई हो। जतलाया या बतलाया हुआ। २. जिसका या जिसके संबंध में विज्ञापन हुआ हो। (एडवरटाइजड)

विज्ञप्ति–स्त्री० [सं०] [वि० विज्ञप्त] १. जतलाने या सूचित करने की क्रिया। (नोटिफिकेशन) २. अधिकारिक रूप से प्रकाशित की हुई कोई सूचना। (कम्यूनिक) ३. विज्ञापन। इश्तहार।

विज्ञान–पुं० [सं०] १. ज्ञान। जानकारी। २. आत्मा। ३. बौद्धों के अनुसार आत्म-स्वरूप का ज्ञान। ४. किसी विषय का अच्छा और पूरा ज्ञान। ५. किसी विषय विशेषतः जड़ पदार्थों और लौकिक विषयों की जानी हुई बातों, तत्त्वों, सिद्धान्तों आदि का वह विवेचन जो एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में हो। (साइन्स) जैसे–भौतिक विज्ञान; राजनीति विज्ञान।

विज्ञानमय-कोष–पुं० [सं०] ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह।। (वेदान्त)

विज्ञानवाद–पुं० [सं०] एक बौद्ध दार्शनिक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता था कि विज्ञान या चित्त ही एक मात्र सत्य

पदार्थ है।

विज्ञानी-पुं॰ [सं॰ विज्ञानिन्] १. किसी विषय का अच्छा ज्ञाता। २. बहुत बड़ा ज्ञानी। ३. विज्ञानवेत्ता।

विज्ञापन-पुं॰ [सं॰] [वि॰ विज्ञापक, विज्ञापनीय, विज्ञापित] १. जानकारी कराना। सूचना देना। २. वह सूचना-पत्र जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बतलाई जाती है। इश्तहार। ३. बिक्री आदि के माल या किसी बात की वह सूचना जो सब लोगों को, विशेषतः सामयिक पत्रों के द्वारा दी जाती है। (एडवरटिजमेन्ट)

विज्ञापित-वि॰ [सं॰] १. जिसका या जिसके संबंध में विज्ञापन हुआ हो। (एडवरटाइज्ड) २. जिसकी सूचना दी गई हो। (नोटिफायड)

विज्ञापित क्षेत्र-पुं॰ [सं॰] स्थानिक स्वशासन और प्रबन्ध के लिए नियत किया हुआ छोटा क्षेत्र। (नोटिफायड एरिया)

विट-पुं॰ [सं॰] १. कामुक और लंपट। २. धूर्त्त। चालाक। ३. साहित्य में वह धूर्त्त और स्वार्थी नायक जो भोग-विलास में अपनी सारी संपत्ति गँवा चुका हो। ४. विष्ठा। गुह।

विटप-पुं॰ [सं॰] वृक्ष। पेड़।

विटामिन-पुं॰ [अं॰] प्रायः खाद्य पदार्थों में पाया जानेवाला एक प्रकार का पोषक तत्त्व। विशेष दे॰ 'पोषक'।

विटैमिन-पुं॰ दे॰ 'विटामिन'।

विडंब-पुं॰ १. दे॰ 'विडंबन'। २. दे॰ 'विडंबना'।

विडंबन-पुं॰ [सं॰] १. चिढ़ाने या हँसी उड़ाने के लिए किसी के रंग-ढंग या हाव-भाव की नकल उतारना। २. हँसी उड़ाना। उपहास करना।

विडंबना-स्त्री॰ [सं॰][वि॰ विडंबनीय, विडंबित] १. किसी को चिढ़ाने या तुच्छ ठहराने के लिए की जानेवाली उसकी नकल। २. हँसी। उपहास। ३. दम्भ।

विडरना*-अ॰ [?] १. तितर-बि होना। २. भागना।

विड़ारना-स॰ हिं॰ 'विड़रना' का स॰

विड़ाल-पुं॰ [सं॰] बिल्ली।

विड़ौजा-पुं॰ [सं॰] इन्द्र।

वितंडा-स्त्री॰ [सं॰] [वि॰ कर्त्ता वैत १. दूसरे की बातों की उपेक्षा करते अपनी बात कहते चलना। २. व्यर्थ विवाद या कहा-सुनी।

वितंत*-पुं॰ [सं॰ वि॰ + तंत्र] (सा सितार आदि से भिन्न प्रकार का) वह जिसमें तार न लगे हों।

वित*-वि॰ [सं॰ विद्] १. जानने ज्ञाता। २. चतुर। निपुण।

*पुं॰ = वित्त (धन)।

वितताना*-अ॰ [सं॰ व्यथा] होना। बेचैन होना।

वितति-स्त्री॰ [सं॰] विस्तार। फैला

वितथ-वि॰ [सं॰] १. जिसमें कुछ न हो। २. मिथ्या। झूठ।

पुं॰ आज्ञा, निश्चय, आभार आदि के या पालन का अनुचित या दंडनीय या अभाव। (डिफॉल्ट)

वितथी-पुं॰ [सं॰ वितथ] वह जो निश्चय, आभार आदि का ठीक सम और उचित रूप से पालन न कर स वितथ का दोषी। (डिफॉल्टर)

वितन*-पुं॰ [सं॰ वितनु]

उदा॰—तिय-तन वितन जु पंचसर ही बार।—नंददास।

वितनु-वि॰ [सं॰] १. बिना त शरीर का। २. बहुत छोटा। सूक्ष्म।

पुं॰ कामदेव।

वितपन्न*-वि॰ पुं॰ = व्युत्पन्न।

वि॰ [?] घबड़ाया हुआ। व्याकुल।

वितरक-पुं॰ [सं॰] १. वह जो बाँ हो। बाँटनेवाला। २. वह जो किसी अभिकर्त्ता के रूप में उसकी तैयार की

मार्च तक का होता है)

विथकना*–अ० [हिं० थकना] १. थकना। २. मोह या आश्चर्य के कारण चुप होना।

विथकित*–वि० [हिं० विथकना] १. थका हुआ। २. मोहित या चकित होने के कारण चुप।

विथराना*–स० [सं० वितरण] १. फैलाना। २. बिखराना। छितराना।

विथा*–स्त्री० = व्यथा।

विथारना*–स० = फैलाना।

विथित–वि० = व्यथित।

विदग्ध–पुं० [सं०] [भाव० विदग्धता, स्त्री० विदग्धा] १. रसिक। २. विद्वान्। पंडित। ३. चतुर। होशियार। ४. दक्ष। होशियार।

विदग्धा–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह परकीया नायिका जो होशियारी के साथ परपुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे। यह दो प्रकार की मानी गई हैं–वचन विदग्धा और क्रिया विदग्धा।

विदरना*–अ० [सं० विदरण] फटना। स० विदीर्ण करना। फाड़ना।

विदर्भ–पुं० [सं०] आधुनिक बरार प्रदेश का पुराना नाम।

विदल–वि० [सं०] १. जिसमें दल न हों। २. खिला हुआ।

विदलन–पुं० [सं०] [वि० विदलित] १. रौंदने, मलने, दबाने आदि की क्रिया या भाव। २. फाड़ना। ३. नष्ट करना।

विदा–स्त्री० [अ० विदाअ] १. प्रस्थान। २. जाने की अनुमति। वि० प्रस्थित। रवाना।

विदाई–स्त्री० [अ० विदाअ] १. विदा होने की क्रिया या भाव। २. प्रस्थान करने के समय दिया जानेवाला धन। ३. किसी के प्रस्थान करने के समय उसके प्रति शुभकामना प्रकट करने के लिए लोगों का एकत्र होना। (फेयरवेल)

विदारक-वि० [सं०] फाड़नेवाला ।

विदारण-पुं० [सं०] १. फाड़ना । २. मार डालना ।

विदारना*-स० = फाड़ना ।

विदित-वि० [सं०] जाना हुआ । ज्ञात ।

विदिशा-पुं० [सं०] १. दो दिशाओं के बीच की दिशा । कोण । २. मध्य भारत की एक प्राचीन नगरी । (आज-कल का भेलसा नामक नगर) ।

विदीर्ण-वि० [सं०] फाड़ा या फटा हुआ ।

विदुष-पुं० [सं०] [स्त्री० विदुषी] पंडित। विद्वान् ।

विदुषी-स्त्री० [सं०] विद्वान् स्त्री ।

विदूर-वि० [सं०] [वि० विदूरित] बहुत दूर ।

*पुं० दे० 'वैदूर्य' ।

विदूषक-पुं० [सं०] [स्त्री० विदूषिका] १. अपने वेष, चेष्टा, बात-चीत आदि से दूसरों को हँसानेवाला । मसखरा । २. प्रायः नाटकों में इस प्रकार का एक पात्र जो नायक का अंतरंग मित्र या सखा होता है ।

विदूषण-पुं० [सं०] दोष लगाना ।

विदेश-पुं० [सं०] [वि० विदेशी, विदेशीय] अपने देश के सिवा दूसरा देश । पर-देश ।

विदेशी-वि० [हिं० विदेश] १. दूसरे देश या देशों से सम्बन्ध रखनेवाला । [फॉरेन] २. विदेश का निवासी । परदेसी ।

विदेह-पुं० [सं०] १. राजा जनक । २. मिथिला और मगध प्रदेशों का पुराना नाम । (इसमें कन्या-वाचक शब्द लगने से 'सीता' का अर्थ होता है ।)

वि० [सं०] १. जिसे अपने शरीर के अस्तित्त्व का कुछ भी ध्यान या चिंता न हो । २. शरीर-रहित । ३. बे-सुध ।

विदेही-वि० [स्त्री० विदेहिनी] दे० 'विदेह'।

विद्-वि० [सं०] जानकार । ज्ञाता । (यौ० के अन्त में: जैसे-कलाविद् ।)

विद्दरण-वि० [सं०] दरण करने दलनेवाला । विदारक ।

विद्ध-वि० [सं०] १. बेधा या छेदा हुआ २. घायल । ३. टेढ़ा । ४. सटा हुआ

विद्यमान-वि० [सं०] [भाव० विद्यमान उपस्थित । मौजूद । (प्रेज़ेन्ट)

विद्या-स्त्री० [सं०] १. शिक्षा आदि द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान । २. वे जिनमें ज्ञान की बातों का विवेचन है । ३. ज्ञान के विशेष विभाग । ४.

विद्याधर-पुं० [सं०] [स्त्री० विद्या १. एक प्रकार की देव-योनि । २. प्रकार का अस्त्र । ३. विद्वान् ।

विद्या-पीठ-पुं० [सं०] शिक्षा का केन्द्र । महाविद्यालय ।

विद्यारंभ-पुं० [सं०] बालक की या पढ़ाई आरंभ करने का संस्कार

विद्यार्थी-पुं० [सं०] [स्त्री० विद्या विद्या पढ़नेवाला । छात्र ।

विद्यालय-पुं० [सं०] वह जगह विद्या पढ़ाई जाती हो । पाठशाला । (

विद्युत्-स्त्री० [सं०] बिजली । (इलेक्ट्रि विशेष दे० 'बिजली' ।

विद्युत्-चालक-वि० [सं०] [विद्युत् चालकता] (वह पदार्थ) एक सिरे पर विद्युत् लगते ही उस सिरे तक पहुँच जाय । (कन्डक्टर इलेक्ट्रिसिटी) जैसे-धातुएँ आदि ।

विद्युतिक-वि० [सं० विद्युत्] १. सम्बन्धी । विद्युत् का । २. बिजली के और यंत्रों से सम्बन्ध रखने (इलेक्ट्रिकल)

विद्युत्मापक-पुं० [सं० विद्युत + मा वह यंत्र जिससे विद्युत् का मल और वे गति नापी जाती है ।

विद्युद्दर्शक-पुं० [सं०] एक प्रकार यन्त्र जिसकी सहायता से यह देखा है कि किसी वस्तु में कैसी और कितनी

ह। (ऐम्मीटर)
[सं०] चार चरणों
जिसके प्रत्येक चरण
दो गुरु होते हैं।
] गूँगा।
[सं०] १. द्वेष। २. वह
उद्देश्य राज्य की हानि
या नष्ट करना हो।
। (रिबीलियन, म्यूटिनी)
[सं० विद्रोहिन्] १. द्वेष
करनेवाला। बागी।
[सं० विद्वस्] [भाव० विद्वत्ता]
विद्या पढ़ी हो। पंडित।
[सं०] १. विद्वेष से उत्पन्न।
करनेवाला। (रिपगनेन्ट)
[सं०] १. शत्रुता। वैर।
विरोधिता। (रिपगनेन्सी)
[सं० विध्वंस] [*क्रि०
ना।
। नष्ट। विनष्ट।
[सं० विधि] ब्रह्मा।
प्रकार। तरह।
[सं० विधि] १. विश्व का
शक्ति। २. होनी।
अनन्यता।
वि० [सं०] १. विधि के
विधि के अनुसार।
[सं० विधर्मिन्] [भाव०
अधर्म या दुष्कर्म करनेवाला।
दूसरे धर्म का अनुयायी। ३.
धर्म आदि से भिन्न प्रकार के
रखनेवाला। ('सधर्मी का
[सं०] [भाव० वैधव्य] वह
पति मर चुका हो। राँड़।
पुं० [सं० विधवा + आश्रम]
अनाथों और विधवाओं के
और शिक्षा आदि का प्रबंध

होता है।

विधाँसना*--स० दे० 'विधंसना'।

विधाता-पुं० [सं० विधातृ] [स्त्री० विधात्री] १. विधान करनेवाला। २. उत्पन्न करने या जन्म देनेवाला। ३. सृष्टि रचनेवाला। (ब्रह्मा या ईश्वर)

विधान-पुं० [सं०] १. किसी कार्य का आयोजन। अनुष्ठान। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३. विधि। प्रणाली। ढंग। ४. रचना। निर्माण। ५. कोई काम करने के लिए दी हुई आज्ञा। विधि। ६. राज्य या शासन द्वारा किसी विशेष विषय में बनाये हुए नियमों का समूह। क़ानून। (ऐक्ट) जैसे—खाद्य विधान, दंड विधान आदि। ७. दे० 'संविधान'।

विधान-परिषद्-स्त्री० [सं०] १. किसी देश या राज्य के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह परिषद् या सभा जो उसके लिए नये विधान या कानून बनाती और पुराने विधानों में संशोधन आदि करती है। (लेजिस्लेटिव एसेम्बली) २. दे० 'संविधान परिषद्'।

विधान-मंडल-पुं० दे० 'विधायिका'।

विधानवाद-पुं० दे० 'संविधानवाद'।

विधानवादी-पुं० दे० 'संविधानवादी'।

विधायक-वि० [सं०] [स्त्री० विधायिका, विधायिनी] १. विधान करनेवाला। २. यह बतलानेवाला कि यह काम इस प्रकार होना चाहिए। ३. (पत्र, आज्ञा आदि) जिसके द्वारा कोई विधान किया या आज्ञा दी जाय। (मैनडेटरी)

विधायन-पुं० [सं० विधान से हिं०] १. विधान करना या बनाना। २. राज्य, शासन या विधायिका सभा का कोई नया विधान अभिनियम, निर्देश आदि बनाना। (एनेक्टमेन्ट) ३. उक्त प्रकार से बने हुए विधान, अधिनियम निर्देश आदि। ४. किसी विषय या विभाग के कार्य-संचालन से सम्बन्ध

रखनेवाले नियम आदि।

विधायन संग्रह–पुं० [सं०] किसी विषय, विभाग, प्रान्त आदि के कार्य संचालन से सम्बन्ध रखनेवाले नियमों, निर्देशों आदि का संग्रह। (कोड) जैसे–बंगाल विधायन संग्रह। (बंगाल कोड)

विधायिका (सभा)–स्त्री० [सं०] लोकतंत्री शासन में प्रजा के प्रतिनिधियों की वह सभा जो नये विधान या कानून बनाती और पुराने विधानों में संशोधन, परिवर्तन आदि करती है। (लेजिसलेचर)

विधायित–वि० दे० 'विहित'।

विधायी–वि० दे० 'विधायक'।

विधारण–पुं० [सं० वि (विकृत या विपरीत) + धारणा] [वि० विधारित] किसी विवादास्पद या अप्रमाणित बात या विषय या पहले से स्थिर की हुई विपरीत, विकृत या पक्षपात-पूर्ण धारणा। (प्रिजुडिस)

विधारित–वि० [हिं० विधारण] १. जिसने अपने मन में किसी विषय में कोई विकृत या पक्षपात-पूर्ण धारणा बना ली हो। २. जिसके संबंध में उक्त प्रकार की धारणा बनी या हुई हो। (प्रिजुडिस्ड)

विधि–स्त्री० [सं०] १. काम करने का ढंग या रीति। प्रणाली। तरीका। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३. किसी धर्म, शास्त्र या प्रामाणिक ग्रंथ में बतलाई हुई व्यवस्था। शास्त्रीय विधान। ४. शास्त्रों की यह आज्ञा कि मनुष्य को अमुक-अमुक काम अवश्य करने चाहिएँ। ५. मनुष्यों के आचार-व्यवहार के लिए राज्य द्वारा स्थिर किये हुए वे नियम या विधान, जिनका पालन सबके लिए आवश्यक और अनिवार्य होता है और जिनका उल्लंघन करने से मनुष्य दंडित होता या हो सकता है। कानून। (ला) ६. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे किसी को कोई काम करने का आदेश दिया जाता है। (इम्परेटिव मूड) जैसे–यहाँ बैठो, सच बोलो आदि। साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध या स्थापित विधान में किसी अभिप्राय से फिर कोई नया विधान स्था किया जाय या कोई नई बात या लगाई जाय। जैसे–मनुष्य तो वह है ईश्वर-भक्ति, दया, परोपकार, सहा आदि गुण हों। ८. प्रकृति या नियति भाँति। तरह।

पुं० सृष्टि की रचना करनेवाला, ब्रह्मा

विधिक–वि० [सं०] १. विधि या से सम्बन्ध रखनेवाला। २. जो वि विचार से ठीक हो। वैध। (लीगल, ला जैसे–विधिक अधिकार, विधिक प्रति आदि।

विधिकता–स्त्री० [सं०] विधि विधि-विधान आदि के विचार से ठीक होने की दशा या भाव। (लीगै

विधि-कर्त्ता–पुं० [सं०] वह जो या कानून बनाता हो। (लॉ मेकर)

विधिक प्रतिनिधि–पुं० [सं० जिसे विधि या कानून के अनुसार प्रतिनिधि रूप में सब काम करने का कार हो। (लीगल रिप्रेज़ेन्टेटिव)

विधिक व्यवहार–पुं० [सं०] वह या प्रक्रिया जो किसी व्यवहार या में विधि या कानून के अनुसार हो (लीगल प्रोसीडिंग)

विधिक साध्या–स्त्री० [सं० साध्या जो विधि अर्थात् कानूनी सम्बन्ध रखती हो। (इश्यू ऑफ़ लॉ)

विधिज्ञ–पुं० [सं०] १. विधि का २. वह जिसने विधि-शास्त्र या कानू अच्छा अध्ययन किया हो और जो के व्यवहारों के संबंध में न्यायाल प्रतिनिधि के रूप में काम करता हो। वकील, बैरिस्टर आदि। (लॉयर)

विधितः–क्रि० वि० [सं०] १. विधि

। (बाई-लॉ) २. विधि
से ठीक या मान्य रूप में।

[सं०] सरस्वती।
[सं०] ऐसा काम करना
विधि या कानून टूटता हो।
लॉ)

-स्त्री० = सरस्वती।
वि० [सं०] १. विधि या
अनुसार। २. उचित रूप से।
-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें
के विशिष्ट नियमों, विधियों,
का विवेचन होता है और
से मनुष्य उस विषय में दक्ष
(जूरिसप्रूडेन्स) जैसे-भैषज्य
(मेडिकल जूरिसप्रुडेन्स) या
विज्ञान (लीगल जूरिसप्रूडेन्स)
-पुं० [सं०] किसी देश या
विधि (कॉमन लॉ) और
की समष्टि। जैसे-भारतीय विधि-
इंडियन लॉ), जरमन विधि-
जरमन लॉ) आदि।
-पुं० [सं०] चन्द्रमा को प्रसने-
।

[सं०] १. चन्द्रमा। २. ब्रह्मा।
-स्त्री० दे० 'विधु-वदनी'।
[सं०] [स्त्री० विधुरा] १.
व्याकुल। ३. असमर्थ। ४. वह
की पत्नी मर गई हो। रँडुआ।
-स्त्री० [सं०] चन्द्रमा की

-स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।
[सं०] १. काँपता या हिलता
छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३. दूर
हटाया हुआ।
[सं०] [वि० विधूनित] काँपना।
[सं०] १. जिसका विधान
हो। किये जाने के योग्य।

कर्त्तव्य। २. जिसका विधान होने को हो। पुं० व्याकरण में वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाता है। (प्रेडिकेट)

विधेयक-पुं० [सं०] किसी विधान या कानून का वह पूर्व या प्रस्तावित रूप जो पारित होने के लिए विधायिका में उपस्थित किया जाता है। कानून का मसौदा। (बिल)

विध्वंस-पुं० [सं०] पूरा-पूरा नाश। बरबादी।

विध्वंसक-वि० [सं०] नाश करनेवाला। पुं० एक प्रकार का लड़ाई का जहाज। (डिस्ट्रायर)

विध्वस्त-वि० [सं०] नष्ट किया हुआ।

विनत-वि० [सं०] १. झुका हुआ। २. नम्र।

विनति-स्त्री० [सं०] १. झुकाव। २. नम्रता। सुशीलता। ३. प्रार्थना। विनती।

विनती-स्त्री० = विनति।

विनम्र-वि० [सं०] [भाव० विनम्रता] बहुत विनीत या नम्र।

विनय-स्त्री० [सं०] १. नम्रता। २. शिक्षा। ३. प्रार्थना। ४. नीति।

विनयन-पुं० [सं०] १. विनय। नम्रता। २. शिक्षा। ३. निर्णय। निराकरण। ४. दूर करना। मोचन।

विनयी-वि० [सं० विनयिन्] विनययुक्त। विनयशील। नम्र।

विनशन-पुं० = विनाश (करना)।

विनश्य-वि० [सं०] नष्ट किये जाने या होने के योग्य।

विनश्वर-वि० [सं०] नाशवान्। अनित्य।

विनष्ट-वि० [सं०] [भाव० विनष्टि] १. नष्ट। ध्वस्त। २. मृत। ३. बिगड़ा हुआ। ४. पतित।

विनसना*-अ० [सं० विनशन] नष्ट होना।

विनाण*-पुं० = विज्ञान।

विनाती*-स्त्री० = विनति।

विनायक-पुं० [सं०] गणेश।

विनाश-पुं० [सं०] [वि० विनाशक] १. नाश । २. लोप । ३. बिगाड़ । खराबी ।

विनाशक-पुं० [सं०] [स्त्री० विनाशिका] विनाश करनेवाला ।

विनाशन-पुं० [सं०] [वि० विनाशी, विनश्य] १. नष्ट करना । २. संहार करना ।

विनासना*-स० [सं० विनाशन] १. नष्ट करना । २. मार डालना ।

विनिधान-पुं० [सं० वि + निधान] [वि० विनिधित] १. निर्देश, सूचना आदि के रूप में पहले से यह बतला देना कि अमुक कार्य इस रूप में हो अथवा अमुक-अमुक वस्तुओं का प्रयोग इस रूप में हो । २. इस प्रकार के निर्देश या सूचना से युक्त लेख । (प्रेसक्रिप्शन)

विनिधित-वि० [हिं० विनिधान] जिसका निर्देश, सूचना आदि के रूप में पहले से विनिधान हुआ हो । (प्रेसक्राइब्ड)

विनिमय-पुं० [सं०] १. एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना । परिवर्त्तन । (बार्टर) २. वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न पक्षों या देशों का लेन-देन विनिमय-पत्रों के अनुसार होता है । (एक्सचेंज) ३. वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य स्थिर होते हैं और जिसके अनुसार आपसी लेन-देन चुकाये जाते हैं । (एक्सचेंज)

पद-**विनियम की दर** = वह दर जिससे एक देश के सिक्के दूसरे देश के सिक्कों से बदले जाते हैं ।

४. साहित्य में 'परिवृत्ति' नामक अलंकार । विशेष दे० 'परिवृत्ति' ७. ।

विनिमय-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी आर्थिक देन या व्यय का सूचक होता है और जिसके द्वारा आपस के लेन-देन की दर तै होती है । (बिल आफ एक्सचेंज)

विनियंत्रण-पुं० [सं०] [वि० विनियंत्रित] नियंत्रण का हटाया या दूर किया जाना । (डि-कन्ट्रोल)

विनियोग-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु
किसी काम में लाया या लगाया जाना ।
उपयोग । प्रयोग । (एप्लिकेशन) २. वैदि
कृत्यों में होनेवाला मंत्र का प्रयोग ।
प्रेषण । भेजना । ४. व्यापार में पूँ
लगाना । (इन्वेस्टमेंट) ५. संपत्ति आ
किसी प्रकार (विक्रय या दान आदि से
दूसरे को देना । (डिसपोजल, डिस्पोजीशन
६. दे० 'उपयोजन' ।

विनियोगिका(वृत्ति)-स्त्री० [सं०]
नियोग करने के योग्य या विनियोग
में सक्षम बुद्धि या वृत्ति । (डिस्पोजिं
माइन्ड)

विनियोजक-वि० [सं०] १. विनि
करनेवाला । २. व्यापार में पूँजी लगानेवा
३. अपनी संपत्ति किसी को देनेवाला ।

विनिर्दिष्ट-वि० [सं०] विशेष रूप से नि
किया या बतलाया हुआ । (स्पेसिफा

विनिर्देश-पुं० [सं०] विशेष रूप से कि
हुआ कोई निर्देश या निश्चित रूप से
लाई हुई कोई बात । (स्पेसिफिकेशन

विनिवर्त्तन-पुं० [सं०] [वि०
वर्त्तित] दी हुई वस्तु या आज्ञा, किया
प्रस्ताव अथवा प्रचलित की हुई चीज
लेना । वापस लेना । (विदड्रॉवल)

विनिवर्त्तित-वि० [सं०] जिसका
वर्त्तन हुआ हो । देने या उपस्थित
बाद वापस लिया हुआ (विद्ड्रॉन)

विनिश्चय-पुं० [सं०] किसी वि
विशेषतः किसी सभा-समिति या न्या
में, होनेवाला निश्चय या निर्णय । (डिसी

विनिश्चायक-वि० [सं०] विनिश्चय
निर्णय करनेवाला । (डिसाइसिव)

विनीत-वि० [सं०] [स्त्री० विनीता
१. विनयी । सुशील । २. शिष्ट । नम्र ।
धर्म या नितिपूर्वक व्यवहार करनेवाला ।

विनोक्ति-स्त्री० [सं०] साहित्य में

कोई वस्तु (क) किसी
के कारण अशोभन अथवा
त का अभाव होने पर भी
बतलाई जाती है।
] [वि० विनोदी] १. मन
या काम। तमाशा। २.
ऐसी वास्तविक या कल्पित
लोग हँस पड़े। परिहास।
प्रसन्नता।
[सं० विनोदिन्] वह जो
नेवाली बातें कहता हो।
करनेवाला। विनोदशील।

[सं०] [वि० विन्यस्त]
रखना। २. यथा-स्थान या
लगाना। ३. जड़ना।
[सं०] १. एक प्रकार की
सुरी। मुरली।
नोहर शब्द निकले।
[सं०] १. दूसरा या विरोधी
विरोध या खंडन। ३. दे०

[सं० विपक्षिन्] १. विरुद्ध
। २. विरोधी। शत्रु। ३.
(अपोनेन्ट) ४. प्रतिवादी।
[सं० विपद् + जनक]
लाने वाला। संकट उत्पन्न

[सं०] १. दुःख। कष्ट। २.
। ३. कठिनाई। ४. कोई
घटना या उससे उत्पन्न होनेवाली
बड़ी हानि हो सकती हो।
। (कैलेमिटी)
–वि० [सं०] जिससे विपत्ति
आ सकती हो। (डेन्जरस)
] बुरा या खराब रास्ता।
[सं०] [स्त्री० विपथ-
ी या खराब रास्ते पर
चलनेवाला। कुमार्गी। २. चरित्र-हीन। बद-चलन।

विपद्–स्त्री० [सं०] विपत्ति। आफत।

विपन्न–वि० [सं०] [स्त्री० विपन्ना, भाव० विपन्नता] दुःखी। आर्त्त।

विपरीत–वि० [सं०] १. जो अनुकूल या हित-साधन में सहायक न हो। प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। (कन्ट्रैरी) २. जो प्रकृति, प्रवृत्ति, स्थिति आदि के विचार से किसी के मुकाबले में या दूसरे पक्ष में हो। उलटा। (अपोजिट) ३. जो क्रम मान्यता आदि के विचार से किसी के विरुद्ध या दूसरे पक्ष में पड़ता हो। उलटा। (रिवर्स)

विपर्ण–पुं० [सं०] एक साथ या आमने-सामने लगी हुई रसीदों आदि का वह बाहरी भाग जो लिख या भरकर किसी को दिया जाता है। (आउटर फॉयल)

विपर्यय–पुं० [सं०] [वि० विपर्यस्त] १. इधर-उधर या आगे-पीछे होना। उलट-पुलट। व्यतिक्रम। २. क्रम में आगे से पीछे या पीछे से आगे होना। क्रम परिवर्त्तन। (ट्रांसपोजीशन) ३. कुछ का कुछ समझना। भ्रम। ४. भूल। गलती। ५. उलटकर फिर पहले रूप, स्थान आदि में लाना। (रिवर्शन) ६. गड़बड़ी। अव्यवस्था।

विपर्यस्त–वि० [सं०] १. जिसका विपर्यय हुआ हो। २. जिसे ठीक या मान्य न समझकर उलट या रद्द कर दिया गया हो। (ओवर-रूल्ड)

विपर्याय–पुं० [सं० वि (विरुद्ध) + पर्याय] किसी शब्द का ठीक विरोधी या विपरीत अर्थ या भाव सूचित करने वाला शब्द। विरुद्धार्थक। (एन्टॉनिम) जैसे–'दिन' का विपर्याय 'रात' या 'अन्धेरा' का विपर्याय 'उजाला' है।

विपल–पुं० [सं०] एक पल का साठवाँ भाग।

विपाक–पुं० [सं०] १. परिपक्व होना। पकना। २. पूरी अवस्था को पहुँचना। ३.

परिणाम। फल। ४. पचना। ५. दुर्दशा।

विपिन–पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. उपवन। बगीचा। बाग।

विपुल–वि० [सं०] [स्त्री० विपुला, भाव० विपुलता, *विपुलाई] संख्या, परिमाण आदि में बहुत अधिक।

विपोहना*–स० [सं० वि+प्रोत] १. पोतना। २. नष्ट करना। ३. दे० 'पोहना'।

विप्र–पुं० [सं०] ब्राह्मण।

विप्रयोग–पुं० [सं०] १. अलग या पृथक होने की अवस्था या भाव। अलगाव। पार्थक्य। २. किसी बात या वस्तु से रहित या हीन होने की अवस्था या भाव। 'संयोग' का विरुद्धार्थक। जैसे–बिना धनुष-बाण के राम। (यदि 'धनुष-बाणवाला राम' कहा जायगा तो वह 'संयोग' कहलावेगा।)

विप्रलंभ–पुं० [सं०] १. प्रिय वस्तु या व्यक्ति का न मिलना। २. वियोग। विरह। ३. साहित्य में वियोग श्रृंगार (दे०)। ४. छल। धोखा। ५. धूर्त्तता।

विप्रलब्ध–वि० [सं०] जिसे चाही हुई वस्तु न मिली हो।

विप्रलब्धा–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जिसके मन में नायक के वियोग के कारण खेद और दुःख है।

विप्रलाप–पुं० = प्रलाप।

विप्लव–पुं० [सं०] १. उपद्रव। अशान्ति। २. विद्रोह। बलवा। (रिबेलियन) ३. उथल-पुथल। हल-चल। ४. आफत। विपत्ति। ५. नदी आदि की बाढ़।

विप्लवी–वि० [सं० विप्लविन्] १. विप्लव या विद्रोह करनेवाला। (रिबेल)

विप्सा–स्त्री० दे० 'वीप्सा'।

विफल–वि० [सं०] [भाव० विफलता] १. (वृक्ष) जिसमें फल न लगा हो। २. (काम) जिसका कोई फल या परिणाम न हो। निष्फल। व्यर्थ। ३. (व्यक्ति) जिसे प्रयत्न में सफलता न हुई हो। ४. (विषय या निश्चय) जो न होने के समान हो या
कर दिया गया हो। (नल)

विफलता–स्त्री० [सं०] 'विफल'
की दशा या भाव। (फेल्योर)

विबुध–पुं० [सं० वि+बुध] [
विबुधा] १. विद्वान् २. बुद्धिमान्।
देवता। ४. चन्द्रमा।

विबुधाकर–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

विबुधेश–पुं० [सं०] इन्द्र।

विबोध–पुं० [सं०] [वि० विबोध्य, विबो
सो चुकने के उपरांत, जागने की अवस्
भाव। जाग्रत होना। जागना। (सा
में इसलिए यह संचारी भाव माना ग
कि प्रायः सोकर उठने के समय नायि
मुख, शरीर आदि की शोभा भी
प्रकार से आकर्षक होती है।)

विभंग–पुं० [सं०] [वि० विभंगि
खंडित होना। टूटना। २. आघात
से शरीर की कोई हड्डी टूटना। (फ्रैक
३. तरंग। लहर।

वि० १. चंचल। २. प्रबल। तेज। उ
भँवर-पर विभंग तर तरंग-मालिका।–

विभक्त–वि० [सं० वि+भज्] १.
कई भागों में बँटा हुआ। विभाजित
अलग किया हुआ।

विभक्ति–स्त्री० [सं०] १. विभ
अलग होने की क्रिया या भाव। वि
अलगाव। २. कारक-चिह्न (
जैसे–का, ने, से, को आदि।

विभव–पुं० [सं०] १. धन।
२. ऐश्वर्य। ३. अधिकता। बहुताय

विभव-कर–पुं० [सं०] वह कर जो
से उसकी धन-संपत्ति या वैभव के
से लिया जाता हो। (सरकमस्टान्सेज

विभाँति–वि० [हिं० वि+भाँति]
प्रकार का। तरह-तरह का।

विभा–स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चम
२. प्रकाश। रोशनी। ३. किरण।

[सं०] १. सूर्य्य। २. ता।

[सं०] १. बाँटने की क्रिया भाजन। बँटवारा। (डिस्ट्री- अंश। हिस्सा। ३. पुस्तक अध्याय। ४. सुभीते या प्रबंध अलग किया हुआ क्षेत्र। डिपार्टमेंट) ५. कार्य संचालन के लिए किसी कार्य-क्षेत्र के कई हिस्सों में से एक। (सेक्शन) ६. कार्य के लिए अलग और निश्चित कोई अंश, खंड, क्षेत्र आदि।

-पुं० [सं० विभाग+अध्यक्ष] किसी विभाग का अध्यक्ष अथवा सबसे बड़ा अधिकारी हो। (हेड डिपार्टमेन्ट)

-वि० [सं०] १. विभाग या संवाला। २. बाँटनेवाला।

-पुं० [सं०] १. अलग-अलग हिस्सों में बाँटने की क्रिया या करना। बँटवारा। (पार्टिशन,)२. थोड़ा-थोड़ा करके लोगों बाँटना। बँटवारा। तकसीम।) ३. लोगों में बाँटने के आवश्यकता, उपयोगिता, उत्तर- आदि के विचार से किसी अलग-अलग अंश या विभाग (अपोर्शनमेन्ट)

-वि० = विभक्त।

-वि० [सं०] [भाव० विभाज्यता] करने योग्य। जिसका विभाजन (डिवीज़िबुल) २. जिसका सकता हो।

-अ० [सं० विभा] १. चमकना। होना।

-ना। २. शोभित करना।

[सं०] साहित्य में वे बातें या वस्तुएँ जो किसी रस के आश्रय (व्यक्ति) में करुणा, रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न करके उन्हें उद्दीप्त तथा जाग्रत करती हैं। (आलंबन और उद्दीपन दोनों इसके अन्तर्गत आते हैं)

विभावन-पुं० [सं०] १. किसी विषय में होनेवाली स्पष्ट धारणा या विचार। २. किसी को देखकर पहिचानना और कहना कि यह वही है; शिनाख्त। (आइडेन्टिफिकेशन) ३. साहित्य के रस-विधान में वह मानसिक व्यापार जिसके कारण पात्र द्वारा प्रदर्शित भाव का, श्रोता या पाठक भी साधारणीकरण के द्वारा भागी होता है।

विभावन-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहिचान का सूचक हो और उसके पास इसी काम के लिए रहता हो। (आइडेन्टिटी कार्ड)

विभावना-स्त्री० [सं०] १. किसी बात या वस्तु की विशिष्ट रूप से भावना या कल्पना करना। २. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कारण और कार्य का साधारण के अतिरिक्त कुछ विशेष या विलक्षण ढंग से उल्लेख होता है। जैसे—कारण के अभाव या अपूर्णता से भी कोई कार्य होना, अथवा कारण के बाधक या विपरीत होने पर भी कार्य होना आदि।

विभावरी-स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।

विभाव्य-वि० [सं०] [भाव० विभाव्यता] जिसके होने की कुछ आशा या संभावना हो। जो हो सकता हो। (प्रोबेबुल)

विभाषा-स्त्री० [सं०] [वि० वैभाषिक] १. यह कहना कि ऐसा हो भी सकता है और ऐसा नहीं भी हो सकता। २. व्याकरण में ऐसा प्रयोग जिसके संबंध में उक्त प्रकार की बात कही जाय।

विभास-पुं० [सं०] [*क्रि० विभासना] १. चमक। दीप्ति। २. ओड़व जाति का एक राग जो प्रातःकाल गाया जाता है।

विभिन्न-वि० [सं०] १. बिलकुल अलग। पृथक्। जुदा। २. अनेक प्रकार के।

विभीषिका-स्त्री० [सं०] १. भयभीत करना। डराना। २. भयानक कांड या दृश्य।

विभु-वि० [सं०] [भाव० विभुता] १. सर्व-व्यापक। २. बहुत बड़ा। महान्। ३. सदा बना रहनेवाला। नित्य। ४. बलवान्। पुं० १. जीवात्मा। २. ईश्वर।

विभुता-स्त्री० = विभूति।

विभूति-स्त्री० [सं०] १. अधिकता। बढ़ती। २. वैभव। ऐश्वर्य्य। ३. संपत्ति। धन। ४. दिव्य या अलौकिक शक्ति। ५. दिव्य या अलौकिक शक्ति से युक्त बहुत योग्य तथा गुणवान मनुष्य। महापुरुष। ६. शिव के अंग में लगाने की राख या भस्म। ७. लक्ष्मी। ८. सृष्टि।

विभूषण-पुं० [सं०] [वि० विभूषित] १. भूषण। गहना। २. गहनों आदि से सजाने की क्रिया या भाव। अलंकरण।

विभूषना*-स० [सं० विभूषण] १. गहनों से सजाना। २. सुशोभित करना।

विभेटना*-पुं० = भेंटना।

विभेद-पुं० [सं०] [* क्रि० विभेदना] १. अंतर। फरक। २. अनेक भेद। कई प्रकार। ३. विशेष रूप से किया हुआ भेद या अलगाव। (डेस्क्रिमिनेशन) ४. भेदन करना, छेदना या वेधना।

विभोर-वि० [सं० विह्वल] १. विह्वल। विकल। २. मग्न। लीन। ३. मत्त। मस्त।

विभौ*-पुं० = विभव।

विभ्रम-पुं० [सं०] १. भ्रान्ति। धोखा। २. संदेह। ३. पारस्परिक व्यवहार में किसी के काम या बात का आशय समझने में होनेवाली भूल। किसी के ठीक भाव को भी भ्रम से गलत समझना। (मिस-अन्डरस्टैंडिंग) साहित्य में संयोग-शृंगार के समय स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे प्रियतम का आगमन सुनकर या उससे मिलने के लिए जाने के समय उत्सु- कता के कारण जल्दी में उलटे-पलटे भूषण- वस्त्र पहन लेती हैं।

विमत-पुं० [सं०] विरुद्ध या विपक्ष में दिया जानेवाला मत। (डिस्सेन्ट)

विमन-वि० [सं० विमनस्] १. अन- मना। २. उदास।

विमनस्क-वि० [सं०] १. अन्यमनस्क। अनमना। २. उदास।

विमर्श(र्ष)-पुं० [सं०] १. मन में होने- वाली अहं-भाव की स्फूर्ति। २. विचार विवेचन। ३. आलोचना। ४. परीक्षा जाँच। ५. परामर्श। ६. नाटक की पाँ संधियों में से एक, जिसमें बीज का अधि विकास होता है, परन्तु फल प्राप्ति से पह शाप, विपत्ति आदि के रूप में विघ्न लगते हैं।

विमल-वि० [सं०] [भाव० विमलत स्त्री० विमला] १. स्वच्छ। निर्मल। पवित्र। निर्दोष। ३. सुंदर।

विमाता-स्त्री० [सं० विमातृ] [वि वैमात्रिक] पिता की दूसरी पत्नी माता की सौत। सौतेली माँ। (स्टेप मद

विमान-पुं० [सं०] १. आकाश-मा से चलनेवाला रथ। उड़न-खटोला। वायु-यान। हवाई जहाज। ३. मरे वृद्ध मनुष्य की अरथी जो धूम-धाम निकाली जाती है। ४. रथ। ५. घोड़ा वि० १. मान या प्रतिष्ठा से रहित जिसमें चमक-दमक न हो। फीका।

विमान-चालक-पुं० [सं०] वह विमान या हवाई जहाज चलाता हो।

विमान-भेदी-स्त्री० दे० 'विमानवेधी'।

विमान-वाहक-पुं० [सं० विमान+ वाहक] एक प्रकार का समुद्री जहाज जिस ऊपर बहुत लंबी-चौड़ी छत होती है और जिसपर बहुत-से हवाई जहाज रहते हैं।

विमान-वेधी-स्त्री० [सं० विमान+वि०

र की तोप, जो उड़ते हुए
र गोले चलाती है।
[सं०] १. अच्छी तरह
। स्वच्छंद। ३. (दंड
या छूटा हुआ। (ए-
सक।
[सं०] १. छुटकारा।
मोक्ष। ३. अभियोग
छूटना। (एक्विटल)
[सं०][भाव० विमुखता]
न हो। २. जिसने किसी से
हो। विरत। ३. उदासीन।
तक संकट, पराधीनता आदि
र अन्त में सदा के लिए उससे
छुटकारा। (इमैन्सिपेशन)
५. अप्रसन्न। ६. निराश।
पुं० दे० 'अवमूल्यन'।
पुं० [सं०][वि० विमोचित]
आदि से छूटा हुआ। २.
प्रमाण के अभाव में अभियुक्त
से मुक्त होना। (एक्विटल)
अवतंक भार या देन से छूटने के
बार में कुछ इकट्ठा धन दे
रिम्पशन)
-स० [सं० विमोचन] बंधन
छुड़ाना या खोलना।
-वि० [सं०] १. बंधन आदि से
। २. सन्तोषजनक प्रमाण के
मुक्त किया हुआ। (एक्विटेड)
या देन जो चुका दिया गया हो।
)
-अ० [सं० विमोहन] १.
होना। १. बेसुध होना। ३.
आना।
करना। लुभाना। २. बेसुध
धोखे में डालना।
=शिव।
[सं० द्वि] १. दो। २. जोड़ा।

युग्म। २. दूसरा। अन्य।

वियत*–पुं० [सं० वियत्] आकाश।

बियुक्त–पुं० [सं०] १. जिसका किसी से वियोग हुआ हो। २. अलग। ३. रहित। (माइनस)

वियुग्म–वि० [सं०] १. जो युग्म या जोड़ा न हो। अकेला। २. जिसे दो से भाग देने पर एक बचे। ३. जो साधारण, निश्चित या स्वाभाविक से कुछ भिन्न और अलग हो। विलक्षण। अनोखा। (ऑड)

वियो*–वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।

वियोग–पुं० [सं०] [वि० वियुक्त, वियोगी] १. किसी से बिछुड़ने या दूर होने की क्रिया, अवस्था या भाव। अलग होना। २. प्रिय व्यक्ति से मिलन न होना। विरह। ३. अलग होने का दुःख। ४. घटाया या कम किया जाना।

वियोग-शृंगार–पुं० [सं०] साहित्य में शृंगार रस का वह विभाग जिसमें प्रेमियों के पारस्परिक वियोग या विरह का वर्णन होता है। विप्रलंभ। 'संयोग शृंगार' का विरुद्धार्थक।

वियोगांत–वि० [सं०] (नाटक, उपन्यास आदि) जिसका अन्त या पर्यवसान दुःखपूर्ण हो। (ट्रेजेडी)

वियोगी–वि० [सं० वियोगिन्] [स्त्री० वियोगिनी] प्रेमिका के वियोग से दुःखी। विरही।

वियोजक–पुं० [सं०] पृथक् या अलग करनेवाला।

वियोजन–पुं० [सं०] १. किसी वस्तु के संयोजक अंगों को अथवा कुछ मिले हुए तत्त्वों को अलग अलग करना। २. युद्ध-काल में बढ़ाये हुए सैनिकों को सैनिक सेवा से हटाना। (डिमॉबिलाइजेशन)

विरंचि–पुं० [सं०] ब्रह्मा।

विरंजन–पुं० [सं०] १. वह प्रक्रिया जिससे किसी वस्तु में के सब रंग हट या

निकल जायँ। रंगों से रहित करना। २. धोकर साफ करना। (ब्लीचिंग)

विरक्त-वि० [सं०] [भाव० विरक्ति] १. विमुख। विरत। २. उदासीन। ३. अप्रसन्न।

विरक्ति-स्त्री० [सं०] [वि० विरक्त] १. किसी के प्रति अनुराग, प्रेम, सहानुभूति आदि न रह जाने का भाव। विराग। २. सांसारिक सुख-भोगों से मन भर जाना और उनकी ओर प्रवृत्ति न रह जाना। वैराग्य। ३. उदासीनता।

विरचन-पुं० [सं०] [वि० विरचित] १. रचने का काम। निर्माण। बनाना। २. तैयारी।

विरचना*-स० [सं० विरचन] १. रचना या निर्माण करना। बनाना। २. सजाना।

अ० [सं० वि+रंजन] विरक्त होना।

विरचित-वि० [सं०] बनाया या रचा हुआ। निर्मित।

विरज-वि० [सं०] कामना, वासना आदि से रहित।

विरत-वि० [सं०] [भाव० विरति] १. जो अनुरक्त न हो। विमुख। २. जो काम छोड़कर अलग हो गया हो। निवृत्त। ३. विरक्त वैरागी। ४. कार्य, पद, सेवा आदि से हटा हुआ। (रिटायर्ड)

विरति-स्त्री० [सं०] १. विरत होने की क्रिया या भाव। २. कार्य, पद, सेवा आदि से अलग होना। (रिटायरमेन्ट)

विरथ-वि० [सं०] १. जो रथ या सवारी पर न हो। २. पैदल।

विरद-पुं० दे० 'विरुद'।

विरदावली-स्त्री० दे० 'विरुदावली'।

विरदैत*-वि० [हिं० विरद] बड़े विरद-वाला। कीर्त्ति या यशवाला।

विरमना*-अ० [सं० विरमण] [स० विरमाना] १. किसी से या कहीं मन लगाना। रमना। २. रुकना। ठहरना।

अ० दे० 'विलंबना'।

विरमाना*-स० हिं० 'विरमना' का स०।

विरल-वि० [सं०] [भाव० विरलता] १. 'घना' या 'सघन' का उलटा। २. दूर-दूर पर स्थित। ३. दुर्लभ। ४. कम। थोड़ा। ५. पतला। ६. निर्जन।

विरस-वि० [सं०] [भाव० विरसता] १. नीरस। फीका। २. अप्रिय। अरुचिकर। ३. जिसमें रस का निर्वाह न हुआ हो। (काव्य)

पुं० १. रस का अभाव। रस का न होना। २. साहित्य में वह स्थिति जो रस के विरी हो। ३. अनुराग, दया आदि का अभ या विपरीत अवस्था। उदा०-राजत अं रस-विरस अति, सरस-सरस रस भेद।-के

विरह-पुं० [सं०] १. किसी से अल रहित होने का भाव। २. दे० 'वियोग'।

विरही-वि० [स्त्री० विरहिणी] वियोगी।

विराग-पुं० [सं०] [वि० विरागी] १. र या इच्छा का अभाव। २. दे० 'वैराग्य'।

विराज-वि० [सं०] राज्य-रहित।

पुं० [सं० विराज] १. वैराज्य-शा प्रणाली वाले राज्य का राजा। २. प्राची काल के एक प्रकार के प्रजातंत्री राज्य प्रधान या राजा।

पुं० [सं० विराजस्] ब्रह्मा की प संतान या पुत्र जिससे पहले मनु या स्वायं मनु की उत्पत्ति हुई थी। (मनुस्मृ आधार पर)

विराजना-अ० [सं० विराजन] १. शोभि होना। २. बैठना। ३. विद्यमान होन (आदर-सूचक)

विराजमान-वि० [सं०] १. शोभित। २. उपस्थित। मौजूद। ३. बैठा हुआ।

विराट्-पुं० [सं०] १. विश्व-रूप ब्रह्म। २. विश्व। ३. क्षत्रिय। ४. कांति। दीप्ति।

वि० बहुत बड़ा या बहुत भारी।

विराम-पुं० [सं०] १. रुकना। ठहरना।

सेवा, कार्य आदि से
करना। (रिटायरमेन्ट)
स्थल जहाँ बोलते समय
हो। ५. पद्य के चरण

पुं० [सं०] वह समय या
करने या सुस्ताने के लिए
(वेकेशन)

पुं० [सं०] लेख, छापे
होनेवाले वे विशिष्ट चिह्न
के विरामों के सूचक होते हैं।
जैसे-, ;-आदि।

स्त्री० [सं०] वह संधि जो
की संधि होने से पहले उसकी
के लिए होती हैं। (ट्रूस)

= बरासत।

= विलासी।

[सं०] निरोग। रोग-रहित।

अ० = उलझना।

[सं०] १. राजाओं की स्तुति
गुण-वर्णन। प्रशस्ति। २.
के राजाओं की कीर्त्ति-सूचक
पद।

स्त्री० [सं०] गुण, पराक्रम,
का विस्तारपूर्वक होनेवाला
।२. गुणावली।

[सं०] १. प्रतिकूल। विपरीत।
२. किसी के मुकाबले या विरोध
(एगेन्स्ट) ३. कार्यों, प्रयत्नों
करने या उनकी विफलता

[सं० विरुद्ध + अर्थ + क
विरुद्ध या विपरीत अर्थ प्रकट

किसी शब्द का ठीक
अर्थ अथवा भाव प्रकट
(एन्टॉनिम) जैसे-
दोनों एक-दूसरे के

विरुद्धार्थक हैं।

विरुद्द*-वि० = विरुद्ध।
पुं० = विरोध।

विरूप-वि० [सं०] [स्त्री० विरूपा, भाव० विरूपता] १. अनेक रंग-रूपों का। २. कुरूप। भद्दा। ३. परिवर्तित। ४. शोभाहीन। वि-श्री। ५. विरुद्ध।

विरूपण-पुं० [सं०] [वि० विरूपित] आघात आदि के द्वारा अथवा और किसी प्रकार किसी का रूप या आकार बिगाड़ना। (डिफार्मेशन)

विरूपता-पुं० [सं०] रूप के बिगड़े हुए होने (या विरूप होने) का भाव। (डिफॉर्मिटी)

विरूपाक्ष-वि० [सं०] बिगड़े हुए, बे-ढंगे या विलक्षण नेत्रोंवाला।
पुं० महादेव। शिव।

विरूपित-वि० [सं०] जो विरूप किया गया हो। जिसका विरूपण हुआ हो।

विरेचन-पुं० [सं०] [वि० विरेचक, विरेचित] १. दस्त लानेवाली दवा। जुलाब। २. दस्त लाना। ३ निकालना।

विरोध-पुं० [सं०] [वि० विरोधक] १. प्रतिकूलता। २. बैर। शत्रुता। ३. दो विपरीत बातों का एक साथ न हो सकना। व्याघात। ४. किसी कार्य को रोकने के लिए अथवा उसके विपरीत प्रयत्न। ५. भिन्न-भिन्न विचारों या तथ्यों में होनेवाला पारस्परिक विपरीत भाव। (रिपग्नेन्सी) ६. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें घटनाओं, द्रव्यों आदि के कार्यों, गुणों, जातियों आदि के विचार से परस्पर विरोधी होने पर भी कोई बात होने का उल्लेख होता है। जैसे—वर्षा ऋतु और वसन्त अथवा अमृत और विष का एक साथ होना, अथवा अपना प्रभाव या स्वरूप दिखलाना। (इसके दस भेद माने गये हैं)

विरोधना*-अ० [सं० विरोधन] विरोध,

शत्रुता या लड़ाई करना।

विरोध पीठ-पुं० [सं०] विधायिका सभाओं आदि में वे आसन जिनपर राजकीय पक्ष या बहु-मत दल के विरोधी लोग बैठते हैं। (अपोजिशन बेंचेज)

विरोधाभास-पुं० [सं०] १. दो बातों में दिखाई देनेवाला विरोध। २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें क्रिया, गुण, जाति, द्रव्य, धर्म आदि का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि उनकी कुछ बातों में पारस्परिक विरोध का कुछ आभास सा मिलता है।

विरोधिता-स्त्री० [सं०] १. 'विरोधी' का भाव। विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। २. बैर। शत्रुता।

विरोधी-वि० [सं० विरोधिन्] [स्त्री० विरोधिनी] १. विरोध करनेवाला। २. विरुद्ध पड़नेवाला। उलटा। विपरीत। (अपोजिट) जैसे—ये दोनों सिद्धान्त एक दूसरे के विरोधी हैं।

पुं० १. वह जो सामने आकर मुकाबला करता हो। विपक्षी। (अपोनेन्ट) २. शत्रु। बैरी।

विलंब-पुं० [सं० विलंबन] साधारण या नियत से अधिक समय (जो किसी काम में लगे)। देर। अति-काल। (डीले)

विलंबना*-अ० [सं० विलंबन] १. देर करना या लगाना। २. लटकना। ३. सहारा लेना।

अ० दे० 'विरमना'।

विलंबित-वि० [सं०] १. लटकता हुआ। २. लंबा किया हुआ। ३. जिसमें देर हुई हो। ४. देर लगाकर और मन्द गति से गाया जानेवाला (गान)। 'द्रुत' का विपर्य्याय।

विलक्षण-वि० [सं०] [भाव० विलक्षणता] १. अद्भुत। अनोखा। २. असाधारण।

विलखना-अ० दे० 'बिलखना'।
*अ० [सं० लक्ष] १. पता पाना। २.

विलग-वि० = अलग।

विलगाना*-अ०, स० [हिं०
अलग या पृथक् होना या करना।

विलपना*-अ० [सं० विलाप]

विलम*-पुं० दे० 'बिलंब'।

विलमना*-अ० दे० 'बिलमना'।

विलय(न)-पुं० [सं०] १. लय
होना। २. एक वस्तु का दूसरी
मिलकर समा जाना। ३. घुल
जाना। (फ्यूजन) ४. विघटित
५. किसी देशी रियासत या राज्य
पास के सरकारी या दूसरे बड़े
राज्य मे मिलकर एक हो जाना। (

विलयीकरण-पुं० [सं०] १.
करना। २. राज्य या राष्ट्र का
राज्य को अपने में मिला लेना। (

विलसन-पुं० [सं०] [वि०
*क्रि० विलसना] १. चमकने की
२. क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद।

विलाप-पुं० [सं०] [*क्रि०
रोकर दुःख प्रकट करना। रुदन।

विलायत-पुं० [अ०] [वि०
१. विदेश। २. दूर का देश।

विलास-पुं० [सं०] १. प्रसन्न
क्रिया। २. मनोविनोद। ३.
हर्ष। ४. स्त्रियों की पुरुषों के प्रति
सूचक चेष्टाएँ। ५. साहित्य में
शृंगार का एक हाव जिसमें प्रिय
होने पर नायिका अपनी गति-
से नायक का अनुराग उद्दीप्त करती
कोई मनोहर चेष्टा। ७. किसी
मनोहर रूप में हिलना-डोलना
यथेष्ट सुख-भोग।

विलासिनी-स्त्री० [सं०] १. सुंदरी
कामिनी। २. वेश्या।

विलासी-पुं० [सं० विलासिन्]

] १. सुख-भोग में लगा
। २. कामी । कामुक । ३.
। विनोदप्रिय ।
[सं० व्यलीक] अनुचित ।
[सं०] १. अदृश्य । लुप्त ।
हुआ । ३. छिपा हुआ ।
[सं० विध्वंस] नष्ट होना ।
[हिं० लखना ?] १. कल्पना ।
२. सोच विचार ।
तेल'
दे० 'देखना' ।
[सं०] [वि० विलोड़ित]
। मथना ।
[सं०] १. लुप्त या गायब
२. कुछ समय के लिए भंग या
। (डिस्सोल्यूशन)
[सं० विलोप] लुप्त या
।
[सं०] विपरीत । उलटा ।
नीचे की ओर आने का क्रम ।
दे० 'विधि' ।
[सं०] [वि० विवक्षित]
इच्छा । २. अर्थ । तात्पर्य ।
परिणाम के रूप में या
रूप से होनेवाली बात ।
)
=विवाद करना ।
[सं०] १. छिद्र । छेद । २.
द्वार । गर्त । ४. गुफा । कंदरा ।
[सं०] १. किसी बात या
रखनेवाली मुख्य बातों का
वर्णन । वृत्तान्त । हाल ।
एकान्ट) २. किसी बड़े के
अपने कार्यों आदि के संबंध में
विस्तृत बातें । परिवृत्त ।
) १. दे० 'विवरणिका' ।
-स्त्री० [सं०] सभा-संस्थाओं
आदि का वह विवरण जो सूचना के लिए किसी को भेजा जाय। (रिपोर्ट)

विवर्जन-पुं० = वर्जन ।

विवर्ण-पुं० [सं०] साहित्य में भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदलना जो एक भाव माना गया है ।

वि० [सं०] [वि० विवर्णित, भाव० विवर्णता] १. जिसका रंग बिगड़ गया या फीका पड़ गया हो । बद-रंग । २. कान्तिहीन ।

विवर्त-पुं० [सं०] १. रूपांतर। २ भ्रांति । भ्रम । ३. ह्रास ।

विवर्तन-पुं० [सं०] चक्कर लगाना । घूमना । २. घूमना-फिरना । टहलना ।

विवर्द्धन-पुं० [सं०] [वि० विवर्द्धित] १. बढ़ाना । २. किसी छोटी वस्तु के प्रतिबिम्ब आदि को कुछ विशिष्ट प्रक्रियाओं से बड़ा करना । (मैगनिफिकेशन)

विवश-वि० [सं०] [भाव० विवशता] १. जो ऐसी अवस्था में पड़ा हो, जिसमें वह अपनी इच्छा से कुछ कर न सके । बेबस । लाचार । २. जो दूसरे की ओर से उक्त प्रथा की अवस्था में लाया या रखा गया हो । (कम्पेल्ड)

विवशन-पुं० [सं०] विवश करने की क्रिया या भाव ।

विवसन-वि० [सं०] [स्त्री० विवसना] जो कोई वस्त्र न पहने हो । नंगा । नग्न ।

विवस्त्र-वि० [सं०] [स्त्री० विवस्त्रा] नंगा ।

विवाद-पुं० [सं०] [वि० विवादग्रस्त, विवाद्य] १. ऐसी बात जिसके विषय में दो या अधिक विरोधी पक्ष हों और जिसकी सत्यता का निर्णय होने को हो । (डिस्प्यूट) २. कहा-सुनी । वाक्-युद्ध । ३. झगड़ा । कलह । ४. दीवानी या फौजदारी मुकदमा । (केस, सूट)

विवादास्पद-वि० [सं०] १. जिसके विषय में विवाद हो । विवादयुक्त (डिस्प्यूटेड) २. जिसके सम्बन्ध में विवाद या बहस हो

सकती हो। (डिबेटेबुल) ३. जिसके सम्बन्ध में कोई विवाद चल रहा हो या चलने को हो। (कॉन्ट्रोवर्सल)

विवादी-पुं० [सं० विवादन्] १. विवाद या झगड़ा करनेवाला। २. मुकदमा लड़नेवालों में से कोई एक। ३. संगीत में वह स्वर जो किसी राग के मुख्य या वादी स्वर से मेल न खाता हो और किसी राग में लग कर उसका स्वरूप विकृत कर देता हो।

विवाह-पुं० [सं०] [वि० वैवाहिक, विवाहित] वह धार्मिक या सामाजिक कृत्य या प्रक्रिया जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष में पत्नी और पति का संबंध स्थापित होता है। पाणि-ग्रहण। ब्याह। शादी। (हमारे यहाँ आठ प्रकार के विवाह कहे गये हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व राक्षस और पैशाच। आजकल इनमें से केवल ब्राह्म-विवाह प्रशस्त माना जाता है और वही प्रचलित है।

विवाहना-स० = विवाह करना।

विवाह-विच्छेद-पुं० [सं०] पति और पत्नी का वैवाहिक संबंध तोड़ना या न रखना जो कुछ धर्मों में और कुछ विधियों के अनुसार होता है। तलाक। (डाइवोर्स)

विवाहित-वि० [सं०] [स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो। ब्याहा हुआ।

विवि[illegible]-वि० [सं० द्वि] १. दो। २. दूसरा।

विविक्त-वि० [सं०] १. किसी से अलग या पृथक किया हुआ। २. एकान्त में रहने या होनेवाला। ऐकान्तिक। ३. जो किसी कारण से दूसरों के सामने न हो सकता हो। एकान्त में कुछ गुप्त रूप से किया जाने या होनेवाला। (प्राइवेट) जैसे—विविक्त परामर्शालय। ४. जिसका पता ऊपर से सहज में न लग सके। गंभीर। गहन। जैसे—विविक्त निर्णय या विचार।

पुं० [सं० विविक्त] १. अकेले होने की अवस्था या भाव। अकेलापन। २. एकान्त स्थान। ३. ऐसी स्थिति जिसमें कोई काम या बात साधारणतः निजी रूप से परन्तु दूसरों की दृष्टि बचाकर किया जाता है या करने की आवश्यकता या प्रथा हो। (प्राइवेट)

विविच्छेद-पुं० दे० 'विवाह-विच्छेद'।

विविध-वि० [सं०] [भाव० विविधता] १. अनेक प्रकार का। कई तरह का। २. कई विभागों, मदों आदि का मिला-जुला। फुटकर। (मिसलेनियस)

विवृत-वि० [सं०] [भाव० विवृति] १. विस्तृत। फैला हुआ। २. खुला हुआ। ३. विवरण, व्याख्या आदि के द्वारा स्पष्ट किया हुआ।

पुं० ऊष्म स्वरों के उच्चारण में होनेवाला एक प्रकार का प्रयत्न। (व्याकरण)

विवृत्ति-स्त्री० [सं०] वह कथन या वक्तव्य जो अपने किसी कार्य के अनुचित समझे जानेपर उसके स्पष्टीकरण के लिए हो। (एक्सप्लेनेशन)

विवृतोक्ति-स्त्री० [सं० विवृत = स्पष्ट उक्ति] साहित्य में एक अलंकार जिसमें पहले तो कोई रहस्यपूर्ण बात श्लिष्ट शब्दों में कही जाती है, पर अंत में किसी शब्द या क्रिया के द्वारा वह बात स्पष्ट कर दी जाती है।

विवृत्त-वि० [सं०] [भाव० विवृत्ति] १. घूमता हुआ। २. लौटा हुआ। फैला

विवृत्ति-स्त्री० [सं०] [वि० विवृत] १. घूमना। चक्कर खाना। २. लौट कर वापस होना।

विवेक-पुं० [सं०] १. भली बुरी बातें सोचने समझने की शक्ति या ज्ञान। (डिस्क्रीशन) २. मन की वह शक्ति जिससे भले-बुरे का ठीक और स्पष्ट ज्ञान होता है। (कॉन्शेन्स) ३. बुद्धि।

विवेक-स्वातन्त्र्य-पुं० [सं०] शासन की ओर से लोगों को मिलनेवाली

में उसे अपने विवेक के
करने से इन्कार करने का
है। (लिबर्टी ऑफ कॉन्शेन्स)
किसी को लड़ाई पर जाने
को नष्ट करने के लिए
वह अपने 'विवेक-स्वातंत्र्य'
ऐसा करने से इनकार कर

वि० [सं०] जो किसी के
के ज्ञान पर आश्रित हो।

)
[सं० विवेकिन्] १. भले-
रखनेवाला। विवेकशील। २.
३. ज्ञानी। ४. न्यायशील।
[सं०] [वि० विवेचनीय,
१. भली-भाँति परीक्षा करना।
निर्णय करना। मीमांसा।

०=विवेचन।
[सं०] साहित्य में एक हाव
के कारण अथवा मान-
अथवा उसकी दी हुई किसी
कुछ अनादर या उपेक्षा का
जाता है।
[सं०] [भाव० विशदता]
। २. विस्तार रूप से। जैसे-
। ३. स्वच्छ। निर्मल। ४.
। ६. सफेद। ७. सुन्दर।
[सं०] १. काँटे आदि से
। २. कष्ट, चिन्ता आदि

स्त्री० [सं०] शरीर
से विष का प्रभाव दूर
या दवा।
[सं०] १. पंडित। २. कुशल।
[सं०] [भाव० विशालता]
२. विस्तृत। लंबा-चौड़ा।
। ४. दे० 'बृहत्तर' २.।

विशिख-पुं० [सं०] बाण। तीर।

विशिष्ट-वि० [सं०] [भाव० विशिष्टता] १. किसी विशेषता से युक्त। २. असाधारण। ३. मुख्य। प्रधान।

विशिष्टाद्वैत-पुं० [सं०] एक भारतीय दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जीवात्मा और जगत दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी अभिन्न ही माने गये हैं। (यह वेदांत दर्शन का एक सप्रदाय है।)

विशिष्टीकरण-पुं० [सं०] १. किसी विषय को उसके ब्योरे की बातों पर ध्यान देते हुए उसे विशिष्ट और स्वतन्त्र रूप देना। ऐसा रूप देना जो विशेषता का सूचक या परिचायक हो। २. किसी विषय, कार्य, व्यवसाय आदि का विशेष रूप से अध्ययन करना। अथवा उसमें पारंगत होना। (स्पेशलाइजेशन)

विशुद्ध-वि० [सं०] [भाव० विशुद्धता, विशुद्धि] १. किसी प्रकार की मिलावट से रहित। खरा। जैसे-विशुद्ध घी। (प्योर) २. जिसमें किसी प्रकार का दोष या खराबी न हो। जैसे-विशुद्ध आचरण। ३. जो व्यर्थ की या इधर-उधर की बातों से रहित या अलग हो। जैसे-विशुद्ध ज्ञान।

पुं० हठ-योग के अनुसार शरीर के अंदर के छः चक्रों में से एक जो गले के पास माना गया है। यह धूम्र वर्ण का और सोलह दलोंवाला माना गया है। (आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केन्द्र की प्रक्रिया से शरीर में के विष बाहर निकलते हैं।)

विशुद्धता-स्त्री० [सं०] विशुद्ध होने की दशा या भाव। (प्योरिटी)

विशुद्धि-स्त्री० = विशुद्धता।

विशुद्धिवाद-पुं० [सं०] [वि० विशुद्धिवादी] १. यह सिद्धांत कि मनुष्य को अपने धार्मिक आचार-विचारों का पूरा-पूरा और कठोरतापूर्वक पालन करना चाहिए। २. किसी क्षेत्र में यह सिद्धांत कि अपने कार्यों

या कृतियों में व्यर्थ की या इधर-उधर की बातें नहीं आने देनी चाहिए और उन्हें पूर्ण रूप से विशुद्ध रखना चाहिए। (प्यूरोटैनिज्म) जैसे—साहित्यिक क्षेत्र में अपनी भाषा में दूसरी भाषाओं के शब्दों का परित्याग और बहिष्कार।

विशुद्धिवादी-पुं० [सं० विशुद्धवादिन्] वह जो विशुद्धिवाद का सिद्धांत मानता हो और उसके अनुकूल आचार या व्यवहार करता हो। (प्यूरिटन)

विशूचिका-स्त्री० दे० 'विसूचिका'।

विशृंखल-वि० [सं०] [भाव० विशृंखलता] जिसमें क्रम या शृंखला न हो।

विशेष-वि० [सं०] १. जो स्वरूप, मान, मात्रा आदि के विचार से औरों से कुछ बढ़ा हुआ और फलतः कुछ अलग प्रकार का हो। जिसमें कोई खास, अलग या नई बात हो। २. किसी एक अलग विषय, वस्तु, व्यक्ति या कार्य से सम्बन्ध रखनेवाला। (स्पेशल; उक्त दोनों अर्थों के लिए) ३. जितना होता हो या होना चाहिए उससे अधिक या सिवा। सामान्य या साधारण के सिवा कुछ बढ़ा या बढ़ाया हुआ। ४. किसी अलग, नये या खास काम के लिए लगाया या रखा हुआ। ५. किसी एक अवसर पर या उद्देश्य की सिद्धि के लिए अलग से या खास तौर पर नियत या नियुक्त किया हुआ। (एक्स्ट्रा)
पुं० १. किसी विषय में उसके स्पष्टीकरण के लिए या अपनी सम्मति के रूप में कही जानेवाली बात। (रिमार्क) २. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें बिना आधार के आधेय, थोड़े परिश्रम से बहुत प्राप्ति, एक ही चीज के कई स्थानों में होने का या इसी प्रकार की और किसी आश्चर्यजनक बात का वर्णन होता है।

विशेषक-पुं० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें समान गुण और धर्मवाले प्रस्तुत और अप्रस्तुत दोनों तत्त्वों की समानता तो बतलाई जाती है, फिर भी प्रस्तुत में कोई ऐसी विशेषता बतलाई जाती है जिससे वह अप्रस्तुत से भिन्न और विशि हो जाता है।

विशेषज्ञ-पुं० [सं०] १. वह जो कि विषय का विशेष रूप से ज्ञाता हो। कि काम का बहुत अच्छा जानकार। (स्पे लिस्ट) २. दे० 'विचक्षण'।

विशेषण-पुं० [सं०] १. वह जिससे कि प्रकार की विशेषता सूचित हो। २. विकारी शब्द जो संज्ञा की विशेषता लाता है। (व्याकरण)

विशेषता-स्त्री० [सं०] १. 'विशेष' का या धर्म। खासियत। २. विलक्षणता।

विशेषत्व-पुं० = विशेषता।

विशेषना*-स० [सं० विशेष] १. वि रूप देना। २. विशिष्टता उत्पन्न करना। अ० निश्चय करना।

विशेष सूचना-स्त्री० [सं०] किसी से सम्बन्ध रखनेवाली वह आवश्यक, में रखने योग्य या विशेष सूचना जो अन्त में एक दो वाक्यों में परिशिष्ट में रहती है। इसका संक्षिप्त 'वि० सू० और इसके स्थान पर प्रायः 'पुनश्च' प्रयोग होता है। (नोटा बेने)

विशेषाधिकार-पुं० [सं०] वह कार जो साधारणतः सब लोगों को प्रा हो, पर कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में को विशेष रूप से प्राप्त हो। प्राधि (प्रिविलेज)

विशेषोक्ति-स्त्री० [सं०] साहित्य में अर्थालंकार जिसमें कारण के पूरी त वर्त्तमान रहने पर भी कार्य के अभा अथवा किसी क्रिया के होने पर भी परिणाम या फल का अभाव बत जाता है।

विशेष्य-पुं० [सं०] व्याकरण में वह

विशेषण लगा हो। २.
।
[सं०] १. दृढ़ या पक्का
एतबार। (कॉन्फिडेन्स) २.
प्रेमिका में संभोग के समय
या झगड़ा। ३. प्रेम।
[सं०] १. दृढ़ विश्वास
(कॉन्फिडेन्ट) २. जो इस
रखकर किसी को बतलाया
दूसरे किसी को न बतलावेगा।
कॉन्फिडेन्शल)
[सं०] १. शान्त। २.
। ३. निर्भय। निडर।
ोढ़ा-स्त्री० [सं०] साहित्य
नायिका जिसका पति पर
लगा हो और जिसके मन
कुछ कम हो गया हो।
[सं०] १. जो विश्राम करता
रुका हुआ। ३. थका हुआ।
[सं०] १. विश्राम।
थकावट। ३. दे० 'विराम'।
[सं०] १. श्रम या थकावट
आराम करना। २. ठहरने
१. आराम। चैन। सुख।
-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ
करते हों। (रेस्ट हाउस)
[सं०] १. श्री या कांति से
। २. भद्दा। कुरूप।
[सं०] प्रसिद्ध। विख्यात।
[सं०] १. प्रसिद्धि। ख्याति।
सब लोगों में प्रसिद्ध करने या
की क्रिया या भाव।
)
-पुं० [सं०] वह पत्र जो
समय उसे नियत समय पर
प्रतिज्ञा का सूचक होता है।
)
[सं०] १. जिसका विश्लेषण

हुआ हो। २. विकसित। ३. प्रकट।

विश्लेष-पुं० [सं०] १. वियोग। विछोह। २. दे० 'विश्लेषण'।

विश्लेषक-पुं० [सं०] वह जो रासायनिक अथवा इसी प्रकार की और कोई विश्लेषण करता हो। (एनालिस्ट)

विश्लेषण-पुं० [सं०] किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों या किसी बात के सब अंगों या तथ्यों की परीक्षा, आदि के लिए अलग-अलग करना। (एनेलेसिस)

विश्वंभर-पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. विष्णु।

विश्व-पुं० [सं०] १. सारा ब्रह्मांड। (कॉसमॉस, युनिवर्स) २. संसार। दुनियाँ। ३. दस देवताओं का एक गण। ४. विष्णु। ५. शरीर। देह।

वि० १. पूरा। सब। कुल। २. बहुत।

विश्वकर्मा-पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. ब्रह्मा। ३. एक प्रसिद्ध देवता जो शिल्पशास्त्र के पहले आचार्य और आविष्कर्त्ता माने जाते हैं। ४. बढ़ई। ५. लोहार।

विश्व किरण-स्त्री० दे० 'विष्वक् किरण'।

विश्व-कोश-पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें सभी विषयों या किसी विषय के सभी अंगों का विस्तार से वर्णन हो। (एन्साइक्लोपीडिया)

विश्वनाथ-पुं० [सं०] १. विश्व का स्वामी। २. शिव।

विश्वविद्यालय-पुं० [सं०] वह बहुत बड़ा विद्यालय जिसमें अनेक प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा देनेवाले अनेक महाविद्यालय हों। (युनिवर्सिटी)

विश्व-व्यापी-वि० [सं०] सारे विश्व में व्याप्त या फैला हुआ।

विश्वसनीय-वि० [सं०] [भाव० विश्वसनीयता] जिसका विश्वास या एतबार किया जा सके। विश्वस्त। (रिलाएबुल)

विश्वस्त-वि० [सं०] विश्वसनीय।

विश्वात्मा-पुं० [सं०] ईश्वर।

विश्वास—पुं० [सं०] यह निश्चय कि ऐसा ही होगा या है, अथवा अमुक व्यक्ति ऐसा ही करता है या करेगा। एतबार।

विश्वास-घात—पुं० [सं०] [वि० विश्वास-घातक] अपने पर विश्वास करनेवाले के विश्वास के विपरीत कार्य्य करना। धोखा।

विश्वास-घातक—वि० [सं०] विश्वास-घात करनेवाला।

विश्वास-पात्र (भाजन)—पुं० [सं०] वह व्यक्ति जिसका विश्वास किया जाय।

विश्वासी—पुं० [सं० विश्वासिन्] [स्त्री० विश्वासिनी] १. विश्वास करनेवाला। २. जिसपर विश्वास हो। विश्वासपात्र।

विषंग—पुं० [सं०] १. आपस में मिले हुए तत्वों, अंगों आदि का अलग या पृथक् होना। २. अपने में से किसी को काटकर या और किसी प्रकार अलग कर देना। (डिस्सोसिएशन)

विष—पुं० [सं०] १. वह वस्तु जिसके खाने या शरीर में पहुँचने से प्राणी मर जाता है। जहर। गरल। (पॉएज़न) (मुहावरों के लिए देखें जहर के मुहावरे) २. जल। पानी। ३. कमल नाल का रेशा। ४. किसी की सुख-शांति या स्वास्थ्य आदि में बाधक वस्तु।

पद—**विष की गाँठ** = बुराई या खराबी पैदा करनेवाला व्यक्ति, वस्तु या बात। ५. बहुत ही कटु और अप्रिय बात। जैसे—विष-वमन। (देखें) ६. बछनाग। ७. कलिहारी।

विष-कन्या—स्त्री० [सं०] वह युवती जिसके शरीर में बाल्यावस्था से ही इसलिए विष प्रविष्ट किया गया हो कि उसके साथ संभोग करनेवाला मर जाय। (प्राचीन)

विषण्ण—वि० [सं०] १. जिसे विषाद हुआ हो। २. दुःखी। खिन्न।

विषदंड—पुं० [सं०] कमलनाल। भसींड। मुरार।

विषधर—पुं० [सं०] साँप

विषम—वि० [सं०] [भाव० विषमता] १. जो समान या बराबर न हो। 'सम' का उलटा। (अन्-ईवेन) २. (वह संख्या) जो दो से भाग देने पर पूरी पूरी न बँट सके। ताक। ३. बहुत कठिन। ४. ती या तेज। ५. भयंकर।

पुं० १. वह वृत्त जिसके चारो चरणों अक्षरों की संख्या समान न हो। २ साहि में एक अर्थालंकार जिसमें दो विरो वस्तुओं का संयोग अथवा उस संयोग अनौचित्य विषमता बतलाई जाती है।

विषम छंद—पुं० दे० 'विषम वृत्त'।

विषम वृत्त—पुं० [सं०] पिंगल में छन्द या वृत्त जिसके सब चरण एक से होते, वे एक दूसरे से कुछ छोटे या होते हैं।

विषम-शर—पुं० [सं०] कामदेव।

विषय—पुं० [सं०] १. वह जिसके कुछ कहा या विचार किया जाय। (सब्जेक्ट) २. वे बातें जिसका किसी लेख ग्रन्थ आ में विवेचन हो। जिसका विवेचन क हो। मजमून (मैटर) ३. स्त्री-संभोग ४. संपत्ति। ५. बड़ा प्रदेश या राज्य। वह जिसे इंद्रियाँ ग्रहण करें। जैसे—नेत्र विषय रूप या कान का विषय शब्द है

विषयक—वि० [सं०] किसी विषय सम्बन्ध रखनेवाला। सम्बन्धी।

विषय-प्रवेश—पुं० [सं०] ग्रन्थ की भूमिका या उसके विषय का परिचायक कथन।

विषय-निर्द्धारणी—स्त्री० = विषय-समिति

विषय-समिति—स्त्री० [सं०] कुछ विशि सदस्यों की वह समिति जो किसी महासभा या सम्मेलन में उपस्थित किये जानेवाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित या प्रस्तु करती है। (सब्जेक्ट कमिटी)

विषयानुक्रमणिका—स्त्री० [सं०] किसी ग्रंथ के विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विषय-सूची। (इन्डेक्स)

[सं०] [भाव० विषया-
विषय अर्थात् सांसारिक
आसक्त हो। २. विलासी।

स्त्री० [सं० विषय + आसक्ति]
] १. सांसारिक विषयों
विलास की ओर होनेवाली
प्रवृत्ति। २. विलासिता।

[सं० विषयिन्] १. भोग-
रहनेवाला। विलासी।
कामदेव। ३. धनवान्।

[सं०] बहुत ही कड़ु,
लगती हुई बातें कहना। विष

-पुं० [सं०] वह विज्ञान
इस बात का विवेचन होता
प्रकार के विष किस प्रकार
काम करते हैं और उनका
दूर किया जा सकता है।

[सं०] वह जो विष का
वाली चिकित्सा करता हो।

[सं०] एक प्रकार का
फोड़ा जिसके अच्छे हो जाने
प्रायः अधिक दिन तक नहीं
। (कार्बन्कल)

[सं०] १. विष-युक्त।
) २. बहुत अधिक
घातक। जैसे—आजकल का
वातावरण बहुत विषाक्त हो

] १. सींग। २. सूअर

[सं०] [वि० विषण्ण]
न होने पर मन में
दुःख जो साहित्य में एक
गया है। २. जड़ता।

निश्चेष्टता।

विषादन-पुं० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें इच्छा या कामना के विरुद्ध विषाद उत्पन्न करनेवाली कोई विपरीत घटना या बात होने का उल्लेख होता है।

विषुव-पुं० [सं०] वह समय जब सूर्य के विषुवत् रेखा पर पहुँचने से दिन तथा रात दोनों बराबर होते हैं। (ऐसा वर्ष में दो बार होता है—२२ मार्च तथा २२ सितंबर को।)

विषुवत् रेखा-स्त्री० [सं०] वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी-तल के पूरे मान-चित्र पर ठीक बीचो-बीच गणना के लिए पूर्व-पश्चिम खींची गई है। (ईक्वेटर)

विष्ठा-स्त्री० [सं०] मल। मैला। गुह।

विष्णु-पुं० [सं०] हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध और प्रमुख देवता जो सृष्टि का पालन करनेवाले और अवतार माने जाते हैं।

विष्णु-पद-पुं० [सं०] २६ मात्राओं का एक छन्द जिसके कई भेद होते हैं।

विष्वक्-वि० [सं०] १. विश्व संबंधी। विश्व का। २. सारे विश्व में समान रूप से होने या पाया जानेवाला। (युनिवर्सल) ३. इस जगत से भिन्न, शेष सारे विश्व से संबंध रखनेवाला। पृथ्वी को छोड़कर सारे आकाश और ब्रह्मांड का। (कॉस्मिक)

विष्वक् किरण-स्त्री० [सं०] एक विशिष्ट प्रकार की किरण जो इस पृथ्वी से नहीं, बल्कि आकाश या विश्व के अन्य भागों से आती है। (कॉस्मिक रेज़)

विशेष—अभी तक इस बात का पता नहीं चला है कि ये किरणें कहाँ से आती हैं; परन्तु कई पदार्थों और यंत्रों पर इनका वैद्युत प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई देता है। संभवतः वायु मंडल में वेग से चलनेवाले नहिक और सहिक अणुओं से ये किरणें उत्पन्न होती हैं।

विस†-सर्व० = उस।

विसंवाद--पुं० [सं०] १. सादृश्य, एकरूपता, मेल आदि का अभाव। ठीक या उपयुक्त न बैठना। 'संवाद' का विरोधी। २. छल। धोखा।

विसदृश-वि० [सं०] १. विपरीत। उलटा। २. अ-समान। ३. विलक्षण।

विसर्ग-पुं० [सं०] १. दान। २. छोड़ना। त्याग। ३. व्याकरण में एक चिह्न जो किसी वर्ण के आगे लगाया जाता है। (इसमें ऊपर-नीचे दो विंदु होते हैं और इसका उच्चारण प्रायः आधे 'ह' के समान होता है।) ४. मोक्ष। ५. मृत्यु। ६. प्रलय।

विसर्जन-पुं० [सं०] [वि० विसर्जित] १. परित्याग। छोड़ना। २. विदा करना। रवाना करना। ३. किसी कर्मचारी पर कोई दोष या लांछन लगाकर उसे उसके पद से हटाना या अलग करना। (डिसमिसल) ४. न्यायालय में वाद आदि का रद्द या खारिज होना। (डिसमिसल)

विसर्पी-वि० [सं० विसर्पिन्] १. तेज चलनेवाला। २. फैलनेवाला।

विसामान्य-वि० [सं०] जो सामान्य से कुछ घटकर हो। (सब-नार्मल)

विसूचिका-स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक रोग जिसे आजकल कुछ लोग हैजा मानते हैं।

विस्तर-वि० [सं०] १. बड़ा और लंबा-चौड़ा। विस्तृत। २. बहुत अधिक। *पुं० दे० 'विस्तार'।

विस्तरण-पुं० [सं०] विस्तार करने या बढ़ाने की क्रिया या भाव। (एक्सटेन्शन)

विस्तार-पुं० [सं०] लंबाई और चौड़ाई। फैलाव।

विस्तारण-पुं० [सं०] १. विस्तार करना। बढ़ाना। २. फैलाना।

विस्तारना*-स० = विस्तार करना।

विस्तारित-वि० [सं०] जिसका विस्तार किया गया हो। बढ़ाया हुआ। (एक्सटेंडेड)

विस्तीर्ण-वि० [सं०] विस्तृत।

विस्तृत-वि० [सं०] [भाव० विस्तार विस्तृति] १. जिसमें यथेष्ट विस्तार हो लंबा-चौड़ा। विस्तारवाला। २. जिस चर्चा, व्याख्या या विवरण बहुत विस्ता से हो। ३. दूर तक फैला हुआ या विशाल (इक्स्टेन्सिव; उक्त सभी अर्थों के लिए)

विस्थापन-पुं० [सं० वि + स्थापन [वि० विस्थापित] १. किसी को अपने स्थ पर स्थापित न रहने देना। स्थापन विपर्याय। २. किसी स्थान पर बसे लोगों को वहाँ से बल-पूर्वक हटा देन उद्वासन। (डिस्प्लेस्मेन्ट)

विस्थापित-वि० [सं० वि + स्थापित] अपने स्थान से हटा दिया गया (डिसप्लेस्ड)

विस्थिति-स्त्री० [सं० वि (विकट) + स्थिति किसी कार्य या क्रम में उत्पन्न होने वह विकट स्थिति जिससे कोई बहुत उलट-फेर हो सकता हो। (क्रिसिस)

विस्फारण-पुं० [सं०] [वि० विस्फा १. खोलना। फैलाना। २. फाड़ना।

विस्फारित-पुं० [सं०] १. अच्छी से खोला या फैलाया हुआ। जैसे-विस्फा नेत्र। २. फाड़ा हुआ।

विस्फीति-स्त्री० [सं० वि + स्फीति] कृ रूप से फूले हुए पदार्थ या बढ़े हुए मुद्रा प्रचलन को फिर से पूर्व स्थिति में लान 'स्फीति' का उलटा। (डिफ्लेशन)

विस्फोट-पुं० [सं०] १. अन्दर की गर से बाहर उबल या फूट पड़ना। २. जहरी और खराब फोड़ा।

विस्फोटक-पुं० [सं०] १. जहरीला फोड़ा २. गरमी या आघात के कारण भभ उठनेवाला पदार्थ। (एक्सप्लोसिव) शीतला का रोग। चेचक।

विस्मय-पुं० [सं०] [वि० विस्मित आश्चर्य। ताज्जुब।

-पुं० [सं०] एक प्रकार
विस्मय, खेद, आश्चर्य आदि
होते हैं। (इंटरजेक्शन)
आदि।
[सं०] [वि० विस्मृत]

[सं०] जिसे विस्मय या
हो। चकित।
[सं०] भूला हुआ।
[सं०] भूल जाना।
= विश्राम।
[सं०] १. पक्षी। चिड़िया।
तीर। ३. मेघ। बादल।
आकाश में उड़नेवाला। २.
से विचरण करनेवाला।
-पुं० [सं०] साँख्य के अनुसार
मोक्ष की प्राप्ति जिससे साधक
अर्थात् इसी जन्म में मोक्ष का-
लगता है।
-अ० = हँसना।
दे० 'विहंग'।
-अ० [सं० विहरण] १. विहार
घूमना-फिरना।
[सं० वि + अहि] प्रातः
।
[सं०] १. टहलना। घूमना।
और सुख-प्राप्ति के लिए
क्रीड़ा। ३. बौद्ध भिक्षुओं या
रहने का मठ। संघाराम।
[सं०] श्रीकृष्ण।
विहारिणी] विहार करनेवाला।
[सं०] १. जिसका विधान
गया हो। (प्रेस्क्राइब्ड)
या कानून का रूप दिया
या कानून के रूप में लाया
) ३. नियमों के अनुसार
।
[सं०] [भाव० विहीनता]
१. रहित। बिना। २. त्यागा हुआ।

विहून*-वि० = विहीन।

विहृत-पुं० [सं०] साहित्य में संयोग शृंगार के अन्तर्गत वह अवस्था जिसमें लज्जा के कारण प्रिय पर अपना मनोभाव प्रकट नहीं किया जा सकता। इसकी गिनती हावों में होती है।

विह्वल-वि० [सं०] [भाव० विह्वलता] व्याकुल। विकल। बे-चैन।

वीचि-स्त्री० [सं०] पानी की लहर, विशेषतः छोटी और हलकी लहर जैसी प्रायः तालाबों, नदियों आदि में उठती है। तरंग।

वीज-पुं० [सं०] १. मूल कारण। २. शुक्र। वीर्य्य। ३. तेज। ४. तांत्रिक मंत्र। ५. दे० 'बीज'।

वीज-गणित-पुं० [सं०] वह प्रक्रिया जिससे सांकेतिक अक्षरों की सहायता से गणना करके अभीष्ट राशियाँ निकाली जाती हैं। (गणित का एक अंग)

वीटक-पुं० [सं०] [स्त्री० अल्प० वीटिका] पान का बीड़ा।

वीटिका-स्त्री० [सं० वीटक का स्त्री० अल्प०] पान का छोटा बीड़ा। बीड़ी।

वीणा-स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध बाजा जो सब बाजों में श्रेष्ठ माना गया है। बीन।

वीत-राग-पुं० [सं०] जिसने सांसारिक वस्तुओं और सुखों के प्रति राग या आसक्ति बिलकुल छोड़ दी हो।

वीथी-स्त्री० [सं०] १. दृश्य-काव्य में रूपक का एक भेद जिसमें एक ही अंक और एक ही नायक होता है। २. मार्ग। रास्ता। ३ आकाश में सूर्य के चलने का मार्ग। ४. आकाश में नक्षत्रों के रहने के कुछ विशिष्ट स्थान।

वीप्सा-स्त्री० [सं०] [वि० वीप्सित] १. व्याप्त होने की इच्छा या कामना। २. व्याप्ति। ३. शब्दों की वह विरुक्ति जो किसी कार्य के लगातार होते रहने की सूचक

होती है। जैसे—मैं तो बार-बार यही कहता था। ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमें आतुरता, आश्चर्य, खिन्नता, प्रसन्नता, बाहुल्य आदि प्रकट करने के लिए किसी शब्द की विरुक्ति होती है। जैसे—थक-थक के न बैठेंगे, न मर-मर के जियेंगे।

वीभत्स–वि० [सं०] [भाव० वीभत्सता] १. जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। घृणित। २. क्रूर। ३. पापी।
पुं० साहित्य में नौ रसों में से एक जो रक्त, मांस, हड्डी, चर्बी, मृत शरीर आदि गन्दे पदार्थ देखकर या उनका वर्णन सुनकर मन में होनेवाली अरुचि, ग्लानि या घृणा से उत्पन्न होता है।

वीर–पुं० [सं०] [भाव० वीरता] १. बहादुर। बलवान। २. योद्धा। सिपाही। ३. उत्साह या साहस का कोई बड़ा काम करनेवाला। ४. भाई, पति, पुत्र आदि के लिए सम्बोधन। ५. साहित्य के नौ रसों में से एक जो असहाय दीन-दुखियों के कष्ट दूर करने, प्रबल या सशक्त शत्रुओं को दबाने अथवा कोई दुस्तर या विकट कार्य करने के लिए मन में होनेवाले उत्साह और साहस से उत्पन्न होता है। ६. पिंगल में एक प्रकार का मात्रिक सवैया जिसके प्रत्येक चरण की पहली और दूसरी आठ मात्राओं पर यति और अंत में एक गुरु और एक लघु होता है। इसी को लोक में 'आल्हा' कहते हैं।

वीरगति–स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र में वीरता पूर्वक लड़कर मरने पर प्राप्त होनेवाली गति जो श्रेष्ठ मानी गई है।

वीरचक्र–पुं० [सं०] स्वतंत्र भारत में केन्द्रीय सरकार की ओर से सैनिकों को वीरतापूर्ण कार्य करने पर, दिया जानेवाला एक प्रकार का चक्र या पदक।

वीर-पूजा–स्त्री० [सं०] वीरों, अर्थात् बड़े-बड़े नायकों और नेताओं का पूरा-पूरा आदर-सम्मान करना और उन्हें देव-तुल्य तथा आदर्श मानकर उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति प्रकट करना। (हीरोवर्शिप)

वीर-मंगल–पुं० [देश०] हाथी।

वीर-माता–स्त्री० [सं० वीर-मातृ] वी
पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्री। वीर जननी।

वीरसू–वि०, स्त्री० [सं०] वीरों को उत्पन्न
करनेवाली।

वीरान–वि० [पहलवी अवीरान (वनहीन
से फा०] (स्थान) जिसमें बस्ती या आबा
न हो। उजाड़।

वीरासन–पुं० [सं०] बैठने का एक प्रक
का आसन या मुद्रा। (वीरता-सूचक)

वीरुध–पुं० [सं०] १. लता। २. पौधा

वीर्य–पुं० [सं०] १. शरीर की वह धा
जिससें उसमें बल, तेज और कांति आ
तथा सन्तान उत्पन्न होती है। शुक्र। रे
बीज। २. दे० 'रज'। ३. बल। पराक्रम

वुरना–अ० [हिं० ओराना का व्रज रू
१. ओर या सिरे पर आना। २. समा
पर आना। उदा०–देखत बुरै कपूर ज्यों
उपै जाइ जिन लाल।—बिहारी।

वुराना–अ०, स० दे० 'ओराना'।

वृंत–पुं० [सं० वृन्त] १. कच्चा और छो
फल। २. इस आकार का वनस्पति का को
अंग। बौंडी। ३. वह पतला डंठल जि
पर फूल लगा रहता है।

वृंद–पुं० [सं०] दल। झुंड।

वृंदारक–पुं० [सं०] देवता।

वृंदावन–पुं० [सं०] मथुरा के पास
एक प्रसिद्ध तीर्थ जो श्रीकृष्ण चन्द्र
क्रीड़ा-स्थल माना जाता है।

वृक–पुं० [सं०] १. गीदड़। २. भेड़िया
३. चोर।

वृक्ष–पुं० [सं०] १. पेड़। दरख्त। २
वृक्ष के समान वह आकृति जिसमें कोई मूल
वस्तु और उसकी शाखाएँ आदि दिखाई
गई हों। जैसे—वंश-वृक्ष।

वृक्षायुर्वेद–पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें

का विवेचन होता है।
' ३।
] १. वृत्तान्त। हाल। २.
जीविका का साधन। वृत्ति।
। ५. वह क्षेत्र जो ऐसी
है, जिसका प्रत्येक बिंदु उस
बिंदु से समान अंतर पर हो।
। (सरकिल) ६. घेरा।
[सं०] समाचार। हाल।
[सं०] वृत्त या गोलाई का
गोलाई लिए हुए ऐसी रेखा
न बनाती हो।
[सं०] १. कोई ऐसा काम
कुशल हो और जिसके द्वारा
निर्वाह करता हो। जीविका।
। (प्रोफेशन) २. किसी
छात्र आदि को उसके सहाय-
मिलनेवाला धन। (स्टाइपेंड)
भरण-पोषण आदि के लिए
धन। (एलाउएन्स) ४.
की व्याख्या। ५. शब्द-योजना
योजना जिससे रचना में माधुर्य,
आदि गुण आते हैं। जैसे—
और प्रौढ़ा आदि। (साहित्य)
विषय के विचार से भारती,
और आरभटी ये चार
। ७. दे० 'वृत्यानुप्रास'।
कार्य। ९. स्वभाव। प्रकृति।
प्रकार का पुराना अस्त्र।
[सं० वृत्ति] १. वृत्ति संबंधी।
वृत्ति, पेशे या व्यवसाय के
या किया जानेवाला। व्यव-
शनल)
-पुं० दे० 'वृत्त्यनुप्रास'।
[सं०] साहित्य में एक
कुछ स्वर-युक्त या स्वर-
कई बार आते हैं।
] १. अँधेरा। २. मेघ। बादल। ३. एक असुर जिसे इन्द्र ने मारा था।

वृत्रासुर—पुं० दे० 'वृत्र' ३.।

वृथा—वि० [सं०] [भाव० वृथात्व] जिससे कोई मतलब न निकले। व्यर्थ का। क्रि० वि० बिना मतलब के। व्यर्थ।

वृद्ध—पुं० [सं०] [भाव० वृद्धता] १. साठ वर्ष से अधिक अवस्थावाला मनुष्य। २. वह जो साधारण की अपेक्षा बड़ा और श्रेष्ठ हो। (एल्डर) ३. बुड्ढा। ४. पंडित। विद्वान्।

वृद्धा—स्त्री० [सं०] बुड्ढी स्त्री। बुढ़िया।

वृद्धावस्था—स्त्री०[सं०] १.बुढ़ापा। २.मनुष्यों में साठ वर्ष में अधिक की अवस्था।

वृद्धि—स्त्री० [सं०] १. 'वृद्ध' होने की क्रिया या भाव। २. बढ़ने की क्रिया। बढ़ती। अधिकता। ३. ब्याज। सूद। (इन्टरेस्ट) ४. वह अशौच जो सन्तान होने पर सगे-सम्बन्धियों को होता है। ५. अभ्युदय। समृद्धि। ६. वेतन में होनेवाली अधिकता। (इन्क्रीमेन्ट)

वृश्चिक—पुं० [सं०] १. बिच्छू। २. बारह राशियों में से आठवीं राशि जिसमें विशाखा नक्षत्र का अन्तिम पाद, पूरा अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र हैं। (स्कार्पिओ)

वृष—पुं० [सं०] १. गौ का नर। साँड़। २. श्रीकृष्ण। ३. बारह राशियों में से दूसरी राशि इसमें १४१ तारे हैं और कृत्तिका नक्षत्र के अन्तिम तीन पाद, पूरा रोहिणी नक्षत्र और मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो पाद हैं। (टारस) ४. दे० 'वृषभ' २.।

वृषण—पुं० [सं०] १. इन्द्र। २. साँड़। ३. घोड़ा। ४. अंडकोश। पोता।

वृषभ—पुं० [सं०] १. बैल या साँड़। २. चार प्रकार के पुरुषों में से एक जो बहुत समर्थ और श्रेष्ठ कहा गया है। (काम-शास्त्र)

वृषल—पुं० [सं०] १. शूद्र पत्नी या दासी

के गर्भ से उत्पन्न पुरुष। २. शूद्र। ३. दुष्कर्मी। बद-चलन।

वृषोत्सर्ग–पुं० [सं०] मृत पूर्वज के नाम पर साँड़ पर चक्र दाग कर उसे छोड़ना।

वृष्टि–स्त्री० [सं०] १. वर्षा। २. बहुत सी चीजों का एक साथ आकर गिरना। जैसे–फूलों की वृष्टि, गोलियों की वृष्टि आदि।

वृष्य–वि० [सं०] वीर्य और बल बढ़ानेवाला (पदार्थ)।

वृहत्–वि० [सं०] बहुत बड़ा या भारी।

वे–वि० [हिं० वह] हिं० 'वह' का बहु०।

वेग–पुं० [सं०] १. प्रवाह। बहाव। २. मल, मूत्र आदि की शरीर से बाहर निकलने की प्रवृत्ति। ३. जोर। तेजी। ४. शीघ्रता। जल्दी।

वेग-धारण–पुं० [सं०] मल, मूत्र आदि का वेग या उन्हें निकलने से रोकना।

वेगवान्–वि० [सं०] तेज चलनेवाला।

वेण–पुं० [सं०] सूर्य-वंशी राजा पृथु के पिता का नाम।

वेणी–स्त्री० [सं०] स्त्रियों के सिर के बालों की गूथी हुई चोटी।

वेणु–पुं० [सं०] १. बाँस। २. बाँसुरी।

वेतन–पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी को कोई काम करते रहने के बदले में दिया जाता है। तनखाह। महीना। (पे, सैलरी) २. पारिश्रमिक। (वेजेज, रिम्यूनरेशन)

वेतन फलक–पुं० [सं०] वह फलक या कागज जिसपर किसी कार्यालय में काम करनेवाले सब कर्मचारियों के किसी मास के वेतन का पूरा विवरण हो और जिसपर वेतन चुकाने के उपरांत कर्मचारियों से हस्ताक्षर कराये जाते हों। (पे शीट)

वेतन-भोगी–पुं० [सं० वेतन-भोगिन्] वेतन लेकर काम करनेवाला। वैतनिक। (पेड)

वेताल–पुं० [सं०] १. द्वारपाल। २. शिव के गणों में से एक प्रधान गण। ३. एक प्रकार की भूत-योनि।

वेत्ता–वि० [सं०] जाननेवाला। ज्ञाता।

वेद–पुं० [सं०] १. सच्चा और वास्त ज्ञान। २. भारतीय आर्यों के सर्व-प्र और सर्व-मान्य धार्मिक ग्रंथ। श्रु आम्नाय। ये चार हैं—ऋग्वेद, यजु सामवेद और अथर्ववेद।

वेदन–पुं० = वेदना।

वेदना–स्त्री० [सं०] उग्र या कष्टदायक पीड़ा, विशेषतः हार्दिक मानसिक। व्यथा। (एगोनी)

वेद-वाक्य–पुं० [सं०] ऐसी प्रम बात जिसमें तर्क की जगह न हो।

वेद-व्यास–पुं० दे० 'व्यास'।

वेदांग–पुं० [सं०] वेदों के ये छः शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्यो और छंदः शास्त्र।

वेदांत–पुं० [सं०] १. वेदों के भाग (उपनिषद और आरण्यक आ जिनमें आत्मा, ईश्वर, जगत् आदि विवेचन है। ब्रह्म-विद्या। अध्यात्म छः दर्शनों में से एक जिसमें पारमा सत्ता का विवेचन है। अद्वैतवाद।

वेदांती–पुं० [सं० वेदांतिन्] वेदान्त अच्छा ज्ञाता।

वेदिका–स्त्री० [सं०] १. वह च जिसके ऊपर इमारत बनती है। कुर २. दे० 'वेदी'।

वेदी–स्त्री० [सं०] शुभ या धार्मिक कृत्य लिए बनाई हुई ऊँची छायादार भूमि।

वेध–पुं० [सं०] १. छेदना। बेधना। दूर-दर्शक यंत्रों आदि से ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गति-विधि देखना। (ऑबजरवेश

वेधक–वि० [सं०] १. वेध करनेवाल २. छेदनेवाला।

वेधशाला–स्त्री० [सं०] वह स्थान ग्रहों, नक्षत्रों और तारों का वेध करने यंत्र रहते हों। (ऑबजर्वेटरी)

= वेधशाला।

'वेधक'।

[सं०] कँपकपी। कंप।

[सं०] १. काल। समय। २.

। ३. तट। ४. सीमा।

[सं०] बेल। लता।

[सं०] १. वस्त्र आदि पहनने का

पहनने के वस्त्र। पोशाक।

भूषा = पहनने के कपड़े और

। ४. घर। मकान।

[सं०] घर। मकान।

[सं०] गाने-बजाने और धन

करनेवाली स्त्री। रंडी।

)

पुं० [सं०] वह घर जिसमें

पेशा करती हों। (ब्रॉथल)

स्त्री० [सं०] १. वेश्या बनकर

लेकर पर-पुरुषों से संभोग

धन कमाना। २. किसी गुण,

का बहुत ही बुरी तरह से

अनुचित और बुरा उपयोग।

)

[सं०] १. दे० 'वेश'। २. रंग-

नेपथ्य।

[सं०] [वि० वेष्टित, स्त्री०

घेरना या लपेटना। २. कोई

का कपड़ा। बेठन।

दे० 'वे'। २. दे० 'दो'।

१. भी (शब्दों के अन्त में);

कुछ भी। २. ही। जैसे—भुत-

।

[सं०] १. किसी एक पक्ष

एकांगी। २. जो अपनी

अनुसार चुनकर ग्रहण किया जा

) ३. उन दो या कई

जिसे अपनी इच्छा से ग्रहण किया जा सके। (ऑल्टरनेटिव)

वैकल्य—वि० = विकलता।

वैकुंठ—पुं० [सं०] १. विष्णु। २. विष्णु का निवास-स्थान या लोक। ३. स्वर्ग।

वैक्रम(मीय)—वि० दे० 'विक्रमी'।

वैखरी—स्त्री० [सं०] १. वाणी का व्यक्त रूप। २. व्यक्त और स्पष्ट वाणी। ३. वाक्शक्ति। ४. वाग्देवी।

वैखानस—पुं० [सं०] १. वानप्रस्थ आश्रम में रहनेवाले यति। २. कृष्ण यजुर्वेद की चार प्रधान शाखाओं में से एक, जिसमें उक्त प्रकार के यतियों के आचारों, धर्मों आदि का विवेचन है।

वैगन—पुं० [अं०] माल-गाड़ी का डब्बा जिसमें भरकर माल बाहर भेजा जाता है।

वैचारिक—वि० [सं०] १. विचार सम्बन्धी। २. न्याय-विभाग और उसके विचार या व्यवहार-दर्शन से संबंध रखनेवाला। (जुडिशल) जैसे—वैचारिक व्यवहार। (जुडिशल प्रोसीडिंग)

वैचारिक अवेक्षा—स्त्री० [सं०] किसी विषय में न्याय-विभाग या वैचारिकी के द्वारा होनेवाली अवेक्षा या उस पर दिया जानेवाला ध्यान। (जुडिशिल नोटिस)

वैचारिक गवेषणा—स्त्री० [सं०] किसी घटना की वह जाँच जो न्याय-विभाग के किसी उच्च कर्मचारी से, वैचारिक दृष्टि से कराई जाय। (ज्युडिशल इन्क्वायरी)

वैचारिक-मंडल—पुं० [सं०] किसी बड़े अभियोग पर विचार करने के लिए विशिष्ट अधिकारियों या न्यायकर्त्ताओं का बना हुआ वर्ग या मंडल। (ट्रिब्यूनल)

वैचारिक विधि विज्ञान—पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें व्यवहारों या मुकदमों के विचार से सम्बन्ध रखनेवाले मूल सिद्धांतों का वर्णन होता है। (लीगल ज्युरिस प्रूडेन्स)

वैचारिकी—स्त्री० [सं०] न्याय-विभाग में

काम करनेवाले अधिकारियों का वर्ग। (जुडिशिअरी)

वैचित्र्य-पुं० दे० 'विचित्रता'।

वैजयंती-स्त्री० [सं०] १. पताका। झंडी। २. एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रंगों के फूल होते हैं।

वैज्ञानिक-पुं० [सं०] विज्ञान संबंधी खोज या विज्ञान के क्षेत्र में काम करनेवाला। विज्ञान का ज्ञाता। विज्ञान वेत्ता। (आधुनिक प्रयोग)

वि० १. विज्ञान संबंधी। विज्ञान का। २. विज्ञान के क्षेत्र, प्रक्रिया सिद्धांत आदि से संबंध रखनेवाला।

वैतंडिक-पुं० [सं०] वह जो वितंडा या व्यर्थ का झगड़ा करता हो।

वि० वितंडा सम्बन्धी।

वैतनिक-पुं० [सं०] वेतन पर काम करने या वेतन पानेवाला। वेतन-भोगी। (पेड; सैलरीड)

वैतरणी-स्त्री० [सं०] यम के द्वार के पास की एक कल्पित पौराणिक नदी।

वैताल(लिक)-पुं० [सं०] प्राचीन काल में राजों-महाराजों के दरबार में वह कर्मचारी जो स्तुति पाठकर उन्हें जगाता था।

वैत्तिक-वि० [सं०] आय-व्यय आदि की व्यवस्था से सम्बन्ध रखनेवाला। वित्त-संबंधी। वित्त का। (फाइनैन्शल)

वैदर्भी-स्त्री० [सं०] काव्य की एक प्रकार की रीति या शैली जिसमें कोमल वर्णों से मधुर रचना की जाती है। इसमें प्रायः अनुस्वार-युक्त शब्द और छोटे समास आते हैं। यह करुणा, शृंगार और हास्य रसों के लिए उपयोगी मानी गई है। उपनागरिका।

वैदिक-पुं० [सं०] १. वेदों का अनुयायी। २. वेदों का पंडित।

वि० वेद संबंधी। वेद या वेदों का।

वैदूर्य-पुं० [सं०] लहसुनिया (रत्न)।

वैदेशिक-वि० [सं०] १. विदेश सम्बन्धी। विदेश का। २. दूसरे देशों या राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला। (फारन)

वैदेही-स्त्री० [सं०] सीता। जानकी।

वैद्य-पुं० [सं०] १. पंडित। २. वैद्यक शास्त्र के अनुसार रोगियों की चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक।

वैद्यक-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें रोगों की पहचान तथा उनकी चिकित्सा आदि का विवेचन होता है। आयुर्वेद।

वैद्युत्-वि० [सं०] जिसमें विद्युत य बिजली का संयोग हो। बिजली सम्बन्धी बिजली का। (इलेक्ट्रिक)

वैद्युतिक-वि० = विद्युतिक या वैद्युत्।

वैध-वि० [सं०] १. जो विधि के अनुसा हो। कानून के अनुसार ठीक। (लीगल २. जो विधान या संविधान के अनुसार ठी हो। (कांस्टिट्यूशनल)

वैधन-पुं० दे० 'वैधीकरण'।

वैधव्य-पुं० [सं०] विधवा होने की अव स्था या भाव। रँडापा।

वैधानिक-वि० [सं०] १. विधान संघटन के नियमों से सम्बन्ध रखनेवाल (कांस्टिट्यूशनल)। २. जो विधान रूप में हो। (स्टैट्यूटरी) ३. दे० 'अ धानिक'।

वैधीकरण-पुं० [सं० वैध + करण] [वैधीकृत] १. विधि या विधान के रूप में ल की क्रिया या भाव। वैध करना। कार्य, लेख्य आदि को ऐसा रूप देना वह विधि या कानून की दृष्टि से ठीक मान्य हो जाय। (वैलिडेशन)

वैधीकृत-वि० [सं० वैध + कृत] [भा वैधीकरण] १. जो विधि या विधान रूप में लाया गया हो। २. जो पहले वै न रहा हो, पर अब वैध कर दिया ग हो। (मेड लॉफुल, वैलिडेटेड)

वैफल्य-पुं० [सं०] विफल या निरर्थ होने का भाव। विफलता। (नल्लिटी)

] १. धन-सम्पत्ति। विभव।

[सं०] वह जिसके पास
हो। मालदार। अमीर।
[सं०] १. विभाषा संबंधी।

] बौद्धों के हीनयान के दो
यों में से एक। (दूसरा
' कहलाता है)
[सं०] विभिन्नता।
[सं०] शत्रुता। दुश्मनी।
-वि० [सं०] [स्त्री० वैमा
से उत्पन्न। सौतेला।
[सं०] विमान संबंधी।
जो विमान पर सवार हो। २.
चलानेवाला। ३. जैन मत
स्वर्गलोक में रहनेवाले जीव।
[सं०] सामूहिक या
से भिन्न किसी एक व्यक्ति
रखनेवाला। व्यक्तिगत। निजी।
'सामूहिक' का विरुद्धार्थक।
डिविजुअल)
[सं० वान्] एक प्रत्यय जो
धातुओं के अन्त में लगकर
का अर्थ देता है। जैसे—चड़-
आदि।
[सं०] व्याकरण का पंडित।
] [भाव० वैरता] शत्रुता।
चुकाना या निकालना =
फिर शत्रु को हानि पहुँ-
लेना। **वैर बाँधना** =
करना। दुश्मनी खड़ी
साधना = वैर चुकाना।
[सं०] १. वह जिसे वैराग्य
हो। २. एक प्रकार के

] सांसारिक कार्यों और
किसी विशेष बात से
होनेवाली विरक्ति।

वैराज्य-पुं० [सं०] एक ही देश में दो राजाओं या शासकों का शासन।

वैरी-पुं० [सं० वैरिन्] दुश्मन। शत्रु।

वैलक्षण्य-पुं० = विलक्षणता।

वैवर्ण्य-पुं० [सं०] १. 'विवर्ण' होने की अवस्था या भाव। विवर्णता। २. साहित्य में मोह, क्रोध, भय आदि से शरीर या चेहरे की रंगत बदल जाना, जो सात्विक अनुभावों के अन्तर्गत माना गया है।

वैवाहिक-वि० [सं०] विवाह संबंधी।

वैशाख-पुं० [सं०] चैत के बाद और जेठ के पहले का महीना।

यौ०-**वैशाख-नन्दन** = गधा।

वैशिक-पुं० [सं०] वेश्यागामी नायक।

वैशेषिक-पुं० [सं०] १. महर्षि कणाद-कृत दर्शन जो छः दर्शनों में से एक है और जिसमें पदार्थों या तत्त्वों का विशेष रूप से विवेचन किया गया है। २. वैशेषिक दर्शन का ज्ञाता या अनुयायी।

वि० किसी विशेष विषय आदि से संबंध रखनेवाला। जैसे—वैशेषिक विद्यालय।

वैश्य-पुं० [सं०] [स्त्री० वैश्या] भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण, जिसके काम कृषि, गो-रक्षा और वाणिज्य हैं।

वैषम्य-पुं० [सं०] विषमता।

वैष्णव-पुं० [सं०] [स्त्री० वैष्णवी] १. विष्णु का उपासक और भक्त। २. हिंदुओं का एक प्रसिद्ध विष्णु उपासक सम्प्रदाय।

वि० विष्णु संबंधी। विष्णु का।

वैष्णवी-स्त्री० [सं०] १. विष्णु की शक्ति। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. तुलसी।

वैसा-वि० [हिं० वह + सा] उस तरह का।

वैसे-क्रि० वि० [हिं० वैसा] उस तरह।

मुहा०-**वैसे तो** = प्रस्तुत को छोड़कर किसी और या दूसरी दशा में। (अदरवाइज)

वोद्र*-पुं० [सं० उदर] पेट। उदा०-जननी वोद्र गर्भ मँह सूता।---कबीर।

वोक*–पुं० [?] ओर। तरफ। उदा०–सूर श्याम काली उर विरतत आवत ब्रज की वोक।—सूर।

वोट–पुं० [अं०] चुनाव में किसी उम्मेदवार के पक्ष में दी जानेवाली राय या मत।

वोटर–पुं० दे० 'मत-दाता'।

वोटिंग–स्त्री० [अं०] किसी चुनाव के लिए वोट या मत लिया या दिया जाना।

व्यंग्य–पुं० [सं०] १. किसी को चिढ़ाने, दुःखी करने, नीचा दिखाने आदि के लिए कही जानेवाली वह बात जो स्पष्ट शब्दों में न होने पर भी अथवा विपरीत रूप की होने पर भी उक्त प्रकार का अभिप्राय या आशय प्रकट करती हो। ताना। बोली। चुटकी। (आईरनी) जैसे–वाह! आपसे बढ़कर पंडित हमें कहाँ मिलेगा? २. साहित्य में ऐसी उक्ति जो शब्दों की व्यंजना वृत्ति के द्वारा उक्त प्रकार का आशय या अभिप्रायः प्रकट करे। (इनेन्डो)

व्यंग्य-चित्र–पुं० [सं०] किसी व्यक्ति या घटना का वह चित्र जो व्यंग्यपूर्वक उसका उपहास करने के लिए बना हो। (कार्टून)

व्यंग्य-विदग्धा–स्त्री० [सं०] साहित्य में नायिका की वह सखी जो व्यंग्यपूर्ण बात कहकर उसे यह जतलाती हो कि मैंने तुम्हारा सब हाल जान लिया।

व्यंग्यार्थ–पुं० [सं०] किसी शब्द या वाक्य का उसके साधारण अर्थ से भिन्न, वह अर्थ जो उसकी व्यंजना-शक्ति से निकलता है। जैसे–यदि हम किसी से व्यंग्यपूर्वक कहें—आपने हम पर बहुत कृपा की; तो इसका व्यंग्यार्थ होगा कि आपने हमारे साथ बहुत अनुचित व्यवहार किया।

व्यंजक–वि० [सं०] व्यक्त, प्रकट या सूचित करनेवाला।

व्यंजन–पुं० [सं०] १. व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया या भाव। (एक्सप्रेशन) २. चावल, रोटी आदि के साथ खाये जानेवाले पदार्थ। जैसे–तरकारी, साग आदि। ३. पका हुआ भोजन। ४. वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के न बोला जा सके। (हमारी वर्णमाला में 'क' से 'ह' तक के सब वर्ण व्यंजन हैं।)

व्यंजना–स्त्री० [सं०] १. व्यक्त या प्रक करने की क्रिया या भाव। २. शब्द की वा शक्ति जिससे वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ (अथा अभिधा और लक्षणाशक्ति से निकलनेवा अर्थों) के सिवा ध्वनि के रूप में कु विशेष अर्थ निकलता है। यह दो प्रक की मानी गई है—शब्द-गत या शाब्दी (दे और अर्थ-गत या आर्थी (दे०)।

व्यक्त–वि० [सं०] [भाव व्यक्तता] जो प्रकट किया या सामने लाया गया जिसका व्यंजन हुआ हो। प्रकट। (ए प्रेस्ड) २. साफ। स्पष्ट।

व्यक्ति–स्त्री० [सं०] व्यक्त या प्रकट होन पुं० १. मनुष्य। आदमी।। (पर्स २. जाति या समूह में से कोई एक। (विजुअल)

व्यक्तिगत–वि० [सं०] किसी व्यक्ति सम्बन्ध रखनेवाला। वैयक्तिक। (पर्सन

व्यक्तिगत विधि–स्त्री० [सं०] धर्म के अनुयायियों की वे नैतिक सामाजिक रीतियाँ या विधियाँ अनुसार उनके सब काम होते हैं। धर्म-शास्त्र। (पर्सनल-लॉ)

व्यक्तित्व–पुं० [सं०] १. 'व्यक्ति' का गु या भाव। २. वे विशेष गुण जिनके किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सूचित होती है। (पर्सनैलिटी)

व्यग्र–वि० [सं०] [भाव० व्यग्रता] घबराया हुआ। विकल। २. डरा हु भयभीत। ३. काम में लगा हुआ। व्य

व्यजन–पुं० [सं०] पंखा।

व्यतिकरण–पुं० [सं०] १. क्रिया प्रतिक्रिया के रूप में होना या करना।

। ३. बीच में बाधा के रूप
होना। (इंटरफ़ियरेन्स)
'।
[सं०] १. क्रम-भंग।
(डिसआर्डर) २. बाधा। विघ्न।
वि० = अतिरिक्त।
[सं०] [वि० व्यतिरेकी]
। २. भेद। अंतर। ३. साहित्य
अलंकार जिसमें उपमान की
में कुछ उत्कर्ष या विशेषता
में कुछ अपकर्ष या न्यूनता
ती है। इसके दो प्रकार या
ये हैं। जैसे—रात्रि के समय
के साथ ही चन्द्र भी प्रसन्न हो

[सं०] बीता हुआ। गत।
-अ० = बीतना।
पुं० [सं०] ज्योतिष में एक
शुभ काम करना मना है।
दे० 'व्यतिक्रम'।
[सं०] [वि० व्यथित] १.
। कष्ट। २. दुःख। क्लेश।
[सं०] [स्त्री० व्यथिता]
प्रकार की व्यथा या कष्ट हो।
।
[सं०] १. असावधानी के
भूला हुआ। २. (अधिकार
) जो ठीक समय पर उपयोग में
कारण हाथ से निकल गया हो
न मिल सकता हो। (लैप्सड)
[सं०] १. असावधानी
वाली कोई सामान्य या छोटी
समय तक किसी अधिकार,
सुभीते का उपयोग न करने के
हाथ से निकल जाना। (लैप्स)
[सं०] [कर्त्ता० व्यभिचारी]
ठीक मार्ग से हटकर अनुचित
पर चलना या जाना।

अनाचार। २. नियमित मार्ग से हटकर अनियमित मार्ग पर चलना या जाना। अतिचार। ३. बुरा या दूषित आचार। दुश्चरित्रता। बदचलनी। ४. नीति शास्त्र में किसी पुरुष या स्त्री, विशेषतः विवाहित पुरुष या स्त्री का क्रमात किसी पर-स्त्री या पर-पुरुष के साथ होनेवाला अनुचित लैंगिक संबंध। अनाचार। छिनाला। (एडल्टरी) ५. तर्क-शास्त्र में वह अवस्था जिसमें हेतु तो हो पर उसका साध्य न हो।

व्यभिचारी-पुं० [सं० व्यभिचारिन्] [स्त्री० व्यभिचारिणी] १. दुश्चरित्र। २. पर-स्त्री गामी। ३. दे० 'संचारी' (भाव)।

व्यय-पुं० [सं०] [वि० व्ययी] १. किसी तत्त्व या वस्तु का इस प्रकार काम में आना कि उसके परिमाण में कुछ कमी या क्षीणता हो। जैसे—शक्ति या समय का व्यय। २. कोई काम पूरा करने के लिए, पारिश्रमिक, मूल्य आदि के रूप में धन का दिया जाना या लगना। खर्च। (एक्सपेन्डिचर) ३. उतना धन जितना कोई चीज तैयार करने में लगे। परिव्यय। लागत। (कॉस्ट) ४. न रह जाना। नष्ट होना। विनाश।

व्यर्थ-वि० [सं०] [भाव० व्यर्थता] १. बिना मतलब का। अर्थ रहित। २. जिससे कोई लाभ न हो। निरर्थक। ३. कार्य रूप में जिसका कोई लाभ, प्रभाव या फल न हो। विफल। (नल्ल)

क्रि० वि० बिना मतलब के। यों ही।

व्यर्थन-पुं० [सं०] पहले की आज्ञा, निर्णय आदि को रद्द करके न किये हुए के समान करना। मोघन। (नलिफिकेशन)

व्यर्थीकरण-पुं० दे० 'व्यर्थन'।

व्यवच्छेदन-पुं० [सं०] १. किसी चीज के सब अंग काटकर अलग-अलग करना। २. वह प्रक्रिया जिसमें मृत शरीर के सभी भीतरी अंगों या अंशों को अलग-अलग करके उनके कार्य, रूप आदि का ज्ञान प्राप्त

किया जाता है। (डिस्सेक्शन)

व्यवधान–पुं० [सं०] १. ओट। परदा। २. रुकावट। बाधा। ३. विभाग। खंड। ४. विच्छेद। ५. परदा।

व्यवसाय–पुं० [सं०] [वि० व्यावसायिक, कर्त्ता व्यवसायी] १. जीविका-निर्वाह के लिए किया जानेवाला काम। पेशा। धन्धा। (ऑकुपेशन). २. किसी विशेष पेशे में रहकर उसके द्वारा धन कमाने के लिए उसका कार्य करना। (प्रैक्टिस) जैसे–चिकित्सक का व्यवसाय। ३. जीविका। वृत्ति। (प्रोफेशन) ४. रोजगार। व्यापार। ५. काम-धंधा।

व्यवसायिक–पुं० दे० 'व्यावसायिक'।

व्यवसायी–पुं० [सं० व्यवसायिन्] १. वह जो व्यवसाय करता हो। २. व्यापारी। रोजगारी।

व्यवस्था–स्त्री० [सं०] १. शास्त्रों, नियमों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित किसी कार्य का विधान जो उसके औचित्य का सूचक होता है। (रूलिंग) २.चीजों को सजाकर या ठिकाने से रखना या लगाना। ३. कोई काम ठीक ढंग या उचित प्रकार से करना या उसे पूरा करने का आयोजन करना। (अरेंजमेन्ट) ४. प्रबंध। इन्तजाम। (मैनजमेन्ट) ५. वह अवस्था जिसमें सब काम ठीक तरह से होते हों। (ऑर्डर) ६. सामने आया हुआ काम, कर्त्तव्य के भाव से पूरा करना। (डिस्पोजल डिस्पोजीशन) ७. धन-संपत्ति के बँटवारे, प्रबन्ध आदि से सम्बन्ध रखनेवाली योजना या इन्तजाम। (डिस्पोजीशन) जैसे–मरणोत्तरक व्यवस्था (वह योजना जिसमें यह बतलाया गया हो कि हमारे मरने के बाद हमारी सम्पत्ति का इस प्रकार बँटवारा या प्रबन्ध हो। ८. विधान आदि में कोई उद्देश्य सिद्ध करने या किसी बात की गुंजाइश निकालने के लिए किया जानेवाला कोई कार्य या उसके लिए निकाला हुआ रास्ता। निर्देश। (प्रॉविजन)

व्यवस्थान–पुं० [सं०] १. आपस हो नेवाला समझौता या सन्धि। २. संघटि सभा या संघ। (कम्पैक्ट)

व्यवस्थापक–पुं० [सं०] १. शास्त्री व्यवस्था देनेवाला। २. प्रबंध-कर्त्ता (मैनेजर)

व्यवस्था-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जि किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था या वै रिक विधान लिखा हो।

व्यवस्थापन–पुं० [सं०] व्यवस्था या करने का काम या भाव।

व्यवस्थापिका सभा–स्त्री० [सं०] देश के प्रतिनिधियों आदि की वह सभा देश के लिए कानून आदि बनाती विशेष–देखो 'विधायिका सभा'।

व्यवस्थित–वि० [सं०] जिसमें किसी प्र की व्यवस्था या नियम हो। नियमित।

व्यवहार–पुं० [सं०] १. कार्य। का २. किसी बात को कार्य के रूप में ला कार्यान्वित करना। (ऐक्शन) ३. सा जिक सम्बन्धों में औरों के साथ जानेवाला आचरण। बरताव। (कॉन्ड ४. रुपये-पैसे आदि के लेन देन का का महाजनी। ५. मुकदमा (दीवानी फौजदारी दोनों)। (केस) ६. किसी मु से सम्बन्ध रखनेवाली उसकी सारी प्रक्रि (प्रोसीडिंग, लीगल)

मुहा०–**व्यवहार** प्रस्तुत करना=ऐ कार्य करना जिसमें किसी के विरुद्ध कारवाई विशेषतः विधिक काररवाई हो या व्यवहार चल सके। (टु टेक प्रोसीडि ७. बहुत दिनों से चली आई हुई अब तक चलती हुई प्रथा या परिपाटी उपाचार। (यूसेज)

व्यवहारतः–क्रि० वि० [सं०] १. व्यव की दृष्टि से। २. उपयोग के विचार

के रूप में। (प्रैक्टिकली)

-पुं० [सं०] व्यवहारों या
) का विचार और सुनवाई
आफ केसेज)

-पुं० [सं०] वह अधि-
या साधारण मुकदमों में सर-
से पैरवी करता है। (कोर्ट
)

-पुं० [सं०] वह शास्त्र
के निर्णय और अपराधों के
होता है। धर्म-शास्त्र।

[सं०] १. व्यवहार या
या लाने के योग्य। २. जिसे
दिया जा सके। (प्रैक्टिकल)
सम्बन्ध में कोई व्यवहार या
वाई की जा सकती हो।
) जैसे-व्यावहार्य अपकार।
रांग)

[सं०] [भाव० व्यवहृति]
या काम में लाया हुआ। २.
या प्रयोग होता या हुआ हो।

[सं०] 'समष्टि का' कोई एक
पृथक् अंश या सदस्य।
। व्यक्ति। (इंडिविजुऽल)

[सं०] [अनुयायी व्यष्टिवादी]
में व्यष्टि की स्वतंत्र सत्ता और
जाता है। (इंडिविजुऽलिज्म)

[सं०] वह जो व्यष्टिवाद
हो। (इंडिविजुऽलिस्ट)

[सं०] [वि० व्यसनी] १.
बुरी या अमांगलिक बात।
आसक्ति। ४. कोई बुरा
। ५. किसी काम या
।

[सं० व्यसनिन्] वह जिसे
का व्यसन हो।

'व्यग्र'। २. दे० 'व्यास'।

[सं०] (वि० वैयाकरण) वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के प्रकारों और प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है। (ग्रामर)

व्याकरणिक-वि० [सं०] व्याकरण सम्बन्धी। व्याकरण का। (ग्रैमेटिकल)

व्याकल्प-पुं०[सं०] १.कुछ निश्चित अवधि तक होनेवाले आय-व्यय आदि का पहले से किया जानेवाला अनुमान। २. इस प्रकार अनुमान से तैयार किया हुआ लेखा। (बजट)

व्याकुल-वि० [सं०] [भाव० व्याकुलता] १. घबराया हुआ। २. बहुत उत्कंठित।

व्याकृति-स्त्री० [सं०] १. वाक्य में शब्दों का क्रम, जिसके आधार पर उसका अर्थ निकलता है। (कन्स्ट्रक्शन) २. शब्दों के क्रम के विचार से निकलनेवाला वाक्य या शब्द का अर्थ। (रीडिंग)

व्याख्या-स्त्री० [सं०] [वि० व्याख्यात] १. किसी जटिल वाक्य आदि के अर्थ का स्पष्टीकरण। टीका (एक्सप्लेनेशन) २. किसी वाक्य, कथन आदि का अपनी बुद्धि या अपने दृष्टि-कोण से लगाया जानेवाला अर्थ। अर्थापन। (इन्टरप्रेटेशन) ३. किसी विषय का कुछ विस्तार से किया हुआ वर्णन।

व्याख्यात-वि० [सं०] जिसकी व्याख्या हुई हो।

व्याख्याता-पुं० [सं० व्याख्यातृ] १. व्याख्या करनेवाला। २. भाषण करनेवाला।

व्याख्यान-पुं० [सं०] १. व्याख्या या वर्णन करने का काम। २. वक्तृता। भाषण।

व्याख्यानदाता-पुं० [सं०] वह जो व्याख्यान देता हो। भाषण करनेवाला।

व्याख्यापक-वि० [सं०] १. व्याख्या करनेवाला। जो व्याख्या के रूप में हो। (एक्सप्लेनेटरी)

व्याख्यापन-पुं० [सं०] व्याख्या करना।

व्याख्यायक-वि० दे० 'व्याख्यापक'।

व्याघात-पुं० [सं०] १. विघ्न। बाधा। २. मार। ३. किसी के अधिकार या स्वत्व पर होनेवाला आघात या उसमें पड़नेवाली बाधा। (इन्फ्रिजमेन्ट) ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमें ऐसे परस्पर विरोधी कार्यों, बातों, साधनों आदि का साथ साथ उल्लेख होता है, जो एक दूसरे का व्याघात करनेवाले या बाधक होते हैं अथवा यह कहा जाता है कि एक उद्देश्य या उपाय से एक ने जो काम किया, उसी उद्देश्य या उपाय से दूसरा उसके ठीक विपरीत काम करता है। जैसे-(क) जो फल आपने इतना परिश्रम करके पाया, वह मुझे अनायास मिल गया। (ख) जिस काम से उनकी इतनी बदनामी हुई, वही काम आपका यश बढ़ानेवाला हो गया।

व्याघ्र-पुं० [सं०] बाघ। शेर।

व्याघ्र-चर्म्म-पुं० [सं०] बाघ की खाल।

व्याज-पुं० [सं०] १. छल। मिस। बहाना। २. बाधा। विघ्न। ३. विलम्ब। पुं० दे० 'ब्याज'।

व्याज-निंदा-स्त्री० [सं०] किसी बहाने या ढंग से की जानेवाली वह निन्दा जो साधारणतः देखने में निन्दा न जान पड़े।

व्याज-स्तुति-स्त्री० [सं०] १. कुछ खास ढंग से की जानेवाली वह स्तुति जो साधारणतः देखने में स्तुति न जान पड़े। २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें इस ढंग से किसी की निन्दा या स्तुति की जाती है कि निन्दा से तो स्तुति का अथवा स्तुति से निन्दा का भाव प्रकट होता है।

व्याजोक्ति-स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अलंकार, जिसमें कोई भेद या रहस्य खुल जाने पर भी उसे किसी व्याज या बहाने से छिपाने अर्थात् बात बनाकर कुछ का कुछ समझाने का उल्लेख होता है।

व्याध-पुं० [सं०] १. पशु पक्षियों को मारकर अपनी जीविका चलानेवाला। बहेलिया। २. उक्त काम करनेवाली एक प्रचीन जाति

व्याधा-पुं० दे० 'व्याध'। स्त्री० दे० 'व्याधि'।

व्याधि-स्त्री० [सं०] १. रोग। बीमारी। २. साहित्य में काम वासना, प्रिय के चिन्ता वियोग या विरह आदि के कारण अस्व या रुग्न होना जो (क एक संचारी और (ख) पूर्व-राग की दस दशाओं से एक माना गया है। ३. विपत्ति। आफ ४. झंझट। बखेड़ा।

व्यापक-वि० [सं०] [भाव० व्याप १. चारों ओर फैला हुआ। २. भरा छाया हुआ। ३. घेरने या ढकनेवा ४. जो अपने क्षेत्र में या उसके च ओर दूर दूर तक फैला हो या प्रभाव ड हो। जिसके पेट में बहुत-सी बातें आती (कॉम्प्रिहेन्सिव) ५. साधारणतः क्षेत्र की सब बातों से सम्बन्ध रखनेवा (जनरल) जैसे-व्यापक निर्देश (आर्डर)।

व्यापन-पुं० [सं०] व्याप्त होना। फैला

व्यापना*-अ० [सं० व्यापन] किसी के अन्दर व्याप्त होना या फैलना।

व्यापार-पुं० [सं०] १. कार्य। का २. क्रियात्मक रूप धारण करने का भा काम करना। (ऑपरेशन) ३. वह आचरण, व्यवहार, प्रयोग आदि के रू किया जाय। (कॉन्डक्ट) जैसे-जी व्यापार। ४. चीजें खरीदकर बेचने का का रोजगार। (ट्रेड, बिजनेस)

व्यापार-चिह्न-पुं० [सं०] वह चिह्न जो व्यापारी अपने माल पर, दूसरे व्यापारियों के माल से पृथक् करने के लिए अंकित करते हैं। (ट्रेड मा

व्यापारिक-वि० [सं०] व्यापार सम्बन्धी रोजगार का। जैसे-व्यापारिक सम्बन्ध, व्या रिक समझौता।

[सं० व्यापारिन्] व्यवसाय,
करनेवाला। रोजगारी।

] व्यापार सम्बन्धी।
रिक।
[सं० व्यापिन्] व्याप्त होने
वाला। (यौगिक के
व्यापी महायुद्ध)
[सं०] १. किसी वस्तु या
या भागों में भरा, फैला या
२. सीमा में या उसके अंतर्गत

[सं०] १. किसी वस्तु या
अंगों या भागों में फैले हुए
अवस्था, क्रिया या भाव।
२. साधारणतः सभी अव-
होने का भाव। (जेनेरलिटी)
में किसी एक पदार्थ में
एक या पूर्ण रूप से मिला
होना।
[सं०] [वि० व्यामोहक,
१. अज्ञान। २. मोह। ३.
में पड़कर यह न समझ
करना चाहिए।
[सं०] १. केवल बल बढ़ाने
क्रिया जानेवाला शारीरिक
(एक्सरसाइज)
[सं०] रूपक या दृश्य-
प्रकार या भेद जो एक अंक
और जिसकी कथा ऐतिहासिक
है।
[स्त्री० व्याली] १.
३. राजा। ४. विष्णु।
[सं०] साँपों को खाने-
] साँप खानेवाला, गरुड़।
व्यालू'।
[सं०] १. चारो ओर
से घेरनेवाला। २. बाँधने या बाधा डालनेवाला। बाधक। ३. पीछे की ओर लौटाने या हटाने वाला। ४. अन्तर या भेद सूचित करनेवाला।

व्यावर्त्तन–पुं० [सं०] चारो ओर से घेरना। २. पीछे की ओर लौटाना या मोड़ना। ३. चारो ओर की स्थिति। परिस्थिति। ४. चक्कर लगाना। घूमना। ५. बराबर होता रहनेवाला परिवर्त्तन। उद०–नित्य का यह अनित्य नर्तन, विवर्तन जग, जग व्यावर्त्तन।–पंत। ६. अन्तर। भिन्नता। भेद।

व्यावहारिक–वि० [सं०] १. व्यवहार या बरताव सम्बन्धी। २. जो व्यवहार में आ सकता या आता हो। व्यवहार में आने या लाने योग्य। ३. कार्य के रूप में होने वाला। क्रियात्मक। (प्रैक्टिकल) ४. व्यवहार (दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के) या मुकदमों अथवा उनके अधिक्षेत्र से सम्बन्ध रखनेवाला। (लीगल) जैसे–व्यावहारिक अक्षमता। (लीगल डिसएबिलिटी)

व्यास–पुं० [सं०] १. कृष्ण द्वैपायन, जिन्होंने वेदों का संग्रह और संपादन किया था और जो पुराणों के रचयिता माने जाते हैं। २. जो पुराणों आदि की कथायें सुनाता हो। कथा वाचक। ३. वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त का गोल क्षेत्र के बीचोबीच होती हुई गई हो और जिसके दोनों सिरे वृत्त की परिधि से मिले हों। विस्तार। ४. फैलाव।

यौ०–व्यास-समास = (क) घटाना-बढ़ाना। (ख) काट-छाँट।

व्यासक्त–वि० [सं०] [भाव० व्यासक्ति] एक ही वर्ग या प्रकार के अंतर्गत होने के कारण परस्पर सम्बद्ध या सदृश। (एलाइड)

व्यासक्ति–स्त्री० [सं०] [वि० व्यासक्त] वह समानता जो अनेक वस्तुओं में उनके

एक ही प्रकार या वर्ग के अंतर्गत होने के कारण होती है। (एफिनिटी)

व्यासार्द्ध-पुं० [सं०] किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग। (रेडिअस्)

व्यासिद्ध-वि० [सं०] [सं० व्यासिद्धि, व्यासेध] किसी विशेष कार्य, पद, व्यक्ति आदि के लिये मुख्य रूप से अलग या सुरक्षित किया हुआ। (रिज़र्वड)

व्यासेध-पुं० [सं०] किसी विशिष्ट व्यक्ति, पद, कार्य आदि के लिये मुख्य रूप से अलग करने या सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव। (रिज़र्वेशन)

व्याहत-वि० [सं०] १. मना किया हुआ। वर्जित। २. बुरा। निषिद्ध। ३. व्यर्थ। ४. परस्पर विरोधी।
पुं० साहित्य में उक्ति या कथन का एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है जब एक साथ दो परस्पर विरोधी बातें कही जाती हैं। जैसे-चन्द्र-मुखी का मुख चन्द्रमा के समान नहीं हो सकता। (तर्क-शास्त्र का वदतो व्याघात दोष इसी के अन्तर्गत आता है।)

व्याहृति-स्त्री० [सं०] १. कथन। उक्ति। २. भूः, भुवः और स्वः इन तीनों का मंत्र।

व्युत्पत्ति-स्त्री० [सं०] १. उद्गम या उत्पत्ति का स्थान। २. शब्द का वह मूल रूप जिससे वह निकला या बना हो। (डेरिवेशन) ३. शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न-वि० [सं०] [भाव० व्युत्पन्नता] १. जिसकी किसी से व्युत्पत्ति हुई हो। २. जिसे किसी शास्त्र या विषय का अच्छा ज्ञान हो। किसी विद्या या कला या किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित।

व्यूह-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. निर्माण। रचना। ३. शरीर। ४. सेना। ५. युद्ध में सैनिकों आदि या सेना की स्थापना का विशेष प्रकार। विन्यास।

व्योम-पुं० [सं० व्योमन्] १. आकाश। आसमान। २. आकाश में व्याप्त व पारदर्शी तत्त्व जिसमें से होकर सूर्य की किरणें पृथ्वी तक पहुँचती हैं। आकाश (ईथर)

व्योमकेश-पुं० [सं०] महादेव।

व्योमचारी-पुं० [सं० व्योमचारिन्] जो आकाश में विचरण करता हो। देवता। ३. पक्षी। चिड़िया।

व्योम-यान-पुं० [सं०] हवाई जहाज

व्रज-पुं० [सं०] १. जाना या चलन २. समूह। ३. मथुरा और वृन्दावन आस-पास का क्षेत्र और श्रीकृष्ण लीलाभूमि।

व्रजन-पुं० [सं०] १. चलना। गम २. पाप।

व्रजभाषा-स्त्री० [सं०] मथुरा, आ आदि में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध जिसमें सूर, तुलसी, बिहारी आदि कवि अनेक ग्रथ-रत्न हैं।

व्रजमंडल-पुं० [सं०] व्रज और आस-पास का प्रदेश।

व्रजराज-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजांगना-स्त्री० [सं०] १. व्रज की २. गोपी।

व्रजेश-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रण-पुं० [सं०] [वि० व्रणित] १. फो २. शरीर में प्राकृतिक कारणों से होनेवाला घाव (सोर या अल्सर)

व्रणित-वि० [सं०] १. व्रण से रखनेवाला। २. (अग) जिसमें व्रण (सोर्ड, अल्सरेटेड)

व्रत-पुं० [सं०] [वि० व्रती, व्रति १. भोजन न करना। २. पुण्य या धा अनुष्ठान के लिये नियमपूर्वक उपवास कर ३. संकल्प या प्रतिज्ञा।

व्रतिक-वि० [सं०] व्रत सम्बन्धी। व्रत क

व्रती-पुं० [सं० व्रतिन्] वह जि

किया हो। २. यजमान।

[अप०] अपभ्रंश भाषा
में प्रचलित था।
[सं०] १. शरीर से किया
शारीरिक श्रम।
) २. मनुष्य। आदमी।
। ४. समूह। राशि।

माला में तीसवाँ व्यंजन वर्ण
स्थान तालु है।
] १. डर। भय। २. शंका।
[सं० शंका] १. शंका या
। २. डरना।
[सं०] मंगलकारक। शुभ।
। २. दे० 'शंकराचार्य्य'।
' (राग)।
नामक छन्द का एक भेद।
'।
[सं० शंकर] ओड़व-षाड़व
राग जो रात के दूसरे पहर
है।
[सं०] पार्वती।
[सं०] १. अनिष्ट का भय।
। २. अपने किसी अनुचित
मन में उठनेवाला यह
कोई अनिष्ट न हो जाय।
एक संचारी भाव माना
। ३. सन्देह। संशय। शक।

[सं०] [स्त्री० शंकिता]
हुई हो। २. डरा हुआ।
] १. मेख। कील। २.
। बरछा। ४. वह खूँटी
में सूर्य्य या दीये की
थी। ५. मोटी सींक।

व्रात्य–पुं० [सं०] १. वह जिसके दस संस्कार न हुए हों। २. यज्ञोपवीत संस्कार से हीन या रहित। ३. वर्ण-संकर।

व्रीड़न–पुं० [सं०] १. लज्जित करना या होना। २. लज्जा। शर्म।

व्रीड़ा–स्त्री० [सं०] लज्जा। लाज। शर्म। (साहित्य में एक संचारी भाव)

व्रीहि–पुं० [सं०] १. धान। २. चावल।

श

शंख–पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा घोंघा जिसका कोष बहुत पवित्र माना जाता है और देवताओं के आगे बजाया जाता है। कंबु।

मुहा०*-**शंख पूरना** = शंख में मुँह से हवा भरकर बजाना।

२. सौ पद्म की संख्या जो अठारहवें स्थान पर पड़ती है।

शंखचूड़–पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत जहरीला साँप।

शंखासुर–पुं० [सं०] एक दैत्य जो ब्रह्मा के वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था और जिसे विष्णु ने मत्स्यावतार धारण करके मारा था।

शंखिनी–स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की वनौषधि। २. काम-शास्त्र में स्त्रियों के पद्मिनी आदि चार भेदों में से एक जो दुबली-पतली, छोटे स्तनोंवाली, कुछ निर्लज्ज और क्रोधी स्वभाव की कही गई है।

शंड–पुं० दे० 'षंड'।

शंपा–स्त्री० [सं० शम्पा] १. विद्युत्। बिजली। २. कमर। कटि।

शंबर–पुं० [सं० शंबरः] १. एक राक्षस जिसे प्रद्युम्न ने मारा था। २. पर्वत। पहाड़। ३. एक प्रकार का हिरन। ४. युद्ध। लड़ाई। ५. इंद्रजाल। जादू।

पुं० [सं० शंबरं] १. जल। पानी।

२. बादल। मेघ। ३. धन। सम्पत्ति।

शंबरारि–पुं० [सं०] १. प्रद्युम्न, जिन्होंने शंबर नामक राक्षस को मारा था। २. कामदेव।

शंबुक–पुं० [सं०] घोंघा।

शंभु–पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शंसिका–स्त्री० [सं० शंसा] किसी व्यक्ति या घटना के सम्बन्ध में आलोचना के रूप में प्रकट किया हुआ संक्षिप्त विचार। उप-कथन। टिप्पणी। (रिमार्क)

शऊर–पुं० [अ०] १. अच्छी तरह काम करने की योग्यता या ढंग। २. बुद्धि।

शक–पुं० [सं०] १. एक प्राचीन अनार्य जाति जो शक द्वीप की रहनेवाली थी और म्लेच्छों में गिनी जाती थी। २. शकाब्द। पुं० [अ०] [वि० शक्की] शंका। सन्देह।

शकट–पुं० [सं०] १. रथ। २. बैल-गाड़ी। छकड़ा।

शकर–स्त्री० दे० 'शक्कर'।

शकरकंद–पुं० [हिं० शकर + सं० कंद] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।

शकर-पारा–पुं० [फा०] १. एक प्रकार का फल। २. एक प्रकार की छोटी चौकोर मिठाई। ३. इस आकार की चौकोर सिलाई जो रुईदार कपड़ों में होती है।

शकल–स्त्री० [अ० शक्ल] १. मुख की आकृति। चेहरा। स्वरूप। २. मुख का भाव। चेष्टा। ३. बनावट। गढ़न। ४. (काम करने का) उपाय। ढंग। रास्ता। पुं० [सं०] १. चमड़ा। २. छाल। ३. अंश। खंड। टुकड़ा।

शकाब्द–पुं० [सं०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत् जो सन् ई० के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था।

शकुंत–पुं० [सं०] पक्षी। चिड़िया।

शकुन–पुं० [सं०] १. किसी विशेष कार्य के आरंभ में दिखाई देनेवाले शुभ या अशुभ लक्षण। सगुन। २. शुभ मुहुर्त्त। ३. शुभ मुहुर्त्त में होनेवाला कार्य।

शक्कर–स्त्री० [सं० शर्करा, फा० शकर] १. चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड़।

शक्की–वि० [अ० शक + ई (प्रत्य०)] हर बात में शक या सन्देह करनेवाला।

शक्त–पुं० [सं०] समर्थ या शक्तिवान्।

शक्ति–पुं० [सं०] [वि० शक्य, शाक्त] १. कोई ऐसा तत्त्व जो कोई कार्य करता, कराता अथवा क्रियात्मक रूप में अपना प्रभाव दिखलाता हो। बल। ताकत (एनर्जी) २. कोई ऐसा तत्त्व जो निश्चि रूप से और बलपूर्वक किसी से कोई का करा सकता हो। बल। (फोर्स) ३. साधन या तत्त्व जिससे कोई कार्य या अभी सिद्ध होता है। जैसे–सैनिक या आर्थि शक्ति। ४. बड़ा और पराक्रमी। रा जिसमें यथेष्ट धन और सेना आदि हो (पॉवर) ५. वह सम्बन्ध जो शब्द औ उसके अर्थ में होता है। ६. प्रकृति माया। ७. किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहला हैं। (तंत्र) ८. दुर्गा। ९. एक प्रकार शस्त्र। साँग। १०. अठारह मात्राओं एक छन्द।

शक्तिमत्ता–स्त्री० [सं०] शक्तिमान् हो का भाव। ताकत।

शक्तिवान्–वि० [सं०] [स्त्री० शक्तिम बलवान्। बलिष्ठ। ताक़त-वर।

शक्तिशाली–वि० [सं० शक्तिशालिन्] [स्त्री० शक्तिशालिनी] बलवान्। ताकतव

शक्तिशील–वि० [स्त्री० शक्तिशीला] दे 'शक्तिशाली'।

शक्ति संतुलन–पुं० [सं०] परस्पर विरोधी शक्तियों का ऐसा विभाजन या वर्गीकर जिसमें दोनों पक्ष प्रायः समान रहें और एक दूसरे का अनिष्ट न कर सकें। (बैलेन्स ऑफ पॉवर)

शक्य–वि० [सं०] [भाव० शक्यता]

हो सकने योग्य। संभव।
[सं०] 'शक्य' होने की
(पोटेन्शियालिटी)
] इन्द्र।
[सं०] इन्द्र-धनुष।
'शकल'।
] व्यक्ति। जन।
] १. व्यापार। काम-
विनोद।
] १ दे० 'शकुन'।
बात-चीत पक्की होने की
। टीका।
[हिं० शगुन] शकुन का
साधारण ज्योतिषी।
[फा०] १. कली। २. फूल।
और विलक्षण घटना या बात।
[सं०] इन्द्र की पत्नी।
[अ०] १. वंश-वृत्त। २ पट-
हुआ खेतों का नकशा।
[सं०] १ सिर के बालों की
की जड़।
[भाव० शठता] १. धूर्त्त।
२. लुच्चा। बदमाश। ३.
। पाजी।
वह नायक जो बातें बनाकर
में और अपना काम निका-
तथा निर्लज्ज हो।
[सं०] पचास का दूना। सौ।
[सं०] [स्त्री० शतिका] १.
सौ वस्तुओं का समूह या
शताब्दी। (सेन्चुरी)
[सं० शत कुंडिन्] वह
सौ कुंडों में एक साथ यज्ञ
[सं०] एक प्रकार का
[सं०] कमल।
[सं०] १. सैकड़ों बार। २.

सैकड़ों प्रकार से। ३. सैकड़ों टुकड़ों में।

शतरंज–स्त्री० [फा०, मि० सं० चतुरंग] एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो बत्तिस गोटियों से खेला जाता है।

शतरंजी–स्त्री० [फा०] रंग-बिरंगे सूतों से बनी हुई दरी या मोटा बिछावन।

शतशः–वि० [सं०] १. सैकड़ों। २. सौ गुना। ३. बहुत अधिक।

शतांश–पुं० [सं०] सौ हिस्सों में से एक। १०० वाँ भाग।

शताब्दी–स्त्री० [सं०] सौ वर्षों का विशेषतः किसी सन्, संवत् की किसी इकाई से सैकड़े तक का समय। शती। शतक। (सेन्चुरी)

शतायु–वि० [सं० शतायुस्] सौ वर्षों की आयुवाला।

शतावधान–पुं० [सं०] [वि० शतावधानी] वह जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हें ठीक क्रम से याद रख सकता और बहुत-से काम एक साथ कर सकता हो।

शती–स्त्री० [सं० शतिन्] १. सौ का समूह। सैकड़ा। २. शताब्दी। (सेन्चुरी)

शत्रु–पुं० [सं०] वैरी। दुश्मन।

शत्रुता–स्त्री० [सं०] दुश्मनी। वैर।

शनाख्त–स्त्री० [फा०] किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर पहचानने की क्रिया या भाव। विभावन। पहचान।

शनि–पुं० [सं०] सौर जगत् का सातवाँ ग्रह जो फलित ज्योतिष में अशुभ और कष्टदायक माना जाता है। (सैटर्न)

शनिवार–पुं० [सं०] शुक्रवार के बाद और रविवार के पहले का वार या दिन।

शनिश्चर–पुं० दे० 'शनि'।

शनैः–अव्य० [सं०] धीरे। आहिस्ता।

शनैश्चर–पुं० दे० 'शनि'।

शपथ–स्त्री० [सं०] १. कसम। सौगंध। (ओथ) २. दृढ़तापूर्ण कथन। प्रतिज्ञा।

शपथ-ग्रहण–पुं० [सं०] किसी विशेष

अवसर पर नियमपूर्वक और विधिवत् शपथपूर्वक कोई प्रतिज्ञा करने की रीति या भाव। (स्वेयरिंग)

शपथ-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी बात की सत्यता प्राख्यापित करने के समय शपथपूर्वक लिखकर न्यायालय में उपस्थित किया जाता है। (एफिडेविट)

शबनम–स्त्री० [फा०] १. ओस। २. एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।

शबर-पुं० [सं०] भारत में बसनेवाली एक प्राचीन अनार्य जाति।

शबरी–स्त्री० [सं०] शबर नामक अनार्य जाति की एक प्रसिद्ध भक्त स्त्री जिसने प्रवास के समय रामचंद्र को, पहले आप चखकर उनमें से मीठे बेर खिलाये थे।

शबल(लित)–वि० [सं०] १. चितकबरा। २. रंग-बिरंगा। बहु-रंगा।

शबीह–स्त्री० [अ०] चित्र। तसवीर।

शब्द–पुं० [सं०] १. ध्वनि। आवाज। २. अक्षरों या वर्णों आदि से बना हुआ और मुँह से उच्चरित अथवा लिखा जानेवाला वह संकेत जो किसी भाव, कार्य या बात का बोधक होता है। सार्थक। ध्वनि। लफ्ज। (वर्ड) ३. संतों के बनाये हुए पद। ४. किसी आप्त पुरुष की कही हुई ऐसी बात जिसमें कुछ उपदेश भी हो। जैसे कबीर या गुरुनानक के शब्द।

शब्द-कोश–पुं० [सं०] वह कोश (ग्रंथ) जिसमें बहुत से शब्द यों ही अथवा अर्थ सहित दिये हों। (डिक्शनरी, लेक्सिकन)

शब्द-चित्र–पुं० [सं०] शब्दों में किसी विषय या बात की ऐसी स्पष्ट और विस्तृत चर्चा जो देखने में उसके चित्र के समान जान पड़े।

शब्द-जाल–पुं० दे० 'शब्दाडंबर'।

शब्द-प्रमाण–पुं० [सं०] ऐसा प्रमाण जिसका आधार केवल किसी का कथन हो।

शब्द-भेद–पुं० [सं०] १. व्याकरण में शब्दों का वह विशेष प्रकार का विभाग जिसके अनुसार यह निश्चय होता है कि अमुक शब्द संज्ञा है या सर्वनाम, विशेषण है या क्रिया विशेषण, क्रिया है या अव्यय आदि। (पार्ट्स ऑफ स्पीच) २. दे० 'शब्द-वेध'।

शब्द-योजना–स्त्री० [सं०] १. किसी वाक्य या कथन के लिए उपयुक्त शब्द बैठाना। २. इस प्रकार बैठाये हुए शब्दों का क्र और रूप। (वर्डिंग)

शब्द-वक्रोक्ति–स्त्री० दे० 'वक्रोक्ति'।

शब्द-विरोध–पुं० [सं०] वह विरो जो वास्तविक या तात्पर्य सम्बन्धी न है बल्कि केवल शब्दों में जान पड़ता हो केवल शब्द-गत विरोध।

शब्द-वेध–पुं० [सं०] [वि०, क शब्द-वेधी] लक्ष्य को बिना देखे उसपर होनेवाले आघात या उसकी ओर आनेवाले शब्द से दिशा का ज्ञान क लक्ष्य पर ठीक और सच्चा निशाना लगान

शब्द-वेधी–पुं० [सं० शब्द-वेधिन्] के सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान किसी वस्तु को बाण से मारनेवाला।

शब्दशः–क्रि० वि० [सं०] किसी के या लिखे हुए विचारों आदि के प्रत्येक श के अनुसार या अनुकरण पर। (वरबेटि

शब्द-शक्ति–स्त्री० [सं०] शब्द की शक्ति जिसके द्वारा उससे कोई अर्थ नि है। यह तीन प्रकार की कही गई है अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। (देखो

शब्द-शास्त्र–पुं० [सं०] व्याकरण।

शब्द-श्लेष–पुं० दे० 'श्लेष' (अलंकार)

शब्द-साधन–पुं० [सं०] व्याकरण का अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, प्रकार रूपान्तर आदि का विचार होता है।

शब्दाडंबर–पुं० [सं०] साधारण कहने के लिए बड़े-बड़े शब्दों और वाक्यों का प्रयोग। शब्द-जाल (बॉम्बैस्ट

शब्दान्वय–पुं० [सं०] (व्याकरण में

हुए किसी शब्द का शब्द-
वचन, कारक, काल आदि
वह बतलाना कि दूसरे शब्दों
क्या सम्बन्ध है। (पार्जिंग)
[सं० शब्द + अर्थ] किसी
अर्थ। माने। (उससे
किसी विशिष्ट भाव से भिन्न।
पुं० [सं०] काव्य में वह
प्रयुक्त होनेवाले शब्दों से
उत्पन्न हो, उनके स्थान पर
रखने से वह चमत्कार न रहे।
स्त्री० [सं०] १. किसी विषय
सम्बन्ध रखनेवाले शब्द या
। २. किसी वाक्य, कथन या
प्रयुक्त शब्दों का प्रकार या
डिंग)
[सं०] १. जिसमें शब्द
हो। २. बोलता हुआ।
[सं०] [भाव० शमता] १.
मोद। ३. अंतःकरण तथा
में रखना। ४. क्षमा।
[सं०] [वि० शमित] १.
उपद्रव आदि दबाना। २.
यम। यमराज। ४. दे०

[फा०] तलवार।
[अ० शमऽ] मोमबत्ती।
पुं० [अ० शम + फा० दान] वह
में मोमबत्ती जलाई जाती है।
[सं० शिवा ?] एक प्रकार
। सफेद कीकर।
[सं०] १. सोना। निद्रा लेना।
। ३. शय्या। पलंग। ४.
बिछौना।
स्त्री० [सं० शयन + हिं०
आरती जो देवी-देवता के सामने
उन्हें शयन कराने से पहले की

शयन-गृह–पुं० दे० 'शयनागार'।

शयनागार–पुं० [सं०] सोने का कमरा या घर। शयन-गृह।

शयनालय–पुं० दे० 'शयनागार'।

शयित–वि० [सं०] १. सोया हुआ। निद्रित। २. शय्या पर पड़ा वा लेटा हुआ।

शय्या–स्त्री० [सं०] १. बिछौना। बिस्तर। २. सोने के लिए ओढ़ना-बिछौना या खाट अथवा पलंग। ३. चिकित्सालयों आदि में वह खाट जिसपर रोगी रहते हैं। (बेड उक्त सभी अर्थों के लिए)

शय्या-दान–पुं० [सं०] मृतक के उद्देश्य से महाब्राह्मण को चारपाई, ओढ़ना बिछौना, बरतन आदि दान देना।

शय्या-व्रण–पुं० [सं०] रोगियों की पीठ, कमर आदि में होनेवाला वह घाव जो बहुत दिनों तक बिस्तर पर पड़े रहने से हो जाता है। बिस्तर घाव। (बेड सोर)

शर–पुं० [सं०] [भाव० शरता] १. बाण। तीर। २. सरकंडा। सरई। ३. सरपत। रामशर। ४. दूध या दही पर की मलाई। ५. भाले का फल।

शरअ–स्त्री० [अ०] [वि० शरई] १. कुरान में बतलाया हुआ विधान। २. दस्तूर। परिपाटी। ३. मुसलमानों का धर्म-शास्त्र।

शरई–वि० [अ०] जो शरअ या इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुसार ठीक हो।

शर-कोट–पुं० [सं०] चलाये हुए तीरों या बाणों का ऐसा घेरा जो शत्रु सैनिकों को जल्दी बाहर न निकलने दे। शर-पञ्जर।

शरण–स्त्री० [सं०] १. रक्षा। आश्रय। २. बचाव की जगह। ३. घर। मकान। वि० शरण देने या रक्षा करनेवाला। यौगिक शब्दों के अंत में, जैसे–अशरण-शरण।

शरण-गृह–पुं० [सं०] जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण आदि से बचने के लिए छिपकर रहते हैं।

शरणद-पुं० [सं० शरण + द (प्रत्य०)] शरण देनेवाला।

शरणागत-वि० [सं०] शरण में आया हुआ।

शरणार्थी पुं० [सं०] १. वह जो कहीं शरण पाना चाहता हो। २. वह जो अपने निवास-स्थान से बलपूर्वक हटा दिया गया हो और दूसरी जगह शरण पाकर रहना चाहता हो। (रिफ्यूजी)

शरण्य-वि० [सं०] शरण में आनेवाले की रक्षा करनेवाला।

शरत्-स्त्री० [सं०] १. ऋतु जो आश्विन और कार्तिक में होती है। २. वर्ष। साल।

शरता-स्त्री० [सं०] १. शर का भाव। २. शर या तीर चलाने की कला या विद्या। उदा०-छोंड़ि दई शरता सब काम मनोरथ के रथ की गति खूटी।—केशव।

शर्तिया-क्रि० वि० दे० 'शर्त्तिया'।

शरत्काल-पुं० दे० 'शरत्' २.।

शरद-स्त्री० दे० 'शरत्'।

शर-पंजर-पुं० = शर-कोट। उदा०-'जाख्यो शर पंजर छार कख्यो नैऋत्यन को अति चित्त डख्यो।—केशव।

शरद पूनो-स्त्री० = शरद पूर्णिमा।

शरद पूर्णिमा-स्त्री० [सं०] आश्विन मासके शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा।

शरबत-पुं० [अ० शर्बत] [वि० शरबती] १ कोई मधुर पेय पदार्थ। २. चीनी आदि में पकाकर तैयार किया हुआ किसी ओषधि का रस। ३. वह पानी जिसमें शक्कर या खाँड घुली हो।

शरबती-वि० [हिं० शरबत] शरबत के रंग का। पीला मिला हुआ हलका हरा। पुं० शरबत की तरह का पीला मिला हुआ हलका हरा रंग।

स्त्री० एक प्रकार की बढ़िया मलमल।

शरभ-पुं० [सं०] १. टिड्डी। २. हाथी का बच्चा। ३. शेर। ४. ऊँट। ५. एक प्रकार का कल्पित जंतु जो आठ पैरोंवाला और शेर से भी अधिक बलवान माना गया है। ६. पशु। जानवर। ७. बानरों की एक विशेष जाति। ८. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ४ नगणों के बाद १ सगण होता है। मणिगुण। शशिकला।

शरम-स्त्री० [फा० शर्म] १. लज्जा। हया। **मुहा०-मारे शरम के गड़ जाना या पानी पानी होना** = बहुत लज्जित होना। २. लिहाज। संकोच। ३. प्रतिष्ठा। इज्जत।

शरमाऊ-वि० दे० 'शरमीला'।

शरमाना-अ० [अ० शर्म + आना(प्रत्य०)] लजाना। लज्जित होना।

स० शर्मिंदा या लज्जित करना।

शर्मिंदा-वि० [फा०] [भाव० शरमिंदगी] लज्जित।

शरमीला-वि० [फा० शर्म + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आती हो। लजीला। लज्जालु।

शरह-स्त्री० [अ०] १. टीका। भाष्य। २. दर या भाव। ३. प्रथा। परिपाटी।

शरह बंदी-स्त्री० दे० 'दर-बंदी'।

शरह-मुऐयन-वि० [अ०] (खेत) जिसकी मालगुजारी बिलकुल निश्चित हो और किसी प्रकार बढ़ाई न जा सकती हो।

शराकत-स्त्री० [फा०] साझा।

शराकत-नामा-पुं० [अ० शिरकत + फा० नामः] वह पत्र जिसपर शराकत या साझे की शर्तें लिखी रहती हैं।

शरापना*-अ० = शाप देना।

शराफत-स्त्री० [अ०] सज्जनता।

शराब-स्त्री० [अ०] एक प्रसिद्ध तरल मादक पदार्थ जो कई तरह की चीजों का खमीर उठाकर बनाया जाता है। मदिरा। मद्य।

शराबखोरी-स्त्री० [फा०] मदिरा-पान।

शराबी-पुं० [हिं० शराब + ई (प्रत्य०)] वह जो प्रायः शराब पीता हो। मद्यप।

शराबोर-वि० [फा०] बिलकुल भीगा

तर-ब्रतर ।

[अ॰] पाजीपन । दुष्टता ।

[सं॰] धनुष ।

[अ॰] [भाव॰ शराकत] मैं साथ देनेवाला । २. शामिल । सम्मिलित ।

और सहायक । २. हिस्से-

दे॰ 'शराकत' ।

[अ॰] भला आदमी । सज्जन ।

[सं॰ श्रीफल या सीता-फल] आकार का एक प्रसिद्ध वृक्ष । फल । सीता-फल ।

[सं॰] १. प्राणियों के सब समूह । देह । तन । बदन ।

)

छूटना = मृत्यु होना ।

बरतना = शरीर छूटना ।

का सारा विस्तार या ढाँचा अंग सम्मिलित हों । (फ्रेम)

] [भाव॰ शरारत] पाजी ।

-पुं॰ [सं॰] मृत्यु ।

-पुं॰ दे॰ 'अंग-रक्षक' ।

-पुं॰ [सं॰] वह शास्त्र के अंगों की बनावट और उनके विवेचन होता है ।

[सं॰] मृत्यु । मौत ।

[सं॰ शरीरिन्] १. शरीर- । २. आत्मा । जीव ।

युक्त । शरीरवाला ।

[सं॰] १. शक्कर । २. बालू ।

[अ॰] १. किसी विषय के सम्बन्ध में दृढ़तापूर्वक कुछ प्रकार जिसमें सत्य या असत्य हार-जीत और कुछ लेन देन बाजी । २. किसी काम के लिए बन्धन या नियन्त्रण के

रूप में होनेवाली आवश्यक बात या काम । ३. पारस्परिक निश्चय, संविदा आदि से सम्बन्ध रखनेवाली वे सब बातें जिनका पालन प्रायः नियम के रूप में एक या सभी पक्षों के लिए आवश्यक होता है । पण । (टर्म)

शर्तिया–क्रि॰ वि॰ [अ॰] निश्चयपूर्वक । वि॰ बिलकुल ठीक । निश्चित ।

शर्ब–पुं॰ दे॰ 'शर्व' ।

शर्म–पुं॰ [सं॰] १. सुख । २. घर । ३. सुख । आनन्द । ४. कल्याण । मंगल । स्त्री॰ दे॰ 'शरम' ।

शर्म्मा–पुं॰ [सं॰ शर्म्मन्] ब्राह्मणों की उपाधि ।

शर्व–पुं॰ [सं॰] १. शिव । २. विष्णु ।

शर्वरी–स्त्री॰ [सं॰] रात । रात्रि ।

शर्वाणी–स्त्री॰ [सं॰] १. पार्वती । २. दुर्गा ।

शलगम–पुं॰ [फा॰ शलजम] गाजर की तरह का एक प्रसिद्ध कंद ।

शलभ–पुं॰ [सं॰] १. टिड्डी । २. फतिंगा ।

शलवार–स्त्री॰ दे॰ 'सलवार' ।

शलाका–स्त्री॰ [सं॰] १. सलाई । सीख । २. बाण । तीर । ३. निर्वाचन आदि में छोटी रंगीन गोलियों या कागजों की सहायता से गुप्त रूप से दिया जानेवाला मत । ४. इस प्रकार मत देने की प्रणाली । (बैलट)

शलूका–पुं॰ [फा॰] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती ।

शल्य–पुं॰ [सं॰] १. हड्डी । अस्थि । २. शलाका । ३. साँग नामक अस्त्र । ४. दुर्वचन । गाली । ५. वे उपकरण जिनसे फोड़े या रुग्ण अंग चीरे फाड़े जाते हैं । (सर्जिकल इन्स्ट्रूमेंटस) । ६. दे॰ 'शल्य-कर्म' ।

शल्यक–वि॰ [सं॰] १. शल्य-सम्बन्धी । शल्य का । २. शल्य-चिकित्सा से सम्बन्ध रखनेवाला । (सर्जिकल) जैसे—शल्यक-क्रिया । (सर्जिकल ऑपरेशन)

शल्य-कर्म–पुं॰ [सं॰] फोड़ों, रोग युक्त

अंगों आदि को चीरने-फाड़ने और टूटी हुई हड्डियाँ आदि जोड़ने या उखड़ी हुई हड्डियाँ आदि बैठाने की विद्या या काम। (सर्जरी)

शल्य-कर्मी–पुं० = शल्य-चिकित्सक।

शल्यकार–पुं० [सं०] १. वह जो शल्य-कर्म का अच्छा ज्ञाता हो। २. दे० 'शल्य-चिकित्सक'।

शल्यक्री–स्त्री० = शल्य-कर्म।

शल्य-चिकित्सक–पुं० [सं०] चीर-फाड़ आदि करके अंगों के रोग दूर करनेवाला चिकित्सक। (सर्जन)

शल्य-चिकित्सा–स्त्री० = शल्य-कर्म।

शल्य-विज्ञान(शास्त्र)–पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें फोड़ों, दूषित अंगों आदि की चिकित्सा के लिए चीरने-फाड़ने, काटने आदि की और टूटी-फूटी या उखड़ी हुई हड्डियों आदि को जोड़ने-बैठाने आदि की प्रक्रियाओं का विवेचन होता है। (सर्जरी)

शल्योपचार–पुं० [सं० शल्य + उपचार] [वि० शल्योपचारीय] फोड़ों, रोग से युक्त अंगों आदि को चीरकर उन्हें मवाद, रोग, विकार आदि से मुक्त या रहित करके ठीक करने की क्रिया। चीर-फाड़। (ऑपरेशन)

शल्योपचारिक–वि० [सं०] शल्योपचार से सम्बन्ध रखनेवाला। शल्योपचार का। (सर्जिकल)

शल्योपचारी–पुं० [सं० शल्योपचारिन्] शल्योपचार द्वारा चिकित्सा करनेवाला। (सर्जिकल ऑपरेटर)

शल्ल–वि० [सं०] शिथिल। सुन्न। (हाथ-पैर आदि)

शव–पुं० [सं०] ऐसा शरीर जिसमें से प्राण निकल गये हों। मृत शरीर। लाश। (कार्प्स)

शवता–स्त्री० [सं०] १. 'शव' का भाव। लाश-पन। २. निर्जीवता। मुरदापन।

शव-परीक्षा–स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति के मृत शरीर या लाश की वह जाँच जो उसकी मृत्यु का कारण जाँचने के लिए होती है।

शवर–पुं० [सं०] [स्त्री० शवरी] एक प्राचीन जंगली जाति।

शवल–वि० दे० 'शबल'।

शश–पुं० [सं० शशः] खरगोश नाम जंतु।

शशक–पुं० [सं०] १. खरगोश। चन्द्रमा में का कलंक। ३. काम-शास्त्र पुरुष के चार भेदों में से एक।

शशधर–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

शश-शृंग–पुं० [सं०] खरगोश के सींग की तरह असम्भव या अनहोनी बात।

शशांक–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

शशि–पुं० [सं० शशिन्] चन्द्रमा।

शशिकला–स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा कला। २. शरभ नामक वृत्त या छन्द

शशिधर–पुं० [सं०] शिव।

शशि-मुख–वि० [सं०] [स्त्री० शशि-मुखी] चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाला।

शशि-शेखर–पुं० [सं०] महादेव। शिव

शसा*–पुं० [सं० शश] खरगोश।

शसि (ी)*–पुं० दे० 'शशि'।

शस्त्र–पुं० [सं०] १. वे साधन जिनसे के समय शत्रु पर आक्रमण तथा रक्षा की जाती है। (आर्म्स) १. शत्रु आक्रमण करने के उपकरण। हथियार (वेपन) ३. कार्य सिद्ध करने का उपाय ढंग या साधन।

शस्त्र-चिकित्सक–पुं० दे० 'शल्य-कार'

शस्त्र-चिकित्सा–स्त्री० दे० 'शल्य-कर्म'

शस्त्र-धारी–वि० [सं० शस्त्रधारिन्] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करने वाला। हथियार-बंद।

शस्त्र विद्या–स्त्री० [सं०] १. हथियार चलाने का विद्या। २. दे० 'धनुर्वेद'।

शस्त्रशाला–स्त्री० दे० 'शस्त्रागार'।

[सं०] शस्त्रों के रखने
लड़ाई के लिए गोले बारूद
जगह। शस्त्रशाला। सिलह-
ख़ाना)
[सं०] शस्त्र और अस्त्र
आक्रमण और आत्म-रक्षा
(आर्म्स ऐण्ड वेपन्स)
[सं०] सेना या राष्ट्र
आदि से सज्जित करना।
[सं०] १. अन्न। अनाज।
३. नई घास। ४. खेती-बारी
खेतों की हरियाली। जैसे—शस्य-
मि।
दे० 'शाहंशाह'।
[फा०] बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठतर।
जैसे-शहज़ोर = बलवान्।
शतरंज के खेल में कोई मोहरा
घर में रखना जहाँ से बादशाह
में पड़ता हो। किश्त। २.
बढ़ावा देने की क्रिया या भाव।
दे० 'शाहज़ादा'।
[फा०] बली। बलवान्।
[फा०] लकड़ी का बड़ा
तख़्ता। (इमारत में)
[फा०] मझोले आकार का
की फलियाँ मीठी होती हैं।
[अ०] मधु-मक्खियों द्वारा
एकत्र करके छत्तों में संचित शीरे
प्रसिद्ध मीठी वस्तु। मधु।
शहद लगाकर चाटना=निर-
लेकर बैठे रहना। (व्यंग्य)
[अ० शिहनः] १. शासक।
२. कर संग्रह करनेवाला।
दे० 'रोशन-चौकी'।
[फा०, मि० स० सह-बाल]
दूल्हे के साथ जानेवाला
।
] नगर। पुर।

शहर-पनाह—स्त्री० [फा०] शहर की चारदीवारी। प्राचीर। परकोटा।

शहराती—वि० = नागरिक।

शहरी—वि० [फा०] शहर का। शहर संबंधी। नागर।
पुं० शहर में रहनेवाला। नगर-निवासी। नागरिक।

शहवत—स्त्री० [फा०] काम-वासना।

शहवती—वि० = कामुक।

शहादत—स्त्री० [अ०] गवाही।

शहाना—वि० [फा०] [स्त्री० शहानी] १. शाही। राजसी। २. बहुत बढ़िया। उत्तम।
पुं० संगीत में एक प्रकार का राग।

शहाब—पुं० [फा०] एक प्रकार का गहरा लाल रंग जो कुसुम के फूलों से बनाया जाता है।

शहीद—पुं० [अ०] किसी शुभ प्रयत्न में अपने प्राण देनेवाला व्यक्ति।

शांकर—वि० [सं०] शंकर संबंधी। शंकर का।

शांत—वि० [सं०] [भाव० शांति] १. (मन) जिसमें क्षोभ, चिंता, दुःख, उद्वेग आदि न हों। राग आदि से रहित और स्वस्थ। २. वेग, गति, क्रिया आदि से रहित। निश्चल। ३. हो हल्ले आदि से रहित। ४. जिसके दुष्ट विकारों का अन्त हो गया हो। ५. (समाज या देश) जिसमें उपद्रव, आन्दोलन, झगड़े-बखेड़े आदि न हों। सभी विघ्न-बाधाओं से रहित। ६. धीर और सौम्य। ७. मौन। चुप। ८. मरा हुआ। मृत।
पुं० साहित्य में नौ रसों में से एक जो संसार की असारता या नश्वरता के ज्ञान, धर्म-ग्रन्थों के अनुशीलन अथवा आत्मा और परमात्मा के स्वरूप आदि के चिन्तन से उत्पन्न होता है। सत्संगति और त्यागी साधु महात्मा आदि इसके आलंबन और विनाश के दृश्य, महात्माओं के उपदेश,

तपोवन आदि इसके उद्दीपन हैं।

शांति—स्त्री० [सं०] [वि० शांत] १. मन की वह अवस्था जिसमें वह क्षोभ, चिन्ता, दुःख आदि से रहित रहता है। चित्त की स्वस्थता। २. वेग, गति, क्रिया आदि का अभाव। निश्चलता। ३. हो-हल्ले या चीख-पुकार का अभाव स्तब्धता। सन्नाटा। ४. युद्ध, मार-काट आदि का अभाव। ५. समाज या देश में उपद्रव, आन्दोलन, विद्वेश, झगड़े-बखेड़े आदि का अभाव। (पीस, उक्त सभी अर्थों के लिए) ६. बाधा, अमंगल आदि दूर करनेवाला धार्मिक उपचार या कृत्य।

शांति-भंग—पुं० [सं०] कोई ऐसा उपद्रव या अनुचित काम जिससे जन-साधारण के सुख और शान्तिपूर्वक रहने में बाधा होती हो। (ब्रीच ऑफ पीस)

शांतिवाद—पुं० [सं०] [वि० शांतिवादी] यह सिद्धान्त कि सब लोगों को यथा-साध्य शांति-पूर्वक रहना चाहिए और संसार से लड़ाई झगड़े आदि का अंत हो जाना चाहिए। (पैसिफिज्म)

शांतिवादी—पुं० [सं० शान्तिवादिन्] वह जो लड़ाई-झगड़ों से बचकर सबको शान्ति-पूर्वक रहने का उपदेश देता हो। शान्ति-वाद का अनुयायी। (पैसिफिस्ट)

शांति-संधि—स्त्री० [सं०] युद्ध समाप्त होने पर परियुद्धक राष्ट्रों में होनेवाली वह संधि जिसके द्वारा शान्ति स्थापित होती और परस्पर मित्रता का भाव आरम्भ होता है। (पीस ट्रीटी)

शांबदिक—पुं० [सं०] ऐन्द्रजालिक। जादूगर।
वि० इन्द्रजाल या जादू से सम्बन्ध रखनेवाला।

शाक—पुं० [सं०] भाजी। तरकारी।
वि० [सं०] शक जाति संबंधी।

शाक द्वीप—पुं० [सं०] [वि० शाकद्वीपी] १. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप। २. ईरान और तुर्किस्तान के बीच का वह प्रदेश जिसमें पहले शक रहते थे।

शाकाहार—पुं० [सं०] [वि० शाकाहारी] वनस्पति-जन्य पदार्थों और अन्न का भोजन। 'मांसाहार' का विरुद्धार्थक।

शाक्त—वि० [सं०] शक्ति-सम्बन्धी।
पुं० शक्ति या देवी का उपासक।

शाक्य—पुं० [सं०] नैपाल की तराई बसनेवाली एक प्राचीन क्षत्रिय जाति।

शाख—स्त्री० दे० 'शाखा'।

शाखा—स्त्री० [सं०] १. वृक्षों आदि के से इधर-उधर निकले हुए अंग। टहनी डाल। २. किसी मूल वस्तु से इसी में या इसी प्रकार के निकले हुए अं ३. किसी मूल वस्तु के वे अंग जो स्व विभाग के रूप में हो गये हों। जैसे की शाखा। ४. किसी संस्था का वह जो दूर रहकर भी उसके अधीन और उ अनुसार काम करता हो। जैसे-किसी दू या बंक की शाखा। (ब्रांच, उक्त अर्थों के लिए। ५. वेद की संहिता पाठ और क्रम-भेद। किसी विषय सिद्धान्त के सम्बन्ध में एक ही तर विचार या मत रखनेवाले लोगों का व सम्प्रदाय। (स्कूल)

शाखा-मृग—पुं० [सं०] बंदर।

शाखी—वि० [सं० शाखिन्] शाखाओंवा
पुं० वृक्ष। पेड़।

शाखोच्चार—पुं० [सं०] विवाह के स होनेवाला वंशावली का बखान।

शागिर्द—पुं० [फा०] [भाव० शागि शिष्य। चेला।

शाण—पुं० [सं०] [वि० शाणित] सान रखने का पत्थर। कुरंड। २. पत्थ ३. कसौटी।

शात—वि० [सं०] १. जिसपर शान च हो। तेज किया हुआ। २. क्षीण। सुंदर। खूबसूरत। ४. दीप्त। चमकील

[सं०] १. दक्षिण भारत
प्राचीन राज-वंश । २.
।
] १. खुशी । आनंद ।
। ३. विवाह । ब्याह ।
] रेगिस्तान के बीच की
स्ती । मरुद्वीप । (ओएसिस)
] [वि० शानदार] १.
। ठाट-बाट । २. दर्प । ठसक ।
। विशालता । ४. शक्ति ।
प्रतिष्ठा ।
।
-स्त्री० [अ०] तड़क-भड़क ।
सावट ।
] १. किसी के अनिष्ट की
हुआ शब्द या वाक्य । २.
ना ।
[सं० शाप] शाप देना ।
हरयो मोहिं मति शापै
अंत !-सूर ।
[सं०] जिसे किसी ने शाप
-ग्रस्त ।
[सं०] शबर-संबंधी ।

कार । अंधेरा । २. कष्ट ।
। बुराई । ४. दुष्ट । पाजी ।
बेलनाज ।
[फा०] [भाव०
प्रशंसा-सूचक शब्द ।
। साधुवाद ।
] [स्त्री० शाब्दी]
शब्द या शब्दों का ।
[सं०] १. शब्द-संबंधी ।
हुआ) । ३. वाक्य-
व्याकरण के नियमों से
। (ग्रैमेटिकल) जैसे-
। (ग्रैमेटिकल वेरिएशन)

४. (अनुवाद में) प्रत्येक शब्द के विचार से ठीक और ज्यों का त्यों । (लिटरल)

शाब्दी व्यंजना-स्त्री० [सं०] व्यंजना (शब्द-शक्ति) का वह प्रकार या भेद जिसमें व्यंजित होनेवाला अर्थ किसी विशेष शब्द तक ही परिमित रहता है, उससे आगे नहीं बढ़ता ।

शाम-स्त्री० [फा०] साँझ । संध्या ।
*वि०, पुं० दे० 'श्याम' ।
पुं० अरब के उत्तर का एक प्राचीन देश जो अब सीरिया कहलाता है । इसे महात्मा नूह के पुत्र शाम ने बसाया था ।

शामत-स्त्री० [अ०] १. दुर्भाग्य । **पद-शामत का मारा** = जिसका दुर्भाग्य समीप आ गया हो ।
२. विपत्ति । दुर्दशा ।
मुहा०-शामत सवार होना = दुर्दशा का समय निकट आना ।

शामियाना-पुं० [फा० शामियानः] एक प्रकार का बड़ा तम्बू या खेमा ।

शामिल-वि० [फा०] सम्मिलित ।

शामी-पुं० [शाम (देश)] मनुष्यों का वह आधुनिक वर्ग या विभाग जिसमें यहूदी, अरब, मिश्री आदि जातियाँ हैं । (सेमेटिक)
स्त्री० प्राचीन शाम देश की भाषा । (सेमेटिक)
वि० १. शाम देश-संबंधी । २. शाम देश में होनेवाला । जैसे-शामी कबाब ।

शायक-पुं० [सं०] १. बाण । तीर । शर । २. खड्ग । तलवार ।
पुं० [अ० शायक ('शौक' से)] शौकीन ।

शायद-अव्य० [फा०] कदाचित् । सम्भव है ।

शायर-पुं० [अ०] कवि ।

शायरी-स्त्री० [अ०] १. कविताएँ रचना । २. काव्य । कविता ।

शायी-वि० [सं० शायिन्] सोनेवाला । (यौ० के अन्त में, जैसे-शेषशायी, जलशायी)

शारद-वि० [सं०] शरद् काल का ।

शारदा-स्त्री० [सं०] १. सरस्वती । २.

भारत की एक प्राचीन लिपि।

शारदीय–वि० [सं०] शरद् काल का।

शारदीय नवरात्र–पुं० [सं०] आश्विन शुक्ल पक्ष में होनेवाला नवरात्र।

शारीर–वि० [सं०] शरीर-संबंधी।

शारीरक–वि० [सं०] शरीर से युक्त। शरीरधारी। शरीरवाला।
पुं० जीवात्मा।

शारीर विज्ञान(शास्त्र)–पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें जीवों की उत्पत्ति और वृद्धि आदि का विवेचन हो। २. दे० 'शरीर-शास्त्र'।

शारीरिक–वि० [सं०] शरीर और उसके अंगों से सम्बन्ध रखनेवाला। शरीर का। (फिजिकल, मैनुअल) जैसे–शारीरिक कष्ट।

शारीरित–वि० [सं०] शरीर के रूप में लाया हुआ। जिसे शरीर का रूप दिया गया हो।

शार्ग–पुं० [सं० शार्ङ्ग] १. धनुष। कमान। २. विष्णु का धनुष।

शार्गधर(पाणि)–पुं० [सं० शार्ङ्गधर] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शार्दूल–पुं० [सं०] १. बाघ। २. सिंह। ३. एक प्रकार की चिड़िया। ४. राक्षस।
वि० सर्व-श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

शार्दूलविक्रीड़ित–पुं० [सं०] पिंगल में चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १९ अक्षर (म, स, ज, स, त, त और अन्त में गुरु) होते हैं और बारहवें अक्षर के बाद यति होती है।

शाल–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वृक्ष। साखू।
पुं० [सं० शल्य] सरहथ नाम का हथियार।
स्त्री० = साल (सालने की क्रिया या भाव)।
पुं० [फा०] दुशाला।

शालग्राम–पुं० [सं०] विष्णु की गोल पत्थर की एक प्रकार की मूर्त्ति।

शाला–स्त्री० [सं०] १. घर। गृह। २. जगह। स्थान। जैसे–पाठशाला, धर्मशाला।

शालि–पुं० [सं०] जड़हन धान।

शालि धान्य–पुं० [सं०] बासमती चा

शालिवाहन–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध राजा जिसने 'शक' संवत् चलाया था।

शालिहोत्र–पुं० [सं०] १. घोड़ा। २. चिकित्सा की विद्या। (वेटेरिनरी सा

शालिहोत्री–पुं० [सं० शालिहोत्र (प्रत्य०)] पशुओं और पक्षि चिकित्सा करनेवाला। (वेटेरिनरी डॉ

शालिहोत्रीय–वि० [सं०] पशु चिकित्सा से संबंध रखनेवाला। (वेटे

शाली–प्रत्य० [सं० शालिन्] एक जो शब्दों के अंत में लगकर स्वामि संबंध आदि का सूचक होता है और या 'वाला' के समान अर्थ देता है। ऐश्वर्यशाली, भाग्यशाली।

शालीन–वि० [सं०] [भाव० शाली १. विनीत। नम्र। २. लज्जाशील अच्छे आचार-विचारवाला। ४. धन ५. दक्ष। चतुर।

शाल्मलि–पुं० [सं०] १. सेमल का २. पुराणानुसार एक द्वीप।

शावक–पुं० [सं०] पशु या पक्षी का

शाश्वत–वि० [सं०] जो सदा बना नित्य। (एटेर्नल)

शासक–पुं० [सं०] [स्त्री० शासि १. वह जो शासन करता हो। २. हा

शासन–पुं० [सं०] १. आज्ञा। आ हुक्म। २. अधिकार या वश में उचित सीमा या मर्यादा के अन्दर रख नियन्त्रण। जैसे–सभा, समिति या इन्द्रि शासन। ३. राज्य के कार्यों का और संचालन। हुकूमत। (गवर्नमेन्ट राज्य का संचालन करनेवाले मुख्य कारियों का समूह या मंडल। (ऑथारि ५. राजत्व का काल या समय। ६. आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को अधिकार दिया जाय। पट्टा। ७. दंड।

[सं०] १. शासन-
का। २. शासन-विभाग
अधिकारी।
[सं०] [स्त्री० शासिता] १.
का शासन या राज्य हो। २.
के शासन या नियंत्रण में
(गवर्नेंड), उक्त दोनों अर्थों
जिसे दंड दिया जाय।
दे० 'शासक'।
[सं०] १. शासन २.
३. दंड या हरजाने आदि
जानेवाला धन या कार्य।

[सं०] १. जन-साधारण के
विधान बतलानेवाले धार्मिक
चारो वेद, व्याकरण, ज्योतिष,
, पुराण, आयुर्वेद आदि।
का वह सारा ज्ञान जो क्रम
गया हो। विज्ञान।
[सं०] शास्त्र बनानेवाला।
[सं०] वह जिसे शास्त्रों का
हो। शास्त्रवेत्ता। (एकेमेडी-

[सं० शास्त्रिन्] १. शास्त्रों
धर्मशास्त्र का ज्ञाता।
[सं०] किसी विषय को
देना।
[सं०] १. शास्त्र-संबंधी।
शास्त्रीय ज्ञान से सन्बन्ध
आश्रित रहनेवाला।
-शास्त्री विवेचन, शास्त्रीय
शास्त्र के सिद्धान्तों के
-शास्त्रीय संगीत = वह
-शास्त्र के सिद्धान्तों के
रागिनियों के रूप में हो।
[सं०] शास्त्रों में कहा या

[फा०] [भाव० शाहंशाही]
बहुत बड़ा बादशाह। महाराजाधिराज।

शाहंशाही-वि० [हिं० शाहंशाह] शाहंशाह-सम्बन्धी। शाहंशाह का।
स्त्री० १. शाहंशाह का कार्य, पद या भाव। २. अपने बड़प्पन, उदारता आदि की सूचक कोई बात या कार्य। (बोल-चाल)

शाह-पुं० [फा०] १. महाराज। बादशाह। २. मुसलमान फकीर।
वि० बड़ा या भारी। महान्।

शाह-खर्च-वि० [फा०] [भाव० शाह-खर्ची] बहुत खर्च करनेवाला।

शाहजादा-पुं० [फा०] [स्त्री० शाहजादी] बादशाह का लड़का। महाराज-कुमार।

शाहाना-वि० [फा०] राजसी।
पुं० वह कपड़े जो विवाह के समय दूल्हे को पहनाया जाता है। जामा।

शाही-वि० [फा०] बादशाहों का।
स्त्री० कुंभ आदि पर्वों पर साधु-महात्माओं की निकलनेवाली सवारी।

शिंगरफ-पुं० दे० 'ईंगुर'।

शिंजन-पुं० [सं०] [वि० शिंजित] १. मधुर ध्वनि। २. आभूषणों की झंकार।
वि० मधुर ध्वनि करनेवाला।

शिंजिनी-स्त्री० [सं०] १. नूपुर। पैजनी। २. अँगूठी। ३. धनुष की डोरी।

शिंबी-स्त्री० [सं०] १. छीमी। फली। २. सेम नाम की फली। (तरकारी)

शिंशुमार-पुं० [सं०] सूँस। (जल-जन्तु)

शिंशिपा-पुं० [सं०] शीशम का वृक्ष।

शिकंजबी-स्त्री० [फा० शिकंजबीन] किसी फल के रस को पानी में घोलकर अथवा उबालकर तैयार किया हुआ पेय पदार्थ जिस का उपयोग औषध के रूप में होता है।

शिकंजा-पुं० [फा०] १. दबाने, कसने आदि का यंत्र। २. वह यंत्र जिसमें जिल्द-बंद किताबों को कसकर जुज सिलाई के लिए घाट काटते अथवा कगर निकालते हैं। ३. कठोर दण्ड देने के लिए एक प्राचीन यंत्र।

मुहा०–किसी को शिकंजे में कसना = बहुत अधिक शारीरिक कष्ट देना। (धमकी)

शिकन–स्त्री० [फा०] सिलवट।

शिकम–पुं० [फा०] पेट।

शिकमी–वि० [फा०] पेट-सम्बन्धी। २. किसी के अन्तर्गत रहनेवाला।

मुहा०–(खेत आदि) शिकमी देना = (जमींदार या मालिक से) किराये, लगान आदि पर ली हुई चीज, अपनी ओर से किसी दूसरे को किराये, लगान आदि पर देना।

शिकमी काश्तकार–पुं० [फा०] वह जो किसी दूसरे काश्तकार से जमीन लेकर जोतता हो। काश्तकार के अधीन रहनेवाला आसामी। (सब टेनेन्ट)

शिकरम–स्त्री० [फा०] एक प्रकार की गाड़ी।

शिकरम-पट्टा–पुं० [फा० + हिं०] वह पट्टा जो कोई पट्टेदार, अपनी ओर से पट्टे पर ली हुई जमीन के सम्बन्ध में किसी को लिखकर देता है। (सब-लीज)

शिकरा–पुं० [फा०] एक प्रकार का बाज पक्षी।

शिकस्त–स्त्री० [फा०] युद्ध, प्रतियोगिता आदि में होनेवाली हार। पराजय।

शिकायत–स्त्री० [अ०] [वि० शिकायती] १. निन्दा। २. चुगली। ३. उलाहना। ४. रोग। बीमारी।

शिकार–पुं० [फा०] १. मांस खाने या मनोविनोद के लिए जंगली पशुओं को मारने का कार्य। आखेट। मृगया।

मुहा०–किसी का शिकार होना = (क) किसी के जाल में फँसना। (ख) मर जाना। (ग) किसी के वशवर्त्ती या लक्ष्य हो कर बुरी अवस्था में पहुँचना।

२. वह जानवर जो इस प्रकार मारा जाय। ३. गोश्त। मांस। ४. आहार। खाद्य। ५. वह जिसके फँसने या हाथ में आने से बहुत आय या लाभ हो। आसामी।

शिकारगाह–स्त्री० [फा०] शिकार खे की जगह।

शिकारी–पुं० [फा०] शिकार करनेवाल वि० शिकार से संबंध रखनेवाला या शि में काम आनेवाला।

शिक्षक–पुं० [सं०] [स्त्री० शिक्षि १. शिक्षा देनेवाला। विद्यालय में वि र्थियों को पढ़ानेवाला। गुरु। उस्ताद

शिक्षण–पुं० [सं०] तालीम। शिक्षा

शिक्षण विज्ञान–पुं० [सं०] वह जिसमें इस बात का विवेचन होता है विद्यार्थियों को शिक्षा किस प्रकार दी

शिक्षण-विद्यालय(महाविद्यालय) दे० 'प्रतिक्षण विद्यालय'। (महाविद्या

शिक्षणालय–पुं० [सं०] वह स्थान किसी प्रकार की शिक्षा दी जाती विद्यालय।

शिक्षिका–स्त्री० [सं०] 'शिक्षक' का स्त्री सिखाने-पढ़ाने का काम करनेवाली उस्तादनी।

शिक्षा–स्त्री० [सं०] १. विद्या पढ़ सिखाने की क्रिया। तालीम। (एजुके २. उपदेश। नसीहत। ३. एक जिसमें वेदों के वर्णों, स्वरों, मात्राओं का विवेचन है। (आरथोग्राफी) ४. पाठ। ५. परामर्श। सलाह।

शिक्षा गुरु–पुं० [सं०] वह जिससे पढ़ी या किसी कार्य की शिक्षा ली जा

शिक्षार्थी–पुं० [सं०] [स्त्री० शिक्षार्थि वह जो किसी विद्या, कला या कार्य शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसमें लगा

शिक्षालय–पुं० दे० 'विद्यालय' 'शिक्षणालय'।

शिक्षा-विभाग–पुं० [सं०] [शिक्ष विभाग] वह सरकारी विभाग जो दे शिक्षा का प्रबन्ध करता हो। (एजुके डिपार्टमैंट)

शिक्षा-शास्त्र–पुं० [सं०] वह शास्त्र

शित–वि० [सं०] (शस्त्र) जिसमें धार हो। धारदार। (जैसे-छुरी या कटारी)

शिति–वि० [सं०] १. श्वेत। सफेद। २. कृष्ण। काला।

शितिकंठ–पुं० [सं०] १. महादेव। शिव। २. मोर। (पक्षी)

शिथिल–वि० [सं०] [भाव० शिथिलता] १. जो अच्छी तरह बँधा, कसा या जकड़ा हुआ न हो। ढीला। २. जो थकावट आदि के कारण धीमा पड़ गया हो। ३. सुस्त। धीमा। ४. (आज्ञा या विधान) जिसका ठीक तरह से या पूरा पालन न हो। ५. (वाक्य) जिसकी शब्द-योजना ठीक न हो।

शिथिलता–स्त्री० [सं०] १. 'शिथिल' का भाव। २. वह वाक्य जिसमें शब्दों की ठीक और संगत योजना न हो।

शिथिलाई*–स्त्री० = शिथिलता।

शिथिलाना*–अ०, स० [सं० शिथिल] शिथिल होना या करना।

शिथिलित–वि० = शिथिल।

शिनाख्त–स्त्री० [फा०] पहचान।

शिफर*–पुं० [फा० सिपर] तलवार का वार रोकने की ढाल।

शिया–पुं० दे० 'शीया'।

शिर–पुं० दे० 'सिर'।

शिरकत–स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु, कार्य, अधिकार आदि में शरीक या सम्मिलित होने का भाव। २. हिस्सेदारी। साझा। ३. किसी काम में सम्मिलित होना।

शिर-मौर–वि० [सं० शिरस् + हिं० मौर] सब में श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

शिरस्त्राण–पुं० [सं०] युद्ध के समय सिर पर पहना जानेवाला लोहे का टोप। कूँड़। खोद।

शिरहन*–पुं० दे० 'तकिया'।

शिरा–स्त्री० [सं०] १. शरीर में रक्त की छोटी नस, विशेषतः वह नस जिसके द्वारा

शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों से रक्त चलकर हृदय तक पहुँचता है। 'धमनी' से भिन्न। (वीन) २. इस आकार या प्रकार की कोई नाली।

शिरोधार्य-वि० [सं०] आदरपूर्वक ग्रहण करने के योग्य।

शिरोभूषण–पुं० [सं०] १. सिर पर पहनने का गहना। २. मुकुट।
वि० सर्व-श्रेष्ठ। सबसे अच्छा।

शिरोमणि–पुं० [सं०] सिर पर पहनने का रत्न।
वि० सबसे अच्छा। सर्व-श्रेष्ठ।

शिरोरुह–पुं० [सं०] सिर के बाल।

शिल–पुं० दे० 'उंछ'।

शिला–स्त्री० [सं०] १. पत्थर की पटिया या बड़ा चौड़ा टुकड़ा। २. उंछ-वृत्ति।

शिलाजीत–स्त्री० [सं० शिलाजतु] पहाड़ों की चट्टानों से निकलनेवाली एक प्रसिद्ध पौष्टिक काली औषधि। मोमियाई।

शिलान्यास–पुं० [सं०] भवन आदि बनाने से पहले उसकी नींव का पत्थर रक्खा जाना।

शिलारोपण–पुं० दे० 'शिलान्यास'।

शिला-लेख–पुं० [सं०] पत्थर पर खोदा हुआ (विशेषतः प्राचीन) कोई प्राचीन लेख। (एपिग्राफ)

शिलावट–पुं० [सं०] वह जो पत्थर आदि गढ़ने का काम करता हो। संग-तराश।

शिला-वृष्टि–स्त्री० [सं०] ओले गिरना।

शिलीमुख–पुं० [सं०] भौंरा।

शिल्प–पुं० [सं०] हाथ से चीजें बनाकर तैयार करने की कला। दस्तकारी। कारीगरी।

शिल्पकार–पुं० [सं०] शिल्पी। कारीगर।

शिल्प-विद्या–स्त्री० दे० 'शिल्प'।

शिल्प-शास्त्र–पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शिल्पों या हाथ की कारीगरियों का विवेचन होता है। (टेक्नॉलॉजी)

शिल्पिक–वि० [सं०] शिल्प-कला या उसकी शिक्षा से सम्बन्ध रखनेवाला (टेकनिकल) जैसे–शिल्पिक प्रशिक्षण

शिल्पी–पुं० [सं० शिल्पिन्] १. शि
के काम करनेवाला। कारीगर। (आर्टि
२. किसी शिल्प का अच्छा शा
(टेकनीशियन)
वि० [सं० शिल्प] शिल्प-सम्बन्धी।
का। जैसे–शिल्पी प्रशिक्षण।

शिव–पुं० [सं०] १. मंगल। कल्य
२. मोक्ष। ३. रुद्र। ४. परमेश्वर
हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो स
संहार करनेवाले माने जाते हैं।

शिवगामी–पुं० [सं० शिवगामि
कल्याण या मंगल की कामना करने
साधक।

शिवनामी–स्त्री० [सं० शिव+नाम
(प्रत्य०)] वह चादर या कपड़ा जि
जगह-जगह 'शिव या 'जय शिव'
होता है।

शिव-निर्माल्य–पुं० [सं०] १. शि
चढ़ा हुआ पदार्थ जो ग्रहण करने के
नहीं होता। २. परम अग्राह्य वस्तु।

शिवपुरी–स्त्री० [सं०] काशी नगरी

शिव-रात्रि–स्त्री० [सं०] फाल्गुन
चतुर्दशी, जो शिव के विवाह की तिथि
फलतः एक पर्व के रूप में मानी जाती

शिव-रानी–स्त्री० = पार्वती।

शिवलिंग–पुं० [सं०] शिव या म
की पिंडी जिसकी पूजा होती है।

शिव-लोक–पुं० [सं०] कैलास।

शिवा–स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. पार्व
३. गीदड़ जाति की मादा। शृगाली
मुक्ति। मोक्ष।

शिवालय–पुं० [सं०] शिव का मन्दि

शिवाला–पुं० = शिवालय।

शिविका–स्त्री० [सं०] पालकी। डोल

शिविर–पुं० [सं०] १. सेना के ठह
का स्थान। पड़ाव। २. वह स्थान

किसी विशेष कार्य या
हैं। जैसे-शिक्षा-शिविर।
। खेमा। निवेश। ४.
झोटे।
[सं०] १. माघ और फाल्गुन
। २. जाड़ा। शीत-काल।
[सं०] [भाव० शिशुता,
बच्चा। (बेबी)
[सं०] १. बाल्यावस्था।
२. बालकों का-सा आचरण।

स्त्री० = शिशुता।
पुं० [सं०] [वि० शैशुनाग]
प्राचीन राजा।
= शिशुता।
पुं० [सं०] चेदि देश का एक
जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा

[सं०] पुरुष का लिंग या

= शिष्य।
'शिक्षा'। २. दे० 'शिखा'।
[सं०] [भाव० शिष्टता]
व्यवहार और आचरण-
आदमी। सभ्य। (सिविल)
। उत्तम।
[सं०] १. सभ्यता। भल-
. उत्तमता। श्रेष्ठता।
पुं० [सं०] कुछ शिष्ट लोगों
जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए
है। (डेपुटेशन) जैसे-
शिष्ट-मंडल।
पुं० [सं०] १. सभ्य या शिष्ट
आचरण। उत्तम व्यवहार।
का आदर सम्मान। आव-
दिखावटी और ऊपरी सभ्य

[सं०] [स्त्री० शिष्या, भाव० शिष्यता] वह जिसे किसी ने कुछ पढ़ाया या सिखाया हो। चेला। शागिर्द।

शिस्त–स्त्री० [फा०] निशाना। लक्ष्य।

शीघ्र–क्रि० वि० [सं०] [भाव० शीघ्रता] बिना विलम्ब किये या देर लगाये। जल्द।

शीघ्रगामी–वि० [सं० शीघ्रगामिन्] जल्दी या तेज चलनेवाला।

शीघ्रता–पुं० [सं०] जल्दी। फुरती।

शीत–वि० [सं०] ठंडा। शीतल।
पुं० १. तापमान के गिरने से शरीर में होनेवाली वह अनुभूति जिसमें कपड़े आदि ओढ़ने या धूप, आग आदि तापने की इच्छा होती है। ताप का विरोधी भाव। जाड़ा। सरदी। (कोल्ड) २.जाड़े के दिन।

शीतक–वि० [सं०] शीत उत्पन्न करने या ठंडक बनानेवाला।
पुं० बिजली की सहायता से कार्य करनेवाला एक उपकरण जिससे गरमी के समय कमरे, कोठरियाँ आदि ठण्डी रखी जाती हैं। (कूलर)

शीत-कटिबंध–पुं० [सं०] पृथ्वी के वे दो विभाग जो भूमध्य-रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद पड़ते हैं और जिनमें बहुत सरदी होती है। (टॉरिट जोन)

शीतकर–पुं० [सं०] चन्द्रमा।

शीत-काल–पुं० [सं०] जाड़े के दिन। सरदी का मौसिम।

शीत-ज्वर–पुं० [सं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। (मलेरिया)

शीत-तरंग–स्त्री० [सं०] शीत काल में किसी स्थान पर बहुत अधिक सरदी या बरफ पड़ने पर उसके प्रभाव से किसी दिशा में बढ़नेवाली शीत की वह तरंग जिससे दो-चार दिनों के लिए सरदी बहुत बढ़ जाती है। (कोल्ड वेव)

शीतल–वि० [सं०] [भाव० शीतलता] १. ठंडा। सर्द। 'गरम' का विरुद्धार्थक। २.

क्षोभ या उद्वेग-रहित। शान्त। ३. परम सन्तुष्ट और प्रसन्न (मन)।

शीतलता–स्त्री० [सं०] 'शीतल' का भाव। ठंडापन। ठंडक।

शीतला–स्त्री० [सं] १. चेचक रोग। २. इस रोग की अधिष्ठात्री देवी।

शीया–पुं० [सं०] एक मुसलमानी सम्प्रदाय जो हजरत अली का अनुयायी है।

शीरिष*–पुं० = शीर्ष।

शीरा–पुं० [फा०] चीनी या गुड़ पकाकर बनाया हुआ गाढ़ा रस। चाशनी।

शीराजी–वि० [फा० शीराज (नगर)] शीराज नगर का।

पुं० १. एक प्रकार का कबूतर। २. एक प्रकार की शराब।

शीरीनी–स्त्री० [फा०] १. मिठास। मीठापन। २. मिठाई। मिष्ठान्न।

शीर्ण–वि० [सं०] १. टूटा-फूटा। २. फटा-पुराना। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४. दुबला। पतला।

शीर्ष–पुं० [सं०] १. किसी चीज का सबसे ऊँचा या ऊपरी भाग। सिरा। चोटी। २. भूमिति में वह बिन्दु, जिसपर दो ओर से दो तिरछी रेखाएँ आकर मिलती हों। (वर्टेक्स, उक्त दोनों अर्थों के लिए) ३. सिर। कपाल। ४. माथा। मस्तक। ५. सामने या आगे का भाग। ६. खाते आदि की मद या विभाग का नाम। (हेड)

ीर्षक–पुं० [सं०] १. दे० 'शीर्ष'। २. वह शब्द या पद जो विषय का परिचय कराने के लिए लेख के ऊपर उसके नाम के रूप में रहता है। (हैडिंग, कैप्शन)

ीर्ष-नाम–पुं० [सं०] लेख्य, विधान आदि का वह पूरा नाम जो उसके आरंभ में रहता है। सिरनामा। (टाइटिल, शार्ट टाइटिल)

ीर्ष-विंदु–पुं० [सं०] सिर के ऊपर या ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।

शील–पुं० [सं०] [भाव० शीलता] १. स्वभाव की प्रवृत्ति या रुख। मिजाज। चाल-ढाल। (डिस्पोजिशन) २. उत्तम स्वभाव और आचरण। सद्वृत्ति। ३. संकोच। मुरौवत।

वि० [स्त्री० शीला] प्रवृत्त। तत्पर (यौ० के अन्त में जैसे–प्रयत्नशील)

शीलता–स्त्री० [सं०] 'शील' का भाव जैसे–दान-शीलता। सहनशीलता।

शीलवान्–वि० = सुशील।

शीश*–पुं० दे० 'शीर्ष'।

शीशम–पुं० [सं० शिंशिपा से फा०] एक ब पेड़ जिसकी लकड़ी इमारत के और सजाव सामान बनाने के काम में आती है।

शीश-महल–पुं० [फा० शीश + अ० महल वह मकान या कमरा जिसकी दीवारों बहुत-से शीशे लगे या जड़े हों।

शीशा–पुं० [फा० शीशः] १. काँच नामक पारदर्शी मिश्र धातु। विशेष दे० 'काँच' २. इस धातु के एक पार्श्व पर रसायनि प्रक्रिया से लेप करके बनाया हुआ वह रू जिसमें दूसरे पार्श्व पर सामने की वस्तु प्रतिबिम्ब दिखाई देता हो। दर्पण। आइना ३. झाड़, फानूस आदि सजावट के बने हुए सामान।

शीशी–स्त्री० [हिं० शीशा] शीशे का व लम्बोतरा छोटा पात्र जिसमें तरल, द आदि रखते हैं। छोटी बोतल।

मुहा०–**शीशी-सुँघाना**=बेहोशी की दवा सुँघाकर किसी को बेहोश करना (अब- चिकित्सा आदि के समय)।

शुंग–पुं० [सं०] प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश जिसने मौर्यों के बाद मगध पर राज्य किया था।

शुंड–पुं० [सं०] हाथी की सूँड।

शुंडा–स्त्री० [सं०] १. सूँड। २. एक तरह की शराब।

शुंडिक–पुं० [सं०] वह जो शराब बनाता

शुतुर–पुं० [सं० उष्ट्र से व० वि० द्वारा फा०] ऊँट।

शुतुर-नाल–स्त्री० [अ० + फा०] ऊँट पर रखकर चलाई जानेवाली तोप।

शुतुर-मुर्ग–पुं० [फा०] एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह लम्बी होती है।

शुदनी–स्त्री० [फा०] नियति। होनी। भावी। होनहार।

शुद्ध–वि० [सं०] [भाव० शुद्धता] १. पवित्र। २. स्वच्छ। साफ। ३. जिसमें भूलें, त्रुटियाँ आदि न हों। ठीक। सही। ४. मिलावट से रहित। खालिस। ५. जिसमें से लागत, व्यय आदि निकाले जा चुके हों। जैसे–शुद्ध लाभ। (नेट प्रॉफिट) ६. निर्दोष। बे-ऐब।

शुद्धकल्याण–पुं० [सं०] ओड़व सम्पूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है।

शुद्धता–स्त्री० [सं०] १. शुद्ध या बे-मेल होने का भाव। (प्योरिटी) २. शुद्ध या ठीक होने का भाव। (करेक्टेस) ३. दे० 'शुद्धि'।

शुद्ध सारंग–पुं० [सं०] ओड़व षाड़व जाति का एक राग जो मध्याह्न में गाया जाता है।

शुद्धा–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह लक्षण जिसका आधार कार्य-कारण, संबंध या अंगांगी भाववाला सम्बन्ध (सादृश्य से भिन्न) होता है।

शुद्धपह्नुति–स्त्री० [सं०] साहित्य में अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय को झूठा या व्यर्थ ठहरा कर उपमान को ही ठीक बतलानेवाला वर्णन होता है।

शुद्धि–स्त्री० [सं०] १. 'शुद्ध' होने का कार्य या भाव। २. सफाई। स्वच्छता। ३. वह धार्मिक कृत्य या संस्कार जो किसी धर्म-च्युत, विधर्मी या अशुचि व्यक्ति को शुद्धकर अपने समाज में मिलाने के लिये होता है।

शुद्धि-पत्र–पुं० [सं०] अन्त का वह पत्र जिसमें यह बतलाया जाता है कि इस में कहाँ क्या क्या अशुद्धियाँ हैं और उनका शुद्ध रूप क्या क्या है। (एरार्टा)

शुद्धिकरण–पुं० [सं० शुद्ध + करण] शुद्ध करने की क्रिया या भाव। शुद्धि।

शुद्धोदन–पुं० [सं०] गौतम बुद्ध के पिता जो शाक्य वंश के एक राजा थे।

शुनासीर–पुं० [सं०] इन्द्र।

शुफा–पुं० [अ० शुफ़अऽ] पड़ोसी। पार्श्ववर्ती।

यौ०–हक्क शुफा=किसी मकान या जमीन को खरीदने का वह अधिकार जो उसके पड़ोस में रहने वालों को, औरों से पहले प्राप्त होता है।

शुबहा–पुं० [अ०] १. सन्देह। शक। २. धोखा। भ्रम।

शुभंकर–वि० [सं०] [स्त्री० शुंभकरी] मंगल-कारक।

शुभंगी–वि० [सं० शुभ + अंग] शुभ या सुन्दर अंगोंवाला।

पुं० 'शोकहर' नामक छंद का दूसरा नाम।

शुभ–वि० [सं०] १. अच्छा। भला। २. कल्याणकारी। मंगलप्रद।

पुं० कल्याण। भलाई।

शुभचिंतक–पुं० [सं०] किसी का शुभ या कल्याण चाहनेवाला। किसी की भलाई की बातें सोचनेवाला। हितैषी। शुभेच्छू। (वेल विशर)

शुभ-चिंतन–पुं० [सं०] [वि० शुभ-चिंतक] किसी की भलाई या हित की बातें सोचना।

शुभ दंडक–पुं० [सं०] विजया नामक छन्द का वह भेद या प्रकार जिसमें उसके प्रत्येक चरण का अन्त नगण से होता है।

शुभ-दर्शन–वि० [सं०] १. जिसके दर्शन करने से कुछ भलाई हो। २. सुन्दर। खूबसूरत।

शुभमस्तु–अव्य० [सं०] शुभ हो। शुभ
फल देनेवाला। (शुभ कामना)

शुभा–स्त्री० [सं०] १. शोभा। २. कान्ति
चमक। ३. देव-सभा।

पुं० दे० 'शुभदा'।

शुभकांक्षा–स्त्री० [सं०] [वि० शुभ
कांक्षी] किसी व्यक्ति या कार्य के सम्बन्ध
की जानेवाली शुभ या अच्छी आकां
या कामना।

शुभाकांक्षी–वि० [सं०] [स्त्री० शु
कांक्षिणी] दे० 'शुभचिंतक'।

शुभाशय–पुं० [सं०] [स्त्री० शुभाश
वह जिसके विचार या आशय अच्छे हों

शुभेच्छू–पुं० = शुभ-चिंतक।

शुभ्र–वि० [सं०] [भाव० शुभ्रता] स
श्वेत। उजला।

शुमार–पुं० [फा०] १. गिनती। गण
२. हिसाब। लेखा।

शुरू–पुं० [अ० शुरूअ] आरंभ।

शुल्क–पुं० [सं०] वह देन जो किसी नि
विधि या परिपाटी के अनुसार आव
रूप से दिया या लिया जाय। (ड्यू
२. आयात-निर्यात, विक्रय आदि की व
पर राज्य की ओर से लगनेवाला एक
प्रकार का कर। (ड्यूटी) ३. कोई
करने के बदले में लिया जानेवाला
(चार्ज, फी) ४. किराया। भाड़ा।
विवाह में कन्या को दिया जानेवाला

शुल्कार्ह–वि० [सं०] जिस पर शुल्क
सकता हो। शुल्क लगाये जाने के यो
'(ड्यूटिएबुल)

शुश्रूषा–स्त्री० [सं०] [वि० शुश्रूष्य]
सेवा। टहल। २. रोगी की परिचर्या

शुष्क–वि० [सं०] [भाव० शुष्क
१. जिसमें गीलापन या तरी न हो। 'आ
का विरुद्धार्थक। सूखा। २. जिसमें से
भाविक आर्द्रता या नमी निकल गई हो।
जिसमें किसी तरल पदार्थ का उपयोग

। जैसे-शुष्कप्रतिसारण । ४. रहते या रह सकनेवाली कोई । जैसे-शुष्क वेतन = ऐसा प्रालिक से केवल धन मिले, आदि न मिले । ५. जिसमें लता आदि गुणों का अभाव शुष्क हृदय । ६. जिसमें मनो-रंजकता या रस न हो । नीरस । विषय । (ड्राई, उक्त सभी र्थों में)

स्त्री० [सं०] शुष्क होने की भाव । सूखापन ।

वि० [सं०] जिसके हृदय उदारता आदि उत्तम और कोमल । (अ-भावुक)

[सं०] १. अन्न की बाल या । नौ । ३. कागज नत्थी । आलपीन । (पिन)

स्त्री० [सं०] गद्दी आदि लगी या आधार जिसमें आल-रखी जाती हैं । (पिन कुशन)

[सं०] [स्त्री० शूकरी] जन्तु ।

पुं० [सं०] आजकल एटा सोरों नामक स्थान जहाँ वाराह मूर्ति और मन्दिर है ।

[सं०] [स्त्री० शुद्रा, शुद्री,] १.हिन्दुओं के चार वर्णों में और अंतिम । (इस वर्ण का तीनों वर्णों की सेवा करना कहा २. इस वर्ण का मनुष्य ।

[सं०] चूल्हा, चक्की, आदि या उनके रहने के स्थान से नित्य अनजान में अनेक होती है ।

[सं०] [भाव० शून्यता] १. वह अन्दर कुछ भी न हो । खाली) २. आकाश । ३. बिंदी । बिंदु । (सिफर, जीरो) ४. न होना । अभाव । ५. हठ-योग के अनुसार शरीर के अन्दर के आठ चक्रों या कमलों में से सातवाँ जिसे 'सहस्रार' भी कहते हैं । विशेष दे० 'सहस्रार' । ६. स्वर्ग । ७. ईश्वर । वि० १. जिसके अन्दर कुछ न हो । खाली । २. विहीन । रहित । जैसे-दयाशून्य, हृदय-शून्य । ३. जिसमें वैसी कोई बात न हो जैसी साधारणतः होनी चाहिए । (ब्लैंक) जैसे-शून्य-दृष्टि ।

शून्यपाल-पुं० [सं०] १. वह जो किसी की जगह पर अस्थायी रूप से काम करे । २. प्राचीन भारत में, वह जो राजा के न रहने या उसके अयोग्य, असमर्थ, अल्प-वयस्क आदि होने पर राज्य के सब कामों की देख-रेख करता था (रीजेंट)

शूर-पुं० [सं०] [भाव० शूरता] १. वीर । बहादुर । २. योद्धा । सूरमा ।

शूरता-स्त्री० [सं०] वीरता । बहादुरी ।

शूरताई*-स्त्री० = शूरता ।

शूरवीर-पुं० [सं०] अच्छा वीर और योद्धा । सूरमा ।

शूरसेन-पुं० [सं०] मथुरा प्रदेश का पुराना नाम ।

शूरा*-पुं० [सं० शूर] बहादुर । वीर । पुं० [सं० सूर्य्य] सूर्य्य ।

शूर्पणखा-स्त्री० [सं०] रावण की बहन एक प्रसिद्ध राक्षसी जिसके नाक-कान लक्ष्मण ने काटे थे ।

शूर्पनखा-स्त्री० = सूर्पणखा ।

शूल-पुं० [सं०] १. बरछे की तरह का एक प्राचीन अस्त्र । विशेष दे० 'त्रिशूल' । २. बड़ा लंबा और नुकीला काँटा । ३. वायु के प्रकोप से पेट में होनेवाली एक प्रकार की प्रबल पीड़ा । ४. पीड़ा । दर्द ।

शूलना*-अ० [हिं० शूल] १. शूल या काँटे की तरह गड़ना । २. दुःख देना ।

शूलपाणि-पुं० [सं०] महादेव ।

शूल-स्तूप-पुं० [सं०] वह विशेष प्रकार का स्तूप जो शूल के आकार का होता है।

शूली-पुं० [सं० शूलिन्] शिव। महादेव। स्त्री० दे० 'सूली'।

शृंखल-पुं० [सं०] [भाव० शृंखलता] १. कोई चीज बाँधने का लोहे का बड़ा सिक्कड़। २. हथकड़ी और बेड़ी।

वि० जो शृंखला के रूप में, क्रम से या नियम, नियंत्रण आदि के अधीन हो। व्यवस्थित और ठीक।

शृंखलता-स्त्री० [सं०] क्रम के अनुसार, नियमित, नियंत्रित, या व्यवस्थित होने की दशा या भाव। (इसका विरोधी भाव 'उच्छृङ्खलता' है।)

शृंखला-स्त्री० [सं०] १. एक दूसरी में पिरोई हुई बहुत सी कड़ियों का समूह। २. क्रम से आने या होनेवाली बहुत सी बातें, चीजें, घटनाएँ आदि। (चेन; उक्त दोनों अर्थों के लिए) जंजीर। साँकल। सिकड़ी। ३. एक ही प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदि का, एक के बाद एक करके चलनेवाला क्रम। माला। (सीरीज) जैसे—कार्य-शृंखला। ४. एक ही दिशा, विभाग, रूप आदि में कुछ दूर तक चलनेवाला क्रम। माला। श्रेणी। कतार। (रेज) ५. क्रम। सिलसिला। ६. एक अलंकार जिसमें पहले कहे हुए पदार्थों का क्रम से वर्णन किया जाता है। (साहित्य)

शृंग-पुं० [सं०] १. पर्वत का शिखर। चोटी। २. गौ, बकरी आदि के सिर के सींग। ३. कँगूरा।

शृंगज-पुं० [सं०] शर। वाण। तीर।

शृंगार-पुं० [सं०] [वि० शृंगारित] १. सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २. वह जिससे किसी चीज की शोभा बढ़े। ३. स्त्रियों का गहने-कपड़ों से अपने आपको सजाना। साहित्य में इसके १६ अंग कहे गये हैं; यथा-उबटन लगाना, मंजन करना, मिस्सी लगाना, नहाना, अच्छे कपड़े पहनना, बाल सँवारना काजल लगाना, माँग में सेंदुर डालना, पैर में महावर लगाना, बिन्दी लगाना, ढोढ़ी पर तिल बनाना, हाथ में मेंहदी लगाना, शरीर में गन्ध-द्र लगाना, गहने पहनना, फूलों की मा पहनना और पान खाना। ४. साहित्य नौ रसों में से सब से अधिक प्रसिद्ध औ प्रधान रसों में से एक जो सब में मुख माना जाता है। इसमें (क) नाय नायिका के मिलन या संयोग से उत्प सुख और (ख) उनके वियोग के कार होनेवाले कष्टों का वर्णन होता है इसी लिए इन्हें क्रमात् संयोग-शृंगार अ वियोग-शृंगार कहते हैं। नायक अ नायिका इसके आलंबन तथा उनकी वे भूषा, चेष्टाएँ, चाँदनी रात, वर्षा-ऋतु आदि इसके उद्दीपन हैं।

शृंगारना*-स० [सं० शृंगार] सजाना

शृंगार हाट-स्त्री० [सं० शृंगार+हिं हाट] वेश्याओं के रहने का बाजार। चकला

शृंगारिक-वि० [सं०] शृंगार-संबंधी

शृंगारिणी-स्त्री० [सं०] स्रग्विणी नाम वर्ण-वृत्त का दूसरा नाम।

शृंगारिया-पुं० [सं० शृंगार] वह देव-मूर्त्तियों आदि का शृंगार करता हो।

शृंगी-पुं० [सं०] १. हाथी। २. वृ पेड़। ३. पर्वत। पहाड़। ४. सींगवा पशु। ५. सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। ६. महादेव। शिव। ७. एक प्राचीन ऋषि। (कहते हैं कि इन्हीं के श्राप से परीक्षित को तक्षक ने काटा था।)

शृग-पुं० = शृगाल।

शृगाल-पुं० [सं०] गीदड़।

शेख-पुं० [अ०] [स्त्री० शेखनी] १. मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से पहला और श्रेष्ठ वर्ग। ३. आचार्य।

=दोष।
[अ० शेख+हिं० चिल्ली]
महामूर्ख व्यक्ति। २. व्यर्थ
असम्भव मन्सूबे बाँधनेवाला।
[सं०] १. शीर्ष। सिर।
। किरीट। ३. पहाड़ की
।
अच्छा या श्रेष्ठ।
[अ० शेख] १. अभिमान।
ऐंठ। अकड़। ३. बढ़-बढ़कर
। डींग।

बघारना या हाँकना =
बातें करना। डींग हाँकना।
वि० [अ० शेखी + फा० बाज]
या डींग हाँकने या बढ़-वढ़कर
।
-स्त्री० [सं०] निःर्गुण्डी या
का पौधा।
[फा०] [स्त्री० शेरनी] १.
जाति का एक बहुत बड़ा और
हिंसक पशु। व्याघ्र। नाहर।
होना = निर्भय, धृष्ट या
होना।
वीर और साहसी व्यक्ति।
] गजल के दो चरण।
दे० 'शेर मुँहा'।
-पुं० [फा० शेर + हिं० पंजा] शेर
आकार का एक अस्त्र। बघ नहाँ।
-पुं० [फा०] एक प्रकार की
?)।
पुं० [फा०] सिंह। केसरी।
वि० [हिं० शेर + मुँह] १.
शेर के मुँह की तरह का हो।
अगला भाग शेर के मुँह की
हो। ३. (मकान या जमीन)
भाग अपेक्षाकृत अधिक
पिछला भाग उसकी अपेक्षा
हो। (ऐसा मकान या
जमीन मालिक को अशुभ फल देनेवाली मानी जाती है।)

शेरवानी–स्त्री० [फा० शेर?] एक प्रकार का अंगा या लम्बा पहनावा।

शेरिफ–पुं० [अ०] १. विशिष्ट राजकीय उच्चाधिकारी जो भिन्न भिन्न देशों में न्याय, शान्ति-रक्षा आदि कार्यों के लिए अवैतनिक और सम्मानित रूप से नियुक्त या निर्वाचित होता है। २. दे० 'सुमान्य'।

शेल–पुं० दे० 'सेल'।

शेष–पुं० [सं०] १. बाकी बची हुई वस्तु, संख्या आदि। बाकी। (रिमेण्डर) २. (गणित में) घटाने से बची हुई संख्या या रकम। बाकी। (बैलेन्स) ३. समाप्ति। अंत। ४. शेषनाग। ५. लक्ष्मण जो शेषनाग के औतार कहे जाते हैं।
वि० १. बचा हुआ। अवशिष्ट। बाकी। २. अंत तक पहुँचा हुआ। समाप्त।

शेष-धन–गणित में घटाने से बची हुई संख्या या रकम। (बैलेन्स)

शेषधर–पुं० [सं०] महादेव। शिव।

शेषनाग–पुं० [सं०] पुराणों के अनुसार हजार फनोंवाला वह नाग जिसके फनों पर यह पृथ्वी ठहरी हुई मानी जाती है।

शेषवत–पुं० [सं०] न्याय-शास्त्र में कोई कार्य होता हुआ देखकर उसका कारण निश्चित करना।

शेषशायी–पुं० [सं०] विष्णु।

शेषांश–पुं० [सं०] १. बाकी बचा हुआ अंश। २. अन्तिम अंश।

शेषोक्त–वि० [सं०] ऊपर या पहले कहे हुए शब्दों, कथनों, पदार्थों आदि में सबके पीछे आया या कहा हुआ। सब के अन्त में कहा हुआ।

शैतान–पुं० [अ०] १. ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों में तमोगुण का प्रधान देवता जो मनुष्यों को ईश्वर के विरुद्ध चलाता और धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करता है।

पद-**शैतान की आँत**=बहुत लंबा। २. भूत। प्रेत। ३. बहुत बड़ा पाजी या दुष्ट।

शैतानी–स्त्री० [अ० शैतान] दुष्टता। पजीपन।

वि० १. शैतान-सम्बन्धी। शैतान का। २. दुष्टतापूर्ण।

शैत्य–पुं० [सं०] शीत का भाव। शीतता।

शैथिल्य–पुं० = शिथिलता।

शैल–पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़। (इसके साथ कन्या या पुत्री वाचक शब्द लगने से पार्वती का बोध होता है।)

शैल-कुमारी–स्त्री० [सं०] १. पहाड़ी देश की कन्या या कुमारी। २. पार्वती।

शैलजा–स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैलपुत्री–स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में पहली दुर्गा।

शैलात्मजा–स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैली–स्त्री० [सं०] १. चाल। ढब। ढंग। २. प्रणाली। तर्ज। ३. रीति। प्रथा। रवाज। ४. वाक्य रचना का वह विशिष्ट प्रकार जो लेखक की भाषा सम्बन्धी निजी विशेषताओं का सूचक होता है। (स्टाइल) ५. हाथ से बनाई जानेवाली वस्तुओं में ऐसी बातों का समूह जिनकी विशेषताओं में उनके कर्त्ताओं की मनोवृत्ति की एकरूपता के कारण साम्य हो। कलम। जैसे–मुगल या पहाड़ी शैली के चित्र।

शैलूष–पुं० [सं०] १. नाटक या अभिनय करनेवाला। नट। २. धूर्त्त। चालाक।

शैलेन्द्र–पुं० [सं०] हिमालय। (पर्वतों का राजा)

शैलेय–वि० [सं०] १. पहाड़ों में होनेवाला। पहाड़ी। २. जिसमें कंकड़-पत्थर बहुत हों। पथरीला।

शैव–वि० [सं०] शिव-सम्बन्धी। शिव का। पुं० शिव का उपासक एक सम्प्रदाय।

शैवलिनी–स्त्री० [सं०] नदी।

शैवाल–पुं० [सं०] सेवार।

शैशव–वि० [सं०] १. शिशु-सम्बन्धी। छोटे बच्चों का। २. बाल्यावस्था का। पुं० वह अवस्था जब तक कोई शिशु रहता है। बचपन।

शैशुनाग–वि० [सं०] मगध के प्राची राजा शिशुनाग या उसके वंशजों से सम्ब रखनेवाला।

शोक–पुं० [सं०] प्रिय व्यक्ति की मृ या वियोग के कारण मन में होनेवाला प कष्ट। सोग। गम।

शोकहर–पुं० [सं०] एक प्रकार का मात्रि छंद जिसके प्रत्येक चरण में ८, ८ विश्राम से ३० मात्राएँ होती हैं। 'सुभंगी' भी कहते हैं।

शोख़–वि० [फा०] [भाव० शोख़ी] ढीठ। धृष्ट। २. नटखट। पाजी। चंचल। चुलबुला। ४. गहरा औ चमकदार। (रंग)

शोख़ी–स्त्री० [फा०] शोख़ होने की अव या भाव। उदंडता।

शोच–पुं० [सं० शोचन] १. दुःख। रं अफसोस। २. चिंता। फ़िक्र।

शोचनीय–वि० [सं०] १. जिसकी द देखकर दुःख या चिन्ता हो। २. बहुत या बुरा।

शोच्य–वि० [सं०] १. सोचने या विच करने के योग्य। २. दे० 'शोचनीय'।

शोण–पुं० [सं०] १. लाल रंग। लाली। अरुणता। ३. अग्नि। आग। रक्त। लहू। ५. बिहार प्रदेश या राज्य सोन नामक नद।

वि० लाल रंग का। अरुण। सुर्ख।

शोणित–वि० [सं०] लाल। सुर्ख।

पुं० रक्त। लहू। रुधिर। ख़ून।

शोथ–पुं० [सं०] रोग के कारण शरीर किसी अंग का फूलना। सूजन। वरम।

शोध–पुं० [सं०] [वि० शोधनीय, शोध्

संस्कार। २. ठीक या
। दुरुस्ती। ३. चुकता
(शुण)। ४. जाँच। परीक्षा।
।
[सं०] [स्त्री० शोधिका]
ढूँढ़ने या पता लगानेवाला।
।
[हिं०] [वि० शोधित, शोधनीय,
] १. शुद्ध या साफ करना।
ठीक करना। सुधारना। ३.
वह संस्कार जिससे वे व्यवहार
हैं। ४. छान-बीन। जाँच।
करना। ढूँढ़ना। ६. ऋण, देन
। (पेमेन्ट) ७. दस्त की
करना। विरेचन।
[सं० शोधन] शोधन करना।
करना। (दे० 'शोधन')
हिं० 'शोधना' का प्रे०।
[हिं० शोधना + आई
१. शोधने की क्रिया या भाव।
पारिश्रमिक।
[सं० शोध] १. शुद्ध या
हुआ। २. जिसका या जिसके
शोध हुआ हो।
= शोधक।
[सं०] १. जिसमें किसी प्रकार
करने की आवश्यकता हो। २.
में किसी प्रकार का शोध या
आवश्यकता हो या की जाय।
[अ०] १. इन्द्रजाल। जादू।
आँखों को धोखा देकर किया
।
[अ० शोबद + फा० बाज]
२. दूसरों को धोखा देने या
। चालाक।
= शोभा।
[सं०] [स्त्री० शोभिनी] १.
। ३. उत्तम। ४. शुभ।

पुं० १. अलंकार। गहना। २. मंगल। कल्याण। ३. सुन्दरता।

शोभना–स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री। *अ० शोभा देना। भला लगना।

शोभनीय–वि० दे० 'शोभन'।

शोभांजन–पुं० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष जिसमें लंबी फलियाँ लगती हैं। सहिंजन।

शोभा–स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। कान्ति। चमक। २. सुन्दरता। छटा। ३. सजावट। ४. किसी की सुन्दरता बढ़ानेवाली कोई वस्तु या तत्त्व। ५. दलाली का धन। (दलाल)

शोभायमान–वि० [सं०] शोभा बढ़ाने या देनेवाला। सुन्दर।

शोभा-यात्रा–स्त्री० [सं०] जनयात्रा। जलूस। (यह शब्द बंगला से हिन्दी में आया है)

शोभित–वि० [सं०] १. सुन्दर। २. शोभा बढ़ाने या देनेवाला। फबता या अच्छा लगता हुआ।

शोर–पुं० [फा०] १. बहुत से लोगों की एक साथ मिली हुई जोरों की आवाज। कोलाहल। २. प्रसिद्धि। धूम। जैसे–आपकी किताब का तो शोर मच गया है।

शोरवा–पुं० [फा०] उबाली हुई तरकारी आदि का रस। जूस। रसा।

शोरा–पुं० [फा० शोर] मिट्टी से निकलनेवाला एक प्रसिद्ध क्षार।

शोला–पुं० [अ० शोअलऽ] जलती हुई आग की लपट। लौ। अग्नि-शिखा।

शोशा–पुं० [फा०] १. निकली हुई नोक। २. विलक्षण या अनोखी बात। ३. दोष।

शोषक–वि० [सं०] [स्त्री० शोषिका] १. शोषण करने या सोखनेवाला। २. दूसरों का धन हरण करनेवाला। (एक्सप्लॉयटर)

शोषण–पुं० [सं०] [वि० शोषित, शोषनीय] १. किसी वस्तु में का जल या रस खींचकर अपने अन्तर्गत करना। सोखना। २. सुखाना। ३. नाश करना।

४. दुर्बल या अधीनस्थ के परिश्रम, आय आदि से अनुचित लाभ उठाना। (एक्सप्लॉयटेशन)

शोषित-वि० [सं०] १. जिसका शोषण किया गया हो। २. जो सोखा गया हो। ३. जिसकी दुर्बलता, पराधीनता आदि से औरों ने अनुचित रूप से आर्थिक लाभ उठाया हो। (एक्सप्लॉयटेड)

शोषी-वि० = शोषक।

शोहदा-पुं० [अ०] १. व्यभिचारी। लंपट। लुच्चा। बदमाश। २. आवारा।

शोहरत-स्त्री० [अ०] १. मशहूर होने की अवस्था या भाव। प्रसिद्धि। ख्याति। २. किंवदंती। प्रवाद। अफवाह।

शौंडिक-पुं० [सं०] शराब बनानेवाला।

शौक-पुं० [अ०] १. किसी वस्तु की प्राप्ति या सुख के भोग की कुछ प्रबल, उत्कट या असाधारण अभिलाषा या लालसा।

मुहा०-शौक से = प्रसन्नतापूर्वक।

२. व्यसन। चसका।

शौकत-स्त्री० दे० 'शान'।

शौकिया-क्रि० वि० [अ०] शौक से।

शौकीन-पुं० [अ० शौक] [भाव० शौकीनी] १. वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो। शौक करनेवाला। २. सदा बना-ठना रहनेवाला। छैला।

शौकीनी-स्त्री० [अ० शौक] अपना वैभव दिखाने या वासनाएँ पूरी करने के लिए व्ययसाध्य वेष-भूषा रखने और तरह-तरह के शौक करने का भाव।

शौक्तिक-पुं० [सं०] मोती।

शौच-पुं० [सं०] १. शुद्धता। पवित्रता। २. सब प्रकार से पवित्र जीवन बिताना। ३. मलत्याग, कुल्ला-दातुन आदि कृत्य जो सबेरे उठकर सबसे पहले किये जाते हैं। ४. पाखाने या टट्टी जाना। ५. दे० 'अशौच'।

शौध-वि० [सं० शुद्ध] निर्मल।

शौरसेन-पुं० [सं०] आधुनिक मथुरा और उसके आस पास के प्रदेश का पुराना नाम जो वहाँ के राजा शूरसेन के नाम प पड़ा था।

शौरसेनी-स्त्री० [सं०] शौरसेन प्रदेश क प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो 'ना भी कहलाती थी।

शौर्य-पुं० [सं०] शूर का भाव। शूरता वीरता। बहादुरी।

शौल्किक-पुं० [सं०] शुल्क-सम्बन्धी शुल्क का। जैसे-शौल्किक अधिकारी।

शौहर-पुं० [फा०] स्त्री का पति। खस

श्मशान-पुं० [सं०] १. वह स्थान मुरदे जलाये जाते हैं। मसान। मरघ (क्रिमेशन ग्राउंड) २. बिलकुल उज हुआ। ध्वस्त किया हुआ स्थान।

श्मशान-यात्रा-स्त्री० [सं०] शव मृत शरीर का श्मशान ले जाया जाना। अरथी का श्मशान जाना।

श्मश्रु-पुं० [सं०] दाढ़ी-मूँछ।

श्याम-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण का एक न जो उनके शरीर के वर्ण या रंग के का पड़ा था।

वि० [भाव० श्यामता] १. काला नीला मिला हुआ रंग। २. कुछ-कु काला। साँवला।

श्यामकर्ण-पुं० [सं०] वह सफेद घो जिसका एक कान काला हो।

श्यामकल्याण-पुं० [सं०] ओड़व सं जाति का एक राग जो रात के पहले प में गाया जाता है।

श्यामकृष्ण-वि० [सं०] जिसका रंग कु कालापन लिये हुए नीला हो।

पुं० कुछ कालापन लिये हुए नीला रंग

श्यामघन-पुं० [सं०] घनश्याम (श्रीकृष्ण)

श्यामता-स्त्री० [सं०] १. श्याम व या काले होने का भाव। कालापन। २ साँवलापन। ३. मलिनता। ४. शोभा आ

काम जिसे करते-करते शरीर में शिथिलता आने लगे। शरीर को थकानेवाला काम। परिश्रम।

मुहा०–श्रम साधना=(क) कठिन परिश्रम करना। (ख. अभ्यास करना। उदा०–मुक्ति हेत जोगी स्रम साधैं असुर विरोधैं पावै।—सूर।

२. साहित्य में संभोग आदि के कारण होनेवाली थकावट जिसकी गिनती संचारी भावों में की गई है। ३. जीविका-निर्वाह या धन-उपार्जन के लिए किया जानेवाला इस प्रकार का कोई काम। ४. हाथ में लिए हुए किसी काम में होनेवाली मेहनत। (लेबर) ५. थकावट। क्लान्ति। ६. दौड़-धूप। ७. पसीना।

श्रम-कण–पुं० [सं०] अधिक परिश्रम, लज्जा, आतंक आदि के कारण शरीर से निकलनेवाली पसीने की बूँदें।

श्रम-जन–पुं० दे० 'श्रमजीवी'।

श्रम-जल–पुं० [सं०] पसीना। स्वेद।

श्रम-जीवी–वि० [सं० श्रमजीविन्] श्रम या मजदूरी करके पेट पालनेवाला। (लेबरर)

श्रमण–पुं० [सं०] १. बौद्ध संन्यासी। २. यति। मुनी।

श्रम-वारि–पुं० [सं०] श्रम-कण। पसीना। स्वेद।

श्रम-बिंदु–पुं० [सं०] पसीना। स्वेद।

श्रम-विभाग–पुं० [सं०] १. किसी कार्य के अलग-अलग अंगों के सम्पादन के लिए अलग-अलग व्यक्ति नियत करना। (डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ लेबर) २. राज्य का वह विभाग जो श्रम-जीवियों के सुख और कल्याण की व्यवस्था करता है।

श्रम-सीकर–पुं० [सं०] पसीना। स्वेद।

श्रमिक–पुं० [सं०] वह जो शारीरिक श्रम करके अपना पेट पालता हो। मजदूर। वि० श्रम-सम्बन्धी। शारीरिक श्रम का।

श्रमिक संघ–पुं० [सं०] कल कारखानों

आदि में काम करनेवाले मजदूरों का वह संघ जो मजदूरों के हितों की रक्षा और उनकी अवस्था के सुधार के उद्देश्य से बनाया जाता है। (लेबर यूनिअन)

श्रमित–वि० [सं० श्रम] श्रम या मेहनत करने के कारण शिथिल या थका हुआ।

श्रवण–पुं० [सं०] [वि० श्रवणीय] १. वह इन्द्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। सुनने का अंग या इन्द्रिय। कान। कर्ण। २. सुनना। ३. धार्मिक कथाएँ और देवताओं के चरित्र आदि सुनना जो एक प्रकार की भक्ति है। ४. बाईसवाँ नक्षत्र।

श्रवणीय–वि० [सं०] १. जो सुना जा सके। श्रव्य। २. जिसे सुनना प्रिय जान पड़े। सुनने योग्य।

श्रवन*–पुं० [सं० श्रवण] कान।

श्रवना–स० [सं० स्राव] १. बहना। २. चूना। टपकना। ३. रसना।

स० १. गिराना। २. बहाना।

श्रवित*–वि० [सं० स्राव] बहा हुआ।

श्रव्य–वि० [सं०] १. जो सुना जा सके। जिसे कान से सुन सकें। (ऑडिबुल) २. सुनने योग्य। जैसे-संगीत, कहानी आदि।

श्रव्य-काव्य–पुं० [सं०] वह काव्य जो केवल सुना जा सके, पर जिसका अभिनय न हो सकता हो।

श्रांत–वि० [सं०] [भाव० श्रांति] थका हुआ।

श्रांति–स्त्री० [सं०] १. परिश्रम। मेहनत। २. परिश्रम के कारण होनेवाली थकावट। ३. थकावट मिटाने के लिए किया जानेवाला विश्राम।

श्राद्ध–पुं० [सं०] १. श्रद्धापूर्वक किया जानेवाला काम। २. हिन्दुओं में पिंडदान और ब्राह्मण-भोजन आदि कृत्य जो पितरों के उद्देश्य से और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए होते हैं। ३. किसी काम या बात को बहुत बुरी तरह करने या बिगाड़ने की क्रिया या भाव। जैसे-अपनी इस रचना में तो उन्होंने कविता का श्राद्ध ही किया है। ४. दे० 'पितृपक्ष'।

श्राप–पुं० दे० 'शाप'।

श्रावक–पुं० [सं०] [स्त्री० श्राविका] १. बौद्ध संन्यासी या भिक्षु। २. जैन-धर्म का अनुयायी। जैनी।

वि० सुननेवाला। श्रोता।

श्रावगी–पुं० [सं० श्रावक] जैनी।

श्रावण–पुं० [सं०] आषाढ़ के बाद औ भादों के पहले का महीना। सावन।

वि० [सं०] श्रवण, कानों अथवा सु से सम्बन्ध रखनेवाला। (ऑडिटरी)

पुं० सुनने की क्रिया या भाव।

श्रावणी–स्त्री० [सं०] सावन मास पूर्णमासी जो 'रक्षा-बंधन' का दिन है।

श्रावन*–स० [हिं० स्रवना] गिराना।

श्रावस्ती–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नग जो उत्तर-कोशल में गंगा के किनारे थी

श्रावित–वि० [सं०] १. सुना हुअ २. जो सुनकर मान्य कर लिया गया है। ३. (लेख्य या दस्तावेज) जिसे सुन लिखनेवाले ने उसपर अपनी स्वीकृति सूचक हस्ताक्षर कर दिये हों। (एटेस्टे

श्राव्य–वि० [सं०] सुनने योग्य।

श्री–स्त्री० [सं०] १. विष्णु की प लक्ष्मी। कमला। २. सरस्वती। सम्पत्ति। धन। दौलत। ४. विभू ऐश्वर्य। ५. छटा। शोभा। ६. आदर-सूचक शब्द जो पुरुषों के नाम पहले लगाया जाता है। जैसे-श्री नाराय दास। ७. कान्ति। चमक। ८. रोली। सफेद चन्दन। १०. कीर्त्ति। यश। स्त्रियों के माथे पर की बिन्दी। १२. संपूर्ण जाति का एक राग जो सूर्यास्त समय गाया जाता है।

पुं० संगीत में सम्पूर्ण जाति का एक रा जो शिशिर ऋतु में सन्ध्या समय गा

सम्पन्न । अमीर । २. एक आदर-सूचक शब्द जो पुरुषों के नाम के पहले विशेषण के रूप में लगाया जाता है । श्रीयुत ।

श्रीयुक्त–वि० दे० 'श्रीयुत' ।

श्रीयुत–वि० [सं०] एक विशेषण जो भले आदमियों के नाम के पहले उनके आदर के लिए लगाया जाता है । श्रीमान् ।

श्री-रमण–पुं० [सं०] विष्णु ।

श्रीवत्स–पुं० [सं०] १. विष्णु । २. विष्णु के वक्ष-स्थल पर का वह चिह्न, जो भृगु के लात मारने से हुआ था ।

श्रीश–पुं० [सं०] विष्णु ।

श्री-हत–वि० [सं०] जिसकी श्री या शोभा न रह गई हो । निस्तेज । निष्प्रभ ।

श्रुत–वि० [सं०] १. सुना हुआ । २. जो परम्परा से सुनते आये हों । ३. प्रसिद्ध ।

श्रुत-पूर्व–वि० [सं०] जो पहले सुना हो ।

श्रुति–स्त्री० [सं०] १. श्रवण करना । सुनना । २. सुनने की इन्द्रिय । कान । ३. सुनी हुई बात । ४. सृष्टि के आरम्भ से चला आया हुआ पवित्र ज्ञान । वेद । ५. चार की संख्या । ६. एक प्रकार का अनुप्रास । विशेष दे० 'श्रुत्यनुप्रास' । ७. संगीत में सातों स्वरों में से प्रत्येक स्वर के कुछ नियत और निश्चित खंड या विभाग । स्वर के आरम्भ, मध्य और अंत के भाग । षड्ज में ४, ऋषभ में ३, गांधार में २, मध्यम में ४, पंचम में ४, धैवत में २, और निषाद में २, इस प्रकार कुल २२ श्रुतियाँ मानी गई हैं जिनके अलग-अलग नाम हैं । ८. दे० 'श्रुत्यनुप्रास' ।

श्रुति-कटु–वि० [सं०] जो सुनने में बुरा जान पड़े ।

श्रुति-पथ–पुं० [सं०] १. श्रवणेन्द्रिय । कान । २. वेद-विहित मार्ग ।

श्रुत्य–वि० [सं०] १. सुनने या सुने जाने के योग्य । २. श्रुति-सम्बन्धी । श्रुति का । ३. प्रसिद्ध । ४. प्रशस्त । अच्छा और भला ।

श्रुत्यनुप्रास-पुं० [सं०] अनुप्रास का वह भेद जिसमें मुख के एक ही स्थान से उच्चारित होनेवाले व्यंजन कई बार आते हैं।

श्रुवा-पुं० [सं०] काठ की वह कलछी जिससे हवन के लिए आग में घी छोड़ा जाता है। स्रुवा।

श्रेणी-स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। अवली। पाँति। २. क्रम। शृंखला। परंपरा। ३. एक ही प्रकार का व्यवसाय करनेवाले व्यापारियों का सघात। (कॉरपोरेशन) ४. योग्यता, कर्त्तव्य आदि के विचार से किया हुआ विभाग। दरजा। (क्लास) ५. सीढ़ी।

श्रेणीकरण-पुं० [सं०] [वि० श्रेणीकृत] १. बहुत सी वस्तुओं को अलग अलग श्रेणियों में बाँटना या रखना। (क्लैसिफिकेशन) २. व्यापारियों आदि के सघात या संस्था को विधि या कानून के अनुसार श्रेणी का रूप देना। (इन्कॉरपोरेशन)

श्रेणीकृत-वि० [सं०] (संस्था या संघ) जिसे विधि के अनुसार श्रेणी का रूप दिया गया हो। (इन्कॉरपोरेटेड)

श्रेणी-बद्ध-वि० [सं०] श्रेणी या पंक्ति के रूप में लगा या रखा हुआ।

श्रेय-वि० [सं० श्रेयस्] [स्त्री० श्रेयसी] १. अधिक अच्छा। बेहतर। २. श्रेष्ठ। उत्तम।

पुं० १. अच्छापन। २. कल्याण। मंगल। ३. शुभ और शुद्ध आचरण। सदाचार। ४. किसी काम के लिए मिलनेवाला यश। (क्रेडिट)

श्रेयस्कर-वि० [सं०] श्रेय देने या श्रेष्ठ बनानेवाला।

श्रेष्ठ-वि० [सं०] [स्त्री० श्रेष्ठा, भाव० श्रेष्ठता] १. सर्वोत्तम। २ मुख्य। प्रधान। ३. पूज्य। ४. और या बहुतों की अपेक्षा अच्छा। (सुपीरियर)

श्रेष्ठक-वि० [सं०] १. श्रेष्ठ-सम्बन्धी। श्रेष्ठकर। २. श्रेष्ठता का सूचक। जैसे-श्रेष्ठक भावना। (देखें)

श्रेष्ठक भावना-स्त्री० [सं०] मन में बैठी हुई यह धारणा या भावना कि हम अमुक अथवा औरों की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं। (सुपीरियारिटी काम्प्लेक्स)

श्रेष्ठता-स्त्री० [सं०] औरों की अपेक्षा श्रेष्ठ या अच्छे होने की दशा या भाव। उत्तमता।

श्रेष्ठी-पुं० [सं० श्रेष्ठिन्] महाजन। सेठ

श्रोता-पुं० [सं० श्रोतृ] १. सुननेवाला २. कथा, पुराण, उपदेश, व्याख्यान आ के समाज में बैठकर सब बातें सुननेवाल

श्रोता-वर्ग-पुं० [सं०] कथा, उपदे व्याख्यान आदि के स्थान पर बैठकर सुन वाले सब लोग या उनका समाज (ऑडिएन्स)

श्रोत्र-पुं० [सं०] कान।

श्रोत्रिय-पुं० [सं०] १. वह जो वे वेदान्तों और शास्त्रों का अच्छा ज्ञाता २. ब्राह्मणों में एक जति।

श्रोन*-पुं० दे० 'शोण'।

श्रोनित*-पुं० दे० 'शोणित'।

श्रौत-वि० [सं०] १. श्रवण सम्बन्धी। श्रुति-सम्बन्धी। ३. जो वेदों के अनुसार

श्रौन*-पुं० दे० 'श्रवण'।

श्लथ-वि० [सं०] १. शिथिल। ढील २. मन्द। धीमा। ३. दुर्बल। कमजो

श्लाघनीय-वि० [सं०] १. श्लाघा प्रशसा के योग्य। जिसके लिए या जि कारण प्रशंसा की जा सके। २. उत्तम बढ़िया।

श्लाघा-स्त्री० [सं०] [वि० श्ला श्लाघनीय] १. प्रशंसा। तारीफ। चापलूसी। खुशामद।

श्लाघी-वि० [सं० श्लाघिन्] [स्त्री श्लाघिनी] १. श्लाघा या प्रशंसा कर वाला। तारीफ करनेवाला। २. स्तुति बड़ाई करनेवाला। ३. खुशामदी।

श्लाघनीय ।
[सं०] १. एक में मिला या
२. (साहित्य में) श्लेष युक्त ।
र्थ हो ।
[सं०] फीलपाँव (रोग) ।
[सं०] [भाव० श्लीलता]
बढ़िया । २. शुभ । ३. शिष्टों
योग्य । सभ्योचित ।
[सं०] [वि० श्लेषक, श्लिष्ट] १.
ना । जुड़ना । २. एक शब्द
धिक अर्थ होने की अवस्था
(पन्) ३. साहित्य में एक
समें ऐसे शब्दों का प्रयोग होता
नेक अर्थ होते हैं और वे अर्थ
अनुसार कई तरह से अलग-
ते हैं। जसे–नाहीं नाहीं करैं
थु देन कहैं, मंगन को देखि पट
त हैं में कही हुई सब बातें
दाता दोनों पर अलग-अलग
नतः घटती हैं ।
पुं० [सं०] वह चित्र जिसमें
के अतिरिक्त कोई और
हो । जैसे-यदि कोई नायक
नायिका पर रीझकर अन्य
भूल जाय और इस पर कोई
ऐसा चित्र अंकित करे
बहुत-सी कुमुदिनियों के
एक ही कुमुदिनी का रस ले
चित्र श्लेष चित्र कहलावेगा ।
[सं०] [वि० श्लेषित,
संयोग कराना, मिलाना,
ना । २. गले लगाना ।
स्त्री० दे० 'वक्रोक्ति' ।
[सं०] वह अर्थालंकार
शब्दों का प्रयोग हो जो
दोनों पर घटे ।

श्लेष्मा–पुं० [सं०] कफ । बलगम ।

श्लोक–पुं० [सं०] १. शब्द । आवाज । २. स्तुति । प्रशंसा । ३. कीर्त्ति । यश । ४ अनुष्टुप छन्द । ५. संस्कृत का कोई पद्य ।

श्वपच–पुं० [सं०] चांडाल ।

श्वश्रू–स्त्री० [सं०] श्वसुर की स्त्री । सास ।

श्वसित–वि० [सं०] १. जो श्वास लेता हो । २. जीवित ।

पुं० निश्वास । ठंढा साँस ।

श्वसुर–पुं० [सं०] किसी स्त्री या पुरुष के विचार से उसके पति या पत्नी का पिता । ससुर ।

श्वसेन–पुं० [सं०] १. श्वास । साँस । २. जीवन ।

श्वान–पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] कुत्ता ।

श्वापद–पुं० [सं०] हिंसक पशु ।

श्वास–पुं० [सं०] १. नाक से हवा खींचना और बाहर निकालना जो जीवन का लक्षण है । २. दमा नामक रोग ।

श्वासा–स्त्री० [सं० श्वास] १. साँस । २. प्राण वायु ।

श्वासोच्छ्वास–पुं० [सं०] वेग से साँस लेना और छोड़ना ।

श्वेत–वि० [सं०] [भाव० श्वेतता] १. सफेद । २. उज्वल । साफ । ३. गोरा । ४. जिसपर किसी प्रकार की छाया या प्रभाव न पड़ा हो । ५. अच्छा । भला ।

पुं० १. सफेद रंग । २. पुराणों के अनुसार एक द्वीप का नाम ।

श्वेत-कृष्ण–पुं०[सं०]१.सफेद और काला । २. किसी बात के भले और बुरे दोनों पक्ष या अंग । ३. भलाई और बुराई । उपकार और अपकार ।

श्वेत-पत्र–पुं० [सं०] (साधारणतः सफेद कागज पर छपा हुआ) किसी विषय से सम्बन्ध रखनेवाला सरकारी वक्तव्य । (ह्वाइटपेपर)

श्वेत वाराह–पुं० [सं०] एक कल्प जो

ब्रह्मा के मास का पहला दिन कहा गया है।

श्वेत-सार-पुं० [सं०] अनाजों, तरकारियों आदि का वह सफेद सत्त जो प्रायः कपड़े पर कलफ लगाने या दवाओं आदि में काम आता है। माँड़ी। कलफ। (स्टार्च)

श्वेतांँग-वि० [सं०] जिसके अंग का वर्ण श्वेत हो। सफेद रंग के शरीरवाला। पुं० गोरी जाति (अर्थात् यूरोप, अमेरिक आदि) का कोई व्यक्ति।

श्वेतांशु-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

ष

ष-नागरी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में ३१ वाँ वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है, इससे वह मूर्द्धन्य कहलाता है। इसका उच्चारण 'श' के समान भी होता है और 'ख' के समान भी।

षंड(ढ)-पुं० [सं०] हीजड़ा। नपुंसक।

षट्-वि० [सं०] गिनती में छः।

षट्कर्म्म-पुं० [सं० षट्कर्म्मन्] १. ब्राह्मणों के ये छः काम—यज्ञ करना, यज्ञ कराना, पढ़ना, पढ़ाना, दान देना और दान लेना। २. मनुष्य के लिए नियत ये छः काम जो उसे नित्य करने पड़ते हैं या करने चाहिए—(क) स्नान। (ख) संध्या। (ग) पूजा। (घ) तर्पण। (ङ) जप। (च) होम। ३. झगड़ा। झंझट।

षट्कोण-वि० [सं०] छः कोणोंवाला।

षट्-चक्र-पुं० [सं०] १. हठ-योग में माने जानेवाले कुंडलिनी के ऊपर के ये छः चक्र—मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा। (पदवर्त्ती हठ-योगियों ने इनके सिवा ३-४ और चक्रों की भी कल्पना की है।) २.षड्यंत्र।

षट्-दर्शन-पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के ये छः दर्शन या शास्त्र—सांख्य, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, योग और वेदान्त।

षट्पद-वि० [सं०] [स्त्री० षट्पदी] छः पदों या पैरोंवाला।
पुं० भ्रमर। भौंरा।

षट्पदी-स्त्री० [सं०] छप्पय नामक छः पदोंवाला छन्द।

षट्रस-पुं० दे० 'षड्रस'।

षट्राग-पुं० [सं० षट्+राग] १. संगी के छः राग जिनके नाम हैं—भैरव, मल श्री, हिंडोला, मालकोस और दीपक। व्यर्थ का झगड़ा या बखेड़ा।

षट्रिपु-पुं० दे० 'षड्रिपु'।

षट्शास्त्र-पुं० दे० 'षड्दर्शन'।

षटक-पुं० [सं०] १. छः की संख २. छः वस्तुओं का समूह।

षडंग-पुं० [सं०] १. वेद के ये छः अ शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, और ज्योतिष। २. शरीर के ये छः दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़।
वि० जिसके छः अंग हों।

षडानन-पुं० [सं०] कार्त्तिकेय।

षड्ज-पुं० [सं०] संगीत के सात में से पहला जिसका संकेत 'स' है।

षड्दर्शन-पुं० [सं०] [वि० षड्द न्याय, मीमांसा (पूर्व), योग, सा वैशेषिक और वेदान्त या उत्तर मी ये छः दर्शन।

षड्यंत्र-पुं० [सं०] १. किसी के वि गुप्त रूप से की जानेवाली कार्र भीतरी चाल। (कॉन्सपिरेसी) २. पूर्ण आयोजन।

षड्रस-पुं० [सं०] मधुर, लवण, ति कटु, कषाय और अम्ल ये छः प्रका रस या स्वाद।

षड्रिपु-पुं० [सं०] मनुष्य के ये विकार—काम, क्रोध, मद, लोभ,

] छठा।

] १. चान्द्र मास के
छठी तिथि। २. दुर्गा। ३.
(व्याकरण) ४. शिशु
छठे दिन का कृत्य। छठी।

[सं०] वह राग जिसमें
लगाते हों, कोई एक स्वर
है।

-पुं० [सं०] वह राग जो
षाड़व और अवरोही में ओड़व
)

-पुं० [सं०] वह राग जो
षाड़व और अवरोही में संपूर्ण
)

-पुं० [सं०] कार्त्तिकेय।

-वि० [सं०] छठे महीने
नेवाला।

[सं०] सोलह।

पुं० सोलह की संख्या।

षोड़श मातृका–स्त्री० दे० 'मातृका' ४.।

षोड़श शृंगार–पुं० [सं०] साहित्य में स्त्रियों का पूर्ण शृंगार जो सोलह अंगोंवाला कहा गया है।

षोड़श संस्कार–पुं० [सं०] गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जात-कर्म, नाम-करण, निष्क्रमण, अन्न-प्राशन, चूड़ा-कर्म, यज्ञोपवीत, केशान्त, समावर्त्तन और विवाह आदि सोलह वैदिक संस्कार।

षोड़शी–वि० [सं०] १. सोलहवीं। २. सोलह वर्ष की (युवती)।

स्त्री० वह कृत्य जो किसी के मरने के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है। (हिन्दू)

षोड़शोपचार–पुं० [सं०] पूजन के ये १६ अंग–आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा और वन्दना।

स

-माला का बत्तीसवाँ व्यंजन।
-स्थान दन्त है, इसलिए
दन्त्य 'स' कहलाता है। शब्दों
में यह उपसर्ग के रूप में लगकर
है–(क) सहित या साथ ;
, सजीव। (ख) एक ही में का,
। (ग) पूर्वक, जैसे–सप्रेम,
-शास्त्र में यह षड्ज स्वर का
में 'सगण' का संक्षिप्त रूप
।

[सं० सम्] एक उपसर्ग जो
शोभा, समानता, उत्कृष्टता,
सूचित करने के लिए लगता
, संताप, संतुष्ट आदि।

दे० 'सैंतना'।

= सौंपना।

संक*–स्त्री० = शंका।

संकट–पुं० [सं० सम + कृत] १. विपत्ति। आफत। २. दुःख। कष्ट। ३. जल या स्थल के दो बड़े विभागों को बीच से जोड़नेवाला तंग रास्ता या संकीर्ण अंग। जैसे–गिरि संकट (पहाड़ का दर्रा), जल-संकट (जल-डमरूमध्य), स्थल-संकट (स्थल-डमरूमध्य)। ४. दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा।

संकटा–स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध देवी जो संकट दूर करनेवाली मानी जाती है। २. ज्योतिष में योगिनियों के विचार से एक दशा जो मनुष्य पर संकट लानेवाली मानी जाती है।

संकत*–पुं० = संकेत।

संकना*–अ० [सं० शंका] १. शंका या

सन्देह करना । २. डरना ।

सँकर*—स्त्री० [सं० शृंखला] सिकड़। जंजीर।
पुं० = संकर।
वि० = सँकरा।

संकर पुं० [सं०] [भाव० संकरता] १. दो चीजों का आपस में मिलना या मिलकर एक हो जाना। २. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियों के पिता और माता से हुई हो दोगला। ३.साहित्य में दो या अधिक अलकारों के इस प्रकार एक साथ और मिले जुले रहने की अवस्था जिसमें या तो वे एक दूसरे से अलग न किये जा सकें या जिनका उस प्रसंग में स्वतत्र रूप सिद्ध न हो सके। उदाहरणार्थ यदि किसी वर्णन में दो या अधिक अलंकार समान रूप से घटित होते हों तो उन्हें संकर कहा जायगा उसकी गणना स्वतंत्र अलंकार के रूप में होती है।
वि० दो या अधिक के योग से बना हुआ। मिश्र। जैसे—संकर जाति, संकर राग।
*पुं० दे० 'शंकर'।

संकर-घरनी*—स्त्री० = पार्वती।

संकरता—स्त्री० [सं०] १. संकर या मिले-जुले होने की दशा या भाव। २. दो भिन्न-भिन्न वर्गों के संयोग से उत्पन्न होने की दशा या भाव। दोगलापन।

संकर समास—पुं० [सं०] दो ऐसे शब्दों का समास जिनमें से एक शब्द किसी एक भाषा का और दूसरा किसी दूसरी भाषा का हो। जैसे—अछूतोद्धार में हिन्दी के 'अछूत' शब्द का संस्कृत के 'उद्धार' शब्द से समास हुआ है। (ऐसे समास अच्छे नहीं समझे जाते)

सँकरा—वि० [सं० संकीर्ण] [स्त्री० सँकरी] पतला और कम चौड़ा। तंग।
*स्त्री० दे० 'साँकल'।

सँकराना*—अ०, स० [हिं० सँकरा] सँकरा या संकुचित होना या करना।

संकर्षण—पुं० [सं०] [वि० संकृष्ट] खींचना। २. हल जोतना। ३. कृष्ण भाई बलराम जिनका आयुध हल था। कानून में अधिकार या उत्तरदायित्व आ के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति स्थान पर दूसरी वस्तु या व्यक्ति का र या नाम चढ़ाया जाना। (सब्रोगेशन)

संकलन—पुं० [सं०] [वि० संकलित १. संग्रह या जमा करना। २. संग्रह। गणित में योग नाम की क्रिया। जोड़। अनेक ग्रन्थों या स्थानों से अच्छे-अ विषय या बातें चुनने की क्रिया। ५. प्रकार चुनकर तैयार किया हुआ ग्रन्थ, सं या और कोई चीज (कम्पाइलेशन)।

संकलप—पुं० = संकल्प।

संकलपना*—स० [सं० संकल्प] सं का मंत्र पढ़कर धार्मिक कार्य या कोई दान करने का निश्चय करना।
अ० १. संकल्प या विचार करना। दृढ़ निश्चय करना।

संकला—स्त्री० दे० 'साँकल'।

संकलित—वि० [सं०] १. चुना हुआ २. इकट्ठा किया हुआ। संग्रही (कम्पाइल्ड) ३. जो थोड़ा थोड़ा क बढ़ा या इकट्ठा होकर एक हो गया (एग्रिगेट)

संकल्प—पुं० [सं०] [वि० संकल्पि १. कोई कार्य करने का दृढ़ विचार। प इरादा। २. देव-कार्य्य या दान आदि कर के समय विशिष्ट मंत्र पढ़ते हुए उसका निश्चय करना। ३. इस प्रकार पढ़ा जा वाला मंत्र। ४. सभा-समिति आदि किसी विषय में विचारपूर्वक किया हु पक्का निश्चय। मंतव्य। (रिजोल्यूशन)

संकल्पित—वि० [सं०] जिसका संकल्प किय गया हो। संकल्प के रूप में लाया हुआ।

सँकाना*—अ०, स० = डरना या डराना।

संकेत।
हिं० संकेत] संकेत करना।
०] १. सदृश। समान।
। समीप।
०] [भाव संकीर्णता]
सँकरा। २. संकुचित।
' का विरुद्धार्थक। जैसे-
। ४. क्षुद्र। ५. छोटा।
रागों के मेल से बना
राग।
=कीर्त्तन।
कु।
=संकोच।
[सं०] १. जिसे संकोच हो।
। २. सिकुड़ा हुआ। ३.
। ४. जो औरों के अच्छे विचार
'उदार' का विरुद्धार्थक।
०] [वि० संकुलित, भाव०
। तंग। २. भरा हुआ।
मिला हुआ। युक्त।
लड़ाई। २. समूह। झुंड।
परस्पर विरोधी वाक्य।
[सं०] १. सिकोड़ा या
। २. भरा हुआ। ३.
सं० संकष्ट] संकट या कठिनता
] [वि० संकेतित, साँकेतिक]
करनेवाली कोई शारी-
त। इशारा। २. साहित्य
और मुख्य अर्थ जो
निकलता है। 'बिंब का
कोई ऐसी बँधी हुई
जो किसी विशेष और
की सूचक हो। चिह्न।
किसी घटना, कथा आदि
उल्लेख या चर्चा जो उस
उसके प्रसंग की सूचक

हो। (एल्यूजन) ५. वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलते हैं। ६. एकांत स्थान।

संकेत-ग्रह—पुं० [सं०] कोई शब्द सुनकर, उसका अभिधा शक्ति से निकलनेवाला पहला और मुख्य अर्थ ग्रहण करना। 'बिंब ग्रहण' का विरुद्धार्थक।

संकेत-चित्र—पुं० [सं०] वह चित्र जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति आदि के स्थान पर उसका कोई प्रतीक अंकित हो।

संकेत-चिह्न—पुं० [सं०] वाक्य, पद, नाम, आदि के सूचक वे चिह्न जो संकेत के रूप में होते हैं। जैसे—मध्य प्रदेश का म० प्र०। (एब्रीवियेशन)

संकेतना*—स० [सं० संकीर्ण] संकट या कष्ट में डालना।

संकेत-लिपि—स्त्री० [सं०] किसी लिपि के अक्षरों के छोटे और संक्षिप्त संकेत या चिह्न बनाकर तैयार की हुई वह लेख-प्रणाली जिससे कथन या भाषण बहुत जल्दी लिखे जाते हैं (शार्टहैन्ड)

संकेत-विघट्टना—स्त्री० [सं०] साहित्य में वह अनशयाना नायिका जो अपने अभिसार का संकेत-स्थल नष्ट हो जाने के कारण दुःखी होती और पछताती है।

संकेत संग्रह—पुं० दे० 'संकेत-ग्रह'।

संकेतित—वि० [सं०] जिसके सम्बन्ध में सकेत किया जाय। संकेत का आधार या विषय। जैसे—आपका संकेतित भाव मैं समझ गया।

सँकेलना—स० दे० 'सकेलना'। उदा०—प्रथम कुगति कर कपट सँकेला।—तुलसी।

संकोच—पुं० [सं०] १. सिकुड़ने की क्रिया या भाव। २. हल्की या थोड़ी लज्जा या शर्म। ३. आगा-पीछा। हिचक। ४. एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के बहुत अधिक संकोच का वर्णन होता है।

संकोचन—पुं० [सं०] संकुचित होने की क्रिया या भाव। सिकुड़ना।

संकोचित–पुं० [सं०] तलवार चलाने का एक प्रकार। वि० = संकुचित।

संकोची–पुं० [सं० संकोचिन्] १. सिकुड़नेवाला। २. संकोच करनेवाला।

संकोपना–अ० दे० 'कोपना'।

संक्रमण–पुं० [सं० संक्रमित] १. जाना या चलना। २. एक अवस्था से धीरे-धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचना। (ट्रांजीशन) ३. एक के हाथ या अधिकार से दूसरे के हाथ या अधिकार में जाना। (पासिंग)

संक्रमण-काल–पुं० [सं०] १. वह समय जब कोई चीज पहले रूप से बदलकर दूसरे रूप में आ रही हो। २. दे० 'संक्रान्ति'।

संक्रमिक–वि० [सं०] जिसका संक्रमण हुआ हो। जो अंतरित या हस्तांतरित किया गया हो। (ट्रांसफर्ड)

संक्रांति–स्त्री० [सं०] १. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना। २. ठीक वह समय जब सूर्य एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करता है। (हिन्दुओं का पर्व)

संक्रामक–वि० [सं०] (रोग) जो संसर्ग या छूत से फैलता हो। (कन्टेजस्)

संक्रामण–पुं० [सं०] [वि० संक्रामित] १. संक्रमण कराने की क्रिया या भाव। २. एक विभाग से दूसरे विभाग में या एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी के पास विचार, कार्रवाई आदि के लिए भेजना। (ट्रांसफरेन्स) जैसे–वाद या व्यवहार का एक न्यायालय से दूसरे न्यायालय में संक्रामण।

संक्रामित–वि० [सं०] जिसका संक्रामण हुआ हो। (ट्रांसफर्ड)

संक्रामी–वि० = संक्रामक।

संक्राम्य–वि० [सं०] जिसका संक्रामण होने को हो या हो सकता हो। (ट्रान्सफरेबुल)

संक्रोन*–स्त्री० = संक्रान्ति।

संक्षमण–पुं० [सं०] किसी दोष अपराध के लिए किसी को जान-बूझ और उसके दोष या अपराध पर ध्या देते हुए क्षमा कर देना। (कन्डोन)

संक्षिप्त–वि० [सं०] (लेख, आदि) जो संक्षेप में लिखा या कहा हो। खुलासा। (एब्रिज्ड)

संक्षिप्त आलेख–पुं० [सं०] बड़े वक्तव्य आदि का तैयार किया हुआ सं रूप। (एब्रिवियेचर)

संक्षिप्तीकरण–पुं० [सं० संक्षिप्त + कृ किसी विषय, कथन आदि को संक्षिप्त की क्रिया या भाव।

संक्षेप–पुं० [सं०] १. थोड़े में कोई कहना। २. बहुत सी बातों को दिया वाला छोटा रूप। सार।

संक्षेपक–वि० [सं०] किसी को सं रूप देने या संक्षेप करनेवाला।

संक्षेपण–पुं० [सं०] संक्षिप्त रूप करना। (एब्रिजमेन्ट)

संक्षेपतः–अव्य० [सं०] संक्षेप थोड़े में।

संख–पुं० = शंख।

संखिया–पुं० [सं० शृंगिका] एक सफेद उपधातु जो बहुत उत्कट विष है

संख्यक–वि० [सं०] संख्यावाला। सं युक्त। जैसे–बहु०-संख्यक। अल्प-सं

संख्या–स्त्री० [सं०] १. एक, दो, आदि गिनती। तादाद। २. गिनत विचार से किसी वस्तु का परिमाण ब वाला अंक। अदद। ३. सामयिक प अंक। (नम्बर, सभी अर्थों के लिये)

संख्याता–पुं० [सं० संख्या से संख्या वह जो संख्यान का काम करता या हि किताब आदि लिखता हो। लेखा (एकाउन्टेन्ट)

संख्यान–पुं० [सं०] आय-व्यय या

हुआ हिसाब। (एकाउन्ट)
= संख्याता।
पुं० [सं०] आय-व्यय या
हिसाब लिखने का काम।
)
] [वि० संगी] १.
। २. साथ रहना।
। ३. सांसारिक विषयों
आसक्ति।
। सहित।
][वि० संगी, संगिन] पत्थर।
= संघटन।
= संघटित।
[सं०] १. जो किसी वर्ग,
होने के कारण उसके साथ
या लगाया जा सकता हो।
) १. पूर्वापर या आसपास
विचार से अथवा और किसी
बैठने या मेल खानेवाला।
या रिलेवेन्ट)
] १. संग रहना। साथ।
उदासी या निरमले साधुओं
। ३. संबंध। संसर्ग। ४.
आदि के द्वारा किसी कला-
पानेवाला साथ। (अकम्प-
-गवैये के साथ तबला, सारंगी,
उसकी संगत करना कह-

[फा० संगतरः] एक प्रकार
। संतरा।
[फा०] [भाव० संग
काटने या गढ़नेवाला

[सं०] १. संगत होने की
। (कम्पैटिबिलिटी) २.
। मेल। मिलाप। ३.
४. सम्बन्ध। ५. आगे-पीछे
वाक्यों आदि का अर्थ के विचार से या कार्यों आदि का पूर्वापर के विचार से ठीक बैठना या मेल खाना। (कन्सिस्टेन्सी) ६. सभा। समाज।

संगतिया—पुं० [हिं० संगत] १. साथी। २. गवैये के साथ बाजा बजानेवाला।

संगती—पुं० दे० 'संगतिया'।

संग-दिल—वि० [फा०] [भाव० संगदिली] कठोर-हृदय।

संगम—पुं० [सं०] १. मिलाप। सम्मेलन। मेल। २. दो नदियों के मिलने का स्थान। ३. दो या अधिक वस्तुओं के एक जगह मिलने का भाव। ४. वर्तमान काल की सब बातों का ज्ञान। उदा०—आगम-संगम निगम मति, ऐसे मंत्र विचारि।—केशव।

संग-मरमर—पुं० [फा० संग + अ० मर्मर] एक प्रकार का बहुत चमकीला, मुलायम, बढ़िया, सफेद पत्थर।

संग-मूसा—पुं० [फा०] संग-मरमर की तरह का काला चिकना पत्थर।

संगर—पुं० [सं०] १. युद्ध। संग्राम। २. विपत्ति। ३. नियम।

पुं० [फा०] १. सेना की रक्षा के लिए बनी हुई चारो ओर की खाई या धुस। २. मोरचा।

सँगाती—पुं० [हिं० संग] साथी। संगी।

संगिनी—स्त्री० [हिं० 'संगी' का स्त्री० रूप] संग या साथ रहनेवाली स्त्री। सखी। सहेली। सहचरी।

संगी—पुं० [हिं० संग + ई (प्रत्य०)] [स्त्री० संगिनी, संगिनी] १. संग रहनेवाला। साथी। २. मित्र। बन्धु। दोस्त।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रेशम का कपड़ा।

वि० [फा० संग = पत्थर] पत्थर का। संगीन।

संगीत—पुं० [सं०] लय, ताल, स्वर आदि के नियमों के अनुसार किसी पद्य का आकर्षक और मनोरंजक रूप से विशेष प्रकार के उतार-चढ़ाव के विचार से होनेवाला वह उच्चारण, जिसके साथ कभी-कभी नृत्य और प्रायः वाद्य भी होता है। गाना।

(म्यूजिक)

संगीतज्ञ–पुं० [सं०] वह जो संगीतविद्या में निपुण हो। गवैया।

संगीत शास्त्र–पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें संगीत विद्या का विवेचन रहता है।

संगीन–पुं० [फा०] [भाव० संगीनी] वह बरछी जो बंदूक के सिरे पर लगी रहती है।

वि० १. पत्थर का बना हुआ। २. मोटा या भारी। ३. विकट। भीषण। जैसे–संगीन जुर्म = बहुत बड़ा अपराध।

संगृहीत–वि० [सं०] संग्रह या एकत्र किया हुआ। संकलित।

संगोपन–पुं० [सं०] औरों से गुप्त रखना। प्रकट न होने देना। छिपाना।

संग्या*–स्त्री० = संज्ञा।

संग्रह–पुं० [सं०] १. एकत्र या इकट्ठा करना। संचय। २. वह पुस्तक जिसमें अनेक विषयों की बातें इकट्ठी की गई हों। ३. एक जगह इकट्ठी करके रखी हुई बहुत चीजें। (कलेक्शन) ४. ग्रहण करना।

संग्रहणी–स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें पतले दस्त आते हैं।

संग्रहणीय–वि० दे० 'संग्राह्य'।

संग्रहना*–स० [सं० संग्रहण] संग्रह या इकट्ठा करना। जमा करना।

संग्रहाध्यक्ष–पुं० [सं०] वह जो किसी संग्रह या संग्रहालय का अध्यक्ष या व्यवस्थापक हो। (क्यूरेटर)

संग्रहालय–पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ एक ही अथवा अनेक प्रकार की बहुत सी चीजों का संग्रह हो। (म्यूजियम)

संग्रही–वि० दे० 'संग्राहक'।

संग्राम–पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

संग्राहक–पुं० [सं०] संग्रह करनेवाला। संग्रह-कर्त्ता।

संग्राह्य–वि० [सं०] संग्रह करने योग्य।

संघ–पुं० [सं०] १. समूह। समुदाय। २. संघटित समाज। (सभा, समिति आदि (एसोसिएशन) ३. प्राचीन बौद्ध भिक्षु आदि का धार्मिक समाज अथवा नि स्थान। ४. वह सभा या समाज जिसे का के अनुसार एक व्यक्ति के रूप में कार्य का अधिकार हो। (कॉरपोरेशन) प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्र राज्य। ६. आज-कल ऐसे राज्यों का जो अपने क्षेत्र में बहुत कुछ स्वतंत्र पर कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए केन्द्रिय शासन के अधीन हों और राष्ट्रों के साथ एक ही नीति के अ व्यवहार करते हों (फेडरेशन)

संघट–पुं० [सं०] १. समूह। राशि ढेर। २. युद्ध। लड़ाई। ३. मुठ-भे ४. मिलन। संयोग। उदा०–सब मिलि मंजु बध्यौ इमि समौ सुहायौ रत्ना०। ५. दे० 'संघटन'।

संघटन–पुं० [सं०] १. मेल। संयो २. नायक और नायिका का मिलाप। रचना बनावट। ४. बिखरी हुई श को एक में मिलाकर उन्हें किसी का लिए तैयार करना। ५. इस उद्देश्य से ब हुई संस्था (आरगेनाइजेशन)

संघटित–त्रि० [सं०] जिसका सं हुआ हो। (ऑर्गनाइज्ड, कॉंस्टीट्यूटे

संघट्ट न)–पुं० [सं०] १. मिल मिलाप। २. कुछ वस्तुओं या व्यक्तियों एक जगह आकर मिलना। जमघट। साहित्य में नायक और नायिका का मिलन जो दूती की सहायता से होता ४. बनावट। रचना। ५. दे० 'संघटन'

संघति–स्त्री० [सं०] दो अथवा अधि दलों, संस्थाओं, राज्यों आदि का मिल इस प्रकार एक हो जाना कि एक द संस्था या राज्य के रूप में काम करें।

संघती–पुं० दे० 'संघाती'।

संघपति–पुं० [सं०] किसी प्रकार के सं

जैसे–बौद्ध संघ या
क।
ति।
संघार'।
[सं० संहार] संहार या

[सं०] १. रगड़ खाना।
होड़। ३. एक चीज की
साथ होनेवाली रगड़।
४. दोनों दलों में होनेवाला
दोनों एक दूसरे को दबाने
है। (कानफ्लिक्ट) ५.
ीत परिस्थितियों से निकल
ने के लिये, होनेवाला प्रयत्न
(स्ट्रगल) जैसे–जीवन संघर्ष।

पुं० [सं०] संघाराम का
भिक्षु।
[सं०] [वि० संघातिक]
झुंड। २. कुछ लोगों का ऐसा
कर कोई काम करने के लिए
कोई काम करता हो। (बॉडी)
जगह। निवास-स्थान। ४.
। ५. गहरी या भारी चोट।
ना। वध।
[सं० संघ] १. साथ रहने-
। २. मित्र। दोस्त।
साम्राज्य–पुं०[सं०] प्राचीन
में वह साम्राज्य जिसके
एक-तन्त्र राज्य होते थे।
=संहार।
[सं० संहार] १. संहार
। २. मार डालना।
[सं०] प्राचीन काल के वे
बौद्ध साधु या भिक्षु रहते थे।
[सं० संचय] १. संचय। २.

[सं० संचय] संचय या इकट्ठा

संचकर*–वि० [सं० संचय + कर] १. सञ्चय या इकट्ठा करनेवाला। २. कंजूस।

संचना*–स० [सं० संचय] संचित या इकट्ठा करना। जमा करना। उदा०–सतगुरु कह्यौ, कहौं तोसौं हौं, राम-रतन धन सँचिबौ।—सूर।

संचय–पुं० [सं०] [वि० संचयी] १. समूह। ढेर। २. एकत्र या सग्रह करना। जमा करना।

संचरण–पुं० = संचार।

संचरना*–अ० [सं० संचरण] १. चलना या घूमना-फिरना। २. फैलना। ३. प्रचलित होना।

स० दे० 'संचारना'।

संचरित–वि० [सं०] जिसमें या जिसका सचार हुआ हो।

संचान–पुं० [सं०] बाज। (पक्षी)

संचार–पुं० [सं०] [कर्त्ता संचारक, वि० संचारित] १. गमन। चलना। २. फैलना, विशेषतः किसी के अन्दर फैलना।

संचारक–वि० [सं०] [स्त्री० संचारिका, संचारिणी] संचार करने या फैलानेवाला।

संचारना*–स० [सं० संचारण] १. संचार करना। फैलाना। २. प्रचार करना। ३. जन्म देना। ४. चलाना (अस्त्र आदि)।

संचारिका–स्त्री० [सं०] कुटनी। दूती। वि० संचार करनेवाली, संचारिणी।

संचारी–पुं० [सं० संचारिन्] १. संगीत में स्थाई या पहला पद, एक बार साधारण रूप से कह चुकने के बाद वही पद या उसका कुछ अंश अधिक ऊँचे स्वरों में तथा कुछ दूसरे प्रकार कहने की क्रिया या भाव। उछाल। २. दे० 'संचारी भाव'। वि० [स्त्री० संचारिणी] संचरण या संचार करनेवाला।

संचारी भाव–पुं० [सं०] साहित्य में मुख्य और स्थायी भावों से भिन्न वे गौण और अ-स्थायी भाव या मानसिक विकार

जो कुछ विशेष अवसरों पर उत्पन्न होकर उनकी पुष्टि करते और अन्त में अपना काम कर चुकने पर नष्ट या विलीन हो जाते हैं। ये किसी एक ही भाव से सम्बद्ध नहीं रहते, बल्कि अनेक भावों से सम्बद्ध होते हैं। इसी लिए इन्हें 'व्यभिचारी' भी कहते हैं। साहित्यकारों ने इसके ये ३३ भेद कहे हैं—अपस्मार, अमर्ष, असलता, अवहित्था, अनसूया, आवेग, उग्रता, उन्माद, औत्सुक्य, गर्व, ग्लानि, चपलता, चिंता, जड़ता, दैन्य, धृति, निद्रा, निर्वेद, मति, मद, मरण, मोह, लज्जा, वितर्क, विबोध, विषाद, व्याधि, शंका, श्रम, संत्रास, स्मृति, स्वप्न और हर्ष।

संचालक–पुं० [सं०] [स्त्री० संचालिका, संचालिनी] १. चलाने या गति देनेवाला। परिचालक। २. काल या कार्यालय आदि का काम चलानेवाला। ३. अपने निरीक्षण में किसी बहुत बड़े कार्य या विभाग के सब काम कराने या चलानेवाला। (डाइरेक्टर)

संचालन–पुं० [सं०] [वि० संचालित, कर्त्ता संचालक] १. गति देना। चलाना। २. ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था करना जिसमें कोई काम चलता या होता रहे। (कन्डक्शन)

संचालित–वि० [सं०] जिसका संचालन किया गया हो या किया जा रहा हो। चलाया हुआ।

संचिका–स्त्री० [सं० संचय] वह नत्थी जिसमें पत्र, कागज आदि इकठे करके रखे जाते हैं। नत्थी। (फाइल)

संचित–वि० [सं०] १. इकठा या जमा किया हुआ। २. संचिका या नत्थी में लगाया हुआ। (फाइल्ड)

संचु*–पुं० [?] १. आनन्द। प्रसन्नता। २. सुख। आराम।

संजम*–पुं० = संयम।

संजय–पुं० [सं०] धृतराष्ट्र का एक मन्त्री जो उन्हें महाभारत के युद्ध का विवरण सुनाता था।

संजात–वि० [सं०] उत्पन्न। जैसे–चा संजात = हनुमान।

संजाफ–स्त्री० [फा०] कपड़े पर टँ हुई झालर। गोट। मगजी।

संजाफी–पुं० [फा०] रंग के विचार से प्रकार का घोड़ा। (आधा लाल और आ हरा या सफेद)

संजीवन–वि० [सं०] जीवन शक्ति उ करने या देनेवाला।

पुं० १. बहुत अच्छी तरह जीवन बिता २. बहुत अच्छी तरह बिताया जाने जीवन। सद्‌जीवन।

संजीवनी–वि० [सं०] जीवन देनेवा स्त्री० मरे हुए मनुष्यों को जीवित वाला एक कल्पित ओषधि या विद्या।

संजीवनी मंत्र–पुं० [सं०] एक प्र का कल्पित मंत्र जिसके प्रयोग से मृत प्र का जी उठना माना जाता है।

संजीवनी विद्या–स्त्री० [सं०] मरे व्यक्ति को जिलाने की विद्या।

संजुक्त*–वि० = संयुक्त।

संजुग*–पुं० = संग्राम। (युद्ध)

सँजोइ*–क्रि० वि० [सं० संयोग] साथ

सँजोइल*–वि० [हिं० सँजोना] अच्छी तरह सजा हुआ। २. जमा हुआ। एकत्र।

सँजोऊ*–पुं० [ह० सजाना] १. तै उपक्रम। २. सामग्री। सामान।

संजोग–पुं० = संयोग।

सँजोना–स० [सं० सज्जा] अलंकृत क सजाना।

स० [सं० संचय] इकट्ठा या जमा क

सँजोया–पुं० [हिं० सँजोना = सजा लड़ाई के समय पहना जानेवाला कवच

सँजोवना–स० = सजाना।

सँजोवस*–वि० [हिं० सँजोना] सजा हुआ। २. सेना सहित। ३. सावध

] १. प्राणियों के शारी-
शक्ति जिससे उन्हें बाह्य
और अपने शरीर या मन
नुभूति होती है। चेतना-
) २. बुद्धि। ३. ज्ञान।
व्याकरण में वह विकारी
वास्तविक या कल्पित वस्तु
है। जैसे—राम, पर्वत,
। (नाउन)
[सं०] बौद्ध शास्त्रों के
वस्था जिसमें यह ज्ञान हो
भी नहीं है और असंज्ञा
चित सदा समाहित रहता

[सं०] [भाव० संज्ञा-
। बेसुध।
[सं० संध्या] संध्या का।
झला' का अनु०] मँझला
छोटे से बड़ा। मँझले और
।
[सं० संध्या + बत्ती]
जलाया जानेवाला दीया।
ऐसे समय गाया जाता है।
= संध्या (समय)।
[सं० संध्या] संध्या का
।
[हिं० संडा + मुसंड
हट्टा-कट्टा। मोटा-ताजा।
[सं० संदंश] १. तंग
में पड़कर फँसना। २. संकट

संदंश] [स्त्री० अल्पा०
किसी चीज के पकड़ने
प्रकार का चिमटा या

ड] हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा।
डा = बहुत हृष्ट-पुष्ट।
)

संड़ासी—स्त्री० = संड़सी।

सँडास—पुं० [?] एक प्रकार का पाखाना जो जमीन में गहरा गड्ढा खोदकर बनाया जाता है। शौच-कूप।

संत—पुं० [सं० सत्] १. साधु, संन्यासी या महात्मा। २. ईश्वर भक्त।

संतत—अव्य० [सं०] १. लगातार। निरंतर। बराबर। २. सदा। हमेशा।

संतति—स्त्री० [सं०] बाल-बच्चे। संतान। औलाद।

संतप्त—वि० [सं०] [स्त्री० संतप्ता] १. अच्छी तरह या खूब तपा हुआ। २. जिसके मन को बहुत दुःख पहुँचा हो। परम दुःखी।

संतरण—पुं० [सं०] अच्छी तरह तैरना या तैर कर पार होना।
वि० पार उतारने या तारनेवाला।

संतरा—पुं० [पुर्त० संगतरा] एक प्रकार का मीठा नीबू।

संतरी—पुं० [अं० सन्टरी] पहरेदार।

संतान—उभय० [सं०] [वि० संतानवान, संतानवती] किसी के लड़के लड़कियाँ या बाल-बच्चे। संतति। औलाद।

संतान-निग्रह—पुं० दे० 'संतान निरोध'।

संतान-निरोध—पुं० [सं०] बढ़ती हुई आबादी रोकने तथा उसके दुश्परिणामों से बचने के लिए इन्द्रिय-निग्रह अथवा कृत्रिम उपायों से संतान न उत्पन्न करने का सिद्धांत या प्रक्रिया। (बर्थ कन्ट्रोल)

संताप—पुं० [सं०] १. ताप। जलन। आँच। २. मानसिक कष्ट या दुःख।

संतापन—पुं० [सं०] १. संताप देने या संतप्त करने की क्रिया या भाव। २. कामदेव के पाँच बाणों में से एक जो विरही को संतप्त करता है।

संतापना*—स० [सं० संताप] संताप या कष्ट देना।

संतापित*—वि० = संतप्त।

संतुलन—पुं० [सं०] १. आपेक्षिक तौल

या भार बराबर और ठीक करना या होना। २. दो पक्षों का बल बराबर रखना या होना।

संतुष्ट–वि॰ [सं॰] १. जिसका संतोष हो गया हो। (सैटिस्फ़ाइड) २. तृप्ति।

संतुष्टीकरण–पुं॰ [सं॰] किसी को संतुष्ट करने की क्रिया या भाव। (एपीजमेन्ट)

संतोष–पुं॰ [सं॰] [वि॰ संतुष्ट] १. सदा प्रसन्न रहना और किसी बात की कामना न करना। सब्र। २. जी भर जाना। तृप्ति। ३. किसी बात की चिंता, अपेक्षा या शिकायत न रह जाना। किसी बात से पूरा प्रसन्न होना। (सैटिस्फैक्शन)

संतोषना*–स॰ [सं॰ संतोष] संतोष कराना। संतुष्ट करना।
अ॰ संतुष्ट होना।

संतोषित*–वि॰ = संतुष्ट।

संतोषी–पुं॰ [सं॰ संतोषिन्] वह जो सदा संतोष रखता हो।

संत्रस्त–वि॰ [सं॰ त्रस्त] १. डरा हुआ। भयभीत। २. घबराया हुआ। व्याकुल। ३. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित।

संत्रास–पुं॰ [सं॰] वि॰ संत्रस्त] १. डर। भय। २. किसी प्रकार के अहित की आशंका से मन में उत्पन्न होनेवाली चिन्ता या भय जो साहित्य में एक संचारी भाव माना गया है। (इसी को त्रास भी कहा गया है।)

संथा–स्त्री॰ [सं॰ संहिता ?] एक बार में पढ़ा या पढ़ाया हुआ पाठ।

संदंश–पुं॰ [सं॰] १. सँड़सी। २. चिमटी। ३. एक विशेष प्रकार की चिमटी जो चीर-फाड़ करते समय नसों आदि को पकड़ने के काम आती है।

संदर्भ–पुं॰ [सं॰] १. रचना। २. निबंध। लेख। ३. पुस्तक-लेख आदि में वर्णित विषय, प्रसंग, चर्चा आदि जिसका विचार या उल्लेख हो। (कन्टेक्स्ट) ४. वह पुस्तक जिसमें किसी दूसरी पुस्तक में आई हुई किसी गूढ़ बात का स्पष्टीकरण (रेफ़रेन्स बुक)

संदर्शन–पुं॰ [सं॰] अच्छी तरह देखना

संदल–पुं॰ [फ़ा॰] चंदन।

संदली–पुं॰ [फ़ा॰ संदल] १. एक प्र का हलका, पीला रंग। २. एक प्रकार हाथी। ३. एक प्रकार का घोड़ा।
वि॰ संदल या चंदन का।

संदिग्ध–वि॰ [सं॰] [भाव॰ संदिग्ध १. जिसमें संदेह हो। संदेहपूर्ण। (गुवस) २. जिस पर संदेह हो। (सस्पे

संदिग्धत्ता–पुं॰ [सं॰] १. संदिग्ध की अवस्था या भाव। २. साहित्य में प्रकार का दोष जो उस समय माना जब किसी कथन का अर्थ स्पष्ट नहीं हो और वह संदेह उत्पन्न करता है।

संदग्धित्व–पुं॰ = संदिग्धत्ता।

संदीपन–पुं॰ [वि॰ संदीप्त] दे॰ 'उद्दीप

संदूक–पुं॰ [अ॰] [अल्पा॰ संदुकची लकड़ी या धातु की चौकोर पेटी। बक्स

संदूकड़ी–स्त्री॰ [अं॰ संदूक] छोटा सं

संदेश–पुं॰ [सं॰] १. समाचार। ह २. किसी के उद्देश्य से कही या क हुई कोई महत्त्वपूर्ण बात। (मेसेज एक प्रकार की बंगला मिठाई।

सँदेसहर–पुं॰ [संदेस + हर (प्रत्य संदेश ले जानेवाला। दूत।

सँदेसा–पुं॰ [हिं॰ संदेश] जबानी क हुआ समाचार।

सँदेसी–पुं॰ [हिं॰ सँदेसा] सँदेसा ले वाला। दूत।

संदेह–पुं॰ [सं॰] १. किसी विषय में धारणा कि यह ऐसा है या नहीं। नि का अभाव। संशय। शका। श (डाउट) २. साहित्य में एक अलं जिसमें किसी उपमेय के अनेक उपम दिखाई देने पर भी यह निश्चय न किया जाता कि वास्तव में यह कौन

इस प्रकार उपमानों के
या संदेह बना रहता है।
ओं में 'किधौं' या 'कीधौं'
द होता है।) जैसे—यह
ता?
[सं०] जिसमें या जिसके
। संदिग्ध।
= संदेहात्मक।
सं०] १. दूध दोहना। २.
समूचा मान या रूप। ३.
४. ढेर। राशि।
[सं० संधि] संयुक्त होना।
दे० 'प्रचार'।
सं०] १. निशाना लगाने
पर तीर ठीक तरह से
वैठाना। २. ढूँढ़ने या
काम। ३. युक्त करना।
लेखे, खाते आदि में लेन-
ठीक या पूरा करना।
। (ऐडजस्टमेन्ट) ५.
ठीक तरह से और उप-
करना, जो सहज में ठीक
हो। मेल मिलाना या
जस्टमेन्ट) ६. दो चीजों
। ७. किसी का किसी
ओर मिलना। (एला-
चीज को सड़ाकर उसमें
। (फर्मेन्टेशन) ९.
चार।
[सं० संधान] १. निशाना
ना।
'अचार'।
] १. मेल। संयोग।
पदार्थों के मिलने की
राज्यों आदि में होने-
कि अब हम आपस में
मित्रतापूर्वक रहेंगे, अथवा
प्रकार से व्यवहार करेंगे। सुलह। (ट्रीटी) ४. व्याकरण में दो शब्दों के साथ-साथ आने पर उनके मिलने के कारण उनके कुछ अक्षरों में विशेष प्रकार का होनेवाला परिवर्त्तन। ५. चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ६. एक अवस्था की समाप्ति और दूसरी अवस्था के आरंभ का समय या स्थिति। ७. दो चीजों के बीच की थोड़ी सी खाली जगह। अवकाश। ८. भेद। रहस्य।

संधि-विच्छेद—पुं० [सं०] १. आपस की संधि या समझौता तोड़ना या टूटना। २. व्याकरण में किसी पद को संधि के स्थान से तोड़कर उसके शब्द अलग-अलग करना। जैसे—'मतैक्य' का संधि-विच्छेद होगा—मत + ऐक्य।

संध्या—स्त्री० [सं०] १. वह समय जब दिन का अन्त और रात का आरंभ होने को होता है। सायंकाल। शाम। २. आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो सवेरे, दोपहर और संध्या को होती है।

संनिवेश—पुं० = सन्निवेश।

संन्यस्त—वि० [सं० संन्यास] १. जिसने संन्यास लिया हो। २ पूरी तरह से किसी काम में लगा हुआ। निरत।

संन्यास—पुं० [सं०] १. हिन्दुओं के चार आश्रमों में से अंतिम, जिसमें त्यागी और विरक्त होकर सब कार्य निष्काम भाव से किये जाते हैं। २. किसी निश्चित क्षेत्र या सीमा के अन्दर ही रहने अथवा कोई काम करने या उस क्षेत्र या सीमा से बाहर न निकलने की प्रतिज्ञा या व्रत। जैसे—गृह-संन्यास, क्षेत्र-संन्यास। (देखें) ३. अपने विधिक या कानूनी अधिकारों का स्वेच्छा-पूर्वक त्याग। (सिविल सुइसाइड)

संन्यासी—पुं० [सं० संन्यासिन्] संन्यास आश्रम में रहनेवाला।

संपजना*—अ० [सं० सम + उपजाना]

१. उपजना। पैदा होना। उगना। २. प्रकाशित होना।

संपत(ती)*–स्त्री० = संपत्ति।

संपत्ति–स्त्री० [सं०] १. धन-दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार में हो और जो खरीदी और बेची जा सकती हो। जायदाद। (प्रापर्टी, एफेक्टस्) २. ऐश्वर्य। वैभव।

संपत्ति-कर–पुं० [सं०] वह कर जो किसी पर उसकी संपत्ति या जायदाद के विचार से लगाया जाता है। (प्रॉपर्टीटैक्स)

संपद्–स्त्री० [सं०] १. वैभव। ऐश्वर्य। २. सौभाग्य। ३. व्यापारिक मण्डली या संस्था की व्यापार में लगी हुई पूँजी। ४. किसी व्यक्ति का वह धन या पूँजी जो उसने किसी व्यापारिक संस्था में अपने हिस्से के रूप में लगाया हो। ५. इस प्रकार लगी हुई पूँजी का सूचक प्रमाण-पत्र। (स्टाक, अन्तिम तीनों अर्थों के लिए)

संपदा–स्त्री० [सं० संपद्] १. धन। दौलत। सम्पत्ति। (एस्टेट) २. ऐश्वर्य। वैभव।

संपन्न–वि० [सं०] [भाव० संपन्नता] १. पूरा किया हुआ। सिद्ध। २. सहित। युक्त। जैसे—गुण-संपन्न। ३. धनी। दौलतमंद।

संपरीक्षक-पुं० [सं०] संपरीक्षण करनेवाला। (स्क्रूटिनाइजर)

संपरीक्षण–पुं० [सं०] किसी कार्य्य, तथ्य, लेख आदि के सबंध में अच्छी तरह देखकर यह जाँचना कि वह ठीक और नियमानुसार है या नहीं। (स्क्रूटिनी)

संपर्क–पुं० [सं०] [वि० संयुक्त] १. लगाव। संबंध। वास्ता। २. स्पर्श।

संपर्कित–वि० दे० 'संपृक्त'।

संपात–पुं० [सं०] संगम। समागम। वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी से मिलती या उसे काटती हुई बढ़ती है।

संपादक–पुं० [सं०] [भाव० संपादकत्व] १. कार्य्य सम्पन्न या पूरा करनेवाला। किसी समाचार-पत्र या पुस्तक का आदि लगाकर और उसे सब प्रकार से करके प्रकाशित करनेवाला। (एडिटर)

संपादकीय–वि० [सं०] संपादक का पुं० सामयिक पत्रों में वह अंश जो संपादक का लिखा हो। (एडिटोरिय

संपादन–पुं० [सं०] [वि० संपादित, सं १. काम पूरा और ठीक तरह से क पालन। (डिस्चार्ज) २. पुस्तक या साम पत्र आदि का क्रम, पाठ आदि ठीक उसे प्रकाशित करना। (एडिटिंग)

संपाद्य–वि० [सं०] १. जिसका सं करना हो या होना हो। २. वह सिद्धान्त जिसे विचारपूर्वक ठीक सिद्ध की आवश्यकता हो। (प्राब्लेम)

संपुट–पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० सं १. पात्र के आकार की कोई वस्तु दोना। ३. डिब्बा। ४. अंजुली कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटकर बन्द हुआ वह बरतन जिसमें कोई रस या का भस्म तैयार करते हैं। (वैद्यक)

संपुटी–स्त्री० [सं० संपुट] कटोरी।

संपूर्ण–वि० [सं०] [भाव० संपू १. खूब भरा हुआ। २. सब। ३. समाप्त। खतम। पुं० स्वरों की संख्या के विचार रागिनियों की एक जाति या प्रकार। जिसमें सातों स्वर लगते हों।

संपूर्ण-ओड़व–पुं० [सं०] वह रा आरोही में संपूर्ण और अवरोही में हो। (संगीत)

संपूर्णतः–क्रि० वि० [सं०] पूरे त पूर्णरूप से।

संपूर्णतया–क्रि० वि० = संपूर्णतः।

संपूर्ण-षाड़व–पुं० [सं०] वह रा आरोही में संपूर्ण और अवरोही में हो। (संगीत)

[सं०] जिसका या जिससे
संबद्ध ।
[हिं० साँप] [स्त्री० सँपेरिन]
ा । मदारी ।
संपति । उदा०—सँपै देखि न
देखि न रोय ।—कबीर ।
[सं० सर्प-पोतलक, या हिं०
(प्रत्य०)] साँप का बहुत
।
पुं० = सँपोला ।
[सं०] [वि० संपोषित,
भाँति पोषण या पालन करना ।
[सं०] योग में समाधि की
जिसमें आत्मा को अपने स्वरूप
ज्ञान तो नहीं होता, पर योगी
बहुत कुछ पास तक पहुँच

[सं०] इस समय । अभी ।
[सं०] १. देनेवाला । २.
आदि देनेवाला ।
[सं०] १. दान देने की
। २. किसी की वस्तु उसे
के पास तक पहुँचाना ।
३. व्याकरण में वह कारक
'देना' क्रिया का लक्ष्य होता
'को' है ।
[सं०] [वि० सांप्रदायिक]
धार्मिक मत । (सेक्ट)
के अनुयायियों की मंडली ।
या सिद्धान्त के संबंध में
विचार या मत रखनेवाले
शाखा । (स्कूल)
पुं० दे० 'सांप्रदायिकता' ।
पुं० [सं०] [स्त्री० संप्र-
जो अपने संप्रदाय को
दूसरे संप्रदायों को हेय या
और उनसे घृणा या द्वेष
नलिष्ट)

संप्राप्त—वि० [सं०] [भाव० संप्राप्ति] १. आया या पहुँचा हुआ । उपस्थित । २. पाया हुआ । प्राप्त । ३. जो हुआ हो । घटित ।

संप्राप्ति—स्त्री० [सं०] संप्राप्त होने की अवस्था या भाव ।

संप्रेक्षक—पुं० [सं०] जो वह संप्रेक्षण करता हो । आय-व्यय या हिसाब-किताब आदि की जाँच करनेवाला । (ऑडिटर)

संप्रेक्षण—पुं० [सं०] आय-व्यय आदि का लेखा जाँचने का काम । (ऑडिटिंग)

संप्रेक्षा—स्त्री० दे० 'संप्रेक्षण' ।

संप्रेक्षित—वि० [सं०] (आय-व्यय का लेखा) जिसकी जाँच हो चुकी हो । (ऑडिटेड्)

संबंध—पुं० [सं०] १. एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना । २. लगाव । संपर्क । वास्ता । (कनेक्शन) ३. एक ही कुल में जन्म लेने अथवा दूसरे कुल में विवाह करने के कारण व्यक्तियों में होनेवाला पारस्परिक लगाव । नाता । रिश्ता । (रिलेशन, रिलेशनशिप) ४. विवाह अथवा उसका निश्चय । ५. दे० 'संबंध कारक' । ६. दो वस्तुओं में किसी प्रकार का लगाव या संपर्क बतलानेवाला तत्त्व । लगाव । रिलेशन ।

संबंध कारक—पुं० [सं०] व्याकरण में वह कारक जिसमें एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ संबंध सूचित होता है । (पजेसिव केस) जैसे—'आम का पेड़' में 'आम का' संबंध कारक है ।

संबंधवान्—पुं० [सं०] व्याकरण में संबंध कारक में रहनेवाला वह शब्द जिसका सम्बन्ध दूसरे शब्द के साथ दिखाया जाता है । जैसे—'राम का घर' में 'राम' सबंधवान् है ।

संबंधातिशयोक्ति—स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का वह भेद जिसमें किसी के साथ कोई संबंध न होने पर भी संबंध

किया जाता है।

संबंधित–वि० दे० 'संबद्ध'।

संबंधी–वि० [सं० संबंधिन्] १. जिसका या जिसके साथ संबंध या लगाव हो। २. विषयक। किसी विषय से लगा हुआ।

पुं० वह जिससे कुछ संबंध या नाता हो। रिश्तेदार। (रिलेटिव)

संबद्ध–वि० [सं०] १. जिससे संबंध हो या हुआ हो। २. बँधा या जुड़ा हुआ। ३. जिसका किसी के साथ संबंध लगा हो। संबंध-युक्त। (कनेक्टेड)

संबल–पुं० [सं०] १. रास्ते का भोजन। २. वह सामग्री, साधन आदि जिनके भरोसे कोई काम किया जाय। (रिसोरसेज) *३. सहारा।

संबुद्ध–वि० [सं०] १. जिसे बोध या ज्ञान हो गया हो। २. जिसका बोध या ज्ञान हुआ हो।

पुं० १. गौतमबुद्ध। २. जैनों के जिन देव।

संबुल–पुं० [अ० सुंबुल] बाल-छड़। जटामासी। (पाधा)

संबूर*–पुं० दे० 'समूर'।

संबोधन–पुं० [सं०] [वि० संबोधित, संबोध्य] १. जगाना। २. पुकारना। ३. किसी के उद्देश्य से कोई बात कहना। (एड्रेस) ४. समझाना-बुझाना। ५. सांत्वना या ढारस देना। ६. व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या उससे कुछ कहने के लिए प्रयोग सूचित होता है। (वोकेटिव केस) जैसे–हे राम !

संबोधना*–स० [सं० सम्बोधन] १. संबोधन करना। २. समझाना-बुझाना।

संबोधित–वि० [सं०] जिसे संबोधन किया जाय।

संभर*–पुं० दे० 'संभार'।

संभरण–पुं० [सं०] [वि० संभरित] भरण-पोषण आदि की व्यवस्था या सामग्री। (प्रॉविजन)

संभरण निधि–स्त्री० [सं०] वह नि जिसमें किसी, विशेषतः कार्यालय में क करनेवाले कर्मचारियों की वृद्धावस्था आ के समय भरण-पोषण आदि के लिए एकत्र किया जाय। (प्रॉविडेन्ट फंड)

सँभरना*–अ० = सँभलना।

सँभलना–अ० [हिं० भालना = देख १. किसी बोझ आदि का रोका या कर्त्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सक २. किसी आधार या सहारे पर रहना। ३. होशियार या सावधान हो ४. चोट या हानि से बचाव क ५. रोग से छूटकर स्वस्थता प्राप्त कर चंगा होना।

संभव–पुं० [सं० सम्भव] उत्पत्ति।

वि० १. उत्पन्न। (यौ० के अन्त जैसे–कर्म-संभव = कर्म से उत्पन्न।) २. हो सकता हो। हो सकने के यो मुमकिन। (पॉसिबुल)

संभवतः(तया)–अव्य० [सं०] हो स है। संभव या मुमकिन है। संभव है कि

संभवना*–स० [सं० सम्भव] उत्पन्न क अ० १. उत्पन्न होना। २. संभव होन

संभवनीय–वि० [सं०] संभव। मुमकि

सँभार*–पुं० [हिं० सँभालना] दे० 'सँभ

यौ०–सार-सँभार = पालन-पोषण देख-भाल।

संभार–पुं० [सं०] १. संचय। ए करना। २. वह स्थान जहाँ एक ही की बहुत सी वस्तुएँ इकट्ठी करके बिक्री के लिए रखी हों। भंडार। (स्टो ३. तैयारी। साज-सामान। ४. सजाव ५. धन-संपत्ति। ६. पालन-पोषण। देख-रेख। रखवाली। ८. प्रबन्ध। इन्तजा ९. होश-हवास। चेतना।

सँभारना*–स० = सँभालना।

स० [सं० स्मरण] १. स्मरण कर

सेवन करना।

[सं० सम्भार] १. रक्षा।
पोषण या देख-रेख आदि
दन की सुध।
[हिं० 'सँभलना' का स०]
लेना। २. रोककर वश
गिरने न देना। ४.
५. बुरी दशा में जाने से
पालन-पोषण या देख-रेख
ठीक तरह से किसी कार्य का
चलाना। ८. यह देखना
ठीक और पूरी है या नहीं।

[हिं० सँभाल] मरने के
तता-सी आना।
ला लेना = रोगी का मरने
थोड़ा सँभल या ठीक हो जाना।
[सं० सम्भावना] १.
किन होना। (पॉसिबिलिटी,
२. साहित्य में एक अलंकार
क बात के होने पर दूसरी के
का वर्णन होता है। जैसे—यदि
तो उत्सव की शोभा बढ़
अर्थ। क्रिया।
[सं०] जिसके होने की
जो कभी हो सकता हो।
बेबुल)
सम्भावित?] अपने सम्मान
वाला। स्वाभिमानी।
[सं० सम्भाव्य] जिसकी
जो बहुत करके हो सकता
(प्राबेबुल)
वि० [सं०] हो सकने
जिसकी आशा की जा सकती
। (लाइकली)
[सं०] [वि० संभाषित,
कथन। बात-चीत।
[सं० सम्भाष्य] जिससे
बात-चीत करना उचित या योग्य हो। बात-चीत करने योग्य।

संभीत—वि० [सं०] डरा हुआ। भयभीत।

संभूत—वि० [सं० सम्भूत] [भाव० सम्भूति] १. एक साथ उत्पन्न होनेवाले। २. उत्पन्न। पैदा। ३. युक्त। सहित।

संभूय-अव्य० [सं०] साझे में।

संभूय समुत्थान—पुं० [सं०] कुछ लोगों के साझे में होनेवाला रोजगार।

संभेद—पुं० [सं०] आपस में मिले हुए व्यक्तियों, पदार्थों, तत्त्वों आदि में होनेवाला वियोग, अलगाव या भेद। (क्लीवेज)

संभोग—पुं० [सं०] १. अच्छी तरह होनेवाला भोग, उपयोग या व्यवहार। २. स्त्री के साथ होनेवाला समागम या इन्द्रिय-सुख का भोग। काम-वासना की तृप्ति। रति-क्रीड़ा। मैथुन। ३. प्रेमी और प्रेमिका का संयोग या मिलाप। ४. भोग-विलास की वस्तुएँ या सामग्री।

संभ्रम—पुं० [सं० सम्भ्रम] १. दौड़-धूप। प्रयत्न। २. घबराहट। व्याकुलता। ३. मान। गौरव।

संभ्रांत—वि० [सं० सम्भ्रान्त] १. भ्रम में पड़ा या घबराया हुआ। २. सम्मानित। प्रतिष्ठित। (अशुद्ध प्रयोग)

संभ्राजना*—अ० [सं० संभ्राज्] अच्छी तरह सुशोभित होना।

संमत—वि० दे० 'सम्मत'।

संम्राज*—पुं० = साम्राज्य।

संयत—वि० [सं०] १. बँधा हुआ। बद्ध। २. किसी प्रकार की सीमा या मर्यादा के अन्दर रहने और उसका उल्लंघन न करनेवाला; अथवा उस सीमा के अन्दर रोककर रखा हुआ। औचित्य की सीमा के अन्दर रहनेवाला। मर्यादित। (मॉडरेट) ३. किसी के नियंत्रण या दबाव में पड़ा हुआ। दमन किया हुआ। ४. क्रम-बद्ध। व्यवस्थित। ५. वासनाओं और मन को वश में रखने-

वाला। निग्रही।

संयम–पुं [सं०] [वि० संयमी, संयमित, संयत] १. रोक। दाब। २. बन्धन। ३. मन की वासनाओं को अनुचित या बुरे मार्गों में जाने से रोकना। इंद्रिय-निग्रह। ४. हानिकारक या बुरी बातों या कार्य्यों से दूर रहना या बचना। परहेज। ५. औचित्य की सीमा के अन्दर होना या रहना। (मॉडरेशन) ६. बाँधना या बन्द करना। ७. योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।

संयमन–पुं० [सं०] संयम करने की क्रिया या भाव। रोकना (मन आदि)।

संयमित–वि० [सं०] १. जिसपर किसी प्रकार का संयम हो। २. संयम के द्वारा रोका हुआ।

संयमी–वि० [सं० संयमिन्] १. मन और वासनाओं को वश में रखनेवाला। संयम-पूर्वक रहनेवाला। आत्म-निग्रही। २. पथ्य से रहनेवाला।

संयुक्त–वि० [सं०] [भाव० संयुक्तता] १. जुड़ा, सटा या लगा हुआ। संबद्ध। (एनेक्स्ड) २. एक में मिले या मिलाये हुए। (कम्पाउंड) ३. साथ रहकर या मिलकर बहुत कुछ समान भाव से काम करनेवाला। (ज्वाइन्ट) जैसे-संयुक्त सम्पादक, संयुक्त खाता।

संयुक्तक–पुं० [सं०] वह पत्र या और कोई कागज जो किसी दूसरे पत्र आदि के साथ लगा दिया गया हो। (एनेक्शर)

संयुक्त कुटुंब–पुं० [सं०] वह कुटुंब या परिवार जिसमें भाई-भतीजे आदि सब मिलकर एक साथ रहते हों। (ज्वाइन्ट फैमिली)

संयुक्त परिवार–पुं० = संयुक्त कुटुंब।

संयुक्त वाक्य–पुं० [सं०] व्याकरण में तीन प्रकार के शब्दों में से एक जो प्रायः बहुत बड़ा होता है और जिसमें कई मुख्य बातें और हर मुख्य बात के साथ कोई छोटी-मोटी बात भी लगी होती है। (कम्पाडंड सेन्टेन्स)

संयुत–वि० [सं०] जुड़ा या लगा हुआ।

संयोग–पुं० [सं०] १. मेल। मिलान। २. लगाव। संबंध। ३. दो या कई बातें का अचानक एक साथ होना। इत्तफाक। ४. पुरुष और स्त्री या प्रेमी और प्रेमि का इकट्ठा रहना। 'वियोग' का विपर्याय

संयोग श्रृंगार–पुं० [सं०] साहित्य श्रृंगार रस का वह विभाग जिसमें प्रेमि के संयोग या मिलन से सम्बन्ध रखनेवाल बातों का उल्लेख होता है। 'वियोग श्रृंगार का विरुद्धार्थक।

संयोगी–पुं० [सं० संयोगिन्] [स्त्री संयोगिनी] वह जिसकी प्रिया या प्रेमि उसके पास हो। 'वियोगी' का उलटा। वि० = संयोजक।

संयोजक–पुं० [सं०] १. जोड़ने मिलानेवाला। २. व्याकरण में वह श जो दो शब्दों या वाक्यों के बीच में जोड़ने या मिलाने के लिए आता है। सभा-समिति आदि का वह मुख्य स जो उसकी बैठकें बुलाने और उसके अ के रूप में उसका काम चलाने के नियुक्त होता है। (कन्वीनर)

संयोजन–पुं० [सं०] [वि० संयो संयोजनीय संयोज्य, संयोजित] १. जो या मिलाने की क्रिया। २. चित्र आं करने में प्रभाव या रमणीयता लाने लिए आकृतियों को ठीक जगह पर बैठान जुहाना। ३. किसी बड़े राज्य का कि छोटे राज्य या प्रान्त को बलपूर्वक अ में मिला लेना। (एनेक्सेशन)

संयोज्य–वि० [सं०] जिसका संयोजन सकता हो या होने को हो। जो मिल जा सके या मिलाया जाने को हो।

संयोज्य क्रिया–स्त्री० [सं०] व्याकर में वह क्रिया जो किसी के साथ, उस अर्थ में कोई विशेषता लाने के लि

है। जैसे-उठ बैठना, चल
जाना में 'बैठना', 'पड़ना',
क्रियाएँ हैं।
दे० 'सजाना'।
[सं०] [स्त्री० संरक्षिका]
रक्षा करनेवाला। २.
रखने या आश्रय में रखने-
) ३. दे० 'अभिभावक'।
[सं०] [वि० संरक्षी,
संरक्षणीय] १. हानि,
से बचाना। हिफाजत। २.
में रखकर पालन-पोषण या
। (ऐट्रीनेन) ३. देख-रेख।
४. अधिकार। कब्जा। ५.
गिता से अपने व्यापार आदि
प्रोटेक्शन)
-पुं० दे० 'संरक्षण-शुल्क'।
-पुं० [सं०] वह कर जो
करनेवाली किसी वस्तु को
कारण नष्ट होने से बचाने के
से आनेवाली उस चीज पर
(प्रोटेक्टिव ड्यूटी) जैसे-देशी
व्यापार के संरक्षण के लिए
नेवाली चीनी पर लगानेवाला
संयोग।
[सं०] १. सँभालकर या
रखा हुआ। २. अपनी
संरक्षण में लिया हुआ।
[सं०] [स्त्री० संलग्ना] १.
२. संबद्ध। ३. किसी दूसरे
में या अन्त में लगा, जुड़ा
। (अपेन्डेन्ड, एटैच्ड)
[सं०] १. बात-चीत।
२. साहित्य में आप ही आप
बड़बड़ाना, जो पूर्व-राग
में से एक माना गया है।
ऐसी बात-चीत जिससे धीरता

संलापक-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का उपरूपक। २. संलाप करनेवाला।

संलेख-पुं० [सं०] वह लेख या विलेख जो विधिक क्षेत्र में नियमानुसार लिखा हुआ, ठीक और प्रामाणिक माना जाता हो। (वैलिड डीड)

संलोभन-पुं० दे० 'प्रलोभन'।

संवत्-पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. संख्या के विचार से चलनेवाली विशेषतः महाराज विक्रमादित्य के समय से प्रचलित मानी जानेवाली वर्ष-गणना में का कोई वर्ष। जैसे-संवत् २००८।

संवत्सर-पुं० [सं०] वर्ष। साल।

सँवर*-स्त्री० [सं० स्मृति] १. स्मरण। याद। २. वृत्तान्त। हाल।

संवर*- पुं० दे० 'संबल'।

संवरण-पुं० [सं०] [वि० संवरणीय, संवृत] १. पसन्द करना। चुनना। जैसे-विवाह के लिए वर का संवरण करना। २. दूर करना। हटाना। ३. समाप्त या अन्त करना। जैसे-इह-लीला संवरण करना। ४. विचार या इच्छा को दबाना या रोकना। जैसे-लोभ संवरण करना। ५. गोपन करना। छिपाना।

संवरना-अ० [हिं० 'सँवारना' का अ०] बिगड़ी हुई चीज का फिर से सुधरना, बनना या ठीक होना।

*स० [हिं० सुमिरना] स्मरण करना।

संवरिया-वि० दे० 'साँवला'।

संवर्द्धक-वि० [सं०] [स्त्री० संवर्द्धिका, संवर्द्धिनी] संवर्द्धन करने या बढ़ानेवाला।

संवर्द्धन-पुं० [सं०] [कर्त्ता संवर्द्धक, वि० संवर्द्धित, संवृद्ध] १. बढ़ना। २. पालना। ३. बढ़ाना।

संवल-पुं० दे० 'संबल'।

संवाद-पुं० [सं०] [कर्त्ता संवादक] १. सादृश्य, एक रूपता आदि के कारण आपस में ठीक बैठना। मेल खाना। २. वार्त्तालाप।

बात-चीत। ३. खबर। समाचार। ४. विवरण। हाल। (रिपोर्ट)

संवाददाता-पुं० [सं०] १. वह जो समाचार या संवाद दे। खबर देनेवाला। २. वह जो किसी विशेष स्थान या क्षेत्र के समाचार लिखकर समाचार-पत्र में छपने के लिए भेजता हो। (कॉरेस्पाण्डेण्ट, रिपोर्टर)

संवादी-वि० [सं० संवादिन्] [भाव० संवादिता, स्त्री० संवादिनी] १. संवाद या बात-चीत करनेवाला। २. अनुकूल या मेल में होनेवाला। किसी के साथ ठीक बैठनेवाला।

पुं० संगीत में वह स्वर जो किसी राग के वादी स्वर के साथ लगकर उसकी श्रुति-मधुरता बढ़ाता हो।

सँवार*-स्त्री० [सं० संवाद या स्मरण] हाल। समाचार।

स्त्री० [हिं० सँवारना] १. सँवारने की क्रिया या भाव। २. क्षौर-कर्म। हजामत। ३. एक प्रकार का शाप या गाली। ('मार' के स्थान पर। जैसे—तुझपर खुदा की सँवार।)

संवार-पुं० [सं०] शब्दों के उच्चारण में वह बाह्य प्रयत्न जिसमें कंठ कुछ सिकुड़ता है।

संवारण-पुं० [सं० वारण] मना करना। रोकना।

संवारना-स० [सं० संवर्णन] १. दोष, त्रुटियाँ आदि दूर करके ठीक या अच्छी अवस्था में लाना। दुरुस्त या ठीक करके काम लाने के योग्य बनाना। २. अलंकृत करना। सजाना। ३. काम बनाना। काम ठीक करना।

संवारना*-अ० [सं० संवारण] मना करना। रोकना।

संवास-पुं० [सं०] [वि० संवासित] १. सुगंध। खुशबू। २. श्वास के साथ मुँह से निकलनेवाली दुर्गंध। ३. सार्वजनिक निवास-स्थान ४. मकान। घर।

संविद्-स्त्री० [सं०] १. चेतना। शक्ति। २. बोध। ज्ञान। ३. समझ बुद्धि। ४. संवेदन। अनुभूति। वृत्तान्त। हाल। ६. नाम। संज्ञा। ७. यु लड़ाई। ८. संपत्ति। जायदाद।

संविद-वि० [सं०] चेतनायुक्त। चेत

संविदा-स्त्री० [सं०] कुछ निश्चित या शर्तों के आधार पर दो पक्षों में वाला समझौता। ठीका। (कन्ट्रैक्ट)

संविदा-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिस किसी संविदा की शर्तें लिखी हों। ठी नामा (कन्ट्रैक्ट डीड)

संविदा प्रविधि-स्त्री० [सं०] वह प्र या कानून जिसमें संविदा या ठीके से रखनेवाले नियमों का विवेचन हो। ऑफ कन्ट्रैक्ट)

संविधान-पुं० [सं० सं = संघटन विधान] [वि० संविधानिक] वह वि या कानून जिसके अनुसार किसी राज्य, या संस्था का संघटन, संचालन और व्य होती है। (कान्स्टिट्यूशन)

संविधान परिषद्-स्त्री० [सं०] परिषद् या सभा जो किसी देश जाति राष्ट्र के राजनीतिक शासन की नियम आदि बनाने के लिए संघटित हो (कान्स्टिट्यूएन्ट एसेम्बली।

संविधानवाद-पुं० [सं०] वह सि जिसके अनुसार विधान या राज-नियम सर्व-प्रधान माना जाता हो और उ विरुद्ध कुछ न किया जाता हो। (कान्सि यूशनलिज्म)

संविधानवादी-पुं० [सं० संविधान वादिन्] वह जो संविधानवाद का अनु हो। विधान या राज-नियम के अनुसार सब काम करनेवाला। (कान्स्टिट्यूशनलि

संविधान सभा-स्त्री०=संविधान परिषद्

संविधानिक-वि० [सं०] संविधान संघटन के नियमों से संबंध रखनेवाला

ा)
ं०] १. ढका या छिपा
ित।
[सं०] किसी वस्तु के बाहरी
ार या बाद में होनेवाली
ेशन)
ं०] संवेदन।
[सं०] [वि० संवेदनीय,
] १. शरीर के किसी अंग
वह शारीरिक व्यापार या
े किसी विशेष उपवस्था में
ी विशिष्ट पदार्थ के सम्पर्क
ी है और जिसके फलस्वरूप
चेतना या अनुभूति होती है।
) जैसे-ताप-शीत या सुख-दुःख
नुभव करना। २. ज्ञान। ३.
 करना।
पुं० [सं०] यह दार्शनिक
हमें सभी बातों का ज्ञान
के द्वारा प्राप्त होता है।
न)
पुं० [सं०] सारे शरीर में
ुओं का वह जाल जिसमें
ताप, सुख, पीड़ा आदि का
ान होता है। स्नायु।
[सं० सवेदन] १. मन में
या अनुभव। अनुभूति।
कष्ट में देखकर मन में होने-
सहानुभूति।
[सं०] [वि० संशयी] १.
जिसमें पूरा निश्चय न हो।
शुबहा। २. आशंका। डर।
वि० [सं०] जिसमें कुछ
हो। सन्दिग्ध।
पुं० [सं० संशयात्मन्] वह
में अभी संशय बना हो और
तरह से स्थिर न हुआ हो।
[सं०] १. जिसे या जिसमें

संशय हो। २. जिसे हर बात में प्रायः संशय या सन्देह होता रहे। संशयात्मा। (सेप्टिक)

संशयी-वि० [सं० संशयिन्] जो प्रायः संशय करता रहता हो। जो सहज में किसी व्यक्ति या बात का विश्वास न करता हो।

संशयोपमा-स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें कुछ वस्तुओं के साथ उपमा तो दी जाती है, पर साथ ही उन उपमाओं के सम्बन्ध में कुछ संशय या सन्देह का भी उल्लेख होता है।

संशुद्ध-वि० [सं०] जिसका संशोधन हुआ हो। शुद्ध किया हुआ।

संशोधक-पुं० [सं०] १. संशोधन करनेवाला। २. बुरी से अच्छी दशा में लानेवाला। सुधारनेवाला।

संशोधन-पुं० [सं०] [वि० संशोधनीय, संशोधित] १. भूल, दोष आदि दूर करके ठीक या शुद्ध करना। (करेक्शन) २. ठीक करना। सुधारना। ३. प्रस्ताव आदि में कुछ सुधार करने या घटाने-बढ़ाने का सुझाव। (एमेन्डमेन्ट) ४. (ऋण आदि) चुकता करना। (देन) चुकाना।

संशोधित-वि० [सं०] जिसका संशोधन हुआ हो। शुद्ध या ठीक किया हुआ।

संश्रय-पुं० [सं०] १. संयोग। मेल। २. संबंध। लगाव। ३. आश्रय। ४. सहारा।

संश्रित-वि० [सं०] १. लगा या सटा हुआ। २. शरण में आया हुआ। ३. दूसरे के सहारे रहनेवाला। आश्रित।

संश्लिष्ट-वि० [सं०] मिला, सटा या लगा हुआ।

संश्लेषण-पुं० [सं०] [वि० संश्लिष्ट] १. एक में मिलाना, लगाना या सटाना। २. कार्य से कारण अथवा नियम, सिद्धान्त आदि से उनके फल या परिणाम का विचार करना। मिलान करना। 'विश्लेषण' का विपर्याय। (सिन्थेसिस)

संस(इ)*-पुं० [सं०] संशय (संदेह)।

संसक्त–वि० [सं०] [भाव० संसक्ति] १. किसी की सीमा के साथ सटा या लगा हुआ। (कन्टिगुवस) २. सम्बद्ध। ३. (किसी की ओर) अनुरक्त या प्रवृत्त। ४. (किसी विचार या काम में) लग्न। लीन।

संसक्ति–स्त्री० [सं०] [वि० संसक्त] १. किसी के साथ सटे या लगे होने का भाव। (कन्टीगुइटी) २. एक ही तरह के पदार्थों या तत्वों का आपस में मिल या सटकर एक-रूप होना। (कोहेशन) ३. सम्बन्ध। लगाव। ४. विशेष अनुराग या आसक्ति। लगन। ५. लीनता। ६. प्रवृत्ति।

संसद्–स्त्री० [सं०] [वि० सांसद्] १. किसी विशेष कार्य के लिए संघटित बहुत से लोगों का समुदाय या निकाय। (एसोसिएशन) २. राज्य या शासन-सम्बन्धी कार्यों में सहायता देने और पुराने विधानों में संशोधन करने तथा नये विधान बनाने के लिए प्रजा के प्रतिनिधियों की चुनी हुई सभा। (पार्लमेन्ट)

संसरण–पुं० [सं०] [वि० संसृति] १. चलना। २. संसार। जगत। ३. रास्ता।

संसर्ग–पुं० [सं०] १. साथ या पास रहने से होनेवाला संबंध। लगाव। २. मिलन। मिलाप। ३. संगति। साथ। ४. स्त्री० और पुरुष का संबंध या सहवास।

संसर्ग-दोष–पुं० [सं०] वह दोष या बुराई जो किसी के साथ रहने से उत्पन्न होती है।

संसर्ग-रोध–पुं० [सं०] १. वह व्यवस्था जो किसी स्थान को संक्रामक रोगों आदि से बचाने के लिए बाहर से आनेवाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखकर की जाती है। २. इस काम के लिए अलग किया हुआ स्थान। (क्वारेन्टाइन)

संसर्गी–वि० [सं० संसर्गिन्] [स्त्री० संसर्गिणी] जिससे या जिसका संसर्ग या लगाव हो।

संसा*–पुं० = संशय।

*पुं० दे० 'संसौ'।

संसार–पुं० [सं०] [वि० सांसारिक, संसारी] १. जगत। दुनिया। २. इह लोक। मर्त्यलोक। ३. घर।

संसार-तिलक–पुं० [सं०] एक प्रका का धान और उसका चावल।

संसार-यात्रा–स्त्री० [सं०] १. जीव का निर्वाह या यापन। २. जीवन। जिन्द

संसारी–वि० [सं० संसारिन्] [स्त्री० संसारिणी] संसार-संबंधी। लौकिक। पुं० संसार या घर-गृहस्थी के झगड़ों फँसा हुआ व्यक्ति।

संसिक्त–वि० [सं०] १. बहुत भी हुआ या गीला। २. अच्छी तरह सीं हुआ।

संसृति–स्त्री० [सं०] संसार।

संसृष्ट–वि० [सं०] [भाव० संसृष्टि] किसी के साथ मिला या लगा हु संबद्ध। २. किसी के अन्तर्गत आया हु

संसृष्टि–स्त्री० [सं०] [वि० संसृष्ट] किसी के साथ होनेवाली सृष्टि, उत्पत्ति आविर्भाव। २. संबंध। लगाव। मिश्रण। मिलावट। ४. हेल-मेल। जोल। ५. साहित्य में दो या अ काव्यालंकारों का इस प्रकार साथ-आना कि सब अलग-अलग दिखाई इसकी गणना एक स्वतन्त्र अलं रूप में होती है।

संसेवन–पुं० [वि० संसेवित] = सेवन

संसै*–पुं० = संशय।

संसौ*–पुं० [सं० श्वास] १. श्वा साँस। २. जीवनी शक्ति। प्राण। उदा नित संसौ हंसौ बचतु, मनो सु इहिं मानु।–बिहारी।

संस्करण–पुं० [सं०] १. संस्कार कर ठीक या दुरुस्त करना। सुधारना। पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृ (एडिशन)

[सं०] संस्कार करनेवाला।
[सं०] १. दोष आदि दूर
। दुरुस्ती। सुधार। २.
मर्यादा, शिक्षा, सभ्यता
पड़नेवाला प्रभाव। ३.
की दृष्टि से शुद्ध और
लिए होनेवाले १६ (या
मत से १२) विशिष्ट कृत्य।
पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जात-
निष्क्रमण, अन्नप्राशन,
मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह
रुचि, आचार-विचार
तथा उन्नत करने का
) ५. परंपरा से चला
ऐसा कृत्य जिसका किसी
के लिए विधान हो।
६. कुछ विशिष्ट अवसरों
कोई ऐसा धार्मिक या सामा-
किसी देश या समाज में
सब जगह प्रचलित हो।
) ७. मृतक की अंत्येष्टि

[सं० संस्कारिन्] १. वह
का संस्कार करता हो। २.
संस्कारों या गुणों से युक्त
मात्राओं के छन्दों की संज्ञा।
[सं०] १. जिसका संस्कार
किया हुआ। २. सँवारा
। ३. सुधारा और ठीक

आर्यों की प्रसिद्ध प्राचीन
। देव-वाणी।
[सं०] १. शुद्धि। सफाई।
सुधार। ३. किसी व्यक्ति,
की वे सब बातें जो उसके
आचार-विचार, कला-कौशल
में बौद्धिक विकास
है। (कल्चर)

संस्था–स्त्री० [सं०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। स्थिति। २. व्यवस्था। विधि। ३. मर्य्यादा। ४. जत्था। गरोह। ५. कोई संघटित समाज, समूह या वर्ग। (बॉडी) किसी धार्मिक, सामाजिक या लोकोपकारी विशेष कार्य या उद्देश्य के लिए संघटित समाज या मंडल। (इन्स्टिट्यूशन) ६. व्यवसायिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट सिद्धान्तों और नियमों के अनुसार काम करनेवाला कोई संघटित समाज या दल। (सोसाइटी) जैसे– सहकारी संस्था। (देखें) ७. किसी कार्यालय या विभाग में काम करनेवाले सब लोगों का समूह या वर्ग। अधिष्ठान। (एस्टैब्लिशमेन्ट) ८. राजनीतिक या सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाला कोई नियम, विधान या परंपरागत प्रथा। (इन्स्टिट्यूशन) जैसे–विवाह हमारे यहाँ की धार्मिक संस्था है।

संस्थान–पुं० [सं०] १. ठहराव। स्थिति। २. बैठाना। स्थापन। ३. अस्तित्व। ४. देश। ५. सर्व-साधारण के इकठे होने का स्थान। ६. किसी राज्य के अन्तर्गत जागीर आदि। (स्टेट) ७. साहित्य, विज्ञान, कला आदि की उन्नति के लिए स्थापित समाज। (इन्स्टिट्यूशन) ८. प्रबन्ध। व्यवस्था।

संस्थापक–पुं० [सं०] [स्त्री० संस्थापिका] संस्थापन करनेवाला। (संस्था आदि) स्थापित करने या उसे आरम्भ करनेवाला। (फाउन्डर)

संस्थापन–पुं० [सं०] [वि० संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य] १. अच्छी तरह जमाकर बैठाना, लगाना या खड़ा करना। २. मंडली, संस्था आदि बनाना। ३. कोई नई बात चलाना।

संस्मरण–पुं० [सं०] [वि० संस्मरणीय, संस्मृत] १. किसी व्यक्ति के संबंध की स्मरणीय घटनाएँ या उनका उल्लेख।

(रेमिनेन्सेज) अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना।

संहत-वि० [सं०] १. खूब मिला या सटा हुआ। २. कड़ा। सख्त। ३. गठा हुआ। घना। ४. मिलाकर एक किया हुआ। एकत्र। इकट्ठा। (कन्सालिडेटेड्)

संहति-स्त्री० [सं०] १. मिलान। मेल। २. बहुतों को मिलाकर एक करना। इकट्ठा होने की क्रिया या भाव। ३. राशि। ढेर। ४. समूह। झुंड। ५. घनता। ठोसपन। (कन्सॉलिडेशन)

संहर*-पुं० = संहार। उदा०-'यही तो है असार संसार सृजन, सिञ्चन, संहर'।-पंत।

संहरना*-स० [सं० संहार] संहार करना। अ० संहार या नाश होना।

संहार-पुं० [सं०] [क्रि० संहारना, कर्त्ता संहारक] १. (सिर के बाल) अच्छी तरह समेटकर बाँधना। गूँथना। २. छोड़ा हुआ वाण फिर अपनी ओर लौटाना। ३. नाश। ध्वंस। ४. (युद्ध आदि में) मार डालना।

संहारक-वि० [सं०] १. संहार या नाश करनेवाला। २. मार डालनेवाला।

संहारकर्त्ता-वि० = संहारक।

संहारना*-स० [सं० संहार] १. संहार या नाश करना। २. मार डालना। वध करना।

संहित-वि० [सं०] १. इकट्ठा किया हुआ। २. मिला, सटा या जुड़ा हुआ। ३. जो अधिकारिकी द्वारा नियमों, विधियों आदि की संहिता के रूप में लाया गया हो। (कोडीफायड)

संहिता-स्त्री० [सं०] १. संहित या मिले हुए होने का भाव। २. मेल। मिलावट। ३. व्याकरण में संधि। ४. वह ग्रंथ जिसके पद-पाठ आदि क्रम परम्परा से एक नियमित वा निश्चित रूप में चला आ रहा हो। जैसे-धर्म-संहिता। ५. अधिकारिकी द्वारा किया हुआ नियमों, विधियों आदि का संग्रह। (कोड) जैसे-भारतीय दंड संहिता (इंडियन पेनल कोड)

सइ*-अव्य० [सं० सह] से। साथ।

सइयो*-स्त्री० = सखी।

सउँ*-अव्य० दे० 'सौं'।

सक*-पुं० दे० 'साका'। स्त्री० दे० 'शक्ति'।

सकट*-पुं० दे० 'शकट'।

सकत†-स्त्री० [सं० शक्ति] १. व शक्ति। ताकत। २. धन। सम्पत्ति। क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। यथा-शक्ति पुं० दे० 'शाक्त'।

सकता-पुं० [अ० सकतः] १. बेहो या उसकी बीमारी। २. स्तब्धता। भौचक्क पन। ३. कविता में, विराम। यति। यति-भंग का दोष।

सकति (ती)*-स्त्री० = शक्ति।

सकना-अ० [सं० शक् या शक्य] कुछ करने में समर्थ होना। कुछ करने योग्य होना। जैसे-चल सकना। (सं० शंका) मन में डरना, घबरा शंकित या संकुचित होना। उदा०-'सूखे श्रमे से सकबके से सके से थके, भूले से से भमरे से भकुवाने से'।-रत्ना०। वि दे० 'सकाना'।

सकपकाना-अ० दे० 'चकपकाना'।

सकबकाना-अ० दे० 'चकपकाना'।

सकरना-अ० [सं० स्वीकरण] स या माना जाना। जैसे-हुंडी सकारना।

सकर्मक-वि० [सं०] व्याकरण में क्रिया जो कर्म से युक्त हो। (ट्राँजिटिव

सकर्मक क्रिया-स्त्री० [सं०] व्याक में वह क्रिया जिसका कार्य्य उसके कर्म समाप्त होता है। जैसे-रखना धोना आ

सकल-वि० [सं०] [स्त्री० सकला] सब। समस्

सकलात*-पुं० [?] [वि० सकलाती] १. रजाई। दुलाई। २. सौगात। उपहार ३. मखमल नामक कपड़ा।

[हिं० सकलात] १.
के रूप में किसी को देने
अच्छा। बढ़िया।
[अनु०] डर से

[अनु०] १. भयभीत
। २. अड़ना। ३. फँसना।
न बचन भयौ हिच-
।–रत्ना०।
'सक्का'।
[सं० शंका] १. संदेह
हिचकना। उदा०–क्षत्रिय
।–तुलसी। ३. डरना।
सबै सकाइ कहा करि है
–रत्ना०। ४. दुखी होना।
निवर के परुष बचन कछु
–रत्ना०।
का प्रे०। (क्व०)
[सं०] १. वह जिसके मन
या वासना हो। २. वह
पूरी हुई हो। ३. कामुक।
की इच्छा करे।
[सं० सकाल] प्रातःकाल।

[सं० स्वीकरण] १.
। मंजूर करना। २. महाजन
पर आई हुई हुंडी मान्य
आफ ए ड्राफ्ट)
वि० [हिं० सकार + सं०
या कथन जो स्वीकृति
सूचक हो। 'नकारात्मक' का
रमेटिव)
वि० [सं० सकाल] १.
। जल्दी।
= संकोच।
[सं० संकोच] १. लज्जा
। २. (फूलों का) सिम-
। बंद होना।

सकुचाई*–स्त्री० = संकोच।

सकुचाना–अ० [सं० संकोच] संकोच करना।
स० १. संकुचित करना। सिकोड़ना। २. लज्जित करना।

सकुचीला(चौहाँ)*–वि० [हिं० संकोच] संकोच करनेवाला। लजीला।

सकुन*–पुं० १. दे० 'शकुन'। २. दे० 'शकुत'।

सकुपना*–अ० = कोपना।

सकुल्य–पुं० दे० 'सगोत्र'।

सकूनत–स्त्री० [अ०] निवास-स्थान।

सकृत–अव्य० [सं०] १. एक बार। २. सदा।

सकृद्दर्शन–अव्य० [सं०] १. देखने पर तुरन्त। २. ऊपर से देखने पर। (प्राइमाफेसी)

सकेत*–पुं० दे० 'संकेत'।
वि० [सं० संकीर्ण] तंग। संकुचित।
पुं० विपत्ति। संकट।

सकेतना*–अ० दे० 'सिकुड़ना'।

सकेरना*–स० दे० 'समेटना'।

सकेरा*–पुं० [सं० सकाल] शीघ्रता। जल्दी।

सकेलना–स० [सं० सकल] १. इकट्ठा करना। जमा करना। उदा०–जो बनिता-सुत-जूथ सकेले, हय-गय-बिभव घनेरौ। —सूर। २. बिखरे हुए काम या चीजें एक जगह करना। समेटना।

सकेलना–स० [सं० संकलन] १. इकट्ठा करना। २. कसवाना। ३. दबाना।

सकेला*–स्त्री० [अ० सैकल] एक प्रकार की तलवार।

सकोच*–पुं० = संकोच।

सकोचना*–अ० = संकोच करना।
स० = सिकोड़ना।

सकोपना*–अ० दे० 'कोपना'।

सकोरा–पुं० दे० 'कसोरा'।

सक्का–पुं० [फा०] मशक में पानी भर कर लोगों को पिलाने या घर-घर पहुँ-

चानेवाला।

सक्र*-पुं० [सं० शक्र] १. इन्द्र। २. मेघ। बादल।

सक्रारि*-पुं० [सं० शक्रारि] मेघनाद।

सक्रिय-वि० [सं०] [भाव० सक्रियता] १. जिसमें क्रिया भी हो। २. जो क्रियात्मक रूप में हो। ३. जिसमें कुछ करके दिखलाया जाय। (ऐक्टिव)

सक्षम-वि० [सं०] [भाव० सक्षमता] १. जिसमें क्षमता हो। २. समर्थ। ३. किसी काम के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त और उसका अधिकारी। (काम्पीटेन्ट)

सखर*-वि० [हिं० स + खर = तेज धार] १. तेज धारवाला। चोखा। पैना। २. तेज। उग्र। ३. प्रबल।

सखरच†-वि० [फा० शाह + खर्च] बहुत उदारतापूर्वक और जी खोलकर खरच करनेवाला। शाह-खर्च। उदा०—बनियक सखरच ठकुरक हीन। बैद कपूत व्याधि नहिं चीह्न—घाघ।

सखरस-पुं० [?] मक्खन।

सखरा†-वि० [हिं० निखरा का अनु०] जो घी, दूध आदि में नहीं बल्कि जल के संयोग से पका हो। कच्चा। (भोजन या रसोई)

स्त्री० दे० 'सखरी'।

सखरी-स्त्री० [हिं० निखरी से अनु०] दाल, रोटी आदि कच्ची रसोई।

सखा-पुं० [सं० सखिन्] १. साथी। संगी। २. मित्र। दोस्त। ३. साहित्य में नायक का वह मित्र या साथी जिससे वह अपने मन की सब बातें कहता है। इसके ये चार भेद हैं—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक। इन्हें सहचर भी कहते हैं।

सखार-वि० [सं० स + हिं० खार (क्षार)] १. क्षार-युक्त। २. खारा।

सखी-स्त्री० [सं०] १. सहेली। सहचरी। २. संगिनी। ३. साहित्य में नायिका के साथ रहनेवाली वह स्त्री जिससे वह अप मन की सब बातें कहती है। ४. एक प्र का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं और अन्त में मगण यगण होना आवश्यक होता है।

वि० [अ० सखी] १. दाता। २. उद

सखीभाव-पुं० [सं०] भक्ति का प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको देवता की पत्नी या सखी मानकर उ उपासना और सेवा करता है।

सखी सम्प्रदाय-पुं० [सं०] भक्तों वह सम्प्रदाय जो सखीभाव से अपने देव की उपासना करता है।

सखुआ-पुं० [सं० शाल] साखू या नामक वृक्ष या उसकी लकड़ी।

सखुन-पुं० [फा० सखुन] १. कथ उक्ति। २. कविता। काव्य।

सखुन-तकिया-पुं० [फा०] वह श या पद जो कुछ लोगों के मुँह से बात करते समय प्रायः निकला करता कथनाश्रय।

सख्त-वि० [फा०] [भाव० सख्ती कठोर। कड़ा। २. मुश्किल। कठि ३. कठोर व्यवहार करनेवाला।

क्रि० वि० बहुत अधिक। (दुष्ट या बातों के संबंध में। जैसे—सख्त नालायक

सख्य-पुं [सं०] १. सखा का सखापन। २. मित्रता। दोस्ती। भक्ति का वह प्रकार जिसमें इष्ट देव भक्त, अपना सखा मानकर उसकी उ सना करता है।

सगण-पुं० [सं०] पिंगल में दो और एक गुरु अक्षर का एक गण। इस रूप ||S है।

सगति*-स्त्री० = शक्ति।

सग-पहिती-स्त्री० [हिं० साग + पहिती दाल] साग मिलाकर पकाई हुई दाल।

सगबग-वि० [अनु०] [क्रि० सगबगा

पथ-पथ । २. द्रवित । ३.
हुआ ।
से । तुरन्त ।
अ० [हिं० सगबग] १.
होना । बहुत भींगना । २.
। चकपकाना ।
या तर करना । २. चकित
ना ।
] अयोध्या के एक प्रसिद्ध
जो रामचन्द्र के पूर्वज थे ।
(सत्र) ।
[सं० साग्र] [स्त्री० सगरी]
।
सागर] १. समुद्र । २. बहुत
या जलाशय ।
= सकल ।
[सं० स्वक्] [स्त्री० सगी,
] १. एक ही माता से
सोदर । २. संबंध या रिश्ते में
कुल या परिवार का । जैसे–
।
[हिं० सगा + आई (प्रत्य०)]
का भाव । सगापन । २.
अथवा घनिष्ठ परिवारिक सम्बन्ध ।
। उदा०–देवहु लोग हरि कै
घरै पुत्र-धिया सँग जाई ।–
बिलकुल एक से या एक वर्ग
अवस्था या भाव । जैसे–बैन
मैत्री या अनुप्रास । ४. विवाह
मँगनी । ५. विधवा स्त्री के साथ
संबंध जो कुछ जातियों में
समान माना जाता है । ६.
रिश्ता ।
[हिं० सगा] सगा या
का भाव ।
दे० 'सगापन' ।
[सं०] सत्त्व, रज और तम
युक्त परमात्मा का रूप ।
साकार ब्रह्म ।

सगुन–पुं० १. दे० 'शकुन' । २. दे० 'सगुण' ।

सगुनाना–स० [सं० शकुन] शकुन निकालना या देखना ।

सगुनिया†–पुं० [सं० शकुन] शकुन बतलानेवाला ।

सगुनौती–स्त्री० [हिं० सगुन] १. शकुन विचारने की क्रिया या भाव । २. मंगलाचरण । मंगल पाठ ।

सगुरा–वि० [हिं० स + गुरु] १. जिसने किसी गुरु से दीक्षा ली हो । २. जिसने किसी गुरु से किसी काम की अच्छी शिक्षा पाई हो । 'निगुरा' का विरुद्धार्थक ।

सगोती–पुं० = सगोत्र ।

सगोत्र–पुं० [सं०] वे जो एक ही पूर्वज से उत्पन्न हुए हों । एक ही गोत्र के लोग (किंड्रेड)

सगोत्रिय–पुं० दे० 'सगोत्र' ।

सगौती†–स्त्री० [देश०] खाने का मांस ।

सग्गड़–पुं० [सं० शकट] बोझ ढोने की एक प्रकार की बड़ी गाड़ी जिसे आदमी खींचते या ढकेलते हैं ।

सग्गा–वि० = सगा ।

सघन–वि० [सं०] [भाव० सघनता] १. घना । अविरल । २. ठोस । ठस ।

सच–वि० [सं० सत्य] १. जैसा हो, वैसा ही (कहा हुआ) । सत्य । २. वास्तविक । ३. ठीक ।

सचना*–स० [सं० संचयन] १. संचय या इकट्ठा करना । २. पूरा करना । उदा०–'बहु कुंड शोनित सों भटे पितु तर्पणादि क्रिया सची' ।—केशव । ३. निर्माण करना । बनाना ।

सच-मुच–अव्य० [हिं० सच + मुच (अनु०)] १. वास्तव में । यथार्थ रूप में । २. अवश्य । निश्चय ।

सचरना*–अ० [सं० संचरण] संचरित

होना । फैलना ।

स-चराचर-पुं० [सं०] संसार के चर और अचर सभी पदार्थ तथा प्राणी ।

सचल-वि० [सं०] [भाव० सचलता] १. जो अचल न हो । चलता हुआ । २. चंचल । ३. जंगम ।

सचाई-स्त्री० [सं० सत्य, प्रा० सच्च] १. 'सच' का भाव । सत्यता । सचापन । २. वास्तविकता । यथार्थता ।

सचान-पुं० [सं० संचान] बाज पक्षी ।

सचारना*-स० हिं० 'सचरना' का स० ।

सचावट†-स्त्री० = सचाई ।

सचिंत-वि० [सं०] जो किसी बात की चिन्ता में हो । चिन्तायुक्त ।

सचिक्कण-वि० [सं०] बहुत चिकना ।

सचिव पुं० [सं०] १. मित्र । दोस्त । २. मंत्री । (मिनिस्टर)

सचिवाधिकार-पुं० [सं०] किसी राज्य के सचिवों का वर्ग या मंडल; अथवा उनका शासन-काल । (मिनिस्टरी)

सचिवालय-पुं० [सं०] वह भवन जिसमें किसी राज्य, प्रान्तीय सरकार अथवा किसी बड़ी संस्था के सचिवों, मन्त्रियों और विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय रहते हैं । (सेक्रेटेरिअट)

सची*-स्त्री० = शची (इन्द्र की पत्नी) ।

सचु*-पुं० [?] १. सुख । आराम । २. प्रसन्नता । आनंद । ३. संतोष । तसल्ली ।

सचुपाना*-अ० = चुप या मौन होना ।
स० = चुप या मौन कराना ।

सचेत-वि० [सं० सचेतन] १. जो चेतना-युक्त हो । २. सावधान । होशियार । खबरदार । ३. दे० 'सचेतन' ।

सचेतन-पुं० [सं०] [भाव० सचेतनता] वह जिसमें चेतना या ज्ञान हो ।
वि० 'जड़' का विरुद्धार्थक । चेतन ।

सचेष्ट-वि० [सं०] १. जिसमें चेष्टा हो । २. चेष्टा कर रहा हो ।

सच्चरित(त्र)-वि० [सं०] अच्छे चरि
या चाल-चलनवाला । सदाचारी ।
पुं० उत्तम आचरण । उदा०-भई तुष्ट औ
पै त्रिलोकि सच्चरित तिहारे ।—रत्ना० ।

सच्चा-वि० [सं० सत्य] [स्त्री० सच्ची
१. सच बोलनेवाला । सत्यवादी ।
वास्तविक । यथार्थ । ठीक । ३. असली
झूठा या बनावटी नहीं । ४. बिलकुल ठी
और पूरा ।

सच्चाई-स्त्री० [हिं० सच्चा] 'सच्चा' हो
का भाव । सत्यता । सच्चापन ।

सच्चापन-पुं० = सच्चाई ।

सच्चिदानंद-पुं० [सं०] (सत्, चि
और आनंद से युक्त । परमात्मा ।

सच्ची टिपाई-स्त्री० [हिं० सच्ची = बिल्कु
ठीक + टिपाई] प्राचीन चित्र-कला में चि
बनाने के समय पहले रूप-रेखा अंकि
कर चुकने पर गेरू से होनेवाला अंकन ।

सच्छंद*-वि० = स्वच्छंद ।

सच्छत*-वि० [सं० सक्षत] घायल ।

सच्छास्त्र-पुं० [सं० सद् + शास्त्र
अच्छे या उत्तम शास्त्र ।

सच्छी*-पुं०, स्त्री० दे० 'साक्षी' ।

सज-स्त्री० [हिं० सजावट] १. सजाव
२. बनावट । गढ़न । ढौल । ३. शोभ
४. सुन्दरता ।
पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष ।

सजग-वि० [सं० सज्ञान] [भा
सजगता (अशुद्ध रूप)] सावधान
सचेत । होशियार ।

सजगता-स्त्री० [हिं०सजग + ता(प्रत्य०
१. सजग रहने या होने की क्रिया या भा
२. सतर्कता । होशियारी ।

सजदार-वि० = सजीला ।

सज-धज-स्त्री० [हिं० सज + धज(अनु०
बनाव-सिंगार । सजावट ।

सजन-पुं० [सं० सत् + जन = सज्जन
[स्त्री० सजनी] १. सजन । २. पति

सजावट–स्त्री० [हिं० सजाना] सजे हुए होने की क्रिया या भाव ।

सजावन*–पुं० = सजावट ।

सजावना*–स० = सजाना ।

सजावल–पुं० [तु० सजावुल] १. लेन या कर उगाहनेवाला कर्मचारी । २. जमादार ।

सजीला–वि० [हिं० सजना] [स्त्री० सजीली] १. सज-धज से या बन-ठनकर रहनेवाला । छैला । २. सुन्दर । आकर्षक ।

सजीव–वि० [सं०] १. जिसमें जीवन या प्राण हो । २. जिसमें ओज या तेज हो ।

सजीवन–पुं० दे० 'संजीवनी' ।

सजुग*–वि० दे० 'सजग' ।

सजूरी–स्त्री० [?] एक प्रकार की मिठाई ।

सजोना†–स० = सजाना ।

सजोयल*–वि० दे० 'सँजोइल' ।

सज्ज*–पुं० दे० 'साज' ।

सज्जन–पुं० [सं० सत् + जन] [भाव० सज्जनता] १. सबके साथ अच्छा, प्रिय और उचित व्यवहार करनेवाला । भला आदमी । शरीफ । २. प्रियतम ।

सज्जनता–स्त्री० [सं०] 'सज्जन' होने का भाव । भल-मनसत । सौजन्य ।

सज्जनताई*–स्त्री० = सज्जनता ।

सज्जा–स्त्री० [सं०] [वि० सज्जित] १. सजाने की क्रिया या भाव । सजावट । २. वेष भूषा । ३. कोई काम ठीक तरह से पूरा करने के लिए सभी आवश्यक उपकरण, साधन आदि एकत्र करके यथा-स्थान बैठाना या लगाना । ४. उक्त कार्य के लिए सभी आवश्यक और उपयोगी उपकरणों और साधनों का समूह । (ईक्विपमेंट; अन्तिम दोनों अर्थों के लिए)

स्त्री० दे० 'शय्या' ।

सज्जित–वि० [सं०] [स्त्री० सज्जिता] १. सजा हुआ । अलंकृत । २. आवश्यक अंगों, उपकरणों, वस्तुओं या साधनों से युक्त । (ईक्विपड) जैसे–सज्जित सेना या भवन ।

सज्जी–स्त्री॰ [सं॰ सर्जिका] एक प्रसिद्ध क्षार जो चीजें धोने या साफ करने के काम में आता है।

सज्ञान–वि॰ [सं॰] १. ज्ञानवान। २. चतुर। ३. बुद्धिमान।

सज्या*–स्त्री॰ १. दे॰ 'सजा'। २. दे॰ 'शय्या'।

सटक–स्त्री॰ [अनु॰ सट से] १. सटकने की क्रिया या भाव। २. धीरे से चल देना। ३. पतली लचकीली छड़ी। उदा॰–चिलक, चिकनई, चटक सों लफति सटक लौं आइ।—बिहारी। ४. हुक्का पीने की लचीली नली। नैचा।

सटकन–स्त्री॰ [हिं॰ सटकना] 'सटकना' की क्रिया या भाव। हट जाना।

सटकना–स॰ [अनु॰ सट से] धीरे से या चुपचाप खिसक जाना। चंपत होना।

सटकाना–स॰ [अनु॰ सट से] छड़ी, कोड़े आदि से मारना।

सटकार–स्त्री॰ [हिं॰ सटकारना] १. सटकारने की क्रिया या भाव। २. पशुओं को हाँकने की क्रिया।

सटकारना–स॰ [अनु॰] [भाव॰ सटकार] १. छड़ी या कोड़े से सट-सट मारना। २. गौ, बैल आदि हाँकना।

सटकारा–वि॰ [अनु॰] चिकना, मुलायम और लंबा। (विशेषतः बाल ; बहु॰ में)

सटकारी†–स्त्री॰ [हिं॰ सटकार] छोटी और पतली छड़ी।

सटना–अ॰ [सं॰ स + स्था] १. आपस में इस प्रकार मिलना कि दोनों के पार्श्व या तल एक दूसरे से लग जायँ। २. चिपकना। ३. मार-पीट होना।

सट-पट–स्त्री॰ [अनु॰] १. इधर-उधर की व्यर्थ की बातें या काम। २. संकोच। ३. दुविधा। असमंजस। आगा-पीछा। ४. डर। भय। ५. घबराहट उदा॰–अरी खरी सटपट परी, बिधु आधैं मग हेरि। —बिहारी।

सटपटाना–अ॰ दे॰ 'सिटपिटाना'।

सटपटी–स्त्री॰ = सट-पट।

सटर-पटर–स्त्री॰ = सट-पट।
वि॰ [अनु॰] व्यर्थ का, निकम्मा या तुच्

सटा†–स्त्री॰ [सं॰ जटा ?] १. शेर गरदन पर के बाल। अयाल। उदा॰–सि की सटा ऐंचे कलम करनि करि।—केश २. शिखा। उदा॰–यह कहि कर गहि सटा लौं सूँति सटाई।—रत्ना॰। ३.

सटाना–स॰ हिं॰ 'सटना' का स॰।

सटियल–वि॰ [?] घटिया। रद्दी।

सटिया–स्त्री॰[हिं॰ साटना या सटाना] रूप से बात-चीत करके किसी को अ ओर मिलाने की क्रिया। षड्यंत्र रच उदा॰–उनहूँ जाइ सौंह दै पूछो, मैं पठयौ सटिया।–सूर।
स्त्री॰ दे॰ 'साँटी'।

सटीक–वि॰ [सं॰] जिसमें मूल के टीका भी हो। व्याख्या सहित।
वि॰ [हिं॰ ठीक] [भाव॰ सटीक बिलकुल ठीक। (एक्योरेट)

सटोरिया–पुं॰ दे॰ 'सट्टेबाज'।

सट्टक–पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का रूपक।

सट्टा–पुं॰ [देश॰] १. इकरारनामा साधारण व्यापार से भिन्न खरीद-बिक्र वह प्रकार जो केवल तेजी-मंदी के से अतिरिक्त लाभ करने के लिए होता खेला। स्पेक्युलेशन)

सट्टा-बट्टा–पुं॰ [हिं॰ सटना + बट्टा मेल मिलाप। हेल-मेल। २. धूर्ततापूर्ण चालबाजी। ३. अनुचित संबंध।

सट्टी–स्त्री॰ [हिं॰ हट्टी] वह जिसमें एक ही तरह की चीजें कुछ नि समय पर आकर बिकती हैं। हाट।

सट्टेबाज–पुं॰ [हिं॰ सट्टा + फा॰ [भाव॰ सट्टेबाजी] वह जो केवल तेजी

बिक्री करता हो । सट्टा
(स्पेक्युलेटर)
[सं० शठ + मति] दुष्ट
। उदा०—तजतु अठान न,
आठो जाम ।—बिहारी ।
[हिं० साठ] १. साठ
। २. बुड्ढे हो जाने पर बुद्धि
न देना ।
० 'सठोरा' ।
[अ० शरक] आने-जाने
रास्ता । राज-मार्ग ।
[हिं० सड़ना] सड़ने की

[सं० सरण] १. किसी
विकार होना जिससे उसके
और उसमें दुर्गन्ध आने
मिले हुए पदार्थ में खमीर
। ३. हीन अवस्था में

० 'सड़ना' का स० ।
[हिं० सड़न + गंध] १.
सड़ने पर उसमें से आने-
। २. घावों, फोड़ों आदि के
सड़ने की अवस्था या भाव ।
)
[हिं० सड़ना] सड़ने की

वि० [अनु० सड़ से] १.
के साथ । २. जल्दी-जल्दी ।
[हिं० सड़ना] १. सड़ा
। रद्दी । खराब ।
।
२. सज्जन । ३. नित्य ।
। पवित्र । ५. श्रेष्ठ ।
० 'सतत' ।
] सत्यतापूर्ण धर्म ।
सड़ना = पति का मृत
पर बैठना और उसके साथ सती होना । **सत पर रहना** = पतिव्रता और साध्वी होना ।

वि० १. दे० 'शत' । २. दे० 'सत्' ।

पुं० [सं० सत्य] १. किसी चीज में से निकाला हुआ सार भाग । तत्त्व । २. जीवनी शक्ति । ताकत ।

वि० 'सात' (संख्या) का संक्षिप्त रूप । (यौ० के आरम्भ में, जैसे—सतलड़ा हार ।)

सत-करा*—पुं० [सं० सत्य + कार्य] सत्य की रक्षा, पालन या उसके प्रति होनेवाली निष्ठा ।

सतकारना*—स० = सत्कार करना ।

सतगारा†—पुं० दे० 'सथिया' ३. ।

सतगुरु—पु० [हिं० सत् + गुरु] १. सच्चा और अच्छा गुरु । २. परमात्मा ।

सतजुग—पुं० = सत्ययुग ।

सतत—अव्य० [सं०] १. सदा । हमेशा । निरंतर । लगातार ।

वि० जिसका क्रम बीच में न टूटे । लगातार चलता रहनेवाला । (परपेचुअल) जैसे—सतत उत्तरोत्तरता या अनुक्रम । (परपेचुअल सक्सेशन)

सत-नजा—पुं० [हिं० सात + अनाज] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल ।

सत-पदी—स्त्री दे० 'सप्तपदी' ।

सत-फेरा—पु० दे० 'सप्तपदी' ।

सत-भाएँ*—क्रि० वि० [सं० सद्भाव] अच्छे भाव से । सद्भावपूर्वक ।

सतभाय*—दे० 'सद्भाव' ।

सत-मासा*—पुं० [हिं० सात + मास] १. वह बच्चा जो गर्भ के सातवें महीने उत्पन्न हो । २. गर्भाधान के सातवें महीने होनेवाला कृत्य । (हिन्दू)

सत-युग—पुं० दे० 'सत्य-युग' ।

सत-रंगा—वि० [हिं० सात + रंग] [स्त्री० सत-रंगी] सात रंगोंवाला ।

पुं० इन्द्र-धनुष ।

सतर—स्त्री० [अ०] १. रेखा । लकीर ।

२. पंक्ति । कतार ।

वि० १. टेढ़ा । वक्र । २. क्रुद्ध । नाराज ।

स्त्री० [अ०] १. स्त्री या पुरुष की गुप्त इंद्रिय । ओट । आड़ ।

*क्रि० वि० [सं० सत्वर] शीघ्रतापूर्वक । जल्दी से ।

सतराई*–स्त्री० [सं० शत्रु + आई प्रत्य०] शत्रुता । दुश्मनी । उदा०–कोऊ कहै होई करम दुख-दाता । सो तौ मैं न कीन्ह सतराई ।—सूर ।

सतराना*–अ० [अ० सतर] क्रुध होना ।

सतरौंहाँ–वि० [हिं० सतराना] १. कुपित । क्रुद्ध । २. कोप-सूचक ।

सतर्क–वि० [सं०] [भाव० सतर्कता] १. तर्क या युक्ति से युक्त । २. सावधान ।

सतर्पना*–स० [सं० सतर्पण] अच्छी तरह तृप्त या संतुष्ट करना । खूब प्रसन्न करना ।

सत-लड़ी–स्त्री० [हिं० सात + लड़] सात लड़ों की माला ।

सतवंती–वि० दे० 'सती' ।

सतसई–स्त्री० [सं० सप्तशती] १. एक ही प्रकार की सात सौ चीजों का समूह । २. किसी कवि के सात सौ पद्यों का संग्रह । जैसे–बिहारी-सतसई, वृन्द-सतसई ।

सतह–स्त्री० [अ०] किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल ।

सत-हरा*–वि० [हिं० सत्य + हारना] जिसने सत्य हार या छोड़ दिया हो ।

सतांग–पुं० [सं० शतांग] रथ (सवारी का) ।

सताना–स० [सं० संतापन] कष्ट या दुःख देना । पीड़ित करना ।

सतावना*–स० = सताना ।

सति*–पुं० दे० 'सत्य' ।

सतिभाएँ*–क्रि० वि० दे० 'सतभाएँ' ।

सती–वि० [सं०] [भाव० सतीत्व] पति के सिवा और किसी पुरुष का ध्यान न करने वाली (स्त्री) । साध्वी । पतिव्रता ।

स्त्री० १. दक्ष प्रजापति की कन्या और शिव की पहली पत्नी । २. वह स्त्री जो अप पति के शव के साथ चिता में जलकर उसके मरने पर तुरंत किसी और प्रकार अपने प्राण दे दे ।

पुं० [सं० सत + ई (प्रत्य०)] सदा या सत्य पर आरूढ़ और दृढ़ रहनेवा परम सत्यनिष्ठ । जैसे–जती-सती ।

सतीत्व–पुं० [सं०] १. सती हों भाव । २. स्त्री की वह विशेषता या जिसके कारण वह अपने पति के सिवा किसी पुरुष से प्रेम संबंध नहीं क पातिव्रत ।

सतीत्व-हरण–पुं० [सं०] किसी चारिणी स्त्री के साथ बलपूर्वक करना । स्त्री का सतीत्व नष्ट करना ।

सतीपन–पुं० = सतीत्व ।

सतुआ†–पुं० = सत्तू ।

सतून–पुं० [सं० स्थूण से फा० सु खंभा । स्तंभ ।

सतृष्ण–वि० [सं०] तृष्णा से युक्त तृष्णापूर्ण ।

सतोखना*–स० [सं० संतोषण] संतुष्ट या तृप्त करना । ढारस देना ।

सतोगुण–पुं० दे० 'सत्वगुण' ।

सतोगुणी–वि० [हिं० सतोगुण] सत्व गुण पूर्ण रूप से हो । सत्व से युक्त ।

सत्कर्ता–वि० [सं०] सत्कार करने सत्कारक ।

सत्कर्म–पुं० [सं० सत्कर्मन्] [कर्त्ता स अच्छा काम ।

सत्कार–पुं० [सं०] १. आनेवाले का आदर या सम्मान । खातिरदारी धन आदि भेंट देकर किसी का किया वाला, आदर, सम्मान या सेवा ।

सत्कारक–वि० [सं०] सत्कार करनेवा सत्कर्त्ता ।

सत्कार्य्य–वि० [सं०] सत्कार करने यो

अच्छा काम । सत्कर्म ।
[सं०] अच्छी और
र्य ।
[सं०] अच्छा या ऊँचा
[सं०] जिसका सत्कार किया
या ।
[सं०] वह जो अच्छे काम
र्मा ।
ति । उत्तम कार्य ।
सं० सत्व] १. किसी मूर्त्त
निकाला हुआ उसका सार
ठी का सत्त । २. जीवनी
व । प्राणी । ४. आदमी ।
-यद्यपि होय शुद्ध मति सत्तु ।
ज्यों उनमत्तु ।-केशव ।
या सत्य] स्त्री का सतीत्व ।
त ।
[सं०] १. सबसे बढ़कर ।
परम पूज्य । ३. परम साधु ।
[सं०] १. मूर्त रूप में होने
रहने की अवस्था या भाव
विपर्याय) अस्तित्व । भाव ।
) २. शक्ति । सामर्थ्य ।
जो अधिकार, बल या सामर्थ्य
करके अपना काम करती हो ।
-राज-सत्ता ।
चलाना या जताना =
सिद्ध करना कि हम में यह
है ।
] ताश या गंजीफे का वह
सात बूटियाँ होती हैं ।
[सं०] जिसके हाथ में
अधिकारी ।
दे० 'सत्यानाश' ।
दे० 'सत्यानाशी' ।
सक्तुक] भुने हुए जौ, चने आदि का चूर्ण ।

सत्पथ-पुं० [सं०] १. उत्तम मार्ग । २. सदाचार । अच्छा आचरण ।

सत्पात्र-पुं० [सं०] १. दान आदि ग्रहण करने के योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति या अधिकारी । २. श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति ।

सत्पुरुष-पुं० दे० 'सज्जन' ।

सत्यंकार-पुं० [सं०] कोई बात निश्चित करने के समय पहले से दिया जानेवाला धन । अग्रिम । पेशगी । अगाऊ ।

सत्य-वि० [सं०] [भाव० सत्यता] १. जिसके बिलकुल ठीक होने में कोई सन्देह न हो । (ट्रू) २. जैसा हो या होना चाहिए, वैसा । ३. असल । वास्तविक । पुं० १. यथार्थ तत्व । ठीक बात । २. न्याय-संगत और धर्म की बात । ३. ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपरी लोक । ४. दे० 'सत्य-युग' ।

सत्यकाम-वि० [सं०] सदा उत्तम या रूढ़ बातों की कामना करनेवाला ।

सत्यता-स्त्री० [सं०] सत्य का भाव० । सच्चापन । सच्चाई ।

सत्य नारायण-पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम या रूप । वि० सदा सत्य पर दृढ़ रहनेवाला । सत्यव्रत ।

सत्य-प्रतिज्ञ-वि० [सं०] अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला । बात का पक्का ।

सत्य-युग-पुं० [सं०] पुराणों के अनुसार चार युगों में से पहला जो सबसे अच्छा माना गया है ।

सत्य-लोक-पुं० [सं०] सबसे ऊपर का लोक जिसमें ब्रह्म रहता है । (पुराण)

सत्यवादी-वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] सच बोलनेवाला ।

सत्य-व्रत-पुं० [सं०] वह जिसने सदा सच बोलने और सद् आचरण करने का व्रत ले रखा हो । सदा सच बोलनेवाला ।

सत्य-संध-वि० [सं०] [स्त्री० सत्यसंधा]

अपने वचन का पालन करनेवाला।

सत्या–स्त्री० १.दे०'सत्ता'। २ दे० 'सत्यता'।

सत्याग्रह–पुं० [सं०] [कर्त्ता सत्याग्रही] किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिए शान्ति-पूर्वक हठ करना।

सत्याग्रही–पुं० [सं० सत्याग्रहिन्] वह जो सत्याग्रह करता हो।

सत्यानाश–पुं० [सं० सत्ता + नाश] [वि० सत्यानाशी] सर्व नाश। ध्वस। बरबादी।

सत्यानाशी–वि० [हिं० सत्यानाश] सत्यानाश या पूरी बरबादी करनेवाला। स्त्री० दे० 'भड़भांड़'।

सत्यापक–वि० [सं०] सत्यापन करनेवाला। यह कहनेवाला कि यह बिलकुल ठीक है। (वेरिफाइंग) जैसे–सत्यापक लेख या सत्यापक अधिकारी।

सत्यापन–पुं० [सं०] [वि० सत्यापित] १. कहकर सिद्ध करना कि यह ठीक है। (सर्टिफिकेशन) २. मिलान या जाँच करके यह देखना कि यह ठीक या ज्यों का त्यों है न। (वेरीफिकेशन) ३. लेख्य आदि पर उसके ठीक होने की बात लिखकर हस्ताक्षर करना। (एटेस्टेशन)

सत्यापित–वि० [सं० सत्यापन] जिसका सत्यापन हुआ हो। (वेरीफाइड)

सत्र–पुं० [सं०] [वि० सत्रिक] १. यज्ञ। २. घर। मकान। ३. वह स्थान जहाँ गरीबों को भोजन बाँटा जाता है। छेत्र। सदावर्त। ४. वह नियत काल जिसमें कोई कार्य एक बार आरंभ होकर कुछ समय तक बराबर होता रहता है। (सेशन) ५. वह नियत काल जिसमें कोई कार्यकर्त्ता या प्रतिनिधि अपना काम करता है। (टर्म)

सत्र न्यायालय–पुं० [सं०] किसी जिले के जज का वह न्यायालय जिसमें कुछ विशिष्ट गुरुतर अपराधों का विचार होता है और जिसमें किसी व्यवहार या मुकदमे का विचार आरम्भ होने पर तब तक चलता रहता है, जब तक उसका निर्णय नहीं हो जाता। (सेशन्स कोर्ट)

सत्राई*–स्त्री० [सं० शत्रुता] शत्रुता दुश्मनी। उदा०–कोउ कहै सत्रु होइ दु दाई। सो तौ मैं न कीन्हि सत्राई।–सू

सत्रावसान–पुं० [सं०] [वि० सत्रा सानित] विधायिका सभाओं आदि किसी अधिवेशन का अधिकारिक रूप कुछ समय के लिए बन्द किया जाना अ अगले अधिवेशन तक के लिए स्थ किया जाना। (प्रोरोग)

सत्रिक–वि० [सं०] १. सत्र-सम्बन्धी सत्र का। २. किसी सत्र या नियत क पर होता रहनेवाला। (पीरियॉडिक) किसी सत्र या नियत काल तक बराबर ह रहनेवाला। (टरमिनल)

सत्रुहन*–पुं० दे० 'शत्रुघ्न'।

सत्व–पुं० [सं०] [वि० सात्विक] १. सत्त अस्तित्व। २. सार। तत्त्व। ३. चैत ४.जीवनी शक्ति। प्राण। ५. अच्छा क

सत्व गुण–पुं० [सं०] प्रकृति का वह जो अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्ति करता

सत्वर–क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्

सत्संग–पुं० [सं०] [वि० सत्संगी] साधुओं या सज्जनों का संग-साथ। संगत। २. वह समाज जिसमें धर्म आध्यात्म-संबंधी चर्चा होती हो।

सत्संगति–स्त्री० = सत्संग।

सत्संगी–वि० [हिं० सत्संग] १. सत् में रहने या सत्संग करनेवाला। २. धा या आध्यात्मिक समाज में बराबर जाने और धर्म शील।

सथर*–स्त्री० [सं० स्थल] भूमि।

सथिया–पुं० [सं० वास्तविक] १. स्व चिह्न卐। २. भारतीय ढंग से फोड़ चीर फाड़ करनेवाला। अस्त्र-चिकित्स ३. जुलाहों के काम की बाँस या सरकंडे पतली छड़ी। सर।

[सं० सद्य] ताजा । हाल का ।
] बढ़िया । अच्छा ।
= सदैव या सदा ।
[अ० सदकः] १. खैरात ।
छावर । उतारा ।
[अ० सदकः] निछावर किया
किसी के लिए अपना सर्वस्व
ने का सूचक)
[सं०] सदा चलता
।
। हवा । २. सूर्य ।
= सदाचारी ।
और सत्य । उदा०–एतो ही
सम्मति सदचारी ।–रत्ना० ।
सं०] [वि० सदनिक] १.घर ।
स्थान जिसमें किसी विषय पर
नियम, विधान आदि बनाने-
अधिवेशन होता हो । ३. उक्त
होनेवाली सभा या उसमें
होनेवाले लोगों का समूह । ४.
भवन जिसमें बहुत से लोग
के रूप में उपस्थित हों ।
के स्थानों में उपस्थित होने-
समूह । (हाउस, उक्त सभी
)
हरि-भक्त कसाई का नाम ।
सद्यस्] थोड़े दिनों का ।
।
[अ० सद्मः] किसी दुःखद
घात या चोट ।
[सं०] [भाव० सदयता]
दया हो । दयालु ।
[अ० सद्र] प्रधान । मुख्य ।
स्थान जहाँ कोई बड़ा अधि-
या किसी विभाग का प्रधान
केंद्र-स्थल । २. सभापति ।
पुं० [अ० सद्र + आला =
अदालत का एक प्रकार का वैचारिक अधिकारी जो जज से छोटा होता है ।

सदराला–पुं० दे० 'सदर-आला' ।

सदरी–स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती ।

सदर्थना*–स० [सं० समर्थ] समर्थन या पुष्टि करना ।

सदसद्विवेक–पुं० [सं०] सद् और असद् या अच्छे और बुरे की पहचान या विवेक ।

सदसि*–स्त्री० [सं० सदस्य] सदस्य या सभ्यों के बैठने का स्थान । उदा०–विपुल-भूपति-सदसि महँ नर-नारि कह्यो प्रभु पाहिं ।—तुलसी ।

सदस्य–पुं० [सं०] [भाव० सदस्यता] सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति । सभासद । (मेम्बर)

सदस्यता स्त्री० [सं०] सदस्य का भाव या पद (मेम्बरशिप)

सदा–अव्य० [सं०] १. नित्य । हमेशा । स्त्री० [अ०] १. शब्द । आवाज । २. पुकार । संगीत में कोई सुन्दर स्वर लहरी ।

सदाचरण (चार)–पुं० [सं०] उत्तम आचरण अच्छा चाल-चलन ।

सदाचारिता–स्त्री० दे० 'सदाचरण' ।

सदाचारी–पुं० [सं० सदाचारिन्] [स्त्री० सदाचारिणी] नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरणवाला मनुष्य ।

सदा-फल–वि० [सं०] वृक्ष जो सदा या बारहो महीने फल देता हो ।
पुं० १. एक प्रकार का नीबू । २. गूलर । ३. नारियल । ४. बेल । (वृक्ष और उसका फल)

सदा-बहार–वि० [हिं० सदा + फा० बहार] सदा हरा रहनेवाला वृक्ष ।

सदारत–स्त्री० [अ०] सभापतित्व ।

सदावर्त–पुं० [सं० सदाव्रत] वह स्थान जहाँ गरीबों को नित्य भोजन मिलता हो ।

अन्न-सत्र ।

सदाशय-वि० [सं०] [भाव० सदाशयता] सज्जन । भला-मानस ।

सदाशिव-पुं० [सं०] शिव । महादेव । वि० सर्वदा कल्याण करनेवाला ।

सदा-सुहागिन-स्त्री=वेश्या । (परिहास)

सदी-स्त्री० दे० 'शती' ।

सदुपदेश-पुं० [सं०] १. उत्तम उपदेश । अच्छी शिक्षा । २. अच्छी सलाह ।

सदुपयोग-पुं० [सं० सद् + उपयोग] सद् या अच्छा उपयोग । अच्छी तरह या अच्छे काम में लगना ।

सदूर*-पुं० [सं० शार्दूल] सिंह । शेर । उदा०—बेगि आइ पिउ बाजहु गाजहु होइ सदूर ।—जायसी ।

सदृश-वि० [सं०] [भाव० सादृश्य] समान । तुल्य ।

सदेह-क्रि० वि० [सं०] १. इसी शरीर से । सशरीर । २. मूर्त्तिमान् । प्रत्यक्ष ।

सदैव-अव्य० [सं०] सदा । हमेशा ।

सद्गति-स्त्री० [सं०] मरने के बाद अच्छे लोक में जाना ।

सद्गुण-पुं० [सं०] [वि० सद्गुणी] अच्छा गुण ।

सद्गुरु-पुं० [सं०] १. अच्छा गुरू । २. परमात्मा ।

सद्द*-पुं० [सं० शब्द] १.शब्द । ध्वनि । अव्य० [सं० संध] तुरंत । तत्काल । वि० तुरंत का बना । ताजा ।

सद्दर्शन-पुं० [सं०] सद् या उत्तम और उच्च कोटि का दर्शन शास्त्र ।

सद्धर्म-पुं० [सं०] [अनुयायी सद्धर्मी] १. अच्छा या उत्तम धर्म । २. बौद्धधर्म ।

सद्भाव-पुं० [सं०] १. प्रेम और हित का भाव । २. कोई काम करने में सच्चा या अच्छा भाव या नीयत । (गुडविल) ३. मेल-जोल । मैत्री ।

सद्भावना-स्त्री० [सं०] १. अच्छी और शुभ भावना । २. किसी के हित, मंगल या सद्भाव की भावना या कामना या उसे प्रकट करने की स्थिति । जैसे-पश्चिमी एशिया में भारत का सद्भावना मंडल जायगा । ३. कार-बार या व्यापारि संस्था बेचने के प्रसंग में एक तत्व जिस अन्तर्गत उस कार-बार का नाम और उस साथ रहनेवाला ग्राहकों आदि का संबं भी रहता है और जो प्रायः कार-बार साथ ही बेचा जाता है । (गुडविल)

सद्म-पुं० [सं० सद्मन्] [स्त्री० अल्पा सद्मिनी] १. घर । मकान । २. युद्ध ।

सद्मिनी-स्त्री० [सं०] १. छोटा सु घर । २. कोठरी ।

सद्य(:)-अव्य० [सं०] १. आज के दि आज ही । २. इसी समय । अभी । उदा कीरति कुमारी के दरस-रस सद्य वही छलकनि चाहि पलकनि तुलकाए लेत ।- रत्ना० । ३. तुरंत । तत्काल । उसी सम

सद्रूप-वि० [सं०] [भाव० सद्रूपत १. अच्छे स्वरूपवाला । सुन्दर । २. अ गुण और आचरणवाला । सज्जन । उदा 'साधु-सील सद्रूप पुरुष को, अपजस उच्चरतौ' ।—सूर ।

सद्वृत्त-वि० [सं०] [भाव० सद्वृत्ति अच्छी वृत्ति या आचरणवाला । सदाचा

सद्व्रत(ी)-वि० [सं०] [स्त्री० सद्व्र १. जिसने अच्छा व्रत धारण किया २. सदाचारी । नेक-चलन । पुं० उत्तम या शुभ व्रत ।

सधना-अ० [हिं० साधना] १. सिद्ध होना । काम पूरा होना । २. चलना या निकलना । मतलब निकल ३. अभ्यस्त होना । मँजना । ४. प्रयो सिद्धि के अनुकूल होना । ५. हो सक ६. निशाना ठीक बैठना ।

सधर-पुं० [सं०] ऊपर का होंठ ।

सधर्मी-वि० [सं० सधर्मिन्] [भा

किसी के समान धर्म रखने-
के समान धर्म, गुणों आदि
र्मी' का विपर्य्याय ।
[हिं० विधवा का अनु०] वह
जीवित हो । सुहागिन ।
[हिं० साधना] १. साधने
से कराना । २. पूरा, सम्पन्न
। निपटाना । जैसे-परोसा
सधाना = खा कर समाप्त
पशु-पक्षियों आदि को सिखाकर
के योग्य बनाना । जैसे-मदारी
को साधता है ।
[हिं० साधू + उक्कड़
साधुओं का-सा । साधुओं की
-सधुक्कड़ी बोली या कविता ।
होने का भाव । साधुता ।
] १. वर्ष । २.दे० 'संवत्' ।
शण] एक पौधा जिसके
और टाट बनते हैं ।
] वेग से चलने या निकलने
।
सं० संग] साथ ।
(प्रा० संतो) 'से' विभक्ति, का
उदा०-प्रात कहा मुनि सन
तुलसी ।
[अ०] [वि० सनअती]
शिल्प-कौशल ।
[हिं० सन (वनस्पति)] सन
एक प्रकार का छोटा पौधा ।
[सं० शंक = खटका] पागलों
वृत्ति या आचरण । झक्क ।
चढ़ना या सवार
की सीमा तक पहुँचती
।
[हिं० सनक] १. पागल
पागलों की-सी बातें या आ-

सनकारना*-अ० [हिं० सैन करना] संकेत या इशारा करना । उदा०—सनकारे सेवक सकल चले स्वामी रुख पाई ।—तुलसी ।

सनकियाना†-अ० = सनकारना ।

सनत्कुमार-पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक ।

सनद-स्त्री० [अ०] [वि० सनदी] १. प्रमाण । सबूत । २. प्रमाण-पत्र ।

सनना-अ० [सं० संधम्] १. गीला हो कर किसी में मिलना । २. किसी के अन्दर घुसकर उसमें मिलना । ३. लीन होना ।

सनबंध*-पुं० = संबंध ।

सनम-पुं० [अ०] प्रिय नायक या नायिका ।

सनमानना*-स० [सं० सम्मान] सम्मान या सत्कार करना ।

सनमुख*-अव्य० = सम्मुख । (सामने)

सनसनाना-अ० [अनु०] (हवा का) सन-सन शब्द करते हुए चलना या बहना ।

सनसनाहट-स्त्री० [अनु०] सन-सन शब्द होने की क्रिया या भाव ।

सनसनी-स्त्री० [अनु० सन] १. शरीर के संवेदन-सूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन जिसमें कोई अंग जड़ होकर सन-सन करता हुआ जान पड़ता है । झुनझुनी । २. किसी विकट घटना के कारण लोगों में फैलनेवाली आश्चर्यपूर्ण स्तब्धता या उत्तेजना । उद्वेग । घबराहट । (सेन्सेशन)

सनहक(की)-स्त्री० [अ०] मिट्टी का एक प्रकार का बरतन । (मुसल०)

सना*-प्रत्य० [सं० संग] अवधी में 'कारण कारक' का चिह्न । साथ । से ।

सनाढ्य-पुं० [सं०] ब्राह्मणों का एक भेद जो गौड़ों के अन्तर्गत है ।

सनातन-पुं० [सं०] [भाव० सनातनता] १. अत्यंत प्राचीन काल । २. बहुत दिनों से चला आया हुआ व्यवहार, क्रम या परम्परा ।

वि० बहुत दिनों से चला आया हुआ।

सनातन धर्म-पुं० [सं०] १. पुराना या परंपरागत धर्म। २. आज कल का हिंदू धर्म, जिसमें पुराण, तंत्र, मूर्त्ति-पूजन आदि विहित और माननीय हैं।

सनातनी-पुं० [सं० सनातन + ई(प्रत्य०)] सनातन धर्म का अनुयायी।
वि० दे० 'सनातन'।

सनाह-पुं० [सं० सन्नाह] कवच। बकतर।

सनि*= शनि (ग्रह)।

सनित*-वि० [हिं० सनना] सना या एक में मिला हुआ। मिश्रित। (अशुद्ध रूप) उदा०-सद्गंधों से सनित मुख की वास संबंध से आ।—हरिऔध।

सनिपात*-पुं० = सन्निपात।

सनीचर-पुं० दे० 'शनैश्चर'।

सनेस(ा) पुं० = संदेश।
*पुं० = स्नेह।

सनेहा(रा)*पुं० = स्नेह।

सनेही-वि० [सं० स्नेही] स्नेह या प्रेम रखनेवाला। प्रेमी।

सनौ*-अव्य० [सं० संग] मिला हुआ। युक्त।

सनौढ़िया-पुं० = सनाढ्य (ब्राह्मण)।

सन्न-वि० [सं० शून्य या अनु०] १. संज्ञाशून्य। निश्चेष्ट। जड़। २. स्तब्ध। भौचक। ३. डर से चुप।

सन्नद्ध-वि० [सं०] १. तैयार। उद्यत। २. काम में पूरी तरह लगा हुआ। उदा०-दैव सनद्ध (सन्नद्ध) कटिबद्ध कौन थिरता फिर थापै।—रत्ना०।

सन्नयन-पुं० [सं०] १. ले जाना। २. लेख या लेख्य आदि के द्वारा किसी संपत्ति, विशेषतः अचल सम्पत्ति का एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। अंतरण। (कन्वेयन्स)

सन्नयनकार (लेखक)-पुं० [सं०] वह जो सन्नयन-सम्बन्धी लेख्य आदि लिखकर प्रस्तुत करता हो। (कन्वेयसर)

सन्नयन-लेखन-पुं० [सं०] सन्नय विषयक लेख्य आदि लिखने का काम (कन्वेयसिंग)

सन्नयन विद्या-स्त्री० [सं०] वह वि या शास्त्र जिसमें सन्नयन सम्बन्धी ले आदि प्रस्तुत करने का विवेचन होता (कन्वेयसिंग)

सन्नाटा-पुं० [हिं० सन से अनु०] वह अवस्था जिसमें कहीं कुछ भी श न होता हो। नीरवता। निस्तब्धता। निर्जनता। एकान्तता। ३. भौचक्कापन

मुहा०-सन्नाटे में आना = स्तब्ध हक्का-बक्का हो जाना।

४. पूरा मौन। चुप्पी।

मुहा०-सन्नाटा खींचना या मारन बिलकुल चुप हो जाना। **सन्ना छाना** = सब लोगों का बिलकुल स्त हो जाना।

५. चहल-पहल आदि का अभाव।
पुं० जोर से हवा चलने का शब्द।
वि० १. निर्जन। एकान्त। २. नीर निःशब्द।

सन्नाह-पुं० [सं०] कवच। बकतर।

सन्निकट-अव्य० [सं०] समीप। पा

सन्निकर्ष-पुं० [सं०] [वि० सन्निकृ १. संबंध। लगाव। २. निकटता।

सन्निधाता-पुं० [सं० सन्निधातृ] प्राच भारतीय राजनीति में वह व्यक्ति जो रा कोष का प्रधान अधिकारी होता था।

सन्निधान-पुं० [सं०] १. स्थापि करने, रखने, बैठाने आदि की क्रिया भाव। २. समीपता। निकटता।

सन्निधि-स्त्री० [सं०] १. आपस आमने-सामने होने की स्थिति। मुकाबला
२. समीपता। निकटता।

सन्निपात-पुं० [सं०] एक रोग जिस कफ, वात और पित्त तीनों बिगड़ जाते

ाने के कारण फेफड़ों में
ी है। त्रिदोष। सरसाम।
)
ुं० दे० 'अधियोजन'।
० [सं०] [संज्ञा सन्निवेश]
र्गत आया या मिलाया हुआ।
[सं०] [वि० सन्निविष्ट]
या स्थित होना। २. सजा
खना। ३. अँटना। समाना।
ना। इकट्ठा होना। जुटना।
ुं० [सं०] [वि० सन्निविष्ट]
ो किसी दूसरी वस्तु या बात
लाना। सन्निविष्ट करना।
२. सजा, जमा या लगा-

० [सं०] १. साथ या पास
। २. पास का।
दे० 'सम्मान'।
ुं० दे० 'सन्निपात'।
दे० 'संन्यास'।
० [सं० स+पंक=कीचड़]
े भरा हुआ। २. जिसे पार
कठिन हो। बीहड़। विकट।
दे० 'श्वपच'।
० दे० 'सपुचना'।
[सं०] पत्नी की दृष्टि से
ी दूसरी स्त्री। सौत। सौतिन।
० [सं०] पत्नी के सहित।
वि० [हिं० स+पद=
ी (मुख्यतः चलते हुए)।
[सं० स्वप्न] अच्छी तरह
ी दशा में दिखाई देनेवाला
या घटना। स्वप्न।
ोई चीज) सपना हो
दुर्लभ या अप्राप्य हो
में भी दिखाई न दे।
[सं० स्वप्न] स्वप्न

अ० स्वप्न देखना।

सपनी*–स्त्री० [सं० स्वप्न] स्वप्न देखने की अवस्था।

सपरदाई–पुं० [सं० संप्रदायी] वेश्या के साथ तबला या सारंगी बजानेवाला आदमी। समाजी।

सपरना–अ० [सं० संपादन] १. काम का पूरा होना। निपटना। २. काम का हो सकना।

सपराना–स० हिं० 'सपरना' का स०।

स-परिषद्–क्रि० वि० [सं०] अपनी परिषद् के सदस्यों या मन्त्रियों आदि के साथ। जैसे—स-परिषद राज्यपाल या प्रान्त-पति = अपने मन्त्रियों या परिषद् के साथ राज्यपाल (का कोई काम करना या कोई आज्ञा देना)।

सपाट–वि० [सं० स+पट्ट] १. जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो। सम-तल। २. जो क्षितिज की ओर एक ही सीध में दूर तक सीधा चला गया हो। (हारिजन्टल) (विशेषतः भूमि या मैदान)

सपाटा–पुं० [सं० सर्पण] १. चलने या दौड़ने का वेग। २. तीव्र गति। दौड़। **यौ०–सैर सपाटा** = मन बहलाने के लिए कहीं जाकर घूमना-फिरना।

सपाटू–पुं० [देश०] महोगनी नामक वृक्ष का खाया जानेवाला फल।

सपाद–वि० [सं०] जिसमें पूरे एक के साथ चौथाई और मिला हो। सवाया।

सपिंड–पुं० [सं०] एक-ही कुल के वे लोग जो एक ही पितरों को पिंड देते हों।

सपिंडी–स्त्री० [सं० सपिंड] मृतक के श्राद्ध में वह क्रिया, जिसके अनुसार वह दूसरे मृत पूर्वजों के साथ मिलाया जाता है।

सपुचना*–अ० [सं० संपूर्ण] १. पूर्णता तक पहुँचना। पूरा होना। उदा०—नादे बिंदे रुधिर के संगे। घट ही में घट सपुचे।—कबीर। २. बढ़ना। ३. (आग)

सुलगना।

सपुर्द-वि॰ [फा॰ सिपुर्द] [भाव॰ सपुर्दगी] १. किसी के जिम्मे किया हुआ। किसी को सौंपा हुआ। जैसे-लड़का या मकान किसी को सपुर्द करना। २. उचित कार्य्य, विचार आदि के लिए किसी अधिकारी के हाथ सौंपा हुआ (कमिटेड) जैसे-चोर को पुलिस के सपुर्द करना, अभियुक्त को दौरा सपुर्द करना।

सपुर्दगी-स्त्री॰ [फा॰] किसी के सपुर्द किये जाने, होने या रहने का भाव।

सपूत-पुं॰ [सं॰ सत्पुत्र] अच्छा और योग्य पुत्र।

सपेट*-स्त्री॰ = झपट।

सप्त-त्रि॰ [सं॰] छः और एक। सात।

सप्तक-पुं॰ [सं॰] १. एक ही तरह की सात वस्तुओं, कृतियों आदि का समूह। जैसे-सतसई सप्तक। २. संगीत में सातों स्वरों का समूह। 'षड्ज' से 'निषाद' तक के सातों स्वर। (साधारणतः गाने बजाने के लिए तीन सप्तक माने गये हैं-मन्द्र, मध्य और तार।)

सप्तपदी-स्त्री॰ [सं॰] विवाह के समय वर और वधू का अग्नि की सात परिक्रमाएँ करना। भाँवर। भँवरी।

सप्त-भुज-पुं॰ [सं॰] सात भुजाओंवाला क्षेत्र। (हेप्टैगन)

सप्तम-वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमी-स्त्री॰ [सं॰] १. चान्द्र मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २. अधिकरण कारक की विभक्ति। (व्याकरण)

सप्तर्षि-पुं॰ [सं॰] १. इन. सात ऋषियों का समूह या मंडल-(क) गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि; अथवा-(ख)-मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वशिष्ठ। २. वे सात तारे जो साथ रहकर ध्रुव की परिक्रमा करते हुए दिखलाई पड़ते हैं। (चर्ल्स वेन)

सप्तशती-स्त्री॰ [सं॰] सात सौ (छन्दों आदि) का समूह। सतसई।

सप्ताह-पुं॰ [सं॰] [वि॰ साप्ताहिक] १. सा दिनों का काल। हफ्ता। २. सोमवार से रविवा तक के सात दिन। ३. भागवत, रामाय आदि की पूरी कथा सात दिनों में पढ़ या सुनना।

सफ-स्त्री॰ [अ॰] पंक्ति। कतार।
*स्त्री॰ [फा॰ सैफ] तलवार।

सफ-जंग-स्त्री॰ [फा॰ सैफ़ = तलवार जंग = युद्ध] योद्धाओं में तलवारों होनेवाली लड़ाई।

सफर-पुं॰ [अ॰] यात्रा।

सफर-मैना-स्त्री॰ [अं॰ सैपर + माइन सेना के वे सिपाही जो खाई खोदने, काटने या रास्ता साफ करने के लिए आगे-आगे चलते हैं।

सफरी-वि॰ [अ॰ सफर] सफ़र में आनेवाला। (छोटा और हलका)
स्त्री॰ [सं॰ शफरी] सौरी मछली।
स्त्री॰ [देश॰] धातु का एक प्रकार पीला वरक या पन्नी।

सफल-वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ सफला, भा सफलता] १. जिसमें फल लगा हो। जिसका कुछ फल या परिणाम सार्थक। ३ जिसने प्रयत्न करके कार्य उद्देश्य सिद्ध कर लिया हो। कृतका कामयाब। (सक्सेसफुल)

सफलता-स्त्री॰ [सं॰] 'सफल' होने भाव। कार्य की सिद्धि। कामयाबी (सक्सेस)

सफलित*-वि॰ = सफल।

सफलीभूत-वि॰ [सं॰] जिसने सफ प्राप्त कर ली हो। जो सफल हो चुका हो

सफा-वि॰ दे॰ 'साफ'।
पुं॰ [अ॰ सफहः] पुस्तक का पृष्ठ।

सफ़ाई-स्त्री॰ [अ॰ सफ़ा] १. 'साफ' हो की क्रिया या भाव। २. लड़ाई-झगड़

रा। दुर्भाव न रह जाना।
अपनी निर्दोषिता प्रमाणित

[हिं० साफ़] बिलकुल
ना।

[अ० साफ़] १. कुछ भी
ाना। पूरी सफाई। २.
।

[अ० सफ़ीनः] अदालत या
से हाजिर होने का बुलावा।

[फ़ा० सुफ़ैद] उजला।

-पुं० [हिं० सफेद + अ० दाग़]
रोग मे शरीर पर होने-
धब्बा। श्वेत कुष्ठ।

-पुं० [फ़ा०] [भाव० सफेद·
साफ कपड़े पहननेवाला। २.
स्थ, पर भला आदमी।

[फ़ा० सुफ़ैदः] १. जस्ते का
के काम में आता है। २.
बढ़िया आम। ३. एक
बड़ा वृक्ष जिसकी कलियों
से निकलनेवाला सुगंधित तेल
में आता है। गंध सफेदा।
)

[फ़ा० सुफ़ैदी] १. सफेद
। श्वेतता। उजलापन।

फेदी आना = बाल सफेद
आना।

आदि पर चूने की सफेद रंग
। कली।

[सं० सर्व] १. जितने हों, वे
। २. पूरा। सारा।

[फ़ा०] १. पाठ। २. शिक्षा।
दे० 'सब्ज'।

[सं० शब्द] १. दे० 'शब्द'।
साधु-महात्मा के वचन। ३.
आदि की उपदेशपूर्ण बात।

-वि० = सर्वदर्शी।

सबब–पुं० [अ०] कारण। वजह।

सबय*–पुं० [सं० स + वय = अवस्था] १. समान अवस्था या उमरवाला। समवयस्क। २. सखा। साथी।

सबर–पुं० [अ० सब्र] संतोष। धैर्य।

मुहा०–किसी का सबर पड़ना = किसी के चुपचाप सहन किये हुए मानसिक कष्ट का प्रकारान्तर से प्रतिफल मिलना।

सबरा†–वि० [स्त्री० सबरी] = सब (समस्त)।

सबरी–स्त्री० [सं० शर्वला = कुदाली मिट्टी या दिवार खोदने का एक औजार साबर।

*स्त्री० दे० 'शबरी'।

सबल–वि० [सं०] [भाव० सबलता] १. बलवान्। ताकतवर। २. जिसके साथ सेना हो।

सबार*–क्रि० वि० [हिं० सबेरा] १. शीघ्र। जल्दी। २. सबेरे। उदा०–पूस-मास सुनि सखिनु प, साईं चलत सवारु। –बिहारी। ३. उचित या उपयुक्त समय से पहले।

सबी*–स्त्री० [अ० शबीह] चित्र। तसवीर। उदा०–लिखन बैठि जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर। —बिहारी।

सबील–स्त्री० [अ०] १. युक्ति। उपाय। तरकीब। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३. पौसला।

सबुनाना–स० [हिं० साबुन] किसी चीज में विशेषतः कपड़ों आदि में साबुन लगाना।

सबुनी–स्त्री० [हिं० साबुन] किसी चीज में विशेषतः कपड़ों आदि में साबुन लगाने की क्रिया या भाव।

सबूत–पुं० [अ०] प्रमाण।

वि० [अ० साबित] जो टूटा न हो। पूरा।

सबूना†–पुं० दे० 'साबुन'।

सबेरा–पुं० = सवेरा।

सबै*–वि० = सभी।

सब्ज–वि० [फा०] १. हरा। (रंग) २.

कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि)। ३. सुन्दर और लहलहाता हुआ।

मुहा०-सब्ज बाग दिखलाना = फँसाने के लिए झूठी आशाएँ दिलाना।

सब्ज-कदम-पुं [फा०] वह जिसका आना अशुभ सिद्ध हो। मनहूस।

सब्जा-पुं० [फा० सब्ज] १. हरियाली। २. पन्ना नामक रत्न। ३. वह घोड़ा जिसका रंग कालापन लिये सफेद हो।

सब्जी-स्त्री० [फा०] १. हरापन। २. हरियाली। ३. हरी तरकारी। साग भाजी।

सब्र-पुं० दे० 'सब्र'।

सभा-स्त्री० [सं०] १. परिषद्। गोष्ठी। समिति। २. वह संस्था जो कोई विशेष कार्य करने या किसी विषय पर विचार करने के लिए बनी हो।

सभाग-पुं० = सभागा।

सभागा-वि० [हिं० स + भाग्य] भाग्यवान। 'अभागा' का विपर्याय।

सभागृह-पुं० [सं०] वह स्थान या घर जिसमें कोई सभा होती हो।

सभा-चतुर-पुं० [सं०] [भाव० सभा-चातुरी] वह जो सभा या शिष्ट समाज में बैठकर अच्छी-अच्छी बातें कह सकता हो।

सभा-चातुरी-स्त्री० [सं० सभा + हिं० चातुरी] सभा या शिष्ट समाज में बैठकर सबको प्रसन्न करनेवाली और अच्छी-अच्छी बातें कह सकने की योग्यता।

सभापति-पु० [सं०] [भाव० सभापतित्व] सभा का प्रधान, नेता या मुखिया। (प्रेसिडेन्ट)

सभा-मंडप-पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कोई सभा या समाज एकत्र होता हो। २. देव-मंदिरों में गर्भ-गृह के सामने का वह स्थान जहाँ भक्त लोग बैठकर भजन, कीर्तन आदि करते हैं। जगमोहन।

सभा सचिव-पुं० दे० 'सांसद मंत्री'।

सभासद-पुं० [सं०] वह जो किसी सभा में उसके अंग के रूप में और अधिकार-पूर्वक रहता हो। सदस्य। (मेम्बर)

सभिक-पुं [सं०] वह जो अपने यहाँ लोगों को बैठाकर जूआ खेलता और बदले में उनसे कुछ धन लेता हो। फड़बाज।

सभी-वि० [हिं० सब + ही] सब कोई।

सभीत-वि० दे० 'भीत'।

सभेय-वि० [सं०] सभा या शिष्ट समा के योग्य।

पुं० वह जो सभा या शिष्ट समाज में बैठ अच्छी-अच्छी बातें कह सकता हो।

सभ्य-वि० [सं०] [भाव० सभ्यता] अ आचार-विचार रखने और भले आदमियों सा व्यवहार करनेवाला। शिष्ट। (सिविल पुं० १. सभा का सदस्य। सभासद। वह जिसका व्यवहार सज्जनों और शि का-सा हो। भला आदमी।

सभ्यता-स्त्री० [सं०] १. सभ्य होने का भाव २. सदस्यता। ३. शील और सज्जन की अवस्था या भाव। भलमनसत। श फत। ४. किसी जाति या राष्ट्र की वे बातें जो उसके सौजन्य तथा शि और उन्नत होने की सूचक होती (सिविलाईजेशन)

समंजन-पुं० [सं०] [वि० समंजित १. ठीक करना या बैठाना। २. लेन-दे का हिसाब या इसी तरह का और काम ठी करके बैठाना। (ऐडजस्टमेंट) विशे दे० 'संधान' ४, ५.।

समंजस-वि० [सं०] [भाव० सामंजस्य प्रसंग, उल्लेख आदि के विचार से ठी बैठनेवाला उपयुक्त। ठीक।

समंद-पुं० [फा०] मटमैले बादामी रं का घोड़ा।

समंदर-पुं० [सं० समुद्र] १. सागर समुद्र। २. बड़ा तालाब या झील।

पुं० [फा०] चूहे के आकार का एक प्रकार का कल्पित जन्तु जिसकी उत्पत्ति आग से मानी जाती है।

] [स्त्री० समा, भाव०
आदि से अन्त तक प्रायः
हो। जिसमें कहीं बहुत
हेर-फेर न हो। २. जिसका
ऊबड़-खावड़ न हो।
(संख्या) जिसे दो से भाग
न बचे। जूस। (ईवेन)
के समान या बराबर।
मानना।
में वह स्थान जहाँ लय के
की समाप्ति होती है और
वालों का सिर हिलता या हाथ
आघात सा करता है। २.
अलंकार जिसमें स्थिति के
किसी कार्य का अथवा रूप
अनुरूप कार्यों, गुणों आदि
है।

विष। जहर।
] शपथ। सौगंध। कसम।
[सं०] १. समान।
सब बातों में किसी के बराबर
का। (पैरेलल)
कार-स्त्री० [सं० + हिं०] वह
जो किसी देश की पुरानी सर-
अयोग्य आदि समझकर
लेने और उसे नष्ट करने के
है। (पैरेलल गवर्नमेंट)
-वि० [सं०] जो (दो या
में हुए हों। (कन्टेम्परेरी)
स्त्री० = 'सम्यक' का भाव।

-स० [सं० सम = बराबर]
चीजें ठीक करके या यथा-

[सं०] ज्यामिति में ९०
को किसी बेड़ी रेखा पर
सीधी रेखा के आकर मिलने
से बनता है। (राइट ऐंगिल)
वि० [सं०] (चतुर्भुज) जिसके आमने-सामने के सभी कोण समान हों।

समकोणी-वि० [सं०] (क्षेत्र) जिसके चारो कोण बराबर हों। (रेक्टैंगुलर, आरथॉगानल)

समक्ष-अव्य० [सं०] सामने। सम्मुख

समग्री*-स्त्री० = सामग्री।

समग्र-वि० [सं०] सारा। सब।

समग्री*-स्त्री० = सामग्री।

सम-चर-वि० [सं०] सदा और सब के साथ समान रूप से आचरण या व्यवहार करनेवाला।

सम-चतुर्भुज-वि० [सं०] (ज्यामिति में क्षेत्र) जिसके चारो भुज या बाहु बिलकुल एक से हों, छोटे बड़े न हों।

सम-छंद-पुं० दे० 'सम-वृत्त'।

समझ-स्त्री० [सं० सम्बुद्ध, प्रा० समुज्झ, समुझ] जानने और समझने की शक्ति। बुद्धि। अक्ल। (सेन्स)

समझदार-वि० [हिं० समझ + दार] बुद्धिमान। अक्लमन्द।

समझदारी-स्त्री० [हिं० समझदार] समझ रखने या समझदार होने का भाव। बुद्धिमत्ता। (सेन्स)

समझना-स० [हिं० समझ] १. कोई बात अच्छी तरह विचार करके ध्यान में लाना। २. किसी बात का स्वरूप आदि देखकर उसके सम्बन्ध की कुछ और बातों का अनुमान या कल्पना करना। (डीम)

समझाना-स० [हिं० समझना] ऐसी बात करना जिससे कोई समझ जाय।

समझाव(ा)-पुं० [हिं० समझाना] समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

समझौता-पुं० [हिं० समझ] लेन-देन, व्यवहार, झगड़े विवाद आदि के सम्बन्ध में सब पक्षों में आपस में होनेवाला निपटारा। (एग्रीमेन्ट, काम्प्रोमाइज)

सम-तल–वि० [सं०] जिसकी सतह या तल बराबर हो । सपाट ।

समता–स्त्री० [सं०] सम या समान होने का भाव । बराबरी । तुल्यता । (इक्वैलिटी)

समताई*–स्त्री० = समता ।

समतुलन–पुं० दे० 'सम-तोलन' ।

समतूल*–वि० दे० 'सम तोल' ।

समतूली*–स्त्री० [सं० सम + तुल्य] समानता । बराबरी ।

सम-तोल–वि० [सं० सम + हिं० तोल या, सं० तुल्य] महत्त्व आदि के विचार से समान । बराबर ।

सम-तोलन–पुं० [सं०] १. महत्व आदि के विचार से सबको समान रखना । २. दोनों पलड़ों या पक्षों को समान रखना । (बैलेन्सिंग)

समत्थ*–वि० = समर्थ ।

समद*–पुं० = समुद्र ।

समदन*–स्त्री० [सं० समादान] १. उपहार । भेंट । नजर । २. भेंट । मुलाकात ।

समदना*–स० [हिं० समदन] उपहार या भेंट देना ।

अ० प्रेमपूर्वक मिलना । आनन्द या उमंग में आना ।

समदर्शी–वि० [सं० समदर्शिन्] सबको एक-सा समझनेवाला ।

सम-धरातल–पुं० [सं०] ऐसा धरातल जिसका ऊपरी भाग बिलकुल सम हो, टेढ़ा-मेढ़ा या ऊँचा-नीचा न हो । (प्लेन)

समधिक–वि० [सं०] बहुत । अधिक ।

समधियाना–पुं० [हिं० समधी] समधी का घर ।

समधी–पुं० [सं० संबंधी] [स्त्री० समधिन] पारस्परिक सम्बन्ध के विचार से, किसी के लड़के या लड़की का ससुर ।

समन–पुं० दे० 'सम्मन' ।

पुं० दे० 'शमन' ।

सम-नाम–वि० [सं०] जिसका नाम किसी और के नाम के समान हो ।

पुं० समनार्थ शब्द । पर्याय ।

समनुज्ञा–स्त्री० [सं०] [वि० समनुज्ञा
किसी व्यक्ति को कोई काम करने के लि
दिया जानेवाला अधिकार या उसका सू
पत्र । (लाइसेन्स)

समनुज्ञा अधिकारी–पुं० [सं०]
अधिकारी जो लोगों को किसी काम के
समनुज्ञा (लाइसेन्स) देता हो । (लाइसे
ऑफिसर)

समन्वय–पुं० [सं०] [वि० समन्वि
१. विरोध का अभाव । मिलान । मिला
२. कार्य या कारण की संगति या निर्वा

समन्वित–वि० [सं०] १. जिसका सम
हुआ हो । २. किसी के साथ मिला या
हुआ । किसी के अन्तर्गत आया हुआ

समय–पुं० [सं०] [वि० सामयिक] १. स
सन्ध्या या दिन-रात के विचार से काल का
मान । वक्त । २. अवसर । मौका । व
पद–समय विशेष पर = (क)
निश्चित समय पर । (ख) आनेवाले
ऐसे समय पर जब कि कोई बात हो स
हो और जिसके संबंध में कोई विधा
व्यवस्था की गई हो । (फॉर दि टाइम बी
यौ०-समय कुसमय = (क) अच्छे
शुभ दिन और बुरे या संकट के दि
(ख) उपयुक्त अवसर पर भी और अ
युक्त अवसर पर भी । मौके बे मौ
जैसे–आप समय कुसमय अपना ही
अलापते रहते हैं ।
३. अवकाश । फुरसत । खाली वक्त ।
आपस में होनेवाला किसी प्रकार का नि
करार या समझौता । ५. कोई धार्मि
सामाजिक प्रथा या परिपाटी । ६. सिद्धा
७. परिणाम । अन्त ।

समय-सारिणी–स्त्री० [सं०] को
की वह सारिणी जिसमें भिन्न-भिन्न स
पर होनेवाले कार्य्यों का विवरण सूची

है। (टाइम टेबुल) जैसे-
ल की समय-सारिणी।
[सं०] युद्ध। लड़ाई।
नार] कामदेव।
वि० = समर्थ।
स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र।
शयन।
स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र में
त होकर जमीन पर गिरने की

[सं० सम + रस] [भाव०
रस्य] १. एक ही प्रकार के
र्य)। २. एक ही तरह या
३. सदा एक-सा रहनेवाला।
स्त्री० = समर-शय्या।
[सं०] युद्ध-क्षेत्र। लड़ाई

० [हिं० सँवारना] १.
सँवाना। २. सँवारना या

[सं०] भली भाँति की
ना।
[सं०] [भाव० समर्थता,
कोई काम करने की शक्ति
नेवाला। कुछ कर सकने के
)। २. कोई काम ठीक
ने की पूरी योग्यता रखने-
उसका उपयुक्त अधिकारी।
टेन्ट) जैसे—समर्थ न्यायालय।
ों, कार्यों आदि पर अपना
ने की शक्ति रखनेवाला।
४. काम में आने या प्रयुक्त

[सं०] समर्थन करनेवाला।
[सं०] 'समर्थ' होने का
। शक्ति।
[सं०] [वि० समर्थनीय,
] यह कहना कि अमुक

विचार, सुझाव या प्रस्ताव ठीक है या इसके अनुसार काम होना चाहिए। किसी मत का पोषण। (सेकेंडिंग)

समर्थित–वि० [सं०] जिसका समर्थन हुआ हो।

समर्पक–वि० [सं०] १. समर्पण करनेवाला। २. कहीं पहुँचाने के लिए कोई माल देनेवाला। (कन्साइनर)

समर्पण–पुं० [सं०] १. किसी को आदरपूर्वक कुछ देना। भेंट या नजर करना। २. धर्म-भाव से या श्रद्धा-भक्तिपूर्वक कुछ कहते हुए अर्पित करना। (डेडीकेशन) ३. अपना अधिकार, स्वामित्व, भार आदि किसी दूसरे के हाथ में देना। सौंपना। ४. युद्ध, विवाद आदि बन्द करके अपने आपको शत्रु या विपक्षी के हाथ में सौंपना। (सरेन्डर; अन्तिम दोनों अर्थों में) ५. जमा करने, सुरक्षा पूर्वक रखने या कहीं पहुँचाने के लिए किसी को देना। (कन्साइनमेन्ट) ६. दे० 'आत्म-समर्पण'।

समर्पण मूल्य–पुं० [सं०] वह धन जो बीमा करानेवाले को अवधि पूरी होने से पहले ही अपना बीमा रद्द कराने या बीमा-पत्र लौटा देने पर मिलता है। (सरेन्डर वैलू)

समर्पना*–स० [सं० समर्पण] समर्पण करना। सौंपना।

समर्पित–वि० [सं०] १. जो समर्पण किया गया हो। २. (माल) जो कहीं भेजने के लिए दिया गया हो। (कन्साइन्ड)

समर्पितक–पुं० [सं० समर्पित] वह माल जो कहीं भेजने या पहुँचाने के लिए किसी को दिया गया हो। (कन्साइन्मेन्ट)

समर्पिती–पुं० [सं० समर्पित] १. वह जिसे कुछ समर्पित या भेंट किया गया हो। २. वह जिसके नाम कोई माल भेजा गया हो। (कन्साइनी)

सम-वयस्क–वि० [सं०] समान वयस या अवस्थावाला। बराबर की उमर का।

समवर्ती–वि० [सं० समवर्त्तिन्] १. किसी के पास या साथ रहनेवाला। २. सम-कालीन। ३. किसी के साथ समान रूप और समान भाव से होने, रहने या चलनेवाला। (कॉन्करेन्ट)

समवाय–पुं०[सं०] [वि० समवायिक, समवायी] १. समूह। झुंड। २. अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का सम्बन्ध। ३. किसी प्रकार का सदा बना रहनेवाला सम्बन्ध। नित्य-सम्बन्ध। ४. विधि या कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार व्यापारिक कार्य के लिए बनी हुई वह संस्था जिसके हिस्सेदारों को अपनी लगाई हुई पूँजी के हिसाब से, उस व्यापार से होनेवाले लाभ का अंश मिलता है। (कम्पनी)

समवायी–वि० [सं० समवायिन्] जिसका किसी के साथ सदा बना रहनेवाला या नित्य सम्बन्ध हो।

सम-वृत्त–पुं० [सं०] वह वृत्त या छंद जिसके चारों चरण समान हों।

समवेत–वि० [सं०] इकट्ठा या जमा किया हुआ। एकत्र।

सम-शीतोष्ण-कटिबन्ध–पुं० [सं०] पृथ्वी के वे दो भाग जो भूमध्य रेखा के नीचे और ऊपर उष्ण कटिबन्ध और शीत कटिबंध के मध्य में पड़ते हैं। (टेम्परेट जोन)

समष्टि–स्त्री० [सं०] १. जितने हों, उन सबका समूह, जिसमें उसके सभी अंगों या व्यष्टियों का समावेश या अन्तर्भाव होता है। 'व्यष्टि' का विरुद्धार्थक। २. साधुओं का वह भंडारा जिसमें सभी स्थानिक साधु निमंत्रित होते हैं।

समष्टिवाद–पुं० [सं०] आधुनिक राजनीति में समाजवाद का वह विकसित और उग्र रूप, जिसमें कहा जाता है कि सब पदार्थों पर राष्ट्र के सब लोगों का समान रूप में अधिकार होना चाहिए; सम्पत्ति पर व्यक्तियों का अधिकार नहीं होना चाहिए। (कम्यूनिज्म)

समष्टिवादी–पुं० [सं०] समष्टिवाद क सिद्धान्त माननेवाला। (कम्यूनिस्ट)

सम-समुन्नत–वि० [सं०] [भाव० सम समुन्नति] १. जो बराबर थोड़ी-थोड़ी दू के बाद पहलेवाले धरातल से कुछ ऊँ होता जाय। २. सीढ़ियों की तरह कुछ रहकर ऊँचा होता हुआ। (टेरेस-लाइक

समसान*–पुं०=श्मशान।

सम-सामयिक–वि० दे० 'सम-कालीन'।

समस्त–वि० [सं०] १. सब। कुल समग्र। (होल) २. समास के नियमों मिला या मिलाया हुआ। समास-युक्त।

समस्या–स्त्री० [सं०] १. वह उलझ वाली विचारणीय बात जिसका निराकर सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रस (प्रॉब्लेम) २. छंद आदि का वह अंति चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लि कवियों के सामने रखा जाता है।

समस्या-पूर्ति–स्त्री० [सं०] किसी समस् छन्द आदि के अन्तिम चरण या पद आधार पर उससे पहले रहने के योग्य च बनाकर छंद आदि पूरा करना।

समाँ–पुं० [सं० समय] समय। वक्त **मुहा०–समाँ बँधना**=। संगीत अ का) इतनी उत्तमता से संपन्न होना लोग स्तब्ध हो जायँ।

समांतर–वि० [सं०] (दो या अधिक रेखाएँ आदि जो एक सिरे से दूसरे सिरे त बराबर समान अन्तर पर रहें। (पैरेलल)

समा–स्त्री० [सं०] वर्ष। साल। उदा० राका राज जरा कारा, मास मास समा।—केशव।

समाई–स्त्री० [हिं० समाना] १. सम की क्रिया या भाव। २. शक्ति। सामर्थ ३. औकात। बिसात।

समाउ*–पुं० दे० 'समाई'।

समाक*–वि० = सम्यक्।

[सं०] किसी घटना की
बातें क्रम से कहना या
नैरेशन)।

[सं०] [स्त्री० समागता]
आया हुआ। जैसे-समागत
जो इस समय आकर उप-
हुआ हो। जैसे-समागत
गा।

[सं०] १. आगमन।
मिलना। २. कुछ लोगों का
कार्य के लिए कहीं इकट्ठा
भोग। मैथुन।

[सं०] संवाद। खबर।

त्र-पुं० [सं० समाचार + पत्र]
समय पर प्रकाशित होनेवाला
में अनेक प्रकार के समाचार
अखबार। २. उक्त प्रकार के
वर्ग या समूह। (प्रेस)

[सं०] १. समूह। गरोह।
रहनेवाले अथवा एक ही
करनेवाले लोगों का वर्ग,
समुदाय। ३. किसी विशिष्ट
की हुई सभा। (सोसाइटी;
में)

पुं० [सं०] वह सिद्धान्त
जाता है कि समाज के
में बहुत बढ़ी हुई विषमता
स्थापित की जानी चाहिए।
)

पुं० [सं०] वह जो समाज-
मानता हो। (सोशलिस्ट)

पुं० [सं०] वह शास्त्र जो
सामाजिक प्राणी मानकर उनके
संस्कृति की उत्पत्ति, विकास
करता है। (सोशियालोजी)

पुं० [सं० समाज-शास्त्रिन्]
ज्ञाता या पंडित।

समाजी-पुं० [हिं० आर्य समाज] वह जो आर्य समाज के सिद्धान्त मानता हो। आर्य समाज का अनुयायी। आर्य समाजी।
पुं० [हिं० समाज] वह जो वेश्याओं के साथ तबला, सारंगी, मजीरा आदि बजाते हैं। सपरदाई।

समाजीकरण-पुं० [सं० समाज + करण] किसी कार्य या बात को ऐसा रूप देना कि उसपर सारे समाज का अधिकार हो जाय और सब लोग समान रूप से उससे लाभ उठा सकें। (सोसलाइजेशन)

समादर-पुं० [सं०] [वि० समादृत] यथेष्ट आदर या सम्मान।

समादृत-वि० [सं०] जिसका खूब आदर हुआ हो। सम्मानित।

समादेश-पुं० [सं०] [वि० समादिष्ट] १. अधिकारपूर्वक किसी को कोई काम करने का आदेश या आज्ञा देना। २. इस प्रकार दिया हुआ आदेश या आज्ञा। (कमांड) ३. वह आज्ञा जो न्यायालय, कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है। (इनजंक्शन)

समादेशक-पुं० [सं०] १. वह जो किसी को कोई काम करने का आदेश दे। २. वह प्रधान सैनिक अधिकारी जिसके आदेश से सेना के सब काम होते हैं। (कमांडर) **यौ०-प्रधान समादेशक।**

समाधा-स्त्री० दे० 'समाधि'।

समाधान-पुं० [सं०] [वि० समाधानीय] १. किसी का संदेह दूर करनेवाली बात या काम। प्रबोध। तसल्ली। २. मत-भेद या विरोध दूर करना। ३. निष्पत्ति। निराकरण। ४. समाधि।

समाधानना*-स० [सं० समाधान] १. किसी का समाधान या संतोष करना। २. सांत्वना देना।

समाधि-स्त्री० [सं०] १. ईश्वर के ध्यान में मग्न होना। २. योग-साधन का चरम

फल, जिससे मनुष्य सब क्लेशों से मुक्त होकर अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त करता है। ३. वह स्थान जहाँ किसी का मृत शरीर या अस्थियाँ गाड़ी गई हों। ४. प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उनकी संज्ञा या चेतना नष्ट हो जाती है और वे कोई शारीरिक क्रिया नहीं करते। ५. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से सहायता मिलने पर किसी के कार्य में सुगमता होने का उल्लेख होता है। इसे 'समाहित' भी कहते हैं।

समाधित–वि० = समाधिस्थ।

समाधि-लेख–पुं० [सं०] वह लेख जो किसी मृत व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय कराने के लिए उसकी समाधि या कब्र पर लिखा या अंकित किया जता है। (एपिटैफ)

समाधिस्थ–वि० [सं०] जिसने समाधि ली या लगाई हो। समाधि में स्थित।

समान–वि० [सं०] [भाव० समानता] आकार, गुण, मूल्य, महत्त्व आदि के विचार से एक-जैसे। बराबर। तुल्य।

*स्त्री० दे० 'समानता'।

समानक–पुं० [सं०] १. वह जो मूल्य, महत्त्व, कार्य आदि के विचार से किसी से पूरी समानता या बराबरी रखता हो। (ईक्विवेलेन्ट) २. दे० 'समानार्थक'।

समानता–स्त्री० [सं०] समान, बराबर या तुल्य होने की दशा या भाव। (ईक्वैलिटी)

समानांतर–वि० दे० 'समांतर'।

समाना–अ० [सं० समावेश] १. किसी वस्तु के अन्दर पहुँचकर भर जाना या उसमें लीन हो जाना। भरना। *२. कहीं से चलकर आना। पहुँचना।

स० अंदर करना। भरना।

समानाधिकरण–पुं० [सं०] वाक्य में अपने किसी समानार्थी शब्द या पद का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आनेवाला शब्द या पद। (व्याकरण)

समानार्थ–पुं० [सं०] वे शब्द जिनका अर्थ एक हो या एक-सा हो। पर्याय। (सिनॉनिम)

समानार्थक–वि० [सं०] (किसी शब्द के समान अर्थ रखनेवाला (दूसरा शब्द) पर्यायवाची। (सिनॉनिमस)

पुं० दे० 'समानार्थ'।

समापक–वि० [सं०] समाप्त करनेवाला।

समापत*–वि० = समाप्त।

समापत्ति–स्त्री० [सं०] युद्ध, दंगे, दुर्घट आदि के कारण लोगों के प्राणों या शर पर आनेवाला संकट। हताई। (कैजुऐलि

समापन–पुं० [सं०] [वि० समा समापनीय] १. कार्य समाप्त या पू करना। (डिस्पोजल) २. विवाद, विग्र आदि के समय उसका अन्त करने के लि कोई विशेष बात कहना। (वाइंडिंग अ ३. मार डालना।

समापात–पुं० [सं०] दो कार्यों या बा का संयोग-वश साथ-साथ या एक ही स में घटित होना। (कॉयनसाइडेन्स)

समापिका क्रिया–स्त्री० [सं०] व्याक में वह क्रिया जिससे किसी कार्य और फल उसके सूचक वाक्य या उप-वाक्य की सम सूचित होती हो।

समापित–वि० = समाप्त।

समाप्त–वि० [सं०] जो अन्त तक पहुँ कर पूरा हो गया हो। खतम।

समाप्ति–स्त्री० [सं०] १. किसी चल हुए काम का पूरा होना। २. सीमा, अव आदि का अन्त होना। (एक्सपाय एक्सपायरेशन) ३. किसी बात या ची का स्थायी रूप से या सदा के लिए अ होना। न रह जाना। (एक्सटिंक्शन)

समायुक्त–वि० [सं०] आवश्यकता प पर दिया या पास पहुँचाया हुआ (सप्लायड)

समायुक्तक–पुं० दे० 'समायोजक'

[सं०] [वि० समायुक्त]
कि लोगों की आवश्यकता
मिल जायँ या उनके पास
मायोजन। (सप्लाई)
पुं० [सं०] वह जो समायोग
लायर)
पुं० दे० 'समायोग'।
[सं०] १. अच्छी तरह
होना। २. समारोह।
० = सँवारना।
[सं०] १. भारी आयोजन।
२. बहुत धूम-धाम से होनेवाला
बड़ा काम। (फंक्शन)
पुं० [सं०] समालोचना
ति।
पुं० = समालोचना।
स्त्री० [सं०] १. अच्छी
लोचना जिसमें दोषों और गुणों
लग जाय। २. इस प्रकार
णों और दोषों की विवेचना
। आलोचना। (रिव्यू)
दे० 'समाई'।
पुं० [सं० समय + आवरण]
] वह टीप, लेख या सूचना
के साथ एक ही लिफाफे में
भेजी जाय। अंतर्गतक।
(एन्क्लोजर)
पुं० [सं०] १. वापस आना।
२. एक प्राचीन वैदिक संस्कार
के अध्ययन समाप्त कर लेने
में उसके स्नातक बनकर लौटने
था। ३. आधुनिक विश्व-
सभा जिसमें उच्च परीक्षाओं
वाले विद्यार्थियों को पदवियाँ
पदवीदान समारंभ। (कानवो-

दे० 'अधिवास'।
[सं० सम + आवृत]

(कागज, लेख, सूचना आदि) जो किसी पत्र के साथ एक ही लिफाफे में बन्द करके कहीं भेजा जाय। (एन्क्लोज्ड) जैसे–इस पत्र के साथ १००) सौ रुपये का चेक समावृत है।

समावेश–पुं० [सं०] [वि० समाविष्ट] १. एक साथ या एक जगह रहना। २. एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अंतर्गत होना।

समाश्रय–पुं० = आश्रय।

समाश्रित–वि० = आश्रित।

समास–पुं० [सं०] १. समर्थन। २. संग्रह। ३. सम्मिलन। ४. व्याकरण के नियमों के अनुसार दो शब्दों का मिलकर एक होना। (साधारणतः हिन्दी में यह चार प्रकार का होता है–अव्ययीभाव, समानाधिकरण, तत्पुरुष और द्वंद्व।)

समासक–पुं० [सं० समास + क (प्रत्य०)] विराम-चिह्नों के अन्तर्गत एक चिह्न जो समस्त-पदों के अलग-अलग शब्दों के बीच में लगाया जाता और उनके समास युक्त होने का सूचक होता है। समास-चिह्न।

समास-चिह्न–पुं० दे० 'समासक'। (हाइफन)

समासीन–वि० [सं०] अच्छी तरह बैठा हुआ।

समासोक्ति–स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें श्लिष्ट विशेषणों या संज्ञाओं की सहायता से कोई ऐसा वर्णन किया जाता है जो प्रस्तुत विषय के अतिरिक्त किसी दूसरे अप्रस्तुत विषय पर भी समान रूप से घटता है। जैसे–बड़ो डील लखि पील को, सबन तज्यो बन थान। धनि सरजा तू जगत में ताको हर्यो गुमान। इसमें 'सरजा' (संज्ञा) प्रस्तुत (सिंह या शेर), अप्रस्तुत (शिवाजी) के सम्बन्ध में घटता है।

समाहना–अ० [पुं० हिं० सामुहें = सामने] सामना करना। सामने आना। उदा०–त्रिबली, नाभि दिखाइ, कर सिर ढाकि, सकुचि समाहि।–बिहारी।

*स० [सं० समाहित] पकड़ना। उदा०–अनम अठेल अभंग नीर असि मीर समाहिय।––चंदबरदाई।

समाहरण–पुं० [सं०] १. एक स्थान पर इकट्ठा करना। संग्रह। २. राशि। ढेर। ३. कर, चन्दा, प्राप्य धन आदि उगाहना। वसूली। (कलेक्शन) ४. मिलाना। ५. क्रम, नियम आदि से सजकर या ठीक ढंग से इकट्ठा होना। (फॉरमेशन) जैसे–वायुयानों का समाहरण।

समाहर्त्ता–पुं० [सं० समाहर्तृ] १. समाहार या संग्रह करनेवाला। २. मिलानेवाला। ३. राज-कर या प्राप्य धन आदि उगाहनेवाला अधिकारी। (कलेक्टर)

समाहार–पुं० [सं०]१. व्याकरण में एक प्रकार का द्वन्द्व समास जिसमें उसके दोनों शब्दों के साधारण अर्थों के सिवा कुछ और अर्थ या भाव सूचित होता है। जैसे–धनीमानी। सेठ-साहूकार। २. दे०'समाहरण'।

समाहित–वि० [सं०] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ; विशेषतः सुन्दर और व्यवस्थित रूप से इकट्ठा किया हुआ। केंद्रित। २. शांत। ३. समाप्त। ४. स्वीकृत। पुं० साहित्य में समाधि नामक अलंकार का दूसरा नाम।

समिति–स्त्री० [सं०] १. सभा। समाज। २. वैदिक काल की वह सभा या संस्था जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था। ३. किसी विशेष कार्य के लिए बनी हुई छोटी सभा। (कमिटी)

समिद्ध–वि० [सं०] १. प्रज्वलित। २. भड़का या भड़काया हुआ। उत्तेजित।

समिध–पुं० [सं०] अग्नि।

समिधा–स्त्री० [सं० समिधि] हवन-कुंड में जलाने की लकड़ी।

समीकरण–पुं० [सं०] १. दो या अधिक राशियों, वस्तुओं आदि को समान या बराबर करने की क्रिया या भाव। २. गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात राशि जानी जाती है। ३. यह सिद्धकर दिखलाना कि असु अमुक राशियाँ या मान आपस में बराब हैं। (ईक्वेशन)

समीक्षक–पुं० [सं०] १. वह जो समीच करता हो। छानबीन और जाँच-पड़ता करनेवाला। (इग्जामिनर) २. समालोचक

समीक्षा–स्त्री०[सं०][वि० समीक्षित, भाव समीक्ष्य] १. छान-बीन या जाँच-पड़ता करने के लिए कोई वस्तु या बात अच्छ तरह देखना। २. आलोचना। समालोचना ३. मीमांसा-शास्त्र।

समीचीन–वि० [सं०] [भाव० सम चीनता] १. उपयुक्त। ठीक। २. उचित वाजिब।

समीति*–स्त्री० = समिति।

समीप–वि० [सं०] [भाव० समीपता निकट। पास। नजदीक।

समीर–पुं० [सं०] वायु। हवा।

समीर-कुमार–पुं० = पवनकुमार। (मान)।

समीरण–पुं० = समीर (हवा)।

समुंदर–पुं० = समुद्र।

समुंदर-फेन–पुं० [सं० समुद्र + फेन समुद्र के पानी पर तैरनेवाला फेन या जिसे सुखाकर ओषधि के रूप में काम लाते हैं।

समुचित–वि० [सं०] १. उचित। ठीक २. जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।

समुच्चय–पुं० [सं०] [वि० समुचित १. कुछ वस्तुओं का एक में मिलना (कॉम्बिनेशन) २. समूह। राशि। कुछ वस्तुओं या बातों का एक साथ जगह इकट्ठा होना। (क्यूमुलेशन) एक अलंकार जिसमें कई भावों के साथ उदित होने अथवा कई कारणों एक ही कार्य होने का वर्णन होता है।

क-पुं० [सं०] व्याकरण
जो दो शब्दों, पदों आदि
जोड़ता या मिलाता हो।
-और, तथा, व, आदि।

-स्त्री० [सं०] साहित्य में
का एक भेद जिसमें उपमेय
अनेक गुणों या धर्मों का एक
होता है।

[सं० समुच्चय] जो धीरे-
इकट्ठा और एकाकार हो गया
टेड)

[सं०] [भाव० समु-
१. विशेष रूप से उज्वल या
२. चमकीला।

= समझ।

[सं०] १. उठने की क्रिया
उत्पत्ति। ३. आरंभ।

[सं०] [भाव० समुत्सुकता]
से उत्सुक।

वि० दे० 'समुदाय'।

[सं०] १. समूह। ढेर।
। (एसेम्बली)

। कुल।

= समुदाय।

= उद्यत।

[सं०] [वि० समुद्रीय, समुद्री]
की वह विशाल राशि जो
भाग को चारो ओर से घेरे
। अंबुधि। उदधि। २.
के ज्ञान या गुण का बहुत

दे० 'समुंदर-फेन'।

[सं०] १. एक प्रसिद्ध
जिसमें देवताओं और दानवों
मथा था। इस मंथन से
निकले थे—लक्ष्मी, मणि,
अमृत, शंख, ऐरावत हाथी,
कामधेनु, धन, धनवंतरि वैद्य, विष और घोड़ा। २. कुछ ढूँढ़ने या काम करने के लिए बहुत अधिक विषयों या ग्रन्थों की छानबीन।

समुद्र-मथन-पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक दानव का नाम। २. दे० 'समुद्र-मंथन'।

समुद्र-यात्रा-स्त्री० [सं०] समुद्र पार करके दूसरे देश में जाना।

समुद्र-यान-पुं० [सं०] समुद्र में चलनेवाली कोई सवारी या जहाज।

समुद्री-वि० [सं० समुद्रीय] १. समुद्र संबंधी। समुद्र का। २. सामुद्रिक शक्ति या सेना से सम्बन्ध रखनेवाला। नौ-सैनिक। (नैवेल)

समुद्रीय-वि० [सं०] १. समुद्र में रहने या होनेवाला। २. समुद्र का। समुद्र-संबंधी।

समुन्नत-वि० [सं०] भली-भाँति उन्नत।

समुन्नति-स्त्री० [सं०] [वि० समुन्नत] १ यथेष्ट उन्नति। २. उच्चता। ऊँचाई।

समुपस्थिति-वि० = उपस्थित।

समुल्लास-पुं० [सं०] १. उल्लास। आनन्द। प्रसन्नता। २. किसी ग्रन्थ का परिच्छेद या प्रकरण।

समुहा*-वि०, क्रि० वि० = सामने।

समुहाना*-अ० [सं० सम्मुख] १. सामने आना। उदा०—'अति भय त्रसित, न कोऊ समुहाई।—तुलसी। २. मुकाबला करना। सामना करना। उदा०—'ढीठ, निठुर, न डरति काहूँ, त्रिगुनह्वै समुहाई'।—सूर।

समूचा-वि० [सं० समुच्चय] १. सारा। सब। कुल। २. जो कटा या टूटा न हो। अखंड। पूरा।

समूढ़-वि० [सं०] १. इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। संचित। २. भोगा हुआ। भुक्त। ३. संगत। ठीक। ४. जो अभी उत्पन्न हुआ हो। ५. ब्याहा हुआ। विवाहित। पुं० १. समूह। राशि। ढेर। २. आगार। भंडार। उदा०—'प्रौढ़ रूढ़ि की समूढ़ गूढ़

गेह में गयो' ।—केशव ।

समूर–पुं॰ [अ॰] साबर । (हिरन)

समूरा†–वि॰ [सं॰ समस्त] सब। समूचा। सारा ।

समूल–वि॰ [सं॰] जिसका मूल या हेतु हो। क्रि॰ वि॰ जड़ से । मूल सहित ।

समूह–पुं॰[सं॰]१.बहुत सी चीजों का समूह। राशि । २. मनुष्यों का समुदाय। झुण्ड ।

समूहतः–क्रि॰ वि॰ [सं॰] सारे समूह के रूप में । सामूहिक रूप से । (एन-ब्लॉक) जैसे-सुधारवादियों ने समूहतः त्याग-पत्र दे दिया ।

समूहीकरण–पुं॰ [सं॰ समूह + करण] वस्तुओं के ढेर या समूह बनाने की क्रिया या भाव ।

समृद्ध–वि॰ [सं॰] सम्पन्न । धनवान् ।

समृद्धि–स्त्री॰ [सं॰] धन, वैभव आदि की अधिकता । संपन्नता ।

समेटना–स॰ [हिं॰ सिमटना] बिखरी या फैली हुई चीजें इकट्ठी करना ।

समेत–वि॰ [सं॰] संयुक्त । मिला हुआ । अव्य॰ सहित । साथ ।

समैया*–पुं॰ = समय ।

समोखना*–स॰ [सं॰ सम्मुख] बहुत ताकीद से या जोर देकर कहना ।

समोधना*–स॰ [सं॰ सम्बोधन] समझा· बुझाकर शान्त करना या ठीक रास्ते पर लाना ।

समोना*–स॰ [?] मिलाना । *अ॰ १. निमग्न होना । डूबना । २. मग्न या लीन होना । उदा॰—'भरत अंक परजंक पर दोउन रसनि समोइ' ।–विक्रम सतसई ।

समोसा–पुं॰ [?] एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान जो नमकीन और मीठा दोनों तरह का होता है ।

समौ*–पुं॰ = समय । (वक्त)

समौरिया†–वि॰ [सं॰ सम + उमर] जो उमर में किसी दूसरे के बराबर हो । समवयस्क ।

सम्मत–वि॰ [सं॰] जिसकी राय मिलती हो । सहमत । (एग्रीड)

सम्मति–स्त्री॰ [सं॰] १. सलाह । राय २. आदेश । अनुज्ञा । ३. किसी विषय प्रकट किया जानेवाला अपना विचार मत । राय । (ओपीनियन) ४. कि विषय में कुछ लोगों का एक मत होना (एग्रीमेन्ट) ५. किसी के प्रस्ताव विचार को ठीक और उचित मानकर उस निर्वाह के लिए दी जानेवाली अनुमति (कन्सेन्ट)

सम्मन–पुं॰ [अ॰ समन] न्यायालय वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को न्यायालय उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है।

सम्मान–पुं॰ [सं॰] [वि॰ सम्मानि मान । प्रतिष्ठा । इज्जत ।

सम्मानना*–स्त्री॰ दे॰ 'सम्मान'। *स॰ सम्मान या आदर करना ।

सम्मानित–वि॰ [सं॰] १. जिसका स किया गया हो । २. जिसका सब सम्मान करते हों । प्रतिष्ठित।

सम्मान्य–वि॰ [सं॰] सम्मान के यो जिसका सम्मान करना उचित हो या गया हो ।

सम्मार्जनी–स्त्री॰ [सं॰] झाड़ू ।

सम्मिलन–पुं॰ [सं॰] मिलाप । मे

सम्मिलित–वि॰ [सं॰] किसी से या में मिला हुआ । मिश्रित । युक्त ।

सम्मिश्रक–पुं॰ [सं॰] १. वह जो प्रकार का सम्मिश्रण करता हो । २ व्यक्ति जो ओषधियों, विशेषतः वि ओषधियों आदि के मिश्रण प्रस्तुत हो । (कम्पाउंडर)

सम्मिश्रण–पुं॰ [सं॰] [वि॰ सम्मि १. मिलने की क्रिया । २.मेल । मिला ३. औषध तैयार करने के लिए कई प्र की ओषधियाँ एक में मिलाना । (

[सं०] सामने । समक्ष ।
वि० = सम्मुख (सामने) ।
[सं०] १. मनुष्यों का,
उद्देश्य से अथवा किसी विशेष
विचार करने के लिए, एकत्र
। (कॉन्फ्रेन्स) २. जमा-
। ३. मिलाप । संगम ।
[सं०] १. मोहित करने या
क्रिया या भाव । २. प्राचीन
कल्पित अस्त्र जिसके प्रयोग
मोह में पड़ जाना माना
। ३. कामदेव के पाँच बाणों
।

करनेवाला ।
[सं०] पूरा । सब ।
१. सब तरह से । २. अच्छी

[सं०] १. सम्राट की पत्नी ।
की अधीश्वरी ।
[सं० सम्राज्] वह बहुत बड़ा
अधीन अनेक राजा या राज्य
धिराज । शाहंशाह । (एम्परर)
स्त्री० = स्मृति ।
अ० = सँभलना ।
= सौ (संख्या-वाचक) ।
१. दे० 'शयन' । २. दे०

१. दे० 'शयन' । २. दे० 'सैन' ।
= शैल (पर्वत) ।
(सब) ।
१. दे० 'सयाना' । २. दे०
।

स्त्री० दे० 'सयानपन' ।
[हिं० सयाना + पन] १.
का भाव । २. चतुरता ।

[सं० सज्ञान] १. अधिक या

पूरी अवस्थावाला । वयस्क । २. बुद्धिमान् । ३. चतुर । ४. चालाक । धूर्त ।

सरंजाम–पुं० [अ० सर + अंजाम] १. कार्य की समाप्ति । २. व्यवस्था । प्रबंध । ३. सामग्री । सामान ।

सर–पुं० [सं० सरस्] तालाब ।

स्त्री० [सं० सदृश] समानता । बराबरी ।

मुहा०*–किसी का सर पूजना=किसी की बराबरी तक पहुँचना ।

स्त्री० [सं० शर] चिता ।

पुं० [फा०] १. सिर । २. सिरा । ३. चरम सीमा ।

मुहा०*–(कोई बात) सर पहुँचाना= ठिकाने या हद तक ले जाना ।

वि० १. बलपूर्वक दबाया हुआ । २. जीता हुआ । पराजित । ३. अभिभूत ।

पुं० [सं० अवसर का अनु०] ऐसा अवसर जो किसी काम के लिए उपयुक्त न हो ।

मुहा०–सर-अवसर न देखना या न समझना = यह न सोचना कि अमुक काम के लिए यह अवसर ठीक है या नहीं । उदा०–नृप सिसुपाल महापद पायौ, सर-अवसर नहिं जान्यौ ।—सूर ।

*पुं० १. दे० 'शर' २. दे० 'सथिया' ।

सरकंडा–पुं० [सं० शरकांड] सरपत की जाति की एक वनस्पति ।

सरक–स्त्री० [हिं० सरकना] १. 'सरकना' का भाव या प्रकार । २. नशे, विशेषतः शराब के नशे की खुमारी । ३. शराब पीने का प्याला । मद्य-पात्र ।

सरकना–अ० दे० 'खिसकना' ।

सरकस–पुं० [अं०] पशुओं और कलाबाजी आदि का कौशल या ऐसा कौशल दिखलानेवालों का दल या मंडली ।

सरकार–स्त्री० [फा०] [वि० सरकारी] १. मालिक । प्रभु । २. देश का शासन करनेवाली संस्था या सत्ता ।

सरकारी–वि० [फा०] १. सरकार या

मालिक का। २. सरकार या राज्य का। राजकीय। (ऑफिशियल) जैसे—सरकारी कागज, सरकारी हुकुम।

सरक्क*—वि॰ [हिं॰ सरक = मद्य-पात्र] मत्त। मस्त। उदा॰—···मद सरक्क, पट्टे तिना।—चन्दवरदाई।

सरखत—पुं॰ [फा॰] वह कागज या छोटी बही जिस पर मकान आदि के किराये या इसी प्रकार के और लेन-देन का व्योरा लिखा जाता है।

सरखप*—पुं॰ = सर्षप (सरसों)।

सरग*—पुं॰ = स्वर्ग।

सरग-तीय*—स्त्री॰ १. अप्सरा। २. देवांगना।

सरगना—पुं॰ [फा॰ सर्गनः] सरदार।

सरग-पताली—वि॰ [सं॰ स्वर्ग + पाताल] (गौ या बैल) जिसका एक सींग ऊपर उठा हो और दूसरा नीचे झुका हो।

सरगम—पुं॰ [हिं॰ सा, रे, ग, म,] संगीत में सातों स्वरों का समूह या उनके चढ़ाव उतराव का क्रम। स्वर-ग्राम।

सर-घर*—पुं॰ [सं॰ शर = तीर + हिं॰ घर] तीर रखने का तरकस। तूणीर। उदा॰—लोने-लोने धनुष विशिष कर कमलनि, लोने मुनि पट कटि लोने सर-घर हैं।—तुलसी।

सरजना—स॰ दे॰ 'सिरजना'।

सरजा—पुं॰ [फा॰ सरजाह] १. सरदार। २. सिंह। शेर। ३. छत्रपति शिवाजी की वाचक एक संज्ञा या नाम। उदा॰—साजि चतुरंग वीर रंग में तरंग चढ़ि, सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।—भूषण।

सरजिव*—वि॰ = सजीव।

सरजीवन*—वि॰ [सं॰ संजीवन] १. जीवन देने या जीवनी शक्ति प्रदान करनेवाला। २. हरा, भरा और ताजा। ३. उर्वर। उपजाऊ। प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेवाला।

सरजोर—वि॰ [फा॰] [भाव॰ सरजोरी] १. बलवान। ताकतवर। २. प्रबल। जबर्दस्त। ३. उद्धत। उदंड। ४. विद्रोही। विप्लवी।

सरणी—स्त्री॰ [सं॰] १. मार्ग। रास्ता। २. ढर्रा। ढंग। ३. लकीर। रेखा।

सर-ताज पुं॰ दे॰ 'सिर-ताज'।

सर-तारा*—वि॰ [हिं॰ सर + तरना] जो अपना काम करके निश्चिंत हो गया है।

सरद—वि॰ दे॰ 'सर्द'।

सरदई—वि॰ [हिं॰ सरदा] सरदा नामक फल के रंग का। हलका हरापन लिये पीला। पुं॰ हलका हरापन लिये पीला रंग।

सर-दर—क्रि॰ वि॰ [फा॰ सर + दर] भाव] १. एक सिरे से। २. सबको मानकर उनके विचार से। औसत में।

सरदा—पुं॰ [फा॰ सर्दः] एक प्रकार का बढ़िया खरबूजा।

सरदार—पुं॰ [फा॰] [भाव॰ सरदारी] १. नायक। अगुआ। २. शासक। अमीर। रईस।

सरदार-तंत्र—पुं॰ दे॰ 'कुल-तंत्र'।

सरदारी—स्त्री॰ [हिं॰ सरदार] सरदार का पद, काम या भाव।

सरदियाना—अ॰ [हिं॰ सरदी] १. सरदी के कारण ठंढा होना। २. आवेश आदि शान्त होना। ठंढा पड़ना। 'गरमाना' का विपर्याय।

सरदी—स्त्री॰ [फा॰ सर्दी] १. शीतलता। ठंढक। २. जाड़ा। ३. प्रतिश्याय। जुकाम।

सरधन*—वि॰ = धनवान।

सर-घर*—पुं॰ दे॰ 'तरकश'।

सरधा†—स्त्री॰ [सं॰ श्रद्धा] १. श्रद्धा। २. अभिलाषा। वासना। पुं॰ दे॰ 'सारदा' (फल)।

सरन*—स्त्री॰ = शरण।

सरनदीप—पुं॰ दे॰ 'सिंहल द्वीप'।

सरना—अ॰ [सं॰ सरण] १. सरकना

हिलना-डोलना। ३. काम
ना। उद्देश्य सिद्ध होना।
कुटुम्ब घनेरे, तिनतैं कछु
। ४. किसी के उपयोग में
-हाथ वही, उन गात
सखान। ५. किया जाना।
६. किसी चीज, काम या बात
। ७. आपस में सद्भाव बना
। पटना।

[फा०] प्रसिद्ध। मशहूर।
दे० 'सिरनामा'।
दे० 'सरणी'।
[फा० सर + हिं० पंच]
व्यक्ति। पंचायत का

[सं० शर + पिंजरा]
हुआ पिंजड़ा या घेरा।
कीन्हेसि सर-पंजरा।—

= सर्प (साँप)।
[सं० सर्पण] घोड़े की एक
चाल।
की उक्त चाल की तरह
हुए।
[सं० शर पत्र] एक प्रकार
जिससे छप्पर आदि छाये

[सं० सर्पण] १. खिस-
बढ़ना।
[फा०] पगड़ी के ऊपर
कलगी।
[अनु०] व्याकुल

[सं० शरबंध] तीरं-

दे० 'सर्व'।

सरबग्य*-वि० = 'सर्वज्ञ'।

सर-बर-स्त्री० [हिं० सर = बराबरी + बर (अनु०)] समानता। बराबरी।
स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बकवाद या बहुत बढ़-चढ़ कर की जानेवाली बात।

सरबरना*-अ० [हिं० सर-बर] किसी की समता या बराबरी करना।

सर-बराह-पुं० [फा०] १. प्रबंध-कर्त्ता। व्यवस्थापक। २. मजदूरों आदि के सरदार। ३. रास्ते के खान-पान का और ठहरने आदि का प्रबन्ध करनेवाला।

सरबरी*-स्त्री० [सं० शर्वरी] रात्रि। रात।

सरबस*-पुं० = सर्वस्व।

सरबोर*-वि० दे० 'सराबोर'।

सरभ*-पुं० दे० 'शरभ'।

सरमा-स्त्री० [सं०] वैदिक काल की, देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया।

सरमाया-पुं० [फा० सरमायः] १. मूल धन। पूँजी। २. धन-दौलत। सम्पत्ति।

सरयू-स्त्री० [सं०] उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नदी।

सरल-वि० [सं०] [स्त्री० सरला, भाव० सरलता] १. जो टेढ़ा न हो। सीधा। (स्ट्रेट, स्ट) जैसे—सरल रेखा। २. निश्छल। निष्कपट। सीधा-सादा। ३. सहज। सुगम।
पुं० १. चीड़ का पेड़। २. इस पेड़ का गोंद। गंधा-बिरोज।

सरलता-स्त्री० [सं०] १. 'सीधा' होने का भाव सीधापन। २. निष्कपटता। निश्छलता ३. 'सहज' होने का भाव। सुगमता।

सरलीकर-पुं० [सं० सरल + करण] किसी कठिविषय आदि को सरल करने की क्रिया भाव। (सिम्प्लिफिकेशन)

सरवंग*-। = सर्वांग।

सरवन-पुं [सं० श्रमण] १. अंधक-मुनि के पुत्र श्रमजो अपने पिता को काँवर या

बहँगी पर रखकर तीर्थाटन करते थे। २. इनकी पुण्यात्मक कथा कहकर भीख माँगनेवाला ब्राह्मण।

*पुं० = श्रवण।

सरवर-पुं०=सरोवर।

सरवरि+-स्त्री० [सं० सदृश] १. बराबरी। समता। २. प्रतियोगिता। होड़।

सरवरिया-वि० [हिं० सरवार] सरवार या सरयू-पार का।

पुं० सरयूपारी।

सरवांक*-पुं० [सं० शरावक] १. डिबिया। २. कटोरी। ३. कसोरा।

सरवान*-पुं० [?] १. तंबू। खेमा। २. झंडा। पताका।

सरवार-पुं० [सं० सरयू + पार] सरयू नदी के उस पार का देश जिसमें गोरखपुर और बस्ती आदि के जिले हैं।

सरस-वि० [सं०] [स्त्री० सरसा, भाव० सरसता] १. जिसमें रस हो। रस-युक्त। रसीला। २. गीला। तर। ३. हरा और ताजा। ४. सुन्दर। मनोहर ५. मधुर। मीठा। ६. जिसमें मन के कोमल भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण।

सरसई*-स्त्री० = सरस्वती।

*स्त्री० [सं० सरस] सरसता।

+स्त्री० [हिं० सरसों] सरसों के दाने की तरह का फलों का आरंभि और बहुत छोटा रूप।

सरसता-स्त्री० [सं०] 'सरस' का भाव। २. रसीलापन। ३. सिकता। ४. सुन्दरता। ५. मधुरता। ६. ावपूर्णता।

सरसना-अ० [सं० सरस . हरा होना। पनपना। २. उन्नत होन बढ़ना। ३. शोभित होना। सोहाना ४. रसपूर्ण होना। ५. कोमल या सरस व के आवेश में आना। उदा०-सब देव सादर प्रनाम करि अति सुख सरसे।—र०।

सर-सर-पुं० [अनु०] ी आदि के जमीन पर रेंगने या वायु के चलने उत्पन्न शब्द।

सरसराना-अ० [अनु० सर सर] [भा सरसराहट] १. वायु का सर सर श करते हुए चलना। सनसनाना। २. ज जल्दी कोई काम करना।

सरसरी-क्रि० वि० [फा० सरासरी] अच्छी तरह ध्यान लगाकर नहीं, ब जल्दी में। २. स्थूल रूप से। मोटे पर। (समरी) जैसे-सरसरी प्रक्रि (समरी प्रोसिडिंग) सरसरी व्यवहार-द (समरी ट्रायल)

सरसाई*-स्त्री० [सं० सरस] १. 'सरसता'। २. अधिकता।

सरसाना-स० हिं० 'सरसना' का स०

*अ० दे० 'सरसना'।

सरसाम-पुं० [फा०] सन्निपात ना रोग।

सरसिज-पुं० [सं०] कमल।

सरसी-स्त्री० [सं०] १. छोटा स या जलाशय। २. बावली। ३. एक का मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चर २७ मात्राएँ (१६ वीं मात्रा पर य और अन्त में गुरु और लघु होते हैं सुमंदर भी कहते हैं। होली के दि गाया जानेवाला कबीर प्रायः इसी छ होता है।

सरसी-रूह-पुं० [सं०] कमल।

सरसेटना-स० [अनु०] डाँट फटकारना।

सरसों-स्त्री० [सं० सर्षप] एक प्र पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

सरसौंहा*-वि० [हिं० सरस] सरस रस-युक्त करनेवाला।

सरस्वती-स्त्री० [सं०] १. विद्या अ वाणी की अधिष्ठात्री देवी। वाग्देवी भारती। शारदा। २. विद्या। इल्म। पंजाब की एक प्राचीन नदी।

-स्त्री० [सं०] वसंत पंचमी
विशेष रूप से होनेवाली
ता।
[फा०] १. सेनापति। २.
कोतवाल। ४. सिपाही।
[सं० शलभ] टिड्डी। (कीड़ा)
[सं० शर या शल्य + हिं०
की तरह का एक हथियार
मछलियों का शिकार किया

[फा० सर + अ० हद]
] १. सीमा। २. चौहद्दी
या चिह्न। ३. चित्र में
उसके किसी अंग अथवा
रूपरेखा जिससे उसके आकार
होता है।
[हिं० सरहद] १. सरहद
। २. सरहद या सीमा पर

[सं० शर] चिता।
। (बाण)
।
= सलाई।
दे० 'सलाख'।
= सरंजाम।
दे० 'श्राद्ध'।
[हिं० सारना का प्रे०] १.
राना। (संपादित कराना)
करना। उदा०—सिल्पकार
की सार सरावत।—रत्ना०।
= शाप।
[सं० शाप] शाप देना।
[फा०] नख-सिख।
[अ० सर्राफ] [भा० सराफी]
का व्यापारी। २. रुपये-पैसे
वह दुकानदार जिससे
आदि भुनाते हैं।
[अ० सर्राफ़ः] १. सराफ का काम या पेशा। २. सराफों का बाजार।

सराफी—स्त्री० [हिं० सराफ] १. सराफ का काम या भाव। २. महाजनी या कोठीवाली लिपि। मुंडा।

सराबोर—वि० [सं० स्राव + हिं० बोर] बिलकुल भीगा हुआ। तर।

सराय—स्त्री० [फा०] यात्रियों के ठहरने की जगह। मुसाफिरखाना।

सराव*—पुं० [सं० शराव] १. मद्य पीने का प्याला। २. कटोरा। ३. दीया।

सरावगी—पुं० दे० 'जैन'।

सरासर—अव्य० [फा०] [भाव० सरासरी] १. बिलकुल। पूरा-पूरा। २. साक्षात्। प्रत्यक्ष।

सरासरी—स्त्री० [फा०] शीघ्रता। जल्दी। क्रि० वि० १. जल्दी में। शीघ्रतापूर्वक। २. मोटे हिसाब से। अनुमानतः।

सराह*—स्त्री० [हिं० सराहना] सराहने की क्रिया या भाव। प्रशंसा। तारीफ।

सराहना—स० [सं० श्लाघन्] प्रशंसा या बड़ाई करना।
स्त्री० प्रशंसा। तारीफ।

सराहनीय*—वि० [हिं० सराहना] प्रशंसा के योग्य। अच्छा। (अशुद्ध रूप)

सरि—स्त्री० [सं० सरित्] नदी।
*स्त्री० [सं० सदृश] समता। बराबरी।
*स्त्री० [सं० स्रक] शृंखला। लड़ी। उदा०—मोतिन की सरि सिर कंठमाल हार। —केशव।
वि० समान। तुल्य। बराबर।
क्रि० वि० पर्यंत। तक।

सरित-राज—पुं० = समुद्र।

सरिता—स्त्री० [सं० सरित्] १. धारा। २. नदी।

सरियाना†—स० [हिं० सर = पंक्ति] १. क्रम से लगाकर चीजें यथा-स्थान रखना। २ मारना। पीटना। ३. सुलझाना।

सरिश्ता—पुं० [फा० सरिश्तः] १. कार्यों

अथवा कार्यालय का विभाग। महकमा। २. कार्यालय। ३. कार्य, व्यवहार आदि निश्चित और परंपरा-गत क्रम या रीति।

सरिश्तेदार–पुं॰ [फा॰ सरिश्तःदार] १. किसी विभाग का प्रधान अधिकारी। २. अदालतों में मुकदमों की नत्थियाँ आदि रखनेवाला अधिकारी।

सरिस*-त्रि॰ [सं॰ सदृश] सदृश। समान।

सरी–स्त्री॰ [सं॰] १. छोटा सर या तालाब। झरना। सोता। चश्मा।

सरीकता*–स्त्री॰ [अ॰ शरीक] साझा।

सरीखा–वि॰ [सं॰ सदृश] समान। तुल्य।

सरीसृप–पुं॰ [सं॰] रेंगकर चलनेवाला जंतु। जैसे–साँप, कनखजूरा आदि।

सरुज–वि॰ [सं॰] जिसे रोग हो। रोगी।

सरुझना*–अ = सुलझना।

सरूप–वि॰ [सं॰] १. आकार या रूप से युक्त। २. सुन्दर। ३. सदृश। समान। *वि॰ पु॰ = स्वरूप।

सरूर–पुं॰ [फा॰ सुरूर] हलका नशा।

सरेख(ा)*–वि॰ [सं॰ श्रेष्ठ] [स्त्री॰ सरेखी] सयाना और समझदार। होशियार।

सरेखना–स॰ दे॰ 'सहेजना'।

सरेस–पुं॰ [फा॰ सरेश] एक प्रसिद्ध लसदार वस्तु जो चमड़े, सींग आदि को उबालकर निकाली जाती है।

सरो–पुं॰ [फा॰ सर्व] एक प्रकार का वृक्ष जो सीधे और सुन्दर आकार के लिए प्रसिद्ध है।

सरोकार–पुं॰ [फा॰] १. आपस के व्यवहार का संबंध। २. लगाव। वास्ता।

सरोज–पुं॰ [सं॰] कमल।

सरोजना*–स॰ [?] प्राप्त करना। पाना।

सरोजिनी–स्त्री॰ [सं॰] १. कमलों से भरा हुआ तालाब। २. कमल।

सरोट*–स्त्री॰ दे॰ 'सिलवट'।

सरोता*–पुं॰ = श्रोता।

सरोद–पुं॰ [फा॰ मि॰ सं॰ स्वरोदय सारगी आदि की तरह का एक प्रक का बाजा।

सरोरुह–पुं॰ [सं॰] कमल।

सरोवर–पुं॰ [सं॰] तालाब।

सरोष–वि॰ [सं॰] क्रोधयुक्त। कुपित क्रि॰ वि॰ रोषपूर्वक। क्रोध से।

सरो-सामान–पुं॰ [फा॰ सर+व सामान] सारी सामग्री या उपकरण।

सरौट*–स्त्री॰ दे॰ 'सिलवट'।

सरौता–पुं॰ [सं॰ सार=लोहा+प एक प्रसिद्ध औजार जिससे सुपारी आ काटते हैं।

सर्करा*–स्त्री॰ = शर्करा।

सर्ग–पुं॰ [सं॰] १. चलना या बढ़ना। गमन। २. संसार। सृष्टि। बहाव। प्रवाह। ४. प्राणी। जीव। संतान। औलाद। ६. स्वभाव। प्रकृति ७. किसी ग्रंथ, विशेषतः महाकाव्य, अध्याय। (कैन्टो)

सम॰–सर्ग बंध या सर्ग-बद्ध=(का या ग्रन्थ) जो कई सर्गों या अध्या बना हो।

८. प्राकृतिक वस्तुओं जीवों आदि का स्वतंत्र और पूरा समूह या वर्ग। (किंड जैसे–जीव सर्ग, वनस्पति-सर्ग आदि।

सर्गुन*–वि॰ दे॰ 'सगुण'।

सर्जन–पुं॰ [सं॰] [वि॰ सर्जनीय, सर्जि १. (कोई चीज) चलाना, छोड़ना फेंकना। २. निकालना। ३. कोई ची बनाकर तैयार करना। रचना (क्रिएशन पु॰ [अं॰] फोड़ों आदि की चीर-फा करनेवाला डाक्टर।

सर्द–वि॰ [फा॰] १. ठंढा। शीतल २. सुस्त। मंद। धीमा।

सर्दी–स्त्री॰ दे॰ 'सरदी'।

सर्प–पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ सर्पिणी] साँप

सर्प-यज्ञ–पुं॰ दे॰ 'नाग यज्ञ'।

दे० 'गारुड़ी'।
] १. साँप की चाल
तिरछा। २. जो साँप की
हुए हो।
सर्फ़ः] व्यय। खर्च।

[अनु०] सर्राते हुए आगे
भाव।
[हिं० सर्र से अनु०] १.
चलने पर होनेवाला सर्र-
इस प्रकार तेजी से भागना
हो।
भरना = तेजी के साथ
हुए इधर से उधर जाना।
] सब। समस्त। कुल।
[सं०] १ सब प्रकार
नेवाला। २. सब प्रकार
करनेवाला।
[सं०] किसी विशिष्ट
विशिष्ट अवसर पर किसी
अपराधी बन्दियों को एक
छोड़ देना। (एमनेस्टी)
[सं०] आधुनिक युद्ध में
पीछे हटने के समय सारी
इसलिए नष्ट कर
आगे बढ़नेवाले शत्रु के
। (स्कार्च्ड अर्थ)
[सं०] सब जगह जाने या
उदा०—'यद्यपि श्री रघुनाथ
सर्वज्ञ'।—केशव।
[सं०] चंद्रमा या सूर्य्य
जिसमें उसका सारा बिम्ब

दे० 'सार्वजनिक'।
[सं०] सबको जीतनेवाला।
] [भाव० सर्वज्ञता]
वाला।
। २. बुद्धदेव।

सर्वज्ञता—स्त्री० [सं०] सर्वज्ञ होने की अवस्था, गुण या भाव, जो ईश्वर का एक गुण माना जाता है। (ओम्निसायन्स)

सर्वतंत्र—पुं० [सं०] सब प्रकार के शास्त्रीय सिद्धांत।

वि० जिसे सब शास्त्र या लोग मानते हों।

सर्वतः—अव्य० [सं०] १. चारों ओर। २. सब प्रकार से।

सर्वतोभद्र—वि० [सं०] १. सब प्रकार से कल्याणकारी। २. जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुड़े हों।

पुं० १. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो देवताओं पर चढ़ाने के वस्त्र पर बनाया जाता है। २. सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुड़ाना। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य।

सर्वतोभाव—क्रि० वि० [सं०] १. सब तरह से। २. अच्छी तरह। भली भाँति।

सर्वतोमुख—वि० [सं०] १. जिसका या जिसके मुँह चारों ओर हों। २. सब जगह मिलने या होनेवाला। व्यापक।

सर्वतोमुखी—वि० = सर्वतोमुख।

सर्वत्र—अव्य० [सं०] सब जगह।

सर्वथा—अव्य० [सं०] १. सब प्रकार से। पूरी तरह से। २. बिलकुल। पूरा।

सर्वदर्शिता—स्त्री० [सं०] सर्वदर्शी होने का भाव।

सर्वदर्शी—पुं० [सं० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिणी, भाव० सर्वदर्शिता] विश्व में होनेवाली सभी बातें देखनेवाला।

सर्वदल—पुं० [सं०] [वि० सर्वदलीय] किसी विषय पर विचार करने अथवा किसी क्षेत्र में काम करनेवाले सभी दल या वर्ग। जैसे—उस समय एक सर्वदल-सम्मेलन हुआ था।

सर्वदा—अव्य० [सं०] हमेशा। सदा।

सर्वदैव—अव्य० [सं०] सदा ही। सदैव।

सर्वनाम—पुं० [सं० सर्वनामन्] व्याकरण

में वह शब्द जो संज्ञा की जगह आता है। (प्रोनाउन) जैसे—मैं, तुम, वह।

सर्वनाश—पुं० [सं०] सब चीजों का पूरा नाश। पूरी बरबादी।

सर्व-नाशक—वि० [सं०] सब बातें या सब प्रकार के काम नष्ट करनेवाला। सब कुछ चौपट करनेवाला।

सर्वनाशी—वि० = सर्व नाशक।

सर्वपति—पुं० [सं०] विष्णु।

सर्व-प्रिय—वि० [सं०] जो सबको प्रिय हो या अच्छा लगे। (पापुलर)

सर्व-प्रियता—स्त्री० [सं०] सब का प्रिय होने या अच्छा लगने का भाव। लोकप्रियता। (पॉपुलैरिटी)

सर्व-भक्षी—वि० [सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खा जानेवाला।

सर्व-भोगी—वि० [सं०] अच्छी और बुरी अथवा ग्राह्य और अग्राह्य सभी वस्तुओं का भोग करनेवाला या आनन्द लेनेवाला।

सर्व-मंगला—स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।

वि० सब प्रकार से मंगल या कल्याण करनेवाली।

सर्वरी*—स्त्री० [सं० शर्वरी] रात। रात्रि।

सर्व-वर्त्तुल—वि० [सं०] (पिंड) जिसका प्रत्येक विन्दु उसके मध्य विन्दु से समान अन्तर पर हो। गोल। (स्फेरिकल)

पुं० उक्त प्रकार का पिंड। गोल। (स्फियर)

सर्व-व्यापक—वि० [सं०] [भाव० सर्व-व्यापकता] सब पदार्थों में व्याप्त रहनेवाला। (ओम्निप्रेजेन्ट; ईश्वर का एक विशेषण)

पुं० = ईश्वर।

सर्व-व्यापी—वि० दे० 'सर्व-व्यापक'।

सर्व-शक्तिमान—वि० [सं०] जिसमें सब कुछ करने की शक्ति हो। (ओम्नीपोटेन्ट; ईश्वर का एक विशेषण)

पुं० = ईश्वर।

सर्व-श्री—वि० [सं०] एक आदर-सूचक विशेषण जो बहुत से नामों का उल्लेख हो पर उन सबके साथ अलग-अलग श्री लगाकर, उन सबके सामूहिक सूचक के में, आरम्भ में लगाया जाता है। जै सर्व-श्री सीताराम, माधोप्रसाद, बालकृ नारायणदास आदि।

सर्वश्रेष्ठ—वि० [सं०] [भाव० सर्वश्रेष्ठ] सबसे उत्तम।

सर्व-सत्ता—स्त्री० [सं०] [वि० सत्ताक] किसी कार्य या विषय से सम रखनेवाली सब प्रकार की सत्ता या अधिक जैसे—सत्ताधारी राज्य या शासक।

सर्व-सत्ताक—वि० [सं०] १. सब प्र की सत्ताओं से संबंध रखनेवाला। २. प्रकार की सत्ताएँ या अधिकार रखनेवा

सर्व-सम्मत—वि० [सं०] जिससे स्थित या सम्बद्ध सभी लोग सहमत जिसके पक्ष में सबकी सम्मति हो। (यूनैनि

सर्व-सम्मति—स्त्री० [सं०] ऐसी जिसमें उपस्थित या सम्बद्ध सभी लोग मत हो। सबकी एक सम्मति या (यूनैनिमिटी)

सर्व-साधारण—पुं० [सं०] सभी के लोग। जनता। आम लोग।

वि० जो सबमें पाया जाय। आम। (कॉ

सर्व-सामान्य—वि० [सं०] १. जो समान रूप में पाया जाय। (कॉमन) जो सब लोगों के लिए हो। (पब्लिक

सर्व-सोख—वि० [सं० सर्व + हिं० सोख सब कुछ सोख लेने, निगल जाने य लेनेवाला। उदा०—'सत्यानाशी जुद्ध सर्व-सोख सों।—रत्ना०।

सर्वस्व—पुं० [सं०] जो कुछ पास मे वह सब। सारी सम्पत्ति या पूँजी।

सर्वांग—पुं० [सं०] १. संपूर्ण श सारा बदन। २. किसी चीज, काम या के सब अवयव या अंश।

सर्वांगपूर्ण—वि० [सं०] जो सभी अ

अवयवों से युक्त हो । सब
।
[सं०] जो सभी
से सुंदर या अच्छा हो ।
[सं०] १. सब अंगों से
। २. सब अंगों से
।
[सं०] आत्मा के रूप में
वाला, ब्रह्म ।
पुं०[सं०][वि० सर्वाधिकारी]
करने का अधिकार । पूरा
सारे अधिकार ।
-पुं० [सं०] वह जिसे सब
हों या मिले हों ।
-पुं० [सं०] एक प्रकार
सिद्धान्त जिसमें यह माना
की सभी वस्तुओं की
है, वे असार नहीं हैं ।
-पुं० [सं०] १. सबका
।
-पुं० [सं०] वह सिद्धांत
जाता है कि ईश्वर एक
के सभी प्राणियों और
रूप से वर्त्तमान है ।

[सं० सर्वे-सर्वाः] जिसे
कार्य में सब प्रकार के
हों । पूरा मालिक ।
[सं०] सबसे उत्तम । सबसे
।
[सं०] स्वतन्त्र भारत का
जिसमें सभी लोगों के
शारीरिक, सामाजिक आदि
प्रकार की उन्नति के
है ।
] सबसे ऊपर या बढ़कर ।
] सरसों ।
] १. किसी चीज में

पड़ा हुआ बल । सिकुड़न । सिलवट । २. परत । तह ।

स्त्री० [देश०] १. जानकारी । पता । २. परिचय । ज्ञान ।

पुं० [सं०] जल । पानी ।

सलई–स्त्री० [सं० शल्लकी] १. चीड़ का पेड़ । २. चीड़ का गोंद । कुंदुर ।

सलज्ज–वि० [सं०] जिसे लज्जा हो । लज्जाशील ।

क्रि० वि० लज्जापूर्वक । शरमाते हुए ।

सलतनत–स्त्री० [अ० सल्तनत] १. राज्य । २. साम्राज्य । ३. प्रबंध । ४. सुभीता ।

सलना–अ० हिं० 'सालना' का अ० ।

सलभ*–पुं० = शलभ (पतिंगा) ।

सलमा–पुं० [अ० सलमः] सोने या चाँदी का वह तार जो कपड़ों पर बेलबूटे बनाने के काम में आता है । बादला ।

सलवट–स्त्री० दे० 'सिलवट' ।

सलवार–स्त्री० [फा० शलवार = जाँघिया] १. पायजामे के नीचे पहनने का जाँघिया । २. एक प्रकार का बहुत ढीला पायजामा जो विशेषतः पंजाब और उसके पश्चिमी भागों में पहना जाता है ।

सलहज–स्त्री० [हिं० साला] साले की स्त्री ।

सलाई–स्त्री० [सं० शलाका] १. काठ या धातु का छोटा पतला छड़ । जैसे–गंजी, मोजे आदि बुनने की सलाई । २. आँखों में सुरमा लगाने की सलाई ।

मुहा०–किसी की आँखों में सलाई फेरना = किसी को अंधा करने के लिए सलाई गरम करके उसकी आँखों में लगाना । ३. दीया-सलाई ।

स्त्री० [हिं० सालना] सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

सलाक*–पुं० दे० 'तीर' ।

स्त्री० दे० 'सलाख' ।

सलाख–स्त्री० [फा० मि० सं० शलाका] धातु का मोटा, लंबा छड़ ।

सलाद-पुं० [अं० सैलाड] एक प्रकार के कंद के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे खाये जाते हैं।

सलाम-पुं० [अ०] प्रणाम। बंदगी।
मुहा०-दूर से सलाम करना = पास न जाना। दूर या अलग रहना।

सलामत-वि० [अ०] १. हानि या आपत्ति से बचा हुआ। रक्षित। २. जीवित और स्वस्थ। सकुशल। ३. स्थित। कायम।

सलामती-स्त्री० [अ०] १. तन्दुरुस्ती। स्वस्थता। २. कुशल। क्षेम।

सलामी-स्त्री० [अ० सलाम] १. सलाम करने की क्रिया या भाव। २. सैनिकों आदि की सलाम करने की प्रणाली। ३. इस ढंग से (तोपें, बन्दूकें आदि छोड़कर) बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति का अभिवादन करना।
मुहा०-सलामी उतारना = किसी बड़े अधिकारी के आने या जाने के समय उक्त प्रकार से अभिवादन करना। **सलामी लेना** = किसी बड़े अधिकारी का खड़े होकर सैनिकों का अभिवादन स्वीकृत करना।
४. वह धन जो मकान या जमीन का मालिक मकान या जमीन किराये पर देने के समय किराये के अतिरिक्त, पहले ले लेता है। पगड़ी।
वि० थोड़ा ढालुआँ। (स्थान)

सलारा†-पुं० [?] एक प्रकार की चिड़िया।

सलाह-स्त्री० [अ०] १. यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए अथवा इस प्रकार नहीं होना चाहिए। सम्मति। राय। २. परामर्श।

सलाहकार-पुं० [अ० सलाह + फा० कार (प्रत्य०)] परामर्श या सलाह देनेवाला।

सलिल-पुं० [सं०] जल। पानी।

सलिला*-स्त्री० [सं० सलिल] नदी।

सलीका-पुं० [अ० सलीकः] १. अच्छी तरह काम करने का ढंग। योग्यता शऊर। २. हुनर। ३. शिष्टता।

सलीता-पुं० [देश०] एक प्रकार बहुत मोटा मारकीन (कपड़ा)।
†पुं० [स्त्री० अल्पा० सलीती] झोला थैला।

सलील-वि० [सं०] १. लीला-युक्त। क्रीड़ाशील। खेलवाड़ी। ३. 'कुतू प्रिय। कौतुकी। ४. किसी प्रकार की भंगी से युक्त। ५. लीला या क्रीड़ा से यु

सलूक-पुं० [अ०] १. आपसदारी अच्छा बरताव या व्यवहार। २. भल उपकार।

सलोतर-पुं० दे० 'शालिहोत्र'।

सलोतरी-पुं० दे० 'शालिहोत्री'।

सलोना-वि० [हिं० स + लोन=नम [स्त्री० सलोनी, भाव० सलोनापन] १. नमक पड़ा हो। नमकीन। २. सुन्दर

सलोनो-पुं० [सं० श्रावणी ?] हि का रक्षा-बंधन नामक त्योहार।

सल्लम-स्त्री० [देश०] हाथ का बुन प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गाढ़

सव*-पुं० [सं० शव] मृत शरीर।
मुहा०-सव साजना = चिता जलाने के लिए उसपर शव रखना।

सवत(ति)†-स्त्री० दे० 'सौत'।

सवन-पुं० [सं०] यज्ञ।

सवर्ण-वि० [सं०] १. समान। २. एक ही वर्ण या जाति के। जैसे के लिए क्षत्रिय या ब्राह्मण के लिए सवर्ण होते हैं।

सवाँग-पुं० दे० 'स्वाँग'।

सवाँगना†-अ० [हिं० स्वाँग] झूठा भेस बनाना। रूप भरना।

सवा-वि० [सं० स + पाद] जिस के सिवा चौथाई और लगा हो। सवा चार।

सवाई-स्त्री० [हिं० सवा + ई (प्रत्य

जिसमें मूल धन का सवाया
है। २. जयपुर के महा-
ाधि।
वा'।
'स्वाद'।
दे० 'स्वादिष्ट'।
= स्वादिष्ट।
[हिं० स्वाद] १. स्वाद लेने
। २. आनन्द या रस लेने-
।
०] १. पुण्य। २. उपकार।
[हिं० सवा] [स्त्री० सवाई]
चौथाई अधिक। सवा गुना।
अपेक्षा कुछ बढ़ा हुआ या
र।
[फ़ा०] १. वह जो घोड़े,
वाहन पर चढ़ा हो। २.
क।
सवार बनना = योग्यता
बड़ों के साथ अपनी गिनती
करना।
चढ़ा या बैठा हुआ।
।
दे० 'सवेरा'।
[फ़ा०] १. वह चीज जिस-
वाहन। २. वह व्यक्ति जो
बड़े आदमी, देव-मूर्ति आदि
जलूस।
०] १. पूछने की क्रिया।
देने की प्रार्थना। माँग।
परीक्षा या जाँच के समय
दिया जाता है।
पुं० [अ०] तर्क-वितर्क।
।
[सं०] विकल्प या संदेह
।
की सहायता से होने-
(योग

सविता-पुं० [सं० सवितृ] १. ईश्वर। भगवान। २. सूर्य। ३. बारह की संख्या। ४. कुछ लाली लिए सफेद रंग की एक चमकीली धातु जो प्रायः निकल और लोहे के साथ पाई जाती है। (कोबाल्ट)

सविनय अवज्ञा-स्त्री० [सं० सविनय + अवज्ञा] राज्य या अधिकारी की अनुचित आज्ञा या कानून न मानकर उसकी अवज्ञा या उलंघन करना (सिविल डिसओबीडिएन्स)

सवेरा-पुं० [हिं० स + सं० वेला] १. दिन निकलने का समय। प्रातःकाल। सुबह। २. निश्चित या नियत समय के पहले का समय। (क्व०)

सवैया-पुं० [हिं० सवा + ऐया (प्रत्य०)] १. सवा सेर का बाट। २. वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है। ३. ऋण के रूप में अनाज, धन आदि देने की एक प्रणाली जिसमें दिये हुए मान का सवाया वसूल किया जाता है। ४. एक प्रसिद्ध छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। मालिनी। मदिरा।

सव्य-वि० [सं०] १. वाम। बायाँ। २. दक्षिण। दाहिना। ३. प्रतिकूल। उलटा।

सव्यसाची-पुं० [सं०] अर्जुन। (पांडव)

सशंक-वि० [सं०] १. जिसे शंका हो। २. डरा हुआ। भयभीत।

सशंकना*-अ० [सं० सशंक] १. शंका या सन्देह करना। २. डरना।

सशक्त-वि० [सं०] शक्तिशाली। बलवान।

सशस्त्र-वि० [सं०] १. शस्त्र सहित। शस्त्र से युक्त। २. जिसके पास शस्त्र हो। शस्त्रों आदि से सज्जित या युक्त किया हुआ। सायुध। (आर्म्ड) जैसे–सशस्त्र बल। (आर्म्ड फोर्स)

सस*-पुं० [सं० शशि] १. चंद्रमा। २. चंद्रमा का कलंक।

पुं० [सं० शस्य] १. धान्य। अनाज।

२. खेती-बारी।

ससका-पुं० [सं० शशक] खरगोश।

ससना*-अ० [सं० शासन] विपत्ति भोगना। कष्ट सहना।

अ० [हिं० साँस] साँस लेने में कष्ट होना। दम घुटना।

अ० [?] प्रविष्ट होना। समाना।

ससहर*-पुं० [सं० शशिधर] चंद्रमा।

ससहरना*-अ० [हिं० सिहरना] डरना। उदा०-'रह्यौ ढीठ ढारसु गहैं, ससहरि गयौ न सूर'।—बिहारी।

ससा-पुं० दे० 'ससक'।

ससाना*-अ० [?] १. घबराना। २. काँपना।

ससि*-पुं० शशि। चंद्रमा।

पुं० [सं० शस्य] धान्य। अनाज।

ससिधर-पुं० = चंद्रमा।

ससिहर*-पुं० = ससिधर।

ससी*-पुं० दे० 'शशि'।

ससुर-पुं० [सं० श्वशुर] स्त्री या पुरुष के विचार से उसके पति या पत्नी का पिता।

ससुरा-पुं० १. दे० 'ससुर'। २. दे० 'ससुराल'।

ससुराल-स्त्री० [सं० श्वशुरालय] ससुर का घर।

सस्ता-वि० [सं० स्वस्थ] [स्त्री० सस्ती, क्रि० सस्ताना] १. साधारण से कम मूल्य का। २. साधारण। मामूली। (क्व०) ३. जिसका भाव उतर गया हो।

मुहा*-सस्ते छूटना = सहज में किसी बड़े काम या संकट से छुटकारा पाना।

४. जो बहुत ही थोड़े परिश्रम या व्यय से अथवा बहुत ही सहज में मिल जाय। (चीप) जैसे-सस्ता यश या सम्मान।

सस्ताना-अ० = सस्ता होना।

स० = सस्ता करना।

सस्ती-स्त्री० [हिं० सस्ता] १. सस्तापन। २. वह समय जब सब चीजें सस्ती मिलती हों।

सस्त्रीक-वि० [सं०] स्त्री या पत्नी के साथ

सस्मित-वि० [सं० स + स्मित] मुस्कराता या हँसता हुआ।

क्रि० वि० मुस्कराकर। मुस्कराता हुआ।

सहँगा†-वि० [हिं० महँगा का अनु० थोड़े दामवाला। सस्ता। उदा०-'म मानिक महँगे किए, सहँगे तृन जल नाज —तुलसी।

सह-अव्य [सं०] [भाव० सहत्व] सहि समेत। साथ।

वि० [सं०] १. सहनशील। २. समर्थ

सहकार-पुं० [सं०] १. सुगंधित पदा २. आम का वृक्ष। ३. औरों के साथ मिल काम करने की वृत्ति, क्रिया या भा सहयोग। (कोआपरेशन)

सहकार-समिति-स्त्री० [सं०] वह स या संस्था जो कुछ विशेष प्रकार के भोक्ता, व्यवसायी आदि आपस में मि सबके हित के लिए बनाते हैं और द्वारा वे कुछ चीजें बनाने, बेचने आदि व्यवस्था करते हैं। (कोआपरेटिव सोसा

सहकारिता-स्त्री० [सं०] १. साथ मि कर काम करना। (कोआपरेशन) २. कारी या सहायक होने का भाव।

सहकारी-पुं० [सं० सहकारिन्] [सहकारिणी] १. साथी। सहयोगी। सहायक। (एसिस्टेन्ट)

सहकारी-संस्था-स्त्री० दे० 'सह समिति'।

सहगत-वि० [सं०] जो एक ही लिफा किसी पत्र के साथ कहीं भेजा गया समावृत। (एन्क्लोज्ड)

सहगतक-वि० [सं०] साथ जाने भेजा जानेवाला।

पुं० दे० 'समावरण'।

सह-गमन-पुं० [सं०] १. किसी के जाना या चलना। २. पति के शव के स पत्नी का जल मरना। सती होना।

[सं०] १. कई आदमियों
मिलकर गाना। २. वह गाना
गाया जाय। (कोरस)
स्त्री० [सं०] १. सह-गमन
२. पत्नी। ३. सहेली।
[सं० सहगामिन्] [स्त्री०
साथ चलनेवाला। २. साथ
ाथी। ३. दे० 'समवर्त्ती'।
दे० 'सह गमन'।
[सं०] [स्त्री० सहचरी] १.
चलनेवाला। २. साथी।
नौकर। ४. दे० 'सखा' ३।
[सं० १. पत्नी। २.सखी।
[सं०] [वि० सहचरी]

स्त्री० [सं०] १. साथ रहने
ली। सहेली। २. पत्नी।

[सं० सहचरिन्] [स्त्री०
भाव० सहचारिता] १. साथ
२. संगी-साथी। सहचर।
सं०] [स्त्री० सहजा, भाव०
सगा भाई। २. स्वभाव।
उत्पन्न होनेवाला। २. स्वा-
सरल। सुगम। ४. जन्म से
उत्पन्न होने अथवा अपने
में रहनेवाला। प्रकृत। साधा-
)
पुं० [हिं० सहज + धारी =
] गुरु नानक का वह
सिर और दाढ़ी आदि के बाल
बल्कि साधारण हिन्दुओं की
ना मुँड़ाता हो।
पुं०[सं०]दे०'सहज-समाधि'।
[सं०] [वि० सहजपंथी]
संप्रदाय की एक शाखा।
पुं० [सं०] जीव-जन्तुओं
स्वाभाविक शक्ति या ज्ञान

जो उन्हें कोई काम करने या न करने की प्रेरणा करता है।। (इंस्टिंक्ट)

सहज-समाधि-स्त्री० [सं०] वह ध्यान या समाधि जो सद्‌गुरु के बतलाए हुए सहज या सरल रूप से लगाई जाती है और जिसमें आसन, मुद्रा आदि के प्रयोगों की आवश्यकता नहीं होती।

सहजात-वि० [सं०] १. साथ-साथ जन्म लेने या उत्पन्न होनेवाला। (कान्जेनिटल) २. यमज।
पुं० सगा भाई। सहोदर।

सह-जातिक-वि० [सं०] एक ही साथ या प्रकार के। (होमोजिनीयस)

सहजिया-पुं० = सहज-पंथी।

सहताना*-अ० १. दे० 'सुस्ताना'। २. दे० 'सस्ताना'।

सहत्व-पुं० [सं०] १. 'सह' का गुण या भाव। २. संग-साथ। मेल-जोल।

सहदानी*-स्त्री० दे० 'निशानी'।

सहदूल*-पुं० दे० 'शार्दूल'।

सहदेव-पुं० [सं०] पाँचों पांडवों में सबसे छोटा भाई।

सह-धर्मिणी-स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या।

सह-धर्म्मी-वि० [सं०] समान धर्मवाला।
पुं० [स्त्री० सहधर्मिणी] पति।

सहन-पुं० [सं०] १. सहने की क्रिया या भाव। २. आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। (एबाइड) ३. क्षमा।
पुं० [अ०] १. घर के बीच का खुला भाग; आँगन या चौक। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

सहनशील-वि० [सं०] [भाव० सहनशीलता] सहने या बरदास्त करनेवाला। सहिष्णु। (टालरेन्ट)

सहनशीलता-स्त्री० [सं०] सहनशील होने की अवस्था या भाव। सहिष्णुता। (टालरेन्स, टालरेशन्)

सहना-स० [सं० सहन] १. झेलना।

बरदाश्त करना। २. भार वहन करना।

*पुं० दे० 'साहनी'।

सहनीय–वि० [सं०] जो सहन किया जा सके। सहे जाने के योग्य। सह्य।

सहपाठी–पुं० [सं०सहपाठिन्] वह जो किसी के साथ पढ़ा हो। सहध्यायी।

सह-प्रतिवादी–पुं० [सं०] किसी वाद या मुकदमे में वह व्यक्ति जो मुख्य प्रतिवादी के साथ गौण रूप से उत्तरदायी बतलाया जाता है। (को-डिफेन्डेन्ट)

सह-बात–स्त्री० [सं० सह = साथ + हिं० बात] मेल-जोल की बात-चीत। उदा०–'क्यौं हूँ सहबात न लगै, थाके भेद-उपाइ'। —बिहारी।

सह-बाला–पुं० [सं० सह + बाल = बालक] वह छोटा बालक जो विवाह के समय वर के साथ घोड़े या पालकी पर बैठकर उसके सखा के रूप में जाता है।

सह-भागिता–स्त्री० [सं०] सह-भागी होने की अवस्था या भाव। हिस्सेदारी।

सह-भागिनी–वि० [सं०] समानता के भाव से किसी कार्य में सम्मिलित होनेवाली। सह-भागी का स्त्री०।

स्त्री० पत्नी। जोरू।

सह-भागी–वि० [सं० सह + भागिन्] [स्त्री० सहभागिनी] समानता के भाव से किसी काम में किसी के साथ सम्मिलित होनेवाला।

पुं० वह जो व्यापार आदि में किसी के साथ समानता के भाव से सम्मिलित हो और उसके हानि-लाभ आदि का समान रूप से भागी हो। हिस्सेदार। (शेयरर)

सह-भावी–वि० [सं० सहभाविन्] साथ-साथ होने, रहने या चलनेवाला। (कॉनकमिटेन्ट)

सह-भोज–पुं० [सं०] [वि० सहभोजी] बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना।

सहम–पुं० [फा०] १. भय। डर। २. संकोच। ३. हिचक।

सहमत–वि० [सं०] जिसकी राय दूस से मिलती हो। एक मत का। (एग्रीड

सहमति–स्त्री० [सं०] सहमत होने क्रिया या भाव। किसी के साथ एक होना। (एग्रिमेंट, कॉन्करेन्स)

सहमना–अ० [फा० सहम] डरना।

सह-मरण–पुं० दे० 'सह-गमन'।

सहमाना–स० हिं० सहमना का स०।

सहमृता–वि०, स्त्री० [सं०] अपने पति के शव के साथ सती होने या जानेवाली (स्त्री)।

सहयोग–पुं० [सं०] किसी काम में के साथ लगकर उसकी सहायता कर २. बहुत से लोगों के साथ मिलकर काम करने का भाव। (को-ऑपरेश ३. सहायता।

सहयोगी–पुं० [सं०] किसी के मिलकर उसी का या उसी तरह का करनेवाला। २. सहकारी। साथी। सम-कालीन।

सहर–क्रि० वि० [हिं० सहराना] मंद से। धीरे-धीरे।

पुं० [देश०] बन-बिलाव या स्याह नामक जंगली जन्तु।

पुं० [अ०] बहुत सवेरा। तड़का।

†पुं० दे० 'शहर'।

सहर-गही–स्त्री० [अ० सहर = प्रभात फा० गह] निर्जल व्रत आरंभ करने के बहुत तड़के उठकर किया जानेवाला भोजन। सहरी।

सहराना*–स० दे० 'सहलाना'।

अ० दे० 'सिहरना'।

सहरी–स्त्री० = सहर-गही।

†स्त्री० [सं० शफरी] एक प्रकार मछली।

सहल–वि० [अ०] सरल। सुगम। सह

=साथी ।
[अनु०] १. किसी वस्तु
धीरे-धीरे हाथ फेरना । २.
[सं०] १. साथ रहना ।
संभोग ।
[सं०] [स्त्री० सह-
साथ रहनेवाला । २. पति ।
=सहस्र ।
-पुं० = सूर्य ।
पुं० = सूर्य ।
पुं० = सूर्य ।
[सं०] एकाएक । अकस्मात ।
पुं० = सहाइ ।
पुं० [सं० सहस्राक्ष] इंद्र ।
विहात करि विघन पात सहसा
सहसाद्रि) ।—रत्ना० ।
-पुं० = सहसाद्रि ।
[सं०] मोर । मयूर ।
-पुं० [सं० सहस्रानन] शेषनाग ।
[सं०] हठयोग के अनु-
के अन्दर के आठ कमलों या
जो हजार दलों का माना
स्थान मस्तिष्क का ऊपरी
जाता है । इसे शून्य चक्र भी
आधुनिक विज्ञान के अनुसार
शक्ति और शरीर का विकास
नाड़ियों का केंद्र है ।
[सं०] दस सौ । हजार ।
में दस सौ हो ।
पुं० [सं०] कमल ।
पुं० [सं०] १. सूर्य । २. विष्णु ।
पुं० [सं०] शेषनाग ।
पुं० = सहस्रार्जुन ।
-पुं० = इंद्र ।
[सं०] १. इंद्र । २. विष्णु ।
स्त्री० [सं०] किसी संवत्
एक से हर हजार तक के

वर्षों का समूह । साहस्री । (माइलीनियम)

सहस्रार्जुन-पुं० [सं०] राजा कृतवीर्य का पुत्र जिसकी राजधानी माहिष्मती में थी । सहस्रबाहु ।

सहांश-पुं० [सं०] अपने हिस्से या अंश के रूप में किसी को दी जानेवाली कोई चीज या धन । (कॉन्ट्रिब्यूशन)

सहांशिक-पुं० [सं०] वह जो अपने हिस्से या अंश के रूप में किसी को कुछ देता हो (कॉन्ट्रिब्यूटर)
वि० सहांश के रूप में (कॉन्ट्रिब्यूटरी)

सहाइ(ई)*–पुं० = सहायक ।
स्त्री० [सं० सहाय] १. सहायता । मदद । २. सेना । फौज । उदा०–सहित सहाइ कलिकाल भीरू भागि है ।—तुलसी ।

सहाउ*-पुं० = सहाय ।

सहाध्यायी-पुं० = सहपाठी ।

सहाना*-वि० [स्त्री० सहानी] दे० 'शहाना' ।

सहानुभूति-स्त्री० [सं०] किसी का दुःख देखकर उसी की तरह दुःखी होना । हमदर्दी ।

सहाब*-पुं०=शहाब (लाल रंग)

सहाय-पुं० [सं०] १. सहायता । मदद । २. सहायक । ३. आश्रय । सहारा ।

सहायक-वि० [सं०] [स्त्री० सहायिका] १. सहायता करनेवाला । २. किसी बड़ी नदी में मिलनेवाली छोटी नदी । (ट्रिब्यूटरी) ३. अधीन रहकर काम में सहायता करनेवाला । सहकारी । (असिस्टैन्ट)

सहायता-स्त्री० [सं०] १. किसी के कार्य में इस प्रकार योग देना कि वह काम जल्दी या ठीक तरह से हो । मदद । २. कोई कार्य आगे बढ़ाने या चलता रखने के लिए दिया जानेवाला धन । (एड)

सहार-पुं० [हिं० सहारना] १. सहारने या सहने का भाव, गुण या शक्ति । सहनशीलता । सहन ।

सहारना†-स०[भाव०सहार]दे० 'सहना'। *स० [हिं० सहारा] सहारा देना या लगाना।

सहारा-पुं० [सं० सहाय] १. आश्रय। आसरा। २. भरोसा। ३. सहायता।

सहालग-पुं० [सं० साहित्य ?] ब्याह-शादी के दिन। लगन। (हिन्दू)

सहावल†-पुं० दे० 'साहुल'।

सहिक-वि० [सं० स (अस्) + हिं + क (प्रत्य०)] १. (कथन) जो निश्चित और स्पष्ट रूप से प्रस्थापित या व्यक्त किया गया हो। ठीक मानकर साफ कहा हुआ। २. जो सचमुच वर्त्तमान हो। सत्ता से युक्त। वास्तविक। ३. जिसमें किसी प्रकार का सन्देह, संकोच या आगा-पीछा न हो। दृढ़ और निश्चित। ४. जिसमें कोई विशिष्ट तत्व या भाव वर्त्तमान हो। ५. गणित में शून्य की अपेक्षा अधिक, जो 'धन' कहलाता है। 'ऋण' का विपर्याय। ६. (प्रतिकृति या मूर्त्ति) जिसमें मूल के समान ही छाया या प्रकाश हो। जो उलटा न जान पड़े। सीधा। 'नहिक' का विपर्य्याय। (पॉजिटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए) पुं० १. वह कथन या बात जिसमें किसी तत्व या सिद्धान्त का निश्चित रूप से निरूपण या प्रस्थापन किया गया हो। ठीक मानकर दृढ़तापूर्वक कही हुई बात। २. किसी विषय, निश्चय आदि का वह अंश या पक्ष जिसमें उक्त प्रकार का निरूपण या प्रस्थापन हो। ३. वह प्रतिकृति या मूर्त्ति जिसमें मूल की छाया के स्थान पर छाया और प्रकाश के स्थान पर प्रकाश हो। वह नकल जो देखने में सीधी जान पड़े, उलटी नहीं। ४. छाया चित्र में नहिक शीशे पर से कागज पर छापी हुई वह प्रति जो मूल के ठीक अनुरूप होती है। 'नहिक' का विपर्य्याय। (पॉजिटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)

सहिजन-पुं० [सं० शोभांजन] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लंबी फलियों की तरकारी बनती है।

सहिजानी†-स्त्री० दे० 'निशानी'।

सहित-अव्य० [सं०] समेत। साथ।

सहिदानी†-स्त्री० [सं० सज्ञान] १ स्मृति के लिए किसी को दी हुई वस्तु निशानी। २. पहचान। चिह्न। लक्षण।

सहिष्णु-वि० [सं०] [भाव० सहिष्णुत बरदाश्त करनेवाला। सहनशील। (टालरेन

सहिष्णुता-स्त्री० [सं०] सहिष्णु हो का भाव, गुण या शक्ति। सहनशीलता (टालरेन्स, टालरेशन)

सही-वि० [फा० सहीह] १. सत प्रामाणिक। २. शुद्ध। ठीक। 'गल का विरुद्धार्थक।

मुहा०-(किसी की) सही भरना यह कहना कि हाँ, यह ठीक है। किसी सत्यता की साक्षी देना।

स्त्री० हस्ताक्षर। दस्तखत।

†क्रि० वि० सचमुच। वस्तुतः।

सही-सलामत-वि० [हिं० सही + सलामत] १. स्वस्थ। भला-चंगा। २. जिसमें कोई बाधा न हुई हो।

क्रि० वि० कुशलपूर्वक। सकुशल।

सहुँ*-अव्य० [सं० सम्मुख] १. साम २. तरफ। ओर।

सहु*-वि० = सब (सारा)।

सहूर-पुं० दे० 'शऊर'।

सहूलियत-स्त्री० [फा०] सुभीता।

सहृदय-वि० [सं०] [स्त्री० सहृद भाव० सहृदयता] १. दूसरों के सुख, दु आदि समझनेवाला। २. दयालु। रसिक। भावुक।

सहेजना-स० [अ० सही ?] [प्रे० सहे वाना] १. यह देखना कि सब चीजें प हैं या नहीं। सँभालना। २. सँभालने याद रखने के लिये कहना।

सहेजवाना-स० हिं० 'सहेजना' का प्रे०

'सहेत' ।
] घूमना-फिरना । चक्कर

।
[हिं० सहेटना] बहुत घूमने
घुमक्कड़ ।
[सं० संकेत] प्रेमी-प्रेमिका
र्दिष्ट तथा गुप्त स्थान ।
[सं०] जिसमें कुछ हेतु
।
हेतु या उद्देश्य से ।
पुं० = सुहेला ।
ी० = सहेली ।
पुं० = सुहेला ।
[सं० सह + एली (प्रत्य०)]
हनेवाली दूसरी स्त्री । सखी ।
वि० [सं० स + हर्ष] प्रसन्नता
सहर्ष ।
[हिं० सहाय] सहायक ।
सहन] सहनेवाला ।
[सं०] साहित्य में एक
में 'सह', 'संग', 'साथ' आदि
ार प्रयुक्त होते हैं कि किसी
)एक कार्य के साथ और भी
होना सूचित होता है । जैसे--
तुम्हारे मुख के साथ ही चंद्रमा
हो जाता है । अथवा (ख)
शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होता
अलग प्रसंगों में अलग-अलग
जैसे--यौवन में उसके ओष्ठ
साथ ही रागयुक्त (क्रमात्-
पूर्ण या अनुरक्त) हो गये ।
[सं०] [स्त्री० सहोदरा]
माता के उदर या गर्भ से
।
] सहने या बर्दाश्त करने
जा सके । (टॉलरेबुल)

सह्याद्रि-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पर्वत जो बम्बई प्रांत में है ।

साँई-पुं० [सं० स्वामी] १. स्वामी । मालिक । २. ईश्वर । ३. पति । ४. मुसलमान फकीर ।

साँक*-स्त्री० दे० 'शंका' ।
वि० दे० 'सशंक' ।

साँकड़ा-पुं० [सं० शृंखला] पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना ।

साँकर*-स्त्री० [सं० शृंखला] जंजीर ।
पुं० [सं० संकीर्ण] संकट । विपत्ति ।
वि० १. संकीर्ण । सँकरा । २. दुःखमय ।

साँकरा-वि० [सं०] संकीर्ण । कम चौड़ा । तंग । संकीर्ण ।
पुं० १. कष्ट । विपत्ति । संकट । २. कठिन समय । संकट की अवस्था ।

सांकर्य-पुं० = संकरता ।

सांकेतिक-वि० [सं०] १. जो संकेत रूप में हो । इशारे का । २. भाषा-विज्ञान में, शब्द के संकेत (अभिधा शक्ति से निकलनेवाले पहले और मुख्य अर्थ) से सम्बन्ध रखनेवाला । 'व्यंजनाधायक' का विरुद्धार्थक ।

सांकेतिक भाषा-स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में काम आनेवाली ऐसी भाषा जिसमें साधारण और प्रचलित शब्दों के स्थान पर कुछ ऐसे सांकेतिक शब्द और पद बना लिये जाते हैं । जिन्हें साधारण लोग नहीं समझ सकते । (कोड लैंगवेज)

साँखा*-स्त्री० = शंका ।

सांख्य-पुं० [सं०] महर्षि कपिल-कृत एक प्रसिद्ध दर्शन, जिसमें जड़ प्रकृति और चेतन पुरुष ही जगत् का मूल माना गया है ।

सांख्यिकी-स्त्री० [सं०] १. किसी विषय की संख्याएँ आदि एकत्र करके उनके आधार पर कुछ सिद्धान्त स्थिर करने या निष्कर्ष निकालने की विद्या । २. इस प्रकार एकत्र की हुई संख्याएँ (स्टैटिस्टिक्स)

साँग–स्त्री० [सं० शक्ति] [अल्पा० साँगी] एक प्रकार की बरछी। शक्ति।

†पुं० दे० 'स्वाँग'।

सांग–वि० [सं० साङ्ग] सब अंगों से युक्त। सम्पूर्ण। पूरा।

पुं० दे० 'सांग रूपक'।

सांग रूपक–पुं० [सं०] साहित्य में रूपक अलंकार का वह भेद जिसमें उपमान के सभी अंगों या अवयवों का उपमेय में आरोप होता है। (सस्टेन्ड मैटाफर) जैसे–'चिबुक कूप, रसरी अलक, तिल सु-चरस दृग बैल। बारी बैस गुलाब की सींचत मनमथ छैल।–बिहारी।

साँगी–स्त्री० [हिं० साँग] छोटी साँग या बरछी।

सांगोपांग–वि० [सं० साङ्गोपाङ्ग] सब अंगों और उपांगों से युक्त। सम्पूर्ण।

सांघातिक–वि० [सं०] १. 'संघात' से संबंध रखनेवाला। २. (चोट का प्रहार) जिससे आदमी मर सकता हो। घातक। (फैटल) ३. जिससे प्राणों पर संकट आ सकता हो। बहुत जोखिम का।

सांघिक–वि० [सं०] संघ-संबंधी। संघ का।

साँच*–वि०, पुं० [स्त्री० साँची] दे० 'सच' और 'सच्चा'।

साँचना–स० [सं० संचय] १. संचित करना। २. किसी चीज में भरना।

साँचला†–वि० [स्त्री० साँचली] = सच्चा।

साँचा–पुं० [सं० स्थाता] १. विशिष्ट आकार का वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज ढालकर उसी के आकार की दूसरी और चीजें बनाई जाती हैं।

पद०–साँचे में ढला=सर्वांग सुन्दर और सुडौल।

२. किसी बड़ी आकृति का छोटा नमूना। ३. बेल-बूटे छापने का ठप्पा। छापा। *४. शरीर। देह।

वि० [स्त्री० साँची] दे० 'सच्चा'।

साँची–स्त्री० [?] पुस्तकों की छपाई का वह ढंग जिसमें पृष्ठ के बेड़े बल में पंक्तियाँ रहती हैं।

पुं० एक प्रकार का पान।

साँझ†–स्त्री० दे० 'संध्या'।

साँझा–पुं० दे० 'साझा'।

साँझी–स्त्री० [हिं० साँझ] मन्दिरों भूमि पर रंगीन चूर्णों से बनाई हुई बे बूटों आदि की सजावट, जो प्रायः सा में या उत्सवों के समय होती है।

साँट–स्त्री० [सट से अनु०] १. छड़ी २. कोड़ा। ३. शरीर पर कोड़े आदि मार का दाग या निशान।

स्त्री० दे० 'साँठ'।

साँटा–पुं० [हिं० साँट = छड़ी] १. कोड़ २. गन्ना।

पुं० [?] प्रतिकार। बदला। उदा०–साँटो लै कृष्णावतार, तब ह्वैहो तुम सं पार।–केशव।

साँटि*–क्रि० वि० [?] बदले में की जगह।

साँटिया–पुं० दे० 'साँटेमार'।

पुं० [?] डुग्गी या डौंड़ी पीटनेवाल ढँढोरिया।

साँटी†–स्त्री० [हिं० साँटा] १. छोटी पत छड़ी। २. दे० 'साँटा'।

स्त्री० दे० 'साँठ-गाँठ'। ('साँठ' के अन्त

साँटेमार–पुं० [हिं० साँटा = कोड़ा + (प्रत्य०)] एक प्रकार के सिपाही हाथ में साँटा लेकर राजा की सवारी हाथी के साथ चलते थे।

साँठ–पुं० [देश०] १. दे० 'साँकड़ २. ईख। गन्ना। ३. सरकंडा।

स्त्री० [हिं० सटना] १. सम्बन्ध। सम्ब २. हेल-मेल।

स्त्री० [?] मूलधन। पूँजी।

यौ०–साँठ-गाँठ (नाठ)=१. घनि या गुप्त सम्बन्ध। २. गुप्त संधि। षड्यं

= पकड़ना ।
[हिं० शरकांड] १. सरकंडा ।
ा ।
'पूँजी' ।
षंड] १. केवल सन्तान
के लिए पाला हुआ गौ का
की स्मृति में दागकर छोड़ा

[स्त्री० साँड़नी] नर ऊँट ।
[हिं० साँड़िया] ऊँटनी जो
ती है ।
[हिं० साँड़] एक प्रकार का
जन्तु जिसकी चरबी का औषधों
ता है ।
[हिं० साँड़ ?] साँड़नी पर
ला ।
[सं० श्यालिवोढर] किसी की
की बहन) का पति ।
] १. जिसका अन्त अवश्य
अन्त-युक्त ।
त ।
= शांति ।
[सं०] दुःखी व्यक्ति को
। ढारस । तसल्ली ।
'लक्ष्य' ।
'संधि' । २. दे० 'सेंध' ।
[सं० संधान] निशाना ठीक
ना । संधान करना ।
न] पूरा करना । साधना ।
शित करना । मिलाना । २.
।
= संधि ।
[हिं० साधना] साधन
वाला । साधक ।
[सं०] संध्या-संबंधी ।
सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री०
एक प्रसिद्ध सरीसृप जिसकी
ही जहरीली और घातक

होती हैं । भुजंग । विषधर ।

मुहा०–कलेजे पर साँप लोटना = ईर्ष्या आदि के कारण अत्यन्त दुःख होना । **(किसी को) साँप सूँघ जाना** = किसी को साँप का काट लेना, जिससे वह प्रायः मर जाता है ।

कहा०–साँप-छछूँदर की दशा या गति = बहुत असमंजस की अवस्था ।

२. बहुत बड़ा दुष्ट और घातक व्यक्ति ।

सांपत्तिक–वि० [सं० साम्पत्तिक] सम्पत्ति से संबंध रखनेवाला । सम्पत्ति का ।

साँप-धरन*–पुं० [सं० सर्प + धारी] शिव । महादेव ।

साँपिया–पुं० [हिं० साँप] साँप के (काले) रंग से मिलता-जुलता एक प्रकार का भूरा रंग । वि० उक्त प्रकार के रंग का ।

सांप्रत–अव्य० [सं० साम्प्रत] [वि० सांप्रतिक] इस समय । अभी ।

सांप्रतिक–वि० [सं०] १.जो इस समय हो या चल रहा हो । (करेन्ट) २. जो समय या आवश्यकता को देखते हुए ठीक और उपयुक्त हो ।

सांप्रदायिक–वि० [सं० साम्प्रदायिक] १. किसी विशेष सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखनेवाला । २. परस्पर विरोधी और विद्वेषी सम्प्रदायों से संबंध रखनेवाला । (कम्यूनल)

सांप्रदायिकता–स्त्री० [सं०] १. सांप्रदायिक होने का भाव । २. केवल अपने संप्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना और दूसरे सम्प्रदायों से द्वेष रखना । (कम्यूनलिज्म)

साँभर–पुं० [सं० सम्भल या साम्भल] राजपूताने की एक झील जिसके पानी से नमक बनता है । २. इस झील के पानी से बना हुआ नमक । ३. एक प्रकार का हिरन । * पुं० दे० 'संबल' ।

साँमुहें†–अ० [सं० सम्मुखे] सामने ।

साँवत।– पुं० दे० 'सामंत' ।

साँवत्सरिक–वि० [सं०] संवत्सर का। संवत्सर-सम्बन्धी ।

साँवर– वि० दे० 'साँवला'।

साँवलताई*–स्त्री० = साँवलापन।

साँवला–वि० [सं० श्यामल] [स्त्री० साँवली, भाव० साँवलापन] कुछ-कुछ काला। हलके श्याम वर्ण का।
पुं० १. श्रीकृष्ण। २. पति। ३. प्रेमी। ४. गीत।

साँवलापन–पुं० [हिं० साँवला + पन (प्रत्य०)] 'साँवला' होने का भाव, गुण या अवस्था। श्यामलता।

साँवाँ–पुं० [सं० श्यामक] कँगनी या चेना की तरह एक प्रकार का घटिया अन्न।
*वि० [सं० श्याम] १. साँवला। २. काला।

सांवादिक–वि० [सं०] १. संवाद संबंधी। २. समाचार संबंधी।
पुं० दे० 'पत्रकार'।

सांवादिक-सम्मेलन–पुं० दे० 'पत्रकार-सम्मेलन'।

साँस–पुं० [सं० श्वास] १. नाक या मुँह से हवा अन्दर फेफड़ों तक खींचकर फिर उसे बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम।
मुहा०–साँस उखड़ना या टूटना = मरने के समय रोगी का बहुत कष्ट से साँस लेना। **साँस ऊपर नीचे होना** = साँस रुकना। दम घुटना। **साँस चढ़ना**= परिश्रम आदि के कारण साँस का जल्दी-जल्दी चलना। **साँस तक न लेना** = कुछ भी न बोलना। **साँस फूलना** = (क) दमे का रोग होना। (ख) जल्दी-जल्दी साँस चलना। **साँस रहते**=जीते जी। **गहरा, ठंढा या लंबा साँस लेना** = (क) बहुत दुःख या शोक होना। (ख) संतोष या विश्राम का अनुभव करना। **उल्टा साँस लेना** = (क) साँस उखड़ना। (ख) गहरा या ठंढा साँस लेना।
२. अवकाश। फुरसत।
मुहा०–साँस लेना = कोई काम करते करते कुछ रुकना या ठहरना।
३. गुंजाइश। समाई। ४. किसी चीज वह बहुत छोटी संधि या दरज जिसमें पा या हवा जा सकती हो। ५. दमा या श्वा नामक रोग।

साँसत–स्त्री० [सं० शास्ति] १. ब अधिक शारीरिक कष्ट या पीड़ा। यातन २. सजा। दण्ड।

साँसत-घर–पुं० दे० 'काल-कोठरी'।

सांसद–वि० [सं० संसद] (कथन, वहार, या आचरण) जो संसद या उ सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो। भद्रोचित। (पार्लमेंटरी)

सांसद मंत्री–पुं० [सं०] किसी रा सचिव से सम्बद्ध वह मंत्री जो उसे सं के कार्यों में सहायता देता हो। (पा मेन्टरी सेक्रेटरी)

सांसदी–पुं० [सं० संसद्] वह जो सं के रीति व्यवहारों का अच्छा ज्ञाता हो उसमें बैठकर सब काम ठीक तरह से च में पूर्ण पटु हो। (पार्लामेन्टेरियन)

साँसना*–स० दे० 'सासना'।

सांसर्गिक–वि० [सं०] १. संसर्ग-संबंध २. संसर्ग से उत्पन्न होनेवाला।

साँसा†–पुं० [हिं० साँस] १. श्वास साँस। २. जीवन। जिन्दगी। जैसे- तक साँसा, तब तक आशा।
*पुं० [सं० संशय] १. सन्देह। श २. भय। डर।

सांसारिक–वि० [सं०] [भाव० सां रिकता] संसार का। लौकिक। ऐहिक।

साँसी–स्त्री० दे० 'मिस्की'। (गाने का ढं

साँसो*–पुं० = संशय।

सांस्कृतिक–वि० [सं०] संस्कृति सम्बन्ध रखनेवाला। संस्कृति-संबंधी। (क

सं० सदृश] [स्त्री० सी]
तुल्य। २. एक परिमाण-
। जैसे-थोड़ा-सा; बहुत-सा।
ड्ज] संगीत में षड्ज स्वर
द। जैसे-सा, रे, ग।
सं० शायक] १. वाण। तीर।
तलवार।
स्त्री० [अं०] दो पहियोंवाली
गाड़ी जिसके दोनों पहिये आगे-
और जो पैरों से चलाई जाती
है।
[अ० साअत] १. पल।
समय। ३. मुहूर्त्त। ४. शुभ

-पुं० दे० 'नामपट्ट'।
=साईं। (ईश्वर)
[सं० सागर] समुद्र। सागर।
सुता हित हत्यौ लंकपति, बाँध्यौ
—सूर
'साँईं'।
[हिं० साइत ?] वह धन जो
कर कोई काम कराने से पहले
पक्की करने के लिए दिया जाता
बयाना। (अर्नेस्ट मनी)
[हिं० रईस का अनु०] घोड़े
करनेवाला। नौकर।
[हिं० साईस] साईस का
।
दे० 'सावज'।
-स्त्री० = मेंहदी
[सं० शाक्त] १. शाक्त मत
का अनुयायी। उदा०—तुम
भाव-भागवत, राग द्वेष तैं
हैं जो किसी गुरु से दीक्षा
साधु या वैरागी हो गया हो।
है।

स्त्री० = शक्ति।

साकर*—स्त्री० = शक्कर।

साकला—पुं० [सं० साकल्य] एक में मिले हुए जौ तिल आदि दानें जिनसे हवन किया जाता है।

साकल्य—पुं० [सं०] 'सकल' का भाव। सकलता।

साका—पुं० [सं० शाका] १. संवत्। २. यश। कीर्त्ति। ३. कीर्त्ति का स्मारक। ४. ख्याति। प्रसिद्धि। ५. धाक। रोब। ६. कोई बड़ा काम जिससे कर्त्ता की बहुत कीर्त्ति हो। **मुहा०—साका चलाना या बाँधना**= आतंक फैलाना। रोब जमाना।

साकार—वि० [सं०] [भाव० साकरता] १. रूप या आकारवाला। २. मूर्त्तिमान्। मूर्त्त। ३. स्थूल। ४. (कल्पना या योजना) जिसे उद्दिष्ट क्रियात्मक या उपयोगी आकार अथवा रूप प्राप्त हुआ हो।
पुं० ईश्वर का आकार-युक्त माना जानेवाला रूप।

साकिन—वि० [अ०] निवासी। रहनेवाला।

साकिनुल्मिल्कियत—पुं० दे० 'काश्तकार' के अंतर्गत।

साकेत—पुं० [सं०] १. स्वर्ग माना जानेवाला रामचन्द्र का लोक। २. अयोध्या नगरी।

साक्षर—वि० [सं०] [भाव० साक्षरता] जो पढ़ना-लिखना जानता हो। शिक्षित। (लिटरेट)

साक्षरता—स्त्री० [सं०] साक्षर या पढ़े-लिखे होने का भाव। (लिटरेसी)

साक्षात्—अव्य० [सं०] सामने। सम्मुख।
वि० मूर्त्तिमान्। साकार। जैसे-आप सक्षात् बृहस्पति हैं।
पुं० भेंट। मुलाकात।

साक्षात्कार—पुं० [सं०] भेंट।

साक्षी—पुं० [सं० साक्षिन्] [स्त्री० साक्षिणी] १. वह व्यक्ति जिसने कोई

घटना अपनी आँखों से देखी हो। २. साखी। गवाह। (विटनेस) ३. दूर से देखनेवाला। तटस्थ दर्शक।

स्त्री० किसी के सामने कोई बात प्रमाणित करने के लिए यह कहना कि ऐसा ही है या हुआ है। गवाही। (एविडेन्स)

साद्य-पुं० [सं०] गवाही।

साद्य-प्रविधि-स्त्री० [सं०] वह प्रविधि या कानून जिसमें साक्षी देने के नियमों आदि की व्यवस्था हो। (लॉ ऑफ एविडेन्स)

साद्य-विधान-स्त्री०, पुं० दे० 'साद्य-प्रविधि'।

साख-स्त्री० [सं० शाका] १. धाक। रोब। २. मर्य्यादा। ३. लेन-देन या व्यवहार के खरेपन की मान्यता। (क्रेडिट)

साखना*-स० [सं० साक्षि] गवाही देना।

साखर*-वि० = साक्षर।

पुं० = शक्कर।

साखा*-स्त्री० = शाखा।

साखी-पुं० [सं० साक्षिन्] १. गवाह। २. आपसी झगड़ों का निपटारा करनेवाला पंच।

स्त्री० १. साक्षी। गवाही।

मुहा०-साखी पुकारना = गवाही देना।

२ ज्ञान-सम्बन्धी दोहे या पद्य। जैसे—कबीर की साखी।

*पुं० [सं० शाखिन्] वृक्ष। पेड़।

साखू-पुं० [सं० शाल] शाल या सखुआ नाम वृक्ष या उसकी लकड़ी जो इमारत के काम में आती है।

साखोचारन*-पुं० दे० 'गोत्रोच्चार'।

साग-पुं० [सं० शाक] १. कुछ विशेष प्रकार के पौधों की तरकारी की तरह खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। २. तरकारी। भाजी।

यौ०-साग-पात=१. रूखा-सूखा भोजन। २. तुच्छ और निकम्मी चीज।

सागर-पुं० [सं०] १. समुद्र। २. झील। ३. एक प्रकार के दशनामी साधुओं की उपाधि या साम्प्रदायिक नाम।

सागू-पुं० [अं० सैगो] १. ताड़ की जाति का एक वृक्ष जिसके तने के गूदे से सा दाना बनता है। २. सागूदाना।

सागूदाना--पुं० [अं० सैगो + दाना सागू नामक वृक्ष के तने के गूदे से तै किये हुए दाने जो शीघ्र पच जाते साबूदाना।

सागौन-पुं० दे० 'शाल' १. (वृक्ष)

साग्र-वि० [सं०] पूरा। सब। सारा।

क्रि० वि० आदि या आरंभ से।

साग्रह-क्रि० वि० [सं०] आग्रहपूर्व जोर देकर।

साचित्य-पुं० [सं० सचेत] सचेत की क्रिया या भाव। सचेतता। (कॉश

साचेत-वि० [सं० सचेत] १. जि चेतना हो। चेतना-युक्त। २. होशिया सचेत।

साच्छात*-अव्य० = साक्षात्।

साछ*-पुं०, स्त्री० दे० 'साक्षी'।

साज-पुं० [सं० सज्जा से फा०] १. हुए होने की अवस्था या भाव। सजाव २. रंग-ढंग, वैभव, शोभा आदि की सू बातें। ठाठ-बाट। ३. किसी चीज को करके उपयुक्त या काम में लाने यो सामग्री। जैसे—घोड़े का साज। ४. वा बाजा। ५. लड़ाई के हथियार।

वि० मरम्मत करने या बनानेवाला (यौगि के अन्त में, जैसे—घड़ीसाज)।

साजन-पुं० [सं० सज्जन] १. पति। प्रेमी। प्यारा। ३. सज्जन।

साजना*-स० दे० 'सजाना'।

अ० दे० 'सजना'।

साज-बाज-पुं० [सं० साज + बाज (अनु० १. तैयारी। २. मेल-जोल।

साज-संगीत-पुं० [फा० साज + सं संगीत] साज या बाजों पर होनेवाला संगीत 'कंठ-संगीत' से भिन्न वाद्य-संगीत।

म्यूजिक)
-पुं० [फा०] १. सामग्री।
ठाठ बाट।
[फा० साजिन्दः] किसी
साज या बाजा बजानेवाला।
[हिं० साज या सजाना]
ता।
दा'।
० [फा०] १. बनावट।
षड्यंत्र।
दे० 'सायुज्य' (मुक्ति)।
[सं० साधक = आधा हिस्सा]
। २. भाग। हिस्सा।
-पुं० [सं० सार्धक + सीर]
वह जोताई जिसमें दो
आधी उपज या हिस्से के
है। २. किसी काम या लाभ
हिस्सेदारी।
-पुं० दे० 'साझेदार'।
दे० 'साझेदार'।
० [हिं० साझा + दार
][भाव० साझेदारी] किसी
ार में साझा रखनेवाला।
भी।
१. दे० 'साड़ी'। (स्त्रियों के
२. दे० 'साँट'।
ने की क्रिया। विक्रय।
[अं० सैटिन] एक प्रकार
मी कपड़ा।
[हिं० सटाना] १. किसी
के लिए गुप्त रूप से अपनी
। २. दे० 'सटाना'।
० षष्टि] [वि० साठा, क्रि०
दूना। पचास से दस और।
सूचक अंक या संख्या।
० [हिं० सटना] १. मेल-
चित सम्बन्ध। ३. षड्यंत्र।

वि० [हिं० साठ ? + नाठ = नष्ट] १. दरिद्र। गरीब। २. रूखा या फीका। नीरस। ३. इधर उधर फैला या बिखरा हुआ। ४ नष्ट-भ्रष्ट।

साठा–पुं० [देश०] ईख। गन्ना।
वि० [हिं० साठ] साठ वर्ष का।

साड़ी–स्त्री० [सं० शाटिका] स्त्रियों के पहनने की चौड़े किनारे की धोती।
स्त्री० दे० 'मलाई' (दूध की)।

साढ़ी–स्त्री० [सं० सार ?] दूध या दही के ऊपर जमनेवाली मलाई।
स्त्री० = साड़ी।
†वि० = असाढ़ी।

साढ़ू–पुं० दे० 'साँढ़ू'।

साढ़े–अव्य० [सं० सार्द्ध] एक अव्यय जो पूरे के साथ लगकर आधे अधिक का सूचक होता है। जैसे–साढ़े चार।

साढ़े-साती–स्त्री० [हिं० साढ़े + सात + ई (प्रत्य०)] शनिग्रह की अशुभ दशा या प्रभाव जो प्रायः साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने, या साढ़े सात दिन तक रहता है।

सातंक–क्रि० वि० [सं० स + आतंक] आतंक या भय-प्रदर्शन के साथ। आतंकपूर्वक।

सात्–वि० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर 'मिला हुआ' या 'रूप में आया हुआ' का अर्थ देता है। जैसे–भूमिसात्, भस्मसात्।

सात–वि० [सं० सप्त] पाँच और दो।
पुं० इस अंक की सूचक संख्या।
सम०–सात-पाँच=चालाकी। धूर्तता।
पद०–सात समुद्र पार = बहुत दूर।

सातत्य–पुं० [सं०] 'सतत' का भाव। सदा या निरंतर होता रहना। (पर्पेचुइटी)

सातिक*–वि० दे० 'सात्विक'।

सात्म्य–पुं० [सं०] समान रूप होने का भाव। एकरूपता। सरूपता। उदा०–समसुर सात्म्य समीप-नाद की नाद धमक सौं।–रत्ना०।

सात्वती–स्त्री० [सं०] शिशुपाल की माता

का नाम। २. सुभद्रा का एक नाम। ३. नाटक में एक प्रकार की वृत्ति, जिसमें मुख्यतः दान, दया, शौर्य आदि वीरोचित कार्यों का वर्णन होता है। इसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है।

सात्विक–वि० [सं०] १. सतोगुणी। २. पवित्र। निर्मल। ३. सत्व गुण से उत्पन्न। पुं० १. साहित्य में सतोगुण से उत्पन्न ये अंग विकार—स्तंभ, स्वेद, मंद, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय। २. दे० 'सात्वती' ३.।

साथ–पुं० [सं० सहित] १. संगीत। सहचार। २. साथी। संगी। ३. मेल। मित्रता। †अव्य० १. सहित।

यौ०–साथ ही = सिवा। अतिरिक्त। **साथ ही साथ**=एक साथ। एक क्रम में। २. प्रति। से। ३. द्वारा।

साथरा†–पुं० [?] १. बिछौना। २. चटाई।

साथी–पुं० [हिं० साथ] [स्त्री० साथिन] १. साथ रहनेवाला। संगी। २. मित्र।

सादगी–स्त्री० [फा०] १. सादापन। २. सीधापन। निष्कपटता।

सादरा–पुं० [?] एक प्रकार का बढ़िया पक्का गाना।

सादा–वि० [फा० सादः] [स्त्री० सादी] १. साधारण बनावट का। २. जिसके ऊपर बेल-बूटे, सजावट आदि का कोई काम न हो। जैसे—सादा कागज। ३. जो छल-कपट न जानता हो। सीधा। सरल।

सादी–स्त्री० [हिं० सादा] १. वह पूरी या रोटी जिसके अन्दर पूर या कोई चीज भरी न हो। 'कचौरी' का विपर्याय। २. लाल नामक पक्षी की मादा। सदिया।

*पुं० [फा० सद = शिकार] १. शिकारी। २. घोड़ा। ३. सवार।

†स्त्री० = शादी।

सादूर*–पुं० [सं० शार्दूल] १. सिंह। शेर। २. हिंसक पशु।

सादृश्य–पुं० [सं०] रूप प्रकार आदि समानता। एक-रूपता। २. बराबरी। तुलना ३. परस्पर विरोधी या भिन्न बातों के विशेष तत्वों में पाई जानेवाली समानता अतिदेश। (एनॉलोजी)

साध–स्त्री० [सं० श्रद्धा = प्रबल वासन १. अभिलाषा। उत्कंठा।

मुहा०–(किसी बात की) साध रहने देना = सब प्रकार से इच्छा पूरी लेना। कुछ कमी या कसर न कर उदा०–व्याध अपराध की साध राखी पिंगलै कौन मति भक्ति भई।–तुलसी

मुहा०–साध राधना = अभिलाषा करना या होना।

२. गर्भवती होने के सातवें महीने में वाला एक प्रकार का उत्सव।

पुं० [सं० साधु] १. साधु। स महात्मा। २. सज्जन।

†वि० [सं० साधु] उत्तम। अच्छा।

साधक–पुं० [सं०] [स्त्री० साधि १. साधना करनेवाला। २. योगी तप ३. साधन। जरिया। ४. वह जो अनु और सहायक हो। ५. किसी उद्देश्य की में सहायता देनेवाला। ६. न्याय में लक्षण, जिसके आधार पर कोई बात करने का प्रयत्न किया जाता है। लिंग।

साधन–पुं० [सं०] १. कार्य आरम करके सिद्ध या पूरा करना। २. नि आज्ञा आदि के अनुसार कार्य का देना। पालन करना। ३. अपने का निर्वाह अथवा अपने पद के कर्त्त का पालन करना। ४. कोई ऐसी जिससे किसी दोष या क्षति का परि हो। उपचार। प्रतिविधि। (रेमेडी) विधिक लेख्यों आदि में बतलाये हुए पूरे करना। (एकजिक्यूशन; उक्त अर्थों के लिए) ६. कोई चीज तै करने का सामान। सामग्री। ७.

की सामर्थ्य या शक्ति। वह जिसके द्वारा या जिसकी कार्य सिद्ध हो। उपकरण। उपाय। युक्ति। १०. धातुएँ आदि शोधने

पुं० १. दे० 'करण' ३.।

'।

वि० [हिं० साधना + हार १. साधने या सिद्ध करने- जो साधा या सिद्ध किया जा सकने योग्य। साध्य।

[सं०] १. कोई कार्य्य सिद्ध या भाव। सिद्धि। २. आराधना। ३. दे० 'साधन'।

] १. पूरा करना। २. ३. अभ्यास करना। ४. ठहराना। ५. एकत्र करना। ७. बनावटी को असल दिखाना।

[सं०] १. साधन स- का। २. किसी राज्य या , शासन या कार्य-साधन से वाला। (एकजिक्यूटिव)

अधिकारी–पुं० [सं०] किसी अधिकारी जो उसके प्रबन्ध या संचालन करता है। ऑफिसर)

[सं० साधनिक] १. का वह विभाग जो विधि- का पालन करता और (एक्जिक्यूटिव) २. इस कारियों का समूह या वर्ग।

)

[सं० साधन] १. लोहे औजार जिससे दीवार सतह की सीध नापते हैं। । उदा०—बोलि साधनी- पुंज मंजु मंडप रचवायौ।—रत्ना०।

साधर्म्य–पुं० [सं०] 'सधर्मी' अर्थात् समान धर्म या गुणों से युक्त होने की अवस्था या भाव। एक-धर्मता। 'वैधर्म्य' का विपर्याय।

साधार–वि० [सं० स + आधार] जिसका कुछ आधार हो। आधार-युक्त।

साधारण–वि० [सं०] १. जैसा प्रायः सब जगह होता या पाया जाता हो। जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता न हो। सामान्य। (यूजुअल) २. प्रकार, प्रकृति, रूप आदि के विचार से जैसा सब जगह होता हो, वैसा। प्रकृत। सहज। (नॉर्मल) ३. अच्छे से कुछ हलके दरजे का। विशेषता या उत्कृष्टता से रहित। मामूली। (आर्डिनरी; उक्त दोनों अर्थों के लिए) ४. सबके समझने योग्य। सहज। सुगम। सरल। ५. दे० 'सामान्य'।

साधारणतः–अव्य० [सं०] १. सामान्य रूप से। मामूली तौर पर। २. बहुधा। प्रायः। अक्सर।

साधारण वाक्य–पुं० [सं०] व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों में से पहला जो प्रायः बहुत छोटा होता है और जिसमें एक कर्त्ता और एक क्रिया (सकर्मक होने पर क्रिया के साथ एक कर्म भी) होती है। (वाक्य के शेष दो प्रकार मिश्र और संयुक्त कहलाते हैं।)

साधारणीकरण–पुं० [सं०] १. एक ही प्रकार के बहुत-से विशिष्ट तत्त्वों या गुणों के आधार पर कोई ऐसा साधारण नियम या सिद्धान्त स्थिर करना जो उन सब तत्त्वों या गुणों पर समान रूप से प्रयुक्त हो सके। २. किसी समान गुण या धर्म के आधार पर अनेक तत्त्वों को एक तल पर या एक वर्ग में लाना। गुणों आदि के आधार पर समानता स्थिर करना। (जेनरलाइजेशन)

साधिका–स्त्री० [सं० साधक] वह लेख

या पत्र जिसपर किसी प्रकार के देने-पावने का ठीक-ठीक हिसाब या भेजे हुए माल का पूरा विवरण लिखा रहता है। (वाउचर)

साधिकार–क्रि० वि० [सं०] अधिकारपूर्वक। अधिकार। (ऑथारिटेटिवली)
वि० १. जिसे अधिकार प्राप्त हो। २. अधिकारपूर्वक या आधिकारिक रूप से कहा या किया हुआ। (ऑथारिटेटिव)

साधित–वि० [सं०] जिसका साधन हुआ हो। साधा या सिद्ध किया हुआ।

साधु–पुं० [सं०] [भाव० साधुता] १. कुलीन। आर्य्य। २. सांसारिक झगड़ों और सम्बन्धों या बंधनों से अलग रहकर धार्मिक जीवन बितानेवाला पुरुष। संत। ३. सज्जन।
वि० १. अच्छा। २. प्रशंसनीय। ३. उचित। ४. शिष्ट और शुद्ध (भाषा)।
अव्य० १. ठीक है। अच्छी बात है। २. बहुत अच्छा। बहुत सुन्दर या उत्तम।

साधुवाद–पुं० [सं०] किसी के कोई अच्छा काम करने पर 'साधु-साधु' कहकर उसकी प्रशंसा या आदर करना।

साधू–पुं० = साधु।

साधो–पुं० [सं०] संत। साधु।

साध्य–वि० [सं०] [भाव० साध्यता] १. करने योग्य। २. जो हो सके। ३. सहज। सुगम। ४. (बात) जिसे प्रमाणित या सिद्ध करना हो। ५. जो अच्छा किया जा सके (रोग)। चिकित्स्य। (क्योरेबुल)
पुं० १. देवता। २. शक्ति। सामर्थ्य। ३. प्रश्न या समस्या के रूप में सामने आनेवाली वह बात जिसे ठीक सिद्ध करना हो। (प्रॉपोजिशन)। ४. तर्कशास्त्र में किसी पक्ष की कही हुई वह बात जो अभी प्रमाणित या सिद्ध की जाने को हो।

साध्यवसाना–स्त्री० [सं० स + अध्यवसान + आ] साहित्य में लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिसमें उपमेय का अध्यवसान करके अर्थात् उसे बिलकुल हटाक केवल उपमान इस प्रकार उपस्थित कि जाता है कि उपमेय से उसका कोई नहीं रह जाता। जैसे–यदि हम कहें– विकट अवसर पर 'पंजाब का शेर' मैदान आया, तो 'पंजाब का शेर' से प्रसंग अनुसार महाराज रणजीत सिंह अथवा ल लाजपत राय का बोध होगा।

साध्या–स्त्री० [सं० साध्य] किसी व्यव या दीवानी मुकदमे में वे विचारणीय जिनका एक पक्ष स्थापन करता हो जिन्हें दूसरा पक्ष न मानता हो और जि आधार पर उस व्यवहार या मुकदमे निर्णय होने को हो। (इश्यू)

विशेष–यह दो प्रकार की होती है– विधिक अर्थात् कानूनी प्रश्नों से रखनेवाली साध्या। (इश्यू आफ और (ख) तथ्यक अर्थात् वास्तव्य अ वास्तविक घटनाओं या तथ्यों से संबंध र वाली साध्या। (इश्यू ऑफ फैक्ट्स)

साध्वी–वि० [सं०] पतिव्रता या प आचरणवाली (स्त्री)।

सानंद–क्रि० वि० [सं०] आनन्दपूर्व

सान–पुं० [सं० शाण] वह पत्थर जिस रगड़कर अस्त्रों आदि की धार तेज़ की है। कुरंड।

मुहा०–सान धरना = धार तेज क

सानना†–स० [हिं० सनना का स०] चूर्ण आदि किसी तरल पदार्थ में मिल गीला करना। गूँधना। २. मिश्रित कर मिलाना। ३ सम्मिलित करना। ४. अपराध आदि के लिए किसी के अकारण दोषी या उत्तरदायी बनाना।

साना*–अव्य० [सं० शांत] १. शांत हो २. समाप्त होना। न रह जाना। उदा कृपासिंधु, बिलोकिए जन-मन की सां सान।— लछी।
स० १. शांत करना। २. नष्ट करना

[हिं० सानना] पानी में
भैंसों का चारा।
दूसरा। २. बराबरी का। सम।
=अद्वितीय। बे-जोड़।
] १. पर्वत का शिखर।
छोर। सिरा। ४. चौरस
। जंगल।
चौड़ा। २. चौरस। सपाट।
वि० = अनुकूल।
वि० [सं० स + अनुज]
भाई के साथ।
वि० = समीप।
[सं०] 'सन्निधि' का भाव।
निकटता। (प्राक्सिमिटी)
[सं०] 'सन्मुख' होने की
भाव। सामना।
= शाप।
[सं० शाप] शाप देना।
ताड़त पुरुष कहन्ता।—कबीर।
[सं०] [भाव० सापेक्षता]
दूसरे तत्त्व, विचार, दृष्टि-कोण
होने के कारण उसकी
हो। बिना किसी दूसरे के
न होनेवाला। (रिलेटिव)
अपेक्षा करनेवाला। ३. जो
या आशा की अपेक्षा में
। (पेन्डिग)
पुं० [सं०] वह सिद्धान्त
ओं या बातों को एक दूसरी
माना जाता है।
वि० [सं०] १. सप्ताह-
प्रति सप्ताह होनेवाला।
(वीकली)
प्रकाशित होनेवाला समा-
(वीक्ली)
[अ०] १. स्वच्छ। निर्मल।
। ३. निर्दोष। ४.

स्पष्ट। ५. उज्वल। ६. जिसमें कोई झगड़ा-बखेड़ा न हो। ७. निखरा हुआ। चमकीला। ८. निष्कपट। ९. सादा। कोरा। १०. जिसमें रद्दी अंश न हो। ११. खाली।

मुहा०—साफ करना = (क) मार डालना। (ख) नष्ट करना।

१२. (लेन-देन) जो चुकता किया गया हो। क्रि० वि० १. बिना किसी दोष या कलंक के। २. बिना किसी प्रकार की हानि के। ३. इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे। ४. बिलकुल। परम।

साफल्य—पुं० = सफलता।

साफा—पुं० [अ० साफ़ः] १. छोटी पगड़ी। २. कपड़ों में साबुन लगाकर उन्हें साफ करने की क्रिया या भाव।

मुहा०—साफा देना या लगाना = कपड़ों में साबुन लगाकर उन्हें साफ करना।

साफी—स्त्री० [अ० साफ़] १. भाँग छानने या गाँजे की चिलम के नीचे लगाने का छोटा कपड़ा। २. हाथ में रखने का छोटा रूमाल।

साबन—पुं० = साबुन।

साबर—पुं० [सं० शंबर] साँभर (हिरन) का चमड़ा।

पुं० [सं० शर्वला = कुदाल] मिट्टी खोदने की सबरी।

*वि० दे० 'शाबर'।

साबिक—वि० [अ०] पहले का। पुराना।

पद—साबिक-दस्तूर = जैसा पहले था वैसा ही। यथापूर्व।

साबिका—पुं० [अ०] पारस्परिक व्यवहार के कारण होनेवाला संबंध। सम्पर्क।

साबित—वि० [अ०] जिसका सबूत या प्रमाण मिल चुका हो। प्रमाणित। सिद्ध। वि० [अ० सबूत] १. पूरा। समस्त। सारा। २. पक्का। दृढ़।

साबुत—वि० [अ० साबित] १. जो खंडित न हुआ हो। पूरा। २. समस्त। सब।

साबुन–पुं० [अ० साबून] क्षार, तेल आदि से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और कपड़े साफ किये जाते हैं।

साबूत–वि० दे० 'साबुत'।
पुं० दे० 'सबूत'।

साबू दाना–पुं० दे० 'साग़ू दाना'।

साभार–क्रि० वि० [सं० स+आभार] आभार मानते हुए। कृतज्ञतापूर्वक।

सामंजस्य–पुं० [सं०] १. औचित्य। २. अनुकूलता। ३. मेल। एक-रसता।

सामंत–पुं० [सं०] १. वीर। योद्धा। २. शक्तिशाली जमींदार या सरदार।

सामंत-तंत्र–पुं० दे० 'सामंत प्रणाली'।

सामंत प्रणाली–स्त्री० [सं०] किसी राज्य के अंतर्गत वह प्रणाली जिसमें सामंतों, सरदारों और जमींदारों आदि को किसानों, खेती-बारी की जमीनों आदि के सम्बन्ध में बहुत अधिक या पूरे-पूरे अधिकार होते हैं। (फ्यूडल सिस्टम)

सामंत-शाही–स्त्री० दे० 'सामंत प्रणाली'।

सामंत सभा–स्त्री० [सं०] इंगलैण्ड के संविधान में वहाँ के बड़े-बड़े सामंतों (लार्डों) की वह सभा जो वहाँ की लोक-सभा से बड़ी मानी जाती है। (हाउस ऑफ लार्ड्स)

साम–पुं० [सं० सामन्] १. गाये जाने-वाले वेद-मंत्र। २. दे० 'सामवेद'। ३. राजनीति में शत्रु से मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने की नीति। ४. मित्रता।
पुं० दे० 'शाम'। (देश)
*वि० दे० 'श्याम'।
*पुं० दे० 'श्याम'। (कृष्ण)
*पुं० दे० 'स्वामी'।

सामग–पुं० [सं०] वह जो सामवेद के मंत्र गाता हो।

सामग्री–स्त्री० [सं०] १. वे आवश्यक वस्तुएँ जिनका किसी कार्य में उपयोग होता हो। आवश्यक द्रव्य। (मेटीरियल) २. घर गृहस्थी या काम चलाने की सब चीजें। सामान। (एफेक्ट्स) ३. साधन उपकरण।

सामना–पुं० [हिं० सामने] १. सम या सम्मुख होने की क्रिया या भाव। भेंट। मुलाकात। ३. सामने या आगेवा भाग। ४. प्रतियोगिता। मुकाबला।

सामने–क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सम्मुख। समक्ष। आगे। २. उपस्थि में। ३. सीधे आगे की ओर। ४. मुका में। विरुद्ध।

सामयिक–वि० [सं०] [भाव० स यिकता] १. समय से संबंध रखनेवा २. वर्त्तमान समय का। ३. समय देखते हुए उचित, उपयुक्त या ठीक।

सामयिकता–स्त्री० [सं०] १. साम होने का भाव। २. वर्त्तमान समय, स्थिति आदि के विचार से युक्त दृष्टि- या अवस्था।

सामयिक पत्र–पुं० [सं०] कुछ नि समय पर बराबर प्रकाशित होता वाला पत्र। (पीरियॉडिकल)

सामरथ*–पुं० = सामर्थ्य।

सामरस्य–पुं० = समरसता।

सामरा*–वि, पुं० = साँवला।

सामरिक–वि० [सं०] समर-संबंधी युद्ध का। जैसे–सामरिक व्यवस्था।

सामर्थ्य–पुं० [सं०] 'समर्थ' का भ कुछ कर सकने की शक्ति। (पॉवर)

सामवायिक–वि० [सं०]समवाय-सम्ब समवाय का।

साम वेद–पुं० [सं० सामन्] [वि० वेदी] चार वेदों में से तीसरा जिसमें जानेवाले स्तोत्र हैं।

सामवेदी–पुं० [सं० साम-वेदिन्] जो सामवेद का अनुयायी अथवा ज्ञाता

सामहिं*–अव्य० = सामने।

सामाँ*–पुं० = सामान।
*स्त्री० = श्यामा।

वि० [सं०] [भाव० सामा-
समाज से संबंध रखनेवाला ।
(सोशल)
नाटक आदि का श्रोता या
रय।
[फा०] १. दे० 'सामग्री' ।
आयोजन । ३. घर, गृहस्थी
कोई काम चलाने की सब
टेक्स्ट)
वि० [सं०] १. जिसमें कोई
हो। मामूली। २. सब या
रखनेवाला । ३. प्रायः सभी
अवसरों, अवस्थाओं आदि में
वाला या उनसे सम्बन्ध रखने-
र्वजनिक। आम । (जनरल;
अर्थों के लिए) ४. दे०

समानता । बराबरी । २. किसी
कार की सब चीजों या बातों
जानेवाला समान गुण । जैसे-
मनुष्यत्व । ३. दे० 'मध्यक' ।
में एक अलंकार जिसमें उपमान
अथवा प्रस्तुत और अ-प्रस्तुत
आदि के बिलकुल समान या
का उल्लेख रहता है । जैसे—यह
चाँदनी रात में अटारी पर खड़ी
और चन्द्रमा में इतनी समान-
पता नहीं चलता कि मुख
चन्द्रमा कौन ।
क्रि० वि० [सं०] १. सामान्य
रण रीति से । साधारणतः ।
रणतः या प्रायः होता हो ।
)
स्त्री० [सं०] १. 'सामान्य'
होने की अवस्था या भाव ।
होने या सब जगह सामान्य
या पाए जाने की अवस्था या
रिटी)

सामान्य बुद्धि–स्त्री० [सं०] प्रायः सब लोगों में पाई जानेवाली वह सामान्य या सहज बुद्धि जिससे वे साधारण बातें बिना किसी प्रयत्न के या आपसे आप समझ लेते हैं । (कॉमन सेन्स)

सामान्य विधि–स्त्री० [सं०] १. कोई साधारण विधि या आज्ञा । जैसे—बुरे काम मत करो ! २. किसी देश या राष्ट्र में प्रच-लित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश या राष्ट्र के निवासियों का आचरण या व्यवहार परिचालित होता है । (कॉमन लॉ)

सामान्या–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो केवल धन के लोभ से पर-पुरुषों से सम्बन्ध करती हो । गणिका ।

सामासिक–वि० [सं०] समास से सम्बन्ध रखनेवाला । समास का ।

सामिग्री-स्त्री० = सामग्री ।

सामिष–वि० [सं०] (भोजन) जिसमें आमिष (मांस, मछली आदि) भी मिला हो।

सामी–पुं० दे० 'स्वामी' ।

वि०, पुं०, स्त्री० दे० 'शामी' ।

सामीप्य–पुं० [सं०] 'समीप' होने का भाव । निकटता । समीपता ।

सामुझि*–स्त्री० = समझ ।

सामुदायिक–वि० [सं०] समुदाय का ।

सामुद्र–वि० [सं०] १. समुद्र-सम्बन्धी । समुद्र का । २. समुद्र से उत्पन्न ।

सामुद्रिक–वि० [सं०] समुद्र-संबंधी । पुं० १. वह विद्या जिसमें मनुष्य के शारीरिक लक्षण, विशेषतः हथेली की रेखाएँ देखकर शुभाशुभ फल बतलाये जाते हैं । २. इस शास्त्र का ज्ञाता ।

सामुहें*–अव्य० = सामने ।

सामूहिक–वि० [सं०] [भाव० सामूहिकता] समूह या बहुत से लोगों से सम्बन्ध रखनेवला । 'वैयक्तिक' का विरुद्धार्थक ।

साम्य–पुं० [सं०] 'सम' या 'समान' होने

का भाव या दशा । समता । समानता ।

साम्यवाद–पुं० दे० 'समाजवाद' ।

साम्यवादी–पुं० दे० 'समाजवादी' ।

साम्या–स्त्री० [सं०] साधारण न्याय के अनुसार सब लोगों के साथ निष्पक्ष और समान भाव से किया जानेवाला व्यवहार । समदर्शितापूर्ण व्यवहार । (इक्विटी)

साम्या-मूलक–वि० [हिं०साम्या + मूलक] जिसमें साम्या या समदर्शिता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया हो । (ईक्विटेबुल)

साम्यावस्था–स्त्री० [सं०] वह अवस्था या स्थिति जिसमें परस्पर विरोधी शक्तियाँ इतनी तुली हुई हों कि एक दूसरी पर अपना अनिष्ट प्रभाव डालकर कोई गड़बड़ी न उत्पन्न कर सकें । (ईक्विलिब्रिअम)

साम्राज्य–पुं० [सं०] १ वह बड़ा राज्य जो एक सम्राट् के शासन में हो और जिसमें कई राज्य या देश हों । सार्वभौम राज्य । (एम्पायर) २. किसी क्षेत्र या कार्य में किसी का पूरा अधिकार । आधिपत्य ।

साम्राज्यवाद–पुं० [सं०] साम्राज्य को बनाये रखने और बढ़ाते चलने का सिद्धान्त । (ईम्पीरियलिज्म)

साम्राज्यवादी–पुं० [सं०] वह जो साम्राज्यवाद का अनुयायी और समर्थक हो । साम्राज्य को दृढ़तापूर्वक बनाये रखने का पक्षपाती । (इम्पीटियलिस्ट)

सायं–पुं० [सं०] सन्ध्या । शाम । (समय) वि० सन्ध्या के समय होनेवाला । जैसे–सायं सन्ध्या = सायंकाल की जानेवाली सन्ध्या नामकी धार्मिक हिन्दू उपासना ।

सायंकाल–पुं० [सं०] [वि० सायंकालीन] सन्ध्या का समय । शाम ।

साय*–पुं० = सायंकाल । सन्ध्या ।

सायक–पुं० [सं०] १. वाण । २. खड्ग ।

सायत–स्त्री० दे० 'साइत' ।

सायन–पुं० [सं०] वर्ष में दो बार आनेवाला वह समय, (२० मार्च और २३ सितम्बर) जब सूर्य के भू-मध्य रेखा प पहुँचने पर दिन और रात दोनों बरा होते हैं । (ईक्वीनॉक्स)

सायना*–अ० दे० 'साना' ।

सायवान–पुं० [फा० सायःबान] मक या कमरे के आगे की ओर छाया के लि बनी हुई टीन आदि की छावन ।

सायर†–पुं० [सं० सागर] समुद्र । पुं० [अ०] १. वह भूमि जिसकी पर कर नहीं लगता । २. अतिरिक्त फुटकर आय ।
वि० प्रकीर्णक । फुटकर ।

सायल–पुं० [अ०] १ सवाल या करनेवाला । २. प्रार्थना-पत्र देने या प्रा करनेवाला । प्रार्थी । ३. माँगनेवाल याचक ।

साया–पुं० [फा० सायः मि० सं० छाय १. छाया । २. परछाईं । ३. भूत, आदि । ४. सान्निध्य से पड़ने प्रभाव । असर ।
पुं० [अ० शेमीज] घाघरे की तर एक जनाना पहनावा ।

सायास–क्रि० वि० [सं० स + आया आयास, प्रयत्न या परिश्रमपूर्वक ।

सायुज*–पुं० दे० 'सायुज्य' ।

सायुज्य–पुं० [सं०] १. किसी मिलकर उसके साथ एक होने अवस्था या भाव । संपूर्ण मिल २. एक प्रकार की मुक्ति जिसके में यह माना जाता है कि जीव जाकर परमात्मा के साथ मिल गया उसमें लीन हो गया ।

सायुध*–वि० [सं० स + आयुध] आ या शस्त्रों से युक्त । जिसके पास हथि आदि हों । सशस्त्र । (आर्म्ड) सायुध रक्षी-दल । (आर्म्ड कॉन्स्टैबुलरी

सारंग–पुं० [सं०] १. एक प्रकार हिरन । २. कोयल । ३. हंस । ४. मोर

हाथी । ७. घोड़ा । ८.
। १०. स्वर्ण । सोना ।
। १२. भौंरा । १३. एक
मक्खी । १४. विष्णु का
शंख । १६. चंद्रमा । १७.
पानी । जल । १९. तीर ।
। २१. चन्दन । २२. बाल ।
शोभा । २४. तलवार । २५.
। २६. आकाश । २७. मेढक ।
। २९. कामदेव । ३०. बिजली ।
। ३२. दीपक । दीया । ३३.
। ३४. ग्रह, नक्षत्र आदि ।
। ३६. गहने, कपड़े आदि
सामान । ३७. चार तगण का
। ३८. ओड़व जाति का एक
दिन के दूसरे पहर में गाया
सारंगी नाम का बाजा ।
हुआ । रंगीन । २. सुन्दर ।
सरस । रस-युक्त ।
-पुं० [सं०] विष्णु ।
-पुं० [हिं० सारंगी] सारंगी
।
[सं० सारंग] एक प्रसिद्ध
लगे हुए तार कमानी से रेत
हैं ।
] [भाव० सारता] १.
मुख्य या मूल भाग ।
। २. तात्पर्य । निष्कर्ष । ३.
जल । पानी । ५. गूदा ।
परिणाम । फल । ७. घन ।
मलाई या मक्खन । ९. बल ।
लोहा । ११. लोहे का बना
हथियार । १२. तलवार । १३.
का पासा । १४. शतरंज,
की गोटी । गोट । १५.
अलंकार जिसमें एक बात
उसके उत्कर्ष-सूचक सार
अनेक बातों का उल्लेख

होता है । जैसे—सब प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है और सब मनुष्यों में उदार, धर्मात्मा और सज्जन श्रेष्ठ है । १६. पिंगल में एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं । अन्त में दो गुरु होते हैं तथा १६ मात्राओं पर यति होती है ।

*पुं० [सं० सारिका] मैना । (पक्षी)

*पुं० [हिं० सारना] १. पालन-पोषण । २. देख-रेख । ३. पलंग । खाट ।

*पुं० [सं० घनसार] कपूर ।

पुं० [सं० शल्य, हिं० साल का पुराना रूप] सालने की क्रिया या भाव । मन में खटकने या कष्ट देनेवाली बात । उदा०—भेदि दुसार कियौ हियौ तन-दुति भेदे सार ।—बिहारी ।

†पुं० दे० 'साला' ।

वि० = कठिन ।

सार-गर्भित—वि० [सं०] जिसमें सार या तत्व हो । सार-युक्त । तत्व-पूर्ण ।

सार-ग्राहिता—स्त्री० [सं०] सार-ग्राही होने का भाव अवस्था या प्रवृत्ति ।

सार-ग्राही—वि० [सं०] [स्त्री० सार-ग्राहिणी] [भाव० सारग्राहिता] वस्तुओं या विषयों का तत्व या सार ग्रहण करनेवाला ।

सारणी—स्त्री० [सं०] छोटी नदी या नाला ।
स्त्री० दे० 'सारिणी' ।

सारथित्व—पुं० [सं०] सारथी का काम, पद या भाव । सारथ्य ।

सारथी—पुं० [सं०] [भाव० सारथित्व, सारथ्य] १. रथ चलानेवाला । सूत । २. समुद्र ।

सारथ्य—पुं० [सं०] सारथी का कार्य, भाव या पद । सारथित्व ।

सारद*—स्त्री० [सं० शारदा] सरस्वती ।
वि० [सं० शारद] शरद ऋतु-संबंधी । शारदीय ।

सारदा*—स्त्री० = शारदा ।

सारदी—वि० = शारदीय ।

सारना*–स० [हिं० सरना का स०] १. (काम) पूरा या ठीक करना । बनाना । २. सुन्दर बनाना । सजाना । ३. रक्षा करना । ४. (आँखों में अंजन या सुरमा) लगाना । ५. (अस्त्र-शस्त्र) चलाना । प्रहार करना । ६. पालन-पोषण या देख-रेख करना । ७. दूर करना । हटाना । उदा०–धारत धरा पै ना उदार अति आदर सौं, सारत बँहोलिनी जो आँस अधिकाई है ।—रत्ना० । ८. ठंढा करना । बुझाना । उदा० कहै रत्नाकर वियोग-आगि सारन कौं, ऊधौ हाय हमकौं बयारि भखिबो कहौ । —रत्ना० ।

सारबान–पुं० [फा०] [भाव० सारबानी] वह जो ऊँट चलाने या हाँकने का काम करता है ।

सार-भाग–पुं० [सं०] किसी तथ्य, कथन, पदार्थ आदि का मुख्य अंश या सार ।

सार-भाटा–पुं० [सं० सार = सारण या पीछे हटना] समुद्र में ज्वार आने के बाद उसके पानी का फिर पीछे हटना ।

सारल्य–पुं० = सरलता ।

सारवती–स्त्री० [सं०] दस वर्णों का एक प्रकार का वर्ण वृत्त, जिसमें तीन भगणों के उपरान्त अंत में एक गुरु वर्ण होता है । इसे 'हाकली' भी कहते हैं ।

सारवत्ता–स्त्री० [सं०] १. 'सारवान्' का भाव । २. सारग्राहिता ।

सारवान्–वि० [सं०] [भाव० सारवत्ता] जिसमें सार या तत्व हो । सार-युक्त ।

सारस–पुं० [सं०] १. एक प्रकार का सुन्दर बड़ा पक्षी । २. हंस । ३. चन्द्रमा । ४. कमल ।

सारस्य–पुं० [सं०] सरसता ।

सारस्वत–पुं० [सं०] १. पंजाब में सरस्वती नदी के तट पर का प्राचीन प्रदेश । २. इस देश के प्राचीन निवासी । ३. इस देश में रहनेवाले ब्राह्मण ।

वि० १. सरस्वती-संबंधी । २. विद्वानों का
३. सारस्वत देश का ।

सारांश–पुं० [सं०] १. किसी पूरे तथ्य पदार्थ, कथन आदि के सब तत्त्वों आ का मुख्य आशय, सार या निचोड़ संक्षेप । सार-भाग । (ऐब्स्ट्रैक्ट) किसी बात की मुख्य-मुख्य और सार- विशेषताएँ । तात्पर्य । निष्कर्ष । (समरी २. वह छोटा खेल जिसमें किसी लेख की मुख्य बातें बतलाई गई हों (कम्पैण्डियम)

सारा–पुं० दे० 'साला' ।

वि० [सं० सह] [स्त्री०सारी] समस्त । पूर

वि० [सं० सारा] उत्तम । श्रेष्ठ ।

सारि–पुं० [सं०] जूआ खेलने का पास

सारिका–स्त्री० [सं०] मैना । (पक्षी

सारिणी–स्त्री० [सं०] एक पृष्ठ में अल अलग स्तम्भों या खानों के रूप में दिये शब्दों, पदों, अंकों आदि का वह विन्य जिससे उन शब्दों, पदों, अंकों आदि पारस्परिक संबंध या कुछ विशिष्ट तथ्य सू होते हैं और जिसका उपयोग अध्ययन, ग आदि के लिए होता है । कोष्ठक । (टेबुल

सारी–स्त्री०[सं०] १. सारिका पक्षी । मैना
२.जूआ खेलने का पासा । गोटी । ३.थूह

वि० समस्त ।

*स्त्री० दे० 'साड़ी' २. दे० 'साली' ।

सारूप्य–पुं० [सं०] [भाव० सारूप्यत १. वह मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपा देव का रूप प्राप्त कर लेता है । २. स पता । समानता ।

सारो*–स्त्री० दे० 'सारिका' ।

पुं० दे० 'साला' ।

सारोपा–स्त्री० [सं०] साहित्य में लक्ष का एक प्रकार जिसमें उपमेय में उपमा का इस प्रकार आरोप किया जाता है कि उप मान से उपमेय आच्छादित नहीं होने पाना । जैसे–विद्या में आप बृहस्पति हैं

'सारिका' (पक्षी)।
] अर्थ सहित।
सं०] [भाव० सार्थकता]
१. सफल। पूर्ण-मनोरथ।
[सं०] व्यापारी, विशेषतः
अपना माल बेचने दूर तक

सं०] जिसमें आधा और
हो। ड्योढ़ा।
वि० [सं०] १. सब कालों
२. सब समयों का।
वि० [सं०] १. सब लोगों
जनता। सर्व-साधारण-संबंधी।
) जैसे-सार्वजनिक उपयोग।
) २. समान रूप से
प्रयोग में आनेवाला। (कॉमन)
कूआँ या धर्मशाला।
जीवन-पुं० दे० 'लोक-

वि० दे० 'सार्वजनिक'।
वि० [सं०] १. सारे देश
या सारे देश में होनेवाला।
से संबंध रखने या सब देशों
(यूनिवर्सल)
वि० [सं०] सब भूतों या
रखने या उसमें होनेवाला।
[सं०] [वि० सार्व-
चक्रवर्ती राजा। २. हाथी।
या उसके सब देशों से
उनमें होनेवाला।
वि० दे० 'सार्वभौम'।

वह जिसका दृष्टि-कोण इतना
वह संसार के सब लोगों या
समझता हो। स्थानिक,
दूसरे संकुचित विचारों से
पोलिटन)
वि० [सं०] [भाव० सार्व-

राष्ट्रीयता] सब या अनेक राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला। (इन्टरनेशनल)

सार्विक—वि० [सं०] १. सर्व-संबंधी। सबका। २. सब जगह समान रूप से होने या पाया जानेवाला। (यूनिवर्सल)

साल—पुं० [पहलवी सालक् से फा० मि० सं० शरद्] वर्ष। बरस। काल-मान। स्त्री० [हिं० सालना] १. 'सालने' की क्रिया या भाव। २. मन में होनेवाला कष्ट। वेदना। पीड़ा। कसक। ३. क्षत। घाव। ४. लकड़ियाँ जोड़ने के लिए उनमें किया जानेवाला चौकोर छेद। ५. छेद। सूराख।
*पुं० दे० 'शालि' और 'शाल'।
*स्त्री० दे० 'शाला'।

सालक*—वि० [हिं० सालना] सालने, खटकने, चुभने या मन में कष्ट देनेवाला।
पुं० = साला (किसी की पत्नी का भाई)।

साल-गिरह—स्त्री० [फा०] बरस-गाँठ।

सालन—पुं० [स्त्री० सलवण] पकी हुई मसालेदार तरकारी।

सालना—अ० [सं० शल्य] [भाव० साल] १. मन में खटकना। मानसिक कष्ट या पीड़ा होना। २. चुभना। गड़ना।
स० १. दुःख पहुँचाना। २. छेद करना। ३. चुभाना। ४. प्रविष्ट करना। अन्दर पहुँचाना। ५. लकड़ी आदि में छेद करके दूसरी लकड़ी का सिरा उसमें घुसाना।

सालममिसरी—स्त्री० [अ० सालब + मिस्र (देश०)] एक प्रकार के क्षुप का कन्द जो पौष्टिक होता और दवा के काम आता है।

सालसा—पुं० [अं० सारसा-पेरिल्ला] खून साफ करनेवाली एक प्रसिद्ध दवा।

साला—पुं० [सं० श्लायक] [स्त्री० साली] १. किसी की पत्नी का भाई। २. इस सम्बन्ध की सूचक एक प्रकार की गाली।
*पुं० [सं० सारिका] मैना (पक्षी)।

सालाना—वि० [फा० सालानः] हर साल

या वर्ष का । वार्षिक ।

सालार–पुं० [फा०] १. मार्ग-दर्शक । २. प्रधान नेता । अगुआ ।

सालिम–वि० [अ० सालम] १. पूरा । समूचा । सारा । २. दृढ़ । पक्का ।

सालिया–पुं० [फा० साल = वर्ष] प्रति वर्ष लिया या दिया जानेवाला कोई कर या शुल्क ।

सालियाना–वि० = सालाना ।

पुं० दे० 'सालिया' ।

सालिसनामा–पुं० दे० 'पंचनामा' ।

सालु–स्त्री० दे० 'साल' ।

सालू–पुं० [देश०] एक लाल कपड़ा । (मांगलिक)

सालोक्य–पुं० [सं०] वह मुक्ति जिसमें जीव को भगवान का लोक प्राप्त होता है ।

सावंत–पुं० दे० 'सामंत' ।

साव–पुं० दे० 'साहू' ।

सावक*–पुं० दे० 'शावक' ।

सावकरन*–पुं० दे० 'श्यामकर्ण' ।

सावकाश*–पुं० [सं०] १. अवकाश । फुरसत । छुट्टी । २. मौका । अवसर ।

क्रि० वि० [सं० स + अवकाश] अवकाश होने पर । फुरसत के समय ।

सावचेत*–वि० = सावधान ।

सावज–पुं० [?] वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाता हो । शिकार ।

सावत–पुं० [हिं० सौत] १. सौतों का आपस का भेद या डाह । सौतिया डाह । २. ईर्ष्या । जलन । डाह । उदा०—तँह गये मद मोह लोभ अति, सरगहुँ मिटत न सावत ।—तुलसी ।

सावधान–वि० [सं०] [भाव० सावधानता, सावधानी] सचेत । सतर्क । होशियार । खबरदार ।

सावधानता–स्त्री० [सं०] सावधान, सचेत या सतर्क रहने की क्रिया या भाव ।

सावधानी–स्त्री० = सावधानता ।

सावधि–वि० [सं० स + अवधि] जिस या जिसकी कुछ अवधि हो । अवधियुक्त

सावन–पुं० [सं० श्रावण] आषाढ़ बाद और भाद्रपद के पहले का महीन श्रावण ।

पुं० [सं०] एक सूर्योदय के दूसरे सूर्यो तक का काल या समय । पूरा एक और एक रात जिसका मान ६० दंड है

सावनी–वि० [हिं० सावन (महीना १. सावन-सम्बन्धी । सावन का । २. स में होनेवाला ।

स्त्री० १. सावन में गाया जानेवाला प्रकार का गीत । २. सावन में वर-प कन्या के लिए भेजे जानेवाले क मिठाइयाँ आदि ।

स्त्री० दे० 'श्रावणी' ।

सावनी कल्याण–पुं० [हिं सावनी + कल्याण] सावनी और कल्याण के से बना हुआ एक प्रकार का संकर (संगीत)

सावित्री–स्त्री० [सं०] १. गायत्री सरस्वती । ३. उपनयन के समय होने एक संस्कार । ४. सत्यवान् की पत्नी अपने सतीत्व के लिए प्रसिद्ध है । ५. नदी । ६. सुहागिन । सधवा ।

साश्रु–क्रि० वि० [सं० स + अश्रु] में आँसू भरकर ।

वि० जिसमें आँसू भरे हों । अश्रु-युक्त

साषी–स्त्री० १. दे० 'सासी' । २. 'साखी' ।

साष्टांग–क्रि० वि० [सं०] आठो अंगों

साष्टांग प्रणाम–पुं० [सं०] सिर, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और इन आँठों से भूमि पर लेटकर किया वाला प्रणाम ।

सास–स्त्री० [सं० श्वश्रु] स्त्री या पुरु विचार से उसके पति या पत्नी की माता

सासरा–पुं० = ससुराल ।

शासन।
[सं० शासन] १. दंड देना।
हुत अधिक कष्ट पहुँचाना।
टना।
सजा। २. बहुत अधिक
। साँसत। उदा०—बहुत
दहिं, ताहि निसंक कियौ।

[सं० संशय] सन्देह।
' या 'साँस'।
१. दे० 'ससुर'। २. दे०

दे० 'साहु'। २. दे० 'शाह'।
[सं०] १. 'सहचर' होने
चरता। २. किसी प्रकार
या साथ रहने या होने का
साथ। (एसोशिएशन)
[सं०] १. सहज बुद्धि
होनेवाला। (इन्स्टिक्टिव)

[?] ग्रहण करना। लेना।
र मारूफ खाँ लिए पान
-चन्दबरदाई।
[सं० साधनिक, प्रा० साहनिय]
भारत के एक प्रकार के राज-
सेना आदि के किसी उप-
ध्यक्ष होते थे। २. मध्य-
के एक प्रकर के राज-कर्म-
रिषद्। ४. सगी। साथी।
गेव।
[अ० साहिब] [स्त्री० साहबा]
मी। मालिक। २. परमेश्वर।
एक सम्मान-सूचक शब्द।
गोरी जाति का व्यक्ति। गोरा।
त-स्त्री० [अ०] १. परस्पर
गी। सलाम। २. परस्पर
सम्बन्ध। मेल-जोल।
[अ० साहिब] साहों या

अँगरेजों का-सा।

स्त्री० १. प्रभुता या ऐश्वर्य से युक्त उच्च अधिकार। २. बड़ाई।

साहस—पुं० [सं०] १. मन की वह दृढ़ता जो कोई बड़ा काम करने में प्रवृत्त करती है। हिम्मत। हियाव। (करेज) २. बल-पूर्वक दूसरे का धन लेना। लूटना। ३. कोई बुरा काम।

साहसिक—पुं० [सं०] [भाव० साहसिकता] १. पराक्रमी। २. डाकू। ३. चोर। वि० १. कार्य जिससे साहस प्रकट हो। साहसपूर्ण। (करेजस) २. निर्भीक। निडर।

साहसी—वि० [सं० साहसिन्] साहस रखनेवाला। हिम्मती। दिलेर। (करेजस)

साहस्र—वि० [सं०] सहस्र-सम्बन्धी। हजार का।

साहस्रिक—वि० साहस्र।

साहस्री—स्त्री० [सं० साहस्रिक] किसी सन् या संवत् के हर एक से हजार वर्षों तक का समूह। सहस्राब्दी। (माइलीनिअम)

साहाय्य—पुं० [सं०] सहायता। मदद।

साहि*—पुं० [फा० शाह] राजा।

साहित्य—पुं० [सं०] १. 'सहित' या साथ होने का भाव। एक साथ होना, रहना या मिलना। २. किसी भाषा अथवा देश के उन सभी (गद्य और पद्य) ग्रन्थों, लेखों आदि का समूह या सम्मिलित राशि, जिनमें स्थायी, उच्च और गूढ़ विषयों का सुन्दर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो। वाङ्मय। (लिटरेचर) ३. वे सभी लेख, ग्रन्थ आदि जिनका सौन्दर्य, गुण, रूप या भावुकतापूर्ण प्रभावों के कारण समाज में आदर होता है। ४. किसी विषय, कवि या लेखक से संबंध रखनेवाले सभी ग्रन्थों और लेखों आदि का समूह। जैसे—वैज्ञानिक साहित्य, तुलसी का साहित्य। ५. किसी विषय या वस्तु से सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों का विस्तृत विवरण जो प्रायः उसके विज्ञापन

के रूप में बँटता है। जैसे–किसी बड़े ग्रन्थ, संस्था, यंत्र आदि का साहित्य। (लिटरेचर) ६. गद्य और पद्य की शैली और लेखों तथा काव्यों के गुण-दोष, भेद-प्रभेद, सौन्दर्य अथवा नायिका-भेद और अलंकार आदि से सम्बन्ध रखनेवाले ग्रन्थों का समूह।

साहित्यकार–पुं० [सं०] वह जो ग्रन्थ आदि लिखकर साहित्य की रचना करता हो। (लिटरेट्योर)

साहित्यिक–वि० [सं०] साहित्य-संबंधी। साहित्य का। (लिटरेरी)

पुं० वह जो साहित्य की सेवा या रचना करता हो। साहित्यकार। (अशुद्ध प्रयोग)

साहिनी*–स्त्री०, पुं० दे० 'साहनी'।

साहिबा†–पुं० = साहब।

साहियाँ*–पुं० = साईं।

साहिल–पुं० [अ०] किनारा। तट।

साही–स्त्री० [सं० शल्यकी] एक जंगली जन्तु जिसके शरीर पर लम्बे काँटे होते हैं।

†स्त्री० [फा० शाही] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

साहु–पुं० [सं० साधु] १. सज्जन। भला आदमी। २. सेठ। महाजन। ३. बनिया। वणिक। ४. ईमानदार। 'चोर' या 'बेईमान' का विरुद्धार्थक।

साहुल–पुं० [फा० शाकूल] दीवारें आदि बनाते समय उनकी सीध नापने का एक प्रकार का डोरीदार लट्टू या यंत्र।

साहूकार–पुं० [हिं० साहु] [भाव० साहूकारी] बड़ा महाजन। कोठीवाल।

साहूकारा–पुं० [हिं० साहूकार + आ (प्रत्य०)] १. महाजनी कारबार। वह बाजार जहाँ ऐसा कार बार होता हो।

साहूकारी–स्त्री० [हिं० 'साहूकार'] 'साहू' का काम, भाव या पद।

साहैं*–स्त्री० [हिं० बाँह] भुज-दण्ड।

अव्य० [हिं० सामुहें] सामने। सम्मुख।

†सिउँ*–प्रत्य० दे० 'स्यों'।

सिंकना–अ० हिं० सेंकना का अ०।

सिंगरफ–पुं० दे० 'ईंगुर'।

सिंगा†–पुं० [हिं० सींग] नरसिंहा तुरही को फूँककर बजाया जानेवाला प्रकार का बाजा। बड़ी सिंगी।

सिंगार–पुं० [सं० शृंगार] [क्रि० सिं रना] १. सजावट। सज्जा। बनाव शोभा।

*पुं० दे० 'हर-सिंगार'।

सिंगार-दान–पुं० [हिं० सिंगार + दान] शीशा, कंघी आदि शृंगार सामग्री रखने का छोटा सन्दूक।

सिंगारना–अ०, स० = शृंगार करना

सिंगार हाट–स्त्री० [हिं० सिंगार + हा वेश्याओं के रहने का बाजार। चकला

सिंगार-हार–पुं० दे० 'हर-सिंगार'।

सिंगारिया–पुं० [सं० शृंगार] मूर्ति का शृंगार करनेवाला पुजारी।

सिंगारी–वि० = सिंगार-सम्बन्धी।

पुं० = सिंगारिया।

सिंगिया–पुं० [सं० शृंगिका] एक का स्थावर-विष।

सिंगी–पुं० [हिं० सींग] फूँककर ब जानेवाला सींग का एक बाजा।

मुहा०–सिंगी पूरना = सिंगी के से हवा भरकर बजाना।

स्त्री० १. एक प्रकार की मछली। सींग की वह नली जिससे जर्राह शरी दूषित रक्त या मवाद चूसकर निकालते

सिंगौटा–पुं० [हिं० सींग] बैलों क की सींगों पर चढ़ाया जानेवाला धातु आवरण।

सिंघ–पुं० = सिंह।

सिंघल–पुं० = सिंहल।

सिंघी–स्त्री० दे० 'सिंगी'।

सिंचन–पुं० दे० 'सेचन'।

सिंचना–अ० हिं० 'सींचना' का अ०।

सिंचाई–स्त्री० [सं० सेचन] १. सीं

सिंधु-द्वार–पुं० [सं०] मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा और उसके आस पास के प्रदेश का पुराना नाम।

सिंधूरा–पुं० [सं० सिंधुर] ओड़व-संपूर्ण जाति का एक राग जो संध्या समय या कुछ रात होने पर गाया जाता है।

सिंधोरा–पुं० [हिं० सिंदूर] [स्त्री० अल्पा० सिंधोरी] स्त्रियों का सिंदूर रखने का काठ का डब्बा।

पुं० दे० 'सिंधूरा'।

सिंह–पुं० [सं०] [स्त्री० सिंहनी] १. बिल्ली के वर्ग में सबसे अधिक बलवान हिंसक जंगली जन्तु, जिसके नर की गर्दन पर बड़े-बड़े बाल होते हैं। शेर बबर। मृगराज। केशरी। २. बहुत बड़ा वीर। ३. ज्योतिष में बारह राशियों में से एक जिसमें पूरा मघा और पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र तथा उत्तरा फाल्गुनी का प्रथम पाद है। (लिओ)

सिंह-द्वार–पुं० [सं०] किले, महल आदि का सदर और बड़ा फाटक।

सिंह-नाद–पुं० [सं०] १. सिंह की दहाड़ या गरज। २. युद्ध के समय वीरों की ललकार। ३. ललकार कर कही हुई बात।

सिंह-पौर–पुं० = सिंह-द्वार।

सिंहल–पुं० [सं०] एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग प्राचीन लंका मानते हैं।

सिंहली–वि० [हिं० सिंहल] सिंहल द्वीप का।

पुं० सिंहल देश का निवासी।

स्त्री० सिंहल द्वीप का भाषा।

सिंहस्थ–वि० [सं०] सिंह राशि में स्थित कोई ग्रह।

पुं० वह समय जब बृहस्पति सिंह राशि में स्थित रहता है। (कुछ शुभ काम ऐसे समय में वर्जित हैं।)

सिंहार-हार*–पुं० दे० 'हर-सिंगार'।

सिंहाली–वि॰, पुं॰, स्त्री॰ = सिंहली।

सिंहावलोकन–पुं॰ [सं॰] १. सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन या वर्णन।

सिंहासन–पुं॰ [सं॰] राजा या देवता के बैठने की विशेष प्रकार की चौकी।

सिंहिका–स्त्री॰ [सं॰] समुद्र में रहनेवाली एक राक्षसी जो राहु की माता थी। यह आकाश में उड़नेवाले पक्षियों को उनकी छाया के द्वारा पकड़कर खा जाती थी, जिससे इसे 'छाया-ग्राहिणी' भी कहते हैं। जब हनुमान जी समुद्र पार करके लंका जा रहे थे, तब उन्हें भी इसने पकड़ा था। उस समय हनुमानजी ने इसे मार डाला था।

सिंहिनी–स्त्री॰ [हिं॰] सिंह की मादा। शेरनी।

सिंहेजा(ला)–पुं॰ [सं॰ सिंघ] सिंह या शेर का बच्चा।

सि–वि॰, स्त्री॰ [हिं॰ सा] समान। तुल्य।

सिअन–स्त्री॰ दे॰ 'सीवन'।

सिअरा*–वि॰ [सं॰ शीतल] ठंढा। पुं॰ छाया। छाँह।

सिआर†–पुं॰ = गीदड़।

सिकंजबी–स्त्री॰ [फा॰ सीकंजबीव] १. सिरके या नीबू के रस में पकाया हुआ कोई शरबत या दवा। २. पानी में घोला हुआ नीबू का रस और चीनी।

सिकंदरा–पुं॰ [फा॰ सिकंदर] स्टेशनों के पास रेल की पटरी के किनारे ऊँचे खम्भे पर लगा हुआ डंडा जो झुककर गाड़ी के आगे बढ़ने का संकेत करता है। (सिगनल)

सिकड़ी–स्त्री॰ [सं॰ शृंखला] १. जंजीर। २. किवाड़ का साँकल। ३. गले में पहनने का एक गहना। ४. करधनी। तागड़ी।

सिकत*–स्त्री॰ दे॰ 'सिकता'।

सिकता–स्त्री॰ [सं॰] १. बालू। रेत। २. रेतीली जमीन। ३. चीनी। शर्करा।

सिकतिल–वि॰ [सं॰ सिकता] रेतिला।

सिकत्तर†–पुं॰ [अं॰ सेक्रेटरी] मंत्री

सिकली–स्त्री॰ [अ॰ सैकल] [का सिकलीगर] अस्त्र आदि माँजकर साफ तेज करने की क्रिया।

सिकलीगर–पुं॰ [हिं॰ सिकली + गर प्रत्य॰] अस्त्रों आदि पर सान या धातुओं आदि को रगड़कर चम वाला कारीगर।

सिकहर–पुं॰ दे॰ 'छीका'।

सिकुड़न–स्त्री॰ [हिं॰ सिकुड़ना] सि के कारण पड़ा हुआ कुछ बल। शि

सिकुड़ना–अ॰ [सं॰ संकुचन] कुचित होना। सिमटना। २. शिकन पड़ना। ३. तनाव के छोटा होना।

सिकोड़ना–स॰ हिं॰ 'सिकुड़ना' का

सिकोरा–पुं॰ दे॰ 'कसोरा'।

सिकोही*–वि॰ [फा॰ शिकोह = वै १. वैभवशाली। २. वीर। बहादुर अभिमानी। घमंडी।

सिक्का–पुं॰ [अ॰ सिक्का] १. मोहर। छाप। ठप्पा। २. टकसा ढला हुआ निर्दिष्ट मूल्य का धातु का जो वस्तु-विनिमय का साधन होता मुद्रा। रुपया-पैसा आदि। (कॉयन अधिकार। प्रभुत्व।

मुहा॰–**सिक्का** बैठना या जम (क) प्रभाव या अधिकतर स्थापित हो (ख) रोब जमाना। आतंक छाना।

सिक्ख–पुं॰ [सं॰ शिष्य] १. शि चेला। २. गुरु नानक के पंथ का अनुया *स्त्री॰ [सं॰ शिक्षा] सीख। शिक्षा *स्त्री॰ [सं॰ शीखा] शिखा। चोटी

सिक्खेकार–पुं॰ [हिं॰ सीखना + (प्रत्य॰)] [भाव॰ सिक्खेकारी] कि किसी गुरु से अच्छी तरह सीखकर वि प्राप्त की हो। (गवैये)

सिक्त–वि॰ दे॰ 'सेचित'।

सं० शिखंडी] १. मोर।
का पर। मोर-पंख।
ई।
ख।
=सीखना।
=शिखर।
दे० 'शिखरन'।
= सिखाना।
=शिखा।
[सं० शिक्षण] विद्या,
शिक्षा या उपदेश देना।
-पुं० [हिं० सिखाना]
।
० = सिखावा।
=शिखी।
[अ०] १. किसी विशेष
जानेवाला कोई निश्चित-
दे० 'सिकंदरा'।
[सं० समग्र] [स्त्री०
सिगरे] १. समस्त
। समस्त।
[अं०] कागज में लपेटा
का चूरा जिसका धुआँ

[सं० समग्र] [स्त्री०
हो वह सब। सम्पूर्ण। सारा।
दे० 'चुरुट'।
दे० 'हर-सिंगार'।
[सं० संचान] बाज(पक्षी)।
=शिक्षा।
[अ०] प्रणाम। दंडवत्।
दे० 'सोझना'।
[सं० सिद्ध] १. आँच
ना। २. कष्ट देना। ३.
कराना। प्राप्य करना।
तुम्हारी दलाली सिझा दी।
रूप से या बहकाकर वसूल
ना। जैसे—उन्होंने जूए में उनसे सौ रुपये सिझा लिए। (बाज़ारू)

सिटकिनी—स्त्री० [अनु०] किवाड़ बंद करने के लिए लोहे या पीतल का एक विशेष प्रकार का उपकरण। सटकिनी।

सिटपिटाना—अ० [अनु०] १. भयभीत या संकुचित होकर चुप होना। २. दब जाना। ३. असमंजस या दुविधा में पड़ जाना।

सिट्टी—पुं० [हिं० सिटना] बहुत बढ़-बढ़कर बोलना। डींग मारना।

मुहा०—सिट्ट भूलना = सिटपिटा जाना। कुछ कहने या करने में अक्षम होना।

सिट्ठी—स्त्री० दे० 'सीठी'।

सिठनी—स्त्री० दे० 'सीठना'।

सिठाई—स्त्री० [हिं० सीठा] सीठे या फीके होने का भाव। सीठापन।

सिड़—स्त्री० [हिं० सिड़ी] १. पागलपन। उन्माद। २. सनक। झक।

सिड़वारा*—वि० दे० 'सिड़ी'। उदा०—या बिधि जाँचक लघु विवेक और बहु सिड़वारे।—रत्ना०।

सिड़ी—वि० [सं० शृणीक] पागल। सनकी।

सित—वि० [सं०] [स्त्री० सिता, भाव० सितता] १. सफेद। २. चमकीला। ३. साफ। पुं० १. शुक्ल पक्ष। २. शक्कर। ३. चाँदी।

सितकंठ*—पुं० = शितिकंठ।

सित-कर—पुं० [सं०] चंद्रमा।

सितम—पुं० [फा०] [कर्ता सितमगर] अत्याचार। जुल्म।

सितल*—वि० = शीतल।

सितलाई*—स्त्री० = शीतलता।

सिता—स्त्री० [सं०] १. शक्कर। २. ज्योत्स्ना। ३. मल्लिका। मोतिया। (फूल) ४. मदिरा।

सिताब—क्रि० वि० [फा० शताब] १. शीघ्र। जल्दी। २. सहज में। उदा०—नूपुर के ऊपर बढ़ी कहत न बनत सिताब।

—विक्रम।

सितार–पुं० [सं० सप्त+तार, फा० सेहतार] तारों का बना एक प्रसिद्ध बाजा।

सितारा–पुं० [फा० सितारः] १. आकाश का तारा। नक्षत्र। २. भाग्य। प्रारब्ध।

मुहा०–सितारा चमकना = भाग्य का बहुत प्रबल या अनुकूल होना।

३. चमकीले पत्तर की छोटी गोल बिन्दी जो शोभा के लिए कपड़ों आदि पर टाँकी या लगाई जाती है। चमकी।

सितारिया–पुं० [हिं० सितार] सितार नाम का बाजा बजानेवाला।

सिति*–वि० = शिति।

सिथिल*–वि० = शिथिल।

सिथिलाई*–स्त्री० = शिथिलता।

सिद*–पुं० [सं० सिद्ध] १. सोनार। २. पारखी।

सिदिक–वि० [अ० सिद्क] वास्तविक और सच्चा। खरा।

सिदौसी†–क्रि० वि० [?] जल्दी। शीघ्र।

सिद्ध–वि० [सं०] [भाव० सिद्धि, सिद्धता] १. जिसकी आध्यात्मिक साधना पूरी हो। २. जिसे अलौकिक सिद्धि हुई हो। ३. जो योग की विभूतियाँ प्राप्त कर चुका हो। ४. सफल। ५. तर्क या प्रमाण से ठीक माना हुआ। प्रमाणित। (एस्टैब्लिश्ड) ६. जो प्रमाणों आदि के द्वारा ठीक ठहराया गया हो। जैसे–उन्होंने अपना पक्ष सिद्ध कर दिया। ७. जो नियमों आदि के अनुसार ठीक हो। जैसे–व्याकरण से सिद्ध शब्द।

पुं० १. वह जिसने योग या तपस्या के द्वारा कोई सिद्धि या अलौकिक शक्ति प्राप्त की हो। २. पूर्ण योगी या ज्ञानी। ३. आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा या पहुँचा हुआ सन्त या महात्मा। ४. एक प्रकार का देवता।

सिद्ध-गुटिका–स्त्री० [सं०] एक प्रकार की कल्पित मंत्र-सिद्ध गुटिका। (कहते हैं कि इसे मुँह में रख लेने से मनुष्य अदृ
हो जाता है।

सिद्ध-पीठ–पुं० [सं०] वह जगह
योग या आध्यात्मिक अथवा तांत्रिक सा
सहज में सम्पन्न होता है।

सिद्ध-हस्त–वि० [सं०] [भाव० सिद्धहस्त
जिसका हाथ कोई काम करने में खूब
या मँजा हो। निपुण। कुशल।

सिद्धांजन–पुं० [सं०] तांत्रिकों के
सार एक प्रकार का कल्पित अंजन।
हैं कि इसे आँखों में लगा लेने से
में गड़ी हुई चीजें दिखलाई देने लगती

सिद्धांत–पुं० [सं०] १. विचार
तर्क द्वारा निश्चित किया हुआ
असूल। (प्रिंसिपुल) २. विद्या,
आदि के सम्बन्ध में कोई ऐसी मूल
मत जो किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादि
स्थापित हो और जिसे बहुत लोग ठीक
हों। ३. ऋषियों आदि के मान्य उप
(डाक्ट्रिन) ४. सार की बात। तत्

सिद्धांती–वि० [सं० सिद्धांत] १.
आदि के सिद्धांत जाननेवाला। २.
सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाला।

सिद्धा–वि० [सं०] 'सिद्ध' का स्त्री०
पुं० [सं० असिद्ध] बिना पका हुआ
सीधा।

सिद्धाई–स्त्री० [हिं० सिद्ध] सिद्ध
महात्मा होने की दशा या भाव।

सिद्धासन–पुं० [सं०] १. योग-
का एक प्रकार का आसन। २. सिद्ध-पी

सिद्धि–स्त्री० [सं०] १. काम पू
ठीक होना। सफलता। २. प्रमाणित
३. निश्चय। निर्णय। ४. पकना। सी
५. योग या तपस्या के द्वारा प्राप्त होने
अलौकिक शक्ति। ६. योग साधन के
किक फल। (ये आठ सिद्धियाँ) म
गई हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघि
प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व

द. दक्षता । निपुणता ।
दो त्रियों में से एक ।
या ।
= सिद्ध ।
= सीधापन ।
दे० 'सिधारना' ।
अ० [हिं० सीधा + जाना]
। प्रस्थान करना । २. मरना ।
धारना' ।
= सिद्धि ।
] उम्र । अवस्था । वय ।
[सं० सिंघाणक] [भाव०
से हवा निकालकर नाक का
ना ।
स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक
पक्ष की प्रतिपदा ।
दे० 'चल-चित्र' ।
[फ़ा० शीरीनी] १. मिठाई ।
गुरु आदि को चढ़ाई जाने-
।
[फ़ा०] तलवार आदि के
ढाल ।
[१] क्षत्रियों की एक
।
[फ़ा०] सिपाही का पेशा ।
-पुं० [फ़ा०] सेनापति ।
[फ़ा०] सेना । फौज ।
[फ़ा०] १. सैनिक । योद्धा ।
विभाग का एक छोटा
पहरेदार । ४. वीर । बहादुर ।
= सिपर ।
[फ़ा०] १. निशाने पर किया
२. कार्य सिद्ध करने की युक्ति ।
का सुयोग ।
जमाना या बैठाना =
युक्ति या उपाय करना ।
की एक प्रकार की

सिफत–स्त्री० [अ०] १. गुण । २. विशेषता ।

सिफर–पुं० [अ०] शून्य । सुन्ना ।

सिफाकंद†–पुं० = कमलनाल । (बुन्देल)

सिफारिश–स्त्री० [फ़ा०] किसी के पक्ष में कुछ अनुकूल अनुरोध । अनुशंसा । (रिकमेन्डेशन)

सिफारिशी–वि० [फ़ा०] १. जिसमें शिफारिश हो । २. सिफारिश करनेवाला । ३. खुशामदी ।

यौ०–सिफारिशी टट्टू = जो केवल सिफारिश से या खुशामद करके किसी पद पर पहुँचा हो या काम निकालता हो ।

सिमंत–पुं० = सीमंत ।

सिमटना–अ० [सं० समित + ना] १. सिकुड़ना । २. बल या शिकन पड़ना । ३. विस्तार छोड़कर एक जगह एकत्र होना । ४. कार्य समाप्त होना । निपटना ।

सिमरना†–स० दे० 'सुमिरना' ।

सिमसिमी–स्त्री० [अनु०] वह थोड़ा सा तरल पदार्थ जो प्रायः गीली लकड़ी जलने पर बुदबुदों के रूप में निकलता है ।

सिमिरिख*–पुं० = शिंगरफ । उदा०–कोउ काषादि वसन पहिरि कोउ सिमरिख रंगी ।—रत्ना० ।

सिय*–स्त्री० [सं० सीता] जानकी ।

सियना*–अ० [सं० सृजन] रचना । स० दे० 'सीना' ।

सियर*–वि० दे० 'सियरा' ।

सियरना*–अ० [हिं० सियरा] ठंढा होना ।

सियरा*–वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सियरी, भाव० सियराई] १. ठंढा । शीतल । २. कच्चा । अपक्व ।

सियराई*–स्त्री० [हिं० सियरा] शीतलता । ठंढक ।

सिया–स्त्री० [सं० सीता] जानकी ।

सियापा*–पुं० दे० 'स्यापा' ।

सियार–पुं० [सं० शृगाल] गीदड़ ।

सियाह–वि० दे० 'स्याह'।

सियाहा–पुं० [फा०] १. आय-व्यय के लेखे की बही। रोजनामचा। २. माल-गुजारी जमा करने की पंजी या बही।

सियाही–स्त्री० = स्याही।

सिर–पुं० [सं० शिरस्] १. शरीर का सबसे आगे या ऊपर का भाग। कपाल। खोपड़ी। २. शरीर में गरदन से आगे या ऊपर का भाग।

मुहा०–**सिर आँखों पर होना** = शिरोधार्य होना। आदर मान्य होना। **सिर आँखों पर बैठाना** = बहुत आदर सत्कार करना। **सिर उठाना** = (क) विरोध में खड़ा होना। (ख) सामने आने के लिए उठना। (ग) गर्व, साहस या प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना। **सिर ऊँचा करना** = दे० 'सिर उठाना'। **सिर करना** = (स्त्रियों का) केश सँवारना। **सिर के बल जाना** = (क) बहुत विनीत भाव से जाना। (ख) प्रसन्नतापूर्वक कष्ट सहकर जाना। **सिर खाली करना** = (क) बकवाद करना। (ख) सिर खपाना। **सिर खाना** = बकवाद करके परेशान करना। **सिर खपाना** = सोच-विचार में हैरान होना। **सिर घूमना** = (क) सिर में चक्कर आना। (ख) घबराहट या चिन्ता से विभ्रम होना। **सिर चढ़ाना** = (क) अधिक आदर या उपेक्षा करके उद्दंड बनाना। (ख) आदर-पूर्वक मान्य करना। शिरोधार्य करना। **सिर झुकाना** = (क) नमस्कार करना। (ख) लज्जित होना। **सिर ढोरना** = प्रसन्न होकर सिर हिलाना। उदा०–......मुरली की धुनि सुनि सुर-वधू सिर ढोरैं।–सूरदास मदनमोहन। **सिर देना** = प्राण देना। (**किसी के**) **सिर दोष लगाना** = किसी को किसी बात का दोषी ठहराना। उदा०–तुम तौ दोष लगावान कौं सिर, बैठे देखत नेरैं।–सूर। **सिर**

धरना = आदरपूर्वक स्वीकार करना
सिर धुनना = अपनी भूल समझ
पछताना। हाथ मलना। **सिर नीच**
करना = लज्जित होना या करना
सिर पटकना = (क) बहुत परि
करना। (ख) पछताना। **सिर पर**
(क) ऊपर। (ख) बहुत पास या साम
सिर पर पाँव रखकर भागना
तेजी से भागना। **सिर पर पड़ना**
(क) जिम्मे पड़ना। (ख) अपने ऊपर
या बीतना। **सिर पर खून चढ़ना**
सवार होना = (क) किसी को
डालने पर उतारू होना। (ख) हत्या
आपे में न रहना। **सिर पर होन**
बहुत निकट होना। **सिर फिरन**
(क) सिर घूमना। सिर चकराना।
पागल हो जाना। **सिर मारना** =
व्यर्थ बहुत प्रयत्न करना। (ख) सो
सोचते हैरान होना। **सिर मुड़ाते**
ओले पड़ना = आरम्भ में ही
आना। **सिर सूँघना** = छोटों पर
प्रेम दिखलाने के लिए उनका सिर
का नाट्य करना। उदा०–दै असीस
सूँघि सीस सादर बैठाखो।–र
सिर से पैर तक = आरंभ से अंत
पूर्ण रूप से। **सिर से कफन बाँधन**
मरने के लिए तैयार होना। **सिर से**
जाना = प्राण दे देना। **सिर हिलान**
(क) स्वीकृति या अस्वीकृति बतल
लिए सिर को गति देना। (ख) प्रस
सूचित करने के लिए सिर को गति दे
जैसे–उत्तम संगीत सुन कर सिर हिला
सिर होना = (क) पीछा न छोड़
(ख) तँग करना। (ग) कोई बात
समझ या ताड़ लेना।
३. ऊपर का सिरा। चोटी।
*वि० १. एक महान्। बड़ा। २. उत्त
श्रेष्ठ। ३. अच्छा। बढ़िया।

[हिं० सिर + कटना]
ऊपरी भाग) कटा हो ।
सिर + काटना] दूसरों का
अपकार करनेवाला ।
[फा०] धूप में पकाकर
किसी फल का रस ।
[हिं० सरकंडा] सरकंडे
छप्पर जो प्रायः बैल-
करने लिए रखते हैं ।
(जाति) ।
दे० 'सुलगाना' ।
[१] गलगल । (पक्षी)
[हिं० सिर + चंद = चंद्रमा]
एक प्रकार का अर्द्ध-
।
[हिं० सिरजना] १.
नेवाला । २. सृष्टि-कर्त्ता ।

-पुं० [सं० सृजन + हिं०
नेवाला, परमात्मा ।
[सं० सृजन] १. रचना ।
या तैयार करना ।
[हिं० सिर + फा० ताज]
शिरोमणि । ३. सरदार ।
-पुं० [हिं० सिर +
)] संरक्षक । पृष्ठ-पोषक ।
सिरधरी] जिसे सिर पर
। शिरोधार्य । उदा०—
सिरधरी प्रमीला का बहु
।
[सं० शीर्ष + नाम, मि०
] १. पत्रों आदि के ऊपर
पता । २. लेख आदि
नाम सूचक शब्द या पद ।
[हिं० सिर + पचाना]
माथा-पच्ची ।
दे० 'सिरोपाव' ।
[फा० सर + पेच] पगड़ी पर बाँधने का एक गहना । कलगी ।

सिर-फूल-पुं० [हिं० सिर + फूल] सिर पर पहना जानेवाला एक गहना ।

सिर-बंदी-स्त्री० [हिं० सिर + फा० बंद] सिर पर पहनने का एक गहना ।

सिरमनि*-वि०, पुं० = शिरोमणि ।

सिरमौर-पुं० [हिं० सिर + मोर] १. सिर का मुकुट । १. सिर-ताज । शिरोमणि । ३. प्रचीन काल का एक केश-विन्यास ।

सिरहाना-पुं० [सं० शिरस् + आधान] सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग ।

सिरा-पुं० [हिं० सिर] १. लंबाई में किसी ओर का अंत । छोर । २. ऊपरी भाग । ३. आरम्भ या अंत का भाग । ४. शीर्ष । (हेड) ५. नोक । अनी ।

मुहा०—**सिरे का** = सबसे अच्छा ।

सिराजी-पुं० [फा० शीराज (प्रदेश)] १. शीराज देश का घोड़ा । २. शीराज देश का कबूतर ।
वि० शीराज देश का ।

सिराना*-अ० [हिं० सीरा = ठंढा] १. ठंढा होना । २. मंद पड़ना । ३. पूरा या समाप्त होना । उदा०—भव-मग अगम अनंत है, बिनु स्रमहिं सिरातो ।—तुलसी । ४. बीतना । उदा०—ऐसहिं सोच विचार माँहि नृप-आयु सिराई ।—रत्ना० । ५. बंद होना । ६. फुरसत पाना । ७. निबाहना ।
स० १. ठंढा करना । २. बिताना ।

सिरावन*-वि० [हिं० सिराना] १. ठंढा या शीतल करनेवाला । २. संताप, क्लेश आदि दूर करनेवाला ।

सिरिश्ता-पुं० दे० 'सरिश्ता' ।

सिरी-स्त्री० [हिं० सिर] १. खाने के लिए मारे हुए पशु या पक्षी का सिर । २. सिर पर पहनने का एक गहना ।
*स्त्री० = श्री (शोभा) ।

सिरी-खंड-पुं० = श्रीखंड ।

सिरोपाव-पुं० [हिं० सिर + पाव] वह

पूरी पोशाक जो राज-दरबार से सम्मान के रूप में किसी को मिलती है। खिलअत।

सिरोमनि*—वि० = शिरोमणि।

सिरोरुह—पुं० = सरोरुह (कमल)।

सिरोही—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की काली चिड़िया।

स्त्री० सिरोही (राजपूताना) की बनी बढ़िया तलवार।

सिर्फ़—वि० [अ०] केवल। मात्र।

सिल—स्त्री० [सं० शिला] १. शिला। पत्थर का बड़ा लम्बा टुकड़ा। २. पत्थर की पटिया जिसपर मसाले आदि पीसते हैं।

पुं० दे० 'उंछ'।

सिलपट—वि० [सं० शिलापट्ट] १. चौरस। बराबर। २. चौपट। सत्तानाश।

सिलवट—स्त्री० [देश०] बल। सिकुड़न।

सिलवाना—स० दे० 'सिलाना'।

सिलसिला—पुं० [अ०] १. क्रम। बँधा हुआ तार। २. श्रेणी। पंक्ति। ३. व्यवस्था।

सिलसिलेवार—वि० [अ० सिलसिला + फ़ा० वार] तरकीब या सिलसिले से। क्रमानुसार।

सिलह—पुं० [अ० सिलाह] हथियार। शस्त्र।

सिलहखाना—पुं० [अ० सिलाह+फ़ा० खानः] हथियार रखने का स्थान। अस्त्रागार।

सिलहला—वि० [हिं० सील या सीड़ + हिला = कीचड़] [स्त्री० सिलहली] (स्थान) जो इतना गीला और चिकना हो कि उस पर पैर फिसले।

सिलहारा*—वि० [हिं० सिल + हारा (प्रत्य०)] खेतों में गिरा हुआ अन्न चुनकर उससे निर्वाह करनेवाला।

सिला—पुं० [सं० शिल] कटे हुए खेतों में गिरा और बचा हुआ अन्न चुनकर निर्वाह करने की वृत्ति। शिल-वृत्ति। उंछवृत्ति।

*स्त्री० = शिला।

सिलाई—स्त्री० [हिं० सीना + आई (प्रत्य०)] 'सीने' का काम, ढंग या मजदूरी।

सिलाना—स० हिं० 'सीना' का प्र०।

सिलापट—पुं० [अं० स्लीपर] ल आदि का वह मोटा, चौड़ा तख्ता जो की पटरी के नीचे उसके आधार-स्व बिछाया जाता है। (स्लीपर)

सिलाह—पुं० [अ०] १. कवच हथियार।

सिलाहबंद—वि० [अ० सिलह + बंद] सशस्त्र।

सिलाहर*—वि० दे० 'सिलहारा'।

सिलाही*—पुं० १. दे० 'सैनिक'। २ 'कवचधारी'।

सिलिमुख*—पुं० = शिलीमुख। (भौं

सिलौटा—पुं० [हिं० सिल] १. शि सिल। २. सिल और उसका बट्टा।

सिल्क—पुं० [अं०] १. रेशम रेशमी कपड़ा।

सिल्ला—पुं० [सं० शिल] फसल क पर खेत में गिरे हुए अन्न के दाने।

सिल्ली—स्त्री० [सं० शिला] १. ह की धार तेज करने का पत्थर। सान पत्थर की पटिया।

सिव—पुं० दे० 'शिव'।

सिवईं—स्त्री० दे० 'सेवईं'।

सिवा—अव्य० [अ०] अतिरिक्त। अ

*स्त्री० दे० 'शिवा'।

सिवान—पुं० [सं० सीमांत] हद।

सिवाय—अव्य० [अ० सिवा] दे० '

†वि० = अधिक। ज्यादा।

सिवार—स्त्री० [सं० शैवाल] प होनेवाली एक प्रकार की लंबी घास।

सिष*—स्त्री० = शिखा।

पुं० = सिक्ख।

सिष्ट*—वि० [सं० शिष्ट] १. भला आ सज्जन। २. साधु-महात्मा।

सिसकना—अ० [अनु०] सिसकी भ रोना। खुलकर नहीं बल्कि धीरे-धीरे रो

अ० [अनु० सी-सी + करना]
सा शब्द निकालना । २.
।
० [हिं० सिसकारना] १.
ब्द । २. दे० 'सीत्कार' ।
[अनु०] १. धीरे-धीरे
। सिसकारी । २. सीत्कार ।
= शिशिर ।
दे० 'शिशुमार' ।
= सृष्टि ।
[हिं० सिहरना] सिहरने की
। सिहरी ।
[सं० शीत + ना] शीत
ना ।
दे० 'सिहरन' ।
दे० 'सिहरन' ।
अ० [सं० ईर्ष्या] १. ईर्ष्या
लायित होना । उदा०—मेरी
कुचाहुँ सिहाहूँ ।—तुलसी ।
। ४. संतुष्ट होना ।
अभिलाषा की दृष्टि से देखना ।
[देश०] १. तलाश करना ।
करना । जुटाना ।
[सं० सिहुंड] थूहर नाम का
।
सं० इषीका] १. सरकंडा ।
का पतला कड़ा डंठल । ३.
की कील (गहना) ।
[हिं० सींक] पेड़ पौधों की
शाखा या टहनी । डाँड़ी ।
।
शृंग] १. वे कठोर, लंबे और
जो खुरवाले पशुओं के सिर
निकलते हैं । विषाण ।
पर **सींग होना** = कोई
कहीं **सींग समाना** =
निर्वाह होना । **सींग**
की इच्छा होना ।

कहा०—सींग कटाकर बछड़ों में मिलना = वयस्क होकर भी बच्चों का सा आचरण करना ।

२. सिंगी नाम का बाजा ।

सींगदाना—पुं० दे० 'मूँग-फली' ।

सींगी*—स्त्री० दे० 'सिंगी' ।

सींचना—स० [सं० सेचन] १. खेतों आदि में पानी देना । २. तर करना । भिगोना । ३. छिड़कना ।

सींड—पुं० [सं० सिंहाण] नाक से निकला हुआ मल या कफ ।

सींव*—स्त्री० = सीमा ।

सी—स्त्री० [हिं० सा' का स्त्री०] सदृश । **मुहा०—अपनी-सी** = अपनी इच्छा या शक्ति भर । अपने मन के अनुसार । स्त्री० दे० 'सीत्कार' । अव्य० हिं० 'सा' का स्त्री० ।

सीअर*—वि० = शीतल ।

सीउ*-पुं० = शीत ।

सीक*—पुं० दे० 'सीत्कार' ।

सीकर—पुं० [सं०] १. जल-कण । पानी की बूँद । २ बूँद । छींटा । *स्त्री० [सं० शृंखला] जंजीर । सिक्कड़ ।

सीकल—स्त्री० दे० 'सिकली' ।

सीकस†—पुं० [सं० सिकता या सैकत] १. रेतीली भूमि । बलुई जमीन । २. ऊसर । बंजर ।

सीख—स्त्री० [हिं० सिखाना] १. सीखाई जानेवाली और हित की बात । शिक्षा । उपदेश । २. सलाह । परामर्श । मंत्रणा । स्त्री० १. दे० 'सींक' । २. दे० 'सीखचा' ।

सीखचा—पुं० [फा०] लोहे का लंबा छड़ ।

सीखन*—स्त्री० [हिं० सीख] हित के लिए बतलाई हुई बात । उपदेश । शिक्षा ।

सीखना—स० [सं० शिक्षण] १. ज्ञान प्राप्त करना । २. शिक्षा पाना । समझना ।

सीगा—पुं० [अ०] विभाग । महकमा ।

सीझना—अ० [सं० सिद्ध] [भाव० सीझ]

१. आँच पर पकना या गलना। २. आग में पड़कर भस्म होना। जलना। उदा०—लै करसी प्रयाग कब सीझै।—तुलसी। ३. सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भींगकर मुलायम और टिकाऊ होना। ४. कष्ट सहना। ५. तपस्या करना।

सीटना—अ० [अनु०] बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। शेखी हाँकना।

सीटी—स्त्री० [सं० शीतृ] १. होंठ सिकोड़कर बाहर वायु फूँकने से निकला हुआ महीन पर तेज शब्द। २. इस प्रकार का शब्द जो किसी बाजे आदि से निकलता है। ३. वह बाजा जिससे उक्त प्रकार का शब्द निकले।

सीठना—पुं० [?] विवाह आदि मंगल अवसरों पर स्त्रियों द्वारा गाये जानेवाले वे गीत जिनमें दूसरों पर कुछ व्यंग्य या अश्लील बातें होती हैं।

सीठा—वि० [सं० शिष्ट] नीरस। फीका।

सीठी—स्त्री० [सं० शिष्ट] १. चूसे या रस निचोड़े हुए फल आदि का नीरस अंश। खूद। २. सार-हीन पदार्थ। ३. फीकी या बची-खुची चीज।

सीड़—स्त्री० [सं० शीत] सीली या तर जमीन के कारण होनेवाली नमी। तरी।

सीढ़†—पुं० दे० 'सीड़'।

सीढ़ी—स्त्री० [सं० श्रेणी] १. ऊँचे स्थान पर चढ़ने का वह उपकरण या साधन जिसमें एक के बाद एक पैर रखने के स्थान बने हों। निसेनी। पैड़ी। जीना। २. ऐसे मार्ग या साधन में बना हुआ पैर रखने का प्रत्येक स्थान या डंडा।

सीत*—वि० [सं० शीतल] १. शीतल। ठंढा। २. सुस्त। धीमा।

पुं० = शीत।

सीतकर*—पुं० [सं० शीत + कर] चंद्रमा।

सीतल*—वि० = शीतल।

सीतल पाटी—स्त्री० [सं० शीतल + हिं० पट] एक प्रकार की बढ़िया पतली चटाई

सीता—स्त्री० [सं०] १. भूमि जोतने हल की फाल से पड़ी हुई रेखा। कूँ २. जानकी। (राजा जनक की कन राम की पत्नी) ३. पिंगल में एक प्र का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में र तगण, मगण, यगण, रगण होते हैं।

सीता फल—पुं० [सं०] १. शरीफ २. कुम्हड़ा।

सीत्कार—पुं० [सं०] पीड़ा या आ विशेषतः स्त्री-संभोग के समय मुँह से नि लनेवाला सी-सी शब्द। सिसकारी।

सीथ—पुं० [सं० सिक्थ] १. अन्न दाना। २. पके या भुने हुए अन दाना। ३. जूठन। उदा०—साधुन के वारे चुनि-चुनि उदर, पोषिए सीथिन हरिराम व्यास।

सीद—पुं० [सं० शीद्] कष्ट। पीड़ा

सीदना*—अ० [सं० सीदति] १. पाना। २. नाश होना। नष्ट होना। स० १. दुःख देना। २. नाश क नष्ट करना।

सीध—स्त्री० [हिं० सीधा] १. सीधे की दशा या भाव। सीधापन। २. रेखा या दिशा। ३. लक्ष्य। निशाना

सीधा—वि० [सं० शुद्ध] [स्त्री० सी भाव० सीधापन] १. जो टेढ़ा न सरल। ऋजु। २. जो ठीक लक्ष्य की हो। ३. जो चतुर न हो। भोला। शांत और सुशील।

यौ०—सीधा सादा = भोला भाला

मुहा०—सीधा करना = (क) अनु करना। (ख) दंड देकर ठीक करना।

५. सहज। आसान। सुगम।

यौ०—सीधा-सादा=सुगम और प्रत्य

६. दाहिना। दक्षिण।

पुं० सामने का भाग। (ऑबवर्स)

पुं० [सं० असिद्ध] बिना पका हुआ अन

= सिद्धि।
[हिं० सीधा] १. सामने
बिना बीच में रुके या मुड़े।
से। अच्छी तरह से।
सीवन] कपड़े आदि के
सुई-तागे से जोड़ना। टाँका

छाती। वक्ष-स्थल।
शुक्ति, प्रा० सुत्ति] १.
की तरह कड़े आवरण में रहने-
जंतु। सीपी। २. समुद्री
चमकीला आवरण जिससे
हैं।
= श्रीपति (विष्णु)।
दे० 'छिपर' (ढाल)।
[देश०] कड़ा जाड़ा।
[हिं० सीप ?] एक प्रकार
बढ़िया आम।
] एक प्रकार का गहरा भूरा
पीलापन लिये होता है।
[हिं० सीप] सीप नामक
या संपुट।
[अनु० सी-सी] स्त्रियों का
सीत्कार। सिसकारी।
[सं०] १. स्त्रियों के सिर की
'सीमंतोन्नयन'।
-पुं० दे० 'सीमंतोन्नयन'।
-पुं० दे० 'सीमंतोन्नयन'।
-पुं० [सं०] हिन्दुओं के
में से तीसरा जो गर्भाधान के
आठवें महीने होता है।
[सं० सीमा] सीमा। हद।
चरना = दूसरे के क्षेत्र में
अधिकार जताना।
-पुं० [सं० सीमा = शुल्क]
देश की सीमा पर बाहर से
और देश से बाहर जानेवाले
है। (कस्टम्स ड्यूटी)

सीमांत-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ सीमा का अन्त होता हो। (फ्रॉन्टियर)

सीमांतिक-वि० [सं०] सीमान्त से सम्बन्ध रखनेवाला। सीमान्त-सम्बन्धी।
पुं० दे० 'सीमशुल्क'।

सीमांतिक शुल्क-पुं० दे० 'सीम शुल्क'।

सीमा-स्त्री० [सं०] १. किसी प्रदेश या स्थान के चारो ओर के विस्तार की अंतिम रेखा या स्थान। हद। सरहद। (बाउंडरी)
मुहा०-सीमा बन्द करना = ऐसी राजनीतिक व्यवस्था करना कि देश की सीमा पर से आदमियों और माल का आना-जाना रुक जाय।
२. वह अंतिम स्थान जहाँ तक कोई बात या काम हो सकता हो या होना उचित हो। नियम या मर्यादा की हद। (लिमिट)
मुहा०-सीमा से बाहर जाना=उचित से अधिक बढ़ जाना। (निषिद्ध)

सीमा शुल्क-पुं० दे० 'सीम शुल्क'।

सीमेंट-पु० [अं०] मटमैले रंग का एक विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ मसाला जो आज-कल इमारतों की जोड़ाई में काम आता है।

सीमोल्लंघन-पुं० [सं० सीमा + उल्लंघन] १. किसी निश्चित सीमा या मर्यादा के बाहर जाना। मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना। २. किसी राज्य पर आक्रमण आदि करने के लिए अपनी सीमा पार करके उसकी सीमा में पहुँचना।

सीय-स्त्री० [सं० सीता] जानकी।
*वि० [सं० शीतल] ठंढा।
*पुं० = शीत।

सीयन-स्त्री० दे० 'सीवन'।

सीयरा*-वि० दे० 'सियरा'।

सीर-पुं० [सं०] १. हल। २. सूर्य।
स्त्री० [सं० सीर = हल] १. साझा। शराकत। २. किसी के साझे में जमीन जोतने-बोने की रीति। ३. इस प्रकार

जोती-बोई जानेवाली जमीन। ४. वह जमीन जो जमींदार स्वयं अथवा किसी असामी के साझे में जोतता हो। ५. सम्बन्ध। लगाव।

*वि० [सं० शीतल] ठंढा। शीतल।

*पुं०[सं० शीर्ष]१. ऊपरी भाग। २. सिर।

सीरक*-पुं० [सं० सीरा] ठंढा करनेवाला।

सीरख(ष)*-पुं० = शीर्ष।

सीरदार-पुं० [हिं० सीर + फा० दार] [भाव० सीरदारी] १. वह भूमिधर (पुराना जमींदार) जो अपनी भूमि किसी असामी के साझे में जोतता-बोता हो और जिसपर उसे स्थायी वंशानुक्रमिक अधिकार प्राप्त हो।

सीरदारी-स्त्री० [हिं० सीरदार]'सीरदार' का काम, पद या भाव।

सीरध्वज-पुं० [सं०] राजा जनक।

सीरा-पुं० [फा० शीरः] घुली हुई चीनी पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी।

*वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीरी] १. ठंढा। शीतल। २. शांत। ३. मौन। चुप।

सील-स्त्री० [सं० शीतल] भूमि की आर्द्रता। सीड़। नमी।

पुं० दे० 'शील'।

सीला-पुं० [सं० शिल] १. दे० 'सिल्ला'। २. खेत में गिरे हुए दानों से निर्वाह करने की उंछ वृत्ति।

वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीली] आर्द्र।

सीव*-स्त्री० = सीमा।

सीवन-स्त्री० [सं०] १. सीने का काम। २. सलाई के टाँके। ३. दरार। संधि।

सीवना-स० = सीना (कपड़े आदि)।

सीवाँ*-स्त्री० = सीमा (हद)।

सीष*-[सं० शिष्य] चेला। शिष्य। उदा०-गुरू सीष सहित सब बूड़े, अन्तकाल पछिताना।—कबीर।

पुं० दे० 'शीर्ष'।

सीस-पुं० = सिर।

सीसक-पुं० [सं०] सीसा (धातु)।

सीस-ताज-पुं० [हिं० सीस = सिर + फा० ताज] शिकारी जानवरों की आँखें मुँह आदि बन्द रखने के लिए उन्हें पहना जानेवाली टोपी।

सीस-फूल-पुं० [हिं० सीस + फूल] सि पर पहनने का एक गहना।

सीस-महल-पुं० = शीश महल।

सीसा-पुं० [सं० सीसक] हलके का रंग की एक मूल धातु।

*पुं० दे० 'शीशा'।

सीसी-स्त्री० [अनु०] दे० 'सीत्कार'।

*स्त्री० दे० 'शीशी'।

सीह*-स्त्री० [सं० सुगन्ध] महक। गंध

*पुं० [स्त्री० सीहणी] दे० 'सिंह'।

सुँघनी-स्त्री० [हिं० सूँघना] सूँघने लिए बनाई हुई तम्बाकू के पत्तों की बुकनी हुलास। नस्य।

सुँघाना-स० [हिं० सूँघना] किसी सूँघने में प्रवृत्त करना।

सुंड-पुं० = सूंड़।

सुंड-भसुंड-वि० = संड-मुसंड।

सुंडा-स्त्री० = सूँड़।

सुंदर-वि० [सं०] [स्त्री० सुंदरी, भाव० सुंदरता] १. रूपवान। खूबसूरत। मनोहर। २. अच्छा।

सुंदरता-स्त्री० [सं०] सुन्दर होने अवस्था या भाव। सौन्दर्य। खूबसूरती।

सुंदरताई*-स्त्री० = सुंदरता।

सुंदराई*-स्त्री० = सुंदरता।

सुंदरी-स्त्री० [सं०] १. सुन्दर या वती स्त्री। २. चार चरणों का एक व वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण दो भगण और एक रगण होता है (इ को द्रुत विलंबित भी कहते हैं।) ३. सवैया नामक छंद का एक भेद जिसके प्रत्ये चरण में आठ सगणों के बाद एक गु वर्ण होता है। सुखदायी।

] १. इस्पंज । २. तोप
गरम नली ठंढी करने
फेरा जानेवाला गीला
।

] सुन्दर या श्रेष्ठ का वाचक
-सुकवि, सुकाल ।

] सो । वह ।

] तृतीया, पंचमी और
का चिह्न ।

(अपना)

।

=सुन्दर ।

दे० 'तोता' (पक्षी) ।

[सं० सुत] पुत्र । बेटा ।
सुअन, होहि दासहू
।

[हिं० सुअन या सं०
होना ।

(पक्षी) ।

[सं० शुक] तोता (पक्षी) ।

।

[सं० सु+आयु] दीर्घायु ।

=सुलाना ।

(प्रसव करना) का प्रे० ।

=स्वामी ।

=रसोइया ।

स्त्री० [सं० सुआसिनी]
पास रहनेवाली स्त्री ।
सधवा । सुहागिन ।

[?] तलवार चलाने का
ढंग ।

'सुई' ।

[सं०] १. जिसकी गरदन
जिसका स्वर मधुर हो ।
ग्रीव ।

=संकोच करना ।
=सिकुड़ना ।

[सं० शुक+नासिका]
तोते की चोंच के समान सुन्दर नाक-वाली (स्त्री) ।

सुकर-वि० [सं०] [भाव० सुकरता] १. जो सहज में किया जा सके । २. सुगम । सहज ।

सुकरता-स्त्री० [सं०] सुकर का भाव । सुगमता । सुभीता । (फैसिलिटी)

सुकरित*-पुं० दे० 'सुकृत' ।

सुकर्म-पुं० [सं०] [वि० सुकर्मी] उत्तम या अच्छा काम । सत्कर्म ।

सुकर्मी-वि० [सं०] सत्कर्म करनेवाला ।

सुकल*-वि० = शुक्ल ।

सुकवना*-अ० [?] अचंभे में होना । चकित होना ।

सुकवाना†-स० [?] अचंभे में डालना । चकित करना ।

अ०=सुकवना (चकित होना) ।

स० = सुखाना ।

सुकवि-पुं० [सं०] अच्छा कवि ।

सुकाना*-स० = सुखाना ।

सुकाल-पुं० [सं०] १. अच्छा समय । २.सस्ती का समय । 'अकाल' का विरुद्धार्थक ।

सुकिज*-पुं० = सुकृत । (अच्छा कार्य)

सुकिया(कीउ)-स्त्री० दे० 'स्वकीया' ।

सुकुआर†-वि०=सुकुमार ।

सुकुति†-स्त्री० [सं० शुक्ति] सीप ।

सुकुमार-वि० [सं०] [स्त्री० सुकुमारी] [भाव० सुकुमारता] १. कोमल अंगोंवाला । २. कोमल ।

पुं० १. कोमलांग बालक । २. कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त काव्य ।

सुकुल-पुं० [सं०] १. उत्तम कुल । २. कुलीन । ३. 'शुक्ल' ।

सुकुवार*-वि०[स्त्री० सुकुवारी]=सुकुमार ।

सुकृत्-वि० [सं०] १. उत्तम और शुभ कार्य्य करनेवाला । २. धार्मिक ।

सुकृत-पुं० [सं०] १. पुण्य । २. सत्कर्म । वि० १. भाग्यवान् । २. धर्म्मशील ।

मुहा०-सुकृत मनाना = अपने सत्कर्मों को इस अभिप्राय से मनाना कि संकट से रक्षा हो। उदा०—लगी मनावन सुकृत, हाथ कानन पर दीने।—रत्ना०।

सुकृति-स्त्री० [सं०] अच्छा कार्य।
पुं० अच्छे काम करनेवाला व्यक्ति।

सुकृती-पुं [सं०] १. वह जो सुकृत करता हो। २. धर्मात्मा। पुण्यवान। ३. भाग्यवान्।

सुकी*-वि० [सं० स्वकीय] अपना। उदा०— ए वार सुर बंटहु नहीं बंधि लेहु सुकी बधुअ।—चंद बरदाई।

सुकित-वि० = सुकृत्।
पुं० = सुकृत।

सुखंडी-स्त्री० [हिं० सूखना] बच्चों का शरीर सूखने का रोग। सूखा रोग।

सुख-पुं० [सं०] १. वह अनुकूल और प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की कामना हो। 'दुःख' का विरुद्धार्थक।
मुहा०-सुख मानना = संतुष्ट या प्रसन्न होना। **सुख की नींद सोना** = निश्चित होकर रहना।
२. आरोग्य। ३. सरलता। ४. जल। पानी। ५. सवैया छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण और दो लघु वर्ण होते हैं।
क्रि० वि० १. स्वभावतः। २. सुखपूर्वक।

सुख-आसन-पुं० दे० 'सुखासन'।

सुखकंद-वि०=सुखदा।

सुखकर-वि० [सं०] १. सुख देनेवाला। २. सहज में होनेवाला। सुगम।

सुखकारक-वि० [सं०] = सुखदायक।

सुखकारी-वि० = सुखकारक।

सुख-चाव-पुं० [हिं० सुख + चाव=चाह] आनंद-मंगल।

सुख-जीवी-वि० [सं० सुख + जीविन्] वह जो झगड़े-बखेड़ों और परिश्रम आदि से यथासाध्य दूर रहकर निश्चितता और सुखपूर्वक जीवन बिताना चाहता हो।

सुखद-वि० [सं०] [स्त्री० सुखदा] सु या आनन्द देनेवाला। सुखदायी।

सुखदाता-वि० [सं० सुखदातृ] सुख

सुखदानि*-वि० [हिं० सुख + दा सुख देनेवाला। सुखद।
पुं० = प्रियतम।
स्त्री० [सं०] सुंदरी नामक छन्द दूसरा नाम।

सुखदानी-वि० = सुखदानि।

सुखदायक वि० दे० 'सुखद'।

सुखदायी-वि० = सुखद।

सुखदेन*-वि० [स्त्री० सुखदनी] = सु

सुखदेव पुं० = शुकदेव।

सुख-धाम-पुं० [सं०] १. सुख का २. बैकुंठ। स्वर्ग।

सुखपाल-पुं० [सं० सुख + पाल (की एक प्रकार की पालकी।

सुखप्रद-वि० = सुखद।

सुखमन*-स्त्री० दे० 'सुषुमा'।

सुखमा-स्त्री० = सुषमा।

सुख-मुख-वि० [सं०] १. सुन्दर करनेवाला। २. जो मुँहजोर न हो।

सुखरास(ि)*-वि० [सं० सुख+रा सर्वथा सुखमय।

सुखलाना-स० = सुखाना।

सुखवंत-वि० [सं० सुखवत्] १. सु २. सुखदायक।

सुखवन-स्त्री० [हिं० सूखना] किसी के सूखने या सुखाने के कारण उसमें वाली कमी या छीज।

सुखवार*-वि० [स्त्री० सुखवारी] दे० 'सुख

सुख-साध्य-वि० [सं०] सहज में सकनेवाला। सुगम। सहज।

सुखसार-पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति

सुख-स्वप्न-पुं० [सं०] प्रायः निरा रूप से यह समझना कि हमें आगे चल ये-ये सुख मिलेगा।

सं०] वह जिसका अंत सुख-
, नाटक आदि)
= शुकदेव ।
हिं० 'सूखना' का प्रे०] १.
गीलापन दूर करने के लिए
आग पर रखना । २.
। ३. दुर्बल बनाना ।
] १. अच्छा या भला
शरीर के लिए सह्य या अनु-

-वि० [हिं० सुख] १.
सहज । सुगम ।
[हिं० सुख] १. सुखी ।
सहज ।
[सं०] १. सुखद । २. सहज ।
[सं०] पालकी ।
[सं०] प्रसन्न । सुखी ।
[सं०] १. सुखी होने की
। २. सुख । आनन्द ।
दे० 'सुखी' ।
[सं० सुखिन्] जिसे सब प्रकार
मिलते हों । २. आनंदित ।
[सं०] सुखपूर्वक । सुख से ।
' ।
दे० 'सुखद' ।
[सं०] १. प्रसिद्धि । २.
।
[सं०] [वि० सुगंधित]
या महक । सुवास । खुशबू ।
जिसमें से अच्छी महक निक-
चंदन ।
। खुशबूदार ।
[सं० सुगंध] सुगंध-युक्त ।
[सं०] १. महात्मा बुद्ध का
बौद्ध ।
[सं०] मरने के उपरांत
गति । मोक्ष ।

सुगना†—पुं० [सं० शुक] तोता (पक्षी) ।

सुगम—वि० [सं०] [भाव० सुगमता] १. जिसमें जाना या पहुँचना कठिन न हो । २. जल्दी हो सकनेवाला । सहज ।

सुगर†—वि० १. दे० 'सुघड़' । २. दे० 'सुकंठ' । ३. दे० 'सुगम' ।

सुगाना*—अ० [सं० शोक] १. दुःखी होना । २. बिगड़ना । नाराज होना ।

अ० [?] संदेह करना ।

सुगुरा—पुं० [सं० सुगुरु] वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया या शिक्षा पाई हो ।

सुगैया†—स्त्री० दे० 'चोली' । (स्त्रियों की)

सुग्गा†—पुं० [सं० शुक] तोता (पक्षी) ।

सुग्रीव—वि० [सं०] सुन्दर ग्रीवा या गर्दनवाला ।

पुं० [सं०] १. बानरों का राजा, राम का मित्र । २. इन्द्र । ३. शंख ।

सुघट—वि० [सं०] १. सुंदर । सुडौल । २. सहज में बन या हो सकनेवाला । सुगम ।

सुघड़—वि० [सं० सुघट] [भाव० सुघड़ाई, सुघड़पन] १. सुन्दर । सुडौल । २. हाथ के काम करने में निपुण । कुशल ।

सुघड़ई—स्त्री० [हिं० सुघड़ + ई (प्रत्य०)] १. सुंदरता । अच्छी बनावट । २. चतुरता । निपुणता । ३. षाड़व संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो दिन के दूसरे पहर में गाई जाती है ।

सुघर—वि० दे० 'सुघड़' ।

सुघरई—स्त्री० दे० 'सुघड़ई' ।

सुघराई—स्त्री० = सुघड़पन ।

सुघरी—स्त्री० [हिं० सु + घड़ी] अच्छी या शुभ घड़ी । शुभ समय या साइत ।

सुचंद*-वि० [सं० सु + चंद्र ?] उत्तम । श्रेष्ठ । बढ़िया ।

पुं० पूर्णिमा का चन्द्रमा । उदा०—गुण-ज्ञान-मान सुचंद है । नित करत खल-मुख मंद है—पद्माकर ।

सुच—वि० दे० 'शुचि' ।

सुचना*–स० [सं० संचय] इकट्ठा करना। अ० इकट्ठा होना।

सुचरित्र–पुं० [सं०] [स्त्री० सुचरित्रा] उत्तम आचरणवाला। नेकचलन।

सुचा*–वि० दे० 'शुचि'।
स्त्री० [सं० सूचना] १. सूचना। २. ज्ञान। चेतना।

सुचान–स्त्री० [हिं० सोचना] १. सोचने की क्रिया या भाव। २. सूझ। विचार। ३. सुझाव। सूचना।

सुचाना–स० [हिं० 'सोचना' का प्रे०] १. सोचने में प्रवृत्त करना। २. दिखलाना। ३. ध्यान आकृष्ट करना। सुझाना।

सुचार*–स्त्री० दे० 'सुचाल'।
वि० दे० 'सुचारु'।

सुचारु–वि० [सं०] [भाव० सुचारुता] अत्यन्त सुन्दर।

सुचाल–स्त्री० [सं० सु + हिं० चाल] [वि० सुचाली] अच्छी चाल। उत्तम आचरण।

सुचाली–वि० [हिं० सुचाल] अच्छे चालचलनवाला। सदाचारी।

सुचाव–पुं० [हिं० सुचाना+आव (प्रत्य०)] १. सुझाने की क्रिया या भाव। २. सुझाव। सूचना।

सुचि–वि० दे० 'शुचि'।

सुचित–वि० दे० 'सूचित'।

सुचितई*–स्त्री० [हिं० सुचित] १. निश्चिंतता। बेफिक्री। २. छुट्टी। फुरसत।

सुचित्त–वि० [सं० सु + चित्त] १. (किसी काम से) निवृत्त। २. निश्चिंत। ३. एकाग्र।

सुचिमत*–वि० [सं० शुचि + मत] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी।

सुचिमन*–वि० [सं० शुचि + मन] पवित्र मनवाला। शुद्ध हृदय। उदा०–पहिले ऐसे रहे विवेक, ऐसे सुचि मन। –रत्ना०।

सुचिर–वि० [सं०] १. स्थायी। २. पुराना।

सुचेत–वि० [सं० सुचेतस] चाकन्ना। सतर्क।

सुच्चा–वि० [सं० शुचि] १. पवित्र। शुद्ध। २. जो खाकर जूठा न किया गया हो। ३. जो हर तरह से बिलकुल ठीक और निर्दोष हो। ४. जो असली या स हो, नकली न हो। जैसे–सुच्चा मोती।

सुच्छंद*–वि०=स्वच्छंद।

सुच्छ*–वि० = स्वच्छ।

सुच्छम*–वि० = सूक्ष्म।

सुछंद*–वि०=स्वच्छंद।

सुजक्का†–वि० [?] [स्त्री० सुजक्की] सुंदर। उदा०–उज्जल दंतिय अष्ठ, शीश ढाल सुजक्की।–चन्द बरदाई।

सुजन–पुं० [सं०] [भाव० सुजनता] सज्जन पुरुष। भला आदमी।
पुं० [सं० स्वजन] परिवार के लोग।

सुजनी–स्त्री० [फा० सोजनी] बिछाने एक प्रकार की बड़ी और मोटी चादर।

सुजस–पुं० = सुयश।

सुजागर–वि० [सं० सु + जागर] प्रकाशमान। २. सुंदर।

सुजात–वि० [सं०] १. अच्छे कुल उत्पन्न। २. सुन्दर।

सुजान–वि० [सं० सज्ञान] [भा सुजानपन] १. बुद्धिमान्। चतुर। होशि यार। २. निपुण। कुशल। ३. सज्जन
पुं० १. पति या प्रेमी। २ ईश्वर।

सुजोग*–पुं० = सुयोग।

सुजोधन*–पुं०=दुर्योधन।

सुजोर–वि० [सं० सु + फा० जोर] दृढ़। पक्का। २. बलवान।

सुज्ञ–वि० [सं०] सुविज्ञ। विद्वान्।

सुझाना–स० [हिं० सूझना का प्रे० दूसरे को सूझ या ध्यान में लाना। दिखाना

सुझाव–पुं० [हिं० सुझाना + आ (प्रत्य०)] १. सुझाने की क्रिया भाव। २. जिस बात की ओर किसी ध्यान न गया हो, उसकी ओर उसका ध्यान दिलाना। इस प्रकार ध्यान दिलाने के लि

। प्रस्ताव। सूचना।
[हिं० सटकना] छोटी
[अनु०] १. चुपचाप या
देना। खिसक जाना। २.

।
दे० 'सुठि'।
[सं० सुष्ठु] सुडौल। सुन्दर।
[सं० सुष्ठु] १. सुन्दर।
। ३. बहुत।
सुष्ठु] पूरा-पूरा। बिलकुल।
दे० 'सुठि'।
दे० 'सुठि'।
दे० 'सुरकना'।
[अनु०] सुड़-सुड़ शब्द
। जैसे-हुक्का सुड़सुड़ाना।
[सं० सु+हिं० डौल] सुंदर
या बनावटवाला। सुंदर।
[हिं० सुडौल+पन
] सुडौल होने का भाव। सब
होना। सर्वाङ्ग सुन्दरता।
'सुघड़'।
[हिं० सुढंग+ई (प्रत्य०)]
ढंगवाला। २. सुंदर। ३. उच
अच्छा। उदा०—ग्रंथनि कौ औ
कौ ज्ञान सुढंगी।—रत्ना०।
[सं० सु+हिं० ढलना] कृपालु।
सु+दार] सुडौल।
[स्त्री० सुदारी] दे० 'सुडौल'।
= स्वतंत्र।
[सं०] अच्छा तंत्र या शासन।
।
[स्त्री० सुता] पुत्र। बेटा।
= सूत्रधार।
दे० 'शुतुर'।
[सं० सुतराम्] १. अतः। इसलिए। और भी।

सुतरी—स्त्री० दे० 'सुतली'। २. दे० 'तुरही'।

सुतल—पुं० [सं०] सात पाताल लोकों में से एक।

सुतली—स्त्री० [हिं० सूत] १. सूत की बनी हुई डोरी। २. सन की डोरी।

सुतवाँ—वि० दे० 'सूतवाँ'।

सुतहर(हार)†—पुं० = सुतार।

सुतार—पुं० [सं० सूत्रकार] १. बढ़ई। २. कारीगर। शिल्पी।

वि० [सं० सु+तार] अच्छा। उत्तम।

पुं० दे० 'सुभीता'।

सुतारी—स्त्री० [सं० सूत्रकार] १. चमड़ा सीने का मोचियों का सूआ। २. शिल्पी। कारीगर।

सुती—वि० [सं० सुतिन्] जिसे सुत या पुत्र हो। पुत्रवाला।

सुतीक्ष्ण—वि० [सं०] १. बहुत तीक्ष्ण या तीखा। २. बहुत तेज धारवाला।

पुं० एक ऋषि जो अगस्त्य मुनि के भाई थे।

सुतीछन—वि०, पुं० दे० 'सुतीक्ष्ण'।

सुतीछा*—वि० [सं० सुतीक्ष्ण] [स्त्री० सुतीछी] बहुत तेज धारवाला।

सुतुही†—स्त्री० दे० 'सीपी'।

सुथना—पुं० दे० 'सूथन'।

सुथनी—स्त्री० [देश०] १. पिंडालू। रतालू। २. दे० 'सूथन'।

सुथरा—वि० [सं० स्वच्छ] [स्त्री० सुथरी, भाव० सुथरापन] स्वच्छ। साफ।

सुथराई*—स्त्री० [हिं० सुथरा] सुथरे या साफ होने का भाव। सुथरापन।

सुथरापन—पुं० [हिं० सुथरा+पन] सुथरे या साफ होने का भाव। सफाई।

सुथरेशाही—स्त्री० [सुथराशाह] १. गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया हुआ एक सम्प्रदाय। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

सुदत*—वि [सं० सु+दत=दन्त या दाँत]

[स्त्री० सुदित, सुदती] सुन्दर दाँतोंवाला।

सुदन्त-वि० = सुदत।

सुदम* = दमदार।

सुदरसन-वि०, पुं० = सुदर्शन।

सुदर्शन-पुं० [सं०] १. विष्णु का चक्र। २. शिव। ३. एक प्रकार का वृक्ष। ४. वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जिसका प्रयोग विषम ज्वर में होता है।

वि० देखने में सुन्दर। मनोरम।

सुदामा-पुं० [सं० सुदामन्] श्री कृष्ण के सहपाठी और परम मित्र एक दरिद्र ब्राह्मण जिन्हें उन्होंने बहुत सम्पत्तिशाली बना दिया था।

सुदि-स्त्री० = सुदी।

सुदिन-पुं० [सं० सु + दिन] अच्छा या शुभ दिन।

सुदी-स्त्री० [सं० शुक्ल या शुद्ध] चान्द्र मास का उजाला पक्ष। (महीने के नाम के साथ, जैसे-चैत सुदी नवमी)

सुदूर-वि० [सं०] बहुत दूर।

सुदृढ़-वि० [सं०] खूब मजबूत।

सुदेस-वि० [सं० सुदर्श] १. मनोहर। सुन्दर। उदा०-भाँति भाँति सुदेश केशव दुन्दुभी न बजाय।—केशव। २. अच्छा। उत्तम। बढ़िया।

पुं० [सं० सु + देश] अच्छा या उत्तम देश।

*पुं० = स्वदेश।

सुदेसी†-वि० १. दे० 'स्वदेशी'। २. दे० 'सुदेश'।

सुद्दा-स्त्री० [अ० सुद्दः] पेट से निकलने-वाला सूखा मल। कंडी।

सुद्र*-पुं० = शूद्र।

सुधंग-वि० दे० 'सुढंग'।

सुध-स्त्री० [सं० शुद्ध] १. स्मृति। याद। **मुहा०-सुध विसारना या भूलना** = किसी को भूल जाना। याद न रखना।

२. चेतना। होश।

यौ०-सुध-बुध = होश-हवास। चेतना। **मुहा०-सुध बिसरना** = बुद्धि ठिक न रहना।

३. खबर या हाल। पता।

*स्त्री० दे० 'सुधा'।

सुधना-अ० [सं० शुद्ध] १. शुद्ध या किया जाना। २. नियमों आदि के अनु उपयुक्त और ठीक किया जाना। ३. बैठाना या होना।

सुध-मना*-वि०[हिं० सुध = होश + १. जो होश में हो। २. सचेत। स

सुधरना-अ० [हिं० सु + ढरना = ढ बिगड़ी हुई या सदोष वस्तु का अच्छे ठीक रूप में आना। ठीक होना।

सुधराई-स्त्री० [हिं० सुधरना] सु या सुधरवाने की क्रिया भाव या पारिश्र

सुधर्म-वि० [सं० सुधर्मन] १. धर्मों से युक्त। अच्छे धर्मवाला। अच्छा। बढ़िया।

पुं० [सं०] अच्छा या उत्तम धर्म।

सुधांशु-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

सुधा-स्त्री० [सं०] १. अमृत। २. ३. दूध। ४. पृथ्वी। धरती।

सुधाई*-स्त्री० [हिं० सीधा] सीधा उदा०-रावरी सुधाई में भरी है कुटि कूटि बात की मिठाई में लुनाई लाह हौ।—रत्ना०।

स्त्री० दे० 'शोधाई'।

सुधाकर-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

सुधाघट-दे० 'सुधाकर'।

सुधा-दीधिति-पुं० [सं०] चन्द्रमा

सुधाधर-पुं० [सं० सुधा + धर] चन्द्र वि० [सं० सुधा + अधर] जिसके अ में अमृत का-सा स्वाद हो।

सुधाना*-स० [हिं० सुध] याद दिलान स० १. किसी से शोधने का काम कराना २. (लग्न, कुंडली आदि) ठीक कराना

सुधानिधि-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा २. समुद्र।

सुधारना] १. सुधरने या
या भाव। २. बिगड़ी
या ठीक करना। संस्कार।
किसी चीज को और
उपयोगी बनाना।

[हिं० सुधार + क (प्रत्य०)]
का सुधार करनेवाला।
या सामाजिक सुधार
करनेवाला। (रिफार्मर)।
[हिं० सु + ढार = ढालना]
करके ठीक करना।
[हिं० सुधार + वादी]
विषय में सुधार करने का
(रिफार्मिस्ट)
[हिं० सुधार + सं० आलय]
जहाँ अपराधी बालक दंड
ही नैतिक दृष्टि से सुधारे
भेजे जाते हैं। (रिफार्मेटरी)।
[सं०] राहु नामक ग्रह।
'सुध'।
[हिं० सुधि + आना
आना। याद पड़ना।
याद कराना।
[सं०] १. बुद्धिमान। समझ-
पंडित।
और तीव्र बुद्धि।
-पुं० [हिं० सोना + किरवा=
प्रकार का कीड़ा जिसके पर
रंग के होते हैं।
[हिं० सुनना + अनु० गुन]
जो इधर-उधर से कोई
लगता हो।
स्त्री० दे० 'सुन्नत'। उदा०—
पढ़ाया। सुनति कराय
—कबीर।
[सं० श्रवण] १. कही हुई बात या शब्द का कानों से ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना।

मुहा०—सुनी अनसुनी कर देना = कोई बात सुनकर भी न सुनी हुई के समान मानना या समझना। ध्यान न देना। २. किसी की बात या प्रार्थना पर ध्यान देना। ३. अपनी निन्दा की बात या डाँट-फटकार श्रवण करना। ४. विचार के लिए दोनों पक्षों की बातें अपने सामने आने देना।

सुनरी*—स्त्री० [सं० सुन्दरी] सुन्दर स्त्री।

सुनवाई-स्त्री० [हिं० सुनना + वाई (प्रत्य०)] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. अभियोग आदि का विचार के लिए सुना जाना। (हियरिंग)

सुनवैया—वि० = सुननेवाला।

सुनसान—वि० [सं० शून्य + स्थान] जहाँ कोई न हो। निर्जन। एकान्त। पुं० सन्नाटा।

सुनहरा(ला)—वि० [हिं० सोना] [स्त्री० सुनहरी, सुनहली] सोने के रंग का।

सुनहा†-पुं० [सं० श्वान] १. कुत्ता। उदा०—दरपन केरि गुफा में, सुनहा पैठा आय।—कबीर। २. दे० 'कामी'। (जन्तु)

सुनाई—स्त्री० दे० सुनवाई'।

सुनाना-स० हिं० 'सुनना का प्रे०।

सुनाभी—वि० [सं०] सुन्दर नाभीवाला। पुं० १. मैनाक पर्वत। २. विष्णु का चक्र।

सुनाम—पुं० [सं०] कीर्त्ति। यश।

सुनार-पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारी, भाव० सुनारी] सोने-चाँदी के गहने आदि बनानेवाला कारीगर। (गोल्डस्मिथ)

सुनावनी—स्त्री० [हिं० सुनाना] १. विदेश से किसी संबंधी की मृत्यु का आया हुआ समाचार। २. ऐसा समाचार आने पर होनेवाला स्नान, शोक आदि।

सुनाहक*—क्रि० वि० दे० 'नाहक'।

सुनाची†-पुं० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न-वि० [सं० शून्य] १. (अंग) जिसकी चेष्टा या चेतना कुछ समय के लिए बिल्कुल सुन्न हो गई हो। स्पन्दन-हीन। निश्चेष्ट। २. दे० 'शून्य'।

पुं० १. दे० 'सुन्ना'। २. दे० 'शून्य'।

सुन्नत-स्त्री० [अ०] लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काटने का कुछ धर्मों की रसम। खतना। मुसलमानी। (सरकमसीजन)

सुन्ना-पुं० [सं० शून्य] शून्य की सूचक गोल बिन्दी। सिफर। (साइफर, जीरो)

सुन्नी-पुं० [अ०] मुसलमानों का एक सम्प्रदाय।

सुन्नैया-वि० = सुननेवाला।

सुपच*-पुं० दे० 'श्वपच'।

सुपटु-पुं० [सं०] वह जो किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता अथवा किसी विषय में बहुत पटु हो। (एक्सपर्ट)

सुपत*-वि० [हिं० सु + पत = प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठित।

सुपथ-पुं० [सं०] उत्तम या अच्छा पथ।

सुपन(ा)-पुं० दे० 'स्वप्न'।

सुपनाना*-स० [हिं० सुपना] स्वप्न दिखाना।

सुपर्व-पुं० [सं०] देवता।

सुपात्र-पुं० [सं०] दान, शिक्षा आदि लेने या कोई काम करने के लिए कोई योग्य या उपयुक्त व्यक्ति। अच्छा पात्र।

सुपारी-स्त्री० [सं० सुप्रिय] एक विशेष वृक्ष के छोटे गोल फल जो काटकर पान के साथ खाये जाते हैं। गुवाक।

सुपास-पुं० [देश०] [वि० सुपासी] १. सुख। आराम। २. सुभीता। सुयोग।

सुपुत्र-पुं० [सं०] [स्त्री० सुपुत्री] अच्छा और योग्य पुत्र।

सुपेत*-वि० दे० 'सफेद'।

सुपेती*-स्त्री० १. दे० 'सफेदी'। २. दे० 'सुपेदी'।

सुपेद*-वि० = सफेद।

सुपेदी-स्त्री० [फा० सफेदी] १. सफे... उज्ज्वलता। २. बिछौना। बिस्तर। ... तोशक। गद्दा। ४. रजाई या लिहाफ...

सुप्त-वि० [सं०] [भाव० सुप्ति] १. ... हुआ। निद्रित। २. जिसकी क्रिया या ... रुकी हुई हो। (डारमेन्ट)

सुप्ति-स्त्री० [सं०] सोये रहने की अवस... निद्रा।

सुप्रतिष्ठा-स्त्री० [सं०] [वि० सुप्रति...] अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत।

सुप्रतिष्ठित-वि० [सं०] जिसकी ... प्रतिष्ठा हो। इज्जतदार।

सुप्रसिद्ध-वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध...

सुफल-पुं० [सं०] अच्छा फल ... परिणाम।

वि० [स्त्री० सुफला] १. सुन्दर फलवा... २. सफल।

सुफलक-पुं० [सं०] अक्रूर याद... पिता का नाम।

सुबरन*-वि० [सं० सु + वर्ण] ... रंगवाला।

*पुं० = स्वर्ण (सोना)।

सुबस*-वि० [सं० स्व + वश] जो ... वश या अधिकार में हो।

क्रि० वि० अपने अधिकार या वश में...

सुबह-स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। स...

सुबहान अल्ला-पद [अ०] एक ... पद जिसका अर्थ है-ईश्वर धन्य है।

सुबास-स्त्री० दे० 'सुगंध'।

पुं० [सं० स्ववास] ईश्वर का निवास-... अर्थात् ब्रह्म लोक।

सुबासना*-स० [सं० सुवास] सुग... करना।

सुबिस्ता-पुं० = सुभीता।

सुबुक-वि० [फा०] १. हलका। २. सुन्दर।

पुं० दे० 'सूक्ति'।

सुभाषी-वि० [सं० सुभाषिन्] अच्छा सुन्दर या मीठा बोलनेवाला।

सुभिक्ष-पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें अन्न बहुत और सस्ता हो। सुकाल।

सुभीता-पुं० [देश०] १. वह स्थिति जिसमें कोई काम करने में कुछ कठिनता या अड़चन न हो। सुगमता। सहूलियत। (कन्वीनियेन्स) २. वह स्थिति जिसमें कोई काम अपेक्षाकृत कम कठिनता से या सहज में हो सके। सुकरता। (फैसिलिटी) ३. सुअवसर। सुयोग।

सुभौटी†-स्त्री० = शोभा।

सुमंगली-स्त्री० [सं० सुमंगल] वह दक्षिणा जो विवाह में सप्तपदी के बाद पुरोहित को दी जाती है।

सुमंत-पुं० = सुमंत्र।

सुमंत्र-पुं० [सं०] राजा दशरथ का एक सखा जो उनका मंत्री और सारथी था।

सु-मंत्रित-वि० [सं०] १. (व्यक्ति) जिसे अच्छी मंत्रणा दी गई हो। २. आचरण या कार्य जिसके संबंध में अच्छी सलाह या शुभ परामर्श मिला हो। (वेल-ऐड्वाइज्ड)

सुमंदर-पुं० [सं०] सरसी नामक छंद का दूसरा नाम। विशेष दे० 'सरसी'।

सुम-पुं० [फा०] गौ, घोड़े आदि चौपायों का खुर। टाप।

सुमत-स्त्री० = सुमति।

सुमति-स्त्री० १. अच्छी बुद्धि। २. आपस का मेल-जोल।
वि० बुद्धिमान्।

सुमन-पुं० [सुमनस्] १. देवता। २. विद्वान्। ३. फूल। पुष्प।
वि० १. सहृदय। २. सुन्दर।

सुमनस-पुं० [सुमनस्] १. देवता। २. विद्वान्। ३. महात्मा। ४. फूल।
वि० प्रसन्न-चित्त।

सुमनित*-वि० [सं० सु + मणि] अच्छी मणियों से जड़ा हुआ या युक्त।

वि० [सं० सुमन] जिसमें फूल लगे हों। फूला हुआ (पौधा या वृक्ष)।

सुमरन-पुं० = स्मरण।

सुमरना-स० [सं० स्मरण] १. स्मरण करना। २. जपना (नाम)।

सुमरनी-स्त्री० [हिं० सुमरना] जप करने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।

सुमान्य-वि० [सं०] विशिष्ट रूप से मान्य और प्रतिष्ठित।

पुं० १. कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े नगरों में एक विशिष्ट अवैतनिक सम्मानित राजपद जिसपर नियुक्त होनेवाले लोगों को शांति-रक्षा और न्याय-विभाग के कुछ विशिष्ट कार्य करने पड़ते हैं। २. इस पद पर नियुक्त होनेवाला व्यक्ति। (शेरिफ)

सुमार्ग-पुं० [सं०] १. ऐसा अच्छा और साफ रास्ता या सड़क जिसपर चलने में कोई बाधा या कठिनता न हो। (थॉरोफेयर) २. नैतिक दृष्टि से अच्छा और प्रशंसनीय मार्ग या रास्ता।

सुमित्रा-स्त्री० [सं०] राजा दशरथ की एक रानी जिनसे लक्ष्मण और शत्रुघ्न उत्पन्न हुए थे।

सुमिरना*-स० दे० 'सुमरना'।

सुमिल*-वि० [हिं० सु + मिलना] १. जो सहज में मिल सके या मिला हो। २. जिसका किसी के साथ ठीक मेल बैठे। उपयुक्त। ३. मेल-जोल या स्नेह का सम्बन्ध रखनेवाला।

सुमुख-वि० [सं०] [स्त्री० सुमुखी] सुन्दर मुखवाला।

पुं० [सं० सुमुखः] १. गणेश। २. शिव। ३. गरुड़।

सुमुखी-स्त्री० [सं०] १. सुन्दर मुखवाली स्त्री। सुन्दरी। २. पिंगल में एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण, एक लघु और एक गुरु होता इसे 'मानिनी' और 'मल्लिका' भी कहते

सुमेरू-पुं० [सं०] १. एक कल्पित जो पुराणों में सब पर्वतों का राजा सोने का कहा गया है। २. जप करे माला में ऊपरवाला दाना। ३. ध्रुव। ४. पिंगल में एक प्रकार का जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ हैं, अन्त में यगण होता है, १२ मा पर यति होती है तथा पहली, आठवीं पन्द्रहवीं मात्राओं का लघु होना आव होता है।

वि० सबसे अच्छा। सर्व-श्रेष्ठ।

सुमेरू-ज्योति-स्त्री० दे० 'मेरू-ज्योति

सुम्रति*-स्त्री० = स्मृति।

सुम्रिति*-स्त्री० = स्मृति।

सुयश-पुं० [सं०] अच्छी और कीर्त्ति या यश।

सुयोग-पुं० [सं०] अच्छा योग वसर।

सुयोग्य-वि० [सं०] बहुत यो लायक।

सुयोधन-पुं० = दुर्योधन।

सुरंग-वि० [सं०] १. अच्छे रं २. लाल रंग का। उदा०-रहे सुरँ रँगि उहीं, नह-दी महदी नैन ।—वि ३. रसपूर्ण। ४. सुन्दर। ५. सुडो स्वच्छ। साफ।

पुं० १. नारंगी। २. रंग के वि घोड़ों का एक भेद।

स्त्री० [सं० सुरंगा] १. जमीन या बारूद से उड़ाकर उसके नीचे हुआ रास्ता। २. बारूद आदि की से किला या उसकी दीवार उड़ाने उसके नीचे खोदकर बनाया हुआ और लम्बा गड्ढा। ३. एक प्रकार का निक यंत्र जिससे (क) समुद्र में के जहाजों के पेंदे में छेदकर उन्हें

जिसे स्थल में शत्रुओं के
र उनका नाश किया जाता
।४. दे० 'सेंध'।

पुं० [फा० सुरंग + हिं०
] एक प्रकार का जहाज जो
द्वारा बिछाई हुई सुरंगें हटा-
ओं के लिए आगे बढ़ने का
ता है। (माइन-स्वीपर)

] [भाव० सुरता] १.
। ३. मुनि। ऋषि।

] स्वर।

के सुर में सुर मिलाना=
में हाँ मिलाना। खुशामद
का समर्थन करना। नया
ना = कोई विलक्षण, नई या
तरह की बात कहना।

= इन्द्र।

सं० सुरेख] मत्थे पर लगाया
प्रकार का तिलक जो बरछी
आकार का होता है। उदा०—
तिलक-सर, सुरक-भाल
-बिहारी।

[अनु०] [भाव० सुरक]
घीरे-घीरे सुड़-सुड़ शब्द
खींचना।

पुं० [सं० स्वर + हिं०
देने के लिए स्वर बदल-

[सं०] [वि० सुरक्षित]
जानेवाली रक्षा। रखवाली।
(सिक्योरिटी)

[सं०] १. जिसकी अच्छी
गई हो। (सिक्योर्ड) २.
में हो कि उसकी कोई हानि
दे० 'व्यासिद्ध'।
दे० 'सुर्ख'।
[फा०] चकवा (पक्षी)।
का पर लगना=

श्रेष्ठतासूचक विशेषता होना। (व्यंग)

सुरखी—स्त्री० [फा० सुर्ख ?] इमारत के काम में आनेवाला एक प्रकार का लाल चूर्ण या मसाला जो प्रायः ईंटें पीसकर बनाया जाता है।

स्त्री० [फा०] १. लाली। अरुणता। २. लेखों आदि का शीर्षक।

सुरग*—पुं० = स्वर्ग।

सुर-गज—पुं० [सं०] इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

सुरगा—वि० = सुरंग (सुन्दर)।

सुर-गिरि—पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

सुरगैया—स्त्री० दे० 'काम-धेनु'।

सुरज*—पुं० = सूर्य।

सुरजन—वि० १. दे० 'सज्जन'। २. दे० 'चतुर'।

सुरझना—अ० = सुलझना।

सुरत—पुं० [सं०] सम्भोग। मैथुन।

स्त्री० [सं० स्मृति] १. सुध। ज्ञान। २. ध्यान। लौ। लगन। ३. समाधि। (क०)

मुहा०—**सुरत बिसारना** = भूल जाना।

सुर-तरंगिनी—स्त्री० [सं०] १. आकाश-गंगा। २. गंगा-नदी। ३. सरयू नदी।

सुर-तरु—पुं० [सं०] कल्प-वृक्ष।

सुरता—स्त्री० [सं०] सुर या देवता होने का भाव। देवत्व।

वि० [हिं० सुरत] चतुर। सयाना।

स्त्री० [सं० स्मृति] १. ध्यान। २. याद। स्मृति।

सुरति—स्त्री० [सं०] १. पति-पत्नी का वह प्रेम जो काम वासना की तृप्ति से उत्पन्न होता है। २. दे० 'रति'।

स्त्री० दे० 'सुरत'। २. दे० 'सूरत'।

सुरति कमल—पुं० [सं०] हठ योग के अनुसार शरीर के अन्दर आठ कमलों या चक्रों में से अंतिम जिसका स्थान मस्तक में सहस्रार के ऊपर माना गया है।

सुरति-गोपना—स्त्री० [सं०] साहित्य में

वह नायिका जो अपनी सखियों से अपने संभोग की बात छिपाती हो।

सुरति-संगोपना–स्त्री० दे० 'सुरति-गोपना'।

सुरती–स्त्री० [सं० सूरत (नगर)] पान के साथ या यों ही चूने के साथ खाया जानेवाला अथवा बीड़ी, सिगरेट आदि में भरकर पीया जानेवाला तम्बाकू के पत्तों का चूरा।

सुरद–वि०[सं०]सुंदर या अच्छे दाँतोंवाला। *पुं० दे० 'सुहृद'।

सुरदार–वि० = सुरीला।

सुर-धनु–पुं० [सं०] इन्द्र धनुष।

सुर-धाम–पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरधामिनी–स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरधामी*–वि० [सं० सुरधामिन्] १. जो स्वर्ग में रहता हो। २. स्वर्गीय।

सुर-धुनी–स्त्री० [सं०] गंगा।

सुर-धेनु–स्त्री० [सं०] कामधेनु।

सुर-नदी–स्त्री० [सं०]१. आकाश-गंगा। २. गंगा नदी।

सुरनाथ–पुं० [सं०] इन्द्र।

सुरनाह*–पुं० = सुरनाथ।

सुरप(पति)*–पुं० = इन्द्र।

सुर-पाल(क)–पुं० [सं०] इन्द्र।

सुर-पुर–पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरबहार–पुं० [हिं० सुर + फा० बहार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुर-बाला–स्त्री० [सं०] देवता की स्त्री या कन्या। देवांगना।

सुर-भंग–पुं० [सं० स्वर + भंग] साहित्य में बोलते समय स्वर में होनेवाला वह कंप या और कोई परिवर्त्तन जो प्रेम, क्रोध, भय आदि के कारण होता है और सात्त्विक भावों में गिना जाता है।

सुरभि–स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. गौ। ३. कामधेनु। ४. सुगंध। खुशबू। वि० १. सुगंधित। २. सुन्दर। ३. उत्तम।

सुरभित–वि० [सं०] सुगंधित। सौरभित।

सुरभि-भक्षण–पुं० [सं०] हठ-योग की एक क्रिया जिसमें साधक खेचरी मुद्रा द्वारा अपनी जीभ उलट कर तालू के मू वाले छेद में लगाता और सहस्रार निकलनेवाला अमृत पीता है। इसे मांस भक्षण' भी कहते हैं।

सुरमई–वि० [फा०] सुरमे के रंग हलका नीला।

पुं० १. हलका नीला रंग। २. इस में रंगा हुआ कपड़ा। ३. इस रंग घोड़ा।

सुरमचू–पुं० [फा० सुर्मः] आँखों सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमणि–पुं० [सं०] चिन्तामणि।

सुरमा–पुं० [फा० सुर्मः] एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आ में अंजन की तरह लगाते हैं।

सुरमीला–वि०[हिं०सुरमा + ईला(प्रत्य [स्त्री० सुरमीली] जिसमें सुरमा लगा जैसे–सुरमीली आँखें।

सुरमेदानी–स्त्री० [फा० सुरमः + (प्रत्य०)] सुरमा रखने का एक प्रकार का लंबोतरा पात्र।

सुरम्य–वि० [सं०] अत्यन्त रम्य मनोहर। परम सुन्दर और रमणीक।

सुरराई*–पुं० = इन्द्र।

सुरराज–पुं० [सं०] इन्द्र।

सुरराव–पुं० = सुरराज। (इन्द्र)

सुरल*–वि० [स्त्री० सुरलि, सुरली] सुरीला। उदा०–तेरी गुंजन सुरलि, म उत मधुर मुरलि धुनि।—सत्यनारायण

सुरली–स्त्री०[हिं० सु + रली]सुन्दर क्री

सुर-लोक–पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरवधू–स्त्री० [सं०] देवांगना।

सुरवाजि–पुं० [सं०] इन्द्र का घोड़ा उच्चैःश्रवा।

सुरवाहन–पुं० [सं०] इन्द्र का हाथ ऐरावत।

सुरस–पुं० [सं०] १. जल। पानी।

प्रेम। प्रीति।
सुरसता] १. सरस। २.
सुन्दर।
= सरस्वती।
= गंगा।
[सं०] पुराणानुसार एक
की माता मानी गई है।
= इन्द्र।
[सं०] १. अप्सरा।
देवांगना।
[सं०] यमुना।
[अनु०] [भाव० सुर-
] १. कीड़ों आदि का
कुलबुलाना। ३. हलकी
।
उत्पन्न करना।
[अनु०] १. शरीर के
ऐसा जान पड़ना कि कोई
चल या रेंग रही है। २.
। ३. दे० 'सुनगुन'।
= इन्द्र।
[सं० सरल] सीधा ऊपर
हुआ।
दे० 'सोरही'।
= सुरहर।
दे० 'देवांगना'।
[सं०] मदिरा। शराब।
= शूरता।
दे० 'सूराख'। २. दे०
[अ० सुराग़] अपराध, षड-
गुप्त रूप से लगाया हुआ
।
+राग] १. अच्छा राग।
।
[सं० सुरभि] एक प्रकार
। चमरी। चौरी।
दे० 'सुराज्य'। २. दे०

'स्वराज्य।

सुराज्य–पुं० [सं०] अच्छा या सुखद राज्य या शासन।

सुरानीक–पुं० [सं०] देवताओं की सेना। (हिन्दी में प्रायः स्त्री० में प्रयुक्त)

सुरापी–वि० [सं० सुरापिन्] शराब पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

सुराय*–पुं० [सं० सु + राय] अच्छा राजा।

सुरारि–पुं० [सं०] राक्षस।

सुरालय–पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. शराब बिकने का स्थान। कलवरिया। शराबखाना।

सुरावट–स्त्री० [हिं० सुर] १ स्वरों का न्यास या उतार-चढ़ाव। २. सुरीलापन। उदा०–मुरज वीणा वेणु आदिक बज उठे। विश्व वैतालिक सुरावट सज उठे।–मैथिली०।

सुराष्ट्र–पुं० दे० 'सौराष्ट्र'।

सुरा-सार–पुं० [सं०] कुछ विशिष्ट पदार्थों में से भबके की सहायता से निकाला हुआ वह मादक तरल पदार्थ जो शराब बनाने तथा अनेक प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाओं में काम आता है। फूल शराब। (अल्कोहल)

सुराही–स्त्री० [अ०] जल रखने की मिट्टी, धातु आदि का एक प्रसिद्ध पात्र।

सुराहीदार–वि० [अ० सुराही + फा० दार] सुराही की तरह गोल और लम्बोतरा। जैसे–सुराहीदार मोती या गरदन।

सुरीला–वि० [हिं० सुर + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुरीली] बोलने, गाने आदि में मीठे स्वरवाला। सु-स्वर।

सुरुख–वि० [हिं० सु + फा० रुख] १. सुन्दर आकृति या रूपवाला। खूबसूरत। २. प्रसन्न रहकर दया करनेवाला। अनुकूल। उदा०–सुरुख सुमुख एक रस एक रूप तोहि।—तुलसी।

*वि० दे० 'सुर्ख'।

सुरुचि–स्त्री० [सं०] अच्छी, शिष्ट या परिष्कृत रुचि। उत्तम रुचि।
वि० अच्छी रुचिवाला।

सुरुति*–स्त्री० = श्रुति।

सुरूप–वि० [सं०] [स्त्री० सुरूपा, भाव० सुरूपता] सुन्दर।
*पुं० दे० 'स्वरूप'।

सुरेंद्र(रेश)–पुं० [सं०] इन्द्र।

सुरैत–स्त्री० दे० 'रखेली'।

सुर्ख़–वि० [फ़ा०] रक्त वर्ण का। लाल।
पुं० गहरा लाल रंग।

सुर्ख़रू–वि० [फ़ा० मि० सं० शुक्र रूप] [भाव० सुर्ख़रूई] १. वह जिसके मुँह पर लाली हो; अर्थात् तेजस्वी। कांतिवान्। २. प्रतिष्ठित। ३. सफल होने के कारण जिसके मुँह पर लाली आ गई हो या जिसके मुँह की लाली रह गई हो।

सुर्ख़ी–स्त्री० दे० 'सुरखी'।

सुर्लभ*-वि०=सुलभ। (दुर्लभ के अनु०पर)

सुलक्षण-वि० [सं०] [स्त्री० सुलक्षणा] अच्छे लक्षणोंवाला।
पुं० शुभ लक्षण। अच्छे चिह्न।

सुलक्षणक–वि० [सं०] अच्छे लक्षणोंवाला।

सुलग*–अव्य० [हिं० सु + लगना] समीप। पास। निकट।
स्त्री० = सुलगन।

सुलगन–स्त्री० [हिं० सुलगना] सुलगाने की क्रिया का भाव।

सुलगना–अ० [सं० सु + हिं० लगना] [भाव० सुलग, सुलगन] १. (लकड़ी आदि का) जलना। दहकना। २. अधिक दुःख या सन्ताप से दुःखी होना।

सुलगाना*-स० हिं० 'सुलगना' का स०।

सुलच्छन–वि० = सुलक्षण।

सुलच्छ*-वि० = सुलक्षण।

सुलझन–स्त्री० [हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव।

सुलझना–अ० [हिं० उलझना] उलझन या जटिलता दूर होना या हटना।

सुलझाना–स० हिं० 'सुलझना' का स०।

सुलझाव–पुं० = सुलझन।

सुलटा–वि० [हिं० उलटा] [स्त्री० सुल सीधा। 'उलटा' का विरुद्धार्थक।

सुलतान–पुं० [फ़ा०] बादशाह। महारा

सुलतानी–वि० [फ़ा० सुलतान] १. तान या बादशाह-संबंधी। २.लाल (रंग
स्त्री० १. सुलतान का राज्य या श काल। २. एक प्रकार का रेशमी कप

सुलप*–वि० दे० 'स्वल्प'।
पुं० [सं० सु + आलाप] सुन्दर आल

सुलफ़ा–पुं० [फ़ा० सुल्फ़ः] १. ग चरस आदि। २. तम्बाकू की चिलम का वह प्रकार जिसमें मिट्टी के त प्रयोग नहीं होता।

सुलभ–वि० [सं०] [भाव० सुल सुलभत्व] १. सहज में प्राप्त होने या वाला। २. सहज। सुगम।

सुलह–स्त्री० [अ०] १. मेल। मिल २. लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर वाला मेल। सन्धि।

सुलहनामा–पुं० [अ० सुलह + फ़ा० वह पत्र जिसपर सुलह या मेल की लिखी हों। सन्धि-पत्र।

सुलागना*–अ० दे० 'सुलगना'।

सुलाना–स० हिं 'सोना' का प्रे०।

सुलेमान–पुं० [फ़ा०] [वि० सुले १ एक प्रसिद्ध यहूदी बादशाह जो पैग़म माना जाता है। २. पश्चिमी पंजाब एक पर्वत।

सुव-पुं० दे० 'सुअन'।

सुवटा–पुं० = तोता (पक्षी)।

सुवन*–पुं० १ दे० 'सुअन'। २.दे० 'सु

सुवर्ण–पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण (ध २. दस माशे की एक पुरानी स्वर्ण-मु
वि० सुन्दर वर्ण या रंग का।

सुवस*-वि० [सं० स्व + वश] जो वश या अधिकार में हो।

सुवा-पुं० दे० 'सुआ'।

[सं० सु + वाचा] मुँह से
अच्छी और शुभ बात।
= सुलाना।
[सं० सूपकार] रसोइया।
दे० 'सवाल'।
[सं०] [वि० सुवासित]
खुशबू। २. सुन्दर या
।
[सं०] १. जो अच्छी
किया गया हो। २.सुगंधित।

स्त्री० [सं०] सधवा (स्त्री)।
[सं०] [वि० सुविचारी]
उत्तम विचार या ख्याल।
या फैसला।
[सं० सुविचारिन्] १.
उत्तम रूप से विचार करने-
अच्छा फैसला करनेवाला।

[सं०] बहुत अच्छा ज्ञाता।
= सुपीता।
[सं०] काम करने की ऐसी
जो सब तरह से अच्छी और
त्रुटि-रहित विधि या ढंग।

वि० [सं०] ठीक, अच्छी
है। (थारोली)
[सं०] १. अच्छी तरह कोई
। २. अच्छी-अच्छी बातें
वाला। ३. उत्तम आचरण-
कारी।
+ वृत्त] सुन्दर गोलाईवाला।
[सं० सु + वेष] १. जिसने
धारण किया हो। २. मनोहर।
[सं०] जिसने अच्छी
है।

सुशील–वि० [सं०] [स्त्री० सुशीला, भाव० सुशीलता] अच्छे शील या स्वभाव-वाला। अच्छे आचरण और व्यवहारवाला।

सुशोभन–वि० [सं०] १. खूब शोभा देने-वाला। २. सुन्दर।

सुशोभित–वि० [सं०] अच्छी तरह शोभित और सजता हुआ। अत्यन्त शोभायमान।

सुश्री–वि० [सं०] सुन्दर या अच्छी श्री से युक्त।

स्त्री० एक आदरसूचक शब्द जो स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जाता है। जैसे– सुश्री मालती देवी।

सुश्रुत–पुं० आयुर्वेद के एक प्रसिद्ध प्राचीन आचार्य।

सुश्रुखा*–स्त्री० = सुश्रूषा।

सुषमना(नि)*–स्त्री० = सुषुम्ना।

सुषमा–स्त्री० [सं०] बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता।

सुषिर–पुं० [सं०] १. बाँस। २. अग्नि। आग। ३. वह बाजा जो हवा के दबाव या जोर से बजता हो।

वि० १. जिसमें छेद हों। २. खोखला। पोला।

सुषुप्त–वि० [सं०] अच्छी तरह या गहरी नींद में सोया हुआ।

सुषुप्ति–स्त्री० [सं०] [वि० सुषुम] १. गहरी निद्रा। २.योग साधन में वह अवस्था जिसमें ब्रह्म को प्राप्त कर लेने पर भी जीव को उसका ज्ञान नहीं होता।

सुषुम्ना–स्त्री० [सं०] वैद्यक और हठ-योग के अनुसार एक नाड़ी जो नाभि से आरम्भ होकर मेरू-दंड में से होती हुई ब्रह्म-रंध्र तक गई है। हठ-योग में कहा गया है कि इसी के अन्तर्गत वह ब्रह्म-नाड़ी है जिससे चलकर कुंडलिनी ब्रह्म-रंध्र तक पहुँचती है।

सुषेण–पुं० [सं०] १. विष्णु। २. एक

बन्दर जो बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था।

सुष्ट-वि० [सं० 'दुष्ट' का अनु० या सं० सुष्ठु] [भा० सुष्टता (अशुद्ध रूप)] अच्छा। भला। 'दुष्ट' का विरुद्धार्थक।

सुष्ठु-वि० [सं०] [भाव० सुष्ठुता, सौष्ठव] १. उत्तम। अच्छा। २. सुन्दर।

सुष्मना*-स्त्री० = सुषुम्ना।

सु-संगति-स्त्री० [सं० सु + हिं० संगति] अच्छे आदमियों की संगत। सत्संग।

सुसकना-अ० = सिसकना।

सुसज्जित-वि० [सं०] [स्त्री० सुसज्जिता] अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ।

सुसमा*-स्त्री० = सुषमा।

सुसर (1)-पुं० दे० 'ससुर'।

सुसराल-स्त्री० दे० 'ससुराल'।

सुसरी-स्त्री० [हिं० सुरसुराना] गेहूँ आदि में लगनेवाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

सुसा*-स्त्री० [सं० स्वसृ] बहन।

सुसाध्य-वि० [सं०] [संज्ञा-सुसाधन] सहज में हो सकनेवाला। सुगम।

सुसारना*-स० [सं० सु + सारण] अच्छी तरह समझाकर कहना।

सुसिद्धि-स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक के किए हुए अच्छे कार्य का फल दूसरे को मिलने का वर्णन होता है।

सुसुकना-अ० = सिसकना।

सुसुप्ति*-स्त्री० = सुषुप्ति।

सुस्त-वि० [फा०] [भाव० सुस्ती] १. जिसकी प्रसन्नता या उत्साह बहुत कम हो। उदास। २. जिसका बल या वेग घट गया हो। मन्द। ३. जो अच्छी तरह पूरा काम न कर सके। ढीला। आलसी। ४. जिसकी गति अपेक्षाकृत मन्द हो। जैसे—घड़ी या गाड़ी की सुस्त चाल।

सुस्ताई*-स्त्री० = सुस्ती।

सुस्ताना-अ० [फा० सुस्त] काम करते-करते थककर विश्राम करना। थकावट मिटाने के लिए काम रोकना।

सुस्ती-स्त्री० [फा० सुस्त] १. सुस्त का भाव। शिथिलता। २. आलस्य।

सुस्तैन*-पुं० = स्वस्तयन।

सुस्थ-वि० [सं०] [भाव० सुस्थता] १. भला-चंगा। निरोग। स्वस्थ। प्रसन्न। खुश। ३. अच्छी तरह बैठा जमा हुआ।

सुस्वर-वि० [सं०] [भाव० सुस्वरता] जिसके कंठ का स्वर अच्छा या मधुर हो।

सुस्वादु-वि० [सं०] जिसका स्वाद अच्छा हो। बहुत स्वादिष्ट।

सुहँगा*-वि० [हिं० 'महँगा' का अनु०] सस्ता।

वि० [सं० सुगम] सहज।

वि० [हिं० सु + ढंग] सुन्दर।

सुहंगम(गा)*-वि० = सुहग।

सुहटा*-वि० [स्त्री० सुहटी] = सुहाव

सुहम*-वि० = सूक्ष्म।

सुहराना-स० = सहलाना।

सुहल*-पुं० दे० 'सुहेल'।

सुहव*-पुं० = सूहा (राग)।

सुहा*-वि० [स्त्री० सुही] = सूहा (ला

सुहाग-पुं० [सं० सौभाग्य] १. स्त्री वह अवस्था जिसमें उसका पति जीवित हो। सधवा रहने की दशा। सौभाग्य। २. वे गीत जो विवाह के समय कन्या की स्त्रियाँ गाती हैं।

*पुं० दे० 'सुहाना'।

सुहागरात-स्त्री० [हिं० सुहाग + रात] विवाह के बाद की वह पहली रात जिसमें और वधू का पहले-पहल समागम होता

सुहागा-पुं० [सं० सुभग] एक प्र का खनिज क्षार जो सोना गलाने औषधों के काम में आता है।

सुहागिन-स्त्री० [हिं० सुहाग] स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा

बड़े लोग मंगल-कामना के लिए छोटों का मस्तक सूँघते हैं।

२. बहुत थोड़ा भोजन करना। (व्यंग्य)

३. (साँप का) काटना। डसना।

सूँघा-पुं० [हिं० सूँघना] १. वह जो केवल सूँघकर बतलाता हो कि जमीन के नीचे इस जगह पानी या खजाना है। २. भेदिया। जासूस।

सूँड़-पुं० [सं० शुण्ड] हाथी का वह अगला लंबा अंग जो प्रायः जमीन तक लटकता और नाक का काम देता है। शुंड।

सूँड़ी-स्त्री० [सं० शुडी] १. अनाज या फसल में लगनेवाला एक प्रकार का सफेद कीड़ा। २. दे० 'जल-स्तंभ'।

सूँतना*-स० दे० 'सूतना'। उदा०-यह कहि कर गहि जटा सटा लौं सूँति सटाई। —रत्ना०।

सूँस-स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जंतु। सूस।

सूँहाँ-अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

सूअर-पुं० [सं० शूकर] [स्त्री० सूअरी] एक प्रसिद्ध स्तनपायी जंतु जो आकार और वास-स्थान के विचार से दो प्रकार का होता है-जंगली और पालतू।

सूआ-पुं० [सं० शुक] तोता।

पुं० [हिं० सूई] बड़ी सूई।

सूई-स्त्री० [सं० सूई] १. लोहे का वह पतला उपकरण जिसके छेद में धागा पिरोकर कपड़ा सीते हैं।

मुहा०-आँखों की सूइयाँ निकालना = किसी विकट काम के प्रायः समाप्त हो चुकने पर उसका शेष थोड़ा-सा सुगम अंश पूरा करके उसका श्रेय पाने का प्रयत्न करना।

२. किसी विशेष परिणाम, अंक, दिशा आदि का सूचक तार या काँटा। जैसे-घड़ी की सूई। ३. पौधे का छोटा पतला अंकुर। ४. चिकित्सा-क्षेत्र में नली के आकार का

एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण, जिसकी सहायता से कुछ तरल दवाएँ शरीर के रंगों या पट्ठों में पहुँचाई जाती हैं। पिचकारी। (सीरिंज) ५. उक्त उपकरण से शरीर के रगों या पट्ठों में तरल औषध आदि पहुँचाने की क्रिया। (इंजेक्शन)

मुहा०–सूई लगाना = उक्त नली के द्वारा शरीर के अन्दर दवा पहुँचाना। **सूई लेना** = रोगी का उक्त उपकरण के द्वारा कोई दवा अपने शरीर में प्रविष्ट कराना।

सूईकारी–स्त्री० [हिं० सूई + फा० कारी (किया हुआ काम)] कपड़े पर सूई और डोरे की सहायता से (तीलीकारी से भिन्न) बनाये हुए बेल-बूटे आदि। सूची-शिल्प। (नीडल वर्क)

सूक*–पुं० दे० 'शुक्र'।

सूकना†–अ० = सूखना।

सूकर–पुं० [सं०] [स्त्री० सूकरी] सूअर। (जन्तु)।

सूकरखेत–पुं० दे० 'शूकरक्षेत्र'।

सूका–पुं० [सं० सपादक] चार आने मूल्य का सिक्का। चवन्नी।

सूक्त–पुं० [सं०] वेद के मंत्रों या ऋचाओं का कोई संग्रह।
वि० अच्छी तरह कहा हुआ।

सूक्ति–स्त्री० [सं०] उत्तम या सुन्दर उक्ति, पद, वाक्य आदि।

सूक्ष्म–वि० [सं०] [स्त्री० सूक्ष्मा, भाव० सूक्ष्मता] बहुत छोटा, पतला या थोड़ा।
पुं० १. लिंग शरीर। २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी सूक्ष्म चेष्टा या सांकेतिक व्यवहार से ही अपने मन का भाव प्रकट करने का अथवा किसी के प्रश्न या संकेत का उत्तर देने का उल्लेख होता है।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र–पुं० [सं०] वह यंत्र जिसके द्वारा देखने पर छोटी चीजें बड़ी दिखाई देती हैं। (माइक्रोस्कोप)

सूक्ष्मदर्शी–वि० [सं० सूक्ष्मदर्शिन्] [भाव० सूक्ष्मदर्शिता] बहुत ही सूक्ष्म या छो
छोटी बातें तक सोच या समझ लेनेवाला

सूक्ष्मदृष्टि–स्त्री० [सं०] छोटी-छो
बातें तक सहज में समझ या देख ले
वाली दृष्टि।

सूक्ष्म शरीर–पुं० [सं०] वह कल्पि
शरीर जो पाँच प्राणों, पाँच ज्ञानेन्द्रि
पाँच सूक्ष्म भूतों तथा मन और बुद्धि
योग से बना हुआ और मनुष्य की मृत्यु
उपरान्त भी बना रहनेवाला माना ज
है। लिंग शरीर।

सूखना–अ० [सं० शुष्क] १. नमी,
आदि से रहित हो जाना। शुष्क होना।
जल न रहना या कम हो जाना। ३.
डर जाने के कारण सन्न होना। ४.
चिन्ता आदि से दुबला होना।

सूखा–वि० [सं० शुष्क] [स्त्री० सू
भाव० सूखापन] १. जिसमें जल या उ
कोई अंश न हो या न रह गया हो।
सूखा कपड़ा, सूखी नदी। २. जि
आर्द्रता या नमी न हो या न रह गयी
जैसे–सूखा मौसम = ऐसा मौसम जिसमें
न हो और हवा में नमी न हो। ३.
से जीवनी शक्ति का सूचक हरापन
गया हो। जैसे–सूखा वृक्ष। ४.
जीवनी शक्ति बहुत कम या नहीं के
हो। जैसे–सूखा चेहरा। ५. जिसमें
कता, सरसता आदि कोमल गुणों
अभाव हो। (ड्राई उक्त सभी अर्थों
लिए) विशेष दे० 'शुष्क'। ६. कोरा। नि
मुहा०–सूखा जवाब देना =
इनकार करना।
पुं० १. पानी न बरसने की दशा या सम
अनावृष्टि। (ड्रॉट) २. ऐसा स्थान
जल न हो। स्थल। ३. तम्बाकू का सु
हुआ चूरा या पत्ता। ४. एक प्रकार
खाँसी। हब्बा-डब्बा। ५. दे० 'सुखं
(रोग)।

दे० 'सुघड़'।
[सं०] [स्त्री० सूचिका]
वाला या कोई बात बताने-
किसी बात के अस्तित्व के लक्षण
ला। बोधक। (तत्व)
[सं०] [वि० सूचनीय,
१. वह बात जो किसी को किसी
न या परिचय कराने के लिए
ताने या बताने के लिए कही
(इन्फार्मेशन्) २. वह पत्र
र उस प्रकार की कोई बात
ई हो। विज्ञापन। ईश्तहार।
३. वह बात जो कोई कार्रवाई
किसी संबद्ध व्यक्ति को पहले
के लिए कही जाय। (इन्·
४. दुर्घटना के संबंध में अदा·
और किसी तरह की कार्रवाई
पुलिस या किसी और उप-
री से उसका हाल कहना।
५. कहीं से आनेवाले माल के
संबंध में आया हुआ विवरण,
बीजक। चलान। (ऐडवाइस)
सूचन] सूचित करना।

पुं० [सं०] वह पट्ट या तख्ता
जानकारी के लिए सूचनाएँ
ई जाती हैं। (नोटिस बोर्ड)
पुं० [सं०] वह पत्र जिस·
चना छपी या लिखी हो।
हार। (नोटिस)
[सं०] सूई।
-पुं० [सं०] वैद्यक में एक
णासन्न रोगियों की चिकित्सा
उनके मस्तक पर लगाते हैं।
[सं०] १. जिसकी सूचना
या हुआ। ज्ञापित। २.
गई हो। जैसे–उन्हें सूचित
है।

सूची–स्त्री० [सं०] १. कपड़ा सीने की सूई। २. सेना का एक प्रकार का व्यूह। ३. किसी विषय की मुख्य-मुख्य बातों की क्रम में दी हुई सूची। अनुक्रमणिका। (इन्डेक्स) ४. दे० 'सूचीपत्र'। ५. चहार-दीवारी आदि में हर दो खम्भों के ऊपर आड़ा रखा जानेवाला पत्थर। तकिया। ६. छन्द शास्त्र में वह रीति जिससे यह जाना जाता है कि कुछ नियत वर्णों या मात्राओं से कितने प्रकार के छन्द या वृत्त बनते या बन सकते हैं।

सूचीपत्र–पुं० [सं०] वह पुस्तिका जिसमें बहुत सी चीजों की नामावली, विवरण, मूल्य आदि में हो। तालिका। सूची। (कैटलॉग)

सूची-फलक–पुं० [सं०] वह फलक जिसपर क्रम से बहुत सी सूचियों या अनुक्रमणिकाएँ दी हों। (इन्डेक्स शीट)

सूची-शिल्प–पुं० [सं०] कपड़े पर सूई-डोरे से बनाये हुए बेल-बूटे। सूईकारी। (निडल वर्क)

सूच्छम*–वि० = सूक्ष्म।

सूच्य–वि० [सं०] सूचित करने के योग्य।

सूच्यार्थ–पुं० [सं०] शब्दों की व्यंजना-शक्ति से निकलनेवाला अर्थ।

सूछम*–वि० = सूक्ष्म।

सूजन–स्त्री० [हिं० सूजना] सूजने की क्रिया या भाव। शोथ।

सूजना–अ० [फा० सोजिश] आघात, रोग आदि के कारण शरीर के किसी अंग का प्रायः पीड़ा लिये हुए फूलना। शोथ होना।

सूजा–पुं० [सं० सूची] बड़ी सूई। †पुं० = सूजन।

सूजाक–पुं० [फा०] मूत्रेंद्रिय का एक रोग जिसमें उसके अन्दर घाव हो जाता है।

सूजी–स्त्री० [सं० शुचि] गेहूँ का एक विशेष प्रकार का दरदरा आटा।

सूझ–स्त्री० [हिं० सूझना] १. सूझने का

भाव। २. दृष्टि। नजर। ३. अच्छी-अच्छी बातें ध्यान में आने का भाव। होने या आनेवाली बातों के सम्बन्ध में समझदारी। ४. अनोखी कल्पना। उपज।

सूझना–अ० [सं० संज्ञान] १. दिखाई देना। २. ध्यान में आना।

सूझ-बूझ–स्त्री० [हिं० सूझ + बूझना = समझना] अच्छी बातें ध्यान में आना और समझ-बूझकर उनका उपयोग करना। दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता।

सूट–पुं० [अं०] पहनने के सब कपड़े, विशेषतः कोट, पतलून आदि।

सूटना†–स० [?] (हथियार) घुमाना या चलाना।

सूत–पुं० [सं० सूत्र] १. रूई, रेशम आदि का वह पतला बटा हुआ तागा जिससे कपड़ा बुनते हैं। तंतु। धागा। डोरा। २. किसी चीज में से निकलनेवाला इस प्रकार का तार। ३. लंबाई नापने का एक छोटा मान। ४. इमारत के काम में लकड़ी आदि पर निशान डालने की डोरी।

मुहा०–सूत धरना या बाँधना = निशान लगाना।

पुं० [सं०] [स्त्री० सूती] १. प्राचीन काल की एक वर्ण-संकर जाति। २. सारथी। ३. भाट। चारण। ४. पुराणों की कथा कहनेवाला। पौराणिक। ५. सूत्रधार।

वि० [सं०] प्रसूत। उत्पन्न।

पुं० दे० 'सूत्र'।

वि० [सं० सूत्र = सूत] भला। अच्छा।

सूतक–पुं० [सं०] १. जन्म। २. घर में संतान होने या किसी के मरने पर परिवार-वालों को लगनेवाला अशौच।

सूतक-गेह–पुं० दे० 'सूतिकागार'।

सूतकी–वि० [सं० सूतकिन] जिसे सूतक या अशौच लगा हो।

सूतना–स० [हिं० सूत + ना (प्रत्य०)]
१. उस प्रकार सीधा करना जैसे–लकड़ी प
निशान डालने या दीवार की सीध नाप
के लिए सूत लगाया जाता है। २. क
से नीचे की ओर हाथ फेरना। जैसे–
सूतना। ३. डोरे आदि पर मांझ
कलफ चढ़ाना। ४. नोचना। खसोट
५. साफ करना। ६. सोखना। चूस
जैसे–पसीना सूतना।

अ० दे० 'सोना' (शयन)।

सूतवाँ–वि० [हिं० सूत] (सूत से नाप
ठीक की हुई वस्तु के समान) सुडौ
जैसे–सूतवाँ नाक।

सूतिका–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे
हाल में बच्चा हुआ हो। जच्चा।

सूतिकागार (गृह)–पुं० [सं०]
कमरा या घर जिसमें स्त्री बच्चा जनती
सौरी। प्रसव-गृह।

सूतिग†–पुं० दे० 'सूतक'।

सूती–वि० [हिं० सूत] सूत का बना हु
स्त्री० दे० 'सीपी'।

सूत्र–पुं० [सं०] [वि० सूत्रित]
सूत। तागा। डोरा। २. यज्ञोपवी
जनेऊ। ३. करधनी। ४. नियम।
वस्था। ५. थोड़े शब्दों में कहा हुआ व
य वचन जिसमें बहुत और गूढ़ अर्थ
६. वह बात जिसके सहारे किसी दूसरी
बड़ी बात, घटना, रहस्य आदि का
लगे। संकेत। पता। सुराग। (क्ल्यू)
वह सांकेतिक पद या शब्द जिसमें
वस्तु बनाने या कार्य्य करने के मूल सिद्धा
प्रक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित
(फार्म्यूला) ८. किसी कार्य या योजना
सम्बन्ध में उन अनेक बातों में से कोई,
उस कार्य या योजना की सिद्धि के
सोची जाय। (प्वाइंट) जैसे–इस यो
के चार सूत्रों में से दो बहुत ही उपयो
और आवश्यक है।

सूत्रकार–पुं० [सं०] १. वह जिसने

ता। सूत्र रचयिता। (विशेष
) २. बढ़ई। ३. जुलाहा।
[सं०] १. नाट्य-शाला
नाटक की व्यवस्था करने-
२. बढ़ई। ३. पुराणानुसार
वर्ण-संकर जाति।
= सूत्रधार।
[सं०] किसी कार्य का
था प्रारम्भ होने का पूरा
। नींव पड़ना।
[सं०] सूत्र के रूप में लाया
। (फॉरमूलेटेड)
[सं० सूत्र + ई (प्रत्य०)]
। सूत्र का। २. सूत्रों से
सूत्र हों। (यौगिक के अन्त
सूत्री योजना।
[सं०] १. सूत्र-सम्बन्धी।
२. जिसमें सूत्र हों। जैसे—अष्ट-
।
[सं० स्वस्थाना = एक प्राचीन
प्रकार का पायजामा।
सं०] १. लाभ। फायदा।
हुए धन के बदले में मिलने-
भिन्न) धन। व्याज। वृद्धि।
[फ़ा०] [भाव० सूदखोरी]
व्याज लेनेवाला।
-पुं० [फ़ा०] वह व्याज या
के सिवा बाकी पड़े हुए या
भी दिया जाता हो। चक्र-
उंड इन्टरेस्ट)
[सं०] विनाश करनेवाला।
वध करना। मार डालना।
[सं० सूदन] नष्ट करना।
सं० सूद] (पूँजी या रकम)
पर दी गई हो। ब्याजू।
सूद।
दे० 'सीधा'। २. दे० 'शुद्ध'।

सूधना*—अ० [सं० शुद्ध] १. सिद्ध होना। २. सत्य या ठीक होना।

सूधा—वि० = सीधा।

सूधी—स्त्री० = सीधी।

सूधे—क्रि० वि० [हिं० सूधा] सीधी तरह से।

सून—पुं० [सं०] १. प्रसव। जनन। २. फूल की कली। ३. फूल। ४. पुत्र। बेटा।

वि०, पुं० दे० 'शून्य'।

वि० दे० 'सूना'।

सूना—वि० [सं० शून्य] [स्त्री० सूनी] जिसमें या जहाँ कोई न हो। निर्जन। एकान्त। सुनसान।

पुं० निर्जन स्थान। एकान्त।

स० [सं० प्रसव] गर्भ से जन्म देना। प्रसव करना।

स्त्री० [सं०] १. पुत्री। बेटी। २. कसाई-खाना। ३. गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चीजें (चूल्हा, चक्की आदि) जिनमें या जिनसे अनजान में जीव-हिंसा होती या होने की संभावना रहती है। ४. हत्या।

सूनु—पुं० [सं०] १. संतान। औलाद। २. छोटा भाई। ३. सूर्य।

सूप—पुं० [सं०] १. पकाई हुई दाल या उसका पानी। २. रसेदार तरकारी। ३. रसोइया। ४. बाण। तीर।

पुं० दे० 'छाज'। (अनाज फटकने का)

सूपकार—पुं० [सं०] [भाव० सूपकारिता] रसोइया।

सूपकारता*—स्त्री० = सूपकारिता।

सूपकारिता—स्त्री० [सं०] रसोई बनाने की क्रिया या कला। पाक-शास्त्र।

सूपनखा—स्त्री० = शूर्पनखा। (रावण की बहन)

सूप-शास्त्र—पुं० = पाक-शास्त्र।

सूफ़—पुं० [अ०] १. पशम। ऊन। २. देशी काली स्याहीवाली दावात में डाला जानेवाला लत्ता या चिथड़ा।

सूफ़ियाना—वि० [अ० सूफ़ी] १. सूफ़ियों

का। सूफ़ी-सम्बन्धी। २. देखने में सादा होने पर भी बहुत सुन्दर।

सूफ़ी-पुं० [अ०] १. मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय जो अपने विचारों की उदारता के लिए प्रसिद्ध है और जिसमें साधारण मुसलमानों का कट्टरपन बिल्कुल नहीं है। २. इस संप्रदाय का अनुयायी।

सूबा-पुं० [अ० सूबः] १. किसी देश का कोई भाग। प्रांत। प्रदेश। २. दे० 'सूबेदार'।

सूबेदार-पुं० [फ़ा० सूबः + दार (प्रत्य०)] १. किसी सूबे या प्रांत का प्रधान अधिकारी या शासक। २. सेना विभाग में एक छोटा पद। ३. इस पद पर रहनेवाला व्यक्ति।

सूबेदारी-स्त्री० [फ़ा०] सूबेदार का पद या काम।

सूभर*-वि० [सं० शुभ्र] १. सफेद। २. सुन्दर।

सूम-वि० [अ० शूम] कृपण। कंजूस।

सूमति*-स्त्री० [हिं० सूम = कंजूस] सूम या कृपण होने की अवस्था या भाव। कृपणता। कंजूसी। उदा०—जेती संपति कृपण कै, तेती सूमति जोर।—बिहारी।

सूर-पुं० [सं०] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. विद्वान्। ४. आचार्य। ५. सुप्रसिद्ध महात्मा और कवि सूरदास के नाम का संक्षिप्त रूप। ६. अन्धा।

*पुं० [सं० शूर] १. वीर। बहादुर। २. राजा या बादशाह।

यौ०—**सूर-सावंत (सामंत)** = (क) बहुत बड़ा बहादुर। (ख) युद्ध का संचालन करनेवाला अधिकारी। (ग] नायक। सरदार।

*पुं० [सं० शूकर] १. सूअर। २. भूरे रंग का घोड़ा।

*पुं० दे० 'शूल'।

पुं० [देश०] पठानों का एक वंश।

सूरज-पुं० [सं० सूर्य] सूर्य। (मुहावरों के लिए दे० 'सूर्य' के मुहा०)।

*वि० [सं० शूर + ज (प्रत्य०)] जो शूर से उत्पन्न हो। वीर की सन्तान।

सूरज-तनी*-स्त्री = सूर्य-तनया।

सूरज-मुखी-पुं० [सं० सूर्यमुखी] एक पौधा जिसके पीले रंग के फूल दिन समय सीधे खड़े रहते और रात के स नीचे झुक जाते हैं। २. एक प्रकार शीशा जिसपर सूर्य का ताप पड़कर केन्द्र में एकत्र होता और वहाँ ताप या उत्पन्न करता है। ३. बड़े पंखे के आ का एक प्रकार का राज चिह्न। ४. मनु के शरीर का एक विशेष प्रकार का जन्य वर्ण जो यूरोपियनों आदि के व मिलता-जुलता होता है।

सूरत-स्त्री० [फ़ा०] १. रूप। आकृति।

मुहा०—**सूरत दिखाना** = सामने आ। **सूरत बनाना** = (क) अच्छा रूप या बनाना। (ख) नाक-भौं सिकोड़ना। **सू बिगड़ना** = रूप रंग आदि खराब या फीका पड़ना।

२. शोभा। सौन्दर्य। ३. कार्य-सि मार्ग या युक्ति। ४. अवस्था। द हालत।

स्त्री० [अ० सूरः] कुरान का प्रकरण

पुं० [सं० सौराष्ट्र] गुजरात का एक नगर।

*स्त्री० दे० 'सुरत'।

सूरता(ई)*-स्त्री० = शूरता।

सूरती-स्त्री० [हिं० सूरत नगर] चाल की एक प्रकार की तलवार।

सूरदास-पुं० [सं०] व्रज भाषा के प्रसिद्ध और परम श्रेष्ठ कृष्ण-भक्त महा और महात्मा जो अंधे थे।

सूरन-पुं० [सं० सूरण] एक प्रसिद्ध जिसकी तरकारी बनती है। जमींकंद।

सूरनखा*-स्त्री० दे० 'शूर्पणखा'।

सूर मल्लार-पुं० [सूरदास (महात्मा) मल्लार] सारंग और मल्लार के यो बना हुआ एक संकर राग जो वर्षा

पहर में गाया जाता है।
[सं० शूर] वीर। बहादुर।
= सूर्यकांत (शीशा)।
= सूरमा।
ो० = सूर्य-सुता। (यमुना)।
[फा०] छेद। छिद्र।
ं०] १. सूर्य। २. यज्ञ
ऋत्विज। ३. बहुत बड़ा
विद्वान्।
ं०] १.विद्वान् स्त्री। विदुषी।
ी।
।
शूकरी] १. सूअर नामक
।
।
शूल] भाला।
= सूर्य।
ं०] १. हमारे सौर जगत्
बड़ा और ज्वलंत पिंड जिससे
गरमी और प्रकाश मिलता
। दिनकर।
को दीपक दिखाना =
महान् हो, उसे कुछ बत-
की प्रशंसा करना। **सूर्य**
= जो बहुत महान् हो उसके
अनुचित बात कहना।
संख्या (क्योंकि सूर्य बारह
)। २. बहुत बड़ा कृती।
-पुं० [सं०] १. एक
। २. दे० 'सूरजमुखी'

ं० [सं०] १. पृथ्वी और
में चन्द्रमा के आ जाने और
पड़ने से होनेवाला सूर्य का
हठ-योग की परिभाषा में वह
पिंगली नाड़ी से होकर प्राण
पहुँचते हैं।
ी० [सं०] यमुना।

सूर्य-लोक–पुं० [सं०] १. सूर्य का लोक। (कहते हैं कि युद्ध-क्षेत्र में लड़कर मरनेवाले इसी लोक में जाते हैं।)

सूर्यवंश–पुं० [सं०] [वि० सूर्य-वंशी] क्षत्रियों के दो प्रसिद्ध और मूल वंशों या कुलों में से एक जिसकी उत्पत्ति सूर्य से मानी गई है। (दूसरा चन्द्र वंश है।)

सूर्य सुता–स्त्री० [सं०] यमुना।

सूर्यावर्त्त–पुं० [सं०] सिर की एक प्रकार की पीड़ा जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहती है। अध-कपारी। आधा-सीसी।

सूर्यास्त–पुं० [सं०] १. संध्या को सूर्य का छिपना या डूबना। २. सन्ध्या का समय।

सूर्य्योदय–पुं० [सं०] १. सूर्य्य का उदय होना या निकलना। २. सूर्य्य निकलने का समय। प्रातःकाल। सबेरा।

सूर्य्योपासना–स्त्री० [सं०] [वि० सूर्य्योपासक] सूर्य को ही सर्व-श्रेष्ठ देवता और ईश्वर का प्रतीक मानकर उसकी उपासना करना।

सूल–पुं० दे० 'शूल'।

सूलना–स० [हिं० सूल + ना (प्रत्य०)] १. नुकीली चीज से छेदना। २. कष्ट देना। अ० १. नुकीली चीज से छिदना। २. पीड़ित या व्यथित होना।

सूली–स्त्री० [सं० शूल] १. लोहे आदि का वह नुकीला डंडा या इसी प्रकार का और कोई उपकरण जिसपर बैठा या लटकाकर प्राचीन काल में अपराधियों को प्राण-दंड दिया जाता था। २. प्राण-दंड। ३. दे० 'फाँसी'।

*पुं० [सं० शूलिन] महादेव। शिव।

सूवना*–अ० [सं० स्रवण] बहना।

सूस–पुं० दे० 'सूँस'। (जल-जन्तु)।

सूहा–पुं० [हिं० सोहना] १. एक प्रकार का लाल रंग। २. ओड़व-षाड़व जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर के अन्त में

गाया जाता है।

वि० [स्त्री० सूही] लाल रंग का।

सृंग*-पुं० = शृंग।

सृंगज*-पुं० = शृंगज।

सृंगारना*-स० = शृंगार करना।

सृक-पुं० [सं०] १. बरछा। भाला। २. वाण। तीर। वायु। हवा।

*पुं० [सं० स्रज,स्रक्] माला। हार।

सृग*-पुं० दे० 'सृक'।

सृगाल*-पुं० = शृगाल।

सृजक*-पुं० [सं० सृज्] सृष्टि या रचना करनेवाला। सर्जक।

सृजन*-पुं० [सं०सृज्, सर्जन] १. सृष्टि या रचना करने की क्रिया। २. सृष्टि।

सृजनहार*-पुं० = सृष्टिकर्त्ता।

सृजना*-स० [सं०सृज् + हिं०ना(प्रत्य०)] सृष्टि या रचना करना। बनाना।

सृत-वि० [सं०] चला या खिसका हुआ।

सृति-स्त्री० [सं०] १. पथ। रास्ता। २. गमन। चलना। ३. सरकना। खिसकना।

सृष्ट-वि० [सं०] १. जिसकी सृष्टि या रचना की गई हो। बनाया हुआ। निर्मित। रचित। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त।

सृष्टि-स्त्री० [सं०] १. रच या बनाकर तैयार करने की क्रिया या भाव। (क्रिएशन) २. उत्पत्ति। जन्म। ३. निर्माण। रचना। ४. संसार। जगत।

सृष्टिकर्त्ता-पुं० [सं० सृष्टिकर्तृ] संसार की रचना करनेवाला (ब्रह्मा या ईश्वर)।

सृष्टि विज्ञान-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, बनावट और विकास का विवेचन होता है। (कॉस्मोजेनी)

सेंक-पुं० [हिं०सेंकना] १. सेंकने की क्रिया या भाव। २. ताप। गरमी। ३. शरीर के किसी रुग्न अंग पर गर्म चीज़ से पहुँचाई जानेवाली गर्मी। टकोर। (फोमेन्टेशन)

सेंकना-स० [सं० श्रेषण] १. आग पर या उसके सामने रखकर साधारण गरमी पहुँचाना। जैसे-रोटी सेंकना। २. धूप या गरमी पहुँचानेवाली चीज़ के सामने र कर उसकी गरमी से लाभ उठाना। जैसे धूप सेंकना।

मुहा०-आँखें सेंकना = सुन्दर रूप दे कर आँखें तृप्त करना।

सेंट†-स्त्री० [?] स्तन से निकलनेवा दूध की धार।

सेंण*-पुं० = सेवक।

सेंत-स्त्री० [सं० संहति] पास का खर्च न होना।

मुहा०-सेंत का = १. जिसमें कुछ न हुआ हो। मुफ्त का। **सेंत या** **मेंत में** = (क) बिना कुछ व्यय किये हु मुफ्त में। (ख) व्यर्थ।

वि० बहुत अधिक।

सेंतना*-स० दे० 'सैंतना'।

सेंत-मेंत-क्रि० वि० [हिं० सेंत + (अनु०)] १. मुफ्त में। २. व्यर्थ।

सेंति(ती)*-प्रत्य० [प्रा० सुंती] पु हिन्दी में करण और अपादान कारक विभक्ति। से।

स्त्री० दे० 'सेंत'।

सेंथी*-स्त्री० [सं० शक्ति] छोटा भा बरछी।

सेंदुर*-पुं० दे० 'सिंदूर'।

सेंद्रिय-वि० [सं०] जिसमें इन्द्रियाँ इन्द्रियोंवाला। जैव। (जीव या जन्त (ऑर्गनिक)

सेंध-स्त्री० [सं० संधि] दीवार में कि हुआ वह छेद जिसमें से घुसकर चोर च करते हैं। सुरंग। नकब।

सेंधना†-अ० [हिं०] सेंध लगाना।

सेंधा-पुं० [सं० सैंधव] एक प्रकार खनिज नमक। सैंधव।

सेंधिया-पुं० [हिं० सेंध] सेंध लगा चोरी करनेवाला चोर।

पुं० दे० 'सिंधिया'।

[देश०] एक प्रकार का
।
'छिदूर'।
'छेवई'।
'छेमल'।
[अं०] वह सरकारी अफसर
समाचार-पत्र आदि छपने या
नाटक खेले जाने, चित्र-पट
या तार से कहीं समाचार भेजे
उन्हें देखने या जाँचने और
धिकार होता है।
[सं० सिहुड़] थूहर नाम
धा।
० सुंत] करण और अपा-
चिह्न। तृतीया और पंचमी
जिसका प्रयोग इन अर्थों में
द्वारा; जैसे–हाथ से देना,
मान में कम या अधिक;
(ग) सीमा का आरम्भ;
।
(समान) का बहु०।
'सो' (वह) का बहु०।
'सेव' और 'सेब'।
= सेवट (१)।
[अं०] एक मिनट का साठवाँ
-मान)
[अं०] मंत्री।
'शेष' और 'शेख'।
= १. शेखर। २. = शिखर।
अ०] विभाग।
[सं०] चनेवाला।
[सं०] [वि० सेचनीय, सेचित]
दि जल से सींचना। सिंचाई।
। ३. अभिषेक।
सं० शय्या] शय्या। पलंग।
[हिं० सेज + पाल] राजा
रा देनेवाला सैनिक।
स्त्री० = सेज।

सेज्या*–स्त्री० = शय्या।

सेटना*–अ० [सं० श्रत] १. मानना। २. महत्व स्वीकार करना।

सेठ–पुं० [सं० श्रेष्ठी] [स्त्री० सेठानी] बड़ा साहूकार। धनी और महाजन।

सेढ़ा†–पुं० दे० 'सींड़'।

सेत*–पुं० दे० 'सेतु'।

वि० दे० 'श्वेत'।

सेतद्युति*–पुं० = चंद्रमा।

सेतवाह–पुं० = अर्जुन (पांडव)।

सेती†–अव्य० दे० 'से'।

सेतु–पुं० [सं०] १. नदी आदि पर का पुल। २. पानी की रुकावट के लिए बना हुआ बाँध। (डैम) ३. खेत की मेंड़। डाँड़। ४. सीमा। हद।

सेतुक–पुं० [सं०] १. छोटा पुल। पुलिया। २. छोटा बाँध।

*पु० दे० 'सौतुख'।

सेतुबंधु–पुं० [सं०] १. पुल या बाँध बनाने का काम। २. कन्या कुमारी के पास का समुद्र का वह पुल जो लंका पर चढ़ाई करने के समय रामचन्द्र जी ने बनवाया था।

सेथिया–पुं० [तेलगू चेट्टि] एक प्रकार के चिकित्सक जो आँख, गुदा, मूतेन्द्रिय आदि की चिकित्सा करते हैं।

सेद–पुं० दे० 'स्वेद'।

सेदज*–वि० = स्वेदज।

सेन–पुं० [सं० श्येन] बाज (पक्षी)।

*स्त्री० दे० 'सेना'।

सेनप–पुं० = सेनापति।

सेना–स्त्री० [स०] १. युद्ध के लिए सिखाये हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए सैनिकों या सिपाहियों का बड़ा दल या समूह। फौज। पलटन। (आर्मी) २. बहुत बड़ा दल। झुंड।

†स० [सं० सेवन] १. सेवा-टहल करना। **मुहा०–चरण सेना** = (क) पैर दबाना।

(ख) किसी की तुच्छ चाकरी करना। २. आराधना या उपासना करना। ३. नियमित रूप से प्रयोग करना। ४. पवित्र स्थान पर निरन्तर वास करना। जैसे—काशी या वृन्दावन सेना। ५. यों ही किसी चीज पर बराबर पड़े रहना। जैसे—चारपाई सेना। ६. मादा पक्षी का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना। ७. व्यर्थ लेकर बैठे रहना। (व्यंग्य)

सेनादार*-पुं० = सेना-नायक।

सेनाध्यक्ष-पुं० [सं०] सेनापति।

सेना-नायक-पुं० [सं०] सेनापति।

सेनानी-पुं० [सं०] १. सेनापति। २. कार्त्तिकेय।

सेना-न्यायालय-पुं०=सैनिक न्यायालय।

सेनापति-पुं० [सं०] [भाव० सेनापत्य] १. सेना का प्रधान और सबसे बड़ा अधिकारी। (कमान्डर-इन्-चीफ) २. कार्त्तिकेय।

सेनापत्य-पुं० [सं०] सेनापति का कार्य या पद।

सेनावास-पुं० [सं०] सेना के रहने का स्थान या पड़ाव। छावनी।

सेना-वाहक-पुं० [सं०] वह हवाई या समुद्री जहाज जो सैनिकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता है।

सेनि*-स्त्री० दे० 'श्रेणी'।

सेनी-स्त्री० [फा० सीनी] तश्तरी।

*स्त्री० [सं० श्येनी] मादा बाज (पक्षी)।

*स्त्री० = श्रेणी।

सेब-पुं० [फा०] नाशपाती की तरह का एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़।

सेम-पुं० [सं० शिंबी] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

सेमई-स्त्री० दे० 'सेवई'।

सेमर-पुं० दे० 'सेमल'।

सेमल-पुं० [सं० शाल्मलि] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फल में से एक प्रकार की रूई निकलती है।

पद०-सेमल का सूआ = व्यर्थ काम या परिश्रम करके उसके बुरे परिणा से दुःखी होने और पछितानेवाला। (सेम के बीज में चोंच मारनेवाले तोते दृष्टान्त पर) उदा०-कत तूँ सुवा होत से कौ, अंतहि कपट न बचिचै।—सूर।

सेप्टिक-पुं० दे० 'शामी'।

सेर-पुं० [सं० सेठ ?] सोलह छटाँक, पाव या अस्सी तोले की एक तौल।

सेरा-पुं० [हिं० सिर] चारपाई में सिरा की ओर की पाटी या लकड़ी।

पुं० [हिं० सेर] सेर भर या १६ छ का मान या बटखरा।

पुं० [फा० सेराब] सींची हुई जमीन

सेराना*-अ० [सं० शीतल] १. होना। २. मर जाना। ३. समाप्त हो स० १. ठंढा करना। २. मूर्त्ति आदि में प्रवाहित करना।

अ० [फा० सेर] तृप्त होना। अघान

स० [फा० सेर] तृप्त करना।

सेरी-स्त्री० [फा०] तृप्त। उदा० ही न पावति भजि भजन सेरी।—सूर

सेल-पुं० [सं० शल] बरछा। माला

सेलना†-अ० [सं० शेल] १. मर जा मरना। २. छेदना।

सेला-पुं० [सं० शल्लक] [स्त्री० अ सेली] एक प्रकार का तिल्लेदार दुपट्टा

सेलिया-पुं० [?] एक प्रकार का घोड़

सेली-स्त्री० [हिं० सेल] बरछी।

स्त्री० [हिं० सेला] १. छोटा दुपट्टा गाँती। ३. वह माला जो योगी लोग में पहनते या सिर पर लपेटते हैं। ४. प्रकार का गहना।

सेल्ही-स्त्री० दे० 'सेली'।

सेव-पुं० [सं० सेविका] सूत के रूप में हुआ बेसन का एक प्रकार का पकवान

*स्त्री० दे० 'सेवा'।

ँ।
[सं० सेविका] गूँधे हुए मैदे
पतले लच्छे जो दूध या पानी
जाते हैं।
[सं०] [स्त्री० सेविका, सेव-
] १. सेवा करनेवाला ।
) २. सेवन करनेवाला । ३.
स्थान में नियमपूर्वक स्थायी
करनेवाला ।
= सेवा ।
= सेवक ।
पुं० [देश०] नदियों के मुहाने
पर जमा होनेवाली मिट्टी ।
) उदा०—लोग फूल दल सेवट
फूल दल बालक देखौ ।—केशव ।
[सं० श्रमणक या श्वेताम्बर]
के जैन साधु । २. जैनों की
का अनुयायी ।
सेव] सेव की तरह का पर
एक प्रकार का पकवान ।
दे० स्वाती' । (नक्षत्र)
[सं०] सफेद गुलाब ।
[सं०] [वि० सेवनीय,
सेवी] १. परिचर्या । टहल ।
उपासना । आराधना । ३.
से किया जानेवाला प्रयोग
। इस्तेमाल । जैसे—औषध का
बराबर किसी बड़े के पास या
स्थान पर रहना । जैसे—काशी-
उपयोग ।
दे० 'सेना' ।
= दासी ।
[सं०] सेवन करने योग्य ।
दे० 'शवरी' ।
[सं०] १. बड़े, पूज्य, स्वामी
पहुँचाने के लिए किया
। परिचर्या । टहल ।
में = बड़े के सामने ।

२. सेवक या नौकर होने की अवस्था या काम । नौकरी । ३. व्यक्ति, संस्था आदि से कुछ वेतन लेकर उनका कुछ काम करने की क्रिया या भाव । नौकरी । ४. किसी लोकोपयोगी वस्तु, विषय, कार्य आदि में रुचि होने के कारण उसके हित, वृद्धि, उन्नति आदि के लिए किया जानेवाला काम । जैसे—साहित्य-सेवा, देश-सेवा आदि । ५. सार्वजनिक अथवा राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जिम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो । जैसे—वैचारिक सेवा (जुडिशियल सर्विस), साधनिक सेवा । (इक्जिक्यूटिव सर्विस) ६. इस प्रकार के किसी विभाग में काम करनेवालों का समूह या वर्ग । (सर्विस, उक्त सभी अर्थों के लिए) ७. धार्मिक दृष्टि से ईश्वर, देवता आदि का पूजन या उपासना । आराधना । ८. आश्रय । शरण । जैसे—आज-कल मैं इन्हीं की सेवा में हूँ ।

सेवा-काल—पुं० [सं०] उतना समय या उतने दिन जिनमें किसी ने कोई सेवा या नौकरी की हो । (पीरियड ऑफ सर्विस)

सेवाती*—स्त्री० = स्वाति (नक्षत्र) ।

सेवादार(धारी)—पुं० [हिं० सेवा + फा० दार] सिक्ख गुरुद्वारे में रहकर वहाँ की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी ।

सेवा-पंजी—स्त्री० [सं०] वह पंजी या पुस्तिका जिसमें सेवकों, विशेषतः राजकीय सेवकों के सेवा-काल की कुछ मुख्य बातें लिखी जाती हैं । (सर्विस बुक)

सेवार(ल)—स्त्री० [सं० शैवल] पानी के अन्दर होनेवाली एक प्रकार की घास ।

सेवा-वृत्ति—स्त्री० [सं०] नौकरी ।

सेविका—स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली स्त्री दासी ।

सेवित—वि० [सं०] [स्त्री० सेविता] १. जिसकी सेवा की जाय या की गई हो । २. जिसका सेवन या प्रयोग किया जाय या

किया गया हो। ३. उपभोग किया हुआ।

सेवी-वि० [सं० सेविन्] १. सेवन करनेवाला। (विशेष दे० 'सेवन'।) २. किसी की या किसी प्रकार की सेवा करनेवाला। जैसे--देश-सेवी, समाज-सेवी, साहित्य-सेवी आदि। (विशेष दे० 'सेवा')

सेव्य-वि० [सं०] [स्त्री० सेव्या] १. जिसकी सेवा, पूजा या आराधना करनी हो या की जाय। २. सेवन करने के योग्य। पुं० स्वामी। मालिक।

सेव्य-सेवक-पुं० [सं०] स्वामी और सेवक।

पद-सेव्य सेवक भाव = भक्ति मार्ग में उपासना का एक भाव जिसमें देवता को स्वामी और अपने आपको उसका सेवक माना जाता है।

सेश्वर-वि० [सं०] जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।

सेष*-पुं० दे० 'शेष' और 'शेख'।

सेस*-पुं०, वि० दे० 'शेष'।

सेसर-पुं० [फा० सेह = तीन + सर = बाजी] १. ताश का एक प्रकार का जूआ। २. धूर्त्तता। चालबाजी। ३. छल-कपट। जालसाजी। ४. जाल।

सेसरिया-पुं० [हिं० सेसर] १. धूर्त्त। चालबाज। २. जाल-फरेब करनेवाला। जालिया।

सेह†-स्त्री० = साही (जन्तु)।

सेहत-स्त्री० दे० 'स्वास्थ्य'।

सेहरा-पुं० [हिं० सिर + हार] १. विवाह के समय वर को पहनाने के लिए फूलों या सोनहले-रुपहले तारों आदि की बड़ी मालाओं की पंक्ति या पुंज। २. विवाह का मुकुट। मौर।

मुहा०-किसी के सिर सेहरा बँधना = किसी को किसी बात का श्रेय मिलना। ३. विवाह के अवसर पर वर-पक्ष में गाये जानेवाले मांगलिक गीत या पद्य।

सेही-स्त्री० = साही। (जन्तु)

सेहुआँ†-पुं० [?] एक प्रकार चर्म-रोग।

सैं*-विभ०=से।

अव्य० [सं० सदृश = समान] समा तुल्य। उदा०-सटपटाति सैं ससिमुखी, घूँघट पट्ट ढाँकि।-बिहारी।

सैंकड़ा-पुं० [हिं० सै या सौ] सौ समूह। एक सौ।

सैंकड़े-क्रि० वि० [हिं० सैकड़ा] सौ के हिसाब से। प्रति शत। जैसे-रुपये सैकड़े। (पर-सेन्ट)

सैंकड़ों-वि० [हिं० सैंकड़ा] १. कई २. गिनती में बहुत अधिक।

सैंडल-पुं० [अं०] पैर में पहनने का प्रकार का जूता। चप्पल।

सैंतना†-स० [सं० संचय] १. संचित कर इकट्ठा करना। उदा०-कंचन मनि काँचहिं सैंतत, या माया के लीन्हें।- २. समेटना। ३. सहेजना।

सैंथी*-स्त्री० [सं० शक्ति] भाला। ब उदा०-इन्द्रजीत लीन्हीं जब सैंथी, हहा करयो।-सूर।

सैंधव-पुं० [सं०] १. नमक। २. देश का घोड़ा।

वि० १. सिन्ध देश का। २. सिन्धु समुद्र सम्बन्धी।

सैंधवी-स्त्री० [सं०] संगीत में जाति की एक रागिनी जो भैरव राग भार्या मानी जाती और ग्रीष्म ऋतु में के चौथे पहर में गाई जाती है।

सैंह*-वि० दे० 'सौंह'।

सैंहथी†-स्त्री० दे० 'सैंथी'।

सै†-वि० [सं० शत] सौ।

*स्त्री० [सं० सत्व या फा० शै (चीज) १. सत्त्व। सार। २. वीर्य। ३. ब शक्ति। ४. बढ़ती। वृद्धि।

सैकत(तिक)-वि० [सं०] [स्त्री० सैकती

हुआ। (स्थान) २. रेत या
हुआ। (पदार्थ)
'सिकली'।
'सैयद'।
[सं०] सिद्धान्त का
। पंडित।
न्त-सम्बन्धी। सिद्धान्त का।
मत-भेद या विवाद। २.
से भिन्न) सिद्धान्त के आधार
। (थियोरेटिकल) जैसे—सैद्धा-
।

[सं० संज्ञपन] १. संकेत।
चिह्न। निशान। ३. पहचान।
—दे० 'साँमा' (संशय) में।
] एक प्रकार का बगला।
'शयन। २. दे० 'श्येन'।
सेना'।
पुं०=सेनापति।
[सं०] [भाव० सैनिकता]
में रहकर लड़नेवाला। सिपाही।
न्धी। सेना का। जैसे—सैनिक
सैनिक आयोजन।
स्त्री० [सं०] १. सैनिक या
की अवस्था या भाव। २. सैनिक
और युद्ध करने की शक्ति
दशा।
यालय—पुं० सैनिक विभाग का
न्यायालय जो साधारणतः सेना-
होनेवाले अपराधों का विचार
करता है। (कोर्ट-मार्शल)
—पुं० [सं० सैनिक + करण]
सैनिक बनाने और सैनिक सामग्री
करने का काम।
—पुं० दे० 'स्वास्थ्य निवास'।
सेना भगत (व्यक्ति)] हज्जाम।
श्रेणी] पंक्ति। कतार।
'सैना'।
[सं० सेना] सेना में रहकर लड़ सकने के योग्य।

सैन्य—पुं० [सं०] १. सैनिक। सिपाही। २. सेना। फौज। ३. सैनिक पड़ाव। छावनी। वि० सेना-सम्बन्धी। फौज का।

सैन्य-सज्जा—स्त्री० [सं०] सेना को आवश्यक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित करना।

सैनाध्यक्ष—पुं० = सेनापति।

सैफ—स्त्री० [अ०] तलवार।

सैयद—पुं० [अ०] मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंशजों का अल्ल या उपाधि।

सैयाँ*—पुं० [सं० स्वामी] पति।

सैया*—स्त्री० = शय्या।

सैरंधी*—स्त्री० = सैरंध्री।

सैरंध्र—पुं० [सं०] [स्त्री० सैरंध्री] १. प्राचीन काल की एक संकर जाति। २. घर में काम करनेवाला नौकर।

सैरंध्री—स्त्री० [सं०] १. घर में काम करनेवाली दासी। २. द्रौपदी का उस समय का नाम जब वह अज्ञात-वास में थी।

सैर—स्त्री० [फा०] १. मन बहलाने के लिए कहीं जाना या इधर-उधर घूमना-फिरना। २. मौज। आनन्द। ३. बाग-बगीचे आदि में कुछ मित्रों का होनेवाला खान-पान और आमोद-प्रमोद। ४. मनोरंजक दृश्य। तमाशा।

सैरा—पुं० [फा० सैर] हाथ से अंकित चित्रों में भूमिका के रूप में वह प्राकृतिक दृश्य जिसके आगे व्यक्तियों या घटनाओं का चित्र अंकित होता है।

सैल—स्त्री० दे० 'सैर'।
पुं० दे० 'शैल'।
स्त्री० [फा० सैलाब] १. नद, नदी आदि की बाढ़। २. पानी का बहाव।

सैलजा(सुता)—स्त्री० दे० 'शैलजा'।

सैलानी—वि० [फा० सैर] सैर-सपाटा करने या मनमाना घूमनेवाला।

सैलाब—पुं० [फा०] पानी की बाढ़।

सैलाबी—वि० [फा०] (खेत या स्थान)

जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो।

सैलूख*-पुं० दे० 'शैलूष'।

सैवल*-पुं० दे० 'शैवाल'।

सैसव*-पुं० = शैशव।

सों†-अव्य० [प्रा० सुन्तो] द्वारा। से।
क्रि० वि० संग। साथ।
वि० दे० 'सा'।
*स्त्री० अव्य० दे० 'सौंह'।

सोंचर नमक-पुं० = काला नमक।

सोंटा-पुं० [सं० शुण्ड या हिं० सटना] १. मोटा डंडा। २. भंग घोटने का डंडा।

सोंठ-स्त्री० [सं० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक।

सोंठौरा†-पुं० [हिं० सोंठ + औरा (प्रत्य०)] सोंठ तथा कुछ मेवे मसालों का बना हुआ एक प्रकार का लड्डू। (प्रसूता स्त्री के लिए)

सोंध*-अव्य० दे० 'सौंह'।
स्त्री० = सुगंध।
वि० = सोंधा।

सोंधा-वि० [सं० सुगंध] [स्त्री० सोंधी] १. सुगंधित। खुशबूदार। २. मिट्टी पर वर्षा का पहला पानी पड़ने या भुने हुए चने, बेसन आदि से निकलनेवाली सुगंध के समान।
पुं० १. सिर के बाल धोने का एक प्रकार का सुगंधित मसाला। २. तेल को सुगधित करने के लिए उसमें मिलाया जानेवाला एक प्रकार का मसाला। ३. कोई सुगंधित पदार्थ। जैसे—तेल, इतर आदि।

सोंह(ी)*-स्त्री०, अव्य० दे० 'सौंह'।

सो-सर्व० [सं० सः] वह।
अव्य० इसलिए। अतः।
*वि० दे० 'सा'।

सोऽहम्-पद [सं० सः + अहम्] वह (अर्थात् ब्रह्म) मैं ही हूँ। (वेदान्त का सिद्धान्त)

सोअना*-अ० दे० 'सोना'। (शयन)

सोआ-पुं० [सं० मिश्रेया] एक प्रकार का साग।

सोइ(ई)-सर्व० दे० 'वही'।
अव्य० दे० 'सो'।

सोऊ-वि० [हिं० सोना] सोनेवाला। उदा०
तृष्ना हाथ पसारे निसि-दिन, पेट भरे सोऊ।—सूर।
सर्व० वह भी।

सोक*-पुं० = शोक।

सोकन-पुं० [दे०] एक प्रकार का जिसका चमड़ा कुछ लाल रंग का है। कैरा।

सोकना*-स० [सं० शोक] शोक कर

सोकित*-वि० [सं० शोक] जिसे हुआ हो। शोक ग्रस्त।

सोखक*-वि० [सं० शोषक] १. सो वाला। २. नष्ट करनेवाला।

सोखना-स० [सं० शोषण] जल या चूसना। शोषण करना।

सोखू*-वि० [हिं० सोखना] सोखनेवा

सोख्ता-पुं० [फ़ा० सोख्तः] एक प्रका खुरदरा कागज जो तुरन्त के लिखे लेखों पर की स्याही सोख लेता है।

सोग* पुं० [सं० शोक] किसी के पर होनेवाला दुःख या शोक। मातम

सोगवारा-पुं० [हिं० सोक (शोक) वारा (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ लोग बहुत शोक कर रहे हों।

सोगिनी*-वि० हिं० 'सोगी' का स्त्री०

सोगी-वि० [हिं० सोग] [स्त्री० सोगि १. शोक मनानेवाला। २. वियोगी।

सोच-पुं० [सं० शोच] १. चिन् फिक्र। २. दुःख। रंज। ३. पछताव पश्चात्ताप।

सोचना-अ० [सं० शोचन] १ कि विषय पर मन में कुछ विचार करना। चिन्ता या फिक्र करना। ३. खेद दुःख करना।

सोच-विचार-पुं० [हिं० सोच +

ने और समझने या विचार
या भाव। गौर।

[हिं० सोचना] सोचने
ने की क्रिया या भाव।

[हिं० सोचना का स०]
को सोचने में प्रवृत्त करना।
१. किसी के आगे कोई सुझाव
ध्यान उसकी ओर आकृष्ट

= सीधा।

[देश०] मूर्ख। बेवकूफ।

दे० 'सौंड़'।

दे० 'सोत' या 'सोता'।

दे० 'सौत'।

[सं० स्रोत] [स्त्री० अल्पा०
प्राकृतिक रूप से कहीं से निकल
बहती रहनेवाली जल की छोटी
रना। २. नदी की शाखा।

[हिं० सोता का स्त्री० अल्पा०]
सोता।

स्वाती। (नक्षत्र)

त्रिय। (ब्राह्मणों की एक जाति)

[सं० सहोदर] [स्त्री० सोदरा]

= शोध।

शोध] प्रासाद। महल।

[सं० शोधन] १. शुद्ध
शुद्धता की जाँच की परीक्षा
०—सिय लौं सोधति तिय तनहिं
की ज्वाल।——बिहारी। ३.
दूर करना। ४. ढूँढ़ना ५.
करके धातुओं को औषध रूप
खाने के योग्य बनाना। ६.
। ७. निश्चित करना।

हिं० 'सोधना' का प्रे०।

दे० 'शोधक'।

[सं० शोण] बिहार का एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिलता है।

वि० [सं० शोण] लाल। अरुण।

*पुं० दे० 'सोना'।

पुं० जलाशय के आस-पास रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया।

सोन-खरिका—पुं० [?] एक प्रकार का धान और उसका चावल।

सोन गुलाल—पुं० [हिं० सोना + गुलाल] एक प्रकार का बढ़िया लाल रंग।

सोन-चिरी—स्त्री० [हिं० सोना + चिड़िया] नट जाति की स्त्री। नटिन। नटी।

सोन-जूही—स्त्री० [हिं० सोना + जूही] एक प्रकार की पीली जूही। स्वर्ण यूथिका। पीली चमेली।

सोनभद्र—पुं० [सं० शोण-भद्र] बिहार का सोन नामक नद (बड़ी नदी)।

सोनरास—पुं० [हिं० सोना = स्वर्ण + राशि] पका हुआ सफेद या नीला पान।

सोनवाना*—वि० [हिं० सोना (स्वर्ण) + वर्ण] [स्त्री० सोनवानी] सोने के रंग का। सुनहरा।

सोनहला—वि० = सुनहला।

सोनहा—पुं० = कोगी (जन्तु)।

सोनहार—पुं० [?] एक प्रकार की चिड़िया।

सोना—पुं० [सं० स्वर्ण] १. एक प्रसिद्ध बहुमूल्य पीली धातु जिसके गहने आदि बनते हैं। स्वर्ण। कांचन।

मुहा०—**सोने का घर मिट्टी करना**=बहुत अधिक धन-सम्पत्ति व्यर्थ और पूरी तरह से नष्ट करना। **सोने में घुन लगना**=परम असम्भव बात होना। **सोने में सुगंध होना**=किसी बहुत अच्छी चीज में और भी कोई अच्छा गुण या विशेषता होना।

पद—**सोने की कटार**=वह चीज जो देखने में बहुत सुन्दर होने पर भी वस्तुतः बहुत घातक या हानिकारक हो।

२. बहुत सुन्दर या बहुमूल्य पदार्थ।

अव्य० [सं० शयन] १. लेटकर शरीर और मस्तिष्क को विश्राम देनेवाली निद्रा की अवस्था में होना। नींद लेना। शयन। मुहा०—सोते-जागते = हर समय। २. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना। ३. किसी विषय या बात की ओर से उदासीन होकर चुप या निष्क्रिय रहना।

सोना-मक्खी—स्त्री० [सं० स्वर्णमाक्षिका] एक खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग औषध के काम में होता है।

सोनार—पुं० दे० 'सुनार'।

सोनित—पुं० दे० 'शोणित'।

सोनी—पुं० दे० 'सुनार'।

सोपत—पुं० दे० 'सुभीता'।

सोपाधिक—वि० [सं०] १. जिसमें कोई प्रतिबन्ध या शर्त लगी हो। (कन्डिशनल) २. किसी विशिष्ट सीमा, मर्यादा, व्याख्या आदि में बँधा हुआ। (क्वालिफायड)

सोपान—पुं० [सं०] [वि० सोपानित] ऊपर चढ़ने की सीढ़ी। जीना।

सोपानित—वि० [सं०] जिसमें सोपान या सीढ़ियाँ बनी या लगी हों।

सोऽपि—वि० [सं० सः + अपि] १. वही। २. वह भी।

सोफ़ता—पुं० [हिं० सुभीता का उर्दू रूप] १. एकान्त या निर्जन स्थान। २. अवकाश या फुरसत का समय। ३. रोग आदि में कमी होने का भाव या दशा।

सोफ़ा—पु० [अं०] एक प्रकार का लम्बा गद्दीदार आसन। कोच।

सोफ़ियाना—वि० दे० 'सूफ़ियाना'।

सोफ़ी—पुं० = सूफ़ी।

सोभ—स्त्री० = शोभा।

सोभना*—अ० [सं० शोभन] शोभा देना।

सोभा*—स्त्री० = शोभा।

सोभाकारी—वि० [सं० शोभाकर] सुन्दर।

सोभार—वि० [सं० स + हिं० उभार] जिसमें उभार हो। उभरा हुआ। उभारदार। उदा०—मुक्त नभ-श्रेणी में सोभार।—पन्त क्रि० वि० उभार के साथ। उभरकर।

सोभित*—वि० = शोभित।

सोम—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन भारती लता जिसके रस का सेवन वैदिक ऋ मादक पदार्थ के रूप में करते थे। एक प्राचीन वैदिक देवता। ३. चन्द्रमा ४. सोमवार। ५. अमृत। ६. जल।

सोम-कर—पुं० [सं०] चन्द्रमा की किरण

सोमन*—पुं० दे० 'सौमन'।

सोमनस*- सौमनस्य।

सोमनाथ—पुं० [सं०] बारह ज्योतिर्लिंगों से एक जिसका मन्दिर काठियावाड़ में

सोम-पान—पुं० [सं०] सोम लता रस पीना।

सोमपायी—वि० [सं० सोमपायिन्] सो लता का रस पीनेवाला।

सोमयज्ञ(याग)—पुं० [सं०] वैदिक का एक प्रकार का यज्ञ।

सोम-याजी—पुं० [सं० सोमयाजिन्] जो सोमयज्ञ करता हो या जिसने सोम किया हो।

सोम-रस—पुं० [सं०] सोमलता का रस

सोमराज—पुं० [सं०] चन्द्रमा।

सोमवंश—पुं० [सं०] क्षत्रियों का चंद्र वंश

सोमवती—स्त्री० [सं०] सोमवार को पड़ वाली अमावस्या, जिसकी गिनती बड़े प में होती है।

सोमवल्लरी—स्त्री० [सं०] १. सोमलता २. चामर नामक छन्द का एक नाम।

सोमवल्ली—स्त्री० दे० 'सोम' १.।

सोमास्त्र—पुं० [सं०] प्राचीन काल एक प्रकार का अस्त्र, जिसके अधिष्ठा देवता चन्द्रमा माने जाते थे।

सोमेश्वर—पुं० दे० 'सोमनाथ'।

सोय*—सर्व० [हिं० सो + ही, ई] वही सर्व० दे० 'सो'।

गीता' ।
ा० शोर] १. कोलाहल ।
द्धि । ख्याति ।
टा] पेड़ों की जड़ । मूल ।
[सं० सौराष्ट्र] १. गुजरात
ठियावाड़ का प्राचीन नाम ।
ी राजधानी, सूरत ।
[सं० सौराष्ट्र] पिंगल में चार
एक छंद जिसके पहले और
में ग्यारह और दूसरे तथा
में तेरह मात्राएँ होती हैं ।
के चरण को यतिस्थान से
सोरठा हो जाता है ।)
= झाड़ ।
= सोलह ।
[हिं० सोलह] १. जूआ
र सोलह चित्ती कौड़ियाँ ।
ों से खेला जानेवाला जूआ ।
[१] प्राचीन क्षत्रियों की
जिसने बहुत दिनों तक गुजरात
था ।
[सं० षोडश] गिनती में दस
। षोड़श ।
हो आने = पूरा-पूरा । सब ।
ार-पुं० दे० 'षोड़श शृंगार' ।
[देश०] एक प्रकार का झाड़
से अँगरेजी टोप बनते हैं ।
वि० [सं० स + उल्लास]
। आनंद और उत्साह से ।
दे० 'सावज' ।
[हिं० सोवना=शयन करना]
या भाव । शयन ।
दे० 'सोना' ।
[हिं० सोना (शयन) +
सोने का कमरा । शयनागार ।
दे० 'सौरी' ।
)-पुं० [रूसी] १. रूसी
मजदूरों के प्रतिनिधियों की

सभा । २. आधुनिक रूसी प्रजातंत्र, जो इन सभाओं के प्रतिनिधि चलाते हैं ।

सोवैया*-पुं० [हिं० सोवना] सोनेवाला ।

सोसन-पुं० [फा० सौसन] १. एक प्रकार का पौधा । २. इस पौधे का फूल ।

सोसनी-वि० [हिं० सोसन] सोसन के फूल के रंग का । लाली मिला पीला ।

सोसाइटी-स्त्री० [अं०] १. समाज । २. सभा । समिति ।

सोषू, सोसू-वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला । शोषक ।

सोस्मि*-पद दे० 'सोऽहम्' ।

सोहं(ग)-पद दे० 'सोऽहम्' ।

सोह†-क्रि० वि० दे० 'सौंह' ।

सोहगी-स्त्री० [हिं० सुहाग] १. ब्याह की एक रसम जिसमें तिलक के बाद वर-पक्ष से लड़की के लिए कपड़े, गहने आदि भेजे जाते हैं । २. सिंदूर, मेहँदी आदि सुहाग की सूचक वस्तुएँ ।

सोहन-वि० [सं० शोभन] [स्त्री० सोहनी] सुंदर । सुहावना ।

पुं० १. सुंदर पुरुष । २. नायक ।

पुं० एक प्रकार का पक्षी ।

सोहन पपड़ी-स्त्री०[हिं० सोहन + पपड़ी] एक प्रकार की बढ़िया मिठाई ।

सोहन हलुआ-पुं० [हिं० सोहन + अ० हलवा] एक प्रकार की बढ़िया मिठाई ।

सोहना-अ० [सं० शोभन] १. शोभित होना । सुन्दर लगना । २. रुचिकर लगना । अच्छा लगना ।

†वि० [स्त्री० सोहनी] सुंदर । मनोहर ।

सोहनी-स्त्री० [सं० शोधनी] झाड़ू ।

वि०, स्त्री० [हिं० सोहना] सुहावनी । सुंदर ।

स्त्री० एक प्रकार की रागिनी ।

सोहबत-स्त्री० [अ०] १. संग-साथ । संगत । २. स्त्री-प्रसंग । संभोग ।

सोहमस्मि-पद दे० 'सोऽहम्' ।

सोहर†-पुं० [सं० सूति गृह, प्रा० सूइहर]

बच्चा पैदा होने के समय घर में गाये जानेवाले गीत। सोहला।

स्त्री० [?] नाव का पाल खींचने या बाँधने की रस्सी।

स्त्री० दे० 'सौरी'।

सोहराना–स० दे० 'सहलाना'।

सोहला–पुं० [हिं० सोहाना] १. घर में बच्चा पैदा होने पर गाये जानेवाले गीत। २. कोई मांगलिक गीत।

वि०=सरल (सुगम)।

सोहाइन*–वि० = सुहावना।

सोहाग†–पुं० दे० 'सुहाग'।

सोहागिन–स्त्री० = सुहागिन।

सोहाना पुं० दे० 'सुहाना'।

वि० = सुहावना।

सोहारद*–पुं० दे० 'सौहार्द'।

सोहारी स्त्री० दे० 'पूरी'। (पकवान)

सोहावा*–वि० = मुहावरा।

सोहासित*–वि० [हिं० सोहाना] १. अच्छा लगनेवाला। रुचिकर। २. सुंदर।

पुं० [सं० सुभाषित] ठकुर-सुहाती। खुशामद।

सोहिं–क्रि० वि० दे० 'सौंह'।

सोहिनी–स्त्री० [हिं० सोहन] सुंदर। शोभायमान।

स्त्री० षाड़व जाति की करुण रस की एक रागिनी जो मध्य रात्रि के बाद गायी जाती है।

सोहिल*–पुं० दे० 'सुहेल' (तारा)।

सोहिला*–पुं० दे० 'सोहला'।

वि० [स्त्री० सोहिली] सरल। सहज।

सोहीं, सोहैं*–क्रि० वि० = सामने।

सौं*–स्त्री० दे० 'सौंह'। (शपथ)

अव्य० १. दे० सों'। २. दे० 'सा' (समान)।

सौंकेरा*–पुं० [सं० सकाल] सवेरे का समय।

सौंकेरे†–क्रि० वि० [हिं० सौंकेरा] १. प्रातःकाल। सवेरे। २. नियत समय से कुछ पहले या जल्दी।

सौंघा–वि० [हिं० महँगा का विरु [भाव० सौंघाई] १. अच्छा। उत्त २. ठीक। वाजिब। ३. सस्ता।

सौंघाई–स्त्री० [हिं० सौंघा] १. उत्तम अच्छाई। औचित्य। ३. सस्ता ४. अधिकता। बहुतायत।

सौंचना†–स० [सं० शौच] मल करने पर गुदा और हाथ-पैर धोना।

सौंज*–स्त्री० दे० 'सौज'।

सौंजना†–स० = सुपुर्द करना।

सौंजा†–पुं० [हिं० समझना] १. में होनेवाला समझौता। २. गुप्त होनेवाला परामर्श या स्थिर किया जाने मन्तव्य। ३. सौंपने की क्रिया या भाव।

सौंजाई*–स्त्री० [हिं० सौंज] अल करने या शोभा बढ़ानेवाली चीज। वट का समान। उदा०–जल, विद्या, धाम, रूप, गुन और सकल मिथ्या सौंज – सूर।

सौंड़†–स्त्री० [देश०] ओढ़ने की चा

सौंड़ा†–वि० [स्त्री० सौंड़ी] चौड़ा

सौंतना*–स० दे० 'सूतना'।

सौंतुख†–क्रि० वि० सामने। प्रत्यक्ष

सौंदन–स्त्री० [हिं० सौंदना] कपड़े के पहले उन्हें रेह मिले पानी में भिगो (धोबी)

सौंदना–स० [सं० संधम्] १. मिला सनना। २. मिट्टी आदि के योग से या गंदा करना।

सौंदर्य–पुं० [सं०] सुंदरता। खूबसूर

सौंध*–पुं० दे० 'सौध'।

स्त्री० दे० 'सुगंध'।

सौंधना–स० = सुगंधित करना।

सौंधा†–वि० [हिं० सोंधा] [स्त्री० सौं १. दे० 'सोंधा'। २. अच्छा लगनेवा रुचिकर। ३. मनोहर।। सुंदर।

पुं० [सं० सुगंध] सुगंध। खुश

उदा०–सौंधे के डारे लगी, अली च

हारो ।
[सं० समर्पण] १. व्यवस्था,
के लिए किसी को कुछ
करना । (एन्ट्रस्ट) १. दे०

[सं० शतपुष्पा] [वि०
छोटा पौधा जिसके बीज दवा
के काम में आते हैं ।
०, वि० दे० 'सौंफी' ।
[हिं० सौंफ] जिसमें सौंफ

योग से बनी हुई एक प्रकार

[हिं० साँवला] साँवला-
ता ।
[हिं० सँवरना] सँवारा
या ठीक किया जाना ।
ना ।
ण] स्मरण या याद करना ।
ई के सौंरियत चोर मिहिचनी
ाम ।
[हिं० सौगंध] शपथ ।

ा ।
सामने ।
[ ] एक प्रकार का हथियार
[सं० सन्मुख] सामने ।

सं० शत] गिनती में पचास
और दस । शत ।
बात की एक बात =
ोड़ ।
(समान) । उदा०—अति नव,
सी चेढव जानौ ।—रत्ना० ।
[हिं० सौत] सौत । सपत्नी ।
+एक या क (प्रत्य०)]

के लगभग । प्रायः एक सौ ।

सौकन†—स्त्री० दे० 'सौत' ।

सौकर्य-पुं० [सं] १. 'सुकर' का भाव । सुकरता । २. सुभीता ।

सौकुमार्य-पुं० [सं०] १. सुकुमारता । २. यौवन । जवानी । ३ काव्य का एक गुण जो ग्राम्य और श्रुतिकटु शब्दों का त्याग करने और सुन्दर तथा कोमल शब्दों का प्रयोग करने से उत्पन्न होता है ।

सौख*-पुं० दे० 'शौक' ।

सौख्य-पुं० [सं०] १. 'सुख' का भाव । सुखता । २. सुख । आराम ।

सौगंद(गंध)-स्त्री० [सं० सौगंध] शपथ । कसम ।

सौगंध-स्त्री० = सौगंद ।

सौगत-पुं० [सं०] १. बौद्ध धर्म । २. दे० सौगतिक' ।

सौगतिक-पु० [सं०] १. सुगत का अनुयायी । बौद्ध । नास्तिक ।

सौगात-स्त्री० [तु०] [वि० सौगाती] वह अच्छी चीज जो इष्ट-मित्रों को देने के लिए कहीं से लाई जाय । भेंट । उपहार । तोहफ़ा ।

सौघा†—वि० = सस्ता ।

सौच*-पुं० = शौच ।

सौज-स्त्री० [सं० सज्जा] १. सामग्री । समान । २. वस्तु । चीज ।

सौजना-अ०, स० = सजना ।

सौजन्य-पुं० [सं०] सुजन होने का भाव । सज्जनता । भल-मनसत ।

सौजन्यता स्त्री० = सौजन्य । (सौजन्यता, रूप अशुद्ध है ।)

सौजा-पुं० [हिं० सावज] वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाता हो ।

सौड़ा†—वि० [स्त्री० सौड़ी] = कम चौड़ा ।

सौत-स्त्री० [सं० सपत्नी] किसी स्त्री की दृष्टि से उसके पति या प्रेमी की दूसरी पत्नी या प्रेमिका । सपत्नी ।

पद-सौतिया डाह=दो सौतों में होने-

वाली डाह या ईर्ष्या।

सौतन(तिन)–स्त्री० = सौत। (सपत्नी)

सौतेला–वि० [हिं० सौत] [स्त्री० सौतेली] १. सौत से उत्पन्न। २. जिसका सम्बन्ध किसी सौत के पक्ष से हो। जैसे–सौतेला भाई = माता की सौत का लड़का।

सौत्रांतिक–पुं० [सं०] बौद्धों के हीनयान के दो प्रमुख सम्प्रदायों में से एक। (दूसरा सम्प्रदाय 'वैभाषिक' कहलाता था)

सौदा–पुं० [अ०] १ खरीदने और बेचने की चीज। माल।

यौ०–सौदा सुलुफ = खरीदने की चीजें या वस्तुएँ। कई तरह की चीजें।

२. खरीदने-बेचने या लेन-देन की बातचीत या व्यवहार। (बार्टरिंग) ३ ऐसा व्यवहार जिसमें किसी का कोई काम या हित करके उसके बदले में उससे अपना कोई काम या हित कराया जाता हो। (बारगेन)

मुहा०–सौदा करना या पटाना = बात-चीत करके लेन-देन, आदान-प्रदान आदि का कोई व्यापार या व्यवहार पक्का या स्थिर करना।

स्त्री० [फा०] [वि० सौदाई] पागलपन। (रोग)

सौदाई–पुं० [अ० सौदा] पागल।

सौदागर–पुं० [फा०] [भाव० सौदागरी] व्यापारी। व्यवसायी।

सौदागरी–स्त्री० [फा०] सौदागर का काम, पेशा, पद, व्यवहार आदि। वाणिज्य। व्यापार।

सौदामनी–स्त्री० [सं०] बिजली। विद्युत्।

सौदामिनी–स्त्री० = सौदामनी। (बिजली)

सौदा-सूत+–पुं०[अ०सौदा+सूत (अनु०)] १. क्रय-विक्रय का व्यवहार। व्यापार। रोजगार। उदा०–सुहृद् समाज दगाबाजि ही को सौदा-सूत।—तुलसी।

पुं० दे० 'सौदा-सुलुफ'।

सौदेबाजी–स्त्री० [हिं० सौदा + फा० बाजी (प्रत्य०)] खूब समझ-बूझकर को अड़कर अथवा अपने लाभ का पूरा ध्य रखकर, ठहराव, लेन-देन या व्यवहार सम्बन्ध में की जानेवाली बातचीत (बारगेनिंग)

सौध–पुं० [सं०] १. बड़ा और ऊँ मकान। प्रासाद। २. चाँदी। रजत।

सौधना–स० दे० 'सोधना'।

सौन–क्रि० वि० = सामने।

पुं० [सं० स्वर्ण] १. स्वर्ण या सोन २. सोने का सुन्दर, पीला रंग। ३.अ

सौनक–पुं० दे० 'शौनक'।

सौनजाइ–स्त्री० = सोनजूही।

सौनजुही*–स्त्री० दे० 'सोनजूही'।

सौभागिनी–स्त्री० दे० 'सुहागिन'।

सौभाग्य–पुं० [सं०] १. अच्छा भा खुशकिस्मती। २. सुख। आनन्द। ऐश्वर्य। वैभव। ४. स्त्री के सधवा की दशा। सुहाग। अहिवात।

सौभाग्यवती–वि० [सं०] (स्त्री) जि पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन।

सौभाग्यवान्–वि० = भाग्यवान्।

सौभिक्ष्य–पुं० = सुभिक्ष।

सौम*–वि० = सौम्य।

सौमन–पुं० [सं०] एक प्रकार पुराना हथियार।

सौमनस–वि० [सं०] १. सुमनों या का। २. मनोहर। सुन्दर।

पुं० प्रसन्नता। आनन्द। २. अस्त्रों व्यर्थ करनेवाला एक प्राचीन अस्त्र।

सौमनस्य–पुं० सं०] १. भलमनस २. प्रसन्नता। ३.प्रेम। प्रीति। ४.सन्तो

सौमित्र–पुं० [सं०] लक्ष्मण जो सुमि के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

सौमित्रा–स्त्री० = सुमित्रा।

सौम्य–वि० [सं०] [स्त्री० सौम्या] साम या उसके रस से सम्बन्ध रखनेवाला

चन्द्रमा से सम्बन्ध रखने-
। ३. ठंडा और शान्त । ४.
वाला । नम्र और सुशील ।
मनोहर ।
यश । २. बुध, जो चन्द्रमा
जाता है । ३. अगहन का
शीर्ष । ४. रक्त का वह पूर्व
लाल रंग का होने से पहले
(सीरम)
वि०[सं०] देखने में सुन्दर ।
पुं० [सं०] वह विज्ञान
के काम के लिए जीवों के
बनाने का विवेचन होता है ।
[सं०] १. सूर्य-सम्बन्धी । सूर्य
जगत् । २. सूर्य से उत्पन्न ।
प्रभाव से होनेवाला । (सोलर)
का उपासक । २. सूर्य वंशी ।
।
सौड़] चादर ।
=शौर्य । (शूरता)
पुं० [सं०] सूर्य और उसकी
लेवाले ग्रहों (पृथ्वी, मंगल,
शुक्र, शनि, यूरेनस आदि)
वर्ग जो आकाशचारी पिंडों
इकाई के रूप में माना जाता
सिस्टम)
पुं० [सं०] एक सूर्योदय
तक का समय ।
[सं०][वि० सौरभित] १.
। २. आम्र । आम ।
[सं०] सौरभ या सुगन्धि
त ।
[सं०] एक सौर संक्रान्ति
संक्रान्ति तक का महीना ।
[सं०] एक मेष संक्रान्ति
संक्रान्ति तक का वर्ष ।
[सं०] सुरसता ।
[सं०] [वि० सौराष्ट्रिक]

१. गुजरात-काठियावाड़ का प्राचीन नाम । सोरठ देश । २. उक्त प्रदेश का निवासी ।

सौराष्ट्रिक-वि० [सं०] सौराष्ट्र देश-सम्बन्धी । सौराष्ट्रिक ।
पुं० सौराष्ट्र देश का निवासी ।

सौरास्त्र-पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का दिव्यास्त्र ।

सौरी-स्त्री० [सं० सूतिगृह प्रा० सूइहर] वह कोठरी जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है । सूतिकागार । जच्चाखाना । (लेबर रूम)
स्त्री०[सं० शफरी] एक प्रकार की मछली ।
स्त्री० = सौड़ (चादर) ।

सौर्य-वि० [सं०] सूर्य-सम्बन्धी । सौर ।

सौवर्ण-वि० [सं०] सोने का ।
पुं० स्वर्ण । सोना । (धातु)

सौवीर-पुं० [सं०] १. सिन्धु नद के आस पास का प्राचीन प्रदेश । २. इस प्रदेश का निवासी ।

सौष्ठव-पुं० [सं०] १. 'सुष्ठु' होने का भाव । सुष्ठुता । २. सुन्दरता । सौन्दर्य ।

सौसन-पुं० दे० 'सोसन' ।

सौहँ-स्त्री० [सं० शपथ] सौगन्ध । कसम ।
क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने । आगे ।

सौहार्द(र्द्य)-पुं० [सं०] १. 'सुहृद्' होने का भाव । २. सज्जनता । ३. मित्रता ।

सौहीं*-क्रि० वि० = सामने ।

सौहृद-पुं० [सं०][भाव० सौहृद्य] १. मित्रता । दोस्ती । २. मित्र । दोस्त ।

स्कंद-पुं० [सं०] [वि० स्कंदित] १. निकलना या बाहर आना । २. विनाश । ध्वंस । ३. कार्तिकेय जो देवताओं के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं । ४. शरीर । देह ।

स्कंद गुप्त-पुं० [सं०] गुप्तवंश के एक प्रसिद्ध और प्रतापी सम्राट् । (ईसवी पाँचवी शताब्दी)

स्कंद पुराण-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पुराण जो १८ पुराणों के अन्तर्गत है ।

स्कंध-पुं० [सं०] १. कंधा। २. वृक्ष के तने का वह ऊपरी भाग जिसमें से डालियाँ निकलती हैं। कांड। ३. शाखा। डाल। ४. समूह। झुंड। ५. वह स्थान जहाँ विक्रय, उपयोग आदि के लिए बहुत सी चीजें जमा रहती हों। भंडार। (स्टॉक) ६. ग्रन्थ का वह विभाग जिसमें कोई पूरा विषय हो। ७. शरीर। देह। ८ युद्ध। लड़ाई। ९. दर्शन-शास्त्र में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

स्कंधक-पु० [सं०] वह जो विक्रय आदि के लिए बहुत सी वस्तुएँ (या स्कंध) अपने पास रखता हो। (स्टाकिस्ट)

स्कंधधारी-पु० [सं०] अपने पास किसी प्रकार की बहुत सी वस्तुएँ या उनका स्कंध रखनेवाला। (स्टॉक-होल्डर)

स्कंध-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पंजी या बही जिसमें स्कंध या भंडार में रखी हुई वस्तुओं का विवरण हो। (स्टॉक-बुक)

स्कंधपाल-पुं० [सं०] वह अधिकारी जो किसी स्कंध या भंडार की देख-रेख आदि के लिए नियत हो। (स्टॉक कीपर)

स्कंधावार-पु० [सं०] १. राजा का शिविर। २. सेना का पड़ाव। छावनी। ३. सेना।

स्कंभ-पु० [सं०] १. स्तंभ। २. ईश्वर।

स्काउट-पु० दे० 'बल-चर'।

स्कूल-पु० [अं०] [वि० स्कूली] १. विद्यालय। २. सम्प्रदाय या शाखा।

स्खलन-पुं० [सं०] [वि० स्खलित] १. चीरना-फाड़ना। २. हत्या। ३. गिरना।

स्खलित-वि० [सं०] १. गिरा हुआ। च्युत। २. लड़खड़ाया हुआ। विचलित। ३. चूका हुआ।

स्टांप-पुं० दे० 'अंक-पत्र'।

स्टीमर-पु० [अं०] भाप के जोर से चलनेवाला छोटा समुद्री जहाज।

स्टेट-पुं० [अं०] बड़ा राज्य। पुं० [अं० एस्टेट] १. बड़ी जमींदारी २. स्थावर और जंगम सम्पत्ति।

स्टेशन-पुं० [अं०] १. रेल गाड़ी के ठ का स्थान। २. किसी विशेष कार्य के सं लन के लिए नियत स्थान। आस्था (विशेष० दे० 'अवस्थान')

स्तंभ-पुं० [सं०] [वि० स्तंभित] खंभा। २. वह व्यक्ति, तत्त्व या तथ्य किसी संस्था, कार्य्य, सिद्धान्त आ आधार के रूप में हो। जैसे—आप संस्था के स्तंभ हैं। ३. समाचार प पृष्ठों, सारिणियों आदि में खड़े बल क विभाग जिसमें ऊपर से नीचे तक विशेष बातें, अंक आदि होते हैं। ४. चार-पत्रों में उक्त प्रकार के विभागों क वर्ग जिसमें किसी विशेष विषय का पादन या निरूपण होता है। जैसे—स कीय स्तंभ, स्थानिक स्तंभ आदि। (का उक्त सभी अर्थों के लिए) ५. पेड़ तना। ६. साहित्य में किसी कारण घटना (जैसे—हर्ष, लज्जा, भय, श्रम अ से अंगों का बिलकुल शिथिल हो जाना सात्विक भावों में माना गया है जड़ता। अचलता। ८. प्रतिबंध। रुक ९. तंत्र में किसी शक्ति को रोकने प्रयोग।

स्तंभक-वि० [सं०] १. रोकनेवा रोधक। २. मल रोकने या कब्ज वाला। ३. संभोग के समय वीर्य जल्दी स्खलित होने से रोकनेवा (औषध)

स्तंभन-पुं० [सं०] १. रोकने की या भाव। रुकावट। अवरोध। २. आदि को स्खलित होने या मल को बाहर निकलने से रोकना। ३. वीर्य रोकने की दवा। ४. जड़ या नि करना। जड़ीकरण। ५. किसी की

रोकनेवाला तांत्रिक प्रयोग।
पाँच वायों में से एक।
[सं०] १. जो जड़ और
हो। निस्तब्ध। सुन्न।
रोका हुआ। अवरुद्ध। ३.

] स्त्रियों या मादा पशुओं
जिसमें दूध रहता है। छाती।
[सं०] [वि० स्तनित्]
गरजना। २. ध्वनि या शब्द
गर्जनाद।
[सं०] स्तन में मुँह लगा-
दूध पीना।
[सं०] वे जन्तु या जीव
पर अपनी माता का दूध
है। (मैमल) जैसे-मनुष्य,

[सं०] गले में पहनने का
हार।
[सं०] १.बादल की गरज।
कड़क। ३. ताली बजाने

या शब्द करता हुआ।
[सं०] स्तन सम्बन्धी।

[सं०] [भाव० स्तब्धता]
या निश्चेष्ट हो गया हो।
दृढ़। पक्का। ३ मन्द। धीमा।
[सं०] १. 'स्तब्ध' होने
भाव। २. जड़ता। ३.
४. सन्नाटा।
सं०] १. एक दूसरी के ऊपर
हुई तह। परत। २. भूमि
प्रकार का विभाग जो भिन्न-
बनी हुई उसकी तहों के
गया है। (स्ट्रेटा)
सं०] [वि० स्तीर्ण] फैलाने
काम।

स्तरीभूत-वि० [सं०] जो जमकर स्तर के रूप में हो गया हो। (स्ट्रेटिफायड)

स्तव-पुं० [सं०] १. (पद्य के रूप में) देवता आदि का स्वरूप वर्णन या गुणगान। स्तोत्र। २. स्तुति। प्रशंसा।

स्तवक-पुं० [सं०] १. स्तव या स्तुति करनेवाला। २.फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। ३. समूह। झुंड। ४. राशि। ढेर। ५. पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।

स्तवन-पुं० [सं०] स्तव या स्तुति करना।

स्तिमित-वि० [सं०] १. ठहरा हुआ। निश्चल। २. भींगा हुआ। गीला। तर।

स्तीर्ण-वि० [सं०] १. दूर तक फैला हुआ। विस्तृत। २. इधर उधर बिखरा या छितराया हुआ। विकीर्ण।

स्तुत-वि०[सं०] जिसकी स्तुति की गई हो।

स्तुति-स्त्री०[सं०] [वि०स्तुत्य] १.किसी के गुणों का वर्णन। प्रशंसा। बड़ाई। २.स्तव।

स्तुत्य-वि० [सं०] स्तुति या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय।

स्तूप-पुं० [सं०] १. मिट्टी, पत्थर आदि का ऊँचा ढूह। टीला। २. वह ढूह या टीला जो भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति-चिह्नों को सुरक्षित रखने के लिए उनके ऊपर बनाया गया हो। ३. ऊँचा ढेर।

स्तेन-पुं० [सं०] १. चोर। २. चोरी।

स्तेय-पुं० [सं०] चोरी।

स्तैन्य-पुं० [सं०] चोरी।

स्तोता-वि०[सं०स्तोतृ] स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र-पुं० [सं०] १. देवता आदि का पद्यात्मक गुण-गान। २. स्तव। स्तुति। (साम)

स्तोम-पुं० [सं०] १. स्तुति। स्तव। २. यज्ञ। ३. समूह। झुंड। ४. राशि। ढेर।

स्त्री-स्त्री० [सं०] [भाव० स्त्रीत्व, वि० स्त्रैण] १. मनुष्य जाति के जीवों के दो भेदों में से एक जो अपनी सुन्दरता, कोम-

लता आदि के लिए प्रसिद्ध है और जिसका काम गर्भ धारण करके सन्तान उत्पन्न करना है। 'पुरुष' का उल्टा। नारी। औरत। २. पत्नी। जोरू। ३. किसी जीव-जन्तु की मादा। 'पुरुष' या 'नर' का उल्टा। स्त्री० दे० 'इस्तरी'।

स्त्रीत्व–पुं० [सं०] १. 'स्त्री' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। औरतपन। २. गुण, धर्म आदि के विचार से स्त्रियों का-सा होने का भाव। जनानापन। ३. शब्दों के अन्त में लगनेवाला स्त्री-लिंग का सूचक प्रत्यय। (व्याकरण)

स्त्री-धन–पुं० [सं०] स्त्री को उसके मैके या ससुराल से मिला हुआ वह धन जिसपर उसका एकान्त रूप से पूरा अधिकार रहता है और जो परिवार के लोगों में बँट नहीं सकता।

स्त्री-धर्म–पुं० [सं०] स्त्री का रजस्वला होना। मासिक धर्म।

स्त्री-प्रसंग–पुं० [सं०] मैथुन। संभोग।

स्त्री-लिंग–पु० [सं०] हिन्दी व्याकरण में दो लिंगों में से एक जो स्त्री-जाति का अथवा किसी शब्द के अल्पार्थक रूप का वाचक होता है। (फेमिनिन) जैसे-'लड़का' का स्त्री-ज़िग 'लड़की' या 'छुरा' का स्त्री-लिंग 'छुरी' है।

स्त्री-व्रत–पुं० दे० 'पत्नी व्रत'।

स्त्री-समागम–पुं० = स्त्री-प्रसंग।

स्त्रैण–वि० [सं०] १. स्त्री-संबंधी। स्त्रियों का। २. स्त्रियों का-सा। स्त्रियों की तरह का। ३. स्त्री या पत्नी के वश में रहनेवाला। स्त्री-रत (पुरुष)। ४. सदा स्त्रियों की मंडली में रहने की प्रवृत्ति रखनेवाला।

स्थ-प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर ये अर्थ देता है—(क) स्थित। जैसे—तटस्थ। (ख) उपस्थित। वर्त्तमान। जैसे—कंठस्थ। (ग) रहनेवाला। जैसे—काशीस्थ। (घ) लीन। रत। मग्न। जैसे—ध्यानस्थ।

स्थगन–पुं० [सं०] १. छिपाना। सभा की बैठक, बात की सुनवाई अ और कोई चलता हुआ काम कुछ स के लिए रोक देना। (एडजोर्नमेन्ट) विचार आदि के लिए कुछ समय रोकना। (सस्पेन्शन)

स्थगनक–वि० [सं०] स्थगन-सम्बन् स्थगन का।

स्थगनक प्रस्ताव–पुं० [सं०] वह प्र जो विधायिकाओं आदिमें यह कहकर स्थित किया जाता है कि और काम छो पहले इसपर विचार होना चाहि (एडजर्नमेन्ट मोशन)

स्थगित–वि० [सं०] १. ढका हु आच्छादित। २. ठहराया या रोका हु (स्टेड) ३. जो कुछ समय के लिए दिया गया हो। मुलतवी। (एडजोर्न

स्थल–पुं० [सं०] [वि० स्थलीय भूमि। जमीन। २. जल से रहित भू खुश्की। (लैण्ड) ३. स्थान। ज (प्लेस) ४. कोई ऐसी जगह जहाँ विशेष बात, रचना आदि हो या हो हो। (साइट) ५. अवसर। मौका

स्थल-कमल–पुं० [सं०] स्थल के वाला कमल के आकार का एक का फूल।

स्थल-चर–वि० [सं०] स्थल में या विचरण करनेवाला।

स्थल-चारी–वि० = स्थल-चर।

स्थलज–वि० [सं०] स्थल में उ होनेवाला।

स्थल-डमरूमध्य–पुं० [सं०] दाहिने बायें पानी से घिरा हुआ स्थल का लम्बा भाग जो दोनों ओर के दो बड़े के बीच में हो और उन्हें मिलाता (स्थमस)

स्थल-पद्म–पुं० दे० 'स्थल-कमल'।

[सं०] स्थल या भू भाग
युद्ध । मैदान की लड़ाई ।
स्त्री० [सं०] स्थल या जमीन
फ़ौज । पैदल सिपाही और
। (आर्मी)
पुं० [सं०] किसी स्थल
। (साइट प्लान)
[सं०] १. जमीन । भूमि ।
जगह ।
[सं०] १. स्थल या भूमि
रहनेवाला । स्थल का । २. दे०

स्थायी । (अशुद्ध अव्वरी)
[सं०] १. खंभा । २. पेड़
तना जिसके ऊपर की डालियाँ
। ठूठ । ३. शिव । वि०
।
-पुं० [सं०] पुरातत्त्व के क्षेत्र
ओं या स्थान-देवताओं की
सामूहिक नाम जो प्रायः
पत्थर आदि के लंबे खड़े
में पाई जाती हैं । (वर्टिकल

[सं०] [वि० स्थानिक, स्था-
स्थिति । ठहराव । २. खुला
। जमीन । मैदान । ३.
परिमित स्थितिवाला वह भू-
कोई बस्ती, प्राकृतिक रचना
बात हो । जगह । स्थल ।
—वहीं देखने योग्य अनेक
रहने की जगह । (मकान,
सेवा या लोकोपकार आदि
की जगह । पद । ओहदा ।
बैठने का वह विशिष्ट स्थान
अथवा प्रतिनिधित्व करने-
लिए व्यासिद्ध होता है । ७.
या इसी प्रकार का और
। ८. अवसर । मौका ।

स्थान-च्युत(भ्रष्ट)-वि० [सं०] [भाव० स्थान-च्युति] जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो ।

स्थान-देवता-पुं० [सं०] किसी स्थान (गाँव, जंगल, पहाड़ी आदि) का अधिष्ठाता माना जानेवाला वह देवता जिसकी पूजा उस स्थान के आस-पास रहनेवाले लोग करते हैं ।

स्थानांतर-पुं० [सं०] प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न या दूसरा स्थान ।

स्थानांतरण-पुं० [सं०] [वि० स्थानांतरित] १. किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर पहुँचाना, रखना या भेजना । (रिमूवल) २. दे० 'अंतरण' ।

स्थानांतरित-वि० [सं०] जो अपने पहले स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर कर, रख या भेज दिया गया हो ।

स्थानापन्न-वि० [सं०] १. किसी के न रहने पर उसके स्थान पर बैठनेवाला । २. किसी कर्मचारी के कुछ दिनों के लिए कहीं चले जाने पर उसकी जगह काम करनेवाला । एवजी । (ऑफिशिएटिंग)

स्थानिक-वि० [सं०] १. उस स्थान का, जिसके विषय में कोई उल्लेख या चर्चा हो । २. उस स्थान का जहाँ से कोई बात कही जाय । (लोकल)

स्थानिक अधिकरण्य-पुं० [सं०] किसी विशेष स्थान पर रहनेवाले अधिकारियों का समूह, वर्ग या निकाय । (लोकल ऑथॉरिटी)

स्थानिक कर-पुं० [सं०] किसी स्थान विशेष पर लगनेवाला कर । (लोकल टैक्स)

स्थानिक परिषद्-स्त्री० [सं०] किसी बस्ती के निवासियों के प्रतिनिधियों की वह परिषद् या सभा जिसपर वहाँ के कुछ विशिष्ट लोक-हित संबंधी सार्वजनिक कार्यों का भार हो । (लोकल बोर्ड)

स्थानिक स्वराज्य-पुं० दे० 'स्थानिक

स्व शासन'।

स्थानिक स्व-शासन–पुं० [सं०] किसी देश या प्रान्त के भिन्न-भिन्न नगरों आदि को अपना शासन और व्यवस्था करने के लिए मिला हुआ अधिकार; अथवा ऐसे अधिकार के अनुसार अपना शासन आप करने की स्वतंत्रता और प्रणाली। (लोकल सेल्फ-गवनमेन्ट)

स्थानीय–वि० = स्थानिक।

स्थानीयकरण–पुं० [सं०] चारो ओर फैली हुई बहुत सी शक्तियों, वस्तुओं, उपद्रवों आदि को घेर या लाकर किसी एक स्थान पर एकत्र करना। (लोकलाइजेशन)

स्थापक–वि० [सं०] १. स्थापन करनेवाला। २. मूर्ति बनानेवाला। ३. नाटक में सूत्रधार का सहकारी। ४. दे० 'संस्थापक'।

स्थापत्य–पुं० [सं०] १. वह विद्या जिसमें मकान, पुल आदि बनाने के सिद्धांतों और प्रणालियों का विवेचन होता है। वास्तु शास्त्र। २. चार उपवेदों में से एक जिसमें उक्त विषय (वास्तु-शास्त्र) का विवेचन है।

स्थापन–पुं० [सं०] [वि० स्थापनीय, स्थापित, कर्त्ता स्थापक] १. दृढ़तापूर्वक जमाना, रखना या बैठाना। जैसे–वृक्ष या देवता का स्थापन। २. दृढ़ या पुष्ट आधार पर स्थित करना। स्थायी रूप देना। ३. कोई नई संख्या या व्यापरिक कार-बार खड़ा करना। ४. प्रमाण आदि के द्वारा ठीक सिद्ध करते हुए कोई विषय सामने रखना। निरूपण। प्रतिपादन। (इस्टैब्लिशमेन्ट; उक्त सभी अर्थों के लिए) ५. किसी को किसी पद पर काम करने के लिए लगाना या नियत करना। (पोस्टिंग)

स्थापना–स्त्री० दे० 'स्थापन'।

*स० = स्थापित करना।

स्थापित–वि० [सं०] जिसका स्थापन हुआ हो। (एस्टैब्लिश्ड) विशेष दे० 'स्थापन'।

स्थायित्व–पुं० [सं०] १. 'स्थायी' होने की अवस्था, गुण, धर्म, या भाव। किसी वस्तु विशेषतः सेवा या नौकरी के आदि पर होनेवाला ऐसा अधिकार जो विशिष्ट नियमों के अनुसार सुरक्षित नियत काल के लिए स्थायी हो। (टेन्यो

स्थायी–वि० [सं०] [भाव० स्थायि १. बराबर बना रहने या काम करनेवा सदा स्थिर रहनेवाला। (परमानेन्ट) २. दिनों तक चलनेवाला। टिकाऊ।

पुं० सगीत में किसी गीत का पहला टेक। (दूसरा पद अंतरा कहलाता है

स्थायी-करण–पुं० [सं०] [वि० स् कृत] १. किसी वस्तु, कार्य या बा स्थायी रूप देना। २. किसी पद पर अ- रूप से अथवा परीक्षण के रूप में काम वाले व्यक्ति को उस पद पर स्थायी रूप से करना। ३. उक्त कार्य के लिए दी वाली आज्ञा या स्वीकृति। (कन्फर्मे

स्थायी कोष–पुं० [सं०] किसी आदि का वह कोष या धन राशि जो स्थायी रूप से बनाये रखने के लिए क्रम से बराबर संचित होती रहती है और वि उपयोग उस संस्था को पुष्ट रूप देने स्थायी बनाये रखने में होता है।

स्थायीनिधि–स्त्री० [सं०] १. वह जो कोई काम चलाये चलने के स्थापित की गई हो और जिसके ब्याज से वह काम चलता हो। २. स्थायी क (एन्डाउमेन्ट)

स्थायी-भाव–पुं० [सं०] साहित्य मूल तत्त्व या भाव जो मूलतः मनुष्यों के में प्रायः सदा निहित रहते और कुछ वि अवसरों पर अथवा कुछ विशिष्ट कार स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। जैसे– हर्ष या उससे उत्पन्न होनेवाला, खेद, दुःख, शोक, भय, वैराग्य आ इन्हीं तत्त्वों या भावों के आधार पर शा के ये नौ रस स्थिर हुए हैं–शृंगार,

वीर, भयानक, वीभत्स और
रसों से मूल तथा स्थायी रूप
वाले भाव स्थायी कहलाते हैं।
ति-स्त्री० [सं०] १. वह
यी रूप से बनी रहकर काम
ए नियुक्त की गई हो। २.
या महासभा आदि की वह
उस सम्मेलन या महासभा के
शन तक सब कार्यों की व्य-
र चुनी जाती है। (स्टैंडिंग

[सं०] १. हंडी। हँड़िया।
रिकाबी।
क न्याय-पुं० [सं०] (हाँडी
चावल देखकर, अर्थात्) कोई
कर उसके संबंध की या उस
र बातें जान लेना।
[सं०] १. अचल। स्थिर।
स्थान से हट न सके। 'जंगम'
अचल। गैरमनकूला। (इम्मू
उक्त प्रकार के पदार्थों से उत्पन्न
रखनेवाला। जैसे—स्थावर

-पुं० [सं०] वह विष जो
में या उनके साथ पाया जाता
या।
त्ति-स्त्री० [सं०] वह सम्पत्ति
न पर दृढ़तापूर्वक लगी या
वहाँ से हटाई न जा सकती
ति। (रियल एस्टेट)
[सं०] [भाव० स्थिति] १.
ठहरा या टिका हुआ। २.
आसीन। ३. उपस्थित।

[सं०] [वि० स्थित] १.
क्रिया या भाव। रहना या
न अस्तित्व। २. एक
एक ही रूप में बना रहना। ३. आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियों से प्रायः होनेवाली अवस्था। जैसे—आजकल उनकी स्थिति अच्छी नहीं है। दशा। हालत। ४. पद, मर्यादा आदि के विचार से समाज में किसी को प्राप्त होनेवाला स्थान। (पोजीशन) ५. किसी व्यक्ति, संस्था आदि की वह विधिक स्थिति जो उसे अपने क्षेत्र में कुछ निश्चित सीमा में प्राप्त होती है और जो उसकी मर्यादा, पद, सम्मान आदि की सूचक होती है। (स्टेटस) ६. वे बातें जो कोई पक्ष अपने वक्तव्य, अभियोग, आरोप आदि के संबंध में कहता या उपस्थित करता है। (केस) जैसे—इस विषय में मैं अपनी स्थिति आपको बतला चुका हूँ।

स्थितिक—वि० [सं०] एक ही स्थान या रूप में ठहरा या बना रहनेवाला। स्थिर। (स्टैटिक)

स्थिति-प्रज्ञ—वि० [सं०] १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २. सब प्रकार के मनोविकारों से रहित और आत्म में ही सन्तुष्ट तथा सदा प्रसन्न रहनेवाला।

स्थिति-स्थापक—वि० [सं०] [भाव० स्थिति-स्थापकता] दाब हट जाने पर फिर ज्यों का त्यों हो जानेवाला। लचीला।

स्थिर—वि० [सं०] [भाव० स्थिरता] १. एक ही स्थिति में रहने या ठहरनेवाला। निश्चल। २. सदा ज्यों का त्यों बना रहनेवाला। स्थायी। (स्टैबल) ३. निश्चय के रूप में लाया हुआ। निश्चित। ४. उद्वेग, चंचलता आदि से रहित। शान्त।

स्थिर-चित्त—वि० [सं०] १. जो अपने विचारों आदि पर स्थिर या दृढ़ रहता हो। दृढ़-चित्त। २. जिसके मन में किसी प्रकार की विफलता उद्वेग, घबराहट आदि न हो।

स्थिरता—स्त्री० [सं०] १. स्थिर होने का भाव, धर्म, गुण या दशा। निश्चलता। २. दृढ़ता। (स्टैबिलिटी)

स्थिर-बुद्धि—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि

स्थिर या ठिकाने हो। जो अच्छी तरह और उचित रूप में सब बातें सोच-समझ सकता हो।

स्थिरीकरण–पुं० [सं०] घटती-बढ़ती रहनेवाली वस्तुओं का स्वरूप या मानक स्थिर करना। (स्टैबिलाइजेशन) जैसे–मूल्य या भाव का स्थिरीकरण।

स्थूल–वि० [सं०] [भाव० स्थूलता] १. मोटा। २. तुरन्त या बिना परिश्रम के समझ में आनेवाला। 'सूक्ष्म' का विरु०। ३. मोटे हिसाब से अनुमान किया या ध्यान में आया हुआ। ४. अभी जिसमें से लागत, व्यय आदि न निकाला गया हो। 'पक्का' का विरु०। (ग्रॉस) जैसे–स्थूल आय।

स्थूल आय–स्त्री० [सं०] वह सारी आय जिसमें से लागत या परिव्यय निकाला न गया हो। (ग्रॉस इन्कम)।

स्थूलता–स्त्री० [सं०] १. 'स्थूल' का गुण, भाव या धर्म। २. मोटापन। मोटाई।

स्थैर्य–पुं० = स्थिरता।

स्नात–वि० [सं०] [स्त्री० स्नाता] १. नहाया हुआ। २. जिसके सब अंगों पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ा हो। जैसे–चन्द्रिका से स्नात उद्यान।

स्नातक–पुं० [सं०] १. वह जिसने विद्या का अध्ययन और ब्रह्मचर्यव्रत समाप्त कर लिया हो। २. वह जिसने किसी विश्व-विद्यालय की कोई परीक्षा पारित की हो। (ग्रैजुयेट)

स्नान–पुं० [सं०] [वि० स्नात] १. स्वच्छ या शीतल करने के लिए सारा शरीर जल से धोना या जल-राशि में प्रवेश करना। नहाना। २. धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना, लेटना या होना कि सारे शरीर पर उसका पूरा प्रभाव पड़े। जैसे–वायु-स्नान, आतप-स्नान। ३. इस प्रकार किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का पड़नेवाला प्रभाव या प्रसार जैसे–चंद्रमा की चाँदनी में पृथ्वी का स्नान।

स्नानागार–पुं० [सं०] स्नान करने कमरा या कोठरी।

स्नायविक–वि० [सं०] स्नायु-संबंधी

स्नायु–स्त्री० [सं०] [वि० स्नायविक] सारे शरीर में फैला हुआ बहुत सूक्ष्म का वह जाल जिससे स्पर्श, शीत, वेदना आदि की अनुभूति होती है। (न

स्निग्ध–वि० [सं०][भाव० स्निग्धत १. जिसमें स्नेह या प्रेम हो। २. जि स्नेह या तेल हो या लगा हो। चिकना

स्निग्धता–स्त्री० [सं०] १. 'स्निग्ध' भाव, गुण या धर्म। २. चिकनापन।

स्नेह–पुं० [सं०] [वि० स्नेही] १. प्यार। मुहब्बत। २. चिकना पदार्थ, षतः तेल।

स्नेह-पात्र–पुं० [सं०] वह जिसके स्नेह किया जाय।

स्नेह-पान–पुं० [सं०] वैद्यक के के अनुसार कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, आदि पीने की प्रक्रिया।

स्नेही–पुं० [सं० स्नेहिन्] वह जिसके स्नेह या प्रेम हो। प्रेमी।

स्पंद–पुं० [सं०] [वि० स्पंदित धीरे-धीरे हिलना या काँपना। २. स्पंद क्रिया में होनेवाला हलका आघात फड़क। (पल्स)। विशेष दे० 'स्पं

स्पंदन–पुं० [सं०] [वि० स्पंदित रह-रहकर धीरे-धीरे हिलना या काँ २. जीवों के शरीर में रक्त के प्र संचार के कारण कुछ रुक-रुककर वाली वह लपक गति जो हृदय के फूलने और संकुचित होने से आघा खटक के रूप में उत्पन्न होती है। ३. नाड़ी या हृदय का स्पंदन। क्षेत्रों में किसी प्रक्रिया से होनेवाला प्रकार का व्यापार या स्थिति। (पल्सेशन)

[सं०] हिलता, काँपता या
।
[सं०] [वि० स्पर्द्धित] १.
आदि में किसी से होनेवाली
सामर्थ्य या योग्यता से अधिक
ने की इच्छा। ३. किसी में
बात देखकर सद्भावपूर्वक उसके
की कामना। (एम्यूलेशन)
[सं० स्पर्द्धिन्] स्पर्द्धा करनेवाला।
दे० 'स्पर्द्धा'।
[सं०] [वि० स्पृष्ट] १.
गुण जिससे छूने, दबने आदि
होता है। २. एक वस्तु के
री वस्तु के तल से सटना या
) ३. व्याकरण के उच्चारण
र के आभ्यंतर प्रयत्नों में से
उच्चारण करते समय वागि-
र बंद-सा हो जाता है। ('क'
के व्यंजनों का उच्चारण इसी
ता है।) ४. ग्रहण के समय
चंद्रमा पर छाया पड़ने लगना।
वि० [सं०] १. स्पर्श से
. दे० 'संक्रामक'।
पुं० [सं०] पारस पत्थर।
स्त्री० [सं०] ज्यामिति में, वह
जो किसी वृत्त को किसी एक विन्दु
ती हुई (बिना उस वृत्त को
) एक ओरसे दूसरी ओर
है। (टैन्जेन्ट)
[सं०] [स्त्री० स्पर्शिनी]
या छूनेवाला।
स्त्री० [सं०] त्वचा। चमड़ा।
[सं०] [भाव० स्पष्टता] १.
देने या समझ में आ नेवाला।
) २. जिसके संबंध में कोई
ह न हो। (क्लियर)
वि० [सं०] स्पष्ट रूप
।

स्पष्टवक्ता–पुं० [सं०] वह जो बिना किसी संकोच या भय के स्पष्ट या साफ बातें कहने का अभ्यस्त हो।

स्पष्टवादी–पुं० = स्पष्टवक्ता।

स्पष्टीकरण–पुं० [सं०] १. कोई बात इस प्रकार स्पष्ट या साफ करना कि उसके संबंध में कोई भ्रम न रहे। (एल्यूसिडेशन) २. जो बात स्पष्ट होने से रह गई हो, उसे इस प्रकार स्पष्ट करना कि औरों का भ्रम दूर हो जाय। (क्लैरिफिकेशन) ३. किसी अपने किए हुए कार्य के विषय में आपत्ति होने पर यह बतलाना कि किन कारणों से यह काम इस रूप में किया गया है। विवृत्ति। व्याख्या। (एक्सप्लेनेशन)

स्पृश्य–वि० [सं०] स्पर्श करने के योग्य। छूने लायक।

स्पृष्ट–वि० [सं०] जिसका या जिससे स्पर्श हुआ हो। छूआ हुआ।
पुं० व्याकरण में वर्णों के उचारण का वह प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे को छू लेते हैं। (जैसे-प या म में)

स्पृहणीय–वि० [सं०] जिसकी स्पृहा या कामना करना उचित या योग्य हो। बहुत अच्छा।

स्पृहा–स्त्री० [सं०] [वि० स्पृहणीय] इच्छा। कामना।

स्फटिक–पुं० [सं०] १. एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर जो देखने में प्रायः बरफ के टुकड़े की तरह होता है। २. उक्त प्रकार के पत्थर की तरह बनाया हुआ एक प्रकार का शीशा जिसमें पारदर्शिता अपेक्षाकृत अधिक होती है। (क्रिस्टल; उक्त दोनों अर्थों के लिए) ३. शीशा। काँच।

स्फटिकीकरण–पुं० [सं०] ऐसा कार्य या प्रक्रिया करना जिससे कोई वस्तु स्फटिक का रूप धारण करे। (क्रिस्टलाइजेशन)

स्फार–वि० [सं०] १. प्रचुर। विपुल। बहुत अधिक। २. विकट। ३. जो फैल

या फूल कर बड़ा हो गया हो। उदा०—मोगरा कर्ण-फूल सा स्फार।—पन्त।

स्फीत—वि० [सं०] [भाव० स्फीति] १. बढ़ा हुआ। वर्द्धित। २. फूला या उभरा हुआ। जैसे—गर्व से स्फीत वक्ष-स्थल। ३. समृद्ध। संपन्न।

स्फीति—स्त्री० [सं०] [वि० स्फीत] १. कुछ विशिष्ट कारणों से अस्वाभाविक या कृत्रिम रूप में बढ़ना या फूलना। (इन्फ्लेशन) २. दे० 'मुद्रा स्फीति'।

स्फुट—वि० [सं०] १. दिखाई देनेवाला। व्यक्त। २. खिला हुआ। विकसित।

स्फुटन—पुं० [सं०] १. सामने आना। २. (फूल का) खिलना या फूलना। ३. फूटना।

स्फुटित—वि० [सं०] खिला हुआ।

स्फुरण—पुं० [सं०] [वि० स्फुरित] १. कुछ कुछ हिलना। २. (अंग का) फड़कना।

स्फुरति*—स्त्री० = स्फूर्ति।

स्फुलिंग—पुं० [सं०] चिनगारी।

स्फूर्ति—स्त्री० [सं०] १. धीरे-धीरे हिलना। २. फड़कना। ३. किसी काम के लिए मन में होनेवाला उत्साह। ४. फुरती। तेजी।

स्फोट (न)—पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का अपने ऊपरी आवरण को फाड़कर वेगपूर्वक बाहर निकलना। फूटना। जैसे—ज्वालामुखी का स्फोट। २. फोड़ा, फुन्सी आदि।

स्मर—पुं० [सं०] कामदेव।

स्मरण—पुं० [सं०] [वि० स्मृत, स्मरणीय] १. किसी देखी, सुनी या बीती हुई बात का मन में ध्यान रहना या फिर से याद आना। २. नौ प्रकार की भक्तियों में से वह जिसमें उपासक अपने देवता को बराबर याद करता रहता है। ३. साहित्य में एक अलंकार जिसमें पहले की देखी हुई कोई वस्तु या सुनी हुई कोई बात के समान कोई दूसरी वस्तु देखने या दूसरी बात सुनने पर उस पहली वस्तु या बात का ध्यान आने का उल्लेख होता है। इसे 'स्मृति' भी कहते हैं। जैसे—चन्द्रमा को देखते ही मुख का स्मरण हो आता है।

स्मरणपत्र—पुं० [सं०] १. किसी वे कोई बात याद दिलाने के लिए लिख जानेवाला पत्र। (रिमाइन्डर) २. दे 'स्मृति-पत्र'।

स्मरण-शक्ति—स्त्री० [सं०] वह मानसि शक्ति जिससे बातें स्मरण या याद रहती हैं (मेमरी)

स्मरणीय—वि० [सं०] याद रखने योग्य

स्मरना*—स० [सं० स्मरण] स्मरण याद करना।

स्मर्ण*—पुं० = स्मरण।

स्मर्य—वि० [सं०] स्मरण या याद रखने योग्य

स्मर्यमाण—वि० [सं०] स्मरण करानेवाला याद दिलानेवाला।

स्मशान—पुं० = श्मशान।

स्मारक—वि० [सं०] स्मरण करनेवाला पुं० १. वह कार्य, पदार्थ या रचना किसी की स्मृति बनाये रखने के लिए हो यादगार। (मेमोरियल) २. वह ची जो किसी को अपना स्मरण बनाये रख के लिए दी जाय। यादगार। ३. वह प जो किसी बड़े आदमी को कुछ बातों व स्मरण कराने या कुछ बातें स्मरण रख के लिए दिया जाय। (मेमोरियल) ४. दे 'स्मारिका'।

स्मारिका—स्त्री० [सं० स्मारक] वह प जो किसी के पास उसे कार्य, वचन आदि का स्मरण कराने के लिए भेजा जाय स्मरणपत्र। (रिमाइंडर)

स्मार्त्त—पुं० [सं०] वह जो स्मृतियों क अनुयायी हो।

वि० स्मृति-सम्बन्धी। स्मृति का।

स्मित—पुं० [सं०] धीमी हँसी। मुस्कराहट।

त हुआ। २. मुस्कराता हुआ।
दे० 'स्मित'।
[सं०] जिसका स्मरण हो।
हुआ।
[सं०] [वि० स्मृत] १.
स्मरण-शक्ति के द्वारा एकत्र
है। याद। (मेमरी) २.
(क) किसी पुरानी या भूली हुई
के याद आना जो एक संचारी
ना है; (ख) प्रिय के सम्बन्ध
सुनी हुई बातें रह-रहकर याद
पूर्व-राग की दस दशाओं में से
धर्म, दर्शन, आचार व्यवहार,
न्ध रखनेवाले हिन्दू धर्म-शास्त्र
ना ऋषि-मुनियों ने वेदों का
चिन्तन करके की थी। ४.
क अलंकार का दूसरा नाम।
'स्मरण' ३.।
-पुं० [सं०] वह चित्र जो
या घटना आदि की सामान्य
आधार पर बनाया जाय और
की अपेक्षा रूप या दृश्य आदि
ता हो।
पुं० [सं०] १. वह पत्र,
दि जिसमें किसी विषय की कुछ
बातें स्मरण रखने या कराने
ने एकत्र की गई हों। २. किसी
के मुख्य-मुख्य नियमों आदि
। (मेमोरेन्डम)
[सं०] रथ, विशेषतः युद्ध का।
[सं०] एक मणि जिसकी
कलंक श्रीकृष्ण पर लगा था।
[सं०] कदाचित्। शायद।
पुं० [सं०] जैन दर्शन जिसमें
है कि स्यात् ऐसा है, स्यात्

[हिं० सयाना + पन(प्रत्य०)]
बुद्धिमानी। २. चालाकी।

स्याना-वि० [सं० सज्ञान] [स्त्री० स्यानी] १. चतुर। बुद्धिमान। होशियार। २. चालाक। धूर्त्त। ३. वयस्क। बालिग।

पुं० १. बड़ा-बूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २. झाड़-फूँक करनेवाला ओझा। ३. चिकित्सक।

स्यापा-पुं० [फा० स्याहपोश] मरे हुए व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों का प्रतिदिन एकत्र होकर शोक करना।

मुहा०-स्यापा पड़ना = (क) रोना-चिल्लाना मचना। (ख) बिलकुल उजाड़ या सुनसान हो जाना। (किसी स्थान का)

स्याम*-पुं० वि० दे० 'श्याम'।

पुं० [सं० श्याम] भारत और बर्मा के पूर्व का एक देश।

स्यामी-वि० [हिं० स्याम] स्याम देश का।

पुं० स्याम देश का निवासी।

स्त्री० स्याम देश की भाषा।

स्यार-पुं० दे० 'गीदड़'।

स्यावज*-पुं० दे० 'सावज'।

स्याह-वि० [फा०] कृष्ण वर्ण का। काला।

पुं० घोड़े की एक जाति।

स्याह-कलम-पुं० [फा०] मुगल चित्र-शैली के एक प्रकार के बिना रंग भरे रेखा-चित्र जिनमें एक-एक बाल तक अलग-अलग दिखाया जाता है और होठों, आँखों और हथेलियों में नाम मात्र की और बहुत हलकी रंगत रहती है।

स्याहा-पुं० दे० 'सियाहा'।

स्याही-स्त्री० [फा०] १. वह प्रसिद्ध रंगीन तरल अथवा कुछ गाढ़ा पदार्थ जो लिखने या कपड़े, कागज आदि छापने के काम में आता है। रोशनाई। २. कालापन। कालिमा। ३. कालिख। कलौंछ।

†स्त्री० दे० 'साही'।

स्यों*-अव्य० दे० 'स्यौं'।

स्यौं (ं)*-अव्य० [सं० सह] १. साथ।

सहित। २. निकट। पास। उदा०—स्यौं बिजुरी मनु मेंह आनि इहाँ बिरहा धरे।—बिहारी।

स्रक्–उभय० [सं०] फूलों की माला। हार।

स्रग–उभय० = स्रक्।

स्रग्धरा–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भ, र, भ, न, प, य, और य होता है।

स्रग्विणी–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में र, र, र, और र होता है।

स्रजना*–स० दे० 'सृजना'।

स्रद्धा*–स्त्री० = श्रद्धा।

स्रम*–पुं० = श्रम।

स्रमना*–अ० [सं० श्रम + ना (प्रत्य०)] १. श्रम या परिश्रम करना। २. थकना। उदा०—सूखे से, स्रमे से, सकबके से, थके, भूले, से, भ्रमे से, भभरे से, भकुवाने से।—रत्ना०।

स्रवण–पुं० [सं०] [वि० स्रवणीय, स्रुत] १. बहने की क्रिया या भाव। बहाव। प्रवाह। २. गर्भ का समय से पहले गिरना। गर्भ-पात। ३. आय-व्यय, लाभ, फल आदि के रूप में किसी वस्तु से कुछ प्राप्त होना। (एक्रूअल)

स्रवन*–पुं० = १. श्रवण। २. श्रमण।

स्रवना*–अ० [सं० स्रवण] १. बहना। २. टपकना। ३. गिरना।

स० १. बहाना। २. टपकाना। ३. गिराना!

स्रष्टा–पुं० [सं० स्रष्ट] १. सृष्टि बनानेवाले, ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव।

वि० कोई चीज बनानेवाला। (क्रिएटर)

स्रस्त–वि० [सं०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २. शिथिल। ढीला। उदा०—तान, सरिता वह स्रस्त अरोर।—निराला।

स्राध*–पुं० = श्राद्ध।

स्राप–पुं० = शाप।

स्राव–पुं० [सं०] वह या रसकर निकलना। क्षरण। (डिस्चार्ज) २. गर्भ-पात। गर्भ स्राव। ३. निर्यास। रस।

स्रावक–वि० [सं०] स्राव कराने, बह या टपकानेवाला।

स्रावी–वि० = स्रावक।

स्रुत–वि० [सं०] १. बह या रसकर निक हुआ। २. बहता हुआ। ३. जो आ ब्याज, लाभ, फल आदि के रूप में कि से प्राप्त हो। (एक्रूड)

स्रुतिमाथ*–पुं० = विष्णु।

स्रुवा–स्त्री० [सं०] लकड़ी की वह कल जिससे हवन के समय अग्नि में घी अ की आहुति दी जाती है।

स्रोत–पुं० [सं० स्रोतस्] १. पानी बहाव। धारा। २. नदी। ३. पानी सोता। झरना। ४. वह आधार या सा जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या आ हुई किसी को मिलती रहे। (सोर्स)

स्रोतस्विनी–स्त्री० [सं०] नदी।

स्रोन-कन*–पुं० [सं० श्रमकण] प की बूँद। स्वेद-कण। श्रम-कण। उदा स्रवत स्रोतकन, तन सोभा, छबि-घन ब मनु लाल।—सूर।

स्वः–पुं० [सं०] १. आकाश। २. स्व

स्व–वि० [सं०] अपना। निज

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के में लगकर ता, त्व आदि की भाँति भ वाचकता; (जैसे—निजस्व, परस्व;) प्राप्य धन (जैसे—राजस्व, स्वामित्व) आ का अर्थ देता है।

स्वकीय–वि० [सं०] [स्त्री० स्वकीया] अपना। निज का।

स्वकीया–स्त्री० [सं०] साहित्य में नायिका जो केवल अपने पति से प्रेम कर हो, पर पुरुष का ध्यान न करती हो 'परकीया' का विपर्य्याय।

स्व-ख्यापन–पुं० [सं०] स्वयं ही अपन प्रशंसा करके अपने आपको प्रसिद्ध करना

वि॰ [सं॰] आप ही आप।
कहना)।
में आया या लाया हुआ।
२. मन में आया हुआ। मनोगत।
गत-कथन'।
-पुं॰ [सं॰] नाटक में किसी
बात इस प्रकार कहना, मानों
सुननेवाला वहाँ कोई हो ही
।
[सं॰] [भाव॰ स्वच्छंदता]
इच्छा के अनुसार सब काम कर
। स्वाधीन। स्वतंत्र। २. मन-
करनेवाला। निरंकुश।
किसी संकोच या विचार के।
[सं॰] [भाव॰ स्वच्छता]
साफ। २. उज्ज्वल। शुभ्र।
पवित्र।
-स्त्री॰ [सं॰] स्वच्छ होने की
। निर्मलता। सफाई।
-स॰ [सं॰ स्वच्छ] स्वच्छ,
करना।
[सं॰] १. अपने परिवार के
रिश्तेदार। संबंधी।
)-स्त्री॰ [सं॰ स्वजन] १.
या आपसदारी की स्त्री। २.
। सहचरी।
-स्त्री॰ [सं॰] [वि॰ स्वजातीय]
।
ही जाति का।
-वि॰ [सं॰] अपनी ही जाति
।
-स्त्री॰ दे॰ 'आत्म-चरित'।
[सं॰] [भाव॰ स्वतंत्रता]
के दबाव के बिना स्वयं सब
हो। स्वाधीन। आजाद।
) २. अलग। जुदा। भिन्न।
आदि के बन्धन से रहित। (फ्री)
-स्त्री॰ [सं॰] १. बिना बाहरी
दबाव के स्वयं सब कुछ कर सकने की शक्ति या अधिकार। आजादी। (फ्रीडम) २. वह अवस्था जिसमें बिना किसी प्रकार की रोक-टोक के विशेषतः बिना किसी राजकीय या शासनिक रोक-टोक के कोई काम करने का अधिकार होता है। स्वातंत्र्य। (लिबरटी) जैसे–भाषण या विवेक-सम्बन्धी स्वतन्त्रता।

स्वतंत्रा–स्त्री॰ [सं॰] साहित्य में 'गणिका' या 'सामान्या' नायिका का दूसरा नाम।

स्वतः–अव्य॰ [सं॰ स्वतस्] आपसे आप। आप ही। स्वयं। खुद।

स्वतःसिद्ध–वि॰ दे॰ 'स्वयंसिद्ध'।

स्वत्व–पुं॰ [सं॰] १. स्व का भाव। अपनापन। २. वह अधिकार जिसके आधार पर कोई चीज अपने पास रखी या किसी से ली या माँगी जा सकती हो। अधिकार। हक। (राइट) ३. वह स्थिति जिसमें किसी वस्तु या विषय के हानि-लाभ से किसी व्यक्ति का विशेष रूप से सम्बन्ध हो। स्वार्थ। (इन्टरेस्ट)

स्वत्वाधिकारी–पुं॰ [सं॰ स्वत्वाधिकारिन्] १. वह जिसे किसी बात का पूरा स्वत्व या अधिकार प्राप्त हो। २. स्वामी। मालिक।

स्वदेश–पुं॰ [सं॰] अपना देश। मातृभूमि

स्वदेशी–वि॰ [सं॰ स्वदेशीय] १. अपने देश का। २. अपने देश में बना हुआ।

स्वधा–अव्य॰ [सं॰] एक शब्द जिसका प्रयोग यज्ञ में हवि देने के समय होता है। स्त्री॰ १. दक्ष की एक कन्या का नाम। २. पितरों के उद्देश्य से दिया जानेवाला भोजन।

स्वन–पुं॰ [सं॰] शब्द। आवाज।

स्वनाम-धन्य–वि॰ [सं॰] जो अपने नाम से ही धन्य या प्रसिद्ध हो। बहुत बड़ा पराक्रमी या महापुरुष।

स्वपच*–पुं० =श्वपच (चांडाल)।

स्वप्न–पुं० [सं०] १. सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २. सोने के समय पूरी नींद न आने के कारण कुछ घटनाएँ आदि दिखाई देना। (ड्रीम) ३. नींद में इस प्रकार दिखाई देनेवाली घटना। (साहित्य में इसे एक संचारी भाव माना गया है) ४. मन में उठनेवाली वह बहुत ऊँची कल्पना या विचार जो सहज में पूरा न हो सके।

यौ०–दिवा स्वप्न। (देखें)

स्वप्न-दोष–पुं० [सं०] एक रोग जिसमें सोने की दशा में वीर्य-पात हो जाता है।

स्वप्नाना*–अ०, स० [सं० स्वप्न] स्वप्न देखना या दिखाना।

स्वप्निल–वि० [सं०] १. सोया हुआ। २. स्वप्न देखता हुआ। ३. स्वप्न-सम्बन्धी। स्वप्न का।

स्वभाव–पुं० [सं०] [वि० स्वाभाविक, क्रि० वि० स्वभावतः] १. व्यक्ति या वस्तु में सदा प्रायः एक-सा बना रहनेवाला मूल या मुख्य गुण। प्रकृति। (नेचर) २. आदत। बान। (हैबिट)

स्वभावतः–क्रि० वि० [सं०] स्वभाव से ही। प्राकृतिक रूप से।

स्वभाव-सिद्ध–वि० = स्वाभाविक।

स्वभावोक्ति–स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी जाति, वर्ग या व्यक्ति के सहज और स्वाभाविक कार्यों, धर्मों आदि का उल्लेख होता है।

स्वयं–अव्य० [सं० स्वयम्] १. आप। खुद। २. आपसे आप।

स्वयंदूत–पुं० [सं०] [स्त्री० स्वयंदूती] नायिका पर अपनी वासना और प्रेम आप ही या स्वयं प्रकट करनेवाला नायक।

स्वयंदूतिका–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो नायक से मिलने की इच्छा उसपर स्वयं प्रकट करती हो।

स्वयंदूती–स्त्री० = स्वयंदूतिका।

स्वयंपाक–पुं० [सं०] [कर्त्ता स्वयंपाकी अपना भोजन आप पकाना। अपने हा से भोजन बनाकर खाना।

स्वयंपाकी–पुं० [सं० स्वयंपाकिन्] व जो धार्मिक दृष्टि से, छूत-छात से बचने लिए अपने खाने के लिए स्वयं भोज बनाता हो।

स्वयंभव–वि० दे० 'स्वयंभू'।

स्वयंभू–पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। काल। ३. कामदेव। ४. शिव। वि० १. आपसे आप उत्पन्न होनेवाला २. आपसे आप कुछ बन जानेवाल (बिना शिक्षा, अधिकार, योग्यता आ प्राप्त किये)। जैसे–स्वयं नेता या संपाद

स्वयंभूत–वि०, पुं० = स्वयंभू।

स्वयंवर–पुं० [सं०] प्राचीन भारत एक प्रसिद्ध प्रथा जिसमें कन्या अपने लि आप ही वर चुन लेती थी।

स्वयंवरा–स्त्री० [सं०] अपना वर चुननेवाली कुमारी या स्त्री। पतिवरा।

स्वयं-सिद्ध–वि० [सं०] [भाव० स्व सिद्धि] (बात या तत्त्व) जो किसी या प्रमाण के बिना आप ही ठीक सिद्ध हो। सर्व-मान्य।

स्वयं-सिद्धि–स्त्री० [सं०] [वि० स्व सिद्ध] वह सर्व मान्य सिद्धांत या तत्त्व सिद्ध या प्रमाणित करने की कोई आ श्यकता न हो। (एग्जियम)

स्वयंसेवक–पुं० [सं०] [स्त्री० स्व सेविका] अपनी इच्छा से और के सेवा-भाव से आप ही किसी काम में विशे कर सैनिक ढंग के काम में सम्मिलि होनेवाला व्यक्ति। (वॉलेन्टियर)

स्वयमेव–क्रि० वि० [सं०] आप ही।

स्वर–पुं० [सं०] [भाव० स्वरता] कोमलता, तीव्रता, उतार-चढ़ाव आदि युक्त वह शब्द जो प्राणियों के गले अथ

दूसरी वस्तु का आघात पड़ने
है। २. संगीत में इस प्रकार
श्चित शब्द या ध्वनियाँ जिनका
ता, तन्यता आदि स्थिर हैं।
ड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम,
और निषाद। ३. व्याकरण
क शब्द जिसका उच्चारण
दूसरे वर्णों की सहायता के और
होता है और जिसके बिना
का उच्चारण नहीं हो सकता।
यथा—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,
ओ और औ।

पुं० [सं०] संगीत में 'सा' से
सातों स्वरों का समूह। सप्तक।

पुं० [सं०] १. किसी शब्द का
करने में उसके किसी वर्ण पर
या रुकना। २. उचित वेग,
का ध्यान रखते हुए होनेवाला
उच्चारण। (एक्सेन्ट)

पुं० [सं०] १. आवाज या
जो एक रोग माना गया है।
हर्ष, भय, क्रोध, मद आदि
आना अथवा जो कुछ कहना
मुख से और कुछ निकल
एक सात्विक अनुभाव माना

पुं० [सं०] वीणा की तरह
पुराना बाजा जिसका प्रचार
कम हो गया है।

पुं० [सं०] गले के अन्दर का
अंश जिसकी सहायता या
या शब्द निकलता है।

स्त्री० [सं०] ऊँचे नीचे
लहर या क्रम जो प्रायः संगीत
उत्पन्न की जाती है।

स्त्री० [सं०] संगीत में किसी
आदि में आनेवाले सभी
स्वरों का क्रम-बद्ध लेख। (नोटेशन)

स्वरस–पुं० [सं०] पत्तियों आदि को कूटकर निकाला हुआ रस। (वैद्यक)

स्वराज्य–पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें किसी देश के निवासी अपने देश का सब शासन और प्रबंध स्वयं और बिना किसी विदेशी शक्ति के दबाव के करते हों। अपना राज्य।

स्वरिक–वि० [सं० स्वर] कंठ से निकलने वाले स्वर से सम्बन्ध रखनेवाला। (फोनेटिक)

स्वरित–वि० [सं०] जिसमें स्वर होता हो। स्वर से युक्त।

स्वरूप–पुं० [सं०] व्यक्ति, पदार्थ, कार्य आदि की आकृति। शकल। २. मूर्त्ति, चित्र आदि। ३. वह जिसने किसी देवता का रूप धारण किया हो।
वि० [स्त्री० स्वरूपा] १. खूबसूरत। २. तुल्य। समान।
अव्य० रूप में। तौर पर।

स्वरूपवान्–वि० [सं० स्वरूपवत्] [स्त्री० स्वरूपवती] सुन्दर। खूबसूरत।

स्वरूपी–वि० [सं० स्वरूपिन्] १. स्वरूप वाला। २. किसी के स्वरूप के अनुसार होने या दिखाई देनेवाला।
*पुं० दे० 'सारूप्य'।

स्वरूपोत्प्रेक्षा–स्त्री० दे० 'वस्तूत्प्रेक्षा'।

स्वरोदय–पुं० [सं०] स्वरों या श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जानने की विद्या।

स्वर्गंगा–स्त्री० दे० 'आकाश-गंगा'।

स्वर्ग–पुं० [सं०] १. हिन्दुओं के अनुसार सात लोकों में से वह जिसमें पुण्य और सत्कर्म करनेवालों की आत्माएँ जाकर निवास करती हैं। देव लोक।
मुहा०–**स्वर्ग के पथ पर पैर रखना** = (क) मरना। (ख) जान जोखिम में डालना।
स्वर्ग जाना या सिधारना = मरना।

पद-स्वर्ग-सुख = उसी प्रकार का बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख, जैसा स्वर्ग में मिलता है। **स्वर्ग की धार** = आकाश-गंगा।

२. अन्य धर्मों के अनुसार इसी प्रकार का एक विशिष्ट स्थान जो आकाश में माना जाता है। बिहिश्त। (हेवेन) ३. वह स्थान जहाँ बहुत अधिक सुख मिले, और किसी प्रकार का कष्ट न हो। ४. आकाश।

स्वर्गगामी-वि० [सं० स्वर्गगामिन्] [स्त्री० स्वर्गगामिनी] १. स्वर्ग की ओर जानेवाला। २. जो मर चुका हो। स्वर्गीय।

स्वर्गवास-पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

स्वर्गवासी-वि० [सं० स्वर्गवासिन्] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १. स्वर्ग में रहनेवाला। २. जो मर गया हो। स्वर्गीय। मृत।

स्वर्गस्थ-वि० [सं०] १. जो स्वर्ग में हो या स्थित हो। २. स्वर्गवासी।

स्वर्गारोहण-पुं० [सं०] १. स्वर्ग की ओर चढ़ना या जाना। २. मरना।

स्वर्गिक-वि० = स्वर्गीय।

स्वर्गीय-वि० [सं०] [स्त्री० स्वर्गीया] १. स्वर्ग संबंधी। स्वर्ग का। २. स्वर्ग में रहने या होनेवाला। ३. जो मर कर स्वर्ग चला गया हो। मृत। ४. जिसकी मृत्यु अभी हाल में अथवा कुछ ही दिन पहले हुई हो। (लेट)

स्वर्ण-पुं० [सं०] सोना नामक बहुमूल्य और प्रसिद्ध धातु। सुवर्ण।

स्वर्णकार-पुं० [सं०] सोने-चाँदी के गहने आदि बनानेवाला। सुनार।

स्वर्ण-कीट-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का चमकीला कीड़ा। सोन-किरवा। २. जुगनूँ।

स्वर्ण-गिरि-पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

स्वर्ण-जयंती-स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति, संस्था आदि या किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के जन्म या आरंभ होने के ५० वर्ष पूरा होने पर होनेवाली जयंती। (गोल्डेन जुबिली)

स्वर्ण दिवस-पुं० [सं०] बहुत ही अच्छा शुभ और महत्वपूर्ण दिन।

स्वर्णपुरी-स्त्री० [सं०] लंका।

स्वर्ण मुद्रा-स्त्री० [सं०] सोने का सिक्का।

स्वर्ण युग-पुं० [सं०] सबसे अच्छा औ श्रेष्ठ युग या समय।

स्वर्णाभ-वि० [सं०] १. सोने की आभा या चमकवाला। २. सोने के रंग का। सुनहला। ३. (प्रतिभूति) जो प्रकार से सुरक्षित हो और जिसके डूबने व्यर्थ होने की कोई आशंका न हो। (गि एजेड)

स्वर्णिभ-वि० [सं० स्वर्ण] सोने के रंग का। सुनहला।

स्वर्भू-पुं० [सं०] स्वर्ग-लोक।

स्वर्वासी-वि० [सं० स्वर्वासिन्] स्वर्ग निवासी। स्वर्ग में रहनेवाला।

पुं० देवता।

स्वल्प-वि० [सं०] बहुत थोड़ा।

स्व-विवेक-पुं० [सं०] कुछ वि नियमों और बन्धनों के अधीन रहकर उ अनुचित और युक्त-अयुक्त का विचार की शक्ति। (डिस्क्रिशन)

स्व-शासन-पुं० [सं०] १. अपने कामों की व्यवस्था स्वयं करने का अधिकार। (ऑटानोमी) २. अपने आ क्षेत्र में शासन, राजनीतिक प्रबंध अ स्वयं करने का पूरा अधिकार। (से गवर्नमेन्ट)

स्वस्ति-अव्य० [सं०] कल्याण हे मंगल हो। भला हो। (आशीर्वाद)

स्त्री० कल्याण। मंगल।

स्वस्तिक-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का ब प्राचीन मंगल-चिह्न जो शुभ अवसरों दीवारों आदि पर अंकित किया जाता है आज कल इसका यह रूप प्रचलित है 卐 २. हठ-योग में एक प्रकार का आसन।

न-पुं० [सं०] एक धार्मिक
कोई मंगल-कार्य आरम्भ करते
मंत्रों का पाठ होता है।
[सं०] [भाव० स्वस्थता,
१. जिसे कोई रोग न हो।
दुरुस्त। चंगा। २. जिसका
हो। सावधान। ३. जिसमें
अश्लीलता आदि न हो।
सभी अर्थों के लिए) ४.
विकार या त्रुटि न हो। (साउंड)
श।
-वि० [सं०] जिसकी बुद्धि
समझने और सब काम ठीक तरह
समर्थ हो। (ऑफ साउंड

[सं० सु+अंग] १. किसी के
धारण किया जानेवाला बनावटी
। भेस। २. परिहासपूर्ण खेल
। नकल। ३. लोगों को धोखा
बनाया हुआ रूप या किया
आम। आडम्बर।
-अ० [हिं० स्वाँग] कृत्रिम
धारण करना। स्वाँग बनाना।
दे० 'बहु-रूपिया'।
-पुं० [सं०] किसी वस्तु को
या अंग में पूरी तरह से मिला-
या एक कर लेना। आत्मसात्
(एसिमिलेशन)
[सं०] अंतःकरण।
साँसा-पुं० = साँस।
[सं०] [वि० स्वाक्षरित]
का) अपने हाथ से लिखा
छोटा लेख या हस्ताक्षर जिसे
पास स्मृति के रूप में रखते हैं।
) २. दे० 'हस्ताक्षर'।
-वि० = हस्ताक्षरित।
[सं०] किसी मान्य या
पर आगे बढ़कर आदर-पूर्वक

उसका अभिनंदन करना। अभ्यर्थना।

स्वागतकारिणी समिति-स्त्री० [सं०] वह समिति जो किसी बड़े सम्मेलन आदि में आनेवालों के स्वागत-सत्कार के लिए बनती है। (रिसेप्शन कमिटि)

स्वागत-पतिका-स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो अपने पति के विदेश से लौटने पर प्रसन्न हो।

स्वाच्छंद*-क्रि० वि० [सं० स्वच्छंद] १. स्वच्छंदता-पूर्वक। २. सुख से। सहज में। उदा०—श्री जयदेव अजौं स्वाच्छंद ललित सौं भावै। रत्ना०।

स्त्री० दे० 'स्वच्छंदता'।

स्वातंत्र्य-पुं० = स्वतंत्रता।

स्वाति-स्त्री० [सं०] पन्द्रहवाँ नक्षत्र जिसकी वर्षा के जल से मोती की उत्पत्ति मानी जाती है।

स्वाती-स्त्री० [स्वाति] स्वाति नक्षत्र।

पद०-स्वाती की बूँद = ऐसी दुष्प्राप्य वस्तु जिसके मिलने पर बहुत प्रसन्नता हो।

स्वात्म-वि० [सं० स्व + आत्म] अपना। निजका।

स्वाद-पुं० [सं०] १. कुछ खाने या पीने से जीभ या मुँह को होनेवाला अनुभव। जायका। २. किसी बात में होनेवाली रुचि या उससे मिलनेवाला आनंद। (टेस्ट)

मुहा०-स्वाद चखाना = किसी को उसके अनुचित कार्य का दंड देना।

स्वादन-पुं० [सं०] स्वाद लेने या चखने की क्रिया या भाव।

स्वादिष्ट (ष्ठ)-वि० [सं० स्वादिष्ट] जिसका स्वाद अच्छा हो।

स्वादी-वि० [हिं० स्वाद] १. स्वाद लेने-वाला। २. मजा या आनन्द लेनेवाला। रसिक।

स्वादु-वि० = स्वादिष्ट।

स्वाधिकार-पुं० [सं०] १. अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतंत्रता।

स्वाधिष्ठान-पुं॰ [सं॰] हठ-योग के अनुसार शरीर के आठ चक्रों में से दूसरा जिसका स्थान शिश्न का मूल या पेड़ू है। यह छः दलों का और सिन्दूर वर्ण का माना गया है। (आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केन्द्र से यौवन और शरीर की प्रजनन शक्ति आती है।)

स्वाधीन-वि॰ [सं॰] [भाव॰ स्वाधीनता] जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र। आजाद।

स्वाधीनता-स्त्री॰ [सं॰] किसी दूसरे के अधीन नहीं, बल्कि स्वयं अपने अधीन या स्वतन्त्र होने की अवस्था या भाव। स्वतंत्रता। आजादी।

स्वाधीन-पतिका-स्त्री॰ [सं॰] साहित्य में वह नायिका जिसका पति उसके वश में रहता हो।

स्वाध्याय-पुं॰ [सं॰] १. वेद की कोई शाखा जो किसी कुल या वंश में परम्परा से चली आई हो। २. वेदों का नियम-पूर्वक, पूरा और ठीक अध्ययन। ३. किसी विषय का अनुशीलन। अध्ययन।

स्वाना*-स॰ = सुलाना।

स्वाप-पुं॰ [सं॰] १. निद्रा। नींद। २. अज्ञान।

स्वापन-पुं॰ [सं॰] प्राचीन काल का एक अस्त्र। कहते हैं कि यह अस्त्र चलने पर शत्रुओं को सुला देता था।

वि॰ सुलाने या नींद लानेवाला।

स्वाभाविक-वि॰ [सं॰] [भाव॰ स्वाभाविकता] १. स्वभाव से या आप से आप होनेवाला। प्राकृतिक। नैसर्गिक। कुदरती। (नेचुरल) २. स्वभाव से सम्बन्ध रखने या होनेवाला।

स्वाभिमान-पुं॰ [सं॰] [वि॰ स्वाभिमानी] अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।

स्वाभिमानी-पुं॰ [सं॰ स्वाभिमानिन्] [स्त्री॰ स्वाभिमानिनी] वह जिसे अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का स्वाभिमान या ध्य हो। अपनी इज्जत का ख्याल रखनेवाला

स्वामि*-पुं॰ = स्वामी।

स्वामिकता-स्त्री॰ [सं॰] वह अव जिसमें कोई किसी वस्तु का स्वामी मालिक होता है। मालिक होने का भा मिल्कियत। (ओनरशिप)

स्वामिकार्त्तिक-पुं॰ [सं॰] शिव पुत्र, स्कन्द। कार्त्तिकेय।

स्वामित्व-पुं॰ [सं॰] 'स्वामी' होने भाव। मालिकपन। (ओनरशिप)

स्वामित्व-चिह्न-पुं॰ [सं॰] वह जो किसी वस्तु या सम्पत्ति पर उ स्वामी अपना स्वामित्व सूचित करने लिए लगा देता है। (प्रॉपर्टी मार्क)

स्वामिनी-स्त्री॰ [सं॰] [हिं॰ 'स्वा का स्त्री॰] १. मालकिन। २. घर मालकिन। गृहिणी। ३. श्री राधिका।

स्वामिस्व-पुं॰ [सं॰ स्वामी + स्व] धन जो भू-स्वामी, किसी वस्तु के आविष्क ग्रन्थ के लेखक आदि को उसके स्वामि अधिकार या रचना से होनेवाले लाभ अंश के रूप में कुछ नियत मात्रा में नियत समय पर बराबर मिलता रहता (रॉयलटी)

स्वामि-हीनत्व-पुं॰=अस्वामिकता। (प

स्वामी-पुं॰ [सं॰ स्वामिन्] [स्त्री॰ स्वामि भाव॰ स्वामित्व] १. वह जिसे किसी व पर पूरे और सब प्रकार के अधिकार प्रा हों। मालिक। (ओनर, प्रोप्राइटर) घर का प्रधान व्यक्ति। ३. पति। शौहर ४. साधु, संन्यासी आदि का सम्बोधन।

स्वाम्य-पुं॰ = स्वामित्व।

स्वायंभुव-पुं॰ [सं॰] पुराणानुसार पह मनु का नाम जो स्वयंभू (ब्रह्मा) से उत्प माने जाते हैं।

स्वायत्त-वि॰ [सं॰] [भाव॰ स्वायत्तता १. जिसपर अपना ही अधिकार हो। जो

हो। २. जो किसी दूसरे के
नियंत्रण में न हो बल्कि अपने
चालन अपने आप करता हो।
]

सन-पुं० [सं०] १. राजनीति
की दृष्टि से स्थानिक क्षेत्रों में
काम आप करने की स्वतंत्रता।
) २. दे० स्थानिक स्व-शासन'।

पुं० = स्वार्थ।

स्वार्थ] अपना अर्थ, लाभ या
भलाई। स्वार्थ।

स्वारथ आना = भलाई या
र उपयोगी होना।

स्वार्थक या सार्थ] १. उचित
रूप से काम में आया हुआ।
र्थक। (बोल-चाल) जैसे—सारा
रथ हो गया।

पुं० [सं०] १. सरसता। २.
मिलनेवाला आनंद या सुख।

पुं० = सवारी।

[सं०] [भाव० स्वार्थता]
अर्थ या उद्देश्य। अपना मत-
ऐसी बात जिसमें स्वयं अपना
हो।

किसी बात में) स्वार्थ
होनेवाले काम में अनुराग
आधुनिक, पर भद्दा प्रयोग)
क्षेत्रों में, किसी वस्तु या सम्पत्ति
नेवाला किसी व्यक्ति का वह
अनुसार उसे उस वस्तु या
अथवा उससे होनेवाले लाभ
स्वामित्व अथवा इसी प्रकार का
अधिकार प्राप्त रहता है।
)

-पुं० [सं०] [वि० स्वार्थ-
अच्छे काम के लिए अपने
का ध्यान छोड़ देना।

-त्व० [सं०] अच्छे काम या किसी के उपकार के लिए अपने हित या लाभ का ध्यान छोड़ देनेवाला।

स्वार्थ-पर-वि० [सं०] [भाव० स्वार्थपरता] स्वार्थी। खुद-गरज।

स्वार्थ-परायण-वि० [सं०] स्वार्थी।

स्वार्थ-साधन-पुं० [सं०] [कर्त्ता० स्वार्थ-साधक] अपना मतलब या काम निकालना। स्वार्थ सिद्ध करना।

स्वार्थांध-वि० [सं०] जो अपने स्वार्थ के फेर में पकड़कर अंधा हो रहा हो और भले-बुरे का ध्यान न रखता हो।

स्वार्थी-वि० [सं० स्वार्थिन्] [स्त्री० स्वार्थिनी] अपना मतलब निकालनेवाला। मतलबी। खुद-गरज।

स्वावलंबन-पु० [सं०] अपने ही भरोसे रहकर और अपने बल पर काम करना।

स्वावलंबी-वि० [सं० स्वालम्बिन्] [स्त्री० स्वावलंबिनी] अपने ही भरोसे या सहारे पर रहनेवाला।

स्वाश्रय-पुं० [सं०] [वि० स्वाश्रित] वह जिसे केवल अपना सहारा हो, दूसरों का सहारा न हो।

स्वाश्रित-वि० [सं०] [स्त्री० स्वाश्रिता] केवल अपने ही सहारे रहनेवाला।

स्वास(ा)-स्त्री० = श्वास।

स्वास्थ्य-पुं० [सं०] स्वस्थ या नीरोग होने की दशा। आरोग्य। तन्दुरुस्ती। (हेल्थ)

स्वास्थ्य-कर-वि० [सं०] तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाला। आरोग्य-वर्द्धक।

स्वास्थ्य-निवास-पुं० [सं०] विशेष रूप से निश्चित या निर्मित वह स्थान जहाँ जाकर लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए रहते हैं। (सैनिटोरिअम)

स्वास्थ्य-विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें शरीर को नीरोग और स्वस्थ बनाये रखने के नियमों और सिद्धान्तों का विवेचन हो। (हाईजीन)

स्वाहा-अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका प्रयोग हवन की हवि देते समय होता है। वि० १. जो जलकर राख हो गया हो। २. पूरी तरह से नष्ट। बरबाद।

स्वीकरण-पुं० [सं०] १. स्वीकार या अंगीकार करना। २. मानना।

स्वीकार-पुं० [सं०] अपनाने या ग्रहण करने की क्रिया। अंगीकार। मंजूरी।

स्वीकारात्मक-वि० [सं०] (कथन जिसमें कोई बात स्वीकृत की गई या मानी गई हो अथवा उसकी पुष्टि की गई हो। (अफर्मेटिव)

स्वीकारोक्ति-स्त्री० [सं०] वह कथन या बयान जिसमें अपना अपराध स्वीकृत किया जाय। दोष, अपराध, पाप आदि की स्वीकृति। अपने मुँह से कहकर यह मान लेना कि हमने अमुक अनुचित या बुरा काम किया है। (कन्फेशन)

स्वीकार्य-वि० [सं०] स्वीकृत या ग्रहण करने या मानने के योग्य।

स्वीकृत-वि० [सं०] १. जिसके सम्बन्ध में स्वकृति दी जा चुकी हो। स्वीकार किया हुआ। (सैंक्शन्ड) २.ग्रहण किया या माना हुआ। प्रतिपन्न। मंजूर। (एक्सेप्टेड) ३.जिसे आधिकारिक रूप से मान्यता मिली हो। मान्य। (रिकग्नाइज्ड)

स्वीकृति-स्त्री० [सं०] [वि० स्वीकृत] १. स्वीकार करने की क्रिया या भाव। मंजूरी। २. प्रस्ताव, शर्तें आदि मान लेने या उपहार, देन आदि ग्रहण करने की क्रिया या भाव। (ऐक्सेप्टेन्स) ३. बड़ों, अधिकारियों आदि के द्वारा छोटों की प्रार्थना आदि मान लेने की क्रिया या भाव। (सैन्कशन)

स्वीय-वि० [सं०] अपना। निज का।

स्वे*-वि० = स्वः (अपना)।

स्वेच्छया-क्रि० वि० [सं०] अपनी इच्छा से और बिना किसी के दबाव के। (वालन्टरिली) जैसे—स्वेच्छया किया हुआ काम।

स्वेच्छा-स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा। जैसे—स्वेच्छा से कोई काम करना।

स्वेच्छाचार-पुं० [सं०] [भाव० स्वेच्छाचारिता, वि० स्वेच्छाचारी] भला-बुरा कुछ मन में आवे, वही कर डालना। यथेच्छाचार।

स्वेच्छाचारी-वि० [सं० स्वेच्छाचारिन् [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] स्वेच्छाचार या माने ढंग से सब काम करनेवाला। (निन्दा)।

स्वेच्छासेवक-पुं० = स्वयंसेवक।

स्वेटर-पुं० [अं०] बनियाइन या आदि की तरह का एक प्रकार का पहनावा जो कोट, कमीज आदि के पहना जाता है।

स्वेद-पुं० [सं०] [वि० स्वेदित] १. पसी २. साहित्य में रोष, लज्जा, हर्ष, श्रम से शरीर का पसीने से भर जाना जो सात्त्विक अनुभाव माना गया है। ३. भ

स्वेदक-वि० [सं०] स्वेद या प लानेवाला। (पदार्थ)

स्वेद-कण-पुं० [सं०] पसीने की

स्वेदज-पुं० [सं०] पसीने से उत्पन्न वाले जीव। जैसे—खटमल, जूँ आदि।

स्वेदन-पुं० [सं०] शरीर में पसीना ल

स्वै*-वि० [सं० स्वीय] अपना। सर्व० दे० 'सो'।

स्वैच्छिक-वि० [सं०] १. अपनी इ से सम्बन्ध रखनेवाला। २. अपनी इ से किया, या अपने ऊपर लिया जानेवा (वॉलेन्टरी)

स्वैर-वि० [सं०] [भाव० स्वैरता] स्वेच्छाचारी। २. स्वतंत्र। ३. धीम मंद। ४. मन-माना।

स्वैराचार-पुं० [सं०] [वि० स्वैराचा ऐसा मनमाना आचरण जो नैतिक, धार्मि सामाजिक आदि नियमों या बंधनों उपेक्षा करके किया जाय।

स्वैराचारी-वि० [सं० स्वैराचारिन्] [स्त्री

]१. मन-माना काम करने-
भिचारी। लंपट।
पुं० दे० 'स्वेच्छाचार'।

स्वैरिणी–स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी।

स्वोपार्जित–वि० [सं० स्व + उपार्जि] अपना उपार्जित किया या कमाया हुआ।

ह

नागरी वर्णमाला का तेंतीसवाँ
उच्चारण के विचार से ऊष्म वर्ण
।
अ० = ललकारना।
[हिं० हाँकना] बहुत से लोगों
आदि को चारो ओर से
के सामने लाना।
हिं० 'हाँकना' का प्रे०।
पुं० = हाँकनेवाला।
[हिं० हाँकना] हाँकने की
या मजदूरी।
[हिं० हाँक] १. दे० 'हाँकना'।
। २. हँकवाना।
[सं० हक्कार] जोर से बुलाने
भाव। पुकार।
कार पड़ना = बुलाहट या
।
[सं० अहंकार] गर्व। घमंड।
–चढ़े गये बड़पने रोम-रोम
र।
र'।
स० = पुकारना।
रना।
[हिं० हँकार] १. लोगों को
व्यक्ति। २. दूत।
की क्रिया या भाव। बुलाहट।
[फा० हंगामः] १. उपद्रव।
शोर-गुल। हल्ला। ३.
[सं० अभ्यटन] १. घूमना-
। २. इधर-उधर ढूँढ़ना।
का व्यवहार में आने पर कुछ
समय तक चलना या ठहरना।

हंडा–पुं० [सं० भांडक] [स्त्री० अल्पा० हंडी हँड़िया, हाँड़ी] १. पानी रखने या भरने का पीतल या तांबे का एक प्रकार का बड़ा बरतन। २. एक विशिष्ट प्रकार की वह बड़ी रोशनी जिसके ऊपर हंडे के आकार की शीशे की बहुत बड़ी चिमनी लगी रहती है।

हँडाना–स० हिं० 'हंडना' का स०।

हँड़िया–स्त्री० दे० 'हाँड़ी' या 'हंडी'।

हंडी–स्त्री० [हिं० हंडा का स्त्री० अल्पा०] मिट्टी, धातु आदि का बना एक प्रसिद्ध छोटा गोलाकार बरतन। हाँड़ी।

हंत–अव्य० [सं०] एक दुःखसूचक शब्द। जैसे–हा हंत ! यह क्या हो गया !

हंता–पुं० [सं० हंतृ] [स्त्री० हंत्री] हत्या या वध करनेवाला।

हँफनि–स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव।

मुहा०–हँफनि मिटाना* = सुस्ताना।

हंबा–अव्य० [हिं० हाँ] सहमति या स्वीकृति सूचक अव्यय।

हँबाना†–अ० दे० 'रँभाना'। (गौओं का)

हंस–पुं० [सं०] [स्त्री० हंसिनी, हंसी] १ बत्तख की तरह का एक प्रसिद्ध जल-पक्षी। २. सूर्य। ३. ब्रह्म। ४. माया से निर्लिप्त और शुद्ध आत्मा। जीवात्मा। ५. जीवनी-शक्ति। प्राण।

मुहा०–हंस उड़ जाना = शरीर से प्राण निकल जाना। उदा०–काँचे बासन टिकै न पानी। उड़ि गौ हंस काया कुम्हिलानी।–कबीर।

६. संन्यासियों का एक भेद। ७. प्राण-वायु। (आत्मा विशुद्ध रूप में) ८. पैर में पहनने का नूपुर नामक गहना। ९. ईश्वर। नारायण।

हंसक–पुं० [सं०] पैर में पहनने का नूपुर नाम का गहना।

हंस-किंकिणी–स्त्री० [सं०] ओड़व-संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो दिन के तीसरे पहर में गाई जाती है।

हंस गति–स्त्री० [सं०] जीवात्मा का ब्रह्म में मिल जाना। सायुज्य मुक्ति।

हंसजा–स्त्री० [सं०] सूर्य की कन्या, यमुना।

हँसता-मुखी–पुं० = हँस-मुख।

हँसना–अ० [सं० हँसन] १. प्रसन्नता प्रकट करने के लिए मनुष्य का मुँह खोलकर हा-हा करना। हास करना।

मुहा०–हँसते हँसते = (क) प्रसन्नता से। (ख) सहज में। **हँसना-खेलना या हँसना-बोलना** = प्रसन्नता और आमोद-प्रमोद की बातचीत करना। **हँसकर बात उड़ाना**=तुच्छ या साधारण समझकर हँसते हुए कोई बात टाल देना। २. दिल्लगी या परिहास करना। ३. घर, स्थान आदि का इतना सुन्दर लगना कि हँसता हुआ-सा जान पड़े।

स० किसी की हँसी या उपहास करना। हँसी उड़ाना।

मुहा०–किसी पर हँसना = किसी की हँसी उड़ाना। उपहास करना।

हँसनि*–स्त्री० [हिं० हँसना] हँसने की क्रिया या भाव। हास।

हँस-मुख–वि० [हिं० हँसना + मुख] १. सदा हँसता रहनेवाला। २. विनोदशील। हास्य-प्रिय। ठठोल। मसखरा।

हँसली–स्त्री० [सं० अंसली] १. गले के पास छाती के ऊपर की दोनों धन्वाकार हड्डियाँ। २. गले में पहनने का एक गहना।

हँसाई–स्त्री० [हिं० हँसना] १. दे० 'हँसी
२. लोक में होनेवाली बदनामी या निन्
जैसे–नाम-हँसाई।

हँसाना–स० [हिं० हँसना] किसी को
में प्रवृत्त करना।

हँसाय*–स्त्री० = हँसाई।

हंसिनी–स्त्री० [सं०] हंस (पक्षी) की म

हँसिया–स्त्री० [सं० असिद, प्रा० अ
खेत की फसल, घास, तरकारी आदि
का एक औजार।

हँसी–स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँस
क्रिया या भाव। हास।

यौ०–हँसी-खुशी = प्रसन्नता।
ठट्ठा = विनोद। मजाक।

मुहा०–हँसी छूटना = हँसी आन
२. परिहास। दिल्लगी। मजाक। ठ

मुहा०–हँसी उड़ाना = व्यंग्यपूर्ण
या उपहास करना। **हँसी या हँसी
समझना** = किसी काम या ब
साधारण या तुच्छ समझना। हँ
उड़ाना = साधारण समझकर हँ
टाल देना। **हँसी में ले जाना** =
बात को हँसी की बात सम
३. लोक में होनेवाली उपहासपूर्ण
या बदनामी।

हंसी–स्त्री० [सं०] हंस (पक्षी) की

हँसुआ–पुं० = हँसिया।

हँसुली–स्त्री० = हँसली।

हँसोड़–वि० [हिं० हँसना + ओड़ (प्र
सदा हँसी की बातें करनेवाला। दि
बाज। मसखरा। ठठोल।

हँसौहाँ–वि० [हिं० हँसना] [स्त्री० हँ
१. कुछ हँसी लिये हुए। २. हँ
दिल्लगी का।

हई–अ० [हिं० है + ही] 'है ही' का
रूप। जैसे–यह तो हई है।

*[सं० हयिन्] घुड़-सवार।

स्त्री० [अनु०] आश्चर्यसूचक शब्द

सूचक हैं। या अ० हैवत =
भय। उदा०—है हिय रहती
जुगती जग जोइ।—बिहारी।
० दे० 'हौं'।
०] १. सच। सत्य। २.
ब। ठीक। मुनासिब।
ार। इख्तियार।
में = पक्ष में।
र्ज।
अदा करना=कर्तव्य पालन
पूरा करना।
जिसपर न्याय से अधिकार
४. किसी लेन-देन में बन्धेज
नुसार मिलनेवाला धन। ५.
ठीक बात अथवा पक्ष। ६.
मान)
[अ० हक + फा० दार] हक
रखनेवाला। अधिकारी।
प्रत्य० [अ० नाहक + फा०
दस्ती। २. व्यर्थ। फजूल।
दे० 'हक्का-बक्का'।
प्र० [अनु०] हक्का-बक्का हो
जाना।
० [हिं० हकार] पुकारना।
० [सं० हुंकार] १. हुंकार
ललकारना (राज०)
[हिं० हकलाना] हकलाकर
बोलनेवाला।
० [अनु० हक] [भाव०
रों का ठीक तरह से उच्चारण
के कारण बीच-बीच में कोई
रुककर बोलना।
ना)-पुं०[अ०हक्के-शुफ़ऽ =
कार] जमीन, मकान आदि
हक जो गाँव के हिस्सेदारों
को औरों से पहले प्राप्त
म। (प्रिएम्पशन)

हकाहक*-क्रि० वि० [अनु०] खूब जोरों से। प्रबल रूप से।

स्त्री० जोरों की लड़ाई। घोर युद्ध।

हकीकत-स्त्री० [अ०] १. वास्तविक तत्त्व या बात। तथ्य। असलियत।

मुहा०-हकीकत में = वास्तव में। सचमुच। **हकीकत खुलना** = ठीक बात का पता लगना।

२. सच्चा और वास्तविक वृत्तान्त।

हकीम-पुं० [अ०] १. विद्वान्। पंडित। २.यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक।

हकीमी-स्त्री० [अ० हकीम + ई (प्रत्य०)] १. हकीम का पेशा या काम। २. यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। हिकमत।

वि० हकीम-सम्बन्धी।

हकूमत†-स्त्री० [अ० हुकूमत] १. शासन। २. आधिपत्य। अधिकार।

मुहा०-हकूमत चलाना = प्रभुत्व या अधिकार जताना या उससे काम लेना। **हकूमत जताना** = अधिकार या बड़प्पन दिखाना।

३. राजनीतिक शासन या आधिपत्य।

हक्का†-पुं० [सं० हुंकार] १. हुंकार। २. हाँक। पुकार।

हक्काक-पुं० [?] नगीने आदि काटने और जड़ने का काम करनेवाला।

हक्का-बक्का-वि० [अनु० हक, धक] बहुत घबराया हुआ। भौचक्का।

हक्कारना*-स० [सं० हुंकार] ललकारना। उदा०-दूजन सल कूरंभ, वंध पल्हन हक्कारिय।-चंद-बरदाई।

हगना-अ० [?] मल-त्याग करना। झाड़ा या पाखाना फिरना।

स० विवश होकर देन चुकाना या कुछ देना।

हचकना-अ० [अनु०] हच-हच शब्द करते हुए बीच में रुकना या झुकना।

हचका-पुं० दे० 'हचकोला'।

हचकोला-पुं० [हिं० हचकना] गाड़ी आदि चलनेवाली चीजों के हिलने-डोलने से लगनेवाला धक्का। धचका।

हचना*-अ० = हिचकना।

हज-पुं० [अ०] मुसलमानों का काबे की परिक्रमा के लिए मक्के (अरब) जाना।

हजम-वि० [अ०] १. जिसका पाचन हुआ हो। पचा हुआ। २. बेईमानी या अनुचित रीति से इस प्रकार लिया हुआ (धन) कि फिर दिया न जाय।

हजरत-पुं० [अ०] १. महात्मा। महापुरुष। २. दुष्ट या धूर्त्त। (व्यंग्य)

हजामत-स्त्री० [अ०] बाल काटने और दाढ़ी बनाने का (हजाम का) काम। क्षौर।
मुहा०-हजामत बनाना = (क) दाढ़ी या सिर के बाल मूँड़ना या काटना। (ख) ठगकर धन लेना।

हजार-वि० [फा०] १. दस सौ। सहस्र। २. बहुत। अनेक।
पुं० दस सौ की संख्या या अंक। १०००।
क्रि० वि० चाहे जितना अधिक। बहुतेरा।

हजारा-वि० [फा०] (फूल) जिसमें हजारों (बहुत अधिक) पंखड़ियाँ हों।
पुं० फुहारा।

हजारी-पुं० [फा०] १. एक हजार सिपाहियों का सरदार। २. वर्ण-संकर। दोगला।

हजारों-वि० [हिं० हजार] १. कई हजार। २. बहुत अधिक। जैसे-हजारों घटनाएँ।

हजूम-पुं० [अ० हुजूम] भीड़।

हजूर-पुं० [अ० हुजूर] १. किसी बड़े की समक्षता। २. बादशाह या हाकिम का दरबार। कचहरी। ३. बहुत बड़ों को सम्बोधन करने का शब्द।
†क्रि० वि० (किसी बड़े के) सामने। समक्ष।

हजूरा†-पुं० [स्त्री० हजूरी] दे० 'हजूरी'।

हजूरी-पुं० [अ० हजूर] बड़े आदमी, बादशाह या राजा की सेवा में सदा उपस्थित रहनेवाला सेवक।
मुहा०-जी-हजूरी करना = चाप
या खुशामद करना।
वि० हजूर का।

हजो-स्त्री० [अ० हज्व] निन्दा।

हज्ज-पुं० दे० 'हज'।

हज्जाम-पुं० [अ०] हजामत बनानेवा
नाई। नापित।

हटक†-स्त्री० [हिं० हटकना] १.
या मना करने की क्रिया। वारण। व
मुहा०-हटक मानना = मना कर
मान या रुक जाना।
२. पशुओं को हाँकने का काम।

हटकन†-स्त्री० [हिं० हटकना] १.
'हटक'। २. पशुओं को हाँकने की
हटकना†-स० [हिं० हटक] १.
करना। रोकना। २. पशुओं को
ओर हाँकना।
मुहा०-*हटकि = (क) बलपूर्वक
बिना कारण या आधार के।
अ० मना करने पर मानना या
उदा०-खटकी चित, भटकी फिरत
रहत हियै न।-विक्रम सतसई।

हटतार*-पुं० = टकटकी।

हटना-अ० [सं० घट्टन] १. अपना
छोड़कर इधर-उधर होना। खिस
सरकना। २. सामने से इधर-उधर
होना। टलना। ३. अपने स्थान से
की ओर चलना, जाना या पहुँचना
न रह जाना। ५. वचन आदि का
न करना।
*स० दे० 'हटकना'।

हटवाई*-स्त्री० [हिं० हाट] हाट में
सौदा लेना या बेचना। क्रय-विक्रय।
पुं० हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला
हटवाना-स० हि० 'हटाना' का प्रे०

हटवार*-पुं० = दूकानदार।

हटा-पुं० [हिं० हटकना या हटाना] नि

[हिं० 'हटाना' का स०] १.
से किसी प्रकार दूसरे स्थान
भेजना। २. अलग या दूर
कर भगाना। ४. जाने देना।

=१. हट्टी (दुकान) । २.
)।
] १. दूकान। २. बाजार।

[सं० हृष्ट + अनु० कट्टा]
ट्टी] हृष्ट पुष्ट। बलवान।
सं० हट्ट] दूकान।
][वि० हठी, हठीला] १.
कहना कि ऐसा ही है, होगा
ए। अड़। टेक। जिद।
पकड़ना = आग्रह या जिद
रखना = जिस बात के लिए
, वह मान लेना या पूरी
माँड़ना* = हठ करना।
। अटल संकल्प। ३. अनु-
ग्रह। (क्व०)
[सं०] अपने मत पर, हठ
। कट्टरपन।
[सं० हठ + धर्म] अपनी
मी अड़े रहना। दुराग्रह।

नी अनुचित बात पर भी
। कट्टर।
[हिं० हठ] १. हठ या जिद
प्रतिज्ञा करना। ३. आग्रह
। उदा०–रामनाम-नवनेह
ठि होहि पपीहा।–तुलसी।
[सं०] योग का वह अंग
में करने के लिए कठिन
नों का विधान है।
सं०] १. हठपूर्वक। २.
अचानक। सहसा।

हठाहठ(ी)*–क्रि० वि० दे० 'हटात्'।

हठी–वि० [सं० हठिन्] हठ करनेवाला। जिद्दी।

हठीला–वि० [सं० हठ + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हठीली] १. दे० 'हठी'। २. लड़ाई में धीरतापूर्वक जमा रहनेवाला।

हड़–स्त्री० [सं० हरीतकी] १. एक बड़ा पेड़ जिसका प्रसिद्ध फल औषध के रूप में काम में आता है। हर्रे। २. उक्त फल के आकार का एक गहना। लटकन।

हड़-कंप–पुं० [सं० हृत्कंप] लोगों में घबराहट फैलाने या उनकी हड्डियाँ तक कँपानेवाली भारी हलचल। तहलका।

हड़क–स्त्री० [सं० हृदय, प्रा० हड़क] १. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए होनेवाली व्याकुलता। २. कुछ करने या पाने की उत्कट लालसा।

हड़कना–अ० [हिं० हड़क] १. कोई चीज न मिलने या कोई काम पूरा न होने से बहुत व्याकुल होना। २. पागल होना। (विशेषतः कुत्ते का)

हड़कम†–पुं० दे० 'हड़-कंप'।

हड़काना–स० [हिं० हड़क] १. तंग करने के लिए किसी को किसी के पीछे लगाना। २. बहुत तरसाना। ३. दूर हटाना। अ० दे० 'हड़कना'।

हड़काया–वि० [हिं० हड़कना] पागल (कुत्ता)।

हड़ताल–स्त्री० [सं० हट्ट = दूकान + ताला] दुःख, विरोध या असंतोष प्रकट करने के लिए कल-कारखानों, कार्यालयों आदि के कर्मचारियों या जन-साधारण का सब कार-बार, दूकानें आदि बन्द कर देना। (स्ट्राइक) स्त्री० दे० 'हरताल'।

हड़ताली–वि० [हिं० हड़ताल + ई (प्रत्य०)] १. हड़ताल-संबंधी। हड़ताल का। २. हड़ताल करनेवाला।

हड़प–वि० [अनु०] १. खाया या निगला

हुआ। २. लेकर छिपाया हुआ।

हड़पना–स० [अनु० हड़प] १. मुँह में रखकर निगल जाना। २. अनुचित रूप से ले लेना। उड़ा लेना।

हड़-बड़–स्त्री० दे० 'हड़बड़ी'।

हड़बड़ाना–अ० [अनु०] जल्दी मचाना। स० जल्दी मचाकर किसी को जल्दी-जल्दी कोई काम करने में प्रवृत्त करना।

हड़बड़िया–वि० [हिं० हड़-बड़] जल्दी मचानेवाला। उतावला।

हड़-बड़ी–स्त्री० [अनु०] १. जल्दी। शीघ्रता। उतावली। २. जल्दी या उतावलेपन के कारण होनेवाली घबराहट।

हड़ावर–पुं० [हिं० 'जड़ावर' का अनु० या हाड़ = आषाढ़] गरमी के दिनों में पहनने के कपड़े जो मालिक की ओर से नौकरों को मिलते हैं।

स्त्री० [हिं० हाड़ = हड्डी] हड्डियों की माला।

हड़ावल–स्त्री० [हिं० हाड़ + सं० अवलि] १. हड्डियों का ढाँचा। ठठरी। २. हड्डियों की माला।

हड़ीला–वि० [हिं० हाड़] १. जिसमें हड्डियाँ मात्र रह गई हों। २. दुबला-पतला।

हड्डी–स्त्री० [सं० अस्थि] १. मनुष्यों, पशुओं आदि के शरीर के अन्दर की वह प्रसिद्ध कड़ी, सफ़ेद वस्तु जो भीतरी ढाँचे के अंग के रूप में होती है। अस्थि।

मुहा०–हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना = बहुत मारना। **हड्डियाँ निकल आना** = रोग आदि के कारण बहुत दुबला होना।

यौ०–पुरानी हड्डी = पुराने समय के आदमी का-सा दृढ़ शरीर।

२. वंश। खानदान।

हत्–अव्य० [अनु०] एक अव्यय जिसका प्रयोग उपेक्षापूर्वक किसी को दूर भगाने अथवा त्याज्य या बुरा सूचित करने के लिए आता है। जैसे–हत् तेरे भाग्य की।

हत–वि० [सं०] १. जो मार डाला गया

हो। २. जिसे मार पड़ी हो। ३. रहि
४. जिसका अस्तित्व मिट गया हो।
रह गया हो। नष्ट। ५. जिसमें विकार
न्यूनता आ गई हो। बिगड़ा हुआ।
हत-प्रभ।

हतक–स्त्री० [अ० हतक = फाड़ना]
मान। अप्रतिष्ठा। हेठी।

हतक-इज्जती–स्त्री० = मान-हानि।

हत-चेत–वि० दे० 'हत-ज्ञान'।

हत-ज्ञान–वि० [सं०] बेहोश। बेसु

हतना–स० [सं० हत] १. मार डाल
२. मारना। पीटना। ३. पालन न क
न मानना। ४. भंग करना। तो
उदा०–ज्यौं गज फटिक सिला मैं
दसननि डारत हति।–सूर।

हत-प्रभ–वि० [सं०] जिसकी प्र
श्री नष्ट हो गई हो। श्री-हीन।

हत-बुद्धि–वि० [सं०] १. बुद्धि
मूर्ख। २. जिसकी समझ में यह न
कि अब क्या करना चाहिए। कि
विमूढ़।

हत-बोध–वि० = हत-बुद्धि।

हत-भागा–वि० दे० 'अभागा'।

हत-भाग्य– वि० [सं०] भाग्यहीन

हत-मना–वि० [सं० हत + मनस्
जिसके मन में उत्साह, प्रसन्नता आदि
गई हों। २. चिन्तित तथा दुःखी।

हतवाना-स० हिं० 'हतना' का प्रे०

हत-श्री–वि० [सं०] १. जिसके
पर कान्ति न रह गई हो। हत-प्रभ
मुरझाया हुआ। उदास।

हता*-अ० [स्त्री० हती] 'होना' का
कालिक एक वचन रूप। था। उदा
हाथी सो कब हती, कहु रहीम पहिचा
रहीम।

हताई–स्त्री० [हिं० हतना] युद्ध,
दुर्घटनाओं आदि में लोगों के घायल
मरने आदि की क्रिया या भाव। समा

)
हतवाना।
[सं०] जिसकी आशा हत
हो। निराश।
[सं० हत + आहत] हत
मारे हुए और घायल।
'होना' का भूतकालिक बहुवचन
। उदा०–नयन हते तिनहूँ पर
।
हता (था)।
[सं०] जिसमें उत्साह
हो।
हाथ।
[हिं० हत्थ, हाथ] १. औजार
जिससे उसे पकड़ते हैं। दस्ता।
के फलों का गुच्छा। घौद।
पानी उलीचने का काठ का
।
दे० 'हत्था'।
[हिं० हाथ] १. हाथ में।
चढ़ना = (क) हाथ में
आना। (ख) वश में आना।
द्वारा। हस्ते।
[सं०] १. मार डालने की
। (मर्डर)
लगना = किसी को मार
पाप लगना।
में अथवा यों ही संयोगवश
के उद्देश्य से नहीं) किसी के
। (होमीसाइड) ३. व्यर्थ
झंझट।
[सं० हत्या + आरा (प्रत्य०)]
रिन, हत्यारी] १. हत्या करने
वाला। (मर्डरर) २. हत्या
बड़े-बड़े दुष्कर्म करनेवाला।
।
[हिं० हाथ] समस्त पदों के
होनेवाला 'हाथ' का संक्षिप्त रूप।

हथ-कंडा–पुं० [हिं० हाथ + सं० कांड] १. हाथ की चालाकी। २. छिपी हुई चालबाजी। (काम निकालने के लिए)

हथकड़ी–स्त्री० [हिं० हाथ + कड़ी] लोहे के वे कड़े जो कैदी के हाथ बाँधने के लिए उसे पहनाये जाते हैं।

हथ गोला–पुं० [हिं० हाथ + गोला] तोप के गोलों की तरह का एक प्रकार का गोला जो शत्रुओं पर हाथ से फेंकते हैं। (ग्रेनेड, हैंड-बाम्ब)

हथ-नाल–स्त्री० [हिं० हाथी+नाल = तोप] हाथी पर रखकर चलाई जानेवाली तोप। गज नाल।

हथनी–स्त्री० [हिं० हाथी + नी (प्रत्य०)] १. हाथी की मादा। २. घाटों आदि में बड़ी और ऊँची सीढ़ियों के आकार की बनावट, जो साधारण सीढ़ियों के दोनों ओर होती है।

हथ-फूल–पुं० [हिं० हाथ + फूल] हथेली पर पहनने का एक गहना।

हथ फेर–पुं० [हिं० हाथ + फेरना] १. प्यार से शरीर पर हाथ फेरना। २. चालाकी से किसी का माल उड़ा लेना। ३. कुछ समय के लिए लिया या दिया हुआ ऋण। हाथ-उधार।

हथ-बाही–स्त्री० दे० 'हाथा-बाही'।

हथ-लेग्रा–पुं० दे० 'हथ-लेवा'।

हथ-लेवा–पुं० [हिं० हाथ + लेना] विवाह के समय वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेने की रीति। पाणि ग्रहण। उदा०–दियौ हियौ सँग हाथ कैं, हथलेयैं (लेवैं) हीं हाथ।–बिहारी।

हथ-साँकर*–स्त्री० दे० 'हथ फूल'।

हथसार–स्त्री० [हिं० हाथी + सं० शाला] हाथियों के रहने का स्थान। फील-खाना।

हथा-हथी*–अव्य० [हिं० हाथ] १. हाथों-हाथ। २. चटपट। तुरन्त।

हथिनी–स्त्री० दे० 'हथनी'।

हथिया–पुं० [सं० हस्त] १. हस्त नक्षत्र। २. इस नक्षत्र से होनेवाली वर्षा जो प्रायः बहुत जोरों की और मूसलाधार होती है।

हथियाना–स० [हिं० हाथ + आना (प्रत्य०)] १. अपने हाथ में करना। २. धोखे से लेना।

हथियार–पुं० [हिं० हथियाना] १. हाथ से पकड़कर चलाया जानेवाला अस्त्र। जैसे–तलवार, बन्दूक आदि। (आर्म्स) २. औजार। उपकरण।

हथियार-बंद–वि० [हिं० हथियार + फा० बंद] जो हथियार लिये हो। स-शस्त्र।

हथेरी*–स्त्री० = हथेली।

हथेली–स्त्री० [सं० हस्त-तल] हाथ पर का कलाई के आगे का वह ऊपरी चौड़ा हिस्सा जिसके आगे उँगलियाँ होती हैं। कर-तल।

मुहा०–हथेली पर जान लेकर कोई काम करना = जान जोखिम में डालकर कोई काम करना।

हथेव*–पुं० = हथौड़ा।

हथोरी†–स्त्री० = हथेली।

हथौटी–स्त्री० [हिं० हाथ + औटी(प्रत्य०)] हाथ से कोई काम करने का ठीक ढंग या कौशल।

हथौड़ा–पुं० [हिं० हाथ + औड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हथौड़ी] एक प्रसिद्ध औजार जिससे कारीगर कोई चीज तोड़ते, पीटते, ठोंकते या गढ़ते हैं।

हथ्याना*–स० = हथियाना।

हथ्यार*–पुं० = हथियार।

हद–स्त्री० [अ०] १. सीमा।

मुहा०–हद बाँधना = सीमा निश्चित करना।

२. वह स्थान या परिमाण जहाँ तक कोई बात ठीक हो सकती हो। मर्यादा।

पद–हद से ज्यादा = (क) बहुत अधिक। (ख) अत्यन्त।

क्रि० वि० हद दरजे का। बहुत अधिक। अत्यन्त।

हदस–स्त्री० [अ० हादिस ?] मन उत्पन्न होनेवाला ऐसा भय जिसमें मनु कि-कर्त्तव्य विमूढ़ हो जाय।

हदसना–अ० [हिं० हदस] [स० ह साना] मन में हदस या भय उत्पन्न होना डरना।

हदसाना–स० हिं० 'हदसना' का प्रे०।

हनन–पुं० [सं०] [वि० हननीय, हनि १. मार डालना। वध करना। २. आघ करना। मारना। २. गुणा करना (गणित)

हनना*–स० [सं० हनन] १. दे० 'हनन २. (नगाड़ा आदि) लकड़ी के आघात बजाना। ३. (शस्त्र) चलाना।

हनवाना–स० हिं० 'हनना' का प्रे०।

हनिवंत*–पुं० = हनुमान।

हनु–स्त्री० [सं०] १. दाढ़ की हड् जबड़ा। * २. ठोढ़ी। चिबुक।

हनुमान्–वि० [सं० हनुमत्] १. भ दाढ़ या जबड़ेवाला। २. बहुत बड़ा वी पुं० श्री रामचन्द्र के परम भक्त प्रसिद्ध वीर बन्दर। महावीर।

हनुव*–पुं० = हनुमान्।

हफ्ता–पुं० [फा०] १. सप्ताह। सात दिन।

हबकना†–अ० [अनु० हप] खाने काटने के लिए झपटना।

स० दाँत काटना।

हबराना*–अ० दे० 'हड़बड़ाना'।

हबशी–पुं० [अ० हब्शी] अफ्रिका हबश देश का निवासी, जिसके शरीर रंग घोर काला होता है।

हबीब–पुं० [अ०] १. मित्र। दोस्त २. मुहम्मद साहब जिन्हें मुसलमान ईश्व का परम प्रिय मित्र मानते हैं।

हबूड़ा–पुं० [?] एक यायावर जाति।

हब्बा-डब्बा–पुं० [हब-डब से अनु० बच्चों का एक रोग जिसमें साँस जोर-जोर

सं० अहम्] उत्तम पुरुष
सूचक सर्वनाम। 'मैं' का

। अहंकार। घमंड।
] १. साथ। संग। २.
। (यौ० के आरम्भ में;
, हम-उमर)
= हुमकना।
ना।
० [अनु०] हं हं शब्द
दि को चलाना।
[फा० हम + हिं० जोड़ी]
के और बराबर साथ रहने-
संगी।
[हिं० हम + ता (प्रत्य०)]
कि हम बहुत कुछ हैं। अहं-
-ममता जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं
मानौं।—सूर।
[फा०] [भाव० हमदर्दी]
नेवाला।
[फा०] सहानुभूति।
= हमारा।
अ०] गर्भ।
= हम्मला।
= हुमकना।
० 'हम्माम'।
[हिं० हम + आरा (प्रत्य०)]
] 'हम' का सम्बन्ध कारक

[अ० हम्माल] बोझ ढोने-
कुली।
[हिं० हम] १. सब लोगों
लाभ के लिए होनेवाला
। २. अहंकार।
० हम] 'हम' का कर्म और
का रूप। हमको।
[हिं० हम] घमंड। अहं-

कार। उदा०—दीन्यौ प्रेम-नेम गरुवाई-गुन ऊधौ कौं हिय सौं हमेव-हरुवाई बहिराइ कै।—रत्ना०।

हमेशा—अव्य० [फा०] सदा। सदैव।

हम्द—स्त्री० [अ०] १. प्रशंसा। स्तुति। २. ईश्वर का गुण-गान या उससे सम्बन्ध रखनेवाली कविता अथवा गीत।

हम्मला—पुं० [अ०] १. आक्रमण। चढ़ाई। २. मारने के लिए झपटना। ३. प्रहार। वार।

हम्माम—पुं० [अ०] १. चारो ओर से बन्द वह कमरा जिसमें गरम पानी से नहाते हैं। २. स्नानागार।

हम्मीर—पुं० [सं०] १. संपूर्ण जाति का एक संकर राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है। २. रणथम्भोर का एक प्रसिद्ध राजा जो बहुत दृढ़-प्रतिज्ञ था और अलाउद्दीन खिलजी के साथ लड़कर मरा था।

हयंद*—पुं० [सं० हयेन्द्र] बड़ा या अच्छा घोड़ा।

हय—पुं० [सं०] १. घोड़ा। २. इन्द्र।

हयग्रीव—पुं० [सं०] विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक।

हयना—स० [सं० हनन = मार डालना] १. मार डालना। हनना। उदा०—लोभ, छोभ, मोह, गर्व, काम, कामना हई।—केशव। २. नष्ट करना। न रहने देना। उदा०—जन प्रहलाद प्रतिज्ञा पुरई सखा विप्र दारिद्र हयौ।—सूर।

अ० [सं० हनन या अ० हैबत = भय] डरना। भयभीत होना।

हय-नाल—स्त्री० [सं० हय + हिं० नाल] घोड़े पर से चलाई जानेवाली तोप।

हय-मेध—पुं० = अश्वमेध (यज्ञ)।

हयशाला—स्त्री० [सं०] घुड़साल। अस्तबल।

हयसार*—स्त्री० = हयशाला। घुड़साल।

हया—स्त्री० [अ०] [वि० हयादार] लज्जा। शर्म।

हयादार—वि० [अ० हया + फा० दार]

[भाव० हयादारी] जिसे अनुचित काम करने में लज्जा आती हो। लज्जाशील।

हर–वि० [सं०] [स्त्री० हरी] १. छीनने, लूटने या हरण करनेवाला। २. दूर करने या मिटानेवाला। ३. वध या नाश करनेवाला। ४. ले जानेवाला। वाहक।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर ऊपर बतलाये हुए (विशेषणवाले) सभी अर्थ देता है। जैसे–(क) कष्ट हर = कष्ट दूर करनेवाला। (ख) सन्देश हर = सन्देश ले जानेवाला।

पुं० १. शिव। महादेव। २. गणित में वह संख्या जिससे भाग देते हैं। भाजक।

प्रत्य० [सं० गृह से व० वि०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर घर, स्थान आदि का अर्थ देता है। जैसे–खँडहर, धौरहर, मैहर, पीहर आदि।

वि० [फा०] प्रत्येक। एक-एक।

पद–हर एक = प्रत्येक। एक एक। **हर रोज**=प्रति दिन। नित्य। **हर दम**=सदा।

हरई*–स्त्री० [हिं० हरूआ = हलका] १. हलकापन। २. तुच्छता। ओछापन।

हरउद्दा†–पुं० दे० 'लोरी'।

हरएँ*–अव्य० [हिं० हरूवा] १. धीरे-धीरे। २. चुपके से। ३. क्रम-क्रम से।

हरकत–स्त्री० [अ०] १. हिलना-डोलना। गति। २. चेष्टा। क्रिया।

हरकना–स० [हिं० हटकना का पुराना रूप] १. अलग या दूर करना। हटाना। २. मना करना। रोकना। उदा०–राखौं हरकि उतै को धावै उनकी वैसिय परनि परी री।–सूर।

हरकारा–पुं० [फा०] पत्र आदि पहुँचाने या ले जानेवाला दूत। पत्रवाह।

हरक़त–स्त्री० दे० 'हरज'।

हरख*–पुं० = हर्ष।

हरखना*–अ० [सं० हर्ष] प्रसन्न होना।

हरगिज–अव्य० [फा०] कदापि। कभी।

हरज·पुं० [अ० हर्ज] १. काम में पड़ने वाली अड़चन या बाधा। रुकावट। २ क्षति। हानि। नुकसान।

हरजाई–वि० [फा०] १. हर जगह व्य घूमनेवाला। २. हर किसी से अनुचित प्रे सम्बन्ध स्थापित करनेवाला। आवारा। स्त्री० व्यभिचारिणी (स्त्री)। कुलटा।

हरजाना–पुं० [फा० हर्जानः] किसी हर्ज या हानि होने पर उसके बदले में जानेवाला धन। क्षतिमूल्य। प्रति-कर।

हरट्ठ*–वि० [सं० हृष्ट] हृष्ट-पुष्ट।

हरण–पुं० [सं०] १. छीनना, लूटना अनुचित रूप से बलपूर्वक ले लेना। २ करना। मिटाना। ३. नाश। ४ जाना। वहन। ५. भाग देना। (ग

हरता-धरता–पुं० दे० 'कर्त्ता-धर्त्ता'।

हरताल–स्त्री० [सं० हरिताल] [हरिताली] पीले रंग का एक प्रसिद्ध पदार्थ जो दवा के काम में आता है।

मुहा०–(किसी लेख या बात प **हरताल लगाना** = व्यर्थ या रद क

हरद*–स्त्री० दे० 'हल्दी'।

हरदी†–स्त्री० दे० 'हलदी'।

हरद्वार–पुं० दे० 'हरिद्वार'।

हरन*–पुं० = हरण।

†पुं० दे० 'हरिन' (पशु)।

हरना–स० [सं० हरण] हरण क छीनना या ले लेना। (विशेष 'हरण')

मुहा०–**मन हरना** = मोहित क लुभाना। **प्राण हरना**=(क) मार (ख) बहुत कष्ट देना।

*अ० दे० 'हारना'।

*पुं० [स्त्री० हरनी] दे० 'हिरन'।

हरनाकस*–पुं० = हिरण्यकशिपु।

हरनाच्छ*–पुं०.= हिरण्याक्ष।

हरनी–स्त्री० [हिं० हिरन] हिरन की मा मृगी।

[हिं० हिरन] हिरन का बच्चा।
[देश०] १. सिन्दूर रखने
डिब्बा। २. डिब्बा।
[अ०] अक्षर। वर्ण।
-स्त्री० [सं० हरिपर्वरी] १.
जाति का एक पेड़। २. उक्त
।
० दे० 'हड़बड़ी'।
-अ०, स० दे० 'हड़बड़ाना'।
० दे० 'हड़बड़ी'।
[अ० हरबः] हथियार। अस्त्र।
[?] १. अँधेर। २.
। उजड्ड।
[अ० मि० सं० हर्म्य = प्रासाद]
स्नानखाना। रनिवास।
। २. रखेली स्त्री।
स्त्री० = हरियाली।
स्त्री० = हरियाली।
० दे० 'हराएँ'।
पुं० दे० 'हरावल'।
० [तु० हरवल] १. हरावल
का कार्य या पद। २. सेना
। फौज की अफसरी।
[सं० ह्रस्व] [स्त्री० हरवी]
। हल्का।
'हार' (गले में पहनने का)।
पुं० दे० 'हलवाहा'।
= हर्ष।
अ० [हिं० हर्ष + ना (प्रत्य०)]
प्रसन्न होना।
-स० हिं० 'हरषना' का प्रे०।
या प्रसन्न होना।
वि०=हर्षित।
-अ० दे० 'हरषना'।
० दे० 'हरिस'।
-पुं० [सं० हार + सिंगार]
जिसमें छोटे सुगन्धित फूल लगते

हैं। परजाता।

हरहाया–वि० [?] [स्त्री० हरहाई] नटखट (गौ, बैल आदि)।

हर-हार–पुं० [सं०] १. (शिव के गले का हार) सर्प। साँप। २. शेष नाग।

हराँस*–स्त्री० [अ० हिरास] १. भय। डर। २. दुःख। चिन्ता। ३. थकावट। ४. हल्का ज्वर या ताप। हरारत।

हरा–वि० [सं० हरित] [स्त्री० हरी] १. घास, पत्ती आदि के रंग का। हरित। सब्ज। २. प्रफुल्ल। प्रसन्न। ३. जो मुरझाया न हो। ताजा।

यौ०–हरा-भरा = (क) जो सूखा या मुरझाया न हो। (ख) जो हरे पेड़-पौधों से भरा हो।

पुं० घास या पत्ती का-सा रंग। हरित वर्ण।

*पुं० [सं० हार] गले में पहनने का हार या माला। उदा०–रिपु-रुंड धरा को, अरपत ताको, हरीहि हरा को, मुंड दिया।–पद्माकर।

*वि० [हिं० हारना] १. हारा हुआ। २. जो (कोई बात) हार या छोड़ चुका हो। जैसे–सत-हरा = जो सत्य छोड़ चुका हो।

वि० [सं० हर] रहित। शून्य।

हराठा–वि० [सं० हृष्ट] [स्त्री० हराठी] मोटा-ताजा और मजबूत। हट्टा-कट्टा।

हराना–स० [हिं० हारना] १. युद्ध, प्रतियोगिता आदि में प्रतिद्वंद्वी को परास्त करना। पराजित करना। २. ऐसा काम करना जिससे कोई हार जाय। ३. थकाना।

हराम–वि० [अ०] १. जो इस्लाम धर्मशास्त्र में वर्जित या त्याज्य हो। निषिद्ध। २. बुरा। दूषित।

मुहा०–(कोई बात)हराम करना = कोई कार्य परम कष्टदायक और फलतः असम्भव कर देना। जैसे–तुमने हमारा खाना-पीना हराम कर दिया है।

पुं० १. अधर्म । पाप ।

मुहा० हराम का = (क) जो अधर्म से उत्पन्न या प्राप्त हो । (ख) मुफ्त का ।

२. स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध । व्यभिचार ।

हराम-खोर–पुं० [अ० हराम + फा० खोर] [भाव० हराम-खोरी] १. मुफ्त का माल खानेवाला । २. धन लेकर भी काम न करनेवाला ।

हरामजादा–पुं० [अ० हराम+फा० जादा] [स्त्री० हरामजादी] १. दोगला । वर्ण-संकर । २. परम दुष्ट । बहुत बड़ा पाजी ।

हरामी–वि० दे० 'हरामजादा' ।

हरामीपन–पुं० [अ० हराम + ई + हिं० पन] अधिक-दुष्टता या नीचता ।

हरारत–स्त्री० [अ०] १. गरमी । ताप । २. हलका ज्वर । ज्वरांश ।

हरावरि*–स्त्री० १. दे० 'हड़ावर' । २. दे० 'हरावल' ।

हरावल–पुं० [तु०] सेना में सबसे आगे चलनेवाले सिपाहियों का दल ।

हरास–पुं० [फा० हिरास] १. भय । डर । २. आशंका । खटका । ३. दुःख । ४. निराशा ।

स्त्री० [हिं० हारना] हारने की क्रिया या भाव ।

हराहर*–पुं० [हिं० हरना = हरण] बल-पूर्वक एक दूसरे की चीजें छीनना । छीना-झपटी ।

*पुं० = हलाहल ।

हरि–पुं० [सं०] १. विष्णु । २. शिव । महादेव । ३. बंदर । ४. अग्नि । आग । ५. विष्णु के अवतार, श्रीकृष्ण । ६. घोड़ा ।

*अव्य० [हिं० हरूए] धीरे । आहिस्ते ।

हरिअर†–वि० दे० 'हरा' । (रंग)

हरिआई*–स्त्री० दे० 'हरियाली' ।

हरिआना–दे० 'हरियाना' ।

हरिआली–स्त्री० दे० 'हरियाली' ।

हरि-कीर्त्तन–पुं० [सं०] ईश्वर या उस अवतारों के नाम या गुणों का कीर्त्तन ।

हरिखंड–पुं० [सं०] मोर का पर मोर-पंख ।

हरिगीतिका–स्त्री० [सं०] पिंगल एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण २८ मात्राएँ होती हैं, अन्त में एक और एक गुरु होता है और १६ मात्रा पर यति होती है । इसकी पाँचवीं, उन्नी और छब्बीसवीं मात्राएँ लघु होनी चाहिए

हरि-चंदन–पुं० [सं०] एक प्रकार चन्दन ।

हरि-जन–पुं० [सं०] १. ईश्वर का भ २. पद-दलित या अस्पृश्य जातियों सामूहिक नाम । (आधुनिक)

हरि-जान*–पुं० दे० 'हरि-यान' ।

हरिण–पुं० [स्त्री० हरिणी] दे० 'हिरन

हरिणाक्षी–वि० [सं०] हिरन की आँ के समान सुन्दर आँखोंवाली (स्त्री) ।

हरिणी–स्त्री० [सं०] १. हिरन की माद २. दे० 'चित्रिणी' ।

हरित (त)–वि० [सं०] हरा । सब्ज

हरिताभ–वि० [सं०] जिसमें हरे रंग आभा हो । हरापन लिए हुए ।

हरितालिका–स्त्री० [सं०] भादों शुक्ल पक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लि व्रत की तिथि है । तीज ।

हरिद्रा–स्त्री० [सं०] हलदी ।

हरिद्वार–पुं० [सं०] उत्तर भारत एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा तट पर है ।

हरि-धाम–पुं० [सं०] वैकुंठ ।

हरिन–पुं० [स्त्री० हरिनी] दे० 'हिरन'

हरि-नग*–पुं० [सं०] साँप की मणि

हरिनाकुस*–पुं० 'हिरण्यकशिपु' ।

हरि-नाम–पुं० [सं० हरिनामन्] ईश्व या भगवान का नाम । (जपने के लिए

हरिनी–स्त्री० [हिं० हिरन] मादा हिरन

हरि-प्रिया–स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी

एक प्रकार का छंद जिसके
में ४६ मात्राएँ होती हैं और
होता है। इसमें बारह-बारह
यति होती है।
[सं०] ईश्वर का भक्त

दे० 'हरा'। (रंग)
स्त्री० दे० 'हरियाली'।
[सं०] विष्णु के वाहन,

[?] हिसार, रोहतक,
इनके आस-पास का प्रदेश।

हरिअर (यर)] १. पेड़-
होना। २. प्रफुल्लित या
। उदा०-मख राजन को रंग
हरिअने।-रत्ना०।
भरा करना। २. प्रसन्न करना।
स्त्री० [हिं० हरियाना] हरियाना
बोली जानेवाली भाषा। बाँगड़ू।
स्त्री० [हिं० हरा] हरे-भरे पेड़-
समूह या विस्तार।
हरियाली **सूझना** = कठिन
की उमंग, प्रसन्नता या दूर की
बातें सूझना।
पुं० [सं०] गरुड़।
पुं० [सं०] सूर्य-वंश के एक
जो बहुत बड़े सत्यनिष्ठ थे।
[सं० हलीषा] हल का वह
एक सिरे पर फालवाली लकड़ी
जुआ रहता है।
[सं०] १. इन्द्र। २. सूर्य।
हिं० 'हरहाया' का स्त्री०।
[सं०] वीर-बहूटी। (कीड़ा)
[सं०] १. हर की पत्नी, पार्वती।
का एक वर्ण-वृत्त जिसके
में ब, र, ज, र, और अंत में
और एक गुरु होता है। उसे
'अनन्द' भी कहते हैं।

पुं० दे० 'हरि'।

हरीकेन-स्त्री० [अं०] एक प्रकार की दस्ती लालटेन।

हरीतकी-स्त्री० [सं०] हड़। हर्रे।

हरीतिमा-स्त्री० [सं०] १. हरे-भरे पेड़ों का विस्तार। हरियाली। २. हरापन।

हरीरा--पुं० [अ० हरीरः] दूध में मेवे मसाले डालकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ।

*वि० [हिं० हरिअर] [स्त्री० हरीरी] १. हरा। सब्ज। २. हर्षित। प्रसन्न।

हरुअ(आ)*-वि० [भाव०हरुआई]=हलका।

हरुआई-स्त्री० [हिं० हरुआ] हलकापन। स्त्री० [हिं० हरुआना] १. शीघ्रता। जल्दी। २. तेजी। फुर्ती।

हरुआना†-अ० [हिं० हरुआना] १. हलका होना। २. फुरती करना। ३. घबराकर या और किसी कारण से जल्दी मचाना।

हरुए*-क्रि० वि० दे० 'हरएँ'।

हरुवा*-वि० दे० 'हरुआ'।

हरू-वि० दे० 'हलका'।

हरें†-अव्य० दे० 'हरएँ'।

हरे-पुं० [सं०] 'हर' का संबोधन कारक-वाला रूप। हे हर!

*क्रि० वि० [हिं० हरुए] धीरे से। मन्द गति से।

*वि० १. हलका। २. धीमा। मन्द। ३. कोमल।

हरेक-वि० = हर एक। (अशुद्ध रूप)

हरेरी*-स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरेव-पुं० [देश०] १. मंगोलों का देश। २. मंगोल जाति।

हरेवा-पुं० [हिं० हरा] बुलबुल की तरह की हरे रंग की एक चिड़िया।

हरैं*-क्रि० वि० [हिं० हरुए] धीरे से। आहिस्ते।

हरैया*-पुं० [हिं० हरना] १. हरण करने या हरनेवाला। २. दूर करने या मिटानेवाला।

हरौल†-पुं० दे० 'हरावल'।

हरौहर*-स्त्री० [सं० हरण] १. बल-पूर्वक छीनना। २. लूट।

हर्ज-पुं० दे० 'हरज'।

यौ०-हर्ज-मर्ज = बाधा। अड़चन। विघ्न।

हर्त्ता-पुं० [सं० हर्तृ] [स्त्री० हर्त्री] हरण करनेवाला।

हर्फ़-पुं० दे० 'हरफ़'।

हर्म्य-पुं० [सं०] सुन्दर प्रासाद। महल।

हर्रे-स्त्री० दे० 'हड़'।

हर्ष-पुं० [सं०] [वि० हर्षित] १. प्रसन्नता या भय के कारण रोएँ खड़े होना। रोमांच। २. साहित्य में संयोग-शृंगार के अन्तर्गत एक संचारी भाव जिसमें प्रसन्नता के कारण रोएँ खड़े हो जाते हैं या चेहरे पर कुछ पसीना आ जाता है। ३. प्रसन्नता। आनन्द। खुशी।

हर्षित-वि० [सं०] प्रसन्न। खुश।

हल्-पुं० [सं०] व्यंजन का वह विशुद्ध रूप जिसके अन्त में स्वर न लगा हो। जैसे-'सम्राट्' का ट्।

हलंत-वि० [सं०] (शब्द) जिसके अन्त में हल् हो। जैसे-क्वचित्, कदाचित्।

हल-पुं० [सं०] १. जमीन जोतने का एक प्रसिद्ध उपकरण। सीर। लांगल।

मुहा०-हल जोतना = (क) खेत में हल चलाना। (ख) गँवारों का-सा काम करना।

२. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

पुं० [अ०] १. हिसाब लगाना। गणित करना। २. समस्या का समाधान या निराकरण।

हल-कंप-पुं० दे० 'हड़-कंप'।

हलक-पुं० [अ०] गले की नली। कंठ।

पद-हलक की तान = गवैयों की एक प्रकार की तान (जबड़े की तान से भिन्न) जो बहुत कठिन होती और उच्च कोटि

मानी जाती है।

स्त्री० [हल-हल से अनु०] तरंग। लह

हलकई†-स्त्री० = हलकापन।

हलकना-अ० [सं० हल्लन] [भा

हलकन] १. बरतन में भरे हुए जल

हिलने से शब्द करना। २. हिलोरें लेन

लहराना। ३. हिलना। उदा०-हिय हल

बन-माल उठावहु, मुरली धरहु उतारी।

भारतेन्दु।

हलका-वि० [सं० लघुक] [स्त्री० हल

भाव० हलकापन] १. जो भारी न

कम वजन का। २. जो तेज या चटक

न हो। ३. जो गहरा न हो। उथला।

जो अपने साधारण मान, बल, वेग अ

से कुछ कम या घटकर हो। कम अच्छ

५. कम। थोड़ा। ६. ओछा। तुच्छ।

सहज। सुख-साध्य। ८. निश्चित।

प्रफुल्ल। प्रसन्न। १०. हरा। ताजा।

† वि० [हिं० हड़कना] पागल। (

गीदड़ आदि के लिए)

†पुं० [अनु० हल-चल] तरंग। लह

पुं० [अ० हल्कः] १. वृत्त। मंड

गोलाई। २. घेरा। परिधि। ३. मंड

गरोह। ४. चारो ओर घेर कर रहनेव

का झुंड। जैसे-हाथियों का हलका।

किसी विशेष कार्य के लिये निर्धारित

गाँवों और कसबों का समूह।

हलकाई†-स्त्री० = हलकापन।

हलकान†-वि० दे० 'हलाकान'।

हलकापन-पुं० [हिं० हलका + पन(प्रत्य

१. 'हलका' होने का भाव या गुण।

ओछापन। तुच्छता। ३. अप्रतिष्ठा। हे

हलकारना†-स० [अनु०] तितर-बि

करना। छितराना।

हलकोरा†-पुं० [अनु०] तरंग। लह

हल-चल-स्त्री० [हिं० हिलना + चलना

१. हिलने डुलने की क्रिया या भाव।

राहट फैलने के कारण होने-
, भगदड़, शोर-गुल, विक-
खलबली।
ता या हिलता हुआ।
[सं० हरिद्रा] एक प्रसिद्ध
जो मसाले और रँगाई के
है।
दी उठना या चढ़ना =
दूल्हे और दुलहन के शरीर
और तेल लगना। हलदी
विवाह होना।
दी लगे न फिटकिरी =
खर्च या परिश्रम किये हुए।

[सं०] १. बलराम जी।

[सं० हल्लन] १. हिलना।
पैठना।
[अ०] शपथ। कसम।
] पानी की लहर। तरंग।
पुं० दे० 'शपथ-पत्र'।
[हिं० हल + बल] [क्रि०
खलबली। हलचल।
)-वि० [हलब देश] १. हलब
२. मोटे दल का और बढ़िया
३. बहुत मोटा।
चाल की एक प्रकार की

[सं०] जमीन जोतने का
जो इंजन की सहायता से
और जिससे बहुत अधिक भूमि
जोती जाती है। (ट्रैक्टर)
[हिं० हिलोरा] (बच्चों
लेकर इधर-उधर हिलाना।
हिलना-डोलना।
'हलुआ'।
[अ० हलवा + ई (प्रत्य०)]
] मिठाई, पूरी, नमकीन

पकवान आदि बनाने और बेचनेवाला।

हलवाई-खाना-पुं० [हिं० हलवाई + फा० खाना = घर या स्थान] वह स्थान जहाँ हलवाई बैठकर बिक्री या भोज आदि के लिए मिठाई, नमकीन, पूरी आदि बनाते हैं।

हलवाह(ा)-पुं० [सं० हलवाह] हल चलानेवाला।

हलहल*-वि० [हिं० हिलना] हिलता या काँपता हुआ।

हलहलाना-स० [अनु० हलहल] जोर से हिलाना। झकझोरना। अ० काँपना। थरथराना।

हला*-पुं० दे० 'हल्ला'।

हलाक-वि० [अ० हलाकत] जो मार डाला गया हो। हत।

हलाकान-वि० [अ० हलाक] [भाव० हलाकानी] परेशान। हैरान। तंग।

हलाकू-वि० [हिं० हलाक] हलाक करनेवाला।

हलाना-स० [हिं० हलना का स०] किसी को हलने या पैठने में प्रवृत्त करना।

हला-भला-पुं० [हिं० भला और उसका अनु०] १. कल्याण। मंगल। २. आराम। सुख।

हलायुध-पुं० [सं०] बलरामजी।

हलाल-वि० [अ०] जो शरअ या इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुकूल या ठीक हो। जायज। पुं० वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो।

मुहा०—हलाल करना = (क) मुसलमानी शरअ के अनुसार (धीरे-धीरे गला रेतकर) पशु की हत्या करना। जबह करना। (ख) मार डालना।

पद—हलाल का = ईमानदारी से कमाया या लिया हुआ।

हलालखोर-पुं० दे० 'मेहतर'।

हलाहल-पुं० [सं०] १. वह प्रचंड विष जो समुद्र-मंथन के समय निकला था। २.

उग्र विष । भारी जहर ।
वि० पूरा-पूरा । भर-पूर ।

हली–पुं० [सं० हलिन्] १. बलराम । २. किसान ।

हलीम–वि० [अ०] सुशील और शान्त ।

हलुआ–पुं० [अ० हलवः] एक प्रसिद्ध मीठा खाद्य-पदार्थ । मोहन-भोग ।

हलुक*–वि० दे० 'हलका' ।

हलुवा–पुं० दे० 'हलुआ' ।

हलूफ़ा–पुं० [अ० अलूफ़ः] वे मिठाइयाँ, पकवान आदि जो कुछ विशिष्ट जातियों में विवाह से एक-दो दिन पहले लड़कीवालों के यहाँ से, लड़केवालों के यहाँ भेजे जाते हैं ।

हलोर*–पुं० दे० 'हिलोर' ।

हलोरना*–स० [हिं० हिलोर] १. पानी में हिलोरा उत्पन्न करना । २. अनाज फटकना । ३. दोनों हाथों से समेटना । (धन आदि)

हल्दी–स्त्री० दे० 'हलदी' ।

हल्ला–पुं० [अनु०] १. शोर-गुल । कोलाहल । २. लड़ाई के समय की ललकार या शोर । ३. आक्रमण । चढ़ाई ।

हल्लीश–पुं० [सं०] एक प्रकार का नृत्य-प्रधान और एक अंकवाला उप-रूपक ।

हवन–पुं० [सं०] [वि० हवनीय] मंत्र पढ़कर घी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालने का वैदिक, धार्मिक कृत्य । होम ।

हवलदार–पुं० [अ० हवालः + फ़ा० दार] पुलिस या फौज का एक छोटा अफसर ।

हवस–स्त्री० [अ०] १. लालसा । वासना । चाह । २. तृष्णा । ३. काम-वासना । ४. दिल का अरमान ।

हवा–स्त्री० [अ०] १. प्रायः सर्वत्र चलता रहनेवाला वह तत्त्व जो सारी पृथ्वी में व्याप्त है और जिसमें प्राणी साँस लेते हैं । हवा । (एअर) ।

मुहा०–हवा उड़ना = खबर फैलना ।
हवा करना=पंखे आदि से हवा चला
(कोई चीज) हवा करना = गा
करना । उड़ा लेना । **हवा के घोड़े**
सवार होना = (क) बहुत जल्दी में हो
(ख) किसी प्रकार के नशे या गहरी उमंग
होना । **हवा खाना**=(क) शुद्ध वायु
सेवन करना । (ख) विकल या वंचित हो
हवा पीकर रहना = बिना भोजन
रहना । (व्यंग्य) **हवा बताना** = यों
चलता करना । टालना । **हवा बाँधना**
गप या शेखी हाँकना । **हवा पलट**
फिरना या बदलना = कोई नई सि
उत्पन्न होना । हालत बदलना । (कि
को) हवा बताना = किसी के मनो
या उद्देश्य की सिद्धि में बाधक होकर
दूर हटाना । **हवा बिगड़ना** = सारी
स्थिति खराब होना । **हवा से ब**
करना = बहुत तेज दौड़ना या चल
(किसी की) हवा लगना = संग
प्रभाव पड़ना । **हवा हो जाना** =
बहुत जल्दी चले जाना । (ख) न रह जा
गायब हो जाना । **हवा से लड़ना**
बिना किसी कारण के लड़ना ।
पद–हवा-पानी ।
२. भूत । प्रेत । ३. यश । कीर्ति ।
महत्त्व या उत्तम व्यवहार का विश्वास । सा
मुहा०–हवा बँधना = (क) कीर्ति
यश फैलना । (ख) बाजार में साख होने
हवा बिगड़ना = पहले की-सी म
या धाक न रह जाना ।

हवाई–वि० [अ० हवा] १. हवा
वायु-सम्बन्धी । २. हवा में चलनेवा
जैसे–हवाई जहाज । ३. कल्पित या
निर्मूल । जैसे–हवाई खबर ।
स्त्री० बान या आसमानी नाम की आ
बाजी ।
मुहा०–(मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना
चेहरे का रंग फीका पड़ जाना ।

-पुं० वह स्थान जहाँ हवाई
ों को उतारने-चढ़ाने के लिए
ते हैं। (एयरोड्रोम)

ाज-पुं० हवा में उड़नेवाली
ु-यान। (एयरोप्लेन)

-स्त्री० वह डाक या चिट्ठियाँ
ाई जहाज के द्वारा एक स्थान
पर भेजी जाती हों। (एयर मेल)

स्त्री० दे० 'मोटर' २.।

स्त्री०[हिं० हवा + चक्की] १.
से चलनेवाली आटे की चक्की।
। २. इस प्रकार का कोई यंत्र।

ं० [फा०] (स्थान) जिसमें
ाने के लिए खिड़कियाँ, द्वार,
हों।

े काम का एक प्रकार का हलका
ाली कालीन)

-पुं० किसी स्थान की वायु, जल
ाकृतिक बातें जिनका प्राणियों,
आदि के जीवन, स्वास्थ्य, विकास
प्रभाव पड़ता है। जल-वायु।

ं० [अ० हवा + फा० बाज]
जहाज चलाता हो। उड़ाका।

[अ० अहवाल] १. हाल।
रिणाम। ३. वृतान्त।

ुं० 'हवलदार'।

[अ०] १. प्रमाण का उल्लेख।
। मिसाल। ३. सपुर्दगी।

सी के) **हवाले करना** =
सौंपना। किसी को दे देना।

ं० [अ०] १. पहरे में रखा
ह स्थान जहाँ विचार होने
पहरे में रखा जाता है।

० [अ०] १. हवालात-
२. हवालात में रखा हुआ
।

हवाली-स्त्री० [अ०] आस-पास के स्थान, विशेषतः किसी नगर के आस-पास के गाँव आदि।

हवास-पुं० [अ०] १. इन्द्रियाँ। २. संवेदन। ३. चेतना। सुध। होश।

मुहा०-हवास गुम होना=होश ठिकाने न रहना। कर्त्तव्य न सूझना।

हवि-पुं० [सं० हविस्] आहुति देने की वस्तु।

हविष्य-वि० [सं०] हवन करने योग्य। पुं० १. देवता के उद्देश्य से अग्नि में डाली जानेवाली बलि। हवि। २. दे० 'हविष्यान्न'।

हविष्यान्न-पुं० [सं०] व्रत, यज्ञ आदि के दिन या उससे पहले दिन किया जानेवाला कुछ विशिष्ट सात्विक भोजन।

हविस-स्त्री० दे० 'हवस'।

हवेली-स्त्री० [अ०] १. बड़ा मकान। २. पत्नी। स्त्री। (पूरब)

हव्य-पुं० [सं०] हवन की वस्तु।

हव्वा-स्त्री० दे० 'हौवा'। पुं० दे० 'हौआ'।

हसद-पुं० [अ०] ईर्ष्या। डाह।

हसन-पुं० [सं०] १. हँसना। २. परिहास। दिल्लगी।

हसब-अव्य० [अ०] अनुसार। मुताबिक।

हसरत-स्त्री० [अ०] १. दुःख। अफसोस। २. हार्दिक कामना।

हसि*-अ० [सं० अस्ति] हिं० 'है' या 'हो' का अव० रूप। उदा०-जो हसि सो हसि मसि मुख लाई। आँखि ओट उठि बैठहि जाई।-तुलसी।

हसित-वि० [सं०] १. जिसपर लोग हँसते हों। हास्यास्पद। २. हँसता हुआ। ३. खिला हुआ। पुं० १. हास्य। हँसी। २. उपहास। हँसी-ठट्ठा। ३. हास्य या हँसी का एक विशेष प्रकार।

हसीन-वि० [अ०] बहुत सुन्दर। (व्यक्ति)

हसीलᵗ–वि॰ [अ॰ असील] सीधा-सादा।

हस्त–पुं॰ [सं॰] १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३. चौबीस अंगुल की एक नाप। हाथ। ४. एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।

हस्तक–पुं॰ [सं॰] १. हाथ। २. हाथ से बजाई जानेवाली ताली। ३. करताल। ४. नृत्य में हाथों की मुद्रा।

हस्त-कौशल–पुं॰ [सं॰] हाथ की कारीगरी।

हस्तक्षेप–पुं॰ [सं॰] किसी होते या चलते हुए काम में कुछ फेर-बदल करने के लिए हाथ डालना या कुछ कहना। दखल देना। (इन्टरफिअरेन्स)

हस्तगत–वि॰ [सं॰] हाथ में आया या मिला हुआ। प्राप्त। हासिल।

हस्त-मुद्रा–स्त्री॰ [सं॰] नृत्य आदि में भाव बताने के लिए हाथ को किसी विशेष स्थिति में रखने की मुद्रा या ढंग। हस्तक।

हस्त-रेखा–स्त्री॰ [सं॰] हथेली पर की वे रेखाएँ जिन्हें देखकर सामुद्रिक के अनुसार किसी के जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाएँ बताई जाती हैं।

हस्त-लाघव–पुं॰ [सं॰] हाथ की चालाकी, सफाई या फुरती।

हस्त-लिखित–वि॰ [सं॰] हाथ का लिखा हुआ। (ग्रंथ, लेख आदि)

हस्त-लिपि(लेखा)–स्त्री॰ [सं॰] किसी के हाथ की लिखावट या लिपि। (हैन्डराइटिंग)

हस्तांतर कर्त्ता–पुं॰ [सं॰] वह जो कोई सम्पत्ति या उसके सम्बन्ध के अधिकार आदि दूसरे को देता हो। हस्तांतरण करनेवाला। (ट्रांसफरर)

हस्तांतरण–पुं॰ [सं॰] [वि॰ हस्तांतरित] (सम्पत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। (ट्रान्सफरेन्स)

हस्तांतरणीय–वि॰ [सं॰] जिसका हस्तांतरण हो सकता हो। संक्राम्य। (ट्रांसफरेबु

हस्तांतरित–वि॰ [सं॰] (सम्पत्ति अधिकार) जो एक के हाथ से दूसरे हाथ में गया हो। जिसका हस्तांतरण हु हो। (ट्रांसफर्ड)

हस्तांतरिती–पुं॰ [सं॰ हस्तांतरित] जिसे किसी सम्मत्ति का अधिकार दिया सौंपा गया हो। (ट्रांसफरी)

हस्ताक्षर–पुं॰ [सं॰] लेख आदि के अपने हाथ से लिखा हुआ अपना जो उस लेख या उसके उत्तरदायित्व स्वीकृति का सूचक होता है। दस्तख (सिगनेचर)

हस्ताक्षरक–पुं॰ [सं॰] वह जो आदि पर हस्ताक्षर करे। दस्तखत क वाला। (सिगनेटरी)

हस्ताक्षरित–वि॰ [सं॰] जिसपर ह क्षर हुए हों।

हस्तामलक–पुं॰ [सं॰] वह चो बात जिसके सभी अंग (हथेली पर रखे आँवले की तरह) सामने आते ही प्रकट हो जाते हों।

हस्तायुर्वेद–पुं॰ [सं॰] हाथियों के की चिकित्सा का शास्त्र।

हस्ति-जिह्न–स्त्री॰ [सं॰] हठयो अनुसार बाईं आँख की नाड़ी।

हस्तिनी–स्त्री॰ [सं॰] १. मादा ह हथिनी। २. काम-शास्त्र और साहि चार प्रकार की स्त्रियों में से सबसे प्रकार की स्त्री जो स्थूल और लोम शरीरवाली तथा पति या प्रेमी को अधि पूर्वक अपने वश में रखनेवाली मानी ग

हस्ती–पुं॰ [सं॰ हस्तिन्] [स्त्री॰ हि हाथी।

स्त्री॰ [फा॰] १. अस्तित्व। २. व्यक्ति

हस्ते–अव्य॰ [सं॰] हाथ से। द्वारा। या और किसी वस्तु का दिया जाना।

हहरनाᵗ–अ॰ [अनु॰] १. काँपना।

र्दाना । ३. दंग रह जाना ।
। ४. ईर्ष्या या डाह करना ।
हिं० 'हहरना' का स० ।
हहरना' ।
प्र०, स०, दे० 'हहराना' ।
जल-थल-चर बिकल सकल थल
।—रत्ना० ।
[अनु०] १. हँसने का शब्द ।
हाहाकार । ३. दीनता प्रकट
गिड़गिड़ाने का शब्द ।
हा खाना=बहुत गिड़गिड़ाना ।
सं० आम्] १. स्वीकृति, सम-
ति सूचक शब्द ।
जी, हाँ जी करना या हाँ
तलाना = किसी की अनुचित
को मान लेना या बतलाना ।
हाँ' ।
[सं० हुंकार] १. वह जोर का
सी को पुकारने के लिए किया
र ।
क देना या लगाना =
पुकारना । हाँक-पुकार कर
सबके सामने चिल्लाकर या खुले-
।
। हुंकार । ३. बढ़ावा । ४.
[हिं० हाँक] १. जानवरों को
हाने के लिए आगे बढ़ाना या
रना । २. गाड़ी, रथ आदि
, जोर से पुकारना या बुलाना ।
धावे के समय शत्रु को लड़ने
कारना । हुँकार करना । ५.
तें करना । डींग मारना । ६.
करना ।
[हिं० हाँकना] जंगली जानवरों
करने के लिए उन्हें हाँक कर
जाना जहाँ सहज में उनका
के ।

पुं० [हिं० हाँक] १. पुकार । टेर । २. ललकार । ३. गरज । ४. दे० 'हँकवा' ।

हाँगर—स्त्री० [बँग०] एक प्रकार की विकट और भीषण समुद्री मछली जो प्रायः मनुष्यों पर घातक प्रहार करती है । (शार्क)

हाँगी†—स्त्री० [हिं० हाँ] किसी प्रश्न के उत्तर में 'हाँ' कहना । स्वीकृति ।

मुहा०—हाँगी भरना=कोई बात विशेषतः स्वीकृत सूचक बात कहना । उदा०—...... रोकि रसना हू त्यों भरी ना कछू हाँगी री । ——पद्माकर ।

हाँड़ना†—स० [सं० भंडन] यों ही इधर-उधर घूमना ।

हाँड़ी—स्त्री० [सं० भांड़] १. देगची के आकार का मिट्टी का छोटा बरतन । हँड़िया ।

मुहा०—हाँड़ी पकना = षड्यंत्र रचा जाना । **हाँड़ी चढ़ाना** = भोजन आदि पकाने के लिए हाँड़ी का आग पर रखा जाना ।

कहा०—काठ की हाँड़ी = ऐसा छल जो बार-बार न चल सके ।

२. इसी आकार का शीशे का वह पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाते हैं ।

हाँतना*—स० [सं० हात] १. अलग करना । २. दूर करना । हटाना । ३. दे० 'हतना' ।

हाँता*—वि० [सं० हात] [स्त्री० हाँती] अलग या दूर किया हुआ ।

हाँपना—अ० [अनु०] परिश्रम करने, दौड़ने आदि के कारण जोर-जोर से और जल्दी-जल्दी साँस लेना ।

हाँसना*—अ०, स० = हँसना ।

हाँसल—पुं० [देश०] लाल रंग का वह घोड़ा जिसके पैर कुछ काले हों । कुम्मैत । हिनाई ।

हाँसी—स्त्री० = हँसी ।

हाँसु†—पुं० = हँसील (गहना) ।

हाँ हाँ—अव्य० [सं० आम्] स्वीकृति या सहमति का शब्द ।

अव्य० [हिं० हैं ! (आश्चर्य)] मना करने या रोकने का शब्द ।

हा-अव्य० [सं०] १. शोक, दुःख, भय आदि का सूचक शब्द ।

मुहा०-हा-हा खाना = बहुत ही दीनतापूर्वक और गिड़गिड़ाकर कोई प्रार्थना करना ।

२. आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द ।

प्रत्य० हनन करनेवाला । मारनेवाला । (यौ० के अन्त में, जैसे–वृत्रहा)

हाइ*-स्त्री० [सं० घात] १. दशा । हालत । अवस्था । २. घात । गौं । ३. तौर । ढंग । ढब ।

अव्य० दे० 'हाय' ।

हाइल*-वि० [अ० हायल] चारो ओर से घिरा या बँधा हुआ ।

वि० [हिं० हाही उत्कट लालसा] जिसे किसी बात की हाही पड़ी हो । उत्कट लालसा रखनेवाला ।

हाई कोर्ट-पुं० = धर्माधिकरण ।

हाऊ-पुं० दे० 'हौआ' ।

हाकल-पुं० [?] १४ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द जिसमें नवीं मात्रा के बाद यति और अन्त में गुरु वर्ण होता है ।

हाकली-स्त्री० [सं०] सारवती नामक छन्द का दूसरा नाम ।

हाकिम-पुं० [अ०] [वि०, भाव० हाकिमी] १. शासक । २. बड़ा अधिकारी ।

हाजत-स्त्री० [अ०] [वि० हाजती] १. आवश्यकता । जरूरत । २. चाह । ३. पहरे में रक्खा जाना । हिरासत । हवालात ।

हाजमा-पुं० [अ०] भोजन पकाने की क्रिया या शक्ति ।

हाजरी-स्त्री० दे० 'हाजिरी' ।

हाजिर-वि० [अ०] उपस्थित । मौजूद ।

हाजिर जवाब-वि० [अ०] [भाव० हाजिर-जवाबी] हर बात का तुरन्त और उपयुक्त उत्तर देनेवाला ।

हाजिरात-स्त्री० [अ०] एकप्रक्रिया जि
किसी वस्तु या व्यक्ति पर कोई आ
बुलाकर उससे कुछ बातें पूछी जाती है

हाजिरी-स्त्री० [अ०] १. हाजिर की क्रिया या भाव । २. उपस्थिति ।
दगी । ३. भोजन, विशेषतः दोपहर क

हाजी-पुं० [अ०] वह जो हज कर
हो । (मुसल०)

हाट-स्त्री० [सं० हट्ट] १. दूकान । २. बा

मुहा०-हाट करना = (क) दुकान
कर बैठना । (ख) बाजार जाकर चीजें ल
हाट लगना = बाजार में दूकानें ल
हाट चढ़ना = बाजार में बिके
लिए आना ।

हाटक-पुं० [सं०] सोना । स्वर्ण ।

हाटकपुर-पुं० [सं०] लंका ।

हाड़*-पुं० [सं० हड्ड] १. हड्डी । अ
२. वंश की मर्यादा । कुलीनता ।

हाता-पुं० दे० 'अहाता' ।

*वि० [सं० हात] [स्त्री० हाती
अलग या दूर किया हुआ । उदा०
सब हाते करि राखत, राम सनेह-सग
तुलसी । २. नष्ट ।

पुं० [सं० हंता] वध करनेवाला ।

हाथ-पुं० [सं० हस्त] १. कन्धे
तक का वह अंग जिससे चीजें पकड़ते
काम करते हैं । कर । हस्त ।

मुहा०-हाथ आना या पड़
प्राप्त होना । मिलना । (किसी
हाथ उठाना = सलाम करना । (कि
पर) **हाथ उठाना या चला**
मारना । **हाथ कट जाना** = प्र
लेख आदि से बद्ध होने या और
कारण से कुछ करने योग्य न रहना ।
खाली होना = पास में धन न हो
हाथ खींचना = कोई काम करते
रुक जाना । (किसी का) **हाथ**
आना = किसी प्रकार की आर्थिक प्र

किसी को घूस आदि देना।
) हाथ छोड़ना = मारना।
) हाथ जोड़ना = (क)
स्कार करना। (ख) कृपा के
विनय करना। **दूर से हाथ**
बिलकुल दूर या अलग रहना।
ना = (क) हस्तक्षेप करना।
। **हाथ तंग होना** = पास
ना। **(किसी को) हाथ**
सहारा देना। सहायक होना।
'हाथ मिलाना'। **(किसी**
हाथ धोना = (क) गँवा या
(ख) प्राप्ति की आशा छोड़
धोकर पीछे पड़ना =
प्रयत्न में लग जाना। **हाथ**
=(क) कोई काम करने से
(ख) आश्रय देना। शरण में
सी के) **हाथ पड़ना या**
ड़ना = किसी के अधिकार या
ना। किसी के पल्ले पड़ना।
हु पाखँड मानहु बात नाहिं
म के हाथ।—कबीर। **हाथ**
धरे बैठे रहना = खाली बैठे
न करना। **(किसी के**
थ पसारना या फैलाना =
र हाथ आगे करना। **हाथ-**
ना = काम-धन्धा करना। **हाथ-**
ना = अनुनय-विनय करना।
फूलना = इतना घबरा जाना
रते-धरते न बने। **हाथ-**
ना = प्रयत्न या परिश्रम करना।
काम में) **हाथ बँटाना** =
ना। योग देना। **(किसी के**
हाथ बाँधे खड़े रहना =
उपस्थित रहना। **हाथ**
(ख) हथेलियाँ एक दूसरी से
आपस में मलने या रगड़ने
किसी बात के लिए दुःखी होने या पछताने की सूचक है। (ख) पछताना। **(किसी चीज पर) हाथ मारना** = उड़ा लेना। गायब कर देना। **हाथ मिलाना** = (क) किसी से भेंट होने पर उसकी हथेली अपने हाथ में लेकर प्रसन्नता प्रकट करना। (ख) सम्पर्क या सम्बन्ध स्थापित करना। **हाथ मीड़ना** = *दे० 'हाथ मलना'। उदा०–मीड़त हाथ, सीस धुनि ढोरत, रुदन करत नृप पारथ। –सूर। **हाथ में करना** = अपने अधिकार या वश में करना। **हाथ रँगना** = अनुचित रूप से लाभ या प्राप्ति करना। ***हाथ रोपना या ओड़ना** = दे० 'हाथ फैलाना'। **हाथ लगना** = प्राप्त होना। मिलना। **(किसी के काम में) हाथ लगना** = आरम्भ या शुरू होना। **हाथ लगाना** = (क) छूना। (ख) आरम्भ करना। **रँगे हाथ या हाथों** = अपराध करते हुए या उसके प्रमाण के साथ। जैसे–रँगे हाथ पकड़े जाना। **लगे हाथ या हाथों** = कोई काम करते समय, उसे पूरा करके निश्चिंत होने से पहले। जैसे–लगे हाथ यह काम भी कर डालो। **हाथों के तोते उड़ जाना** = अचानक कोई दुर्घटना या अनिष्ट हो जाने पर भौचक या सन्न हो जाना। **हाथों-हाथ** = एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए। **हाथों-हाथ लेना** = बहुत आदर और सम्मान से स्वागत करना।

पद–हाथ या हाथ पर की मैल = तुच्छ वस्तु या पदार्थ।

२. कोहनी से पंजे के सिरे तक की लम्बाई की नाप। ३. हाथ से खेले जानेवाले खेलों में हर खिलाड़ी के खेलने की बारी। दाँव।

हाथ-फूल–पुं० [हिं० हाथ + फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथा–पुं० [हिं० हाथ] १. औजारों आदि की मूठ। दस्ता। २. मंगल-अवसरों पर

हलदी आदि से दीवारों पर लगाई जानेवाली पंजे की छाप।

हाथा-पाई (बाँही)–स्त्री० [हिं० हाथ + पायँ या बाँह] हाथ-पैर से खींचने और ढकेलने की लड़ाई। भिड़ंत।

हाथी–पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हथिनी] १. एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो अपने स्थूल और विशाल आकार तथा सूँड के कारण सब जानवरों से विलक्षण होता है। गज।

मुहा०–हाथी के साथ गन्ने खाना= किसी काम में ऐसे आदमी की बराबरी करने का प्रयत्न करना जिसकी बराबरी की ही न जा सकती हो।

कहा०–हाथी का खाया कैथ = ऐसा पदार्थ जो ऊपर से देखने में बिलकुल ठीक और सार-युक्त जान पड़े, पर जिसके अन्दर का सार या तत्त्व निकल गया हो।

२. शतरंज का एक मोहरा।

*स्त्री० [हिं० हाथ] हाथ का सहारा।

हाथीखाना–पुं०[हिं० हाथी + फा० खानः] वह स्थान जहाँ पाले हुए हाथी रहते हों।

हाथी-दाँत–पुं० [हिं० हाथी + दाँत] हाथी के मुँह के दोनों ओर बाहर निकले हुए दाँत के आकार के वे सफेद अवयव जिनसे कई तरह की चीजें बनती हैं।

हाथीनाल–स्त्री० दे० 'गज-नाल'।

हाथी-पाँव–पुं० दे० 'फीलपा'।

हाथीवान–पुं० दे० 'महावत'।

हादसा–पुं० [अ०] दुर्घटना।

हान*–पुं० [सं० हानि] त्याग। छोड़ना। †स्त्री० = हानि।

हानि–स्त्री० [सं०] १. टूटने-फूटने आदि के कारण होनेवाला नाश। (लॉस) २. आर्थिक क्षति। नुकसान। (डैमेज) ३. कोई ऐसी अनुचित बात या आघात जिससे मान-मर्यादा, संपत्ति आदि में कुछ कमी होती हो। क्षति। (इंजरी) ४. घाटा। टोटा। 'लाभ' का विरु०। ५. स्वास को पहुँचनेवाली खराबी। ६. अपकार बुराई।

हानिकर (कारक)–वि० [सं०] हानि करनेवाला। जिससे नुकसान हो। स्वास्थ्य बिगाड़नेवाला।

हानि-मूल्य–पुं० [सं०] वह धन किसी की हानि होने पर उसके बदले में दिया जाय। प्रति-कर। क्षति-पूर्ति (डैमेजेस)

हानि-लाभ–पुं० [सं०] व्यापार में होनेवाला या और किसी प्रकार नुकसान और नफा। (प्राफिट ऐन्ड लॉ

हानी*–वि०[सं० हीन]रहित। हीन। उदा० इक रसना, सोउ लोचन-हानी कहौ क्यों पाऊँ।—हित वृन्दावनदास।

स्त्री०* = हानि (नुकसान)

हाफिज–पुं० [अ०] वह धार्मिक मुस मान जिसे कुरान कंठस्थ हो।

वि० हिफाजत करनेवाला। रक्षक।

हामी–स्त्री० [हिं० हाँ] 'हाँ' करने क्रिया या भाव। स्वीकृति।

मुहा०–हामी भरना = मंजूर करना

स० [अ०] हिमायत करनेवाला।

हाय–अव्य० [सं० हा] शोक, दुःख, पी आदि का सूचक शब्द।

मुहा०–(किसी की) हाय पड़ना किसी के हाय करने का बुरा फल मिलना

हायन–पुं० [सं०] वर्ष। साल।

हायल*–वि० [सं० हात = छोड़ा हुआ हत ?] १. क्षत-विक्षत। घायल। उदा० पाप लगौ छाँड़ौ न अब हायल न कुमार।–राम-सतसई। २. ढीला शिथिल। ३. थका हुआ। ४. बहुत दुःखी। परम खिन्न। उदा०–है हिय हायल घायल-सी घन घूमि गिरि परी प्रे तिहारे।–पद्माकर।

वि० [अ०] बीच में आड़ करनेवाला।

[हिं० हाही] (किसी वस्तु
ुर । व्याकुल । (यौ० शब्दों
) उदा०-मेल्यौ जाल काल जन्न
मीन जल-हार्यौ ।–सूर ।
हिं० हारि] १. युद्ध, प्रति-
आदि में प्रतिद्वंद्वी से न जीत
या भाव । पराजय ।
खाना = हारना ।
। थकावट । ३. हानि ।
] १. राज्य द्वारा हरण । २.
। ३. गले में पहनने की सोने,
यों, फूलों आदि की माला ।
त में भाजक । ५. जंगल ।
न ।
करने या ले जानेवाला । २.
। ३. नाशक ।
(दशा) ।
ी० हारी] दे० 'हारा' ।
[सं०] [स्त्री० हारिका] १.
ला । २. मनोहर । सुन्दर ।
। २. लुटेरा । ३. गणित में
हार । माला ।
दे० 'हार्दिक' ।
हृदय] मन की बात, अभिप्राय,
ना आदि ।
[हिं० हार] १. युद्ध, खेल,
आदि में प्रतिपक्षी के सामने
पराजित होना । 'जीतना' का
थक जाना । ३. प्रयत्न में
।
रे दर्जे = लाचार होकर ।
= असमर्थ या विवश होकर ।
योगिता, युद्ध, खेल आदि में
ने के कारण हाथ से उसे या
रखनेवाली चीज, जाने देना ।
धन या बाजी हारना । २.
। उदा०–नैंकु त्रियोग मीन
प्रेम-काज बपु हार्यौ ।–सूर ।

३. न रख सकने के कारण जाने देना ।

हारबार*–स्त्री० दे० 'हड़बड़ी' ।

हारा†–प्रत्य० [?] [स्त्री० हारी] गद्य के 'वाला' प्रत्यय की जगह कविता, विशेषतः प्राचीन कविता में प्रयुक्त होनेवाला प्रत्यय जो कर्तृत्व, स्वामित्व आदि का सूचक होता है । जैसे–करनहारा, चलावनहारा ।

हारिल–पुं० [देश०] एक चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुल में तिनका या छोटी पतली लकड़ी लिये रहती है । उदा०–मृग-मद छाँडि न जात, गही ज्यौं हारिल लकरी ।–भगवत रसिक ।

*वि० [हिं० हारना] १. हारा हुआ । २. थका हुआ ।

हारी–वि० [सं० हारिन्] [स्त्री० हारिणी] १. हरण करनेवाला । (यौ० के अन्त में) स्त्री० [हिं० हारना] पराजय । हार । उदा०–हारी जानि पीर हरि मेरी ।–सूर ।

हारीत–पुं० [सं०] १. चोर । २. डाकू ।

हारौल*–पुं० दे० 'हरावल' ।

हार्दिक–वि० [सं०] १. हृदय संबंधी । हृदय का । २. हृदय से निकला हुआ या हृदय में होनेवाला । ठीक और सच ।

हाल–पुं० [अ०] १. दशा । अवस्था । २. परिस्थिति । ३. समाचार । वृत्तान्त । ४. विवरण । ब्योरा ।

वि० वर्तमान । मौजूद ।

मुहा०–हाल में = कुछ ही दिन पहले । **हाल का** = ताजा ।

अव्य० १. इसी समय । अभी । २. तुरन्त । चटपट ।

स्त्री० [हिं० हिलना] १. हिलने की क्रिया या भाव । कंप । २. पहिये पर चढ़ाया जानेवाला लोहे का गोल बन्द ।

हाल-गोला*–पुं० दे० 'गेंद' ।

हाल-डोल–पुं० [हिं० हालना + डोलना] १. हिलने-डोलने की क्रिया या भाव । २. हलचल ।

हालत–स्त्री० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. आर्थिक स्थिति। ३. परिस्थिति।

हालना*–अ० = हिलना।

स० = हिलाना।

हालरा†–पुं० [हिं० हालना] १. बच्चों को गोद में लेकर हिलाना-डुलाना। २. झोंका। ३. लहर। हिलोर।

हालरी–स्त्री० [हिं० हालना] बच्चों को सुलाने के लिए गाया जानेवाला गीत। लोरी। (राज०)

हालाँ कि–अव्य० [फा०] यद्यपि।

हाला–स्त्री० [सं०] मद्य। शराब।

हालाहल–पुं० = हलाहल।

हालै*–अव्य० [अ० हाल] १. इसी समय। अभी। २. बहुत शीघ्र। तुरन्त।

हाव–पुं० [सं०] साहित्य में संयोग के समय नायक को मोहित करने अथवा उस पर मिलन की इच्छा प्रकट करने के लिए की जानेवाली स्वाभाविक चेष्टाएँ जो कायिक तथा मानसिक अनुभावों के अन्तर्गत मानी गई हैं और जो बारह प्रकार की कही गई हैं। यथा—लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, बिब्बोक, विहृत, कुट्टमित, ललित बोधक और हेला।

हावन-दस्ता–पुं० [फा०] खरल के आकार का धातु का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिसमें कोई चीज उसी धातु की मुँगरी से कूटी जाती है। इमाम दस्ता।

हाव-भाव–पुं० [सं०] पुरुषों को मोहित करने के लिए स्त्रियों की मनोहर चेष्टाएँ। नाज-नखरा।

हाशिया–पुं० [अ० हाशियः] १. किनारा। पाड़। २. गोट। मगजी। ३. लिखने के समय कागज के किनारे खाली छोड़ी हुई जगह। उपांत।

पद–हाशिये का गवाह = वह गवाह जिसने किसी लेख्य के किनारे पर गवाही की हो। उपांतस्थ साक्षी।

४ किसी बात पर की हुई टीका-टिप्पणी

मुहा०–हाशिया चढ़ाना = किसी वि
रण में अपनी ओर से कुछ और जोड़ना

हास–पुं० [सं०] १. हँसने की क्रिया
भाव। हँसी। २. दिल्लगी। ठठोली।
साहित्य में केवल कौतुक के लिए कही जा
वाली वह बात या बनाया जानेवाला
रूप या वेष जो आह्लाद या प्रसन्नता
सूचक और उत्पादक होता है। यह साहि
भावों के अन्तर्गत है।

हासक–पुं० [सं०] [स्त्री० हासिका
१. हँसने-हँसानेवाला। २. हँसोड़।

हासिल–वि० [अ०] पाया या मि
हुआ। प्राप्त। लब्ध।

पुं० १. जोड़ में किसी संख्या का वह अं
जो अन्तिम अंक के नीचे लिखे जाने
बच रहे। २. गणित की क्रिया का फ
३. पैदावार। उपज। ४. लाभ। न
५. जमीन का लगान। जमा। ६. वह
जो किसी से अधिकारपूर्वक लिया जाता
जैसे–खिराज, चौथ आदि। उदा०–"'ठ
ठौर हासिल उगाहत है साल को।–भूष

हासी–वि० [सं० हासिन्] [स्त्री० हासिनी
हँसनेवाला।

हास्य–वि० [सं०] १. हँसने के यो
जिसपर लोग हँसें। २ उपहास के योग्य

पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी
२. साहित्य में नौ रसों में से एक
अयुक्त, असंगत, कुरूप या विकृत घटना
पदार्थों या बातों आदि से उत्पन्न होता है
इसका स्थायी भाव हास या हँसी है।
दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक।

हास्यक–पुं० [सं० हास्य + क (प्रत्य०)
हँसी की बात या किस्सा। चुटकुला।

हास्यास्पद–वि० [सं०] [भाव० हास्या
स्पदता] जिसके बेढंगेपन की लोग हँ
उड़ावें। हँसी उत्पन्न करानेवाला।

[सं०] हे ईश्वर, यह
।
अनु०] १. हँसने का शब्द।
ी, ही ही (ठी ठी) = हँसी-
कोटि का परिहास।
ती की पुकार। दुहाई।
हा करना या खाना* =
त्रापूर्वक और गिड़गिड़ाकर
।
[सं०] घबराहट के समय
ी पुकार या चिल्लाहट (विशे-
लोगों की)। कुहराम।
दे० 'हाहाकार'।
[हिं० हाय हाय] कुछ पाने के
हाय हाय' करते रहना। चरम
ेम।
[अनु०] १. शोर-गुल।
ल्ला। २. हलचल।
[सं० हिंकार] १. पीड़ा
। उदा०–हिंकरि हिंकरि हय
-तुलसी। २. दे० 'हिनहिनाना'।
ना'।
सं०] हींग।
[सं०] ईंगुर। शिंगरफ।
[सं० हिंगुपत्र] एक प्रकार
ंगली पेड़ जिसके फलों से तेल
इंगुदी।
= इच्छा।
पुं० दे० 'हिंडोला'।
दे० 'हिंडोला'।
[सं० हिन्दोल] १. हिंडोला।
ओड़व जाति का एक राग जो
दिन के पहले पहर में गाया
[सं० हिन्दोल] १. काठ का बना
चक्कर जिसमें लोगों के बैठने
नीचे घूमनेवाले छोटे-छोटे
। २. पालना। झूला। ३.

वह कविता जिसमें हिंडोले पर झूलने का वर्णन हो।

हिंताल–पुं० [सं०] खजूर की जाति का एक प्रकार का सुन्दर पेड़ जो प्रायः जलाशयों के किनारे होता है।

हिंदवाना–पुं० = तरबूज।

हिंदवी–स्त्री० दे० 'हिंदी' (भाषा)।

हिंदी–वि० [फा०] हिन्द या हिन्दुस्तान का। भारतीय।

पुं० हिन्द का निवासी। भारतवासी।

स्त्री० १. हिन्दुस्तान की भाषा। २. उत्तरी और मध्य भारत की वह भाषा जिसके अन्तर्गत कई उप भाषाएँ या बोलियाँ हैं और जो इस देश की राष्ट्र-भाषा है।

मुहा०–हिन्दी की चिन्दी निकालना= १. बहुत सूक्ष्म, पर व्यर्थ के या तुच्छ दोष निकालना। २. कुतर्क करना।

हिंदी वर्णमाला–स्त्री० देव-नागरी वर्णमाला का वह रूप जिसमें ऋ, लृ और लॄ ये तीनों स्वर नहीं होते। विशेष दे० 'देवनागरी'।

हिंदुस्तान–पुं० [फा० हिन्दोस्तान] १. भारतवर्ष। २. दिल्ली से पटने तक का भारत का उत्तरीय और मध्य भाग।

हिंदुस्तानी–वि० [फा०] हिन्दुस्तान का। हिन्दुस्तान-सम्बन्धी। भारतीय।

पुं० हिन्दुस्तान का निवासी। भारतवासी। भारतीय।

स्त्री० १. हिन्दुस्तान की भाषा। २. बोलचाल या लोक व्यवहार की (पर साहित्यिक से भिन्न) वह हिन्दी जिसमें न तो अरबी के शब्द अधिक हों, न संस्कृत के।

हिंदुस्थान–पुं० दे० 'हिंदुस्तान'।

हिंदू–पुं० [फा०] [भाव० हिंदूपन, हिंदुत्व] भारतीय आर्यों के वर्त्तमान भारतीय वंशज जो वेदों, स्मृति-पुराणों आदि को अपने धर्म-ग्रन्थ मानते हैं।

हिंवार†–पुं० [सं० हिमालि] १. हिम।

बरफ । २. तुषार । पाला ।

हिंसक-पुं० [सं०] [भाव० हिंसकता, हिंसा] १. हिंसा करने या मार डालनेवाला । घातक । २. दूसरों की बुराई या हानि चाहने और करनेवाला ।

वि० (पशु) जो पशुओं या जीवों को मारकर उनका मांस खाता हो ।

हिंसना*-स० [सं० हिंसन] १. हिंसा या हत्या करना । २. किसी की निन्दा या बुराई करना । बुरा-भला कहना । उदा०-यौं कहि हिंसत सबहिं लहहिं जासौं जहँ संगम ।—रत्ना० ।

हिंसा-स्त्री० [सं०] [वि० हिंसक] १. प्राणियों को मारने-काटने और शारीरिक कष्ट देने की वृत्ति । २. किसी को हानि पहुँचाना ।

हिंसात्मक-वि० [सं०] जिसमें हिंसा हो । हिंसा से युक्त ।

हिंसालु-वि० [सं०] हिंसा करनेवाला ।

हिंस्र(क)-वि० [सं०] हिंसा करनेवाला ।

हि-एक पुरानी विभक्ति जो पहले सब कारकों में चलती थी, पर बाद में 'को' के अर्थ में ही रह गई ।

*अव्य० दे० 'ही' ।

हिअ(रा)*-पुं० = हृदय ।

हिआव†-पुं० = हिआव (साहस) ।

हिकमत-स्त्री० [अ०] [वि० हिकमती] १. कोई नई बात ढूँढ़ निकालने की बुद्धि । २. युक्ति । उपाय । तरकीब । ३. यूनानी चिकित्सा शास्त्र । ४. पेशा । हकीमी ।

हिक्का-स्त्री० [सं०] १. हिचकी । २. एक रोग जिसमें बहुत हिचकियाँ आती हैं ।

हिचक-स्त्री० [हिं० हिचकना] कोई काम करने से पहले मन में होनेवाली हलकी रुकावट । आगा-पीछा ।

हिचकना-अ० [हिं० हिचकी या अनु०] [भाव० हिचक, हिचकिचाहट] कोई काम करने से पहले, आशंका, अनौचित्य, असमर्थता आदि का ध्यान करके कुछ रुकना । आगा-पीछा करना ।

*अ० [हिं० हिचकी] हिचकियाँ लेना ।

हिचकिचाना-अ० = हिचकना । रुकना ।

हिचकी-स्त्री० [अनु० हिच या सं० हिक १. प्रसिद्ध शारीरिक व्यापार जिसमें या कलेजे की वायु कुछ रुककर गले रास्ते निकलने का प्रयत्न करती है ।

मुहा०-हिचकी लगना=मरने के स बार-बार हिचकियाँ आना ।

२. इसी प्रकार का वह शारीरिक व्य जो बहुत अधिक रोने पर होता है ।

हिजड़ा-पुं० दे० 'हीजड़ा' ।

हिजरत-स्त्री० [अ०] १. एक स् छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना । २. मुह साहब का मक्के से मदीने जाना ।

हिजरी-पुं० [अ०] मुसलमानी सन् मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भा या हिजरत करने की तिथि । (१५ जू ६२२ ई०) से चला है ।

हिज्जे-पुं० [अ० हिज्जः] किसी शब् आये हुए अक्षरों, मात्राओं आदि क्रम । अक्षरी । वर्त्तनी । (स्पेलिंग)

हिज्र-पुं० [अ०] वियोग । (श्रृंगार

हित-पुं० [सं०] १. कल्याण । मंग २. भलाई । उपकार । ३. लाभ । फायद ४. अनुराग । प्रेम । ५. विविध क्षेत्रों किसी वस्तु या विषय के साथ होनेवा किसी व्यक्ति का वह सम्बन्ध जिसके अ सार उस विषय या वस्तु के कारण भवि में होनेवाले हानि या लाभ से उस व्य की भी हानि या लाभ होता या हो स हो । (इन्टरेस्ट) ६. स्नेह । मुहब्ब ७. वह जो किसी की भलाई चाहता करता हो । हितैषी । उदा०-पांच पति हारि बैठे, रावरैं हित मौर ।—सूर । संबंधी । रिश्तेदार ।

अव्य० १. (किसी की भलाई या प्रसन्न

वाते। २. निमित्त। लिए।
-कान कियौ जन हित जदु-
।

(क)-वि॰ [सं॰] [भाव॰
१. हित या भलाई करने-
भदायक। फायदे-मन्द। ३.
र अच्छा और लाभदायक।
॰ = हितकर।
वि॰ [सं॰] [भाव॰ हित-
चाहनेवाला। शुभचिंतक।

-पुं॰ [सं॰] किसी के उपकार
बातें सोचना।
॰ दे॰ 'हित' १. तथा ४.।
॰ दे॰ 'हिताना'।
॰ दे॰ 'हिताई'।
[सं॰ हित] १. सम्बन्ध।
नातेदारी। २. हित-चिन्तन।
री या मित्रता का सम्बन्ध।

॰ [सं॰ हित] १. हितकारी
होना। २. प्रेम या स्नेह
उपकार या भलाई करना।
॰ = हितकारी।
॰ [सं॰] १. हित और
ाई और बुराई। २. लाभ
नफा और नुकसान।
सं॰ हित] १. हितैषी। २.
तेदार। ३. सुहृद। स्नेही।
सं॰ हित] १. हितकारक।

॰ दे॰ 'हितू'।
= हितैषी।
॰ दे॰ 'हिताई'।
[सं॰ हितैषिन्] [स्त्री॰ हितै-
हितैषिता] हित या भला
हितचिन्तक।
[अ॰] १. बड़े का छोटे

को यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए। २. अभिसूचना। निर्देश।

हिनती*–स्त्री॰ = हीनता।

हिनहिनाना–अ॰ [अनु॰] [भाव॰ हिनहिनाहट] घोड़े का हिन् हिन् शब्द करना। हींसना।

हिना–स्त्री॰ [अ॰] मेंहदी।

हिनाई–वि॰ [अ॰] मेंहदी के रंग की तरह का, लाल।
पुं॰ उक्त रंग का घोड़ा।

हिफाजत–स्त्री॰ [अ॰] रक्षा। रखवाली।

हिब्बा–पुं॰ [अ॰ हिब्बः] १. कौड़ी। २. दान।

हिब्बानामा–पुं॰ = दानपत्र।

हिमंचल*–पुं॰ = हिमालय।

हिमंत*–पुं॰ = हेमंत।

हिम–पुं॰ [सं॰] १. पाला। तुषार। २. जाड़ा। शीत। ठंड। ३. जाड़े का मौसम। शीत ऋतु। ४. चन्द्रमा। ५. कपूर।
वि॰ ठंडा या शीतल।

हिम-कण–पुं॰ [सं॰] तुषार या पाले के बहुत छोटे-छोटे कण या टुकड़े।

हिमकर–पुं॰ [सं॰] चन्द्रमा।

हिमजन–पुं॰ [अं॰ हीलियम को दिया हुआ सं॰ रूप] एक प्रकार का रासायनिक तत्त्व जो एक पारदर्शक वाष्प के रूप में होता है और जिसका पता हाल में लगा है। (हीलियम)

हिमपात–पुं॰ [सं॰] प्राकृत रूप से बरफ गिरना। (स्नो फॉल)

हिम-भानु–पुं॰ [सं॰] चन्द्रमा।

हिमयानी–स्त्री॰ [फा॰] कमर में बाँधी जानेवाली रुपये रखने की लम्बी थैली।

हिमवान्–वि॰ [सं॰ हिमवत्] [स्त्री॰ हिमवती] जिसमें बरफ या पाला हो।
पुं॰ १. हिमालय। २. चन्द्रमा।

हिमांक–पुं॰ [सं॰] १. कपूर। २. ताप-मापक यंत्र में वह अंक या स्थान जो ऐसे

शीत का सूचक होता है जिसमें कोई द्रव पदार्थ, विशेषतः जल, जमने लगता है । (फ्रीजिंग प्वॉइंट)

हिमांशु-पुं० [सं०] चन्द्रमा ।

हिमाकत-स्त्री० [अ० अहमक़ का भाव०] मूर्खता । बेवकूफी ।

हिमाचल-पुं० = हिमालय ।

हिमाद्रि-पुं० = हिमालय ।

हिमानी-स्त्री० [सं०] १. तुषार । पाला । २. बरफ । ३. बरफ की वे बड़ी चट्टानें या नदियाँ जो ऊँचे पहाड़ों पर रहती हैं । (ग्लेशियर)

हिमायत-स्त्री० [अ०] [वि० हिमायती] १. पक्षपात । २. किसी के पक्ष का समर्थन या पोषण ।

हिमालय-पुं० [सं०] भारत के उत्तर का और संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा प्रसिद्ध पर्वत ।

हिमीकर-वि० [सं० हिम + कर] हिम की तरह बहुत ही ठंढा या शीतल करनेवाला । पुं० अलमारी, सन्दूक आदि की तरह का वह आधान जिसका उपयोग खाद्य पदार्थ, औषध आदि ठंढे रखने और फलतः उन्हें सड़ने-गलने या नष्ट होने से बचाने के लिए होता है । (रिफ्रिजेरटर)

हिम्मत-स्त्री० [अ०] [वि० हिम्मती] साहस ।

मुहा०-हिम्मत हारना = हताश होकर साहस छोड़ना ।

हिय(रा)†-पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय । २. साहस ।

मुहा०-*हिय हारना = साहस छोड़ना ।

हियाँ†-अव्य० = यहाँ ।

हिया-पुं० [सं० हृदय] १. हृदय ।

पद०-हिये का अंधा = परम मूर्ख ।

मुहा०-हिये की फूटना=बुद्धि नष्ट होना । **हिय जलना** = अत्यन्त क्रोध या ईर्ष्या होना । **हिय में लोन सा लगना** = बहुत बुरा या अप्रिय लगना । २. वक्षःस्थल । छाती ।

मुहा०-हिये लगाना = गले लगाना । ३. साहस । हिम्मत ।

हियाव-पुं० [हिं० हिय] साहस ।

हिरकना*-अ० [सं० हरुक् = समीप १. पास आना । २. सटना । ३. परचना ४. मना करना । रोकना । हटकना । उदा० कोउ काहू कौं पकरि पीठि-पाछैं हरि हि कत ।— रत्ना० ।

हिरकाना*-स० हिं० 'हिरकना' का स०

हिरण-पुं० दे० 'हिरन' ।

हिरण्मय-वि० [सं०] सोने का । सुनहल

हिरण्य-पुं० [सं०] सोना । स्वर्ण ।

हिरण्यकशिपु-पुं० [सं०] दैत्यों का प्रसिद्ध राजा जो प्रह्लाद का पिता था जिसे भगवान ने नृसिंह अवतार धा करके मारा था ।

हिरण्यकश्यप-पुं० = हिरण्यकशिपु ।

हिरण्यगर्भ-पुं० [सं०] १. वह तिर्मय अंड जो ब्रह्मा और सारी सृष्टि उत्पादक मूल माना गया है । २. ब्रह ३. विष्णु ।

हिरण्यनाभ-पुं० [सं०] १. विष्‌ २. मैनाक पर्वत ।

हिरण्याक्ष-पुं० [सं०] हिरण्यक दैत्य के भाई का नाम ।

हिरदय*-पुं० = हृदय ।

हिरन-पुं० [सं० हरिण] सींगोंवाला प्रसिद्ध चौपाया जो मैदानों और जंगल रहता है । मृग । हरिना ।

मुहा०-हिरन हो जाना = (क) जाना । (ख) नष्ट हो जाना । न रह जा जैसे-नशा हिरन हो जाना ।

*पुं० = हिरण्य ।

हिरन-वारि*-पुं० = मृगतृष्णा ।

हिरना-पुं० दे० 'हिरन' ।

*स० दे० 'हेरना' ।

स-पुं० = हिरण्यकशिपु।
पुं० दे० 'हिरण्याक्ष'।
पुं० [हिं० हिरन + प्रा० उत्त
बना औटा प्रत्य०] हिरन
।
[सं० हिरण्य] सोना। स्वर्ण।
वि० = किरमजी।
स्त्री० दे० 'हिर्स'।
पुं० [हिरात देश] अफगानिस्तान
रात नामक प्रदेश का घोड़ा।
अ०, स० दे० 'हेराना'।
स्त्री० दे० 'हरास'।
स्त्री० [अ०] १. किसी व्यक्ति
जानेवाला पहरा या चौकी।
।
स्त्री० दे० 'किरमिज'।
पुं० दे० 'हरावल'।
[अ०] १. लालच। लोभ।
। ३. वासना।
-अ० [सं० हिक्का] १. हिचकी
सिसकना। ३. दे० 'हिलगना'।
-स्त्री० [सं० हिक्का] हिचकी
र तक रोने या सिसकने के कारण
उदा०—जागत हूँ प्रिय हिय लगी,
न जाई।—मतिराम।
-पुं० दे० 'हिलोर'।
[हिं० हिलगना] १. हिल-
मिल जाने की क्रिया या भाव।
प्रीति। ३. लगन। लौ।
स्त्री० [हिं० हिलगना] १. हेल-
ना। उदा०—हिलगन कठिन है
।—कुंभनदास। २. प्रीति।

अ० [सं० अधिलग्न] [भाव०
. अटकना। फँसना। उलझना।
मिलना। परचना। ३.लटकना।
।
स० हिं० हिलगना का स०।

हिलना-अ० [सं० हल्लन] १. अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होना। साधारण गति में आना।

मुहा०-हिलना-डोलना = (क) थोड़ा इधर-उधर होना। (ख) घूमना-फिरना। (ग) किसी काम के लिए उठना या आगे बढ़ना।

२. कम्पित या चलायमान होना। गतियुक्त होना। ३. लहराना। ४. काँपना। ५. जमा या दृढ़ न रहना। ढीला होना। ६. (पानी में) पैठना। धँसना। ७. (मन का) चंचल होना। डिगना।

अ० [हिं० हिलगना] हेल-मेल में आना। परचना।

हिलाना-स० हिं० 'हिलना' का स०।

हिलोर-स्त्री० [सं० हिल्लोल] पानी की लहर। तरंग।

मुहा०-हिलोरें लेना = लहराना।

हिलोरना-स०[हिं० हिलोर + ना (प्रत्य०)] १. पानी को इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठें। २. लहराना। ३. दे० 'हलोरना'।

हिल्लोल-पुं० [सं०] १. पानी की लहर। तरंग। २. आनंद की तरंग। मौज। उमंग।

हिवंचल*-पुं० = हिमालय पर्वत।

हिवड़ा†-पुं० [सं० हृदय] हृदय। मन। (राज०) उदा०—चोट लगी निज नाम हरी की, म्हाँरे हिवड़े खरकी।—मीरा।

हिसका†-स्त्री० दे० 'हिसखा'।

हिसखा*-पुं० [सं० हिंसा] १. द्वेष। दुश्मनी। २. ईर्ष्या। डाह। ३. किसी के बराबर बनने की इच्छा। स्पर्धा। उदा०—केशोदास मुख हास हिसखे ही कहियत।—केशव।

हिसना*-अ० [सं० ह्रास] कम या क्षीण होना। उदा०—''हिसि गई हिम्मत हजारों लोग सारे की।—भूषण।

हिसाब-पुं० [अ०] [वि० हिसाबी] १. गिनकर लेखा तैयार करने का काम या

विद्या। २. लेन-देन, आय-व्यय आदि का लिखा हुआ विवरण। लेखा। (एकाउन्ट) **मुहा०-हिसाब चुकाना या चुकता करना** = जो कुछ बाकी निकलता हो, वह दे देना। **हिसाब देना** = आय-व्यय का विवरण बताना। **हिसाब लेना या समझना** = यह पूछना कि कहाँ से कितना (धन) आया और कहाँ कितना खर्च हुआ। **हिसाब बैठना** = (क) युक्ति या व्यवस्था ठीक होना। (ख) सुभीता होना। **यौ०-बे-हिसाब**=(क)बहुत अधिक। (ख) नियम विरुद्ध। **टेढ़ा हिसाब**=(क) कठिन कार्य। मुश्किल काम। (ख) अव्यवस्था। ३. गणित-सम्बन्धी प्रश्न। ४. भाव। दर। ५. तरीका। ढंग। ६. धारणा। समझ। ७. अवस्था। दशा। ८. किफायत। मित-व्यय।

हिसाब-किताब-पुं० [अ०] १. आय-व्यय आदि का (विशेषतः लिखा हुआ) ब्यौरा या लेखा। २. व्यापारिक लेन-देन का व्यवहार। ३. ढंग। रीति।

हिसाबी-पुं० [अ०] हिसाब या गणित का जानकार।

वि० हिसाब का। हिसाब-सम्बन्धी।

हिसालू-पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा या बेल जिसके लाल गूदेदार और रसीले फूल खाये जाते हैं (स्ट्रा-बेरी)

हिसिषा*-स्त्री० दे० 'हिसखा'।

हिस्का†-स्त्री० दे० 'हिसखा'।

हिस्सा-पुं० [अ० हिस्सः] १. समष्टि या समूह का कोई अंश। अवयव। अंग। २. टुकड़ा। खंड। ३. विभक्त होने या बँटने पर मिलनेवाला अंश। भाग। बखरा। ४. व्यापार आदि में होनेवाला साझा। ५. वह अधिकार जो किसी व्यापार में और लोगों के साथ धन लगाने पर उसके हितों आदि के सम्बन्ध में प्राप्त होता है। अंश। (शेयर)

हिस्सेदार-पुं० [अ० हिस्सः + फा० दार (प्रत्य०)] [भाव० हिस्सेदारी] १. जिसे कुछ हिस्सा मिला हो या मिलने हो। २. वह जो व्यापार, सम्पत्ति अ में औरों के साथ या साझे में कुछ लगाकर उसके किसी अंश या हिस्से मालिक बनता है। साझेदार। सह-भा (शेयरर)

हिस्सेदारी-स्त्री० [हिं० हिस्सेदार] हि दार होने की अवस्था या भाव। भागिता।

हींग-स्त्री० [सं० हींगु] १. अफगानि और फारस में होनेवाले एक पौधे जमाया हुआ दूध या गोंद जिसमें तीव्र गंध होती है और जो दवा मसाले के काम में आता है।

हींचना†-स० = खींचना।

हींछना*- स० [हिं० हींछा = इच इच्छा करना। चाहना।

हींछा†-स्त्री० = इच्छा।

हींड़ना†-अ० [हिं० हंडना] च फिरना। घूमना। उदा०-सोबन व हींडिया सुन्न समाधि लगाय।—कबी स० पता लगाना। ढूँढना।

हींसना-अ० [भाव० हींस] दे० हिनाना'।

ही-अव्य० [सं० हि (निश्चयार्थक)] अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अ होता है—(क) निश्चय; जैसे-यही, आदि। (ख) केवल, माना आदि की तरह अल्पता या परिमिति, मुझे पुस्तक ही चाहिए, पैसे नहीं। हीनता या उपेक्षा; जैसे-अब वह आ जाय तो क्या? (घ) किसी बात पर देने के लिए; जैसे-यह काम होकर ही र

*पुं० दे० 'हिय' या 'हृदय'।

अ० ब्रज-भाषा के 'हो' (था) का स्त्री०।

हीक-स्त्री० [सं० हिक्का] १. हिच २. हलकी अप्रिय गन्ध या स्वाद।

०=हिचकना। उदा०—कहत
मति हीचे।—तुलसी।

[?] वह व्यक्ति जिसमें न
लिंग और न स्त्री का ही चिह्न
।

स० दे० 'हींड़ना'।

[सं०] [स्त्री० हीना, भाव०
किसी तत्त्व, गुण, वस्तु, बात
ली। रहित। (लेस्) जैसे—
बुद्धि से रहित। २. निम्न
णी का। निकृष्ट। घटिया।
। ३. बहुत छोटा, तुच्छ या
औरों या बहुतों की अपेक्षा
टिया। (इन्फीरियर) ५.
हलका, कम या थोड़ा।

[सं०] १. हीन-सम्बन्धी।
२. हीनता का सूचक। जैसे—
ना। (देखें)

ता-स्त्री० [सं०] मन में बैठी
ना कि हम अमुक अथवा औरों
हीन है। (इनफीरियॉरिटी
।

वि० [सं०] मूर्ख।

ं० [सं०] बौद्ध धर्म की मूल
शाखा जिसका विकास बरमा,
देशों में हुआ था।

-स्त्री० [अ०] जीवन-काल।

०=हृदय।

हिं० हीरा] १. किसी वस्तु के
भाग। २. इमारती लकड़ी के
भाग। ३. धातु या वीर्य, जो
र भाग है। ४. शक्ति। बल।

[सं०] हीरा नामक रत्न।

नी-स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति,
पूर्ण कार्य आदि की वह जयंती
या आरम्भ होने के ६० वें
वर्ष होती है। (डायमन्ड जुबीली)

हीरा-पुं० [सं० हीरक] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो अपनी उज्वल द्युति और बहुत अधिक कठोरता के लिए प्रसिद्ध है। **मुहा०-हीरे की कनी चाटना**=हीरे का कण खाकर आत्म-हत्या करना।
वि० हीरे के समान स्वच्छ, उज्वल और बहुमूल्य। जैसे—हीरा जनम।
*पुं० = हियरा। (हृदय)

हीरा-कट-वि० [हिं० हीरा + काट] जिसके पहल हीरे के पहलों की तरह कटे हों।

हीरा-तराश-पुं०[हिं०हीरा + फा० तराश] [भाव० हीरा-तराशी] वह जो हीरे घिसने या तराशने का काम करता हो।

हीरामन-पुं० [हिं० हीरा + मणि] एक प्रकार का तोता जिसका ंग सोने का-सा माना गया है।

हीलना*-अ० = हिलना।

हीला-पुं० [अ० हीलः] १. बहाना। मिस। **यौ०-हीला-हवाला** = बहाना।
२. निमित्त। द्वार। साधन।

हीसका(सा)*-स्त्री० [सं० हिंसा] १. ईर्ष्या। डाह। २. प्रतियोगिता। होड़।

हुँ*-अव्य० १. दे० 'हू'। २. दे० 'हाँ'।

हुंकार-पुं० [सं०] १. भय-भीत करने के लिए जोर से किया जानेवाला शब्द। गर्जन। गरज। २. ललकार।

हुंकारना-अ० [सं० हुंकार] १. डराने के लिए जोर का शब्द करना। २. गरजना।

हुँकारी-स्त्री० [अनु० हुँ] 'हूँ' 'हुँ' करके स्वीकृति या सम्मति सूचित करने की क्रिया।
*स्त्री० दे० 'बिकारी'।

हुँड़ावन-स्त्री० [हिं० हुंडी] हुंडी से रुपये भेजने का पारिश्रमिक या दस्तूरी।

हुँड़ियाना-अ० [हिं० हुंडी] किसी के नाम हुंडी लिखना।

हुंडी-स्त्री० [देश०] १. भारतीय महाजनी क्षेत्र में वह पत्र जो कोई महाजन किसी से

कुछ ऋण लेने के समय उसके प्रमाण-स्वरूप ऋण देनेवाले को लिखकर देता है और जिस पर यह लिखा होता है कि यह धन इतने दिनों में व्याज सहित चुका दिया जायगा। (पुराने ढंग का एक प्रकार का हैंड नोट)

मुहा०–हुंडी सकारना = हुंडी के रुपये स्वीकृत करना और चुकाना। २. रुपये उधार लेने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को कुछ निश्चित समय के अन्दर व्याज-सहित कुछ किस्तों में सारा ऋण चुका देना पड़ता है। ३. अपना प्राप्य धन या उसका कोई अंश पाने के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिसपर यह लिखा होता है कि इतने रुपये अमुक व्यक्ति, महाजन या बैंक को दे दिए जायँ। (ड्राफ्ट्, बिल या बिल आफ एक्स्चेंज)

यौ०–दर्शनी हुंडी (देखो)

हुँत*–प्रत्य० [प्रा० विभक्ति 'हिंतो'] १. पुरानी हिन्दी में पंचमी और तृतीया की विभक्ति। से। २. लिए। वास्ते। द्वारा।

हु*–अव्य० [सं० उप] 'भी' का वाचक एक अतिरेक-सूचक अव्यय।

हुआ–अ० हिं० 'होना' क्रिया का भूत०।

हुक–पुं०[अं०] १.टेढ़ी कील। २.अँकुसी। स्त्री० [देश०] एक प्रकार का नस का दरद जो प्रायः पीठ में सहसा बल पड़ने पर उत्पन्न होता है।

हुकुम†–पुं० दे० 'हुक्म'।

हुकूमत–स्त्री० दे० 'हकूमत'।

हुकरना*–अ० [सं० हुंकार] हुंकार करना। गरजना।

हुक्का–पुं० [अ० हुक्कः] तम्बाकू पीने के लिए विशेष प्रकार का एक उपकरण। (इसके गड़गड़ा, फरशी, पेचवान आदि कई भेद होते हैं।)

हुक्का-पानी–पुं० [अ० हुक्का + हिं० पानी] एक बिरादरी के लोगों का आपस में जल, हुक्का आदि पीने-पिलाने का व्यवहा बिरादरी का बरताव।

मुहा०–हुक्का-पानी बन्द करन बिरादरी से निकाल या अलग कर दे

हुक्काम–पुं० अ० 'हाकिम' का बहु०।

हुक्कारना–अ० = हुंकारना।

हुक्म–पुं० [अ०] [वि० हुक्मी किसी बड़े का छोटे से यह कहना कि करो या ऐसा मत करो। आज्ञा। आ

मुहा०–हुक्म चलाना = आज्ञा **हुक्म तोड़ना** = आज्ञा न मानना। २. जन-साधारण के लिए राज्य या द्वारा निकाली हुई आज्ञा। ३. शा प्रभुत्व। ४. धर्म-शास्त्र आदि में ब हुई विधि। ५. ताश का एक रंग।

हुक्मनामा–पुं० = आज्ञापत्र।

हुक्मी–वि० [अ० हुक्म] १. हुक आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। पालक। २. पराधीन। ३. अवश्य दिखानेवाला। अचूक। अव्यर्थ।

हुचकना–अ० [हिं० हुचकी = हि हिचकियाँ लेना। सिसकना। उदा० हुचकि हा नाथ! हमैं ऐसो बिसरायौ।– अ० दे० 'हचकना'

हुचकी–स्त्री० दे० 'हिचकी'।

हुजूर–पुं० दे० 'हजूर'।

हुजूरी–पुं० दे० 'हजूरी'।

हुज्जत–स्त्री० [अ०] [वि० हुज व्यर्थ का विवाद। तकरार।

हुज्जती–वि० [हिं० हुजत] बहुत या हुजत करनेवाला।

हुड़क–स्त्री० [अनु०] हुड़कने की या भाव।

हुड़कन–स्त्री०=हुड़क।

हुड़कना–अ० [अनु०] [स० हुड़ भाव० हुडुक, हुड़कन] १. वियोग के क बहुत दुःखी होना। (विशेषतः छोटे का) २. भयभीत और चिन्तित होना।

अनु० हुड़ + हिं० दंगा]
उछल-कूद ।
सं० हुडुक्क] एक प्रकार का
बाजा ।
०] १. जंगली । गँवार ।
हुड़ंड ।
० 'हड़क' ।
] १. हवन किया हुआ । २.
में दिया हुआ ।
पुराना रूप ।
हुतो) द्वारा । से । (अवधी)
हिं० हुत] 'होना' क्रिया का
था ।
[सं०] अग्नि ।
[प्रा० हिंतो] १. करण
कारक का चिह्न । से । द्वारा ।
तरफ से ।
[प्रा० हिंतो] १. से । द्वारा ।
तरफ से ।
होना' का ब्रज० भूत-कालिक
। उदा०—कोमल कर गोब्र-
हुते नंद-दुलारे ।—सूर ।
० [प्रा० हिंतो] ओर से ।

' का पुराना भूत-कालिक

० दे० 'उकसाना' ।
[सं० हुंडन] १. स्तब्ध होना ।
२. ठिठकना ।
[अ०] एक प्रकार का पक्षी ।
हूण] १. सोना । स्वर्ण ।
अशरफी ।
बरसना=बहुत आय होना ।
] इस समय । अब ।
[सं० हवन] १. आहुति
हुते अनल कहँ बार बहु हरषि
—तुलसी । २. हवन करना ।

२. भस्म करना ।

हुनर–पुं० [फा०] १. कला । कारीगरी । २. कोई काम करने का कौशल ।

हुनरमंद–वि० [फा०] १. हुनर जाननेवाला । कलाविद् । २. निपुण । कुशल ।

हुमकना–अ० [अनु० हुँ] १. दे० 'हुमचना' । २. ठुमकना । (बच्चों का)

हुमकाना–स० हिं० 'हुमकना' का स० ।

हुमगना*–अ० [सं० उमंग] १. बलपूर्वक आगे बढ़ना । उदा०–हुमगी लात तकि कूबर मारा ।–तुलसी । २. प्रसन्न होना ।

हुमचना–अ० [अनु०] १. किसी चीज पर चढ़कर उसे बार-बार जोर से नीचे दबाना । २ उछलना । कूदना । ३. दे० 'हुमकना' ।

हुमड़ना*–अ० १. दे० 'उमड़ना' । २. दे० 'उभड़ना' ।

हुमरना*–अ० = हुमड़ना ।

हुमसना†–अ० १. दे० 'हुमचना' । २. दे० 'उमसना' ।

हुमसाना–स० [हिं० हुमसना] १. जोर से ऊपर की तरफ उठाना । उछालना । उदा०–जुगल कंध बल संध हुमकि हुमसाइ उचाए ।–रत्ना० । २. बढ़ाना । ३. उत्तेजित करना । उकसाना ।

हुमा–स्त्री० [फा०] एक कल्पित पक्षी । (कहते हैं कि जिसपर इस पक्षी की छाया पड़ जाय, वह राजा हो जाता है ।)

हुमेल–स्त्री० [अ० हमायल] अशरफियों, रुपयों आदि को गूँथकर बनाई हुई माला ।

हुर–पुं० [देश०] सिन्ध में रहनेवाले एक प्रकार के अर्द्ध-सभ्य मुसलमान ।

हुलरना†–अ० = हिलना । (राज०)

हुलराना†–स०=हिलाना । (राज०)

हुलसना–अ० [हिं० हुलास] १. बहुत प्रसन्न होना । २. उभरना । ३. उमड़ना । *स० आनन्दित या प्रसन्न करना ।

हुलसाना–स० हिं० 'हुलसना' का स० ।

हुलसित*–वि० [हिं० हुलास] आनन्द

की उमंग से भरा हुआ। परम प्रसन्न।

हुलसी–स्त्री० [हिं० हुलास] १. हुलास। उल्लास। २. कुछ लोगों के मत से गो० तुलसीदास जी की माता का नाम।

हुलाना†–स० दे० 'हूलना'।

हुलास–पुं० [सं० उल्लास] १. विशेष आनन्द। उल्लास। २. उत्साह। हौसला। स्त्री० सुँघनी। नस्य।

हुलिया–पुं० [अ० हुलियः] १. रूप। शकल। आकृति। २. किसी मनुष्य के रूप-रंग आदि का ऐसा विवरण जिससे उसकी पहचान हो सके।

मुहा०–हुलिया कराना=किसी आदमी का पता लगाने के लिए उसकी शकल, सूरत आदि पुलिस को बताना।

हुल्लड़–पुं० [अनु०] १. कोलाहल। हो-हल्ला। २. उपद्रव। उत्पात।

हुल्लड़-बाजी–स्त्री० [हिं० हुल्लड़ + फा० बाजी] हो-हल्ला या शोर-गुल मचने या मचाने या उपद्रव करने की क्रिया।

हुशियार–वि० = होशियार।

हुस्न–पुं० [अ०] सौन्दर्य। उत्तम। रूप।

हूँ–अव्य० [अनु०] स्वीकृति-सूचक शब्द। हाँ। *अव्य० दे० 'हू'।
अ० 'होना' क्रिया का वर्त्तमान कालिक उत्तम पुरुष एकवचन रूप।
†वि० = हौं (मैं)।

हूँकना–अ० [सं० हुंकार] गरजकर बोलना। हुंकार करना।

हूँसना–स० [अनु०] [भाव० हूँस] १. नजर लगाना। २. बराबर डाँट सुनाते रहना। ३. ललचाना। ४. कोसना।

हू*–अव्य० [सं० उप = आगे] भी।

हूक–स्त्री० [सं० हिक्का] १. हृदय की वेदना। २. दर्द। पीड़ा। ३. आशंका। खटका।

हूकना–अ० [हिं० हूक] १. पीड़ा या कसक होना। २. पीड़ा या कष्ट से चौंकना।

हूटना*–अ० [हिं० हटना] १. अ स्थान से इधर-उधर होना। हटना। पीछे हटना। (लड़ाई आदि में) ३. 'हूठना'।

हूठना–अ० [?] किसी को चिढ़ाने के उसकी भाव-भंगी, मुद्रा आदि की करना। (ब्रज०)

हूठा–पुं० [?] देहाती स्त्रियों का किसी चिढ़ाने या तुच्छ ठहराने के लिए बाँधकर दोनों हाथ कमर पर रखकर इ हुए मटकाना। (ब्रज०)

मुहा० हूठा देना=किसी को चिढ़ा लिए उक्त मुद्रा बनाकर मटकना। उ हूठ्यौ दै, इठलाइ, दृग करै गँवारि सु —बिहारी।

हूड़*–वि० दे० 'हुड्ड'।

हूण–पुं० [?] एक प्राचीन मंगोल जो कुछ दिनों तक एशिया और युरे देशों पर आक्रमण करती-फिरती थी।

हूत–वि० [सं०] बुलाया हुआ।

हूनना†–स० [सं० हवन] १. अग्नि डालना। २. विपत्ति में फँसाना।

हू-बहू–वि० [अ०] १. ज्यों का जैसा हो, ठीक वैसा ही। २. (किसी बिलकुल अनुरूप या समान।

हूर–स्त्री० [अ०] मुसलमानों के अ स्वर्ग की अप्सरा।
पुं० दे० 'हुर'।

हूरना†–स० [अनु०] १. बहुत भोजन करना। २. मारना। हूलना।

हूल–स्त्री० [सं० शूल] १. हूलने की या भाव। भोंकना। २. हूक। टीस। स्त्री० [अनु०] १. कोलाहल। ह २. हर्ष-ध्वनि। ३. ललकार।

हूलना–स० [हिं० हूल] लाठी, भाले का सिरा जोर से धँसाना या घुसाना।

हूश–वि०[हिं हूड़] गँवार। उजड्ड।

हूह–स्त्री० [अनु०] हुँकार।

दे० 'अष्ट-कमल'।
] [भाव० हृति] हरण
। छीनकर लिया हुआ।
[सं०] हृदय की धड़कन।
[सं०] हृदय-रूपी तंत्री

] हृदय। कलेजा। दिल।
[सं०] कलेजा।
हृदय।
(तालव्र)।
[सं०] अच्छी तरह हृदय
आया हुआ।
[सं०] १. छाती के अन्दर
एक अवयव जिसके द्वारा शुद्ध
नलियों में पहुँचता है।
। २. इसी के पास छाती
में माना जानेवाला वह
प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा,
मनोविकार उत्पन्न होते और

विदीर्ण होना = शोक,
आदि के कारण मन को बहुत
हुँचना।
। विवेक-बुद्धि।
-पुं० [सं०] [स्त्री० हृदय-
को आकृष्ट करनेवाला।
-वि० [सं०] मन को
पहुँचानेवाला। (शोक,
की घटना)
[सं० हृदयहारिन्] [स्त्री०
] मन को हरण करने या
मनोहर।
दे० 'हृदयालु'।
[सं०] १. दृढ़ हृदयवाला।
उदार। ४. स-हृदय।
)-पुं० [सं०] [स्त्री०
प्रियतम। २. पति।
[सं०] १. हृदय में का।

आन्तरिक। २. मन में बैठा या जमा हुआ।

हृद्देश-पुं० [सं० हृत् = हृदय + देश] हृदय। मन। उदा०-एक को भल ज्ञान से क्यों खिल उठा हृद्देश।-दिनकर।

हृद्य-वि० [सं०] हृदय से सम्बन्ध रखनेवाला। हृदय का।

हृद्रोग-पुं० [सं०] हृदय में होनेवाला रोग। जैसे- कलेजे की धड़कन आदि।

हृद्रोध-पुं० [सं०] हृदय की गति का रुक जाना। (हार्ट फेल्योर)

हृषीकेश-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. कृष्ण।

हृष्ट-वि० [सं०] [भाव० हृष्टि] प्रसन्न।

हृष्ट-पुष्ट-वि० [सं०] मोटा-ताजा।

हेंगा+-पुं० [सं० अभ्यंग] खेत में मिट्टी के ढेले चूर करने का उपकरण। पाटा।

हें हें-स्त्री० [अनु०] दीनतापूर्वक हँसने या गिड़गिड़ाने का शब्द।

हे-अव्य० [सं०] सम्बोधन सूचक अव्यय। +अ० व्रज-भाषा के 'हो' (था) का बहु० रूप। थे। उदा०-मानी हार बिमुख दुरजोधन, जाके जोधा हे सौ भाई।-सूर।

हेकड़-वि० [हिं० हिया + कड़ा] [भाव० हेकड़ी] १. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। २. प्रबल। प्रचंड। ३. अक्खड़। उद्धत।

हेकड़ी-स्त्री० [हिं० हेकड़] हेकड़ या अक्खड़ होने का भाव। उद्धतता।

मुहा०-किसी की हेकड़ी भुलाना = किसी को पराजित करके उसका अभिमान नष्ट करना।

हेकला+-वि० = अकेला। (राज०)

हेच-वि० [फा०] तुच्छ। हीन।

हेठ+-क्रि० वि० [सं० अधस्थः] नीचे।

हेठा-वि० [हिं० हेठ = नीचे] १. नीचा। २. घटकर। हलका। ३. तुच्छ।

हेठी-स्त्री० [हिं० हेठा] अ-प्रतिष्ठा।

हेत-पुं० [सं० हित] प्रेम। मुहब्बत। उदा०-काको गृह, दारा, सुत, संपति, जासौं कीजै हेत।-सूर।

पुं० दे० 'हेतु'।

हेति–स्त्री० [सं०] १. आग की लपट। लौ। २. वज्र। ३. सूर्य की किरण। ४. भाला। ५. चोट। आघात।

हेतु–पुं० [सं०] १. वह बात जिसे ध्यान में रखकर अथवा जिसके विचार से कोई काम किया जाय। अभिप्राय। उद्देश्य। २. कारण। वजह। सबब। ३. वह बात जिसके होने से कोई और बात घटित हो। ४. तर्क। दलील। ५. तर्क-शास्त्र में वह तर्क-संगत कारण या युक्ति जिससे कोई निष्कर्ष निकलता या सिद्धान्त स्थिर होता हो। साधक। ६. साहित्य में एक अलंकार जिसमें या तो (क) कारण के होते ही कार्य के भी हो जाने का उल्लेख होता है। जैसे–उन्हें देखते ही मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हो गई; अथवा (ख) कारण का ही कार्य रूप में भी उल्लेख होता है। जैसे–आपकी कृपा ही मेरा कल्याण है।
*दे० 'हेत'।

हेतुमत–वि०, पुं० दे० 'हेतुमान'।

हेतुमान–वि० [सं० हेतुमत्] जिसका कोई हेतु या कारण हो। हेतु या कारण से उत्पन्न या सामने आया हुआ।
पुं० वह बात या तथ्य जिसका कोई कारण हो। कार्य। काम।

हेतुवाद–पुं० [सं०] १. तर्क-शास्त्र। २. कु-तर्क। ओछी दलील। ३. नास्तिकता।

हेत्वाभास–पुं० [सं०] कोई बात सिद्ध करने के लिए बतलाया जानेवाला ऐसा कारण जो देखने में ठीक जान पड़ने पर जो वास्तव में ठीक न हो। मिथ्या हेतु। (फैलेसी)

हेमंत–पुं० [सं०] अगहन पूस की ऋतु।

हेम–पु० [सं० हेमन्] १. हिम। पाला। २. सोना। स्वर्ण।
*पु० दे० 'हिम'।

हेम-मुद्रा–स्त्री० [सं०] सोने का सिक्का। अशरफी। मोहर।

हेमाद्रि–पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

हेमाभ–वि० [सं०] हेम या सोने की आभावाला। सुनहला।

हेय–वि० [सं०] १. छोड़ने योग्य। त्याज्य। २. बुरा। खराब। ३. तुच्छ।

हेरंब–पुं० [सं०] गणेश।

हेर†–स्त्री० हिं० 'हेरना' का भाव०।
पुं० दे० 'अहेर'।

हेरना†–स० [सं० आखेट पु० हिं० अ
१. ढूँढ़ना। २. देखना। ३. परखना
†स० [हिं० हारना] १. खोना। गँवा
२. बिताना। उदा०–बन मकरंद
आयु अठहत्तर हेरी।—सहचरिशरण

हेर-फेर–पुं० [हिं० हेरना + फेरना
घुमाव-फिराव। चक्कर। २. दाँव-
चालबाजी। ३. अदल-बदल। उलट-प
४. कुछ बेचना और कुछ खरीदना।

हेरा†–पुं० [हिं० हेरना] १. किस
पुकारने या बुलाने का शब्द। उदा०–
चलति हेरा दै बोलनि पुलकति नन्दकिस
ललित किशोरी। २. किसी को ढूँढ़
क्रिया या भाव। तलाश।

हेराना†–अ० [सं० हरण] १.
निकल या खो जाना। २. लुप्त हो
न रह जाना। ३. किसी के सामने
या मन्द पड़ना। ४. सुध-बुध भूलन
स० कोई चीज खोना। गँवाना।

हेरा-फेरी–स्त्री० [हिं० हेर + फेर] १
फेर। अदल-बदल। २. इधर का उध
या करना। ३. बार-बार आना-जाना

हेरी*–स्त्री० [हिं० हेरना] पुकार।
मुहा०–हेरी देना* = पुकारना।

हेलना–अ० [सं० हेलन] १. क्री
मनोविनोद करना। २. मन बहला
स० [हिं० हेला] हेय या तुच्छ समझ
†अ० [हिं० हिलना] १. पैठना। २.

हेल-मेल–पुं० = मेल-जोल।

हेलया–क्रि० वि० [सं०] १. खेलवाड़

मजाक में।

[सं०] १. तुच्छ या उपेक्ष्य
रस्कार। २. खेलवाड़। क्रीड़ा।
क्रीड़ा। केलि। ४. साहित्य
गार के अंतर्गत एक हाव जिसमें
खें या भौहें नचाकर मिलन की
कुछ धृष्टतापूर्वक और अधिक
प्रकट करती है।

हल्ला] १. पुकार। हाँक।
चढ़ाई।

रेलना] धक्का। रेला।

हेल] [स्त्री० हेलिन, हेलिनी]
र।

[संबोधन हे + अली] हे सखी।
मैं वामन डंड जिमि, हेली बाधै
दास।
हेली'।

हेय] प्रायः क्रीड़ा या विनोद
श। क्रीड़ाशील।

वि० [हिं० हेल-मेल] जिससे
।

= हेमंत।

था। (व्रज०)

क्रिया के वर्त्तमान रूप 'है'
।

नु०] १. एक अव्यय जो
मति आदि का सूचक है।

क्रिया का वर्त्तमान-कालिक
।

(घोड़ा)।

'हेकड़'।

० 'हेकड़ी'।

[सं० हय + गला] गले में
गहना।

हैज़ः] एक प्रसिद्ध घातक
रोग जिसमें कै होती और
विशूचिका।

० हनन] मार डालना।

वध करना। उदा०—सुन सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहिं बान असुर सब हैहौं।—सूर।

हैफ़—अव्य० [अ० हैफ़] एक अव्यय जो मन की बहुत ही कष्टदायक अवस्था सूचित करता है। 'परम दुःख की बात है' का सूचक अव्यय।

हैबर*—पुं० [सं० हयबर] अच्छा घोड़ा।

हैम—वि० [सं०] [स्त्री० हैमी] १. सोने का बना हुआ। २.सोने के रंग का। सुनहला। वि० [सं०] १. हिम या बरफ का। २. जाड़े में होनेवाला।

हैरान—वि० [अ०] [भाव० हैरानी] १. चकित। भौचक्का। २. परेशान। तंग।

हैवान—पुं० [अ०] [वि० हैवानी] पशु। जानवर।

हैसियत—स्त्री० [अ०] १. सामर्थ्य। शक्ति। २. आर्थिक योग्यता। वित्त। बिसात। ३. धन-सम्पत्ति।

हों—अ० 'होना' क्रिया का संभाव्य काल का बहुवचन रूप।

होंठ—पुं० दे० 'ओंठ'।

हो—अ० 'होना' क्रिया के अन्य पुरुष, संभाव्य काल और मध्यम पुरुष, बहुवचन के वर्त्तमान काल का रूप।
*व्रज भाषा में 'है' का सामान्य भूत रूप। था।
पुं० [सं०] पुकारने का शब्द। हे।

होई—स्त्री० दे० 'अहोई'।

होछ*—स्त्री० = इच्छा।

होछना*—अ० = इच्छा करना।

होड़—स्त्री० [सं० हार = विवाद] १. शर्त। बाजी। २. चढ़ा-ऊपरी। प्रतियोगिता। ३. हठ। जिद।

होड़ाबाजी—स्त्री० दे० 'होड़ा-होड़ी'।

होड़ा-होड़ी—स्त्री० [हिं० होड़] १. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। २. शर्त। बाजी।

होता—स्त्री० [हिं० होना] १. होने की क्रिया या भाव। अस्तित्व। २. पास में

होने का भाव। सम्पन्नता। ३. वित्त। सामर्थ्य।

अ० [हिं० हो] पुकारने का शब्द। हो।

होतब(व्य)-पुं० = होनहार।

होता-पु० [सं० होतृ] [स्त्री० होत्री] हवन करने या यज्ञ में आहुति देनेवाला।

होनहार-वि० [हिं० होना + हार (प्रत्य०)] १. जो अवश्य होने को हो। होनी। भावी। २. आगे चलकर जिसके सुयोग्य होने की आशा हो। अच्छे लक्षणोंवाला। उदीयमान्। (प्रौमिसिंग)

स्त्री० वह बात जो अवश्य होने को हो। होनी। भवितव्यता।

होना-अ० [स० भवन] १. सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति आदि सूचित करनेवाली मुख्य और सबसे अधिक प्रचलित क्रिया। अस्तित्व में आना या वर्त्तमान रहना।

मुहा०-किसी का होना = (क) किसी के अधीन या वश में होना। (ख) किसी का आप्त या संबंधी होना। रिश्ते में होना। **कहीं का हो रहना** = कहीं जाकर वहीं रह जाना। **हो आना** = भेंट करने के लिए जाना और भेंट करके लौट आना।

२. पहला रूप छोड़कर दूसरे या नये रूप में आना।

मुहा०-हो बैठना=नये रूप में स्थित होना। बन जाना।

३ कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से सामने आना। व्यवहार या परिणाम के रूप में सामने आना।

मुहा०-होकर रहना = किसी तरह न टलना। जरूर होना।

४. स्त्री० का रजस्वला होना। ५. कार्य के रूप में सिद्ध या सम्पन्न होना। ६. बनाया या तैयार किया जाना। बनना। ७. रोग आदि का अपना रूप प्रगट करना। जैसे—ज्वर होना। ८. जन्म लेना। जैसे—लड़का होना।

होनी-स्त्री० [हिं० होना] १. होने क्रिया या भाव। २. अवश्य होने होकर रहनेवाली बात या घटना। भावी भवितव्यता।

होम-पुं० [सं०] हवन। यज्ञ।

मुहा०-होम करना = (क) जला (ख) नष्ट या बरबाद करना। (ग) अ या उत्सर्ग करना। जैसे—जी होम करना

होमना-स० [सं० होम + ना (प्रत्य १. होम या हवन करना। २. पूरी त अर्पण या उत्सर्ग करना। ३. नष्ट कर

होरसा-पुं० [सं० घर्ष = घिसना] का वह चकला जिसपर चन्दन घिसते

होरहा-पुं० [सं० होलक] चने का पौधा। बूट।

होरा-स्त्री० [यू०] १. दिन-रात का सवाँ भाग। घंटा। २. जन्म-कुन्डली पुं० दे० 'होला'।

होरिल(ा)-पुं०[देश०] बहुत छोटा ब छोटा बच्चा। शिशु।

होरिहा[1]-पुं० [हिं० होली + हा (प्र होली खेलनेवाला।

होरिहार*-पुं० [हिं० होरी] खेलनेवाला।

होरी-स्त्री० = होली।

होला-पुं० [हिं० होली] सिक्खों की जो होली जलने के दूसरे दिन होती है पुं० [सं० होलक] १. आग में भु हरे चने या मटर की फलियाँ। २ का हरा पौधा या दाना। होरहा। बूट

होलिका-स्त्री० = होली।

होलिहार-पुं० [हिं० होली] वह जो घूमकर धूम-धाम से होली खेलता फिरता

होली-स्त्री० [सं० होलिका] १. हि का एक प्रसिद्ध त्यौहार जो फाल्गु पूर्णिमा को होता है और जिसमें जलाते और एक दूसरे पर रंग, अबीर छिड़कते हैं।

ोली **खेलना** = एक दूसरे पर
आदि डालना ।
आदि का वह ढेर जो उक्त
जाता है । ३. एक प्रकार का
ाघ-फागुन में गाया जाता है ।
० दे० 'होलिहार' ।
[फा०] १. ज्ञान करानेवाली
शक्ति या वृत्ति । चेतना ।
होश उड़ना या जाता
कष्ट, भय आदि से सुध-बुध भूल
होश सँभालना = समझने-बूझने
आना । सयाना होना । **होश**
ा = बेहोशी दूर होने पर फिर
ाप्त करना । **होश की दवा**
बुद्धि ठिकाने लाना । **होश**
होना = (क) भ्रम दूर होना ।
सहकर या दंड भोगकर पछ-
ा ।
। समझ ।
-हवास = चेतना और बुद्धि ।
-वि० [फा०] [भाव० होशि-
१. समझदार । बुद्धिमान् । २.
ुशल । ३. सावधान । सचेत ।
के विचार से समझने-बूझने के
गया हो । सयाना । ५. चालाक ।
० दे० 'होश' ।
'हौस' ।
सी†-स्त्री० [हिं० हवस =
लाग-डाँट । चढ़ा-ऊपरी ।
पुं० = छात्रावास ।
[सं० अहम्] व्रज भाषा में
का एक वचन रूप । मैं ।
(व्रज०)
-अ० [हिं० हुंकार] गरजना ।
० 'हौंकना' । २. दे० 'धौंकना' ।
० [अ० हवस] कामना । चाह ।

लालसा ।

स्त्री० [हिं० हौसला] उत्साह ।

हौं*-अ० १. दे० 'था' । २. दे० 'हो' ।

हौआ-पुं० [अनु० हौ] बच्चों को डराने के लिए कल्पित भयानक जीव ।

स्त्री० दे० 'हौवा' ।

हौका-पुं० [हिं० हाय] १. किसी बात की बहुत प्रबल इच्छा । २. दीर्घ निश्वास ।

हौज-पुं० [अ०] पानी का छोटा कुंड ।

हौद-पुं० दे० 'हौज' ।

हौदा-पुं० [अ० हौदज] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला चौखटा जिस पर आदमी बैठते हैं । अम्मारी ।

हौदी-स्त्री० [हिं० हौदा] १. छोटा हौदा । २. छोटा हौज । ३. मकानों के सामने बना हुआ वह छोटा गड्ढा जिसमें मकान का खराब पानी, कीचड़ और गन्दगी आकर जमा होती है ।

हौन*-पुं० [सं० अहम्] अपनापन । निजत्व ।

पुं०=हवन ।

हौरा†-पुं० [अनु०] हल्ला । कोलाहल ।

हौरे*-क्रि० वि० दे० 'हौले' ।

हौल-पुं० [अ०] डर । भय ।

हौल-दिल-पुं० [फा०] १. कलेजा धड़कने का रोग । २. कलेजे की धड़कन ।

हौल-दिली-स्त्री० [फा०] संग-यशब (पत्थर) का वह टुकड़ा जो गले में हृदय-सम्बन्धी रोग दूर करने के लिए पहना जाता है । नादली ।

हौली-स्त्री० [सं० हाला=मद्य] देशी शराब बनने या बिकने की जगह । कलवरिया ।

हौले-क्रि० वि० [हिं० हरुआ] १. धीरे । आहिस्ते । २. हलके हाथ से ।

हौवा-स्त्री० [अ०] पैगम्बरी मतों के अनुसार संसार की वह पहली स्त्री जो आदम की पत्नी थी और जिससे सारी मनुष्य-जाति की उत्पत्ति मानी जाती है ।

पुं० दे० 'हौआ'।

हौस–स्त्री० [अ० हवस] १. लालसा। कामना। चाह। २. उत्साह। हौसला।

हौसला–पुं० [अ० हौसिलः] १. कोई काम करने की उमंग। प्रबल उत्कंठा।

मुहा०–मन का हौसला निकालना= (क) इच्छा पूरी होना। (ख) प्रयत्न कर देखना।

२. उत्साह।

हौसाहौस-पुं० [हिं० हौस से अनु०] लागडाँट। मुकाबला।

ह्याँ–अव्य० = यहाँ (इस जगह)।

ह्यो*–पु० दे० 'हिया'।

अ० = था। (ब्रज०)

ह्रद–पुं० [सं०] १. बड़ा ताल। झील। सरोवर। तालाब।

ह्रस्व–वि० [सं०] [भाव० ह्रस्वता] छोटा। २. नाटा। ३. थोड़ा। ४.नी पुं० दीर्घ की अपेक्षा कुछ कम खींच बोला जानेवाला स्वर। जैसे–अ, इ आ

ह्रास–पुं० [सं०] १. किसी वस्तु के गु तत्वों आदि में कमी होना। (डिक्री २. कमी। घटती। (डिक्रीमेन्ट) उतार। घटाव। ४. किसी प्रकार घि छीजने, नष्ट होने या व्यर्थ जाने की या भाव। (वेस्ट)

ह्वाँ*–अव्य० = वहाँ।

ह्वै*–अव्य० = वहाँ या वहीं।

ह्वै*–पूर्व० = होकर।

परिशिष्ट

छूटे हुए शब्द और अर्थ

[स्त्री० अल्पा० अँकड़ी]

स्त्री० [सं०] बहुत से अंकों जैसे-एक से सौ तक की अंक-

री)†-स्त्री० [हिं० अँकरा]

० [हिं० आँकना + वाई] आँकने की क्रिया या भाव। पारिश्रमिक।

० [हिं० आँकना] आँकने दूसरे से कराना। अंकित या ना।

-पुं० [सं०] नाटक में एक समाप्ति होने पर, पात्रों का संकेत ना कि अगले अंक में क्या- गी।

० [सं० अकुंटक] कोई चीज ड़ा अँकुड़ा।

= अक्रूर (श्रीकृष्ण के काका)।

[सं०] जिसका अंकन करना सकता हो। अंकित किए जाने

० दे० 'अनखाना'।

० [सं० अंग + फा० कद] इस बात का विचार कि चित्रित अंग उसके कद या ऊँचाई से ठीक हों।

० = उपंगज।

० [सं० अंग + जात]] पुत्र। लड़का।

[सं०] घर में का आँगन।

अँगना†-पुं० = आँगन। †स्त्री० = अंगना (सुन्दरी)।

अंगना-स्त्री० [सं०] १. सुन्दर अंगोंवाली स्त्री। सुन्दरी। २. सार्वभौम दिग्गज की हथिनी का नाम।

अंगरा†-पुं० दे० 'अंगारा'।

अंगराना*-अ० = अंगड़ाना।

अंगरी-स्त्री० [सं० अंगरक्षक] १. कवच। जिरह-बख्तर। २. अंगुलित्राण। (परि०)

अँगवाना*-स० हिं० 'अँगवाना' का प्रे०।

अंग-विक्षेप-पुं० [सं०, १. हाथ-पैर आदि अंग हिलाना। २. चमकना-मटकना। ३. नाच। नृत्य।

अंग-विद्या-स्त्री० दे० 'सामुद्रिक'।

अंग-संधि-स्त्री० दे० 'संध्यंग'।

अँगिका-स्त्री० [सं०] अँगिया। चोली।

अंगुलित्राण-पुं० [सं०] अंगुलि में पहनने का चमड़े का दस्ताना जो धनुष की रगड़ से रक्षा के लिए पहना जाता है।

अंगुश्तरी-स्त्री० [फा०] अँगूठी।

अंगुश्ताना-पुं० [फा०] टोपी के आकार का धातु का वह छल्ला जो कपड़े सीने के समय उँगली में इसलिए पहना जाता है कि सूई न चुभे।

अँगूठी-स्त्री० [हिं० अँगूठा] १. हाथ में पहनने का एक छोटा गोलाकार गहना। छल्ला। मुँदरी।

पद-अँगूठी का नगीना = बहुत ही उत्तम और महत्व का पदार्थ या व्यक्ति।

अँगेरना*-स० = अँगेजना।

अँग्रेज-पुं० = अँगरेज।

अँग्रेजी-वि०, स्त्री० = अँगरेजी।

अँगोजना*–स० = अँगेजना।

अंघ्रि–पुं० [सं०] चरण। पैर।

अँचरा†–पुं०=अंचल (आँचल)।

अँचाना†–स० [सं०] १. आचमन करना। २. पीना।
अ० दे० 'अँचवना'।

अंछर*–पुं० [सं० अक्षर] १. अक्षर। हरफ। २. जादू-टोना करने के लिए पढ़ा जानेवाला मंत्र।

अंज-पुं० = अम्बुज (कमल)।

अंजना–स्त्री० [सं०] १. हनुमान की माता का नाम। २. अंजनहारी।
*स० दे० 'आँजना'।

अंजल*–पुं० [सं० अन्न + जल] अन्न-जल। दानापानी।

अँजवाना–स० [सं० अंजन] आँखों में अंजन या सुरमा लगवाना।

अँजहा†–वि० [स्त्री० अंजही] दे० 'अनाजी'।

अँजाना–स० = अनजाना।
वि० [हिं० अनजान] १. अनजान। ना-समझ। २. अल्प-वयस्क। बालक।

अंजाम–पुं० [फा०] परिणाम।

अंजित–वि० [सं०] आँखें) जिनमें अंजन या सुरमा लगा हो।

अंजुमन–स्त्री० [फा०] सभा। समाज।

अँजोर†–पुं० = उजाला।

अँजोरी–स्त्री० [हिं० अँजोरा] १. चन्द्रमा की चाँदनी। २. उजाला। प्रकाश। ३. आभा। चमक। दीप्ति।

अंझना†-अ० [हिं० अंझा] समाप्त होना।

अंझा†–पुं० [सं० अनाध्याय] १. किसी काम में पड़नेवाला विराम। नागा। २. छुट्टी।

अँटना†–अ० [सं० अंतर्या] १. अन्दर आना, भरना या समाना। २. पूरा पड़ना। यथेष्ट होना। ३. उपयोग में आने के कारण समाप्त होना।

अँटा–पुं० [सं० अंड] [स्त्री० अल्पा० अँटी] १. बड़ा गोला। २. सूत आ का लच्छा।

अँटा घर–पुं० [हिं० अँटा + घर] स्थान जहाँ लोग एक प्रकार की गोलि जूआ खेलते हैं।

अँटा-चित–वि० [हिं० अंटा + चि १. नशे आदि के कारण बेसुध पड़ा हु २. जो शक्ति आदि से हीन होकर योग्य न रह गया हो।

अँटाना–स० [हिं० अँटना का स० स्थान निकालकर अन्दर भरना। २. करना कि कोई चीज यथेष्ट हो जाय।

अँटिया†–स्त्री० [हिं० अंटी] घास, सूत आदि की छोटी राशि जो बँधी हो।

अँटियाना–स० [हिं० अंटी] छिपाना, रखना या लगाना।

अंड-कराह–पुं० [सं०] सारा ब्रह्मांड।

अँड़ना†–अ० = अड़ना।

अंडस–स्त्री० [हिं० अँड़सना] कुछ परिस्थिति जिससे सहज में निकलन सके। साधारण कठिनता।

अँड़सना†–अ० [?] बीच में इस अकटना या फँसना कि सहज में निकल न

अंडाकृति–वि० = अंडाकार।

अँडुआ†–वि० दे० 'आँडू'।

अंतःसर–पुं० [सं०] अंतःकरण में रहनेवाले दया, प्रेम आदि अच्छे या उनका उद्गम।

अंतकृत–पुं० [सं०] यमराज।

अंतक्रिया–स्त्री० दे० 'अंत्येष्टि'।

अंतघाई(यी)*–वि० [सं० अंत + अंत में घात करनेवाला। विश्वास-घा

अंतरचक्र–पुं० [सं०] १. हठ अनुसार शरीर के अन्दर के मूलाधार चक्र या कमल। २. वह भीतरी च मनुष्यों का वर्ग जो अन्दर के सब काम

बाहरवालों या जन-साधारण (इनर सरकिल)

-वि० दे० 'अन्तर्यामी'।

-पुं० [सं०] आत्मा।

-स्त्री० दे० 'अंतर्रति'।

[सं०] विघ्न। बाधा।

[सं०] १. एक सिरे पर मिली रों या रेखाओं के बीच का ना। २. मध्य। बीच।

-पुं० [सं० अंतर्पट] कपड़े का टुकड़ा जो व्रज में स्त्रियाँ प्रायः छाती आदि के ऊपर) पेट और रहती हैं।

-वि० [सं० अंतर्गत + क] जो किसी के अंतर्गत हो गया त होकर रहनेवाला।

समावरण'।

-स्त्री० [सं०] किसी नगर के में स्थित देव-स्थानों, तीर्थों विधिवत् की जानेवाली यात्रा।

-पुं० [सं०] भीतरी या ज्ञान

शिक-वि० [सं० अंतर + प्रादे- सी देश के दो या अधिक प्रदेशों रखने या उनमें होनेवाला। विन्शल)

-पुं० [सं०] १. मन में होने- अनुभूति या ज्ञान जिसके अनुसार तों के प्रकार, रूप आदि समझते यूशन) २. मन में होनेवाली चेतना। अन्तर्ज्ञान।

-स्त्री० [सं०] मैथुन। संभोग

का-स्त्री० [सं०] ऐसी पहेली त्तर किसी रूप में उसकी पद- के अंतर्गत आया हो। 'बहिर्लापिका' र्थक। जैसे-एक नार तरुवर से , पर, उसके पाँउँ। ऐसी नार कुनार को मैना देखन जाउँ—का उत्तर 'मैना' पक्षी इसके दूसरे पद में आया है।

अंतर्वर्ण-पुं० [सं०] अंतिम वर्ण का। चतुर्थ वर्ण का। शूद्र।

अंतर्वेश्म-पुं० [सं० अंतरवेश्मन्] मकान के अन्दर की कोठरी या कमरा।

अंतस*-पुं० = अंतःकरण।

अंदु†-स्त्री० दे० 'आँदू'।

अंधा कूआँ-पुं० [हिं० अंधा + कूआँ] १. वह गहरा कूआँ जिसमें का पानी सूख गया हो और जिसमें मिट्टी भर गई हो। २. उदर। पेट।

अंबख*-पुं० दे० 'अंबक'।

अंबरी-वि० [हिं० अंबर + ई (प्रत्य०)] जिसमें अंबर पड़ा या मिला हो। अंबर की सुगन्धि से युक्त। जैसे-अंबर-बिरियानी।

अंबोधि*-पुं० = अंबुधि।

अंभु*-पुं० दे० 'अंबु'।

अंभोद-पुं० [सं०] बादल। मेघ।

अंभोद-नाद-पुं० [सं०] मेघनाद।

अंभोधि-पुं० [सं०] समुद्र।

अँहुंठा†-पुं० [देश०] जुलाहों का लकड़ी का गज जो दो हाथ लंबा होता है।

अक-पुं० [सं० अ = न, नहीं + क = सुख] 'सुख' का अभाव या विरोधी भाव। दुःख। कष्ट।

*पुं० दे० 'अघ'।

अकबकाना†-अ० [सं० अवाक] १. चकित या भौचक्का होना। २. घबराना।

अकबर-वि० [अ०] बहुत बड़ा और श्रेष्ठ। (महान्)।

अकबरी-वि० [अ०] अकबर बादशाह या उसके शासन-काल से सम्बन्ध रखने-वाला। जैसे-अकबरी अशरफी।

स्त्री० १. पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार। २. एक प्रकार की मिठाई।

अकरन*-वि० [हिं० अ = नहीं + करना] न करने योग्य। अनुचित। (कार्य)

अ-करार*–वि० [हिं० अ + अ० करार] १. अनिश्चित । २. मर्यादा से रहित या हीन ।

अकरार†–पुं० १. दे० 'इकरार' । २. दे० 'करार' ।

अकलुष–वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार का कलुष न हो । २. पवित्र । शुद्ध । ३. निर्मल । साफ ।

अकहुआ*–वि० = अकथ्य ।

अकाथ*–वि० [सं० अकृत] निष्फल । व्यर्थ ।

अ-कृपा–स्त्री० [सं०] कृपा या अनुग्रह का न होना । 'कृपा' का विपर्य्याय ।

अकोर–पुं० दे० 'अँकोरा' ।

अक्रमातिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] साहित्य में अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण के आरम्भ होते ही कार्य के पूरा हो जाने का उल्लेख होता है ।

अक्रित*–वि० दे० 'अकृत' ।

अक्ष-पटल–पुं० [सं०] प्राचीन भारत के राज्य के आय-व्यय के लेखों का प्रधान विभाग । २. इस विभाग का प्रधान अधिकारी ।

अक्षर-न्यास–पुं० [सं०] तांत्रिक पूजन में कुछ विशिष्ट मंत्रों का एक-एक अक्षर बोलते हुए अपने शरीर का एक-एक अंग छूना ।

अक्षर-योजना–स्त्री० [सं०] किसी विशेष उद्देश्य से अथवा कोई विशेष रूप देने या विशेष अर्थ निकालने के लिए किसी क्रम से कुछ अक्षर बैठाना । जैसे–चित्र-काव्य की अक्षर-योजना ।

अक्ष-शाला–स्त्री० [सं०] प्राचीन भारतीय राज्यों का वह विभाग जिसके अधिकार में सोने, चाँदी और टकसाल आदि का प्रबन्ध रहता था ।

अखंडल–पुं० [सं०] [वि० आखंडलीय] इन्द्र ।

अखद्द*–वि० = अखाद्य ।

अखाँगना†–स० [हिं० खाँग ?] प्रहार करना । मारना ।

अखारा*–पु० दे० 'अखाड़ा' ।

अ-खुटित*–वि० दे० 'अखूट' । क्रि० वि० लगातार । निरन्तर ।

अखेट*–पुं० = आखेट (शिकार) ।

अखोटा–पुं० [?] कान में पहनने एक प्रकार का गहना । (राज०)

अग-जग–वि० [सं० अग + जग = जा अचल और चल, सब ।

अगद–वि० [सं०] १. रोग-रहित । नीरे २. कष्टों और बाधाओं से रहित । निष्

अगनि*–स्त्री० = अग्नि (आग) ।

अगराना*–अ० = अँगड़ाना ।

अग्रस्तिया–पुं० = अगत्स्य (वृक्ष)

अगह*–वि० [सं० अ + ग्रहण] १. पकड़ा न जा सके । २. जो हाथ में न जा सके । ३. दे० 'अग्राह्य' ।

अगाऊँ–क्रि० वि० [हिं० आगे] आगे पहले से ।

अगारी–क्रि० वि० = आगे ।

अगि-लाई*–स्त्री० [हिं० आग + लान लगाना] १. आग लगाने की क्रिय भाव । अग्नि-दाह । २. आपस में ल झगड़ा करना । आग लगाना ।

अगुन*–वि० [सं० अ + गुण] १. जि कोई गुण न हो । गुण-हीन । २. ना-सम मूर्ख ।

पुं० = अवगुण ।

अगोट–स्त्री० [सं० आगुंठन] बचाने रक्षा करनेवाली चीज । आड़ । रोक ।

अग्नि-चक्र–पुं० [सं०] १. आग का च या गोला । २. हट-योग में 'कुंडलिनी' एक नाम ।

अग्निवर्त्त–पुं० [सं०] पुराणानुसार प्रकार का मेघ ।

अग्नि-स्फुलिंग–पुं० [सं०] आग चिनगारी ।

अग्य*–वि० = अज्ञ ।

दे० 'आज्ञा'।

० = अज्ञात।

० = अज्ञान।

० [सं०] १. किसी प्रकार के
वाला पहला स्थान। २. वह
अधिकार जिसके अनुसार किसी
ता प्राप्त करने, मुख्यतः सम्पत्ति
विधिक दृष्टि से औरों की
रूप से और पहला अधिकारी
है। हक-शफा। (प्रिएम्पशन)

० [सं०] समाचार पत्रों आदि
का लिखा हुआ पहला या मुख्य
डर, लीडिंग आर्टिकिल)

-स्त्री० [सं०] यमराज की
समें प्राणियों के कर्मों का लेखा

० [हिं० अघाना] अघाने की
व। तृप्ति।

० [हिं० अ + घाती या घातक]
हार या नाश न करनेवाला।
नीय।

० [सं० अ + घुण] १. बहुत
सूक्ष्म। २. जो परम सूक्ष्म
भी परे हो। अचिंत्य।

-स० दे० 'अचवना'।

क्रि० वि० दे० 'अचानक'।

क्रि० वि० = अचानक।

० दे० 'अचिंतनीय'।

स्य-वि० [सं०] (रोग) जो
ठीक या अच्छा न हो सके।
(इनक्योरेबुल)

० [सं०] जिसके शरीर पर
हो। वस्त्र-हीन। नंगा।

रण-पुं० [सं० अचेतन +
चिकित्सा शास्त्र में, औषधों आदि
शरीर के किसी अंग का अचे-
करना। (एनीसथेसिस)

वि० = अक्षय।

अच्छरिय*–स्त्री० = अप्सरा।

अजका†–वि० [?] उद्धत। उद्दंड। (राज०)

अजगव–पुं० [सं०] शिवजी का धनुष। पिनाक।

अजगूता*–वि० दे० 'अजगुत'।

अजर*–पुं० [सं० अजिर] आँगन।

अजहत लक्षणा–स्त्री० [सं०] लक्षणा के तीन भेदों में से एक जिसमें लक्षक शब्द अपना वाच्यार्थ न छोड़ते हुए कुछ अतिरिक्त अर्थ प्रकट करता है। जैसे–तोपों के पहुँचते ही शत्रु भागने लगे।

अजहत-स्वार्था–स्त्री० दे० 'अदहत-लक्षणा'।

अ-जाची*–पुं० दे० 'अ-याचक'।

अजाद*–वि० = आजाद (स्वतंत्र)।

अजादी*–स्त्री० = आजादी (स्वतंत्रता)।

अजार†–पुं० [फा० आजार] बीमारी। रोग।

अजुगत†–वि० [सं० अयुक्त] १. अद्भुत। अनोखा। २. अभूतपूर्व। अनहोना।

अजो*–वि०, पुं० = अजय।

अजोरना–स० [हिं० जोड़ना] इकट्ठा या एकत्र करना। जमा करना।
स० दे० 'अजोरना'।

अटक-भटक–स्त्री० दे० 'भूलभुलैया'।

अटेकरी*–वि० [?] निरपराध। निर्दोष।

अठाव†–पुं० दे० 'अठपाव'। (बुन्देल०)

अड़न–स्त्री० [हिं० अड़ना] १. अड़ने की क्रिया या भाव। २. अड़। जिद। हठ। ३. खड़े होने, बैठने आदि की स्थिति। ठवन। मुद्रा।

अढार–वि० [हिं० अ + ढरना = ढहना] १. जो किसी पर ढरे नहीं। अनुरक्त न होनेवाला। २. निर्दय।

अणु तरंग–स्त्री० [सं०] विज्ञान में, बिजली या विद्युत से निकलनेवाली एक प्रकार की बहुत ही छोटी तरंग या लहर। (माइक्रोवेव)

अतन*–पुं० = अतनु।

अतन-जतन*-पुं०=यत्न। (प्रयत्न)

अतर-पुं० [अ० इत्र] फूलों आदि से तैयार किया हुआ एक प्रसिद्ध सुगंधित तरल पदार्थ। पुष्पसार।

अतिथि-शाला-स्त्री० [सं०] वह भवन या मकान जो विशेष रूप से अतिथियों के ठहरने के लिए नियत हो। (गेस्ट हाउस)

अतिशयता-स्त्री० [सं०] 'अतिशय' का भाव। अधिकता। ज्यादती।

अतीतना-अ० [सं० अतीत] गुजरना। बीतना।

स० छोड़ना। त्यागना।

अतूल*-वि० = अतुल।

अतोल*-वि० [सं० अ + तुलन, हिं० तौलना] १. जिसकी तौल या नाप न हो सके। बहुत अधिक। २. जिसकी तुलना या बराबरी का और कोई दिखाई न देता हो। अनुपम। अतुल।

अत्थि*-स्त्री० [सं० अस्ति] होने की अवस्था या भाव। सत्ता। वर्त्तमानता।

अत्यंतातिशयोक्ति-स्त्री० [सं०] साहित्य में अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण के आरम्भ होने से पहले ही कार्य पूरा हो जाने का उल्लेख होता है। जैसे-अभी शिव का तीसरा नेत्र खुलने भी न पाया था कि उधर कामदेव जलकर राख हो गया।

अत्यधिक-वि० [सं० अति + अधिक] बहुत अधिक। हद से ज्यादा। (एक्सेसिव)

अदभ्र-वि० [सं०] १. अधिक। बहुत। २. पूरा। सम्पूर्ण।

अदल-पुं० [अ०] न्याय। इन्साफ।

अदोखिल-वि० [हिं० अ + दोखिल] जिसमें कोई दोष या बुराई न हो। निर्दोष।

अधरामृत-पुं० [सं० अधर + अमृत] अमृत का-सा वह रस या स्वाद जो प्रिय के अधर या होंठ चूमने से मिलता है।

अधरासव-पुं० [सं० अधर + आसव] प्रिय के अधरों या होठों का चुम्बन करने आसव या मदिरा पीने के समान स्वाद आनन्द देनेवाली मादकता।

अधिक कोण-पुं० [सं०] भूमिति वह कोण जो-सम-कोण से बड़ा हो। (अ ट्यूज़ एंगिल)

अधिकार-क्षेत्र-पुं० दे० 'अधिक्षेत्र'।

अधिकार-सीमा-स्त्री० दे० 'अधिक्षे

अधिक्रांति-स्त्री० [सं०] [वि० अ क्रांत] राज्य, शासन आदि का अपनी व शक्ति या अधिकार के द्वारा किसी या संघ को हटा या दबाकर उसका भार अपने ऊपर ले लेना। (सुपर से

अधिराधिका-स्त्री० [सं०] धुरा धुरी (गाड़ी की)।

अध्यवसान-पुं० [सं०] [वि० अ सायित, अध्यवसित] १. निरन्तर उद्यो दृढ़तापूर्वक लगा रहना। अध्यवसाय। दृढ़ निश्चय। २. दो वस्तुओं के आप मिलनेपर होनेवाली वह एकात्मता तादात्म्य, जिसमें एक वस्तु दूसरी को रूप से आत्मसात् कर लेती है। अल के क्षेत्र में ऐसे तादात्म्य से अतिशय अलंकार बनता है और ध्वनि के क्षे इससे साध्यवसाना लक्षणा बनती है।

अध्याहार-पुं० [सं०]१. अहा-पोह छान-बीन। २. किसी वाक्य का आशय निकालना जो उसके शब्दों से न होता हो, फिर भी जो आशय साधार हो सकता हो। (इन्फरेन्स)

अनंद-पुं० [सं०] 'हरी' नामक छंद दूसरा नाम।

अनइस*-वि० = अनिष्ट।

अनगना(गवना)*-अ०[सं० अन् + जान-बूझ कर अगवना = आगे बढ़ाना] टालने के लिये किसी काम में देर लगाना विलंब करना।

अन-गुना*-वि० [हिं० अन + गुनना

ाझा या जाना न गया हो।
अन+गुण] सब गुणों से
ा।

-वि० [हिं० अन+चीन्हना=
जिसे जानते या पहचानते न हों।
रिचित।

[सं० आनय] लाना।

[सं०] साहित्य में एक
जिसमें उपमेय को ही उपमान
जाता है। इसे अतिशयोपमा
। जैसे–शिव के समान शिव
कोई नहीं।

वि० [सं० अनपायिन्] [स्त्री०
१. अटल। ध्रुव। २. निश्चल।
जो कभी नष्ट न हो।

-वि० [हिं० अन=नहीं+
ना] जो डूबा न हो।

-वि० १. जो न बोलता हो।
जिसके विषय में कुछ कहा न
अनिर्वचनीय।

-अ०=अनुभव करना।

[सं० अ+नमन] १. न
। २. अपने मान, प्रतिष्ठा
चार से किसी से न दबनेवाला।

[हिं० अन+रंग] दूसरे
र का।

स्त्री० दे० 'अन-ऋतु'।

० दे० 'अन-लेखा'।

अ० [पुं० हिं० अँगवना] १.
ना। २. अपने ऊपर लेना।

स्त्री० [हिं० अन=नहीं+
जो न हो सके। असंभव। २.
के। अलौकिक घटना। ३.
अभाव। अनस्तित्व।

० [हिं० अनाज] अनाज या
हुआ (भोजन)। 'फलारी'
है।

अनामय–वि० [सं०] १. नीरोग। स्वस्थ। २. दोष रहित। निर्दोष। ३. अच्छा। उत्तम।

अनावरण–पुं० [सं० अन्+आवरण] १. किसी चीज पर पड़ा हुआ आवरण या पर्दा हटाना। २. कोई ऐसा सार्वजनिक कृत्य या समारोह जिसमें किसी महापुरुष के चित्र, मूर्त्ति आदि के सामने पड़ा हुआ परदा हटाकर उसे सर्व साधारण के लिए दर्शनीय किया जाता है। उद्घाटन। (अन्वीलिंग)

अनावृत–वि० [सं०] १ जिसके आगे पड़ा हुआ परदा हटा दिया गया हो। २. (चित्र या मूर्त्ति) जिसका अनावरण-संबंधी समारोह हुआ हो। (अनवील्ड)

अनिंद*–वि० दे० 'अनिंद्य'।

अनि*–स्त्री० = सेना।

अनिमादिक*–स्त्री० [सं० अणिमा+आदि] अणिमा, गरिमा, महिमा आदि आठों सिद्धियाँ।

अनु*–अव्य० अथवा। या।

अनुकूला–स्त्री०दे० 'मौक्तिकमाला'। (छंद)

अनुगंता–पुं० [सं०] पीछे पीछे चलनेवाला। अनुगामी।

अनुगुण–पुं० [सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी अच्छी वस्तु के सामीप्य से किसी दूसरी वस्तु के गुण और भी बढ़ जाने का उल्लेख होता है। जैसे–चन्द्रमुखी नायिका के गले में पड़कर सोने का हार और भी अधिक चमकने लगा।

अनुग्रहीत–वि० = अनुगृहीत।

अनुच*–वि० = अनुच्च।

अनुच्च–वि० [सं०] जो उच्च या ऊँचा न हो। नीचा। 'उच्च' का विपर्य्याय।

अनुत्साह–पुं० [सं०] [वि० अनुत्साही] उत्साह या उमंग का न होना। उत्साहहीनता।

अनुदिन–क्रि० वि० [सं०] प्रति दिन।

हर रोज।

अनुद्योग-पुं०[सं०]अकर्मण्यता। आलस्य। सुस्ती।

अनुद्विग्न-वि० [सं०] १. शांत चित्त का। २. निर्भय। निश्शंक।

अनुद्वेग-पुं० [सं०] उद्वेग का अभाव। भय या व्याकुलता से मुक्त रहने का भाव।

अनुपूर्त्ति-स्त्री० [सं०] [वि० अनुपूर्त्त] १. अनुपूरण करने की क्रिया या भाव। २. वह वस्तु जिससे किसी त्रुटि आदि का अनुपूरण किया जाय। (सप्लिमेंट)

अनुप्राप्य-वि० [सं०] जो अनुप्राप्त होने को हो या किया जा सके। उगाहने योग्य।

अनुभाव्य-वि० [सं० अनुभव] जिसका अनुभव किया जा सकता हो या किया जाने को हो। अनुभव के योग्य।

वि० [सं० अनुभाव] १. प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। २. (गुण या लक्षण) जो किसी में विशेष रूप से पाया जा सकता हो।

अनुभूमिका-स्त्री० [सं०] किसी बड़े ग्रन्थ के किसी विभाग या प्रकरण से पहले दी जानेवाली छोटी भूमिका।

अनुरत*-वि० = अनुरक्त।

अनुलिखित-वि० [सं० अनुलेख से वि०] (पत्र या लेख) जिस पर अनुलेख लिखा हो। (एन्डोर्स्ड)

अनुल्लंघ्य-वि० [सं०] जिसका उल्लंघन न हो।

अनुवक्ता-वि० [सं० अनुवक्तृ] किसी की कही हुई बात दोहरानेवाला। अनुवचन करनेवाला।

अनुवादी-पुं० [सं०] संगीत में वह स्वर जो किसी राग के वादीस्वर के बाद उसका सौन्दर्य बढ़ाने के लिए लगाया जाता है।

अनुविद्ध-वि० [सं०] १. मिला हुआ। युक्त। २. फैला हुआ। व्याप्त। ३. सजाया हुआ। अलंकृत। ४. गूँथा या पिरोया हुआ।

अनुविष्टि-स्त्री० दे० 'अनुवेश'।

अनुवेश-पुं० [सं०] [वि० अनुविष्ट] (खाते, पंजी आदि में धन या नाम) यथ स्थान लिखा या चढ़ाया जाना। दर्ज होन (एन्टरी)

अनुसंधयान-पुं० [सं०] प्राचीन भारत राजतंत्र में वह व्यवस्था जिसके अनु प्रति तीसरे या पाचवें वर्ष किसी राज्य महामात्यों का समस्त वर्ग बदल जाता था।

अनुसंधायक-वि० [सं०] अनुसंधान खोज करनेवाला। अनुसंधानकारी।

अनुसरता*-पुं० [सं० अनुसर्तृ, अनुसरण] अनुसरण करने या पीछे चलनेवाला। अनुगामी।

अनूदन-पुं० [सं०] किसी की कही बात फिर से कहना। अनुवाद कर तर्जुमा करना।

अनूपम*-अनुपम।

अनूपान-पुं० दे० 'अनुपान'।

अनेस*-वि० दे० 'अनेक'।

अनै*-स्त्री० [सं० अ+नय] १. विरुद्ध आचरण या बात। अनीति उपद्रव। उत्पात।

अनौपचारिक-वि० [सं०] जो उ के रूप में न हो। 'औपचारिक' का विपय

अन्य-सुरति दुःखिता-स्त्री० [साहित्य में वह नायिका जो किसी अन्य के लक्षणों से यह समझ ले कि इस नायक के साथ संभोग किया है और इस दुःखी हो।

अन्नियाय*-वि० = अन्यायी।

स्त्री० = अन्याय।

अन्वीकृत-वि० दे० 'अन्वित'।

अपघन-पुं० [सं०] १. शरीर का अंग। जैसे-हाथ-पैर आदि। २. शरीर।

वि० जिसमें घन या बादल न हों। रहित।

ी० [सं०] १. सम्मान ।
। २. विनाश । बरबादी ।
वि० [सं० अपर्याप्त] जो
या पूरा न हो । आवश्यक
कम । थोड़ा ।
[सं०] जो पटु, कुशल या
।
ी० [सं० आपत्ति] १. उप-
। २. अन्यायपूर्ण आचरण ।
।
दे० 'अपह्नव' । (परि०)
ी० दे० 'अपह्नुति' ।
पु० दे० 'अपवर्ग' ।
–वि० दे० 'अपरंपार' ।
[सं०] लोक में होनेवाली
नामी ।
[सं०] १. निष्क्रम ।
निर्गम । २. निकल जाना ।
भाप ।
ी० = अपसरण ।
[सं०] अन्त या नाश

[सं०] १. निषेध । मनाही ।
छिपाना । ३. दे० 'अपह्नुति' ।
पुं० = अपाय ।
[सं०] १. आँख का काना ।
र । कटाक्ष ।
'आपस' ।
= अपूर्व ।
[सं० अपेक्षा] १. अपेक्षा ।
। २. लालसा । चाह ।
[सं० अ० + पौतिक]
) जिसमें अभी विषाक्त
प्रवेश या सृष्टि न हुई हो ।
न आई हो । 'पौतिक' का
एंसेप्टिक)
[सं०] काव्य में एक
शब्द के प्रयोग से होता

है जो शुद्ध होने पर भी कवियों द्वारा कभी प्रयुक्त न हुआ हो ।

अप्रशिक्षित–वि० [सं० अ + प्र + शिक्षित] जिसे कोई विशेष प्रकार की प्रशिक्षा न मिली हो । (अन्-ट्रेन्ड)

अ-प्रस्तुत प्रशंसा–स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई उद्देश्य सिद्ध करने या किसी की प्रशंसा आदि करने के लिए प्रस्तुत की चर्चा न करके केवल अप्रस्तुत की चर्चा की जाती है और उसी से प्रस्तुत का ज्ञान कराया जाता है । जैसे–(क) उसके मुख के सामने चंद्रमा पानी भरता है । (ख) यह कहना कि कमलों से कोमलता, चंद्रमा से प्रकाश, सोने से रंग और अमृत से माधुर्य लेकर यह मुख बनाया गया है । साहित्यकारों ने इसके पाँच भेद माने हैं ।

अफताली–पुं० [?] वह अधिकारी जो राजाओं आदि की यात्रा के समय पहले से किसी स्थान पर पहुँचकर उनके ठहरने की व्यवस्था करता है । (बुन्दे०)

अफीमी–वि० [हिं० अफीम] अफीम-संबंधी । अफीम का ।
पुं० दे० 'अफीमची' ।

अबिनासी*–वि० = अविनाशी (अविनश्वर) ।

अबीह†–वि० [हिं० अ + भय] निडर । निर्भय । (राज०)

अबै*–वि० [सं० अ + व्यय] जो या जिसमें से व्यय न हुआ हो ।

अब्बा–पुं० [अ०] पिता । बाप ।

अब्र–पुं० [सं० अभ्र से फा०] मेघ । बादल ।

अभगा*–वि० = अखंड ।

अभार*–वि० [हिं० अ+भार] इतना भारी कि ढोया न जा सके । दुर्वह ।

अभावना–स्त्री० [सं०] भावना का न होना ।
वि० [हिं० अ + भाना = अच्छा लगना] जो अच्छा न लगे । अप्रिय ।

अभिअंतर–क्रि० वि० = अभ्यंतर ।

अभिज्ञता–स्त्री० [सं०] अभिज्ञ, परिचित या जानकार होने का भाव। परिचय। जानकारी।

अभित्यक्त–वि० [सं०] १. जो छोड़ दिया गया हो। २. जो अभियोग, अपराध, दंड आदि से मुक्त कर दिया गया हो। (रिलीज्ड)

अभित्याग–पुं० [सं०] [वि० अभित्यक्त] १. छोड़ने की क्रिया या भाव। २. अभियोग, अपराध, दंड आदि से मुक्त होने या करने की क्रिया या भाव। (रिलीज)

अभिदेशना–स्त्री० [हिं० अभिदेश] आधुनिक राजनीति में एक प्रक्रिया जिसके अनुसार किसी विशिष्ट और महत्वपूर्ण प्रश्न के संबंध में यह पता लगाया जाता है कि मतदाताओं का कितना अंश इसके पक्ष में है और कितना विरुद्ध। (रेफरेन्डम)

अभिदेशिकी–पुं० [हिं० अभिदेश] १. वह जिससे किसी विषय में निर्णायक मत माँगा जाय। २. वह जो किसी विवादस्पद विषय का निर्णय करने के लिए पंच या मध्यस्थ के रूप में नियत किया जाय। (रेफरी)

अभिनै*–पुं० = अभिनय।

अभियानी–वि० [सं०] विजय, लाभ आदि की कामना से अभिदान करनेवाला।

अभिशंसन–पुं० दे० 'अभिशंसा'।

अभिशंसा–स्त्री० [सं०] [वि० अभिशंसित] इस बात का निर्णय या कथन कि अभियुक्त पर लगाया हुआ दोष प्रमाणित हो गया है और उसके फल-स्वरूप उसे कुछ दंड भी मिला है या मिलना चाहिए। (कनविक्शन)

अभिषेचनीय–पुं० [सं०] प्राचीन भारत का वह विधान जिसमें अभिषेक के पहले राजा पर जल छिड़ककर उसे पवित्र किया जाता था।

अभिसंधिता–स्त्री० [सं०] कलहांतहिता नायिका।

अभिसंपात–पुं० [सं०] १. झग
बखेड़ा। २. युद्ध। लड़ाई।

अभिहित–वि० [सं०] १. अभिधा (क
उल्लेख आदि) के रूप में आया हु
कथित या उल्लिखित। २. नाम आ
प्रसिद्ध या संबोधित।

अभेद रूपक–पुं० [सं०] साहित्य
रूपक अलंकार का एक प्रकार या
जिसमें उपमेय में उपमान का ज्यों क
और बिना कुछ घटाये, बढ़ाये आरोप
जाता है। इसके ये तीन अवान्तर
माने गये हैं। सम अभेद रूपक,
अभेद रूपक और न्यून अभेद रूपक

अभ्रंकष– वि० [सं०] आकाश को
वाला। गगनचुंबी अर्थात् बहुत ऊँचा
पुं० आस-पास के भवनों या इमा
बहुत अधिक ऊँचा वह भवन जो
को छूता हुआ जान पड़े। (स्काई स्

अमंद–वि० [सं० अ + मंद] जो
बुरा न हो; अर्थात् अच्छा या उत्तम

अमरपुर–पुं० [सं०] अमरावती।

अमरषा*–पुं० = अमर्ष (क्रोध)

अमर्षण–पुं० दे० 'अमर्ष' (क्रोध)।

अमहल*–पुं० [हिं० अ + अ० म
१. वह जिसके रहने का कोई नि
स्थान या घर न हो। २. इधर-उधर
रहनेवाला; साधु।

अमिलता(ई)*–स्त्री० [हिं० अमि
ता या ताई (प्रत्य०)] 'अ-मिल
भाव। बिलकुल अलग या बे-मेल र
अवस्था या भाव।
स्त्री० दे० 'अम्लता'।

अ-मुकता–वि० [हिं० अ + मुक
समाप्त होना] जो जल्दी न मुके;
बहुत अधिक। यथेष्ट।

अमृत-कुंड–पुं० दे० 'मान सरो
(हठ-योग का)

स्त्री० [सं०] कहने या पढ़ने
कुंडलिया' नामक छंद का
प्रकार या रूप। इसमें दोहा
रूप में रहता है पर 'रोला'
रण की आठ-आठ मात्राओं
टुकड़े होते हैं जिनमें यमक
वर्णों की प्रचुरता होती है।
विशेषताओं और पढ़े जाने के
यह वीर-रस के लिए बहुत

पुं० दे० 'उषः पान'।
[अमेरिका महादेश] अमे-
का।
महादेश का निवासी।
दे० 'निर्मोही'।
[सं०] 'अम्ल' का भाव।
ाई।
[सं० अयन + क] चश्मा।

[सं०] १. जिसकी रक्षा
या न की जाती हो। २.
या स्थान) जिसकी सामरिक
रक्षा न हो। (अन्-डिफेन्डेड।
[हिं० अरबराना] १.
। विकल। २. प्रेम से भरा
न।
= ताशा (बाजा)।
[आरमेनिया (देश०)] आर-
सम्बन्धी। आरमेनिया का।
देश का निवासी।
देश की भाषा।
सं०] गाड़ी के पहियों की
जो पहियों की गड़ारी और
में जड़ी रहती है।
[सं० अराति] १. शत्रु।
दे० 'अराति'।
[सं०] १. शत्रु। दुश्मन।
, लोभ, मद, मोह और मत्सर ये छः विकार।

अराबा–पुं० [अ०] वह गाड़ी जिसपर तोप लदकर चलती है।

अरिता–स्त्री० [सं०] शत्रुता। दुश्मनी।

अरिहा–पुं० [सं० अरिहन्] शत्रुघ्न (राम के छोटे भाई)।
वि० शत्रु का नाश करनेवाला।
*पुं० = अर्हंत।

अ-रीतिक–वि० [सं०] जो औपचारिक, नियमित या रीतिक रूप से नहीं, बल्कि योंही और सिर्फ आपसी तौर पर हो। अनौपचार। गैर-रस्मी। (इन्-फॉर्मल)

अरुझाव†–पुं० = उलझना।

अरुझेरा†–पुं० = उलझन।

अरुणता–स्त्री० [सं०] १. अरुण का भाव। २. ललाई। लालिमा।

अर्थ वक्रोक्ति–स्त्री० दे० 'वक्रोक्ति'।

अर्थ-श्लेष–पुं० [सं०] साहित्य में श्लेष अलंकार के दो भेदों में से एक जिसमें किसी वाक्य का एक ही अर्थ एक से अधिक पक्षों में घटित होता है और उन पक्षों के मुख्य शब्दों के पर्याय रख देने पर भी श्लेष में कोई बाधा नहीं होती। जैसे–सुखदा, सिखदा, अर्थदा, जसदा, रस-दातारि। रामचन्द्र की मुद्रिका, किधौं परम गुरु-नारि॥ में 'मुद्रिका' और 'गुरु-नारि' शब्दों के स्थान पर यदि इनके पर्याय रख दिये जायँ तो भी श्लेष ज्यों का त्यों बना रहेगा।

अर्थांतर न्यास–पुं० [सं०] साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी विशेष कथन का किसी साधारण कथन से अथवा किसी प्रस्तुत कथन से किसी अप्रस्तुत कथन का प्रतिपादन या समर्थन किया जाता है। जैसे–महात्मा गाँधी ने अपने सिद्धान्त के पालन में अपने प्राण तक देकर यह दिखला दिया कि महापुरुष बड़े-बड़े कष्ट भी प्रसन्नतापूर्वक सहन कर लेते हैं।

अर्द्ध-सम–वि० [सं०] (छन्द या वृत्त)

जिसके पहले और तीसरे चरण एक से हों।

अर्पक–वि० [सं०] अर्पण करने या नम्रता-पूर्वक दे देनेवाला।

अलकेश–पुं० [सं०] अलकापुरी के स्वामी; इन्द्र।

अलसता–स्त्री० = आलस्य।

अलसना†–अ० [सं० आलस्य] आलस्य से युक्त होना। अलसाना।

अलहन–पुं० [सं० अ + लहन = प्राप्ति] न मिलना। अप्राप्ति।

स्त्री० आफत। विपत्ति।

अलिक–पुं० [सं०] भाल। माथा। ललाट।

अलोही*–वि० [सं० लौहित] १. लाल। २. रक्त से भरा हुआ।

अलौलिक–वि० [सं० अ + लोल] १. जो युवावस्था की उमंग के कारण ठीक तरह से आचरण या कार्य न कर सकता हो। २. अल्हड़पन से भरा हुआ।

अल्पांश–पुं० [सं० अल्प + अंश] १. थोड़ा सा अंश। अल्प भाग। २. किसी समुदाय या समूह का कुछ या आधे से बहुत कम अंश या भाग। (माइनॉरिटी) जैसे–आजकल समाज का कदाचित् अल्पांश ही सुखी और सन्तुष्ट होगा।

अवज्ञान–पुं० [सं०] [वि० अवज्ञात, अवज्ञेय] १. अपमान। अनादर। २. आज्ञा का उल्लंघन। ३. पराजय। हार।

अवतरण-छत्र–पुं० दे० 'छतरी' २।

अवतारणा–स्त्री० [सं०] १. ऊपर से नीचे लाने की क्रिया या भाव। उतारना। २. किसी अमूर्त या अदृश्य बात या तत्त्व को मूर्त्त, दृश्य, श्रव्य आदि रूपों में लाने की क्रिया या भाव। इन्द्रिय गोचर कराने की क्रिया। जैसे–(क) चित्रपट पर सीताहरण की अवतारणा। (ख) सितार पर ललित राग की अवतारणा।

अवनिप(नीप)–पुं० [सं०] राजा।

अवभासन–पुं० [सं०] [वि० अवभासनीय, अवभासित] १. प्रका चमकना। २. ज्ञान। बोध। प्रतीति प्रकट होना। जाहिर होना। खुलना।

अवमानित–वि० [सं०] १. अवमान हुआ हो। २. दे० 'अपमा

अवलच्छना*–स० [सं० अव + देखना।

अवलिया*–पुं० दे० 'औलिया'।

अववर्त्त–वि० [सं० अव + वर्त्त जितना आवश्यक हो उससे कम लागत आदि की अपेक्षा मान, मूल्य के विचार से कम (आय, मूल्यन अ जैसे–अववर्त्त आय-व्ययिक = ऐसा व्ययिक जिसमें आय की अपेक्षा व्यय दिखाया गया हो। (डेफिसिट बजट पुं० मूल्यन, मान आदि के जितना होना चाहिए या जितना हो उसकी तुलना में होनेवाली कमी। का विरु०। घटती। तोड़। (उक्त सभी अर्थों के लिए)

अवशता–स्त्री० [सं०] 'अवश' क्रिया या भाव। बेबसी। लाचारी।

अवसन्नता–स्त्री० [सं०] १. (दुःख)। २. विनाश। बरबा आलस्य। सुस्ती।

अवसादना*–अ० [सं० अवसा अवसाद या विषाद से युक्त होना होना। २. निराश होना।

स० १. किसी को अवसाद से युक्त करना! २. नष्ट करना।

अवसान–पुं० [फा० औसान] १. चेतना। २. संज्ञा। होश।

अवांग–वि० [सं० अवाङ्] नीचे झुका हुआ। नत।

अवाँगना*–स० [सं० अवाङ्] ओर झुकाना। झुकाना।

अवाइ*–स्त्री० दे० 'अवाई'।

अवाङ्–वि० [सं०] नीचे की ओर

=आवास (घर)।
[पुं०] जो जाना न गया

स्त्री० [सं०] १. भद्दापन।
काव्य में यह एक दोष माना

पुं० [सं०] द्रोणाचार्य के

पुं० [सं०] हठयोग में शरीर
आधार से ललाट तक माने
चक्र या कमल जिन्हें 'हृच्चक्र'
ये आठों चक्र या कमल इस
आधार, स्वाधिष्ठान, आज्ञा,
विशुद्ध, अनाहत और मणिपूर
दे० 'चक्र' ५.।
[सं०] १. पुराणों के
(सर्पों) के ये आठ कुल
वासुकि, कम्बल, कर्कोटक,
शंख और कुलिक। २.
राजनीति में राज्य के मुख्य
जिनके अधिकारी अष्ट-प्रधान

दे० 'अष्ट-कमल'।
[सं०] जिसके आठ पैर हों।
आदि की झालर। २. एक
समुद्री जंतु जिसके आठ
भुजाओं की तरह सब ओर
। (ऑक्टोपस)
[सं०] [स्त्री० अष्ट-
भुजाओंवाला।
में वह क्षेत्र जिसमें आठ
हों। (आक्टेगन)
[सं०] जिसके आठ अंग
अंगोंवाला।
[सं०] साहित्य में
जिसमें कारण और
विलक्षण रूप से उल्लेख

होता है कि दोनों में संगति नहीं बैठती अर्थात् कारण एक जगह और एक प्रकार का और कार्य किसी दूसरी जगह और किसी दूसरे प्रकार का बतलाया जाता है। जैसे— दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरति चतुर चित प्रीति। परति गाँठि दुरजन हिए, दई नई यह रीति। में जितनी बातें बतलाई गई हैं उनमें परस्पर कोई संगति नहीं है।

असंगी—वि० [हिं० अ० + संग] विरक्त।

असंबंधातिशयोक्ति—स्त्री० [सं०] साहित्य में अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी के किसी विषय में परम योग्य या समर्थ होने पर भी इस बात का उल्लेख होता है कि वह अमुक विषय में असमर्थ, अयोग्य या हीन सिद्ध हुआ है। जैसे— अमुक राजा की दानशीलता देखकर कल्पतरु और कामधेनु को भी दंग रह जाना पड़ता था।

असक्त*—वि० १. दे० 'अशक्त'। २. दे० 'आसक्त'।

अ-सगुन—पुं० [हिं० अ + सगुन (शकुन)] बुरा या अशुभ शकुन। अप-शकुन।

असना†—अ० = आसना (होना)।

असभ्यता—स्त्री० [सं०] १. असभ्य होने की अवस्था या भाव। २. ऐसा व्यवहार जो सभ्य समाज में बुरा समझा जाता हो। अशिष्टता। गँवारपन।

असम-शर—पुं० [सं०] कामदेव।

अ-समान—वि० [सं०] जो किसी के समान या बराबर न हो।

असमान* —पुं० = आसमान (आकाश)।

असरार*—वि० [सर सर से अनु० ?] निरंतर। लगातार।

असवार*—पुं० दे० 'सवार'।

असा—पुं० [अ०] डंडा। सोंटा।

†वि० = ऐसा।

असाधा*—वि० = असाध्य।

असीमित—वि० दे० 'असीम'।

असुन*–पुं० [?] हृदय । अन्तःकरण ।

असूझ*–वि० [हिं० अ = नहीं + सूझना] १. जो दिखाई न दे । अदृश्य । २. जिसे दिखाई न दे । अंधा । ३. मूर्ख । पुं० अंधकार । अँधेरा ।

असेस*–वि० [सं० अशेष] १. पूरा । समूचा । २. सब । सारा ।

अस्तमित–वि० [सं०] जो अस्त हो चुका हो ।

अस्त्र-चिकित्सक–पुं० [सं०] वह जो फोड़ों की चीड़-फाड़ आदि करके चिकित्सा करता हो । शल्यकार । (सर्जन)

अस्त्रीकरण-पुं० [सं०] [वि० अस्त्रीकृत] देश, राष्ट्र आदि को अस्त्र-शस्त्रों से युक्त और सज्जित करने की क्रिया या भाव । (आर्मामेन्ट)

अस्थामा*–पुं० = अश्वत्थामा ।

अस्थि-प्रवाह–पुं० [सं०] किसी मृत व्यक्ति का शव जलाने पर उसकी बची हुई अस्थियाँ किसी पवित्र नदी या जलाशय में डालना ।

अस्थैर्य–पुं० [सं०] अस्थिरता ।

अस्म*–पुं० = अश्म (पत्थर) ।

अस्मय*–वि० [सं० अश्मय] १. पत्थर का । २. पत्थर के रूप में आया हुआ ।

अहमक–पुं० [अ०] [भाव० हिमाकत] मूर्ख । बेवकूफ ।

अहमिति*–स्त्री० दे० 'अहम्मति' ।

अहमित्व–पुं० दे० 'अहम्मन्यता' ।

अहम्मति–स्त्री० [सं०] १. अहंभाव । अहमन्यता । २. अविद्या । अज्ञान ।

अहम्मन्य–वि० [सं०] [भाव० अहम्मन्यता] जो अपने आपको बहुत बड़ा समझता हो ।

अहम्मन्यता–स्त्री० [सं०] अपने आपको औरों से बहुत बड़ा समझना ।

अहला†–वि० [?] व्यर्थ । बे-फायदे (राज०)

अहिनाथ–पुं० [सं०] शेषनाग ।

अहिमेध–पुं० [सं०] नागयज्ञ ।

अहिवाती–वि०, स्त्री० [हिं० अहिवा
(स्त्री) जिसका पति जीवित हो । सध
सुहागिन ।

अहेरी–पुं० [हिं० अहेर] शिकारी ।

अहै*–अ० [सं० अस्] ब्रज-भा
'होना' क्रिया का सामान्य वर्त्तमान क
रूप । है ।

अहोनिस*–क्रि० वि० दे० 'अहर्निश

आँख-मीचली*–स्त्री० दे० '
मिचौली' ।

आँग†–पुं० = अंग ।

आँगरी*–स्त्री० = उँगली ।

आँगी*–स्त्री० = अँगिया (चोली) ।

आँचर–पुं० [सं० अंचल] १. कप
सिरा । आँचल । पल्ला । २. स्त्री के
कुच । ३. दे० 'आँचल' ।

आँजू–पुं० [देश०] फसल की बाढ़
वाली एक प्रकार की रद्दी वनस्पति ।

आँधरा*–वि० = अंधा (नेत्रहीन) ।

आई*–अ० [हिं० अहि] 'होना'
का पुराना भूत-कालिक रूप ।

आउ-बाउ*–पुं० = अंड-बंड ।

आक्रीड़–पुं० [सं०] १. क्रीड़ा कर
स्थान । क्रीड़ा-स्थल । २. केलि-का
३. उपवन । बाग । ४. विहार । ५.
'क्रीड़ा' ।

आक्षेप–पुं० [सं०] साहित्य में
अर्थालंकार जिसमें कोई बात कहकर
किसी प्रकार का उत्कर्ष, व्यर्थता
सूचित करने के लिए किसी प्रकार का
किया जाता है । जैसे–सज्जनता का व्य
तो दुर्जनों के साथ भी करना चाहिए
होता है वह प्रायः ऊसर में बीज बो
ही समान । साहित्यकारों ने इसके तीन
किए हैं ।

आखंडलीय–वि० [सं० अखंडल] अ
डल या इन्द्र-सम्बन्धी । इन्द्र का ।

आखु–पुं० [सं०] १. चूहा । २. चोर

ग्रहण।

० [हिं० आगे] १. किसी
अच्छा या आगे बढ़ा हुआ।
बहुत अधिक।

[हिं० आगा] अगवानी।

गो लेना = (क) अगवानी
रना। (ख) किसी को प्रसन्न
ए उसकी इच्छा के अनुसार
ना। (ग) आदर या सत्कार

० वि० [सं० अग्र] १. आगे
२. आगे बढ़कर।
० दे० 'आक्षिप्त'।
० दे० 'आक्षिप्त'।
० दे० 'आनना' (लाना)।
[सं० आत्मन्] अपना।
ा। २. ब्रह्म।
पुं० [फा०] गरमी या फिरंग
। विशेष देखें 'गरमी' ७.।
० दे० 'आतश'। (इसके
दे० 'आतश' के यौ०]
पुं० [सं०] अतिथि या मेह-
में किसी को अपने यहाँ ठह-
आतिथ्य करनेवाला।
वि० [सं०] पूरी तरह से
।
पुं० [सं०] अपना अथवा
मा का बल।
पुं० [सं०] वह जो आत्मा
मा का स्वरूप पहचानता हो।

स्मृत-वि० [सं०] [भाव०
ति] जो यह भूल गया हो कि
क्या हूँ।
मान-पुं० दे० 'आत्म-गौरव'।
[सं० अस्तमान] अस्त होना।

आद्-वि० [सं०] खाने या खा जानेवाला। (शब्दों) के अन्त में प्रत्यय के रूप में; जैसे–व्यालाद = गरुड़।

आदमजाद-पुं० [अ० आदम + फा० जाद] आदम की सन्तान, आदमी। मनुष्य।

आदाता-पुं० [सं० आदातृ] १. वह जो लेता या ग्रहण करता हो। २. वह यंत्र या उपकरण जो शब्द उत्पन्न करनेवाले यंत्र के किसी अंग से शब्द ग्रहण करके लोगों के कानों तक पहुँचाता या उन्हें सुनाता हो। 'परिषक' का विरुद्धार्थक। (रिसीवर) ३. दे० 'आग्राहक'। ४. दे० 'प्रतिग्राहक'।

आदात्र-पुं० दे० 'आदाता'।

आधा-तीहा-वि० [हिं० आधा + तिहाई] आधे या तिहाई के लगभग कुछ या थोड़ा अंश।

आधायक-वि० [सं०] लानेवाला। जैसे–दोषाधायक = कहीं से दोष लाकर किसी वस्तु को दूषित करनेवाला।

आधृत-वि० [सं०] १. धारण या ग्रहण किया हुआ। २. जो किसी के आधार पर हो। जिसने आधार ग्रहण किया हो।

आनुकूल्य-पुं० [सं०] अनुकूल होने का भाव। अनुकूलता।

आपगा-स्त्री० [सं०] नदी।

आपन*-पुं० [हिं आप] अपना अस्तित्व या स्वरूप।

क्रि० वि० अपने आप। आपसे आप।

वि०, सर्व० अपना।

आप-निधि-पुं० [सं० आप=जल + निधि] समुद्र। सागर।

आपु*-सर्व० = आप।

पुं० = अहंकार।

आपुनपौ*-पुं० = अपुनपौ।

आपुस*-पुं० [हिं० आपस] आपसदारी का सम्बन्ध। आत्मीयता।

आप्त पुरुष-पुं० [सं०] वह व्यक्ति जो

तत्त्वों, वस्तुओं आदि के पदार्थ रूप अच्छी तरह जानता हो और जिसकी उपदेशपूर्ण बातें प्रामाणिक मानी जाती हों।

आफू†–पुं० = अफीम।

आभ–प्रत्य० [सं०] किसी चीज की आभा रखनेवाला। आभा से युक्त। (यौ० के अन्त में) जैसे–स्वर्णाभ।

आभरित–वि० [सं०] आभरणों या गहनों से युक्त। अलंकृत।

आभासवाद–पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि जितनी अमूर्त्त धारणाएँ या भावनाएँ हैं, वे सब नाम मात्र की हैं, उनकी वास्तविक सत्ता नहीं है।

आभासीन–वि० [सं० आभास] आभास-रूप में दिखाई देनेवाला।

आमक–पुं० [सं०] वह श्मशान जहाँ मुरदे जलाये नहीं जाते, बल्कि कौओं, कुत्तों आदि के खाने के लिए योंहीं फेंक दिये जाते हैं। (आजकल यह प्रथा पारसियों में प्रचलित है)

आमय–पुं० [सं०] रोग। बीमारी।

आयातक–पुं० [सं०] वह जो दूसरे देश से किसी वस्तु का आयात करता हो।

आयुर्बल–पुं० [सं०] आयु या उमर के रूप में माना जानेवाला बल। आयु का परिमाण।

आरज*–पुं० = आर्य।

आरति*–स्त्री० [सं० आर्त्ति] १. पीड़ा। दरद। २. कष्ट। दुःख।

स्त्री० दे० 'आरती'।

आरमेनिया–पुं० [देश का नाम] पश्चिमी एशिया का एक छोटा, प्राचीन देश जहाँ के निवासी अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।

आरसी–स्त्री० [सं० आदर्श] १. शीशा। दर्पण। २. अँगूठे में पहनी जानेवाली एक प्रकार की बड़ी अँगूठी जिसपर मुँह देखने के लिए शीशा जड़ा होता है।

आरि*–स्त्री० दे० 'अड़न'। (परि०)

आरुण्य–पुं० दे० 'अरुणता'।

आरोग्य-स्नान–पुं० [सं०] वह स् जो कोई रोगी रोग से मुक्त होकर स् होने पर पहले-पहल करता है।

आर्थ–वि० [सं०] [स्त्री० आर्थी] अर्थ-संबंधी। अर्थ का। २. अर्थ के से सिद्ध होनेवाला (तत्त्व या भाव)।

आर्थी व्यंजना–स्त्री० [सं०] व्यं (शब्द-शक्ति) का वह प्रकार या जिसमें वक्ता, बोधव्य, प्रकरण, प्र देश, काल, काकु आदि के द्वारा विशेष अर्थ व्यंजित होता है।

आर्नव*–पुं० = अर्णव (समुद्र)।

आर्त्ति–स्त्री० [सं०] १. आर्त्त हो अवस्था या भाव। २. कष्ट। दुःख।

आर्यत्व–पुं० [सं०] 'आर्य' होने भाव। आर्य-पन।

आल–पुं० [सं०] १. हरताल। २. प्रकार का पौधा जिससे लाल रंग निक है। ३. इस पौधे से निकाला हुआ लाल

पुं० [अनु०] १. लड़ाई-झगड़ा झंझट। बखेड़ा।

पुं० [सं० आर्द्र] १. गीलापन। आर्द्र तरी। २. आँसू।

स्त्री० [अ०] १. बेटी की सन्तति। यौ०–आल-औलाद = बाल-बच्चे। २. वंश। कुल। खानदान।

आलम–पुं० [अ०] १. जगत। दुनि संसार। २. संसार में रहनेवाले सब लो ३. मनुष्यों का बहुत बड़ा समूह। भी ४. अवस्था। दशा। हालत।

आलात*–पुं० दे० 'अलात'।

आलुझना*–अ० = उलझना।

आव–प्रत्य० [हिं० आई (प्रत्य०) सं० भाव०] एक प्रत्यय जो क्रियाओं धातुओं में लगकर उनमें स्थिति, भाव आ

त करता है। जैसे–चढ़ना से
से ब्रढ़ाव आदि।
यु।
० [सं० आवरण] १.
ना। ढकना। २. घेरना।
।
होना। घिरना। २. ओट
होना। छिपना।
० दे० 'आवृत्त'।
-स० [सं० आवाहन] आ-
।
-पुं० [सं०] आविष्कार
क्रिया या भाव। विशेष दे०
।
० [सं०] किसी प्रकार के
संचार आदि से युक्त होना।
पक–पुं० [सं०] साहित्य में
र का एक भेद जिसमें एक ही
शब्द कई अवस्थाओं या
ई बार प्रयोग किया जाता है।
-पुं० [सं०] सर्प। साँप।
० दे० 'आशिष'।
-स० दे० 'आखना'।
= आखु (चूहा)।
वि० १. भरोसे। सहारे। २.
के) कारण। वजह से। मारे।
व बैद गुरु तीनि जो प्रिय
आस।—तुलसी।
-अ० = होना। (व्रज)
र-पुं० [अ० आसा + फा०
ह सेवक जो राजा की सवारी,
आदि में शोभा के लिए
आगे आगे चलता है।
म-पुं० [हिं० आसा + बल्लम=
या सोंटा और बल्लम या भाला
सवारी; बरात आदि में साथ-
चलते हैं।
० दे० 'असम'। (देश)

आसामी–वि० दे० 'असमी'।
पुं० दे० 'असामी'।

आसिक*–वि० = आशिक।

आसिरबचन–पुं० दे० 'आशीर्वाद'।

आसित*–स्त्री० दे० 'अस्ति'।

आस्मान–पुं० दे० 'आसमान'।

आस्मानी–वि०, पुं०, स्त्री० दे० 'आसमानी'।

आहार शास्त्र–पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि कौन-सा आहार या खाद्य पदार्थ शरीर के लिए कितना आवश्यक और पोषक होता है। (डायटिक्स)

आहु*–पुं० [सं० आह्वान] लड़ने आदि के लिए दी जानेवाली ललकार। प्रचारण।

आहू–पुं० [फा०] हिरन। मृग।

इंगवा–पुं० [?] जंगली सूअर का खांग।

इंदव–पुं० [सं०] मत्तगयंद नामक छंद का दूसरा नाम।

इंदुवदना–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भ, ज, स, न और अन्त में दो गुरु होते हैं।

इंद्रचाप–पुं० दे० इन्द्र धनुष।

इंद्र-जौ–पुं० [सं० इन्द्र-यव] एक प्रकार का पौधा जिसके बीज दवा के काम में आते हैं।

इंद्र-धनुषी–वि० [हिं० इन्द्रधनुष + ई (प्रत्य०)] १. इन्द्र धनुष संबंधी। २. इन्द्र धनुष की तरह सात रंगोंवाला।

इंद्रवज्रा–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो तगणों और एक जगण के बाद दो गुरु होते हैं।

इंद्र-वधू–स्त्री० [सं०] बीरबहूटी नामक कीड़ा।

इंद्री–स्त्री० = इंद्रिय।

इंद्री-जुलाब–पुं० [सं० इन्द्रिय + फा० जुलाब] १. वह दवा जिसे खाने से पेशाब बहुत आवे। २. उक्त प्रकार की दवा खाने से बार बार पेशाब होना।

इंधन–पुं॰ = ईंधन (जलाने की लकड़ी)।

इच्छाचारी–वि॰ [सं॰ इच्छाचारिन्] १. अपनी इच्छा के अनुसार सब काम करनेवाला। स्वतंत्र-प्रवृत्ति। २. अपनी इच्छा के अनुसार जहाँ चाहे वहाँ पहुँच जानेवाला।

इजराईल–पुं॰ दे॰ 'इसराईल'।

इजाफा लगान–पुं॰ [अ॰ इजाफा + हिं॰ लगान] किसान से जोती-बोई जानेवाली जमीन पर लिया जानेवाला लगान।

इठलाहरी*–वि॰ [हिं॰ इठलाना] इठलाने या इतरानेवाला।

इतबार–पुं॰ = एतबार (विश्वास)।

इनारू†–पुं॰ = इंद्रायन (लता और उसका फल)।

इबरानी–पुं॰ [अं॰ हिब्रू] इब्राहीम नामक पैगम्बर के वंशज जो सामी जाति के हैं। यहूदी। (हिब्रू)

स्त्री॰ उक्त जाति की प्राचीन भाषा जो सामी वर्ग की है।

इभ–पुं॰ [सं॰ इभः] हाथी।

इमरतीदार–वि॰ [हिं॰ इमरती + फा॰ दार (प्रत्य॰)] जिसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर इमरती की तरह के छोटे छोटे गोल घेरे या बल पड़े हों। जैसे–इमरतीदार कड़ा।

इमाम दस्ता–पुं॰ दे॰ 'हावन दस्ता'।

इयारा*–वि॰ [फा॰ यार = मित्र] मित्रों का-सा। आपसदारी का और प्रेमपूर्ण।

इराक–पुं॰ [अ॰] [वि॰ इराकी] अरब का एक प्रदेश जहाँ के घोड़े बहुत अच्छे होते हैं।

इराकी–वि॰ [अ॰] इराक देश का।

पुं॰ १. इराक देश का निवासी। २. इराक देश का घोड़ा जो बहुत अच्छा होता है।

स्त्री॰ इराक देश की भाषा।

इसक*–पुं॰ = 'इश्क' (प्रेम)।

इसर*–पुं॰ = ईश्वर।

इसराईल–पुं॰ [सामी] १. आजकल के फिलिस्तीन या पैलेस्टाइन देश का पुराना नाम। २. उक्त देश में बसनेवाली पुरा यहूदी नामक जाति।

इसरी*–वि॰=ईश्वरीय।

इह–सर्व॰ [सं॰] १. यह। जैसे– लोक। २. यह का वह रूप जो उसे विभ लगने से पूर्व प्राप्त होता है।

पुं॰ = इह-लोक।

इह-लोक–पुं॰ [सं॰] यह संसार जि मनुष्य जन्म लेता, मरता और रहता (पर-लोक, स्वर्ग आदि से भिन्न)।

इहिं*–सर्व॰ = इसे (इसको)।

इहै*–सर्व॰ = यही (यह ही)

ईरण–पुं॰ [सं॰ ईरणः] वायु। हवा

पुं॰ [सं॰ ईरणं] [वि॰ ईरित] किसी को आगे ढकेलने या बढ़ाने की या भाव। २. उत्तेजना या प्रेरणा गमन। जाना। ४. घोषणा।

ईराक–पुं॰ दे॰ 'इराक'। (परि॰)

ईराकी–वि॰ पुं॰, स्त्री॰ दे॰ 'इराकी'। (प

ईरित–वि॰ [सं॰] १. आगे ढकेल बढ़ाया हुआ। २. प्रेरित या प्रोत्सा ३. जिसकी घोषणा की गई हो। घोषि

ईषु*–पुं॰ [सं॰ इषु] बाण। तीर।

ईस*–पुं॰ = ईष।

उँडेरना–स॰ दे॰ 'उंडेलना'।

उकचना†–अ॰ = उचकना।

उकत*–स्त्री॰ = उक्ति (कथन)।

उकसाहट–स्त्री॰ [हिं॰ उकसाना + आ (प्रत्य॰)] १. उकसाने की क्रिया भाव। २. उत्तेजना।

उकाब–पुं॰ [अ॰] गिद्ध नामक पक्षी

उकीरना–स॰ [सं॰ उत्कीर्णन] खो उखाड़ना या निकालना।

उक्ती*–स्त्री॰ = उक्ति।

उग्रता–स्त्री॰ [सं॰] १. 'उग्र' होने अवस्था या भाव। प्रचंडता। तेजी। मन की वह अवस्था जिसमें क्रोध आदि कारण दया, स्नेह आदि कोमल भावन

जाती हैं। (साहित्य में यह
भाव माना गया है।)

-पुं० [हिं० उघटा + सं०
सी के पुराने दोषों और अपने
पुराने उपकारों का अकारण
उल्लेख या कथन।

-स० [हिं० उचकना का स०
करना। उठाना।

पुं० [सं०] १. उखाड़ने की
उदासीन। विरक्त। उचाट।

-पुं० [सं०] [वि० उच्छलित]
उठने या उछलने की क्रिया
उछाल।

-पुं० [सं० उच्छिलींध्र]
नाम की बरसाती वनस्पति।

-अ० [हिं० छकना का विरु-
१. (नशा या उमंग) न रह
हो जाना। २. होश में आना।

०= उजला या उज्वल।

० [सं० उज्वलन] उज्वल
चमकाना।

० = उजाड़।

-स० दे० 'उजालना'।

'उजाड़ना'।

-अ० [हिं० उजास + ना
] प्रकाशित होना। चमकना।

० = वजीर (मंत्री)।

-स० दे० 'उजालना'।

पुं० दे० 'उजाला'।

० उजोरी] = उज्वल।

पुं० [सं०] [वि० उज्जीवित]
नष्ट होने पर फिर से चैतन्य
से होश में आना। २. मृत-
उपरान्त फिर से जीवित होना।
जीवन।

३. नष्ट होने पर फिर से अस्तित्व में आना।

उझपना†-अ० [हिं० झपना का अनु०] खुलना। 'झपना' का विरु०। स० खोलना (आँख)।

उठा-पटक-स्त्री० [हिं० उठाना + पटकना] ऐसी लड़ाई जिसमें लोग एक दूसरे को उठा-उठाकर जमीन पर पटकते हों।

उठावनी-स्त्री० [हिं० उठना या उठाना] १. उठने या उठाने की क्रिया या भाव। २. वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार आदि खरीदने के लिए पेशगी दिया जाय। दादनी। ३. वह धन या अन्न जो किसी देवता की पूजा के लिए अलग रखा जाय। ४. किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोगों का इकट्ठा होकर कुछ रस्म और लेन-देन करना।

उड़न-क़िला-पुं० [हिं० उड़ना + किला] युद्ध-क्षेत्र के काम आनेवाला एक प्रकार का बहुत बड़ा हवाई जहाज जो किले के समान दृढ़ और सुरक्षित माना जाता है। (फ्लाइंग फोर्ट्रेस्)

उड़न-गढ़ी-स्त्री० दे० 'उड़न-क़िला'।

उड़न-थाल-पुं० [हिं० उड़ना + थाल (पात्र)] बहुत बड़े थाल या पात्र के आकार का एक प्रकार का आधुनिक उपकरण जो आकाश में उड़ता हुआ शत्रुओं के देश पर गोले बरसाता चलता है। (फ़्लाइंग डिश, फ़्लाइंग सॉसर)

उड़ाइक*-वि० [हिं० उड़ाना] १. उड़ानेवाला। २. उड़ाने की कला में कुशल या प्रवीण।

उड़ियाना-पुं० [हिं० उड़िया ?] कुण्डल नामक छंद का वह प्रकार या रूप जिसके अंत में दो गुरु की जगह एक ही गुरु होता है।

उडुचर-पुं० [सं०] पक्षी। चिड़िया।

उतपाना*-स० उत्पन्न या पैदा करना।

उतर(रु)*-पुं = उत्तर।

उत्कंठ–वि० [सं०] जिसे उत्कंठा हो। उत्कंठित।
क्रि० वि० १. गरदन ऊपर उठाए हुए। २. उत्कंठापूर्वक।

उत्कलिका–स्त्री० [सं०] १. उत्कंठा। २. कली। ३. तरंग।

उत्का*–स्त्री० दे० 'उत्कंठिता' (नायिका)।

उत्तमा–स्त्री० [सं०] १. किसी विषय की कोई विशिष्ट ऊँची परीक्षा। २. दे० 'उत्तमा नायिका'।

उत्ताल–वि० [सं०] बहुत ऊँचा।

उत्पीड़क–पुं० [सं०] कष्ट या पीड़ा पहुँचानेवाला।

उत्स–पुं० [सं०] १. फुहारा। २. पानी का सोता।

उत्साहना–अ० [हिं० उत्साह+ना (प्रत्य०)] १. उत्साह से भरना। उत्साहित होना। स० उत्साहित करना। उत्साह बढ़ाना।

उदंगल*–वि० [सं० उद्दण्ड ?] [स्त्री० उदंगली] १. उद्दण्ड। उद्धत। २. प्रबल। प्रचंड।

उदधि-सुत–पुं० [सं०] १. समुद्र से उत्पन्न होनेवाला। २. चन्द्रमा। ३. अमृत। ४. कमल। ५. शंख।

उदधि-सुता–स्त्री० [सं०] १. समुद्र से उत्पन्न होनेवाली। २. लक्ष्मी। ३. सीप।

उदरना*–अ० = उतरना।

उदौ*–पुं० = उदय।

उद्वेग*–पुं० = उद्वेग।

उद्धत-दंडक–पुं० [सं०] विजया नामक मात्रिक छंद का वह प्रकार या भेद जिसमें प्रत्येक चरण का अंत एक गुरु और एक लघु से होता है।

उद्भासन–पुं० [सं०] [वि० उद्भासित] १. चमकना। २. चमकाना।

उद्वर्त्त–वि० [सं० उद् + वर्त्त] १. जितना आवश्यक हो उससे अधिक। २. व्यय, लगात आदि की अपेक्षा मान, मूल्य आदि के विचार से अधिक (आय, मूल्यन आदि) जैसे–उद्वर्त्त आय-व्ययिक=ऐसा आय-व्ययिक जिसमें व्यय की अपेक्षा आय अधिक दिखाई गई हो। (सरप्लस बजट)
पुं० मूल्य, मान आदि के विचार से जितना आवश्यक हो या साधारणः जितना होना चाहिए उसकी तुलना में होनेवाली अधि कता। "अववर्त्त" का विरू०। बढ़ती बचती। (सरप्लस सभी अर्थों और रूपों में

उद्वेलित–वि० [सं०] १. सीमा से बाह फैलता हुआ। छलछलाता या छलक हुआ।

उधराना=अ० [सं० उद्धरण] १. ह के कारण बिखरना। इधर-उधर फैलना जैसे–रूई उधराना। २. नष्ट हो जाना रह जाना।

उधारन*–वि० [सं० उद्धार] उद्ध करनेवाला। उद्धारक। यौ० शब्दों के अ में, जैसे–विपति उधारन।

उन्मादक–वि० [सं०] उन्माद उत्प करने या उन्मत्त करनेवाला।

उप-कथन–पुं० [सं०] १. किसी के क के उत्तर के रूप में अथवा अपने क की पुष्टि के लिए कही जानेवाली बात जैसे–कथनोपकथन। २. किसी कार्य, घट व्यक्ति आदि के सम्बन्ध में आलोच कही या लिखी जानेवाली बात। टिप्पणी शंसिका। (रिमार्क)

उपदि–क्रि० वि० [?] १. अपनी इच् से। २. मन-माने ढंग से।

उपसेवा–स्त्री० [सं०] १. सेवा। २. नौकरी

उपसेवी–वि० [सं० उपसेविन्] १. से करनेवाला। २. नौकर। चाकर।

उपाचार–पुं० [सं० उप + आचार बहुत दिनों से चली आई परिपाटी प्रथा। (यूसेज)

उपादान लक्षणा–स्त्री० [सं०] साहि में लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिस

ज्यों का त्यों बना रहने पर भी
कोई और अर्थ या आशय अथवा
शब्द का भी अर्थ ग्रहण कर
जैसे-वहाँ जमकर लाठियाँ चलीं।
ों ने स्वयं चलने के साथ चलाने-
आशय (कर्तृत्व या गुण) ग्रहण

-स्त्री० = उपाधि।
-स० [सं० उपाय] उपाय या
करना।
-वि० = उपास्य।
ा-स्त्री० [सं०] एक प्रकार का
जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से
तगण, जगण और अन्त में दो
हैं।
-पुं० दे० 'उपपति'।
-पुं० [हिं० उ + बाना (जुलाहों
कपड़ों की बुनावट में वह सूत जो
ा, ऊपर या बाहर रह जाता है।
-स्त्री० दे० 'उभार'।
कार-पुं० [सं०] साहित्य में दो
क अलकारों के एक साथ और
जगह आने की अवस्था या रूप
गणना एक स्वतंत्र अलंकार के रूप
ती है। इसके दो भेद माने गये
और संसृष्टि।
-अ० दे० 'उमड़ना'।
-स्त्री० [हिं० उमग] उमगने की
भाव। उभार। उमंग।
-स० [?] १. इकठा या जमा
बटोरना। २. अपने ऊपर लेना।
करना।
-पुं० [सं०] उमा अर्थात् पार्वती
शिव।
= उमाह (उमंग)।
० ऊमि (लहर)।
[सं०] [स्त्री० उरगी, उरगिनी]

उरगाय*-पुं० [सं० उरूगायः] विष्णु का एक नाम।

उर-घर*-पुं० [सं० उर + हिं० घर] १. वक्ष-स्थल। छाती। २. मन। हृदय।

उरझौहाँ*-वि० [हिं० उरझना] उलझने-वाला।

उरन*-पुं० [सं० उर्ण] भेड़ा।

उरनी*-वि० दे० 'उऋण'।

उरबसी*-स्त्री० दे० 'उर्वशी' (अप्सरा)।

उरूग*-पुं० [स्त्री० उरुगिनी] = उरग (साँप)

उर्वीधर-पुं० [सं०] पृथ्वी को धारण करने वाले, शेषनाग।

उलंघना*-स० [सं० उल्लंघन] लाँघना। फाँदना।

उलटवाँसी-स्त्री० [हिं० उलटा] कविता आदि में ऐसी उक्ति जिसमें साधारण नियम, प्रकृति, व्यवहार आदि से बिलकुल उलटी बात कही गई हो।

उल्लंघ-वि० [सं०] नंगा। नग्न।

उल्लंघ्य-वि० [सं०] १. जिसका उल्लंघन हो सके। २. जिसे लाँघकर पार कर सके।

उल्लाल(ा)-पुं० [सं०] एक प्रकार का मात्रिक अर्द्ध-सम छन्द जिसके पहले और तीसरे चरणों में १५-१५ तथा दूसरे और चौथे चरणों में १३-१३ मात्राएँ होती हैं।

उल्लेख्य-वि० [सं०] उल्लेख किये जाने के योग्य।

उसाना*-स० दे० 'ओसाना'।

उसीला*-पुं० दे० 'वसीला'।

उसीस+-पुं० [सं० उष्णीष] १. पगड़ी। २. मुकुट। ३. तकिया।

उसेस+-पुं० [सं० उच्छीर्षक ?] [स्त्री० अल्पा० उसेसी] तकिया।

उहार+-पुं० दे० 'ओहार'।

उही*-क्रि० वि० [हिं० उहाँ = वहाँ] उसी स्थान पर। वहीं।

ऊपनना*-अ० [सं० उत्पन्न + ना (प्रत्य०)]

उत्पन्न होना। उपजना।

ऊमट–वि० दे० 'ऊबट'।

ऊरमि*–स्त्री० = ऊर्मि (लहर)।

ऊर्जा–स्त्री० [सं०] १. बल। शक्ति। २. जीवन। ३. श्वास। साँस। ४. जीवों के शरीर की वह क्रियाशील शक्ति जिससे वे सब काम करते हैं और जिसके कारण वे जीव-धारी कहलाते हैं। जीवनी-शक्ति। (विगर)

ऊद्‌र्ध्व-बाहु–पुं० [सं०] एक प्रकार के तपस्वी जो अपना कोई एक हाथ सदा ऊपर उठाये रखते हैं।

ऊद्‌र्ध्व रेखा–स्त्री० [सं०] १. सामुद्रिक में हाथ की एक प्रकार की सीधी लम्बी रेखा जो ऐश्वर्य और परम सौभाग्य की सूचक मानी जाती है। २. उक्त प्रकार की एक रेखा जो राम, कृष्ण आदि अवतारों के ४८ चरण-चिह्नों में से एक मानी गई है।

ऊद्‌र्ध्व-रेता–पुं० [सं० उद्‌र्ध्वरेतस्] वह जो अपना वीर्य्य स्खलित न होने दे अर्थात् पूर्ण ब्रह्मचारी। (भीष्म पितामह, शिव, हनुमान आदि ऊद्‌र्ध्व-रेता माने जाते हैं।)

ऊद्‌र्ध्व विंदु–पुं० [सं०] १. स्वतिक। शीर्ष विन्दु। २. अनुस्वार।

ऊर्ध-रेत*–पुं० = उद्‌र्ध्व-रेता।

ऊर्ननाभि–पुं० [सं०] मकड़ी।

ऋण-पक्ष–पुं० [सं०] बही, खाते, लेखे आदि में वह विभाग या स्थंभ जिसमें किसी को दी हुई रकमों या माल का विवरण और मूल्य लिखा जाता है। (क्रेडिट् साइड)

ऋणाणु–पुं० [सं०] वह अणु जो सदा ऋणात्मक विद्युत् से आविष्ट रहता है। (नेगेटिव)

ऋणात्मक–वि० [सं०] १. ऋणवाले तत्त्व से युक्त। २. ऋण-पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला। विशेष दे० 'ऋण'। (नेगेटिव)

ऋषि-कल्प–पुं० [सं०] ऋषियों के समान पूज्य और बड़ा। जैसे–ऋषि-कल्प दादाभा नौरोजी।

एकठ*–क्रि० वि० [एकत्र] एक जगह इकट्ठे।

एकताई*–स्त्री० = एकता।

एक-बारक*–क्रि० वि० दे० 'एक-बारगी'

एक-मूठ–वि० [हिं० एक + मूठ = मुट्ठी (पूरा देन) जो एक साथ या एक बार दिया जाय।

पुं० एक साथ या एक बार में चुकाये जा वाले पूरे रुपये। (लम्प सम)

एक-सखा–वि० [हिं० एक + सखा] एक ही प्रकार की प्रवृत्ति के वश में र वाला। जैसे–एक-सखा आदमी या व्यवहा २. (कपड़ा, कागज) जिसके एक ही त बेल-बूटे या और कोई काम हुआ हो।

एण–पुं० [सं०] हिरन। हरिन। (जन्तु

एतद्‌द्वारा–क्रि० वि० [सं० एतद् + द्वा इस (पत्र, लेख्य आदि) के द्वार (हियर बाइ)

एतादृश–वि० [सं०] इस प्रकार का। ऐस क्रि० वि० इस प्रकार। ऐसे।

एन*–पुं० [सं० एण] [स्त्री० एनी हिरण नामक जंतु।

एरा–प्रत्य० [पुं० हिं० केर = का] प्रत्यय जो प्रायः विशेषणों और संज्ञाओं लगकर ये अर्थ देता है- (क) परिमाण मात्रा की अधिकता; जैसे–घन से घनेरा बहुत से बहुतेरा। (ख) किसी प्रकार कार्य व्यवहार आदि का कर्त्ता; जैसे–ला से लखेरा, साँप से सँपेरा, काम से कमेरा।

एली*–स्त्री० [सं० एला] इलायची।

ऐंद्रिक–वि० [सं०] इंद्रियों से सम्बन् रखनेवाला। इन्द्रियों का। (सेन्सुअल)

ऐंद्रियता–स्त्री० [सं०] १. 'इंद्रिय' क भाव। २. इंद्रियों का सुख-भोग। इंद्रियों की वासना की पूर्ति। (सेन्सुएलिटी)

ऐयाशी–स्त्री० [अ०] विषय-भोग में बहुत

रहना। विषयाशक्ति।

=उपेक्षा पूर्वक किसी को बहुत ठहराने का पद। जैसे–उसकी क्या करेगा।

[सं० ओड्र] गधों पर ईंट, ढोनेवाली एक जाति।

डव-पुं० [सं०] वह राग जो ओड़व और अवरोही में षाड़व त)

र्ण-पुं० [सं०] वह राग जो ओड़व और अवरोही में संपूर्ण त)

-स्त्री० [हिं० ओढ़ना] १. ओढ़ाने की क्रिया या भाव। २. चादर। ओढ़नी।

० [हिं० ओत] [स्त्री० ओती] की अपेक्षा हलका या थोड़ा। जो अपने काम के लिए उपयुक्त, मर्थ न हो।

उतना'।

० [हिं० ओल] आड़। ओट।

० [सं० विवर] छोटा कमरा।

-स० दे० 'उसारना'।

-पुं० दे० 'उसारा'।

० [सं० अवगाध] अथाह।

० [?] वह स्थान जहाँ नये चलना सिखाने के लिए चक्कर है।

० [सं० अव+घूर्णन] ना या घूमना।

० [स्त्री० औती] दे० 'ओता'।

-पुं० दे० 'उत्सुकता'।

[सं०] 'उपमा' का गुण या

-स्त्री० दे० 'अवम तिथि'।

[सं० वटक, हिं० बड़ा] [स्त्री० अल्पा० औरी] एक प्रत्यय जो प्रायः संज्ञाओं में लगकर उनसे बनी हुई छोटी टिकिया आदि के रूप का सूचक होता है। जैसे–तिल से तिलौरा या तिलौरी, सोंठ से सोंठौरा।

औरासी–वि० [सं० अव+राशि] बे-ठिकाने का। बेढंगा।

कं–पुं० [सं०] १. जल। पानी। २. सुख। ३. सिर। ४. आग। ५. सेना। फौज।

कंकोल–पुं० [सं०] अशोक नामक वृक्ष। २. शीतल चीनी की जाति का एक पेड़।

कंचु*–पुं० = काँच (शीशा)।

कंचुआ†–पुं० [सं० कंचुक] चोली। अंगिया।

कंजज–पुं० [सं०] ब्रह्मा।

कंजन–पुं० [सं० कंज] ब्रह्मा, जिनकी उत्पत्ति कमल से मानी गई है।

कंजाभ–वि० [सं०] कमल के समान आभा या कांतिवाला।

पुं० कमल के समान आभा या कान्ति।

कंठ-श्री–स्त्री० [सं०] गले में पहनने की कंठी या माला।

कंठसिरी*–स्त्री० दे० कंठ-श्री।

कंदाकर–पुं० [सं०] बादलों की घटा। मेघ-माला।

कंपति–पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

कइ*–अव्य = क्या। (राज०)

कका†–पुं० दे० 'काका'।

ककुभ बिलावल–पुं० [हिं० ककुभ+बिलावल] षाड़व-संपूर्ण जाति का एक राग जो दिन के पहले पहर में गाया जाता है।

कचोटना–स० [कच से अनु०] चिकोटी काटना।

अ० कष्ट या पीड़ा होना।

मुहा०–मन कचोटना = दे० 'मन' में।

कछ*–पुं० [सं० कच्छप] १. कछुआ नामक जन्तु। २. भगवान का कच्छप या कूर्म नामक अवतार।

+पुं० दे० 'काछा'।

कछरा†-पुं० [स्त्री० अल्पा० कछरी] दे० 'कमोरा'।

कछुवै*-अव्य० = कुछ भी।

कजाक*-पुं० [तु० कज्जाक] [वि० भाव० कजाकी] डाकू। लुटेरा।

कटाछ*-पुं० = कटाक्ष।

कठुला†-पुं० दे० 'कठला'।

कठूला†-पुं० दे० 'कठला'।

कड़खा-पुं० [सं० कर्ष] १. एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ८, १२, ८ और ९ के विराम से कुल ३७ मात्राएँ होती हैं। २. लड़ाई के समय वीरों को उत्तेजित और उत्साहित करने के लिए गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत जो प्रायः उक्त छंद में होता है। ३. विजय होने पर विजयी की प्रशंसा में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

कढ़वाना-स० [हिं० काढ़ना] काढ़ने का काम दूसरे से कराना। किसी को काढ़ने में प्रवृत्त करना।

कढ़िराना*-स० = कढ़ाना (निकालना या निकलवाना)

कणीकरण*-पुं० [सं० कण + करण] कणों या रवे के रूप में करना या होना। (क्रिस्टलाइजेशन)

कथकाली-स्त्री० [हिं० कथक + आली (प्रत्य०)?] नृत्य की एक विशेष प्रकार की शैली।

कथाकाली-स्त्री० दे० 'कथकाली'।

कदुष्ण-वि० [सं०] थोड़ा गरम। कुनकुना।

कनक-कूट-पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

कनयर*-पुं० दे० 'कनेर'।

कना†-पुं० [सं० कण] [स्त्री० अल्पा० कनी] १. अन्न का दाना। २. छोटा टुकड़ा। कण।

कनियाँ†-पुं० [सं० स्कंध = कंधा] बच्चों को गोद में लेकर अपने कंधे पर सिर लगाने की क्रिया या भाव।

कनीसिका-स्त्री० [सं०] आँख की पुतल

कपट-कन*-पुं० [सं० कपट + कण] चिड़िया फँसाने के लिए बिखेरा जाने अन्न। २. किसी को फँसाने के लिए बि हुआ जाल।

कपट-पुरुष*-पुं० [सं० कपट + पु खेतों में फसल को पक्षियों, जानवरों से बचाने के लिए बाँस तथा हँड़िय बनाया हुआ पुतला जो दूर से मनु समान दिखाई देता है।

कपूत-वि० [सं० कु + पूत = पवित्र हिं० पोत = प्रकृति] बहुत ही बुर खराब।

कपूर-धूर-स्त्री० [हिं० कपूर + ध पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।

कपूर-मणि-पुं० [हिं० कपूर + सं० तृण-मणि या कहरूवा नाम का प विशेष दे० 'तृण-मणि'।

कपोल-कल्पित-वि० [सं०] कोई वास्तविक अस्तित्व न हो, कल्पना कर ली गई हो। मन-गढ़न्त

कबंधज-पुं० [सं०] वह जो किसी व्यक्ति के वंश में हो जिसका कबंध (कट जानेपर खाली धड़) युद्ध में लड़ा

कबिलनवी*-स्त्री० [फा० किब्लः नु दिग्दर्शक यंत्र।

कबीर-वि० [अ०] बहुत बड़ा श्रेष्ठ। महान।

पुं० १. मध्य युग के एक प्रसिद्ध भक्त जाति के जुलाहे और मुसलमान होने भी रामानन्दजी के शिष्य हुए थे जिन्होंने हिन्दू धर्म और इस्लाम के सम का विशेष रूप से प्रयत्न किया था। होली में गाया जानेवाला एक प्रकार अश्लील गीत जो प्रायः सरसी छन्द गाया जाता है।

कमधुज*-पुं० दे० 'कबंधज'।

पुं० = कमलनाल ।
स्त्री० [सं०] सुन्दर नेत्रोंवाली
नयनी ।
ुं० = कुमुद ।
दे० 'किरंटा' ।
-पुं० [सं०] ऐसा बादल जिससे
ते हों ।
[सं०] 'कर' से उत्पन्न ।
[सं०] कौआ (पक्षी) ।
-स्त्री० [सं० कर्त्तरी] कैंची ।
[सं० करण] १. करने की
भाव । २. करने योग्य काम ।
३. दे० 'करण' ।
र्ण' ।
-स्त्री० [सं० कर्णिका] कर्णफूल ।
-पुं० दे० 'कर-पल्लवी' ।
वि० [सं० कर्बुर] १. चित-
२. रंग बिरंग ।
-पुं० [सं० कर्म + चंद (व्यक्ति
वाचक)] भाग्य । क़िस्मत ।
ुं० १. दे० 'कड़खा' (गीत)
ख' ।
-स्त्री० दे० 'करामात' ।
[सं० कर = वधिक या हत्यारा
] वध या हत्या करनेवाली ।
[सं०] करील नाम का पौधा ।
[सं०] १. बहुत बड़ा हाथी ।
।
[सं०] जंगलों में पाया जाने-
गोबर जो प्रायः जलाने के काम
उपला । कंडा ।
ुं० दे० 'करौत' ।
-वि० [हिं० करौंदा] करौंदे के
का । कुछ पीलापन लिए लाल ।
ान-पुं० [सं०] जो कुछ
य हो, वह ठीक तरह से पूरा
परफॉरमेन्स आफ ड्यूटी ।)
वि० [सं०] [स्त्री० कलंकिता]

जिसे कलंक लगा हो । लांछित ।

कलहा†-वि० = कलही ।

कलहिनी-स्त्री० [हिं० कलही] बहुत कलह या लड़ाई-झगड़ा करनेवाली स्त्री ।

कलामुख-पुं० [सं०] चन्द्रमा ।

कलासी†-स्त्री० [हिं० कला = चालबाजी] काम निकालने की तरकीब । चालाकी । दाव-पेंच ।

कलित-वि० [सं०] १. जाना हुआ । ज्ञात । २. प्रसिद्ध । मशहूर । ३. कहा हुआ । उक्त । ४. मनोहर । सुन्दर । ५. सजा या सजाया हुआ । सज्जित । ६. मिला हुआ । प्राप्त । ७. किसी के साथ मिला या लगा हुआ । युक्त ।

कलिहारी-स्त्री० [हिं० कलह + आरी (प्रत्य०)] कलह या लड़ाई-झगड़ा करनेवाली स्त्री । कलहिनी ।

कलीत*-वि० दे० 'कलित' ।

कलुख*-पुं०=कलुष ।

कले†-क्रि० वि० [सं० कल] १. कल अर्थात् आराम या चैन से । २. धीरे । आहिस्ता । ३. दे० 'कलै' ।

कलै*-क्रि० वि० [सं० कल] १. कल या चैन से । २. अपनी इच्छा के अनुसार ३. मन-माना ।

कलोलना*-अ० [सं० कल्लोल] कलोल करना । आमोद-प्रमोद करना ।

कल्हार†-पुं० [?] एक प्रकार का पौधा और उसके फूल ।

कवची-वि० = कवच-धारी ।

स्त्री० हिं० 'कवच' का स्त्री० अल्पा० ।

कवींद्र-पुं० [सं०] वह जो कवियों में श्रेष्ठ हो । बहुत बड़ा कवि ।

कशाघात-पुं० [सं० कश + आघात] १. कोड़े या चाबुक की मार । २. ऐसी प्रबल प्रेरणा जो कोई काम करने के लिए पूरी तरह से विवश कर दे ।

कश्मीरक-पुं० दे० 'कश्मीरी मुद्रा' ।

कश्मीरी मुद्रा–स्त्री० [सं०] स्फटिक का कुंडल जो गोरखपंथी साधु कानों में पहनते हैं।

कसीसा–स्त्री० [सं० कर्ष] कठोरता और निर्दयता का व्यवहार।

कह-मुकरी–स्त्री० दे० 'मुकरी'।

कहरुबा–पुं० [फा०] तृण-मणि नाम का पदार्थ। विशेष दे० 'तृण-मणि।

कहाउ–पुं० [हिं० कहना] वह जो कुछ कहा जाय। उक्ति। कथन।

कहाब*–पद = कहा (क्या) + अब।

काँगड़ी–स्त्री० [काँगड़ा प्रदेश] एक प्रकार की छोटी अँगीठी जो छाती और पेट गरम रखने के लिए गले में लटका कर रखी जाती है। (कशमीर)

काँडा–पुं० [सं० कांड] [स्त्री० अल्पा० काँड़ी] १. लकड़ी का लम्बा लट्ठा। २. छोटा सूखा डंठल।

काँती–स्त्री० दे० 'काती'।

काँदला–पुं० [हिं० काँदा] कीचड़, मैल आदि।

वि० गँदला। मैला।

काँदा–पुं० [सं० कर्दम] १. कीचड़। २. मैल।

काँमर*–स्त्री० दे० 'काँवर'।

काउ*–क्रि० वि० [सं० कदा] किसी समय। कभी।

काकिणी–स्त्री० [सं०] १. पण का चौथा भाग जो बीस कौड़ियों का होता था। २. कौड़ी। ३. गुंजा। घुंघची।

काकु वक्रोक्ति–स्त्री० [सं०] साहित्य में वक्रोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी की कही हुई बात सुनकर श्रोता कंठ-ध्वनि बदल कर वाक्य का दूसरे प्रकार से अन्वय करके या प्रश्नात्मक रूप में वह बात इस प्रकार दोहराता है कि उसका आशय उलट या बदल जाता है।

काकोदर–पुं० [सं०] सर्प। साँप।

काछन–स्त्री० दे० 'काछनी'।

काजू–पुं० [कोंक-काज्जु] एक प्रकार वृक्ष जिसके फलों की गिनती सूखे मेवों होती है।

काजैं*–अव्य० [सं० कार्य्य] लि वास्ते। (व्रज०)

काता–पुं० [हिं० कातना] एक प्रकार मिठाई जो देखने में बहुत महीन कते सूत के लच्छों की तरह होती है। बु का काता।

काम-बन–पुं० [सं०] वह वन जि तपस्या करते समय शिव जी ने कामदे जलाया था।

काम-वर–वि० [सं०] मनोहर। सुन्दर

काम-रिपु–पुं० [सं०] कामदेव को ज वाले, शिव।

काय*–स्त्री० = काया (शरीर)।

+ अव्य० प्रश्न-वाचक अव्यय। (बुन्दे०)

कायिक अनुभाव–पुं० दे० 'अनुभा और 'हाव'।

कारक-दीपक–पुं० [सं०] साहि दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें कार्यों का उल्लेख करके उसके ए कारक (कर्ता) या साधन का उ होता है। जैसे–मनुष्य में उदारता, क परायणता, दयालुता, समदर्शिता गुण आस्तिकता से ही आते हैं।

कारचोबी–वि० [फा०] जिस पर चोब या सलमे-सितारे का काम हुआ जरदोजी।

कारनामा–पुं० [फा० कारनामः] के किए हुए बड़े-चड़े कामों का उ या ऐसे कामों का लिखित विवरण।

कारमन*–पुं० दे० 'कार्मण'।

कारीगरी–स्त्री० [फा०] १. कारीगर पद या काम। २. ऐसा काम जिसमें र का विशेष कौशल या चमत्कार दि

वि० = कारुणिक ।
पुं० [सं०] यात्री ।
[सं०] कर्मण्यता । कर्मठता ।
पुं० [सं०] इन्द्रायन । इनारू ।
-पुं० [सं०] १.किसी बात की
मय पूरा होना । २. काल या
विधान जो अपरिहार्य्य और
माना जाता है । होनहार ।

र-पुं० [हिं० काला +
] एक प्रकार का जहरीला
रोगी का शरीर काला पड़

-पुं० [सं० कलिंग] सम्पूर्ण
राग जो रात के अंतिम पहर
है । इस राग में सब भैरव
हैं ।
-स्त्री० [सं० कणजीर] एक
पौधा जिसकी फलियों के दाने
में काम में आते हैं ।
= कोई ।
-पुं० [सं०] साहित्य में एक
में किसी की कही हुई बात की
र्थन करने के लिए प्रमाण के
कारण या हेतु भी बतलाया
से-जिसने अपनी पगड़ी उतार
की पगड़ी उतारते क्या

-स्त्री० [सं०] साहित्य में
जिसमें किसी की कही हुई बात
और साधारण अर्थ के साथ
शय भी निकलता है जो मुख्य
गया हो । जैसे-हम राजनीति
भी नहीं जानते, फिर उसके
तो कहना ही क्या है ? से यह
ता है कि हम राजनीति के
कुल नहीं जानते ।

काश-अव्य० [फा०] अच्छा होता यदि ।

काशिकी-स्त्री० [सं० काशिका = प्रकाश करनेवाली] वह विद्या या विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि प्रकाश की सहायता से दृष्टि और दर्शक यंत्र किस प्रकार काम करते हैं । (ऑप्टिक्स)

काष्ठा-स्त्री० [सं०] १. अवधि । हद ।
यौ०-पराकाष्ठा ।
२. सबसे ऊँची चोटी । ३. परम उत्कर्ष । ४. ओर । तरफ । दिशा । ५. चन्द्रमा की कला । ६. एक कला (काल-विभाग) का ३० वाँ भाग जो १८ फल का होता है । ७. आज-कल एक मिनट का ६० वाँ भाग । (सेकेन्ड)

कासार-पुं० [सं०] तालाब ।

काहिली-स्त्री० [अ०] काम करने में होनेवाली सुस्ती ।

किंकिनी*-स्त्री० दे० 'किंकिणी' ।

किकयान†-पुं० [हिं० केकान] केकान देश का घोड़ा ।

किरंटा-पुं० [अं० क्रिश्चियन] साधारण ईसाइयों के लिए उपेक्षा-सूचक संज्ञा ।

किरण-केतु-पुं० [सं०] सूर्य ।

किरमिजी-वि० [हिं० किरमिज] कुछ मटमैलापन लिए हुए लाल । हिरमिजी । पुं० उक्त प्रकार का रंग ।

किलात-पुं० दे० 'किरात' ।

किल्विषी-वि० [हिं० किल्विष] १. पापी । २. अपराधी । दोषी । ३. रोगी ।

कीता*-स० [सं० कृत] हिन्दी 'करना' क्रिया का पुराना भूतकालिक रूप । किया । (पश्चिमी हिन्दी)

कीबी-स० हिं 'करना' क्रिया का विधिवाला रूप । करें । कीजिए ।

कुंचिका-स्त्री० [सं०] १. ताले में लगाने की कुंजी । ताली । २. बाँस की पतली टहनी । कमची ।

कुंतलवाही-पुं० [सं० कुंतलवाहिन्] [स्त्री०

कुंतलवाहिनी] वह जो राजाओं की सवारी के साथ भाला या बरछा लेकर चलता है। भाला-बरदारा। बरछैत।

कुंभकार–पुं० [सं०] मिट्टी के बर्त्तन बनानेवाला। कुम्हार।

कुंभकारी–स्त्री० [हिं० कुंभकार] मिट्टी के खिलौने बर्त्तन आदि बनाने का काम। कुम्हारी। (पौटरी)

कुंभी–पुं० [सं० कुंभिन्] १. हाथी। २. मगर। ३. एक कल्पित राक्षस जो बच्चों के लिए कष्टदायक माना गया है।

पुं० दे० 'कुंभीपाक'। (नरक)

स्त्री० [सं०] १. छोटा कुंभ या घड़ा। २. दे० 'जलकुंभी'।

कुचाग्र–पुं० [सं०] कुच या स्तन का अगला छोटा गोल भाग। ढेपनी।

कुचाह–स्त्री० [हिं० कु + चाह] १. किसी के लिए की जानेवाली अमंगल की भावना। २. अमंगल। बुराई।

कुची†–स्त्री० [हिं० कुंजी] ताला खोलने की कुंजी। ताली। (बुन्देल०)

कुठार-पाणि–पुं०[सं०] परशुराम।

कुणप–पुं०[सं०] १.देह। शरीर। २.लाश। शव। ३. बरछा। भाला।

कु-बलि–स्त्री० [सं० कु = बुरा + बलि] निन्दनीय, हीन या बुरी बलि।

कुमंत्रित–वि० [सं०] १. (व्यक्ति) जिसे बुरी मंत्रणा या सलाह दी गई हो। २. (बात या विषय) जिसके सम्बन्ध में मंत्रणा या सलाह दी गई हो अर्थात् अनुचित और न करने योग्य। (इल एडवाइज्ड)

कुमीच–वि० [हिं० कु + मीच = मृत्यु] बहुत दुर्दशा भोगकर या बुरी तरह से मरनेवाला।

कुमेरु-ज्योति–स्त्री० दे० 'मेरु ज्योति'।

कुम्हेरी†–स्त्री० [हिं० कुम्हार+एरी (प्रत्य०)] कुम्हार का काम या पेशा।

कुयोधन–पुं०[सं०] दुर्योधन का दूसरा नाम।

कुरकुट*–पुं० = कुक्कुट।

कुरज–पुं० [?] एक प्रकार का पक्षी

कुरमा†–पुं० = कुनबा (कुटुम्ब)।

कुरर–पुं० [सं०] [स्त्री० कुररी गिद्ध की तरह का एक पक्षी। २. कर या क्रौंच नामक पक्षी। ३. टि टिटिहरी।

कुल-गारी†–स्त्री० [सं० कुल + हिं० कलंक, निन्दा या बदनामी की बात। पुं० दे० 'कुलांगार'।

कुलज–वि० [सं०] कुल में उत्पन्न। नीच कुलज।

कुलहिरी†–स्त्री० दे० 'कुलही'।

कुलिस*–पुं० = कुलिश।

कुवलयापीड़–पुं० [सं०] कंस का व जिसे उसने श्रीकृष्ण को कुचलवाने रख छोड़ा था और जिसे श्री मार डाला।

कुसियारी†–स्त्री० दे० 'कोसा' (रे

कुहक–पुं० [सं०] १. छल। माया। २. जाल। फरेब। ३. इन्द्र जादूगरी। ४. जादू की तरह अ पड़नेवाली कोई चीज।

स्त्री० १. कुहकने की क्रिया या भाव। की बाँग। ३. पक्षियों, विशेषतः को 'कुहू कुहू' बोलने का मधुर शब्द।

वि० [स्त्री० कुहकनी] १. छ मायावी। २. चालाक। धूर्त्त। मक्क

कुहकिनी–स्त्री० [सं०] कोयल (

कुहना†–स० [?] आक्रमण या करना। मारना।

कुहेलिका–स्त्री० [सं०] कोहासा।

कूपक–पुं० [सं० कूप] छोटा कूआ

कूरम*–पुं० = कूर्म (कछुआ)।

कृसानु*–पुं० = कृशानु।

केकर†–सर्व० [हिं० के = किस + कर [स्त्री० केकरि] किसका।

केकान–पुं० [?] एक प्राचीन दे

तः आज-कल के फारस का

०] १. खेतों, बगीचों आदि
। २. वृक्ष के नीचे का
हिमालय की एक चोटी का
ओड़व-षाड़व जाति का एक राग
रे पहर में गाया जाता है।
[सं० कदली] १. केले का
ले का फल।
-पुं० [सं०] पीतांबर।
सं० केश] १. सिर के बाल।
रोएँ।
स न टार सकना = कुछ
पहुँचा सकना। बाल बाँका न

] १. कोई चीज रखने का
र। २. मुकदमा। ३. रोगी या
की अवस्था। ४. अवस्था।
त।
ाना-पुं० केसरिया रंग के
प्रायः मध्ययुग में राजपूत लोग
ने के समय पहनकर निकलते थे।
ात-पुं० एक प्रकार के मीठे
केसर भी पड़ा रहता है।
[सं०] १. केतु-सम्बन्धी।
केतु से युक्त।
अं०] नशा। मद।
दे० 'कीवाड़'।
दे० 'खोंच' ३.।
[सं० कः + अपि] कोई।
[सं० कोश] आँख का कोआ

ार का रंग।
ा-स्त्री० [सं०] किसी विभाग
की ली जानेवाली वह परीक्षा
होने पर वे ऊँची कोटि में
। (ग्रेड इग्जामिनेशन)
[सं० क्रोड़] उछंग। गोद।

कोरवा-पुं० [हिं० कोरा = गोद] गोद।

कोरिक*-वि० [सं० कोटिक] १. कई करोड़। करोड़ों। २. बहुत अधिक।

कोरिया-पुं० [?] बहुत ही छोटी या नीच जाति।

कोरो†-पुं० [?] खपरैल आदि की छाजन में लगाई जानेवाली लम्बी लकड़ी। काँड़ी।

कोस*-पुं० [सं० कोष] १. तलवार की म्यान। २. चारो ओर से ढकनेवाला आवरण। ३. दे० 'कोश'।

कौहर†-पुं० [सं० कटु फल] इंद्रायन का फल।

कौतूह*-पुं० १. दे० 'कुतूहल'। २. दे० कौतुक।

कौर-स्त्री० [सं० कुमारी] कुमारी का वाचक और अपभ्रष्ट शब्द जो स्त्रियों के नाम में चलता है। जैसे-राजकुमारी अमृत कौर।

कौल*-पुं० [सं० कमल] १. कमल। २. कटोरा।

कौहा-पुं० = कौआ।

कौहा-पुं० दे० 'बँड़ेरी' (छाजन की)।

क्योड़ा†-पुं० = केवड़ा।

क्योला†-पुं० = कमला। (संतरा)

क्रन*-पुं० = कर्ण (कान)

क्रिया-चतुर-पुं० [सं०] साहित्य में वह नायक जो अनेक प्रकार के कौशल या छल करके अपना कार्य सिद्ध करने में दक्ष हो।

क्रीड़नक-पुं० [सं०] १. खिलौना। २. खेलवाड़।

क्लान्त-वि० [सं०] [भाव० क्लान्ति] थका हुआ। शिथिल।

क्वासि-पद [सं०] कहाँ हो।

क्षत-पुं० [सं०] कटने, चोट लगने आदि से शरीर में होनेवाला घाव। जख्म। (वुंड)

क्षपानाथ-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

क्षमी*-स्त्री० [सं० क्षमिन्] [स्त्री० क्षमिणी] जिसमें क्षमता या समर्थ्य हो। समर्थ्य।
वि० [स्त्री० क्षमिणी] १. क्षमा करनेवाला।

क्षमाशील। २. सहन करनेवाला। सहिष्णु।

क्षय पक्ष-पुं० [सं०] चान्द्र मास का वह पक्ष जिसमें चन्द्रमा नित्य कुछ-कुछ क्षीण होता हो। कृष्ण पक्ष।

क्षीव-वि० [सं०] १. आवेश में आया हुआ। उत्तेजित। २. नशे में चूर। मत्त।

खं-पुं० [सं०] १. शून्य स्थान। खाली जगह। २. आकाश। ३. विन्दु। सिफर। ४. स्वर्ग। ५. छिद्र। छेद।

खंड-वृष्टि-स्त्री० = खंड-वर्षा।

खंभावती-स्त्री० [सं० स्कंभावती] ओड़व-सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जो रात के दूसरे पहर में गाई जाती है।

खजमज-वि० [अनु०] किंचित् अस्वस्थ। जैसे—आज तबीयत कुछ खजमज है।

खजमजाना-अ० [अनु०] मन में कुछ अस्वस्थता-सी प्रतीत होना।

खटिका-स्त्री० [सं०] खड़िया नाम की सफेद मिट्टी।

ख-मण्डल-पुं० [सं०] सारा आकाश। आकाश मंडल।

खमसा-पुं० [अ० खम्सः] १. उर्दू-फारसी में एक प्रकार की कविता जो पाँच चरणों की होती है। २. उक्त प्रकार की कविता के आधार पर गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। ३. संगीत में एक प्रकार का ताल जिसमें पाँच आघात और तीन खाली होते हैं।

खर-दूषण-पुं० [सं०] १. सूर्य। २. खर और दूषण नाम के दो राक्षस जो रावण के भाई थे।

खरिक-पुं० [सं० खड़] वह स्थान जहाँ गृहस्थ अपनी भैसें आदि बाँधकर रखते हैं। (व्रज)

खरोट-स्त्री० [हिं० खरोटना] काँटे, नाखून आदि की रगड़ से शरीर में होनेवाला छोटा घाव।

खरौंट†-स्त्री० दे० 'खरोट'।

खर्वीकरन-पुं० [सं०] छोटा या कम करने की क्रिया या भाव।

खियाल†-पुं० [हिं० खेल का पुर स्थानिक रूप] क्रीड़ा। खेल।

खिरना†-अ० [सं० खण्ड ?] बादलों फटना या हटना।

खिलाप*-वि० = खिलाफ (विरुद्ध)

खिल्लना*-अ० [हिं० खेलना] १. खेलन २. आगे बढ़ना।

खीरु†-पुं० = खीर।

खुजाई-स्त्री० [हिं० खोजना+अई (प्रत्य खोजने की क्रिया या भाव। खोज। तला

खुथी†-स्त्री० दे० 'खुत्थी'।

खुरी†-स्त्री० = खुर (पशुओं का)।

खुलित*-वि० [हिं० खुलना] खुला हु

खुलेआम-क्रि० वि० [हिं० खुल आम = सार्वजनिक] सब के सामने।

खूँटना-स० [सं० खण्डन ?] फूल, आदि तोड़ना। जैसे—मेंहदी खूँटना। अ० दे० 'खुटना' (समाप्त होना)।

खूँद-स्त्री० [हिं० खूँदना] घोड़ों के की क्रिया का भाव। घोड़ों का बा जमीन पर पैर पटकना।

खूबानी-स्त्री० [फा०] एक प्रकार का जिसकी गिनती मेवों में होती है।

खेचरी-स्त्री० [सं०] हठ-योग की मुद्रा जिसमें जबान उलटकर तालू से दृष्टि दोनों भौहों के मध्य भाग पर जाती है।

खेय†-पुं० दे० 'खेवा'।

खेला-स्त्री० [सं०] क्रीड़ा। खेल।

ख्वाना†-स० [हिं० खाना का किसी को खाने में प्रवृत्त करना। खिल

गंगन*-पुं० = गगन (आकाश)।

गंगन-मंडल*-पुं० दे० 'गगन-मंडल'

गंगा-जल-पुं० [सं०] १. गंगा नदी का जल जो बहुत पवित्र माना है। २. एक प्रकार का मलमल का कप (मध्य युग)

ं० = गंड-स्थल (कनपटी) ।
[सं०] मुँह से किया जानेवाला
कुल्ला ।
[?] सोना ।
ं० [सं० गन्धबंधु] आम (वृक्ष
या फल) ।
व-पुं० दे० 'मुश्क बिलाव' ।
ार-पुं० [सं०] मुश्क बिलाव
एक जंगली जन्तु ।
-पुं० [सं०] वायु । हवा ।
ुं० [सं०] चन्दन ।
[सं० ग्रहण] ग्रहण करना ।

(चारी)-पुं० [सं०] पक्षी ।

श में विचरण करनेवाला ।
ल-पुं० [सं०] १. पृथ्वी के
आकाश रूपी घेरा या मंडल ।
की परिभाषा में, ब्रह्मांड (सिर
ी ओर का भीतरी भाग) और

-पुं० [सं०] गणेश ।
ं० [सं० गज + अरि] शेर ।
ं० = गरज (गर्जन) ।
अनु०] कोई चीज गले के नीचे
शब्द । जैसे—गट-गट करके
।

गण] १. समूह । राशि । २.
।

[हिं० गड्डु] १. किसी चीज की
। गड्डु । २. आतिशबाजी में
आदि में लगाया जानेवाला पटाका
बाजी छूटने के समय बहुत जोर
रता है ।
बैलगाड़ी या ठेला ।
'गड्ढा' ।
ी० [सं०] दे० 'सामान्या' ।
)

गद—पुं० [सं०] १. विष । २. रोग । ३. रोग का उपचार या चिकित्सा । (क्व०) पुं० [अनु०] गुलगुली वस्तु पर या गुलगुली वस्तु से आघात होने पर निकलने वाला शब्द ।

गदबदा—वि० [अनु०] भरे हुए अंगोंवाला ।

गनबी*—अ० [हिं० गनना का भूतकालिक व्रज रूप] गिना जायगा । गिनती होगी ।

गरकाब—वि० [अ०] १. डूबा हुआ । अंतरस्थ । २. जलमग्न ।

गरम कपड़ा—पुं० जाड़े, के दिनों में ओढ़ने या पहनने का ऊनी कपड़ा ।

गरुवा†—वि० दे० 'गरु' ।

गर्वित—वि० [सं०] [स्त्री० गर्विता] जिसे गर्व या अभिमान हुआ हो । अभिमानी । घमंडी ।

गल्यका—स्त्री० [?] किसी नदी का पुराना नाम ।

गवेला†—पुं० [स्त्री० गवेली] = गँवार ।

गहिला†—वि० [सं० ग्रस्त (भूत-प्रेत की बाधा से)] [स्त्री० गहिली] पागल । बावला ।

गाँवर*—वि० दे० 'गवाँर' ।

गा—प्रत्य० क्रियाओं के अन्त में लगनेवाला एक प्रत्यय जो भविष्य काल का सूचक है । जैसे—जायगा ।

पुं० संगीत में गांधार स्वर का सूचक वर्ण । ग ।

*अ० [हिं०] गया क्रिया का अवधी रूप ।

गाच—स्त्री० [अं० गॉज] १. झीनी बुनावट का एक प्रकार का पतला कपड़ा । २. फुलवर नामका रंगीन बूटीदार कपड़ा ।

गाढ़ता—स्त्री० [सं०] १. गाढ़, गम्भीर या गहन होने का भाव । २. कठिनता । दुरुहता ।

गाधा—स्त्री० [सं०] १. गायत्री स्वरूपा महादेवी । २. बहुत अधिक कष्ट या दुःख ।

गामा*—पुं० [सं० ग्राम] ग्रामीण । गवाँर ।

देहाती।

गारा–पुं० [?] १. एक प्रकार का राग। (संगीत) २. मछलियों के खाने का वह चारा जो उन्हें फँसाने के लिए बंसी में लगाया जाता है।

गार्हस्थ्य विज्ञान–पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें यह बतलाया जाता है कि घर-गृहस्थी के धन्धे (भोजन बनाना, कपड़े सीना, बच्चों को पालना) स्त्रियों को किस प्रकार करने चाहिए। (डोमेस्टिक सायन्स)

गिरंदा–पुं० [फा० गीर = पकड़नेवाला] १. पकड़ने या रखनेवाला। २. फंदे में फसानेवाला।

गुटकाना–स० [अनु०] १. 'गुट गुट' शब्द उत्पन्न करना। २. धीरे-धीरे तबला बजाना।

गुण-कथन–पुं० [सं०] १. किसी के गुण कहना या बतलाना। २. साहित्य में प्रिय के गुणों या अच्छी बातों से सम्बन्ध रखनेवाली प्रशंसात्मक चर्चा जो पूर्व-राग की दस दशाओं में से एक है।

गुणकरी–स्त्री० [सं०] ओड़व-षाड़व जाति की एक रागिनी जो दिन के पहले पहर में गाई जाती है।

गुणाढ्य–वि० [सं०] गुणवान। गुणी।

गुणीभूतव्यंग्य–पुं० [सं०] व्यंग्य का वह भेद या प्रकार जिसमें अर्थ या तो रसों आदि का अंग होता है अथवा काकु से आक्षिप्त या वाच्यार्थ का उपपादक होता है अथवा अर्थ अस्फुट रहता है।

गुदेंद्रिय–स्त्री० [सं०] गुदा नामकी इन्द्रिय। मलद्वार।

गुनील(ा)–वि० १. दे० 'गुणी'। २. गुण करनेवाला। लाभदायक।

गुरज†–पुं० [फा० गुर्ज] १. छत या मीनार इत्यादि के ऊपर का उभरा हुआ गोलाकार भाग। गुंबज। २. एक प्रकार की गदा। गुर्ज।

गुराई*–स्त्री० [सं० गौर हिं० गोरा] शरीर के रंग के गोरे होने की अवस्था या भाव गोरापन।

गुलाली–स्त्री० [हिं० गुलाल + ई (प्रत्य०) चित्रकारी के काम में आनेवाला एक प्रका का गहरा लाल रंग।

गूँगी–पुं० [?] १. दो-मुहाँ साँप। पैरों की उँगली में पहना जानेवाला बिछि की तरह का एक गहना।

गूढचर–पुं० [सं०] गुप्तचर। जासूस।

गूढोत्तर–पुं० [सं०] साहित्य में उ अलंकार का एक भेद जिसमें किसी ग अभिप्राय से युक्त या किसी संकेत प्र करनेवाले उत्तर का उल्लेख होता है।

गृह-गोधा–स्त्री० [सं०] छिपकली।

गृह-पशु–पुं० [सं०] १. घर में पाले रखे जानेवाले जानवर। २. कुत्ता।

गृह-स्वामी–पुं० [सं०] [स्त्री० गृ स्वामिनी] वह जो घर में सबसे बड़ा घर का मालिक हो।

गेंदिया†–स्त्री० [हिं० गेंदा + इया (प्रत्य० फूलों की माला के नीचे लटकनेवाला फू पत्तों का गुच्छा जिसमें प्रायः गेंदे के दो फूल भी लगे रहते हैं।

गेराँव†–पुं० [हिं० गेरना = डालना] बैलों के गले में बाँधी जानेवाली रस्सी पगहा।

गैंत†–स्त्री० [सं० गोष्ठ] १. गौओं के र का स्थान। गोठ। २. घर-आँगन को घेर वाली दीवार। चहार-दीवारी। (व्रज०)

गैन*–पुं० [सं० गगन] आकाश। गगन

गैना–पुं० [हिं० गाय] [स्त्री० गैनी छोटी जाति का नाटा बैल।

गैयर–वि० [हिं० गैया = गौ] गौ की त सीधे स्वभाववाला। सुशील।

गैर-रस्मी–वि० दे० 'अ-रीतिक'।

गोइँडा–पुं० [सं० गोष्ठ] १. गाँव या छो बस्ती की चारो ओर की सीमा या क्षेत्र।

का स्थान।
पुं० [हिं० गोटा + पट्ठा] गोटा
के जरी के साज जो कपड़ों
साथ टाँके जाते हैं।
[सं०] इन्द्रियों से जिसका
। इन्द्रियातीत।
स्त्री० [सं०] पर्वत की कन्या,

, [सं० गो = गाय + हिं०
की हत्या करनेवाला।
[सं०] गौ का मांस या गोश्त
पवित्रता के कारण) हिन्दुओं
और अस्पृश्य समझा जाता है।
क्षण-पुं० दे० 'सुरभि-भक्षण'
की क्रिया)।
[सं०] गीदड़ (जन्तु)।
[अ० गुलाम] [स्त्री० गोली]
दास। २. नौकर। सेवक।
-पुं० [हिं० गौड़ + मल्लार]
का एक संकर राग जो गौड़
के योग से बनता है। यह रात
में गाया जाता है।
-पुं० [हिं० गौड़ + सारंग]
जाति का एक राग जो दिन
में गाया जाता है। संकर।
-स्त्री० [सं०] साहित्य में
भेद या प्रकार जिसका आधार,
आदि का सादृश्य (कार्य-कारण
भाववाले संबंध से भिन्न)

[सं० गौरांग] गोरों का देश।

-पुं० [?] इन्द्रधनुष।
)

=गर्व (घमंड)।
=गृह (घर)।
= ग्वालिन।
दे० 'गोइँडा'।

घनहर*–पुं० [सं० घन = बादल] बादल। मेघ।

घर-जँवाई–पुं० [हिं० घर + जँवाई = दामाद] वह जँवाई या दामाद जिसे ससुरालवालों ने अपने घर रख लिया हो।

घरियक*–क्रि० वि० [हिं० घरी (घड़ी) + एक)] घड़ी भर। बहुत थोड़ी देर।

घर्मांशु–पुं० [सं०] सूर्य।

घिराना–स० [हिं० घेरना का प्रे०] १. घेरने का काम किसी से कराना। २. चरती हुई गौओं को इकट्ठा कराना।

घुरला*–स्त्री० [हिं० घेरना = घूमना] बहुत आने-जाने के कारण बना हुआ मार्ग। कच्चा रास्ता। पगडंडी।

घूँघटना†–स० [हिं० घूँट]घूँटना। पीना।

घूक–पुं० [सं०] उल्लू नाम का पक्षी।

घूघ–पुं० [सं० घूक] उल्लू नामक पक्षी।

घूम-घुमारा†–वि० [हिं० घूमना] १. घूमता या चक्कर खाता हुआ। २. अलसाता और मद से भरा हुआ (नेत्र)।

घोंटू–वि० [हिं० घोंटना + ऊ (प्रत्य०)] घोटनेवाला। जैसे–गला-घोंटू कानून।

घोरमारी–स्त्री० दे० 'महामारी'।

घोषक–वि० [सं०] घोष या घोषणा करनेवाला।
पुं० वह जिसका काम बराबर किसी प्रकार घोषणा करते रहना हो।

चंचल–पुं० = घोड़ा (डिंगल)।

चंचली–स्त्री० [सं०] चचरी नामक वर्णवृत्त का दूसरा नाम।

चंडासा–पुं० [हिं० चाँड + आसा (प्रत्य०)] कोई काम जल्दी करने के लिए की जाने वाली प्रेरणा। किसी काम के लिए मचाई जानेवाली जल्दी।

मुहा०–चँडासा चढ़ाना = बहुत जल्दी मचाना। उतावली करना।

चंद्र-वधू–स्त्री० [सं०] वीरबहूटी नाम का लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा।

चंपक-माला–स्त्री० [सं०] चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण, सगण और गुरु होते हैं। इसे 'रूपवती' भी कहते हैं।

चँमेली†–स्त्री० = चमेली (फूल)।

चकिया†–स्त्री० [सं० चक्रिका] किसी चीज का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। चक्की। जैसे–पत्थर की चकिया।

चखा†–पुं० [हिं० चखना] १. चखनेवाला। २. रस का आस्वादन करनेवाला। प्रेमी। रसिक।

चड्डो–स्त्री० [हिं० चुड = भग] स्त्रियों के लिए एक प्रकार की गाली जो उनकी दुश्चरित्रता की सूचक होती है।

चतुष्कोण–पुं० [सं०] ज्यामिति में चार भुजाओंवाला क्षेत्र, जिसमें चार कोण होते हैं। (क्वाड्रैंगिल)

चबाई†–पुं० दे० 'चवाई'।

चभना–अ० [सं० चर्वण] १. चाभा या खाया जाना। २. दरेरा खाना। दबना या पिसना।

चमक–स्त्री० चमकने या चौंधने की क्रिया या भाव। चौंक।

चयनीय–वि० [सं०] जो चयन किये या चुने जाने के योग्य हो। चेय।

चयित–वि० [सं०] जिसका चयन हुआ हो। चुनकर इकट्ठा किया या लिया हुआ।

चरत–पुं० [हिं० बरत (व्रत) का अनु०] व्रत या उपवास के दिन निराहार न रहकर अथवा फलाहार न करके अन्न आदि खाना। 'वरत' (व्रत) का विपर्याय।

चरनपीठ–पुं० [सं०] खड़ाऊँ।

चरम-पत्र–पुं० [सं०] दिष्सा-पत्र। वसीयतनामा। (विल)

चरमावस्था–स्त्री० [सं०] चरम अर्थात् अंतिम अवस्था या दशा।

चलीसा–पुं० दे० 'चालीसा'।

चलौआ†–पुं० दे० 'चाला' ४.।

चवपैया–स्त्री० दे० 'चौपैया'।

चहका–पुं० [हिं० चहकना = चमकना
जलती हुई लकड़ी।
पुं० दे० 'चहला'।

चहनना†–स० दे० 'चहलना'।

चहर†–स्त्री० [हिं० चहरना] (
चहानेवाली) चिड़िया।

चहलुम–पुं० दे० 'चेहलुम'।

चहा†–पुं० दे० 'चाहा' (पक्षी)।

चहूँ*–वि० दे० 'चहुँ'।

चहूँघा–क्रि० वि० दे० 'चहुँघा'।

चाँका†–पुं० [हिं० चार + अंक] अ
और किसी चीज के ढेर पर चारो
लगाया जानेवाला चिह्न।

चांचल्य–पुं० = चंचलता।

चाँचिया–पुं० [?] १. एक छोटी जा
प्रायः चोरी, डाके आदि से निर्वाह
है। २. डाकू। लुटेरा।

चाँचियागिरी–स्त्री० [हिं० चाँचिय
फा० गीरी (प्रत्य०)] डाके डालने
काम या पेशा। लुटेरापन।

चाँदा–पुं० [सं० चन्द्र या हिं० चाँद
पीतल, सींग आदि की बनी अर्द्ध-
आकार की एक प्रकार की पटरी जिससे भू
के लिए कोण आदि नापे जाते
(प्रोट्रैक्टर) २. वह पटरा जिसपर नि
लगाने का अभ्यास करने के लिए छोटे
चिह्न बने रहते हैं।

चांद्रमस–वि० [सं०] चंद्रमा-संबंधी।

चांद्रवर्ष–पुं० [सं०] बारह चांद्र मास
समय। (यह सौर वर्ष से कुछ
होता है)

चांद्रायण–पुं० [सं०] १. एक प्रका
मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में
मात्राएँ होती हैं। इसमें ११ मात्राओं
यति होती है और वहीं एक जगण
चरण के अन्त में रगण होता है।

चाँय चाँय–स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बक

।

'चाय' ।

= चावल ।

[अं०] एक प्रकार की मिठाई ।

[सं० चक्र] चक्का । पहिया ।

[सं० चाष] नीलकंठ (पक्षी) ।

[सं० चटशाला में का चट] । जैसे—चेले-चाटी ।

मिट्टी का एक प्रकार का मटका ।

[सं०] कंस का सेवक, एक या योद्धा जो श्रीकृष्ण के हाथों था ।

[सं०] (देश या राज्य) ओर प्राकृतिक सीमाएँ हों ।

-पुं० [सं०] भूमिति में वह जो किसी चाप के एक सिरे से तक होती है । जीवा । (कॉर्ड)

-स्त्री० = चपलता ।

दे० 'चाव' ।

स्त्री० दे० 'चमड़ी' ।

ही-पुं० [सं० चामर + ग्रहिन्] मर ग्राहिणी] वह जो देवता, के पीछे खड़ा होकर चँवर जाते ।

स्त्री० दे० 'चंवल' ।

[हिं० चाव या चाह का पू० राग । प्रेम ।

-पुं० दे० 'चौपाया' ।

-वि० [सं०] १. चरित्र-संबंधी । । २. अच्छे चरित्रवाला ।

ता-स्त्री० [सं०] १. 'चारित्रिक' सदाचार । २. चरित्र-चित्रण की शल ।

-वि० [सं० चारुहासिन्] [स्त्री०] जिसका हँसना देखने में सुन्दर जान पड़े ।

चालनहार*-वि० [हिं० चलाना + हार (प्रत्य०)] १. चलानेवाला । २. ले जाने या ले चलनेवाला ।

वि० [हिं० चलना] चलनेवाला ।

चालुक्य-पुं० [सं०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध और प्रतापी राजवंश जिसने वहाँ ई० ५ वीं शताब्दी से १२ वीं तक राज्य किया था । कहते हैं कि इनके पूर्वज चंद्रवंशी थे और अयोध्या में राज्य करते थे ।

चावड़ी-स्त्री० [देश०] रास्ते में यात्रियों के ठहरने का स्थान । पड़ाव ।

चिगना-पुं० [देश०] छोटा बच्चा ।

चिंगुड़ना†-अ० = सिकुड़ना ।

चिंघाड़-स्त्री० [हिं० चिंघाड़ना] हाथी के बोलने का शब्द ।

चिंत*-स्त्री० = चिंता ।

चिंतामनि-पुं० दे० 'चिंतामणि' ।

चि०-हिंदी 'चिरंजीव' का संक्षिप्त रूप ।

चिकनी मिट्टी-स्त्री० [हिं० चिकनी + मिट्टी] एक प्रकार की साफ सफेद लसीली मिट्टी जो हाथ धोने, लीपने-पोतने आदि के काम आती है ।

चिकारना†-अ० [सं० चीत्कार] १. चिल्लाकर या जोर से बोलना । गरजना । २. हाथी का चिंघाड़ना ।

चिकित्साशास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें अनेक प्रकार की चिकित्साओं का विवेचन होता है । आयुर्वेद ।

चिखाई-स्त्री० [हिं० चीखना = चखना + आई (प्रत्य०)] १. चीखने या चखने की क्रिया या भाव । २. चीखने या चखने का पारिश्रमिक ।

चिखुरन†-स्त्री० [हिं० चिखुरना] खेत निराने पर निकलनेवाली घास ।

चिखुरना†-स० [देश०] खेत में फालतू घास-फूस काटकर निकालना । निराना ।

चिखुरा†-पुं० [सं० चिकुर] [स्त्री० चिखुरी] गिलहरी नामक जन्तु ।

चिटक†–वि० = चिकट (मैला और गंदा)। स्त्री० चिटकने की क्रिया या भाव।

चिट्ठकी†–स्त्री० = चुटकी।

चिढ़–स्त्री० [हिं० चिड़ना] १. चिढ़ने की क्रिया या भाव। २. वह चीज या बात जिससे कोई चिढ़ता हो।

चिढ़कना†–अ० = चिढ़ना।

चितउर*–पुं० दे० 'चित्तौर'।

चितरवा†–पुं० [सं० चित्रक] एक प्रकार का पक्षी।

चितरोख–पुं० दे० 'चितरवा'।

चितवाना*–स० [हिं० चितवना का प्रे०] किसी को देखने में प्रवृत्त करना। दिखाना।

चितसार(ी)–स्त्री० दे० 'चित्रसारी'।

चिताना–अ० [सं० चित्रण] चित्रित होना। स० चित्रित करना। अंकित करना।

चितारना–अ० [सं० चित्रण] चित्रित करना। अंकित करना।

चितावन†–स्त्री० दे० 'चेतावनी'।

चितैना†–स० [हिं० चितवन] देखना।

चितौना*–स० दे० 'चितवना'।

चित्कार*–पुं० = चीत्कार।

चित्तज–पुं० [सं०] कामदेव।

चित्तभू–पुं० [सं०] कामदेव।

चित्त-भूमि–स्त्री० [सं०] योग-शास्त्र के अनुसार चित्त की ये पाँच अवस्थाएँ या स्थितियाँ–क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध।

चित्तर†–पुं० दे० 'चित्र'।

चित्तरसारी–स्त्री० दे० 'चित्रशाला'।

चित्त-विश्लेषण–पुं० [सं० चित्त + विश्लेषण] इस बात का पता लगाना कि किस अवस्था में चित्त किस प्रकार का काम करता है।

यौ०–चित्त-विश्लेषण विज्ञान = मनोविज्ञान।

चित्रतल–पुं० [सं०] वह तल या सतह जिसपर चित्र अंकित हो। जैसे–पत्थर, काठ, हाथीदाँत, चमड़ा, कपड़ा, कागज आदि।

चित्र-पुत्री–स्त्री० [सं०] कपड़े, लक आदि की बनी हुई गुड़िया। पुतली।

चित्रफलक–पुं० [सं०] वह लकड़ी, पत्थ हाथीदाँत आदि जिसपर चित्र बना और जो चित्र-पट की तरह लपेटा न सकता हो।

चित्रलेखा–स्त्री० [सं०] १. एक प्र का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम मगण, भगण, नगण और तब तीन य होते हैं। २. चित्र अंकित करने की क या कूँची।

चित्र-विद्या–स्त्री० = चित्र-कला।

चित्र-सभा–स्त्री० दे० 'चित्र-शाला'।

चित्र-सामग्री–स्त्री० [सं०] चित्र अं करने की सामग्री। जैसे–रंग, तूलिका, व कागज, पत्थर आदि।

चित्रांगद–पुं० [सं०] राजा शांत एक पुत्र और विचित्रवीर्य के छोटे भाई

चित्रालंकार–स्त्री० दे० 'चित्र' ६।

चित्रोक्ति–स्त्री० [सं०] अलंकृत भाष कही हुई बात।

चित्रोत्तर–पुं० [सं०] साहित्य में अलंकार का एक भेद जिसमें प्रश्न विचित्र ढंग से रखे जाते हैं कि उन्ह शब्दों में उनका उत्तर भी रहता है अ कई प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।

चिद*–पुं० दे० 'चित्'।

चिदाकाश–पुं० [सं०] पर-ब्रह्म।

चिनगटा†–पुं० [सं० चीर्ण] बहु फटा और मैला कपड़ा। चिथड़ा।

चिनना†–अ० = चुनना।

चिनिया–वि० [चीन देश से] १. चीन का। चीन-संबंधी। २. चीन देश का बना चीन से आया हुआ। जैसे–चिनिया रे या चिनिया केला।

चिनौटिया†–वि० [हिं० चिनना = चुन १. जिसमें चुनट डाली गई हो या पड़ी हो

ा।
ौटिया चीर = चुँदरी या चूनरी
पड़ा।
-स० १. दे० 'चिपकाना'। २.
ाना'।
-स्त्री० [सं०] एक प्रकार की
।
-वि० दे० 'चिलबिला'।
-स्त्री० [हिं० चिमटा] चिमटे
का एक छोटा उपकरण जिससे
ई तरह के काम करते हैं।
-स्त्री० १. दे० 'चमोटी'। २.
टी'।
ी० [देश०] गुंजा। घुंघची।
-स्त्री० [हिं० चिरवाना] चिरवाने
भाव या मजदूरी।
ाधि-स्त्री० [सं०] ऐसी समाधि
भी अन्त न हो अर्थात् मृत्यु।
-स्त्री० [सं० चार] चिरौंजी।
-स्त्री० = चिड़िया (पक्षी)।
-वि० [हिं० चीरना] चीरने या
ाला।
चिड़िया (पक्षी)।
ी० [देश०] बिजली। वज्र।
वि० [हिं० चिलक] बहुत चम-
। चमकीला। जैसे—चिलकी

स्त्री० [सं० चिल्ल] चील
िद्ध पक्षी।
-अ० दे० 'चीतना' (चिंतन
।
ुं० = कीचड़।
वि० = चिकना।
० [हिं० चिखुरा] [स्त्री० चिखुरी]

० [हिं० चीकड़ (कीचड़)] मैल।

० = चिढा।

चीढ़-पुं० दे० 'चीड़'।

चीतावती*-स्त्री० [हिं० चेत = याद] १. स्मृति-चिह्न। निशानी। २. स्मारक। यादगार।

चीथरा†-पुं० = चीथड़ा।

चीन की दीवार-स्त्री० १. चीन के उत्तरी भाग में प्रायः १५०० मील लंबी एक दीवार जो दो हजार बरस पहले बनी थी और जिसकी गिनती संसार की सात आश्चर्य-जनक वस्तुओं में होती है। २. कोई बहुत बड़ी बाधा या अड़चन।

चीनना*-स० = चीन्हना। (पहचानना)

चीना-बादाम-पुं० दे० 'मूँगफली'।

चीनिया-वि० [चीन (देश)] चीन देश का। चीन-संबंधी।

चीन्हा†-पुं० १. दे० 'चिह्न'। २. दे० 'परिचय'।

चीरवासा-पुं० [सं० चीरवासस] १. शिव। महादेव। २. यक्ष।

चीर-हरण-पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण की एक लीला, जिसमें वे स्नान करनेवाली गोपियों के चीर या वस्त्र लेकर कदम की डाल पर जा बैठे थे। २. महाभारत की वह घटना जिसमें दुर्योधन ने रजस्वला द्रौपदी को भरे दरबार में बुलाकर अनावृत करने का प्रयत्न किया था और जबकि श्रीकृष्ण ने वहाँ पहुँचकर द्रौपदी की लाज रखी थी।

चीरिका-स्त्री० [सं०] झींगुर। झिल्ली।

चीरी*-स्त्री० [सं० चीर] चिट्ठी। पत्र।

चीलड़-पुं० दे० 'चीलर'।

चीलिका-स्त्री० [सं०] झींगुर। झिल्ली।

चीलू-पुं० [सं०] एक प्रकार का आड़ू की जाति का फल।

चील्ह-स्त्री० = चील (पक्षी)।

चील्ही-स्त्री० [हिं० चील्ह या चील (पक्षी)] एक प्रकार का टोना जिसमें बच्चों के कल्याण के लिए उनपर से मांस के टुकड़े काटकर

चीलों को खिलाये जाते हैं।

चीस-स्त्री० दे० 'टीस'।

चीह†-स्त्री० [फा० चीख] चिल्लाहट। चीत्कार।

चुँगना†-स० दे० 'चुगना'।

चुँटली-स्त्री० दे० 'धुँधली'।

चुंडा†-पुं० [सं० चूड़ा] [वि० चुंडित*] १. सिर पर के बाल। २. चोटी। चुंदी। पुं० [सं०] कूँआ।

चुँधलाना†-अ० दे० 'चौंधियाना'।

चुंबकीय-वि० [सं०] १. चुंबक-संबंधी। चुंबक का। २. जिसमें किसी को अपनी ओर खींचने की वैद्युत् शक्ति हो। (मैगनेटिकल)

चुंबित-वि० [सं०] १. चुंबन किया या चूमा हुआ। २. किसी से छुआ हो। स्पृष्ट।

चुँभना*-अ० = चुभना।

चुआई-स्त्री० [हिं० चूना = टपकना] १. चूने या चुआने की क्रिया या भाव। २. चुआने की मजदूरी।

चुआनी-स्त्री० [हिं० चूना = टपकना] १. पानी का गड्ढा। २. छोटी नहर या खाँई।

चुकचुकाना-अ० [अनु०] द्रव पदार्थ का छोटे-छोटे कणों के रूप में रसकर बाहर निकलना। जैसे-पसीना चुकचुकाना।

चुकटी*-स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चुकरैंड-पुं० [देश०] दो-मुहाँ साँप। गूँगी। (बुन्देल०)

चुक्की-स्त्री० [हिं० चूक] १. भूल। चूक। २. छल। धोखा।

चुक्र-पुं० [सं०] १. चुक या चूक नाम की खटाई। २. काँजी।

चुगल†-पुं० दे० 'चुगलखोर'।

चुगाई-स्त्री० [हिं० चुगना] चुगने या चुगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चुग्गा-पुं० दे० 'चुगा'।

चुचुक-पुं० [सं०] १. स्तन का अगला भाग। कुचाग्र। २. दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश।

चुटका†-पुं० [चट् से अनु० या हिं० चोट या
एक विशेष प्रकार का कोड़ा जिसक
घोड़ों को चलना सिखाने के लिए होता

चुटकला-पुं० दे० 'चुटकुला'।

चुटका-पुं० [हिं० चुटकी] १. चुटकी। २. उतना पदार्थ जितना चुटकी में आवे।

चुटकारी-स्त्री० [चुटचुट से अनु
अँगूठे और तर्जनी के योग से बजाई
वाली चुटकी या उससे होनेवाला शब्द

चुटला-पुं० [हिं० चोटी] १. सि
गूँथी हुई चोटी। २. सिर की चोटी
पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना
वि० दे० 'चुटीला'।

चुटाना†-अ० [हिं० चोट] चोट
आघात से पीड़ित होना। चोट खाना

चुटीलना-वि० [हिं० चोट] किस
चोट पहुँचाना। चुटीला करना।

चुटीला-वि० [हिं० चोट] जिसे
लगी हो। चोट खाया हुआ। घायल
†पुं० [हिं० चोटी] सिर के बालों
गुथी हुई चोटी।
वि० चोटी या सिरे का। सबसे बढ़कर

चुट्टा-पुं० दे० 'चुटला'।

चुन-पुं० दे० 'चून'।

चुनवट†-स्त्री० दे० 'चुनट'।

चुनवाना-स० [हिं० 'चुनना' का प्रे
चुनने का काम दूसरे से कराना।

चुनाना-स० = चुनवाना।

चुनौटिया†-वि० दे० 'चिनौटिया'।

चुन्न†-पुं० दे० 'चून'।

चुन्ना†-पुं० दे० 'चूना'।

चुपकाना†-स० = चुप कराना।

चुपकी-स्त्री० [हिं० चुप] चुप रहने
अवस्था या भाव। मौन। चुप्पी।
मुहा०-चुपकी साधना = बोलने
अवसर होने पर भी बिलकुल चुप रह

चुपरना*-स० दे० 'चुपड़ना'।

[अनु०] बार-बार पानी
र निकलना । रह-रहकर गोता

स्त्री० [हिं० चुभना का अनु०]
की ।
स० = चुभाना ।
स्त्री० दे० 'चुमकार' ।
पुं० दे० 'चुंबक' ।
वि० [हिं० चोरकट] १. दे०
। २. घबराया हुआ ।
अ० [अनु०] रह-रहकर दबी
कहना । (व्यंग्य)
चूर] टुकड़े-टुकड़े या चूर-चूर

स्त्री० = चोटी (शिखा) ।
वि० दे० 'चुरकुस' ।
अ० दे० 'चुरकना' ।
वि० दे० 'चुरमुरा' ।
स० [हिं० चुराना का प्रे०] १.
चोरी कराना । २. चुराने, औटाने,
का काम दूसरे से कराना ।
१. दे० 'चूरा' । २. दे० 'चूड़ा' ।
-पुं० [?] एक प्रकार का
जो दोहे के प्रत्येक चरण के
जगण और एक लघु रखने से

[हिं० चुल = शरारत] नटखट ।
रती ।
दे० 'चूल्हा' । २. दे० 'चिता' ।
पुं० दे० 'चूल्हा' ।
[देश०] हड्डी की नली के अन्दर

चौआ = चार पैरोंवाला]
या ।
स० = चुसाना ।
[हिं० चूसना] चूसने की
या मजदूरी ।
सल)-स्त्री० [हिं० चूसना]
बार-बार या अधिक चूसने की क्रिया या भाव ।

चुहचुही-स्त्री० [अनु०] एक प्रकार की छोटी काली चिड़िया जो प्रायः फूलों के पास बैठती है । फूल-सुँघनी ।

चूँदरी†-स्त्री० दे० 'चूनरी' ।

चूका-पुं० [सं० चुक] चूक नाम का खट्टा साग ।

चूड़(क)-पुं० दे० 'चूड़ा' ।

चूड़ाकरण-पुं० [सं०] बालक के सिर के बाल पहले-पहल मूँडने का संस्कार । मुंडन ।

चूड़ाभरण-पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का केश-विन्यास ।

चूचुक-पुं० [सं०] १. चूँची या स्तन का अगला भाग । २. स्तन । चूँची ।

चूरामनि*-पुं० = चूड़ामणि ।

चूरी-स्त्री० [हिं० चूरा] रोटी, पूरी आदि को मसलकर बनाया हुआ चूरा जिसमें घी और चीनी मिली हो । चूरमा ।
*स्त्री दे० 'चूड़ी' ।

चूर्णक-पुं० [सं०] साहित्य में वह गद्य जिसमें छोटे-छोटे शब्द और श्रुति-मधुर वर्ण हों ।

चूलक-पुं० दे० 'चूलिका' ।

चूलिका-स्त्री० [सं०] नाट्य-शास्त्र के अनुसार, नेपथ्य में मिलनेवाली किसी ऐसी घटना की सूचना जिसका रंग-मंच पर प्रदर्शन निषिद्ध हो । (जैसे-मृत्यु, रक्तपात आदि)

चूहरी†-स्त्री० = चुड़िहारा के स्त्री० चुड़िहारिन का स्थानिक रूप ।

चेंगड़ा†-पुं० [अनु०] [स्त्री० चेंगड़ी] बालक । बच्चा ।

चेजा†-पुं० [हिं० छेद] छेद । सूराख ।

चेटुआ(वा)†-पुं० [?] चिड़िया का बच्चा ।

चेत्-अव्य० [सं०] १. अगर । यदि । २. कदाचित् । शायद ।

चेतकी-स्त्री० [सं०] एक प्रकार की बड़ी हड़ ।

चेतौनी†–स्त्री० दे० 'चेतावनी'।

चेना–पुं० [सं० चणक] कँगनी या साँवा की तरह का एक प्रकार का मोटा अन्न।

चेपना†–स० = चिपकाना।

चेय–वि० [सं०] चयन करने योग्य।

चेर*–पुं० = चेरा (चेला)।

चेराई†–स्त्री० [हिं० चेरा] १. (चेले) या शिष्य होने की अवस्था या भाव। शिष्यता। २. दासता। नौकरी।

चेल–पुं० [सं०] कपड़ा। वस्त्र।

चेलकाई†–स्त्री० दे० 'चेलहाई'।

चेलहाई†–स्त्री० [हिं० चेला] १. लोगों को अपने चेले या शिष्य बनाने की वृत्ति। २. चेलों या शिष्यों का वर्ग या समूह।

चेलिकाई†–स्त्री० दे० 'चेलहाई'।

चेहलुम–पुं० [फा०] मुलमानों का एक त्योहार जो मुहर्रम में ताजिया दफन करने के दिन से चालीसवें दिन होता है।

चैंप†–पुं० [हिं०] चेप (लासा) का ब्रज रूप।

चैकित्सिक–वि० [सं०] चिकित्सा या एलाज से संबंध रखनेवाला। (मेडिकल)

चैत्त–वि० [सं०] चित्त-संबंधी। चित्त का।

चैपला–पुं० [?] एक प्रकार की चिड़िया।

चैयाँ†–स्त्री० [हिं० बहियाँ = बाँह] बाँह।

चोंघना†–स० १. दे० 'चुगना'। २. दे० 'चूसना'।

चोंडा†–पुं० [सं० चड़ा] १. सिर पर के बड़े और लंबे बाल। २. सिर।

चोंड़ा–पुं० [सं० चुंडा] खेतों की सिंचाई के लिए खोदा हुआ छोटा, कच्चा कूआँ।

चोखना†–स० [हिं० चूसना] १. चुसना। २. गौ के थन में मुँह लगाकर उसका दूध चूसना या पीना।

चोखनी†–स्त्री० [सं० चूषण] चूसकर पीने की क्रिया।

चोटहा†–वि० [हिं० चोट] १. जिसे चोट लगी हो। २. जिस पर चोट का दाग या निशान हो।

चोटार†–वि० [हिं० चोट] करने अथवा आघात पहुँचा[illegible] दे० 'चोटहा'।

चोटारना*–अ० [हिं० चोट] पहुँचाना या लगाना। २. आघात करना।

चोटिया†–स्त्री० = चोटी।

चोटी-पोटी*–स्त्री० [?] झूठी, या इधर-उधर की (बात)।

चोढ़ा†–पुं० [?] उत्साह। उमंग।

चोब-चीनी–स्त्री० [फा० चोब = लक चीनी = चीन देश का] चीन में हो एक लता की जड़ जो औषध के आती है।

चोबदारी–स्त्री० [फा० चोबदा (प्रत्य०)] चोबदार का कार्य या प

चोबा–पुं० [फा० चोब] १. प चावल। भात। २. दे० 'चोब'।

चोरना*–स० [हिं० चोर] चोरी चुराना।

चोर पेट–पुं० स्त्री का ऐसा पेट जिस रहने पर भी जल्दी पता न चले।

चोरौंधा–वि० [हिं० चोर + औंधा (प्र किसी की विशेषतः घर के लोगों की से बचाकर रखा हुआ (धन आदि) जैसे–लड़की के ब्याह के समय उन्होंने चोरौंधा रुपया निकालकर काम चला

चोल-खंड–पुं० [सं० चोल = चो खंड] कपड़े का वह टुकड़ा जो प्रायः के साथ (अथवा अलग भी) बुना जाता है कि उससे चोलन या बन सके।

चोल-रंग–पुं० दे० 'चोल' के पद–'चोल का रंग'।

चोषक–वि० [सं०] शोषण कर चूसनेवाला।

चोष्य–वि० [सं०] जो चूसा जाता चसा जाने को हो।

चौहट्टा (बाजार) ।

हिं० चौंकना] चौंकने की ।

[हिं० चौंकना] १. ऐसा जिससे कोई चौंके । २. सतर्क ना । †३. भड़काना ।

दे० 'चौंडा' ।

दे० 'चबूतरा' ।

[सं०] चुंबक-संबंधी । चुंबक में चुंबकवाली शक्ति हो ।

दे० 'चौखट' ।

[हिं० चौ = चार + कल =] पिंगल में चार मात्राओं

[हिं० चौ = चार + खंड] वाला ऊँचा मकान । चौमंजिला ऐसे मकान का सबसे ऊपरी ऐसा मकान जिसके चार अलग- और चार आँगन हों ।

डों या विभागोंवाला ।

दे० 'चौखंडा' ।

१. दे० 'चौगोड़ा' । २. दे०

[हिं० चौ = चार + गुना] ने की अवस्था या भाव । २. गति या लय में गाना बजाना जिससे चौगुनी गति या लय में गुनी तेजी से और चौथाई वाला गाना-बजाना । (दून से

-स्त्री० दे० 'चौघड़िया' ।

[हिं० चौ = चार + युग)] चार युगों (सतयुग, द्वापर कलियुग) का समूह ।

[हिं० चौड़ा] १. चौड़ा ना । २. व्यर्थ विस्तार करना । होना ।

चौड़े-क्रि० वि० [हिं० चौड़ा] सबके सामने । खुले-आम ।

चौतनियाँ†-स्त्री० दे० 'चौतनी' ।

चौतरा-पुं० [हिं० चौ = चार + तार] सितार की तरह का एक बाजा जिसमें बजाने के लिए चार तार रहते हैं ।

पुं० दे० 'चबूतरा' ।

चौतही-स्त्री० [हिं० चौ = चार + तह] चार तह करके बिछाई जानेवाली एक प्रकार की बहुत बड़ी और मोटी चादर ।

चौताला-पुं० [हिं० चौताल] १. संगीत में वह ताल जिसमें चार ताल हों । (ऐसे कई प्रकार के ताल हैं) २. दे० 'चौताल' ।

चौतुका-पुं० [हिं० चौ = चार + तुक] चौपदा नाम का छन्द ।

चौथपन-पुं० [हिं० चौथा + पन=अवस्था] मनुष्य की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था ।

चौथा-वि० [हिं० चौ=चार + था (प्रत्य०)] क्रम या संख्या के विचार से चार के स्थान पर पड़नेवाला ।

चौथाई-वि० [हिं० चौथा] चार समान भागों में से कोई एक ।

चौथिया-पुं० [हिं० चौथा] हर चौथे दिन आनेवाला पारी का बुखार । (मलेरिया ज्वर का एक प्रकार)

चौथैया†-वि०, पुं० दे० 'चौथाई' ।

चौदंती-स्त्री० [हिं० चौदंता] १. उद्दंडता । शोखी और शरारत । २. धृष्टता । ढिठाई ।

चौदस-स्त्री० [सं० चतुर्दशी] चान्द्र मास के किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि । चतुर्दशी ।

चौदाँत†-वि० [हिं० चौ = चार + दाँत] (दो हाथी) जिनके दाँत (लड़ने के लिए) आपस में आमने-सामने आकर मिल गए हों ।

चौधराना-पुं० [हिं० चौधरी] १. चौधरी का पद या भाव । २. वह नियत धन जो चौधरी को उसके किसी काम के बदले में

दिया जाय।

चौधारी-स्त्री० [हिं० चौ = चार + धारी] वह कपड़ा जिसमें खड़े और बेड़े बल में धारियाँ बनी होती हैं। चारखाना।

चौपई-स्त्री० [सं० चतुष्पदी] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ और अन्त में गुरु, लघु होते हैं। इसे 'जयकरी' भी कहते हैं। यदि अन्त में गुरु, लघु की जगह लघु, गुरु हो तो यही 'चौबोला' हो जाता है।

चौपखा†-पुं० [हिं० चौ = चार + पाख = पक्ष] चारो ओर की दीवारें। चहारदीवारी। परिखा।

चौपग†-पुं० = चौपाया।

चौपत-स्त्री० [हिं० चौ = चार + परत] कपड़े की लगाई जानेवाली तह।

चौपताना-स० [हिं० चौपत] कपड़े आदि की तह लगाना।

चौपतिया-पुं० [हिं० चौ = चार + पतिया = पत्ता] १. कसीदे के काम में वह बूटी जिसमें चार पत्तियाँ हों। २. एक प्रकार का साग।

चौपदा-पुं० [सं० चतुष्पद] १. एक प्रकार का छन्द। चतुष्पद। २. दे० 'चौपाया'।

चौपहरा-वि० [हिं० चौ = चार + पहर] [स्त्री० चौपहरी] १. चार पहरों से संबंध रखनेवाला। २. दिन के चारो पहरों में, हर पहर पर होनेवाला।

चौपैया-स्त्री० [हिं० चौ = चार + पैया = पद या चरण] एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और १० वीं तथा १२ वीं मात्राओं पर यति होती है। यदि अन्त में सगण और गुरु हो तो अच्छा है।

चौफेर-क्रि० वि० [हिं० चौ = चार + फेरा] चारों ओर।

चौबंदी-स्त्री० [हिं० चौ = चार + फा० बंद] १. एक प्रकार की कुश्ती जिसमें चार बन्द लगे होते हैं। २. राजस्व

चौबंसा-पुं० [सं० चतुर्वंशः] एक का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण नगण और एक रगण होता है।

चौबच्चा-पुं० दे० 'चहबच्चा'।

चौबरसी-स्त्री० [हिं० चौ = चार हिन्दुओं में मृतक के उद्देश्य से किय वाला श्राद्ध या कृत्य जो किसी की चार वर्ष बाद होता है।

चौबाछा-पुं० [हिं० चौ = चार + कर लेना] मुगल शासनकाल का जो प्रति व्यक्ति, प्रति बालक, प्रति प्रति पशु के हिसाब से लिया जाता

चौबे-पुं० [सं० चतुर्वेदी] चतुर्वेदी

चौ-मंजिला-वि० [हिं० चौ = मंजिल] [स्त्री० चौ-मंजिली] चार या खंडोंवाला (मकान या इमारत

चौमार्ग*-पुं० = चौराहा।

चौमुख-क्रि० वि० [हिं० चौ = मुख = ओर] चारों ओर। सब त

चौमेखा-पुं० [हिं० चौ = चार प्राचीन काल का एक प्रकार का जिसमें अपराधी को जमीन पर चि उसकी हथेलियों और पैरों में मे जाती थीं।

चौरी-स्त्री० [हिं० चौरा] १. छो या चबूतरा। २. वेदी।

†स्त्री० = चँवर।

चौल कर्म-पुं० [सं०] हिन्दु मुंडन नामक संस्कार।

चौ-लड़ा-वि० [हिं० चौ = चार [स्त्री० चौ-लड़ी] चार लड़ोंवा या कोई चीज)।

चौहान-पुं० [?] क्षत्रियों की ए शाखा या जाति जो उत्तरी भारत में

च्यवन-पुं० [सं०] १. चूने, या रसने की क्रिया या भाव। २. भृ एक प्रसिद्ध ऋषि। (कहते हैं कि

राक्षस से बचाने के लिये
या चू पड़े थे; इसी से ये
)
रता (संस्कृति)-स्त्री॰
में किसी रचना का व्या-
के विरुद्ध होना, जो बहुत
गया है।
[सं॰] १. च्युत होने अर्थात्
नीचे गिरने या आने की
पतन। २. अपने उपयुक्त
दि से कुछ निम्न कोटि का
। चूक।
छः + उँगली] वह जिसके
जगह ६ उँगलियाँ हों।
[अनु॰] छन-छन शब्द
का)।
[हिं॰ छाँछ + बरी] छाछ
ई हुई पकौड़ी या बरी।
[हिं॰ छाँटना का प्रे॰]
का काम किसी से कराना।
[हिं॰ छाँटना] १. छाँट
ला हुआ। २. छाँटने से
निकल जाने के बाद बचा हुआ
)।
१. दे॰ 'छँटाई'। २. दे॰

[हिं॰ छाँड़ना = छोड़ना]
आदि से मुक्त किया हुआ।
त्यागा हुआ।
दे॰ 'छाँदना'।
[सं॰] किसी छंद में
वह योजना जिसके द्वारा
एक विशेष प्रकार की गति
भव हो।
य रोग।
[हिं॰ छः] १. छः का
पालकी जो छः कहार
हैं।

छगड़ा†–पुं॰ [सं॰ छागल] बकरा।

छगन-मगन–पुं॰ [हिं॰ छगन + मग्न] छोटे-छोटे हँसते-खेलते हुए प्यारे बच्चे।

छ-गोड़ा–वि॰ [हिं॰ छः + गोड़ = पैर] [स्त्री॰ छगोड़ी] छः पैरोंवाला। षट्-पद। पुं॰ मकड़ा (जन्तु)।

छछोरी–स्त्री॰ दे॰ 'छँछोरी'।

छटंकी–स्त्री॰ [हिं॰ छटाँक] छटाँक भर तौल का बटखरा।
वि॰ आकार में बहुत छोटा और हलका।

छटुआ–†–वि॰ दे॰ 'छँटुआ'।

छट्ठी–स्त्री॰ दे॰ 'छठी'।

छड़ना–स॰ दे॰ 'छँड़ना'।

छड़ा–पुं॰ [हिं॰ छड़] १. पैरों में पहनने का एक गहना। २. मोतियों की लड़ी। ३. हाथ का पंजा (राज॰)।
वि॰ जिसके साथ कोई न हो। अकेला। जैसे—छड़ा सिपाही, छड़ी सवारी।

छड़ी-बरदार–पुं॰ दे॰ 'चोबदार'।

छड़ीला–पुं॰ दे॰ 'छरीला'।

छतराना–अ॰ [सं॰ छत्रक] छत्रक या खुमी के रूप में उत्पन्न होकर फैलना या बढ़ना। (फंगेट) जैसे—सड़न से घाव छतराना, दाद (रोग) छतराना।

छतिया†–स्त्री॰ दे॰ 'छाती'।

छतिवन–पुं॰ [स॰ सप्तपर्णी] एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसके कुछ अंग दवा के काम आते हैं।

छतौना–पुं॰ दे॰ 'छाता'।

छत्त–स्त्री॰ = छत।

छत्ती–स्त्री॰ [सं॰ छत्ति] चमड़े, रबड़ आदि का वह बड़ा थैला जिसके अन्दर हवा भरी रहती है और जिसके सहारे छोटी नदियाँ पार की जाती हैं।

छत्तीसा–वि॰ [स्त्री॰ छत्तीसी] दे॰ 'छतीसा'।

छत्रकायमान–वि॰ [सं॰] छत्रक के रूप में होने या फैलनेवाला। (फंगेटिंग)

छत्र-छाँह–स्त्री॰ दे॰ 'छत्र-छाया'।

छत्र-छाया–स्त्री० [सं०] रक्षा। शरण।

छत्राक–पुं० [सं०] कुकुरमुत्ता, खुमी आदि की तरह की वनस्पतियाँ जिनका ऊपरी भाग छाते की तरह होता है।

छद्मवेष–पुं० [सं०] दूसरों को धोखा देने के लिए धारण किया हुआ नकली वेष।

छपटाना-स० [सं० चिपिट या हिं० चिपटना से स०] १. चिपकाना। चिमटाना। २. छाती या गले से लगाना।

छपरा†–पुं० १. दे०'छप्पर'। २.दे०'टोकरा'।

छपवाई–स्त्री० [हिं० छपवाना] छपवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

छपवैया–वि० [हिं० छपवाना] १. छपवाने या छपाई करानेवाला। २. अंकित या मुद्रित करानेवाला। छाप लगवानेवाला।

छपानाथ*–पुं० = क्षपानाथ (चन्द्रमा)।

छब*–स्त्री० दे० 'छबि'।

छब्बीसी–स्त्री० [हिं० छब्बीस (संख्या)] फलों आदि की गिनती का एक प्रकार जिसमें २६ गाहियों (अर्थात् १३० दानों) का सैकड़ा माना जाता है।

छमक–अ० [अनु०] छमकने की क्रिया या भाव।

छमकना–अ० [हिं० छम अनु०] १. (स्त्रियों का) सुन्दर गहने-कपड़े पहनकर इठलाते हुए इधर उधर फिरना।

छमिच्छा†–स्त्री० दे० 'समस्या'।

छमी*–वि० दे० 'क्षमी'।

छयल*–वि० दे० 'छैला'।

छरना†–स० [सं० क्षरण] सूप में रखकर अनाज आदि फटकना। छाँटना।

अ० १. अनाज आदि छाँटा या फटका जना। २. चूना। टपकना।

छरी*-स्त्री० [सं० अप्सरा] अप्सरा।

छरीला–पुं० [सं० शैलेय] चट्टानों आदि पर जमनेवाली एक प्रकार की बहुत छोटी सुगंधित वनस्पति जिसका व्यवहार मसालों आदि में होता है।

छरोरा–पुं० [सं० क्षर या क्षत] पर लगनेवाली खरोंच।

छलंक*–स्त्री० दे० 'छलाँग'।

छलकन–स्त्री० [हिं० छलकना] १. कने की क्रिया या भाव। छलक। २. अधिक भरे होने के कारण किसी च बाहर उमड़ या फूट पड़ना।

छल-छिद्री–वि० [हिं० छल-छिद्र] व

छलन–पुं० [सं०] छलने या धो का कार्य या भाव।

छलाँगना–अ० [हिं० छलाँग] भरते हुए आगे बढ़ना।

छलाना–स० [हिं० छलना का प्रे०] का काम दूसरे से कराना।

†अ० छला जाना। धोखे में आना।

छलिक–पुं० [सं०] एक प्रकार का

छलित–वि० [सं०] जो छला ग गया हो। प्रतारित।

छल्ली–स्त्री० [सं०] १. छाली। २. वल्लरी। ३. अनाज के बोरों की या क्रम से लगा हुआ ढेर।

छवैया†–वि० [हिं० छाना] छवाने का काम करानेवाला।

छह–वि० = छः (संख्या)।

छाँका–पुं० [?] खंड। टुकड़ा।

छाँगना-स० [सं० छिन्न] कुल्हा से पेड़ की डाल काटना।

छाँट छिड़का†–पुं० [हिं० छींटा कना] बहुत हलकी वर्षा। बूँदाबाँ

छाँद–स्त्री० [हिं० छाँदना] १. क्रिया या भाव। २. छाँदने या छोटी रस्सी।

छांदोग्य–पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध जो सामवेद का अंग है और जि की उत्पत्ति, यज्ञों के विधान तथा प्रकार के उपदेश हैं।

छाँधना†–स० दे० 'छाँदना'।

छाँहगीर–पुं० [हिं० छाँह + फ

१. छत पर लगाई जानेवाली
ओआ। २. सिंहासन के ऊपर
छत्र।
[हिं० क्षार] १. राख। भस्म।
।
दे० 'छाँह'।
१. दे० 'छाज'। २. 'छज्जा'।
[सं०] १. छाने या आच्छा-
। २. कपड़े आदि देनेवाला।
[सं०] छाया या ढका हुआ।
=छादक।
[?] चोरी से। छिपकर।
= छाया।
[सं०] चन्द्रमा।
-पुं० [सं०] गणित का वह
जिसमें किसी शंकु की छाया
की गति-विधि का हिसाब
है।
-वि० [सं० छाया-ग्राहिन्]
-ग्राहिणी] छाया को अथवा
किसी को ग्रहण करने या
।
-पुं० [सं०] एक प्रकार का
किसी पात्र में घी या तेल
उसमें अपने मुख आदि की
जाती है और तब वह पात्र
किसी को दिया जाता है।
पुं० [सं०] षाड़व-संपूर्ण जाति
राग जो रात के पहले पहर
है।
-पुं० [सं० छायापातिन्] सूर्य।
-पुं० [सं०] वह छोटा पात्र
आदि भरकर अपने शरीर की
जाती है। अपने अरिष्ट आदि
लिए ऐसा पात्र दान करने का

-पुं० [सं०] मनुष्य के आकार
जिसका पता बहुत देर तक

आकाश की ओर टक लगाकर देखने पर चलता है। (हठयोग की एक साधना)

छालटी-स्त्री० [हिं० छाल] अलसी आदि की छाल से बना हुआ कपड़ा।

छालना†-स० १. दे० 'छानना'। २. दे० 'छेदना'।

छावँ†-स्त्री० = छाँह (छाया)।

छावना†-स० = छाना।

छाह†-स्त्री० = छाछ (मठा)।

छिंगुली†-स्त्री० दे० 'छिगुनी'।

छिकनी-स्त्री० दे० 'नक-छिकनी'।

छिगुली-स्त्री० = छिगुनी।

छिजना-अ० = छीजना।

छिटकी†-स्त्री० दे० 'छींटा'।

छिटवा†-पुं० [सं० शिक्य ?] टोकरा।

छिड़काई-स्त्री० [हिं० छिड़कना] छिड़कने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

छिण*-पुं० = क्षण।

छितरना-अ०, स० दे० 'छितराना'।

छितर-बितर-वि० = तितर-बितर।

छितराव-पुं० [हिं० छितराना] छितराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

छितिकंत*-पुं० [सं० क्षितिकांत] राजा।

छितिरुह*-पुं० [सं० क्षिति + रुह] वृक्ष।

छिदवाना-स० [हिं० छेदना का प्रे०] छेदने का काम दूसरे से करवाना।

छिद्रदर्शी-वि० दे० 'छिद्रान्वेषी'।

छिद्रात्मा-पुं० [सं०] खल। दुष्ट।

छिनदा*-स्त्री० [सं० क्षणदा] रात।

छिनवाना-स० [हिं० छीनना का प्रे०] छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिन्नमस्ता-स्त्री० [सं०] महाविद्याओं में की एक देवी।

छियाज†-पुं० [हिं० ब्याज का अनु०] कटुआँ ब्याज।

छिल्लड़†-पुं० = छिलका।

छिवना*-स० = छूना।

छिहरना†-अ०, स० = छितराना।

छीर-फेन*–पुं॰ [सं॰ क्षीर = दूध + फेन] दूध के ऊपर की मलाई।

छीव*–पुं॰ = क्षीव।

छुछ-मछली–स्त्री॰ [सं॰ सूक्ष्म + मछली] मेंढ़क का वह आरंभिक रूप जो लंबे कीड़े या मछली के आकार का होता है।

छुछहँड़†–स्त्री॰ [हिं॰ छूछा + हँड़ी] वह हाँड़ी (बरतन) जिसमें कुछ भी न हो। **मुहा॰–छुछहँड़ दिखाना** = माँगने पर तिरस्कारपूर्वक कहना कि नहीं है।

छुटना–अ॰ = छूटना।

छुटभैया–पुं॰ [हिं॰ छोटा + भैया (भाई)] वह जिसकी गिनती छोटे आदमियों में हो, बड़े आदमियों में नहीं हो। जैसे–वहाँ हमारे जैसे छुट-भैयों को कौन पूछता है।

छुड़ाई–स्त्री॰ [हिं॰ छोड़ना] छोड़ने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

छुड़ैया–वि॰ [हिं॰ छुड़ाना] छुड़ानेवाला। स्त्री॰ दे॰ 'छुड़ाई'।

छुरित–पुं॰ [सं॰] 'लास्य' नामक नृत्य का वह प्रकार जिसमें नायक और नायिका परस्पर आलिंगन, चुंबन आदि भी करते चलते हैं।

छुवना†–स॰ = छूना।

छुही–स्त्री॰ [हिं॰ छूना] खड़िया नाम की सफेद मिट्टी।

छूत-छात–स्त्री॰ [हिं॰ छूत + अनु॰ छात] छूआछूत या अस्पृश्य का भाव या विचार।

छेक†–पुं॰ दे॰ 'छेद'।

छेकापह्नुति–स्त्री॰ [सं॰] साहित्य में अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी तीसरे या अनभीष्ट व्यक्ति के सुन लेने पर कोई दूसरी बात बनाकर वह भेद छिपाने का उल्लेख होता है। 'कह-मुकरी' या 'मुकरी' में यही अलंकार होता है।

छेकोक्ति–स्त्री॰ साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई बात सिद्ध करने के लिए उसके साथ किसी लोकोक्ति या कहावत का भी उल्लेख किया जाता है।

छेड़ी†–स्त्री॰ [?] छोटी और तंग गल (बुन्देल॰)

छेदनहार*– [हिं॰ छेदना + हार (वा १. छेदनेवाला। २. काटने, नष्ट कर मिटानेवाला।

छेद्य–वि॰ [सं॰] छेदे जाने के योग्य

छेमकरी*–स्त्री॰ [सं॰ क्षेमकरी] सफेद

छेरी†–स्त्री॰ = छेरी (बकरी)।

छेरना†–अ॰ [सं॰ क्षरण] बार-बार मल त्यागना।

छेरवा†–पुं॰ दे॰ 'छोहरा'।

छेवा–पुं॰ [सं॰ छेदन] १. छीलने, आदि का काम। २. छेदने काटने आ पड़ा हुआ निशान। ३. छिद्र। छेद महाजनी बही-खाते में वह चिह्न जो लौटी हुई चीज या रकम के लेख प सूचित करने के लिए लगाया ज कि अब वह प्राप्य नहीं रह गई। ५. का तेज बहाव (मल्लाह)।

छेहर†–स्त्री॰ = छाया।

छेहरा†–पुं॰ दे॰ 'छेह'।

छैल–स्त्री॰ [हिं॰ छैलाना] छैलाने की क्रिया या भाव। लड़कों हठ। पुं॰ दे॰ 'छैला'।

छैलना*–अ॰ दे॰ 'छैलाना'।

छोटाई–स्त्री॰ [हिं॰ छोटा] छोटे अवस्था या भाव। छोटापन।

छोड़–अव्य॰ [हिं॰ छोड़कर का सं॰ छोड़कर। अतिरिक्त। सिवा।

छोला†–पुं॰ [हिं॰ छोलना] १. या छीलने का काम करनेवाला व्य २. चना।

छोहगर–वि॰ [हिं॰ छोह] छो स्नेह करनेवाला। प्रेमी।

छौर*–पुं॰ = क्षौर।

जंगल-बाड़ी*–स्त्री॰ [हिं॰ जंगल + एक प्रकार की मलमल।

[फा० जंगूलः] घुँघरू का

[फा० जंगार] तूतिये या
का (हरा)।
पुं० [हिं० जंगी + अं० लार्ड]
ति।
= जंजाल।
जिसमें जंजीर या सिकड़ी लगी

] एक प्रकार का जंगली
फलियों का अचार बनता है।
[हिं० जाँता = चक्की]
इस प्रकार दाब में पड़ना,
में पिस रहा हो।
-वि० = जंतुघ्न।
[अं०] कुरते की तरह का
जनाना पहनावा।
दे० 'जँबीरी-नीबू'।
-पुं० [सं० जम्बीर] एक
ड़ा नीबू जिसका रस बहुत खट्टा

दे० 'जबूरा'।
[फा०] एक प्रकार का
पड़ा।
[सं०] १. भोजन करना।
रति। संभोग। ३. जँभाई।
= जंबुक।
[सं० जामातृ] दामाद।
-अ०, स० दे० 'जहँड़ना'।
[देश०] एक प्रकार की

= जगत्।
= यक्ष।
[सं० जरत् + गृध्र] १. बहुत
। धूर्त्त। घाघ। २. दूसरों
पनेवाला। घाऊघप।
= यक्षिणी। (यक्ष का स्त्री०)
'यखनी'।

जगच्चक्षु-पुं० [सं० जगत् + चक्षु] सूर्य।

जगझंप-पुं० [सं०] एक प्रकार का बड़ा ढोल जो युद्ध के समय बजाया जाता है।

जगती-तल-पुं० [सं०] पृथ्वी का ऊपरी भाग जिसपर हम सब लोग रहते हैं।

जगद्धाता-पुं० [सं० जगद्धातृ] [स्त्री० जगद्धात्री] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. महेश। शिव।

जगरनाथ*-पुं० = जगन्नाथ।

जगसूर*-पुं० [सं० जगत् + सूर] राजा। (क्व०)

जगहर†-स्त्री० दे० 'जगार'।

जगाती-पुं० [अ० जकात = कर] कर उगाहनेवाला अधिकारी।

वि० जिसपर जकात या कर लगता या लग सकता हो।

जगार†-स्त्री० [हिं० जागना] जागते रहने की अवस्था या भाव। जागरण।

जगौहाँ-वि० [हिं० जागना] जागने या जगाने की प्रवृत्ति रखनेवाला।

वि० [हिं० जगमगाना] जगमता हुआ।

जघन-चपला-स्त्री० [सं०] १. दुश्चरित्रा स्त्री। कुलटा। पुश्चली। २. आर्या छन्द का एक भेद जिसका पूर्वार्द्ध आर्या का और उत्तरार्द्ध चपला छन्द का होता है।

जचना-अ० दे० 'जँचना'।

जजन*-पुं० = यजन।

जज्ञ-उपवीत-पुं० = यज्ञोपवीत।

जज्ञागिनी*-स्त्री० [सं० यज्ञ + अग्नि] यज्ञ की अग्नि जो परम पवित्र मानी जाती है।

जटाव-पुं० [हिं० जटना = ठगना] ठगे जाने की क्रिया या भाव।

पुं० दे० 'कुम्हौटी'।

जटायु-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध गिद्ध जो उस समय रावण से लड़ा था, जब वह सीता को हरकर ले जा रहा था।

जटिलता-स्त्री० [सं०] १. जटिल का भाव। दुरूहता। २. पेचीलापन।

जट्टा†–पुं० = जाट (जाति)।

जठेरा†–वि० [हिं० जेठ या जठर] [स्त्री० जठेरी] जेठा। बड़ा।

जड़ताई*–स्त्री० = जड़ता।

जड़ भरत–पुं० [सं०] अंगीरस गोत्र के त्यागी तपस्वी जो विषय-भोग से बचने के लिए जड़-वत् होकर रहते थे।

जड़ान–स्त्री० [हिं० जड़ना] जड़ने की क्रिया या भाव।

जड़ीला–वि० [हिं० जड़] जिसके साथ या जिसमें जड़ हो। जड़वाला।

जतनी–वि० [हिं० जतन] १. जतन या प्रयत्न करनेवाला। २. चतुर। चालाक।

जतु–पुं० [सं०] १. गोंद। २. लाख। लाक्षा। ३. शिलाजीत।

जतुका–स्त्री० [सं०] चमगादड़।

जतु-गृह–पुं० [सं०] १. झोंपड़ी। २. लाख का वह घर जो दुर्योधन ने पांडवों को जलाकर मार डालने के लिए बनवाया था। लाक्षा-गृह।

जथारथ*–वि० = यथार्थ।

जदुपाल*–पुं० = यदुपाल (श्रीकृष्ण)।

जदुबीर*–पुं० = यदुवीर (श्रीकृष्ण)।

जद्-बद्†–स्त्री० [सं० यत् + अवद्य] न कहने योग्य या अनुचित बात।

जनकांगजा स्त्री० [सं०] जानकी। सीता।

जननाशौच–पुं० [सं०] घर में किसी बालक के जन्म लेने पर लगनेवाला अशौच।

जनपदी–वि० [सं० जनपद + ई (प्रत्य०)] जनपद-संबंधी। जनपद का। जैसे–जनपदी भाषा।

जन-वास–पुं० [सं०] १. जन-साधारण के ठहरने का स्थान। २. दे० 'जनवासा'।

जन-श्रुत–वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।

जनहरण–पुं० [सं०] एक प्रकार का दंडक (छंद) जिसके प्रत्येक चरण में तीस लघु और एक गुरु होता है।

जनांतिक–पुं [सं०] नाटकों आदि में दो पात्रों की आपस की ऐसी सांकेतिक बात-
जिसके संबंध में यह माना जाता है
दूसरे पात्र उसे नहीं देखते या नहीं समझ

जनाचार–पुं० = लोकाचार।

जनावर†–पुं० = जानवर।

जनिता–स्त्री० [सं०] माता। माँ।

जनिय–पुं० [सं०] जन्म-स्थान।

जनूनी–पुं० [अ०] पागल।

जनेंद्र–पुं० [सं०] राजा।

जनेता*–पुं० [सं० जनयितृ] पिता

जनेवा–पुं० [हिं० जनेऊ] १. किसी
के चारो ओर जनेऊ की तरह पड़ी
धारी या लकीर। २. तलवार का वा
जो कन्धे पर पड़कर तिरछे बल (दूसरी
कमर तक काट करे।

जन्नत–स्त्री० [अ०] मुसलमानों के
सार 'स्वर्ग'। बिहिश्त।

जन्म-ग्रहण–पुं० [सं०] जन्म
पैदा होना। उत्पत्ति।

जन्म-तिथि–स्त्री० = जन्म-दिन।

जन्म-स्थान–पुं० [सं०] वह स्था
जगह जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।
भूमि।

जन्या–स्त्री० [सं०] १. माता की
२. वधू की सखी। ३. वधू। बहू।

जपन–पुं० [सं०] [वि० जपनी
जपने की क्रिया या भाव।

जफीलना†–अ०[हिं०जफील]सीटी ब

जबर जंग–वि० [फा०] १. बहुत
या बलवान। २. उच्च। श्रेष्ठ।

जबरन्–क्रि० वि० [अ०] बलपू
जबरदस्ती।

जबरा–पुं० [अं० जेब्रा] गधे, घोड़े
की तरह का एक प्रकार का जंगली
जिसके शरीर पर सुन्दर लंबी धारियाँ हो
†वि० जबरदस्त। बलवान।

जबाँ–स्त्री० = जबान। (इसके यौ० के
दे० 'जबान' का यौ०)

[अ० जमः] १. जमा। (धन संबंधी। २. (भूमि या खेत) लगान नगद या धन रूप में लिया जाय। ३. (लगान पाकर) जो धन के रूप में लिया या दिया (जिन्सी का विरू०)

पुं० = यमक।

-स० = चमकाना।

-पुं० [सं०] प्राचीन ऋषि जो के पिता थे।

-स्त्री० [हिं० जमा + गथ=(जथ) की सारी संपत्ति और धन।

-वि० [हिं० जमानत] जमानत जमानत का। जैसे-जमानती जमानती वारंट।

'जामनि'

पुं० [अ०] बहुत सुन्दर रूप।

-अ० [?] पास पहुँचना या ना। सटना।

स्त्री० = यमुना।

[सं०] जीते-जाने के योग्य। सकें।

स्त्री० [सं० जीरक] १. ताजे बोये में से निकला हुआ छोटा अंकुर। २. धान या जौ के उक्त प्रकार के अंकुर जो विशिष्ट अवसरों या बड़ों को मंगल कामना प्रकट करने भेंट किये जाते हैं।

*-पुं० [फा० जर + हिं० कंबल] जिसपर जरी का काम किया हो।

-वि० [फा०] धन या मूल्य दिया हुआ। क्रीत।

-वि० [हिं० जलना + क्षार] जलकर राख हो गया हो। २. जलाद।

पुं० [सं०] मगध का राजा पुत्र जो भीम के हाथों मारा गया था।

जरिमा–स्त्री० [सं०] वृद्धावस्था। बुढ़ापा।

जर्रा–पुं० [अ० जर्रः] बहुत ही छोटा टुकड़ा। अण्ड।

जल-चादर–स्त्री० [सं० जल + हिं० चादर] ऊँचे स्थान से, चादर के रूप में गिरनेवाला जल का चौड़ा प्रवाह। प्रपात। (विशेष दे० 'प्रपात' २)

जल-चिकित्सा–स्त्री० [सं०] रोग आदि दूर करने की एक चिकित्सा-प्रणाली जिसमें दवा के रूप में कई तरह की शीशियों में भरकर कुछ नियत समय तक धूप में रखे हुए जल का व्यवहार होता है। (हाइड्रोपैथी)

जल-जंतु–पुं० [सं०] जल में रहनेवाले जानवर। जलचर।

जल-जाल–पुं० [सं०] सागर। समुद्र।

जलधर-माला–स्त्री० [सं०] १. बादलों का समूह। २. एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, सगण और यगण होते हैं।

जलपति–पुं० [सं०] १. वरुण (देवता)। २. समुद्र।

जल-पथ–पुं० [सं०] १. नहर। २. दे० 'जल-मार्ग'।

जलपाना*–स० [हिं० जलपना] किसी को बोलने या जलपने में प्रवृत्त करना।

जल-प्राय–वि० [सं०] (स्थान या प्रदेश) जिसमें जलाशय आदि बहुत हों।

जल-बम–पुं० [हिं० जल + बम] एक प्रकार का गोला जो गोताखोर जहाजों को नष्ट करने के लिए उन पर या उनके आस-पास फेंका जाता है।

जल-यंत्र–पुं० [सं०] १. वह नल या उपकरण जिससे पानी ऊपर उठाया या किसी स्थान पर पहुँचाया जाता हो। (वाटर पम्प) २. फुहारा। ३. जल-घड़ी।

जल-यात्रा–स्त्री० [सं०] १. अभिषेक

आदि शुभ कार्यों के लिए कहीं से जाकर पवित्र जल लाना। २. वह उत्सव जिसमें जलाशयों की पूजा या देवताओं को ठंढे जल से स्नान कराते हैं।

जल-राशि–पुं० [सं०] समुद्र।

जल-व्याघ्र–पुं० [सं०] एक प्रकार का हिंसक जल-जन्तु।

जल-स्तंभन–पुं० [सं०] मंत्रों आदि की सहायता से जल का प्रवाह या गति, वर्षा आदि रोकना।

जलहरण–पुं० [सं०] एक प्रकार का वृत्त या छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ वर्ण होते हैं और १६ पर यति होती है और अंतिम दो वर्ण लघु होते हैं।

जल-हस्ती–पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत बड़ा जल-जन्तु।

जलाऊ–वि० [हिं०जलाना+आऊ (प्रत्य०)] जो जलाया जाय या जा सके। जलाने का। जैसे–जलाऊ लकड़ी = ईंधन।

जलाजल†–वि० दे० 'झलाझल'।

जलाटीन–पुं० दे० 'जलाटिन'।

जला-तन–वि० [हिं० जलना + तन = शरीर] जिसे बहुत कष्ट पहुँचा हो। संतप्त।

जलातन†–स्त्री० [हिं० जलाना + तन (प्रत्य०)] बहुत अधिक कष्ट देने या संतप्त करने की क्रिया या भाव। जैसे–इतनी जलातन करोगे तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा।

जलाधिप–पुं० [सं०] वरुण (देवता)।

जलाल–पुं० [अ०] १. तेज। प्रकाश। २. प्रभुत्व, वैभव आदि का सूचक तत्त्व।

जलूसी–वि० [अ० जुलूस] १. जुलूस-संबंधी। २. (सन् या संवत्) जिसका आरम्भ किसी राजा या बादशाह के सिंहासन पर बैठने के दिन या वर्ष से हुआ हो।

जलेंद्र–पुं० [सं०] १. वरुण नामक देवता। २. महासागर।

जल्दबाजी–स्त्री० [फा०] किसी काम में आवश्यकता से अधिक जल्दी करना।

जल्पित–वि० [सं०] १. कहा हुआ कथित। २. मन-गढ़ंत और मिथ्या (बात)

जल्ला†–पुं० [हिं० जल] १. झील। तालाब। ३. वह स्थान जहाँ जल अधि होता या ठहरता हो।

जव–पुं० [सं०] १. वेग। तेजी। शीघ्रता। जल्दी।

वि० १. वेगवान्। २. तेज।

जवाँ–वि०, पुं० = जवान।

जवाड़ी–स्त्री० [हिं० जौ + आड़ी (प्रत्य० गेहूँ में कहीं-कहीं मिलनेवाले जौके दाने

जवाब-तलब–वि०[फा०जवाब + अ०तल (बात) जिसके विषय में आधिकारिक रूप किसी दोष या मूल के संबंध में पूछा हो कि ऐसा क्यों हुआ।

जवार–पुं० [अ०] १. आस-पास के स्था २. मार्ग। रास्ता।

*पुं० दे० 'जवाल'।

†स्त्री० दे० 'ज्वार' (अन्न)।

जस्ता–पुं० कपड़ों में बुनावट के के इधर-उधर हट जाने के कारण दिख देनेवाला झीनापन, जो दोष माना जाता

जहकना†–अ० [हिं० झकना] १. में कुढ़ना या चिढ़ना। २. व्यर्थ बढ़-चढ़ बातें करना।

जहत्–पुं० [सं०] परित्याग। छोड़न

जहत्-लक्षणा–स्त्री० [सं०] साहित्य लक्षणा का एक भेद जिसमें पद या वा अपना वाच्यार्थ छोड़कर सामीप्य संबंध किसी और अर्थ का बोध कराता है। जै 'हमारा घर गंगा में है' का अर्थ हो हमारा घर गंगा के किनारे है।

जहत् स्वार्थ–स्त्री० दे० 'जहत् लक्षणा'

जहदना†–अ० [?] १. शिथिल होन ढीला पड़ना। २. कीचड़ होना।

जहदा†–पुं० [?] १. कीचड़। २. दलदल

जहरी–वि० [हिं० जहर] १. (व्यक्ति जिसका हृदय बहुत ही कलुषित और द्वे

२. दे० 'जहरीला'।
तों पर लगाया जानेवाला एक
हरा रंग।
स्त्री० [अ०] जाहिल होने की
का भाव। परम मूर्खता।
[अ०] जाहिर या प्रकट होने
या, क्रिया या भाव।
पुं० [अ० जहूर] १. प्रताप।
शक्ति। ३. दृश्य। ४. ठाट-बाट।
[फा० जा] उचित। मुनासिब।
न। जीवन। प्राण।
पुं० [?] चारण, भाट या बन्दी।
-पुं० [सं०] साँप पकड़ने
का विष दूर करनेवाला।
ग*-स्त्री० [हिं० जाँचक] जाँचक
अवस्था या भाव।
-स० [सं० यातना] १. यातना
देना। २. नष्ट करना।
-वि० दे० 'जांतव'।
-पुं० दे० 'जहाँपनाह'।
[सं०] १. जामुन (वृक्ष और
२. जामुन से बनी हुई (क) शराब
सिरका।
स्त्री० [सं०] जांबवान की कन्या
से ब्याही थी।
वि० [फा०] [भाव० जाँ-बाजी]
बाजी लगाने या प्राण तक देने
तैयार रहनेवाला।
(वान्)-पुं० दे० 'जांबवान'।
कला (ज्योति)-स्त्री० [हिं०
+सं० कला (ज्योति)] देवी-देवता
प्रत्यक्ष दिखाई देनेवाला चमत्कार।
पुं० [सं०] १. जागरण। २. कवच।
-पुं० [देश०] ब्रहेलिया।
[हिं० जाट] करनाल, रोहतक
जाटों की बोली। बाँगड़ू। हरियानी।
[सं०] पुत्री। बेटी।
] जा (उत्पन्न) का स्त्री०।

जातित्व-पुं० [सं०] जाति का भाव।

जाति-धर्म-पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि अथवा पशु-पक्षियों आदि की वे सब बातें या कार्य जो उनकी समस्त जाति में प्रायः समान रूप से होते हों।

जाति-वैर-पुं० [सं०] वह वैर जो एक जाति के लोगों या जीव-जन्तुओं का दूसरी जाति के लोगों या जीव-जन्तुओं से समान रूप से और प्रायः स्वाभाविक हो।

जाति-संघ-पुं० [सं०] राजनीति में वह राष्ट्र-विधान जिसमें किसी जाति के मुख्य-मुख्य लोगों के द्वारा शासन होता हो।

जात्य-वि० [सं०] १. उत्तम कुल या जाति में उत्पन्न। कुलीन। २. श्रेष्ठ।

जात्य-त्रिभुज-पुं० [सं०] ज्यामिति में वह त्रिभुज जिसमें एक सम-कोण हो।

जात्रा†-स्त्री० = यात्रा।

जाथका*-स्त्री० [सं० यूथ] ढेर। राशि।

जानकारी-स्त्री० [हिं० जानकार] जानकार होने की अवस्था या भाव। अभिज्ञता।

जान-बख्शी-स्त्री० [फा०] किसी को दिया जानेवाला ऐसा आश्वासन या वचन कि तुम्हें प्राण-दंड नहीं दिया जायगा।

जा-नमाज-स्त्री० [फा० जा + अ० नमाज] दरी की तरह का वह कपड़ा जिसपर बैठकर नमाज पढ़ते हैं।

जान-राज्य-पुं० [सं०] वह राज्य जिसमें एक ही जाति के मनुष्य रहते हों।

जा-नशीन-पुं० [फा०] [भाव० जा-नशीनी] जो किसी के स्थान पर उसके उत्तराधिकारी के रूप में बैठा हो।

जानि-स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या।

जानु-पाणि-क्रि० वि० [सं०] १. (छोटे बच्चों का) घुटनों या हाथ-पैरों के बल (चलना)। २. घुटने टेककर।

जाफत-स्त्री० [अ० जियाफत] खाने-पीने का समारोह। दावत। भोज।

जाफरी-स्त्री० [अ० जअफर] १. चौरे

हुए बाँसों की पट्टियों की टट्टी या परदा। २. एक प्रकार का गेंदा (फूल)।

जाबड़ा†-पुं० दे० 'जबड़ा'।

जाबर*-वि० [सं० जर्जर ?] बुड्ढा। वृद्ध।

जाबाल-पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि जो सत्यकाम भी कहलाते हैं।

जामातु*-पुं० = जामाता (दामाद)।

जामा मसजिद-स्त्री० [अ०] नगर की वह सबसे बड़ी और मुख्य मसजिद जिसमें वहाँ के सब मुसलमान मिलकर नमाज पढ़ते हों।

जायस-पुं० रायबरेली जिले का एक प्रसिद्ध प्राचीन स्थान जहाँ कई बड़े-बड़े सूफी फकीर हो गये हैं। (पद्मावत के रचयिता मलिक मुहम्मद भी यहीं के थे।)

जायसवाल-पुं० [जायस (स्थान) + वाल (ा)] १. जायस नामक स्थान या उसके आस-पास का रहनेवाला। २. कुरमियों, कलवारों आदि का एक भेद या वर्ग।

जायसी-वि० [हिं० जायस] जायस का रहनेवाला।

जालंधर-पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि। २. जालंधर नामक राक्षस।

जालक-पुं० [सं०] १. जाल, विशेषतः कोई चीज बाँधने का। २. फूल की कली। ३. झरोखा। ४. चिड़ियों का घोंसला।

जालिका-स्त्री० [सं०] १. पाश। फंदा। २. जाली। ३. मकड़ी। ४ समूह।

जालिमा*-वि० = जालिम (अत्याचारी)।

जिजिया†-स्त्री० = जीजी (बड़ी बहन)। पुं० दे० 'जजिया'।

जितवना*-स० [हिं० जताना का पुराना रूप] जतलाना। परिचित कराना। स० = जिताना (जीत कराना)।

जिति-स्त्री० [सं०] जीत। विजय।

जित्तना*-स० = जीतना।

जित्वरी-स्त्री० [सं०] काशी पुरी।

जिन्नात-पुं० अ० 'जिन' (भूत-प्रेत)।

जिन्नी-वि० [अ० जिन] जिन या भूत-प्रेत से संबंध रखनेवाला। पुं० वह जिसने जिन को वश में किया हो।

जिभ्या†-स्त्री० = जिह्वा। (जीभ या जबान)

जियाफत-स्त्री० [अ०] १. अतिथियं आदि का स्वागत और सत्कार। आतिथ्य २. बहुत से लोगों के खाने-पीने का आयोज और समारोह। दावत। भोज।

जियारत-स्त्री० [अ०] पूज्य व्यक्ति पवित्र स्थान के दर्शन।

जिवाना-स० [सं० जीवन] १. जीवि करना। जिलाना। २. (आग) जलाना स० = जिमाना (भोजन कराना)।

जिह्म-पुं० [सं०] [वि० जिह्मित [भाव जिह्मता] १. टेढ़ा। वक्र। २. अप्रसन्न रुष्ट। ३. कपटी। चालबाज। धूर्त्त।

जिह्वा-मूलीय-वि० [सं०] १. जिह्वा मूल भाग या जड़ से संबध रखनेवाला २. (व्याकरण में वर्ण) जिसका उच्चा जिह्वा के मूल भाग से हो। (यदि 'क' 'ख' के पहले विसर्ग हो तो वे जिह्वा-मूली हो जाते हैं। जैसे-'दुख' में का 'ख'।

जीजना*-अ० = जीना (जीवित रहना)

जीमूत-मुक्ता-स्त्री० [सं०] एक प्र का कल्पित मोती जिसकी उत्पत्ति बादलों (ओले आदि की तरह) मानी गई है।

जीमूत-वाहन-पुं० [सं०] इन्द्र।

जीय-दान*-पुं० दे० 'जीव-दान'।

जीर-पुं० [सं०] १. जीरा। २. फूलों केसर। ३. तलवार। वि० जल्दी या तेज चलनेवाला।

जीरी-स्त्री० [हिं० जीरा] १. फूलों आ का छोटा केसर। २. एक प्रकार का घ जिसका चावल बहुत दिनों तक रहता है ३. दे० 'काली जीरी'।

जीर्ण ज्वर-पुं० [सं०] वैद्यक में दिनों से अधिक का ज्वर। पुराना बुखार

जील†-स्त्री० [फा० जीर] १. धीमा हल्का शब्द। २. संगीत में नीचा या मद्धि

तबले के साथ का बायाँ ।
स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की
सकी पत्तियाँ दवा के काम में आती
एक प्रकार की हड़ । ३. गुड़ुच ।
पुं० [सं०] १. जीवधारी । जीव ।
२. सँपेरा । ३. एक प्रकार का
सकी जड़ कन्द के रूप में होती
के काम में आती है ।
तु-पुं० [सं०] जीविका । रोजी ।
क्ति-स्त्री० [सं०] जीवन्मुक्त होने
था या भाव ।
-पुं० दे० 'जीव-बंधु' ।
धु-पुं० [सं०] गुल-दुपहरीया या
नाम का पौधा और उसका फूल ।
स्त्री० [सं०] १. जीवन । प्राण ।
का । रोजी । ३. धनुष की डोरी ।
त*-पुं० = जीव-जंतु ।
ार-पुं० [सं०] हृदय ।
स्त्री० [?] यज्ञ या हवन करने का
सुवा ।
-स्त्री० [अनु०] १. गले में
का जुगनूँ नाम का गहना । २. एक
की चिड़िया । शकरखोरी ।
-स्त्री० = युक्ति (तरकीब) ।
फ़िया-पुं० [अ०] भूगोल (विद्या) ।
री*-वि० [सं० युगांतरीय] प्राचीन।
-स्त्री० दे० 'जुगाली' ।
क-पुं० [सं०] दूसरों की निन्दा
ना ।
दी-स्त्री० [फ़ा०] जिल्दबंदी में पुस्तकों
ाई का वह प्रकार जिसमें पहले एक-
जुज़ या फरमा अलग-अलग सीकर
नकी एक में सिलाई होती है ।
ल*-पुं० = युधिष्ठिर ।
० [सं० युक्त] १. एक में मिली
साथ रहनेवाली दो चीजें । युग्म ।
। जत्था । दल । ३. किसी के जोड़
बले की (चीज या आदमी) । ४. एक
साथ रहने या काम में आनेवाली कई चीजों का समूह । जोड़ । कुलक । (सेट) जैसे–कपड़ों या गहनों का जुट ।

जुटला†–वि० [सं० जूट] [स्त्री० जुटली] लम्बे-लम्बे बालों या जटा-जूटवाला ।

जुदायगी–स्त्री० दे० 'जुदाई' ।

जुनून–पुं० दे० 'जनून' ।

जुन्हारी†–स्त्री० दे० 'जोंधरी' ।

जुबराज*–पुं० = 'युवराज' ।

जुबाद–पुं० [अ०] एक प्रकार का तरल गंध द्रव्य जो गन्ध-मार्जार या मुश्क-बिलाव के अंडकोश से निकलता है ।

जुबान–स्त्री० = जबान ।

जुमुकना†–अ० दे० 'जुमकना' ।

जुमेरात–स्त्री० [अ०] वृहस्पतिवार ।

जुम्मा–पुं० दे० 'जुमा' ।

जुरअत–स्त्री० [सं०] साहस । हिम्मत ।

जुरना*–अ० [हिं० जुड़ना का पुराना रूप] १. एक में मिलना । २. अँगड़ाई लेना । अ० = जुड़ाना = ठंढा होना ।

जुरबाना–पुं० दे० 'जुरमाना' ।

जुरूर–वि०, क्रि० वि० दे० 'जरूर' ।

जुर्माना–पुं० दे० 'जुरमाना' ।

जुर्राफा–पुं० दे० 'जुराफ़ा' ।

जुलना–अ० [हिं० मिलना का अनु०] मिश्रित, सम्मिलित या साथ होना । (मिलना के साथ) जैसे-मिलना-जुलना ।

जुलम†–पुं० दे० 'जुल्म' ।

जुलाई*–वि० [हिं० जुल + आई (प्रत्य०)] १. धोखा देनेवाला । २. धूर्त्त । स्त्री० दे० 'जूलाई'।

जुलुफ†–स्त्री० दे० 'जुल्फ' ।

जुहावना†–स० दे० 'जुहाना' ।

जूठा†–वि० दे० 'जूठा' । स्त्री० दे० 'जूठन' ।

जूड़†–वि० [सं० जड़] ठंढा । शीतल । पुं० दे० 'जूड़ा' ।

जूथका(थिका)*–स्त्री० [सं० यूथिका]

जूही का पौधा या फूल।

जूलाई–स्त्री० [अं०] अंगरेजी वर्ष का सातवाँ महीना।

जूष–पुं० [सं०] उबाली हुई चीज का रसा। जूस। शोरबा।

जृंभा–स्त्री० [सं०] १. जंभाई। २. आलस्य। ३. साहित्य में वियोग के समय अथवा मोह, आलस्य आदि के कारण रह-रहकर अंगड़ाइयाँ लेना, जो सात्विक अनुभावों के अन्तर्गत माना गया है।

जेठवा†–वि० [हिं० जेठ (महीना)] जेठ या ज्येष्ठ में होनेवाला। जैसे–जेठवा कपास।

†वि० दे० 'जेठा'।

पुं० जेठ में तैयार होनेवाली एक प्रकार की बढ़िया कपास। झुलवा।

जेतव्य–वि० [सं०] जो जीता जाने को हो।

जेतार†–पुं० [सं० जेता] जीतनेवाला।

जेना†–स० दे० 'जेवना'।

जेमन–पुं० [सं०] भोजन करना। खाना।

जेर-बार–वि० [फा०] [भाव० जेर-बारी] व्यय के भार या संकट से दबा हुआ।

जेलर–पुं० [अं०] जेल का प्रधान अधिकारी और प्रबन्धक।

जेहरि†–स्त्री० = आँवल (खेड़ी)।

जेहल†–पुं० = जेल (कारागार)।

स्त्री० [फा० जहल] हठ। जिद।

जेहली†–वि०[हिं० जेहल] १. हठी। जिद्दी। २. मूर्ख। ना-समझ।

जोई†–स्त्री० [सं० जाया] जोरू। पत्नी।

जोख–स्त्री० [हिं० जोखना] १. जोखने या तौलने की क्रिया या भाव; जैसे–नाप-जोख। २. परिमाण। मान।

जोगता*–स्त्री० = योग्यता।

जोगन†–स्त्री० = जोगिन।

जोगमाया*–स्त्री० = योगमाया।

जोड़ती†–स्त्री० = जोड़। (गणित का)

जोड़ला†–वि० = जुड़वाँ।

जोड़वाँ†–वि० = जुड़वाँ।

जोड़वाई–स्त्री० [हिं० जोड़वाना] जोड़वाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़ीदार–पुं० [हिं० + फा०] जो किसी के साथ या बराबर होकर रहता हो।

वि० मुकाबले का।

जोतदार–पुं० [हिं० + फा०] वह असा जो दूसरों की जमीन लेकर जोतता-बोता हो।

जोतिखी*–पुं० = ज्योतिषी।

जोतिर्लिंग*–पुं० = ज्योतिर्लिंग।

जोतिष*–पुं० = ज्योतिष।

जोतिषी*–पुं० = ज्योतिषी।

जोतिस*–पुं० = ज्योतिष।

जोतिसी*–पुं० = ज्योतिषी।

जोत्सना*–स्त्री० = ज्योत्सना।

जोन*–स्त्री० = योनि।

जोना†–स० [सं० जुषण] १. ताकना। देखना। २. प्रतीक्षा करना। आस देखना। ३. ढूँढ़ना। तलाश करना।

जोप*–पुं० = यूप।

जोबना*–स० दे० 'जोवना'। (देखना

जोरन†–पुं० = जोड़न (जामन)।

जोष*–स्त्री० = जोख।

जोषा–स्त्री० = जोषिता।

जोस*–पुं० = जोष।

जौकना†–अ० [अनु०] १. क्रोध जोर से कुछ कहना। २. डाँटना-डपटना।

जौखा†–पुं० [तु० जूक = सेना] १. फौज सेना। २. जत्था। झुंड। ३. पंक्ति।

जौतुक*–पुं० = यौतुक।

जौधिक–पुं० [सं०] तलवार चला का एक ढंग या प्रकार।

जौन्ह*–स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।

जौबन*–पुं० = यौवन।

जौम*–पुं० = जोम।

जौर–पुं० [फा०] अत्याचार। जुल्म।

जौशन–पुं०=जोशन (गहना)।

ज्ञा–स्त्री० [सं०] ज्ञान। जानकारी।

ज्ञानता स्त्री० [सं०] 'ज्ञान' होने की

भाव ।
० वि० [सं०] जान-बूझकर ।
-पुं० [सं०] अपनी आत्मा को
रूप में अर्पित करके ईश्वर या
लना ।
-पुं० [सं०] तांत्रिकों के अनु-
साधन का एक आसन या मुद्रा ।
स्त्री० [हिं० ग्यारस का स्था० रूप]
तिथि । (बुन्देल०)
क-वि० [सं०] ज्यामिति संबंधी ।
का । (ज्यामेट्रिकल) जैसे-
आकृति ।
ं० [सं०] किसी नगर या राज्य
अधिकारी ।
क-पुं० [सं०] पुराणों के अनु-
लोक जिसमें उत्तानपाद के पुत्र
निवास माना गया है । ध्रुव-लोक ।
द्या-स्त्री० = ज्योतिष ।
क-वि० [सं०] ज्योतिष-संबंधी ।
-पुं० [सं०] ग्रह, नक्षत्र, तारे
काश में रहनेवाले पिंड ।
-स्त्री० = ज्योत्स्ना ।
-पुं० = जौहर (जीव-हर से व्यु०) ।
क-पुं० [सं०] दे० 'ज्योतिषी' ।
-स्त्री० दे० 'ज्योनार' ।
ुं०=जवान ।
स्त्री० = जवानी ।
पुं० = जवार ।
-पुं० = जुआरी ।
ं० [सं०] १. आग की लपट ।
. दे० 'ज्वाला' ।
पुं० दे० 'झंखाड़' ।
-स्त्री० [हिं० झाँकना] १.
। २. जाली ।
-स० = झकोरना ।
-पुं० = झकोरा ।
ं० दे० 'झगा' ।

झँगूला†-पु० [हिं० झगा] [स्त्री० अल्पा० झँगूली] बच्चों के पहनने का छोटा कुरता । झगा ।

झंझा-स्त्री० १. दे० 'झाँझ' । २. दे० 'झंझा' ।

झंझी-स्त्री० [अनु०] १. कौड़ी । २. दलाली में मिलनेवाला धन ।

झँडूलना†-वि०, पुं० दे० 'झँडूला' ।

झँपरी†-स्त्री० [हिं० झाँप] डोली, पालकी आदि ढकनेवाला कपड़ा । ओहार ।

झँपिया-स्त्री० हिं० 'झाँपा' का स्त्री० अल्पा० ।

झँवन-स्त्री० [हिं० झँवाना] १. झँवाने की क्रिया । २. वह अंश जो किसी चीज के झँवाने या किंचित जल जाने के कारण कम हो जाय । जैसे-मशीन में आटा पिसाने से कुछ झँवन भी निकल जाती है ।

झककेतु*-पुं० = झषकेतु ।

झकझेलना-स० = झँझोड़ना ।

झकर†-पुं० दे० 'झक्कड़' ।

झक्का-पुं० [अनु०] १. तेज हवा का झोंका । २. आँधी । अंधड़ ।

झखिया-स्त्री० [सं० झष] मछली ।

झगड़ी†-वि० [हिं० झगड़ा] अपने अधिकार या प्राप्य के लिए झगड़नेवाला ।

झगला*-पुं० दे० 'झगा' ।

झज्झी-स्त्री० दे० 'झंझी' ।

झझकाना-स० [हिं० झझकना] किसी को झझकने में प्रवृत्त करना ।
†अ० = झझकना ।

झटाका†-पुं०, क्रि० वि० दे० 'झड़ाका' ।

झटास†-स्त्री० [अ०] वर्षा की बौछार ।

झट्ट-क्रि० वि० दे० 'झट' ।

झड़क्का*-पुं० दे० 'झड़ाका' ।

झनक-मनक-स्त्री० [अनु०] गहनों या उनके घुँघरुओं के टकराने से उत्पन्न शब्द ।

झन्नाटा-पुं० [अनु०] १. झन-झन होने का शब्द । २. किसी चीज के बहुत तेजी से चलने के कारण होनेवाला शब्द ।
यौ०-**झन्नाटेदार** = खूब तेजी से चलनेवाला । जैसे-झन्नाटेदार एक्का ।

क्रि॰ वि॰ १. झन-झन शब्द के साथ। २. बहुत तेजी से।

झपड़ियाना–अ॰ [हिं॰ झापड़ + इयान (प्रत्य॰)] झापड़ों की मार मारना।

झपस–स्त्री॰ [हिं॰ झपसना] पेड़-पौधों के घने होने की अवस्था या भाव।

झपसट–पुं॰ [अनु॰] धोखेबाजी। छल। जैसे–तुम तो अपना सब काम झपसट में ही निकाल लेते हो।

झपसना–अ॰ [हिं॰ झँपना] बहुत-से पेड़-पौधों का एक जगह उगना और फैलना।

झपाट†–क्रि॰ वि॰ = झट-पट।

झपासिया–वि॰ [अनु॰] कोरी और व्यर्थ की ब.तें बनाकर अपना काम निकालनेवाला। धोखेबाज।

झबझबी–स्त्री॰ [अनु॰] कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

झबरैदा†–वि॰ = झबदा।

झमकड़ा–पुं॰ = झमक।

झमझमाना–अ॰ [अनु॰] झमझम शब्द होना।

स॰ झमझम शब्द उत्पन्न करना।

झमाट†–पुं॰ = झुरमुट (वृक्षों का)।

झमूरा–पुं॰ [अनु॰ झम से] कोई सुन्दर और प्यारी छोटी वस्तु या जीव।

वि॰ दे॰ 'झबरा'।

झरनी–स्त्री॰ हिं॰ 'झरना' का अल्पा॰।

झरपेटा†–पु॰ दे॰ 'झपेटा'।

झरबैरी†–स्त्री॰ दे॰ 'झड़-बेरी'।

झरवाना–स॰ हिं॰ 'झारना' का प्रे॰।

झरहरा†–वि॰ दे॰ 'झँझरा'।

झरा–पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का धान।

झलमला–वि॰ दे॰ 'झिलमिला'।

झलवाना–स॰ हिं॰ 'झलना' का प्रे॰।

स॰ हिं॰ झालना का प्रे॰।

झलहाया†–वि॰ [हिं॰ झाल = डाह] [स्त्री॰ झलहाई] ईर्ष्या या डाह करनेवाला।

झल्लरी–स्त्री॰ [सं॰] हुडुक नामक बाजा। स्त्री॰ [सं॰ झल्लक] झाँझ नामक बाजा।

झल्लिका–स्त्री॰ [सं॰] १. ज्योति प्रकाश। २. चमक। दीप्ति। ३. सूर्य किरणों का तेज या प्रकाश।

झल्लो†–स्त्री॰ [देश॰] टोकरा। दौरा

वि॰ दे॰ 'झल्ला'।

झवर†–वि॰ दे॰ 'झगड़ा'।

झषांक–पुं॰ [सं॰] कामदेव।

झहनाना†–स॰ [अनु॰] झनझन श उत्पन्न करना।

झाँकर†–पुं॰ दे॰ 'झंखाड़'।

झाँख–पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का हिर

झाँखना†–अ॰ दे॰ 'झींखना'।

झाँगला†–पुं॰ [हिं॰ झगा] ढीला कुर

झाँगा†–पुं॰ दे॰ 'झगा'।

झाँझी–स्त्री॰ [हिं॰ झँझरी] १. दश के लगभग होनेवाला लड़कियों का उत्सव जिसमें वे झँझरीदार हाँड़ी में रखकर गाती हुई घर-घर जाती और से पैसे, अनाज आदि पाती हैं। (इन्हीं दि इस प्रकार का लड़कों का जो उत्सव होत वह 'टेसू' कहलाता है।) २. उक्त अव पर गाये जानेवाले गीत।

झाँवर†–वि॰ [सं॰ श्यामल] १. 'झाँवला'। २. शिथिल। ढीला। मंद। सुस्त।

†स्त्री॰ दे॰ 'डाबर'।

झाऊ–पुं॰ [सं॰ झावुक] एक प्रकार छोटा पौधा जिसकी पत्तियों का उप औषधों में होता है।

झागना†–अ॰ = झाग उत्पन्न होना।

स॰ = झाग उत्पन्न करना।

झाड़ीदार–वि॰ [हिं॰ + फा॰] १. झ की तरह घना और छितराया हुआ (या पौधा)। २. काँटेदार। कँटीला।

झाबदार†–वि॰ [?] परिपूर्ण। भरा-पू

झाबर–पुं॰ [हिं॰ डाबर ?] दलदलवा जमीन।

॰ [हिं॰ झालर] १. झालर
ना या हिलना। २. (वृत्त का)
ियों आदि से युक्त या संपन्न

[सं॰ झल्ल] १. कान में
क प्रकार का गहना। पीपल-
सितार बजाने में एक विशेष
ात्मक झंकार।

ं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ झिंगुली]
।

-स्त्री॰ [हिं॰ झँझरा] वह
ाँड़ी जिसमें दीया रखकर लड़-
ी गाने निकलती हैं।

-अ॰ [अनु॰] १. एकत्र
ठा होना। २. लोगों का जमा
होना।

वि॰ १. दे॰ 'झिल्लड़'। २.
।

-स्त्री॰ = झिल्ली (झींगुर)।

[हिं॰ झीखना] झीखने की
व। कुढ़न।

॰ दे॰ 'झीखना'।

॰[सं॰ चिंगट] १. एक प्रकार की
ींगवा। २. एक प्रकार का धान।

अ॰=झेंपना।

॰[अनु॰]१. ऊँघना। २.झूमना।

ं॰ दे॰ 'झीवर'।

ं॰ दे॰ 'झिलम'।

ी॰ दे॰'झिल्ली'।

-स्त्री॰ [हिं॰ झुँझलाना]
ी क्रिया या भाव।

ं॰ दे॰ 'झुटपुटा'।

-अ॰ [अनु॰] १. झोंका जाना।
ना।

ं॰ = (हवा का) झोंका।

ी॰ = झुकाव।

ी-स्त्री॰ [अनु॰] १. झुन-
रनेवाली चीज। २. झाँझन या पायल नाम का गहना। २. बेड़ी, हथकड़ी आदि।

झुपरी†-स्त्री॰ = झोंपड़ी (कुटी)।

झुप्पा†-पुं॰ दे॰ 'झब्बा'।

झुलका†-पुं॰ दे॰ 'झुनझुना'।

झुलना†-पुं॰ दे॰ 'झुल्ला'।

झुलमुला-वि॰ [स्त्री॰ झुलमुली] दे॰ 'झिलमिला'।

झुलमुलाना-अ॰ [अनु॰] १. सिर में चक्कर आ जाने की अवस्था होना। २. झिलमिलाना।

झुलमुली-स्त्री॰ [अनु॰] १. झालर। २. झुमका। ३. झिलमिली।

झुलसाना-स॰ हिं॰ 'झुलसना' का प्रे॰।

झुहिरना-अ॰ [देश॰] लादा जाना। लदना।

झूँका†-पुं॰ = (हवा का) झोंका।

झूँसना†-स॰ [हिं॰ झाँसा] झाँसा या धोखा देकर लेना। ठगना।

अ॰, स॰ = झुलसना।

झूकटी†-स्त्री॰ [देश॰] १. छोटा पेड़। २. झाड़ी।

झूझना†-अ॰ दे॰ 'जूझना'।

झूना†-वि॰ दे॰ 'झीना'।

झूर†-स्त्री॰ [हिं॰ झुरना = मन में दुखी होना] १. मन ही मन दुःख या पश्चात्ताप करने की क्रिया या भाव। संताप। २. जलन। दाह।

वि॰ [हिं॰ झूरा] १. सूखा। खुश्क। २. खाली। रिक्त।

†वि॰ दे॰ 'जूठा'।

झूरना†-अ॰ [हिं॰ झूरा] १. मन में दुःख या पश्चात्ताप करना। झुरना। २. दे॰ 'झुराना'।

झूलरी-स्त्री॰ [हिं॰ झूलना] झूलनेवाली कोई छोटी चीज। जैसे-गुच्छा, झुमका आदि।

झेरा†-पुं॰ दे॰ 'झेर'।

झोंकदार–वि० [हिं० झोंक + दार (प्रत्य०)] जो सम रेखा से नीचे की ओर झुका हो और उस रेखा से १८०° से ३६०° तक के अंतर का कोण बनाता हो। जैसे–झोंकदार छज्जा। (वास्तु०)

झोंटा†–स्त्री० [सं० झुंट] १. झाड़ी। २. छोटे पेड़ों का झुरमुट। ३. गट्ठा। पूला ४. दे० 'झोंटा'।

झोंपड़ी–स्त्री० = छोटा झोपड़ा।

झोलना†–स० [हिं० झोल] १. तपाना या जलाना। २. संतप्त या दुःखी करना।

टंक-मार–स्त्री० [अं० टैंक + हिं० मारना] एक प्रकार की भारी तोप जिसका उपयोग टंकों पर मढ़ी हुई इस्पात की मोटी चादरें तोड़ने में होता है।

टँकवाना–स० हिं० 'टाँकना' का प्रे०।

टँकुआ†–वि० [हिं० टाँकना] [स्त्री० टकुँई] (कपड़ा या और कोई चीज) जिस पर कोई दूसरी चीज टाँक या सी कर लगाई गई हो। जैसे–टँकुआ दुपट्टा, टँकुई साड़ी।

टँगड़ी†–स्त्री० = टाँग (पैर)।

टकटोना†–स० दे० 'टटोलना'।

टकटोहना†–स० = टटोलना।

टकहाया†–वि० [स्त्री० टकहाई] दे० 'टकाहा'।

टकोरना–स० [हिं० टकोर] १. टकोर या सेंक करना। २. ऐसा आघात करना जिससे टँकार का शब्द हो। जैसे–डंका या धनुष टकोरना।

टकोरी†–स्त्री [सं० टंक] हलकी चोट या आघात। ठेस।

टटल-बटल†–वि० [अनु०] अंड-बंड। ऊट-पटांग।

टटावली–स्त्री० [सं० टिट्टिभ] टिटिहरी या कुररी नाम की चिड़िया।

टटिया†–स्त्री० दे० 'टाटी'।

टटीबा†–पुं० [हिं० टिटिंबा] १. दे० 'टिटिंबा'। २. चक्कर।

टड़िया†–स्त्री० = टाँड़ (गहना)।

टन–पुं० [अनु०] धातु आदि पर आ से होनेवाला शब्द।
वि० दे० 'टन्न'।

टन्न†–वि० [अनु०] नशे आदि में या बेहोश।

टपकाव†–पुं० [हिं० टपकाना] की क्रिया, अवस्था या भाव।

टप्पर†–पुं० दे० 'छप्पर'।

टब्बर–पुं० दे० 'टाबर'।

टमकी†–स्त्री० दे० 'डुग्गी'।

टमटी†–स्त्री० [देश०] पुरानी चा एक प्रकार का बरतन।

टरकी–पुं० [तुर्क देश] एक प्रक मुरगा जिसका माँस स्वादिष्ट माना जा

टरकुल†–वि० [हिं० टरकाना] घ रद्दी।

टरनि*–स्त्री० [हिं० टरना] ट टाले जाने की अवस्था, क्रिया या भा

टवर्ग–पुं० [सं०] वर्ण-माला में तक के वर्णों का वर्ग या समूह।

टवाई†–स्त्री० [सं० अटन] १. फिरना। टहलना। २. व्यर्थ इध घूमना।

टाँड़ी†–स्त्री० दे० 'टिड्डी'।

टाँसना†–स० १. दे० 'टाँकना'। 'टाँचना'।

टाइटिल–पुं० १. दे० 'आगम'। 'उपाधि'। ३. दे० 'शीर्षनाम'। ४ 'आवरण-पत्र'।

टाइम–पुं० [अं०] समय। वक्त।

टाइम टेबुल–पुं० दे० 'समय-सारिणी

टाई–स्त्री० [अं०] १. कपड़े की पट्टी जो अँग्रेजी पहनावे में गले में जाती है। २. प्रतियोगिता आदि में वाली जिच।

टाउन–पुं० [अं०] कसबा।

पुं० [अं०] बड़े-बड़े नगरों
सभाओं आदि के लिए
वाला विशिष्ट भवन ।

दे० 'टटका' ।

१. दे० 'टट्टर' । २. दे०

सं० स्थाली] [स्त्री० अल्पा०
ड़ी थाली । थाल । २. बटुआ
ाम का बरतन ।

[सं० दृढ़ांग] [स्त्री० अल्पा०
दृढ़ अंगोंवाला । बलवान् और
जो सूखकर कड़ा हो गया

१. दे० 'टापा' । २. दे०

[अनु०] डिमडिमि । डुग्गी ।
दे० 'टोटका' ।

पेडो)–पुं० [अं०] एक
ोतरा गोला जो समुद्र के अन्दर
ाता है और शत्रुओं के जहाज
ेद करके उन्हें डुबाने के काम

[अं० टैली] एक विशेष
मकीली ईंट या उसके आकार-
ड़ा जिसपर बेल-बूटे बने होते
मीनों, दीवारों आदि पर शोभा
जाती हैं ।)

दे० 'डेंडसी' ।

ी० दे० 'टिकठी' ।

ार की चिड़िया ।

१. दे० 'टीला' । २. दे०

[अ० ततिम्मः = परिशिष्ट ?]
बखेड़ा । २. आडम्बर ।

दे० 'टिटिहरी' ।

–वि० = टेढ़ा-मेढ़ा ।

[हिं० टीपना] १. किसी
प्रकार की छोटी बुंदी । २. ताश की बूटी ।

टिबरी†–स्त्री० [हिं० टीबा] १. छोटा टीला । २. पहाड़ की चोटी ।

टिमाक†–पुं० = टिम-टाम ।

टिर-फिस†–स्त्री० [हिं० टर्राना] १. साधारण रूप से टर्राने की क्रिया या भाव । २. साधारण प्रतिवाद या विरोध ।

टीसना–अ० [हिं० टीस] रह-रहकर कसक या पीड़ा होना ।

टुनहाया–पुं० [स्त्री० टुनहाई] दे० 'टोनहा' ।

टुभकना–अ० [अनु०] १. हलका डंक मारना । २. धीरे से कोई कटु या व्यंग्यपूर्ण बात कहना ।

टुलकना†–अ० दे० 'ढुलकना' ।

टूँक†–पुं० दे० 'टूक' ।

टूका†–पुं० [हिं० टूक] १. खंड । टुकड़ा । २. किसी चीज का चौथाई भाग । ३. भिक्षा । भीख ।

टूना†–पुं० दे० 'टोना' ।

टूल–स्त्री० [अं० स्टूल] बैठने या छोटी-मोटी चीजें रखने की छोटी तिपाई ।

टेढ़ा-मेढ़ा–वि० [हिं० टेढ़ा+मेढ़ा (अनु०)] १. कुटिल । टेढ़ा । वक्र । २. कठिन । मुश्किल । विकट ।

टेरी†–स्त्री० दे० 'टहनी' ।

टेलिग्राम–पुं० [अं०] तार द्वारा भेजे हुए समाचार ।

टेलिप्रिंटर–पुं० [अं०] एक प्रकार का यंत्र जिसमें तार द्वारा आए हुए समाचार टंकण यंत्र पर छपते चलते हैं ।

टेलिस्कोप–पुं० [अं०] एक प्रकार की दूरबीन जिससे दूर की चीजें बड़े आकार की दिखाई देती हैं ।

टेवैया†–वि० [हिं० टेना] १. टेनेवाला । २. धार चोखी या तेज करनेवाला ।

टैंक–पुं० [अं०] १. छोटा तालाब । २. पानी रखने का हौज । ३. युद्ध-कार्य के

लिए एक प्रकार की गाड़ी जिसपर तोपें चढ़ी रहती हैं और जो पहाड़ियों तक पर चढ़ जाती है।

टैंटी†–वि०, स्त्री० पुं० दे० 'टेंटी'।

टैक्सी–स्त्री० [अं०] किराए पर चलनेवाली मोटर-गाड़ी।

टोकन–पुं० [अं०] धातु आदि का वह संकेत सूचक टुकड़ा जिसे दिखलाकर किसी को कोई चीज पाने या कोई काम करने का अधिकार प्राप्त होता है।

टोनहाई–स्त्री० [हिं० टोना] १. जादू-टोना करने की वृत्ति या भाव। २. जादू-टोना करनेवाली स्त्री।

टोपरी†–स्त्री० = टोकरी।

टोर†–स्त्री० [देश०] कटारी (अस्त्र)।

टौस–स्त्री० दे० 'तमसा' (नदी)।

ट्रंक–पुं० [अं०] लोहे की चद्दर का वह सन्दूक जिसमें यात्रा के समय लोग सामान रखकर ले जाते हैं।

ट्रस्ट–पुं० [अं०] न्यास। (देखें)

ट्रस्टी–पुं० [अं०] न्यासी। (देखें)

ठंठार†–वि० [अनु०] खाली। रीता।

ठई*–स्त्री० [?] स्थिति।

ठउर†–पुं० = ठौर (जगह)।

ठकमुरी†–स्त्री० दे० 'ठगमूरी'।

ठकुरई†–स्त्री० दे० 'ठकुराई'।

ठकुराइस–स्त्री० दे० 'ठकुराई'।

ठकुराय–पुं० [हिं० ठाकुर] एक प्रकार के क्षत्रिय।

ठकोरी†–स्त्री० [हिं० ठेक = टेक (सहारा)] लकड़ी या छड़ी जिसके सहारे प्रायः अशक्त या वृद्ध चलते हैं; या बोझ ढोनेवाले रुककर सहारा लेते हैं।

ठगई†–स्त्री० दे० 'ठग-पना'।

ठगहाई (री)†–स्त्री० दे० 'ठग-पना'।

ठगाठगी†–स्त्री० = धूर्तता।

ठगाही†–स्त्री० दे० 'ठगी'।

ठटकीला–वि० दे० 'ठठकीला'।

ठटना†–अ०, स० दे० 'ठठना'।

ठट्ठा†–पुं० दे० 'ठाट'।

ठट्ठी†–स्त्री० दे० 'ठठरी'।

ठट्ठर† पुं० = ठठरी।

ठठेर-मंजारिका–स्त्री० दे० 'ठठेरा
अंतर्गत कहा० 'ठठेरे की बिल्ली'।

ठढियाना†–स० [हिं० ठढा =
खड़ा करना।

ठनका†–पुं० [हिं० ठनक] १. दे० 'ठ
२. गरजता हुआ बादल।

ठनकाना–स० [हिं० ठनकना]
मृदंग आदि बजाना।

ठपका†–पुं० [अनु०] ठेस। ठो

ठरगजी–स्त्री० [?] बहनोई की
बहन को ननद। (व्रज)

ठराना–स० हिं० 'ठहरना' का स०
†अ० दे० 'ठरना'।

ठरुआ†–वि० [हिं० ठार] (फस
ठार या पाले से खराब हो गई हो

ठहक–स्त्री० [अनु०] नगाड़े, मृदं
का शब्द।

ठहियाँ†–स्त्री० दे० 'ठाँव'।

ठाकुर-सेवा–स्त्री० ठाकुर या
पूजा, अर्चना आदि।

ठाट–पुं० दे० 'ठाठ'।

ठाटी–स्त्री० [हिं० ठाट] समूह।

ठादर†–स्त्री० [हिं० ठानना]
लड़ाई। (व्रज०)

ठान–स्त्री० [हिं० ठानना] १.
क्रिया या भाव। २. ठाना हुआ

ठाहरना*–अ० = ठहरना।

ठिक-ठैन(ा)–पुं० [हिं० ठीक +
१. ठाट-बाट। शोभा। २. प्रबंध

ठिकना†–अ० [सं० स्थित]
रुकना।

ठिकरौर†–पुं० [हिं० ठीकरा]
जहाँ बहुत से ठीकरे पड़े हुए दि
जैसे-यहाँ ठिकरौर देखकर पुरानी

है।
[हिं० ठीक] ठीक होने की
भाव।
दे० 'ठेलम-ठेल'।
-स० [?] निन्दा करना।

अनु०] घोड़ों के हिनहिनाने

[अनु०] १. बच्चों की तरह
'ठनकना'।
[हिं० ठुमकना] ठुमकने की

-ठुमककर चलना=(बच्चों
धीरे-धीरे और रुक-रुककर

[स्त्री० ठुमकी] दे० 'ठिंगना'।
[हिं० ठेलना] बार-बार
को आपस में एक दूसरे को
देने की क्रिया या भाव।
दूसरे को ठेलते या धक्का

[हिं० ठेस] १. सहारा लेना।

= ठाँव (स्थान)।
[हिं० ठोंग] ठोंग का आघात
लगाना।
[अनु०] [स्त्री० ठोठरी]
पोला।
[हिं० डाँटना] डाँटने-फट-
बतानेवाला।
= दंडक (वन) या दंडकारण्य।
[सं० दंड] दंड या सजा

[हिं० डंडा + हरा (प्रत्य०)]
] लकड़ी का लंबा डंडा
की रोक के लिए लगाया

] एक प्रकार की छोटी मछली।

डंडाबेड़ी–स्त्री० बेडियाँ और उनके साथ लगा रहनेवाला लोहे का डंडा जो विकट कैदियों को इसलिए पहनाया जाता है कि वे बैठ न सकें।

डँवरुआ†–पुं० [?] गठिया नाम का बात रोग।

डकैती–स्त्री० [हिं० डाका] डाका डालने का काम या भाव। डाका।

डक्का†–पुं० [?] वीणा। बीन। (डिंगल)

डगक*–पुं०[हिं० डग + क(एक का वाचक प्रत्यय)] एक या दो डग। एक या दो कदम।

डगडोरा†–वि० [हिं० डग + डोलना] १. अस्थिर। चंचल। २. दे० 'डाँवाडोल'।

डगा†–पुं० दे० 'डागा'।

डग्गर†–पुं० [सं० तर्क्षु] कुत्ते, भेड़िये आदि की तरह का एक जंगली हिंसक जन्तु।

डडकना†–अ० [अनु०] १. जोर से शब्द करना। २. बजना। (डिंगल)

डफारा†–स्त्री०[?] जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द।

डफोरना†–अ० दे० 'डफारना'।

डब–स्त्री० [?] १. कमर पर पड़नेवाला धोती का वह भाग, जिसमें रुपए-पैसे खोंस कर रखे जाते हैं। २. छोटी थैली।

डबा†–पुं० दे० 'डब्बा'।

डरा-डरी†–स्त्री० [हिं० डर] भय। डर।

डरीला†–वि० [हिं० डार = डाल] जिसमें डालें या शाखाएँ हों। टहनीदार।

डरैला†–वि० [हिं० डर] १. डरावना। भयानक। २. डरपोक।

डसन–स्त्री० [हिं० डसना] डसने की क्रिया या भाव। दंश।

डहडहाट†–स्त्री० 'डहडहा' होने की अवस्था या भाव।

डाँ†–स्त्री० = डाइन।

डाँवरा†–पुं०, स्त्री० = डावरा (बेटा)।

डाक व्यय–पुं० [हिं० डाक + सं० व्यय]

(डाक के टिकटों के रूप में होनेवाला) वह व्यय जो कोई चीज डाक घर के द्वारा कहीं भेजने में होता है। (पोस्टेज)

डाकी†–वि० [हिं० डाका ?] जबरदस्त। बलवान्। (डिंगल)

डाख†–पुं० = ढाक (पलास)।

डागा†–पुं० [सं० दंडक] वह लकड़ी या डंडा जिससे नगाड़ा या धौंसा बजाते हैं।

डागुर–पुं० [?] जाटों का एक वर्ग।

डाचा†–पुं० [?] मुँह। (डिंगल)

डाला–पुं० [हिं० डला] बड़ी चँगेर। डला।

डावा†–पुं० [हिं० दाँव का पुराना रूप] १. दाँव। बाजी। २. अवसर। मौका।

डिंडी–पुं० [सं० डिंडिन्] वह चितेरा जो दीवारों आदि पर भद्दे चित्र बनाता है।

डिंभिया†–वि० [सं० दंभ] १. दंभ या अभिमान करनेवाला। अभिमानी। २. पाखंडी।

डिडकार–स्त्री० [अनु०] डिडकारने की क्रिया या भाव।

डिडकारना–अ० [अनु०] गौ से छूटे हुए बछड़े का उसे पुकारने के लिए चिल्लाना।

डोआ†–पुं० [हिं० डोई] काठ की बड़ी कलछी या चम्मच।

डोकरा–पुं० [सं० दुष्कर, प्रा० डुक्कर ?] [स्त्री० डोकरी] बुड्ढा। वृद्ध।

डोरना†–अ० [हिं० डोर] किसी की डोर या सहारे पर साथ या पीछे चलना।

डोरिआना†–स० [हिं० डोर] डोर या रस्सी बाँधकर साथ ले चलना। जैसे–कुत्ते को। स० [हिं० डोरा] प्रेम-सूत्र में बाँधने का प्रयत्न करना। (किसी पर) डोरे डालना।

ढमकना–अ० [अनु०] ढम-ढम शब्द होना। जैसे–ढोलक ढमकना।

ढलाव–पुं० [हिं० ढालना + आव (प्रत्य०)] ढालने या ढाले जाने का ढंग या भाव।

ढाबर†–पुं० दे० 'डाबर'।

ढिठई*–स्त्री० = ढिठाई (धृष्टता)।

ढीठ्यो*–स्त्री० [हिं० ढीठ] धृष्टता।

ढुरन–स्त्री० [हिं० ढुरना] ढुरने या ढोर

की क्रिया या भाव।

ढूका†–पुं० [हिं० ढुकना] छिपकर किसी की दृष्टि से बचकर कहीं खड़े होने

अवस्था या भाव।

मुहा०–**ढूका देना** = चोरी से या छि

कर किसी के पीछे लगना।

ढेमनी†–स्त्री० [हिं० ढीमरी = धीवर

की स्त्री] रखी हुई स्त्री। रखेली। सुरैति

ढेरा†–पुं० [देश०] चकई

का खिलौना।

ढोठा–पुं० [स्त्री० ढोठी] दे० 'ढोटा'

ढोर–स्त्री० [हिं० ढोरना] १. ढुरने

ढोरने की क्रिया या भाव। ढुरन। २.

हर अंग-भंगी। अदा। लटक।

ढोरी*–स्त्री० [हिं० ढोरना=अनुयायी हो

उत्कट अभिलाषा। धुन। लगन। लौ

तंद्रिल–वि० [सं० तन्द्रा] जिसमें तंद्रा

हलकी नींद भरी हो।

तगनी–स्त्री० [हिं० तागना] (रूईदार क

तागने की क्रिया या भाव। तगाई।

तग्या†–पुं० दे० 'तज्ञ'।

तठ†–अव्य० [ं० तत्र] उस जगह।

तड़िद्दाम–पुं० [सं० तड़ित् + दा

आकाश में चौंधनेवाली बिजली की रे

तड़ीत*–स्त्री० = तड़ित (बिजली)।

तद्रूप–पुं० साहित्य में रूपक अलंका

एक प्रकार या भेद जिसमें उपमेय

उपमान से पृथक मानते हुए भी उसे

मान का दूसरा रूप और उसके कार्य का

बतलाया जाता है। यह तीन प्रकार का

गया है—(क) सम-तद्रूप रूपक (ख) अ

तद्रूप रूपक और (ग) न्यून-तद्रूप रूपक

तनै†–अव्य० [सं० तन] की ओर।

तरफ (राज०)

तनोआ–पुं० [हिं० तानना] ऊपर

जानेवाला बड़ा कपड़ा। चँदोआ।

तपशील–पुं० [सं० तप + शील] तप

तपस्वी ।
= तपशील (तपस्वी) ।
फ़सील' ।
[हिं० तपाना + एला (प्रत्य०)]
रने का एक प्रकार का बरतन ।
[अ०] चिकित्सक । वैद्य ।
[हिं० तमकना] १. किसी
प्रवृत्त करना । २. क्रोध के
(हाथ आदि) उठाना ।
[सं० तम + आई (प्रत्य०)]
ार । अन्धेरा ।
अंधकार नष्ट करनेवाला ।
'तँवार' (ताप) ।
तमीचर] १. वह जो रात के
हो । निशिचर । २. राक्षस ।
स्त्री० = तरवन या तरौना ।
गहना)
[सं० तरणि] सूर्य ।
तरनी' ।
-स्त्री० = तरणिजा (यमुना) ।
[सं० तरणि] सूर्य ।
[सं० तर्पण] तर्पण करना ।
= तरी (नाव) ।
[हिं० तरेरना] क्रोधपूर्ण दृष्टि ।
-पुं० [सं०] पलंग के ऊपर
बड़ी चादर । पलंग-पोश ।
[सं० तपन] १. तपे हुए
अवस्था या भाव । २. ताप ।
अग्नि । आग !
[सं०] वर्ण-माला में त से न
ों का वर्ग या समूह ।
-वि० [अ०] तवारीख या
संबंध रखनेवाला । ऐतिहासिक ।
स्त्री० दे० 'तसबीह' ।
स्त्री० [अ० तस्बीह] नाम जपने
जप-माला । सुमरनी । (मुसल०)
अ०, स० दे० 'ताकना' ।
पुं० ३. सिर में आनेवाला चक्कर ।

४. बेहोशी ।

ताका–वि० [हिं० ताकना] तिरछा ताकनेवाला । भेंगा ।

ताखड़ा†–वि० = तगड़ा । (राज०)

ताछन–पुं० घोड़े का आगे बढ़ते समय बीच में इधर-उधर मुड़ना । कावा काटना ।

ताटस्थ्य–पुं० [सं०] 'तटस्थ' होने या रहने की अवस्था या भाव । तटस्थता ।

ताती†-स्त्री० [सं० तप्त] दूध । (व्रज)

तात्पर्य–पुं० [सं०] १. 'तत्पर' होने की अवस्था या भाव । तत्परता । २. किसी कथन का वास्तविक आशय । अभिप्राय । मतलब । ३. किसी कृत्य के संबंध में मन में रहनेवाला उद्देश्य । हेतु ।

तात्पर्य वृत्ति–स्त्री० [सं०] साहित्य में वह वृत्ति या शक्ति जो किसी वाक्य के सब शब्दों के वाच्यार्थों का समन्वय करके उस पूरे वाक्य का संगत अर्थ सूचित करती है । पूरे वाक्य का अर्थ बतलानेवाली वृत्ति । (जब अभिधा शक्ति प्रत्येक शब्द के अलग अथ का बोध करा चुकती है, तब उन शब्दार्थों को परस्पर संबद्ध और समन्वित करके समूचे वाक्य का आशय यही वृत्ति बतलाती है)

तार*–अव्य० नाम को भी । लेश मात्र । *पुं० १. डाँट-फटकार । ताड़ना । २. डर । भय ।

ताल-संपुटक–पुं० [सं०] ताड़ के पत्तों का बना दोना ।

तावरा–पुं० १. दे० 'तावरी' । २. दे० ताँवरा ।

तिड़–पुं० [?] पत्र । (डिंगल)

तिदरा–पुं० [हिं० तीन + फा० दर=दालान] [स्त्री० तिदरी] १. वह दालान जिसमें तीन दर हों । २. वह कमरा जिसमें तीन दर हों । वि० तीन दरोंवाला ।

तिब्बर*–क्रि० वि० = तिबारा ।

तिमि–स्त्री० तिमिंगिल नामक जल जन्तु ।

तिमिरांत–पुं० [सं० तिमिर + अन्त] १. ति-

मिर या अँधेरे का अन्त। २. प्रभात। तड़का।

तिरस्कार–पुं० ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी अच्छी वस्तु में भी किसी युक्ति से कोई दोष दिखलाकर उसे तुच्छ या तिरस्कृत सिद्ध किया जाता है। जैसे–जिन के प्रिय न राम वैदेही। तजिये तिन्हें कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही।–तुलसी।

तिरहुत–पुं० [सं० तीरभुक्त] [वि० तिरहुतिया, तिरहुती] आधुनिक मुजफ्फरपुर और दरभंगे के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम। मिथिला प्रदेश।

तिलकोड़ा–पुं० जंगली कुंदरू जिसकी पत्तियों का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं।

तिसूती–स्त्री० [हिं० तीन + सूत] वह कपड़ा जो तीन-तीन डोरे एक साथ बटकर बनाया जाता है।

वि० तीन सूतों वाला।

तीर्थ–वि० [सं०] तारने या मोक्ष देनेवाला।

तीलोकारी–स्त्री० [हिं० तील + फा० कारी] कपड़े बुनने का वह प्रकार जिसमें बेल-बूटे आदि करघे पर ही बुने जाते हैं। (सूईकारी से भिन्न)

तुख*–पुं० = तुष (भूसी)।

तुच्छार्थक–वि० [सं० तुच्छ + अर्थक] तुच्छतासूचक अर्थ देने या रखनेवाला।

पुं० वह वस्तुवाचक शब्द या उसका विकृत रूप जो वस्तु या व्यक्ति की तुलना में कुछ तुच्छता सूचित करने के लिए बनाते हैं। (डिमिन्यूटिव) जैसे–'बात' से तुच्छार्थक 'बतोला' और 'घोड़ा' का 'घोड़वा' है।

तुजुक–पुं० [तु०] १. धन, वैभव आदि की शोभा। शान। २. नियम। कायदा। ३. ३. प्रथा। दस्तूर। ४. बड़ों के प्रति प्रकट किया जानेवाला सम्मान। अभिनन्दन।

तुरमती–पुं० [?] एक शिकारी चिड़िया।

तुरसीला†–वि० [फा० तुर्श ?] १. मधुर। २. मनोहर। ३. तीखा। तीक्ष्ण।

तुरी–पुं० [सं० तुरंग] घोड़ा।

वि०, पुं०, स्त्री० दे० 'तुरीय'।

तुलसिका–स्त्री० = तुलसी।

तुल्य-योगिता–स्त्री० [सं०] साहित्य एक अलंकार जिसमें कुछ बातों में समा रखनेवाले कई अप्रस्तुत पदार्थों के एक धर्म से युक्त या संबद्ध होने का उल होता है। जैसे–तुम्हारे मुख ने कमल चन्द्रमा दोनों को जीत लिया।

तूणीर–पुं० [सं०] तीर रखने का चों तरकश। भाथा।

तूमा†–पुं० दे० 'तूँबा'।

पद–तूमा पलटी = दे० 'तूँबा'।

तूर–पुं० [अ०] शाम देश का एक प्र पर्वत। (कहते हैं कि हजरत मूसा को पर्वत पर अलौकिकता का ईश्वरीय प्र दिखाई पड़ा था)

मुहा०–तूर चमकना = ज्ञान का प्र दिखाई देना।

तूर्य–पुं० [सं०] १. तुरही। २. नगा

तूलि–स्त्री० [सं०] १. तकिया। २. 'तूलिका'।

तृण-मणि–पुं० [सं०] पीले रंग का प्रकार का गोंद का ढेला जिसे कप हाथ पर रगड़कर तिनकों के पास ले पर तिनके खिचकर उससे चिपक जाते हमारे यहाँ के प्राचीन साहित्यकारों ने पत्थर माना है। कहरुबा। कपूर-मणि

तेऽपि–सर्व० [सं०] वे (लोग या पदार्थ)

तेजोन्वेष–पुं० [सं० तेज + अन्वेष एक प्रकार का बहुत बड़ा वैज्ञानिक जिसकी सहायता से परावर्त्तित ध्वनि त के आधार पर यह जाना जाता है आकाश, जल अथवा स्थल में किस दि में और कितनी दूरी पर शत्रु के आका यान, जल-यान और सैनिक महत्त्व के संग हैं; और उनपर अचूक प्रहार किया जा सक है कि नहीं। इसका आविष्कार दूसरे महायु के समय हुआ था। (रैडर)

= बुलाना ।

सं० तपन] १. गरम होना ।

न में दुःखी होना ।

।

[हिं० तैराक + ई (प्रत्य०)] क्रिया या भाव । तैराई । २. वह रने की कलाओं और जल- का प्रदर्शन या प्रतियोगिता हो ।

दंगल ।

सं० त्रुटि या हिं० टूटना] क्रिया या भाव । २. कमी । टा । टोटा । ४. दोष । बुराई ।

[सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त चरण में चार सगण होते हैं ।

० [हिं० छोपना ?] आवृत्त ना । २. पूरी तरह से भरना ।

० [सं० तुषार] घोड़ा, विशेषतः खार देश का ।

[?] ओर । तरफ ।

० [?] नगाड़ा । धौंसा ।

पुं० [सं०] आधिदैविक, आधि- र आध्यात्मिक ये तीनों प्रकार कष्ट ।

अ० = बजना (राज०) ।

[सं०] हठ योग में एक प्रकार जिसमें किसी विंदु पर टक लगा- पड़ता है ।

त्री० दे० 'त्राटक' ।

त्री० [सं० त्रास] १. डर । आशंका । खटका ।

० [सं० त्रिभंगिन्] जो खड़े जगह से बल खाए हुए हो । मुद्रा में खड़ा हुआ ।

० दे० 'त्रिबली' ।

त्री० [सं० त्रि + वाचा] कोई देने के लिए तीन बार कहने

मुहा०*-त्रिवाचा बाँधना = जोर देने या दृढ़ता दिखलाने के लिए कुछ कहना ।

थति-स्त्री० [?] समूह । झुंड ।

थपकाना-स० [हिं० थपकना का प्रे०] थपकने का काम दूसरे से कराना । *अ० दे० 'थपकना' ।

थहरन-स्त्री० [हिं० थहरना] थहरने या थहराने की क्रिया या भाव । थरथरी ।

थाँभना†-स० = थामना । (पकड़ना)

थाठ†-पुं० = ठठ (समूह) । (राज०)

थार*-पुं० = थाल (बड़ी थाली) ।

थारा*-सर्व० [स्त्री० थारी] हिं० 'तुम्हारा' का राज० रूप ।

थारी†-स्त्री० दे० 'थाली' ।

थावस*-स्त्री० [सं० स्थेयस्] स्थिरता । धीरज । ठहराव ।

थाहर†-पुं० = थर या माँद (राज०) ।

थुलमा-पुं० [सं० उल्वण] एक प्रकार का मोटा पहाड़ी कंबल ।

दंडक-पुं० ३. छंद शास्त्र के अनुसार (क) ऐसा मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ से अधिक मात्राएँ हों; अथवा (ख) ऐसा वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २६ से अधिक वर्ण या अक्षर हों ।

दंडपाल-पुं० [सं०] १. प्राचीन राज-नीति में सेना के निर्वाह आदि का प्रबन्ध करनेवाला । २. ड्योढ़ीदार । दरबान ।

दंडात्मक-वि० [सं०] १. दण्ड से संबंध रखनेवाला । २. जो दंड के रूप में लगाया हो । (प्यूनिटिव)

दंतकार-पुं० [सं०] वह जो आदमियों के दाँतों की चिकित्सा करता हो और टूटे हुए दाँतों की जगह नए दाँत लगाता हो । (डेन्टिस्ट)

दंतबीज-पुं० [सं०] अनार, जिसके दाने देखने में दाँतों के समान होते हैं ।

दंद*-पुं० [सं० द्वंद्व] १. उपद्रव । झगड़ा । २. शोर-गुल । हल्ला-गुल्ला । ३. सांसा-

रिक कष्ट।

दक्खिनी–स्त्री० हिंदी भाषा का वह रूप जिसका विकास बहमनी शासन-काल में और बीजापुर तथा गोलकुंडा के बादशाहों के दरबार में हुआ था। अपने आरंभिक काल में उर्दू भी इसी के ढंग पर चलना चाहती थी पर बाद में वह अरबी-फारसी शब्दों के मिश्रण के कारण स्वतंत्र हो गई।

दच्छ-सुता–स्त्री० = दच्छ-कन्या।

दच्छ*–वि०, पुं० = दच्छ।

दच्छिनाइन*–वि० दे० 'दच्छिणायन'।

दझना*–स० [सं० दहन] जलाना।

दधना*–अ० [सं० दग्ध] जलना।
स० दे० 'दाधना'।

दब्बू–वि० [हिं० दबना] (व्यक्ति) जो स्वभावतः दूसरों से दबकर रहता हो।

दमंगल†–पुं० [?] युद्ध। लड़ाई। (डिं०)

दमानक–स्त्री० [देश०] तोपों की बाढ़। गोलों की लगातार मार।

दयिता–स्त्री० [सं०] १. पत्नी। भार्या। जोरू। २. स्त्री। औरत।

दरखास्ती कागज–पुं० एक विशेष आकार-प्रकार का मोटा कागज जो न्यायालयों में दी जानेवाली दरखास्तें लिखने के काम आता है।

दरगहा–पुं० [फा० दरगाह ?] किसी को तंग करने के लिये उसके पीछे पड़ने की क्रिया या भाव। जैसे–सब लोग उसके दरगह मत पड़ो।

दरड़ा†–स्त्री० = दरार या बिल। (राज०)

दरदीला†–वि० [हिं० दरद + ईला (प्रत्य०)] १. दूसरों का कष्ट समझनेवाला। दरदवंत। २. मन में दर्द या गुदगुदी पैदा करनेवाला।

दरना*–स० [सं० दरण] १. दलना। चूर्ण करना। २. नष्ट करना। ३. शरीर में मलना या लगाना।

दरारा†–पुं० दे० 'दरेरा'।
†पुं० = बड़ी दरार। (क्व०)

दरिया†–पुं० दे० 'दलिया'।
*वि० [हिं० दरन = दलन] १. द या नाश करनेवाला। २. दलने या च में पीसने वाला।

दरेर–स्त्री० [हिं० दरेरना] १. दरे २. दबाव। चाप। ३. पानी का बहा ४. किसी प्रकार का प्रवाह या वेग।

दर्दनाक–वि० [फा०] जिसे देख सुनकर मन में दर्द या करुणा उत्पन्न करुणा-जनक।

दर्बी†–स्त्री० दे० 'दरबी'।

दर्याव†–पुं० दे० 'दरियाव'।

दलमलाना–स० हिं० 'दलमलना' का अ० = दलमलना।

दलाई–स्त्री० [हिं० दलना] दलने क्रिया, भाव या मजदूरी।

दलैया†–वि० [हिं० दलना] दलनेवा स्त्री० दे० 'दलाई'।

दश-भुज–वि० [सं०] जिसकी दस भु हों। दस भुजाओंवाला।
पुं० भूमिति में वह क्षेत्र जिसकी दस भु हों। (डेकागन)

दश-भुजा–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

दश-भुजी–स्त्री० = दश-भुजा।

दशिका–स्त्री० [सं०] कपड़े के था छोर या सिरा।

दष्ट–वि० [सं०] कटा या काटा हुआ

दस-गात*–पुं० दे० 'दश-गात्र'।

दस-धा*–क्रि० वि० [हिं० दस + ध ओर] दसो दिशाओं में। सब ओर। स्त्री० दसो प्रकार की भक्ति। (क्व०)

दस-बदन*–पुं० = रावण।

दस्युज–पुं० [सं०] [स्त्री० दस्युजा] दस्यु की संतान। २. नीच। कमीना।

दस्सी–स्त्री० [सं० दशा या दशि थान के सिरे पर का अंश। छोर।

दहपट्टना*–स० दे० 'दहपटना'।

०[हिं० दह = दस + बाट =
-भिन्न । तितर-बितर ।
[सं० दश] पु० हिं० दह
समष्टि-वाचक रूप । दसो ।
० [सं०] जो जल रहा हो ।
।
० [?] प्रतीत होना ।
।
दे० 'डाट' ।
[सं० दृढ़] १. दृढ़ ।
मजबूत । ३. बलवान ।
(राज०)
-पुं० दे० 'दारी-जार' ।
[सं० दातव्य] वह पदार्थ जो
शुभ अवसर पर प्रसन्न होकर
में दिया जाय ।
ा-स्त्री० [सं०] दान की हुई
त्ति के साथ दक्षिणा के रूप में
ाला धन । दक्षिणा ।
०[फा०]बुद्धिमत्ता । समझदारी ।
० = दामिनी ।
[फा०] १. दंड-स्वरूप प्राण
ी । २. फाँसी ।
० ३. मार डालना ।
[सं०] सारथी ।
० [सं०] १. दिशाओं के
ा । दिक्पाल । २. एक प्रकार
छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में
ँ (१२वीं मात्रा पर यति)
उर्दू का 'रेखता' यही छंद है ।
० १. नित्य-प्रति । हर रोज ।
। बराबर । सदा ।
-पुं० [सं० दिन-मणि] सूर्य ।
पुं० = दीया (दीपक) ।
-पुं० [सं०] आकाश का जलना;
त प्रवल आन्दोलन या क्रान्ति ।
[सं०] १. निश्चित । निर्दिष्ट ।
ाया या बतलाया हुआ ।

दिसट*–स्त्री० = दृष्टि (नजर) ।

दिहा–पुं० दे० 'दिहाड़ा' ।

दीधिति–स्त्री० [सं०] १. सूर्य, चन्द्रमा आदि की किरण । २. उँगुली ।

दीपक–पुं० २. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें समानता रखनेवाले अप्रस्तुत और प्रस्तुत पदार्थों के किसी एक गुण या धर्म से संबंध होने का, एक ही क्रिया के द्वारा उल्लेख होता है । जैसे–रात को चन्द्रमा और तुम्हारा मुख दोनों खिल उठते हैं ।

विशेष–जहाँ अप्रस्तुत का अलग और प्रस्तुत का अलग उल्लेख होता है, वहाँ तुल्य-योगिता अलंकार होता है ।

दीपा–वि० [सं० दृप्त ?] १. मद्धिम । फीका । २. मन्दा ।

दुअन–वि० दोनों ।

दुगंछा–स्त्री० [?] ग्लानि या घृणा ।

दुगध*–पुं० = दुग्ध (दूध) ।

दुगध-नदीश*–पुं० = क्षीर-सागर ।

दुत*–स्त्री० [सं० द्युति] कान्ति । चमक ।

दुमची–स्त्री० २. झूला झूलने के समय, पेंग बढ़ाने के लिए कमर झुकाकर जोर लगाने की क्रिया या भाव ।

दुरंग–पुं० [सं० दुर्ग] किला । गढ़ ।

दुराधिगम–वि० [सं०] १. कठिनता से मिलनेवाला । दुर्लभ । २. दुर्जय । ३. दे० 'दुरध्व' ।

दुरध्व–वि० [सं०] (मार्ग) जिसपर चलना कठिन हो ।

पुं० विकट मार्ग । बीहड़ रास्ता ।

दुरूहता–स्त्री० [सं०] 'दुरूह' का भाव । गूढ़ता । कठिनता ।

दुर्धर्ष–वि० [सं०] जिसे दबाना या वश में करना कठिन हो । प्रचंड । प्रबल ।

दुर्वह–वि० [सं०] जिसे वहन करना बहुत कठिन हो ।

दुस्तम*–वि० = दुस्तर ।

दूँदर*–वि० [सं० द्वंद्व] शक्तिशाली ।

दूतत्व–पुं० [सं०] दूतता ।

दूमना*–स० कँपाना । हिलाना ।

दूरत्व–पुं० [सं०] दूरता । दूरी ।

दूलह–वि० जो सदा दुलहे या वर के समान बना-ठना रहता हो ।

दृगंबु–पुं० [सं०] १. आँखों से निकलनेवाला पानी । २. अश्रु । आँसू ।

दृश्याधार–पुं० [सं०] १. वह जो किसी दृश्य का आधार हो । २. वह जिसमें कुछ देखा जाय ।

दृष्टांत–पुं० २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक तो उपमेय वाक्य अपने साधारण धर्म सहित होता है और उसके प्रतिबिंब के रूप में दूसरा उपमान वाक्य अपने साधारण धर्म के उल्लेख के साथ अलग रहता है और इस प्रकार एक उदाहरण के आधार पर दोनों में समानता दिखाई जाती है । जैसे–आकाश में चन्द्रमा और पृथ्वी पर तुम्हारा मुख दोनों एक-से शोभायमान होते हैं ।

देखिबी†–स० [हिं० देखना] देखा जाने को है । देखना है । (बुन्देल०)

देव-कपास–स्त्री० [सं० देव + हिं० कपास] नरमा नाम की कपास । विशेष दे० 'नरमा' ।

देव-गांधार–पुं० [सं० द्वि-गांधार] संपूर्ण जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर में गाया जाता है ।

देवाना†–पुं० दे० 'दीवाना' ।

देवायतन–पुं० [सं०] १. स्वर्ग । २. देव-मंदिर । देवालय ।

देहावसान–पुं० [सं० देह + अवसान] देहान्त । मृत्यु ।

दोखिल*–वि० = १. दोषी । २. दूषित ।

दोगा–पुं० [देश०] १. इमारत के काम के लिए बरी का एक विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ रूप । २. दीवारों पर लगाने के लिये घोला हुआ चूना ।

दोधक–पुं० [सं०] 'बंधु' नामक छंद का दूसरा नाम । विशेष दे० 'बंधु' २ ।

दो-मुँहा-साँप–पुं० [हिं० दो मुँह + साँ
१. एक प्रकार का साँप, जिसके विषय यह प्रसिद्ध है कि छः महीने इसके एक मुँह रहता है और छः महीने दूसरी ओ चुकरैंड । २. दोहरी चाल चलनेवाला अ बहुत बड़ा धूर्त्त ।

दोर†–पुं० = द्वार (दरवाजा) । स्त्री० = दौड़ ।

दोलायमान–वि० [सं०] १. झूलता या लेता हुआ । २. हिलता या लहराता हु

दोषा–स्त्री० [सं०] रात्रि । रात ।

दोषाकर–पुं० [सं० दोषा = रात + चन्द्रमा ।

दौं†–स्त्री० [सं० दव] १. दे० 'दौ' आग ।

दौड़हा†–पुं० [हिं० दौड़ना + हा (प्रत्य वह जिसका काम दौड़कर समाचार या आदि ले आना और ले जाना हो । हरका

दौत्य–वि० [सं०] दूत-संबंधी । दूत जैसे–दो राष्ट्रों में दौत्य संबंध स्थापित हो

दौनाचल*–पुं० दे० 'द्रोणाचल' ।

दौष्यिक–पुं० [सं०] कपड़े बेचने व्यापारी । बजाज ।

द्रोण गिरि–पुं० दे० 'द्रोणाचल' ।

द्रोणाचल–पुं० [सं०] पुराणों के अ एक कल्पित पर्वत जो क्षीरोद समुद्र में लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी बूटी पर्वत पर से आई थी ।

द्विघर–वि० [सं०] दोहरा ।

द्विरसन–पुं० [सं०] [स्त्री० द्विरसन सर्प । साँप ।

वि० १. दो जबानोंवाला । दो जिह्वाओंव २. कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवा जिसकी बात का विश्वास न किया जा स

द्विष्ट–वि० [सं०] जिसमें द्वेष का भाव हो द्वेषपूर्ण । जैसे–द्विष्ट आलोचना ।

धंधक-धेरी–पुं० दे० 'धंधक-धोरी' ।

अ॰ [देश॰] स्थिर रहना।
पुं॰ [हिं॰ धड़कना] १. कलेजा
रोग। २. धड़कन।
पुं॰ [देश॰] लकुच या लुकाट
और उसका फल।
', पुं॰ दे॰ 'धनी'।
पुं॰ [सं॰] स्त्रियों के बालों का

ी॰ = धरणी (पृथ्वी)।
ी॰ = धरणी (पृथ्वी)।
' [सं॰ धारण] १. धारण
२. धरेगा। पकड़ेगा। (बुन्देल॰)
का–स्त्री॰ [सं॰] यज्ञ आदि में
जिसपर बलि चढ़ाए जानेवाले
ा सिर रखा जाता है।
–पुं॰ [सं॰] ओड़व जाति का
जो संध्या समय गाया जाता है।
–अ॰ किसी की धाक या रोब में
आतंकित होना।
वि॰ = धन्य।
हड़ी)†–स्त्री॰ [सं॰ दुहिता]
बेटी।
स्त्री॰ [हिं॰ धुंध] १. आँधी के
ा में उड़नेवाली धूल। २. आँधी
कार। अँधेरा।
–पुं॰ दे॰ 'धुर्जटि'।
–स्त्री॰ = ध्वजा।
–अ॰ १. अधिकता या बहुतायत
। २. ऊपर या चारो ओर से घिर
। आच्छादित होना। छाना।
–स॰ धूर्त्तता करके बिगाड़ना या नष्ट
।
–वि॰ [स्त्री॰ धूमरी] = धूमिल।
[हिं॰ धोना] धोए जाने की क्रिया।
भी इस धोती पर चार धो भी नहीं
कि चिथड़े हो गई।
ी†–स्त्री = धोती (पहनने की)।
ी–पुं॰ दे॰ 'धौरहर'।

ध्रुपदिया–पुं॰ [हिं॰ ध्रुपद] वह गवैया जो अधिकतर या विशेषतः ध्रुपद, धमार आदि ही गाता है।

ध्रुवता–स्त्री॰ [सं॰] १. ध्रुव होने की अवस्था या भाव। २. दृढ़ता। मजबूती। ३. निश्चय।

ध्रुवताई*–स्त्री॰ = ध्रुवता।

ध्रुव लोक–पुं॰ [सं॰] पुराणानुसार ध्रुव (भक्त) के रहने का लोक। ज्योतिर्लोक।

ध्रू*–वि॰ पुं॰ = ध्रुव।

ध्वांत-धाम–पुं॰ [सं॰] नरक।

नका*–पुं॰ दे॰ 'निकाह'।

नगराज–पुं॰ [सं] पर्वतों का राजा हिमालय।

नग-स्वरूपिणी–स्त्री॰ [सं॰] 'प्रमाणिका' छंद का दूसरा नाम।

नग्नवाद–पुं॰ [सं॰] [वि॰ नग्नवादी] एक आधुनिक सिद्धांत जिसमें कहा जाता है कि मनुष्य को निरोग और सुखी रहने के लिए सदा, नहीं तो प्रायः अथवा बीच-बीच में कुछ समय तक नंगे रहना चाहिए। (न्यूडिज्म)

नग्नवादी–पुं॰ [हिं॰ नग्नवाद] वह जो नग्नवाद का अनुयायी हो। (न्यूडिस्ट)

नतरुक–क्रि॰ वि॰ = नतर या नतरु।

नथिया–स्त्री॰ दे॰ 'नथ'।

नदन–पुं॰ [सं॰] [वि॰ नदित] १. नाद या शब्द करना। २. बोलना।

नदित–वि॰ [सं॰] जिसमें या जिसपर नाद या शब्द होता हो। बजता या बोलता हुआ।

नदीश-नंदिनी–स्त्री॰ [सं॰] लक्ष्मी।

नद*–पुं॰ १. दे॰ 'नद'। २. दे॰ 'नाद'।

नपना–अ॰ [हिं॰ नाप] नापा जाना।
†पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ नपनी] वह बरतन जिससे दूध, तेल, आदि तरल पदार्थ तौले जाने के बदले नापे जाते हैं। जैसे–पाव भर का नपना; सेर भर का नपना।

नपाना–स॰ [हिं॰ नापना का प्रे॰]

नापने का काम दूसरे से कराना।

नफासत–स्त्री० [अ०] नफीस या बढ़िया होने की अवस्था या भाव।

नमन–पुं० [सं०] [वि० नमनीय] झुकने की क्रिया या भाव।

नमनि*–स्त्री० [सं० नमन] १. झुकने की क्रिया या भाव। २. नम्रता।

नरगा–पुं० [यू० नर्ग] १. आदमियों का वह घेरा जो पशुओं का शिकार करने के लिए बनाया जाता है। २. जन-समूह। भीड़-भाड़। ३. विपत्ति। कठिनता।

नराच–पुं० २. चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और तब गुरु वर्ण होता है। इसे नागराज और पंचचामर भी कहते हैं।

नल–पुं० [सं० नर] आदमी। मनुष्य।

नलकार–पुं० [सं०] बेंत से पलंग, चौकी आदि बुननेवाला कारीगर।

नवका*–स्त्री० दे० 'नौका'।

†वि० दे० 'नया'।

नव-भुज–पुं० [सं०] ज्यामिति में वह क्षेत्र जिसमें नौ भुजाएँ या पार्श्व हों। (नौमेगन)

नव-मालिनी–स्त्री० [सं०] चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, जगण, मगण और यगण (न, ज, म, य) होते हैं।

नव युग–पुं० [सं०] ऐसा समय जब कि प्रायः सभी पुरानी बातें नष्ट हो चली हों और नई बातों का आरम्भ हो रहा हो।

नष्ट-पुं० छंद शास्त्र में मात्रिक छंदों या वर्ण-प्रस्तार में यह जानने की प्रक्रिया कि उनके किस या कौन से भेद का क्या रूप है।

नसी–वि० [हिं० नासा = नाक] नाक-वाला या वाली।

नहारू†–पुं० [सं० नाहर] शेर। सिंह।

नाइ*–पुं० [सं० नाम] नाम। संज्ञा

नाइक†–पुं० दे० 'नायक'।

नाकपति–पुं० [सं०] स्वर्ग का राजा, इ

नाकुल*–पुं० = नकुल (नेवला)।

नाक्षत्रिक–पुं० [सं०] छन्द शास्त्र २७ मात्राओं के छंदों की संख्या। वि० दे० 'नाक्षत्र'।

नाघना†–स० = लाँघना (उल्लंघन कर

नाट–पुं० [सं०] १. नृत्य। नाच नकल। स्वांग। ३. संगीत में एक का नाम।

पुं० [?] काँटे या अस्त्र के फल का अंश जो शरीर के अंदर टूट कर रह है और पीड़ा करता है।

ना-फ़ुरमाँ*–वि० [हिं० ना + फा० माना] बड़ों की आज्ञा न मानने या उ उल्लंघन करनेवाला।

नामांकिती–पुं० [सं० नामांकिति] जो किसी चुनाव, पद, कार्य आदि के नामांकित किया गया हो। (नॉमिनी)

नाया†–स्त्री० = नाव।

नायकी कान्हड़ा–पुं० [?] अ संपूर्ण जाति का एक राग जो रात तीसरे पहर में गाया जाता है।

नारीत्व–पुं० [सं०] नारी या स्त्री का भाव। स्त्रीत्व। औरतपन।

नालंद(ा)–पुं० बिहार का एक प्रा स्थान जो किसी समय बौद्धों का एक केन्द्र था और जहाँ किसी समय एक ब बड़ा विश्व-विद्यालय था।

निंदरा†–स्त्री० = निद्रा (नींद)।

निःस्व–वि० [सं०] १. जो अपना अ खो चुका हो। २. जिसकी सुध-बुध रह गई हो।

निका†–पुं० दे० 'निकाह'।

निकारा†–वि० [फा० नाकार = निकम्मा [स्त्री० निकारी] १. तुच्छ। निकम्मा हीन। २. खराब। बुरा।

वि० [हिं० नि = नहीं +
का] बे-खटके। निश्चिततया।
[सं०] १. किसी से
या छाया हुआ। २. किसी
दबा हुआ।
[सं०] वह जो निदान
ाता हो। (पैथॉलोजिस्ट)
-पुं० [सं०] वह शास्त्र
के निदान या पहचान का
ता है। (पैथॉलोजी)
-वि० [हिं० निनरा] [स्त्री०
एक मात्र पुत्र।
-स० = निवारण (मना) करना।
-वि० [सं०] १. मुँदा हुआ।
सिकुड़ा हुआ।
[सं० निज] अपना।
ता-स्त्री० [सं०] निरंकुश होने
स्वेच्छाचार।
-वि० दे० 'निरपेक्ष'।
ना*-स० [सं० निर्वाह] निर्वाह
निभाना।
वि० = निर्भय।
-वि० [सं० निःशंक] १. जिसे
कोई शंका न हो। २. जिसे
भय न हो। निडर।
बिना किसी शंका या भय के।
-वि० दे० 'निरस्त'।
†-वि० [हिं० निराश] १.
आशा न रह गई हो। निराश।
के समय गाली का सूचक एक
। (स्त्रियाँ)
-वि० [?] अपवित्र और मलिन।
-वि० [सं०] [वि० निरावृत]
गे या सामने कोई आवरण न हो।
।
स्त्री० ४. साहित्य में एक अर्था-
समें केवल निरुक्ति अर्थात् शब्द
के आधार पर किसी नाम या शब्द का दूसरा अर्थ या आशय ग्रहण करके उससे संबंध रखनेवाली कोई और ही विलक्षण बात कही जाती है।

निर्गुंडी–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ दवा के काम आती हैं। शेफालिका। नीला सिंधुआर।

निर्धूम–वि० [सं०] जिसमें धूआँ न हो, या जिसमें से धूँआ न निकलता हो।

निर्बीर*–वि० १. दे० 'निर्वीर'। २. दे० 'निर्वीर्य'।

निर्मोक–पुं० [सं०] १. मुक्त करने की क्रिया या भाव। मुक्ति। छुटकारा। २. आकाश। ३. वातावरण। ४. त्वचा। चमड़ा। ५. साँप की केंचुली।

निर्वापित–वि० [सं०] १. जिसका निर्वापण हो चुका हो। २. बुझा या बुझाया हुआ। ३. विनष्ट। बरबाद।

निर्वीर–वि० [सं०] (देश या स्थान) जो वीरों से खाली हो गया हो। वीर-रहित। *वि० दे० 'निर्वीर्य'।

निवसन–पुं० [सं०] १. निवास करना। रहना। २. पहनने के कपड़े। पोशाक। ३. अधोवस्त्र। धोती।

निवाण†–पुं० [सं० निम्न ?] तालाब, बावली आदि जलाशय।

निवाना†–वि० [सं० अनिर्वचनीय ?] [स्त्री० निवानी] बहुत ही अद्भुत और सुन्दर। परम मनोहर।

निश्चेत–वि० दे० 'निश्चेतन'।

निषीदन–पुं० [सं०] चटाई।

निष्कीटक–वि० [सं०] निष्कीटण करनेवाला। कीटों से रहित करनेवाला। (स्टर्लाइज़र)

पुं० वह उपकरण या यंत्र जिससे निष्कीटण करते हैं। (स्टर्लाइज़र)

निष्कीटण–पुं० [सं०] [वि० निष्कीटित] १. किसी वस्तु को तपा कर अथवा रासायनिक प्रक्रिया से कीटों या कीटाणुओं

से रहित करना। २. उत्पादन करनेवाले कीटाणु नष्ट करके अनुर्वर, नपुंसक या बाँझ करना। पुंसत्व नष्ट करना। (स्टर्लाइजेशन)

निष्कीटित–वि० [सं०] १. निष्कीटण की प्रक्रिया से, जिसके कीटाणु नष्ट कर दिये गये हों। २. किसी प्रक्रिया से जिसकी उर्वरा या पुंसवन शक्ति नष्ट कर दी गई हो। (स्टर्लाइज्ड)

निष्पेषण–पुं० [सं०] [वि० निष्पेषित] अच्छी तरह पीसना। पेषण।

निष्पेषित–वि० [सं०] अच्छी तरह पीसा हुआ।

निसंकी*–वि० [सं० निःशंक] १. जिसके मन में किसी प्रकार की शंका न हो। निश्शंक। २. जो किसी से न डरता हो। उद्धत। उजड्ड।

निसील*–वि० [सं० निःशील] १. जिसका शील या स्वभाव अच्छा न हो। दुष्ट स्वभाववाला। २. जो शील या सभ्यता न जानता हो। असभ्य।

निहचै*–पुं०, क्रि० वि० = निश्चय।

निहिंसन–पुं० [सं०] मार-काट। हिंसा।

निहीन–वि० [सं०] १. नीच। पामर।

निहोरन*–स्त्री० [हिं० निहोरा] निहोरा करने की क्रिया या भाव।

नींदाला†–वि० [सं० निद्रालु] १. जिसे नींद आ रही हो। २. जो सोया हो। निद्रित।

नीत–वि० [सं०] १. पहुँचाया या लाया हुआ। २. प्राप्त। ३. ग्रहण किया हुआ। गृहीत।

***–स्त्री० = नीति।**

†–स्त्री० = नीयत।

नीतिवाद–पुं० [सं०] वह वाद या सिद्धांत जिसमें व्यवहार और आचार-संबंधी नीति की ही प्रधानता हो।

नीर-क्षीर-विवेक–पुं० [सं०] ऐसा विवेक या ज्ञान जो भले-बुरे, न्याय-अन्य आदि में ठीक, पूरा और स्पष्ट भेद विभाग कर सके।

नीलाज*–वि० = निर्लज्ज।

नीसरना*–पुं० = निसरना (निकलना

नुकल–पुं० [अ० नुक्ल] वह मि मेवे आदि जो भोजन के बाद पाच मुँह का स्वाद बनाने के लिए खाये जाते

नेड़ा†–पुं० [हिं० नीअर] पास का स्थ

नेतुल्ली–पुं० [हिं० नेता + उल्ली (प्रत्य वह जो नेता बनता फिरता हो पर बहु तुच्छ और नगण्य हो।

नैचुक*–स्त्री० दे० 'नैचकी'।

नैदानिक–वि० [सं०] रोगों की पह या निदान शास्त्र से संबंध रखनेवाले (पैथॉलाजिकल)

न्यग्रोध–पुं० [सं०] बड़ का पेड़। वट

न्यूनतम–पुं० १. सबसे नीचा, छो ऐसा कम अंक या परिमाण जो अ या नीचे की सीमा के रूप में निश्चि प्राप्त हो और जिसके नीचे जाने के अवकाश या विधान न हो। २. आगे वस्तु का वह मान या मूल्य जिसके उसका घटना या नीचे जाना बन्द हो और जिसमें केवल वृद्धि या बढ़ाव के अवकाश रहता है। (मिनिमम)

न्यून-पद–पुं० [सं०] साहित्य में कथन जिसमें कोई आवश्यक श पद भूल से छूट गया हो। जैसे-'आ पराक्रम में विजय की कली खिली है बदले होना चाहिए—'आपके पराक लता में......'। यह साहित्य में स सम्बन्धी दोष माना जाता है।

न्यूनांश–पुं० दे० 'अल्पांश'।

न्हान†–पुं० = नहान (स्नान)।

न्हास*–पुं० = नाश।

पंकजयोनि–पुं० [सं०] ब्रह्मा।

पंगीर†–स्त्री० [?] कीर्ति। यश। (रा

ला–स्त्री० [हिं० पाँच + तोला]
और हलकी साड़ी जो तौल में
की हो।
पुं० [सं०] ज्यामिति में वह क्षेत्र,
भुजाएँ या क्षेत्र हों। (पेन्टागन)
भुजाओंवाला।
० [सं०] पाँच मुखोंवाला।

व। महादेव। २. सिंह। शेर।
)*–स्त्री० = पंक्ति।
० [हिं० पाप ?] १. पापी।

० [सं० पार्श्व] १. निकट।
व। २. से।
*–स्त्री० = पाषाण मणि।
वा)–पुं० [हिं० पंख = पर]
विशेषतः मोर का पर जो सिर पर
लिए पहले लगाया जाता था।
अ० = पिघलना।
–स० [हिं० पाछ = पीछे +
त्य०)] किसी को पीछे डाल-
आगे बढ़ जाना। पीछे छोड़ना।
[हिं० पट = औंधा] १. औंधाया
मारकर गिराया हुआ।
० [हिं०पाटना + आस(प्रत्य०)]
पटाने की क्रिया या भाव।
पुं० [सं०पटोल] कपड़ा। वस्त्र।
० [सं० परन्तु] परंतु। लेकिन।
, [सं०] जिसमें किसी प्रकार
प्रतिबंध या शर्त लगी हो।
(कन्डिशन्ड)
[हिं० पत = प्रतिष्ठा] १.
२. लज्जा। शर्म।
० [सं० पातक] पाप।
पुं० [?] अहीरों का एक वर्ग
प्रांत के कुछ पूर्वी जिलों में कहीं-
जाता है।
० [सं० पात्र] [स्त्री० पतुकी] १. घड़ा। मटका। २. पतीला।

पत्रकारिता–स्त्री० [सं०] १. पत्रकार का कार्य या पद। २. पत्रकार होने की क्रिया या भाव। (जर्नलिज़्म)

पदाघात–पुं० [सं० पद+आघात] पैर या लात से किया जानेवाला आघात। पैर से लगाई हुई चोट।

पद्धटिका–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अन्त में जगण होता है।

पद्धर†–वि० [?] सम-तल। सपाट। (भूमि)

पद्धरि–स्त्री० = पद्धटिका (छंद)।

पन–उप० [हिं० पानी] एक उपसर्ग जो कुछ शब्दों के पहले लगकर पानी के संबंध का सूचक होता है। जैसे–पन-कपड़ा, पनघट, पन-डुब्बा आदि।

उप० [हिं० पान] एक उपसर्ग जो कुछ शब्दों के पहले लगकर पान के साथ उनका संबंध सूचित करता है। जैसे-पन-डब्बा, पन-वाड़ी आदि।

पनवारा†–पुं० = पनवार (पत्तल)।

पनियाव†–पुं० [हिं० पानी + इयाव (प्रत्य०)] कूआँ खोदते समय उसके गड्ढे में वह स्थान जहाँ पानी यथेष्ट होता है।

पयस–पुं० [सं० पयस] दूध।

परंतप–वि० [सं०] १. बहुत अधिक तप करके इन्द्रियों को वश में रखनेवाला। २. अपने ताप या तेज से शत्रुओं को कष्ट देनेवाला।

परकासना*-स० [सं० प्रकाशन] १. प्रकाश फैलाना। २. प्रकाश में या सामने लाना या रखना।

परगहा–पुं० [सं० प्रग्रहण] वास्तु-कला में एक प्रकार का साज या अलंकरण जो खंभों के ऊपर और नीचे रहता है।

परज–पुं० [सं० पराजिका] ओड़व-सम्पूर्ण या षाड़व-संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के अंतिम पहर में गाया जाता है।

परणाना*–स० = परणना (व्याहना)।

परन-साल*–स्त्री० [सं० पर्णशाला] कुटी। झोपड़ी।

परना†–पुं० दे० 'उपरना'।

अ० दे० 'पड़ना'।

परबेस*–पुं० = प्रवेश।

परवलय–पुं० [सं०] ज्यामिति में, वह अंडाकार या लंबोतरा वृत्त जो किसी कोण के अगले भाग को धरातल पर इस प्रकार रखकर घुमाने से या चलाने से बनता है कि कोण की भुजा धरातल के समानांतर हो। (पैराबोला)

परसन*–स्त्री० [सं० स्पर्श] स्पर्श करने की क्रिया या भाव। स्पर्श। छूना।

परा–वि० [सं० पर = बाद का] जो साधारण या सम स्थिति के बाद या नीचे का अथवा हलका हो। (इन्फ्रा) जैसे—परा-पीत रंग, परा-लाल किरण।

पराछित†–पुं० = प्रायश्चित्त।

परायणता–स्त्री० [सं०] किसी कार्य, निश्चय, विषय, आदि में दृढ़तापूर्वक लगे रहने की अवस्था या भाव। जैसे—कर्त्तव्य-परायणता।

परावर–पुं० [सं० पर = विद्या + वर (पति)] परा विद्या के स्वामी या परम ज्ञाता।

पराशय–वि० [सं०] १. बहुत अधिक। २. उच्च कोटि का। श्रेष्ठ।

परिक्षिप्त–वि० [सं०] १. खाई आदि से घिरा हुआ। २. चारों ओर से घिरा हुआ। जैसे—परिक्षिप्त सेना।

परिजंत*–अव्य० [सं० पर्यंत] १. पर्यंत। तक। २. पास। निकट।

परिणाम–पुं० ६. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी कार्य के साथ उससे होनेवाले फल का भी उल्लेख होता है। जैसे—मुख-चन्द्र के दर्शनों से मन का सारा संताप शान्त हो जाता है।

परिणाह–पुं० [सं०] १. परिधि। घे २. लंबाई-चौड़ाई। विस्तार।

परिपार (रि)†–स्त्री० [सं० पालि मर्यादा] मर्यादा। सीमा।

परिपालना*–स० [सं० परिपाल परिपालन, रक्षा या पोषण आदि करन

स्त्री० दे० 'परिपालन'।

परिपोषण–पुं० [सं०] १. पालन-पो करना। परवरिश करना। २. पुष्ट क

परिपोषना*–स० [सं० परिपोषण] पोषण करना। पालना।

परिभोग–पुं० [सं०] उपभोग। जैसे—देश-काल परिभोग = देश और के अनुसार खाना-पीना, पहनना, आदि।

परिवान*–पुं० = प्रमाण।

वि० = प्रामाणिक।

परिवृक्त–वि० [सं०] जिसका आ सम्मान अपेक्षाकृत कम हो।

परिष्वंग–पुं० [सं०] गले लग आलिंगन।

परिसर–वि० [स्त्री० परिसरा] हुआ। विस्तृत।

परिसिंधु–पुं० [सं०] सिन्धु नदी पार के प्रदेश अर्थात् आज-कल के चिस्तान का पुराना नाम।

परिहेलना–स० [सं० परि + हेल अवज्ञा] अनादर या तिरस्कारपूर्व हटाना। ठुकराना।

पर्णी–पुं० [सं० पर्णिन्] वृक्ष। पेड़

स्त्री० १. बेल। लता। जैसे–पीलु पर्ण अंगूर की बेल। २. अप्सराओं का एक

पर्षद्–स्त्री० दे० 'परिषद्'।

पलकी–स्त्री० दे० 'पलँगड़ी'।

पलखन–पुं० दे० 'पाकर' (वृक्ष)।

पल-भरता–स्त्री० [सं० पल + हिं० भर ता (प्रत्य०)] १. पल-भर या थोड़ी देर तक रहने या होने की अव

-भंगुरता।
[सं०] ऊनी कालीन।
[हिं० पलोटना] पलोटने
से कराना। पैर दबवाना।
[?] आक्रमण या चढ़ाई

दे० 'प्लवंग'।
–स्त्री० [सं०] आषाढ़ शुक्ल
होनेवाली एक ज्यौतिषिक
वायु की गति आदि जाँच,
विशेषतः वर्षा संबंधी भविष्य-
ती है। (देहातों में इस दिन
जिसे इल्म-शाही कहते हैं)
[सं०] वर्ण-माला में प से म
का वर्ग या समूह।
)*–पुं० दे० 'पखेव'।
[सं० पाद, प्रा० पाय, पाव =
तःकाल का उजाला। पौ।
-अ० = पनपना।
= पंगु या पंगुल।
[हिं० पच्ची] रत्नों आदि
काम। पच्ची।
१. दे० 'पाछना'। २. दे०

[हिं० पाँव] (जलाशय या
में इतना कम जल हो कि यों
चलकर पार किया जा सके।
ज'।
पुं० दे० 'पाँज'।
[सं० पांडुर] १. एक प्रकार
२. आध्यात्मिक परिभाषा में

-वि० दे० 'पायमाल'।
*–पुं० = पाकशासन (इन्द्र)।
[हिं० पाट] सबसे बड़ा।
ज०)
[हिं० पत्तल] पत्तों द्वारा
गोलाकार आधार जिस पर खाने के लिए वस्तुएँ रखते हैं। पत्तल।

पादाग्र–पुं० [सं० पाद + अग्र (भाग)] पैर का अगला भाग। पैर का पंजा।

पाधर (ा)†–वि० [?] १. प्रशस्त। लम्बा-चौड़ा। २. अनुकूल। प्रसन्न और कृपालु। ३. सरल। सीधा। (राज०)

पापनासी-वि० = पाप-नाशक।

पामरा†–पुं० दे० 'पाँवड़ा'।

पायजा†–पुं० [?] पेशाब। मूत्र।

पायमाल–वि० [फा०] [भाव० पाय-माली] १. पैरों से रौंदा या कुचला हुआ। २. नष्ट। बरबाद।

पारधी–पुं० [सं० परिधान] १. (आड़ या ओट से वार करने के कारण) बहेलिया। चिड़ीमार। २. अहेरी। शिकारी। ३. वधिक। हत्यारा।

पारीक्षणिक–पुं० [सं० परीक्षण] वह कर्मचारी जो इस बात की परीक्षा या जाँच के लिए रखा गया हो कि यह अपने काम या पद के लिए उपयुक्त है या नहीं। (प्रोबेशनर)

पाषाण मणि–पुं० [सं०] सूर्यकांत मणि।

पासक*–पुं० दे० 'पाशक'।

पाहार*–पुं० [सं० पयोधर, प्रा० पयोहर] बादल। मेघ।

पिंजक–पुं० [सं०] धुनिया। पींजा।

पिंजा†–पुं० दे० 'पींजा'।

पिछानी†–पुं० [हिं० पहचान] पहचानने-वाला।

† स्त्री० = पहचान।

पितृ-देश–पुं० [सं०] किसी की दृष्टि से, उसके पितरों या पूर्वजों के रहने का देश। वह देश जिसमें कोई अपने पूर्वजों के समय से रहता आया हो। (फादर लैंड)

पियौसार†–स्त्री० [सं० पति + शाला] विवाहिता स्त्री के लिए, उसके पति का घर; अर्थात् ससुराल।

पिसरण*–पुं० [सं० पिशुन] १. चुगल-

खोर। २. शत्रु।

पींजा†–पुं० [सं० पिंजक] रुई धुननेवाला। धुनिया।

पीलु-पर्णिका (र्णी)–स्त्री० [सं०] अंगूर की बेल।

पुंड्र–पुं० [सं०] १. रेखा। लकीर। २. उस प्राचीन देश का नाम जिसमें आज-कल पुरनियाँ, मालदह, दीनाजपुर और राजशाही के कुछ भाग हैं।

पुगाना–सं० [हिं० पुजाना] १. पूरा कराना। पुजाना। जैसे-मिति पुगाना; रुपया पुगाना। २. किसी चीज में भरना।

पुछना–अ० [हिं० पोछना का अ०] पोंछा जाना।

पुछाना†–सं० [हिं० पूछना] निर्णय करने के लिए किसी के सामने किसी से पूछना। पुछवाना। जैसे—चलिए, पंडित जी से पुछा दें।

पुट-पाक–पुं० [सं०] वैद्यक में, वह प्रक्रिया जिसमें ओषधियाँ आदि एक गोले के रूप में बनाकर फूँकी जाती हैं।

पुट-बद्ध–वि० [सं०] जो किसी पुट या संपुट के अन्दर बन्द हो। पुटित।
पुं० एक प्रकार का जूता जो घुटनों तक पहुँचता था और जो बौद्ध काल में प्रायः यवन पहनते थे।

पुटित–वि० [सं०] १. पुटी के रूप में बनाया या लाया हुआ। २. (ओषध) जो पुटी के रूप में किसी आवरण के अन्दर हो। पुट-बद्ध। (कैपस्यूल्ड)

पुटी–स्त्री० ४. खाने के लिए गोली या टिकिया के रूप में, वह ओषध जो किसी ऐसे आवरण में बन्द हो जो औषध के साथ खाया जा सके। (कैप्स्यूल)

पुनरावलोकन–पुं० [सं०] [वि० पुनरावलोकित] १. देखी हुई चीज को फिर से देखना। २. किए हुए काम, निश्चय आदि को, सुधार के विचार से फिर से देखना या दोहराना। (रिवीज़न) पुनरीक्षा [

पुनवासी†–स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

पुनश्च–क्रि० वि० [सं०] १. इसके फिर। २. दूसरी बार। दोबारा।
पुं० एक पद जिसका प्रयोग पत्र लिखकर समाप्त कर लेने पर बाद में आई हुई बात नीचे लिखने से पहले, है। (नोटा बेने)

पुरहूत*–पुं० = पुरुहूत (इन्द्र)।

पुरउना*–स० दे० 'पुरवना'।

पुराचीन–वि० = प्राचीन (पुराना)।

पुरिष*–पुं० दे० 'पुरीष'।

पुरैना*–स० [हिं० पूरा] पूरा
पूर्ण करना।
स्त्री० दे० 'पुरइन'।

पुलकबंध–पुं० [सं०] चुनरी या नाम का कपड़ा।

पुलकाना*–स० [सं० पुलक + (प्रत्य०)] प्रेम या हर्ष आदि ह्लित करना। पुलकित करना।
अ० पुलकित या प्रफुल्लित होना।

पुलना†–अ० [सं० पलायन] भा (राज०)

पूजोपहार–पुं० [सं० पूजा + उ पूजा के समय सामने रखा जानेवाला या भेंट। चढ़ावा।

पूज्यवर–वि० [सं०] आदरणीय और बड़ा। जैसे—पूज्यवर मालवीय।

पून्यौं†–स्त्री० = पूर्णिमा (तिथि)।

पूरिका–स्त्री० [सं०] ओढ़ने की चादर।

पूर्व-पीठिका–स्त्री० [सं०] वह अ रूप या स्थिति जिसके आगे कोई स्थिति या रूप खड़ा हो। भूमि (बैकग्राउंड)

पूर्व-पुरुष–पुं० [सं०] बाप-दादा। (फोर-फादर्स) विशेष दे० 'पूर्वज' २.

[सं०] १. युद्ध । लड़ाई ।
ौज । ३. सेना का एक प्राचीन
ों । ४. सेना की बड़ी टुकड़ी ।
[सं० प्रेक्षण] वह जो कुछ
देखा जाय । दृश्य ।
[सं० परिधान] पहनना ।

[सं० पेशस् + कार
] वह जो कसीदा काढ़ने का
हो । (वैदिक)
[हिं० पैना] किसी धारवाली
ड़कर तेज करना ।
किसी चीज पर) दाँत
कोई चीज पाने के लिए उसपर
ा । दाँत गड़ाना ।
वि० = पहले ।
[सं० पर] उस ओर या उस
रला (व्रज०) ।
० [?] कमल (राज०) !
पुं० [सं०] [वि० पौनः
ोई काम या बात पुनः-पुनः या
ने की अवस्था या भाव ।
० [देश०] एक प्रकार का
तेज पीला रंग जो उस खास
ट्टी से तैयार होता है जिसपर
की पत्तियाँ खिलाकर कुछ दिनों
धी जाती है और जो उसके मूत्र
ो जाती है ।
० [सं०] जिसका प्रकरण चल
जिसका उल्लेख या वर्णन
।
[सं०] १. जिसने प्रस्थान
२. जो चल पड़ा हो । चलता
मरा हुआ । मृत । ४. छूटा
युक्त ।
दी-पुं० [सं० प्रगतिवादिन्]
का समर्थक, पोषक अथवा
। प्रगतिवाद के सिद्धांतों को
माननेवाला ।

प्रगुण–वि० [सं०] १. गुणवान् । गुणी । २. चतुर । होशियार । ३. अच्छा और लाभदायक । शुभ ।

प्रजालना*–स० दे० 'प्रजारना' ।

प्रतप्त–वि० [सं०] १. अच्छी तरह या बहुत अधिक तपा हुआ । २. जिसे बहुत अधिक कष्ट पहुँचा हो ।

प्रतिकारना*–स० [सं० प्रतिकार] प्रतिकार करना । दूर करना ।

प्रतिगामिता–स्त्री० [सं०] प्रतिगामी होने या विरुद्ध चलने की अवस्था या भाव । (रि-ऐक्शनिज्म)

प्रतिगामी–पुं० [सं० प्रतिगामिन्] [भाव० प्रतिगामिता] विरुद्ध या उलटा चलनेवाला । साधारणतः लोक, समाज, प्रगति, काल आदि के विरुद्ध या विपरीत चलनेवाला । (रि-ऐक्शनरी)

प्रतिध्वान–पुं० दे० 'प्रतिध्वनि' ।

प्रति-पक्ष–पुं० [सं०] [वि० प्रति-पक्षी] सामने का या विरोध पक्ष ।

प्रतिपच्छी*–पुं० = प्रतिपक्षी ।

प्रति-पौतिक–वि० [सं०] जो पूति (सड़ायँध आदि) का नाश करनेवाला हो । पूती का मारक । (एन्टी-सेप्टिक्)

प्रतीप–क्रि० वि० विपरीत अवस्था या रूप में । उलटे ।

प्रतीयमानतः–क्रि० वि० [सं०] (प्रतीति या ज्ञान के लिए) प्रतीयमान के रूप में । ऊपर या बाहर से देखने में । (एपरेन्ट्ली)

प्रत्यह–क्रि० वि० [सं०] प्रतिदिन । नित्य ।

प्रत्यूह–पुं० [सं०] विघ्न । बाधा ।

प्रबंधी–वि० [सं० प्रबंध] प्रबंध करनेवाला । प्रबंधक । (मैनेजिंग) यौ० के आरंभ में; जैसे प्रबंधी संचालक ।

प्रबंधी संचालक–पुं० [हिं० + सं०] किसी बड़े कारबार के संचालकों में से वह व्यक्ति जिसपर उसके प्रबंध आदि का भी

सब भार हो। (मैनेजिंग डाइरेक्टर)

प्रभत*–स्त्री० [सं० प्रभुता] बड़प्पन। बड़ाई।

प्रमाणी–पुं० [सं० प्रमाणिन्] चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, रगण और तब लघु, गुरु (ज, र, ल, ग,) होते हैं। नग-स्वरूपिणी।

प्रयोजनवती (लक्षणा)–स्त्री० [सं०] साहित्य में लक्षणा का वह प्रकार जिसमें मुख्य अर्थ का बोध होने पर किसी विशेष प्रयोजन के लिए मुख्य अर्थ से संबद्ध किसी दूसरे अर्थ का ज्ञान कराया जाता है। जैसे—'वह गाँव पानी में बसा है' इसलिए कहा जाता है कि वह गाँव किसी नदी या बड़ी झील के किनारे, या कई ओर पानी से घिरा होता है। यह 'शुद्धा' और 'गौणी' दो प्रकार की होती है।

प्रवान–वि० [सं० प्रमाण या प्रामाणिक] १. प्रामाणिक। ठीक। २. जो पूरा या सत्य सिद्ध हुआ हो।

प्रवेग–पुं० [सं०] १. बहुत तीव्र या प्रबल वेग। तेजी। २. विज्ञान में वायु, शब्द आदि की गति जिसकी तीव्रता आदि की जाँच होती या जिसका मान स्थिर किया जाता है। (वेलॉसिटी)

प्रश्न-चिह्न–पुं० [सं०] एक प्रकार का विराम-चिह्न जो प्रश्न का सूचक होता और प्रश्नात्मक वाक्यों के अन्त में लगता है। (नोट ऑफ इन्टरोगेशन) जैसे-क्या वह चला गया ? में का '?'।

प्रसाधिनी–स्त्री० [सं०] सिर के बाल झाड़ने की कंघी।

प्रसाव–पुं० [सं० प्रस्ताव] १. कृपा। दया। २. दे० 'प्रस्ताव'।

प्रसावक–वि० [सं०] [स्त्री० प्रसाविका] प्रसव करानेवाला।

प्रसिद्ध*–क्रि० वि० स्पष्ट शब्दों में। साफ-साफ।

प्रसूतालय–पुं० दे० 'प्रसूति भवन'।

प्रातिलोमिक–वि० [सं०] प्रतिलो संबंधी। प्रतिलोम का।

प्राथम्य–पुं० [सं०] प्रथम होने या जाने की अवस्था या भाव। प्रथम (प्रायोरिटी)

प्रावण्य–पुं० [सं०] 'प्रवण' होने भाव। प्रवणता।

प्रावरण–पुं० [सं०] आवरण। पर

प्राश–पुं० दे० 'प्राशन'।

प्राश्निक–वि० [सं०] १. प्रश्न-संबंधी। का। २. प्रश्न से युक्त। प्रश्नात्मक। पुं० वह जो परीक्षाओं के लिए प्रश् आदि बनाता हो। (पेपर सेटर)

प्रीणन–पुं० [सं०] प्रसन्न करना। करना।

प्रेय–वि० [सं०] १. प्रिय। प्यारा अभीष्ट। वांछित।

प्रोक्षण–पुं० [सं०] १. जल आदि के देना। छिड़कना। २. पानी का छींट

प्रोत–वि० [सं०] १. किसी के अच्छी तरह मिला हुआ। २. छिपा हुआ।

प्रोथन†–पुं० [सं० प्रोथ] १. थूथ २. जबड़ा।

प्लक्ष–पुं० [सं०] १. पाकर नाम का २. पीपल। ३. पुराणानुसार सात में से एक।

प्लवंग–पुं० [सं०] १. बन्दर। २. ३. घोड़ा। ४. नाव। ५. पाकर वृक्ष

प्लावित–वि० [सं०] १. जिसपर हुआ हो। २. जिसपर जल या तरल प अधिक मात्रा में आ पड़ा हो। तरह डूबा या भींगा हुआ।

फटकनी–स्त्री० [हिं० फटकना] फटकने का सूप।

फरहार†–पुं० = फलाहार।

ुं० दे० 'सट्टा' २।
अ० [हिं० फाल = डग]
ल्दी चलना। २. कूदना।

दे० 'फिटकार'।
० = फेफड़ा। (राज०)
-स्त्री० [हिं० फिरना = चक्कर
१. घूमने या चक्कर लगाने की
व। २. दे० 'फिरकी'।
टेहरा)†-पुं० [हिं० फूटना]
र आदि का वह खिला हुआ
हैं भुनने पर प्राप्त होता है।
टहरा फूटना = खूब जोरों की
ठहाका लगाना। (व्यंग्य)
[हिं० फुरना] फुरने की
ाव।
-पुं० दे० 'फरमान'।
= फुर (सत्य)।
० [हिं० फूँक] १. आग में
आग लगाकर जलाना। जैसे—
घर फूकना, मुरदा फूकना। २.
ेष प्रक्रिया से, कुछ तैयार करने
कोई चीज आग में डालना।
ारत के लिए चूना फूकना,
काम के लिए सोना फूकना।
खर्च करना। धन उड़ाना या

फूकना तापना=व्यर्थ खर्च करके
करना।
फूँकना'।
[?] अस्थि। हड्डी। (राज०)
० [सं० वंक] वक्र। टेढ़ा।
विकट।
ुं० २ व्रज में गाया जानेवाला
र का लोक-गीत।
-पुं० दे० 'बँसवाड़ी'।
सूला)†-पुं० दे० 'बसूला'।
ी-स्त्री० [फा० बख्शिश] १.

पुरस्कार। इनाम। २. दान।

बगतर†-पुं० दे० 'बकतर'।

बगेदना†-स० [हिं० बगदना] १. धक्का देकर गिराना या हटाना। २. विचलित करना।

बग्ग*-स्त्री० = बाग (घोड़े की लगाम)।

बघंबर-पुं० दे० 'बाघंबर'।

बचती-स्त्री० [हिं० बचत] उपयोग, व्यय आदि होने पर बचनेवाली चीज या धन। उद्वर्त्त। (सरप्लस)

वि० जिसमें बचत हो। जो उपयोग, व्यय आदि के बाद बचा हो। (सरप्लस)

बचा†-पुं० [हिं० बच्चा] बालक। लड़का।

बछा†-पुं० [सं० वत्स] १. बच्चा। २. बछड़ा।

बजारी†-वि० [हिं० बाजना = बोलना] बहुत बढ़-बढ़कर और व्यर्थ बोलनेवाला। लबार।

वि० दे० 'बाजारी'।

बझाऊ†-वि० [हिं० बझाना] बझाने या फँसाने वाला।

पुं० दे० 'बझाव'।

बझाव-पुं० [हिं० बझना] १. बझने की क्रिया या भाव। २. बझाने या फँसानेवाली चीज। जाल।

बटा†-पुं० [हिं० बाँटना] अंश। भाग। हिस्सा।

बटवा†-पुं० = बटुआ।

बटु*-पुं० = वटु (ब्रह्मचारी)।

बढ़ा-बढ़ी-स्त्री० [हिं० बढ़ना] १. प्रतिद्वंदिता। होड़। २. आवश्यकता से अधिक आगे बढ़ते जाना। सीमा या मर्यादा का उल्लंघन।

बढ़ियारा†-स्त्री० [हिं० बढ़ना] नदियों आदि से आनेवाली पानी की बाढ़।

बढ़ोतरी-स्त्री० [हिं० बढ़ना] १. बढ़ने की क्रिया या भाव। बढ़ती। वृद्धि। २. व्यापार आदि से होनेवाला आर्थिक लाभ।

नफा।

बतरावनि*–स्त्री० [हिं० बतराना] १. बात-चीत। वार्तालाप। २. बात-चीत करने का ढंग या भाव।

बनज*–पुं० [सं० वनज] कमल।

बन-बिलाव–पुं० [हिं० बन + बिलाव = बिल्ली] बिल्ली की जाति का एक प्रकार का जंगली जानवर। स्याहगोश।

बन-माल(ा)–स्त्री० [सं० वनमाला] १. जंगली फूलों की माला। २. कमल, कुन्द और मन्दार के फूलों तथा तुलसी की पत्तियों की वह लंबी माला जो पैरों तक लटकती हो।

बब्बर†–पुं० १. दे० 'बब्र'। २. दे० 'बर्बर'।

बम-बारी–स्त्री० [हिं० बम + फा० बारी = वर्षा] शत्रुओं पर बम के गोले फेंकने या बरसाने की क्रिया या भाव। बम-वर्षा।

बम-वर्षा–स्त्री० [हिं० बम + सं० वर्षा] शत्रुओं पर बम के गोले फेंकना या बरसाना। बम-बारी।

बयस*–पुं० = वैश्य (जाति या वर्ण)। †पुं० = वयस् (अवस्था या उमर)।

बरगी–पुं० [फा० बारगीर] १. बोझ ढोनेवाला मनुष्य। २. मुगल राज्य में वे सिपाही जो घोड़ों पर सवार होकर शासन व्यवस्था देखते थे।

बरदी†–स्त्री० [हिं० बरधा = बैल] बैलों पर माल लादकर दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या व्यवसाय। टाँड़ा।

बरन–अव्य० [सं० वर्ण] तरह। प्रकार। अव्य० = वरन् (बल्कि)।

बरनाबरन*–वि० [सं० वर्ण] १. अनेक वर्णों या रंगों के। २. तरह-तरह के। अनेक प्रकार के।

बरवै–पुं० [देश०] एक छंद जिसके विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरणों में बारह-बारह और सम अर्थात् दूसरे और चौथे चरणों में सात मात्राएँ होती हैं। इन्हीं अन्तिम सात मात्राओं में अन्त के चार मात्राओं का जगण के रूप में हो आवश्यक है।

बरष*–पुं० = वर्ष।

बरिआई†–क्रि० वि० [सं० बल] बलपूर्वक। जबरदस्ती। २. अपने आप न रोक सकने पर। बरबस।

बरेत–स्त्री० [सं० वरत्रा] मथानी की रस्स पुं० दे० 'बरेता'।

बरेता–पुं० [सं० वरत्रा] [स्त्री० अल्प० बरेती] कूएँ में मोट खींचने का मो रस्सा।

बर्ण्य*–वि० = वर्ण्य।

बलक्ष–वि० [सं०] १. सफेद। २. उज्ज्व

बलहारा–वि० [सं० बल + हिं० हारना] अशक्त। कमजोर।

बलिदानी–वि० [हिं० बलिदान] बलिदान-संबंधी। बलिदान का। २. ब दान करनेवाला। बलि चढ़ानेवाला।

बसंता†–पुं० [सं० वास=निवास] बसने या रहनेवाला। निवासी।

बसह–पुं० [सं० वसह] बैल।

बहक–स्त्री० [हिं० बहकना] १. बह की क्रिया या भाव। २. बिना समझे- या अटकल-पच्चू कही हुई बहुत बड़ी भ्र पूर्ण और हास्यास्पद बात। (हाउलर) जैसे-(क) मथुरा नगरी केकई की दा मन्थरा के नाम पर बसी है; (ख) कोलम्बस लंका या सिंहल का राजा था; उसने अपने नाम पर वहाँ कोलम्बो न बसाया था।

बहलवान–पुं० [हिं० बहल या बहली + वान (प्रत्य०)] बहल या बहल हाँकनेवाला।

बहिर्जीवन–पुं० [सं०] ऊपरी, बाहरी या लौकिक जीवन अर्थात् आचरण व्यवहार आदि।

स*-पुं० = वाग्विलास ।
०[सं० वि + चयन] १. चुनना।
२. कर, चन्दा आदि वसूल
ाहना ।
० [अ० बंअ्रज, हिं० बाज]
े] कोई-कोई । कुछ विशिष्ट ।
ं० [सं० वाद्य] बाजा ।
-स्त्री० [सं०] १. बाणों या
अवली या पंक्ति। २. शत्रुओं
ी बाणों या तीरों की बौछार।
० [हिं० बाधा] बाधा । विघ्न ।
वर्धन] १. विस्तृत करना ।
२. आगे करना । फैलाना ।

ुं० दे० 'बानैत' ।
० [हिं० बाना] १. वेष ।
सुन्दर बनावट । ३. सुन्दर और
र ।
ि० [सं० विवश] १. बे-बस ।
निराश्र ।
*-स्त्री० = वार-वधू (वेश्या)।
*-पुं० = वारिवाह (बादल)।
-स्त्री० = बालधि (दुम)।
-पुं० = वल्लभ। (राज०)
ुं० = वासव (इन्द्र)।
[हिं० बाहना] १. बाहने की
भाव। २. खेत की जुताई।
० वाह] जल का प्रवाह। बहाव।
स० [सं० वन्दन] १. वन्दना
२. प्रशंसा करना।
-पुं० [सं०] भाषा-विज्ञान
विज्ञान में वह बौद्धिक या मान-
या जिससे कोई शब्द या बात
अभिधा शक्ति से निकलनेवाले)
अर्थ से भिन्न कोई विशेष अर्थ
ग्रहण किया जाता है। 'संकेत-
विरुद्धार्थक।
-पुं० [सं०] बिंब या कुँदरू की
तरह लाल रंग के होंठ। (सौंदर्य-सूचक)

बिआना†-स० [हिं० बि = दो] स्त्री का संतान प्रसव करना।

बिकाना*-स० खरीदना। मोल लेना।

बिग†-पुं० [सं० वृक] भेड़िया।

बिगसाना*-स० [सं० विकासन] १. विकसित करना। २. प्रसन्न करना।

बिघार†-पुं० [हिं० बाघ] बाघ।

बिचराना*-स० [हिं० विचरना का स०] विचरण करना। इधर-उधर घूमना।

बिचलाना†-स० = विचलित करना।

बिचुकना†-वि० [हिं० बिचकना] 'बिचकना'।

बिछड़न-स्त्री० [हिं० बिछड़ना] बिछड़ने या अलग होने की क्रिया, अवस्था या भाव। वियोग।

बिजोरी†-स्त्री० दे० 'बिजौरा' (नीबू)।

बिटौरा†-वि० [?] बहुत बड़ा या भारी। पुं० राशि। ढेर।

बिड़†-वि० [सं० विट] १. दुष्ट। पाजी। २. नीच।

बिदा-वि० [अ० बिदाअ] जो कहीं से चल या प्रस्थान कर रहा हो।

बिदाई-स्त्री० [हिं० बिदा] १. कहीं से बिदा होने या चलने की अवस्था या भाव। प्रस्थान। २. वह धन जो किसी को बिदा होने के समय दिया जाता है। ३. किसी के बिदा होने या प्रस्थान करने के समय लोगों का उससे मिलना और उसके सकुशल रहने की कामना करना। (फेयरवेल्)

बिनहना*-अ० [सं० विनष्ट] नष्ट करना। बरबाद करना।

बिपत (द)*-स्त्री० [सं० विपत्ति] बहुत बड़ा कष्ट या संकट। आफत। **मुहा०-बिपति पारना** = संकट की स्थिति में डालना। आफत ढाना। ***बिपति भरना** = विपत्ति भोगते हुए दिन बिताना।

बियन*-पुं० [सं० विजन] एकान्त स्थान। निराली जगह।

बिरत*-वि० = विरत।

स्त्री० = वृत्ति।

बिरहागि*-स्त्री० [सं० विरह + हिं० आग] प्रिय के विरह के कारण होनेवाला बहुत अधिक कष्ट। विरह-रूपी अग्नि।

बिरहुली-स्त्री० [हिं० बिरहुला = साँप] साँप के काटने पर उसका विष उतारने का मंत्र।

बिराना-वि० [फा० बेगानः] [स्त्री० बिरानी] दूसरे का। पराया।

बिरोगी-वि० [हिं० बिरोग] [स्त्री० बिरोगिन, बिरोगिनी] वियोगी। विरही।

बिर्छ*-पुं० = वृक्ष (पेड़)।

बिलंदना†-अ० [?] १. नष्ट होना। २. हारना।

स० १. नष्ट करना। २. हराना।

बिलँबाना*-स० [सं० विलंब] विलंब कराना। देर कराना।

अ० १. विलंब करना। देर करना।

बिलमाना-स० [हिं० बिलमना] १. बिलंब या देर कराना। २. किसी को अपने प्रेम में अनुरक्त करके अपने पास रोक रखना।

बिलवारी-स्त्री० [?] बुन्देलखंड में कुआँर कातिक में गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक गीत।

बिलसाना*-स० [सं० विलसन] १. सुशोभित करना। २. प्रसन्न करना। ३. भोग या उपभोग कराना।

अ० दे० 'बिलसना'।

बिलावल-पुं० [देश०] षाड़व-संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है।

बिलुलित*-वि० [सं० वि + लुलन] लहराता या हिलता हुआ।

बिसुवा*-स्त्री० = वेश्या।

बिहाग-पुं० [?] ओड़व-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर गाया जाता है।

बिहित*-वि० = विहित (ठीक और मान्य

बीटिका-स्त्री० = वीटिका (पान बीड़ा)।

बुकना†-स० [सं० भक्षण हिं० भखन भोजन करना। खाना। (राज०)

बुद्धि-पर-वि० [सं०] समझ में योग्य।

*वि० [हिं० बुद्धि + पर = परे] बुद्धि परे या बाहर। जो समझ में न आ स

बुबुक†-स्त्री० [अनु०] १. जोर से की क्रिया। रुलाई। २. दे० 'भभक'।

बुभुक्षा-वि० [सं०] क्षुधित। भूखा।

बुर्द-वि० [फा०] १. डूबा हुआ। जो नष्ट-प्राय हो चुका हो। बहुत कुछ न

मुहा०-(शतरंज की) बाजी होना=ऐसी अवस्था होना कि किसी प केवल बादशाह बच जाय, बाकी सब मो मर जायँ। (यह आधी मात या हार के सम मानी जाती है)

३.कहीं से मुफ्त में मिलनेवाला (माल)

बुसना†-अ० [हिं० बासी] (ख पदार्थ का) बासी होने के कारण बदबू होना। जैसे-यह कढ़ी तो बुस गई है।

बूठना†-अ० = बरसना।

बूड़ना-अ० [हिं० डूबना का पु० रूप १. जल में डूबना। २. किसी बात या वि में निमग्न या लीन होना।

बूर†-पुं० [?] वर्षा की झड़ी। (राज

बेकूप (फ)*-पुं० = बेवकूफ (मूर्ख)।

बेचक*-पुं० [हिं० बेचना] बेचनेवाला

बेदन*-स्त्री० वेदना (कष्ट)।

बे-मौत-क्रि० वि० [हिं० बे = बिना + मौत] बिना मौत या मृत्यु आये।

मुहा०-बे-मौत मरना = बहुत संकट पड़ना।

बेल*-स्त्री० [सं० वेला] १. तरंग। लहर।

। तट ।
फूल । बेला ।
[सं० वयस्] अवस्था । उमर ।
दे० 'बीहड़' (विकट) ।
अ०, स० = बौराना । (पागल
रना)
[सं० वंश = बाँस या बैसना =
औजारों, शस्त्रों आदि में लगा
ड़ी का दस्ता । बेंट । मूठ ।

[सं० उदर] पेट ।
३. ऐसा काम करना जिसका
चलकर दिखाई दे ।
[सं० वपन, हिं० बोना का
] उत्पन्न करना । पैदा करना ।
-पुं० १. दे० 'व्यवहरिया' । २.
व' (जाति) ।
ी० [देश०] जुलाहों का एक
प्रायः कंघी के आकार का होता
ने के बीज में रहता है ।
-पुं० [सं०] १. गंगा नदी ।
का जल । गंगा-जल ।
-स्त्री० [सं०] हठ-योग के
सुषुम्ना के अंतर्गत वह नाड़ी
होकर कुंडलिनी ब्रह्म-रंध्र तक
है ।
-स्त्री० [सं०] १. ब्रह्मा की पत्नी ।
ती ।
पुं० = व्रज ।
(जिन)*-पुं० [सं० वृजनं]
। २. कष्ट । दुःख । ३. सांसारिक
में लीन रहने के कारण होनेवाला कष्ट ।
†-स्त्री० [हिं० भाँड़] भाँड़ों
कों की-सी बात-चीत, आचरण
र । भाँड़पन ।
वि० [सं० भांडहर] चोरों की
-छिपकर । चोरी से ।
स्त्री० [सं० भाँड] १. मिट्टी के छोटे-छोटे गोल बरतन जिनमें दिवाली के दिन लोग लावा, बतासे आदि भरते हैं । २. सजावट के लिए भरा हुआ वह भद्दा सामान या बेल-बूटे आदि जो आवश्यकता से अधिक हों ।

भँड़ेहरी-स्त्री० [हिं० भाँड़ + हरी (प्रत्य०)] भाँड़ों का काम । भाँड़पन ।

वि० भाड़ों का-सा ।

भंभा-भोरी†-पुं० [अनु०] बच्चों का एक प्रकार का खेल । (राज०)

भँभूरा†-पुं० [हिं० बगूला का पु० रूप] चक्रवात । बगूला ।

भक्षिणी-स्त्री० [सं०] भक्षण करने या खा जानेवाली ।

भट-कटैया-स्त्री० [सं० कंटकारी] एक प्रकार का छोटा कँटीला पौधा जिसकी जड़ और पत्तियाँ दवा के काम आती हैं ।

भड़ंग-पुं० [अनु०] [वि०, भाव० भड़ंगी] १. दिखावे की झूठी बात । आडंबर । २. भाँड़पन ।

भड़ंगी-स्त्री० [हिं० भड़ंग + ई (प्रत्य०)] भड़ंग का भाव । भाँड़पन ।

वि० दिखावा करनेवाला । आडंबर रचनेवाला ।

भदेश†-पुं० [हिं० देश का अनु०] अर्द्ध सभ्य या गँवार आदमियों की बस्ती या प्रदेश ।

वि० १. गँवारू । २. भद्दा । भोंदा ।

भद्द-स्त्री० [हिं० भद्दा] तिरस्कृत या तुच्छ ठहरानेवाली बात । जैसे-यहाँ उनकी बहुत भद्द हुई ।

भर्ग-पुं० [सं० भर्गस्] १. दीप्ति । चमक । २. वैभव ।

भल*-वि० = भला (अच्छा) ।

†क्रि० वि० = भली भाँति ।

भवाँ†-स्त्री० [हिं० भवना] चक्कर । फेरी ।

भविष्णु-वि० [सं०] [भाव० भविष्णुता] जिसमें आगे चलकर बहुत अच्छे

होने के लक्षण हों। होनहार।

भाकर–पुं॰ [सं॰] सूर्य।

भाखर†–पुं॰ [?] पर्वत। पहाड़।

भाग-त्याग–पुं॰ दे॰ 'जहद्‌जहल्लक्षणा'।

भागनेय–पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ भागनेयी] बहन का लड़का। भान्जा।

भागवान–पुं॰ = भाग्यवान।

भागाई–वि॰ [सं॰] १. भाग या अंश पाने का अधिकारी। हिस्सेदार। २. जिसके भाग या विभाग होने को हों या हो सकें। भाज्य। विभाज्य। (डिविज़िबुल)

भागू†–पुं॰ दे॰ 'भग्गू' या 'भगोड़ा'।

भाजना†–अ॰ [सं॰ व्रजन] भागना।

†स॰ [सं॰ भर्जन] भूनना।

*स॰ [सं॰ भाजन] खंड या टुकड़े करना। विभाग करना।

स॰ [सं॰ भँजन] १. तह करना या लगाना। २. दे॰ 'भाँजना'।

भाटी†–स्त्री॰ दे॰ 'भाटा'।

भाठना※–स॰ [?] समाप्त करना। खतम करना। न रहने देना।

भाड़वाड़ी–पुं॰ [?] एक प्रकार का घोड़ा।

भादों–पुं॰ [सं॰ भाद्रपद] सावन और कुँवार के बीच का महीना।

भाद्रपद–पुं॰ [सं॰] भादों नाम का महीना।

भाद्रपदा–स्त्री॰ [सं॰] चार तारों का एक पुंज या नक्षत्र जो दो भागों (पूर्वा और उत्तरा) में विभक्त है। इसका पहला अंश कुंभ राशि में और दूसरा मीन राशि में है।

भामिनी–स्त्री॰ [सं॰] औरत। स्त्री।

भारा†–पुं॰ [हिं॰ भार] बहँगी, जिसपर बोझ ढोते हैं।

†वि॰ हिं॰ 'भारी' का पु॰ रूप। (क्व॰)

भाव-चित्र–पुं॰ [सं॰] वह चित्र जो विशेषतः कोई मानसिक भाव प्रकट करने के उद्देश्य से बनाया गया हो।

भाव-भंगी–स्त्री॰ [सं॰ भाव + हिं॰ भं
= भंगिमा] मन का भाव और उसे प्रव
करनेवाला अंग-निवेश या अंदाज।

भावात्मक–वि॰ [सं॰] १. जिस
किसी प्रकार का मानसिक भाव भी हो
२. जिसमें निश्चित रूप से किसी बात
होने की (अर्थात् भाव की) सूच
मिलती हो। जिसमें किसी प्रकार
अभाव न हो। ३. दे॰ 'सहिक'।

भीख–स्त्री॰ [सं॰ भिक्षा] १. बहुत
दीनतापूर्वक विशेषतः खाने-पहनने के लि
किसी से कुछ माँगने की क्रिया या भा
भिक्षा। २. इस प्रकार माँगने पर मि
हुई चीज। भिक्षा।

मुहा॰–भीख मानकर लेना = बहुत
दीन भाव से और कृतज्ञतापूर्वक किसी
दी हुई कोई चीज लेना।

भीचना–स॰ दे॰ 'भींचना'।

भीजना–अ॰ [हिं॰ भीगना] १. भीग
आर्द्र होना। २. अधिक भारी
गंभीर होना।

भीत–वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ भीत
डरा हुआ।

भुजायन–पुं॰ [सं॰ भुजा]
भुजाओं के रूप में अपने कुछ अंग श
के बाहर निकालना। २. किसी पदार्थ
अपना कोई गुण, तत्त्व आदि उक्त प्रव
से बाहर निकालकर आस-पास या चा
ओर फैलाना। (रेडिएशन) जैसे—ता
विद्युत् या शब्द की तरंगों अथवा चन्द्रम
सूर्य आदि की किरणों का भुजायन।

भुनाई–स्त्री॰ [हिं॰ भूनना] भूनने
क्रिया, भाव या मजदूरी।

भुरज†–पुं॰ = बुर्ज (राज॰)।

भुवि*–स्त्री॰ = भूमि।

भुसल (सिल)*–पुं॰ दे॰ 'भोंसला'।

भूतपाल–पुं॰ [सं॰] १. विष्णु। २
शिव। महादेव।

ी० = भूपता ।
[सं० भूमन्] सर्वव्यापी पर-
परमात्मा ।
ी० [सं०] [वि० भौमितिक]
वह अंश या विभाग जिसमें किसी
रातल, भुजाओं, कोणों आदि की
का विचार होता है। रेखागणित ।
(जिऑमेट्री)

त्व–पुं० [सं०] भू स्वामी होने
। जमीन की मिलकियत ।

)*–पुं० = भेद (रहस्य) ।

स० [हिं० भिड़ाना] (द्वार
बंद करना ।

धसान–स्त्री० [हिं० भेड़ +
जिस प्रकार एक भेड़ के किसी
ने पर बाकी सब भेड़ें भी उसी
पड़ती हैं; उसी प्रकार औरों के
त से लोगों के बिना सोचे-समझे
ने की क्रिया या प्रवृत्ति ।

त्री० [सं०] १. भेद का भाव ।
'भेद' ।

-स० [?] इकट्ठा करना । (राज०)

ुं० [?] समूह । झुंड । (राज०)

-पुं० [देश०] नागपुर के पुराने
जाओं का अल्ल ।

वि० [?] १. युक्त । सहित ।
या हुआ । भीगा हुआ ।

–पुं० [सं०] शेष नाग ।

ज–पुं० दे० 'भोगराज' ।

० [हिं० भोट + ई (प्रत्य०)]
भूटान देश का ।

० [हिं० भोला का पु० रूप]
-सादा । भोला । २. असावधान ।

-पुं० [हिं० भूल] धोखा । भुलावा ।

क्रि० वि० [सं० भ्रम या हिं०
भूलकर भी (अर्थात् कभी नहीं) ।

-वि० दे० 'भौंडा' ।

क–वि० [सं० भूमिति] भूमिति
या ज्यामिति से संबंध रखनेवाला । भूमिति
का । (जिआमेट्रिकल)

भ्रमद–वि० [सं० भ्रम + द (प्रत्य०)]
[स्त्री भ्रमदा] भ्रम उत्पन्न करनेवाला ।
धोखे में डालनेवाला ।

भ्रांतिमान्–पुं० [सं०] भ्रांति नामक
अलंकार का दूसरा नाम । विशेष दे०
'भ्रांति' ६ ।

मँ*–सर्व० [सं० मम] मैं ।

मँजीरा–पुं० [सं० मंजीर] काँसे, पीतल
आदि की छोटी कटोरियों की जोड़ी जिससे
संगीत में ताल देते हैं । जोड़ी ।

मंजु-मालिनी–स्त्री० [सं०] मालिनी
नामक छन्द का दूसरा नाम ।

मँझरिया*–क्रि० वि० [सं० मध्य, पु०
हिं० माँझ] बीच में । मध्य में ।

मंडान–स्त्री० [हिं० मंडना] १. मंडित
करने की क्रिया या भाव । २. आयोजन ।
प्रबंध । इन्तजाम ।

मुहा०–मंडान बाँधना = आयोजन या
प्रबंध करना ।

मंदाक्रांता–स्त्री० [सं०] चार चरणों का
एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में
मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु
वर्ण (म, भ, न, त, त, ग, ग) होते हैं ।

मंद्र–पुं० संगीत में तीन सप्तकों में से पहला
और बीचवाले या मध्य सप्तक से नीचे-
वाला सप्तक ।

मख-पाल–पुं० [सं०] यज्ञ की रक्षा
करनेवाला । यज्ञ-रक्षक ।

मग्घा†–पुं० = मघा (नक्षत्र) ।

मजेजदार†–वि० दे० 'मजेजवंत' ।

मटकी–स्त्री० [हिं मटकना] १. मटकने
की क्रिया या भाव । मटक । २. आँखें
मटकाकर किया जानेवाला इशारा । संकेत ।

मुहा०–मटकी मारना = आँखों से
इशारा करना ।

मड़ा†–पुं० दे० 'माँड़ा' ।

होने के लक्षण हों। होनहार।

भाकर–पुं० [सं०] सूर्य।

भाखर†–पुं० [?] पर्वत। पहाड़।

भाग-त्याग–पुं० दे० 'जहद्जहल्लक्षणा'।

भागनेय–पुं० [सं०] [स्त्री० भागनेयी] बहन का लड़का। भानजा।

भागवान–पुं० = भाग्यवान।

भागाई–वि० [सं०] १. भाग या अंश पाने का अधिकारी। हिस्सेदार। २. जिसके भाग या विभाग होने को हों या हो सकें। भाज्य। विभाज्य। (डिविज़िबुल)

भागू†–पुं० दे० 'भग्गू' या 'भगोड़ा'।

भाजना†–अ० [सं० व्रजन] भागना।

†स० [सं० भर्जन] भूनना।

*स० [सं० भाजन] खंड या टुकड़े करना। विभाग करना।

स० [सं० भँजन] १. तह करना या लगाना। २. दे० 'भाँजना'।

भाटी†–स्त्री० दे० 'भाटा'।

भाठना⊛–स० [?] समाप्त करना। खतम करना। न रहने देना।

भाड़वाड़ी–पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

भादों–पुं० [सं० भाद्रपद] सावन और कुँवार के बीच का महीना।

भाद्रपद–पुं० [सं०] भादों नाम का महीना।

भाद्रपदा–स्त्री० [सं०] चार तारों का एक पुंज या नक्षत्र जो दो भागों (पूर्वा और उत्तरा) में विभक्त है। इसका पहला अंश कुंभ राशि में और दूसरा मीन राशि में है।

भामिनी–स्त्री० [सं०] औरत। स्त्री।

भारा†–पुं० [हिं० भार] बहँगी, जिसपर बोझ ढोते हैं।

†वि० हिं० 'भारी' का पु० रूप। (क्व०)

भाव-चित्र–पुं० [सं०] वह चित्र जो विशेषतः कोई मानसिक भाव प्रकट करने के उद्देश्य से बनाया गया हो।

भाव-भंगी–स्त्री० [सं० भाव + हिं० भं = भंगिमा] मन का भाव और उसे प्रक करनेवाला अंग-निवेश या अंदाज।

भावात्मक–वि० [सं०] १. जिस किसी प्रकार का मानसिक भाव भी हो २. जिसमें निश्चित रूप से किसी बात होने की (अर्थात् भाव की) सूच मिलती हो। जिसमें किसी प्रकार अभाव न हो। ३. दे० 'सहिक'।

भीख–स्त्री० [सं० भिक्षा] १. बहुत दीनतापूर्वक विशेषतः खाने-पहनने के लि किसी से कुछ माँगने की क्रिया या भा भिक्षा। २. इस प्रकार माँगने पर मि हुई चीज। भिक्षा।

मुहा०–भीख मानकर लेना = बहुत दीन भाव से और कृतज्ञतापूर्वक किसी दी हुई कोई चीज लेना।

भीचना–स० दे० 'भींचना'।

भीजना–अ० [हिं० भीगना] १. भीग आर्द्र होना। २. अधिक भारी गंभीर होना।

भीत–वि० [सं०] [स्त्री० भीत डरा हुआ।

भुजायन–पुं० [सं० भुजा] भुजाओं के रूप में अपने कुछ अंग श के बाहर निकालना। २. किसी पदार्थ अपना कोई गुण, तत्त्व आदि उक्त प्रव से बाहर निकालकर आस-पास या चा ओर फैलाना। (रेडिएशन) जैसे—ता विद्युत् या शब्द की तरंगों अथवा चन्द्रम सूर्य आदि की किरणों का भुजायन।

भुनाई–स्त्री० [हिं० भूनना] भूनने क्रिया, भाव या मजदूरी।

भुरज†–पुं० = बुर्ज (राज०)।

भुवि*–स्त्री० = भूमि।

भुसल (खिल)*–पुं० दे० 'भोंसला'।

भूतपाल–पुं० [सं०] १. विष्णु। २ शिव। महादेव।

त्री० = भूपता ।
[सं० भूमन्] सर्वव्यापी पर-
परमात्मा ।
त्री० [सं०] [वि० भौमितिक]
वह अंश या विभाग जिसमें किसी
रातल, भुजाओं, कोणों आदि की
का विचार होता है। रेखागणित ।
(जिऑमेट्री)
त्व-पुं० [सं०] भू-स्वामी होने
। जमीन की मिलकियत ।
)*-पुं० = भेद (रहस्य) ।
स० [हिं० भिड़ाना] (द्वार
बंद करना ।
धसान-स्त्री० [हिं० भेड़ +
जिस प्रकार एक भेड़ के किसी
ने पर बाकी सब भेड़ें भी उसी
पड़ती हैं; उसी प्रकार औरों के
त से लोगों के बिना सोचे-समझे
ने की क्रिया या प्रवृत्ति ।
त्री० [सं०] १. भेद का भाव ।
'भेद' ।
-स० [?] इकट्ठा करना । (राज०)
पुं० [?] समूह । झुंड । (राज०)
-पुं० [देश०] नागपुर के पुराने
जाओं का अल्ल ।
वि० [?] १. युक्त । सहित ।
या हुआ । भीगा हुआ ।
ज-पुं० [सं०] शेष नाग ।
ज-पुं० दे० 'भोगराज' ।
० [हिं० भोट + ई (प्रत्य०)]
भूटान देश का ।
वि० [हिं० भोला का पु० रूप]
-सादा । भोला । २. असावधान ।
-पुं० [हिं० भूल] धोखा । भुलावा ।
क्रि० वि० [सं० भ्रम या हिं०
भूलकर भी (अर्थात् कभी नहीं) ।
-वि० दे० 'भोंडा' ।
क-वि० [सं० भूमिति] भूमिति या ज्यामिति से संबंध रखनेवाला । भूमिति का । (जिआमेट्रिकल)

भ्रमद-वि० [सं० भ्रम + द (प्रत्य०)] [स्त्री भ्रमदा] भ्रम उत्पन्न करनेवाला । धोखे में डालनेवाला ।

भ्रांतिमान्-पुं० [सं०] भ्रांति नामक अलंकार का दूसरा नाम । विशेष दे० 'भ्रांति' ६ ।

मँ*-सर्व० [सं० मम] मैं ।

मँजीरा-पुं० [सं० मंजीर] काँसे, पीतल आदि की छोटी कटोरियों की जोड़ी जिससे संगीत में ताल देते हैं । जोड़ी ।

मंजु-मालिनी-स्त्री० [सं०] मालिनी नामक छन्द का दूसरा नाम ।

मँझरिया*-क्रि० वि० [सं० मध्य, पु० हिं० माँझ] बीच में । मध्य में ।

मंडान-स्त्री० [हिं० मंडना] १. मंडित करने की क्रिया या भाव । २. आयोजन । प्रबंध । इन्तजाम ।

मुहा०-मंडान बाँधना = आयोजन या प्रबंध करना ।

मंदाक्रांता-स्त्री० [सं०] चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु वर्ण (म, भ, न, त, त, ग, ग) होते हैं ।

मंद्र-पुं० संगीत में तीन सप्तकों में से पहला और बीचवाले या मध्य सप्तक से नीचे-वाला सप्तक ।

मख-पाल-पुं० [सं०] यज्ञ की रक्षा करनेवाला । यज्ञ-रक्षक ।

मग्घा†-पुं० = मघा (नक्षत्र) ।

मजेजदार†-वि० दे० 'मजेजवंत' ।

मटकी-स्त्री० [हिं मटकना] १. मटकने की क्रिया या भाव । मटक । २. आँखें मटकाकर किया जानेवाला इशारा । संकेत ।

मुहा०-मटकी मारना = आँखों से इशारा करना ।

मड़ा†-पुं० दे० 'माँड़ा' ।

मढ़ियल–वि० [हिं० मढ़ + इयल (प्रत्य०)] १. किसी जगह अड़कर चुप-चाप बैठ जानेवाला। अड़ियल। २. बहुत ही सुस्त और निकम्मा।

मणि-वर्म–पुं० [सं०] जिरह-बख्तर।

मत-क्षेत्र–पुं० दे० 'निर्वाचन-क्षेत्र'।

मताना*–अ० [सं० मत्त + ना (प्रत्य०)] मत्त या मस्त होना।

स० मत्त या मस्त करना।

मतेया†–वि० [सं० वैमात्रेय] [स्त्री० मतेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

मत्त-गयंद–पुं० [सं०] सवैया नामक छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और दो गुरु वर्ण होते हैं। इसे मालती भी कहते हैं।

मत्स्य-न्याय–पुं० [सं०] यह न्याय या सिद्धांत कि छोटों को बड़े या दुर्बलों को सबल खा जाँय या दबा लें। जिसकी लाठी उसकी भैंसवाला सिद्धांत। २. आततायियों, उपद्रवियों और अराजकों का राज्य।

मथाई–स्त्री० [हिं० मथना + आई (प्रत्य०)] १. मथने की क्रिया या भाव। २. मथने की मजदूरी।

मथाव–पुं० [हिं० मथना + आव(प्रत्य०)] मथने की क्रिया या भाव।

मदरि*–पुं० दे० 'मदारी'।

मदिरा–स्त्री० २.सवैया नामक छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और तब एक गुरु वर्ण होता है। इसे उमा, दिवा और मालती भी कहते हैं।

मध्य–पुं० ४ संगीत में, तीन सप्तकों में से बीचवाला सप्तक (साधारणतः गाना-बजाना इसी सप्तक से आरंभ होता है)। जब स्वर ऊँचे होकर इसके बादवाले सप्तक में पहुँचते हैं, तब वह सप्तक 'तार' कहलाता है; और जब स्वर नीचे होकर इससे पहलेवाले सप्तक में पहुँचते हैं तब वह सप्तक 'मंद्र' कहलाता है।

मध्यमा–स्त्री० ज्यामिति में वह रेखा किसी क्षेत्र में उसके शीर्ष से आधार मध्य विन्दु तक खींची जाय। (मीडिय

मन-कुमार–पुं० [सं०] कामदेव।

मनहरण–वि० [सं०] मनोहर। सुन्द

पुं० १. दंडक का वह भेद जिसमें प्र चरण में ३१ वर्ण होते हैं और लघु का विचार नहीं होता। शुद्ध घनाक्ष २. नलिनी या भ्रमरावली छंद का दूसरा

मना–पुं० [हिं० मन] 'मन' का संबो कारक का रूप। हे मन!

मनिहारी–स्त्री० [हिं० मनिहार (प्रत्य०)] १. मनिहार जाति की चुड़िहारिन। २. बिसाती के यहाँ मि वाली चीजें। बिसातखाना।

मनु-पुत्र–पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।

मनोभूत–वि० [सं०] मन से उ होनेवाला।

पुं० [सं०] कामदेव।

मनोवैज्ञानिक–वि० [सं०] मनोवि से संबंध रखनेवाला।

मन्मथ–पुं० [सं०] कामदेव।

मरमना†–पुं० [?] व्रज में गाया ज वाला एक प्रकार का लोक-गीत।

मरीचिमाली–पुं० [सं०] सूर्य।

मरू करा†–क्रि० वि० [हिं० मर + क बहुत कठिनता से। अनेक उपाय करके।

मर्दित–वि० [सं०] १. जिसका म हुआ हो। २. मला-दला या मींजा हुआ।

मर्ष–पुं० [सं०] १. क्रोध। गुस्सा। पराजय। हार।

मलंग†–पुं० [सं० मल्ल] वीरता कौशल का काम। करतब। (राज०)

मलपट–पुं० [देश० मल + पट = चित्र] वह चित्र जिसमें चेहरा ही दिखाया गया और अंग न हो। (चित्र०)

मलीमस–वि० [सं०] १. मलिन मैला। २. खराब। बुरा। ३. काला।

ाप । २. लोहा ।
वि० [सं०] बहुत मलिन या बुरा।
, दे० 'मलोला' ।
०, पुं० दे० 'मौन' ।
स्त्री० [अ०] किसी चीज की,
मीन की नाप-जोख ।
त्री० = मसूर (दाल)।
ं० [सं०] गोल तकिया ।
ी० = महत्ता या महत्व ।
-पुं० [हिं० महतारी] पिता ।
व०)
ा० [सं० महिला] पत्नी । जोरू।
स्त्री० दे० 'महावट' ।
-पुं० [सं०] सारा या पूरा

-वि० = महिमावान् ।
पुं० [सं०] पहाड़ ।
-वि० [सं०] [स्त्री० महीयसी]
अधिक। २. बड़ा । बहुत विशाल ।
उत्तम ।
-पुं० [सं०] पेड़ । वृक्ष ।
ुं० २. महुए के रंग का अर्थात्
ो रंगवाला बैल ।
र-पुं० [सं० महा + उच्चार
] बहुत ऊँचा या जोर का शब्द ।
त्रियों की आपस की बात-चीत
हेलियों के लिए, अथवा आश्चर्य-

ुं० दे० 'माँजा' (मादक फेन) ।
)*-अव्य०, पुं० = माँझ (मध्य)।
ा-स्त्री० दे० 'माधवी' ।
-पुं० दे० 'मान-सरोवर' ।
-पुं० दे० 'मूल्यांकन ' ।
ुं० ३. वह यंत्र जिससे बिजली,
दि के प्रवाह, किसी चीज का भार
ी चलने वाली चीज की गति
ापा जाता है। (मीटर)
नेवाला ।

मारजित्-पुं० [सं०] महादेव । शिव । वि० काम-वासना को जीतनेवाला ।

मारुतपति-पुं० [सं०] वरुण ।

मालकोश-पुं० [सं०] ओड़व-जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है । इसे कौशिक राग भी कहते हैं ।

मालती-स्त्री० ३. चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक नगण, दो जगण और एक रगण (न, ज, ज, र) होता है । ४. मत्तगयंद (सवैया का एक भेद) नामक छंद का दूसरा नाम । ५. मदिरा नामक छंद का दूसरा नाम ।

मालिनी-स्त्री० २. चार चरणों का एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण एक मगण और दो यगण (न, न, म, य, य) होते हैं । मंजुमालिनी । ३. 'मदिरा' नामक छंद का एक नाम ।

मावली-वि० [हिं० मावला] मावलों (जाति) का । जैसे-मावली दल ।

मासूम-वि० [अ०] जो सब प्रकार से असमर्थ, निर्दोष और दया का पात्र हो । निरीह । जैसे-मासूम बच्चा ।

माहिलें†-क्रि० वि० [हिं० माहिं] अन्दर।

मिचौहाँ†-वि०[हिं० मिचना] बन्द होने या मुँदनेवाला ।

मिटौना†-वि० = मीठा ।

मिनख†-पुं० = मनुष्य (राज०) ।

मियनी†-पुं० [?] एक प्रकार का बैल जो अच्छा समझा जाता है ।

मियादी-वि० दे० 'मीयादी' ।

मिरदहा-पुं० दे० 'मीरदहा' ।

मिरवना*-स० दे० 'मिलाना' ।

मिलकियत-स्त्री० दे० 'मिल्कियत' ।

मिलगत-स्त्री० [हिं० मिलना + गत (प्रत्य०)] मुनाफे या बचत आदि की रकम । जैसे-इस माल में चार पैसे की मिलगत हो जायगी ।

मिश्रीकरण–पुं० [सं०] कई चीजों का एक में मिलने की क्रिया या भाव । मिश्रण ।

मिस्र–पुं० [अ०] [वि० मिस्री] अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी भाग का एक देश जो अपनी पुरानी सभ्यता के लिए प्रसिद्ध है ।

मिस्री–वि० [हिं० मिस्र + ई (प्रत्य०)] मिस्र देश-संबंधी । मिस्र देश का ।

मिहर†–स्त्री० [अ० मेह्र] कृपा । दया ।

मिहरी†–स्त्री० = मेहरी (स्त्री या पत्नी) ।

मीनाक्ष–पुं० [सं० मीन + अक्ष] [स्त्री० मीनाक्षी] जिसके नेत्र मछली की तरह लंबोतरे और सुन्दर हों ।

मीर-दहाँ–पुं० [अ० मीर+फा० दहाँ] पुराने राज-दरबारों का वह सिपाही जो दरबारियों आदि को सूचनाएँ देकर सचेत या सजग करता था ।

मुक्तक–पुं० २. छंद शास्त्र में 'कवित्त' नामक छन्द का वह भेद या प्रकार जिसमें गणों का कोई बन्धन नहीं होता, केवल अक्षरों की संख्या का और कहीं-कहीं गुरु-लघु का कुछ ध्यान रखना पड़ता है ।

मुक्तहरा–स्त्री० [सं०] चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ जगण होते हैं ।

मुक्ति फौज–स्त्री० दे० 'मुक्ति सेना' ।

मुक्ति सेना–स्त्री० [सं०] ईसाई त्यागियों या विरक्तों का एक संघटन जिसका उद्देश्य जनता में ईसाई धर्म और नीति का प्रचार करना तथा लोकोपकार के दूसरे काम करना है । (सैल्वेशन आर्मी)

मुखचारी*–पुं० [हिं० चार मुख] चार मुँहवाले अर्थात् ब्रह्मा ।

मुख-पोतिका–स्त्री० [सं०] मुँह पोछने का रूमाल ।

मुजरैत–वि० [अ० मुजरा + ऐत (प्रत्य०)] जो केवल साधारण मुजरा करना जानता हो पर अच्छा और उच्चकोटि का गायक न हो ।

मुठड़ी†–स्त्री० दे० 'मुट्ठी' ।

मुठियाना†–स० [हिं० मुट्ठी] मुट्ठ
रखकर धीरे-धीरे दबाना । जैसे-(
किसी के हाथ-पैर मुठियाना (दबाना
(ख) लड़ाने से पहले, गरमाहट ला
लिए, बटेर मुटियाना ।

मुड़न–स्त्री० [हिं० मुड़ना] १. मुड़
क्रिया या भाव । २. मुड़े हुए हो
अवस्था । ३. दे० 'मोड़' ।

मुरझना*–अ० [सं० मूर्छन्] १.
या बेहोश होना । २. कुम्हलाना । मुरझा

मुरन*–स्त्री० दे० 'मुड़न' ।

मुरुंड–पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति
लंपाक (आधुनिक लमगान, अफ़
स्तान) में बसती थी ।

मुर्ग-केश–पुं० [अ० मुर्ग + फा० केश]
की जाति का एक पौधा ।

मुर्गा–पुं० दे० 'मुरगा' ।

मुलाम†–वि० = मुलायम ।

मुहँगा†–वि० दे० 'महँगा' ।

मुहाँ–वि० [हिं० मुहँ] मुहँ से यु
मुहँवाला । जैसे-दो-मुहाँ, शेर-मुहाँ आदि

मृग-चर्म–पुं० दे० 'मृग-छाला' ।

मृग-नयन–वि० [सं०] [स्त्री०
नयनी] जिसकी आँखें हिरन की आँख
समान सुन्दर हों ।

मृग-नयनी–वि०, स्त्री० 'मृग-नयन'
स्त्री० ।

मृजाद*–स्त्री० = मर्यादा ।

मृतक–वि० साहित्य में, (पद या वाक्य
जिसका कुछ भी वास्तविक अर्थ न ह
जैसे-(१) बादाम में आदमी; या (ख
च्यूँटी पर हाथी की सवारी ।

मृत्स्ना–स्त्री० [सं० मृत्स्नन्] मिट्टी ।

मृत्पात्र–पुं० [सं०] १. मिट्टी, ची
मिट्टी आदि के बने हुए बरतन । २. व्याप
अर्थ में मिट्टी, चीनी मिट्टी आदि की ब
हुई मूर्तियाँ, खिलौने आदि सभी चीजें
(पॉटरी)

ब्रज० में 'मेरा' का रूप ।
ष० [हिं० मेहर = दया]
।
दे० 'मेहर' ।
ी० [सं० मनःशिला] वैद्यक
ेवाली एक पीली धातु ।
ी० [सं०] एक प्रकार
।
हिं० की 'में' विभक्ति का

० [सं० मोक्षण] छोड़ना ।

ं० [सं०] सेमल वृक्ष का गोंद ।
० [सं०] एक प्रकार
।
. किसी चीज में होनेवाला
न । (कर्व)
मौलि] मौर । सेहरा ।
म–पुं० दे० 'मौक्तिक दाम'

[सं०] १. लड्डू । २. चार
एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक
ार मगण होते हैं ।
[सं० मोहन] १.मोहित करना ।
२. मोह के वश में करना ।
लना ।
मोहित या आसक्त होना । २.
म में पड़ना ।
–पुं० दे० 'मोर-चंद्रिका' ।
स० [हिं० मोल + ना (प्रत्य०)]
। खरीदना ।
ुं० [फा० मुसिन = वयस्क]
पूरी उमर का आदमी और
य या अनुभवी ।
अव्य० [सं० अवसर (?)]
।
ुं० [हिं० मुँह] १. मुँह ।
सबसे आगे पड़नेवाला अंश

या भाग ।

मोहन-भोग–पुं० [सं०] १. हलुआ । २. एक प्रकार का आम । ३. एक प्रकार का बढ़िया चावल ।

मोहिला*–वि०, पुं० दे० 'मोहला' ।

मौक्तिक दाम–पुं० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार जगण होते हैं ।

मौगा†–पुं० [?] [स्त्री० मौगी] १. पुरुष । मर्द । २. नपुंसक । हीजड़ा ।

मौजूदगी–स्त्री० [फा०] मौजूद (उपस्थित या वर्त्तमान) होने की अवस्था या भाव । उपस्थिति । विद्यमानता ।

मौरना*–स० [हिं० मौर = मंजरी] १. मंजरियों से युक्त होना । बौरना । २. आनंद या उमंग से भरना ।

मौल–पुं० १. बड़ा जमींदार । भू-स्वामी । २. प्राचीन काल में एक प्रकार के मंत्री ।

मौलिकता–स्त्री० [सं०] १. मौलिक होने का भाव । २. स्वयं अपनी उद्भावना में कुछ कहने, बोलने या लिखने की शक्ति अथवा गुण । (ओरिजिनेलिटी)

मौलिपट्ट–पुं० [सं०] पगड़ी । साफा ।

म्हों†–पुं० = मुँह । (व्रज०)

यंत्र-पुरुष–पुं० [सं०] केवल यंत्र या कल के रूप में काम करनेवाला आदमी; फलतः निष्ठुर और हृदय-हीन ।

यंद†–पुं० [सं० इन्द्र] चंद्रमा । (डिंगल)

यथा-कृत–वि० [सं०] जैसा आरम्भ में बना हो, वैसा ही । जैसे–यथा-कृत वस्त्र = बिना सीया हुआ कपड़ा ।
पुं० वह अवस्था जो पहले से चली आ रही हो और इस समय भी वर्त्तमान हो । प्रचलित स्थिति । (स्टेटस को)

यथैव–अव्य० [सं०] जिस तरह का । जैसा । 'तथैव' का नित्य-संबंधी ।

यमली–पुं० [सं० दमलिन्] धोती और दुपट्टा दोनों । जोड़ ।

यला*–स्त्री० = एला (इलायची)।

यवनानी–वि० [सं० यवन] १. यवन नामक जन-पद से संबंध रखनेवाला। २. यूनान देश का। यूनानी।

युद्धमान–वि० [सं०] युद्ध करनेवाला। जो युद्ध कर रहा हो।

यूनान–पुं० [वि० यूनानी] दक्षिणी यूरोप का एक प्रसिद्ध देश जो किसी समय बहुत सभ्य और उन्नत था।

यूनानी–वि० [हिं० यूनान] यूनान देश का।

पुं० यूनान देश का निवासी।

स्त्री० यूनान देश की भाषा।

रंकु–पुं० [सं०] [वि० रांकव] वह बकरी जिसके रोएँ 'पशमीना' कहलाते हैं।

रंगामेजी–स्त्री० [सं० रंग+फा० आमेजी= मिलाने की क्रिया] १. रंगों को आपस में मिलाने की क्रिया या भाव। २. दे० 'गदकारी'। ३. कोई बात बढ़ा-चढ़ा कर कहना। अतिरंजन।

रक्तारुण–वि० [सं० रक्त+अरुण] रक्त या लहू की तरह लाल। बहुत लाल।

रखा–स्त्री० [हिं० रखना] गौओं के चरने के लिए रक्षित भूमि। गोचर भूमि।

रजन–स्त्री० [हिं० रजना] रजने की क्रिया या भाव।

स्त्री० दे० 'राल'।

रटन–स्त्री० दे० 'रट'।

रणित–वि० [सं०] १. शब्द या गुंजार करता हुआ। २. बजता हुआ।

रथांग–पुं० ४. घोड़ा।

रयवारा*–पुं० [हिं० रजवाड़ा] राजा।

रल-मिल–स्त्री० [हिं० रलना + मिलना] १. रलने-मिलने की क्रिया या भाव। हेल-मेल। २. सम्मिश्रण। मिलावट।

रली*–अ० [हिं० रलना] १. भरी हुई। २. मिली हुई।

रवाँस†–पुं० दे० 'लोबिया'।

रसवत्–पुं० [सं०] साहित्य में अवस्था जिसमें एक रस किसी दूसरे अथवा स्थायी या संचारी भाव के के रूप में आता है। इसकी गणना कारों में होती है।

रसान*–वि० [हिं० रस] १. रस से हुआ। रसपूर्ण। २. भींगा हु आर्द्र। गीला।

रसौत–स्त्री० [सं० रसोद्भूत] एक जो दारुहल्दी की लकड़ी उबाल निकाली जाती है।

रहवैया–वि० [हिं० रहना + वैया (प्रत्य रहनेवाला।

रहाना–स० हिं० 'रहना' का प्रे०। रख

राँका–वि० [सं० रंक] १. द गरीब। २. तुच्छ। हीन।

राँचना*–स० [सं० रंजन] १. चढ़ाना। रँगना। २. रखना। ३. ल

राउ*–पुं० [सं० रव] १. आवाज। २. सुंदर या मधुर शब्द।

पुं० = राव (राजा)।

रागधर*–पुं० = शार्गंधर (विष्णु)

राग-विवाद–पुं० [सं०] गाली-गल

रागारुण–वि० [सं० राग + अ जो राग या प्रेम के कारण लाल हो हो। जैसे—रागारुण कपोल।

राजताल–पुं० [सं०] १. एक का बड़ा ताड़ जिसके पत्तों पर प्राचीन में ग्रंथ लिखे जाते थे। २. सुपारी का

राजपुरी–स्त्री० [सं०] राजधानी।

राजबंदी–पुं० [सं० राजवंदिन्] जिसे राजा या राज्य कुछ विशेष कार बिना किसी अपराध के या बिना मुव चलाए बंदी बनाया गया हो। (स्टेटप्रि

राज-भवन–पुं० २. आधुनिक भार किसी राज्य के राजपाल का सरकारी नि स्थान। (गवर्नमेन्ट-हाउस)

राज्य-पाल–पुं० [सं०] आधुनिक भ

राज्य का प्रधान शासक जो केन्द्र
से नियुक्त होता है। (गवर्नर)
० [सं० राटि] झगड़ा। तकरार।
दुष्ट। पाजी। २. नीच। बुरा।
। डरपोक।
अ० [हिं० राता] १. राता या
ा। २. रँगा जाना। ३. अनु-
।
ाता या लाल करना। २. रँगना।
ना (या होना)।
)*-पुं० [सं० राजपुर] [स्त्री०
ावरी] राज-महल। अंतःपुर।
० [सं० वराशि = छाल से बुना
जो नकली या घटिया कलाबत्तू
ो।
ा या नकली कलाबत्तू।
-स० हिं० 'रँगना' का प्रे०।
ी० [सं० ऋद्धि] वैभव। सम्पन्नता।
-पुं० २. भेंट आदि के रूप में
नेवाली चीज। ३. राजा या बड़े
से भेजा जानेवाला पत्र।
-स्त्री० [फा० रुख] बढ़इयों का
ार जिससे वे लकड़ियों में गड्ढे
ते हैं।
-वि० [सं०] जिसे बहुत सा
लहू लगा हो। खून से भरा हुआ।
० [?] १. खड्ग। २. तलवार।
-पुं० ३. ऐसी साहित्यिक रचना
सी विषय की मुख्यतः रूप-रेखा
हो।
[हिं० रेलना] १. रेलने की
भाव। २. रेली। धक्का। ३.
प्रवाह।
० [हिं० रेहना] १. रेहने की
भाव। २. रेहने से निकला हुआ
अंश।
[सं० रेणु] धूल।
० २. ऐसी गड़बड़ी जो जल्दी समझ में न आवे। झंझट। बखेड़ा।

लंकाल†-पुं० [?] शेर। सिंह।

लक्ष्मीधर-पुं० [सं०] स्रग्विणी नामक छंद का दूसरा नाम।

लखाव-पुं० [हिं० लखना] लखने की क्रिया या भाव।

लचना*-अ० = लालच में पड़ना।

लचारी†-स्त्री० दे० 'लाचारी'।

लज्ज*-स्त्री० = लज्जा।

लज्जना*-अ० = लज्जित होना।

अ० दे० 'लरजना'।

लड़-पुं० ३. कपड़े का लटकता हुआ सिरा। जैसे-पगड़ी या दुपट्टे का लड़।

लपटीला†-वि० [हिं० लपटना] [स्त्री० लपटीली] रह-रहकर लपटनेवाला।

*वि० दे० 'रपटीला'।

लर-स्त्री० दे० 'लड़'।

लरत्थना†-अ० = लड़खड़ाना।

लव-वि० बहुत ही अल्प या थोड़ा।

लवनित*-वि० [सं० लवण] १. जिसमें नमक हो। नमकीन। २. सलोना।

लहाना*-स० [?] गँवाना।

लाँघन†-स्त्री० [हिं० लाँघना] लाँघने या लाँघे जाने की क्रिया या भाव। जैसे-देखो, बच्चे पर लाँघन न पड़े।

†-पुं० = लंघन (उपवास)।

लाक्षणिक-पुं० छंद शास्त्र में ३२ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

लातरना†-अ० [हिं लात] चलते-चलते या कोई काम करते-करते थकना। (राज०)

†स० लात से कुचलना। रौंदना।

लाना*-स० ३. मूँदना या बन्द करना। ४. लगाना।

लारी†-स्त्री० [?] चेहरे आदि की बनावट। आकृति।

†अव्य० = लार (संग, साथ)।

लाला-पुं० [सं० लालसा] अभिलाषा। चाह।

लीलावती–स्त्री० [सं०] ३२ अक्षरों का एक छंद जिसमें लघु-गुरु का कोई विचार नहीं होता।

लुंचित–वि० [सं०] नोचा या झटके से उखाड़ा हुआ।

लुब्ध–वि० २. मन में किसी चीज का बहुत लोभ या वासना रखनेवाला। जैसे–धन-लुब्ध, रूप-लुब्ध।

लुभावना†–वि० [सं० लुब्ध] [स्त्री० लुभावनी] मन को मोहित या लुब्ध करनेवाला। मनोहर। सुंदर।

† अ०, स० दे० 'लुभाना'।

लूभना–अ० २. ऊपर से आकर घेरना या छाना।

लेलिहान–पुं० [सं०] [वि० लेलिह्य] १. बार-बार चाटना। २. लप-लप करना। लपलपाना। ३. शिव का एक रूप। ४. सर्प। साँप।

लेलिह्य–वि० [सं०] लप-लप करता हुआ। लपलपाता हुआ।

लोक विरुद्ध–वि० [सं०] (आचरण, कथन या कार्य) जो लोक में प्रचलित न हो और इसी लिए ठीक न हो।

लोध-स्त्री० [सं० लोध्र] एक प्रकार का वृक्ष जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं और जिसकी छाल तथा लकड़ी औषध के काम में आती है।

लौं–अव्य० ३. किसी की तरह। किसी की भाँति।

लौका†–स्त्री० [हिं० लौकना = चमकना] बिजली।

पुं० = लौआ (कद्दू)।

वंदन-धूरि–स्त्री० [सं० वंदन = सिंदूर + हिं० धूरि = धूल] गुलाल।

वच*–पुं० = वचन (कथन या बात)।

स्त्री० दे० 'वच'।

वतीतना†–अ० [सं० व्यतीत] बीतना। गुजरना।

स० बिताना। गुजारना।

वतीतना†–अ०, स०, दे० 'वतीतना'।

वयन–पुं० २. उधेड़-बुन। सोच-विचार

वरणीय–वि० [सं०] [स्त्री० वरणीया] १. वरण करने के योग्य (वर, पात्र आदि) २. चुनने या संग्रह करने के योग्य। उत्तम बढ़िया।

वर्ग-पहेली–स्त्री० [सं० वर्ग + हिं० पहेली सामयिक पत्रों में निकलनेवाली, आधुनि प्रकार की एक पहेली जिसमें एक बड़े के अन्तर्गत बहुत से छोटे-छोटे वर्ग होते दिये हुए संकेतों या सूत्रों के आधार उन्हीं छोटे वर्गों या खानों में शब्द भ पड़ते हैं। (क्रास-वर्ड या स्क्वेयर-वर्ड पज

वर्षा-मंगल–पुं० [सं०] वर्षा का अभ होने या सूखा पड़ने पर मेघों या वरुण वर्षा की प्रार्थना करना।

वलन–पुं० [सं०] [वि० वलित, व यित] १. किसी ओर घूमना या घुमा अथवा मुड़ना या मोड़ना। २. किसी अ प्रवृत्त होना या बढ़ना। प्रवृत्ति। घुमाव। मोड़। ४. चारों ओर घुमान चक्कर देना! ५. उत्तेजना। आवेश।

वलयित–वि० [सं०] किसी ओर घुमा मोड़ा या प्रवृत्त किया हुआ।

वायु-वलन–पुं० दे० 'वायु-संवलन'।

वायु-वलित–वि० दे० 'वायु-संवलित'

वायु-संवलन–पुं० [सं०] [वि० वा संवलित] यांत्रिक या वैज्ञानिक प्रक्रिया ऐसी व्यवस्था करना कि किसी घिरे हुए स्थ के ताप मान पर उसके बाहर के ताप-म का प्रभाव न पड़ने पावे; अर्थात् उसमें सरदी या गरमी नियमित और नियंत्रित रहे (एयरकन्डिशनिंग)

वायु-संवलित–वि० [सं०] (स्थान जिसका तापमान वायु-संवलन की प्रक्रि से नियमित और नियंत्रित किया गया हो (एयर-कन्डिशन्ड)

वारिवाह–पुं० [सं०] बादल। मेघ

ी० [सं० वायु] १. हवा । २. हक । (राज०) जैसे—बघ-वाव या रीर से निकलनेवाली गंध ।

वि० [सं०] लंबा-चौड़ा । विस्तृत ।

वि० १. अपने आप को भूला हुआ । स्मृत ।

र्व० = उन (उसका बहु०) ।

वि०[सं०] १. जिसमें किसी प्रकार या बाधा न हो । २. फैला हुआ ।

विघ्न । बाधा । २. कोष्ठ-बद्धता । ।

वि० [सं० विमुख] १. उलटा । २. पीछे की ओर घूमा हुआ ।

वेदन–पुं० [सं०] साहित्य में दूती का नायक अथवा नायिका पहुँचकर उससे यह कहना कि तुम्हारे नायक अथवा नायिका बहुत ।

–वि० [फा० बेगानः] [स्त्री० न] दूसरे का । पराया । (राज०)

-वि० = विरुद्ध ।

ीरुध (पौधा या लता) ।

त–वि० = वर्जित ।

-वि० दे० 'विवादास्पद' ।

सन–पुं० [सं०] धनुष ।

-वि० [सं०] जीर्ण-शीर्ण । फटा-या टूटा-फूटा ।

-वि० ४. भटका या भटकता भ्रांत ।

ा–स्त्री० [सं०] विषम होने की या भाव ।

-पुं० ३. सींग का बना हुआ सिंगी ी नामक बाजा ।

-पुं० [सं०] १. विस्तार । २. विघ्न । ३. नाटक में एक प्रकार या अंग जिसमें किसी बीती हुई थ्य में होनेवाली बात की सूचना दी जाती है। २. ज्योतिष में एक प्रकार का योग ।

विसंधि–स्त्री० [सं०] समस्त पदों या शब्दों की संधियाँ मन-माने ढंग से तोड़ना-मोड़ना या बनाना-बिगाड़ना जो साहित्य में एक दोष माना गया है ।

विसा–सर्व० = उस ।

विसिख (ष)*–पुं० = विशिख (बाण) ।

विसिखा (षा) **सन***–पुं० = विशिखासन (धनुष) ।

विहाना*–अ०, स० दे० 'बिहाना' (बीतना और बिताना) ।

वृत-खंड–पुं० [सं०] ज्यामिति में किसी वृत्त का वह खंड या अंश जो दो अर्द्ध-व्यासों और चाप से घिरा हो । (सेक्टर)

वृहती–स्त्री० [सं०] छंद शास्त्र में नौ अक्षरोंवाले छंदों की संज्ञा ।

वृहद्रथ–पुं० [सं०] इंद्र ।

वृहन्नला–स्त्री० [सं०] अर्जुन का उस समय का नाम जब वे स्त्री के वेष में विराट के यहाँ रहते थे ।

वेशंत–पुं० [सं०] १. पानी का गड्ढा । २. अग्नि । आग ।

वैयक्तिक–वि० २. किसी व्यक्ति के निजी आचार-व्यवहार से संबंध रखनेवाला । निजी । 'सार्वजनिक' का विरुद्धार्थक । (प्राइवेट)

वैशाली–स्त्री० [सं०] बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध वैभवशाली नगरी । (आज-कल का मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ़ नामक स्थान) ।

वैश्वानर–वि० [सं०] चेतना-युक्त । चेतन । पुं० १. अग्नि । आग । २. परमात्मा ।

व्रच्छ*–पुं० = वृक्ष (पेड़) ।

व्रजप–पुं० [सं०] व्रज के राजा । जैसे-नंद, श्रीकृष्ण आदि ।

व्रजपांगना–स्त्री० [सं० व्रजप + अंगना] व्रजप की पत्नी । जैसे–यशोदा, सत्यभामा

आदि।

व्रज्या-स्त्री० [सं०] १. घूमना-फिरना, टहलना या चलना। पर्यटन। २. गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई।

शंकाकुल-वि० [सं० शंका + व्याकुल] शंका या डर से घबराया हुआ।

शक्रारि-पुं० [सं०] मेघनाथ। इंद्रजित्।

शमित-वि० [सं०] जिसका शमन (दमन या शान्ति) हुआ हो। दबा या दबाया हुआ।

शय-पुं० [सं०] १. आशय। २. स्थान।

शशभानु*-पुं० = शशि या चन्द्रमा।

शशि-लेखा-स्त्री० [सं०] चंद्रमा की किरण।

शाणित-वि० [सं०] सान पर चढ़ाकर जिसकी धार तेज की गई हो।

शाबर-वि० २. बुरा। खराब।

शाब्दी-वि० [सं०] शब्द-संबंधी। जैसे—शाब्दी अभिव्यंजना।

शिरश्चंद्र-पुं० [सं०] महादेव। शिव।

शिरीष-पुं० [सं०] सिरिस नाम का वृक्ष।

शैलेय-पुं० १. शिलाजीत। २. छरीला नाम का पौधा।

शोभिनी-वि०, स्त्री० [सं०] शोभा देनेवाली। सुंदर।

श्रीवन-पुं० = वृंदावन।

संकुल-वि० ३. मिला हुआ। युक्त।

संकेतकी-स्त्री० [सं० संकेत] आपस के व्यवहार में संक्षेप और गोपन के लिए स्थिर की हुई वह वार्त्ता-प्रणाली जिसमें साधारण शब्दों और पदों के लिये छोटे-छोटे सांकेतिक शब्द बना लिए जाते हैं। (कोड, व्यापारिक और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रायः तार द्वारा समाचार और आदेश भेजने के लिए)

संघटित-वि० २. युद्ध, प्रतियोगिता आदि में लगा हुआ। भिड़ा हुआ। ३. टकराता हुआ।

संघत्त*-पुं० १. दे० 'संघात'। २. दे० 'संघाती'।

सँजोइल-वि० ३. सब तरह से तैयार उद्यत और सन्नद्ध।

संज्ञक-वि० [सं०] संज्ञा या नामवाल नामक।

संतत*-स्त्री० = संतति (संतान)।

संदन*-पुं० [सं० स्यंदन] रथ।

संदीप्त-वि० [सं०] [भाव० संदीप्ति १. जिसका भली भाँति संदीपन या उद्दी हुआ हो। २. खूब चमकता हुआ प्रकाशमान।

संदीप्ति-स्त्री० [सं०] [वि० संदीप्त संदीप्त होने की अवस्था या भाव।

संपूज्य-वि० [सं०] भली भाँति पूजने यो

संपोषक-वि० [सं०] [स्त्री० संपोषिक १. भली भाँति पालन-पोषण करनेवाल २. अच्छी तरह बढ़ानेवाला।

संपोषित-वि० [सं०] [स्त्री० संपोषि जिसका संपोषण हुआ हो।

संभवी-वि० [सं० संभविन्] किसी संभूत या उत्पन्न होनेवाला। जैसे—स्व संभवी वस्तु या हेतु।

संभीत-वि० [सं०] [स्त्री० संभीता डरा हुआ। भय-भीत।

संयुग-पुं० [सं०] १. मिलना। यो २. टकराना। भिड़ना।

संवर्द्धना-स्त्री० [सं०] १. सम्मा आदर-सत्कार। २. दे० 'संवर्द्धन'।

संवलन-पुं० [सं० सं + वलन] [वि संवलित] १. किसी ओर घुमाना मोड़ना। २. मिलाना। मिश्रण। ३. मे योग। ४. ऐसी व्यवस्था करना कि आ श्यकता के अनुसार घटाया-बढ़ाया जा सक (कंडिशनिंग) जैसे—वायु-संवलन।

संवेत-गान-पुं० = 'सह-गान'।

सचना*-अ० दे० 'सरचना'।

सच्छांति-स्त्री० [सं० सद् + शान्ति सद् या उत्तम शांति। पूरी और विशुद्ध शांति

सतराना-अ० २. चिढ़ना।

ोष चढ़ाना। २. चिढ़ाना।

० [?] जाँघ का मोटा भाग।

-स० [हिं० सनकना] ऐसा
जिससे कोई सनके या पागल हो।
'सनकना'।

० [सं० सद्+मन] शुद्ध
मन।

-अ० [?] किसी स्थान पर
(राज०)
'सपरना'।

० [अ०] राजदूत। एलची।

ी० [अ०] प्राचीर। शहर-

वि० = सब (समस्त)।

ं० [सं०] समता। बराबरी।

स्त्री० [सं० श्यामली] चील।

)

-वि० [सं०] [भाव० सम-
] शील, स्वभाव, प्रकृति आदि
र से एक ही तरह के। समान।

-वि० = समतल।

समर (युद्ध)।

० सं० 'सम' का स्त्री०। जैसे—
समा = कामिनी के समान।

-वि० [सं०] जिसका समाहरण
ार हुआ हो।

-पुं० [सं०] १. समीक्षा करने
या भाव। २. दे० 'समीक्षा'।

ा*-अ० [सं० सम्राज्] अच्छी
ष्ठित, स्थापित या विराजमान होना।

-वि० = सगुण।

स्त्री० [सं०] मधु-मक्खी।

-स्त्री० दे० 'सरबर'।

मम)*-स्त्री० = शर्म (लज्जा)।

-पुं० दे० 'सरखत'।

० [सं० सर्पिस्] घृत। घी।

-स्त्री० = शर्वरी (रात)।

सर्बरीनाथ*-पुं० = शर्वरीनाथ (चन्द्रमा)।

सर्बस-पुं० = सर्वस्व (सब कुछ)।

सर्वोच्च-वि० [सं०] [भाव० सर्वोच्चता] १. सबसे ऊँचा। २. सबसे ऊपर का, बढ़िया या श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

स-वत्स-वि० [सं०] [स्त्री० स-वत्सा] जिसके साथ उसका बच्चा भी हो। जैसे—स-वत्सा गौ।

ससमा*-पुं० = शशि (चंद्रमा)।

ससिता*-स्त्री० = शशिता।
स्त्री० = शिशुता।

ससिभानु*-पुं० = शशभानु (चंद्रमा)।

सस्य*-पुं० = शस्य (धान्य)।

सहासन-वि० [सं० सह+आसन] १. किसी के साथ उसके बराबर के आसन पर बैठनेवाला। २. आधे का हिस्सेदार।

साँचना*-अ० [?] किसी बड़े का कहीं आना। पदार्पण करना। पधारना।। (गुज०, राज०)

साँटा-स्त्री० [हिं० सटना] १. सटने या संलग्न होने की क्रिया या भाव। २. लगन। लौ।

साँठे-अव्य० [हिं० साँठ] १. कारण या वजह से। २. आधार पर।

सांद्र-वि० [सं०] १. एक में गुथा, जुड़ा या मिला हुआ। २. गंभीर। घना। ३. हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा। ४. तीव्र। प्रबल। ५. बहुत अधिक। प्रचुर।

साख्यौ*-पुं० = साक्षी।

सागी†-क्रि० वि० दे० 'सागे'।

सागे†-क्रि० वि० [सं० सह] संग। साथ। (राज०)

साभा-क्रि० वि० [सं० स+आभा] १. आभा से युक्त। २. चमकदार। चमकीला।

सामधेनी-स्त्री० [सं०] बाँस की वह नली जिससे फूँककर यज्ञ की अग्नि सुलगाई जाती थी।

सामा*–स्त्री० [सं० शम या शांति] १. शांति । २. धैर्य । धीरज ।

सारखा†–वि० [स्त्री० सारखी] = सरीखा (समान) ।

सार्विक–वि० [सं० सर्व] १. सर्व-साधारण से संबंध रखनेवाला । २. अपनी कोटि या वर्ग के प्रायः सभी अंगों या सदस्यों से सम्बन्ध रखनेवाला । (जनरल)

सिंधुर–पुं० [सं०] [स्त्री० सिंधुरा] १. हाथी । २. आठ की संख्या का सूचक शब्द ।

सिंधुर-वदन–पुं० [सं०] गणेश ।

सिंधुर-सुता–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

सिंसुपा*–स्त्री० = शिशुपा (वृक्ष) ।

सिद्धाग्नि–स्त्री० [सं० सिद्ध + अग्नि] १. खूब जलती हुई अग्नि । २. ऐसी पवित्र अग्नि जो दूसरों को भी पवित्र और शुद्ध कर दे ।

सिरिस–पुं० [सं० शिरीष] वृक्ष विशेष।

सुग–वि० [सं०] १. अच्छी तरह और खूब चलनेवाला । २. अच्छी तरह और खूब जागने या सचेत रहनेवाला ।

सुधागेह–पुं० [सं०] चंद्रमा ।

सुर-द्विष–वि० [सं०] सुरों या देवताओं से द्वेष या वैर रखनेवाला ।

सुर-वर्त्म–पुं० [सं०] स्वर्ग ।

सोर†–पुं०[?] बारूद । (राज०)

स्रब*–वि० = सर्व (सब) ।

स्रिग*–पुं० दे० 'स्रक' ।

स्वप्न-दर्शन–पुं० [सं०] साहित्य में वह अवस्था जब किसी को स्वप्न में कोई देखता है और उसके प्रति मन में प्रेम उत्पन्न होता है ।

स्वावना*–स० = सुलाना ।

हत-वृत्त–पुं० [सं०] छंदों में का भंग नामक दोष ।

हथवाँसना†–स० [हिं० हाथ] हाथ या अधिकार में लेना ।

हभरना†–अ० = भहराना (लड़खड़ गिरना) ।

हर-गिरि–पुं० [सं०] कैलाश पर्वत

हल्या–वि० [सं०] १. फैला हु विस्तृत । २. जोतने योग्य ।

हविस–वि०, पुं० दे० 'हविष्य' ।

हसत*–पुं = हस्त (हाथ) । पुं० = हस्ति (हाथी) ।

हसम†–पुं० [अ० हश्म] १. संपत्ति । वैभव । २. ठाठ-बाट । ३. शो

हाक†–स्त्री० = हाँक (पुकार) ।

हाम†–वि० [?] किसी में पूरी तर लगा या समाया हुआ । लीन । लिप्त ।

हारी–स्त्री० २. थकावट । शिथिलता ।

हितैषणा–स्त्री० [सं० हित + एषण किसी के हित या मंगल की कामना । कामना । खैर-ख्वाही ।

हिराँस–स्त्री० = हरास ।

हृत–वि० २. जिसका कुछ छीन लिया हो । (यौ० के आरंभ में) जैसे–हृत-बंधु जिसके भाई-बंधु उससे छिन गए हों ।

हैरत–स्त्री० [अ०] आश्चर्य । ताज्जुब

होलकर–पुं० [होल नामक गाँव [स्त्री० होलकरीन] मध्य-युगीन भारत इन्दौर नामक देशी राज्य के राजा की उपाधि ।

अँगरेजी-हिन्दी शब्दावली

गोरू-चोर, पशु-चोर।
-१. अपसर्जन (वि० अप-
२. परित्याग (वि० परित्यक्त)।
टना।
nt-१. अपचय। २. छूट।
ation-संकेत-चिह्न, संक्षिप्तक।
ature-संक्षिप्त आलेख।
-चतुः सीमा।
ion-१. पद-त्याग। २. राज्य-

on-अपनयन (वि० अपनीत)।
nt-दुरुत्साहन।
-दुरुत्साहक।
ce-लंघन।
. अनुसरण। २. पालन। ३.

क्षमता।
itio-आरम्भतः।
. समर्थ। २. योग्य।
nal-१. अप्रकृत, असाधारण।
मान्य, असाधारण।
आवास।
n-१. उत्सादन (वि० उत्सादित)।
न (वि० उन्मूलित)। ३. विक-
० विकर्षित, विकृष्ट)।
al-गर्हित।
inal-मौल।
n-गर्भ-स्राव।
e-निष्फल।
par-बढ़ती से।
ement-संक्षेपण (वि० संक्षिप्त)।
d-पलायन करना, भाग जाना।
der-पलायक, भगोड़ा।
ce-१. अनुपस्थिति। २. अभाव।

Absent-अनुपस्थित।
Absolute-१. केवल। २. निरुपाधि, निरुपाधिक। ३. अविकल्प, निर्विकल्प। ४.निस्सीम, असीम। ५.अबाध, अनियंत्रित। ६. परम। ७. पूर्ण।
Absolute Monarchy-अनियंत्रित या एकछत्र राज्य।
Absolute Order-परम आज्ञा।
Absolute power-परम सत्ता।
Absolutism-ब्रह्मवाद।
Absolutist-ब्रह्मवादी।
Abstinence-उपरति।
Abstract-सारांश (वि० अमूर्त्त)।
Abuse-दुरुपयोग।
Academic-शास्त्रीय।
Academician-शास्त्रज्ञ, शास्त्र-वेत्ता।
Accent-स्वर पात।
Acceptance-प्रतिपत्ति (वि० प्रतिपन्न), स्वीकृति।
Accepted-प्रतिपन्न, स्वीकृत।
Access-पहुँच, गति।
Accessory, after the fact-अनुषंगी।
,, , before the fact-पुरःसंगी।
Accident-दुर्घटना, घटना।
Accidental-आकस्मिक।
Accidentalism-आकस्मिकतावाद।
Accompaniment-संगत।
Accomplice-अभिषंगी।
Accordance-अनुसारता।
Account-१. खाता। २. लेखा, संख्यात्क, हिसाब। ३. विवरण, वर्णन।
,, , on-मद्धे।
Accountancy-लेखा कर्म, संख्यान-कर्म।
Accountant-लेखाध्यक्ष।

Account book-लेखाबही ।
Accrual-स्रवण ।
Accrued-स्रुत ।
Accumulated-पुंजित ।
Accumulation-पुंजन ।
Accurate-परिशुद्ध, सटीक ।
Accusation-१. अभियोग । २. आरोप ।
Accused-अभियुक्त ।
Acetic-कांजिक ।
Acid-तेजाब ।
Acid test-अग्नि-परीक्षा ।
Aconite-बछनाग ।
Acquired-१. अर्जित । २. अधिगृहीत । ३. प्राप्त ।
Acquirer-अधिग्राहक ।
Acquisition-अधिग्रहण, उपार्जन ।
Acquittal-विमोचन, विमुक्ति, उन्मुक्ति । (वि० उन्मुक्त, विमुक्त)
Acquitted-विमोचित, विमुक्त ।
Act-१. कृत्य, कार्य । २. करण । ३. आचरण । ४. विधान ।
Acting-वि० १. कार्यकारी (या कार्यकारिणी) । २. कारक ।
संज्ञा-अभिनय ।
Action-१. क्रिया, कार्य । २. चर्या । ३. व्यवहार ।
Actionable-व्यवहार्य ।
Actionable wrong-व्यवहार्य अपकार ।
Active-सक्रिय ।
Active voice-कर्तृ-वाच्य ।
Actor-अभिनेता, नट ।
Actress-अभिनेत्री, नटी ।
Actual-वास्तविक ।
Actually-वस्तुतः ।
Acute Angle-न्यून कोण । (परि०)
Adaptation-अनुकलन ।
Adapted-अनुकलित ।
Addition-१. परिवर्द्धन, परिवृद्धि, संवृद्धि ।
२. जोड़ (गणित में) ।
Additional-अतिरिक्त ।
Address-१. पता, बाह्यनाम । २. अ
नन्दन-पत्र । ३. संबोधन । ४. अभिभाष
Address of Advocate-अभिभाष
Addressee-प्रेषिती, यापक ।
Adept-दक्ष ।
Ad hoc-तदर्थ ।
Ad hoc Committee-तदर्थ समि
Adjacent-आसन्न ।
" Angle-आसन्न कोण ।
Adjourned-स्थगित ।
Adjournment-स्थगन ।
" motion-स्थगनक प्रस्त
Adjusted-संधानित ।
Adjustment-संधान, समंजन ।
Administration-प्रशासन ।
Administrative-प्रशासनिक ।
Administatror-प्रशासक ।
" General-महा-प्रशासक ।
Admirality-नावाधिकरण ।
Admissible-ग्राह्य ।
Admission-१. ग्रहण । २. प्रवेश ।
मान्यता ।
Admission fee-प्रवेश-शुल्क ।
Adopted son-दत्तक ।
Adoption-दत्तक-ग्रहण, दत्तक-विधान
Adoptive-दत्तक-ग्राही ।
Adult-वयस्क ।
Adulteration-अपमिश्रण ।
Adultery-व्यभिचार ।
Adult Sufferage-वयस्क मताधिकार
Ad Valorem-मूल्यानुसार ।
Advance-अगाऊ, अग्रिम, सत्यंकार ।
Advancement-उन्नति ।
Advent-आगमन, आविर्भाव ।
Adverb-क्रिया-विशेषण ।
Advertised-विज्ञापित ।

ement-विज्ञापन ।
, परामर्श, मंत्रणा । २. प्रज्ञप्ति ।
।
मंत्रित ।
-कुमंत्रित ।
ell-सुमंत्रित ।
-अभिभाषक ।
, address of-अभिभाषण ।
यविक ।
ne-हवाई अड्डा ।
e-वायुयान, हवाई जहाज ।
-निदान ।
on-अपरंजन । (वि॰ उपरक्त,
-उपरक्त ।
-अनुरक्ति ।
nate gift-प्रसाद-दान ।
t-शपथ-पत्र ।
-व्यासक्ति ।
tion-१. प्रकथन । २. पुष्टि ।
ive-स्वीकारात्मक, सकारात्मक ।
ation-वन-रोपण ।
id-पूर्वोक्त, उपर्युक्त ।
-विरुद्ध ।
य, अवस्था । २. आयु । ३. युग ।
-१. अभिकरण । २. साधना ।
-कार्यावली ।
अभिकर्त्ता, एजेन्ट ।
ian-कृषिक, क्षेत्रिक ।
ation-अतिरेक ।
ate-संकलित ।
on-आन्दोलन ।
icism-असेयवाद ।
वेदना ।
-सहमत, सम्मत ।
ent-१. अनुबंध, समझौता,
। २. अनुबंध-पत्र, इकरारनामा ।
रूपता, मेल । ४. सहमति, सम्मति ।

Agricultural-कृषिक ।
Agricultural Area-कृषि-क्षेत्र ।
Agricultural year-कृषि (क) वर्ष ।
Agriculture-कृषि ।
Aid-सहायता ।
Air-Conditioned-वायु-संवलित ।
Air-Conditioning-वायु-संवलन ।
Air Force-१. विमान-बल । २. वायु-सेना ।
Air Mail-हवाई डाक ।
Air Service-वायु-सेवा ।
Airways-वायु-पथ ।
Album-चित्राधार ।
Alcohol-सुरासार ।
Algebra-बीज-गणित ।
Alias-उपनाम ।
Alienable-देय ।
Aliment-पोषण ।
Alimentary Canal-पोषिका ।
Alimony-भृति ।
Alkali-क्षार ।
Alkaloid-उपक्षार, क्षारोद ।
Allegation-कथन, अभिकथन ।
Alleged-कथित, अभिकथित ।
Allegience-अनुशक्ति, निष्ठा ।
Alliance-संधान ।
Allied-व्यासक्त ।
Allitevation-अनुप्रास ।
Allotment-प्रदेशन ।
Allotted-प्रदिष्ट ।
Allow-अनुज्ञा देना ।
Allowance-उपजीविका, भत्ता, वृत्ति ।
Allowed-अनुज्ञप्त, अनुज्ञात ।
Alloy-१. मिश्र-धातु । २. मिश्रण ।
Allurement-प्रलोभन ।
Allusion-१. अंतर्कथा । २. संकेत ।
Alluvial-कछारी ।
Alluvial area-कछारी क्षेत्र ।
Alluvial land-कछार ।

Almanac-तिथि पत्र, पंचांग।
Alpbabet-अक्षर।
Alphabetical order-अक्षर-क्रम।
Alphabets-वर्ण-माला।
Alteration-परिवर्त्तन।
Alternate-एकांतर।
Alternative-वि० १. वैकल्पिक। २. एकांतर (रिक)।
संज्ञा अनुकल्प, विकल्प।
Altitude-उन्नतांश।
Alturism-परार्थवाद।
Alum-फिटकिरी।
Amalgamation-एकीकरण।
Ambassador-राजदूत।
Ambiguous-संदिग्ध।
Ambition-उच्चाकांक्षा।
Ambitious-उच्चाकांक्षी।
Amendment-संशोधन।
Amentia-बालिश्य।
Ammeter-विद्युद्दर्शक।
Ammunitions-१. आयुधीय। २. गोला-बारूद।
Amnesty-निर्मुक्ति, सर्व-क्षमा।
Amount-धन-राशि, धनांक, मात्रा, रकम।
Amputation-अंगच्छेद।
Amulet-यंत्र।
Anachronism-कालदोष।
Anaesthesis-अचेतनीकरण।
Analogous-अतिदिष्ट, अनुधमक, सदृश।
Analogy-सादृश्य, अतिदेश, अनुधर्मता।
Analysis-विश्लेषण (कर्त्ता-विश्लेषक)।
Anarchism-अराजकता।
Anarchist-अराजक।
Ancestors-पूर्वज, पितृ।
Ancestral-पैतृक।
Anchor-लंगर।
Angle-कोण।
Angle of Vision-दृष्टि-कोण।

Angular-कोणिक।
Animal husbandary-पशुपालन
Animate-चेतन।
Annexation-संयोजन।
Annexed-संयुक्त।
Annexure-संयुक्तक।
Announcement-विख्यापन।
Annual-वि० १. वार्षिक। २. एक
संज्ञा-वार्षिकी।
Annuity-वार्षिकी।
Answerability-वक्तव्यता।
Ante-प्राक्।
Antedated-पूर्वतिथीय।
Antediluvial-पूर्व-प्लावनिक।
Anthropology-मानव-शास्त्र।
Anticipation-प्रवेक्षा (वि० प्रवेक्षित
Anti-dote-मारक।
Anti-septic-प्रतिपौतिक।
Antonym-विपर्याय, विरुद्धार्थक।
Apathetic-अरत।
Apathy-अरति, अराग।
Apoplexy-अपस्मार, मिरगी।
Apparatus-उपकरण, उपस्कर।
Apparent-प्रतीयमान।
Apparently-प्रतीयमानतः।
Appeal-अपील, पुनर्वाद।
Appeasement-संतुष्टिकरण।
Appellant-पुनर्वादी।
Appellate-पौनर्वादिक।
Appellation-उपाधि।
Appended-संलग्न।
Appendix-परिशिष्ट।
Applicable-१. योजनीय। २. लागू
Applicant-प्रार्थी।
Application-१. प्रार्थना-पत्र, आवेद
पत्र। २. प्रयोग, विनियोग।
Applied-१. प्रयौगिक। २. प्रयुक्त, लाग
„ for-प्रार्थित।

प्रार्थना करना। २. लागू करना।
-नियुक्त।
ent-नियुक्ति (वि॰ नियुक्त)।
ment-विभाजन।
nent-कृत।
ion-उन्मान, मूल्यांकन।
sion-आशंका, भीति।
ation-१. उपयोजन, योजन।
।
-अनुमोदन।
-परिसिद्धक।
nate-१.प्रायिक। २. आसन्न।
-कुम्भ (राशि)।
on-पंच, पंचायत।
r-पंच।
lture-तरु-रोपण, वानस्पत्य।
क्षेत्र। २. क्षेत्र-फल।
logist-पुरातत्वज्ञ।
logy-पुरातत्व।
ogo-द्वीप-पुंज।
t-वास्तुकार।
nt-वितर्क, तर्क।
(राशि)।
acy-अभिजात-तंन्त्र, कुल-तंत्र।
tic-अंकगणित, पाटी-गणित।
भुजा, बाहु। २. शास्त्र, आयुध।
ent-अस्त्रीकरण।
सशास्त्र, सायुध।
Constabulary-सशस्त्र या
ीदल।
force-सशस्त्र-बल, सायुध-बल।
ce-अवहार।
ास्त्र, आयुध, हथियार।
nd weapons-शस्त्रास्त्र।
सेना।
ement-व्यवस्था।
-अवशिष्ट।

Arrears-अवशेष, बकाया।
Arrears of rent-बकाया लगान।
Arrest-गिरफ्तारी।
Arsenic-संखिया।
Artery-धमनी।
Article-अनुच्छेद।
Artificial-कृत्रिम।
Artisan-शिल्पी।
Ascendents-पूर्वज।
Aseptic-अ-पौतिक। (परि॰)
A-sexual-अयान, अलैंगिक।
Aspect-अंग, पार्श्व, पहलू।
Asphalt-अश्मज।
Aspirant-अभिलाषी।
Aspirated-महाप्राण।
Assault-आक्रमण।
Assembly-१. समुदाय। २. परिषद।
„, Coustituent-संविधान परिषद।
„, Legislative-विधान परिषद।
Assent-अनुमति।
Assessee-निर्धारिती।
Assessment-निर्धारण।
Assets-१. परिसंपद। २. निकासी।
„, Gross-कच्ची निकासी।
„, Net-पक्की निकासी।
Assiduity-एकाग्रता, धुन।
Assigned-अभ्यर्पित।
Assignee-अभ्यर्पिती।
Assignment-१. अभ्यर्पण (वि॰ अभ्यर्पित)। २. निर्देश (वि॰ निर्दिष्ट)। ३. जमोग।
Assignor-अभ्यर्पक।
Assimilation-स्वांगी-करण।
Assistant-सहायक।
Association-१. संसद। २. साहचर्य।
Assyrian-असुर।
Asterisk-तारक।
Astrologer-ज्योतिषी।

Astrology-ज्योतिष (फलित) ।
Astronomy-ज्योतिष (गणित), खगोल विद्या ।
Atheism-निरीश्वरवाद, नास्तिकता ।
Atheist-नास्तिक ।
Atlantic-अतलांतक ।
Atmosphere-आवह, वातावरण, वायुमंडल ।
Atom-अणु, परमाणु ।
Atomic-आणविक ।
Atomism-परमाणुवाद ।
Atomist-परमाणुवादी ।
At once-तुरंत ।
At par-बराबरी से ।
Attached-१. अनुलग्न, संलग्न । २. आसंजित ।
Attachment-१. आसंग । २. आसंजन, कुर्की ।
Attestation-सत्यापन (वि० सत्यापित), प्रमाणीकरण (वि० प्रमाणित) ।
Attested-आवित ।
Attorney-अभिकर्त्ता ।
" , Power of-अभिकर्त्ता-पत्र ।
Auction-निलाम ।
Audience-श्रोतावर्ग ।
Audible-श्रव्य ।
Audited-संप्रेक्षित ।
Auditing-लेखा-परीक्षा, संप्रेक्षण ।
Auditor-लेखा-परीक्षक, संप्रेक्षक ।
Auditory-श्रावण ।
Authorised-१. अधिकृत । २. अनुज्ञात ।
Authoritative-१. अधिकारिक । २. प्रामाणिक ।
क्रि० वि० साधिकार ।
Authoritatively-साधिकार, अधिकारतः ।
Authority-१-अधिकार । २. अधिकारिक, अधिकारी । ३. अधिकारिकी । ४. अधिकरण्य । ५. शासन । ६. सत्ता ।
uthority, local-स्थानिक अधिकरण्य ।

Autobiography-आत्म-चरित ।
Autograph-स्वाक्षर ।
Autonomous-स्वायत्त ।
Autonomy-१. स्वायत्त शासन स्व-शासन ।
Average-१. माध्यक, मध्या, औ २. गड्डु ।
Awakening-जागरण ।
Axiom-स्वयं सिद्धि, स्वतः सिद्धि ।
Axis-अक्ष ।
Baby-शिशु ।
Back door-चोर दरवाजा ।
Background-१. भूमिका । २. पृष्ठ-भूमि । ३. पूर्व-पीठिका ।
Badge-बिल्ला ।
Balance-अवशेष, शेष ।
Balance of power-शक्ति-संतुलन
Balance sheet-आय-व्यय फलक, पत्र, तल-पट ।
Balancing-सन्तुलन, समतोलन ।
Bale-गाँठ ।
Ballad-गाथा ।
Ballot-शलाका ।
Ballot box-मत-पेटिका ।
Ballot paper-मत-पत्र ।
Bar-बाध ।
Bard-भाट, चारण ।
Bargain-सौदा ।
Bargaining-सौदेबाजी ।
Barometer-ताप-क्रम-यन्त्र ।
Barred-बाधित ।
Barred by limitation-अवधि-बा तमादी ।
Barter-१. विनिमय । २. सौदा अदला-बदली ।
Barren land-ऊसर ।
Barrier-परिध, बाढ़ ।
Base-संज्ञा-भूमि, आधार ।

रित ।
शासन
या, औ
सिद्धि ।
। २.
-संतुलन
फलक,
लन ।
वधि-बा
सौदा ।

(जाली या नकली)।
ाश्रित, निर्भर।
-निराधार।
धारिक।
धारक।
तर। २. पलंग। शय्या।
-बिस्तर-घाव, शय्या-व्रण।
ता।
nt-परियुद्धक।
ar-घटती से। बट्टे से।
ीठ।
ary-लाभार्थी।
-लाभ।
पेटी। २. पट्टी।
म।
ty-पशु-मैथुन।
-बढ़ान।
raphy-संदर्भ-सूची।
eral-द्वि-सदनिक।
l-द्वैवार्षिक।
al-द्विपदी।
प्यक। २. विधेयक। ३. हुन्डी।
llector-प्राप्यक समाहर्त्ता।
xchange-विनिमय-पत्र,हुन्डी।
lading-वहन-पत्र।
phy-जीवन-चरित, जीवनी।
-जीव-विज्ञान।
ertificate-जन्म-प्रमाणक।
control-संतति-निग्रह, संतान-

ay-जन्म-दिन, जन्म-दिवस।
register-जन्म-पंजी।
list-कृष्ण-सूची। काली-सूची।
market-चोर-बाजार।
r-मूत्राशय।
-शून्य।
ing-विरंजन।
le-नाका-बंदी।

Blood pressure-रक्त-चाप।
Bluff-धुप्पल।
Board-१. बोर्ड। २. पट्ट।
,, , District-जिला बोर्ड।
,, , Municipal-नगर बोर्ड।
,, , of revenue-भू-आगम बोर्ड।
Body-१. शरीर। २. निकाय, संघात। ३. संस्था।
Bodyguard-अंग-रक्षक।
Bombast-शब्दाडंबर।
Bomber-बम-मार, बम-वर्षक।
Bona vacantia-अस्वामी,स्वामिहीनत्व।
Bond-बंध।
Bond of surety-प्रतिभू-पत्र।
Bondsman-प्रतिभू, लग्नक।
Bonus-अधिलाभ।
Book-१. पुस्तक। २. बही।
Book depot-पुस्तकालय।
Booklet-पुस्तिका।
Booty-परिहार।
Borrower-अधमर्ण, उद्धारणिक, ऋण-गृहीता (ग्राही)।
Botany-वनस्पति-विज्ञान।
Bound-१. आबद्ध, बद्ध। २. बाध्य।
Boundary-सीमा।
Boxing-मुक्की, मुक्केबाजी।
Boycott-बहिष्कार।
Boy scout-बाल-चर।
Bracket-कोष्ठक।
Branch-शाखा।
Breach-१. उल्लंघन। २. भंग।
Breach of law-विधि-भंग।
Breach of peace-शांति-भंग।
Breach of trust-न्यास-भंग।
Breast stroke-मल्लाही (तैरायी)।
Breathed-अघोष। (व्या०)
Breeding-वर्द्धन।

Brevity–लाघव (शाब्दिक) ।
Broadcasting–प्रसारण ।
Bronze–काँसा ।
Bronze age–कांस्य युग, ताम्र-युग ।
Brothel–वेश्यालय ।
Budget–आय-व्ययिक, व्याकल्प ।
Building–१.इमारत, भवन । २. निर्माण, रचना ।
Bulb–१. लट्टू । २. गाँठ ।
Bungling–घपला, घपलेबाजी ।
Burden–भार ।
Burial ground–क़ब्रिस्तान ।
Bye- आनुषंगिक ।
Bye-election–उपनिर्वाचन ।
Bye-law–उप-विधि ।
Bye-product–उपसर्ग, उपजात (परि०), आनुषांगिक उपज ।
Cabinet–मन्त्रि-मंडल ।
Calamity–विपत्ति ।
Calculation–१. गणना, कलन (वि० कलित) । २. परिकलन (वि० परिकलित) ।
Calculator–१. कलयिता । २. परिकलक ।
Calendar–१. दिन-पत्र । २. पंचांग ।
" month–पंचांग मास ।
" year–पंचांग वर्ष ।
Camouflage–छलावरण (वि० छलावृत) ।
Camp–शिविर ।
Cancellation–निरसन (वि० निरस्त) ।
Cancer–१. कर्कट । २. कर्क (राशि) ।
Candidate–अर्थिक ।
Cane–बेंत ।
Canopy–१. चँदवा । २. छतरी ।
Canto–सर्ग ।
Cantonment–छावनी ।
Canvasser–अनुयाचक ।
Canvassing–अनुयाचन ।
Cap–टोपी, (सभी अर्थों में) ।
Capable–क्षमा ।
Capacity–१. क्षमता । २. आयतन ।
Cape–अंतरीय ।
Capitalism–पूँजीवाद ।
Capital punishment–प्राण-दण्ड ।
Capillary–कौशिक ।
Capricornus–मकर (राशि) ।
Capsule–पुटी ।
Capsuled–पुटित ।
Caption–शीर्षक ।
Carbon–अंगारक ।
Carbuncle–जहरबाद, विष-व्रण ।
Care-अवधान ।
Caricature–प्रहास ।
Carpenter–बढ़ई ।
Carnivora–मांसाहारी ।
Carriage–परिवहन ।
Carried out–कार्यान्वित ।
Carrier–वहनक ।
Cartoon–व्यंग-चित्र ।
Case–१. अभियोग, मामला । २. विधि-व्यवहार, मुकदमा । ३. स्थिति, अवस्था । ४. कारक (व्या०) ।
Cash–क्रि०-भुनाना ।
संज्ञा–१. रोकड़ । २. भुक्ति । वि० रोकड़, नकद ।
Cashbook-रोकड़-बही ।
Cashed–भुक्त ।
Cashier–१. रोकड़िया । २. खजानची ।
Cashmemo–रोक-टीप, विक्रयिका ।
Casket–मंजूषा ।
Caste–जाति ।
Casting vote–भारिक मत, निर्ण मत ।
Casual–आकस्मिक ।
Casuality–आकस्मिकी, समापत्ति, हता
Casual leave–आकस्मिक छुट्टी ।
Catalogue–सूचीपत्र ।
Catechism–प्रश्नोत्तरी ।

-मोतियाबिंद ।
y-वर्ग ।
कारणिक ।
ty-कारणिकता ।
ve-प्रेरणार्थक क्रिया ।
f action-कार्य-हेतु ।
-सान्निध्य ।
(money)-पारिभाव्य (धन) ।
re-लड़ाई-बंदी ।
उच्चक ।
price-उच्चक मूल्य ।
कोष । २. कोषाणु ।
१. गणना । २. मनुष्य-गणना ।
-केन्द्रीय ।
government-केन्द्रिय सरकार,
शासन ।
१. केन्द्र (वि० केन्द्रिक, केन्द्रिय) ।
।
y-शति, शतक, शताब्दि ।
२. वि०-मूर्द्धन्य ।
ate-प्रमाणक ।
Birth-जन्म-प्रमाणक ।
Charge-भार-प्रमाणक ।
Death-मरण-प्रमाणक ।
Life-जीवन-प्रमाणक ।
Medical-चिकित्सन-प्रमाणक ।
ation-१. प्रमाणीकरण । २.
खजानची ।
d-प्रमाणित ।
r-प्रमाण-कर्त्ता ।
कर । अबवाब ।
१. श्रृंखला । २. माला !
पीठ ।
an-अध्यक्ष ।
ge-१. आक्षेप । २. चुनौती ।
-परिवर्त्तन ।
l-प्रणाली, द्वार ।
r-अध्याय ।

Character-१. आचरण, चरित्र, चालचलन । २. लिपि ।
Character book or roll-आचरण-पुस्तिका, आचरण-पुंजी ।
Characteristics-अनुभाव ।
Charge-१. अभियोग, आरोप, अधिरोप (ण) । २. अवधान, प्रत्यवेक्षण । ३. परिव्यय । ४. भार, कार्य-भार । ५. पद-भार । ६. शुल्क ।
,, , free of-निःशुल्क ।
Chargeable-परिव्ययनीय ।
Charge-certificate-भार-प्रमाणक ।
Charge-holder-भार-धारक ।
Charge-sheet-आरोप-फलक ।
Charitable-पुण्यार्थ ।
,, endowment-पुण्यार्थ निधि ।
,, purpose-पुण्यार्थ ।
Charle's wain-सप्तर्षि ।
Chart-मानचित्र ।
Cheap-सस्ता ।
Check-१. जाँच, पड़ताल । २. रुकावट, रोध (न), रोक ।
Checking-पड़ताल ।
Chemical examiner = रासायनिक पीरक्षक ।
Chemistry-रसायन-शास्त्र ।
Cheque-देयक ।
Chief-मुख्य ।
Chief Officer-मुख्य अधिकारी ।
Chord-चाप-कर्ण, जीवा । (परि०)
Chorus-सहगान ।
Chronology-कालक्रम, कालानुक्रम ।
Circle-१. वृत्त । २. घेरा । ३. परिधि ।
,, inspector-परिधिक ।
,, , Vicious-दुश्चक्र ।
Circular-परिपत्र ।
Circulation-प्रचारण ।
Circumference-परिधि ।

Circumscribed—परिगत ।
Circumstances—परिस्थिति ।
Circumstances Tax—विभव-कर ।
Citation—१. उपनीय (वि॰ उपनीत), उद्धरण (वि॰ उद्धत) । २. उपस्थिति-पत्र ।
Cited—उपनीत ।
City—नगर ।
City-father—नगर-पिता ।
Civics—नागरिक-शास्त्र ।
Civil—१. नागर । २. जानपद । ३. अर्थ । ४. सभ्य, शिष्ट । ५. लौकिक । ६. दीवानी ।
„ case—अर्थ-व्यवहार (विवाद) ।
„ court—अर्थ-न्यायालय, दीवानी न्यायालय या अधिकरण ।
„ Disobedience—सविनय अवज्ञा ।
„ law—अर्थ-विधि, जानपद-विधि ।
„ marriage—नागर विवाह, लौकिक विवाह ।
„ procedure—अर्थ-प्रक्रिया ।
„ process—अर्थ-प्रसर ।
„ remedy—अर्थोपचार ।
„ service—जानपद-सेवा ।
„ suicide—सन्यास ।
„ suit—अर्थ-व्यवहार, अर्थ-विवाद ।
„ war—नागर युद्ध, गृह-युद्ध ।
Civilisation—सभ्यता ।
Claim—अभ्यर्थ, अभ्यर्थन । अधिकार । ममाग्रह ।
Clairvoyance—दिव्य-दृष्टि ।
Clarification—स्पष्टीकरण ।
Class—१. श्रेणी । २. वर्ग ।
Classification—श्रेणीकरण, वर्गीकरण ।
Clause—१. खंड । २. प्रनियम ।
Clear—स्पष्ट ।
Cleavage—संभेद ।
Clerk—करणिक, लिपिक ।
Cliff—भृगु ।
Climate—जलवायु । हवापानी ।

Climax—चूड़ान्त, पराकाष्ठा ।
Clique—गुट्ट ।
Clock-tower—घंटाघर ।
Clockwise—वामावर्त्त ।
Closing balance—रोकड़ बाकी ।
Clue—सूत्र ।
Cobalt—सविता (धातु) ।
Code—१. संहिता । २. विधायन, सं
३. संकेतिकी । (परि॰)
Co-defendent—सह-प्रतिवादी ।
Code language—सांकेतिक भाषा ।
Codicil—दिरसा क्रोड़ ।
Codified—संहित ।
Codify—संहित करना ।
Cognate—सजातीय ।
Cognizable—अवेक्षणीय ।
Cognizance—अवेक्षण ।
Cohesion—संसक्ति ।
Coil—कुंडल (वि॰ कुंडलित) ।
Coin—सिक्का ।
Coinage—१. टंकारण । २. टकसाल
Coincidence—समापात ।
Cold—१. शीत । २. प्रतिश्याय । जुक
Cold war—ठंडा युद्ध ।
Cold wave—शीत तरंग ।
Collection—१. संग्रह । २. समाह
अनुप्रापण, वसूली ।
Collector—१. कलक्टर । २. समाहर्
College—महा-विद्यालय ।
Colony—उपनिवेश ।
Colour—वर्ण ।
„ Blind—वर्णान्ध ।
„ Blindness—वर्णान्धता ।
Column—१. स्तंभ । २. खंभा ।
Combination—समुच्चय ।
Combustible—दह्य ।
Comet—केतु, धूमकेतु, पुच्छलतारा ।
Comma—अल्प विराम ।

d-समादेश ।
der-समादेशक ।
der-in-chief-सेनापति ।
cement-प्रारम्भ ।
t-टीका, टीका-टिप्पणी । आ·

tary-टीका-भाष्य ।
tator-टीकाकार, भाष्यकार ।
ce-वाणिज्य ।
sion-१. आयोग । २. छूट ।
ो ।
sionary-प्रमंडल ।
sioner-आयुक्त ।
-सुपुर्द करना ।
ed-आचरित ।
ee-समिति ।
-१. सर्व-साधारण । २. सर्व-

law-१. सामान्य-विधि । २.
त्र ।
sense-सामान्य-बुद्धि ।
ly-सामान्यतः ।
wealth-राष्ट्र-मंडल ।
al-सांप्रदायिक ।
alism-सांप्रदायिकता ।
alist-संप्रदायवादी ।
ication-गमनागमन, यातायात ।
ique-विज्ञप्ति ।
ism-समष्टिवाद ।
ist-समष्टिवादी ।
ation-परिवर्त्तन ।
-व्यवस्थान ।
y-१. मंडली । ३. पूग, समुदाय,

ative-तुलनात्मक ।
ison-तुलना ।
-प्रकार ।
sion-अनुकंपा ।

Compatability-संगति ।
Compatible-संगत ।
Compelled-बाध्य ।
Compendium-सारांश ।
Compensated-निष्क्रीत ।
Compensation-१. प्रतिकार, बदला । २. अवक्रय, निष्क्रय ।
Compensatory-प्रतिकारक ।
Competent-सक्षम, समर्थ ।
Compilation-संकलन ।
Compiled-संकलित ।
Complainant-अभियोगी, अभियोक्ता ।
Complaince-पालन ।
Complaint-१. अभियोग । २. परिवाद ।
Complement-पूरक ।
Complementary-अनुपूरक, पूरक ।
Complex-संज्ञा-भावना । वि० जटिल ।
„ Inferiority-हीनक भावना ।
„ Sentence-मिश्र वाक्य ।
„ Superiority-श्रेष्ठक-भावना ।
Complexion-रंग, वर्ण ।
Composition-१. घटना । २. रचना ।
Compound-वि० संयुक्त । संज्ञा-अहाता ।
„ interest-चक्रवृद्धि, सूद-दर-सूद ।
„ sentence-संयुक्त वाक्य ।
Compoundable-प्रशम्य ।
Compounder-मिश्रक, संमिश्रक ।
Compounding-१. संमिश्रण । २. अभिसंधि । (वि० अभिसंधित)
Comprehensive-व्यापक ।
Compromise-समझौता ।
Compulsion-बाध्यता ।
Compulsory-अनिवार्य ।
Computation-गणना ।
Concave-नतोदर ।
Conceal-छिपाना ।
Concealment-छिपाव ।

Concession-रियायत, छूट ।
Conclusion-परिणाम ।
Conclusive-निश्चायक ।
Concommitant-सहभावी ।
Concrete-मूर्त्त ।
Concurrence-सहमति ।
Concurrent-समवर्त्ती ।
Condition-१. दशा, अवस्था । २. पण, प्रतिबंध ।
Conditional-सोपाधिक ।
Conditioned-१. पणित, प्रतिबद्ध । २. संवलित ।
Conditioning-संवलन ।
Condolence-संवेदना ।
Condomonium-द्वैराज्य ।
Condone-सक्षमण ।
Conduct-१. आचरण । २. व्यवहार । ३. व्यापार ।
Conduct of life-जीवन-व्यापार ।
Conduction-परिचालन, प्रचालन, संचालन ।
Conductor-परिचालक ।
" of electricity-विद्युत्-चालक ।
Cone-कोण ।
Confederation-परिसंघ ।
Confer-प्रदान करना, देना ।
Conference-सम्मेलन ।
" , Press-पत्रकार-सम्मेलन ।
Confession-स्वीकारोक्ति ।
Confidence-विश्रंभ ।
Confident-विश्रंभी ।
Confidential-विश्रंभी ।
Confirmation-१. दृढ़ायन, पुष्टीकरण । २. स्थायीकरण (वि० स्थायीकृत) ।
Confiscated-जब्त ।
Confiscation-जब्ती ।
Conflagaration-अग्नि-काण्ड ।
Conflict-संघर्ष, संघर्षण ।

Congential-सहजात ।
Congratulation-प्रतिनंदन, बधाई
Conjunction-समुच्चय बोधक ।
Connected-संबद्ध ।
" therewith-तत्संबंधी ।
Connection-संबंध ।
Conquest-अभिजिति, विजय ।
Conscience-१. अंतःकरण । २. वि
Consecutive-लगातार ।
Consent-सम्मति ।
Consequence-परिणाम ।
Consequent-अनुवर्त्ती ।
Consequential-परिणामिक ।
Consequently-फलतः ।
Consideration-१. विचार । २. प्रति
Consigned-समर्पित ।
Consignee-१. प्रेषिती । २. निक्षि ३. समर्पिती ।
Consignment-१. चलान, निक्षि २. प्रेषण, प्रेषितक । ३. समर्पितक । समर्पण ।
Consignor-१. निक्षेपक । २. प्रे ३. समर्पक ।
Consistancy-संगति ।
Consistant-संगत ।
Consolidated-संहत ।
Consolidation-संहति ।
" of holdings-चकबन्
Conspiracy-षड्यन्त्र, अभिसन्धि ।
Constabulory-रक्षी-दल ।
Constellation-नक्षत्र ।
Constipation-मलावरोध ।
Constituency-निर्वाचन-क्षेत्र । मत-क्षे
Constituent-उपादान ।
Constituent Assembly-संवि परिषद ।
Constitution-संविधान ।
Constitutional-१. संविधानिक । २. वै

tionalism-संविधानवाद ।
tionalist-संविधानवादी ।
int-अभिभव ।
ction-१. निर्माण, रचना । २.

ctive-रचनात्मक ।
-वाणिज्य-दूत ।
ation-परामर्श ।
ing room-परामर्शालय ।
er-उपभोक्ता ।
ption-उपभोग ।
ious-संक्रामक ।
porary-समकालीन, सम-साम-

pt-अपमान,अवमान ।
s-अंतर्वस्तु ।
-१. प्रसंग । २. संदर्भ ।
ity-संसक्ति ।
ious-संसक्त ।
nt-महादेश, महाद्वीप ।
gency-प्रासंगिकी ।
gent-आकस्मिक, अनिश्चित,
।
ued-क्रमागत ।
ct-१. ठीका । २. संविदा ।
ct deed-१. ठीका पत्र । २.
त्र ।
ctor-ठीकेदार ।
diction-खंडन, प्रतिवाद ।
dictory-प्रतिवारिक्त ।
ry-प्रतिकूल, विपरीत, विरुद्ध ।
bution-१. अंशदान । २. सहांश ।
butor-१. अंशदाता । २.सहांशी ।
butory-सहांशिक ।
l-१. अंकुश, नियंत्रण । २.
।
versial-विवादास्पद ।
versy-वाद-विवाद ।

Convener-संयोजक ।
Convenience-सुभीता ।
Convention-अभिसमय (वि० अभिसामयिक) ।
Conventional-अभिसामयिक ।
Convergent-अभिसारी ।
Converse-प्रतिलोम ।
Conveyance-१. यान । २. सन्नयन ।
,, allowence-यान-भत्ता ।
Conveyancer-सन्नयक, सन्नयनकार, सन्नयन लेखक ।
Conveyancing-१. सन्नयन विद्या । २. सन्नयन लेखन ।
Convex-उन्नतोदर ।
Conviction-१. अभिशंसन, अभिशंसा । (वि० अभिशंसित) । २. आधर्षण । (वि० आधर्षित)
Convocation-समावर्तन ।
Convocation address-दीक्षान्त भाषण ।
Cooler-शीतक ।
Co-operation-१. सहकार । २. सहकारिता । ३. सहयोग ।
Co-operative society-सहकार समिति ।
Copied-प्रतिलिपित ।
Copy-१ प्रतिलिपि । २. प्रति ।
Copyist-प्रतिलिपिक ।
Copyright-प्रतिक-स्वत्व ।
Co-relation-अनुबंध ।
Corporate-नैगम ।
Corporation-१. निगम । २. संघ ।
,, Aggregate-बहुक निगम ।
,, Sole-एकक निगम ।
Corpse-शव ।
Correct-ठीक ।
Correction-संशोधन (वि० संशोधित) ।
Correctness-शुद्धता ।
Corresive-क्षय-कर ।
Correspondence-पत्र-व्यवहार ।

Correspondent-संवाददाता ।
Corresponding-तदनुरूप ।
Corrupt-१. प्रदुष्ट । २. भ्रष्ट ।
Corruption-१. प्रदोष । २. भ्रष्टाचार ।
Cosmic-विश्वक् ।
„ rays-विश्वक्-किरण ।
Cosmogeny-सृष्टि-विज्ञान ।
Cosmology-ब्रह्मांड विज्ञान ।
Cosmopolitan-सार्वभौमिक ।
Cosmos-ब्रह्मांड, विश्व ।
Cost-लागत, परिव्यय, व्यय ।
Costs-१. अर्थ दण्ड । २. वाद-व्यय ।
Cot-खटोला ।
Cottage industry-कुटी उद्योग, कुटी शिल्प, गृह-उद्योग ।
Council-परिषद् ।
„ in-सपरिषद ।
„ of State-राज्यपरिषद, राष्ट्र परिषद ।
Counter-action-प्रतिकरण ।
„ -attack-प्रत्याक्रमण ।
„ -balance-प्रतितुलन ।
„ -Charge-प्रत्यारोप ।
„ -Clockwise-दक्षिणावर्त्त ।
Counterfiet-प्रतिरूप, जाली ।
Counterfoil-प्रतिपर्ण ।
Counter-seal-प्रतिमुद्रांकन ।
Countervailing duty-प्रतिशुल्क । (परि०)
Courage-साहस ।
Courageous-१. साहसी । २. साहसिक ।
Course-१. मार्ग । २. रीति । ३. पाठ्यक्रम ।
Court-अधिकरण, न्यायालय, कचहरी ।
„ , Civil-दीवानी न्यायालय ।
„ , Revenue-माल न्यायालय ।
„ , Subordinate-अधीनस्थ न्यायालय ।
Court of first instance-मौलिक न्यायालय ।

Court fee-अधिकरणशुल्क, न्यायशुल
Court inspector-व्यवहार निरीक्षक
Court of records-अभिलेख अधिकर
Court of wards-प्रतिपालक अधिकर
Court martial-सैनिक न्यायालय ।
Court sale-अधिकरणिक विक्रय ।
Creation-सर्जन, सृष्टि, रचना ।
Creative-१. रचनात्मक । २. कारयि
Creator-स्रष्टा ।
Credential-प्रत्यायक ।
Credit-१. आकलन । २. प्रतीति, प्रत
३. साख । ४. श्रेय ।
Credit-note आकलन पत्रक ।
Creditor-उत्तमर्ण, महाजन ।
Credit side-धन-पक्ष । आकलन-पक्ष
Cremation ground-श्मशान ।
Cricket-गेंद-बल्ला ।
Crime-अपराध ।
Criminal-१. अपराध-शील । २.
राधिक ।
„ court-फौजदारी न्यायालय
„ process-अपराधिक प्रक्रि
„ tribe-अपराध-शील जन-
Criminology-अपराध विज्ञान ।
Crisis-विस्थिति ।
Criteria-कसौटी ।
Crop-फसल ।
„ , growing-बढ़ती फसल ।
„ , standing-खड़ी फसल ।
Cross-१. क्रास, क्रूस । २. चक्र ।
Cross-examination-प्रति परीक्षण
Cross-reference-प्रति-अभिदेश, प्र
भिदेश ।
Crossword puzzle-वर्ग-पहेली ।
Crusade-धर्म-युद्ध ।
Crystal-१. कण । रवा । २. स्फटिक
Crystalisation-१. कणीकरण ।
स्फटिकीकरण ।

ion-कृषि, खेती-बारी ।
ted-कर्षित ।
ble land-खेती भूमि ।
l-सांस्कृतिक ।
-१. संस्कार । २. संस्कृतिक ।
त ।
ted-समुच्चित ।
ation-समुच्चय ।
-चिकित्स्य । साध्य ।
-संग्रहाध्यक्ष ।
cy-प्रचलन ।
cy-note-चल पत्र ।
t-१. चलता, चालू, चलित, प्रच-
२. सांप्रतिक । ३. धारा ।
t account-चलता खाता ।
n-आवरण, पट, परदा ।
-१. मोड़ । २. वक्रता ।
d-वक्र ।
dian-अभिरक्षक ।
dy-१. प्रतिग्रह । २. अभिरक्षा ।
m-१. अचार । २. बंधान, रूढ़ि ।
nary-आचारिक ।
ms-duty-सीम-शुल्क, सीमांतिक
।
कटौती ।
motion-कटौती का प्रस्ताव ।
-चक्र ।
ic-चक्रीय ।
ic-order-चक्र-क्रम ।
nder-बेलन ।
her-शून्य, सुन्ना ।
y-गोशाला ।
-मंच ।
-सेतु ।
nage-क्षति, हानि ।
nages-क्षति-पूर्ति, हानि-मूल्य ।
ngerous-विपत्ति जनक ।
te-दिनांक ।

Day-dream-दिवा स्वप्न ।
De-१. अव (जैसे-अवमूल्यन) । २. वि (जैसे-विनयन्त्रण) ।
Dead-वि० मृत । संज्ञा० मृतक ।
Dead language-मृत भाषा ।
Deadlock-जिच, गत्यावरोध ।
Deal-अर्थ-बंध ।
Dealer-व्यापारी ।
Dear-मंहगा ।
Death-मृत्यु ।
Death certificate-मरण प्रमाणक ।
" duty-मृत्यु-कर (शुल्क) ।
" Role-मृत्यु संख्या ।
Debenture-ऋण-पत्र ।
Debit-विकलित, ऋण ।
Debit side-ऋण-पक्ष, विकलन-पक्ष ।
Debtor-ऋणी ।
Decade-दशक, दशी ।
Decadence-अवक्षय ।
Decagon-दशभुज ।
Decease-प्रमीति ।
Deceased-प्रमीत, मृतक ।
Decentralisation-विकेन्द्रीकरण ।
Decimal-दशमलव, दशमिक ।
Decimal system-दशमिक प्रणाली ।
Decided-निर्णीत ।
Decision-निर्णय, विनिश्चय ।
Decisive-विनिश्चायक ।
Declaration-प्रख्यापन ।
Declaratory-१. प्रख्यापनिक । २. प्रख्यापक ।
Declared-प्रख्यापित ।
Declension-रूप-साधन ।
Decline-ह्रास ।
Decolorisation-विरंजन ।
Decontrol-विनियन्त्रण ।
Decree-१. जय-पत्र । २. आज्ञप्ति ।
Decrement-ह्रास ।

Dedication–समर्पण ।
Deduct–१. काटना । २. घटना ।
Deduction–१. अभ्युपगम । २. कटौती ।
Deed–प्रलेख ।
Deem–समझना ।
De facto–यथार्थतः, वस्तुतः ।
Defamation–मानहानि ।
Default–वितथ ।
Defaulter–वितथी, बाकीदार ।
Defect–त्रुटि, दोष ।
Defence–प्रतिरक्षा ।
Defendant–प्रतिवादी ।
Deficit–अववर्त्त, ऊनता, घटती, तोड़ा ।
Deficit Budget–घटती आय ।
Defined–परिभाषित ।
Definit–निश्चित, ध्रुव ।
Definition–परिभाषा । (वि० परिभाषित)
Deflation–१. विस्फीति । २. मुद्रा विस्फीति ।
Deflection–वलन ।
Deformation–विरूपण ।
Deformity–विरूपता ।
Defraying–अदायगी ।
Degenerate(d)–अपजात ।
Degeneration–आपजात्य ।
Degradation–कोटि-च्युत ।
Dehydrated–निरुदित ।
Dehydration–निरुदन ।
Deism–ईश्वरवाद ।
Deist–ईश्वरवादी ।
Delay–देर, विलंब ।
Delegacy–प्रतिनिधान ।
Delegation–१. प्रतिनिधायन । २. प्रतिनिधान ।
Deletion–उद्धारण ।
Delimitation–परिसीमन ।
Deliver–देना ।
Delivered–अभिदत्त ।
Deliverence–उद्धार ।

Delivery–१. अभिदान । १. संप्रदान
३. प्रसव ।
Delivery of possession–दखल-दिह
Deluge–प्लावन ।
Demand–अभियाचना ।
" writ of–मांग-पत्र ।
Demarcation–परिच्छेद ।
Dementia–बुद्धि-भ्रंश ।
Demise–निधन ।
Demobili sation–वियोजन ।
Democracy–लोक-तन्त्र, जनवाद ।
Democrat–लोक-तन्त्री, जनवादी ।
Democratic–लोक-तान्त्रिक, जानवादि
Democratisation–लोक - तान्त्रीकर
जन-तन्त्रीकरण ।
Demon–असुर ।
Demonology–असुर-विद्या ।
Demonstration–१. उपपादन । २. प्रद
Demonstrator–उपपादक ।
Density–घनता, घनत्व ।
Dental–दंत्य ।
Dentist–दंतकार ।
Department–विभाग ।
" Head of the–विभागाध्यक्ष ।
Departure–प्रयाण, प्रस्थान ।
Dependence–अवलंबन ।
Dependent–१. अवलंबित । २. आश्रित
३. अवलंबी ।
Deposit–निक्षेप (वि० निक्षिप्त), अभि
न्यास (वि० अभिन्यस्त) ।
Deposited–निक्षिप्त, जमा ।
Depositor–निक्षेपक ।
Depriceation–१. अपकर्षण । २. अर्घ
पतन, उतार । ३. घटी ।
Depressed class–दलित-वर्ग ।
Deprivation–वंचन ।
Deprived–वंचित ।
Deputation–१. प्रतिनिधायन, प्रति-

। २. शिष्ट मंडल ।
-प्रतिनियुक्त ।
-१. प्रतिपुरुष । २. प्रति (यौगिक आरम्भ में)
ion-व्युत्पत्ति ।
ion-अपकर्षण ।
ory-अपकर्षक ।
ent-वंशज ।
-उद्भव ।
ed-वर्णित ।
tion-१. वर्णन, विवरण । २. रह । (जैसे-दोनों प्रकार के दण्ड)
r-अपसरक ।
on-अपसरण ।
-परिरूप ।
te-मनोनीत ।
tion-अभिधान, पदनाम ।
er-परिरूपक ।
le-अभीष्ट, इष्ट, वांछित ।
-वांछा ।
er-विध्वंसक ।
-ब्योरा ।
on-निरोधन ।
ination-अवधारण ।
ined-अवधारित ।
inism-नियतिवाद ।
inist-नियतिवादी ।
tion-अपकर्षण ।
ation-अवमूल्यन ।
pment-विकाशन, विकास ।
tion-उत्तराधिकार ।
es-मूत्र-कृच्छ्र, बहु-मूत्र (रोग) ।
sis-निदान ।
al-कर्ण, विकर्ण ।
ally-विकर्णित ।
-बोली ।
ue-कथोपकथन ।
ter-व्यास ।

Diamond Jubilee-हीरक-जयंती ।
Diarchy-द्वैध-शासन ।
Diary-दैनिकी ।
Dictator-अधिनायक ।
Dictionary-शब्द-कोष, अभिधान । कोष ।
Didactics-शिक्षा-शास्त्र ।
Die-hard-दुर्मर ।
Diet-भोजन ।
Dieted-भोजन-ग्राही ।
" , Non-अ-भोजन-ग्राही ।
Dietics-आहारशास्त्र (परि०) ।
Difference-अंतर ।
Different-भिन्न ।
Difficult-कठिन ।
Dilemma-उभय-संकट, धर्म संकट ।
Diluvial-प्लावनिक ।
Dimunitive-अल्पार्थक ।
Direct-१. निर्देश करना । २. प्रत्यक्ष ।
Direction-१. निर्देश । २. निर्देशन ।
Director -निर्देशक, संचालक ।
Directory-निर्देशिका ।
Disabled-अक्षम ।
Disability-अक्षमता ।
" , Legal-व्यावहारिक अक्षमता ।
Disaffection-अपरक्ति ।
Disarmament-निरस्त्रीकरण ।
Discharge-१. निस्सरण, निस्सारण । २. स्राव । ३. निरसन । ४. उत्सर्जन, छोड़ना । ५. अवरोप, अवरोपण । ६. पालन, संपादन । ७. उन्मोचन । ८. मुक्ति । ९. परिशोध (देन आदि का) ।
Discharged-उन्मुक्त, अवरोपित ।
Discipline-अनुशासन ।
Disconnected-असंबद्ध ।
Discount-१. बट्टा । २. छूट ।
Discovery-आविष्कार ।
Discretion-विवेक, स्व-विवेक ।
Discretionary-विवेकाधीन ।

Discrimination–१. विभेद। २. भेद-भाव।
Discussion–तर्क-वितर्क, वाद-विवाद।
Disease–रोग।
„ , Veneral–रतिज रोग।
Dishonesty–अनार्जव।
Dismissal–१. विसर्जन। २. पदच्युति।
Dismissed–१. खारिज। २. पदच्युत। ३. विसर्जित।
Disobedience–अवज्ञा, आज्ञाभंग।
Disorder–१. व्यति-क्रम। २. अव्यवस्था।
Displaced–१. स्थान-च्युत। २. विस्थापित, उद्वासित।
Displacement–१. विस्थापन, अभिक्रान्ति। २. उद्वासन। स्थान-च्युति।
Dispensary–औषधालय।
Disposal–१. विनियोग। २. समापन। ३. निस्तारण, व्यवस्था।
Dispose–निपटाना।
Disposing mind–विनियोगिका वृत्ति।
Disposition–१. बेची, विक्रय। २. शील। ३. व्यवस्था। ४. मनोवृत्ति। ५. विनियोग।
Dispute–विवाद।
Disputed–विवादास्पद।
Disregard–अवहेलना, उपेक्षा।
Dissection–व्यवच्छेदन।
Dissent–विमत्।
Disservice–दुस्सेवा।
Dissociation–विषंग।
Dissolution–१. अवसान। २. विलोपन। ३. विघटन।
Distillation–अभिस्रावण।
Distillary–अभिस्रावणी।
Distinct–भिन्न।
Distinguish–पहचानना।
Distribution–१. विभाजन, विभाग। २. वितरण।
„ of Labour–श्रम-विभाग।
Distributor–वितरक।
District–जिला।
District Board–जिला बोर्ड।
Divergent–अपसारी।
Dividend–लाभांश।
Divisible–भागार्ह, भाज्य, विभाज्य।
Divisibility–भाज्यता, विभाज्यता।
Divison–१. प्रखंड, प्रमंडल (भू-भाग
२. विभाजन, विभाग। ३. वाहिनी (
का विभाग)।
Divisonal–प्राखंडिक, प्रमण्डलिक।
Divorce–विवाह-विच्छेद, विविच्छेद।
Docket–खरीता।
Doctrine–सिद्धांत।
Document–१. लेख। २. चीरक।
Documentary–लिखित।
Domestic science–गार्हस्थ्य विज्ञान
Domicile–अधिवास।
Domiciled–अधिवासी।
Done–कृत, किया हुआ।
Dormant–सुप्त।
Doubt–शंका, संदेह।
Draft–१. पांडु-लिपि। २. पांडु-
प्रालेख। ३. हुन्डी।
Drafting–पांडुलेखन, प्रालेखन।
Draftsman–पांडु-लेखक, प्रालेखक
Drain–१. निर्गम। २. नाली।
Draw–आग्रहण।
Drawee–आगृहीती।
Drawer–आग्राहक, आदाता (परि
प्रापक।
Drawn–आगृहीत।
Dream–स्वप्न।
Dress–परिच्छद, पहनावा।
Dresser–प्रतिसारक।
Dressing–प्रतिसारण, मरहम-पट्टी।
„ , Dry–शुष्क प्रतिसारण।
Drop–बूँद, बिंदु।

r-विंदुक ।
t-अनावृष्टि, सूखा ।
शुष्क, सूखा । २. निर्जल ।
aning-निर्जल धुलाई ।
ssing-शुष्क प्रतिसारण ।
ming-निर्जल खेती ।
shing-निर्जल धुलाई ।
ather-सूखा मौसिम ।
m-द्वैतवाद ।
ा-१. दातव्य, देय । २. प्राप्य ।
० यथावत् ।
rocess of law-यथावत् व्यवहार ।
ावना ।
यथावत्, यथा-विधि ।
ate-द्वितक ।
le-टिकाऊ ।
bin-कूड़ा-कोठ ।
ble-शुल्काई ।
-१. कर्त्तव्य । २. शुल्क ।
Performance of-कर्त्तव्य-पालन ।
Protective-संरक्षण-शुल्क ।
mic-गतिशील ।
mics-गति-विज्ञान ।
-अर्जन ।
d-अर्जित ।
st money-साई, अग्रिम, अगाऊ ।
-१. पृथ्वी । २. मिट्टी ।
quake-भूकंप ।
nent-आभुक्ति, आभोग ।
-पूर्व, पूरब ।
ar-सुदूर पूर्व ।
Middle-मध्य पूर्व ।
Near-निकट पूर्व ।
-अनुनाद, गूंज, प्रतिध्वनि ।
ing-प्रतिध्वनन ।
ptic-क्रान्तिमंडल, क्रांतिवृत्त ।
nomic-१ आर्थिक । २. लाभकर ।
nomics-अर्थ-शास्त्र ।

Edible-खाद्य ।
Editing-संपादन ।
Edition-संस्करण ।
Editor-संपादक ।
Editorial-संपादकीय ।
Educated-शिक्षित ।
Education-शिक्षा ।
Effect-१. गुण । २. प्रभाव । २. परिणाम ।
,, To take-कार्यरूप में परिणित होना, अमल में आना ।
Effective-१. प्रभाविक । २. समर्थ ।
Effects-१. सम्पत्ति । २. सम्मान ।
Efficiency-कौशल ।
Efficiency bar-कौशल-बाध ।
Efficient-कुशल ।
Ejectment-बेदखली ।
Elastic-तन्यक ।
Elasticity-तन्य ।
Elbow-कोहनी ।
Elder-वृद्ध ।
Election-निर्वाचन, चुनाव ।
Elector-निर्वाचक ।
Electoral roll-निर्वाचक सूची ।
Electric-वैद्युत् ।
Electrical-वैद्युतिक ।
Electricity-बिजली, विद्युत ।
Element-भूत, तत्व ।
Elegible-पात्र ।
Elegibility-पात्रता ।
Elocution-वक्तृत्व-कला ।
Elucidation-स्पष्टीकरण ।
Emancipation-विमुक्ति ।
Embankment-बाँध ।
Embezzlement-अपभोग ।
Embryo-भ्रूण ।
Embryology-गर्भ-विज्ञान ।
Emergency-आपात ।
Emergent-आपातिक, आत्यथिक ।

Emigration–परियान।
Emissory–प्रणिधि।
Emmerson–प्रवाह, भसन।
Emperor–सम्राट।
Empire–साम्राज्य।
Employed–अधियुक्त।
Employee–अधियुक्ती।
Employer–अधियोजक, नियोक्ता।
Employment–अधियोजन।
Emulation–स्पर्धा।
Enact–१.विधान बनाना। २.विहित करना।
Enacted–विहित।
Enactment–विधायन।
En-bloc–समूहतः।
Enclosed–समावृत।
Enclosure–१. समावरण। २. घेरा।
Encroachment–अतिक्रमण, अतिचार।
Encumberance–भार।
Encumbered–भारित।
Encyclopedia–विश्व-कोश।
Endorsed–अनुलिखित।
Endorsement–अनुलेख।
Endowment–निधि, स्थायीनिधि।
,, Charitable–पुण्यार्थनिधि।
Endurance–मर्षण।
Energy–शक्ति।
Enforce–बलवत् या प्रचलित करना।
Engagement–अनुबन्ध।
Engineering–यन्त्र-विद्या।
Engrave–उकेरना।
Engraving–उकेरी।
Enhance–बढ़ाना।
Enima–वस्ति।
Enlargement–परिवर्द्धन।
Enquiry–१. जाँच, गवेषणा। २. परिप्रश्न।
,, Judicial–वैचारिक गवेषणा।
Enquiry office–जाँच-घर।

Enrolment–१. पंजीयन। २. ना लिखाई, नाम-प्रवेश।
Entered–निविष्ट।
Entertainment–आमोद-प्रमोद, म रंजन।
Entitled–अधिकारी।
Entomology–कीट विज्ञान, कृमि-विज्ञा
Entrance–१. प्रवेश द्वार। २. प्रवेशि
Entrance-fee–प्रवेश-शुल्क।
Entrust–सौंपना।
Entry–निविष्टि, पूर्त्ति, लेखी, इन्दर अनुवेश।
Envelope–१. लिफाफा। २. आवरण
Environment–प्रतिवेश।
Envy–ईर्षा।
Epic–महाकाव्य।
Epidemic–महामारी।
Epigraph–शिलालेख।
Epigraphy–पुरालिपि-शास्त्र।
Epitaph–समाधि-लेख।
Equal–बराबर, समान।
Euqality–बराबरी, समता, समानता।
Equation–समीकरण।
Equator–विषुवत्‌रेखा, भू-मध्यरेखा।
Equilibrium–साम्यावस्था।
Equinox–सायन।
Equipped–सज्जित।
Equipment–सज्जा। (वि० सज्जित)
Equitable–साम्यामूलक।
Equity–साम्या।
Equivalent–१. पर्यायवाची, समानार्थक २. समानक।
Era–युग।
Erosion–कटाव।
Errata–शुद्धि-पत्र।
Error–भूल।
Espionage–चार-कर्म, भेदन।
Essay–निबंध।

ial-अनिवार्य ।
shed-१. स्थापित । २. सिद्ध ।
shment-१. अधिष्ठान । २.
३. स्थापन, स्थापना ।
१. भू-संपत्ति, संपदा । २. भूमि ।
थान । ४. राज ।
duty-भू-चुंगी । भू-शुल्क ।
te-१. आगमन । २. अनुमान ।
ted-अनुमानित ।
tion-मूल्यांकन ।
-शाश्वत ।
आकाश, व्योम ।
-आचार-शास्त्र, नीति-विज्ञान (शास्त्र) ।
logy-निरुक्त ।
ptus-सफेदा, गंध सफेदा ।
ee-निष्क्रमिती ।
ration-वाष्पीकरण ।
सम ।
nce-१. गवाही, साक्षी । २. प्रमाण ।
tion-विकास ।
-पूर्व ।
vation-खुदाई ।
garation-अत्युक्ति, अतिशयोक्ति ।
ination-परीक्षा ।
ination Hall (Room)
लय ।
ine-१. जाँचना । २. बयान लेना ।
क्षा लेना ।
inee-परीक्षिति ।
iner-१. परीक्षक । २. समीक्षक ।
nple-उदाहरण, नमूना ।
pt-अतिरिक्त, सिवा ।
ption-अपवाद ।
ptive-अपवादिक ।
ssive-अत्यधिक (परि०) ।
hange-१. परिवर्तन । २. विनिमय ।
ise-वि० १. प्रतिभागिक । २. आब-
, अदला-बदली ।

पुं० उत्पाद-शुल्क ।
Excise duty-१. उत्पाद-शुल्क, प्रतिभाग, मागदेय । २. आबकारी शुल्क ।
Excitement-उत्तेजना ।
Excluded-वर्जित ।
Exclusion-वर्जन ।
Exclusive-एकांतिक ।
Executed-निष्पन्न, निष्पादित ।
Execution-१. निष्पादन । २. साधन । ३. तामील (जैसे-वारण्ट की) ४. इजरा (जैसे-दीवानी न्यायालय की डिग्री की) ५. फाँसी, वधन ।
Executioner-वधिक ।
Executive-साधनिक ।
„ the-साधनिकी ।
„ officer-साधनिक अधिकारी ।
„ service-साधनिक सेवा ।
Executor-निर्वाहक, निष्पादक ।
Exemption-१. उन्मुक्ति, मुक्ति, उन्मोचन । २. छूट । ३. रहितत्व ।
Exercisable-प्रयोज्य ।
Exercise-१. व्यायाम । २. प्रयोग ।
Exhibit-१. प्रयोग में लाना । २. दर्शित ।
Exhibition-प्रदर्शनी ।
Existing-१. विद्यमान, वर्त्तमान, प्रस्तुत । २. प्रचलित ।
Ex-officio-पदेन ।
Ex-parte-एक-तरफा ।
Expedient-उपपन्न, आवश्यक और उचित ।
Expedition-अभियान ।
Expenditure-व्यय ।
Experience-अनुभव ।
Experiment-परीक्षा, प्रयोग ।
Experimental-प्रायोगिक ।
„ science-प्रायौगिक-विज्ञान ।
Expert-विचक्षण, सुपटु, प्रवर ।
Expiration-समाप्ति ।

Expiry–समाप्ति ।
Explanation–१. विवृत्ति । २. व्याख्या । ३. स्पष्टीकरण ।
Explanatory–व्याख्यापक ।
Exploitation–शोषण ।
Exploited–शोषित ।
Exploiter–शोषक ।
Explosive–विस्फोटक ।
Export–निर्यात ।
Exporter–निर्यातक ।
Express–१. आशुग । २. व्यक्त, स्पष्ट ।
Expressed–व्यक्त, अभिव्यक्त ।
Expression–१. अभिव्यंजन, व्यंजन । २. पद ।
Expressive–अभिव्यंजक ।
Ex-proprietary tenant–साकितुल-मिल्कियत काश्तकार ।
Expulsion–अपसारण ।
Extended–प्रसारित, विस्तारित, अतिदिष्ट ।
Extension–प्रसारण विस्तरण, अतिदेश ।
Extent–आयत, प्रसार, विस्तार ।
External–बाह्य ।
External trade–बहिर्वाणिज्य ।
Extinction–निर्वापण, समाप्ति ।
Extirpation–उन्मूलन ।
Extra–१. विशेष । २. अतिरिक्त ।
Extract–१. उद्धरण । २. सारांश ।
Extra-ordinary–असाधारण ।
Extreme–परिसीमा, चरमसीमा ।
Extremism–चरम-पंथ ।
Extremist–चरम-पंथी ।
Eye-drop–नेत्र-बिंदु ।
Eye-witness–अनुभावी, प्रत्यक्षदर्शी ।
Face–१. मुख, चेहरा । २. मुखादी ।
Face value–अंकित मूल्य ।
Facility–सुभीता, सुविधा, सुकरता ।
Facsimile–प्रतिमुद्रण ।
Fact–तथ्य ।
Fact, in–वस्तुतः, वास्तव में ।
Factory–उद्योगालय ।
Failure–विफलता ।
Faith–१. निष्ठा । २. धर्म । ३. श्रद्धा
Fall–१. पतन । २. दे० water fall
Fallacy–हेत्वाभास ।
False–मिथ्या झूठा ।
Family–१. कुटुम्ब । २. परिवार ।
Fanatic–धर्मांध, कट्टर ।
Farce–प्रहसन, तमाशा ।
Far-east–दूर-पूर्व, सुदूर-पूर्व ।
Farewell–विदाई ।
Farm–फार्म ।
Fasten–जड़ना ।
Fatal–सांघातिक, घातक ।
Father–१. पिता, बाप । २. जनक ।
Father-land–पितृ-देश ।
Fault–दोष ।
Federation–१. संघ । २. राज्य संघ ।
Fee–शुल्क ।
Feminine gender–स्त्रीलिंग ।
Fermentation–संधान ।
Ferry toll–घट्ट-कर ।
Fertile–उर्वर, उपजाऊ ।
Fertility–उर्वरता, उपजाऊपन ।
Feudal system–सामंत तन्त्र, सामं प्रणाली ।
Fibre–तंतु, रेशा ।
Field book–खसरा ।
Fifth column–पंचमांग ।
Fifth columnist–पंचमांगी ।
Figurative–आलंकारिक ।
Figure–१. अंक । २. आकृति ।
Figure of speech–अलंकार ।
File–संज्ञा–१. पत्रजात । २. नत्थी । ३. संचिका ।
क्रि० दाखिल करना ।
Filed–१. नस्तित । २. संचित । ३. दाखिल ।

ता, प्रस्तुत करना ।
ion–गालन (वि० गालित) ।
. अन्तिम । २. अविकल्प ।
-वित्त ।
ll-वित्त-विधेयक ।
inister–अर्थ सचिव, वित्त सचिव ।
ial–वित्तीय, वैत्तिक ।
–अधिगम, अवधारण ।
र्थ-दण्ड, जुरमाना ।
rt–ललित कला ।
print–अंगुलि-प्रतिमुद्र ।
oof–अग्नि-कवच ।
od–ईंधन ।
थम, पहला ।
–प्रथमतः ।
erson––उत्तम पुरुष ।
ies–मीन क्षेत्र ।
y–मीनाशय ।
ा० मूर्च्छा ।
चित, उपयुक्त, योग्य ।
-नियत, निश्चित ।
rate–शरह मुएयन ।
. झंडा, ध्वजा, पताका । २. झंडी ।
ed–पताकित ।
le–चपरी नत्थी ।
le–नमनीय, लचीला ।
ility–नमनीयता, लचीलापन ।
वाद ।
-आलंकारिक ।
uation–उतार-चढ़ाव ।
l action (of river)–वहिका ।
dish–उड़न-थाल ।
ortress–उड़न-किला, उड़न गढ़ी ।
sauce–उड़न-याल ।
r–चारा ।
र्ण ।
dance–लोक-नृत्य ।
ore–लोक-वार्ता ।

,, song–लोक गीत ।
Follow, to–अनुसरण करना ।
Follower–अनुयायी ।
Following–निम्नलिखित ।
Fomentation–टकोर, सेंक ।
Food–भोजन ।
Food grains–खाद्यान्न ।
Foot note–पाद-टिप्पणी ।
Foot-wear–पादुका ।
Force–बल-शक्ति ।
,, , Come into–प्रचलित होना ।
,, , Police–आरक्षिक बल ।
Forceps–संदेश ।
Forefathers–पूर्वज, पूर्व-पुरुष, बाप-दादा ।
Foregoing–पूर्वोक्त ।
Foreign–१. पर-राष्ट्रीय, वैदेशिक । २. विदेशी ।
Forest–जंगल, वन ।
Foreword–प्राक्कथन ।
Forfeiture–अपवर्त्तन (वि० अपवर्त्तित) ।
Form–१. आकार । २. आकार-पत्र । ३. रूप, रूपक । ४. फरमा ।
Formal–१. औपचारिक । २. रीतिक, रस्मी ।
Formality–उपचार, रीतिकता ।
Formally–उपचारात् ।
Formation–१. निर्माण । २. समाहरण ।
Former–पहला, पहले ।
Formerly–पहले ।
Formulae–सूत्र ।
Formulated–सूत्रित ।
For sale–विक्रयार्थ ।
For the time being–समय विशेषकर ।
Fort–किला, गढ़ ।
Fortnightly–पाक्षिक ।
Fortress–किला, गढ़ी ।
,, , Flying–उड़न-किला, उड़न-गढ़ी ।
Forwarding–अग्रसारण (वि० अग्रसारित) ।

Fossil-जीवावशेष, जीवाश्म ।
Founder-संस्थापक ।
Fraction-१. भग्नांश । २. भग्नांक । ३. भिन्न ।
Fractional-भिन्नात्मक ।
Fracture-विभंग ।
Frame-१. चौखटा । २. ठाठ, ढाँचा । ३. शरीर ।
Franchise-मताधिकार ।
Fraud-छल ।
Fraudulently-छल से ।
Free-१. स्वतन्त्र । २. मुक्त ।
,, trade-मुक्त-व्यापार ।
Freedom-स्वतन्त्रता ।
,, of speech-भाषण-स्वातन्त्र्य ।
,, of press-मुद्रण-स्वातन्त्यत्र्य ।
Free of charge-निःशुल्क ।
Freezing point-हिमांक ।
Fresco-भित्ति-चित्र ।
Friction-१. घर्षण, रगड़ । २. संघर्ष (ण) ।
Frontier-सीमान्त ।
Fugitive-भगोड़ा ।
Fully-पूर्णतः, पूर्णतया ।
Function-१. कृत्य । २. उत्सव, समारोह ।
Functionary-कृत्यवाह, कार्याधिकारी ।
Fund-निधि, निचय ।
Fundamental-१. तात्विक । २. मौलिक ।
Funding-निचयन ।
Fungating-छत्रकायमान ।
Fungus-छत्रक ।
Furnishing-उपस्करण । (वि॰ अपस्कृत)
Furniture-उपस्कार ।
Furthur-अपर ।
Fusion-विलय ,विलयन ।
Gain-१. प्राप्ति । २. लाभ ।
Gallery-दीर्घा ।
Gamut-स्वर-ग्राम, सप्तक !
Gambler-जुआरी ।
Gambling-जुआ ।
Garden-बाग, बगीचा ।
Gardening-बागवानी ।
Garrage-गराज ।
Gauze-गाच ।
Gazette-वार्त्तायन, गजट ।
Gazetted-वार्त्तायित ।
,, officer-वार्तायित्त अधिका
Gemini-मिथुन (राशि) ।
Gender-लिंग ।
Geneology-वंशावली ।
General-१. सामान्य, सार्विक । व्यापक ।
Generalisation--साधारणीकरण ।
Generality-१. व्याप्ति । २. सामान्य
Generation-पीढ़ी ।
Generator-उत्पादक ।
Genius-१. प्रतिभा । २. प्रतिभाशाली
Genocide-जाति-वध ।
Genuine-जेन्य ।
Genus-गण, जाति ।
Geographical-भौगोलिक ।
Geography-भूगोल ।
Geology-भू-गर्भ शास्त्र । भू-विज्ञान ।
Geometrical-ज्यामितिक, भौमितिक
Geometry-रेखा-गणित ,ज्यामिति,भूमि
Germ-कीटाणु, जीवाणु ।
Germination-अंकुरण ।
Gift-१. दान । २. देन ।
Gilt-edged-स्वर्णाभ ।
Glacier-हिमानी ।
Gland-गिलटी ।
Glucose-द्राक्ष-शर्करा ।
Godown-गोदाम ।
Golden Jubilee-स्वर्ण-जयंती ।
Goldsmith-सुनार ।
Good conscience-सद्विचार ।
,, faith-सद्भाव ।

ill-सद्भावना ।
वलक, पण्य, माल ।
ed-शासित ।
edby-(के द्वारा) नियमित ।
ment-राज, शासन, सरकार ।
, Central-केन्द्रीय सरकार ।
, Provincial-प्रान्तीय सरकार ।
, State-राज्य सरकार ।
, House-राज-सदन, राज-भवन ।
or-१. राज्यपाल । २. प्रान्तपति ।
ion-कोटि-बंध (वि० कोटि-बद्ध)।
कोटि ।
amination-कोटि-परीक्षा ।
te-स्नातक ।
ted-क्रमिक ।
atical-१. शाब्दिक । २. व्याकरणिक ।
Variation-शाब्दिक रूपान्तर ।
ner-व्याकरण ।
-अनुदान, प्रदान ।
in-aid-सहायता, सहायक अनुदान ।
e-माफीदार ।
-आलेख ।
cation-अनुतोष, अनुतोषण, परितोषण ।
ty-आनुतोषिक ।
ation, Law of-गुरुत्वाकर्षण, र्षण ।
y-गुरुता ।
r-बृहत्तर ।
-कच्चा, स्थूल ।
asset-कच्ची निकासी ।
income-स्थूल आय ।
d-आधार ।
-वर्ग ।
ng-पिलाई ।
-बाग ।
Holder-बाग दार ।

Growing Crop-बढ़ती फसल ।
Gurantee-प्रतिश्रुति ।
Guardian-अभिभावक, अभिरक्षक ।
Guess-अनुमान ।
Guessed-अनुमित ।
Guest-अतिथि ।
Guest-house-अतिथिशाला ।
Guidance-पथ-दर्शन (प्रदर्शन) ।
Guide-पथ-दर्शक ।
Gutter-नाबदान, पनाला ।
" Press-नाबदानी पत्र, पनालिया पत्र ।
Guttural-कंठय ।
Gutturo-labial-कंठोण्ठ्य ।
Gutturo-palatal-कंठ-तालव्य ।
Habit-स्वभाव ।
Habitat-निवास ।
Haemorrhage-रक्त-स्राव ।
Hail-ओला ।
Hallucination-मतिभ्रम ।
Halo-१. कुंडल । २. परिवेश, प्रभा-मंडल, भा-मंडल ।
Hand-maid-कठपुतली ।
Hand note-हुण्डी ।
Hand writing-हस्तलिपि (लेखा) ।
Head-१. अध्यक्ष, प्रधान । २. शीर्ष, शीर्षक । ३. मद । ४. सिरा ।
Head constable-अधिरक्षी ।
Head of cattle-रास ।
Head of the Department-विभागाध्यक्ष ।
Heading-शीर्षक ।
Head office-प्रधान कार्यालय ।
Head Quarter-मुख्यावास ।
Health-स्वास्थ्य ।
Healthy-स्वस्थ ।
Hearing-सुनवाई ।
Heart failure-हृद्रोध ।
Heat-ताप ।

Heat wave-ताप-तरंग ।
Heated-तप्त ।
Heater-तापक ।
Heaven-स्वर्ग ।
Hebrew-इबरानी ।
Heir-उत्तराधिकारी ।
Helium-हिमजन ।
Hell-नरक ।
Help-सहायता ।
Helpless-असहाय, निस्सहाय, निरवलंब ।
Heptagon-सप्तभुज ।
Herald-अग्रदूत ।
Here-after-भविष्य में ।
Hereby-एतद्द्वारा । (परि०)
Hereditary-आनुवांशिक, पुरुषानुक्रमिक, मौरूसी, वंशानुक्रमिक ।
„ tenant-मौरूसी काश्तकार ।
Heresy-नास्तिकता ।
Heritance-पैतृक सम्पत्ति ।
Hero-१. नायक । २. वीर ।
Heroine-नायिका ।
Hero-worship-वीर-पूजा ।
Hesagon-षट्-भुज ।
Hibernation-परिशयन ।
High court-धर्माधिकरण ।
Highway-राज-पथ ।
Hindu law-धर्मशास्त्र (हिन्दू) ।
Hired-भाड़ैत ।
Hiring-भाड़ैती ।
Historical-ऐतिहासिक ।
History-sheet-दुवृत्त फलक ।
Holding-१. जोत । २. खाता ।
„, Joint-संयुक्त-खाता ।
„, Consolidation of-चकबन्दी ।
Homage-१. अभिवादन । २. श्रद्धांजलि ।
Home-गृह ।
Home guard-गृह-रक्षक ।
Home minister-गृह-सचिव ।

Homicide-नर-हत्या, हत्या ।
Homogeneous-सम-(सह) जातिक
Honest-ऋजु, इमानदार ।
Honesty-आर्जव, इमानदारी, ऋजुता
Honorable-माननीय ।
Honorarium-मानदेय ।
Honorary-अवैतनिक, मान्यक ।
Honour a bill or draft-सकारन
Horizantal-१. लंब । २. सपाट क्षैतिज ।
Horizon-क्षितिज ।
Horoscope-जन्म-पत्री ।
Horticulture-उद्यानकरण ।
Hospital-अस्पताल, चिकित्सालय ।
„ Mental-मानसिक चि लय ।
Host-आतिथेय ।
Hostage-ओल ।
House-सदन ।
House of Commons-लोकसभा ।
House of Lords-सामंत सभा ।
House of People-लोक सभा ।
House-search-गृह-विचयन ।
Howler-बहक ।
Humanity-मानवता ।
Humility-नम्रता ।
Humour-विनोद ।
Humourist-विनोदी ।
Hunger strike-अनशन ।
Hurt-उपहत ।
Hydraulic-उदिक ।
Hydrogen-उदजन ।
Hydropathy-जल-चिकित्सा ।
Hydrophobia-जलांतक ।
Hygiene-स्वास्थ्य-विज्ञान ।
Hyphen-समासक ।
Hyphothecated-भाराक्रांत ।
Hyphothecation-भाराक्रान्ति ।

esis-कल्पितार्थ, परिकल्पना ।
etic-परिकल्पित ।
दर्श ।
tion-आदर्शीकरण ।
-आदर्शवाद ।
-आदर्शवादी ।
cation-१. एकात्मता, तादा-
पहचान, विभावन ।
Card-विभावन पत्र ।
ph-चित्र-लिपि ।
जड़ता ।
ड़ ।
-मूर्त्ति-पूजक ।
-मूर्त्तिपूजा ।
ce-अज्ञान ।
ised-कुमंत्रित ।
-अविधिक, अवैध ।
gratification-अवैध अनुतोष ।
n-अध्यास, माया ।
y-मायिक ।
ation-१. निदर्शन । २. चित्र ।
y-मूर्त्त-विधान ।
able-कल्पनीय ।
ation-कल्पना ।
ative-कल्पनक ।
ry-काल्पनिक ।
on-अनुकृत्ति ।
r-अनुकारक ।
ure-अपक्व ।
sion-१. निमजन । २. प्रवाह,

tal-अमर ।
able-अचल, स्थावर ।
property-अचल संपत्ति ।
tial-निष्पक्ष ।
tiality-निष्पक्षता ।
chment-महाभियोग ।
ative mood-विधि, आज्ञार्थक (व्या०) ।
Imperialism-साम्राज्यवाद ।
Imperialist-साम्राज्यवादी ।
Implement-उपकरण ।
Implication-विवक्षा ।
Import-१. आयात । २. निहितार्थ ।
Importance-महत्व ।
Impotant-महत्वपूर्ण ।
Impose-लगाना ।
Impossible-असंभव । (भाव० असंभवता)
Impotency-नपुंसकता ।
Impotent-नपुंसक ।
Impounding-अवरोध (वि० अवरुद्ध) ।
Impregnated-निसिक्त ।
Impregnation-निषेक (वि० निषिक्त) ।
Impression-१. चिह्न । २. धारणा । ३. छाप ।
Imprint-मुद्रांकन ।
Imprisonment-१. कारारोध । २. कारावास ।
Improvement-१. उन्नति । २. सुधार ।
Impulse-आवेग ।
Inactive-अक्रिय, निष्क्रिय ।
Inadvertence-असावधनता, असावधानी ।
Inadvertently-असावधानी से ।
Inauguration-उद्घाटन ।
Incapable-अक्षम ।
Incarnation-अवतार ।
In cash-नगदी ।
In charge-अवधायक, कार्यभारी, भारवाह ।
Incidence-अनुषंग ।
Incidental-आनुषंगिक, प्रासंगिक ।
Inclination-नति, झुकाव ।
Included in-अंतर्गत, अंतर्भुक्त ।
Inclusion-अंतर्भाव ।

Income-आय ।
Income-expenditure-आय-व्यय ।
Income-tax-आयकर ।
Inconsistent-असंगत ।
In-corporated-१. निगमीकृत, श्रेणीकृत । २. अंतर्भावित ।
In-corporation-१. निगमन, श्रेणीकरण । २. निगमीकरण ।
Increment-वृद्धि ।
Incurable-अचिकित्स्य, असाध्य ।
Incurred-उपगत् ।
Independent-स्वतन्त्र ।
Index-अनुक्रमणिका, सूची ।
,, sheet-सूची फलक ।
,, subject-विषयमानुक्रमणिका ।
Indian law-भारतीय विधि-शास्त्र ।
Indian penal code-भारतीय दंड संहिता ।
Indigestion-अपच, अजीर्ण ।
Indirect-अप्रत्यक्ष, परोक्ष ।
Indirect-tax-परोक्ष-कर ।
Individual-संज्ञा-व्यक्ति, व्यष्टि । वि० वैयक्तिक ।
Individualism-व्यष्टिवाद ।
Individualist-व्यष्टिवादी ।
Indoor-आंतरिक ।
Induction-अनुगम ।
Industrial-औद्योगिक ।
Industrialisation-औद्योगीकरण ।
Industrialist-उद्योगपति ।
Industry-उद्योग-धन्धे ।
Inefficiency-अ-कौशल ।
Inevitable-अनिवार्य, अवश्यंभावी ।
Inexpedient-अनुपयुक्त ।
Inference-अध्याहार ।
Inferior-१. अवर । २. हीन ।
Inferior servant-अवर सेवक ।
Inferior service-अवर सेवा ।
Inferred-अध्याहृत ।
Infirmity-निर्बलता ।
Inflation-१. स्फीति । २. मुद्रा-स्फी
Influence-प्रभाव ।
Influential-प्रभावशाली ।
Informal-अ-रीतिक, गैर-रस्मी ।
Information-सूचना, ज्ञप्ति, विज्ञप्ति
Infringement-व्याघात ।
Inheritance-उत्तराधिकार ।
Initial-आद्याक्षर । (वि० आद्याक्ष
Injection-सूई ।
Injunction-समादेश ।
Injury-१. आघात, चोट । २. हा
In kind-जिन्सी ।
Inland-अन्तर्देशीय ।
Inner circle-अन्तर-चक्र ।
Inning-पाली (खेलों की) ।
Innocent-निरीह ।
Innuendo-व्यंग्य ।
Inoperation-चालू ।
Inoperative-अक्रियमाण ।
Inorganic-निरिन्द्रिय ।
In part-अंशतः ।
Insectivorous-कीट-भोजी ।
Insinuation-ध्वनि ।
Insolvency-दिवाला ।
Insolvent-दिवालिया ।
Insomnia-उन्निद्र (रोग) ।
Inspection-निरीक्षण ।
Inspiration-प्रेरणा ।
Inspired-प्रेरित ।
Installation-प्रस्थापन ।
Instalmant-किस्त, खंडिका ।
Instance-उदाहरण ।
Instinct-सहज बुद्धि ।
Instinctive-साहजिक ।
Institute-संस्थान ।
Institution-संस्था ।

tion-अधिसूचना, हिदायत ।
nent-करण, लिखत ।
nental music-साज संगीत ।
ीत ।
अपमान ।
nce-चीमा ।
t-प्रज्ञा, बुद्धि ।
ctuality-बुद्धि-तत्व ।
ctualism-बुद्धि-वाद ।
ed-अभिप्रेत ।
on-१. आशय, अभिप्राय । २. ।
t-१. स्वार्थ । २. हित । ३. ४. व्याज, वृद्धि, सूद । ५. रस ।
Compouud-चक्रवृद्धि, सूद-दर-सूद ।
Simple-व्याज, वृद्धि, सूद ।
erence-हस्तक्षेप, व्यतिकरण ।
m-अन्तरिम ।
ection-विस्मयादि-बोधक ।
nediarv-मध्यवर्त्ती ।
al-आंतरिक, अंतरस्थ, आभ्यता ।
al trade-अतर वाणिज्य ।
national-सार्व-राष्ट्रिय, अंतर्राष्ट्रिय ।
ment-अन्तरायण ।
pretation-व्याख्या, अनुवचन ।
-provincial-अंतर्प्रादेशिक ।
rable-असहनीय, असह्य ।
acy-जटिलता ।
cate-जटिल ।
nsic-आंतर ।
duction-१. परिचय । २. प्रस्ता-(पुस्तक की) ।
ductory-परिचायक ।
ition-अंतर्ज्ञान, अंतर्बोध ।
lid-अवैध ।
lid deed-दुर्लेख्य ।
ntion-उपज्ञा, आविष्कार ।

Investigation-अनुसंधान, जाँच ।
Investment-अधिष्ठान, विनियोग, लागत ।
Invoice-बीजक ।
Involuntary-अनैच्छिक ।
In whole-पूर्णतः, पूर्णतया ।
Ipso facto-यथार्थतः ।
Iron age-लौह युग ।
Iron curtain-लौह पट ।
Ironsmith-लोहार ।
Irony-व्यंग्य ।
Irregular-अनियमित ।
Irrelevent-अप्रासंगिक ।
Irresponsible-अनुत्तरदायी ।
Irrigation-सिंचाई ।
Ism-वाद ।
Island-टापू, द्वीप ।
Issue-१. निकासी । २. साध्या । ३. अंक (सामयिक पत्रों आदि का), ४. संतान । ५. प्रश्न ।
Issue of facts-घटनाओं या तथ्यों से संबंध रखनेवाली साध्य । तथ्यक साध्या ।
Issue of law-विधिक प्रश्नों से संबंध रखने वाली साध्या ।
Isthmus-स्थल-डमरूमध्य ।
Item-पद ।
Jail-कारागार, बंदी-गृह, कैदखाना ।
Jailor-कारागारिक ।
Jealousy-असूया, ईर्ष्या ।
Jew-यहूदी ।
Joint-वि० संयुक्त । संज्ञा जोड़ ।
Joint family-संयुक्त कुटुम्ब ।
Journalism-पत्रकारिता ।
Journalist-पत्रकार ।
Juice-रस ।
Jubilee-जयंती ।
Judge-विचारपति ।
Judgement-विचारण ।

Judgement debtor–वाद ऋणी ।
Judicial–वैचारिक ।
„ inquiry–वैचारिक गवेषण ।
„ notice–वैचारिक अवेक्षा ।
„ proceedings–वैचारिक व्यवहार ।
Judicial service–वैचारिक सेवा ।
Judiciary–वैचारिकी ।
Junior–कनिष्ठ ।
Jurisdiction–अधिक्षेत्र । (अधिकार-सीमा, अधिकार क्षेत्र)
Jurisprudence–विधि विज्ञान ।
„ , Legal–वचारिक विधि विज्ञान ।
„ , Medical–भैषज्य विधि विज्ञान ।
Jury–अभिनिर्णायक ।
„ , verdict of–अभिनिर्णय ।
Just–न्याय संगत ।
Justice–१. न्याय-मूर्त्ति । २. न्याय ।
Kidnapping–अपहरण ।
Kind–प्रकार ।
Kindred–सगोत्र ।
Kingdom–१. सर्ग । २. राज्य ।
Knowledge–ज्ञान ।
Labial–ओष्ठ्य ।
Labio-dental–दंतोष्ठ्य ।
Lable–अंकितक ।
Laboratory–प्रयोग-शाला ।
Labour–१. परिश्रम, श्रम । २. प्रसव ।
Labourer–श्रम-जीवी, मजदूर ।
Labour union–श्रमिक संघ ।
Labour room–प्रसूति-भवन, प्रसूतालय, सौरी ।
Lading, Bill of–वहन-पत्र ।
Laissez faire–मुक्त व्यापार ।
Lake–झील ।
Land–भूमि ।
Land-holder–क्षेत्रपति ।
Landing–उत्तरण ।
Landlords–भू-स्वामी ।
Land records–भौमिक अभिलेख ।
Land revenue–भू-आगम, भू-रा
मालगुजारी ।
Land tenure–भू धृति, भौमिक अधि
Language–भाषा ।
Lapse–व्ययगति, अतिपात ।
Lapsed–व्ययगत ।
Larynx–स्वर-यन्त्र ।
Late–स्वर्गीय ।
Lateral–पार्श्विक ।
Latitude–अक्ष, अक्षांश ।
Latitudinal–अनुप्रस्थ ।
Law–१. विधि । २. प्रविधि ।
„ , Breach of–विधि-भंग ।
„ , By–विधितः ।
Lawful–विधिक, वैध ।
„ , Made–वैधीकृत ।
Lawfully–विधितः ।
Law, personal–धर्म-शास्त्र ।
Law-maker–विधि-कर्त्ता ।
Law of contract–संविधा प्रविधि
Law of evidence–साक्ष्य प्रविधि
Lawyer–विधिज्ञ ।
Leader–१. नेता । २. अग्रलेख ।
Leap year–अधिवर्ष ।
Lease–पट्टा ।
„ , permanent–दवामी पट्टा ।
„ , sub–शिकमी पट्टा ।
Leasee–पट्टेदार ।
Leave–१. छुट्टी । २. अवकाश ।
Ledger–खाता-बही ।
Left-wing–वाम-पंथ । (वि० वाम-पं
Leagacy–उत्तरदान ।
Legal–१. विधिक, वैध । २. व्यवहारि
„ disability–व्यवहारिक अक्षमत
„ jurisprutence–वैचारिक वि
विज्ञान ।
„ proceedings–विधिक व्यवहा

।
epresentative–विधिक प्रति-

y–विधिकता ।
–विधितः ।
n–दूतावास ।
tive Assembly–विधान-

ture–विधायिका (सभा) ।
ल ।
(राशि) ।
. बाद । २. हीन ।
-१. अक्षर । २. पत्र ।
book–पत्र-पंजी ।
ox–पत्र-पेटी ।
f credit–प्रत्यय पत्र ।
f request-निवेदन पत्र ।
le–आरोप्य, आवाप्य ।
-आदेय ।
-१. आरोप । २. आवाप्ति । ३.
रोप ।
n–कोष । शब्दकोश ।
ity–१. दायित्व । २. धार्मत्व । देन ।
–देयी, देनदार ।
l–उदार ।
y–स्वतंत्रता, स्वातन्त्र्य ।
of conscience–विवेक स्वातंत्र्य ।
of press–मुद्रण स्वातंत्र्य ।
of speech–भाषण स्वातंत्र्य ।
-तुला (राशि) ।
ry–पुस्तकालय ।
se–समनुज्ञा ।
sing officer–समनुज्ञा अधिकारी ।
जीवन ।
boat–जीवन नौका ।
certificate–जीवन-प्रमाणक ।
insurance–जीवन-बीमा ।

Life long–आजीवन ।
Lift–उत्थानक ।
Lifting–उद्धार ।
Light house–प्रकाश-गृह, दीप स्तंभ ।
Light literature–ललित साहित्य ।
Lightning–बिजली, वज्र ।
Lightning arrester–वज्र-धर, वज्र धारक ।
Likely–सम्भाव्यतः ।
Limit–सीमा ।
Limitation–१. परिमिति । २. अवधि, कालावधि ।
,, , barred by–अवधिबाधित, तमादी ।
Limited–१. परिमित । २. परिसीमित ।
Line–रेखा ।
Linguist–भाषाविद् ।
Liquidation of company–अपाकर्म ।
Liquidation of debt–अपाकरण । भुगतान (ऋण का) ।
Literacy–साक्षरता ।
Literal–शाब्दिक ।
Literary–साहित्यिक ।
Literate–साक्षर, शिक्षित ।
Literator–साहित्यकार ।
Literature–साहित्य ।
Lithograph–प्रस्तर-मुद्रण ।
Living allowance–जीवन वृत्ति ।
Loadstone–चुंबक (पत्थर) ।
Loan–ऋण, कर्ज ।
Loby–प्रकोष्ठ ।
Local–स्थानिक, स्थानीय ।
Local Board–स्थानिक परिषद ।
Local self Government–स्थानिक स्वशासन ।
Local Tax–स्थानिक कर ।
Localisation–स्थानीयकरण ।
Locust–टिड्डी ।

Logic—तर्क शास्त्र, न्याय शास्त्र।
Logical—तर्क संगत।
Logician—नैयायिक, तार्किक।
Longing—उत्कंठा।
Loss—हानि।
Loud speaker—गर्जक।
Lower—अधस्तन।
Lower class—निम्नवर्ग।
Loyalty—१. निष्ठा (वि० निष्ठ) २. राज-भक्ति।
Lullaby—लोरी।
Lump sum—एक-मूठ।
Lunatic—पागल, विक्षिप्त।
Lyric—गीत।
Lyric poem—गीति-काव्य।
Lyric poet—गीतकार।
Lymph—लसीका।
Machine—यन्त्र।
Magazine—१. पत्रिका। २. शस्त्रागार।
Magic—१. जादू। २. माया।
Magic square—माया वर्ग।
Magical—१. मायिक। २. मयावी।
Magistrate—दंडाधिकारी।
Magnet—चुंबक।
Magnetical—चुंबकीय।
Magnification—विवर्द्धन।
Maintenance—१. पालन-पोषण, भरण-पोषण। २. रख-रखाव।
Maintenance Allowence—पोषण-वृत्ति।
Major—वयस्क।
Majority—१. वयस्कता। २. बहुमत। ३. अधिकांश।
Malaria—शीत-ज्वर, जूड़ी।
Male—पुंजातीय।
Male descendent—पुंसंतति।
Mammal—स्तनपायी।
Management—प्रबंध, व्यवस्था।
Managment charges—प्रबंध-परिव्य
„ „ cost of—प्रबंध-व्यय।
Manager—व्यवस्थापक, प्रबंधक
प्रबंधक।
Managing committee—प्रबंध समि
Managing director—प्रबंधी संचाल
Mandatory—विधायक।
Manganese—मंगल (धातु)।
Manifestation—अभिव्यक्ति।
Manner—१. रीति। २. प्रकार, ढंग।
Manner, presented—नियत रीति।
Man power—जन-शक्ति। (परि०)
Manual—संज्ञा—नियमावली।
वि० शरीरिक।
„ labour—श्रात।
Manure—खाद।
Manuscript—पांडु-लिपि।
Map—मानचित्र नक्शा।
Margin—उपांत।
Marginal—१. उपांतस्थ, उपांतीय। न्यूनाधिक
„ Witness—उपांतस्थ साक्ष
Mark—चिह्न।
Marked—चिह्नित।
Mars—मंगल (ग्रह)।
Masculine—पुल्लिंग।
Mask—वर्णक।
Match—जोड़।
Material—संज्ञा—सामग्री।
वि० १. तात्विक। २. महत्वपूर्ण। प्रभावी।
Materialism—१. देहात्मवाद। पदार्थवाद।
Maternity—१. प्रसव। २. मातृत्व।
Matriarch—मातृ।
Matriarchal—मातृक।
Matriarchy—मातृक-प्रणाली।
Matricide—मातृ-हत्या।

-मातृका ।
-१. तत्व । २. विषय ।
-कहावत, लोकोक्ति ।
um-अधिकतम, महत्तम ।
मध्या ।
g-अर्थ ।
-साधन ।
re-१. नाप, माप । २. पैमाइश ।
rement-माप, मापन ।
nic-यान्त्रिक ।
-पदक ।
n-मध्यमा ।
tor-मध्यस्थ । (भाव० मध्यस्थता)
al-१. चिकित्सन । २. चैकित्सिक ।
al certificate-चिकित्सन प्रमाणक ।
Jurisprudence-चिकित्सन या भैषज्य विधि विज्ञान ।
leave-चिकित्सावकाश ।
officer-चिकित्सा अधिकारी ।
eval-मध्यकालीन, मध्य-युगीन ।
ation-ध्यान ।
erranean-भूमध्य सागर ।
um-माध्यम ।
ber-१. सदस्य, सभासद । २. अंग ।
bership-सदस्यता ।
-दे० 'Mamorandum'.
orandum-१. अनुबोधक । २. क पत्र । ३. परिचय पत्र । ४. स्मृति स्मरण-पत्र, परिपत्र ।
orial-स्मारक ।
ory-स्मरण शक्ति । स्मृति ।
ses-मासिक मासिक धर्म ।
suration-क्षेत्र-मिति, भू-मिति ।
tal-मानसिक ।
tal deficiency-मनोवैकल्प ।
tal hospital-मानसिक चिकित्स्य ।
tal science-मानस विज्ञान ।

Mentality-मानसता ।
Mention-१. उल्लेख । २. चर्चा ।
Mentioned-१. उल्लिखित । २. चर्चित ।
Merchandise-पण्य-द्रव्य ।
Merchandise-mark-पण्य-चिन्ह ।
Mercury-१. बुध (ग्रह) । २. पारा, पारद ।
Merger-विलय, विलयन, विलयीकरण ।
Merit-१. योग्यता । २. गुण ।
Merits-गुण-दोष ।
Message-संदेश ।
Metaphor-रूपक ।
,, Sustained-सांग रूपक ।
Meteorology-अंतरिक्ष विज्ञान ।
Meter-मापक ।
Method-ढंग, प्रणाली ।
Mica-अभ्रक, भोडर (ल) ।
Microphone-ध्वनि-क्षेपक यन्त्र ।
Microscope-सूक्ष्म-दर्शक यन्त्र ।
Micro wave-अणु तरंग । (परि०)
Middle age-मध्ययुग ।
Middle class-मध्यम वर्ग ।
Middle east-मध्य-पूर्व ।
Middle-man-मध्यस्थ ।
Midwife-दाई, प्रसाविका ।
Midwifery-प्रासविक विज्ञान ।
Millenium-सहस्राब्दि, साहस्री ।
Mine-१. खान । २. सुरंग ।
Mine-sweeper-सुरंग-बुहार ।
Mineral-खनिक ।
Minerals-खनिज-पदार्थ ।
Minerology-खनिज-विज्ञान ।
Minimum-न्यूनतम ।
Minister-मन्त्री, सचिव ।
Ministerial-कारणिक ।
,, servant-कर्मचारी ।
,, service-कारणिक सेवा ।
Ministry-सचिवाधिकार ।

Minor–अवयस्क, अल्पवयस्क ।
Minority–१. अल्म-मत । २. अल्पसंख्यक । ३. अवयस्कता । ४. अल्पांश, न्यूनांश ।
Minus–वियुक्त ।
Minute–कला ।
Minute book–कला-पंजी ।
Miracle–चमत्कार, करामात ।
Misappropriation–अपयोजन ।
Misbehaviour–कदाचार ।
Miscellaneous–प्रकीर्ण (क), फुटकर । विविध ।
Misleading–भ्रामक ।
Mistake–१. अशुद्धि । २. भूल ।
" Bonafide–अकामतः की हुई भूल ।
Misunderstanding–विभ्रम ।
Misuse–दुरुपयोग ।
Mixture–मिश्रण ।
Mode–ढंग ।
Model–प्रतिमान ।
Moderate–संयत ।
Moderation–संयम ।
Modern–आधुनिक, अर्वाचीन ।
Modification–१. परिष्कार, परिष्करण । २. परिवर्त्तन ।
Monarchy–राजतन्त्र ।
Money–द्रव्य ।
Monism–अद्वैतवाद ।
Monopoly–एकाधिकार ।
Month–मास, महीना ।
Monthly–मासिक ।
Mood–मनोवृत्ति ।
Moon–चंद्रमा ।
Morphology–अंग-संस्थान ।
Mortal–अनित्य, नश्वर ।
Mortgage–बंधक, रेहन ।
Mortgge deed–बंधक पत्र, रेहननामा ।

Mortgagee–बंधकी ।
Mortgage, simple–दृष्टि-बंधक ।
Mortgage with possession–भो बंधक ।
Mortgagor–बधंक-कर्त्ता ।
Mortuary–चीर-घर ।
Mother–माता, माँ ।
Mother country–मातृ-देश ।
Mother land–मातृ-भूमि ।
Mother tongue–मातृभाषा ।
Motif–अभिप्राय ।
Motive–उद्देश्य ।
Movable–चल, जंगम ।
" property–चल-संपत्ति ।
Municipal Board–नगरबोर्ड ।
" Commissioner–नकार पार्षद ।
" court–जानपद न्यायाल
" fund–नागर निधि ।
Municipality–नगर परिषद, नग पालिका ।
Murder–नरवध, बध । हत्या ।
Murderer–हत्याकारी, हत्यारा ।
Muscle–पट्ठा ।
Museum–संग्राहलय, अजायबघर ।
Mushroom–खुमी, छत्रक ।
Music–संगीत ।
" Instrumental–साज संगी वाद्य संगीत ।
" , Vocal–कंठ संगीत ।
Mutation–नाम चढ़ाई, नामांतरण ।
Mutatis mutandis–आवश्यक परिवर्त्तनों के साथ ।
Mutiny–विद्रोह, विप्लव ।
Mutual–पारस्परिक ।
Mysitc–रहस्यवादी ।
Mysticism–रहस्यवाद ।
Nadir–अधःस्वस्तिक, अधोबिंदु ।

e, by-नाम (नामतः)।
ly-यथा।
tion-समाख्यान।
-अनुनासिक।
-प्रासूतिक।
n-राष्ट्र।
nal-वि० राष्ट्रीय, जातीय।
-राष्ट्रिक।
nalist-राष्ट्रवादी।
nality-१. राष्ट्रिकता। २. ता।
nal language-राष्ट्र-भाषा।
ral-१. नैसर्गिक, प्राकृतिक। २. विक।
re-१. निसर्ग, प्रकृति। २. स्वभाव।
कार।
l-१. नौ-सैनिक। २. समुद्री।
l force-नौ-शक्ति।
lservice-नौ-सेवा।
gable-नाव्य, नौतरणीय।
gation-१. नौतरण। २. परि-
।
-नौसेना।
east-निकट-पूर्व।
ssary-आवश्यक।
le work-सुईकारी, सूची-शिल्प।
tion-निषेध।
tive-१. अभावक। २. नत्वर्थक,
ात्मक। ३. नकारात्मक। ४. नहिक।
ण (परिशिष्ट)
igence-प्रमाद।
igently-प्रमादतः।
une-वरुण।
es-स्नायु, संवेदन सूत्र।
-पक्का।
assetts-पक्की निकासी।
mismatics-मुद्राशास्त्र।
tral-तटस्थ।

Neutralisation-तटस्थीकरण।
Neutrality-तटस्थता।
New-born-नव-जात।
Nib-डंक, जीभ (कलम की)।
Night School-रात्रि पाठशाला।
Nomad-यायावर।
Nominal-१. नामिक। २. दिखावटी।
Nominalism-आभासवाद।
Nominated-नामांकित।
Nomination-नामांकन।
Nominee-नामांकिती।
Nonagon-नव-भुज। (परि०)
Non-agricultural-अकृषिक।
Non-cognizable-अनवेक्षणीय।
Non-cognizance-अनवेक्षा।
Non-dieted-अभोजन-ग्राही।
Non-occupancy (tenant)-गैर-दखीलकार।
Non-paying-निःशुल्क।
Non-recurring-अनावर्त्तक।
Non-resident-अनावासिक।
Normal-प्रकृत, सहज, साधारण।
Normal School-प्रशिक्षण विद्यालय।
Normative science-आदर्श विज्ञान।
North-उत्तर।
Nota bene-पुनश्च (परि०), विशेष सूचना।
Notation-स्वर-लिपी।
Note-१. टीप, टिप्पणी। २. आलोक। ३. पलक। ४. धन-पत्र।
Notice-सूचना, सूचना-पत्र।
Notice-board-सूचना-पट्ट।
Notification-विज्ञप्ति।
Notified-विज्ञापित।
" Area-विज्ञापित क्षेत्र।
Noun-संज्ञा।
Novel-उपन्यास।

Novelist-उपन्यासकार।
Nucleus-नाभि।
Nudism-नग्नवाद। (परि०)
Nudist-नग्नवादी।
Nuisance-कटक।
Null-मोघ, व्यर्थ, विफल।
Null and void-व्यर्थ और विफल।
Nullification-व्यर्थन, मोघन।
Nullity-वैफल्य, व्यर्थता।
Number-१. संख्या। २. अंक।
Nurse-धातृका।
Nursing-परिचार।
Nux Vomica-कुचला।
Oasis-मरुद्वीप, शाद्वल।
Oath-शपथ।
Object-१. ध्येय, उद्देश्य। २. वस्तु, पदार्थ।
Objection-१. आपत्ति, उज्र। २. उज्रदारी।
Obligation-१. आभार। २. दायित्व।
Oblique-तिर्यक्, तिरछा।
Observation-१. पर्यवेक्षण। २. वेध।
Observatory-वेधशाला।
Observer-पर्यवेक्षक।
Obstetrical-प्रासविक।
Obstetrics-प्रासविक विज्ञान।
Obstruction-बाधा, रुकावट।
Obtuse angle-अधिक कोण। (परि०)
Obverse-सीधा, मुख।
Occassion-अवसर।
Occidental-पाश्चात्य।
Occupancy right-दखीलकारी।
" tenant-दखीलकार।
Occupant-काबिज।
Occupation-व्यवसाय, उद्यम।
Octagon-अष्ट-भुज। (परि०)
Octavo-अठपेजी।
Octopus-अष्टपाद।
Offence-अपराध।
Offer-प्रस्ताव।
Offeree-प्रस्ताविती।
Offerer-प्रस्तावक।
Office-१. कार्यालय। २. पद।
" by virtue of-पदेन।
Officer-अधिकारी। पदाधिकारी।
" in-charge-अवधायक अ
कारी, भारवाह अधिकारी।
Official-संज्ञा० अधिकारी।
वि० सरकारी।
Official title-पदनाम।
Officiating-स्थानापन्न, निर्वाहणिक
Off-print-अधि मुद्रण।
Oil painting-तैल-चित्र।
Oligarchy-अभिजात तन्त्र।
Omission-१. अकरण, अनाचर
२. चूक, छूट।
Omnipotent-सर्व-शक्तिमान।
Omnipresent-सर्व-व्यापक।
Omniscience-सर्व-ज्ञाता।
On account of-मद्धे।
On service-राज-प्रेष्य।
Opening balance-आद्य-शेष।
Opera-गीति-नाट्य।
Operation-१. व्यापार। २. चीर-फ
शल्योपचार।
" in-चालू।
Operative-क्रियमाण।
Opinion-मत, सम्मति।
Opponent-विपक्षी, विरोधी।
Opportunism-अवसरवाद।
Opportunist-अवसरवादी।
Opportunity-अवसर।
Opposite-उलटा, विपरीत, विरोधी।
Opposition bench-विरोधी-पीठ।
Optics-काचकी। (परि०)
Optimism-आशावाद।
Optimist-आशावादी।
Optional-ऐच्छिक, वैकल्पिक।

e-आकाशवाणी, देव-वासना ।
estra-वाद्य-गोष्ठी, वाद्य-वृन्द ।
-१. आज्ञा । आदेश । २. क्रम ।
वस्था । ४. माँग ।
of preference-तारतम्य ।
sheet-आज्ञा फलक ।
form-माँग-पत्र ।
ance-अध्यादेश ।
ary-साधारण ।
n-१. अवयव । २. मुख-पत्र ।
nic-सेन्द्रिय, जैव ।
nisation-संघटन ।
nised-संघटित ।
ntal-पौर्वात्य । प्राच्य ।
inal-१.नव, नवीन । २. मौलिक ।
मूलिक ।
inal civil jurisdiction-मूलिक
नी अधिक्षेत्र ।
inality-मौलिकता ।
inal side-मूलिक पक्ष ।
inator-प्रवर्त्तक ।
ament-आभूषण ।
ithology-पृथ्वी विज्ञान ।
hanage-अनाथालय ।
hogonal-समकोणी ।
hography-वर्ण विचार या शिक्षा ।
er-अन्य, दूसरा ।
erwise-वैसे तो, अन्यथा ।
-door-बाह्य ।
terfoil-विपर्ण ।
tline-रूपरेखा ।
t of date-दिनातीत ।
t post-चौकी ।
tskirts-बाह्यिआंचल ।
ary-डिबाशय ।
erhitting-अतिसंधान ।
er population-अति-प्रजन ।
er production-अति-उत्पादन ।

Over ruled-विपर्य्यस्त ।
Over seer-अधिकर्म्मी ।
Ovum-१. डिंब । २. डिंबाणु ।
Owner-स्वामी ।
Ownership-स्वामिकता, स्वामित्व ।
Pacificism-शान्तिवाद ।
Pacific-शान्तिवादी ।
Pad-पत्राली । परती ।
Paid-१. दत्त । २. वेतन भोगी, वैतनिक ।
Painting-रंजन ।
Palatal-तालव्य ।
Palate-तालू, तालु ।
Paliontology-प्रत्न-जीव-विज्ञा ।
Pale depot-मैला घर ।
Paleography-पुरालिपि शास्त्र ।
Panel-१. दिल्ला । २. चयनक ।
Panic-उद्वेग ।
Pantheism-सर्वेश्वरवाद ।
Paper money-पत्रक धन ।
Papers-पत्र जात ।
Paper setter-प्राश्निक । (परि०)
Paper weight-दाब, पत्र-वारक ।
Parabola-परवलय ।
Parachute-छतरी ।
Paradox-मिथ्याभास ।
Paragraph-अनुच्छेद ।
Parallel-१. समकक्ष । २. समांतर,
समानांतर ।
Parallel government-समकक्ष सरकार ।
Parasite-पर-जीवी (परि०), परांग-भक्षी ।
Parcel-पोट ।
Parcel post-पोट-डाक ।
Parliament-संसद ।
Parliamentarian-सांसदी ।
Parliamentary-सांसद ।
„ secretary-सांसद मंत्री ।
Parody-भड़ौआ ।
Parsing-शब्दान्वय ।

Part-अंश, भाग ।
Particulars-ब्योरा ।
Partial-आंशिक ।
Partition-विभाजन, बँटवारा ।
Parts of speech-शब्द-भेद ।
Partly-अंशतः ।
Party-दल, पक्ष, पक्षक, फरीक ।
Pass-१. पारणक, पारण-पत्र । २. प्रवेश-पत्र । ३. प्रवेशिका । ४. गिरि-संकट, दरी ।
Pass Book-प्रति लेखा ।
Passed-पारित ।
Passing-१. पारण । २. संक्रमण ।
Passive voice-कर्म-वाच्य ।
Pastoral poetry-ग्वाल गीत ।
Pasture-पशुचर ।
Pasture-land-गोचर भूमि, पशुचर-भूमि ।
Pathological-नैदानिक ।
Pathologist-निदानज्ञ ।
Pathology-निदान-शास्त्र ।
Patient-रोगी ।
Patriarch-पितृ ।
Patriarchal-पितृक ।
Patriarchy-पितृ-प्रणाली ।
Patricide-पितृहत्या ।
Patriot-देशभक्त ।
Patriotism-देशभक्ति ।
Patron-संरक्षक ।
Patronage-संरक्षण ।
Pauperism-मुफलिसी ।
Pay-वेतन ।
" to-चुकाना ।
Payable-देय ।
Payee-पानेवाला ।
Paying-दायक ।
Payment-१. प्रदान, भुगतान । २. शोधन ।
Pay sheet-वेतन फलक ।

Payment order-देयादेश ।
Peace-शांति ।
Peace treaty-शांति-संधि ।
Peace and order-योग-क्षेम ।
Peace, Breach of-शांति-भंग ।
Pecuniary-आर्थिक ।
Pedagogy-शिक्षा-शास्त्र ।
Penal-१. दंडनीय । २. दंडात्मक ।
Penal code-दंड-संहिता ।
Penalty-दंड, शास्ति ।
Pending-१. विचाराधीन । २. अनुलंबि-लंबित, सापेक्ष्य ।
Pen-down strike-कलम-छोड़ हड़ता
Peninsula-प्रायद्वीप ।
Pension-अनुवृत्ति, उत्तरवेतन ।
Pensionable-अनुवृत्तिक ।
Pensioner-अनुवृत्तिधारी ।
Pentagon-पंच-भुज । (परि०)
Penumbra-उपच्छाया ।
Peon-पत्र-वाह(क) ।
Peon-book-पत्रवाह-पंजिका ।
Per annum-वार्षिक ।
Per cent-प्रतिशत, सैकड़े ।
Per mensem-मासिक ।
Percentage-प्रति शतक ।
Peremial-बहुवर्षी ।
Perfect-पूर्ण ।
Perfection-पूर्णता ।
Performance-पालन ।
" , of duty-कर्त्तव्य पालन
Period-१. अवधि । २. काल, काल-खंड
" of service-सेवा काल ।
Periodic-सत्रिक, कालिक ।
Periodical-सामयिक पत्र ।
Permanent-१. स्थायी । २. दवामी इस्तमरारी ।
" , Advance-अप्रतिदेय ऋण
" , Fund-स्थायी कोष ।

anent Lease-दवामी पट्टा।
Settlement-स्थायी बन्दोबस्त।
, tenure holder-दवामी
ार।
nently-स्थायी रूप से।
ssion-अनुज्ञा, अनुमति।
tation-प्रस्तार, क्रम-चय।
ual-सतत।
uity-सातत्य।
n-१. व्यक्ति। २. पुरुष (व्याकरण)।
nal-१. व्यक्तिगत, वैयक्तिक। २. निजी, अपना।
,, Assistant-निजी सहायक।
,, , law-धर्मशास्त्र
ी का निजी)। व्यक्तिगत विधि।
nality-व्यक्तित्व।
ective-अनुदृष्टि, दृष्टि-क्रम।
al-अवलोकन।
asion-व्याप्ति।
erse-प्रतीय, विकृत।
ersion-प्रतीपना, विकृति।
mism-निराशावाद, दुःखवाद।
mist-निराशावादी, दुःखवादी।
ion-याचिका, प्रार्थना-पत्र।
ioner-निवेदक, प्रार्थी।
ion of objection-आपत्ति-पत्र।
tom-मनोलीला।
omenal world-दृश्य जगत।
ology-भाषा विज्ञान।
osophy-दर्शन शास्त्र।
bia-आंतक।
netia-स्वरिका।
netics-स्वर विज्ञान।
to-छाया-चित्र, चित्र।
tography-आलोक (छाया) चित्रक।
ोग्राफी।
rase-वाक्यांश।

Phraseology-वाक्य-रचना।
Physical-शारीरिक।
Physical geography-भौतिक भूगोल।
Physicion-चिकित्सक।
Physics-पदार्थ विज्ञान, भौतिक विज्ञान।
Physiography-भौतिक भूगोल।
Picketing-धरना।
Picture-चित्र।
Pigeonhole-कोष्ठ।
Pin-कंटिका, शूक।
Pin-cushion शूकधानी।
Pirate-जल-दस्यु।
Pisces-मीन (राशि)।
Place-स्थान, स्थल।
Place of occurence-घटना-स्थल।
Plaint-वाद-पत्र।
Plaintiff-वादी।
Plan-१. योजना। २. रूप-रेखा। ३. रेखा-चित्र।
Plane-१. सम-धरातल। २. वायु-यान।
Plaster-पलस्तर।
Plateau-पठार।
Player-खिलाड़ी।
Play ground-क्रीड़ा-स्थल, खेल का मैदान।
Pleader-अभिवक्ता।
Pleading-अभिवचन।
Pliers-पलास (उपकरण)।
Plot-१. गाटा। २. कथानक, कथा-वस्तु।
Plural-बहुवचन।
Pneumonia-सन्निपात।
Poem-काव्य।
Poetry-१. कविता। २. पद्य।
Point-१ विंदु। २. सूत्र। ३. अवस्थान।
Poison-विष, जहर।
Poisonous-जहरीला, विषाक्त।
Police-आरक्षी।
Police station-थाना।

Policy–१. नीति । २. बीमा-पत्र ।
Polish-ओप ।
Politician–राजनीतिज्ञ ।
Politics-राजनीति ।
Polity–राज्य-तन्त्र ।
Polling–मत·दान ।
Polygamy -बहु-विवाह ।
Polyglot–बहुभाषज्ञ ।
Polygon–बहु-भुज ।
Pond–झीलर ।
Pool–गोलक ।
Popular–सर्व-प्रिय, लोक·प्रिय ।
Popularity–लोक-प्रियता, सर्व-प्रियता ।
Population–जन-संख्या ।
Portion–अंश, भाग ।
Portrait–प्रतिकृति ।
Pose–ठवन, मुद्रा ।
Position–स्थिति, बाना ।
Positive–वि० १. भावक । २. घन । ३. सहिक ।
संज्ञा-घनाणु ।
Positive science–तात्विक·विज्ञान ।
Positivism–प्रत्यक्षवाद ।
Positivist–प्रत्यक्षवादी ।
Possession–१. अधिकार, आधिपत्य, कब्जा, भोग ।
,, , Delivery of–दखल दियानी ।
,, , Mortgage with–भोग-बंधक ।
Possessive case–संबंध-कारक ।
Possible–संभव ।
Possibility–संभावना ।
Post–१. स्थान, पद । २. डाक ।
Post dental–दंत मूलिय ।
Posted–नियत (पद या कार्य पर) ।
Poster–प्रज्ञापक ।
Post-humous–मरणोत्तर (क) ।
Posting–स्थापन (स्थान या पद पर) ।

Post mortem–शव-परीक्षा ।
Post office–डाकघर ।
Posture–मुद्रा, ठवन ।
Potency–पुंसत्व ।
Potent–पुंसक ।
Potentiality–शक्यता ।
Pot-sherd–ठीकरा ।
Pottery–१, कुंभ-कारी. कुम्हारी । भृरापात्र ।
Power–१. अधिकार । २. शक्ति, साम
३. सत्ता ।
Power of attorney–अभिकर्त्ता·पत्र
Power politics–बलिक नीति ।
Practical–क्रियात्मक, व्यावहारिक ।
Practically–व्यवहारतः ।
Practice–१. अभ्यास । २. व्यवहार
Preamble–अथवाद ।
Pre–प्राक् ।
Precarious (land)–एहतमाली (भूमि
Precaution–वारणक ।
Precautionary–वारणिक ।
Precept–उपदेश, निर्देश ।
Predecessors–पूर्वाधिकारी ।
Predicate विधेय ।
Pre-emption–अग्र क्रम ।
Preface–आमुख, भूमिका ।
Preferable–अधिमान्य ।
Preference–अधिमान, वरीयता ।
Prefix–उपसर्ग ।
Pregnant–गर्भवती, गर्भिणी ।
Prehistoric–प्रागैतिहासिक ।
Prejudice–विधारण ।
Prejudiced–विधारित ।
Preliminary–वि० आरम्भिक, प्राथमि
संज्ञा–उपोद्घात ।
Prelude–मंगला-चरण ।
Premium–१. नजराना । २. चन्द
(बीमे का) ।

id-पुरःदत्त, पूर्व-दत्त ।
ration-१. आयोजन, उपक्रम ।
कल्पन ।
yment-पुरःदान (वि० पुरिदत्त) ।
gative-आदिमान ।
ibe-प्रदेशन, (वि० प्रदिष्ट), नियत
ibed-१. नियत । २. प्रदिष्ट । ३.
। ४. विनिश्चित ।
iption-१. अतिभोग । २. प्रदेशन ।
nt-१. वि० उपस्थित (भाव०
ति), विद्यमान । २. प्रस्तुत । ३.
।
मने रखना, प्रस्तुत करना ।
ेंट, उपहार ।
rvation-परिरक्षण ।
le, to-अध्यासन ।
ent-सभापति ।
ling-अध्यासिन ।
ling officer-अधिपति ।
-१. छापाखाना, मुद्रणालय । २.
समाचार-पत्र । (सामूहिक रूप में)
Printing-छापाखाना, मुद्र-
।
conference-पत्रकार सम्मेलन ।
med-परिकल्पित ।
mption-परिकल्पन ।
ous-पूर्व ।
-अवक्रय, दाम, मूल्य ।
-पुरोहित ।
hood-पौरोहित्य ।
na facie-ऊपर से दिखने पर,
रूप से ।
-आद्य ।
minister-महा मंत्री ।
tive race-आदिम जाति ।
pal-वि० १.प्रधान, मुख्य । २.मूल ।
१. मूल (धन) । २. पूँजी ।

Principle-सिद्धांत ।
Printer-मुद्रक ।
Printing-छपाई, मुद्रण ।
Printing press-मुद्रणालय, छापाखाना ।
Priority-प्रथमता, प्राथमिकता, प्राथम्य ।
Prison-कैदखाना, बंदी-गृह ।
Prisoner-कैदी, बंदी ।
Prisoner of war-युद्ध-बंदी ।
Privacy-विविक्त ।
Private-१. निजी, वैयक्तिक । २. विविक्त ।
Privation-वंचन ।
Privilege-अधिकार, विशेषाधिकार ।
Privileged-अधिकृत ।
Prize-पारितोषिक ।
Probability-संभावना, संभाव्य ।
Probable-विभाव्य, संभाव्य, संभावित ।
Probation-परीक्षण (वि० पारिक्षणिक) ।
Probationer-पारीक्षणिक ।
Problem-संपाद्य, समस्या ।
Procedure-प्रक्रिया ।
Proceeding-१. कार्य्यवाही, कार्रवाई ।
२. व्यवहार । ३. प्रक्रिया ।
Proceedings-कार्य्य विवरण ।
" , to take-व्यवहार प्रस्तुत करना ।
Process-१. प्रक्रिया । २. प्रसर ।
Process fee-प्रसर शुल्क ।
Process server-प्रसरपाल ।
Proclaimation-उद्घोषण, घोषणा ।
Produce-क्रि० प्रस्तुत करना ।
संज्ञा-उपज ।
Product-गुणनफल ।
Production-१. उत्पत्ति । २. उत्पादन ।
Productive-उत्पादक ।
Porductivity-उपजाऊपन, उर्वरता ।
Profession-वृत्ति, व्यवसाय ।
Professional-वृत्तिक, व्यावसायिक ।
Professor-प्राध्यापक ।

Profit—फलोदय, लाभ, लाभ्यांश ।
Profitable—लाभदायक ।
Profit and loss—हानि-लाभ ।
Programme—कार्य्यक्रम ।
Prohibited—प्रतिषिद्ध ।
Prohibition—प्रतिषेध ।
Prohibitor—प्रतिषेधक ।
Prohibitory—निषेधक, प्रतिषेधक ।
Project—प्रक्षेप, योजना ।
Projection—प्रक्षेपण ।
Projector—प्रक्षेपक ।
Promise—प्रतिश्रुति, वाग्दान, वचन, वादा ।
Promising—उदीयमान्, होनहार ।
Promissory note—विश्रुति-पत्र ।
Promotion—१. उन्नयन (वि० उन्नति) । २. पदोन्नति, प्रोन्नति (वि० प्रोन्नत) ।
Promulgation—विघोषण (वि० विघोषित) ।
Pro-note—प्रश्रुति-पत्र ।
Proof—१. प्रमाण । २. प्रतिमान (छापे का) ।
,, sheet—प्रतिमान ।
Proof—कवच ।
,, , Fire—अग्नि-कवच ।
,, , Water—जल-कवच ।
Propaganda—१. प्रचार । २. अधिप्रचार ।
Propagandist—अधिप्रचारक (परि०) ।
Proper—१. उचित । २. उपयुक्त । ३. यथोचित ।
,, court—उपयुक्त न्यायालय ।
Property—१. गुण । २. संपत्ति ।
,, , Immovable—अचल संपत्ति ।
,, , Mark—स्वामित्व चिह्न ।
,, , Movable—चल संपत्ति ।
,, , Tax—संपत्ति कर ।
Prophet—देव दूत, पैगम्बर ।
Propitiation—प्रासादन ।
Proportion—अनुपात ।
Proportionate—अनुपातिक ।
Proposal—१. प्रस्ताव (वि० प्रस्तावित) २ सुझाव ।
Proposer—प्रस्तावक ।
Proposition—साध्य ।
Proprietor—स्वामी, मालिक ।
Pro-rata—पड़ते से ।
Prorouge-सन्नावसान ।
Prose—गद्य ।
Prosecution-अभियोग ।
Prosody—छंदःशास्त्र ।
Prostitute—वेश्या ।
Prostitution—वेश्या-वृत्ति ।
Protection—१. रक्षा । संरक्षण । परित्राण ।
Protective duty—संरक्षण-शुल्क ।
Protectorate—रक्षित-राज्य ।
Protest—प्रत्याख्यान ।
Protoplasm—जीव-धातु ।
Protractor—चाँदा । (परि०)
Proved—सिद्ध, प्रमाणित ।
Proverb—कहावत ।
Provided—निर्दिष्ट ।
Provident fund—संभरण निधि ।
Province—प्रान्त ।
Provincial-प्रान्तीय ।
,, government—प्रांतीय सरका
Provincialism—प्रांतीयता ।
Provison—१. निर्देश, व्यवस्था । संभरण । ३. निवेश ।
Proviso—प्रतिबंध ।
Proximity—सान्निध्य ।
Proxy—प्रतिनिधि-पत्र ।
Psalm—स्तोत्र ।
Psychology—मनोविज्ञान ।
Psycho-analysis—मनोविश्लेषण ।
Public—संज्ञा-जनता, लोक । वि० १. सार्वजनिक । २. सर्व-सामान्य ।

c health—लोक स्वास्थ्य ।
life—लोकजीवन,सार्वजनिक जीवन ।
nuisance—लोक-कंटक ।
office—लोक-पद ।
opinion—लोक-मत । जन-मत ।
place—महाभूमि ।
peace—लोक-शांति ।
servant—लोक-सेवक, जन-सेवक ।
service—लोक-सेवा, जन-सेवा ।
service commission—लोक-सेवा आयोग ।
utility—सार्वजनिक उपयोगिता ।
works—लोक-वास्तु ।
cation—प्रकाशन ।
cist—पत्रकार ।
city—विश्रुति ।
shed—प्रकाशित ।
sher—प्रकाशक ।
y—गड़ारी, घिरनी ।
tion—(स्पंदन) ।
—१. नाड़ी । २. स्पंद । ३. दाल,
।
p—दमकल ।
रलेज ।
tuation—विराम चिह्न ।
shable—दंडनीय ।
shed—दंडित ।
liable to be—दंडनीय ।
shment—दंड ।
tive—१. दंडनीय । २. दंडात्मक ।
री ।
police—ताज़ीरी पुलिस ।
tax—ताज़ीरी कर ।
pet—कठपुतली ।
hase—क्रय, खरीद ।
haser—क्रेता ।
hasing power—क्रय-शक्ति ।
—विशुद्ध ।

Puritan—विशुद्धीवादी ।
Puritanism—विशुद्धिवाद ।
Purity—विशुद्धता, विशुद्धि, शुद्धता ।
Purport—आशय ।
Purported—प्रतीयमान ।
Purpose—प्रयोजन ।
,, , Charitable—पुण्यार्थ ।
,, , Religious—धर्मार्थ ।
Purposely—कामतः ।
Purse—थैली ।
Quadrangle—चतुष्कोण ।
Quadrilateral—चतुर्भुज ।
Qualification—योग्यता ।
Qualified—सोपाधिक ।
Quantitative—मात्रिक ।
Quantity—परिमाण, मात्रा ।
Quarantine—संसर्ग, रोध ।
Quarter—त्रिमास ।
Quarterly—त्रैमासिक ।
Quarto—चौ-पेजी ।
Question—१. प्रश्न । २.अनुयोग, आपत्ति ।
Questionnaire—प्रश्नावली ।
Quinine—कुनैन ।
Quorum—इयत्ता ।
Quota—यथांश ।
Quotation—अवतरण, उद्धरण, प्रोक्ति ।
Quoted—उद्धृत, प्रोक्त ।
Quotient—भाग-फल ।
Race—जाति ।
Rack—टाँड ।
Rader—तेजोन्वेष (परि॰) ।
Radiation—भुजायन । (परि॰)
Radical—चरम-पंथी ।
Radicalism—चरम-पंथ ।
Radius—अर्द्ध-व्यास, त्रिज्या, व्यासार्द्ध ।
Raid—छापा ।
Raising—उद्धार ।
Rally—जमाव ।

Range-१. अधिक्षेत्र। २. पर्वतमाला। ३. शृंखला, माला।
Rank-पद, पदवी।
Rare-१. दुर्लभ, कृत्स्न। २. क्वचित।
Rate-१. दर। २. भाव।
„ circular-रघौती।
Ratification-अभिपोषण।
Ratified-अभिपुष्ट, अभिपोषित।
Ration-अनुभक्तक।
Rationalism-बुद्धिवाद।
Rationed-अनुभक्त।
Rationing-अनुभाजन।
Ray-किरण।
Reaction-प्रतिक्रिया।
Reactionary-१. प्रतिक्रियावादी, प्रतिगामी। २. प्रतिक्रियात्मक।
Reactionism-१. प्रतिगामिता। २. प्रतिक्रियावाद।
Reader-१. उपस्थापक। २. पाठक, वाचक। ३. पाठावली।
Reading-१. पाठ। २. अध्ययन। ३. व्याकृति। ४. अधिगमन। ५. वाचन। (विधेयकों का)
Reading room-वाचनालय।
Real estate-स्थावर संपत्ति।
Reality-यथार्थता, वास्तविकता।
Realism-यथार्थवाद (वि॰ यथार्थवादी)।
Realist-यथार्थवादी।
Re-armament-पुनरस्त्रीकरण।
Reason-कारण।
Rebate-छूट।
Rebel-विद्रोही, विप्लवी।
Rebellion-विद्रोह, विप्लव।
Receipt-प्राप्तिका,रसीद।
Receivable-ग्राह्य।
Receiver-१. प्रतिग्राहक। २. आदात्र, आदाता।
ception committee-स्वागत कारिणी समिति।
Recess-मध्यावकाश।
Reciprocal-पारस्परिक।
Reclaiming-उद्धार।
Recognised-मान्य, स्वीकृत।
Recognition-मान्यता।
Recollection-अनुस्मरण।
Recommendation-अनुशंसा,सिफारि
Recommended-अनुशंसित।
Reconstruction-अनुनिर्माण।
Record-अभिलेख।
„ ,, court of-अभिलेख अधिकरण
Recorded-अभिलिखित।
Recording-अभिलेखन।
Record-keeper-अभिलेख-पाल।
Recovery-१. पुनः प्राप्ति, प्रति प्राप्
२. वसूली।
Recruit-रंगरूट।
Recruitment-भरती।
Rectangle-आयत।
Rectangular-आयत, समकोणी।
Recurrence-आवर्त्तन।
Recurring-आवर्त्तक।
Recurring grant-आवर्त्तक अनुदान
Redeemed-१. निष्क्रीत। २. विमोचित
Redemption-विमोचन।
Redistribution-पुनर्विभाजन।
Red army-लाल सेना।
Red tape-दीर्घ सूत्रता, लालफीता।
Red tapism-दीर्घ सूत्रता।
Reduction-१. छँटनी (व्यक्तियों की
२. छूट, कमी (मूल्य, देन, आदि का)
Re-enacted-पुनर्विधित।
Re-enactment-पुनर्विधायन।
Re-examination-पुनर्परीक्षा।
Referee-अभिदेशिकी। (परि॰)
Reference-अभिदेश।
Reference-book-अभिदेश ग्रन्थ, संदर्भ

endum-अभिदेशना (परि०) ।
red, to-अभिदिष्ट ।
tion-प्रतिबिंब ।
tor-प्रतिफलक ।
n-सुधार ।
matory-सुधारालय ।
mer-सुधारक ।
mist-सुधारवादी ।
gerator-हिमीकर ।
gee-शरणार्थी ।
d-प्रतिनिचयन ।
ation-खंडन ।
nt-शून्यपाल ।
ter-१. पंजी । २. पंजीयन, निबंधन ।
tered-१. निबंधित, निबद्ध । २.
री ।
tered post-रजिस्टरी डाक ।
strar-निबंधक ।
stration-निबंधन । रजिस्टरी ।
lating-नियमन ।
lation-अधिनियम ।
bilitation-पुनर्वास, पुनर्वासन ।
arsal-प्राभ्यास ।
bursement-प्रतिपूर्ति ।
ted-अपासित, अस्वीकृत, प्रत्या-
।
tion-अपासन, अस्वीकारण, प्रत्या-
।
inder-प्रत्युत्तर ।
tion-संबंध ।
tionship-संबंध ।
tive-वि० आपेक्षिक, सापेक्ष ।
-संबंधी ।
y-पुनर्सारण (वि० पुनर्सारित) ।
ase-१. मुक्ति, २. अभित्याग ।
pass-मुक्ति-पत्र ।
ased-मुक्त । अभित्यक्त ।
vent-संगत ।

Reliable-विश्वसनीय, विश्वस्त ।
Relief-उपराम ।
Relieved-पद-न्यास्ता (अधिकारी) ।
Relieving-पद-गृहीत (अधिकारी) ।
Religion-धर्म ।
Religious-धार्मिक ।
,, purpose-धर्मार्थ ।
Remainder-शेष, बाकी ।
Remark-उप कथन, टिप्पणी, शंसिका ।
Remedy-उपचार प्रतिविधि, साधन ।
Reminder-स्मारक (रिका), स्मरण-पत्र ।
Reminiscence-संस्मरण ।
Remission-अवसर्ग, छूट ।
Remittance-प्रेषण ।
Removal-१. पृथक्करण । २. स्थानांतरण ।
Remuneration-१. पारिश्रमिक । २. वेतन ।
Renaissance-नवोत्थान, नवाभ्युत्थान, पुनरुत्थान ।
Renewal-नवीकरण ।
Renovation-पुनरुद्धार ।
Rent-१. किराया, भाड़ा । २. लगान ।
,, arrears of-बकाया लगान ।
,, collector-भाटक समाहर्त्ता ।
,, free grantee-माफीदार ।
,, in kind-जिन्सी लगान ।
,, officer-भाटक अधिकारी ।
Repairs-मरम्मत, संस्कार ।
Repayment-परिशोध, परिशोधन ।
Repeal-निवर्त्तन ।
Repealed-निवर्त्तित ।
Repealing-निवर्त्तक ।
Repeat-दोहराना ।
Repetition-१. अनुलाप, द्विरुक्ति, पुनरुक्ति । २. आवर्त्तन, पुनरावृत्ति ।
Replacement-प्रतिस्थापन ।
Replied-उत्तरित ।
Reply-उत्तर ।

Report—१. आख्या (वि॰ आख्यात)। २. सूचना, प्रसूचना, इत्तला। ३. प्रवाद। ४. विवरणिका। ५. संविदा।
Reporter—१. आख्यापक। २. संवाददाता।
Representing—निरूपण।
Repression—अवदमन, दमन।
Reprimand—ताड़ना।
Reprint—पुनर्मुद्रण।
Reproduced—पुनर्व्यक्त।
Reproduction—पुनर्व्यंजन।
Republic—गण-तन्त्र।
Republican—गण-तन्त्री।
Repugnancy—विरोध, विद्वेष।
Repugnant—१. प्रतिकूल, विरुद्ध। २. विद्विष्ट।
Reputation—ख्याति, प्रसिद्धि।
Repute—ख्याति, प्रसिद्धि।
Reputed—ख्यात, प्रसिद्ध।
Required—अपेक्षित।
Requirement—अपेक्षा।
Requisition—अधियाचन।
Rescinded—निरस्त।
Rescinding—निरसन।
Rescuing—उद्धार, उत्तारण।
Research—गवेषणा।
Reseated—पुनरासीन।
Reservation—व्यासेध।
Reserved—१. रक्षित। २. व्यासिद्ध।
Residence—आवास।
Resident—आवासिक, निवासी।
Residuary—तालीय।
Residuary power—तालीय अधिकार।
Resignation—त्याग-पत्र।
Resolution—१. प्रस्ताव। २. संकल्प, मंतव्य।
Resources—संबल।
Respectively—क्रमत्।
Response—प्रतिभावना।
Responsible—उत्तरदायी।
Responsibility—उत्तरदायित्व।
Responsive—प्रतिभावनिक।
Rest House—विश्रामालय।
Restoration—१. पुनरुद्धार। २. प्रत्यर्पण
Restriction—नियमन, निरोध।
Result—परिणाम, फल।
Resumption—१. पुनर्ग्रहण। २. प्रत्याहार ३. पुनरारंभ।
Retail—खुदरा, परचून।
Retailer—परचूनिया।
Retired—अवकाश प्राप्त, अवसर प्रा विरत।
Retirement—१. अवकाशग्रहण, निवृत्ति २. विराम, विरति।
Retrenchment—छँटनी(कर्मचारियों की
Return—१. परिलेख। २. प्रतिदान। प्रतिफल।
Returning officer—निर्वाचन अधिकार
Revenue—१. राजस्व। २. भू-आगम मालगुजारी।
Revenue court—माल न्यायालय।
" department—माल विभाग
Reversal—१. उलटाव। परावर्तन।
Reverse—संज्ञा—पृष्ठ, पीछा, पीठ। वि॰ उलटा, विपरीत।
Reversion—विपर्य्यय, विपर्य्यास।
Review—१. समालोचना। २. पुनरीक्षण
Revise—दोहराना।
Revision—१. दोहराव। २. पुनरीक्षण (वि॰ पुनरीक्षित), निगरानी। पुनरावलोकन।
Revival—पुनरुज्जीवन।
Revived—पुनरुज्जीवित।
Revocation—अनुशय, प्रायावर्त्तन।
Revolution—क्रान्ति।
Revolutionary—क्रान्तिकारी।
Revolutionist—क्रान्तिवादी।

ard-पारितोषिक ।
oric-अलंकार शास्त्र ।
thm-लय ।
thmical-लयक, लयिक ।
t-संज्ञा-स्वत्व, अधिकार ।
वि० १. ठीक । २. सरल ।
angle-समकोण ।
tful-वास्तविक । (जैसे-वास्तविक कार-Rightful claim) ।
twing-दक्षिणपथ या मार्ग ।
-१. उत्कर्ष, उत्थान । २. उदय ।
-जोखिम, झाँकी ।
al-संस्कार ।
l-प्रतिद्वन्दी, प्रतिस्पर्धी ।
lry-प्रतिद्वन्दता, प्रतिस्पर्धा ।
-१. चरिक । २. पंजी । ३. तालिका ।
edgold-मंडित स्वर्ण ।
ler-बेलन ।
number-नामांक ।
aion-परिभ्रमण ।
nd-संज्ञा-१. चक्र (गोलियों का) । रौंद (अधिकारियों की) । गोल ।
te-मार्ग ।
al seal-राजमुद्रा ।
alty-स्वामित्व ।
e-१. नियम । २. शासन ।
ing-व्यवस्था ।
nour-किंवदंती, जनश्रुति, प्रवाद, वाह ।
nning-चलता, चालू ।
ral-ग्राम्य ।
ral uplift-ग्राम्य सुधार ।
otage-ध्वसंन ।
rament-संस्कार ।
rifice-त्याग ।
e-वि० सुरक्षित ।
-तिजोरी ।

Safe-conduct-अभय-पत्र ।
Safety-क्षेम ।
Saggitarius-धनु (राशि) ।
Said, the-उक्त ।
Salaried-वैतनिक ।
Salary-वेतन (वि० वैतनिक) ।
Sale-१. बेची । विक्रय । २. नीलाम ।
Sale, for-विक्रयार्थ ।
Sale proceeds-विक्रय मूल्य ।
Salesman-विक्रयिक ।
Salesmanship-विक्रयकला ।
Sales tax-बिक्री कर ।
Salvation-मुक्ति ।
,, Army-मुक्ति-सेना ।
Sanction-१. अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा । २. स्वीकृति ।
Sanctioned-स्वीकृत ।
Sandal-चंदन ।
Sanitation-शुचिता ।
Sanitorium-स्वास्थ्य निवास ।
Sarcasm-कटाक्ष ।
Sarcastic-कटाक्षिक ।
Satisfaction-परितोष, संतोष ।
Satisfied-परितुष्ट, संतुष्ट ।
Sattelite-उप-ग्रह ।
Saturn-शनि (ग्रह) ।
Scale-मान ।
Scene-दृश्य ।
Scenery-दृश्य ।
Sceptic-संशयात्मा, संशायिक ।
Schedule-अनुसूची, परिशिष्ट ।
Scheduled-परिगणित ।
Scheme-योजना ।
Scholarship-छात्र-वृत्ति ।
School-१. विद्यालय । २. शाखा ।
Science-विज्ञान ।
Scientific-वैज्ञानिक ।
Scorched earth-सर्व-क्षार ।

Scorpio–वृश्चिक (राशि)।
Screen–पट।
„ , Silver–रजत-पट।
„ , Smoke–धूम-पट।
Script–लिपि।
Scripture–आगम धर्म-ग्रन्थ।
Scrofula–कंठ-माला (रोग)।
Scroll–खर्रा, चरिक।
Scrutiniser–संपरीक्षक।
Scrutiny–संपरीक्षा।
Seal–मुद्रा, मुद्रांकन। (वि० मुद्रांकित)।
„ counter–प्रति-मुद्रांकन।
Search–विचयन।
Search light–विचयन प्रकाश।
Second–काष्ठा (काल-मान)।
Secondary–१. द्वितीयक। २. गौण।
Seconding–समर्थन।
Second person–मध्यम पुरुष।
Secret–गोप्य।
Secret agent–प्रणिधि।
Secretariat–सचिवालय, मंत्रालय।
Secretary–मंत्री।
„ Parliamentary–सांसद मंत्री।
Secretion–निस्सारण।
Sect–संप्रदाय।
Section–१. धारा। २. विभाग।
„ Sub–उपधारा।
Sector–वृत्त-खंड। (परि०)
Secular–ऐहिक, लौकिक।
Secure–सुरक्षित।
Security–१ सुरक्षा। २. जमानत, प्रतिभूति। ३. प्रतिभूजामिन।
Sedition–राजद्रोह।
Seismograph–भूकम्प-सूत्रक।
Seismology–भूकम्प-विज्ञान।
Select commitee–१. प्रवर समिति। २. विशिष्ट समिति।
Selection–चुनाव, वरण।
Self government–स्व-शासन।
Semetic–शामी, सामी।
Semi–अर्द्ध।
Semi-circle–अर्द्ध-वृत्त।
Sender–प्रेषक।
Senior–जेष्ठ।
Seniority–ज्येष्ठता।
Sensation–१. संवेदन। २. सनसनी।
Sensationalism–संवेदनवाद।
Sense–१. संज्ञा। २. भाव, आशय। ३. समझ। ४. समझदारी।
Sensual–ऐन्द्रिय (क)।
Sensualism–इन्द्रियार्थवाद।
Sensuality–ऐन्द्रियकता।
Sentimental–भावुक।
Sentimentality–भावुकता।
Sepsis–पूति, सड़ायँध।
Septic–पौतिक।
Serial number–क्रम-संख्या।
Series–१. माला। २. शृंखला।
Serious–१. गम्भीर। २. दारुण (रोग)
Serum–सौम्य।
Servant–सेवक।
Served–अनुपालित, तामील।
Service–१. सेवा। २.अनुपालन, तामील
„ on–राज्य-प्रेष्य।
„ book–सेवा पंजी।
„ stamp–राज्य-प्रेष्य अंक पत्र।
Session–१. सत्र। २. अधिवेशन।
Sessions court–सत्र-न्यायालय।
Set–कुलक, जोड़, जुट।
Set aside–उत्सादन, अन्यथा करना।
Settlement–१. आबंध, बन्दोबस्त। २. निपटारा।
„ officer–आबंधक अधिकारी।
Sexual–१. यौन, लैंगिक। २. मैथुनिक।
Sexuality–१. कामिता। २. यौनता।
Shade–१. आभा। २. छाया।

low-१. छाया । २. प्रतिबिंब ।
e-अंश, हिस्सा ।
er-सहभागी, हिस्सेदार ।
holder-अंशधर, अंशी ।
k-हाँगर (मछली) ।
-१. तख्ता । ताव (कागज का) ।
ाक ।
-१. कवच । २. गोला (तोप का) ।
if-सुमान्य ।
-पाली ।
-hand-संकेत-लिपि ।
title-शीर्ष-नाम ।
down-चल परीक्षा ।
kage-आकुंचन, सिकुड़न ।
b-क्षुप । झाड़ी ।
-१. चिन्ह । २. संकेत ।
al-१. सिकन्दरा । २. संकेत ।
atory-हस्ताक्षारक ।
ature-हस्ताक्षर ।
board-नाम-पट्ट ।
r Jubilee-रजत-जयंती ।
screen-रजत पट ।
e-उपमा ।
le interest-ब्याज, वृद्धि, सूद ।
le-mortgage-दृष्टि-बंधक ।
lification-सरलीकरण ।
ular-एक वचन ।
s-नाड़ी-व्रण, नासूर ।
महोदय ।
स्थल ।
plan-स्थलालेख्य ।
ch-१. आलेख्य । २. रूप-रेखा ।
खा-चित्र ।
ching-१. आलेखन । २. रेखांकन ।
-scrapper-अभ्रंकष ।
der-अपवाद (वि० अपवादिक) ।
e-दास ।
ery-दासता ।

Sleeper-सिलापट ।
Slip-१. चिट । २. भूल, चूक ।
Slogan-घोष, नारा ।
Slug-धातु-मल ।
Smok·screen-धूम-पट ।
Snow fall-हिमपात ।
Snow line-तुषार रेखा ।
Soap stone-गोरा पत्थर, घीया पत्थर । संग-जराहत ।
Socalled-तथोक्त, तथा-कथित ।
Social-सामाजिक ।
Socialisation-समाजीकरण ।
Socialism-समाजवाद ।
Socialist-समाजवादी ।
Society-समाज ।
Sociology-समाज शास्त्र ।
Soil-जमीन ।
,, sandy-बलुआर, भुड़ ।
,, virgin-बंजर ।
Solace-संतोष ।
Solar system-सौर जगत् ।
Sole-एकक, एकल ।
,, , corporation-एकक-निगम ।
Sore-घाव, व्रण ।
,, , bed-शय्या-व्रण ।
Sored-व्रणित ।
Sorrow-खिन्नता, खेद ।
Sorry-खिन्न ।
Soul-आत्मा ।
Sound-वि० स्वस्थ ।
संज्ञा-ध्वनि ।
,, mind, of-स्वस्थ, प्रज्ञ ।
,, wave-ध्वनि तरंग ।
Source-स्रोत ।
South-दक्षिण ।
Sovereign authority-प्रभु-सत्ता ।
Special-१. विशेष । २. विशिष्ट ।
,, mention-परिसंख्या (अलंकार) ।

Specialisation–विशिष्टीकरण ।

Specialist–विशेषज्ञ ।

Specification–विनिर्देश ।

Specified–निर्दिष्ट, विनिर्दिष्ट ।

Specimen–प्रतिरूप, नमूना ।

Spectrum–वर्णच्छटा ।

Speculation–सट्टा ।

Speculator–सट्टेबाज ।

Speech–१. वक्तृता । भाषण । २. वाणी ।

,, of absence–विनोक्ति (अलंकार) ।

,, of brevity–समासोक्ति (अलंकार) ।

Spelling–अक्षरी, हिज्जे ।

Sphere–गोल, सर्व-वर्त्तुल ।

Spherical–गोल, सर्व-वर्त्तुल ।

Spine–पृष्ठ वंश, मेरु-दंड, रीढ़ ।

Spinning–कताई ।

Spokesman–प्रवक्ता ।

Sport–नर्म ।

Squad–टुकड़ी, दस्ता ।

Squadron–टुकड़ी, दस्ता ।

Square–१. चत्वर । २. वर्ग । ३. टुकड़ी ।

Squareword puzzle–वर्ग-पहेली ।

Stablishment–स्थिरीकरण ।

Stability–स्थिरता ।

Stable–स्थिर ।

Staff–कर्त्तृक, कर्त्तृ-वर्ग ।

Stage–१.अवस्थान । २.रंग-मंच । ३.मंच ।

Stamen–पराग-केसर ।

Stamp–संज्ञा०–अंक-पत्र ।
वि० अंकपत्रित ।

Stamped–अंक-पत्रिक ।

Standard–मानक ।

Standarlisation–मानकीकरण ।

Standing commitee–स्थायी-समिति ।

Stand crop–खड़ी फसल ।

Stand post–चौकीघर ।

Stand still–यथास्थित समझौता ।

Starch–श्वेत सार ।

Starvation–भुखमरी ।

State–१. राज्य । २. संस्थान ।

,, government–राज्य-सरकार ।

,, language–राज्य-भाषा ।

,, prisoner–राजबंदी । (परि०)

Statement–१. अभ्युक्ति । कथन । परिवृत्त, विवरण, लेखा । ३. वक्तव्य ।

State prisoner–राज-बंदी ।

State seal–राजमुद्रा ।

Statesman–राजपुरुष ।

Static–स्थितिक ।

Station–अवस्थान ।

Stationary–लेखन-सामग्री ।

Statistics–१. आँकड़े । २. सांख्यिकी

Status–स्थिति ।

Status quo–यथा-कृत । (परि०)

Statute–प्रविधान ।

Statutory–१. प्रविधानिक । २.वैधानिक

Stayed–स्थगित ।

Steam–वाष्प, भाप ।

Steel–इस्पात ।

Step mother–विमाता । सौतेली माँ ।

Sterling balance–पाउंड-पावना ।

Sterlization–निष्कीटण । (परि०)

Sterlizcd–निष्कीटित । (परि०)

Sterlized–निष्कीटण । (परि०)

Stipend–वृत्ति ।

Stock–१. भण्डार, स्कंध । २. राज-ऋण
३. संपद् । ४. पशु ।

,, Book–भांडार-पंजी, स्कन्ध-पंजी,

,, holder–स्कंध-धारी ।

Stockist–भांडारिक, स्कान्धिक ।

Stock keeper–भांडारपाल, स्कन्धपाल

Stone age–प्रस्तर युग ।

Store–संभार, भंडार ।

Straight–सरल, सीधा ।

in–कर्ष।
t–जल डमरूमध्य।
a–स्तर।
ified–स्तरीभूत।
vberry–हिसालू (फल)।
e–हड़ताल।
) pen down–कलम छोड़ हड़ताल।
ghold–गढ़।
gle–संघर्ष।
for existence–जीवन संघर्ष।
y–अध्ययन।
–शैली।
-१. अधः। २. उप। ३. वि।
clause–उप-खंड।
commitee–उप-समिति।
divison–१. उप-विभाग। २. परगना।
family–उप-कुल।
lease–शिकमी पट्टा। पट्टा दर पट्टा।
let, to–शिकमी देना।
normal–विसामान्य।
order–अंतर्वर्ग।
proprietor–अदना मालिक।
registrar–उप-निबंधक।
rule–उप-नियम।
section–उप-धारा।
soil–अधो-भूमि।
tenant–शिकमी काश्तकार।
Treasury–उप-कोषागार।
terranean–अन्तर्भौम। भू-गर्भित।
bject–१. विषय। २. प्रजा।
, committee–विषय समिति।
, index–विषयानुक्रमणिका।
, to–आधीन, अभ्यधीन, उपाश्रित।
jugation–१. अधीनीकरण। २.
ाव।
marine–डुबकनी, पनडुब्बी।
ordinate–मातहत, अधस्थ, अधीनस्थ।

Subordinate court–अधीनस्त न्यायालय।
Subrogation–संकर्षण।
Subsisting–चालू।
Substance–पदार्थ। तत्व।
Substantial–तात्विक।
Substantially–तत्त्वतः।
Substitute–प्रतिहस्त।
Substitution–प्रतिहस्तायन।
Subtle–वि॰ सूक्ष्म।
संज्ञा–सूक्ष्म (अलंकार)।
Suburb–उप-पुर। परिनगर।
Suburban–पुरनागर।
Success–सफलता।
Successive–आनुपूर्वी।
Successful–सफल।
Succession–१. उत्तराधिकारी। २. उत्तरोत्तरता। ३. अनुक्रम।
„ certificate–उत्तराधिकार प्रमाणक।
„ Tax–उत्तराधिकार कर।
Successor–उत्तराधिकारी।
Sufferage–मताधिकार।
Sufferance–मर्षण।
Sufficient–पर्याप्त, यथेष्ट।
Sufficiently–पर्याप्तः, यथेष्टतः।
Suffix–प्रत्ययः।
Suggestion–सुझाव।
Suicide–आत्महत्या, आत्मघात।
Suit–विवाद, वाद।
Sum–धन-राशि।
Summary–वि॰ सरसरी।
संज्ञा–सारांश।
„ proceedings–सरसरी प्रक्रिया।
Summer vacation–ग्रीष्मावकाश।
Summoning–आकारण।
Summons–आकारक, उपस्थिति पत्र, सम्मन
Sun–सूर्य।
Sun-bath–आतप-स्नान।

Super annuation—अतिहायन ।
„ charge—१. अधिभार । २. अधिशुल्क ।
Superintendence—अधीक्षण ।
Superintendent—अधीक्षक ।
Superior—१. प्रवर, वरिष्ठ । २. श्रेष्ठ ।
Superior of an office—पद-प्रवर ।
Supernatural—आधिदैविक ।
Superseded—अधिक्रांत । (परि०)
Supersession—अधिक्रांति । (परि०)
Superstition—अंधविश्वास ।
Super-tax—अधिकर, अतिकर ।
Supervision—पर्यवेक्षण ।
Supervisor—पर्यवेक्षक ।
Supplement—१. अनुपूरक, पूरक । २. क्रोड़-पत्र ।
„ to—अनुपूर्त्ति करना ।
Supplementary—अनुपूरक ।
Supplementation—अनुपूरण ।
Supplemented—अनुपूरित, अनुपूर्त्त ।
Supplied—पूर्त्त, समायुक्त ।
Supplier—पूरक, समायोजक ।
Supply—पूर्त्ति, समायोग, समायोजन ।
Support—१. आधार । २. भरण-पोषण ।
Surety—प्रतिभू, लग्नक ।
„ bond of—प्रतिभू-पत्र ।
„ for appearance—दर्शन प्रतिभू ।
Surface—धरातल ।
Surgeon—शल्य-कार, शल्य-कर्मी, शल्य-चिकित्सक ।
Surgery—१. शल्य-शास्त्र । २. शल्य-कर्म, शल्यकी, अस्त्र-चिकित्सा ।
Surgical—शल्यक, शल्योपचारिक ।
Surgical instruments—शल्य-शस्त्र ।
Surgical operation—शल्यक-क्रिया ।
Surgical operator—शल्योपचारी ।
Surname—उपनाम ।
Surplus—उद्वर्त्त, बचती, बढ़ती ।
Surplus budget—बचती आय-व्ययक ।
„ province—बचती प्रान्त ।
Surrender—आत्म-समर्पण, समर्पण ।
„ value—समर्पण-मूल्य ।
Surrendering—१. समर्पण । २. आत्मसमर्पण ।
Survey—१. पर्यवलोकन, पर्यालोचन । भू-मापन, पैमाइश । ३. सर्वेक्षण ।
Surveyor—भू-मापक ।
Survival—अतिजीवन, परिजीवन ।
Surviver—परिजीवी ।
Suspect—संदिग्ध ।
Suspended—अनुलंबित, प्रलंबित ।
Suspense—१. अनुलंबित । २. उचिंत
„ account—अनुलंब खाता, उचिंत
Suspension—१. अनुलंबन, प्रलंबन २. स्थगन ।
Sustained metaphor—सांगरूपक ।
Swearing—शपथ ग्रहण ।
Symbol—प्रतीक ।
Symbolic—प्रतीकी, लाक्षणिक ।
Symbolism—प्रतीकवाद ।
Symmetry—प्रतिसाम्य ।
Symmetrical—प्रतिसम ।
Synonym—पर्याय, समानार्थक ।
Synonymous—पर्यायवाची ।
Synthesis—संश्लेषण ।
Table—सारिणी ।
Talkie—बोल पट ।
Tangent—स्पर्श-रेखा ।
Tap root—मूसला (जड़) ।
Target—लक्ष्य ।
Taste—१. स्वाद । २. रुचि ।
Tattoo—गोदना ।
Taurus—वृष (राशि) ।
Tantalogy—पुनर्वाय ।
Tax—कर, महसूल ।
Tear gas—अश्रु गैस ।

nical-१. पारिभाषिक। २. शिल्पिक।
term-परिभाषा।
nician-शिल्पी।
nology-शिल्प शास्त्र।
erate zone-समशीतोष्ण कटिबंध।
erature-तापमान।
orary-अस्थायी।
tation-प्रलोभन।
city-तानता।
nt-काश्तकार।
ex-proprietory-साकितुल मिल्कियत।
heriditary-मौरूसी काश्तकार।
occupancy-दखिलकार।
ency-प्रवृत्ति, झुकाव।
er-अपद्येय।
e-काल।
re-१. भौमिक अधिकार। २. स्था-
।
re-holder-खातेदार।
n-१. अवधि। २. पण, शर्त्त। ३.
। ४. सत्र।
ninal-१. सत्रिक। २. आंतिक।
tax-आंतिक कर।
nination-परिसमाप्ति।
ninology-परिभाषिकी।
ace-like-सम-समुन्नत।
ra-cotta-मृण्मूर्ति।
itorial-प्रादेशिक।
army-प्रादेशिक सेना।
water-जल-प्रांगण।
itory-भू-भाग।
or-आतंक।
oism-आतंकवाद।
orist-आतंकवादी।
-जाँच, परख, परीक्षण।
" Tube-परीक्षण नलिका।
imonial-प्रमाणपत्र।

Text-book-पाठ्य पुस्तक।
Theism-आस्तिकता।
Theist-आस्तिक।
Themonia-धर्मोन्माद।
Theorem-उपपाद्य।
Theoretical-सैद्धांतिक।
Thermometer-ताप-मापक यन्त्र।
Thesis-प्रबन्ध।
Third person-अन्य पुरुष। (व्याकरण)
Through-fare-सुमार्ग।
Throughly-सुविधितः।
Throughness-सुविधि।
Thumb empression-अँगूठे का निशान, अँगूठे की छाप।
Ticket-प्रवेश-पत्र, टिकट।
Tidal waters-ज्वार-भाटा।
Timber-इमारती लकड़ी, वास्तु काष्ठ।
" tree-वास्तु वृक्ष।
Time-१. समय, काल। २. कालविधि।
Time being, for the-समय विशेष पर।
Time limit-कालावधि।
Time table-समय सारिणी।
Tissue-मांस-तंतु।
Titanus-धनुष-टंकार (रोग)।
Title-१. आगमन। २ उपाधि, पदवी। ३. शीर्ष नाम। ४. आवरण-पत्र, आवरण पृष्ठ (पुस्तक का)।
" page-मुख-पृष्ठ।
Toilet-प्रसाधन।
Tolerable-सह्य।
Tolerance-सहनशीलता, सहिष्णुता।
Tolerant-सहनशील, सहिष्णु।
Toleration-सहनशीलता, सहिष्णुता।
Toll-tax-मार्ग-कर।
Torrid zone-शीत कटिबंध।
Total-जोड़ योग, योग-फल।
Touch-स्पर्श।
Tour-परिक्रम, दौरा, भ्रमण।

Tourist-यात्री ।
Town-नगर, पत्तन ।
Town-area-नगरी-(पत्तन) क्षेत्र ।
Toxicology-विष विज्ञान ।
Tracing-प्रत्यंकन ।
Tract-क्षेत्र, भू-खण्ड ।
Tractor-हल-यन्त्र ।
Trade-व्यापार ।
Trade-mark-व्यापार चिह्न ।
Trader-व्यापारी !
Trade union-श्रमिक संघ ।
Tradition-१. अनुश्रुति । २. परंपरा ।
Traditional-१.परंपरागत । २.अनु-श्रुत ।
Traga canth-कतीरा, कतीला ।
Tragedy-१. दुर्विपाक । २. वियोगान्त ।
Trained-प्रशिक्षित ।
Training-प्रशिक्षण, प्रशिक्षा ।
,, College-प्रशिक्षण महाविद्यालय ।
Trance-समाधि ।
Tranquility-प्रशान्ति ।
Transaction-पणाया । मामला ।
Transcription-प्रतिलेखन ।
Transferable-हस्तांतरणीय, संक्राम्य ।
Transfer-हस्तांतरित, संक्रामित् ।
Transferee-अंतरिती । हस्तांतरिती ।
Transference-१. अंतरण । २. बदली । ३. हस्तांतरण । ४. संक्रामण ।
,, deed-अंतरण पत्र ।
Transferor-अंतरितक । हस्तांतरकर्त्ता ।
Transferred-अंतरित, हस्तांतरित । संक्रामित ।
Transformation-रूपांतरण ।
Transformed-रूपांतरित ।
Transgression-अतिचरण ।
Transition-संक्रमण ।
Transitive-सकर्मक (व्याकरण)।
Transit pass-निकासी, रवन्ना ।
Translation-अनुवाद, उल्था ।
Translator-अनुवादक ।
Transmigration (of soul)-पुनर्जन्म ।
Transmission-प्रेषण ।
Transmitter-परिषक । (परि०)
Transparent-पारदर्शक ।
Transport-उत्तारण । (परि०)
Tranrportation-१. उत्तारण । द्वीपांतरण ।
Transposition-क्रम-परिवर्त्तन, विपर्यय
Treasurer-कोषाध्यक्ष, खजांची ।
Treasury-कोषागार, खजाना ।
,, sub-उप-कोषागार ।
Treasury benches-राजपीठ ।
Treatment-उपचार ।
Treaty-संधि ।
,, Peace-शांति-संधि ।
Tresspass-अपचार ।
Tresspasser-अपचारक ।
Tresspassing-अपचारण ।
Trial-१. परिदर्शन । २. परीक्षण ।
,, of cases-व्यवहार-दर्शन ।
Triangle-त्रिभुज ।
Tribe-जन-जाति । (परि०)
Tribunal-न्यायाधिकरण । वैचारिक मंड
Tributory-सहायक ।
Triennial-त्रै-वार्षिक ।
Tropic zone-उष्ण कटिबंध ।
Truce-विराम सन्धि ।
True-सत्य ।
Trust-न्यास ।
Trustee-न्यासी ।
Tube-well-नल-कूप ।
Tumor-अर्बुद ।
Type writer-टंकण-यंत्र ।
Type writing-टंकण ।
Typist-टंकक ।
Tyranny-अत्याचार ।

nt-अत्याचारी ।
-व्रण ।
rated-व्रणित ।
natum-अंतिमेत्थम् ।
ra-प्रच्छाया ।
ire-अंककार, पंच ।
ble-असमर्थ ।
nimity-सर्व-सम्मति ।
nimous-सर्व-सम्मत ।
shed-अभुक्त ।
vil-अशिष्ट ।
vilised-असभ्य ।
mmon-असाधारण ।
nstitutional-अवैधानिक ।
ltivateed-अकृषित ।
urrent-अप्रचलित ।
efended-अरक्षित । (परि०)
er-१. अधस्थ, मातहत । २. अधीन ।
current-अंतर्धारा ।
ground-पाताली ।
mentioned-निम्नलिखित ।
proprietor-मातहतदार ।
erstood-अध्याहृत ।
ertaking-वचन, वादा ।
esirable-अनभीष्ट, अनिष्ट । अवांछित ।
ue-अनुचित ।
arned-अनर्जित ।
conomic-अलाभकर ।
mployed-अनिधियुक्त, बेकार ।
mployment-बेकार, अनिधियुक्ति ।
quivocal-असंदिग्ध ।
ven-विषम ।
it-अयोग्य ।
ification-एकीकरण ।
iform-संज्ञा-परिच्छद, वरदी ।
० एक-रूप ।
formity-एक-रूपता ।
ilateral-एक-पक्षीय ।

Unique-अद्वितीय, अनुपम जोड़ ।
Unit-मात्रक, इकाई, एकाई ।
United Nations organisation-राष्ट्र संघ । (U. N. O)
Universe-ब्रह्मांड, विश्व ।
Universal-१. विष्वक् । २. सार्विक । ३. सार्वभौम, सार्वदेशिक ।
University-विश्वविद्यालय ।
Unlimited-अपरमित ।
Un-natural-अप्राकृतिक, अनैसर्गिक ।
Unpaid-अदत्त ।
Unparliamentry-असांसद ।
Unseated-अनासीन ।
Unsound mind, of-विकृत चित्त ।
Unstability-अस्थिरता ।
Unstable-अस्थिर ।
Un-timely-असामयिक ।
Untouchability-अस्पृश्यता ।
Untouchable-अस्पृश्य ।
Untrained-अप्रशिक्षित ।
Untrue-असत्य ।
Unusual-असाधारण ।
Unveiled-अनावृत ।
Unveiling-अनावरण ।
Upper class-उच्च वर्ग ।
Up to date-दिनाप्त ।
Uranus-वारुणी, उरण (ग्रह) ।
Urban-नागर
Urgent-आवश्यक ।
Usage-उपाचार ।
Use-उपयोग, प्रयोग ।
Used-प्रयुक्त ।
Usual-१. प्रायिक । २. साधारण ।
Utilitarian-उपयोगितावादी ।
Utilitarianism-उपयोगितावाद ।
Utilization-उपयोग ।
Utility-उपयोगिता ।
Utopia-राम-राज्य

Vacancy-रिक्ति ।
Vacation-विरामकाल ।
Vaccine-टीका ।
Vaccum-शून्य ।
Vacuity-रिक्तता ।
Valcano-ज्वालामुखी ।
Valid-वैध ।
" -deed-संलेख ।
" in law-वैध ।
Validation-वैधीकरण ।
Validity-वैधता ।
Valuable-मूल्यवान ।
Valuation-मूल्यन, मूल्यांकन, मानांकन ।
Value-१. मूल्क । २. अर्घ ।
Vapour-भाप, वाष्प ।
Variation-१. रूपांतर । २. परिवर्त्तन, घट-बढ़ ।
" grammatical-शाब्दिक रूपांतर ।
Vari lectio-पाठांतर ।
Vehicile-वाहन ।
Vein-१. शिरा । २. धारी ।
Velocity-प्रवेग । (परि०)
Veneral-रतिज ।
Veneral disease-रतिज रोग ।
Ventilation-झरोखा, हवा कश ।
Venus—शुक्र (ग्रह) ।
Verb-क्रिया । (व्याकरण)
Verbal-मौखिक ।
" noun-क्रियार्थक संज्ञा ।
Verbatim-अविकल, शब्दशः ।
Verdict of jury-अभिनिर्णय ।
Verification-सत्यापन ।
Verified-सत्यापित ।
Verifying-सत्यापक ।
Vertex-शीर्ष ।
Vertical-ऊर्ध्व ।
Vertical man, the-स्थाणु पुरुष ।

Vessel-जल यान ।
Vested-अधिष्ठित ।
Vested interest-अधिष्ठित या निहि स्वार्थ ।
Vesterinary-शालिहोत्रीय ।
" doctor-शालिहोत्री ।
" science-शालिहोत्र ।
Vesting-अधिष्ठान ।
Veto-निषेधाधिकार ।
Vice-वि० उप ।
संज्ञा-अवगुण ।
" Chairman-उपाध्यक्ष ।
" Chancellor-कुलपति ।
" Chancellor, Pro-उप-कुलपति
" President-उप-सभापति ।
" Versa-प्रतिक्रम से भी; प्रि
क्रमात भी ।
Vicious circle-दुश्चक्र ।
View-दिखाव, दृश्य ।
View point-दृष्टि कोण ।
Vigour-ऊर्जा । (परि०)
Vigourous-ऊर्ज, ऊर्जित ।
Virgin soil-बंजर ।
Virgo-कन्या (राशि) ।
Visible-दृश्य ।
Vision-१. दृष्टि । २. भाविक (अलंकार
Visual-चाक्षुष, दृश्य ।
Vitamin-पोषक ।
Viva voce-मौखिक ।
Vocal-मौखिक ।
Vocal music-कंठ संगति ।
Vocative case-संबोधन कारक ।
Voice-वाच्य (व्या०) ।
" active-कर्तृ वाच्य ।
" passive-कर्म वाच्य ।
Void-व्यर्थ ।
Volatile-वाष्प-शील ।
Voluntarily-स्वेच्छया ।

tary–स्वैच्छिक ।
teer–स्वयंसेवक ।
. मत । २. मत-पत्र ।
मतदाता ।
–मतदान ।
er–साधका ।
–स्वर ।
r–अश्लील ।
–वेतन, मजदूरी ।
ng room–प्रतीक्षालय, प्रतीक्षा-गृह ।
Painting–भित्ति चित्र ।
युद्ध ।
risoner of –युद्ध-बंदी ।
–१. आश्रित । २. कक्ष ।
boy–किंकर ।
ant–अधिपत्र वारंट ।
hip–युद्ध-पोत ।
age–क्षीज, क्षीजन ।
e–ह्रास ।
ing disease–क्षीणक रोग ।
r channel–जल-प्रणाली ।
colour–जल-रंग ।
course–जल-मार्ग ।
fall–प्रपात ।
mark–जलांक ।
marked–जलांकित ।
proof–जल-कवच ।
pump–जल-यंत्र ।
Rate–जल-कर ।
ways–जल मार्ग । (परि०)
Works–जल-कल, पानी कल ।
e–तरंग, लहर, लहरी ।
s–१. ढंग । २. मार्ग (जैसे वायु मार्ग) ।
lth–धन, धन-संपत्ति, दौलत ।
pon–शस्त्र ।
her–मौसिम ।
ver–जुलाहा बुनकर ।
ving–बुनाई, बुनकरी ।

Weeding–निकाई, निराई ।
Weekly–साप्ताहिक ।
Weight–१. तौल, वजन । २. बटखरा, बाट । ३. बोझ, भार ।
Well-advised–सु मंत्रित ।
Well-wisher–शुभ चिंतक, शुभेच्छु ।
West–पश्चिम ।
Wet–गीला ।
Whale–तिमिंगल ।
Whim–तरंग, मौज ।
Whimsical–तरंगी, मौजी ।
Whip–चेतक ।
White paper–श्वेतपत्र ।
Whole–समस्त ।
Wholesale–थोक ।
Wholly–पूर्णतः ।
Will–चरम पत्र, दिस्सा (पत्र) । वसीयतनामा ।
Wind–पवन ।
„ furnace–पवन भट्ठी ।
„ mill–पवन-चक्की ।
Winding up–समापन ।
Wireless–वितंतु ।
Withdrawal–विनिवर्तित ।
Withdrawn–विनिवर्ति ।
Witness–गवाह साक्षी ।
Word–शब्द ।
Wording–शब्दावली ।
Work–कार्य ।
Working day–कार्य दिवस ।
Worship–आराधना, उपासना ।
Wound–क्षत, घाव ।
Writ लेख ।
„ of demand–माँग पत्र ।
Writing–लेख ।
Wrong–अपकार ।
Year–वर्ष ।
Year before last–त्योरस ।

Year-book–अब्द-कोश ।
Yearly–वार्षिक ।
Younger–कनिष्ठ ।
Zenith–ऊर्ध्व-बिन्दु, शीर्ष-बिन्दु, ख-स्वस्तिक ।
Zero–शून्य, सुन्ना ।
Zodaic–राशि चक्र, भ-चक्र ।
Zone–१. कटिबंध । २. क्षेत्र ।
Zoology–जन्तु- विज्ञान ।

अच्छी हिन्दी

[लेखक—श्री रामचन्द्र वर्म्मा]

क्या आप जानते हैं कि आप जो हिन्दी बोलते या लिखते हैं, समें कहाँ-कहाँ और कितने प्रकार की अशुद्धियाँ होती हैं? ा आपको मालूम है कि समाचार-पत्रों और पुस्तकों में आप हिन्दी पढ़ते हैं, वह कितनी अशुद्ध और बे-मुहावरे होती है? ा आप जानते हैं कि कोई शब्द जरा सा आगे-पीछे हो जाने एकाध मात्रा हट-बढ़ जाने से ही वाक्यों के अर्थ और भाव कितना अन्तर पड़ जाता है? क्या आप जानते हैं कि आपकी षा में से हिन्दीपन किस प्रकार निकलता जा रहा है और समें अँगरेजियत कितनी बढ़ती जा रही है? यदि नहीं, तो पका हिन्दी-ज्ञान अधूरा है। इन सब बातों का पूरा ज्ञान प्त करने के लिए 'अच्छी हिन्दी' पढ़िये।

लेखकों और कवियों के लिए, सम्पादकों और संवाददाताओं लिए, अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए, व्याख्यानदाताओं र जन-सेवकों के लिए, व्यापारियों और कर्मचारियों के लिए, ायालयों के अधिकारियों और वकीलों के लिए 'अच्छी हिन्दी' ढ़ना आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है। इसे पढ़कर खक और सम्पादक अपने लेख प्रभावशाली बना सकते हैं, ाख्यानदाता लोगों पर अधिक प्रभाव डाल सकते हैं, अध्यापक पने विद्यार्थियों को अच्छी तरह शुद्ध भाषा सिखा सकते हैं और विद्यार्थी परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं। 'अच्छी न्दी' का अध्ययन सभी तरह के लोगों के लिए इतना अधिक ाभदायक है कि शब्दों में उसका वर्णन नहीं हो सकता।

सभी समाचार-पत्रों और मासिक-पत्रों ने, हिन्दी के छोटे और बड़े सभी विद्वानों ने और शिक्षा-विभाग के अनेक बड़े-बड़े अधिकारियों ने मुक्त-कंठ से 'अच्छी हिन्दी' की प्रशंसा की है और एक स्वर से कहा है कि सभी हिन्दी पढ़ने-लिखनेवालों को "अच्छी हिन्दी" का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। भारत के ायः सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों और हाई स्कूल-इण्टर बोर्डों, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मद्रास, राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, वर्धा, गुरुकुल विश्वविद्यालय, काँगड़ी, हिन्दी विद्यापीठ, बम्बई, महिला विद्यापीठ, प्रयाग आदि सभी प्रमुख संस्थाओं की भिन्न-भिन्न परीक्षाओं के पाठ्य-क्रम में इस पुस्तक को स्थान मिला है।

यदि आपको हिन्दी पढ़ने-लिखने का कुछ भी शौक हो तो आपको 'अच्छी हिन्दी' अवश्य अपने पास रखनी चाहिए। यह आपको हिन्दी-ज्ञान के भण्डार में एक अमूल्य निधि का काम देगी। ऐसी निधि से वंचित रहना अपनी बहुत बड़ी हानि करना है। हजारों लेखक, पाठक, शिक्षक और विद्यार्थी इससे बहुत अधिक लाभ उठा चुके हैं। आप भी क्यों न उठावें?

पांचवाँ संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण, पृष्ठ संख्या २७ दाम ३) वी० पी० से ३≡)

अपने यहाँ के पुस्तक-विक्रेता से माँगिये, या नीचे लिखे पते से मंगाइये। पुस्तक-विक्रेताओं को २० प्रतिशत छूट।

हिन्दी प्रयोग

(लेखक—श्री रामचन्द्र वर्मा)

'अच्छी हिन्दी' तो महाविद्यालयों या कालेजों के आरम्भिक वर्गों के विद्यार्थियों के लिये है; पर यह पुस्तक विशेष रूप से हाई स्कूलों के नवें-दसवें और हिन्दी स्कूलों के आठवें वर्ग के अथवा इनसे मिलते-जुलते अन्य वर्गों के विद्यार्थियों के उपयोग के लिए लिखी गई है। केवल हिन्दी की परीक्षाएँ लेनेवाली संस्थाओं की प्रथमा और मध्यमा और शिक्षा-विभागों के हिन्दी शिक्षकों आदि की नार्मल, ट्रेनिंग, सर्टिफायड टीचर्स और कोविद सरीखी परीक्षाओं में बैठनेवाले लोगों की आवश्यकताओं का भी इसमें पूरा-पूरा ध्यान रक्खा गया है। जो शिक्षक यह पुस्तक एक बार भली-भाँति पढ़ लेंगे, वे अपने विद्यार्थियों को अधिक अच्छी भाषा की शिक्षा देकर स्वयं यश के भागी बनेंगे। एडमिशन या मैट्रिक तक की योग्यता प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों के लिए भी यह परम उपयोगी है। जो विद्यार्थी हिन्दी भाषा और व्याकरण की मुख्य-मुख्य बातें और हिन्दी के शुद्ध प्रयोग बहुत सहज में सीखना चाहते हों, उनके लिए यह पुस्तक पढ़ना अनिवार्य है। इससे आरम्भिक विद्यार्थियों को अपनी भाषा विशुद्ध और निर्दोष बनाने में बहुत अधिक सहायता मिलेगी और परीक्षा में वे अच्छे अंक प्राप्त कर सकेंगे। हिन्दी की आरम्भिक कक्षाओं के शिक्षकों के जानने योग्य कठिन और जटिल बातें इसमें इतने सहज और मनोरंजक ढंग से बतलाई गई हैं कि एक बार पुस्तक पढ़ लेने पर लिखने में जल्दी कोई भूल न होगी। इसे संयुक्त प्रान्त, बिहार और राजपूताने तथा मध्य भारत की हाई स्कूल परीक्षाओं, पूर्वी

ंजाब की हिन्दी भूषण, प्रयाग महिला विद्यापीठ की विद्याविनोदिनी तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की प्रथमा परीक्षा के पाठ्य-क्रम में स्थान मिल चुका है। चौथा संस्करण ; पृष्ठ १८२, ाम १।।)

रूपक-रत्नावली

(लेखक—श्रीरामचन्द्र वर्म्मा)

क्या आप जानते हैं कि स्वप्नवासवदत्ता, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशी, शकुन्तला, प्रियदर्शिका, नागानन्द रत्नावली, मालती-माधव, उत्तर-रामचरित, मुद्रा-राक्षस, कर्पूर-मंजरी और चण्ड-कौशिक संस्कृत के परम उत्कृष्ट और जगत् प्रसिद्ध नाटकों में कैसे कैसे सुन्दर कथानक, कैसी कैसी सुन्दर उक्तियाँ और कैसे-कैसे सुन्दर भाव भरे पड़े हैं ! यदि नहीं तो आप यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। इस एक पुस्तक से आप इन बारह नाटकों की सभी अच्छी बातों, गुणों और विशेषताओं से परिचित हो जायँगे। इस पुस्तक में इन नाटकों की सभी अच्छी और जानने योग्य बातें बहुत ही सुन्दर और मनोहर कहानियों के रूप में मिलेंगी, और आप उनमें के सभी उत्तम स्थलों और जानने योग्य बातों से परिचित हो जायँगे। इसके सिवा इस पुस्तक में आपको ऊँचे दरजे की, परम शुद्ध और आदर्श हिन्दी का जो नमूना मिलेगा, उससे आपको शुद्ध, सुन्दर और अच्छी हिन्दी लिखने में भी बहुत अधिक सहायता मिलेगी। पृष्ठ-संख्या ४२२; दाम ३।।)

संक्षिप्त रूपक-रत्नावली

उक्त पुस्तक का संक्षिप्त संस्करण जिसमें स्वप्नवासवदत्ता, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशी शकुन्तला प्रियदर्शिका नागानन्द, मालती-माधव और मुद्रा-राक्षस की कथाएँ हैं। बिहार की इन्टरमीडिएट परीक्षा के लिए पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकृत। विद्यार्थियों के लिए परम उपयोगी। पृष्ठ २०८, दाम २।।)

कबीर साहित्य का अध्ययन

(लेखक—श्री पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, एम. ए.)

यों तो अब तक महात्मा कबीरदास जी और उनके साहित्य से संबंध रखनेवाली कई पुस्तकें हिन्दी में निकल चुकी हैं, पर यह पुस्तक कई दृष्टियों से सर्व-श्रेष्ठ और उन सब से कहीं आगे बढ़ी-बढ़ी है। इसमें विद्वान् और विचारशील लेखक ने बिलकुल नये

ढंग से और नये दृष्टि-कोण से संत कबीर के सब ग्रन्थों और कबीर सम्बन्धी हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, अँगरेजी के सैकड़ों ग्रन्थों के विशाल साहित्य का बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से पूरा-पूरा अनुशीलन करके उनकी बहुत मार्मिक आलोचना की है और कबीर तथा उनके साहित्य के मर्म तक पहुँचने का बहुत ही अभूत-पूर्व और सफल प्रयत्न किया है। इसमें यह बतलाया गया है कि कबीर-साहित्य के अध्ययन का प्रयोजन क्या है और उसकी पद्धति कैसी होनी चाहिए; उनके साहित्य का वास्तविक रूप क्या है; उनकी भाषा में कौन-कौन से तत्त्व हैं और उनके शुद्ध पाठ क्या हैं तथा कठिन पद्यों के अर्थ क्या हैं और उनकी कविता में कौन-कौन सी मुख्य बातें या क्या-क्या सिद्धान्त हैं। साथ ही कबीर साहित्य के अध्ययन के इतिहास का विवरण देते हुए कबीर के जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाओं का विस्तृत विवेचन किया है और यह बतलाया है कि भारतीय श्रेय-मार्ग में उनका क्या स्थान है, उनके रहस्यवाद का स्वरूप क्या है और आधुनिक साम्यवाद के साथ कबीर के सिद्धान्तों का किस प्रकार का संबंध है। कबीर के कुछ कठिन शब्दों के अर्थ, उनके ग्रन्थों की विस्तृत और तुलनात्मक सूची और अंत में शब्दानुक्रमणिका से पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। सारांश यह कि विद्या-प्रेमी अध्ययनशीलों के लिए यह पुस्तक एक अमूल्य रत्न है और उन्हें गम्भीर अध्ययन तथा विचार की ओर प्रवृत्त करने में बहुत अधिक सहायक होगी। पृष्ठ-संख्या ४००; मूल्य—जिल्ददार प्रति का ४॥), बिना जिल्द प्रति का ४)।

जाग्रत जीवन

या

भारत की अध्यात्म-मूलक संस्कृति

[लेखक—श्री रामावतार विद्याभास्कर]

इस पुस्तक में स्वच्छता, संयम, भलाई का फल, नम्रता, संतोष, स्वास्थ्य आदि दैनिक जीवन से संबंध रखनेवाले अनेक उपयोगी विषयों पर बहुत ही सुन्दर, आदर्श और मौलिक विचार प्रकट किये गये हैं और यह बतलाया गया है कि हम क्या करें और क्या न करें, कैसे बोलें, क्या पढ़ें, कैसे सफल हों, कैसे प्रसन्न रहें, लोगों के साथ कैसा व्यवहार करें, आदि आदि। पुस्तक आदि से अंत तक बहुत ही सुन्दर और मांगलिक विचारों से भरी है और भारतीय संस्कृति के आदर्श के अनुसार

कृष्ट जीवन व्यतीत करने में बहुत अधिक सहायक हो सकती
। पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य ३)

बौद्ध-कालीन भारत

[लेखक—श्रीयुत पं० जनार्दन भट्ट, एम० ए०]

इसमें आपको गौतम बुद्ध की जीवनी, बौद्ध तथा जैन धर्मों इतिहास, गौतम बुद्ध के सिद्धान्त तथा उपदेश, बौद्ध संघ का तिहास, प्राचीन बौद्ध काल का राजनीतिक इतिहास, उस समय प्रजातंत्री राज्यों तथा मौर्य साम्राज्य की शासन-प्रणाली तथा द्ध-काल के साहित्य, शिल्प व्यवसाय और समाज के सम्बन्ध सैकड़ों-हजारों जानने योग्य बातें मिलेंगी। सैकड़ों उत्तमोत्तम यों का बहुत अच्छी तरह अध्ययन करके यह पुस्तक बहुत ही रिश्रमपूर्वक लिखी गई है। हिन्दी में यह अपने ढंग की अनुपम र अपूर्व पुस्तक है। पृष्ठ संख्या चार सौ से ऊपर है। बढ़िया ण्टिक कागज, जिल्ददार ३॥)

हिन्दी भाषा का विकास

(लेखक—स्व० डा० श्यामसुन्दरदास, बी० ए०)

इसमें यह बतलाया गया है कि आरम्भ से अब तक हमारी न्दी भाषा, संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि के विवेचन, रानी हिन्दी का स्वरूप और पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राज-थानी, अवधी, व्रज भाषा और खड़ी बोली आदि भेद और शेषताएँ बतलाई गई हैं। पृष्ठ-सख्या ११७, दाम १)

रूपक-विकास

(लेखक—श्री वेदमित्र 'व्रती' साहित्यालंकार)

इस पुस्तक में नाट्य-शास्त्र-सम्बन्धी जानने योग्य सभी मुख्य-मुख्य बातों के विस्तृत विवेचन, हिन्दी के सभी प्रकार के नाटकों का आलोचनात्मक विवेचन और नाटककारों का संक्षिप्त परिचय, ङ्गाली, मराठी, गुजराती आदि के प्रमुख नाटकों और नाटककारोंका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। संस्कृत नाटकों के आरम्भ से आज तक के हिन्दी नाटकों की सब बातों का ज्ञान करानेवाली इससे अच्छी और कोई पुस्तक आपको न मिलेगी। पृ० ४३; दाम २॥)

साहित्य-रत्न-माला कार्यालय,
२० धर्मकूप, बनारस।

हिन्दी-साहित्य कुटीर, बनारस द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची

हिन्दी दासबोध

रचयिता श्री समर्थ रामदासजी (छत्रपति शिवाजी के गुरु)

अनुवादक—रामचन्द्र वर्मा

जिस तरह उत्तर भारत में गोस्वामीजी को रामायण का प्रचार राजा से लेकर रंक की झोपड़ी तक है उसी तरह इस पुस्तक का प्रचार दक्षिण भारत में है। इस ग्रंथ-रत्न में आप धार्मिक सामाजिक, पौराणिक तथा राजनीतिक इत्यादि जिस विषय का उपदेश चाहेंगे वही पूर्ण रूप से मिलेगा। ये उपदेश वही हैं जो स्वामीजी शिवाजी महाराज को दिया करते थे। इन्हीं उपदेशों का यह फल है कि आज महाराज शिवाजी की गणना संसार के महान् पुरुषों में की जाती है। इन उपदेशों का ढंग आज-कल की तरह नहीं, किन्तु एक विलक्षण ही ढंग है, जो हृदय में तीर की तरह चुभकर वास्तविक काम करते हैं।

वास्तव में यह ग्रन्थ संसार की नीति तथा धार्मिक ग्रंथों का सार है। तिलकजी ने इसे संसार के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों में माना है। मूल भाषा में इस पुस्तक के कितने ही संस्करण हाथों-हाथ बिक गये हैं। यह ग्रन्थ बालकों के वास्ते शिक्षा का भंडार, नवयुवकों के वास्ते जीवन-पथ-प्रदर्शक तथा बुड्ढों के वास्ते स्वर्ग की कुञ्जी है। पृष्ठ संख्या ५०० मोटा, चिकना कागज, सुन्दर छपाई तथा सुन्दर पक्की जिल्द के साथ मूल्य केवल ३)।

हिन्दी ज्ञानेश्वरी

(श्री मद्भागवद्गीता की सर्वश्रेष्ठ टीका)

अनुवादक—रामचन्द्र वर्मा

महाराष्ट्र प्रान्त में ज्ञानेश्वर, समर्थ, एकनाथ आदि अनेक उच्चकोटि के महात्मा हुये हैं। इनमें से श्री ज्ञानेश्वरजी ने भक्तों को भगवद्गीता का वास्तविक मर्म समझाने के लिए श्री शंकराचार्य के मतानुसार 'ज्ञानेश्वरी' नामक बहुत ही विद्वत्तापूर्ण और विशद टीका लिखी है। इसे धर्म-ग्रन्थ कहिये, काव्य कहिये या व्यवहार नीति का ग्रन्थ कहिये, किसी भी दृष्टि से इस ग्रन्थ की ओर देखा जाय, पर इसके जोड़ का कोई दूसरा ग्रन्थ अभी

क नहीं बना। इस ग्रन्थ में उपमाओं, रूपकों और दृष्टान्तों के द्वारा व्यवहार-नीति का बहुत ही रोचकतापूर्ण बोध कराया गया है और ज्ञान तथा भक्ति का तो मानो यह सागर ही है। व्यवहार-ज्ञान तथा परमार्थ दोनों को एक साथ जानने की इच्छा रखनेवालों के लिए यही एक ग्रन्थ पर्याप्त है। इस ग्रन्थ द्वारा बहुत सी ऐसी नवीन बातों का ज्ञान होगा जिनसे आपका रोज का परिचय होते हुए भी आप उनसे अपरिचित-से हैं। विषय गहन होने पर भी लेखन-शैली की सरलता तथा रोचकता के कारण साधारण लोगों के लिए भी यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है और अनुवाद तो इतना अधिक सुन्दर, शुद्ध और मुहावरेदार हुआ है कि इस जोड़ का अनुवाद समस्त-हिन्दी-साहित्य में कहीं जल्दी ढूँढ़े न मिलेगा। गीता-प्रेमियों को तो इसे अवश्य देखना चाहिये। पृष्ठ-संख्या लगभग ७५०, चिकने मोटे कागज पर छपी, सुन्दर जिल्द के साथ पुस्तक का मूल्य केवल ५)

वैदेही वनवास

लेखक—स्व० महाकवि 'हरिऔध'

साहित्य-संसार को लेखक की यह पुस्तक एक अनोखी देन है। बहुत दिनों से उत्सुकता से लोग इसकी आशा देख रहे थे। इसमें राम और सीता का इतना सुन्दर और आदर्श चित्र चित्रित किया गया है कि पढ़ते ही बनता है। ग्रंथ पढ़ते-पढ़ते आप करुण-रस के सागर में निमग्न हो जायगे। करुण-रस का तो यह ग्रन्थ भाण्डार ही है। काव्य-लालित्य पर आपका मन-मयूर मुग्ध होकर नाच उठेगा। ग्रंथ की एक-एक पंक्ति लेखक ने आँसू पोंछ-पोंछ कर लिखी है। ग्रंथारम्भ में काव्य-सम्बन्धी अनेक बातों का दिग्दर्शन कराते ८५ पृष्ठों की लेखक ने विद्वत्तापूर्ण भूमिका भी लिखी है। सुन्दर मोटे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मू० ३)

प्रियप्रवास

लेखक—स्व० महाकवि 'हरिऔध'

इस ग्रन्थ के विषय में विशेष लिखना व्यर्थ है। लेखक ने स्वर्गवासी होने के पूर्व बड़े ही परिश्रम के साथ इस ग्रंथ में संशोधन एवं परिवर्द्धन किये हैं। अब नूतन संस्करण सोने में सुगन्धवाली उक्ति चरितार्थ करता है। जितनी प्रशंसा इस ग्रन्थ

के लिए लगातार ३५ वर्षों से हिन्दी-संसार करता आ रहा है यह सभी जानते हैं। वास्तव में खड़ी बोली का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य यही ग्रन्थ है यह सभी एक स्वर से कहते आ रहे हैं। प्रेम और करुण-रस का तो यह ग्रन्थ सागर ही है। हिंदी की सभी उच्च परीक्षाओं में यह पाठ्य-ग्रन्थ नियत है। जिल्ददार सुंदर पुस्तक का मू० ३=)

उर्दू साहित्य का इतिहास

लेखक—श्री ब्रजरत्नदासजी

आरम्भ से लेकर आज तक का इसमें उर्दू साहित्य का पूरा-पूरा विवरण दिया है। उर्दू भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई, कौन-कौन गद्य तथा पद्य लेखक हुए, क्रमशः कैसे यह भाषा विकासोन्मुख हुई आदि आदि विषयों पर पूरा-पूरा प्रकाश डाला गया है। कवियों पर तो उनकी कविताओं के उदाहरण देकर काफी प्रकाश डाला गया है। हिंदी साहित्य में यह अपने विषय की अकेली पुस्तक है और आलोचनात्मक ढंग से लिखी गई है। संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण अभी प्रकाशित हुआ है। मूल्य सजिल्द ३)

भाषा की शिक्षा

लेखक—पं० सीतारामजी चतुर्वेदी एम. ए., बी. टी.

पं० शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' एम. ए. बी. टी.

हिन्दी भाषा की शिक्षा देने के वास्ते यह अपने विषय की अकेली पुस्तक है। इस ग्रन्थ में उन सभी नये प्रयोगों, प्रणालियों और शिक्षण-सिद्धांतों का समावेश किया गया है जो सर्वमान्य हो चुके हैं। भाषा-शिक्षा के जितने भी पहलू हो सकते थे उन सब पर इसमें प्रकाश डाला गया है। शिक्षक के सामने उठ खड़ी होनेवाली सभी समस्याओं और कठिनाइयों पर पुस्तक में विस्तार से विचार किया गया है और उन्हें सुलझाने के उपाय भी बताये गये हैं। यह ग्रन्थ उन सभी अध्यापकों के काम का है जो प्राथमिक कक्षाओं से लेकर ऊँची कक्षाओं तक भाषा की शिक्षा देते हैं। यह पुस्तक प्रायः सभी ट्रेनिङ्ग कालेजों में पाठ्य ग्रन्थ नियत है। मू० २॥)

प्रसाद और उनका साहित्य

लेखक—पं० विनोदशंकरजी व्यास

प्रसादजी इस युग के सभी कुछ-कवि, नाटककार, उपन्यास-कार तथा कहानी-लेखक—हो गये हैं। इस पुस्तक में हिन्दी

हित्य के सभी अंगों को लेकर और उनकी कृतियों का जबर-
त अध्ययन कर बड़े विशद रूप से उनकी सभी कृतियों पर
लोचनात्मक रूप में प्रकाश डाला गया है। विद्यार्थियों तथा
हित्य-सेवियों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। सजिल्द
तक का मू० २॥)

हिन्दी - नाट्य - साहित्य

लेखक— श्रीयुत ब्रजरत्नदासजी

इस ग्रन्थ के आरंभ में प्रायः ६० पृष्ठों में संस्कृत-नाट्य-
ाहित्य की उत्पत्ति, विकास, नाटक तथा लक्षण-ग्रन्थों का
क्षिप्त इतिहास रूपक-भेद, वस्तु, रस आदि पर एक पूरा प्रकरण
या गया है। इसके अनन्तर काल-विभाग करते हुए भारतेन्दु
बू हरिश्चन्द्र के पूर्व के नाटकों का इतिहास देकर भारतेन्दुजी
ी नाट्य-रचनाओं का विवरण आलोचना सहित क्रमशः तीन
करणों में दिया गया है। इसके बाद भारतेन्दु-काल के अन्य
ाटककारों का विवरण एक प्रकरण में देकर वर्तमानकाल के
मुख नाटककार 'प्रसाद' जी की रचनाओं की ५० पृष्ठों में विवे-
ना की गई है। तदनंतर वर्तमान-काल के सभी प्रसिद्ध नाटक-
ारों का कृतियों की पूर्ण विवेचना की गई है। उपसंहार में समग्र
नाट्य-कला, अभिनय तथा वर्तमान रंगमंच और नाट्य-प्रवृत्ति
पर आलोचनात्मक दृष्टि डाली गई है।

यह ग्रन्थ बड़े अध्यवसाय तथा खोज से लिखा गया है;
जिसमें नाटकों के इतिहास-सम्बन्धी समग्र ज्ञातव्य बातें संकलित
कर दी गई हैं। हिन्दी-साहित्य में इस विषय का यह एकमात्र ग्रंथ
है और इसलिए अद्वितीय है। सजिल्द पुस्तक का मू० २॥)

मीराँ-माधुरी

सम्पादक—बाबू ब्रजरत्नदासजी

मीराँबाई के पदों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं पर यह संग्रह सबसे बड़ा है। इसमें प्रायः पाँच सौ पद संगृहीत हुए हैं, जिनमें गुजराती भाषा के पद भी सम्मिलित हैं। पदावली के अनंतर कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए गए हैं और अंत में प्रतीकानुक्रमणिका भी दी गई है। भूमिका में मीराँबाई की जीवनी के संबंध में जहाँ तक साधन प्राप्त हुए या हो सकते थे उन सबका उपयोग किया गया है और यथाशक्ति शुद्ध जीवनी निश्चित कर लिखी गई है। उनके संबंध में जो अनेक भ्रांत दंत-

कथाएँ प्रचलित हों गई हैं, उन पर पूरा प्रकाश डाला गया है। संक्षेप में वैष्णव संप्रदाय का दिग्दर्शन कराते हुए मीराँबाई की कृष्णभक्ति की अनन्यता, एकनिष्ठा, तल्लीनता आदि की विवे-चना की गई है और विरह की इनकी कातरोक्तियाँ, उपालंभ तथा विरक्तिपूर्ण पदों की भी समुचित आलोचना की गई है। इससे अच्छा सर्वांगपूर्ण संग्रह अभी तक दूसरा नहीं प्रकाशित हुआ है। डिमाई साइज की पुस्तक की पृष्ठ संख्या लगभग ३५० सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४)

हिंदी कहानियों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह

(प्रथम खंड) **मधुकरी** (द्वितीय खंड)

संपादक—पं० विनोदशंकर व्यास

हमारे साहित्य में कहानियों के दर्जनों संग्रह प्रकाशित हुए हैं और नित्य प्रति कितने ही संग्रह प्रकाशित हो रहे हैं। किन्तु यह संग्रह "सर्वश्रेष्ठ" है, यह मत स्व० प्रेमचन्दजी, स्व० गणेश शंकर विद्यार्थी, स्व० कौशिकजी तथा सभी पत्र पत्रिकाओं का है। भूमिका भाग में 'हिन्दी कहानियों का विकास' नामक एक वृहत निबंध ने तो पुस्तक की उपदेयता में चार चाँद लगा दिये हैं। पुस्तक के कितने ही संस्करण हाथों हाथ बिक गये हैं। प्रथम खंड में जयशंकर प्रसाद, कौशिक, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, ज्वालादत्त शर्मा, चतुरसेन शास्त्री, बद्रीनाथ भट्ट, शिव पूजन सहाय, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचन्द्र, राय कृष्णदास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', चण्डीप्रसाद 'हृदयेश', गोविन्द वल्लभ पन्त सुदर्शन, बेचन शर्मा 'उग्र'-१७ प्रसिद्ध, सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखकों की सर्वोत्तम २२ कहानियों का संग्रह है।

द्वितीय खंड में—निराला, इलाचन्द्र जोशी, भगवती प्रसाद वाजपेयी, कृष्णानन्द गुप्त, राजेश्वर प्रसाद सिंह, अन्नपूर्णानंद, वृंदावनलाल वर्मा द्विज, भारती, सियारामशरण गुप्त, मोहन लाल महतो, जैनेन्द्र कुमार, पंत, पहाड़ी, राधाकृष्ण, वीरेश्वरसिंह अज्ञेय, धनीराम प्रेमी, सुभद्राकुमारी चौहान, सत्यवती मलिक आदि ३२ कहानी लेखकों की ३२ उत्तम कहानियों का संग्रह है। छपाई, सफाई, जिल्दबन्दी गेटअप आदि अत्यन्त सुन्दर। प्रत्येक खण्ड का मूल्य ३)

मिलने का पता—**हिन्दी साहित्य कुटीर**, बनारस।

Tag 6.11.95

STOCK VERIF... 2020 G.K.V. Library

COMPILED